ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्





सार्वदेशिक

साप्ताहिक



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ३६ अक ३६ १४ जनवरी से २० जनवरी २००१ तक दयानन्दाब्द १७६ सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०१ सम्वत २०५७ मा० कृ० ५

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एव मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के सयुक्त तत्वावधान मे

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मुम्बई में

२३, २४, २५ एवं २६ मार्च २००१

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एव मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के सयुक्त तत्वावधान मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन २३ २४ २५ तथा २६ मार्च २००१ (शुक्रवार शनिवार रविवार एव सोमवार) की तिथियो में मुम्बई शहर मे आयोजित किय' जा रहा है। इस महासम्मेलन म अमरीका अ र्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुखदेव चन्द सोनी इस महासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष होगे। मारीशस तथा दक्षिण अफ्रीका से भी सैकडो की सख्या मे आर्यजनो के भाग लेने की उम्मीद है

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने विगत ६ दिसम्बर को इस महासम्मेलन की तैयारियो का बिगुल बजाते हुए समस्त प्रान्तीय सभाओं के प्रधान/मन्त्रियो की एक आवश्यक बैठक दिल्ली मे बुलाई जिसकी अध्यक्षता स्वामी ओमानन्द जी ने की। मुम्बई के कैप्टन देवरत्न आर्य श्री ओकार नाथ आर्य श्रीमती शिवराजवती श्री अरुण अब्रोल आदि विश्व विख्यात सन्यासी डा० स्वामी सत्यम के नेतृत्व मे भाग लेने पहुचे।

इस बैठक मे पजाब हिमाचल प्रदेश हरियाणा उत्तर प्रदेश मध्य प्रदेश राजस्थान बिहार मध्य विदर्भ महाराष्ट्र तथा गुजरात आदि प्रान्तो से सभा के अधिकारियो ने भाग लिया। दिल्ली से भी बहुत से गणमान्य आर्यनेताओ ने इस बैठक मे उत्साह पूर्वक अपनी योजनाए प्रस्तुत की।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान होने के नाते यह घोषणा की कि दिल्ली से एक विशेष रेलगाडी इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए चलाई जाएगी। इसी प्रकार हरियाणा सभा ... ेर से भी पो० शेरसिह जी ने एक विशेष रेलगाडी ... जान की घोषणा की

डा० स्वामी सत्यम जी अमेरिका से विशेष रूप से ... सम्मेलन मे सहयोग करने तथा इसे सफल बनाने के लिए पधारे है। स्वामी जी ने इस बैठक म अपने विचार रखत हुए कहा कि मुम्बई मे एक ऐसे सम[य] ... अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन हो ... जो दो शताब्दियो की सन्धि वेला ...से महान अवसर पर आर्यसमाज ...तीत का स्वर्णिम इतिहास भविष ... अदभुत स्वप्न से मिलता दीख र[हा] ... महर्षि के अद्वितीय सदेश की ज्य[ोति] ... जगमगाता हुआ आर्यसमाज ... छला युग जो अनेकानेक महा[त्म]... नाओ के बलिदानो की गाथाओ से ...डा है विदाई ले रहा है और न[ए] ...न नई चेतना नए स्वप्न और परि... के साथ कार्यभार सम्भालने के लिए नये युग को आह्वान दे रहा है।

अन्तर्राष्ट्री[य] ... महासम्मेलन के सयोजक कैप्टन ...व...त्न आर्य ने कहा कि पिछली शत...ी मे कई महान आत्माओ ने अपनी सुविधाओ खुशियो परिवारो बच्चो ...र सम्बन्धियो का बलिदान देकर इ... महान सस्था को सम्पूर्ण शक्ति महर्षि के चरणो मे अटूट विश्वास और श्रद्धा तथा निःस्वार्थ त्याग भावना से इस उच्च स्थिति तक पहुचाय' है आज भी जब उनके बच्चे व सम्बन्धी उनके बलिदानो की कहानिया सुनाते है तो गर्व व प्रीति से उनकी आखे भर आती हैं। वे चाहते है कि कोई उनके माता पिता दादा दादी नाना नानी तथा अन्य ऐसे बलिदानी सम्बन्धियो के चित्र देकर और उनकी कहानी किसी महान ग्रन्थ मे छापकर उन आत्माओ को अमर कर दे ताकि भविष्य मे भी उनके बच्चो और अन्य आर्य भाई बहनो को उनके अदभुत जीवन से प्रेरणा मिलती रहे। इससे उनको अ...यन्त सुख मिलेगा और तृप्ति होगी कि उन्होने उन स्वर्गीय आत्माओ के लिए जिन्हे वे सम्मान व प्रीति से देखते हैं कुछ अमूल्य भेट प्रदान की है। उन आत्माओ के लिए श्रद्धाजलि अर्पित करने का यह सर्वोत्तम उपाय है।

कैप्टन देवरत्न ने बताया कि ऐसे बलिदानी महान आत्माओ के विवरण एकत्र करके एक महान ग्रन्थ तैयार करके इसी आर्य महासम्मेलन मे उसका विमोचन कराया जाएगा ऐसे सभी व्यक्ति जो अपने बलिदानी पूर्वजो की गाथा देन' चाहत हैं अपने एस सम्बन्धियो (स्वर्गीय अथवा जीवित) का चित्र व जीवन की कहानी सक्षप मे भेजन की कृपा करे और साथ मे ...य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के नाम स ...५ ०/ ...पये (१०० अमेरिकन डालर ७० ब्रिटिश पौंड अमरि... तथा इग्लेड वासिय' ... िए) ड्रफ्ट द्वारा आर्यसमाज सान्ताक्रुज (प) लिकिंग रोड मुम्बई ४ ००५४ के पते पर भेज दे जो हम दिनाक ३१ जनवरी २००१ से पहल मिल जाए जिस क्रम से उक्त सामग्री हमे मिलती जाएगी उसी क्रम से जीवनिया उस महान ग्रन्थ मे प्रकाशित होगी

हर परिवार को दा पृष्ठ दिए जाएगे बाए पृष्ठ पर सम्बन्धित महान व्यक्ति का चित्र होगा जिसके सामने दाये पृष्ठ पर उनकी जीवन गाथा सक्षप मे दी जाएगी चित्र के नीचे इस गाथा को देनेवाले सम्बन्धित पुत्रो व पुत्रियो के नाम दिए जाएगे

बैठक मे सभ के उपप्रधान प्रो० शेरसिह ने कहा कि इस अवसर पर एक विशाल रथ का निर्माण करके दिल्ली से मुम्बई तक प्रचार यात्रा की जानी चाहिए।

(शेष भाग पृष्ठ १२ पर)

विशेषांक की शुभ सूचना

ऋषि ... । ...र्वाप ...ाध तथा आर्यसमाज स्थापना के 125 वर्ष पू... हाने पर एक भव्य विशेषाक को प्रकाशित करने की ...ोजना है। सभी विद्वान महानुभावों तथा आर्य कार्यकर्त्ताओं ...े निवेदन है कि वे अपने लेख 500 से 1000 शब्दों के ... लिखकर यथाशीघ्र भेज देवें। आपके लेख हमारे पार ... फरवरी तक पहुच जाने चाहिए क्योंकि विशेषाक मा... के प्रथम अथवा द्वितीय सप्ताह में निकाला जाएगा। इ... विशेषाक में प्रकाशित सामग्री का चयन विशिष्ट उद्दे... से गठित विद्वत मण्डल करेगा तथा प्रकाशित लेखों के ...ए सार्वदेशिक सभा द्वारा विशिष्ट लेखक प्रमाण पत्र ...री किया जाएगा।

सम्पादक

खेद व्यक्त

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के दिवगत मन्त्री श्री सूर्यदेव जी के निधन के बाद कुछ अपरिहार्य प्रशासनिक अव्यवस्थाओ के कारण विगत लगभग दो माह से सार्वदेशिक साप्ताहिक का प्रकाशन सम्भव नहीं हो पाया। इसके लिए सम्पादक मण्डल अपने सम्माननीय पाठको से खेद व्यक्त करता है। ईश्वर से प्रार्थना है कि भविष्य में इस लोकप्रिय साप्ताहिक का प्रकाशन निर्विघ्न चलता रहे। ☐

सह सम्पादक

विमल वधावन एडवोकेट

संगठनात्मक अनुशासन सर्वोपरि



भाइ सूयदव जी के दुखद दहावसान के बाद सावदेशिक सभा के मन्त्री पद का दायित्व मेरे कन्धो पर आया। सवप्रथम मै सार्वदेशिक साप्ताहिक के प्रकाशन म हुई उस अव्यवस्था क लिए खद व्यक्त करना चाहता हू जो हमारे नियन्त्रण म नहीं थी आर जिसके कारण हमारे प्रबुद्ध आर्य पाठको का लगभग २ माह स कुछ अधिक समय तक वेदिक विचारा आर आर्यसमाज की गतिविधिया की जानकारी प्राप्त नही हो पाइ।

सार्वदेशिक साप्ताहिक के प्रकाशन मे आने वाली समस्त प्रशासनिक बाधाआ का पार करने क बाद यह लोकप्रिय साप्ताहिक पत्र पुन आपको समर्पित है। आशा है इसका प्रकाशन पूर्ववत आप तक पहुचता रहगा।

सावदशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री पद से अपन दायित्वो का निवहन करते हुए मुझे एक विशेष अनुभूति हुई है। विगत दो माह के अल्प समय मे वैसे तो किसी विषय पर अन्तिम निणय व्यक्त करना अथवा पूण अवलोकन करना सरल काय नही है परन्तु फिर भी मेने यह महसूस किया हे कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा जोकि समूचे आर्य जगत की सर्वोच्च सस्था हे इस सस्था को प्रत्यक दृष्टिकोण से आय बन्धुओ के सामन एक मिसाल के रूप मे प्रस्तुत करना चाहिए। दूसरी तरफ समूचे विश्व क आर्यो को इस सभा क लिए हर प्रकार का सहयोग देने हेतु तत्पर रहना चाहिए।

परस्पर सहयोग से हर प्रकार के काय मे सुविधाजनक परिस्थितिया उत्पन्न होती है ओर सफलता भी अप्रत्याशित होती हे। आयसमाज की गतिविधिया सिद्धान्त आर सगठन हमारे लिए सर्वोपरि होने चाहिए। सगठन मे शक्ति बडे सामान्य से सिद्धान्त है परन्तु कुछ भाई इसके महत्त्व को नकारने की कोशिश करते है। सगठन का अहित करके किसी का भी लाभ नही हो सकता।

मै बाल्यकाल स अपने बुजुग आर्यो से सगठन ओर अनुशासन की प्रेरणा प्राप्त करता आया हू। मुझे इस बात का गर्व है कि मैने अपने जीवन मे सगठन हीनता का कोई भी कार्य कदापि नही किया। अत सगठनात्मक अनुशासन मेरे लिए सर्वोपरि महान है। सार्वदेशिक सभा क दायित्वो का निर्वहन करने मे मुझे बहुत सुविधा होगी यदि समस्त आर्यजन आर्य सभा सद आर्यसमाजो और सभाओ के पदाधिकारीगण एकजुट होकर आर्यसमाज अमर रहे का नारा लगाते समय अपने प्रत्येक कार्य का आत्मावलोकन करे कि कहीं उनके किसी कार्य से सगठन एव अनुशासन की व्यवस्था मे कोई विकार तो उत्पन्न नहीं हो रहा। — *वेदव्रत शर्मा*

सब आर्यजन मुम्बई चलें



आर्य समाज की स्थापना पर चर्चा किसी भी दृष्टिकोण से प्रारम्भ की जाए तो मस्तिष्क मे महर्षि दयानन्द जी का दिव्य चित्र इस प्रकार घूमने लगता हे कि मन वेदिक विचारो की पवित्र पावन उत्तेजना से घूमने लगता हे। इसी उत्तेजना के परिणाम स्वरूप मस्तिष्क म आर्यसमाज के सगठन आर कार्यक्रमो को लकर नइ नइ विचार शक्तियो का उदय हाता ह। साथ ही इश्वर से यह प्रार्थना व्यक्त हाती है कि —

भगवान आर्यो को
ऐसी लगन लगा दे।
वैदिक धर्म की खातिर
जीना इन्हे सिखा दे।।

इन विचारो के बोझ म जीवन यापन सुखद लगता ह। क्योकि यह विचार अपन आप मे निस्वाथ और निष्काम कर्म का साधन भी है और साध्य भी।

महर्षि दयानन्द जी के जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना ऐसी निष्कामता और योगिक प्रवृत्ति को उदय करने के लिए अत्यन्त प्रासगिक है। महर्षि दयानन्द जी की भेट काला पहाड नामक एक महान योगी से हुई तो परस्पर योग साधना की उपलब्धियो के विचारो का आदान–प्रदान हुआ। जब महर्षि दयानन्द जी ने अपनी योग साधनावृत्ति के बारे मे उस महान योगी को बताया तो काला पहाड नामक सन्यासी ने कहा — **"दयानन्द तुम तो मोक्ष के द्वार पर बैठे हो फिर सासारिक खडन मडन, सुधार और स्वतन्त्रता जैसे कार्यो मे क्यो फसे हो।**

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने उत्तर दिया — **देश सेवा और देशवासियो के उत्थान के लिए मै सकल्पबद्ध हू और इस पवित्र कार्य के लिए मैं मोक्ष को भी ठुकराने को तैयार हू।'**

इस घटना से महर्षि जी की मनसिकता के बारे मे यही समझ आता है कि वे देशवासियो का उत्थान चाहते थे इसलिए ऐसे ही कार्यो को उन्होने साधन बनाया। यही उनका लक्ष्य था — दशवासियो की सेवा। अर्थात साधन आर साध्य का भेद समाप्त हो गया।

समर्पित आर्यो को भी इसी प्रकार का लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए अथात हम आयसमाज मे क्यो है ? इसका उत्तर हे कि आर्यसमाज दशवासियो की ही नहीं अपितु सार विश्व के प्राणियो की सवा का माध्यम हे।

हमारा लक्ष्य क्या है ? इसका उत्तर भी आर्यसमाज हे। क्योकि प्राणीमात्र की सवा ही आयसमाज का लक्ष्य ह।

ऐसी पावन विचारधारा वाले योगी का अनुयायी कहलाना कितना सुखद और मगलकारी है। इसकी कल्पना ओर इसका आनन्द उसी व्यक्ति के पास ह जिसन निष्कामता क इस सिद्धान्त को समझ लिया है।

आयसमाज की स्थापना को १२५ वष हो चुके हैं। इस एतिहासिक वर्ष का शुभारम्भ ५ अप्रैल २००० इस्वी को अथात नव सम्वतसर २०५७ के शुभारम्भ के साथ एक तरफ भारत के प्रधानमन्त्री निवास पर एक डाक–टिकट विमोचन के साथ आयोजित किया गया था तो दूसरी तरफ मॉरिशस मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के रूप मे वहा के राष्ट्रपति के हाथो उदघाटन द्वारा आयोजित किया गया। इस १२५वे वर्ष का समापन आगामी २६ मार्च २००१ का सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एव मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के सयुक्त तत्वाधान मे उसी मुम्बई नगरी मे किया जा रहा है जहा पर पहली आयसमाज की स्थापना के साथ आर्यसमाज का बीजारापण किया गया था। उस समय महर्षि जी जिस देह मे थे आज बेशक उस देह का अभाव है परन्तु महर्षि जी के विचार कम या अधिक किसी न किसी रूप मे हजारो–लाखो आर्यो के ह्रदय मे आज भी विराजमान है। आवश्यकता है उन सब ह्रदयो के द्वारा एक स्वर मे सगच्छध्व और सवदध्व के विचारो को अगीकार करने की।

विस्तृत चर्चा चलती रहेगी परन्तु एक अपील के द्वारा इस चर्चा का समापन करना चाहता हू, कि सब आर्य आत्माए मुम्बई पहुचे। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तिथिया हे **२३ २४ २५ तथा २६ मार्च २००१ (शुक्रवार शनिवार रविवार और सोमवार)।** सगठन की एकता का प्रदर्शन और उसी की प्रेरणा भविष्य के लिए प्राप्त हो ऐसी कामना है।

— **विमल वधावन**
एडवोकेट

।। ओ३म।।

आर्य पर्वो की सूची

सन् 2001 ई0 तदनुसार विक्रमी सम्वत् 2057-58

क्र०स०	पर्व नाम	चन्द्र तिथि	सम्वत् तिथि	अग्रेजी तिथि	दिवस
१	लोहडी	माघ वदी ४	२०५७	१३ १-२००१	शनिवार
२	मकर सक्रान्ति	माघ वदी-५	२०५७	१४-१-२००१	रविवार
३	बसन्त पचमी	माघ सुदी-५	२०५७	२६ १ २००१	सोमवार
४	सीताष्टमी	फाल्गुन वदी-८	२०५७	१५-२-२००१	गुरुवार
५	ऋषि पर्व — महर्षि दयानन्द जन्म दिवस	फाल्गुन वदी-१०	२०५७	१७-२-२००१	शनिवार
६	ऋषि पर्व — शिवरात्रि (महर्षि दयानन्द बोधदिवस)	फाल्गुन वदी-१३	२०५७	२१-२-२००१	बुधवार
७	लेखराम तृतीया	फाल्गुन सुदी-३	२०५७	२६-२-२००१	सोमवार
८	नवसस्येष्टि (होली)	फाल्गुन सुदी-१५	२०५७	९-३-२००१	शुक्रवार
९	आर्यसमाज स्थापना दिवस/ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (नव-सम्वतसर) उगाडी/गुडी पडवा/चेटि चाद	चैत्र सुदी-१	२०५८	२६-३-२००१	सोमवार
१०	रामनवमी	चैत्र सुदी-९	२०५८	२-४-२००१	सोमवार
११	वैशाखी	वैशाख बदी—६	२०५८	१३—४—२००१	शुक्रवार
१२	हरि तृतीया	श्रावण सुदी-३	२०५८	२३-७-२००१	सोमवार
१३	वेद प्रचार समारोह — श्रावणी उपाकर्म (रक्षा बन्धन)	श्रावण सुदी-१५	२०५८	४ ८-२००१	शनिवार
१४	वेद प्रचार समारोह — श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	भाद्र वदी-८	२०५८	१२-८-२००१	रविवार
१५	विजयदशमी	आश्विन सुदी-१०	२०५८	२६-१०-२००१	शुक्रवार
१६	गुरुवर स्वामी विरजानन्द दण्डी दिवस	आश्विन सुदी-१२	२०५८	२८-१०-२००१	सोमवार
१७	महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस (दीपावली)	कार्तिक वदी १४	२०५८	१४-११-२००१	बुधवार
१८	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	अगहन सुदी-६	२०५८	२३-१२-२००१	रविवार

विशेष टिप्पणी *आर्यसमाजे इन पर्वो को उत्साहपूर्वक मनाये। देशी तिथियो मे घट-बढ हाने स पव तिथि मे परिवतन हो सकता है।* ***वेदव्रत शर्मा,*** *मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मदान नइ दिल्ली—११०००२*



सामाजिक उत्थान और आर्यसमाज

– डॉ० आर्येन्दु द्विवेदी

उन्नीसवीं शताब्दी मे भारत का अग्रेजो द्वारा धार्मिक आर्थिक सास्कृतिक एव राजनीतिक शोषण अपनी चरम सीमा पर पहुच गया था। भारतीय समाज दोहरे सकट से गुजर रहा था। एक उसकी स्वय की दयनीय दशा और दूसरा इस्लाम तथा ईसाइयत का तेजी से बढता हुआ सर्वग्रासी रूप। धर्म का वास्तविक स्वरूप लुप्त हो चुका था। पाखण्ड आडम्बर अन्धविश्वास आदि ने धर्म को आच्छादित कर लिया था। धर्म के नाम पर पापाचार पनप चुके थे। जात–पात छुआछूत बाल विवाह दहेज प्रथा जैसी कुरीतिया समाज को जर्जर कर रही थी। सती प्रथा तथा बहुविवाह दहेज जैसी क्रूरताए समाज में विद्यमान थीं। समाज में नैतिक अध.पतन हो जाने के कारण स्त्रियो की दशा अत्यन्त दयनीय थीं।

राजनीतिक स्वतन्त्रता के अभाव मे तत्कालीन आर्थिक स्थिति जर्जर हो गई थी। अग्रेजो की शोषण नीति के फलस्वरूप भारतीय कृषि व्यवस्था और कुटीर उद्योग धन्धे नष्ट हो गए थे। आर्थिक कठिनाइयो से त्रस्त निम्न वर्ग को ईसाई बनाया जा रहा था।

ऐसे समय में पुनर्जागरण की लहर समाज मे आई। पुनर्जागरण का अर्थ है कुछ समय निन्द्रा के उपरान्त राष्ट्र के मानस एत आत्मा का जाग्रत होना। धार्मिक और सुधारवादी आन्दोलनो मे ब्रह्मसमाज आर्यसमाज रामकृष्ण मिशन प्रार्थना समाज एव थियोसोफिकल सोसाइटी प्रमुख हैं। राजा राम मोहन राम ने पर्दा प्रथा बहु विवाह स्त्रियो से अशिक्षा सती प्रथा आदि कुरीतियो के निराकरण का प्रयास किया। प्रार्थना समाज ने अवतारवाद बहुदेववाद मूर्तिपूजा पुजारियो की सत्ता के विरोध के साथ–साथ धार्मिक एव सामाजिक सुधार का प्रयत्न किया जिससे हिन्दू समाज जाग्रत हो सके।

रामकृष्ण परमहस ने सभी धर्मो कोसमान बताकर धार्मिक समन्वयवाद पर बल दिया। इसके पश्चात थियोसोफिकल सोसाइटी ने भारतीय सस्कृति के गौरव ग्रन्थो वेदों उपनिषदो के अध्ययन एव धर्माचरण की प्रेरणा दी।

धार्मिक नवजागरण का सब से प्रभावशाली योगदान आर्यसमाज द्वारा सचालित किया गया। आर्यसमाज ने निराकार ब्रह्म की उपासना एव भारतीय सस्कृति पर आधारित शिक्षा व्यवस्था सुलभ कराने पर बल दिया। धार्मिक पुनर्जागरण मे आर्यसमाज आन्दोलन ने महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित किए। स्वामी दयानन्द सरस्वती उस सुधार और पुनर्गठन के समर्थक थे। जो विभिन्न धर्मों के समन्वय पर आधारित न होकर शुद्ध हिन्दू परम्पराओं की मान्यताओ पर आधारित थी। स्वामी दयानन्द का उद्देश्य धर्म निरपेक्षता अथवा ईसाई इस्लामी धर्मों की मान्यताओ मे एकता की खोज न करके वैदिक धर्म का पुनरुथान करना है। स्वामी जी का विचार था कि हिन्दू धर्म मे नवजीवन तभी आ सकता है जब समाज मे व्याप्त रूढियो अन्धविश्वासों तथा निर्मूल परम्पराओ को समाप्त करके वैदिक धर्म की स्थापना की जाए।

महर्षि दयानन्द मे हिन्दू समाज को सगठित करने का प्रयास किया। महर्षि दयानन्द के प्रेरणास्रोत वेद एव अन्य प्राचीन ग्रन्थ थे। उन्होने वेदों को समस्त ज्ञान का भण्डार सिद्ध किया और वैदिक ज्ञान के आलोक मे भारतीय जनमानस मे व्याप्त अज्ञानजनित अन्धकार को दूर करने का सार्थक प्रयास किया। स्वामी दयानन्द मुख्यत धार्मिक सुधारक थे। उन्हाने स्त्री और शूद्रो को वेदाध्ययन का अधिकारी बनाया और निम्नवर्ग पर हो रहे अत्याचारो की निन्दा की। अपनी वाणी लेखनी व्याकरण शास्त्रार्थ द्वारा हिन्दू समाज को जाग्रत करने का प्रयास किया।

आर्यसमाज आन्दोलन ने व्यापक आन्दोलन का रूप लिया और समाज को नवीन प्रकाश प्रदान किया। महर्षि दयानन्द के अनुसार धर्म का अभिप्राय कर्मकाण्ड के जटिल क्रिया जाल ‹ग पालन ही नहीं अपितु धर्म उन उदात्त गुणो की समष्टि का नाम है जो मनुष्य के नैतिक सम्वर्धन तथा आध्यात्मिक उत्थान मे सहायक होते हैं स्वामी दयानन्द ने वेद को धर्म का मूलाधार बताया है। अपने ग्रन्थो द्वारा पाखण्ड एव अन्धविश्वास दूर करने का प्रयत्न किया।

आर्यसमाज के प्रचार प्रसार मे अनेक वीतराग तपस्वी सन्यासियो विद्वानो और उत्साही प्रचारको का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आज आर्यसमाज की अनेक शाखाए वैदिक सस्कृति का प्रचार कर रही है।

सामाजिक क्षेत्र मे स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज आन्दोलन का अत्याधिक महत्वपूर्ण योगदान है। तत्कालीन समाज मे अल्पायु मे बालक व बालिकाओ का विवाह कर दिया जाता था। महर्षि दयानन्द ने ब्रह्मचर्य पर बल दिया। विवाह की आयु न्यूनतम २४ वर्ष पुरुष एव १६ वर्ष कन्या निर्धारित की। स्वस्थ लोगो मे विवाह से उत्तम सतान प्राप्त होती है। महर्षि ने वर एव कन्या के गुणो का विधान बताया है।

आर्यसमाज ने विधवाओ के लिए विधवाश्रम अनाथों के लिए अनाथालय की स्थापना की। तत्कालीन समाज मे व्याप्त भूत प्रेत की पूजा जादू टोने मे विश्वास सन्तान प्राप्ति के लिए विविध कर्म तन्त्र मन्त्र आदि अन्धविश्वासों को महर्षि ने दूर करने का प्रयास किया। महर्षि ने जाति प्रथा का विरोध करते हुए गुण कर्म के आधार पर जाति प्रथा का निर्धारण किया। दलितों के उद्धार के लिए दलितोद्धार सभा अछूतोद्धार सभा दलितोद्धार सगठन आदि स्थापित किए गए जिससे निम्न जातियों का उत्थान हो सके।

महर्षि दयानन्द ने वेदो के प्रमाण द्वारा सभी को वेदाध्ययन का अधिकार दिया है। नर–नारी शूद्र सहित सभी को वेद पढने का अधिकार प्राप्त है। आर्यसमाज के सुधार आन्दोलनो का भारतीय समाज और सस्कृति पर बहुमुखी प्रभाव पडा।

आर्यसमाज के प्रादुर्भाव के समय भारत धार्मिक और नैतिक दृष्टि से पतन की ओर अग्रसर था। समाज मे बहुदेवतावाद अवतारवाद मूर्तिपूजा के प्रचलन के साथ–साथ धर्मों के नाम पर अनेक कुकर्म हो रहे थे। महर्षि ने निराकार अजन्मा परमात्मा की पूजा अराधना उपासना तथा सध्या हवन करने की सलाह दी।

भारवतर्ष के राष्ट्रीय शिक्षा के अग्रदूतो मे महर्षि दयानन्द महात्मा गाधी रवीन्द्रनाथ ठाकुर मदन मोहन मालवीय और अरविन्द घोष प्रमुख है। भारतवर्ष में राष्ट्र शिक्षा के प्रवर्तक और उन्नायक महर्षि दयानन्द है। उन्होने प्राचीन सस्कृति पर बल देते हुए गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति की आधारशिला रखी। उन्होने आदर्शवाद प्रकृतिवाद समाजवादी दर्शन को समाहित करते हुए सत्य सदाचार एव ब्रह्मचर्य पर बल दिया। शिक्षा वैयक्तिक एव सामाजिक उन्नति के लिए है।

भारतवर्ष मे स्त्री शिक्षा का उन्नायक महर्षि दयानन्द को माना जा सकता है। उन्होने जाति भेद मूलक शिक्षा व्यवस्था का विरोध किया और स्त्रियो तथा शूद्रो को वेद पढने का अधिकार प्रदान किया। सस्कृत भाषा के ज्ञान के बिना शिक्षा अपूर्ण है। स्वामी जी का विचार है कि स्वावलम्बन की भावना शिक्षा के मूल मे होनी चाहिए। उन्होने प्रत्येक व्यक्ति के शिक्षित होने पर बल दिया। वर्तमान समय मे गुरुकुल कन्या गुरुकुल डी०ए०वी० कालेज बाल विद्या मन्दिर मॉडल स्कूल पब्लिक स्कूल आदि मे परम्परागत भारतीय सस्कृति और नवीन पाश्चात्य ज्ञान के समन्वय के आधार पर इस समय शिक्षा दी जा रही है। पाच हजार से भी अधिक शिक्षा सस्थाए देश–विदेशो मे आर्यसमाज द्वारा सचालित की जा रही है।

महर्षि ने राजनीतिक और आर्थिक सुधारो पर बल दिया। स्वराज्य का मन्त्र सर्वप्रथम महर्षि द्वारा उद्घोषित किया गया। महर्षि दयानन्द ने भारत को राजनीतिक सामाजिक धार्मिक रूप मे एक सूत्र मे बाधने का प्रयास किया। उन्होने स्वदेश स्वधर्म स्वजाति स्वसस्कृति और स्वभाषा का प्रबल समर्थन करक भारतवासियो मे राष्ट्रीय भावना का सचार किया।

आर्यसमाज ने आर्थिक सुधारो पर भी ध्यान दिया। स्वामी जी का मत है कि करो का उद्देश्य प्रजा का सुख है। महर्षि ने बीस प्रतिशत आय शिक्षा बीस प्रतिशत धन स्थिर कोष बीस प्रतिशत राज्य तीस प्रतिशत रक्षा व्यवस्था के लिए निर्धारित किया है। महर्षि द्वारा प्रतिपादित अर्थव्यवस्था आज भी प्रासगिक है।

आर्यसमाज ने सामाजिक धार्मिक नैतिक सुधार जातिवादी परम्पराओ मे सुधार शिक्षा के क्षेत्र मे सुधार तथा राजनीतिक आर्थिक सुधारो द्वारा हिन्दुओ की क्षीण शक्ति को पुनर्जीवित किया और समाज को नई दिशा प्रदान की। महर्षि दयानन्द का स्पष्ट मत है कि मानसिक सामाजिक राजनीतिक सभी प्रकार की दासता से मुक्ति प्राप्त होनी चाहिए। अपनी स्थापना काल से आज तक आर्यसमाज विविध सुधार कार्यों मे सफलतापूर्वक अग्रसर होता रहा है। उसके प्रगतिशील विचार और मानवतावादी सन्देश समाज को नई दिशा प्रदान करते हैं। महर्षि दयानन्द भारत के राजनीतिक सामाजिक धार्मिक सुधार के इतिहास मे महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

– प्रवक्ता समाजशास्त्र स० महा० विद्यालय जालौन (उ०प्र०)

विश्व शान्ति ध्वज केवल वेद के द्वारा सम्भव

— ब्र० सुभद्रा विद्यालंकार, एम०ए० संस्कृत

आज प्रत्येक देश का नेता यही इच्छा रखता है कि मेरे देश में सुख शान्ति का ध्वज लहरा उठे परन्तु उसके विपरीत प्रत्येक देश की गति हो रही है अर्थात् लडाई–झगडे, ईर्ष्या–द्वेष और मातृ–भूमि का कण–कण लहू–लुहान ही दिखाई देता है। प्रश्न है ऐसा क्यो? जबकि आज प्रत्येक देश विज्ञान में बहुधा बहुत उन्नति के शिखर पर हैं, फिर निराशा क्यो?

प्रश्न का उत्तर स्पष्टत बतलाता है कि प्रत्येक देश ने " ईश्वर की वाणी वेद से मुख मोड़ लिया है इस कारण नाना प्रकार के कष्टों से, पीड़ा से व विनाश से प्रत्येक देश ग्रस्त रहता है। विज्ञान चाहे कितनी भी उन्नति कर ले, लेकिन जब तक परमपिता की वाणी को नही अपनाएगे, तब तक शान्ति नहीं आ सकती। यह मेरा कथन नहीं स्वत वेद का प्रमाण है –

"ओ३म् दृतेदृहंमा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे"।। *यजु० ३६/१८*

हे अविद्या रूपी अधकार के निवारक जगदीश्वर! जिससे सब प्राणी मित्र की दृष्टि से मुझको सम्यक देखे, मै मित्र की दृष्टि से सब प्राणियो को सम्यक देखू, मित्र की दृष्टि से हम लोग परस्पर देखते रहे, इस विषय मे हमको दृढ कीजिए।

वेद ने इस मन्त्र मे मैत्री भावना का सन्देश दिया है। वेद की कामना है कि विश्व के सब मनुष्यो मे सदभावना , मैत्री भावना विश्व बन्धुत्व और विश्व–भातृत्व की भावनाए फैलें। मनुष्यों में स्नेह सम्बन्ध कैसे सुदृश हो, हमे इस समस्या पर विचार करना है। विश्वशान्ति को भग करने वाले दो प्रमुख कारणों पर दृष्टिपात होते हैं – साम्राज्यवाद और सम्प्रदायवाद। इनके अतिरिक्त कुछ अन्य भी कारण है जैसे– वर्ण, भूमि, सम्पत्ति धनादि। वेद विश्व मे शान्ति का श्रोत है वेद मे कहा जाता है– अंतरिक्ष शान्त हो, पृथिवी शान्त हो, जल शान्त हो, ओषधिया शान्त हो, वनस्पतिया शान्त हो, सब देव शान्त हो, ज्ञान शान्त हो, सब वस्तुए शान्त हों, सर्वत्र शान्ति ही शान्ति हो और यह शान्ति सबको प्राप्त हो।

विश्व शान्ति को भग करने का प्रमुख कारण साम्राज्यवादी भावना है। जब यह साम्राज्यवादी भावना किसी जाति मे प्रबल हो उठती है तो वह जाति दूसरी जाति पर आक्रमण कर देती है इससे दो जातियो का सग्रामहोता है। लोहे से लोहा टकराता है रक्त की नदिया बहती हैं। सिकन्दर और नेपोलियन इसी साम्राज्यवादी मनोवृत्ति के मूर्त रूप थे प्रथम विश्व युद्ध व द्वितीय विश्वयुद्ध इसी के मूल उदाहरण थे।

विश्वशान्ति को भग करने का दूसरा कारण अर्थ लोलुपता अर्थात् अर्थाभाव के कारण एक भूखी नगी जाति दूसरी जाति के धन धान्य से लाभ उठाने के लिए उस पर आक्रमण कर देती है। भारत पर आक्रमण अधिकतर इसी दृष्टि से किए गए। जिसका इतिहास साक्षी है।

विश्वशान्ति को भंग करने का तीसरा कारण – साम्प्रदायिक भावनाए है। इस्लाम और ईसाइयत के प्रचार के लिए ससार में जो रक्तपात हुआ है, उसने भी विश्वशान्ति को भग करने की भूमिका निभाई है। ईसाइयों और मुसलमानो के पारस्परिक युद्ध, मुसलमानों के भारत पर आक्रमण और अत्याचार मे साम्प्रदायिकता ही सहज है।

विश्वशान्ति को भंग करने का चौथा कारण– आर्थिक समस्याओं को लेकर है। साम्यवाद ने भी संसार में बहुत रक्तपात किया है। मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति, शोषण का निराकरण, बेरोजगारी और महंगाई आदि की समस्याओ से संसार के विभिन्न देशो मे रक्तपात हुआ।

ये तो प्रमुख चार कारण ही है जिन्होने विश्वशान्ति का ध्वज उखाड दिया इनके अतिरिक्त नाना कारण हैं जो गौण है। मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताए समान हैं और मानसिक अनुभूतिया भी समान हैं, परन्तु मनुष्य भूमि, सम्पत्ति, धन व

विश्व शान्ति को भंग करने का प्रमुख कारण है साम्राज्यवादी भावना – जब यह साम्राज्यवादी भावना किसी जाति में प्रबल हो उठती है तो वह जाति दूसरी जाति पर आक्रमण कर देती है इससे दो जातियों का संग्राम होता है। लोहे से लोहा टकराता है रक्त की नदियां बहती हैं। सिकन्दर और नेपोलियन इसी साम्राज्यवादी मनोवृत्ति के मूर्त रूप थे। प्रथम विश्व युद्ध व द्वितीय विश्वयुद्ध इसी के मूल उदाहरण थे।

पदवी के कारण एक दूसरे से घृणा ईर्ष्या आदि करने लगा। संसार के इन समस्त रक्तपात, कलह और घृणा को दूर करने का उपाय क्या है? वेद इसका समाधान करता है। ईश्वर सर्वव्यापक है वह हमारा पिता है। वेद ईश्वर के पितृत्व की बात कहता है –

ओं त्वं हि न' पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ।

अधा ते सुम्नमीमहे।। *अथर्व २०/१०८/२*

हे बसाने वाले और हे सैंकडो कर्मो वाले परमेश्वर! तू हमारा पिता है और तू ही माता, इसलिए तेरे सुख को हम चाहते हैं।

ओं यत्ते मध्यं पृथिवि यच्च नभ्यं यास्त ऊर्जस्तन्वः संबभूवुः।

तासु नो धेह्यभि नः पवस्व माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।।

अर्थव १२/१/१२

हे पृथ्वी! जो तेरा न्याययुक्त कर्म है और जो क्षत्रियों को हितकारी कर्महै तथा जो बलदायक पदार्थ तेरे शरीर से उत्पन्न हुए हैं, उन सब क्रियाओं के भीतर तू हमें रख और हमे सब ओर से शुद्ध कर। भूमि · मेरी माता है मैं पृथ्वी का पुत्र हूं। इस मन्त्र मे भूमि के मातृत्व की ओर सकेत किया गया है और कहा–

ओं यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति।

सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न वि चिकित्सति।।

यजु० ४०/६

जो व्यक्ति सब प्राणियों और अप्राणियो को परमात्मा मे देखता है और सब प्रणियों में परमात्मा को देखता है, वह सशय को प्राप्त नहीं होता। परमात्मा को सब पदार्थों मे देखने वाला व्यक्ति ऊच नीच की भावना से भी ऊचा उठ जाता है। वह किसी से घृणा व द्वेष नहीं करता, किसी के प्रति तुच्छता की भावना नहीं रखता। सबके भीतर एक परमदेव की ज्योति को जगमगाता हुआ देखता है। प्रभु कहता है –

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते संभ्रातरो वावृधुः सौभाग्य। *ऋ० ५/६०/५*

हे ससार के लोगो ! न तो तुममे कोई बड़ा है और न ही तुममें कोई छोटा। सभी भाई–भाई हो। सौभाग्य की प्राप्ति के लिए आगे बढो। उन्नति के मार्ग सभी के लिए खुले हैं उन्नति का सभी को समान अधिकार है। मै तुम्हारे लिए एक हृदयता, एकमनता और निर्वैरता करता हू एक दूसरे की तुम सब ओर से प्रीति चाहो, जैसे न मारने योग्य गौ उत्पन्न हुए बछडे को प्यार करती है।

ओं समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।

सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः।।

अथर्व ३/३०/६०

हे मनुष्यो! तुम्हारे जल पीने का स्थान एक हो। धरती माता जो तुम्हे अन्न प्रदान करे उसका समान भाव से उपभोग करो। मैं तुम सबको समानता मे बाधता हूं। तुम सब मिलकर अग्नि की उपासना करो, अर्थात् परमात्मा की उपासना करो, यज्ञ द्वारा भौतिक अग्नि का सेवन करो। ऐसे मिलकर रहो जैसे रथ की नाभि मे अरे जुड़े हुए होते हैं।

एकता व विश्व मे ध्वज शान्ति का तभी लहरा सकता है जब मनुष्यों के मन एक हों, मिलकर चले, बोलें सबकी उपासना ध्येय एक हो, चित्त में समानता हो, विचार मे समानता हो, खान–पान–रहन–सहन एक जैसा हो , क्योंकि वेद केवल भारतीयों के लिए ही नहीं हैं अपितु ससार के प्रत्येक प्राणि मात्र के लिए हैं जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश, वायु, पानी सभी के लिए हैं वैसे ही वेद ज्ञान भी सार्वभौम है। इसलिए संसार के सभी मनुष्य यदि वेद के इस आदेश पर आचरण करें, तो संसार का कल्याण हो सकता है सिद्ध होता है कि वेद का संदेश संकीर्णता, संकुचितता, पक्षपात, घृणा, जातीयता, प्रान्तीयता और साम्प्रदायिकता से कितना ऊंचा है। अगर विश्वशान्ति ध्वज लहराना है तो सभी को वेद का सहारा लेना पड़ेगा, इसके अलावा अन्य कोई मार्ग नहीं जो सुख व शान्ति का ध्वज लहरा सके।

नान्या पन्था विद्यतेऽयनाय।। *यजु० ३१/१८*

— सुपुत्री श्री ओमप्रकाश शर्मा, यज्ञ सदनम्
३२२, कर्मचारी नगर, इज्जत नगर, बरेली
(उ०प्र०)- २४३१२२

संस्कृत पढ़िये संस्कृति बचाइये

— डॉ० बलवीर दत्त शास्त्री

वर्तमान मे हिन्दी दिवस मनाये जाने के समाचार समाचार पत्रो मे पढने को प्राप्त हुए बडा दुख हुआ जब पाया कि मात्र औपचारिक सभाये ही हुई उनमे भाग लेने वाले बहुत कम मात्रा मे पुरुष सम्मिलित हुए वे भी हिन्दी प्रेमी नही थे फिर मात्र दिखाव का क्या लाभ। आज भारत वर्ष पूरी तरह से पश्चिममय बनता जा रहा है लार्ड मैकाले ने बहुत दूर की सोची थी कि भविष्य काल मे अग्रेजो के यहा से चले जाने पर भी हमारी अग्रेजी यहा बनी रहेगी और सभी भारतवासी काले रग के होते हुए भी अग्रेज बने रहेगे। जो वर्तमान मे परिलक्षित हो रहा है। हमारे सभी बच्चे अब अपने विगत गौरव को तो भूल ही गये हैं वे जानते ही नहीं कि हम भारतीवासी है और हमारी भी कोई अपनी पहचान थी क्योकि उन्हे प्रारम्भ से ही अग्रेजी पढना एव बोलना सिखाया जा रहा है। माता क्या होती है वे नही जानते माम कहते है पिता न कहकर डैड (मरा) कहते है। क्या हो गया है हमारे शिक्षाविदो को अपनी मातृभाषा हिन्दी को जानते ही नहीं सर्वत्र अग्रेजी का ही वर्चस्व स्थापित हो रहा है राष्ट्रभाषा हिन्दी होते हुए भी उसकी घोर उपेक्षा हो रही है जो प्रान्त हिन्दी जानते ही नहीं उनके विषय मे तो क्या कहना पर जो प्रदेश हिन्दी भाषी समझे जाते हैं जैसे उत्तर प्रदेश तो हिन्दी का गढ ही माना जाता था उसके साथ दिल्ली हरियाणा राजस्थान मध्यप्रदेश भी हिन्दी भाषी प्रान्त ही समझे जाते हैं धीरे–धीरे यहा भी हिन्दी का प्रचलन समाप्त सा होता जा रहा है मै फरीदाबाद की ही बात करता हू जो हरियाणा प्रदेश का ही जिला है किन्तु किसी जगह या दुकान पर कहीं भी हिन्दी के बोर्ड न होकर सभी जगह अग्रेजी के बोर्ड लगे हुए हैं। कही भूल से किसी ने हिन्दी लिख दी हो तो पता नहीं अन्यथा सभी जगहो पर अग्रेजी का साम्राज्य व्याप्त है। जब हिन्दी की ही इतनी दुर्दशा है तो वहा सस्कृत भाषा की बात कहना तो अपराध ही होगा जबकि सस्कृत सभी भाषाओ की जननी है अन्य भाषाए तो थोडे दिनो की ही उपज है। दुनिया भर मे सबसे बडा पुस्तकालय लन्दन मे है जहा पर सबसे पहली पुस्तक 'ऋग्वेद' है फिर अन्य भाषाओ की पुस्तकें तो उसके पश्चात ही आई है। सस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है। सस्कृत मे ही सारे वेद शास्त्र ब्राह्मण आरण्यक उपनिषदे सदुक्तिया पुराण इतिहास रचे गये हैं मनु महाराज ने अपनी मनुस्मृति मे स्पष्ट उल्लेख किया है –

एतदेश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन ।
स्व स्व चरित्र शिक्षेरन पृथिव्या सर्व मानवा ।

उस समय मे भारत वर्ष सवाग्रणी देश था यहा की विद्या की गूज चारा दिशाओ मे फैली थी इसलिए उन्होने लिखा कि पृथ्वी पर रहने वाल सभी मानव अपने–अपने चरित्र की बाते इस (भारत) देश मे उत्पन्न ब्राह्मणो (विद्वानो) से सीखे अर्थात सारी शिक्षा का उत्पत्ति स्थान भारत वर्ष ही था किन्तु आज दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि सबका प्रधान देश भारत वर्ष भी अपनी अनुपम गरिमा को खोता जा रहा है। सस्कृत की तो इतनी घोर उपेक्षा हो रही है कि अनिवार्य न करके इसको ऐच्छिक पाठयक्रम मे शिक्षाविदो ने रख छोडा है कुछ लोग यह कह कर सुख का अनुभव करते हे कि क्या करना है सस्कृत पढकर यह तो मात्र पूजा पाठ की भाषा ह। मे पूछता हू कि पूजापाठ करना क्या अपराध है आज जितने भी मत मतान्तर भूलोक मे विद्यमान हैं क्या व ी भापा म उसी देवीय सत्ता (ईश्वर) की प्रार्थना नही करते फिर सस्कृत पर यह आक्षेप क्यो दूसरी बात यह है कि इसको कठिन भाषा कहा जाता है मैं पूछता हू कि जिनक माता पिता जो भाषा बोलते है उनके बच्चे भी सहज ही उस भाषा मे ही बोलना सीख जाते हैं यदि उनको दूसरी कोई भी भाषा सिखाई जावे तो वह उन्हे कठिन ही लगेगी। आज भी केरल मे एक ग्राम ऐसा है जहा सभी सस्कृत बोलते हैं तो इसमे उन्हे क्या कठिनाई होती है कुछ भी नहीं। जैसी स्वरलहरी शब्दावली उनके कानो मे पडेगी वैसी ही वे सहज भाव से सीख लेगे अब जब प्रारम्भ से ही अग्रेजी पढाई जाती है तो उनको क्या कठिन नहीं लगती अवश्य लगती है। इसलिए यह कहना उचित नहीं है। सस्कृत मे सभी विषय विज्ञान गणित भूगोल इतिहास आदि सभी उपलब्ध है। अब चूकि सर्वत्र अग्रेजी का साम्राज्य है तो हिन्दी भाषी भी उच्च परीक्षाओ मे नहीं बैठ सकते। यदि सभी कार्यालयो मे न्यायालयो मे बाजारो मे हिन्दी अनिवार्य हो तो सस्कृत वालो को भी रोजगार की कमी नहीं रहेगी कमी है तो केवल राष्ट्र कर्णधारो की इच्छा शक्ति की है। यदि ऊपर से यह कठोर आदेश हो जाये कि भविष्य मे सभी काम काज हिन्दी मे ही होगे और उनको कार्यान्वित किया जाए तो कोई कारण नही कि हिन्दी व सस्कृत का वर्चस्व न हो जाये।

आज पाश्चात्य सस्कृति इतनी हावी हो गयी है कि खानपान रहन सहन मे सभी जगह अग्रेजी स्थापित हो गयी है हमारे बच्चो के पहनावे शर्म और लाज को छोडकर इतने उन्मुक्त हो गये हैं कि चारा ओर जीन्स का पहनावा बढता जाता है लडकिया ऐसे तग वस्त्र पहनकर बाजार मे निकलती हैं कि उनके शरीर के प्रत्येक उभार स्पष्ट दृष्टिगोचर होते है फिर नौजवान यदि उनकी ओर आकृष्ट होते है तो उनको क्यो दोष दिया जाता है। जब हम स्वय अपने प्रदर्शन मे उन्हे बुलावा देते है तो नवयुवको का आकृष्ट न होना सम्भव नही है अपितु अनिवार्य है इसलिए यह उन्मुक्त यौन व्यवहार के प्रचलन कारण हमारे बच्चे पतन की ओर अग्रसर होते जा रहे हैं। हमारी सस्कृति साधुवेश (सुन्दर वस्त्र स्वच्छ वस्त्र) धारण करने को कहती है। साधारण स्वास्थ्य वर्धक आहार विहार मानव को रोग रहित रखता है। आज हम शाकाहार को छाड़ कर मासाहार की ओर बढ रहे हैं मास हत्या से प्राप्त होता है किसी भी धम मे दूसरे को सताना उसके प्राण हरण अत्ना निन्दित ही माना है। वैज्ञानिको ने भी सिद्ध कर दिया है कि मासाहार शाकाहार की अपेक्षा अधिक रोग जनक अस्वास्थ्य कर है। योग को ही ले ले और विचार करे कि हमारी सस्कृति का अभिन्न अग है पहले सभी योग करते थे स्वस्थ रहते थे पर उन सस्कृतज्ञो की बातो पर आधुनकि समाज विश्वास नही करता यही बात जब पाश्चात्य देश यौगा शब्द से कहने लगे तो उसे मान्यता मिलने लगी है सत्य बोलना धर्म पर चलना परोपकार करना दूसरे को न सताना सद्व्यवहार करना सादा भोजन करना सादे वस्त्र पहनना हमारी सस्कृति है जिसे आज छोडते जा रहे है और पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण हमारा धर्म हो गया है। सस्कृत भाषा को मृत भाषा कहने लगे जबकि सस्कृत मे पचपन लाख शब्द हैं और अग्रेजी में मात्र पाच लाख ही शब्द हैं अब आप ही विचारिये कि समृद्ध भाषा सस्कृत हुई या अग्रेजी। सभी भाषाओ मे सस्कृत के शब्द भरे पडे हुए है। सस्कृत पढा व्यक्ति आज भी बेरोजगार नहीं है जबकि अग्रेजी पढे लाखो युवक नौकरी के लिए पडपते फिर रहे हैं। एम०ए० उत्तीर्ण युवक चपरासी पंद भी आसानी से नही प्राप्त कर पाता। इसलिए सस्कृत पढना भारतवासी ही का नहीं अपितु म'न मात्र का कर्त्तव्य है और भारतीय सस्कृ ही सर्वश्रेष्ठ है इसे अपनाना चाहिए अब रोजाना यह समाचार मिलते रह है कि जो लोग भारतीय विवाह पद्ध को छोडकर वरमाला पहनने मात्र या मन्दिर मस्जिद या गुरुद्वारा चर्च जाकर एक दूसरे का वरण करते है थोडे ही दिनो मे बिखर जाते है। जब भारतीय सस्कृति जीवन पर्यन्त सा निभाने का आदेश देती है विवाह परिक्रमा मन्त्रा मे कन्या कहती है f देव परमात्मा अग्नि रूप हैं जो मु पापो से मुक्त करावे परन्तु कभी पति से मुक्त न करे अर्थात हमा साथ सदा बना रहे। क्या सस्कृति है और आज न जाने कितने पति–पत्नि स विमुख होकर दुख भोग रहे है राजा भोज ने अपने राज्य मे सस्कृ और इससे जुडे सस्कृति का पर्या प्रचार किया था। एक बार भोज सभा मे ५०० पण्डितो मे यह विव छिड गया कि हममे अनेक पण्डि महाकवि होने के योग्य है आप कालिदास का ही महाकवि क्यो ब रखा है तो भोज बोले आप विद्वा की आपत्ति को मै उचित मानता परीक्षा के बिना निर्णय नहीं दिया सकता उसने कहा कि क ख ग घ इ समस्या पूर्ति को जो विद्वान कर सुनावेगा वही आगे महाकवि होगा। स ने यह बात स्वीकार करते हुए ७ दि का अवकाश ले लिया। ७ वे दिन स बैठी सभी से समस्यापूर्ति सुनाने कहा गया तो सभी विद्वान खडे होक लज्जित होने लगे अन्त मे भोज विश्वास के अनुसार कालिदास ने समस्या इस प्रकार पूरी की। मार्ग आती हुई एक छोटी सी बालिका उसकी बातचीत हुई कि कितनी सर सस्कृत है – का त्व बाले। काञ्च माला कस्या पुत्री। कनक लताया ह कि ते ? ताली पत्रम क वा रेखा ख ग घ।।

इस प्रकार सस्कृत मे ज्ञान का भण्ड भरा पडा है और भारतीय सस्कृति श्रेष्ठ और कोई सस्कृति नही हो सक इसलिए मेरा सुझाव है कि प्रत्येक अ परिवार स्वय सस्कृत पढे और f अपने बच्चो को भी पढावे तथा अ पडोसियो को इसके लिए प्रेरित करे हमारी वैदिक सस्कृति की रक्षा सम्भ हो सकेगी।

— बैन्दा आयुर्वेदिक फार्मे
१४६२/१४ फरीदाबाद (हरियाणा)

'कल्याण' पाप की प्रेरणा देने वालों में प्रमुख

— स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

गीता प्रेस गोरखपुर से पिछले ७४ वर्ष से लाखो की सख्या मे 'कल्याण' नामक पत्रिका पती आ रही है। अनेक श्रद्धालु व्यक्ति इसका श्वास कर पापो मे डूबते जा रहे हैं। ऐसी पत्रिकाओं सहारे ही सिनेमा एव टी०वी० मे कल्पित पौराणिक ल्मे दिखाकर लोगो को भ्रमित किया जाता है ; अमुक देवता ने अपने भक्त को जीवित किया, मुक भक्त को बिना परिश्रम के धनवान बनाया, मुक पाप करता हुआ भी मुक्ति तक पहुच गया। बकि ऐसी करामात आज तक कोई कराकर नहीं खा सका।

इस वर्ष के कल्याण के सितम्बर के अक में 'हे ो तेरी महिमा अनन्त' के नाम से श्री डॉ० राजीव । प्रचडिया का एक लेख छपा है। लेखक महाभारत वन पर्व एवं अनुशासन पर्व का उद्धरण देते हुए खता है – यदि कोई सैकडों पाप कर्म करके ा जल का अवसिंचन करता हे तो गगा जल । पापों को उसी प्रकार जला देता है जिस ार अग्नि ईधन को – कलियुग मे गगा की शेष महिमा है नाम लेने पर गगा पापी को पवित्र : देती है। इन्हें देखने से सौभाग्य प्राप्त होता है। न्याण मगल प्राप्त होता है। जब इसमें स्नान या जाता है या जल ग्रहण किया जाता है तो त पीढियों तक 'कुल' पवित्र हो जाता है –

सर्व कृत युगे पुण्यं त्रेतायां पुष्करं स्मृतम्।
द्वापरेऽपि कुरुक्षेत्र गंगा कलियुगे स्मृता।।
पुनाति कीर्तिता पापं दृष्टा भद्रं प्रयच्छति।
अवगाढा च पीता च पुनात्यासप्तमं कुलं।।

जब कोई इस में डुबकी लगाता है या जब का नाम लिया जाता है या इसकी स्तुति की ती है तो गगा प्राणियो को प्रतिदिन पवित्र कर ी है। जब सहस्रो योजन दूर रहने वाले लोग भी । का स्मरण करते हैं तो तीन जन्मों के एकत्र नष्ट हो जाते हैं।

श्रुताभिलषिता दृष्टा स्पृष्टा पीतावगाहिता।
या पावयति भूतानि कीर्तिता च दिने दिने।
गंगा गंगेति यैर्नाम योजनानां शतेष्वपि।
स्थितैरुच्चारितं हन्ति पापं जन्मत्रयार्जितम्।।

वह व्यक्ति जो चाहे या अनचाहे गंगा के पास व जाता है और मर जाता है वह स्वर्ग जाता है, ६ नहीं देखता।

इसी ढंग की अनेक गप्पे इस लेख में दी हुई साधारण जनता इसे पढकर भ्रम में पडती है पाप करते हुए नहीं डरती। अनेक लोग सोचते - कि कुछ पाप कर दिया तो क्या हुआ, एक गगा में जाकर नहा लेंगे। इन पुराणों ने कुम्भ न की विशेष महत्ता फैला रखी है। इसलिए इतनी भीड इकट्ठा होती है। पौराणिकों के तार मिथ्या प्रचार से लोगों के मन में यह ना बैठ गई है कि गंगा स्नान से सारे पाप छूट । हैं। इससे लोग खुलकर पाप करते हैं। व्यापारी तोलता और मिलावट करता हुआ भी सोचता के मैं गगा का नाम ले लूगा, एक माला जप । या अमुक कथा कर लूगा तो सारे पाप कट ागे। इससे अनेक समझदार लोग हिन्दू धर्म का खण्डन करते हैं। सरिता जैसी बदनाम पत्रिका को भी हिन्दू धर्म का खण्डन करने का अवसर प्रदान करती है। कितने आश्चर्य की बात है कि अधिकतर लोग भी इन गप्पो का विश्वास करते आ रहे हैं। इन्ही गप्पों का सहारा लेकर तांत्रिक और झाड–फूंक वाले तथा उदम्भी साधु जनता को बलिदान आदि गलत काम करने के लिए उकसाते हैं।

जैसे अनपढ व्यक्ति इन पौराणिकों के भ्रमजाल में फंसे हुए हैं उसी प्रकार पढे–लिखे व्यक्ति भी सिनेमा, धर्म के नाम पर दिखाने वाली कल्पित कथाओं का विश्वास करते हैं। फलस्वरूप चारों ओर पाखण्ड, अन्याय और अत्याचार बढ़ते जा रहे हैं। विशेष दु:ख यह है कि आज तो अनेक आर्यसमाजी भी इस चक्कर में फसते जा रहे हैं। वे भी अपना एवं अपने परिवार का भविष्य बिगाड़ रहे हैं। जबकि विचारशील आर्यजनो को अन्यों का भ्रमजाल छुडाने का यत्न करना चाहिए। यदि गंगा की या मूर्तिपूजा की महत्ता को जनता न मानती तो यह देश हजारो वर्षों तक पराधीन नहीं होता। मुट्ठी भर मुस्लिम सेना सोमनाथ मन्दिर के अरबों रुपयो को लूटकर नहीं ले जाती। देश के पराधीन होने का यह भी मुख्य कारण था।

आज आतकवादियो ने सारे देश में लूटपाट मचा रखी है। कश्मीर में हजारों मन्दिरों को तोड दिया है। हजारों ब्राह्मण परिवारों को लूटकर उनकी बहिन बेटियों को अपने पास रख लिया। परन्तु इनके देवता एक भी मन्दिर की या ब्राह्मण की रक्षा नहीं कर सके और अपने प्रभाव एवं चमत्कार से एक भी दुष्ट को नष्ट नहीं कर सके। फिर भी इस मूर्ति पूजा के भ्रमजाल में पड़े हुए हैं। इस अंक के प्रथम लेख मे लिखा है, याद रखो अनन्त जन्मों के अनन्त सचित पाप हैं जिनसे बार–बार जन्म मृत्यु के चक्कर में पडना होता है। कभी छुटकारा नहीं मिलता। नई–नई पाप वासनायें, नए–नए पाप कर्म और नए नए पाप परिणाम आते रहते हैं।' मनुष्य का अपने पुरुषार्थ से शक्ति से सामर्थ्य से इनसे छुटकारा पाना असम्भव सा है। परन्तु ये वह सब धर्मों का आसरा छोड़कर एकमात्र भगवान् की शरण में हो जाता है तो भगवान उसे सब पापों से मुक्त कर देते है।

'सर्व धर्म परित्यज यामेकं शरणं ब्रज अहं त्वं सर्व पापेभ्यो मोक्षेष्यामि मासुचः।'

इस वाक्य में तो स्पष्ट ही प्रेरणा दी गई है कि भगवान् का नाम लेकर कुछ भी पाप करते रहो तो पापों से छूट जाओगे। परन्तु वैसे मनुष्य कितने ही पुरुषार्थ करे, कितना ही सात्विक कर्म करे वह दु:खों से नहीं छूट सकता। जबकि वैदिक धर्म में कहा है – 'अवश्य मेव भोक्तव्यं कृत कर्म शुभाशुभम्।' अर्थात् अपना शुभ–अशुभ कर्म का फल अवश्य भोगना है। परन्तु इन पुराणों ने इस सारे कर्मफल व्यवस्था को पाप पुण्य की भावना को नष्ट कर दिया। जबकि मनु जी महाराज कहते हैं – 'आचारो हन्तय लक्षणम्।'

मृतं शरीरमुत्सृज्य काष्ठलोष्ठसमं क्षितौ।
मिमुखा बान्धवा यान्ति धर्मस्त मनुगच्छति।।

अच्छा चरित्र ही सब पापों को नष्ट करता है। मरे हुए प्राणी को उसके सारे सगे सम्बन्धी श्मशान में जलाकर वापिस आ जाते हैं। केवल धर्म ही उस मृत प्राणी का साथ देता है। वहां गंगा में नहाना या गंगा का नाम लेना मृत प्राणी के कोई काम नहीं आता और न ही किसी आर्ष शास्त्र में इसका उल्लेख है। अत. विचारशील सज्जनों को कल्याण के इस पाप बढ़ाने वाले लेखों का विरोध करना चाहिए तथा आर्यजगत् के पत्रों को ऐसे लेखों की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए।

— आचार्य, गुरुकुल आश्रम, आमसेना
नवापारा (उड़ीसा)

वैदिक संस्कृति और उसके मूल तत्व

— सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

भारत की संस्कृति के प्राण वेद रहे हैं, उपनिषद् रहे हैं, गीता रही है। वैदिक संस्कृति की घोषणा है कि जब प्रत्येक व्यक्ति को किसी न किसी दिन ससार छोड़ना है तब संसार में रमे रहना। इसी के भोगों में लिप्त रहना किसी का अन्तिम लक्ष्य नहीं हो सकता। जीवन का वही मार्ग सुख देने वाला है, जिससे मनुष्य ससार को भोगता हुआ भी उसमें लिप्त रहता न हो –

एवं त्वयि नान्यथे तोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।

वैदिक संस्कृति यथार्थवादी संस्कृति है। वैदिक संस्कृति का मौलिक विचार यह है कि संसार तो भोगने के लिए रचा गया है, इसे भोगो संसार को भोगो परन्तु त्याग पूर्वक, ससार में रहो परन्तु निर्लिप्त होकर, निस्संग होकर इसमें रहते हुए भी इसमें न रहने के समान। 'भोगना और त्यागना' इन दोनों सत्यों का सम्मिश्रण संसार की किसी और संस्कृति में नहीं है।

वैदिक संस्कृति में निम्न बातें उल्लेखनीय हैं –

१ यह संसार सत्य है, यह मनुष्य के भोग के लिए रचा गया है, मनुष्य के लिए कर्मभूमि है, कर्मक्षेत्र है।

२ संसार सत्य है, पर साथ ही असत्य भी है, कोई वस्तु यहां टिकती नहीं, अस्ति का अन्त नास्तिक है, जो आज है, वह कालान्तर में नहीं।

३. ससार सत्य है, सारयुक्त है, प्रवृतिमार्ग भौतिकवाद भी तथ्य है।

४. निवृत्तिमार्ग और अध्यात्मवाद भी सही है।

इसलिए व्यवहारिक व्यापक दृष्टि यही है कि भौतिकवाद और आध्यात्मवाद के लिए आत्मवाद दोनों का जीवन में समन्वय हो। भोग और त्याग पर अटक जाना मनुष्य जीवन है, इस प्रकार बस कर देने से मानव की शक्ति और उसका सामर्थ्य बना रहता है। इस व्यवहारिक समन्वय से मानवीय जीवन का व्यवस्थित निर्माण होता था।

१७ अक्टूबर जन्म दिवस पर विशेष

प्रखर वैदिक क्रान्तिकारी थे वीर जयानन्द भारतीय

– धर्म सिह शास्त्री

गिरिराज हिमालय की विशाल गोद में बसा हुआ उत्तराचल का जनपद गढवाल सदैव बडे–बडे वीर तपस्वियो को जन्म देने वाला प्रदेश रहा है। विकास खड वीरोखाल की पट्टी साबली निवासी श्री छविलाल जी ने आज से १२० वर्ष पूर्व दिनाक १७ अक्तूबर १८८१ को रविवार के दिन एक वीर पुत्ररत्न की प्राप्ति की जिसका नाम जेबी रखा गया। जेबी की उम्र केवल ४ वर्ष की थी कि जन्म देने वाली माता का निधन हो गया। मातृहीन इस बालक को विमाता ने लाड–प्यार से पालकर बडा किया और वह गढवाल के इतिहास मे क्रान्तिकारी समाज सुधारक परमदेशभक्त क्रान्तिकारी स्वतन्त्रता सेनानी भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के ज्वाजल्यमान नक्षत्र वैदिक धर्मावलम्बी ऋषि भक्त कर्मवीर जयानन्द भारतीय के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

भारतीय जी को सत्यार्थ प्रकाश नेचमत्कारित कर दिया। वे देवी–देवताओ के स्थान पर सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान परमात्मा की उपासना करने की प्रेरणा लेने लगे और स्वामी दयानन्द सरस्वती के उपकारों की वर्षा गढवाल मे बरसाने के लिए प्रयत्न करने लगे। सन १९११ मे भारतीय जी गुरुकुल कागडी जाकर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज से मिले। उन्होंने स्वामी जी से पूछा – क्या मैं आर्यसमाजी बन सकता हू, क्या मैं यज्ञोपवीत पहन सकता हू ? वर्ण व्यवस्था के बारे मे जैसा सत्यार्थ–प्रकाश मे लिखा है उसके अनुसार उत्तम कर्म करके उच्च वर्ण प्राप्त किया जा सकता है ? स्वामी जी ने इनका उत्तर देकर भारतीय जी के चारो ओर के दरवाजे खोल दिए और उन्होंने धार्मिक और सामाजिक महान कार्यों के लिए आर्यसमाज के मच को चुन लिया। वे सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार कार्य में जुट गए। उन्होने भीषण प्रतिकूल परिस्थितियो व अभावो का कठिन सघर्ष करते हुए विभिन्न वर्ग–वर्णों जाति–सम्प्रदायो के भेदभावो से ग्रस्त जनमानस मे मानव एकता के लिए वेद की मनुर्भव की पवित्र घोषणा का उद्बोध किया। समाज मे एक नई चेतना दी और नया जीवन मन्त्र फूका। महर्षि दयानन्द सरस्वती की आर्य पताका उत्तराचल मे पहुचाने मे भारतीय जी का सर्वप्रथम महत्वपूर्ण योगदान रहा अन्यथा उत्तराचल मे हिन्दू समाज मे भयकर अमिट कोढ अपनी मजबूत जडे बना चुका था। हिन्दू आपस में जाति–पाति छूआछूत घृणाद्वेष धर्म के नाम पर पाठ–पूजा के दल–दल मे फस गया था। मन्दिर विद्यालय सर्वाजनिक स्थल जलाशय आदि सब बन्द थे। वेद –विद्या यज्ञ–हवन यज्ञोपवीत आदि गढवाल मे था ही नहीं। ऋषि पताका की जयघोष करते हुए भारतीय जी ने भूखे प्यासे असीम विघ्न बाधाओ को झेलते हुए महर्षि के मिशन को स्थानीय क्षेत्रों मे प्रबल शक्ति का सचार कर आज हमें सफलता की चोटियो तक पहुचाया।

जब भारतीय जी को ज्ञान हुआ कि आर्य समाज एक अमर क्रान्ति का नाम है एक ऐसी क्रान्ति जिसने अपने परिवर्तनशील प्रवाह से एक नई चेतना और आलोक बिखेर दिया। यह एक ऐसी आग है जिसमें जलन और तपन नहीं बल्कि उत्साह वेग और विरल गतिशीलता है। आर्यसमाज साबली आदि पचपुरी गढवाल के सस्थापक गढवाल के दयानन्द कहे जाने वाले जयानन्द जन्मजात क्रान्तिकारी थे। उनकी क्रान्ति किसी भी मूल्य पर सकुचित नहीं बल्कि बहुआयामो को अपने भीतर समाविष्ट किए हुए थी उनकी क्रान्ति के स्त्रोत बहुमुखी थे उनका ओज–तेज स्वय उनकी महानता का साक्षी था। आजीवन कठिन से कठिन बाधाओ और मुसीबतो से जूझकर अन्तत मृत्यु को अगुठा दिखाकर अमरत्व का आलिगन करने वाला यह महामानव अपनी मिसाल स्वय आप ही था। हाथ मे गुलामी के विरुद्ध विद्रोह का प्रतीक तिरगा थामे इकलाब जिन्दाबाद काग्रेस जिन्दाबाद" "मालकम हेली गो बैक" जैसे गगन भेदी नारो की गूज सुनकर प्रदेश के तत्कालीन गवर्नर सर विलियम माकमल हेली का भाषण थम गया। अचानक सबका ध्यान उस व्यक्ति की ओर गया जिसे पुलिस लाठियो से पीट रही थी। यह बहादुर आदमी और कोई नहीं बल्कि वीर जयानन्द भारतीय थे जिन्होने अपने आस्तीन में छुपाकर रखे तिरगे झण्डे को निकालकर विलियम हेली की सभा मे खलबली मचा दी थी। यह घटना ६ दिसम्बर १९३२ की है। उस समय अग्रेज समर्थक अमन सभा के लोगो ने भारत मे अग्रजी राज्य की जडे मजबूत करने के उद्देश्य से लॉट गवर्नर को पौडी बुलाया था। लॉट गवर्नर को इस अवसर पर खुश करने के लिए उन्हे बुलाया गया था कि गढवाल मे कोई भी बागी काग्रेसी नहीं है। बाद मे लखनऊ वापस जाते समय लॉट साहब ने कोटद्वार मे रेल के दरवाजे पर खडे होकर अमन सभा के नेताओ व अपने अहलकारो को सम्बोधित करते हुए कहा "मैं उस बहादुर आदमी जयानन्द भारतीय का बडा शुक्रगुजार हू जिसने मेरी जान बचाई अगर वह आदमी चाहता तो मुझे गोली मार सकता था। इससे अमन सभा के नेता और उनके अनुयायी बडे शर्मिन्दा हुए।

६ सितम्बर १९५२ को समतामूलक समाज का यह प्रवल पक्षधर हमेशा के लिए हमसे बिदा हो गया। भारतीय जी के जीवन–सघर्ष और साहसिक कार्यकलापो का एक प्रेरणाप्रद इतिहास है। इतिहास मे उन्हे सच्चे देशभक्त और समाज के जर्जर सामती ढाचे को एक ही झटके मे तोडने के लिए तत्पर एक प्रखर क्रान्तिकारी के रूप मे हमेशा याद किया जाएगा। सामाजिक कुरीतियो धार्मिक आडम्बरो अन्धविश्वास की विषमताओ का जिस प्रकार से भारतीय जी ने सामना किया वह हमारे देश में प्रेरणादायक ही नहीं बल्कि चिरस्मरणीय है। प्यारे राष्ट्र को परतन्त्रता की कठोर बेडियो में जकडा हुआ देखकर तो जयानन्द मानो क्रान्ति का एक दहकता हुआ अगारा बन गया और वे काग्रेस मे शामिल होकर राजनीति मे कूदे और अग्रेजो के सिरदर्द बन गए थे –

जजीरों से जकडे स्वदेश को राह दिखाई थी तूने
जिनको न काल भी बुझा सका वह शमा जलाई थी तूने
घनघोर तिमिर के आगन में तू बीज उषा के बोता था
आवाज लगाई थी तूने जब सारा उत्तराचल सोता था।

– प्रधान आचलिक गढवाल आर्य समाज दिल्ली डब्ल्यु० पी० ६६ ए पीतमपुरा दिल्ली ३४

अब गूंगे भी बोल सकेंगे

– वेद अग्रवाल

कम्प्यूटर अब शीघ्र ही गूगो की आवाज बनेगा। इग्लैंड के वैज्ञानिको ने एक ऐसी कम्प्यूटर प्रणाली विकसित की है जो उन हजारों लोगो को आवाज देगा जो बोल नहीं पाते हैं।

डनडी विश्वविद्यालय मे पाच वर्ष के शोधकार्यों और प्रयोगो के बाद विकसित नयी कम्प्यूटर प्रणाली की सहायता से गूगे लोग न केवल बातचीत कर सकेगे बल्कि अपनी भावनाओं और मन–स्थितियों को भी व्यक्त कर सकेगे। इसकी सहायता से गूगे लोग क्रोध निराशा सुख–दु ख क्षोभ उन्माद और उत्तेजना जैसे भावो को भी व्यक्त कर पायेंगे। ब्रिटिश सूचना सेवा की विज्ञान पत्रिका स्पेक्ट्रम के अनुसार अभी हाल में मानसिक आघात सेरिब्रल पालसी से पीडित एलन मैक ग्रेनर ने इस नये कम्प्यूटर स्वर सश्लेषक की सहायता से बोलने का प्रदर्शन किया। श्री ग्रेनर मानसिक आघात के कारण बोलने में असमर्थ थे परन्तु उन्होने लोगों को यह बतलाया कि गूगे लोगो को दैनिक जीवन मे किन–किन कठिनाइयो का सामना करना पडता है और उन्हें कैसे–कैसे त्रासदी अनुभवों की अनुभूति करनी पडती है। कम्प्यूटर की मेमोरी मे वाक्य और शब्द भरे रहते हैं। इसमें ऐसी व्यवस्था की गयी है इसका प्रयोग करने वाले गूगे लोग आवश्यकता के वाक्य अथवा शब्द ढूढ सके और उसे सामान्य बोलचाल की गति से कम्प्यूटर की ध्वनि प्रणाली के माध्यम से उन शब्दो का उच्चारण कर सके। इस तरह गूगे लोग बातचीत कर पाने मे समर्थ हो पाते हैं।

कम्प्यूटर की मेमोरी मे विभिन्न मनोभावो को व्यक्त करने वाले शब्द और स्वर भरे होते है जिससे गूगे अपनी भावनाओ को व्यक्त कर सके।

कम्प्यूटर सचालक स्क्रीन पर शब्द अथवा वाक्य सूचक को लाने के लिए एक 'कम्प्यूटर माउस का उपयोग करते हैं तथ आवश्यकता के शब्दों वाक्यो और भावनाओं को व्यक्त करते हैं।

डनडी विश्वविद्यालय के कम्प्यूटर वैज्ञानिक छोटे आकार का कम्प्यूटर विकसित करने के प्रयास मे है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ० नार्मन आल्म भाविष्यवाणी करते हैं कि पाच वर्षों के भीतर इस पूरी कम्प्यूटर प्रणाली को जेब में रखने योग्य बना दिया जायेगा। कम्प्यूटर के स्क्रीन मेनू को सम्भवत चश्मे के ग्लास में लगा दिया जायेगा और स्पीकर गर्दन से लटकते रहेगे।

भारत के सभी बड़े नगर पाकिस्तानी मिसाइल के निशाने पर

इस्लामाबाद २५ सितम्बर। पाकिस्तान मध्यम दूरी के युद्धक मिसाइल शाहीन–द्वितीय के परीक्षण के लिए पूरी तरह तैयार है। यह मिसाइल अपनी २५०० कि०मी० तक मारक क्षमता के साथ भारत के लगभग सभी प्रमुख शहरो को अपना निशाना बना सकता है। अखबारो ने पाकिस्तान के परमाणु वैज्ञानिक डॉ० अब्दुल कादिर खान को यह कहते हुए उदधृत किया है।

पाकिस्तान ने ७५० कि०मी० तक मारक क्षमता वाले शाहीन प्रथम का गत वर्ष १५ अप्रैल को परीक्षण किया था और अब इसे सेना मे शामिल भी किया जा चुका है। कादिर के अनुसार पाकिस्तान के पास मिसाइलो और परमाणु बमो का जखीरा है ओर वह भारत के सभी प्रमुख नगरो को निशाना बना सकता है। उन्होने कहा मैं उन शहरो के नाम भी बता सकता हू लेकिन ऐसा करना ठीक नहीं होगा। उन्होने दावा किया कि परमाणु हथियारो को लाने–ले जाने के लिए पाकिस्तान के पास दोष रहित व्यवस्था है और इसका मुकाबला दुनिया के किसी भी देश की ऐसी व्यवस्था के साथ किया जा सकता है।

कादिर खान ने कहा परमाणु हथियारो के निर्माण मे हम १९८५ मे ही सफल हो गए थे लेकिन अपने पडोसी द्वारा चुनौती दिए जाने तक हम इनके परीक्षण किसी न किसी बहाने टालते रहे। पश्चिमी मीडिया के अनुसार पाकिस्तान का गुप्त मिसाइल कार्यक्रम चीनी और उत्तरी कोरियाई मिसाइल प्रौद्योगिकी का ही विस्तार है। जमीन से जमीन पर मार करने वाला शाहीन – प्रथम मिसाइल सडक मार्ग से लाया जा सकता है और किसी स्थिर प्लेटफार्म से भी इसे दागा जा सकता है।

आर्यसमाज टैगोर गार्डन (ए०सी०ब्लाक) का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज मन्दिर टैगोर गार्डन (ए०सी० ब्लाक) का ३४ वा वार्षिकोत्सव ७ नवम्बर से १२ नवम्बर तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आचाय अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व मे विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया है। समारोह मे प्रभात फेरी वेद कथा आर्य महिला सम्मेलन वेद सम्मेलन सहित अनेको कार्यक्रम आयाजित किये जा रहे है। इस अवसर पर डॉ० महेश विद्यालकार डॉ० सारस्वत मोहन मनीषी डॉ० धर्मपाल श्री रामनाथ सहगल श्री मदन लाल खन्ना श्री ओ०पी० बब्बर श्री विमल वधावन सहित अनेको विद्वान साधु सन्यासी पधार रहे हैं। इस पावन अवसर पर आप सपरिवार आमन्त्रित हैं।

आर्यसमाज टाण्डा का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज टाण्डा का १०६ वा वार्षिकोत्सव ७ से ११ नवम्बर तक डी०ए०वी० एकेडमी मे समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर वृहद यज्ञ आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न होगा। समारोह में भजन प्रवचन के अतिरिक्त नगर कीर्तन वेद सम्मेलन महिला सम्मेलन शका समाधान गोरक्षा सम्मेलन राष्ट्रीय एकता सम्मेलन सहित अनेको आकर्षक कार्यक्रम सम्पन्न होगे। समारोह में अनेको विद्वान साधु सन्यासी आदि पधार रह है। अधिक से अधिक सख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाये।

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया का वार्षिकोत्सव

आर्यजनो को सूचित किया जाता है कि आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया का वार्षिकोत्सव जोकि १७ १८ १६ नवम्बर २००० को होना था वह विशेष कारणवश स्थगित कर दिया गया है।

अब आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया का वार्षिकोत्सव २४ २५,२६ नवम्बर २००० को समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है। मेरी समस्त आर्य जनो से प्रार्थना है कि वे अधिक से अधिक सख्या मे दाधिया उक्त समारोह मे पधारकर कायक्रम की शोभा बढाये। रविवार दिनाक २६–११–२००० को प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी आर्यसमाज ग्रीन पार्क आर्य समाज ग्रटर कैलाश आर्यसमाज जनकपुरी आर्यसमाज कृष्णनगर आयसमाज शाहदरा आर्यसमाज पजाबी बाग आर्यसमाज फरीदाबाद आर्यसमाज आर०के० पुरम सेक्टर – ६ आर्यसमाज पजाबी बाग ईस्ट आर्यसमाज अनारकली से प्रात ६ बजे बसे चलेगी इच्छुक आर्य जन सम्बन्धित आर्यसमाजो से दाधिया उत्सव मे सम्मिलित होने हेतु सम्पर्क करने की कृपा करे।

– मन्त्री

आर्यसमाज बडा बाजार पानीपत का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज बडा बाजार पानीपत का १०४ वा वार्षिकोत्सव ३० अक्तूबर से ५ नवम्बर तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर अनेको कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे है। समारोह मे स्वामी विद्यानन्द सरस्वती डॉ० महावीर अग्रवाल नरेश चन्द्र निर्मल सहित अनेको विद्वान तथा साधु सन्यासी पधार रहे है। मुख्य समारोह ३ से ५ नवम्बर तक प० रतिराम वाटिका महर्षि दयानन्द मार्ग पानीपत मे सम्पन्न होगा। भारी सख्या मे पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाये।

आर्यसमाज चन्दौसी का ११५वां वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज चन्दौसी का ११५ वा वार्षिक उत्सव एव विश्व कल्याण यज्ञ दिनाक १३ १० २००० से १६ १० २००० तक धूम–धाम से मनाया गया। प्रात ७ बजे से १० बजे तक प्रतिदिन चारो वेदो के मन्त्रो द्वारा स्वस्ति याग किया गया। ब्रह्मा स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती वेद भिक्षु सर्वदानन्द गुरुकुल महाविद्यालय के उपाचार्य श्री जीवन सिह एव ब्रह्मचारियो ने सस्वर वेद पाठ किया। अपराह्न २ बजे से ५ बजे की सभाओ मे १३ १० २००० को नारी जागृति सम्मेलन १५ को राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया। रात्रि को ८ बजे से १० बजे के कार्यक्रमो मे भी आर्यसमाज के विचार सुनने हेतु जनता की अपार भीड उमडी। १४/१० को विशाल नगर शोभा यात्रा का आयोजन किया गया।

पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती वेदभिक्षु उपाचार्य श्री जीवन सिह भजनोपदेशक श्री भानुप्रकाश आर्य सुश्री प्रभादेवी श्रीमती मीरा मोहन शास्त्री के प्रवचनो एव भजनो ने श्रोताओ पर गहरा प्रभाव डाला।

१५/१० को क्षेत्र के सासद राजा नन्द विजय सिह द्वारा स्मारिका 'वैदिक रश्मि' का विमोचन भी किया गया।

– मन्त्री आर्यसमाज, चन्दौसी

आर्यसमाज सुन्दरनगर कालोनी का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज सुन्दरनगर कालोनी का वार्षिकोत्सव दिनाक ११ अक्तूबर से १५ अक्तूबर तक बडी धूमधाम के साथ मनाया गया। आचार्य परमदेव मीमासक जी के ब्रह्मत्व मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ हुआ जिसमे यजमानो ने बडी श्रद्धापूर्वक भाग लिया। ब्र० अशुदेव और ब्र० धनजय ने वेद पाठ किया। आर्यप्रतिनिधि सभा के महामन्त्री आचार्य रामानन्द जी हिमाचल गुरुकुल के आचार्य प० परमदेव मीमासक जी तथा इसी गुरुकुल के अधिष्ठाता आचार्य भगवान देव चैतन्य जी के सारगर्भित प्रवचनो ने जनता को अत्याधिक प्रभावित किया। सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सुभाष राही तथा सतीश सुमन के मनोहर भजनो ने श्रोताओ को मन्त्र मुग्ध किया। इन प्रवचनो एव भजनो के द्वारा वैदिक धर्म के विभिन्न पहलुओ का इस ढग से विवेचन किया गया कि जनता को आर्यसमाज के मूलभूत सिद्धान्तो को समझने का अवसर मिला। समारोह मे हिमाचल प्रदेश सरकार के मन्त्री माननीय श्री प्रकाश चौधरी जी विशेष रूप से आमन्त्रित थे। उन्होने अपने उदबोधन मे आर्यसमाज और गुरुकुल शिक्षा पद्धति की प्रशसा करते हुए कहा कि मुझे आर्यसमाज मे आकर विचार सुनने को मिले यह मेरे लिए गौरव की बात है। उन्होने आर्यसमाज को हर प्रकार का सहयोग देने का आश्वासन दिया तथा अपनी ऐच्छिक निधि से पाच हजार रुपये का सात्विक दान भी दिया। ऋषि लगर के साथ समारोह का समापन हुआ।

– मन्त्री

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के छात्रों ने चलविजयोपहार ट्राफी जीती

कुरुक्षेत्र (१ सितम्बर २०००) कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग मे प्रवक्ता श्रीमती स्वतन्त्र जैन ने अपने स्वर्गीय पिता बाबू मूलचन्द जैन के जन्म दिवस पर उनकी स्मृति मे 'पर्यावरण को प्रदूषण रहित रखना हमारा कर्त्तव्य तथा वर्तमान परिवेश मे युवको की भूमिका विषय पर जिला व राज्य स्तरीय भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया। जिसमे गुरुकुल के ब्रह्मचारी (छात्र) शिवपूजन ने किशोर वर्ग मे प्रथम स्थान व ब्रह्मचारी पकज आर्य ने बाल वर्ग में द्वितीय स्थान प्राप्त कर गुरुकुल को गौरवान्वित किया। इन दोनो ब्रह्मचारियो को श्रीमती स्वतन्त्र जैन ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र मे विशेष रूप से पधार कर अपने कर कमलो से चलविजयोपहार ट्राफी व पारितोषिक देकर सम्मानित किया व घोषणा की कि अगले वर्ष बाबू मूलचन्द जैन का जन्म दिवस समारोह विशाल स्तर पर गुरुकुल कुरुक्षेत्र परिसर में ही आयोजित किया जाएगा। जिसमे जिले के सभी विद्यालयो के विद्यार्थी भाग लेकर बाबू मूलचन्द जैन की स्मृति को चिर स्थायी बनाने मे सहायक होगे।

– उप प्रधानाचार्य

गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

वैदिक सत्संग का भव्य आयोजन

आर्यसमाज मन्दिर मण्डी डबवाली के तत्वावधान मे २–११–२००० से ५–११–२००० तक वैदिक सत्सग का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर आचार्य आर्य नरेश तथा प० सत्य पाल पथिक पधार रहे है। आर्य विद्या मन्दिर सीनियर सैकेन्डरी स्कूल डबवाली मे यज्ञ भजन व प्रवचन तथा पारिवारिक यज्ञ व सत्सग ८–३० से १०–३० तक विभिन्न स्थानो मे सम्पन्न होगे। अधिक से अधिक सख्या में पधार कर धर्म लाभ उठाए।

पारिवारिक यज्ञ द्वारा वेद प्रचार

पितृविसर्जन अमावस्या के दिन पारिवारिक यज्ञ का आयोजन श्री सर्वेश कुमार मो० जयनगर सुल्तानपुर (उ०सि० नगर) उ०प्र० के निवास पर किया गया। पितृ यज्ञ की वैदिक व्याख्या की गई। यज्ञ का पौरोहित्य श्री कृष्ण आर्य उपमन्त्री आर्य उपप्रतिनिधि सभा कुमाऊ ने किया।

– श्री कृष्ण

ऐसे लोगों को कौन भारतीय कहेगा ?

के० नरेन्द्र

हमारे भाजपाई नेता मानें या न मानें, वस्तुस्थिति यह है कि जैसे भी हो मुसलमानों को खुश करके अपनी तरफ करने की कोशिशों का नतीजा यह तो हुआ नहीं जो वह चाहते हैं और अगर वह हो गया तो इसका स्वागत ही किया जाएगा। लेकिन आमतौर पर जो कुछ दीख रहा है वह यही है कि आम मुस्लिम नेताओं ने यह समझा है कि भाजपाई नेता उनको भाजपा मे लाने के लिए तडप रहे है। इस तरह श्री बगारू लक्ष्मण की घोषणा का स्वागत करने की बजाय उसको गलत रूप में पेश किया जा रहा है और आम मुसलमानों को यह इशारा दिया जा रहा है कि वे सावधान रहे और अपनी शर्त मनवाए बिना भाजपा में जाने की तैयारी न करें।

अत में मुसलमान क्या फैसला करते है यह देखने की बात है। लेकिन आमतौर पर यही कहा जा सकता है कि कुछ मुसलमानो ने यह समझ लिया है कि भाजपाई नेता उनको अपनी सस्था में शामिल करने के लिए तडप रहे हैं इसलिए उनकी जुबान पर जो बात आती है उसे कह डालते हैं। उन्हें इस बात से कोई डर नहीं कि वे कानून की अवहेलना कर रहे हैं या मुसलमानों को बागी बनाने की बाते कर रहे हैं। ऐसे लोगों की तकरीरे और उनके विचारों का जब अध्ययन किया जाता है तो यह प्रश्न उठता है कि क्या ऐसे लोगो को मुह लगाना भी सही होगा और कि क्या वे भारत के वफादार भी हें? ऐसे लोगों में जामा मस्जिद के पूर्व ठेकेदार अब्दुल्ला बुखारी भी एक हैं। इन्हीं दिनों में उन्होंने जा तकरीरे की हे उनसे साफ नजर आता है कि उनके दिल में देश के प्रति कितनी वफादारी है। पिछले दिनों उन्होंने जो कुछ कहा उसके कुछ हिस्से नीचे पेश कर रहा हू–

उन्होंने फरमाया है कि आज भारतीय कश्मीर में, जिसे ये गुलाम कह रहे हैं, सात लाख फौजी जवान मुसलमानों के कत्लेआम के लिए जिम्मेवार हैं। निहत्थे मुसलमानों पर ये भारतीय फौजे जो अत्याचार कर रही है उनको देखते हुए मैं नहीं चाहता कि कश्मीर भारत के साथ रहे। आगे चलकर उन्होंने फरमाया कि छत्तीसिहपुरा मे अमरीकी राष्ट्रपति बिल क्लिटन के आने के समय जिन ३६ सिखों का कत्ल हुआ था वह दरअसल सरकारी इशारे पर हुआ था ताकि मुसलमानों पर इसका आरोप लगाया जा सके। इसी तरह एक सौ से ज्यादा श्रद्धालुओं को इसी मकसद से अमरनाथ की यात्रा में मारा गया था। उन्होंने माग की कि इस तरह की 'पकडो और कत्ल करो' की खूनी घटनाओं की अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर जाच होनी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि छत्तीसिहपुरा की दुर्घटना भारत सरकार ने इस मकसद से की थी कि सिखों और मुसलमानों में एक–दूसरे के खिलाफ दुश्मनी बढे और ये एक–दूसरे की गर्दन पर सवार हों। इसके बाद उन्होंने कहा कि भारत सरकार के इशारे पर कश्मीर में मुसलमानों का खून ऐसे ही बहाया जा रहा है जैसे पहले पजाब में सिखों का बहाया जा रहा था।

स्पष्ट हो कि यह अब्दुल्ला बुखारी वाहिद मुस्लिम लीडर नहीं है जो इस तरह की बागियाना बातें कर रहा है बल्कि और कइ मुस्लिम मुल्ला भी इसी तरह से देशद्रोह का प्रदर्शन कर रहे ह। लेकिन एक और मौलवी मुफ्ती मोहम्मद अकरम जो दिल्ली की फतेहपुरी मस्जिद का इमाम है का कहना है कि कश्मीर में जो आतकवाद फैला है उसके लिए पाकिस्तन को बदनाम नहीं करना चाहिए।

इन दोनों मुल्लाओं की तरह जमीयत उल उलेमा के मुखिया मौलाना असद मदनी का कहना है कि 'साप के साथ आपकी दोस्ती नहीं हो सकती चाहे उसके जहरीले दात निकाल दिए जाए। यह सेक्युलरिज्म महज धोखा है। यह मानना कठिन है कि अब यह मुसलमानों के निकट आना चाहता है। यहूदियों की तरह यह सिर्फ ताकत में ही यकीन रखता है। यह इशारा है श्री बगारू लक्ष्मण की पेशकश के जवाब में।

इसी तरह आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड के महासचिव मौलाना सैय्यद निजामुद्दीन फरमाते हैं– कोरे बयानो से मुसलमान भाजपा के निकट नहीं लाए जा सकते। उन्होंने हमेशा मुसलमानों के लिए मुश्किलें पैदा की है और उन्हें दूर ही रखा है। आज भी कश्मीर के बारे में धारा – ३७० मुस्लिम पर्सनल ला का विरोध और राम मन्दिर का निर्माण इनक एजेडा में शामिल हैं जिससे पता चलता है कि इनकी मुस्लिम विरोधी नीतिया बदस्तूर जारी हैं। उन्ह कोरे ५ ना की बजाय कुछ ठोस कदम उठाने होंगे जिससे मुसलमानों के प्रति उनकी ईमानदारी साबित हो। उदाहरण के तौर पर मुसलमानो की आर्थिक समस्याओं को हल करना होगा और बाबरी मस्जिद को फिर से बनाना होगा। अब मुसलमान बडा समझदार वोटर बन गया है।

> **ऐसे मुसलमान लीडरो का सौभाग्य है कि भाजपा की सरकार है वरना कोई और सरकार होती तो ऐसे मुस्लिम लीडरो को एक दिन भी आजाद न रहने दिया जाता। जो लोग डके की चोट पर भारत सरकार के खिलाफ बाते करते हैं उन्हें सिर्फ भाजपा के लीडर ही बर्दाश्त कर सकते है।**

इन तमाम बातो पर टिप्पणी करते हुए मुस्लिम अखबार 'नई दुनिया' ने यह लिखा है कि आप घोडे को पानी तक तो ले जा सकते हैं लेकिन उसे पानी पीने पर विवश नहीं कर सकते। भाजपा ने मुसलमानो को कत्लगाह तक ले जाने के लिए डिप्लोमैटिक साजिश रची है। भाजपा यह महसूस करती है कि उसके हिन्दुत्व के नारे का जितना असर होना था हो चुका अब इसे आगे बढने के लिए मुस्लिम पासपोर्ट की जरूरत है। अपना मुस्लिम वोट बैंक बनाने के लिए दूसरी पार्टियों के मुस्लिम वोट बैंक को तोडना इसका मकसद है।

अब कोई बताए कि किस तरह भारतीयों से यह उम्मीद की जाती है कि इस तरह के इरादे रखने वालों से दोस्ती और सदभावना पैदा करें। जिस कश्मीर पर हजारो भारतीय नौजवान कुर्बान हो चुके हैं उसे ये लोग पाकिस्तान के हवाले करना चाहते हैं। पाकिस्तान ने कश्मीर में जिस तरह मासूमों का कत्लेआम कर रखा है उसे रोकने के लिए भारतीय सेना को यहा भेजा गया है और ये मौलवी और मुल्ला चाहते हैं कि इन फौजो को वापस बुला लिया जाए ताकि पाकिस्तानियो को भारतीय कश्मीर मे ऊधम मचाने का पूरा मौका मिल जाए। ऐस मुसलमान लीडरों का सौभाग्य है कि भाजपा की सरकार है वरना कोई और सरकार होती तो ऐसे मुस्लिम लीडरो को एक दिन भी आजाद न रहने दिया जाता। जो लोग डके की चोट पर भारत सरकार के खिलाफ बाते करते है उन्हे सिर्फ भाजपा के लीडर ही बर्दाश्त कर सकने हैं और कौन इस बात स इनकार करेगा कि जा छूट इन्हें मिली हुई हे उसका ये पूरा–पूरा फायदा उठा रहे हें ताकि पाकिस्तान दुनिया को यह बता सके कि भारत के मुसलमान अपनी सरकार की कश्मीर नीति से बेजार हो रहे हैं। और कश्मीर पर पाकिस्तान के हक को ऐलानिया तस्लीम कर रहे हैं।

आई० एस० आई० का लक्ष्य उत्तर-पूर्व के जन जीवन को पंगु बनाना है

गुवाहाटी (विसके)। असम पुलिस के पास पाकिस्तानी खुफिया एजेन्सी (आई० एस० आई०) की गतिविधियो के पक्के सबूत मिले हैं कि असम मे हिंसा और आतकवाद को बढावा देने मे सलग्न है। असम के मुख्यमन्त्री प्रफुल्ल कुमार महत ने आई० एस० आई० के बारे मे बजट अधिवेशन के दौरान १६ पृष्ठो का एक बयान पढकर उसका भडाफोड किया था। उसमे उसकी गतिविधियो और उद्देश्यों का खुलासा किया गया है। आई०एस०आई० स्थानीय आतकवादियो को सक्रिय सहायता देकर राज्य मे हिसक वारदातो को बढावा दे रही है।

इसके साथ ही जनजाति और धर्मो के आधार पर लागो को उकसाकर नए–नए आतकवादी गुटो को पैदा कर रही है और उनको प्रशिक्षण ओर हथियारो से सुसज्जित कर आतक ग्रस्त बनाने मे मदद कर रही है। इसके लिए विभिन्न माध्यमो से अत्याधुनिक हथियार और आर०डी०एक्स० जैसे अत्यत घतक विस्फोटक मुहेया करा रही है। देश को अर्थिक दृष्टि से अपग बनाने के लिए तेल की पाइप लाईनो महत्वपूर्ण प्रतिठानो रेलवे लाइनो व सडक के पुलो पर विस्फोट कर भारी क्षति पहुचा रही है। और लोगो को आतकित करने के प्रयास मे लिप्त है। स्थानीय मुसलमान युवको को 'जेहाद' (धर्म युद्ध) क नाम पर बहकाकर उनको कट्टरवाद और आतकवाद की ओर धकेल रही है। अत्यन्त उत्तेजित किन्तु झूठा अभियान चलाकर हिन्दू और मुसलमान नागरिको के बीच साम्प्रदायिक तनाव का बढावा दे रही है। इसके कारण आतकवाद से पीडित राज्य के लिए साम्प्रदायिक सघर्ष को रोकने के लिए कदम उठाने पड रहे हैं।

असम पुलिस के पास ऐसे अनेक साक्ष्य मौजूद हे जिनसे प्रमाणित होता हे कि यूनाइटेड लिबरेशन फ्रट आफ असम (उल्फा) के सर्वोच्च नेताओं के ढाका स्थित पाकिस्तानी उच्चायोग के कुछ अधिकारियो के साथ घनिष्ठ सबध हैं। उल्फा के नेता बराबर ढाका के रास्ते पाकिस्तान की यात्रा करते हैं। सैंकडो उल्फा कैडरो को पाकिस्तानी सरकारी एजेन्सियो ने हथियारो का प्रशिक्षण दिया है। उल्फा के गिरफ्तार कैडरो ने इकबालिया बयान दिया है कि ढाका के पाकिस्तानी उच्चायोग के अधिकारियो ने मुस्लिम नामो से पासपोर्ट जारी कर उन्हे कराची भेजा है। कराची हवाई अड्डे से उन्हे बिना नम्बर की गाडियो मे बैठाकर विभिन्न प्रशिक्षण केन्द्रो मे भेजा गया है। इस प्रकार के उल्फा नेताओ के प्रशिक्षण के अनेक निर्दिष्ट प्रमाण पुलिस के पास उपलबध है।

धार्मिक आधार पर आतकवाद असम पुलिस ने गुवाहाटी महानगर मे १० अगस्त १९९९ को चार व्यक्तियो को शक के आधर पर गिरफ्तार किया क्योंकि वे सदिग्ध अवस्था मे राज्य के विभिन्न हिस्सों में घूम घूम कर लोगों से सम्पर्क स्थापित करने के कार्य में जुटे हुए थे।

ये चारो पाकिस्तान इन्टरनेशनल एयरलाइन्स से कराची से ढाका विभिन्न दिना मे पहुचे और १९९९ की जुलाई के तीसरे सप्ताह मे ढाका स्थित आई०एस०आई० के अधिकारी से मिले। उसने उनके आगे की यात्रा का प्रबन्ध कर दिया और उनक साथ असम के लिए आरडीएक्स की एक खेप भी भेज दी। इस योजना के तहत वे सिलहट पहुचे और अवैध तरीके से करीमगज के निकट भारत मे दाखिल हो गए।

असम में हरकत उल मुजाहिदीन का प्रसार पूछताछ के दौरान आई०एस०आई० के इन एजेटों ने बताया कि पाकिस्तान के खूखार आतकवादी गिरोह हरकत उल असार ने असम मे अनेक युवको को भर्ती किया है और उन्हे प्रशिक्षण देने के लिए पाकिस्तान भेजा है। उनके द्वारा दी गई सूचना के आधार पर असम पुलिस ने बडी सख्या मे प्रशिक्षण प्राप्त कर असम लौटे व्यक्तियो को गिरफ्तार किया।

उनमे असम इकाई के हरकत उल मुजाहिदीन के सर्वोच्च आतकवादी भी शामिल हैं। हरकत का असम का मुख्य सगठनकर्ता मुस्लिमुद्दीन भी पकडा गया। पूछताछ से यह भी मालूम हुआ कि भारत स्थित हरकत का नायब अमीर मौलना मुहम्मद फकरुद्दीन उर्फ अकरम मास्टर असम के ग्वालपाडा जिला का निवासी है। वह वर्तमान मे पाकिस्तान म रह रहा है।

मजहवी नाम पर आतकवादी सगठन गत कुछ वर्षो मे असम मे अनक मुस्लिम आतकवादी सगठन खडे हुए हैं उनमे से कुछ इस प्रकार हें – मुस्लिम यूनाईटेड फ्रट ऑफ असम (मुल्फा) इस्लामिक लिबरेशन फ्रट असम (एमएलटीए) मुस्लिम लिबरेशन आर्मी ऑफ असम (इला) यूनाइटेड मुस्लिम लिबरेशन फ्रट आफ असम (यूएमएलएफ) यूनाईटेड रिफार्मेशन प्रोटेस्ट आफ असम (यूआरपीए) पीपुल्स यूनाईटेड लिबरेशन फ्रट (पल्फ) मुस्लिम वालटियर फोर्स (एमवीएफ) आदम सेना इस्लामिक सेवक सघ हरकत–उल–मुजाहिदीन (हम) और हरकत – उल – जेहाद।

विदेश समाचार

आर्यसभा मॉरीशस के तत्वावधान में

निर्धिन आर्यसभा में प्राकृतिक सेवा सप्ताह

इस सेवा सप्ताह का उदघाटन आर्य सभा के प्रधान डाक्टर रुद्रसेन निऊर जी ने अक्टूबर मास के मध्य मे किया था। मौके पर आयसभा के कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्र मोहित जी डाक्टर उषा शर्मा जी कानुन्दों को श्री उग्रसेन देवपाल कौडिया जी भी पधारे थे उपस्थित सभी लोगों ने इस सेवा सप्ताह की सराहना भी की थी।

आर्यसभा के मन्त्री डाक्टर उदय नारायण गगू जी ने मन्त्री का पदभार समाला था।

गायत्री मन्त्र के उच्चारण से कार्य का प्रारम्भ किया गया था। प्रथम दिन आर्यसभा के पण्डित और पण्डिताओ द्वारा विशेष यज्ञ किया गया था।

आर्य सभा की आर्योदय पत्रिका के प्रमुख सम्पादक श्री सत्यदेव प्रीतम जी आर्य भूषण ने कहा कि निर्धिन भवन है सम्पूर्ण मोरिशस टापू मे आर्यसमाज की शाखाओ के २५० भवन हैं। मौके पर डाक्टर निर्मला मुनत जी ने कहा के भारत मे भी ऐसी कार्यवाही के लिए आर्यसमाज की ओर से हमें बहुत सहयोग प्राप्त होता रहता है जिससे हमे अति प्रसन्नता होती है।

सर्वप्रथम आर्यसभा के वरिष्ठ पण्डित तथा प्रचारक प्र० धर्मवीर रजीत जी सन् १६८८ मे भारत गये थे और वहा पर इस प्राकृतिक चिकित्सा विधि का अध्ययन करके लौटे अब भारत जाकर नौजवानो को इस विधि का कोर्स देकर लौटते हैं। वे इन को सुनकर बहुत प्रभावित होते है अनेक लोग उनसे मोरिशस और भारत मे भी स्वास्थ्य लाभ उठाते हैं।

सेन्फ्रॉसिसको अमेरीका से डाक्टर शरद मुनत जी टेकजास अमेरीका की कुमारी जुही मुनत जी भारत से डाक्टर चन्द्रकुमार जवेरी जी भी पधारे थे। कुमारी जुही जी से जब रेडियो प्रसारण पूछा गया कि आप तो डाक्टरी का अध्ययन करने वाली हैं तो क्यों प्राकृतिक चिकित्सा का अध्ययन करने आई हैं उन्होने उत्तर दिया कि "मैं दोनों पद्धतियों का अध्ययन करने का विचार रखती हूँ। ऐसा मेरे माता–पिता का भी परामर्श है।

डाक्टर शरद मुनत जी अमेरिका नासा वैज्ञानिक केन्द्र मे कार्यकरत है। आप ३० वर्षों से वहा पर हैं आप योगासन के प्राध्यापक है और प्राकृतिक चिकित्सक भी हैं। आप ने यहा हमे योगासन की अनेक मुद्राए बताई है। श्रीमती एव डाक्टर सरला जरेटी जी ने यहा पर हमे व्यायाम करने और प्राणायाम करने की भी विधिया सिखाई। आप ने कहा कि प्राणायाम करने और ध्यान लगाने से और मन्त्रोच्चारण करन स अनेक बीमारिया दूर हो जाती हैं। हसना भी तनाव से छुटकारा पाने की एक अचूक विधि है। हमेशा प्रसन्न चित्त रहने से दिमाग और दिल की तथा उच्चरक्तचाप की बीमारियों से लोग बचे रहते हैं। श्रीमती निर्मला मुनत जी ने एक बार कार्यशाला के दौरान कहा था कि – १ घर का सादा भोजन करें। २ अच्छा साहित्य पढे गप–शप छोडें। ३ वाहन मे कम चलें पैदल भी चले। ४ बिजली मे कम रहे सूर्य स्नान हर रोज ले। ५ हमे भगवान का नहीं भूलना चाहिए भजन कीर्तन करते रहना चाहिए। ६ भोजन के बाद पानी दुगुना पीये कसरत जरूर करे। ७ व्यायाम और योगासन से सारी जिन्दगी सुधर जायेगी। ८ सन्तुलित आहार और फलो का सेवन करने से बीमार नहीं होगे। ६ शराब छोडे दूध का सेवन करे।

यह कार्यशाला एक सप्ताह और चलती रही। रडियो पर अनेक कायक्रम किये गये। मोरिशस के दूरदर्शन पर भी ये दृश्य दिखाये गये। इस प्रसारण के सहयोग से इस टापू की सब दिशाओ से माताओ बहनो भाइयों और बच्चो ने आकर स्वास्थ्य लाभ उठाया। जल नेती और रबड नेती से एक महानुभाव जो ५ वर्षों से बीमार थे एक सप्ताह के अन्दर चगा हो गये।

श्री सत्यदेव प्रितम जी ने अन्तिम दिन विदाई के शुभावसर पर कहा कि – प्राकृतिक चिकित्सा का एक केन्द्र आर्य सभा द्वारा खोलने की योजना बनाई गई है।

शान्ति पाठ के साथ कार्य का विसर्जन किया गया

– पण्डित धर्मवीर घूरा मान्य प्रधान मादक विरोधी द्रव्य संस्था मोरिशस

सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहियें।

– आर्यसमाज का पाचवा नियम

कश्मीर पुलिस का क़हर राष्ट्रवादियो पर

यह है कश्मीर पुलिस। इसके सामने भारत माता की जय बोलना अपराध है। केवल यह ही नहीं यदि आप मुस्लिम नहीं है और राष्ट्रीय अखण्डता में विश्वास रखते हैं तो आपको भी कश्मीर पुलिस की बर्बरता का सामना करना पड सकता है। अमरनाथ यात्रा के दौरान आतकियो और पुलिस के व्यवहार को पूरे विश्व ने देखा।

हाल ही मे लद्दाख मे स्थानीय निकायो के चुनाव हुए। इन चुनावों में कश्मीर पुलिस ने बिना जनाधार वाले मुस्लिम प्रत्याशियों को विजयश्री दिलाने हेतु शैतानियत का नगा खेल खेला। कश्मीर मे कोई हिन्दू (बोद्ध) चुनाव कैसे जीत सकता है ? यह कश्मीर पुलिस का घोषित कार्यक्रम ह। लद्दाख के शान्तिप्रिय बौद्धो को आतकित करने के लिए कई स्थानो पर पुलिस द्वारा गोलिया चलाई गई। जिससे अनेक बौद्ध गम्भीर रूप से घायल हो गये। ज्ञातव्य हो लद्दाख क्षेत्र मे आतकी गतिविधियो की अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। पिछले मास तीन लामाओं की हत्या कर दी गई थीं। दूसरी ओर लद्दाख का इस्लामीकरण तेजी से हो रहा है। इसी मध्य कश्मीर पुलिस आतकियों के लिए सुविधाजनक वातावरण बनाने पर लगी है।

जिस पुलिस ने कभी किसी आतकी के विरुद्ध एक गोली भी नहीं चलाई हो वह हिन्दुओ और बौद्धो के विरुद्ध अपनी वीरता का प्रदर्शन कर रही है। शर्मनाक बात यह है कि मानवता और राष्ट्रीयता से जुडे इस प्रश्न पर धर्मनिरपेक्ष दल मौन हैं।

प्रभु भक्ति देश भक्ति शिविर सम्पन्न

उदगीथ साधना स्थली डोहर हिमाचल में आचार्य आर्य नरेश जी की अध्यक्षता में ३ अक्तूबर से ८अक्तूबर तक सस्कार शिविर हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस शिविर में हिमाचल हरयाणा दिल्ली जम्मू व पजाब से आये लगभग पचास लोगों ने भाग लिया। विद्यार्थियो को वैदिक सस्कृति राष्ट्रभक्ति मातृ पितृ भक्ति के साथ साथ पाखण्डों को छोडकर चेतन प्रभु की उपासना कर वेद विज्ञान धर्म की शिक्षा दी गई। इसके साथ साथ उन्हें योगासन प्राणायाम तथा जूडो कराटे की भी शिक्षा दी गई। शिविरार्थी जनों ने अण्डा मास मछली चाय व कोक छोडने का सकल्प किया।

बडे लोगो ने ध्यान योग वेदपाठ तथा वैदिक सिद्धान्तो का प्रशिक्षण प्राप्त किया। कुछ लोगो ने झूठी मान्यताओ को जड से उखाडने हेतु अपने जीवित रहते ही अपने हाथो से बेटों के सिर पर पगडी रस्म को पुनर्जीवित करने का सकल्प लिया। जिसका उद्देश्य वास्तव मे वानप्रस्थ लेना है। हिमाचल के बस्माणा से आए बच्चों ने यज्ञोपवीत धारण करके देश धर्म व समाज हेतु योग्य सेवक व सच्चे आदर्शो हेतु विद्यार्थी बनने का निर्णय लिया। पर्यावरण को शुद्ध करने वाले यज्ञ मे सबके द्वारा पूर्णाहुति डालकर शिविर समाप्ति की घोषणा हुई।

– कार्यालय अध्यक्ष "आर्यवीर दल"

विदेश समाचार

अमरीका के आदर्श आर्यनेता डॉ० सोनी

– डॉ० दिलीप वेदालकार (यू०एस०ए०)

वदन प्रसाद सदन
सदय हृदय सुधामुचो वाच।
करण परोपकरण
येषा केषा न ते वन्द्या।।

– **'जिनका शरीर प्रसन्नता का घर है हृदय दयावान है वाणी अमृत के समान मधुर है और परोपकार जिनका कार्य है वे सज्जन किसके वन्दनीय नहीं होते।**

उपरोक्त सुभाषित **डॉ० सुखदेवचन्द सोनी** के जीवन मे साकार हो रहा है। आर्य सस्कृति के अनन्य उपासक हिन्दुत्व के प्रखर प्रहरी और अहर्निश धर्मसेवारत दानवीर डा० सोनी सचमुच एक निराला व्यक्तित्व है।

गौरवर्ण लम्बा कद ऊची नाक स्नेहमयी आखे विशाल ललाट की तहो मे छिपा अनुभवो का भडार मन्द आवाज धर्म के धनी सत्सगप्रिय विद्वतसेवी मिलनसार क्षमाशील विनम्र निरहकारी उत्साही और सदा प्रसन्नवदन – यह है सोनी जी का प्राणवान और वास्तविक व्यक्तित्व।

असल मे डा० सोनी ६७ वर्ष के युवा है। उनके निकट मुझे उनकी सेवापरायणता परोपकारिता वचनबद्धता और दानवीरता के दर्शन हुए है।

श्री सुखदेवचन्द्र सोनी का जन्म जुलाई २३ १९३४ मे वर्मा (म्यामार) मे श्रीमती सावित्री देवी जी और श्रीमान बरकतराम जी के घर पर हुआ था। आपका परिवार १९२० मे उज्ज्वल भविष्य के हेतु भारत (पजाब) से बर्मा पहुचा था। मध्यमवर्ग का यह परिवार अत्यन्त परिश्रम एव मिलनसार तथा मधुर स्वभाव के कारण अल्पकाल मे बर्मा का एक सफल और लोकप्रिय व्यापारी परिवार बन गया। हीरे मोती रत्न और सुवर्णादि के व्यापार मे इस परिवार का नाम प्रथम पक्ति मे आ गया।

डॉ० सोनी जी के दो भाई और तीन बहने हैं। आपकी शिक्षा रगून मे हुई। १९६२ मे आपने रगून यूनिवर्सिटी से एम०बी०बी०एस० की डिग्री प्राप्त की। १९६३ मे बर्मा के लब्धप्रतिष्ठ डॉक्टर और सुप्रसिद्ध समाजसेवक आर्यनेता डा० ओम्प्रकाश जी एव लब्धप्रतिष्ठ अध्यापिका श्रीमती सत्यभाषिणी जी (जिनके सुखदेव जी छात्र रह चुके थे) की सुपुत्री सरोज जी के साथ सुखदेव जी का विवाह सम्पन्न हुआ। इस विवाह के द्वारा दो आर्य सुपात्रो का एव दो सस्कार सम्पन्न परिवारो का शुभ मिलन हुआ। साहित्य सगीत कला एव आर्यशिक्षा से सम्पन्न सरोज जी एक आदर्श गृहिणी बनी। वैसे सुखदेव चन्द जैसे सुशिक्षित प्रतिभाशाली सस्कार सम्पन्न होनहार और स्वस्थ सुन्दर दामाद पाकर डा० ओम्प्रकाशजी श्रीमती सुभाषिणी जी एव उनका परिवार आदि अत्यधिक प्रसन्न एव सन्तुष्ट थे। सरोज जी की प्रेरणा और समर्पण तथा सुखदेव जी के पुरुषार्थ एव सेवा–भावना ने मिलकर अपने विशाल परिवार के उत्कर्ष का तथा देश धर्म जाति की सेवा का स्वप्न साकार किया है आपने वर्मा से निकले हुए ६० परिवार जनो को तथा कई मित्रो को अमरीका मे सेटल करवाया।

सेवा ओर समर्पण की भावना से ही प्रेरित होकर उत्साही युवक डा० सुखदेव ने नगर के सुखदायक स्थानो को छोडकर (वर्मा मे) चीन और थाइलेण्ड की सरहद पर बसे वन्य प्रदेश के पिछडे गावो मे दलितो और दरिद्रो की सेवा करने का सकल्प किया। हिसक वन्य पशुओ से युक्त क्षत्र मे जान की परवाह किए बगेर आपने वर्षो तक सेवायज्ञ जारी रखा। इस प्रकार 'परोपकाराय सता विभूतय के आदश को आपने चरितार्थ कर दिखाया।

१९६८ मे आपके जीवन का एक नया अध्याय शुरू हुआ। बर्मा की राजनैतिक स्थिति बिगड रही थी। जनतन्त्र खतरे मे था। प्रवासी भारतीयो के लिए सकट के दिन उपस्थित हुए। उस हालात मे डॉ० सोनी पत्नी सरोज और बच्चे चि० शशाक और चि० शुमदा को लेकर अमरीका पहुचे। यहा पहुचने पर सेवा और साहस की भावना से आप अमरीकी सेना मे भर्ती हो गए और शीघ्र ही लेफ्टिनेन्ट कर्नल बन गए। आगे चलकर एक सफल केन्सर विशेषज्ञ के रूप मे आपने अपना व्यवसाय शुरू किया और यहा पर भी चिकित्सा व्यवसाय को सेवायज्ञ बना दिया। अमरीका जैसे अर्थमूलक और भौतिकवादी देश मे रहते हुए भी डॉ० सोनी जी आर्य सस्कृति के एव भारतीय चिकित्सा विज्ञान के प्राचीन और मानवतावादी आदर्श – कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्' को आज सार्थक कर रहे हैं। आप सदा अपने मरीजो को स्वजन समझते है। कई बार दरिद्र और विपन्न मरीज से फीस लेने के बजाए अपनी आर से उसकी सहायता भी कर देते है। दया करुणा और परदुःख भजकता के दर्शन पदे पदे आपके व्यवहार मे दृष्टिगोचर होते है। फिर भी उपकार करने का अहसास कभी भी नहीं होने देते। विनम्रता और निरहकारिता की साक्षात मूर्ति डा० सोनी जी का दानप्रवाह निरन्तर बहता रहता है। आर्य सस्कृति के नाम पर या किसी हिन्दू प्रवृत्ति के नाम छोटा बडा कोई भी उनके पास कभी भी पहुच जाए – खाली हाथ नही लौटता। सरिता बह रही है जो चाहे प्यास बुझा लेवे।

अमरीका हो या भारत कोई भी हिन्दू स... या प्रवृत्ति आपके दान से वचित नही रही हे – चाहे आर्यसमाज हो चाहे बी०एच०पी० हो चाहे आर०एस०एस० हो चाहे गायत्री परिवार हो चाहे भारत सवा समाज हो चाह हिन्दू युनिवर्सिटी यू एस०ए० चाह हिन्दू स्टुडेन्टस काउन्सिल हो चाह हरिओम मन्दिर हो। Little India Foundation USA और Hindu Heritage USA क तो आप स्थापक आधार स्तम्भ है। वैसे शिकागो की कोई भी भारतीय – सामाजिक धार्मिक या सास्कृतिक प्रवृत्ति हो या सगठन हो डा० सोनी जी प्रेरक प्रधान या सरक्षक रहे है फिर भी स्टेज पर सदा पीछे रहना पसन्द करते हैं।

आपकी सरलता और उदारता का लाभ उठाकर कई बार कुपात्र या अयोग्य भी दान ले जाता है। जब मालूम पडेगा तो सोनी जी कह देगे – 'मैने तो शुभभावना से दे दिया है। लेने वाला अपना कर्म भोगेगा। हा आर्यसमाज की किसी भी प्रवृत्ति मे उनकी तथा श्रीमती सरोज जी की असाधारण प्रीति है। ऋषि दयानन्द एव वैदिक धर्म मे अनन्य निष्ठा। गत वर्ष भारत यात्रा पर प्रस्थान करते हुए आप मुझसे कहने लगे – दिलीप जी ! मैं लम्बेकाल बाद भारत जा रहा हू। आज आपने वेदोपदेश मे दान की महिमा का उल्लेख किया है। भारत जानेपर कुछ दान देने की भावना बन रही है। मैं वहा की आर्य सस्थाओ से अधिक परिचित नहीं हू। आप बतावे किसे दान दिया जावे। उनकी इस भावना से मे गदगद हो गया। मैने उन्हे दानयोग्य आर्यसस्थाओ की सूची दे दी। बस दूसरे ही क्षण चैक लिखकर भारत मे भेजने के लिए मेरे हाथ मे थमा दिए। मैने उनसे कहा कि चैक के साथ आप ही अपने लैटर हेड पर अपनी ओर से सबको पत्र भी लिख देवे। उनका सरल सा उत्तर था – दिलीप जी ! मेरे नाम की कोई आवश्यकता नहीं हे आप ही अपने नाम से पत्र लिख देवे। कैसी निष्कामवृत्ति। दाया हाथ देवे तो बाए हाथ को भी मालूम न होवे।

शतहस्त समाहर सहस्रहस्त सकिर के वेदापदश का सोनी जी ने साकार किय ह। शिकागो का विशाल आर्यसमाज मन्दिर आपके उदार दान की साक्षी दे रहा है लाखो डालर मे एक चच खरीदकर आर्यसमाज को अपना मन्दिर और प्रवृत्ति केन्द्र बनाने के लिए सहष अर्पित कर दिया। इसक आप स्थापक प्रधान है। समाज की धार्मिक सास्कृतिक और शक्षणिक प्रवृत्तियो के सुयोग्य सचालन के लिए लब्धप्रतिष्ठ वैदिकविद्वान डॉ० दिलीप वेदालकार को आमन्त्रित किया और उनके समस्त योगक्षेम का दायित्व भी स्वय वहन किया जिससे आर्यसमाज पर कोई बोझ न पडे। आज आर्यसमाज शिकागो डा० सोनी जी के नेतृत्व मे और डा० दिलीप वेदालकार के आचार्यत्व मे उन्नतिपथ पर अग्रसर है।

डॉ० सोनी जी को आर्यसमाज मे दीक्षित करने का श्रेय उनके श्वसुर (स्व०) आर्यरत्न डा० ओमप्रकाश जी को और प्रेरणादाता धर्मपत्नी सरोज जी को है तो उनकी दानप्रवृत्ति के महान प्रेरक उनके स्व० पिता श्री बरकतराम जी थे। डॉ० सोनी जी और सरोज जी दोनो मे लक्ष्मी और सरस्वती का अपूर्व सगम है। दोनो ही सादगी और सरलता की साक्षात मूर्तिया है। लाखो का दान देने वाले अपने लिए मितव्ययी है।

देश धर्म और जाति की सेवा मे अहर्निश तन–मन–धन से सलग्न एसे आदर्श आर्ययुगल पर किसे गौरव नही होगा।

श्री जगदीश आर्य तथा श्री सत्यवीर शास्त्री सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री नियुक्त

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग बैठक दिनाक ६ दिसम्बर २००० मे श्री जगदीश आर्य तथा श्री सत्यवीर शास्त्री को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का उपमन्त्री नियुक्त किया गया है।

श्री सत्यवीर शास्त्री मध्यविदर्भ आर्य प्रतिनिधि सभा क प्रधान है तथा श्री जगदीश आर्य दिल्ली के प्रमुख आर्यनेता तथा आर्यसमाज राजोरी गार्डन दिल्ली के प्रधान हैं। श्री जगदीश आर्य स्व० श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी के दामाद भी है।

– *मन्त्री सभा*

खेद व्यक्त

सार्वदेशिक दिनाक ८ अक्तूबर २००० मे योग का प्रभाव शीर्षक के अन्तर्गत स्वामी धर्मानन्द सरस्वती सदस्य यतिमण्डल का एक सक्षिप्त लेख प्रकाशित हुआ जिसमे स्वामी सत्यपति जी की योग साधना और आध्यात्मिक उच्चता पर प्रश्न चिन्ह सा लगाने का प्रयास किया गया है। इस लेख का प्रकाशन सम्पादक मण्डल की जानकारी के बिना भूलवश हो गया है जिसके लिए और जिसे पढ कर सम्पादक मण्डल स्वय हतप्रद है। इस कार्यालय भूल के लिए सम्पादक मण्डल क्षमाप्रार्थी है।

वैदिक परिप्रेक्ष्य में जय किसान जय जवान

– डॉ० सत्यदेव आजाद

किसान भ ान राष्ट्र क एस ... राष्ट्र ... ह निरन्तर नीद ... विकास निर्भर ... इन्हीं जय होती रहेगी ... की भी जय जयकार रहेगी ये दोनों राष्ट्र के एसे प्रबल पोषक तत्व है जिनके बल ... जनता सुख शान्ति पूर्वक अन्य उत्पादन कार्यों मे जुटी रहती ह। कारखाना ... दुकान हो अथवा अन्य कर्मशाला ... अन्न वस्त्र अथवा सु ... आश्वासन मिलना आवश्यक है। इसके बिना मशीनो का पहिया घूमना बन्द ... सकता है और पहिया घूमता ... उत्पादन भी होता रहेगा। पहिया बन्द हो जाने पर सम्पूर्ण कारखाना बन्द तथा उत्पादन ठप्प। किसान का हल चलता रहेगा तो ... के ढेर लग जाएगे और हल बन्द हो गया तो अन्न भी बन्द अन्न न होने पर तो जीवन ... सकता है। हल के समान ही बन्दूक का भी महत्व है। बाहरी शत्रुओ से रक्षा के लिए हमारे सैनिको की बन्दूक तथा सगीने भी सदव तनी रहनी आवश्यक है बाह्य सु ... की दृष्टि दृढ व्यवस्था के पश्चात ही अन्न वस्त्र तथा अन्न उत्पादक अग कार्यरत रहते है।

वद ... बहुत ही सुन्दर ... किया ... मन्त्र म

अनु स्वधामक्षरन्नापो अरयावधत मध्य आ नाव्यानाम। सध्रीचीनेन मनसातमिन्द्र ओजिष्ठेन हन्मनाहन्नभिद्यूनन।।

ऋ० १.३३.११

आप अस्य जल इसके जल प्रवाह इसके

स्वधाम अनुअक्षरन अन्न के अनुसार खेत मे चलने लगे।

नाव्याना मध्ये आ अवर्धत वृत्र नौकाओं द्वारा प्रवेश करने योग्य नदियो मे मध्य बढ रहा था।

इन्द्र सध्रीचीनेन मनसा इन्द्र ने धैर्यपूर्ण मन से धीरता पूर्व **कात ओजिष्ठेन हन्मना** उस शत्रु को बलवान घातक वज्र से अभि धून अहन कुछ ही दिन म मार डाला।

इस ऋचा का अधिक स्पष्ट करने के लिए थोडी सी व्याख्या की आवश्यकता है। जल प्रवाह खेत म चलने लगे परन्तु अनियन्त्रित तथा अवाच्छित ढग स नही। इसीलिए कहा अन्न के अनुसार। इसका अभिप्राय यह ह कि किसान के कृषि कार्य के लिए जल की आवश्यकता होती है। कितना ही उत्तम बीज बोया जाए तथा खूब हल चलाकर भूमि भी अच्छी प्रकार तैयार कर ली जाए परन्तु समय पर पानी न मिल तो सब पर पानी फिर जाएगा अत प्राथना है कि ... पर वर्षा होती रहे सूखा न पड तथा बाढ भी न आए। अनावृष्टि तथा अतिवृष्टि दोनो ही न हो उतनी ही वर्षा हो जितनी अन्न की भरपूर उपज के लिए ... हो। ... भगवद्गीता म भगवान श्री कृष्ण ने कहा ... पर्जन्यादन्नसभव। ... कृपा होने से अन्न का उत्पादन भरपूर होगा तथा अन्न की बहुतायत से प्रजाजन भी सुखपूर्वक रहेगे। देश म पर्याप्त अन्न ... जय किसान।

वृत्र नौकाओं द्वारा नदियो के बीच बढ रहा था इससे तात्पर्य यह ह कि वृत्रासुर देवताओ का शत्रु ह। वह नदियो के माग स क्षेत्र मे प्रवेश कर रहा था शत्रु नदियो के मार्ग स आया ही करते है। इन्द्र देवताओ के रक्षक है। उन्होने स्थिर मन से धैर्यपूर्वक अपने अमोघ अस्त्र वज्र स उसका सहार कर दिया। ऋचा के इस अश मे जवानो के लिए प्राथना है प्रेरणा है। देश की सीमाओ पर नियत सैनिक दृढतापूर्वक तथा स्थिर मन रहे। धैर्य उनका विशेष गुण होना चाहिए। वे ... सतर्क हुए स्वस्थ चित्त स उत्तम तीक्ष्ण ... से सज्जित रहे और शत्रुओ का शीघ्र ही सहार कर दे। इन्द्र का वज्र जिस प्रकार शत्रुओ के सहार के लिए सदैव उद्यत रहता है उसी प्रकार हमारे सैनिको के आधुनिक आयुध तथा सगीने गालिया आदि रहे। यह हुई जय जवान।

इस प्राथना मे दो प्रमुख बात ह प्रथम किसान की तथा द्वितीय जवान की। किसान हल पर सावधान रहे और जवान बन्दूक पर। किसान के परिश्रम के साथ प्रार्थना है कि देवता समय पर तथा पर्याप्त वर्षा करे परन्तु जवान कह सकता है कि हमारे परिश्रम के साथ स्पष्ट प्रार्थना नहीं ह कवल इन्द्र के उदाहरण क लिए यहा एक ही पर्याप्त है।

अश्याम ते सुमति देव यज्यया क्षयदवीरस्य तव रूद्र मीढव। सुम्नायन्निद विशो अस्माकमा चरारिष्टवीरा जुहवाम ते हवि।

मीढव रूद्र हे सुखदायक रूद्रदेव।

क्षयद्वीरस्य ते वीर को आश्रय देने वाले तेरी।

सुमति अश्याम उत्तम बुद्धि को हम प्राप्त हो।

अस्माक विश हमारी प्रजाओ को

ते देवयज्यया सुम्नायन अपने देवयजन स सुखी हुआ तू।

इत आचर हमारे लिए अनुकूल आचरण कर।

अरिष्टवीरा हमारे वीरो का नाश न हो।

ते हवि जुहवाम हम सब तुम्हारे लिए अन्नादि समर्पित करे।

अर्थात रूद्रदेव हमारे सैनिको की रक्षा करते रहे। भगवान रूद्र ही मृत्यु व देवता है। अत उन्हीं से प्रार्थना की गइ ह कि आप शिव हैं हमारे सैनिको का कल्याण करे। हमारे वीरो को आप आश्रय दे क्योकि आप सम्पूर्ण जगत को आश्रय देने वाले हैं। हमारी बुद्धि भी आप ठीक रख हमे सुख दे तथा हमारे लिए अनुकूल आचरण करे। – *डॉ० सत्यदेव आजाद*

अर्जुनपुरा डीग गेट मथुरा।

वरिष्ट स्वतन्त्रता सेनानी एव आर्य नेता लाला लाजपत राय निझावन का निधन



आर्यसमाज प्रताप नगर के सरक्षक एव पूर्व प्रधान लाला लाजपत राय जी निझावन का निधन ७ जनवरी को हो गया। वे ५२ वर्ष के थे। उनका अन्तिम सस्कार पूर्ण वेदिक रीति से ८ जनवरी को प्रात ११ बजे निगम बोधघाट पर किया गया। अतिम सस्कार म दिल्ली के असख्य आर्यनताओ के अतिरिक्त राजनीतिक नेता भी उपस्थित थ। श्री निझावन की स्मृति मे शोकसभा का आयोजन प्रताप नगर म किया गया जिसम पूर्व शिक्षा मन्त्री श्री कुलानन्द भारतीय दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा महामन्त्री श्री तजपाल मलिक वरिष्ठ मन्त्री श्री विमल वधावन केन्द्रीय सभा के प्रधान डा० शिव कुमार शास्त्री श्री सुरेश बत्रा स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती तथा श्री प्रेम पाल शास्त्री आदि उपस्थित थे।

लाला जी हर प्रकार के सामाजिक और सेवा कार्यो मे सदैव अग्रणी रहते थे ... आर्यसमाजो की बहुत सी सस्थाओ ... दे ... आर्य प्रतिनिधि सभा एव सार्वदेशिक सभा म भी प्रतिनिधि रहे है। काग्रस म रहते हुए भी व सदर जिला काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष थे। लायलपुर के आर्य परिवार म श्री लाजपत राय निझावन का जन्म हुआ। माता पिता महर्षि दयानन्द की शिक्षा तथा शहीद आजम भगत सिह के आन्दोलनो से प्रभावित होकर वे आजादी की लडाई मे कूद पडे। कई बार सत्याग्रह के लिए जेल गये। देश विभाजन के पश्चात विधवा आश्रम आर्य समाज प्रताप नगर आर्य विद्या मन्दिर आदि सस्थाओ की स्थापना की। जिसमे ५०० बच्चो को उत्तम व चरित्र निर्माण की नियमित शिक्षा दी जाती है। उनके पुत्रवत दामाद श्री के०के० सेठी (मन्त्री आर्यसमाज प्रताप नगर) उत्तरी दिल्ली मण्डल व आर्य सस्थाओ के प्रमुख प्रतिनिधि रूप मे लालाजी के पद चिन्हो पर चलते हुए अपना कर्त्तव्य निभा रहे है।

ऋषि बोधोत्सव

प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टकारा मे शिवरात्रि पर भव्य ऋषि बोधोत्सव ऋषि मेला का आयोजन २० २१ २२ फरवरी २००१ को समारोह पूर्वक किया जा रहा है।

इस अवसर पर आर्यसमाज के सन्यासीगण विद्वान एव भजनोपदेशक पधारेगे। ऋषि मेला से एक सप्ताह पूर्व १४ फरवरी २००१ से यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन आचार्य विद्यादेव एव श्री रामदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व मे होगा। विस्तृत कार्यक्रम आपको शीघ्र ही भेजा जा रहा है।

हमारी हार्दिक इच्छा है कि आप उक्त समारोह मे अपनी आर्यसमाज स्त्री आर्यसमाज से अधिक से अधिक सदस्यो के साथ परिवार सहित टकारा पधारने की कृपा करे। यह हमारा सौभाग्य होगा। टकारा मे आप सभी के आवास एव भोजन का प्रबन्ध ट्रस्ट की ओर से होगा।

आपकी सूचना के लिए स्वामी दयानन्द जन्म गृह पर निर्माण कार्य आरम्भ कर दिया है। इसी तरह ट्रस्ट परिसर मे सत्सग हाल एव कुछ कमरो का निर्माण कार्य भी प्रगति पर है।

हमे पूरी आशा है कि टकारा मे मनाये जाने वाले ऋषि बोधोत्सव मे अधिक से अधिक सदस्यो के साथ टकारा अवश्य पधारेगे।

निवेदक ओंकारनाथ मैनेजिंग ट्रस्टी रामनाथ सहगल मन्त्री

समझौता एक्सप्रेस समाप्त करने का सुअवसर



भारत और पाकिस्तान के बीच समझौते का कोई भी प्रयास सफलता की मजिल को दूर से ही नमस्ते कहता हुआ प्रतीत होता है। इसका मौलिक कारण है कि यह प्रयास सदैव ही एकतरफा से रहे। भारतीय पक्ष ने जितनी गम्भीरता से प्रयास शुरू किए पाकिस्तानी पक्ष ने उतना अधिक मजाक उन प्रयासो का बनाया। यही नही उन प्रयासो के दम पर पाकिस्तान ने दोस्ती मे बढे हाथो को तोडने मरोडने का प्रयास भी किया।

प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जब दोस्तो से भरी बस लेकर दोस्ती करने लाहौर पहुचे तो उनके सम्मान मे भी एक मजाक किया गया, सेना के प्रमुख उस सम्मान समारोह का ही बायकाट करते नजर आए। इतना ही नहीं इस दोस्ती के बदले कारगिल मे घुसपैठ कराई गई जो एक भयकर का कारण बनी।

इससे पूर्व, समझौते का एक और प्रयास रेलगाडी चलाकर भी किया गया था। यह रेलगाडी जिसका नाम ही समझोता एक्सप्रेस था कांग्रेस के जमाने से चलती आ रही थी। समझौता एक्सप्रेस भारतीय सीमा मे अमृतसर जिले के अटारी रेलवे स्टेशन से लाहौर तक जाती है। भारत सरकार के पास इस बात के बेशुमार तथ्यात्मक आकडे हैं कि सैकडो बार इस रेल का दुरुपयोग पाकिस्तान के आई०एस०आई गुप्तचरो द्वारा हथियार और जाली नोट भारत मे प्रवेश कराने के लिए किया गया। ऐसे कुछ कारणो के आधार पर भारत सरकार के सामने कई बार राष्ट्रवादी व्यक्तियो और सगठनो ने इस समझौता एक्सप्रेस को समाप्त करने की अपील की। परन्तु ऐसा लगता है कि सरकार अपनी अन्तर्राष्ट्रीय छवि को उदारवादी रूप मे प्रदर्शित करने के व्यामोह मे इसे रद्द करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रही। इस अन्तर्राष्ट्रीय कारण के अतिरिक्त, अन्दरूनी मुस्लिम तुष्टीकरण नीति भी एक प्रमुख कारण हो सकती है।

परन्तु दूसरी तरफ पाकिस्तानी हुकमरानो और तानाशाहो की हिम्मत देखिए कि उन्होने भारत सरकार पर अब यह दबाव डालना शुरू कर दिया है कि समझौता एक्सप्रेस को भारतीय सीमा के अटारी रेलवे स्टेशन पर खत्म करने के बजाए अमृतसर तक ले जाया जाए।

यह स्मरण रखना अत्यन्त आवश्यक है कि अटारी और अमृतसर के बीच लगभग १० १५कि०मी० का ही अन्तर है। अमृतसर रेलवे स्टेशन जहा एक सार्वजनिक रेलवे स्टेशन है और वहा दिन मे बहुत सी रेलगाडियो का आना जाना लगा रहता है। जबकि अटारी रेलवे स्टेशन पर कस्टम आदि के दृष्टिकोण से विशेष चैकिग की सुविधाए स्थापित की गई हैं।

पाकिस्तान अपने यात्रियो की छोटी–सी सुविधा के लिए भारत से आशा करता है कि वे अपनी सुरक्षा व्यवस्था को ताक पर रख दे। भारत की सुरक्षा सस्थाओ ने भारत सरकार को यह चेतावनी दे दी है कि इस रेल को अमृतसर तक लाने की अनुमति कदापि नही दी जानी चाहिए। क्योकि अमृतसर तक आने का अर्थ होगा आई०एस०आई० की बरोकटोक घुसपैठ। अमृतसर रेलवे स्टेशन की लचीली सुरक्षा व्यवस्था का खतरा कई दृष्टिकोणो से होगा।

पाकिस्तानी अधिकारियो की ओर से यह माग जान बूझकर एसे समय पर उठाइ गई हे जब समझौता एक्सप्रस की मियाद समाप्त हो रही है। क्योकि वे भारतीय नेताआ के अन्तर्राष्ट्रीय उदारीकरण की लालसा से सुपरिचित है। उन्होने जान–बूझकर भारत को विकट परिस्थितियो मे डालने वाली शर्त रख दी हे जिससे इस ट्रेन के बन्द होने की धमकी को भारतीय नेता अपनी उस छवि के लिए खतरनाक समझने लगे और इन शर्तो को मानले। इन परिस्थितियो मे भारतीय नेताओ को विशेष रूप से श्री अटल बिहारी वाजपेयी ओर श्री लालकृष्ण आडवाणी को राष्ट्रहित मे कडा रुख अपनाना चाहिए। उन्हे स्मरण रखना चाहिए कि पाकिस्तान के अधिकतर विध्वसक मसूबे इसी रेल के द्वारा अपनी मजिल पर पहुचते है।

अत पाकिस्तान इस रेल को बन्द करवाने की नौबत कभी नही आने देगा। और यदि पाकिस्तान के इस आडियल रवैये से यह रेल बन्द होती हो तो रेल को बन्द करने का इससे अच्छा अवसर कभी नही आएगा।

– वेदव्रत शर्मा

अखबार कैसे पढ़ें ?



जब तक प्रकाशन और मुद्रण का विकास नहीं हुआ था छपाई के लिए मशीन नहीं बनी थी उस काल मे प्रकाशन और प्रचार का रूप पूर्णत व्यक्तिगत था। विद्वतजन अपने विचार पत्तो आदि पर लिखकर उनका सग्रहण किया करते थे और यही सग्रहण गुरु–शिष्य परम्परा के रूप मे या अन्य मेलजोल के द्वारा हस्तातरित होते रहते थे। स्वाभाविक था कि उन पत्तो पर लिखे विचारो के बारे मे लेखक या सम्पादक यह नहीं कह सकता था कि इन विचारो से हमारा सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

प्रकाशन और मुद्रण के आविष्कार के बाद आज यह क्षेत्र अपनी चरम सीमा पर है। मुद्रण के विज्ञान ने जितनी तरक्की की है उस तरक्की का कुछ लाभ विद्वतजन को तो स्वाभाविक रूप से हो रहा है क्योकि उनके विचार एक बार लिखने के बाद मुद्रण के द्वारा हजारो लाखों लोगों तक पहुच जाते हैं।

प्रकाशन और मुद्रण के वैज्ञानिक विकास का उससे भी अधिक लाभ इस माध्यम से लाभ उठाने वाले व्यापारिक प्रवृत्ति के लोगो को हो रहा है। जिन्होने इस मुद्रण के साथ कई पेचीदगियॉ नियमों और कानूनों को जोड दिया है।

पहले हमारे ऋषि मुनि जो विचार प्रकट किया करते थे उन्हे वे ईश्वर की कृपा का फल समझकर निस्वार्थ भावना से अधिक से अधिक जनता को बिना किसी लोभ–लालच या प्रतिफल के बाट दिया करते थे। इसके विपरीत आज के युग मे एक व्यक्ति १०–२० पेज की पुस्तिका भी लिखता है तो उसके प्रथम पृष्ठ पर प्रमुख रूप से कापी राइट की धमकी प्रकाशित करवाता है और उसकी व्याख्या करते हुए स्पष्ट करता है कि इस पुस्तक के किसी अश का प्रयोग या पुनर्मुद्रण करवाना कानूनी जुर्म है।

पहले जहा लेखक या सम्पादक यह ठोक बजा कर दावा करता था कि इन पत्तो पर लिखी सामग्री से मैं सहमत हू। यह विचार मेरी समझ से निकले हैं और इन पर अडिग हू। जब तक उन विचारो को शास्त्रार्थ और तर्क द्वारा परास्त न कर दिया जाए तब तक उसके वे विचार दृढ रहते थे।

परन्तु आधुनिक प्रकाशन युग मे अधिकतर सम्पादक अपनी किसी एक विचार धारा पर अपने अखबारो को नही चलाते। इसी कारण वे इस अवधारणा का सहारा लेते हैं कि उनकी पत्रिका मे छपे लेखो से उनका सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

सार्वदेशिक पत्रिका आज के आधुनिक युग से लगभग अछूती है क्योंकि इसमे तथ्यात्मक सामग्री कम और गुणात्मक सैद्धान्तिक वैदिक पक्ष की सामग्री अधिक होती है।

नवभारत टाइम्स के १६ अक्तूबर के अक मे किसी बौद्ध अनुयायी का एक पत्र छपा " धर्म दीक्षा से जुडे प्रश्न"। इस पत्र मे लेखक ने हिन्दुओं की कुछ पुरानी सामाजिक कमजोरियो को पुन उजागर करते हुए खुली अपील जारी की कि प्रत्येक व्यक्ति को जल्दी से जल्दी हिन्दू धर्म को त्याग कर बौद्ध धर्म अपनाना चाहिए।

इस पत्र को पढने के बाद मैने नवभारत टाइम्स के एक वरिष्ठ अधिकारी से विचार विमर्श किया तो उन्होने स्पष्ट स्वीकार किया कि ये विचार केवल मात्र एक पाठक के है हमारे समाचार पत्र के नहीं।

मेरे द्वारा यह पूछने पर कि आपके समाचार पत्र समूह के क्या विचार है तो उन्होने जवाब दिया कि निश्चित कुछ भी नहीं।

समाचार पत्रो के इस ढाचे को देखकर इतना अनुमान तो लगाया ही जा सकता है कि पहले बेशक कुछ समाचार पत्रो की एक निश्चित विचारधारा हुआ करती थी।

चाहे वह राष्ट्र भक्ति की विचारधारा हो समाज सेवा की विचारधारा हो किसी वाद विशेष की विचार धारा हो या किसी विशेष रूप की आध्यात्मिकता से सबधित हो परन्तु आजकल लगभग सभी समाचार पत्र विचारधारा शून्य हो चुके हैं।

विचारधाराओ के मरने के बाद इन समाचार पत्रो मे प्रकाशन कानून ने एक गुजाइश तो अवश्य बनाकर रखी है जिससे शाति व्यवस्था मे बिगाड न उत्पन्न हो।

नवभारत टाइम्स के उन्हीं बन्धु ने मुझे कहा कि आपको यदि कोई समाचार या लेख अच्छा न लगता हो तो आप अपन विचार भी लिखकर भेजो हम उन्हे भी प्रकाशित कर देगे। यह कानूनी सच्चाइ भी है। अत इस नियम और कानून का लाभ आर्यसमाज को भी उठाना चाहिए।

जब भी आर्यसमाज के प्रबुद्ध जन कार्यकर्ता पदाधिकारी सन्यासी वानप्रस्थी ब्रह्मचारी पुरोहित आदि अखबार पढने बैठे तो अपने साथ सफेद कागज और एक पैन लेकर अखबार को पढना शुरू करे।

जहा कहीं अखबारो मे प्रकाशित सामग्री अच्छी लगे तो उसके अच्छेपन का जोरदार समर्थन वैदिक दृष्टिकोण से करते हुए समाचार पत्र के कार्यालय को पत्र लिखे।

इसी प्रकार जब कोई प्रकाशित सामग्री विरोधाभासी लगे तो उसके विरोध मे सुन्दर तथा शालीन भाषा मे तर्क आदि प्रस्तुत करते हुए १० २० पक्तियो मे पत्र लिखकर सम्बन्धित समाचार पत्र को भेजे।

समाचार पत्रो को पढने और उन पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने का यह तरीका निश्चित रूप से एक–एक आर्य समाजी को लाखो की शक्तिवाला बना सकता है और वैदिक विचारो को सुशुप्त य मृत मानने की कल्पना को निराधार साबित कर सकता है।

एक बार इस उपाय का क्रियान्वयन प्रारम्भ करके देखे आपको अवश्य ही उत्साह और प्रफुल्लता प्राप्त होगी।

– विमल वधावन एडवोकेट

वैदिक शिक्षा-मानव मात्र की परम आवश्यकता

– विश्वभर प्रसाद गुप्त बन्धु

हमे पक्षी की भाति आकाश मे उडना सिखाया जाना है मछली की भाति पानी म तैरना सिखाया जाता है किन्तु मनुष्य की भाति इस धरती पर कैसे रहा जाए यह नही सिखाया जाता। जिसका लक्ष्य मानवता हो एसी शिक्षा हमे नही दी जाती। इस प्रकार आधुनिक शिक्षा पर कटाक्ष किया था विश्व-विख्यात दार्शनिक और शिक्षा-शास्त्री डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने। उन्होने यह भी बताया था कि मनुष्य को मनुष्य बनाने का गुण भारतीय शिक्षा मे ही हे जिसमे मानवता के तत्त्व कूट कूटकर भरे है।।

वैदिक शिक्षा और उसका उद्देश्य

उपर्युक्त कथन मे डा० राधाकृष्णन का स्पष्ट सकेत इस वेद-वाक्य की ओर है जिसमे शिक्षा का मूल उद्देश्य निहित है **मनुर्भव जनया दैव्य जनम** अर्थात मनुष्य बनो और दिव्य समाज का निर्माण करो। वेद का यह आदेश कार्यान्वित करने के लिए ही ऋषियो न हमे भारतीय जीवन-दर्शन दिया है। इसकी शिक्षा ही भारतीय (मानव) सस्कृति का आधार है। धर्म अर्थ काम और मोक्ष य चारा पुरुषार्थ सुचारू रूप से सिद्ध करन के लिए वेदिक शिक्षा म धर्म प्रधान है। अर्थ काम गौण है और मोक्ष इन तीनो की सतोषप्रद सिद्धि की परिणति है। सम्पूर्ण मानव जीवन ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ आर सन्यास नाम के चार आश्रमो मे बाट दिया जाता है। आवासीय विद्यालय या गुरुकुल सतत-चितन-रत मनीषी गुरु छात्रो को चारो आश्रम-जीवन जीने की शिक्षा देते है।

तात्पर्य यह है कि शिक्षा का उद्देश्य है मानव मे मानवता जगाना और समाज मे उन दिव्य गुणो का सचार करना जिससे वह देवताओ का समाज बन जाए। डा० राधाकृष्णन अन्यत्र कहते है वैदिक ऋषि के शब्दो मे देवो भूत्वा देवान आप्येति अर्थात मनुष्य देवता बनकर देवताओ मे मिल सकता है। ये देवता भी और कोइ नहीं श्रेष्ठ दिव्य पुरुष ही है जिनका एक समाज निर्माण करना ही शिक्षा का उद्देश्य है।

वैदिक शिक्षा भारतीय शिक्षा मानवता की शिक्षा

विस्तार मे न आकर यहा इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि श्रेष्ठ पुरुष बनने के लिए जो कुछ भी आवश्यक है उसका परामर्श भी वैदिक मत्रो मे ही मिलता है। चरित्र निर्माण इनमे प्रमुख है। आचार्य अपने शिष्य को सिखाते है सत्य वद धर्म चर ईश्वर स्मर स्वध्यायान्मा प्रमद। शिक्षा का सार तत्त्व इन वाक्यो मे निहित है जो शिक्षित मानव के यशस्वी जीवन के मूल मत्र हे।

इस सम्बन्ध मे यह भी स्पष्ट करना आवश्यक है कि ऋषियो का धर्म आचरण के लिए है वह किसी मत-मतान्तर या सम्प्रदाय का द्योतक नही है। मानव के लिए निर्दिष्ट आचरण अथात मानवता ही मानव का धर्म है। **आचार परमो धर्म** । इस आचरण को धारण करन वाला ही मानव है।

इस शिक्षा का उत्स वैदिक सहिताओ म हे जो भारत के धर्म-ग्रन्थ है। अत वैदिक शिक्षा ही भारतीय शिक्षा है जो मानवता की शिक्षा कही जा सकती हे।

दासता का अभिशाप

भारतीय समाज की ८० प्रतिशत रचना प्राचीन भारतीय सस्कृति और परम्परा के उन सूत्रो से हुइ है जिनमे भारतीय दर्शन का रग चढा है। किन्तु दासता के युग मे शिक्षा और सस्कृति क स्रोत्र पर ही कुठाराघात किया गया। और फिर आग्ल शासन तो और भी एक कदम आग बढकर मेकाले की शिक्षा नीति अपनाकर भारतीयता का ही उन्मूलन करने पर तुल गया।

मेकाले की अग्रजी शिक्षा नीति का विरोध उसी क जमाने मे उसके प्रतिपक्षी हागसन ने यह कहकर किया था कि भारतीयो की सामाजिक व्यवस्था मे दो बात स्पष्ट रूप से प्रमुख हैं। एक तो यह कि आध्यात्मिक साहित्य से इसका अटूट सम्बन्ध हे और दूसरे यह कि भारतीय जीवन के प्रत्येक क्षत्र मे ईश्वरीय प्रेरणा का प्रभाव है और मनुष्य के कार्य-क्षेत्र का कोई भी कोना इनसे अछूता नहीं है। इसलिए भारतीयो को ऐसी शिक्षा देना जिसका धर्म के बिलकुल सम्बन्ध न हो और जिसका सकीर्ण उद्देश्य केवल सरकारी काम के लिए उपयुक्त व्यक्ति तैयार करना हो उनकी सास्कृतिक हत्या करने क समान है। किन्तु अग्रेज शासको ने अपने स्वार्थ के लिए वही शिक्षा-नीति स्वीकारी ताकि भारतीय लोक रग-रूप से हिन्दुस्तानी रहने पर भी मन बुद्धि और विचार से अग्रेज हो जाए – काले अग्रेज जो उन्हीं की हा मे हा मिलाते रहे।

अग्रेजी शिक्षा प्रणाली पर प्रतिक्रिया

काले अग्रेजो की फौज तैयार करने मे लगी हुई ऐसी लूली और सकीर्ण मनोवृत्ति वाली विदेशी शिक्षा की भर्त्सना स्वामी विवकानन्द ने उसी जमाने मे की थी जब अग्रेजी का बीज बोया जा रहा था। उन्हाने कहा था कि उच्च (शिक्षित) वर्ग शारीरिक और नैतिक दृष्टि से मर चुका है। इसलिए आजादी मिलते ही गाधी जी ने कहा एक सस्कृति-अपहारक के रूप मे अग्रेजी को भी हमे उसी तरह निकाल फेकना चाहिए जिस तरह हमने अग्रजो के राजनीतिक शासन को उखाड फेका। उन्होने तो यहा तक कहा कि यदि मेरे पास किसी निरकुश शासक की शक्ति होती तो मै विदेशी भाषा से अपने बच्चो की शिक्षा आज ही बद करा देता।

यह एक ऐसी बुराई है जिसका तत्काल उपचार होना ही चाहिए।

खेद है कि राष्ट्र-पिता की भी सलाह नही मानी गई और आजाद होते हुए भी हमने भारतीय शिक्षा-प्रणाली अपनाने के बजाय राष्ट्र के गले मे फासी की तरह कसी हुई मेकाले की शिक्षा-नीति को ही बरकरार रखा।

विदेशी शिक्षा एक राष्ट्रीय शोक

वर्तमान विदेशी शिक्षा से हमार बालको म हीन भावना भर रही है। वे बचपन से ही अनात्मविश्वासी और अनुकरणशील हो जाते है। महात्मा गाधी के शब्दो मे हमारी बौद्धिक चेतना जीवन से कटकर दूर हो गइ है राष्ट्र के श्रेष्ठ दिमागा का विकास रुक गया है।

जो विरासत हमे अपने बाप दादो से मिली है उसके आधार पर नव निर्माण करने के बजाय उसे भूलना ही हमने सीखा है। इस दुर्गति की मिसाल सारी दुनिया के इतिहास मे नहीं है। यह तो राष्ट्रीय शोक अथवा ट्रैजेडी का विषय है।

परिणाम भी सबके सामने है – भारतीय सस्कृति को विदेशी शिक्षा के राहु ने ग्रस रखा है और उसके समाप्त होने की आशका से भारतीय सविधान की भारतीय आत्मा सिसक रही है। देश का चरित्र गिर रहा है पश्चिम गढे मे और राष्ट्र का दम घुट रहा है उसके गले मे पडे अग्रेजी के फदे से। यहा प्रसिद्ध विचारक एच० जी० वेल्स के विचार भी उल्लेखनीय है – इतिहास हमेशा शिक्षा और महाविपत्ति के दो विकल्प हमारे सामने रखता है। ऐसी शिक्षा के लिए जो महाविपत्ति से बचाती है कोई पाठय क्रम पर्याप्त नहीं होता। उसके लिए तो प्रवृत्ति जागृत होनी (या करनी) चाहिए। केवल वृत्ति परक शिक्षा से काम नहीं चलता। बिका कौशल सिखाने की तो बात ही आत्म-घाती है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य तो इसान को इसान बनाना है।

अग्रेजी का शिकजा

आज के विश्वविद्यालयो के भवन तो ऊचे हो रहे हैं किन्तु उनमे पढनेवालो के दिमाग सिकुड रहे है। हमारे युवक एक शोषणमूलक भाषा अग्रेजी के शिकजे मे बुरी तरह कसे है। उन पर ससार की सार्वाधिक अवैज्ञानिक अबुद्धिसगत अनाकर्षक दुरूह और दुराग्रही भाषा निर्दयतापूर्वक लाद दी जाती है जिसके बोझा से वे कराहते है। अपनी सस्कृति और परम्पराओ की डोर से कटी हुई पतग की भाति वे शून्य मे लक्ष्यहीन निरुद्देश्य भटकते रहते है। वे कुर्सी के बाबू (किवा बबून-नकलची बदर) बनकर हाथ से काम करने से कतराते हुए बिलकुल निकम्मे हो जाते हैं और बेकारो की सख्या बढाते हैं।

अपनी भाषा ही सर्वाधिक उपयुक्त होती है

सन १९३३ के भौतिकी के नोबेल-पुरस्कार विजेता इरविन स्काडिजर महोदय कहते थे कि भाषा सम्बन्धी कठिनाइयो की उपेक्षा नहीं की जा सकती। अपनी भाषा सर्वथा फिट बैठनेवाली पोषाक की तरह है। यदि किसी को वह तुरन्त उपलब्ध न हो ओर उसके बजाय दूसरी पहन पडे तो पहननेवाला कभी आराम नही पा सकता। इसी के साथ हमे याद आता है डॉ० राधाकृष्णन का कथन कि भौतिक सुख पाने के लिए आज भीतरी चरित्र की बलि चढा दी गई है। असली शिक्षा वह है जो सम्पूर्ण मानव तैयार करे। ऐसी शिक्षा की जडे भारत की पुरानी परिपाटी मे है। गाधी जी ने भी आजादी मिलते ही सस्कृति-अपहारक विदेशी भाषा अग्रेजी को अविलम्ब निकाल फेकने की सलाह दी थी।

किन्तु खेद है कि हम अग्रेजी को अभी तक उसी तरह चिपकाए हैं जैसे बदरिया अपने मरे बच्चे को छाती से चिपकाए फिरती है। भाषायी गुलामी के इस पटटे से भारत के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान को अपार क्षति पहुची है और अब तो उसकी पहचान ही खोने का खतरा है।

क्रमश

नारी का स्थान - वेद एवं दर्शनों की दृष्टि में

– स्व० आचार्य डॉ० प्रज्ञा देवी जी

पुरुष एव स्त्री मे कुछ नैसर्गिक भेद होते हुए भी अध्ययन अध्यापन तथा सामाजिक सम्मान की दृष्टि से पुरुष एव नारी दोनो समान रूप से श्रेष्ठता–उच्चता को प्राप्त होते है कही से कोई हीन नहीं ऐसा वेद ने स्पष्ट शब्दो मे अनेकत्र प्रतिपादित किया है। ऋग्वेद के दशम मण्डल मे पुत्र एव पुत्री को समान स्थान देते हुए कहा हे कि –

पिता यत् स्वा दुहितरम् अधिष्कन् क्ष्मया रेत सजग्मानो निषिञ्चत्।

स्वाध्योऽजनयन् ब्रह्म देवा वास्तोष्पतिं व्रतपा निरतक्षन् ।।

(ऋ० १० ।६१ ।७)

अर्थात – जो पिता **क्ष्मया**= धरित्री मा=उत्पादनशीला स्त्री मे बीज का वपन करके **स्वा दुहितरम् अधिष्कन्**=अपनी कन्या का प्राप्त करता है उसके लिए उत्तम ज्ञानी ध्यानी दूरदर्शी लोग यह ज्ञान प्रकट करते हैं कि उस कन्या को पिता **वास्तोष्पति व्रतपा निरतक्षन्**=पितृकर्म की रक्षिका गृह की स्वामिनी=भूषिका माने।

वेद के शब्दो मे यहा तात्पर्य यह निकला कि पुत्र और पुत्री मे कोई भेद न मानते हुए जिस प्रकार पुत्र पितृकर्म का रक्षक एव कुल का गौरव है उसी प्रकार पुत्री भी है। इससे अगले मन्त्र –

स ईं वृषा न फेनमस्यदाजौस्मदा परदैप दभ्रचेता । सरत् पदा न दक्षिणा परावृङ् न ता नु मे पृशन्यो जगृभ्रे।।

(ऋ० १० ।६१ ।८ ।)

इसमे भी नारी जाति के सम्मान विषय को लेकर यही कहा गया कि जिस पुरुष से वह कन्या विवाहित हो वह पुरुष **दक्षिणा पदा न सरत् परावृक्** = दक्षिणा=दी हुई कन्या=अपनी वधू को पैर से न ठुकराये अर्थात उसका अपमान कभी न करे एव अल्प मन वाला बन कर उस स्त्री के पिता द्वारा प्राप्त धन का कभी लालच न करे। वस्तुत नारी के उत्कर्ष की महिमा का वर्णन वेद मे पढ कर मन भर आता है कि किस प्रकार क्रूरकर्मी स्वार्थी जाल्म लोगो ने तथाकथित अपने धर्मशास्त्रो मे अन्यायपूर्ण नीच व्यवस्थायें (सती प्रथा आदि) नारी के लिए दी है। मध्यकाल मे पुरुष प्रधान समाज ने नारी को एक खिलौना बना कर रख दिया और उनके इस अहम भाव ने समाज को रसातल मे पहुचा दिया।

नारी जाति को वेदध्ययन से वञ्चित करने की जिस काल मे स्वार्थान्धो द्वारा बात कहीं जाने लगी उसी काल मे कर्मकाण्ड मे यजमान पत्नी द्वारा वेदमन्त्रो के उच्चारण कराने की बात भी कहीं गई है। यथा आश्वलायन श्रौतसूत्र मे कहा – **वेद पत्न्यै प्रदाय वाचयेद् होता अध्वर्युर्वा वेदोऽसि वित्तिरसि विदेय कर्मासि (१११)**

यह वेद का पाठ किसी के द्वारा वेदाध्ययन करने पर ही सम्भव है इसके बिना नहीं। इसलिए महर्षि जैमिनि ने कहा –

ज्ञाते च वाचनं न ह्यविद्वान् विहितोऽस्ति

(मी० द० ३ ।८ ।८)

अर्थात वेद के जानने वाले से ही मन्त्र बुलवाया जा सकता है अविद्वान व्यक्ति से नहीं। स्पष्ट है कि वेदाध्ययन की हुई यजमान पत्नी ही मन्त्रों का उच्चारण कर्मकाण्ड के समय कर पायेगी। वेदाध्ययन न करने से बेचारी स्त्रिया जब शूद्रा सदृश हो गईं तो इन पाखण्डी धर्माधिकारियो ने यह भी कह डाला कि –

कथञ्च स्त्री नाम समाया साध्वी स्यात (महा० ४ ।१ ।१५) कि किस प्रकार स्त्री किसी सभा म बठने योग्य हो सकती है ? यहा इन धर्माधिकारियो को अपना इतिहास भी भूल गया कि याज्ञवल्क्य का ब्रह्मवादिनी गार्गी के साथ शास्त्रार्थ सभा मे ही बैठकर ही हुआ था तथा मण्डन मिश्र एव शकराचाय के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ मे मण्डन मिश्र की पत्नी भारती देवी ने शास्त्रार्थ की मध्यस्थता सभा मे बेठ कर ही की होगी।

जहा तक छहो दर्शनो मे केवल स्त्री विषयक व्यवस्था का प्रश्न हे वह पूर्वमीमासा को छोडकर अन्यत्र दर्शनो मे उपलब्ध नही है क्योकि अन्य दर्शनो का विषय मोक्ष=अपवर्ग योग सृष्टिगत पदार्थ विद्या का निरूपण आदि ही है। यत मीमासा दर्शन का विषय कर्मकाण्ड है अत यज्ञ यागादि मे स्त्री के अधिकार अनाधिकार विषय को लेकर यह प्रसग उठता है। मीमासा दरर्शन के छठे अध्याय के प्रथम पाद मे तृतीय अधिकरण से छठे लेकर अधिकरण पर्यन्त याग मे पुरुषो के समान स्त्री के अधिकार भी हैं या नहीं इस बात पर प्रबल पूर्वपक्षो के साथ विचार किया गया है जिसमे तृतीय अधिकरण – **'क्रतुषु स्त्रिया अप्याधिकाराधिकरणम्' के उत्तरपक्ष में 'जातिं तु बादरायणोऽविशेषात् तस्मात् स्त्र्यपि प्रतीयेत जात्यर्थस्याविशिष्टत्वात्**

(मी० द० ६ ।१ ।३–८)

सूत्र मे बताया गया कि स्वर्ग की इच्छा सामान्य रूप से स्त्री–पुरुष दोनो को है अत जिस प्रकार स्वर्गकामो यजेत वचन से पुरुष को यज्ञ का आधिकार है उसी प्रकार स्त्री भी यज्ञ कर्म मे अधिकृत मानी जानी चाहिए क्योकि स्वर्गकामो यजेत इस वचन मे जाति (पुरुष या स्त्री) गत अर्थ सामान्य है। इस प्रकार जब यज्ञ मे पुरुष एव स्त्री को मान अधिकार है तो दोनो को वेदाध्ययन एव यज्ञोपवीत सस्कार भी स्वत सिद्ध हो ही जाता है।

महाभारत के पश्चात नारी जाति की शिक्षा दीक्षा के अभाव मे अतिदीन स्थिति हो चुकी थी अत समाज मे उनका दान विक्रम अतिसर्ग (परित्याग) भी होने लगा था। एक क्रीत दास के समान उन पर पुरुष का अधिकार समझना जाने लगा था अत जिस प्रकार क्रीत दास का अपना कोई धन नही होता उसी प्रकार स्त्री का भी अपना कोई धन नहीं होता क्योकि वह पुरुष की क्रीता है ऐसा माना जाने लगा' अत इसी अधिकरण मे इसी प्रकार पूर्वपक्ष रख कर यह कहा गया कि जहा (पिता के यहा) से वह बेची गई और जिसने (पति ने) उसे खरदी उन दोनो का ही धन स्त्री का अपना धन नहीं। धन के अभाव मे वह कैसे यज्ञ सम्पन्न कर सकेगी ? इसलिए स्त्री जाति का (अपना धन न हो सकने के कारण) यज्ञ मे उसका कोई अधिकार नहीं। इस पूर्वपक्ष का जैमिनि महर्षि बडी दृढता से उत्तर देते हुए कहते हैं –

फलोत्साह विशेषात तु। अर्थेन च समवेतत्वात्।।

मी० द० ६ ।१ ।१३ १४ ।।

अर्थात् फल के प्रति उत्साहित होने के कारण स्त्री निधना कभी नही होती। स्त्री धन स सयुक्त होती ह उसको निधन कहना अन्याय ह क्योकि कन्या दान के समय धम अथ आर काम की सिद्धि हतु इसका ग्रहण होता ह इसका परित्याग कदापि नहीं करना चाहिए ऐसा कहा जाता है अत यह क्रीतदास के समान कदापि नही हो सकती। पुन इसी अधिकरण म –

स्ववत्तामपि दर्शयति (मी० द० ६ ।१ ।१६) कहकर जेमिनि महर्षि ने गृहस्थ धर्म मे स्त्री पुरुष के समान ही धन की स्वामिनी हे अत यज्ञ मे उसे पूर्ण अधिकार हे ऐसा बता कर यह डक की चाट सिद्ध कर दिया कि स्त्री के लिए दान विक्रम ओर अतिसर्ग वाली बाते अति नीच ओर कदर्म लोगो द्वारा उस युग मे कहीं गई है।

इस अध्याय मे चतुर्थ अधिकरण मे खुलकर यह बात प्रतिपादित की गई कि यज्ञ याग मे पति पत्नी का पूर्ण अधिकार है। इस अधिकरण मे सूत्र एव शबर स्वामी का भाष्य यहा देखते ही बनता है जहा कहा है –

अवश्य च सह पत्न्या यष्टव्यम्। मध्यग हीद दम्पत्योर्धनम्। तत्र यागोऽवश्य सह पत्न्या कर्त्तव्य । इतरथाऽन्यतरानिच्छाया त्याग एव न सवर्त्तेत।।

(मी०द० शा भाष्य ६ ।७ ।१७ ।

यहा अवश्य ही अपनी पत्नी के साथ यजमान को यज्ञ करना चाहिए इस बात को इसी सूत्र पर मीमासक श्री कुमारिल भटट ने **अवश्यम् च सह पत्न्या यष्टव्यम् इत्यादिस्तुअयुक्तो ग्रन्थ।।** (द्र० टुप टीका पृ० १३६३) यह कह कर पत्नी के साथ याग करने को गलत बताया है। अर्थात कुमाटिल भटट यहा यह कह रहे है कि स्त्री को याग करने का अधिकार भले ही जैमिनि या शबर स्वामी ने दे दिया हो पर वस्तुत उसे अधिकार नहीं है। वाहरी अहवादिता! कुमारिल भटट जैसे दिग्गज पण्डित भी यहा मध्यकालीन सकुचित स्वार्थी परम्पराओ से घिरे हुए हैं यह बहुत ही आश्चर्य का विषय है। इससे भी अधिक आश्चर्य आगे चल कर छठे अधिकरण के **'तस्या यावदुक्तम् आशीर्ब्रह्मचर्यमतुल्यत्वात्** (मी० द० ६ ।१ ।२४) सूत्र के शाबर भाष्य एव कुमाटिल भटट की टुप टीका को देखने पर होता है जहा सूत्रगत **'अतुल्यत्वात्'** शब्द को देख कर शबर स्वामी ने भी यह लिख डाला कि – **यजमान पुमान् विद्वाश्च पत्नी स्त्री चाविद्या च यानि क्रत्वर्थानि तन्मत्रकाणि तेष्वविधित्वात पत्नी न स्यात् ।**

अर्थात पत्नी=स्त्री विद्या से रहित होती है अत वह पुरुष के तुल्य नहीं हो सकती। यज्ञ मे जो सम्क्रम कर्म है वह विद्यारहित होने से पत्नी नहीं कर सकती। कैसी अन्धेर की बात हैकि कर्मकाण्ड मे जहा बार बार **'इम मन्त्र पत्नी पठेत्'** कहा जाता है वहा मीमासा भाष्यकार आखे मूद कर यह कह रहे है कि समन्यक कर्म पत्नी नहीं कर सकती॥ इसके आगे शबर स्वामी और भी लिखते है – **तस्मात् प्रतिषिद्धस्य पत्न्या अध्ययनस्य पुन प्रसवे न भिञ्चदस्ति प्रमाणम्।**

शेष भाग पृष्ठ ८

वैदिक धर्म मे आरोग्य का स्थान

वेदों में स्वस्थ जीवन के मौलिक सूत्र

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

मानव जीवन का लक्ष्य हे पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति। धर्म अर्थ काम और मोक्ष रूपी चतुर्विध पुरुषाथ की प्राप्ति मे आरोग्य की महत्वपूर्ण भूमिका है। कहा भी है –

धर्मार्थकाममोक्षाणाम आरोग्य मूलमुत्तमम।।

महाकवि कालिदास ने शिव–पार्वती सवाद मे एक महत्त्वपूर्ण उक्ति लिखी है – **शरीरमाघ खलु धर्मसाधनम** शरीर ही धर्म की साधना का प्रमुख साधन है। यह तो सत्य है कि मानव शरीर पाञ्चभौतिक होने के कारण नश्वर है अन्तत नष्ट होने वाला है तथापि वह ऐसी क्षुद्र वस्तु भी नहीं है जिसकी सदा उपेक्षा की जायेगी। जब कबीर ने मानव शरीर को पानी का बुदबुदा बताया तो उनका भाव यही था कि सीमित कालावधि के लिए जन्म लेने वाले मनुष्य के लिए उचित है कि वह यथाशीघ्र परमात्मा को पहचाने तथा श्रेयमाग का पथिक बने।

चारा वेद सहिताओ मे मानव को स्वस्थ तथा नीरोग रहने की बार बार प्रेरणा दी गई हे। वस्तुत वेद मानव के हित की विद्याओ तथा विज्ञानो का भण्डार है अत उसमे यदि शरीर की उन्नति तथा आरोग्य के उपायो का वर्णन मिले तो इसमे आश्चर्य ही क्या ? भगवान मनु के अनुसार वद पितर देव तथा मनुष्यो के मार्गदर्शन के लिए सनातन चक्षुओ के तुल्य है जिनके द्वारा लोग अपने हित और अहित को पहचान कर कर्त्तव्याकर्त्तव्य का निर्धारण कर सकते हैं। वेदो मे जहा भौतिक एव लोकिक विषयो की विवेचना मिलती हे वहा दार्शनिक तथा आध्यात्मिक प्रश्नो का समाधान भी मिलता है। मानव स्वास्थ्य के लिए उपयोगी शरीर विज्ञान तथा स्वास्थ्य रक्षा का विशद निरूपण इस वाडमय मे उपलब्ध है। वेदो की दृष्टि मे यह शरीर न तो हेय है और न तिरस्कार के योग्य। भारत के इतिहास मे एक ऐसा युग भी आया था जब हमारे चिन्तको और दार्शनिको ने स्थूल शरीर की सर्वथा उपेक्षा ही नही की अपितु देहदण्डन तथा शरीर की पीडा देना ही तप का पर्याय मान लिया। वेद की दृष्टि इसके विपरीत है। अथर्ववेद तो शरीर को अयोध्यापुरी से उपमित करता है –

अष्टाचक्रा नवद्वारा देवाना पुरयोध्या।
तस्या हिरण्यय कोश स्वर्गो ज्योतिषावृत ।।

(अथर्ववेद १०।२। ३१)

आठ चक्रो (मूलाधार आदि योगकथित) तथा नौ इन्द्रियो रूपी तारो वाली यह देवनगरी अयोध्या है जिस पर विजय पाना कठिन है।

वेदो मे मनुष्य के लिए दीर्घायु की कामना की गई जो शरीर को नीरोग रखने से ही सम्भव है। आयुर्यज्ञेन कल्पता प्राणो यज्ञेन कल्पता चक्षुर्यज्ञेन कल्पता श्रोत्र यज्ञेन कल्पताम (यजु० ६।२१) आदि मन्त्रो मे मनुष्य के दीर्घायु होने तथा स्वजीवन को लोकहित (यज्ञ) मे लगाने की बात कही गई है। यह तभी सम्भव है जब उसकी चक्षु तथा श्रोत्र आदि इन्द्रिया तथा पञ्च प्राण पूर्ण स्वस्थ व बल युक्त रहे। वेदो मे ज्ञानेन्द्रियो और कर्मेन्द्रियो को बलिष्ठ स्वस्थ तथा यशस्वी बनाने के लिए कहा गया हे। प्राणश्च मेऽपानश्च मे (यजु० १८। २७) मे प्राण अपान तथा व्यानादि को स्वस्थ रखने के साथ–साथ चक्षु मन नेत्र तथा श्रोत्र आदि को भी बलयुक्त रखने की बात कही गइ है। सन्ध्योपासना के अन्तर्गत उपस्थान मन्त्र मे स्पष्ट कहा है कि मनुष्य को चाहिए उसके नेत्र कान तथा वाणी इतने बलशाली हो जिससे वह सौ वर्ष पर्यन्त पदार्थो को देखता रहे शब्दो को सुनता रहे वचनो को बोलता रहे तथा स्वस्थ एव सदाचार युक्त जीवन जीता रहे। कवल सौ वष पर्यन्त ही नही इससे भी अधिक भूयश्च शरद शतात। वैदिक उक्ति मे शरीर को पत्थर की भाति सुदृढ बनाने की बात कही गई है –

अश्मा भवतु ते तनू ।

आरोग्य लाभ के विविध साधनो तथा उपायो की चर्चा भी वेदो मे आइ है। उषाकाल मे सूर्योदय से पूर्व शय्या त्याग को स्वास्थ्य के लिए अतीव उपयोगी बताया गया है। इसलिए वेदो मे उषा को दिव्य ज्योति प्रदान करने वाली तथा सत्कर्मों मे प्रेरित करने वाली देवी के रूप मे चित्रित किया गया है। जब प्रात काल मे सन्ध्या के लिए बैठते है जो हम उपस्थान मन्त्रो का उच्चारण करते हैं। उसी समय हमे पूर्व दिशा मे भगवान भास्कर उदय होते दिखाई देते है। इस पवित्र तथा स्फूर्तिदायिनी वेला मे साधक एक ओर तो आकाश मे उदय होने वाले प्रचण्ड मार्तण्ड को देखता है दूसरी ओर वह अपने हृदयाकाश मे प्रकाश युक्त परमात्मा के दिव्यालोक का अनुभव कर कह उठता है –

उद्वय तमसस्परि स्व पश्यन्त उत्तरम।
देव देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम।।

(यजु० २०।२१)

अन्धकार का निवारण करने वाला यह ज्योतिष्पुञ्ज सूर्य प्राची दिशा मे उदय हुआ है वहीं देवो का देव परमात्मा रूपी सूर्य मेरे मानस क्षितिज पर उदय हुआ है और उससे निस्सृत ज्ञानरश्मियो की ऊष्मा को मै अन्त करण मे अनुभव कर रहा हू।

यो जागार तमृच कामयन्ते। (ऋग्वेद ५।४५।१४) ऋग्वेद की इस ऋचा मे स्पष्ट कहा गया है जो जागता है जल्दी उठ कर प्रभु को स्मरण करता है ऋचाए उसकी कामना पूरी करती है। सामादि अन्य वेदो का ज्ञान भी उषाकाल मे उठकर स्वाध्याय मे प्रवृत्त होन वाले व्यक्ति के लिए ही सुलभ होता हे। आलसी प्रमादी दीर्घसूत्री तथा देर तक साते रहने वाले लोग सौभाग्य और आरोग्य से वञ्चित रहते हैं। जल्दी उठकर वायु सेवन के लिए भ्रमण करना चाहिए। इस सम्बन्ध मे वद का कहना है कि पर्वतो की उपत्यकाओ म तथा नदियो के सगम स्थल पर प्रकृति की छटा अवर्णनीय होती है। यहा विचरण करने वाले लोग अपनी बुद्धियो का विकास करते है –

उपहरे गिरीणा सगमे च नदीनाम।
धिया अविप्रो अजायत।। (ऋग्वेद ८।६।२८)

शरीर को स्वस्थ और नीरोग रखने के लिए शुद्ध पुष्टिदायक रोगनाशक अन्न तथा जल का सेवन आवश्यक है। जल के बारे मे वेद कहते है –

आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन।
महे रणाय चक्षसे।। *(यजु० ११। ५०)*

जल हमे सुख प्रदान करने वाला तथा ऊर्जा प्रदान करने वाला हो।

अन्न विषयक अनेक मन्त्र वेदो मे आये है। जिन पुष्टिकारक अन्नो का हम सेवन करे उनकी गणना निम्न मन्त्र मे की गई है –

व्रीहयश्च से यवाश्च मे माषाश्च से तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे
गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पताम्।।

(यजु० १८। १२)

भोजन मे गाय के दूध का सेवन अत्यन्त आवश्यक है। वेदो मे गोमहिमा के अनेक मन्त्र आये है। गाय की महत्ता का वर्णन करते हुए उसे रुद्रसज्ञक ब्रह्मचारियो की माता वसुसज्ञको की दुहिता तथा आदित्यसज्ञक तेजस्वी पुरुषो की बहिन कहा गया है।

माता रुद्राणा दुहिता वसूना स्वसादित्यानाममृतस्य नाभि ।।

(ऋग्वेद ८। १०१। १)

अथर्ववेद निम्न मन्त्र में गायो को सम्बोधन कर कहा गया है कि आप कृश तथा दुर्बल व्यक्ति को पुष्ट और स्वस्थ बना देती हो। उसके शरीर की सौन्दर्यवृद्धि का कारण आपका दूध ही है। **यूय गावो'** आदि (अथर्व मन्त्र) अन्न के विषय में वेद में कतिपय आवश्यक निर्देश मिलते हैं। प्रथम तो यह कहा गया है कि अन्नपति परमात्मा ही है। वही हमे रोगरहित तथा बलवर्द्धक अन्न प्रदान करता है। वह इतना उदार तथा समदर्शी है कि दो पैर वाले मनुष्यो तथा चौपाये जानवरो सभी प्राणियो को अन्न प्रदान करता है –

अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिण ।
प्र प्र दातार तारिष ऊर्ज नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

(यजु० ११।८३)

भोजन के बारे में एक अन्य प्रसिद्ध मन्त्र निम्न है –

मोघमन्न विन्दते अप्रचेता सत्य ब्रवीमि वध इत्स तस्य।
नार्यमण पुष्यति नो सखाय केवलाघो भवति केवलादी।।

(ऋग्वेद १०। ११७। ६)

अकेला खाने वाला अन्यो को भोजनादि से वञ्चित रखने वाला वास्तव मे पाप ही खाता है। जो स्वार्थी व्यक्ति न तो राजा को ही पोषित करता है और न अपने मित्रो को। जो स्वार्थी व्यक्ति न तो राजा को ही पोषित करता है और न अपने मित्रो को ऐसा अकेला खाने वाला अन्यो को भोजनादि से वञ्चित रखने वाला पापपूर्ण अन्न को खाता है। भगवान कृष्ण ने वेद की इसी उक्ति की पुष्टि निम्न प्रकार से की –

यज्ञशिष्टाशिन सन्तो मुच्यन्ते सर्व किल्बिषै ।
भुञ्जते ते त्वघ पापा ये पचन्त्यात्मकारणात।।

(३।१३)

जो पापी अपने लिए ही पकाते हैं वे वस्तुत पाप ही खाते हैं। आहार और अन्न की शुद्धता के अनेक निर्देश वेदाश्रित उपनिषदादि ग्रन्थो मे भी मिलते है जहा कहा गया है।

आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धि सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृति ।

सात्त्विक आहार ग्रहण करने से मन की शुद्धि होती है और मन के शुद्ध होने पर अविचलित स्मृति प्राप्त होती है। उपनिषदो मे ही अन्न की निन्दा न करने का उपदेश दिया गया है – **अन्न न निन्द्यात तद् व्रतम।** भोजनपान आदि को भाति शान्त और स्थिर निद्रा भी आरोग्य के लिए आवश्यक मानी गई है। ऋग्वेदीय रात्रिसूक्त (१०।१२७) को देखे। रात्रि मे उचित समय पर सोना स्वास्थ्य के लिए जरूरी है। वेद मे रात को द्युलोक की पुत्री कहा हे। यह रात्रि वस्तुत उषाकाल मे बदल कर अन्धकार का विनाश करती है – **ज्योतिषा बाधते तम ।** *(ऋग्वेद १०। १२७।२)*

मनुष्य का नीरोग और स्वस्थ रहना केवल शरीर–रक्षण से ही सम्भव नही है। इसी अभिप्राय से उपनिषत पञ्चकोशो का उल्लेख करते है जिनमे अन्नमय कोश प्राणामय कोश तथा मनोमय कोश के बाद ही विज्ञानमय कोश तथा आनन्दमय कोश की चर्चा हुई है। स्वस्थ प्राणशक्ति आरोग्य का प्रमुख कारण बनती है। वेदो ने तो प्राणो को परमात्मा का ही वाचक माना है – **प्राणाय नमो यस्य सर्वमिद वशे।** *(अथर्व० ११।४।१)*

इसी अभिप्राय को भगवान बादरायण ने अपने सूत्र अतएव प्राण मे कहा है। प्राण नाम से परमात्मा ही कथित हुए हैं।

आरोग्य का एक महत्त्वपूर्ण साधन है ब्रह्मचर्य। ब्रह्मचय पालन की महिमा के लिए अथर्ववेद का ब्रह्मचर्य सूक्त द्रष्टव्य है। यहा स्पष्ट कहा गया है कि ब्रह्मचर्य रूपी तप के द्वारा विद्वान देवगण मृत्यु पर भी विजय पा लेते हैं –

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत।

(अथर्व० ११।५।१९)

अथर्ववेद मे रोगो रोग के कारणो उसके निवारण के उपायो रोगनाशक औषधियो एव वनस्पतियो तथा रोग दूर करने वाले वैद्यो (भिषक) आदि की विस्तृत चर्चा मिलती है। ये सभी प्रकरण शारीरिक स्वास्थ्य से ही सम्बद्ध हैं। मनोवैज्ञानिक चिकित्सा के सकेत भी वेदो मे मिलते हैं। यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवम् (यजु० ३४।१–६) आदि मन्त्र मन की दिव्य शक्तियो का उल्लेख कर उसे शिवसकल्प वाला बनाने की बात करते हैं। स्पर्शपूर्वक रोग निवारण के सकेत भी अथर्ववेद के अय मे हस्तो भगवानय मे भगवत्तर । (अथर्व ४।१३।६) आदि मन्त्रों में मिलते हैं जिसमे सहानुभूति प्रवण वैद्य का कोमल स्पर्श रोगी के लिए औषधि का काम करता है।

– नन्दनवन , जोधपुर

सकारात्मक चित्रण या दृश्यीकरण

– मुकुल चौधरी

जब हमे भूतकाल की किसी घटना से गहरा धक्का पहुचता है तो हमारी क्या स्थिति होती है ? वह घटना बार–बार एक फिल्म की भाति हमारे भीतर चलती रहती है। एक–एक डायलॉग जिसने हमे चोट पहुचाई उसकी वास्तविक आवाज तक हम उस दृश्य मे सुन लेने मे सक्षम होते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि हमारे भीतर यह योग्यता है कि हम किसी भी घटना को मन ही मन फिल्माकित कर सकते हैं। जब युवक या युवती का विवाह होने वाला होता है तो वह भविष्य की सुखद कल्पनाये करते हैं और कभी कभी तो कल्पनाये इतनी अधिक सजीव हो उठती हैं कि सारी जैविक क्रियाये घटित हो जाती है। किन्तु यह सब कल्पनाये हम जानबूझ कर नही कर रहे होते अपितु अपने आप ही हो रही होती है।

सकारात्मक चित्रण से हम अभी कल्पनाशक्ति का उपयोग जानबूझकर करते हैं। यदि हमें पानी का एक गिलास भी चाहिए तो पहले हमे मस्तिष्क मे कल्पना करते हैं कि मैं उठा मैने पानी का एक गिलास उठाया और पानी पीना प्रारम्भ कर दिया। यदि हमे किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति से मिलना होता है जैसे कि किसी बडे अधिकारी से या जब विवाह के लिए लडका लडकी एक दूसरे को देखने जाते है तो पहले पूरा सवाद पूरा चित्र पूरी फिल्म मस्तिष्क मे दौड जाती है। पहले मै यह कहूगा वह यह जवाब देगा मैं फिर यह कहूगा फिर वह यह जवाब देगा इत्यादि। और फिर जब मीटिंग होती है तो लगभग वैसा ही घटनाक्रम घटता है जैसी कि हमने कल्पना की थी।

अपनी इसी छुपी हुई शक्ति कल्पना की शक्ति का उपयोग हम सकारात्मक दृश्यीकरण के द्वारा अपने जीवन की अनेक परिस्थितियो मे कर सकते हैं।

जब हम नींद मे स्वप्न देख रहे होते हैं तो भी हमारी कल्पनाशक्ति कार्य कर रही होती है। आइये देखे कि उस समय क्या हो रहा होता है ?

पहली बात तो यह है कि स्वप्न मे समय का कोई महत्व नहीं होता। हो सकता है कि हम अपने बचपन मे पहुच जाए हो सकता है भविष्य मे और हो सकता है कि पूर्व जन्म में। हो सकता है कि हम स्वप्न मे १५ मिनट मे पूरे जीवन की झाँकी देख लें। हम घुटनो के बल चलते–चलते बडे हो गए स्कूल जाने लगे कॉलेज जाने लगे विवाहित हो गये काम में लग गये हमारे बच्चे हो गये बच्चे बडे हो गए हम बूढे हो गए – कुछ ही मिनटो मे हमारा पूरा जीवन हमारे सामने घूम जाता है। फिर स्वप्न का कोई आरम्भ नहीं होता और कोई अन्त नहीं होता। हम एक स्वप्न देख रहे होते हैं और बीच मे ही अचानक दूसरे स्वप्न मे पहुच जाते हैं और फिर वापस उसी स्वप्न मे आ जाते हैं।

हमे स्वप्न के लिए जिस जिस दृश्य की या जिस जिस घटनाक्रम की आवश्यकता होती है उसकी हम रचना कर लेते हैं उसे हम उत्पन्न कर लेते हैं। यदि स्वप्न मे हम पर कोई नाराज हो रहा होता है तो वह व्यक्ति उसकी चीख सबकुछ हम स्वय ही निर्मित कर लेते हैं।

जो कुछ भी हम स्वप्न मे निर्मित करते है वह और कुछ नहीं बल्कि हमारे विचार ही हैं किन्तु उनका हमारे शरीर पर वास्तविक प्रभाव पडता है। एक डरावना स्वप्न हमारे दिल की धडकन तेज कर देता है। डरावने स्वप्न मे घटी घटना तो वास्तविक नहीं है किन्तु उसका प्रभाव हमारे ऊपर वास्तविक होता है। एक कल्पना या दृश्य को यदि मन की दृढता के साथ अपने चेतन मन मे रखा जाये तो यह दृश्याकन धीरे–धीरे मानसिक सम्मिश्रण की प्रक्रिया द्वारा हमारे अचेतन मन मे प्रवेश कर जाता है और जब यह हमारे अचेतन मन द्वारा दृढतापूर्वक स्वीकार कर लिया जाता है तो उस घटना मे और हममे कोई अन्तर नही रह जाता और वह व्यक्ति यह पाता है कि वह घटना उसके जीवन मे वास्तव मे घटित हो जाती है।

इस क्रिया मे अपने चेतन मन मे उस घटना को इतने व्यस्तविक रूप मे देखना होता है कि हमारा अचेतन मन उसे स्वीकार कर लेता है और क्रियाशील हो जाता है परिणामस्वरूप उसी प्रकार की परिस्थितिया हमारे चारो और उत्पन्न होने लगती हैं और वह घटना वास्तविकता मे घटित हो जाती है। आइए अब एक उदाहरण के माध्यम से इस सिद्धान्त को समझने का प्रयत्न करे –

अमेरिका मे एक शहर है सिनसिनाटी। वहा की चालीस–पचास वर्ष पुरानी घटना है। ठड का मौसम है। सडक पर लोग कपकपाती ठड से काप रहे हैं। एक ११–१२ वर्ष का बालक एक बिल्डिग के सामने आकर रुक जाता है। यह बिल्डिग सिनसिनाटी के सर्वश्रेष्ठ दैनिक अखबार सिनसिनाटी एन्क्वायरर का प्रधान कार्यालय है। वह लडका एक निर्धन परिवार से सम्बन्धित है ठड से काप रहा है वह शीशे से उस दैनिक समाचार पत्र के कार्यालय का दृश्य देखता है। वह देखता है कि किस प्रकार पत्रकारगण अपने अपने कार्य मे व्यस्त है। कार्यालय के बीचोबीच एक व्यक्ति मेज के पास कुर्सी पर बैठा है उसके एक हाथ मे सिगार जल रही है और उसने अत्यधिक कृत्रिम प्रकाश से बचने के लिए हरे रग का चश्मा पहन रखा है। उसकी मेज कागजो से भरी हुई है। वही से सबको आदेश पारित हो रहे हैं। वह निर्धन बालक समझ जाता है कि यही व्यक्ति यहा सबसे अधिक प्रभावशाली है।

वह अधिकारी अपनी कुर्सी पर इधर से उधर घूम रहा है एक पीला कागज टाइपराइटर मे लगता है टाइप करता है और फिर उस पर पेन्सिल से कुछ आदेश पारित करता है। एक चपरासी भागा हुआ आता है और वह कागज लेकर चला जाता है। लेकिन वह ठड से कापता हुआ निर्धन बालक वहीं सडक पर खडा हुआ सारा दृश्य देख रहा है। तभी रात के अन्धेरे मे एक पुलिस वाला अपनी घडी को घुमाता हुआ वहा से गुजरता है। वह बालक उससे पूछता है – साहब ! वह व्यक्ति जो हरा चश्मा पहने है और मुह मे सिगार दबाये है आखिर है कौन ?

वह सिनसिनाटी एन्क्वायरर का प्रधान सम्पादक है बेटा पुलिस वाला कह कर आगे बढ जाता है।

यह जानकर वह बालक आगे बढने लगता है किन्तु वह अब बदल चुका है। उसे ठडी हवाओ और भीडभाड का कोई एहसास नहीं हो रहा। उसके मस्तिष्क मे एक दृश्य उत्पन्न हो रहा है। एक अस्पष्ट दिवास्वप्न नहीं बल्कि भविष्य की सत्यता का एक स्पष्ट चित्र जिसमे पूरी तीव्रता है। वह बालक जानता है कि जो दृश्य वह अभी अपने मन में चित्रित कर रहा है वह भविष्य मे वास्तविकता मे अवश्य घटित होगा।

वह देख रहा है कि उस दृश्य मे उस शीशे की खिडकी के भीतर उस सम्पादक की कुर्सी पर कई वर्ष के पश्चात वह स्वय बैठा है। उस बालक का नाम है – रोजर फर्जर। वह गरीब निर्धन बालक जिसके पास न धन है न कोई जान पहचान और न ही कोई सुविधाये। उसके पास केवल एक शक्तिशाली दृश्य की कल्पना है चित्राकन है दृश्यीकरण चित्रण है इतना अधिक शक्तिशाली कि उसे कोई हिला नहीं सकता, हटा नहीं सकता।

वह घर जाता है और सोने से पहले जब वह प्रार्थना मे बैठता है तो फिर वह उसी दृश्य को मन ही मन दोहराता है जिसमे वह सम्पादक की कुर्सी पर खुद को बैठा पाता है। और वह दृश्य उसकी अचेतन अवस्था मे इतनी गहराई से बैठ जाता है कि उसे स्वप्न मे भी उसी से सम्बन्धित दृश्य दिखाई देते है और अन्तत उसका यह स्वप्न साकार हो जाता है। कुछ वर्षों के पश्चात रोजर फर्जर सिनसिनाटी एन्क्वायरर का न केवल प्रधान सम्पादक बन जाता है बल्कि आगे चल कर उस समाचार पत्र का मालिक भी बन जाता है उसे खरीद लेता है।

इस उदाहरण के माध्यम से यह स्पष्ट है कि आशाजनक या सकारात्मक दृश्यीकरण मे बहुत शक्ति है। इसी प्रकार के और भी उदाहरण दिए जा सकते हैं। दरअसल हमारे कानो मे हमारे मस्तिष्क तक जाने वाली नस–नाडियो की तुलना मे हमारी आखो से हमारे मस्तिष्क तक जाने वाली नस नाडियो की सख्या बीस गुना अधिक है।

यही कारण है कि अपने लक्ष्यो के विषय मे यदि हम केवल सुनते है तो हम पर इतना प्रभाव नहीं पडता जितना कि सजीव चित्रण करने से पडता है।

हम जब सत्सग मे जाते हैं तो हमे सुना हुआ प्रवचन बहुत अच्छा लगता है किन्तु बाहर आकर हम सब भूल जाते है। किन्तु यदि हम अपने शुभ लक्ष्यो का सजीव चित्रण करते है फिल्माकन करते हैं दृश्यीकरण करते है तो परिणाम बीस गुना अधिक तेजी से निकलने लगते हैं। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि यदि हम किसी सकारात्मक दृश्य या आशाजनक दृश्य को अपने मन मे दृढता से बिठा ले ता वह वास्तविकता मे अवश्य घटित होगा।

हमने यह भी देखा कि हम अपने स्वप्नो को किस प्रकार निर्मित कर लेते हैं और स्वप्न मे देखे गये दृश्य किस प्रकार हमारे शरीर को प्रभावित करते है।

ठीक उसी प्रकार आशाजनक दिवास्वप्नो का निर्माण करना है – सकारात्मक चित्रण करना है 'सकारात्मक दृश्यीकरण' करना है। इस अभूतपूर्व शस्त्र का प्रयोग हमे करना है – अपने को आगे बढाने मे अपनी कमियो को दूर करने मे अपने लक्ष्यो की प्राप्ति मे अपने सम्बन्धो को दूसरो से सुधारने मे ससार का कल्याण करने मे इत्यादि।

सबसे मुख्य बात यह है कि हम सकारात्मक चित्रण या सकारात्मक दृश्यीकरण का जितना अधिक उपयोग ध्यान की अवस्था मे शुभसकल्पो के साथ करेगे उतनी ही अधिक सफलता हमे जीवन के हर पक्ष मे प्राप्त होगी।

स्वास्थ्य चर्चा

एन्जाइना की सफल चिकित्सा

कैप्टन देवरत्न आर्य

हृदय की रक्त सचार करने वाली रक्त वाहिकाओ मे रुकावट होने के कारण जोकष्ट ओर पीडा हो जाती है जिसे चिकित्सा भाषा मे एन्जाइना कहने हे उसकी सफल चिकित्सा आयुर्वेद द्वारा सम्भव है।

अब तक हृदय रोगो मे रक्त वाहिनी जो हृदय को रक्त पहुचाती है के अवरुद्ध हो जाने पर ओप हार्ट (बाईपास सर्जरी) के द्वारा पैर या हाथ से नसे निकाल कर उनके स्थान् पर लगाई जाती है। दूसरी नसे लगा देने के पश्चात भी बहुत से रोगियो की उन नसो मे पुन अवरोध हो जाता है जिसके कारण पुन सर्जरी कर दूसरी नयी नस लगाते हैं। यह पहले आप्रेशन से और अधिक जोखिम भरा होता है।

इस विषय मे मुम्बई के डा० मनुभाई कोठारी ने नया अनुभव किया है। डा० मनुभाई कोठारी के०ई०एम०आई० अस्पताल के डीन के पद से निवृत्त हुए है।

अपने प्रयोग से उन्होने कई रोगियो को ठीक किया हैं। जो रोगी उन्होने ठीक किये हैं उनका वर्णन तो मै यहा नहीं करूगा परन्तु उनके प्रयाग स जो रोगी मैने स्वय ठीक होते देखे है उनमे से एक रोगी का वर्णन मै अवश्यक करूगा।

श्री रघुवीर जो आज कल विश्व हि दू परिषद केन्द्रीय कार्यालय आर०के०पुरम मे रहते हैं हृदय रोग से पीडित है। उनको तीव्र एन्जाइना था। उनकी हालत यह हो गयी थी कि सीढी चढना उनके लिए बहुत मुश्किल हो गया था एक-एक सीढी चढते थे। तेज चल नहीं सकते थे। हमेशा बिस्तर पर पडे रहने की इच्छा होती थी। दिन में कई-कई बार सोर्बीट्रेट की गोलिया लेनी पडती थीं। इसके बाद उनको जी०बी० पत हास्पिटल मे दिखाया गया। एन्जीयोग्राफी हुई उसमे पता चला कि इनकी तीन रक्त वाहीनिया लगभग बन्द हो चुकी थी। कार्डिक सर्जन को दिखाया गया परन्तु सर्जन ने भी मना कर दिया कि इनकी बाईपास सर्जरी नहीं हो सकती क्योकि एक रक्त वाहिनी पूरी तरह बन्द होती तो कर सकते थे ये तो तीनो बन्द हैं। अत तीन बार आप्रेशन नहीं हो सकता है। अत दवाई के सहारे जब तक चल सकते हैं ऐसा ही चलने देना चाहिए। इसी बीच सघ के सहसरकार्यवाह मा० सुदर्शन जी से मुझे इस प्रयोग की जानकारी मिली। मैंने रघुवीर जी को बताया एवम् उन्होने उसका प्रयोग किया जिससे उनको बहुत लाभ हुआ है। अब उनको एन्जाइना नहीं के बराबर है। खूब चलते हैं १५ ६ कि०मी० रोज भ्रमण करते है। दौडकर सीढी चढते है। उनकी स्थिति देखकर मै स्वय आश्चर्यचकित हू। अब लगभग सोबीट्रेट नहीं लेते है। रात-रात भर भजन सकीर्तन करते हैं।

प्रयोग विधि घिया (लोकी) की छिलके सहित धोकर घिया कस मे कस लेवे। कसी हुई घिया को ग्राइण्डर मे डालकर अथवा सिलबट्टे पर पीस लेवे। इसके साथ ७ ८ तुलसी के पत्ते ५ ६ पुदीना के पत्ते भी पीसने के समय घिया के साथ डालकर पीसे। पिसी गई घिया को पतले कपडे से छानकर रस निकाल लेवे। छाने हुए रस की मात्रा १२५ १५० ग्राम ही होनी चाहिए। इसके साथ बराबर का स्वच्छ जल मिला लेवे अर्थात घिया और पानी की कुल मात्रा २५०-३०० ग्राम होनी चाहिए। इस रस मे ४ काली मिर्च का चूर्ण तथा १ ग्राम पिसा हुआ सेधा नमक मिलाकर भोजन के आधा-पौने घण्टे पश्चात प्रात दोपहर रात्रि मे तीन बार लेना चाहिए। प्रारम्भ मे रस की मात्रा तीन चार दिन तक कुछ कम भी ली जा सकती है। बाद मे अभ्यास एव पेट सुधर जाने पर पूरी मात्रा मे लेनी चाहिए। हर बार ताजी दवाई बनानी चाहिए।

घिया का रस पेट मे जो भी पवन विकार होते हैं उनको दूर कर मल के द्वार बाहर निकालता है जिसके कारण प्रारम्भ म ३ ४ दिन तक पेट मे खलबली गडबडाहट होती है। एकाद दस्त भी अधिक लग सकते हैं। यह स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। इससे भयभीत नहीं होना चाहिए। पेट के विकार दूर होते ही सामान्य स्थिति हो जायेगी।

इस प्रयोग के करते समय टहलना अनिवार्य है। चाहे पहले दिन दस कदम ही चले। इस प्रयेग के दस दिन बाद कुछ आराम अनुभव होने लगेगा। धीरे धीरे १० १२ कि०मी० तक भ्रमण करने का अभ्यास करना चाहिए। अत जो रोगी एन्जाइना से पीडित है मेरा नम्र निवेदन है कि बाईपास सर्जरी कराने से पहले वे इस चिकित्सा का अवश्य प्रयोग करे। अधिक जानकारी के लिए डा० मनुभाई कोठारी से सम्पर्क कर सकते हैं।

उनका पता है – १४ बी स्वामी विवेकानन्द मार्ग मुम्बई – ५४ दूरभाष नम्बर (००९१-२२) ६१२८१०७

– डॉ० योगेन्द्र सिह दिल्ली

(सघमार्ग २८ जनवरी १९९९ से साभार)

हमने जनोपयोग जानकर इसे 'वेदवाणी' मासिका से उदधृत किया है। अपने चिकित्सक की अनुमति से प्रयोग करना उचित होगा।)

पृष्ठ ५ का शेष भाग

नारी का स्थान वेद एव दर्शनो की दृष्टि मे

अर्थात पत्नी क वेदाध्ययन का सर्वथा प्रतिषेध कर दिया गया। उसके वेदाध्ययन मे कोई प्रमाण है ही नहीं।

अन्धेनैव नीयिमाना यथान्धा के समान अपनी मीमासा दर्शन की टुप टीका मे कुमारिल भटट भी यहा क्यो चुप रहे वे भी लिखते है – **तस्मात पुसोऽध्ययन विहिमितरस्य विधाना भावादवैधता। न चान्यथाऽनुपपत्त्याध्ययन तस्या अन्यथाऽपि उपपधमानच्वात। अत प्राप्तोऽध्ययनप्रतिषेध** ।(द्र० वही टुप टीका)

आश्चर्यम! महदाश्चर्यम! यहा कुमारिल भटट का भी यही अभिमत है कि नारी के लिए वेदाध्ययन प्रतिषिद्ध है। उस युग मे राजकन्या के यह कहने पर कि को वेदान उद्धरिष्यति के उत्तर मे – **मा रुदिहि वरायेहे भटटचार्योऽस्ति भूतले** कहने वाले वेदोद्धारक कुमारिल भट तक नारी के प्रति इतने अनुदार निष्ठुर हो सकते हैं तो बेचारी नारिया अपनी अपील ले कर वहा जा सकती हैं जब उच्च न्यायालय ने ही उनके लिए यह कह डाला।

यहा यह समझ लेना चाहिए कि प्रकृत सूत्र **तस्या यावदुक्तम आशीर्ब्रह्मचर्यमतुल्यत्त्वात्** मे भाष्यकारो ने जो अतुल्यच्वात का अर्थ स्त्री पुरुष क समान नही ऐसा किया ह यह सूत्रकार के आशय के विपरीत बात है। अतुल्यच्वात का का इतना ही अर्थ है कि स्त्री एव पुरुष के नैसर्गिक भेद होने के कारण जो याग विषयक केश श्मश्रु वपन आदि कार्य हैं वे स्त्री मे पुरुष के अतुल्य होने से सम्भव नहीं अत पत्नी का जो कार्य कहा है (उतना ही) वह आशी और ब्रह्मचर्य ही कर्त्तव्य है।

वस्तुत महर्षि जैमिनि के पश्चात उत्तरोत्तर गिरते हुए काल मे नारी के प्रति ऐसी हीन और तुच्छ भावनाये बनती चली गई कि व्याख्याकारो ने अपने पक्ष मे एक नहीं अनेकत्र सूत्रकार से भिन्न आशय की व्याख्याये लिख डाली हैं। इसका यहा एक और उदाहरण देखे – **अपराधात कर्तुश्च पुत्रदर्शनम** (मी०द० १।२।१३)

यज्ञकाल मे यजमान अपने प्रवर का वरण करते हुए कहता है कि **न चैतद् विद्मो यदि ब्राह्मण कर्तुश्च अपराधात** अर्थात् कर्त्ता के अपराध से यह पता नहीं कि यह ब्राह्मण है या अ ब्राह्मण। यहा पर चरित्रगत अपराध तो पुरुष या स्त्री दोनो का सम्भव है परन्तु शबर स्वामीने अपनी व्याख्या मे **स्व्यपराधेन** यह कह कर स्त्रियो मे ही ऐसा दोष सम्भव है ऐसी लाञ्छना नारियों के प्रति दे डाली है।

यहा यह कहना उचित ही होगा कि उस काल में मीमासमाचार्य शबर स्वामी सदृश जन हो या अद्वैतवादी शकराचार्य हों सभी ने स्त्रियों के प्रति अन्यायपूर्ण व्यवस्था ही दी है। श्री शकराचार्य जी ने तो परस्पर विरुद्ध कथन करते हुए स्त्रियो के प्रति जो भावना दिखाई है उसका एक दृष्टान्त देखे – **हृद्यपेक्षया मनुष्या धिकारत्वात्** (वे०द० १।३।२५) सूत्र मे महर्षि वेदव्यास ने प्रतिपादित किया है कि अध्यात्म विद्या जो मोक्ष की प्राप्ति का साधन है मे स्त्री पुरुष दोनो का अधिकार है तो मोक्ष प्राप्ति का लाभ स्त्री या पुरुष दोनों को ही अवश्य होगा अत पौराणिक भाइयो का यह कहना कि मोक्ष की प्राप्ति पुरुष देह मे ही सम्भव है स्त्री देह मे नही यह नितान्तगलत है। पुरुष की अपेक्षा स्त्री सरल और निष्पाप होती है अत स्त्री शरीर द्वारा तो मोक्ष प्राप्ति का लाभ अधिक ही सम्भव है। न जाने कैसे मध्यकाल मे उसे दूषित एव अपवित्र कह दिया गया यह आश्चर्य का विषय है।

उपर्युक्त वेदान्त दर्शन के सूत्र का श्री शकराचार्य जी ने भी यही भाष्य लिखा है कि **शास्त्र हि अविशेषप्रवृत्तमपि मनुष्यानेव अधिकरोति अतो मनुष्याधिकारत्त्वात शास्त्रस्य** शकराचार्य जी ने इस सूत्र पर मनुष्य मात्र को वेद का अधिकार दिला दिया। किन्तु बृद्धारण्यमकोपनिषद् मे –

अथ य इच्छेत दुहिता मे पण्डिता जायेत

(बृ० उ०६।४।८)

वाक्य का भाष्य करते हुए उनकी बुद्धि चकरा गई और घोर-सकीर्णतावादी बन कर लिख मारा कि –

दुहितु पाण्डित्य गृहतन्त्रविषयमेव द वेदेऽनाधिकारात

अर्थात पुत्रियो को वेद पढने का अधिकार न होने से उनका पाण्डित्य तो गृहस्थ विषयक ही मानना चाहिए। श्री शकराचार्य जी के इस प्रकार के विरुद्ध प्रलाप को देख कर सचमुच बहुत आश्चर्य होता है।

मे सोचती हू कि जिन लोगो ने इस गिरे हुए काल मे नारी निन्दापरक वाक्यो को लिख कर सम्पूर्ण सुभाषित रत्नभाण्डागारम आदि को 'कुभाषितरत्नभाण्डागारम' बना डाला उन लोगो के सम्बन्ध मे कुछ लिखना ही व्यर्थ है। जब मीमासा दर्शन के शवर स्वामी जैसे भाष्यकार तथा वेदान्त दर्शन पर शकरचार्य जी जैसे दिग्गजो ने ही स्त्री एव शूद्र पर ऐसा कुठाराघात कर डाला है।

सचमुच ऐसे अज्ञानान्धकार के समय यदि देव दयानन्द न आते तो यह समाज कहा गोते खाता इसका कोई अनुमान नहीं। उन्होने युक्ति और प्रमाणो द्वारा पढे यह सिद्ध करके दिखाया कि प्राचीन काल की ब्रह्मवादिनी मैत्रेयी घोषा अपाला के समान सब नारियो को वेद पढने का अधिकार है तथा उनका समाज मे सर्वोच्च स्थान है।

– पाणिनि कन्या महाविद्यालय तुलसीपुर वाराणसी १० (उ०प्र०)

लद्दाख, जम्मू और कश्मीर घाटी

समस्या और डॉ० मुखर्जी द्वारा प्रस्तुत समाधान

– *बलराज मधोक*

जम्मू कश्मीर हिन्दुस्तान के ५०० से अधिक देसी राज्यो म सबसे बडा था। इसका क्षेत्रफल ८४४७१ वर्ग मील था। महाराजा हरिसिह द्वारा इसके भारत मे विलय के बाद इसका क्षेत्रफल लगातार सिकुडता जा रहा है। १ जनवरी १६४६ की युद्धबदी से इसका ३० हजार वर्ग मील क्षेत्र पाकिस्तान के अधिकार मे चला गया। पाकिस्तान ने १६६३ मे उसमे से लगभग पाच हजार वर्ग मील क्षेत्र चीन को दे दिया। तिब्बत पर अधिकार करने के बाद चीन ने लद्दाख क्षेत्र के १४ हजार वर्ग मील वाले चाग थाग भाग पर अधिकार कर लिया और इसे आकसी चिन नाम दिया। यह अभी तक चीन के अधिकार मे है। १६७१ के युद्ध मे पाकिस्तान ने जम्मू के छब क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। शिमला सधि के अनुसार भारत ने पाकिस्तान का पाच हजार वर्ग मील विजित क्षेत्र तो पाकिस्तान को वापिस कर दिया परन्तु छब वापिस नहीं लिया। फलस्वरूप भारत के अधिकार वाले जम्मू कश्मीर राज्य का क्षेत्रफल ४० हजार वर्गमील से भी कम रह गया है। इसमे भूगोल और भाषा की दृष्टि से विशिष्ट पहचान वाले तीन क्षेत्र हैं उनमे से सबसे बडा लद्दाख है जिसका क्षेत्रफल लगभग २० हजार मील है। दूसरा क्षेत्र जम्मू है जो पठानकोट से पचाल पर्वत तक फैला है। इसका क्षेत्रफल लगभग १२००० वर्गमील है। तीसरा और सबसे छोटा क्षेत्र कश्मीर घाटी है इसका वर्गफल लगभग ३ हजार वर्गमील है। काश्मीरी भाषा भाषी कश्मीरी क्षेत्र और पाक अधिकृत क्षेत्र के बीच पडने वाली पजर्द ष्षा भाषी ऊडी टीटवाल पटटी का क्षेत्रफल लगभग १५०० वर्गमील है और लद्दाख तथा पाक अधिकृत क्षेत्र के बीच पडने वाली बलती भाषा भाषी द्रास कारगिल पटटी का क्षेत्रफल लगभग १००० वर्ग मील है।

भारतीय सेना पाक अधिकृत क्षेत्र को वापिस ले सकती थी परन्तु इस गैर कश्मीरी मुस्लिम बहुल क्षेत्र के वापिस लेने मे न शेख अब्दुल्ला की रुचि थी और न पडित नेहरू की। इदिरा गाधी ने भी उसे वापिस लेने मे कोई रुचि नहीं दिखाई। शिमला समझौते मे उसने पाकिस्तान पर जोर डाला कि वह युद्धवन्दी रेखा जिसे तब नियन्त्रण रेखा – एल०ओ०सी० का नाम दिया गया को भारत और पाकिस्तान के बीच स्थायी सीमा मान ले। कारगिल काड के बाद अमरीका और बहुत से अन्य देशों ने भी इस रेखा को स्थायी सीमा मानने की बात कहनी शुरू कर दी है। फलस्वरूप चाहे पाक अधिकृत क्षेत्र कानूनी तौर पर भारत का है वस्तुत यह पाकिस्तान का अग बन चुका है और पाकिस्तान ने इसके एक लाख से अधिक हिन्दुओ को खत्म करके इसका पूरी तरह इस्लामीकरण कर दिया है। अब उसका भविष्य पाकिस्तान के साथ जुड चुका है और उसका फैसला पाकिस्तान के साथ निर्णायक युद्ध से ही होगा। वह युद्ध भारत को सिध और पजाब मे लडना होगा नियन्त्रण रेखा या उसके पार पाक अधिकृत क्षेत्र मे नही क्योकि सामरिक दृष्टि से वहा पाकिस्तान की स्थिति भारत से बहुत बेहतर है।

चीन अधिकृत क्षेत्र की वापसी की तो कोई बात ही नही करता। उसका फैसला भी तिब्बत के भविष्य का अतिम फैसला होने के साथ ही होगा। इस समय पाकिस्तान और चीन घी शक्कर हैं और एक दूसरे को मदद दे रहे है। परन्तु विडबना यह है कि जो क्षेत्र कानूनी और जमीनी तौर पर भारत क अधिकार मे हे और जो पूरी तरह भारत का आतरिक मामला है वह भी भारत के लिए समस्या बन रहा है। इस मामले मे पहली और सबसे भयानक भूल उस समय हुई जब भारत सरकार क दबाव पर महाराजा को इस सारे क्षेत्र का प्रशासन शेख अब्दुल्ला क हवाले करना पडा। शेख अब्दुल्ला केवल कश्मीर घाटी का नेता था और उसे येन केन प्रकारेण अपने अधिकार मे लेना चाहता था। इसी हेतु उसने १६४६ मे महाराजा हरिसिह और जम्मू के लोगो के विरुद्ध कश्मीर छोडो आन्दोलन चलाया था। जम्मू, लद्दाख और रिसासत के अन्य भागो मे उसकी ना कोई रुचि थी और न ही उन पर उसका कोई प्रभाव था। यदि १६४७ मे अब्दुल्ला को केवल कश्मीर घाटी का शासन सौंपा गया होता तो स्थिति काबू मे रहती। जम्मू और लद्दाख भी उसके अधिकार मे देने के कारण उसकी महत्वाकाक्षा बढ गई। तब उसने कश्मीर का सुल्तान बनने के साथ साथ जम्मू और लद्दाख का इस्लामीकरण करके उनका सम्राट बनने का भी सपना देखना शुरू कर दिया।

जिस समय महाराजा को सत्ता अब्दुल्ला को सौंपनी पडी उस समय मेहर चद महाजन रियासत के प्रधानमन्त्री थे। मैने श्री महाजन से पूछा था कि जम्मू की सत्ता वहा के लोगो को देन की बजाए अब्दुल्ला का क्यो सोपी गई? उनका उत्तर था कि उस समय जम्मू मे ना कोई ऐसी राजनेतिक पार्टी और न कोई नेता था जिसे वहा की सत्ता सौंपी जाती। तब मैंने तुरन्त जम्मू प्रजा परिषद बनाने का फैसला किया। उस समय सघ मुख्यालय से हरी झडी प्राप्त करने का समय नहीं था। इसलिए मैने १५ नवम्बर १६४७ को अपनी पहल पर प्रजा परिषद बना डाली। कुछ समय के बाद सघ मुख्यालय से अनुमति मिलन के उपरान्त जम्मू के सघ चालक पडित प्रेमनाथ डोगरा प्रजा परिषद म शामिल हो गए और उन्हे इसका अध्यक्ष बना दिया गया। वतमान स्थिति को समझने और उसका सही मूल्याकन करने के लिए इन तथ्यो की जानकारी होना आवश्यक है

अपनी महत्त्वाकाक्षा को पूरा करने के लिए शेख अब्दुल्ला ने नेहरू पर दबाव डाला कि वे भारत अधिकृत जम्मू कश्मीर का शेष राज्यो से भिन्न विशेष दजा दे। उसका तर्क था कि क्योकि डिक्सन योजना के अनुसार प्लेनीसाइट अथात जनमत कश्मीर घाटी मे ही होना है और क्योकि वहा के अधिकाश लोग मुसलमान है जो हिन्दू बहुल हिन्दुस्तान के सविधान और इसकी सरकार का पूरा भरोसा नही रखते इसलिए उन्हे विशेष दर्जा और सविधान बनाने का अधिकार देना आवश्यक है। यह वही तर्क था जो जिन्ना ने भारत विभाजन और पाकिस्तान बनाने के पक्ष मे दिया। पण्डित नेहरू ने उसकी बात मान ली। १६४६ मे भारत के सविधान मे अस्थायी धारा ३७० जोडने की यह पृष्ठभूमि है।

यदि विशेष दर्जे को शुरू से ही कश्मीर घाटी तक सीमित कर दिया होता और जम्मू और लद्दाख को वहा के लोगो की इच्छा के अनुसार भारत के सविधान के अन्तर्गत अन्य राज्यो की तरह पूरी तरह भारत मे मिला दिया गया होता तो शायद स्थिति इतनी न बिगडती। परन्तु क्योकि शेख अब्दुल्ला जम्मू और लद्दाख पर भी अपना अधिपत्य कायम करना चाहता था इसलिए जम्मू और लद्दाख और उनके लोगो के हितो इच्छाओ और आकाक्षाओ की सर्वथा अनदेखी की गई। जम्मू और लद्दाख के अलग अस्तित्व और उनके लोगो की आकाक्षाओ की ओर देश की जनता का ध्यान उस समय गया जब लद्दाख बेद्ध सगठन ने लद्दाख को रियासत से अलग करके शेष भारत म पूरी तरह विलय करने और इस केन्द्र शासित राज्य बनाने की माग उठाई ओर जम्मू म प्रजा परिषद ने धारा ३७० का निरस्त करने और सारे देश के लिए एक विधान एक निशान और एक प्रधान की सशक्त आवाज उठाई।

जुलाई १६५२ मे मेरे सुझाव पर डा० मुखर्जी जम्मू कश्मीर का अध्ययन करने के लिए पहली बार जम्मू और श्रीनगर गये। वे पण्डित प्रेमनाथ डोगरा से भी मिले और शेख अब्दुल्ला से भी। उसके बाद जम्मू के परेड मैदान मे एक विशाल जनसभा को सम्बोधित करते हुए उन्होने प्रजा परिषद के राष्ट्रवादी दृष्टिकोण और माग का समर्थन किया और इसे मनवाने के लिए जी जान से प्रयत्न करने की घोषणा की। दिल्ली लोटने पर उन्होने जम्मू कश्मीर की स्थिति के अपने मूल्याकन के आधार पर श्री नेहरू को एक पत्र लिखा। इसमे उन्होने लिखा कि शेख अब्दुल्ला को जम्मू कश्मीर के लिए अलग सविधान अलग झण्डे और अलग सदरे रियासत के साथ भारत के गणराज्य के अन्तर्गत एक अलग स्वतन्त्र गणराज्य बनाने की योजना देश की एकता और प्रभुसत्ता क साथ खिलवाड है। उन्होने माग की कि ऐसा नहीं होने देना चाहिए।

अपने उत्तर मे श्री नेहरू ने शेख अब्दुल्ला के दृष्टिकोण की वकालत की और लिखा कि वे अब्दुल्ला को विशेष दर्जा देने का वचन दे चुके हैं और वे उससे पीछे नही हट सकते।

इस पत्र के उत्तर मे डॉ० मुखर्जी ने श्री नेहरू को एक और पत्र लिखा। इसमे उन्होने देश की एकता और प्रभुसत्ता के विपरीत किसी प्रकार का वचन देने की बात पर आश्चर्य प्रकट किया और लिखा कि यदि आप अपने वचन का देशहित से अधिक महत्वपूर्ण मानते है और पीछे हटने को तैयार नहीं है तो विशेष दर्जा कश्मीर घाटी तक समिति रखे और इसे जम्मू और लद्दाख पर न लादे। जम्मू के लोगो की शेष भारत के साथ पूर्ण विलय की माग देशभक्ति पूर्ण और तर्कसगत है इसलिए वहा के लोगो की लोकतात्रिक हितो और आकाक्षाओ को ध्यान मे रखते हुए उन्हे पूरी तरह शेष भारत मे मिलाने की दिशा मे पग उठाया जाना चाहिए।

शेष भाग अगले पृष्ठ पर

पिछले पृष्ठ का शेष भाग

लद्दाख, जम्मू और कश्मीर ....

२६ दिसम्बर १९५२ को भारतीय जनसघ के कानपुर मे हुए पहले राष्ट्रीय अधिवशन के अवसर पर दिए गए अपने अध्यक्षीय भाषण मे डॉ० मुखर्जी ने पुन इस माग को दोहराया। उन्होने कहा – जैसा कि मै पहले भी कह चुका हू हम कश्मीर घाटी और शेख अब्दुल्ला की अस्थायी रूप म विशेष दर्जा देने की बात मान सकते है परन्तु उस हालत मे जम्मू और लद्दाख को उनके लोगो की इच्छा के अनुसार भारत मे पूरी तरह मिलाना आवश्यक हे। यदि शेख अब्दुल्ला अपनी बात पर अडना चाहता हे तो जम्मू और लद्दाख को उसकी महत्त्वाकाक्षा पर बली नहीं चढाया जा सकता। कश्मीर घाटी को भले ही भारत सघ राज्य का एक ऐसा अलग राज्य बना दिया जाए जैसा शेख अब्दुल्ला चाहता है परन्तु उसकी बात को जम्मू और लद्दाख पर कदापि लादा नही जा सकता।

डॉ० मुखर्जी के महान बलिदान के बाद जम्मू कश्मीर रियासत के शेष भारत के साथ पूरी तरह जोडने का क्रम शुरू हुआ था परन्तु भारत की केन्द्रीय सरकारो की भूलो और पाकिस्तान और उसके एजेन्टो के आक्रान्ता रुख के कारण स्थिति फिर बिगड गई है ओर उसका लाभ उठाकर अब्दुल्ला का बेटा फ रुक अपने पिता से भी दो कदम आगे ढना चाहता है। उसकी सारी रियासत लिए अधिक स्वायत्तता की माग शेख अब्दुल्ला की माग से भी बदतर है। जम्मू क श्मीर विधानसभा के चुनावो मे फारुख अब्दुल्ला की नेशनल काफ्रेस का मुश्किल से १५ प्रतिशत मत मिले थे परन्तु क्योकि कश्मीर घाटी को अनुपात से अधिक प्रतिनिधित्व मिला हुआ है और कश्मीरी मुस्लिम सदस्यो का इसमे स्पष्ट बहुमत है इसलिए इसके द्वार पारित प्रस्ताव जम्मू और लद्दाख की भावनाओ का प्रतिबिम्ब न है और न हो सकता है। परन्तु यह भी सत्य है कि कश्मीर घाटी की स्थिति बहुत बिगड चुकी है और वहा के कुछ मुस्लिम सगठन फारुक अब्दुल्ला की नेशनल काफ्रेस से भी दो कदम आगे बढकर अलगाववादी मागे उठा रहे है। अत इस स्थिति मे जम्मू कश्मीर की आतरिक समस्या का एकमात्र यथार्थवादी और तर्कसगत हल वही हो सकता है जो १९५२ मे स्व० डा० मुखर्जी ने पेश किया था। इसके अनुसार पहला पग कश्मीर घाटी जो चहु ओर से १० से १५ हजार फुट ऊची पर्वत श्रृखलाओ से घिरी हुई है और जो इस कारण इतिहास मे सदा एक अलग राज्य अथवा समय समय पर बनने वाले भारतीय साम्राज्यो का अलग सूबा रही है को जम्मू और लद्दाख से अलग करके भारत सघ राज्य का एक अलग राज्य बना दिया जाए। इसकी जनसख्या लगभग ४० लाख है। इसे भारत के सविधान के अन्तर्गत अन्य राज्यो से कुछ अधिक स्वायत्तता दी जा सकती है। कश्मीर घाटी का भावी सवैधानिक ढाचा तय करने के लिए भारत सरकार को नेशनल काफ्रेस के नेताओ के अतिरिक्त हुर्रियत काफ्रेस और गूजर महासभा के नेताओ तथा वहा से बलात निकाले गए पाच लाख कश्मीरी हिन्दुओ के पनून कश्मीर जेसे प्रतिनिधि सगठनो के साथ भी बातचीत करनी होगी।

पनून कश्मीर की माग है कि घाटी के दक्षिण भाग मे श्री अमरनाथ गुफा से लेकर नेहरू टनल के दक्षिण पूर्व का भाग हिन्दुओ के पुनर्वास के लिए एक सुरक्षित क्षेत्र घोषित किया जाए। इसमे श्री अमरनाथ की गुफा मटन मार्तड और अनतनाग जैसे प्रमुख तीर्थस्थलो के अतिरिक्त पहलगाव जैसे पर्यटन स्थल भी शामिल होगे। कश्मीरी हिन्दू इसका दुतगति से विकास कर सकेगे जिसका लाभ सारी कश्मीर घाटी को मिलेगा। पनून कश्मीर की माग पर भारत सरकार को गम्भीरता से विचार करना चाहिए।

शेख अब्दुल्ला ने लद्दाख को जम्मू क्षेत्र से काटने के लिए इसके जनसकार भाग को अलग करके उसमे बलती मुस्लिम बहुल कारगिल द्रास पटटी मिलाकर एक अलग मुस्लिम बहुल जिला बनाया था। यह उसके लद्दाख के इस्लामीकरण करने की योजना का अग था। जनसकार जिसकी जनसख्या मे लगभग ६५ प्रतिशत बौद्ध हैं को पुन लद्दाख के साथ मिला देना चाहिए और सारे ल ाख को वहा के लोगा की च्छा के अनुसार अविलम्ब न्द्र शासित राज्य बना ना चाहिए। इससे भारत की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति भी म जबूत होगी और चीन के विस्त ाद पर अकुश लगाने म भी सहायता मिलेगी। हाल ही मे जनसकार के एक बौद्ध मठ पर आतकियो के हमले और तीन भिक्षुओ की हत्या से स्थिति की गम्भीरता खुलकर सामने आ गई है। मुझे लगता है कि फारुक की नेशनल काफ्रेस का भी इस घटना मे हाथ हो सकता है।

पचाल पर्वत से पठानकोट तक फैला हुआ जम्मू क्षत्र क्षेत्रफल और जनसख्या मे हिमाचल प्रदेश से बडा है और आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर है। शेख अब्दुल्ला ने इसको साम्प्रदायिक आधार पर बाटने के लिए ऊधमपुर जिला का कुछ भाग काटकर मुस्लिम बहुल डोडा जिला बनाया था। फारुक अब्दुल्ला भी उसी आधार पर जम्मू को बाटना चाहता है। उसकी यह योजना सर्वथा साम्प्रदायिक सैक्युलर विरोधी और राष्ट्र विरोधी है। भूगोल को बदला नहीं जा सकता। जम्मू राज्य की उत्तरी सीमा पचाल पर्वत है और रहेगी।

किश्तवाड पाडर और जनसकार होकर जानेवाला जम्मू लेह मार्ग जिसके द्वारा वजीर जोरावर सिह लद्दाख गया था का पुनर्निर्माण करना चाहिए। लद्दाख को जम्मू और शेष भारत से जोडने वाला यह सबसे छोटा रास्ता होगा।

पजाबी भाषा भाषी ऊडी टीटवाल पटटी और बलती भाषा भाषी द्रास कारगिल पटटी को सीधे सेना के नियन्त्रण मे दे देना चाहिए और ऊडी टीटवाल द्रास तथा कारगिल के लिए उचित स्थानीय स्वायत्त शासन की व्यवस्था करनी चाहिए। इससे देश की सुरक्षा मजबूत होगी पाकिस्तानी घुसपैठ पर प्रभावी रोक लगाई जा सकेगी और इनका द्रुत विकास भी हो सकेगा।

ऊपर दी गई योजना राष्ट्रहित अनुकूल तर्कसगत और यथार्थवादी है। इसे डॉ० मुखर्जी का आशीर्वाद प्राप्त है। वाजपेयी सरकार से अपेक्षा है कि वे इसे अविलम्ब कार्य रूप दे।

– जे-394, शकर मार्ग, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली - 110060

पं० शिवपूजन जी कुशवाहा नहीं रहे

समस्त आर्यजगत को यह जानकर अति कष्ट होगा कि आर्यसमाज के प्रबुद्ध विद्वान और मनीषी साहित्यकार श्री प० शिवपूजन जी कुशवाहा का ६ जनवरी २००१ को गुरुकुल गौतमनगर (दिल्ली) मे निधन हो गया उनकी अन्त्येष्टि ग्रीनपार्क (दिल्ली) के श्मशानघाट मे पूर्ण वैदिकरीति से की गई। वे लगभग ८ वर्षो से गुरुकुल गौतमनगर मे अध्यापन कार्य कर रहे थे।

आदरणीय पण्डित जी ने आर्यसमाज के सिद्धान्ता की पुष्टि तथा अन्य मतो की समीक्षा के लिए साठ से अधिक ग्रन्थो की रचना की थी। लगभग इतने ही ग्रन्थ अप्रकाशित रूप मे उनके घर पर भी रखे हुए हैं। इनका जन्म आरा (बिहार) मे हुआ था। इनके पुत्रादि वाराणसी मे रह रहे है। पण्डित जी ८२ वर्ष के थे। इनके दिवगत हो जाने से आर्यसमाज की बहुत क्षति हुई है। इसकी पूर्ति होनी असम्भव है।

ईश्वर से प्रार्थना है कि इनके आत्मा को कर्मानुसार सदगति प्रदान करे तथा हम सभी आर्य बन्धुओ को धेर्य प्रदान करे।

– हरिदेव आचार्य
श्रीमद दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय ११६ गौतम नगर नई दिल्ली ४६

स्व0 प्रकाशवीर शास्त्री प्रखर राष्ट्रवादी थे

हिन्दी के लिए किये गये उनके कार्य चिरस्मरणीय रहेंगे - अटल बिहारी वाजपेयी

प्रकाशवीर शास्त्री ही वह व्यक्ति थे जिन्होने अपनी धारा प्रवाह भाषण शैली से लोक सभा मे हिन्दी को प्रस्थापित किया। एक समय था जब लोक सभा मे अग्रेजी का ही बोलवाला था। हिन्दी के भाषणो को कोई कुछ समझता नही था परन्तु प्रकाशवीर शास्त्री ने अपनी हिन्दी भाषा मे वक्तृत्व कला से यह सिद्ध कर दिया कि हिन्दी मे जटिलतम विषयो को भी सटीक एव स्पष्टता के साथ प्रकट किया जा सकता है। प्रधानमन्त्री जी ने यह बात शास्त्री जी की स्मृति मे प्रकाशित दो पुस्तकों का लोकार्पण करते हुए कही। अपनी यह बात पुष्ट करते हुए प्रधानमन्त्री जी ने कहा कि जब श्री अनन्तशयनम अययगार लोक सभा के अध्यक्ष थे तब उनसे यह पूछा गया कि सदन मे सबसे अच्छा वक्ता कौन है। इसके उत्तर मे श्री अय्यगार ने श्री हीरेन मुखर्जी और श्री प्रकाशवीर शास्त्री का नाम लिया था। अहिन्दी भाषी भी शास्त्री जी के भाषणो को ध्यान से सुनते थे तथा उन्हे पसन्द करते थे। प्रकाशवीर जी कभी उत्तेजित नही होते थ। वे अपने भाषणो को बडी सयत और नपे तुले शब्दो का प्रयोग करते थे। यदि वे प्रहार भी करते थे तो उससे शालीनता की सीमा मे चुभन पैदा करते थ।

प्रधानमन्त्री जी ने कहा कि प्रकाशवीर शास्त्री का नाम लेते ही उनके सामन एक शालीन सयत और गरिमापूर्ण व्यक्तित्व सामने उपस्थित हो जाता है। मेरे उनके सम्बन्ध बडे आत्मीय और प्रगाढ थे। हम दोनो मे अच्छी पटती थी। उन्होने शास्त्री जी के साथ अपनी इजराइल यात्रा का उल्लेख करते हुए कहा कि हमारी यह यात्रा विशिष्ट थी क्योकि सत्तारूढ दल व सरकार को इससे प्रसन्नता नहीं थी। हमने अन्य अनेक मोर्चो पर भी साथ साथ काम किया है। हमारे विचारो मे भी समानता थी।

हिन्दी के बारे मे प्रकाशवीर शास्त्री द्वारा किए गए प्रयासो की सराहना करते हुए प्रधानमन्त्री ने कहा कि सरकारी कार्यो मे यदि हिन्दी को कुछ प्रयोग है तो उसका श्रेय शास्त्री जी को ही है। हिन्दी के लिए किए गए उनके कार्य चिरस्मरणीय रहेगे। हिन्दी के सम्बन्ध मे उसके सरकारी कामकाज मे कम प्रयोग पर प्रधानमन्त्री ने अपनी वेदना भी प्रकट की उन्होन कहा कि फाइलो मे मेरी हिन्दी टिप्पणियो का सही अग्रेजी अनुवाद करने मे अधिकारियो को बडा समय लगता है तथा उन्हे परेशानी होती ह। हिन्दी जानने एव पढने वालो की सख्या बढ रही है पर प्रशासन मे उसका अपेक्षित प्रयोग नही हो पा रहा है।

प्रधानमन्त्री जी ने कहा कि प्रकाशवीर जी प्रखर राष्ट्रवादी थे। भारतीय सभ्यता सस्कृति देश की अस्मिता और गौरव की रक्षा के लिए वे सदा सतर्क और सजग रहते थे। उनका भविष्य बडा ही उज्ज्वल था हम समझते थे कि वे देश के लिए महत्वपूर्ण ऊचाइयो पर पहुचेगे तथा अनेक क्षितिजो को छुएगे पर रेल दुघटना मे उनकी मृत्यु मित्रो परिचितो के लिए तथा विशेषत देश के लिए एक भारी आघात सिद्ध हुआ। उन्होने शास्त्री जी के भाषणो को भी प्रकाशित करने का आग्रह किया।

वेद प्रतिष्ठान एव प्रकाशवीर शास्त्री ग्रन्थ समिति के अध्यक्ष डा० लक्ष्मीमल्ल सिघवी ने अपने भाषण मे शास्त्री जी की अन्तरमन स्नेह भावना और सहजता का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्हे सरस्वती देवी का वरदान प्राप्त था। उन्होने वेद के एक मन्त्र को पढते हुए कहा कि इसमे कामना की गइ है कि ससद मे अपने भाषणो से यह यश प्राप्त करे। शास्त्री जी ने ससद मे अपनी भाषण निपुणता से यह यश स्वय अर्जित किया। डा० सिघवी ने कहा कि हमे तीन ऋणो मातृ ऋण पितृ ऋण और आचार्य ऋणो को चुकाने को कहा गया। पर मै एक चौथा ऋण भी मानता हू। वह है मित्र ऋण। हमने इन ग्रन्थो के द्वारा मित्र ऋण को चुकाने का प्रयास किया है।

इससे पूर्व वेद प्रतिष्ठान एव समिति के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने जो मच का सचालन कर रहे थे वेद प्रतिष्ठान का तथा स्मृति ग्रन्थ के बारे मे विवरण दिया। उन्होने यह भी घोषणा की कि वेद प्रतिष्ठान शास्त्री जी के ससद के भाषणो को भी दस खण्डो मे शीघ्र ही प्रकाशित करेगा।

इस अवसर पर प्रधानमन्त्री जी द्वारा ग्रन्थ के तीनो सम्पादको श्री दत्तात्रेय तिवारी श्री अशोक कौशिक और श्री शिव कुमार गोयल एव मुद्रक श्री राकेश भार्गव का शाल एव स्वर्ण पदक प्रदान कर सम्मानित किया।

समारोह के अन्त मे डी०ए०वी० के प्रधान पद्मश्री श्री ज्ञानप्रकाश चोपडा ने प्रधानमन्त्री के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए अभ्यागतो का आभार प्रकट किया। उन्होने प्रधानमन्त्री जी से प्राथना की कि अप्रैल २००१ मे आर्य समाज की स्थापना की १२५ वी वर्षगाठ सारे देश मे मनाइ जाएगी इसमे उसमे हमारा मार्गदर्शन करे। ❑

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार आर्य जनों की दृष्टि में

गुरुकुल के आचार्य श्री हरिगोपाल शास्त्री जी और डा० वत्स के सरक्षण मे गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर पूर्ण रूप से चल रहा ह। श्री प्रधान जी द्वारा कइ लाख रुपये लगा कर एक विशेष सभागार उसके साथ चार विशेष अतिथि कक्ष निर्मित किये है। इस समय महाविद्यालय मे २५० से अधिक छात्र आश्रम मे रहकर अध्ययन कर रहे है।

विद्यारत्न (दसवी पास) की मान्यता उत्तर प्रदेश बोर्ड और पजाब बोर्ड से प्राप्त है। और विद्याभास्कर परीक्षा बी०ए० के समकक्ष मान्यता प्राप्त है। इस प्रकार कई विश्वविद्यालयो द्वारा विद्या भास्कर स्नातक एम०ए० परीक्षा मे सम्मिलत होते है।

यह उत्तर भारत मे सस्कृत विश्व विद्यालय सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय की भाति दर्शनानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय बने ऐसा गुरुकुल के अधिकारियो का प्रयास सरकार से चल रहा है।

आयुर्वेद महाविद्यालय की स्थापना के लिए उत्तराचल सरकार से भी प्रयास हो रहा है १८,१९,२० जनवरी २००१ मे गुरुकुल वासी जन स्वामी दर्शनानन्द जयन्ती बडे धूम धाम से गुरुकुल भूमि मे मना रहे है।

इस सस्था ने आर्यजगत को अनेक विद्वान तपस्वी नेता शास्त्रार्थ महारथी प्रदान किये है। मै समझता हू यह सस्था आर्य जनता की दृष्टि मे महान सस्था है और आर्यजनो की कृपा की पात्र सदा रही है और भविष्य मे भी आर्यजन इस के उत्थान मे सदा ही प्रयत्नशील रहेग।

– डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री

शोक समाचार

तमिलनाडु आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्यसमाज सैन्ट्रल चेन्नई के उप-प्रधान श्री आर० पाण्डुरगराव का हृदय गति रुक जाने से आकस्मिक निधन गत १६ दिसम्बर को हो गया। उनकी स्मृति मे २४ दिसम्बर को आर्यसमाज मदुरै मे एक शोक सभा आयोजित की गई जिसमे स्वामी नारायण सरस्वती राममूर्ति तथा कई अन्य नेताओ ने श्री पाडुरगराव के सगठनात्मक कार्यो का स्मरण करते हुए उनके निधन को आर्यसमाज के लिए एक भारी क्षति बताया।

गेर [illegible] 11049/2001 सार्वदेशिक [illegible] 21 1 2001 [illegible] लाइसेंस न0 U(C) 93/2001
R N HNo 626 57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2000 in NDPSo on 18 19/1/2001

कीर्तिनगर स्त्री समाज की स्तम्भ श्रीमती ज्ञान देवी नहीं रहीं

कीर्तिनगर आर्यसमाज की प्रमुख मन्त्री श्रीमती ज्ञानदेवी का गत माह हृदय गति के रुक जाने से आकस्मिक देहावसान हो गया। वे ७५ वर्ष की थीं। श्रीमती ज्ञानदेवी आर्यसमाज की प्रधाना एव मन्त्रिणी भी रही है। आर्यसमाज के प्रत्येक कार्य मे उनका चहुमुखी सहयोग रहता था। धन सग्रह से लेकर उच्च कोटि के विचार विमर्श तक श्रीमती ज्ञानदेवी के चारो सुपुत्र [illegible] लाल अशोक गुलशन तथा जितेन्द्र खरबन्दा पूर्णरूपेण आर्य सस्कारो से ओत प्रोत है।

श्रीमती ज्ञानदेवी की क्रिया रस्म एव शोक सभा आर्यसमाज मन्दिर कीर्ति नगर के हाल मे आयोजित की गई जिसमे आर्यजगत के समस्त प्रमुख महानुभावो ने भाग लिया वेदिक विद्वान श्री वेदप्रकाश जी आचार्य सुभाष जी के अतिरिक्त दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा तथा वरिष्ठ मन्त्री श्री विमल वधावन एडवोकेट श्री नरेन्द्र आर्य के अतिरिक्त पश्चिम दिल्ली की आर्यसमाजो के बहुत से प्रमुख अधिकारियो सर्वश्री मदन मोहन सलूजा बलदेव राज भीमसेन गुलाटी उपस्थित होकर श्रीमती ज्ञान देवी के श्रद्धाजलि अर्पित की।

वेद प्रचार वाहन द्वारा यज्ञ सम्पन्न

दिनाक ३१ ०६ २००० से १२ १० २००० तक अनन्त चतुर्दशी गणेश पूजन महोत्सव के अवसर पर ग्राम भीमकण्ड बालाखोरी बोरडी जामदा मुजाल रूपारेल काटडा बडी धामनी छोटी धामनी चोखवाडा भीमपूरी आश्रम फलीया थान्दला काकनवानी परवलिया एव बलवन आदि ग्रामो मे रामायण टी०वी० वी०सी०आर० 'रामायण कैसेटस्' के साथ साथ आचार्य बसन्त कुमार एम०ए० थान्दला द्वारा वृहद्ध यज्ञ कर गणनात्वा गणपति मन्त्र की वैदिक व्याख्या प्रस्तुत की गई। गणेश के सच्चे स्वरूप वैदिक स्वरूप के विषय मे सुनकर लोगो ने भूरि भूरि प्रशसा करते हुए कहा कि आज तक हमने गणेश भगवान की कथा नहीं सुनी थी। गणेशजी के वैदिक स्वरूप का जानकर हम धन्य हो गये।

अनेक लोगो ने यज्ञ मे यज्ञमान बनकर शराब मास गुटखा तम्बाकू बीडी आदि बुराईयो को त्यागने का सकल्प लिया कार्यक्रम के पश्चात प्रसाद वितरित की गई।

प्रवीण कुमार भाटी
म०द०से० थान्दला
जिला झारखण्ड (मध्यप्रदेश)

श्री जयप्रकाश आर्य के स्वास्थ्य मे सुधार

आर्यसमाज बिरला लाईस के प्रधान श्री जय प्रकाश आर्य विगतमाह पीलिया रोग से ग्रस्त होकर काफी समय अस्वस्थ रहे और इसके कारण उनका लीवर बढने से भी उन्हे काफी तकलीफ उठानी पडी। वे लगभग ७ दिन एक प्राईवेट अस्पताल मे भी उपचार कराते रहे परन्तु कोई विशेष लाभ न होने पर उन्हाने आयुर्वेदिक पद्धति की शरण ली। अब श्री जयप्रकाश के स्वास्थ्य मे लगातार सुधार हो रहा है। परन्तु अभी उन्हे विश्राम की सलाह दी गई है। समूचा आर्य जगत उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करता है।

प्रतिष्ठा मे

आर्यसमाज, लल्लापुरा का [illegible] उत्सव

आर्यसमाज भारतीय सस्कृति की रक्षक व [illegible] है'

आर्यसमाज लल्लापुरा का ६४ वा वार्षिकोत्सव १४ से १७ दिसम्बर २००० तक समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ जिसमे देश के कोने कोने से आये भजनोपदेशक गण एव वदिक विद्वानो ने ज्ञान की गगा प्रवाहित की प्रतिदिन प्रात ८ से १० बजे तक यज्ञ का कार्यक्रम डा० माधुरी रानी के [illegible] मे सम्पन्न हुआ [illegible] ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने कहा कि आज की युवा पीढी दिग्भ्रमित हो गयी है। उद्देश्यविहीन युवक होता जा रहा है भोगवादी प्रवृत्ति युवको मे व्याप्त हो रही है। दूरदर्शन व अन्य राष्ट्रीय चेनलो पर परोसे जा रहे कार्यक्रमो से युवा पीढी के आगे एक नई समस्या भारतीय सस्कृति के प्रति रूझान कम होती [illegible] उत्पन्न होती जा रही है। विभिन्न विद्वानो के प्रवचन व भजनोपदेश हुए जिसमे प्रमुख रूप से आचार्य रामकृष्ण जी आचार्य गुरुकल जानकी परम लखनऊ डा० मेधा दवी प्राचार्य पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी डा [illegible] कुमार शास्त्री सस्कृत विभागाध्यक्ष रणवीर रणज्जय स्नातकात्तर महाविद्यालय अमेढी प० राम अधार शास्त्री मिर्जापुर सुश्री नन्दिता शास्त्री पाणिनी कन्या महाविद्यालय प० वृजप [illegible] मुजफ्फ [illegible] शास्त्री श्री सत्यप्रक [illegible] मिर्जापुर डा० प्रशस्य मित्र [illegible] वन्दना की प्रस्तुति प्रदान की।

महर्षि दयानन्द गो सम्वर्धन दुग्ध केन्द्र गाजीपुर में

महर्षि जन्मोत्सव

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो की ओर से महर्षि दयानन्द गो सम्बर्द्धन दुग्ध केन्द्र गाजीपुर मे महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव फाल्गुन वदी दशमी तदनुसार १७ फरवरी २००१ को समारोहपूर्वक मनाया जाएगा।

आर्यसमाज के सदस्यो आर्य शिक्षण सस्थाओ गुरुकलो तथा अन्य आर्य सगठनो से प्रार्थना है कि [illegible] अधिक से अधिक सख्या मे पधारकर समारोह की शोभा [illegible]

— वेदव्रत शर्मा, सभा मन्त्री

गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ नजीबाबाद मे समारोह सम्पन्न

गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ नजीबाबाद का दूसरा वार्षिको[illegible] सम्पन्न हुआ। इसमे गुरुकुल कागडी के आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री डा० [illegible] राजन प० यशपाल आर्यबन्धु (मुरादाबाद) आचार्य ज्ञानेन्द्र देव व स्वामी वदमुनि परिव्राजक के प्रवचन हुए।

१४वा अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष झारखण्ड की राजधानी राची में लगेगा

विगत १५ वर्षो के अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद ७ की ओर से आयोजित हो रहा अन्तराष्ट्रीय वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर सन २००१ मे २० मई से २० जून तक दूसरी बार राची मे आयोजित किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि ५ वर्ष पूर्व भी राची मे शिविर का सफल आयोजन हुआ था। शिविर मे भाग लेने के इच्छुक व्यक्ति निम्न पते पर सम्पर्क आवेदन पत्र मगवाए। शिविर मे १८ वर्ष से अधिक आयु के स्त्री पुरुष दोनो भाग ले सकते है। शिविर मे भाग लेने वाले प्रशिक्षणार्थियो के लिए १०वी कक्षा के समकक्ष योग्यता तथा हिन्दी भाषा की पढने लिखने की योग्यता अपेक्षित है।

— *अधिष्ठाता अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान वेद मन्दिर*
महर्षि दयानन्द भवन हैदराबाद २७

सार्वदशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रकाशन लि० द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली-२ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२१६) से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५ आसफ अली रोड नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१ ३२६०९८५)।
सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री
ई मेल नम्बर vedicgod@vsnl net in तथा वेबसाईट http //www whereisgod com

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्



सार्वदेशिक

साप्ताहिक





सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ३६ अक ३८ | २८ जनवरी से ३ फरवरी २००१ तक | दयानन्दाब्द १७६ | सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०१ | सम्वत २०५७ | मा० शु० ४

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन भविष्य के लिए आशा की किरण उपलब्ध कराएगा

मुम्बई में विशाल स्तर पर तैयारियां तथा कार्यक्रम सत्रों की घोषणा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एव मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के सयुक्त तत्वावधान मे २३ से २६ मार्च को आयोजित अ तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अपने आप मे एक अनूठा अनुशासनात्मक आध्यात्मिक एव बौद्धिक सम्मेलन होगा जो विगत १२५ वर्षो के गौरवशाली इतिहास का स्मरण कराते हुए भविष्य के लिए एक आशा की किरण प्रस्तुत करेगा। यह उदगार अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन के ब्रह्मा डा० स्वामी सत्यम ने इस महासम्मेलन की तेयारियो के लिए बुलाई गई बैठक मे व्यक्त किए। यह बेठक आर्य समाज सान्ताक्रुज मे १४ जनवरी को बुलाई गई थी। इस बेठक मे सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मत्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा वैदिक लाईट के सम्पादक श्री विमल वधावन भी पहुचे।

डा० स्वामी सत्यम् ने इस महासम्मेलन मे आयोजित कार्यक्रमो का ब्योरा प्रस्तुत करते हुए बताया कि आर्य परम्परा के अनुसार महासम्मेलन के चारो दिन प्रात ७ ३० बज से १० बजे तक यज्ञ एव वैदिक प्रवचन होगे।

२३ मार्च २००१ (शुक्रवार) को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी के द्वारा ओ३म ध्वजारोहण होगा।

प्रथम दिवस प्रात कालीन सत्र ११ बजे से १ बजे तक होगा। इस सत्र का नाम "वैदिक धर्म ससद" रखा गया है जिसमे मुख्य विषय होगा "प्रकाश की तलाश में"।

प्रथम दिवस मे ही भोजनोपरान्त विशाल उदघाटन समारोह सम्पन्न होगा। जिसके लिए बडे बडे राष्ट्रीय नेताओ को आमन्त्रित करने का प्रयास चल रहा है

प्रथम दिवस के तीसरे सत्र मे रात्रि ७ बजे आर्य सम्मेलन आयोजित होगा।

द्वितीय दिवस २४ मार्च २००१ (शनिवार) को पूर्ववत प्रात कालीन यज्ञ के बाद प्रात १० ३० बजे प्रथम सत्र मे पुन वैदिक धर्म ससद आयोजित होगी जिसका विषय होगा "इन्सान की तलाश मे"।

द्वितीय दिवस के द्वितीय सत्र मे भोजनोपरान्त विशेष आयोजन और इसी दिन तीसरे अर्थात रात्रिकालीन सत्र मे वेद सम्मेलन आयोजित किया गया है जिसके मुख्य विषय इस प्रकार हैं –

१ वेद प्रचार की व्यूह रचना २ वेद और परिवार ३ वेदो मे विज्ञान और ज्योतिष ४ वास्तु और वेद ५ वेद विश्व का विधान है ६ वेद और मानव अधिकार।

तीसरे दिन २५ मार्च २००१ (रविवार) को भी तीन सत्र आयोजित होगे। पहला सत्र वैदिक धर्म ससद जिसका विषय हे स्वर्ग की तलाश मे।

तीसर दिन के दूसरे सत्र मे आय महिला सम्मेलन तथा तीसरे सत्र मे आर्य युवा सम्मेलन आयोजित होगे।

२६ मार्च २००१ (रविवार) को यज्ञ क उपरान्त समापन समारोह होगा।

इस बैठक के सयोजक कै० देवरत्न आर्य ने बताया कि भाग लेने वाले आर्यजनो के लिए लाखो रुपये खर्च करके अच्छी अच्छी धर्मशालाओ मे बुकिग कराई जा रही है जिसमे आर्य जनो का मुम्बई आवास सुखद हो। उन्होंने बताया कि मुम्बई मे ५००/– रुपये प्रतिदिन से लेकर ३०००/– रुपये प्रतिदिन तक के बहुत से होटल भी है। जो लोग इन होटलो मे ठहरना चाहते हैं उन्हे इसका व्यय स्वय देना होगा। वे चाहे तो राष्ट्रीय स्तर की होटल सूचियो मे से देखकर रिकलेमेशन ग्राउण्ड दादर बान्द्रा अथवा सान्ताक्रुज आदि क्षेत्रो मे ही अपने आवास का प्रबन्ध करे। बैठक मे मध्य विदर्भ से प्रान्तीय सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री भी उपस्थित थे।

श्री वेदव्रत शर्मा ने बैठक को सम्बोधित करते हुए कहा कि सारे दश के लोग इस मुम्बई महासम्मेलन मे आने के लिए बहुत उत्सुक है। अत मुम्बई वासियो को उनके स्वागत के लिए पूरी तरह से तैयार रहना चाहिए। दूसरी तरफ उन्होने सारे देश के आयजनो से आह्वान करते हुए कहा है कि वे इस महासम्मेलन मे आर्थिक सहयाग भी करे। क्योकि लाखो रुपयो के खर्च का प्रबन्ध सीमित हाथो द्वारा नही हो सकता

वैदिक लाइट क सम्पादक श्री विमल वधावन ने कहा कि इस महासम्मेलन के विभिन्न विषयो को लेकर जो सत्र आयोजित किये जा रहे है उन सभी सत्रो मे एक एक विशिष्ट प्रस्ताव भी पारित किया जाएगा। इसके अतिरिक्त इस अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के अवसर पर घोषणा पत्र भी तैयार होगा जो आने वाले समय के लिए लोगो को प्रेरणाए तथा मार्ग दर्शन भी प्रदान करेगा। ☐

गणतन्त्र प्रार्थना

हे ईश्वर ! वेदो की इस धरती पर विश्व की प्राचीनतम सभ्यता को उत्पन्न करने वाले आर्यावर्त्त राष्ट्र जिसे अब भारत के नाम से जाना जाता है और जो विश्व का सबसे बडा लोकतन्त्र है। इस पवित्र स्थान पर रहने वाले निवासियो मे ऐसा आत्मिक बल उत्पन्न करो कि वे समूचे विश्व को आध्यात्मिकता के पावन मार्ग पर ले चलने मे सक्षम हो। परिणामत यह सभ्यता समूचे विश्व को मानवीयता पर आधारित एक अनूठा गणतन्त्र दिखाई दे।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का चुनाव सम्पन्न

लखनऊ १४ जनवरी। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का चुनाव अधिवेशन आज प्रात काल सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री की देखरेख मे सम्पन्न हुआ। इस चुनाव मे श्री जयनारायण अरूण सर्व सम्मति से प्रधान निर्वाचित हुए।

नवनिर्वाचित कार्यकारिणी की पूर्ण सूची पृष्ठ ११ पर देखें।

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव सम्पन्न

हाजीपुर २१ जनवरी। बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक चुनाव अधिवेशन पटना के निकट हाजीपुर मे सम्पन्न हुआ। जिसमे बिहार एव झारखण्ड से आए प्रतिनिधियो ने भाग लिया तथा सर्व सम्मति से श्री भूपनारायण शास्त्री को पुन आगामी तीन वर्षो के लिए सभा का प्रधान चुना गया। नवनिर्वाचित सभा प्रधान को शेष पदाधिकारियो अन्तरग सदस्यों सम्बद्ध सस्थाओ की कमेटिया पदाधिकारी तथा झारखण्ड राज्य के लिए अन्तरिम रूप मे आर्य प्रतिनिधि सभा के नव गठन का अधिकार भी दिया।

इस चुनाव की सम्पूर्ण कार्यवाही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा नियुक्त दो सदस्यीय निर्वाचन समिति की देख रेख एव नियन्त्रण मे हुई। चुनाव की बैठक की अध्यक्षता श्री स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती ने की। इनके अतिरिक्त वैदिक लाइट के सम्पादक श्री विमल वधावन एडवोकेट भी विशेष रूप से उपस्थित थे। ☐

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

सह सम्पादक
विमल वधावन एडवोकेट

संघर्ष-विराम राष्ट्र-घातक



भारत की केन्द्र सरकार के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी ने लगभग दो माह पूर्व इस्लामिक रोज के अवसर पर अपनी उदारता का परिचय देते हुए उग्रवादियो के विरूद्ध सघर्ष विराम की घोषणा की थी। इस सघष विराम की घोषण से श्री वाजपेयी उग्रवादियो का रोजे का उपहार देना चाहते थे या भारत की सीमाओ पर सघर्ष कर रहे सैनिको के जीवन को खेल बनाना चाहते थे या महात्मा गाधी की उस नीति पर चलना चाहते थे जिसमे यदि कोई एक गाल पर थप्पड मारे तो दूसरा गाल आगे कर दिया जाता है या इन सब विचारो से परे हटकर उनका लक्ष्य अपनी अन्तर्राष्ट्रीय छवि मे निखार लाना था।

खैर अब तो इस सघष विराम को लगभग दो माह बीत चुके है और सेकडो सेनिक और नागरिक बलिदान दे चुके है। जितना परिणाम निकलना था वह निकल चुका है। इस अवधि के दौरान पचायत के चुनाव भी हो चुके हैं। चुनावो मे आम जनता की ओर से किसी प्रकार का कोई विरोध नही था क्योकि लगभग ६० से ८० प्रतिशत तक मतदान हुआ। यह इस बात का प्रतीक है कि जम्मू कश्मीर के हर हिस्से मे हर पथ के लोग शान्ति से रहना चाहते है।

उग्रवादी तत्वो को जबरदस्ती अथवा उदारतापूर्वक शान्ति से रहना नहीं सिखाया जा सकता। उग्रवाद अपराधिक प्रवृत्ति की पराकाष्ठा है और अपराधिक प्रवृत्ति को समाप्त करने के प्रमुखत दो उपायो पर हम विचार करना चाहते है।

प्रथम विचार अपराध जगत मे प्रशासन के दृष्टिकोण से है तो दूसरा विचार इसके ठीक विपरीत अपराध जगत को सुधारवादी और आध्यात्मिक उपदेशो के जरिए अपराध त्याग की ओर ले जाने के दृष्टिकोण से सम्बन्धित है। सर्वप्रथम इस सुधारवादी और आध्यात्मिक उपाय पर विचार करते हैं।

इस उपाय के तहत अपराधी प्रवृत्ति के व्यक्तियो को सर्वोच्च स्तर के आध्यात्मवादी विचारो के निरन्तर सम्पर्क मे रखा जाना चाहिए। परन्तु यह तभी सम्भव होता है जब यह कार्य अपराधी की जाति धर्म पन्थ सम्प्रदाय समुदाय या समूह से सम्बन्धित व्यक्ति ही इस प्रकार के उपदेश करे या अपराधी किसी अन्य समूह के व्यक्ति की सर्वोच्च आध्यात्मिकता के सम्पर्क मे आये। यह कार्य केवल एक बार उपदेश का या पत्र व्यवहार का नही है अपितु निरन्तर प्रवाहित रहना चाहिए।

उग्रवादियो और अपराध जगत के लोगो के लिए सरकार एसी कोई व्यवस्था करने मे सक्षम नही हे। यह कार्य अपराध जगत से सम्बन्धित समुदाय के आध्यात्मिक नेताओ को ही करना चाहिए। परन्तु दुर्भाग्य है कि इस्लाम जगत के आध्यात्मिक मुल्ला मोलवियो पीरो फकीरो आदि ने आज तक ऐसी कोई सार्थक पहल नही की।

यदि ऐसी कोई पहल अन्य पन्थो या समुदायो के लोग करते तो इस बात की सम्भावना अत्यन्त न्यून थी कि उनके विचारो और उपदेशो को उग्रवादी तत्व धेर्यपूर्वक और निष्पक्षता पूर्वक सुनते। परिणामत एसी भी कोई पहल नहीं हुई।

अब दूसरे उपाय पर विचार करना चाहिए जो उग्रवाद आतकवाद और अपराध जगत के प्रशासनिक मनोविज्ञान से सम्बन्धित है। इस स्थापित विचार के तहत अपराधी को तब तक प्रताडित और आतकित किया जाता है जब तक वह पूरी तरह से प्रशासन के समक्ष समपण न कर दे। आगे प्रशासन पर निर्भर करता है कि उसके पिछले कार्यो को देखते हुए उनमे गम्भीरता ओर उनके परिणामो को देखते हुए उसे सुधारने का मौका दे या उसका जीवन समाप्त करने की कार्यवाही की जाए। अर्थात् बडे स्पष्ट शब्दो मे प्रशासन को इस निर्णय की खुली छूट होनी चाहिए कि वे ऐसे तत्वो से निपटने के लिए स्वय ही उचित निर्णय ले और प्रशासनिक कार्यो मे राजनीतिक दखलबाजी नही होनी चाहिए।

प्रशासन के अधिकारी अपनी जान पर खेल कर अपराधियो और आतकवादियो को काबू करते हैं तो राजनीतिक लोग उन्हे किसी न किसी प्रकार से मदद पहुचाने का प्रयास करते है। यह कार्य मौखिक आदेशो के द्वारा गिरफ्तार किये गये लोगो को छोडने के रूप मे हो सकता है या समाज के किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति या व्यक्तियो का अपहरण होने के बाद उनकी जान बचाने का दिखावा करते हुए गिरफ्तार व्यक्तियो को छोडने का लिखित आदेश देकर भी हो सकता है या एक नया तरीका जैसा कि प्रधानमत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने प्रशस्त किया है – युद्ध विराम के द्वारा भी हो सकता है।

युद्ध विराम का परिणामिक अर्थ यही निकलता है कि पुलिस और सेना कार्यवाही मे लचीलापन दिखाए और उग्रवादी अपनी इच्छानुसार अपने कार्य सम्पन्न करे। युद्ध विराम के इन दो महीनो मे जहा सैकडो सैनिक और नागरिक शहीद हो गये वहा कुछ दर्जन उग्रवादी भी सरकार के हाथ नहीं आए और न मारे गये।

– वेदव्रत शर्मा

पूरब और पश्चिम



अक्सर लोग यह मानते हैं कि सभ्यताए जन्म लेती है और धीरे धीरे उनका विकास होता है। इस वक्त विश्व मे लगभग तीन प्रकार की वृहद श्रेणिया सभ्यता के नाम पर स्थापित है – हिन्दू, मुस्लिम और ईसाई सभ्यता। परन्तु एक सुधारवादी मस्तिष्क के रूप मे विकास की ओर अग्रसर होने के कारण और महर्षि दयानन्द के विचारो के प्रभाव के कारण मेरा विश्वास है कि इन समुदायो के नाम पर चल रही सभ्यताओ पर विचार विश्लेषण अथवा निष्कर्ष निकालना उचित प्रतीत नहीं होता। क्योकि कोई भी एक वर्ग या समुदाय एक ही प्रकार की मान्यताओ का पोषक या अन्धानुयायी नही हो सकता। हर समुदाय मे सुधारवादी बुद्धिया अवश्यमेव विद्यमान रहती है।

सभ्यताओ का उचित अध्ययन तभी हो सकता है जब उसे ऐसी श्रेणियो मे बाटा जाए जिनमे से किसी भी व्यक्ति के लिए अपने आप को किसी एक मे स्थापित करना बहुत कठिन न हो। इस दृष्टि से यदि हम आधुनिक सभ्यता और प्राचीन सभ्यता का वर्गीकरण अपने दिमाग मे रखे और इन दोनो सभ्यताओ के विचारो पर विस्तृत अध्ययन करे और इन दोनो सभ्यताओ के विचारो पर विस्तृत अध्ययन करे तो निश्चय ही किसी के लिए भी यह सरल कार्य होगा कि वह स्वय को इन दोनो सभ्यताओ मे से किसी एक का छात्र मानना प्रारम्भ कर दे।

प्राचीन सभ्यता का उदगम समूचे ग्लोब के आधार पर मैं पूरब दिशा मानता हू। और आधुनिक सभ्यता का उदगम मैं ग्लोब का पश्चिम क्षेत्र मानता हू। इस विचार को वैज्ञानिकता की कसौटी पर भी सिद्ध किया जा सकता है क्योकि सृष्टि उत्पत्ति के बाद मानव की उत्पत्ति ग्लोब के पूरब क्षेत्र मे त्रिविष्टप (तिब्बत) नामक स्थान पर हुई। ज्ञान का उदय अर्थात वेदो का उद्गम भी ग्लोब के पूरब क्षेत्र मे ही हुआ। भारत को इसीलिए वेदो की धरती कहा जाता है। वेदो के उदगम के बाद अन्य सैकडो हजारो अमूल्य ग्रन्थो के रचित होने के बाद ग्लोब का यह पूरब क्षेत्र ज्ञान का जगल बनता चला गया। ज्ञान के इसी जगल के आधार पर पूरब का व्यक्ति विशेषत भारतवासी स्वय को पूरब सभ्यता का ध्वज वाहक मानता हैं।

पूरब सभ्यता के विपरीत लगभग दो तीन हजार साल से कुछ नवीन परम्पराओ का उद्भव होना प्रारम्भ हो गया। यह नवीनता मुख्यत ग्लोब के पश्चिम क्षेत्रो मे उदय हो रही थी। अत इस नवीन सभ्यता को पश्चिमी सभ्यता कहे तो अनुचित नहीं होगा।

अथ पूरब-पश्चिम कथा आरम्भ

(१) पूरब सभ्यता की मूल और प्राथमिक अवधारणा धर्म है। धर्म ने यहा के समस्त क्षेत्रो जैसे राजनीति कानून युद्ध शान्ति लोगो के निजी और सार्वजनिक जीवन पर सदैव बडा भारी प्रभाव बनाये रखा है। पूर्वी सभ्यता मे हर कार्य धर्म की प्रधानता से युक्त रहता है अन्य सब बाते गौण रहती है।

जबकि पश्चिमी सभ्यता मे धर्म शब्द का न तो अनुसरण किया जाता है और न ही इसकी कोई पर्यायवाची अन्य भाषा उपलब्ध है। धर्म शब्द के स्थान पर पश्चिमी भाषाओं का उत्पादन है रिलीजन जिसका अर्थ है पन्थ या समुदाय। पन्थ और समुदाय के सब कार्य विचारवादी न हो करके प्रक्रियावादी है अत जीवन के सब कार्यों मे इन प्रक्रियाओं की स्थापना सम्भव ही नहीं।

(२) पूरब सभ्यता मे जहा व्यक्ति के आन्तरिक और लम्बी अवधि तक रहने वाली सन्तुष्टि का प्रयास किया जाता है इसके विपरीत पश्चिमी सभ्यता मे वाह्य अर्थात शारीरिक सन्तुष्टि महत्वपूर्ण होती है और यह शारीरिक सन्तुष्टि लम्बे समय तक नहीं रहती। ऐसा जानते हुए भी थोडी सी अवधि के लिए उस शारीरिक सन्तुष्टि का हर सम्भव प्रयास और चेष्टाए सम्पन्न की जाती है।

जैसे पूर्वी सभ्यता का अनुयायी धन कमाता है केवलमात्र परोपकारी और धार्मिक कार्यो को सम्पन्न करने के लिए। बेशक वह धन का काफी सचय भी करता है परन्तु उस धन सचय का अभिप्राय भी केबल मात्र एक व्यक्ति या एक परिवार का पालन नहीं होता अपितु वृहद समाज उस धन का पात्र निर्धारित होता है। इन उद्देश्यो से कमाए गये धन और व्यय किये गये धन से पूर्वी सभ्यता के इस व्यक्ति को लम्बे समय तक आत्म सन्तुष्टि प्राप्त होती है। कभी कभी तो यह सन्तुष्टि उसके जीवन की अवधि सीमा को भी लाघ कर अगले जन्मो तक भी बनी रहती है। इसके विपरीत पश्चिमी सभ्यता का व्यक्ति धन कमाता है तो उसका प्राथमिक उद्देश्य मै और मेरा परिवार होता है। अपना जीवनयापन करते करते अचानक कुछ परोपकार हो जाए तो हो जाए परन्तु वह उसका मुख्य लक्ष्य नहीं था। धन कमाकर अधिक से अधिक कामनाओ की पूर्ति करते हुए पश्चिमी व्यक्ति यह भूल जाता है कि कामनाओ को तृप्त करते करते कामनाए सदैव बढती हैं तृप्त नहीं होती। *(क्रमश)*

– विमल वधावन

'काले अंग्रेज' भारत को क्या बनाने पर तुले हैं

— लक्ष्मीकाता चावला

'कुछ सौ वर्ष पूर्व की बात है हमारा दिन सूर्य की प्रथम किरण के साथ प्रारम्भ होता था। राज्यादेश जारी करते समय यह घोषणा की जाती थी कि अमुक दिवस को सूर्य की पहली किरण के साथ ही यह लागू हो जाएगा। सूर्योदय से पूर्व उषा काल और उससे भी पूर्व के समय को ब्राह्म मुहूर्त माना जाता था। पर स्वतन्त्र देश के शासक और शासको के साथ ही हम आम आदमी बहुत कुछ भूलते जा रहे हैं। अंग्रेजो की गुलामी ने हमे आत्मविस्मृत बनाने का प्रयास किया किन्तु स्वतन्त्र भारत मे भी हम और हमारे शासक यह मानने को तैयार ही नहीं कि हमे हमारा वास्तविक रूप विस्मृत हो चुका है। सच तो यह है कि अ धिकतर यही प्रयास किया जा रहा है कि अंग्रेजो द्वारा गुलामी के दिनो मे बनाई रस्मे चलती रहे स्वदेशी की रोशनी देशवासियो के निकट न आ सके।

प्रभात के बजाय आधी रात

सूर्य की प्रथम किरण के साथ नए राज्यादेश लागू करने करवाने वाली सस्कृति के देश के शासक भारतवासी आधी रात को ही नया दिन मानने लगे है। रात के १२ बजकर एक मिनट ऊपर होते ही सरकार मध्यरात्रि मे ही दिन मानने लगती है। जब अग्रेजो की गुलामी से भारत को स्वतन्त्रता मिली तब हमे वही समय स्वीकार करना पडा जो अग्रेज शासक चाहते थे। उन्होन अपनी सस्कृति का अनुसरण करत हुए आधी रात के ही कुछ पल आगे पीछे कर १४ और १४ अगस्त का पाक ओर भारत की स्वतन्त्रता घोषित की।

नये राज्य आधी रात मे

हमारे बलिदानी वीरो ने अग्रेजो को निकाल बाहर किया पर हमारे शासक उनकी लकीर की फकीरी आज भी आख मूदे बडी शान से कर रहे है। अभी पिछले कुछ सप्ताहो मे तीन बडे जश्न हुए। छत्तीसगढ उत्तराचल और झारखण्ड तीन नये राज्य अस्तित्व मे आए। हम गुलाम मानसिकता मे इस बुरी तरह धसे हैं कि रात बारह बजते ही सरकारी आदेशो से आधी रात को ही नया दिन मान कर नाचने लगे। किसी ने यह पूछना आवश्यक नहीं समझा कि आखिर आधी रात को ही सरकार उत्सवो के लिए क्यो बेताब हो गई और रात के अधेरो को ही दिन समझ लेने तथा जन–साधारण को भी यही समझाने की मजबूरी क्या है ?

गाधी जी ने किसी सद्भाव को लक्ष्य कर बुरा न बोलने न देखने और न सुनने का सकेतात्मक उपदेश दिया था किन्तु हमने कुछ ऐसा सकल्प कर लिया कि सामने अनुचित कार्य होते देखकर भी देखते बोलते नहीं। कठपुतलियों की तरह किसी के धागे से बधे नाचते हैं। सरकार ने कहा कि आधी रात को नया दिन होगा नया राज्य बनेगा और हमने मान लिया। सरकारी जश्न हुआ तथा उसमे हमने भाग लिया।

कामकाज का दिन देर से निकलता है। ब्राह्म मुहूर्त उषाकाल ओर सूर्य की प्रथम किरण न सही बडे बडे बल्बो और सर्च लाइटो के प्रकाश तले ही नए राज्यो की स्थापना हो गई। मैन किसी को भी अपने बच्चे का नामकरण सस्कार मुण्डन अथवा पगडी बाधने का उत्सव गृह प्रवेश का उत्सव आधी रात को करते नहीं दखा। शगुन और सगाई भी दिन मे ही होते हे कम से कम आधी रात का नही पर यह नही समझ पाए कि सरकारी दिन आधी रात को ही क्यो चढता है ?

किसी मुख्यमन्त्री जी को फोन कर यह प्रार्थना कर कि आवश्यक काम से अभी मिलना है किसी गृह सचिव या रक्षा सचिव से रात बारह बज फान पर अपने या प्रान्त के सकट के सम्बन्ध म कुछ कहना चाहे या जनता का प्रतिनिधिमण्डल मिलन का समय मागे तो उनका निश्चित उत्तर यहीं होगा कि आखिर क्या मुसीबत आ गइ जो आधी रात को ही फोन की घण्टी बजाना शुरू कर दिया दिन तो चढने दो। सही बात यह है कि रात को साहब लोग स्वय फोन उठाने का कष्ट ही नही करत उनके लिए दूसरे कर्मचारी जागते है। उनकी क्या मजाल कि आधी रात को साहब को घण्टी की आवाज पहुचवा दे ? हां ऊपर स आने वाली घण्टी पहुच सकती है। अब तो यह काम साथ घूमते फोनर हो सकता है। स्नान और नाश्ता करने के लिए बच्चो को स्कूल भजने के लिए दफ्तर जाने और जनता से मिलने के लिए दिन सूर्योदय के भी बहुत बाद चढता है पर नए राज्यो के गठन की धूमधाम करने के लिए आधी रात को ही नया दिन दिखाई देने लगता है। यू कहिए कि देखने का आदेश मिलता है। जश्नो के मुख्य अतिथियो की प्रतीक्षा हो सकती है सूर्योदय की नही।

निशाचरी सस्कृति

इसी मानसिकता का दुष्परिणाम यह है कि स्वतन्त्रता के तिरेपन वर्ष पश्चात भी हमारे बहुत से देशवासी ३१ दिसम्बर की आधी रात को ही सडको पर पीते झूमते पटाखे चलाते नए वर्ष का नया दिन मनाने लगते हैं। हम पश्चिम की नकल करने मे अपने पुराने मालिको का अनुसरण करने मे ही बडप्पन मानते है और अब तो कुछ कहने को बचा ही नहीं जब भारत सरकार की देखरेख मे ई सन २००० विक्रमी सम्वत २०५७ मे भी स्वतन्त्रता की स्वर्ण जयन्ती उत्सवो की धूमधाम के बाद भी नए राज्यो की स्थापना रात के घने अन्धेरो के बीच हो रही है।

तमसो मा ज्योतिर्गमय के मन्त्र का गान एव तदर्थ प्रयास करने वाला देश विदेशी मानसिकता मे ग्रस्त स्वदेशी शासको के शासन मे भारतीय सस्कृति एव जीवन पद्धति से जितना दूर हुआ उतना अग्रेजी गुलामी मे नही हो सका।

जन्म दिन पर दीप बुझाना अशुभ

अग्रेजो के समय म ओर उनके जान के बहुत वर्ष बाद तक भी अपने बच्चा के जन्म दिवस पर दीपक बुझा कर मनाने वालो की सख्या हमार देश मे बहुत थोडी थी। स्वतन्त्र भारत मे यह सख्या बढती गई और अब जब भारतीय दूरदर्शन के बहुत से कार्यक्रमो ओर फिल्मो मे भी जन्मदिन पर दीपक बुझा कर तालिया मारने के दृश्य दिखाए जाने लगे तो इस विदेशी प्रवाह को कौन रोक सकता है ? एक बार दश के एक राष्ट्रपति को ही अपना जन्म दिवस दीपक बुझा कर बधाइ लेते हुए दूरदर्शन वालो ने दिखा दिया इससे दिखाई देने लगा कि दश को किस दिशा मे धकेला जा रहा है। वैसे भी अपने देश मे लगभग बारह प्रतिशत लोग ऐसे है जो भारत के विषय मे न जानते हैं न जानना चाहत हे। वे इडियन ह ओर इटरनैशनल दिखाई देने की चिता मे लगे रहते है। कुछ माता पिता यह भी तक देते है कि बच्चे अपने मित्रो क घर मे यह देख कर आते हे कैसा घटिया आत्मसमर्पण हे। देखा ओर नकल कर लिया दिखान और अनुसरण करन के लिए हमारे पास कुछ और नहीं है ? सच हे यथा राजा तथा प्रजा इसलिए तो भगवान श्रीकृष्ण ने गीता मे कहा है

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जन
स यत्प्रमाण कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।

अर्थात जिस युग के श्रेष्ठ व्यक्ति जो आचरण करते है अन्य लोग उसकी नकल करते हैं। इसी मानसिकता का ही यह परिणाम है कि आज देश हिन्दी दिवस मनाने को विवश है। जिन महान नेताओ के नाती पोते कभी भारतीय भाषाओ एव भारतीय जीवन पद्धति से सप्रयास दूर रखे जाते हैं जिनके हस्ताक्षर घर और दफ्तर के नामपटट पत्र व्यवहार सब अग्रेजी मे है वे एक दिन रैडीमेड भाषण हिन्दी के महत्व पर पढ कर बढिया राशन खाते है और शेष ३६४ दिन भारतीय भाषाओ से पूरा परहेज रखते हैं। अब भारत सरकार ने सस्कृत वर्ष मनाया। एक नहीं तीन सौ पैंसठ दिन का कार्यक्रम दिया। मे मानती हू कि वर्तमान भारत सरकार मे कुछ लोग काफी हद तक सस्कृत के प्रति ईमानदार हैं किन्तु उनके इरादो एव आदेशो की धज्जिया किस प्रकार उडाई जा रही है वे शायद यह जानते ही नहीं अथवा जानकर भी अनजान बने हैं क्योकि वे बेबस आदेश जारीकर्ता हैं।

सस्कृत की हत्या

पजाब सरकार ने सस्कृत वर्ष म जा गुल खिलाया शायद ही किसी अन्य प्रातीय सरकार ने किया हो। सस्कृत को निकाल बाहर किया लेकिन सस्कृत प्रचार प्रसार के लिए जो करोडो रुपए केन्द्र से आए व पूरी तरह पचा लिए। पजाब सरकार की सस्कृत के प्रति शत्रु नीति के विरोध मे विद्यार्थी अध्यापक तथा अन्य कइ सगठन सडको पर आन्दोलन के लिए आ बैठे हैं पर सरकार बेखबर होने का ढोग कर रही है। पजाब के सरकारी स्कूलो से सस्कृत का कुछ वष पूर्व ही बाहर धकेल दिया गया था निजी शिक्षण सस्थाओ द्वारा सचालित बहुत से स्कूलो मे सस्कृत पढाने का सुचारू प्रबन्ध अब भी है। कुछ वष पूर्व आठवी ओर दसवी मे सस्कृत की परीक्षा देने वाले छात्रो पर अतिरिक्त फीस लगा दी यू कहिए सस्कृत पढन वालो को जजिया देना पडा। तब आम आदमी स बी० एई०पी० बन गए नेताओ ने जनता की आवाज न सुनी लेकिन सस्कृत पढने पढाने का काम चलता रहा। निश्चित ही इसी से परशान होकर पजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड ने काला आदेश जारी कर यह घोषणा कर दी कि आठवी और दसवीं मे सस्कृत की परीक्षा देने वालो के प्राप्त अक पूर्णाका म नहीं जोडे जाएग। भारत सरकार के सस्कृत वर्ष की सारी सदभावना को पजाब सरकार ने स्याही स काला कर दिया। इस आदेश क पीछ पजाब सरकार का गुप्त नही खुला एजडा हे पजाब से सस्कृत व भारतीय सस्कृति का दूर करन की

क्या सरकार यह नही जानती कि हिन्दी और पजाबी के प्राध्यापको के लिए बी०ए० तक का सस्कृत ज्ञान आवश्यक है ? क्या यह पता नहीं कि बी०एम०एस० मे सस्कृत का विषय आवश्यक है ? क्या यह भूल गए कि गुरु गोविन्द सिह जी ने पजाब के हित मे यहा के विद्वानो को सस्कृत पढने काशी भेजा था ? पजाबी स्वय ६० से ७० प्रतिशत तक सस्कृतमय हैं। ऐसे म सस्कृत स पजाबियो का नाता तुडवा कर पजाबी का विकास करने की बात कहने वाले हमारे पजाब के शासक पजाबी का ही अहित कर रहे हैं। हम सबको जो भारतवासी है इस बारे मे चिन्ता करनी है। बहुत से शासक और प्रशासक तो यहा से धन बटोर कर यूरोप तथा अमरीका मे बस सकते हैं परन्तु हमे तो अपने पूर्वजो की विरासत को सम्भालना एव सवारना है। विदेशी हमारी सस्कृति व सस्कृत सीख रहे हैं और उसका लाभ उठा रहे हैं पर हम अपने पावो पर कुल्हाडी मार रहे है। याद रखिए

सर सूखे पछी उडे और शरण समाहिं।
दीन मीन बिनु पख के कहा रहीम कह जाहिं।

(पजाब केसरी से साभार)

वैदिक आर्थिक चिन्तन

– डॉ० भवानी लाल भारतीय

(सेवा निवृत्त प्रोफेसर तथा अध्यक्ष दयानन्द शोधपीठ, पजाब विश्व विद्यालय)

वैदिक साहित्य म परा और अपरा भद स विद्या को दो प्रकार का माना गया है। मुण्डकोपनिषद क अनुसार ऋग्गादि चारो वेदो की गणना अपरा विद्या मे की गई है जबकि अनादि अक्षर परमात्मा तत्व को बताने वाली विद्या परा कही गई है उसका कारण यह है कि वदो मे जहा धर्म अध्यात्म तथा दर्शन की चर्चा हुई है वहा अनेक लौकिक विषय भी वेदो मे वर्णित हुए है। यह समझना होगा कि वेदो को अपरा विद्या के अन्तर्गत लाकर उपनिषदकार ने उनका अवमूल्यन नहीं किया है अपितु उन्हे सब विद्याओ का भण्डार बताया है। मनु ने इसी अभिप्राय को **सर्वज्ञानमयोहि स** कह कर व्यक्त किया और ऋषि दयानन्द ने वेद को समस्त सत्य विद्याओ की पुस्तक बताया।

किसी देश या समाज की अर्थव्यवस्था वहा की शासन व्यवस्था पर निर्भर रहती है। ऋग्वेद के एक मत्र म कहा गया है – स्वराज्य की रक्षा एक व्यक्ति के द्वारा नहीं की जा सकती। बहुतो को मिलकर स्वराज्य रक्षणके लिए यत्नशील होना चाहिए –

'आ यद्वामीयचक्षसा मित्र वय च सूरय व्यचिष्ठे बहुपाय्ये यतेमहि स्वराज्ये।। ५/६६/६

ऋषि दयानन्द न उस मत्र के भावाथ म लिखा है – मनुष्यो को चाहिए कि मित्रता करक अपने तथा दूसरे क राज्य की न्याय से रक्षा करके धर्म की उन्नति करे। अन्यत्र कहा गया है कि राष्ट्र की अभिवृद्धि तथा उसके कल्याण का चिन्तन दे ऋषि लोग करते हैं जो अपनी तपस्या और ज्ञान के द्वारा स्वदेश के बल और ओज की सतत बुद्धि मे लगे रहते है।

भदमिच्छन्त ऋषय स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे, ततो राष्ट्र बलमोजश्च जात तदस्मै देवा उपसनमन्तु।।

अथर्व १६/४६/१

ब्राह्मण ग्रन्थो मे साम्राज्य भौज्य स्वराज्य वैराज्य पारमेष्ठय राज्य महाराज्य आदि विभिन्न शासन प्रणालियो की चर्चा आई है जिससे विदित होता है कि यद्यपि शासन पद्धतियो को लेकर प्राचीन समय मे विविध अवधारणाए प्रचलित थी किन्तु समुद्र पर्यन्त पृथ्वी पर सार्वभौम एकराट साम्राज्य की स्थापना का विचार भी ऋषियो के मन मे आया था जिससे इस ग्रह पर निवास करने वाले निखिल मानव समाज का हित हो सके। वैदिक मत के अनुसार प्रजाजनो मे ही राजा (शासक) की स्थिति या अस्तित्व माना गया है –

"विशि राजा प्रतिष्ठित ' यदि हम वैदिक शासन व्यवस्था को यथार्थत जानना चाहे तो हमे वेदो के कतिपय स्थलो ब्राह्मण ग्रन्थो के अनेक प्रकरणो स्मृति ग्रन्थो मे उल्लिखित विधि विधानो के अतिरिक्त महाभारत के पूर्ववर्ती मनु शुक्र भारद्वाज पराशर गर्ग भागुरि आदि ऋषियो के ग्रन्थो महाभारत काल मे विद्यमान भीष्म व्यास कृष्ण तथा बिदुर एव कृष्ण सखा उद्धव के विचारो तथा महाभारत क उत्तरवर्ती विष्णुगुप्त चाणक्य (कोटिल्य) हितोपदेश के प्रवक्ता विष्णु शमा कामन्दक नीति के प्रणेता आचार्य कामन्दक तथा सोमदेव सूरि जेसे नीति विशारदो शासन व्यवस्था तथा अर्थ नीति विषयक मन्तव्यो का ऊहापोह करना हागा।

वैदिक चिन्तन मे मनुष्य की वैयक्तिक तथा समूहगत उन्नति के लिए पुरुषार्थ चतुष्टय को सिद्ध करना आवश्यक माना गया है। इन चतुर्विध पुरुषार्थो मे धर्म को प्रथम स्थान मिला है जबकि अर्थ दूसरे स्थान पर है। आचार्य चाणक्य के मत मे **धर्मस्य मूल अर्थम"**। धर्मपूर्वक अर्थ का सचय ही हमारे लिए हित ओर मगल करने वाल' होता हे। इसलिए इस अथ का रक्षण वधन तथा उपभोग भी क्रमश होना चाहिए –

धनमूला क्रिया सर्वा यत्न तस्यार्जने मत ।

रक्षण वर्धन भोगत्रय तस्य विधि क्रमात्।।

आगे इस धन को तीन प्रकार का बताया गया है – शुद्ध शबल और कृष्ण (काला धन Black Money)। कृष्ण धन को आज दूसरे नम्बर का पैसा कहा जाता है जो चोरी लूट तस्करी रिश्वत द्यूत (जुआ) आदि अनैतिक साधनो से अर्जित किया जाता है। प्रतिरूपक अर्थात चकली और जाली वस्तुए बनाना नकली लेबल लगाना चोर बाजारी करना जैसे बेईमानी के धन्धो से कमाया धन कृष्ण है।

वस्तुत वैदिक जीवन की भी मासा धर्म और अर्थ के सन्तुलन पर खडा है। यहा धन के सचय के लिए आदेश है तो समाज के हित मे उसके वितरण पर भी जोर दिया गया है –

शतहस्त समाहर सहस्त्रहस्त स किर, कृतस्य कार्यस्य चेह स्फाति समावह।। *अथर्व ३/२४/५*

सौ हाथो वाले होकर धन धान्य का सग्रह करो किन्तु हजार हाथों वाले होकर उसका दान करो लोकोपकार के लिए उस वितरित करो। यजुर्वेद मे **'मा गृध '** कहकर धन से विरत होने के लिए कहा गया है। कारण कि अन्तत यह धन किसी का नही हे – **'कस्यस्वित् धनम्'** (४०/१) क का अर्थ यदि प्रजापति से ले तो इसका अर्थ होगा यह धन प्रजापति परमेश्वर का है ईश्वरदत्त है अत इसे दैवी वरदान समझ कर इसका मर्यादापूर्वक भोग ही उचित है।

वैदिक अर्थ व्यवस्था मे धन के उपयुक्त सन्तुलित विभाजन पर जोर दिया गया है –

"सविभ्य हि भोक्तव्य धन सद्‌भिरितीष्यते'

धन का यह विभाजन भी साधुजनो द्वारा ही किया जाना चाहिए। क्षुद्र और स्वार्थी लोग धन पर एकाधिकार स्थापित करना चाहते है। इसी बात को ध्यान मे रख कर आचार्य मनु ने कहा था – **यो असा[ध्]भ्यो अर्थमादाय साधुभ्य सम्प्रयच्छति, स त्वा प्लवभात्मान सतारयति तावुभौ।।**

११/१

अथ[ात्] जो असाधु जनो (काला बाजारेया तस्करो रिश्वतखारो) से धन छीन कर साधुजनो (समाज के साधारण लोग) को देता है वह न्याय रू[पी] [नौ]का के द्वारा उन दोनो (साधु और असाधु) को तार देता है।

धन के विभाजन और वितरण मे किसी प्रकार की जोर जबरदस्ती तथा हिसा का प्रयोग अनुचित है। धनियो से यह अपेक्षा की गई है कि वे स्वोपार्जित धन को समाज की भलाई के लिए स्वेच्छा से दान करे। इसी प्रकार जो दरिद्र हैं उन्हे अपनी दरिद्रता का रोना न रोकर पुरुषार्थपूर्वक धनोपार्जन करना चाहिए। महामति विदुर ने दान न देने वाले धनिक तथा आलसी प्रमादी तथा अतपस्वी किन्तु गरीबी का हल्ला मचाने वाले दोनों को पानी मे डुबो देने के दण्ड का विधान किया है –

द्वावम्भसि निवेष्टव्यौ गले बद्ध्वा दृढा शिलाम्, धनवन्तमदातार दरिद्रम् चातपस्विनम्।। १/३४

फलितार्थ यह निकला कि अदानशीलता तथा परिश्रम विमुखता दोनों ही समाज के लिए हानिकारक हैं। इसी बात को ध्यान मे रखकर वेद भी सविता परमात्मा को विभिन्न भोग्य पदार्थों का न्यायपूर्वक विभाजनकर्ता रहता है –

'विभक्तार हवामहे वसोश्चित्रस्य राधस , सवितार नृचक्षसम्

ऋग्वेद १/२२/७

वैदिक अर्थ व्यवस्था मे एकागी निवृत्ति मार्ग के लिए स्थान नहीं है। वेदो मे मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओ अन्न वस्त्र निवास शिक्षा चिकित्सा आदि के लिए उपयुक्त तथा प्रचुर साधन जुटाने की बात कही गई है। यजुर्वेद मे घृत पय कीलाल आदि भक्ष्य पदार्थों का उल्लेख हुआ है। इसी सहिता मे ब्रीहि यव माष तिल मुद्ग (मूग) नीवार गोधूम (गेहू) मसूर आदि अनाजो और दालो की चर्चा आई है। इसी वेद मे चतुर जुलाहो के द्वारा सूती तथा ऊनी वस्त्रो के बुनने का उल्लेख हुआ है। अथर्ववेद (३/१२) मे भवन निर्माण (शाला कर्म) तथा भवनों मे गृहस्थो के सुख पूर्वक रहने की चर्चा आई है। स्वामी दयानन्द ने सस्कार विधि मे शाला कर्म विधि लिखकर एक आदर्श आर्य के घर मे हविर्धान अग्निशाला पत्नी सदन देवसदन आदि विभिन्न कक्षो के निर्माण की आवश्यकता बताई है। चिकित्सा मे प्रयुक्त होने वाली विधि औषधियो तथा वनस्पतियो का विस्तारपूर्वक उल्लेख अथर्ववेद मे मिलता है – द्रष्टव्य अथर्ववेदीय चिकित्सा शास्त्र स्वामी ब्रह्ममुनि रचित। यजुर्वेद मे तो रुद्र को दैवी भिषक (श्रेष्ठ पुरुषो का चिकित्सक कहा गया हे। द्रष्टव्य – रुद्राध्याय) अथर्ववेद का ब्रह्मचर्य सूक्त (११/५) शिक्षा और शिक्षक के आदर्शो का निरूपण करता है।

अर्थ व्यवस्था को सुदृढ बनाने के लिए वर्णाश्रम विधान का निरूपण वैदिक जीवन मीमासा की विशेषता है। समाज को आर्थिक दृष्टि से समुन्नत करने मे वैश्य वर्ग की प्रमुख भूमिका रहती है। तथापि इस कार्य मे अन्य वर्णों की भागीदारी भी कम नहीं है। ब्राह्मण को समाज का मूर्धास्थान प्रदान कर उससे यह अपेक्षा की जाती है कि वह राष्ट्र मे ऐसा बौद्धिक वातावरण बनायेगा जिससे अर्थोपार्जन मे रत वैश्य को समुचित सहायता प्रेरणा तथा मार्गदर्शन मिल सके। इसी प्रकार क्षत्रिय को राष्ट्र की सुरक्षा के कार्य मे लगाया गया तथा उसे व्यापारी वर्ग को समुचित सरक्षण देने के लिए कहा। रहा शूद्र या श्रमिक वर्ग। चाहे वह विद्या बुद्धि शौर्य पराक्रम तथा विचार शक्ति मे त्रैवर्णों के तुल्य नही किन्तु शारीरिक श्रम द्वारा उपभोक्ता वस्तुओं के निर्माण के लिए उसकी सेवाए ली जा सकती हैं।

शेष भाग पृष्ठ १० पर

शिक्षक, शिक्षार्थी और शिक्षणालयों का उत्तरदायित्व

– श्री विनय गौतम

शिक्षा–जगत का अधिष्ठाता आचार्य या शिक्षक ह। पर आज आचार्य वरतन्तु समथ गुरु रामदास मुनि सादीपनि गर्गाचार्य आदि की कल्पनामात्र शष हे। शिक्षा–जगत के प्रहरी माना सुप्त हे। माता–पिता उसके चरित्र–निर्माण के लिए योग्य आचार्यो के पास भेजते थे। शिक्षा का लक्ष्य केवल अर्थोपार्जन नही था। शिक्षा धर्म और मोक्ष की प्राप्ति का सोपान थी। ऐसी शिक्षा अध्यात्म–विचारा की अधिष्ठात्री मानवीय गुणो की उपदेशिका और अध्यात्मक चरित्र की उन्नायिका थी।

आज स्थिति भयावह है। इस जगत के शिक्षक शिक्षार्थी और शिक्षा – ये तीनो अग आत्मस्वरूप से विमुख है। इसका प्रमुख कारण है – धर्म–निरपेक्ष प्रशासन का अनर्थीकरण धर्मनिरपेक्षिता का वास्तविक अर्थ न समझ कर धर्म नीति और सस्कृति पर कुठाराघात। जो शिक्षा अमृतलता थी वह विषवल्लरी बन गयी। उसका विष राष्ट्र क हर क्षेत्र मे फैलता जा रहा है। इसका सबस अधिक कुप्रभाव विद्यार्थी वर्ग पर पडा।

धर्मविहीन आधुनिक शिक्षा ने शिक्षार्थियो की युवापीढी को ऐवरेस्ट के शिखर से उठा कर एक ऐसी अन्धेरी तलहटी मे औधे मुह पटक दिया है जहा उसकी चेतना मानवीय भावना सामाजिक राष्ट्रीय और धार्मिक साधना लुप्त हो गयी है। सदभाव सत्साहित्य और सत्सग से विमुख होकर हडताल तोड–फोड और लूट–खसोद करने मे गुरुजनो की अवहेलना किशोरावस्था मे दुर्व्यसनो मे फसना अनुशासनहीनता नेतागिरी और निन्दनीय कर्मो मे नेतृत्व करना आज क शिक्षार्थी की शान समझा जाता है। आज देश मे प्रत्येक स्तर पर दिशा मे जन–जन के मानस मे त्रास पतन उथल–पुथल मच रही है। राजनीति मे अनाचार भ्रष्टाचार बलात्कार चोरी डकैती अपहरण और हत्या बढ रही है। व्यक्ति मे सजावट दिखावट और कृत्रिमता बढ रही है। भारतीयता ठुकराई जा रही है। सस्कृति पर नया रग पोता जा रहा है। शिक्षा के प्राण चरित्र का हनन हो रहा है। अत्यन्त विषम परिस्थिति तो यह है कि शिक्षार्थी का जीवन जर्जर है। फलत उसमें विनय के स्थान पर उद्दण्डता स्वतन्त्रता के नाम पर स्वच्छन्दता और अनुशासन मे बन्धन की गन्ध आने लगी है। शिक्षणालय भ्रष्ट राजनीति के अखाडे और शिक्षणालयो के छात्रावास असामाजिक तत्वो के अडडे बने हैं।

शिक्षार्थियो के चरित्र–गठन की साधना ही उनके जीवन–गठन की आधारशिला है। मनु महाराज द्वारा उपदिष्ट–अहिंसा अस्तेय सत्य शौच और इन्द्रियनिग्रह – इन पाच कर्मो पर मानव–सस्कृति की गगनचुम्बी अटटालिका स्थिर की जा सकती है। शिक्षक–बन्धुओ को इन पाच कर्मो के अनुसार जीवन–यापन करने के साथ–साथ अपने शिक्षार्थियो मे भी इन्हीं आदर्श कर्मो की प्रेरणा देनी चाहिए ताकि वे अपने राष्ट्र को उच्च बनाने मे सक्षम हो सके। जब राष्ट्र चरित्रवान् महापुरुषो के नेतृत्व द्वारा परिचालित होता है तब राष्ट्रवासी अल्प त्याग स भी विपुल समृद्धि का अर्जन करने म समर्थ हाते है।

राष्ट्र को प्रगति–पथ पर अग्रसर करने क लिए शिक्षार्थिया मे सदाचार चरित्र ओर शील की भावनाए आवश्यक ही नही प्रत्युत अनिवार्य भी हे। हमारे राष्ट्र मे प्राचीन काल से ही सदाचार की एक सात्विक सरिता सतत प्रवाहित हाती रही हे ओर अजस्र स्रोत प्रवाहमान रहा है। सदाचार क इसी अक्षय स्रोत से हम आज के युद्ध–जर्जर और विषाक्त विश्व के लिए शीतल जल लेकर कल्याण का कार्यक्षेत्र सिक्त कर सकते है मानवता का पथप्रशस्त कर सकते हे ओर प्रम का पावन प्रकाश विकीर्ण कर सकते है। सदाचार के सोपान पर आरूढ हो कर ही हमारे भारतवर्ष के भावी कर्णधार शिक्षार्थी गौरव और आनन्द की प्राप्ति कर सकते है और चारित्र्य की वाटिका मे ही जीवन–पुष्प की सर्वश्रेष्ठ सुगन्ध फैला सकते है। अमृतत्व की प्राप्ति ही मानव–जीवन का एकमात्र लक्ष्य है। सदाचार शील और चरित्र की पावन त्रिवणी धारा मे गोता लगाए बिना वह अमृतत्व प्राप्त नही हो सकता है।

आज मानव के मन मे जो अशान्ति आ रही है वह इसलिए कि उसके जीवन से सदाचार का स्रोत शुष्क हो चुका है ओर शील की सरिता सूख गई है। आज हमारे ज्ञान विज्ञान सभी व्यर्थ सिद्ध होगे यदि भारत के शिक्षणालयो क शिक्षार्थी सदाचारी शीलवान और चरित्रवान नही बनते हे। इसलिए हमार शिक्षको का यह परम कर्त्तव्य बन जाता है कि व अपन छात्रा बालका मे शील सदाचार धर्म नीति और चारित्र्य की भावनाए प्रतिष्ठित करे और उनके जीवन का पवित्र बनाए। शिक्षार्थियो के जीवन के पवित्र होने पर समाज सात्विक गुणयुक्त हो सकता हे और विश्व विमल बन सकता है। सदाचार और शील के अपनाने पर ही हमारे भावी राष्ट्र–निर्माता शिक्षार्थी अपना राष्ट्र का और विश्व का कल्याण कर सकते हैं।

भारत की सदाचार–पद्धति बहुत ही विशिष्ट और सर्वजन स्पृहणीय है। सदाचार पद्धति के आविष्कारक ऋषि महर्षियो ने स्वय भी सदाचार पद्धति के अनुरूप ही अपना समस्त जीवन व्यतीत किया था और उसको अपनी स्मृतियो और पुराणो में स्थान देकर मानव जाति का महान उपकार किया है। आज भी जब हम अपने पूर्वज ऋषि महर्षि प्रणीत सदाचारपूर्ण ग्रन्थो को देखते हैं तो उनमे सदाचार का बहुत ही आदर्शपूर्ण वर्णन मिलता है जिसके अनुसार यदि हमारे शिक्षक जीवन यापन करे और अपने छात्रों को भी ऐसा ही जीवन यापन करने की प्रेरणा दे तो हमारा भारतवर्ष सर्वशक्तिसम्पन्न आदर्श आध्यात्मिक राष्ट्र बन सकता है।

आध्यात्मिक विजय ही स्थायी होती है। उसी के आधार पर किये गये कर्म स्थायी महत्त्व रखते हैं। उसी दैवी तत्त्व के प्रकाश से महान कार्य सम्भव हो सकते हैं। शिक्षार्थी वर्ग को दैवी तत्व के साक्षात्कार और उसक द्वारा महान कार्यो क सिद्धि क मम को शिक्षक बन्धुओ द्वारा समझान की परम आवश्यकता हे। इस देश क मन्त्रद्रष्टा ऋषिया ने मानव–मनाविज्ञान का विशषतया अध्ययन किया था। उन्हान यह जान लिया था कि उन्मुक्त स्वेच्छाचार मानव–जाति के हितमे नही ह। मानव के लिए देवत्व ओर अमृतत्व की ओर पदन्यास करने म निरर्गल–आचरण सर्वदा ही बाधक रहा हे।

भारतवर्ष अपनी सभ्यता और सस्कृति के उषा काल से ही लोकोत्तर चारित्र्य–सम्पदा स समन्वित एक दिव्य देश रहा है। यहा माता की गोद स ही चरित्र–निर्माण की शिक्षा आरम्भ हो जाती थी। ऋग्वेद ५.५१.१५ की मन्त्रश्रृखला मे अनुग्रथित है – स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्यचन्द्रमसाविव अर्थात हम कल्याण मार्ग के उपदेष्टा जाग्रत प्रहरी सूर्य और चन्द्रमा का अनुसरण करते हुए अपना चरित्र–निर्माण करे। यह भारत राष्ट्र की सामान्य जनभावना थी। इसने भारत का विश्वगुरु की महनीय पदवी मे प्रतिष्ठित कर दिया था। आज शिक्षार्थी के चरित्र–निर्माण की महती आवश्यकता है।

प्रत्येक शिक्षणालय शिक्षक और शिक्षार्थी का अपने देश के प्रति महान उत्तरदायित्व होता है। हमारा राष्ट्र भारतवर्ष धर्म और अध्यात्म–विद्या का स्रोत है। हमारी इस पवित्र मातृभूमि का मेरुदण्ड मूलभित्ति या जीवन–केन्द्र एकमात्र धर्म ही है। इसलिए हम इस धर्मपाण राष्ट्र मे धर्म की नीति के अनुसार चलना है। हमारा नैतिक आचरण उच्च व महान हो। हमे अपने प्राचीन गौरव को सम्मुख रख कर हिसा–प्रतिहिसा द्वेष अत्याचार ओर भ्रष्टाचार प्रभृति अनैतिक आचारो से बचना चाहिए। अपने राष्ट्रीय चरित्र के उत्कर्ष के लिए इच्छुक लालायित और प्रयासशील होना चाहिए। यदि हमारे आचार्य और शिक्षक अपने शिक्षार्थियो को इस निर्दिष्ट पद्धति पर चलाने की प्रयास करे और उन्हे उनके राष्ट्रीय उत्तरदायित्व को हृदयगम करा सके तभी अपूर्व महिमा से मण्डित भावी भारत राष्ट्र का पुनर्जागण होगा।

आज भारत देश को चारित्र्य–सम्पदा की महती आवश्यकता है। शिक्षालयो मे शिक्षको द्वारा अपने शिक्षार्थियो को इस चारित्र्य–सम्पदा से विभूषित करना प्रथम कर्त्तव्य है। हजारो वर्ष पहले विश्व के सबसे प्रथम और महान विधिविधायक मनु महाराज थे जिन्होने चरित्र तथा आचरण की विचित्र सहिता दी है। वह धरती पर केवल भारतीयो को ही सुन्दर चरित्र और व्यवहार सिखाने वाली नहीं है प्रत्युत सम्पूर्ण विश्व के सम्पूर्ण मानव–जाति के चरित्र को उन्नत करने वाली है। उसके ही आश्रय से हम पुनः अपने गौरवमय चरित्र को प्राप्त कर सकते है।

आधुनिक अनात्मवादी सभ्यता की शक्तिहीनता तथा असन्तोष के रहते हुए भी हम लोग जो शास्त्र की मर्यादा को आत्मलक्ष्य की पूर्ति के लिए देख हैं वह भारत के प्राचीन सर्वद्रष्टा ऋषियो की देन हमारे हृदयो मे है – सत्यमेव जयते और सत्य ही सच्चरित्र का मूल तत्त्व है। आइए हम मगल–आशासासहित उसी पथ से चलने का दृढतम निश्चय करे जिससे राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण हो सके और भारत को विश्व गुरु का गौरव पुन विश्व दे सके।

– ३०६८ सेक्टर ३७ डी चण्डीगढ १६००३६

आधुनिक संकटों की कुंजी वेदों में मौजूद है

एस० पी० हिंदुजा

भारतीय ज्ञान की परम्परा वदो स शुरू हाती हे और वद दुनिया को भारत की अमूल्य दन हे। वद शब्द की उत्पत्ति विद शब्द से हुई ह जिसका मतलब होता है ज्ञान। वेद ज्ञान के शाश्वत सिद्धान्ता के वज्ञानिक रूप हे जो हर मानवीय सम्बन्ध पर लागू होत हे।

वदा की पहचान हिन्दू धर्म से जोड देने के कारण ढेरो गलतफहमिया पैदा हो गई है। इससे वेदो की वैज्ञानिक जानकारी की प्रकृति के बारे मे बहुत सारी बुनियादी गडबडिया हो गई है। ये गडबडिया चाह उपेक्षा के कारण हुई हो या हमारे समाज को धर्म ओर जाति के आधार पर बाटने की इच्छा क कारण यह बडे शर्म की बात है कि बाटो और राज करो की जिस नीति को हमारे पूर्ववर्ती विदेशी शासक अपने पीछे छोड गए अब वह नीति पूर्णता प्राप्त कर रही है और उस नीति को अपने ही देश के सत्ता और धन लालुप लोग लागू कर रहे हैं।

इसका नतीजा यह निकला कि हमारे अपन ही लागो को जाडने वाले पुल टूट गए है और मेलमिलाप का रोकने वाली बाधाए खडी हो गई है। अब इन बाधाओ को दूर करने के लिए जरूरी हे कि हम वेदो को समझे। ये वेद फिर से लोगो के बीच मेलमिलाप कराने वाल मजबूत पुलो का निर्माण करेगे। उससे भी आगे मित्रता सहनशीलता और एक दूसरे को समझने बूझने वाली ताकते आगे बढेगी। सकारात्मक सोच से राजनीतिज्ञो के दोनो लक्ष्य देश का आर्थिक विकास ओर उनका अत्यधिक ताकतवर होने का निजी लक्ष्य भी आसानी से हासिल किए जा सकेगे।

प्रधानमन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी ने पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमन्त्री नवाज शरीफ से कहा था कि बीती बातो को बिसार दे और भविष्य के बारे मे मिलकर विचार करे। ऐसा करक वाजपेयी ने अपने व्यापक दृष्टिकोण का परिचय दिया है। ऐसा साहसी और प्रेरणात्मक दृष्टिकोण ही हमारे समाज के विभाजन के घावो को भरने वाला सही कदम है।

बहरहाल हम देखते हैं कि भगवान कृष्ण के जमाने मे भी आज ही की तरह राजनीतिक गिरावट थी। हम पता है कि उस समय भी उपद्रवी लोग मानव जाति को अपने ढग से विभाजित करने की कोशिश करत थे या नेता निजी लालच या सत्ता के लिए अपने अधिकारो का दुरुपयोग करते थे। ऐसे मे भगवान कृष्ण धम के सिद्धान्तो की स्थापना करते हैं। वे कौरवो और पाडवो के बीच शान्ति स्थापित करवाना चाहते हैं। वे उन्हे चेतावनी देते है कि अगर वे उनकी बात नहीं मानेगे तो युद्ध अवश्यभावी होगा। वे कौरवो से कहते है कि उनके लोभ और सत्ता लोलुपता से उपजे बुरे कर्म विध्वस का कारण बनेगे। इसी तरह के सन्देश दूसरे महान लोगो (देवदूतो) बुद्ध मोसेस नानक श्री चैतन्य श्री राम और दूसरे कई लोगो ने भी दिए है। इन सभी लोगो ने शान्ति एकता और प्रेम का ही सन्देश दिया है। हालाकि इनके मूल सन्देश एक जैसे ही थे लेकिन उनकी व्याख्याए समय स्थान और परिस्थितियो के कारण बदलती रही हैं।

विश्व की सभी परम्पराए इन सिद्धान्तो को जीने की कला के कानून के आधार पर अपनाती रही हैं। ये सिद्धान्त सभी वर्ग के लोगो–व्यापारी राजनीतिज्ञ प्रोफेशनल्स छात्र और दूसरे लोगो पर लागू होते है लेकिन इन सिद्धान्तो का सिर्फ प्रवचन ही काफी नहीं है बल्कि हमे इन्हे अपने जीवन मे लागू करना भी होगा ताकि धर्म और जाति की बाधाए दूर की जा सके। और शान्ति तथा आम राय कायम की जा सके। इन विचारो के प्रति जागरुकता बढाने के लिए हि हिन्दुजा फाउडशन ने इस्कान के साथ सहयोग किया और नई दिल्ली मे हिन्दुजा इस्कान ग्लोरी आफ इडिया वैदिक कल्चरल सेटर की स्थापना की।

इस केन्द्र का उदघाटन ५ अप्रैल १९९८ को हुआ था। इस मौके पर प्रधानमन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा कि भगवदगीता पर काम की शुरूआत से देश मे काम की एक नई सस्कृति का जन्म होगा। यह भी ध्यान दने की बात है कि गीता आधुनिक समस्याओ का निरन्तर हल सुझाती आ रही है इस बात के मद्देनजर प्रधान मन्त्री ने इसका श्रेय इस्कान को दिया कि वह गीता के उपदेशो को पूरे विश्व मे फैला रहा है।

इस केन्द्र के उदघाटन के मोके पर कई नेता उपस्थित थे और सबका मानना था कि ज्ञान की प्राचीन परम्परा की शुरुआत वेदो के रूप मे हमारी मातृभूमि से हुई ओर यह भारत का विश्व को सबसे बडा योगदान था।

भारतीय ज्ञान की परम्परा मे बहुत सी निधिया छिपी हुई हैं जिसके जरिए हम आधुनिक सकटो का समाधान कर सकते है। यदि वेद और दूसरे भारतीय ग्रन्थ केवल मिथक होते और आधुनिक समस्याओ के हल का कोई ठोस तरीका नहीं सुझाते होते तो आइस्टाइन जैसे प्रखर वैज्ञानिक कभी भी गीता का अध्ययन नही करत। आधुनिक सदर्भ मे गीता की उपयोगिता के बारे मे राल्फ बाल्ड इमरसन ने कहा था कि यह एक पुरानी प्रखर बुद्धि की आवाज है जो एक दूसरे युग और अलग परिस्थितियो मे कही गई है। इसके पीछे काफी लम्बा चिन्तन है और इसमे ज्ञान को क्रमवार रख गया हे। इसमे उन्ही सवालो का जवाब है जिनसे आज हम रूबरू हे। इसलिए हिन्दूजा फाउडेशन ने कोलबिया विश्वविद्यालय कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय और नई दिल्ली मे हिन्दुजा सेटर्स ऑफ इडिक रिसर्च की स्थापना की है ये केन्द्र सिर्फ वेदो पर ही नही बल्कि दूसरी भारतीय परम्पराओ पर भी शोध कराते हैं। इन शोध कार्यक्रमो के नतीजे अब इंटरनेट पर हैं ओर पूरी दुनिया के विद्वान इसका लाभ उठा रहे है।

हमारे विद्वान ऋषियो ने जो आज कई महान खोजे की है उनमे दशमलव प्रणाली और नम्बरो की दोहरी पद्धति भी है। आज आधुनिक गणित और कम्प्यूटर साइस इन्ही दोनो पर आधारित है जो भारत की खोजे है। ऐसी ऐतिहासिक खोजो के प्रभाव का पता तुरन्त नहीं बल्कि कुछ समय के बाद ही चलता है आज जिन वैदिक तथ्यो की खोज हो रही है उसके प्रभाव का भी पता भविष्य मे कई सालो बाद ही चल पाएगा। इससे मानवता को काफी लाभ भी होगा।

इन शोध कार्यक्रमो से यह साबित होगा कि वेद ज्ञान की सकीर्ण परम्परए नहीं हैं। इन्हे सिर्फ धर्म के साथ नही जोडा जाना चाहिए। सच यह है कि वैदिक सस्कृति सभी धर्मो की सहनशीलता की मूल है।

सत्य केवल एक ही है लेकिन विद्वान लोग इसकी व्याख्या अलग–अलग ढग से करते है वैदिक सस्कृति की यही सच्ची महत्ता है। यह हमे समभाव और समबुद्धि की शिक्षा देती है। हम सभी लोग एक ही वायुमडल मे रहते है एक ही धरती पर चलते है एक ही जल पीते हैं एक जैसी ही हवा मे सास लेते हैं और एक ही आग पर खाना पकाते है। जब प्रकृति हमे बराबरी का स्तर प्रदान करती है तो हमे भी एक दूसरे के साथ समानता के साथ रहना सीखना चाहिए। आम राय और सौहार्द का यह व्यापक दृष्टिकोण वेदो पर आधारित है। वेदो का यह महान उपहार है। इसे हमारे नेता लोगो को दे सकते हैं। ❑

डायबिटीज के रोगी भी खा सकते है आलू

डायबिटीज के रोगियो को आलू खाना बद करने की जरूरत नही है। वैज्ञानिको का मानना है कि डायबिटीज मरीजो के लिए तो आलू पूर्ण आहार भी हो सकता हे क्योकि आलू मे ८० फीसदी पानी हाता है और वसा नहीं के बराबर होती है। इतना ही नही जो लोग यह सोचते हे कि आलू खाने से वह मोटे हो जाएगे तो वे पूरी तरह किसी गलत धारणा के शिकार है। एक आम आदमी अगर प्रतिदिन तीन किलोग्राम आलू खाता है तो भी वह मोटा नहीं होगा। बराबर मात्रा मे अनाज और दाल से आलू की तुलना मे तीन से चार गुना अधिक कैलोरी मिलती है और यही कैलोरी मोटापे का कारण है।

भारतीय विज्ञान काग्रेस के तीसरे दिन केन्द्रीय आलू अनुसधान सस्थान (सीपीआरआई) मेरठ के वैज्ञानिको ने बताया कि आलू को लेकर लोगो मे व्याप्त भ्रातियो को अगर दूर कर दिया जाए तो देश मे पैदा होने वाले आलू की खेती करने वाले किसानो की समस्या सुलझ जाएगी।

सीपीआरआई मेरठ के निदेशक डॉ० वीरपाल सिह ने आलू मे वसा दशमलव एक फीसदी ही होती है। इसमे ८० फीसदी पानी तथा १८ प्रतिशत कार्बोहाइड्रेड मिलता है। इसके अलावा आलू मे एक फीसदी खनिज ०३ फीसदी विटामिन सी और ०२ प्रतिशत विटामिन बी मिलता है।

उन्होने कहा कि आलू मे मिलने वाला कैल्शियम् आयरन फास्फोरस पोटैशियम पोषण की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। आलू मे पाई जाने वाली फॉस्फोरस की ८० फीसदी मात्रा मानव शरीर मे ठीक से सुपाच्य है। आलू के छिलके मे गेहू के छिलके (चोकर) से बेहतर किस्म का रेशा पाया जाता है। वैज्ञानिको के मुताबिक आलू को उबालकर या भूनकर खाने से डायबिटीज रोगियो को कभी कोई समस्या नहीं होगी। आलू को तेल मे भूनकर या उबाल कर खाने से उसमे वसा की मात्रा बढ जाती है जो नुकसानदेह होता है। तले हुए आलू चिप्स और फ्रेंच फ्राई मे तेल या वसा की मात्रा ४० प्रतिशत होती है। यही वजह है कि आलू को तल कर खाने से लोग जल्दी मोटे हो जाते है।

वैज्ञानिको के मुताबिक आलू मे नाइट्रोजनयुक्त यौगिको की मात्रा की आधी मात्रा प्रोटीन की होती है। बराबर मात्रा के अनाज और दाल से आलू की तुलना मे तीन चार गुना कैलोरी अधिक मिलती है। अपने देश मे एक व्यक्ति औसतन साल मे १५ किलोग्राम आलू खाता है। इसके मुकाबले अमेरिका मे ३२ किलोग्राम ब्रिटेन मे ७६ किलोग्राम तथा जापान में ८७ किलोग्राम आलू की खपत है।

भारत मे इस समय प्रति व्यक्ति सालाना २० किलोग्राम आलू का उत्पादन हो रहा है। दुनिया मे आलू उत्पादन मे भारत तीसरे नम्बर पर है। आलू वैज्ञानिक अनिल कुमार ने कहा कि अगर हम अपनी 'फूड हैबिट' मे थोडा सा परिवर्तन करे तो आलू की अधिक उपज की समस्या से निपटा जा सकता है।

उन्होने बताया कि सोयाबीन के बाद आलू मे सबसे ज्यादा सुपाच्य प्रोटीन मिलती है। अमेरिका महाद्वीप मे आलू की १५० से ज्यादा प्रजातिया पाई जाती हैं। आलू में मिलने वाले प्रोटीन के गुण दूध के प्रोटीन के बराबर होते हैं।

महिला प्रगति और चुनौतियां

– विश्व भूषण मिश्र राज

यूनीसेफ ने अभी हाल ही मे दुनिया मे स्त्रियो की प्रगति रिपोर्ट' जारी की। इस रिपोर्ट मे ८० से ६० के दशक मे महिलाओ की आर्थिक सामाजिक व राजनैतिक स्थिति को अध्ययन का आधार बनाया गया है। प्रस्तुत रिपोर्ट मे लैगिक भेदभाव के रूप मे तीन सबसे अधिक सवेदनशील बातो को देखा गया है – सैकेण्डरी स्कूलो मे लडकियो का पजीकरण गैर कृषि क्षेत्रो (उद्योग एव सेवा) मे सवतनिक काम करने वाली औरतो की सख्या तथा ससद मे स्त्रियो की सख्या।

इस समय विश्व–स्तर पर महिलाए अपने अधिकारो के प्रति सचेत हो रही हैं। महिलाओ की प्रगति सुनिश्चित करने तथा विकास हेतु प्रत्येक पाच वर्षो के अतराल पर विश्व महिला सम्मेलन आयोजित किए जाते है। इसके अतिरिक्त प्रतिवर्ष आठ मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस भी मनाया जाता है।

लिग आधारित भेदभाव

सयुक्त राष्ट्र ने अपने सर्वेक्षण मे पाया कि सैकेण्ड्री शिक्षा के क्षेत्र मे ११ फीसदी देशो मे लडके–लडकियो मे समानता है। ५१ प्रतिशत देशो म लडकियो का पजीकरण लडको की अपेक्षा कम है जबकि मात्र ३८ फीसदी देश ऐसे भी है जहा लडकियो की पजीकरण सख्या लडका स अधिक है। माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र म भारत ४८ प्रतिशत नेपाल मे ३८ ७ प्रतिशत बाग्लादेश मे १५ ६ प्रतिशत और श्रीलका मे ७६ २ प्रतिशत लडकिया स्कूल जाती हैं। इस क्षेत्र मे १६६७ के बीच बहुत से देशो मे लडकियो की शिक्षा के क्षेत्र मे प्रगति हुई है। परन्तु कुछ क्षेत्रो मे कमी भी आई है। ऐसे क्षेत्रो के अन्तर्गत– सहारा क्षेत्र के ११ मध्य व पश्चिम एशिया के ७ लैटिन अमेरिक व करेबिया के ६ और पूर्वी यूरोप के ६ देश आते हैं।

शिक्षा के तूफानी प्रचार प्रसार के बावजूद दुनिया के ८७५ करोड अशिक्षित प्रौढो मे से दो तिहाई अर्थात ६६ फीसदी महिलाए हैं। गर्भ धारण स जुडे कारणो से प्रतिवर्ष ६ लाख औरते मौत तथा ८० लाख औरते अपगता का शिकार हो जाती हैं। औरतो की साक्षरता दर ३७ प्रतिशत से आगे नही बढ पाई है। खासकर पाकिस्तान और नेपाल मे तो यह २५ और २१ प्रतिशत जैसी शोचनीय स्थिति मे है।

समस्त विश्व के कुल श्रम का दो–तिहाई योगदान महिलाओ का होता है पर इतनी मेहनत के बावजूद उन्हे मात्र १० प्रतिशत मजदूरी या मेहनताना मिलता हे। वर्ष १६६० मे रोजगार दन वाली स्त्रिया की सख्या २८ देशो मे ३० प्रतिशत या इससे ऊपर थी। १६८० क मुकाबले ५६ देशा मे से ५१ दशा मे प्रशासनिक और प्रबन्धन क्षेत्रा मे स्त्रियो की सख्या बढी हे। १६६० म ही १६ देशो म ३० प्रतिशत या अधिक महिलाए उच्च पदो पर कार्यरत थी। १६६७ मे उद्योग और सेवा के क्षख मे पुरुषो के मुकाबले स्त्रियो की आय ७८ प्रतिशत थी। कुछ देशो मे यह ६७ प्रतिशत तो कुछ देशा म ५३ प्रतिशत ही थी। विशेषत द० एशिया म यह स्थिति अत्यन्त विकट है। यहा अब भी उच्च प्रशासनिक पदा पर पुरुषो का वर्चस्व कायम ह। उदाहरण के लिए पाकिस्तान म ८०० पुरुष सयुक्त सचिवो के मुकाबल १६ महिला सयुक्त सचिव हैं। बाग्लादेश मे हालाकि सिविल सर्विसेज मे महिलाओ का १०प्रतिशत काटा निधारित है परन्तु उनकी वास्तविक सख्या ८ फीसदी से भी कम है।

हालाकि सरकारे चुनने के पात्र मतदाताओ मे ५० प्रतिशत महिलाए है पर दुनिया की सभी ससदो मे कुछ महिला सदस्यो की सख्या मात्र १३ फीसदी हे और मात्र ७४ प्रतिशत महिलाए कबीना स्तर की मन्त्री हे। कवल १० देशा म इस समय महिला राष्ट्राध्यक्ष मौजूद हे।

कुल सम्पत्ति मे से मात्र १ प्रतिशत पर महिलाओ का अधिकार है। महिलाओ को पैतृक सम्पदा मे हिस्सा नही मिलता तथा घरेलू एव बाहरी हिसा से सुरक्षा हेतु उन्हे पूर्ण कानूनी सरक्षण नहीं उपलब्ध है। पिछले दशक म गरीबी के कुचक्र मे फसी हुई स्त्रियो एव पुरुषो के मध्य खाई और चौडी हुई है।

महिलाओ के प्रति अपराध

पुरुषो द्वारा महिलाओ के प्रति न केवल शारीरिक हिसा बरती जाती हे अपितु उनका मनोवैज्ञानिक शोषण भावनात्मक शोषण तथा यौन शोषण भी किया जाता है। श्रीलका मे सर्वेक्षित ६० प्रतिशत पाकिस्तान मे ८० प्रतिशत नेपाल मे ७७प्रतिशत भारत मे ४० प्रतिशत और बग्लादश मे ७२ प्रतिशत महिलाए किसी न किसी रूप मे घरेलू हिसा का शिकार पाई गइ। शरीरिक हिसा अनेक रूपो मे प्रमुख है परिवार की इज्जत खातिर औरतो को जान से मार देना। इसे करो–करी नाम से जाना जाता है। हालाकि यह स्त्री–पुरुषो पर समान रूप से लागू है परन्तु इसकी ज्यादातर शिकार महिलाए ही हाती ह। यह मुख्यत पाकिस्तान म प्रचलित ह। आकडो के अनुसार वहा इसकी शिकार ७ प्रतिशत महिलाए हाती ह। करो–करी क अतिरिक्त अन्य प्रमुख रूप है– पुलिस स्टशना मे महिलाआ का बलात्कार उनके प्रति अमानजनक तथा हिसक बताव। उदाहरणार्थ पाकिस्तान के पुलिस स्टेशनो मे ७० फीसदी औरतो का यौन शोषण अथवा उनके प्रति शारीरिक हिसा का बर्ताव किया गया लकिन इस जुम के कुसूरवार किसी भी पुलिस कर्मी को दण्डित नही किया गया।

भारत के परिप्रक्ष्य मे भी आकड चिन्ताजनक हे। सरकारी सस्था – राष्ट्रीय अपराध रिकड ब्यूरा (NCRB) के अनुसार इस वष (एक सितम्बर तक) मात्र दिल्ली म बलात्कार के २६५ अपहरण क ८२६ ओर छडछाड के ४४० मामले दर्ज हुए है। दिल्ली मे वर्ष २००० के दौरान महिलाओ के विरुद्ध कुल अपराधो की सख्या १६१२ रही है जबकि वर्ष १६६६ के दौरान यह सख्या २४३८ थी। चन्नई म महिलाओ के विरुद्ध अपराधो की कुल सख्या देश म सर्वाधिक ३१०७ रही है। गृह मन्त्रालय के सूत्र के अनुसार बढती जनसख्या के कारण सन २०१० तक बलात्कार की घटनाए सन १६६८ के मुकाबले ५५७ प्रतिशत तक बढ सकती ह।

सरकारी आकडो के मुताबिक देश म सर्वाधिक सख्या म महिला विचाराधीन कैदी बिहार मे हे। उनकी सख्या ६४६ है। विचाराधीन महिला कदियो की सख्या तमिलनाडु मे ५०५ मध्य प्रदेश म ५०२ महाराष्ट्र म ४७१ उत्तर प्रदेश मे ४६५ तथा दिल्ली मे ३५६ है।

मुम्बई महानगर मे महिलाओ के प्रति अपराध अपेक्षाकृत कम हुए है। यहा इस वर्ष बलात्कार के ८६ अपहरण के १२४ व छेडछाड के १६६ मामले दर्ज हुए हैं।

महत्वपूर्ण प्रयास एव उपलब्धिया

पाचवा विश्व महिला सम्मेलन सयुक्त राष्ट्र अन्तराष्ट्रीय महिला सम्मेलन का सफर सन १६७५ म मेक्सिका से प्रारम्भ होकर कापेन–हगन नरोबी और बीजिंग की यात्रा करते हुए जून २००० म न्यूयार्क आ पहुचा। इन २५ वर्षो म स्त्रियो क अस्तित्व ओर विकास घरेलू हिसा बाह्य हिसा यान उत्पीडन अशिक्षा अरवस्थता सामजिक तथा आथिक आजादी एम्पावरमट आदि पर सार्थक तक वितक तथा निर्णायक घोषणा पत्र स्वीकार हुए।

५व सम्मलन की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि यह रही कि इनम पहली बार आदिवासी महिलाओ न भी भाग लिया २५ देशो स आइ इन १०० आदेवासी महिलाओ न न्यूयार्क मे एक नया अन्तराष्ट्रीय आदिवासी महिला सगठन का गठन किया जो उनकी [illegible] समस्याओ स निपटन म [illegible] आवाज को मजबूती दन के लिए एकजुट हाकर काम करेगा।

हालाकि पहल क मुकाबल अब इस दिशा मे अनेक क्रान्तिकारी सुधार हो चुके है। उदाहरण के लिए सन १६४५ मे सयुक्त राष्ट्र क ५१ मूल सदस्य म मात्र ३० राष्ट्रो की महिल[illegible] मताधिकार प्राप्त था जबकि लगभग हर राष्ट्र की महिलाओ को यह अधिकार प्राप्त हे। परन्तु पूर्ण सुधार अभी दूर है। इसे पाने के लिए आवश्यक है कि स्त्री पक्षधर सगठनो का आथिक ज्ञान बढाया जाए आथिक नीतिया मे स्त्रियो की भागीदारी सुनिश्चित की जाए तथा सरकारी मशीनरी को महिलाओ की समस्याओ के प्रति अधिक सवदनशील बनाया जाए। इस लक्ष्य को पाने मे समय तो लगेगा परन्तु कह सकते है कि पौ फटी है तो बाकी अधेरा जरूर छटेगा प्रकृति का यह अटल नियम यहा यकीनन लागू होगा।

– ४१/४६६, रामजस लैन नरही लखनऊ २२६००१

चुने हुए फूल

– आर्कश कालरा

१ निर्धन वह है जिसका कोई मित्र न हो।
२ तेरा स्वर्ग तेरी माता के चरणो मे है।
३ न इतने कडवे बनो कि दुनिया तुम पर थूके और न इतने मीठे बनो कि दुनिया तुम्हे खा जाए।
४ जहा पति पत्नी का झगडा नहीं होता वहा लक्ष्मी निवास करती है।
५ नेक बन के जिओ ताकि लोग तुम्हारे मरने के पश्चात् तुम्हे याद करे।
६ समय का उचित प्रयोग करना अपने जीवन से सच्चा प्यार है।
७ कठिनाईया सब पर आती है। बुद्धिमान हस कर और मूर्ख रोकर काटता है।
८ तुम्हारा शरीर परमात्मा की देन है। इसको निर्बल न होने दो।
६ धैर्य ऐसी सवारी है जो कभी ठोकर नहीं खाती।
१० परिश्रम से दिल चुराने वाला सफल नहीं हो सकता।
११ मन सफेद कपडे की तरह है जिसको जिस रग मे रग दो रग जाएगा।

– आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी दिल्ली

स्वास्थ्य चर्चा

दांतों के रोग क्यों बढ़ रहे है

डॉ० रमाशकर पाण्डेय

दांता की बनावट प्रकृति नात री प्रयागशाना रा एक अभ्भत चमकार ह। कइ प्रकार के तत्वा क रासायनिक समीकरण मे दात का विकास हुआ करता हे ान्त की बनावट म मज्जा मास व स्नायु सबका सहयाग ह। दाता क ऊपरी भाग म जा मोती जेसी चमक होती है वह एक ऊपरी आवरण ह। यह एक प्रकार की पालिश है यह पालिश दातो की सुन्दरता का ही नही बढाती हे वरन इन्हे घिसन और टूटन से भी बचाती है। शेष दात एक कडी हडडी की बनावट हे। शरीर की हडिडया से यह बहुत अधिक दृढ तथा भारी हे। दातो की जडा म पत रहती है। यह पर्त सीमन्ट जेसे पदार्थ की तरह होती है। यह दाता की बुनियाद को अपने भीतर थाम रहती है। दाता का भीतरी भाग खोखला होता है जिसम छोटे-छाट अगणित रक्तवाहिनी शिराय फेली रहती है। दातो मे जब दर्द होता हे तब इन्ही स्नायुओ के द्वारा उसका ज्ञान मस्तिष्क को होता है। फलत व्यक्ति का दातो का दद महसूस हाता हे।

आधुनिक सभ्यता के अन्य रागो की तरह दातो के रोग भी मानव समाज का सताते है। आज तो कठिनाइ से पाच प्रतिशत ही ऐसे लोग मिलेगे जिनके दात ठीक-ठीक है। दातो के रागा के साथ यह याद रखना हे कि दातो का सम्बन्ध सीधा पोषण और पाचन प्रणाली स ह। शरीर क भीतर जा पोषण निमाण की रसायनशाना हे उसकी पहली फैक्ट्री दात ही ह। वास्तव म पाचन का काम सबस पहले मुह स ही आरम्भ होता ह। पेट मे ता पाचन क्रिया बाद मे होती है। दाता की पक्ति भाजन का पीसने वाली चक्की है। आहार दातो द्वारा पीसा जाकर मुख मे निःसृत लुवाबदार द्रव्य-लार क साथ मिलता हे। लार गले की ग्रथियो से निकलती है और फिर नालिकाओ के जरिये मुख मे आ जाती है। इसी लार के सहयोग से भोजन पर एक रासायनिक प्रक्रिया होती है जो पेट मे भोजन पचाने के लिए अति आवश्यक है। अत जिन व्यक्तियो के दात नही है या जो अपने भोजन को अच्छी तरह से चबाते नही है या चबा नहीं सकते है उनके भोजन का सम्मिश्रण लार के साथ नहीं हो पाता है। इसी कारण से भोजन मे वह उपयुक्त रासायनिक परिवर्तन नहीं हो पाता जो पेट की पाचन क्रिया के लिए आवश्यक है। अभिप्राय यह है कि अच्छी पाचन शक्ति दातो द्वारा भोजन को चबाने पर ही निर्भर है। हल्के से हल्का या पौष्टिक से पौष्टिक भाजन भी यदि ठीक से चबाया नही गया तो उससे शरीर को किसी प्रकार का लाभ नही होता।

बालो और आखो के रोगो की भाति दात के रोग भी प्राय पैतृक परम्परा से आते है। कई बार रोग पिता के पक्ष से आते है तो कई बार माता के पक्ष से। फिर भी परम्परा का अर्थ निश्चित नियम नही है। प्राय मुख की सफाई नहीं रखने स दातो के रोगो का हान का अच्छा अवसर मिल जाता हे। कवल अन्न का सडना ही मुख की गदगी नही है। मुख क स्नायुओ और विभिनन रसा क प्रसग से जो निरतर प्रक्रिया चलती रहती है उससे कई प्रकार की गदगी मुह मे उत्पन्न होती हे। यही गदगी दाता मे विषैली गैस पदा करती हे ओर इस प्रकार दात के कीटाणु दातो की जडा मे प्रवेश कर जाते ह। आता के राग भी अधिकतर दाता के रोग के कारण पेदा होते हे। यह कहना ओर मानना ठीक ही ह कि दातो ओर आतो का परस्पर बडा सम्बन्ध हे।

इधर वैज्ञानिक शोधो से पता चला ह कि समुचित पोषण के अभाव से ही ज्यादातर दातो की बीमारिया उत्पन्न होती है। आहार मे खनिज पदार्थो की कमी से भी दातो क रोग होत ह। जिन जगहो के पानी म केल्शियम की कमी रहती ह वहा दातो की कमजोरी ज्यादा है। हा! अकेला केल्शियम ही दाता का पोषण नही करता अपितु फारफोरस की उपस्थिति भी आवश्यक हे। केल्शियम की कमी का असर यह होता ह कि दाता की सधिया चौडी और गहरी हो जाती है। गर्भवती स्त्रिया अपन दात खो बैठती हे। कारण यह है कि गर्भ म बालक क अस्थि-विकास के लिए केल्शियम ओर फास्फोरस की आवश्यकता होती है। जब इसकी यथेष्ट मात्रा गभवती को भोजन द्वारा नही प्राप्त होती हे तब स्वय माता के दातो आर अस्थिया के कल्शियम ओर फास्फरस इस कमी का पूरा करन लगते ह। इसी प्रकार दूध पिलान वाली माता या धाय क दातो मे प्राय गडड पड जात हे कुछ विशेषज्ञो का मानना ह कि नजल क कारण जिस प्रकार आखो की ज्याति कमजोर पड जाती ह ओर बालो मे सफदी आ जाती है उसी प्रकार दातो की जडे भी कमजार हो जाती हे। ऐसी अवस्था मे नजले का इलाज पहले होना चाहिए। शरीर म कैल्शियम और फास्फोरस के निर्माण की कमी से नजला पनपता है। दात और नजले का प्रतिक्रियात्मक सम्बन्ध यही है। सुपाच्य सब्जी फल अन्न और दूध के पदार्थ की खुराक देकर दात क्षय और नजले पर काबू पाया जा सकता है।

यह बात सदा याद रखनी हे कि विटामिन डी के अभाव मे कैल्शियम का ठीक से परिपाक नहीं होता है। अत कैल्शियम प्रधान खुराको के साथ-साथ ही विटामिलन डी के सयोग की भी पूरी-पूरी व्यवस्था होनी चाहिए। शरीर पर तेल-मर्दन कर कुछ देर धूप म बेठने स उस विटामिन की काफी अच्छी खुराक आसानी से प्राप्त हो जाती है। यदि इस क्रम से यह सम्भव न हो पाये तो ताजा मक्खन बकरी का दूध अगूर और लौकी की सब्जी के द्वारा भी इसकी पूर्ति हो सकती है।

दात विशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि खनिज पदार्थो की दृष्टि से भाजन म पयाप्त पाषण क बावजूद भी दातो के रागो से काफी जन पीडित हे। बगाल ओर उडीसा के लागो क दात ज्यादातर रोग ग्रस्त पाये जाते हे। इसका मूल कारण यही हे कि वहा के लागो के आहार मे विटामिनो की मात्रा काफी कम होनी है। चेन्नई (तमिलनाडु) और केरल क निवासियो के विषय मे भी यही कहा जा सकता हे। मिल क चावल मे विटामिन के अलावा विभिन्न पदार्थो की कमी रहती है।

इस देश के भोजन मे प्रोटीन की कमी और स्टार्च का आधिक्य उत्तरोत्तर बढता ही जा रहा हे। दूध दही और घी की जगह अन्न को ही मुख्य आहार बनाया जा रहा है। स्टाचे प्रधान भोजन जीवन विकास के लिए विशेष उपयुक्त नही हो सकता। दातो के लिए तो उसका बाहुल्य हानिकारक सिद्ध हो सकता हे। पायरिया ओर दातो के और अनेक रोगो की आज देशभर मे जो वृद्धि हा रही हे इसका कारण भी यही है। अब राष्ट्रीय आहार केवल मात्र स्टार्च का आहार रह गया है। स्टार्च के आधिक्य के साथ-साथ अधिक चीनी खाना भी दात के लिए हानिकारक है क्योकि आहार विज्ञान के विश्लेषणानुसार स्टार्च आर चीनी दोनो ही अम्लमय चीजे हैं। ये चीजे सडती है और बडी तेजी से अम्लो मे परिणित हो जाती हैं। दातो की सधियो मे यदि चीनी या स्टार्च के कण जमा रह जाते हैं तो वे वही पर सडने लगते हे और अम्लो मे बदल कर दातो की जडो को क्षीण कर देते है। ❑

२३ जनवरी जन्म दिवस पर विशेष –

नेता जी सुभाष चन्द बोस के अनमोल वचन

१ जब तक हम अपन महापुरुषो का उपयुक्त सम्मान करना नही सीखेगे तब तक इस भारत का उद्धार सम्भव नही।

२ भारत की महिलाए नही जागी तो भारत कभी नही जागेगा। जब तक भारतवासी इन्द्रिय सुख के पीछे भागते रहेग तब तक भारत उन्नति नहीं कर सकना।

३ मातृभूमि के चरणो मे उत्सर्ग करने के लिए मेरे पास कुछ विशेष नहीं हे कवल मन आर यह तुच्छ शरीर हे।

४ समाज सवा क लिए बहुत धैर्य चाहिए।

५ भक्ति ओर प्रेम से मनुष्य निस्वार्थी बन जाता है।

६ जीवन दिय बिना जीवन नही मिल सकता।

७ आदर्श का प्रतिक्षण सामने न रखन से जीवन मे प्रगति करना असम्भव हे।

८ यदि सिर पर भगवान हे ओर पृथ्वी पर सत्य की प्रतिष्ठा हे तो हमारे हृदय की बात एक न एक दिन भविष्य म देशवासी अवश्य समझेग।

९ काय करते समय सफलता या असफलता की ओर ध्यान न दो।

१० जिसने जीवन म कभी जल नही दखी उसने जगत मे कुछ नहीं देखा।

११ जिस वस्तु से बाहर देखन पर कष्ट दिखाई देते हैं उसमे भीतर झाकने पर आनन्द का बाध होता है।

१२ हे प्रभा जिसे तुम अपनी पताका दो उसे वहन करने का सामर्थ्य भी दो।

१३ मनुष्य के विचार ही मनुष्य को गति देते है।

१४ ससार मे मेरी आसक्ति नहीं है इस कारण मैने गृहस्थ आश्रम मे प्रवेश ही नही किया। क्या में देश की वर्तमान दशा मे शान्ति का मार्ग छोडकर नये सिरे से ससार जाल मे लिप्त होऊ ? नहीं कभी नहीं।

१५ स्वय मनुष्य बने बिना दूसरो को मनुष्य नहीं बनाया जा सकता।

१६ जैसा बनना चाहते हो वैसा कर्म करो कर्मण्यता ही जीवन है।

१७ देश के सबसे बडे भू भाग मे बोली जाने वाली हिन्दी ही राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है।

१८ मेरे पास देने के लिए (देशवासियो से) केवल मौत है मगर याद रखो तुम्हारी मौत ही तुम्हारे देश की जिन्दगी है तुम मरकर अमर हो जाओगे।

१९ मिटटी पत्थर नदियो जगलो और पहाडो से देश नहीं बनते हैं। धन दौलत कमा लेने या पढा-लिखा लेने और मरने से भी देश नहीं बनते हैं। हजारो लाखो के पैदा हाने ओर मरने से भी देश नहीं बनते हैं। देश बनते हैं वीरोके शौर्य से वीरागनाओ क सत्य से और शहीदो के रक्त से। इस भारत देश के निमाण मे हमारे पूर्वजो ने भी इसी प्रकार अपने खून की खाद दी है माताओ-बहनो न अपने सिन्दूर चढाये हैं शस्त्रास्त्रो के लिए ऋषियो ने अपनी हडिडया अर्पित की हैं। आइए आजादी के इस यज्ञ मे हम भी अपनी आहुति देकर पूर्वजो की परम्परा जारी रखे।

२० जुल्म करने वाले से जुल्म सहनेवाला अधिक अपराधी होता है। इस अन्याय के विरुद्ध हमे युद्ध करना है उसके बदले मे चाहे हमे कितना ही बलिदान क्यो न करना पडे।

वैदिक शिक्षा - मानव मात्र की परम आवश्यकता

— विश्वभर प्रसाद गुप्त 'बन्धु'

गताक से आगे

प्रेम का आधार भारतीय शिक्षा

आज देश भर मे मुसीबते ही मुसीबते दिखाई देती हैं। राष्ट्र–गान पर आपत्ति राष्ट्र–भाषा पर आपत्ति वन्दे मातरम पर आपत्ति राष्ट्र–ध्वज का अपमान गणतन्त्र–दिवस के बहिष्कार की धमकी कहीं कुछ कहीं कुछ। राष्ट्र–द्रोह का यह फैलता हुआ जहर। राष्ट्र की एकता खतरे मे है और हम पश्चिमी शिक्षा से दिवाध होकर अपना त्राण उसी मे खोज रहे है जो भारतीय सस्कृति को ही जड–मूल से मिटाने पर उतारू हैं। हमारा सभ्य समाज पढ–लिखकर विदेशो की ओर ही देखता है। जब बचपन से ही विदेशी शिक्षा देकर उन्हे विदेशी प्रेमी विदेशान्मुखी और विदेशी सस्कृति का आग्रही बना दिया जाता है तब उनसे स्वदेश–प्रेम की भारतीय सस्कृति और परिपाटियो से मार्ग–दर्शन ग्रहण करने की अपेक्षा ही कैसे की जा सकती है। बच्चे बडे होकर वही तो बनेगे जोकुछ उन्हे बनाया जाता है। उन्हे जैसी शिक्षा मिलेगी वैसे ही वे बन जायेगे।

कोई भी नियोजित षडयत्र दूषित विचारो से ही उपजता है और यह वैचारिक प्रदूषण किसी यत्र से नहीं उपयुक्त शिक्षा से ही रोका या मिटाया जा सकता है। वर्तमान अर्थ काम प्रधान शिक्षा का स्थान जब तक धर्म प्रधान भारतीय शिक्षा नहीं ले लेती तब तक मानव–सस्कृति सिसकती ही रहेगी सभ्यता कलपती रहेगी और मानवता रो–रोकर अतिभौतिकता के जुए का बोझ ढोती रहेगी। वास्तव मे देश के बिखराव का और अनेकानेक मुसीबतो का इलाज शिक्षा मे ही है जो देश–प्रेम का आधार है और युवकों मे अहिसा सत्य अस्तेय दया दाक्षिण्य आदि मानवता के सभी उत्कृष्ट गुणो की सृष्टि करने मे समर्थ है। यह भारतीय शिक्षा ही है जिसमे 'धियो यो न प्रचोदयात' अर्थात प्रभु हमारी बुद्धियो को सत्कर्म मे प्रेरित करे यह प्रार्थना बार–बार दोहराई जाती हैं।

भारत ही नहीं, विश्व के लिए उपयुक्त शिक्षा

भारतीय या वैदिक सस्कृति का आधार यज्ञमय जीवन है। वही जीवन यज्ञमय कहलाता है जिसके मूलभूत सिद्धान्त और नियम समाज-हित की दृष्टि से निश्चित किए जाते हैं स्वार्थ की दृष्टि से नहीं। यज्ञ परोपकार और जन–हित के कार्य होते हैं। यज्ञों की आहुतियों में अर्थात् सभी शुभ कार्यो के प्रत्येक चरण में 'इदन्न मम' की भावना बनी रहे स्वाहा की प्रवृत्ति जागृत रहे मा गृध अर्थात कुछ हडपने का मन न करे 'कस्यस्विद्धनम' अर्थात सारी सपत्ति प्रजापति की है सार्वजनिक हित के लिए है ऐसा दृष्टिकोण हो और इसीलिए त्यक्तेन भुजीथा अर्थात त्याग कर मिल–बाटकर (यज्ञशिष्टामृत का) ही भोग करे ये सभी आदर्श जीवन के मूल मन्त्र हैं। ये ही आदर्श समाज द्वारा अपना लिए जाने पर उस समाज की सस्कृति हो जाते हैं। यज्ञमय जीवन ही यह प्रमाणित करता है कि इसका लक्ष्य किसी व्यक्ति या वर्ग के नहीं बल्कि सारे विश्व की ही सुख शान्ति और समृद्धि है। 'वसुधैव कुटुम्बकम' और 'सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निरामया सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद दु खभाग्भवेत' भारतीय सस्कृति के ही स्वर है।

भारतीय सस्कृति विश्व की प्राचीनतम और सनातन सस्कृति है। यह विश्वधारा है अर्थात यह किसी क्षेत्र विशेष के लिए नही वरन सारे ससार के लिए उपयुक्त है। इसका उत्स वेदो मे है अत वैदिक शिक्षा से ही यह सस्कृति सीखी जा सकती है। वैदिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए सस्कृत सीखने की आवश्यकता है अग्रेजी सीखने की नहीं। सस्कृत की आवश्यकता पर किसी स्वतन्त्र लेख मे ही सम्यक प्रकाश डाला जा सकता है। यहा तो इतना ही अभिप्रेत है कि आज ही नही अनादि काल से अनत काल तक मानव को मानव बनाने और बनाए रखने के लिए यह शिक्षा उपयुक्त रही है और रहेगी। यह सार्वभौम शिक्षा है।

भौतिकता और अध्यात्म का समन्वय

भारतीय शिक्षा पर प्राय यह आरोप लगाया जाता है कि यह अध्यात्म पर ही बल देती है और भौतिकता की उपेक्षा करती है। किन्तु यह तो वेदो के सम्यक ज्ञान के अभाव के कारण या भारतीय सस्कृति नष्ट करने के कुत्सित उद्देश्य से जान–बूझकर किया हुआ एक दुष्प्रचार मात्र है। अन्यथा वेद स्पष्ट कहते है कि जो व्यक्ति स्वातन्त्र्यवाद या कोरी भौतिकता का अवलबन करते हैं वे अध पतन को प्राप्त होते हैं परन्तु जो केवल अध्यात्म मे रमते हैं वे उससे भी अधिक नीचे गिरते हैं। कोरा भौतिकवाद ससार के लिए आत्म घाती है यह सभी देख चुके हैं। उसका भुक्त-भोगी पश्चिम हमारे सामने है भले ही वह विकसित होने या विश्व मे प्रथम होने का आत्मश्लाघी दम्भ पालते हुए हमे अविकसित और 'तृतीय विश्व कहकर अपमानित करता रह। वास्तव मे भौतिकवाद और अध्यात्मवाद दोनो साथ–साथ रहे तभी लाभदायक होते है। दोनो का समन्वय विश्व–शान्ति के लिए आवश्यक होता है यह हमे वैदिक शिक्षा से ज्ञात होता है। यह समन्वय ही वैदिक समाजवाद है जिस पर व्यापक प्रकाश वेद ने डाला है।

भारतीय शिक्षा मे भौतिक विज्ञान

भौतिकता की उपेक्षा का आरोप भी सही नहीं है। वेदो मे आध्यात्मिक ज्ञान तो है ही सभी प्रकार के भौतिक विज्ञान की भी पराकाष्ठा है। वेद तो 'सर्वज्ञानमयो हि स अर्थात वह सभी सत्य विद्याओ का भण्डार है। वास्तव मे धर्म शास्त्र राजनीति शास्त्र समाज शास्त्र शिक्षा शास्त्र अर्थ शास्त्र गणित युद्धविद्या आदि के साथ साथ गृहनिर्माण विज्ञान नगर रचना शास्त्र धातु विज्ञान वस्त्र वयन विज्ञान मार्ग निर्माण विज्ञान नौका विज्ञान विमान विज्ञान शरीर विज्ञान आयुर्विज्ञान चिकित्सा विज्ञान सूर्य चिकित्सा विज्ञान जल चिकित्सा विज्ञान कृषि विज्ञान वनस्पति विज्ञान पशु विज्ञान योग विज्ञान मनोविज्ञान सृष्टि उत्पत्ति विज्ञान दूर सचार विज्ञान मत्र विज्ञान आदि सभी विज्ञान विषयो का जैसा सम्यक विवेचन वेदिक सहिताओ मे है उस पर पूरा प्रकाश डालना किसी लेख या लेखो मे नही विशाल ग्रथो मे ही सम्भव हो सकता है।

वैदिक सभ्यता जितनी पुरानी है उतना ही पुराना भारतीय तकनीकी विज्ञान है। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण समझा जाता था। शिल्प की यथाविधि शिक्षा दी जाती थी। समाज मे शिल्पियो की प्रतिष्ठा थी। शिल्पियो को विश्वकर्मा (विश्व=प्रत्येक या समस्त कर्मा= कार्यो मे कुशल व्यक्ति) अर्थात इजीनियर कहकर देवतुल्य सम्मान दिया जाता था। — क्रियावानेष ब्रह्मविदा वरिष्ठ अर्थात कमशील ये (शिल्प) लोग ब्रह्मवेत्ताओ मे वरिष्ठ होते हैं। बहुत सी शिल्प कृतिया वर्तमान कृतियो की तुलना मे कही अधिक श्रेष्ठ होती थी। हजारो–लाखो साल बाद जब यद्यपि बहुत अवशेष नहीं मिलते फिर भी जो कुछ भी कही–कहीं मिल जाते हैं उन्हे ही देख–परखकर वर्तमान शिल्प–शास्त्री प्राचीन भारतीय शिल्पियो का लोहा मानते हैं। इसमे सन्देह नहीं कि वे विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। भारत के पुरातत्व विभाग के एक अधिकारी ने लिखा है कि उन रचनाओ से उनके निर्माताओ का अद्वितीय निर्माण कौशल सूक्ष्मता और पूर्णता प्रकट होती हे। उन जैसे कारीगर आज ससार मे नहीं है। किन्तु यदि होते भी तो हमारी वर्तमान शिल्पकला मे उन्हे कुछ सीखने योग्य न मिलता।

समाहार

भारतीय शिक्षा या वैदिक शिक्षा भारत के लिए नहीं सारे ससार के लिए उपयोगी होगी। यह विश्व–शान्ति का एक मात्र साधन है। विदेशी प्रभाव से और पाश्चात्य आक्रमण से मुक्त होकर ही भारतीय शिक्षा पनप सकती है। भारत अब स्वतत्र है अत उसे तो शीघ्रातिशीघ्र भारतीय या वैदिक शिक्षा अपनाकर सुख–शान्ति और सम्पन्नता का पथ प्रशस्त करना चाहिए और तथाकथित विकसित देशो का मार्ग–दर्शन करके जगदगुरु का अपना खोया हुआ सम्मान प्राप्त करना चाहिए। ससार का कल्याण आश्रम पद्धति वाली भारतीय शिक्षा अपनाने से ही सम्भव होगा। मानव कल्याण का और कोई मार्ग नहीं है।

— अधीक्षण अभियता (से०नि०)

लो०नि०वि०आन० तकनीकी सम्पादक
इस्टटयूशन ऑफ इजीनियर्स
बी १५४ लोक विहार
दिल्ली ३४

योगीराज स्वामी आत्मानन्द जी की जन्म शताब्दी मनाने का निर्णय

आर्य जगत को यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि सयुक्त पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान व हिन्दी रक्षा आन्दोलन के नायक योगीराज स्वामी आत्मानन्द जी की जन्म शताब्दी एक समारोह के रूप मे मनाने का निर्णय लिया गया है। यह समारोह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी ओमानन्द जी के सरक्षण मे आयोजित होगा।

समारोह की रूपरेखा बनाने के लिए एक आवश्यक बैठक दिनाक ११ फरवरी २००१ को प्रात ११ बजे श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर मे बुलाई गई है। स्वामी आत्मानन्द जी के सभी प्रशसको सहयोगियो व शिष्यो (विशेषतय स्नातक मण्डल) से प्रार्थना है कि वे इस सूचना को ही निमन्त्रण पत्र समझकर उक्त स्थान व समय पर अवश्य पधारे ताकि सभी की सहमति से कार्यक्रम को अन्तिम रूप दिया जाए।

— डॉ० गेन्दाराम आर्य मत्री
उपदेशक महाविद्यालय शादीपुर
यमुनानगर (हरियाणा)

पृष्ठ ४ का शेष भाग

वैदिक आर्थिक चिन्तन

वेदा मे जहा श्रमिका के अनेक भेदो की चर्चा आइ है उससे जाना जाता है कि विभिन्न प्रकार के हस्तशिल्प ग्रामोद्योग तथा अन्य प्रकार के उत्पादक कार्यो मे कितने प्रकार के श्रमिक लग रहते थ। यजुर्वेद मे ही कुलाल कर्मकार मणिकार इषुकार धनुष्कार ज्याकार निषाद व्याघ्र गन्धर्व अप्सरा गोपाल अजपाल सुराकार धीवर दाश कैवर्त निषाद हिरण्यकार वणिक आदि नाम गिनाये गये हैं।

वैदिक अथ व्यवस्था मे कृषि कर्म को सर्वाधिक महत्व मिला है। अथर्ववेद का एक सम्पूण सूक्त (३/१७) कृषि को समर्पित है। विश्वामित्र ऋषि द्वारा देखे गये तथा प्रचारित किये गये इस सूक्त का देवता सीता (हाल की फाल) है। इसके प्रथम मत्र म कहा गया है कि बुद्धिमान लोग (कवि) ही कृषि कार्य करते है –

सीरा युञ्जन्ति कवय वितन्वते पृथक धीरा देवेषु सुम्नयौ।। अथर्व ३/७/१

छठे मत्र मे हल को चलाने मे समर्थ बैलो कृषि कार्य मे लगे किसानो तथा कृषि कर्म के हमारे लिए कल्याणकारी होन की कामना की गई है – शुन वाहा शुन नर शुन कृषतु लागलम खेतो को जोतने बोने उत्तम रीति से सिचाई करने तथा फसलो के उपजाने का विस्तृत उल्लेख इस सूक्त मे मिलता है। वेदो की मान्यता हे कि मनुष्य के अर्थोपार्जन के लिए कृषि कर्म ही सर्वोत्तम करणीय है। इसी मे मानवी श्रम की सार्थकता है। इसके विपरीत द्यूत क्रीडा (जुआ खेलना) अनार्योचित कर्म है जो मनुष्य के विनाश का कारण बनता है। ऋग्वेदीय अक्ष सूक्त मे एक जुआरी की आत्मग्लानि तथा हृदय द्रावक पश्चाताप का वर्णन करने के पश्चात मत्र का दृष्टा ऋषि कहता है –

अक्षैर्मा दीव्य कृषि मित्कृषस्व वित्ते रमस्व बहुमन्यमान – जुआ मत खेलो कृषि मे मन लगाओ उसी मे तुम्हे धन तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। आज की भाति वैदिक काल मे बडे बडे यत्रो से युक्त कल कारखानो तथा वैज्ञानिक तकनीक के साधनो की सम्भावना तो दिखाई नहीं पडती किन्तु उस काल के लोग यह अनुभव अवश्य करते थे कि महायत्रो के प्रवर्त्तन तथा खनिज उद्योगो के एकाधिकार Monopoly से जनसाधारण के आर्थिक हितो की हानि होती है इसलिए मनुस्मृति मे जहा उप पातको की गणना की गई है वहा कहा गया है –

सर्वकारेष्वधीकारो महायत्र प्रवर्त्तनम हिंसौषधीना स्त्रया जीवोऽभिचारो मूल कर्म च।। ११/६३

खानो पर एकाधिकार बडे कल कारखानो की स्थापना तथा औषधियो (वनो वनस्पतियो) को नष्ट करना पाप कर्म है। इस प्रकार पर्यावरण रक्षण पर जोर दिया गया है।

कृषि के पश्चात वैदिक अर्थव्यवस्था मे पशुपालन तथा गोसवर्धन जैसे लोकोपकारी व्यवसायो को महत्व मिला है। अथर्ववेद (३/१४) मे गोपालन की महिमा बताई गई है। गोमहिमा का एक अन्य सूक्त अथर्ववेद (४/२१) मे है जिसमे कहा गया है कि गोदुग्ध का सेवन करने से मनष्य का शरीर हृष्ट पुष्ट तथा बलिष्ठ तो बनता ही है उसके घर की शोभा भी बढ जाती है। समाज मे उसे सम्मान मिलता है। ऋग्वेद मे गाय को रुद्र सज्ञक ब्रह्मचारियो की माता वसु नाम वाले ब्रह्मचारियो की पुत्री तथा आदित्य के समान तेजस्वी ब्रह्मचारियो की बहिन कहा गया हे। वस्तुत गाय तो अमृत की नाभि (केन्द्र स्थान) ही है। इस निष्पाप तथा अखण्डनीया गो को मारना जघन्य पाप है। कृषि तथा गो पालन के बाद ही वेद वाणिज्य द्वारा धनोपार्जन की बात करता है। तथापि उसका यह भी कथन है कि व्यवसायी आदमी अपने पुरुषार्थ और प्रतिभा से अपने धन को दोगुना चौगुना बढाये –

येन धनेन प्रपण चरामि धनन देवा धनमिच्छमान तन्मे भूयो भवन्तु मा कनीयाऽग्ने सातध्रो दवान हविषानिषेध।।

३/१५/५

अर्थात जिस मूलधन के द्वारा व्यापार करता हू वह मेरा मूलधन बढता रहे। कम न हो। बुद्धिमान जनो के सहकार तथा परामर्श से वह निरन्तर बृद्धि पाता रहे।

विदेश व्यापार की बृद्धि के लिए समुद्रपार के देशो मे जाना पडता है। इसका उल्लेख भी वेदो मे है। समुद्र के वक्ष पर चलने वाली नौकाओ की वरुण देवता के इस मत्र मे चर्चा हुई है –

'वेदा यो वीना पदमन्तरिक्षेण पतताम्, वेद नाव समुद्रिय'

ऋग्वेद १/२५/७

सर्व द्रष्टा परमात्मा उन पक्षियो की गति को जानता है जो आकाश मे उड्ते हैं तथा उन नौकाओं पर भी दृष्टि रखता है जो समुद्र मे चलती है।

वेदो मे उन सड़को राजमार्गो तथा सार्थवाहो (कारवा) के चलने वाले रास्तो को सुरक्षित रखने की बात कही गइ है। सामान्यतया इन मार्गो पर सभी लोग चलते हैं किन्तु वेद चाहता है कि व्यापारियो की सम्पदाओ से लदे काफिलो को गन्तव्य स्थान तक ले जाने वाले ये मार्ग शन्ति तथा सुरक्षा की दृष्टि से निर्विघ्न तथा बाधा रहित रहे।

ये ते पन्थानो बहवीजनायना रथस्य वर्त्मानसश्च यातवे। यै सचरन्त्युभये भद्रपापास्त पन्थान जयेमानमित्रमस्तकर यच्छिव तेन नो मृड।।

अथर्ववेद १२/१/४७।।

अर्थात जिन सार्वजनिक मार्गो पर लोगो का सतत आवागमन होता है रथ तथा अन्य वाहन जहा से लगातार गुजरते है वे हम पथचारियों के लिए सुखद हो तस्करो तथा पापियो से हमे कोई हानि न हो।

वैदिक अर्थ व्यवस्था समाज के सभी वर्गो के सन्तुलित विकास तथा सब मे कत्तव्य बोध जगाने पर जोर देती है। यही भाव यजुर्वेद के मत्र आ ब्रह्मन ब्रह्मणो (२२/२२) मे आया है। हमारे राष्ट्र मे ब्रह्म तेज को धारण करने वाले ब्राह्मण हो शूर वीर अस्त्र शस्त्रो से सुसज्जित क्षत्रिय हो बहुव दूध देने वाली गौवे हो बलशाली शीध्रगामी घोड तथा अधिक बोझ ढोने वाले बैल हो। हमारी सन्नारिया व्यवहार कुशल तथा गृहकार्यो मे निपुण हो' हमारे योद्धा विजयशील हो हमारे राष्ट्र मे यथासमय वृष्टि होती रहे जिससे वनस्पतिया तथा औषधिया सतत फल देती रहे। हमारे राष्ट्र के योग क्षेम मे सदा अभिबृद्धि होती रहे।

वैदिक आर्य व्यवस्था भौतिक साधनो के अनावश्यक सग्रह को अनुचित मानती है। योगदर्शन मे इसे अपरिग्रह वृत्ति कहा हैं यही विचार निम्न श्लोक मे भी आया है –

यावद्भ्रियेत जठर तावत् स्वत्व हि देहिनाम्, अधिक योऽभिमन्येत स स्तेनोदण्डमर्हति'

हमारा अधिकार उतने पर है जितने से हमारा पेट भर जाये। जो इससे अधिक की इच्छा करता है वह चोर है तथा दडनीय है। हमारे यहा अपरिग्रही और असग्रही की सर्वत्र प्रशसा की गई है। मनु कहते हैं कि जिसके पास जितना न्यून अन्न है वह उतना ही श्रेष्ठ है

(अध्याय – ४ श्लोक ७–८)

निश्चय ही वैदिक अर्थ व्यवस्था के मूलभूत सिद्धातो को समझ कर उन्हे देश काल तथा परिस्थिति के अनुसार व्यवहार में लाया जाये तभी व्यक्ति तथा समाज की उन्नति सुनिश्चित हे।

लता मंगेशकर व आर्यसमाज

– प्रा० डॉ० कुशलदेव शास्त्री

सुप्रसिद्ध पाश्व गायिका लता मगेशकर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पद्मभूषण रसेश्वर तानसेन सुरश्री आदि अनेक सम्मानो से सम्मानित हा चुकी है। उनकी देश विदेश की सगीत यात्राए तो अत्यन्त ही लोकप्रिय सिद्ध हुई हैं।

सभवत आर्य जगत मे यह बात अज्ञात ही है कि लता दीदी को शुद्ध सस्कृत वाणी के सस्कार आर्यसमाज के माध्यम से प्राप्त हुए है। मुम्बई से प्रकाशित लोकसत्ता नामक मराठी दैनिक (२३ अप्रैल १९८६ पृष्ठ ५) मे स्वय लता जी द्वारा लिखित एतदविषयक मराठी सस्मरण का हिन्दी अनुवाद आर्य जगत की जानकारी के लिए प्रस्तुत है।

पुणे मे हम राजिवडेकर की चाल मे रहते थे। (चाल से तात्पर्य उस बडे भारी मकान से है जिसमे पचासो किरायेदार सपरिवार रह सके।) तब हमारे पडोस मे शर्मा नामक एक आर्य समाजी रहा करते थे। वे हमे मत्रोच्चारण करने की पद्धति सिखलाते थे। पिताश्री मास्टर दीनानाथ जी मगेशकर के कहने पर हम भाई बहन उनके पास सस्कृत भाषा मे लिखे मत्र पढने जाते थे। तत्पश्चात पुणे मे हमने एक घर लिया। गृह प्रवेश के समय होम हवन सम्पन्न हुआ। उस समय पिताजी ने हमे भी मत्र पाठ करने के लिये प्रेरित किया। जब अपने इस नये घर मे हम सब बच्चे धारा प्रवाह मत्र पाठ कर रहे थे तब उस दृश्य को बडे कुतूहल के साथ पिताजी भी देख रहे थे। आगे चलकर इसी घर मे रहते समय पिताजी का देहात हुआ और हमे घर छोडना पडा। पर इस घर मे रहते समय शुद्ध सस्कृत वाणी के जो सस्कार हमारे दिलो दिमाग पर पडे वे अमिट रहे। हम मगेशकर भाई बहनो ने बचपन मे ही स्वच्छ शुद्ध शब्दोच्चारण मत्रोच्चारण का सस्कार आत्मसात कर लिया था।

सगीत के समस्त अलकारो को अपनी असामान्य ग्रहण शक्ति द्वारा ग्रहण कर देव दुर्लभ गायन प्रस्तुत करने वाली लता दीदी को सश्रद्ध नमन। साथ ही आर्य जगत के माध्यम से दीर्घायु चिरायु हितायु होने की शुभकामनाए। जीवेत शरद शतम। भूयश्च शरद शतात।।

– नेताजी सुभाष चन्द्र बोस
महाविद्यालय
नादेड ४३१६०१ (महाराष्ट्र)

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के चुनाव सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की कार्यकारिणी एव अन्तरग के चुनाव गत १४ जनवरी का विधि पूर्वक लखनऊ मे सम्पन्न हुए। इन चुनावो म निम्न प्रमुख पदाधिकारी निर्वाचित घोषित किये गये –

प्रधान – श्री जयनारायण अरूण
उप प्रधान – श्रीमती आशा रानी राय
– डॉ० वीरेन्द्र बहादुर सिह
– श्री महेन्द्र सिह आर्य
– श्री जितेन्द्र कुमार एडवोकेट
– श्रीमती मधु चोपडा
मन्त्री – प० चन्द्रकिरन शर्मा
उप-मन्त्री – श्री विमल कुमार आर्य एडवोकेट
– श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य
– श्री गोविन्द सिह आर्य
– श्री राजाराम शास्त्री
– श्रीमती गिरिजा त्रिपाठी
कोषाध्यक्ष – श्री अरविन्द कुमार आर्य
सहा० कोषाध्यक्ष – श्री चन्द्रकेतु आर्य
पुस्तकाध्यक्ष – श्री दलसिगार सिह
स० पुस्तकाध्यक्ष – श्रीमती सुबाला श्रीवास्तव
प्रतिष्ठित सदस्य – डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
स्वामी यज्ञ मुनि जी
– चौ० लक्ष्मी चन्द आर्य
सहयुक्त – स्वामी वेद मुनि परिव्राजक
– श्री आई० सी० गुप्ता
– श्री सुखवीर सिह
– श्री राजेन्द्र राय
– श्री बलराम गोविन्द आर्य

नेपाल मे सिर्फ दाऊद के गुर्गे का चैनल चालू दूरदर्शन सहित भारतीय चैनलो के प्रसारण पर रोक

ऋतिक राशन की कथित नेपाल विरोधी टिप्पणी स नेपाल मे उठे बवडर के बीच ऋतिक की फिल्मो के प्रदर्शन पर रोक के बाद नेपाल सरकार ने आज देश मे दूरदर्शन समत सभी भारतीय चेनलो के प्रसारण पर रोक लगा दी। आज दिनभर वहा केवल एस पी एन टीवी चैनल का प्रसारण किया गया। इस निजी टी० वी० चेनल का मालिम जमीम शाह अडरवर्ड सरगना दाऊद इब्राहिम का खास आदमी बताया जाता है। गौरतलब है कि जमीम शाह के स्वामित्व वाले काठमाण्डो स्थित अखबार स्पेस टाइम्स ने ही सबसे पहले ऋतिक की कथित नेपाल विरोधी टिप्पणी की खबर छापी थी जिसके बाद वहा लोग रासकर वामपथी आन्दोलन से जुडे छात्रो ने बवाल खडा कर दिया। आज यहा सूत्रो ने बताया कि यह पूरा प्रकरण दाऊद इब्राहिम और आई० एस० आई० की साजिश का नतीजा है जिसका उददेश्य नेपाल मे भारत विरोधी भावनाओ को भडकाना और किसी तरह ऋतिक की फिल्म मिशन कश्मीर का प्रदर्शन रूकवाना है जिसमे कश्मीर के आतकवाद का चित्रण है। सूत्रो का कहना है कि इसी साजिश के तहत आज दिनभर एस पी एन चैनल ने भारत विरोधी कार्यक्रम दिखाए। इसके अतिरिक्त अखबार स्पेस टाइम्स भी पिछले कई दिनो स लगातार भारत विरोधी खबरो लेखो का प्रकाशन कर रहा है। जमीम शाह के बारे मे बताया जाता है कि वह दाऊद इब्राहिम का आदमी है और उसने एक माह पहले ही एक नेपाली युवती से शादी की है। मूलत वह वहा का निवासी है। इसकी पुख्ता जानकारी नहीं मिल पाई है।

इस बीच ऋतिक ने दोहराया है कि उसने ऐसा कोई साक्षात्कार दिया ही नहीं है जिसको लेकर बवाल मचाया जा रहा है। उसने बताया कि इस वर्ष उसने मीडिया को केवल छ इण्टरव्यू दिए हैं। हालाकि ऋतिक ने इनमे बी० बी० सी० पर प्रसारित करण थापर के कार्यक्रम फेस टू फेस का जिक्र नहीं किया है जिसमे वह बतौर गेस्ट शामिल हुआ था। **(राष्ट्रीय सहारा नई दिल्ली २६/१२/२००० से साभार)**

धर्मवीर हकीकतराय बलिदान दिवस (बसन्तोत्सव)

आर्य समाज मन्दिर वाई ब्लाक सरोजिनी नगर नई दिल्ली मे रविवार ४ फरवरी को प्रात ८ ३० बजे से दोपहर १ ३० बजे तक धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस बडे समारोहपूर्वक मनाया जाएगा। प्रात ८ ३० बजे से ९ ३० बजे तक यज्ञ ९ ३० बजे से १० बजे तक श्री गुलाब सिह राघव के मनोहर भजन १० बजे से १२ बजे तक स्कूल मे बच्चो के गायन भाषण एव रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल मे बच्चो द्वारा विशेष कार्यक्रम होगा। १२ बजे से १ ३० बजे तक सम्मेलन होगा जिसमे श्रीमती शकुन्तला आर्या पूर्व महापौर डॉ० धर्मपाल कुलपति गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय श्री वेदव्रत शर्मा प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा डॉ० महेश विद्यालकार श्री रामभज जी विधायक स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती श्री रामनाथ सहगल पधारेगे और अपने विचार रखेंगे। अन्त मे १ ३० बजे ऋषि लगर होगा।

शनिवार ३ फरवरी को प्रात १० से १२ बजे तक हकीकत राय के जीवन पर भाषण व कविता गायन आदि की प्रतियोगिता होगी जिसमें पाँचवी कक्षा से १२वीं कक्षा तक के बच्चे भाग ले सकेंगे। विजेता बच्चों को तथा अन्य भाग लेने वाले बच्चो को स्वर्गीय श्री रतनलाल सहदेव की स्मृति में पारितोषिक – स्मृति चिन्ह रविवार ४ फरवरी को मुख्य समारोह में दिया जाएगा।

– सोहनलाल गुप्ता, महामन्त्री

ऋषि पर्व

महर्षि दयानन्द जयन्ती एवं ऋषिबोधोत्सव पर क्या करें

आर्यसमाज के सस्थापक **महर्षि दयानन्द सरस्वती जी** का **जन्मदिवस** इस वर्ष **फाल्गुन वदी दशमी विक्रमी सम्वत २०५७** तदनुसार **१७ फरवरी २००१** (शनिवार) को तथा **ऋषिबोधोत्सव** अर्थात **महाशिव रात्रि पर्व फाल्गुन वदी १३ सम्वत २०५७** तदनुसार **२१ फरवरी, २००१** (बुधवार) को है। अत इस पावन पर्व **ऋषि पर्व** को बडी धूमधाम से समारोहपूर्वक अपने अपने क्षेत्र मे मनाए। इस महान पर्व पर ऋषि के विचारो को अधिकाधिक जनता तक पहुचाकर अन्य बन्धुओ को भी सन्मार्ग पर लाने के लिए प्रयास करे। हमारा एकमात्र उद्देश्य अधिकाधिक लोगो और समूचे विश्व को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनाना है। **कृण्वन्तो विश्वमार्यम।**

ऋषि पर्व के अवसर पर स्थानीय परिस्थितियो के अनुसार एक या अधिक निम्न गतिविधियो का समावेश किया जा सकता है –

१ वृहद यज्ञो का आयोजन २ यज्ञ के दौरान तथा बाद मे आर्य उपदेशको तथा स्वाध्यायशील आर्य महानुभावो के प्रवचन तथा उपदेश ३ अपने क्षेत्र के अलग अलग वर्गों जैसे युवाओ, महिलाओ, वृद्धो, बच्चो आदि के लिए अलग अलग विचार विमर्श या मार्गदर्शन कार्यक्रम। गोष्ठियो या लघु सम्मेलनों अथवा कार्यशालाओ का आयोजन, ४ सत्यार्थ प्रकाश की विशेष कथा का आयोजन ५ आर्यसमाज भवनों पर विशेष सजावट तथा लाईटो का प्रबन्ध ६ अपने अपने क्षेत्र मे भाषण या अन्य प्रतियोगिताए आयोजित करके बच्चो में सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ पुरस्कार रूप मे वितरित करे तथा क्षेत्रीय जनता मे आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द से सम्बन्धित लघु साहित्य का भी वितरण करे ७ अपने आयोजनो की विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशनार्थ हमारे पास तथा दैनिक समाचार पत्रो मे अवश्य भेजे।

– वेदव्रत शर्मा, सभा मन्त्री

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 28 1 2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2001
R N HNo 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2000 in NDPSo on 25 26/1/2001

साधारण सन्देश का विशेष उत्तर

प्रसिद्ध वरिष्ठ अधिवक्ता श्री रामफल बसल ने गत माह जितने भी क्रिश्चियन वष क शुभ कामना सन्देश प्राप्त किय उनके उत्तर मे भजन वालो को उनकी श्रद्धा के लिए धन्यवाद करते हुए एक विशेष सन्देश भेजा है जो वास्तव मे एक प्रशसनीय प्रयास है। विशेष रूप से इस कारण कि शुभ कामना सन्देश भेजने वाले महानुभाव वैदिक मान्यताओ के शत प्रतिशत प्रभाव मे नहीं थे। श्री रामफल बसल के पत्र मे से विशेष सन्देश को यहा प्रकाशित किया जा रहा है –

आपकी जानकारी के लिए गायत्री मत्र के सम्बन्ध में कुछ लिखना उचित समझता हू। इस मत्र का हम सभी लोग हर अवसर पर उच्चारण करते है। यह महामत्र है जो चारों वेदों मे मिलता है। यजुर्वेद में यह मत्र 36वें अध्याय का तीसरा मत्र है। मत्र इस प्रकार है

ओ३म भूर्भुव स्व । तत्सवितुर्वरेण्य भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो न प्रचोदयात्।।

अर्थ हे प्रभु तूने ही हमें उत्पन्न किया है तू ही हमारा पालन कर रहा है तुझसे ही हम प्राण पाते है तू ही दुखियों के कष्टों को हरता है तेरा तेज महान है। तू ही सर्वव्यापी है तू ही सर्व विद्यमान है सृष्टि की हर वस्तु में तू ही तू है। तेरा ही हम ध्यान करते हैं। तेरे से तेरी ही दया मागते हैं। तुझसे प्रार्थना करते हैं कि हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर चला।

आप देखेंगे परमात्मा से अन्त में ही कुछ मागा गया है कि वह हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर चलाये [illegible] में सब [illegible] निहित है। सदबुद्धि [illegible] तो कुछ भी [illegible] इसलिए सदबुद्धि [illegible] की प्रार्थना [illegible] गई है। *धियो यो न प्रचोदयात्* इससे पूर्व प्रभु का [illegible] गुणगान [illegible]

धर्म तो वैदिक धर्म है जो सत्य और सनातन है। आज की स्थिति मे इस आन्तरिक और बाह्य हो रहे है। हम परमात्मा से प्रार्थना करें वह हमें शक्ति प्रदान जिससे हम इसके प्रहारों का मुकाबला कर सकें। यह धर्म अमर बना रहे।

मेरी वाणी और मेरे व्यवहार में परम पिता प्रभु एकता प्रदान करें।

इन्ही शब्दों के साथ समाज सेवा में आपका अपना

(रामफल बसल)

प्रतिष्ठा मे
10150 पुस्कालाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय
जिला हरिद्वार (उ०प्र०

विशेषांक की शुभ सूचना

ऋषि जन्म ऋषि बोध तथा आर्यसमाज स्थापना के 125 वर्ष पूर्ण होने पर एक भव्य विशेषाक को प्रकाशित करने की योजना है। सभी विद्वान महानुभावों तथा आर्य कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि वे अपने लेख 500 से 1000 शब्दों के बीच लिखकर यथाशीघ्र भेज देवें। आपके लेख हमारे पास 15 फरवरी तक पहुच जाने चाहिए क्योंकि विशेषाक मार्च के प्रथम अथवा द्वितीय सप्ताह में निकाला जाएगा। इस विशेषाक में प्रकाशित सामग्री का चयन विशिष्ट उद्देश्य से गठित विद्वत मण्डल करेगा तथा प्रकाशित लेखों के लिए सार्वदेशिक सभा द्वारा विशिष्ट लेखक प्रमाण पत्र जारी किया जाएगा। *सम्पादक*

आर्यसमाज राजौरी गार्डन मे बहुकुण्डीय यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज राजौरी गार्डन के तत्वावधान मे गत माह बहुकुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया जिसके ब्रह्मा आचार्य सुभाष जी थे। यह वृहद यज्ञ एक प्रकार से उस अभियान की पूर्णाहुति था जो लम्बे समय से आचार्य सुभाष जी के ब्रह्मत्व एव नतृत्व मे राजौरी गार्डन क्षेत्र मे चल रहा था। इस अभियान के तहत आचार्य सुभाष जी कई परिवारो मे जा जाकर यज्ञ कराते थे और लोगो को दैनिक यज्ञ के लिए प्रेरित करते थे।

वैदिक लाइट के सम्पादक श्री विमल वधावन ने इस अवसर पर अपना उद्बोधन देते हुए कहा कि यज्ञ पूरी सृष्टि के उत्पन्न होने और पालन होते रहने की ही एक प्रतीकात्मक प्रक्रिया है। ईश्वर द्वारा सृष्टि का निर्माण भी यज्ञ है क्योकि सृष्टि निर्माण के पीछे ईश्वर का कोई स्वार्थ साबित नहीं हो सका। इसी प्रकार ईश्वर द्वारा दिन प्रतिदिन आत्माओ और प्रकति के पालन मे भी कोई स्वार्थ नहीं है। इसी तरह यज्ञ करने वाला मनुष्य यज्ञ केवल अपने लिए नहीं करता अपितु उससे वायुमण्डल मे उपस्थित समस्त जीवात्माओ को लाभ होता है। इस दृष्टिकोण से यज्ञ करने वाला यज्ञमान भी दाता बन जाता है। शुभ वायुमण्डल को पैदा करने वाला और उसकी पवित्रता को बनाये रखने वाला।

प्रमुख वेदिक विद्वान डा० महेश विद्यालकार न यज्ञमान दम्पत्तियो को आशीर्वाद देते हुए कहा कि यज्ञ करने वाले दम्पति सदैव परस्पर प्रेम और शान्ति से रहते है सासारिक दु ख इन्हे दु खी नही कर सकते। ऐसे दम्पत्तियो की सन्ताने सदैव उत्तम हुआ करती है।

आर्यसमाज राजौरी गार्डन के प्रधान श्री जगदीश आर्य श्री मदान श्रीमती शशि प्रभा श्रीमती विभापुरी श्री नन्द किशोर भाटिया तथा श्रीमती राज पाण्डेय आदि ने यज्ञमानो का धन्यवाद किया।

राष्ट्रीय तीरदाजी में सात स्वर्णपदक सहित तीन नये कीर्तिमान

इस शताब्दी के अन्त मे आयोजित कनिष्ठ एव मध्यवर्गीय तीर दाजी प्रतियोगिता मे गुरुकुल प्रभात आश्रम के धनुर्धरो ने ७ स्वर्ण पदको के साथ ३ नये कीर्तिमान बनाये।

पटियाला मे २७ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर तक आयोजित राष्ट्रीय तीरन्दाजी प्रतियोगिता मे कनिष्ठ वर्ग मे प्रभात आश्रम के धनुर्धर राजमणि ने ५ स्वर्णपदक जीते। मध्यमवर्गीय राष्ट्रीय प्रतियोगिता मे श्री मनोज ने २ स्वर्णपदक सहित २ नए कीर्तिमान स्थापित किये तथा मनोज राजमणि एव विकास ने १ दलीय कीर्तिमान भी बनाया।

– प्रबन्धक गुरुकुल प्रभात आश्रम

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आत्मशुद्धि आश्रम के प्रमुख स्वामी धर्ममुनि जी की अध्यक्षता मे आश्रम का वार्षिक उत्सव बहुकुण्डीय यज्ञो के उपरान्त आम सभा के रूप मे बडे हर्ष और उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य उद्बोधन सुप्रसिद्ध सन्यासी स्वामी दीक्षानन्द जी द्वारा प्रदान किया गया। उन्होने वेद मत्र को अपनी चिर परिचित शैली में अत्यन्त सरल तरीके से धार्मिक जनता के सामने प्रस्तुत किया।

इस समारोह मे स्थानीय विधायक श्री राठी वैदिक लाइट के सम्पादक श्री विमल वधावन डॉ० शिव कुमार शास्त्री आर्य तपस्वी श्री सुखदेव श्री हरवन्स लाल कपूर श्री विजय भूषण तथा स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती ने भी अपने विचार प्रकट किये।

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक स्वाध्याय सन्दोह
लेखक स्वामी वेदानन्द तीर्थ सरस्वती
पृष्ठ ४७६ मूल्य २०० ०० रुपये
प्रकाशक मधुर प्रकाशन २८०४ बाजार सीताराम दिल्ली ११०००६

स्वाध्याय सन्दोह बीसवीं सदी के सर्वोत्तम ग्रन्थो मे से एक प्रमुख एव लोकप्रिय ग्रन्थ है।

यह पुस्तक सम्भवत विभाजन से कुछ वर्ष पूर्व प्रकाशित हुई थी। इस अनमोल ग्रन्थ मे ३६७ मत्र है जिनका शब्दार्थ प्रस्तुत करते हुए सुन्दर एव सरल शब्दो मे व्याख्या भी प्रस्तुत की गई है स्वाध्याय की दृष्टि से यह पुस्तक उन महानुभावो के लिए और अधिक महत्वपूर्ण साबित हो सकती है जो जीवन मे समय का अभाव महसूस करते है। क्योकि केवल मात्र १५ २० मिनट स्वाध्याय करके उन्हे वेदज्ञान का सक्षिप्त रूप अनुभव करने को मिल सकता है। इस पुस्तक के प्रथम सस्करण के प्राक्कथन मे महात्मा आनन्द स्वामी जी ने ग्रन्थ लेखक स्वामी वेदानन्द जी के विचार लिखते हुए कहा है कि वेद तो अमृत ही अमृत है यह मिश्री की डली की तरह है जिसे किसी तरफ स भी चखो यह मीठी ही लगती है।

स्वामी वेदानन्द जी अपने इस प्रयास को दुग्ध दोहन की सज्ञा देते है उन्होने वेद माता की तुलना कामधेनु गाय से की है जिसे नित्य प्रात साय दोहना उनका प्रमुख कार्य है। दोहन के बाद प्रसाद रूपी दुग्ध को वे स्वय भी पीते है और अन्यो को भी पिलाते हैं।

उन्होने स्पष्ट रूप से अथर्ववेद (चार ग्यारह बारह) को प्रस्तुत करते हुए यह निर्देश दिया है कि जैसे गाय का दूध प्रात और साय दोह कर पिया जाता है जिससे शारीरिक क्षीणता उत्पन्न न हो उसी प्रकार वेद माता से निकले इस ज्ञान रूपी दूध का दोहन एव पान गौ दुग्ध के समान ही होना चाहिए।

दुहे साय दुहे प्रातर्दुहे मध्यन्दिन परि दोहा ये अस्य सयन्ति तान् विद्मानुपद स्वत ।
अथर्व ४/११/१२

सायकाल दोहता हू, प्रात काल दोहता हू दोपहर को दोहता हू। इसके जो दोह = दूध उत्तमता से प्राप्त होते हैं उन क्षीण न होने वालो को हम जाने।

इस पुस्तक का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए। ऐसी अपील करते हुए मेरे मन मे सशय उत्पन्न हो रहा है कि क्या ऋषियो की इस धरती के वासी पुन नियमित स्वाध्याय की परम्परा और प्रेरणा को जीवित कर पाएगे जो लगातार सिकुडती जा रही है। यदि कोई ऐसा कर पाए तो यह निश्चय ही इस पवित्र पावन आर्यावर्त धरती माता के ऋण को चुकाने का एक प्रयास होगा।

– विमल वधावन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रकाशन लि० द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली–२ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२१६) से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५ आसफ अली रोड नई दिल्ली–२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१ ३२६०६८५)।
सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री ई मेल नम्बर vedicgod@vsnl.net.in तथा वैबसाईट http://www whereisgod.com

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ३६ अक ३६ ४ फरवरी से १० फरवरी २००१ तक दयानन्दाब्द १७६ सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०१ सम्वत २०५७ मा० शु० ११

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुदी डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

गुजरात में दैविक विनाश-लीला

आर्यसमाज गांधीधाम सहायता कार्यों का केन्द्र घोषित

प्रकृति की विनाशलीला का भयानक रूप है – भूकम्प। मनुष्य के न चाहते हुए भी यह बार बार आ जाता है। इस विनाशलीला से सेकडो परिवार त्राहि त्राहि कर उठते हैं। अपरिचित लोग बेशक उनक दुख को कम न कर पाए परन्तु स्वयम उनके साथ गमगीन अवश्य हो जात हे या इससे भी बढकर कुछ न कुछ सहायत्ता उपलब्ध करान का प्रयास करते है। उस समय पीडित व्यक्ति का महसूस होता हे कि जहा एक तरफ ईश्वरीय लीला न उसे पटकनी दी है वही ईश्वर के यह दूत सामाजिक कार्यकर्त्ताओ के रूप म उसे सहायता उपलब्ध कराने आए हैं।

गुजरात मे आए भूकम्प से हुई जान और माल की क्षति पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती तथा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने गहरा दुख व्यक्त करते हुए कहा है कि पीडितो को हर सम्भव सहायता करना प्रत्येक आर्य पुरुष का सामाजिक एव आध्यात्मिक कर्त्तव्य है।

अनुमान है कि इस भूकम्प मे कई हजार लोग काल का ग्रास बने हैं और उनसे भी अधिक अन्य गम्भीर रूप से घायल भी हुए है। इसके अतिरिक्त रिहायशी स्थलो की भी काफी क्षति हुई है। समाचार पत्रो के आकलन के अनुसार भूकम्प का सबसे अधिक प्रभाव भुज कच्छ गाधीधाम अहमदाबाद आदि क्षेत्रो मे पडा है जहा लगभग ६० प्रतिशत मकान ध्वस्न हो गए है। मौसम विभाग स प्राप्त सूचनाओ के अनुसार अभी और झटको की आशका है।

ईश्वरीय प्रलय भी आध्यात्मिक शक्ति के सामने झुकती है

ऋषि जन्म स्थली टंकारा पूर्णतः सुरक्षित

शुक्रवार २६ जनवरी की प्रात वला म आए भूकम्प का नाभि केन्द्र महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली गुजरात प्रदेश का कच्छ आर मोरवी क्षत्र था। इश्वर की प्रलयकारी शक्ति जब भूकम्प के रूप म महर्षि दयानन्द क जन्म स्थान टकारा पहुची तो महर्षि दयानन्द की आध्यात्मिक ताकत के सम्मुख नत मस्तक होती हुइ टकारा ऋषि जन्म स्थली को बिना छुए मुह मोडकर चली गई। हालाकि टकारा के ही अन्य हिस्सो मे कुछ क्षति हुइ है। ग्रीनपाक आर्यसमाज के पूव प्रधान श्री गुरुदत्त तिवारी विगत ३ सप्ताह से टकारा मे ही थे उन्होने टेलीफोन द्वारा सार्वदेशिक सभा को सूचित किया कि ईश्वर की कृपा से टकारा स्थल पूर्णत सुरक्षित है और टकारा भवन के माध्यम से भी सहायता कार्य शुरू कर दिए गए है।

इसी प्रकार भुज शहर म भी आर्यसमाज मन्दिर के विशाल प्रागण मे सैकडो व्यक्ति तीन दिवसीय जलसे पर एकत्र हुए थे और प्रवचन आदि का भव्य कार्यक्रम चल रहा था जब धरती माता की समाधि मे विघ्न उत्पन्न हुआ परन्तु आर्यसमाज के आध्यात्मिक वातावरण को निर्विघ्न सम्पन्न होने की अनुमति मिल गइ। भुज मे बहुत स आर्यजनो की व्यक्तिगत सम्पत्तियो की काफी क्षति हुइ है।

आर्यसमाज गाधीधाम से भी समाज मन्दिर के भवन को किसी प्रकार की क्षति न होने के समाचार है। हालाकि गाधीधाम शहर भी भयकर तबाही की चपेट मे आ गया हे।

श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि आर्यसमाज ने प्रत्येक दैविक त्रासदी म जनता की निस्वाथ भाव से सेवा की है। पूर्व की भाति अब भी हम भूकम्प पीडितो को हर सम्भव सहायता उपलब्ध कराने का भरपक प्रयास करग।

श्री स्वामी आमानन्द सरस्वती तथा श्री वदव्रत शमा न आर्य जनता स **अधिकाधिक धन कपडे गरम वस्त्र दवाइया कम्बल टैण्ट** तथा **अन्न** इत्यादि दान दने की अपील की हे।

सार्वदशिक सभा द्वारा **१ लाख रुपये की राशि से गुजरात भूकम्प पीडित सहायता कोष स्थापित किया गया है**। गुजरात मे सहायता सामग्री का वितरण करने एव सवा कार्यो को सम्पन्न करने के लिए आर्यसमाज मन्दिर **गाधीधाम झण्डा चौक को प्रमुख केन्द्र घोषित किया गया है**। सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान श्री स्वामी सुमेधानन्द तथा सार्वदशिक आर्य वीर दल के उप प्रधान सचालक श्री आर्य नरेश के नेतृत्व मे एक सहायता दल गाधीधाम पहुच गया है।

अगले पृष्ठ पर जारी

दुखियो पीडितो और बेघर हुए ईश्वर पुत्रो को सहायता का हाथ बढाना प्रत्येक आर्य का परम कर्त्तव्य हे। यह सामाजिक दृष्टि से सर्वोत्तम कार्य होने के साथ साथ दानदाता के अपने आध्यात्मिक उत्थान मे भी सहायक है।

ईश्वर ने आपको भरपूर धन धान्य उपलब्ध कराया है। आज ईश्वर के कुछ अन्य पुत्रो को जब सहायता की आवश्यकता है तो उन्हे सहायता उपलब्ध कराना ईश्वर के आशीर्वाद को प्राप्त करने का एकमात्र उपाय है।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती
प्रधान सार्वदेशिक सभा

वेदव्रत शर्मा
मन्त्री सार्वदेशिक सभा

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

सह सम्पादक
विमल वधावन एडवोकेट

दिल्ली मे सहायता एकत्र करने का कार्य युद्ध स्तर पर

दिल्ली के राजारी गार्डन क्षेत्र से गुजरात भूकम्प पीडितो के लिए सहायता सामग्री तथा धन का सहयोग एकत्र करने का समाचार सर्वप्रथम प्राप्त हुआ ह। आर्यसमाज राजोरी गार्डन के प्रधान श्री जगदीश आर्य तथा मन्त्री श्री दयानन्द मदान न समाज के अन्य महानुभावो की सहायता से हजारो रुपये दान एकत्र कर लिया है तथा प्लास्टिक शीटस के बडे बडे टेण्ट जो दो तरफ उसी शीट की दीवार बनाएग तथा दो साइडो पर परदा होगा। इन टैण्टो की अनुमानित लागत ३०० रु० प्रति टैण्ट की दर स हे ओर ऐसे हजारो टैण्ट गुजरात के विभिन्न क्षेत्रो मे भेजे जाएगे।

पश्चिम क्षेत्र से ही श्री सोमदत्त महाजन श्री वीरेन्द्र सरदाना श्री रामजी लाल गोयल श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा श्री प्रियतमदास रसवन्त तथा श्री नरेन्द्र आर्य आदि भी इन कार्यो मे जुटे है। दक्षिण दिल्ली क्षेत्र मे श्री सतेन्द्र मिश्र श्री रोशनलाल गुप्ता तथा श्री पुरुषोत्तम लाल गुप्ता भी सहायता सग्रह क कार्यों मे जुटे है। पूर्वी दिल्ली मे श्रीमती ईश्वरी देवी धवन श्री पतराम त्यागी श्री सुरेन्द्र कुमार रैली श्री विशम्भर नाथ अरोडा एव श्री रवि बहल तथा उत्तरी दिल्ली मे महाशय रामविलास खुराना ने भी धन सग्रह का कार्य प्रारम्भ कर दिया हे। इसी के साथ ही श्री कृष्ण कुमार भाटिया एव श्री रामशरण भाटिया ने भी सूचित किया है कि भाटिया विरादरी की तरफ से वे भी इस काय मे जुटे हुए हैं।

विशेषांक की शुभ सूचना

ऋषि जन्म ऋषि बोध तथा आर्यसमाज स्थापना के 125 वर्ष पूर्ण होने पर एक भ विशेषाक को प्रकाशित करने की योजना है। सभी वि । महानुभावो तथा आर्य कार्यकर्त्ताओ से निवेदन है वि अपने लेख 500 र 1000 शब्दों के बीच लिखकर य भज देवे। आपके लेख हमारे पास 15 फरवरी त पहुच जाने चाहिए क्योंकि विशेषाक मार्च के प्रथम भ तीय सप्ताह में निकाला जाएगा। इस विशेषाक म रात सामग्री का चयन विशिष्ट उद्देश्य स गठित f न करेगा तथा प्रकाशित लेखों के लिए सार्वदेशि ग विशिष्ट लेखक प्रमाण पत्र जारी किया जाएगा।

सम्पादक

पृष्ठ १ का शेष भाग

गुजरात में दैविक विनाश लीला

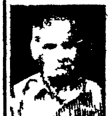
वहा सहायता कार्य **गुजरात आय प्रतिनिधि सभा के म त्री श्री वाचोनिधि आर्य तथा आर्यसमाज के प्रधान श्री पटेल की देख रेख मे सम्पन्न** होगा।

मुम्बई से सावदेशिक सभा के उप प्रधान कै० देवरत्न आर्य लगातार टेलीफोन द्वारा सावदेशिक सभा क सम्पर्क मे है और आशा है कि व आगामी एक सप्ताह मे ही लगभग १० लाख रुपये का दान एव सामग्री गुजरात भूकम्प पीडितो के लिए जुटा कर भिजवाएगे।

दूसरी तरफ दिल्ली मे सहायता सामग्री एकत्र करने तथा गुजरात पहुचाने का प्रबन्ध करने के लिए दिल्ली के प्रमुख आयजनो की एक समिति भी गठित की गइ है जो इस प्रकार है – (१ **श्री सोमदत्त महाजन** अध्यक्ष नि० 5551587 5505543 (२) **श्री विमल वधावन** सदस्य नि० 7224090 प्रस 3270507 3274216 (३) श्री रोशनलाल गुप्त सदस्य नि० 2411741 स्कूल 4677063 (४) श्री पतराम त्यागी सदस्य नि० 2462321 का० 3361521 (५) श्री अजय भल्ला सदस्य नि० 6865698 (६) श्रीमती शशि आर्या सदस्य नि० 5436828 (७) श्री नरेन्द्र आर्य सदस्य नि० 5457755 (८) श्री विनय आर्य सदस्य नि० 5049999 (९) श्री प्रियतमदास रसवत सदस्य नि० 5119614 (१०) श्री तेजपाल मलिक (सयोजक) नि० 5087952।

सहायता सामग्री तथा दान राशि एकत्र करने के लिए – **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय ३/५ दयानन्द भवन रामलीला मैदान दिल्ली २** मे केन्द्र स्थापित कर दिया गया है। **सभा को दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के तहत कर से मुक्त है।**

नन्दकिशोर भाटिया दिवंगत



अश्रुपूर्ण न । दुखी हृदय और भारी मन से सूचित करना पड रहा है कि महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त श्री नन्दकिशोर भाटिया का १२ जनवरी २००१ की रात्रि मे हृदय गति अवरोध से प्राणान्त हो गया। श्री भाटिया जी दिल्ली मे आर्यसमाज के एक सुदृढ स्तम्भ थे। श्रद्धा निष्ठा लगन और समर्पण के प्रति भाटिया जी का व्यक्तित्व बहुत ही उज्ज्वल था। उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी। महर्षि दयानन्द के वे अनन्य भक्त थे। विगत अनेक वर्षो से नियमित रूप से शिवरात्रि के अवसर पर ऋषि जन्म भूमि टकारा मे महर्षि दयानन्द का श्रद्धाजलि अर्पित करने के लिए जाना उन्होने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था। टकारा मे निर्माणाधीन महर्षि स्मारक के लिए धन सग्रह कर स्मारक का सुन्दरतम बनाना भी उनका लक्ष्य था। आर्यसमाज के किसी भी कार्य म वे बडी निष्ठा लगन आर श्रद्धा से जुट जाया करते थे। वे अपने धुन के धनी थे। वे सदा सजग ओर तत्पर रहते थे। सबक प्रति मित्र भाव रखना सबके दुख ओर सकट म सहायता क लिए भाटिया जी सदा तत्पर थ

आर्यसमाज स जुडन स पूव वे राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के ५ ७ वर्ष तक प्रचारक रह चुके थ। सघ मे भी उन्होने अपनी निष्ठा लगन स कार्य किया था सघ पर प्रतिबन्ध लगने पर उन्हाने कारागार की यातनाए भी सही थीं

भाटिया सूचना पत्र के वे सस्थापक थे। वर्तमान मे उसके प्रबन्ध सम्पादन का कार्य देख रहे थे। पत्र की उन्नति के लिए वह प्रयत्नशील रहते थे।

वास्तव मे श्रद्धा लगन निष्ठा और समर्पण भाव भाटिया जी के पर्याय बन गए थे। भ्रष्टाचरण और असत्य भाषण उन्हे तनिक भी सहन नहीं था। वे उनके विरुद्ध सदा ही अपनी आवाज उठाते रहे। ऐसे ध्ययनिष्ठ कर्मठ लगनशील समाजसेवी के निधन से रिक्त हुए स्थान की पूर्ति सम्भव नहीं है।

५१ नवम्बर १९२६ को फतेहगढ चूडिया जिला गुरुदासपुर (पजाब) मे जन्म श्री नन्दकिशोर की शिक्षा अमृतसर मे ही सम्पन्न हुई। लगभग ७२ वर्ष का सफल तप करते हुए श्री नन्दकिशोर भाटिया आर्य जगत के एक निष्ठावान नेता के नाते अपनी प्रवृत्तियों की एक प्रभावशाली छाप छोड गए हैं। आर्यसमाज राजौरी गार्डन के विभिन्न पदो पर रहकर तथा बिना पदाधिकारी बने उन्होने आर्यसमाज की किसी गतिविधि से स्वय को अछूता नहीं रहने दिया। इस समय वे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत समस्त स्कूलो पर नियन्त्रण रखने वाली आर्य विद्या परषिद के रजिस्ट्रार के रूप मे कार्य कर रहे थे तथा राजौरी गार्डन आर्यसमाज के तहत चल रहे महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कल के सचिव भी थे। इससे पूर्व वे अल्प समय के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष भी बने।

श्री नन्दकिशोर भाटिया के आकस्मिक निधन से दिल्ली के असख्य आयजनो को व्यक्तिगत क्षति हुइ हे क्योकि श्री भाटिया स्वभाव से अत्यन्त हसमुख और प्रेमशील व्यक्ति थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा वैदिक लाइट के सम्पादक श्री विमल वधावन सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री जगदीश आय दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री तेजपाल मलिक सर्वश्री रामनाथ सहगल मदन मोहन सलूजा बलदेव राज दयानन्द मदान आचार्य सुभाष डा० महेश विद्यालकार श्रीमती शशि आर्या आदि अनेक आर्य नेताओ ने दिवगत आत्मा के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए। इनके अतिरिक्त दर्जनो आर्यसमाजो शिक्षण सस्थाओ तथा अन्य कल्याणकारी सामाजिक एव व्यापारिक सस्थाओ की ओर श्री भाटिया की स्मृति मे मर्मस्पर्शी शोक सन्देश प्राप्त हुए।

दिल्ली मे गुजरात भूकम्प पीडितो के लिए सामग्री एकत्र करने हेतु स्थापित केन्द्र

दिल्ली मे सहायता सामग्री के लिए निम्न आर्यसमाज मन्दिरो मे केन्द्र खोल दिए गए हैं जहा राहत सामग्री पहुचायी जा सकती है –

(१) आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली (मध्य दिल्ली) 2967440
(२) आर्यसमाज प्रीत विहार दिल्ली (पूर्वी दिल्ली) 2204698
(३) आर्यसमाज कृष्ण नगर दिल्ली (पूर्वी दिल्ली) 2050892
(४) आर्यसमाज तिमार पुर दिल्ली (उत्तरी दिल्ली) 3953762
(५) आर्यसमाज लाजपत नगर नई दिल्ली (दक्षिण दिल्ली) 6834876
(६) आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश पार्ट 1 नई दिल्ली (दक्षिण दिल्ली) 6440762
(७) आर्यसमाज रमेश नगर (5153901) राजौरी गार्डन (5101266) तथा पखा रोड सी० ब्लॉक (5544486) नई दिल्ली (पश्चिमी क्षेत्र)
(८) दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान् रोड नई दिल्ली-१ 3360150
(९) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ३/५ दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली २ 3274771, 3260985

गुजरात में भीषण भूकम्प

पूर्व की भांति सहायता कार्यों में आहुति डालें



दैविक त्रासदियों पर किसी व्यक्ति या बडे से बडे वैज्ञानिको द्वारा विकसित किए गए तरीको और यत्नो आदि से नियन्त्रण आज तक नहीं हो सका और न ही ऐसी कोई सम्भावना है जिनसे इन प्राकृतिक विपदाओ को रोका जा सके। यह निश्चय ही प्रकृति के गर्भ मे छुपा रहस्य है जिनपर पूरी तरह से उस सर्वोच्च सत्ता का ही एक मात्र नियन्त्रण है। जिसे हम परमपिता परमात्मा के रूप मे मानते हैं।

एक बार फिर ईश्वर ने पृथ्वी के एक हिस्से मे एक ऐसा वेग उत्पन्न किया जिससे धरती माता के आचल मे जीवन यापन करने वाले मनुष्यो का जीवन पूरी तरह से अस्त व्यस्त हो गया।

इस बार २६ जनवरी की प्रात वेला मे यह त्रासदी भारत के पश्चिमी हिस्से मे स्थित गुजरात प्रान्त के कच्छ क्षेत्र को नाभि बनाते हुए उत्पन्न हुई और नाभि केन्द्र को तो पूरी तरह ध्वस्त कर दिया जबकि इस हलचल का आभास हजारो किलोमीटर के क्षेत्रफल मे हुआ। इस बार समूचा भारत वर्ष पाकिस्तान नेपाल और अफगानिस्तान तथा कई अन्य अरब देश इस हलचल के दायरे मे थे।

गुजरात के भुज गाधीधाम से लेकर अहमदाबाद तक के क्षेत्रो मे भयकर तबाही हुई है।

आर्यसमाज एकेश्वरवादी और परिणामत भरपूर मानवतावादी व्यक्तियो का सगठन है। अत जब हमारे कुछ ईश्वर पुत्रो पर कोई दैविक कष्ट आता है तो उस सकट की घडी मे हर प्रकार से उनके दुख मे भागीदारी हमारा मानवीय एव आध्यात्मिक कर्त्तव्य बन जाता है हमे स्वय थोडे बहुत कष्ट झेलकर भी यदि उन दुखी और पीडित व्यक्तियो की सहायता का अवसर मिले तो इसे स्वय अपने आध्यात्मिक उत्थान का अवसर समझना चाहिए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा समूचे आर्य समाज का इतिहास गवाह है कि हमने सदैव ऐसी विपदाओ मे अपनी सामर्थ्यानुसार कुछ न कुछ सहयोग अवश्य ही आहूत किया है।

आर्यसमाज पूर्व की भाति सहायता के लिए पीछे नहीं हटेगा ऐसा हमे विश्वास है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा एक लाख रुपये की प्रारम्भिक राशि से गुजरात भूकम्प पीडित सहायता कोष स्थापित कर दिया गया है। सेवा कार्यो की भारी जिम्मेवारी गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा क साथ साथ समूचे देश के आर्यजनो पर है। तन मन धन से इस त्रासदी मे सहायता पहुचाना तथा वहा जाकर सेवा करना आर्यजनो का सर्वोच्च आध्यात्मिक कर्त्तव्य होना चाहिए। जब तक यह पत्र आप तक पहुचेगा तब तक सेवा कार्य अवश्यमेव प्रारम्भ हो चुका होगा। सार्वदेशिक सभा द्वारा गुजरात मे यह सेवा कार्य इस बार भुज के निकट गाधीधाम आर्यसमाज मन्दिर को केन्द्र बनाकर किया जाएगा।

आर्य महानुभावा उद्योगपतियो वानप्रस्थियो तथा आर्य शिक्षण सस्थाओ के अतिरिक्त समूचे जन सामान्य से हम यह निवेदन करते हैं कि इस विशाल सहायता कार्य मे धन सूखी खाद्य सामग्री कम्बल टैन्ट तथा दवाईयो आदि की व्यवस्था करने हेतु दान देकर पुण्य लाभ मे भागीदार बने। धन या सामग्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कायालय ३/५ दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली – २ के पते पर भिजवाए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को दिए गए दान पर आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत छूट भी प्रप्त है।

– *वेदव्रत शर्मा*

वैदिक जीवन पद्धति ही इन प्राकृतिक खतरों से मुक्ति दिला सकती है

पूरब – पश्चिम



२६ जनवरी २००१ की प्रात कालीन वेला म भारत के लगभग सभी हिस्सो मे जब भारत के नागरिक गणतन्त्र दिवस परेड का आनन्द लेने की तैयारिया कर रहे थे तो उससे कुछ ही मिनट पूर्व भारत के नागरिको को दुनिया हिलती नजर आने लगी। देश के अन्य हिस्सो मे शायद यह भूकम्प का केवल एहसास मात्र था परन्तु भारतवासियो को क्या पता था कि गुजरात प्रान्त मे बसने वाले उनके भाई बहन बच्चे और बुजुर्ग एक भयकर त्रासदी का शिकार हो रहे हैं।

दोपहर बाद लगभग ३ बजे मैं और श्री वेदव्रत शर्मा खान राज्य मन्त्री श्री जयसिगराव गायकवाड पाटिल के घर पहुचे क्योकि हम युवा एव खेल मन्त्री साध्वी उमा भारती से भेंट करने जाने वाले थे तो उसी समय पता लगा कि मन्त्रीमण्डल की एक तत्काल बैठक बुलाई जा रही है वहीं पर सूचना भी मिली थी कि गुजरात मे प्राकृतिक कहर टूट पडा है और इस बार का भूकम्प इतिहास के पन्नो में एक विनाशकारी प्रविष्टी दर्ज कराने लायक है। वहीं से बम्बई मे कैप्टन देवरत्न से सम्पर्क किया गया तो पता लगा कि वास्तव मे गुजरात में भयकर तबाही हो चुकी है।

ईश्वर जीव और प्रकृति के सिद्धान्त को वैदिक धर्म के अनुयायी बहुत स्पष्ट रूप से समझते हैं। ईश्वर ने जीवात्माओ के भोग के लिए प्रकृति का निर्माण किया है। कुछ महान ईश्वरपुत्रो ने जीवात्माओ को बडा सरल परन्तु स्पष्ट निर्देश भी दिया है – अति सर्वत्र वर्जयेत अर्थात किसी भी चीज की अति भयकर है। भोग करने की इस प्रक्रिया मे मनुष्य ने प्रकृति के साथ छेडछाड करने की गतिविधियो को बेलगाम सा कर दिया। प्रकृति के इस बेलगाम दोहन से स्वाभाविक है कि प्रकृति मे कई प्रकार की कमजोरिया उत्पन्न हो रही है। धरती के ऊपर अशान्त – वायुमण्डल मे तो प्रदूषण स्पष्ट रूप से नजर आ रहा है जिसे मनुष्य बिगाड रहा है बिगडते हुए देख रहा है और फिर भी वैज्ञानिक प्रगति के नाम पर इन विध्वसक कार्यों को रोकने की सोच भी नहीं रहा।

धरती के नीचे चटटानो मे एक तरफ तो लगातार दरारे पडती जा रही हैं। वायुमण्डल मे ओजोन परत के लगातार कमजोर होने से सूर्य की हानिकारक किरणे धरती के अन्दर भी पहुच कर अपना विध्वसात्मक प्रभाव डाल रही है। जब यह दबाव सीमा से अधिक बन जाएगा तो स्वाभाविक रूप से धरती फटने लगेगी जैसा कि गुजरात मे हुआ।

कई वैज्ञानिको ने आशका व्यक्त की है कि जिस दबाव के तहत यह हलचल पैदा हुई है उसका प्रभाव समाप्त नही हुआ अपितु अभी और अधिक बढने की आशका है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदो की ओर चलो का एक मार्मिक आह्वान किया था इसका अर्थ केवल वेद की पुस्तको तक ही पहुच बनाना नहीं था। अर्थात इसका अर्थ केवल पुस्तकालयो मे जाकर वेद को पढना मात्र नहीं था इसका सूक्ष्म अर्थ था वैदिक जीवन पद्धति की ओर लोट चलो। वैदिक जीवन पद्धति पूरी तरह से प्राकृतिक जीवनयापन है। वैदिक जीवन पद्धति पद और पैसे तक दौड बनाने की अपेक्षा या सामाजिक और आर्थिक रूप से ताकतवर बनने की अपेक्षाकृत आध्यात्मिक ताकत को मनुष्य का लक्ष्य बनाती है।

वैदिक जीवन पद्धति पर आप अकेले चलते रहे अर्थात कुछ गिने–चुने लोग प्राकृतिक जीवनयापन करते रहे तो भी इस आधुनिक उथल–पुथल से बचना सम्भव नहीं। इसके लिए अन्यो को भी प्रेरित करना पडेगा। वैदिक जीवन पद्धति क्योकि भारत भूमि पर रहने वाले पूर्वजो की जीवन शैली रही है अत इसी जीवन शैली का दूसरा नाम पूर्वी सभ्यता है अन्यत्र पश्चिमी सभ्यता है। उल्लेखनीय है कि इस पूर्वी क्षेत्र मे बृहत्तर भारत अर्थात ग्रेटर इण्डिया का जब अध्ययन करते है तो इसमे भारत के आस–पास के दर्जनो देश शामिल हो जाते है। इन पूर्वी क्षेत्रो मे तो अब भी भूकम्प कुछ वर्षो के अन्तराल पर आत है जबकि पश्चिमी सभ्यता के केन्द्र अमेरिकी क्षेत्रो मे दर्जनो सैकडा छोटे–बडे भूकम्प भूचाल और तूफान प्रतिवष आते है।

पूरब और पश्चिम मे केवल मात्र सस्कृतियो का ही अन्तर नही हे अपितु विज्ञान का भी अन्तर है। या दूसरे शब्दो मे यह कहा जा सकता है कि सस्कृतियो का यह अन्तर बढते बढते पूरब और पश्चिम के विज्ञान को भी अलग अलग कर देता है। पूरब का विज्ञान अभी उस विनाशकारी विनाश से बहुत दूर है जिस विनाशकारी सीमा को पश्चिम का विज्ञान पार कर चुका है।

हमारे बन्धुओ को अर्थात वैदिक धर्म के अनुयायी आत्माओ को यह प्रयास सदैव करते रहना चाहिए कि विश्व के समस्त मनुष्य प्राकृतिक जीवन शैली को अपनाए तभी धरती माता भी हमे अपनी गोद मे बैठने का एक सुरक्षित स्थान उपलब्ध कराएगी।

परन्तु अब जब धरती माता का एक हिस्सा त्रासदी से पीडित है तो हम सब का यह प्रथम दायित्व बनता है कि इस भूकम्प से पीडित जनता तक हर सम्भव सहायता भेजने के लिए भरपूर सहयोग करे।

(क्रमशः)

– *विमल वधावन*

वेदोक्त धर्मविचार

– डॉ० रघुवीर वेदालकार

वेद पृथ्वी को टुकडो मे बटी हुई नही देखता। वेद की दृष्टि मे समस्त पृथ्वी एक हे इकाई है। यह हमारी माता है। जब कोई वेद का अध्येता **'माता भूमि पुत्रोऽह पृथिव्या '** कहता है तो वेद के अनुसार इसका यह आशय नही कि अमुक व्यक्ति किसी देश विशेष की भूमि का ही पुत्र है तथा केवल उसकी रक्षा करना ही उसका कर्त्तव्य है चाहे उसके लिए अन्य देशवासियो का उत्पीडन ही क्यो न करना पडे। पृथ्वी शब्द पृथु विस्तारे धातु से बना है। जहा तक भी पृथ्वी का विस्तार है मै उसका पुत्र हू, यही आशय उक्त सूक्ति का है।

वेद की दृष्टि मे मानवमात्र भी एक हैं। उन मे देश जाति भाषा आदि के आधार पर अनेक भेद नही है। वेद मनुष्यो के केवल दो ही वर्गो की बात करता है। आर्य तथा दस्यु। **विजानीह्यार्यान् ये च दस्यव '**। यह मन्त्राश इसी को द्योतित करता है। वेद की दृष्टि मे समस्त पृथ्वी एक अखण्डनीय अदिति है। इस पृथ्वी पर रहने वाले सभी मानव उस परम पिता की सन्तान है जिसके लिए कहा गया है – शृण्वन्तु विश्वेऽमृतस्य पुत्रा। (यजु० ११।५) मानव ने अपने अज्ञान तथा स्वार्थ वश पृथ्वी को टुकडो मे बाट लिया जिससे उनकी राष्ट्रीयता भी विभक्त हो गयी तथा धर्म भी बट गया। वेद तो **'यत्र विश्व भवत्येकनीडम्'** का उदघोषक था।

जिस प्रकार वेद की दृष्टि मे समस्त पृथ्वी तथा उस पर बसे मानव एक है उसी प्रकार वेद प्रतिपादित धर्म भी एक है जो सार्वभौम तथा सार्वकालिक है। पृथ्वी तथा राष्ट्रीयता के समान हमने धर्म को भी जाति तथा देशो के आधार पर बाट लिया। न केवल बाट ही लिया अपितु आज के तथाकथित धर्म एक दूसरे के विरुद्ध भी खडे हो गये। धर्म के आधार पर एक जाति दूसरी जाति की शत्रु बन गयी। एक देशवासी दूसरे देशवासियो को मिटाने पर उतारू हो गये। न केवल धर्म अपितु ईश्वर की कल्पना भी अपने-अपने अनुसार कर ली गयी या यो कहे कि ईश्वर को भी देश तथा जाति के आधार पर बाट लिया गया। देशो तथा जातियो के परस्पर लडाई-झगडे तथा आक्रमण आदि का यही कारण है। वेद यह कह रहा था – **'पुमान् पुमास परिपातु विश्वत '**। मानव मात्र दूसरे मानव की सभी ओर से सभी प्रकार की रक्षा करे। आज हम युद्धो की विभीषिकाओ मे जी रहे हैं मानव ही नहीं अपितु देश भी परस्पर शत्रुता रख रहे हैं तथा एक दूसरे को मिटाने पर उद्यत हैं।

प्रश्न है कि क्या वेद मे राष्ट्र की कल्पना नहीं है। वेद राष्ट्र का भी प्रतिपादन करता है। यदि राष्ट्रवाद है तो अनेक राष्ट्र भी हो सकते है। हा हो सकते हैं किन्तु तब भी उनका धर्म उनका ईश्वर एक हो सकता है। अभी भी एक ही धर्म है। सम्प्रदाय को मानने वाले कई कई राष्ट्र हैं। अनेक राष्ट्र होने का यह अर्थ नहीं है कि उनमे परस्पर विरोध हो वे एक दूसरे के शत्रु हो। वेद का अध्येता तब भी अपने राष्ट्र अपनी मातृभूमि के लिए **'माता भूमि '** कहकर उसके प्रति नत हो सकता है तथा साथ ही 'पुत्रोऽह पृथिव्या कहकर समस्त पृथ्वी के लिए ही अपने को पुत्र प्रस्तुत कर सकता है। यदि ऐसा होगा तो अनेक राष्ट्र होते हुए भी उनमे परस्पर बन्धुत्व होगा वैर वैमनस्य नही।

अनेक राष्ट्रो मे बटे होने मर भी हम वेद के इस आदर्श को ध्यान मे रखे कि मैं प्राणीमात्र को मित्र की दृष्टि से देखू। ध्यान रहे कि यहा पर मानवमात्र नहीं अपितु प्राणीमात्र कहा है। कितनी व्यापक तथा प्रेममयी दृष्टि है वेद की। यही वेदोक्त धर्म है तथा विभिन्न राष्ट्रो मे रहकर उनके प्रति निष्ठावान रहकर भी इसका पालन किया जा सकता है। वेद इससे आगे जाता है। वेद का अध्येता कह रहा है – **सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु।** समस्त दिशाए वहा पर रहने वाले सभी प्राणी मेरे मित्र बन जाए। मेरा किसी के साथ भी वैर विरोध रह ही न जाये। यदि विरोध हो तो केवल दस्यु, दुष्ट अनार्य प्राणी से हो। ये सभी शब्द लगभग एक ही अर्थ के द्योतक हैं। ये सभी मानव मात्र के समस्त पृथ्वी के शत्रु हैं। अत सभी राष्ट्रवासी मिल कर उनका प्रतिरोध करे इन्हे विनष्ट करे। इस सन्दर्भ मे वर्तमान आतकवाद को देखा जा सकता है जिसके लिए आज विश्वभर को चिन्तित होना पड रहा है तथा जिसके विरुद्ध मिल कर लडने की बात कही जा रही है। वेद तो मानव मात्र मे प्रेम का सचार करना चाहता है। सभी को परस्पर मित्र बनाना चाहता है। तभी तो कहा गया है कि देवो मैं – प्रजा पशु तथा अपने सदृश सभी का प्रिय बनू।

राष्ट्र एक हो या अनेक हो वे तभी उन्नति कर सकते हैं। जब कि वहा की प्रजा ऐसे नियमो को धारण करे जो सर्वजनहिताय सर्वजनसुखाय हो तथा राष्ट्र के प्रति समर्पण भावना से किये जा रहे हो। ऋत सत्य तथा यज्ञ वेद प्रतिपादित ऐसे तत्त्व हैं जो उन्नति चाहने वाले किसी भी राष्ट्र को धारण करने ही होगे। इन पर चल कर ही राष्ट्र शक्तिशाली बन सकता है तथा प्रजा सुखी रह सकती है। इन तत्त्वो के अभाव मे वही दुर्दशा होगी जो आजकल हो रही है। जनता हो या जन-प्रतिनिधि हो शासक हो या शासित हो सभी का जीवन आज असत्य पर आधारित है। व्यक्तिगत सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवन पूर्णत असत्यमय बन गया। नित्य प्रति नये नये घोटाले सामने आते जा रहे हैं जिनमे राष्ट्र के कर्णधार भी लिप्त पाये जाते हैं। कर्त्तव्य जनता को उचित दिशा तथा सुख प्रदान करना था। इससे बढकर और दुर्भाग्य क्या हो सकता है किसी देश के मन्त्री तथा प्रधानमन्त्री भी भ्रष्टाचार के दोष मे लिप्त पाये जाए। भारत मे यह सब हो रहा है।

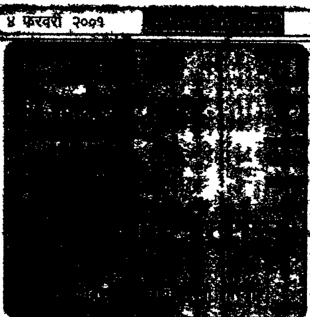
राष्ट्र की प्रगति के अन्य आवश्यक तत्त्व दीक्षा तथा तप है। अपने कर्त्तव्य को पूर्ण निष्ठा से करना यही दीक्षा का अर्थ है। इसके लिए तप करना पडता है श्रम करना पडता है। कठोर श्रम ही तप कहलाता है। राष्ट्र से कम से कम लेकर उसे अधिक से अधिक देने का नाम ही तप है। किन्तु आज ये दोनो ही तत्त्व जनता सरकारी कर्मचारियो तथा स्वय सरकार से भी तिरोहित हो गये। कोई भी अपने डयूटी=कर्त्तव्य का पूर्ण निर्वाह नहीं कर रहा है। सरकारी नौकरी प्राप्त करते ही अधिकाधिक सुविधाओ की माग प्रारम्भ हो जाती है। अन्य कर्मचारियो की तो बात ही क्या आज दश का प्रतिनिधित्व करने वाली ससद के सदस्य भी अपने लिए अधिकतम सुविधाओ को प्राप्त करने मे जुट जाते है। इसमे उन्हे कोई कठिनाई भी नही होती क्योकि नियम/कानून बनाने वाली ससद ही तो है।

चाहे राष्ट्र के अधिकारी हो कर्मचारी हो या सामान्य जनता हो सब की एक सामान्य प्रवृत्ति है कि अधिक से अधिक सम्पत्ति को प्राप्त करू। इसके लिए वह उचित अनुचित सभी प्रकार के साधन अपनाता है। रिश्वत लेता है भ्रष्टाचार करता है पदार्थो मे मिलावट करता है यहा तक कि खाद्य पदार्थो तथा औषधियो को भी वह इस अपराध की चपेट मे ले लेता है भले ही उससे किसी के प्राण सकट मे पड जाए। व्यापारी वर्ग वस्तुओ का कृत्रिम अभाव उत्पन्न करके जनता का शोषण करता है। वेद की दृष्टि मे ऐसे सभी लोग पणी सज्ञक है। वेद स्पष्ट घोषणा करता है कि राजा को ऐसे पणियो के साथ मित्रता न रखकर उनका विनाश करना चाहिए। जिन्होने अनुचित रूप से दूसरो का स्वत्व अपहरण करके सम्पत्ति एकत्रित कर ली है। राजा उन सबका पता लगाकर उनकी सम्पत्ति को प्रजा मे बाट दे।

यदि वेद के इस आदेश का पालन हो जाए तो इस अव्यवस्था पर नियन्त्रण किया जा सकता है। यही वेद प्रतिपादित धर्म है। जिसका पालन सभी राष्ट्रवासियो को करना चाहिए।

यहा पर हमे यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वेद विश्व का ग्रन्थ है। ससार मे सर्वप्रथम प्राप्त ज्ञान है। यह किसी देश काल जाति की सीमा मे नहीं बधा है किन्तु दुर्भाग्य है कि आज इस विश्वव्यापी वेद को भी भारतवर्ष तथा यहा के निवासियो केवल हिन्दू आर्य से ही सम्बन्धित कर दिया गया। हमारा पूरा यत्न यह होना चाहिए कि समस्त विश्व इसे विश्व हितकारी तथा सर्वप्रथम प्राप्त ज्ञान मानकर इसे अपने लिए उपयोगी एवम् अपरिहार्य समझे।

– बी-२६६ सरस्वती विहार दिल्ली ३४



महाभारत काल से लेकर आज तक इस मध्य अनेक विद्वान सन्त विचारक भारत में हो चुके हैं। जिन्होंने समयानुसार भारतीयों को विभिन्न धार्मिक ऐतिहासिक विचारो द्वारा मानव जीवन को उन्नतिशील बनाने का प्रयास किया। साथ ही उनके विरुद्ध कुछ ऐसे व्यक्ति भी आये जिन्होने भोगवाद का आश्रय लेकर भारतीय प्रजा को भाग्यवाद का उपदेश देकर उन्हे अकर्मण्य एवम अन्धविश्वासी बना दिया। इस कारण भारत ने अभी तक अपनी मौलिक समस्याओं को पूर्णतया हल नहीं कियां। क्योकि इसमें पुरुषार्थवाद की उपेक्षा कर दी गयी। जबकि पुरुषार्थ से ही भाग्य का निर्माण होता है।

पुरुषार्थी बनने के लिए सत्यविद्या का उपयोग करना पडता है जिससे भाग्यवादी विचारों का अवसान हो जाता है। लेकिन मानव निर्माण के शत्रुओ ने प्रचार कर दिया —

भाग्य फलति सर्वत्र न च विद्या न च पौरुषम्।

उल्टा कर दिया। विद्या और पुरुषार्थ से ही तो भाग्य का निर्माण होता है। जब कभी भाग्य फलता है तो उसका अर्थ यही होगा कि पहले पुरुषार्थ किया गया है। कर्म पहले और उसका फल बाद मे मिलता है। यह सर्वविदित है। आज भी ऐसे [illegible] लोग हैं जो बिना पुरुषार्थ के ही श्रेष्ठ फल चाहते हैं। इस सत्यता से अनभिज्ञ अनेक लोग ज्योतिषियो से अपने भाग्य का निर्णय कराते हैं। यदि गरीबी है तो मान लिया कि यह भाग्य मे लिखा है। प्रयत्न करने पर भी [illegible] न होगी। रोगी हैं सन्तान नहीं है मुकदमा लगा है। पारस्परिक [illegible] किसी न किसी की हत्या कर दी शत्रु आक्रमण कर रहा है। [illegible] कि भाग्य मे ऐसा ही होना है। भगवान की मर्जी। यह अपरिहार्य है। [illegible] भारत को विकसित नहीं होने दिया। वस्तुत मानव धर्म भाग्यवाद का नहीं पुरुषार्थवाद का समर्थक है। —

[illegible] है कि [illegible] में एक [illegible] [illegible] [illegible] का परिहार [illegible] हुए उत्तर दिया कि वह जीवन असार है। इस उत्तर को सुनकर ससार के उत्साही वर्ग में निराशा छा जाना स्वाभाविक है। क्योकि असार जीवन की समस्याए भी असार हैं। उनका हल खोजना भी व्यर्थ है। आद्य शकराचार्य जी ने बताया कि यह ससार माया है तो जिन्होने जीवन की हर दशा को माया कहा उन्होने लोगो की समस्याओ को हल करने में उपेक्षा ही वरती। कारण यह है कि उन्हीं समस्याओ का हल खोजा जाता है जो सार हैं।

कुछ लोगों ने प्रचार किया कि ससार असत्य है। ब्रह्म सत्य जगन्मिथ्या का सिद्धान्त रचा गया। उनसे पूछिये कि सत्य ब्रह्म का कार्यरूप जगत असत्य क्यो कर हो सकता है। सृष्टि की कारण रूप प्रकृति भी सत्य है। अविनाशी है। अन्यथा जगदरचना असम्भव है। फिर कुछ यह भी कह रहे हे सत हरि भजन जगत सब सपना। जीवन को सपना वा माया कहने से किसी भी समस्या का हल नहीं हो सकता। इन समस्याओ को हल करने मे असमर्थ भारत भ्रान्त विचारो मे डूबा रहा है। बताइये फिर भारत का विकास कैसे होता ?

इसे मिथ्यावाद से निकालने के लिए महर्षि दयानन्द जी न भारतीयो को एक वैज्ञानिक प्रक्रिया प्रदान की और हमारे सोचने का ढग बदल दिया। प्राचीन रूढिवादिता को समाप्त करके वैज्ञानिक चिन्तन सामने रखा। जिसमे तर्क एव युक्ति को प्रधानता दी। तब हम जग मिथ्यावादियो से पूछने लगे —

जब ससार असत्य है तो भोजन क्यों करते हो। रोगी होने पर चिकित्सा क्यो कराते हो ? क्योकि भूख और रोग दोनो ही असत्य हैं। और हा यह धरती भी तो असत्य है। इस के ऊपर क्यों खडे हो ? यदि अपने वचन को सत्य सिद्ध करने के लिए ब्रह्मवादी कहे कि हम धरती छोड वायुयान से आकाश मे विचरेगे तो भी समस्या का हल नही हुआ। क्योंकि धरती और आकाश भी जगत में सम्मिलित हैं। अब कहा जाओगे ? अभिप्राय यह है कि जब तक हम ऐसे लोगो से अपनी समस्याओ का हल पूछते रहेंगे भारत निर्धन ही बना रहेगा। इसका कोई भी विकास नहीं होगा और न यह कोई विज्ञान पैदा कर सकेगा।

वस्तुत हम समस्याओं का हल गलत [illegible]। जो जीवन को सत्य मानते हैं वे ही समस्या का हल खोज सकते हैं। असत्य व माया कहने वाले तो मनुष्यो को विपरीत ज्ञान देकर भ्रमजाल मे फसा रहे हैं। ध्यान रहे, प्रकृति नितान्त सत्य व परिपूर्ण हे। ऐसी गलत मान्यताओं के कारण हजारो वर्षों तक भारत दूसरों का गुलाम रहा। जीवन नर्क ही बन गया। इस नर्क से हमे वही निकालेगा जो जीवन को सत्य मानता है परन्तु दुःख है कि हमने ऐसे लोगो को सम्मान दिया जो जीवन को मिथ्या बताते रहे। जगत और उसमें उत्पन्न पदार्थ सभी सत्य हैं। जो इस तथ्य को समझ लेता है वह परमात्मा को भी जान लेता है। विज्ञान की खोज भी करता है। बाहरी और भीतरी दोनो विज्ञानों को समझे बिना जीवन की समस्याओ का हल निकल ही नहीं सकता।

केसी रोगी वा गरीब को हम कहे कि तू अपने पाप कर्मो का फल भोग रहा है। पानी नहीं बरसा सूखा अकाल पड गया तो भी हम उसे पापो का फल मान कर सन्तुष्ट है। इससे आगे हमारी बुद्धि काम नही कर रही। वर्षा न होने अकाल पडने का पापो से क्या सम्बन्ध है ? यह अवैज्ञानिक चिन्तन है। एक समय था कि भारत अपनी उन्नति की चरम सीमा पर था और दूसरे कई देश निर्धन वा ज्ञान विज्ञान में पिछडे हुए थे। तब क्या कारण है कि हम सब प्रकार से पिछड गये और दूसरे अनेक देश वैभव सम्पन्न व विकसित है ? कारण स्पष्ट है कि हमने भाग्यवाद का और अन्य देशो ने पुरुषार्थवाद का आश्रय लिया। यही तो बात थी कि सन १९४५ मे जब अमरीका ने जापान पर बम गिरायें तो वहा डेढ लाख से भी अधिक व्यक्ति मारे गये थे। मिनटो मे ही सब कुछ तबाह हो गया। तब हम भले ही कहते रहें कि उसके भाग्य मे ऐसा ही होना था। लेकिन कुछ ही समय मे उसी जापान ने इतनी उन्नति कर ली कि ससार के विकासशील देशो मे वह समान स्तर पर खडा है। अब भाग्यवादी बतायें कि जापान की उन्नति का आधार क्या था ? सही उत्तर यह है कि यह सब उसके पुरुषार्थ का फल था। जिसने भाग्य को बदल दिया।

एक व्यक्ति की आयु कम है दूसरे की अधिक है। यहा अधिकाश भारतीयो का विश्वास यह है कि ईश्वर जिसके भाग्य में जितनी आयु निश्चित कर देता है उतनी ही होती है। कम वा अधिक नहीं। विचारणीय है कि जब हम व्यायाम भोजन आदि द्वारा अपना स्वास्थ्य बढा सकते हैं स्वाध्याय सत्सग द्वारा ज्ञान-विज्ञान बढा सकते हैं। व्यापार मे धन लगाकर बुद्धि व परिश्रम से अपने धन में वृद्धि कर सकते हैं और रोगी होने पर औषधि से रोग को हटा सकते हैं तो क्या कारण है कि हम प्राकृतिक नियमों का पालन करके आयु मे वृद्धि नहीं कर सकते ? भाग्यवादी बतावे कि ईश्वर ने ये सब बातें भाग्य में क्यो नहीं लिखीं केवल आयु ही क्यो लिखी ? अमरीका रूस चीन जापान आदि देशो के भाग्य मे उनकी आयु लिखना ईश्वर कैसे भूल गया ?

१९१७ मे रूस मे क्रान्ति हुई। तब वहा लोगो की औसत आयु २३ वर्ष थी। लेकिन आज उनकी आयु का औसत ७० वर्ष बताया जाता है। जब उनकी आयु का औसत २३ वर्ष ईश्वर ने तय किया तो उसके विरुद्ध वहा आयु मे तीन गुणा वृद्धि कैसे हो गयी ? केवल भारतीयो की आयु ईश्वर भाग्य मे लिखता है। हमारा यह कितना अज्ञान भरा चिन्तन है। जो व्यक्ति रूस हो आये हैं वे बताते हैं कि वहा आज भी सवा सौ डेढ सौ वर्ष की आयु के सैकडो वृद्ध पुरुष जीवित है। कुछ वर्ष पूर्व ही वहा एक महिला की आयु मरते समय १७८ वर्ष थी। यहा भारत के विज्ञान को देखिये कि शिक्षित व्यक्ति भी फुटपाथ पर बैठे ज्योतिषी स एक दो रुपये देकर अपनी आयु पूछ रहा ह। जिसे स्वयम अपनी आयु का पता नही उसी स अपनी आयु का निणय कराना अपनी अज्ञानता प्रकट करना ह इधर ८५ की जनसख्या तेजी स बढती जा रही है। इसका कारण हम बता रहे है कि भगवान की मर्जी। वही बालक पेदा करता है। ऐसा कहकर हम सन्तुष्टि कर लते हे किन्तु अपन सयमहीन जीवन पर तनिक भी धब्बा नही आन देते। सब कुछ हम भगवान ओर भाग्य पर छोड देत है। गरीबी हो बीमारी हो तो वही भगवान् जिम्मेवार है। बालक जन्म स अपग पैदा हो तो यह इश्वरीय करतूत हे। हम तो बिल्कुल निर्दोष हे। कह रह हे कि यह इसके पिछले जन्म के कर्मो का फल है। वस्तुत ये सब बाते निरथक हे। इस सम्बन्ध मे मनुष्य बिल्कुल अज्ञानी हे। अन्धा लगडा बालक अपने कर्मो का फल नही भोग रहा अपितु माता पिता की अज्ञानता का फल भोग रहा है। शरीर विज्ञान का अध्ययन किया जाये तो अपग बालक पैदा होने की आवश्यकता नहीं है

प्राकृतिक घटनाओ को छाडकर किसी भी व्यक्ति की अकाल मृत्यु नहीं हो सकती लेकिन प्रकृति और शरीर विज्ञान से अनभिज्ञ होने से ऐसी घटनाए हो रही है। इसलिए जब तक हम अवैज्ञानिक चिन्तन से मुक्त नहीं होगे जब तक पुरुषार्थी न बनेगे तब तक हमारी कोई भी समस्या हल नहीं हो सकती। दूसरो स पराजित हो कर हम गुलाम बने ही रहग। हमारी पिछली गुलामियो का कारण भाग्यवाद प्रमाद एवम अकर्मण्यता हे जीवन को असार कहन से ही भारत विदेशियो का गुलाम बना पराजित हुआ। जीवन का यथार्थ बताने वालो की उपेक्षा की गयी। उनके विरुद्ध वातावरण तेयार किया गया। इसलिए उस काल मे भारत मे कोई विज्ञान पैदा न हो सका।

शेष पृष्ठ ८ पर

e-mail : vedicgod@nda.vsnl.net.in ओ३म् ☎: 3274771, 3260985

पीड़ितों की सेवा हम सबका राष्ट्रीय कर्त्तव्य

गुजरात में विनाशकारी भूकम्प

भुज, गांधीधाम, अहमदाबाद सर्वाधिक प्रभावित

पीड़ितों की सहायतार्थ अपील

बच्चों के प्रति अभिभावकों के प्रमुख कर्त्तव्य

सुरेश बी० शर्मा

बच्चा जन्म से ही चार पाच वर्ष तक अभिभावको के सरक्षण मे फलता फूलता है। खेलता कूदता खाता पीता विकसित होता है। बच्चा चार पाच वर्ष तक अभिभावको के सान्निध्य मे ही सब कुछ सीखता है उन्ही का अनुकरण कर वह सब कुछ सीखता है जैसा अभिभावक करते है। इस कच्ची उम्र मे अभिभावक बच्चे को जिस ढाचे मे डालेगे वह उसी मे ढल जाएगा। जैसे सस्कार बच्चे को देगे वैसा ही वो बनेगा। पाच वर्ष के उपरान्त शाला मे बच्चा जाता है तो उसे वैसा ही बनाना पडगा। अस्तु यह आवश्यक है कि अभिभावक बच्चो के प्रति निम्न प्रमुख कर्त्तव्यो के प्रति सजग रहे

१ विद्याध्ययन करते हुए बच्चो को तेजस्वी व ओजस्वी बनाए तथा परीक्षा मे अच्छे अको से उत्तीर्ण होने की युक्तिया सुझाए।

२ बच्चो के जीवन की नींव पुष्ट करने के लिए उत्तम चरित्र का निर्माण करे।

३ योगासन प्राणायाम ध्यान योग व व्यायाम द्वारा बच्चो की सुषुप्त शक्तियो को समय समय पर अच्छे कार्यो हेतु जागृत करते रहे और प्रोत्साहित व प्रेरित करते रहे।

४ तन को स्वस्थ मन को शान्त सौम्य और प्रसन्न बुद्धि को प्रखर और दिव्य बनाने के लिए बच्चो को बताते रहे स्वय भी सम्पूर्ण रूप से सहयोग देवे।

५ बच्चो मे आत्मविश्वास जगा कर सर्वांगीण विकास द्वारा जीवन को सफल बनाने हेतु प्रेरित करे और शौर्य उमग उत्साह आदि जगाकर जीवन को समृद्ध बनाने हेतु प्रयत्न करे।

६ बच्चो को माता पिता कुटुम्ब परिवार समाज राष्ट्र एव विश्व मानवता की सेवा हेतु प्रोत्साहित करे। उनके विचारो मे सादगी सरलता सयम व सहयोग का भाव जगाए।

७ बच्चो को सिखाए कि वे सत्यनिष्ठ व कर्त्तव्य परायण बनकर हर क्षेत्र मे सुख समृद्धि शान्ति और सफलता प्राप्त कर अपने व्यक्तित्व को निखारे।

८ बच्चो को शरीर स्वास्थ्य के मूलभूत पाठ का ज्ञान करा कर शरीर को हम पुष्ट व निरोग रखने की सरल युक्तिया बताए तथा उन्हे सिखाए कि अलौकिक ज्ञान से कठिनतम उलझन को पल भर मे ही कैसे सुलझाए।

९ बच्चो को मादक पदार्थो से सदैव दूर रहने को कहे तथा उन्हें बताए कि इनके सेवन से क्या क्या मुसीबते आती है ? जीवन मे वे कैसे निर्भय निडर निश्चिन्त सजग आत्म विश्वासी स्वाभिमानी व दृढ सकल्पी बने ?

१० बच्चो को ब्रह्मचर्य का पालन व यौवन सुरक्षा के प्रति अवश्य जागरूक करे।

११ बच्चो को माता पिता के उपकारो के प्रति उनके क्या कर्त्तव्य है यह अवश्य बताए।

१२ बच्चो को भक्ति योग ज्ञान उपासना पूजा अर्चना एव जीवनपोषक तत्वों की जानकारी दें।

१३ बच्चों को बताए कि राम कृष्ण, बुद्ध महावीर, नानक व ज्ञानदेव कबीर सूर तुलसी दयानन्द विवेकानन्द आदि ने जीवन मे कैसे-कैसे महान् कार्य किए। इनसे वे प्रेरणा प्राप्त कर अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाए।

१४ भारतीय सस्कृति धर्म व दर्शन के प्रति बच्चो को अवश्य जागरूक करें।

१५ बच्चो को बताए व सावधान करे कि जीवन नाम है सघर्ष का अत इससे न घबरा कर उत्तरोत्तर आगे बढते रहें और अपना लक्ष्य रखे जीवन मे जिओ और जीने दो। परमार्थी बन जन जन की सेवा करें तभी सुफल की प्राप्ति होगी।

— पोस्ट आफिस गुमानपुरा
कोटा (राज०)

स्वास्थ्य चर्चा

औषधीय गुणों से भरपूर गाजर

डॉ० श्रीमती स्वराज्य गुप्ता

गाजर को हम फल और सब्जी के रूप मे प्रयोग करते है लेकिन गाजर केवल फल या सब्जी ही नही है बल्कि इसम अनेक ओषधीय गुण मौजूद होते है इसके खाने से कई प्रकार के रोग दूर होते हैं अनिद्रा खून की कमी स्नायुणिक दुर्बलता दमा क्षय रोग धातु दौर्बल्य मूत्राल्पता तथा हृदय की कमजोरी आदि मे गाजर का औषधि रूप मे प्रयोग किया जाता है

- ❖ कच्ची गाजर खाने से आतो के कृमि नष्ट हो जाते हैं।
- ❖ गाजर खाने से मूत्र साफ होता है। गुर्दे तथा मूत्राशय की पथरी टूट कर निकल जाती है।
- ❖ गाजर की सब्जी खाने से बवासीर रोग नष्ट होता है।
- ❖ गाजर का मुरब्बा तरावट देता है दिल और दिमाग को शक्ति प्रदान करता है तथा रक्त वृद्धि करता है।
- ❖ गाजर का हलवा दिल ओर गुर्दे की कमजोरी को दूर करके कमर के दर्द को दूर करता है।
- ❖ गाजर त्रिदोष नाशक होने के कारण हृदय रोगो मे बडी लाभकारी है।
- ❖ गाजर के नियमित सेवन से नेत्रो की कमजोरी रतौंधी आखो से पानी गिरना जलन आदि मिट जाती है
- ❖ रक्त विकार जैसे चर्म रोग फोडे फुसी और मुहासे आदि होने पर गाजर का प्रयोग लाभकारी रहता हे।
- ❖ गाजर का रस पीन स दात मजबूत होते हैं तथा गले के रोगो व टॉसिल म लाभ होता है।
- ❖ गाजर के हरे पत्ते चबाकर खान से कामशक्ति बढती है।

पृष्ठ ५ का शेष भाग

भाग्यवाद और पुरुषार्थवाद

जर्मनी मे आइन्स्टीन नामक महान वैज्ञानिक विचारक था। वह एटम बम की शाध वहा करने की तैयारी मे था। लेकिन जर्मनी से उसे भगा दिया गया। वह अमरीका चला गया। परिणाम यह हुआ कि जो एटम बम जर्मनी मे बनना था अमरीका मे बना। उसी एटम बम ने जापान और जर्मनी के घुटने टिका दिये तभी से अमरीका परमाणु शक्ति सम्पन्न देश बनता आ रहा है और सार विश्व पर दादागिरी चला रहा है यदि आइन्स्टीन को न भगाया जाता तो जर्मनी सर्वाधिक शक्ति सम्पन्न देश होता। इस भूल से सारे विश्व का ही इतिहास बदल गया।

हम भी विश्व मे बडे बडे वेज्ञानिक तयार कर सकते थे। परन्तु इसलिए न कर सके कि हमने जीवन को यथार्थ न समझा। क्योकि भारत के मिथ्यावादी साधुओ ने हमें यही विश्वास दिलाया कि सब कुछ मिथ्या है असार है। ऐसी दशा मे विज्ञान का जन्म कैसे हो सकता था। ऐसे असार कहन वालो को यदि भारत से निकाल दिया जाता तो भारत का विज्ञान आज उच्च शिखर पर होता और ससार भारत पर निर्भर होता।

जब से मिथ्यावादियो का विश्वास कम हुआ और भारत मे जीवन को यथार्थ समझा तब से यहा विज्ञान ने अपने पैर पसारने आरम्भ कर दिये। परिणामत आज हम विज्ञान मे आगे बढ रहे है। हमने भाग्यवाद को धता बता दिया है और पुरुषार्थ पर विश्वास करते है। सरकार द्वारा परमाणु परीक्षण इसी परिश्रम का फल है। लेकिन यह तो भौतिक विज्ञान का कुछ विकास हुआ है। आध्यात्म विज्ञान मे विकास न के बराबर है। क्योकि कालेजो मे तो छात्रो को भौतिक विज्ञान ही पढाया जा रहा है। उनका मस्तिष्क पूर्णतया वैज्ञानिक नहीं है। हम प्रत्यक्ष देखते है कि एक छात्र एम०ए० परीक्षा मे उत्तीर्ण होने की चाह मे हनुमान वा किसी कल्पित देवता के आगे करबद्ध प्रार्थना कर रहा है। वह यह सोचने मे असमर्थ हे कि उत्तीर्ण होना न होना मेरे परिश्रम पर निर्भर हे। न कि फर्जी देवता की कृपा पर। इसलिए लोग भले ही विज्ञान पढ रहे है। किन्तु अन्दर से अवैज्ञानिक हैं क्योंकि भौतिकी विज्ञान तो बाहरी ससार का ज्ञान कराता है। किन्तु आन्तरिक ससार को जानने के लिए आत्मविज्ञान का आश्रय लेना पडेगा। जब दोनो विज्ञानों में वृद्धि होगी तो भौतिक के साथ आत्मिक अन्धकार भी दूर हो जायेगा। फिर हमें वास्तविकता का पता चलेगा कि जीवन सत्य है वा असत्य। इस सत्य ज्ञान के प्रकाश को देश विदेश मे विस्तार करने के लिए हमे उन [illegible] से सावधान रहना पडेगा जिन्होने मिथ्यावाद का प्रचार करके भारत को विज्ञान के क्षेत्र में आगे नही बढने दिया।

१२६ जनता डी० [illegible]
बदरपुर, नई दिल्ली-११[illegible]

स्वास्थ्य चर्चा

बिना दवा की जादुई चिकित्सा

- डॉ० विमल कुमार मोदी, *एम० डी० एन० डी०*

प्राकृतिक चिकित्सा उस विधि का चिकित्सा नहीं हे जिस के सम्बन्ध में एक आम धारणा है। प्राकृतिक चिकित्सा एकदम उससे भिन्न विधि है। आम चिकित्सक तो अपने रोगियों को चिकित्सा के रूप में दवाए देता है इजेक्शन लगाता है पर प्राकृतिक चिकित्सक ऐसा कुछ नहीं करता। आम चिकित्सक तो विषाक्त दवाए दे कर अपने रोगी के स्वास्थ्य को जीवन भर के लिए नष्ट कर देता है पर प्राकृतिक चिकित्सक इस प्रकार की कोई विषाक्त दवा नहीं देता बल्कि विषाक्त दवाए देने की भर्त्सना करता है।

सभी दवाए विष है

प्राकृतिक चिकित्सा की मान्यता है कि सभी दवाए विष होती हैं। वे रोगी को मार ही डालती हैं देर सवेर। खाने वाले को मार डालना ही विष का काम है। कोई स्वस्थ आदमी न तो पेनिसिलीन का इजेक्शन लेना चाहता है और न सखिया खाना पसद करता है। बीमारी की अवस्था में उनसे चाहे तो ऊपरी लाभ दिखलायी पडे मोटे रूप में आदमी स्वीकार ही कर लेगा कि ये विष है। और आदमी यह जानता है कि जब भी ये चीजे शरीर के अन्दर प्रवेश करेंगी तब शरीर के स्वस्थ क्रिया कलाप को नष्ट ही करेंगी और इनसे शरीर को मुक्त बनाने के लिए शरीर की आतरिक प्रणाली को अत्यन्त कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता पडेगी।

आम चिकित्सक इन दवाओं को दे कर जो भूल करता हे उसके पीछे उसकी यह धारणा है कि ये दवाए शरीर की कायप्रणाली के विरुद्ध नहीं। वे यह भी समझ लेते हैं कि इन दवाओं के बाद जो प्रतिफल दिखाई पडता है वह इन दवाओं के खाने का प्रतिफल है। यह विचार गलत है कि दवाए काम करती हैं। वे जो रासायनिक क्रिया करती हैं वह निश्चय ही कोषाओं और शरीर के "आर्गेनिज्म" को नुकसान ही पहुचाती हैं।

शरीर विषों को बाहर निकालता है

शरीर का आतरिक क्रिया कलाप शरीर में आये विषाक्त तत्वों को बाहर निकाल फेंकता है। अत जब शरीर में विषाक्त दवाए पहुचायी जाती हैं तो निश्चय ही शरीर उसे अपने अन्दर नहीं रोके रख सकता। यदि वह विष शरीर में रह जाए तो निश्चय ही उसका फल मृत्यु है। विष यदि निकल जाये तभी रोगी जीवित रह सकता है। अत जब विषाक्त दवाए शरीर में पहुचायी जाती हैं तो पूरे शरीर का पहला काम उस विष को शरीर से निकाल फेंकना हो जाता है। अत शरीर उसे निकालने के लिए जो प्रयास करता है उसे लोग भूल कर दवा का प्रतिफल मान लेते हैं।

प्रतिवर्ष सहस्रों व्यक्ति दवा के रूप में दिये गये विष के कारण मृत्यु के चगुल में फसते है अत कहना चाहिए कि दवा प्रतिवष हजारों को मार डालती है रोग से उतने लोग कभी नहीं मरते यदि उनको यह विषाक्त दवाए न दी गयी होती। अत यह कहना गलत है कि "अमुक रोग से व्यक्ति मरा। वस्तुत सत्य यह है कि उस रोग की चिकित्सा के लिए जो दवा दी गयी उससे रोगी मरा।

दवाए रचनात्मक नहीं

दवाओं की पद्धति वस्तुत रचनात्मक नहीं विघटनात्मक है। जीवन और स्वास्थ्य को बहुत कम लोग समझते हैं और उससे कम लोग उसके प्रशसक हैं। यदि व्यक्ति उन्हें जान जाए ओर उसके अनुरूप अपना रहन सहन बना ले तो वह कभी बीमार नहीं होगा आर बीमार भी होगा तो वे ही नियम उसके शरीर को स्वस्थ भी बना सकने में समर्थ है। प्राकृतिक चिकित्सा वस्तुत वह विधि है जो रोग के लक्षणों को समाप्त करके व्यक्ति को रोगमुक्त नहीं मानती। वह उन कारणों को दूर करने का प्रयास करती है, जिसके फलस्वरूप रोग होता है। वह शरीर में विष नहीं पहुचाती बल्कि शरीर की सहायता करती हे जो विषाक्त द्रव्य शरीर में आ गये हैं जिनके कारण वह कष्ट व्यक्ति को हो गया है उन्हें शरीर निकाल फैंके। इसके लिए प्राकृतिक चिकित्सा में एक शब्द है प्राण शक्ति। प्राकृतिक चिकित्सा की यह मान्यता है कि वह प्राण शक्ति ही मूल शक्ति है जो शरीर को नीरोग बनाती है। प्राणशक्ति के अभाव में दवाए निरर्थक हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा अपने मूल रूप में किसी भी दवा का प्रयोग नहीं करती। वह न तो क्वाथ पिलाती है न गुटिका निकलवाती है। वह पत्तों जडों या फलों का स्वरस भी दवा के रूप में नहीं देती। उसकी दवा वस्तुत वही है जो हमारा भोजन है। स्वरस के रूप में वह गाजर सतरा सरीखे सर्वस्वीकार्य खाद्यों का ही प्रयोग करती है और मूलत रोगी के भोजन की उन गलतियों को दूर करने का प्रयास करती है जिन्हें रोगी आजीवन करता रहा है। उसका लक्ष्य भोजन को स्वास्थ्यकर और रोग निवारक बनाना है। इसके लिए वह फल सब्जियों का अधिक उपयोग करना सिखाती है। प्राकृतिक चिकित्सा की मान्यता है कि मानव रक्त क्षारमय है। अत जब तक मानव शरीर क्षारमय रहेगा व्यक्ति नीरोग रहेगा और जब रक्त में अम्लता बढेगी व्यक्ति रोगी हो जायगा। प्राकृतिक चिकित्सा की मान्यता है कि फल सब्जी क्षारयुक्त भोजन है और तली भुनी चीजें मिर्च मसाले मास मछली सभी अम्लकारक पदार्थ हैं। अत प्राकृतिक चिकित्सक रोग निवारण के लिए पहला काम रोगी के भोजन में अम्लकारक भोजन को बन्द करके क्षारवर्धक भोजन की सलाह देता है। इसके लिए वह फलों ओर सब्जियों की प्रकृति पर उस रूप में विचार नहीं करता जसा कि अन्य पद्धतिया करती है। उसका कहना है कि सभी फल ओर सब्जिया क्षारवर्धक हैं। अत वे अम्लता को कम करेंगी।

इसके अतिरिक्त चिकित्सा के रूप में प्राकृतिक चिकित्सा धूप हवा मिट्टी तथा पानी का ही उपयोग करता है

धूप

धूप की नवजीवन प्रदान करने की शक्ति तथा रोग निवारक शक्ति सर्वविदित है। वह रोगी को बद कमरे में रखना स्वीकार नहीं करती। खुला साफ हवा को वह स्वास्थ्य लाभ के लिए अत्यावश्यक मानती है। ताजी आक्सीजनयुक्त हवा फेफडों में पहुचना स्वास्थ्य के लिए कितना आवश्यक है यह बात किसी से छिपा नहीं है। इसलिए वह शुद्ध ताजी हवा में रोगी को नित्य टहलने की सलाह देती है।

मिट्टी

आदमी मिट्टी का पुतला है यह एक पुरानी मान्यता है। अत मिट्टी को कूट छान कर पानी में गूद कर आटे के समान बना कर वह उसका प्लास्टर शरीर के रुग्ण स्थान पर और कभी कभी पूरे शरीर में लगा कर उस अग विशेष को रोगमुक्त करने का प्रयास करता है।

जल

प्राकृतिक चिकित्सा में जल चिकित्सा का बडा महत्व है। लुइ कूने नामक एक चिकित्सक ने हजारों रोगियों को मात्र कटि स्नान दे कर स्वस्थ किया। इसके अतिरिक्त रुग्ण स्थान पर गीली पट्टिया बाधना प्राकृतिक चिकित्सा में स्वास्थ्य प्राप्त करने का बडा सफल तरीका है। गठिया दमा आदि अनेक कष्टसाध्य और असाध्य रोग इससे अच्छे होते देखे गये हैं।

आसन और व्यायाम

प्राकृतिक चिकित्सा में आसनों और व्यायामों का अपना स्थान है। अनेक रोगों को व्यक्ति श्रम से जी चुरा का मोल ले लेता है। उनसे छुटकारा पाने की विधि शरीर से उपयुक्त श्रम लेना मात्र है।

प्राकृतिक चिकित्सा वस्तुत सही जीवन जीने की विधि है। उसकी मान्यता है कि अपनी जिन गलतियों के कारण व्यक्ति बीमार होता है, उसके लिए किसी भी रूप में किसी बाहरी दवा आदि की आवश्यकता नहीं है।

आरोग्य मन्दिर
गोरखपुर (उ०प्र०)

आई० एस० आई० आतकवाद फैलाने के लिए इमामों का भी उपयोग कर रही है - मुख्यमत्री महत

गुवाहाटी। इस्लामी कटटरवाद ने राज्य की सुरक्षा के लिए एक नई जटिलता खडी कर दी है। विभिन्न उग्रवादी सगठन मुस्लिम लोगो के एक बडे हिस्से को लुभाने मे सफल हुए है। यह कथन है असम के मुख्यमत्री प्रफुल्ल कुमार महत का। असम का जायजा देने इस महीने दिल्ली से आए पत्रकारो की एक टीम के समक्ष मुख्यमत्री ने यह बाते कहीं। पत्रकारो के दल से मुख्यमत्री ने कहा कि आई० एस० आई० इमामो के रूप मे असम मे बहुत से अपने एजेटो को घुसाने मे सफल हुई है। खुफिया तथ्यो के अनुसार पाकिस्तान और बाग्लादेश से जमात–ए–इस्लामी नामक सगठन असम मे सक्रिय विभिन्न मुस्लिम आतकवादी सगठनो से गुप्त सबध बनाए हुए हैं।

राज्य पुलिस की विशेष शाखा द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदन मे कहा गया है कि जमात–ए–इस्लामी आतकवादियो को नैतिक समर्थन ही नही बल्कि हिसात्मक व तोडफोड की कार्रवाइयो को सम्पन्न करने के लिए धन भी उपलब्ध करा रही है। उल्फा की तरह सेना के अभियान से पस्त आतकवादी सगठनो का बाग्लादेश मे आश्रय लेने के मद्देनजर इस तरह के कार्यकलापो मे वृद्धि हुई है। उसके फलस्वरूप अनेक मुस्लिम कटटरवादी सगठनो ने सिर उठा लिया है। उनमे स्टूडेट इस्लामिक मूवमेट आफ इडिया मुस्लिम वालटियर्स फोर्स टाइगर लिबरेशन फ्रट आफ असम इस्लामिक रिवोल्यूशनरी आर्मी सद्दाम वाहिनी इस्लामिक सेवक सघ आदि शामिल है।

मुख्यमत्री ने साथ ही कहा कि चार पाकिस्तानी नागरिको की गिरफ्तारी के बाद पाकिस्तानी आतकवादी सगठन हरकत उल मुजाहिदीन की असम मे अशाति फैलाने की भूमिका सम्बन्धी कई तथ्य प्रकाश मे आए हैं। उनके अनुसार मुजाहिदीन गुट द्वारा प्रशिक्षित कई युवको के उल्फा के शीर्ष नेतृत्व के द्वारा ढाका स्थित पाकिस्तानी उच्चायोग के कुछ अधिकारियो के साथ घनिष्ट सम्बन्ध रखने के पर्याप्त प्रमाण पुलिस के हाथ मे हैं। आई० एस० आई० से लडने के लिए श्री महत ने और कठोर कानून की वकालत की। **(विसके)**

मानव जीवन को सार्थक करना है तो संशय छोडकर अपने ऋषियों का अनुसरण करो

उदगीथ साधना स्थली हिमाचल प्रदेश क वदिक प्रवक्ता आचाय नरेश ने कहा कि यदि मानव जीवन को साथक करन ह तो सशय छाडकर अपने ऋषियो का अनुसरण करो और वेद वाणी क अनुसार आचरण व्यवहार और आचार करो।

व यहा के आर्य विद्या मदिर मे आयाजित वैदिक सत्सग के तीसरे दिन आ३म के महत्व व उसकी शक्ति पर बोल रहे थे। उन्होने कहा कि वेदवाणी के अनुसार जीवन जीने से मनुष्य नव निधि अष्ट सिद्धि के साथ साथ मृत्यु पर भी नियत्रण पा लेता है। वेद के अनुसार जीवन जीने वाला तभी अपनी देह का त्याग करता है जब उसकी इच्छा हो। उन्हाने कहा स्वामी दयानन्द को १७ बार जहर दिया गया लेकिन योगबल स वेद वाणी के अनुसार आचरण करने पर उनका बाल भी बाका नहीं हुआ।

वदिक प्रवक्ता ने कहा कि आज जर्मन रूस चीन और अमरिका मे सस्कृत का वेद का प्रचार हो रहा है लकिन हम जिनके अपने वेद है उनके यहा वेद अनुसार आचरण न किये जाने से अधविश्वास और अधकार बढ रहा है। उन्होने कहा कि देश मे महिलाओ को शिक्षा और वेद पढने अधिकार दयानन्द ने दिलाया और गाधी से भी पहले छुआछूत के खिलाफ आय समाज और दयानन्द उतरे।

अत मे उन्होने ओ३म के बारे मे बताया कि यही ईश्वर का असली और सबसे पुराना नाम है। इसमे भगवान के अन्य गुणो वाले नाम आ जाते है। ओ३म उच्चारण करने से सभी रोग मिट जाते है। उनके अनुसार हर वस्तु जो भी चलती है यदि उस पर ध्यान दिया जाए तो वह ओ३म ध्वनि करती हे। ओ३म की ध्वनि क अनुसार उच्चारण करने से कई लाभ मिलते है। ध्वनि प्रदूषण का भी अत होता है।

— डॉ० अशोक आर्य पत्रकार
आर्य कुटीर मित्र विहार
मण्डी डबवाली (हरियाणा)

सस्कृत विश्व की सबसे सरल भाषा

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार ने सस्कृत विद्यालयो तथा शिक्षको की स्थिति सुधारने के लिए माध्यमिक शिक्षा परिषद की तर्ज पर सस्कृत शिक्षा परिषद के गठन के प्रस्ताव को मजूरी दे दी है।

उक्त जानकारी राज्य के गन्ना विकास व चिकित्सा शिक्षा मत्री श्री नरन्द्र सिह गौड ने दी। उन्हाने कहा कि सस्कृत भाषा के बिना भारतीय सस्कति का कोइ मतलब नही है। सस्कत शिक्षा को लेकर भाजपा सरकार के आने स पहले काफी विषमताए रही। इसका कारण यह था कि सस्कृत शिक्षको की नियुक्तिया ता उच्च शिक्षा परिषद से होती थी परन्तु उन्हे वेतन माध्यमिक शिक्षा परिपद से दिया जाता था।

प्रदेश अध्यक्ष श्री कलराज मिश्र न कहा कि भाजपा सरकार सस्कृत के उन्नयन के लिए क्या कर रही है यह सस्कृत शिक्षको से छिपा नहीं है। उन्होने कहा कि प्रदेश सरकार सस्कृत शिक्षको की मागो को गभीरता से लेगी और इस भाषा के उन्नयन के लिए सब कुछ करने को तेयार है।

ग्रामीण विकास मत्री शिव प्रताप शुक्ला ने कहा कि सस्कृत वह निधि है जिससे अन्य भाषाए पोषित होती है। हम सस्कत के बिना इस देश की सस्कृति की रक्षा नहीं कर सकते।

उन्होने कहा कि सस्कृत कि पिछडेपन के लिए समाज दोषी है। इसलिए सस्कृत भाषा की रक्षा के लिए सस्कृत विद्यालयो की भरपूर मदद करनी चाहिए। *(विसके)*

१३० ईसाई वैदिक धर्म में दीक्षित

गत २६ दिसम्बर का ग्राम कटगझरिया जिला सुन्दरगढ उडीसा म श्री स्वामी व्रतानन्द जी प्रधान उत्कल आय प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता मे शुद्धि का कार्यक्रम अत्यन्त समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। इन लोगो ने अत्यन्त श्रद्धापूर्वक विदेशी ईसाई मत को छोडकर वैदिक धर्म ग्रहण किया। दीक्षा सस्कार श्री प० विशीकेशन जी शास्त्री वेद प्रचार अधिष्ठाता उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा ने करवाया। इस अवसर पर अनेक गण्यमान्य व्यक्ति एव मुण्डा सगठन के प्रधान भी उपस्थित थे। वे सभी इस कार्यक्रम से बहुत प्रभावित हुए। अत आगामी मार्च मे दो तीन हजार और लोगो को मिलाने का सकल्प हमने लिया है।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

शोक सन्देश

अत्यन्त दुख के साथ सूचित करना है कि आय सिन्धु सस्कृत गुरुकुल सस्थान (मुम्बई) के सस्थापक श्री अशोक वे० किशोराणी की धर्मपत्नी एव हमारी पूज्या माताजी श्रीमती इन्द्रा अशोक किशोराणी का आकस्मिक निधन दिनाक २०.१२.२००० को हो गया है।

— डॉ० प्रकाशचन्द्र वेदालकार
प० नरेन्द्र वेदालकार

रक्तदान शिविर का आयोजन

आर्यसमाज के कार्यो मे सहयोगी स्व० श्री सुरेश गोवर की पुण्य तिथि १६ जनवरी २००१ को आर्यसमाज करोलबाग मे एक रक्त दान शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर सुरेश ग्रोवर परमार्थ ट्रस्ट व रोटरी क्लब दिल्ली द्वारा लगाया गया। इस शिविर मे १०० के लगभग लोगो ने रक्तदान किया। इस अवसर पर दयानन्द सेवाश्रम सघ के प्रचार कार्यो के लिए आर्थिक सहयोग भी प्रदान किया गया।

— चन्द्रमोहन आर्य पत्रकार

न्यारा भारत देश

यह भारत देश हमारा है सब देशा से भी न्यारा है।

जिस देश की पावन धरती पर राम कृष्ण ने अवतार लिया।
आजाद भगतसिह सुभाषचन्द्र बोस ने जिसे जीवन दान दिया।
रानी लक्ष्मी बाई ने भी प्राणो की आहुति प्रदान किया।
कितने ही स्वदेश प्रमियो ने इस देश की खातिर बलिदान दिया।
खडा हिमालय है उत्तर मे बन वीर प्रहरी का काम किया।

यह भारत देश हमारा है सब देशो से भी न्यारा है।

स्वामी दयानन्द गुरुनानक परमहस ने यहा सत्य ज्ञान प्रसार किया।
भागीरथ ने तपोबल से जहा पावम गगा–जल प्रदान किया।
विक्रमादित्य सम्राट अशोक राणाप्रताप ने जहा राज्य किया।
नमन है उन वीर जवानो को जो देश रक्षा का कार्य किया।
नमन है उन वीर किसानो को जो शुद्ध वायु अन्न प्रदान किया।

यह भारत देश हमारा है सब देशो से भी न्यारा है।

डॉ० देवराज सिह यादव जासरपुर फैजाबाद (उ० प्र०)

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

गुरुकुल महा विद्यालय ज्वालापुर में दर्शनानन्द जयन्ती सम्पन्न

हरिद्वार। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर क सस्थापक श्री स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज का १३६वा जयन्ती समारोह बडे हर्ष के साथ विद्वत्कला परिषद् एव आर्य किशोर परिषद के तत्वावधान मे मनाया गया।

पुरस्कार वितरण एव समापन सत्र मे विशिष्ट अतिथि के रूप मे भारत सरकार के पूर्व निर्वाचन आयुक्त माननीय श्री जी० वी० जी० कृष्णमूर्ति एव मुख्य अतिथि के रूप मे उत्तराचल सरकार के स्वास्थ्य मत्री माननीय श्री अजय भटट का उत्साहपूर्वक स्वागत किया गया। सर्वप्रथम गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने वैदिक मगलाचरण करके स्वागत – गीत के माध्यम से मान्य अतिथियो का स्वागत किया। तदन्तर पृथ्वीराज चौहान डिग्री कॉलेज रोहालकी के प्राचार्य एव महाविद्यालय सभा के मत्री डॉ० प्यारेलाल चोहान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा क कोषाध्यक्ष डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के उपकुलपति प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री भगवानदास केन्द्रीय आदर्श सस्कृत महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य श्री मनसाराम शास्त्री भारत सरकार के पू० शिक्षा सलाहकार श्री आर० के० शर्मा गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ० महावीर अग्रवाल प्रादेशिक सस्कृत विद्यालय समिति के सदस्य एव रामानुज सस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ० ओमप्रकाश भटट डॉ० अजय कोशिक (कुलसचिव) डॉ० केशव प्रसाद उपाध्याय (उपाचार्य) भारतीय जनता पार्टी क जिला महामन्त्री श्री मदन कोशिक दिल्ली प्रदेश ब्राह्मण सभा क अध्यक्ष महेन्द्र शर्मा दिल्ली सरकार के प्रशासक श्री पृथ्वी सिह गौड आदि महानुभावो ने मान्य अतिथियो का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया। श्री जी० वी० जी० कृष्णमूर्ति की धर्मपत्नी श्रीमती पदमाकृष्णमूर्ति का अभिनन्दन माल्यार्पण द्वारा श्रीमती मधु कौशिक ने किया।

सस्था के प्रधान श्री हरवश सिह वत्स ने माननीय जी० वी० जी० कृष्णमूर्ति पूर्व चुनाव आयुक्त भारत सरकार एव श्री अजय भटट जी स्वास्थ्य मत्री उत्तराचल को स्मृति चिन्ह भेट कर एव शाल उढाकर मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथियो का सम्मान किया। सस्था के प्राचार्य डॉ० हरिगोपाल शास्त्री ने गुरुकुल के छात्रो अध्यापको कर्मचारियो एव अधिकारियो की ओर से विशिष्ट अतिथि एव मुख्य अतिथि को अभिनन्दन पत्र भेट किये साथ ही प्राचार्य जी द्वारा सस्था का पूर्ण परिचय आए हुए अतिथियो एव विशिष्ट महानुभावो को दिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री ने अपने उद्बोधन भाषण मे कहा कि लार्ड मैकाले की कूटनीति ने ही सस्कृत भाषा के प्रचार और प्रसार को बल दिया क्याकि वह सस्कृत का समूल नष्ट करना चाहत थे।

सस्था के सभामत्री डॉ० प्यारेलाल चौहान ने अपने भाव व्यक्त करत हुए माननीय जी० वी० जी० कृष्णमूर्ति एव स्वास्थ्य मत्री श्री अजय भटट उत्तराचल प्रदेश से निवेदन किया कि इस अभूतपूर्व सस्था गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर को समसामान्य विश्वविद्यालय का दर्जा मिले तदर्थ आपकी कृपा दृष्टि एव सहयोग इसके लिए होना चाहिए।

उत्तराचल सरकार के स्वास्थ्य मत्री श्री अजय भटट ने कहा कि स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती जैसे शिक्षाप्रेमी एव सस्कृत और सस्कृत के पोषक जिन्होने गुरुकुलो की स्थापना करने मे अपना सर्वस्व लगा दिया मैं आज ऐसी सस्था मे आकर अपने को गौरवान्वित मानता हू। ऐसे महापुरुषो का सम्बल लेकर ही हमारा समाज एव देश भ्रष्टाचार से मुक्त हो सकता है उन्हे काम करने की प्रेरणा मिल सकती है हम उनक बताये हुए मार्ग पर चलना चाहिए। मैं महाविद्यालय की प्रगति क लिए सदैव तत्पर रहूगा। मरे योग्य कोई भी काय हो मुझे भी सस्था की इकाई मानते हुए सेवा का अवसर मिलता रहे तो मुझे प्रसन्नता होगी।

विशिष्ट अतिथि श्री जी० वी० जी० कृष्णमूर्ति पूर्व चुनाव आयुक्त भारत सरकार ने गुरुकुल महाविद्यालय मे पधारने पर सस्था के स्वरूप एव सौन्दर्य की भूरि भूरि प्रशसा की और यहा के प्राचीन भव्य भवनो एव सस्कृत वातावरण को दखकर वे भाव विभोर हो गए। उन्हान कहा बिना सस्कृत के हमारा देश उन्नति नही कर सकता। सस्कृत के कारण ही आज भारत विश्व गुरु ह। जब तक देश मे गगा गीता गायत्री आर गोविन्द की महत्ता रहेगी तब तक भारत विश्व गुरु के पद पर प्रतिष्ठित रहेगा। उन्होने अपने भाषण के मध्य मे सस्कृत के कोटेशन और श्लाको के द्वारा अपने सस्कृत और हिन्दी प्रेम को उजागर किया और उन्होने अपने स्वदेश प्रेम की महत्ता पर बल देते हुए उसे सर्वोपरि माना। अन्त मे उन्होने स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित यह गुरुकुल महाविद्यालय विश्वविद्यालय बने इसके लिए मगल कामना की।

इस समारोह के अवसर पर अजब सिह चौहान (सहायक अधिष्ठाता) पूर्व ब्लॉक प्रमुख श्री चादमल चौहान आयुर्वेद क्षेत्रीय अधिकारी डॉ० रमाकान्त शर्मा प्रमुख मुख्य चिकित्सा अधिकारी व्यापार उद्योग मण्डल के पूर्व अध्यक्ष अजय पाठक पी०ए०सी० (४०वीं) वाहिनी के सेनानायक श्री प्रताप सिह आदि गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। सस्था के प्रधान श्री हरवश सिह वत्स ने आगतुको का आभार प्रदर्शन तथा उन्हे धन्यवाद दिया।

– आचार्य हरिगोपाल शास्त्री

कोटा में राष्ट्रीय आर्य लेखक सम्मेलन सम्पन्न
आर्यसमाज द्वारा प्रतिपादित वेदों के सन्देश को जन-जन तक पहुंचाने का आह्वान

राची, २६ दिसम्बर आय लेखक परिषद कोटा के द्वारा छठा राष्ट्रीय आर्य लेखक ओर राष्ट्र एव सस्कृति रक्षा सम्मेलन का आयोजन गत २२ स २४ दिसम्बर तक कोटा (राजस्थान) के थर्मल क्लब भवन थर्मल कॉलोनी म हुआ। कार्यक्रम का उदघाटन छोटानागपुर आर्य प्रतिनिधि सभा राची के उप प्रधान दयाराम पोद्दार ने किया। उन्होने उपस्थित आर्य लेखको का आह्वान किया कि वे आयसमाज द्वारा प्रतिपादित वदो के सदेश को जन–जन तक पहुचान के लिए अपनी लेखन प्रतिभा का उपयोग करे। आय लेखको से अपनी लेखन की परिधि कवल आर्यसमाज तक सीमित न करके क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित ओर प्रसारित होने वाले पत्र–पत्रिकाओ से भी उसक विभिन्न स्तम्भो मे तदनुकूल आकषक सामग्री देने का अनुरोध किया।

आगत आय लेखको के परिचय स्वागत और उदघाटन के पश्चात भिन्न–भिन्न सत्रो म निम्नलिखित विषयो पर सगोष्ठियो का आयोजन किया गया (१) आर्यसमाज के १२५ वष युगानुकूल लखन प्रवचन ओर प्रचार प्रणाली म परिवर्तन (२) आय लेखक आर लखन की समस्याए और समाधान (३) कर्मकाण्ड की दृष्टि से सस्कार विधि पर विचार (४) आर्यसमाज की पत्र–पत्रिकाए समाचार पत्र ओर पत्रकारिता ओर (५) साहित्य की विभिन्न विधाओ मे महर्षि दयानन्द ओर आर्यसमाज की प्रगतिशील विचारधारा।

कोटा वालो मे कतिपय प्रमुख लेखको मे सुप्रसिद्ध मनुस्मृति भाष्यकार डॉ० सुरेन्द्र कुमार (हरियाना) डॉ० प्रशस्य मित्र शास्त्री (रायबरेली) डॉ० ज्वलत कुमार शास्त्री (अमेठी) महाराष्ट्र से प्रो० कुशलदेव और सेवा निवृत्त प्राचाय गोविद घनश्याम भेदरकर मित्र महेश आर्य (गुजरात) श्री मनुदव अभय (इदार) दिल्ली से दिवस्पुत्र भारती अखिलेश आर्येन्दु उत्तर प्रदेश स पाणिनी गुरुकुल वाराणसी की प्राचार्या सुश्री सूर्या सुश्री प्रियम्बदा डा० सुमेधा मित्र वेदालकार डा० रामकृष्ण आर्य राजस्थान स मदन म हन जावलिया डॉ० रामकृष्ण आय राची से दयाराम पोद्दार व सूर्यदेव या री इत्यादि लेखको ने भाग लिया।

महर्षि दयानन्द सेवाश्रम संघ एवं मध्य प्रदेश आर्यवीर दल की कुछ शाखाओं का निरीक्षण

४ दिसम्बर को गुरुकुल हाशगाबाद मध्यप्रदेश क शिविरोपरान्त सावदेशिक आर्य वीर दल के पूव कायालय मन्त्री वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक हरिसिह आय (दिल्ली) एव डा० बसन्त कुमार आचाय ब्र० कपिलदेव आचाय राजेन्द्र कुमार जी ब्र० जीवधन जी द्वारा निम्न स्थानो का निरीक्षण किया गया।

महर्षि दयानन्द सेवाश्रमसघ जनकल्याणाश्रम सिद्धपुर सेभी हरचन्द आचार्य राजेन्द्र जी के पुरुषार्थ से छात्रो एव बृद्धो तथा महिलाओ को शीत कालीन वस्त्र वितरण किए गए। तत्पश्चात सभी लोगो ने भोपाल होते हुए सिहोर शाखा का निरीक्षण किया। तत्पश्चात आर्यसमाज नई सडक उज्जैन के अधिकारियो से आर्यवीर दल की गतिविधयो को सुचारू रूप से चलाने पर विचार विमर्श किया गया। तत्पश्चात ५ दिसम्बर को मौलाना (विक्रमपुर) गाव मे भी लक्ष्मी नारायण जी पाटीदार जी से आर्यवीर दल का कार्य करने का आश्वासन दिया गया।

आर्यसमाज बड नगर बदनावर के सदस्यो से सम्पर्क किया गया। वहा पर भी जगदीश चन्द जी खटोड प्रमुख रहे। तत्पश्चात कई स्थानो पर सम्पर्क करते हुए ५ दिसम्बर रात्रि मे दयानन्द सवाश्रम थान्दला मे विश्राम किया।

६ दिसम्बर का सवाश्रम सघ की निम्न इकाइया का निरीक्षण किया। थादला मेघ नगर अन्तरवलिया बलबन स्थानो पर। दयानन्द सवाश्रम बनवासी क्षेत्र मे दिल्ली द्वारा सचालित हो रहे है। जहा पर कार्य तथा साधना की अत्यधिक आवश्यकता हे। सभी दानी महानुभावो को इसमे अधिक स अधिक सहयोग करना चाहिए।

७ दिसम्बर को झाबुआ मे जिला शिक्षाधिकारी एव अन्याधिकारियो से सम्पर्क करके आश्रमो मे शिक्षा की मान्यता प्राप्त की गई तथा ८ दिसम्बर को थादला से चलकर ६ दिसम्बर को दिल्ली वापस पहूचे।

– हरिसिह आर्य, पूर्व कार्यालय मन्त्री सार्वदेशिक आर्य वीर दल

निर्वाचन सम्पन्न

२१ १ २००१ रविवार को आर्यसमाज मन्दिर मुगल सराय का वार्षिक चुनाव २००१ का श्री सुभाष चन्द्र जी क्षेत्रपाल के सचालन से सर्व सम्मति से सम्पन्न हुआ। नीचे लिखे सभासदो का चुनाव हुआ और चुने गए।

प्रधान – श्री शकर लाल पोद्दार
मन्त्री – श्री निवास सिह
कोषाध्यक्ष – श्री राधेश्याम

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 4 2 2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2001
R N HNo 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2000 in NDPSo on 1 2/2/2001

१८वा श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य साहित्य पुरस्कार विद्यामार्त्तण्ड स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती को भेट

हिण्डान सिटी। आर्यसमाज हिण्डोन सिटी का ...वा श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य साहित्य पुरस्कार सन २००० के लिए विद्यामार्त्तण्ड स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती का उनक द्वारा लिखित सवस्व ग्रन्थमाला व ६५ से अधिक पुस्तको के प्रकाशन क लिए गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली मे अभिनन्दन समारोह क अन्तगत प्रदान किया गया। इसके अन्तगत आपको अभिनन्दन पत्र प्रभाकरदेव आर्य हिण्डान तथा रमेशकुमार जी दिल्ली द्वारा शाल स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती तथा सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के कार्यकर्त्ता प्रधान स्वामी सुमधानन्द जी द्वारा स्मृति चिह्न श्रद्धेय वैदिक विद्वान प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु अबोहर द्वारा तथा ११ हजार रूपय की राशि आर्य हरित्व द्वारा भेट की गई।

आर्य समाज हिण्डौन सिटी के सन १९ ३ म ११ सा रूपय से प्रारम्भ इस पुरस्कार म पिछल वर्ष १० हजार रूपय करलीय विद्वान आचार्य नरेन्द्रभूषण को भट किए गए थे।

इस समारोह के अन्तगत श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य ट्रस्ट द्वारा ३५० पृष्ठीय पुस्तक सन्ध्यापद्धति मीमासा का विमोचन हीरो होण्डा ग्रुप के चेयरमैन बृजमोहन मुजाल व स्वामी जगदीश्वरानन्द ने किया।

स्वामी दीक्षानन्द को अनेको सस्थाओ के प्रतिनिधियो ने फूलमालाओ से लाद दिया अपने सम्मान के उत्तर मे स्वामी जी ने कहा यह मेरा नही अपितु देव दयानन्द की परम्परा का सम्मान है।

– प्रभाकर देव आर्य
मन्त्री श्री घूडमल प्रहलाद कुमार आर्य ट्रस्ट हिण्डौन सिटी

भूकम्प की विनाशलीला से हताहत व्यक्तियों की शाति के लिए विशेष यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल दिल्ली म आज दिनाक २ १ ० १ का गुजरात मे आए भूकम्प की विनाशलीला से हताहत व्यक्तिया की शाति के लिए एक शाति यज्ञ का आयोजन किया गया। इसक अतिरिक्त घायल एवम पीडित व्यक्तिया के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की प्रार्थना की गइ।

आयसमाज की आर से राहत कार्य तुरन्त प्रारम्भ कर दिया गया ह। जनता से अपील की गई है कि राहत कार्यो के लिए दिल खोल कर दान दे। आर्यसमाज दीवान हाल को दिया गया दान आयकर नियम की धारा ८० (जी) के अन्तगत आयकर से मुक्त है।

भवदीय
डॉ० (मेजर) रविकान्त
(सेवा निवृत्त)
मन्त्री आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली

अपना समस्त कार्य हिन्दी में करें।

कश्मीर मुद्दे पर वार्ता मे पडितो को सम्मिलित करने की माग

नई दिल्ली। कश्मीरी पडितो ने कश्मीर मुद्दे पर किसी भी बातचीत म उन्हे भी सम्मिलित करने की माग की है। कश्मीरी पडितो ने रमजान के दौरान राज्य म जारी सघर्ष विराम की सफलता पर सन्देह व्यक्त करते हुए कहा कि जम्मू कश्मीर मे शाति बहाल करने के लिए किसी भी प्रयास का वे समथन करगे। उन्होने कहा कि राज्य मे हिसा तब तक समाप्त नहीं होगी जब तक इस्लामीकरण के मुख्य मुद्दे पर ध्यान नही दिया जाता। पनुन कश्मीर के प्रवक्ता रमेश मानवती न कहा कि अलगाववादी नेताओ की अधिकारिता सन्देहास्पद है। एक ओर तो वे बातचीत का पक्ष लते हे वही दूसरी आर हिसा भी जारी रखे हुए है। मानवती ने कहा कि हुर्रियत कान्फ्रेस राज्य के सभी वर्गो का प्रतिनिधित्व नहीं करती है। हुर्रियन जम्मू व लद्दाख के लोगो का तो एकदम प्रतिनिधित्व नहीं करती है। उन्होने कहा कि सरकार को किसी भी बातचीत मे कश्मीरी पडितो के अलावा जम्मू और लद्दाख के लोगो को भी विश्वास मे लेना चाहिए। कश्मीरी समिति के उपाध्यक्ष सुनील शकदर ने कहा कि आतकवाद से वास्तविक रूप स हम लोग पीडित है। इसलिए कश्मीर समस्या के किसी भी समाधान मे हमार विचारो पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। वर्ष १९८९ के बाद जम्मू कश्मीर से साढे तीन लाख कश्मीरी पडितो को पलायन के लिए बाध्य किया गया हैं घाटी से पलायन कर चुके पडित जम्मू ऊधमपुर तथा दिल्ली मे शरण लिए हुए है।

प्रति

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा की बहन
श्रीमती निर्मल शर्मा दिवंगत

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा क मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा की छोटी बहन श्रीमती निमल शर्मा का गत १७ जनवरी २००१ को ६२ वर्ष की अवस्था मे अचानक देहावसान हो गया। वे कुछ दिनो स अस्वस्थ चल रही थीं। वे अपने पीछे अपने पति श्री सुदर्शन जी तथा सुपुत्र श्री राकेश शर्मा को छोड गइ है। श्रीमती निमल शर्मा का अन्तिम सस्कार पूण वैदिक रीति से डा० कर्णदव शास्त्री ने सम्पन्न कराया। इस अवसर पर वैदिक लाइट के सम्पादक श्री विमल वधावन एडवोकेट गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति डा० धर्मपाल दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री तजपाल मलिक दिल्ली सभा के मन्त्री श्री रोशनलाल गुप्त दयानन्द विहार आर्यसमाज के प्रधान श्री सुरेन्द्र मिगलानी सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति तथा पारिवारिक जन उपस्थित थे।

श्रीमती निर्मल शर्मा की स्मृति मे १९ जनवरी को एक शाति यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के उप मन्त्री श्री जगदीश आर्य दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री तजपाल मलिक दक्षिणी दिल्ली के श्री रोशन लाल गुप्त दिल्ली प्रदेश आर्यवीर दल के अधिष्ठाता श्री प्रियतमदास रसवन्त जी सहित अनेक व्यक्तियो ने अपनी अपनी सस्थाओ की ओर स भावभीनी श्रद्धाजलिया अर्पित की।

सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो तथा समस्त कर्मचारियो की तरफ से दिवगत आत्मा की शाति तथा पारिवारिक जनो को इस दारुण दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना परमपिता परमात्मा से की गई। ❑

धन्वन्तरि विधि से एड्स की सफल चिकित्सा का दावा

नई दिल्ली। आयुर्वेदिक चिकित्सक श्री भूपनारायण मण्डल ने दिल्ली उच्च न्यायालय के समक्ष दावा किया हे कि उसने प्राचीन धन्वन्तरि विधि स एडस के कई रोगियो की चिकित्सा कर उन्हे स्वस्थ कर दिया है इसलिए उसे ओर अवसर और सहायता दिलाई जाए। न्यायालय ने इस बारे मे केन्द्रीय स्वास्थ्य सचिव से कहा है कि याचिकाकर्ता के दावे पर विचार कर उचित कार्यवाही करे।

याचिका कर्ता श्री भूपनारायण मण्डल ने अपने वकील सुग्रीव दुबे के माध्यम से दी गई याचिका मे कहा है कि पिछले बीस वर्षो से वह प्राचीन धन्वन्तरि विधि से एडस के रोगियो का इलाज कर रहे है उनके इस इलाज से सभी रोगी ठीक हो गए। वह एडस रोग के बढने को रोकने के लिए शोधकार्य भी कर रहे है। श्री मण्डल ने कहा – एक ओर एडस की रोकथाम के लिए सरकार करोडो रुपए खर्च कर रही है और इस बारे मे कई विज्ञापन भी निकालती है। याचिका मे कहा गया है कि इस विलुप्त हो रही आयुर्वेदिक विधि पर सरकार ध्यान दे और एडस पीडितो की चिकित्सा करवाई जाए।

आर्यसमाज सीहोर का निर्वाचन सम्पन्न

विगत रविवार को आर्यसमाज सीहोर का वार्षिक निर्वाचन राणा उदयसिह आर्य की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। समस्त पदाधिकारिया का निवाचन सर्वसम्मति से किया गया। प्रो० राजेन्द्र वीर आर्य को सातवीं बार प्रधान चुना गया तथा राजवीर सिह मौलिक उपप्रधान श्री नरेशचन्द्र आर्य मन्त्री रामसिह राठौर उपमन्त्री श्रीराम भरोस आर्य कोषाध्यक्ष श्री बाबूलाल आर्य पुस्तकालय अध्यक्ष श्री सतोषसिह पत्रकार प्रचार मन्त्री श्री चन्दरसिह राठौर का आर्य वीरदल अधिष्ठाता चुना गया। मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि तथा अन्तरग के गठन का अधिकार सर्वसम्मति से प्रधान जी को दिया गया।

वैचारिक क्रान्ति के लिए "सत्यार्थ प्रकाश" पढ़ें और पढाएं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रकाशन लि० द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली–२ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२१६) से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५ आसफ अली रोड नई दिल्ली–२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१ ३२६०९८५)।
सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री ई मेल नम्बर vedicgod@vsnl.net.in तथा वेबसाईट http //www.whereisgod com

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

वेदा
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

सार्वदेशिक

साप्ताहिक



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ३६ अक ४० ११ फरवरी से १७ फरवरी २००१ तक दयानन्दाब्द १७६ सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०१ सम्वत २०५७ फा० कृ० ४

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

सभा अधिकारी राहत सामग्री लेकर गुजरात पहुंचे

समूचा आर्यजगत् गुजरात भूकम्प पीड़ितों की सेवा में जुटा

गांधीधाम और भुज के क्षेत्रों में आर्यसमाज की शक्ति साक्षात नजर आ रही है

विगत २६ जनवरी को गुजरात के भुज और गाधीधाम क्षत्र का नाभि बनाकर आए भूकम्प की विनाश लीला अब सारे विश्व के सामने प्रकट हो चुकी हे।

सावदेशिक आयप्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यसमाज गाधीधाम का सहायना कार्यो का प्रमुख कन्द्र घापित किया गया था इसके अतिरिक्त भुज म भी अन्य कन्द्र स्थापित किया गया ह। इन दोना केन्द्रो का सयोजन गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य बडी कर्मठता ओर कुशलता के साथ कर रहे हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा क उप प्रधान स्वामी सुमधानन्द जी राहत कार्यो का निरीक्षण करके वापस लोट आए है। सभा ... आय त ... श्री ... आय अब गाधीधाम पहुच चुक ह। इनक अतिरिक्त सकडो की सख्या म कइ आय जन भी सहायता कार्यो म सहयोग करने के लिए अपनी सुविधानुसार कुछ दिनो के लिए बारी बारी से इन केन्द्रो मे पहुच रहे है। आचार्य ... आय न्रेश श्री राज सिह आर्य श्री प्रभ भाटिया श्री वीरन्द्र आर्य श्री विनय आर्य श्री मुशीलाल सठी श्री बलदेवराज आय श्री आर्य मुनि गुरुकुल गोतम नगर के ब्र० श्री रामभ... मनोहर लाल जी प्रियतम दास रसवन्त श्री अजय एव मनाज आय आदि क अतिरिक्त कइ अन्य महानुभाव कायकर्ता भी इन कन्द्रो मे पहुच है। दिल्ली म सहायता सामग्री एकत्रित करन तथा इन कन्द्रो स सम्पक करक यथायोग्य कायवाही का सयाजन सभामन्त्री श्री वदव्रत शर्मा तथा श्री विमल वधावन एडवाकेट पूरी तन्मयता क साथ कर रह ह।

दिल्ली से अब तक चार ट्रको म लाखो रुपए की बहुमूल्य सहायता सामग्री सहायता कन्द्रो म भिजवाई गइ है।

निरीक्षण रिपार्टो तथा सहायता केन्द्रो से जैस ही सूचना मिली कि आर्यसमाज क कार्यकर्त्ता मृत शरीरो के सस्कार करने के लिए अथक परिश्रम कर रहे ह क्याकि दस दस दिन पुरान मत शरीरो स ... दुर्गन्ध क सामन किसी भी सर ... । अधिकारी की वहा खडे रहने की हिम्मत नही होती। एसी विकट एव प्रतिकूल परिस्थितियो म भी आयसमाज क कार्यकर्ता मलबे से लाशे निकालने तथा उनक सस्कार ... काय सम्पन्न करत ह। कुछ सरकारी अधिकारी तो मिटटी का तल छिडक कर भी लाशा का सस्कार करन स भी परहज नही करत। इन प्रतिकूलताआ स निपटन क लिए सावदशिक सभा न लगभग दस टन हवन सामग्री इन कन्द्रो मे भजने की व्यवस्था की है। इसमे पाच टन सामग्री महाशय धमपाल जी क द्वारा तथा ढाइ टन सामग्री आदशनगर आयसमाज के बत्रा परिवार द्वारा तथा एक टन सामग्री राजौरी गार्डन आयरामाज द्वारा आहूत की गई है।

शेष पृष्ठ २ पर



प्रसिद्ध उद्योगपति महाशय धर्मपाल जी गुजरात के भूकम्प पीड़ितों के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में ट्रक भेजी जा रही सामग्री को झण्डी दिखाते हुए। साथ में सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा, वैदिक लाईट के सम्पादक श्री विमल वधावन, श्री बलदेव राज जी, आचार्य देवव्रत जी, श्री जगदीश आर्य, आर्यसमाज राजौरी गार्डन के श्री सुदर्शन आहूजा तथा श्री आर्य मुनि जी।

मुम्बई में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार होगा

मुम्बइ में २३ से २६ मार्च २००१ की तिथियों में आयोजित अन्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अपने पूर्व निर्धारित कायक्रम के अनुसार ही सम्पन्न होगा।

इस कायक्रम के लिए केन्द्र सरकार के बहुन मे मन्त्रियों तथा अन्य विशिष्ट महानुभावों ने अपनी स्वीकृति दे दी ह। देश विदेश से बहुत बडी सख्या में आय महानुभावों के पहुचने की आशा हे।

सावदेशिक सभा के उप प्रधान तथा महासम्मेलन के सयोजक के० देवरत्न आर्य ने सूचित किया हे कि बेशक हमें दो तीन सप्ताह का समय गुजरात के सहायता कार्यों के लिए लगाना पडेगा आर जनता को गुजरात के लिए धन का सहयोग भी देना होगा। परन्तु गुजरात के लोगों की सच्ची सहायता ओर आध्यात्मिक कर्त्तव्य की पूर्ति तभी होगी जब उनके लिए किसी स्थाई ओर विशाल परियोजना को क्रियान्वित किया जाए।

कै० देवरत्न ने कहा कि आगामी एक माह में अनाथाश्रम विधवाश्रम तथा एक आधुनिक आवासीय विद्यालय की योजनाओं को सयुक्त रूप से लागू करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का मच सार्थक साबित होगा।

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

सह सम्पादक
विमल वधावन एडवोकेट

समूचा आर्यजगत् गुजरात भूकम्प पीड़ितों की सेवा में जुटा

आ मी दिना म [illegible] सर [illegible] करक जहा एक तरफ मृतक क परिजनो को [illegible] होगा वहीं दूसरी तरफ पर्यावरण प्रदूषण का मुकाबला भी सम्भव हो सकेगा।

श्री विमल वधावन क विशष प्रयास से ट्रको की एक विशाल कम्पनी भण्डारी इन्टरस्टट करियर ने आयसमाज के सहायता अभियान मे सहयोग करते हुए अपनी तरफ से ट्रको की सुविधा नि शुल्क उपलब्ध करा दी हे। इस कम्पनी क प्रबन्ध निदेशक श्री नवीन भण्डारी ने कहा कि आयसमाज को इन सेवा कार्यों के लिए जितन भी ट्रको की आवश्यकता होगी वे [illegible] नि शुल्क उपलब्ध कराए जाएगे। आयसमाज क चार पाच कार्यकर्त्ताओ को इन ट्रको मे जाने की सुविधा रहेगी तथा ये ट्रक गाधीधाम ओर भुज मे आर्यसमाज के केन्द्रो पर ही सामान उतारेगे और यदि आवश्यकता पडी तो गुजरात के क्षेत्रो मे भी आवागमन के लिए यह ट्रक उपलब्ध रहेगे।

आर्यसमाज राजोरी गार्डन के द्वारा लगभग ८ सो कम्बल [illegible] टैन्ट एक टन [illegible] चार [illegible] न [illegible] स्वामी [illegible] ओ३म ध्वज पताका दिखाकर विदा किया। इस ट्रक मे शामिल सामग्री एकत्रित करने मे प्रमुख सहयोग श्रीमती [illegible] श्री सुरेन्द्र एव नरेन्द्र [illegible] जारी गार्डन [illegible] एक ट्रक को महाशय धर्मपाल जी ने ओ३म ध्वज दिखाकर [illegible] किया। पूर्वी दिल्ली [illegible] प्रियदर्शिनी विहार क्षेत्र म श्री प्रेम भाटिया तथा उनकी





भण्डारी इन्टरस्टेट कैरियर के प्रमुख प्रबन्ध निदेशक सरदार स्वर्ण सिह जी तथा प्रबन्ध निदेशक श्री नवीन पाल सिह भण्डारी जिन्होने दिल्ली से भुज तथा गाधीधाम के लिए किसी भी सख्या मे नि शुल्क ट्रक उपलब्ध कराने का भीष्म आश्वासन दिया तथा उसे क्रियान्वित भी कर रहे हैं। हम ईश्वर से प्रार्थना करते ह कि इस समूचे ट्रासपाट सगठन को हर प्रकार की समृद्धि प्रदान करे।

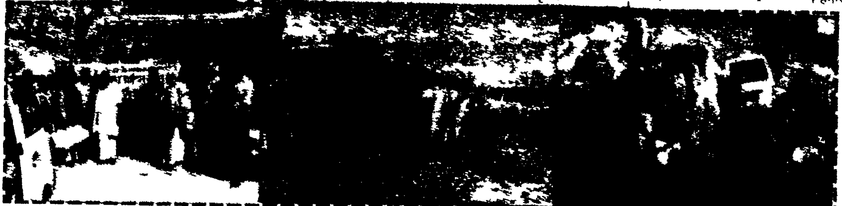
इग्लेण्ड स प्राप्त नए [illegible] भी भिजवाई गई हे।

[illegible] देवरत्न आय जो स्वर्ग एक [illegible] रिलीफ मिशन नामक सस्था के प्रमुख हे उन्होने इस सस्था की ओर से एक वातानुकूलित एक्सरे वैन भी मुम्बई से भिजवाई है। जिसमे तत्काल एक्सरे की सुविधा उपलब्ध है।

अजमेर से के० देवरत्न जी क स्व० पिता तथा आर्यसमाज के प्रसिद्ध आय प्रचारक आचार्य भद्रसेन की स्मृति मे गठित एक न्यास की ओर से भी एक एम्बुलेन्स गाधीधाम एव भुज केन्द्रों के लिए भेजी गई है।

अजमेर से श्री दत्तात्रेय बावले जी के द्वारा भी लगभग दो लाख रुपए एकत्र करके सहायता कार्यो के लिए गुजरात भेजा गया है।

गाधीधाम से गुजरात सभा के मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य ने सूचित किया हे कि स्थानीय प्रशासन द्वारा भी गाधीधाम शहर तथा [illegible] पादर नामक [illegible] पूरे तरह से आर्यसमाज [illegible] सुपुर्द किए [illegible] जिनम [illegible] [illegible] हमारी



१ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी सुमधानन्द जी के साथ गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा क मन्त्री श्री वाचानिधि आर्य गाधीधाम आयसमाज क प्रधान [illegible] पटल तथा श्री आर्य नरेश श्री राजसिह श्री विनय आय भूकम्प पीडित राहत केन्द्र क सामने। २ [illegible] द्वारा भारी मात्रा मे [illegible] राहत सामग्री का वितरण करते हुए।

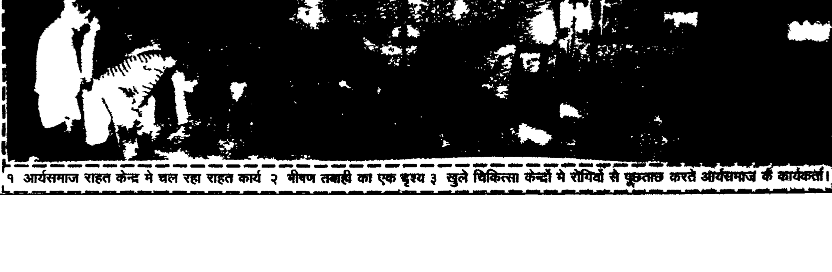


१ आयसमाज राहत केन्द्रो पर पहुचा समिधा स भरा एक ट्रक २ ग्राम वासी राहत सामग्री प्राप्त करते हुए।
३ सार्वदेशिक आर्य वीर दल की गुजरात शाखा द्वारा भेजा गया ट्रक ४ ट्रको द्वारा गाव गाव जाकर बाटी गई राहत सामग्री।

पाच बोरी चावल तथा सैंकडा की सख्या मे नए कपडे बीस गद्दे तथा भारी मात्रा मे बर्तन आदि एकत्र करने के अतिरिक्त हजारो रुपए की धनराशि भी आहूत की गई है। यह सामग्री दो ट्रको मे गुजरात पहुचा दी गई है।

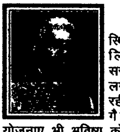
एक ट्रक सामग्री पूर्वी दिल्ली के योजना विहार क्षेत्र से एकत्रित की गई जिसे भण्डारी इन्टरस्टेट केरियर के प्रमुख [illegible] सरदार गम्भीर श्री के० के० चाधरी एव धर्मपत्नी श्रीमती इन्दिरा चोधरी दिनेश कुमार श्री कृष्ण चावला आदि का था। श्री के० के० चौधरी ने अपने कपडा उद्योग मे से लगभग पन्द्रह सौ विभिन्न किस्म के नए कपडे उपलब्ध कराए तथा इसके अतिरिक्त अपने उद्योग पवन एक्सपोर्टस क समस्त कायकर्ताओ की ओर से इक्यावन हजार रुपये का सात्विक दान [illegible] पत्नी श्रीमती सुशीला भाटिया के सात्विक प्रयासों से भी लाखो रुपाए की राहत सामग्री एकत्र करके ट्रक द्वारा भिजवाई गई है।

मुम्बई से के० देवरत्न आर्य ने बताया कि भुज और गाधीधाम क्षेत्रो के मकानों मे आई हल्की दरारो की मरम्मत के लिए पाच टन प्लास्टर पेरिस भिजवाया गया है। इसके अतिरिक्त तीन हजार पाच सौ कम्बल दरिया दो ह[illegible]र टैन्ट भी भिजवाए गए हे। जिम्मेदारी है। उन्होने बताया कि अजमेर विद्यालय से आई बस का सदुपयोग इन सहायता कार्यों के सयोजन के लिए किया जा रहा है। कार्यकर्त्ताओ के आठ दल बारी बारी से अलग अलग स्थलो पर सहायता कार्यो के लिए भेजे जाते हैं। सहायता कार्यों का प्रारम्भ प्रतिदिन विशाल यज्ञ से किया जाता है जिसमे सभी स्थानीय निवासी उत्साह पूर्वक भ[illegible]न हे। ☐



१ आर्यसमाज राहत केन्द्र मे चल रहा राहत कार्य २ भीषण तबाही का एक दृश्य ३ खुले चिकित्सा केन्द्रों मे रोगियों से पूछताछ करते आर्यसमाज के कार्यकर्ता।

अन्तरंग और साधारण बैठक से अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन तक का समय निर्णायक होगा



गुजरात भूकम्प से उत्पन्न स्थिति से निपटने के लिए न केवल सरकारी स्तरो पर लम्बी योजनाए बन रही हैं अपितु कुछ गैर सरकारी योजनाए भी भविष्य को ध्यान मे रखते हुए बनाई जा रही है। गैर सरकारी स्तर पर बडी बडी योजनाए कुछ बडे औद्योगिक घरानो के द्वारा ही बन रही है। आर्यसमाज एक विश्वस्तर की सस्था है। अत निश्चय ही इस महान सस्था को कोई ठोस योजना बनाने के लिए अवश्य ही प्रयासरत रहना चाहिए। गैर सरकारी स्तर पर चाहे कितनी ही बडी से बडी योजनाए बने परन्तु एक बात निश्चित है कि ये योजनाए सरकारी योजनाओ के सामने नगण्य सी ही साबित होती होगी। एक आकलन है कि गुजरात मे पूर्ववत न सही परन्तु गुजारे लायक आवास उपलब्ध कराने तथा अ य गतिविधियो के लिए अनुमानत २५ से ३० हजार करोड रुपये की आवश्यकता पड सकती है। अत यह बात वास्तविकता की परिधि मे नजर आती है कि भविष्य की स्थाई योजनाए सरकारो के द्वारा ही बनाई जा सकती हैं। वैसे कानूनी और राजनीतिक दृष्टि से भी देखे तो गणतन्त्र मे जनता को ऐसी दैविक आपदाओ के बाद सहायता उपलब्ध कराना तन्त्र का ही प्रमुख कर्त्तव्य है। इसका एक स्पष्ट कारण हे – तन्त्र दण्ड व्यवस्था के साथ चलता हे। ऐसी आपातकालीन परिस्थितिया मे तन्त्र नए–नए करो के माध्यमो से तथा अन्य व्यवस्थाए जारी करके धन एकत्र कर सकता है और इसमे सहायता न करने वाले को दण्डित भी किया जा सकता है।

इन्हीं सिद्धान्तो के तहत सरकार यह घोषणा भी कर चुकी है कि हर टूटे हुए मकान के निर्माण के लिए धन उपलब्ध कराया जाएगा अथवा विकल्प रूप मे भवन निर्माण करके उपलब्ध कराए जाएगे।

सरकारी स्तर पर गुजरात के लिए जहा एक तरफ प्रधानमन्त्री राहत कोष पहले की तरह फिर से धन सग्रहण के लिए प्रारम्भ कर दिया गया है वहीं दूसरी तरफ सरकार ने कुछ महत्त्वपूर्ण नियम भी बनाए है।

१ प्रत्येक आयकर देने वाले नागरिक को एक वर्ष के आयकर का दो प्रतिशत अतिरिक्त अधिभार देना होगा। सरकार को अनुमान है कि इस अतिरिक्त अधिभार से अनुमानत १३ सौ करोड रुपये का राजस्व प्राप्त होगा। जिसका उपयोग कवल गुजरात के लिए ही किया जाएगा।

२ धर्मार्थ एव परोपकारी सस्थाओ को दिए जाने वाले दान पर धारा ८० जी के तहत आयकर की छूट भी ५० प्रतिशत से बढाकर १०० प्रतिशत कर दी गई है।

३ सरकार ने इस बार यह नियम भी बनाया है कि गुजरात के लिए किसी भी सस्था द्वारा एकत्र किया गया धन केवल गुजरात मे ही खर्च हाना चाहिए किसी अन्य मद पर नही। प्रधानमन्त्री राहत कोष पर भी यही नियम लागू होगा।

दो वर्ष पूर्व जब कारगिल युद्ध के कारण शहीद तथा घायल हुए सैनिक परिवारो की सहायतार्थ प्रधानमन्त्री राहत कोष मे लोगो ने उदार हृदय से दान दिया था उस समय सार्वदेशिक सभा के तत्कालीन मन्त्री श्री सूर्यदेव की तरफ से एक विशेष पत्र प्रधानमन्त्री को भेजा गया था। जिसमे उनसे आग्रह किया गया था कि सैनिको के नाम पर एकत्रित धन को कही अन्यत्र न खर्च किया जाए क्योकि जब कभी किसी आपातकालीन परिस्थिति मे जनता अपना अनुदान देती है तो वह अनुदान विशेष भावनाओ के तहत दिया जाता है। यदि ऐसे किसी भी कोष का उपयोग किसी भी अन्य कार्य के लिए किया जाए इससे दानदाताओ की भावनाओ को अवश्य ही ठेस पहुचती है।

> ## सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग तथा साधारण सभा की बैठकें
>
> सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग बैठक १७ फरवरी २००१ (शनिवार) तथा साधारण सभा की बैठक १८ फरवरी २००१ (रविवार) को आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड मे बुलाई गई है।
>
> सभी अन्तरग सदस्यो तथा प्रान्तो के प्रतिनिधियो से निवेदन है कि वे इन महत्त्वपूर्ण बैठको मे अवश्य उपस्थित हो।
>
> – ***वेदव्रत शर्मा***, सभा मन्त्री

सरकार के पास एक मजबूत तन्त्र हे जैसा कि मै पहले कह चुका हू। गणतन्त्र मे हर व्यक्ति तन्त्र के नियमो और प्रावधानो से बधा रहता है। अत तन्त्र को धन जुटाने के लिए कोई विशेष और कडे प्रयास नही करने पडते।

दूसरी तरफ गैर सरकारी प्रयास केवल मात्र लोगो की उदारता और अनुशासन पर निर्भर करते हैं। सामान्य जनता की उदारता पर शक करना तो उचित प्रतीत नहीं हाता परन्तु अनुशासन पर अवश्य ही कुछ चर्चा आवश्यक है।

अनुशासन भी सामान्य जनता खराब नही करती अपितु कुछ तथाकथित नेता जनता की शक्ति के बिखराने म ही अपनी महानता समझते हे और इसका बडा स्पष्ट सा ही कारण हे कि उस बिखरी हुई शक्ति स कोष के एक हिस्से पर उन्हे भी आधिपत्य जमाने का अवसर मिल जाता हे।

यदि समूचे विश्व की आर्यसमाजे किसी भी ऐसे अभियान मे एकजुट होकर पूरे अनुशासनबद्ध तरीके से दान अनुदान को एकत्र करने का अभियान चलाए तो कोई कारण नहीं कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से भी कोई बहुत बडा प्रोजेक्ट सफल होने मे कोई कसर रह जाए।

गुजरात मे भूकम्प के बाद जो परिस्थितिया बनकर खडी हुई हे उनके दृष्टिगत यह अत्यन्त आवश्यक है कि किसी बडी परियोजना को मूर्त्त रूप दिया ही जाना चाहिए। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का नेतृत्व विभिन्न विकल्पो पर विचार कर रहा है। विधवा आश्रम अनाथाश्रम तथा आवासीय विद्यालय आज के गुजरात की सामाजिक आवश्यकताए है। जो हमारे विचार के अनुसार गुजरात के भाई–बहनो की सेवा मे सम्पन्न की जा सकती हे। इसके अतिरिक्त भी कुछ व्यवाहरिक कार्यों के प्रारम्भ करने पर विचार हो सकता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग तथा साधारण बेठक १७ ओर १८ फरवरी को बुलाई गइ है। जिसमे प्रमुख रूप से सभी विषयो पर चर्चा होनी स्वाभाविक है जिसमे अगले माह बम्बई मे होने वाले सम्मेलन तक की एक निश्चित परियोजना जनता के सामने रखी जाए और अधिकतर १ वर्ष की अवधि मे इन परियोजनाओ को सम्पूर्ण आर्य जनता के सहयोग से क्रियान्वित करने का प्रयास भी किया जाए।

मुझे आशा ही नही अपितु पूर्ण विश्वास है कि आगामी अन्तरग और साधारण अधिवेशन से प्रारम्भ होकर मार्च के अन्त मे आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का समय आर्यसमाज की गतिविधियो को एक व्यापक दिशा निर्देश देने के लिए एतिहासिक साबित होगा। बशर्ते इश्वर की कृपा हम पर बनी रहे। देव पुरुषो का सहयोग प्राप्तव्य हो और असुरो की काली छाया हमसे दूर रहे।

– ***वेदव्रत शर्मा***

गुजरात की पीड़ा के साथ हम सब चिन्तित क्यों ?



हमारे शरीर के किसी भी अग मे जब भी कोई विकार उत्पन्न होता है तो पूरा शरीर उस विकार को दूर करने के लिए प्रयासरत हो जाता है। यदि हम पूरी सृष्टि को ईश्वर निर्मित एक शरीर ही समझे तो जब उस सृष्टि के एक हिस्से मे रह रही आत्माए दर्द से कराह रही हो तो सृष्टि के अन्य हिस्सो मे रह रही आत्माओ को उस दर्द को बाटना ही अभीष्ट है।

यदि पाव का दर्द शरीर के अन्य हिस्सों में सवेदना उत्पन्न न करे तो वैज्ञानिक दृष्टि से लकवे की सम्भावना प्रबल हो जाती है। लकवे को सवेदनहीनता के रूप में भी परिभाषित किया जा सकता है।

इन वैज्ञानिक सिद्धान्तों के बाद वैदिक सिद्धान्तो पर जब हम ध्यान लगाते हैं तो हमे भगवान की वेदवाणी यह स्पष्ट निर्देश देती है कि जो आत्माए अन्य आत्माओ के सुख दु ख में भागीदारी के लिए प्रयासरत रहती हैं वे शोक और मोह के जजाल से सदैव मुक्त रहती हैं।

गुजरात में आए भूकम्प ने गुजरात की बहुतायत जनता के सुचारू रूप से चलते जीवन को एकदम रोक सा दिया है। असख्य घर खण्डहर बन चुके है असख्य आत्माए बेसहारा हो चुकी हैं असख्य लोगो का भविष्य अनिश्चित सा हो गया है। इन असख्य लोगो की पीडा इनसे भी कई गुणा असख्य लोगो को पीडित कर रही है।

२६ जनवरी से ही हम सब लोग गुजरात की पीडा से ग्रस्त है। गुजरात के लिए सहायता सामग्री का प्रबन्ध करने की इस सामाजिक प्रक्रिया के दौरान एम०डी०एच० मसाला कम्पनी के मुखिया महात्मा धर्मपाल जी ने कहा कि आपकी शक्ल देखकर ऐसा लग रहा है कि गुजरात में भूकम्प आया है या आपके निजी जीवन मे। महाशय धर्मपाल जी भी गुजरात वासियो की पीडा मे आवश्यकता से अधिक सवेदनशील नजर आए। लगभग डेढ लाख रुपये की हवन सामग्री उन्होने तत्काल देने की स्वीकृति प्रदान की। इसके अतिरिक्त और भी सामग्री तथा धन देने का आश्वासन दिया। इनके अतिरिक्त जिन जिन लोगो से भी सम्पर्क हुआ वे सभी गुजरात वासियो की पीडा में पूर्ण सवेदनशील नजर आए।

मुम्बई मे कैप्टन देवरत्न भी विगत लगभग ४ महीने से मार्च मे होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तैयारियो मे जुडे हुए है। वहा कई लाखो की प्रबन्ध व्यवस्था को सम्भालने के बावजूद उन्होने गुजरात के लिए लाखो रुपये की सहायता एकत्र करके भिजवाई है। जिसका विवरण पृथक समाचार के रूप मे भी दिया जा रहा है।

२६ जनवरी से आज तक मैने कई बार इस प्रश्न की व्याख्या पर जितनी बार भी विचार किया ध्यान और चिन्तन किया मुझे हर बार एक ही उत्तर मिला। प्रश्न था – गुजरात की पीडा के साथ हम सब चिन्तित क्यो ?

जैसा कि मै पहले कह चुका हू हम सब ईश्वर द्वारा प्रदत्त जीव विज्ञान सृष्टिविज्ञान और मनोविज्ञान के सिद्धान्तो के तहत एक ही बडे शरीर का हिस्सा है जिसका नाम है सम्पूर्ण सृष्टि।

इस सारी सृष्टि मे जहा कहीं भी व्यवधान उत्पन्न हों अप्राकृतिक घटनाए हो दर्द और पीडाए हो पाप अत्याचार अनाचार व्यभिचार आदि के कारण अव्यवस्थाए उत्पन्न हो तो हमारे सवेदनशील होने का परिचय तभी प्राप्त होगा जब हम इनकी रोकथाम क लिए अपनी प्रतिक्रियाए व्यक्त करे और ईश्वर का स्मरण करते हुए सदप्रयास करे।

यदि हम ऐसा नही करते तो हमे सवेदनहीन मानते हुए यदि कोई हमे लकवा ग्रस्त कहता है तो हमे बुरा नही मानना चाहिए।

गुजरात के घटना चक्र को अर्थात ईश्वर के काल चक्र को यदि सहायता एकत्र करके या शोक प्रस्ताव पारित करके अपना कर्त्तव्य पालन समझ ले तो श्रेष्ठता का परिचय उपलब्ध होगा। परन्तु यदि असह्य अवला तथा अनाथो के लम्बे दु ख पर ध्यान केन्द्रित किया जाए तो आपको अवश्य ही महसूस होगा कि आध्यात्मिक प्रवृत्तियो का पालन अभी प्रारम्भ भी नही हो पाया। वैसे आपकी सूचना के लिए कहना चाहता हू कि आर्यसमाज के इस आध्यात्मिक कर्त्तव्य को बडे प्रेम और श्रद्धा के साथ सम्पन्न करने की ठोस योजना तैयार हो रही है। मुझे पूरी आशा है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की आध्यात्मिक शक्ति आर्यों को इस पवित्र कार्य के लिए भी एक सुन्दर मार्ग पर प्रेरित करेगी।

– ***विमल वधावन***

"श्रेष्ठ जीवन की कसौटियाँ"

– डॉ० श्रीमती ईश्वर मुखी

संध्या सत्सग सत्य सवा व स्वावलम्बन आर्यत्व की परख की पाच कसोटिया हे। जिस मनुष्य के जीवन मे यह सकार घुलमिल गये हा निश्चय ही वह देवत्व को प्राप्त करने मे सफल होता है। अनुशीलन से पूर्व यह चिन्तन आवश्यक है कि इन शब्दो का अथ क्या है व किस प्रकार इनका अभ्यास कर हम अपने जीवन को उन्नत बना सकते है।

सध्या

सध्यायन्ति सधीयते व परब्रह्म यस्या सा सध्या अर्थात प्रात साय सधिवेला के समय परमात्मा की उपासना व ध्यान करना सध्या है। ब्रह्म की गोदी मे विचरण करना आत्मा का ब्रह्म से साक्षात होना ही इसका उद्देश्य है जिसके कारण इसे ब्रह्मयज्ञ की सज्ञा भी दी गई है। आसन ाणायाम ध्यान व उपासना इसके ोपान है। एकात स्थान मे उपयुक्त ासन मे स्थित होकर प्राणायाम द्वारा ापनी चित्त वृत्तियो का निरोध करते ए अपने ध्यान को भृकुटी नेत्र नासिका के अग्रभाग हृदय के मध्य अथवा पीठ मे स्थिर कर परमात्मा का गुणगान करना ही सध्या उपासना है। स्तुति स ईश्वर मे प्रीति उसके गुण कर्म स्वभाव से अपने गुण कर्म स्वभाव का सुधारना प्रार्थना से निराभिमानता उत्साह व सहाय का मिलना उपासना से परब्रह्म से मेल और उसका साक्षात्कार होना। आदि ध्या के फल महर्षि दयानन्द सरस्वती ा सत्यार्थ प्रकाश के सातवे सम्मुल्लास ा बतलाये है। वैदिक सध्या के रूप ा अपनी इन्द्रियो के लिए पवित्रता ल व यश की कामना करता हुआ क्त अघमर्षण मन्त्रो द्वारा प्रभु की यापकता शक्तिमत्ता व सृष्टिरचना ा चिन्तन करते हुए अपने पापो को र करने हेतु सकल्पित होता है। नसा परिक्रमा मन्त्रो द्वारा समस्त देशाओ मे प्रभु की व्यापकता का नुभव करते हुए अपने चित्त को रमपिता परमेश्वर मे स्थिर करने ा यत्न करता है। अपने शत्रु से भी दला लेने की भावना उसके हृदय मे त्पन्न न हो ऐसी प्रार्थना करता है। पस्थान मन्त्रो द्वारा भक्त स्वय को र्वरक्षक सर्वशक्तिमान प्रकाश स्वरूप भु की पवित्र गोद मे बैठा हुआ अनुभव रता है। गायत्री व समर्पण मन्त्र ारा परमपिता प्रभु से धर्म अर्थ काम माक्ष की सिद्धि हतु प्रार्थना कर शान्ति की याचना करता हे। प्रतिदिन प्रात साय सध्या करने से जीवन श्रेष्ठ व उन्नत बनता है।

सत्सग

सत्सग का अर्थ है उत्तम ग्रथो का स्वाध्याय एव श्रेष्ठ पुरुषो का सग। स्वाध्याय हेतु जिन ग्रन्थो का चयन किया जाये वे है आदि ग्रन्थ चार वेद ब्राह्मण ग्रन्थ (वेदो के व्याख्यान जिनमे इतिहास न हो) वेदो के अग ६ (शिक्षा कल्प निरुक्त व्याकरण ज्योतिष छन्द आदि) वेदो के उपाग ६ – (साख्य न्याय योग वैशेसिक वेदान्त व मीमासा दर्शन) उपनिषद ११ (ईश केन ऐतरेय आदि) स्मृति ग्रन्थ (मनुस्मृति मानव धर्मशास्त्र आदि सूत्र ग्रन्थ ३ व आर्य भाषा भाष्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश व ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका। 'इन ग्रन्थो का स्वत परत प्रमाण करना सुनना और पढना सबको उचित है। (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका)। स्वाध्याय के चार सोपान हे – १ पठन अर्थात पढना २ मनन अर्थात पढे हुए पर विचार करना। ३ निदिध्यासन मनन व विचार द्वारा किसी निष्कर्ष पर पहुचना ४ साक्षात्कार दृढ किये हुए विचार पर आचरण करना।

सत अथवा आप्त पुरुषो का सानिध्य भी जीवन के उत्थान मे सहायक होता हे। श्रेष्ठ पुरुषो के सग से मन से अज्ञान व असत्य के आवरण हट जाते है। कोरा ज्ञान मनुष्य को अभिमानी बना देता है किन्तु सत पुरुषो का सग साधक मे अहकार शून्यता लाकर उसे विनम्र व्यवहार कुशल बना देता है। इसलिए सत तुलसीदास ने एक घडी आधी घडी आधि ते पुनि आधि तुलसी सगत साधु की कटै कोटि अपराध कहकर मनुष्य को सत्सग हेतु प्रेरित किया है।

सत्य

सत्य धर्म का अत्याज्य अग है। सत्य को ग्रहण करने व असत्य को त्यागने के निए व्यक्ति को सदैव उद्यत रहना चाहिए। सत्य के तीन सोपान हैं – सत्य जानना सत्य बोलना व सत्य का आचरण करना। सत्य की परख के लिए महर्षि दयानन्द जी ने पाच कसौटिया बतलाई है (१) आप्त मनुष्यो के उपदेश अथवा उनका आचरण २ आत्मा की शुद्धि तथा सत्य जानने की उत्कट इच्छा ३ वेद विद्या का ज्ञान ४ प्रमाणो की कसौटी (प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द आदि) ५ जिसका एक भी व्यक्ति विरोध न करे।

सत्य बोलने के सम्बन्ध मे मनुस्मृति का श्लोक –

सत्य ब्रूयात प्रिय ब्रूयात

प्रिय वाणी मे सत्य बोलने का निर्देश देता है। सत्य वाणी सुन्दर (प्रिय) व शिव से ओत–प्रोत होनी चाहिए। कल्याण कामना से प्रिय वाणी मे कहा गया सत्य निश्चय ही ग्राह्य होता है।

सत्य के सम्बन्ध मे मात्र जान लेना अथवा सत्य वचनो का बोलना ही पर्याप्त नही है अपितु सत्य का अनुशीलन करना भी आवश्यक है। सत्य का आचरण करने वाले व्यक्ति मे वह शक्ति आ जाती है कि वह भविष्य द्रष्टा बन जाता है। उसके द्वारा कहे गए वचन अथवा दिये गए आशीर्वाद वरदान के रूप मे फलीभूत होते है।

सेवा

पितर (माता–पिता वयोवृद्ध सम्बन्धी) गुरु वेदवेत्ता ब्राह्मण आचार्य व अतिथि की सेवा करना प्रत्येक आर्य का कत्तव्य है। परमात्मा ने प्रत्येक व्यक्ति को कुछ न कुछ दिया है किसी को उत्तम ज्ञान किसी को श्रेष्ठ बाहुबल किसी को पुष्ट शरीर व किसी को धन। वाणी तो ईश्वर ने सभी को दी है जिसके द्वारा हम पीडित को सात्वना प्रदान कर सकते है। यथाशक्ति प्रत्येक व्यक्ति को मानवता की सहायता व सेवा करनी चाहिए। प्रजा कर चुका कर व राजाज्ञा का पालन कर राजा की सेवा करे। राजा प्रजा का पालन करे। पडोसी से अपने शरीर के अगो जैसा व्यवहार करे। सेवको का पालन–पोषण करे व उनके सुख दुख की जानकारी सदैव रखे।

सर्वप्रथम अपने कुटुम्बियो की सहायता करे फिर पडोस पश्चात समाज देश तथा विश्व–इस प्रकार अपनी सेवा के दायरे को बढाये। सेवा मे प्रशसा सम्मान अथवा बदले मे कुछ प्राप्त करने की इच्छा कदापि न करे।

स्वावलम्बन

प्रत्येक आर्य को अपने बाहुबल व बुद्धि द्वारा अर्जित धन की ही कामना करनी चाहिए। आत्मनिर्भर होना व पराई दौलत का आश्रय को न चाहना ही स्वावलम्बन है। कार्य सिद्ध न होने पर आत्मावलोकन कर–कार्य हितकारी नही है अथवा पुरुषार्थ की कमी है जाच कर पुन पुरुषार्थ करने के पश्चात भगवान से प्रार्थना करनी चाहिए इससे सफलता अवश्य मिलेगी। स्वावलम्बी मनुष्य अपने प्रारब्ध का निर्माता स्वय होता है। व्यक्ति को सदैव अप्राप्त को प्राप्त करने प्राप्त की रक्षा करने रक्षित की वृद्धि करने व वृद्धि किये गये धन को परोपकार मे व्यय करने हेतु सदा पुरुषार्थ करना चाहिए।

जो सहज ही जीवन मे सत्य सेवा व स्वावलम्बन के गुणो को धारण कर सत्सग व सध्या द्वारा सर्वशक्तिमान परमेश्वर की उपासना नियमित रूप से करता है वह निश्चय ही देवत्व को प्राप्त होता है।

– सनशीम १७४८ रतन कालोनी २०१ नरबदा रोड जबलपुर

'परोपकार: सर्वप्रधानं''

– ब्र० सुभद्रा विद्यालकार

मनुष्य को परोपकारी बनना चाहिए। सामान्यत जीवन सभी प्राणी निर्वाह करते है किन्तु जो परोपकार रूपी रहस्यमय गुण को अपनाकर अपना जीवन निवाह करता ह वह समाज म सर्वोपरि हाता है। वेद मे भी परापकार की महिमा गाई गई है। इसी परोपकार को सबसे प्रधान बनलाया गया है। जिसके अन्दर यह चीज घटित होती है वही इसे प्राप्त कर प्रसन्न होता है तथा दूसरो को करता है। अथर्ववेद मे कहा गया है –

ओं मा प्र गाम पथो वय मा यज्ञादिन्द्र सोमिन । मान्त स्थुर्नो अरातय ।। १३।१।५६

वयम=हम ऐश्वर्यसम्पन्न होकर पथ मा=सन्मार्ग स मत प्रगाम=दूर जाए। इन्द्र=हे एश्वर्य सम्पन्न परमेश्वर ! यज्ञात=यज्ञ से परोपकार से मा=मत दूर जाए। अरातय=दान न देनेवाल न अन्त मा स्थु=हमारे बीच मे मत ठहरे।

इस मन्त्र मे बतलाया गया है कि हम शुभ मार्ग स परे न हो। वह शुभ मार्ग कौन सा हे ? यज्ञ अथार्त – परोपकार का मार्ग ही शुभ मार्ग है। यज्ञ स अभिप्राय द्रव्ययज्ञ श्रष्ठतम कर्म ओर परापकार स ह। दूसरी बात कही गई कि अदानशील हममे न ठहर। इसका अभिप्राय हे कि किसी भी प्राणी मे अदानशीलता न हा।

परोपकार का अर्थ है दूसरो की भलाई। मनुष्य का धर्म हे कि वह दूसरा की भलाई करे। मनुष्य जीवन की सार्थकता इसी मे ही है कि वह दूसरो के काम आये। अपने लिए ता सभी जीते है अपितु उसके जीवन की सार्थकता तभी है कि वह दूसरो क लिए कितना जीता हे ? अपन अस्तित्व को बनाय रखन क लिए मनुष्य का अपक्षित कर्म करने ही पडत हे। अपन लिए तो मनुष्य उद्याग करता ही है अपितु दूसरा के लिए कितना प्रयत्न करता है ? यह बहुत ही गूढ तथा विवेचनीय विषय है। दूसरो पर उपकार करने वाले मनुष्य धन्य हात है। महर्षि दयानन्द जी ने खूब लिखा है – 'ससार दुखदलनेन सुभूषिता य धन्या नरा विहितकर्मपरोपकारा ।' संसारी जनो के दुखो को दूर करने से सुभूषित वेदविहित कर्मो से जो उपकार करने मे लगे रहते हैं वे नर और नारी धन्य हैं।

जब मे मानव जीवन पर विचार–विमर्श करती हूँ तो स्वत इस तथ्य पर पहुचती हू कि एक मनुष्य को दूसर मनुष्य के सहयोग की गहन आवश्यकता होती है। ससार मे कोई ऐसा व्यक्ति नही जिसको दूसर के सहयोग की आवश्यकता न पडी हो या न पडती हो। परापकार से मनुष्य जीवन की शोभा और महिमा बढती है। सच्चा परोपकारी सदा प्रसन्नचित्त रहता है। वह दूसरो का कार्य करके हर्ष की अनुभूति करता है तथा अपने अन्दर दिव्य प्रकाश अनुभव करता हैं। कहा भी जाता है महान व्यक्ति केवल सम्मान को ही चहाते है और उच्चकोटि के महान व पवित्र आत्माये मान को भी तिलाञ्जलि दे देते हैं जैसे– महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी इन्हे मान की भी अभिलाषा नहीं थी बस उनकी अभिलाषा सत्य को प्रकाशित करने की थी। किसी ने क्या खूब लिखा है –

श्रोत्रंश्रुतेनैव न कुण्डलेन, दानेन पाणिर्न तु कंकणेन। विभाति काय करुणाकुलाना, परोपकारेण न चन्दनेन।।

अर्थात – कान वेद शास्त्रादि शास्त्रो के सुनने से होती है न कि कुण्डल धारण करने से नही होती। हाथ की शाभा परापकार अथवा दान देने से होती है कगण पहनने से नही होती। करुणा से व्याकुल पुरुषो का शरीर चन्दन लेपन स शोभा नही ओर मनुष्य परापकार से ही शोभा पाता है। आचार्य चाणक्य लिखते है –

परोपकरण येषा जागर्ति हृदये सताम्। नश्यन्ति विपदस्तेषा सम्पद स्यु पदे पदे।।

चा० नी० १७।१४

जिन सज्जनो के हृदय मे परोपकार की भावना जाग्रत रहती है उनकी आपत्तिया दूर हो जाती है और पद–पद पर उनहे सम्पत्ति प्राप्त होती है।

पिबन्ति नद्य स्वयमेव नाम्म स्वय न खादन्ति फलानि वृक्षा । धराधरो वर्षति नात्महेतो परोपकाराय सता विभूतय ।।

जिस प्रकार नदिया अपना पानी स्वय नही पीती वृक्ष अपने फल स्वय नही खाते मघ अपने लिए नहीं बरसता उसी प्रकार सज्जनो का सब कुछ पर उपकार क लिए होता है। परोपकारी हमेशा यही विचार विमर्श करता रहता हे कि कब मे दूसरो के काम आऊ जब तक वह दिन मे एक वार पर उपकार नही कर लेता तब तक वह अपने अन्दर बचनी सी अनुभव करता रहता हे इसलिए परोपकारी जनो का परापकार करना ही श्रष्ठतम धन हाता हे। वह जितना अधिक उपकार करत है उनकी खुशी यश कीर्ति व आत्मविश्वास उतना ही बढता ह। ऐसे मनुष्य ही दूसरो के काम आते है तथा स्वत को मरकर भी अमर कर जाते है इसलिए कहा गया –

आपन्नार्तिप्रशमनफला सम्पदो ह्युत्तमानाम्। मेघदूत

सत्पुरुषो की सम्पत्ति का यही फल है विपत्ति मे पडे हुए मनुष्यो के दुख दूर करे। इसलिए परोपकार रहित मनुष्य जीवन को धिक्कार है। उससे तो वे पशु ही धन्यवाद के पात्र हे जिनका कि मरने के बाद चमडा भी दूसरो के काम आता है।

परोपकार ईश्वर प्राप्ति का एक सोपान है। व्यक्ति जितना परोपकारी बनता है उतना ही ईश्वर की समीपता प्राप्त करता है। परोपकार से शत्रु भी मित्र बन जाते है। आपका शत्रु भी यदि सकट मे फसा हुआ है और आप जाकर उसकी सहायता के लिए उपस्थित हो जाते हैं तो वह आपके एहसान के बोझ से नीचे दब जाता है और आपका हो जाता है। चाहे वह आपके प्रति कितनी भी कठोर भावना रखता हो द्रवीभूत हो जाता है। परोपकार के लिए सकुचितता छोडने की गहन आवश्यकता होती है। जब मनुष्य सकोच का छोडता है तब उसका हृदय सबके लिए खुला हुआ व विशालता के लिए हुए होता है। तेरे मेरे के भाव शून्यता प्राप्त करते हैं तथा उसके अन्दर यह विचार भी नहीं आता कि मेरा कोई (उपकार के बदले) सम्मान करे या आदर दे। केवल उसका मूल कर्त्तव्य होता है परोपकार करना।

भातिक जगत का प्रत्येक पदार्थ ओर पशुजगत का प्रत्यक पालतू पशु मनुष्य के उपकार मे लीन है। सूर्य चन्द्र नक्षत्र आकाश वायु अग्नि जल पृथिवी ओषधिया वनस्पतिया फल फूल ओर पशु सभी मनुष्य के कल्याण के लिए अर्थात परोपकार के लिए दिन–रात प्रयत्नशील है। जब ये सब पदार्थ और प्राणी परोपकार मे लगे है तो मनुष्य ही मनुष्य के प्रति उपकार क्यो न करे। मनुष्यो को भी पशु जगत पक्षी जगत ओषधियो आदि से प्ररणा लेकर परोपकारी बनना चाहिए। मनुष्य तो सर्वाधिक बुद्धिजीवी है। इसलिए प्रत्येक क्षेत्र मे विचार विमर्श करके सही परामर्श देना व उचित न्याय लेना चाहिए। इस कारण से परोपकार को ही सर्व श्रेष्ठ बतलाया गया है तथा सबका प्रधान भी बतलाकर मनुष्य न विचार किया कि म कसा हू जो आजतक किसी के काम नही आया ऐरो ही भावो को गहराई से विचार करते हुए मनुष्य ने स्वत स पूछा –

कभी कुछ काम भी आया किसी आफत रसीद के ?
कभी दामन से पोछे तूने आसू आबदीद के ?
शरीके दर्दे गम बनकर कभी दुख भी बटाया है ?
मुसीबत मे किसी आफतजदा के काम आया है ?
पराई आग मे पडकर कभी दिल भी जलाया है ?
किसी बेकस की खातिर जान पर सदमा उठाया है ?

वेदमन्त्र मे एक बात पर और बल दिया गया मान्त स्थुर्नो अरातय– हमारे अन्दर अदानशीलता की भावना न हो अर्थात हम दान दाता भी बने परोपकारी बन। शास्त्रो मे दान अनकों प्रकार का आया है अपितु मुख्य रूप से तीन प्रकार का बतलाया गया है कि मानव का तन मन धन से सहयोग करना चाहिए। इन्ही तीन प्रकार के सहयाग स ही समाज की उन्नति हो सकती है मान लीजिए धन का सहयोग प्रत्यक मानव नही दे सकता तो तन व मन तो अपना है अगर धन अपना न मानकर इस समाज का मान प्रभु की असीम कृपा मान तो आज समाज की अच्छी उन्नति हो सकती है प्रत्येक मानव के अन्त करण म दान की अग्नि धधक सकती हे अर्थात कह सकत हे कि कोई दान देने स नही चूकेगा और हमारे बीच मे अदानीजनो का वास नही होगा हम सभी मन्त्र के अर्थ को सार्थक बना पायेगे अर्थात अपन अपन कर्मो मे प्रेरित कर देगे। दान या परोपकार कभी भी व्यर्थ या खाली नही जाता है इस बात को निश्ति जानना हितकर होता है। जैसा कि योगिराज श्री कृष्णचन्द्र जी ने भी कहा –

पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते। नहि कल्याण कृत्कश्चिद् दुर्गति तात गच्छति।।

गी० ६।४०।।

हे अर्जुन ! शुभ कर्म करने वाला का न यहा ओर न परलाक म विनाश हाता ह। हे प्रिय बन्धु ! कोई शुभ कर्म करने वाला दुर्गति को प्राप्त नही होता है।

गीता के इन्ही पवित्र वचनो को ध्यान मे रखकर व्यक्ति को सदा परोपकार मे लगे रहना चाहिए। वेद मन्त्र का भी यही आशय हे कि हम परापकार तथा शुभ कर्मो से कभी पृथक न हा अपितु केवल पर उपकार को अपना मुख्य लक्ष्य बनाकर उपकार करे। उपकार का कवल उपकार की भावना स ही करे।

– पुत्र श्री ओमप्रकाश शर्मा मकान न० ३२२ कर्मचारी नगर पो० इज्जत नगर बरेली (उ०प्र०)

ध्यानं निर्विषयं मनः

हरिश्चन्द्र वर्मा

परम ऋषि कपिल मुनि प्रणीत साख्य दशन मे – ध्यान उस कहते है जिसम आख कान नाक आदि के विषय सामन न हो। मूत्ति म तो रूप भी है रग भी है और स्पर्श भी है। अत ध्यान मे कोई चिन्ह=प्रतीक नही होना चाहिए।

ध्यान मे मन को एकाग्र किया जाता है इसी एकाग्रता के कारण सर्कस मे नये–नये चमत्कार दखने को मिलते है किन्तु ईश्वर के ध्यान मे और सर्कस के कर्म मे अन्तर है। सर्कस मे दृश्य वस्तु को देखा और दिखाया जाता है किन्तु परमात्मा के ध्यान मे कोई दृश्य वस्तु नही रहती। केवल मन को किसी आभ्यन्तर चक्र के प्रदेश म मन्त्र जप अथवा प्राणायाम द्वारा मानसिक दृष्टि त्रिनेत्र अर्थात ज्ञान नेत्र को स्थिर किया जाता है। इस स्थिरता मे कोई दृश्य पदार्थ नहीं रहता शून्य मे प्रवेश करना होता है जिस तरह सुइ की नोक को खडा किया जाता है ताकि हिलने न पावे उसी तरह परमेश्वर के ध्यान मे मन का एकाग्र किया जाता है जिस तरह जल स्थिर होने से उसमे प्रतिबिम्ब दिखलाई देने लगता हे उसी तरह मन के स्थिर हो जाने से आत्मा ओर परमात्मा का दर्शन और आनन्द प्राप्त होन लगता है यह सब क्रिया निरवयव है।

पतञ्जल ने ध्यान क व र म लिखा है कि –

तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम।

व्याख्या – तत्र – उस प्रदश अर्थात ध्येय विषय मे जिसमे चित्त को वृत्तिमात्र स ठहराया ह। प्रत्यय=ध्येय की आलोचना करन वाली वृत्ति अर्थात वह वृत्ति जो धारण मे ध्येय के तदाकार होकर उसके स्वरूप से भासती है। एकतानता=एक सा बना रहना अर्थात उस ध्येय आलम्बन वाली वृत्ति का समान प्रवाह से लगातार उदय होते रहना और किसी अन्य वृत्ति का बीच मे न आना।

धारणा मे चित्त जिस वृत्तिमात्र से ध्येय मे लगता है जब वह वृत्ति इस प्रकार समान प्रवाह से लगातार उदय होती रहे कि दूसरी कोई और वृत्ति बीच मे न आये तब उसको ध्यान कहते हैं।

आज प्राय लोग पतञ्जल शास्त्र जो ब्रह्मानन्द को प्राप्त कराता है उसे भुलाकर अथवा उस पर पर्दा डालकर प्रतिमा पूजन की तरफ सबको आकृष्ट किया जा रहा है जो अवैज्ञानिक है। उन सबके पूजन से कोई भी मनोरथ पूर्ण नहीं होता केवल देशाटन और धन ही शरीर की परेशानी का कारण होता है।

आज क अल्प विचार वाले लोग काल्पनिक मूर्त्ति को ही भगवान देवी महादेवी समझ बैठे हैं। इनक कोन समझाये जो पीतल को सोना समझ बै है। अत सत्य के प्रतिकूल विश्वास करना निष्फल है। जो लोग कहते है कि अमुक देवी क पूजन से हमे सन्तान आदि प्राप्त हुए यह नितान्त असत्य धारणा हे। यह कहना चाहिए कि मरे पूर्वजन्म अटल विश्वास और कर्मचेष्टा के कारण ही अमुक की प्राप्ति हुई। यदि मूर्त्ति पूजा से असम्भव सम्भव होता तो कोई भी डाक्टर के यहा नहीं जाता और यदि मूर्ति खाने लगती तो कोई नैवेद्य नही चढाता देश मे अकाल पड जाता। प्रतिमा पूजन का जड इतना गहरा गड गया है कि उसे उखाडना कठिन ही नहीं असम्भव हे। इतिहास को देखकर भी लोगो की आखे नही खुलती।

जो तान्त्रिक अग्नि पर चलते है उन्हे चिता पर जलाना चाहिए। यदि नही जलेगे तो समझिये उनकी मन्त्र विद्या ठीक है। जो खडग के धार पर खडे हो जाते हैं अथवा शरीर का भेदन कर भोली भाली जनता को अपनी ओर प्रदर्शनी दिखाकर आकृष्ट करते हे उन्हे युद्ध के मोर्चे पर भेज देना चाहिए क्योकि तोप की गोली उनका कुछ नही बिगाड सकती। तब देखिये –

मुसलमान ईसाई मुर्दा पूजक हे हिन्दू पुराणवादी मूर्त्ति पूजक है। आर्यसमाज कहता है कि हम चित्र नही चरित्र की पूजा करते हे ओर आर्यसभा के लोग कहते है न मुर्दा पूजा न मूत्ति पूजा न चित्र न चरित्र बल्कि कार्य की पूजा करनी चाहिए उसी से कल्याण हागा।

अब विचार कीजिये कि किसकी पूजा करनी चाहिए। हमारे विचार से चरित्र और कार्य की ही पूजा करनी चाहिए। यहा पूजा का अर्थ दूसरा है – कार्य की पूजा का अर्थ है। वैदिक धर्म का प्रचार करना वह भी एक जगह बैठकर नही सब जगह जाकर ओर चरित्र पूजा का अर्थ हे किसी के अच्छे गुण कर्म स्वभाव का सम्मान करना उनके बताये मार्ग पर चलना और उससे भी और आगे की ओर प्रगति करना।

आज सब कुछ तरक्की पर है सब कोई आगे बढ रहे है नयी नयी जानकारी प्राप्त कर रहे हैं आर्यसमाज को भी चाहिये कि वेद के विज्ञान को विकसित करें। ध्यान योग का अधिक से अधिक प्रचार करें और उसे करने के लिए सबको प्रेरित करे।

सत्यार्थ प्रकाश को सब कोई पढना नही चाहता जिनके मन मे जिज्ञासा तथा कुछ और जानने की इच्छा रहती है वे ही सत्यार्थप्रकाश को पढते हैं किन्तु उसे पढकर भी सब कोई आर्य सिद्धान्त को अपनाने से कतराते हैं। वह इसलिए कि उसमे आमिष भोजन के लिए निषेध किया गया है। हम जहा मुरारई मे रहते हैं वहा मुसलमानो की सख्या अधिक है। एक बार एक मौलवी साहब को सत्यार्थप्रकाश दिये तो वे कुछ अश १४ वा समुल्लास को पढकर बोले कि यह पुस्तक किसी पागल ने लिखी है। एक सज्जन को दिया तो उनका मन तो बदल गया किन्तु पौराणिक विचार से अलग नही हो सक। तात्पय यह कि सब कोई सत्यार्थप्रकाश के रहस्य ज्ञान को समझकर भी नासमझी करते है। बगाल बिहार आसाम जैसे कुछ राज्य ऐसे हे कि आर्यसमाज से कोसो दूर भागते हैं। इन राज्यो म प्रतिमा पूजन बलिप्रथा और मद्य मास भक्षण सर्वप्रिय है। इन्हे समझाना कठिन है। ये लोग अन्य नये मत ग्रहण कर लेते है क्योकि खान पान मे कोई रूकावट नही है किन्तु आर्य धर्म का अपनाना नही चाहते। कहते हैं वह पुराना पड गया है। पुराना ता सूय भी है किन्तु उसकी तजस्विता आज भी नवीन हे और सबको जीवन दान दे रहा है **इसी प्रकार वेद और सत्यार्थप्रकाश है जो भटके हुए को सही रास्ते पर ला सकता है।**

आज की नयी पीढी के नवयुवको से पूछिए कि सत्यार्थप्रकाश किसने लिखा है तो उन्हे नही पता। किन्तु किसी सिनेमा के हीरो हीरोइन आदि का नाम पूछिये तो तुरन्त बता देते है। यहा तक कि छाट छोटे बच्चे भी और यही सब सिनेमा के बारे मे प्रश्नोत्तर की ट्रेनिग दी जा रही है ओर पुरस्कार वितरण किया जा रहा हे। आज की दुनिया आर्य सभ्यता की दुनिया नही है चलचित्र से प्रभावित रगीनियो की दुनिया है जो बिल्कुल भौतिकवाद ओर पाश्चात्य सभ्यता से भरी हुई हे। यदि आपको अग्रजी नही आती तो आज का सभ्य समाज आपका निम्न श्रेणी का समझता हे किन्तु उस सभ्य समाज का समझना चाहिए कि – विश्व कवि रविन्द्रनाथ ठाकुर समाज सुधारक ऋषि दयानन्द आदि जो अग्रेजी का प्रयोग नही किये थे ससार मे अमरज्योति बनकर आज भी जगमगा रहे हैं। ससार को सभ्य बनाने वाले हमारे पूर्वज ऋषियो ने वेद शास्त्र मे बीजात्मक ज्ञान देकर बहुत प्रकार के विद्या ज्ञान का विकास करने के लिए सूत्रपात कर दिया था जिनसे ससार मे सभ्यता फैली और ज्ञान विज्ञान मे तरक्की हुई। आज के नवयुवको से यदि पूछा जाए कि आपके पूर्वज कौन थे तो उत्तर देते है कि बन्दर थे। यह डार्विन के विकासवाद की काल्पनिक धारणा है।

हा तो हम ध्यान की बात कर रहे थे। यदि मूर्त्ति के सामने बैठकर उस मूर्त्ति को ध्यान मे लायेगे तो क्या होगा क्या वह मूर्ति हमारे विचार को बदल देगी? ध्यान मे मूर्ति की कल्पना करना उसकी रूपाकृति को देखना यह परमात्मा का ध्यान नहीं है यह तो एक कल्पना है इससे कुछहोने वाला नहीं है। जब तक पतञ्जल शास्त्र के अनुसार ध्यान नहीं किया जायेगा। अन्तर-की जागृति तथा प्राण के उत्थान के बिना कोई अपने को नहीं समझ सकता।

मुरारई, वीरभूम (प० बंगाल)

यदि मूर्त्ति के सामने बैठकर उस मूर्त्ति को ध्यान मे लायेगे तो क्या होगा क्या वह मूर्ति हमारे विचार को बदल देगी ? ध्यान मे मूर्त्ति की कल्पना करना उसकी रूपाकृति को देखना यह परमात्मा का ध्यान नहीं है यह तो एक कल्पना है इससे कुछ होने वाला नहीं है। जब तक पतञ्जल शास्त्र के अनुसार ध्यान नहीं किया जायेगा। अन्तर की जागृति तथा प्राण के उत्थान के बिना कोई अपने को नहीं समझ सकता।

फ़िल्मी सितारों के समान भीड़ खींचने वाला

विक्लांग वैज्ञानिक और ईश्वर-वेद तथा महर्षि दयानन्द

ज्ञानचन्द

स्टेफन हाकिग विश्व विश्रुत वैज्ञानिक एव समकालीन जगत के महानतम विज्ञान चिन्तक अभी भारत आए थे। उनके प्रसगो एव वार्ताओ से भारत के अखबार पिछले दिनो भरे रहे। सामान्य जनो को चकित और अभिभूत कर देने वाले एव वैज्ञानिको की सृष्टि व ब्रह्माण्ड सम्बन्धी अनुसधानो को दिशा देने वाले सुप्रसिद्ध भौतिकीविद स्टेफन हॉकिग के सिद्धान्तो मे वैदिक सिद्धान्तों की भीनी व प्राथमिक झलक देख कर वैदिक अध्येताओ कों आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता होगी। वैदिको की आस्था को और बल मिलेगा तथा उन वैदिक प्रेम व वेदानुसधान का उत्साह और भी गतिमान होगा। पर अब एक बात स्पष्ट हो चुकी है कि वेदाथ का समझने व समझाने के लिए वद अध्येताआ को आधुनिक विज्ञान की भाषा परिभाषाए व्याख्याए व कूट सकेत भी ह्रदयस्थ करने ही होगे। विज्ञान की नई भाषा मे वैदिक काल की प्राप्तियो व व्याप्तियो के वर्णन कहने सुनने होगे तभी उनका सुस्थिर सुप्रचार हा सकेगा। इस कार्य के लिए अग्रेजी भाषा का ज्ञान अपरिहाय है।

प्राय १२–१३ वष पूर्व लेखक ने टा०आ०इ० क एक लेख रा प्ररित हा कर स्टेफन हाकिग की प्रथम पुस्तक समय का क्षिप्त इतिहास पढी थी। यह पुस्तक उपन्यास व गल्प ग्रन्था की तरह लाखो की सख्या म बिकी तथा भारत की भाषाओ के अतिरिक्त विश्व की सभी भाषाओं मे उसके अनुवाद प्रकाशित और प्रचलित हुए। उस समय ही स्टेफन हाकिग क सिद्धान्तो मे महर्षि दयानन्द द्वारा व्याख्यायित वैदिक सिद्धान्तो की अपरिपक्व झलक मिली थी। बाद मे उसकी दूसरी पुस्तक काल विवर एव शिशु ब्रह्माण्ड नामक पुस्तक आइ तथा पैनरोज नामक विज्ञानवेत्ता से स्टेफन हाकिग के गहन वार्तालाप का सग्रह आया। वेदो की अस्पष्ट व प्रकपित परन्तु सुनिश्चित झलक देने वाली इन व्याख्याओ ने एक बात तो स्पष्ट कर ही दी की समय की कसौटी पर वेदो के शुद्ध स्वर्ण सिद्ध होने का क्षण शीघ्र ही आ रहा है। अब वैज्ञानिक सिद्धान्त अज्ञात रूप मे या तो वैदिक सिद्धान्तो के समीप आ रहे हैं या वैदिक सिद्धातो द्वारा अपने अवरोध व अनिश्चय को दूर कर देने की गुह्य माग कर रहे हैं।

स्टेफन हाकिग का यह दावा कि भविष्य कभी भी जाना नहीं जा सकता – महर्षि दयानन्द के प्रबल उद्घोषणो की स्मृति दिलाता है जिसमे उन्होने कहा था कि 'भविष्य कोई नहीं जान सकता। क्योकि जो बना ही नहीं उसे जाना क्यों कर जाएगा। ईश्वर भी भविष्य को नहीं जानता। शायद पौराणिक भारतीयों के ह्रदय इससे आलोकित हो सकें और दे महर्षि दयानन्द की प्रचण्ड पुरुषार्थ वादिता को ग्रहण कर सके। महर्षि की भविष्य विषयक इस उक्ति पर इसके वैदिक तर्क का अनदेखा करके दैवज्ञो ज्योतिशियो कुण्डली पचाग याचको व भविष्य वक्ताओ को बहुत मर्म पीडा हुई थी व होती रही है। इन पौराणिक आख्याओ मे विश्वासी तथा त्रिकालज्ञ शब्द का अतिरेक पूर्ण प्रयोग करने वाले सनातनी व चमत्कारो जादू, तात्रिक प्रयोगो के दावेदार तात्रिको योगियो पर अब नवविज्ञान ने बहुत नाक भौ सिकोडी थी की तर्क सिद्ध ही नहीं प्रयोग सिद्ध व्याप्तियो पर वे क्या बोलेगे।

स्टेफन हाकिग का कहना हे कि कण (पर्टिकल) की स्थिति (पोजीशन) व गति (स्पीड) जानी जा सक तो सम्भवत भविष्य जाना जा सकेगा। परन्तु कण गति व जड ऊजा की सीमाओ से बधा विज्ञान वेत्ता इसके आगे के सर्वस्व सार तत्त्व को जान नही पा रहा अभी। उसका यह कथन ताकिक विरोधाभास है। इस बात को पूरा समझने मे वेद हमारी अद्वितीय सहायता करता है। स्थिति व गति स्वय मे स्वतन्त्र तत्त्व व स्थिति नही ह। स्थिति व गति क पीछे का अज्ञेय क्षेत्र जड वज्ञानिको के बूते के बाहर की बात है। स्थिति व गति के पीछे क परम मौलिक सवशायी सर्वव्यापक क्षेत्र को वदो ने परमे व्योमन् कहा ह। परम व्योमन यानी 'परम–व्योम जिसे न कभी जाना जा सका हे और न कभी जाना जा सकेगा। यह परम व्योम अपने होने पन के प्रमाण सतत देता रहता है पर उसके स्वय होने का प्रमाण अत्यन्त अल्प रूप मे भी एक निर्विकल्प समाधि का विषय है। वैज्ञानिक का मन बुद्धि तर्क व प्रयोगशाला तथा कैमिकल्स का पुज यहा व्यर्थ है। यह परम व्योम चिदाकाश के भी आधार मे का 'दिव्य सत्तत्त्व है जो महर्षि याज्ञवल्क के अनुसार न चेतन है न अचेतन बल्कि उभयातीत है। वेद मन्त्रो का ऋषि अन्तर मे अविकृत उन्ननयन इसी 'परम व्योम से होता है। ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन् देवा अधि विश्वे विजेदु। – ऋग्वेद। इस पोजीशन और स्पीड को उनके पीछे का परम व्योम और उसका सार सत्तत्त्व स्वय आश्रय देता है। लगता है वैदिक ऋषियो की योग समाधि कला को वैज्ञानिको द्वारा सीखने का समय निकट ही है।

'कण या मूल भूत पर्टिकल की परीक्षा सृजन की सरचना को समझने का एकाकी साधन व एकमात्र स्रोत है। परन्तु 'कण' और निरीक्षक के परस्पर सम्पर्क की समस्या का समाधान वैज्ञानिको को मिल ही नहीं पा रहा है। कण के स्वभाव व कण की गति पर निरीक्षक की उपस्थिति निरीक्षण व मनस्थिति का प्रभाव डाले जाने से रोकने का विज्ञान पर कोई उपाय ही नहीं है। क्योकि निरीक्षक न होगा तो कण के स्वभाव व गति को नापेगा कोन ?। यह जटिल समस्या वदार्थ अध्ययन एव योग–कला की ओर इगित कर रही है जहा वेदार्थो के आधार पर योग द्वारा योग सिद्ध ज्ञानवेत्ता स्वय की उपस्थिति को पूर्ण तटस्थ व निरीह करने मे सफल हो सकता है तथा तादात्म्य द्वारा कण के स्वभाव उसकी क्रिया और गति को किसी विकृति के बिना जान सकता हे। इस इगित और प्ररणा को वेज्ञानिक कब समझेगे ओर केसे समझेगे ये वे जाने या उनका कण जाने।

स्टेफन हाकिग की यह घोषणा कि इश्वर भी अनिश्चय सिद्धा त अन्सर्टेनिरी प्रिसीपल से बधा हे एक अपने मानवीय साइज से बडा दावा हे। स्टेफन हाकिग ईश्वर को भी सृष्टि प्रक्रिया से बधा हुआ मानता है। हाकिग की इस उदघोषणा के दो अर्थ निकलत है तथा उन दोना अर्थो के आधार पर नया प्रश्न खडा हाता हे। उसका समाधान भी भारतीय मनीषा दे चुकी हे।

(क) ईश्वर भी अपने बनाए नियमो को नहीं बदल सकता अत भविष्य के विषय म ईश्वर भी अनिश्चय मे ही हागा। इस विषय मे महर्षि दयानन्द ईश्वर अनिश्चय म हे ऐसा गूढ कथन नही करते परन्तु मात्र इतना कहते है कि जो बना ही नही है उसे कोई जानेगा ही केसे वह कोई चाहे ईश्वर ही क्यो न हो। यह अनिश्चय नहीं एक निर्विचार मौन और तटस्थता है जो सकल्प व विकल्प से अतीत स्थिति है।

(ख) इस अनिश्चय स्द्धिान्त मे ईसाई मुसलमानो के व्यक्तिस्वरूप ईश्वर व एक स्थान वासी स्वर्गस्थ ईश्वर आस्था की झलक है जो कई बार निश्चय अनिश्चय के चक्र मे फसता रहता है अपने निर्णय बदलता रहता है।

यदि इन दो बातो को ख्याल मे ले तो स्टेफन हाकिग के अनिश्चय सिद्धान्त' अनसर्टेनिटी प्रिसीपल का विशद समाधान हमारे ग्रन्थो म क्या हैं।

योग वशिष्ठ ग्रथ की जगत स्वप्न सिद्धान्त वादिता के विधान से यह सृष्टि जिसम इस समय हम हैं एक स्थूल द्रव्यात्मक सृष्टि है। इसके पीछे स्थूल से सूक्ष्म और सूक्ष्म स सूक्ष्मतर होती चली जान वाली अनन्त सृष्टिया व ब्रह्मण्ड है। प्रत्येक सृष्टि दूसरी भिन्न सृष्टियो के लिए स्वप्नवत कल्पक्त व काल्पनिक रूप है। क्योकि स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर बढते जगतो में प्रकृति के परिचालक नियम भी बदलते चले जाते हैं। जैसे चन्द्रमा म गुरुत्वाकर्षण पृथ्वी स अत्यन्त अल्प हाने क कारण वहा व्यक्ति अत्यन्त अल्पभार हो जाता हे अत एक चरण म कई मीटर तक चले जान की सामर्थ्य वाला हो जाता है। इसी प्रकार प्रत्येक भिन्न सृष्टि मे नई सामथ्य नये वैशिष्टय नई क्षमता नई मनोवृत्ति के साथ गोचरता भी नयी होगी अत एक भिन्न नियम वाले व्यक्ति की सामान्य गोचरता मे अन्य नियमो पर आधारित विश्व नहीं पकड मे आता। स्थिति पोजीशन व गति स्पीड भी सभी जगतो मे भिन्न है। परन्तु परमव्योम और उसके पीछे का परम सत्तत्त्व सबमे एक है।

यह परमसत्तत्व वदो का जातवेदस अग्नि महर्षि दयानन्द का परमात्मा इन सभी स्वरूपवान शब्द व गध युक्त एव विशिष्ट गतियुक्त चैतन्य प्रवाह रूप सृष्टियो के भी परे ओर पीछे हे। उन सबके मूल व आधार मे होने के बावजूद वह इन सबसे पूरी तरह अलिप्त असग और अप्रभावित है। कुछ ऐसा ही समझा जाय जैसे कि हमारी निद्रित चेतना मे होने वाले स्वाप्निक प्रघटनो का हमारी जाग्रत चेतना से कोई तारतम्य नहीं हाता वैसे ही परम चैतन्य परम वि परमात्मा का अल्प चैतन्य व जड प्रकनि क आवरणा से ढक इन स्वप्न भासमान जगतो के निश्चय अनिश्चय से क्या लेना देना। य जगत परमात्म की विशुद्ध चेतना के अमिश्रित दिव्य तत्त्व से नहीं बन है बल्कि परम मा रूपी शुद्ध अस्तित्व क्षत्र मे प्रकति क स्पन्दन व क्रिया विलास तथा प्रकतिगत जीवो के परस्पर परिमिश्रण से निर्मित होते है।

विषय बहुत लम्बा तथा जटिल है। पर कहने का भाव यह हे कि आधुनिक साईस (विज्ञान) एक ऐसे पराकाष्ठा बिन्दु पर आ गया है जहा वह चाहे तो वेद का श्रेष्ठतम चेतना विज्ञान उसकी अग्र ग्रथियो को खोल सकता है। समय अब पूरी तरह तैयार व परिपक्व है कि वैदिक दृष्टि के साथ विज्ञान का मेल कराकर परम सत्य को मानवीय समझ की सीमा तक यथा सभव लाने का यत्न किया जा सके। उसके लिए वैज्ञानिको एव वेदज्ञो का द्विधारा पथ अपनाना होगा। द्विधारापथ का अर्थ है कि आधुनिक विज्ञान को वेदो से समृद्ध किया जाय तथा वेदार्थो को आधुनिक विज्ञान की भाषा व परिभाषाओ से व्याख्यायि किया जाय।

आर्य जन व वेदानुसधानक इस ओर सकेन्द्रित प्रयास करे। यह लेखकीय अभीप्सा भी है तथा अपेक्षा भी है।

– श्री अरविन्द चेतना समाज
(पजीकृत शिक्षात्मक न्यास)
६५६२/६ चमेलियान रोड
दिल्ली ११०००६

सर्वहित परतन्त्रता ही सर्वसुख स्वतन्त्रता का मूल है

– आचार्य आर्य नरेश वैदिक गवेषक

संसार मे जैसे जैसे ज्ञान विज्ञान तथा प्रचार तन्त्र के द्वारा जनता प्रबुद्ध हो रही है ठीक वैसे वैसे ही विश्व का प्रत्येक व्यक्ति अधिकाधिक स्वतन्त्रता और सुख की कामना करने लग गया है। एक छोटे से छोटे बालक और कम से कम पढे लिखे व्यक्ति मे भी सब बन्धनो से मुक्त होकर स्वेच्छापूर्वक जीने की भावना जागृत हो गयी है। सुख और स्वतन्त्रता की प्रतिस्पर्धा मे यह दिखायी दे रहा है कि सुख और स्वतन्त्रता पहले की अपेक्षा बढे नही है अपितु कम हो गए है। अधिक सुख की लालसा मे आज प्रत्येक चतुर व्यक्ति स्वच्छन्दता को ही स्वतन्त्रता समझकर व्यक्तिगत स्वार्थहित सब नियमो को ताडकर मनमानी का जीवन जीने पर उतारु हो चुका है।

क्योकि ससार की इस भीड मे प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको दूसरे से अधिक चतुर समझता है। अत वह अपनी तथाकथित स्वतन्त्रता को सुरक्षित रखने के लिए किसी भी दूसरे व्यक्ति की कोई चिन्ता नही करता। जिसका परिणामआज का अनुशासनहीन समाज है। समाज मे जीते हुए यदि हम अन्य सब लोगो की उपेक्षा करके सुख और स्वतन्त्रता चाहेगे तो क्या यह सम्भव हो सकेगा ? कदापि नही। कारण जैसे कि हम अपनी स्वतन्त्रता और सुख के लिए चिन्तित हैं ठीक वैसे ही समाज मे रहने वाले अन्य लोगो की भी यही स्वाभाविक इच्छा है। परन्तु यदि प्रत्येक व्यक्ति अन्य लोगो की उपेक्षा करके पूरा चाहेगा तो उसको सुख के स्थान पर ढेर सारा दुख और स्वतन्त्रता के स्थान पर ढेर सारी चिन्ताए ही उपलब्ध होगी। उदाहरणार्थ किसी राजमार्ग पर यात्रा करते हुए अथवा किसी नगर की भीड भरी सडक पर चलते हुए यदि हम चाहे कि बस केवल हमारी ही गाडी आगे निकल और इसमे कोई व्यक्ति कोई गाडी अथवा कोई नियम आडे नहीं आवे। हम जैसे भी चाहे सडक के जिस ओर भी चाहे गाडी को दौडाकर आगे ले जाए तो क्या यातायात के नियमो को तोडकर कोई व्यक्ति अपने घर पर सुरक्षित पहुच सकेगा ? क्या बाए अथवा दाए किसी भी ओर स्वच्छन्दता से अपनी गाडी बढा देने पर सडक का यातायात चल सकेगा ? कदापि नहीं। क्योकि हमारे पीछे से एव सामने से आने वाले लोग भी बिना किसी नियम के तथाकथित स्वतन्त्रता को पूर्ण करने के लिए एव शीघ्रता से पहुचने के सुख को प्राप्त करने हेतु ऐसा ही करना चाहेगे। जिसका परिणाम गाडी की तीव्र गति के स्थान पर यातायात का अवरुद्ध होना और शीघ्र घर पहुचने के सुख के स्थान पर दुर्घटनाग्रस्त होकर किसी हस्पताल मे भयकर दुख को झेलना होगा।

इस उपरोक्त उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है कि यदि समाज मे रहते हुए हमे अधिक सुख स्वतन्त्रता चाहिए तो हम सबको एक सर्वहितकारी नियम मे बन्धन की परतन्त्रता को स्वीकार करना होगा। यह बात आज से लगभग डेढ शताब्दी पूर्व विश्वमित्र आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कही थी। यदि हम तथाकथित स्वतन्त्रता के पश्चात देव दयानन्द द्वारा प्रतिपादित विश्वशान्ति के दस नियमो मे से अन्तिम नियम को अगीकार कर लेते तो निश्चित रूपेण आज के भारत का वातावरण इतना भयावह कभी न होता। ऋषिवर लिखते है – **प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने मे परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम मे सब स्वतन्त्र रहे।**

(आर्यसमाज का १०वा नियम)

आज अत्यन्त दुख एव आश्चर्य का विषय है कि ज्ञान विज्ञान की अत्यधिक उन्नति होने पर भी देश के चप्पे चप्पे मे विद्यालयो एव महाविद्यालयो का जाल बिछा होने पर भी और पहले की अपेक्षा कहीं अधिक शिक्षित लोगो की सख्या अधिक होने पर भी समाज मे अनुशासनहीनता शत्रुता द्वेष अपराधो की सख्या एव मानसिक तनाव निरन्तर बढ रहे है। जिसका मौलिक कारण है सर्वहितकारी नियम पालन का अभाव। जिसे आज का तथाकथित बुद्धिजीवी व्यक्ति इसलिए स्वीकार नहीं करता क्योकि ऐसा करके वह अपनी स्वतन्त्रता का भग हो गयी समझता है। ऐसे समय मे वह दूसरे की स्वतन्त्रता की भावना को भूल जाता है। इसलिए महर्षि दयानन्द ने कहा कि – प्रत्येक व्यक्ति को सर्वहितकारी नियम पालने मे परतन्त्र रहना चाहिए। देव दयानन्द द्वारा प्रस्तुत यह सर्वहित परतन्त्रता ही वास्तविक सुख ओर स्वतन्त्रता का मूल है। हम एक और उदाहरण के द्वारा विषय को और अधिक स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं – एक व्यक्ति जीवन की सुख सुविधाओ को एकत्रित करने के लिए किसी सस्था मे कार्यरत था। उस सस्था के आने जाने काम करने उठने बैठने तथा खाने पीने के नियम निश्चित थे। दो चार दिन के पश्चात उस कार्यकर्ता ने कहा – मैं गुलाम बनकर कार्य नहीं कर सकता। इन नियमो को पालना ओर परतन्त्र होना मे उचित नहीं समझता। मैं एक स्वतन्त्र प्राणी हू। मैं अकुश मे रहना पसन्द नहीं करता। मैं तो अब अपनी ही सस्था चलाऊगा। सस्था प्रारम्भ हुई। अधिक लाभ के लिए वस्तुओ तथा समय का सदप्रयोग आवश्यक था। अत उसने भी कार्यकर्त्ताओ के लिए आने जाने खाने पीने मशीनो पर कार्य करने व उनका प्रयोग करने के नियम प्रसारित कर दिए। उसकी सस्था मे उसका एक साथी जो पूर्व सस्था मे कार्य कर चुका था भी कार्यरत था। उसने इस सस्था मे इन सब नियमो को देखकर अपने उस मित्र एव मालिक को कहा – देखो भाईसाहब ! अब आप उन्हीं सब नियमो का अकुश हम पर लगा रहे हैं जिनको आप गुलामी और परतन्त्रता की सज्ञा देकर छोड आए थे। इस बात को सुनकर उसका मित्र देखता रह गया और कुछ न कहता हुआ चुपचाप गर्दन झुकाकर खडा हो गया।

पाठकवृन्द ! मानव समाज मे जीते हुए यदि हमे पूर्ण सुख और तनाव रहित शान्ति चाहिए तो महर्षि देव दयानन्द का सर्वहितकारी परतन्त्रता का यह नियम आज समाज के प्रत्येक स्तर और वर्ग के लिए अत्यन्त अनिवार्य है। कुछ वर्ष पूर्व स्वच्छन्दता को ही स्वतन्त्रता मानकर जीने वाले रजनीश की पूना मे एक लहर चली थी। रजनीश कहता था सब बन्धनो को तोडकर मुक्त हो जाओ। और ऐसा ही उसने किया भी। अथात सब सामाजिक नियमो को ताक पर रखकर नग्नता का प्रदर्शन और अश्लीलता का वातावरण योग समझा जाने लगा। उन्हीं दिनो देश के एक प्रबुद्ध आर्य युवक ने उसके आश्रम मे पहुचकर उससे वार्तालाप करने के लिए समय ले लिया। समय नपा तुला था ओर उतने ही समय मे उस युवक को अपनी बात पूर्ण करनी थी। विषय था – कि यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने मन की तथाकथित इच्छा पूर्ण करने के लिए स्वच्छन्द हो जाए जिसे आप स्वतन्त्रता कहते हैं तो क्या समाज मे सुख बढेगा या दुख ? क्योकि जब हर व्यक्ति समाज मे अपनी मनमानी चलायेगा तो उसके स्वच्छन्द व्यवहार से प्रत्येक दूसरे व्यक्ति को हानि तनाव और कष्ट निश्चित रूपेण होगे और यह व्यवहार जिसे भूल से प्राय स्वतन्त्रता कहा जाता है स्वच्छन्दता ही है। क्योंकि स्वतन्त्र मे भी एक तन्त्र है अर्थात एक आत्मिक सूत्र है जो सब आत्माओ के हित मे है। परन्तु स्वच्छन्दता तो पूरी मनमानी हैं। प्रश्न का उत्तर रजनीश के पास नहीं था। वह हडबडाया और बोला मेरी बात तुम्हारी बुद्धि से परे है। मेरा समय नष्ट मत करो और यहा से चले जाओ। और वैसे भी तुम्हे बातचीत के लिए दिया गया समय समाप्त हो चुका है। जैसे ही उस युवक ने समय समाप्ति का नियम सुना तो उसने आक्रोश मे आकर कहा – मै अब तुम्हारी ही तरह स्वतन्त्र हू और मेरी इस स्वतन्त्रता को तुम भग नहीं कर सकते अर्थात् मैं भी सब नियमो से ऊपर हू और मैं जितनी देर चाहू तुम्हे मेरी बात सुननी होगी और यदि तुम आनाकानी करोगे तो फिर मेरी मनमानी मार पिटाई तक भी हो सकती है। रजनीश हक्का–बक्का रह गया और उसने हाथ जोडकर बडी कठिनाई से उस युवक से छुटकारा पाया। (विशेष जानकारी के लिए लेखक की अन्य पुस्तके पढे)

मानव समाज मे जीते हुए यदि हमे पूर्ण सुख और तनाव रहित शान्ति चाहिए तो महर्षि देव दयानन्द का सर्वहितकारी परतन्त्रता का यह नियम आज समाज के प्रत्येक स्तर और वर्ग के लिए अत्यन्त अनिवार्य है। प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने मे परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम मे सब स्वतन्त्र रहे।

परिवारो मे हम देखते हैं कि बच्चे यह नही चाहते कि माता–पिता उन पर नियमो का अकुश लगाए। विद्यालय मे विद्यार्थी कार्यालयो मे कार्यकर्ता राष्ट्र मे राष्ट्र के अधिकारी भी यही चाहते हैं कि उन पर किसी प्रकार के नियम का प्रतिबन्ध न लगे। वे सब स्वच्छन्द रहें। परन्तु सज्जनवृन्द। क्या ऐसा होने से कोई भी सुखी हो सकेगा ? कदापि नही। आज इस तथाकथित स्वतन्त्र भारत के उच्छखल समाज मे जो कुछ भी सुख अथवा स्वतन्त्रता दिखायी दे रहे है उनका कारण वे कुछ मानवतावादी धार्मिक लोग है जो कि सर्वहितकारी अनुशासन की परतन्त्रता मे बधकर ठीक समय पर निर्धारित स्थान पर उचित साधनो के द्वारा कर्त्तव्य का पालन कर रहे है। यदि बच्चो की भाति माता पिता भी पालन पोषण के दायित्व की परतन्त्रता मे न बधे और उन्हे समय पर सब सुविधाए न दे तो फिर बच्चो के सुख का क्या बनेगा यदि बस रेल राशन बिजली पानी हस्पताल आदि के सभी अधिकारी भी अन्य कुछ कर्त्तव्यहीन लोगो की ही भाति पूर्ण रूपेण स्वच्छन्द हो जाए तो फिर जनता के सुख और स्वतन्त्रता का क्या बनेगा ? यदि सीमा के प्रहरी वीर सैनिक एव उनके सभी अधिकारी भी यही सोच ले कि हम भी क्यो परतन्त्र बनकर यहीं खडे ओर अडे रहे ? हमारी इच्छा होगी तो सीमा को देख लेगे अन्यथा नहीं। तो फिर देश मे एक कारगिल नहीं सभी सीमाए कारगिल बन जायेगी और देश का कोई भी कथित स्वतन्त्रता चाहने वाला स्वच्छन्द व्यक्ति सदा के लिए गुलामी की जजीरो मे जकड लिया जाएगा।

अत पाठक वृन्द ! महर्षि देव दयानन्द के शब्दो मे यदि हमे सर्वसुख स्वतन्त्रता चाहिए तो उसकी प्राप्ति के लिए सर्वहितकारी सामाजिक नियमो मे परतन्त्र रहना ही होगा। यही पूर्ण सुख का मूल मन्त्र है। इसलिए प्रत्येक देश के नागरिक को चाहिए कि वह अनुशासन युक्त जीवन को कभी दुखदाई न समझे। अनुशासन से हमारा अभिप्राय एक ऐसे वातावरण से है जहा प्रत्येक व्यक्ति अपने ठीक समय और उचित स्थान पर क्रियाशील साधनो से सुसज्जित होकर प्रसन्नता एव पुरुषार्थपूर्वक कर्त्तव्य का पालन करने के लिए अडिग एव तत्पर रहता है।

– उद्‌गीथ साधना स्थली ग्राम कोहर डाक शाखा तहसील राजगढ जिला सिरमौर हिमाचल प्रदेश पिन १७३१०१

स्वास्थ्य चर्चा

कब्ज रोग

– देवीसिह मलिक

कारण व निवारण – शरीर विकास और इसकी क्षतिपूर्ति हेतु हम रोज भोजन करते है। पचने के बाद मल बडी आत या मलाशय मे इकटठा हो जाता है। नियम से रोज पेट साफ होना चाहिए। ठण्डे प्रदेशो मे एक या दो दिन छोडकर भी लोग शौच जाया करते हैं। इसमे कोई नुकसान नहीं अगर पेट तीन–चार मिनट मे साफ हो जाए तथा मलाशय का सारा मल साफ हो जाए। कब्ज जब माना जाता है जब पूरा मल ना निकले या जोर लगाना पडे। इस रोग के वैद्यक व डाक्टरी भाषा मे कई नाम हैं। अपने ४३ वर्ष के अनुभव के आधार पर वर्षो बर्फ मे व राजस्थान की अत्यन्त मरुभूमि मे रहने का मौका मिला है। लिखने का आशय सिर्फ इतना है कि जहा जैसे साधन हो देश प्रदेश समय व वातावरण के अनुसार स्वय इस व्याधि को जडमूल से भगाने का प्रयत्न अगर पक्के इरादे से लगातार किया जाए तो जरूर लाभ होगा। नीचे मैं इस बारे मे कुछ कारण व उपाय बताने का प्रयास करूगा। कोई भी दवा लगातार नही लेनी चाहिए। औषध का प्रयोग कम से कम हो। विज्ञापित दवाओ के चगुल से बचना चाहिए। लगभग सभी दवाए आतो की कार्यशक्ति को कमजोर करती है। दवाईया इतने बडे पैमाने पर बनती है कि सभी रसायन शालाओ मे शुद्ध बननी ही कठिन है। ठेकेदारी और व्यापारी प्रथा मे टका ही सब कुछ है। मानव हित गौण हो गया है। अन्यथा बाजार मे खाने के पदार्थ नकली नहीं बिकते। जो भी लोग खाने की वस्तुओ मे मिलावट करते हैं तथा बिना ढके बेचते है ये बिना हथियार के उग्रवादी है क्योकि देश की जनता को बीमार बनाते हैं ? रोज का अनुभव बताता है कि कुछ समय बाद दवा की मात्रा बढानी पडती है या दवा बदलनी पडती है।

भोजन ना करे तो कई दिन कुछ खास नहीं बिगडता। किन्तु पेशाब पाखाना रुकने से जल्दी ही परलोक की तैयारी होने लगती है। इसलिए शरीर से मल निकालने के बहुत द्वारा बने हैं। कब्ज के कारण अनेक गम्भीर रोगों का जन्म होता है यथा गैस हार्निया बवासीर चमडी के रोग टासिल दमा आदि।

कारण

कारण अनेक हैं शौच (हाजत) को रोकना घूमने जाये या ना जाए ऐसा हो तो जाना चाहिए। गलत खान पान व व्यवहा' से अप्राकृतिक भोजन से जैसे चिकनाई द्वारा मसालो मे तरकारी को रगड व भूनकर खाना–धुली दालो का प्रयोग तोरी आदि तरकारियो को छील कर बनाना अमरूद व सेब आदि फलो को छीलकर खाना या मसाले लगाकर खाना (मसाले औषधिया) रोज खाने के लिए नहीं। बिना भूख भोजन करना ठीक समय पर ना करना चबा–चबाकर ना खाना। घूट–घूट कर ना पीना शारीरिक श्रम का ना करना प्यास लगने पर जल व भूख लगने पर भोजन ना करना घूट–घूटकर खाना ज्यादा पानी पीने से अमाशय ठीक काम नही कर पाता। यायाम ना करना एण्टी बाईटिक दवाओ का प्रयोग करते रहना मानसिक परेशानी या नीद कम आना आदि से अनेक रोग शुरू हो जाते हैं। तग पोशाक स शरीर के अग अपना काम ठीक तरह से नहीं कर पाते। रेशेदार तरकारियो के बिना पेट साफ नही हो पाता।

कब्ज दूर करने के उपाय

जिस कारण से कब्ज हो उसे हटाना प्राय ताजे या साधारण जल मे एक नींबू व एक दो चम्मच मधु पानी मे पीना ज्यादा सर्दी हो तो निवाये में ले। चाहे किसी भी मक्खी का हो (बडी–छोटी या पालतू) मधु ना हो तो थोडा सा गुड मिला ले या सिर्फ नींबू साथ जल ही ले। खिलाडी और शारीरिक श्रम करने वालो के सिवाये भारी भोजन की आवश्यकता नहीं है। मोटा आटा प्रयोग में लाये। जहा सम्भव हो लकडी हो आच पर रोटी बनाए। वैज्ञानिक तरीके से खाना खाया करे। एक ग्रास रोटी का खूब चबा–चबाकर खाने के बीच में सब्जी सलाद दाल दही छाछ आदि खाये–पीये।

आवश्यकतानुसार बीच मे पानी पी लेना चाहिए। इससें भोजन के तुरन्त बाद प्यास नहीं लगेगी। विशेष रूखा भोजन हो तब या सूखी तरकारी हो तब या जहा पानी कम मिलने की सम्भावना हो वहा पर जैसा समय और स्थिति हो करे। अधिकतर वैद्य–डाक्टर लिखते और कहते देखे गए है कि भोजन से आधा घण्टा पहले या घण्टा बाद पानी पीना चाहिए यह ठीक है लेकिन मेरा अनुभव रहा है कि छाछ दही पानी आदि थोडा–थोडा बीच मे और प्यास लगने पर तुरन्त पानी पीना चाहिए चाहे भोजन किए हुए कितना थोडा समय क्यो न हुआ हो हा इतना पीये जितने से प्यास बुझ सके। श्रमिक किसान देशरक्षक सैनिक आदि जो भी शरीर से कठिन काम लेते है इनके लिए डाक्टरी नियमो से ज्यादा दैनिक व्यवहारिक अनुभव काम करता है।

जहा सम्भव हो जल्दी लाभ के लिए छोटे–छोटे उपवास करे तथा एनिमा का प्रयोग करे। व्रत मे नींबू रस मिला जल या मौसमी सतरा आदि रस आहार पर या तरकारी का सूप सेवन करके ३ से ५ दिन का उपवास किया जा सकता है। एनीमा क किलो डेढ किलो जल मे (निवाये मे) आधा नीबू रस छानकर मिला ले। सिर्फ जल व एक चम्मच साधारण नमक मिलाकर भी लिया जा सकता है। शौच होने के बाद ठण्डे जल का एनिमा लेने से आतो का बल शीघ्र बढता है। कुछ ही दिन बाद नीबू की १० या १२ बूद दही जल मे मिलाने से या सादे पानी से ही काम चल जाता है। जितने दिन का उपवास हो उतने ही दिन बाद पूर्ण भोजन कर आये। जैसे पहले अर्ध तरह पतली लस्सी गुड की भुना दलिया घीया या सूजी की खीर फिर सूखा फुल्का ले।

एनीमा भी कब्ज ठीक होने पर तीसरे दिन फिर ७ दिन मे दो बार फिर बन्द कर दे। सिवाय पानी के बिना भूख कभी कुछ न खाये। काम भी करना पडे तो फल तरकारी छाछ फलो का रस दूध आदि सुपाच्य पेय ही ले। जीवन मे जब तक कडी भूख लगती रहे व्रत नहीं रखना चाहिए। भारत में लोग धर्म और पुण्य के नाम पर देखा–देखी छोटे–छोटे बच्चो को और गर्भवती माताओ को भी भूखा रखते है। यह इनके साथ अन्याय व अनैतिकता हैं। साय का भोजन सोने से डेढ या दो घण्टे पहले खा लेना चाहिए दूध आदि भी सोने से घण्टा आधा पहले ही ले लेना चाहिए।

आसनो के व्यायाम करे। १५–२० दिन १०–१० मिनट के लिए पेट पर चार तह का ठण्डे पानी मे भिगोकर थोडा इसका पानी निकाल कर कपडा रख लिया करे।

पेट ठीक रखना हो तो भारी भोजन लगभग सभी गर्म मसाले और नशे तुरन्त त्यग दो तथा मानसिक तनाव को भी अभ्यास से कम करे और पूरी नीद लेनी चाहिए।

मीठे की जगह खाड शुद्ध गुड शक्कर सीरा खजूर छुआरा मुनक्का अजीर व मधु आदि जो मिले उसका प्रयोग करना चाहिए। जिनके दात ठीक है भोजन के बाद सौफ चबा लिया करे और जिनके दात नही हैं सौफ को मामूली भूनकर रकडकर रोटी मे पकाकर खा ले।

छिलके की दाल पकाते समय चौलाई बथुआ पालक आदि हरी पत्तेदार तरकारी डालकर पकाए। प्याज का सेवन करने वाले प्याज डाल ले। जिनकी आत कण्डम या बहुत कमजोर है उन्हे घीया की खीर भुना दलिया सूजी की खीर तथा तिगुनी दाल और एक भाग चावल की पतली खिचडी सेवन करे। हमेशा प्रात साय को भूख से थोडा कम ही खाना चाहिए। दोपहर को भरपेट खाए।

हानिरहित साधारण औषधिया

इसबगोल की भूसी साय गर्म दूध से ले मुरब्बा आवला प्रात खाली पेट या सूखे आवले का मोटा चूर्ण एक चम्मच भोजन के बाद पानी से ले। १० १५ मुनक्का को धोकर जल मे साय को भिगो दे। प्रात चबा–चबाकर खाये। यह पानी भी पी ले या साय को दूध मे डालकर भी सेवन की जा सकती है सर्दी मे गाजरो को चासनी या गुड की शर्बत मे पकाकर सेवन करे ऊपर से दूध पी ले।

विश्व को ईश्वर ने दी है चेतावनी !

विनाशकारी भूकम्प का कारण जीव हत्या !

– बी० वेदप्रकाश

२६ जनवरी २००१ यह दिवस भारत मे विनाशकारी दिन सिद्ध हुआ। लगभग सारे विश्व मे भूकम्प ने हलचल मचा दी जिसके फलस्वरूप हजारो लोगो की मृत्यु हुई और अरबो रुपयो की वित्तीय हानि। यह परमात्मा की विश्व को चेतावनी है ऐसा हमारा मानना है क्योकि –

यजुर्वेद के प्रथम ही मन्त्र मे परमात्मा की आज्ञा है कि –

अघ्न्या यजमानस्य पशूनपाहि

अर्थात हे मनुष्य ! तू इन पशुओ को कभी मत मार और यजमान अर्थात सब के सुख देने वाले मनुष्यो के सम्बन्धी पशुओ की रक्षा कर जिनसे तेरी भी पूरी रक्षा होवे।

वेदो मे पृथ्वी गौ का पर्याय है आत्मानुभूति पर आधारित मेरा विश्वास है केवल भूकम्प ही नही महामारी अकाल अतिवृष्टी बाढ अनावृष्टि आदि प्राकृतिक प्रकोप का एक कारण गोवश हत्या तथा पशुधन सहार भी है।

वैज्ञानिको के अनुसार पृथ्वी पर तीन प्रकार की तरगे चलती रहती है – १ प्राथामिक तरगे २ द्वितीय तरगे और ३ तलीय तरगे। प्राथमिक तरगे बहुत तेज चलती है और द्वितीय स्तर की तरगे धीमी ये दोनो ही तरगे जीवो की हत्याओ के समय उत्पन्न दारुण वेदना (आह) से निसृत होती है। लगातार प्राणियो का वध होने से इस प्रकार की तरगे उत्पन्न और सकलित (डेन्सीफाई) होती रहती है और जब इन तरगों की ऊर्जा शक्ति विस्फोटक स्थिति तक बढ जाती है तो पृथ्वी मे कम्पन होता है जिससे भूकम्प उत्पन्न होता है। जब बडे पैमाने पर जीवो की हत्याए की जाती है चाहे मनुष्य की हो या पशु पक्षियो की उनसें जो वेदना उत्पन्न होती है वही ई०पी०तरगे होती है एक कत्लखाने से जो ई०पी०डब्लू निकलती है उनकी ऊर्जा १०४० मेगावाट से अधिक है ऐसा विद्वतजनो का मानना है और इन तरगो मे इतनी जबरदस्त शक्ति होती है कि पृथ्वी तक काप उठती है जिससे भूकम्प आता है।

जीव हत्या का भूकम्प से परस्पर सम्बन्ध ठीक वैसा ही है जैसा की भोजन की अधिकता का अजीर्ण और अपच से है। यहा पर तर्क यह है कि जहा हत्याए हो रही है भूकम्प भी वही पर आए यह आवश्यक नहीं। भूकम्प उन तरगो के प्रभाव से विश्व मे कहीं भी आ सकता है।

विश्व के कई वैज्ञानिक इन तथ्यो से सहमत है इसका वैज्ञानिक यह आधार है कि –

१ भूकम्पीय प्रकाश का अवलोकन २ भूगर्भीय जल मे रडान का बढ जाना ३ ध्वनि की इनाइसोट्रोपी (असमानता) का बढ जाना और चटटानो पर दबाव की अभिवृद्धी ४ विषैली गेसो (फास्जीन आदि) का उत्सर्जन।

अर्थात भूकम्प आने से पूर्व जमीन के भूमिगत पानी मे रेडान का गाढापन (कन्सट्रेशन) दस गुणा हो जाता है इस तथ्य की पुष्टि विश्व के सर्वाधिक भूकम्पीय देशो चीन व जापान के वैज्ञानिक कर चुके है। भूमि से रेडान तभी उत्सर्जित होती है जब चटटानो मे दरार पडे और दरार तब पडती है जब अकाउस्टिक एनाइसोट्रोपी मे अभिवृद्धि के कारण शिलाओ पर अत्याधिक दबाव पड जाता है। यहा ध्यान देने याग्य तथ्य यह है कि ई०पी० तरग जेसे–जस बढती जाती है वसे–वेरा अकाउस्टिक ए • नोपी म भ्रिवृ नी ती है नन है कि ई०पी० तरगे ही मुख्य रूप से भूकम्प का कारण है जो प्राणियो के कत्ल से उत्पन्न होती है। यहा पर भूगर्भीय परीक्षण के आधार पर सिद्ध किया गया है कि चूकि ई०पी० वेव्ज पृथ्वी पर प्राथमिक और द्वितीय तरगो के रूप मे हर समय बहती रहती है इसलिए इन तरगो की ऊर्जा सकलित होकर धरती की अलग अलग परतो मे अवशोषित होती है। यदि पृथ्वी परतो का ऊर्जा अवशोषण प्रतिशत मात्र १० ही मानें तब भी यह बहुत अधिक होती है। इसी अवशोषण के परिणाम स्वरूप ई०पी०वेव्ज के उर्ध्वगामी दबाव से अकाउस्टिक एनाइसोट्रोपी में अभिवृद्धि होती जाती है और भूगर्भीय शिलाओं पर दबाव बढता जाता है। यह इस हद तक बढ जाता है कि पृथ्वी परतों द्वारा अवशोषित ई०पी० वेव्ज की ऊर्जा फास्जीन आदि अन्य गैसों सहित भयकर विस्फोट के साथ पृथ्वी से बाहर निकलती है। इससे पृथ्वी पर जो कम्पन उत्पन्न होता है वही भूकम्प कहलाता है।

ऐसा नहीं है कि – सभी भूकम्प ई०पी० तरगो से आते हो बल्कि भूमिगत आणविक प्रस्फुटन ज्वालामुखी प्रक्रिया बडे बडे जल सग्रह का निर्माण एव भूगर्भ से लगातार डीजल आदि लुब्रीकेटस की निकासी आदि भी कई अन्य ऐसे कारण हैं जिनसे पृथ्वी पर भूकम्प आते है।

लेकिन सत्यता यह है कि पृथ्वी पर आने वाले भूकम्पो में से अधिकाश भूकम्प ई०पी० बेव्ज से ही आते है जो प्राणियो के कत्ल से उत्पन्न दारुण वेदना से निरुसृत होती है।

इस सत्य का जानकर क्या हम कोई शिक्षा लेगे ?

– आरती १० नया सूबेदार लेआउट रोड नागपुर (विदर्भ) भारत

यज्ञ, विज्ञान एवं पर्यावरण

यज्ञ भले ही वैदिक धर्मी आर्यों का धार्मिक कर्मकाण्ड है लेकिन पर्यावरण शुद्धि एव सतुलन मे इसकी अहम भूमिका है। केवल हमारा ही नही बल्कि वैज्ञानिको का भी यही अभिमत है। उनमे से कुछ वैज्ञानिको के सक्षिप्त विचार हम यहा दे रहे है।

- **चेचक के टीके के आविष्कारक डॉ० हैफकिन (फ्रास) का कथन है यज्ञ हवन मे घी जलाने से रोग के कीटाणु मर जाते है।**
- **फ्रास के ही दूसरे वैज्ञानिक प्रोफेसर टिलर्बर कहते हैं यज्ञ हवन मे जलती हुई शक्कर मे वायु शुद्ध करने की बहुत बडी शक्ति है इससे टी० बी० चेचक हैजा आदि बीमारिया तुरन्त नष्ट हो जानी है।**
- **अग्रेजी शासन काल मे मद्रास के सेनेटरी कमिश्नर डॉ० कर्नलकिग आई०एम०एस० ने कहा था घी और चावल मे केसर मिलाकर यज्ञ हवन मे अग्नि में जलाने से (प्लेग व केसर) से बचा जा सकता है।**

यज्ञ अथवा अग्निहोत्र अब केवल धार्मिक कर्मकाण्ड तक ही सीमित नही रह गया है बल्कि यह वैज्ञानिक अनुसधान का विषय बन गया है। कैलफोर्निया मे अग्निहोत्र यूनिवर्सिटी मे यज्ञ पर अनुसधान कार्य हुए हैं। परीक्षणो से यह पाया गया है कि वृष्टि जल एव वायु की शुद्धि पर्यावरण सतुलन एव रोग निवारण मे यज्ञ को अहम भूमिका है।

यज्ञ हवन का प्रत्यक्ष प्रभाव सन १९८४ के भोपाल गैस काण्ड मे देखा गया था। जहरीली गैस मिथाइल आइसो साइनेट के रिसाव का अनुभव होने पर अपने घरो मे यज्ञ–हवन करने वाले केवल दो परिवार उस जहरीली गैस के दुष्प्रभाव से बच गये थ। जहरीली गैस के दुष्प्रभाव से लोगो के प्राण की रक्षा करने वाला यज्ञ निश्चत रूप से पर्यावरण शुद्धि का कारगर उपाय सिद्ध हुआ है।

यही कारण है अब विदेशो मे सार्वजनिक स्थानो एव वाहनो पर एक स्टिकर चिपका रहता है जिस पर यह वाक्य अकित रहता है अर्थात स्वस्थ पर्यावरण के लिए अग्निहोत्र (यज्ञ हवन) कर। भारत मे भी अब बडे–बडे महानगरो मे इस प्रकार के स्टिकर चिपकाने प्रारम्भ हो गये है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वैदिक धर्म का धार्मिक कर्मकाण्ड-यज्ञ अथवा अग्निहोत्र एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है और रोग निवारण एव पर्यावरण शुद्धि एव सतुलन मे इसकी अहम भूमिका है। अत पर्यावरण प्रदूषण की जटिल समस्या के समाधान के लिए यज्ञ हवन का सर्वत्र प्रचार प्रसार होना चाहिए। इससे मानव ही नहीं बल्कि प्राणी मात्र लाभान्वित होगा।

(यह लेख आर्यसमाज जुरहरा (भरतपुर) राजस्थान द्वारा जनसेवा के प्रचारार्थ छपवाकर बाटा गया है जिसके नीचे लोगो से आर्यसमाज मन्दिर मे होने वाले दैनिक यज्ञ मे भाग लेने की प्रार्थना की गई है। आप भी इसका अनुसरण करे) – विमल वधावन

महर्षि दयानन्द गो सम्वर्धन दुग्ध केन्द्र गाजीपुर दिल्ली में

महर्षि जन्मोत्सव

समय प्रात ६ बजे से दोपहर १२ ३० तक

अध्यक्षता श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक सभा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो की ओर से महर्षि दयानन्द गो सम्बर्द्धन दुग्ध केन्द्र गाजीपुर मे महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव फाल्गुन वदी दशमी तदनुसार १७ फरवरी २००१ शनिवार को समारोहपूर्वक मनाया जाएगा।

आर्यसमाज के सदस्यो आर्य शिक्षण सस्थाओ गुरुकुलो तथा अन्य आर्य सगठनो से प्रार्थना है कि सपरिवार अधिक से अधिक सख्या मे पधारकर समारोह को सफल बनाए।

— **श्री वेदव्रत शर्मा** सभा मन्त्री

आर्य अनाथालय को एक लाख रुपये का दान अभी हाल ही म पजाब नशनल बैंक दरियागज नई दिल्ली—२ ने सस्था द्वारा अनाथ बच्चो के लिए समुचित पालन पोषण व शिक्षण द्वारा आज का एक आदश नागरिक बनाने की प्रक्रिया से प्रसन्न हाकर एक लाख रुपये की राशि दान मे दी। ज्ञातव्य हा कि शासन स नाममात्र को सहायता प्राप्त इस सस्था का काय केवल दान से ही चलता हे।



चित्र मे बाए से दाए श्री विनोद पारासर श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री जी मत्री आय अनाथालय श्री हमीर सिह रघुवशी अधिष्ठाता श्री कृष्ण मिगलानी मुख्य प्रबन्धक पजाब नेशनल बैंक श्री अरोरा जी श्री योगेश जी तथा सस्था के बच्च

बिहार सभा की नई कार्यकारिणी

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रेवार्षिक निर्वाचन २१ १ २० १ को हाजीपुर वशाली म सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा नियुक्त निर्वाचन समिति सर्वश्री वेदव्रत शर्मा तथा डा० धर्मपाल की अध्यक्षता मे हुआ। इस अधिवेशन मे सभा के कार्यकर्त्ता प्रधान स्वामी सुमेधानन्द एव वैदिक लाईट के सम्पादक श्री विमल वधावन भी उपस्थित थ। अधिवेशन म प्रतिनिधियो न सर्वसम्मति से श्री भूपनारायण शास्त्री को प्रधान चुन तथ कार्यकारिणी अन्तरग एव सार्वदेशिक प्रतिनिधियो आदि को नियुक्त करने का अधिकार भी उन्हे ही दिया गया।

प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री
कार्यकारी प्रधान श्री रामेश्वर प्रसाद
उप प्रधान श्री महथ प्रसाद
– श्री दामोदर आर्य
– श्री सत्यव्रत वानप्रस्थ
– श्री त्रिलाक नाथ गुप्त
श्री हरिहर प्रसाद साहू

मन्त्री प्रो० श्यामनन्दन शास्त्री
वरिष्ठ उपमन्त्री – श्री विन्देश्वरी प्रसाद
उपमन्त्री श्री विष्णुकान्त शास्त्री
– श्री जगदीश नारायण
– भरत उपाध्याय
कोषाध्यक्ष – श्री ब्रजेन्द्र कुमार आय

९ से २८ फरवरी तक होने जा रही जनगणना मे

निम्न बातों का ध्यान रखें

प्यारे आय हिन्दू भाइयो यह ता आपको पता ही हे कि अपनी आर्य हिन्दू जाति छ सो वष मुस्लिमा की दास बनकर रही हे और उनके असहनीय अत्याचार अपमान ही सहे है और दो सौ वर्ष अग्रजो की दासता सहनी पडी है। बडे त्याग और बलिदान करने के पश्चात सन १९४७ म हिन्दुओ को अग्रेजी दास्ता मिली है। परन्तु हिन्दुओ का स्वराज्य हिन्दू राज्य धार्मिक हिन्दू राज्य आर्य राज्य अभी तक प्राप्त नही हुआ है। सम्पूर्ण आर्य हिन्दू जाति के दुर्भाग्य का अवसर है कि सविधान मे भारत का हिन्दुओ का देश नही माना गया है जबकि थोडे से मुस्लिमो ने अपना इस्लामी देश पाकिस्तान बना लिया। भारत को आर्य राष्ट्र हिन्दू देश घोषित न किया जाना भारतीय हिन्दुओ की विवेकहीनता का बताने वाला हे

यदि हिन्दू शीघ्र ही सावधान न हुए ता २५० वष पश्चात भारत से हिन्दुओ का नामोनिशान ही मिट जाएगा। भारत एक मुस्लिम दश बन जाएगा ओर हिन्दू उद्योगपतियो की सारी धन सम्पत्ति जायदाद क स्वामी मुस्लिम हागे।

भारत मे प्रत्यक दस वर्ष पश्चात जनगणना हाती ह। न १९८१ मे जो गणना हुई फि १९ म जनगणना हुई हे स १ स ९१ तक मुस्लिम भारत मे नेशत बढ ए ओर इसी अवधि मे हे क ल २२७ प्रतिशत बढे हैं।

इस हिसाब स सन २२५१ की जनगणना म मुस्लिम भारत मे १५० अरब ८३ कराड के लगभग हागे और हिन्दू १३६ अरब ६६ करोड होग। तब भारत मे मुस्लिम हिन्दुओ की तुलना म ग्यारह अरब अधिक होग।

धम मानवता को मरने दो या बचा लो अब भी समय शेष है आत्मरक्षा क। हिन्दुओ का भविष्य अधिकाधिक सकटम बन जा रहा है। इस बार की जनगणना म अपना धम वेदिक (हिन्द लिखा तथा भाषा सस्क (या ी) खव

जनगणना में ध्यान रखें

जनगणना अधिकारी द्वारा सम्पर्क किए जाने पर निम्न बातो का विशेष ध्यान रखे

१ **हमारा धर्म** **वेदिक धम (हिन्दू)**
२ **मातृभाषा** **सस्कृत (या हिन्दी)**

अक्सर देखने में आता है कि जनगणना अधिकारी हिन्दू परिवारों में स्वत ही धम खाने में हिन्दू आर मातृभापा क खाने में हिन्दी लिख देत ह। परन्तु हम ध्यान रखना चाहिए कि समस्त हिन्दू धम का वेदिक धम ह आर उसी प्रकार भाषा सस्कृत ह। यदि सस्कृत की रक्षा होगी तो हिन्दी की रक्षा स्वत हो जाएगी

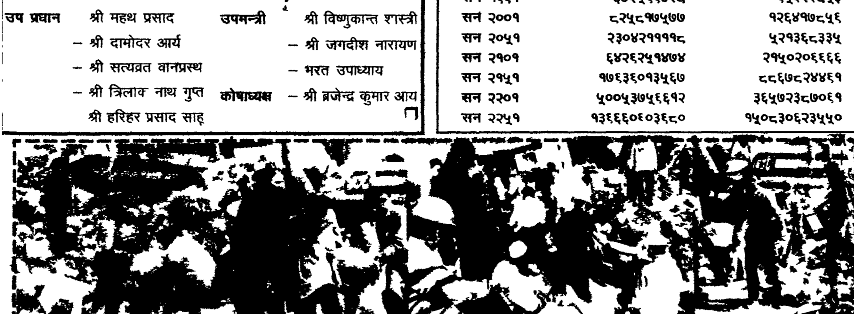
अत जनगणना अधिकारी स आग्रह किया जाए कि वे धम क स्थान प वेदिक धम (हिन्दू) तथा मातृभापा क स्थान पर सस्कृत (या हिन्दी) ही लिख

मन्त्री सभा

आंख खोलने वाले आंकडे

नीचे जनगणना का एक गणितीय अनुमान दिया जाता है जिसमे प्रति दस वर्ष में बढने वाली मुस्लिमो की सख्या ३२ ७६ प्रतिशत बढने ओर हिन्दु सख्या २२ ७८ प्रतिशत बढने के आकडे दिए गए हैं

सन प्रति दस वर्ष मे वृद्धि	हिन्दू जनसख्या वृद्धि (२२ ७८ प्रतिशत)	मुस्लिम जनसख्या वृद्धि (३२ ७६ प्रतिशत)
सन १९८१	५४७७६४२६६	७१७२८०६३
सन १९९१	६७२५६६४२८	९५२२२८५३
सन २००१	८२५८१७५७७	१२६४१७८५६
सन २०५१	२३०४२१११८	५२१३६८३३५
सन २१०१	६४२६२५१४७४	२१५०२०६६६
सन २१५१	१७६३६०१३५६७	८८६७८२४४६१
सन २२०१	५००५३७५६६१२	३६५७२३८७०६१
सन २२५१	१३६६६०६०३६८०	१५०८३०६२३५५०



यह सभी चित्र आर्य कार्यकर्त्ताओं द्वारा मलवे से लाशे निकालने तथा उनके सस्कार के लिए की गई कार्यवाही को दिखा रहे है। इस कार्य में बहुत से मुसलमान भाइयों की लाशों को निकालकर उनके परिवारों को सौपने का कार्य भी आर्य कार्यकर्त्ताओ द्वारा सम्पन्न किया गया।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न. डी(सी) 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 11-2-2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 93/2000
R N HNo 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2000 in NDPSo on 8-9/2/2001

ओ३म्

☎ : 3274771
: 3260985

प्रतिष्ठा में -

पीड़ितों की सेवा

हम सबका राष्ट्रीय कर्त्तव्य

गुजरात में विनाशकारी भूकम्प

भुज, कच्छ, गांधीधाम, अहमदाबाद क्षेत्र सर्वाधिक प्रभावित

पीड़ितों की सहायतार्थ अपील

तन-मन-धन से सहयोग दीजिए

सभा को दिया गया दान आयकर से मुक्त है

चैक/मनीआर्डर/ड्रॉफ्ट एवं सहायता सामग्री निम्न पते पर भेजें :-

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

3/5, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली - 2

फोन : 3274771, 3260985

निवेदक

स्वामी ओमानन्द सरस्वती, प्रधान   **वेदव्रत शर्मा,** मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

3/5, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली - 2

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रकाशन लि० द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली-२ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२१६) से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली-२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१ ३२६०९८५)।
सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री   ई मेल नम्बर vedicgod@vsnl.net.in तथा वेबसाईट - http://www.whereisgod.com

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र



वर्ष ३६ अक ४१ | १८ फरवरी से २४ फरवरी २००१ तक | दयानन्दाब्द १७६ | सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०१ | सम्वत २०५७ | फा० कृ० ११

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

आर्यसमाज द्वारा भूकम्प राहत कार्यों को विश्वव्यापी मान्यता

विशाल अनाथालय तथा विधवाश्रम योजनाओं पर कार्य प्रारम्भ

कानून मन्त्री श्री अरुण जेटली द्वारा आर्यसमाज के कार्यों की सराहना

आर्यसमाज एक सक्षम संस्था है तथा यह पवित्र संस्था अत्यन्त सुव्यवस्थित तरीके से परोपकारी कार्यों को सम्पन्न कर सकती है।

यह महान उदगार केन्द्रीय कानून मन्त्री श्री अरुण जेटली ने गान्धीधाम मे काण्डला पोर्ट ट्रस्ट तथा सिन्धु पुनर्वास कारपोरेशन के उच्चाधिकारियो की एक विशेष बैठक मे व्यक्त किए जिसमे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व वैदिक लाइट के सम्पादक श्री विमल वधावन एडवोकेट तथा गुजरात में राहत कार्यों को सम्पन्न करने वाले आर्य नेताओ सर्व श्री पुरुषोत्तम भाई पटेल श्री वाचोनिधि आर्य आचार्य आर्य नरेश तथा केप्टन सूद आदि को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया था।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रेरणा पर गान्धीधाम आर्यसमाज द्वारा एक विशाल अनाथालय तथा विधवा आश्रम की भव्य योजना बनाई जा रही है जिसके लिए श्री अरुण जेटली ने जहाजरानी मन्त्री होने के नाते अपना पूर्ण सहयोग एव प्रोत्साहन देने का आश्वासन दिया है।

श्री अरुण जेटली ने इस बैठक मे कहा कि आर्यसमाज का अपना एक विशाल एव महान इतिहास है ऐसे परोपकारी कार्यों में आर्यसमाज सदैव आगे बढ़कर कार्य करता रहा है अत आर्यसमाज के इन कार्यों मे हर सम्भव सहयोग देना हमारा कर्त्तव्य भी है।

केन्द्रीय मन्त्री ने कहा कि आर्यसमाज ने मानवीय एव परोपकारी कार्यों द्वारा सदैव राष्ट्रवादी अवधारणा को क्रियान्वित करके दिखाया है।

इस महत्त्वपूर्ण बैठक को सम्बोधित करते हुए आर्य नेता श्री विमल वधावन ने कहा कि आर्यसमाज का विशाल एव कर्त्तव्यनिष्ठ सगठन है जिसकी लगभग आठ हजार शाखाए समूचे विश्व मे फैली हुई है इसी विशाल सगठन और इसके अनुशासन के द्वारा ही सदैव बडे से बडा कार्य भी बिना किसी बाधा एव परेशानी के सम्पन्न कर लिया जाता है। उन्होने श्री अरुण जेटली तथा बैठक मे उपस्थित अन्य सभी सरकारी अधिकारियो के समक्ष सकल्प व्यक्त किया कि इस महान सगठन की अपनी शक्ति ही इस उपकार कार्य के लिए एक सूत्र मे बध कर कार्य करने मे सक्षम होगी।

श्री वधावन ने समूचे आर्यजगत को आह्वान किया है कि तन मन धन से शीघ्रातिशीघ्र इस परोपकारी कार्य को सम्पन्न करने मे यथायोग्य सहयोग करें।

उन्होने कहा कि नि स्वार्थी व्यक्तियो और व्यक्तियो के समूह ईश्वरीय ताकत के निकट होते है अत उस बल के माध्यम से ही महान कार्य सम्पन्न होते है।

इससे पूर्व दिल्ली मे सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा श्री विमल वधावन एडवोकेट श्री रामफल बसल वरिष्ठ अधिवक्ता के साथ श्री अरुण जेटली से मिलकर उनके साथ पूरी योजना के क्रियान्वयन पर विचार विमर्श कर चुके थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशानुसार गान्धीधाम और भुज के निकट क्षेत्रो मे आर्यसमाज द्वारा भूकम्प पीडितो के लिए राहत कार्य पूर्ण श्रद्धा के साथ बडे सुन्दर समन्वय का प्रदर्शन करते हुए चलाए जा रहे हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी भी ऋषि जन्म स्थल टकारा का दौरा करके आए है। सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान स्वामी सुमेधानन्द कै० देवरत्न तथा उपमन्त्री श्री जगदीश आर्य अलग अलग दलो के साथ राहत कार्यों का निरीक्षण एव सहयोग करने के लिए दौरा कर चुके हैं। वैदिक लाइट के सम्पादक श्री विमल वधावन ने भी भुज गान्धीधाम अजार भचाऊ के साथ साथ टकारा के विभिन्न स्थलो को भी देखा। उनके साथ श्री पुरुषोत्तम भाई पटेल प्रधान तथा श्री वाचोनिधि आर्य मन्त्री आर्यसमाज गान्धीधाम तथा श्री राजेन्द्र विद्यालकार मन्त्री सार्वदेशिक आर्य वीर दल भी थे।

[illegible] आर्यसमाज के प्रधान श्री वी०एच० पटेल ने बताया कि [illegible] लगातार दोपहर और रात्रि का लगर [illegible] आर्यसमाज द्वारा चलाया जा रहा [illegible] हजारो की सख्या मे स्थानीय जनता [illegible] ग्रहण [illegible] मनुभाई की पत्नी रसीला [illegible] पुत्र दीप कुमार (६) की दुखद मृत्यु भूकम्प के बाद उनका मकान [illegible] जबकि एक अन्य पुत्री [illegible] (१२) [illegible] लगभग घण्टे बाद बहाणी की हालत मे निकाला गया जो [illegible] है। भूकम्प वाले दिन भुज आर्यसमाज का तीन दिवसीय उत्सव प्रारम्भ हो रहा था तथा नौ बजे ध्वजारोहण का समय निर्धारित था। मनुभाई का निवास भुज आर्य समाज मन्दिर के सामने वाली बिल्डिगो मे था। मनु भाई प्रात काल से ही परिवार सहित उत्सव मे सेवा कार्य सम्पन्न कर रहे थे। उनकी पत्नी कुछ समय पूर्व ही अपने बच्चो को लेकर अपने निवास पर गई थी जिससे उनके कपडे आदि बदल कर ध्वजारोहण के समय उत्सव मे शामिल हो सके।

श्री विमल वधावन ने मनुभाई को सहृदय सान्त्वना व्यक्त की।

आर्यसमाज भुज के मन्त्री डा महेश वेलानी तथा उनके भाई डा० योगेश वेलानी का लाखो रुपए से निर्मित एक सुव्यवस्थित हस्पताल भी अस्त व्यस्त हो चुका है।

आर्यसमाज भुज मे लगभग दो सौ आयजन आज भी शरणागत नजर आए। पूर्व मेयर श्रीमती प्रभा बेन भी अन्य आर्य महिलाओ के साथ लगर आदि कार्यों की व्यवस्था सभाल रही है।

भुज कच्छ का एक प्रमुख शहर है जहा पर भूकम्प के बाद स्कूल अस्पताल थियेटर टैलीफोन एक्सचेन्ज डाक खाने बैंक तथा अन्य बिल्डिगे आदि पूरी तरह से ध्वस्त हो चुकी है। व्यापार ठप हो चुका है और जनजीवन रुका हुआ प्रतीत होता है।

शेष पृष्ठ २ पर

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मुम्बई के लिए

रेल किराये में ५० प्रतिशत की छूट

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा द्वारा रेल राज्य मन्त्री श्री दिग्विजय सिह को लिखे पत्र के फलस्वरूप रेलवे बोर्ड के डाइरेक्टर श्रीमती मणि आनन्द ने अपने पत्र सख्या **टी सी २/२०६६/९८/६** दिनाक १४ फरवरी २००१ द्वारा मुम्बई कलकत्ता नई दिल्ली गोरखपुर गुवाहाटी चेन्नई सिकन्दराबाद भुवनेश्वर हाजीपुर अलाहाबाद जयपुर बगलोर तथा जबलपुर कार्यालय को सूचित किया है कि **२३ से २६ मार्च २००१** की तिथियों में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मुम्बई मे भाग लेने वाले **यात्री मेल तथा एक्सप्रेस गाड़ियों में द्वितीय श्रेणी साधारण और स्लीपर** के किराये मे ५० **प्रतिशत छूट** के अधिकारी होगे। यह छूट **केवल ३०० कि०मी० से अधिक** की यात्रा करने वालो को ही उपलब्ध होगी। इस छूट का लाभ **किन्ही ३० दिनो** मे उठाया जा सकेगा जिसमें महासम्मेलन की तिथिया (२३ से २६ मार्च २००१) शामिल हो।

यह छूट प्राप्त करने के लिए **आर्य यात्री तत्काल सार्वदेशिक सभा कार्यालय** (फोन न० ३२७४७७१ ३२६०९८५) **सार्वदेशिक प्रेस** (फोन न० ३२७०५०७ ३२७४२१६) तथा **श्री विमल वधावन (नि० ७२२४०६०)** पर अपने **नाम आयु स्टेशन** जहा से यात्रा आरम्भ करनी है का विवरण **अपने पते सहित** लिखवा दें।

यह सूचना मिलने पर तत्काल आर्य यात्री को सभा मन्त्री **श्री वेदव्रत शर्मा** द्वारा **हस्ताक्षरित** एक **प्रमाण-पत्र** जारी कर दिया जाएगा। यह **प्रमाण-पत्र** प्राप्त होने पर आर्य यात्री अपने निर्धारित रेलवे स्टेशन पर इसे प्रस्तुत करके **५० प्रतिशत छूट** वाले **रेलवे टिकट** प्राप्त कर पाएगे।

दुबई की कम्पनी द्वारा विशेष सहयोग

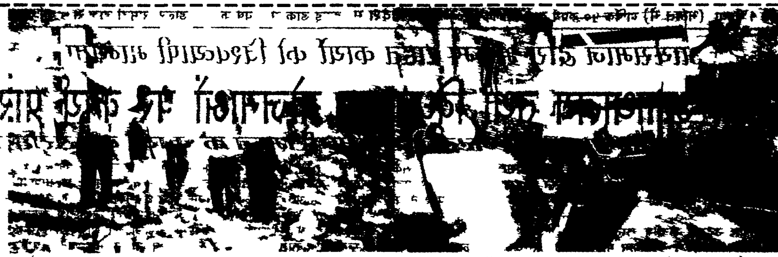
दुबई से ट्रान्सवर्ल्ड शिपिंग कम्पनी जो एक अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री जहाज चलाने वाली कम्पनी है, के द्वारा २० कन्टेनर भरकर तम्बू, टैन्ट तथा कम्बल इत्यादि आर्यसमाज गान्धी धाम के नाम पर बिल्टी बना कर भेजे गये हैं। यह सामग्री लगभग ५४ ट्रकों में भरी जाने वाली सामग्री के बराबर है। इस कार्य में स्थानीय प्रबन्धक कमान्डर सी०एस० [illegible] का विशेष प्रयास शामिल है। यह सहयोग अपने आप में आर्यसमाज के परोपकारी कार्यों की अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता का प्रतीक है।

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

सह सम्पादक
विमल वधावन एडवोकेट



१ आर्यसमाज द्वारा एकत्रित राहत सामग्री का एक ट्रक पंजाब केसरी कायालय से स्थानीय सम्पादक श्री अश्विनी कुमार द्वारा रवाना किया गया इस अवसर पर उपस्थित आर्य समाज के श्री वेदव्रत शर्मा श्री विमल वधावन डॉ० धर्मपाल श्री विनय श्री प्रवीन महावीर यत्रा, श्री अजुन देव, श्री चन्द्रमोहन आय श्री मुकेश रानी तथा अन्य आर्यजन २. भुज आर्यसमाज मन्दिर के सामने गिरी बिल्डिंग।



3 गान्धीधाम आर्यसमाज के प्रधान श्री पुरुषात्तम भाइ पटेल मन्त्री श्री वाचानिधि आय भुज आर्यसमाज के प्रधान श्री वी०एच० पटेल तथा कोषाध्यक्ष श्री मनु भाइ जिरा मलबे पर खड़े हैं यह कभी आठ मन्जिला इमारत थी ४ भुज आर्यसमाज के मन्त्री श्री महेश ठेलानी तथा श्री योगेश वेलानी का निजी विशाल हस्पताल भी क्षति ग्रस्त हुआ है जिसमे लाखों रुपये मूल्य की आधुनिक मशीने भी लगी थी

प्रथम पृष्ठ का शेष भाग

विशाल अनाथालय तथा विधवाश्रम योजनाओं पर कार्य प्रारम्भ

भुज स ... गे ... भाग पूरा नष्ट ... अजार में भी विशाल भूकम्प ... देखने का मिली जहा ... बच्चे ... अध्याप ... मृत ... मलबे में ...

... पूर्ण ... व्यक्त करते ... दिया है श्री ... भूकम्प ... समूचे देश से ही नहीं विदेश से भी ... कार्य मे अथक प्रयास कर रहे हैं ... सहयोग ... आर्यसमाज ... गान्धीधाम केन्द्र ... तथा ...

आर्यसमाज ... केन्द्र का ... एक अधिकारिक केन्द्र के रूप मे मान्यता दी गई है

पोरबन्दर से आर्य वीर दल का एक जत्था केनन भाई आदि के साथ एक गैस कटर लेकर तत्काल राहत के लिए इन क्षेत्रो मे पहुच गया था इस कटर की मदद से मलबे को काट काट कर सडती बदबूदार लाशों को निकालने का साहसिक कार्य भी आर्यवीर दल के इन जवानो द्वारा ही किया गया है आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता अन्तिम संस्कार का कार्य भी करते रहे है।

धौलका रोड लाइन्स द्वारा राजकोट से भी राहत सामग्री भेजी गई

मुम्बई से कै० देवरत्न आर्य श्री ओमकार नाथ तथा श्री गिनोरिया जी आदि के द्वारा भी बड़ा महान सहयोग गुजरात मे भेजा गया। वातानुकलित एक्सरे वैन आवश्यकता अनुसार दवाइया पीने के लिए मिनरल वाटर कम्बल टेन्ट तथा वस्त्रो आदि का विशेष सहयोग मुम्बई से पहुचा है।

गान्धीधाम मे झण्डा चौक पार्क मे कैम्प स्थापित किए गए है तथा प्रतिदिन यज्ञ सम्पन्न किया जाता है प्रान्तीय स्तर पर पूर्व सांसद श्री के०डी० जैसवानी का आर्य समाज की गतिविधिया को भरपूर सहयोग एवं समर्थन मिल रहा है।





ऋषि जन्मस्थल टकारा की ऐतिहासिक घण्टाघर जिसकी चार बुर्जियों मे ... एक बुर्जी टूट ...

... अजमेर ... आदि ... स्थानो से ... आर्यसमाज ... सरकारी डाक्टरो ... आर्यसमाज के केन्द्रो द्वारा ...

शेष भाग पृष्ठ ११ पर

अतिथि सम्पादकीय

आर्यसमाज का भविष्य उज्ज्वल है।



गुजरात मे एभू म्प ग्रस्त क्षेत्रो मे ायताa आर्यसमाज क ार्यों के अवलोकन हेतु विभिन्न गावो मे गया। भुज एव गान्धीधाम क्षेत्रो मे आर्यसमाज गान्धीधाम के सक्रिय कार्यकर्त्ता एव मन्त्री श्री वाचोनिधि एव प्रधान श्री पुरुषोत्तम जी पटेल व अन्य सदस्यो के माध्यम से जो सहायता कार्य भूकम्प ग्रसित क्षेत्रो मे हुआ है वह आर्यसमाज के इतिहास की एक प्रमुख घटना हैं व स्वर्णाक्षरो मे लिखने योग्य है। आर्यसमाज गान्धीधाम के अधिकारियो के साथ मैंने अनेक भूकम्प पीडित क्षेत्रो का दौरा किया और सहायता कार्यों का अवलोकन किया।

लगभग २५००० की आबादी वाला रतनाल गाव जो गान्धीधाम से ३५ किलोमीटर दूर है पूर्णतया नष्ट हो गया है। वहा मलवे के ढेर के अतिरिक्त कुछ भी देखने को नही मिला। अनेक गैर सरकारी सस्थाए वहा राहत कार्य मे लगी हुई है। इस गाव मे गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली के ब्रह्मचारियो ने जहा आयसमाज गान्धीधाम की ओर से दवाईया अनाज कम्बल आदि राहत सामग्री का वितरण किया वहा मलवे मे से शवो को निकालने का अद्वितीय कार्य भी किया। शवो का अग्नि सस्कार किया और उस पर कोई बोरी हवन सामग्री डाली ताकि पर्यावरण को कई हानि न पहुचे व बदबू आदि समाप्त हो जाए।

इसी प्रकार टप्पर दुधई वरसामेडी पसुडा सुखपर लुडवा भीमासर आधोई शिकारपुर जगी ललियाना बोध आदि गावो मे राहत सामग्री का वितरण किया गया।

आर्यसमाज गान्धीधाम ने अपने राहत कार्यो को चार भागो मे बाटा – मुद्रा विभाग गान्धीधाम विभाग अजार विभाग और भुज विभाग। सम्पूर्ण भारत वर्ष से प्राप्त सहायता सामग्री को इन विभागो मे उनकी आवश्यकतानुसार बाटा जाता रहा।

इसमे सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्र भचाऊ ओर अजार था। हम अजार क्षेत्र मे् गये जहा लगभग सभी भवन मिटटी के ढेर मे परिवर्तित हो चुके थे। पूरा सरकारी तन्त्र वहा मुस्तैदी से कार्यरत था। रियलान्स कम्पनी ने इस गाव से मलवे के ढेर हटाने का उत्तरदायित्व लिया। अनेक मशीने व ट्रक गाव से मलवा उठाने का कार्य कर रही थी। आर्यसमाज ने अजार मे अपना केन्द्र खोला हुआ था जिसमे आर्यसमाज अजार के सदस्य भी अपना सक्रिय योगदान कर रहे थे।

दिल्ली पानीपत पोरबन्दर धगन्धा आदि मे आर्यवीर दल के लगभग १०० आर्य वीर इन गावो मे शव ढूढने और उनका अन्तिम सस्कार करने मे लगे हुए थे। अनेक जीवित व्यक्तियो को बचाने का श्रेय भी उन्हे मिला। इसका नेतृत्व किया – श्री वीरेन्द्र श्री राजसिह श्री विनय आर्य श्री सुखवीर सिह श्री अजय आदि ने। आचार्य आर्य नरेश भी इनके साथ इस कार्य मे लगे रहे। अनेको प्रकार की सहायता सामग्री विशेषकर तम्बू, कम्बल अनाज दवाईया आदि वितरित की गई। आर्यवीर दल के नवयुवको ने जिस निर्भीकता एव उत्साह से यहा कार्य किया – आर्यसमाज के लिए यह गर्व की बात है।

हम वहा से ही अजार क्षेत्र के एक गाव सिनोग्रा मे गये। आर्यसमाज जोधपुर के आर्य जनो ने जो कार्य वहा किया उसको देखकर हम और भूकम्प पीडित नतमस्तक हुए बिना नहीं रह सके।

लगभग एक एकड भूमि में उन्होंने अपना कैम्प सिनोग्रा ग्राम म बनाया हुआ था। राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री अशोक गहलोत की पूज्या माता जी के नाम से स्थापित न्यास की ओर से सहायता सामग्री आयी। कैम्प के बीच मे उन्होने यज्ञशाला बनाई है जहा इस गाव के पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए यज्ञ होता रहता था। इस दल का नेतृत्व कर रहे है – श्री राजेन्द्र सिह सोलकी एव श्री राम,सिह आर्य। जोधपुर के आर्य जन इस गाव मे निम्न सामग्री लेकर आए है।

१ डाक्टर गनपत सिह एम०डी० व एक कम्पाउडर २ १०० टेन्ट खूटी और रस्सी सहित ३ १००० कम्बल ४ १००० चादर ५ १००० स्टील प्लेट ग्लास व २००० कटोरी ६ ४ जे०वी०सी० (मलवा साफ करने के लिए) ७ ४ डम्पर ८ १५००० मिनरल वाटर की बोतले

इन्होने १००० परिवारो मे १ कम्बल १ चादर १ थाली १ ग्लास और कटोरी के सेट करके वितरित किये। जे०व्ही०सी० व डमपर के माध्यम से भनेक शवो को निकाला। इस दल मे १५ से अधिक व्यक्ति काम कर रहे है। जिसमे डाक्टर एडवोकेट जैसे उच्च शिक्षित व्यक्ति शामिल है। साथ ही ३० आर्य वीर भी।

इसके पश्चात हम भुज क्षेत्र मे गये। वहा जो भूकम्प से तवाही हुई उसका वर्णन नही किया जा सकता। पूरा गाव मलवे के ढेर मे परिवर्तित हो गया है। लगभग १०० आर्य वीर इस क्षेत्र मे काम कर रहे थे। सैंकडा लाशो को मलवे से निकाल चुके थे व कई जीवित व्यक्ति भी। आर्यसमाज भुज के कार्यकर्ता रात दिन सहायता कार्य मे लगे हुए थ वहा वायु शुद्धि और मन शुद्धि हेतु सारे समय यज्ञ होता रहता है। लगभग ४००० व्यक्तियो की मध्याहन एव रात्रि को भोजन व्यवस्था चल रही हे जिसमे सब धर्मो ओर मजहब क लाग लाभ प्राप्त कर रहे हे। भुज आर्यसमाज के प्रधान डॉ० बी०एच० पटेल एव अन्य आर्य जन २४ घण्ट भुज आर्य समाज के प्राङ्गण मे अपनी सेवाए दे रहे हे। डा० योगेश वेलाणी ने एक नया उदाहरण प्रस्तुत किया। भूकम्प के पश्चात उन्होने अपनी दवाओं की दुकान को जन साधारण के लिए नि शुल्क खोल दिया। जिसे जो भी दवा चाहिए वहा से प्राप्त कर सकता था।

समस्त गुजरात क्षेत्र मे भारत की विभिन्न आर्यसमाजो और गैर आर्यसमाजी सस्थाओ द्वारा लगभग १०० ट्रक सामग्री प्राप्त हो चुकी है। मुम्बई से पाच टन प्लास्टर ऑफ पेरिस ४० कारटून विभिन्न दवाओ के लगभग ५००० कम्बल १५०० सामूहिक आवास के बडे टेन्ट ४०० कपडे के बॉक्स जो इग्लैण्ड से प्राप्त हुए वितरण के लिए भेजे गए। यह सामग्री आर्य विद्या मन्दिर मुम्बई के छात्रो व रामानन्द आर्य डी०ए०वी० कालेज के छात्रो तथा आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई की ओर से एकत्रित की गई थी। गुजरात भर की आर्य समाजो विशेषकर राजकोट पोरबन्दर जामनगर साबरिला सैजपुर – अहमदाबाद धागन्धा टकारा आदि स्थानो से कार्यकर्त्ता राहत सामग्री लेकर आये। ब्र० धर्मबन्धु के नेतृत्व मे अनाज कम्बल टेन्ट बाटे गए। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा लगातार जीवत सम्पर्क रखकर टेन्ट कम्बल खाद्य सामग्री हवन सामग्री भिजवाई गई।

प्रसन्नता की बात है कि अनेक गैर आर्यसमाजी सस्थाओ ने आर्यसमाज पर विश्वास और भरोसा कर उनके द्वारा एकत्रित राहत सामग्री को आर्यसमाजो मे ही वितरण के लिए भेजा।

आयसमाज पानीपत बग्लूर रानीबाग हैदराबाद व्यावर अजमेर पोरबन्दर धागन्धा आदि स्थानो स आर्यसमाज के स्वय सेवक राहत सामग्री लेकर आयसमाज गान्धीधाम पहुचे।

सेना के ब्रिगेडियर श्री मलिक की धर्मपत्नी यहा एक सप्ताह रहीं और राहत कार्यों मे जुटी रही इस सहायता कार्य मे देश के विभिन्न विशिष्ट नेता विद्वान व कार्यकर्त्ता यहा पहुच गये थे।

जिनमे मुख्य है स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती आचार्य आर्य नरेश श्री जगदीश जी आर्य (दिल्ली) ब्र० राजसिह जी ओमप्रकाश झवर श्री कल्याणदेव आर्य आचार्य ज्ञानेश्वर जी ब्र० धर्मबन्धु जी आदि। गुरुकुल गौतम नगर से २० ब्रह्मचारी झज्जर के ब्रह्मचारी – सार्वदेशिक आर्य वीर दल व अन्य प्रदेशो के लगभग १५० आर्य वीर पूरे भारत से पधारे।

देश विदेश से दूरभाष पर सहायता की पूछताछ कर तुरन्त सहायता भेजी गयी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा श्री विमल वधावन जी एव मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा जी सतत सम्पर्क मे रहे। प्रतिदिन गान्धीधाम कार्यकर्त्ताओ द्वारा सूचना एकत्र करके सार्वदेशिक हेतु सकलन तथा माग के अनुसार सामग्री का प्रबन्ध नियमित किया जाता रहा। दिल्ली से नि शुल्क ट्रको की व्यवस्था मे भण्डारी इन्टरस्टेट करियर को प्रेरित करने का श्रेय भी श्री विमल वधावान एव श्री वेदव्रत शर्मा जी को जाता '। मुम्बई से श्री ओकारनाथ जी आर्य व चेम्बूर आयसमाज के मन्त्री श्री चन्द्रभूषण गिरोत्रा भी सतत सम्पर्क कर राहत सामग्री को भेजते रहे।

दिनाक ७/२/२००१ को जन सेवा दल पानीपत ४ ट्रक राहत सामग्री लेकर आर्यसमाज गान्धीधाम पहुचा। आठ सदस्यो का यह दल श्री सुभाष गुगलानी श्री कैलाश ग्रोवर के नेतृत्व मे आटा दाल गुड भुने चने चावल कम्बल टेन्ट नई साडिया साबुन टूथ पेस्ट सब्जिया आदि वितरण के लिए लेकर आया। इन ट्रको मे लगभग ५ लाख रुपये का सामान था। इस दल को जब राहत कार्य के लिए कहा गया तो उन्होने कहा हमे तो सडी लाशो को निकाल कर दाह सस्कार का काम ही दीजिए।

आर्यसमाज गान्धीधाम को दिल्ली से लगभग १० टन हवन सामग्री प्राप्त हुई जिसे उन्होने सभी श्मशान भूमि पर भेज दिया इस आदेश के साथ कि प्रत्येक दाह सस्कार पर डाल दिया जाए और पर्यावरण को दूषित होने से बचाया जाय ताकि महामारी न फैल सके। इसमे एम०डी०एच० प्रमुख श्री महाशय धर्मपाल श्री जगदीश आर्य एव श्री प्रवीण बत्रा आदि का प्रमुख सहयोग रहा। कस्टम लेडीज एशोसिएशन की महिलाओ ने एक ट्रक सामान जिसमे प्लास्टिक की बाल्टी टेन्ट व जीवनोपयोगी समान आर्यसमाज गान्धीधाम को वितरण हेतु दिया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के ६ विद्यार्थी आर्यसमाज भवन मे ठहरे व राहत कार्यो मे भाग लिया। भौरुका रोड लाईन्स के मालिक श्री नरेश अग्रवाल ने एक ट्रक सामग्री एक लाख नकद भेजा और कहा मैं पाचलाख तक राहत सामग्री आपको भेजूगा। गान्धीधाम आर्यसमाज के पास लगभग १०० ट्रक राहत सामग्री सारे भारत वर्ष से पहुची।

इकॅनामिक ट्रान्सपोर्ट आर्गेनाईजेशन ने सम्पूर्ण भारत से बिना किराया लिए राहत सामग्री गान्धीधाम भेजी।

केप्टन दवरत्न आय न आर्य मेडिकल रिलीफ मिशन की वातानुकुलित एक्स रे वाहन का पूरे कच्छ म ५० एक्स र फिल्म के साथ भेजा जिसन गावो मे जाकर उन फैक्चर पीडित व्यक्तियो के एक्स रे निकाले जो अस्पताल तक नही जा सकते थे।

अजमेर से श्री दत्तात्रेय वाब्ले ने एक ट्रक माल व एक लाख रुपये भेजे। वैदिक विद्वान स्व० आचार्य भद्रसेन जी की स्मृति मे चल रही एक रुग्ण वाहिका अजमेर से अजार गाव पहुची और श्री सोमरत्न आर्य के नेतृत्व मे कार्य करती रही।

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई द्वारा किये जाने वाले राहत कार्यों से प्रभावित होकर आगरा निवासी आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्त्ता श्री उमेशचन्द्र जी गुप्त कोषाध्यक्ष आर्य उप प्रतिनिधि सभा जनपद आगरा ने विभिन्न आर्यसमाजो एव सेवा भावी सज्जनो से ५०००० रुपये एकत्र कर मुम्बई भेजे। जिसका उपयोग भी भूकम्प पीडितो के लिए किया जा रहा ह।

इन हृदय विदारक दृश्यो को जहा देखकर मन मे दु ख ओर शोक होता रहा वहा भारत वष की समस्त आयजनता ने जिस समर्पण एव साहस के साथ सामग्री भेजकर जो उत्साह दिखाया उससे मन बडा प्रफुल्लित हुआ। 'ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य हे' इसका सार्थक व व्यवहारिक रूप कच्छ मे देखकर यही विचार आया कि दयानन्द की आर्यसमाज का भविष्य बहुत ही उज्ज्वल हैं जिसके हम सब अनुयायी हैं।

आर्यसमाज के इन कार्यो को देखकर गुजरात सरकार न एक अध्यादेश जारी कर गान्धीधाम पुराना नगर एव गलपादर गाव को दत्तक गाव के रूप मे देकर उसकी आवश्यकता ओर पुनवास का दायित्व आर्यसमाज गान्धीधाम को सौप दिया।

आय जगत क लिए प्रसन्नता की वात ह कि भ रत सरकार ने इस क्षत्र क विकास के लिए जिन गेर सरकारी सस्थाओ के माध्यम से कायवाही करने का निणय किया उसमे आर्यसमाज गान्धीधाम का नाम सर्वोपरि था।

आर्यसमाज गान्धीधाम व भुज के अधिकारियो की जितनी प्रशसा की जाय कम हे। उन्होने भारत वर्ष स आए कायकर्त्ताओ के साथ सैकडो शवो को मलवे स निकाला जगह जगह पर यज्ञ कराए। सर्दी भरी रातो मे बाहर निकल कर सडक के किनारे जो व्यक्ति बिना कम्बल के कापते हुए सो रहे थे उन पर चुपचाप कम्बल आढाय २४ घण्टे रसोई चलाई गैस कटर से लोह की छडे काटकर जीवित व्यक्ति निकाले बाहर से आने वाले ट्रको का मार्गदर्शन किया। पशुओ के लिए चारा अन्त्येष्ठी के लिए लकडी हवन सामग्री की व्यवस्था की। अस्पताल व डाक्टरो को दवाईयो और प्लास्टर ऑफ पेरिस पहुचाया एव समस्त गुजरात के भूकम्प ग्रस्त इलाको का दौरा कर उनकी आवश्यकताओ को पूरा करने का प्रयत्न किया।

अब समय आ गया है कि हम समस्त विश्व को कच्छ मे किए गए आर्यसमाज के परोपकारी कार्यो से परिचित कराकर आर्यसमाज के परोपकारी ऐतिहासिक इतिहास की रचना करे और इस काय हेतु हमारा भन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन जो दिनाक २३ से २६ मार्च २००१ तक होने जा रहा है उसमे इसका स्वरूप रखे ताकि आम जनता तक हमारे किए हुए कार्य पहुच सके।

– कैप्टन देवरत्न आर्य
(उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)

युवक-युवती को आमन्त्रण

– ब्रिगेडियर चितरंजन सावत वी०एस०एम०

यह एक निमन्त्रण है। हमारे युवा वर्ग के लिए एक आह्वान है। हमारा उद्देश्य है कि हम आर्यसमाज की प्रेरणा से अपनी नई पीढी के लडके लडकियो मे एक नये उत्साह एक नई उमग का सचार करे। उन्हे अपने जीवन को सफल रूप से जीने के लिए एक नया मार्ग खोजने मे सहायक हो।

आज हमारे किशोरो मे जीवन के प्रति उत्साह है परन्तु उस उत्साह को कम करने के लिए अनेक अवैदिक बाते हो रही है जिससे उनके व्यक्तित्व के विकास मे बाधा पडती है। हम वातावरण तैयार करे कि विषम परिस्थितिया भी उनको डिगा न सके। कारगिल काण्ड के ताण्डव भयभीत न कर सके। हमारा लक्ष्य क्या है ? हमारा लक्ष्य क्या इतना ही है कि परीक्षा मे पास हो जाए उसके बाद नौकरी ढूढ। स्पष्ट है कि नोकरी हमारा अन्तिम लक्ष्य नही है। हमारा लक्ष्य तो है सुखी जीवन। अन्तत जीवन मृत्यु से मुक्ति। विद्या वही मार्ग दिखलाये जो हमे बन्धनो से मुक्त कराये।

सुख क्या है ? इस पर विभिन्न विचारो के लोगो मे मतभेद हो सकता है। कुछ लोग यह सोचते है कि सुबह से रात तक आराम से जिन्दगी बिताई खाना पीना किया फिल्मे देखी और गपशप मे समय बीत गया बस। उनका यही क्रम दिन प्रतिदिन चलता रहता है। किन्तु एक स्थिति ऐसी आती है जब आदमी इस दिनचर्या से ऊब जाता है क्योकि वह सब कुछ अपने ही लिये कर रहा है। समाज जिसका वह अग है उसके लिए तो कुछ किया ही नही उसने। धीरे धीरे यह बात मन को कचोटने लगती है।

हम अपने उन साथियो के बारे मे भी तो सोचे जो हमारे साथ पढ रहे है और खेल रहे है। उनके लिए भी कुछ करे। कोई भी व्यक्ति अकेला नही रह सकता। अकेला रहना सम्भव नही है क्योकि जीवन मे अनेक आवश्यकताए ऐसी है जिन्हे पूरी करने के लिए समाज मिलकर चलता है। आप हाकी की टीम मे खिलाडी है और आपके साथ १० और खिलाडी है। यदि हर खिलाडी अपना ही हुनर दिखाये और अकेले ही विपक्षी पर गोल पर गोल करना चाहे तो क्या यह सम्भव होगा ? कभी नही। यदि ग्यारह के ग्यारह खिलाडी अपने अपने एकल गोल दागने की सोच तो वे सभी के सभी असफल हो जाएगे। इसलिए सभी को मिलकर एक टीम के रूप मे खेलना है विपक्षी टीम को हराते हुए अपनी जीत दर्ज करना है यही टीम भावना है। इसी प्रकार समाज मे रहते हुए हम सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझते है यदि एक व्यक्ति स्वय उन्नति करना चाहे और साथियो को सदा गिराना चाहे तो इसमे सफलता सम्भव नही होगी। केवल व्यक्ति ही नही अपितु समाज ही असफल हो जाएगा।

पढाई लिखाई के बावजूद युवा विद्यार्थी कभी कभी अधविश्वासो के घेरे मे फस जाते है। अधविश्वास आत्म विश्वासो को कम करते है। जब आत्म विश्वास कम होता है तो अपने व्यक्तित्व का विकास करने मे आप असफल हो जाते हैं। इसलिए नई पीढी के लोगो को नया सूरज देखते हुए ज्ञान मार्ग पर चलना चाहिए। यह ज्ञान हमे मिलेगा वेद से। सृष्टि के आरम्भ मे ईश्वर ने मनुष्य मात्र को यही रास्ता दिखाने के लिए ऋषियो के हृदय मे ज्ञान दिया। यह ज्ञान हमे वेद मन्त्र के रूप मे उपलब्ध है। ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद और अथर्ववेद हम सभी का मार्गदर्शन करते है जिससे हम राह न भटक जाए। इसी मार्ग पर चलने से हम प्रसन्नता पाते है और अपने निर्धारित लक्ष्य को भी पाते है। ज्ञान का प्रकाश अध विश्वास के अन्धकार को दूर भगा देता है।

पढाई लिखाई के बावजूद युवा विद्यार्थी कभी कभी अधविश्वासो के घेरे मे फस जाते है। अधविश्वास आत्म विश्वासो को कम करते हैं। जब आत्म विश्वास कम होता है तो अपने व्यक्तित्व का विकास करने मे आप असफल हो जाते है। इसलिए नई पीढी के लोगो को नया सूरज देखते हुए ज्ञान मार्ग पर चलना चाहिए। यह ज्ञान हमे मिलेगा वेद से। सृष्टि के आरम्भ मे ईश्वर ने मनुष्य मात्र को यही रास्ता दिखाने के लिए ऋषियो के हृदय मे ज्ञान दिया। यह ज्ञान हमे वेद मन्त्र के रूप मे उपलब्ध है। ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद और अथर्ववेद हम सभी का मार्गदर्शन करते है जिससे हम राह न भटक जाए। इसी मार्ग पर चलने से हम प्रसन्नता पाते है और अपने निर्धारित लक्ष्य को भी पाते है। ज्ञान का प्रकाश अध विश्वास के अन्धकार को दूर भगा देता है।

अध विश्वास के कई रूप है। कुछ स्वार्थी लोग नई पीढी को भ्रमित करने के लिए उनसे कह देते है कि शनिवार को कोई नया काम न शुरू करो। यह अशुभ है। यह भी कहा जाता है कि शनिश्चर की पूजा करो ताकि शनि शमन हो। सच पूछिए शनैश्चर एक ईश्वर का वैदिक नाम है। ईश्वर हमारा पिता है और चढावा न चढाने से पुत्र पुत्री से कुपित नही होता। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' मे लिखा है – जो सबसे सहज मे प्राप्त धैर्यवान है इससे उस परमेश्वर का नाम शनैश्चर है। शनिवार को एक टीन के डिब्बे मे वीभत्स आकृति पर पैसा चढाना कि सडक दुर्घटना शनिदेव न होने देगे अपने आपको भुलावा देना है। यह काम तो ठग लोग अपनी पेट पूजा के लिए करते है और नई पीढी को इसमे नहीं फसना चाहिए।

अविद्या से पैदा होता है अन्धकार। इसलिए हमे विद्या से न केवल स्वय को ज्ञानवान बनाना चाहिए बल्कि समाज के ऐसे साथी सगी जो निर्धन है उन्हे भी विद्या का लाभ देना चाहिए। विद्या की हम जितनी भी वृद्धि करेगे समाज उतना ही प्रगति करेगा। जब समाज प्रगति करेगा तो ठग अविद्या और दूसरो की कमाई पर बिना कुछ किए धरे जीने वाले पैरासाइट (पराजीवी) सभ्य समाज मे कभी नही पनप सकेगे। इस तमस नाशक यज्ञ मे हमारी पीढी का योगदान बहुत ही महत्त्वपूर्ण होगा। आर्यवीर अपने बीच अनार्य ठगो को न पनपने दो।

आज नई पीढी के सामने एक अत्यन्त गम्भीर समस्या है। यह समस्या पूरे विश्व मे है। यह राक्षस रावण से भी भयकर है। इस राक्षस का नाम है एडस। महारोग एडस कही महामारी न बन जाए इसलिए पहले तो पुरानी पीढी युवा पीढी को खुद इसकी जानकारी दे। फिर युवा वर्ग अपने साथी साथियो मे एडस निरोध का प्रचार करे। एडस फैलने का मुख्य कारण है यौन दुराचार बिना सोचे समझे एडस पीडित लोगो से यौन सम्बन्ध स्थापित करने से यह बीमारी फैलती है। हम यह भी कह सकते है कि एडस के मूल मे अज्ञान और अरूचि है। अज्ञानता है महारोग के कारणो और उपचार के बारे मे जानकरी और अरूचि है ब्रह्मचर्य पालन मे। अरूचि का मुख्य कारण है आज का सेक्सी माहौल। ब्रह्मचर्य पालन तो अब सपना सा लगता है। लेकिन यह बात ध्रुव सत्य है और विश्व विशेषज्ञ यह मानते है कि जो ब्रह्मचर्य का पालन करेगा उसे एडस कभी नही होगा। हम इस अरूचि को शिक्षा के माध्यम से ही रूचि मे बदल सकते हैं। यदि हम बार बार अपने को यह सुझाव दे कि नई पीढी मे ब्रह्मचर्य पालन के सुख है तो धीरे धीरे हम इस ओर बढेगे और सफल होगे। एडस फैलने का दूसरा कारण बीमारी के लक्षणो को न पहचानना। इसे दूर करने के लिए युवा वर्ग से खुलकर बात की जा रही है। यदि इसमे आज लज्जा करेगे तो कल अवश्य ही रोएगे। व्यक्ति ही नहीं अपितु राष्ट्र रोएगा – अफ्रीकी देशो के समान। एडस ग्रसित व्यक्ति के साथ सम्भोग करते ही एडस नही होता। एडस के जीवाणु ६ से ८ वर्ष तक शरीर मे धीरे धीरे पनपते रहते है और फिर हमारे शरीर की आन्तरिक सुरक्षा व्यवस्था (इम्युन सिस्टम) को छिन्न भिन्न कर देते है। फलस्वरूप मामूली सा जुकाम निमोनिया मे बदल जाता है हल्की सी हरारत टाईफाईड बन जाती है और देखते देखते स्वस्थ्य तन नर–ककाल मे बदल जाता है। अन्तत मृत्यु हो जाती है। क्या आप इतनी दर्दनाक मृत्यु का आलिंगन करना चाहते है। यदि नहीं तो अनजाने व्यक्ति से सम्भोग के क्षणिक सुख को दे दीजिए तिलाजलि। भूल जाइए अपरिचितो से सेक्स की बात। सम्भोग सरस है किन्तु सम्भोग जनित एडस है घातक हृदय विदारक। रोग रहित तमस विहीन मार्ग पर चलने के लिए हमे मार्गदर्शक चाहिए। कौन है हमारा मार्गदर्शक ? सुख की ओर चलने के लिए हमे प्रेरणा चाहिए। कौन है हमारी प्रेरणा का स्रोत ? हमारे सुख मार्ग का मार्गदर्शक हमारी प्रेरणा का स्रोत है – परमपिता परमात्मा। परमात्मा ने ही तो हमे वेद ज्ञान दिया जिसके सहारे हम आगे बढ सकते हैं। परमात्मा ही सत्य विद्या का जनक है। परमात्मा मे अटूट आस्था लाने से हमारा मार्ग सरल और सीधा बन जाता है क्योकि सुपथ पर चलने से उपजती है आत्मशक्ति। इसका आधार है – अनुभव। यह एक आस्तिक की अनुभूति है। आस्तिक की आस्था अटूट है और है विघ्न नाशक।

युवा वर्ग सुबह से शाम तक व्यस्त रहता है स्कूल की पढाई है होम वर्क करना है खेलने जाना है कुछ हाबी भी तो है इन सबके बाद समय कहा है कि हम अपने बारे मे सोचे और अपने लक्ष्य के बारे सोचे। फिर भी व्यस्त कार्यक्रम मे से हमे अपने लक्ष्य के बारे मे सोचने के लिए समय तो निकालना ही है। एक सफल समय प्रबन्धक चौबीस घण्टो के अन्दर ही सभी आवश्यक कार्यक्रम को पूरा करने का प्रयास करता है। किस बात के लिए कितना समय देना है यह तो हर व्यक्ति को अपनी अपनी प्राथमिकता पर निर्भर करता है। किन्तु यह ध्यान रखिए कि अभी आपकी आयु कुछ भी क्यो न हो आपको दीर्घायु होना है स्वस्थ रहते हुए लम्बी आयु वाला होना है। आपके ज्ञान का लाभ स्वय आपको मिलेगा और आपके बाद आने वाली पीढी को मिलेगा। आप अपने आपको और समाज को यह सफलता का सुख अवश्य देना चाहेगे यह हमारा विश्वास है।

**– उपवन ६०६ सेक्टर २६
नोएडा उत्तर प्रदेश**

बोध नहीं क्रान्ति

– वेदाचार्य डॉ० रघुवीर वेदालकार

महर्षि दयानन्द जन्मना क्रान्तिकरी थे। जिसे हम बोधरात्रि कहते है उसमे दयानन्द के मन में क्रान्ति का अकुर ही फूटा था। बाद मे वह अनेक रूपो मे पल्लवित हुआ। दयानन्द सामान्य मानव नहीं अपितु ऋषि को यास्काचार्य कहते हैं – ऋषिर्दर्शनात। जो दर्शन करे वह ऋषि है। दर्शन तो सभी करते है किन्तु हम केवल वर्तमान का दर्शन करते है जबकि ऋषि भूत तथा भविष्य की घटनाओ तथ्यो को भी प्रत्यक्ष के समान ही देखता है। भर्तृहरि कहते हैं कि अतीन्द्रिय तथा अचिन्तनीय निषयो को भी ऋषि ऋषित्य बुद्धि से जान लेता है।

महर्षि दयानन्द की अनेक घोषणाए ऐसी थी जिन पर उस समय विश्वास करना कठिन था किन्तु आज विज्ञान ने उनको सिद्ध कर दिया है। यथा महर्षि दयानन्द ने कहा कि ग्रहो मे भी सृष्टि है। विमान के बनाने की बात भी उन्ही दिनो उन्होने की थी। आज विज्ञान ने दोनो ही घोषणाओ को सिद्ध कर दिया जो महर्षि ने अपनी दिव्य ऋषि दृष्टि से की थी। तीसरी घोषणा इससे भी अधिक क्रान्तिकारी है। केवल सामान्य मानव की नही अपितु ऊचे से ऊचे शिक्षाविद भी डार्विन के इस सिद्धान्त से बुरी तरह प्रभावित है कि मानव की उत्पत्ति अमीवा नामक लघुतम जन्तु से हुई है। वही अमीवा विकास के अनेक सोपानो को पार करके अन्ततोगत्वा मनुष्य बना। हास्यास्पद सिद्धान्त है तथापि बुद्धिजीवियो ने इसका प्रतिवाद न करके समर्थन ही किया। महर्षि ने भी विचित्र सी घाषणा की की आदि सृष्टि मे पृथिवी के गर्भ से ही युवा मानवो की सृष्टि हुयी। यह अमैथुनी सृष्टि थी। आज विज्ञान न भी सिद्ध कर दिया कि माता पिता के सयोग के बिना परखनली इत्यादि के माध्यम स भी मानवोत्पत्ति हा सकती है। महर्षि की उक्त तीनो ही घोषणाए वेचारिक जगत मे किसी क्रान्ति से कम नही थी दूसरे देशो मे तो इस प्रकार की एक एक बात पर विश्व प्रसिद्ध वज्ञानिक बन जाते है।

ऋषि को यह दिव्य दृष्टि तो ऋषि बनन के बाद ही मिली होगी किन्तु क्रान्ति के बीज ता उनक मन म जन्म से ही विद्यमान थे। महर्षि की पड यह क्रान्ति दे रूपो मे थी यह हो सकता हे यह नही हो सकता। पत्थर पर चढे चूह को माल प्रसाद खाते देखकर मूलशकर बोला यह परमेश्वर नहीं हो सकता जो चूहे से भी अपनी रक्षा न कर सके। जब समूचा भारत उस पत्थर मे परमश्वर को मान रहा था ऐसे मे मूलशकर की यह घोषणा किसी क्रान्ति से कम नही। अभी यह अकुरित मात्र हुइ थी तथा इसका पुष्पित एव पल्लवित रूप लोगो कुम्भ मे पाखण्ड खण्डिनी पताका के रूप म देखा।

अब दयानन्द समग्र क्रान्ति के क्षेत्र मे उतर आये। अदभुत क्रान्ति थी वह जो कि – एक ब्राह्मण ने ब्राह्मण समुदाय के विरुद्ध की। एक साधु ने साधुओ क विरुद्ध की। एक कौपीन धारी दिगम्बर ने बडे बडे अखाडो महन्तो के विरुद्ध की एक विद्वान ने तात्कालिक विद्वत्समुदाय के विरुद्ध की। एक धर्मनेता ने धर्मप्रचारक ने अन्य धर्मप्रचारको के विरुद्ध की। एक समाज सुधारक ने सामाजिक बुराइयो के विरुद्ध की। इतना ही नहीं अपितु जिनके शासन मे सूर्य नहीं छिपता था उन अग्रेजो – उनकी सभ्यता सस्कृति तथा भारत की पराधीनता के विरुद्ध भी दयानन्द ने क्रान्ति का बिगुल बजाया।

यह क्रान्ति दयानन्द ने अकेले की किन्तु निराधार नहीं की। वेद उनका आधार था तथा परमेश्वर सहायक। केवल इन दोनो के बल पर ही दयानन्द ने सभी को परास्त करके दिग्विजय प्राप्त की। पण्डे पुजारियो साधु महन्तो के विरुद्ध दयानन्द ने यो ही शख नहीं फूक दिया था अपितु सबके रहस्यो को जानकर ही उनका पर्दाफाश किया था। धर्म के नाम पर चली आ रही विभिन्न कुरीतियो तथा उनके ठेकेदारो प्रचारको के विरुद्ध न केवल घोषणाए अपितु युद्धस्तर पर कार्य करना दयानन्द का ही काम था। बडे से बडे दिग्गज पण्डितो को शास्त्रार्थ के लिए ललकारने का साहस दयानन्द ने किया। बडा साहस उन्हे प्रभु से प्राप्त था तथा सत्य पर आधारित था। समस्त पाश्चात्य विद्वानजगत तथा उनके अनुयायी भारतीय भी कह रहे थे कि वेदो मे गप हैं अश्लीलता है इतिहास है मिलावट है इत्यादि । दयानन्द अकेले ही महान घोष करते है – वेद परमेश्वर की वाणी तथा सत्य विद्याओ की पुस्तक है। चार सहिताए ही वेद हे ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नही है यह कहकर दयानन्द ने उन वेदज्ञ पण्डितो को निरुत्तर कर दिया जो ब्राह्मण ग्रन्थो को भी वेद मानते थे। इन्ही दम्भी पण्डितो ने व्यर्थ का शब्द जाल रचकर जो क्लिष्ट ग्रन्थ बना रखे थे दयानन्द उनका निराकरण यह कह कर करते है कि महर्षियो के ग्रन्थो का पढना एसा हे जसा कि समुद्र मे गोता लगाना तथा मोतियो का पाना। इसके विपरीत अनार्ष ग्रन्थो का पढना ऐसा है जैसे पहाड का खोदना तथा कौडी का लाभ होना। यह बात पण्डित दयानन्द ने वैसे ही नहीं कही थी अपितु लगभग तीन हजार ग्रन्थो की छान बीन करके की थी। ऐसी क्रान्तिकारी घोषणा करने का साहस उस समय किसी मे भी नही था।

विद्वत्क्षेत्र मे उनकी एक अति महत्त्वपूर्ण घोषणा आर्यो के आगमन के विषय मे थी। जान बूझकर एक झूठ को पाठयक्रम के माध्यम से प्रचारित एव सुप्रतिष्ठित कर दिया गया था कि आर्य भारत मे बाहर से आये हैं। यह इतिहास वेत्ता दयानन्द ही था जिसने सप्रमाण कहा कि आर्य भारत के ही मूल निवासी है। किसी भी प्राचीन सस्कृत ग्रन्थ मे नहीं लिखा कि आर्य बाहर से अये है। एक इतिहासज्ञ पुरातत्ववेता तथा विद्वान की भाति उन्होने यह भी कहा कि आदि सृष्टि तिब्बत पर ही हुयी थी। आज इतिहास वेत्ता भी इस बात को सिद्ध कर रहे है।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द का समस्त जीवन उनकी स्थापनाए उनके कार्यो पर दृष्टिपात करे तो यही पायेगे कि दयानन्द जन्मजात क्रान्तिकारी रहे प्रत्यक क्षेत्र मे जो नयी मान्यताए तथा घोषणाए उन्होने की उनकी कल्पना भी कोई नहीं कर सकता था। दयानन्द क्योकि पारदृष्टा ऋषि थे इसलिए उन्होने भूत भविष्य तथा वर्त्तमान सभी पर दृष्टिपात करके स्पष्ट रूप मे कहा ऐसा हे ऐसा नहीं है। यह ठीक हे यह गलत है इत्यादि। शिवपिण्डी के विषय मे भी बालक मूलशकर ने यही कहा था यह परमेश्वर नही हो सकता। बालक मूलशकर का यह कदम अति साहसिक एव क्रान्तिकारी कदम था।

रामजस कालेज दिल्ली विश्वविद्यालय

हिन्दी में दाखिल याचिका पर विचार हो सकता है : सुप्रीम कोर्ट

नइ दिल्ली जनवरी उच्चतम न्यायालय ने व्यवस्था दी हे कि न्यायालय की कार्यवाही के नियमो के तहत अग्रेजी भाषा मे ही याचिका तैयार करने के प्रावधान के बावजूद उच्च न्यायालय मे हिन्दी भाषा मे पेश चुनाव याचिका पर विचार हो सकता है

मुख्य न्यायाधीश डा० आदश सेन आनन्द न्यायमूर्ति आर०सी० लाहोटी और न्यायमूर्ति शिवराज वी० पाटिल की तीन सदस्यीय खण्डपीठ ने पिछले सप्ताह इस सम्बन्ध मे मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के ४ फरवरी २००० के निर्णय का सही ठहराते हुए महश्वर विधान सभी सीठ से निर्वाचित डा० विजय लक्ष्मी साढो की याचिका खारिज कर दी।

न्यायाधीशो ने अपने १४ पेज क निर्णय मे कहा कि चुनाव याचिका क बारे म उच्च न्यायालय द्वारा निर्धारित नियम सिर्फ प्रक्रिया सम्बन्धी ही है और वे कोइ महत्वपूण कानून नही है। न्यायाधीशो ने कहा कि सविधान के अनुच्छेद ३४ (१) मे स्पष्ट है कि उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालया की कार्यवाही अग्रेजी भाषा मे होगी लेकिन अनुच्छेद ३४८ (२) मे इस सम्बन्ध मे अपवाद का भी प्रावधान है। न्यायाधीशो ने विधायक डा० विजय लक्ष्मी साढो की याचिका खारिज करते हुए कहा कि अनुच्छेद (२) मे स्पष्ट है कि राष्ट्रपति की पूर्व अनुमति से किसी भी राज्य के राज्यपाल उच्च न्यायालय मे हिन्दी अथवा किसी अन्य भाषा के इस्तेमाल की अनुमति दे सकते ह बशर्ते सम्बन्धित राज्य म ही उच्च न्यायालय की प्रधान बच हो।

इस मामल म मध्य प्रदेश के राज्यपाल ने राष्ट्रपति की पूर्व अनुमति से १८ सितम्बर १९७१ को एक अधिसूचना के तहत उच्च न्यायालय के फैसले आदश और डिक्री के अलावा अन्य सभी कार्यवाही म हिन्दी भाषा के इस्तमाल की अनुमति दे दी थी।

न्यायाधीशो ने कहा कि अनुच्छेद ३४८ (२) के साविधिक प्रावधानो को निष्प्रभावी करने के लिए उच्च न्यायालय के नियम २ (बी) का प्रयोग नही किया जा सकता है। न्यायाधीशो ने कहा कि नियम २ (बी) को अनुच्छेद ३४८ (२) क तहत राज्यपाल की अधिसूचना के आलोक म देखना होगा। इसक अनुसार चुनाव याचिका हिन्दी भाषा मे दाखिल की जा सकती है लेकिन उच्च न्यायालय के नियम २ (बी) पर अमल नही होने के आधार पर इस जनप्रतिनिधित्व कानून की धारा ८६ के तहत शुरू मे ही खारिज नही किया जा सकता है। इस प्रकरण मे महेश्वर विधान सभा सीट पर चुनाव हारने वाले जगदीश ने चुनाव मे भ्रष्ट तरीक अपनाने के आरोप लगाते हुए डा० साढा के निर्वाचन को चुनौती दी थी। श्री जगदीश ने अपनी याचिका और हलफनामा हिन्दी भाषा मे दाखिल किया था।

आर्यो महर्षि दयानन्द बोधोत्सव पर वेद प्रचार का व्रत लो

- पं० नन्दलाल निर्भय सिद्धांताचार्य

हमारे जीवन मे जो महत्व वेद श्रावणी उपाकम विजयदशमी दीपावली और होली का है वही महत्त्व दयानन्द सरस्वती बोधोत्सव (महाशिवरात्रि) का है किन्तु हम इस पावन पर्व का महत्त्व समझ नही पा रहे हैं। हम आर्य जन इस पर्व पर हर वर्ष उत्सव सम्मेलनो का आयोजन करते हैं महर्षि की आर्यसमाज की जय के नारे लगा लगा कर आकाश को गुजा देते है और फिर अपने-अपने घरो को आ जाते हैं तथा इसी मे अपने कर्त्तव्य पालन की इति श्री समझ कर चुप बैठ जाते हैं। आर्यो थोडा विचार करो क्या इस तरह महर्षि का सकल विश्व को आर्य बनाने का स्वप्न साकार हो पाएगा ? क्या इस प्रकार आर्यो का चक्रवर्ती साम्राज्य ससार मे स्थापित हो पाएगा ? मैं कहता हू, कभी नहीं।

सारा ससार अच्छी तरह जानता है कि महर्षि दयानन्द महाराज ने अकेले होते हुए भी सर्व विश्व मे तहलका मचा दिया था। वे वेद प्रचार के हामी थे। राणा सज्जन सिह द्वारा सम्पत्ति का लालच राव कर्ण सिह की तलवार और अग्रेजो का आतक उन्हे भयभीत न कर सके। स्वामी जी ने अपने देव गुरु स्वामी विरजानन्द दण्डी जी को जो वचन दिया था वे उस चन का जीवन भर पालन करके निर्भयता पूर्वक वेद चार करते रहे। नादान लोगो ने उन पर गोबर फैका गालिया दीं पत्थर मारे बार बार विष पिलाया केन्तु वे वेद पथ से कभी विचलित नहीं हुए। स्वामी ी ने जगन्नाथ रसोइया से कहा था – जगन्नाथ झे अपने मरने की कोई चिन्ता नहीं है। यह नश्वर रीर तो एक दिन नष्ट होना ही है किन्तु इस शरीर बैठा हुआ जीवात्मा अमर है। मुझे दु ख यह है कि ने वेद प्रचार क पावन कार्य को प्रारम्भ किया था ह पवित्र कार्य अधूरा ही रह गया। तूने लालच मे ाकर यह दूषित कार्य किया है किन्तु तुझे कुछ भी मिलेगा। मैं तुझे पॉच सौ रुपये दे रहा हू तू इन्हे ाकर नेपाल की सीमा मे चला जा। दिन निकलने र जब आर्य जनो को तेरी करतूत का पता चलेगा ो तुझे जान से मार देगे। मैं नहीं चाहता कि मेरे ारण तू मारा जाए। ऐसे महान थे देव दयानन्द हाराज अब ससार मे कोई उन जैसा त्यागी तपस्वी र्मात्मा विद्वान नहीं है। आज उन जैसे महात्माओ ी विश्व को जरूरत है।

आर्यो जरा ध्यान से देखो क्या ऐसी कोई सभा ास्था है जहा धन सम्पत्ति पदो पर कलह मुकदमे ाजी नहीं है। हम आजादी के त्रेपन वर्ष पश्चात भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा नहीं बना पाए देव वाणी सस्कृत म तोड रही है ससार मासाहार की ओर तेजी से ढ रहा है। प्रतिदिन ऋषियो की भूमि भारत मे एक ाख से ज्यादा गौ आदि उपकारी पशु पक्षियो की त्या हो रही है और मास विदेशो को भेजा जाता है। ाय हन्त।

हम भाषण देन म सबसे आगे हैं और काम करने बहुत पीछे। पदा का लालच जन्म जाति का राग मे धुन की तरह खा रहे हैं। महर्षि देव दयानन्द के ीवन से हम कुछ नहीं सीख रहे हैं। सम्मेलनो मे ासाहारी शराबी राजनेताओ का स्वागत करना हमन शा बना लिया है। इसलिए जनता हमारी हसी डाती है। अगर आप सकल ससार को आर्य बनाना चाहते हो तो स्वय आर्य बनो तथा निम्नलिखित दस सूत्रो को अपना लो। विश्वास रखो सबका कल्याण हो जाएगा।

१. आर्य सभाओं, समाजों के पदाधिकारी ईमानदार हों

प्राय यह देखा जाता है कि आर्य समाजो और सभाओ मे धन को प्राथमिकता देकर निकम्मे लोगो को मन्त्री प्रधान आदि उच्च पदो पर बैठा दिया जाता है जो पद पाकर गलत काम करते हैं। अत विद्वान् ईमानदार व्यक्तियो को ही उच्च पदो पर बैठाना चाहिए।

२. वेद प्रचारक विद्वान्, चरित्रवान हो -

आर्य प्रचारक विद्वान चरित्रवान और निष्ठावान होने चाहिए जो जनता को वेदो का ज्ञान भली प्रकार दे सके। उपदेशको का व्यवहार भी अच्छा होना चाहिए। जो जनता को वेदो का ज्ञान भली प्रकार दे सके। उपदेशको का व्यवहार भी अच्छा होना चाहिए।

३. सभी आर्यजन स्वाध्यायशील बने -

पहले आर्य समाजी परिश्रमी स्वाध्यायशील होते थे जो अडोस पडोस मे आर्यसमाज का प्रचार भली प्रकार करते थे। किन्तु आज ऐसे व्यक्ति भी मन्त्री प्रधान बन जाते हैं जिनको आर्य समाज के नियम भी याद नहीं होते। अत आर्यो को रोजाना स्वाध्याय करना चाहिए।

४. प्रत्येक आर्य अपनी सन्तान को गुरुकुल में पढाए

आर्य लोग बात तो गुरुकुलीय शिक्षा की करते हैं किन्तु अपने बच्चो को पब्लिक स्कूलो मे पढाते हैं जिससे वे आर्य समाज से दूर चले जाते हैं। अत हमे बच्चो को गुरुकुल मे पढाना चाहिए।

५. हमारी वेषभूषा भारतीय होनी चाहिए

आजकल आर्यजन कोट पेन्ट टाई का प्रयोग करते है जो गुलामी के प्रतीक हैं। हमे भारतीय वेषभूषा धोती कुर्ता पगडी का प्रयोग अधिक से अधिक करना चाहिए।

६. हमारा खानपान शुद्ध सात्विक होना चाहिए

ईश्वर ने मानव को शाकाहारी बनाया है किन्तु बहुत से नासमझ व्यक्ति अण्डे मास शराब आदि अभक्ष पदार्थों का सेवन करते है जो हमारी बुद्धि का नाश करते हैं। अत हमे अन्न फल दूध आदि पदार्थों का ही सेवन करना चाहिए क्योकि कहा है – जैसा खाए अन्न वैसा होवे मन और जैसा पीए पानी वैसी होवे वाणी।

७. हमारी वाणी में माधुर्य और हमारा व्यवहार उत्तम हो

हम जहा भी कहीं रहते है हमारा व्यवहार उत्तम होना चाहिए तथा हामरी वाणी मे मधुरता होनी चाहिए जिससे पडोसियो पर अच्छा प्रभाव पडे तथा वे आर्यसमाज को अपना सके।

८. अपने नामों के साथ जन्म जाति सूचक शब्द नहीं लगावें

महर्षि दयानन्द महाराज ने ससार मे आर्य अनार्य दो प्रकार के व्यक्ति माने है किन्तु हम अपने नामो के साथ जन्म जाति सूचक शब्द लगाकर वर्गवाद को बढावा देते है जो सर्वथा अनुचित है। अत हमको जन्म जाति सूचक शब्द नहीं लगाने चाहिए।

६. आर्यों को पदों का लालच नहीं करना चाहिए

प्राय देखा जाता है कि आर्य समाजो मे बहुत से व्यक्ति पदो पर झगडते रहते हैं जो मानवता के विरुद्ध है। हमे शुभ कर्म करने मे विश्वास रखना चाहिए सम्मान तो काम करने वालो को स्वयमेव मिल जाता है। हमे स्वामी श्रद्धानन्द प० लेखराम जैसा त्यागी तपस्वी बनकर आर्यसमाज की सेवा करनी चाहिए।

१०. प्रत्येक आर्य अपने घर में एक गऊ अवश्य पाले

महर्षि दयानन्द जी ने सर्वप्रथम गोकरुणा निधि नामक पुस्तक लिखी थी तथा राव युधिष्ठिर से मिलकर रेवाडी (हरियाणा) मे गऊशाला खुलवाई थी जो अभी भी चल रही है। इसलिए हमे भी गऊ भक्त बनकर गऊ माता की सेवा करनी चाहिए।

प्रिय आर्यो अगर आपने उपरोक्त दस सूत्रो को अपना लिया तो कल्याण हो जाएगा और सकल ससार आर्य बन जाएगा। यही हमारी महर्षि दयानन्द जी महाराज को सच्ची श्रद्धाजलि मानी जाएगी। अन्त मे मेरी आपसे पुन यही प्रार्थना है –

आर्य वीरो, कर्म क्षेत्र में, एक साथ मिल कदम बढाओ।
करो वेद प्रचार जगत में, ओइम् ध्वज जग में फहराओ।।
धर्म कर्म को, सच्चाई को, भूल गई है दुनिया सारी।
आपा धापी मची हुई है, आतंकित हैं सब नर नारी।।
मानवता दम तोड रही है, दानवता का जोर रहा है।
पनपगई रावण की सेना, मारो, काटो शोर रहा है।।
जगत गुरु ऋषि दयानन्द के, वीर सैनिकों, धर्म निभाओ।
गाव-गाव में नगर-नगर में, पावन आर्यसमाज बनाओ।

– ग्राम व डाकघर – बहीन जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

ज्योति पुन्ज दयानन्द

– हरिश्चन्द्र आर्य

घन घोर तिमिर का वक्ष चीर भू पर उतरी थी एक किरन
सदेश सबेरे का लाई हम करते उसका अभिनन्दन
तू पराधीनता पाश तोड कर मुक्ति दिलान आया था
वेदो की धरती सोई थी तू उसे जगाने आया था।
तू महामृत्यु के मस्तक पर जीवन की जय लिखने आया
तूने जडता के आगन मे चेतना का ध्वज फहराया।
तूने आसू गिरते देखे जब भारत भूमि भवानी के
कायरता के मुख पर डाले तूने अगारे जबानी के
तेरी हुकारे काव्य बनीं तेरे विचार इतिहास बने
तूने बोये जो ज्ञान बीज वे पतझर मे मधु मास बने।
भारत माता के उपवन मे जब फूल चुराये जाते थे
वेदों की धरती पर जब कलुषित अगार गिराये जाते थे।
कितने अछूत जल जाते थे अपमान घृणा की ज्वाला मे
कितने ही फूल न गुथ पाते भावी भारत की माला मे
तू महादेश का निर्माता भारत का भाग्य विधाता है
इस धरती का कवि कोई श्रद्धा से शीश झुकाता है।

– अमरोहा (ज्योतिबा फूले नगर) उ०प्र०

जगें हम, लगें जगाने विश्व

फैलाएं वैदिक आलोक

– मनुदेव अभय विद्या वाचस्पति

वेदो मे अनेको स्थलो पर इस पच भौतिक शरीरधारी 'मनुष्य के लिए उठकर जागने के लिए कहा गया है। केवल आख खोल देने का नाम 'जागना नहीं अपितु शय्या त्याग कर उठ खडे होने तथा इधर उधर आवश्यक कार्य करने के लिए आदेशित किया है। वस्तुत जो मनुष्य 'जाग' गया है उसके लिए तो अधिक कहने समझाने – बुझाने की आवश्यकता नहीं अपितु जो आखे खोलकर 'प्रमादी बन कर आज का काम कल करने वाले व्यक्ति को सजग करने के लिए विश्व के जगृतिशील महापुरुषो ने बहुत कुछ कहा है।

ऋग्वेद मे जागने वालो को स्वत स्फूर्त करने के हेतु कहा –

यो जागार समृच कामयन्ते यो जागार तमु सामनि यन्ति।
यो जागार समय सोम आह तवाहस्मि सख्ये न्योका ।।

ऋ० ५/४४/१४

इस वेद मन्त्र मे मनुष्य को सचेत करते हुए कहा गया है –

१ **जो जागता है उसे ऋचाए चाहती हैं।**
२ **जो जागता है उसे साम अर्थात अनेक शान्तिया प्राप्त होती हैं। और अन्त में**
३ **जो जाग जाता है उसका और सर्वान्तर्यामी प्रभु का ठिकाना एक हो जाता है।**

तात्पर्य यह है कि जो विश्व मे प्रशसित होना चाहता है अथवा जो यह चाहता हे कि इस परिवर्तनशील जगत मे चुह ओर मेरी प्रशसा की विजय के नगाडे बजने लग जाए तो उसे जागकर अन्यो को जगाने की बीडा उठाना होगा। यह एक अनिवार्य शर्त है। अन्यथा वह विश्व मे या तो निन्दा का पात्र बनेगा अथवा लोग उसे भुला देगे। इसी तरह जो इस अशात ससार मे रहकर आध्यात्मिक आधिदैविक तथा आधिभौतिक शाक्तिया प्राप्त करना चाहता है उसे अपनी गहरी निन्द्रा और तन त्याग कर उठ खडा होना पडेगा। और अन्त मे लाख रुपये की बात कहते हुए वेद सर्तक एव सावधान करता है कि वास्तविक और अक्षयसुख शान्ति करने का एक मात्र स्थान कही अन्यत्र नहीं अपितु तेरा स्वय का ह्रदयागार है। सक्षेप मे इस मन्त्र मे उन सभी मनुष्यो को शिक्षा दी गई है कि केवल बहिर्मुखी होना प्रेय मार्ग का अनुगामी होना ही पर्याप्त नहीं अपितु इसके साथ ही अन्तर्मुखी होना श्रेय मार्ग का भी अनुगामी बनना पडेगा। इतना होने पर ही मनुष्य के जीवनोद्देश्य की पूर्ति सम्भवनीय है।

सम्प्रति हम यहा केवल पहले बिन्दु पर ही सक्षिप्त अपितु महत्त्वपूर्ण तथ्यो के आधार पर कुछ विचार करेगे। ससार का इतिहास बताता है कि इस ससार मे यो तो लाखो करोडो अथवा असख्य जन्तुगण उत्पन्न होते हैं और मृत्यु को भी प्राप्त होते रहते हैं किन्तु जो जन्म लेने के पश्चात जाग्रत होकर जागकर उठकर आगे बढने का कुछ कर दिखाने का प्रयास करते हैं उन्हे ही यह ससार जानता और स्नेह करता है। उनकी ही विश्व मे ख्याति होती है तथा वे प्रशसा के पात्र होते हैं। यहा ऋचा का भाव स्तुति प्रशसा ख्याति तथा सार्थकता का ही अर्थ ग्रहण करना चाहिए। कौन सा मनुष्य नहीं चाहता कि लोग उसकी खूब प्रशसा करे उसे समाज का नेता माने उच्चासन दे तथा सम्मान करे। किन्तु चाहने मात्र से कुछ नहीं होता। जाग कर आगे चलने और चलकर अपने गतव्य तक पहुचने का प्रयत्न पुरुषार्थ करने पर प्रशसित हो सकता है। किन्तु प्रश्न यह है कि कौन किसे जगाये ? सोते हुए को जगाकर उसे दिशा बोध क्यो और कैसे कराये ? यह भी अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न है।

आर्यसमाज के सस्थापक वैदिक धर्मोद्धारक दयानन्द को कोई जगाने नही आया था। शिव रात्रि के अवसर पर उस शिव मन्दिर मे अन्य शिव भक्तो के समान वह भी सो सकता था और ब्रह्म मुहूर्त या उषाकाल मे उठकर अपने घर लौटकर माता पिता के चरण स्पर्श कर आशीष प्राप्त कर सकता था। किन्तु वह तो यो जागार अर्थात रात्रि भर जाग कर उस शिव के दर्शन करना चाहता था जो मगलकारी था कल्याणकारी था। यह भी विचित्र बात है कि अन्यो को सोता हुआ देखकर भी वह नहीं सोया। इससे अधिक आश्चर्य की बात यह रही है कि वह उन लोगो को सोता हुआ देख रहा था जो 'जगाने आये थे। मै यहा एक रोचक तथ्य का वर्णन करने का लोभ सवरण नही कर सकता हू।

देश पर्यटन के समय कई बार बस चालक की सीट के निकट बैठकर घण्टो यत्रा करने का अवसर मिला। वाहन चालक मुझे एक शर्त के साथ अपने निकट बैठाता था। – महाशय ठडी हवा लगने पर रात्रि हो जाने पर भी आप सोना मत/अन्यथा आपको सोता देखकर नींद का सक्रमण मुझ पर भी हो जाएगा। और यदि मै ही सो गया तो फिर इस वाहन तथा वाहन मे बैठे ५०–५५ व्यक्तियो का भगवान ही मालिक है। मैंने उस चालक की चेतावनी स्वीकार की। परिणामत सम्पूर्ण काया निष्कटक रही और अपने घर सकुशल लौट आया। यह है नीद का रहस्य।

यह कितने आश्चर्य की बात रही है कि सोते हुए मनुष्यो को भी देखकर उनके निकट बैठे रहने पर भी वह बालक मूलशकर सोया नही। अपितु आखो पर ठण्डे पानी के छीटे दे देकर इसलिए जागता रहा कि आज शकर के दर्शन अवश्य ही करूगा चाहे कुछ भी हो जाये। इन सोने वालो का क्या दर्शन तो मुझे करने है। इसलिए मुझे ही जागना पडेगा। और देखे बालक मूलशकर जागा दयानन्द बना और फिर उसने ससार को जगाने का कार्य प्रारम्भ कर दिया। वह विश्व को जगाते हुए ही ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो कहते हुए उसने जो एक बार आखे बन्द की तो फिर वह न तो जागा और न अपनी आखे खोली। इसलिए ऋग्वेद की ऋचा मे बिल्कुल ठीक कहा है – जो जागता है वेद की ऋचाए उसकी प्रशसा करती हैं। कोई चाहे माने या न माने विश्व की आध्यात्मिक क्राति के प्रणेता 'दयानन्द की सर्वत्र प्रशसा हो रही है। विश्व के सभी आस्तिक एक स्वर से दयानन्द की बातो को एक एक करके स्वीकार करते जा रहे हैं कि वेद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक है। इसे न तो चमत्कार कहना चाहिए अथवा न कोई अनहोनी घटना। बस दयानन्द ने तो स्वय जागकर विश्व को जगाना प्रारम्भ कर दिया। और यह कहते हुए दृढ विश्वास उत्पन्न होता जाता है कि जब तक यह विश्व अज्ञान अभाव और अन्याय की निन्द्रा मे सोते रहेगा तब तक दयानन्द की नहीं नहीं वेद के ज्ञान की आवश्यकता उसे जगाने के लिए होती रहेगी।

महर्षि दयानन्द ने विश्व की मानव सस्कृति को जगाने के लिए ही आर्यसमाज की स्थापना की थी। स्थापना करने के पूर्व उसने उद्घोषणा की थी – सोने से है मुसाफिर को खतरा – इसलिए इन मुसाफिरो को विश्ववासियो को न केवल एक बार अपितु सतत कई बार जगाते रहने के लिए आर्यों के इस सगठन की स्थापना की थी। आर्यसमाज की स्थापना के पश्चात उसने अपने पास भी कुछ नहीं रखा। अपनी सारी आध्यात्मिक तथा भौतिक सम्पदा भी परोपकारिणी सभा को सौप गया है ऐसा है कोई अन्य दानी जो दयानन्द की बराबरी कर सके ? कदापि नहीं कदापि नही।

महर्षि दयानन्द ने विश्व के मनुष्यो को सदैव जगाते रहने के लिए जो साध्य वेद प्रचार का कार्य किया था क्या हम उसे कर पा रहे है। हम यहा निराशा की बात नही कर रहे है। आर्यसमाज द्वारा वेद प्रचार के कारण ही मत मतान्तरो के आचार्यों ने अपने पथीय (साम्प्रदायिक) ग्रन्थो के भावो को बदल दिया है। किन्तु यह सन्तोष की बात नहीं है। ऐसा लग रहा है कि नदी मैदान मे बहने के कारण उसकी गति कुछ मन्द पड गई है। नदी के किनारो को तो हम सिकोड नहीं सकते है किन्तु हॉं उसके ऊपर बाध बनाकर उसकी धाराओ को तीव्र अवश्य कर सकते है। किन्तु हमारी इस मन्दता का एक कारण साधन को ही साध्य बनाकर हम कही उलझ गये है। उसीका कुपरिणाम यह हो रहा है कि आर्यसमाज द्वारा केवल सामाजिक पक्ष पर ही बल दिया जा रहा है और आध्यात्मिक पक्ष जगाने का पक्ष गतिशीलता का पथ कही अवरूद्ध हो गया है। साधन साध्य हो गया और साध्य गौण हो गया है।

अब जागने का पर्व आ गया है। कविवर प्रसाद के शब्दो मे जगे हम लगे जगाने विश्व के अनुसार जगाने के कार्य को और गति दे तभी उपरोक्त वैदिक ऋचा के अनुसार स्वय जागकर दूसरो को जगाने का कार्य करना प्रारम्भ कर दे तो हम ऋषियो की भाति ऋचाओ द्वारा प्रशसित होने लग जाएगे।

– विद्यावाचस्पति सुकिरण अ/१३ सुदामा नगर इन्दौर (मध्य प्रदेश) पिन ४५२००७

महर्षि दयानन्द की पैनी दृष्टि

– ओम प्रकाश आर्य

महर्षि दयानन्द के आविर्भाव के पूर्व इस देश की सामाजिक राजनैतिक आर्थिक धार्मिक वैचारिक स्थिति अत्यन्त क्षीणावस्था को प्राप्त हो चुकी थी। सामाजिक ढाचा जर्जरित हो चुका था। धर्म कर्म के ऊपर अज्ञानता का आवरण छा गया था। पौराणिको के अनुसार वेदो को शखासुर चुरा ले गया था। ढोग पाखण्ड अन्धविश्वास छुआछूत ऊच नीच जाति पात का बोलबाला था। इस अन्धकार के युग मे प्रकाशयुक्त सत्यपथ को ढूढना कितना कठिन काम था जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती। महर्षि दयानन्द की पैनी दृष्टि ने भगवान भास्कर की किरणो के समान समस्त अज्ञानान्धकार को विदीर्णकर मानवमात्र के कल्याण का द्वार खोल दिया। उनकी पैनी दृष्टि को मुख्यत निम्न भागो मे बाट सकते है –

१ **ईश्वर के वास्तविक स्वरूप का विश्लेषण।**
२ **धर्म की सत्यता उजागर करना।**
३ **वेदो के मन्त्रो की वैज्ञानिक व्याख्या।**
४ **तर्कणा शक्ति का निदर्शन।**
५ **यज्ञ के वैज्ञानिक महत्त्व का प्रतिपादन।**
६ **विश्वकल्याणार्थ आर्यसमाज की स्थापना करना।**
७ **देश की स्वतन्त्रता के लिए उद्घोषणा करना।**
८ **महापुरुषो के विकृत चरित्र का शुद्धिकरण**
९ **मानव का मानव के रूप मे निरूपण।**
१० **मत-मतातरो की समीक्षा।**
११ **अनेक ग्रन्थो की रचना।**

१ ईश्वर के वास्तविक स्वरूप का विश्लेषण

स्वामी दयानन्द के समय देश मे अज्ञानता के बादल छाए हुए थे। लोग ईश्वर के सच्चे स्वरूप को भूल चुके थे। अद्वैतवाद द्वैतवाद साकार निराकार अवतारवाद सगुण निर्गुण मूर्तियो तीर्थस्थानो तथा अन्य अनेक रूपो मे ईश्वर की मान्यता थी। इन्हीं विविधिताओ के कारण तमाम मत मतातरो के जाल फैल। ईश्वर के ठेकेदार ईश्वर दर्शन के ठेके लेने लगे। गुरुडम का बोल बोला था। पण्डे पुजारियो की बन पडी। धनी निर्धन सब इन्ही भवर जालो मे उलझकर अपना जीवन बर्बाद कर रहे थे। सही दिशा निर्देशन और सच्चे गुरु के अभाव मे सवत्र अज्ञानता छायी हुई थी। ईश्वर के नाम पर भ्रातिया ही भ्रातिया थी। महर्षि दयानन्द ने वेदो को आधार मानकर इन समस्त झूठी मान्यताआ का पर्दाफाश किया और ईश्वर का सत्य स्वरूप बतलाकर लागा को सन्मार्ग दिखाया। ईश्वर का सत्यस्वरूम उन्हीं के शब्दा मे – 'ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप निराकार सर्वशक्तिमान न्यायकारी दयालु अजन्मा अनन्त निर्विकार अनादि अनुपम सर्वाधार सर्वेश्वर सर्वव्यापक सर्वान्तर्यामी अजर अमर अभय नित्य पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। उनकी ईश्वर के सत्यस्वरूप की यह उदघोषणा पूर्णत वेदो के आधार पर है सत्य है अकाटय है तथा तर्क पर पूर्ण खरा उतरने वाली है। इसमे न द्वैत है न अद्वैत है अपितु उनका त्रैतवाद का सिद्धान्त है। त्रैतवाद का यह सिद्धान्त महर्षि दयानन्द की प्रथम पैनी दृष्टि का परिचायक है।

सम्वत २०३५ के जनज्ञान प्रकाशन का २१८ वा पुष्प 'ईश्वर ससार के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिको की दृष्टि मे नामक लेखो के सग्रह मे विश्व के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक के ईश्वर के सम्बन्ध मे उनके विचार प्रस्तुत किए गए हैं। उनके नाम है – फ्रेक ऐलन (जीव भौतिकविद) राबर्ट मौरिस पेज (भौतिक शास्त्रविद) मैरिट स्टेनली कौंगडन (प्रकृति विज्ञानी और दार्शनिक) जान क्लीवलैड कोथरान (गणितज्ञ और रसायनशास्त्री) डोनाल्ड हेनरी पोरटर (गणित एव भौतिकविद) एडवर्ड लूथर कैसल (जीवविद और कीटविद) आदि ४० वैज्ञानिको के विचार प्रस्तुत किए गए है। इन समस्त वेज्ञानिको ने यह स्वीकार किया है कि कोई चेतन सत्ता है जो जड वस्तु मे गति प्रदान कर रही है। वह चेतन सत्ता ईश्वर ही है। ईश्वर की निराकार की इतनी वैज्ञानिक व्याख्या किसी ने नही की जिस प्रकार महर्षि दयानन्द ने की है।

२ धर्म की सत्यता उजागर करना

धर्म के नाम पर इतनी भ्रातिया थी कि उनका वर्णन करना मुश्किल है – ढोग पाखण्ड आडम्बर मत–मतान्तर आदि। धर्म की आड मे तमाम कुकृत्य होते थे। मन्दिरो मठो मे अनाचार व्याप्त था। पण्डे पुजारियो की बन पडी थी। सामान्य जनता दिग्भ्रमित थी। ऐसे कठिन समय मे स्वामी दयानन्द ने वेदो का आधार लेकर सत्यधर्म का निरूपण किया और बताया धर्म की परिभाषा – जो पक्षपातरहित न्यायाचरण सत्यभाषणादियुक्त ईश्वराज्ञा वेदो से अविरुद्ध है वह धर्म कहलाता है। धर्म की यह परिभाषा मानवमात्र के लिए है। उन्होने मनुस्मृति के आधार पर धर्म का लक्षण बताया –

धृति क्षमा दमोऽस्तेय शौचमिन्द्रियनिग्रह।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशक धर्मलक्षणम्॥

मनु० ६। ९२।

अर्थात धैर्य क्षमा दम अस्तेय शौच इन्द्रियनिग्रह बुद्धि विद्या सत्य क्रोध न करना ये दस धर्म के लक्षण हैं। धर्म का यह लक्षण ससार का कौन मनुष्य स्वीकार नहीं कर सकता। अज्ञानान्धकार की गहनगुहा में से इस परिभाषा और लक्षण का अन्वेषण करना महर्षि दयानन्द की पैनी दृष्टि का सूचक है।

३ वेदो के मन्त्रो की वैज्ञानिक व्याख्या

महर्षि दयानन्द के समय मे लोगो की धारणा थी कि वेद शखासुर चुराकर पाताल लोक चला गया। इसलिए वेद है ही नहीं। महर्षि दयानन्द ने वेदो को उपलब्ध कराया। उनका वास्तविक गूढार्थ प्रस्तुत किया। वेदो के अर्थ देशी विदेशी विद्वानो ने भी किए किन्तु वे सत्यता से बहुत दूर थे। मैक्समूलर उव्वट सायण महीधर आदि विद्वानो ने वेदभाष्य किए। इनके भाष्य स्वामी दयानन्द के भाष्य से अलग है। महर्षि दयानन्द ने 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका लिखकर ऋग्वेद यजुर्वेदभाष्य करके सत्यार्थ को प्रकाशित किया। उनकी वैज्ञानिक व्याख्या की। उनका वेदभाष्य देखकर ससार के समस्त विद्वान अचम्भित है। किसी ने वेदो को गडेरियो का गीत बताया तो किसी ने उनमे जादू टोना। किसी ने इतिहास गढ लिया तो किसी ने अश्लीलता। महर्षि दयानन्द ने न केवल गूढार्थ ही प्रस्तुत किया अपितु मानवमात्र को वेद पढने का अधिकार भी दिया। पहले स्त्री और शूद्र को वेद पढने का अधिकार नही था। स्वामी जी ने तर्को की कसौटी वेद माना जो वेदानुकूल विचार हो उसे सत्य और जो न हो उसे असत्य बताया।

४ तर्कणा शक्ति का निदर्शन

सत्यार्थ प्रकाश महर्षि दयानन्द की तर्कणा शक्ति की अद्वितीय कृति है। इस कृति म धर्म कर्म से लेकर जीवन जगत तक की सारी बातो का उल्लेख है। यह अनुपम कालजयी ग्रन्थ है जिसे पढने के बाद ज्ञान का कपट खुल जाता है और व्यक्ति मे तर्कणा शक्ति का विकास होता है। अधिक से अधिक ग्रन्थो का उद्धरण प्रस्तुत करना समस्त मत मतान्तरो की समीक्षा करना सत्यासत्य का निरूपण करना महापुरुषो का वास्तविक चरित्र सामने लाना पोपलीला का गढ तोडना स्वामी दयाननद की पैनी दृष्टि के उदाहरण है।

५ यज्ञ के वैज्ञानिक महत्त्व का प्रतिपादन

महर्षि दयानन्द के पूर्व यज्ञ हिसापरक हो गए थे। अन्धविश्वासी उसमे मास की आहुति देते थे। पशुओ की बलि देते थे और उसमे सीमित जन ही भाग ले सकते थे। यज्ञ की वैज्ञानिकता समाप्त हो चुकी थी। स्वामी दयानन्द ने अपनी पैनी दृष्टि से यज्ञ को ऋषि मुनियो द्वारा प्रदत्त महान विज्ञान उदभाषित किया जिसे देखकर और पढकर लोगो का उसकी वास्तविकता का पता चला। आज यज्ञ के ऊपर विश्व मे तमाम वैज्ञानिक शोध हो रहे है और नए नए परिणाम सामने आ रहे है।

६ विश्वकल्याणार्थ आर्यसमाज की स्थापना करना

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने ही देश के लिए नहीं अपितु विश्व के कल्याणार्थ आर्यसमाज की स्थापना की। उनके अन्दर वसुधैवकुटुम्बकम की भावना थी। उन्होने आर्य शब्द को व्यापक दृष्टि से देखा और मानवमात्र को श्रेष्ठ बनाने पर बल दिया। आज उनका सन्देश विश्व के कोने कोने मे फैल चुका है और विदेशो मे भी आर्यसमाजे स्थापित हो चुकी है।

७ देश की स्वतन्त्रता के लिए उदघोषणा करना

देश को परतन्त्रता की बेडियो से मुक्त कराने के लिए स्वामी जी ने उद्घोषणा की और स्वदेशी राज्य को विदेशी राज्य से सर्वोत्तम बताया। उनके अन्दर स्वतन्त्रता की अग्नि जल रही थी। देश की स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर ८० प्रतिशत शहीद होने वाले आर्य विचारधारा के थे।

८ महापुरुषो के विकृत चरित्र का शुद्धिकरण

एक ओर अवतारवाद का बोल बाला दूसरी ओर श्रीकृष्ण जैसे महान व्यक्तित्व को लाछित करना राम को साक्षात ईश्वर सिद्ध करना – इन समस्त दोषो को निकालकर स्वामी दयानन्द ने उनके वास्तविक स्वरूप को जनता के समक्ष प्रस्तुत किया। शिव ब्रह्मा विष्णु इन्द्र का सत्यार्थ बताया।

९ मानव का मानव के रूप मे निरूपण

महर्षि दयानन्द एक ऐसे साहसी योद्धा थे जिन्होने जात पात छुआछूत ऊच नीच की भावनाओ का खण्डन करके मानव को मानव बताया। मनुर्भव' का सन्देश दिया। मानवमात्र को एक इश्वर की सन्तान बताया ओर भेदभाव का विरोध किया।

१० मत मतान्तरो की समीक्षा

उस समय देश मे तमाम मत मतान्तरा के जाल फैले हुए थे। भोली भाली जनता इन जालो मे उलझी हुई थी। सत्य का मार्ग लुप्तप्राय हो गया था। महर्षि दयानन्द ने उन समस्त मत मतान्तरो की समीक्षा करके सत्य का प्रकाश किया जिसका विवरण सत्यार्थ प्रकाश मे है।

११ अनेक ग्रन्थो की रचना

महर्षि दयानन्द का कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश है। इसके अतिरिक्त ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका ऋग्वेद यजुर्वेद भाष्य सस्कारविधि व्यवहारभानु गोकरुणानिधि आर्योद्देश्यरत्नमाला स्वमन्तव्या मन्तव्यप्रकाश आदि हैं जो दयानन्द की महती विद्वता के जाज्वल्यमान दीपक हैं।

इसके अतिरिक्त उन्होने नारी शिक्षा गोरक्षा बाल विवाह निषेध अनमेल विवाह निषेध नारी सम्मान बहुदेवी देवतावाद का खण्डन जैसी तमाम विकृतियो को दूरकर बिगडे हुए सामाजिक ढाचे का पुनर्निर्माण किया। उनकी पैनी दृष्टि का अवलोकन करने के लिए उनके ग्रन्थो का अध्ययन करना परमावश्यक है।

– आर्यसमाज रावतभाटा वाया कोटा राजस्थान ३२३३०५

शत हस्त समाहरः सहस्त्र हस्त संकिरः
सौ हाथों से कमाओ तथा हजार हाथों से दान करो

पीड़ितों की सेवा हम सब का राष्ट्रीय कर्त्तव्य है

सार्वदेशिक सभा के आह्वान पर गुजरात में आए भीषण भूकम्प से पीड़ित मानवता की सहायतार्थ दान की अपील पर जिन दानी महानुभावों आर्यसमाजों या संस्थाओं से दान प्राप्त हुए हैं उनकी सूची प्रकाशित की जा रही है

1 सर्वश्री प्रधान/मन्त्री आ० स० नागल दिल्ली 3 600 00
2 प्रधान/मन्त्री आ० स० कैलाश ग्रेटर कैलाश I नई दिल्ली 11 000 00
3 सुरेन्द्रपाल सिंह शाक्य बदायूं 100 00
4 श्रीमती शकुन्तला गुप्ता दिल्ली 50 00
5 मन्त्री आ० स० सुन्दर विहार दिल्ली 5 000 00
6 भूपाल सिंह आर्य बिजनौर 201 00
7 वीणा जोली अन्टारियो (कनाडा) 10 000 00
8 माम चन्द आर्य गाजियाबाद 251 00
9 दयानन्द आदर्श विद्यालय आ०स० तिलक नगर नई दिल्ली 11 000 00
10 पवन एक्सपोर्ट प्रा० लि० गाजियाबाद 51 000 00
11 रतन चन्द आर्य पब्लिक स्कूल विनय निगर नई दिल्ली 21 000 00
12 इन्द्रजीत मोहन गाजियाबाद 1 000 00
13 दिनेश कुमार आर्य बिजनौर 101 00
14 मन्त्री आ०स० नोएडा 3 000 00
15 अनिल अनेजा आ०स० नजफगढ दिल्ली 51 00
16 पवन आ०स० नजफगढ दिल्ली 100 00
17 जयप्रकाश आ०स० नजफगढ दिल्ली 100 00
18 बांकेबिहारी आ०स० नजफगढ दिल्ली 21 00
19 गुप्तदान आ०स० नजफगढ दिल्ली 51 00
20 गुप्तदान आ०स० नजफगढ दिल्ली 51 00
21 गुप्तदान आ०स० नजफगढ दिल्ली 50 00
22 गुप्तदान आ०स० नजफगढ दिल्ली 50 00
23 दावड़ा स्टोर आ०स० नजफगढ दिल्ली 50 00
24 श्याम सुन्दर सिंघल आ०स० नजफगढ दिल्ली 50 00
25 बशी स्वीट आ०स० नजफगढ दिल्ली 51 00
26 अतर सिंह जान आ०स० नजफगढ दिल्ली 01 00
27 आजाद पान भण्डार आ०स० नजफगढ दिल्ली 50 00
28 विजय वर्मा आ०स० नजफगढ दिल्ली 51 00
29 मुकेश आ०स० नजफगढ दिल्ली 51 00
30 नरेश आ०स० नजफगढ दिल्ली 51 00
31 कै० नानक चन्द नजफगढ दिल्ली 150 00
32 श्रीमती सरस्वती देवी नजफगढ दिल्ली 100 00
33 बाल किशन आर्य नजफगढ दिल्ली 100 00
34 रामकिशन आर्य नजफगढ दिल्ली 51 00
35 चन्द्रभान आर्य नजफगढ दिल्ली 500 00
36 सरदार सिंह नजफगढ दिल्ली 100 00
37 गुप्तदान आ०स० नजफगढ दिल्ली 100 00
38 श्रीमती मना देवी नजफगढ दिल्ली 101 00
39 श्रीमती महेन्द्र देवी नजफगढ दिल्ली 101 00
40 जय किशन गहलोत नजफगढ दिल्ली 1 000 00
41 तेजराम नजफगढ दिल्ली 100 00
42 समुन्द्र सिंह नजफगढ दिल्ली 100 00
43 डा० महेन्द्र आर्य नजफगढ दिल्ली 100 00
44 जिले सिंह द्वितीय नजफगढ दिल्ली 50 00
45 मनमोहन आर्य नजफगढ दिल्ली 131 00
46 रामचन्द्र आर्य नजफगढ दिल्ली 100 00
47 ओमप्रकाश नजफगढ दिल्ली 150 00
48 रामपत आर्य नजफगढ दिल्ली 201 00
49 लाला पूरन लाल नजफगढ दिल्ली 1100 00
50 प्रवेश कुमार नजफगढ दिल्ली 50 00
51 जुनेजा सलेक्शन नजफगढ दिल्ली 51 00
52 समुन्द्र सिंह नजफगढ दिल्ली 50 00
53 गुप्तदान आ०स० नजफगढ दिल्ली 200 00
54 नवीन जैन नजफगढ दिल्ली 100 00
55 विकास जैन नजफगढ दिल्ली 100 00
56 राजेन्द्र जैन नजफगढ दिल्ली 100 00
57 गुप्तदान नजफगढ दिल्ली 100 00
58 गुप्तदान नजफगढ दिल्ली 50 00
59 गुप्तदान आ०स० नजफगढ दिल्ली 51 00
60 गुप्तदान आ०स० नजफगढ दिल्ली 51 00
61 दालत राम सतीश कुमार नजफगढ दिल्ली 51 00
62 जगदीश प्रसाद नजफगढ दिल्ली 51 00
63 रामनारायण नजफगढ दिल्ली 50 00
64 देशराज नजफगढ दिल्ली 50 00
65 रामप्रकाश नजफगढ दिल्ली 101 00
66 श्रीराम जलेबी वाले नजफगढ दिल्ली 51 00
67 प्रताप मेडिकल स्टोर नजफगढ दिल्ली 50 00
68 चौ० भूपसिंह नजफगढ दिल्ली 51 00
69 गोपाल दास नजफगढ दिल्ली 51 00
70 अमित कुमार नजफगढ दिल्ली 51 00
71 सतीश बुक डिपो नजफगढ दिल्ली 51 00
72 गुप्तदान आ०स० नजफगढ दिल्ली 50 00
73 विकास मेडिकल स्टोर नजफगढ दिल्ली 51 00
74 गुप्तदान आ०स० नजफगढ दिल्ली 50 00
75 नीलू ट्रेडर्स नजफगढ दिल्ली 51 00
76 जय प्रकाश नजफगढ दिल्ली 50 00
77 गुप्तदान नजफगढ दिल्ली 51 00
78 गुप्तदान आ०स० नजफगढ दिल्ली 51 00
79 जैना ज्वेलर्स नजफगढ दिल्ली 51 00
80 गुप्तदान नजफगढ दिल्ली 101 00
81 सुरेन्द्र वर्मा नजफगढ दिल्ली 500 00
82 रोहताश आर्य नजफगढ दिल्ली 100 00
83 अजीत सिंह आर्य नजफगढ दिल्ली 50 00
84 गुप्तदान आ०स० नजफगढ दिल्ली 2 188 00
85 श्याम सुन्दर सिंघल नजफगढ दिल्ली 31 00
86 श्रीमती सावित्री तथा कृष्ण लाल शर्मा आर्य नजफगढ दिल्ली 251 00
87 शुभम और कुशल नजफगढ दिल्ली 50 00
88 मन्त्री आर्यसमाज नजफगढ दिल्ली 550 00
89 महेश चन्द पैंगेरिया धौलपुर राजस्थान 00 00
90 पुत्तू लाल शाक्य बदायूं 100 00
91 आर्यसमाज ब्रह्मपुरी उस्मानपुर दिल्ली 500 00
92 ए०पी० खुराना दिल्ली (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 101 00
93 रणजीत सिंह (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 500 00
94 राम किशन बत्रा (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 01 00
95 मेजर समय चौधरी (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 500 00
96 श्रीमती ममता शर्मा (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 200 00
97 श्रीमती सुलोचना शर्मा (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 500 00
98 भीमसेन चौधरी (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 101 00
99 बाला दत्ता जी (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 100
100 श्रीमती सत्य अहलूवालिया (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 250 0
101 श्रीमती पवन सूद (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 250 00
102 श्रीमती चम्पा सूद (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 250 0
103 जनाब आबिद हसन (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 50 00
104 आर० के० जैन (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 100 00
105 ओ० पी० श्रीवास्तव (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 200 00
106 मेसर्स कुमार पेण्ट और मार्बल हाउस (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 200 00
107 श्रीमती सीमा गन्डोत्रा (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी) 100 00
108 पी० आर० जोशी देहरादून 100 00
109 डा० नारायण दास गोहाटी 1 001 00
110 मन्त्री आ०स० मन्दिर इन्द्रा नगर बंगलौर 1 00 000 00
111 सत्यकाम चावला (द्वारा आ०स० मेन बाजार रानीबाग दिल्ली) 5 000 00
112 रमेश कुमार अरोड़ा (द्वारा आ०स० मेन बाजार रानीबाग दिल्ली) 500 00
113 वेद कुमार सैनी (द्वारा आ०स० मेन बाजार रानीबाग दिल्ली) 500 00
114 धर्मपाल गुप्ता (द्वारा आ०स० मेन बाजार रानीबाग दिल्ली) 500 00
115 श्रीमती दुर्गा ग्रोवर (द्वारा आ०स० मेन बाजार रानीबाग दिल्ली) 500 00
116 डा० कृष्ण लाल (द्वारा आ०स० मेन बाजार रानीबाग दिल्ली) 251 00
117 श्रीमती राज भूटानी (द्वारा आ०स० मेन बाजार रानीबाग दिल्ली) 1 100 00
118 किशोरी लाल वर्मा (द्वारा आ०स० मेन बाजार रानीबाग दिल्ली) 2100 00
119 मन्त्री आ०स० मन्दिर मेन बाजार रानीबाग दिल्ली 15 503 00
120 ओमप्रकाश गुप्ता (द्वारा आ०स० डी० ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली) 500 00
121 डी० वी० चोपड़ा (द्वारा आ०स० डी० ब्लाक जनकपुरी दिल्ली) 1 000 00
122 प्रवीण सिंह (द्वारा आ०स० डी० ब्लाक जनकपुरी दिल्ली) 11 000 00
123 आर०एल० भवन (द्वारा आ०स० डी० ब्लाक जनकपुरी दिल्ली) 1 100 00
124 ओ० एल० गुप्ता (द्वारा आ०स० सी० ब्लाक जगतपुरी नई दिल्ली) 1 000 00
125 जगदीश चन्द्र (द्वारा आ०स० मन्दिर सी० ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली) 500 00
126 आशा उज्ज्वल (द्वारा आ०स० मन्दिर सी० ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली) 500 00
127 प्रवेश कपूर (द्वारा आ०स० मन्दिर सी० ब्लाक जनकपुरी दिल्ली) 500 00
128 बी० बी० शर्मा (द्वारा आ०स० मन्दिर सी० ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली) 500 00
129 अरूणेश कपूर (द्वारा आ०स० मन्दिर सी० ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली) 500 00
130 श्रीमती सूर्या कुमार (द्वारा आ०स० मन्दिर सी० ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली) 1 000 00
13 श्रीमती कृष्ण अरोड़ा (द्वारा आ०स० मन्दिर सी० ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली) 500 00
132 पी० डी० गुप्ता (द्वारा आ०स० मन्दिर सी० ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली) 500 00
133 आर० के० गुलाटी (द्वारा आ०स० मन्दिर सी० ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली) 500 00
134 एच०एल० त्रिवेदी (द्वारा आ०स० मन्दिर सी० ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली) 500 00
135 एम० एल० आहूजा (द्वारा आ०स० मन्दिर सी० ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली) 2 00 00
136 जगदीश कपूर (द्वारा आ०स० मन्दिर सी० ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली) 500 00
137 वी० एल० गरखेल (द्वारा आ०स० मन्दिर सी० ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली) 500 00
138 [illegible] (द्वारा आ०स० मन्दिर [illegible] जनकपुरी [illegible] दिल्ली) 500 00
139 [illegible] कपूर (द्वारा [illegible] मन्दिर [illegible] जनकपुरी [illegible]) 200 00
140 [illegible] वी० राटो (द्वारा आ० स० मन्दिर [illegible] ब्लाक जनकपुरी [illegible] दिल्ली) 100 00
141 श्रीमती अक्ष्य नन्दा (द्वारा आ०स० मन्दिर सी० ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली) 100 00
142 श्रीमती लता सिंघल (द्वारा आ०स० मन्दिर सी० ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली) 500 00
143 श्रीमती सुनीता कपूर (द्वारा आ०स० मन्दिर सी० ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली) 100 00
144 एस० के० जोशी (द्वारा आ०स० मन्दिर सी० ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली) 100 00
145 एस० के० मदान (द्वारा आ०स० मन्दिर सी० ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली) 1 100 00
146 गुरुदास कपूर (द्वारा आ०स० मन्दिर सी० ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली) 1 100 00
147 विनोद आर्य दिल्ली 100 00

क्रमश

भविष्य मे प्राप्त दान को भी इसी प्रकार प्रकाशित किया जाएगा। **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त घोषित है।** यदि आपको अपने आयकर खातों के लिए प्रमाण पत्र की आवश्यकता हो तो सार्वदेशिक सभा के कार्यालय से मगवा ले। दान की रसीद के साथ ही यह प्रमाण पत्र भी भिजवा दिया जाएगा।

सभा मन्त्री

स्वामी भूमानन्द सरस्वती नहीं रहे



करीब १० दिन पूर्व स्वामी भूमानन्द सरस्वती के अचानक अरवस्थ हो जाने पर उन्हे क्षेत्रीय विधायक श्री अमरीश गौतम एव आर्यसमाज खिचडीपुर के पदाधिकारियो के सहयोग से गुरु तेग बहादुर अस्पताल मे भर्ती कराया गया था। दिनाक १० २ २००१ को दोपहर १ ३० बजे उनका निधन हो गया।

स्वामी जी का पूर्व नाम श्री भूदेव था आपने आर्यसमाज हरदोई मे कई वर्षो तक सेवा कार्य किया था। गहन परिश्रम तथा स्वाध्याय आदि करने के उपरान्त गुरुकुल ज्वालापुर एव गुरुकुल गदपुरी मे अध्यापन कार्य भी किया। बाद मे सन्यास दीक्षा लेकर स्वामी भूमानन्द सरस्वती का नाम पाया और आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली मे रहकर आर्यसमाज का प्रचार कार्य करते रहे। करीब ३० वर्ष पूर्व आर्यसमाज खिचडी पुर ब्लाक चार कल्याणपुरी दिल्ली ६१ मे उन्होने एक आर्यसमाज मन्दिर की स्थापना की और जीवन क अन्तिम क्षण तक वही रहकर आर्यसमाज का प्रचार किया। स्वामीजी ने आर्यसमाज निर्माण विहार दिल्ली ६२ के निर्माण के समय स्वर्गीय स्वामी आनदबोध सररवती के निर्देशानुसार भारी सहयोग दिया था।

श्री भूमानन्द जी का अन्तिम सस्कार कल्याणपुरी श्मशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति श्री रविदत्त से शास्त्री द्वारा सम्पन्न कराया गया। श्री चन्द्रभान सरौतिया मन्त्री आर्यसमाज ने मुखाग्नि दी। इस अवसर पर श्री अमरीश गौतम विधायक सहित सैकडो व्यक्ति उपस्थित थे।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा व डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने स्वामीजी के निधन का समाचार मिलते ही सार्वदेशिक सभा से श्री अवनीन्द्र शर्मा श्री जयनारायण शर्मा तथा ललन राय को स्वामीजी के अन्तिम सस्कार मे सम्मिलित होने के लिए भेजा। स्वामी जी की आत्मा की शान्ति के लिए ११ फरवरी से १७ फरवरी तक प्रात एव साय नियमित रूप से आर्यसमाज मन्दिर खिचडीपुर मे यज्ञ चल रहा है। १८ फरवरी को स्वामीजी की स्मृति मे ऋषि लगर का भी आयोजन किया जाएगा।

चन्द्रभान सरौतिया
मन्त्री आर्यसमाज खिचडीपुर

भूकम्प पीडितो की सहायता हेतु गए आर्य युवको का दल वापसी पर दुर्घटनाग्रस्त

आर्यसमाज गाजियाबाद जिला सभा के मन्त्री श्री महेन्द्र सिह के नतृत्व मे आर्य युवको का एक दल धनराशि व एक ट्रक सामान लेकर गुजरात गया था सामान देकर और क्षेत्र की परिस्थिति देखकर वापस आ रहा था।

दुखियो की पीडा समेटे आर्य युवको का दल वापस आते समय मार्ग मे दुर्घटनाग्रस्त हो गया। जिसमे श्री वीरसिह आर्य दिवगत हो गए। उनके मृत शरीर को गुजरात से दिल्ली वापस लाया गया और अन्तिम सस्कार आर्यसमाज द्वारा सम्पन्न हुआ।

श्री वीरसिह जी अपने पीछे पत्नी व तीन कन्याए छोड गए हैं।

श्री वीरसिह के सहयोगी श्री महेन्द्र सिह जी की टाग टूट गई उनका आपरेशन किया गया और तीन व्यक्ति सख्त घायल हो गए हैं उनका उपचार गाजियाबाद लाकर किया जा रहा है। गए थे सेवा करने और स्वय काल के गाल मे चले गए शेष घायल हो गए।

वीरसिह जी इस ससार से चले गए शेष चार व्यक्ति मृत्यु से तो बच गए लेकिन सख्त घायल हो गए। प्रभु उन्हे शीघ्र स्वास्थ्य लाभ प्रदान करे यह कामना है।

स्व० श्री वीरसिह के देहावसान पर शोक सभा

स्व० श्री वीरसिह को श्रद्धाजलि अर्पित करने हेतु एक शोक सभा का आयोजन आर्य नेता चौ० लक्ष्मीचन्द जी प्रधान गाव सभा बादशाह बाग खचेडा की अध्यक्षता मे गाधी इन्टर कालेज दुजाना मे किया गया। इस शोक सभा मे क्षेत्र के गणमान्य व्यक्ति तथा आर्यसमाजो के प्रतिनिधि सम्मिलित थे।

क्षेत्रीय विधायक श्री नवाबसिह नागर तथा सासद श्री अशोक प्रधान भी उपस्थित थे

दिवगत श्री वीरसिह जी अपने पीछे धर्मपत्नी व तीन कन्याए ६ ५ १ वर्ष की असहाय हालत मे छोड गए है। उनकी सहायतार्थ पाच लाख रुपए की एक स्थिर निधि की घोषणा की गई।

५१ इक्यावन हजार रुपये श्री अशोक प्रधान सासद तथा ११ ग्यारह हजार रुपए श्री नवावसिह नागर ने और ५ हजार एक सौ रुपये श्री लक्ष्मीचन्द जी ने देने की घोषणा की।

इसके अतिरिक्त डा० रविकान्त मन्त्री आर्यसमाज दीवान हाल ने ५००/ मासिक स्वामी आनन्दबोध चेरिटेबल ट्रस्ट दीवानहाल द्वारा देने की घोषणा की। अपील पर दो लाख रुपया तुरन्त जनता द्वारा एकत्रित हो गया। दिवगत आत्मा की सद्गति हेतु प्रभु से प्रार्थना की गई। शान्ति पाठ के साथ सभा विसर्जित हुई।

चौ० लक्ष्मी चन्द प्रधान गाव सभा बादशाह बाग खचैडा

आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली द्वारा भूकम्प से अनाथ हुए बच्चो को गोद लेने का सकल्प

जैसा की सर्वविदित है कि गुजरात को आजादी के बाद के सबसे भीषण भूकम्प की त्रासदी से गुजरना पड रहा है। लाखो लोग अकाल मृत्यु को प्राप्त हुए हैं तथा लाखो बच्चे अनाथ हो गए है।

आर्यसमाज दीवानहाल ने यह निश्चय किया है कि भूकम्प के कारण अनाथ हुए लगभग पचास बच्चो को आर्य समाज गाद लेगा एवम उनके भोजन रहने व शिक्षा दीक्षा का प्रबन्ध आर्य समाज के गुरुकुलो एवम शिक्षण सस्थाओ मे करेगा। आपसे नम्र निवेदन है कि ऐसे बच्चो की सूची आर्यसमाज मदिर दीवान हाल चादनी चौक दिल्ली मे भिजवाकर कृतार्थ करे।

– डॉ० (मेजर) रविकान्त (सेवा निवृत्त) मन्त्री
आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली

करें दयानन्द का गुणगान

– पण्डित वेदप्रकाश शास्त्री

प्रभु जी दे दो यह वरदान करे दयानन्द का गुणगान
चहु ओर अन्धेरा छाया था तब दयानन्द यहा आया था।
लेकर चतुर्वेद का ज्ञान करे दयानन्द का गुणगान।।
वेदो का जिसने पाठ पढाया सबका उस पर अधिकार जताया।
शिक्षा दी सबको एक समान करे दयानन्द का गुणगान।।
पाच बरस का बालक हो जाए वह घर मे नहि रहने पाए।
विद्यालय जाकर पाए ज्ञान करे दयानन्द का गुणगान।।
एकेश्वर का ध्यान सिखाया पचयज्ञ का पथ दर्शाया।
किया त्रैतवाद का मान करे दयानन्द का गुणगान।।
शुद्धि का बिगुल बजाया बिछुडो को था गले लगाया।
भेदभाव का न रहा निशान करे दयानन्द का गुणगान।।
गुण कर्म से वर्ण बताया जन्म का था भेद मिटाया।
वेद ने भी किया यही बखान करे दयानन्द का गुणगान।।

पास्टल रजिस्ट्रेशन न० डी०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 18-2 2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2001
R N HNo 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2000 in NDPSo on 15-16/2/2001

e-mail :
vedicgod@nda.vsnl.net.in

ओ३म्

☎ : 3274771
: 3260985

प्रतिष्ठा मे -
0 पुस्तकाध्यक्ष
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय
जिला हरिद्वार 13040

पीड़ितों की सेवा
हम सबका राष्ट्रीय कर्त्तव्य

गुजरात में विनाशकारी भूकम्प

भुज, कच्छ, गांधीधाम, अहमदाबाद क्षेत्र सर्वाधिक प्रभावित

पीड़ितों की सहायतार्थ अपील

तन-मन-धन से सहयोग दीजिए

सभा को दिया गया दान आयकर से मुक्त है

चैक/मनीआर्डर/ड्रॉफ्ट एवं सहायता सामग्री निम्न पते पर भेजें :-

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

3/5, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली - 2

फोन : 3274771, 3260985

निवेदक

स्वामी ओमानन्द सरस्वती, प्रधान **वेदव्रत शर्मा,** मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

3/5, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली - 2

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रकाशन लि० द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली-२ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२१६) से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली-२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१ ३२६०९८५)।
सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री ई-मेल नम्बर vedicgod@vsnl.net.in तथा वेबसाईट - http://www.whereisgod.com

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुखपत्र





वर्ष ३६ अक ४२ | २५ फरवरी से ३ मार्च २००१ तक | दयानन्दाब्द १७८ | सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०१ | सम्वत २०५७ | फा० शु० २

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

आर्य जन प्रतिदिन गौ-ग्रास निकालने का संकल्प लें - स्वामी दीक्षानन्द

आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मोत्सव बडे हर्ष और उल्लास के साथ सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत चल रहे महर्षि दयानन्द गो सवर्द्धन केन्द्र गाजी पुर मे मनाया गया। इस समारोह की अध्यक्षता सभा के कार्यकारी प्रधान स्वामी सुमेधानन्द ने की तथा सभा क उप प्रधान क० देवरत्न आर्य मुख्य अतिथि के रूप मे उपस्थित थे। मच सचालन श्री विमल वधावन एडवोकेट ने किया।

जन्म दिवस समारोह मे दिल्ली की विभिन्न आर्य शिक्षण सस्थाओं के छात्रो ने बडे उत्साह पूवक सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

सभा के उपप्रधान के० देवरत्न आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जीवन मे दो बार आसू बहाए थे और दोनो बार आसू बहाना एक ऐतिहासिक घटना चक्र के रूप मे स्थापित हो गया। पहली बार बहन और चाचा के देहान्त के बाद उनके आसू आए थे। उनके अन्दर आसुओ से एक विचार उत्पन्न हुआ था कि मृत्यु क्या है? मैं मृत्यु पर विजय प्राप्त करना चाहता हू। इन विचारो के साथ वे घर से निकले और उनका घर से निकलना उनके जीवन मे एक ऐतिहासिक मोड बन गया।

दूसरी बार महर्षि दयानन्द के आसू गगा के किनारे उस समय निकले जब एक महिला अपने मृत बच्चे के शरीर को अपनी साडी रूपी कफन से ढक कर लाई और उसे गगा मे बहाने के बाद उसी कफन को पुन साडी के रूप मे डाल लिया। यह देखकर आसुओ से भरे हुए महर्षि ने सोचा कि हमारे देश की क्या स्थिति बन गई है। एक मा बच्चे के कफन का प्रबन्ध भी नहीं कर सकती। हमारे देशवासी सोए हैं और विदेशी हम पर शासन कर रहे है। महर्षि के यह आसू एक बार फिर ऐतिहासिक साबित हुए और महर्षि ने विदेशी शासन के विरुद्ध जनमत बनाने का महान निणय लेना प्रारम्भ कर दिया।

कै० देवरत्न ने कहा कि आज समाज और पूरी मानव सभ्यता किस मोड पर खडी है परन्तु ऐसा लगता है कि किसी के आसू नहीं निकलते। यदि आसुओ मे ताकत हो तो आर्य समाज एक बार फिर बहुत बडी शक्ति बन सकता है।

उन्होंने कहा कि मुम्बई मे २३ से २६ मार्च २००१ को आयोजित होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के शुभ अवसर पर समूचे विश्व के आर्यो का एकता और अनुशासन का परिचय देना चाहिए। अत उन्होंने अधिक से अधिक सख्या मे आयजनो से मुम्बई पहुचने की अपील की।

सुविख्यात सन्यासी स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश मे ५ सभाओ का वर्णन किया गया है - धर्मार्य सभा विद्यार्य सभा न्यायार्य सभा राजार्य सभा तथा गौ कृषि आदि रक्षिणी सभा उन्होने कहा कि स्वामी जी का जन्म दिन गौ कृषि रक्षिणी सभा के प्रबन्धन मे मनाया जा रहा है अत हम इसी पर चिन्तन ओर सकल्प करना चाहिए कि हम गौ ग्रास प्रतिदिन अपने निवास पर अथवा अपने कारोबार के स्थल पर अवश्य निकाला करे।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने जन्मोत्सव मे भाग लेने वाले महानुभावो का स्वागत करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द गो सवर्द्धन केन्द्र गाजीपुर की नींव मे स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी की कर्मठता और लगनशील भावना है उनके लगाए हुए पौधे को पहले श्री सूर्यदेव जी सींचते रहे और अब यह दायित्व मेरे कन्धो पर है।

उन्होने गुजरात मे आए भूकम्प के बाद आर्यसमाज द्वारा व्यापक स्तर पर किए जा रहे राहत कार्यो का ब्योरा प्रस्तुत किया तथा अगले माह मुम्बई मे होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मे अधिक से अधिक सख्या मे पहुचने का आह्वान किया।

सार्वदेशिक सभा के उप मन्त्री एव बगाल आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री आनन्द कुमार आर्य ने कहा कि महर्षि जी के जन्मोत्सव पर हमे आर्यसमाज के नियमो व प्रावधानो के तहत चलने के लिए सकल्प लेना चाहिए जिससे वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार को अधिकाधिक बल मिलेगा।

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री जयनारायण अरूण ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी की भावनाओ के अनुरूप हम सबको उनके वचनो के पर चलकर आयसमाज के कार्यो को करना चाहिए।

पजाब के श्री अश्विनी कुमार शर्मा ने कहा कि हमे आर्य समाज के कार्यकर्ताओ का भी [illegible] सम्मान करना चाहिए क्योकि [illegible] किसी सस्था के कार्यकर्ता [illegible] ही माध्यम होते है। श्री शर्मा ने २१ हजार रुपए अपनी ओर से मुम्बई सम्मेलन के लिए [illegible] अपनी माता जी के नाम पर एक भूसा गोदाम गोसवर्धन केन्द्र मे बनवाने का वचन दिया।

बिहार सभा के प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री ने कहा कि वेद मे विज्ञान की खोज महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ही की थी उनसे पूर्व वेदो के आधार पर तरह तरह की सामाजिक बुराइया और पाप समाज मे फैल रहे थे।

सुविख्यात उद्योगपति श्री टीकम चन्द ने भी इस समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा कि ईश्वर की भक्ति हमे किसी भी बडे से बडे दुख का सामना करने मे सक्षम बना सकती है उन्होने कहा कि प्रत्येक क्षण ईश्वर का स्मरण और पापो से दूर रहने का सकल्प ही व्यक्ति के प्रमुख लक्ष्य होने चाहिए। उल्लेखनीय है कि श्री टीकम चन्द का विगत भूकम्प से गाधीधाम मे लगभग ७ करोड का नुकसान हुआ है फिर भी हर्ष पूर्वक उन्होने मुम्बइ सम्मेलन के लिए सवा लाख रुपए दने की घोषणा की।

वरिष्ठ अधिवक्ता श्री रामफल बसल ने कहा कि गौमाता की सेवा से इच्छित मृत्यु को प्राप्त किया जा सकता है जिसे मैने साक्षात अपने परिवार मे ही देखा है। उन्होने कहा मेरे पिता गौ की सेवा करते थ और उन्हे इच्छित मृत्यु भी प्राप्त हुई थी

समारोह की अध्यक्षता करते हुए स्वामी सुमेधानन्द जी ने उपस्थित आर्यो से कहा कि स्वामी दीक्षानन्द जी ने जिस गोग्रास की अपील की है उस सकल्प को पूरा करने के लिए सभा द्वारा सुन्दर गुल्लके परिवारो तथा कारोबारी स्थलो पर रखवायी जानी चाहिए जिससे लोगो को नियमित गोपालन हेतु दान करना सुलभ हो।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मुम्बई के लिए

रेल किराये में ५० प्रतिशत की छूट

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा द्वारा रेल राज्य मन्त्री श्री दिग्विजय सिह का लिखे पत्र के फलस्वरूप रेलवे बोर्ड के डाइरेक्टर श्रीमती मणि आनन्द ने अपने पत्र सख्या **टी सी २/२०६६/९८/६** दिनाक १४ फरवरी २००१ द्वारा मुम्बइ कलकत्ता नई दिल्ली गोरखपुर गुवाहाटी चेन्नइ सिकन्दराबाद भुवनेश्वर हाजीपुर अलाहाबाद जयपुर बगलोर तथा जबलपुर कार्यालय को सूचित किया है कि **२३ से २६ मार्च २००१** की तिथियो मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मुम्बई मे भाग लेने वाले **यात्री मेल तथा एक्सप्रेस गाडियों में द्वितीय श्रेणी साधारण और स्लीपर** के किराये मे **५० प्रतिशत छूट** के अधिकारी होगे। यह छूट **केवल ३०० कि०मी० से अधिक** की यात्रा करने वालो को ही उपलब्ध होगी। इस छूट का लाभ **किन्ही ३० दिनो** मे उठाया जा सकेगा जिसमे महासम्मेलन की तिथिया (२३ से २६ मार्च २००१) शामिल हो।

यह छूट प्राप्त करने के लिए **आर्य यात्री तत्काल सार्वदेशिक सभा कार्यालय** (फोन न० **३२७४७७१ ३२६०९८५**) **सार्वदेशिक प्रेस** (फोन न० **३२७०५०७ ३२७४२१६**) तथा **श्री विमल वधावन (नि० ७२२४०६०)** पर अपने **नाम आयु स्टेशन** जहा से यात्रा आरम्भ करनी है का विवरण **अपने पते सहित** लिखवा दे।

यह सूचना मिलने पर तत्काल आर्य यात्री को सभा मन्त्री **श्री वेदव्रत शर्मा** द्वारा **हस्ताक्षरित** एक **प्रमाण पत्र** जारी कर दिया जाएगा। यह **प्रमाण-पत्र** प्राप्त होने पर आर्य यात्री अपने निर्धारित रेलवे स्टेशन पर इसे प्रस्तुत करके **५० प्रतिशत छूट** वाले **रेलवे टिकट** प्राप्त कर पाएगे। रेलवे बोर्ड द्वारा लिखे गए पत्र दिनाक १४/२/२००१ की **मूल प्रति पृष्ठ ११ पर** पूरे नियमो सहित प्रकाशित की जा रही है।

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

सह सम्पादक
विमल वधावन एडवोकेट



बाए से स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती कै० देवरत्न आर्य श्री वेदव्रत शर्मा स्वामी सुमेधानन्द श्री भूप नारायण शास्त्री तथा श्री जय नारायण अरुण।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक चुनाव सम्पन्न स्वामी श्रद्धानन्द प्रधान तथा डॉ० सु० ब० काले मन्त्री बनें



स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती प्रधान



डॉ० सु० ब० काले मन्त्री

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रेवार्षिक चुनाव अधिवशन गत रविवार दिनाक २१ जनवरी २ १ को अ यसमाज परली वैजनाथ जिला बीड मे सम्पन्न हुआ अधिवेशन की अध्यक्षता निवर्तमान प्रधान स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने की तथा निर्वाचन अधिकारी के रूप मे वयोवृद्ध आर्य कार्यकर्त्ता एव सभा के भूतपूव प्रधान श्री दौलत राम जी ढढा न की

आगामी तीन वर्षो के लिए महाराष्ट्र आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद के लिए श्री स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती एव मन्त्री पद के लिए श्री डा सुग्रीव बलीराम जी काले का पुनश्च सवसम्मति से निर्विरोध चुनाव हुआ कोषाध्यक्ष के रूप मे पुन एक बार उग्रसेन जी राठोर को नियुक्त किया गया हे

विगत तीन वर्षो क कायकाल म अभूत पूर्व कार्य कर सभा को आर्थिक दृष्टि से बलवती बनाने एव वेदिक सिद्धान्तो को अधिक समाजोपयोगी बनाने के सफलतम प्रयासो के कारण चुनाव अधिवेशन मे उपस्थित राज्य के लगभग सौ से भी अधिक अ य समा प्रतिनिधियो ने एक स्वर स उपराक्त पदाधिकारियो का चयन किया चुनाव के पश्चात नूतन प्रधान मन्त्री एव कोषाध्यक्ष न कार्यकारिणी गठन किया जिसम निम्न पद धिक री चुन गय सर्वश्री बलीर म प टिल (निलग) दयाराम बसैये (सभाजी नगर) लेखराज आर्य (धूलिया) को उप प्रधान के रूप म तथा सर्वश्री प्रा० एकनाथ नाणेकर (पिपरी पुण) प्रमोद कमार मिश्रा (किल्ल धारूर) व महाधवराव देशपाडे (नासिक) को उपमन्त्री के रूप मे स्थान दिया गया है। पुस्तकाध्यक्ष के रूप मे श्री ज्ञानकुमार आर्य (लातूर) आर्य वीर दल अधिष्ठाता के रूप मे श्री व्यकटेश हालिगे (लातूर) वेद प्रचार अधिष्ठाता के रूप मे आचार्य शिवमुनिजी (परली) एव सस्कार प्रमुख के रूप मे श्री दिनकर राव देशपाडे (गुजोटी) को नियुक्त किया गया है। स्वामी सतोषानन्द सरस्वती (सभाजी नगर) दौलतराम चढढा (देवलाली नाशिक) तथा कष्ण चन्द्र आर्य (पिपरी पुणे) को सरक्षक के रूप मे मनोनीत किया गया है।

नवगठित कार्यकारिणी की घोषणा के पश्चात सभी पदाधिकारियो का आर्यसमाज परली की ओर से अभिनन्दन किया गया। अधिवेशन के अन्त मे सभी आर्यजनो ने आर्य सगठन को मजबूत बनाने का सकल्प लिया तथा सभी ने सभा पदाधिकारियो को बधाई दी ❑



आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के १७७ वे जन्मोत्सव पर गुजरात मे भूकम्प पीडित राहत कार्य के लिए समान से भरा एक ट्रक जिसमे नयी त्रिपाले बर्तनो के सेट कम्बल चावल चीनी आदि लगभग ४ टन माल गुजरात के लिए आर्य जगत के प्रसिद्ध स्वामी दीक्षा नन्द जी सरस्वती महाराज द्वारा ओ३म ध्वज दिखाकर ट्रक को रवाना कराया गया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकर्ता प्रधान स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी उप प्रधान कैप्टन देवरत्न जी डॉ० रविकान्त जी श्री राज सिह मल्ला चौ० लक्ष्मी चन्द श्री उमेश गुप्ता जी तथा अन्य आर्य गण उपस्थित थे।



बाए से श्रीमती शशि प्रभा आर्या श्री आनन्द कुमार आर्य श्री टीकम चन्द श्री रामफल बसल तथा श्री विमल वधावन।

अनुशासन का पर्व - अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन



१८ फरवरी को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का साधारण अधिवेशन सम्पन्न हुआ जिसमे बहुत सी प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओ के प्रतिनिधियो ने भाग लिया। सभा प्रधान स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता मे यह बैठक सम्पन्न हुई। सार्वदेशिक स्तरीय साधारण सभा का सचालन करने का मेरे लिए यह प्रथम अवसर था। सार्वदेशिक मे विभिन्न प्रान्तो के प्रतिनिधियो का अनुभव एक प्रकार से विशेष रूप से लाभकारी होता है क्योकि अलग अलग प्रान्तो के अनुभव स्थानीय परिस्थितियो के दृष्टिगत सुनने को प्राप्त होते हे। जिनके आधार पर प्रभावशाली योजना बनाने मे सहायता होती हे। वैसे इस बार गुजरात मे आर्यसमाज द्वारा भूकम्प पीडित व्यक्तियो के लिए राहत कार्यो के साथ साथ आगामी माह मुम्बई मे हाने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की चर्चा छाई रही।

गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य न सार्वदशिक राभा के सहयोग एव मागदर्शन से चल रहे राहत केन्द्रा के द्वार सम्पन्न किए गए कार्यो की जानकारी दी। तथा भविष्य की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए एक अनाथालय और विधवाश्रम की योजनाओ पर चल रहे कार्यो को भी प्रस्तुत किया। इस भावी योजना मे श्री विमल विधावन का योगदान एक ऐतिहासिक तथ्य बनेगा जिनकी कर्मठता से इस परियोजना के लिए करोडो रुपये मूल्य की भूमि सरकार द्वारा उपलब्ध कराई जा रही है।

वास्तव मे गुजरात प्रान्त के इस युवा मन्त्री ने भी अपनी कर्मठता का विशाल परिचय दिया है। कोई भी व्यक्ति अकेला कुछ नही कर सकता यदि समूचा आर्यजगत और विशेष रूप से उसके निकटवर्ती सहयोगी अधिकारी उसे सहयोग न द।

गुजरात के बाद अब आर्यजगत का लक्ष्य आगामी माह मे आयोजित होने वाला अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन तथा गतव्य स्थान मुम्बई का रिकलेमेशन ग्राऊड बान्द्रा है।

सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने मुम्बई सम्मलन के आयोजन की तैयारियो का विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत किया। मै तथा श्री विमल वधावन विगत माह इन सब तेयारियो का अवलोकन करने मुम्बई भी गए थे। लाखो रुपये खर्च करके धर्मशालाए बुक करवाई गई है तथा आवास क लिए अन्य भी प्रबन्ध किए गए हे। मुम्बई मे आवास ही सबसे बडी समस्या हे।

विगत १२५ वर्षो म सम्पन्न किए गए कार्यो आर गतिविधिया स प्रेरणा लेना आगे की योजनाए बनाना इस सम्मलन का स्वभाविक लक्ष्य हे परन्तु इसम भी अधिक जार इस बात पर दिया जा रहा ह कि आर्यसमाज क कार्यक्रमो को अनुशासन की दृष्टि से भी अभी एक सफर तय करना है। मेरी कामना है कि इश्वर हमारी यह अनुशासन यात्रा शीघ्र सफल करे। कै० दवरत्न जी इस समूचे सम्मेलन के सयोजक भी है। सम्मेलन के आयोजको ने यह व्यवस्था की है कि जिन वक्ताओ के पूर्व निधारित नाम कार्यक्रम मे प्रकासित होगे केवल वही वक्ता अपना सारगर्भित उदबोधन दे पाएगे। यह अनुशासन उन पूर्व निर्धारित वक्ताओ के अतिरिक्त शेष समस्त उपस्थित महानुभावो क लिए होगा कि वे केवल मात्र इस श्रोता की हैसियत से ही स्वय को लाभान्वित कर। दूसरी तरफ वक्ताओ को भी अनुशासन से बाध कर रखने क लिए यह व्यवस्था बनाई गई है कि समस्त निधारित वक्ताओ के लिखित उदबोधन पहले स ही आयोजको को प्राप्त हो जाने चाहिए। इस प्रकार का आयाजन आर्यजगत के लिए अपने आप मे एक विचित्र और प्यारा अनुभव होगा।

इस अनुशासन पद्धति का एक विशेष लाभ होगा विद्वान वक्ता जिन्हे दुनिया के लगभग सभी विषयो पर एक गजब की प्रवीणता हासिल हे। व आर्यसमाज के मच स इश्वरीय ज्ञान वद के आधार पर विश्व के लिए अत्यन्त महत्वपूण विचार ना यक्त करत हे परन्तु वह विचार लाउड स्पीकर स निकलने के बाद वायुमण्डल मे खो जाते है। उन्हे इतिहास क रूप म सुरक्षित रखने का कोई प्रयास नही हा पाता। वक्ताओ से पूर्व निर्धारित भाषण लिखित मे प्राप्त करके यही इतिहास रचने का एक महान कार्य प्रारम्भ करने का प्रयास किया जा रहा है।

महा सम्मेलन के विषय भी लकीर से हटकर प्रतीत होते है। प्रकाश की तलाश मे व्यक्ति की तलाश मे और स्वर्ग की तलाश मे – यह विषय वैदिक धर्म ससद नामक सत्रो क है। कण्वन्तो विश्वमार्यम विषय हे आर्य सम्मेलन का। आज का युवा किस माड पर ? जेसे विषय आर्य युवा सम्मेलन मे चर्चित होगे। महिला ओर परिवार निर्माण तथा नारी के गारव की रक्षा जेसे विषया को आर्य महिला सम्मेलन के लिए निर्धारित किया गया हे। इसी प्रकार वेद प्रचार की बहुमुखी व्यूह रचना को वेद सम्मेलन का विषय बनाया गया है।

यह महा सम्मेलन मेरी कामना हे अनुशासन का ऐतिहासिक पर्व बने।

इश्वर से प्राथना है कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मलन से प्रारम्भ हाने वाली इस अनुशासन यात्रा को सफल कर ओर यह अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मलन इस मायन म एक एतिहासिक सम्मेलन साबित हो

वेद व्रत शर्मा

पूरब - पश्चिम



मुनि वशिष्ट ही असल मे अयोध्या का शासन चलाया करते थे। विश्वामित्र जी का प्रभाव महाभारत काल मे इतिहास के पन्ना पर दर्ज हे। ऋषि दुर्वासा का हर परिस्थिति एव हर वर्ग मे प्रभाव हम कई बार सुन चुके है। पूरब सभ्यता के यह किस्से कहानिया भिखारियो के वर्चस्व का सुन्दर तथा सर्वमान्य सर्व ग्रहीय एव आदरणीय प्रदर्शन करती है। जो व्यक्ति एक इच जमीन का भी मालिक न हो वह समूचे राज्य के मालिक पर भी राज करे। सन्यासी परम्परा मे जिस व्यक्ति के पास यह सुनिश्चितता भी न हो कि आज के भोजन के बाद कल का भोजन उसे कहा और किस रूप मे मिलेगा उस मुनि के कहने पर राज्य के खजाने चाहे जिस दिशा मे भी बहा दिए जाए।

पूर्वी सभ्यता का यह चरित्र एक सर्वोच्च सिद्धान्त को स्थापित करता था जिसके तहत व्यक्ति के शरीर के अन्दर एक ऐसे व्यक्ति की तलाश की जाती थी जो लम्बी अवधि का सन्तोष शान्ति और इन लक्ष्यो की प्राप्ति के लिए मार्गदर्शन दे सके।

इसके विपरीत पश्चिमी सभ्यता ने व्यक्ति की तलाश केवल व्यक्ति के शरीर तक ही सीमित रखी। शारीरिक व्यक्ति के अन्दर बैठे आत्मारूपी व्यक्ति को जाने पहचाने बिना सर्वोच्च और निकृष्ट सस्कारो मे भेद किए बिना किसी भी आत्मा धारक व्यक्ति को व्यक्ति मान लिया और उसे समाज की मौलिक ईकाई घोषित कर दिया। समाज की यह सब मौलिक इकाइया समाज के सचालन के लिए अपना अपना अधिकार मागने लगी तो लोकतन्त्र नामक नियम बना दिए गए जिसने बहुमत के सिद्धान्त को विश्वव्यापी मान्यता प्रदान करवा दी। बहुमत का यह स्पष्ट सिद्धान्त है कि १०० मे से ५१ व्यक्ति जिस करवट बेठ जाए सारे समाज को उसी करवट चलना होगा।

आज लोकतन्त्र की नीव पर खडे हमारे देश के शासन तन्त्र मे भी इसी पश्चिमी सिद्धान्त को अपनाकर व्यक्तिया को चुनना शुरू कर दिया है। व्यक्ति की तलाश मे हमारी दृष्टि भी अब व्यक्ति के शरीर तक ही सीमित रह गई हे। उस शरीर के भीतर हुए आत्मिक व्यक्तियो देखने या पहचानने का हम प्रयास करने के अभ्यस्त ही नही रहे। आज यदि वशिष्ट विश्वामित्र व दुवासा ऋषि ससद को मार्गदर्शन देने की बात सोचे तो ऐसा किसी भी कीमत पर सम्भव नही। कानूनो के कारण और इस लम्बे पश्चिमी सिद्धान्त क अभ्यास के कारण हमारा समाज व्यक्तियो की पहचान करने मे अक्षम सा लग रहा है।

अधिक से अधिक साधन सम्पन्न व्यक्ति को वास्तव मे सम्पन्न समझना अर्थात हर प्रकार के मार्ग दर्शन के योग्य समझना प्राय गलत साबित हो रहा हे क्योकि जो स्थान आध्यात्मिक मूल्यो का मिलना चाहिए वह स्थान साधन सम्पन्नता ने छीन लिया।

पहले जहा आध्यात्मिक सर्वोच्चता की प्रतियोगिता नजर आती थी वहा अब अधिकाधिक साधनो प्राप्ति की होड नजर आ रही है। इस होड ने कई प्रकार के वाद विवाद वर्ग सघर्ष तेर पास है और मेरे पास नही है के विचार उत्पन्न कर दिए है।

पूर्वी सभ्यता मे आत्मा का उत्थान और परोपकार की भावनाए इतनी प्रबल थी कि इस प्रकार की कलहकारी प्रवृत्तिया समाज मे कभी देखने को नही मिली।

हे परमात्मा अपनी आत्माओ को उस पूरब दिशा की ओर देखन और सोचने के लिए प्रेरित करा जिस दिशा से आपने ज्ञान रूपी प्रकाश का प्रतीक सूर्य भगवान उदय होकर हमे यह सन्देश देता है – **तमसो मा ज्योतिर्गमय।**

क्रमश

– विमल वधावन

"भूकम्पन, तूफान और इन्सान"

(इस परिवतनशील ससार मे कही भी कभी भी कुछ भी हो सकता है। गिरने पर रोने की अपेक्षा प्रभु कृपा से सदा मानसिक शक्ति को जगाते झाड–पोछ कर हिम्मत से उठे और आगे बढे। सफलता आप के चरणो को चूमेगी।)

– आचार्य आर्यनरेश

आज से लगभग एक वर्ष पूर्व जब मैं गुजरात के कच्छ प्रदेश मे भ्रमण करते वेद प्रचार कर रहा था तो तब मेने प्रभु व धर्म प्राप्ति के प्रति कम श्रद्धा रखने वालो को झकझोडते हुए कहा था – प्रियवरो ! यह कभी मत सोचना कि भूकम्प या तूफान केवल किल्लारी (महाराष्ट्र) या उडीसा मे ही आता है यहा भी आ सकता है। मनुष्य के जीवन का तो पल भर का भी कोई भरोसा नही है। जिस शरीर समय या धन को हम अपनी बपौती समझ कर केवल लौकिक सुखो या पारिवारिक जनो के लिए ही लगाते जीवन को पूर्ण कर देते हैं यह वास्तव मे हमारी सम्पत्ति नहीं अपितु ईश्वर की धरोहर है। केवल मनुष्य जीवन ही एक ऐसा सुअवसर है कि जिसमे हम अपने आत्मा के कल्याण हेतु ईश्वर की साधना तथा समाज की सेवा का कार्य कर सकते है। अत जब तक मृत्यु दूर है हमे साधना व सेवा हेतु समय निकालने मे आलस्य नही करनी चाहिए। क्या भरासा कुछ क्षणो के पश्चात यह सुन्दर काया व माया मिटटी हो जाए और ओ३म का ध्यान वेद का ज्ञान यज्ञ का अनुष्ठान सस्कारी सन्तान तथा देश हित बलिदान करने का यह सुन्दर अवसर समाप्त हो जाए। सो स्वार्थ छोडे और कुछ परमार्थ मे लगे। प्रभु या धर्म के कार्यो के प्रति कभी भूलकर भी यह न कहे कि हमारे पास समय नही अथवा धन नही। अब दिल्ली मुम्बई कानपुर लखनऊ या हैदराबाद वाले भी सावधान हो जाए झटके तो आ ही रहे हैं पर कहीं धर्म की हत्या से सम्पूर्ण जीवन का ही झटका (हत्या) न हो जाए।

ईश्वर की प्रकृति का एक झटका प्रात काल का सुहावना समय था देश अत्यन्त हर्ष व उल्हास के साथ २६ जनवरी का उत्सव मनाने हेतु तैयार था। बच्चे युवा व वृद्ध सभी नए नए वस्त्रो को पहनकर परेड मे जाने हेतु सजे हुए थे। बहुत से लोग उस दिन भारत के गुजरात प्रान्त मे स्थित भुज आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव हेतु घरो से आ रहे थ। इस समाज की स्थापना लेखक द्वारा आज से लगभग दस वर्ष पूर्व की गई थीं कच्छ मे अमृतफार्म के पश्चात् यह हमारे द्वारा स्थापित दूसरा आर्यसमाज था। प्रात लगभग नौ बजे भयकर हवाई जहाज की सी घू आवाज हुई धरती बुरी तरह से लगभग आधा मिनट तक कापी चारो तरफ धूली उडी अधेरा सा छा गया और इतने मे ही हजारो अनमोल जाने और खरबो रुपयो का धन धरती मे मिलकर मिटटी हो गया।

आर्यसमाज भुज मे व गणतन्त्र दिवस उत्सव हेतु आए आर्य जन मृत्यु की गोद मे जाने से बच गए। अजार के चार सौ विद्यार्थी बच्चे जो कि परेड हेतु सज धज कर अभी नगर की एक गली मे से निकल ही रहे थे कि भूकम्प से दोनो ओर खडी बडी बडी बिल्डिगे पहाड के समान टूटकर उनके ऊपर गिरी और वे सदा के लिए शान्त हो गए। सम्भवत अब अजार मे विद्यालय जाने वाले गिने चुने छोटे बच्चे ही होगे। स्व० श्री लालजी भाई परिवार के दा सदस्य जो कि कारण वश अपने घर पर यह समझकर पहुचे कि अभी उत्सव प्रारम्भ होने मे देरी है वे भी कुछ ही क्षणो मे भवन के साथ बजरी म समा गए। इन दो आर्य जनो को छाडकर और कही भी किसी आय सज्जन की मृत्यु का कोई समाचार नहीं मिला।

भूकम्प ग्रसित क्षेत्र का निरीक्षण करन पर पता चला कि भुज अजार गाधीधाम व भचाऊ आदि मे सर्वाधिक जन माल की हानि हुई। लगभग एक लाख लोगो की मरने की आशका है। भुज गाधीधम व भचाऊ लगभग पूरे नगर ही मिटटी व बजरी के ढेर बन चुके है। हजारो लोग आज भी बिल्डिगो के मलबे मे दबे हुए हैं। भूकम्प के चौथे दिन भी जीवित व्यक्ति निकल रहे हैं। कुछ लोगो की आवाजे जो कि बचाने हेतु प्रात काल तक सुनाई देती थीं। वे दोपहर तक शान्त हो गई। मूल्यवान कारे कोठिया जेवर नगदी आराम दायक गुदगुदे पलग एव ए० सी० सभी दबे पडे हैं। करोडपति लोग या साधारण लोग आज भी एक साधारण भिक्षुक के समान सडको पर ही सोकर जीवन व्यतीत कर रहे है। भूकम्पन के निरन्तर झटके आ रहे हैं। अत कोइ ऐसा भी व्यक्ति जिसका कि घर टूटा नहीं वह भी बाहर धरती पर ही सो रहा है। जैसे जैसे दिन व्यतीत हो रहे ह दबी हुई लाशो के कारण बदबू उठ रही है।

मैंने अपने सम्पूर्ण जीवन मे ऐसी विनाश लीला पहले कभी नहीं देखी। करोडो रूपयो से बने छह छह व सात सात मजली इमारते पलभर मे मिटटी व रोढी का ढेर बन गई। छह मजिले भवनो की दो या तीन मजिले तो धरती मे ऐसी समा गई है कि पता भी नहीं चलता कि यह थी भी या नही। अच्छे अच्छे नास्तिक भी अब यह कहने लगे कि अब हमे विश्वास हो गया है कि ईश्वर जरूर है। उसका एक छोटा सा झटका बडे से बडे अभिमानियो को भी सबक सिखा रहा है। कहते है कि जब पाप बढता है तो धरती हिल जाती है। प्रभु को भुलाकर अपने स्वार्थ के ही कारण प्रकृति को विकृत करने वाले हमारे पापा ने ही हमे सजा दी हे। कक्षा मे गलती कोइ एक करता है पर सजा पूरी कक्षा को भोगनी पडती है। कभी कभी तो एक शरारती बच्चे के पास बैठे हुए अनेक शरीफ बच्चे पिट जाते है। गुजरात मे भी कुछ ऐसा ही है। गुजरात के लोग प्राय शाकाहारी व पुरुषार्थी दानी व धर्म प्रेमी हैं। लेकिन मास अण्डे व शराब हेतु धरती पर प्राय हत्याये की औरो ने और फल पाया गुजरात ने।

मुझ गत पद्रह वर्षो से कच्छ मे वेद प्रचार करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा हे। वहा आर्यजनो व श्री वाचोनिधि जी की सहायता से पाच आर्य समाजो का निर्माण हुआ है। वहा हुई इस विनाशलीला को देखकर हार्दिक दु ख हुआ। वार्षिकोत्सव हेतु बना आर्यसमाज का पाण्डाल प्रथम दिन से ही राहत शिविर के रूप मे बदल गया और समाज के युवाजन दिन रात सेवा मे लगे हैं। डॉ० वी० एच० पटेल के सुयोग्य सुपुत्र व श्री महेशभाई आर्य ने अपनी लाखों की दवाईया कैमिस्ट शाप से नि शुल्क बाट दी। डॉ० योगेश जी चिकित्सा कर रहे हैं। डॉ० वी० एच० पटेल माता गोमती बेन श्रीमती प्रभाबेन तथा अन्य सभी आर्यजन दिन रात सेवा मे जुटे हैं। श्री दिलीप भाई भी एक भण्डारा व भूकम्प राहत शिविरि चला रहे थे। आर्यसमाज झण्डाचौक गाधीधाम के युवा अधिकारी श्री पुरुषोत्तम भाई पटेल माता गुलाब देवी श्री शर्मा जी कक्कड भाई भी पूर्ण पुरुषार्थ कर रहे है। आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात के सुयोग्य युवा मन्त्री व बैंक अधिकारी श्री प्र० वाचोनिधि आर्य तथा धर्म बन्धु जी दिन रात एक करके हजारो के भोजन बिस्तर तथा ग्रामो मे औषधियो का वितरण कर रहे हैं। मनुष्यो के साथ साथ यह लोग गौओ के लिए भी चारे की व्यवस्था कर रहे हैं। श्री वाचोनिधि जी का छोटा भाई अनथक पुरुषार्थ करते दिखायी दिया। उधर टकारा मे विद्यालय का परिसर पूरे गाम वासियों को भोजन व निवास प्रदान कर रहा है। माननीय आचार्य विद्या देवी जी व उने साथी दिन रात सेवा कर रहे हैं। हमे यहा कच्छ मे पहुचकर पता चला कि यहा लोगो को इस समय मुख्य रूप से बाहर सोने हेतु टैण्ट गददो हाथ के रबड वाले दस्तानो बीमारी से बचाव हेतु नाक व मुह पर लगाने वाले मास्क तथा स्ट्रेचरो की आवश्यता हे तथा गौओ हेतु चारे की भी तुरन्त आवश्यकता है। सो सावदेशिक सहित सबको इन्हीं चीजो को भेजने की भी सूचना दी गयी। मुम्बई मे आर्यसमाज के सुयोग्य मन्त्री श्री गिरोत्राजी से जैसे ही फोन पर मेरी बात हुई उन्होने अपना पूर्ण सहयोग देने की बात की। सार्वदेशिक सभा ने तुरन्त बैठक बुलाई और हमारी सूचना के अनुसार उपरोक्त सामान तुरन्त भेजन का निर्णय लिया। श्री धवन परिवार व प्रधान शिवाजी कालोनी रोहतक ने दिल खोलकर सहायता दी।

इस सारे समान के साथ साथ आज सबसे बडी आवश्यकता "कच्छ मे वायु प्रदूषण को रोकने की है। सो उसके लिए हमने विभिन्न सस्थाओ को हवन सामग्री व शुद्ध घी की भी एक बहुत बडी मात्रा हवन कुण्डो सहित भेजने का आग्रह किया है। सभी आर्य सज्जनो से हमारा अनुरोध है कि वे एक तो लाशो के सस्कार मे अधिक सामग्री जलाए। दूसरे विभिन्न नगरो तथा ग्रामो मे अन्य मन्त्र भी न आते हो तो केवल गायत्री मन्त्र बोलकर ही हवन करना शीघ्र प्रारम्भ कर दे। जिससे कि भूकम्प से बचे हुए लोग भावी बीमारी फैलने के भय से बच सके। धन की रक्षा हेतु इस समय यह भी अनिवार्य है कि पूरा देश या विदेश के सम्पन्न जन ग्रामो व नगरो मे रह रहे लोगो के रहने हेतु शीघ्र घर बनवाने का प्रयत्न करे। जिससे कि सहायता की आड में धर्म परिवर्तन करने वाले उन विदेशी पादरियो से बचा जा सके। जोकि इस समय प्राय वहा दिखाई नहीं देते।

शेष भाग पृष्ठ १० पर

टूटते मानवीय सम्बन्ध और बिखरते परिवार

श्री यशपाल आर्यबन्धु

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज म ही उसका जन्म होता हे और समाज मे ही वह अपना जीवन यापन करता है। समाज के बिना मानव जीवन की कल्पना भी नही की जा सकती। समाज मे रहता हुआ व्यक्ति अन्य व्यक्तियो से अपने सम्बन्ध स्थापित करता है। ऐसे प्रत्येक सम्बन्ध का कोई न कोई आधार अवश्य होता है। चाहे उस सम्बन्ध का आधार पारिवारिक हो या जातिगत सामाजिक हो अथवा व्यापारिक या फिर भौगोलिक दृष्टि से ग्राम या नगर के नाते अथवा प्रान्त या देश के नाते और उससे भी आगे बढे तो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मानवता के नाते यह सम्बन्ध स्थापित होते ह। इन सम्बन्धो का क्षेत्र जितना व्यापक होगा उनका आधार भी उतना ही व्यापक होगा। जहा वसुधेव कुटुम्बकम की बात आएगी तो उसका आधार विशुद्ध मानवता ही होगी। आकृति ग्रहण जाति के अनुसार समान आकृति वाले लोग एक जाति के होते हे। समान प्रस्वात्मिका जाति के अनुसार भी प्रसव मे समानता होने स मानव मात्र एक ही जाति के हे। एक ही जाति के होने से मानवमात्र परस्पर भाई है। किन्तु आकृति या समान प्रसव का आधार भी कोई उत्कृष्ट आधार नही। क्योकि मनुष्य की आकृति वाले होने मात्र से हम मनुष्य नही बन जात। जब तक मानवीय गुणो मानवता या मनुष्यता का हम मे आधान नही होता हम मानव नही। वेद हमार कथन की पुष्टि करत हे। वेद मे मानव के लिए मनुर्भव का उपदश दिया गया ह। वेद का यह उपदेश पशु–पक्षियो के लिए तो है नहीं। न ही पशु–पक्षी मनुष्य बन ही सकते है। फिर वेद द्वारा मनुष्य को मनुष्य बनने का उपदेश देना इसी बात की ओर सकेत करता है। हम उर्दू के शायर 'वली' के इस कथन से सहमत है –

भरी मरदुम से गो सरजमीं है
वली देखने को वे इन्सान नहीं है।

अर्थात यह धरती मानवो से पटी पडी है फिर भी मानव देखने को नहीं मिलता। यूनान का एक दार्शनिक दिन मे सूर्य के प्रकाश मे लालटेन हाथ मे लिए ऐसे घूम रहा था जैसे उसकी कोई वस्तु खो गई हो। कुछ नवयुवको ने जब उसे देखा तो पूछ बैठे कि आप का कुछ खो गया है क्या ? दार्शनिक बोला कि मानव खो गया है जिसकी तलाश मे दिन के उजाले मे हाथ मे लालटेन लिए निकला हू। ("I am seeking for the man in broad day light with lantein in my hand युवक बोले क्या हम आप को मानव नही दिखाई दे रहे ? वह बाला नही। आप सब मानवता का मुखौटा पहने ह मानव नही है। सत्य हे –

मानवता का ओढ मुखौटा घूम रहे शैतान यहा।
नैतिकता का इसीलिए आ पहुचा है अवसान यहा।।
और
नैतिकता नाता तोड भगी है न जाने कहा ?
मानवता हाय ! आज फूट फूट रोती है।

नैतिकता मानवता का आधार स्तम्भ है। इसी को मानव धर्म भी कहते हे। यदि इसे मानवता का पर्याय कह तो कोई अतिशयोक्ति नही हागी। किन्तु जब मानवना का पयाय कही जाने वाली नैतिकता ही मानव से अपना सम्बन्ध तोडले तो फिर मानवीय सम्बन्ध कैसे सुरक्षित रह सकते है ? और जब मानवीय सम्बन्धो का आधार ही नही रहेगा तो मानवीय सम्बन्ध कैसे रहेगे ? उन्हे टूटने से कोई बचा नही सकता। अत यदि मानवीय सम्बन्धो को सुरक्षित रखना है ता मानवता का सुरिक्षत रखना होगा। मानवता बची रहगी तो मानवीय सम्बन्ध भी बच रहग आर यदि मानवता ही नही रहेगी ता मानवीय सम्बन्ध भी नही रहेगे। वेद के मनुर्भव उपदश की सार्थकता इसी मे है कि हम स्वय मनुष्य बन कर जनया दैव्य जनम अपनी सन्तानो का दिव्य बनाए। आज मानव अपनी करतूतो के कारण अपनी विश्वसनीयता खो चुका है और स्थिति यहा तक आ पहुची है कि –

मानव ऊपर आज मानव का लेशमात्र विश्वास नहीं।
मानव मानव से शकित है प्रेम भाव का वास नहीं।।
कोई भले कहे उत्थान इसे मै कहता इसे विकास नहीं।
मेरे मन मे आज मानव के घोर पतन का युग आया।।

आवश्यकता इस बात की है कि हम पतन की इस गर्त से ऊपर उठ कर पुन मानवता का सर्वोच्च स्तर स्थापित करे। हम हिन्दू, मुस्लिम सिख ईसाई बोध जैन पारसी आदि बने न बने पर विशुद्ध मानव नेक इन्सान जिसे वेद की भाषा मे आर्य कहा है वह अवश्य बने। जिस दिन ऐसा हो गया उस दिन यह धरा स्वर्ग बन जाएगी और तभी नवयुग साकार होगा। तब इस धरा पर न हाय हत्या होगी ओर न रहेगा आतकवाद। तब मानव मानव स इस प्रकार प्रेम करेगा जेस गाय तुरन्त उत्पन्न हुए बछडे को चाट चाट कर प्रेम करती है।

बिखरते परिवार

अब रही बात बिखरते परिवारो की। बढती जनसख्या बेरोजगारी आर्थिक तगी ओद्योगिक सभ्यता का विकास तथा पश्चिमी देशो का सास्कृतिक आक्रमण आदि कुछ ऐस कारक है जिनसे परिवारो मे बिखराव सा आने लगा है। एक युग था जब हमारे देश मे सयुक्त परिवार हुआ करते थे और पारिवारिक सगठन अत्यन्त सुदृढ ओर शक्तिशाली हुआ करता था। तब तीन तीन चार–चार पीढिया एक साथ एक ही घर म एक परिवार के रूप म रहत थे। पर बढती आबादी के कारण मकान छोटे पडन लगे खेती के लिए धरती अपर्याप्त अनुभव की जाने लगी। परिणामस्वरूप बेरोजगारी बढन लगी और आर्थिक तगी महसूस की जाने लगी। गाव के लाग रोजगार की तलाश मे नगरो और महानगरो की आर भागने लग। जिस जहा रोजगार मिला वह वही बस गया और धीर धीरे मूल परिवार से कट गया। इस प्रकार परिवारा म तीव्रतर बिखराव आने लगा। पारिवारिक बिखराव का एक अन्य मुख्य कारण था – मकाले की शिक्षा नीति जिसके सम्बन्ध मे कविवर मैथिलीशरण गुप्त को लिखना पडा था – शिक्षे ! तुम्हारा नाश हा तुम नाकरी क हित बनी। बाबू बनान वाली इस शिक्षा पद्धति के कारण शिक्षित नवयुवक मेहनत मजदूरी स जी चुराने लगे और नौकरी की तलाश मे शहरो की ओर भागने लगे और अपने परिवार से नाता तोड बैठे। कोई कोई तो विदेशो मे जाकर बस गए और सदा के लिए वही के हो के रह गए। यहा तक कि शादी गमी पर भी वे भारत न आ सके।

पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से भी परिवारो मे बिखराव आने लगा है। वहा वृद्ध माता पिता को अपने साथ रखने की प्रथा ही नही है। जब माता पिता भाई बहन साथ नही होगे तो परिवारो मे बिखराव तो आएगा ही। उधर भाईयो मे पिता की सम्पत्ति के बटवारे को लेकर मन मुटाव रहने लगा और पारिवारिक ताना बाना टूट कर बिखरने लग गया। पश्चिमी देशो की देखा देखी यहा भी वृद्ध आश्रम खुलने लगे। लोग अपने वृद्ध माता पिना को वहा छोड आते है और स्वय मजे मे रहन लगत ह। पर इसम नि वृद्धा की सवा एवम अभिवादन कर की भावना कहा स आ जाएगी ? आ वृद्धा की सेवा का फल आयु विद्य यश और बल की वृद्धि का आशीर्वा भी कैसे प्राप्त हो सकेगा ? यह स परिवारों के बिखरने का ही दुष्परिणाम ह

हम मानते है कि आज व परिस्थितियो मे उपर्युक्त कारणो से कई एक पारिवारिक बिखराव अपरिहार्य कारण बन चुके है जै घर छोटे पडना खेती की धरती क रह जाना और शहरो की ओ काम धन्धे की तलाश हेतु भागना परन्तु हम इसस भी अधिक दोष उ साच को देते ह जा परिवारो बिखराव का मुख्य कारण बनी हु हे। वह सोच हे अलगाववाद । आ किसी नवयुवक गृहस्थ से पूछ क दख कि आपके परिवार मे कान का है ता उसका यही उत्तर होगा – मेरी पत्नी तथा दो या तीन बच बस। तात्पय यह कि माता पित भाई बहन परिवार के अग नही रहे परिस्थितिवश यदि एक मकान एक स्थान पर नही रह सकत न र पर मूल से सम्बन्ध तो न तोडे। ज मूल स ही सम्बन्ध टूट गया ता फि पारिवारिक एकता का आधार क रहेगा ? आज युग की यही पुकार कि जस भी हो परिवारा का बिखर स बचाया जाए। यदि एसा नही किर गया ता मानवीय सम्बन्ध ओर टूट ओर मानवीय सम्बन्धो के टूटने मानव समाज समाज न रहकर 'समज बन जाएगा जा मानवता के लिए कल का कारण बनेगा जिसस जितना बच जाए उतना ही श्रेयस्कर है।

– आर्य निवास चन्दनगर मुरादाबाद ३२

योग साधना एव स्वाध्याय शिविर

आर्ष गुरुकुल दयानन्द वाणी श्री उद्यान जरैल मधुवनी मे दिनाक २४ २ २००१ शनिवार से दिनाक ४ ३ २००१ रविवार तक योग साधना एव स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया गया है जिसमे दिल्ली के योगाचाय आचार्य यशोवर्धन जी पधार रहे है। इलाके के युवाओ का उत्साहित करने हेतु शुक्रताल मुजफ्फर नगर महर्षि दयानन्द धाम से आर्यवीर ब्र० रामफल जी पधार रहे है।

अतिम तीन दिन दिनाक २ ३ २००१ से ४ ३ २००१ तक गुरुकुल का वार्षिकोत्सव भी मनाया जाएगा जिसमे उच्चकोटि के विद्वान एव भजनोपदेशक भी पधार रहे हैं। शिविर मे भाग लेने हेतु २३ २ २००१ के सायकाल तक गुरुकुल अवश्य पहुच जाए।

योग एक विज्ञान है

दिनेश प्रताप सिह

विश्व के आध्यात्म मे सबसे अधिक लोकप्रिय ग्रन्थ यदि कोई होगा तो वह पतजलि का योगशास्त्र होगा। पतजलि की योग विद्या जब तक भारत के छात्र ओर अध्यापक के जीवन मे प्राण बनकर रही तब तक भारत ससार का जगत गुरु रहा। योग के अतिरिक्त जीवन के परम सत्य को जानने का कोई उपाय नही है। प्रस्तुत है योग के विज्ञानमय रूप पर विचारोत्तेजक और शोधपूर्ण लेख–

मैने योग विद्या का गहरा अध्ययन करके यही निष्कर्ष निकाला कि योग एक पूर्ण विज्ञान है। यह मनुष्य को विश्वास करना नही सिखाता बल्कि यह जानना सिखाता है। मै व्यक्तिगत रूप से योग शिक्षक के रूप मे समाज से जुडा रहा। योग एक महान प्रयोग है। अत एक प्रयोगकर्ता के रूप मे योग पर शोधपूर्ण विचार प्रस्तुत है।

योग एक विज्ञान है योग का इस्लाम हिन्दू, जैन बौद्ध सिख या ईसाई से कोई सम्बन्ध नही। योग के अतिरिक्त जीवन के परम सत्य को जानने का कोई उपाय नही है। धर्म जिसे हम परम सत्य को जानने का सशक्त साधन समझते हैं वे काई विश्वास के साथी है योग कोरे विश्वास का साथी नहीं है। योग तो जीवन के परम सत्य को जानने की दिशा मे किए गए। वैज्ञानिक प्रयोगो की सूत्रवत प्रणाली है। अत योग एक सम्पूर्ण विज्ञान है कोरा विश्वास नही। योग की अनुभूति के लिए किसी अधेपन की आवश्यकता नही है यही कारण है कि नास्तिक भी योग के प्रयोग मे उसी तरह प्रवेश पा सकता है जैसे कि आस्तिक। सही बात यह है कि योग आस्तिक ओर नास्तिक के भद से अपने को परे रखता है जबकि धर्म नास्तिक को सदैव अपने से दूर रखने का प्रयत्न करता है।

योग को विज्ञान इसलिए मान गया है क्योकि विज्ञान हमारी धारणाओ पर निभर नही होता बल्कि विज्ञान के कारण हमे अपनी धारणाए परिवर्तित करनी पडती है। कोई विज्ञान हमसे किसी प्रकार के विश्वास या किसी तरह की मान्यता की अपेक्षा नहीं करता जेसा कि सम्प्रदाय करता हे। विज्ञान केवल प्रयोग की एक्सपरिमेंट की अपेक्षा करता ह। विज्ञान कहता ह कि पहल करो फिर देखो। विज्ञान को कोरे विश्वास या अन्ध श्रद्धा की जरूरत नही होती है। दो और दो चार होत हे माने नहीं जाते ओर कोई न मानता हो तो वह स्वय सकट मे फस सकता हे पर दो और दो चार का सत्य कभी सकट मे फस नही सकता हे?

विज्ञान मान्यता या विश्वास से शुरू नही होता विज्ञान खोज से अन्वेषण से शुरु होता है। इस प्रकार योग भी किसी मान्यता से शुरू नहीं होता खोज जिज्ञासा और अन्वेषण से शुरू होता है। अत योग के लिए केवल प्रयोग करने की शक्ति की आवश्यकता है खोज के साहस की जरूरत है प्रयोग करने की सामर्थ्य की आवश्यकता है और कोई भी जरूरत नही है।

योग क्या है? योग का मूल लक्ष्य क्या है? योग का सूत्र रहस्य प्रबन्ध सिद्धान्त क्या है? उसकी कुजी क्या है? एक मनुष्य के शरीर मे जितनी शक्ति का हम प्रयोग करते हैं उससे भी बहुत अधिक शक्ति पैदा करने की व्यवस्था प्रकृति ने हमारे शरीर मे रखी हुई है। हमारे शरीर मे बहुत क्षमताए हैं जिसका हम हिसाब नहीं लगा सकते। वे सारी की सारी क्षमताए निष्क्रिय अनुपयुक्त पडी हुई है। जीवन मे हमे इन क्षमताओ की आवश्यकता ही नहीं है। अत जीवन के लिए जितनी जरूरत है शरीर उतना ही काम करता है। अगर वैज्ञानिको से पूछे तो वैज्ञानिको का कहना है कि हम दस प्रतिशत से अधिक अपने शरीर का प्रयोग नही कर सकते। नब्बे प्रतिशत शरीर अनुपयोगी रहकर ही समाप्त हो जाता है। हम जन्म लेते है जीवन भोगते हैं और अन्त मे मर जाते है। ६० प्रतिशत शरीर की शक्तिया जो काम कर सकती थीं पडी रह जाती है। योग का पहला काम तो यह है कि उन ६० प्रतिशत निष्क्रिय सोई हुई उन शक्तियो को जगाना है जिनके माध्यम से अन्तर्यात्रा हो सकती है। ऊजा (एनर्जी) के बिना कोई यात्रा नहीं हो सकती। ससार मे भी ट्रेन बिना ऊर्जा के नहीं चल सकती। अगर कोई यह सोचता है कि परम सत्य तक बिना ऊजा के सहारे पहुच जाएग तो वह गलती पर है। परमात्मा की अन्तर्यात्रा तो बहुत गहन है जिसे बिना योग के करना असम्भव है। अत योग द्वारा अपनी निष्क्रिय शक्ति को जगाना अनिवार्य है। जिस शक्ति का हम अपने दैनिक जीवन मे उपयोग करते है उसमे तो दैनिक कार्यो मे ही समाप्त हो जाती है उसमे से कुछ नहीं बचता है और अगर थोडा बहुत बचता है कि आज का मनुष्य उसे व्यर्थ कामो मे नष्ट कर देता हे। मनुष्य करीब करीब दिवालिया जीवन जीता है जो शक्ति छिपी पडी है उसे वह कभी जगा नही पाता।

योग का पहला काम शरीर मे छिपी सम्भावित ऊर्जा (Potential Energy) को जगाना। सब तरह के उपाय योग ने खोजे है। योग ने प्राणायाम खोजा। प्राणायाम मनुष्य के भीतर सोई हुई शक्तियो को जगाने की चोट करने की एक विधि है। इसके बाद योग ने आसन खोजे। आसन मनुष्य के शरीर मे छिपे हुए जो ऊर्जा के स्रोत केन्द्र है। उन पर दबाव डालने की प्रक्रिया है ताकि उनमे छिपी हुइ शक्ति सक्रिय हो जाए।

ट्रेन का उदाहरण सबके सामने है। शक्ति तो बहुत साधारण सी उपयोग मे आती हे आग और पानी की दोनो से बनी हुई भाप की। लेकिन भाप के धक्के से इजन का सिलेण्डर चलना शुरू हो जाता है इससे ट्रेन चलन लगती है। इतनी बडी शक्ति इतनी भारी ट्रेन केवल पानी की भाप या स्टीम चलाती है।

इसी प्रकार शरीर मे भी अनेक साधारण सी शक्तिया है जिन शक्तियो को दबाकर सक्रिय किया जाए तो न जाने कितने सिलेण्डर चलने शुरू हो जाए। इन शक्तियो के बिन्दु को जहा शक्ति छिपी हैं योग चक्र कहलाता है। प्रत्येक चक्र मे छिपी हुई शक्तिया है। प्रत्येक चक्र के दबाने गतिशील करने के आसन है प्राणायाम की विधिया हैं।

कभी कभी मनुष्य के जीवन मे एसी घटनाए हो जाती ह जिससे मनुष्य की छिपी शक्ति का लागो को पता चलता हे। स्विटजरलैण्ड की घटना है एक व्यक्ति ट्रेन से गिर गया था। उसके कान को चोट आई। जब वह अस्पताल मे भर्ती किया गया तो डाक्टरो ने पाया कि दस मील के भीतर जो रेडियो स्टेशन हैं उस व्यक्ति के कान ने उन रेडियो को पकडना शुरू कर दिया। डॉक्टरो को बडी हैरानी हुई। कभी किसी ने सोचा भी न था कि कान मे इतनी क्षमता हो सकती है कि रेडियो स्टेशन को सीधा पकड ले। पर योग मानता है कि कान मे ऐसी क्षमता है केवल उसे सक्रिय करने की जरूरत है। ऐसे ही स्वीडन मे व्यक्ति की आख मे चोट आई। डाक्टरो ने जब आपरेशन किया तो उसे दिन मे भी तारे दिखाई देने लगे। दिन मे तारे होते तो हैं पर सूर्य के प्रकाश के कारण दिखाई नहीं देते योग तो कहता रहा है हमारी आख मे इतनी क्षमता है कि मनुष्य उसकी कल्पना नहीं कर सकता। शरीर मे ऐसी अनेक ऊर्जा केन्द्र हैं। योग ने सभी को सक्रिय करने की प्रक्रिया खोजी हैं। एक्सीडेन्टली आदमी को चोट लगी परन्तु शक्ति केन्द्र सक्रिय हो गए। किन्तु आज योग इसे व्यवस्थित रूप से सक्रिय करना जानता है।

प्रोफेसर राममूर्ति को कौन नही जानता? आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी के एक निबन्ध मे लिखा है कि मैने राममूर्ति को ४० मन का पत्थर अपनी छाती पर तुडवाते देखा है" राममूर्ति की छाती पर से कार निकाली जा सकती है। जबकि राममूर्ति की हड्डियो और हमारी छाती मे कोई बुनियादी भेद नहीं है। हम छाती का प्रयोग केवल श्वास को लेने और छोडने मे करते हैं। यह एक बहुत छोटा कार्य है जबकि राममूर्ति से इसका रहस्य पूछा गया तो राममूर्ति ने कहा कि रहस्य वही है जो कार के टायर और ट्यूब मे एक विशेष अनुपात मे हवा भर दी जाए तो बडे से बडे ट्रक को वह लिए चला जाता है। राममूर्ति का कहना था कि मैं फेफडे से वही काम लेता हू जो आप टायर आर ट्यूब से लेते हैं। हवा का एक विशेष अनुपात मे रोक लेता हू फिर छाती से कार निकल जाए। वजन मेरे ऊपर नहीं पडता। भारी हवा के ऊपर पडता है।

योग मनुष्य के सकल्प को भी अटूट बना देता है। हरिद्वार के एक सन्यासी स्वामी अभयानन्द का एक लेख अखबार मे प्रकाशित हुआ था। इस लेख मे स्वामी जी ने कहा कि सरदार भगतसिह मेरे पास आया करते थे। एक दिन उन्होने मेरे से अनुरोध किया कि मुझे कोई ऐसी योगिक क्रिया सिखाओ जिससे मैं पुलिस की पकड मे आने पर किसी कीमत पर अपने क्रान्तिकारियो के भद प्रकट न कर सकू। मै चाहे बेहोश हो जाऊ या सम्मोहित कर दिया जाऊ पर भेद सदैव गुप्त रहे। इतिहास साक्षी है कि अग्रेज सरकार भगतसिह से कोई भेद न उगलवा सकी। अपने भेद को छिपाने के लिए सरदार भगतसिह ने कभी झूठ का सहारा नही लिया। क्या इतना महान सकल्प योग के बिना सम्भव है?

विश्व के अध्यात्म मे सबसे अधिक लोकप्रिय ग्रन्थ यदि कोई होता तो वह पातजल के योग सूत्र है। इस ग्रन्थ का पाठन और इस पर चिन्तन मनन सबसे अधिक किया जाता है। इसलिए इस पर बहुत टीकाए तथा अध्ययन ग्रन्थ लिखे गए हैं। पतजलि ने केवल १६५ सूत्रो मे आदि से अन्त तक साधना पथ का सम्पूर्ण मनमोहक चित्राकित किया हे। वे केवल थोडे शब्दो के माध्यम से पूरे योगमार्ग का विराट दर्शन करवा देत हे। आज इस बात की कल्पना करना भी कठिन लगता हे कि एक व्यक्ति ने अकेले पूरा विज्ञान निर्मित किया है। पतजलि अपन मे बेजोड है। इस पृथ्वी पर पतजलि जैसे दूसरे कम हुए हे। पतजलि का अध्ययन करते है तो पाते है कि वे गणित के फार्मूले की तरह सटीक बात करते है। वे नियमो की भाषा मे ही बात करते हैं। पतजलि बुनियादी तौर पर एक वैज्ञानिक है। अगर कोई वैसा ही करे जैसा वे कहते हैं और उसका परिणाम वैसा ही निकलेगा जैसा दो चार की तरह सुनिश्चित। यह घटना उसी तरह निश्चित ढग से घटेगी जैसी पानी को सौ डिग्री तक गम करे तो वह वाष्प बनकर उड जाता हे। विश्वास की कोइ जरूरत नहीं करो ओर जानो। पतजलि के योगशास्त्र का आकर्षण इसी मे हे कि व एसे लोको का चित्रमय वर्णन करते हैं जिसकी हम कल्पना भी नही कर सकते। योग एक महान प्रयोग है जिसे कुछ व्यक्तियो ने कभी न कभी निश्चित रूप से किया होगा। अन्यथा उनके पास अनुभवो की इतनी विचित्र सम्पदा न होती।

अब एक प्रश्न उत्पन्न होता है कि अध्यापक और छात्र को योग से क्या मिल सकता है? मनुष्य के भीतर दो प्रकार का मन है। एक मन चेतन तथा दूसरा अचेतन जिसे अग्रेजी मे कौन्शस माइण्ड कहते हैं। इसे ऐसे समझ लो जगते सोते खेलते पढते मनुष्य की क्रियाओ का ६/१० भाग इस अचेतन मन द्वारा होता है और १/१० भाग चेतन मन द्वारा होता है। हमारा अचेतन मन शक्तियो का भण्डार है। अत विद्यार्थियो को उनके ऊपरी मन (चेतन मन) द्वारा शिक्षा देने की अपेक्षा आन्तरिक मन (अचेतन मन) द्वारा अधिक आसानी से और कम समय मे शिक्षा दी जा सकती है। अमेरिका के सुप्रसिद्ध सैन्य दी जा सकती है। अमेरिका के सुप्रसिद्ध सैन्य शिक्षा विशारद डॉ० वाकर ने बताया कि आन्तरिक मन नौ हिस्सो का प्रतिनिधित्व करता है जबकि ऊपरी मन तो केवल एक बटा नौ का प्रतिनिधित्व करता है परन्तु दुख की बात है कि शिक्षा का पूरा बोझ इस एक बटा नौ भाग पर पडता है। अगर योग द्वारा शिक्षा आन्तरिक मन को दी जाए तो मनुष्य पाच वर्ष मे इतनी शिक्षा ग्रहण कर सकता है उतनी शिक्षा बिना योगाभ्यास के पच्चीस वर्ष मे भी नहीं कर सकता। अत अध्यापक और छात्र के लिए योग अत्यन्त लाभदायक है।

अन्त मे हम यही कहेगे कि योग मनुष्य के लिए अत्यन्त उपयोगी है। आज का मनुष्य अगर योग का आश्रय ले तो अपने तनावो से मुक्ति पा सकता हे। छात्र तथा अध्यापक योग द्वारा अपने मे गुणात्मक वृद्धि कर सकते हैं।

– एम० डी० जैन इण्टर कालेज, आगरा

सच बोलना अपराध क्यों ?

– बिशम्बर नाथ अरोडा

भारत के राष्ट्रीय प्रतीक (चिन्ह) के नीचे मुण्डकोपनिषद के तृतीय मूण्डक प्रथम खण्ड के छटे मन्त्र मे से सत्यमव जयते लिखा रहता है। इसका अर्थ है कि सत्य की जय होती है। महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के दस मे से पहले पाच नियमो मे सत्य को धर्म के बराबर दर्जा दिया है। अभिप्राय यह कि हमारे पूर्वजो ने सत्य को महान समझा और आज की सरकार भी सत्य का महत्व समझती है। परन्तु क्या व्यवहार मे सरकार हमे सत्य बोलने देती है ? आओ विचार करे।

आज यदि कोई व्यक्ति सस्था समाचार पत्र नाटक या भाषण द्वारा मुस्लिम या ईसाई युग का सच्चा सच्चा इतिहास बताए या उस पर टिप्पणी करे तो उसे कहा जाता है कि यह साम्प्रदायिकता हे देश के लोगो को लडाने का षडयन्त्र है और राष्ट्रहित के विरुद्ध है। आज सही इतिहास कहना सुनाना अथवा समझाना (अर्थात सच बोलना) अपराध सा बन गया है। ऐसा क्यो ? क्योकि हर राजनैतिक दल (अब तो भारतीय जनता पार्टी भी) मुसलमानो और ईसाइयो के वोट बटोरना चाहता है। हिन्दू चूकि बटे हुए है इसलिए कोई भी दल इनकी परवाह नहीं करता। सभी दल चाहते हे कि ऐतिहासिक सत्यो को भूल कर ऐसा इतिहास रचा जाए जो मुसलमानो ओर ईसाइयो को पसन्द हो। पर क्या इतिहास से खिलवाड करना बेइमानी न होगी ? क्या भावी पीढियो को झूठा और मन घडन्त इतिहास पढाना नैतिक पतन की पराकाष्ठा न होगी ? फिर सत्यमेव जयते का क्या होगा।

पहले पहल मुसलमानो ने आठवीं सदी के पूर्वार्द्ध मे सिन्ध पर कब्जा किया। कुछ समय बाद उन्होने बलोचिस्तान तथा पजाब पर भी अधिकार कर लिया। वह इसी क्षेत्र तक ही ११६२ ई तक सीमित रहे। इस दौरान महमूद गजनवी ने १००८ और १०२५ के दौरान १७ आक्रमण किए और १६ बार हमारी फूट कायरता और अहिसा भावना का लाभ उठा कर सफलता पाई। परन्तु वह लूट मार कर के अफगानिस्तान लौट जाया करता था। सन् ११६१ मे अन्तिम हिन्दू राजा पृथ्वीराज चौहान ने मुहम्मद गौरी को तरावडी मे बुरी तरह से पराजित किया परन्तु नीति विरुद्ध दया दिखाई और उसके कुरान की कसम खाने पर उसे क्षमा कर दिया। अगले ही वर्ष उसने जयचन्द को अपनी ओर करके जबरदस्त आक्रमण क्रिया और पृथ्वीराज को हराकर बन्दी बनाकर साथ ले गया और बाद मे बर्बरता पूवक कत्ल करा दिया। सन ११६२ से १७५७ तक भारत मुसलमानो का दास रहा (वैसे तो दिल्ली के आस पास के क्षेत्र मे १८५७ तक मुगलो का शासन रहा) इस बीच छोटे बडे ३५ मुस्लिम बादशाहो ने दिल्ली या आगरा से भारत के अधिकाश भाग पर राज्य किया। इस अवधि का इतिहास कालिमा और लज्जाजनक मानवताहीन घटनाओ की कहानी है उसे हम कहा छुपा दे। हिन्दू मुस्लिम एक हजार वर्ष से इकटठे रह रहे हैं। बडे बडे सन्तो सूफियो ने इनमे प्यार व भाई चारा कायम करने के यत्न किए किन्तु सब असफल रहे। इनके बीच की दूरी बढती ही गई और बढती ही जाएगी क्योकि सामान्यत मुसलमान जनूनी तगदिल क्रूर और असहनशील हैं। वे दगे करने लडन मारने आग लगाने और हत्या आदि करने मे देरी नहीं लगाते। मौलाना आजाद किदवाई या डाक्टर जाकिर हुसैन जेसे मस्लिम जो उगलियो पर गिने जा सकते है इस व्यापकीकरण का अपवाद मात्र हैं।

हिन्दू तगदिल होते तो भारत मे जेन बुद्ध पारसी इसाई आदि को आरम्भ मे ही कुचल देते लकिन यहा सब पनप रहे है। मुसलमान भी पनप हे मगर प्यार से नही बल्कि शासन क नशे मे चूर हो अत्याचार कर कर क। मैने भारत का विस्तृत इतिहास बडे ध्यान से पढा है और मै चुनौती देता हू कि मुझे कोई एक भी मुस्लिम बादशाह दिखाए (अकबर और टीपू सुल्तान समेत) जिसने मन्दिर न गिराये हो। अकबर ने भी जोधाबाई से विवाह होने तक मन्दिर गिराए। टीपू ने न केवल मन्दिर बल्कि चर्च भी गिरावाए। एक भी ऐसा बादशाह नहीं हुआ जिसने हिन्दुओ की शिक्षा पद्धति सभ्यता सस्कृति और धार्मिक मूल्यो की रक्षा की हो या हिन्दू नारियो के सतीत्व पर आच न आने दी हो। हिन्दू नारियो को घरो मे छुपना पडा शिक्षा छोडनी पडी पर्दा अपनाना पडा क्योकि कोई भी सुन्दर युवती सुरक्षित नहीं थी। बाल विवाह चालू हो गया शिक्षा बन्द हो गई और पुरुष के दाए पहलू में सम्मानपूर्वक वेद मन्त्र उच्चारण करने वाली आर्य नारी घर का चूल्हा चौका करने वाली बन गई। मुगल बादशाह सब से अच्छे माने जाते हैं पर इतिहास गवाह है कि गुरु अर्जुन देव की शहादत और गुरु हरगोबिन्द की लम्बी कैद जहागीर के काल मे हुई। नन्हे बालक हकीकत राय की शहादत शाहजहा युग मे हुई। औरगजेब का पक्ष तो मुसलमान भी नहीं लेते। गुरु तेग बहादुर भाइ दयाला भाई मतिदास और सतीदास तथा गुरु गोबिन्द सिह को दो नन्हे पुत्र बन्दा बहादुर और उसका पुत्र किस क्रूरता से कत्ल किए गए यह ससार जानता है। सब बादशाहो ने जबरदस्ती हिन्दुओ को मुसलमान भी बनाया।

आज मुसलमानो के ५५ देश है। इनमे से केवल मलेशिया और इन्डोनेशिया मे इस्लाम प्रेम और प्रचार से फैला शेष ५३ देशो मे अत्याचार ओर मारकाट से। बोलो इन इतिहास के पन्नो का कहा फैक दे ? सच्चाई तो सिर चढ कर भी बोलेगी। मुसलमान तो इतन सकीण दृष्टिकोण के हैं (अपवाद छोडकर) कि सुन्नी शिया को देख नहीं सकता। अपने ही भाई अहमदिया इस्माईलिया कादयानी आगाखानी को नमाज पढतो को मारते हैं। ईरान ईराक युद्ध कुवायत का युद्ध अफगानिस्तान का गृह युद्ध चेचनया का उपद्रव कश्मीर का आतकवाद सिन्क्याग मे विद्रोह – सब मस्लिम समुदाय की करनी है। ये न स्वय चैन स बेठते है न किसी का बैठने देते हैं। पाकिस्तान न बगालियो के साथ क्या किया मुहाजरो के साथ क्या कर रहा ह ओर अपने इसाइ व हिन्दू नागरिको (केवल एक एक प्रतिशत) की क्या हालत बना रखी है। इतिहास इतिहास है बताओ इसको कहा ले जाए? अभी मैं अनेक और उदाहरण दे सकता हू परन्तु लम्बा लेख छापना पत्रिकाओ के लिए सम्भव नहीं होता।

ईसाई क्रूरता और नारी अपमान मे तो मुसलमानो से चार उगल पीछे हैं परन्तु चालाकी मक्कारी शब्द व्यूह वचन भगता स्वार्थ भावना और अवसरवादिता मे उनसे कोसो आगे हैं। मुसलमान हाथ मे तलवार लेकर और नारी अपहरण की धमकी देकर धर्म परिवर्तन कराते हैं तो ईसाई सेवा कर के और नौकरी बेटी या धन का लालच देकर धर्म परिवर्तन कराते है। अवसर मिल जाए तो जोर जबरदस्ती भी कर लेते है जैसे स्पेन पुर्तगाल तथा बैलज्यिम ने की। लक्ष्य दोनो का एक ही – पहले धर्म परिवतन कराओ फिर प्रथकता क बीज बोओ और अन्तत भारत स अलग होन की माग का धन धमकी हथियारो तथा आतकवाद द्वारा समर्थन करो। दो देश पाकिस्तान और बग्लादेश तो मुसलमान ले गए। नागालैन्ड और मिजोरम मे ईसाई सक्रिय हैं – देखो कब कामयाब होते है।

हर भारतवासी जानता है कि अग्रेज यहा व्यापारी बन कर आए। कैसे उन्होने यहा की जाति प्रथा तथा फूट को हवा दी और कूटनीति से सारे भारत पर कब्जा कर लिया। इस ध्येय के रास्ते मे जो भी आया उसे ताकत से कुचल डाला। १८५७ विजय के बाद का कत्लेआम बगाल विभाजन जलियावाला बाग भारत छोडो आन्दोलन के बाद का दम न चक्कर क्रान्तिकारी युवको तथा सुभाष का बलिदान तिलक लाजपतराय व अनेक गुमनाम भारतीयो की कुर्बानिया अभी इतनी ताजी है कि हम भुलाना भी चाहे तो भुला नहीं सकते। इतिहास जो बन जाता है वही रहता है। इसलिए भारत के वर्तमान राजनेताओ दूरदर्शी बनो। मुसलमानो या ईसाईयो के लिए उन्हे खुश करने हेतु इतिहास न बदलो। वे आप मे से किसी न किसी को तो वोट देगे ही।

प्रधान आर्य समाज कृष्ण नगर दिल्ली ५१

विनाश लीला

डॉ० सत्यदेव आजाद

गुजरात को भूकम्प ने बर्बाद कर दिया।
आवास ढह गए सभी विषाद भर दिया।
इमारते हिली गिरीं धरापर ढेर बन गए।
हायरे गणतन्त्र ! वहा क्रन्दन बिखर गया।।

दहल गए सभी के दिल कोहराम मच गया।
लुट गए सुहाग परिवार सो गए
गर्भ गिरे नारियो के चीख रो पडी
सद्य प्रसूत बाल भी अनाथ हो गए।

मलवे मे दबा वृद्ध इक कराह रहा था।
पूजा नमाज व्यर्थ गए कह सा रहा था।
सब दीप बुझ गए हैं क्यो मस्जिद कहा गई
गुरु ग्रन्थ बाइबिल और वो गीता कहा गई

पल भर मे धरती गाधी की श्मशान बन गई
भूमि दयानन्द की ये अज्ञान बन गई
हे द्वारिका क नाथ यू अनाथ क्यो किया
जन जन को तनमनधन से असहाय कर दिया।

क्या सर्वनाश सृजन की इक भूमिका नही
यह प्रकृति कोप देश समस्या का हल नही।
स्वच्छन्द भोगवाद ये धरती हिलाएगा।।
मर्यादा भग होगी भूकम्प आयेगा।

– २३१५, अर्जुन पुरा डीहगेट मथुरा

स्वास्थ्य चर्चा

नमक और पानी

– डॉ० सूर्यकान्त

पानी शरीर का एक आवश्यक अग ह। जेस पृथ्वी पर द तिहाइ जल आर एक तिहाई स्थल भाग हे वसे ही हमारे शरीर का दो तिहाई भाग जल है। रक्त मास त्वचा सब मे जलीय अश बहुत है।

जो जल हम पीते है वह पेट मे हो कर रक्त मे पहुचता है। रक्त की वह धुलाई करता है। रक्त सारे शरीर मे दौरा करता है। हर अग मे पहुच कर उसे पोषण पहुचाता है और वहा जो मल इकटठा हो जाता है उसे वापस लाता है। यह मैल या विषैला तत्व पसीने और पेशाब के रास्ते शरीर से बाहर निकल जाता है।

रक्त का शोधन

रक्त का बडा शोधन जल से होता है। थाडा सा शोधन फेफडो मे पहुच कर प्राण वायु से भी होता है। आक्सीजन रक्त मे मिलकर उसम से कार्बन खीच लेती है और कार्बन डायोक्साइड बनकर प्रश्वास के रूप मे बाहर निकल जाती है। इस प्रकार जल और वायु मिल कर हमारे रक्त को शुद्ध करते है और हमे जीवित रखते है। यदि ये क्रियाए बन्द हो जाए तो मनुष्य बहुत थोडी देर जीवित रह सकता है।

इसलिए चिकित्सक लोग सलाह देते है कि हर व्यक्ति का खूब पानी पीना चाहिए आर शुद्ध वायु म भ्रमण करना चाहिए।

आठ गिलास पानी ?

मनुष्य को कितना पानी प्रति दिन पीना चाहिए? चिकित्सको का कहना है कि हर व्यक्ति को दिन मे कम स कम आठ गिलास अर्थात ढाई तीन लीटर पानी रोज पीना चाहिए। उनका कहना था कि यदि प्यास न भी लगे तो भी स्वस्थ रहने के लिए इतना पानी पीना आवश्यक है।

प्राकृतिक चिकित्सका का कहना है कि शरीर को अन्दर बाहर दोनो ओर से धो देना ही सब रोगो का इलाज है। बाहर से धुलाई तरह तरह के स्नानो से हो जाती है और भीतर से धुलाई पानी पीकर और अनीमा दे कर कराई जाती है। प्राकृतिक चिकित्सा मे पानी का महत्व बहुत अधिक है।

शरीर मे फालतू जल न हो

प्राकृतिक चिकित्सको का कहना है कि जल से शरीर की धुलाइ तो होनी चाहिए पर शरीर मे अनावश्यक जल जमा नहीं होना चाहिए। हम लोग जो नमक खाते हे वह पानी को सोखता है। उसके कारण शरीर मे अनावश्यक पानी जमा हो जाता है जो रोगो का कारण बनता है। इसलिए वे रोगी को नमक और चीनी खाना मना कर दते है।

अन्न गेहू, चावल मक्का आदि भी पानी को सोखते है। अन्न खाने पर प्यास लगती है। इसलिए जब अन्न नमक चीनी खाना बन्द कर दिया जाता है तब शरीर मे से अनावश्यक पानी बाहर निकलने लगता है। उस समय यदि दिन मे बार बार थोडा थोडा पानी पिया जाये तो पेशाब खूब और खुल कर आता है और भीतरी अगो की धुलाई अच्छी हो जाती है।

नमक से प्यास

जब नमक खाना बन्द कर दिया जाता है तब प्यास कम लगती है। नमक खाने वालो को पानी की आवश्यकता अधिक रहती हे।

ऐलोपेथिक चिकित्सको का कहना है कि नमक हमारे शरीर का आवश्यक अग है। यह पसीने और पेशाब के साथ बाहर निकलता रहता है। अत इसकी कमी को पूरा करने क लिए हर व्यक्ति को एक चाय के चम्मच जितना नमक प्रति दिन खाना चाहिए। इतना न खाने स कई रोग पैदा हो सकते है।

इसके विपरीत प्र कृतिक चिकित्सको का कहना ह कि नमक की आदत हमने व्यर्थ ही डाली हुई है। जितने नमक की हमार शरीर का आवश्यकता होती है उतना दूध फल आर सब्जियो मे पहले ही विद्यमान होता है। फालतू नमक विष का काम करता है। अधिक नमक खाने वालो का रक्तचाप बढ जाता है।

नमक कम ही खाये

अब प्रश्न यहा आ कर अटक जाता है कि नमक कितना खाना चाहिए ? और उस नमक के अनुसार दिन मे कितना पानी पीना चाहिए। नई खोज करके डाक्टरो ने यह भी कहा है कि आवश्यकता से अधिक पानी पीने से उसके साथ रक्त के बहुत से खनिज लवण भी बह कर निकल जाते हैं जो शरीर के लिए उपयोगी हैं।

फिर क्या किया जाए ? नमक कम खाने की आदत डाली जाए। जो फल या सब्जी बिना नमक के भी खाने मे स्वाद लगती है उसके साथ नमक न लिया जाए। फल और सब्जिया उबली और कच्ची दानो यथेष्ट मात्रा मे सेवन करनी चाहिए। उसके बाद भी व्यक्ति को दिन मे एक लीटर पानी तो अलग से पी ही लेना चाहिए।

पानी भोजन के साथ न पिया जाए तो अच्छा है। प्रात उठते ही एक गिलास पानी पी लेना अच्छा ह। परन्तु इस भी आदत बनाना उचित नहीं है। भोजन के आधे घण्टे पहले और एक घण्टे बाद एक एक गिलास पानी पी लेना लाभकर है।

प्यास के अनुसार पानी

परन्तु सबसे अच्छा नाप शरीर का अपना है। जब शरीर को पानी की आवश्यकता होती है तब हमे अपने आप प्यास अनुभव होती है और हम पानी पीते हे।

कभी कभी रोग के कारण प्यास स्वाभाविक नही रहती। बहुत अधिक या बहुत कम हो जाती है। उस समय रोगी को ध्यान रखना चाहिए कि प्यास न लगने पर भी थोडा–थोडा पानी घण्टे घण्टे भर बाद पीता रहे और अधिक प्यास लगने पर भी एक साथ बहुत सारा पानी जल्दी जल्दी न पिये।

– परमार्थ चिकित्सालय
शक्तिनगर दिल्ली ६

डॉ0 जयदेव वेदालंकार वेदवेदांग राष्ट्रीय पुरस्कार से पुरस्कृत

हरिद्वार २७ जनवरी २००१। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एव अध्यक्ष दर्शन विभाग के डॉ० जयदेव वेदालकार को श्री स्वामी गगेश्वरानन्द वेद प्रतिष्ठान नासिक (महाराष्ट्र) की ओर से २४ जनवरी २००१ को एक भव्य समारोह मे वेद वेदाग राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डा० वेदालकार को यह पुरस्कार उनके प्रसिद्ध ग्रन्थ वैदिक दर्शन पर प्रदान किया गया है। उनका यह ग्रन्थ वैदिक दर्शन के क्षेत्र मे बहुत अधिक अनुपम माना जाता है। इस ग्रन्थ पर लगभग एक दर्जन शोध छात्र पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। आचार्य जयदेव वेदालकार के अन्य ग्रन्थो मे भारतीय दर्शन की समस्याए भारतीय दर्शन मे प्रमाण उपनिषदो का तत्व ज्ञान वैदिक साहित्य का इतिहास आदि अनेक ग्रन्थ भी क्रमश स्वामी प्रणवानन्द पुरस्कार आर्य साहित्य पुरस्कार मुम्बई उत्तर प्रदेश सस्कृत अकादमी लखनऊ से राष्ट्रीय पूरस्कारो से पूरस्कत हो चुक है।

इस वेद वेदाग राष्ट्रीय पुरस्कार मे डॉ० वेदालकार को २१०००/ रुपये (इक्कीस हजार) की थैली भेट की गइ है इसके साथ ही एक रजत ट्राफी शाल एव श्रीफल भी भेट किए गए है। इस राष्ट्रीय पुरस्कार के भव्य समाराह की अध्यक्षता पुण विश्वविद्यालय क माननीय कुलपति डॉ० बी० डी० चारे ने की। समाराह क मुख्य अतिथि डा० धमाधिकारी निदेशक शाध सस्थान पुण थे।

यह ज्ञातव्य है कि स्वामी गगेश्वरानन्द जी ने इस वर्तमान युग मे वेदो का बहुत अधिक प्रचार एव प्रसार करते हुए लगभग ५००० धार्मिक एव शिक्षण सस्थाओ मे चारो वेदो को एक जिल्द मे प्रतिष्ठित किया था।

यह भी ज्ञातव्य है कि डॉ० जयदेव वेदालकार प्रथम आर्य विद्वान हे जिनको यह सम्मान प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर डॉ० वेदालकार ने आभार प्रकट करते हुए कहा कि वास्तव मे यह मेरा सम्मान नही है अपितु यह मेरे गुरुजनो का सम्मान है जिन्होने मेरे जैसे सामान्य व्यक्ति को इस योग्य बनाया है एव यह सम्मान मेरी मातृ सस्था गुरुकुल विश्वविद्यालय का है। उन्होने यह भी बतलाया कि वेदो का ज्ञान सार्वभौमिक ज्ञान है। वस्तुत वेद अखिल ब्रह्माण्ड का सविधान हैं जिसे ईश्वर ने सृष्टि के आदि मे मानव के कल्याण के लिए प्रदान किया है।

समारोह के अन्त मे प्रतिष्ठान के अध्यक्ष श्री किशनलाल सारडा ने समस्त उपस्थित अतिथियो का आभार व्यक्त किया।

गुजरात में आए विनाशकारी भूकम्प में दिवंगत आत्माओं के लिए पारिवारिक शान्ति यज्ञ

गुजरात मे भयकर और विनाशकारी भूकम्प से असख्य मानव क्षति हुई उसके लिए हरिनगर सी० बी० ब्लॉक दिल्ली–६४ मे दिनाक ४/२/२००१ को प्रात १० बजे एक शान्ति यज्ञ का आयोजन श्री सैनसिह जी (कुनजोली) के निवास स्थान मे हुआ जिसमे दिवगत आत्माओ की शान्ति एव घायलो पीडितो के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना सहित ब्रह्माण्ड के समस्त पदार्थ अथवा दिव्य शक्तिया हमारे देश के लोगो एव अन्य सभी मानवो जीवो के लिए सुख शान्तिदायक हो की भी परमपिता परमेश्वर से प्राथना की गई। आर्यजनो ने इस सकट की घडी मे वैदिक धर्म के महत्व एव अपने आर्य ऋषि मुनियो दानवीरो के जीवन दर्शन से सबक लेकर पीडितो की सेवा आदि करने का स्वागत किया है। वाली बात को हृदय से स्वागत किया है। श्री मनोहर लाल आर्य ने आर्य परिवारो को एकत्रित करके शान्ति यज्ञ आयोजन पर श्री गोपाल आर्य (भिडकोट) एव श्री सैनसिह जी को हार्दिक धन्यवाद दिया।

– गोपाल आर्य, सी० बी० ब्लॉक, जनता फ्लैट, हरिनगर नई दिल्ली

पुस्तक समीक्षा

वेदांग परिचय

पृष्ठ १२४ मूल्य ४० रु०
लेखक आचार्य आनन्द प्रकाश जी
प्रकाशक आर्ष विद्या प्रचार न्यास

वैदिक वाडमय अपने मे पूर्ण है। परन्तु इसके रहस्य को समझने व इस तक पहुचने मे जब तक वेदो के अग उपागो को न जाना जाय तब तक वेद के भेद समझे नहीं जा सकते हैं।

वेदागो के विषय मे सामान्य जनता की आवयश्क जानकारी देने वाली लघु पुस्तिका दी जाय। अत यह वेदाग परिचय नामक लघु पुस्तक – इसके गूढ रहस्यो को समझने का विशिष्ट साधन है।

शिक्षा कल्प व्याकरण – निरुक्त छन्द ज्योतिष इन वेदागो के लोक व्यवहार मे भी महत्वपूर्ण है। महाभाष्यकार पतजलि ने कहा है कि – निष्कारणो धमषडगते वेदोऽध्येयोश्रेयश्च।

इनके विषय मे सामान्य जनता को जानकारी नही है। अत न्यूनतम सक्षिप्त जानकारी देने हेतू वेदाग परिचय पुस्तक लाभकारी सिद्ध होगी। पुस्तक मे –

१ वेदागो के लक्षण और स्वरूप
२ वेदार्थ मे वेदागो की उपयोगिता
३ वेदागो के प्रामाणिक ग्रन्थ उनका परिचय ४ अलग अलग वेदागो का प्रयोजन ५ वेदागो को विशेष रूप से ज्योतिष के कुछ विवादास्पद सिद्धान्तो की समीक्षा पर प्रकाश डाला गया है।

इस ग्रन्थ के द्वारा पाठक यह जान सकेगे कि कितना वैदिक साहित्य आज उपलब्ध है क्या नाम है उनमे क्या तत्व है।

बिना अग उपागो आदि के पढे जो मूर्खतापूर्ण ढग से वेद पाठ पढने की परिपाटी पड रही है उसे निरुत्साहित किया जाय।

माननीय आचार्य आनन्द प्रकाश जी ने स्तुत्य प्रयास कर स्वाध्याय युक्त प्रकाशन किया है।

प्रकाशक महोदय बधाई के पात्र हैं। भविष्य मे अन्य ग्रन्थो का प्रकाशन भी उपलब्ध होगा।

आर्षशोध संस्थान कन्या गुरुकुल
अलियाबाद, म० शामीर पेठ
जिला रंगारेड्डी ७८ (आ० प्र०)
समीक्षक डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्यसमाज अम्बा माता स्कीम का नाम परिवर्तन

आर्यसमाज अम्बामाता स्कीम का निजी भवन न होने के कारण पूर्व मे इसका नाम आर्य समाज अम्बामाता स्कीम रखा गया था। किन्तु अब समाज का स्वय का निजी भवन सज्जन नगर 'ए' ब्लॉक मे निर्मित हो चुका है। अत दिनाक २७-१२-२००० को आयोजित अन्तरग की बैठक मे सर्वसम्मती से नाम परिवर्तित करने का निर्णय लिया गया।

महोदय अब इस आर्यसमाज का नाम आर्यसमाज सज्जननगर 'ए' ब्लॉक स्वामी श्रद्धानन्द मार्ग उदयपुर रखा गया है। अत भविष्य मे इस नाम से जाना जावे।

आर्यसमाज सीहोर का निर्वाचन सम्पन्न

विगत रविवार को आर्यसमाज सीहोर का वार्षिक निर्वाचन राणा उदयसिह आर्य की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। समस्त पदाधिकारियो का निर्वाचन सवसम्मति से किया गया। प्रो० राजेन्द्र वीर आर्य को सातवीं बार प्रधान चुना गया तथा राजवीर सिह मौलिक उप प्रधान श्री नरेशचन्द्र आर्य मन्त्री रामसिह राठौर उपमन्त्री श्रीराम भरोसे आय कोषाध्यक्ष श्री बाबूलाल आर्य पुस्तकालय अध्यक्ष श्री सतोषसिह पत्रकार प्रचार मन्त्री श्री चदरसिह राठौर आर्य वीरदल अधिष्ठाता चुना गया। मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि तथा अन्तरग के गठन का अधिकार सर्व सम्मति से प्रधान जी को दिया गया।

– मन्त्री आर्यसमाज सीहोर

श्री निश्शुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या फैजाबाद का हीरक जयन्ती समारोह

श्री निश्शुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या फैजाबाद का हीरक जयन्ती समारोह गुरुकुल सस्थापक के जन्म दिवस के अवसर पर ४ से ७ नवम्बर तक हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ वेदोपदेश एव भजनोपदेश वेद एव आर्य महा सम्मेलन राष्ट्र रक्षा सम्मेलन कवि सम्मेलन तथा सस्कृत सम्मेलन सहित अनेको अन्य कार्यक्रम समपन्न होगे।

समारोह मे आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती प० नेत्रपाल शास्त्री महात्मा आत्मबोध सरस्वती श्रीमती शकुन्तला आर्या ब्र० महिपाल सिह तथा सत्यपाल मधुर सहित अनेको नेता साधु सन्त तथा विद्वान पधार रहे है। अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाए।

आर्य अनाथालय भूकम्प से अनाथ हुए १०० बच्चो को प्रवेश देगा

आर्य अनाथालय पटादी हाउस तथा ईस्ट ऑफ कैलाश के देसराज परिसर मे स्थित इसकी सम्बद्ध सस्थाओ मे गुजरात के भूकम्प से अनाथ हुए १०० बच्चो को प्रवेश दिया जाएगा।

आर्य अनाथालय के अध्यक्ष वीरेश प्रताप चौधरी ने यह पेशकश प्रधानमन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी को लिखे एक पत्र मे की है। उन्होने बताया कि इन सस्थाओ के सात्विक वातावरण मे बच्चो के सर्वोत्तम प्रशिक्षण की व्यवस्था है और उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास पर ध्यान दिया जाता है।

अमर सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द ने आर्य अनाथालय की स्थापना वर्ष १९१८ मे राजधानी मे प्लेग से अनाथ हुए बच्चो को आश्रय देने के लिए की थी। इस सस्था को महात्मा गाधी का भी आशीर्वाद प्राप्त हुआ। इस समय इस सस्था मे ११०० से अधिक अनाथ व निराश्रित बालक बालिकाओ के रहन सहन भोजन व शिक्षा का समुचित प्रबन्ध किय जा रहा है और जो सुविधाए इन बच्चो को दी जा रही हैं वे किसी भी सम्पन्न मध्यम परिवार की तुलना मे कम नहीं हैं।

– एच० एस० रघुवशी
आर्य अनाथालय दरियागज
नई दिल्ली २

आर्यसमाज नैनी का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज नैनी का वार्षिकोत्सव दिनाक २६ २७ एव २ फरवरी २००१ को नैनी बाजार म मनाया जाना सुनिश्चित किया गया है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान एव भजनोपदेशक पधार रहे है। तीनो दिन प्रात ८ से ११ साय ७ से ११ बजे तक यज्ञ भजन एव प्रवचन होगे। नित्य दिन मे ३ बजे से ५ बजे तक महिला सत्सग का आयोजन भी किया गया है। धुनर्विद्या प्रदर्शन प० नेम प्रकाश आर्य द्वारा सम्पन्न होगा।

– सिद्ध नारायण मिश्र, मन्त्री
आर्यसमाज नैनी प्रयाग

वैचारिक क्रान्ति के लिए "सत्यार्थ प्रकाश" पढ़ें और पढ़ाएं।

वैदिक शोध-संगोष्ठी एवं 21वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला मेरठ मे वैदिक शोध सगोष्ठी व २१वा वार्षिकोत्सव १३ व १४ जनवरी का हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

१३ जनवरी को स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध के तत्वावधान मे सगोष्ठी का आयोजन हुआ। शोधगोष्ठी का विषय था वेदार्थ प्रक्रिया मे शिक्षा (वेदाग)। गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ० मान सिह जी कुरुक्षेत्र वि०वि० कुरुक्षेत्र ने की। गोष्ठी का सयोजन डॉ० सोमदेव जी शताशु गु० का० वि०वि० हरिद्वार ने किया। शोध पत्र प्रस्तुत करने वाले वैदिक विद्वानो मे डॉ० श्रीवत्स निगमालकार दिल्ली वि०वि० दिल्ली डॉ० सुधाकराचार्य डॉ० दुर्गाप्रसाद डॉ० विजेन्द्र तोमर चौ० चरण सिह वि०वि० मेरठ प्रमुख थे। गोष्ठी के अन्त मे गुरुकुल के कुलाध्यक्ष पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज ने अपने आशीर्वचनो मे गोष्ठी मे चर्चित विषय का तात्विक विवेचन करते हुए वैदिक विद्वानो व श्रोताओ को वेद ज्ञान की ओर प्रेरित किया।

१४ जनवरी को पाच दिनो से निरन्तर हो रहे यजुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज के ब्रह्मत्व मे हुई। नव प्रविष्ट २१ ब्रह्मचारियो के यज्ञोपवीत एव वेदारम्भ सस्कार ने अभ्यागत विशाल जनसमूह के समक्ष प्राचीन भारत की गुरु शिष्य परम्परा का भव्य स्वरूप उपस्थित किया। देश के कोने कोने से पधारे हुए आर्य भजनोपदेशको वैदिक विद्वानो एव विशिष्ट दायित्वधारियो के भजन एव उपदेश एव प्रवचनो ने दिशानिर्देशन का कार्य किया।

प्रसिद्ध समाज सेविका बहिन सरला जी की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य मे आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमो के अन्तर्गत "बृहद मातृशक्ति सम्मेलन का आयोजन माता शकुन्तला मेरठ के दिशा निर्देशन मे इस उत्सव के अवसर पर हुआ। ब्रह्मचारियो के योगासन एव बल प्रदर्शनो ने अपार जनसमूह के अन्तस्थल मे एक नवीन उत्सव का सचार किया। शान्तिपाठ एव आर्य – जयघोषो के मध्य उत्सव का समापन हुआ।

– स्नातक परिषद
गुरुकुल प्रभात आश्रम
भोलाझाल मेरठ

विशेषांक की शुभ सूचना

ऋषि जन्म ऋषि बोध तथा आर्यसमाज स्थापना के 125 वर्ष पूर्ण होने पर एक भव्य विशेषाक को प्रकाशित करने की योजना है। सभी विद्वान् महानुभावों तथा आर्य कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि वे अपने लेख 500 से 1000 शब्दों के बीच लिखकर यथाशीघ्र भेज देवें। आपके लेख हमारे पास 28 फरवरी तक पहुच जाने चाहिए क्योंकि विशेषाक मार्च के प्रथम अथवा द्वितीय सप्ताह में निकाला जाएगा। इस विशेषाक में प्रकाशित सामग्री का चयन विशिष्ट उद्देश्य से गठित विद्वत मण्डल करेगा तथा प्रकाशित लेखों के लिए सार्वदेशिक सभा द्वारा विशिष्ट लेखक प्रमाण पत्र जारी किया जाएगा।

- सम्पादक

पृष्ठ ४ का शेष भाग

"भूकम्पन, तूफान और इन्सान"

प्रि- -ग मानव जीवन का मुख्य उददेश्य सेवा और साधना है। जिस यज्ञ और याग अथवा ओ३म स्वाहा भी कह सकते है जीवन का गहन रहस्य यही है कि ससार म जन्म लिए बिना मुक्ति की तयारी नही हो सकती। और ससार मे अनुशासन तथा त्यागपूर्वक चलते हुए उसे छोडे बिना भी मुक्ति नही हो सकती। इसलिए मुक्ति हेतु ससार मे जन्म लेना तथा इस प्रभु की पाठशाला म स्वार्थ रहित कर्म करते यज्ञ के समान सबको अपना समझकर दुख दर्द म सहयोग देते ससार रूपी पाठशाला मे सफल हो सकते है। यही जीवन का सार है। यही बात हम सब प्राणियो का पिता परमेश्वर अपने वेद ज्ञान मे उपदेश करता है। यदग दाशुषे त्वमग्ने भद्र करिष्यसि कि मे उसी व्यक्ति का अपना पूण प्यार व आनन्द देता हू जोकि मेरी तरह ही अपना सब कुछ जरूरत पडने पर दूसरो के लिए न्योछावर कर देता है। अत यदि हम जीवन मे स्वार्थ व हिसा को त्यागकर परमार्थ हित जीवन व्यतीत करने लगे तो इस प्रकार से अनेको भूकम्प तूफान अकाल या अतिवृष्टि जसी विपदाओ युद्धो और दुखो से बचकर सुख पूर्वक जीवन व्यतीत कर सकते है।

सब प्राणि परस्पर मित्र की दृष्टि स प्रेमपूवक रहे वद

सगच्छध्व अथात मिल कर चलो तथा मा गृध कस्य स्विदधनम। लालच मत करो का उपदेश देने वाली परमपिता प्रभु की वदवाणी पृथिवी के मानवो का यह उपदेश कर रही है कि हे मनुष्यो इस ससार मे लोभ क्रोध का त्याग करते हुए बिना किसी की हिसा हत्या व शोषण किये प्रेमपूर्वक व्यवहार करते इस धरती की प्रत्येक दिशा मे निर्भीकता व शान्ति का सचार करो। ससार का स्वर्ग तथा सुखी बनाओ। यहा प्राणियो पर दया व परस्पर प्रेम तथा सगठन से तुम (शयोरभिस्रवन्तु न) मेरे आत्मिक आनन्द को भी पा सकोगे। क्योकि जहा परस्पर मिलने मे शान्ति उन्नति व जीवन मिलता है वहा परस्पर द्वष हिसापूवक टकराने से अशान्ति अवनति व मौत का ताण्डव होता है। मन म मेल व प्रेम की प्रवृति पृथ्वी को जोडती तथा झगड व द्वष की प्रवृति को तोडती व भूकम्प लाती है।

अत महर्षि दयानन्द के आर्यसमाज का सिद्धान्त है कि हम सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझे। यह सिद्धान्त नितान्त स्पष्ट है कि जहा क्रोध व हिसा का आचरण करने से आत्मा दुखी व भयभीत नही होता अपितु जड शरीर भी अपनी दूषित तरगो के प्रभाव से रक्त दूषण व अनेको प्रकार क मानसिक रोग भी उत्पन्न हो जाते है।

यह परीक्षणो द्वारा वैज्ञानिको ने सिद्ध किया है। इसकी पुष्टि के लिए क्रोध के समय निकलने वाले तत्व को एकत्रित करके जब किसी सूक्ष्म प्राणी को दिया गया तो वह मृत्यु जैसी स्थिति मे पहुच गया। अत यह बात साफ सिद्ध हो चुकी है कि मनुष्य के द्वारा की गई हिसा से उठने वाली सूक्ष्म पर शक्तिशाली तरगे दूसरो के चेतन आत्मा को ही नही अपितु उसके साथ साथ आस पास के भौतिक शरीर आदि जड पदार्थो को भी प्रभावित करती है। अत यह बात युक्ति व तर्क सगत सिद्ध होती है कि ससार का विनाश जहा भौतिक प्रदूषण फैलने वाले कल कारखानो के रासायनिक पदार्थ व अण्डे मास मछली आदि के जलने से होता है वहा मनुष्यो द्वारा स्वार्थ के वशीभूत होकर लोभ लालच व्यक्तिगत स्वार्थ पूर्ति व सुख पूर्ति हेतु किए जा रहे प्राणियो के विनाश से भी होता है। इसी सिद्धान्त को गत दिनो दिल्ली विश्व विद्यालय व रूस के वैज्ञानिको ने भी सिद्ध किया था। और यह कहा था कि प्राणियो की हिसा से निकलने वाली दुख की तरगे भौतिक वातावरण को इतना प्रभावित करती है कि उनसे भूकम्प भी आ सकते हैं। हमारा भी यही कहना है कि पीडा की तरगे प्रकृति के स्वाभाविक सन्तुलन को बिगाड कर भूकम्प ही नहीं अपितु और भी अनेको तूफान बाढ तथा अकाल एव अतिवृष्टि जैसी विकृति को भी पैदा कर सकती हैं। अर्थात कहने का अभिप्राय यह हे कि आज धरती का सर्वश्रेष्ठ कहलाने वाला तथाकथित बुद्धिजीवी इन्सान भौतिक एवं आध्यात्मिक प्रदूषण के द्वारा भूकम्प तूफान अतिवृष्टि व अनावृष्टि जैसी विपदाओ को उत्पन्न करके स्वय ही इन भूकम्पो तूफान अतिवृष्टि तथा अनावृति का मूल कारण बन गया है।

प्रभुवाणी

आदि मन्त्रो मे स्पष्ट रूप से मनुष्यो को सचेत कर रही है कि हे मानव ! तू जैसा कर्म करेगा वैसा ही फल अवश्य भोगेगा। तू जैसा भी कर्म रूपी अन्न जीवन रूपी हण्डिया मे पकायेगा वैसा फल अवश्य खायेगा। ससार का कोइ भी धार्मिक व्यक्ति व मूल्यवान भेट अथवा किसी बडे व्यक्ति की सिफारिश तुम्हे कर्म के फल से तू बच नहीं सकेगा। वैदिक धर्म की सारी शिक्षाए मात्र मनुष्यो के लिए ही है क्योकि वह स्वतन्त्र इति कर्ता है अर्थात कर्म करने मे स्वतत्र होने के कारण जीवन मे परिवर्तन लाकर अशुभ के स्थान पर शुभ कर्मो के करने का निर्णय लेकर आगे प्राप्त होने वाले दुख रूपी फल से बच सकता है। अत मनुष्य श्रेष्ठ कर्मो के द्वारा हिसा के स्थान पर प्रेम व दान अथवा अन्य प्राणियो का पालन करता हुआ सच्चा इन्सान बन सकता है। जिसका वास्तविक अथ है इन सा नही अथात जिन मनुष्य प्राणियो जैसा दयालु परोपकारी व सवाभावी और कोई प्राणी नहीं है। जोकि सब प्राणियो मे अपने शुभ कर्मो के द्वारा सर्वश्रेष्ठ विचारशील मानव योनी मे होने से ही इन्सान कहलाता है।

पर अत्यन्त दुख का विषय है कि आज इन्सान अपने नाम के वास्तविक अभिप्राय से नितान्त विरुद्ध चलकर बिना मनन के अपने तुच्छ व स्वार्थ हा... परहानी के कर्म करता हुआ मानव से दानव व इन्सान से हैवान बन चुका है। इसी के कारण बार बार भूकम्प व तूफान आ रहे है।

आचार्य प्रकाशचन्द्र शास्त्री जी को पत्नी शोक

आर्य पुरोहित सभा दिल्ली प्रदेश के सरक्षक एव भू० पू० प्रधान तथा आर्य समाज बाजार सीताराम दिल्ली धर्माचार्य आचार्य प्रकाश चन्द्र शास्त्री जी की धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रकिरण देवी जी का दिनाक ५/२/२००१ को असामयिक निधन हो गया। उनका अन्त्येष्टि सस्कार निगमबोध घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य समाजो के धर्माचार्य पदाधिकारीगण एव सदस्य उपस्थित थे।

दिनाक ७/२/२००१ को आर्य समाज सीताराम बाजार दिल्ली मे प्रात १० बजे शान्ति यज्ञ डा० कर्णदेव शास्त्री एव आचार्य द्विजेन्द्र शास्त्री जी द्वारा कराया गया।

दिनाक १४ फरवरी २००१ को सार्वजनिक शोक श्रद्धाजलि सभा प्रात १० बजे से आर्यसमाज सीताराम बाजार दिल्ली मे सम्पन्न हुई जिसमे अनेको गणमान्य व्यक्तियो ने श्रद्धाजलि सुमन

शुद्धि समारोह सम्पन्न

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी व्रतान द जी एव स्वामी धर्मानन्द जी क नेतृत्व मे चतुर्थ वनवासी आर्य महा सम्मेलन मे शुद्धि समारोह बहुत बडे पेमाने पर सम्पन्न हुआ जिसमे लोभ लालच और दबाव से ईसाई बने हजारो व्यक्तियो ने स्वेच्छा पूवक वैदिक धर्म की मा यताओ को अगीकार किया।



२१ २२ जनवरी को वनवासी आर्य महा सम्मेलन (शुद्धि) मे ग्राम तोलमा मे सासद श्री विष्णुदेव साय उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी व्रतानन्द जी एव माता प्रेम लता खन्ना आदि।



आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के आर्य मेडिकल रिलीफ मिशन द्वारा एक वातानुकूलित एक्सरे वेन गुजरात रवाना की गई। चित्र मे श्री सगीत आर्य श्री यशप्रिय आर्य डॉ० स्वामी सत्यम श्रीमती शिवराज वती श्री ओमकार नाथ आर्य आदि। इसी अवसर पर इस मिशन द्वारा दवाईयो का एक ट्रक भी रवाना किया गया।

श्री गिरीश खोसला के सुपुत्र भुवनेश का विवाह सस्कार सम्पन्न

अमेरिका आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री गिरीश चन्द्र खोसला जी के सुपुत्र श्री भुवनेश का शुभ विवाह दिल्ली मे वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। श्री गिरीश खोसला की पुत्रवधु नितीका श्री राजेन्द्र गुप्ता की सुपुत्री है तथा आय परिवार की मर्यादाओ से परिपूर्ण है। समूचे आर्य जगत की ओर से श्री गिरीश खोसला जी के परिवार को हार्दिक शुभकामनाए।

श्री बृजेश आर्य को मातृशोक

सार्वदेशिक आर्यवीर दल दिल्ली शाखा के मन्त्री श्री बृजेश आर्य की माता श्रीमती गगादेवी का निधन गत माह अपने आवास पर हो गया। वे ६८ वर्ष की थी। समूचा आर्य जगत श्री बृजेश तथा उनके परिवार के लिए इस दु ख की घडी मे उन्हे सान्त्वना व्यक्त करता है तथा ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सदगति प्रदान करे।

(भारत सरकार) GOVERNMENT OF INDIA
(रेल मत्रालय) MINISTRY OF RAILWAYS
(रेलवे बोर्ड) RAILWAY BOARD

TELEMAX/POST COPY
ISSUED ON 14/2/2001

General Managers (Commı)
Central Railway Mumbaı
Eastern Railway Calcutta
Northern Railway New Delhı
N E Railway Gorakhpur
N F Railway Guwahatı
Southern Railway Chennaı
S C Railway Secunderabad
S E Railway Calcutta
Western Railway Mumbaı

By hand

OSDs
East Coast Railway/Bhubaneswar
East Central Railway/Hajıpur
North Central Railway/Allahabad
North Western Railway/Jaipur
South Western Railway/Bangalore
West Central Railway/Jabalpur

No TCII/2066/98/6 ( ) Ministry of Railways have agreed to grant concession appearing in S No 18(2) of Annexure to rule 101 of IRCA Coaching Tariff No 24, Part I (Vol II) in Second/Sleeper class to persons with earnings/emoluments of not more than Rs 5000/ per month attending the International Arya Maha Sammelan being organised by Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha New Delhi at Mumbai from 23[d] & 26[h] marth 2001 ( ) this concession has been granted as a very special case and should not be quoted as a precedent ( ) This concession is admissible only in normal train services and not for booking of Special Trains/Coaches ( ) The concessional return journey tickets may be issued on payment of one single journey Second and Sleeper class Mial/Express fares to the persons travelling more than 300 Kms from the journey commencing station to the station serving the place of the Sammelan on production of the requisite certificate from the Secretary of the above mentioned Organisation ( ) Necessary instructions may be issued to the staff concerned immediately ( ) This issues with th concurrence of Finance Directorate of this Ministry ( ) Matter most urgent ( ) Mani Anand/Railways ( )

(Mani Anand)
Dırrector (Passenger Marketing)
Railway Board

Not TCII/2066/98/6 New Delhi Dated 14/2/2001

Copy forwarded for information to
1 DAI (Railways) New Delhi with 36 spares
2 FA & CAOs All Indian Railways

(Mani Anand)
Director (Passenger Marketing)
Railway Board

DA/36 Spares with
Item (1)

स० टी० सी० ११/२०६६/९८/६ नई दिल्ली दिनाक १४/२/२००१

१ श्री वेदव्रत शर्मा मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली के पत्र दिनाक ३०/१२/२००० के सदर्भ मे सूचनार्थ प्रतिलिपि प्रेषित

२ इस रियायत को प्राप्त करने की प्रक्रिया भारतीय रेल सम्मेलन दर सूची स० २४ भाग (वाल्य ११) मे दी गयी है जिसकी एक प्रति प्रमुख रेलवे स्टेशनो पर सदर्भ हेतु उपलब्ध है तथा इसे जनरल सेक्रेटरी भारतीय रेल सम्मेलन चेम्सफोर्ड रोड नई दिल्ली को भुगतान करके वहा से भी प्राप्त किया जा सकता है।

३ इच्छुक भाग लेने वाला को यह प्रमाण पत्र स्याही से विधिवत हस्ताक्षर करके जारी किए जाए तथा इस पर सघ/सम्मेलन की सील/मुहर लगी होनी चाहिए। रियायत प्रदान करने हेतु इसे स्वीकार नही किया जाएगा यदि इस पर अनुकृति हस्ताक्षर रहे हो। इस फार्म या प्रमाण पत्र की एक प्रतिलिपि सलग्न है।

४ उन्हे यह प्रमाण पत्र जारी न किए जाए जिनके यात्रा खर्च कन्द्र या राज्य सरकार या किसी स्थानीय निकाय अथवा साविधिक अथवा किसी निगम या किसी सरकारी उपक्रम या किसी विश्वविद्यालय द्वारा वहन किए जाने हो।

५ यह प्रमाण पत्र उन्हे जारी न किए जाए जिनकी आमदनी/परिलब्धिया प्रतिमाह ५०००/– रुपये से अधिक हो।

६ इच्छुक भाग लेने वालो को सम्बधित रेलवे के प्राधिकृत अधिकारी अर्थात मुख्य वाणिज्य प्रबधक मडल वाणिज्य प्रबधक आदि को यह प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना अपेक्षित होगा जो उन्हे यह रियायत आदेश जारी करेगे जिसके प्रस्तुत किए जाने पर ही स्टेशन मास्टर उन्हे इस रियायत की अनुमति देगे।

७ इस सम्मेलन/सभा की समाप्ति के तुरन्त बाद उसे इस कार्यालय को उन व्यक्तियो की सख्या से अवगत कराना होगा जिन्होने इस रियायत का लाभ प्राप्त किया।

८ आगे से सभी पत्र व्यवहारो मे रेल मत्रालय के पत्र सख्या एव तारीख का निरपवाद रूप से उल्लेख किया जाए तथा यह अनुरोध दो महीने पहले प्रस्तुत किया जाए।

९ कृपया नोट करे कि यह रियायत विशेष रूप से आपके द्वारा त्य की गई तारीख के लिए दी गई है। अत सम्मेल को स्थागित करने के लिए प्रार्थना पर विचार नही किया जाएगा।

सलग्न एक **कृते सचिव रेलवे बोर्ड।**

पोस्ट I रजिस्ट्रेशन व ओ०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 25-2 2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2001
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2001 in NDPSo on 22 23/2/2001

e-mail :
vedicgod@nda.vsnl.net.in

ओ३म्

☎ : 3274771
: 326

पीड़ितों की सेवा
हम सबका राष्ट्रीय कर्त्तव्य

गुजरात में विनाशकारी भूकम्प

भुज, कच्छ, गांधीधाम, अहमदाबाद क्षेत्र सर्वाधिक प्रभावित

पीड़ितों की सहायतार्थ अपील

तन-मन-धन से सहयोग दीजिए

सभा को दिया गया दान आयकर से मुक्त है

चैक/मनीआर्डर/ड्रॉफ्ट एवं सहायता सामग्री निम्न पते पर भेजें :-

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

3/5, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली - 2

फोन : 3274771, 3260985

निवेदक

स्वामी ओमानन्द सरस्वती, प्रधान — **वेदव्रत शर्मा**, मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

3/5, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली - 2

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रकाशन लि० द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली-२ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली-२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०६८५)।
सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वेदा — ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद

वर्ष ३६ अक ४३ ४ मार्च से १० मार्च २००१ तक दयानन्दाब्द १७८ सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०१ सम्वत २०५७ फा० शु० ६

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर



गुजरात भूकम्प पीड़ित क्षेत्रों में आध्यात्मिक उत्थान की प्रबल आवश्यकता

– जयसिंगराव गायकवाड पाटील

केन्द्र सरकार के खान राज्य म त्री श्री जयसिगराव गायकवाड पाटील ने आर्यसमाज द्वारा विशाल स्तर पर सम्पन्न किए जा रहे भूकम्प पीडित राहत कार्यों की सराहना करते हुए कहा है कि निकट भविष्य मे आर्यसमाज को इन क्षेत्रा मे अधिक से अधिक सख्या मे प्रचारक तथा भजनोपदेशक आदि भेजन का प्रबन्ध करना चाहिए क्योकि राहत सामग्री के दृष्टिकोण से नागरिको का उत्थान पूर्ण रूपण तत्काल सम्भव नही हाता। लोगो को पुन उसी शैली मे आते आते कई वर्ष भी लग सकते है। राहत एव पुनर्स्थापन के कार्यों के साथ साथ भूकम्प पीडित मनो को बाधना भी अत्यन्त आवश्यक है। यह कार्य आर्यसमाज के उपदेशक वर्ग द्वारा बहुत अच्छी प्रकार से सम्पन्न किया जा सकता है।

श्री जयसिगराव ने यह विचार सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा एव विमल वधावन के समक्ष एक भेट के दौरान व्यक्त किए।

आर्य नेताओ ने उन्हे सूचित किया कि उन्हे भूकम्प के बाद से हमारे कई प्रचारक वहा पहुचे है और गाव गाव मे यज्ञ और उपदेश का कार्य चल रहा है। सैकडो की सख्या मे आर्यसमाज के जो भी कार्यकर्त्ता उन स्थलो पर राहत कार्यों के लिए गए थे उन्होने राहत कार्यो साथ साथ जनता के आध्यात्मिक उत्थान का पवित्र कार्य भी बडी लगन से किया है।

सभा मन्त्री ने कहा कि भविष्य मे इस दृष्टिकोण को विशेष रूप से ध्यान मे रखते हुए अधिक से अधिक सख्या मे प्रचारको को भूकम्प पीडित क्षेत्रो मे भेजा जाएगा जो गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा क मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य से निर्देश प्राप्त करके गाव गाव यज्ञ और उपदश का कार्य कर्मठता पूर्वक सम्पन्न कर सके। उन्होने इस कार्य के लिए इच्छुक प्रचारको उपदेशको आदि से आह्वान किया ह कि वे इस पवित्र काय क लिए अपनी सेवाए निष्काम भाव स अर्पित करे ❒

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मुम्बई

आर्यजनों से निवेदन

मुम्बई मे २३ स २६ मार्च २००१ की तिथियो म आयोजित अन्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए तेयारिया पूर जोरो पर ह। तयारियो की व्यवस्था मे मुम्बई मे के० देवरत्न आर्य श्री ओकारनाथ आय डा० स्वामी सत्यम आदि क नेतृत्व मे सैकडो आय कायकर्त्ता तन मन धन से जुडे है। दूसरी तरफ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली से आर्य जनो का रेल किराए मे छूट के फार्म भिजवाए जा रहे है।

सम्मेलन के सयोजक कै० देवरत्न आर्य ने एक विशेष परिपत्र के द्वारा इस महासम्मेलन मे भाग लेने वाले आर्य जनो से सम्मेलन की सफलता तथा अपनी सुविधा की दृष्टि से निम्न विशेष बातो की ओर ध्यान रखने को कहा है –

१ कार्यक्रम स्थल – रिक्लेमेशन मैदान बान्द्रा प० मुम्बई है तथा आगन्तुक महानुभाव बान्द्रा स्टेशन पर ही उतरने का प्रयास करे वैसे महासम्मेलन समिति की ओर से यह प्रयास किया जा रहा है कि बान्द्रा सैण्ट्रल मुम्बई तथा दादर स्टेशनो पर पूछताछ केन्द्र स्थापित किए जाए।

२ सम्मेलन मे आने से पूर्व प्रत्येक आगन्तुक को यह सुनिश्चित कराना आवश्यक है कि उन्होने ५०/– रुपये प्रति व्यक्ति भेज कर अपना नाम पजीकृत करा लिया है या नही इस पजीकरण के आधार पर ही केवल पजीकृत व्यक्तियो का ही भोजन व आवास हेतु एक कूपन पुस्तिका दी जाएगी जिससे केवल पजीकत व्यक्ति ही इन सुविधाओ का लाभ उठा पाएगे। जिन महानुभावो ने आने से पूव अपना पजीकरण नही कराया उन्हे यदि आवास आदि की सुविधा प्राप्त होने म किसी प्रकार की कठिनाई का सामना करना पडे तो हम उनसे अग्रिम क्षमा प्रार्थी हें।

३ जो महानुभाव मुम्बई के विभिन्न दर्शनीय स्थलो पर जाना चाहते है उन्हे भी १५०/– प्रति व्यक्ति प्रतिदिन की दर से अग्रिम राशि जमा करवानी होगी जिससे उनके लिए विशेष बस की व्यवस्था की जा सके। मुम्बई भ्रमण की यह व्यवस्था २७ अथवा २८ मार्च को होगी। जो लोग इस विशेष बस सेवा का लाभ उठाना चाहते है वे अपना वापसी आरक्षण भी उसके अनुरूप ही करवाए।

४ सम्मेलन मे भाग लेने वाले विभिन्न प्रान्तो के प्रबुद्ध आर्य जनो से विशेष निवेदन है कि विभिन्न सत्रो मे प्रसारित उदबोधनो के मुख्य विचार नोट करे तथा उन विचारो के अनुरूप आर्यसमाज की गतिविधियो को भविष्य म अपन अपन कार्यक्षेत्रो क स्तर पर मार्गदशन प्रदान कर ऐसा अभ्यास आयजना का विशष रूप स करना चाहिए क्योकि हमार विद्वान वक्ताआ क बहुमूल्य विचारो का क्रियान्विन करन का यही एक माग है कि हम उन्ह पूरी तरह से नोट करके उस पर चिन्तन एव मनन करते हुए उन्हे क्रियान्वित करे।

सम्मेलन के दिना म मुम्बई मे ग्रीष्म ऋतु होगी। अत हल्क सूती वस्त्र ही रख।

जो आर्यजन दलो म पधार रहे हैं वे अपने साथ अपनी सस्थाओ तथा आर्यसमाजो के नाम पटट बैनर्स तथा ओ३म ध्वज आदि अवश्य लाने की कपा करे

सम्मेलन के विभिन्न सत्रो के दौरान आगन्तुक महानुभावो से निवेदन है कि वे सम्मेलन के दौरान चल रहे विभिन्न सत्रो मे वक्ताओ के रूप म अथवा अन्य घाषणाओ क लिए कोइ पर्ची आदि लिखकर सयोजन काय मे बाधाए प्रस्तुत न करे। एक सभ्य अनुशासन क तहत हम सब को निर्धारित नियमो के अनुसार ही ऐसे कार्यक्रमो मे भाग लेना चाहिए।

आशा है समूचे आर्यजगत का सहयोग इस सम्मेलन को सफलता पूर्वक सम्पन्न कराने मे प्राप्त होगा। ❒

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

सह सम्पादक
विमल वधावन एडवोकेट

श्री हरबंश लाल शर्मा
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक दिनांक १७ फरवरी में पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के विवाद पर चर्चा के उपरान्त सभा प्रधान स्वामी ओमानन्द जी को निर्णय का अधिकार दिया गया। स्वामी जी ने १७ दिसम्बर को हुए चुनाव को अपनी मान्यता दी जिसमे श्री हरवश लाल शमा प्रधान तथा श्री सुरन्द्र नाथ मुरगई को महामन्त्री नियुक्त किया गया हे।

प्रधान श्री हरबस लाल जी
वरिष्ठ उप प्रधान व कार्यकर्त्ता प्रधान – श्री डा० क० के० पसरीचा
उप प्रधान – चा० ऋषिपाल सिह
उप प्रधान – चौ० हरवश लाल सेठी
उप प्रधान – श्री सुदर्शन जी शमा
उप प्रधान – श्री धर्मपाल जी सहगल
उप प्रधान श्री स्वतन्त्र कुमार
उप प्रधान श्री आशानन्द आय
महामन्त्री – श्री सुरेन्द्र नाथ मुरगइ
वरिष्ठ मन्त्री श्री आनन्द किशार पसरीचा
मन्त्री श्री मुलखराज आर्य
मन्त्री – श्री प्रेम भाटिया
मन्त्री – श्री जगदीश अग्रवाल
मन्त्री – श्री सर्वजीत शमा एडवाकट
मन्त्री – श्री ओ० पी० टण्डन
मन्त्री – श्रीमती राजेश शर्मा
कोषाध्यक्ष – श्री प्रेम भारद्वाज
प्रस्तोता रजिस्ट्रार – श्री देवेन्द्र कुमार शर्मा
अधिष्ठाता आर्य वीर दल – श्री करतारनाथ आय
अधिष्ठाता वेदप्रचार – श्री जनकराज जी महाजन

पूज्य स्वामी सोमानन्द जी नहीं रहे

बड खद क साथ सूचित करना पड रहा है कि पूज्य स्वामी सोमानन्द अध्यक्ष वेद प्रचारक मण्डल ६०/१३ रामजस रोड नई दिल्ली का दिनाक ११ फरवरी प्रात ३ बजे लम्बी बीमारी के बाद निधन हो गया। साथ ही आश्चय की बात है उनक स्वर्गवास के ठीक १२ घटे पूर्व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती काशल्या देवी १६ फरवरी का साय ३ बज प्रभु को प्यारी हो गइ। श्री स्वामी सामानन्द जी का पूव नाम रमशचन्द वानप्रस्थी का जन्म आगरा म हुआ था। इनके पूज्य चाचा नारायन दास गग (स्वतन्त्रता सेनानी) के साथ ही व बचपन मे दिल्ली आ गय तथा यहा गर्ग एण्ड को के नाम से प्रकाशन का काय आरम्भ किया था। ५० वर्ष की आयु मे वानप्रस्थ आश्रम ग्रहण करने के पश्चात एक कर्मयोगी के समान उन्होने वेद प्रचारक मण्डल सस्था की स्थापना की तथा वेद प्रचारक मासिक पत्रिका का आरम्भ किया तथा आजन्म वैदिक साहित्य छापते रहे। वानप्रस्थी दीक्षा पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी अधिष्ठाता गुरुकुल एटा से ली ७५ वर्ष की आयु मे सन्यास ग्रहण किया। सन्यास की दीक्षा स्वामी ओ३मानन्द अधिष्ठाता गुरुकुल झज्जर (हरियाणा) से ग्रहण की। ततपश्चात एक कमयोगी के अनुसार सस्त आर्य साहित्य के प्रकाशन म तहलका मचा दिया। ६० पसे मे १० प्रान्त के धर्म शिक्षा वैदिक प्रश्नोत्तरी वदिक सध्या आदि २५ पेसे मे आर्य कलेण्डर निकाला इनके मुख्य प्रकाशन थ स्वामी जी के सहयोगी श्री वेदपाल जी शास्त्री उनके पुत्रो के सहयोग स वेद प्रचार मण्डल का काम निरन्तर करत रहेगे तथा आग विचारधारा का निरन्तर प्रचार प्रसार म सलग्न रहेग। पूज्य स्वामी सोमानन्द जी का काम पूरा करेगे। पूज्य स्वामी जी एव माता जी का सस्कार पूर्ण वदिक रीति से श्री सतयवीर शास्त्री पुरोहित (आयसमाज करोल बाग तथा आचाय हरिदेव जी प्रचाकर प्रतिनिधि सभा पूर्व मन्त्री करौलबाग आर्य समाज तथा श्री वेदपाल जी शास्त्री द्वारा सस्कार सम्पूर्ण निगमबोध घाट पर दिल्ली मे हुआ तथा अतिम कार्यक्रम स्वामी जी एव माता जी का एक साथ दिनाक २५ फरवरी को साय ३ बजे से गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारी श्री सत्यवीर जी शास्त्री आचार्य हरिदेव जी प्रधान आर्यसमाज कीर्ति शर्मा तथा अन्य विद्वानो द्वारा सम्पन्न हुआ।

– वेदपाल शास्त्री

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा शिविर

आपको सूचित करना है कि आर्यसमाज सूरजकण्ड रोड मेरठ पर दिनाक १६ माच २०००१ से २६ मार्च २००१ तक जीवन निर्माण केन्द्र पाचली (मेरठ) के सहयोग स योग एव प्राकृतिक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जा रहा।

इस शिविर मे विश्वविद्यालय प्राकृतिक चिकित्सक एव महान सन्त जगदीशवरानन्द जी के शिष्य डॉ० विनोद कुमार शर्मा (योगाचार्य) के द्वारा असाध्य रोगो – शुगर हार्ट अटैक ब्लडप्रैशर गठिया बबासीर दमा जोडो का दर्द अनिद्रा तनाव मोटापा कैसर पेट आख कान चर्म रोग आदि सभी रोगो की चिकित्सा की जाएगी।

इस शिविर का शुभारम्भ दिनाक १५ मार्च २००१ को अपरान्ह ३ बजे से पूज्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी महाराज कुलाधिपति गुरुकुल प्रभात आश्रम टिकरी भोलाझाल मेरठ के आर्शीवाद से होगा। इस अवसर का लाभ उठाए।

गुजरात के अन्य भागों में भी राहत कार्य

गुजरात आय प्रतिनिधि सभा क प्रधान श्री कल्याण दव आर्य न एक प्रस विज्ञप्ति द्वारा सूचित किया है कि गाधीधाम ओर भुज के अतिरिक्त गुजरात के अन्य भागो म भी आर्यसमाजी सस्थाओ क तत्वाधान मे भूकम्प पीडितो के लिए राहत कार्य जोर शोर से चल रहा है।

आर्यसमाज काकरिया अहमदाबाद वानप्रस्थ साधक आश्रम एव दर्शनयोग महाविद्यालय आर्यवन – रोजड (गुजरात) आर्यसमाज सेक्टर – २४ गाधीनगर गुजरात – मार्शल आर्ट एकेडेमी गाधीधाम (गुजरात) के सम्मिलित प्रयास से गुजरात मे भूकम्प पीडित क्षेत्र मे राहत कार्य जोर शोर से चालू है। उपरोक्त सस्थाओ के लगभग ३५ सेवानिष्ठ कार्यकर्त्ता इस कार्य मे अहोरात्र सलग्न है। आर्यसमाज काकरिया के मन्त्री श्री सुरशचन्द्र जी अग्रवाल एव दर्शनयोग महाविद्यालय के आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी आय भी कार्यक्षेत्र मे स्वय उपस्थित रहकर सेवा कार्य का निरीक्षण एव सचालन कर रहे है।

अन्तत इस सेवायज्ञ मे भूकम्प पीडित पाटण जिले के सावलपुर तहसील मे लगभग १० अन्दरुनी गावो मे ५०० टेन्ट खडे किए गए विशेषकर गरीब एव निराधार ग्रामवासियो मे कपडे चप्पल मामबत्ती बाल्टी कम्बल ऊनी वस्त्र गहु चावल दाल तल बिस्किट आदि खाद्य सामग्री दवाईया आदि आवश्यक वस्तुओ का वितरण किया गया।

इस अधिदविक प्रकोप ने लाखो व्यक्तियो का २ मिनट मे बेघर कर दिया। जो कल तक हर प्रकार स सुसम्पन्न थे आज हर प्रकार से विपन्न हो गए है। अपने स्वजनो से बिछडकर वे माघ मास की ठड मे खुले आसमान के नीचे खतरे की आशा मे ठिठुर रहे है।

सवा के इस उदात्त कार्य मे विभिन्न प्रान्तो के आर्य सज्जनो का भी सहयोग उपरोक्त सेवादल को मिला है मिल रहा है। पीडितो के लिए वर्तमान मे सर्वाधिक प्राथमिक आवश्यकता टेन्ट और कम्बल की है। सभी आर्य जनो को इस सेवा कार्य मे सहयोगी बनने की हार्दिक प्रार्थना है।

भूकम्प पीडितो के लिए सहायता का केन्द्र निम्न स्थल पर है

स्थान – मामा की वाडी (श्री भरतभाई जी ठक्कर का फार्म हाउस) विश्रामगृह के पास वाराही (राधनपुर – कडला हाईवे पर राधनपुर से १८ किमी पर स्थित शहर) जिला – पाटण (गुजरात) दूरभाष – (०२७३८) २४११८ अथवा सहायता के लिए निम्न स्थानो पर सम्पर्क करे – आर्यसमाज काकरिया रोड रायपुर दरवाजा बाहर अहमदाबाद दूरभाष – (०७६)२१४३६५३

दर्शनयोग महा विद्यालय आर्यवन रोजड जिला साबरकाठा (गुजरात) दूरभाष – (०२७७४) ७७२१७ ७७७१७

भूकम्प राहत कार्यों के बीच आर्यसमाज की विशेष सेवाएं

गाधीधाम मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से चल रहे भूकम्प पीडित राहत केन्द्र से मिली अन्तिम जानकारी के अनुसार पारीख जहाज कम्पनी द्वारा २२ कन्टेनर राहत सामग्री की बिल्टी आर्यसमाज गाधीधाम के नाम भेजी गई है। यह दूसरी बडी आहूति आर्यसमाज के कार्यो की अन्तर्राष्ट्रीय कर्मठ छवि का परिणाम है। इससे पूर्व ट्रासवर्ल्ड शिपिग कम्पनी ने भी २७ कन्टेनर राहत सामग्री आर्यसमाज को समर्पित की थी।

गत सप्ताह जहाज मन्त्री श्री अरूण जेटली पुन गाधीधाम दोरे पर गए और उन्होने सवाददाता सम्मेलन मे भी आर्यसमाज के कार्यो का उल्लेख किया था।

गुजरात सभा के मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य ने बताया कि अहमदाबाद से बिल्डिग निर्माण के विशेषज्ञो (architect) एक दल बडोदरा से श्री आनन्द वोहरा एण्ड कम्पनी के नेतृत्व मे गाधीधाम पहुचने वाला है। ये विशेषज्ञ दरारो वाली इमारातो को देखकर अपनी राय व्यक्त करेगे तथा लोगो को मुफ्त परामर्श देगे कि किस मकान को मरम्मत के बाद रहने लायक बनाया जा सकता है और किसे नहीं। यह अपने आपमे एक विशिष्ट प्रकार की सेवा है जिसे अभी तक सरकार ने भी नागरिको को उपलब्ध नहीं करवाया।

आर्यसमाज आजमगढ का निर्वाचन सम्पन्न

प्रधान – श्री कपिल देव राय जी
मन्त्री – शकर राम चौरसिया
कोषाध्यक्ष – श्री सन्तोष कुमार श्रीवास्तव

आधुनिक जीवन में वैदिक धर्म की व्यवहारिकता

– आचार्य राम सुफल शास्त्री वैदिक प्रवक्ता

प्राचीनता एव आधुनिकता के विषय मे वैदिक धर्म की व्यवहारिकता एव आधुनिक जीवन का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए अथवा अन्तरमन से आत्म चिन्तन करे तो आधुनिक जीवन एव वैदिक धर्म की व्यवहारिकता मे कोई खास अन्तर नहीं है। अपितु बाहरी नजर से देखा जाए तो खान पान वेश भूषा रहन सहन मे प्राचीन काल की अपेक्षा इस समय आधुनिक युग मे काफी कुछ बदलाव आया है।

यदि हम वैदिक धर्म की व्यवहारिकता का आन्तरिक दृष्टिकोण अपनाकर वर्तमान आधुनिक जीवन के व्यवहार एव अमल मे लाए तो वैदिक धर्म की व्यवहारिकता आधुनिक जीवन के जीने मे बिल्कुल भी बाधक नहीं है। जैसा कि कहावत भी हे कि "जैसी दृष्टि वैसी वृष्टि अर्थात जैसी व्यक्ति की सोच होती है वैसे ही व्यक्ति के विचार बनते है। व्यक्ति के यदि विचार बढिया हो तो व्यक्ति की जीवन शैली भी अच्छी होती है और यदि व्यक्ति के विचार बढिया न हो तो उसका जीवन स्तर भी बढिया नहीं हो सकता। किसी कवि ने बहुत सुन्दर लिखा है कि –

जब उठते है विचार तो उठता है आदमी।

जब गिरते है विचार तो गिरता है आदमी।

वैदिक धर्म की व्यवहारिकता क्या है ? यह बुत ही सोचने और विचारने का विषय है। काश हम यह जान पाए कि वैदिक धर्म की व्यवहारिकता का वास्तविक महत्व क्या है ? तो हमे आधुनिक जीवन मे वैदिक जीवन पद्धति की व्यवहारिक शैली को बनाने मे कोई कठिनाई नही होगी और वर्तमान आधुनिक जीवन मे वैदिक धर्म की व्यहारिकता के आधार पर एक बहुत अच्छा जीवन जीने की शैली मिल सकती है।

आज वैदिक धर्म अथवा उसकी व्यवहारिकता का वास्तविक स्वरूप आमतौर पर लोगो को पता ही नही है। सच्चाई यह है कि बहुत थोडे लोग है जिन्हे धर्म के विषय मे जानकारी है। आज वर्तमान समय मे आम तौर पर हर एक व्यक्ति के जो धर्म के विषय मे विचार हैं वे हिन्दू, मुस्लिम सिख और इसाई के रूप मे है जिनका धर्म के साथ कोई सम्बन्ध नही है। ये अलग अलग कुछ लोगो के मत पन्थ व समुदाय तो हो सकते है परन्तु धर्म नही है। क्योकि धर्म तो एक ही होता है अनेक नही। आज धर्म अनेक मानने की वजह से ही हमे वैदिक धर्म के व्यवहारिक जीवन जीने मे मुश्किले पैदा होती है किन्तु जिसे धर्म के सच्चे स्वरूप का ज्ञान है उसके लिए वैदिक धर्म की व्यवहारिकता एव आधुनिक जीवन परस्पर इस प्रकार सहयोगी होते है जैसे व्यक्ति के दोनो हाथ परस्पर एक दूसरे के लिए सहयोगी होते है। वैदिक धर्म एक सनातन आचरण पद्धति है। जिसे आज भी अपने जीवन मे आधुनिकता के साथ आचरण मे लाने की महती आवश्कयता है। धर्म एक धारण करने की चीज है जिसे मनुष्य को हर एक काल मे धारण करना चाहिए। चाहे वह प्राचीन काल हो अथवा आधुनिक जीवन का समय हो। यह हर अवस्था मे धारण करना चाहिए। जो व्यवहार मुझे अपने लिए पसन्द नहीं है वह व्यवहार किसी के साथ नही करना चाहिए। इसी का नाम धर्म को धारण करना कहलाता हे।

हम यदि आधुनिक जीवन मे वैदिक धर्म की व्यवहारिकता सनातन अर्थात प्राचीन पद्धति को लागू करना चाहते है तो किसी को कोई अच्छा मार्ग प्रशस्त करने अथवा उपदेश देने की बजाय वह व्यवहार अथवा आचरण पहले स्वय पर लागू करे या फिर जिसे अच्छा मार्ग बताना है तो पहले उसकी मानसिकता को अच्छे मार्ग मे चलने के योग्य बनाना चाहिए। उदाहरण के तौर पर एक नौकर बहुत ही अच्छे आचरण वाला व्यक्ति है। जो अपने रिश्वत खोर बेईमान गरीबो पर शोषण करने वाले मालिक को भी एक अच्छे रास्ते पर चलाने का सपना देखता है और नौकर अपने मालिक को अपना समझकर उसे अच्छी सीख देता है। किन्तु मालिक नौकर की अच्छी सीख नहीं सुनना चाहता। बल्कि मालिक यह चाहता है कि नौकर सौ दो सौ ज्यादा ले ले मगर कोई उपदेश न दे क्योकि मालिक के मन मे नौकर के प्रति केवल मात्र नौकर की ही भावना है। जबकि नौकर अपने मालिक के प्रति मालिक के अलावा एक अपनत्व भाव भी सजोए हुए है। इस स्थिति मे नौकर को चाहिए कि वह अपने मालिक के विचारो मे एक ऐसा परिवर्तन लाए कि मालिक भी अपने नौकर को नोकर के अलावा उसे अपना हितैषी भी मान सके। जब तक दोनो परस्पर एक दूसरे को अपना नही मानेगे तब तक नौकर अपने मालिक को चाहते हुए भी उसे सीख नही सिखा सकता। अगर प्रयास करने पर भी अभिमान वश मालिक उसे अपना मानने को तैयार नही है तो नौकर को चाहिए कि अपने मालिक को उपदेश अथवा अच्छी सीख देने की बजाय उन बातो को वह स्वय अपने जीवन मे धारण करे।

इस उदाहरण से स्पष्ट होता ह कि जैसे मालिक और नौकर का सम्बन्ध एक आधुनिक (सासारिक) जीवन है और दोनो का एक दूसरे के प्रति इसानियत का व्यवहार करना ही एक वैदिक (सनातन) धर्म की व्यवहारिकता है।

अत आधुनिक जीवन को वैदिक धर्म की व्यवहारिकता के साथ समन्वय कर दे अथवा वैदिक (सनातन) जीवन पद्धति को वर्तमान जीवन पद्धति के साथ जोडकर जीने का प्रयास करे तो आधुनिक जीवन मे वैदिक धर्म की व्यवहारिकता सार्थक सिद्ध हो सकती है।

आर्यसमाज हासी (हिसार) हरियाणा

गुरुकुल आश्रम आमसेना का 33वा वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

गत दिनाक ६ १० ११ फरवरी को गुरुकुल आश्रम आमसेना का ३३वा वार्षिक महोत्सव एव श्री चौ० शीशराम जी आर्य का पुण्य स्मृति दिवस उत्साहमय वातावरण मे श्री कै० रूद्रसेन जी सिन्धु की अध्यक्षता म मनाया गया।

इस अवसर पर विभिन्न गुरुकुलो क ब्रह्मचारियो की वेद वेदाग की कण्ठस्थ शास्त्र स्मरण प्रतियागिता का आयोजन भी था। इसमे विभिन्न गुरुकुलो के ३५ से अधिक छात्र छात्राओ ने भाग लिया। महोत्सव मे सारे देश के प्रसिद्ध विद्वान जैसे प० आचार्य सुदर्शन देव जी शास्त्री (रोहतक) प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु जी (अबोहर) स्वामी इन्द्रवेश जी श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य (जनरल मेनेजर वैद्यनाथ कम्पनी नागपुर) स्वामी श्रद्धानन्द जी (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र) प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री ओम्प्रकाश जी वर्मा (यमुनानगर) प० सुरेन्द्र पाल जी (नागपुर) डॉ० सु० ब० काले (मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र) विधायक श्री बसन्त कुमार जी पण्डा (नवापारा) डॉ० कुशलदेव जी शास्त्री (महाराष्ट्र) डॉ० कृष्णदेव जी सारस्वत श्री योगेन्द्र कुमार जी शास्त्री आदि अनेक उच्च कोटि के विद्वान व वक्ताओ के प्रभावशाली उपदेश हुए। उत्सव के दोनो दिन कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियाँ एव गुरुकुल के ब्रह्मचारियो का अत्यन्त आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन ने जन समुदाय को मोहित कर दिया।

वैदिक आश्रम पिपराली का उत्सव सम्पन्न

वैदिक आश्रम पिपराली जिला सीकर (राजस्थान) का वार्षिकोत्सव दिनाक ९ १० व ११ फरवरी को समारोह पूवक सम्पन्न हुआ। उत्सव मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्रद्धेय स्वामी ओमानन्द सरस्वती परोपकारिणी सभा के मत्री डॉ० धर्मवीर जी श्री विद्यासागर शास्त्री अलवर प्रो० रामनारायण शास्त्री चुरू इत्यादि विद्वानो के व्याख्यान हुए।

आचार्य भरतलाल शास्त्री हासी के ब्रह्मत्व मे यज्ञ सम्पन्न हुआ। दिनाक १० फरवरी को महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियो का आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन हुआ।

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक प० ब्रजपाल शर्मा कर्मठ प० भूपेन्द्र सिह प० सत्यपाल सरल व वदिक प्रचारिका श्रीमती पुष्पा शास्त्री के मनोहर भजन हुए। उत्सव मे राजस्थान प्रान्त से बडी सख्या मे आर्यजन पहुचे। हरियाणा से भी आर्यजनो ने उत्सव मे भाग लिया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का सचालन स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती अध्यक्ष वैदिक आश्रम ने किया। इस कार्यक्रम से शेखावारी क्षेत्र के आर्यो मे विशेष उत्साह का वातावरण बना है। अनेक युवको ने व्यसन छोडने का सकल्प लिया।

– पूर्णानन्द वानप्रस्थी
वैदिक आश्रम पिपराली

अध्यात्म और विज्ञान में सामंजस्य अत्यावश्यक

आचार्य सजय देव

आज भारत स[illegible] म विज्ञान क नवीनतम आविष्कारो ने मानव जाति की जीवन शैली म अमूल चूल परिवर्तन ला दिया ह। यातायात की बात हो या सुख सुविधाओ की शिक्षा की बात हो या चिकित्सा की कृषि की बात हो या उद्योग की कम्प्यूटर की बात हो या उपग्रह की हर क्षेत्र की कहानी स्पष्ट है। आधी शताब्दी पूव जहा लोग बैल गाडी से यात्रा करते थे वहा वायु सेवा उपलब्ध है। सचार–सम्पर्क हेतु जहा घाडो और पक्षियो का उपयोग होता था। वहा ई मेल का प्रयोग आम हो गया है। ध्वनि की गति से भी तेज चलने वाले सुपरसोनिक विमान का आविष्कार हो चुका है। ससार के किसी भी कोने म बेठकर हम आप किसी से भी सीधा सम्पक उपग्रह क माध्यम स कर सकते हे। लसर किरणो की सहायता से जटिलतम सर्जरी कुछ ही देर मे सम्पन्न की जाने लगी ह। उपग्रहो के माध्यम से मोसम की जानकारी से जनमानस को नई दिशा मिली है। सुपर कम्प्यूटरो की मदद से कठिन से कठिन गणना पलभर मे की जाने लगी है। इलेक्ट्रानिक्स क क्षत्र म अत्यधिक आश्चर्यजनक प्रगति हुइ हे। इस तरह की इलेक्ट्रानिक टाईप मशीने उपलबध ह जा प्रति मिनट सकडे शब्द टाईप कर सकती ह। ये मशीन शब्दा की डिजाइन तथा पक्तियो की सरचना सुन्दर से सुन्दरतम वना देती है।

यह तो विषय वस्तु रूपी सिक्के का एक पहलू है जिससे हमे इस बात की भ्रान्ति होती हे कि विज्ञान ने हमारे लिए सुख–सुविधाओ का अम्बार लगा दिया है। सिक्के का दूसरा पहलू निश्चित रूप से उतना सुखद और उज्ज्वल नहीं है। यदि हम यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए इसका विश्लषण करे तो पाएगे कि विज्ञान की उपलब्धियो ने हमे उन उद्देश्यो के मार्ग से झटका दिया है जिनकी कल्पना करके हमने इसे अपनाया था। ऐसा लगता है कि चलते–चलते हम अपनी राह से भटक गए है। विज्ञान की उपलब्धियो का सहारा लेकर हम इस कदर सुविधा भोगी बन गए हे कि श्रम की साधना को सर्वथा हेय मान बेठे है अपने अधिकारो तथा सीमाओ का अतिक्रमण करते जा रहे है। हम मैत्री सह अस्तित्व पारस्परिकता तथा जीओ और जीने दो क सिद्धान्त को तिलाजलि दे बैठे ह। हम आधुनिकता की आड लेकर यह सब करने पर आमादा है जिससे न केवल हमारी सभ्यता और सस्कृति का ह्रास हो रहा है बल्कि समूची मानवता का खतरा पेदा हो गया ह। जिस विज्ञान की उपलब्धिया ने हम महामारी तथा अनेक प्रकार की खतरनाक बीमारियो स बचाव करने का उपाय देकर हमे त्राण दिया उसी का सहारा लेकर हमने अणुबम और हाइड्रोजन बम तथा अनेक खौफनाक रासायनिक हथियारो का निर्माण कर डाला। जिसका परिणाम यह हे कि मात्र एक बटन दबाने से पलक झपकते ही विश्व के देशो का न केवल अस्तित्व समाप्त हो जाएगा बल्कि सयोगवश बच गए लोगो की आने वाली नस्ले अन्धी लगडी तथा विकृत होगी विज्ञान की प्रगति से जुडे पर्यावरण के प्रदूषण ने हमे शुद्ध प्राकृतिक हवा और जल से भी वचित कर दिया ह। रासायनिक प्रदूषणे का परिणाम केंसर ओर एडस जेसी असाध्य बीमारियो के रूप मे हमारे सामने है।

तथाकथित वैज्ञानिकता के नाम पर जा खतरनाक जहर हमारे अन्दर भीतर तक प्रवश करता जा रहा है तथा हमारी सस्कृति ओर सभ्यता को नष्ट करने को तत्पर हे वह हे नेतिक मूल्यो की योजनाबद्ध उपक्षा। उपग्रह तथा टी वी० सस्कृति ने हमे इस तरह प्रभावित किया ह कि हम हमार मनीषियो और महापुरुष द्वारा स्थापित मूल्यो को धीरे धीरे न केवल मानने स इन्कार कर रहे हे बल्कि उनको झुठलाने पर आमादा है। चाहे वह पारिवारिक सम्बन्ध हो या सामाजिक सामजस्य पयावरण सुरक्षा हो या अन्य प्राणियो के प्रति करुणा ओर सह–अस्तित्व की भावना– इन सबके और हमारे बीच खाई इतनी गहरी हो गई है कि हम स्वय अलग–थलग पडते जा रहे है पारिवारिक शाति का ताना–बाना छिन्न–भिन्न होता जा रहा है। सर्वत्र सामाजिक अशान्ति और हिसा का नग्न ताण्डव चल रहा है। हर कोई स्वय को असुरक्षित अनुभव कर रहा है। भावावेश और तनाव इतने बढ गए हैं कि व्यक्ति का शारीरिक–मानसिक स्वास्थ्य महज मखौल बन कर रहा गया है।

आखिर ऐसा हुआ क्यो ? कहा से मिली हमे इस तरह की दुष्प्रेरणा ? विज्ञान की उपलब्धिया का वरदान हमारे लिए अभिशाप क्यो बनता जा रहा है ? इन सभी प्रश्नो का उत्तर एक वाक्य मे निहित है – विज्ञान पर अध्यात्म के नियन्त्रण का हास। स्वय विज्ञान का मानना है कि हर क्रिया के विपरीत प्रतिक्रिया होती है। प्रतिक्रिया की दिशा क्या होगी – यह इस बात पर निर्भर करता ह कि प्रतिक्रिया करने वाले का स्वय पर नियन्त्रण कितना ह ? स्थिति यह है कि आज का मानव स्व–नियन्त्रण की क्षमता तो पहले ही खो बैठा था अब तथाकथित वैज्ञानिक आधुनिकतावाद के नाम पर सदियो से निर्धारित आध्यात्मिक मूल्यो को भी मानने से इन्कार कर बैठा है। परिणाम यह हुआ कि अपने ही बुने जाल मे उलझता चला जा रहा है।

महात्मा भर्तहरि ने प्रश्न किया था कि मनुष्य और पशु के बीच अन्तर क्या है ? उत्तर देते हुए उन्होने स्वय ही कहा था कि मात्र धर्म ही मनुष्य को पशु से अलग करता है। मनुष्य अपनी पाशविक प्रवृत्तियो पर नियन्त्रण भावना प्रवण मस्तिष्क के द्वारा करता है। सम्भवत वेज्ञानिक प्रगति ने भावना प्रवण मस्तिष्क का निष्क्रिय बना दिया है। आज का वैज्ञानिक भौतिक जगत की उपलब्धियो मे इस तरह उलझ गया है कि वह धर्म रूपी उस अध्यात्म विज्ञान को पूर्णत भूल गया है जो उसे अन्य प्राणियो से श्रेष्ठ बनाता है।

अध्यात्म क मनीषियो ने कभी विज्ञान को नकारा नही था बल्कि उन्होने तो उसका पोषण किया। अपने आन्तरिक अनुभवो क द्वारा उन आचार्यो ने जो सिद्धान्त प्रतिपादित किए वे विज्ञान की कसोटी पर शत प्रतिशत खरे उतरे हैं सत्य तो यह हे कि विज्ञान उस समय अध्यात्म का अविभाज्य अग रहा था। इधर कुछ सो वर्षो से विज्ञान की कुछ जटिल सफलताओ की आड लेकर उसको अध्यात्म से अलग करने तथा उसकी निरकुश स्वतन्त्रता सत्ता स्थापित करने का कुप्रयास किया गया है। यह सही है कि आज के परिवेश मे मनुष्य की तमाम भौतिक आवश्यकताओ की पूर्ति करने मे विज्ञान सक्षम है परन्तु यह भी कटु सत्य है कि मानव–कल्याण से सम्बन्धित जीवन मूल्यो सहिष्णुता ईमानदारी स्नेह शान्ति ऋजुता अहिंसा नैतिकता इन्द्रिय–निग्रह सत्य आदि का भी जीवन मे अपना विशेष महत्त्व है। इनकी उपयोगिता भी सर्व सिद्ध है और इन मूल्यो का पोषण केवल अध्यात्म के द्वारा ही सम्भव है। हमारे जीवन मे इन मूल्यो के ह्रास का अर्थ होगा – मानवता का विनाश। सारी की सारी वैज्ञानिक उपलब्धिया धरी की धरी रह जाएगी यदि हम स्वय ही इनका उपयोग करने के लायक नहीं रहेगे। दूसरे शब्दो मे यदि विज्ञान हमें सुख–सुविधाओ का समुचित उपयोग करने की पात्रता पेदा करता हे। यही नही? अध्यात्म के सूत्र उन सुविधाओ क दुरुपयोग से बचने तथा शाश्वत सत्य का अनुपालन करने की प्रेरणा भी देते हैं।

सामान्य रूप से प्रचलित यह अवधारणा कि विज्ञान और अध्यात्म एक दूसरे के विरोध है मात्र भ्रान्ति ही है। विज्ञान जहा भौतिक–जगत के पदार्थो की सरचना कार्यविधि तथा विकास की प्रक्रिया मे उनके योगदान से सम्बन्धित अध्ययन करता है वही अध्यात्म स्वय का। इस प्रकार विज्ञान और अध्यात्म दोनो क्रमश बाह्य और अन्तर्जगत की ज्ञान पिपासा को शान्त करते है। वास्तव मे दोनो का विकास ही सम्यक ज्ञान और सम्यक दर्शन है। जिस प्रकार विज्ञान के सिद्धान्त किसी भी दुराग्रह से परे होते है किसी व्यक्ति और व्यक्तित्व विशेष का उन पर कोई प्रभाव नही होता उसी प्रकार अध्यात्म ज्ञानी भी स्थित प्रज्ञ होता है तथा राग द्वेष से मुक्त होता है।

विज्ञान की उपलब्धियो के दुरुपयोग की सारी जिम्मेवारी किसी एक वर्ग पर डालना उचित नही होगा। आज आवश्यकता इस बात की है कि वैज्ञानिक समाज सुधारक राजनेता एव प्रशासनिक अधिकारी मिलकर इस तरह का पुरजोर प्रयास करे कि विज्ञान और अध्यात्म के बीच बढती खाइ को पाटा जा सके। केवल सयमित मन स्थिति वाला व्यक्ति ही इस दिशा मे प्रयास कर सकता है।

आज के वेज्ञानिक युग मे सुविधा साधन के नवीन आयामो की स्थापना के साथ साथ अपराध आतक तथा विनाश भी अपने चरमोत्कर्ष पर है। क्या यह भोगवादी दृष्टिकोण की नियति है या कोई और कारण ? इस नियति ने मानवीय चिन्तन को कुछ नया सोचने के लिए विवश किया है आज का हर प्रबुद्ध व्यक्ति कही न कहीं किसी न किसी मोड पर आकर नई राह की खोज मे है। सम्भवत उसी राह का नाम है – अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय। समन्वय तभी होगा जब विज्ञान के क्षेत्र मे कार्यरत लोग अहिसा सत्य अस्तेय मत्री सह अस्तित्व आदि की भावनाओ को सजोए रखे तथा उन्हे वैज्ञानिक प्रयोगो से अलग न करे। अध्यात्म के क्षेत्र मे कार्यरत लोग वस्तु स्थिति को वैज्ञानिक सिद्धान्तो के अनुरूप स्वीकार करे तथा रूढिवादी परम्पराओ मे न उलझे। इस दिशा मे सकल्पबद्ध दृढ प्रयास इस धरा को जीने लायक बनाएगे तथा बारूद के ढेर और विनाश के कगार पर बैठी मानवता को समूल विनाश से बचाएगे।

आर्यसमाज मल्हारगज इन्दौर

पश्चिमी करण के क्रूर पंजे

— डॉ० बिजेन्द्र पाल सिह चौहान

विश्व मे भारतीय सस्कृति अत्यन्त महान है इस पर विदेशी भी आश्चर्य करते है हमारी वैदिक आश्रम व वर्ण व्यवस्था समाज व राष्ट्र के विकास व श्रेष्ठता के लिए विधिवत वैज्ञानिक प्रणाली व जीवन पद्धति रही परन्तु आज उसका रूप बिगाड दिया गया है इस व्यवस्था की ही देन है कि हमारे प्रत्येक कार्य मे शुद्धता पवित्रता तथा आध्यात्मिक भावना का समावेश रहता है परन्तु पाश्चात्य सस्कृति ने हमारी सुन्दर जीवन शैली मे विष घोल दिया है इससे चहु ओर घनघोर अप सस्कृतिकरण के रग मे सने समाचार माध्यमो ने पश्चिमी करण पर अधिक बल देना आरम्भ कर दिया है इसका कारण उनकी कु शिक्षा है कुशिक्षा इसलिए है क्योकि उन्हे अपनी जन्म भूमि अपने पूर्वज इतिहास व महान गाथाए व भारतीय सस्कार देखने पढने व अनुकरण करने को नही मिले कान्वैण्ट स्कूल की शिक्षा प्राप्त यह लोग राष्ट्र मे नागफनी के काटो का कार्य कर रहे है। वेलेण्टाइन डे हैप्पी वथ डे हनीमून विश्व सुन्दरी ब्रह्माण्ड सुन्दरी भारत सुन्दरी जैसी सोन्दर्य प्रतियागिताए इस ब्रह्मचर्य प्रधान समाज वाले देश के लिए एकदम सर्वथा अनुचित है और यह मीडिया विदेशी कुप्रथाओ को हमारे यहा प्रचार कर अनर्थ कर रहे है।

विदेशी ने पूछा कि हमारे देश मे लडके लडकिया वृद्ध वृद्धाए जवान युवती युवक सब हाथ व गले मिलाते व मिलते है और चुम्बन भी लेते है आपके यहा क्यो नहीं आपके यहा हमने लडके लडके व पुरुष पुरुष आपस मे हाथ थाम कर तो चलते देखते है परन्तु स्त्री पुरुष नहीं यहा भारतीय ने उत्तर दिया हमारे यहा ऐसा नहीं होता विवाह के पश्चात ही ऐसा हो सकता हे वह भी सार्वजनिक नहीं। यह तो रही विदेशो मे स्थिति उनके यहा खुले आम चुम्बन स्त्री पुरुष अर्धनग्नावस्था मे अठखेलिया करते कामुकता करते बढाते देखे जा सकते हैं केबरे डास व घरो आदि डिस्को पाप म्यूजिक की धून पर एक दूसरे के गले मे हाथ डाले युवक युवतिया मद्य मे शराबोर हो नाचते रहते है वहा यही कारण है अपराधो की सख्या सर्वाधिक होती है बलात्कार कत्ल तलाक सर्वोपरि होते है और आम मनुष्य की जीवन चर्चा अत्याधिक मानसिक असन्तुलन मे व्यतीत होती है एक स्त्री जीवन मे अनेक अनगिनत विवाह व तलाक कर लेती है पुरुष व स्त्री जिनके बच्चे भी जीवन पर अपने माता पिता से मिलने को भटकते रहते है पति पत्नियो के झगडो मे बच्चो का जीवन व भविष्य अन्धकारमय हो जाता है यह सब क्या हे अपराध बढ रहे है यह वहा का अव्यवस्थित तथा अनुचित अधार्मिक जीवन के कारण है उनके जो सस्कार हे वह हमारे जैसे नही है यह विशेषता व ज्ञान हमारे भारतीय सस्कार शिक्षा व धर्म मे ही निहित है हमारे यहा ब्रह्मचर्य को प्रधानता दी गई है इसमे सुख ही सुख है ओर विदेशी पाश्चात्य सभ्यता सस्कृति मे कामुकता को प्रधानता दी गई है जहा विद्वेष हत्या अपराध बलात्कार नारी शोषण बाल अपराध की वृद्धि हो रही है।

स्त्री पुरुष विवाह पश्चात भी ब्रह्मचय नियमो का पालन करते हे ओर परस्त्री पर पुरुष का दर्शन स्पर्श ना ही नही करते धार्मिक होने के कारण ही तो यहा की सामाजिक जीवन की व्यवस्था अत्यन्त श्रेष्ठ है अच्छे सस्कारो के कारण ही यहा सर्वाधिक धार्मिक विद्वान व महान पुरुष तथा राष्ट्र भक्त हुए वस्तुत उन्हीं सस्कारो के कारण ही यहा का बच्चा बच्चा देश व धर्म हेतु मरना व मिटना जानता है और राष्ट्र समाज के कार्यो मे वह पीछे नहीं परन्तु विदेशी सस्कृति ने उसे भी कुमार्ग पर ढालना आरम्भ कर दिया है सौन्दर्य प्रतियोगिताए कैबरे पाप म्यूजिक नग्नता फूहडपन व कुसस्कार व अपराध पाश्चात्यता के कारण ही बढे है क्योकि जब धन की आसक्ति व भौतिक सुखो को भोगने की इच्छाए बलशाली हो जाती है और अध्यात्मिक ज्ञान कम हो जाता है धर्म नष्ट हो अधर्म बढ जाता है झूठ चोरी हिसा जैसे पाप व अपराध बढ कर मानव को कष्ट देते है आज भारत की सस्कृति व धर्म मार्ग पर जो विष का प्रयोग व कटक खडे हो गए है इसके फलस्वरूप ही सामाजिक राजनैतिक आध्यात्मिक स्थिति का पतन हो दुख बढ गए है।

मुख्य विषय यह है कि जो भी हो रहा है इसका समाधान क्या है ? व्यक्ति समाज व राष्ट्र की उन्नति का मूल वहा की सुशिक्षा है हमारी शिक्षा मे हमारे महान पूर्वजो की महानता वेद उपनिषद की शिक्षा तथा राष्ट्र भक्तो की गाथाए और भारत देश की महानता से सम्बन्धित विषय हो सदाचार की शिक्षा हो गुरुकुलो आश्रमो का विकास हो वहा आज की अत्याधुनिक शिक्षा अर्थशास्त्र विज्ञान जीव विज्ञान भूगर्भ खगोल शास्त्र युद्ध व सैन्य शिक्षा सामाजिक ज्ञान के साथ कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी की आदि का भी विधिवत व पूण ज्ञान दिया जाए और अन्धविश्वास पाखण्डो को समाज मे स्थान न दिया जाए गुरुकुलो आश्रमो मे प्रशिक्षितो को राजनीति व शासकीय सेवाओ मे लिए जाना चाहिए तथा उच्च अधिकारी व राजा मन्त्री प्रधानमन्त्री राज्यपाल आदि पूर्ण वेद आदि के ज्ञान व शिक्षा प्राप्त हो गुरुकुलो मे शिक्षित हो सदाचारी हो ब्रह्मचारी वानप्रस्थी अथवा सन्यासी हो तो श्रेष्ठ होगा क्योकि सन्यासी ही अच्छा शासक हो सकता है। हमे अपनी राष्ट्रीय सामाजिक व व्यक्तिगत व्यवस्था पर शीघ्र ही ध्यान देना चाहिए वरना वह दिन दूर नही जब कि आर्य देश रहे म्यामार अफगानिस्तान पाकिस्तान इन्डोनिशया कम्वोडिया की भाति भारत भी आर्य व हिन्दुत्व शब्द को खो बैठे।

— *उप मन्त्री*

आर्यसमाज खुरजा

न्यायालय में अधिवक्ता धोती पहनकर बहस कर सकता है

उच्च न्यायालय मे न्यायाधीश राजाराम यादव के सामने श्री वेदपाल शास्त्री एडवोकेट रघुवीर सिह बनाम राज्य के मामले मे जमानत के लिए दिनाक १५ फरवरी को उपस्थित हुए। श्री शास्त्री जी धोती पहने हुए थे। इस प्रकार न्यायाधीश राजाराम यादव ने धोती पहनकर पैरवी करने पर आपत्ति की। इस पर श्री शास्त्री ने कहा कि मै सदैव धोती पहनता हूँ। मैंने कभी पैट नही पहनी है तथा धोती भारतीय वेश भूषा है इसे पहनकर बहस की जा सकती है मैं पहले भी विभिन्न न्यायालयो मे उपस्थित होता रहा हू। इस पर न्यायाधीश ने कहा कि पहले यही मुद्दा तय किया जावेगा कि न्यायलय मे धोती पहनकर अधिवक्ता पैरवी कर सकता है या नहीं इस मामले मे तीन दिन बहस चली।

धोती को न्यायालय मे पहनी जाने वाली वेश भूषा मानने के समर्थन मे विभिन्न दृष्टान्त व नजीरे पेश की गई। इस प्रकरण पर सोमवार को हुई सुनवाई के बाद न्यायालय ने मगलवार को निर्णयात्मक सुनवाई के आदेश दिए थे।

मामले की अन्तिम सुनवाई के दौरान अधिवक्ता वेदपाल शास्त्री व उनकी ओर से पैरवी करते हुए अधिवक्ता आर० के० माधुर धमवीर ठोलिया सत्येन्द्र कुमार गुप्ता व पी०सी० जेन वकीलो की न्यायालय मे पहनी जाने वाली पोशाक के बारे मे विस्तृत चर्चा की। अधिवक्ताओ ने इस मुददे पर उच्च न्यायालय नियम दीवानी व फौजदारी कानून महित अधिवक्ता अधिनियम के बारे मे बताया कि अचकन चूडीदार पाजामा समेत काले कोट व सफेद टाई के धोती व सफेद कमीज भी न्यायालय की वेशभूषा है।

दलीले सुनने के बाद न्यायाधीश राजाराम यादव ने अधिवक्ता अधिनियम मे वकीलो को न्यायालय मे पहनने वाली वेश भूषा के रूप मे भारतीय सस्कृति मे पोशाक मे विशेष स्थान रखने वाली धोती को स्वीकृति दे दी।

उल्लेखनीय है कि श्री वेदपाल शास्त्री एडवोकेट गुरुकुल झज्जर हरियाणा के स्नातक है। श्री शास्त्री जी ने राजस्थान उच्च न्यायालय मे कुछ वर्ष पूर्व चले "महर्षि मनु की प्रतिमा (स्टेच्यू) के मामले मे भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

— *स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती*

कार्यकारी प्रधान सार्वदेशिकसभा

अनृणाः स्याम - हम ऋण रहित हों - वेद

– *विवेकानन्द सरस्वती*, प्रभात आश्रम मेरठ

व्यक्ति समाज परिवार या राष्ट्र के विकास का मूलाधार ह उसकी स्वतन्त्रता स्वतन्त्र व्यक्ति या राष्ट्र ही अपना सम्यक विकास कर सकता हे। इसलिए वेदो मे स्वराज्य का अनेकत्र गुणगान किया गया है – अर्चन्ननु स्वराज्यम। ऋग्वेद

स्वाधीनता एक ऐसी परिस्थिति है जो किसी के भी विकास मे मूल साधन होती है। जिस प्रकार पर शासन मनुष्य या राष्ट्र को पग्ति पाश बद्ध कर उसके समुचित विकास को अवरूद्ध कर देता है और अपनी इच्छानुसार उसे सचालित करता रहता है। पराध् ीन व्यक्ति या राष्ट्र की सुख सुविधा या स्वाभिमान सब कुछ नष्ट हो जाता है। यहा तक की उसकी अपनी वेशभूषा सस्कृति भाषा परम्पराए पूर्वज इतिहास सब कुछ अपरिचित स हाकर उससे छूट जाते हे। या जाने अनजाने वह स्वय अपनी परम्पराओ का परित्याग कर देता है। या उनको छोडने मे गौरव की अनुभूति करता है। यह भी होता है कि प्रशास्ता बलात उसको अपनी परम्पराओ से पृथक करने के लिए विवश कर देता है। गोस्वामी तुलसीदास के शब्दो मे पराधीन सपनेहु सुख नाही। की स्थिति हो जाती है। शासक अपनी सुविधा के लिए प्रशास्य व्यक्ति समाज या राष्ट्र का उपयोग मात्र करता है। प्रशास्ता के लिए वह जड वस्तु की भाति एक उपायोज्य वस्तु मात्र रह जाता है। पराधीनता अनेक प्रकार की होती है।

आज कहने मात्र के लिए भारत राष्ट्र स्वतन्त्र है। अर्थात उसका अपना तन्त्र है स्वराज्य है किन्तु यथार्थ हमसे बहुत दूर है। क्योकि वह आर्थिक दासता से जकडा हुआ है। सामान्य मनुष्य ही नही अपितु भीष्म द्रोण जैसे महारथी भी अर्थ का दास बनकर अन्याय का सर्वथा समर्थन करते रहे। भीष्म पितामह ने तो स्पष्ट ही कहा है अर्थस्य दास पुरुष। महाभारत। मनुष्य अर्थ का दास है। इसका स्पष्ट अर्थ यह हुआ कि वह अर्थ दाता का एक प्रकार से किकर (भृत्य) है जो स्वामी के आदेश का पालन करने के लिए बाध्य है। यह स्थिति तो भीष्म द्रोण जैसे शूरवीर लोगो की है जो अपने शौर्य एव त्याग से सब कुछ करने मे समर्थ थे। अन्य लोगो की विवशता का इसी से सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। भारत को स्वतन्त्र हुए अर्थात स्वराज्य प्राप्त किए हुए तिरपन वर्ष व्यतीत हो गए किन्तु आज भी राष्ट्र विदेशी एव स्वदेशी ऋणो के पाशो मे परित आबद्ध है। भारत राष्ट्र पर साढे तीन लाख करोड विदेशी एव साढे चार लाख कराड स्वदेशी ऋण है। इन ऋणो के व्याज को देने के लिए भारत सरकार के पास धन नही अत वह विश्व बैक से या अन्य किसी देश से ऋण लेकर ब्याज चुकाती है और प्रगति के कार्यो की योजना बनाकर नया ऋण लेकर देश के विकास का ढिढोरा पीटती है। अब भारत की जनता को यह सोचना चाहिए कि जिसका राष्ट्र इतने अधिक ऋणो से दबा है कि उसके पास ब्याज देने के लिए भी पैसा नही अथात आर्थिक रूप से दिवाला निकल चुका है वह अपनी सस्कृति सभ्यता या परम्परा की रक्षा कैसे कर सकता है। यह ऋण से आबद्ध वाली स्थिति वाला राष्ट्र क्या स्वतन्त्र रूप से अपने विकास के सम्बन्ध मे कुछ कर सकता है या भारत राष्ट्र के कर्णधार इसके विकास के लिए या जनता की भलाई के लिए स्वतन्त्र रूप से काई याजना बना सकते है या बना भी ले तो क्या वे उसे क्रियान्वित कर सकते है जब सामान्य लोक जीवन मे भी हम देखते है कि ऋणग्रहीता ऋणदाता के सम्मुख दबा रहता है ओर उसके समक्ष स्वतन्त्र रूप से वह कुछ नही सोच पाता है तो क्या विकसित राष्ट्रो या विश्व बैक से ऋण लेने वाला विकासशील राष्ट्र भारत दबा नहीं रहेगा स्वतन्त्र रूप से वह विकसित राष्ट्रो के सम्मुख जिसका ऋण उसने लिया है उनके समक्ष कुछ कर सकता है या कह सकता है उत्तर स्पष्ट है कदापि नही ? जब स्वतन्त्र रूप से वह कुछ कर नही सकता तो सुख समृद्धि तो उससे कोसो दूर रहेगी ही सुख के लिए प्रसन्नता के लिए ऋणरहित होना परमावश्यक है। ऋणी व्यक्ति या राष्ट्र कभी सुख की निद्रा नहीं सो सकता यहा तक कि वह सुख की श्वास भी नही ले सकता है। पाच सहस्र वर्ष पूर्व धर्मराज युधिष्ठिर से यक्ष ने प्रश्न किया कि क मोदते ? अर्थात ससार मे प्रसन्न कौन रहता है ? तो धर्मराज युधिष्ठिर ने उत्तर दिया था –

पञ्चमे अहनि षष्ठे वा शाक पचति स्वग्रहे।
अनृणा चाप्रवासी च स वारिचरमोदते।
(महाभारत यक्ष युधिष्ठिर सवाद।)

अर्थ–अर्थाभाव के कारण अपने घर जो पाचवे या छठे दिन भी केवल साग पका कर खा रहा है किन्तु वह ऋण रहित है तो हे यक्ष वह व्यक्ति प्रसन्न है। इस सवाद से हमे दिशा निर्देश लेना चाहिए। ऋण को लूट का माल या बिना लौटाया जाने वाला धन समझकर प्रगति के नाम पर अन्धा धुन्ध बिना सोचे विचारे ऋण लेने से आज भारत राष्ट्र बिना मेरुदण्ड का शरीर मात्र रह गया है। इसको श्री सम्पन्न बनाने के लिए सर्वप्रथम आवश्यकता है इसे अनृण (ऋणमुक्त) करने की विश्व बैक या विदेशी ऋण से सवथा मुक्त होने की क्योकि ऋण पाश से आबद्ध होकर यह अकिचितकर एव किकर्तव्यविमूढ हो गया है। यह एक विकट परिस्थिति है। ऐसी तमसावच्छिन्न परिस्थिति मे आशा की एक किरण दृष्टिगोचर हो रही है और वह है हमारे पास विपुल प्रच्छन्न सम्पत्ति विश्वस्त सूत्रो से यह ज्ञात हो रहा है कि भारत राष्ट्र के राजनेताओ धनपतियो एव अन्य नेताओ का विदेशी बैको मे पन्द्रह लाख करोड रुपये का जमा होना। यह सहज अनुमानगम्य है कि जिन लोगो का रुपया विदेशी बैको मे सुरक्षित है वे निश्चित रूप से धनहीन नही है। जिन लोगो की अपार सम्पत्ति की सुरक्षा करने के लिए स्वदेशी बैंक छोटा पड गया हो उनको धनहीन नहीं अपितु अतिसम्पन्न कहा जा सकता है। ऐसे लोग चाहे जो भी हो किसी भी प्रकार से किसी भी माध्यम से धन एकत्र किए और उसे विदेशी बैको तक पहुचाने मे सफल रहे। अब यदि वही लोग राष्ट्रीय भावना से सम्प्रेरित होकर अपनी वह विदेशी पूर्ण सम्पत्ति नहीं अपितु आधी सम्पत्ति भी राष्ट्र को अनृण (ऋणमुक्त) बनाने के लिए राष्ट्र को ही स्वेच्छा से समर्पित कर दे (दान कर दे) तो राष्ट्र अपने इन धनदाताओ का कृतज्ञ रहेगा और यदि वे धनपति इससे भी अगला पग बढाए अर्थात अपनी शेष आधी विदेश बैंक मे सुरक्षित सम्पत्ति भी राष्ट्र के विकास कार्यों मे समर्पित कर दे तो वे इस प्रायश्चित से राष्ट्रघात के सभी पापो से मुक्त हो जाएगे और भारत राष्ट्र की जनता उनका कृतज्ञ होकर मुक्त हृदय से अभिनन्दन करेगी। राष्ट्र अनृण होकर विश्व मच पर स्वाभिमान से खडा हो जाएगा। सम्पूर्ण राष्ट्र की जनता गौरव की अनुभूति करेगी। ऋण एक अभिशाप है जिससे मुक्त होने के लिए विश्व के आदि धर्मशास्त्र वेद मे प्रार्थना की गई है वह भी केवल एक प्रकार के ऋण से मुक्त होने के लिए नहीं अपितु सभी प्रकार के ऋणो से मुक्त होने की – सर्वान पथो अनृणा आक्षियेम।

अनृणा अस्मिन अनृणा परस्मिन तृतीयलोके अनृणा स्याम।
ये देवयाना पितृयाणाश्व लोका सर्वान पथो अनृणा आक्षियेम।।

अथर्व० ६/११७/३१

अथर्ववेद के इस मन्त्र मे अपने पराये एव दूरस्थ लोगो के सभी ऋणो से मुक्त होकर सुखपूर्वक रहने की प्रार्थना की गई है। परमात्मा हमारे उन धनपतिओ नेताओ को सदबुद्धि प्रदान करे जिससे वे अपनी अपार विदेशी बैको मे बेकार पडी सम्पत्ति से राष्ट्र के ऋणपाश को छिन्न भिन्न करने मे समर्थ हो। राष्ट्र उनका सदैव चिरकृतज्ञ रहेगा।

परली के आर्य कार्यकर्त्ता प० विनायकराव आर्य नहीं रहे

आर्य समाज परली वैजनाथ जिला बीड (महाराष्ट्र) की सम्पूर्ण गतिविधियो मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले कटटर आर्य कार्यकर्त्ता एव पुरोहित प० विनायकराव आर्य का गत ५ फरवरी को हृदयगति रूक जाने से दुखद निधन हुआ। श्री आर्य विगत २५ वर्षों से आर्यसमाज परली के साथ एकनिष्ठ होकर समर्पित भाव से कार्य करते थे। नगर वासियो को प्रतिदिन प्रात ४ ४५ बजे वेदमत्रो द्वारा ईश्वरीय ज्ञान सुनाते थे। सिद्धान्त निष्ठा एव प्रखर आर्यत्त्व की भावना से उनका जीवन ओत प्रोत रहा है। उनकी अकाल मृत्यु से महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा एव आर्यसमाज परली की अपूर्व क्षति हुई।

अपनी आयु के ५२ वे वर्ष मे अकस्मात जीवन यात्रा समाप्त कर परलोक सिधारने वाले श्री आर्य के परिवार के पालन का उत्तरदायित्व आर्यसमाज परली ने लिया है।

शत हस्त समाहरः सहस्त्र हस्त संकिरः
सौ हाथों से कमाओ तथा हजार हाथों से दान करो
पीड़ितों की सेवा हम सब का राष्ट्रीय कर्त्तव्य है

सार्वदशिक्र गभा के आह्वान पर गुजरात में आए भीषण भूकम्प से पीड़ित मानवता की सहायतार्थ दान की अपील पर जिन दानी महानुभावों, आर्यसमाजों या सस्थाओं से दान प्राप्त हुए हैं उनकी सूची प्रकाशित की जा रही है

गताक से आगे

148	सर्वश्री सर्वश्री आ० स० टोरण्टो कनाडा	3 07000 00
149	तुलाराम यादव बु०शहर	500 00
150	कान्ती प्रसाद रस्तौगी गाजियाबाद	251 00
151	जितेन्द्र सिंह बुलन्दशहर	100 00
152	राजतिलक नैय्यर जनकपुरी नई दिल्ली	1100 00
153	प्रेम कुमार पाहूजा रमेशनगर नई दिल्ली	101 00
154	मुनील कुमार गण्डोत्रा हरिनगर दिल्ली	200 00
155	सुशाल कुमार मल्होत्रा विकासपुरी नई दिल्ली	101 00
156	त्रिलोचन शर्मा (द्वारा चन्द्रभान चौधरी) दिल्ली	150 00
157	श्रीमती डा० पुष्पलता वमा (द्वारा चन्द्रभान चौधरी) दिल्ली	1 0 0
158	श्रामता आहलूवालिया (द्वारा चन्द्रभान चौधरी)	
159	मेसस रतन डेरी (द्वारा चन्द्रभान चौधरी) दिल्ली	50 0[illegible]
160	मेसर्स बालाजी स्टारस (द्वारा चन्द्रभान चौधरी)	50 0[illegible]
161	गुप्तादान (द्वारा चन्द्रभान चौधरी) दिल्ली	50 00
162	सलीता प्रसाद आय दिल्ली	7130 00
163	रतन देवी आय गर्ल्स सी० सै० स्कूल कृष्णा नगर दिल्ली	21 000 00
164	विजय पाल सिंह लखनऊ	500 00
165	जोगी सिंह बाली नगर दिल्ली	1 000 00
166	कृष्ण लाल तनेजा राजा गार्डन दिल्ली	500 00
167	जसवन्त सिंह (द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली)	100 00
168	कु० रश्मि मदान (द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली)	1 000 00
169	कु० पूनम दीवान (द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली)	1 000 00
170	सत्यदेव दीवान (द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली)	250 00
171	अरुण कुमार बेरी (द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली)	100 00
172	गुप्तदान (द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली)	16 000 00
173	एम०एम० चोपड़ा (द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली)	1100 00
174	बनवारी लाल ऐलावादी (द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली)	2500 00
175	कुलजस राम बक्शी (द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली)	250 00
176	कैलाश चन्द्र मलिक (द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली)	250 00
177	सीताराम कालड़ा (द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली)	500 00
178	कालड़ा क्लाथ हाउस (द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली)	1000 00
179	रमेश कुमार अरोड़ा (द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली)	500 00
180	प्रेम नाथ बजाज (द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली)	1100 00
181	श्रीमती शारी सेठ (द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली)	500 00
182	सुमीत कैले तिलक नगर नई दिल्ली	10 000 00
183	दयानन्द आदर्श विद्यालय तिलक नगर नई दिल्ली	10 000 00
184	आ०स० नेहरू नगर नई दिल्ली	5 100 00
185	स्वामी विवेकानन्द बाल भारती स्कूल मदनगीर दिल्ली	2 500 00
186	दिनेश कुमार शर्मा आ० स० गोविन्द पुरी नई दिल्ली	1 000 00
187	सोमदेव मल्होत्रा आ० स० गोविन्द पुरी नई दिल्ली	1 100 00
188	सुरेश कुमार शर्मा आ० स० गोविन्द पुरी नई दिल्ली	500 00
189	आ० स० गोविन्द पुरी नई दिल्ली	5 300 00
190	टेक चन्द कथूरिया आ० स० गोविन्द पुरी नई दिल्ली	2001 00
191	श्रीमती अगूरी देवी आ० स० गोविन्द पुरी नई दिल्ली	501 00
192	योगेन्द्र मित्र आ० स० गोविन्द पुरी नई दिल्ली	1000 00
193	सत्येन्द्र मित्र आ० स० गोविन्द पुरी नई दिल्ली	1000 00
194	आ०स० मदनगीर नई दिल्ली	1 500 00
195	आ०स० लाजपत नगर नई दिल्ली	6 000 00
196	स्त्री आ०स० लाजपत नगर नई दिल्ली	5 000 00
197	कृष्ण लाल सिक्का न्यू फ्रेन्डस कालोनी नई दिल्ली	1100 00
198	श्रीमती सरला पाल (द्वारा स्त्री आर्यसमाज न्यू फ्रेन्डस कालोनी दिल्ली)	1000 00
199	बलबीर वर्मा सरोजनी मार्किट दिल्ली	1 000 00
200	विपन कुमार गुलमोहर पार्क दिल्ली	1000 00
201	अरूणव खुराना डिफेन्स कालोनी दिल्ली	5000 00
202	एयर कमाण्डार जयचन्द्रा दिल्ली	2000 00
203	ब्रिगेडियर आर०डी० धवन डिफेन्स कालोनी दिल्ली	1000 00
204	श्रीमती सुशील धवन डिफेन्स कालोनी दिल्ली	1000 00
205	उदय धवन डिफेन्स कालोनी दिल्ली	1000 00
206	यतिन गुलाटी कोटा	101 00
207	जय चन्द्रा डिफेन्स कालोनी दिल्ली	100 00
208	श्रीमती कमला धवन डिफेन्स कालोनी दिल्ली	2000 00
209	एच० बी० मेहता साउथ एक्स 2 दिल्ली	2000 00
210	डा० पी० एल० राठी सा० एक्स 2 दिल्ली	1000 00
211	हरीश्चन्द्र बत्रा दिल्ली	500 00
212	श्रीमती सुशीला कुकरेजा डिफेन्स कालोनी दिल्ली	500 00
213	आर० के० भाटिया सेवा नगर दिल्ली	1000 00
214	राजन खन्ना डिफेन्स कालोनी दिल्ली	500 00
215	श्रीमती सत्या कोहली डिफेन्स कालोनी दिल्ली	500 00
216	वेदवती सिंह भोला नगर दिल्ली	101 00
217	श्रीमती शीला वरमाणी डिफेन्स कालोनी दिल्ली	200 00
218	श्रीमती यज्ञा तुली डिफेन्स कालोनी दिल्ली	2100 00
219	श्रीमती पुष्पा डिफेन्स कालोनी दिल्ली	51 00
220	श्रीमती सान्ता धवन डिफेन्स कालोनी दिल्ली	2100 00
221	श्रीमती सत्यवती गुप्ता डिफेन्स कालोनी दिल्ली	1000 00
222	श्रीमती सावित्री धवन डिफेन्स कालोनी दिल्ली	500 00
223	के० सी० चौधरी डिफेन्स कालोनी दिल्ली	1100 00
224	श्रीमती सावित्री पारगल डिफेन्स कालोनी दिल्ली	500 00
225	ओ० पी० नैय्यर डिफेन्स कालोनी दिल्ली	1000 00
226	कोल डी०आई०एम० साहनी डिफेन्स कालोनी दिल्ली	2200 00
227	श्रीमती प्रेमलता कपूर डिफेन्स कालोनी दिल्ली	500 00
228	देवेंद्र शर्मा लोधी कालोनी दिल्ली	51 00
229	विनोद धवन डिफेन्स कालोनी दिल्ली	5000 00
230	विग० कमाण्डर राजेन्द्र पण्डल डिफेन्स कालोनी दिल्ली	1000 00
231	एम०डी० खन्ना डिफेन्स कालोनी दिल्ली	1100 00
232	श्रीमती कौशल्या देवी डिफेन्स कालोनी दिल्ली	2500 00
233	श्रीमती सीमा चौधरी डिफेन्स कालोनी दिल्ली	1100 00
234	एम०एम० तनेजा डिफेन्स कालोनी दिल्ली	500 00
235	कमाण्डर लाजपत राय डोंगा डिफेन्स कालोनी दिल्ली	1000 00
236	श्रीमती शशि प्रभा डिफेन्स कालोनी दिल्ली	1000 00
237	श्रीमती गीता डग डिफेन्स कालोनी दिल्ली	1000 00
238	श्रीमती राज आनन्द डिफेन्स कालोनी दिल्ली	500 00
239	आ०स० कस्तूरबा नगर डिफेन्स कालोनी दिल्ली	5696 00
240	आ०स० श्रीनिवासपुरी नई दिल्ली	12500 00
241	आ०स० कटरा प्रयाग इलाहाबाद	7000 00
242	श्रीमती हर कवर देवी राठी अमर ज्योति फ्लैट नागपुर	1000 00
243	आ०स० साकेत नई दिल्ली	25000 00
244	ओम प्रकाश गुप्ता कन्हैया नगर त्रिनगर दिल्ली	1000 00
245	मूलचन्द्र सिंह कोटा राजस्थान	101 00
246	मदन मोहन भसीन आ०स० चौक बुलन्दशहर उ०प्र०	50 00
247	मित्र वर्मा आर्य फिरोजाबाद	500 00
248	मत्री आ०स० लोअर बाजार शिमला	2100 00
249	आ०स० मन्दिर गाधीनगर दिल्ली	5100 00
250	सान्ता राम मलिक दिल्ली	500 00
251	आ०स० बसेड़ा सहारनपुर उत्तर प्रदेश	100 00
252	वरूण मित्र शास्त्री लखनऊ उत्तर प्रदेश	50 00
253	आ०स० पिपलिया मंडी मदसौर म०प्र०	1250 00
254	आ०स० कीर्ति नगर दिल्ली	15000 00
255	दीप बुखिराजा आ०म० कीर्ति नगर दिल्ली	500 00
256	वेद प्रकाश शास्त्री कीर्ति नगर दिल्ली	1000 00
257	कृष्ण लाल ठक्कर कीर्ति नगर दिल्ली	500 00
258	जगदीश मित्र [illegible] कीर्ति नगर दिल्ली	1100 00
259	राजपाल [illegible] कीर्ति नगर दिल्ली	1100 00
260	शिव भगवान लाहारी कीर्ति नगर दिल्ली	2100 00
261	राम गोपाल कथूरिया कीर्ति नगर दिल्ली	1000 00
262	अजय कथूरिया कीर्ति नगर दिल्ली	1000 00
263	एस०के० नारंग रमेशनगर दिल्ली	100 00
264	श्रीमती उषा जुग कीर्ति नगर दिल्ली	500 00
265	महेन्द्र नाथ सहगल कीर्ति नगर दिल्ली	500 00
266	श्रीमती उषा बजाज कीर्ति नगर दिल्ली	500 00
267	अमर लाल बजाज कीर्ति नगर दिल्ली	500 00
268	श्रीमती कृष्णा अनेजा कीर्ति नगर दिल्ली	500 00
269	डा० दयानन्द कीर्ति नगर दिल्ली	250 00
270	ओम प्रकाश आर्य कीर्ति नगर दिल्ली	150 00
271	आ०स० रमेश नगर दिल्ली	5100 00
272	महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल रमेशनगर दिल्ली	1700 00
273	गुप्तदान (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी दिल्ली)	500 00
274	गुप्तदान (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी दिल्ली)	2500 00
275	गुप्तदान (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी दिल्ली)	21 00
276	आर०के० जैन (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी दिल्ली)	51 00
277	श्रीमती कर्म देवी (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी दिल्ली)	150 00
278	भी०के० महाजन (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी दिल्ली)	250 00
279	गुप्तदान (द्वारा श्री चन्द्रभान चौधरी दिल्ली)	1100 00
280	अजीत कुमार आर्य सीतापुर	200 00
281	गोपाल प्रा० आर्य शिवहर (बिहार)	52 00
282	गीता राम मिश्रा हमीरपुर दिल्ली	250 00
283	आई०एम० मेहता आगरा	5000 00
284	डा० जौन्ती चतुरी बाग प्रीतमपुरा दिल्ली	1000 00
285	औरचीड इलेक्ट्रॉनिक्स दिल्ली	5000 00
286	एस० सी० अग्रवाल नई दिल्ली	500 00
287	डा० पुनम गुप्ता नई दिल्ली	1000 00
288	श्रीमती महेश कुमारी आहूजा दिल्ली	1000 00
289	कृष्ण कुमार आर्य दिल्ली	1000 00
290	श्रीमती डा० मधु मलिक लक्ष्मी नगर दिल्ली	1000 00
291	डा० श्रीमती सुशीला लाल लक्ष्मी नगर दिल्ली	1100 00
292	राम प्रसाद सिंह गाजीपुर उ०प्र०	100 00
293	जे० कोहली जैन मंदिर रोड दिल्ली	5000 00

क्रमशः

भविष्य में प्राप्त दान को भी इसी प्रकार प्रकाशित किया जाएगा। **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त घोषित है।** यदि आपको अपने आयकर खातों के लिए प्रमाण पत्र की आवश्यकता हो तो सार्वदेशिक सभा के कार्यालय से मगवा लें। दान की रसीद के साथ ही यह प्रमाण पत्र भी भिजवा दिया जाएगा।

सभा मन्त्री

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 4-3-2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2001
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2001 in NDPSo on 1-2/3/2001

e-mail :
vedicgod@nda.vsnl.net.in

ओ३म्

☎ : 3274771
: 326098

पीड़ितों की सेवा
हम सबका राष्ट्रीय कर्त्तव्य

गुजरात में विनाशकारी भूकम्प

भुज, कच्छ, गांधीधाम, अहमदाबाद क्षेत्र सर्वाधिक प्रभावित

पीड़ितों की सहायतार्थ अपील

तन-मन-धन से सहयोग दीजिए

सभा को दिया गया दान आयकर से मुक्त है

चैक/मनीआर्डर/ड्रॉफ्ट एवं सहायता सामग्री निम्न पते पर भेजें :-

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

3/5, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली - 2

फोन : 3274771, 3260985

निवेदक

स्वामी ओमानन्द सरस्वती, प्रधान **वेदव्रत शर्मा**, मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

3/5, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली - 2

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रकाशन लि० द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली-२ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) **फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित** सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली-२ **से प्रकाशित** (फोन ३२७४७७१, ३२६०९८५)।
सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री **ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in** तथा **वेबसाईट - http://www.whereisgod.com**

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्



सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र



वर्ष ३६ अक ४५   १८ मार्च से २४ मार्च २००१ तक   दयानन्दाब्द १७८   सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०१   सम्वत २०५७   चै० कृ० ६

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

सार्वदेशिक सभा एवं मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तैयारियां अन्तिम चरण में

आर्यजनों में उत्साह की नई लहर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एव मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के सयुक्त तत्वावधान मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तैयारिया अन्तिम चरण मे पहुच चुकी है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी के द्वारा ध्वजारोहण सन्देश स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी के मधुर वैदिक प्रवचनो तथा डा० स्वामी सत्यम की आधुनिक युग कालीन प्रेरणाओ का लाभ उठाने के लिए हजारो आर्य जन लालायित हैं।

हजारो आर्य नर नारियो ने रेल विभाग द्वारा घोषित रेल किराये मे ५० प्रतिशत छूट का लाभ उठाते हुए मुम्बई पहुचने का कार्यक्रम निश्चित कर लिया है। देश के अलग-अलग स्थानो से आर्यजनो के दल कई रेल गाडियो से मुम्बई के लिए रवाना होना प्रारम्भ हो जाएगे।

दिल्ली से २० २१ २२ मार्च की तिथियो मे मुम्बई के लिए चलने वाली प्रत्येक रेलगाडी मे सैकडो नर नारी और बच्चे मुम्बई यात्रा करने के लिए तैयार हैं। दिल्ली से दर्जनो आर्यवीरो का एक जत्था व्यवस्था मे सेवा कार्यों के लिए १८ मार्च को रवाना हो रहा है।

चण्डीगढ से आर्यनेता श्री विजय कुमार आर्य ने श्री विमल वधावन को सूचित किया है कि सैकडो आर्य जन १६ मार्च को रात्रि मे ही रवाना होगे। २० मार्च को प्रात काल मे नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर पहुचेगे जहा दिल्ली मे आर्य नेता उनका स्वागत करेगे। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर गाडी के एक घण्टा विश्राम के दौरान यज्ञ आदि का कार्यक्रम बनाने की योजना है श्री विजय कुमार ने बताया कि गाडी के दो डिब्बो को उन्होने पूरी तरह सजाने की योजना बनाई है दोनो तरफ ओ३म ध्वज बेनर आदि के द्वारा इस यात्रा को एक भव्य प्रचार यात्रा का रूप देने की योजना है।

दिल्ली से समस्त यात्रा कार्यक्रम आदि के संयोजन का दायित्व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान एव उत्साही ८० वर्षीय युवक श्री सोमदत्त महाजन पर है। शेष भाग पृष्ठ ६ पर

कार्यक्रमों का विस्तृत विवरण

मुम्बई के रिक्लेमेशन ग्राउड बान्द्रा मे २३ से २६ मार्च २००१ तक होने वाले कार्यक्रमो का विस्तृत विवरण केन्द्रीय पृष्ठ पर प्रकाशित है।

इस कार्यक्रम मे किन्ही व्यवस्थाओ तथा प्रबन्ध की दृष्टि से परिवर्तन का अधिकार सम्मेलन सयोजक को है।

रमेश नगर आर्यसमाज मन्दिर वाले मार्ग का नाम

महर्षि दयानन्द मार्ग

आर्यसमाज रमेश नगर नई दिल्ली के प्रधान एव दिल्ली सभा के मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य के प्रस्ताव पर दिल्ली की स्थानीय सरकार ने आर्य समाज मन्दिर रमेश नगर के सामने वाले मार्ग का नाम महर्षि दयानन्द मार्ग रखना स्वीकार कर लिया है।

महर्षि दयानन्द मार्ग का नामकरण १८ मार्च २००१ (रविवार) को प्रात १० ३० पर आर्यसमाज मन्दिर के सामने एक समारोह/जन सभा के रूप में रखा जाएगा। इस समारोह मे पूर्व केन्द्रीय मन्त्री एव क्षेत्र के सासद श्री मदन लाल खुराना दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा तथा अन्य आर्य नेताओ के अतिरिक्त स्थानीय विधायक श्री अविनाश साहनी तथा निगम पार्षद श्रीमती ऊषा मेहता आदि भी उपस्थित रहेगे।

इस समारोह मे दक्षिण अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान श्री दीनबन्धु शिशुपाल रामभरोस जी मुख्य आर्य अतिथि होगे। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में तथा श्री विमल वधावन के सयोजकत्व मे श्री रामभरोस जी का नागरिक अभिनन्दन भी किया जाएगा।

कार्यक्रम के उपरान्त ऋषि लगर भी होगा। दिल्ली की आर्य जनता से निवेदन है कि अधिकाधिक सख्या मे भाग लेकर इस समारोह की शोभा बढाए।

तालिबान के साथ भारत की भी निन्दा

The Taliban Terror India s record is not spot less

अर्थात तालिबान का आतक भारत का रिकार्ड भी बेदाग नहीं शीर्षक के तहत स्वामी अग्निवेश का लेख मुम्बई के टाईम्स आफ इण्डिया ८ मार्च २००१ मे प्रकाशित हुआ है जिसमे लेखक ने तालिबान समर्थको द्वारा बौद्ध प्रतिमाए नष्ट किए जाने का दबी जुबान मे ही विरोध किया है परन्तु भारत के इतिहास को कलकित करने का एक बार फिर प्रयास कर दिखाया है।

इस लेख के प्रकाशन से कुछ ही दिन पूर्व जामा मस्जिद के इमाम ने भी तालिबान की कार्यवाही को उचित ठहराते हुए कहा था कि जब भारत मे बाबरी मस्जिद टूट सकती है तो तालिबान द्वारा मूर्तिया तोडना गलत कैसे है।

इमाम के वक्तव्य को आधार बनाते हुए स्वामी अग्निवेश के लेख मे भी इस सारे घटना चक्र को अयोध्या प्रकरण से जोडा गया है। यहा तक कि अप्रत्यक्ष रूप से वीर सावरकर जी के नाम को भी इस प्रवृत्तियो से जोडने का प्रयास किया गया है।

आर्य जनता मे इस लेख की जबरदस्त प्रतिक्रिया है। आर्य समाज ने अयोध्या मे बाबरी ढाचे को कभी मस्जिद नही माना। यहा तक कि अदालत के समक्ष भी इस आशय के पक्के तथ्य है – कि वहा कई दशको से मस्जिद का नामोनिशान तक नहीं था। अत उसे मस्जिद कह कर कुछ लोग केवल मुसलमानो के पक्षधर बनने का राजनीतिक पाखण्ड मात्र करते हैं।

बाबरी ढाचा बाबर के आक्रमण और दमन चक्र का प्रतीक था। अत उसे तोडने की तुलना किसी प्रकार से भी तालिबान हरकतो से नही की जा सकती। जिसने उन बौद्ध प्रतिमाओ को नष्ट करने का अभियान चलाया है जो इस क्षेत्र मे इस्लाम के पदार्पण से पूर्व काल से स्थापित है।

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

सह सम्पादक
विमल वधावन एडवोकेट

हज यात्रा की वित्तीय सहायता गैर इस्लामिक



भारत की पथ निरपेक्ष सरकार एक पथ विशेष के लिए १५० करोड रुपए की सबसिडी (वित्तीय सहायता) उपलब्ध कराती है, यह अपने आप में सविधान की होली जलाने से भी बढ कर है। भारत का कोई अन्य वर्ग इसका विरोध करे तो गृह युद्ध का एक कारण माना जाएगा। वैसे आर्यसमाज और अन्य कई न्याय और समानता की पक्षधर संस्थाओं ने कई बार इसका विरोध किया है परन्तु सरकार किसी प्रकार से भी इस नीति में परिवर्तन करने की हिम्मत जुटा नही पा रही।

इस बार सऊदी अरब की मुस्लिम सरकार ने स्वयं भारत सरकार के इस वित्तीय अनुदान को गैर इस्लामिक घोषित कर दिया है। हज यात्रा में किसी भी प्रकार की वित्तीय सहायता शरीयत के सिद्धान्तों के विरुद्ध है। हालाकि भारत सरकार के पूर्ण खर्च पर ही ५५ मुस्लिम नेताओं का एक उच्च स्तरीय दल फारुख अब्दुल्ला के नेतृत्व में हज यात्रा पर गया है परन्तु फिर भी सऊदी अरब सरकार की दलील का कोई उत्तर नही निकलता।

सऊदी अरब सरकार का यह वक्तव्य आया भी ऐसे समय, जब विगत माह विदेश मन्त्री श्री जसवन्त सिंह इस देश की यात्रा पर थे।

सऊदी अरब के विदेश मन्त्री ने तो भारत सरकार की इस सहायता को एक दम अनुचित कहा है। सऊदी सरकार भारत सरकार को अपने उलेमाओं की सहायता से यह समझाने के लिए भी तैयार है कि यह वित्तीय सहायता शरीयत के बिल्कुल खिलाफ है।

कुरान बडे स्पष्ट निर्देश के तहत मुसलमानो को अपने जीवन में कम से कम एक बार हज यात्रा अवश्य करने के लिए कहती है। साथ ही इस बात पर पूरा जोर दिया गया है कि यह यात्रा मुसलमान को अपनी कमाई से ही पूरी करनी चाहिए।

मुस्लिम पंथ के नेता स्वयं इस बात को स्वीकार करते है कि दूसरों की सहायता से की गई यात्राए अल्ला को स्वीकार्य नहीं है। यात्रा और उस अवधि का भोजन, रहने आदि का पूर्ण व्यय यात्री की अपनी कमाई में से होना चाहिए।

पाकिस्तान सरकार ने भी १९९७ में ही इन्हीं कारणों के आधार पर अपने नागरिको को यात्रा में वित्तीय सहायता देना बन्द कर दिया था। पाकिस्तान ने तो उच्च स्तरीय नेताओं का निरीक्षण या व्यवस्थात्मक दौरा भी सरकारी यात्रा से प्रायोजित करना बन्द कर दिया है। पाकिस्तान मे लाहोर उच्च न्यायालय के आदेश पर यह कार्य सम्भव हुआ जहां न्यायमूर्ति तनवीर अहमद ने शरीयत कानून के हवाले से ऐसी व्यवस्था जारी की।

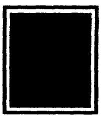
हमारे घर मे हालाकि यात्रा का सारा बोझ नागरिक उड्डयन मन्त्रालय को वहन करना पडता है परन्तु इस सारे कार्य के लिए विदेश विभाग मन्त्रालय को सयोजन करना पडता है। ऐसा माना जाता है कि इस मन्त्रालय ने पूर्व में कई बार यह विचार भी व्यक्त किया है कि इस वित्तीय सहायता को बन्द कर दिया जाए परन्तु सरकार ऐसा कोई निर्णय लेने में कतरा रही है।

भारत सरकार ने १९९३ में ही इस वित्तीय सहायता जैसे सफेद हाथी को पालना प्रारम्भ किया है जब बाबरी ढांचा टूटने के बाद नरसिम्हा राव ने प्रधानमन्त्री होने के नाते मुसलमानों की सहानुभूति अपने पक्ष में लेने के उद्देश्य से ऐसा किया।

भारत सरकार के पास आज फिर एक ऐसा अवसर आ गया है जब सऊदी अरब सरकार के वक्तव्य को आधार बना कर तथा शरीयत कानून की उचित व्याख्या मुस्लिम उलेमाओ से लेकर इस वित्तीय बोझ को समाप्त किया जा सकता है। वैसे भी संविधान की भावनाओ के साथ यदि यह खिलवाड न रोका गया तो भविष्य में ऐसी परम्पराओं को रोकना और अधिक कठिन होगा।

— *वेदव्रत शर्मा*

अद्वितीय सम्मेलन का विशेष महत्व



इस बार का अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन एक दृष्टि से विशेष महत्व का है। वर्तमान पीढी के समक्ष १२५ वर्षों के गौरवशाली इतिहास को स्मरण करने का अवसर है, तो दूसरी तरफ भविष्य के लिए कुछ रीति–नीति और कार्यक्रम निर्धारित करने का समय उपस्थित हुआ है। इस सम्मेलन के सत्र एव उनके विषय भी अद्वितीय रूप में सजोए गए हैं। इन विशिष्ट शैली के सत्रों के लिए विशेष प्रस्ताव तैयार करने का गुरुतर दायित्व निभाकर ऋषिऋण चुकाने के पथ पर एक पग आगे बढाने का प्रयास चल रहा है।

सत्रो की श्रृखला मे सर्वप्रथम आर्यसमाज के इस अन्तर्राष्ट्रीय समारोह में पारित प्रस्ताव के द्वारा विश्व समुदाय को **प्रकाश की तलाश में** आर्यसमाज का अनुसरण करने की प्रेरणा उत्पन्न की जानी है। प्रकाश अर्थात् ज्ञान अर्थात् सद्गुण अर्थात् सत्सग अर्थात् मानवीयता अर्थात् शान्ति। इन सबको ढूढने के लिए उस प्रकाश पुज की ओर इशारा किया जा रहा है जिससे सारा विश्व प्राचीनतम ग्रन्थ समझता है और जो निर्विवादित रूप से कल्याणकारी ज्ञान के भण्डार है, और महर्षि दयानन्द ने इन्हीं वेदो और तदनरूप ज्ञान को सत्यार्थ प्रकाश नामक महान अमर ग्रन्थ में प्रदर्शित किया था।

'इन्सान की तलाश में' नामक सत्र मे पुनः उस अनसुलझे प्रश्न का हल प्रस्तावित किए जाने की योजना है जो प्रश्न महर्षि दयानन्द जी ने अपने गुरु विरजानन्द जी के समक्ष रखा था– मैं कौन हूं?

'स्वर्ग की तलाश में' भी ऐसा ही अन्य सत्र है जिसमें यह प्रस्तावित किए जाने का प्रयास है कि स्वर्ग–नर्क केवल मात्र सुख–दुःख तथा आनन्द–विषाद आदि की अवस्थाए हैं। स्वर्ग से सम्बन्धित कपोल कल्पनाओं से सावधान रहते हुए इन अवस्थाओं रूपी वाच्छित फल प्राप्त करने तथा अवाच्छित फलों से दूरी के उपाय भी इसी चर्चा में शामिल होंगे। मोक्ष का विषय भी इसी चर्चा से सम्बन्धित है।

आर्य सम्मेलन का विषय 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' वास्तव मे एक अन्तर्राष्ट्रीय योजना के बादल उत्पन्न करेगा। मंच पर विभिन्न देशों के आर्यनेता अपनी चर्चाओं के द्वारा परित होने वाले प्रस्ताव के क्रियान्वयन की योजना निर्धारित करेंगे। दक्षिण अफ्रिका से श्री राममरोस जी भारत पहुच चुके हैं और विगत लगभग २ सप्ताह से वे दिल्ली में ही थे। अमेरिका से डॅा० सुखदेव चन्द्र सोनी तथा गिरीश खोसला तथा कुछ अन्य आर्यजन भी पधारर रहे हैं। मॉरिशस से श्री रुद्रसेन नीऊर जी के नेतृत्व मे सैंकडों लोग सम्मेलन मे भाग लेने वाले हैं। इनमें से बहुतायत लोग पहुच चुके हैं। बर्मिंघम (इंग्लैण्ड) से श्री कृष्ण चोपडा जी पधारेगे। कनाडा से श्री अमर ऐरी भी सम्भवतः आ सकते हैं। नेपाल से भी काफी आर्यजनों के आने की उम्मीद है ये सब लोग आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार में कुछ ऐसे अनछुए पहलुओं पर विचार–विमर्श करके यदि भविष्य मे कोई कारगर क्रियान्वयन कर पाए तो वास्तव में यह सम्मेलन एक मील का पत्थर बन जाएगा।

वेद सम्मेलन के द्वारा वेदज्ञान को आधुनिक समाज के माहोल के अनुरूप नई गति और जोश के साथ प्रचारित–प्रसारित करने का संकल्प प्रस्तुत करने की अभिलाषा है। आधुनिक प्रचारतन्त्र ज्ञान के इस मौलिक क्षेत्र से, ज्ञान की नींव से और सब सत्य विद्याओ के प्रथम निर्देशन से अछूता न रहे।

युवा सम्मेलन के माध्यम से समूचे विश्व के युवा वर्ग के लिए एक ऐसा सन्देश पारित करने की योजना है जिसके वायुमण्डल में प्रवाहित होने के बाद आर्यजनों को विशेष दायित्व की अनुभूति होना स्वाभाविक हो जाएगा। जाति के नाम पर जन्मना व्यवस्थाओं को तो हमने पूरे तर्क के साथ सफलता पूर्वक नकारा है परन्तु विज्ञान जन्मना सस्कार को नकारने की अनुमति हमें कभी नहीं दे सकता। मेरा बस चले तो जिस सन्तान के साथ कु प्रत्यय लगा हो उसके माता-पिता का सीना चीर कर दिखा सकता हूं कि संस्कार दोष वहीं से उत्पन्न हुआ है। युवाओं को तैयार करने का काम केवल युवावस्था से ही नहीं प्रारम्भ होगा, अपितु यह कार्य गर्भधारण काल से ही प्रारम्भ हो जाना चाहिए। युवा सम्मेलन का उद्देश्य तो देर आए दुरुस्त आए है।

महिला सम्मेलन मे इस युवा सम्मेलन की वास्तविक रूपरेखा बनाई जाएगी साथ ही महिलाओं के गौरव, मान–सम्मान और भविष्यकारी योजना को भी प्रस्तावित करने की योजना है। इसके अतिरिक्त महिलाओं को अधिकृत रूप में आर्यसमाज के तन्त्र में आगे बढाने का विशेष प्रस्ताव होगा। मातृशक्ति के योगदान पर ही आर्यसमाज का भविष्य टिका हुआ है। ऐसी चेतना उत्पन्न करने का भी प्रयास है।

सम्मेलन को प्राथमिकता दें

इस विशाल सम्मेलन में स्वाभाविक है कि कुछ लोग भोजन और आवास तथा अन्य कई प्रकार की असुविधाओं को प्राथमिक महत्व देने का प्रयास करें, उनसे अग्रिम क्षमा याचना है कि इन असुविधाओं को भी वे बडे सहज भाव से बर्दाश्त करके अपनी भागीदारी का परिचय दें।

सम्मेलन में उपस्थित रहकर इन सत्रो के महत्वपूर्ण विचारों का त्याग, इस महत्व पूर्ण युग परिवर्तन के, प्रत्यक्षदर्शी बनने से इन्कार होगा। आप अवश्य ही एक महत्वपूर्ण मोड पर प्रस्तुत होने वाले दिशा–निर्देशों को प्रत्यक्ष रूप से ग्रहण करने से चूक जाएंगे। मै तो एक विशेष निवेदन यह भी करना चाहता हूं कि प्रत्येक आर्यबन्धु अपने पास एक विशेष नोट पुस्तिका तथा कलम रखे जिस पर इन चार दिवसों के वातावरण को नोट करके आपको अपने भविष्य की कार्य योजना का सविधान तैयार करने में सहायता मिले।

— *विमल वधावन एडवोकेट*

आर्य, द्रविड़ एवं आदिवासी का सच

— सूर्य देव चौधरी

आज भारत में विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक इतिहास के पाठयक्रम मे यह पढ़ाया जाता है कि इस देश के मूल निवासी आदिवासी एव द्रविड है। आर्य तो बाहर से आकर इस देश पर आक्रमण किया और यहा के मूल निवासियो – द्रविड एव आदिवासियो मे से कुछ की हत्या कर दी एव कुछ को अपना दास बना लिया। शेष भय के कारण या तो जगलो मे जा छिपे या फिर दक्षिण की ओर जाकर वहीं बस गए। अब प्रश्न है कि क्या ये बाते सत्य हैं ? आइए तर्क एव प्रमाणो के आलोक मे इन बातो पर विचार करे।

क्या आर्य भारत मे बाहर से आए थे ?

सबसे पहले हम कुछ विद्वानो एव इतिहासकारो के विचारो को यहा उद्धत कर रहे हैं जिससे आर्यो के मूल देश के बारे मे कुछ निश्चय किया जा सके जो इस प्रश्न का उत्तर होगा। हिस्ट्री ऑफ इण्डिया भाग–१ मे पाश्चात्य इतिहासकार एलफिस्टन महोदय ने लिखा है – न तो मनुस्मृति मे और न वेदो मे न किसी ऐसी पुस्तक मे जो मनुस्मृति से प्राचीन है कोई ऐसा उल्लेख आया है कि आर्य भारत के बाहर किसी अन्य देश के निवासी थे। पाश्चात्य विद्वान म्यूर महोदय ने अपनी पुस्तक ओरिजिनल सस्कृत टेक्स्ट भाग–२ मे लिखा है – 'मैं आरम्भ से ही निष्ठापूर्वक यह स्वीकार करता हू कि जहा तक मेरी जानकारी है सस्कृत के किसी भी ग्रन्थ में यहा तक कि प्राचीनतम ग्रन्थो मे भी ऐसा कोई सटीक सदर्भ या उल्लेख नहीं मिलता है जिसमे आर्यों को मूलत विदेशी माना गया है। ऋग्वेद मे प्रयुक्त दास दस्यु असुर आदि शब्दों से भी इस बात का कोई प्रमाण या सकेत नहीं मिलता है कि इनका प्रयोग गैर आर्यो या भारत के मूल निवासियो के लिए किया गया है।

अब हम एक अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी का उल्लेख करते हैं जो यूनेस्को के तत्वावधान मे सोवियत गणराज्य के तजाकिस्तान की राजधानी दुशाम्बे मे आयोजित की गई थी। उस अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी मे भारत का नेतृत्व श्री बी०बी०लाल ने किया था। उस सम्पन्न गोष्ठी मे भारतीय भाषाशास्त्रियो पुरातत्वविदो एव इतिहासकारो ने प्रतिपादित किया था कि आर्यो के भारत मे बाहर से आने विषयक कोई निश्चयात्मक प्रमाण उपलब्ध नहीं है (द हिन्दुस्तान टाइम्स ३१–१०–१९७७) 'रिटन्स ऑफ द आर्यन्स के लेखक भगवान एस० गिडवाणी का कथन है कि आर्य मूल रूप से भारतवर्ष के ही निवासी थे (प्रभात खबर रॉची ११–७–९४)। प्रसिद्ध भारतीय इतिहासकार एव वैज्ञानिक डॉ० नवरत्न एस० राजाराम के अनुसार भारत पर आर्यो के आक्रमण की बात मात्र कपोल कल्पना है (रॉची एक्सप्रेस रॉची ४–१०–९३) अब पुरातात्विक अनुसधानो भू–जल सर्वेक्षणो उपग्रहो सेप्राप्त चित्रो प्राचीन शिल्प की वैज्ञानिक तिथियो ज्यामिति एव वैदिक गणित के सटीक आकडो के आधार पर भारतीय एव अमेरिकी विद्वानो के एक दल ने यह दावा किया है कि आर्य आक्रान्ता नहीं भारत के मूल निवासी थे

(रॉची एक्सप्रेस रॉची ३–१२–९४)

उपरोक्त विचारो के आधार पर यह बात प्रमाणित हो जाती है कि आर्य भारत म बाहर से नहीं आए थे बल्कि वे इस देश के मूल निवासी थे। इसलिए ओरिजिन्स ऑफ आर्यन्स के पृष्ठ–१ पर एक बहुत बडे शिक्षाशास्त्री की साक्षी से टेलर महोदय ने लिखा है – मनुष्य जाति की जन्मभूमि स्वर्गतुल्य कश्मीर ही है। इसी बात को भारतीय इतिहासकार श्री अविनाशचन्द्र दास ने अपनी पुस्तक 'ऋग्वैदिक इण्डिया मे इस प्रकार कहा है – कश्मीर का यह सुन्दर देश और सप्तसिन्धु के मैदान ही आर्य जाति के पालना थे। अस्तु यह बात सिद्ध होती है कि आर्य विदेशी नहीं भरत के मूल निवासी थे।

क्या आर्य आक्रमणकारी थे ?

ऊपर मे यह सिद्ध किया जा चुका है कि आर्य विदेशी नहीं बल्कि भारत के मूल निवासी थे जिससे परोक्ष रूप से इस प्रश्न का भी उत्तर मिल जाता है। फिर भी इस प्रश्न के उत्तर के लिए दो अन्य पाश्चात्य पुरातत्त्वविदो को उद्धत कर रहे हैं। प्रसिद्ध पुरातत्त्वविद टॉमस बरो ने कहा है – आर्यों के भारत पर आक्रमण का न तो कहीं इतिहास मे उल्लेख मिलता है और न ही इसे पुरातत्त्व की सहायता से सिद्ध किया जा सकता है। दूसरे पुरातत्वविद श्री डेल्स हैं जिन्होने पाकिस्तान मे सिन्धु सभ्यता के स्थानो का पर्याप्त उत्खनन किया है। उनके शब्द इस प्रकार हैं – *आर्यों के तथाकथित आक्रमण के काल* के विषय मे कुछ कहना अपरिपक्वता होगी क्योकि सम्पूर्ण दक्षिण एशिया की काल मान्यता ईसा पूर्व छठी शताब्दी तक अभी स्पष्ट नहीं है। अत मात्र काल के आधार पर सिन्धु सभ्यता के लुप्त होने के विषय मे कुछ नहीं कहा जा सकता और न ही आर्यो के आक्रमण के सम्बन्ध मे कुछ कहा जा सकता है। यदि इस विषय मे कुछ कहे भी तो किस आधार पर? क्या भौतिक प्रमाण हैं हमारे पास आर्यो के इस भयानक आक्रमणो के और कत्लेआम के कहा है जले हुए किले आक्रमणो के अस्थिपजर शस्त्र अस्त्र भव्य रथ तथा आक्रमको और सरक्षको के शव जो आक्रमण की तीव्रता को बताए ? सहस्त्रो हडप्पीय स्थानो के व्यापक उत्खननो के बावजूद एक भी प्रमाण ऐसा नहीं बताया जा सकता है जिसे इस आक्रमण का प्रमाण रूप स्वीकार किया जाए।

इन उद्धरणो से यह स्पष्ट है कि आर्यो के भारत पर आक्रमण का कोई पुरातात्त्विक प्रमाण उपलब्ध नहीं है। यह एकदम मनगढन्त मिथ्या एव निराधार इतिहास है कि आर्य आक्रमणकारी थे। इससे इस प्रश्न का उत्तर मिल जाता है और वह उत्तर है कि आर्य आक्रमणकारी नहीं थे।

क्या आर्य, द्रविड एव आदिवासी का भेद सही है ?

इस प्रश्न के उत्तर के लिए भी हम कई विद्वानो इतिहासकारो और मानवशास्त्रो (ऐन्थ्रोपोलोजिस्ट) के विचारो को पहले उद्धत कर रहे हैं। सम रिफ्लेक्शन ऑन आर्यन्स एड द्रविडियन्स नामक लेख मे इतिहासज्ञ ए०एल०बाशम ने लिखा है – इतिहास लेखको ने मोहनजोदडो और हडप्पा को द्रविड कहा है परन्तु मोहनजोदडो मे देखी गई कई धार्मिक बाते दक्षिण भारत की कोई विशेष नहीं है न ही दोनो की खोपडिया ही एक दूसरे से भिन्न है। इसलिए न कोई आर्य जाति है और न द्रविड'। सर जार्ज कैम्पबेल ने अपनी रचना 'इथनोलॉजी ऑफ इण्डिया के पृष्ठ–१५ पर लिखा है – नृवशशास्त्र के आधार पर उत्तर एव दक्षिण के समाज मे कोई विशेष भेद नहीं है।

द्रविड नाम की कोई जाति नहीं है।

निस्सदेह दक्षिण भारत के लोग शारीरिक गठन रीति रिवाज और प्रचार व्यवहार मे केवल एक आर्यसमाज है। ब्रिफ रिविउ ऑफ कास्ट सिस्टम ऑफ नर्थ–वेस्टर्न प्रोबिन्सेज ऑफ ओध के पृष्ठ–२७ पर नेसफिल्ड महोदय ने लिखा है – भारत के लोगो को आर्यो और आदिवासियो के रूप मे विभक्त करने की कल्पना बिल्कुल आधुनिक है। अमेरिकी मानवशास्त्र निष्णात (ऐन्थ्रोपोलोजिस्ट) डॉ० सिगर तथा भारत के सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता प्रो० नीलकठ शास्त्री ने समवेत स्वर मे कहा कि आर्य और द्रविड विवाद का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है (द हिन्दू मद्रास ३२९४)। लोकसभा के भूतपूर्व अध्यक्ष एव दक्षिण भारत के निवासी श्री अनन्तशयनम आयगर ने अपनी पुस्तक सस्कृत विमर्श के भाग–२ मे लिखा है – आध्र के लोग प्रारम्भ से ही अपने आपको आर्यो से निसृत मानते आए है और अपनी लिपि भाषा साहित्य कला और विज्ञान की दृष्टि से उनका आर्यो से निकट सम्बन्ध रहा है।

उपरोक्त विद्वानो के इन विचारो के आलोक मे इस प्रश्न का स्पष्ट उत्तर मिल जाता है और वह उत्तर यह है कि आर्य द्रविड एव आदिवासी का भेद सही नहीं है। आर्य–द्रविड भेद को गलत सिद्ध करने के लिए एक अन्य तर्क भी है। कथित द्रविड क्षेत्र केरल मे जन्मे आदि शकराचार्य ने कही भी आर्य द्रविड भेद का उल्लेख नहीं किया है बल्कि उन्होने शास्त्रार्थ मे अन्य मतो को पराजित कर आर्य अथवा वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना की। साथ ही उन्होने आर्य धर्म ग्रन्थ वेदो के सुचारू प्रचार–प्रसार के लिए भारत के चारो कोनो मे चार मठ की स्थापना की। यदि उस समय आर्य द्रविड भेद की अवधारणा वर्तमान होती तो वे अपने कथित शत्रु आर्यो के धर्मग्रन्थ वेद का प्रचार ही क्यो करते ? इससे यह बात सिद्ध होती है कि आर्य द्रविड का भेद शकराचार्य के समय नही था। इसी तरह आर्य एव आदिवासी (जनजातीय) के भेद को भी गलत साबित करने के लिए भी एक अन्य तर्क है। महर्षि वाल्मीकि हनुमान वेद व्यास आदि को इतिहासकार प्राय जनजातीय या आदिवासी मानते हैं। ज्ञातव्य है कि महर्षि वाल्मीकि ने आर्य धर्मावलम्बी राम के आदर्श को अपनी रचना रामायण के माध्यम से चिरस्थायी किया तो हनुमान ने राम को अपना आराध्य देव माना और आज आर्य (हिन्दू) जनता हनुमान को अपने आराध्य देव के रूप मे पूजती है।

शेष भाग पृष्ठ ७ पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में

आर्यसमाज-स्थापना की १२५ वीं जयन्ती के समापन समारोह के अवसर पर आयोजित

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

शुक्रवार चैत्र कृष्णा त्रयोदशी सं० २०५७ से सोमवार चैत्र शुक्ला प्रतिपदा सं० २०५८ तदनुसार मार्च २३ से मार्च २६ ,२००१ तक

विस्तृत कार्यक्रम

शुक्रवार चैत्र कृष्णा चतुर्दशी (मार्च २३, २००१)

प्रात काल ७ ३० से ६ ०० बजे तक राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ
(१२५ यजमान--दम्पतियों के द्वारा)

ब्रह्मा — **डॉ० स्वामी सत्यम्** (कुलपति वैदिक यूनिवर्सिटी अमेरिका)
आचार्य — डॉ० वागीश शर्मा तथा वेदपाठी गुरुकुल गौतमनगर एवं गुरुकुल एटा के ब्रह्मचारी,

६.०० से ६.३० ओ३म् ध्वजारोहण
पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती
(प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली) के कर-कमलो द्वारा

६ ३० भक्ति सगीत – श्रीमती शिवराजवती आर्या
१० ०० प्रवचन – पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती
१०.२० प्रवचन – पूज्य स्वामी आत्मबोध सरस्वती ज्वालापुर

११.०० से १.०० अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का उद्घाटन

अध्यक्ष · डॉ० स्वामी सत्यम्, अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (कुलपति वैदिक यूनिवर्सिटी अमेरिका)
सयोजक . कैप्टन देवरत्न आर्य, अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन *उपप्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली*

श्रद्धांजलि आर्य हुतात्माओं और भूकम्प-दिवंगतों के लिए

भूमिका — श्री ओंकारनाथ आर्य, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, मुबई
स्वागत भाषण — डॉ० सुखदेव सोनी, स्वागताध्यक्ष आर्य महासम्मेलन प्रधान, (आर्य प्रतिनिधि सभा, अमेरिका)
मुख्य अतिथि — माननीय श्री मुरली मनोहर जोशी, मन्त्री, मानव ससाधन विकास एवं विज्ञान और टेक्लोलॉजी
विशेष अतिथि — माननीय श्री विलासराव देशमुख, मुख्यमन्त्री, महाराष्ट्र राज्य
श्री कृपाशंकर सिंह, गृह राज्य मन्त्री महाराष्ट्र राज्य
श्री मनोहर जोशी, भारी उद्योग मन्त्री, भारत सरकार
श्री बलराम जाखड़, पूर्व लोकसभा अध्यक्ष
श्री धीरूभाई नानजी कालीदास मेहता
वाईस चेयरमेन, मेहता इन्टरनेशल ग्रुप, मुम्बई

ग्रन्थ विमोचन :

१ स्मारिका,
२ आर्य परिवार गौरव गाथा,
३ तलाश इन्सान की,
४ वहे भक्ति की धारा,
५. स्वामी दयानन्द सरस्वती के मुम्बई प्रवास

,भजन — आर्य विद्या मन्दिर की छात्रों द्वारा
वक्ता — श्री वेदव्रत शर्मा, *महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली*

घोषणा पत्र प्रस्तुति
श्री विमल वधावन सम्पादक – वैदिक लाईट, दिल्ली

अपराह्न :

३.०० से ६.०० तक "वैदिक धर्म संसद"

मुख्य विषय — **"प्रकाश की तलाश में"**
अध्यक्ष — पूज्य स्वामी तत्वबोध जी सरस्वती *(प्रधान, श्रीमद्यानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर)*
मुख्य अतिथि — मान्यवर श्री अशोक गहलोत, मुख्यमन्त्री राजस्थान राज्य
विशेष अतिथि — मान्यवर श्री हरेश्वर पाटिल महापौर, मुम्बई महानगरपालिका,
श्री सत्य प्रकाश जी आर्य,
सचालक इकनॉमिक ट्रासपोर्ट आर्गेनाइजेशन मुम्बई
श्री मुज्जफर हुसैन, (पत्रकार मुम्बई)
वक्ता . श्री जयनारायण अरूण, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश,
पूज्य स्वामी सकल्पानन्द जी, उदयपुर

"प्रकाश और ज्योति"

वक्ता — श्री ज्वलन्तकुमार शास्त्री, अमेठी
श्री विजय बिहारी लाल माथुर, जयपुर

"महर्षि दयानन्द और प्रकाश'

भजन — श्रीमती अदिति सेठ एवं वादय वृन्द

वक्ता — श्री रुद्रसेन नीऊर, प्रधान, आर्यसभा मॉरिशस
श्री दिलीप वेदालंकार, अमेरिका

"सत्यार्थ प्रकाश"

वक्ता . श्री सुभाषचन्द्र नागपाल, पुणे
डॉ० योगेन्द्र शास्त्री, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हिमाचल प्रदेश

"सत्यार्थप्रकाश और राजधर्म"

संयोजक · श्री अशोक आर्य, उदयपुर

सांयकाल

६ ३० सन्ध्या-प्रार्थना — श्री प्रभारजन पाठक, पुरोहित आर्यसमाज सांताक्रुज

७.०० से १०.०० आर्य-सम्मेलन

मुख्य विषय — **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"**
अध्यक्ष — डॉ० धर्मपाल (कुलपति गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालाय, हरिद्वार)
मुख्य अतिथि · पद्मश्री डॉ० ज्ञानप्रकाश चोपडा *(चेयरमेन, डी०ए०वी० कॉलेज मैनेजिग कमेटी)*
प्रो० रासासिह, ससद सदस्य
श्री रामनाथ सहगल, मन्त्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा
विशेष अतिथि — श्री शिशुपाल रामभरोस जी,
सरक्षक, आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका, डरबन
प्रो० शेर सिंह उप प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली
वक्ता — डॉ० सोमदेव शास्त्री, मुम्बई
श्री पं० नचिकेता भट्टाचार्य, कोलकाता

"पिछले ५० वर्षों में क्या पाया ?"

वक्ता · श्री अजय सहगल, दिल्ली

"आर्यसमाज की भावी योजनाएं"

वक्ता : श्री आनन्दशंकर पंडया, उपाध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद्, मुम्बई,
श्री रामानन्द जी आचार्य हिमाचल प्रदेश

" आर्यसमाज और हिन्दू - एकता"

वक्ता . श्री कमलेश कुमार अग्निहोत्री, अहमदाबाद

"विश्व-प्रचारकों का निर्माण"

भजन — श्री प्रकाश आर्य एवं मण्डली, महू
वक्ता . आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, नई दिल्ली

"आर्यसमाज और विश्व-बन्धुत्व"

वक्ता : डॉ० राजेन्द्र विद्यालंकार, महामन्त्री सार्वदेशिक आर्यवीर दल,

"२१ वीं सदी - चुनौती और खतरे"

वक्ता : डॉ० कमलेश कुमार शास्त्री, अहमदाबाद

"भविष्य की व्यूह-रचना संगठन"

वक्ता : श्री श्यामलाल एवं श्री कृष्ण कुमार ग्रोवर

"आर्यसमाज और राजभाषा हिन्दी"

संयोजक · श्री सत्यवीर शास्त्री, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश, विदर्भ

शनिवार, चैत्र कृष्णा अमावस्या (मार्च २४, २००१)

प्रातः काल : **७.३० से ६.०० राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ**
६ ०० भक्ति संगीत — श्रीमती उज्ज्वला वर्मा, दिल्ली
१०.०० प्रवचन – प्रो. उमाकान्त उपाध्याय, कोलकाता

१०.३० से १.०० वैदिक धर्म संसद

मुख्य विषय : **"इन्सान की तलाश में"**
अध्यक्ष . श्री सोमपाल जी, सदस्य योजना आयोग, दिल्ली
मुख्य अतिथि · श्री देवगौडा, भूतपूर्व प्रधानमन्त्री, भारत सरकार
विशेष अतिथि . श्री जयसिंह राव गायकवाड, खान राज्यमन्त्री, भारत सरकार
विशेष अतिथि : श्री नरेन्द्र मोहन सम्पादक (दैनिक जागरण), सदस्य राज्यसभा
श्री अश्विनी कुमार चोपडा (सम्पादक पंजाब केसरी)
श्री करुण श्रीवास्तव, म्यु० कमीश्नर, मुम्बई
वक्ता . श्री स्वामी सत्यपति जी, कामारेड्डी, हैदराबाद

"परमपिता परमात्मा का आदेश - मनुर्भव"

वक्ता · श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती
संस्थापक, समर्पण शोध संस्थान, साहिबाबाद

"कहां खो गया इन्सान आज ?"

शेष अगले पृष्ठ पर जारी

पृष्ठ ४ का शेष भाग

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

वक्ता Shri J N Chaudhari (IFS)
"What India requires today"
वक्ता प्रो० रत्नसिह जी गाजियाबाद
"मानव जीवन की नींव धर्म'
भजन श्री नरेन्द्र आर्य एव मण्डली दिल्ली एव कुमार योगेश आर्य मुम्बई
वक्ता श्री भूपनारायण शास्त्री प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार पटना
श्री गुलाम दस्तगीर जगली पीर दरगाह वर्ली
"धर्म और मजहब"
वक्ता श्री वेदप्रताप वैदिक दिल्ली श्री गोरी शकर कौशल भोपाल
"देवत्व की राह"
वक्ता श्री स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती उत्तरकाशी
प्रो० श्यामनन्दन जी शास्त्री पटना
"वैदिक धर्म ही मानव धर्म है"
श्री धर्मजीत जिज्ञासु, न्यूयार्क
"मानव धर्म और उसका विश्व प्रचार"
सयोजक श्री आनन्द कुमार आर्य मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा प० बगाल
अपराह्न ३ ०० से ६ ०० शोभा यात्रा
ध्वज प्रस्थान सकेत श्री दारासिह पजाब केसरी
सयोजक श्री सगीत आर्य
सह सयोजक यशप्रिय आर्य मदन रहेजा सदीप आर्य जितेन्द्र चिकारा
सायकाल ६ ३० सन्ध्या–प्रार्थना श्री विश्वभूषण आर्य
७ ०० से १० ०० वेद सम्मेलन
अध्यक्ष श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती सस्थापक समर्पण शोध सस्थान साहिबाबाद
मुख्य अतिथि श्री अरुण जैतली जहाजरानी मन्त्री भारत सरकार
अतिथि विशेष श्री जयसिह राव गायकवाड खान राज्य मन्त्री भारत सरकार
विशेष अतिथि श्री कन्हैयालाल जी तलरेजा (अध्यक्ष राष्ट्रीय चेतना सगठन दिल्ली)
श्री गजानन्द जी आर्य प्रधान श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर
वक्ता प्रो० उमाकान्त उपाध्याय कोलकाता
"वेद प्रचार की व्यूह रचना
वक्ता डॉ० त्रिलोकीनाथ क्षत्रिय भिलाई श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय
" वेद और परिवार
वक्ता आचार्य वेदव्रत मीमासक आर्ष गुरुकुल वडलूर
"वेदों में विज्ञान और ज्योतिष"
भजन श्रीमती स्नेह पुरी एव मण्डली मुम्बई
वक्ता आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय दिल्ली
"वास्तु और वेद"
वक्ता श्री प्रियव्रत दास जी उडीसा,एव डॉ० रघुवीर सिह दिल्ली
"वेद विश्व का विधान है"
वक्ता श्री दिलीप जी वेदालकार अमेरिका
"वेद और मानव-अधिकार"
सयोजक डॉ० महेशचन्द्र विद्यालकार अध्यक्ष धर्मार्य सभा

रविवार चैत्र कृष्णा अमावस्या (मार्च २५,२००१)

प्रात काल
७ ३० से ६ ०० राष्ट्र समृद्धि यज्ञ
६ ३० भक्ति सगीत मारीशस भजन मण्डल
१० ०० प्रवचन श्री सत्यपति जी परिव्राजक
१० ३० से १ ०० वैदिक धर्म ससद्
मुख्य विषय **"स्वर्ग की तलाश में "**
अध्यक्ष श्री स्वामी ओमानन्द जी प्रधान *सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली*
मुख्य अतिथि श्री देशबन्धु गुप्ता चेयरमैन लूपिन लेबोरेटरीज लि०
विशेष अतिथि श्री महाशय धर्मपाल जी (महाशय दी हटटी वाले)
श्री सेठ प्रतापसिह शूरजी वल्लभदास *(पूर्व प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)*
बेरिस्टर दीपचन्द गार्डी (सुप्रसिद्ध समाज सेवक)
वक्ता डॉ० सत्यपाल सिह (डी०आई०जी०)
"स्वर्ग कहां है ? "
वक्ता प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर
स्वर्ग का वास्तविक स्वरुप
वक्ता श्री स्वामी इन्द्रवेश जी का० प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा
"स्वर्ग का साधन क्या है - यज्ञ, पूजा या धर्म ?"
भजन प्रकाश आर्य भजन मण्डली मह्‌
प० आशा नन्द जी भजनोपदेशक शाहदरा
वक्ता श्री स्वामी सुमेधानन्द जी का० प्रधान सार्वदेशिक सभा
"स्वर्ग के लिए सर्वश्रेष्ठ उपाय क्या है ज्ञान, कर्म या भक्ति ?
वक्ता ब्रिगेडियर चितरजन सावत नोएडा
"स्वर्ग कब मिलता है जीवित रहते या मरने के बाद ?"
वक्ता श्री सच्चिदानन्द शास्त्री कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"स्वर्ग और मोक्ष "

अपराह्न ३ ०० से ६ ०० आर्य महिला सम्मेलन
अध्यक्षा श्रीमती जयवन्ती बेन मेहता ऊर्जा राज्यमन्त्री भारत सरकार
मुख्य अतिथि माननीय उमा भारती जी क्रीडा मन्त्री भारत सरकार
विशेष अतिथि श्रीमती मेधाविनी धीरेन्द्र मेहता
श्रीमती शकुन्तला देवी आर्य पूर्व महापौर दिल्ली महानगर पालिका
वक्ता श्रीमती सरोजिनी गोयल
"महिला श्रद्धा, लगन व समर्पण की प्रतिमा'
वक्ता श्रीमती उज्ज्वला वर्मा
' महिला और सस्कृति"
वक्ता श्रीमती शिवराजवती आर्या
महिला और परिवार निर्माण '
भजन डॉ० उषा शास्त्री गुडगाव एव शशिप्रभा दिल्ली
वक्ता श्रीमती आशारानी कानपुर
'सुन्दरता और शालीनता"
वक्ता श्रीमती पुष्पा शास्त्री रेवाडी
कैसे हो नारी के गौरव की रक्षा '
वक्ता डॉ० उषा शास्त्री
घर घर बने आर्यो का आगन'
सयोजिका श्रीमती शशि प्रभा दिल्ली
सायकाल ७ ०० से १० ०० आर्य युवा सम्मेलन
अध्यक्ष डॉ० सत्यपाल सिह (डी०आई०जी०)
मुख्य अतिथि श्री यशवर्धन बिरला मुम्बई
विशेष अतिथि मान्यवर सैयद शाहनवाज कोयला राज्य मन्त्री भारत सरकार
डॉ० साहिब सिह वर्मा पूर्व मुख्य मन्त्री दिल्ली राज्य
श्री रामरिछ पाल जी अग्रवाल सुप्रसिद्ध उद्योगपति मुम्बई
श्री मफत लाल मेहता सुप्रसिद्ध उद्योगपति एव समाज सेवक
वक्ता डॉ० उदयनारायण गगू, मन्त्री आर्यसमाज मॉरिशस
आज का युवा किस मोड पर ? '
वक्ता कुमारी माधवी रामदीन मॉरीशस
युवा और विवाह
वक्ता श्री जितेन्द्र चिकारा
मौज मस्ती और उत्थान की राह
भजन श्री प्रभाकर गुप्ता एव मण्डली
वक्ता डॉ वागीश शर्मा आचार्य आर्य गुरुकुल एटा
"वैज्ञानिक प्रगति और धर्म विमुखता"
वक्ता आचार्य देवव्रत जी सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल
श्री गिरीश खोसला मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरीका
"युवा शक्ति और राष्ट्रनिर्माण '
वक्ता ब्रह्मचारी राजसिह आर्य दिल्ली
"अनेकता मे एकता'
सयोजक श्री वाचोनिधि आर्य मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात

सोमवार, चैत्र शुक्ला प्रतिपदा (मार्च २६,२००१)

प्रात काल आर्यसमाज काकडवाडी में
७ ०० से ७ ३० महर्षि द्वारा सस्थापित काकडवाडी की आर्य समाज मे युगादि यज्ञ
(बाद्रा के मुख्य पण्डाल में)
७ ३० से १० ०० राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ–पूर्णाहुति
१० ३० से २ ०० अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का समापन समारोह
अध्यक्ष श्री कृष्ण चोपडा प्रधान आर्यसमाज बरमिघम यू०के०
सयोजक कैप्टन देवरत्न आर्य
सम्मान श्री दीनबन्धु शिशुपाल रामभरोस जी (दक्षिण अफ्रीका)
मुख्य अतिथि माननीय श्री राम नाईक (पेट्रोलियम मन्त्री भारत सरकार)
विशेष अतिथि श्री शरद पवार अध्यक्ष राष्ट्रवादी काग्रेस कमेटी
श्री टी०एन० चतुर्वेदी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका
श्री सत्यानन्द जी मुजाल प्रबन्धन निर्देशक मेसर्स हीरो साईकिल लि०
श्री जयन्त टिपणीस आर्केटेक्ट मुम्बई
सम्मेलन के प्रस्ताव श्री विमल वधावन
समापन सन्देश १ डॉ० स्वामी सत्यम २ कैप्टन देवरत्न आर्य
३ श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ४ डॉ० सुखदेवचन्द सोनी
५ श्री मिठाई लाल सिह ६ श्री ओकारनाथ आर्य
वैदिक विहार परियोजना का अनावरण
ज्योति प्रज्वालन – श्री स्वामी सत्यम
अनवारण – श्री जयन्त टिपणीस आर्किटेक्ट मुम्बई
धन्यवाद
श्री वेदव्रत जी शर्मा *(महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली)*
आर्य प्रतिनिधि सभाओ के प्रधान और मन्त्रियो के द्वारा सभा मच पर "सगठन श्रृखला ' की रचना
सगठन सूक्त का गायन श्री विश्वभूषण आर्य

शान्तिपाठ —— प्रीतिभोज

(व्यवस्था और अनुशासन बनाये रखने के लिए कार्यक्रम मे परिवर्तन करने का सयोजक को अधिकार होगा)

प्रथम पृष्ठ का शेष भाग

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तैयारियां अन्तिम चरण में

दिल्ली सभा की व्यवस्था के तहत जाने वाले प्रत्येक यात्री को सम्मेलन की शोभा बढाने वाली सामग्री का एक सेट भेट देने की भी योजना है। इन वस्तुओ के लिए आर्यजनता ने स्वय १०० रु० प्रति व्यक्ति के हिसाब से धन सग्रह किया है।

दिल्ली से लाखो रुपये का दान भी मुम्बई सम्मेलन के लिए एकत्र करके दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा द्वारा मुम्बई व्यवस्था के लिए प्रदान किया जा रहा है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने समूचे देश के आर्यजनो का आह्वान किया है कि

१ जो आर्यजन सामूहिक रूप से मुम्बई के लिए रवाना हो रहे हैं उन्हे प्रथम स्टेशनो पर जोरदार विदाई के साथ रवाना किया जाए।

२ जिन डिब्बो मे आर्यजनो के दल यात्रा कर रहे हो उन डिब्बो को दोनो तरफ ओ३म ध्वजो तथा बैनरो से सजाया जाए जिन पर लिखा हो –

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे मुम्बई अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन २३ से २६ मार्च २००१

(नीचे अपनी–अपनी आर्यसमाज या प्रान्तीय सभा का नाम भी छापा जाए)

३ ऐसे यात्री दल अपने साथ हजारो छोटे–छोटे ट्रेक्ट या वैदिक सिद्धान्तो तथा आर्यसमाज मन्तव्यो के पर्चे फोल्डर हैंडबिल आदि लेकर चले तथा मार्ग के रेलवे स्टेशनो पर जनता को बाटते चले।

४ मार्ग के स्टेशनो पर आर्यजनो को यदि ऐसी किसी यात्री गाडी के आने की सूचना मिलती है तो वे यथा सम्भव स्वागत प्रसाद वितरण आदि के साथ अपने स्टेशनो पर यात्रियो से भेट करने पहुचे।

जम्मू काश्मीर पजाव हिमाचल हरियाणा राजस्थान मध्यप्रदेश गुजरात आन्ध्र प्रदेश तमिलनाडू, कर्नाटक आसाम उडीसा बिहार उत्तर प्रदेश महाराष्ट्र आदि प्रान्तो के विभिन्न हिस्सो से हजारो की सख्या मे आर्यजनो के मुम्बई पहुचने की आशा है। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा के हस्ताक्षर युक्त रेलवे किराया छूट के लिए लगभग २०–२५ हजार फार्म लोगो की माग पर भिजवाए गए है।

मारिशियस सरकार ने ३२ ०००/– रुपये के विमान किराए मे छूट देते हुए केवल १००००/– रुपये विमान किराया निर्धारित किया है। इस के दृष्टिगत मारिशियस देश से ही लगभग एक हजार से भी अधिक आर्य जनो के मुम्बई पहुचने की उम्मीद है।

दक्षिण अफ्रीका सभा के प्रमुख नेता श्री शिशुपाल राम भरोस जी भारत पहुच चुके हैं। आजकल वे सार्वदेशिक सभा मे कार्यों मे सहायता कर रहे है। १८ मार्च को दिल्ली मे रमेश नगर आर्यसमाज वाले मार्ग का नाम महर्षि दयानन्द मार्ग रखे जाने वाले समारोह मे वे मुख्य अतिथि होगे तथा उसके बाद वे मुम्बई रवाना होगे।

अमरीका से भी सभा प्रधान डॉ० सुखदेव चन्द सोनी एव मन्त्री श्री गिरीश खोसला कई अन्य आर्यजनो के साथ मुम्बई सम्मेलन के लिए पहुच रहे है।

नेपाल से आर्यनेताओ ने सार्वदेशिक सभा को ई-मेल द्वारा सूचित किया है कि दर्जनो लोग नेपाल से भी पधार रहे है।

ब्रिमिंगम (इग्लैण्ड) से भी आर्यसमाज के प्रधान श्री कृष्ण चोपडा पहुच रहे है।

सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान एव इस सम्मेलन के सयोजक कैप्टन देवरत्न आर्य ने महाराष्ट्र सरकार के मुख्यमन्त्री श्री विलासराव देशमुख को इस अवसर पर एक मार्ग एव एक पुल का नाम महर्षि दयानन्द जी के नाम पर रखने के लिए प्रेरित किया है। रेलमन्त्री सुश्री ममता बैनर्जी को लिखे एक पत्र मे मुम्बई के चर्नी रेलवे स्टेशन का नाम भी महर्षि दयानन्द जी के नाम पर रखने के लिए निवेदन किया गया है। चर्नी रेलवे स्टेशन काकडवाडी के निकट ही है जहा महर्षि द्वारा प्रथम आर्यसमाज की स्थापना की गई थी। इस दिशा मे दिल्ली से भी श्री विमल वधावन विशेष प्रयास कर रहे हैं।

सार्वदेशिक पत्र के स्वामित्व आदि सम्बन्धी विवरण

फार्म ४ नियम ८

(प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन ऑफ बुक ऐक्ट)

प्रकाशन का स्थान	: दयानन्द भवन, ३/५, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–२
प्रकाशन अवधि	: साप्ताहिक
प्रकाशन का समय	: प्रति बृहस्पतिवार और शुक्रवार
मुद्रक का नाम	: वेदव्रत शर्मा
क्या भारत का नागरिक है	: हा
मुद्रक का पता	: सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–२
सम्पादक	: वेदव्रत शर्मा
क्या भारत का नागरिक है	: हा
प्रकाशक का पता	: पूर्ववत
सम्पादक का नाम	: वेदव्रत शर्मा
क्या भारत का नागरिक है	: हा
सम्पादक का पता	: पूर्ववत
उन व्यक्तियों के नाम-पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूजी के १ प्रतिशत से अधिक के सांझेदार/हिस्सेदार हों	: सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली–२

मैं वेदव्रत शर्मा इस लेख पत्र के द्वारा घोषणा करता हू कि उपर्युक्त विवरण जहा तक मेरा ज्ञान एव विश्वास है सही है।

– **वेदव्रत शर्मा**, *प्रकाशक व मुद्रक*

नव सम्वत्सर तथा आर्यसमाज स्थापना दिवस हर्षोल्लास एवं धूमधाम से मनाएं

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा अर्थात २६ मार्च २००१ को नव विक्रमी सम्वत २०५८ का आगमन है। इसी दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा मुम्बई मे आर्यसमाज की स्थापना की गई थी। इस दिन का राष्ट्रीय एकता के दृष्टिकोण से भी विशेष महत्व है क्योकि इस दिन को विभिन्न प्रान्तो के लोग अलग-अलग रूप मे समारोहपूर्वक मनाते हैं जैसे – **चेती चाद, गुडी पडवा** तथा **उगाडी** आदि।

आपसे निवेदन है कि इस दिन आर्यसमाज मन्दिर में अथवा अपने क्षेत्र में विशेष यज्ञों एव कार्यक्रमो का आयोजन करें प्रसाद वितरण तथा शुभकामनाओं का आदान-प्रदान करे। क्षेत्र के नागरिको मे अल्प मूल्य का वैदिक साहित्य वितरित करे तथा अपनी सुविधा के अनुसार अन्य रूपो मे यथा सम्भव आयोजन करे।

आर्यसमाजें अपने क्षेत्र के विद्वानों, लेखकों, कवियों, चिकित्सकों, इंजीनियरों तथा सम्भ्रांत लोगो को बधाई-पत्र भेजें, (बधाई पत्र का प्रारूप निम्नांकित हैं) जिससे उन्हें नव सम्वत्सर तथा आर्यसमाज स्थापना दिवस की जानकारी प्राप्त हो सके।

इस अवसर पर समस्त मानव जाति को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हार्दिक शुभकामनाए।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती, सभा प्रधान — **वेदव्रत शर्मा**, *सभा मन्त्री*

पोस्टर का नमूना

ओ३म्

नव सम्वत्सर (२०५८) तथा आर्यसमाज स्थापना दिवस

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा अर्थात् सोमवार २६ मार्च, २००१ ई० की देशवासियों को



हार्दिक शुभकामनाएं

निवेदक

आर्यसमाज/शिक्षण संस्थाओं के समस्त अधिकारी एवं सदस्यगण

बधाई-पत्र का नमूना

ओ३म्

सृष्टि सम्वत् १ ९७ २९ ४९ १०२ — चैत्र शुक्ल प्रतिपदा २०५८

चेती चाद/उगाडी/गुडी पडवा — २६ मार्च, २००१



नव सम्वत्सर तथा आर्यसमाज स्थापना दिवस आपके एवं आपके परिवार के लिए कल्याणकारी एवं मंगलमय हो

निवेदक

आर्यसमाज/शिक्षण संस्थाओं के समस्त अधिकारी एवं सदस्यगण

पृष्ठ ३ का शेष भाग

आर्य, द्रविड़ एवं आदिवासी का सच

आदिवासी व्यास मुनि आर्य धर्मग्रन्थ चारों वेदों के पारंगत विद्वान् थे, इसीलिए उन्हें वेदव्यास कहा गया और वे उस समय आर्यसम्राटों के धर्मगुरु थे। यदि रामायण एवं महाभारत के समय आर्य–आदिवासी का भेद रहता और उनमें परस्पर शत्रुता होती तो उपरोक्त बाते क्योंकर घट सकती। इससे यह सिद्ध होता है कि आर्य–आदिवासी का भेद रामायण एवं महाभारत काल में नहीं थां इन सब तर्क एव प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि आर्य, द्रविड़ एवं आदिवासी का भेद गलत है। यह एक दम मिथ्या, निराधार एव मनगढ़त मान्यता है और इसमें कोई सच्चाई नहीं है।

षडयन्त्र का श्रीगणेश

भारत में ब्रिटिश शासन के पूर्व के भारतीय इतिहास एवं संस्कृत साहित्य में इस बात का उल्लेख नहीं मिलता है कि आर्य बाहरी आक्रान्ता थे और द्रविड एव आदिवासी इस देश के मूल निवासी थें ब्रिटिश शासकों ने एक षडयन्त्र के अन्तर्गत आर्यों को विदेशी आक्रान्ता बताया और आर्य, द्रविड एव आदिवासी का कृत्रिम भेद खडा कर दिया। उन्हें भारत में अपने विदेशी शासन का औचित्य सिद्ध करना था, इसलिए उन लोगों ने आर्यों को विदेशी कहा। साथ ही अपने शासन को स्थायित्व प्रदान करने के लिए उन्हें भारतीयों में फूट डालना भी जरूरी था और भारत को खण्ड-खण्ड करना भी उनका लक्ष्य था। इसलिए उनलोगों ने आर्य, द्रविड एव आदिवासी का कृत्रिम भेद खडा कर दिया । यहीं से षडयन्त्र का श्रीगणेश हुआ।

उक्त षडयन्त्र को कार्यरूप देने का श्रेय एडवर्ड थामस नामक अग्रेज को जाता है। ६ अप्रैल १८६६ को रॉयल एशियाटिक सोसायटी के कार्यालय में विस्काऊन्ट स्ट्राफोर्ड की अध्यक्षता में हुई एक बैठक में आर्यों के मध्य एशिया से भारत में आगमन की कल्पना का आविष्कार किया गया। श्री थामस ने ही आर्यों के विषय में कोई एक सिद्धान्त आविष्कृत करने की चर्चा आरम्भ की। इस सम्बन्ध में रॉयल एशियाटिक सोसायटी, लदन के मिनट्स में एक उद्धरण' प्रकाशित है, जिसे विस्तार भय के कारण यहां देना सम्भव नहीं है। अस्तु यह स्पष्ट है कि आर्यों के बाहरी आक्रान्ता होने का विचार और आर्य, द्रविड एव आदिवासी का यह ब्रिटिश शासकों के षडयन्त्र का प्रतिफल है।

इन मिथ्या मान्यताओं का दुष्परिणाम

आर्यों के विदेशी होने और आर्य, द्रविड एवं आदिवासी के भेद की इन मिथ्या मान्यताओं का दुष्परिणाम भी हमारे सामने है। इसके कुछ उदाहरण देखें। 'मुस्लिम इण्डिया' के २७ मार्च १९८५ के अंक में प्रकाशित बक्तव्य इस प्रकार है – ' यदि मुस्लिम और ईसाई विदेशी हैं और उन्हें देश से निकाल देना चाहिए तो प्रथम विदेशी आर्यों को पहले निकाला जाना चाहिए। जो पहले आए, वे पहले जाएं।'

४ सितम्बर १९९९ को संसद मे राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत सदस्य फ्रैक अथोनी ने मांग की थी – संविधान की आठवीं अनुसूची में परिगणित भारतीय भाषाओं की सूची में से सस्कृत को निकाल देना चाहिए क्योंकि यह विदेशी आक्रान्ता आर्यों के द्वारा लायी जाने के कारण विदेशी भाषा है।'

यही नहीं, इन्हीं मिथ्या मान्यताओं के कारण दक्षिण भारत में द्रविड आन्दोलन शुरू हुआ और २३ फरवरी १९७८ को जब भारत ने अपना पहला उपग्रह 'आर्यभट्ट' छोडा तो दक्षिण भारत के एक नेता ने आर्यभट्ट नाम पर आपत्ति की और कहा कि भारतीय उपग्रह का नाम आर्यभट्ट नहीं रखा जाना चाहिए क्योकि आर्य विदेशी नाम है। इसी मिथ्या मान्यता के आधार पर सदा से आर्य (हिन्दू) समाज का अग रहे आदिवासियों मे अन्य हिन्दुओं के प्रति कटुता पैदा की जा रही है। साथ ही भविष्य में भी इस तरह के दुष्परिणाम से इन्कार नहीं किया जा सकता।

निष्कर्ष

आर्य, द्रविड एव आदिवासियों के सम्बन्ध में इन मिथ्या मान्यताओं के कारण प्रत्यक्ष दुष्परिणामो की कुछ झलकिया ऊपर मे हमने देख ही लिया है। इससे भविष्य में राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता सम्बन्धी कोई समस्या न उठे और देशवासियों में वैमनस्य की भावना न पनपे, इसके लिए आवश्यक है कि भारत के इतिहास की पाठ्य पुस्तकों से इन मिथ्या मान्यताओं को निकाल दिया जाए। आखिर इतिहास तो इतिहास है अर्थात् ऐसा निश्चित रूप से हुआ यानी सत्य वृतांत। और सत्य यह है कि आर्य इस देश के मूल निवासी थे और आर्य द्रविड एव आदिवासी का भेद मिथ्या एव मनगढन्त है।

– मन्त्री, छोटानागपुर
आर्य प्रतिनिधि सभा, राँची-१

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 18-3-2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2001
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2001 in NDPSo on 15-16/3/2001

e-mail :
vedicgod@nda.vsnl.net.in

ओ३म्

☎ : 3274771
: 32

पीड़ितों की सेवा

हम सबका राष्ट्रीय कर्त्तव्य

गुजरात में विनाशकारी भूकम्प

भुज, कच्छ, गांधीधाम, अहमदाबाद क्षेत्र सर्वाधिक प्रभावित

पीड़ितों की सहायतार्थ अपील

तन-मन-धन से सहयोग दीजिए

सभा को दिया गया दान आयकर से मुक्त है

चैक/मनीआर्डर/ड्रॉफ्ट एवं सहायता सामग्री निम्न पते पर भेजें :-

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

3/5, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली - 2

फोन : 3274771, 3260985

निवेदक

स्वामी ओमानन्द सरस्वती, प्रधान **बेदव्रत शर्मा,** मन्त्री

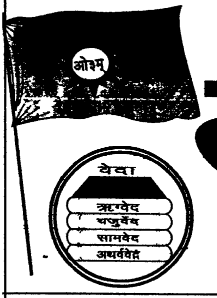
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

3/5, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली - 2

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रकाशन लि० द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली-२ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली-२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०९८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्



सार्वदेशिक

साप्ताहिक



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४० अक १ | ८ अप्रेल से १४ अप्रेल २००१ तक | दयानन्दाब्द १७८ | सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०२ | सम्वत २०५८ | चै० शु० १५

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

आर्यसमाज स्थापना के १२५ वर्ष पूर्ण

श्रद्धा और अनुशासन के साथ आर्यसमाज का नए युग में प्रवेश

सम्मेलन के प्रस्तावों, घोषणापत्र तथा विद्वान वक्ताओं ने आर्यसमाज का विशाल दर्शन तथा भविष्य के लिए योजनाएं प्रस्तुत की

सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा दिल्ली के सहयाग स मुम्बइ आय प्रतिनिधि सभा ने जो अन्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिनाक २३ से २६ मार्च २००१ तक आयोजित किया था वह आशा से कहीं अधिक सफलता से २६ मार्च २००१ को मध्याह्न २ बजे सम्पन्न हुआ। चारो दिन के इस सम्मेलन मे जनता की उपस्थिति बहुत अच्छी रही और अन्तिम दिन तो ५० हजार से ऊपर सख्या थी। इस सम्मेलन की सबसे बडी विशेषता यह रही कि आर्य जनता भारत के हर कोने से यहा उपस्थित थी और प्रात १० बजे से लेकर रात को १० बजे तक विभिन्न सम्मेलनो में जो भी भाषण इत्यादि हुए उनको बडी ही शान्ति से एकाग्र होकर सुनती रही। आर्य महासम्मेलन के प्रति जनता का अपार उत्साह देखने योग्य था। जो लोग बाहर से आये थे जिन्होने अनेकों सम्मेलनों मे भाग लिया था उनको शब्दों के अनुसार-मुम्बई मे होने वाला यह प्रथम सम्मेलन भारत मे अनेको स्थलो पर हुए सम्मेलनों की अपेक्षा बहुत बडा था और इसने मुम्बई मे ही नहीं समूचे भारत में एक नया इतिहास बना दिया। ऐसा सम्मेलन जिसमें सारी जनता प्रेम पूर्वक भाग ले रही थी अपने ढग का बहुत ही अनोखा था। दूसरी विशेषता इस सम्मेलन की यह थी कि इन चारों दिनों में लगभग ८० वक्ताओं ने भाग लिया जिसमें उच्च कोटि के आर्य विद्वान मौजूद थे। इन्होंने आर्य समाज की भावी योजनाओं पर विस्तार से विचार किया अतीत के बलिदानियों वीर पुरुषों और श्रद्धालु भक्तों के चरित्र जनता के सम्मुख रखकर उनको भावी उज्ज्वलमय इतिहास बनाने की प्रेरणा दी।

शुक्रवार दिनाक २३ मार्च २००१ को सर्व प्रथम दिन आर्य महा सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए महा सम्मेलन के सयोजक कैप्टन देवरत्न आर्य (उप प्रधान सावदशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली) न इस सम्मेलन को करन का लक्ष्य व प्रयोजन जनता के सामने प्रस्तुत किया उन्होने कहा कि आर्य जनता चाहती है आर्य समाज और अधिक सक्रिय बने और उसके लिए विभिन्न उपायो और मार्गो की खोज की जाय।" उन्होने आर्य समाज के सन्यासियो विद्वानों से अनुरोध किया कि भारत की प्राचीन सस्कृति का समन्वय आधुनिकता के साथ करते हुए नये से नया दृष्टिकोण आर्य जनता के समक्ष लाये ताकि आर्य समाज मे जागृति और चेतना आ सके।

मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ओकारनाथ आर्य ने आर्य महासम्मेलन मे उपस्थित व्यक्तियो को प्रेम और श्रद्धा के साथ सम्मेलन के विषयो पर ध्यान देने और चर्चा करने की आवश्यकताओं पर बल दिया। उन्होने कहा कि आर्य समाज सदा से ही एक जीवित सस्था रही है इससे पहले भी हिन्दू समाज को आगे लाने मे बहुत योगदान दिया है और आगे आनेवाली पीढी को भी यही मार्ग दिखाएगा।"

आर्य महासम्मेलन के अध्यक्ष डॉ० स्वामी सत्यम जी ने १५ उद्देश्य आर्य सम्मेलन में रखे और मुख्यत इस बात पर जोर दिया कि समाज का स्तर और ऊचा किया जाय इसे आर्य राष्ट्र के रूप मे आगे लाने के लिए यथावश्यक कदम अभी से उठाए जाए।

सार्वदेशिक सभा के मुख पत्र के सह सम्पादक श्री विमल वधावन ने सार्वदेशिक सभा की तरफ से आर्य समाज का घोषणा पत्र प्रस्तुत किया। (घोषणा पत्र तथा अन्य प्रस्ताव शीघ्र ही एक विशेषाक के रूप मे आप तक पहुचेगे)। सम्मेलन के समस्त सत्रो के प्रस्तावो को भी मूल रूप मे श्री विमल वधावन ने स्वामी सत्यम जी से विचार विमर्श उपरान्त तैयार किया। समस्त सत्रो मे व्यक्त किए गए विचारो तथा प्रस्तावो को भी यथाशीघ्र इस पत्र मे प्रकाशित किया जाएगा। सुप्रसिद्ध चित्रकार स्वामी शिवानन्द जी ने परमात्मा के निज नाम ओ३म की प्राकृतिक पेटिग (चित्र) बहत ही सुन्दर रूप देकर बनायी। एक नई कल्पना का प्रस्तुतिकरण किया। इस चित्र का अनावरण सन्यासी गणो ने किया उपस्थित जनता ने उस चित्र की प्रशसा की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने बडे जोशीले शब्दों मे कहा समय आ गया है कि समाज सगठित होकर आगे बढे और जल्दी से जल्दी अपने आपको एक आर्य राष्ट्र के रूप मे प्रस्तुत करे।

सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष डॉ० सुखदेवचन्द सोनी (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका) ने समस्त प्रतिनिधियो का स्वागत करते हुए कहा कि मानव मात्र को सभी प्रकार की बुराइयो से मुक्त कर सच्चे अर्थों मे आर्य अथात परमात्मा की सन्तान बनाने के लिए नेताओ आर जनता को अतुल प्रयास करना चाहिए। श्री धीरुभाइ नानजी कालीदास मेहता (वाइस चेयर मैन मेहता इटरनेशनल ग्रुप मुम्बई) इस समारोह मे उपस्थित थे। इस अवसर पर बहे भक्ति की धारा नामक पुस्तक जिसके लेखक आचार्य भद्रसेन जी तलाश इन्सान की लेखक डॉ० सत्यपाल सिह (डी० आय० जी० नासिक) स्वामी दयानन्द का मुम्बई प्रवास" डॉ० भवानी लाल भारतीय आर्य परिवार गाथा प्रधान सम्पादक डॉ० स्वामी सत्यम (अमेरिका) एवम आर्य महा सम्मेलन की एक विशेष स्मारिका का विमोचन किया गया। तत्पश्चात आय विद्या मन्दिर सान्ताक्रुज मुम्बई की छात्र छात्राआ ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

शेष भाग पृष्ठ ३ पर

सार्वदेशिक न्याय सभा का पुनर्गठन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के विगत साधारण अधिवेशन मे न्याय सभा का पुनर्गठन निम्न प्रकार से किया गया है

१ श्री रामफल बसल वरिष्ठ अधिवक्ता	अध्यक्ष
२ श्री वेदप्रकाश धवन	सदस्य
३ श्री सुरेन्द्र प्रताप सिह चौधरी	सदस्य
४ श्री के०एल०भाटी	सदस्य
५ श्री वेदप्रकाश गोयल	सदस्य
६ श्री अरुण आर्य	सदस्य
७ श्री प्रदीप कुमार	सदस्य
श्री विमल वधावन एडवोकेट	सयोजक

न्याय सभा के नव नियुक्त अध्यक्ष श्री रामफल बसल ने कहा है कि मेरा यह भरसक प्रयास रहेगा कि आर्य बन्धुओ के किसी भी प्रकार के आपसी मतभेद न्याय सभा की सगठनात्मक न्याय प्रणाली के अन्तर्गत ही प्रेमपूर्वक सुलझाए जाए। इसके निराकरण के लिए मेरा यह प्रयास होगा कि प्रत्येक कार्य न्याय के सिद्धान्तो के अनुरूप और सगठन के हित मे हमे बाहरी अदालतो का सहारा न लेना पडे। उन्होने आशा व्यक्त की है कि इस कार्य मे न्याय सभा के नव गठित न्याय मण्डल का पूर्ण सहयोग इन कार्यों के लिए मिलता रहेगा।

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

सह सम्पादक
विमल वधावन एडवोकेट

आर्यसमाज साधुवाद का पात्र



अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मे सभामन्त्री के होने क नाते सहयोग देने का जो सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ वह केवल समूचे आयजगत के आत्मिक बल तथा परम पिता परमात्मा की असीम कृपा के आधार पर ही सफलता पूर्वक निर्वाह किया जा सका। सर्वप्रथम विशेष साधुवाद उन सब आर्य महानुभावो का माताओ बच्चो और बुजुर्गों का जिन्होने अपनी उपस्थिति से आर्यसमाज की एक शक्ति का प्रदर्शन सम्भव कर दिखाया। इतनी विशाल उपस्थिति की आयोजको को आशा भी नहीं थी। परिणामत कहीं कहीं अव्यवस्था प्रारम्भ होने लगी तो आर्यजनो के उत्साह ने उसे सहने करते हुए व्यवस्था मे बदल दिया। अनुशासन श्रद्धा और विश्वास का अनूठा समन्वय देखने लायक था।

मुम्बई के आर्य कार्यकर्ता विशेष रूप से धन्यवाद के पात्र है क्योकि विगत लगभग माह से वे व्यवस्थाओ को जुटाने मे लगे हुए थे। आर्यवीर दल के कार्यकर्ताओ ने भी सम्मेलन के लिए मूल व्यवस्थाओ को सुचारू रूप से चलाने मे भरपूर सहयोग दिया।

वैदिक विद्वानो के ओजस्वी विचारो ने सम्मेलन की भौतिक व्यवस्थाओ को आध्यात्मिक रूप देने के लिए महान कर्त्तव्यो का निर्वहन किया। विद्वानो के उदबोधनो ने सम्मेलन के शरीर मे आत्मा रूपी काय सम्पन्न किया। अत उनके प्रति कृतज्ञता हमारा आध्यात्मिक कर्त्तव्य हे।

समूचे प्रान्तो की सभाओ के अधिकारीयो तथा विदेश की सभाओ और समाजो के अधिकारी भी विशष साधुवाद के पात्र है जिन्होने तन ओर मन से ही नही अपितु धन से भी इस सम्मेलन को भरपूर समर्थन दिया।

बहुत बडी सख्या मे उपस्थित आर्य सन्यासी भी चरण वन्दना के पात्र है जिनके आशीर्वाद आर निर्देशो स यह सम्मेलन एक ऐतिहासिक सम्मेलन बन सका।

मै आशा करता हू कि जिस शाभा के साथ आयसमाज के १२५ वर्षीय इतिहास का यह महान उत्सव मैने आर आप सबने देखा या सुना वह उत्साह भविष्य के लिए क विचित्र स्फूर्ति प्रदान करगा आर हमारा गौरवशाली इतिहास ही हमारा भविष्य बनकर उपस्थित होगा।

वेदव्रत शर्मा

मानवता के उज्ज्वल भविष्य का आश्वासन



आर्यसमाज रूपी एक महान आन्दोलन के १२५ वर्ष की यात्रा पूर्ण होने की स्मृति मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का सफल आयोजन २६ मार्च २००१ को मुम्बई के रिक्लेमेशन मैदान मे सम्पन्न हो गया। इस महासम्मेलन मे हजारो आर्य पुरुषो माताओ तथा बच्चो ने भाग लिया जो भारत से ही नहीं बल्कि विदेशो से भी पधारे थे। उपस्थित जन समुदाय ने आर्यसमाज के सिद्धान्तो भविष्य के कार्यक्रमो महिलाओं और युवको को एक विशेष वर्ग के नाते उत्साहित करने तथा आर्यसमाज की गतिविधियो के विस्तार से सम्बन्धित कई उद्बोधन और विशेष सत्रों मे पारित प्रस्तावो से भरपूर मार्ग दर्शन प्राप्त किया।

इस महासम्मेलन मे कुल ६ सत्र थे जिनमे उदघाटन तथा समापन सत्र भी शामिल थे। यह मेरा सोभाग्य था कि मुझे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की तरफ से तैयार किया गया घोषणा पत्र प्रस्तुत करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। शेष विशेष सत्र इस प्रकार थे

१ प्रकाश की तलाश मे

२ इन्सान की तलाश मे

३ स्वर्ग की तलाश मे

४ वेद सम्मेलन

५ महिला सम्मेलन

६ युवा सम्मेलन

७ आर्य सम्मेलन

इन सत्रो मे विशेष प्रस्ताव आदि पारित किए गए जिन्हे एक पृथक विशेषाक के रूप में शीघ्र ही प्रकाशित करने की योजना है जिन्हे पढकर मेरा विश्वास है कि आपको ऐसा लगेगा जैसे आपने भी इस महासम्मेलन मे भाग लिया हो बेशक आप शारीरिक रूप से इस सम्मेलन मे उपस्थित न हो सके।

मै आप सब आर्यबन्धुओ से निवेदन करता हू कि आइए आर्यसमाज की पवित्र वेदी से मानवता के उज्ज्वल भविष्य की कामना करे तथा एक आवश्यक प्रस्तुत करे। आइए समूचे विश्व को आर्य बनाने के भरसक प्रयास करे।

— विमल वधावन

दलित बन्धुओं के नाम खुला पत्र

डॉ० सत्यदेव

सृष्टि का हर प्राणी सम्मान पूर्वक जीना चाहता है और सम्मान मिलता आया है बलवान गुणवान पुरुषार्थी को। मानव मात्र को जगन्नियन्ता के द्वारा शरीर मन बुद्धि चिन्ता और अह दिया गया है। जिस जिस प्राणी ने इनके बलो का न केवल वर्धन और अर्जन किया है अपितु प्राप्त ससाधनो को सही दिशा मे विवेकपूर्ण प्रयोग किया है सफल रहे है।

आजादी से पूर्व गाधी बापू ने भी हमारे उद्धारार्थ कार्य किया किन्तु अलग से हरिजन नाम देकर हमारी अलग पहचान बना दी और मानव समाज के लिए हमे दया का पात्र घोषित कराया। इससे निस्सन्देह कुछ राहत मिली किन्तु हरिजन होने की जाति विशेषो की अलग पहचान ने हमे समाज मे वहीं का वहीं लाकर खडा कर दिया।

हमारा भाई कितना ही गुणवान ईमानदार कर्मठ देशभक्त क्यों न हो मात्रजातीय सम्बोधन अथवा हरिजन कहते ही सारे गुणो पर पानी फिर जाता है।

महर्षि दयानन्द और उनके सस्थापित आर्यसमाज ने अवश्य हमे योग्यतानुसार प्रतिष्ठा और नामकरण देने का सदप्रयास किया किन्तु क्योकि सम्पूण भारतीय समाज अपने का आर्य कहलाने क लिए तेयार नही हुआ आर इस प्रकार इसका दायरा भी सीमित ही रह गया ह आर जातीय भदभाव का निराकरण पूर्ण रूप से वहा भी नहीं हो पाया।

स्वतन्त्रता के पश्चात् हमारी उन्नति के लिए राष्ट्र ने आरक्षण की व्यवस्था की किन्तु उसका आधार भी जाति तथा सम्प्रदाय और अल्पसख्यक आदि को बनाया। जिससे जातीय विद्वेष और बढता ही जा रहा है।

इसका लाभ भी विकसित जातिया उठाने लगी और आरक्षण मे भी दलित और गैर दलित आरक्षितो का वर्गीकरण हो गया। अत आरक्षण का लाभ भी हमे मात्र २१ प्रतिशत बडे सघर्ष के बाद मिला किन्तु एक अलग वर्ग के रूप मे अब दलित कहलाकर हमारी पहचान बना दी गई।

एक अरब लोगो मे हमारी सख्या लगभग एक तिहाई है और अब भी दलित सज्ञक को तिरस्कार की दृष्टि से देखा जाता है। हमारी आड मे दूसरी जातिया इस आरक्षण के लाभ का बडा भाग लूट रही है और हमे वे भी हिकारत की दृष्टि से देख रही है।

तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो आज भी ८० प्रतिशत दलित लोग ही गरीबी की रेखा से नीचे जा रही है।

यदि आरक्षण का आधार गरीबी को बनाया जाए तो उसका लाभ हम दलितो को ही ७० प्रतिशत स्वत ही मिल जाएगा और हम भी मानव समाज की मुख्य धारा मे सम्मानपूर्वक रह सकेगे फिर हमे अलग वर्ग नहीं गिना जाएगा। हमारी कोशिश हो कि हम आरक्षित कहलाने और होने की बजाय जल्दी से जल्दी इस लानत से निजात पा सके।

आरक्षण का आधार हमे जहा एक ओर सब से अधिक लाभान्वित कराएगा वहीं दलितों के प्रति अलगाव की हीन भावना कम होगी।

वर्तमान आरक्षण की बैसाखियों पर कब तक अपने को तिरस्कृत कराते रहोगे। कब तक अपने को पिछडा जाहिल मूर्ख दलित हरिजन आदि की सज्ञा से दूसरो की घृणा का पात्र बनाए रखोगे ?

आईए गम्भीरता से इस पर चिन्तन करते हुए आरक्षण का आधार आर्थिक बनवाए। भारतीय जनता मे ३५ प्रतिशत लोग गरीबी की रेखा से नीचे जी रहे हैं। उनमे सर्वाधिक सख्या हम दलितो की ही है।

अत इस प्रक्रिया से जहा हम लाभन्वित होगे नहीं अल्पसख्यक आदि के भेदभाव से राष्ट्र को राहत दिला सकेंगे। आशा है कि हमारे नेता चिन्तनशील मनीषी इसे नइ दिशा देकर पिछडे होने के कलक से दलित मात्र को बचाने मे अपनी सक्रिय भूमिका निभाएगे।

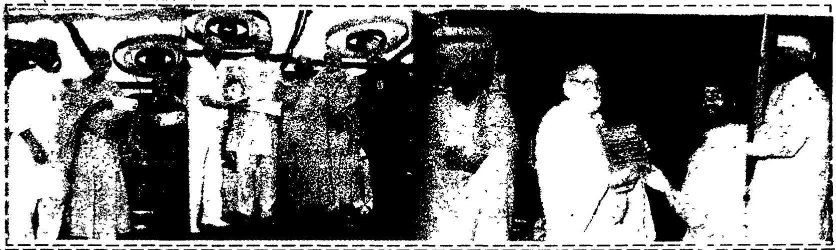
— ३ए /१२४ एन०आई०टी० फरीदाबाद फोन ५४१५४६४

पृष्ठ १ का शेष भाग

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने अपने वक्तव्य में कहा कि ऋषि दयानन्द का ऋण हम सभी पर है उसका स्मरण कर हमे सकल्प लेना चाहिए कि हम कैसे अधिक स अधिक सगठित होकर वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार कर सके।

मध्याह्न के वैदिक धर्म ससद मे श्री जयनारायण अरुण (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश), श्री ज्वलन्त कुमार शास्त्री (अमेठी), डॉ० रुदरोन नीऊर (प्रधान आर्य सभा मॉरिशस) डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री (जम्मू) ने अपने विचार प्रस्तुत किए और निर्णय रूप मे कहा कि अगर हम वैदिक धर्म का प्रचार करना चाहत है तो सबसे अच्छा उपाय यह है कि सत्यार्थ प्रकाश को घर घर मे पहुचाए इस पुस्तक डॉ० धर्मपाल (कुलपति गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार) न की। मुख्य अतिथि के रूप मे पदमश्री डॉ० ज्ञानप्रकाश चोपडा (चेयर मेन डी० ए० वी० कॉलेज मैनेजिग कमेटी) श्री रामनाथ सहगल (मन्त्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा) विशेष अतिथि श्री शिशुपाल रामभरोस (सरक्षक आ० प्र० सभा दक्षिण अफ्रीका, डरबन) उपस्थित थे। डॉ० सोमदेव शास्त्री प्रदेश व विदर्भ के प्रधान श्री सत्यवीर शास्त्री आदि विद्वानो के भाषण हुए। श्री प्रकाश आर्य एवम मडली (महू) ने प्रभु भक्ति व आर्य समाज स सम्बन्धित भजन प्रस्तुत किए।

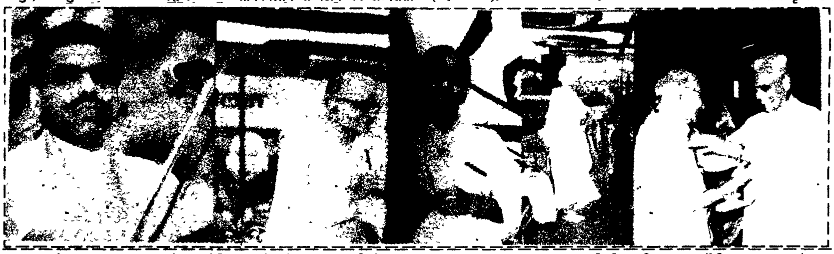
इसी तरह वैदिक धर्म ससद मे तीनो दिन "प्रकाश की तलाश म" "इन्सान की तलाश मे" और स्वर्ग की तलाश मे" इन मुख्य विषयो पर चर्चा हुई। इन्सान की



अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन के अवसर पर (क) सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी तथा उनके साथ मे सभामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ओकार नाथ। (ख) दक्षिण अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री शिशुपाल रामभरोस, अमेरिका सभा के प्रधान डॉ० सुखदेव चन्द सोनी, स्वामी सत्यम, स्वामी ओमानन्द सरस्वती तथा सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान कै० देवरत्न आर्य। (ग) सार्वदेशिक सभा के कार्यकर्त्ता प्रधान स्वामी सुमेधानन्द जी। (घ) चारो वेदो के तेलगू अनुवाद का विमोचन करते हुए सभा प्रधान स्वामी ओमानन्द जी। (ड) सभा उप्रधान श्री शेरसिह।

जिसके अध्यक्ष सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर के स्वामी तत्वबोध सरस्वती थे "प्रकाश और ज्योति" व सत्यार्थ प्रकाश आदि विषयों पर अपने विचार रखे। इस सम्मेलन में स्वामी सकल्पानन्द सरस्वती (उदयपुर), श्री विजय बिहारीलाल माथुर (जयपुर), श्री सुभाषचन्द्र नागपाल (पूणे), ने अतीत में भी बहुतों को प्रकाश दिया है और भविष्य में भी यह सबसे अच्छा काम करेगा। श्रीमती अदिति सेठ ने ईश्वर भक्ति के भजन प्रस्तुत किए। इस वैदिक धर्म ससद का सचालन श्री अमृतलाल तापडिया (उदयपुर) ने किया।

सायकालीन सम्मेलन की अध्यक्षता (मुम्बई), श्री अजय सहगल (दिल्ली), डॉ० दिलीप वेदालकार (अमेरिका), प० नचिकेता भट्टाचार्य (कोलकाता), श्री आनन्द पड्या (उपाध्यक्ष विश्व हिन्दू परिषद्) प० कमलेश कुमार अग्निहोत्री (अहमदाबाद), आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री (नई दिल्ली), श्री श्यामलाल जी, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य तलाश में इस विषय पर बोलते हुए पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती (साहिबाबाद) ने बहुत सुन्दर भाषा मे बताया कि "आज इन्सान खो गया है, विषय वासनाओं में, अपने स्वार्थ में, लोभ लालच में डूबा हुआ इन्सान भटक रहा है। *शेष भाग पृष्ठ ४ पर*



(क) घोषणा पत्र प्रस्तुत करते हुए वैदिक लाईट के सम्पादक श्री विमल वधावन। (ख) राज्य सभा सदस्य श्री त्रिलाकी नाथ चतुर्वेदी। (ग) सभा कोषाध्यक्ष डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री। (घ) वैदिक प्रवक्ता आचार्य नरेश (ड) डी० ए० वी० के अध्यक्ष श्री ज्ञान प्रकाश चोपडा का स्वागत करते हुए श्री वेदव्रत शर्मा।



(क) महिला सम्मेलन मे बाए से श्रीमती उज्ज्वला वर्मा, केन्द्रीय ऊर्जामन्त्री श्रीमती जयवन्ती बेन मेहता, श्रीमती सुनीता आर्य एव सयोजिका शशि प्रभा आर्या। (ख) महाराष्ट्र के गृहमन्त्री श्री कृपाशकर सिह। (ग) वैदिक विहार योजना को प्रस्तुत करते हुए भवन वास्तुविद श्री जयन्त टिपणीस, स्वामी सत्यम तथा मॉरिशस के विश्व विख्यात आर्य नेता श्री मोहन लाल मोहित के सुपुत्र श्री राजन मोहित।

पृष्ठ ३ का शेष भाग

ख मह व च न
नि स

न व
ज म्न

राष्ट्रीय न्स म्न न उमाकान्त
उपाध्याय त्रिप्रा
युवा व निमाप लकर
म विद्वान न वदो
म्द न रतर्गत चचा को सयोजक
म श नक देली न
क फ नद ही

सुख आर शान्ति क ग्ररा बताया

दिनाक २४ मा वदिक म
ससद मे र्क ल न इस
ये प चह न
न म
ल न मी

ठ य एफ र श्री प ाण त्री
प्र न भ प्र नेधि नम विहार श्री
नप्रताप वदिक दिल्ली) एव श्री गौरीशकर
कौशल (नपाल स्वामी वदानन्द सरस्वती
उत्त काशी प्रो श गर्म न्द न शास्त्री
पटना ने परम पिता परम मा क आदेश
म भव कह खो ा इन्सान आज ?
विषया पर अपन उत्तम विचार प्रस्तुत किए
श्री रन्त उ म श्री

पश्चिम बगाल) न किया।

दिनाक २५ माच २ १ वैदिक धर्म ससद म वग की तलाश मे इस विषय पर ा हुइ इस सम्मलन के अध्यक्ष पू स्वामी रामानन्द जी सरस्वती थ

न अ द बन्धु गुप्ता चे र म गि न ट ज न विशेष अतिथि श्री प ई सूरजी वल्लभदास पूव प्रधान अ प्र० सभा दिल्ली) बरिस्टर दीप न ग र्दी (सुप्रसिद्ध समाज सवक) उपस्थित इस प्रसग म डा० सत्यपाल सिह (डी आइ० जी) ने बहुत सुन्दर रूप म जनता की भाषा मे स्वग की व्याख्या की ओर कह स्वर्ग इसी ससार मे ह कही किसी और जगह नही है हम अपने जीवन को सुख शान्तिमय बनाए परोपकार करना रिवार म सुख शान्ति शिक्ष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली) स्वामी इन्द्रवेश जी (कार्यकारी प्रधान आ० प्र० सभ हरियाणा) ब्रिगेडियर चितरजन सवन्त (नोएडा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री (कोषाध्यक्ष आ प्र सभ दिल्ली) रघुवीर वदालकार ने तलाश मे विषय पर अप उनमात्तम विचार प्रस्तुत किए इस सम्मेलन का सचलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने किया

अपराह्न के सम्मेलन मे आय महिला सम्मलन सम्पन्न हुआ जिसकी अध्यक्षा भारत सरकार की ऊर्जा राज्य मन्त्री श्रीमती जगवन्ती बेन मेहता थीं विशेष अतिथि श्रीमती शकन्तला देवी आया (पूर्व महापौर दिल्ली महानगर पालिका) उपस्थित थीं। इस सम्मलन मे श्रीमती सरोजनी गोयल मुम्बइ ने महिलाओ को श्रद्धा लगन और



क मरिशस आर्य अनेक विद्वान डा० रा० रा द्वारा उपनिषद इशोपनिषद ... लिखी गई पुस्तक का विमोचन करत हुए स्वामी दीक्षानन्द जी साथ म हालण्ड सभा के प्रधान डा० महेन्द्र स्वरूप अमेरिका के डा० दिलीप वेदालकार श्री विमल वधावन तथा श्री शिशुपाल रामभरोसा। ख) बहे भक्ति की धारा का विमोचन करत हुए स्वामी दीक्षानन्द जी। ग महासम्मेलन के अवसर पर स्मारिका का विमोचन करते हुए स्वामी सत्यम तथा स्वामी इन्द्रवेश जी।



(क) वदिक विद्वान डा० रघुवीर। (ख) वदिक गर्जना अक का विमाचन करत हुए स्वामी सकल्पानन्द जी तथा महाराष्ट्र सभा क प्रधान श्री श्रद्धानन्द जी एव अन्य। (ग) स्वामी सत्यपति जी श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय गुजरात सभा क मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य तथा सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री टीकमचन्द आर्य।



(क) जम्मू कश्मीर सभा क प्रधान र योगन्द्र शास्त्री। ख स्वामी नत्यान सरस्वती। ग दिलीप वेदालकार (घ आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री तथा वदिक विद्वान कवि श्री साहन लाल पथिक ड आचाय सुधाकर। (च मारिशस सभा क विद्वान आय नता।

विश्व शान्ति के आधार स्तम्भ है इनसे हटकर शान्ति की खोज करना व्यर्थ प्रयास है क्योंकि परमात्मा ने सृष्टि की आदि मे वेदो का आविर्भाव करके मानव मात्र को योगेश कुमार आर्य मुम्बई ने आर्यसमाज व ऋषि दयानन्द से सम्बन्धित भजन गए। इस धर्म ससद् का सचालन श्री आनन्द कुमार आर्य (मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा इन सबके द्वारा बच्चे प्रगति के मार्ग पर चले ताकि उनका भविष्य उज्जवल हो वही स्वर्ग का वास्तविक स्वरूप है। क्रमश स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती (उप प्रधान समर्पण की प्रतिमा के रूप से बहुत सुन्दर रूप से चित्रित किया।

शेष भाग पृष्ठ ६ पर

प्रभु की भक्ति कैसे करें ?

प्रभु दर्शन कैसे होगे तब ही होंगे जब उसकी भक्ति होगी। ईश्वर की भक्ति को ठीक ठीक समझने के लिए ईश्वर मे विश्वास व श्रद्धा परम आवश्यक है इसको मैं ही नहीं ससार के सभी धर्म इस बात को मानते हैं कि यह श्रद्धा व विश्वास का विषय है।

ईश्वर के प्रति कर्त्तव्य पालन का जहा तक सम्बन्ध है उसको समझने के लिए किसी पृथक कर्तव्य कर्म या अनुष्ठान की आवश्यकता नहीं है। वह खुशामद पसंन्द नहीं करता और न उसके दरबार मे रिश्वत चलती।

उसके दरबार मे प्रवेश करने के लिए महर्षि दयानन्द जी महाराज ने अपने ग्रथ मे अष्टाग योग का विस्तार से वर्णन किया है। हमारे ऋषि ने योग द्वारा शरीर मन और प्राण की शुद्धि के लिए ८ प्रकार के साधन बतलाए हैं। मोक्ष को प्राप्त करने के लिए निम्न ८ सीढियो का निर्देश दिया है।

यह ८ अग है —

यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान और समाधि।

यम नियमों से यम तो सार्वजनिक विषय है और नियम व्यक्तिगत है। उसके दरबार मे प्रवेश करने के लिए यम नियमो की साधना ही काम आती है। जितने भी प्रकार के पूजा पाठ प्राय लोग करते है वह सब कर्मकाण्ड तो है ही लेकिन बिना शुद्ध अन्तर के उसका कोई लाभ नही होगा।

यह ध्यान रहे बिना यम नियमो के पालन से ही शुद्ध आचरण होगा।

यम पाच प्रकार के है [illegible] अहिंसा [illegible] ३ अस्तेय ४ ब्रह्मचर्य ५ अपरिग्रह।

इनका विस्तार से नही लिख रहे है। याद रखिए यम का पालन बहुत ही कठिन कार्य है इसकी जरा सी चूक हो जाने से अच्छे अच्छे गिर जाते है। इसके पालन किए बिना ईश्वर के दर्शन असम्भव है इसलिए यम का पालन अत्यन्त आवश्यक है।

नियम भी पाच प्रकार के हैं —

१ शोच २ सतोष ३ तप ४ स्वाध्याय ५ ईश्वर प्राणिधाम।

हमारे देश मे ही नही सारे ससार मे भिन्न भिन्न धर्मों मे भिन्न भिन्न प्रकार से पूजा का प्रचलन है।

मेरा यह दृढ मत है कि कवल पूजा से ईश्वर के दर्शन नहीं हो सकते जब तक कि हम ऊपर लिखे हुए ईश्वरीय नियमो का पालन न करे।

आप कठोर तपस्या करके ईश्वर के नजदीक पहुच भी गए और जरा कहीं चूक भी गए तो सारी साधना मिट्टी में मिल जाएगी। प्रत्यक्ष २ प्रमाण आपके सामने हैं।

१ देश के पूर्व प्रधानमन्त्री नरसिहराव जी बडे विद्वान कई भाषाओं में माहिर व बहुत योग्य व्यक्ति हैं। बड़ी योग्यता से शासन चलाया। अपना ही शासन रहे इसके लिए रिश्वत देकर वोट हासिल किए। लिहाजा उनकी नीयत देखना पड़ा।

२ यही हाल चन्द्रा स्वामी का हुआ। जाने उन्होंने कितनी कठोर तपस्या की होगी जब उन्होंने बड़ा सम्मान पाया। बडे बडे राष्ट्राध्यक्षों से मिलते थे लेकिन अपने शिष्यो की मदद के लिए गलत तरीके अपनाने की वजह से जेल की हवा खानी पड़ी। इसलिए हर मनुष्य को अपने जीवन में हर समय सतर्क रहना चाहिए।

आसन

आसनों के करने से शरीर निरोग व स्वस्थ रहता है और कोई पैसा भी खर्च नहीं होता है। कोई बीमारी आसानी से आपको जकड नहीं सकती। आदर्श स्वास्थ्य के लिए योगासन सबसे उत्तम है। यह शरीर आत्मा का मन्दिर है। इसलिए इसकी सफाई बहुत आवश्यक है।

आसन बहुत प्रकार के हैं इस छोटे से लेख में इसका [illegible] है।

[illegible] ध्यान लगाना बहुत आवश्यक है इसके लिए पदमासन से ३ घण्टे इसका अभ्यास करने से ध्यान पूर्ण रूप से लग जाता है। करके

धर्मपाल विद्यार्थी

देखिए कितना आनन्द आता है।

प्राणायाम

प्राणायाम विज्ञान को प्रत्येक व्यक्ति के लिए बहुत आवश्यक है। प्राण विद्या को समझना इसलिए आवश्यक है कि जो व्यक्ति प्राण पर विजय प्राप्त कर लेता है उसके लिए कोई कार्य मुश्किल नहीं है।

बिना प्राणो को वश में किए इन्द्रिया कभी भी वश मे नहीं हो सकती है। इसलिए यदि इन्द्रियो को वश मे करना है तो सर्व प्रथम प्राणो को वश मे करना परमावश्यक है।

प्राण का मन से गहरा सम्बन्ध है अत मन और बुद्धि चेतन आत्मा से अलग नहीं है। हम टी० वी० से समाचार भाषण गाना बजाना इत्यादि सुनते हैं। दुनिया के किसी शहर की गतिविधिया सुनना चाहे तो उसी के चेनल के बटन को दबा दीजिए सारे प्रोग्राम आ जाते है।

इसी प्रकार रेडियो मे उस जगह के मीटर लगा दीजिए उसी के प्रोग्राम मिलेगे। आप देखग कि कोई तार वगैरह कुछ नहीं है। इसी प्रकार का प्राण विज्ञान है इसीलिए मैंने लिखा है जो इस विद्या का ज्ञान प्राप्त कर लेता है उसके लिए कोई कार्य मुश्किल नहीं है। सिर्फ परमात्मा से सम्पर्क करने के लिए अथवा योग युक्त होने के लिए हमे अपने मन और बुद्धि के स्विच को परमात्मा से लगाना है। यह तभी सम्भव होगा जब आप यम नियमो को कठोरता से पालन करते हुए प्राण विद्या मे प्रवीण हो जाए।

प्राण विद्या से ही सिद्धि प्राप्त की जा सकती है। जब आप ऊपर दी हुई बातो मे पारगत हो जाय तब ही समाधि लगा सकते है। पदमासन पर बैठकर ध्यान आसानी से लग जाता है कम से कम १/२ घण्टा व १ घण्टा तक इस आसन पर बैठकर ध्यान लगा सकते हैं फिर यम ही मन में श्वास क्रिया को भूमध्य मे ले जाए। ध्यान को भूमध्य मे ओ३म पर लगावे निराकार ज्योति बिन्दु को देखें — अगर ध्यान न लगे तो मन ही मन ईश्वर के गुणो को ध्यान करते हुए उनके गुणो को अपनाए। ईश्वर के गुणो की व्याख्या आर्यसमाज के नियम नम्बर २ मे ही हुई है। यह ध्यान रहे उस समय मे कोई विचार नही आना चाहिए। मानो मन आराम कर रहा है सरल उत्तम साधना है।

यह मैने यो ही नहीं लिख दिया है — यह अध्ययन व अनुभव करके देखा है।

अगर आप ३ घण्टे तक बिना हिले डुले पदमासन पर बैठ जाए तो समझो आपने विजय प्राप्त कर ली — समय हो और इसके साथ तीव्र इच्छा शक्ति हो तो आनन्द ही आनन्द है। ६ माह तक अभ्यास हो जाय तो वह आनन्द है जिसका वर्णन नही किया जा सकता। इस प्रकार समाधी लगाकर प्राण का नियन्त्रण करते हुए मन से जो दोष उत्पन्न होते है। जैसे काम क्रोध लोभ मोह अहकार द्वेष ईर्ष्या नही होगी और आपको [illegible] की प्राप्ति हो जाएगी।

महिलाएं क्यों नहीं करा सकती कर्मकाण्ड

प्राचार्या डा० राय स्वय कर्मकाण्ड कराती हैं। उन्होने श्मशान घाट पर जाकर ६ अन्त्येष्टि सस्कार कराए है। वह कहती है समाज मे महिलाओ को यह सब कराने का अधिकार है या नही इसे लेकर बडे बडे भ्रम है।। छात्राए भी इसी तरह के सवाल करती है। रूढिवादी परिवारो की छात्राओ व उनके अभिभावको ने भी तरह–तरह के सवाल उठाए। उन्हे यज्ञोपवीत पहनने सस्कार करवाने व वदपाठ करने के अधिकारो के बारे मे शास्त्रीय प्रमाण देकर व वैज्ञानिक महत्व बता कर समझाना पडता है। जब वे स्वय सन्तुष्ट हो जाते है तभी छात्राओ को यह विषय दिया जाता है। छात्राओ को व्रतो का अनुष्ठान सत्य नारायण व्रत कथा हस्तालिका तीज व्रत कथा व दुर्गा व्रत कथा भी सिखाई जाती है। समवेत स्वरो मे वेद मन्त्रो का शुद्ध शुद्ध स्वर बद्ध उच्चारण। हर वेद मन्त्र के बाद स्वाहा के स्वर और उसी के साथ हवन कुण्ड मे पहली समिधा। पूरा वातावरण हवन के धूम व वेद मन्त्रों के सस्वर पाठ से सुगन्धित हो रहा था। वेद मन्त्रो का उच्चारण करने वाले स्वर न तो किसी आचार्य करने वाले स्वर न तो किसी आचार्य के न किसी पडित पुरोहितों के बल्कि वे सधे स्वर थे आधा दर्जन से अधिक छात्राओ के।

ये दृश्य किसी धारावाहिक का नही कानपुर विद्यामन्दिर पी०जी० कालेज के एक हवन समारोह का है जिसमें कालेज की व्यावसायिक सस्कृत की छात्राए हवन करा रही थीं। जब देश भर में यह बहस गरम रही है कि महिलाओ को वेद पाठ करने अथवा हवन पूजन व कर्मकाण्ड कराने का अधिकार है या नहीं तब छात्राओं को कर्मकाण्ड सिखा कर भारतीय सस्कृति के मानको के अनुरूप पूजन पाठ मे दक्ष बनाना एक जोखिम भरा काम है। यह जोखिम उठाया है इसी कालेज की प्राचार्या डॉ० आशा रानी राय ने। सस्कृत की विदुषी व आर्यसमाज की सक्रिय डॉ० राय कहती हैं 'परमात्मा की अमृतमयी वाणी वेद हैं। जिस प्रकार मा अपने बच्चा का बिना भेदभाव के कल्याण व हित चितन करती है उसी प्रकार सृष्टि की मा वेद वाणी मानव जाति के लिए अनुकरणीय है जिसमे देश काल व परिस्थितिया बाधक नहीं हैं वेद पढने व पढाने का अधिकार प्रत्येक स्त्री पुरुष देश व वर्ण जाति का है।'

विश्वविद्यालय की अनुदान आयोग ने देश के कुछ महाविद्यालयो मे स्नातक स्तर पर व्यावसायिक सस्कृत का पाठ्यक्रम शुरू किया है। कानपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध एक मात्र कालेज कानपुर विद्या मन्दिर को यह कोर्स मिला। विश्वविद्यालय की अनुमति से डॉ राय ने कोर्स तैयार किया जिसका देश भर मे स्वागत हुआ है और अभिभावको व छात्राओं का आकर्षित कर रहा है। महाविद्यालय मे प्रतिवर्ष ४० छात्राए पडिता व विदुषी तैयार की जाती है। बी०ए० प्रथम व द्वितीय वर्ष मे ४० अक लिखित व ६० अक प्रयोगात्मक के है जबकि तृतीय वर्ष मे ५० अक की लिखित व १०० अक की प्रायोगिक परीक्षा होती है। पाठ्यक्रम में ग्राह्य सूत्रो के आधार पर सस्कार विधि षोडश सस्कारों की क्रिया विधि सन्ध्या यज्ञ शान्ति–करणम स्वस्तिवाचनम् षोडशोपचार पूजा विधि ज्योतिष का सामान्य परिचय जन्म पत्रिका निर्माण नवग्रह पूजन व वास्तु शास्त्र का सामान्य अध्ययन शामिल किया गया है।

छात्राए कहती है उनको इस कोर्स के पढने से एक विशेष तरह की आत्म शक्ति व आत्म शुद्धि का अहसास होता है। घर मे किसी भी व्रत पूजा व यज्ञ आदि के लिए पण्डित पुरोहित की बाट नहीं जोहनी पडती। वे चाहे तो आजीविका के लिए पुरोहित कर्म अपना सकती है। भारतीय सस्कृति के गूढ तत्वो से परिचय होता है। उनके सामने श्रोतसूत्रो कल्प सूत्रो व वैदिक साहित्य पर शोध करने की विपुल सम्भावनाए मौजूद हैं।

विशेष विचार धारा के पण्डित-पुरोहित अथवा धर्माचार्य भले ही इस सबका विरोध करे परन्तु प्राचार्या डॉ० राय का कहना है कि शुद्ध वैदिक मन्त्रो के वाचन से आत्म शुद्धि होती है। इससे छात्राए उत्तम भावी माताए बनेगी व समाज को आवश्यकता के अनुसार सस्कारवान सताना को जन्म देगी। घर मे ही रह कर पुरोहित प्रशिक्षण शिविर सचालित कर सकती है।

सबसे बडी बात यह है कि जब टेलीविजन घर के भीतर दिन रात अपसस्कृति परोस रहा है तब घर की एक बालिका अथवा महिला मे समाहित वैदिक सस्कार पूरे परिवार को सुवासित करने का काम करेगा।

यजुर्वेद मे ठीक ही कहा गया है —

यथेमा वाच कल्याणीमावदानि जनेभ्य । ब्रह्मराजन्याभ्या शूद्राय, चार्याय च स्वाय चारणाय।

भगवान की भक्ति कैसे करें ? मन से जागो

महात्मा प्रेम प्रकाश वानप्रस्थ

बात सन ६३ ई कि क क शिव मन्दिर की है कि भक्त न कीतन एव हर हर महादव के जयघाषो से भगवान शिव को जगाने का प्रयास किया था और फिर चूहे ने उन्हे जगाने का प्रयास किया परन्तु वह जाग ही नहीं। वही पर शकर का पुजारी मूल+शकर (भावी महर्षि दयानन्द) शिव पूजा करने के लिए उतावल मन से बेठा शिव प्रतिमा की ओर निहार रहा था। बार बार आखो पर शीतल जल के छीटे मार मार कर जाग रहा था। परन्तु भगवान शिव के न जगने के कारण उसने सकल्प किया कि म जागूगा आर स्वय ही शिव बनूगा। एक कहावत ह जो जागत ह सो पावत हे इसके अनुसार ही शिवरात्रि को शिव मन्दिर मे दो जाग रहे थे दोनो ही मालमाल हो गए। चूहे ने माल खाया आर मूलशकर ने शिव का मार्ग पाया।

लगभग ३० वर्ष हुए हम परिवार सहित हरिद्वार ऋषिकेश लक्ष्मण झूला होते हुए गीता भवन को देखने जा रह थ स्वग आश्रम स पहल एक मन्दिर बना ही था उसकी बडी प्रशसा थी हमने सोचा ले इस भी देख ल दोपहर लगभग एक बजा था मन्दिर बन्द था। हमने मन्दिर क पिछ स पुजारी को आवाज दी आर मन्दिर दर्शन की इच्छा व्यक्त की। पूजारी ने कहा इस समय भगवान सो रह ह। माहम्मद गोरी ने भगवान सोमनाथ को जगाया महमूद बिन कासिम ने दवी को जगाया ओर बाबर ने भगवान राम का जगाया आदि आदि परन्त वे जाग ही नही अत हम लूट लिए गए। भगवान कृष्ण जी ने (गीत ४ ७) म वचन दिया कि जब जब अधर्म बढता है मैं जन्म लेता हू ! परन्तु इस आतकवाद मे जब निर्दोषो की दिन रात हत्याए हो रही थीं दवियो आर बच्च भी गोली स उडाय जा रह थ पापी सब सीमाओ का पार कर चुक थ परन्तु भगवान कृष्ण आय ही नही

मन म आया कि सामवेद के १८२६ मन्त्र म भगवान तो उपदेश देते है कि जो जागता हे उसकी कामनाए पूर्ण होती है। जो जागता है वह जीवन का आनन्द लेता है और जो जागता है भगवान उसके मित्र होते हैं। अर्थात जागने वाला जीवन के हर क्षेत्र मे सफल होता है फिर जगाने वाले भगवान स्वय कैसे सो सकते हैं ? महर्षि वाल्मीकि कहते हैं **न वै स्वपन्ति देव** भगवान कभी नही सोते ! भगवान ने तो क्या सोना था ? उसकी धरती कभी नहीं सोती। उसका सूर्य और चाद कभी नही सोते उसका जल और वायु कभी नही सोत यही तक नहीं हमारी आत्मा भी कभी नहीं सोती अत हमारे प्राण भी कभी नहीं सोते। हमारी नब्ज भी नही सोती। अत आओ ! हम बुद्धि से जागे **धियो यो न प्रचोदयात** के अनुसार भगवान से प्रेरणाए ल ओर अवस्था के अनुसार व्यवस्था करके सफलताए प्राप्त कर।

४ मे एक रात्रि मे विचार कर रहा था कि मूल शकर जी ने १४ वष की आयु मे ही शिव १४ का व्रत रखा। जिस दिन अन्तिम बार घर से बाहर निकल तब भी उन्हे गुरु ढूढने म १४ वष लगे थ। जब व गुरु दक्षिणा म श्रद्धेय दण्डी स्वामी गुरु विरजानन्द जी सरस्वती के आदेशानुसार अपना जीवन राष्ट्र अर्पण करने निकले तो सबसे पहल उन्होन जो ग्रन्थ लिखा उसक भी १४ समुल्लास लिखे। जब वेदाग प्रकाश लिखा उसके भी १४ अध्याय लिखे। उन्हे भ्रमण करते प्रचार करते ओर शास्त्रार्थ करते करते जीवन मे १४ बार ही विष पान करना पडा और एक विद्वान ने तो बहुत पहले लिखा था कि जिस दिन महर्षि जी न प्राण त्याग किए। उस समय १४ थी ओर अमावस्या तो कुछ समय बाद प्रारम्भ होनी थी। जो दीपावली की रात थी । समझ मे नहीं आ रहा कि १४ का ऋषि जीवन से क्या सम्बन्ध था। सोचते सोचते मन मे आया कि सृष्टि के आदि मे दवताओ ने जब समुद्र मन्थन किया था। तब भी १४ रत्न निकल थ। जिसे भारत के विद्वान स्वर कहत हे जेस अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ अ अ कहा गया ह। फिर मन म आया कि भगवान राम को भी १४ वर्ष का वनवास हुआ था। फिर मन म आया कि पाण्डवो को भी १४ वष का वनवास हुआ था। फिर मन म आया कि पाण्डवो को भी १४ वष का वनवास भुगतना पडा ओर भगवान कृष्ण जी न विवाह क पश्चात रूकमनी स सलाह करके बारह वर्ष फिर ब्रह्मचय व्रत का तप किया था और विवाह क १४ वष बाद प्रद्युम्न पुत्र रत्न को जन्म दिया था आयसमाज क मूर्धन्य विद्वान प चमूपति जी एम ए न एक पुस्तक लिखी ह चौदहवीं का चान्द में समझता हू कि १४ शब्द म कोइ न कोइ विशेष रहस्य अवश्य ह जिस पर चिन्तन करना हम सबका कर्त्तव्य है।

जब महर्षि दयानन्द शिव बनकर निकले तो उन्हान लम्बी लम्बी समाधिया लगाई ओर कल्याण की भावना से पहल भक्ति के मार्ग को सुलझाया भक्त और भगवान के बीच मे से सब ऐजण्टो को निकाल दिया भक्त और भगवान का सम्बन्ध पिता पुत्र का रिश्ता बताया। भगवान एक ही ह आर कण कण म व्याप्त हे तथा आत्मा और परमात्मा का निवास स्थान हृदय देश ही हे आत्मा को परमात्मा से युक्त करो। **इन्द्रस्य युज्य मुखा** सामवेद मन्त्र १६७१ के आधार पर समझाया। यही बात गीता १८ ६१ मे भगवान कृष्ण कहते हैं 'ईश्वर सर्वभूतानाम हृददेशे अर्जुन तिष्ठति अर्थात ईश्वर का मिलने का स्थान हृदय देश ही है अत हृदय देश मे ध्यान करना चाहिए। हृदय देश हृदय से ब्रह्म रन्ध्र तक कहा गया है।

यदि भगवान ने हमे खाने के लिए ही पैदा किया होता तो हाथी जैसा बना देते। यदि देखने के लिए ही पैदा किया होता तो गिद्ध या चील बना देते। यदि सुनने के लिए ही पैदा किया होता तो मयूर और हिरण बना देते। यदि सूघने के लिए ही पैदा किया होता तो साप ऊट और कुत्ता बना दते। **मनुष्य तू विचार यदि भगवान सारी सृष्टि को ज्यो का ज्यो तो बना देते और तुझे न बनाते तो भगवान की इस सृष्टि को ज्यों का त्यों तो बना देते और तुझे न बजाते तो भगवान की इस सृष्टि का कोन महत्व समझता। बडे भाग्य मनुष्य तन पावा** गोस्वामी तुलसीदास। अत मनुष्य को भगवान का मनन करना चाहिए। पुरुष को पुरुषाथ करते हुए परमात्मा का ध्यान भी करना ही चाहिए। बन्दा वही है जो बन्दगी (उपासना) करता है। उसकी सारी सृष्टि हमार लिए ही है क्योकि पिता का सब माल पुत्र का ही होता है। पिता न पुत्र से कुछ छिपा कर नहीं रखा ह और न ही पित रखा करता ह। अत उसका गान (धन्यवाद अवश्य करना चाहिए। क्योकि वेद मन्त्रो का गान भगवान का ध्यान केवल मनुष्य ही कर सकता है।

महर्षि ने भारत के प्रत्येक नागरिक को कल्याणकारी मार्ग पर चलने के लिए प्रेरणा दो अत आर्यसमाज के छठे नियम मे शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति को उपकार बताया। हमने शारीरिक और सामाजिक उन्नति तो की परन्तु आत्मिक उन्नति करनी भूल गए। १८-१८ घण्टे की समाधि लगाने वाले महर्षि दयानन्द जी महाराज की पुस्तक आर्याभिविनय जो भक्ति का समुद्र है पढनी चाहिए इस पुस्तिका म महर्षि जी ने भगवान को इतने नामो से सम्बोधित किया है जितने सारे ऋषि भी मिलकर नहीं कर सके हे। उन नामो मे ऋषि की भक्ति की झलक ओर चमक है तथा अनुभूति की धमक हे। आप ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के उपासना विषय को पढिए जिसमे वे लिखते है कि **भगवान की भक्ति करते समय अपनी अवस्था ऐसी बना लेनी चाहिए जैसे एक नदी की समुद्र मे मिलते समय होती है।** अथात नदी जहा स चलती ह शुद्ध होती ह परन्तु समुद्र म मिलत समय गन्दा नाला हो जाता ह परन्तु समुद्र म मिलत ही जल शुद्ध हो जाता ह। अथात भक्ति स जीवन शुद्ध करना चाहिए। आगे लिखत हे कि भगवान की भक्ति मे ऐसे ही गोते लगाने चाहिए जैसे एक गोताखोर बार बार गोते लगाकर जल की शीतलता एव पवित्रता का आनन्द लेता है।

हमारा ब्रह्मरन्ध्र ही शिवालय है सिर पर शिखा ही मन्दिर की ध्वजा हे और पार्वती हमारी सस्कृति का नाम हे तथा हृदय म योगियो का अनाहद नाद ही शख घडियाल की ध्वनि हे। ओ३म ही शिव ह आर आत्मा ही उसका पुजारी ह। जीवन का शीतल एव पवित्र रखना अथात क्रोध रहित एव विषय वासना रहित विचार ही शिव लिग ब्रह्मरन्ध्र पर जल चढाना है और सकल्प पूर्वक भगवान का ध्यान करना ही व्रत रखना हे। शिव की उपासना करना ही शिव बनना हे। अन्यथा मनुष्य शव है।

इसमे सन्देह नही जिन रात्रियो मे भक्त भगवान का भजन करता है वे सब शिव रात्रिया या शुभ रात्रिया ही होती हैं शेष रात्रियो को तो भोग रात्रिया कहा गया है। इसी भाव को भगवान कृष्ण गीता मे यू कहत है या **निशा सर्व भूतनाम तस्याम जागृति सयमी** अर्थात जो सासारिक लोगो के लिए रात होती है वह योगियो के लिए दिन होता है। अर्थात शान्त वातावरण में योगी भगवान के ध्यान मे मग्न होकर आनन्दित होते है। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने भी सन्ध्या के अन्तिम **नमस्कार मन्त्र** से हाथ जोडकर कल्याणकारी भगवान से शरीर के लिए 'सुख मन के लिए शान्ति और आत्मा के लिए आनन्द देने की प्रार्थना करके हमे उपासना करने के लिए जागृत किया है। अनत मे कहने को मन करता है –

यू तो हर रात आती है हमको सुलाने के लिए।
परन्तु शिवरात्रि की रात आई थी, हमको जगाने के लिए।।

आर्य कुटिया धूरी १४८०२४ (पजाब)

संकल्प शक्ति बढ़ाओ "तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु"

– श्री यश बाला गुप्ता

हजारो वर्षो से मनुष्य शान्ति की खोज करता आया है। असख्य सुख सुविधाओ का भोग करते हुए भी मनुष्य को सुख शान्ति मिल जाए यह अनिवार्य नहीं। एक वस्तु की प्राप्ति होती है तो थोडा सन्तोष होता है पर मन अधिक पाने की लालसा मे पुन चिंतित हो उठता है। और और कुछ और पाने की इच्छा इतनी बलवती हो जाती है कि मनुष्य अपने वास्तवविक लक्ष्य को भुला देता है। जीवन का लक्ष्य सुख सन्तोष व आनन्द को पाना है – पर होता यह है कि मानव अपने बनाए हुए जाल मे उलझता जाता है और उसे ओर छोर दिखाई नहीं देता। ऋषि मुनि विद्वतजन जिन्होने जीवन के अर्थ का समझा है वे सदैव ही जन मानस को प्रेरणा देते आए है जिससे उसका कल्याण हो। कितनी विडम्बना है ? यह जानते हुए भी कि मन को बाधना ही श्रेय है फिर भी मानव मन का मनाने तुष्ट करने मे लगा रहता है। अनुचित को न करने के लिए मन से आवाज आती है पर वह उसको अनसुना कर अपना ही अहित कर बैठता है। उच्च रक्तचाप के मरीज को चिन्ता हानिकारक है डायबटीज के मरीज का मिठाई पर मन है कि मानता ही नही – या तो व्यर्थ की चिंताओ मे फसा रहता है या दूसरी ओर अभक्ष्य को भी बिन विचारे गले से नीचे उतार देता है। जिसका परिणाम उल्टा ही होता है।

सचमुच मन बडा चचल है। उधेडबुन करने वाला बलवान तथा हठी है। वायु को वश मे करने के समान उसका निग्रह अत्यन्त दुष्कर है कठिन है। चचलता का दृश्य वेद ने दिखाया है

यज्जाग्रता दूरमुदेति दव तदु सुपतस्य तथेवेति जागते हुए का मन बहुत दूर चला जाता है वैसे ही सोए हुए का भी चला जाता है अर्थात न सोते चैन और न जागते चैन। यदि मनुष्य मन को स्थिर कर सके तो अकेले ही बहुतो से लड सकता है। क्योकि मन की शक्ति अपार है। आख देखती है किन्तु मन् के सहयोग से कान सुनते हैं मन के सहयोग से। जिस इन्द्रिय के साथ मन का सहयोग न हो वह कार्य नहीं कर सकती। अत ऐसे मन को स्थिर करना चाहिए। तन्मे मन शिवसकल्पमस्तु द्वारा पुन पुन यह प्रार्थना की गई हैं कि हे ईश्वर ! मेरा मन शुभ आनन्द व भलाई के लिए सकल्प वाला हो।

आवश्यकता है अपनी सकल्प शक्ति को प्रबल बनाने की। अथर्ववेद का मत्र कहता है "अवधीत कामा मम ये सपत्ना" – मेरे सकल्प बल ने मेरे जो प्रतिद्वन्द्वी बाधक है उन्हें अवधीत अर्थात नष्ट कर दिया है। ईश्वर ने यह सकल्पशक्ति सबको दी है पर हम उसे आराम करने देते है। यदि अपने सकल्प बल का जगा दिया जाए तो काम क्रोध लोभ जैसे रिपुओ से निपटा जा सकता है। उन्हे बेजान किया जा सकता है। फिर मन मे कमजोरी रह ही नहीं जाएगी।

कबीर हा यह दोहा मन के हारे हार है मन के जीते जीत निराशा मे डूबी मानवता के लिए दीप स्तम्भ है। भयकर बीमारियो से ग्रसित व्यक्ति या भयकर दुखो मे डूबा व्यक्ति भी इन पक्तियो को विचारते ही अदभुत शक्ति का अनुभव करने लगता है। जो मन से कमजोर हो जाता है वह तो जीवित रहते हुए भी मृतक है। इन पक्तियो मे वो चुम्बक शक्ति है जिसके पास आते ही विपरीत परिस्थितिया अनुकूल हो जाती है। इन पक्तियो मे विश्वास उस कामधेनु की तरह है जिसको पाकर कुछ पाने को शेष नही रहता। इसकी शक्ति उस चिराग की तरह है जिसके जलने से अधकार स्वय भाग जाएगा।

मन को दृढ बनाना होगा। कोई भी व्यक्ति जन्म से महान नहीं होता कुछ कर पाने की इच्छाशक्ति को दृढ बनाकर ही मनुष्य सफलता के सोपान पर चढ सकता है। जिसने मन को कमजोर बनाया उसकी इच्छाशक्ति भी कमजोर हो जाती है। वह लापरवाह और आलसी बन जाता है और एक बार यदि वह हिम्मत हार जाता है तो ऊपर उठने के लिए बहुत प्रयास करना पडता है। जो कठिनाइयो से भिडता है मैदान मे डरता है साहस का पल्ला नही छोडता वही जीवन मे कुछ कर सकता है।

जीवन को सुन्दर व सफल बनाने के लिए यदि मन के शब्दकोष से नकारात्मक विचार को निकाल दिया जाए तो ही सफलता मिलती है। ये काम मुझसे नही होगा – ऐसा विचार यदि मन मे आ जाए तो समझो कि सफलता पीछे रह गई है। अब प्रश्न उठता है कि क्या नकारात्मक भाव को मिटा देने से ही सफलता मिलेगी ? हा ! क्योकि असफल होने वाला एसा व्यक्ति भाग्य के भरोसे नही बैठेगा। जिसने अपने मन को दृढ बना लिया है वह पुन प्रयत्न करेगा और सफलता के सोपान पर चढेगा। इसलिए आवश्यकता हे मन को स्थिर बनाने की जो धारण ध्यान व अध्यवससाय द्वारा ही किया जा सकता है। इस प्रकार निरन्तर किया हुआ अभ्यास मनुष्य का सयमी व सकल्पवान बनाता है। यह सकल्प ही उसे जीवन के शीर्ष पर ले जाता है सफलता के शिखर पर आसीन करता है सुख के पालने मे झुलाते है। इसीलिए कहा है तन्मे मन शिवसकल्पमस्तु ।

४६/३ लिकिंग रोड एक्स्टेशन
मुम्बई ४०००५४

स्वामी सर्वानन्द सस्कृत महाविद्यालय (गुरुकुल दयानन्द मठ) मे शैक्षणिक कार्य प्रारम्भ

श्रद्धानन्द नगर (भतुहवा) प० चम्पारण २१ फरवरी २००१। स्वामी सर्वानन्द सस्कृत महाविद्यालय (गुरुकुल दयानन्द मठ) जिसका शिलान्यास वैदिक यति मण्डल के अध्यक्ष तथा वितराग सन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी ने किया था का आज आर्य जगत के तपोनिष्ठ व्यक्ति श्री दीनानाथ प्रसाद आर्य (नरकटियागज) द्वारा उदघाटन किया गया। इस उदघाटन समारोह मे बडी सख्या मे आर्यजनो की उपस्थिति रही। समारोह का प्रारम्भ रवि कुमार आर्य (नरकटियागज) के भजन से हुआ तत्पश्चात ब्रह्मचारी ओम प्रकाश आर्य ने अपने विचार व्यक्त किए। उसके बाद पारसनाथ जी (मुरली) तथा श्री रूकुमनारायण आर्य (प्रधान आर्य समाज गौनाहा) के भजन हुए। इस अवसर पर स्वामी सर्वानन्द सस्कृत महाविद्यालय के प्रबन्धक श्री लालजी आर्य द्वारा गुरुकुल की नियमावली पढी गई। तत्काल मे पचम वर्ग से अष्टम वर्ग तक की शिक्षा आज से प्रारम्भ की गई इस कार्य हेतु श्री अवध किशोर प्रसाद तथा श्री उमाशकर प्र० को तात्कालीक शिक्षक नियुक्त किए गए। ब्र० ओम प्रकाश आर्य को आचार्य पद दिया गया। कार्यक्रम के अन्त में मुख्य अतिथि श्री दीनाथ प्र० आर्य ने सभा को सम्बोधित किया। उसके बाद सभापति श्री हरेन्द्र प्र० यादव ने सबका धन्यवाद ज्ञापित कर सभा समाप्ति की घोषणा की। कार्यक्रम का सचालन श्री रामायण शर्मा आर्य (मल्दी) ने किया। ईश्वर की कृपा से समस्त कार्यक्रम पूर्णत सफल रहा।

हॉसी में तीसरे आर्यसमाज की स्थापना

स्थानीय खरड चुन्नी (भाटिया कॉलोनी) हॉसी की ज्योति फैक्ट्री के प्रागण मे स्वामी कीर्ति देव जी महाराज की अध्यक्षता मे एक विशेष वैदिक सत्सग का आयोजन किया गया। जिसमे सर्वप्रथम प० विजयपाल शास्त्री (प्रभाकार) जी द्वारा यज्ञ किया गया।

इस शुभ अवसर पर तीसरे आर्यसमाज खरड चुन्नी हॉसी की विधिवत स्थापना की गई। जिसके प्रधान श्री पुरुषोत्तम लाल जी गिरधर सर्वसम्मति से चुने गए। शेष कार्यकारिणी का गठन करने का अधिकार प्रधान जी को दिया गया।

इस मौके पर बोलते हुए आर्य वीर दल के उपमन्त्री श्री राकेश कालडा ने कहा कि हॉसी नगर मे दो आर्य समाजे और भी हैं यदि वे मान सम्मान के साथ हमारे आर्य वीर दल का सहयोग लेना चाहेगी तो हम दल के सचालक आचार्य रामसुफल शास्त्री जी के नेतृत्व मे तन मन धन से सहयोग देने के लिए तत्पर रहेगे। आर्यसमाज के प्रचार प्रसार को आगे बढाना हमारा मुख्य लक्ष्य है।

इस शुभ अवसर पर श्री रूपचन्द जी आर्य व श्रीमती कमलेश रानी गिरधर ने बहुत ही सुन्दर गीत सुनाए जो ईश्वर भक्ति से ओतप्रोत थे। तथा स्वामी कीर्तिदेव देव जी महाराज ने आर्यों को मिल जुलकर कार्य करने की अपील की एव आर्यवीरो को समाज मे आगे आने के लिए प्रोत्साहित किया।

प्रधान जी की आज्ञानुसार अर्यसमाज खरड चुन्नी का मासिक सत्सग हर महीने के अन्तिम रविवार को दोपहर बाद ३ बजे तक हुआ करेगा इस आशय की जानकारी आयवीर दल प्रेस सचिव राजेश शर्मा ने दी। शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

– राजेश शर्मा प्रैस सचिव आर्य वीर दल हॉसी

अरबों में भारतीय गणित, ज्योतिष और आयुर्वेद का अध्ययन

– डॉ० ब्रजमोहन आचार्य

अब अनेक प्रमाणो से प० रघुनन्दन शर्मा स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती आदि ने पश्चिम एशियाई देशो मे आर्यसस्कृति और भाषा के प्रभाव को सिद्ध कर दिया है तथा डिपोरस प्लाहमी टालोमी टाड कनिघम तथा चीनी इतिहासकारो ने सुरो एव असुरो को शाकद्वीपी (ईरानी) विमात्र भाई माना है। हिस्ट्री आफ पर्शिया भाग २ के आधार पर आचार्य चुतरसेन शास्त्री ने अरबो को शैव धर्मी स्वीकार करते हुए कहा है कि अरब मे सात ग्रहो की पूजा के लिए सात प्रसिद्ध मन्दिर थे तथा काबा मे आज भी काले पत्थर का शिवलिग है जो सोने की जलहरी पर रखा है। इसे मन्नाह या सगे असवद् कहते है। मुसलमान साहब के जन्म से १६५ वर्ष पूर्व अर्थात ४०० ई० मे जुर्रम बिनताई नामक प्रथम श्रेणी का कवि सऊदी अरब मे हुआ है जिसकी कविता के कुछ अश तुर्की के राजकीय पुस्तकालय मे उपलब्ध है। वह लिखता है कि वह देश धन्य है जहा विक्रमादित्य राज्य करता था वह इतना उदार और दानी था कि विदेशियो पर भी कृपादृष्टि रखता था। जब हमारा देश अविद्या और असभ्यता के घोर अन्धकार मे डूबा हुआ था तब उसी राजा ने विद्वानो और उपदेशको को यहा भेजा। आदि (विक्रमशती स्मारक ग्रथ महेश प्रसाद मोलवी का लेख)। आज यह कोई आश्चयजनक तथ्य नही रह गया है कि सुमेरी मेसापीटामिटान बेबिलोनी मिश्री ईरानी आदि प्राचीन सभ्यताए कहीं न कहीं आर्य सभ्यता से जुडी हुई थी साथ ही इण्डो यूरोपियन नाम देकर पश्चिम के मनीषी आर्यों से जुडकर गौरवान्वित हो रहे है। अत स्पष्ट है कि मानवीय सस्कृति और सभ्यता के मूल उद्भावक तथा प्रसारक आर्य ही थे – स्व स्व चरित्र शिएरन पृथिव्या सर्वमानवा – मनु।

अरबो के आक्रमण ने भले ही मिश्र और ईरान जैसे सभ्य देशो को विजित किया हो लेकिन वे इन सस्कृतियो से ऐसे ही पराजित हो गए जैसे रोम ने यूनान को जीतकर भी उसकी सस्कृति के आगे घुटने टेक दिए थे। ७५० ई० मे उमैयाओ से सत्ता छीनकर अब्बासियो ने बगदाद को राजधानी घोषित कर दिया। बस यहीं से अलमसूर (७५४–७५) हारू–अल–रशीद (७८६–८०६) और बस मामून (८१३–३३) के शासन काल मे भारतीय पण्डितो चिकित्साविदा ज्योतिषयो आदि का बगदाद जाने का ताता लग गया। (यूरोपियनो और चीनियो के बाद भारतीय ज्ञान विज्ञान से लाभ उठाने वाले अरब तीसरे विदेशी थे)। अल मसूर के शासन काल मे ७७३ ई० मे एक परम पण्डित बगदाद पहुचा जो ज्योतिष सिद्धान्त तारो की गति रेखाशो के चौथाई के हिसाब से समीकरण ग्रहण राशिचक्र क्रमज्या आदि का ज्ञाता था। इसके पास एक ग्रन्थ सम्भवत ब्रह्मगुप्त का ब्रह्मसिद्धान्त था जिसका अनुवाद खलीफा के आदेश से अल फजारी के पुत्र मुहम्मद ने 'सिहहिद नाम से किया। यह पहला मुसलमान था जिसने गणित ज्योतिष के अध्ययन मे अपना सारा जीवन लगा दिया (तारीख–अल–हुकमा पृ० ३१२)। इसके तीन वर्ष बाद एक और भारतीय पण्डित बगदाद पहुचा जिसने याकूब इब्न तारीक को नक्षत्रो की परस्पर दूरी का रहस्य बताया।

हारू अल रशीद के समय मे भारतीय ज्ञान विज्ञान का प्रभूत अध्ययन हुआ। कहते हैं कि एक बार वह इतना बीमार पडा कि जीवन की आशा ही न रही। तभी हारू के प्रधानमन्त्री बरमक यहिया ने भारतीय वैद्य बुलाकर खलीफा का इलाज कराया जिससे वह ठीक हो गया। प्रसन्न होकर खलीफा ने उस भारतीय वैद्य को राजकीय शफाखाने का प्रधान नियुक्त कर दिया। इस उत्तरदायित्वपूर्ण पद पर सम्भवत यह नियुक्ति विरल उदारण थी। हारू के समय मे चरक सुश्रुत और वाग्भट के ग्रन्थो के अनुवाद किए गए साथ ही आर्यभटट और वराहमिहिर के अनुवाद भी किए गए।

अलमामून कई मायनो मे हारू से भी उदार खलीफा था। वह स्वय विद्वानो की गोष्ठियों मे भाग लेता था तथा ८३० ई० मे उसने 'बैत अल हिक्म' (ज्ञान मन्दिर) नाम की पीठ बगदाद मे स्थापित की जिससे बौद्धिक क्षेत्र मे एक क्रान्ति ही उत्पन्न हो गई। अल ख्वारिज्मी जो अरबी ज्योतिष गणित और भूगोल का प्रतिष्ठित विद्वान माना जाता है इसी काल मे हुआ। इसी विद्वान ने पहली बार भारतीय अको दशमलव और शून्य का अध्ययन कर यूरोप को दिया जिससे यूरोप मे एक क्राति उत्पन्न हो गई। प्रो० ए०एल० बाशम लिखता है कि भारतीय ज्योतिर्विदों का गणित ज्ञान बधाई का पात्र है कि वे यूनान वालो के ज्ञान से कुछ आगे बढे और गणित के रूप मे अरबो की मध्यस्थता से अपना शास्त्र यूरोप भेजा। इतना पूर्व जितना सातवी शती सीरिया के एक ज्योर्विद सिविरस सिवोट को भारतीय ज्योतिष एव गणित की महानता का ज्ञान था। (अद्भुत भारत ४२५) अल राजी इस युग का महान औषधि विशेषज्ञ हुआ है जो ग्रीक फारसी और भारतीय औषधि शास्त्र का ज्ञाता था। इसी के समकालीन अबू सीना था जिसने औषधि विज्ञान पर लगभग २०० पुस्तके लिखी हैं। डाक्टरी शिक्षा पर उसकी महान रचना अल हावी १७ वीं शती तक यूरोपीय जगत मे पाठय पुस्तक रही इसमे भारतीय ग्रीक एव अरबो स्रतोतो का प्रयोग किया गया है। वस्तुत अरबो को भारतीय चिकित्सा विज्ञान का ज्ञान सिधु के आक्रमण से ही था। डॉ० दामोदर सिहल लिखते हे कि अब्बासिद खलीफाओ के समय मे भारतीय चिकित्सा शास्त्र की कई पुस्तको के अनुवाद पहलवी और अरबी भाषाओ मे हुए यथा चरक सुश्रुत अष्टागहृदय निदान सिद्धयोग स्त्री रोगो और उनकी चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तके तरह तरह के जहर और निदान औषधिया नशली वस्तुए तथा स्नायविक रोगो की पुस्तके इत्यादि

(भारतीय सस्कृति और विश्वसम्पर्क भाग २ प० १४६)

ज्योतिष के लिए गणित की विशेष आवश्यकता होती है अत ग्रहो की स्थिति का निर्णय करने के लिए त्रिकोणमिति का अध्ययन किया गया। अरब के प्रसिद्ध ज्योतिर्विद अल–बतानी (८७७–९१८ई०) जिसकी ज्योतिष सरणिया ग्रीक से बढकर थीं वस्तुत आर्यभटट से परिचित था। क्योकि अनुपात ज्या लम्ब आदि का विवेचन सूर्य सिद्धान्त मे पहले से मौजूद था। अल् अन्दलूसी प्रबकात अल उलाम मे लिखता है कि भारत ज्ञान कानून और राजनीति का भण्डार है। लोगों की मान्यता थी कि भारतीय वैज्ञानिक सख्याडनो (अको) के सिद्धान्त ज्यामिति और ज्योतिष के आचार्य हैं और चिकित्सा के विज्ञान मे ससार की सारी जातियो मे अग्रणी है। (९७३–१०४८)

अरबो के अरस्तू कहे जाने वाले अल–बेरूनी का नाम विख्यात ही है। जिसने चालीस वर्ष भारत मे रहकर सस्कृत का अध्ययन किया। इसकी तारीख–अल–हिद भारतीय ज्ञान–विज्ञान एव ऐतिहासिक विवरणो से भरपूर है। भूमिका मे लिखता है कि हिन्दुओं तुम्हारा नाश हो, तुम्हें धिक्कार है कि तुमने अपने पूर्वजो की ज्ञान–विज्ञान को आगे नहीं बढाया तथा महमूद गजनवी ने भारतीय सस्कृति और कला को तहस–नहस कर दिया है। दयानन्द सरस्वती से पूर्व यह पहला मनीषी था जिसने भारतीय साहित्य को हीरों और गोबर का ढेर कहकर पहचाना। कपिल और पतजलि के ग्रन्थों के अरबी मे अनुवाद किए। गणित मे उसने हिन्दी अको का प्रयोग किया तथा अरब ज्ञान को निश्चित रूप दिया। अनेक ग्रीक कृतियो को सस्कृत मे रूपान्तर कर सृजनात्मक समन्वय का महत्वपूर्ण कार्य किया। अरब ससार का महान दार्शनिक अल् किन्दी (ई० ८५०) जिसने विभिन्न विषयो पर लगभग २६५ पुस्तक लिखीं भी भारतीय चिकित्सा विज्ञान का जानकार था। इसी तरह इब्नवशिया जाबिर मैमडी आदि भी भारतीय आयुर्विज्ञान के अध्यता रहे हैं। अल राजनी और अल अशाउ ने अणुवाद की अरब पद्धति का प्रतिपादन किया इस सिद्धान्त के प्रतिपादको को भारतीय अणुवाद के सिद्धानन्तो का ज्ञान अवश्य था। क्योकि ल्यूमिपस और डेमोक्रिटस के ग्रीक अणु सिद्धान्त के स्थान पर अरबो ने न्याय वैशषिक जैन एव आजीविक मतो के विचार अपनाए थे।

साराशत अरबो ने वैज्ञानिक क्षेत्र मे तीन सौ वर्ष (८वीं–११वीं शती) तक बहुत कार्य किया। दार्शनिक विचारो मे वे धार्मिक प्रतिबन्धो के कारण वैसी प्रगति न कर सके। आज यूरोप का जो वैज्ञानिक उपलब्धिया प्राप्त हुई हैं उनमे अरबो का महत्त्वपूर्ण योगदान है। सिकन्दरिया का विश्वविख्यात पुस्तकालय जो ईसा पूर्व ३०० वर्ष से ईसा पश्चात २००ई० तक समस्त पश्चिमी विद्वानो के ज्ञान का स्रोत रहा था जिसमे लाखों भारतीय पाण्डुलिपिया थीं। भारतीय वेदान्त और बौद्ध धर्म के उपदेशको की वहा अत्यन्त प्राचीन समय मे धूम थी। पत्तो के झुरमुट से छनकर आती हुई सूर्यकिरणो की तरह अब यह स्पष्ट हो गया है कि उदार खलीफाओ के शासन काल मे सस्कृत के सैकडो ग्रन्थो के अनुवाद निरन्तर होते रहे तथा अरबों द्वारा स्पेन विजय के साथ ही यूरोप पहुचे।

कहा जाता है कि पश्चिमी जगत को अरबो की तीन महान देन हैं – अकविद्या अरस्तु और कागज। इनमे प्रथम भारतीय द्वितीय यूनानी और तृतीय चीनी है।

– रीडर एव अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राधेहरि राजकीय स्नातकोत्तर महा
काशीपुर (ऊधमसिंह नगर)

पृष्ठ ४ का शेष भाग

श्रीमती उज्ज्वला वर्मा (दिल्ली) ने कहा कि सस्कृति की स्त्रोत महिला ही ह। केसे हो नारी के गौरव की रक्षा विषय मे सुश्री पुष्पा शास्त्री (रेवाडी) का व्याख्यान जनता पर वहुत प्रभाव कारी रहा उन्होने ऐतिहासिक घटनाओ के आधार पर वीरतापूर्ण नारी की गौरव गाथा प्रस्तुत करके जनता मे उत्साह की लहर फेला दी। लोगो ने उनके व्याख्यान को बहुत सराहा। डा० ऊषा शास्त्री ने वडे सुन्दर रूप मे स्पष्ट किया कि महिला ही अपन घरा के आगन को भार्यो का आगन वना सकती ह

श्रीमती शिशरानी आर्या मुम्बइ श्रीमती अ श रानी कानपुर सुश्री वालादवी आचाय आदि न महिल सम्मेलन मे अपने विचार व्यक्त किए।

इस महिला सम्मेलन का सयोजन श्रीमती शशि प्रभा आर्या (दिल्ली) ने किया।

सायकाल मे आर्य युवा सम्मेलन हुआ जिसके अध्यक्ष डॉ० सत्यपाल सिह (डी आई जी) एव विशेष अतिथि श्री रामरिछपाल अग्रवाल (सुप्रसिद्ध उद्योगपति मुम्बई) और संयोजक श्री वाचोनिधि आर्य (गाधीधाम) थे। युवा सम्मेलन अपने आप मे बहुत ही सराहनीय रहा सुश्री माधवी रामटीन (मॉरीशस) ने युवा और विवाह के विषय को लेकर आधुनिकता और प्रचीनता का समन्वय करते हुए वहुत ही साहसिक ढग से युवा सम्प्रदाय क सम्बोधित किया। मॉरिशस से डॉ० उदयनारायण गगू मन्त्री आर्य सभा मॉरिशस) डॉ० वागीस शमा गुरुकुल एटा) श्री जितेन्द्र चिकारा (मुम्बइ आचार्य दवव्रत जी सचालक सार्वदेशिक आय वीर दल दिल्ली श्री गिरीश खोसला मन्त्री आय प्रतिनिधि सभा अमरिका व्र० राजसिह आय दिल्ली आदि वक्ताआ आय युव सम्मलन म युवाआ क लिए प्ररणाप्रद विचार व्यक्त किए।

सामवार दिनाक २६ माच २००१ का दिन सम्मेलन का बहुत ही महत्वपूर्ण दिन था। अन्तर्राष्ट्रीय आय महासम्मेलन के शुभ अवसर पर इस वर्ष वेदोपदेशक पुरस्कार से श्री शिशुपाल जी रामभरोस (सरक्षक आर्य प्रतिनिधि सभा द०अफ्रीका डरबन) को १५००१/ का ड्राफ्ट प० रामनारायण शास्त्री (पटना बिहार की स्मृति मे स्वर्ण ट्राफी शाल श्रीफल व मोतियो की माला से सम्मानित किया गया। अपने सम्मान के उपरान्त श्री रामभरोस जी ने वेदो के स्वाध्याय पर बल देने का अहान श्रोताओ से किया। उन्होने बताया कि आज विदेशो मे वज्ञानिक वदो पर खोज कर रहे है। वेदो की महत्ता सारा विश्व मान रहा है। साथ ही आज आवश्यकता हे कि हमे अपनी सस्कति का सुरक्षित रखे। इस समारोह मे श्री टी एन चतुर्वेदी (आइ ए एस) राज्य सभा सदस्य तथा श्री रामचन्द्र वीरप्पा लाकसभा सदस्य विशेष अतिथि के रूप म उपस्थित थ

आय महासम्मलन क अवसर पर वादेक विहार की स्थापना की याजना के सम्वन्ध म ड० स्वामी सत्यम जी आर क० दवरत्न आय न सारी याजना का विस्तार रूप मे उल्लेख किया। स्वामी सत्यम जी न कहा कि यहा से लगभग ७० किमी० दूरी पर वाडा तहसील मे आर्य महासम्मेलन के सयोजक नेता कै० देवरत्न आय ओर उनके पुत्र श्री आशीष आर्य व अश्विनी आय ने १४ एकड भूमि का दान इस योजना क लिए दिया है जा वतरणा नदी क किनार बनने वाला है। इस योजना मे एक 'अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक अनुसधान केन्द्र की स्थापना की जा रही है जिसमे विभिन्न विदेशी भाषाओ के विद्वान तैयार कर उन्हे भारत के बाहर वदिक सस्कति के प्रचार हेतु भेजा जाता रहेगा। इस केन्द्र मे वृद्धाश्रम चिकित्सालय आर्ष गुरुकुल विद्यालय इत्यादि सामाजिक उन्नति क सभी अगो का समावश होगा। क० देवरत्न आर्य ने कहा कि इसमे आय विद्वान और सन्यासियो के रहने का भी बहुत अच्छा प्रबन्ध होगा जहा पर उनकी वृद्धावस्था मे सवा ओर दख रख का प्रवन्ध हागा उन्होन वताया कि काशिश की जा रही ह अगले वर्ष तक अनुसधान कन्द्र बनकर तयार हा जाएगा आर मारिशस के महान आयनेता रत्न श्री माहनलाल मोहित जी की सौवीं वषगाठ के अवसर पर इसका उदघाटन होगा। श्री जयन्त टिपणीस आर्कटेक्ट मुम्बई ने इस योजना के प्रारूप का अनावरण किया और कहा कि म नि स्वार्थ भाव से इस कार्य को करुगा

समापन के रूप मे सम्मलन क अधिकारिया न अपना सन्देश उपस्थित जनता को दिया।

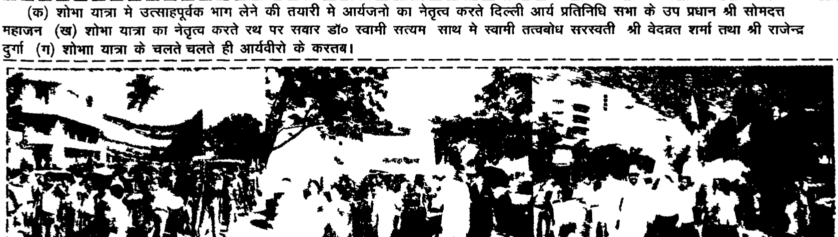
शेष भाग पृष्ठ १० पर



(क) सार्वदेशिक साप्ताहिक के स्थापना दिवस विशेषाक का विमोचन करते हुए डा० स्वामी सत्यम के साथ सम्पादक श्री वेदव्रत शर्मा तथा सह सम्पादक श्री विमल वधावन (ख) मुम्वई के उपमहापोर श्री अरुण देव जी को स्मृति चिन्ह भेट करते हुए डा० सुखदेव चन्द सोनी (ग) महासम्मलन के सयोजक केप्टन देवरत्न आय के साथ पूव कपिमन्त्री श्री सोमपाल रामनाथ सहगल तथा लोकसभा सदस्य श्री रासासिह रावत।



(क) शोभा यात्रा मे उत्साहपूर्वक भाग लेने की तयारी मे आर्यजनो का नेतृत्व करते दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री सोमदत्त महाजन (ख) शोभा यात्रा का नेतृत्व करते रथ पर सवार डॉ० स्वामी सत्यम साथ मे स्वामी तत्वबोध सरस्वती श्री वेदव्रत शर्मा तथा श्री राजेन्द्र दुर्गा (ग) शोभा यात्रा के चलते चलते ही आर्यवीरो के करतब।



(क) मुम्बइ क आयवीरा की टोली बड क साथ (ख) बिहार क प्रतिनिधि (ग) घोडो पर सवार आर्य नेता।



(क) एक अन्य रथ पर शोभायात्रा को उत्साहित करते हुए आचार्य नरेश (ख) नेपाल के विराट नगर से पधारे प्रतिनिधि (ग) आदिवासी वैचारिक क्रान्ति का प्रदर्शन करते आदिवासी आर्यजन दयानन्द सेवाश्रम सघ के तत्वावधान मे।

पृष्ठ ६ का शेष भाग

इसी सिलसिले मे स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने कहा कि हम हरियाणा मे शीघ्र ही बहुत बडा आय महासम्मेलन करेगे और उन्होने जनता से अपील की कि ऐसे आर्य महारम्मेलन भारत मे स्थान स्थान ार हात रहने चाहिए जिससे समाज मे गति और स्फूर्ति बनी रहेगी।

इस सम्मेलन मे दो बाते और महत्वपूर्ण रही राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ प्रतिदिन प्रात ७ ३० से ६ ०० तक होता था यह यज्ञ ३२ हवन कुण्डो मे हुआ जिसमे १२५ यजमानो ने प्रतिदिन आहुतिया दी। इस यज्ञ म लगभग २००० व्यक्ति उपस्थित होत थे ओर बडे प्रेम व श्रद्धा से वेद मन्त्रो क पाठ करत थ।

इस महायज्ञ म सुप्रसिद्ध फिल्मी कलाकार श्री सुरेश आ नय आर श्री अलाकनाथ जी ने यजमान के रूप मे आकर आहुतिया दी ओर संगीत निर्देशक आनन्द मिलिन्द का परिवार भी इस यज्ञ मे सम्मिलित हुआ। यज्ञ मे लोगो की उपस्थिति प्रेम और श्रद्धा को देखकर लगभग सारी जनता चकित रह गई। दूसरी बात थी शोभायात्रा जिसमे हजारो की सख्या मेआर्य सज्जन देविया युवा और बच्चो ने भाग लिया। यह शोभा यात्रा इतनी बडी थी कि लगभग सारी जनता ही ५किमी मे फैल गई इस यात्रा मे मुम्बई की पुलिस सुरक्षा का बहुत अच्छा प्रबन्ध था। और जनता बडे उत्साह और उमग के साथ भजन गाते हुए ठीक सायकाल ६ ०० बजे मुख्य पण्डाल बान्द्रा रिक्लेमेशन मैदान मे पहुच गई इस शोभा यात्रा का मुम्बई की जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पडा।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्री कृपा शकर सिह जी (गृहराज्य मन्त्री महाराष्ट्र राज्य) ने अपने वक्तव्य मे कहा कि ५ एकड जमीन एक फ्लाई ओवर कानाम दयानन्द उड्डाण पुल व चर्नी रोड रेलवे स्टेशन का नाम दयानन्द नगर रखने का सरकार की ओर आश्वासन दिया।

सरकार की ओर से प्राप्त होने वाली भूमि पर आर्य समाज द्वारा मानव निर्माण एव भारतीय सस्कृति उत्थान के लिए अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र की स्थापना की जाएगी। आज मानव समाज मे अनेको प्रकार के अन्धविश्वास कुरीतिया भेदभाव जातिप्रथा बलिप्रथा आदि से अविद्या अधकार अज्ञान अभाव एव सर्वत्र भय व्याप्त है उक्त मानव निमार्ण केन्द्र से इनके उन्मूलन का प्रयास किया जाएगा। समारोह म विशेष अतिथि के रूप मे श्री अरूणदेव (उप महापार नगर पालिका मुम्बइ) उपस्थित थ

आय सम्मेलन मे अनको कार्यो का सुचारु रूप से चलाने के लिए समितिया बनाई गई थी जिसमे सर्वश्री लद्धाभाई पटेल महेश वेलानी दिलीप वेलाणी प्रभूभाई वेलाणी पुरुषोत्तम वेलाणी ने पण्डाल और भोजन लालचद आर्य विजय आर्य ने आवास व्यवस्था आचार्य सोमदेव जी शास्त्री स्मारिक सम्पादक श्री विश्वभूषण आर्य श्री हरीश आर्य श्री अरुण कुमार अब्रोल ने यज्ञ श्री सगीत शर्मा श्री यशप्रिय आय श्री मदन रहजा श्री जितेन्द्र चिकार ने शोभा यात्रा श्री ओकारनाथ आर्य (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई) श्रीमती शिवराजवती आर्या ने धन सग्रह सार्वदेशिक आर्यवीर दल के आर्यवीरो ने परिवहन का कार्य श्री राजकुमार गुप्ता डा० तुलसीराम बागिया श्री ओ३म गुलाटी श्री जिल सिह न परिवहन व्यवस्था श्री सदीप आय ने जल व्यवस्था श्री ललित मोहन साहनी बिजली व माइक व्यवस्था श्री सतीशचन्द्र गुप्ता श्री आशीष आय व श्री अश्विनी आर्य ने मच व्यवस्था श्री राकेश नागिया श्री भरविन्द मल्होत्रा श्री आर के सहगल ने आय विद्या मन्दिर मै आवास व्यवस्था आचार्य उमेश प० प्रभारजन पाठक प० नामदेव आर्य प० विनोद शास्त्री प० नरेन्द्र शास्त्री प० श्याम अधिकारी श्री बबन गडदे एव सुश्री सविता चन्द्रमोर ने कार्यालय व्यवस्था को बडे की सक्रिय व सुचारू रूप से सम्भाला।

आर्य महासम्मेलन को नई दिशा प्रदान करने के लिए कार्यक्रम से तीन माह पूर्व डा० स्वामी सत्यम जी (अमेरिका) से मुम्बई भारत मे पहुचे और इस सम्मेलन का सफल बनाने की सारी जिम्मेवारी स्वामी जी ने अपने कन्धो पर ली। दिन रात एक करके सम्मेलन की पूर्व तैयारी मे लगे अपने स्वय के कम्प्यूटर से आवश्यक पत्र व्यवहार भी उन्होने किया। आपकी ही प्रेरणा से मारिशस द० अफ्रीका अमेरिका आदि देशो के प्रतिनिधियो ने सम्मलने मे भाग लिया इस अवसर पर आय निर्माण गारव गाथा नामक पुरतक के प्रधान सम्पादक के पद का भी भार आपने सम्भाला उस गौरव गाथा का विमोचन आय महासम्मेलन मे किया गया।

राष्ट्रभृत महायज्ञ मे ब्रह्मत्व के पद को आपने सुशोभित किया यज्ञ मे हजारो श्रद्धालुओ ने भाग लिया। उपहार स्वरूप यजमानो को यजमान ट्राफी भेट की जिसकी लोगो ने भूरि भूरि प्रशसा की। यज्ञ का अनोखा कार्यक्रम बहुत ही सुन्दर रूप से सम्पन्न हुआ।

अन्तर्राट्रीय आर्य महासम्मेलन की स्मृति बनाए रखने के लिए स्मृति चिन्ह के रूप मे आर्यसमाज स्थापना की १२५ वी जयन्ती समापन समारोह के उपलक्ष्य मे एक बहुत ही सुन्दर लोगो का चित्र जिसे सार्वदशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने बनवाया था उसी लागा का यजमानो का यजमान ट्राफी एव बैचस और स्टीकर बनवाए गए थे जिस सभी आय जनता ने पसन्द किया व स्मृति के रूप मे अपने साथ ले गए

स्वामी सकल्पानन्द जी सरस्वती (उदयपुर) दो माह पूव मुम्बई मे पधारे। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए उन्होने अत्याधिक परिश्रम किया। मुख्य रूप से जनमानस तक इस कार्यक्रम की रूप रेखा पहुचाने का प्रयास किया एक माह स्वामी जी ने महासम्मेलन के प्रचार प्रसार व धन सग्रह करने के लिए महाराष्ट्र प्रान्त मे हरेक गाव मे जाकर प्रचार कार्य किया और लगभग ५ लाख रूपये दान एकत्रित किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने देश विदेश से आए हुए सभी महानुभावो का धन्यवाद करते हुए कहा कि इस सम्मेलन को सफल बनाने मे आप सभी का तन मन धन से सहयोग प्राप्त है। विकट परिस्थिति मे भी आप सभी ने अपन आयत्व का परिचय दिया और इस सम्मलन को सफल बनाकर एक नइ दिशा पदान की सम्मेलन मे पधारे सभी सन्यासी गण विद्वतगण व अन्य आ कायकर्त्ताओ । उपस्थित सभी अन्य जनता का हृदय स आभार व्यक्त किया। आर्य समाज सान्ताक्रज के उपप्रधान श्री विश्वभूषण आर्य ने सगठन सूक्त शान्ति गीत का सामूहिक गायन कर शान्ति पाठ किया।

शाखा कार्यालय – 63, गली राजा केदार नाथ चावड़ी बाजार, दिल्ली – 6, फोन : 3261871

आर्यसमाज और राजनीति ?

डॉ० एम० एस० निम्बालकर वशिष्ठ

प्रस्तुत लेख मे व्यक्त विचार लेखक के व्यक्तिगत विचार है। इन्हे सम्बन्धित विषय पर चर्चा का एक पक्ष ही समझा जाए।

– सम्पादक

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सामाजिक सुधार के एक निष्णात डॉक्टर थे। उन्होने भारत के सामाजिक रोगो का अचूक निदान किया और अचूक दवाई सजीवनी बूटी बनाकर उसके प्रयोग का उत्तराधिकारी आर्यसमाज को बना दिया।

ऋषि ने अपना सम्पूर्ण जीवन भारत के राजा महाराजाओ को सुधारने के राजनैतिक प्रयास मे व वैदिक धर्म के प्रचार मे लगाकर यह सिद्ध किया कि राजाश्रय के बिना धर्म प्रचार असम्भव है। लेकिन आर्यसमाज के सर्वोच्च्य नेताओ ने निज स्वार्थ सिद्धि हेतु आर्यसमाज राजनीति मे भाग न लेने का प्रस्ताव पारित किया व खण्डन–मण्डन शास्त्रार्थ प्रथा को धर्मनिरर्पेक्ष कानून क तहत बद कर दिया। जिसके फलस्वरूप आर्यसमाज म नायुवका का प्रवेश मार्ग अवरुद्ध हा गया हे। आर पाकिस्तान की पुनरावृत्ति भारत मे होने की आशका बढ गई है। जबकि ब्रिटिशो की हुकुमत मे व मुस्लिम तानाशाही साम्राज्य मे आर्यसमाज को राजनीति मे भाग लेने व शास्त्रार्थ खण्डन–मण्डन प्रथा तथा शुद्धि आन्दोलन पर कोई पाबन्दी नही लगा सके।

धर्म निरर्पेक्ष कानून के तहत मुसलमान व इसाई धर्मान्तरण द्वारा हिन्दुओ की सख्या कम कर सकते है तो आयसमाज के राजनीति मे भाग लेने खण्डन मण्डन शास्त्रार्थ प्रथा व शुद्धि आन्दोलन पर वर्त्तमान सरकार पाबन्दी कैसे लगा सकती है ?

न्याय दर्शन के अनुसार पाप करने वाला तो पापी कहलाता है पर उस पाप को सहन करने वाला महापापी कहलाता है तदनुसार आज के राजनेता तो पापी है ही किन्तु उस पाप को सहन करने वाले आर्यसमाज के नेता महापापी है। क्योकि आर्यसमाज राष्ट्र का प्रहरी है और वेदो व भारतीय सस्कृति का रक्षक है।

महर्षि दयानन्द जी को हजारो प्रलोभन दिए गए हजारो सकटो का सामना करना पडा तथा कई बार प्राणाघातक विषपान करना पडा लेकिन किसी भी शर्त पर स्वामी जी ने आर्यसमाज के वैदिक सिद्धान्तो का समझौता नहीं किया लेकिन खेद है कि उनके अनुयायी आर्यसमाज के सिद्धान्तो पर समझौता वादी बनते जा रहे है इसे भारत की व आर्यसमाज की विडम्बना ही कहना चाहिए। अत इस उपरोक्त विषय पर आर्यसमाज क विद्वाना सन्यासिया वानप्रस्थिया शास्त्राथ महारथियो तर्क शिरोमणियो आदि को मिलकर विचारना चाहिए क्योकि ये ही लोग महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज के बपौती है।

जो यह कहते है कि आर्यसमाज राजनीति मे भाग न ले तो ये बताए कि ऋषि ने अपने जीवन के प्रत्यक्ष कृतियो द्वारा व सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास मे आर्यो को चक्रवर्ति राज्य स्थापनार्थ लिखित आदेश दिया क्या ये गलत किया ?

ऋषि ने १८५७ स्वातन्त्र युद्ध का ५ वर्ष गुप्त रहकर जो सचालन किया क्या ये गलत किया ?

स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु जो ८० प्रतिशत आर्यो ने राजनीति मे भाग लेकर भारत को गुलामी की बेडियो से मुक्त किया क्या यह कदम त्रुटिपूर्ण था ?

ससद भवन के प्रथम अधिवेशन मे ८० प्रतिशत आर्य सासदो के कारण ही छुआछूत विरोधी बाल विवाह विरोधी विधवा विवाह शारदा एक्ट अन्तर्जातीय विवाह तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी आदि के कानून बने क्या यह राजनैतिक प्रवेश व प्रयास के बिना सम्भव था ?

गौ करुणानिधि पुस्तक लिख गोवध बन्दी हेतु लाखो हस्ताक्षर करवाकर महारानी विक्टोरिया के पास लन्दन भेजा क्या यह ऋषि का प्रयास असराहनीय था ?

अजमेर मे स्वामी जी ने पादरी राबिन्सन ग्रे और शुलब्रेड के साथ शास्त्रार्थ किया तो पराजय के पश्चात पादरी ने कहा कि 'ऐसी बातो से कभी आप कारावास मे चले जाएगे तो स्वामी जी ने गम्भीरता से कहा कि 'सत्य की खातिर कारावास कोई लज्जाजनक बात नहीं। प्रतिपक्षी कष्ट देगे तो कवट सहते हुए मेरे चित्त मे शोक व भय कदापि न होगा और प्रतिपक्षियो का अकल्याण कभी न चाहूगा। क्या यह खण्डन मण्डन शास्त्रार्थ अनुचित था ?

ऋषि दयानन्द ने जो सत्यार्थ प्रकाश के ११ वे समुल्लास मे जो मूर्तिपूजा का खण्डन व १२ वे समुल्लास मे जैन मत का खण्डन एव १३ वे समुल्लास मे ईसाई मत का खण्डन १४ वे समुल्लास मे मुस्लिम मत खण्डन और मृत्युपर्यन्त शास्त्रार्थ प्रथा द्वारा काशी के दिग्गजो को हराकर गगा मे मूर्तियो का प्रवाहित करवाया क्या यह सब अनुचित था ?

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने ऋषि सिद्धान्तानुसार लाखो मुसलमानो को शुद्ध कर हिन्दू धर्म मे सम्मिलित किया क्या य शुद्धि आन्दोलन गलत था ?

यदि हम ऋषि के सम्पूर्ण जीवन का अवलोकन करे तो हमे ज्ञात होगा कि उनका सम्पूर्ण जीवन शास्त्रार्थ खण्डन–मण्डन मे व्यतीत हुआ और इसी शास्त्रार्थ रूपी अमोध ब्रह्मस्त्र व राजनैतिक प्रयास के कारण ही आज पूरे विश्व मे आर्यसमाज का वटवृक्ष फैला हुआ है।

आज आर्यसमाज के कार्यकत्ताओ की सन्तान आर्यसमाज के सत्सगो मे आना दकियानुसी ख्याल समझते हैं कितने आर्यसमाज के नेताओ व अधिकारियो की सन्तान गुरुकुलो मे पढ–पढा रहे है ? तनिक सोचे और अपने अन्त करण से पूछे ? सब काले अग्रेज बनने की होड मे लगे हुए है। और भारतीय सस्कृति समाप्त कर रहे है जब सस्कृत ही भारत से समाप्त हो जाएगी तब भारतीय सस्कृति समाप्त हो जाएगी और जब भारदीय सस्कृति समाप्त हो जाएगी तो अपने आप भारतीयता समाप्त हो जाएगी। जब भारतीयता समाप्त हो जाएगी तो हिन्दुत्व आर्यत्व समाप्त हा जाएगा तब आर्यसमाज कैसे बच पाएगा ?

आर्यसमाज मे पुनर्जागृति लाने हेतु सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लस अनुसार आर्यसमाज के उच्चाधिकारी उपरोक्त – आर्यसमाज राजनीति मे भाग न ले व खण्डन मण्डन शास्त्रार्थ प्रथा बद व आरक्षण आदि प्रस्ताव को रदद कर पुरे जोर–शोर से आजादी पूर्वानुसार राजनीति मे भाग लेकर डके की चोट से खण्डन–मण्डन शास्त्रार्थ प्रथा सभाओ का खुले आम आयोजन प्रारम्भ कर नवयुवको का आर्यसमाज मे प्रवेश का मार्ग प्रशस्त कर भारत मे आर्यो के चक्रवर्ती राज्य की स्थापना करे इससे बढकर महर्षि दयानन्द के प्रति और क्या श्रद्धान्जली हो सकती है।

सन १६६० मे स्व० डॉ० प्रशान्त कुमार वेदालकार ने बुद्धिजीवी आर्यसमाज व राजनीति आर्यसम्मेलन का आयोजन हसराज कालेज मे किया था जिसमे आर्य जगत के विद्वानो ने अन्त मे यह निर्णय लिया कि आर्यसमाज को राजनीति मे भाग लेना चाहिए जिसके अध्यक्ष स्व० आनन्द बोध सरस्वती जी थे।

अत ५४ वर्षों से सोने वाले आर्यवीरो अब तो जागो और आर्यसमाज राजनीति मे भाग लेने हेतु प्रस्ताव पारित कर सार्वदेशिक सभा तथा प्रान्तीय सभाओ को भेजकर ऋषि आदेश का पालन कर अपना कर्त्तव्य निभाए।

– शकर मार्किट शेरपुर चौक करावल नगर दिल्ली ११००६४

जो यह कहते है कि आर्यसमाज राजनीति मे भाग न ले तो ये बताए कि ऋषि ने अपने जीवन के प्रत्यक्ष कृतियो द्वारा व सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास मे आर्यो को चक्रवर्ति राज्य स्थापनार्थ लिखित आदेश दिया क्या ये गलत किया ?

ऋषि ने १८५७ स्वातन्त्र युद्ध का ५ वर्ष गुप्त रहकर जो सचालन किया क्या ये गलत किया ?

स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु जो ८० प्रतिशत आर्यो ने राजनीति मे भाग लेकर भारत को गुलामी की बेडियो से मुक्त किया, क्या यह कदम त्रुटिपूर्ण था ?

पोस्ट रजिस्ट्रेशन व ी0 एल0 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 8 4 2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न0 U(C) 93/200
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U(C) 93/2001 in NDPSo on 5-6/4/2001

ओ३म्

☎ : 3274771
: 3260985

प्रतिष्ठा में

10150 पुस्कालाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
जिला हरिद्वार

पीड़ितों की सेवा
हम सबका राष्ट्रीय कर्त्तव्य

गुजरात में विनाशकारी भूकम्प

भुज, कच्छ, गांधीधाम, अहमदाबाद क्षेत्र सर्वाधिक प्रभावित

पीड़ितों की सहायतार्थ अपील

तन-मन-धन से सहयोग दीजिए

सभा को दिया गया दान आयकर से मुक्त है

चैक/मनीआर्डर/ड्रॉफ्ट एवं सहायता सामग्री निम्न पते पर भेजें :-

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

3/5, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली - 2

फोन : 3274771, 3260985

निवेदक

स्वामी ओमानन्द सरस्वती, प्रधान **वेदव्रत शर्मा**, मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

3/5, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली - 2

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रकाशन लि० द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली-२ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२१६) से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली-२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१ ३२६०९८५)।
सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री ई मेल नम्बर vedicgod@vsnl net in तथा वेबसाईट http //www whereisgod com

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र



वर्ष ४० अंक २ १५ अप्रैल से २१ अप्रैल, २००१ तक दयानन्दाब्द १७८ . सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०१ सम्वत् २०५८ वै० कृ० ७
एक प्रति १ रुपया (भारत में) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

सभा प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती द्वारा गुजरात भूकम्प पीड़ितों के लिए अनुकरणीय राहत कार्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती गुरुकुल झज्जर, २६ जनवरी को प्रात महर्षि की जन्म भूमि गुजरात में आए भयंकर भूकम्प जी ने १० हजार रुपयों की नकद सहायता की।

स्वामी जी पीछे से गुरुकुल के आचार्य विजय पाल जी को २०-२५ ब्रह्मचारियों के साथ ट्रक में सामान लाने का निर्देश दे गए थे। स्वामी जी के निर्देशानुसार आचार्य विजयपाल जी गुरुकुल झज्जर के २५ ब्रह्मचारियों के साथ एक डेढ लाख रुपये के वस्त्र, अन्न, कपडे, बर्तन तथा अन्य खाने का सामान आदि लेकर गए। इस सामान को टंकारा के समीपस्थ किन्तु सड़क से दूर तीन गांवों में वितरित किया गया। यह सारा सामान गुरुकुल झज्जर के आचार्य, अध्यापक, कर्मचारी एव ब्रह्मचारियों द्वारा एकत्र किया गया था। शेष भाग पृष्ठ २ पर



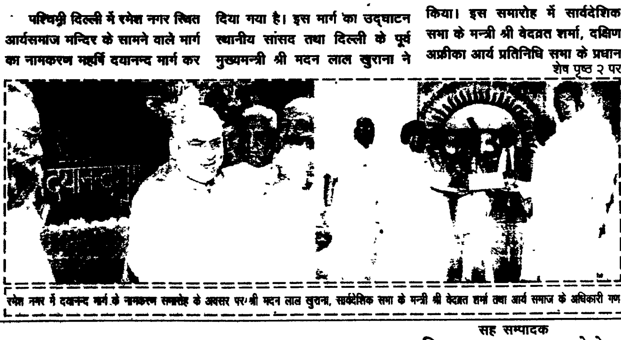
सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी ब्रह्मचारियों को भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिए प्रोत्साहित करते हुए। गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारी राहत सामग्री के साथ

की विनाशलीला का समाचार सुनते ही ३१ जनवरी को प्रातः गुरुकुल झज्जर के वेदपाल शास्त्री, सोमवीर तथा बलवान सिंह आदि पांच ब्रह्मचारियों को लेकर अविलम्ब गुजरात के लिए चल पड़े।

प्रथम चरण के रूप में स्वामी जी अपनी जीप में २५ हजार की आयुर्वेदिक औषधियां निःशुल्क बांटने हेतु साथ ले गए थे। गुरुकुल टंकारा में पहुंचने पर पता चला कि आस-पास के गांवों में जन-पशु हानि तो अधिक नहीं थी, किन्तु मकान पूर्णतः ध्वस्त हो चुके थे। टंकारा गुरुकुल, पीड़ितों की शरण स्थली बन गया था। वहां चल रहे ऋषि लंगर के लिए स्वामी

रमेश नगर में महर्षि दयानन्द मार्ग का नामकरण

पश्चिमी दिल्ली में रमेश नगर स्थित आर्यसमाज मन्दिर के सामने वाले मार्ग का नामकरण महर्षि दयानन्द मार्ग कर दिया गया है। इस मार्ग का उद्घाटन स्थानीय सांसद तथा दिल्ली के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री मदन लाल खुराना ने किया। इस समारोह में सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा, दक्षिण अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान शेष पृष्ठ २ पर



रमेश नगर में दयानन्द मार्ग के नामकरण समारोह के अवसर पर श्री मदन लाल खुराना, सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा आर्य समाज के अधिकारी गण

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

सह सम्पादक
विमल वधावन एडवोकेट

पृष्ठ १ का शेष भाग

रमेश नगर में महर्षि दयानन्द मार्ग का नामकरण

श्री शिशुपाल, रामभरोसे तथा हालैण्ड सभा के प्रधान डॉ० महेन्द्र स्वरूप, वैदिक लाइट के सम्पादक श्री विमल वधावन, स्थानीय पार्षद श्रीमती ऊषा मेहता तथा श्री हीरालाल चावला आदि उपस्थित थे।

नामकरण उद्घाटन समारोह से पूर्व आर्यसमाज मन्दिर के प्रांगण में विशाल यज्ञ सम्पन्न हुआ तथा बाद में एक जन सभा का आयोजन हुआ। जिसका सचालन आर्यसमाज मन्दिर के प्रधान तथा दिल्ली सभा के मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य तथा श्री भीमसेन गुलाटी ने किया।

श्री नरेन्द्र आर्य ने इस नामकरण प्रकरण के निर्धारण मे श्रीमती ऊषा मेहता के विशेष सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।

श्री मदन लाल खुराना ने कहा कि महापुरुषो के नाम पर विभिन्न मार्गो तथा अन्य भवनो, शहरो इत्यादि का नाम रखकर हम यह प्रयास करते है कि उन महापुरुषों का प्रभाव हमारे समाज में चिरकाल तक स्थापित रहे। स्थानीय पार्षद श्रीमती ऊषा मेहता ने कहा कि आर्यसमाज की विचारधारा अलौकिक है तथा समाज को एक सुव्यवस्थित जीने का मार्ग उपलब्ध कराती है। इसलिए समाज में प्रत्येक व्यक्ति को महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों का अनुकरण करना चाहिए।

इस अवसर पर दक्षिण अफ्रीका सभा के प्रधान श्री राम भरोस तथा हालैण्ड सभा के प्रधान डॉ० महेन्द्र स्वरूप जी का अभिनन्दन किया गया।

इन दोनों विशिष्ट अतिथियों का परिचय देते हुए श्री विमल वधावन ने कहा कि जब हमारे कार्यो का आधार धार्मिक और आध्यात्मिक होता है तो समाज में गलतियों की सम्भावना कम हो जाती है और दृष्टिकोण बडा व्यापक हो जाता हैं। इन दोनों आर्य महानुभावों का जीवन सच्चे मायने में ऋषि अनुगामी रहा है। श्री राम भरोस जी ने बाल्यकाल से आज ८४ वर्ष की अवस्था परोपकारी कार्यो मे ही व्यतीत की है।

डॉ० महेन्द्र स्वरूप जी ने राजाओं महाराजाओं को प्रेरित करने के महर्षि दयानन्द वाले दृष्टिकोण को अपना कर्त्तव्य मानते हुए समूचे विश्व के राजाओं महाराजाओं को प्रेरित करने के कार्य सम्पन्न किए हैं।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत जी ने इन दोनों महानुभावों को अभिनन्दन पत्र भेंट किया तथा दिल्ली के विभिन्न आर्या नेताओं ने पुष्प मालादि द्वारा दोनों आर्य नेताओं का हृदय से स्वागत किया। वैदिक विद्वान डॉ० महेश विद्यालंकार ने उपस्थित जन समुदाय को शुभ कार्यो की प्रेरणा देते हुए कहा कि आर्यसमाज के संगठन में कई दरारें नजर आ रही है अतः आर्य नेताओं को अपना कर्त्तव्य पालन बडी पवित्र बुद्धि से करना चाहिए।

दिल्ली सभा की मन्त्रिणी श्रीमती शशि प्रभा तथा श्रीमती विभा पुरी ने मनोहर भजन प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम के अनुसार प्रसाद रूप मे ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

पृष्ठ १ का शेष भाग

गुजरात भूकम्प पीड़ितों के लिए राहत कार्य

इन तीन गावो मे तब तक कोई सहायता नहीं पहुची थी। टकारा से स्वामी जी मौरवी एवं राजकोट आदि भी गए। भूकम्प में गुरुकुल टकारा की गोशाला तथा यज्ञशाला को भी क्षति पहुंची थी।

छह दिन के बाद भूकम्प पीडितों की आवश्यकता का पता लगा कर स्वामी जी को वापसी मे सैकडो ट्रक राहत सामग्री ले जाते हुए मार्ग में मिले। स्वामी जी ने पुनः आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, आर्यसमाज नरेला, रोहणा, सुधीर शास्त्री, तथा प्रि० लाभसिंह पानीपत, गांव दूबल धन आदि की सहायता से तीस हजार का सामान, दाल, चावल, अचार, सिले हुए कपडे आदि तथा इनके अतिरिक्त लगभग तीन लाख का समान न दिनांक १८-३-२००१ को कैप्टन जसवन्त सिंह, वेदपाल शास्त्री, सत्यवीर शास्त्री, सोमवीर शास्त्री, अशोक शास्त्री तथा अन्य ८ ब्रह्मचारियों के साथ निम्नलिखित सामान लेकर एक ट्रक अपनी जीप गाडी के साथ पुनः गुजरात भेजा।

ट्रक की व्यवस्था जिला प्रशासन की ओर से की गई।

१ कम्बल ४००
२ दरिया २००
३ लोई १५०
४ लेडीज शाल १००
५ खेस सूती - २००
६ टन्ट २७
७ देशी घी २ पीपे
८ हवन सामग्री ३ क्विटल यज्ञ हेतु
६ सिले हुए कपडे
१० बर्तनो के सैट
११ ६० मन गेहूं चावल, दाल आदि
१२ सत्यार्थ प्रकाश ५०, श्रीमद्दयानन्द प्रकाश, ५० पुस्तके भी वहा भेजी।

प्रो० शेरसिह जी के गांव बाघपुर, से भी अन्न, धन एवं वस्त्रों की सहायता प्राप्त हुई। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने भी इस अभियान में लगभग एक लाख रुपये का योगदान दिया।

गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों ने सहायता सामान वितरण के लिए गुरुकुल टंकारा से अध्यापक रामदेव जी शास्त्री तथा चार ब्रह्मचारियों को अपने साथ लिया। टंकारा में ही आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब उपप्रधान श्री ऋषिपाल सिंह एडवोकेट तथा श्री कर्तार नाथ जी भी आ मिले। सभी लोगों ने एकत्र होकर मौरवी तालुका के दूर दराज के तीन गांवो नारायणका, २ मानसर, ३ खेवारिया आदि में सहायता सामग्री का वितरण किया।

गावो मे जाने से पता चला कि वहा लोगो को अब कपडे, अन्न तथा अन्य सामान आदि की अपेक्षा भवन निमाण सामग्री की अधिक आवश्यकता ह, जेसे सीमेन्ट, लोहा, ईट, बजरी आदि। इस प्रकार दूसरे चरण की सहायता सामग्री का वितरण करके दल के सभी सहयोगी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मे भाग लेने के लिए मुम्बई पहुंचे।

गुजरात भूकम्प की इस भयंकर त्रासदी मे हरयाणा की समस्त आर्यसमाजो जिला वेद प्रचार मण्डलो एव केन्द्रीय सभाओ ने अपने स्तर पर लाखों रुपये की सहायता भूकम्प पीडितों के लिए गुजरात भेजी। जिन में प्रमुख है -

१. आर्य केन्द्रीय सभा भिवानी
- २० हजार नकद तथा
- १.८५ लाख का सामान

२. आर्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र
- एक दिन का वेतन तथा
- १० अनाथों को गोद लेगें

३. आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद
- ३.५० लाख का सामान

४. केन्द्रीय सभा हिसार
- १.२५ लाख का सामान

५ केन्द्रीय सभा पानीपत
- ६ ट्रक सामान, आर्य शिक्षण संस्थाओं द्वारा एक लाख रुपये
१ लाख ३ रुपये

६ आर्य केन्द्रीय सभा गुडगाव
एक ट्रक भोजन सामग्री

७ आर्यसमाज भीम नगर
- एक ट्रक राहत सामग्री
चीनी, चाय, बर्तन, चावल, गुड, देशी घी के टीन, सब्जी, कपडे, ५० टैण्ट, १५० बल्लियां, रस्से किल्ले, चावल, दाल आदि।

८. आर्यसमाज कोर्ट रोड, सिरसा
- ७३ हजार नकद

इसी प्रकार अम्बाला, यमुनानगर चरखी दादरी, नारनौल तथा जीन्द आदि से सीधें लाखों रुपयो का सामान भेजा गया। इसके अतिरिक्त, जिलों की स्थानीय आर्यसमाजों ने जिला उपायुक्त जिला रेडक्रास, मुख्यमन्त्री सहायता कोष एवं प्रधानमन्त्री सहायाता कोष के माध्यम से लाखों रुपये नकद एवं लाखों का सामान सहायता के रूप में प्रदान किया। इसके लिए हरयाणा की आर्य जनता बधाई की पात्र है। हरयाणा प्रान्त में जिला झज्जर सहायता कार्य में अग्रणी है।

सारा देश भूकम्प पीडितों की सहायता के लिए जिस प्रकार एक साथ खडा हुआ है उसके लिए भारत की जनता बधाई की पात्र है। प्राकृतिक विपदाओं को रोकना तो मानव के वश में नहीं है किन्तु विपत्ति ग्रस्त लोगों की सहायता में एक जुटता व तत्परता दिखलाना देश के लिए एक शुभ लक्षण है।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास,
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा

मनुष्य ही एक धार्मिक पशु है



मनुष्य और पशु योनि मे कई बार चर्चा होती है तो कोई कहता है मनुष्य योनि अन्तिम योनि है कोई कहता है मनुष्य ज्ञान प्राप्त करने की योनि है। मानव जीवन कर्म योनि है जबकि पशु योनि भोग योनि है।

वैसे पाश्चात्य दार्शनिक भी इस मत से सहमत हैं कि मनुष्य भी एक पशु समान ही है परन्तु इसमें दार्शनिक एव धार्मिक बातों को जानने व समझने की योग्यता अन्य पशुओं की अपेक्षाकृत अधिक है।

पशुओ के बारे मे जहा तक मैने देखा सुना व पढा है अब मुझे विश्वास होता जा रहा है कि पशुओं मे भी जानने और समझने की योग्यता किसी आश्चर्य से कम नहीं।

बेशक सामान्यत पशु मनुष्य की बराबरी नहीं कर सकते परन्तु जैसे हमे अपने उत्थान के लिए सदैव अपने से बडे और उन्नत व्यक्तियो के जीवन को आदर्श बनाना पडता है वैसे ही कुछ पशु ऐसे भी हुए और होते है जो प्रतिभा ओर प्रशिक्षण मे मनुष्यो को भी पीछे छोड जाते है।

बल मे अधिकतर पशु मनुष्य से ऊपर है। क्या मनुष्य ने आज तक बिना हथियारो या अन्य सहायक सामग्री के किसी पशु को वश मे किया है?

कई कलाओ मे तो पशुओ ने मनुष्य को भी पीछे छोड दिया। यहा मनुष्य कला में प्रवीणता हासिल करता है सामान्यत प्रशिक्षण के आधार पर। अपवाद रूप मे कुछ मानव बाल्य अवस्था में ही किसी एक या अन्य कला मे दक्षता प्रदर्शित करते है। परन्तु पशुओ में अपनी अपनी कोई न कोई कला ऐसी अवश्य है जो उन्हे पैतृक लक्षण के रूप मे मिलती है जैसे बिल्ली का कूदना बन्दर का जिमनास्टिक मछली का तैरना आदि।

मनुष्य अपने ज्ञान विज्ञान और तरह तरह के विचारो के बल पर पशुओ के लिए उत्पात मचाने लगता है तो पशु अपनी इन्हीं स्वाभाविक कलाओ के बल पर अपनी रक्षा करते हैं। कोई कोई पशु क्रोध मे अथवा आत्मरक्षा मे शिकारियो को मार देते है। इस घातक कार्यो को करते करते मनुष्य के प्रति उनकी प्रवृत्ति हिसक हो जाती है ओर एक समय आता हे जब वह पशु मनुष्य को देखते ही उसे खाने को पडता है। इसके विपरीत मनुष्य जब मन से प्रेम प्रदर्शित करता है तो क्या हम शेर को पालतू बना नहीं देखते। इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि प्रेम एव प्रशिक्षण से सस्कार और पैतृक प्रवृत्तिया भी बदली जा सकती है इसके लिए मनुष्यो को पहले अपनी हिंसक और क्रोधी प्रवृत्ति बदलनी होगी।

मनुष्य आज भी पशुओ को मारकर खा रहा है। क्या इससे बढकर बुरी और जगली पन की काई बात हो सकती है। ऐसी अवस्था मे हम अपने को पशुओ से अधिक उन्नत कैसे समझ सकते है।

पशुओ के खान पान की तरफ भी जब हम देखते है तो अधिकतर यही सामने आता है कि पशु चीनी नमक बहुत गर्म या बहुत ठण्डा नहीं खाते। कितना प्राकृतिक सा खान पान लगता है सामान्यत पशुओ में नींद भी बहुत कम होती है। मैं समझता हू कि खान पान की इसी आदत के कारण ऐसा है।

पशुओ के शरीर मे मानव निर्मित कैमिकल्स दवाईया आदि बहुत कम या न के बराबर ही पहुचती है जबकि हम मनुष्य सुबह से शाम तक तरह तरह की दवाईया मशीनी तथा पका पकाकर मसाले मिले खाद्य पदार्थ अपने शरीरो मे नि सकोच डालते जाते है। कभी कभी तो मनुष्य की पशुओ से श्रेष्ठता एक छलावा सा लगती है। परन्तु जब चिन्तन उस महान धार्मिक आध्यात्मिक पवित्र त्यागी तपस्वी साधुओ सन्तो महात्माओ ऋषियो मुनियो और महर्षियो की ओर जाता है जिन्होने अपने सात्विक शरीर से महान धार्मिक एव परोपकारी कार्य सम्पन्न किए केवल वही मानव सच्चे एव श्रेष्ठ मानव लगते हैं।

वैद्य धन्वन्तरि का एक श्लोक पढ कर भी यही दर्शन प्राप्त होता है

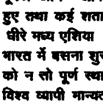
यथा खरश्चन्दन भारवाही भारस्य वेत्ता न तु चन्दनस्य एव हि शास्त्राणि बहून्यधीत्य चार्येषु मूढा खर वद्वहन्ति।

जैसे गधे पर चन्दन लादने से वह केवल भार को ही जानता है चन्दन को नहीं ऐसी अवस्था ही उस मनुष्य की है जो पुस्तके तो बहुत पढ लेता है परन्तु उसके अनुसार आचरण कुछ भी नहीं करता।"

इन विचारो के बाद एक तथ्य और सिद्धान्त पूरी तरह से स्पष्ट हो जाता है कि केवल धर्म की एक ऐसा सिद्धान्त है जो मनुष्यो मे अधिक हो सकता है जिस मनुष्य मे धर्म नहीं वह पशु समान है। अत जहा पाश्चात्य विचारको ने कहा मनुष्य भी एक सामाजिक पशु है वदिक विचारधारा इसे और स्पष्ट करती हे कि मनुष्य ही एक धार्मिक पशु है।

वेदव्रत शर्मा

समूचा विश्वमानव आदिकालीन आर्यों की सन्तति है



आर्यों के विश्व भूमण्डल पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर आवागमन को लेकर दो प्रकार के मत चले।

पाश्चात्य विद्वानो ने इस बात को इतिहास रूप में लागू करने का प्रयास किया कि वर्तमान हिन्दू समाज के पूर्वज आर्य आर्कटिक क्षेत्र मे पैदा हुए तथा कई शताब्दियो के बाद धीरे धीरे मध्य एशिया अफगानिस्तान तथा भारत में बसना शुरू हो गए। इस मत को न तो पूर्ण स्थायित्व प्राप्त हुआ न विश्व व्यापी मान्यता और न ही कोई समर्थक तथ्य और न खोज से प्राप्त सामग्री आदि। बल्कि इस मत को सफलता पूर्वक चुनौती देती वास्तविक सच्ची मान्यताए प्रस्तुत की गई।

उन वास्तविक तथ्यों एव मान्यताओं के अनुसार आर्य अर्थात श्रेष्ठ पुरुष एक गुणवाचक विशेषण है। सृष्टि के प्रारम्भ में मनुष्य एक श्रेष्ठ प्राणी था। जैसे बच्चा जन्म के समय कितना निष्पाप निष्कलक साफ मन और कोमल बुद्धि वाला होता है ठीक उसी प्रकार। सृष्टी में मानव की प्रथम उत्पत्ति वेद की इस धरती पर ही हुई। अत वह मानव ही सच्चा मानव था आर्य था।

अब सोचिए मानव की अर्थात एक आर्य पुरुष की उत्पत्ति होने के बाद प्रारम्भिक काल के चार ऋषियो को वेद ज्ञान प्राप्त हुआ। जब वेद को हम इस भूमि की देन मानते हैं। वेद की उत्पत्ति यहा मानते है तो आर्यों की उत्पत्ति अमेरिका या ईरान मे कैसे हो सकती है।

आर्यों की आर्यावर्त भूमि पर उत्पत्ति के बाद जब जनसख्या बढने के बाद आर्यों की सन्ताने विश्व के अन्य भागों मे जा जाकर बसने लगी तो क्या इस बात में सन्देह रह जाता है कि समूचा विश्व आर्यों की सन्तान है जिसका मूल वश कभी न कभी आर्यावर्त से सम्बन्धित रहा है।

दस-बीस या पचास शताब्दियो के बाद तो इतिहास भी स्मरण नहीं रहता अत विश्व के मानव समुदाय को यह स्मरण नहीं कि उसका मूल सस्कार वेद से सम्बन्धित है।

स्थानीय परिस्थितियों के कारण मनुष्य ने अलग अलग स्थानो पर रहकर अलग-अलग परम्पराए स्थापित कर ली। किसी ने स्थानीय गर्मी-सर्दी को देखते हुए अलग अलग वस्त्रो का प्रचलन प्रारम्भ किया तो किसी ने अलग अलग वनस्पतियो की न्यूनाधिक उपलब्धता को देखते हुए खान-पान मे कई विचित्र चीजो को शामिल कर लिया। यही कारण है कि आज विश्व के अलग अलग हिस्सो के लोग आचरण व्यवहार रहन सहन और देखने मे भी अलग अलग लगते है। मनुष्य के शरीर का रग भी इन्हीं कारणों से अलग अलग है।

परन्तु मनुष्य एक मूल से सम्बन्धित है। इस सिद्धान्त को सूक्ष्म चिन्तन के बाद ही समझा जा सकता है।

गत सप्ताह रोमा समुदाय के कुछ सदस्यों से भेंट का अवसर प्राप्त हुआ जिनके पूर्वज राजस्थान पजाब महाराष्ट्र गुजरात आदि प्रान्तो से अलग अलग समयावधियो मे अलग अलग पश्चिमी देशों मे जाकर बस गए। इनमे से कुछ वहा जाकर मुसलमान बने तो कुछ ईसाई परन्तु सस्कार रीति रिवाज और व्यवहार हिन्दुओ वाला ही रहा। उसका त्याग बिलकुल नहीं हुआ। उनकी रोमानी भाषा के शब्द बहुदा सस्कृत से मेल खाते है। उनके सम्मान मे भारत सरकार और एक गैर सरकारी सस्था हिन्दू हैरिटेज प्रतिष्ठान ने एक सम्मेलन भी आयोजित किया। इस समारोह मे श्री वेदव्रत शर्मा जी भी विशेष आमन्त्रित के रूप मे उपस्थित हुए।

मुझे भी छोटे से उदबोधन का अवसर प्राप्त हुआ। मैंने रोमा समुदाय के इन भाईयो बहनो से प्रमुखत तीन निवेदन किए

१ यदि आप भारत से सम्बन्धित महसूस करते है तो वेद के साथ अपने सम्बन्ध को भी आप छोड नहीं सकते।

२ यदि आप का मूल भारतीय सस्कृति मे है तो आप यज्ञ की परम्परा और रिवाज को भी छोड नहीं सकते।

३ आप पर भारतीय सस्कार हैं तो आप श्रेष्ठता की ओर बढने से भी इन्कार नहीं कर सकते।

महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज के विचारो को रोमा समुदाय के पढे लिखे समझदार महानुभावो ने स्वीकार किया।

विश्व समुदाय और विशेष रूप से इतिहासविद सोचे कि रोमा समुदाय जो पूरी तरह रग व्यवहार चाल आदि मे पाश्चात्य है जब वे महसूस कर सकते हैं कि उनका मूल भारत मे है वैदिक सस्कृति में है तो शेष विश्व के सामने कौन से ऐसे वैज्ञानिक तथ्य है जो साबित कर सके कि वे उस आदि मनुष्य की सन्ताने नहीं है जिसकी उत्पत्ति हिमालय पर हुई।

— विमल वधावन

मनुष्य जीवन का सार

– सोहन लाल सेठ

भगवान की अपार दया से हमको मनुष्य का जन्म मिला है। कई जन्मो के शुभ कर्मो का यही फल है। इसका उद्देश्य है, धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष की प्राप्ति। दो योनियां हैं। एक भोग योनि और दूसरी उभय योनि है। भोग योनि में मनुष्यों को छोड, सब पशु पक्षी, कीट-पतंग आदि है। इस योनि वाले पिछले कर्मो का फल, भोगते है। उनके पास न शुभ या अशुभ कर्म करने की योग्यता है और न ही उनको नए कर्म करने के लिए परमात्मा ने साधन दिए हैं। उभय योनि मनुष्य की है। जिससे मनुष्य को पिछले जन्मो मे किए हुए शुभ कर्मो का सुख दुख रूप मे फल मिलता है, और साथ ही नए कर्मो के करने की स्वतन्त्रता भी। क्योकि प्रभु ने अपार कृपा करके मनुष्य को ऐसे साधन दिए हे जिनसे मुक्ति को पाकर वह परमात्मा क आनन्द का भागी वन सके परन्तु मनुष्य इन्द्रियो के विषयो मे फस कर अपने मोक्ष रूपी ध्येय को भूल जाता है। मोक्ष की प्राप्ति का साधन ज्ञान है। खाना-पीना सोना और सन्तान उत्पन्न करना पशुओ और मनुष्यों मे समान है केवल ज्ञान ही मनुष्यो मे अधिक है। जो मनुष्य ज्ञानहीन है वह तो पशुओ के समान है। कहा जाता है ज्ञानात् ऋते न मुक्ति-ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं मिलती। वह ज्ञान क्या है यह बात समझने वाली और विचार करने वाली है। परमात्मा सत् चित् आनन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अन्नत, निर्विकार, अनादि अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर अमर, अभय नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। जैसा कि आर्य समाज के दूसरे नियम में स्वामी दयानन्द जी ने बताया है । उसका निज नाम ओ३म् है। इसका अर्थ होता है रक्षा करने वाला। ओ३म का ज्रप उसके गुणो का गान और उस दयालु पिता के गुणो को अपने मे धारण करना ही सच्ची भक्ति है" स नो बन्धु स जनिता स विधाता।" वही हमारा मित्र हमारा पिता आर हम को अपने कर्मो का फल देने वाला है। जीव अल्पशक्ति वाला है और ईश्वर के अनुशासन के आधीन है। ईश्वर एक है। जीव अनन्त है। दोनों अनादि हैं। ईश्वर, जन्म-मरण से रहित है। जीव अपने कर्मों के अनुसार अनेक प्रकार की योनियों में आता जाता है। इस जन्म मरण के दुःख से छुटकारा पाने के लिए वह मोक्ष लेना चाहता है। जब शरीर के साथ जीवात्मा का सम्बन्ध हो जाता है तो उसको जन्म कहते हैं। जब वियोग हो जाता है उसको मृत्यु कहते हैं परन्तु इस ससार मे आकर वह इन्द्रियो के विषयो मे इतना लिप्त हो जाता है कि इस देव नगरी रूपी देह को राक्षस नगरी बना कर इस जन्म को व्यर्थ खो देता है। प्रकृति के तीन गुण सत्,रज, और तम् है। जीवात्मा काम, क्रोध, लोभ, मोह आर अहकार के जाल म फस कर रजआर तम की प्रवृत्ति स्वीकार करके अपने ध्येय से दूर चला जाता ह। उपनिपद् अनुसार परमात्मा का सहारा अति उत्तम सहारा ह। धन, सम्पति, पुत्र का सहारा थोडे समय के लिए हे। 'अवश्यमेव भोक्तव्यम् कृत कर्म शुभाशुभम्" जो कर्म शुभ तथा अशुभ जीव करता है उसका फल उसको भोगना पडता है। परमात्मा दयालु है परन्तु न्यायकारी भी है। वह बखशनहार नहीं है और न ही उसका कोई दरबार लगता है जिसमे कुछ समय पश्चात कर्मो को निर्णय करे। स्थूल शरीर तो यहां भस्म हो जाता है परन्तु सूक्ष्म जीवात्मा नाना योनियों मे जाती है और संस्कारों के अनुसार उसको सुख-दुःख मिलता है। इसलिए ज्ञानवान बनना अति आवश्यक है।

शरीर में एक बडा बलवान और अति चचल सूक्ष्म द्रव्य है जिसको मन कहते हैं। मन इसका नाम इसलिए है कि यह एक समय में एक काम कर सकता है। इसमें इतनी शक्ति है कि आयु भी दीर्घ कर सके और सब इन्द्रियो को विषयो से हटाकर जीवात्मा को मुक्ति के पथ पर ला सके। यह सब ज्योतियों की ज्योति है जिस इन्द्री के साथ इसका सम्बन्ध होगा वही इन्द्री काम कर सकेगी। मन के बिना कोई शुभ या अशुभ कर्म नहीं किया जा सकता। जो मनुष्य इस मन को अपने वश मे कर लेता है। वह अपने जीवन के उद्देश्य मे सफल हो जाता है। योगियों और धीरपुरुषों को पिछले जन्मों में किए हुए अशुभ कर्मो का दुख रूपी फल भोगना पडता है, पर वे दुखी नहीं होते, कारण यह कि मन को उन्होंने अपने अधीन किया हुआ होता है। और ईश्वर में उन की अनन्य भक्ति होती है। वह कृपालु ईश्वर जो कुछ करता है वह हमारे कल्याण के लिए ही है। उदाहरण के लिए किसी माता का पुत्र छोटा बच्चा, किसी मिट्टी वाले गन्दे स्थान पर खेल रहा हो और अपने किसी वस्त्र तथा शरीर को गन्दा कर रहा हो तो उसकी माता उसे उठाकर नए वस्त्र पहनाएगी और उसे डाटेगी भी परन्तु बच्चा फिर वहीं जाएगा क्योंकि उस की इच्छा के प्रतिकूल उसकी माता इसे गन्दे स्थान से उठाती ह। वह रोता आर चिल्लाता ह कि माता ने उस पर अत्याचार किया। इसी प्रकार जो परमात्मा रूपी माता के अनुशासन को अपने विषय भोगो में रूकावट समझते हैं वे दु ख को प्राप्त होते हे और जो ईश्वर की इच्छा समझते है अपना सौभाग्य समझते है वह सुखी होते हे। पंजाबी में कहावत है "तेरा भाना मीठा लागे"। ज्ञान और कर्म के बिना ज्ञान लगडा है। दोनो मिलकर वेद आज्ञा के अनुकूल सतकर्म को करें तो मोक्ष आसानी से मिल सकता है।

श्रद्धा का भी बहुत बडा महत्व है। श्रद्धा के बिना कोई भी काम सफल नहीं हो सकता। इसी में परमात्मा की भक्ति ,तप, त्याग, सत्य का आचरण, मत, बानी आदि कर्मों में मधुरता संसार का उपकार तथा प्राणि मात्र पर दया हो सकती है। श्री कृष्ण जी ने गीता मे कहा है कि यज्ञ में पांच बाते आवश्यक हैं। विधि पूर्वक, वेदमन्त्रों सहित, ब्राह्मण को भोजन, पुरोहितों को दक्षिणा और श्रद्धा से किया गया यज्ञ स्वर्ग को पहुंचा देता है। स्वर्ग और नरक कोई विशेष स्थान नहीं है जहा शुभ या अशुभ कर्म करने वालो को पहुंचा दिया जाता है। गृहस्थ आश्रम ही स्वर्ग और नरक है जहा स्त्री, पुरुष और सारे परिवार के लोग सत्यवादी सदाचारी, ईश्वर भक्त, अनुशासन मे रहने वाले उसके गुणो का गान करन वाले मधुर भाषी, आपस मे प्रेम करने वाले, ईर्ष्या, द्वेष न करने वाले विद्वान् तथा धर्मात्मा पुरुष होते है और जहा धन धान्य पर्याप्त है वहीं स्वर्ग है। इससे विपरीत नरक है। इसलिए इस जन्म में सु,ख के इच्छुक मनुष्यों को ऊपर लिखित ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। यही मनुष्य जीवन का सार है।

प्रधान, आर्यसमाज श्रद्धानन्द बाजार, अड्डा होशियार पुर, जालन्धर

आर्यसमाज दीवान हाल में रामनवमी पर्व एवम् पं० रामचन्द्र देहलवी जन्म दिवस का आयोजन

आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली में दिनांक १ अप्रैल २००१ को रामनवमी पर्व एवमं शास्त्रार्थ महारथी स्व० श्री रामचन्द्र देहलवी जी का जन्मदिवस उल्लास पूर्वक मनाया गया।

इसमें वैदिक विद्वान श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री प्रि० चन्द्रदेव जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री सच्चिदानन्द शास्त्री तथा श्री परमानन्द जी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। सतप्रावा आर्य कन्या उच्चतर माध्यामिक विद्यालय की कन्याओं ने उपरोक्त दोनो महापुरुषो के जीवन पर प्रकाश डाला। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान माननीय डॉ० धर्मपाल जी ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए पं० देहलवी जी के जीवन से प्रेरणा लेकर उनके बताए मार्ग पर चलने का आह्वान किया तथा सतप्रावां विधालय की कन्याओं को आर्यसमाज दीवान हाल की ओर से पुरस्कार देकर सम्मानित किया। समारोह की अध्यक्षता श्री राजसिंह भल्ला जी ने, तथा मंच संचालन डॉ० रविकांत, मन्त्री आर्यसमाज दीवान हाल ने किया। समारोह के पश्चात् सभी उपस्थित व्यक्तियो ने जलपान किया।

– डॉ० रविकान्त मन्त्री
आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली

राष्ट्रं मे देहि - मुझे राष्ट्र प्रदान करो

– विवेकानन्द सरस्वती

आज भारत राष्ट्र, जो कभी विश्व में सर्वोच्च शिखर पर था, अर्थात् चक्रवर्ती राज्य के संचालन का केन्द्र बिन्दु था, वही आज एक प्रकार से सब राष्ट्रों में निम्न स्तर पर, नहीं तो, बहुत कुछ नीचे चला गया है। वहां भी, हमारा इतना अधःपतन हो चुका है कि पहचानना भी कठिन हो गया है कि क्या यह वही सार्वभौम शक्ति का केन्द्र भारत है? जो विश्व के सभी मानवों को एक सन्देश, एक आदेश देकर सबको सूत्रबद्ध एवं सुसम्बद्ध बनाए रखता था। हमारे इस अधःपतन का कारण क्या हम यह मान लें कि अब यहां के नागरिकों के अन्दर बल, बुद्धि, तेज, शौर्य, पराकर्म की न्यूनता हो गई है।

जब हम गहराई से इस विषय पर विचार करते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि ऐसा कोई भी दोष या न्यूनता यहां के निवासियों में नहीं आई है। ना ही, प्राकृतिक रूप से इसमें कुछ न्यूनता आई है क्योंकि यहां की अपार प्राकृतिक सम्पदा को देखकर एव साथ ही यहां की विपन्नता को दरवकर किसी मनीपी विद्वान ने ठीक ही कहा ह यह समृद्ध भिकारी दश ह' अथात् प्राकृतिक सम्पदाओं का आकूत भण्डार इसके पास हे किन्तु फिर भी विश्व में यह विपन्न देश है। विद्वान् की यह धारणा शत प्रतिशत सत्य है। भारतवर्ष प्राकृतिक सम्पदा से परिपूर्ण है। सजल नदियां, पर्वत, विविध प्रकार की औषधि वनस्पतियों से परिपूर्ण अरण्य, विविध रत्नों से परिपूर्ण भूगर्भ सम्पदा, वृष्टि, जलवायु, उर्वरा भूमि आदि इसकी परिपूर्णता के सूचक हैं। क्या कुछ है , जो भारतवर्ष के पास नहीं है ? किन्तु फिर भी वही परिणाम विपन्नता का। अन्ततः इसकी विपन्नता का कारण क्या है ? क्या इसके अन्दर संगठन की कमी है ? ऐसा भी नहीं कह सकते। महाकुम्भ के पर्वो पर आयोजित होने वाले जन सम्मर्द विश्व के किसी भी आयोजन या संगठन को चुनौती देता रहा है और भविष्य में देता रहेगा। पुनः इसका अधोपतन क्यों हुआ? हुआ ही नहीं अपितु आज भी हो रहा है।

मध्यकाल से लेकर अर्वाचीन काल तक हमारे जितने भी योद्धा, नेता, बुद्धिमान् आचार्य हुए हैं। वे सभी अपने-अपने क्षेत्र में अद्वितीय रहे हैं किन्तु अन्त में परिणाम क्या निकलता है? वही आशा के विपरीत हमारा पराभव। इस विषय में विहंगम दृष्टि से सभी घटनाचक्रों पर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होता है कि जो लोग इतनी प्रतिमा, शक्ति, नेतृत्व के धनी थे, उनके द्वारा राष्ट्र को पराभव का मुख क्यों देखना पड़ा? इस पर बहुत मन्थन करने के पश्चात् एक स्पष्ट कारण परिलक्षित होता है। वह है - राष्ट्रीय भावना का अभाव।

विदेशियों की अपेक्षा अपने भारत राष्ट्र के लोगों के अन्दर (कुछ अपवादों को छोडकर- जिनके साहस, शौर्य, पराक्रम के बल पर आज तक हम जीवित हैं) राष्ट्रीय भावना का अभाव या न्यूनता रही हैं। विदेशियों की, चाहे वे आक्रान्ता रहें हों या व्यापारी, यह विशेषता रही है कि परस्पर में उनका लाखें मतभेद होने पर भी यदि कोई राष्ट्रीय समस्या आ जाती है तो वे सब मतभेदों को विस्मृत कर दूसरे राष्ट्र के समक्ष एक हो जाते हैं, और शत्रु का मिलकर सामना करते हैं। भारतवासियों की विशेषता? यह रही है (जो आज भी है) कि राष्ट्रीय संकट के समय विस्मृतप्रायः समस्याओं या मतभेदों को उठाने का स्वर्णिम अवसर मानते हैं एवं उन पुरानी बातों को बडे जोर-शोर के साथ उठाते हैं और आसन्न संकट को भूलकर आपस में ही एक दूसरे से लडना-झगडना प्रारम्भ कर देते हैं, वह भी प्रतिशोध की भावना से।

आसन्न भूत के दो ज्वलन्त उदाहरण इस बात को पुष्ट करने के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन पर, जब वे राष्ट्रपति पद पर आसीन थे न्यायालय की अवमानना को लेकर विपक्ष ने महाभियोग का मुकदमा चला रखा था आर परिस्थिति यह थी कि कभी भी विल क्लिटन राष्ट्रपति पद से च्युत होकर न्यायालय के द्वारा दण्डित हो कारागार में जा सकते थे। किन्तु उसी समय अमेरिका का ईराक के साथ आंशिक युद्ध प्रारम्भ हो गया। जो विपक्षी दल क्लिंटन को महाभियोग के द्वारा पदच्युत एवं दण्डित करना चाहता था, उसी ने यह कहकर कि अमेरिका राष्ट्र आज शत्रु देश से संघर्ष कर रहा है, इसलिए इस समय यह महाभियोग चलाना ठीक नहीं, महाभियोग वापस ले लिया और क्लिंटन बच गए। यद्यपि राजनीति प्रेक्षकों तथा विशेषज्ञों का मानना है कि महाभियोग से बचने के लिए ईराक पर आक्रमण करना बिल क्लिंटन की सोची समझी नीति थी। हम इस गहराई में नहीं जाना चाहते, जो भी हो राष्ट्र के नाम पर सारा अमेरिका अपने मतभेदों को भुलाकर एक हो गया। किन्तु दूसरी तरफ हम अपने इस भारतवर्ष की ओर देखें तो हमें दुःखद आश्चर्य होता है। जब पाकिस्तान के साथ कारगिल में युद्ध चल रहा था। शत्रु देश ने छद्म आक्रमण किया था, उस संकटापन्न स्थिति में विपक्ष द्वारा चीनी घोटाले का विषय बडे घटाटोप रूप में उठाना और सरकार को अपदस्थ करने का पूर्ण प्रयास करना तथा जन-जन में इस घोटाले को अतिरंजित कर प्रस्तुत करना, जिससे राष्ट्र सुरक्षा से ध्यान हटाकर नागरिकों का सामान्य विषय पर ले आना। (यद्यपि वास्तविक रूप में चीनी घोटाला हुआ ही नहीं था किन्तु संकट के समय में सरकार को सहयोग देने के स्थान पर उसे चोट देने का प्रयास कितना बडा राष्ट्रघात व गर्हित कृत्य है1)

कितना अन्तर है राष्ट्रीय भावना में, हम में तथा विदेशियों में। एक ओर राष्ट्र के नाम पर महाभियोग समाप्त करना दूसरी ओर राष्ट्रीय सकट आने पर विपक्ष द्वारा झूठा आरोप गढकर सरकार को संकट के घेर में डालना और शत्रु का मनोबल बढाना। यह प्रवृत्ति आज से नहीं अपितु महाभारत युद्ध के बाद से ही हमारे राष्ट्र के अन्दर घर कर गई है। शक, हूण, यवन, पुर्तगालियों, अंग्रेजों के साथ युद्ध या संवादों में हमारे में से ही कुछ लोगों ने संकट के समय अपनों का साथ छोडकर आक्रान्ताओं का साथ दिया। अपने राष्ट्र के लिए जो सर्वस्व समर्पण कर युद्ध या शत्रु का ह्रास कर रहे थे हममे से बहुत से लोग उनका ही पूर्ण शक्ति से विरोध कर रहे थे, उन राष्ट्रभक्तों के ह्रास के लिए पूर्णरूपेण सहयोग कर रहे थे। पोरस रहे या दाहिर; पृथ्वीराज रहे या महाराणा प्रताप; छत्रपति शिवाजी रहे या तिलक; या सुभाष चन्द्र बोस। इन सभी को विदेशी शक्तियों की अपेक्षा अपने राष्ट्र के लोगो के साथ सघर्ष करना पडता था। क्या आम्भी, मानसिंह, जयसिंहादि के सहयोग के बिना हमारे राष्ट्र के शूरवीर कभी शत्रु के सम्मुख पराभव का मुह दे ख सकते थे? क्या झासी की रानी नाना साहब तात्या टोपे सुभाषचन्द्र बोस चन्द्रशेखर आजाद राष्ट्रीय भावना से रहित अपने ही लोगो के विश्वासघात के कारण पूर्णरूप से राष्ट्रहित के कार्य करने में असफल सिद्ध नहीं हुए? क्या ऋषि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द जैसे लोग भी अपने ही राष्ट्रीय भावना से रहित लोगों के द्वारा अनेकों बार संकट की परिस्थितियों में नहीं घिर गए थे ? इतिहास के घटना चक्र हमें स्मरण दिला रहे हैं कि सब कुछ होते हुए भी अर्थात् साधनों से सम्पन्न होते हुए भी हमारी असफलता का कारण हमारे अन्दर उत्कृष्ट राष्ट्रीय भावना का अभाव ही है।

ऐसे परिदृश्यों को देखकर ही व्यथित स्वर में श्री गुरुजी गोवलकर ने एक बार कहा था- हमने अर्थात् अपने राष्ट्र के लोगों ने अंग्रेजों से अनेक अपकृत सीखे। यदि हम उनका एक उत्कृष्ट गुण राष्ट्रीय भावना भी सीख लेते तो आज भारत राष्ट्र के सम्मुख इतनी विकट समस्याएं नहीं होती और भारत राष्ट्र एक समुन्नत देश होता। कितना मार्मिक सत्य है। मानव के आदि धर्मशास्त्र वेद में जहां अनेक प्रकार की प्रार्थनाओं, आदेशों, उपदेशों, सन्देशों एवं आख्यानों के माध्यम से मनुष्य जीवन के उत्थान के लिए अनेक स्वर्णिम निर्देश दिए गए हैं, वहीं राष्ट्र के हित के लिए भी प्रार्थना की गई है। यजुर्वेद में तो स्पष्ट ही कहा गया है - हे परमात्मन् ! तुम राष्ट्र के प्रदान करने वाले हो, मुझे राष्ट्र प्रदान करो- राष्ट्रं मे देहि (यजु० १०/२/३) अर्थात् राष्ट्रीय भावना से मुझे ओतप्रोत कर दो। अथर्ववेद में तो एक स्थल पर कहा है - हे ब्रह्मणस्पते ! हम लोगों को राष्ट्र रक्षा के लिए बढाएं

अमीवर्त्तेन मणिना येनेन्द्रो अभिवावृधे।
तेनास्मान् ब्रह्मणस्पते अभिराष्ट्राय वर्धय।।

अथर्व० १/२९/१

शेष भाग पृष्ठ ६ पर

ऐतिहासिक विकृतियों का शोधन

– डॉ० बिजेन्द्रपाल सिंह चौहान

भारतवर्ष सदैव से गोरवशाली देश रहा है इस पावन भूमि पर जन्मे महापुरुषो ने अपने प्राण अर्पण करके इस भूमि व राष्ट्र की रक्षा की है और सत्य न्याय एवं धर्म की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया, हमारा इतिहास इसका साक्षी है। ऋषि विश्वामित्र, महर्षि वाल्मीकि,ऋषि याज्ञवल्क्य, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगेश्वर श्री कृष्ण, गार्गी, मैत्रेयी, कैकेयी, सीता, ब्रह्मचारी भीष्म, महर्षि व्यास, धनुर्धारी अर्जुन, शब्दभेदी सम्राट पृथ्वीराज चौहान, महाराणा प्रताप, वीरक्षत्रसाल, शिवाजी, रानी पदमिनी, हाडा रानी का इतिहास किसने नहीं पढा। सहस्रो लाखों वीर योद्धाओं ने इस देश व धर्म हेतु अपने प्राणों को बलिदान कर दिया।

भारत के इतिहास में महापुरूषों ने कभी दाग नहीं लगने दिया यदि दुष्ट पैदा भी हुए तो उनका सदैव विरोध किया गया। कभी पक्ष नहीं लिया गया। कंस के लिए कृष्ण, दुर्योधन के लिए भीम, जयचन्द के लिए पृथ्वीराज चौहान, रावण के लिए राम जैसे महान आत्माओं ने सदैव बुराई पर विजय प्राप्त करने हेतु युद्ध किए।

आज इतिहास का एक दृष्टि डाल कर दख ता हमे पता चलता ह कि उसे विकृत करने का प्रयत्न किया गया है अथवा आक्रमण, परतन्त्रता, विदेशी आक्रान्ताओ के कारण कुछ विकृतियां आ गई है आज हमारा इतिहास उन विकृतियों तथा भूलों को समझे तथा इतिहास का अवलोकन कर उसे सत्य रूप में समझे।

सीता जी के विषय में कहा जाताहै कि उनकी अग्नि परीक्षा ली गई थी, एकदम सत्य है परन्तु वह नहीं जो कहा जाता है कि वह अग्नि में प्रवेश कर गई थीं। थोडा सोचें अग्नि में लोहा भी पिघल जाता है मानव देह तो पांच तत्वों पृथ्वी, जल, वायु आकाश, तेज से निर्मित है कष्ट भी होगा और जल कर भस्म भी हो जाएगा। चाहे मनुष्य हो या देव। सबकी देह एक जैसी है। ज्ञान विशेष एवं गुण कर्म स्वभाव श्रेष्ठतम होने से देव कहलाए। उनका शरीर तो ऐसा ही था जैसा हमारा।

हो सकता है हमसे बलिष्ठ होंगे, परन्तु फौलाद नहीं। वस्तुतः अग्नि परिक्षा का अर्थ उनके ज्ञान व संध्या अग्निहोत्र की परीक्षा ली गई थी। सीता जी गुरुकुल में पढी थी, वेद ऋचाएं कण्ठस्थ थीं और उस समय समस्त आर्य महिलाएं व पुरुष वेद के ज्ञाता होते थे। सन्ध्या हवन नित्य प्रति होते थे। वही वेद की ऋचाओं का पाठ व हवन तथा संस्कार विषय सभी में सीता जी पारंगत थीं।

लंका प्रवास की अवधि में कहीं वह वैदिक ज्ञान व दैनिक संध्यादि कर्म को भूल न गई हों अत. ऋषि महर्षियों विद्धानो की उपस्थिति में सीता जी ने सम्पूर्ण यज्ञ हवन वेद पाठ आदि कर्म करके सबको अपने वेदिक धर्मी बने रहने का प्रमाण अग्निहोत्र करके दिया था कि वह वेदिक कर्म को भूलीं नहीं और उन्हे वेद की ऋचाए आज भी ज्यों की त्यों कण्ठस्थ हैं यही अग्नि परीक्षा थी। अग्नि परीक्षा किसी साधारण व्यक्ति की नहीं ली जाती। राजा व विद्वान की ही ली जाती होगी क्योंकि जैसा राजा होता है वैसी ही प्रजा होती है। अत. राजपरिवारों का युद्ध, राजनीति, वेदादिज्ञान में पारंगत होना अत्याधिक आवश्यक होना चाहिए। प्राचीन काल में इन विषयों पर अधिक बल दिया जाता था अतः परिवार का उच्च शिक्षित होना अति आवश्यक था वह वेद मार्ग का दृढता से अनुकरण करते थे वेदानुसार ही बोलते थे मुंह से सोते में भी कोई वाक्य निकलता था तो वेदानुसार होता था। महाराजा हरिश्चन्द्र के लिए कहा गया है-

"सूरज टरै चन्द टरै, टरै जगत व्यौहार।
पर या पै हरिश्चन्द्र कौ टरै न सत्य विचार ।।"

सीता जी को ऋषि वाल्मीकि के आश्रम में रखा गया था वेदानुसार सत्य कर्म है यह। जब स्त्री गर्भवती हो तो स्त्री को श्रेष्ठ सन्तान के लिए पवित्र वातावरण मे रहना चाहिए पति के सम्पर्क से दूर रहे। पुसवन व उपनयन आदि संस्कार भावी सन्तान की श्रेष्ठता क लिए ही किए जात ह। प्राचीन काल मे इन विषयों व संस्कारो का महत्व अधिक था यही कारण है सीताजी ने अत्यन्त श्रेष्ठ दो सुन्दर बालकों सुकुमारों को जन्म दिया। उन्होंने सम्पूर्ण भूगोल में अपने समय में शासन किया व वैदिक प्रकाश को चारो दिशाओं में प्रज्ज्वलित किया उस समय संस्कारों व वेदनियमों पर चल कर ही महान तेजस्वी ज्ञानी बलशाली सन्तानें होती थीं। सन्तानें पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करने में गौरव समझती थीं।

कैकेयी महान राष्ट्रभक्त, राष्ट्र नायिका थीं। राष्ट्र रक्षा हेतु ही उन्होंने महान विद्वान श्री राम व लक्ष्मण को वनवास की मांग की, क्योंकि उस समय आसुरी (राक्षसीय) शक्तियों को नष्ट करना व धर्म की पताका को चहुं दिशाओं मे फहराना आवश्यक था।

हनुमान जी बन्दर नहीं थे, जैसा कि भ्रान्ति लोगों में है। हनुमान जी महान विद्वान् व ज्ञानी पुरुष थे उनके कोई पूंछ आदि न थी। वन में रहने के कारण इन्हें वानर कह दिया गया। इनकी माता व पिता पुरुष जाति के ही थे। हो सकता है पीठ पर यह वन में रहने वाली जाति राष्ट्रीय चिन्ह का प्रतीक ध्वज रखते होंगे और दोनों हाथों से युद्ध आदि का कार्य करते होगे। राष्ट्र का अपमान करने के लिए ही तो रावण ने हनुमान जी के राष्ट्रीय चिन्ह (पुच्छ अर्थात् पीछे स्थित) पुच्छ चिन्ह को जलाया होगा यदि हनुमान जी दूत बन कर गए थे उनसे रावण की शत्रुता होती तो पूरे शरीर को आग लगा देता परन्तु प्राचीन काल में नियम था कि कितना भी बडा शत्रु क्यों न हो उसके दूत को कष्ट नहीं पहुंचाया जाता।

इस प्रकार की ओर भी अनेक विचारणीय वाते देखने को मिलती हे। हम वेद को सामन रखकर इतिहास को देखे आर क्योकि उस काल में वैदिक मत समस्त भूगोलमें था, वेदानुसार ही मन-कर्म व वचन होते थे उसी वेद अर्थात् मानवता हेतु वह प्राण तक अपर्ण कर देते थे। हमें इतिहास व प्राचीन गौरव को वेदानुसार विवेकपूर्ण निर्णय से आंकलन करना चाहिए। हमारी अनेक भ्रान्तियां दूर हो जाएंगी।

– चन्दलोक कालोनी, खुरजा-२०३१३१

पृष्ठ ५ का शेष भाग

राष्ट्रं में देहि - मुझे राष्ट्र प्रदान करो

राष्ट्रं एवं राष्ट्रभूमि के प्रति मातृभावना के पुनीत भाव से भावित होने के लिए अथर्ववेद के १२वें काण्ड में अनेकत्र प्रार्थना की गई है -

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः। अथर्व १२/१/१२
वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम। अथर्व १२/१/६२
माता पुत्राय मे पय। अथर्व १२/१/१०
आदि आदि।

आजकल भारत राष्ट्र में एक विचित्र प्रकार के बुद्धिजीवियों को वर्ग उत्पन्न हो गया है जो राष्ट्र की चर्चा चलने पर ही सहसा यह कहने लगता है कि हमें तो यह भी नहीं पता कि राष्ट्र किसे कहते हैं? राष्ट्र तो एक क्षुद्र भावना का प्रतीक शब्द है। यद्यपि इस प्रकार का उनका कथन एक प्रवंचना मात्र होता है। क्योंकि पाश्चात्य विद्वानों को ही प्रत्येक विषय में प्रमाण मानने वाले भद जनों ने पाश्चात्य विद्वानों द्वारा राष्ट्र शब्द की की गई परिभाषा को अवश्य पढा होगा। पुनरपि वे भारत राष्ट्र की चर्चा चलने पर परिहास क्यों करते हैं? इन तथाकथित विद्वानों में से तो कई यह कहने में भी संकोच नहीं करते कि भारत कभी राष्ट्र था ही नहीं। लोग ग्रामों, उपनगरों या अधिक से अधिक महानगरों तक ही सीमित थे। उनके विचार से जब राष्ट्र था ही नहीं तो राष्ट्रीय भावना का विकास कैसे होता? राष्ट्रीयता भी विदेशियों द्वारा ही हमें प्राप्त हुई है। प्राचीन काल में भारत के लोग राष्ट्र शब्द से सर्वथा अपरिचित थे। उनका इस पकार का कथन प्रमत्त प्रलाप से अधिक महत्व नहीं रखता। क्योंकि विश्व के सर्वाधिक प्राचीन साहित्य वेद में अनेक स्थलों पर राष्ट्र शब्द का प्रयोग हुआ है और राष्ट्र की चर्चा की गई है। क्यों दूर जाएं? महाभारत काल पर भी दृष्टि डालें तो भीष्म पर्व में संजय द्वारा धृतराष्ट्र के सम्मुख भारतवर्ष का माहात्म्य और उसकी विस्तृत सीमाओं का वर्णन हमें इसकी प्राचीनता और इसकी महिमा का स्पष्ट दिग्दर्शन कराते हैं, जो आधुनिक तथाकथित विद्वानों की समस्त शंकाओं का समाधान करने में सक्षम है।

इतिहास से हमें शिक्षा लेकर पुनः वेद के शब्दों में प्रार्थना करनी चाहिए राष्ट्रदा राष्ट्रं में देहि - हे परमात्मन्! तुम राष्ट्र के प्रदान करने वाले हो, मुझे राष्ट्र प्रदान करो।

– प्रभात आश्रम, मेरठ (उ०प्र०)

इंसानी जीवन के प्रति लापरवाह सरकार, क्या सरकार है ?

दूषित पेय और मिलावटी खाद्य हमारे स्वास्थ्य पर चुनौती भरा आक्रमण है

— ओमप्रकाश पत्रकार

"रोम जल रहा है और नेरो बंसुरी बजा रहा है।" दूषित पानी पी कर और मिलावटी खाना खा कर लोग मर रहे हैं और राजनेता आराम से सरकार चला रहे हैं। बीमार लोगों पर स्वस्थ शासन चलाने का मतलब क्या ? राजनेता किस खुशफहमी में जी रहे हैं इससे बडा आश्चर्य भला और क्या हो सकता है ? इंसानी जीवन पर बीमारियों का इतना बडा प्रहार, देश की विशाल आबादी को कितने दिन तक समाप्त कर देगा, अब यह अनुमान लगाना कठिन नहीं रह गया है। अस्वस्थ व्यक्तियों से अब कोई घर, गांव, शहर तथा अस्पताल खाली नहीं बचा है। त्राहि-त्राहि का शोर मचाती हुई बीमार जनता बिलख रही है जिसे सुनने के लिए नेताओं के कान बहरे हो गए हैं तथा देखने के लिए आंखे पथरा गई हैं। अब देखना यह है कि शासक अपनी जीवनियां कब तक बचा सकेंगे ?

केन्द्रीय स्वास्थ्य विभाग के आंकडे पुकार-पुकार कर कह रहे हैं कि आज देश का हर तीसरा आदमी बीमार है। भला इतनी बडी त्रासदी के वाद भी सरकार गाफिल है क्या यह कोई कम आश्चर्य की बात है ? किसी भी घर, गाव, शहर या अस्पताल की ओर नजर उठाए बीमार ही बीमार नजर आते है। देश में निजी और सरकारी डाक्टरों का कोई अन्त नहीं है, होम्योपैथी, एलोपैथी, यूनानी, आयुर्वेदिक, एक्युप्रेशर, आकोपेक्चर आदि अनेक पद्धतियो से डाक्टर, हकीम लोग इलाज कर-कर के थक चुके हैं परन्तु मरीजों का सिलसिला बंद नहीं होने पा रहा है। नई-नई बीमारियां, अपने नए-नए अदांज में जन्म ले रही है। पन्द्रह-सोलह साल की उम्र में लडकों के बाल सफेद होना शुरू हो जाते हैं, चालीस वर्ष की आयु में आखो में मोतिया उतर आंता है तथा साठ वर्ष तक पहुंचते-पहुंचते आदमी बहरा हो जाता है। कारण ? दूषित पेय, मिलावटी खाद्य, बदबू भरी वायु, विष भरा बनावटी उर्वरक आदि अनेक खतरों से घिर गई है आज आदमी की जिन्दगी ! कैसे बचें और कौन बचाए ? फिर हेर-फेर कर हमें सरकार की ओर झांकना पडता है। क्योंकि इंसानियत की सुरक्षा की जिम्मेदारी आखिर सरकार की होती है। साफ पानी सप्लाई करना, मिलावट से खाद्यान्न को बचाना, वायुमण्डल को दूषित होने से रोकना, फसलों को परीक्षित उर्वरक तथा शोधित दवाईयां मुहैया करना, सरकार का ही तो दायित्व है।

गांव की तो कौन बिसात, बडे-बडे शहरों में जहां शासक और प्रशासकों का जमघट लगा रहता है और यहां तक कि देश की राजधानी दिल्ली में भी वाटर वर्कस वाले दूषित जल सप्लाई करते हैं। उन पर सरकार का कोई नियन्त्रण, कंट्रोल हो ऐसी कोई बात नहीं है। किसी को कोई परवाह नहीं। उलटा जनता को स्वास्थ्य विभाग यह हिदायत जारी करता रहता है कि पानी को उबाल कर पीओ छान कर पीओ, उसमें फला दवा मिला कर पीओ, जैसे लोगों को पानी उबालने और छानने के सिवा कोई और काम ही नहीं है। पानी सप्लाई करने वाला विभाग कितनी ही लम्बी तान कर सोए कोई पूछने वाला नहीं, उनके विरूद्ध कोई जवाब तलबी होती हो ऐसा कभी नहीं सुना गया। उक्त विभाग से साफ पानी मुहैया करवाना क्या सरकार की जिम्मेदारी नहीं ? क्या विभाग के कर्मचारी या अधिकारी सरकार से वेतन प्राप्त नहीं करते ? तो फिर कौन ले उनके विरुद्ध ऐक्शन ?

खाद्यान्न में आप दालों को देखों तो मिलावट, हल्दी को देखों तो मिलावट, जीरे को देखों तो मिलावट और यहां तक कि नमक तक भी बिना मिलावट के नहीं मिलता और मिलावट मे कंकर भी नहीं शीशा पीस कर दिया जाता है। खाने के लिए बाजार से कोई चीज खरीद लें कोई भी बिना मिलावट मिल ही नहीं सकती। फूड स्पलाई के अधिकारी क्या सारे मर गए ? व्यापारियों के विरुद्ध उन सब को साप सूंघ गया ? सब मासिक नजराना प्राप्त करते हैं और यहा तक कि वे घोषणा पूर्वक कहते है कि हमारी यह मथली रकम कौन सी हम तक ही रहती हैं, हमें भी तो ऊपर वालो को देना पडता है। ऊपर वालो मे मन्त्री तक भी इस घूस से अछूते नहीं रहते। तो फिर मिलावट कैसे रूके ? लोगों को शासक और प्रशासकों की शह पर जहर, पत्थर, कंकर और शीशा खाने पर विवश होना पड रहा है। लोगों का स्वास्थ्य कैसे बचे ? कौन बचाए ? जनता कहां जाए, किसे कहे और क्या करें ? कितने आश्चर्य की बात है कि कोई चीज भी तो बाजार से बिना मिलावट के नहीं मिलती। बाजार में खाद्य सामग्री की किसी भी वस्तु कीं ओर आप अगुंली कर दीजिए वह मिलावटी मिलेगी। किसी का भी कोई सैंपल भरा जाता हो, कोई मिलावटी दुकानदार पकडा जाता हो ऐसा कभी सुनने में या समाचार आदि में पढने को नहीं मिलता।

जो लोग बाजार का दूध पीते हैं उसमें पानी ही नहीं मिलेगा बल्कि कोई सफेद तरल जहरीला पदार्थ मिला दिया जाता है। दूसरे भैंसो को इंजेक्शन लगा कर दूध दुहा जाता है और भैस भी जो चारा खाती हैं उस पर किसान अधिक फसल लेने के लिए कीडे मार जहरीली दवाई छिडकते हैं। यह जहर आलूद चारा भैस को खिलाकर उसे जहर आलूद इजेक्शन देकर दूध दूहा जाता है और तब वह दूध बाजार मे पहुचता है तो उसमे दुकानदार उपरोक्त जहर आलूद तरल पदार्थ मिलाकर, दूध खरीदार को सप्लाई करता है। इस प्रकार का दूध पीने वाला व्यक्ति किन-किन बीमारियों का शिकार होता है इस बात को तो डाक्टर लोग भी नहीं जान पाते।

हमारे खेतों में उगने वाले गेहूं, मक्का, बाजरा, चने, चावल, जौ आदि के अलावा सब प्रकार की दालें बिना जहर आलूद उर्वरक तथा कीडे मार जहरीली दवाओं के छिडकाव के बगैर तैयार नहीं की जाती। इस तरह हम अन्न भी ज़हर मिश्रित ही खाते हैं। यहां तक कि सब्जियों को भी जल्दी बढने के लिए इंजेक्शन दिए जाते हैं और कच्चे फलों को जल्दी पकाने के लिए जहरीली दवा में दबाया जाता है।

अब बताइए पानी, दूध, प्रत्येक प्रकार का भोजन, फल, सब्जी आदि सभी तो विष मिश्रित है। इस प्रकार के जहर आलूद खाने के बाद कौन व्यक्ति है जो बीमारी से बच सके। इन सब के बाद अब सांस लेने की बात आती है। शहरों के अलावा अब तो कोई गांव भी नहीं बचा जहां दूषित वायु मण्डल न हो। उच्च न्यायालय तथा उच्चतम न्यायालय सरकार को निर्देश दे-कर थक गए कि इंसानियत को वायु प्रदूषण से बचाया जाए। वाहनों का धूआ, कारखानो का कचरा, धूआ तथा मिनरल पदार्थ जिनकी बदबू मे एक सास लेना भी दूभर हो जाता है और जब वह हवा मे फैलता है तो दूर दूर के क्षेत्र को दूषित कर देता है। अब तो गावो के खेतों में भी स्थान-स्थान पर कारखाने, ईटों के भट्टे, वाहनों की दौड धूप ने, वायु मण्डल दूषित करने में कोई कसर नहीं छोड रखी। उस प्रदूषित वायु में मच्छर भी होंगे और डेंगु भी जिनका सरकार की बनावटी नकली एव बोगस दवाई, बाल भी बाका नहीं कर सकतीं

आप भी हमारे साथ मिलकर हामी भरेगे कि इस सारे मामले को ठीक करने की जिम्मेदारी सरकार की है। परन्तु सरकार ! कौन सी सरकार? सरकार तो अब आए दिन बदलती रहती हैं। जिस सरकार से शिकायत करते हैं वह अगले दिन बदली मिलती है। यह ठीक है प्रजातन्त्र में ऐसा ही होता है और होना भी चाहिए। परन्तु सरकार बदलने से भी कोई समस्या का समाधान नहीं। क्योंकि बदली होकर आने वाले शासक भी इसी आबो-हवा में पले-बढे हुए लोग हैं। ये भी अपने से पहले वालो को देख कर काम करते है। पहले वालो ने करोड जमा किए होगे तो अगले अरब जमा करेंगे क्योंकि कोई भरोसा नहीं कब सरकार चली जाए। जल्दी जल्दी में जितना लूटा जाए लूटो। ऐसी परिस्थिति मे उनके पास इतना समय कहां बचा है कि वे लोगों के स्वास्थ्य का ध्यान रखने में अपना वह कीमती समय गवाए जिसमें उन्होंने लूट मारनी हैं। यह तो अब जनता को ही मिल बैठकर सोचना होगा, बडी गम्भीरता से चिन्तन करना होगा कि आखिर हमारा बचाव किस प्रकार की ओर कोन सी सरकार कर सकती है ?

— वैदिक प्रवक्ता से साभार,
ग्राम फरमाणा, सोनीपत,

लोगों को शासक और प्रशासकों की शह पर जहर, पत्थर, कंकर ओर शीशा खाने पर विवश होना पड रहा है। लोगों का स्वास्थ्य कैसे बचे ? कोन बचाए ? जनता कहा जाए, किसे कहे आर क्या करे ? कितने आश्चर्य की बात है कि कोई चीज भी तो बाजार से बिना मिलावट के नहीं मिलती। बाजार मे खाद्य सामग्री की किसी भी वस्तु की ओर आप अगुंली कर दीजिए वह मिलावटी मिलेगी।

केन्द्रीय स्वास्थ्य विभाग के आंकडे पुकार-पुकार कर कह रहे हैं कि आज देश का हर तीसरा आदमी बीमार है। भला इतनी बडी त्रासदी के बाद भी सरकार गाफिल है क्या यह कोई कम आश्चर्य की बात है ?



6 अप्रैल को जिनका बलिदान दिवस मनाया गया

अमर शहीद महाशय राजपाल

– प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु

भारत के संविधान में विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का प्रावधान है। विश्व स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए अनेक लेखकों, प्रकाशकों ने अपने प्राणों की बलि दी है। ऐसे निडर बलिदानी व्यक्तियों को सम्मानित करने के लिए, भारत के गृहमन्त्री लालकृष्ण आडवाणी जी नें महाशय राजपाल जी को मरणोपरान्त "विचार स्वातन्त्र्य पुरस्कार" से सम्मानित किया है। महाशय राजपाल आर्यसमाज के दीवाने तो थे ही, साथ ही प्रकाशन की स्वतन्त्रता के लिए प्रतिबद्ध थे।

आर्यसमाज ने अपने विद्वानों, हुतात्माओं व निर्माताओ का ठीक-ठीक मूल्यांकन नहीं किया। आज तो आर्यसमाज की वेदी से राजनैतिक लोगों पर अधिक सुनने को मिलता है। धर्म पर बलिदान देने वालों पर पत्रों में कितने लेख छपते है ? आर्य हुतात्माओं के जीवन पर उपलब्धियों पर आर्यसमाज में कितने लेखकों व गवेषकों ने साधना की है ? विद्वानों ने इस विषय पर कभी विचार ही नहीं किया। किसे चिन्ता है ?

स्मरण रखिये, महाशय राजपाल जी मात्र एक प्रकाशक ही नहीं थे। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे एक मूक समाज सेवक थे, जिन्होने विविध क्षेत्रो में अपनी ईश्वर प्रदत्त बुद्धि, अखण्ड धर्म निष्ठा, निष्काम धर्मसेवा, जाति भक्ति व देश सेवा की अमिट छाप छोडी। इस लेख में उनकी किस किस सेवा की चर्चा करू ?

मैंने "धर्म की बलिवेदी पर" नाम से उनका एक विस्तृत जीवन चरित्र लिखा है। इसमें बहुत सी सामग्री किसी कारण से छपने से रह गई। इस पुस्तक के प्रकाशन के पश्चात् भी मैंने महाशय जी के जीवन व बलिदान पर और भी नई खोज करने में सफलता प्राप्त की है। महाशय राजपाल जी के सम्बन्ध में निम्न तथ्य विशेष रूप से जानने योग्य है :

लेखराम जी का प्रभाव

वे अमर धर्मवीर पं० लेखराम जी के ओजस्वी व्याख्यानों को सुनकर तथा पण्डित जी के निर्मल जीवन के प्रभाव से वैदिक धर्मी बने।

सभी आर्यनेताओं से सम्पर्क

मुनिवर गुरुदत्त जी विद्यार्थी के सिवाय उन्हें प्रथम व दूसरी पीढी के सभी आर्य नेताओं व विद्वानों के निकट सम्पर्क में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह उनके व्यक्तित्व की विशेषता समझें या विलक्षणता। किसी भी सभा के अधिकारी न होते हुए भी आर्यसमाज के सब कर्णधारों के नयनों में समा गए। इस दृष्टि से मैं नाम गिनाने लगूं, तो यह लेख बहुत लम्बा हो जाएगा।

शास्त्रार्थ किया और करवाया

महाशय राजपाल जी ने मांस भक्षण पर विधर्मियों से एक बहुत अच्छा शास्त्रार्थ किया। वह शास्त्रार्थ आर्यसमाज के इतिहास में एक चिर स्मरणीय शास्त्रार्थ रहा।

महाशय जी ने स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज व पं० गुरुदत्त (पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जी से भिन्न विद्वान थे) जी के शास्त्रार्थ करवाए। स्वामी दर्शनानन्द जी के इस शास्त्रार्थ ने वैदिक धर्म की धाक जमा दी।

आर्य मित्र सभा

महाशय राजपाल जी ने "आर्य मित्र सभा" नाम के सगठन द्वारा ऋषि मिशन की ऐसी सेवा की कि सारा आर्य जगत् "वाह वाह" कह उठा। "धर्म की बलिवेदी पर" पुस्तक में इस सभा का नाम "बाल सुधार सभा" कैसे छप गया, यह मुझे पता नहीं। मैंने तो "आर्य मित्र सभा" नाम ही लिखा था। मुझसे पहले के कुछ लेखकों ने सुनी सुनाई बातों पर विश्वास करके "बाल सुधार सभा" नाम लिख दिया। मैंने महाशय जी के अपने लेख के आधार पर सभा का ठीक नाम दिया है। यह लेख मेरे पुस्तकालय में है।

मुस्लिम लेखकों की पुस्तकों का उत्तर

सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें समुल्लास पर मुसलमानों ने सर्वप्रथम मौलाना सनाउल्ला से एक पुस्तक लिखवाई थी। वे अमृतसर के थे और महाशय जी भी अमृतसर के थे। दोनो ही अपने नाम के साथ अमृतसरी लिखा करते थे। लाहौर आकर महाशय जी ने "अमृतसरी" लिखना छोड दिया। स्वामी योगेन्दपाल जी ने उन दिनो इस्लाम पर कई खोजपूर्ण पुस्तके लिखी। आपने मौलाना की "हक प्रकाश" पुस्तक का भी बडा रोचक व युक्तियुक्त सप्रमाण उत्तर दिया। स्वामी योगेन्द्रपाल जी की ये पुस्तकें अमर धर्मवीर राजपाल जी ने अमृतसर से प्रकाशित की।

जीवनी लेखन

महर्षि दयानन्द जी का प्रथम विस्तृत व प्रामाणिक जीवन चरित्र पं० लेखराम जी ने लिखा था वे धर्म की बलिवेदी पर शीश चढा गए। उनका जीवन चरित्र लिखा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने। वे धर्म की बलिवेदी पर जीवन भेंट कर गए और स्वामी श्रद्धानन्द जी का सबसे पहला जीवन चरित्र लिखा महाशय राजपाल जी ने। वे भी उसी डगर पर चलते हुए अपने प्रेरणा स्रोत पं० लेखराम जी से जा मिले। यह भी हमारी एक परम्परा है।

यशस्वी प्रकाशक

महाशय राजपाल एक ऐसे प्रकाशक थे, जिन्होंने सारे विश्व में वैदिक धर्म सन्देश पहुंचा दिया। इसके साथ ही वे साहित्य की नई विधाएं विकसित करके एक इतिहास बना गए। उन्होंने कई आर्य महापुरुषों की जीवनियां लिखीं। उन्होंने कई आर्य महापुरुषों व पूज्य विद्वानों के व्याख्यानों के लेखों के संकलन तैयार करे व छपे। अपनी उपलब्धियों व वीरतापूर्वक बलिदान से महाशय जी मर कर अमर हो गए।

उन्होंने कई महत्वपूर्ण विषयों पर आर्य विद्वानों से अनुपम ग्रन्थ लिखवाए व छपवाए। वे आग्रह न करते, तो "जवाहिरे जावेद" सरीखे अद्भुत ग्रन्थ कभी भी न छपते। उन्होंने सद्ग्रन्थों का सृजन करवा कर देश विदेश में ऋषि मिशन की धूम मचा दी। स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा "संस्कार विधि" के उर्दू अनुवाद का प्रकाशन भी उनका ऐतिहासिक कार्य था। यह ग्रन्थ भी मैंने खोज लिया है।

रंगीला रसूल

महाशय जी ने समस्त हिन्दू जाति के लिए जीवन वारा। मुसलमानों ने एक पुस्तक छापी, जिसका नाम था "कृष्ण तेरी गीता जलानी पडेगी", फिर "उन्नीसवीं सदी का महर्षि" छापी। प्रत्युत्तर में छापा गया "रंगीला रसूल"। सरकार के गृह विभाग ने व मुसलमानों ने डेढ वर्ष तक तो आपत्ति न की। जब गांधी जी ने "रंगीला रसूल" पर अपनी विपरीत सम्मति अपने पत्र में छापी, तो मुसलमानों का जनून भडक उठा। यही लेख महाशय जी की हत्या का मूल कारण बना।

महाशय जी पर वार करने के लिए बारी-बारी तीन हत्यारे भेजे गए। आश्चर्य की बात तो यह है कि ये तीनों ही अनपढ थे "रंगीला रसूल" कतई नहीं पढा था। इन तीनो अनपढ हत्यारो पर मुसलमान आज तक सकडो पृष्ठ लिख चुके हे।

मौलाना आजाद का इस्लाम प्रेम

इल्मदीन के छुरे से वीर राजपाल ने वीरगति पाई। जब हत्यारे इल्मदीन का भाई मौलाना आजाद को मिलने गया, तो मौलाना आजाद ने मजहबी जोश से उसे छाती से लगा लिया। हत्यारे का भाई होने के कारण मौलाना ने उसका इतना सम्मान सत्कार किया। केस हार कर भी जनूनी जीत गए और महाशय जी की हत्या की गई।

स्वतन्त्रता संग्राम में

महाशय राजपाल स्वतन्त्रता सेनानी थे। उनके द्वारा विद्रोह फैलाने वाला साहित्य छापने के कारण अंग्रेजी सरकार ने काशी में अभियोग चलाया। हर पेशी पर उन्हें काशी जाना पडता था। उन्हें यातना देने का यह अच्छा ढंग सरकार ने निकाला। भाई परमानन्द जी, लाला पिण्डीदास जी, पं० विष्णुदास जी व डॉ० सत्यपाल जैसे जाने माने विद्रोही नेताओं का साहित्य छाप-छाप कर महाशय जी ने सरकार व मौत को ललकारा। पं० चमूपति जी की राष्ट्रीय कविताएं भी आपने प्रसारित कीं।

लेखक का नाम नहीं बताया

छुरा लगने पर, अभियोग चलने, दबाव पडने पर भी आपने "रंगीला रसूल" के लेखक का नाम प्रकट न किया। इसी अद्भुत वीरता शूरता के कारण महामना मालवीय जी ने कहा था : हुतात्मा राजपाल तो सच्चे महात्मा थे।" आज तो पीला कपडा पहनकर कोई भी महात्मा कहलवाने का प्रामण-पत्र पा लेता है। राजपाल जी ने प्राण निछावर करके अमर पद पाया। परहित में जीवन वारा।

तनिक सोचिए

महाशय जी की स्मृति में आप लोगों ने क्या किया ? उनका दिवस कभी किसी ने मनाया ? मैंने तो अपनी कई छोटी बडी पुस्तकों को उनके बलिदान दिवस पर ही पूर्ण करके प्रेस में दिया। ऐसे अटल ईश्वर विश्वासी, मृत्युंजय, पत्रकार, साहित्यकार, प्रकाशक, शास्त्रार्थ महारथी, देशोपकारक, निर्भीक हुतात्मा महात्मा का अभिनन्दन। शत-शत वन्दन।

– वेद सदन, अबोहर

स्वास्थ्य चर्चा

उग्रतम ऋतु - ग्रीष्म ऋतु

प्राचीन महर्षियों ने वर्ष को दो बड़े भागों में बांटा है। विसर्ग काल एवं आदान काल। मोटे तौर पर विसर्ग काल दक्षिणायन एवं आदान काल उत्तरायण का समय होता है। जिस काल में अंतरिक्ष से वर्षा के रूप में चंद्रमा की शीतल किरणों के रूप में एवं वायु के शीत गुण एवं सरल प्रवाह से पृथ्वी एवं पृथ्वीवासी कुछ प्राप्त करते हैं उसे विसर्ग काल कहा गया है। इस काल में स्वाभाविक रूप से व्यक्तियों का बल बढता है। जिस काल में सूर्य अपनी तीव्र किरणों की गर्मी से पृथ्वी के जलीयांश, वृक्ष, मनुष्य एवं अन्य प्राणियों के स्नेहांश, जीवनीय तत्वो का शोषण करता ह। उसे आदान काल कहते ह। इस काल भेद को ३ ३ ऋतुओ म वाटा गया। इस प्रकार वर्ष मे ६ ऋतुओं ऋतुओं का क्रम उपर्युक्त विशिष्ट गुणों के साथ संपन्न होता है।

ग्रीष्म ऋतु आदान काल की शीर्ष ऋतु है। इस ऋतु में आदान काल की प्रक्रिया स्वरूप पृथ्वीवासी प्राणियों के जीवनीय तत्वों का अधिक से अधिक शोषण होता है। यही कारण है कि सम्पूर्ण चराचर सृष्टि में रुक्षता दृष्टिगोचर होती है। जमीन फट जाती है, पेड़, सूखने लगते हैं, पत्ते झड़ जाते हैं, प्राणियों में भी स्नेह एवं जलीयांश की कमी हो जाती है। प्रकृति की सर्वोत्तम किंतु जटिलतम कृति मानव शरीर पर भी इस ऋतु के व्यापक वांक्षित एवं अवांक्षित असामान्य प्रभाव पड़ते हैं। रात्रि का छोटा, दिन का बड़ा होना, वातावरण के तापमान में असामान्य वृद्धि अत्यधिक स्वेद प्रवृत्ति, भूख का कम होना, रूखी हवाओं का बहना आदि ऐसे कारण हैं जो शरीर पर भौतिक एवं जैव रसायनिक प्रभाव डालते हैं। परिणामतः लू लगना, आमाशय शोथ, ज्वर, मसूरिका, ग्रीष्म अतिसार, सर्वागदाह, नेत्रदाह, मूत्रदाह, निद्रानाश, दौर्बल्य, कंडू, प्रलेपक ज्वर आदि रोग आ घेरते है।

– डॉ० गो० प्र० उपाध्याय

आज भारत का बडा भू-भाग ८ महीने गर्मी से तपता रहता और मई, जून के महीने तो प्रतिवर्ष "लू" के माध्यम से सैकडों की मौत के कारण बनते हैं। हम वातावरण तापमान को तो नियन्त्रित कर नहीं सकते किन्तु कुछ सावधानियां बरत कर अपने आपको गर्मी के दुष्प्रभाव से बचा सकते हैं। इसे ही ऋतुचर्या नाम दिया गया है।

आयुर्वेद के आचार्यों ने इस शास्त्र के उद्देश्य वर्णन प्रसंग में स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना और रोगी के रोग को शीघ्र नष्ट करना प्रमुख उद्देश्य स्वीकार किए हैं। प्रथम उद्देश्य स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य संरक्षण की पूर्ति हेतु अनेक उपायों के साथ जो बहुत ही महत्वपूर्ण उपाय बतलाया वह है ऋतुचर्या अर्थात् प्रत्येक ऋतु में व्यक्ति को क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए। आयुर्वेद मे ऋतु चर्या क माध्यम से प्रस्तुत यह कर्त्तव्याकर्त्तव्य विवेचन बहुत ही तर्कसंगत, वैज्ञानिक एवं सवजनोपयोगी है।

जल, भोज्य पदार्थ एवं वनौषधियां ग्रीष्म ऋतु में रूखे, हल्के एवं सारहित हो जाते हैं। इनके उपयोग से पहले ही गर्मी के कारण शुष्क देह वाले प्राणियों में रुक्षता, लघुता, विशदता, निःस्नेहता पैदा होती है। फलतः शरीर में वात दोष का संचय होता है। यदि इस संचित वात का यथासमय निर्हरण या शमन नहीं किया जाता तो वर्षा ऋतु प्रारम्भ होते ही वातज रोग पैदा हो जाते हैं। ग्रीष्म ऋतु में भोजन के लिए महर्षि चरक ने निम्न पदार्थो का विधान किया है -

"स्वादु शीतं द्रवं स्निग्धं
अन्नपानं सदा हिम्"

अर्थात् इस ऋतु में मीठे पदार्थ, शीतल पदार्थ, द्रव बहुल भोज्य, चिकने (स्निग्ध) अन्न - पान, शर्करा के साथ शीतल द्रव खाद्य (खीर, सत्तू, लस्सी) एवं घी, दूध, दही, मट्ठा, गन्ने का रस, चावल सुगंधित पदार्थ (इलायची, खस, सौंफ) के भोगो का अधिक से अधिक सेवन करने से व्यक्ति का स्वाभाविक बल बना रहता है।

इस ऋतु में नैऋत्य कोण से वायु प्रवाहित होती है जिससे शरीर में रुक्षता, दाह एवं क्षोभ पैदा होता है। अतः खुले स्थान में तीव्र वाहनों से, कम वस्त्रों में, नहीं घूमना चाहिए विशेषतः दोपहर में। आचार्यो के अनुसार दिन में ठंडे घरों में विश्राम एवं निद्रा सेवन करना चाहिए। एक मात्र ग्रीष्म ऋतु में दिन में सोने का विधान है। रात्रि में चंद्रमा की किरणों से शीतल खुली हवादार जगह (छत) पर सोना चाहिए। शरीर पर चदन, गुलाब, जल खस, कपूर आदि शीतल सुगंधित पदार्थो का लेप लगाना चाहिए। मोती मणि से शरीर को अलंकृत रखने का भी निर्देश है। चंदन, खस, मोगरा, गुलाब, अगर, एला आदि के शीतल जल से सम्पृक्त वायु युक्त एवं कोमल आसन पर उद्यानों के बीच बने घरों में दोपहर में बिताना चाहिये। तात्पर्य यह है कि मध्यान्ह में जब वातावरण में उष्णता शीर्ष पर रहती है। तब ठंडे, बन्द किन्तु हवादार, ऊंचे छत वाले घरों में रहना लाभकर होता है। इस ऋतु में मैथुन नहीं करना चाहिए।

भोजन में नमक की तो पर्याप्त मात्रा होना चाहिए किन्तु तीखे, चटपटे, नमकीन, खट्टे, मिर्च मसालों की अधिकता वाले चाट आदि नहीं खाने चाहिए। इनके सेवन से आमाशय शोथ (गैस्ट्राइटिस) होकर, पतली टट्टी, जलाल्पता हो जाती है जो कई बार मृत्यु का कारण बन जाते हैं। इन दिनों मच्छर, मक्खी, परोपजीवी कीटाणु पैदा हो जाते हैं अत स्वच्छता जरूरी है। शरीर पर पसीने के कारण चिपचिपापन वन रहता हे अत प्रात एव रात्रि मे दो बार अच्छे से स्नान करना जरूरी है। बार बार थोडा थोडा पानी पीते रहना चाहिए। हल्के, पतले, सूती कपडे ग्रीष्म ऋतु में पहनना स्वास्थ्य की दृष्टि से हितकारी हैं।

ग्रीष्म ऋतु आदान काल की उग्रतम ऋतु है। उष्णकटिबंधीय देश भारत में विगत कुछ वर्षो में हुई बेइन्तिहा जंगलों, पेडों की कटाई और वायुमण्डल के प्रदूषण ने "हमारा छै (६) ऋतुओं का देश" इस धारणा को भी छिन्न भिन्न कर दिया है। समय से और पर्याप्त वर्षा न होना, छायादार पेडों का न होना, ताप पर आधारित नये नये उद्योगों की धमन भट्टियां, गति और दिशा भुला कर इठलाती उडती हवा आदि प्रमुख कारण है गरमी से आपको झुलसाने के। आज भारत का बडा भू भाग ८ महीने गर्मी से तपता रहता ओर मई, जून के महीने तो प्रतिवर्ष "लू" के माध्यम से सैकडों की मौत के कारण बनते हैं। हम वातावरण तापमान को तो नियन्त्रित कर नहीं सकते किन्तु कुछ सावधानियां बरत कर अपने आपको गर्मी के दुष्प्रभाव से बचा सकते हैं। इसे ही ऋतुचर्या नाम दिया गया है। आदान काल में तीन ऋतुएं शिशिर, बसन्त, ग्रीष्म आती है। किन्तु आग्नेत्व (गर्मी) की दृष्टि से ग्रीष्म ऋतु ज्यादा कष्टकारी हैं। तीक्ष्ण सूर्य किरणें और तीव्र वायु संसार के स्निग्धांश का शोषण कर रुक्षता पैदा कर देते हैं। तक्त, कषाय, कटु रस की शरीर में व्यवहार में, वृद्धि हो जाती है फलतः दुर्बलता उत्पन्न हो जाती हैं। इसलिए पौष्टिक किन्तु सुपाच्य आहार लेना चाहिए साथ ही मधुर, ठंडा, द्रवबहुल, स्निग्ध गुण युक्त अन्न पान हितकारी होता है।

मयूखैर्जगतः स्नेहं ग्रीष्मे पेपीयते रविः स्वादु शीतं द्रवं स्निग्धमन्नत्रयान तदाहितम्

शर्करा मिला कर बनाया ठंडा पतला सत्तू, घी और दूध से बने खाद्य चावल की खीर, के साथ आवले का मुरब्बा, गुलकन्द, दाडिम अवलेह आदि भोजन मे बढाना चाहिए।

देश को आर्यसमाज ने ही जगाया

पराग दुग्ध डेरी (मिल्क बार) के सामने आयोजित १२६वे आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह के मुख्य अतिथि श्री देवीदास आर्य ने कहा कि देश को जगाने का श्रेय आर्यसमाज को ही है आर्यसमाज ने देश मे धार्मिक समाजिक राजनैतिक शैक्षिक क्रान्ति पैदा कर दी आज जो कार्य सर्वसाधारण लगते है। १२६ वर्ष पहले असम्भव से लगते थे अंधविश्वास गुरुडम बेमेल विवाह सती प्रथा नशाखोरी देश की गुलामी आदि बुराईयो का आर्य समाज ने डटकर विरोध किया और स्वतत्रता शुद्धि स्वदेशी विधवा विवाह हिन्दी भाषा नारी शिक्षा एक ही ईवश्वर उपासना वेद प्रचार आदि के लिए आन्दोलन किए। यदि हिन्दू आर्य समाज के शुद्धि आन्दोलन का विरोध न करते तो पाकिस्तान कभी नहीं बनता।

श्री आर्य ने कहा कि आर्य समाज के हर अनुयायी को जलते हुए अगारे के समान ही अपनी जीवनचर्या से समाज को प्रकाशित करते रहना चाहिए। हमारा सामाजिक जीवन तटस्थ न होकर उत्साही सघषमय तथा पुरुषार्थी होना चाहिए। आर्य समाज के सिद्धान्तो के प्रचार प्रसार से ही देश ओर समाज का उत्थान सभव है।

सभा का सचालन मत्री श्री बाल गोविन्द आर्य ने किया। समारोह मे प्रमुख रूप से सर्व श्री देवी दास आर्य आनन्द स्वरूप आर्य राम बली आर्य ओम प्रकाश आर्य श्याम प्रकाश शास्त्री आनन्द आर्य रामकष्ण आर्य विनोद चन्द्र श्रीवास्तव मुनीन्द्र शास्त्री रिपु दमन कुमार भल्ला श्रीमती सरोज अवस्थी ने विचार प्रस्तुत किए। समारोह का प्रारम्भ एक बृहत यज्ञ से किया गया।

– बाल गोविन्द आर्य मन्त्री

हासी मे गृह प्रवेश पर वेद प्रचार एव यज्ञ

हासी नगर के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान प० रामसुफल शास्त्री वैदिक प्रवक्ता लाल सडक हासी ने गृह प्रवेश सस्कार पर वेद प्रचार कार्य किया गया।

जिसमे १० मार्च को होलिकोत्सव के रूप मे प० विजय पाल शास्त्री पुरोहित आर्यसमाज खरड चुही हासी द्वारा यज्ञ ए। श्री देव सिह जी ने ईश्वर भक्ति के गीत के माध्यम से अपने विचार रखे।

११ मार्च रविवार को प्रात ६ बजे गृहप्रवेश सस्कार के माध्यम से आर्यजगत के उच्च कोटि के वैदिक विद्वान प० भरत लाल जी शास्त्री द्वारा यज्ञ का श्रेष्ठ कार्य किया गया।

इस शुभअवसर पर आर्यसमाज (शहर) के उपप्रधान श्री सोहनलाल भयाणा ने ईश्वर से भवन मे रहने वालो के लिए मगल कामनी की। पूज्य स्वामी कीर्ति देव जी सरक्षक आर्य समाज वकील कालोनी हासी ने आर्यसमाज क्या है पर अपने विचार रखते हुए परिवार को आशीष वचन कहे।

इस मोके पर हरियाणा के पूर्व मन्त्री श्री अतर सिह सेनी व प्रवीन एलावादी एव नगर पार्षद प्रधान अपने मित्रो सहित शास्त्री जी को बधाई देने आए तथा आयसमाज जी टी रोड के प्रधान हरनारायण मलिक (एस डी ओ) व खरड चुगी के प्रधान पुरुषोत्तम लाल गिरधर चौ० भीमसिह आर्य मन्त्री सीसर खरबला आर्यवीर दल के समस्त आर्यवीर एव नगर प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे।

अन्त मे गृहस्वामी श्री रामसुफल जी ने सभी आगन्तुक महानुभावो का धन्यवाद किया जलपान व प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

– कर्मवीर प्रजापति उप प्रधान
आर्य समाज हासी

"कौन बनेगा सीतापति" की कडे शब्दो मे निन्दा

हासी। स्थानीय आर्यसमाज जी०टी०रोड० के सरक्षक स्वामी कीर्ति देव जी व आयसमाज खरड चुगी के प्रधान श्री पुरुषोत्तम गिरधर एव आय वीर दल के सचालक प० राम सुफल शास्त्री की सयुक्त अध्यक्षता मे एक विशेष बैठक हुई।

बैठक में गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय हिसार मे "कौन बनेगा सीतापति" नाटक का जो मचन विश्वविद्यालय के कुलपति व अन्य गणमान्य व्यक्तियो की उपस्थिति मे किया गया उसका कडे शब्दो मे भर्त्सना की है।

आर्यसमाज जी०टी० रोड० के उपप्रधान कर्मवीर प्रजापति ने कहा कि श्रीराम व सीता का अभिनय करने वालो ने जीन्स की पैट पहन कर सिगरट व शराब पीने का ढोग करने का अश्लील नाटक किया। यह हमारी प्राचीन भारतीय सस्कृति पर कुठाराघात व भगवान राम व सीता माता का घोर अपमान तथा निन्दनीय कार्य है।

इस दु साहस के लिए बैठक मे सामूहिक रूप से कुलपति के त्याग पत्र की माग की गई और प्रशासन से माग की गई कि ऐसा घटिया नाटक करने वालो के विरूद्ध कडी कार्यवाही की जाए। ताकि पुन महापुरूषों का अपमान तथा भारतीय सस्कृति के साथ खिलवाड करने का साहस न कर सके। *– कर्मवीर*

सिमी तालिबान की राह पर

कानपुर सिमी अफगानिस्तान की आतकवादी सरकार तालिबान की राह पर चल रहा है। कानुपर का दगा इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। यदि सिमी पर तुरन्त कठोर प्रतिबन्ध न लगाए गए तो देश के शान्ति प्रिय नागरिको का जीवन दूभर हो जाएगा।

उपरोक्त विचार केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवी आर्य ने आयसमाज मन्दिर गोविन्द नगर में आयोजित आय समाज स्थापना दिवस समारोह की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किए।

श्री आर्य ने आगे कहा कि आर्य समाज कोई राजनैतिक या आर्थिक सम्बन्ध रखने वाली सस्था नही है। आर्य समाज विशुद्ध धार्मिक और सामाजिक सगठन है। परन्तु इसका सम्बन्ध राष्टीय हितो से सदैव ही जुडा रहा है। आर्य समाज देश के नागरिको को हर परिस्थति में सर्घर्ष करने की क्षमता प्रदान करता है। यदि प्रत्येक देश वासी आर्य समाज को अपना ले तो देश मे कभी भी सिमी जैसे सगठन पैदा ही नही हो सकते है।

सभा का सचालन मन्त्री श्री बाल गोविन्द आर्य ने किया समारोह मे ... राजनीतिक पक्ष को प्रस्तुत करते हुए प्रमुख रूप से सर्व श्री देवी दास आर्य सत्य केतु आर्य शुभ कुमार वोहरा मदन लाल चावला राम लाल सेवक श्रीमती मनोरमा सरोज अवस्थी चन्द्र कान्ता गेरा आदि ने विचार व्यक्त किए।

बाल गोविन्द आर्य मन्त्री

आर्य तपस्वी श्री सुखदेव को मातृशोक

आर्यजगत के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान आर्य तपस्वी श्री सुखदेव जी की माता श्रीमती हरदेवी जी का शरीरान्त गत सप्ताह हो गया। वे ६६ वर्ष की थी। श्रीमती हरदेवी एक पवित्र और उच्चकोटि की गृहणी थी जिन्होने अपने त्यागमय जीवन के बल पर श्री सुखदेव जैसी महान सन्तान समाज को दी। माताजी के परिवार की आध्यात्मिक पृष्ठ भूमि से वह हर व्यक्ति परिचित है जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कभी भी इस परिवार के सम्पर्क मे आया हो। श्री सुखदेव जी के नाना श्री जुम्मा राम जी तथा उनकी धर्मपत्नि का देहावसान एक ही दिन और लगभग एक ही समय हुआ था । जब दोनो ६० वर्ष से अधिक आयु के थे। परिवार की सुदृढ आध्यात्मिक पृष्ठभूमि के बल पर ही आर्य तपस्वी श्री सुखदेव जी समूचे आर्यजगत मे एक महान तपोनिष्ठ एव मृदु भाषी विद्वान के रूप मे जाने जाते है।

समूचा आयजगत उनके इस मातृशोक की दु खद घडी मे उनके साथ है। हमारी ईश्वर से प्राथना है कि माताजी की आत्मा को सद्गति प्रदान करे एव उनकी आत्मा की आगामी यात्रा सुखमय हो।

जनजाति बहुल डूंगरपुर जिले के गांवों में हुआ वेद प्रचार

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, द्वारा संचालित "वेद प्रचार मण्डल" के तत्वावधान मे श्री दयानन्द सत्यार्थी उपदेशक एवं श्री शिवपाल आर्य भजनोपदेशक द्वारा १७ फरवरी से ७ मार्च तक जिला डूंगरपुर के सरौदा, बुचिया, खडगदा, सागवाडा, गमडावामनिया, घटाद, नन्दोर, जेठाना आदि ग्रामों में महर्षि सन्देश देकर वेदों की गुज मचाई। इस प्रचार मंडली ने उक्त ग्रामों के विद्यालयों में छात्र-छात्राओं को प्रथम बार दयानन्द का सन्देश पहुंचाया। कुछ ग्रामों में श्रद्धालुओं ने अपने परिवारो या सामुदायिक स्थानों पर यज्ञ एवं भजनोपदेश आयोजित करवाए। रात्रि वेला में सभी ग्रामों में प्रचार मण्डली द्वारा सार्वजनिक स्थानों पर भजन, प्रवचनएवं दयानन्द जी की जीवनी का वीडियों चलचित्र प्रदर्शित किया। वेद प्रचार वाहन के माध्यम से लगभग ३८००/- रूपये का वैदिक साहित्य विक्रय किया गया। विभिन्न ग्रामो के ना व्यक्तियो ने वेद प्रचार मण्डल की सदस्यता ग्रहण की।

- स्वामी तत्वबोध सरस्वती

आर्यसमाज चैनत ने महिला दिवस मनाया

हांसी, बरवाला रोड पर स्थित गांव चैनत में स्थानीय आर्यसमाज के प्रधान मा० हरीराम जी, सेवा निवृत हेडमास्टर की अध्यक्षता में महिला दिवस मनाया गया।

इस अवसर पर हांसी नगर के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य प्रवर पं० रामसुफल शास्त्री ने मुख्य वक्ता एवं यज्ञ के ब्रह्मा के रूप में अपने विचार रखते हुए कहा कि नारी जाति के उद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने महिलाओं की बहुत वकालत की थी। महाभारत काल के बाद नारी शिक्षा पर प्रतिबन्ध था, जिसे हटाने के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपना बलिदान दे दिया। श्री शास्त्री जी ने कहा कि महिलाओं का शिक्षित एवं सभ्य होना समाज की प्रगति के लिए अति आवश्यक है।

इस मौके पर आर्यसमाज घिराए के प्रधान श्री दयानन्द जी, कन्या गुरुकुल घिराए के प्रधान चौ० मनफूल सिंह, कुलपति श्री स्वामी जी महाराज प्राचार्या बहन सुनीता जी व अन्य गणमान व्यक्ति उपस्थित थे।

उल्लेखनीय है कि महिला दिवस के साथ-साथ कार्यक्रम अध्यक्ष मा० हरीराम जी का विगत वर्षो की भांति जन्म दिवस भी मनाया गया।

तपोवन में ग्रीष्मोत्सव १८ अप्रैल से २२ अप्रैल तक

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून का ग्रीष्मोत्सव बुद्धवार १८ अप्रैल से रविवार २२ अप्रैल तक आयोजित किया जा रहा है। सामवेद पारायण यज्ञ तथा योग साधना श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी के निर्देशन में चलेंगे।

आचार्य श्री सत्यव्रत राजेश जी के वेद-प्रवचन होंगे। प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक श्री सुचित नारंग तथा अन्य द्वारा भक्ति संगीत प्रस्तुत किया जाएगा। *– देवदत्त बाली*

पांच छात्रों ने भारतीय परिधान में डिग्री ली

गुरू जम्भेश्वर यूनिवर्सिटी हिसार द्वारा आयोजित प्रथम दीक्षांत समारोह में लगभग १४०० विद्यार्थियों ने स्नातक व स्नातकोत्तर तथा डाक्टरेट की डिग्रीयां ली। समारोह के मुख्य अतिथि उपराष्ट्रपति श्री कृष्णकान्त रहे। पाच छात्रो ने डॉ० विजया (बीएम सी), डिम्पल (बीएमसी) तरुणा (एमएमसी), मनीष (एमएमसी), यशवीर (एमएमसी) ने भारतीय परिधान (धोती कुर्ता, साडी व पटका) पहना व काले गाऊन (ब्रिटिश परिधान) को अस्वीकार किया। भारतीय परिधान का प्रचलन युनीवर्सिटी के प्रथम दीक्षात समारोह में ही हो जाए इसके लिए २० दिन तक संघर्ष करना पड़ा। मा० उपकुलपति, उपराष्ट्रपति व अखबारो को पत्र लिखे गए। परिधान का प्रबन्ध स्वय अपने बलबूते पर किया गया। धोती पहनाने का जिम्मा भी व्यक्ति विशेष ने लिया। काले गाऊन के साथ-साथ यदि भारतीय परिधान भी युनीवर्सिटी में उसी काउंटर पर किराए पर मिलता हो तो बहुत से और छात्र व छात्राएं भी भारतीय परिधान डिग्री लेंगें। भविष्य में भारतीय परिधानों का प्रबन्ध युनिवर्सिटी परिसर में ही किया जाए व शिक्षक गण भी भारतीय परिधान पहन कर समारोह में सम्मिलित हो। *– डॉ० विजया, हिसार*

२८वां वार्षिकोत्सव एवं वेद प्रचार

रामगली आर्य समाज मन्दिर हरि नगर नई दिल्ली - ६४ का २८ वां वार्षिक उत्सव दिनांक २७-४-२००१ से २६-४-२००१ तक बडी धूम धाम से मनाया जा रहा हैं। इस शुभ अवसर पर वेद कथा आचार्य छवि कृष्ण शास्त्री तथा भजन उपदेश श्री गुलाब सिह राघव एव मुरारी लाल बेचेन द्वारा होगे। आप सभी से विनम्र निवेदन है कि आप सपरिवार तथा मित्रो सहित पधार कर धर्म लाभ उठावें।

साधना शिविर सम्पन्न

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित निःशुल्क दस दिवसीय साधना - स्वाध्याय - सेवा शिविर दिनांक २३ फरवरी से ४ मार्च तक ऋषि उद्यान अजमेर में भली प्रकार सम्पन्न हुआ। शिविर में साधना के रूप मे प्रात साय एक एक घटा उपासना का क्रियात्मक अभ्यास तो रखा ही गया था, साथ मे सम्पूर्ण दिवस साधनामय बने एतदर्थ निश्चित समय मे मोन का अभ्यास भी करवाया गया और सयम, अनुशासन, अन्तर्मुखी वृत्ति, आत्मनिरीक्षण के द्वारा साधना को सर्वांगीण परिपुष्ट करने का प्रयत्न हुआ। प्रातः १ घंटे उपासना का क्रियात्मक प्रशिक्षण व सायं १ घंटे उसी का व्यक्तिगत प्रयोग करने का अवसर दिया गया। उपासना काल में निर्बाध आसन बनाये रखने का विशेष प्रशिक्षण दिया गया। शारीरिक साधना हेतु प्रातः एक घंटे सर्वांगसुदर व्यायाम एवं आसन सिखाये गये।

स्वाध्याय की दृष्टि से पातञ्जल योग दर्शन के अनेक सूत्र पढाये - समझाये गये, यज्ञोपरान्त वेद प्रवचन हुए, ज्ञान-कर्म-उपासना का सैद्धांतिक नक्ष विशद किंतु सरल ढंग से बताया गया, वैदिक संध्या के मंत्रों का शुद्ध उच्चारण एवं उनका अर्थ बताया गया।

व्यक्तिगत शारीरिक, मानसिक व आत्मिक उन्नति पर बल देने के अतिरिक्त सामाजिक उन्नति के लिए सेवा का विषय भी विभिन्न पहलुओं से व्यवहारिक दृष्टि रखते हुए बताया समझाया गया। शिविरार्थियों द्वारा प्रतिदिन आधा घंटे सेवा कार्य भी किया गया।

शिविर की पूर्व संध्या २२ फरवरी को शिविर के नियम - अनुशासन एवं व्यवस्था सम्बन्धी सूचनाएं दी गईं। शिविर समाप्ति से एक दिन पूर्व लिखित परीक्षा ली गई।

शिविर मे राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश व चडीगढ के लगभग चालीस साधक साधिकाओ ने भाग लिया। प्रशिक्षण प्रदाता अध्यापक थे ब्र० श्री दर्शनाचार्य, प्रो० श्री धर्मवीर, ब्र० श्री सत्येन्द्र दर्शनाचार्य, ब्र० श्री रवीन्द्र व्याकरणाचार्य, ब्र० श्री सत्यजित् दर्शनाचार्य एवं श्री यतीन्द। संस्था के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं सेवाभावी सहयोगियों के सम्मिलित प्रयास से शिविर सम्यक्तया पूर्ण हुआ।

इसी प्रकार का अगला साधना शिविर १ से १० जून २००१ को इसी स्थान ऋषि उद्यान, अजमेर मे आयोजित होगा। शिविर की पूर्व सध्या अर्थात् ३१ मई की शाम ४ बजे तक यहां पहुचना आवश्यक है।

नवसंस्येष्टि यज्ञ धूम धाम से सम्पन्न

आर्यसमाज बहीन, जनपद फरीदाबाद (हरियाणा) के अन्तर्गत नव संस्येष्टि यज्ञ का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री परमानन्द शर्मा पंच बहीन ने की।

इस अवसर पर ब्रह्मचारी जयदेव आर्य ने ईश्वर भक्ति के मधुर भजन सुनाए जिनको सुनकर श्रोता झूम उठे।

आर्यजगत के प्रसिद्ध कवि पं० नन्दलाल निर्भय ने अपने व्याख्यान में बताया कि नव संस्येष्टि को ही होली कहते हैं। इस पर्व पर हमें गरीब व्यक्तियों को अन्न, वस्त्रादि का दान देना चाहिए। होली का भाव यह है कि किसी के साथ अभद्र वर्ताव नहीं करना चाहिए। इस दिन यज्ञादि शुभ कर्म करने का प्रत्येक व्यक्ति को व्रत लेना चाहिए। श्री राम, श्री कृष्ण, चन्द्र गुप्त मौर्य, आचार्य चाणक्य भी इस पर्व को श्रद्धा पूर्वक मनाया करते थे। गोबर, कीचड छोडकर हमें प्यार प्रेम का रंग समस्त जग में बिखेरना चाहिए तभी विश्व का कल्याण होगा।

श्री परमानन्द शर्मा ने महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा आर्य समाज के कार्यों की भूरि भूरि प्रशसा की। शान्ति पाठ के पश्चात यज्ञ सम्पन्न हुआ। *– ब्रह्मदेव आर्य, मन्त्री आर्यसमाज बहीन, फरीदाबाद*

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व ०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 15 4 2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2001
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2001 in NDPSo on 12 13/4/2001

e-mail : vedicgod@nda.vsnl.net.in

ओ३म्

☎ : 3274771
: 3260

पीड़ितों की सेवा
हम सबका राष्ट्रीय कर्त्तव्य

गुजरात में विनाशकारी भूकम्प

भुज, कच्छ, गांधीधाम, अहमदाबाद क्षेत्र सर्वाधिक प्रभावित

पीड़ितों की सहायतार्थ अपील

तन-मन-धन से सहयोग दीजिए

सभा को दिया गया दान आयकर से मुक्त है

चैक/मनीआर्डर/ड्रॉफ्ट एवं सहायता सामग्री निम्न पते पर भेजें :-

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

3/5, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली - 2

फोन : 3274771, 3260985

निवेदक

स्वामी ओमानन्द सरस्वती, प्रधान **वेदव्रत शर्मा,** मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

3/5, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली - 2

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रकाशन लि० द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली-२ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली-२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१ ३२६०९८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र



वर्ष ४० अक ३ | २२ अप्रैल से २८ अप्रैल २००१ तक | दयानन्दाब्द १७८ | सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०२ | सम्वत २०५८ | वै० कृ० १४
एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड को तोड़ने के विरोध में
संसद मार्ग पर आर्य शक्ति का अभूतपूर्व प्रदर्शन
केन्द्रीय सरकार ने पूर्व की स्थिति बहाल करने का आश्वासन दिया
शिलान्यास (२२ अप्रैल, २००१, प्रात ९ बजे) की तैयारियां जोर-शोर से

यहा मिण्टो रोड पर आर्यसमाज मन्दिर ढहाए जाने पर क्रुद्ध आर्यसमाजियो ने जहा अपनी लडाई शानदार ढग से की है वहा केन्दीय शहरी विकास मत्री जगमोहन को धर्मस्थल को ध्वस्त करने की कार्रवाई के लिए तौबा करने को भी मजबूर कर दिया। जगमोहन ने पश्चाताप के तौर पर ढहाए गए आर्यसमाज मन्दिर के पुनर्निर्माण के लिए अपनी पुस्तक कश्मीर की रायल्टी की सारी रकम देने का वायदा किया है और साथ ही मदिर स्थल की उसी पैमाइश और स्थान को स्वीकार कर लिया है जिसका दावा आर्यसमाज मिण्टो रोड अब तक करता रहा है।

भाजपा उपाध्यक्ष श्री मदन लाल खुराना और महासचिव श्री साहिब सिह वर्मा के सान्निध्य मे आर्यसमाज का एक शिष्टमण्डल केन्द्रीय गृह मत्री श्री लाल कृष्ण आडवानी से मिला और आर्यसमाज मदिर गिराए जाने की लेण्ड एण्ड डिवलपमैण्ट विभाग की कार्रवाई पर सख्त रोष प्रकट किया। श्री आडवानी जी ने शिष्ट मडल को सहानुभूति से सुनने के बाद श्री जगमोहन से सम्पर्क स्थापित कर उन्हे समस्या का हल ढूढने की सलाह दी।

शेष पृष्ठ २ पर

शिलान्यास समारोह एवं कार-सेवा 22 अप्रैल को प्रातः 9 बजे

आपको सहर्ष सूचित किया जाता है कि मिण्टो रोड स्थित जिस आर्यसमाज मन्दिर के भवन को केन्द्र सरकार के शहरी विकास मत्रालय द्वारा गिरा दिया गया था उसकी पुनर्निर्माण की स्वीकृति के लिए सम्बन्धित विभाग को बाध्य करने मे समूचे आर्यजगत की प्रचण्ड शक्ति का प्रदर्शन एक प्रमुख आधार बना। इस पवित्र कार्य मे आर्यजनों का तन मन धन से जो सहयोग प्राप्त हुआ इसके लिए वे साधुवाद के पात्र है।

आर्यसमाज मदिर के पुनर्निर्माण हेतु शिलान्यास समारोह एव कार सेवा का आयोजन २२ अप्रैल २००१ (रविवार) को प्रात: ६ बजे से यज्ञ द्वारा प्रारम्भ होगा। इस यज्ञ के ब्रह्मा पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती तथा शिलान्यास समारोह के अध्यक्ष सार्वदेशिक सभा के प्रधान "पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती होंगे।

शिलान्यास समारोह मे दिल्ली के उप-राज्यपाल श्री विजय कपूर शहरी विकास मन्त्री श्री जगमोहन दिल्ली के दो पूर्व मुख्यमन्त्री सर्वश्री मदनलाल खुराना तथा साहिब सिह वर्मा विशिष्ट आमन्त्रित होगे।

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आर्यसमाज की शक्ति का पुन प्रदर्शन करते हुए अपनी आर्यसमाजो के रविवारीय सत्सगो को सक्षिप्त करते हुए २२ अप्रैल को प्रात ६ बजे आर्यसमाज मिण्टो रोड मिण्टो ब्रिज एव तिलक ब्रिज के मध्य में दीनदयाल उपाध्याय मार्ग के पास तथा रणजीत सिह फ्लाई ओवर के समीप नई दिल्ली मे अपने सभी परिजनो मित्रो तथा आर्यसमाज के सदस्यो को केसरिया टोपी या पगड़ी पहनाकर एव बहनें केसरिया धोती एव दुपटटा ओढे बसों टैम्पुओ तथा अपने निजी वाहनों पर ओ३म ध्वज तथा बैनरो से सुसज्जित करके पधारने की कृपा करे।

शुभकामनाओ सहित

स्वामी सुमेधानन्द
कार्यकारी प्रधान

वेदव्रत शर्मा
सभा मन्त्री



१ आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड को ध्वस्त करने के बाद वहा खडा बुलडोजर।
२ गिरा हुआ मन्दिर का मुख्य द्वार तथा मलबे पर पडा लोहे का दरवाजा। ३ यज्ञशाला की छतरी का जाल।

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

सह सम्पादक
विमल वधावन एडवोकेट

आर्यसमाज की प्रचण्ड शक्ति

श्री आडवानी ने श्री जगमोहन को बताया कि यह मात्र मदिर का मामला नहीं सरकार की प्रतिष्ठा का सवाल भी ह। अत यह शिष्टमडल जिसमे सर्वश्री प्रोफेसर शेर सिह वेदव्रत शर्मा स्वामी



१ वैदिक साहित्य के रैक तथा चित्र आदि तथा अन्य सामान। २ मन्दिर ध्वस्त होने की सूचना मिलने के तुरन्त बाद धरने पर बैठे आर्यजन सर्वश्री प्रि० चन्द देव चौ० लक्ष्मी चन्द विमल वधावन वेदव्रत शर्मा विनय आर्य अरुण वर्मा तथा डॉ० कर्ण देव। ३ मन्दिर ध्वस्त होने के अगले दिन आक्रोश से भरी जनता को सम्बोधित करते हुए पूर्व मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना साथ में सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान प्रो० शेर सिह प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती श्री राजीव भाटिया तथा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा।

सुमेधानन्द स्वामी अग्निवेश स्वामी इन्द्रवेश श्रीमती शकुन्तला आर्या चौ० लक्ष्मी चन्द विमल वधावन डॉ० धर्मपाल आदि अनेक प्रमुख आयसमाजी शामिल थे श्री जगमोहन आर दिल्ली के उपराज्यपाल श्री विजय कपूर से मिला। श्री जगमोहन आर श्री कपूर न घटनास्थल का दौरा किया और तीसरे दौर की मीटिग मे श्री जगमोहन ने शिष्टमडल की सभी मागे स्वीकार कर लीं और पश्चाताप के तौर पर अपनी पुस्तक कश्मीर की रायल्टी मदिर निर्माण और आर्यसमाज की गतिविधियो के लिए देने की घोषणा की।

उपराज्यपाल श्री कपूर ने अपनी पशन का एक भाग इस यज्ञ मे आहुति के रूप मे दने का वायदा भी किया। आयसमाज शिष्टमडल के सदस्या ने यह सब जानकारी देते हुए बताया कि श्री वमा आर श्री खुराना न भी मदिर पुनर्निर्माण के लिए आर्थिक सहयोग देने का वायदा किया। श्री वेदव्रत शर्मा ने बताया कि मिण्टो रोड आर्यसमाज के पुनर्निर्माण के लिए इसकी आधारशिला २२ अप्रैल को प्रात ६ बजे यज्ञ हवन के साथ रखी जाएगी। श्री जगमोहन श्री विजय कपूर श्री खुराना और श्री वर्मा ने इस अवसर पर आना मान लिया है ओर श्री आडवानी को भी आर्यसमाज आमन्त्रित करगा उन्होने राजधानी के सभी आयसमाजो स आधारशिला न्यास समारोह एव कार सेवा म उत्साहपूवक भाग लेने की अपील की।

प्रभावी प्रदर्शन के दौरान श्री वाजपेयी को दिए गए ज्ञापन के तुरन्त बाद श्री आडवानी हरकत मे आए। श्री वेदव्रत शर्मा ने आर्यवीरो को उन द्वारा प्रदर्शित उत्साह और अनुशासन की प्रशसा की और कहा कि उनके सकल्प का ही परिणाम है कि मदिर के पुनर्निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ।

इससे पूर्व मिण्टो रोड आर्यसमाज मन्दिर के पुनर्निर्माण की माग को लेकर ससद की ओर मार्च कर रही हजारा आयसमाजियो की भीड को रोकने के लिए की गइ पानी की तेज बोछारो आर आसू गैस के गोलो के प्रयोग से एक



१ प्रचण्ड प्रदर्शन को सम्बोधित करते हुए आर्यनेता बाए से दाए सर्वश्री प्रो० शेर सिह स्वामी इन्द्रवेश वेदव्रत शर्मा तथा श्रीमती शकुन्तला आर्या।
२ सभा के कार्यकारी प्रधान स्वामी सुमेधानन्द तथा सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा।
३ पुलिस स्टेशन के समक्ष गिरफ्तारी के लिए लालायित आर्यजन – कसम वेद की खाते हैं मन्दिर वहीं बनाएगे नारे लगाते हुए।



१ प्रदर्शन मे आर्यसमाज मोदी नगर के आयजन। २ ससद भवन की ओर अग्रसर होते हुए आर्यजन।
३ डी०ए०वी० प्रबन्धक समिति के अध्यक्ष सर्वश्री पदमश्री ज्ञान प्रकाश चोपडा एम०एल० खन्ना प्रबोध महाजन नवीन सूरी तथा रामनाथ सहगल चौ० लक्ष्मी चन्द तेजपाल मलिक तथा श्री प्रेम पाल शास्त्री ।

के सामने सरकार झुकी



१ आर्यनगर गुरुकुल तथा पहाडगज के आर्यजन २ आर्यसमाज सीताराम बाजार का बैनर लिए हुए आर्यजन ३ आर्यसमाज जनकपुरी सी ब्लाक एव बी० ब्लाक के जत्थे को नेतृत्व देते हुए दिल्ली सभा के उपप्रधान श्री सोमदत्त महाजन।



१ बाए से दाए आर्य वीर दल के उत्साही कार्यकर्ता।
२ डी०ए०वी० विद्यालयो की अध्यापिकाए।
३ आर्यसमाज ब्रह्मपुरी शाहदरा और विनय नगर नई दिल्ली के आर्य कार्यकर्ता।

दर्जन लोग घायल हो गए। लगभग ५०० प्रदर्शनकारियो को ससद मार्ग पुलिस ने हिरासत मे ले लिया। भाजपा के केन्द्रीय उपाध्यक्ष श्री मदन लाल खुराना और महासचिव श्री साहिब सिह वर्मा के पहुचने पर सबको रिहा कर दिया लेकिन शिष्टमण्डल मे शामिल श्री वेदव्रत शर्मा श्री विमल वधावन प्रो० शेरसिह आदि न गृहमत्री को शिकायत की कि जगमोहन की क्रूरता से मन्दिर पर बुल्डोजर चलाते समय भी सन्यासियो महिलाओ का अपमान हुआ तथा आज भी सन्यासियों व महिलाओ को अपमानित किया गया है।

सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान स्वामी सुमेधानन्द ने ज्ञापन देने के बाद बताया कि हमने भारत सरकार को स्पष्ट कर दिया है कि यदि २१ अप्रैल तक पुन मन्दिर निर्माण की प्रक्रिया शुरू न हुई तो २२ अप्रैल से कार सेवा हम स्वय शुरू कर देंगे और मागे माने जाने तक धरने प्रदर्शन जारी रहेंगे। यद्यपि इससे पूर्व १८ अप्रैल से कार सेवा की तैयारी की जा रही थी किन्तु श्री लालकृष्ण आडवानी के उदार रूख को देखकर आर्यसमाज ने चार दिन की मोहलत और दे दी।

इस बीच ससद मार्ग पर सडक घेर कर बैठे आर्यसमाजियो के मध्य हिन्दू नेताओ ने श्री जगमोहन को एक क्रूर मत्री बताया जिसकी घटिया व घृणित शैली से वाजपेयी सरकार अपमान ढो रही है तथा रामभक्त सरकार पर मन्दिर तोडक सस्था का तमगा लग रहा ह।

इधर सन्यासियो व महिलाओ पर पानी की बोछारे फैकने व आसू गैस के गोलो का प्रयोग किए जाने से घायल होने के आरोपो का पुलिस ने यद्यपि खण्डन किया है जबकि हिन्दू नेताओ श्री एम० एल० कुमार बाबा शकर दास पागल श्री सुखबीर शरण अग्रवाल श्री अर्जुन कुमार श्री रामकष्ण गुप्ता महामाई सेवा न्यास के श्री रमेश वजाज ने चेतावनी दी ह कि यदि जगमोहन की यही शैली रही तो वाजपेयी सरकार की हिन्दू जनता मे साख गिर जाएगी।

पानी की बौछारो से कवि सारस्वत मोहन मनीषी की आखो की रोशनी पर गहरी चोट लगी

अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के प्रध ाान श्री दिनेश चन्द त्यागी ने आर्यसमाज के प्रदर्शनकारियों पर आसू गैस व पानी की बौछारें फैंकने की निन्दा करते हुए आरोप लगाया कि हिन्दुओ के नाम पर वोट बटोरने वाली भाजपा सरकार के शासन मे दुर्गा मन्दिर हनुमान मन्दिर व आर्यसमाज मन्दिर को तो मिण्टो रोड पर ध्वस्त कर दिया गया जबकि सडक के किनारे बनी अनेक मजारो व अवेध मस्जिदो को छुआ तक नहीं गया। ज्ञातव्य हो कि जल प्रहार से श्री मनीषी जी की एक आख की ज्योति लुप्त हो गई है जिनकी सघन चिकित्सा व देखरेख राममनोहर लोहिया अस्पताल मे की जा रही है।

इस चार दिवसीय लघु परन्तु गम्भीर अभियान में देश विदेश से निन्दा प्रस्ताव तथा कुछ कर गुजरने के समाचार आश्वासन और प्रस्ताव आने प्रारम्भ हो गए है।

अमेरिका आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री गिरीश खोसला जो कि सयोग से इन दिनो दिल्ली मे ही थे उन्होने भी इस कार्य को आर्यसमाज का एक शक्ति परीक्षण बताया और कहा कि इस अभियान की सफलता आर्यसमाज के भविष्य की सुरक्षा के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने भी प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी को फैक्स सन्देश द्वारा इस घृणित कार्य का विरोध करते हुए चेतावनी दी है कि आर्यसमाज एक जागरुक सस्था है। हम स्वाधीनता हेतु बलिदान होना जानते है और निजाम जैसे व्यक्ति के घुटने टिकवा सकते है तो आर्यसमाज मन्दिर की रक्षा करना भी जानते है। आश्चर्य है कि एक ओर आपकी सरकार मन्दिर बनाने के लिए दृढ प्रतिज्ञ है और दूसरी ओर मन्दिर तुडवा रही हे।

गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य ने भी सभा के अधिकारियो को आश्वासन दिया कि जिस रूप मे भी आवश्यकता पडेगी गुजरात के आर्यजन सहयोग और हर प्रकार की आहुति के लिए तेयार हे।

डी० ए० वी० प्रबन्ध समिति तथा आर्य प्रादेशिक सभा के अधिकारियो का भी इस आन्दोलन मे भरपूर एव सक्रिय सहयोग रहा। अध्यक्ष श्री ज्ञान प्रकाश चोपडा ने अपने अन्य अधिकारियो सहित मन्दिर स्थल का दौरा किया जिनमे प्रमुख थे सर्वश्री प्रबोध महाजन एम० एल० खन्ना नवीन सूरी रामनाथ सहगल आदि। प्रदर्शन मे भी डी० ए० वी० के दर्जनो स्कूलो के अध्यापक अध्यापिकाओ तथा बच्चो ने भाग लिया।

दिल्ली के अतिरिक्त हरियाणा उत्तर प्रदेश उत्तराचल राजस्थान पजाब और चण्डीगढ आदि राज्यों से भी समाचार पत्रो की सूचना के आधार पर उत्साही आर्यजन इस आन्दोलन मे भाग लेने के लिए दिल्ली पहुचे।

आर्यसमाजो के अतिरिक्त दिल्ली की दर्जनो अन्य हिन्दू सस्थाओ के साथ साथ राजनीतिक दलो के विशिष्ट व्यक्तियो ने भी मन्दिर तोडे जाने की इस घटना का घोर विरोध किया।

विश्व हिन्दू परिषद के धर्म प्रचार प्रमुख रामकष्ण गौड ने कहा कि जल्द से जल्द अगर कोई इसका समाधान नहीं निकाला गया तो परिषद इसके खिलाफ आदोलन करेगी। वहीं परिषद के महासचिव राजेन्द्र प्रसार न कारसेवा कर मदिर बनाने का ऐलान तक कर डाला।

मन्दिर तोड़ने के विरोध में
प्रधानमन्त्री को दिया गया ज्ञापन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्यसमाज के समस्त राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय सगठनो की ओर से आर्यसमाज जैसे एक देशभक्त सगठन पर बिना किसी उकसावे अथवा कारण के आपकी सरकार ने जो हमला किया है उसकी कडी भर्त्सना करती है। ४५ वर्ष पुराने आर्यसमाज मन्दिर भवन को जो रणजीत सिह पुल के एक तरफ मिण्टो रोड पर स्थित था के मुख्य भवन पवित्र यज्ञशाला और पवित्र धार्मिक ग्रन्थो को जिस क्रूरता से ध्वस्त नष्ट किया गया उस शर्मनाक काण्ड की निन्दा करने के लिए हमारे पास शब्द नहीं है। जब बुल्डोजरो से भवन को गिराया जा रहा था उस समय डिमोलिशन दस्ते के लोग यज्ञ कर रहे ब्रह्मचारियो के साथ पागलो जैसा व्यवहार कर रहे थे और यहा तक कि उनके कपडे भी फाड डाले। आर्यसमाज जैसे एक अनुशासित सगठन के साथ यह भेदभाव पूर्ण बर्ताव सहन शक्ति के बाहर है।

सबसे अधिक हैरानी की बात यह है कि मिण्टो रोड स्थित आर्यसमाज मन्दिर को गिराने का जो आदेश शहरी विकास मन्त्री श्री जगमोहन ने दिया वह आपकी सरकार के निर्धारित दिशा निदेर्शो के भी विपरीत है। इस सम्बन्ध मे न तो गृहमन्त्री भारत सरकार और न ही उसके प्रतिनिधि दिल्ली के उपराज्यपाल को सूचना दी गई और न ही उनकी स्वीकृति ली गई। यह बात हमारी समझ से बाहर है कि जिस धीगामस्ती एव घमण्ड के साथ केन्द्रीय शहरी विकास मन्त्री श्री जगमोहन ने यह काण्ड करवाया और अब आर्यसमाज के लोगो के बीच झूठे समझौते की अफवाह फैला रहे है।

दलगत राजनीति से अलग जिन राजनीतिज्ञों ने विशेषकर दिल्ली के सासदों सर्वश्री साहिब सिह वर्मा मदन लाल खुराना विजय गोयल और प्रो० विजय कुमार मलहोत्रा ने जो एकता दिखाई उसकी हम प्रशसा करते हैं। विभिन्न धार्मिक नेताओं हिन्दू, मुस्लिम सिक्ख ईसाई जैन इत्यादि ने इस काण्ड पर गहरा क्षोभ एव गुस्सा प्रकट किया है।

४८ घण्टे तक आपके हस्तक्षेप की प्रतीक्षा करने के पश्चात भी आपकी ओर से कोई सकारात्मक उत्तर न मिलने के कारण हम अपनी निम्न मागो की प्राप्ति के लिए शान्तिपूर्ण सत्याग्रह करने के लिए बाध्य है।

१ ४५ वर्ष पुराने आर्यसमाज मन्दिर को ध्वस्त करने के लिए केन्द्रीय सरकार विशेषकर श्री जगमोहन जी बिना शर्त माफी मागे।

२ समाज मन्दिर के ध्वस्त के नुकसान की भरपाई के लिए उसी स्थान पर एक नए सुन्दर आर्य समाज मन्दिर का निर्माण करवाया जाए। स्थान के बारे मे कोई समझौता नहीं होगा।

३ दोषी अधिकारियो को उनके इस कुकृत्य के लिए दण्ड दिया जाए।

हमने यह सौगन्ध खाई है कि जब तक हमारी उपरोक्त मागे सम्मानजनक ढग से पूरी नहीं हो जाती तब तक हमारा यह सत्याग्रह चलता रहेगा।

आखिर मे हम माननीय प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी आपसे अनुरोध करते है कि आप बिना समय खोए इसमे हस्तक्षेप करे और अपनी इस बात का सबूत दे कि आज आपका राजनैतिक एव सामाजिक जीवन जो भी है यह आर्यसमाज की बदौलत है।

(पृष्ठ ३ का शेष)

आर्यसमाज की प्रचण्ड शक्ति के सामने सरकार झुकी

बहरहाल इस घटना के बाद स इलाके मे तनाव बना हुआ है। क्षेत्र के अतिरिक्त पुलिस आयुक्त सतीश गोलचा ने कहा कि पुलिस को चौकसी बरतने के आदेश दिए जा चुके है। वहीं मिण्टोरोड के विधायक ताजदार बाबर पूरे मामले पर विरोध जताते हुए कहती जी तो ४ घट पुलिस की हिरासत मे भी रहे।

अखिल भारतीय हिन्दू महासभा ने ४५ वर्ष पुराने मदिर को ध्वस्त किए जाने के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे लोगों पर पुलिस कार्रवाई की तीव्र भर्त्सना की है।

सरकार की निन्दा

दिल्ली प्रदेश युवा काग्रेस (ई) के अध्यक्ष जयवीर नागर क नतृत्व मे युवा काग्रेस के हजारो कार्यकर्ता विशाल प्रदर्शन करेगे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधियो ने भी इस कार्य की कडी आलोचना की।

इस चार दिवसीय आन्दोलन में पहले ही दिन श्री विमल वधावन एडवोकेट मन्त्री श्री अरुण वमा ने ४ दिन तक निरन्तर अपने अन्य अधिकारियो के सहयोग से सपत्नीक इस आन्दोलनात्मक यज्ञ मे अपने परिश्रम की आहुति दी। दिल्ली और आस पास के गुरुकुलो तथा अन्य शिक्षण सस्थाओ से भी भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ।



१ प्रचण्ड प्रदर्शन पुलिस के तीन बैरीयर द्वारा मार्ग पर खडे किए गए लोहे के अवरोधको पर खडे आर्यजन। २ पुलिस के लोहे के अवरोधको से उतरते हुए आर्यवीर। ३ पानी की भयकर बौछारो और अश्रु गैस के गोले के बावजूद प्रतिशोध की अग्नि तब तक शान्त न हो सकी जब तक साय ६ बजे सरकार ने अपनी भूल स्वीकार करते हुए मन्दिर निर्माण की उसी स्थल पर स्वीकृति का आश्वासन न दिया।

है कि सरकार को किसी भी मदिर या मस्जिद गिराने का कोई हक नहीं है। इससे लोगो की भावनाओ को चोट पहुचती है। हम इस तरह की किसी भी कार्रवाई की निदा करते है।

अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के प्रमुख नेता बाबा प० नन्दलाल मिश्र मन्दिर स्थल का दारा करने आए उन्होने कहा कि सूर्यदेव जी के जीवन काल से मने उन्हे आर श्री विमल वधावन को इस मन्दिर की रक्षा क लिए सघर्ष करते देखा है। सघर्ष के दौरान बाबा सचिव स्टीफन विलियम्स ने केन्द्र मे भाजपा गठबधन सरकार की निन्दा करते हुए कहा कि अयोध्या में राम मदिर के नाम से सत्ता मे आने वाली गठबधन सरकार के केन्द्रीय शहरी विकास मत्री जगमोहन के चुनाव क्षेत्र मिटो रोड के ४५ वर्ष पुराने आर्यसमाज मदिर को लण्ड एण्ड डिवलपमेण्ट विभाग क तोडक दस्तो द्वारा ध्वस्त कर मिटटी म मिला दिया। इस काय की जनता तीव्र भत्सना करती ह। उन्होने कहा कि यदि सरकार मदिर का निर्माण पुन नहीं करती तो श्री विनय आर्य आचार्य देवव्रत श्री अरुण वर्मा सहित जब २५ आर्य महानुभाव पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिए गए तभी आर्य जनता ने यह सकल्प कर लिया था कि यज्ञ कर रहे आर्यसमाजियो का जिस तरह अपमान किया गया है वह नन्दनीय ह। स्वामी सुमेधानन्द एव आचार्य देवव्रत जी के नेतृत्व में श्री विनय आय श्री विजेन्द्र आय वृजश आय राजवीर तथा अन्य दर्जनो आर्यवीर दिन रात इस सघर्ष मे जुटे रहे।

आर्यसमाज हनुमान रोड के युवा

सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री जगदीश आर्य तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शशि प्रभा आर्या का अथक परिश्रम भी इस आन्दोलन की प्रमुख आहुति थी। श्रीमती शशि प्रभा आर्या तथा राजौरी गार्डन दयानन्द विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती विभा पुरी कई अन्य आर्य महिलाओ के साथ लगभग ५ घटे पुलिस हिरासत मे भी रहीं।

आय जगत के सुविख्यात सन्यासी स्वामी दीक्षानन्द जी भी लगातार अपनी उपस्थिति से आन्दोलन की आत्मा बने रहे।

संक्षिप्त जीवन परिचय

बीदर जिले के स्वातन्त्र्य सेनानी

श्री रामचन्द्र वीरप्पा (एम०पी०)

लोकसभा सदस्य, स्वातन्त्र्य सेनानी, जनसेवक श्री रामचन्द्र वीरप्पा अपनी उम्र के ९२ वें वर्ष में भी लोकसभा सदस्य पद पर विराजमान हैं। इससे और आश्चर्य की बात क्या हो सकती है। ऐसी कौन सी शक्ति है ? जो उन्हें इतने वर्षो से इस पद पर विराजमान होने में सहायक हो रही है। एक तो वे पढे लिखे नहीं, किसी पाठशाला का उन्होंने मुंह नहीं देखा। राजनीतिज्ञो के गुण भी उनमें नहीं हैं। फिर भी १९४८ से आज तक लगातार दस बार कभी राज्य सभा तो कभी लोकसभा के सदस्य बनते आ रहे हैं। उनके पास न धन का स्त्रोत है न कोई डिग्री न किसी बडे नेताओं का वरदहस्त उनके सर पर है। प्रत्येक चुनाव में भारी बहुमत से जीत जाते है चाहे वे किसी पार्टी के सदस्य रहे हों। इन सब बातों की गहन अध्ययन की आवश्यकता है।

चुनाव में आजकल जीतने के लिए लाखों नहीं, करोडों रुपयों की अ[illegible]ता होती है। श्री रामचन्द्रप्पा वीरप्पा अपनी जेब से [illegible] पैसा भी खर्च नहीं करते। सारी व्यवस्था-जनता [illegible] करती है। फिर कैसे प्रचार करते हैं ? वह धन किनके हाथ में जाता है ? कौन खर्च करता है ? इस पर वह अनभिज्ञता जताते हैं। जनता का प्यार, उन पर अटूट विश्वास, एव प्रेम के कारण ही जनता उन्हे चुनकर लाती हे। उन्हे जनता, सत्यवादी, बलिदानी, देशप्रेमी, त्यागमूर्ति जनसेवक के रूप मे जानती हे। उन्हे सरल सीधा-सादा, गर्व अभिमान रहित, भोला-भाला एक आम आदमी के प्रतिनिधि के रूप में देखती है। इतना सत्य है कि जब भी चुनाव में किसी पार्टी की और से उन्हें उम्मीदवार के रूप में ठहराया जाता है, वे अपनी ओर से या घर से एक पैसा भी खर्च नहीं करते। केवल उम्मीदवार के रूप में उनका नाम आते ही जनता उन्हें मत देकर चुनकर लाती है। पर कुछ नेतागण, साहित्यकार पत्रकारों की प्रतिक्रिया जानने पर ऐसा भी आभास हुआ, कि श्री रामचन्द्र वीरप्पा के इतने वर्ष से सासद लोकसभा सदस्य रहने पर भी ऐसा एक भी बीदर जिले के लिए कार्य नहीं किया जो स्मरण में आ सके। इनके नाम से पार्टी के बाकी नेताओं ने इनके सदस्यत्व का फायदा उठाकर अपनी मनमानी कर ली और कोई उपलब्धी जनता को नहीं मिली। लेकिन वे सब भी मानते हैं, यह सच्चे देशभक्त त्यागी, कट्टर आर्यसमाजी, दीन दलितों के किसानों का दुख दर्द जानने वाले उनको सदा सहायता करने वाले नेता हैं। ऐसे स्वातन्त्र्य सेनानी, त्यागी जनसेवक का जीवन चरित्र लिखना बहुत ही जिम्मेदारी का कार्य होता है। ऐसे नेताओं का चरित्र लिखने की कला में जो पारंगत है वे ही उनके जीवन के पहलुओं का अध्ययन कर विस्तार से उनकी जीवन शैली, उनके व्यक्तित्व, उनके राजनीतिक जीवन, कार्यशैली का अध्ययन कर पुस्तिका लिख सकते हैं। हम उस स्तर के लेखक नहीं है, यह सब जानते हैं।

मैंने जहां तक हो सके इस लघु लेख में उनके जीवन के हर पहलू पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। उनके जीवन के प्रत्येक भाग को सीधे सरल शब्दों में आम जनता तक सरलता से उनके कार्यों के विषय में समझा सके ऐसा यत्न किया है। मैं जानता हूं साहित्यकार, पत्रकार विमर्शक जनता की दृष्टि में अनेक दोष हो सकते है। एक ही व्यक्ति के विषय में प्रत्येक का, विचार करने का दृष्टिकोण अलग होता है। हमारा उद्देश्य केवल इतना ही है, बीदर जैसे पिछडे जिले मे आज भी एक व्यक्ति ऐसा है जो काल के थपेडों को सहता हुआ अपने कर्म, त्याग, धर्म, नियम का बिना भय झिझक के अपने स्थान पर विराजमान हैं ओर आज भी जनता जनार्दन के प्रिय नेता के रूप में जाने जाते हैं। भारत के प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी जी को जब चाहे मिल सकते है। बिना भय डर के अपनी बात उनके सामने कह सकते है। पार्टी वाले हो, विरुद्ध पार्टी वाले हो, बडे आदर के साथ उनका सम्मान करते हैं। ऐसे व्यक्ति के विषय में आम जनता भी उनकी जीवनी, व्यक्तित्व, कार्यशैली, दीर्घायु, देशप्रेम के विषय में जानने की इच्छा रखती है और इसी उद्देश्य को लेकर यह जीवन चरित्र लिखने की प्रेरणा मिली जो आज आपके सामने छोटी-सी लेख के रूप में प्रस्तुत करने का साहस किया है।

किसी की जीवनी आरम्भ करते समय उनके जीवन के पाच विभाग करने पडते हैं। (१) जन्म, बाल्यावस्था, कुटुम्ब (२) यौवनावस्था तथा कार्य, (३) व्यक्तित्व एवं कार्य साधना, (४) जनसेवा तथा देश सेवा का आंकलन (५) साधना का फल।

बीदर जिला अनादिकाल से धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थल के रूप में जाना जाता है। श्री राम जी जब रावण का वध करके अयोध्या लौटते समय बीदर मार्ग से गुजर रहे थे। विश्राम के लिए पापनाश मे कुछ समय ठहरे थे। तभी यहा एक महालिंग की स्थापना की, ऐसा कहा जाता ह। वास्तव मे इस स्थल के विषय मे रामायण मे या किसी भी पुराण मे उल्लेख नहीं है। उसके पश्चात् महाभारत के काल में इसे 'विदुर नगर' कहा जाता था, पर इसका भी महाभारत में कहीं उल्लेख नहीं है। किवदंतियाँ हैं जो वास्तविक घटनाओं से परे है। हमें यहां बीदर जिले का इतिहास देखने की आवश्यकता भी नहीं है। फिर भी ऐसी पुण्यभूमि में जन्में श्री रामचन्द्र वीरप्पा जी की जीवनी लिखते समय इस पुण्य भूमिका संक्षेप मे वर्णन तो करना ही पडता है क्योकि अन्य राज्य की जनता जब इनका चरित्र का मनन करती है, तो उनके जन्म-स्थान के सन्दर्भ में जानना चाहती है। बीदर कहां है, कौन से राज्य में है ? इसका ऐतिहासिक महत्व क्या है ?

बीदर जैसे पवित्र जिले में १२वीं शताब्दी में बीदर जिले के बसवकल्याण क्षेत्र में जगद्गुरु महात्मा बसवेश्वर जी ने लिंगायत धर्म की स्थापना कर देश में फैले अधर्म, अन्धविश्वास, अज्ञानता, जातिभेद, असमानता का निर्मूलन करने यत्न के साथ ही, दीन दलित, नारी जाति का उद्धार का अविस्मरणीय कार्य अपने कार्यकाल में करके दिखाया, वे साक्षात अवतारी पुरुष थे।

ऐतिहासिक दृष्टि से बीदर जिला विशेष कर बीदर नगर, बरीदशाही, बहमनी राजाओं का प्रमुख राजधानी केन्द्र रहा। बाद में निजामशाही में विलीन हो गया। यहां पर पांच सौ वर्ष पूर्व गुरु नानक देव जी पद गुरु नानक झरामें पडे थे, उनके द्वारा प्रवाहित झरा आज भी देखने को मिलता है। इसके अतिरिक्त हुमनाबाद में स्थित श्री माणिक प्रभु संस्थान, वीर भद्रेश्वर मन्दिर, भालकी में परमपूज्य अवतारी पुरुष पट्ट देव, का आश्रम शिक्षण संस्था। बीदर में झरनी नृसिंह अनंत शयन मन्दिर, किला, गुम्मज ऐतिहासिक गवाही के रूप मे स्थित है। ऐसे पवित्र ऐतिहासिक धरती पर हमारे प्रिय शासक श्री रामचन्द्र जी का जन्म हुआ और उन्होंने अपनी देशभक्ति, बलिदान, त्याग, जनसेवा के कार्य द्वारा इस धरती को पुनीत किया यह हम सबके लिए गर्व अभिमान की बात है।

जन्म और बाल्यावस्था

श्री रामचन्द्र का जन्म बीदर जिले के हुमनाबाद तालूका में हुआ। बीदर जिला उस समय निजाम रियासत में था। उनका जन्म १९०६ मे हुआ। पिता का नाम वीरप्पा बडे भाई का नाम लक्ष्मण तथा इनका नाम रामचन्द्र रखा गया। बचपन के उस काल में दलित वर्ग के लोगो को लिखना पढना पाठशाला में जाना निषिद्ध माना जाता था। वह जन केवल मजूरी करना, दुसरों के खेतों में ...मजदूरी करना होता था। उनके घर भी गांव के बाहर होते थे। रामचन्द्र जी दलित परिवार में जन्म लेने के कारण पढाई लिखाई से वचित रहे, बाद मे भी उन्हे पाठशाला में जाने का सुअवसर प्राप्त नहीं हुआ। बचपन मे गाय-बैल चराना, दुसरो के खेतों में मजदूरी करना यही उन्हें ज्ञात था। उनके बडे भाई बढई का काम करते थे रामचन्द्र बढई का काम उनके साथ रहकर सीखने लगे। उस समय भारत देश अंग्रेज शासन का गुलाम था। भारत को आजाद कराने के लिए निजाम राज्य को छोड सारे भारत मे क्रान्तिकारियों द्वारा आन्दोलन आरम्भ हो चुका था। इस आन्दोलन मे स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्यसमाज की छाव मे उस काल के भारत के दिग्गज नेताओ ने अपना सर्वस्व त्यागकर सारे भारत मे अग्रेजो के विरुद्ध सघर्ष छेड दिया, पर यहा पर निजाम का राज्य होने पर उसका अन्य स्थानो की तरह असर नहीं पडा। तभी हेदराबाद शहर मे आर्यसमाज की स्थापना सुलतान बाजार मे की गई और देखते देखते हजारो की संख्या में बुद्धिजीवी इस समाज के झण्डे तले एकत्र होकर भारत की स्वतन्त्रता के साथ हिन्दुओ को निजाम रियासत से मुक्त दिलाने के लिए भूमिगत आन्दोलन छेड दिया और उसकी शाखाएं, सम्पूर्ण निजाम रियासत (उस जमाने में सोलह जिले थे) फैला दी। गुप्त रूप से भूमिगत आन्दोलन द्वारा हिन्दुओ को एकत्र करना। उनके मन में देशभक्ति की भावना जगाना, निजाम रियासत से उनके जुल्मो से मुक्ति पाने के लिए सभी धर्म जाति वालो को आर्यसमाज के झण्डे तले एकत्र करने,उनमें स्वतन्त्रता, त्याग व देश के लिए बलिदान होने की भावना जगाने का महान कार्य आर्यसमाज ने किया।

रामचन्द्र जी के बडे भाई लक्ष्मण इस ओर आकर्षित हुए। उन्होंने 'आर्यसमाज की महत्ता' स्वीकार कर ग्राम ग्राम जाकर हिन्दू जनता में स्वतन्त्रता की ज्योति जलाई और उन्हें सशक्त बलवान बनाने के लिए प्रत्येक गांव में व्यायामशाला की व्यवस्था कर उन्हें कुश्ती, मुदगल फिराना, मलखान, सूर्य नमस्कार जैसे व्यायाम सिखाकर, उन्हें देश की स्थिति स्वतन्त्रता, त्याग, बलिदान का पाठ पढाने का महान कार्य आरम्भ किया। बचपन में ही रामचन्द्र जी के मां-बाप का स्वर्गवास होने के कारण, उनका सारा भार लक्ष्मण पर आ पडा, वे उनके माता-पिता गुरु बन गए। उन्हीं के नेतृत्व में उन्होंने कुस्ती, मुदगल फिराना, दण्ड बैठक, मलखॉन, सूर्य नमस्कार जैसे पहलवानी के सारे दांव-पेंच सीख लिए और एक बलशाली पहलवान के रूप में ख्याति प्राप्त की। आर्यसमाज के विषय में अपने भाई के साथ प्रचार कार्य में सहायता करने लगे और स्वय एक कट्टर आर्यसमाजी बन गए। युवाओ की टोली बनाना, उन्हे व्यायाम सिखाना, स्वतन्त्रता आन्दोलन तथा निजाम रियासत के विरुद्ध लडने के लिए प्रेरित

— शेष भाग पृष्ठ 6 पर

पृष्ठ ५ का शेष भाग

श्री रामचन्द्र वीरप्पा (एम०पी०)

करना, उनके मन मे देश प्रेम, त्याग एव बलिदान की भावना जगाने का कार्य उन्होने १५ वर्ष की आयु से ही आरम्भ कर दिया। आर्यसमाज से सम्बन्ध रहने के कारण उस काल के अनेक नेताओं से मिलने का तथा उनके साथ कार्य करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। महात्मा गांधी जी के भारत छोडो आन्दोलन से प्रेरित होकर रामचन्द्र वीरप्पा तथा उनके बडे भाई लक्ष्मणजी दोनो अत. प्रेरणा से आर्यसमाज के ध्वज तले दोनो भाईयों ने निजाम सरकार के विरुद्ध अनेक आन्दोलनों में भाग लेकर अपना सारा जीवन इस देश एव हैदराबाद निजाम राज्य से जनता को मुक्ति दिलाने के लिए स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पडे। उस समय पंजाब में 'आर्यसमाज' भारत को स्वतन्त्रता दिलाने में सक्रिय भूमिका निभा रहा था। श्रीरामचन्द्र जी कट्टर आर्य समाजी है और इस समाज के सस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनन्य परम भक्त हैं। उन्होंने आर्यसमाज के प्रमुख ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' को पढकर तथा, साक्षात उसको अपने जीवन को ढाल लिया है। रामचन्द्रजी ने सत्य वक्ता, निःस्वार्थी, जनसेवा, त्याग की भावना को आत्मसात कर लिया है। सत तुकाराम महाराज जी का एक उपदेश है " बोले जैसा चाले त्याची वदावी पाऊले" श्री रामचन्द्र वीरप्पा जो कहते है – डके की चोट पर कहते है और कर दिखाते है। उन्होने आर्यसमाज के एक एक उपदेश का पालनकर उसे अपने जीवन का अग बना लिया ह।

यज्ञ

अनादि काल से भारत वर्ष में यज्ञ करने की परम्परा चली आ रही है। आर्यसमाज में यज्ञ का विशेष महत्व है। युगो-युगो से यज्ञ करने की प्रथा चली आ रही है। श्री प्रभु रामचन्द्रजी ने अश्वमेघ यज्ञ किया था। महाभारत में यज्ञ करने की प्रथा थी। आज भी हर वर्ष हमारे देश मे महायज्ञो का आयोजन होता ही रहता है, पर आर्यसमाज मे हर शुभ कार्य से पहले यज्ञ करने की प्रथा है। रामचन्द्र वीरप्पा जी हर कार्यक्रम के पहले यज्ञ कराते हैं यज्ञ से घर शुद्ध होता हैं, मन शांत होता है, सूक्ष्म जीवन का नाश होता है। साथ ही यज्ञ आहुति से परमात्मा प्रसन्न होते है। वातावरण शुद्ध बनता है। धर्म और विज्ञान दोनों इससे सधते हैं। यज्ञ से वातावरण शुद्ध होता है, यज्ञ कर्म से वर्षा होती है। यज्ञ से समूचा वातावरण शुद्ध एवं पवित्र मंगलमय बन जाता है यज्ञ हमारी संस्कृति एवं सभ्यता के लक्षण हैं। यज्ञ और गायत्री मन्त्र इन दोनों से मानव को अपने आप मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। गायत्री जैसा दूसरा मन्त्र नहीं, यज्ञ जैसा कोई पवित्र कर्म नहीं। इनका चारों वेद, उपनिषदो मे एवं पुराणों में वर्णन देखने को मिलता है। गायत्री मन्त्र इस प्रकार है -

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं।
भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।।'

आर्यसमाज

श्री रामचन्द्र जी आर्यसमाज के कट्टर अनुयायी के रूप मे प्रख्यात है। यूं कहिए वे आर्य है। आर्यसमाज के नियमो के अनुसार उन्होंने अपने आपको ढाल लिया है। आजादी के पश्चात् हमारा भारत देश विदेशी रहन सहन, व्यसनो को अपनाकर अपने और देश को विनाश के कगार पर लाकर खडा कर दिया है। आज अपने आपको भारतीय कहलाने मे हमे लज्जा आती है। ऐसे वातावरण मे वह भी राजनीतिक जीवन मे रहकर अपने धर्म का पालन करना अग्नि परीक्षा के समान है पर रामचन्द्रजी का खान पान शाकाहारी है, चाय, सिगरेट, बीडी, शराब उन्हे आज तक छू नहीं सके। धन का मोह नहीं। पद की लालसा नहीं। अपनी फिकर नहीं। रात-दिन जनसेवा, देशसेवा का विचार। कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं। एक योगी, त्यागी, तपस्वी के समान उनका निर्मल जीवन ही उन्हें इस पद पर विभूषित करता आ रहा है। आज भारत के बडे से बडे सर्वोच्च पद पर विराजमान दिग्गज नेतागण उनका आदर करते हैं। सम्मान करते है, उनके पैर छूकर आशीर्वाद लेते हैं। यह सत्य धर्म पालन, निःस्वार्थ कर्म, देशभक्ति का साक्षात उदाहरण है। वह पूर्ण रूप से योगी पुरुष है। उनके स्थान पर और कोई एम०पी० होता तो करोडों का मालिक बन जाता, भ्रष्ट कार्य से अपना घर भर लेता। देशद्रोही बन जाता। रामचन्द्रजी ने कभी जनता के साथ, देश के साथ, पद के साथ गद्दारी नहीं की। उन्होंने इस ओर देखा ही नहीं। रामचन्द्रजी ने आर्यसमाज के सिद्धान्तों को हर घर में फैलाने का सदा यत्न किया। इस आन्दोलन में अपना सर्वस्व लुटा दिया। आर्यसमाज की विचारधाराओं को नई पीढी तक पहुंचाने का कार्य किया और आज भी कर रहे हैं। गायत्री मन्त्र और यज्ञ करना ही आर्यसमाज का उद्देश्य नहीं, मूल उद्देश्य देश में फैले अन्धश्रद्धा, रूढिवाद, जातिवाद, ऊचनीचता, अमीरी गरीबी का भेद मिटाना, सामाजिक न्याय दिलाना इन सबको उन्होने अपने कार्य से कर दिखलाया हे। जब भी भाषण करते है तब वे 'भारत माता की जय घोष करते ह। उनके रक्त के हर कण-कण में राष्ट्र प्रेम, राष्ट्र भक्ति राष्ट्रीय भावना कूट-कूट कर भरी है। उनके भाषण में केवल देश हित की बातें होती है 'आजादी के ५३ वर्ष बीत जाने पर भी हमारे देशांभिमान, आत्माभिमान कर्म करने की भावना, भाईचारा एकता की भावना नहीं। आज भी भारतीय जनता रोटी-कपडा और मकान से वंचित है, फिर हमने आजादी से पाया ही क्या है। अपने आपको भारतीय कहलाने के लायक हम नहीं रहे। इन सबका समाधान करने वाला, देश की सभ्यता-संस्कृति, धर्म, देश को बचाने वाला कोई नहीं। क्या होगा इस देश का ?' यह चिन्ता उन्हें सदा सताती रहती है। भावी पीढी के भविष्य की उन्हें चिन्ता है। बीदर जिले के हुमनाबाद के एक गरीब दलित परिवार में जन्में पले रामचन्द जी को एम०पी० के रुप में जनसेवक, देशभक्त सत्यवादी नेता के रूप में इतनी ख्याति मिलेगी यह किसी ने सपने में नहीं सोचा था। भाई के साथ बढई का कार्य करने जाते। दूसरों के खेत में भी मजदूरी से कार्य करते। मजदूरी करते बडे हो गए। उनके साथ वे आर्यसमाज संस्था में जाने लगे और आर्यसमाज का प्रसार-प्रचार का कार्य करने लगे। कमाल की बात यह है कि वृत्ति से बढई का कार्य करते थे आज भी वे अपना कार्य करते है। अब वृद्धावस्था के कारण वह वृत्ति छोड दी है। जब तक तन में शक्ति थी, एम०पी० थे फिर भी अपना व्यवसाय कार्य नहीं छोडा। बाद में प्रिन्टिंग प्रेस का कार्य भी उन्होंने कई वर्षो तक किया।

सन् १९४८ से विधानपरिषद सदस्य हैदराबाद राज्य के बने तब से आज तक कम से कम दस बार सदस्य तथा एम०पी०. बनने का सुअवसर उन्हे प्राप्त हुआ, पर आज भी अपना एक नया घर नहीं बना पाए। वही अपना पुराना टीन का, मिट्टी के मकान मे ही वास करते है। यह इस युग मे एक चमत्कार नहीं तो और क्या है ! जनता, नेता उन्हे तो मिलने आती है, तब वे मकान के बरामदे में एक खाट.बिछाकर उस पर बैठते है। उसी पर सोते हैं। आज सारा बीदर ही नहीं, उस राज्य में, बहादुर गंडू" के नाम से उन्हें जाना जाता है। 'ज्वालामुखी' के नाम से जाने वाले रामचन्द्र वीरप्पाजी जो बात होती है बेबाक़ बेधडक उन नेताओं के मुंह पर ही कह देते है। उनकी साध्वी पत्नी श्रीमती शंकरम्मा उनको सदा प्रोत्साहन देती रही, उनके कार्य में कभी बाधक नहीं बनी। उनके चार पुत्र चार पुत्रिया है।

सन् १९३८ में हैदराबाद में आर्यसमाज संस्था की स्थापना हुई निजाम सरकार के बिरुद्ध कई युवा क्रान्तिकारियों ने आन्दोलन छेड दिया था तभी से श्री रामचन्द्र जी इस संस्था से जुडे है प्रत्येक आन्दोलन मे वे भाग लेते रहे। उस समय आर्यसमाज पर निजाम सरकार ने पाबन्दी लगा रखी था। सार्वजनिक भाषण, जुलूस सभा पर पाबन्दी थी उस पाबन्दी के विरुद्ध कार्य कर जेल गए। सन् १९४२ महात्मा गांधी जी ने आन्दोलन से प्रेरित होकर उसमें भाग लिया। इन्हें गुलबर्गा तथा बाद में हैदराबाद जेल में रखा गया। उस समय के स्वतन्त्रता सेनानी देशभक्त क्रान्तिकारी विनायक राव, पंण्डित नरेन्द्रजी विद्यालंकार के सम्पर्क में आए बाद में स्वामी रामानन्द तीर्थ, बापू जी कोण्डा लक्ष्मण के सहयोगी बनकर स्वातन्त्र्य आन्दोलन मे कूद पडे। श्री रामचन्द्र जी अपना सर्वस्व ब्रिटिश एव निजाम के विरुद्ध आन्दोलन मे लुटा दिया था। भारत मा के लिए बलिदान देशभक्ति के अतिरिक्त उन्हे और कुछ नहीं सूझता था। सरकारी इमारतो को बम विस्फोट कर उडा देने की योजना बनाई पर यह असफल सिद्ध हुई उन्हें अण्डमान मे काले पानी की सज़ा भोगनी पडी। आर्यसमाज की और से कोर्ट में लडने के लिए प्रख्यात वकील बी०राम किशन राव जैसे दिग्गज नेता उनके साथ थे। भारत देश को आजादी प्राप्त होने के पश्चात ही उन्हें अण्डमान जेल से मुक्ति मिली।

श्री रामचन्द्रजी निजाम के दौर में हिन्दुओं का वर्णन करते हुए कहते है निजाम सरकार के दौर में हिन्दूओ पर ग्राम से लेकर तालूका का, जिला शहर स्तर तक हर प्रकार का अत्याचार किया जाता था। अज्ञानता, गरीबी, मजबूरी तथा गुलामी का जीवन जीने वाले हिन्दुजन नर्क सा जीवन बिताने पर मजबूर थे। यह सब देख रामचन्द्र जी का खून उबलने लगता और वे और जहां कही भी हिन्दुओं पर अन्याय अत्याचार होता था तव वे अपने साथियों के साथ उन यवनों के विरुद्ध कूद पडते थे। वे सदा अपने पास रिवाल्वर रखते थे। कभी-कभी बन्दूक भी रखते थे। एक तो युवावस्था दूसरा उन्हें व्यायाम का बडा शौक था वे स्वयं पहलवान थे। घरबार बीबी बच्चे की कभी परवाह नहीं करते थे। क्रान्ति करने की एक सनक थी, जुनून था। देश के लिए मर मिटने का व्रत लिया था। मरता वो क्या न करता। उन्होंने ग्राम-ग्राम जाकर आर्यसमाज के झण्डे तले कई युवको की टोली बनाई। उन्हें कर्म धर्म देश कर्त्तव्य का पाठ पढाया और मानो अपनी एक छोटी सी सेना बनाई।

उस समय भारत में स्वतन्त्रता की लडाई में देश के लिए जिन्होंने अपने प्राण त्याग दिए उनका उल्लेख करना आवश्यक है शहीदे आजम भगत सिंह, सुख देव राज गुरु, चन्द्रशेखर आजाद न जाने कई लाख वीरो ने भारत माता की आजादी के लिए अपना सर्वस्व सुख घर त्योगकर मां के चरणों में शहीद हो गए। आज की युवा पीढी को उनके नाम तक याद नहीं। फिर बलिदान की कहानी कौन सुनाएगा। ऐसे देशभक्त वीर बलिदानियों की कहानी स्कूल कॉलेज मे पढने वाले छात्रो को अवश्य पढनी चाहिए, जिससे उनके मन मे सत्य त्याग देश प्रेम की भावना जाग्रत हो। खून की कलम से लिखी यह सच्ची दासता है। उन्हें उनके विषय में बताना चाहिए।

क्रमशः

माता-पिता का भूलकर भी तिरस्कार न करें

– आचार्य रामप्रसाद जी वेदालंकार

माता-पिता जब सन्तान का पालन-पोषण करते हैं, जब उनकी शिक्षा-सुशिक्षा की व्यवस्था करते हैं तो इसमें निःसन्देह उनको अनेक प्रकार की कठिनाईयां आती हैं। मैंने ऐसे माता-पिता देखे हैं जो मर जाएं पर अपने कार्य के लिए किसी को कुछ न कहें, पर अपनी इस प्रिय सन्तान के लिए उनको भी मैंने इतना नम्र, इतना सरल, इतना दीन होकर गिडगिडाते हुए देखा है कि उसका मैं वर्णन नहीं कर सकता। भर्तृहरि जी लिखते हैं कि एक स्वाभिमान से परिपूर्ण विधवा नारी को मैं देखता हूं कि वह भूख-प्यास से मर जाना पसन्द करती है पर कुछ मांगना नहीं। पर उसे भी जब जीने की- अपने बच्चे के पालन-पोषण की कोई राह नहीं दिखाई देती और जब वह सब तरफ से हार कर झोंपडी में खाली हाथ जाती है तो बच्चों में से एक बच्चा उसकी गोद में घुसता है, और इस आशा से उसकी आंखों की ओर निहारता है कि मां अभी कुछ देगी ओर मैं खाऊँगा। मां जब बच्चे के चेहरे से यह बात भांप लेती है तो उसकी आंखो से आसू झरने लगते हैं । ये आसू अभी प्रवाहित ही हो रहे होते है कि एक दूसरा बच्चा मा के फटे-पुराने वस्त्रो को खींचता हुआ कहता है "मा रोटी ! मा बडी भूख लगी है, रोटी दो ।" यह सब देखकर फिर ममता की मारी मा जो उस समय रोटी के लिए कोई और राह नहीं ढूंढ पाती तो हृदय से न चाहते हुए भी आखिर वह हार कर दो पैसे या दो रोटी के लिए हाथ पसार ही देती है। बाप भी ऐसा है कि जिसने अपने स्वाभिमान के कारण कई, नौकरियों को त्याग दिया, पर अब जब बच्चों को देखता है तो नानाविध अपमान और तिरस्कारों को सहकर भी, मन को मार कर भी नौकरी कर ही रहा है। यद्यपि अब भी उसमे जरा सा अपमान होने पर वह अभिमान फन मारता है, पर जब उसको अपने बच्चों का ध्यान आता है तो वह अपने ही पैरों तले अपने अभिमान रूपी सर्प के फन को स्वयं ही कुचल डालता है। कईयों के मुख से मैंने (लेखक ने) स्वयं यह सुना है कि " यदि ये दो चार बच्चे-बच्चियां सम्मुख न होते और फिर इतनी कमरतोड मंहगाई न होती तो फिर मैं इस व्यक्ति को बताता कि मैं क्या हूं, मैं किस खानदान का हूं इत्यादि-इत्यादि।" मैं ने एक कॉलिज में व्याख्यान दिया और उसमें प्रसंगवश कहा कि ...... "मां-बाप, माता-पिता संसार में बडे निराले होते हैं। पुत्र के लिए नानाविध कष्ट सहते हैं। वे स्वयं छाछ के साथ रोटी खाते हैं और बेटे को घी इकट्ठा कर-करके भेज देते हैं, यह सोचकर कि उसको बहुत दिमागी काम करना पडता है। वे स्वयं फटा-पुराना वस्त्र पहन लेते हैं, पर बेटे को नए से नया-अच्छे से अच्छा वस्त्र पहनाते हैं। मैंने बहुत से ऐसे बापों को देखा है, जो अपने बच्चों को नया कोट सिला देते हैं, और उनके पुराने कोटों को स्वयं पहन लेते हैं। पिता बेटे को नया जूता पहना देता है और स्वयं उसका फटा-पुराना जूता पहन कर ड्यूटी पर चला जाता है। इस पर भी वह बेटा सम्भवतः इतना प्रसन्न-तृप्त नहीं होगा जितना उसका पिता होता होगा। ऐसे माता पिता का मेरे प्रिय बच्चो ! हमे कितना मान-सम्मान करना चाहिए, यह हमे स्वय सोचना चाहिए सचमुच ये वे दिव्य देव हैं जिनकी हमें नित्य पूजा और सम्मान करना चाहिए इत्यादि.........। "मेरे इस प्रकार का व्याख्यान देने पर वहां प्रसंगवश एक प्राध्यापक मेरे समीप आया और बोला कि 'इसी कॉलेज में आप चाहें तो मैं आपको एक ऐसे प्राध्यापक के दर्शन करा दूं जो इसी कॉलेज का प्राध्यापक होते हुए भी स्वयं इसी कॉलेज में पढने वाले अपने पुत्र को नए जूते पहनाए हुए हैं और स्वयं परिवार के उत्तरदायित्व को अनुभव करते हुए स्वयं उसका पुराना जूता पहन कर आए हुए है" उसने यह कहा ही था बिना उसके बताए ही उस अध्यापक की आंखें भरे हुए हृदय के कारण कुछ नम हो गयीं, और कुछ तर हो गयीं। मैं समझ गया और हृदय से उस बाप की सराहना करने लगा। बाल्यावस्था मे ही देख लीजिए कि बच्चा कैसा निश्चिन्त सोता है और उसके माता-पिता कितने सचिन्त सोते हैं। बच्चे के मस्तिष्क में उसके उज्ज्वल भविष्य का कोई नक्शा नहीं है पर मां-बाप के मस्तिष्क में उसके भविष्य को उज्ज्वल से उज्ज्वल बनाने के लिए नित्य नए-नए नक्शे बनते रहते हैं, और उनको पूर्ण करने के लिए भी ये नानाविध योजनाए बनाते है, और तो और बच्चा सो भी जाता है तो भी मा-बाप को चिन्ता है कि 'रात को वह कभी जागे, उसको भूख लगे, प्यास लगे, उसका गद्दा या वस्त्र गीले हो जाएं या उसके ऊपर से कम्बल रजाई आदि हट जाए या उसको मक्खी मच्छर आदि परेशान करें, उसको सर्दी या गर्मी लगे इत्यादि, तो इन सब बातों की चिन्ता उस बच्चे को नहीं वरन् उसके मां-बाप को होती है। बडा होने पर उसके उत्तमोत्तम भोजन आच्छादन, उसकी शिक्षा-दीक्षा, उसके समुज्वल भविष्य आदि की सब चिन्ताए उसके माता-पिता को ही होती हैं। अपने इन उत्तरदायित्वों को निभाने मे ये माता-पिता प्रायः इतने तल्लीन हो जाते हैं, इतने खो जाते हैं कि इनको प्राय अपना सब कुछ भूल जाता है।

सच कहा जाए तो इन सन्तानों के पालन-पोषण में, इनके निर्माण सुनिर्माण में ही ये इतनी कठिनाईयों से गुंजरते हैं, इतनी आपत्ति-विपत्तियों से गुंजरते हैं कि उसी में ही इनकी कमर टूट जाती है, इनकी हड्डियां गल जाती हैं, इनके शरीर शिथिल पड जाते हैं, इनके बाल सफेद हो जाते हैं आदि-आदि........। सच पूछो तो इन सन्तानों के पालन-पोषण से इनके निर्माण-सुनिर्माण से, इनके विवाह एवं रहन-सहन आदि की सुव्यवस्था इत्यादि के उत्तरदायित्वों से जब कभी जरा ये निबट कर अपने भविष्य की ओर निहारने लगते हैं तो तब इनको अपनी मन्जिल बहुत दूर दिखाई देती है, इनको अपना लक्ष्य बहुत दूर दिखाई देता है, फिर जब ये उधर उस दूरी को देखते हैं और इधर अपनी इस शरीर रूपी जीर्ण-शीर्ण शटल-गाडी को निहारते हैं तो तब इनकी आंखों के सामने अन्धेरा सा छा जाता है और ये तब हृदय से चाहते हुए भी कुछ विशेष करने में अपने को असमर्थ पाते हैं। क्योंकि ये उस समय जब स्वाध्याय करना चाहते हैं तो आखो मे या तो मोतियाबिन्द उतर आया हुआ होता है या फिर थोडा बहुत पढते हैं तो इन्हें धुन्धला-धुन्धला दीखने लगता है। अर्थात् स्वाध्याय करने मे आखे इनका साथ नहीं देतीं, ये कुछ आत्मकल्याण की बात सुनना चाहते है तो तब कान कुछ भारी (बहिरे) हो रहे होते है, साधना के लिए बैठना चाहते है तो आधा घण्टा बैठ कर प्रभु भजन करना भी इनको बडा भारी लग रहा होता है। ये हृदय से बडा प्रयत्न करते हैं कि किसी तरह जीवन के इन शेष दिनों में मन को प्राणों से प्यारे और सब जग से न्यारे प्रभु में लगाएं पर आश्चर्य यह होता है कि इस विषय में इनके अत्यन्त पुरुषार्थ करने पर भी इनका यह मन मुड-मुड कर पुत्र-पौत्रों में ही नहीं वरन् दुहित-दौहित्रों आदि-आदि की ओर भी बलात् भाग-भाग कर उन्हीं में ही रमण करने लगता है या फिर विषयों में रमण करने से ही इनके इस मन को फुर्सत नहीं मिल पाती है.... ..।"

ऐसे इन महान् माता-पिता के सम्बन्ध में जो अपने इन प्रिय बच्चों के लिए जीवन भर नाना प्रकार की आपत्ति-विपत्तियों को सहते हुए अपना सब कुछ प्रायः खो चुके होते हैं, अपना सब कुछ प्रायः उन पर वार चुके होते हैं, मनु जी कहते हैं -

यं क्लेश मातापितरौ सहेते सम्भवे नृणाम्।
न तस्य निष्कृतिः शक्या कर्तुं वर्षशतैरपि।। (मनु०)

सन्तान के उत्पन्न करने, उसके पालन-पोषण करने एवं उसको शिक्षित-प्रशिक्षित करने आदि में माता-पिता जिस-जिस कष्ट को सहते हैं, जिन-जिन कठिनाईयों को झेलते हैं, सौ वर्ष पर्यन्त भी यदि वह सन्तान उनकी सेवा-शुश्रूषा करती रहे तो भी वह उनके उपकारो का ऋण नहीं चुका सकती।" तो भी हर अच्छी सन्तान का यह कर्त्तव्य तो है ही कि वह अपने ऐसे देवता स्वरूप उत्तम माता पिता का नित्य प्रति श्रद्धा से अभिवादन करे, उनकी जी जान से सेवा-शुश्रूषा करे, भूलकर भी वह उनकी कभी अवहेलना न करे, कभी अपमान एवं तिरस्कार न करें।

गूंजे हिन्दी का जयगान

– राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

हिन्दी भारत की गोरव है
हिन्दी है अभिमान हमारा।
हिन्दी की हम करे अर्चना,
हिन्दी हो अभियान हमारा।

बढे प्रतिष्ठा इस हिन्दी की
गूजे हिन्दी का जयगान।

सहन नहीं अब अधिक करेगे,
हिन्दी का हम सब अपमान।
करे प्रतिष्ठित इस हिन्दी को
राष्ट्र शिखर पर, कर सम्मान।

यह हिन्दी है भारत मा की,
आन-बान व शान महान।

राष्ट्र नायको ! होश मे आओ
हिन्दी को अधिकार दिलाओ।
हिन्दी मे हो कार्य राष्ट्र का,
अग्रेजी को दूर भगाओ।

हिन्दी के हित देगे हम सब
अपने प्राणा का बलिदान।

– मुसाफिर खाना, सुल्तान पुर (उ०प्र०)

मानव जीवन की सफलता का रहस्य (२)

– आर्य तपस्वी सुखेदव

मनुष्य चोला केवल और केवल ईश्वर प्राप्ति के लिए ही मिला है। इस मुख्य प्रयोजन को छोड इस संसार मे अन्य किसी भी विषय को न प्रमुखता दो और न ही प्राथमिकता। अन्यथा यह अमूल्य शरीर जो चन्दन के वन के समान है, कोयले की खान में नष्ट करने के समान है।

सर्वशक्तिमान ईश्वर ने इस संसार की रचना जीवात्मा के विकास के लिए ही की और आज्ञा दी है कि ऐ प्राणी इस संसार में आ। संसार को देख। संसार के सभी पदार्थों को देख। अच्छे लगने पर इनका भोग कर और भोग करते-करते इनमें दुःख नजर आता है तो उनसे छूटने का पुरुषार्थ कर और उस पदार्थ की तलाश कर जिसमें दुःख न हो। इसके लिए जरूरी है - जब तक प्राणी संसार के सभी पदार्थों में दीखने वाले सुखों के पीछे छिपे दुःखों को नहीं समझता तब तक वैराग्य व विरक्ति उत्पन्न नहीं होगी और जब तक वैराग्य व विरक्ति नहीं जगेगी तब तक चंचल मन एकाग्र नहीं होगा। चंचल मन की एकाग्रता के बिना समाधि नहीं लग सकती। जब तक समाधि नहीं लगेगी, तब तक ईश्वर के गुणों का साक्षात्कार नहीं हो सकता, तब तक शरीर पर अज्ञान का पर्दा बना रहेगा और जब तक अज्ञान का पर्दा नहीं हटता तब तक संसार के समस्त दुःख, भय और चिन्ताओं से मुक्ति नहीं मिल सकती। जब तक दुःख भय, चिन्ताओं से मुक्ति नहीं मिलती तब तक पूर्ण और स्थायी सुख - स्वर्ग व मुक्ति नहीं मिल सकती।

मानव जीवन की सफलता संसार के सभी प्रकार के कुसस्कारों को छोडने पर ही है - यही श्रेष्ठ उपाय है। हमारा मन एक लोहे के टुकडे के समान है और संसार के सभी विषय-भोग पदार्थ एक चुम्बक के समान है। चुम्बक सदा लोहे को अपनी ओर खींचकर अपने साथ चिपका लेता है। हम सभी की दशा इसी प्रकार से हो रही है। अज्ञानी, मन्दमति नर नारी संसार के सभी पदार्थो को अपनी आत्मा का भाग मान कर मन रूपी लोहे को विषय भोग रूपी चुम्बक के साथ चिपका कर अपने जीवन को नष्ट कर रहे हैं लेकिन दूसरी ओर हमारी ही भान्ति के वे नर-नारी भी ऋषि चोले मे आकर ऋषियो जेसा तप करके विषय-भोगो से होने वाली हानियों का अन्दाजा पहले से लगा कर, उसमें लिप्त व आसक्त नही होते ओर जीवन को उत्तम कोटि का वना कर इस ससार में अमर हो जाते हैं और आध्यात्मिक ससार में अपने जीवन के लक्ष्य को जानकर, स्वयं भी उसी मार्ग पर चलने का मार्गदर्शन करते हैं जो परम-पिता का बनाया मार्ग-प्रमार्णो के आधार पर तर्क के आधार पर - युक्ति के आधार पर, सिद्धान्तों के आधार पर वेदों के बताए मार्ग हैं।

इस ससार में महात्मा बुद्ध आए, मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द जी आए, योगी राज कृष्ण जी आए, गुरु नानक देव जी आए, महावीर आए, रामकृष्ण परम हंस आए, श्रद्धानन्द जी आए, महर्षि दयानन्द जी आए, गार्गी आई, मैत्रेयी आई, मीरा आई, देवकी आई, राधा आई और संसार में अपना नाम अमिट कर रोशन हो गए थे। ये सभी हमारी और आप की तरह इन्सान थे ससार में, संसार के सभी पदार्थों को देखा, लेकिन इस संसार में लिप्त नहीं हुए, आसक्त नहीं हुए। संसार में सभी धर्मो को जोडने के लिए नाना प्रकार के कष्ट सहे, जहर का प्याला पिया, जिन्दा कीलों से चिनवाए गए, सत्रह बार जहर पिलाया गया, कैंसर रोग से ग्रस्त हुए लेकिन जब तक जिये, संसार के कल्याण के लिए कार्य करते रहे, उपकार के लिए जिए। कभी भी धर्म का, जाति का, सम्प्रदाय का जहर नहीं फैलाया। मनुष्य के उत्थान के लिए, मानवता की रक्षा के लिए कार्य करते रहे।

प्रचारक प्रशिक्षण शिविर

16-5-2001 से 31-5-2001

स्थान - गुरुकुल आश्रम आमसेंना

देश, धर्मप्रेमी, सेवाभावी, श्रद्धालु नवयुवक जो बेरोजगार है उन्हें वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में लगने के लिए तथा संस्कार करने, योगासन, प्राणायाम आदि का प्रशिक्षण देने के लिए आगामी १६ मई से ३१ मई २००१ तक प्रचारक प्रशिक्षण शिविर गुरुकुल आश्रम में लगाया जा रहा है। इस शिविर में भाग लेने वाले युवकों को जहां अपने जीवन निर्माण की प्रेरणा मिलेगी वहां वे योगासन आदि सिखाकर संस्कार आदि करके अपनी आजीविका भी कर लेंगे।

इस शिविर में दैनिक सन्ध्या, यज्ञ, मन्त्रपाठ, प्रारम्भिक संस्कृत शिक्षा वैदिक धर्म के सिद्धान्तों का तुलनात्मक ज्ञान, क्रियात्मक संस्कारों का शिक्षण, बोलने अथवा व्याख्यान देने की कला, संगीत ज्ञान, प्रारम्भिक चिकित्सा एवं आकस्मिक चिकित्सा, योगासन व्यायाम, प्राणायाम तथा आर्यवीर दल का शिक्षण दिया जाएगा। भोजन एवं आवास की निःशुल्क व्यवस्था गुरुकुल की ओर से होगी। शिक्षार्थी की आयु कम से कम १८ वर्ष हो व हिन्दी भाषा बोल एवं पढ़ सके, तथा नियमित दिनचर्या का पालन कर सके। आने वाले नवयुवक किसी आर्यसमाज के अधिकारी या गुरुकुल से परिचित सज्जन का पत्र लेकर आए। अप्रैल के अन्त तक अपने आने की सूचना अवश्य भेज दे। इस शिक्षण में जो छात्र योग्य रहेंगे, उन्हें प्रचार आदि कार्यो में भी लगाया जा सकता है।

आने वाले शिविरार्थी अपने साथ ऋतु अनुकूल वस्त्र एव थाली, लोटा, कटोरी, कापी पेन, सत्यार्थ प्रकाश, सस्कार विधि, व्यवहार भानु आदि पुस्तकें साथ लावें।

– स्वामी धर्मानन्द सरस्वती आचार्य

सऊदी अरब में २५ हजार हिन्दुओं ने मजबूरी में इस्लाम ग्रहण किया

नई दिल्ली। सऊदी अरब में रह रहे भारतीय नरक की जिन्दगी जी रहे हैं। पहले नौकरियां दिलाने वाली कम्पनियों ने सब्जबाग दिखाकर लूटा और वहां गए तो तयशुदा शर्तो से भी आधी तनख्वाह। बची-खुची कसर सऊदी अरब के कानूनों ने पूरी कर डाली, जिसका परिणाम यह निकला कि पिछले एक दशक में २५,००० हिन्दू जो देश के विभिन्न भागों से वहां गए थे, इस्लाम कबूल कर चुके हैं। रियाद से भारतीय दूतावास सूत्रों ने इसकी पुष्टि की है। विदेश मन्त्रालय सारे मामले पर खामोश है।

रियाद से किसी तरह भारत लौटने में सफल लोगों ने बताया कि वहां के कायदे-कानून मुसलमानों को ही रास आते हैं तथा हिन्दुओं की हालत दोजख जैसी है। यदि आपने इस्लाम धारण कर रखा है और किसी हादसे में आप मौत के शिकार हो जाते हैं तो आश्रितों को एक लाख सऊदी रियाल मिलेंगे, जबकि ईसाई होने के स्थिति में यह राशि ५०.००० रियाल है तथा हिन्दू परिवार के लिए यह राशि मात्र ६६६६ रियाल है। ऐसी सूरत में हिन्दू तेजी से इस्लाम कबूल कर रहे हैं। इस्लाम ग्रहण करने के बाद ये लोग वहां खुद को सुरक्षित महसूस करते हैं। जीवन स्तर भी बदल जाता है। इतना ही नहीं, इस्लाम धारण करने पर इन लोगों को पसंद के पद भी मिल जाते हैं तथा वेतन भी पूरा मिलता है।

दीपक कुमार (नाम परिवर्तित) नामक युवक ने बताया कि राजधानी दिल्ली की एक बडी कम्पनी ने उसे टैक्नीशियन के तौर पर सऊदी अरब ले जाना स्वीकार किया। उससे वीजा तथा नियुक्ति पत्र दिलवाने के एवज में तीन लाख रुपये लिए गए। कम्पनी के एजेन्टों ने उसे इन्दिरा गांधी हवाई अड्डे से विदा किया तथा रियाद मे नियुक्ति पत्र दिलाने वाली कम्पनी ने पहले दिन अपने यहा एक कोठरी मे पनाह दी। वहा जमीन पर टाट लगे थे ओर ८ लोग सो रहे थे। रात को ही उसे अपने इन अपरिचित मित्रो से पता लग गया कि वह ठगा गया है। उस कम्पनी के नुमाइंदो ने अगले दिन दीपक को खुले बाजार में नौकरी के लिए अपने ठेकेदार के साथ छोड दिया।

टैक्नीशियन बनने गया दीपक किसी भारतीय के घर घरेलू नौकर बन गया तथा उसे मिलने वाली तनख्वाह उसका ठेकेदार एक वर्ष के लिए बुक करने के बदले ले गया था। दीपक अपनी तनख्वाह उसी कम्पनी से लेता है, जिसके नाम दिल्ली की कम्पनी ने नियुक्ति पत्र भेजा था। ऐसे हजारों युवक इसी तरह रियाद में मारे-मारे फिर रहे है। इन्जीनियर, एकाउंटेंट, एक्स-रे टेक्नीशियन, हैल्पर बनने गए हिन्दू युवक यहां तयशुदा रकम से एक चौथाई रकम पा रहे हैं। वहां स्थित भारतीय दूतावास के दफ्तर में हजारों शिकायतें दर्ज हैं, जिनमें यह बताया गया है कि वे किस प्रकार भारत में रोजगार दिलाने वाली कम्पनियों द्वारा लूट लिए गए।

दरअसल इन कम्पनियों के पास आने वाले लोग ही नौकरियों की मांग करते हैं। योग्य व्यक्ति के लिए नौकरी की मांग की एवज में एक लाख रुपये देना होता है परन्तु दसवीं-बारहवीं पास के लिए भी ये कम्पनियों वाले नौकरी का झांसा देकर फांसते हैं। यह रकम ढाई से तीन लाख रुपये तक जा पहुंचती है। इन लोगों के रिश्तेदार जैसे-जैसे कर्ज उठाकर यह रकम तैयार करके इन कम्पनी वालों को अदा करते हैं।

इन लोगों ने बताया कि हम रियाद के उन भारतीयों के शुक्रगुजार हैं, जिन्होंने हमें स्वदेश लौटाया। यहां आने पर कम्पनी के नाम ही बदले हुए मिले। जैसे-तैसे वहां २ बरस रहकर ये लोग अपने परिवार को हर माह पत्र भेजते थे तो उन्हें लगता था कि वे ठीक-ठाक हैं। इसी तरह ऐसे युवक अपनी सही स्थिति भी बयान नहीं करते थे ताकि परिवारजनों को दुःख न हो।

एक अन्य युवक ने बताया कि इस्लाम कबूल करने वाले हिन्दुओं को मस्जिद में जाकर कलमा पढ़ाए जाने के बाद एक सार्टिफिकेट जारी कर दिया जाता है। इस सार्टिफिकेट को भारतीय दूतावास में पेशकर आपको अपना नाम परिवर्तन करना होता है तथा इसके बाद वहां के किसी भी दैनिक में यह इत्तिला छप जाने के बाद कानूनी तौर पर इस्लाम कबूल हो जाता है तथा कानूनन वह व्यक्ति मुसलमानों की तरह मिलने वाली सहूलियतों का हकदार हो जाता है। मुसलमान बनते ही आपकी सामाजिक सुरक्षा भी सऊदी अरब की जिम्मेवारी बन जाती है तथा नौकरी भी किसी एजेंट की मार्फत कुल कमीशन वगैरह तय हो जाने पर मिल जाती है।

– पजाब केसरी से साभार

अब बहेंगी विदेशी दूध, घी की नदिया

– निवेदिता केसर

भारत आज दुनिया मे सबसे बडे दूध उत्पादकों मे से है। १९९८-९९ में हमारे देश का उत्पादन दुनिया में सबसे ज्यादा ७.८ करोड टन हुआ जबकि अमरीका में ७.२ करोड टन है। हाल के वर्षो में बहुत सारे आरोप दुग्ध उद्योग (डेयरी उद्योग) के ऊपर आए है। सिंथेटिक दूध का पकडा जाना, गांव-गांव में दूध में होने वाली मिलावट, भैंसों को सीधे यूरिया की खुराक चारा में मिलाकर देना, विभिन्न तरह के इन्जेक्शनों का इस्तेमाल, भारतीय दुग्ध उद्योग की काली छाया बनकर खडा हो रहा है। इससे हमें निपटना ही होगा।

हम आन्तरिक कठिनाइयों से जूझने और निकलने के सद्प्रयास मे लगने की कोशिश में ही थे कि विदेशी दूध उत्पाद हमारे खडे ढाँचे को तोडने में ही लगने वाले हैं। आजादी बचाओ आन्दोलन से गहरा जुडाव रखने वाले और गंगा मुक्ति आन्दोलन के नेता अनिल प्रकाश ने विदेशी दूध के मामले को लेकर विभिन्न प्रदेशों का व्यापक दौरा किया है। प्रतिष्ठित दैनिक जनसत्ता में उनके हवाले से छपे समाचार में बाहरी दूध के बारे में काफी कुछ कहा गया ह।

पजाव मे विदेशी दूध आ गया है। हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश दिल्ली में आना शुरू हो चुका ह। अगल निशाने पर राजस्थान, विहार, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र आदि प्रदेशो क किसान होग। दूध-घी नदियों वाले देश में अब विदेशी दूध की नदी बहने वाली है। विदेशी दुग्ध उत्पाद भारतीय दुग्ध उत्पादों की तुलना में काफी सस्ते होने की वजह से बाजार में वही बिकने वाले हैं। परिणामत: भारतीय पशुपालको और किसानों को अपने उत्पादो का पूरा मूल्य मिलने मे कठिनाई आ रही है। पंजाब का बाजार सबसे पहले विदेशी दुग्ध उत्पादों और आयातकों ने पकडा है। पजाब के कई हिस्सो मे नुकसान यह हे कि किसानो और पशुपालको के घरों में दूध, घी और मक्खन अब सडने लगा है। इस पूरे तमाशे के पीछे भारत सरकार द्वारा १ अप्रैल २००० को ७१४ (सात सौ चौदह) विदेशी सामानों से मात्रात्मक प्रतिबन्ध हटाना है।

संकट यह है कि कुछ माह पहले पंजाब में देसी घी १५० रु० किलो बिकता था। विदेशी घी के दबाव में अब ८० रु० से १०० रु० किलो के आसपास आ गया है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में देसी घी १६० रु० किलो से उतरकर ११५ रु० के आस-पास है। मिल्क पाउडर के दामों में बडी तेज गिरावट है। १०० किलो के करीब बिकने वाला मिल्क पाउडर आज ६० रु० किलो के पास पहुच चुका है।

सरकार के रुख से यही बराबर लग रहा है कि विदेशी दूध उत्पादों को रोकना नहीं है। सरकार द्वारा जिस तरीके से विदेशी दुग्ध उत्पादों से मात्रात्मक प्रतिबन्ध हटाया गया है, और दुग्ध आयात प्रावधानों में ढील दी जा रही है, उससे तो लगता ऐसा ही है कि भारतीय पशुपालको और किसानो की दुग्ध व्यापार से छुट्टी ही होने वाली ह।

विदेशी दूध से होन वाला आक्रमण सुनियोजित तरीके से हो रहा ह। प्रसिद्ध पत्रकार देवेन्द्र शर्मा बताते है कि दरअसल विकसित देशो द्वारा अपने दुग्ध उत्पादों को इतना उच्च स्तरीय संरक्षण दिया जाता है कि अगर वे अपनी सब्सिडी के आकार और मात्रा में भारी कटौती कर भी ले तो भी अमरीका और यूरोपीय संघ ऐसे विकासशील देश के बाजार को अपने उच्च सब्सिडी वाले दूध और दूध के पाउडर से पाट सकते है।

सभी विकसित देश दूध उत्पादन पर काफी सब्सिडी दे रहे है। पश्चिम के कई देशों में अपने बटर आयल पर १२३ रु० किलो से ज्यादा की और मिल्क पाउडर ३२ रु० किलो सब्सिडी दी जा रही हे। सन् १९९७ में जापान ने ८२ प्रतिशत, कनाडा में ५६, यूरोपीय संघ मे ५४ अमरीका और आस्ट्रेलिया में २३ प्रतिशत उत्पादन सब्सिडी थी। गैर शुल्कीय अवरोधो को शुल्कीय अवरोधो के रूप मे परिवर्तित करने से भारत शुल्क पर दूध आयात करने पर मजबूर हुआ है। भारत मे डब्लू टी०ओ० के दबाव में लगभग आयात शुल्क समाप्त हो गया जिसकी वजह से काफी सारा विदेशी दूध सस्ते दर पर आ रहा है। जबकि न्यूजीलैण्ड में १२ फीसदी आयात शुल्क आर अमरीका और आस्ट्रेलिया मे क्रमश ८६५ डॉलर आर ११८८ डालर प्रति टन आयात शुल्क ह।

भारत मे आ रहा विदशी दूध १४०० डालर प्रति टन ह। उसमे भी अमरीका १०२८ डालर आर यूरोपीय सघ ६५६ डालर प्रति टन निर्यात सब्सिडी दे रहे है। इतनी ज्यादा निर्यात सब्सिडी की वजह से आयातित दूध हमारे यहा के उत्पादित दूध से भी सस्ता हो गया है।

इस विदेशी आयातित दूध को सबसे ज्यादा पंजाब के बाजारों में भरा गया है। करीब १७,००० टन मलाई रहित दूध का आयात हुआ है। पंजाब के मुख्यमन्त्री प्रकाश सिंह बादल ने आयातित दूध को रोकने के लिए प्रधानमन्त्री अटल जी से गुहार की है। ६० प्रतिशत आयात शुल्क लगाने का आग्रह बादल ने किया है। सरकार ने थोडे प्रयास तो किए है। पर वे इतना प्रभावी नहीं हुए हैं जिससे पूरे खतरे से निपटा जा सके।

फिर सरकार की नीयत पर शक की सुई पहुंचती है। आखिर सरकार डेयरी उद्योग को नष्ट ही करना चाहती है क्या ? डेयरी उद्योग लगभग असंगठित है जिसकी ओर से कोई बोलने वाला नहीं है।

भारत आज ७.८ करोड टन दूध उत्पादन करके आत्मनिर्भर है। कोई कमी नहीं है, जिससे आयात के रास्ते खोलने की मजबूरी हो। डेयरी उद्योग पूरे देश में लगभग १ करोड लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार दे रहा है। ये उदारीकरण की मार की चपेट में आएंगे। अभी हाल ही में जमैका के किसानो ने विदेशी दूध के आयात के खिलाफ मुहिम छेड रखी है। ब्रिटेन द्वारा जमैका के बाजारो में सस्ते और फ्लेवर दूध के भरने के खिलाफ जमैका के किसानो ने विदेशी दूध को सडकों पर बहा दिया।

अगर इस प्रक्रिया को भारत का किसान नहीं अपनाता हे तो श्रीलका की तरह हम पशु विहीन होने की तरफ वढ जाएगे। विदेशी उत्पादो के चक्कर मे श्रीलकाई गाय-भेसे यूरोपियो के पेट मे पहुच गए।

भारतीय किसानो आर डेयरी उद्योग मे लगे हुए लोगों को विदेशी दूध को सडक पर बहाने की तैयारी रखनी ही चाहिए। आजादी बचाओ आन्दोलन ने थोडी पहल शुरु तो की है गाय एवं दुग्ध उद्योग अभियान' छेडकर। डेयरी उद्योग में लगे लोगों को नेतृत्व की जिम्मेदारी उठानी पडेगी वर्ना किसान अपनी गाय, भैंसो को कसाइयों को बेचने पर मजबूर हो जाएगा।

– नई आजादी, उद्घोष मे साभार

प्रान्तीय-प्रशिक्षण शिविर (उज्जैन) का भव्य आयोजन

मान्यवर,

देश का 'बसंत' ही देश की 'तरुणाई' है। तभी तो महाप्राण निराला ने तरुणाई का आह्वान करते हुए 'ऊर्जा' अभिवृद्धि की ओर ध्यान आकर्षित किया था - ''मुझे तो बस एक 'बसंत' की प्रतीक्षा है जिसमें देह का पलाश चमक उठता है और आत्मा का फूल मुस्कराने लगता है।''

देह पर पलाश चमके व आत्मा का फूल मुस्कराए इसी पवित्र भावना को व्यवहारिकता प्रदान-शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति के शिवसंकल्प के साथ विगत वर्षो की भांति इस वर्ष ''दस दिवसीय प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर आर्य वीर दल मध्यप्रदेश व विदर्भ' का योगीराज श्रीकृष्ण की ''ज्ञानदायिनी सांदीपनि की बुद्धिशलाका उज्जयिनी'' में दिनांक ११ मई से २० मई २००१ तक उत्साह सहित आर्यसमाज उज्जैन व सम्भागीय वेद प्रचार समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के राष्ट्रीय संचालक डॉ० देवव्रत आचार्य - दिल्ली एव श्री हरीसिंह जी आर्य के सम्यक निर्देशन में सुयोग्य प्रशिक्षकों द्वारा सभी स्तर का प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस अवसर पर मनसा, वाचा, कर्मणा आपका सहयोग तो अपेक्षित है ही परन्तु 'अर्थ-दान, अन्न-दान' प्रचुर मात्रा में आपकी ओर से उदारतापूर्वक दिए जाने पर हम एक नवीन जागृति-नई दिशा की ओर अग्रसर हो सकेंगे।

एतदर्थ अर्थदान व अन्नदान को विशेष महत्व प्रदर्शित करते हुए दान राशि/चेक/बैंक ड्राफ्ट बनवाकर आर्यसमाज, नई सडक, उज्जैन के पते पर दिनांक १५ अप्रैल या उससे पूर्व शीघ्र ही भिजवाने की कृपा करें।

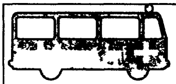
शिविर की सफलता आप के तन-मन-धन से सक्रिय सहयोग पर ही पूर्ण रूपेण आधारित हैं।

शिविरार्थियों के लिए निर्देश :–

१ अपने साथ बिस्तर, थाली, लोटा, लाठी, पेन कापी आदि लावें। २ गणवेश - सफेद कमीज, खाकी पेन्ट, सफेद बलियान, सफेद मोजे व खाकी जूते। ३ आयु - १४ से ३५ वर्ष तक। शिक्षा - न्यूनतम ८ वीं उत्तीर्ण। ४ शिविर शुल्क '१००/ । ५ प्रशिक्षण वर्गो मे (क) शाखा नायक वर्ग (ख) आर्य वीर वग

शिविर स्थल - पाटीदार फार्म हाउस आगर रोड उज्जन (मध्य प्रदेश)

सम्पर्क सूत्र - आर्यसमाज, उज्जैन दूरभाष - ५५०२५६



नींबू के प्रयोग

प्रशान्त शुक्ल

नींबू न केवल एक उपयोगी फल है बल्कि यह हर ऋतु मे आसानी से प्राप्त भी हो जाता है। नींबू स्वास्थ्य और सौन्दर्य की रक्षा करने वाला फल है। जहा नींबू खून की सफाई करता है वहीं स्वाद मे खटटा होते हुए भी रक्त की अम्लता को कम कर उसे अधिक क्षारीय बना देता है। जिससे लाभ यह होता है कि रक्त स्वच्छ हो जाता है और उसकी गदगी दूर हो जाती है।

नींबू मे अम्ल विरोध खनिज तत्त्व काफी मात्रा मे होते है। जिनकी सहायता से शरीर के विषाक्त पदार्थ बाहर आ जाते है। नींबू के प्रयोग से हमारे शरीर का प्रत्येक अग फुर्तीला और थकान रहित रहता है। नींबू के नियमित प्रयोग मे एक महीने मे ही स्वास्थ्य लाभ स्पष्ट हो जाता है।

हर प्रकार की पेट की खराबी कब्ज दमा फोडा फुसी चर्मरोग जुकाम बच्चो के पेट के कीडे और गठिया इत्यादि रोगो मे भी नींबू रामबाण का काम करता ह। इसके साथ साथ नींबू जिगर की बीमारियो मे भी लाभदायक सिद्ध होता हे।

नींबू मे टिामिन ए बी तथा सी होते है। विटामिन सी नींबू मे सबसे अधिक मात्रा में होता है। विटामिन सी हड्डियो तथा दातों के लिए बडा महत्वपूर्ण है। इसलिए नींबू का उपयोग करते रहने से दातो की शिकायतें नहीं होतीं।

नींबू मे कायाकल्प करने का विशेष गुण भी होता है। कल्प करने की विधि यह है कि प्रथम दिन केवल चार नींबू ले। तत्पश्चात एक एक नींबू करते हुए प्रतिदिन नींबुओ की सख्या बढाते जाए। जब सख्या बारह तेरह तक पहुचे तो एक नींबू प्रतिदिन के हिसाब से सख्या कम करते जाइए। जब तक कि नींबुओ की सख्या पुन चार तक न आ जाए। जब नींबुओ की सख्या चार तक आ जाए तो कल्प समाप्त कर देना चाहिए। लेकिन इस कल्प को करते समय अन्नाहार न लेकर केवल फलाहार ले। दूसरी बात यह है कि कल्प शुरू करने से एक दिन पहले केवल पानी पर ही रहकर पूर्ण उपवास करना चाहिए।

नींबू की इतनी विशेषताए तो है ही इनके अतिरिक्त नींबू के कुछ अन्य उपयोग भी है।

बीमारियो मे उपयोग

- साफ छना हुआ नींबू रस यदि दो तीन बूदे नित्य आखो मे डाला जाए तो मोतिया बिन्दु मे बहुत लाभ होता है।
- यदि दात हिलते हो दर्द होता हो या उनमे खून आता हो तो नींबू का प्रतिदिन सेवन अति लाभप्रद होता हे।
- पायरिया की बीमारी मे प्रतिदिन नींबू का रस मसूडों पर मलना चाहिए।
- यदि जुकाम हो जाए तो दिन मे कई बार गर्म पानी मे नींबू निचोड कर पीजिए। हो सकता है कि पहले आपको लगे कि जुकाम और बढ गया है। लेकिन बाद मे बहुत लाभ दिखाई देगा। शरीर की सारी गन्दगी बाहर आ जाएगी।
- अगर दाद खाज हो जाए तो उस जगह पर नींबू का रस मलिए। काफी लाभ होगा।
- फोडे फुसी इत्यादि पर भी नींबू का रस मलने से बडा लाभ होता है। हा इतना अवश्य है कि कुछ लगता है।
- खासी और ज्वर होने पर नींबू को आग पर सेक कर गर्म कर लीजिए। फिर उसे नमक तथा काली मिर्च लगाकर चूसिए। ज्वर खासी दूर हो जाएगी।
- यदि बदहजमी की शिकायत हो तो चाहे कितनी पुरानी से पुरानी बदहजमी हो। एक तोला नींबू के रस मे सेधा नमक मिलाकर भोजन से पहले खाने से दूर हो जाएगी।
- नींबू का रस सफेद जीरे मे मिला ले। फिर उसमे थोडा सा सेधा नमक डालकर मिश्रण को सुखा लीजिए। इस बने चूर्ण को खाने से पाचन शक्ति का विकास होता है।
- नींबू के नियमित प्रयोग से नेत्रो की ज्योति बढती हैं।
- शहद और नींबू के रस को उबलते हुए पानी मे मिला कर शरबत बनाइए। इस शरबत को नित्य पीजिए। आपके शरीर में दिन भर सफूर्ति का सचार होता रहेगा।
- यदि आप सवेरे शौचादि से निवृत्त होने के पश्चात खाली पेट एक गिलास पानी मे दो नींबू निचोड कर पिए तो पुराने से पुराना कब्ज भी दूर हो सकता है। साथ ही साथ पेट के अन्य रोगो मे जैसे भूख कम लगना जी मिचलाना गैस की शिकायत आदि मे भी लाभ होता है।
- गर्मियो की ऋतु मे लू का जोर रहता है। यदि लू लग जाए तो मिश्री के साथ नींबू निचोड कर पीजिए।
- नींबू का शरबत हैजे से बचाव करता है। शरबत के अतिरिक्त यदि नींबू के रस मे प्याज व पोदीने का रस मिलाकर सेवन किया जाए तो भी लू मे अत्यन्त लाभ होता है।
- नींबू के शरबत को यदि चौथे महीने से लेकर प्रसवकाल तक नित्य पिया जाए तो प्रसव बहुत कम पीडा के साथ होता हे।
- यदि जेतून के तेल मे नींबू का रस मिलाकर रोग ग्रस्त स्थान पर रगडा जाए। तो खाज खुजली से मुक्ति मिल जाती है।
- नींबू खजिन लवण का छोटा सा भण्डार है। इसमे पोटाश फास्फोरस मैग्नीशियम की मात्रा बहुत अधिक होती है। जो शारीरिक स्वास्थ्य के लिए बहुत आवश्यक हैं। नींबू इन सबकी पूर्ति करता है।

धर्मवीर लेखराम बलिदान दिवस एव होलिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज मल्हारगज इन्दौर (म०प्र०) मे धर्मवीर प० लेखराम जी का बलिदान दिवस तथा होलिकोत्सव (वसन्ती नव सस्येष्टि पर्व) क्रमश दिनाक ६ मार्च तथा ६ मार्च २००१ को भव्यता क साथ मनाया गया। दोनों ही अवसरो पर युवा वैदिक विद्वान आचार्य डॉ० सजय देव जी ने वैदिक यज्ञ कराया। धर्मवीर प० लेखराम के व्यक्तित्व एव कृतित्व पर आचार्य डॉ० सजय देव ने ओजस्वी व्याख्यान दिया। होलिकोत्सव पर प० मुनदेव अभय तथा आचार्य डॉ० सजय देव के प्रवचन हुए। इन अवसरो पर श्री नरेन्द्र आर्य अमर भूपण ने कवित पाठ किया। आर्यसमाज के मन्त्री श्री लक्ष्मण सिह राठोर ने सब विद्वानो का आभार प्रकट किया।

– दिनेश शर्मा कमल

उपमन्त्री आर्यसमाज मल्हारगज
इन्दौर मध्य प्रदेश

पुलिस की नजरों में अद्वितीय प्रदर्शन

आर्यसमाज का यह विशाल प्रदर्शन जिसमें एक दिन की अल्पावधि सूचना पर लगभग २०००० व्यक्तियों ने भाग लिया है। इसके बारे मे पुलिस कर्मियों ने इसे निम्न कारणों से अद्वितीय बताया –

(१) पुलिस के तीनों बैरीयर तोडने की हिम्मत रखने वाले लोग बहुत कम ही होते हैं।

(२) संसद मार्ग एक महत्वपूर्ण मार्ग है, यह कभी सारे दिन के लिए बन्द नहीं हुआ परन्तु इस प्रदर्शन के दौरान यह मार्ग प्रातः १० बजे से सांय ७ बजे तक बन्द रहा।

(३) पुलिस कर्मियों के लिए बेशक प्रातः १२ बजे थोडा बहुत तनाव पूर्ण माहौल रहा परन्तु सारा दिन पुलिस कर्मी भजन कीर्तन का अद्वितीय आनन्द लेते नजर आए।

(४) सडक पर बैठकर सारी दुनिया ने नमाज पढते तो मुसलमानो को देखा होगा परन्तु इस प्रदर्शन के दौरान सांय ६ बजे जब श्री मदनलाल खुराना, श्री साहिब सिह वर्मा तथा सार्वदेशिक सभा के अधिकारी केन्द्र सरकार से वार्तालाप सम्पन्न करके शुभ सूचना देने प्रदर्शन स्थल पर पहुंचे तो उस समय हजारों आर्यजन सडकों पर पक्तिबद्ध होकर सध्या कर रहे थे। श्री मदनलाल खुराना, श्री साहिब सिंह भी उनके साथ संध्या प्रार्थना में शामिल हो गए।

"चित्र नहीं चरित्र पूजन आवश्यक"

– तत्वबोध सरस्वती

'श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, महिला आर्यसमाज सज्जन नगर, आर्यसमाज सज्जन नगर व आर्यसमाज हिरण मगरी के सयुक्त तत्वावधान मे दिनाक २ अप्रेल, २००१ को साय ५.३० बजे रामनवमी का पावन पर्व न्यास परिसर मे उत्साह पूर्वक मनाया गया। सर्वप्रथम न्यास की यज्ञशाला में वैदिक यज्ञ ब्रह्मचारी श्री ओमदेव के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ। इसके उपरान्त न्यास के सभागार में श्री अशोक आर्य के सयोजन व न्यास अध्यक्ष पूज्य स्वामी तत्तबोध सरस्वती की अध्यक्षता में सत्सग का आयोजन हुआ। सर्वप्रथम पं० शिवपाल आर्य व गिरीश जोशी द्वारा प्रभु भक्ति व राष्ट्र भक्ति के सुमधुर गीत प्रस्तुत किए गए। इस अवसर पण्डित हुकमीचन्द शास्त्री ने कहा कि "हम परस्पर मिलने पर अभिवादन स्वरूप राम-राम तो करते हैं किन्तु तदनुरूप आचरण नहीं करते। तदनुरूप आचरण ही रामनवमी का पर्व मनाने की सार्थकता है।" वयोवृद्ध इतिहासवेत्ता एडवोकेट स्वरूप सिंह चुण्डावत ने कहा कि "अयतारवाद की कल्पना राम के बहुत बाद की है, स्वयं वाल्मीकि ऋषि ने राम को अवतार नहीं आदर्श पुरुष माना है। उनके आदर्शों का अनुपालन श्रेयस्कर है।" मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए स्वामी संकल्पानन्द सरस्वती ने कहा कि "भौतिक उन्नति के फलस्वरूप सर्वविध साधनो की विद्यमानता मे भी आज मानसिक शान्ति का अभाव ह। महापुरुषो के जीवन से मार्ग दर्शन प्राप्त कर जीवन का उन्नत बनाते हुए हम मानसिक शान्ति प्राप्त कर सकें। इस अभिप्राय से ही महापुरुषों के जन्म दिन मनाए जाते है।" अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में स्वामी तत्वबोध सरस्वती ने कहा कि "राम का नाम भक्ति भाव का द्योतक है। वे मर्यादा पालक व रक्षक थे। आज मनुष्य समाज महापुरुषो के चित्रो की पूजा तो करता है किन्तु उनके चरित्र की पूजा नहीं करता। सुखी व समुन्नत समाज हेतु उनके चित्र नहीं अपितु चरित्र की पूजा किया जाना अधिक लाभप्रद है। आज समाज राम के चित्र के पूजा कर रहा है। किन्तु चित्र पूजन के स्थान पर उनके आदर्शों के अनुकरण के रूप में उनके चरित्र की आवश्यकता अधिक है। यही पर्व मनाने की सार्थकता है।"

कार्यक्रम के अन्त में संयोजक श्री अशोक आर्य द्वारा भावी कार्यक्रमों की सूचना देने के उपरान्त शान्ति पाठ व प्रसाद वितरण सहित कार्यक्रम का समापन हुआ।

– मुनीन्द्र सिंह भाटी, न्यास प्रवक्ता

चैत्र नवरात्र एवं रामनवमी समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न

आर्यसमाज रामकृष्ण पुरम् (सैक्टर ६), नई दिल्ली-२२ द्वारा २६ मार्च, २००१ से २ अप्रैल, २००१ तक चैत्र नवरात्र एवं रामनवमी का पर्व बडे हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न परिवारों में सायंकालीन हवन-यज्ञ का आयोजन किया गया तथा वैदिक विद्वानों के आर्यसमाज के सिद्धान्तों, मान्यताओं और वैदिक धर्म की विचारधारा पर सारगर्भित प्रवचन हुए। परिणामस्वरूप अनेक नए परिवार आर्यसमाज की ओर आकृष्ट हुए और उन्होंने पौराणिक रूढियों और अन्धविश्वासों को त्यागकर महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों और मान्यताओं को स्वीकार किया।

आगामी आश्विन नवरात्र तथा विजयदशमी के शुभ अवसर पर भी इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करने का विचार है जिससे वैदिक धर्म का अधिकाधिक प्रचार एवं प्रसार हो सके। आर्यसमाज रामकृष्ण पुरम् (सैक्टर-६), नई दिल्ली, इस दिशा में निरन्तर प्रयत्नशील है।

– रणवीर सिंह, प्रधान

उत्कल दिवस पर नुआपड़ा जिलापाल द्वारा पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी का अभिनन्दन

सेवा की तडप लेकर उडीसा आकर इस पिछडे क्षेत्र में गत ३० वर्ष से सेवारत वैदिक साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् उडीसा एवं छत्तीसगढ में वैदिक धर्म के प्रचार के केन्द्र शुद्धि आन्दोलन के सूत्रधार महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना, आर्ष कन्या गुरुकुल आमसेना तथा रामदुलारी बृजकिशोर धर्मार्थ हस्पताल के संचालक पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी के सेवा और कार्य से सारा आर्यजगत् तो परिचित एव प्रभावित है ही उडीसा की जनता एव अधिकारी भी आपके सेवाकार्य को प्रेरणाप्रद मानते हैं। इनकी सेवा कार्य से प्रभावित होकर उत्कल दिवस एवं नुआपडा जिला स्थापना दिवस १ अप्रैल को नुआपडा में एक भव्य कार्यक्रम जिला प्रशासन ने उप जिलापाल श्री जब्बर भोई की अध्यक्षता में आयोजित किया। इस अवसर पर पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी को उनके नुआपडा जिले मे किए गए सेवा कार्य से प्रभावित होकर उन्हे नुआपडा जिला का श्रेष्ठ समाजसेवी मानकर इस समारोह मे सायकाल ७ बजे नुआपडा के जिलापाल श्री विष्णुपद सेठी ने अभिनन्दन पत्र शाल श्रीफल और मोतियो की माला अर्पित कर उनका सम्मान किया। इस अवसर पर स्थानीय युवा विधायक श्री बसन्त कुमार पण्डा के अतिरिक्त अनेक अधिकारी एव भारी संख्या में जनता उपस्थित थी। विधायक श्री पण्डा, जिलापाल, उप जिलापाल आदि सभी वक्ताओं ने पूज्य स्वामी जी के कार्यो की भूरि-भूरि प्रशंसा की। अभिनन्दन पत्र जिला सूचना लोक सम्पर्क अधिकारी श्री ईश्वरप्रसाद सिंह ने पढकर सुनाया। कार्यक्रम के मुख्यवक्ता श्री रविरजन प्रधान थे।

इस अवसर पर श्री स्वामी जी ने जिलापाल आदि सभी अधिकारियों को धन्यवाद दिया, आभार माना तथा उनके द्वारा जनता की सेवा कार्य की प्रशसा करते हुए उन्होने अधिकारियों से मास, शराब तथा रिश्वत आदि दोषो से बचने का आग्रह करते हुए कहा कि आप लोग इस पिछडे जिले को एक आदर्श जिले के रूप में बदलने का यत्न करें। इससे आप सबको भगवान् का बहुत आशीर्वाद मिलेगा। उपस्थित अधिकारियो को गुरुकुल की ओर से उडिया एव अग्रेजी की पुस्तक भेट स्वरूप दी गई।

– स्वामी व्रतानन्द सरस्वती, प्रधान, उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्यसमाज अशोक विहार फेज-१, दिल्ली में यजुर्वेदीय यज्ञ का आयोजन

ग्रीष्म कालीन वेद प्रचार कार्यक्रम का आयोजन शुक्रवार २०-४-२००१ से रविवार २२-४-२००१ तक किया गया है। आप सभी धर्म प्रेमी सज्जनो से प्रार्थना है कि इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम को तन-मन-धन से सफल बनाने की कृपा करे तथा धर्म लाभ उठाएं।

इस अवसर पर यजुर्वेदीय यज्ञ के ब्रह्मा डॉ० वागीश कुमार जी होगे। तथा रात्रि में आपके द्वारा वेदोपदेश का कार्यक्रम भी सम्पन्न होगा। २२-४-२००१ को पूर्णाहुति सम्पन्न होगी।

– शान्तिलाल आर्य, मन्त्री

आर्यसमाज नीमचाना जिला-बुलन्दशहर (उत्तर प्रदेश) का वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

आर्यसमाज नीमचाना जिला-बुलन्दशहर (उत्तर प्रदेश) का वार्षिकोत्सव दिनांक १६ से १६ मार्च को स्वामी सोमानन्द सरस्वती सदर बाजार दिल्ली की अध्यक्षता में बडी धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विशाल शोभायात्रा निकाली गई जिसका जगह-जगह सम्मान किया गया तथा इस उत्सव में चारों दिन देवयज्ञ (हवन) किया गया तथा पण्डित नन्दलाल निर्भय के ब्रह्मत्व में चार मुस्लिमों की शुद्धि की गई जिनके नाम सत्यवीर, लक्ष्मी, रांजेश, नरेन्द्र रखे गए, उन्हें वैदिक साहित्य और वस्त्र भेंट किए गए।

इस अवसर पर राष्ट्ररक्षा, स्त्री शिक्षा, पाखण्ड खण्डन, गौ रक्षा, दहेज निषेध तथा आर्य सम्मेलनों का आयोजन किया गया। इस समारोह में पण्डित लक्ष्मीचन्द आर्य सिकन्दराबाद, चौधरी खजान सिंह आर्य पारसोल, जिला-अलीगढ, ब्रह्मचारी जयदेव आर्य, ग्राम बहीन, जिला-फरीदाबाद, वैदिक विद्वान् ब्रह्मचारी कडकदेव आर्य, ग्राम-बिनोरा, जिला-बुलन्दशहर, श्री सुशील कुमार आर्य, बसुन्धरा, जिला-बुलन्दशहर ने अपने भव्य विचारों से धर्मप्रमी जनता को लाभान्वित किया।

इस समारोह में स्त्रियों की उपस्थिति प्रशंसनीय रही। आस-पास के गावों मे नर नारी, वाल-वृद्ध, जवान टोलिया बनाकर वैदिक धर्म एव महर्षि दयानन्द महाराज की जय के नारे लगाते हुए आते थे। वातावरण आर्यसमाज मय बन गया था।

शातिपाठ तथा प्रसाद वितरण के पश्चात् समारोह का समापन हुआ।

– नीरज कुमार आर्य, प्रधान

पोस्ट रजिस्ट्रेशन व डी0 एल0 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 22-4-2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न0 U(C) 93/2001
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No. U(C) 93/2001 in NDPSo on 19-20/4/2001

विद्यालय का २० वां वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास से सम्पन्न

टनकपुर (चम्पावत) स्थानीय आर्य शिक्षण सस्था पूर्व माध्यमिक विद्यालय महर्षि दयानन्द विद्या मन्दिर मे वार्षिकोत्सव के तृतीय दिवस की प्रात. कालीन वेला का शुभारम्भ सन्ध्या के मन्त्रों से हुआ। जिसमे यजमान श्री ऋषिदेव और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुधा आर्या रहीं।

आर्यसमाज की प्रधाना श्रीमती कमल आर्या जी ने भजन सुनाया। पिथौरागढ से पधारे गुरुकुलानन्द सरस्वती (कच्चाहारी) जी ने संस्कारों के विषय में बताते हुए कहा कि मनुष्य को सभी संस्कार अवश्य कराने चाहिए। नाम का व्यक्ति के जीवन पर बहुत प्रभाव पडता है।

पिथौरागढ से पधारे महर्षि दयानन्द विद्या मन्दिर के प्रबन्धक श्री गंगादत्त जोशी ने प्राचीन काल के वर्ण और कर्मो को विषद व्याख्या की।

वार्षिकोत्सव के तृतीय दिवस की सायंकालीन बेला का शुभारम्भ नन्हें-मुन्ने बच्चों द्वारा प्रस्तुत स्वागत गीत से हुआ। तत्पश्चात् विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के तहत भाषण, विभिन्न प्रतियोगिताओं भजन, देश भक्ति गीत, आसन, कलाबाजी आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए। भगवती प्रसाद पुनेठा जी ने भजन सुनाया। विद्यालय के अध्यापको तथा अध्यापिकाओ ने अपने विचार रख। श्री शिव प्रताप, श्री मदन मोहन गदतोडी आदि ने भी बच्चों का मार्गदर्शन किया।

ताराचन्द जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि मनुष्य को कोई भी कार्य एकाग्रचित्त होकर करना चाहिए। अपने मन को वश, रखना चाहिए। हमें मन की चचलता छोड राष्ट्र की चिन्ता करनी चाहिए।

कार्यक्रमों के अन्त में विद्यालय के बच्चों को प्रमाण पत्र वितरित किए। विद्यालय के प्रबन्धक रामदेव आर्य प्रधानाचार्या शीला, अञ्जु ने सभी आगन्तुकों का आभार प्रकट किया। संचालन रचना गेहरोत्रा ने किया।

– प्रबन्धक रामदेव आर्य

आर्यसमाज पश्चिम विहार के श्री भरत सिंह वानप्रस्थी दिवंगत

श्री भरत सिंह वानप्रस्थी जी का ८६ वर्ष की आयु में १२-०३-२००१ को घर पर देहावसान हो गया। आप आर्यसमाज पश्चिम विहार के संस्थापको में प्रमुख थे। आपका जन्म गुडगावां के पास स्थित सोहना मे ७-०३-१६१२ को हुआ। आपने दिल्ली मे अपना जीवन अध्यापक के रूप मे प्रारम्भ किया। आप अपने पीछे ३ पुत्र व ४ पुत्रियों सहित भरा पूरा परिवार छोड गए है। श्री भरत सिंह जी एक कर्तव्यनिष्ठ व कर्मठ आर्य मिशनरी थे व नित्य अग्निहोत्र करते थे। १६५६ में उन्होंने आर्यसमाज तिमारपुर की स्थापना में मुख्य योगदान दिया। १६७५ के बाद पश्चिम विहार में आकर बसने के बाद आप आर्यसमाज पश्चिम विहार के लिए डी०डी०ए० से प्लाट लेने में जुट गए व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से आर्यसमाज की स्थापना की। १६८५ में आप वानप्रस्थी बने। आर्यसमाज सरस्वती विहार की स्थापना में भी आपने काफी योगदान दिया।

संसार से जाते वक्त भी, विभिन्न संस्थाओं को क्या देना है, पुरोहित को क्या देना है व अन्त्येष्टि कैसे करनी है, सब डायरी में लिख कर गए।

प्रभु से हार्दिक प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सदगति तथा परिवार को इस दारुण दुख को सहने की शक्ति व सामर्थ्य प्रदान करे।

पगडी रस्म १६-३-२००१ को आर्यसमाज पश्चिम विहार में हुई जिसमें विभिन्न आर्य समाजों से आये महानुभावों ने श्रद्धाजलि दी।

– राजेन्द दुर्गा, उप प्रधान

आर्यसमाज स्थापना दिवस

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जनपद आगरा के अन्तर्गत आर्यसमाज स्थापना दिवस दिनांक २६.०३.२००१ को बैनीसिंह वैदिक विद्यावती इण्टर कालेज, बालूंगज, आगरा में प्रातः १० बजे से मनाया गया। इस अवसर पर आगरा जनपद की सभी समाजों के आर्य बन्धु कार्यक्रम में उपस्थित हुए तथा बैनीसिंह वैदिक विद्यावती इण्टर कालेज बालूंगज आगरा, एन०सी० वैदिक इण्टर कालेज सुल्तानपुरा एवं दयानन्द बाल मन्दिर हाई स्कूल सुल्तानपुरा आगरा सहित तीनों कालेजों के समस्त स्टाफ ने, कार्यक्रम मे भाग लिया और आम जनता ने विद्वानों के प्रवचनो से दृढ ज्ञान प्राप्त कर धार्मिक लाभ प्राप्त किया।

कार्यक्रम के अनुसार प्रातः १० बजे से यज्ञ प्रारम्भ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा पंडित श्री अशोक कुमार शास्त्री ने वैदिक विधान से ११ बजे तक यज्ञ कराया।

११ बजे से आम सभा प्रारम्भ हुई। सर्वप्रथम विद्वानों का एवं अधिकारियों का सम्मान किया गया। सभा के प्रारम्भ में श्री अशोक शास्त्री ने अपना भजन प्रस्तुत किया। डॉ० श्री बादाम सिंह ने बताया कि सभी देवताओं के पूजन का एक ही तरीका है और वह है यज्ञ। हम को वैदिक विधान के अनुसार यज्ञ करना चाहिए, केवल यज्ञ ही वह तरीका है जिस से मन वांछित देवता का ठीक प्रकार से पूजन किया जा सकता है। इस के अतिरिक्त समस्त प्रचलित तरीके त्याज्य है।

पण्डित ओमप्रकाश शास्त्री ने अपने प्रवचन में आर्यसमाज की स्थापना पर प्रकाश डाला।

स्वामी स्वरूपानन्द जी ने अपने प्रवचन के माध्यम से वेद मन्त्रों का ज्ञान कराया। बताने का प्रयत्न किया कि प्रत्येक व्यक्ति हाथ खाली लेकर ही जाता है।

सच्चा आनन्द भगवान की भक्ति में ही प्राप्त होता है। अन्यत्र यह आनन्द नहीं है। इस कारण सब ओर से अपना मन हटा कर केवल एक परमात्मा से मन लगाएं कल्याण होगा।

श्री हरिगोपाल सिह चौहान ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और डॉ० बादाम सिह ने कार्यक्रम का संचालन किया। श्री श्रीचन्द गुप्त ने सभी विद्वानों का एवं आर्य बन्धुओं का आभार प्रकट किया।

कार्यक्रम के बाद शान्ति पाठ हुआ तत्पश्चात् सभी सज्जनों ने प्रेम से मिल कर प्रीत भोज का आनन्द लिया।

– डॉ० बादाम सिंह, मन्त्री

प्रतिष्ठा में
10150 पुस्कालाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
जिला-हरिद्वार (उ.प्र.)

वार्षिक ऋषि महोत्सव एवं यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन

वैदिक मोहन आश्रम में १६ अप्रैल २००१ से रविवार, २२, अप्रैल तक ऋषि महोत्सव बहुत ही श्रद्धा व उल्लास पूर्वक आयोजित किया जा रहा हैं स्वामी आत्मबोध जी (पूर्व महात्मा आर्य भिक्षुजी की अध्यक्षता में व श्री डॉ० महावीर कुलसचिव गुरुकुल कागडी के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायण यज्ञ किया जा रहा है। जिसकी पूर्णाहुति, रविवार २२ अप्रेल को मुख्य यजमान श्रद्धेय पदमश्री ज्ञान प्रकाश जी चोपडा, प्रधान डी०ए०वी० कालेज, प्रबन्ध कर्त्री समिति व आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के करकमलों द्वारा सम्पन्न होगी। आर्य जगत के सुप्रसिद्ध संन्यासी, संत, महात्मा एवम् विद्वानों के अनमोल वचन इस अवसर पर सुनने को मिलेंगे। स्वामी सुमनायति जी, श्री (महात्मा) सत्यानन्द जी मुञ्जाल, स्वामी चन्द्रदेव जी, डॉ० धर्मपाल जी, कुलपति, गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री, उपकुलपति गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, डॉ० रमेश जीवन जी, डॉ० रामप्रकाश जी चण्डीगढ़, ब्रह्मचारिणी इन्दु आर्या, वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, तथा संगीताचार्य, श्री कञ्चन कुमार देहली, श्री उपेन्द्र आर्य जी सहारनपुर, श्री ज्ञानेश्वर भारतीय यमुनानगर, भजनोपदेशक जगतराम बस्तीराम हरियाणा विशेष रूप से आमन्त्रित हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रकाशन लि० द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली–२ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन, ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली–२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०६८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सभा मन्त्री।• ई-मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट - http://www.whereisgod.com

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

सार्वदेशिक
साप्ताहिक

वेद
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र



वर्ष ४० अक ४ | २६ अप्रैल से ५ मई २००१ तक | दयानन्दाब्द १७८ | सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०२ | सम्वत २०५८ | वै० शु० ६

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

पूर्ण वैदिक रीति से आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड के पुनर्निर्माण हेतु

शिलान्यास यज्ञ सम्पन्न

आर्यजनता की ऐतिहासिक संगठनात्मक एकजुटता

आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड नई दिल्ली को तोडे जाने से आर्यसमाज और केन्द्र सरकार के शहरी विकास मत्रालय के भूमि एव विकास विभाग के बीच उत्पन्न हुअ तनावपूर्ण वात वरण तत्कालिक रूप से उसी स्थल पर आर्यसमाज मन्दिर के पुनर्निर्माण हेतु आयोजित शिलान्यास समारोह के साथ शान्त हो गया परन्तु आर्य जनता ने सकल्प किया है कि भविष्य मे भी यदि केन्द्र सरकार अथवा इसके किसी मन्त्री या अधिकारी ने किसी शरारत या बाधा उत्पन्न करने का प्रयास किया तो पहले से भी अधिक तीव्र आन्दालन के द्वारा मोर्चा प्रारम्भ किया जाएगा।

२२ अप्रल रविवार को विगत लगभग एक सप्ताह के तनावपूर्ण वातावरण के बाद सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आमानन्द सरस्वती की अध्यक्षता मे आयाजित एक जन समारोह से पूव स्वामी ओमानन्द जी पूर्व मुख्य मन्त्री श्री मदन लाल खुराना श्री साहिब सिह वर्मा श्री ज्ञान प्रकाश चोपडा क कर कमलो से मन्दिर के पुनर्निर्माण हेतु शिलान्यास किया गया। इस अवसर पर सार्वदशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शमा उपप्रधान प्रो० शरसि स्वामी सुमधानन्द विमल वधावन प्रि चन्द्रदेव इन्द्रवेश जगदीश आर्य अग्निवेश रामनाथ सहगल एम०एल० खन्ना चौ० लक्ष्मी चन्द तेजपाल मलिक आदि आर्य नेता उपस्थित थे।

शिलान्यास से पूव स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती के ब्रह्मत्व मे एक भव्य शिलान्यास यज्ञ का आयोजन किया गया

बंगला देश के विरुद्ध प्रस्ताव

बंगला देश की सेना द्वारा भारतीय सेना के १५ सैनिकों को अपनी सीमा में किसी वार्तालाप हेतु बुलाकर धोखे से क्रूरतापूर्वक कत्ल करने के अमानवीय कृत्य की हम घोर निन्दा करते हैं।

भारत सरकार से समस्त आर्य जगत अपील करता है कि इस कार्यवाही का कूर नीति और सैन्य जवाब अवश्य दिया जाना चाहिए तथा बंगला देश सरकार को बिना शर्त माफी मांगने के लिए कहा जाए।

सारा विश्व के आर्यजन अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय से भी आग्रह करता है कि इस अमानवता के विरोध में बंगला देश सरकार और सेना को चेतावनी दें।

– वेदव्रत शर्मा, सभा मन्त्री



(१) शिलान्यास समारोह के अवसर पर रखी जाने वाली ईंटो को मन्त्रोच्चारण के साथ स्पश करते हुए। बाए से दाए श्री साहिब सिह वर्मा सासद सभा प्रधान स्वामी ओमानन्द जी श्री मदनलाल खुराना सासद एव चौ० लक्ष्मीचन्द जी। २ श्री विमल वधावन श्री मदनलाल खुराना सासद पदमश्री ज्ञान प्राकश चोपडा तथा श्री स्वामी सुमेधानन्द जी।

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

सह सम्पादक
विमल वधावन एडवोकेट

आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड के

यज्ञ और शिलान्यास समारोह के उपरान्त स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता मे एक विशाल जन सभा हुई जिसको सम्बोधित करते हुए दिल्ली के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना ने कहा कि यदि मन्दिर के उसी स्थल पर पुनर्निर्माण का मार्ग प्रशस्त न होता तो हमारे माथे पर ही कलक का टीका लगता। अत इस पवित्र कार्य मे अपनी आहुति देकर हमने तो केवल अपने माथे पर लगने वाले कलक के टीके को मिटाने का प्रयास किया है। हमने किसी पर कोई अहसान नही किया।

श्री खुराना ने कहा कि प्रसिद्ध राष्ट्रवादी नेता श्री हरदयाल देवगुण ने मुझे कुछ ही दिन पूर्व बताया है कि १९५३ मे कश्मीर आन्दोलन के दौरान महत्वपूण गुप्त बैठके इसी मन्दिर मे हुआ करती थी।

दिल्ली के ही एक अन्य पूर्व मुख्यमन्त्री श्री साहिब सिह वर्मा ने कहा कि आर्यसमाज की कुर्बानियो को हम भूल नही सकते। परिवार और व्यापार से निवृत्त लोगो को आर्यसमाज के कार्यो के लिए आगे आना चाहिए। निर्धनो की सेवा और समाज के चरित्र निर्माण की कार्यवाही समाप्त नही होती। जहा एक मन्दिर टूटा तो केसे सारे देश के आर्य बन्धु एक जुट होकर आवाज बुलन्द करने लगे परन्तु क्या किसी ने भारतीय सस्कृति रूपी मन्दिर के रोज रोज टूटने और लूटने पर आवाज उठाई है। पाश्चात्य सस्कृति टेलीविजन के द्वारा रोज रोज हमारी भारतीय सस्कृति के मदिरो को तोड रही है। इस कार्य के लिए हमे सरकारो के भरोसे नही रहना चाहिए। अगर समाज सगठित है तो सरकारे भी ठीक मार्ग पर चलती रहेगी। समाज मे एकता है तो सरकारे भी २५ २५ दलो की नही बनेगी।

उन्होने आर्य जगत से आशा व्यक्त की कि यदि आर्यजगत मजबूत है कर्म क्षेत्र मे अग्रणी है तो देश भी ठीक रहेगा। उन्होने कहा कि आर्यसमाज मदिर पर बुल्डोजर चलने से मेरे मन को बडा भारी कष्ट हुआ था। मुझे प्रसन्नता है कि आर्य जनता की शान्ति ने राजनीतिक प्रयासो को विफल कर दिया और मन्दिर का पुनर्निर्माण उसी स्थल पर हो सके इसका मार्ग प्रशस्त किया।

शिलान्यास यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती ने कहा कि भारत माता की प्रशसा मे गीत गाना तथा उन भावो मे रहना चाहिए। भारत का जो आज राष्ट्रीय गीत है वह वास्तव मे जाज पचम के भारत आगमन पर उसकी प्रशसा मे लिखा गया था। अत उस गीत को भारत की प्रशसा मे राष्ट्रीय गीत मानना एक भूल है। वास्तव मे भारत माता की प्रशसा निम्न पक्तियो से की जानी चाहिए।

वर्यम भारत भारतम प्रियम भारत भारतम
पुण्य भारत भारतम शिवम भारत भारतम

इस सस्कृत पाठ के बाद स्वामीजी ने निम्न पक्तियो मे एक भव्य कविता पाठ भी आम जनता को करवाया –

मनुर्भव का सदेश जिसने दिया था।
सदा जो सुखद शात जीवन जिया था।
परम प्रेम पथ जिसने निर्मित किया था।
विमल वेद विद्या का अमृत दिया था।
जगत यज्ञ सौरव से जिसने सवारा।
वही देश भारत समुन्नत हमारा।
जहा राम जन्मे थे घनश्याम जन्मे।
भरत व्यास गौतम से गुरुग्राम जन्मे।
पतञ्जलि कपिल शकर अभिराम जन्मे।
कुमारिल दयानन्द सुखधाम जन्मे।
जगा जिस से जग में समुज्ज्वल उजारा।
वही देश भारत समुन्नत हमारा।।

स्वामीजी ने विजयी आर्य जनता को आध्यात्मिक मार्ग दर्शन देते हुए कहा कि विजयी व्यक्ति को बातो से विशेष सावधान रहना चाहिए प्रथम विजयी व्यक्ति मे अहकार पनपने की पूरी सम्भावना रहती है जिसमे वह अपनी



शिलान्यास यज्ञ के यजमानो को आशीर्वाद देते हुए श्री मदनलाल खुराना साहिब सिह वर्मा सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा श्री मदन मोहन सलूजा श्री बलदेव राज श्रीमती उज्ज्वला वर्मा। यज्ञवेदी पर विराजमान यज्ञ के ब्रह्मा श्री स्वामी दीक्षानन्द जी तथा स्वामी ओमानन्द जी। यजमान सर्वश्री रामनाथ सहगल ज्ञान प्रकाश चोपडा प्रि० मोहन लाल श्रीमती शीतल शर्मा राजसिह भल्ला श्रीमती प्रभात शोभा तथा प्रो० शेर सिह।



श्री मदनलाल खुराना की अगुआई करते हुए सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा सभा उपमन्त्री श्री जगदीश आर्य तथा प्रि० चन्द्र देव। जनसभा को उदबोधन करते हुए श्री मदनलाल खुराना तथा श्री साहिब सिह वमा।

पुनर्निर्माण हेतु शिलान्यास यज्ञ सम्पन्न



सम्बोधन देत हुए स्वामी ीक्षानन्द सरस्वती प्रो० शेर सिह स्वामी इन्द्रवेश श्री सत्यव्रत सामवेदी हालैण्ड क डा० महेन्द्र स्वरूप।



उद्‌बोधक सर्वश्री ज्ञान प्रकाश चोपडा रामनाथ सहगल स्वामी अग्निवेश स्वामी सुमेधानन्द श्रीमती पुष्पा शास्त्री तथा सभा प्रधान स्वामी ओमानन्द जी अध्यक्षीय भाषण देते हुए।

विजय के प्रभाव को बनाए रखने मे असफल हो जाता है। दूसरा जिस व्यक्ति का हराकर विजय प्राप्त की गई है वह व्यक्ति जीह्वा लटकाए कत्त की तरह मौके की तलाश मे रहता है कि जैसे ही अवसर मिल हरान वाले पर पुन झपट प। उन्हान कहा कि ना को एव आर्य नेताओ को हर प्रकार के अहकार से दूर रहकर मुक्के की तरह इकटठा रहना चाहिए। सबका लक्ष्य एक होना चाहिए। सबका सकल्प एक होना चाहिए। यहा पर भी आप सबके सकल्प से ही कामयाबी हुई है जहा सकल्प नहीं होता वहा कई प्रकार के विकल्प पैदा हो जाते हैं। विकल्पो से मतभेद पैदा होता है और मतभेद का परिणाम असफलता होती ह

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान प्रो० शेरसिह ने कहा कि इस विशाल एकजुटता के प्रदर्शन का श्रेय आर्य जनता को जाता हे। अत आर्य जनता को नए कार्यक्रम चलाने चाहिए। उन्होने कहा कि आर्यसमाज मन्दिर के लिए एक ल ड हमने जीती ह अब अन्य भवनो से सास्कतिक क्रान्ति प्रारम्भ होनी चाहिए। उ होने कहा कि ार्यसमाज न स्वराज के लिए लडाई लडी परन्तु स्वतन्त्रता के बाद जिन नेताओ के हाथ मे सत्ता आई उन्होने स्वराज के शब्दो को उलट दिया अर्थात अब उनका लक्ष्य राजस्व बन गया। अधिक से अधिक राजस्व के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अब हमारी सरकारे देश की जनता को शराब के नशे मे धकेलना एक बहुत बडा काम समझती है। उ होने आह्वान किया कि आर्यसमाज को अब शराब के विरुद्ध आन्दोलनात्मक रवैया अपनाना चाहिए।

शिव सेना उत्तर भारत के अध्यक्ष श्री जय भगवान गोयल ने कहा कि जैसे ही आर्यसमाज मन्दिर टूटने का समाचार शिव सेना प्रमुख बाल ठाकरे जी को मिला उन्हाने तुरन्त हमे निर्देश दिया कि ऐसे दौर मे अ र्यसमाज के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर सहयोग देना चाहिए। उन्होने कह कि भविष्य मे जब कभी भी अ यसमाज पर सकट आएगा दिल्ली के शिव सैनिक हर प्रकार से आपके साथ रहेगे।

डी० ए० वी० प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्री जे० पी० चोपडा हालैण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० महेन्द्र स्वरूप हरियाणा सभा के कार्यकारी प्रधान श्री स्वामी इन्द्रवेश स्वामी अग्निवेश राजस्थान सभा के कार्यकारी प्रधान सत्यव्रत सामवेदी श्री रामनाथ सहगल आदि ने भी इस शिलान्यास जन सभा मे अपने विचार व्यक्त किए। अन्त मे स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने इस आ दोलन से जुडे समस्त सहयोगियो का धन्यवाद किया। सभा प्रधान स्वामी ओमानन्द जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे आर्यजनो को डटकर कार्य करने की प्रेरणा दी। मच का सचालन सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने किया। उन्होने १७ अप्रैल के प्रदशन के दौरान श्री सारस्वत मोहन मनीषी ी एक आख पर गम्भीर चोट लगने की सूचना देते हुए ईश्वर से उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की।

श्री वेदव्रत शर्मा ने समूचे मीडिया का धन्यवाद करते हुए विशेष रूप से पजाब केसरी के प्रधान सम्पादक श्री अश्विनी कुमार चोपडा का भी धन्यवाद किया जिन्होने लगातार इस आन्दोलन के समाचारो को प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित करके इसे एक जन आन्दोलन के रूप मे सफलता दिलाने मे प्रमुख सहयोग दिया।

अन्य चित्र पृष्ठ ११ पर

नारी के आंसू टपकने से दुनिया डूब जाएगी

– माता प्रेमलता शास्त्री

थादला (नि०प्र०) इस देश मे खासकर मध्यप्रदेश म नारिया पर अत्याचार अधिक हाते है ओर यही वजह है कि देश मे अकाल पडता है एव नाना प्रकार के सकटो स जूझना पडता है। अत नारी शक्ति से डरो वर्ना इसके आसू टपकन से दुनिया डूब जावगी।

उक्त आजस्वी उदगार देहली से पधारी सुप्रसिद्ध समाजसेविका माता प्रमलता शास्त्री न महर्षि दयानन्द आय विद्यालय काकनवानी द्वारा आयोजित विश्व शाति एव पर्यावरण शुद्धि महायज्ञ तथा सस्था क वार्षिकात्सव कार्यक्रम क अवसर पर व्यक्त करते हुए आगे कहा कि इस देश म विशेषकर मध्यप्रदेश मे नारी का डायन तथा डाकन कहकर पत्थरो स पीट कर मार डाला जाता है। आखिर नारी ने ऐसा कौन सा गुनाह किया है। इस पृथ्वी पर जितने भी इसान पैदा हुए ह नारी की काख की ही दन है। माताजी ने आगे कहा कि मेने इस सम्बन्ध म मध्यप्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री दिग्विजय सिह को पत्र लिखकर अवगत कराया कि वे अपने नाम के अनुरूप नारी सम्मान का प्रदेश म दिग्विजय दिलवाए वर्ना सत्ता का यह सूय डूब जावेगा। वदनीया माताजी ने यज्ञोपवीत एव हवन यज्ञ का महत्व क्रमश बताते हुए कहा कि यज्ञोपवीत का वेदिककाल से प्रयोग होता आ रहा ह। यही हमार आर्य होने हिन्दू होने का चिन्ह है। यह हमे धर्म को अपने हृदय से लगाए रखने की प्रेरणा देता है तथा हवन यज्ञादि से पर्यावरण शुद्ध होकर महकने लगता है। यदि समय समय पर हवन यज्ञ आदि होते रहते तो आज हमे सूखे जैसे भीषण सकट से नहीं जूझना पडता। सूखा तो राजा राम व कृष्ण के समय भी पडा था तब उन्होने यज्ञ कर मेघो को बरसने पर मजबूर कर दिया था। वन्दनीया माता जी ने आगे कहा कि होम करने से जलवायु शुद्ध होती है तथा प्राणियो मे आरोयता आती है। सुगन्धित तथा पुष्टिकारक पदार्थ खाने या किसी को खिलाने से किसी व्यक्ति विशेष को ही लाभ होता है लेकिन अग्नि मे उन पदार्थों की आहुति देने से लाखो मनुष्यो का लाभ पहुचेगा अत सुगन्धित पदार्थो की आहुति होम मे डालकर जलवायु का शुद्ध कर अपना तथा अन्य प्राणियो का कल्याण करना चाहिए। अन्त मे माता जी न सस्था के भवन निर्माण हेतु १० ००० रुपये अ०भा० दयानन्द सवाश्रम सघ की ओर से देने की घोषणा की।

माता सरलाजी ने कहा कि सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से। जल्दी प्रसन्न होते है भगवान यज्ञ से (गीत) द्वारा यज्ञ का महत्व समझाया। छतीसगढ से पधारे भजनोपदेशक प० सवकराम ने भी इस अवसर पर भजन प्रस्तुत कर दर्शको को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

सस्था के स्वामी श्री सुशील आर्य (छतीसगढ) एव श्री कितेन आर्य के अथक प्रयासा स पचकुण्डीय यज्ञ एव सस्था का वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ सस्था के नन्हे–मुन्ने ग्रामीण छात्रो द्वारा स्वागत गीत हम सब मिलकर स्वागत गीत गाते हे सबक दिल म म नया का हार पहनाते हे गाकर किया इसके पश्चात सस्था के सदस्यो ने अतिथियो का स्वागत पुष्प हारा से किया सस्था के कायवाहक अध्यक्ष डी०आ०पी० बजाज द्वारा सस्था की गतिविधियो एव प्रगति का ब्योरा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम मे महर्षि दयानन्द सेवाश्रम थादला के सस्थापक सदस्य श्री रामकृष्ण बजाज एव थादला आश्रम के श्री बसन्त आर्य विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम के पूर्व सस्था के छात्र छात्राओ द्वारा ग्राम मे वैदिक मन्त्रो के गगनभेदी उच्चारणो के सग रैली निकाली गई।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का सचालन सस्था के प्रधानाचार्य श्री रमेश बारिया ने किया तथा अन्त मे आभार सस्था के अध्यक्ष श्री विजीया बारिया द्वारा व्यक्त किया गया।

हम भी उज्ज्वल कर सकते हैं

आदिवासी बनी कन्याओं का भविष्य

मध्य प्रदेश मे झाबुआ क्षेत्र के आदिवासी पिछडे स्थल थान्दला मे १०० कन्याओ की शिक्षा व्यवस्था के लिए मध्य प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री दिग्विजय सिह जी से भोपाल जाकर अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ की मन्त्रिणी प्रेमलता शास्त्री मिली। मुख्यमन्त्री महोदय ने बहुत कृपा की और उनकी प्रार्थना स्वीकार करते हुए पहले ४० और फिर १०० कन्याओ के लिए मान्यता स्वीकार करवा के बहुत उपकार किया। अब परिस्थिति यह है कि मन्त्री महोदय की कृपा से भोजन की व्यवस्था तो हो चुकी है किन्तु कन्याओ के लिए रहने के स्थान का प्रबन्ध करना सेवाश्रम सघ का दायित्व है।

माता प्रेमलता शास्त्री ने कहा कि आखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ सार्वदेशिक सभा का ही एक अग है जो प्रान्त–प्रान्त मे शिक्षा और सेवा के कार्य मे सलग्न है। आयसमाज ही के सहयोग से हमारा यह कार्य निरन्तर निर्बाध प्रगति पथ पर है। परन्तु जब भी बाधाए हमारे मार्ग मे आती हैं आर्यजनता से हमे पूर्ण सहयोग मिलता रहा है। इस समय जहा मैं मन्त्री महोदय का आभार व्यक्त करना चाहती हू वहीं आर्य जनता से सहयोग की अपील भी करती हू कि इन कन्याओ के लिए १२ कमरो के निर्माण की तुरन्त आवश्यकता है और आप लोग दिल खोलकर दान दे जिससे कि सघ के हाथ सशक्त हो सके और कन्याओ को व्यवस्थित ढग से रखा जा सके।

सार्वदेशिक सभा सेवाश्रम सघ एव वनवासी कन्याए आपके सहयोग और परोपकार के लिए सदा आपकी आभारी रहेगी।

– वेदव्रत मेहता महामन्त्री

मौन से सुख

– आचार्य डॉ० सजय देव

एक साधु हमेशा मौन रहत थ। वे लोगा के प्रश्नो का उत्तर लिखकर दिया करते थे, एक दिन एक महिला ने उत्सुकतावश बाबा से पूछा – आप मान क्यो रहते हे ? बाबा मुस्कराए ओर उत्तर दिया – एक चुप सौ सुख। सभी को आश्चर्य हुआ। भला चुप रहने से सुख कैसे मिल सकता है। यह रहस्य जानने के लिए बाबा से आग्रह किया। साधु ने इसका लाभ सबको समझाया।

मौन एक साधना है जिससे जीवन मे अनुशासन आता हे। हमारा अधिक समय व्यथ एव बेकार की बातो मे जाता है। प्रतिदिन एक–दूसरे की बुराई तथा व्यर्थ की चर्चा मे ही सुबह से शाम हो जाती है। कभी–कभी चर्चाए झझटे भी खडी कर देती है। बिना किसी कारण परेशानिया खडी होकर आ बैल मुझे मार वाली कहावत सही हो जाती है। दिन भर दिन भरत ज्यादा बालना भी अच्छा नही रहता। कभी न कहने वाली बात भी कहने मे आ जाती हे। दूसरे लाग इसका लाभ उठाकर हानि पहुचा दत ह। बाद मे पश्चाताप के अलावा कुछ नही बचता। अधिक बालने से लोगो मे भय बना रहता है तथा लोग मिलने से घबराते है। एक धारणा भी बन जाती है कि बहुत बोलते हैं। ऐसे मे कभी–कभी छोटी सी गलती से कही बात भी राई का पहाड बन जाती है।

इसलिए इन झझटो से बचने के लिए सबसे सरल तरीका यही है कि चुप रहा जाए। चुप रहने का अभ्यास धीरे–धीरे किया जा सकता है। आरम्भ मे जब भी किसी से बातचीत की जाए बाद मे उसका विश्लेषण करना चाहिए। हमने जो भी बातचीत की उसमे व्यर्थ की एव बेकार की कितनी थी जरूरी बातचीत कितनी। हम पाएगे कि आवश्यक बहुत कम और इधर उधर की ज्यादा। फिर प्रयास यह किया जाए कि अगली बार पुन ऐसी गलती न हो। लगातार ऐसा अभ्यास करने से कुछ महीनो मे ही आश्चर्यजनक परिवर्तन महसूस होगा। व्यक्तित्व का विकास होकर जीवन मे आगे बढते जाएगे परन्तु यह अभ्यास स्वेच्छा से दृढ निर्णय लेकर ही किया जा सकता है। जोर जबर्दस्ती के साथ अगर किसी का बोलना बन्द कर दिया जाए और उसे चुप रहने के फायदे दिलाए जाए तो बजाए लाभ के नुकसान ही होगा। इच्छा के विपरीत मोन नही रखा जा सकता। दबाव से अगर मोन रखा भी तो वह मानसिक तनाव उत्पन्न कर देगा। इसलिए किसी का भी दबाव मे बोलना बन्द नही किया जाना चाहिए। मौन के महत्व को समझकर ही उसे आसानी से अपनाया जा सकता है तथा पूरा लाभ उठाया जा सकता है।

मौन एक प्रकार का तप है। जबान को लगाम दना आधे से अधिक मन पर नियन्त्रण करने के समान है। इससे बातचीत मे खर्च होने वाली शक्ति भी बच जाती है। यह ऊर्जा व्यक्तित्व मे निखार लाकर समाज एव घर मे प्रशसनीय और लोकप्रिय बनाती है। इच्छा शक्ति का विकास होता है। काल्पनिक एव ऊची उडान पर नियन्त्रण होकर धैर्य एव सहनशीलता बढ जाती है। मानसिक तनाव से छुटकारा मिलकर मन मे शान्ति शुद्धता आती है। सकल्प शक्ति दृढ होती है सुख की गहरी नीन्द आती हे। ईश्वर चिन्तन मनन पठन पाठन बढ जाता है। इस प्रकार कई सुख केवल चुप रहने से ही मिल जात है। इसलिए चुप रहकर सुख उठाइए।

– आर्यसमाज भवन मल्हारगज इन्दौर ४५२००२ मध्य प्रदेश

वनवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर के नियम

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ द्वारा हर वर्ष की भाति इस वर्ष भी आर्यसमाज के छठे नियम के आधार पर वनवासी युवक – युवतियो का २१ वा वैचारिक क्रान्ति शिविर १३ मई से २८ मई तक आर्यसमाज रानीबाग दिल्ली–३४ मे श्रीमती प्रेमलता खन्ना (७०२२८४४) शास्त्री की अध्यक्षता मे लगाया जाएगा।

शिविरार्थियो हेतु पालनीय नियम

१ शिविरार्थियो की योग्यता नवीं कक्षा से ऊपर हो।
२ हल्का बिस्तर एव तेल साबुन इत्यादि साथ लावे।
३ शिविर मे दिनचर्या एव अन्य नियमो का पालन करना अनिवार्य होगा।
४ नियमों का पालन न करने पर शिविर से वापिस भेज दिया जाएगा।
५ शिविरार्थी अपने आने की पूर्व सूचना लिखित रूप मे भेजे।
६ शिविराथिया को वापिसी का मार्ग व्यय दिया जाएगा।

शिविर सयोजक १ ब्र० जीववर्धन आर्य २ श्री कपिल देव आर्य ३ श्री धर्मपाल जी गुप्ता ४ श्रीमती ईश्वर रानी जी मेहता।

– वेदव्रत मेहता महामन्त्री

संक्षिप्त जीवन परिचय

बीदर जिले के स्वातन्त्र्य सेनानी (२)

श्री रामचन्द्र वीरप्पा (संसद सदस्य)

माननीय पाठकगण

इससे पूर्व अक मे श्री आपने लोकसभा सदस्य श्री रामचन्द्र वीरप्पा की जीवन झाकी का अवलोकन किया होगा। श्री रामचन्द्र वीरप्पा भारत की लोकसभा मे वरिष्ठतम सासद हैं। लगभग ६२ वर्ष की अवस्था मे श्री रामचन्द्र जी मे एक युवक सा उत्साह है। आर्यसमाज से सम्बन्ध वैदिक मान्यताओ मे विश्वास तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती मे अगाध श्रद्धा वीरप्पा जी से किए गए वार्तालाप के प्रत्येक वाक्य मे झलकती है। १६५१ से अब तक श्री रामचन्द्र वीरप्पा लोकसभा या कर्नाटक विधानसभा के सदस्य अवश्य बने रहे है।

श्री रामचन्द्र वीरप्पा जी के प्रशसको द्वारा लिए गए एक निर्णय के अनुसार उनके सम्मान मे एक अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है। प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओ आर्यसमाजो तथा आर्यशिक्षण सस्थाओ सुविख्यात आर्य नेताओ और सन्यासियो से प्रार्थना है कि वे श्री रामचन्द्र वीरप्पा जी के प्रति शुभकामनाए लिखकर निम्न पते पर भेजे –

सार्वदेशिक प्रकाशन १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली। — विमल वधावन एडवोकेट

आज देश की राजनीति मे साम्प्रदायिकता का जहर इस तरह घोला जा रहा है। जैसे एक विशिष्ट साम्प्रदायिकता के लोग ही अपने को देशभक्ति का ठेकेदार बता रहे है और मुसलमान ईसाई की देशभक्ति को शक की नजर से देखने की कोशिश हो रही है। इसके ठीक विपरीत आज से ७१ वर्ष पहले एक आर्यसमाजी रामप्रसाद बिस्मिल तथा एक नौजवान मुसलमान अशफाक आर्यसमाज शहाजहापुर (उ०प्र०) एक ही कमरे मे रहते थे। दोनो एक साथ गुलामी की बेडिया तोडने के सपने देखते थे। दोनो मे सगे भाइयो जैसा प्यार था और दोनो को देश द्रोह का आरोप लगाकर अग्रेजो ने फार्श पर चढाया। १६ दिसम्बर १६२७ को दोनो हसते हसते फासी के फदे को चूमकर शहीद हो गए। उनके अन्य साथी थे ठाकुर रोशन सिह और राजेन्द्र लाहडी चन्द्रशेखर आजाद इनकी टोली मे सबसे कम उम्र के क्रान्तिकारी थे। बाद मे इलाहबाद के एल्फ्रेड पार्क मे शहीद हुए। क्रान्ति की मशाल मे रोशनी बनाए रखने वालो मे अमर शहीद भगत सिह राजगुरु सुखदेव मदललाल धीगरा उधमसिह भगवती चरण वोहरा कल्पना दत्त जतीन्द्रनाथ न जाने कितने खेल गए अपने खून से होली। ऐसे प्रेरणा दायक साहित्य अगर आज की युवा पीढी की प्राथामिक कक्षा से ही पढने का सुअवसर प्रदान किया जाए तो इस चिगारी से युवाओ के मन मे फिर से सत्य अहिसा प्रेम एकता देश भक्ति की भावना जाग जाएगी और सामाजिक आर्थिक जातीवाद भ्रष्टाचार स्वार्थ साम्प्रदायिकता के विरूद्ध एक और क्रान्ति की चिगारी भडक उठेगी और भारत को फिर से वह प्रतिष्ठ/मान दिलाने मे यशास्वी होगी। सारा माहोल फिर से देशभक्ति की भावना से भर जाए युवा पीढी बलशाली बनेगी।

ऐसे क्रातिकारी देश प्रेम्यिो की कहानिग आर्य समाज की सभाओ में अपने सहयोगियो से श्री रामचन्द्र जी सुनते थे तब उनके रोम रोम मे देशभक्ति क्राति की ज्वाला भभक उठती थी वे स्वय भी इसी तरह कुछ कर गुजरने की ठान लेते थे। सभी जानते हैं श्री रामचन्द्र जी ने किसी कॉलेज या पाठशाला मे विद्यार्जन नहीं किया स्वय को अनपढ कह लेने मे कभी अपमान की भावना उनमें नही आती थी। समय की ठोकरो ने परिस्थितियो ने उस समय की देश की स्थिति तथा उनके साथियो के अनुभव से उन्होने महत्वपूर्ण पाठ पढा वैसे बाद मे हिन्दी प्रवेश परीक्षा हिन्दी प्रचार समिति हुमनाबाद से पास की है। उसी के बल पर हिन्दी पुस्तके पत्रिकाए पढ लेते है। उनकी स्मरण शक्ति अगाध है। एक बार किसी व्यक्ति को देख लेते हैं या कोई पुस्तक पत्रिकाये पढकर आत्मसात कर लेते हैं कभी नहीं भूलते। कृषि क्षेत्र मे उनकी अधिक रूचि है। किसानो के वे चहेते नेता माने जाते है।



श्री रामचन्द्र वीरप्पा (लोकसभा सदस्य)

दिन हा या रात जनता सेवा के लिए सदा तत्पर रहते है।

निजाम के दोर मे जब रजाकारो का अत्याचार बढता ही गया तब भी रामचन्द्र जी की मारना तथा मारखाना एक आदत सी बन गयी थी। जब भी दलित जनो पर मुस्लिम कहर ढाते थे अपमानित करते थे गुलाम की तरह उनसे कार्य करवाते थे तब रामचन्द्र जी बिना डरे उनके विरूद्ध सघर्ष करने सबसे आगे रहते थे। डर नाम का शब्द उनके शब्दकोष मे नहीं था। वे सन १६४० मे घटित घटना सुनाते हुए कहते हैं – निजाम के दौर मे सारे राज्य मे विशष कर बीदर मे रजाकारो का जुल्म बढता ही जा रहा था। उस समय की एक घटना को मै बताना चाहूगा एक हिन्दू महिला कपडे धोने के लिए अपने ग्राम के नाले की ओर जा रही थी तभी चार दुष्ट मुस्लिम दानव उसे पकडकर बलात्कार करने का प्रयत्न करने लगे तभी वह महिला जोर जोर से चीखने लगी। उसके समीप के खेत मे मैं कार्यरत था। चीख सुनते ही खेत की बाढ से कूदकर उन पर हमला बोल दिया उन्हे भगा दिया। उस महिला को घर तक पहुचाकर ही घर लौटे। उनके स्मरण मे एक नहीं दो नहीं सैकडो से ऐसी घटनाओ का भडार भरा है जैसा याद आये सुनाते जाते हैं। इस घटना से क्रोधित मुस्लिम भाईयो ने समूह के साथ श्री रामचन्द्र जी पर अचानक हमला बोल दिया अकेले ही उन सबके साथ लाठी प्रहार करते रहे पर एक ने अचानक उनके पेट पर वार कर दिया उस समय आज की तरह अस्पताल नही थे। देशी दवाओ से वैद्यो की सहायता से ही घाव भर गया। उनके बडे भाई लक्ष्मण जी महान वीर बलशाली आर्यसमाजी देशभक्त थे। उनके आश्रय मे उनके तालीम मे उन्होने मुदगल फिराना मल्ल युद्ध कुस्ती ताली दड बैठक बडे ही श्रम के साथ सीख लिया और आज भी जब वे जहा कही भाषण करते है कहते है आज की भावी पीढी व्यसनो के आधीन होकर नामर्द बन गयी है। बलहीन हो गयी है। उनमे न श्रम करने की शक्ति है न खाना पचान की। आज मेरी उम्र ६२ वर्ष की है। आज भी मुझमे वही दम है अगर किसी का हाथ पकड लू तो छुडाकर दिखाये ऐसे कइ प्रसग हैं जिन्हे लिखने बैठ जाए तो एक बडा ग्रथ बन जाएगा।

निजाम के दौर मे सरकारी कार्यालय पुलिस थाने का बम्ब से उडाने के लिए गुप्त स्थान पर क्रातिकारी युवक बम्ब बनाने का कार्य करते थे। इन बम्बो को हाथ बम्ब या आज के सदर्भ मे हथगोले कहा जाता है। यह बम्ब बनाने का कार्य बम्ब बनाने मे सिद्धहस्त माणिकराव भडारी पुडर्लिकराव के साथ श्रीरामचन्द्र जी भी उसमे सक्रिय रूप से भाग लेते थे। वह बम्ब पुलिस चौकी पर रात के अधेरे मे फेककर भाग जाते थे। इसी प्रकार एक थाने पर बम्ब डालने से वहा की पुलिस चौकी ध्वस्त हो गयी। शक के सहारे रामचन्द्र जी तथा इनके साथियो के पकडकर हैदराबाद के चचल गुडा पुलिस थाने मे बन्दी बनाकर रखा गया बाद मे इन्हे कालापानी की सजा सुनाकर अडमान द्वीप भेजा गया। अडमान जाने से पूर्व अपनी पत्नी के साथ वार्तालाप मे उन्होने अपनी धर्मपत्नी को स्पष्ट रूप से कह दिया मैं कालापानी की सजा काटने तुमसे बहुत दूर जा रहा हू। इस कैद से मुक्त होकर वापिस आऊगा इसकी कोई आशा नहीं इतना ही नहीं मैं वहा जीवित रहूगा इसकी भी कोई आशा नहीं मेरे लिए अपना यह अमूल्य जीवन बबाद मत करना। तुम दूसरी शादी करके सुख से रहो। उस काल की घटना है उस समय हमारा समाज अध श्रद्धा अज्ञानता गरीबी भूख बीमारी के नर्कमय जीवन से गुजर रहा था। कितना विशाल ह्रदये कितनी उदारता कितनी क्रान्तिकारी महान विचार भावना थी रामचन्द्र जी की। ऐसे महान व्यक्ति की उनकी देश भक्ति त्याग निडरता वीरता जनसेवा का जनता जनार्दन को परिचय कराना अत्यावश्यक ही नही अनिवार्य है।

भारत को आजादी मिली और भारत सरकार ने जेल मे बद सभी आजादी के मतवालो को आदर सम्मान के साथ स्वातत्र्य सेनानी की उपाधि से विभूषित कर उन्हे आजाद किया। सभी जन आनन्द के साथ अपने अपने घर लौटे।

सन १६४८ से आज तक उनका सम्पूर्ण जीवन जनसेवा ईश्वर सेवा दीनो की सेवा मे ही बीता। दीनो के दाता भाग्य विधाता के रूप मे अपने कर्म त्याग श्रम सेवा से जनमन मे बसने वाले रामचन्द्र जी ने अपने जीवन मे कभी पद की लालसा नहीं की धन का मोह नही छुआ गर्व अभिमान अपशब्द हो या किसी के दिल को दुखाना यह भावना आज तक नही छू सकी। अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल की अमर कृति देशभक्ति से सराबोर तराना यदा कदा गाकर सुनाते है।

— शेष भाग पृष्ठ ६ पर

पृष्ठ ५ का शेष भाग

श्री रामचन्द्र वीरप्पा (एम०पी०)

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल मे है। देखना है जोर कितना बाजुए कातिल मे है।।

उन्होन यह गीत सार्थक करके दिखाया है। उनकी इच्छा है भारत की भावी पीढी उन अमर शहीदो की वीर गाथाए पढे। उनकी दशभक्ति त्याग सत्य न्याय अहिसा शान्ती दश के लिए प्राण अर्पण करन वाल नेता' को क्रातिकारियो की पुस्तके मनन करे। एक सच्चा भारतीय देशभक्त कर्मयोगी एव सच्चा देशभक्त नागरिक बने। भारत को आजादी मिलने के एक वर्ष बाद हैदराबाद के निजाम सरकार से हम आजादी मिली। इसमे स्वातन्त्र सेनानी दिग्गज आर्य समाजी नेताओ का बडा योगदान रहा। उन्हीं के प्रयत्न से सरदार वल्लभ भाई पटेल ने तत्काल निजाम राज्य पर पुलिस एक्शन के नाम से फौज द्वारा आक्रमण कराकर निजाम राज्य को भारत मे विलय करा दिया। आजादी के पश्चात आर्य समाज के दिग्गजो ने उन वीर क्रातिकारी योद्धाओ का कभी नहीं भूलाया उनकी योग्यता के अनुसार उनको सरकार मे उचित स्थान दिया। तब श्री रामचन्द्र जी को प्रथम बार सन १९४८ मे हैदराबाद राज्य विधान परिषद के सदस्य के रूप मे स्थान मिल। फिर सन १९४६ म बीदर म्युनिसिपल काऊसिल का सदस्य चुना गया। उसके पश्चात भारत राज्यो मे बट गया। प्रथम बीदर जिला आध्र से जोडा गया था। तब सारे बीदर जिला क जनो इस जिले का कर्नाटक राज्य से जोडने के लिए घोर अन्दोलन आरम्भ किया इनमे रामचन्द्र जी ने सबसे प्रमुख भूमिका निभाई भूख हडताल रेल रोको सरकार के साथ सघर्ष म फिर जेल गय। जेल भरो आन्दोलन का वे नेतृत्व करत थे। वर्षो के सघर्ष के पश्चात बीदर जिले को कर्नाटक राज्य मे विलीन करने का सपना साकार हुआ। आज बीदर कर्नाटक राज्य के एक जिले के रूप मे विख्यात है। श्री रामचन्द्र जी को अपने पुराने सस्मरण के विषय विस्तार से बताने के विषय मे कहने पर कुछ धटनाए याद करते हुए वे बताते हैं। जब पुलिस थाने पर बम्ब फेकने के आरोप मे उन्हे सजा हो गयी और चचलगुडा जेल मे कैदी के रूप मे थे तब हुमनाबाद से कई लोग चलते हैदराबाद पहुचे जेल मे उनसे मिले। उनकी पत्नी भी उनके साथ आयी थी। उसी समय उन्हाने अपनी पत्नी को दूसरी शादी करके सुख से रहने को कहा था। घर बार ससार यह सब उनके लिए मिथ्या थे। देश प्रेम बलिदान त्याग की भावना उनमे कूट कूट कर भरी थी। बहुत कम नेता है जो रामचन्द्रजी जैसे महान व्यक्ति के रूप मे देखने को मिलते हैं। हैदराबाद राज्य भारत मे विलीन होने के पश्चात बी० राम किशन राय हैदराबाद राज्य के मुख्यमंत्री बने तभी उन्होने रामचन्द्र राव को एम० एल० सीट देने के लिए प्रस्ताव भेजा तब उस समय बीदर जिले के मलधा कोल्लूर काग्रेस के अध्यक्ष थे। उन्होने तत्काल उन्हे कार मे हैदराबाद भेज दिया। आज भी उस घटना को यादकर अपने आत्मीय मित्र काल्लूर के याद कर लेते है। एक और घटना उन्हे याद है। महान देशप्रेमी वीर सावरकर उस समय अडमान जेल मे ही थे। कमरा नम्बर १ २ ३ उस स्थान को उन्होने कालापानी सजा समाप्त होने क बाद वहा जाकर पूजा की। श्रद्धा से नतमस्तक हा गये। एक घटना और याद उन्हे आती है – नई दिल्ली मे कर्नाटक भवन का उदघाटन समाराह था। उस काल के मुख्यमंत्री जे यच० पटेल जी ने रामचन्द्र जी की ओर नजर दौडायी और कहा जसा कुतुममीनार सबसे ऊचा आज भी गर्व से खडा है। उसी तरह हमारे रामचन्द्र जी वीरप्पा अपने निस्वार्थ देशसेवा त्याग देश प्रेम जनसेवक के रूप मे हमारे सबसे उपर है। उनकी काई मिसाल नही। बीदर की हर धर्म जाति के जन मन मे रामचन्द्र जी के विषय मे शुद्ध भावना है प्रेम है अपनापन है। हर ग्राम मे उन्हे बाबा दादा नामसे सबोधित किया जाता है। वे प्रात दस बजे ही घरसे निकल जाते है जनता की छोटी से छोटी समस्या क्यो न हो वे स्वय उनके साथ चलते है। उनके लिए लडते है और उनका काम कर देत है। दिनभर जनसेवा मे ही बिताते हैं। इस आयु मे भी रात को बारह बजे तक घर पहुचते हैं। बाहर कही खाना नही खाते। चाय नही पीते। व्यसन इनको देखकर ही भाग जाता है। डाक बगले मे भी रहते नही। घरकी खेती है। जवारी मूग उडद और चावल खेत मे उगाते है और वही खाते हैं। किसी से एक पेसा लेते नही। वे सदा कहते है कि कई नेता भिकपती से करोडपति बन गए। महल बनवाये। कार हवाइ जहाज मे घूमते हैं। मै जहा था वही हू वही टीन का घर जवारी की रोटी मूग की दाल है ना कमाल। खादी का नेहरू शर्ट काला वासकोट पहले गाधी टोपी पहनते थे बाद मे रूमाल पहनने लगे। उन्ह हरा गुलाबी लाल फेटा पहनने का शौक है। रामचन्द्र जी ने कभी पद पाने की इच्छा नही की की अपन आप ही पद इनक पीछे दौडा चला आता है। वे आजादी के पश्चात कई वर्षो तक काग्रेस पक्ष म रहे। काग्रेस पार्टी ने ही उन्हे एम एल ए बाद मे यम पी बनने का सुअवसर प्रदान किया। बाद मे वे भा०ज०पा० मे आये और दो बाद यम पी० बनने का मौका मिला। भगवान करे सन २००५ मे भी एक और उन्हे मौका मिले। भा०ज०पा० मे जाने के लिए सस्थान माणिक नगर के श्री प्रभू सिद्धराज जी ने सलाह दी और वे मान गए। काग्रेस छोड भा०ज०पा० मे आ गए। यहा भी जनता ने उन्हे अपना नेता चुना। यह प्रभु का आशीर्वाद मानते हैं।

उनका राजनीतिक जीवन काल निम्न प्रकार है –

सन १९४८ मे हैदराबाद राज्य विधान परिषद के सदस्य
सन १९४६ मे टाऊन म्युनिसिपल काऊसिल के सदस्य
सन १९५७–६२ कर्नाटक विधान सभा के सदस्य
सन १९६२ मे लोक सभा सदस्य
सन १९६७ मे लोक सभा के दूसरी बार सदस्य बने
सन १९८०–८५ कर्नाटक विधान सभा सदस्य
सन १९६१ मे लोकसभा के सदस्य (तीसरी बार)

आज फिर वे लोक सभा के सदस्य के रूप मे विद्यमान है। वे अपना खाली समय धार्मिक पुस्तके पढने मे बिताते हैं। कीर्तन भजन मे भाग लेना उन्हे अच्छा लगता है। देश के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने वाले स्वातत्र्य सेनानी वीर रामचन्द्र जी की जीवनी सघर्ष दुख कष्टा से भरा जीवन है। श्री बसवश्वर जी की उक्ति के अनुसार 'कायक्कवे कैलास इस वाक्य को अपने श्रम कर्म से कर दिखाने वाले एक मात्र श्री रामचन्द्र जी ही है और कोई नही और न होगा। रामचन्द्र जी सदा अपनी बीती बाता को यादा को ही बार बार दोहराते हैं उनकी इच्छा है देश मे कृषि मे उन्नति हो ऊच–नीच जाति भेद मिट जाये। सभी को उद्योग मिले पर उन्हे दुख हाता है आजादी के ५३ वर्ष बाद भी इसमे कोई अतर नही आया गरीब और गरीब हो गये किसान कगाल हो गए। जाति धर्म का द्वेष बढता ही जा रहा है अमीर और अमीर हा गये। सत्य अहिसा शाति प्रेम एकता भाईचारा अब किताबी बाते बन गये है इन्हे इसका दुख भी है उन्होने अपने जीवन काल मे जो कार्य करने की ठान ली थी वह पूर्ण नहीं कर सके उनके सपने पूर्ण रूप से साकार नही हो सके।

केवल भारत मे ही नही विश्व के अन्य देशो मे भी क्राति हुइ। रूस तुर्की इरान जैसी क्राति ने उनकी काया ही पलट कर रख दी आज की युवा पीढी को क्राति देश त्याग बलिदान इन शब्दो का अर्थ ही मालूम नही। आजादी के पश्चात जन्म लेने वाली पीढी पर विदेशी चमक दमक सुख भोगने की लालसा धन कमाने की लालसा उसके लिए कुछ भी कर गुजरने की लालसा ने उन्हे स्वार्थी लालची देश द्रोही तक बना दिया है।

भारत की स्वतत्रता चाहने वाले भारत के स्वातत्र्य सेनानियो का एक सपना था। जब भारत देश आजाद हागा तो समाजवादी भारत का एक सपना था वे ऐसे भारत का निर्माण चाहते थे जहा किसान और मजदूर सबसे सुखी जीवन बिताये बाकी बुद्धीजीवी इनके सवक बनकर उनकी आशाओ के अनुरूप उनकी सेवा करे पर आजादी के पश्चात सारा नक्शा ही बदल गया। व्यापारी नौकरशाही नेता गुडे देश पर राज करने लगे। न्याय अन्याय मे धर्म अधर्म मे परमार्थ स्वार्थ मे देश प्रेम देशद्रोह मे बदल गया। ये सारे जन किसान मजदूरो का खून चूसकर उन्हे अपाहिज बना रहे है। आज इस अन्याय के शोषण के विरूद्ध लडने वाले बहुत कम है और आज उनमे इनसे लडने की शक्ति नही रही। मन ही मन छटपटाते है तडपते है और अपने आपको कोसते हैं। क्या यही दिन देखने के लिए बलिदानियो ने अपना सर्वस्व त्याग कर भारत को आजादी दिलाई थी ? रामचन्द्र जी को भी इसी प्रकार का आघात लगा है वे अपनी हर सभा मे अपने भाषण मे यही शब्द दोहराते हैं। आज के नेता पद धन प्राप्त करने वाले स्वार्थी दानव है। मानव का मुखौटा ओढे ये नेता देश के टुकडे करने पर तुले हुए हैं। जाति भाषा धर्म के नाम पर हम सब भारतवासियो का एक दूसरे का कटटर शत्रु बनाकर अपनी रोटी सेक रहे हैं। देश जनता का क्या होगा किसी को फिकर नही आज देश हित तथा जनता के बारे मे कोई नहीं सोचता हर कोई अपना घर भर लेने सुख भोगने की इच्छा से कार्य करता है। युवा पीढी भटक गयी है। इनका भविष्य अधकारमय बना गया है। बढती बेरोजगारी गरीबी एक दिन क्राति अवश्य लायेगी। लेकिन आज तो देश की बागडोर नेता व्यापारी गुडो के हाथ मे है। जहा धर्म न्याय एकता भाईचारे की बात कोई नही सुनता। सभी विलासता भोग विदेशी रग मे रग गये है। श्रम कोई करना नही चाहता। ज्ञान की लालसा नही। देश जनता के प्रति अपनापन नहीं। सारा वातावरण ही बदल गया है। यह सब देखकर रामचन्द्रजी को बडा दुख होता है। उनकी बातो को गभीरता से न लेते है। मजाक के रूप मे लेते है।। देखकर उन्हे कष्ट पहुचता है। हलीखेड शुगर फैक्टरी की स्थापना के लिए उस काल मे रामचन्द्र जी ने अथक प्रयत्न किया इसे खडा करने मे स्व० बापू साहेब देशपाडे जी का बडा योगदान था। आज यह फेक्टरी किसानो के लिए वरदान साबित होती पर इतने वर्ष के पश्चात भी यह कारखाना उन्हे जीवन देने के बजाय उनका शोषण ही कर रहा है। यह सब स्वार्थ जातिवाद राजनीतिज्ञो का खेल है।

क्रमश

वर्तमानयुगीन जटिल समस्याएं और उनका वैदिक समाधान

– **हरिदत्त शास्त्री**

विश्व की वर्तमान परिस्थिति सुखी एव शान्त नहीं दिखाई देती। लगभग सभी प्रमुख देशो के प्रमुख नेता समय समय पर आपस मे मिलकर अनेक प्रकार की जटिल समस्याओ पर विचार करते रहते हैं। परन्तु भौतिकतावादी चकाचौंध मे किए हुए निर्णयो को क्रियान्वयन करने मे अनेक प्रकार की बाधाए आती हैं और उनको वही छोड दिया जाता है। अदम्य साहस न होने के कारण लोगो का साथ न मिलने के कारण देश अनेक प्रकार की विषम परिस्थिति से गुजरता दिखाई पडता है। मूलता भौतिकतावादी दृष्टिकोण के कारण बात वहीं की वही रह जाती है।

आज भौतिकतावादी आकर्षक दृष्टि ने मनुष्य के अस्तित्व को ही सकट मे डाल दिया है। सभ्यता की बात कौन कहे ? विज्ञान ने मारक अस्त्र शस्त्रो के निर्माण से एक भय और आतक व्याप्त कर दिया है। वैर विरोध अविश्वास और घृणा का मनुष्यो मे वातावरण बना दिया है। स्वार्थ और सकीर्णता के घेरे मे मनुष्य अच्छी तरह से घिरा हुआ है। राष्ट्रा एव सत्ता के बीच गुटो मे उत्पन्न प्रतिस्पर्धा निरन्तर विश्वयुद्ध की ओर धकेल रही है। मनुष्यो मे विश्व मैत्री भाव पख लगाकर उड गया है। 'वसुधैव कुटुम्बकम' का भाव कहीं पर भी दिखाई नहीं पडता। भौतिकतावादी व्यवस्था ने अविश्वास के बीज बो कर सम्पूर्ण समाज को विषाक्त बना दिया है। आज परिवार मे विघटन समवेदना से रहित स्वार्थ साधन मे तत्पर बडो के प्रति निरादर सन्तान के प्रति दायित्व का अबोध आय के स्रोतो क प्रति पवित्रता का तिरस्कार मनमानी और उच्छृखलता को बढावा निरन्तर जनरेशन गैप के नाम से दिया जा रहा है। इन पर कोई सन्तुष्टिपूर्ण कार्य नही हो रहा है।

मनुष्य समाज मे फूट विनाश विघटन ओर शत्रुता के भाव आज के भौतिक युग की देन है। मानव जाति मे पारस्परिक विश्वास और प्रेम न के बराबर है। मानव सभ्यता को भुला कर अपने अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिए अपनी बोलिया बोलने लगे हैं। अज्ञान अन्याय और अभाव एव सामाजिक बुराइया व विषमताओ के प्रति हम भौतिकतावादी स्थिति ने अक्षम बना दिया हैं। हमारे समाज मे एक वर्ग सफलता की चरम सीमा पर खडा है और साधनहीन विपन्न लोग गहरे अन्धेरे के गर्त मे पडे हैं। न्यूनाधिक ऐसे ही बड राष्ट्र छोटे राष्ट्रो के प्रति असद् व्यवहार कर रहे हैं। धनी और गरीब की खाई निरन्तर बढ रही है। वाणिज्य और व्यवसाय के क्षेत्र मे एकाधिकार उन्नति के शिखर पर है। कुछ लोग धन के कारण विलासिता मे सराबोर हैं तो कुछ लोग शोषण भुखमरी महामारी के कारण मौत के शिकार हो रहे हैं। मशीनी युग ने मनुष्य को भी मशीन बना दिया और मनुष्य की समवेदना और सहानुभूति कुण्ठित कर दी। आज विश्व का अस्सी प्रतिशत समाज दानवाकार वणिक वृत्ति से पीडित त्रस्त एव अभिशप्त हो रहा है।

क्या इस प्रकार की भौतिकवादी अन्धी और विलासितापूर्ण दौड मे ऐसा कोई सिद्धान्त कोई सूत्र कोई मान्यता विश्व के साहित्य मे उपलब्ध है जो इस धधकती ज्वाला को विचारपूर्वक शान्त करने मे सक्षम हो। अमेरिका के राष्ट्रपति बिल क्लिटन भारत आए तथा भारत के प्रधानमन्त्री अटलबिहारी वाजपेयी अमेरिका गए उच्च स्तरीय विचार विनिमय हुआ। रूस के राष्ट्रपति पुतिन भी भारत आए और गहराई के साथ विचार विनिमय हुआ। ऐसे ही सम्पूर्ण विश्व के राष्ट्रो के राष्ट्राध्यक्ष और राष्ट्रनेता मिल जुल कर विचार विनिमय करते रहते हैं। राष्ट्रो के अन्तरराष्ट्रीय धरातल पर और विश्व के स्तर पर समस्याए जटिल से जटिलतर होती जाती हैं। शायद दिलो मे कुछ खोट है। स्वार्थ से ऊपर उठकर विश्व के धरातल पर चिन्तन भी उसी स्तर का चाहिए और क्रियान्वयन भी। किन्तु ऐसा हो नहीं पाता। इसलिए समस्याए विषम से विषमतर होती जाती हैं।

विश्व क साहित्य मे सबसे प्राचीन वेद का नाम आता है। यदि विश्व के लोग वैदिक सिद्धान्तो को समग्रता के साथ देखे और मनन करे और दृढता के साथ क्रियान्वयन करे तो विश्व के सभी मानव सुख समृद्धि के साथ शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकते हैं। आज की आपाधापी स्वार्थ और सकीर्णता को अविद्या और जहालत को समूल उखाड कर मानव सभ्यता को पवित्र बनाने मे पूर्ण सक्षम है। अथर्ववेद की एक पवित्र ऋचा विषमताओ को दूर करने मे रामबाण सिद्ध हो सकती है। भौतिकवादी समाज मे जीने वाले मनुष्य के लिए आज सबसे बडी आवश्यकता है सौमनस्य और मैत्री भाव की। इन दोनो को शिक्षा के माध्यम से सिखा कर आत्मसात कर लिया जाए तो विश्व स्वर्ग बन सकता है। इसी पवित्र भाव को देखिए इस ऋचा ने कितना सुन्दर रूप दिया है

अभय मित्रादभयममित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु।।

हम सब विश्व के लोग मित्रो और अमित्रो के बीच मे निर्भय होकर विचरे। ज्ञात और अज्ञात लोग भी हमे भय रहित करे। दिन और रात भी हमारे लिए अभय देने वाली हो और सम्पूर्ण दिशाए मित्रवत हो। आज आवश्यकता है मनुष्यो मे विश्व मैत्री भाव जगाने की। प्राय करके हम वेदो को भक्ति और कर्मकाण्ड का ग्रन्थ मानकर पेटियो मे सुरक्षित रख देते हैं। अध्ययन करके गहराई के साथ चिन्तन मनन करके समाज की बुराई को दूर करने के लिए अच्छाई का क्रियान्वयन नही करते। उपरोक्त मत्र मे विश्व के प्राणी मात्र के प्रति निर्भीकता का भाव प्रकट किया गया हे। ऐसे सिद्धान्तो की अनदेखी के कारण विषमताए बढी और जटिलताए बढती चली गई। यजुर्वेद के निम्नलिखित मन्त्र की वाणी देखिए विश्व के समस्त प्राणियो के प्रति मैत्री भाव प्रकट करते हुए यजुर्वेद की घोषणा है

मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।।

समस्त ससार के प्राणीमात्र को हम मित्रता की दृष्टि से देखे। ऐसा यथार्थ आदर्श विश्व के किसी साहित्य मे हो नहीं दृष्टिगोचर होता। आज की भौतिकतावादी व्यवस्था मे विषाक्त वातावरण को अमृत बनाने के लिए वेद की कैसी अदभुत प्रेरणादायक और सबल शिक्षा है। इसकी जानकारी आज के लोगो को शायद नहीं है। जिस दिन विश्व के समाज में इस प्रकार की स्नेह भरी शिक्षा और विचार व्यवहार दिए जाएगे उस दिन भौतिकवादी आकर्षण और विषमताए पख लगाकर उड जाएगी। यजुर्वेद के चालीसवे अध्याय के प्रथम मत्र मे क्या ही मनोहारी शिक्षाप्रद विचार प्रस्तुत किए गए हैं। सम्पूर्ण ससार भगवान से आच्छादित है। भगवान विश्व के कण कण मे व्याप्त है सुख शान्ति चाहने वाले के लिए जरूरी है परमात्मा द्वारा दिए पदार्थों का त्यागपूर्वक उपभोग करे और दूसरे के धन का लोभ और लालच न करे। इस पकार की उदात्त शिक्षाए आज के भौतिकतावादी युग मे अपनाने के लिए प्रेरित करना अत्यन्त आवश्यक है। चारो वेदो मे ऐसे बहुमूल्य सूत्र व सिद्धान्त बहुलता से उपलब्ध है।

सामाजिक स्नेह का चित्रण करते हुए वेद ने क्या ही सुन्दर सिद्धान्त प्रतिपादित किया है अन्योन्यमभिहर्यत वत्स जातमिवाध्न्या तुरन्त पैदा हुए बछडे के प्रति गाय का स्नेह देखने वाला होता है। जैसे गाय अपने बछडे से स्नेह करती है वैसे हमे भी समाज मे रहते हुए एक दूसरे के प्रति स्नेह सहानुभूति और सौमनस्य का व्यवहार रखना चाहिए।

आज प्रत्येक क्षेत्र मे विषमताए मुख खोल कर खडी हैं। धनी ओर गरीबी की मालिक और मजदूर की स्वामी और सेवक की और तो और खाने पीने के विषय मे भी समर्थ लोगो का साम्राज्य दिखाई देता है। वेद ने इसका सुन्दर सशक्त प्रेरणादायक समाधान प्रस्तुत करते हुए कहा है समानी प्रपा सह वा अन्य भाव समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि। विश्व का निर्माण करने वाला भगवान हम सब मनुष्यो को कर्त्तव्य के एक धुरे में बाधता है और साथ–साथ जल की व्यवस्था और भोजन की व्यवस्था की ओर आकृष्ट करते हुए कहता है कि वैदिक समाजवाद लोगो के भोजनालयो और पीने के पानी की एक समान व्यवस्था का आह्वान करता है। पूजीवाद का विरोध करता है। जब मनुष्य अपने कर्त्तव्य पालन के प्रति जागरूक हो जाएगा तो अधिकाशो के झगडे की प्रवृत्ति सदा के लिए समाप्त हो जाएगी और भौतिकतावादी चकाचौंध मे जो एकाधिकार के कारण विकट सकट आया हुआ है वह समाप्त हो जाएगा।

आज का मनुष्य स्वार्थ और सकीर्णता के कारण स्वय मे व्यक्तिवादी दृष्टिकोण को स्थापित करने के लिए अहकारमय हो गया है। परन्तु वेद तो व्यक्ति की उन्नति के साथ सामाजिक उन्नति को भी प्राथमिकता देता है। ऋग्वेद अन्तिम सूक्त समाजवाद के इस व्यक्तिवादी दृष्टिकोण को निरस्त करता हुआ कहता है सगच्छध्व सवदध्व साथ चलने साथ बोलने मनो को एक सा बनाने की प्रेरणा देता है। वेद मनुष्य से देवत्व की ओर बढने की प्रेरणा भी प्रदान करता है। देवाना भद्रा सुमतिर्ऋजूयता हम सब मनुष्य देवताओ की कल्याणी मति को प्राप्त करे। दैवी आदर्शो को वद ने कैसे सुन्दर ढग से प्रस्तुत किया है। मनुष्य से देवत्व को प्राप्त तभी कर सकेंगे जब समष्टिहित की भावना को विकसित करेगे। ऐसी स्थिति मे ऋग्वेद का यह सूक्त विचारो की एकता सगठन की एकता चित्त व मन की एकता की ओर बरबस हमारा ध्यान आकृष्ट करता है। सकल्पशक्ति और मनुष्य के मनोभावो की एकता का कैसा सुन्दर चित्रण ऋग्वेद ने किया है।

कर्म और ज्ञान का समन्वय सामाजिक व्यवस्था सामाजिक हित और सगठन परिवार समाज प्रेम राजनीति शरीर विज्ञान औषधविज्ञान मनुष्य के भिन्न भिन्न प्रकार की रुचियो और प्रवृत्तियो को ध्यान मे रखते हुए वेद ने अनेक अनुपम अविस्मरणीय सिद्धान्त विचार के रूप मे प्रदान किए हैं। जिनकी अवहेलना के कारण आज समस्त विश्व मौत के कगार पर खडा है। इस भीषण विषम सकट से बचने का एक ही प्रकार है कि हम स्वाध्याय मननपूर्वक करे। वेद की शिक्षा को आत्मसात करे। आज के मशीनी युग मे मशीन बना आदमी चिन्तन और निधिध्यासन का समय ही नहीं निकाल पाता। इसका समाधान भी वेद ने कर्म और ज्ञान का समन्वय स्थापित करते हुए कहा कि अविद्यया मृत्युमतीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते मनुष्य कर्मशील होकर मृत्यु से छूटता है और ज्ञानवान होकर अमृतत्व को प्राप्त करता हैं

मध्य युग की अपेक्षा पूर्व और पश्चिम के लोग वेदो का अनुशीलन आज गहराई के साथ कर रहे हैं। भारतवर्ष में आर्यसमाज की स्थापना महर्षि स्वामी दयानन्द ने १८७५ मे वेद के आधार पर की और वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। वेद का पढना पढाना और सुनना सुनाना सबका परम धर्म है ऐसी घोषणा करने वाला आर्यसमाज भी देश और विश्व की व्यवस्था को तो प्रभावित नहीं कर पाया। खेद के साथ कहना पडता है कि आर्यसमाज के सगठन सस्थाए समूचे देश मे हीं नही विदेश मे भी फैली हुई हुई है परन्तु वेद जिन उदात्त जीवन सम्बन्धी गम्भीर चिन्तन समाज राष्ट्र व विश्व के अनुशासन व प्रशासन का दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है वह तो कहीं दिखाई नही देता। आर्यसमाज के कणधारो को विद्वानो और कार्यकर्ताओ को इस ओर अविलम्ब ध्यान देना चाहिए और वेद की सार्वभौम शिक्षाओ को आत्मसात करने के लिए कोई स्वस्थ अभियान चलाना चाहिए।

– **डी०ए०वी० नैतिक शिक्षा सस्थान मन्दिर मार्ग नई दिल्ली**

अतीत के साथ वर्तमान भी निहारे

– अखिलेश आर्येन्दु

दयानन्द देव वेदो की पताका लेकर आ॰ थ भारत का कर गया बेडा पार वा मस्ताना योगी दयानन्द सब को जगाने आए थे दयानन्द जैसा हुआ न होगा वदो अनाथो नारी व दलित का किया उद्धार वो महर्षि मरा जैसे सुमधुर आवाज मे आर्य समाज के ख्याति नामा कवियो व भजनोपदेशको के कैसेट आर्य समाज मन्दिर (दयानन्द का आर्यसमाज जो मन्दिर मे तबदील हो गया) के साप्ताहिक सत्सगो मे बडे जोर शोर से बजाए जाते है। या यू कहिए आर्यसमाजियो के स्वर्ग पाने के कार्यक्रमो की शुरूआत या एक सूत्रीय आर्यसमाज मन्दिरो के प्रोग्रामो की शुरूआत ही इन भजनो के बाद हवन से होती है। यज्ञ हवन भजन सत्यार्थ प्रकाश का पाठ या वेदाञ्जलि। ऋग्वेद भाष्य भूमिका का पाठ और अत मे किसी भजनोपदेशक द्वारा भजन/उपदेश फिर शान्ति पाठ। फिर दयानन्द सहित आर्यसमाज के नामी गिरामी सन्यासियो का जयकारा। सदस्यता चदे या यदि चुनाव पर विचार नहीं करना है। सत्सग की समाप्ति। जिन्होने आर्यसमाज को सध्या हवन पार्टी समझा है वे कहेगे इसमे गडबड क्या है ? क्या सध्या हवन करना पाप है ? पाप पुण्य की बात बाद मे करेगे पहले आर्यसमाज की मौजूदा हालात पर विचार कर लेना चाहिए। वर्तमान मे भविष्य मौजूद होता है इस तथ्य से मौजूदा समय मे देश दुनिया मे क्या घटित हो रहा है और हम उससे कितने रु–ब–रु हैं इस पर खुली बहस होनी जरूरी है। हम (अर्थात आर्य समाज के चिन्तक लेखक पत्रकार कार्यकर्ता और पदेन मठाधीश) एक साथ मिलकर बिना बगैर किसी भेदभाव व ईर्ष्या–द्वेष के साथ कभी बैठने की जुर्रत करते हैं ? क्या सन्यासी वानप्रस्थी और ब्रह्मचारी खुले दिलो – दिमाग से केवल बस केवल (आर्यसमाज के समक्ष मौजूदा हालत मे चुनौतिया और हम) के सदर्भ में चिन्तन करते हैं। यदि नही तो क्यो ? क्या समय नहीं है ? यदि समय नहीं है तो करते क्या है – आप ? यदि समय है तो अत व वाह्य विकार मिटा कर एक साथ बैठकर चिन्तन व बहस क्यो नहीं करते ? मैंने बडे नजदीक से देखा है सबकी अपनी अपनी डफली अपना अपना राग है। 'जब मिले सुर हमारा तुम्हारा तब होगा एक स्वर का सहारा इस बात पर चिन्तन करने को तैयार नहीं। क्या कुर्सी मिल जाने के बाद हम दयानन्द से कुर्सी नहीं बन जाते हैं – शायद सच्चाई यही है। सन्यासियो व वानप्रस्थियो की हालत भी कम नाजुक नही है। खाते है आर्यसमाज का मुहर लगाते है आर्यसमाज की और अपने तरीके के नए मठ मन्दिर बनाकर चेला–चेलिया पालना और सनातनी पोपो जैसा सारा कुछ बनाना आज के सन्यासियो व वानप्रस्थियो की जीवनशैली सी बन गई है। मै यह नही कहता कि आर्यसमाज के सभी सन्यासी व वानप्रस्थी मठ मन्दिर बनाने मे लगे है। लेकिन ज्यादातर योग के क्षेत्र के और देश के बच्चो के हालात पर आसू बहाने वाले भगवा वस्त्र धारियो का यही काम है। मै नहीं कहता कि साप्ताहिक सत्सगो का एक सूत्री कार्यक्रम (सध्या हवन) करना ठीक नहीं है। यज्ञ हवन करना तो हमारा पुनीत और परम कर्त्तव्य है। यज्ञो के नाम पर नई नई परम्पराए (जैसे २१ कुण्डीय या एक सौ एक कुण्डीय) महर्षि दयानन्द व वेदो की स्वस्थ्य परम्परा के खिलाफ है यह बन्द होना चाहिए। १०१ या ५१ कुण्डीय यज्ञो की परम्परा सनातनी पौराणिक परम्परा का अधानुकरण है। इस पर विचार करने की जरूरत है। आर्यसमाज ऐसी सस्था (स्थापना आन्दोलन के रूप मे हुई थी) मे यदि अधश्रद्धा कुतर्क पाखण्ड होता है तो यह आर्यसमाज के लिए बेहद खतरनाक है। इसलिए सार्वदेशिक या परोपकारी द्वारा निर्धारित यज्ञ–नियमो के मुताबिक ही विश्व के सभी आर्यसमाजो मे साप्ताहिक या उत्सवो मे (नित्य यज्ञ मे) यज्ञ हवन होने चाहिए। कम से कम दयानन्द व वेदो के खिलाफ कुछ भी करने का दुस्साहस तो नही ही करना चाहिए। मैने भारत वर्ष के अनेक नामी गिरामी आर्यसमाजो मे देखा है कि हर जगह महर्षि द्वारा निर्धारित यज्ञ पद्धति से हट कर मत्र बोले व यज्ञ किए जाते हैं। यह अभी शुरूआत है इस पर पाबन्दी लगनी चाहिए। गौरतलब है आर्यसमाज मन्दिरो मे जो कुछ भी हो रहा है उसे किसी भी तरह पूर्ण रूपेण ऋषि निर्धारित नहीं कहा जा सकता है। फिर दयानन्द व विरजानन्द की जय बोलना क्या पाखण्ड नहीं कहा जाएगा ? यह थोडा सा सकेत एक सूत्रीय कार्यक्रम यज्ञ हवन पर किया। एक सौ पच्चीस बरस पहले महर्षि देव दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना कर वेदो का डका आलम मे बजवा दिया था। आर्यसमाज की क्रान्ति की आग की लपटे पूरे देश मे अग्रेजी क्रूर शासन को जलाकर भस्म कर रही थी। इससे गाधी समेत तत्कालीन जितने भी देश के नेतृत्व देने वाले वीर थे सबने सीख ली सब इससे प्रेरित हुए। तभी तो गाधी जैसे व्यक्तित्व को स्वीकार करना पडा था कि – मैं जिधर से गुजरता हू वहा आर्यसमाज पहले गुजर चुका होता है। यानी महर्षि दयानन्द का आर्यसमाज अग्रेज/अग्रेजीयत से लड ही रहा था देश में फैली पोप लीलाओ बुराईयो पाखण्डो व अधविश्वासो पर भी गहरी चोट पहुचा रहा था। तत्कालीन ब्राह्मणवाद से आर्यसमाज ने जितना सघर्ष किया उतना दूसरे काग्रेस समेत दल ने नहीं किया। यह बात काग्रेस के सस्थापक ओ० एम० ह्यूम भी स्वीकार करते थे। जाहिरात तौर पर यह मुखर होकर लिखा जा सकता (माना जा सकता है) कि यदि आर्यसमाज की स्थापना महर्षि ने न की होती तो आजादी मिलना दिवा स्वप्न भर था। यानी आर्यसमाज का तकरीबन ७५ वर्ष का इतिहास देश सेवा समाज सुधार वेद प्रचार साहित्य उन्नयन दलितोद्धार स्त्री स्वतत्रता सत्य सवहन और अग्रेजी हुकूमत के खिलाफ लोहा लेने का रहा है। केवल ७५ वष के इतिहास पर ही यदि हम झाके तो भारत का पूरा इतिहास आर्यसमाज के इर्द गिर्द घूमता है। इस इतिहास पर हमे गर्व करने का पूरा अधिकार है। और हम करते भी है। लेकिन इस ७५ वर्ष का गुणगान करके ही हम अपने कर्तव्यो की इतिश्री करले तो आर्यसमाज के लिए यह सवेदनहीनता या मानसिक अपगता ही कहा जाएगा। सन ४७ के बाद हमारी स्थिति यही रही है। आर्यसमाज के रण बाकुरो को लगा हमने आजादी ले ली समाज सुधार के कार्य भी खूब कर लिए वेदो का प्रचार भी कर लिए अब देश के प्रति हमारे कार्य कर्तव्य शेष नहीं है। इस सोच धारणा व चिन्तन का परिणाम कि आज देश हर तरह से पराधीनता के पथ पर पुन बढ रहा है। आर्यसमाज ने ७५ वर्ष देश समाज, धर्म सस्कृति दर्शन राजनीति इतिहास विज्ञान सस्कृति कला साहित्य शिक्षा अध्यात्म व वेदप्रचार प्रसार के लिए कितना किया क्या किया सब जानते है। लेकिन ५० से वर्ष आर्यसमाज ने इन क्षेत्रो के उन्नयन मे किया किया – कोई नही जानता। हम भले ही आर्यसमाज के कुछ नामी गिरामी सन्यासियो पर उनके कार्यो को लेकर सिर ऊचा करले लेकिन पूरे देश स्तर पर कोई बदलाव हम ला सके तो ऐसा कुछ भी नहीं कर सके। यह कटु सत्य है इसे स्वीकार कर आत्म निगृह व आत्म परिमार्जन करके मौजूदा देश समाज सस्कृति कला साहित्य राजनीति के समक्ष चुनौतियो के लिए तैयार हो जाना चाहिए। यही समय की माग है और यही महर्षि के उद्देश्य भी।

आर्यसमाज के विचारशील पत्रकार लेखक राजनेता समाजकर्मी सन्यासी और चिन्तको ने एक साथ मिलकर आजादी के बाद ऐसा कोई भी कार्यक्रम नहीं बनाया जिससे महर्षि के स्वप्नो को साकार करने मे हम आगे बढ सकते ? इससे तीन नुकसान जबरदस्त हुए। पहला तो यह कि आर्य समाज की दिशा और दशा दोनो बदतर होती गई। दूसरा महर्षि दयानन्द के जमाने मे जो पाखण्ड और पाखण्डी तथा पोप थे वे फिर सिर उठाने लगे और धर्म के नाम पर भोली भाली जनता को गुमराह करने लगे। तीसरा राष्ट्रीय स्वयं सेवक सघ जैसे वेद विरोधी व आर्य समाज विरोधी सघटनो को समाज मे पैर पसारने का मौका मिला और महर्षि दयानन्द ने मूर्तिपूजा समेत जितना खण्डन करके समाज को नई दिशा दी थी – वह सब व्यर्थ हो गया। इन जबरदस्त नुकसानो से हम कभी रु–ब–रु होने का क्या साहस कर पाए हैं ? क्या कभी किसी ने इस पर चिन्तन किया है ? यदि नहीं तो फिर महर्षि दयानन्द की जय और आर्यसमाज अमर कैसे रह सकता है ? हम आजादी के बाद जवाहर लाल नेहरू के राष्ट्र विरोधी व वेद विरोधी कार्यों को आख मूद कर समर्थन करते रहे। यह सवेदनता की चरम परिणति है। हमारे रग रग मे अग अग मे आलस्य प्रमाद सवेदनशून्यता किमकर्तव्य विमूढता ने आ घेरा। आर्यसमाज जैसा सूर्य के समान प्रखर आन्दोलन ने काग्रेस (जो उस समय सत्ता लोलुप व्यक्तियो का दल बन चुका था) को वह सब करने दिया जो देश समाज सस्कृति व धर्म विरोधी था। फिर हम उसके परिणाम से कैसे बच पाते।

आज भी हम कितने स्वार्थ व नियम विरुद्ध व चिन्तन शून्य है कि देश को बहुराष्ट्रीय कम्पनियो के हाथो गिरवी रखने वाले प्रधान मत्री को आर्यसमाजी कहकर अपनी झूठी तुष्टि कर लेते है। सवेदन शून्यता व राष्ट्र के प्रति लापरवाह होने की इससे बडी मिसाल क्या हो सकती है ? जबकि अटल बिहारी वाजपेई ने एक नहीं सैकडो बार अपने को राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ का सेवक बताया है। जो देश को बेच रहा है विदेशी कम्पनियो के हाथो उसे हम आर्यसमाजी कह रहे हैं। प्रभु ने आपको क्या इतनी चिन्तन शक्ति नही दी है कि आप गलत सही सत्य–असत्य अच्छा–बुरा समझ सके ? यदि अटल बिहारी जी आर्यसमाजी होते तो देश मे ४००० बहुराष्ट्रीय निगमो को देश लूटने की खुली छूट न देते। यदि अटल बिहारी जी आर्यसमाजी होते तो देश में चल रहे ३६०० बूचड खाने कब के बन्द हो गए होते। आर्यसमाजी अन्याय को बर्दाश्त नहीं करता। वह न अन्याय करता है और न अन्याय सहन ही करता है और पद के लिए समझौता वादी व मौका परस्त नहीं हो जाता।

हमारी मौजूदा हालात उस विधवा के समान हो चुकी है जिसके तन पर एक फटी लगोटी है – जिससे वह अपनी आबरू बचाना चाहती है। आज विश्व फिर करवट ले रहा है। सूचना क्रान्ति की वजह से हम पश्चिमी देशो से ज्यादा जुड गए हैं और अपनी माटी से उतने ही दुर होते जा रहे हैं। जिस दौर से देश गुजर रहा है उसकी नब्ज (नाडी) की धडकन का ज्ञान हमे क्या है ? यदि नहीं तो वह कौन सी वजह है जिससे हम सवेदनशून्य हो गए हैं ? इस पर चिन्तन कर आगे बढने की जरूरत है। जो आर्य ५० वर्ष पहले समाज देश की हर धडकन पर अपनी निगाह रखता था आखिर उसमें ऐसी सवेदन अपगता क्यो ?

मैं जब भी आर्यसमाज की बात आर्यसमाज से इतर बैठको मे करता हू, तो लोग नाक भौं सिकोडते हुए कहते हैं – कहा है दयानन्द का आर्यसमाज और क्या कर रहा है – आर्यसमाज ? उनका यह उलाहना या शिकायत पूरी तरह जायज लगती है – जब मैं एक सप्ताह के बाद रविवार को दस पाच लोगो को यज्ञ हवन कर पुन आर्यसमाज मन्दिर का फाटक बन्द करते देखता हू शायद वे सभी लोग इसके जिम्मेदार हैं जो आर्यसमाज से अपने को सम्बद्ध बताते हैं। क्या नई गुलामी को हम काट पाएगे ? चिन्तन व विचार के लिए आइए एक साथ बैठ कर अपनी दिशा तय करे।

– टी ३३ ग्रीन पार्क नई दिल्ली

स्व-राज और सु-राज : स्व-भाषा और सु-भाषा

– विश्वम्भर प्रसाद गुप्त बन्धु

स्व और सु उपसर्गो का टकराव इतिहास मे मानव सभ्यता के साथ ही उत्पन्न हुआ है। इसे शासन शब्द से जा कर दखिए। जनतत्र विश्व मे सबसे अच्छी शासन पद्धति समझी जाती है जिसकी परिभाषा जनता के लिए जनता द्वारा जनता का शासन सभी विद्वानो द्वारा मान्य है और जनता का अर्थ भी अधिसख्य जन समाज समझा जाता हे जो चुनावो का आधार होता है। फिर समाज के अधिकार सम्पन्न वग म मानव की स्वाभाविक दुर्बलता के कारण सु उपसर्ग (सुशासन अर्थात अच्छा शासन चाहे वह किसी का हो अपना या पराया) प्रिय होता रहा क्योकि इसमे अल्पशासक वग शासितो पर कर भार डालकर (और प्राय उनका शोषण तय करके) सम्पन्न और सुविधा–भोगी जीवन जीता रहा है। किन्तु अधिकार वचित वर्ग मे जो प्राय अधिसख्य श्रमजीवी ही होता है मानव के स्वाभाविक स्वाभिमान के कारण स्व उपसर्ग (स्वशासन अथात अपना शासन चाहे वह अच्छा हो या बुरा) प्रिय और वाछनीय होता रहा है।

इसी क्रम मे सुशासन के लिए स्वशासन की बलि चढान तक की नोबत आ जाती है ओर कहा जाता है कि कुराज के बजाय सुराज की स्थापना करने के लिए किसी भी राजा का स्वागत होना चाहिए फिर चाहे वह विदेशी ही क्यो न हो। ब्रिटिश साम्राज्यवाद या पूजीवाद भी जब भारत मे पूरी तरह जम गया ता वही शासन सुराज कहकर जनता मे लोकप्रिय बनाया गया और स्वभाषा की बलि देकर हमे भारत भारतीयता और भारतीय सस्कृति से काटकर विदेशी भाषा अग्रजी की ललक पेदा की गई। कहा गया कि यही रोजी रोटी समृद्धि ओर अधिकार सम्पन्नता प्रदान करने वाली सुभाषा है। सुभाषा की यही मिथ्या कसोटी लोकप्रिय करके अग्रेजी का चस्का बढाया गया जनता का बुद्धू बनाया गया ओर अग्रेजो के चले जाने के बाद भी अग्रजी की गुलामी बरकरार रखी गइ। यही यह कुटिल चाल थी। गहरा षडयत्र था उन चद लोगो के स्वार्थ साधन के लिए जो अग्रेजी की अनिवायता का आश्रय लेकर अधिकार ओर सत्ता अपन अल्प वर्ग के हाथो मे ही बनाए रखना चाहते है।

ऋषि की दिव्य दृष्टि

यह कुटिल चाल पहिचानने मे उन्नीसवी सदी के तमाम देश भक्त विद्वान लखक चितक समाज सुधारक विफल रहे ओर अग्रेजी राज की सुराज कहकर प्रशसा करते रहे। किसी न यह ध्यान नही दिया कि मिथ्या कसोटी के कारण सु के लिए स्व की बलि चढ देने स तथाकथित सुराज तानाशाही का रूप ले सकता है। बस अपवाद थे तो केवल एक महर्षि दयानन्द जिन्होने वेद ज्ञान के आधार पर डके की चोट कहा कि स्वदेशी राज कितना भी बुरा हो वह अच्छे से अच्छे विदेशी राज से अच्छा ही है। इस प्रकार 'स्वराज' को उस छद्म 'सुराज' पर वरीयता देकर उन्होने षडयन्त्र का भण्डा फोड किया।

महर्षि दयानन्द ने न केवल स्वदेशी राज्य पर जोर दिया वरन स्वदेशी भाषा भूषा और स्वदेशी शिक्षा तक का खुलकर प्रचार किया। इस क्रान्तिकारी आह्वान पर ब्रिटिश सरकार ने तो उन्हे सबसे खतरनाक सन्यासी घोषित किया किन्तु सभी राष्ट्र भक्त चिन्तक और समाज सुधारक उनके अनुयायी बने और स्वतन्त्रता सेनानी होम रूल के बजाए पूर्ण स्वराज की माग करने लगे। स्वतन्त्रता सग्राम के इतिहास मे सबसे अधिक महत्वपूर्ण यह स्वदेशी आन्दोलन ही हो गया जिसकी पताका योगिराज अरविन्द और फिर महात्मा गाधी ने फहराई थी गाधी जी का सपना साकार करने मे सभी स्वतन्त्रता सेनानी एकजुट हो गए। फलस्वरूप आजादी मिली किन्तु अधूरी ही। भाषायी आजादी नहीं मिली। उसे भी प्राप्त करके अधूरी आजादी को पूर्ण स्वराज का रूप अभी देना है। यह एक पवित्र दायित्व है जो आप सब देश भक्त शिक्षको-अध्याकको प्राध्यापको क सहयोग से ही पूरा हो सकता है।

हमारी स्वभाषा हिन्दी तो सुभाषा भी है

स्व और सु उपसर्गो मे चाहे जितना टकराव वर्ग–सघर्ष विरोध और प्रतिकूलता हो भारतीय भाषा के साथ मिलकर दोनो एक हो जाते हैं यानी हमारी स्वभाषा भारतीय भाषा हिन्दी ही सुभाषा (श्रेष्ठतम भाषा) भी है। सस्कृत ससार की सभी भाषाओ की जननी है और हिन्दी अत्यन्त मधुर वैज्ञानिक पूर्णतया परिष्कृत (सस्कार की हुई अतएव श्रेष्ठ भाषा) सर्व समर्थ सक्षम और पूर्णत परिपूर्ण जीवत भाषा है ऐसा सभी श्रेष्ठ निष्पक्ष भाषा विद् मानते है। यह सभी मनीषियो द्वारा पारस्परिक व्यवहार की आपस मे जुडने की भाषा के रूप मे विकसित होकर एक महान राष्ट्र भारत की 'राष्ट्रभाषा' राजभाषा योजक भाषा सम्पर्क-भाषा के आसन पर प्रतिष्ठापित है। यह सस्कृत से भी आवश्यकतानुसार सुधरकर परिपुष्ट हुई है। यह सभी प्रकार से सुभाषा कहीं जाने की अधिकारिणी है।

हिन्दी सुभाषा ही नहीं विश्व की श्रेष्ठतम भाषा भी है। एक विद्वान डा० जयन्ती प्रसाद नौटियाल कहते है कि ससार मे सबसे अधिक समझी जाने वाली भाषा हिन्दी है। यह ससार भर मे उच्च स्तर तक पढाई जाती है और विश्व भाषा बनने के मार्ग पर अग्रसर है क्योकि यह जोडने वाली भाषा है। श्रेष्ठता का इससे बडा प्रमाण और क्या होगा। इसी एक कारण से हमे अग्रेजी नहीं हिन्दी अपनाकर गौरवान्वित होना चाहिए। इसका प्रयोग करने मे हमे गर्व अनुभव करना चाहिए। अग्रजी के अनावश्यक आकर्षण स बचना चाहिए।

– १५४ लोकविहार दिल्ली ३४

मानव जीवन की सफलता का रहस्य (३)

– आर्य तपस्वी सुखदेव

परम पिता सर्व व्यापक होने के कारण कण कण मे समाया हुआ है – वह हमारे अन्दर विराजमान होकर सब कुछ देख रहा है सुन रहा है जान रहा है। किसी के अच्छे या बुरे कर्म फल को तत्काल न पाता देखकर हमे यह विचार अपने मन म नही लाना चाहिए कि आगे जाकर कर्मो का फल नही मिलेगा। कर्म फल से कोई नहीं बच सकता। क्योकि ईश्वर सर्व व्यापक दयालु व न्यायकारी है। अच्छा कर्म करने पर अच्छा व बुरा कर्म करने पर दण्ड अवश्य मिलेगा।

परम–पिता परमेश्वर केवल उन भक्तो को आशीर्वाद देते है जो प्रभु का भय अपने अन्दर धारण करते हुए सदा उसी की आज्ञा का पालन करते है। धर्म आचरण पर चलते हे सत्याचार का पालन करते है यज्ञो का अनुष्ठान करते है ईश्वर कृत पुस्तका का अध्ययन करते है ऐसे प्राणी इस ससार मे रहते हुए भी निडर निश्चल हो जाते हैं। इस ससार मे रहकर सभी प्रकार के पदार्थों का भोग करते हैं। उत्तम जीवन व्यतीत करते है। स्वय अपना निर्माण करते है। अपनी आत्मा पर प्रभु की वाणी से प्रेरणा लेकर अपनी आत्मा प्रकाशित करते हैं। उत्तम सन्तानो मे उत्तम सस्कार डालते हैं। ससार वासियो को एक सूत्र मे बान्धते हुए सदैव उसी मार्ग पर निरन्तर आगे बढते रहते हैं जो ईश्वर का बताया मार्ग है। इस ससार मे कभी भी भयभीत नहीं होते हैं। अपने अन्दर एक सकल्प एक विश्वास बना लेते हैं कि परम पिता ही सब दिव्य गुण-कर्म स्वभाव वाला व विद्यायुक्त है जिसमे पृथ्वी सूर्य आदि लोक स्थित है। वही पिता आकाश के समान व्यापक है। जो लोग उसका ध्यान नहीं करते और उसके साथ सम्बन्ध जोडने का प्रयास व पुरुषार्थ नहीं करते हैं। वे लोग नास्तिक मन्दमत्ति व अज्ञानी कहलाते हैं और सदा दुख सागर मे डूबे रहते है। जिनका परम पिता परमेश्वर मे सच्चा विश्वास बन जाता है – वे परमात्मा को पाने के लिए ससार मे दौडते नही है। वे दृढ विश्वास के साथ मान लेते हैं कि वही हम सब का परम पिता परमेश्वर सृष्टि का रचयिता है सृटि का पालनहार है प्रलयकर्ता है कर्म फल देने वाला है – वही वेदो का (ईश्वर का) ज्ञान देने वाला है। वही हमारा पिता माता गुरु राजा उपास्य है। यही धारण और प्रलय कर्ता है। वही सम्पूर्ण जगत का स्वामी है। जिस व्यापक से यह सब जगत उत्पति स्थिति व प्रलय होता है ? वही परमात्मा है – हमे सदा उस ज्ञानवान चेतन स्वरूप शक्तिमान परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना करनी चाहिए। जो लोग परमात्मा को पाने के लिए ससार मे दौडते है निश्चित मान कर चलिए कि वे लोग परमात्मा के बारे मे लेश–मात्र भी नही जानते। ऐसे इन्सान परमात्मा से बहुत दूर हो जाते है। एक जन्म तो क्या करोडो जन्म लेने पर भी परमात्मा को नही पा सकते। ससार मे दौडते दौडते ससार के पदार्थो को चमक दमक वाला मानकर उसकी वृद्धि होने पर अत्याधिक खुश और उनकी हानि होने पर रोते बिलखते है तडपते है – परमातमा को गिला शिकवा करते हुए कोसते है। वे लोग इस सच्चाई को नहीं जानते कि परमात्मा किसी को न मारते है और न ही दुख देते है। वह परमात्मा तो इतने दयालु – इतने आनन्द मे डूबे हुए हैं कि अपनी प्रतिक्षण बाहे फैलाए अपनी प्रजा को गोद मे बैठाकर सदैव आनन्द मे डुबाए रखना चाहते है। हम अज्ञानी बनकर ससार मे परमात्मा को पाने के लिए दौड़ते फिरते हैं और हमेशा के लिए परमात्मा से इतने दूर हो जाते हैं कि फिर कोई गारन्टी नहीं कि अगला जन्म मनुष्य चोले मे मिले या सुअर बनना पडे कुत्ता साप बिच्छू आदि योनि मे आना पडे।

हमारे मन मे अच्छे या बुरे विचार अपने आप नहीं आते। इन अच्छे या बुरे विचारों को हम अपनी इच्छा से स्वय उत्पन्न करते हैं क्योकि हमारा मन यन्त्र के समान एक जड पदार्थ है और उसका चालक चेतन आत्मा है।

– क्रमश

ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर अमर, अभय, नित्य पवित्र, और सृष्टिकर्त्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है।

स्वास्थ्य चर्चा

बीड़ी सिगरेट का धुआं-मौत का कुंआ

– सुभाष चन्द्र गुप्ता

जनकल्याण हेतु बीडी-सिगरेट के धुएं से होने वाले विनाश से सावधान करने के लिए कुछ जानकारी नीचे दी जा रही है। इसे स्वयं पढिए और दूसरों तक पहुंचाइए।

- एक सिगरेट का धुंआ लगभग ४०००(चार सहस्र) विषैले पदार्थ हवा में फेंकता है। इनमें कुछ है - निकोटिन, कार्बन मोनोक्साइड, कैंसर पैदा करने वाले पदार्थ - कॉरसिनोजनस, टार आदि। निकोटिन से खून में गाठें भी बन जाती हैं, जो हार्ट अटैक/स्ट्रोक पैदा करती हैं। कार्बनमोनोक्साइड खून के हेमोग्लोबिन के साथ मिल जाती है और उसे आक्सीजन धारण करने के अयोग्य बना देती है। टार से फेफड़ों में टार अधिक मात्रा में जमा हो जाता है, तो कैंसर की शुरुआत होने लगती है। एक हल्का धूम्रपान करने वाला, जो दिन में केवल आधा पैकेट सिगरेट पीता है, अपने शरीर पर वर्ष भर में उपरोक्त पदार्थों से लगभग ३५००० बार बमबारी करता है। इसमें क्या आश्चर्य है कि कुछ समय में ही धूम्रपान करने वाला शरीर हिरोशिमा सा बन जाता है।
एक बन्द कमरे या कार में सिगरेट बीडी पीने वाले व्यक्ति के साथ बैठने पर ६० प्रतिशत धुआं धूम्रपान न करने वाले के शरीर में जाता है।
'इंडियन सोसाइटी आफ टोबैको ऐण्ड हैल्थ' द्वारा आयोजित एक सभा में डॉ० सहगल ने बताया कि अगर कोई व्यक्ति अपने घर में दस सिगरेट पीता है, तो उसके परिवार के लोग एक सिगरेट का धुआं सांस के माध्यम से अन्दर लेते हैं। इस प्रकार वे भी रोगों के शिकार बन जाते हैं।
बीडी सिगरेट के धुएं से 'न पीने वालों को भी कितना नुकसान होता है, इसका अनुमान आप कैलिफोर्निया (सान फ्रांसिस्को) की युनिवर्सिटी के दो अमेरिकन अनुसंधानकर्ताओं, स्टेंटन ग्लाट्स और विलियम पार्मले की रिपोर्ट से लगा सकते हैं, जिसमें उन्होंने बताया कि अमेरिका में मात्र सिगरेट के धुएं से लगने वाली दिल की बीमारियों से ऐसे ६०,००० लोग प्रतिवर्ष मरते हैं, जो स्वय तो धूम्रपान नहीं करते, परन्तु धूम्रपान करने वालों द्वारा छोडे गए धुएं को सांस के द्वारा अपने अन्दर धारण करते हैं। (हिन्दुस्तान, टाइम्स दिनांक (१८/१०/१९९५)



- एक सिगरेट के पीने से साढे पांच मिनट आयु कम हो जाती है। (लंदन की एक रिपोर्ट दिनांक १/६/१९७७)
- बीडी पीना सिगरेट से भी अधिक हानिकारक है, क्योंकि सिगरेट की तरह बीडी की तम्बाकू विशिष्ट तरीके से साफ की हुई नहीं होती और उसमें विषाक्त टार की मात्रा अधिक होती है।
- धूम्रपान की धुआं, जो वास्तव में 'मौत का कुंआ' ही है, प्रतिवर्ष ४० लाख लोगों को मौत की नींद सुला देता है। अनुमान है कि यह संख्या २०३० तक बढ़कर ७० लाख तक पहुच जाएगी। भारत में तम्बाकू से प्रति वर्ष होने वाली मौतों की संख्या है ६ लाख ७० हजार। (टाइम्स ऑफ इण्डिया दिनांक १५/४/२०००)
- भारत में तम्बाकू के कारण होने वाले कैंसर के कम-से-कम दो लाख नये रोगी प्रतिवर्ष बढ रहे हैं। ऐसे एक रोगी के इलाज पर होने वाला खर्च है साढे तीन लाख रुपये।
- सिगरेट बनाने वाली मशीन चार मील लम्बा कागज प्रतिघटा इस्तेमाल कर रही है। क्या आप जानते हैं यह कागज कहां से आता है ? एक टन कागज को प्राप्त करने के लिए १७ पेड काटने पडते हैं। इस प्रकार प्रति वर्ष लाखों पेड काटे जाते होंगे। इस प्रकार से होने वाला पर्यावरण का भयंकर ह्रास भी चिंतनीय है।
- हमारे देश का प्रतिवर्ष २३.००० करोड रुपया केवल बीडी, सिगरेट, तम्बाकू पर खर्च हो रहा है। क्या इतनी बडी धनराशि विनाश के साधन के स्थान पर लोगों के स्वास्थ्य तथा सुख समृद्धि के लिए नहीं खर्च की जानी चाहिए ?

इस बात की आज परम आवश्यकता है कि धूम्रपान के विनाशकारी परिणामों से सब को अवगत कराया जाए तथा इसके अभिशाप से विश्व को मुक्त कराने हेतु हर सम्भव प्रयास हों।

विश्वविद्यालयों में ज्योतिष

नवभारत टाइम्स (१४–४–२००१) के 'बहस स्तम्भ के अन्तर्गत – 'वेद मे गणित और फलित दोनो ही को ज्योतिष का प्रमुख आधार बताया गया है', पढ कर बडा दुख हुआ है। आश्चर्य है विद्वान लेखक महर्षि दयानन्द सरस्वती के साहित्य से पूर्ण अनभिज्ञ हैं। युगप्रवर्तक, वेदोद्धारक, पराधीन भारत मे 'स्वराज्य शब्द के प्रथम उद्घोषक महर्षि दयानन्द अपने अनूठे ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास मे लिखते है – हा, यह जन्मपत्र नहीं किन्तु इसका नाम शोकपत्र रखना चाहिए क्योकि । वस्तुत फलित ज्योतिष आर्यावर्तीय विद्या नहीं यह यूनान देश से यहा आई है। इसकी अवैदिकता समय–समय पर प्रकट भी होती ही रहती है। भविष्य वाणिया की जाती है कि अमुक तिथि को ग्रहो के सयोग से धरती पर भारी अनिष्ट होने वाला है परन्तु वह होता नहीं दूसरो का भाग्य बताने वाले सडको के किनारे पिजरा लिए बैठे ज्योतिषी अपने ही भाग्य के बारे मे नहीं जानते। वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। विश्वविद्यालयो मे गणित ज्योतिष ही पढाया जाना चाहिए।

ज्ञानसिह, ४६० सैक्टर-२, सादिक नगर, नई दिल्ली

आर्यसमाज बांकनेर (दिल्ली) के खेल उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज बाकनेर का ५१वा वार्षिक उत्सव हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। प० धर्मव्रत शास्त्री ने वेदपाठ और सत्सग की महिमा पर स्वामी ओमानन्द सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक सभा ने शारीरिक विकास के साथ साथ आत्मिक विकास पर प० आशानन्द भजनीक ने देश भक्ति व युवक निर्माण पर स्वामी अग्निदेव भीष्म (हिसार) ने ब्रह्म की व्याख्या व व्यायाम पर श्री लाल बिहारी तिवारी सासद ने आर्यसमाज के समाज सुधार और देश उत्थान कार्यक्रम पर महाशय रामप्रसाद ने बलिदानियो की देन विषय पर डॉ० भीमसिह डागर ने आधुनिक शिक्षा पद्धति पर वैद्य कर्मवीर व मा० पूर्ण सिह आर्य ने दूरदर्शन के दुष्प्रभाव एव युवको के समाज राष्ट्र निर्माण विषय पर प्रभावशाली विचार रखे।

पद्मश्री सतपाल पहलवान के सान्निध्य मे विशाल इनामी दगल का आयोजन किया गया जिसमे सबसे बडी कुश्ती ५१०० रु० श्रीपाल (अखाडा सजय) और चादराम (गुरु हनुमान) २१०० रु० जोगिन्द्र (गुरु हनुमान) बिजेन्द्र (हरियाणा पुलिस) ११०० रु० जितेन्द्र (बाकनेर) मनोज (सोनीपत) सुनील (सतपाल) प्रकाश (महेन्द्र अखाडा) सोनु (सतपाल) नरेश (बाकनेर) जोगेन्द्र (सी० आई० एस० एफ०) सदीप (नाहरी) बाल्ले (नाहरी) राकेश (सोनीपत) की कुश्तिया बराबर रही। जगमन्द्र (बाकनेर) ने एक ही लगोठ मे पाच कुश्तिाया जीती। इस दगल मे १०० से अधिक जोडो का फेसला हुआ। कबडडी प्रतियोगिता आर्यसमाज बाकनेर सैंटर टीम ने जीती। सदीप राठी दौड मे प्रथम रहे।

अन्त मे श्री मागेराम आर्य प्रधान आर्यसमाज बाकनेर ने उत्सव की महान सफलता के लिए सभी को उनके भरपूर सहयोग के लिए धन्यवाद किया।

पचपुरी के शुभचिंतक स्व० श्री शान्तिप्रकाश प्रेम की धर्मपत्नी श्रीमती नीमादेवी प्रेम का निधन

गढवाल के उत्कृष्ट आर्यनेता निस्वार्थ समाजसेवी वैदिक धर्मावलम्बी स्वतन्त्रता सेनानी एव पचपुरी के शुभचितक स्व० श्री शान्तिप्रकाश प्रेम की धर्मपत्नी श्रीमती नीमादेवी प्रेम का शनिवार दिनाक २१ अप्रैल २००१ को उनके पैतृक स्थान प्रेमकुटी कुणजोली साबली मे निधन हो गया। वह लगभग ७५ वर्ष की थीं।

गढवाल के ज्वाजल्यमान नक्षत्र स्व० श्री जयानन्द भारतीय के बाद आर्यसमाज पचपुरी साबली की बागडोर श्री शान्तिप्रकाश प्रेम ने सम्भाली और उन्होने आर्यसमाज पचपुरी को अपने पुत्र की भाति पालकर फूलता-फलता किया जिसमे श्रीमती नीमादेवी प्रेम का जीवनभर तन-मन धन से अपने पति के साथ सामाजिक कार्यो मे पूर्ण सहयोग रहा। स्व० श्री प्रेम के अधूरे कार्यो को पूर्ण करने के लिए तथा उनकी स्मृतियो को ताजा रखने के लिए श्रीमती प्रेम ने पचपुरी मे होने वाले अनेकानेक सामाजिक-धार्मिक तथा आर्य-पर्वो के कार्यो मे सबसे आगे रहकर अपना तन मन धन समाज के लिए न्यौछावर किया और समाज को यह दिखाया कि श्री शान्तिप्रकाश प्रेम अपनी प्रेमकुटी मे अभी तक जीवित है। श्रीमती प्रेम वशप्रेमी मानतवा अहिसा अध्यात्मवाद एव मानवसेवा के प्रतीक बनकर पुण्यप्रद रही जिससे उनके मन-वचन-कर्म से श्रद्धापूर्वक वह सदैव दानी व समाज सेवाभाविनी बनी रही। ऐसी पुण्य आत्मा को धन्य धन्य।

शुद्धि शान्ति यज्ञ एव श्रद्धाजलि सभा दिनाक १ मई २००१ को प्रेमकुटी कुणजोली गढवाल मे होगी।

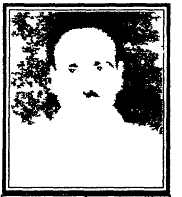
– *धर्मसिह शास्त्री*

आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड के यज्ञ एव शिलान्यास समारोह के अवसर का विहगम दृश्य



पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 29 4 2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न0 U(C) 93/2001
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2001 in NDPSo on 26-27/4/2001

श्री जयप्रकाश आर्यबन्धु का निधन शोक सभा 1 मई को



स्व० श्री जयप्रकाश आर्यबन्धु

दिल्ली के आर्यजगत ने अपना एक सुविख्यान आर्यनेता युवावस्था मे खो दिया है निधन उनका परिवार ही नही अपितु दिल्ली की समस्त आर्यसमाजे और अन्य सस्थाए शोक सतप्त है। आर्य समाज बिरला लाइन्स के प्रधान श्री जयप्रकाश आर्य बन्धु को अकस्मात विगत लगभग ४ माह से अस्वस्थता के गम्भीर दौर से गुजरना पडा और कैंसर रूपी काल ने गत २० अप्रेल को उनकी आत्मा को हमसे छीन लिया। श्री जयप्रकाश आर्यबन्धु का नाम समूचे देश की स्वाध्यायप्रेमी जनता के लिए सुपरिचित है क्याकि सगठनात्मक और सैद्धान्तिक पक्षो पर उनके लेख अकसर सार्वदेशिक और अन्य आर्य पत्र पत्रिकाओ मे प्रकाशित होते रहते थे।

२४ अक्तूबर १९४६ को श्री राधाकृष्ण आर्य तथा श्रीमती शान्तिदेवी के परिवार मे अलवर भूमि पर जन्मे श्री जयप्रकाश का परिवार १९५२ मे दिल्ली आय जह उनकी शिक्षा–दीक्षा आर्यसस्कारा के बीच सम्पन्न हुई। महात्मा हसराज महाविद्यालय से उन्होने विज्ञान मे स्नातक डिग्री प्राप्त की। उनका विवाह आर्यसस्कारो से ओतप्रोत पुष्पा देवी से हुआ और अश्विनी आर्य नामक पुत्र रत्न की प्राप्ति क बाद तीन आर्य कयाए प्राप्त हुई अजलि गरिमा और दिव्या। अश्विनी आर्य वर्तमान मे दिल्ली प्रदेश आर्यवीर दल मे प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं।

श्री जयप्रकाश की छवि मधुर भाषी एव सरल व्यक्तित्व की थी वे साडियो के व्यापार मे उन्नति के पथ पर अग्रसर थे। कमला नगर व्यापार मडल के उपप्रधान थे। श्री जयप्रकाश आर्यसमाज बिरला लाइन्स के तथा बिरला लाइन्स विद्यालय की कार्यकारिणी के सदस्य थे। आर्यवीर दल दिल्ली के कोषाध्यक्ष तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरग सदस्य थे। पूर्व मे वे गुरुकुल कागडी के सचालन हतु आर्य विद्या सभा के भी सदस्य रहे। बाल्यकाल से श्री जयप्रकाश आर्यसमाज की गतिविधियो मे बढ चढ कर भाग लेते रहे। दिल्ली की ४ प्राचीन आर्यसमाजो दीवान हाल सीताराम बाजार नया बास तथा सदर की गतिविधियो मे तथा हर प्रकार की प्रतियोगिताओ मे शामिल होते रहे और उन्होने कई पुरस्कारो को जीतकर अपने जीवन को सुशोभित किया।

गत २ अप्रैल को उनके देहावसान का समाचार सुनकर समूचा आर्य जगत स्तब्ध रह गया। ५१ वर्ष की अवस्था मे एक कर्मठ आर्य नेता का चले जाना उनक परिवार के लिए तथा समूचे आर्यजगत के लिए गम्भीर दुख का विषय है।

श्री जयप्रकाश आर्यबन्धु के पार्थिव शरीर का अन्तिम सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से उनके शरीर से भी अधिक वजन की सामग्री घी तथा चन्दन आदि के साथ निगम बोध घाट पर किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा क मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री चो० लक्ष्मी चन्द दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री तेजपाल मलिक श्री राजसिह भल्ला डॅा० रविकान्त श्री राम विलास खुराना आचार्य देवव्रत तथा कई अन्य आर्य नेता उपस्थित थे।

श्री जयप्रकाश आर्यबन्धु की स्मृति मे शोक सभा का आयोजन **१ मई २००१ मगलवार को दोपहर बाद ३ से ५ बजे तक बिरला लाइन्स विद्यालय के प्रागण मे किया गया है जो कि कमला नगर स्थित आर्य समाज बिरला लाइन्स के समीप है।**

– *विमल वधावन एडवोकेट*

बागपत जनपद मे वेद प्रचार की धूम

जनपद बागपत (उत्तर प्रदेश) के ग्रामीण अचलो मे ग्राम नथेला खेडा हटाना फैजुल्लापुर मे दिनाक १३ १४ १५ अप्रैल को दव यज्ञ एवम वेद प्रचार का आयोजन वेद प्रचार समिति बागपत के तत्वावधान मे किया गया जिसकी अध्यक्षता महान दानी श्री रिसाल सिह राणा ने की तथा सयोजन श्री धमपाल आर्य ने किया। इस अवसर पर प० नन्दलाल निर्भय ब्र० जयदेव आर्य श्री श्रीपाल आर्य श्री इन्द्रपाल शास्त्री ने अपने उदबोधन से श्रोताओ को लाभान्वित किया।

– *श्याम सिह आर्य*

सामाजिक एव वै... क्रान्ति के लि... "सत्यार्थ प्र... पढें।

1C 150 पुस्कालाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कागडी व ...
जिला हरिद्वार (उ०प्र०)

पुस्तक समीक्षा

हिन्द महासागर का मोती मारीशस

प्रकाशक **पुस्तकायन २/४२४० ए अन्सारी रोड दरियागज नई दिल्ली**
पृष्ठ १८२ **मूल्य १०० रु०**

एक समय उन भारतीयो को ले जाकर जो उत्तर प्रदेश बिहार के थे जिनसे मेहनत मजदूरी कराकर सुरम्य घाटियो पर्वतो वनो से आच्छादित एक सुन्दर आकर्षक लघु भारत का निर्माण मारीशस रूप मे किया गया।

मारीशस के निर्माण मे विकास मे भारतीयो का महत्वपूर्ण योगदान है। भारत से दूर देश मे जाकर अपनी सभ्यता सस्कृति को वे भूले नही। पुस्तक के अध्ययन से पता चलता है कि भारी श्रम के बाद सुखद जीवन के आनन्दमयी क्षणो का उपभोग कर रहे है।

पर्वो मे होली दीवाली महाशिव रात्रि के पावन पर्व को मनाकर धन्य समझते है। भाषा के सन्दर्भ मे दोनो देशो के मानव प्राय एक से हैं। हिन्दी का प्रचलन है पर शासकीय क्षेत्र मे हिन्दी उपेक्षित है।

हिन्दी मे पत्र पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं सगोष्ठिया भाषण होते हैं।

अपनी धरती अपना देश अपने गौरी और गणेश किसे प्रिय नहीं।

रामचरित मानस और सत्यार्थ प्रकाश भजन पूजन ने उन्हे चैतन्य किया है रहन सहन वातावरण सब कुछ बदल जाने के बाद भी आत्मा से भारतीय है।

लघु भारत मारीशस को पहचानने मे यह पुस्तक – पर्याप्त सहायक है हिन्दी भोजपुरी शिक्षा प्रणाली सास्कृतिक गति विधिया सभी भारतीय हैं।

आर्यसमाज श्रम आन्दोलन स्वतत्रता के लिए सघर्ष के बाद आज स्वतन्त्र मारीशस लघु भारत के रूप मे देखा जाता है।

विषम वातावरण मे अप्रवासियो ने अपनी दैविक सस्कृति को कैसे सुरक्षित रखा है। घटनाक्रम ने भारत के सम्बन्ध मे कितना महत्वपूर्ण बना दिया है।

इन सभी आयामो का सम्मिश्रण सरल सुबाध भाषा मे प्रस्तुत कर दिया है।

प्रकाशक पुस्तकायन २/४२४० ए अन्सारी रोड नई दिल्ली से श्री गोविन्दराम हासानन्द के पौत्र श्री विनय जी पैत्रिक परम्परा का निर्वहन कर रहे हैं। पाठक गण इसे पढे ओर ज्ञानवर्धन करे।

– *डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री*

आर्यसमाजों एवं प्रतिनिधि सभाओं से अपील

माननीय प्रधान जी एव मन्त्री जी

सादर नमस्ते।

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के तत्वाधान मे एव श्रीमती प्रेमलता खन्ना (शास्त्री) की अध्यक्षता मे स्कूलो मे ग्रीष्मावकाश के दौरान मई माह मे १५ दिनो के लिए आर्यसमाज रानी बाग दिल्ली–३४ मे २० वे 'वनवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर का आयोजन किया जा रहा है

देश की वर्तमान स्थिति को देखते हुए देशभर की सभी प्रान्तीय आर्यसमाजो से विशेष अनुरोध है कि वे आस–पास के ग्रामीण एव पिछडे क्षेत्रा से जो कि ईसाइयत के घेरे मे घिरे हुए हो कुछ चुने हुए युवक युवतियो को इस शिविर मे भेजे। ये युवक–युवतिया जब प्रशिक्षण प्राप्त करके अपने–अपने क्षेत्रो मे वापिस जाए तो आप इन्हे ग्रामीण क्षेत्रो मे छोटे छोटे स्कूल एव बालबाडिया खोलकर दे और ये प्रशिक्षित युवा वर्ग इन्हे सचालित कर सके।

इस शिविर का मुख्य उद्देश्य यही है कि हम अपने भोले भाले ग्रामीण बन्धुओ के मध्य वैचारिक क्रान्ति भर दे ताकि ये लोग ईसाई मिशनरी की चकाचौंध और मिथ्या प्रलोभनो मे न फसकर सत्य–असत्य का स्वय ही निर्णय करने योग्य बन सके। हम केवल इसी प्रकार अपने देश की प्राचीनतम सस्कृति और इसके गौरवमयी इतिहास की सुरक्षा कर सकते हैं जो कि प्रत्येक भारतीय का प्रथम कर्त्तव्य होना चाहिए। आशा है आप समय की आवश्यकता को भली–भाति समझते हुए इस शिविर की सफलता के लिए पूर्ण सहयोग देगे।

– **वेदव्रत मेहता** *महामन्त्री*

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर स सार्वदशिक प्रकाशन लि० द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली–२ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२१६) **फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित** सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली–२ **से प्रकाशित** (फोन ३२७४७७१ ३२६०९८५)। सम्पादक **वेदव्रत शर्मा** सभा मन्त्री। **ई मेल नम्बर vedicgod@nda vsnl net in तथा वेबसाईट http //www whereisgod com**

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक
वेद: ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४० अक ५ | ६ मई से १२ मई २००१ तक | दयानन्दाब्द १७८ | सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०२ | सम्वत २०५८ | वै० शु० १४

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

कच्छ के भूकम्प पीड़ित क्षेत्रों में धर्मान्तरण का प्रयास विफल

गुजरात मे भूकम्प के बाद विश्व भर से राहत सामग्री व व्यक्ति सेवा हेतु आए हैं। हिन्दू सस्थाओ ने तुरन्त व पूरी ताकत से सहायता बाटी परन्तु विश्व स्तर की अनुभवी सस्थाओ ने करीब एक माह बाद कार्य शुरू किया। उन्होने तुरन्त विश्वभर से धन एकत्र किया व जब हिन्दू सस्थाए सहायता सामग्री बाट कर खाली हो चुकी थी ... चुकी थी तो इन सस्थाओ ने काय शुरू किया ये सस्थाए सेवा के साथ धर्म बदलने के उद्देश्य से आयी थी। आक्सफलेम वर्ल्डविझन एफीकोर एकशन इन्डिया आदि आदि नामो के साथ कार्य करने के लिए हर सस्था के पास २५ ३० गाडिया १५०-२०० कायकर्ता आ गये इनका सचालन चर्चे करती हैं।

आर्यसमाज गाधीधाम एक मजबूत केन्द्र है। ३६५ दिन सक्रिय व २४ घटे काम करता है कार्यकर्ता आधी रात को भी आकस्मिक कार्य करने को तैयार रहते हैं। हमने अभी तक राहत कार्य जारी रखा है व पर्याप्त राहत सामग्री हमारे पास आती रहती है बटती है ...

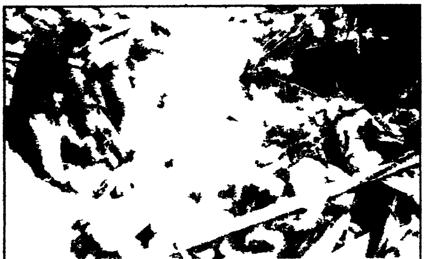
... न हम भकप के तीसरे दिन ही अनाथ बच्चो व विधवा बहनो के लिए आश्रय स्थल खोलने का निर्देश दिया जिसे खोलने मे सफलता मिली। यह कार्य सामाजिक जिम्मेदारी का था। साथ ही उद्देश्य यह भी था कि यदि हम उन्हे आश्रय नही देगे तो ये बच्चे व विधवाए चर्चो के आश्रय स्थल चले जायेंगे उनका धर्म बिक जावेगा।

गाधीधाम के अधिकारी जब मुम्बई आर्य महासम्मेलन मे गए हुए थे। २७ मार्च को प्रात लौटते ही उन्हे गाधीधाम से ७० किमी दूर आधोई मे ईसाइयो द्वारा धर्मपरिवर्तन की सूचना मिली अत दोपहर बाद स्थानीय अधिकारियो श्री पुरुषोत्तम भाई पटेल श्री वाचोनिधि आर्य ...

के श्री गिरीश खोसलाजी पाणिनि कन्या गुरुकुल वाराणसी की आचार्या सूर्यादेवी जी पटना के धुरधर विद्वान स्व० रामनारायण शास्त्रीजी की धर्मपत्नी श्रीमती ईश्वरीदेवी जी व आर्यो को दिल खोलकर दान देने वाले श्री टीकमचन्द आर्य के सा सब आयजन वहा पहुचे

शेष पृष्ठ ३ पर

नि:स्वार्थ भावनाशील प्रचारकों को कच्छ के लिए आमन्त्रण



अब जहा बहुतायत समाज सेवी सस्थाए भूकम्प कार्यों को विराम दे चुकी है वहा आर्य समाज के कर्त्तव्यशील कार्यकर्ता अब भी विभिन्न प्रकार के राहत कार्यों मे जुटे है। पहले जहा आर्य कार्यकर्ताओं ने मलबो में से लाशे निकालने का कार्य किया अब उन्हे कंकालों को निकालना पड रहा है। इस चित्र मे गाधीधाम आर्य समाज के मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य एक ककाल को निकालते हुए।

गुजरात में राहत कार्यो के लिए वाहन

अमेरिका आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री गिरीश खोसला गुजरात मे भूकम्प आने के बाद सहायता कार्यो का अवलोकन करने तथा इस परोपकारी यज्ञ मे अपनी आहुति डालने के उद्देश्य से फरवरी माह मे भारत आए थे। उन्होने अमेरिका सभा की ओर से १२५००० रुपये भूकम्प पीडितो की सहायतार्थ आर्यसमाज गाधीधाम मे गुजरात सभा के मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य को प्रदान किया था वे राहत केन्द्रो द्वारा चलाए जा रहे राहत कार्यो से इतना प्रभावित हुए कि गत माह मुम्बई सम्मेलन मे भाग लेने के लिए पुन



भारत आए तो उनके साथ अमेरिका सभा के प्रधान डॉ० सुखदेव चन्द्र सोनी भी थे। मुम्बई मे ही दोनो अमेरिकी आर्य नेताओ ने गाधीधाम मे चल रहे कार्यो को गति प्रदान करने के लिए सुन्दर वाहन देने का निश्चय किया। परिणामत श्री गिरीश खोसला पुन गाधीधाम गए और वहा के अधिकारियो को टोयेटा क्वालीस वाहन के लिए नकद राशि प्रदान की

गाधीधाम के मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य ने सार्वदेशिक सभा को सूचित किया है कि यह वाहन प्राप्त हो गया है इसका नाम परोपकारी रथ रखा गया है। आर्यसमाज के प्रधान श्री पुरुषोत्तम भाई पटेल ने अमेरिका सभा से सम्बन्धित समस्त आर्य बन्धुओं का साधुवाद किया है

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा वैदिक लाईट के सम्पादक श्री विमल वधावन ने भी इनको धन्यवाद व्यक्त किये है।

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

सह सम्पादक
विमल वधावन एडवोकेट

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 29 4 2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2001
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2001 in NDPSo on 26 27/4/2001

श्री जयप्रकाश आर्यबन्धु का निधन शोक सभा 1 मई को



स्व० श्री जयप्रकाश आर्यबन्धु

दिल्ली के आर्यजगत ने अपना एक सुविख्यात आर्यनेता युवावस्था मे खो दिया है जिससे उनका परिवार ही नही अपितु दिल्ली की समस्त आर्यसमाजे और अन्य सस्थाए शोक सतप्त है। आर्य समाज बिरला लाइन्स के प्रधान श्री जयप्रकाश आर्य बन्धु को अकस्मात विगत लगभग ४ माह से अस्वस्थता के गम्भीर दौर से गुजरना पडा और कैसर रूपी काल ने गत २० अप्रैल को उनकी आत्मा को हमसे छीन लिया। श्री जयप्रकाश आर्यबन्धु का नाम समूचे देश की स्वाध्यायप्रेमी जनता क लिए सुपरिचित है क्योकि सगठनात्मक और सैद्धान्तिक पक्षो पर उनके लेख अकसर सार्वदेशिक और अन्य आर्य पत्र पत्रिकाओ मे प्रकाशित होते रहते थे।

२४ अक्तूबर १९४६ को श्री राधाकृष्ण आर्य तथा श्रीमती शान्तिदेवी क परिवार मे अलवर भूमि पर जन्मे श्री जयप्रकाश का परिवार १९५२ मे दिल्ली आय जह उनकी शिक्षा–दीक्षा आर्यसस्कारो के बीच सम्पन्न हुई। महात्मा हसराज महाविद्यालय से उन्होने विज्ञान मे स्नातक डिग्री प्राप्त की। उनका विवाह आर्यसस्कारो से ओतप्रोत पुष्पा देवी से हुआ और अश्विनी आर्य नामक पुत्र रत्न की प्राप्ति क बाद तीन आर्य कन्याए प्राप्त हुइ– अजलि गरिम और दिव्या। अश्विनी आर्य वर्तमान मे दिल्ली प्रदश आर्यवीर दल मे प्रमुख भूमिका निभा रहे है।

श्री जयप्रकाश की छवि मधुर भाषी एव सरल व्यक्तित्व की थी वे साडियो के व्यापार मे उन्नति के पथ पर अग्रसर थे। कमला नगर व्यापार मडल के उपप्रधान थे। श्री जयप्रकाश आर्यसमाज बिरला लाइन्स के तथा बिरला लाइन्स विद्यालय की कार्यकारिणी के सदस्य थे। आर्यवीर दल दिल्ली के कोषाध्यक्ष तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरग सदस्य थे। पूर्व मे वे गुरुकुल कागडी के सचालन हेतु आर्य विद्या सभा के भी सदस्य रहे। बाल्यकाल से श्री जयप्रकाश आर्यसमाज की गतिविधियो मे बढ चढ कर भाग लेत रहे। दिल्ली की ४ प्राचीन आर्यसमाजो दीवान हाल सीताराम बाजार नया बास तथा सदर की गतिविधियो मे तथा हर प्रकार की प्रतियोगिताओ मे शामिल होते रहे और उन्होने कइ पुरस्कारो को जीतकर अपने जीवन को सुशोभित किया।

गत २ अप्रैल को उनके देहावसान का समाचार सुनकर समूचा आर्य जगत स्तब्ध रह गया। ५१ वर्ष की अवस्था मे एक कर्मठ आर्य नेता का चले जाना उनके परिवार के लिए तथा समूचे आर्यजगत के लिए गम्भीर दुख का विषय है।

श्री जयप्रकाश आर्यबन्धु के पार्थिव शरीर का अन्तिम सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से उनके शरीर से भी अधिक वजन की सामग्री घी तथा चन्दन आदि के साथ निगम बोध घाट पर किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा क मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष डा० सच्चिदानन्द शास्त्री चौ० लक्ष्मी चन्द दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री तेजपाल मलिक श्री राजसिह भल्ला डा० रविकान्त श्री राम विलास खुराना आचार्य देवव्रत तथा कई अन्य आर्य नेता उपस्थित थे।

श्री जयप्रकाश आर्यबन्धु की स्मृति मे शोक सभा का आयोजन **१ मई २००१ मगलवार को दोपहर बाद ३ से ५ बजे तक बिरला लाइन्स विद्यालय के प्रागण मे किया गया है जो कि कमला नगर स्थित आर्य समाज बिरला लाइन्स के समीप है।**

– *विमल वधावन एडवोकेट*

बागपत जनपद मे वेद प्रचार की धूम

जनपद बागपत (उत्तर प्रदेश) के ग्रामीण अचलो मे ग्राम नथेला खेडा हटाना फैजुल्लापुर मे दिनाक १३ १४ १५ अप्रैल को देव यज्ञ एवम वेद प्रचार का आयोजन वेद प्रचार समिति बागपत के तत्वावधान मे किया गया जिसकी अध्यक्षता महान दानी श्री रिसाल सिह राणा ने की तथा सयोजन श्री धर्मपाल आर्य ने किया। इस अवसर पर प० नन्दलाल निर्भय ब्र० जयदेव आर्य श्री श्रीपाल आर्य श्री इन्द्रपाल शास्त्री ने अपने उदबोधन स श्रोताओ को लाभान्वित किया।

– *श्याम सिह आर्य*

पुस्तक समीक्षा

हिन्द महासागर का मोती मारीशस

प्रकाशक पुस्तकायन २/४२४० ए अन्सारी रोड दरियागज नई दिल्ली
पृष्ठ १८२ **मूल्य** १०० रु०

एक समय उन भारतीयो को ले जाकर जो उत्तर प्रदेश बिहार के थे जिनसे मेहनत मजदूरी कराकर सुरम्य घाटियो पर्वतो वनो से आच्छादित एक सुन्दर आकषक लघु भारत का निर्माण मारीशस रूप मे किया गया।

मारीशस के निर्माण मे विकास मे भारतीयो का महत्वपूर्ण योगदान है। भारत से दूर देश मे जाकर अपनी सभ्यता सस्कृति को वे भूले नहीं। पुस्तक के अध्ययन से पता चलता है कि भारी श्रम के बाद सुखद जीवन के आनन्दमयी क्षणो का उपभोग कर रहे हैं।

पर्वो मे होली दीवाली महाशिव रात्रि के पावन पर्व को मनाकर धन्य समझते हैं। भाषा के सन्दर्भ मे दोनो देशो के मानव प्राय एक से है। हिन्दी का प्रचलन है पर शासकीय क्षेत्र मे हिन्दी उपेक्षित है।

हिन्दी मे पत्र पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं सगोष्ठिया भाषण होते हैं। "अपनी धरती अपना ... अपने हैं। गौरी और गणेश किसे प्रिय नहीं। रामचरित मानस और सत्यार्थ प्रकाश भजन पूजन ने उन्हे चैतन्य किया है रहन सहन वातावरण सब कुछ बदल जाने के बाद भी आत्मा से भारतीय है।

लघु भारत मारीशस को पहचानने मे यह पुस्तक – पर्याप्त सहायक है हिन्दी भोजपुरी शिक्षा प्रणाली सास्कृतिक गति विधिया सभी भारतीय हैं।

आर्यसमाज श्रम आन्दोलन स्वतत्रता के लिए सघर्ष के बाद आज स्वतन्त्र मारीशस लघु भारत के रूप मे देखा जाता है।

विषम वातावरण मे अप्रवासियो ने अपनी वैदिक सस्कृति को कैसे सुरक्षित रखा है। घटनाक्रम ने भारत के सम्बन्ध मे कितना महत्वपूर्ण बना दिया है।

इन सभी आयामों का सम्मिश्रण सरल सुबोध भाषा मे प्रस्तुत कर दिया है।

प्रकाशक पुस्तकायन २/४२४० ए अन्सारी रोड नई दिल्ली से श्री गोविन्दराम हासानन्द के पौत्र श्री विनय जी वैदिक परम्परा का निर्वहन कर रहे हैं। पाठक गण इसे पढे और ज्ञानवर्धन करे।

– *डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री*

आर्यसमाजों एवं प्रतिनिधि सभाओं से अपील

माननीय प्रधान जी एव मन्त्री जी
सादर नमस्ते।

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के तत्वावधान मे एव श्रीमती प्रेमलता खन्ना (शास्त्री) की अध्यक्षता मे स्कूलो मे ग्रीष्मावकाश के दौरान मई माह मे १५ दिनो के लिए आर्यसमाज रानी बाग दिल्ली–३४ मे २० वे 'वनवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर का आयोजन किया जा रहा हैं

देश की वर्तमान स्थिति को देखते हुए देशभर की सभी प्रान्तीय आर्यसमाजो से विशेष अनुरोध है कि वे आस–पास के ग्रामीण एव पिछडे क्षेत्रो से जो कि ईसाइयत के घेरे मे घिरे हुए हो कुछ चुने हुए युवक युवतियो को इस शिविर मे भेजे। ये युवक–युवतिया जब प्रशिक्षण प्राप्त करके अपने–अपन क्षेत्रो मे वापिस जाए तो आप इन्हे ग्रामीण क्षेत्रो मे छोटे छोटे स्कूल एव बालबाडिया खोलकर दे और ये अशिक्षित युवा वर्ग इन्हे सचालित कर सके।

इस शिविर का मुख्य उद्देश्य यही है कि हम अपने भोले भाले ग्रामीण बन्धुओ के मध्य वैचारिक क्रान्ति भर दे ताकि ये लोग ईसाई मिशनरी की चकाचौंध और मिथ्या प्रलोभनो मे न फसकर सत्य–असत्य का स्वय ही निर्णय करने योग्य बन सके। हम केवल इसी प्रकार अपने देश की प्राचीनतम सस्कृति और इसके गौरवमयी इतिहास की सुरक्षा कर सकते हैं जो कि प्रत्येक भारतीय का प्रथम कर्त्तव्य होना चाहिए। आशा है आप समय की आवश्यकता को भली–भाति समझते हुए इस शिविर की सफलता के लिए पूर्ण सहयोग देगे।

– **वेदव्रत मेहता** *महामन्त्री*

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर स सार्वदशिक प्रकाशन लि० द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली–२ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२१६) **फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित** सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली–२ **से प्रकाशित** (फोन ३२७४७७१ ३२६०९८५)। सम्पादक **वेदव्रत शर्मा** सभा मन्त्री। **ई मेल नम्बर vedicgod@nda vsnl net in** तथा **बेबसाईट http //www whereisgod com**

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक
वेदा — ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद
ओ३म्
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र



वर्ष ४० अक ५ ६ मई से १२ मई २००१ तक दयानन्दाब्द १७८ सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०२ सम्वत् २०५८ वै० शु० १४
एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

कच्छ के भूकम्प पीड़ित क्षेत्रों में धर्मान्तरण का प्रयास विफल

गुजरात में भूकम्प के बाद विश्व भर से राहत सामग्री व व्यक्ति सेवा हेतु आए हैं। हिन्दू सस्थाओ न तुरन्त व पू[illegible] ताकत से सहायता बाटी परन्तु विश्व स्तर की अनु[illegible] सस्थाओ ने करीब एक माह बाद काय शुरू किया। उन्होने तुरन्त विश्वभर स धन एकत्र किया व जब हिन्दू सर[illegible] राहत सामग्री बाट कर खाली हो चुकी [illegible] चुकी थी तब इन सस्थाओ न काय शुरु किया। ये सस्थाए सेवा के साथ धर्म बदलन के उददेश्य से आयी थी। आक्सफलेम वर्ल्डविझन एफीकोर एकशन इन्डिया आदि आदि नामो के साथ कार्य करने के लिए हर सस्था के पास २५ ३० गाडिया १५०-२०० कायकर्ता आ गये इनका सचालन चर्चे करती हैं।

आर्यसमाज गाधीधाम एक मजबूत केन्द्र है। ३६५ दिन सक्रिय व २४ घटे काम करता है कार्यकर्ता आधी रात को भी आकस्मिक कार्य करने को तैयार रहते हैं। हमने अभी तक राहत कार्य जारी रखा है व पर्याप्त राहत सामग्री

नि:स्वार्थ भावनाशील प्रचारकों को कच्छ के लिए आमन्त्रण

हमार पास आती रहती ह बटती ह। [illegible]

[illegible] सभा ने हम भूकप क तीसर दिन ही अनाथ बच्चा व विधवा बहना के लिए आश्रय स्थल खोलन का निर्देश दिया जिसे खोलने मे सफलता मिली। यह कार्य सामाजिक जिम्मेदारी का था। साथ ही उददेश्य यह भी था कि यदि हम उन्हे आश्रय नही देगे तो ये बच्चे व विधवाए चर्चो के आश्रय स्थल चल जायेगे उनका धर्म बिक जावेगा।

गाधीधाम के अधिकारी जब मुम्बई आर्य महासम्मेलन मे गए हुए थे। २७ मार्च का रात लौटत ही उन्हे गाधीधाम से ७० किमी दूर आधोई मे ईसाइयो द्वारा धर्मपरिवर्तन की सूचना मिली अत दोपहर बाद स्थानीय अधिकारियो श्री पुरुषोत्तम भाइ पटल श्री वा[illegible]निधि आर्य प्रतिनि[illegible] स[illegible]

के श्री गिरीश खोसलाजी पाणिनि कन्या गुरुकुल वाराणसी की आचार्या सूर्यादेवी जी पटना के धुरधर विद्वान स्व० रामनारायण शास्त्रीजी की धर्मपत्नी श्रीमती ईन्दरीदवी जी व आर्यो को दिल खोलकर दान दने वाल श्री टीकमचन्द आर्य क साथ सब आर्यजन वहा पहुचे।

शेष पृष्ठ ३ पर

गुजरात में राहत कार्यो के लिए वाहन

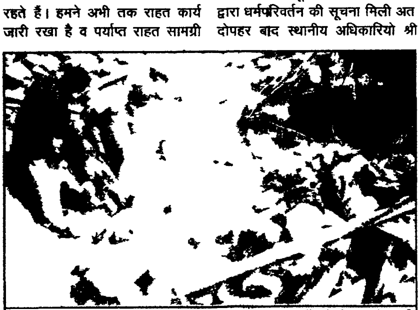
अमेरिका आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री गिरीश खोसला गुजरात मे भूकम्प आने के बाद सहायता कार्यो का अवलोकन करने तथा इस परोपकारी यज्ञ मे अपनी आहुति डालने के उद्देश्य से फरवरी माह मे भारत आए थे। उन्होने अमेरिका सभा की ओर से १२५००० रुपये भूकम्प पीडितो की सहायतार्थ आर्यसमाज गाधीधाम मे गुजरात सभा के मन्त्री श्री वाचोनिधि आय को प्रदान किया था ये राहत केन्द्रो द्वारा चलाए जा रहे राहत कार्यो से इतना प्रभावित हुए कि गत माह मुम्बई सम्मेलन मे भाग लेन के लिए पुन



भारत आए तो उनके साथ अमेरिका सभा के प्रधान डॉ० सुखदेव चन्द्र सोनी भी थे। मुम्बई मे ही दोनो अमेरिकी आर्य नेताओ ने गाधीधाम मे चल रहे कार्यो को गति प्रदान करने के लिए सुन्दर वाहन देने का निश्चय किया। परिणामत श्री गिरीश खोसला पुन गाधीधाम गए और वहा के अधिकारियो को टोयेटा क्वालीस वाहन के लिए नकद राशि प्रदान की।

गाधीधाम के मन्त्री श्री वाचोनिधि आ[illegible] ने सार्वदेशिक सभा को सूचित किया है कि यह वाहन प्राप्त हो गया है जिसका नाम परोपकारी रथ रखा गया है। आर्यसमाज के प्रधान श्री पुरुषोत्तम भाई पटेल ने अमेरिका सभा से सम्बन्धित समस्त आय बन्धुओ का साधुवाद किया है

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा वैदिक लाईट के सम्पादक श्री विमल वधावन न भी इनको धन्यवाद व्यक्त किया है।



अब जहा बहुतायत समाज सेवी सस्थाए भूकम्प कार्यो को विराम दे चुकी है वहा आर्य समाज के कर्तव्यशील कार्यकर्ता अब भी विभिन्न प्रकार के राहत कार्यों में जुटे है। पहले जहा आर्य कार्यकर्ताओं ने मलबो मे से लाशे निकालने का कार्य किया अब उन्हे ककालो को निकालना पड रहा है। इस चित्र मे गाधीधाम आर्य समाज के मन्त्री श्री [illegible] आर्य एक ककाल को निकालते हुए।

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

सह सम्पादक
विमल वधावन एडवोकेट

"समय सबसे बलशाली व मूल्यवान है"

ब्रह्मचारणी सुमना विद्यालंकार एम० ए० (संस्कृत)

समय ही सबसे बलवान है। यह इसी प्रकार व्यतीत होता रहता है और संसार का प्रत्येक जीव नाना प्रकार के कर्म करता व भोग भोगता रहता है समय बहुत ही मूल्यवान है बीता समय कभी लौटकर नही आता है। इसलिए वेद ने भी समय की महिमा का गान किया है

कालो अश्वोवहति सप्तरश्मि
सहस्त्राक्षो अजरो भूरिरेता।
तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितस्तस्य
चक्रा भुवनानि विश्वा।।

अथर्व० १९/५३/१

वेद ने इस मन्त्र मे समय की महिमा का वर्णन करते हुए कहा है – समय बहुत तीव्र गति से भागता हुआ चला जाता है। आशु गच्छतीति अश्व के अनुसार जो तीव्र गति से चलता है। तेज चाल की उपमा घोडे से दी गई है। वास्तविक घोडा बहुत तीव्र गति से चलता है वैसे ही समय भी। उक्त मन्त्र मे समय के चार विशेषण बताए गए है

१ जिस प्रकार सूर्य सात रंगो के साथ प्रकाशमान रहता है उसी प्रकार समय भी संसार मे प्रकाशमान है।

२ जिस प्रकार सूर्य की सत्ता संसार मे प्रमुख है उसी प्रकार समय की भी महत्ता संसार मे मान्य है। उसके सहस्त्रो नेत्र हैं अथवा सहस्त्रो धुरे हैं।

३ जैसे नेत्र देखने का काम करते हैं वैसे काल भी हम सबको देख रहा है।

४ वह सैकडो धुरो वाला है जैसे धुरा के सहारे पहिया चलता है वैसे समय ही के सहारे संसार चलता है। समय कभी बूढा नहीं होता है वह सदा युवा और नवीन रहता है। वह सदा शक्तिशाली है। ऐसे समय पर तमोरोहिन्त कवयो विपश्चि केवल ज्ञानवान और बुद्धिमान व्यक्ति ही सवारी कर सकते है। निर्बुद्धि व्यक्ति इस पर सवारी नहीं कर सकते। जिनका जीवन मे कोई उच्च लक्ष्य होता है वही समय का सदउपयोग करते हैं। ऐसे व्यक्ति संसार मे विरले ही होते हैं।

समय बहुत मूल्यवान है। संसार मे धन बहुत अमूल्य समझा जाता है। यदि हम परिश्रम करे तो धन को बढा सकते हैं और अधिक परिश्रम करे तो धन और भी बढा सकते हैं। परन्तु दिन और रात के चौबीस घण्टो को हम किसी प्रकार भी बढा नहीं सकते। इसका मतलब यह निश्चित है कि समय धन से भी अधिक मूल्यवान है धन यदि नष्ट हो जाए तो उसे हम परिश्रम से दोबारा प्राप्त कर सकते है परन्तु यदि समय एक बार नष्ट हो जाए तो फिर उसका प्राप्त करना असम्भव है अतः समय धन से भी अधिक मूल्यवान वस्तु है। जो समय को नष्ट करता है समय उसे नष्ट कर देता है। जो समय के महत्त्व को समझते हैं वे समय को कभी नष्ट नहीं करते। बीता हुआ समय कभी वापिस नहीं आता है। समय का सदुपयोग करते हुए ही व्यक्ति अपने जीवन को सुखी बना लेता है। समय का लाभ उठाता हुआ मनुष्य धन कमाता है और लक्ष्मीपति हो जाता है। संसार मे हीरे जवाहरात मोती और सोने को बहुत मूल्यवान समझा जाता है परन्तु समय उससे भी अधिक मूल्यवान है। व्यक्ति समय का सदुपयोग करते हुए इन्हे प्राप्त करता है।

समय रूपी धन के दान मे परमात्मा ने किसी प्रकार का पक्षपात नहीं किया यह धन सभी को समान रूप से है चाहे निर्धन हो चाहे धनवान हो चाहे पढने वाला हो चाहे मूर्ख हो व्यक्ति चाहे किसी भी सम्प्रदाय का हो समय रूपी धन प्यार प्रभु ने सभी को समान अर्थात एक दिन मे चौबीस घण्टे दिए हैं। इस धन का कौन व्यक्ति किस प्रकार उपयोग करे उसके लिए प्रभु ने सभी को स्वतन्त्र कर दिया है। समय की एक विशेषता और है जहा इसे परिश्रम द्वारा बढाया नहीं जा सकता लेकिन इसे लाखो उपायो से घटाया भी नही जा सकता रहेगे तो चौबीस ही घण्टे।

कुछ व्यक्ति इस अमूल्य समय को केशो के सजाने नये–नये ढग के कपडे सिलवाने और श्रृगार करने में भी नष्ट कर देते हैं। शरीर और वस्त्रों की सफाई तो अवश्य करनी चाहिए परन्तु इसी मे ही जीवन की सार्थकता नहीं है।

बहुत से व्यक्ति हसी मजाक और गप्पबाजी मे अपना समय नष्ट कर देते हैं वे इसे मनोविनोद और मनोविश्राम का साधन समझते हैं। वास्तव मे यह भी अमूल्य समय को नष्ट करने और वाणी को दूषित करने का एक दुसाधन है। मनुष्य को अपने समय को अमूल्य समझते हुए इसे नष्ट या गप्पादि मे व्यर्थ नहीं करना चाहिए।

अश्लील पुस्तके पढना भी समय का नाश करना ही है इन पुस्तको के पढने से मस्तिष्क को कोई पौष्टिक आहार नहीं मिलता। इसके विपरीत मस्तिष्क मे काम वासना का विष भर जाता है। समय नाश जो हुआ सो हुआ जो बुराई पल्ले पडी सो अलग। इसलिए ऐसी विशेली पुस्तक कदापि नहीं पढनी चाहिए।

जिनके जीवन मे कोइ विशष लक्ष्य नहीं होता वे रोटी कपडे की आवश्यकता से निवृत्त होकर ताश शतरज और लूडो इत्यादि के खेलो द्वारा अपना समय बिताते है यह भी समय का कोइ उत्तम उपयोग नही है। समय का सदुपयोग तो वही करते है जिनके समक्ष कोइ महान लक्ष्य होता है। सामान्य व्यक्ति जब अपनी नित्य आवश्यकताओ से निवृत्त होता है तो मनोरंजन के साधन ढूढता है। परन्तु देखा गया है कि कुछ व्यक्ति इन खेलो के इतनी बुरी तरह से शिकार हो जाते हैं कि वे इन्हीं खेलो मे अपना अमूल्य समय नष्ट करने लगते है। अन्य कार्यो की अवहलना करके इन खेलो मे व्यस्त रहना समय का नष्ट करना है। इस समय का सदुपयोग सन्ध्या के पाठ और अन्य जन उपयोगी कार्यो मे किया जा सकता है परन्तु यह तभी सम्भव है जब व्यक्ति के समक्ष कोइ लक्ष्य हो।

कुछ लोग आवश्यकता से अधिक सोते है यह समय का नाश तो है ही साथ ही शरीर का नाश भी है। आवश्यकता से अधिक सोना अपने स्वास्थ्य को नष्ट करना है। अधिक सोने से मस्तिष्क विश्राम की जगह थकने लगता है शरीर मे चुस्ती और फूर्ती के स्थान पर शिथिलता अनुभव होने लगती है।

लोग समय का दुरूपयोग करते हैं परन्तु वेद ने मूल्यवान समय के सदप्रयोग पर बहुत बल दिया है वेद मे कहा गया है –

'कस्त उष कधप्रियेभुजेमर्तो अमर्त्ये। क नक्षसे विभावरि।। ऋ १।३१।२०।।

हे विद्या प्रियजन ! जो यह नाश रहित कथनप्रिय और विविध जगत को प्रकाश करने वाली प्रात काल की उषावेला सुखभोग कराने के लिए प्राप्त होती है। उसे प्राप्त होकर तू किस मनुष्य को प्राप्त नहीं होता और कौन मनुष्य सुख भोगने के लिए तेरे आश्रय को प्राप्त नहीं होता।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इस मन्त्र का भावार्थ इस प्रकार लिखा है कौन मनुष्य इस काल की सूक्ष्म गति जो व्यर्थ खोने के अयोग्य है उसको जाने। जो पुरुषार्थ के आरम्भ का उत्तम समय प्रातः है। उसमें निश्चय से प्रात काल उठकर जब तक सोने का समय न हो एक क्षण भी व्यर्थ न जाने दे। इस प्रकार समय की सार्थकता को जानते हुए मनुष्य सब काल सुख भोग सकते हैं किन्तु आलस्य करने वाले नही।

वास्तव मे जीवन एक सग्राम है। इस सग्राम मे वही विजय प्राप्त कर सकता है जो समय का सदुपयोग करता है। जो समय को व्यर्थ गवाता है वह इस युद्ध मे विजयी नहीं हो सकता। व्यक्ति पहले समय को नष्ट करता है और फिर समय व्यक्ति को नष्ट कर देता है। किसी ने क्या सुन्दर कहा है

सब वस्तु का मोल है
समय अमूल्य पिछान।
समय व्यर्थ न खोवते
सो जन चतुर सुजान।।

महापुरुष सदा समय का सदुप्रयोग करते हैं। वे कालज्ञ होते है। उनकी नियमित दिनचर्या हुआ करती है। उनका सोना जागना पीना उठना बैठना पढना विश्रामादि करना सब कुछ निश्चित होता है। आलस्य उनको छू तक नहीं सकता दूर से ही आलस्य को फटकार कर भगा देते हैं। समय का सदप्रयोग करके ही महापुरुष बनते हैं। उनके साथी जब सो रहे होते हैं तब वे जागकर परिश्रम करते हैं।

जीवन मे सफलता का रहस्य भी यही है कि निश्चित समय पर कर्म किया जाये। जो व्यक्ति निश्चित समय पर निश्चित कर्म नही करते वे पगे–पगे भटकते रहते है। दिन हमारे मित्रो के समान आते है और हमारे सामने प्रकृति की अमूल्य भेट लाते है। यदि हम उनका सदुपयोग नहीं करते तो अपनी भेट लेकर चले जाते है। इसलिए हमे समय का सदप्रयोग करना चाहिए व्यर्थ नहीं गवाना चाहिए। खोइ हुइ सम्पत्ति नष्ट हुआ धन नष्ट हुआ स्वास्थ्य पुन प्राप्त हो सकते हैं लेकिन खोया हुआ समय पुन प्राप्त नहीं हो सकता।

लोग कहते हैं कि समय बदल गया है। परन्तु मैं कहती हू मनुष्य बदल गया है। समय नहीं बदलता है मनुष्य बदलता है। मनुष्य मे यदि सत प्रवृत्तियो की प्रबलता है तो समय को अच्छा कहा जाता है। यदि मनुष्य मे दुष्प्रवृत्तियों की प्रबलता है तो कहा जाता है – **कि बुरा समय आ गया है।** समय कभी नहीं बदलता यह तो इसी प्रकार चलता रहता है।

लोग कहते है बदलता है जमाना लेकिन मर्द वो है जो जमाने को बदल देते है।

यज्ञ सदनम ३२२ कर्मचारी नगर पो० इज्जतनगर बरेली (उत्तर प्रदेश) पिन २४३१२२

वैदिक विचारों और कर्मठता के लिए एक विहार

बादा मे पिछल दिनो सम्पन्न अतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मलन भाग लेन वाल आर्य प्रतिनिधिया की सख्या पारित सकल्पा आर वैचारिक विचारणापूण व्याख्याना क लिए मुम्बइ वासिया की यादा म हमशा – हमशा के लिए अमर हो गया है और इसे कई ठास कार्यक्रमा व परियाजनाआ की घोषणा के लिए भी याद किया जायेगा। इनमे एक हे वैदिक विहार।

वैदिक विहार के अतर्गत एक अतर्राष्ट्रीय वैदिक अनुसधान केद्र की स्थापना की जायेगी। महासम्मेलन के अध्यक्ष डॉ० स्वामी सत्यम ने इस परियोजना की रूपरखा विषद रूप से प्रतिनिधियो के सामने रखी – हमे अपनी महान सस्कृति क विदशो म प्रचार प्रसार की जरूरत है। हम इस कन्द्र म विदेशी भाषाआ म विद्वान तयार करग आर उन्ह दश क बाहर वदिक [illegible] जा जायगा।

महासम्मलन [illegible] दवरत्न आर्य न बताया [illegible] मे वृद्धाश्रम चिकित्सालय [illegible] गुरुकुल विद्यालय आदि सामाजिक उन्नति के सभी अगा का समावश होगा। इसमे आर्य सन्यासियो के रहने का भी बहुत अच्छा प्रबध होगा। वृद्धावस्था म उनकी सेवा और देख रख पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

वदिक विहार' क लिए स्थान भी तय हा चुका ह। मुम्बई स ७० किलामीटर दूर वाडा। केप्टन आय और उनके पुत्रा न याजना का मूत



अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर वेदोपदेशक पुरस्कार से सम्मानित द० अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा के सरक्षक डॉ० शिशु पाल रामभरोस साथ मे डॉ० सुखदेव चन्द सोनी डॉ० स्वामी सत्यम श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती तथा समारोह के सयोजक कैप्टन देवरत्न आर्य।

रूप दन क लिए [illegible] एकड भूमि क दान दिया ह। कप्तन आय न बताया हमारी कोशिश हागी कि अगल वष तक यह अनुसधान कन्द्र बनकर तेयार हा जाये। महासम्मलन मे इस योजना के प्रारूप का अनावरण भी किया गया। परियाजना के वास्तुकार भी तय हो चुक है जयत टिपणीस।

महासम्मलन मे कई विशिष्ट अतिथि वचन दकर भी नही आये पर इसस न आयाजको के उत्साह पर खलल पडा न प्रतिनिधिया क। प्रदश क गृहराज्यमत्री कृपाशकर सिह तो आयाजन म आकर इतना अभिभूत [illegible] कि वादा करके ही गए कि [illegible] की परियाजना क लिए पाच एकड का एक भूखड दिलाएग आर एक फ्लाइओवर और चर्नी रोड स्टेशन का नाम स्वामी दयानन्द के नाम पर करेगे।

चार दिन के इस आयोजन मे उच्चकोटि के ८० आर्य विद्वानो के व्याख्याना न उत्प्रेरक का काम किया। कई पुस्तका आर आयोजन की विशेष स्मारिका का विमोचन भी हुआ। प्रकाश की तलाश म इन्सान की तलाश मे स्वर्ग की तलाश मे और कैसे हो नारी के गौरव की रक्षा जैसे विषयो पर सारगर्भित चर्चाए हुई जिनका एक निचोड यह निकला ह कि धर्म विलगाव की चीज नही।

यह एक एसा आधार है जिस पर मानव मात्र का एक किया जा सकता है। डा० महश विद्यालकार न डक की चाट पर कहा कि वेद ही विश्व शाति के आधार स्तभ है इनसे हटकर शाति की खाज करना व्यथ प्रयास है।

वेद सम्मलन आर्य युवक और आर्य महिला सम्मेलन के प्रति उत्साह देखते ही बनता था।

वेदोपदेशक पुरस्कार से सम्मानित दक्षिण अफ्रीका स्थित आर्य प्रतिनिधि सभा के सरक्षक शिशुपाल जी रामभरोस ने प्रतिनिधियो को ललकारा कि जब सारा विश्व वेदो की महत्ता के आगे नतमस्तक है तो वे अपनी सस्कृति के प्रति उदासीन क्यो हे? इस उदासीनता को दूर करन का एव त[illegible] [illegible] स्वाध्याय करा शाध करा।

सम्मलन भल समाप्त हो गय [illegible] पर उसम उठाय गय प्रश्न वह पवित्रतापूर्ण वातावरण व प्रेरणापूर्ण व्याख्यान अभी भी भाग लेने वालो की स्मृतियो मे जिदा है। राष्ट्र निर्माण का यहा जो सकल्प किया गया उसकी अनुगूज बहुत काल तक यहा बनी रहेगी। यहा राज प्रात काल ३२ हवनकुडा म राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ होता था। दा हजार श्रद्धालु और सवा सो यजमान एकत्र होते थे ओर आहुतिया दते ओर बहुत प्रेम और श्रद्धा से वेदमत्रो का पाठ किया करते थे।

पृष्ठ १ का शेष

कच्छ के भूकम्प पीड़ित क्षेत्रो मे धर्मान्तरण का प्रयास विफल

गाव म पहुचकर स्थिति का जायजा लिया – मामला गर्म था – चर्चा कर धर्मपरिवर्तन करने वाले बुनकरा क ३८ परिवारो से मिलने की योजना बनाई गयी। स्थानीय व्यक्तियों मे श्री प्रदीप जानी व जूनागढ के पास के सत मुक्तानन्दजी का पूर्ण मार्गदर्शन रहा। हमने गाव से १० कि०मी० दूर आक्सफ्लेम सस्था द्वारा खरीदे गये खेत पर दूसरे दिन पुन जाने की योजना बनाई व दूसरे दिन फिर पहुचकर बुनकरो से बातचीत की अदर की बाते जानी व उन्हे मुख्य धारा में आने को समझाया। ईसाई कार्यकर्ताओ के साथ गरमागरमी हो गयी।

आर्यसमाज की सक्रियता के कारण ईसाईयो के हौसले पस्त हो गये उन्हे यह घृणित कार्य करने से रोका गया। प्रसन्नता की बात है कि दो परिवारो को छोडकर शेष परिवार पुन हिन्दू धारा मे लौट आये हैं।

हालाकि यह सफलता सतोष मानने के लिए पर्याप्त नहीं है – इसाई सगठन बडे पैमन्ने पर जनदा [illegible] लेकर पूरे कच्छ मे उतरे हुए ह लगातार इनक सामना करना पडेगा। आय विद्वान प्रचाराथ यहा पधारे तो धर्मातरण रूक सकता है

श्री वाचोनिधि आर्य न जैसे ही यह सूचना श्री विमल वधावन का दी व श्री टीकमचन्द आय के साथ गृहमन्त्री श्री लालकृष्ण आडवानी तथा कानून मन्त्री श्री अरुण जेटली का इन हालातो से अवगत कराने गए।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने आयजगत के प्रचारका उपदेशको सन्यासिया और वानप्रस्थियो का आहव न किया है कि वे निस्वार्थ भाव से कच्छ के क्षेत्रों मे प्रचार कार्य हेतु अपनी अपनी सेवाए उपलब्ध कराए। उन्हे कच्छ क्षेत्रो मे आने जाने का मार्ग व्यय आवास तथा भोजन आदि सार्वदेशिक सभा तथा गुजरात सभा द्वारा उपलब्ध कराया जाएगा। उन्हे दोनो सभाओ के निर्देशन पर ही प्रचार कार्य करना होगा।

श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि भूकम्प के बाद कच्छ क्षेत्र के आम नागरिको को आर्थिक कठिनाइयो के दौर से गुजरना पड रहा है। अत इन परिस्थितियो मे उन्हे आध्यात्मिक सुदृढता क सिद्धान्तो और विचारा म परिपक्व करना आर्यसमाज का दायित्व हे। इस प्रचार काय से लाभ लालच के आधार पर धमान्तरण की गतिविधिया भी हतोत्साहित होगी।

बोध कथा संघर्ष से क्षमता बढ़ी

महाभारत के युद्ध का प्रसग है। धनुर्धारी वीर अर्जुन के बाणो से गुरु द्रोणाचार्य तेज और शक्ति से क्षीण खडे थे। उन्हे खोजता हुआ कौरवो का राजा दुर्योधन पहुचा और चीखता हुआ बोला – गुरुदेव। आपको यह क्या हो गया है? आप पूरी लगन से युद्ध नही लड रहे है। शिष्य गुरु का पराजित कर रहा है यह मै कैसे मान लू? मै कह सकता हू कि अजुन आपसे बडा पराक्रमी युद्धवीर नही हे।

गुरु द्राणाचाय मुस्करा उठ बोले दुर्योधन तुम ठीक कह रहे हो। एक लम्बी अवधि तक राज्याश्रय के भोग विलास भाग कर मै अपनी ताकत गवा चुका हू जबकि शिष्य अर्जुन अपने भाईयो के साथ सघर्षो से जूझता हुआ सोने सा कुन्दन हो गया है। दुर्योधन! इसमे काई सन्देह नही कि भोग विलास सुख सुविधाए आदमी की शक्ति का ह्रास कर देती है ओर सघर्ष से व्यक्ति की क्षमत [illegible] बढ़ती हे। इस समय युद्ध म अर्जुन की जीत ओर मेरी हार का यही असली रहस्य ह।

नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

आर्यसमाज के सभासदों के लिए चार बिन्दु

— मागेराम आर्य

आर्यसमाज के स्वर्णिम अतीत स प्ररणा लेकर आर्यसमाज के उज्ज्वल भविष्य के लिए वर्तमान मे समर्पित भाव से दृढ सकल्प लेकर सभी आर्यजन निम्न चार बिन्दुओ पर विचार करे।

प्रथम बिन्दु आर्य

"आर्य सभासद ही अर्यसमाज का मूल है नीव है। वेदानुकूल जिसका जीवन है दृढ ईश्वर विश्वासी वेद विश्वासी अहकार के काटे को हृदय भूमि से उखाड फेकने वाला आर्य है।

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम।

दक्षिणा श्रद्धामप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।। यजु० १९/३०

मन्त्र के अनुसार सत्यव्रती एव

स्वस्तिपन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव पुनर्ददता -घ्नता जानता सगमेमहि। ऋ० ५/५१/१५

मन्त्र के अनुसार धार्मिक परोपकारी मार्गी आय ह।

मनुर्भव जनया दव्य जनम (ऋ० १० ५३ ६) सदा मननशील हो दिव्य गुण वाला पुत्र व शिष्य तयार करन वाला आर्य है।

प्र स विश्वे भिरग्नि भिरग्नि स यस्य वाजिन।

तनये तोके अस्मदा सम्यङ वाजै परिवृत। *साम० १५०४*

हमारे वश (आर्य परिवार) मे पुत्र पौत्रादि परम्परा अग्निहोत्र करने वाली हो यह भाव है।

आय का सदन-शाला अथर्व ९/३/१ मन्त्र

उपमिता प्रतिमितामथो परिमितामुत।

शालाया विश्ववाराया नध्दानि विचृतामसि।। के अनुसार सब ओर वाली व सब श्रेष्ठ पदार्थों वाली शाला उपमायुक्त प्रतिमानयुक्त और भी परिमाणयुक्त और बन्धनो (अच्छी प्रकार ग्रन्थित) वाली हो।

नीलोहित भवति कृत्यासक्तिर्व्यज्यते। एधन्ते अस्या ज्ञातमय पतिर्बन्धेषु ब ध्यते।। *अर्थव० १४/१/२६*

मन्त्र के अनुसार कर्तव्य कुशल पत्नी की प्रीति प्रसिद्ध होती है। इस वधु के कुटुम्बी लोग बढते हैं और पति बन्धनो मे बध जाता है।

जो स्व+स्थ = अपने स्थान को जानता है। ह+द+य= लेता है देता है और चलता है और अथर्व० ७/१/१ मे आत्मोन्नति के चार सूत्रो ध्यान सत्य ज्ञान व मनन का पालन करता है वह आर्य ह।

शरीरमाध खुल धमसाधनम। स्वस्थ शरीर ही धर्म की रक्षा का मुख्य साधन है। पच महायज्ञ स्वाध्याय और सत्सग आर्य की दिनचर्या के आवश्यक अग हैं।

द्वितीय बिन्दु - आर्य समाज

मार्गशीर्ष मास स० १९३१ मे बहुत से सज्जनो ने स्वामी दयानन्द सरस्वती से कहा " हम आपके उपदेशको से पूरा लाभ उठाने के लिए सत्सग की स्थापना करना चाहते हैं। कृपया आप श्रीमुख से उसका नामकरण कर दीजिए।" स्वामी जी नत्रोन्मीलन करके बोले "इस सत्सग का शुभ नाम आर्यसमाज ही रखना उचित है। शनिवार को मुम्बई नगर मैं आर्यसमाज की शुभ स्थापना हुई। इसके २८ नियम बनाए गए। लाहौर मे कार्तिक सुदी स० १९३४ को स्वामी दयानन्द जी द्वारा बनाए गए १० नियम स्वीकार किए गए। पहल पाच नियमा म सत्य और पिछल पाच नियमा म परोपकार का स्पष्ट सन्दश ह। समाज का सोभाग्य बढाना समुदाय का काम ह एक का नहीं। अन्य सभासद अथव २१७/१२ मन्त्र की प्राथना करे - ह ईश्वर! मुझे शारीरिक सामर्थ्य आत्मिक पराक्रम सामाजिक बल द। ऋ० १०/७८/६ मन्त्र के अनुसार आर्यसमाजमे विद्वान लोग समूह रूप मे काम करे हसते खेलते हुए। ऋ० १/१२६/६ मन्त्र के अनुसार साठ लोग जिसके पीछे चलते हो वह सदा सुख बढाने वाला ही है वहीं आयसमाज का अधिकारी बन। अथर्व ७/५०/८ मन्त्र के अनुसार "कम मेरे दाहिने हाथ मे और जीत मेरे बाए हाथ मे स्थित है। दृढ सकल्पी हो। अधिकारी कमहीन को कर्मवीर बनाने वाला हो।

आयसमाज में स्थापित प्रजातन्त्र प्रणाली मे नैतिक गुण सदा बने रहे। उत्सवो का राजनीतिकरण बन्द हो। उपदेश-प्रवचन का आधार वेदमन्त्र हो। आर्यस्थन उपासना मन्दिर हो न कि बारात घर। दैनिक सध्या हवन व्यायाम स्वाध्याय के लिए प्रयुक्त हो। सस्थावाद समाप्त हो। १९०८ ई० मे स्थापित आर्यसमाज कुमार परिषद् और १९२८ ई० मे सगठित आर्यवीर दल की शाखाए प्रत्येक आर्यसमाज मे हो। आर्यसमाज अपने नगर-गावो मे धार्मिक एव समाज सुधार का केन्द्र बने। प० लेखराम प० मुन्शीराम अमीचन्द वासुदेव प० बस्तीराम तेज सिह कुवर सुखलाल जैस तजस्वी उपदेशका के उपदेश कराए।

तीसरा बिन्दु आर्य प्रतिनिधि सभा (प्रान्तीय)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा स० २०११ में स्वीकृत उपनियमो (४५व ४६) के अनुसार प्रत्येक प्रान्त मे एक मुख्य सभा "आर्य प्रान्तीय सभा होगी। सब समाजो की व्यवस्था उसी के आधीन तथा अनुकूल होगी। यह सभा उपने नियम स्वय बनाएगी।

ऋ० १०/६१/५ मन्त्र के अनुसार पुत्र के पुत्र का मुख देखकर गृहत्याग कर बन जाए। समाज सेवा करे। इस सभा मे वानप्रस्थियो को प्राथमिकता दी जाए। किन्तु अधिकारी मे सौम्य गुणो का विकास जन शक्ति बढाने की शक्ति बुद्धि की स्वच्छता आदि का होना आवश्यक है। ऋ० १/४१/८ मन्त्र के अनुसार मित्र रहित पुरुष सुख की वृद्धि नही कर सकता इससे विद्वान लाग बहुत स धमात्माओ का मत्र क। अथव २ ४/ मन्त्र के अनुसार जगत म कीर्तिमान हान ही आयु का बढाना है।

आयसमाज म उच्च स्तर का स्वाध्याय रहा तब तक ही हम उन्नति करते रहे। अत यह सभा हिन्दी व प्रान्तीय भाषाओ मे उच्चकोटि के पत्र-पत्रिकाए साहित्य प्रकाशन व विशाल उपयोगी पुस्तकालयो की व्यवस्था करे। प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु, डॉ० भवानी लाल भारतीय अचार्य वेद भूषण सदृश सस्कारी लेखको का सहयोग लिया जाए।

आर्य विद्यालयो मे धार्मिक परीक्षाओ प्रशिक्षण शिविर खेल प्रतियोगिताओ भाषण प्रतियोगिताओ का आयोजन किया जाए। कर्मकाण्डी एव विद्वान तेजस्वी उपदेशक तैयार करने के लिए सभ उपदेशक विद्यालयो का सचालन करे।

सभा आर्य समाजो के प्रति और आर्यसमाजे "सभा" के प्रति पूर्णत समर्पित होने पर सगठन शक्ति बढेगी।

चौथा बिन्दु - सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्यसमाज के उपनियम ४७ के अनुसार समस्त आर्यजगत के लिए एक मुख्यतम सभा होगी जिसका नाम "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" होगा। समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओ के पुरुषार्थ को सयुक्त करके आर्यजगत की समुचित व्यवस्था करना उसका मुख्य कर्तव्य हागा। यह सभा अपने नियम आदि स्वय बनाएगी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना १९०८ ई० मे की गई। किन्तु १९२५ ई० से ही यह सभा प्रभावी ढग से कार्य करने में सफल हो सकी।

इन्द्र वर्धन्तो अप्तुर कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
अपघ्नन्तो राव्ण।।

ऋ० ९/६३/५ के अनुसार विद्वान सत्कर्मी गतिशील रहते हुए ऐश्वर्य आत्मज्ञान का बढाते हुए दुर्गुणो शत्रुओ (काम क्रोध मद मोह) का नाश करते हुए इस ससार को आर्य बनाओ। केवल यह नारा नहीं एक योजना है।

ऋ० १/३०/११ व यजु० ७/४५ मन्त्रो के अनुसार सब परस्पर मित्रभाव का बर्ताव कर व्यवहार की सिद्धि के लिए तीन सभाओ - १ राजार्य सभा २ विधार्य सभा और ३ धर्माय सभा का प्रयत्न के साथ सदा सम्पादन करे।

ऋ० १०/१९१/२ मन्त्र "सग च... सवदध्व सवो मनासि जानताम को सभा के अधिकारी चरितार्थ करने वाले हो। यजु० ४०/२ मन्त्र के अनुसार निष्काम कम करते हुए सौ वर्ष जीवन की इच्छा करन वाले अथ० ११/५/१७ मन्त्र के अनुसार तपस्वी ही सभा के सहयोगी हो। महर्षि दयानन्द की भाति मौलिक अवधारणाआ वाले सभा के अधिकारी बनाए जाए।

इस सभा को अतीत के लगभग ६२ प्रमुख साहित्यकारो एव ४८ वक्ताओ की कडी को आगे बढाना चाहिए। केन्द्रीय वैदिक साहित्य शोध सस्थान एव उपदेशक विद्यालय की स्थापना कर भली भाति सचालन की व्यवस्था हो। इतिहास की रक्षा एव इतिहास की रचना इस सभा का पुनीत लक्ष्य हो। यह जीवन शयन क्षेत्र नहीं कुरूक्षेत्र है। वर्ष मे कम से कम एक शास्त्रार्थ का आयोजन अवश्य हो। विदेश प्रचार विभाग का गठन एव सफल सचालन करे। दैनिक समाचार पत्र का प्रकाशन करे।

सन १९२५ १९३६ १९४४ १९५७ १९६६ १९७५ मे हुए सफल महोत्सवो - आन्दोलनो की भाति भविष्य मे भी ऐसी गतिविधियों की सफलता के लिए सभा को सदैव तैयार रहना चाहिए। "सन्यासी यति मडल" सगठन के द्वारा चिकित्सा साहित्य यज्ञादि का उत्तम कार्य हो। समर्पण एव बलिदान की भावना जागृत की जाए। सन १८६६ मे दयानन्द चरित्र के लेखक प० देवेन्द्र नाथ ठाकुर के सकल्प "अवसर आने पर दयानन्द के सिद्धान्तो के लिए उन्हे अपनी गदन भी कटानी पडे तो उसके लिए वह तैयार रहेगे" को पूरा करने का व्रत ले।

मुम्बइ आय महासम्मेलन की महान सफलता पर बधाई के साथ।

— मागेराम आर्य, बाकनेर, दिल्ली

संक्षिप्त जीवन परिचय

बीदर जिले के स्वातन्त्र्य सेनानी (३)

श्री रामचन्द्र वीरप्पा (संसद सदस्य)

माननीय पाठकगण

इससे पूर्व अक मे भी आपने लोकसभा सदस्य श्री रामचन्द वीरप्पा की जीवन झाकी का अवलोकन किया होगा। श्री रामचन्द वीरप्पा भारत की लोकसभा मे वरिष्ठतम सासद है। लगभग ६२ वर्ष की अवस्था मे श्री रामचन्द्र जी मे एक युवक सा उत्साह है। आर्यसमाज से सम्बन्ध वैदिक मान्यताओ मे विश्वास तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती मे अगाध श्रद्धा वीरप्पा जी से किए गए वार्तालाप के प्रत्येक वाक्य मे झलकती है। १९५१ से अब तक श्री रामचन्द वीरप्पा लोकसभा या कर्नाटक विधानसभा के सदस्य अवश्य बने रहे है।

श्री रामचन्द वीरप्पा जी के प्रशसको द्वारा लिए गए एक निर्णय के अनुसार उनके सम्मान मे एक अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है। प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओ आर्यसमाजो तथा आर्यशिक्षण सस्थाओ सुविख्यात आर्य नेताओ और सन्यासियो से प्रार्थना है कि वे श्री रामचन्द वीरप्पा जी के प्रति शुभकामनाए लिखकर निम्न पते पर भेजे –

सार्वदेशिक प्रकाशन १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली। विमल वधावन एडवोकेट

भारत की आजादी के पश्चात नेहरु जी के काल से अटलबिहारी वाजपेयी के काल तक शासक के रूप मे कार्यरत श्री रामचन्द्रजी अपने राजनैतिक ज्ञान चालबाजी चापलूसी या धन के बल पर नहीं वरन देशप्रेम त्याग जनसेवक सर्वप्रिय तथा कर्मठता के बल पर जीते हैं। जनता का उन पर अटूट प्रेम तथा विश्वास है। यह सही है इतने बडे अन्तराल के बाद भी वे बीदर जिले के लिए जितना कार्य करना था कर नही पाए इसका उन्हे भी अहसास है पर जनता मे कोई असन्तोष नही है। बिना पैसे के चुनाव लडने वाले हमार भारत के एकमात्र यह नेता है।

सुभाष चन्द्र बोस और रामचन्द्र वीरप्पा

भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन म रामचन्द जी के मन पर नताजी सुभाषचन्द्र बोस का गहरा प्रभाव पडा। सुभाषचन्द्र बोस के क्रान्तिकारी नारो और भाषणो के अश सुनकर – कि म भी दश के लिए खून दूगा आर देश को आजादी दिलवाऊगा। इसी भावना ने उन्हे आजाद हिन्द सेना के साथ सम्पर्क साधने पर मजबूर किया। देशबन्धु चित्रजनदास से भी वे प्रभावित थे। उन्ही के नारो से प्रेरित होकर पुलिस चौकियो को बम्ब से उड़ाना तिरगा झडा फहराना जैसे कार्य मे सबसे आगे रहते थे। जयहिन्द वन्दे मातरम का नारा लगात जुलूस मे सबसे आगे रहते। इनका आन्दोलन भूमिगत आन्दोलन था। उनका एक ही ध्येय था जनता को निजाम के शासन से मुक्ति दिलाना भारत माता के लिए हसते हसते अपने प्राण न्यौछावर करना। इन्हे मृत्यु का लेष मात्र भी भय नहीं था।

डॉ० बाबा साहेब अम्बेडकर और रामचन्द्र जी वीरप्पा

श्री रामचन्द्रजी डॉ० बाबा साहेब अम्बेडकर के सन्देशो एव विचारो से बहुत प्रभावित हैं। उन्हे वे अपने जीवन का आदर्श मानते हैं। उन्हे एक अवतारी पुरुष मानकर भक्तिभाव से पूजते हैं उनके उपदेशो को भारत के हर घर मे पहुचाने की कामना करते है। दीन दलितो के दाता सविधान के निर्माता सामाजिक न्याय के पक्षधर जिनके श्रम त्याग और अथक प्रयत्न तथा सघर्ष के कारण ही आज भारत मे दलितो को सविधान द्वारा अधिकार प्राप्त हुए और आज अज्ञान दीनतो गरीबी तथा जातिवाद के अधेरे से निकलना सम्भव हो पाया। दलितो के दाता मसीहा डॉ० बाबासाहेब अम्बेडकर के कारण ही आज पिछडे दलित जनो को राजनीति मे सरकारी नौकरियो मे समाज मे उनको अपना हक और स्थान मिलने मे सहायता मिली।

भारत को धर्म निरपेक्ष राष्ट्र बनाने म डॉ० बाबा साहेब अम्बेडकर का बडा ही योगदान रहा है। उन्हीं के पदचिन्हो पर चलने का प्रयास रामचन्द्र



श्री रामचन्द्र वीरप्पा (लोकसभा सदस्य)

जी करते रहे है।

महात्मा बसवेश्वर और रामचन्द्र जी वीरप्पा

श्री रामचन्द्र जी एक आर डा० बाबा साहब अम्बेडकर की कार्य शैली से प्रभावित हे ता दूसरी आ महान क्रान्तियोगी श्री बसवेश्वर जी से अत्यन्त प्रभावित है। वे उनके कट्टर अनुयायी ह।

बीसवीं शताब्दी मे हमारे ही कर्नाटक राज्य मे बीदर जिले के बसव कल्याण मे विश्व मानव जगत गुरु श्री बसवेश्वर जी का प्रमुख कार्य क्षेत्र था। यह हमारे बीदर वासियो का अहोभाग्य है ऐसे महान अवतारी सतपुरुष ने हमारे बीदर जिले के बसव कल्याण मे अपने जीवन काल के अनेक वर्ष यहा बिताकर उस काल मे धार्मिक सामाजिक राजनीतिक क्षेत्र मे क्रान्तिकारी कार्यकर मानव के जीवन को एक नया मोड प्रदान किया। रामचन्द्र जी सदा बसवेश्वर जी के क्रान्तिकारी कार्यों और वचनो को अपने भाषणो मे बार बार दोहराते है।

जातिवाद अज्ञानता अधविश्वास धर्मान्धता साम्प्रदायिकता को मिटाने मे आज बसवेश्वर जी के वचनो व उनके बताए मार्ग पर चलकर भारत को विश्व मे महान राष्ट्र बनाने मे सफल हो सकते है इसमे कोई सन्देह नही है।

रामचन्द्र वीरप्पा और किसान

श्री रामचन्द्र जी स्वय एक किसान है। बचपन मे वे दूसरो के खेतो मे नौकरी करते थे। किसान मजदूर को क्या क्या कष्ट उठाने पडते हैं कैसा नर्कमय गुलामी का जीवन जीते है। इसका उन्हे पूर्ण अनुभव है। वे कहते है किसान वर्ष के १२ महीने प्रात से शाम तक हर दिन मूसलाधार वर्षा हो तपती धूप हो या कडाके की सर्दी एक योगी की तरह अपने श्रम कर्म से खेतो मे अनाज उगाता है और व्यापारी गण उस माल को बेमोल खरीदकर उसे धनवान बनाने के बजाय और कगाल कर्जदार बना देते है। आज वे किसानो की दयनीय स्थिति के लिए सरकार और व्यापारी दोनो को दोषी मानते हे। भारत मे जिसे सबसे ऊचा स्थान प्राप्त होना चाहिए था वही किसान आज दर दर की ठोकर खाने पर विवश है। आत्महत्या करने पर मजबूर हो गया हे। यह दश के लिए मानवजाति क लिए एक कलक है। उसके नाम से सरकारी कमचारी सरकार व्यापारी सभी लूट के खाते है उसके नाम से योजनाए बनती है अरबा रुपये भ्रष्टाचार के कारण उन तक पहुच नही पाता। ग्राम पचायत हो या जिला पचायत ये सभी उनके सुधार के नाम पर लूट लूटकर उसे कगाल बना रहे है। यह बड दुख की बात है शम की बात हे पर क्या करे सबके सब चोर हे क्या करे किसे पूछे रामचन्द्र जी अपनी शक्ति के अनुसार हर समय किसान मजदूरो की समस्या दूर करने के लिए सदा तत्पर रहत ह।

श्री लाल बहादुर शास्त्री जी और श्री रामचन्द्र वीरप्पा जी

भारत के प्रधान मन्त्री क रुप मे श्री लाल बहादुर शास्त्री जी अपने छोटे स काल मे देशभक्ति जनसेवा दृढ नेता के रूप म सदा अमर रहेगे। अपने प्रधानमन्त्री के काल मे भारत को पाकिस्तान से युद्ध करना पडा। उस समय उन्होने भारतीया के मन मे जय जवान जय किसान जेसा नया नारा और देश मे भारतीयो के मन मे देश भक्ति की ज्योति जलाई और त्याग और बलिदान द्वारा पाकिस्तान को युद्ध मे हराया। शास्त्री जी और रामचन्द्र जी के जीवन मे साम्यता है। वे भी देश प्रेमी सत्य अहिसा के रक्षक सादा जीवन प्रामाणिक जनसेवक दीन दलितो के दाता निधनता सभी रामचन्द्र जी के जीवन से मेल खाता हे। लालबहादुर शास्त्री ओर रामचन्द्र जी के घनिष्ठ सम्बन्ध थे। दोनो की जीवन धारा मे समानता है। वे उनका अपना आदर्श मानते हैं। वे कहते है कि ऐसे महान नेता कभी कभार ही जन्म लेते है।

ऐसे हमारे रामचन्द्र जी स्वच्छमन सरल स्वभाव सादगी से भरा जीवन जन्म से मजदूर किसान क्रान्तिकारी देशभक्त दीन दलित किसानो के दाता आज ऐसे युग मे हमारे बीच है यह क्या कम सौभाग्य की बात है। उनके साथियो मे बहुत कम नेता रह गए है। उनकी एक आदत है भाषण करते समय जो भी वहा उपस्थित रहते है। उनकी ओर व्यग्य करते हुए कहते ही रहते है " हमने आपके जैसा धन नहीं कमाया गाडिया नहीं खरीदी महल नही बनाया पद के लिए सघर्ष नही किया। इसलिए आज भी वहीं टीन के घर मे है खेत मे जो उगता है वही खाते है। ऐसे योगी नेता अब इस युग मे कहा?

श्री रामचन्द्र वीरप्पा के दो प्रमुख महान कार्य

श्री रामचन्द्र वीरप्पा जी के दो कार्य सदा अमर रहेगे। एक हलिखेड शुगर फैक्टरी दूसरा गुलबर्गा बीदर रेलवे लाईन।

– शेष भाग पृष्ठ ६ पर

पृष्ठ ५ का शेष भाग

श्री रामचन्द्र वीरप्पा (एम०पी०)

हलिखड शुगर फैक्टरी स्थापना के समय श्री रामचन्द्र जी न घर–घर पदयात्रा कर इस फैक्टरी के लिए सदस्य बनाए। बडे सघर्ष सकटो के बाद हलिखड शुगर फेक्टरी की स्थापना की। पर स्थापना से आज तक किसानो का इस फेक्टरी से लाभ के बजाय हानि ही उठानी पड रही है यह केवल राजनीतिज्ञो के कारण पदलोलुपता भ्रष्टाचार स्वार्थ अपना वर्चस्व कायम रखने के नाम पर इस फैक्टरी मे उत्पादन ना के बराबर होता रहा और दिवालिया होने के कगार पर आ गया था तब देवराज अर्स के काल मे यह शुगर फैक्टरी बन्द होने की स्थिति मे आ गई थी। मनेजमेन्ट के भ्रष्टाचार के कारण यह फैक्टरी बन्द ही हा जाती पर श्री रामचन्द्र जी ने इसे फिर से सुचारु रूप से चलाने किसानो को कगाल होने से बचाने के लिए उन्होने कर्नाटक सरकार स लडकर कर्नाटक सरकार की ओर से करोडो रूपय धन सहायता कराया और कारखाना फिर से जार शोर से प्रारम्भ हुआ। इस आन्दोलन के समय व बडे धैर्य से किसानो को एकत्र कर कारखाना चालू करवाने कि लिए जिलाधिकारी कार्यालय को स्वय ताला ठोक दिया और अन्त मे व सफल हा गए। हजारो टन गन्ना जलाने की किसानो पर नोबत आ गई थी। पर रामचन्द्र जी ने आन्दोल्न आमरण भूख हडताल जसे अस्त्रा से सरकार को मजबूर कर शुगर फक्टरी का बन्द हा ा स बचा लिया। दूसरी घटना गुलबर्गा बीदर रेलव लाइन विछाना हे इस काय का पूण करन के लिए कन्द्र मे हर नेता मन्त्री प्रधान मन्त्री से मिलकर अपने प्रतिनिधियो के साथ सघर्ष कर अन्त मे उसमे भी विजय प्राप्त की।

श्री रामचन्द्र वीरप्पा अपने भाषण मे सदा इ । वाक्यो को दोहराते हैं। शायरी भी करते है कहानिया भी सुनाते है। जो निम्न प्रकार है।

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल मे है।
देखना है जोर कितना बाजूए कातिल मे है।।
वक्त आने दो बता देगे तुझे ऐ आसमा।
हम अभी से क्या बताए क्या हमारे दिल में है।।
ऐ शहीदे मुल्को मिल्लत! तेरे जजबो पे निसार।
तेरी कुर्बानी की चर्चा गैर की महफिल मे है।

इस सभा मे पधारे कितने ऐसे हैं जो चाय नहीं पीते हाथ उठाए। कोई भी माई का लाल नही। हर बच्चा जवान बूढा सभी चाय पीते है। आप मुझसे पूछिए मेने जीवन मे कितनी चाय पी है। नही। चाय का स्वाद कैसा होता है कडवा या मीठा मुझे नही मालूम। केवल चाय ही नहीं अडा मास शराब कैसी होती है मालूम नहीं। रिश्वत कैसे लेते है खाते है मुझे मालूम नही।

इस प्रकार भावी पीढी को उपदेश करते है और उन्हे तम्बाकू, गुटका बीडी–सिगरेट न पीने की प्रार्थना करते है। अपने भाषण मे डॉ० बाबा साहेब अम्बेडकर एव महात्मा गाधी के उपदेशो को बार–बार दोहराते है गाधी जी शास्त्री जी सुभाष चन्द्र क्रान्तिवीर सेनानी भारत को आजाद करने के लिए कुर्सी पाने या धन कमाने या अपना नाम अमर करने के लिए नही लड वे केवल भारत की जनता को ब्रिटिश गुलामी से बचाने के लिए लडे।

श्री पाटिल पुट्टय्या कहते हे रामचन्द्र जैसा करोडो मे एक व्यक्ति मिलता है।

मुक्ति दिलाने अपना सर्वस्व सुख त्यागकर जान –हथेली पर रखकर आजादी की लडाई मे कूद पडे थे। एक बात और दोहराते है। विधान सदस्य बनने के लिए सभी लोग अपने अपने रिश्तेदारो को टिकिट दिलान के लिए हर प्रकार का शासन पर दवाब डालने के प्रयत्न मे लगे थे। मुझ पर भी दवाब पडा कि मै अपने बेटे और दामाद को टिकिट दिला दू तब मैने कहा मेरे पुत्र या दामाद का छोडकर किसी और को टिकिट दे दीजिए अब अगर आपन इनको टिकिट दिया या प्रयत्न किया तो मैं राजनीति से सन्यास ले लूगा।

इस प्रकार नि स्वार्थ भाव से कहना कोई मामूली बात नहीं। आज के इस जमाने मे भला कौन ऐसा नेता है जो अपना ओर अपनो का भला नहीं चाहेगा। इन विचारों को सुनकर भा०जा०पा अध्यक्ष यडूवीराप्पा केन्द्रीय मन्त्री अनन्त कुमार दग रह गए थे। ऐसा व्यक्ति वह भी इस युग मे विश्वास नही होता।

सन १९९९ मे विधानसभा और लोकसभा के एक साथ चुनाव होने जा रहे थे। चुनाव अभ्यर्थी टिकिट के लिए भाग दौड कर रहे थे। रामचन्द्र एम०पी० के साथ जाने का सुअवसर मिला। हमारे साथ रामचन्द्र जी के सुपुत्र परमेश्वर जी भी थे। उनके मित्र बकप्पा सिदे थे हम सब हैदराबाद से बैगलौर पहुचे। सीध मिटिग हाल मे पहुचे। वहा सभी जन अप न भाइ भतीजे रिश्तेदारा क लिए टिकिट के लिए जी नान स प्रयत्न कर रहे थे। तब उपरोक्त बात एन०पी० रामचन्द्र जी न की थी। अपने भाषण मे जैसा की ऊपर लि चुका हू कविताओ की पक्तिया या कहानी सुनात ह कुछ और पक्तिया इस प्रकार है।

बरवादे चमन के लिए एक ही उल्लू काफी है।
यहा तो हर शाख पर एक एक उल्लू बैठा है।

जो भरा नहीं भावो से बहती जहा रसधार नहीं।
वो हृदय नहीं पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

इन्हीं बिगडी हुई दिमागो मे अमृत के गुच्छे है
हमे पागल कहते है हम पागल ही अच्छे है।"
कहनी है एक बात तुम्हें इन देश के पहरेदारों से।
सम्भल के रहना अपने घर में छुपे हुए गद्दारों से।

पैसो से पलग खरीद सकते है नींद नही खरीद सकते। पैसो से रोटी खरीद सकते है भूख नहीं खरीद सकते। पैसो से पिस्तौल खरीद सकते है हिम्मत नही खरीद सकते। पैसो से ओरत खरीद सकते है धर्मपत्नी नहीं खरीद सकते। मराठी मे एक कहावत है बोले वैसा चाले त्याची वदावी पाऊले अथवा नुडिदत्ते नडी यह रामचन्द्र जी ने अपने जीवन मे सार्थक कर दिखाया है। कन्नड मे एक वचन गुनगुनाते है –

बकरी जहरीले पत्ते खाती है पर दूध देती है
साप दूध पीता है पर जहर उगलता है।

एम०पी० रामचन्द्र वीरप्पा जी की जीवनी लिखने का उद्देश्य

बीदर जिला आज भी कर्नाटक राज्य मे हर क्षेत्र मे पिछडे जिले के रूप मे जाना जाता है। उद्योग क्षेत्र मे कृषि म या शिक्षण क्षेत्र मे आज भी यह जिला अन्य जिलो से बहुत पिछडा हे। ऐसे क्षेत्र म एक स्वातन्त्रय सेनानी महान देश भक्त जन सेवक योगी पुरुष की तरह अपने जीवन के ६२ वष बिना किसी लालच स्वार्थ के स्वय को जनसेवा मे अर्पित कर दिया।

ऐसे महापुरुष की गाथा जनमन तक पहुचे उनके त्याग बलिदान देश सेवा कार्य के बारे मे जनता को ज्ञात हो और भावी पीढी इनसे प्रेरणा ले इसी भावना से श्री रामचन्द्रजी का जीवन लिखने की प्रेरणा मिली और यह कार्य हमने भी नि स्वार्थ भाव से किया है। जैसा कि श्री रामचन्द्रजी की इच्छा है भारत की भावी पीढी मे त्याग बलिदान देश प्रेम की भावना जागृत हो। स्वदेशाभिमान हो वे विश्व के इतिहास मे इस भारत देश का अपनी विशिष्ठ सस्कृति परम्परा विविधता मे एकता देशभक्ति धर्म की पताका फिर से सारे विश्व मे फहराए। यह भावना इनके जीवन से प्राप्त करे यह हमारी इच्छा हे। हमारे वीर शहीदो का उनके कार्य उनका बलिदान त्याग की भावना का परिचय भावी पीढी तक पहुचे उनके चरित्र से प्रेरणा ले इसी भावना का लेकर यह जीवन चरित्र लिखने की प्रेरणा हुई।

आज राजनीति नेतागिरी का व्यापारीकरण हुआ। धन बल अनीति के बल पर एम०एल० ए० एम०पी० मन्त्री बनते है और फिर उस धन को दुगना करने के लिए भ्रष्टाचार द्वारा अपना घर भर लेते है। जनहित की बात तो दूर उनका रक्त चूसने के कार्य मे लिप्त है ऐसे विषमय भ्रष्टकाल म भी एक ऐसा नेता है जिसन अपन जीवन काल मे केवल देना ही सीखा हे लेना नही। पद पर होत हुए भी पद का मोह नही ६ ान क स्रात हात हुए भी उस ओर झाक कर भी दखत ाही । ससार का मोह न स्वजना का मोह न अपनी सुख की चिन्ता। रात दिन एक ही भावना जनसेवा दशसेवा दूसरो के लिए अपना जीवन अर्पण करन वाले रामचन्द्रजी का चरित्र उनकी अमूल्य कार्य शैली हर भारतीय को पढनी चाहिए। भारत के सर्वोच्च स्तर के नेता रामचन्द्र वीरप्पा का देखते ही नतमस्तक हो जाते हैं उनको आदर की दृष्टि से देखते है इसका एक मात्र कारण उनका त्याग बलिदा जनसेवा का भाव तथा हर मोह से दूर रहना ही है। आज हम देखते है धन के मोह मे साधु सन्यासी महात्मा मठाधिपति आदि ने धन कमाने के अनेक स्रोत बना लिए है आश्रम प्रवचन शिष्यवृति न जाने किस किस बहाने से अपना नाम व अपनी सस्था को अमर बनाने मे लगे है जमीन जायदाद बना लिए है। अपना नाम सदा अमर रखने के लिए शिक्षण सस्था का सहारा लेकर अपने नाम की पताका फहरा रहे है और एक रामचन्द्रजी है। वे चाहते तो आज त्याग बलिदान स्वतन्त्रता सेनानी एम०पी० के नाम से करोडपति बन सकते थे। अपने नाम से सस्थाए खोल सकते थे। जमीन जायदाद बना सकते थे। केन्द्रीय मन्त्री भी बन सकते थे। पर उन्होने इस ओर ध्यान ही नही दिया केवल जनसेवा करना अपना कर्म करना यही सच्चे सन्यासी सत महात्मा योगी पुरुष कहलाने के योग्य है। उसी शक्ति के सहारे इतने वयोवृद्ध होने पर भी जनता उन्हे फिर एम०पी० के रूप मे आने वाले दिनो मे भी देखना चाहती है। यह चमत्कार नही तो ओर क्या है। इस लेख द्वारा हर जन मन मे उनके काय त्याग बलिदान की गाथा पहुच और वे भी एक सत्यवादी देशभक्त नागरिक बने यही अभिलाषा है। ❑

जड़ पूजा नहीं, भावात्मक संध्या कीजिए

– आचार्य आर्य नरेश

सत्य चेतन निराकार भगवान की पूजा करने के स्थान पर मूर्ति पूजा मे अधिक आनन्द आता है ऐसा अधिकतर पौराणिक धार्मिक लोगो का विचार है। बिना किसी तर्क या वितर्क के यदि सामान्य दृष्टि से देखा जाए तो यह बात सच्ची प्रतीत होती है। सध्या करने वालो की अपेक्षा मूर्तिपूजा करने वाले कहीं अधिक दत्तचित्त होकर विशेष सुख की अनुभूति करते हुए दिखाई देते हे। पर इसमे दो मत नहीं कि मूर्तिपूजक जिसे वे गलती से आनन्द मान रहे हैं यह वास्तव मे आत्मिक आनन्द न होकर शारीरिक सुख है। सुख का आधार मन आदि इन्द्रिया है जिसे वे ससार के भौतिक साधनों से प्राप्त करते हैं। परन्तु आनन्द का आधार आत्मा है जिसे वह परम पिता परमात्मा स ही प्राप्त करता है।

मूर्त्ति पूजा करने वालो को जो थोडी बहुत शान्ति या सुख मिलता हे वह उन्हे इश्वर स न मिलकर सामन लगी हुइ सुन्दर मूर्त्ति स मिलता हे। जिसका सम्बन्ध वे अपने मन म ही श्रीकष्ण शिव या राम से जोडे रख्ते है। अपनी अधश्रद्धा के वशीभूत होकर वे पूजा करते समय एसा सोचते हैं कि श्री शिव शकर राम या कृष्ण बस उनके बिल्कुल पास ही खड हैं। इस प्रकार से मूर्त्तिपूजक उनके साथ अपना भावनात्मक सम्बन्ध जोडे रखते है। अपने अज्ञान के कारण वे गुणगान करते तथा उन जड मूर्त्तियो को ईश्वर न होते हुए भी चेतन तथा ईश्वर समझते है उनकी पूजा करते है। क्योकि प्राण प्रतिष्ठा के पाखण्ड ने पहले ही उन्हे पक्का विश्वास दिला रखा होता है कि यह एक प्रकार न हिलते डुलते हुए भी चेतन अर्थात प्राण युक्त हैं। जिसे स्थूल जड के उपासक मूर्त्तिपूजा अथवा माला पूजक मन लगाना कहते हैं। वास्तव मे उनका मन एकाग्र न होकर मूर्त्ति के विभिन्न अगो और माला के मनको मे चलायमान रहता है। हा इतनी बात अवश्य है कि वे बडे ससार मे न भटक कर एक छोटे ससार मे भटक रहे होते हैं।

मूर्त्ति पूजक अपना मनुष्य रूपी सम्पूर्ण मूल्यवान जीवन इसी अज्ञानयुक्त पूजा मे व्यतीत कर देते हैं। पर उन्हे कभी भी सच्चे ईश्वर का साक्षात्कार या आनन्द नहीं मिलता। क्योकि जिन्हे वे भगवान मान रहे होते हैं उन शिव राम कृष्ण जी को तो हम स्वय ओम चेतन भगवान की ही साधना करते हुए दखत हैं। उदाहरण के लिए ब्रह्मा जी शिव जी राम जी व कृष्ण जी ये सभी सिद्ध पुरुष अपने चित्रा मे कयल ओम ही की साधना करते मिलते हैं। जब कोई विद्वान प्रेम से उन मूर्त्ति पूजको को यह बात समझाने लगता है तो वे इसे मान भी जाते हैं पर पुन यह कहकर कि मूर्त्तियो की पूजा अज्ञानियो के लिए उस निराकार तक जाने की एक सीढी है। इस जड पूजा मे ही लगे रहते हे। अज्ञानी लोग इन पूर्णों (अक्षरो को सिखाते समय जो सर्वप्रथम छोटे बच्चो को बिन्दी बिन्दी लगाकर सिखाया जाता है) पर चलकर फिर इस की सहायता से निराकार की साधना मे दक्ष हो सकते हैं अत मूर्त्ति पूजा मे बुराई ही क्या है ? प्रियवरो ! क्या असत्य से भी बढकर कोई ओर बडी बुराई हो सकती है ? क्योकि शास्त्रकार मुक्त कण्ठ से कह रहे हैं – न अनृतात पातकम परम अर्थात झूठ से बढकर कोई पाप नहीं क्योकि वह सब पापो का मूल हे।

अब तनिक विचार करे कि आनन्द जो कि केवल परमात्मा मे ही रहता हे और उसके सिवाय किसी भी जड वस्तु या आत्मा मे नही रहता वह राम कृष्ण आदि मे कस मिल सकता हे ? क्योकि वे दिव्य महापुरुष परमात्मा नही अपितु आत्मा ही थे और इसीलिए तो वे आनन्द की प्राप्ति हेतु ओम परमत्मा की साधना किया करते थे। यदि वे स्वय आनन्दयुक्त परमात्मा होते ता ऐसा कभी न करते। अत पहला असत्य तो यह है कि जहा आनन्द नही है वहा आनन्द की कामना करना और दूसरा बडा असत्य यह है कि साकार मूर्त्ति के सहारे निराकार ईश्वर तक पहुचने का प्रयास करना।

देखो भक्तजनो ! स्थूल लिपि एक साकार वस्तु है अत उसके सूक्ष्म आकार वाले पूर्णो से स्थूल पर पहुचने का अभ्यास करना उचित है। पर परमात्मा जो कि मूल रूप से एक निराकार वस्तु है उसका कोई सूक्ष्म या स्थूल आकार सहारा नही बन सकता। अत निराकार (अदृश्य) ईश्वर तक पहुचने का सहारा ससार की कोई भी स्थूल वस्तु या मूर्त्ति कभी नहीं हो सकती। इतना ही नही अपितु ये मूर्त्तिया जिसे आज भगवान जानकर अज्ञानी जनता पूज रही है वह भी ईश्वर की न होकर उसके भक्तो की ही हैं। क्योकि आज ससार मे कही भी चेतन ओकार भगवान की हाथ पैर वाली मूर्त्ति नहीं मिलती। अत भक्तो की मूर्त्तियो के ध्यान भजन अथवा गुणगान से भक्तो क ही जीवन का किचित लाभ व अनुभव हो सकता है न कि भगवान का। और रही बात यह कि अज्ञानी लोग मूर्त्ति पूजा के सहारे यदि ईश्वर को पा ले प्राप्त कर ले तो क्या बुराई ? यह भी एक बहुत बडा झूठ है। क्योकि आज देश तथा विदेशो मे जितनी भी बढ चढकर जोरो से बडे बडे विशाल मन्दिर बनाकर मूर्त्ति पूजा चल रही है वह वास्तम वे मूर्खो या अज्ञानियो के द्वारा नही हो रही अपितु ज्ञानवान व धनवान समझदार लोगो के द्वारा ही करोडो रुपये के मन्दिर बनाकर हो रही है। अत इस बहुत बडे झूठ के षडयन्त्र से भी मुक्ति पाये कि मूर्त्तिपूजा अज्ञानियो के लिए एक सहार है। यदि यह केवल अज्ञानियो या मूर्खो के लिए ही सहारा थी तो फिर इसे करोडो ज्ञानी क्यो कर रहे है ?

क्या करे ? निराकार की पूजा मे न तो मन ही लगता है और न ही कुछ आनन्द ही आता है। अत कुछ तो करे। हा अवश्य करे पर अमृत पान के स्थान पर विषपान न कर। सतचित आनन्द स्वरूप निराकार ईश्वर का ध्यान अमृत है पर ईश्वर के स्थान पर अन्य वस्तुआ की पूजा आत्मा हतु घोर मृत्यु है जिसने सदियो तक भारत को गुलाम बना कर रखा। अत यदि आनन्द चाहिए तो अपने अत्यन्त समीप रहने वाले इस शरीर तथा ससार को बनाने वाले व जीवन को चलाने वाले सब प्रकार की सुख सुविधाओ को देने वाले सच्चे चेतन भगवान ओकार की साधना कीजिए। यदि प्रभु की वाणी वेद के कुछ मन्त्र आते हो तो उससे साधना कीजिये। यदि आप सस्कृत या हिन्दी पढने मे बिल्कुल असमर्थ हो तो उन मन्त्रो के भावार्थ पर विचार करके साधना कीजिये। यदि आप ऐसा भी न कर सके तो केवल ओम के अर्थ पर विचार करते ध्यान कीजिए। आपको मन चाहा आनन्द मिलेगा।

जो लोग प्राय यह शका करते हैं कि सध्या करने या निराकार की उपासना मे न तो उनका मन लगता है और न ही कभी आनन्द आता है। वे लोग आगे ध्यान से पढे। सध्या करने वाले अधिकतर लोगो को उसमे आनन्द न आने या ध्यान न लगने का मुख्य कारण है उनकी अभावात्मक स्तुति प्रार्थना और उपासना। जिस दिन वे अपनी सध्या को भावात्मक बना लेगे उस दिन से उनकी यह ध्यान न लगने की शिकायत समाप्त हा जाएगी। सध्या मे ध्यान लगाने हेतु उसके भावात्मक स्वरूप को जानना आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य भी है। इसीलिए भावात्मक जड पूजा करने वाले अभावात्मक सच्ची चेतन पूजा करने वालो से अधिक भाव विभोर दिखाई देते हैं। इतना ही नहीं उस जड पूजा की अन्धश्रद्धा हमारे चतन सच्चे ईश्वर पूजक की श्रद्धा से कही अधिक होती है। इसका कारण यही है कि वह ईश्वर के समक्ष न होने पर भी उसको अपने झूठे भाव से समक्ष खडा हुआ ही समझता है। परन्तु सच्चा निराकार उपासक 'ठीक उपासना की पद्धति पर चलते हुए भी अपने प्रभु से भावात्मक सम्बन्ध नहीं जोडता इसीलिए उसको पूजा मे रस नहीं आता और उसका मन भी नहीं लगता।

निराकार सच्चे ईश्वर के साधको को बस यही बात सीखनी है कि वे भावात्मक पूजा के रहस्य को समझे और उसे व्यवहारिक रूप दे। अभावात्मक पूजा का अर्थ है कि हम जिसकी पूजा या अर्चना करन जा रह हे वह हमारे सामने अविद्यमान है अर्थात उसका हमारी सध्या मे अभाव हे। क्योकि भाव होते हुए भी सध्या के मन्त्रो का पाठ करते हुए उस ईश्वर के साथ सीधा कोई सम्बन्ध नही जोड पाते। हम लोग मन्त्रो को बोलते अवश्य है पर बोलते हुए हम ऐसा प्राय नही विचारत कि हमारे इन मन्त्रो को यही हमारे अग अग व समक्ष बाहर तथा भीतर विद्यमान भगवान से क्या सम्बन्ध है ? आसन बिछाने चोटी बाधने से आचमन करने तथा मन्त्रो को बोलने तक हम प्राय अपने भगवान से दूर ही होते है। हम सध्या करने जा रहे हैं सध्या करने बैठे हैं सध्या के मन्त्र बोल रहे हैं। ऐसा कहते और करते हुए भी यह नहीं समझ रहे होते कि 'सध्या वास्तव मे क्या है। सम्पूर्ण सध्या की क्रिया प्राय अभावात्मक ही रहती है। यह सब हम जिसके लिए कर रहे हैं वह हमारे सामने नहीं होता तथा न ही हम भावात्मक रूप से उसके साथ जुडे होते हैं।

इस प्रकार से अभावात्मक ईश्वर की विद्यमानता अथवा उसके साथ अलगाव के भाव मे हमारी सध्या पूर्ण हो जाती है। हमारे सारे मन्त्र हवा मे खाली (अभावात्मक) स्थान से छोडे हुए होते हैं। मन्त्रो का उच्चारण करते समय न तो हम अपने आपको ही कुछ सुना रहे या प्रेरणा दे रहे होते हैं और न ही हमारे मन्त्रो का श्रोता वह भगवान ही होता हे जा कि उस समय हमारे अतीव समीप अपने सम्पूर्ण ज्ञान बल व आनन्द से युक्त होकर अपने निराकार रूप मे बाहर भीतर विद्यमान होता है।

शेष पृष्ठ ६ पर

मानव निर्माण में संस्कारों का महत्व

– डॉ० बिजेन्द्र पाल सिंह चौहान

किसी भी व्यक्ति की महानता उसके श्रेष्ठ व महान गुणो कर्मों तथा स्वभाव से होती है उसी प्रकार राष्ट्र की महानता वहा के निवासियो क सुकर्मा त्याग बलिदान धर्म परायणता ज्ञान व शिक्षा से होती है।

राष्ट्र मे अच्छी शिक्षा व्यवस्था न हो। से ही सस्कार हीन सताने होकर कुप्रवृत्तिया ।ष्टाचार अपराधो को बढावा देती है। श्रेष्ठ समाज की रचना क लिए हमे सस्कारो पर विशेष बल देना चाहिए। अच्छे सस्कारो से ही मनुष्य का सत्य रूप मे निमार्ण होता है। श्रेष्ठ समाज के लिए श्रेष्ठ मनुष्यो का होना आवश्यक है और श्रेष्ठ गुण सस्कारो से ही अ सकते है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सोलह सस्कारो का प्रकाश किया है यह सस्कार प्राचीन काल मे प्रचलित थे। इन सस्कारो से श्रेष्ठता व पवित्रता की प्राप्ति होती है। बालक की सात या आठ वर्ष आयु तक ग्यारह सस्कार हा जाते हैं। बचपन मे पडे हुए सस्कार ही आगे फलते व बढते रहते है। अत बच्चे के सुन्दर व श्रेष्ठ भविष्य का मूल है सस्कार ।

जन्म से पूर्व बालक के लिए तीन सस्कार किए जाते है। यह तीन सस्कार है– गर्भाधान पुसवन व सीमन्तोपनयन। गर्भावस्था मे शिशु के विभिन्न अगो का विकास होता है इस अवस्था मे शिशु के रक्त परिसचरण तत्र तत्रिका तत्र श्वसन उत्सर्जन आदि तन्त्रो का सम्बन्ध माता से होता है। माता की भावनाओ आदि का प्रभाव शिशु के आत्मा मन आनुवशिक गुणो गुणसूत्रो पर अवश्य होता है। अच्छे सस्कारो की नींव इस अवस्था मे पड जाती है अभिमन्यु ने माता के गर्भ मे ही युद्ध विद्या मे व्यूह रचना व उसे तोडने का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। लव–कुश की महानता का कारण उनके सस्कार व शिक्षा ही थे। मदालसा के नौ बच्चे इन्हीं सस्कारो से ही महान ज्ञानी व राजा बने।

इस पावन भूमि पर विश्वामित्र जैमिनी महर्षि दयानन्द सरस्वती ब्रह्मचारी भीष्म महान विद्वान विदुर व हनुमान तथा सहस्रो लाखो विद्वानो ने जन्म लिया व ज्ञान का प्रकाश चहु ओर फैलाया उनकी महानता का कारण उनको मिले सस्कार ही थे।

महर्षि दयानन्द सरसवती ने सस्कार विधि की पुस्तक म सोलह सस्कार विधि पूर्वक बताए हे। यह ग्रन्थ मनुष्य के उज्ज्वल भविष्य के लिए अत्यन्त उपयोगी व महत्वपूर्ण हे। इसे पढकर हमे नई पीढी को इस सस्कार विधि का ज्ञान देना चाहिए। जिससे वह आने वाली सन्तान को विद्वान श्रेष्ठ बना सके। श्रेष्ठ सन्तानोत्पत्ति के लिए गर्भाधान पुसवन सीमन्तोपनयन तथा बालक के जन्म के पश्चात बालक के आठ वष का होने तक के कुल ग्यारह सस्कारो पर अवश्य ध्यान देना चाहिए साथ ही माता पिता द्वारा अच्छी शिक्षा देकर और विद्यालय मे अध्यापको द्वारा चरित्र निर्माण की शिक्षा द्वारा बालक को श्रेष्ठ मार्ग पर डाला जा सकता है।

आजकल के वातावरण और जीवनयापन हेतु दिन रात की भागदौड मे इस विषय पर ध्यान ही नही दिया जा रहा उसमे भी बाल्यावस्था से बालक को चलचित्र टी वी सीरियल्स के बेढगे सवाद व चित्र अ ग्नग्नता कामुकता तथा सस्कार रहित कथानको की भरमार अश्लील गानो के वातावरण ने कुमाग पर डालना आरम्भ कर दिया हे। बडे होकर शहरा गलियो मे अश्लील पास्टर सिनेमा के प्रचार चित्रो जो दिवारो पर चिपका दिए जाते हैं ने विद्यार्थियो के चरित्र नैतिकता व अच्छे सस्कारो की अर्थी ही निकाल दी हे। माता पिता की विमुखता से आज का ऐसा वातावरण अत्याधिक प्रदूषित होता जा रहा है। कुसस्कृत बच्चे ही आग चल कर चोर डाकू व लुटेरे बनते है। राजनीति मे जाकर घोटाले व भ्रष्टाचार को करते व फैलाते हैं। राजनीति के दूषित हाने का कारण भी कुछ अपराधी प्रवृत्ति के लोगो का प्रवेश ही है।

आज यदि व्यक्ति समाज व राष्ट्र का श्रेष्ठ निर्माण करना है तो वैदिक गुरुकुल शिक्षा व सस्कारो के महत्व पर बल देना होगा। वरना भारत जैसा आध्यात्मिक ज्ञान से प्रधान व विश्व का धर्मगुरु देश भी विश्व मे बढते उग्रवाद आतकवाद परस्पर युद्ध व अपराधो के जाल मे फसता चला जाएगा। वैदिक सस्कार ही भारत को अवनति से बचा कर विश्व मे राष्ट्र का नाम ऊचा कर सकते हैं और फिर भारत द्वारा ही ज्ञान का प्रकाश चहु ओर होकर "कृण्वन्तो विश्वमार्यम" की कल्पना सार्थक हो सकती है।

– चन्द्र लोक कालोनी खुरजा २०३१३१
उप मन्त्री आर्यसमाज खुरजा

वैदिकधर्मी बनो

– प० नन्दलाल निर्भय

आर्यवर्त मे हो गया घोटालो का जोर।
छीना–झपटी मच रही मचा हुआ है शोर।।
मचा हुआ है शोर देश भारत था नामी।
रह करोडो वर्ष आर्यजन जग के स्वामी।।
हरीशचन्द्र शिवि अश्वपति से थे महाराजा।
सकल जगत मे बजा विजय का उनका डका।।
राम कृष्ण चाणक्य वीर विक्रम से नेता।
मानवता के पुज बहादुर विश्व विजेता।।
गौतम कपिल कनाद जैमिनी से विज्ञानी।
राणा–सागा शिवा वीर बन्दा बलिदानी।।
मानवता का सर्व विश्व को पाठ पढाया।
ईश्वर के थे भक्त वेद पथ को अपनाया।।
उनके वशज भूल गए वैदिक प्रणाली।
करते है दुष्कर्म गए बन दुष्ट कुचाली।।
कभी न करते पुण्य पाप पापी करते है।
लालच हुआ सवार न ईश्वर से डरते हैं।।
नेता गण बन गए शराबी मासाहारी।
चरित्रहीन निर्लज्ज कुकर्मी अत्याचारी।।
अब नेताओ सुनो जगत मे जो आता है।
सृष्टि का है नेम काल उसको खाता है।।
रावण बाली कुम्भकरण भारी बलवानी।
दुनिया से मिट गए न उनकी रही निशानी।।
जरासघ शिशुपाल दुशासन अरु दुर्योधन।
अब तक है बदनाम जगत मे पापी कृपण।।
धन दौलत परिवार किसी के साथ न जाते।
देवो के यशगान सदा नर–नारी गाते।।
सुख चाहो तो सुनो बनो सब परोपकारी।
याद करेगी तुम्हे श्रद्धा से दुनिया सारी।।
जगत गुरु ऋषि दयानन्द की शिक्षा मानो।
वैदिक धर्मी बनो अरे अपने को जानो।।
स्वामी श्रद्धानन्द बनो धर्म–कर्म कमाओ।
लेखराज बन पावन वैदिक नाद बजाओ।।
वीर लाजपत बनो जगत को स्वगर्ग बनाओ।
मानव चोला सफल बनाओ फर्ज निभाओ।।

– ग्राम व पो० बहीन,
फरीदाबाद (हरियाणा)

गांधीनगर (गुजरात) में विशाल योग शिविर

गुजरात की राजधानी गाधीनगर मे स्थित आर्यसमाज के भवन मे २२ से २६ अप्रैल २००१ तक एक विशाल क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस शिविर मे स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक आचार्य ज्ञानेश्वर जी दर्शनाचार्य (दर्शन योग महाविद्यालय आर्यवन राजेड) श्री दिनेश कुमार सुखडिया इजीनियर (अहमदाबाद) डॉ० सदगुणाजी सुश्री प्रवीणाजी और भावना जी आर्या (जूनागढ) आदि प्रशिक्षक पधार कर विभिन्न विषयो पर प्रकाश डालेगे।

योग शिविर मे क्रियात्मक रूप मे योग प्रशिक्षण देने के साथ साथ योगदर्शन के सूत्रो का अध्यापन विवेक वैराग्य अभ्यास शुद्धज्ञान शुद्धकर्म शुद्ध उपासना ईश्वर समर्पण वेद के मन्त्रो तथा श्लोको का शुद्ध उच्चारण आत्मनिरीक्षण स्व स्वामी सम्बन्ध को हटाने आदि आध्यात्मिक दार्शनिक विषयों पर प्रकाश डाला जाएगा।

शिविर शुल्क स्थायी रूप से रहने वाले शिविरार्थी के लिए ३००/– रु० तथा अस्थायी रूप मे भाग लेने वालो के लिए १५०/–रु० रखा गया हैं

शिविरार्थियो के भोजन आवास बिस्तर आदि की समुचित व्यवस्था आर्यसमाज गाधीनगर की ओर से की जाएगी। इस शिविर मे अधिकतम ४०० शिविरार्थियो के लिए व्यवस्था की गई है।

– अरविन्द राणा
क्रियात्मक योग शिविर समिति, गाधीनगर

पृष्ठ ७ का शेष भाग

जड़ पूजा नहीं, भावात्मक संध्या कीजिए, मन अवश्य रुकेगा

वस्तुत सच्चाई यही है कि हमने सध्या करनी है हम सध्या कर रहे हैं और हमने सध्या कर ली अर्थात कुछ निश्चित मन्त्रो का पाठ या विशेष विधि या तरीका अपना कर हमने एक काम कर दिया है। पर हम इस सध्या के काम को करते अथवा कर चुकने के पश्चात भी नहीं समझ रहे होते कि हमारा इसे करने का मुख्य अभिप्राय क्या है। सिवाय इसके कि हमने प्रतिदिन की तरह एक काम पूरा कर दिया

इसको छोडकर हमारा सभवत सध्या करने का और कुछ भी भाव नहीं होता। बस सध्या मे मन या ध्यान न लगने अथवा आनन्द न आने का यही मुख्य कारण है। इसीलिए सध्या हेतु बहुत से लोग बैठते हैं और सारे मन्त्रो का पाठ करके उठ जाते हैं तथा कई बार तो मन्त्रो का पाठ करते करते कहीं और ही चले जाते हैं पर मन्त्र पाठ चलता रहता है। क्योकि प्रतिदिन का अभ्यास होने से वे अनजाने मे ही निकल कर पूरे हो जाते हैं। इस तरह से भी सध्या पूरी हो जाती है। इसी का नाम है अभावात्मक सध्या'।

आइए पाठक वृ द अब विचारत है मन लगान वाली यान जमाने वाली व आनन्द दने वाली भावात्मक सध्या क विषय म। भावात्मक सध्या अर्थात एक सध्या जिसमे तेयारी स लेकर समाप्ति तक और उसके पश्चात भी जिसकी प्राप्ति हेतु सध्या की जाती है उस ईश्वर का भाव बना रहता है कि निराकार रूप मे सच्चिदानन्द भगवान हमारे पास ही विराजमान हैं। सध्या हेतु जाते समय या बैठते समय एक भावात्मक सध्या करने वाले व्यक्ति श्रद्धापूर्वक ऐसी भावना बनाकर सध्या के स्थान की ओर जाते हैं कि अब हम थोडी ही देर के पश्चात अपने सब सासारिक व्यवहारों को छोडकर उस ईश्वर के समीप बैठ जायेगे। आसन बिछाकर बैठने पर वह ऐसा भावात्मक विचार बनाता है कि अब मैं उसके समीप हू और वह ईश्वर मेरे बिल्कुल समीप हैं। गायत्री मन्त्र का उच्चारण करते हुए व अपनी शिखा को बाधते समय वह ऐसा भाव बनाता है कि अब मैं केवल अपने भीतर उपस्थित भगवान की ओर ही ध्यानावस्थित हो रहा हू। अब मेरा मन पूर्व बिखरे हुए बालो के समान इधर उधर नहीं बिखरेगा अपितु बधी हुई चोटी के समान 'प्रभु' में एकाग्र हो जाएगा।

अब इस समय मेरा एक और केवल एक ही कार्य है। वह है केवल भगवान में चित्त लगाकर उसकी ही स्तुति प्रार्थना और उपासना करना, जो कि मेरे बाहर तथा भीतर कण कण मे होता हुआ सर्वव्यापक है। ओं शन्नो देवी से आचमन करता हुआ सच्चा भावात्मक साधक उसी भगवान का जल और भगवान का ही शरीर समझ कर यही भाव बनाता है कि मेरे अतीव समीप विद्यमान भगवान अब मेरे शुभ कर्मों से अपने आनन्द की वर्षा कर रहा है। सध्या के शेष मन्त्रो का भी पाठ करता हुआ 'भावात्मक भक्त सब शब्दो के अर्थ न आते हुए भी ऐसा विचार बनाये रखता है कि भगवान यहीं विराजमान होकर मेरे सब मन्त्रो को स्तुतियो मे सुन रहा है। इसके साथ साथ यदि आप को सब मन्त्रो के अर्थ भी आते हो फिर तो सोने पर सुहागा है। परन्तु यदि सब मन्त्रो के अर्थ नहीं भी आकर केवल भाव ही आते हैं और यह भाव बना रहता है कि भगवान सुन रहा है और अपना आशीर्वाद दे रहा है तो भी कम आनन्द नहीं आयेगा। और इस भावात्मक विधि से मन भी अपनी चचलता को छोड कर सारे सासारिक कार्यो से हट कर भगवान मे लग जाएगा। क्योकि उस मन को अब हमने अपने आगे – पीछे ऊपर – नीचे बायें तथा दाये व अन्दर बाहर उपस्थित महाशक्तिशाली सृष्टिकत्ता तथा अपने सबसे बडे साथी और आनन्द दाता भगवान के साथ जोड दिया है। क्योकि उस भगवान को हमने अपने आस पास सृष्टि के कण कण मे जान ही नहीं लिया अपितु इस सध्या के समय में उसे अपन आस पास नितान्त समीप मान लि'ा ह इतना ही नही अपितु उस आत्म' म समझ कर अपन मन्त्र भी सुना रह है। अत ऐसा भावात्मक व्यवहार होने से मन हमारे आत्मा का सहयोगी होकर अब बाहर कहीं और नहीं जाता। यह तब ही जाता था जब हम आत्मा से बिना जाने कि ईश्वर हमारे पास है यूही हवा मे मन्त्र छोडते या पढते जाते थे। परन्तु अब तक इस भावात्मक सम्बन्ध से आत्मा अपने मन से प्रत्येक मन्त्र ईश्वर को सुना रहा होता है। अत मन के कहीं और जाने का प्राय प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता।

जिन्ह सज्जनो को सध्या के प्रत्येक मन्त्र का शब्दार्थ नहीं आता यदि वे सवप्रथम उसका मोटा सा भाव ही स्मरण करके अपने प्यारे प्रभु को अपने समक्ष जानकर उससे प्रार्थना करेगे मन्त्रो से ईश्वर की उपस्थिति मे अपने आत्मा को प्रेरणा या शिक्षा देगे तो ऐसा भावात्मक सम्बन्ध जुडने से उनका मन बाहर से रुककर आत्मा के अधीन रहेगा तथा आत्मा प्रभु की वास्तविक उपस्थिति मे रहकर मन्त्रा द्वारा उससे बात करता हुआ पूर्ण आनन्द को प्राप्त करेगा। जैसे एक छोटा बच्चा सारे ससार को भूलकर बडे प्रेम से अपने पिता की गोद मे बैठ कर बातचीत करता है ठीक वैसे ही इन वद मन्त्रा का म'ध्यम बनाकर परमपिता से वार्तालाप करे। सध्या के सम्पूर्ण मन्त्रो के पश्चात् गायत्री मन्त्र के शब्दार्थ को वार्तालाप का माध्यम बनाइये इसके पश्चात मन को सूक्ष्मता की ओर लाने हेतु अन्त मे ईश्वर के अनेक गुणों का स्मरण करते हुए ओम का जप कीजिये कि वह सब कुछ सुन रहा है। आपका मन लगेगा आनन्द आएगा और सध्या सफल होगी।

हम ये सब बाते क्रियात्मक रूप से उद्गीथ साधना स्थली मे लगाये जाने वाले शिविरो मे आगन्तुक साधका को बताते रहते हैं। जिन्हें इस विषय में विशेष जानकारी लेनी हो अथवा योगसाधना को वैज्ञानिक रूप से सीखने की इच्छा हो वे यहा समय समय पर लगने वाले नि शुल्क शिविरों में भाग लेकर सीख सकते हैं। क्योंकि लेख के द्वारा प्रत्येक बात को खोलकर समझाना कठिन हैं अत हम अपने मन या बुद्धि से ईश्वर को नमन करना या उसके प्रति झुकना सीखे क्योकि वह बाहर की वाणी या हाथों से नहीं मिलता। बाहर के हाथो या शरीर से तो शरीर धारियो को ही नमन करना उचित है।

ओमवन महर्षि दयान्न्द मार्ग
सिरमौर हिमाचल

मानव जीवन की सफलता का रहस्य (४)

– आर्य तपस्वी सुखदेव

एक कुछ माह का अबोध असहाय बालक भी जिसने इस ससार को अभी देखा नही है लेकिन फिर भी ईश्वर की शक्ति का ज्ञान अपने भीतर बडे ही श्रद्धा भाव व दृढ विश्वास के साथ रखता है। वह पूरी तरह से चलना तो दूर जमीन पर घसीट–घसीट कर भी नहीं चल पाता। वह जिस स्थान पर रहता है उस परिवार के सम्बन्धों को भी नहीं पहचानता। फिर भी ईश्वर की शक्ति अपनी आत्मा मे समेटे हुए है। उसी परिवार मे हजारो की भीड में माताए किसी युग मौत के कारण बिलख–बिलख कर रो रही हैं। छाती पीट रही है। अबोध बालक इन सब से बेखबर है। नींद से उठता है। भूख सताती है। रोना प्रारम्भ कर देता है। घुटनों के बल अपने आप को तन की भूख मिटाने के लिए घसीटना प्रारम्भ कर देता है। कभी कोई चेहरा अपनी ओर खींचता है तो कभी दूसरा। सभी को घूरते देखते आगे बढता रहता है। कोई खिलौना देता है तो कोई मिठाई। सभी को छोडता आगे बढता रहता है। अन्त मे उस दामन को ढूढ कर जोर–जोर से चिल्लाकर बताना चाहता है कि देखो ससार वासियो ! इस हजारों की भीड मे सभी मुझे मेरी मा बनकर बुलाना चाहती थी गोदी मे बिठा मेरी भूख मिटाना चाहती थी खिलौनो मिठाईये से बहलाना चाहती थी पर किसी को अपना न मानता हुआ केवल उसी दामन का पकडा जो मेरा पैदा करने वाला है मेरा पालक है मेरा रक्षक है। वाह रे ससार वालों ! जो एक अरब छियानवे करोड आठ लाख तरेपन हजार निन्यानवे वर्षों से हम सभी की रचना पालना आदि करने वाला है हम उसका दामन छोड करोडो को अपना भगवान मान बैठे हैं जो वास्तव मे कुछ भी नहीं हैं ऐसी अवस्था मे हमारा कल्याण कैसे हो सकता है। कैसे समस्त दु ख भय चिन्ताओ से मुक्ति मिल सकती है। इस घटना से हमें प्रेरणा मिलती है कि जब तक आत्मा में एक पवित्र सकल्प एक दृढ विश्वास एक व्रत धारण नहीं होता तब तक परमपिता परमात्मा के साथ हम योग स्थापित नहीं कर सकते। सम्बन्ध नहीं जोड सकते ससार मे आते रहेगे। भटकते रहेंगे मन को दौडाते रहेगे लेकिन उपलब्धि कुछ नहीं होगी। हमारे ऋषियो का कथन है –

मन और चित्त दोनो एक हैं और जड पदार्थ हैं। इसको हम अपनी इच्छा से स्वय दौडाते हैं। हम चाहते हैं कि ससार के सभी अच्छे लगने वाले पदार्थ सदा हमारे साथ रहे। एक पल के लिए भी दूर न हों इसीलिए इन्हीं में अपने आप को उलझाए रखना चाहते हैं। जिन्हें हम पसन्द नहीं करते अर्थात् जो हमें अच्छे नहीं लगते उन्हे दूर करना चाहते हैं अर्थात इन अच्छे या बुरे पदार्थों को हम स्वय अपनी इच्छा से जगाते व दूर करना चाहते हैं। ये सभी स्वय अपने आप नहीं आते। अच्छी वृत्तिया आने पर सुख मिलता है और बुरी प्रवृत्तियो की तरफ जाने पर कष्ट होता है। यही सिद्धान्त लौकिक ससार व आध्यात्मिक ससार पर घटित होता है। अच्छे कर्म करन से जीवात्मा पर अच्छे सस्कार बनते हैं। रजोगुण तमोगुण व सतोगुण के द्वद मे रजोगुण तमोगुण दब जाते हैं और सतोगुण ऊपर उठकर आत्मा पर प्रभाव डालते हैं। मन शान्त होकर उस सच्चे आनन्द का शान्ति का सुख का प्रसन्नता का दया का मुस्कान का अनुभव करते हुए अपने ससार के कल्याण की कामना करता है। ऐसी वृत्तिया सदा सुखदायी व उस मार्ग की ओर ले जाने मे प्रेरित करती है जो जीवन का अन्तिम लक्ष्य है। इसके विपरीत आने वाली वृत्तियो पाप की ओर झूठ छल कपट अहकार चोरी बेईमानी भोग–वासना व अपने स्वार्थ की सिद्धि की ओर प्रेरित करती है। यह ससार जीवात्मा का अपने विकास करने के लिए अल्पज्ञता से बहुअजता की ओर जाने के लिए मिला है। साथ में मनुष्य कर्म करने मे स्वतन्त्र है। बुरे कार्यों को करने व उन ओर जाने में पूरी तरह से स्वतन्त्र है। परमात्मा हाथ नहीं पकडता।

जब कोई प्राणी स्वार्थ की सिद्धि के लिए परहानि करता है या परहानि के विचार अपने भीतर लाता है तो परमात्मा के विधान के अनुसार इस प्रकार के किए हुए या सोचे हुए कुविचारे के दण्ड से बच नहीं सकता'। ऐसा प्राणी पशुओ का बडा भाई कहलाता है। कभी सुअर बनता है तो कभी कुत्ता। ऐसा जीवन बहुत कष्टदायी बनता है। क्रमश

आर्यसमाज जुरहैडा जिला-भरतपुर (राजस्थान) में वेदप्रचार की भारी धूम

आर्यसमाज जुरहैडा जिला भरतपुर (राजस्थान) मे ३१ माच से १ अप्रैल २००१ तक वेद प्रचार एव यज्ञ का आयाजन किया गया। समाराह की अध्यक्षता चौ० तैय्यव हुसैन कृषि मन्त्री राजस्थान की सुपुत्री श्रीमती जाहिदा बेगम कामा ने की। इस अवसर पर प्रात काल प्रभातफेरी भी निकाली गई तथा देव यज्ञ (हवन) किया गया जिसमे मैंकडो श्रद्धालुओ ने भाग लिया। कई युवको ने धूम्रपान छोडने का व्रत लिया।। वेदप्रचार समारोह की अध्यक्षता राजस्थान के कृषि मन्त्री श्री तैयब हुसैन की सुपुत्री श्रीमती जाहिदा बेगम कामा ने की।

इस अवसर पर बोलते हुए प० नन्दलाल निर्भय ने महर्षि दयानन्द सरस्वती को मानवता का पुज बताया।

ब्रह्मचारी जयदेव आर्य बहीन तथा श्री मगल देव आर्य भजनोपदेशक वेदप्रचार मडल मेवात ने इश्वर भक्ति व महर्षि दयानन्द जी की महिमा के भजन सुनाए जिन्हे सुनकर श्रोता झूम उठे। मा० ओमप्रकाश आर्य न २५१ रु० आर्य समाज का दान दिए श्रीमती जाहिदा बगम न महर्षि दयानन्द का दव पुरुष बताया जिन्हान स्त्रिया शूद्रा का वद विद्या पढन का पूण अधिकार दिलाया। श्रीमती जाहि‍दा बगम न आर्य समाज जुरहैडा को ४०१ रु० दान दिए। शान्ति पाठ एव प्रसाद वितरण के पश्चात समारोह सम्पन्न हुआ।

गोविन्द राम आर्य
मन्त्री आर्य समाज जुरहैडा

नव सम्वत्सर एव रामनवमी का पावन पर्व हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी गढवाल द्वारा रामनवमी का पावन पर्व बडे हर्षोल्लास के साथ मे सम्पन्न हुआ। बृहदयज्ञ तथा भजनोपदेशक श्री बच्ची राम आर्य द्वारा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र के जीवन सम्बन्धी भजन प्रस्तुत किए गए। श्रीराम को पुरुषोत्तम करार दिया गया तथा उनके पदचिन्हो पर चलने का आग्रह आर्यजनो से किया गया।

दिनाक २६ मार्च को नवसम्वत्सर का पर्व भी सम्पन्न हुआ। जिसमे बृहदयज्ञ के बाद सभी आर्यसभासदो ने पूर वष महर्षि क आदर्शो पर चलत हुए उनक विचारा क प्रचार –प्रसार का सकल्प लिया।

गगा प्रसाद सौम्य
आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी गढवाल

पूर्वी उत्तर प्रदेशीय आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर १८ मई से प्रारम्भ

आयवीर दल पूर्वी उ०प्र० के तत्वावधान मे आयवीर प्रशिक्षण शिविर दिनाक १८ मई से २७ मइ तक आर्य समाज झाबुआ सुमरपुर जिला हमीरपुर म सावदशिक आर्यवीर दल के प्रधान सचालक डा० देवव्रत आचाय की अध्यक्षता मे लगगा। समस्त मडल सचालको तथा जिला के सभा प्रधान से यह अपेक्षा की जाती है कि अपने जनपद से कम स कम दो आर्यवीर इस प्रशिक्षण शिविर मे अवश्य भेजें। शिविर का प्रवेश शुल्क २५ रु० प्रति शिविरार्थी है तथा वे आर्यवीर के पूर्ण गणवेश मे भाग ले सकेगे।

ज्ञातव्य हा कि इस शिविर से प्रशिक्षित आयवीरो को ही गाधीधाम क दिनाक ४ जून स १६ जून तक लगने वाले राष्ट्रीय शिविर म भाग लेने की अनुमति दी जाएगी।

शिविर कार्यालय
श्री रामेश्वर प्रसाद आर्य
आर्यसमाज भरुआ सुमर पुर हमीरपुर
फोन– ०५२८२–४३११७
– प्रमोद आर्य सचालक
आयवीर दल पूर्वी उत्तर प्रदेश

लन्दन में बी.बी.ए. रेडियो पर आर्यसमाज का प्रचार

आर्यसमाज लन्दन। वन्दे मातरम भवन लन्दन के कार्यों से प्रभावित होकर ब्रिटिश बोर्न एशियन (B B A Radio) ने आयसमाज लन्दन को चार सप्ताह तक वेदिक धम क प्रचार प्रसार क लिए आमन्त्रित किया। जिसमे आयसमाज के प्रधान प्रो सुरन्द्रनाथ भरद्वाज पुराहित प० रामचन्द्र शास्त्री त० [illegible] श्री [illegible] आर्यसमाज क आजीवन सदस्य श्री बलदेव मोहन मेहता तथा कवि श्री यशपाल गुप्ता ने वद मन्त्र व्याख्या ऋषि जीवन पर विचार तथा माध्यम से रोचक प्ररणा प्रद बी बी ए रेडियो द्वारा प्रचार प्रसार किया।

यहा की स्थानीय जनता ने इस कायक्रम की बहुत प्रशसा की तथा इससे अत्यधिक प्रभावित हे। क्याकि यूरापीय जीवन अधिक व्यस्तताओ से पूण है। जा लाग आयसमाज नही जा सकत व रेडियो द्वारा कायक्रम सुनकर अपन [illegible]। इस तरह के [illegible] भविष्य म भी होते रहेग।

– मन्त्री
आर्यसमाज लन्दन यू के

खुल कर हँसना – हृदय की औषधि

प्रसन्नता शरीर की एक बहुत उत्तम औषधि है। यह सत्य है कि प्रसन्नता और स्वास्थ्य एक दूसरे के मित्र हैं। जो व्यक्ति सदा प्रसन्न रहता है वह सदा स्वस्थ रहता है। स्वस्थ व्यक्ति सदा प्रसन्न रहता है। प्रसन्न रहने वाला व्यक्ति कभी बीमार भी हो जाये तो वह इस समय को प्रसन्नता मे ही व्यतीत करता है। जो व्यक्ति हर बात पर चिन्तित रहता है उसे प्रसन्नता प्राप्त नही होती। चिन्ताग्रस्त व्यक्ति सदा रोगी रहता है।

डाक्टरी वैद्यो का भी यह सत्य अनुभव है कि हसने से हृदय को लाभ होता है। खून मे गति आती है। इससे भोजन की पाचन शक्ति भी बढती है। जीवन एक चुटकला है – अत इसे स्वस्थ रखने के लिए चुटकलो की आवश्यकता है। कुछ वैज्ञानिको का कहना है कि खुलकर हसने से खून की नाडिया फैलती हैं तथा खून अधिक गति से निर्धारित स्थान की ओर बढना है। उसका कहना है कि जिन लोगो के हाथ पाव ठण्डे रहते हैं उन्हे खूब हसना चाहिए – खुले मैदान या किसी बाग मे खेतो मे जाकर हसना चाहिए।

एक वैज्ञानिक का कहना है जिसन हसन पर शोध पत्र लिख हे कि हसन स शरीर का आराम मिलता है जितना ४५ मिनट शरीर का दबाने से आराम मिलता हे उतना आराम एक दो मिनट खुलकर हसने से मिल जाता है। हृदय का आराम मिलता है उसकी गति साधारणतया आती है। दुख दूर होते हैं। मन को सुख और शान्ति मिलती है। खासी नजला जुकाम से छुटकारा मिलता है। पावो मे जुराब या हाथो मे दस्ताने आदि डालने की आवश्यता महसूस नहीं होती।

एक अन्य वैज्ञानिक न अपनी एक पुस्तक मे लिखा है कि जिन्हे नीद नहीं आती या नींद के लिए गोलिया खाते हैं ऐसा व्यक्ति यदि ४५ ५० मिनट तक मन मे हसे खुलकर हसे तो उसे ५ ६ घटे की गाढी निद्रा आयेगी। जो लोग बिस्तरे से जुडे रहते हैं या दिन का अधिकाश भाग कुर्सी पर बैठकर काम करते है या जिन्हे कोई व्यायाम करने का समय नहीं मिलता उनके लिए हसना जरूरी है। दैनिक २५ ३० मिनट प्रात हसना चाहिए इससे उनके शरीर के अवयवो को आक्सीजन मिलती है जैसे हम शरीर के लिए दैनिक व्यायाम करते हे हसना भी एक प्रकार का व्यायाम हे।

प्रवेश सूचना

प्रथम पाठयक्रम महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक (हरियाणा) से मान्यता प्राप्त। मध्यमा शास्त्री आचाय तक अध्ययन सुलभ ह। छद दशन उपनिपद सस्कत याकरण एव साहित्य तथा सभी सस्कार स्वामी दयानन्द जी द्वारा लिखित सभी ग्रथ उपदश भजनापदश का प्रशिक्षण पाना अनिवाय ह।

योग्यता – सातवीं कक्षा पास प्रवश क लिए आवदन कर।

द्वितीय पाठयक्रम – पुराहित उपदशक एव भजनापदेशक का प्रशिक्षण पाने वाले छात्र आवेदन कर सकते हैं।

योग्यता – न्यूनतम दसवीं कक्षा पास।

नोट दानो प्रकार के पाठयक्रमो के प्रशिक्षण क लिए निःशुल्क व्यवस्था है। आवेदन पत्र जमा करने की अन्तिम तिथि ३१ मइ २००१ हे।

आचार्य विद्यादेव
महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय टकारा
जिला राजकोट
टकारा ३६३६५० (गुजरात)

३ अध्यापकों की आवश्यकता

गुरुकुल आयनगर (हिसार) म ऐसे अध्यापको की आवश्यकता है जो गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के पाठयक्रमानुसार दशमी कक्षा तक गणित विज्ञान तथा अग्रजी पढा सक। इसक अतिरिक्त एक सस्कत शास्त्री अध्यापक की भी आवश्यकता हे। वेदिक (आर्य) विचारधारा के अध्यापक का प्राथमिकता दी जायेगी। इच्छुक अध्यापक निम्न पते पर मिले अथवा पत्र व्यवहार करे।

गुरुकुल हिसार शहर स बालसमन्द मार्ग क पाचवे किलामीटर पर नहर के किनारे स्थित हे।

(निवेदक)
प्राचार्य गुरुकुल आर्यनगर
पो० आर्यनगर
जिला हिसार (हरियाणा) १२५००१

वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढना पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।

आर्यसमाज नैरोबी ने स्थापना दिवस हर्ष एवं उल्लास से मनाया

२ अप्रेल रविवार को आर्यसमाज नैरोबी ने आयसमाज का स्थापना दिवस अत्यत हर्ष एव प्रसन्नता के साथ मनाया। कार्यक्रम का आरम्भ हवन यज्ञ स आरभ हुआ। जिसमे आय जना ने अति उत्साह क साथ भाग लिया। यज्ञ के पश्चात प० रामकृष्ण शमा न आय समाज की स्थापना के विषय म अपन विचार व्यक्त किए तथा उन महान आत्माआ का श्रद्धाजली अर्पित की तथा कहा कि **हमें आर्यसमाज की उन महान विभूतियों के बलिदान को सदा स्मरण रखना चाहिए। जिन्होंने आर्यसमाज के लिए अपना तन मन धन वार दिया।** इससे पूर्व प्रातःकाल रडियो पर आर्यसमाज क स्थापना दिवस क उपलक्ष्य म बालते हुए भी प० जी न पूर्वी अफ्रीका म आर्य समाज के द्वारा किए गये शिक्षा सुधारो तथा सामाजिक सुधारा क विषय म लागा का परिचित करवाया शेष कायक्रम महर्षि दयानन्द भवन म सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर भारत के **केन्या मे उच्चायुक्त श्री राजीव जी भाटिया** मुख्य अतिथि थ। सर्वप्रथम आय स्त्री समाज की बहनो ने प० राम कष्ण शमा के साथ मिलकर दा भजन गाए। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा क प्रधान श्री सुरेन्द्र जी विनायक तथा आय समाज नैरोबी के प्रधान श्री कुलभूषण जी विद्यार्थी न पूर्वी अफ्रीका की सभी आर्य समाजों की ओर से पाच लाख का चैक Gujrat Earth quake Relief Fund के लिए भेट किया और साथ ही इतनी ही राशि का चैक महर्षि दयानन्द जी की जन्मभूमि टकारा **जहा पर उपदेशक महाविद्यालय चलता है** को देने की घोषणा की गई। **(स्मरण रहे कि प० राम कृष्ण शर्मा उपदेशक महाविद्यालय के ही स्नातक हैं और पिछले बीस वर्षो से अफ्रीका मे** आर्यसमाज का कार्य कर रहे ह उन्हीं की प्ररणा का फल ह कि टकारा को ... शिलिग की राशि देने का निर्णय ... प्रतिनिधि सभा पूर्वी **अफ्रीका** तथा आर्यसमाज नगरी ने **लिया)** Quake Relief Fund क लिए चक भारतीय उच्चायुक्त का दिय। इस अवसर पर भारतीय उच्चायुक्त श्री राजीव भाटिया न सभा को सम्बोधित किया तथा आर्यसमाज द्वारा जन कल्याण के लिए किए गए कार्यो की प्रसशा की। इस कार्यक्रम के बाद अन्त म आय स्त्री समाज की बहनो ने धन्य हे तुझको हे ऋषि का गान प० रामकृष्ण शर्मा के साथ मिलकर गाया।

– मन्त्री आर्यसमाज नैरोबी

महात्मा हसराज जीवित शहीद थे

क ... । ... ८० ... प्रथम भारतीय ... महात्मा हसराज न अपना ... समाज और ... डी० ए० वी० ... को समर्पित कर दिया। उन्होन डी० ए० वी० कालेज लाहोर स जीवन भर कभी भी कोइ वेतन नहीं लिया। वास्तव म महात्मा हस राज जीवित शहीद थे। आज अर्थ के पीछे भागने वाल राजनैतिक नेताओ को उनसे सबक लेना चाहिए।

उपरोक्त विचार आय नेता समाज तथा केन्द्रीय आर्यसभा क प्रधान श्री देवीदास आय न आयसमाज मन्दिर गोविन्द नगर क सभागार मे आयोजित महात्मा हसराज जयन्ती समारोह की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये।

श्री आर्य ने आग कहा कि महात्मा हसराज का जीवन सरल विनम्रता त्याग तपस्या समर्पण भावना से भरा था। उन्होने डी० ए० वी० कालेज लाहौर क प्राचार्य के नाते छात्रो मे देश भक्ति की प्रेरणा प्रदान करते हुए भगत सिह जैसे अनेक छात्रो को क्रान्तिकारी बनाया।

समारोह मे प्रमुख रूप से सर्व श्री देवीदास आर्य शिव कुमार आर्य प० सत्यकेतु शास्त्री डा० कु० निष्ठा वदालकार श्रीमती दशना कपूर मनोरमा देवी सरोज अवस्थी ने विचार व्यक्त किय। सभा का सचालन मत्री श्री बाल गाविन्द आय न किया।

... ८ ... की आयसमाज क ताड ... का निन्दा प्रस्ताव सवसम्मति स पारित किया गया।

बालगोविन्द आर्य मन्त्री

आवश्यकता है

एक प्रचारक/सम्पर्ककर्ता (पुरोहित नही) की आवश्यकता है जो आर्य व इतर परिवारो म आयसमाज की ओर से सम्पर्क कर आय विचारधार का परिचय दे।

वाछित योग्यता स्नातक विशेषत सस्कत हिन्दी इतिहास समाजशास्त्र तर्क दर्शन आदि विषयो म गुरुकुल स्नातक आर्यवीर को प्राथमिकता दी जायेगी। मराठी भाषियो का वरीयता दी जायेगी। सामान्य निवास के अतिरिक्त उचित पारिश्रमिक दिया जायेगा। अपने पूर्ण विवरण चित्र व अपेक्षाओ सहित ३१ मई २००१ तक लिखे या सम्पर्क करे।

आर्यसमाज पिम्परी
पुणे ४११०१७ (महाराष्ट्र)
फोन ०२० ७४५ ७४०७/७४५५८३०
साय ५ से ८ बुध/रवि को छोड़कर
फैक्स ४४७३८२८

आर्यसमाज आदर्शनगर, नजीबाबाद मे समारोह

आर्यसमाज आदर्शनगर नजीबाबाद के तत्वावधान म त्रिदिवसीय वार्षिक समारोह दिनाक २५ ... मई २००१ का ... समायोजित ... रहा है। ... इस अवसर पर आयजगत के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य रामकिशोर शर्मा (सोरो) डा० वेदपाल जी (बड़ौत) स्वामी वेदमुनि परिव्राजक आचार्य विष्णुमित्र आर्य (नजीबाबाद) व श्री वेगराज आर्य भजनोपदेशक (गाजियाबाद) के महत्वपूर्ण प्रवचन होगे।

आयोजन मे श्रद्धालु जनता सादर आमन्त्रित है। बाहर से पहुचने वाले सज्जनो के लिये आवास व भोजन की समुचित व्यवस्था है।

सन्तोषबाला आर्या प्रधान
आर्यसमाज आदर्शनगर नजीबाबाद

छठा वैदिक धर्म, चर्चा, सम्मेलन एव आध्यात्मिक शिविर

आय समाज (वेद व्यास डी० ए० वी० विद्यालय) विकासपुरी नई दिल्ली के तत्वावधान म एव प्रधानाचार्या चित्रा नाकरा जी के निर्देशन मे भौतिकवाद की भयकर ज्वालाओ म जलते हुए जनमानस को आध्यात्मिक चेतना की ओर उन्मुख करने तथा मानवीय मूल्यो को पारलौकिकता से जानकारी कराने हेतु इस वर्ष भी दिनाक २८ २९ तथा ३० मार्च तक "ब्रह्म ज्ञान की आवश्यकता आनन्द का स्वरूप और उसकी प्राप्ति के उपाय मानवीय मूल्यो के सवर्द्धन मे शिक्षा और शिक्षक की भूमिका" आदि विभिन्न विषयो पर वैदिक विद्वानों का मार्ग दर्शन प्राप्त हुआ।

सम्मेलन का उदघाटन करते हुए श्री मदन लाल जी खन्ना महासचिव डी० ए० वी० कालेज मैनेजिग कमेटी ने कहा कि आज के युग मे लोगो मे ब्रह्म को जानने की जिज्ञासा कम हुई है। तेजी से नास्तिकता बढ रही है। मनुष्य के आचरण मे गिरावट आ रही है। प्रिसिपल चित्रा नाकरा न पाश्चात्य भोगवादी समाज से अपनी दिव्य वैदिक सस्कृति को बचाने क आवाहन करते हुए कहा कि अगर मानव सुख शान्ति ओर समृद्धि चाहता ह तो उस ऋषियो के बताये हुए मार्ग पर चलना होगा।

तदुपरान्त प्रिसिपल श्रीमती आदर्श कोहली ने भी ब्रह्म ज्ञान की आवश्यकता पर बल दिया। आर्य जगत के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान स्वामी यज्ञमुनि जी महाराज ने कहा कि "बिना ब्रह्मज्ञान के मानव सच्ची शान्ति और परमानन्द को प्राप्त नही कर सकता।

सम्मेलन के दूसरे दिन प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा० महेश विद्यालकार जी ने आत्मा के स्वरूप और आनन्द प्राप्ति के उपायो पर बल दिया और कहा कि जिसने आत्मा को परमात्मा को न जाना उसने कुछ भी न जाना"। श्रीमती उदेश आर्या ने भजन के माध्यम से ईश्वर की शक्तियो का वर्णन किया। प्रिसिपल श्रीमती सुदर्शन महाजन ने मानव आनन्द की अनुभूति किन किन क्षेत्रो मे करता है। इस विषय पर विस्तार से चर्चा की।

सम्मेलन के अन्तिम दिन हसराज कालिज के सस्कृत विभाग के अध्यक्ष डा० जयपाल विद्यालकार जी ने आज के समय मे शिक्षा कैसी हो और शिक्षा देने मे शिक्षक की भूमिका क्या हो ? विषय पर विस्तार से चर्चा की।

इस अवसर पर शिक्षा के क्षेत्र मे समाज सेवा म प्रशसनीय उपलब्धियो के लिए शिक्षा परामर्शदाता श्री खेमचन्द जी खेर आचार्य भगवानदेव वेदालकार एव श्री विजय आर्य को उत्कृष्ट वैदिक साहित्य प्रशस्ति पत्र शाल महर्षि दयानन्द का बडा चित्र श्री फल देकर सम्मानित किया गया। इसी अवसर पर विद्यालय के कर्मचारी श्री बाबूलाल श्री मुकेश को भी कम्बल महर्षि का बडा चित्र और फल देकर सम्मानित किया। श्रीमती रजनी वासुदेव मन्त्री ने आर्य समाज (वेदव्यास डी० ए० वी० विद्यालय) के माध्यम से समाज सेवा के क्षेत्र मे उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर विद्यालय कैन्टीन के प्रबन्धक श्रीमती एव श्री दत्ता जी ने सम्मेलन मे उपस्थित सभी अभ्यागतो को ऋषि लगर (प्रीति भोज) देकर आदर्श प्रस्तुत किया।

सम्मेलन के सभी दिवसों में श्री हरेन्द्र शास्त्री जी ने सयोजन किया। श्री हरिदेव आर्य श्री देवेन्द्र विद्यालकार एव आचार्य भगवानदेव वेदालकार जी ने वातावरण की शुद्धि सुख शान्ति के लिए पवित्र यज्ञ कार्य सम्पन्न कराया। सम्मेलन के अन्त मे प्रधान श्रीमती चित्रा नाकरा जी ने विद्वान अभ्यागतो का धन्यवाद किया। इस अवसर पर मुख्य यजमान पद को श्रीमान खेम चन्द जी खेर श्रीमती विजय खेर श्रीमती सूर्या शर्मा श्रीमती सोनाली तनेजा एव श्रीमती नीरज ज्योति ने सुशोभित किया। शान्ति पाठ एव प्रसाद वितरण के बाद सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

प्रतिष्ठा में –
10150 पुस्कालाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
जिला हरिद्वार (उ०प्र०)

आर्य संगठन दृढ बनाओ

– *स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती*

आर्य सगठन दृढ बनाओ
दूर अधेरा करो दिलो का मन से घृणा द्वेष मिटाओ।
आर्य सगठन दृढ बनाओ।

धन धर्म सुकर्म कमाते रहो सत्य मार्ग बतलाते रहो।
चेतन अविनाशी ईश्वर का जम को बोध कराते रहो।।
जड पूजक जनो को सन्ध्या हवन सिखाओ।
आर्य सगठन दृढ बनाओ।

स्वार्थमयी यह भौतिकता युग सबको नाच नचाय रहा।
राजनीति मे कूद पडे कुर्सी को मन ललचाय रहा।।
बेल फूट की ले अगडाई मिलकर काट गिराओ।
आर्य सगठन दृढ बनाओ।

खुल्लम खुल्ला चौरे दाहिने होते है गडबड घोटाला।
चारो तरफ सुलगती रहती द्वेषभाव की प्रचण्ड ज्वाला।
रिश्वत लूट हत्याय होती इनका नाम मिटाओ।
आर्य सगठन दृढ बनाओ।

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रकाशन लि० द्वारा १४८८ पटोदी हाउस दरियागज नई दिल्ली–२ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५ आसफ अली रोड, नई दिल्ली–२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०९८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl net.in तथा वेबसाइट http://www whereisgod.com

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्



सार्वदेशिक

साप्ताहिक



वर्ष ४० अक ६ | २० मई से २६ मई २००१ तक | दयानन्दाब्द १७८ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ | सम्वत २०५८ | ज्येष्ठ कृ० १२

एक प्रति १ रुपया (भारत में) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

शिविरों के माध्यम से चरित्र निर्माण सरल होता है

आर्यसमाज मन्दिर तिलक नगर मे लगभग ८० क्षेत्रीय बच्चो के एक विशेष शिविर का समापन समारोह १३ मई को सम्पन्न हुआ जिसमे सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान कै० देवरत्न आर्य तथा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा उपमन्त्री श्री जगदीश आर्य तथा श्रीमती उज्ज्वला शर्मा एव नरेन्द्र आर्य मुख्य अतिथि थे। इस समारोह की अध्यक्षता श्री विमल वधावन ने की तथा सचालन आर्यसमाज के मन्त्री श्री बलदेव राज ने किया।

कै० देवरत्न आर्य ने कहा कि विज्ञान बहुत तरक्की कर चुका है और अब तो इस प्रकार के प्रयोग भी होने लगे हैं कि शारीरिक रूप मे किसी भी लक्षण से युक्त मनचाही सन्तान उत्पन्न करना भी सम्भव हो सकेगा। वैज्ञानिक इस प्रयास मे लगे है कि माता–पिता चाहे तो गोरे रग का बच्चा लम्बे कद का छोटे कद का मोटा या पतला जैसा चाहे वैसा बच्चा उत्पन्न कर पाए परन्तु आज तक कोई भी आधुनिक वैज्ञानिक न तो इस प्रयास मे सफल हो सका है ओर न उसके होने की सम्भावना है कि सन्तान का मन चाहा चरित्र कैसे बनाया जाए। उन्होने बताया कि मनचाहे चरित्र वाली सन्तान उत्पन्न करने का तरीका वैदिक धर्म के पास है। बच्चो का निर्माण जिस मा के गर्भ मे होता है उस मा को नौ महीने जैसे विचारो मे रखा जायेगा उसकी सन्तान के भी वैसे विचार बनते है और सन्तान उत्पत्ति के बाद ऐसे शिविरो के माध्यम से चरित्र निर्माण का कार्य किया जाता है। आर्यसमाज बडी गम्भीरता और उत्साह के साथ ऐसे शिविरो का आयोजन करता है।

शेष भाग पृष्ठ १६ पर

20 वें आदिवासी क्रान्ति शिविर का उद्घाटन

पवित्रता और आत्म-अनुशासन के बल पर ही राष्ट्र सेवा सम्भव

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के तत्वावधान मे २० वे आदिवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर का शुभारम्भ १४ मई को आर्यसमाज रानीबाग मे किया गया। १४ दिन तक चलने वाले इस शिविर का समापन समारोह २७ मई रविवार को प्रात १० बजे से होगा।

उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता श्री विमल वधावन ने की तथा मच सचालन माता प्रेमलता शास्त्री ने किया। इस शिविर मे आसाम मिजोरम अरूणाचल मध्य प्रदेश राजस्थान बिहार उडीसा तथा उ०प्र० के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग १०० युवक-युवतिया भाग लेने के लिए दिल्ली पहुच चुके है।

श्री विमल वधावन ने अपने उद्घाटन भाषण में शिविरार्थियो को चारों युगों का अन्तर स्पष्ट करते हुए बताया कि कलयुग में सगठन ही प्रमुख शक्ति है। हम समाज के धर्म के या देश सेवा के जो भी कार्य सम्पन्न करना चाहते हैं उन्हें समान विचारधारा वाले लोगो को सगठित करके ही किया जा सकता है। उन्होने बताया कि वैदिक धर्म समूचे विश्व का मूल धर्म है और सतयुग त्रेता युग और द्वापर युग तक वैदिक धर्म की एक प्रभावशाली जीवन्त परम्परा थी परन्तु महाभारत काल के बाद शस्त्र और शास्त्र के विशेषज्ञों की कमी हो जाने के कारण वैदिकधर्मियों की दशा उन अनाथ बच्चो की तरह हो गई जिनको हर परिचित अपने दृष्टिकोण से अलग-अलग प्रकार का मार्ग दर्शन देता है। इस तरह वैदिक धर्मियो को मार्ग दर्शन देने के लिए विगत ५००० सालों के दौरान कई प्रकार के मत और पथ पैदा हो गए। सबने अपनी अलग-अलग पुस्तक धर्म ग्रन्थ के रूप मे लिखकर समाज में अलगाववाद के बीज बोए जिसके कारण धर्मान्तरण जैसी बीमारिया फैलनी प्रारम्भ हो गई।

उन्होने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इन्हीं अलगाव रूपी बीमारियो का आभास करते हुए मूल की ओर जाने का निर्देश दिया। सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से उन्ही मूल वैदिक मान्यताओं को आर्यों के समक्ष प्रस्तुत किया। उन्होंने गायत्री मन्त्र को वेदों का मूल मन्त्र बताया क्योंकि इसके 'धियो यो न प्रचोदयात्' नामक एक सगठनात्मक एव सामूहिक प्रेरणा थी।

इस प्रार्थना मन्त्र में हम केवल अपनी बुद्धि को ही सन्मार्ग पर ले जाने की प्रेरणा नहीं करते अपितु सब की बुद्धियो के लिए सन्मार्ग की प्रार्थना करते है।

उन्होंने कहा कि पवित्रता और आत्म अनुशासन के बल पर ही राष्ट्र रक्षा की जा सकती है। इन लक्षणो के बिना जो सामाजिक कार्य होते हैं उन्हे राजनीतिक कहना ही उचित है।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन और सिद्धान्तों पर बनने वाला धारावाहिक 'प्रकाश' अन्तिम चरण में

हाल ही मे मुम्बई मे आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर महर्षि दयानन्द के जीवन और सिद्धान्तो पर एक विस्तृत दूरदर्शन धारावाहिक प्रकाश के निर्माण की घोषणा सत्या इन्टरप्राईजेज के निर्देशक श्री रजन ठाकुर ने आर्य जनता को दी। इस धारावाहिक की कथा पटकथा तथा सवाद आदि पर धर्मार्य सभा ने कुछ विसगतियो की ओर सकेत किया था। जिनके निराकरण करने के बाद तीन प्रमुख वैदिक विद्वानो सर्व श्री डॉ० स्वामी सत्यम डॉ० सोम देव शास्त्री तथा आचार्य वागीश शर्मा ने भी विसगतिया दूर करवाकर इस धारावाहिक को अनुमति प्रदान करने की स्वीकृति दे दी थी। तदोपरान्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने अनापत्ति प्रदान की।

सत्या इन्टरप्राईजेज के निदेशक श्री ठाकुर तथा सह निर्माता श्री इन्द्रकुमार मेहता ने बताया कि इस धारावाहिक को बडे पवित्र और परोपकारी लक्ष्यो से युक्त भावनाओ के साथ तैयार किया जा रहा है। इस धारावाहिक के लिए विश्व प्रसिद्ध सगीतकार श्री रविन्द्र जैन को अनुबन्धित कर दिया गया है फोटोग्राफी आदि के लिए प्रसिद्ध कैमरामैन श्री अशोक चक्रवर्ती भी अनुबन्धित हैं।

उन्होने बताया कि इस धारावाहिक का प्रारम्भ सृष्टि उत्पत्ति के पूर्ण वैज्ञानिक प्रस्तुतीकरण से किया जाएगा। और प्रारम्भिक बहुत सी कडियो मे पिछले तीनो युगों को सक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करते हुए महाभारत काल के बाद समाज में उत्पन्न कुरीतियो का मूल जैसे नारी पतन की दासता मुगलों फिर ईसाई शासको के आने के उपरान्त इस देश की सामाजिक व्यवस्था पर प्रहार तथा इन सब कारणों से भारत माता की गुलामी और बुराइयो के इस दुष्चक्र के मध्य एक महान योगी महर्षि दयानन्द जी का उदय तथा उसके साथ सनातन वैदिक सभ्यता और सस्कृति की झलक प्रस्तुत करने की योजनाओ के साथ इस धारावाहिक की कथा पटकथा आदि तैयार की गई है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान कै० देवरत्न आर्य भी इस धारावाहिक के निर्माण में अथक प्रयास कर रहे हैं तथा सत्या इन्टरप्राईजेज को आर्यसमाज की ओर से हर प्रकार का सहयोग एव मार्गदर्शन प्रदान कर रहे है। उन्होने बताया कि इस धारावाहिक का प्रसारण सम्भवत इसी वर्ष प्रराम्भ होने की पूरी सम्भावनाए है।

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

सह-सम्पादक
विमल वधावन एडवोकेट

धर्म के कार्य हंसी-खुशी के माहौल में सम्पन्न करने चाहिएं

आर्य समाज मन्दिर जनकपुरी सी ब्लाक द्वारा गत सप्ताह ४ दिन के लिएँ प्रात ४ ४५ से ६ १५ तक प्रभात फेरियो का आयोजन किया गया। अन्तिम दिन की प्रभात फेरी मे श्री विमल वधावन एडवोकेट के साथ मैं भी शामिल हुआ। वितरित करने का निवेदन करते थे जिसके कारण बच्चे विशेष रूप से इस ओर आकर्षित हुए।

इस प्रभात फेरी से एक दिन पूर्व रात को जब श्री विमल वधावन ने मुझे कहा कि सुबह ४ ३० बजे आपको मेरे



आर्यसमाज मन्दिर सी ब्लॉक जनकपुरी द्वारा प्रात ब्रह्मवेला मे ४ ४५ पर प्रारम्भ की गई प्रभात फेरी का भव्य दृश्य। (१) सोमदत्त महाजन प्रधान स्थानीय आर्य बन्धुओ के साथ (२) श्री विमल वधावन एव जी जगदीश आर्य (३) आर्य महिलाए पूर्ण उत्साह और उमग के साथ ईश्वर की जय जयकार और भजन मे मग्न।

साथ एक कार्यक्रम मे चलना है तो मुझे बडा विचित्र सा लगा उन्होने कार्यक्रम को रहस्यमयी बनाए रखा फिर भी मैं प्रात ४ ३० बजे बाहर मार्ग पर उन्हे मिला मुझे और भी अधिक हैरानी हुई जब मैंने देखा उनकी कार मे उनके साथ उनकी पाच वर्षीय बच्ची भी थी। उन्होने मुझे बताया कि हम इस प्रभात फेरी मे जा रहे है अभी रात्रि का अन्धकार मडरा रहा था और हम खुशी-खुशी धर्म प्रचार यात्रा में शामिल होने जा रहे थे। मार्ग मे पुलिसकर्मी अभी भी रात्रि मे वाहन चैक करने का कर्त्तव्य निभा रहे थे। हमे भी रोका गया। इस प्रकार जब हम ठीक ४ ४५ पर जनकपुरी पहुचे तो वहा सुखद आश्चर्य हुआ कि ३०० से अधिक सख्या मे आर्य महानुभाव जुलूस की शक्ल में चलने के लिए तैयार खडे थे। चार पाच सवारी रिक्शाओ का भी प्रबन्ध किया गया था जिससे वृद्ध महानुभावों को असुविधा न हो वे बारी-बारी से इस सुविधा का लाभ उठाते थे। लगभग आधे घण्टे की यात्रा के बाद दिन का उजाला दिखाई दिया लोग अपनी-अपनी खिडकियों से बाहर झाकते है और बडा आनन्दित महसूस करते है कि प्रातकालीन भ्रमण का यह कितना अच्छा वातावरण है कि सडको पर धर्म और चरित्र की रक्षा के नारे लगाए जा रहे है ईश्वर की प्रशसा के गीत गाए जा रहे हैं।

सूर्योदय से पूर्व ही यह प्रभात फेरी लगभग ५-६ किलोमीटर का भ्रमण करने के लिए चल पडी। इस प्रभात फेरी मे लगभग ४०० से अधिक नर-नारियो और बच्चो ने भाग लिया। बच्चो की सख्या भी १०० के लगभग थी। इस आर्यसमाज के प्रधान श्री सोमदत्त महाजन के साथ श्री प्रकाश गुप्त श्री शिव कुमार मदान मन्त्री श्री रमेश तथा मन्दिर के सभी सदस्य परिवार सहित सम्मिलित होते थे

प्रभात फेरी का प्रतिदिन लगभग ८ १० स्थलो पर स्वागत किया जाता था। कहीं बिस्कुट और कहीं नमकीन और कहीं जूस कहीं दूध तो कही आईस्क्रीम के कप वितरित किये जाते थे। श्री महाजन ने बताया कि वितरण करने वाले दानी महानुभावो मे से किसी एक को वे जान बूझकर आईस्क्रीम

इन प्रभात फेरियो के आयोजन से एक लक्षण सामने आया कि धर्मप्रचार के सब कार्य हसी खुशी के महौल मे उछलते-कूदते और खाते पीते सम्पन्न किए जाने चाहिए। ईश्वर से प्रार्थना है कि आर्यसमाज मन्दिर सी ब्लाक जनकपुरी के प्रधान सोमदत्त महाजन तथा अन्य सहयोगी आर्य बन्धुओं के उत्साह को बनाए रखे तथा यह उत्साह विश्व के समस्त आर्य बन्धुओं के लिए एक सद्प्रेरणा के रूप मे कार्य करे।

— जगदीश आर्य
उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा

उपनिषदों का सार है – गीता

गीता मे प्रतिपादित सिद्धान्तो निर्देशो और विचारो को चिकित्सा क्षेत्र से जुडे श्री राजवीर सिह आर्य ने १०८ दोहे बनाकर प्रस्तुत किया है। इस लघुग्रन्थ को आर्यसमाज की सर्वोच्च तथा आर्य जगत् के जाने माने वैदिक विद्वान आर्य तपस्वी सुखदेव जी ने इस समारोह की अध्यक्षता की।

समारोह का सचालन करते हुए श्री विमल वधावन ने कहा कि गीता



गीता दोहावली के विमोचन के अवसर पर बाए से श्री राजवीर आर्य आर्य तपस्वी श्री सुखदेव खान राज्य मन्त्री श्री जयसिंगराव गायकवाड पाटील तथा उनकी धर्मपत्नी एव श्री विमल वधावन एडवोकेट।

प्रकाशन सस्था सार्वदेशिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित करके नि शुल्क वितरण के लिए जारी किया गया।

गीता दोहावली नामक इस ग्रन्थ के लोकार्पण समारोह मे केन्द्रीय सरकार के खान राज्य मन्त्री श्री जयसिग राव गायकवाड पाटील मुख्य अतिथि थे समस्त उपनिषदो का सार है तथा वेद मे वर्णित कर्मफल सिद्धान्त की विस्तृत व्याख्या है। समस्त उपनिषदे यदि एक गाय के समान मानी जाए तो श्रीकृष्ण उन गायो के दुहने वाले हैं।

शेष भाग पृष्ठ १६ पर

पृष्ठ १ का शेष

20 वें आदिवासी क्रान्ति शिविर का उद्घाटन

उडीसा से पधारे स्वामी व्रतानन्द जी ने शिविरार्थियो को ब्रह्मचर्य की महिमा बताते हुए पवित्र जीवन जीने का उपदेश दिया। उन्होने कहा कि महर्षि दयानन्द जी बहुत उच्च कोटि के ब्रह्मचारी थे जिनके चरित्र पर कभी किसी प्रकार की उगली नहीं उठी। उन्होने कहा कि ब्रह्मचारी व्यक्ति शरीर से पुष्ट होता है और हृष्ट पुष्ट व्यक्ति समाज सेवा में भी सदैव अग्रणी रहता है।

हालैण्ड से पधारे स्वामी देवानन्द ने बच्चो को मासाहार की प्रवृत्ति से दूर रहने का निवेदन किया। उन्होने बताया कि बहुत सी विदेशी खाने पीने वाली वस्तुओ मे हडिडयो और चर्बी का चूरा मिलाया जाता है अत शाकाहारी रहने के लिए यह आवश्यक हो गया है कि हम विदेशी वस्तुओ का प्रयोग न करे।

श्री धर्मपाल गुप्त ने शिविरार्थियो को शिविर के नियम पालन मे चुस्त और सचेत रहने का आग्रह किया।

माता प्रेमलता शास्त्री ने शिविर के कार्यक्रम के साथ साथ दयानन्द सेवाश्रम सघ के भावी कार्यक्रमो को रूपरेखा भी प्रस्तुत की। उन्होने कहा कि विगत २० वर्षो से वे इन शिविरो का आयोजन कर रही है। पूरा वर्ष इन प्रान्तो मे घूम घूम कर वे इन आदिवासी बन्धुओ को प्रेरित करती है कि वे लोग विधिवत प्रशिक्षण लेकर वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार कार्यों मे सहयोगी बने। इन कार्यों मे श्री वेदव्रत मेहता तथा श्रीमती ईश्वररानी मेहता का विशेष सहयोग प्राप्त होता है।

समारोह के अन्त मे आर्यसमाज रानी बाग के प्रधान श्री चमन लाल महेन्दु ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड

क्या हुआ और क्या होगा ?



१४ अप्रैल की प्रातकालीन वेला मे मै घर से निकलकर लगभग ६ बजे सार्वदेशिक प्रेस के कार्यालय मे पहुचा जहा श्री विमल वधावन पहले से ही मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। विदेशों से पधारे रोमा समुदाय के कुछ महानुभावो के अभिनन्दन समारोह मे भाग लेने के लिए हम लोग लगभग ६ ३० बजे चल पडे। मिण्टो रोड आर्यसमाज मन्दिर के समीप स्थित उडडयन पुल के ऊपर से गुजरते समय एकदम भारी पुलिस बल की उपस्थिति पर निगाह गई। गाडी रोककर जब हमने पुल से नीचे देखा तो एकदम होश उडाने वाली हैरानी से हम देखते ही रह गए क्योकि पुल के एकदम पास खडे आर्यसमाज मन्दिर के भवन को लगभग पूरी तरह गिराया जा चुका था। पुलिस वालो की व्यवस्था थी कि वहा किसी व्यक्ति को आस पास खडे तक भी न होने दिया जाए। पुलिस के साथ कई प्रकार की झडपे हुई। हमने चारो तरफ देखा कि हजारो की सख्या मे पुलिसबल चारो तरफ पार्क का घेरा बनाकर उपस्थित था। अन्तत हम पुलिस उपायुक्त तक पहुचे जिसने अपनी डयूटी और आदेश की आड मे अपने आपको मजबूर अवस्था मे साबित करने का प्रयास किया। श्री विमल वधावन ने तो उस उपायुक्त को यहा तक कह दिया कि इसी आदेश और डयूटियो की आड में ही ३०० साल ब्रिटिश लोग हम पर हुकुमत कर गए और आपके जैसे पुलिस और फौज के आदमी उनके आदेश और डयूटियो का पालन करते रहे।

पुलिस ने एक अनैतिक और गैरकानूनी आदेश का पालन करते हुए इस मन्दिर को तोड गिराया जिसकी व्यक्तिगत रूप मे बेशक उन्हें आत्म ग्लानि हो रही थी परन्तु पुलिस बल के नाते वे अपनी धूर्तता पर थे। इस मन्दिर में आठ दस ब्रह्मचारी भी रहते थे। उनमें से कुछ को पुलिस गिरफ्तार करके ले गई और दो ब्रह्मचारियों को वहीं अपनी निगरानी में रखा गया। उन्हें टेलीफोन से किसी प्रकार का सम्पर्क भी नहीं करने दिया गया। वहीं पर हमे देखकर नजदीक आ गए ब्रह्मचारियों ने अश्रुपूर्ण अवस्था में हमें बताया कि यह सारा अभियान लगभग एक घण्टे से भी कम समय मे पूरा कर दिया गया है।

इस बीच हमे बाद मे पता लगा कि इस कार्यवाही के दौरान जामा मस्जिद के इमाम भी वहा पहुचे और पुलिस उपायुक्त को आखे दिखाते हुए कहा कि इतने बेशर्म हो गए हो कि अपने मन्दिर ही तोडने शुरू कर दिए। सडक के पार खडी मस्जिद की तरफ गलती से भी मत देख लेना।

उल्लेखनीय है कि पुल के एक तरफ यह आर्यसमाज मन्दिर था जिसके चारो तरफ स्थित सरकारी मकानों को गिराकर अब पार्क बनाया जा चुका है और विगत लगभग ५० वर्षों से यह मन्दिर यहा स्थित था। पुल के दूसरी तरफ आधी सडक को घेरे एक मस्जिद भी है।

मन्दिर के ध्वस्त हो जाने और पुलिस के समाज विरोधी दृष्टिकोण को भाप कर हम दोनो सभा भवन लौट आए और वहा बैठकर आर्यसमाज के बहुत से विशिष्ट व्यक्तियों को टेलीफोन से सूचित किया। श्री विमल वधावन ने कुछ अखबारो के कार्यालयों मे यह सूचना टेलीफोन से ही दर्ज कराई। पजाब केसरी के प्रधान सम्पादक श्री अश्विनी कुमार चौपडा इस सूचना से इतने विचलित हुए कि उन्होने तत्काल एक फोटोग्राफर पत्रकार को भेजकर कुछ चित्र और विस्तृत सूचना भी मगा ली। लगभग एक बजे तक ५० – ६० आर्य महानुभाव टूटे हुए मन्दिर स्थल पर एकत्र होकर धरने पर बैठ चुके थे। वहा पहुचने वालों मे अग्रणी थे आर्यजगत के महान सन्यासी सर्वश्री स्वामी दीक्षानन्द जी प्रि० चन्द्रदेव जी चौ० लक्ष्मी चन्द अरूण वर्मा विनय आर्य आदि प्रमुख थे।

इसके बाद मन्दिर स्थल पर यज्ञ शुरू कर दिया गया और पुलिस ने छेडखानी के उद्देश्य से बुल्डोजर को फिर से आस पास चलाना शुरू कर दिया। विरोध करने पर श्री विमल वधावन श्री विनय आर्य श्री वेद प्रकाश तथा ड्राइवर मन बहादुर को गिरफ्तार करके पुलिस स्टेशन ले जाया गया। इसके बाद पुलिस ने यज्ञ करते हुए लोगों को भी परेशान करने की नीयत से छेड छाड करना शुरू कर दिया। राक्षसवृत्ति वाले पुलिस कर्मियो ने पहली गिरफ्तारी के लगभग एक घण्टे बाद ही लगभग २० आर्यबन्धुओ को गिरफ्तार करके पुलिस स्टेशन भेज दिया। सायकाल लगभग ७ बजे के बाद सभी गिरफ्तार व्यक्तियों को तब रिहा किया गया जब चौ० लक्ष्मी चन्द और श्री राजसिह भल्ला आदि के साथ मैं पुलिस स्टेशन पहुचा। यह दूसरी गिरफ्तारी सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान सचालक आचार्य देवव्रत जी तथा उनके साथ बीस व्यक्तियो की हुई थी। इस रिहाई के बाद सभी लोग मिण्टो रोड मन्दिर स्थल पर पहुचे और जोश पूर्ण योजनाए बनने लगी। तब तक दिल्ली के असख्य लोगो को इस दु खद घटना की जानकारी प्राप्त हो चुकी थी। प्रो० शेरसिह श्रीमती प्रभात शोभा रामनाथ सहगल श्रीमती शकुन्तला आर्य आदि सहित कई लोग मदिर स्थल पर पहुच कर स्थिति को देख चुके थे।

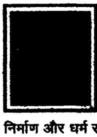
अगले दिन प्रात १० बजे एक जबरदस्त विरोध सभा मन्दिर स्थल पर ही बुलाई गई। पजाब केसरी पत्र ने प्रथम पृष्ठ पर इस समाचार को स्थान देकर तथा अन्तर्राष्ट्रीय पृष्ठ पर अन्य चित्रो को प्रकाशित करके दूर दूर बैठे देशवासियो तक यह समाचार पहुचा दिया।

आगे की कार्यवाही अगले अक मे प्रस्तुत करने का प्रयास करूगा परन्तु एक विशेष सूचना यहीं आपके साथ बाटना चाहता हू कि केन्द्र सरकार के शहरी विकास मन्त्री श्री जगमोहन ने चारो तरफ से पड रहे दबाव के कारण एक बार तो यह स्वीकार कर लिया कि मन्दिर वहीं बन जाएगा परन्तु उसके बाद फिर वे हमे टकराव की मुद्रा मे ही खड रखना चाहते हैं।

– *वेदव्रत शर्मा*

(क्रमश)

सत्याग्रह अर्थात् सत्य का आग्रह



सिद्धान्तो विचारो चर्चाओ और उद्बोधनो से अक्सर ऐसा लगता है कि राष्ट्र की मजबूती चरित्र निर्माण और धर्म रक्षा की चिन्ता सब से अधिक वैदिक धर्मियो को ही हैं परन्तु कभी कभी ऐसा महसूस होता है कि हमारे आर्यबन्धुओ को जिस गति और उत्साह के साथ अपने इन विचारो को क्रियान्वित करना चाहिए था वैसा नहीं हो पा रहा। क्रियान्वयन के क्षेत्र मे अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। भाजपा के सत्ता मे आने से देश की राष्ट्रवादी जनता में कुछ आशा जागृत हुई थी कि शायद अब देश की मजबूती के लिए कुछ ठोस निर्णय होंगे। आई०एस०आई० की आड में पाकिस्तानी गुप्तचरों और सेवा की आड में ईसाई मिश्नरियों पर अकुश लगाने के लिए वर्तमान केन्द्रीय सरकार लोगों की नजरों में पूर्णत विफल रही है।

अभी गत सप्ताह ही श्री अटल बिहारी वाजपेयी को पता नहीं किन मजबूरियों के तहत यह घोषणा करनी पडी कि बगलादेश से आए मुसलमानों को यहा से एकदम निकालना सम्भव नहीं अत उन्हे कार्य परमिट जारी किए जाएगे।

इससे भी घिनौना षडयन्त्र सेवा की आड मे ईसारी मिशनरियो के द्वारा लगातार बढता जा रहा है। इन मिश्नरियो के कारण धर्मान्तरण की गति अधिक से अधिक तीव्र होती जा रही है। धर्मान्तरण गतिविधियो के पीछे तरह तरह के लोभ लालच झूठ धोखा और दबाव की रणनीतिया काम करती है। धर्मान्तरण के कारण देश की राजनीतिक व्यवस्था वर्ष प्रतिवर्ष अनियन्त्रित सी होती जा रही है।

इन्हीं विचारो के चलते मैंने आप सबसे सत्य के नाम पर कुछ आग्रह करने की सोची। यही मेरा सत्याग्रह है और मेरी अभिलाषा है कि इस सत्याग्रह की भावनाओ को समझते हुए आप सब आर्यबन्धु, नर नारी तथा आर्य सस्थाए अपने साधनो ससाधनो और प्रयासो को धर्मान्तरण की रोकथाम के लिए आहुत करने का प्रयास करे।

२२ अप्रैल को जब आर्यसमाज मन्दिर का शिलान्यास समारोह हो रहा था तो उस समय विजय का माहौल था परन्तु मुझे अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के महामन्त्री श्री वेदव्रत मेहता और माता प्रेमलता शास्त्री ने मध्य प्रदेश के थादला स्थित आश्रम से प्राप्त कुछ अव्यवस्था वाली सूचनाए दीं। २५ तारीख को हम सब लोग थादला के लिए रवाना हुए। कुछ स्थानीय लोग मिलकर अपने अधिपत्य और अन्य स्वार्थो के कारण आश्रम की गतिविधियो मे अव्यवस्था उत्पन्न करने का प्रयास कर रहे थे। हमारे साथ श्री धर्मपाल गुप्ता तथा माता ईश्वर रानी मेहता भी थीं। इन अव्यवस्थाओं को देखने और सुलझाने के अतिरिक्त इन आदिवासी क्षेत्रो में मैंने ईसाइयों कि गतिविधियो को जिस रूप मे देखा वे पूर्णत षडयन्त्र पूर्ण लगीं।

ईसाई मिश्नरियो के पास धन और साधनो की किसी प्रकार से कमी नहीं। जिसके आधार पर वे चिकित्सा और शिक्षा सेवाओ के माध्यम से आगे बढ रहे हैं। थोडी थोडी दूरी पर विद्यालय स्थापित करने के नाम पर गाव की ही जमीनें ली जाती हैं।

शेष भाग पृष्ठ १८ पर

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर प्रस्तुत
सार्वजनिक घोषणा पत्र

यदि हम कहे कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की कथनी और करनी ने भारत के पुनरुद्धार आन्दोलन की नींव रखी, तो ऐसा कहना कोई अतिश्योक्ति नही होगी। स्वामीजी का आह्वान सभी प्रकार की सीमाओ को पार कर गया – भौगोलिक, प्रान्तीय,पथिक, राजनीतिक तथा अन्य सभी। यह आह्वान केवल भारतवासियो को जागृत करने का नहीं था, उन्होने कहा था–

'समूचे विश्व को श्रेष्ठ बनाओ'
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

१४ लम्बे वर्ष एक गुरु की तलाश मे और लगभग ३ वर्ष गुरु विरजानन्द के चरणो मे। हम इस अवधि को स्वामी जी का प्रारम्भिक काल कहते है।

जहा कहीं भी, जिस किसी प्रकार की भी बुराई उपस्थित थी, वहा स्वामी जी की भी उपस्थिति महसूस होती थी और वे उनके उन्मूलन के लिए सब सर्वोत्तम प्रयासो मे कार्यरत दिखाई देते थे अपने कार्यों के परिणामो से अविचलित। आप सब अच्छी प्रकार से जानते हैं कि कितनी बार उन्होंने मृत्यु का सामना किया और अन्त मे १८८३ ई० में विष दिए जाने के कारण उनका शरीरात हुआ।

उनकी शहादत ने, इस देश के निवासियों में एक प्रबल इच्छा पैदा कर दी थी – **देश के लिए तथा उन कारणों के लिए जीने और मरने की इच्छा जिनके लिए महर्षि ने अपने जीवन काल में वचनबद्धता प्रकट की थी।**

ईश्वर का धन्यवाद, उनके निर्वाण से पूर्व, आर्यसमाज १८७५ ई० में अस्तित्व मे आ चुका था।

मई १८७६ ई० में श्री लुकास नामक ईसाई नेता ने स्वामी जी से भेट की उनके साथ एक धर्मान्तरित ईसाई भी था। उन्होने एक प्रश्न स्वामी जी के समक्ष रखा जिसे हम यहा व्यक्त करना चाहते हैं–

"मान लीजिए आपको तोप के मुंह पर खड़ा कर दिया जाए और आपको चेतावनी दी जाए कि यदि आप एक मूर्ति के सामने सिर नहीं झुकाते तो आपको उडा दिया जाएगा। उन परिस्थितियों में आपका क्या उत्तर होगा?"

लुकास के इन शब्दो पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए स्वामीजी ने कहा – **"मेरा उत्तर होगा, मुझे उडा दिया जाए।"**

धर्म शासन को स्थापित करने का युद्ध अभी भी चल रहा है। हमे आशा है हम विजयी रहेगे और इसके लिए बहुत लम्बा समय नहीं लगेगा।

यह सच है कि स्वामी दयानन्द जी आज हमारे बीच नहीं हैं परन्तु उनकी आत्मा अमर है, वह मर नहीं सकती।

हम उस महान आत्मा को तथा उन अन्य आत्माओ को अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं जो वेदो की इस धरती पर जीए और मरे – वैदिक जीवन पद्धति के प्रचार प्रसार के लिए।

स्वामी दयानन्द जी ने सुधार के लिए एक आन्दोलन प्रारम्भ किया और वे अपने पीछे उस आन्दोलन को वसीयत के रूप में छोडकर गए हैं।

वह वसीयत बेशक हमे प्राप्त हुई है।

आइए, कुछ आत्मावलोकन करे कि अबतक हमने क्या किया है ?

हम यह नहीं कहते कि स्वामी दयानन्द जी द्वारा छेडा गया भारतीय अभियान असफल रहा है।

आर्यसमाज की स्थापना १८७५ मे हुई। इसके नाम से हमने बहुत सी गतिविधिया सुनी। स्वामी श्रद्धानन्द तथा प० लोकमान्य तिलक जैसे नेताओ ने अपने खून का बलिदान दिया। वे इस अभियान मे सफल हुए और ब्रिटिश हकूमत अर्थात् उपनिवेशवाद का इस धरती पर समापन सम्भव हो सका।

परन्तु यह केवल एक अस्थायी चरण ही साबित हुआ।

. आज आर्यसमाज की शाखाएं लगभग पूरे विश्व मे फैली हुई हैं, अनुमानतः ८०००। परन्तु क्या वे सभी चुस्त हैं?

हमारा यह कहना नहीं है कि स्वामी दयानन्द जी द्वारा चलाया गया आर्यसमाज आन्दोलन असफल हो चुका है। अब यह धीमी गति से चल रहा है। **कारण, हम आर्यसमाज मन्दिर खोलकर पदों को धारण करने की ओर ध्यान देते हैं, और किसी कार्य की ओर ध्यान नहीं देते।**

सगठनात्मक ढाचे में सत्ता का लोभ तथा सत्ता के प्रतिद्वन्दियो मे आपसी खींच–तान – इनका हमे तत्काल त्याग करना होगा, इससे पहले कि स्वामी दयानन्द जी का आन्दोलन निष्फल हो जाए। आर्यसमाज के सदस्यों, सभासदो और अधिकारियो मे आध्यात्मिकता बढाने के उपायो पर विचार करना चाहिए, प्रयास करने चाहिए।

हमारे पास स्वामीजी की महान् रचना – 'सत्यार्थ प्रकाश' है जिसे हम उनका अमर ग्रन्थ कहते हैं। इस का अनुवाद भारत की लगभग सभी भाषाओं में तथा कुछ विदेशी भाषाओं मे भी हो चुका है। आज हमे एक प्रबल इच्छाशक्ति जागृत करने की आवश्यकता है जिससे हम इस सन्देश को सारे विश्व तक पहुंचा सकें, जिसके लिए हम जीने और मरने के लिए तैयार हो जाए।

"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"

सारे विश्व को आर्य बनाओ। आर्य शब्द का वास्तविक अर्थ है– श्रेष्ठ पुरुष, एक आदर्श व्यक्ति, एक शालीन इन्सान। यह हमारा लक्ष्य है।

पूजा का वैदिक स्वरूप

एक महान सुधारवादी के अनुयायी होने के नाते, हम यह समझते हैं कि जाग्रत अवस्था ही ज्ञान है जिसे हमारे ऋषियों-मुनियों ने त्याग, तपस्या एव अनुभव से प्राप्त किया था।

महर्षि दयानन्द ने उस गन्दगी को साफ किया, उस धूल को हटाया जो हमारी धार्मिक पुस्तकों पर पड चुकी थी तथा पवित्र वेदो की, ज्ञान की पुस्तको की एक सच्ची मानवतावादी, वैज्ञानिक, आध्यात्मिक एवं बुद्धिगम्य व्याख्या प्रस्तुत की।

हमे सन्देह की समस्त सीमाओं से परे वेद की वैज्ञानिकता का विश्वास हो चुका है कि मूर्ति पूजा सच्ची वैदिक मान्यताओं के अनुरूप विश्वास के योग्य नहीं है। हम मूर्तिपूजक बेशक न हो परन्तु हमें मूर्तिभजक होने का निर्देश भी कदापि नही दिया गया।

इसलिए अफगानिस्तान पर इस्लामिक कब्जे से पूर्व काल की बौद्ध प्रतिमाओ को नष्ट करने की तालिबानी कार्यवाही के विरोध के लिए हम समूचे विश्व की भावनाओं के साथ है।

इस प्रकार की विध्वसात्मक कार्यवाही की तुलना अयोध्या मे बाबरी ढाचे के गिरने से करना एक भूल है जो विगत कई दशको से कभी मुस्लिम भाइयों का पूजा स्थल नहीं रहा। इसके अतिरिक्त, वह भारत की धरती पर एक राजनैतिक आक्रामकता का चिन्ह था।

हमारा राष्ट्रवाद

राष्ट्र से हमारा अभिप्राय है – जनता का एक ऐसा समुदाय जिनका उद्गम, इतिहास तथा भाषा समान हो तथा वे प्रारम्भ से ही एक स्थान को अपने निवास रूप में प्रयोग करते रहे हों।

सर्वप्रथम, हम सबको यह महसूस करना चाहिए कि हम सास्कृतिक राष्ट्रवाद में विश्वास करते हैं जो किसी प्रकार की भौगोलिक सीमाओं में नहीं बंधता।

इसी अवधारणा के तहत 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का लक्ष्य हमें प्राप्त हुआ। यह कृण्वन्तो भारतम् आर्यम् नहीं था। जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि यह आन्दोलन श्रेष्ठता के प्रचार का था।

हमारे देश में
–मुस्लिम अल्पसंख्यक
–ईसाई अल्पसंख्यक तथा
–पारसी और यहूदी अल्पसंख्यक
है।

(पारसी और यहूदी तो नगण्य सख्या में ही है।)

'हिन्दू' शब्द 'सिन्धू' से उत्पन्न हुआ है। 'सिन्धू' नाम है एक नदी का, जो कि भारत के उत्तर पश्चिम में बहती है, इसे हम 'इन्डस' भी कहते हैं।

हिन्दुस्तान सात नदियो का स्थान है– जिसे सप्त सिन्धु कहा जाता है। ये सात नदिया हैं – गंगा, यमुना, कृष्णा, कावेरी, सिन्धु, गोदावरी और नर्मदा।

हमारी मातृभूमि ने सिन्धु नदी से अपना आधुनिक नाम प्राप्त किया। हिन्दू आर्य अर्थात इस प्रकार ऐतिहासिक रूप मे तथा इस मातृभूमि के मूल निवासी होने के नाते राष्ट्रीय समुदाय के गिने जाते है। हिन्दू का अर्थ सिख जैन तथा बौद्ध के अनुयायियो को शामिल करके ही समझा जाना चाहिए।

आज के बहुत से मुस्लिम तथा ईसाई बीते हुए कल के हिन्दू ही थे। यहा तक कि हिन्दुओ का अन्य समुदायो तथा जीवन पद्धतियो मे धर्मान्तरण आज भी चल रहा है।

हमारा उनसे केवल यही कहना है कि –

"कृपया बहते युग के इतिहास को महसूस करे और भारत के सच्चे नागरिक बने।"

इसका अभिप्राय यह नहीं है कि आप अपने पथ को छोड दे। परन्तु लालच या ताकत धोखे और दबाव के बल पर धर्मान्तरण को अवश्य ही छोड दे। यह हमारे सविधान की आत्मा जैसा कि हम उद्घोषिका मे पाते हैं का उल्लघन है।

हम आपका ध्यान धर्म की स्वतन्त्रता से सम्बन्धित अनुच्छेद की ओर आकृष्ट करना चाहते है।

हर व्यक्ति को अतर्विवेक की स्वतन्त्रता तथा किसी भी मत पथ को अपनाने तथा प्रचार करने की स्वतन्त्रता है। परन्तु लालच और ताकत के बल पर धर्मान्तरण की अनुमति नही दी गई।

उन मुस्लिम देशो की सत्तावादी प्रवृत्तियो को भूलना नही चाहिए जो भारत मे विद्रोही भावनाए भडका कर भारत का कमजोर करने का प्रयास कर रहे है। आई०एस०आई० की उपस्थिति तथा विदेशी तत्वो का आवश्यकता से अधिक यहा ठहरना विशेष रूप से विदेशी मुसलमानो का और वह भी बिना वीजा इत्यादि के भविष्य के लिए अच्छे शगुन का सकेत नहीं देता।

हमारी सरकार अपराधी नीयत से दुश्मनो की इस घुसपैठ को रोक नही पा रही। भारत तथा यहा के लोगा को मृत्यु और विनाश से भी बचा नहीं पा रही।

बहुलवाद हमे अव्यवस्थाओ की ओर ले जा रहा है।

आइए हम सब मिलकर भरसक प्रयास करे भारतीय सास्कृतिक राष्ट्रवाद को बचाने का।

इस सन्दर्भ मे हम राज्यो को अधिक स्वायत्तता की माग का भी जिक्र करना चाहते है। हमारा सविधान आज एक राज्यमण्डलवादी या सघीय व्यवस्था को दृष्टिगत करता है।

परन्तु कुछ राज्यो को विशेष दर्जा देने वाले प्रावधान किसी अच्छाई का आभास नही देते।

जम्मू कश्मीर भारत का एक अविभाज्य अग है परन्तु इसका एक अलग राज्य सविधान है। नागालैण्ड मिजोरम तथा आसाम आदि राज्यो की व्यवस्था बेशक उसके समान ता नही है परन्तु उन्हे भी एक विशेष दर्जा प्राप्त है।

यह भेद भाव मुझे डर है कोई विपत्तिया न खडो कर दे।

जहा तक राष्ट्रीय भाषा हिन्दी का सम्बन्ध है उसकी अवस्था लगभग आधी शताब्दी से अधिक समय बीत जाने पर भी वही बनी हुई है।

एक ऐसी भाषा के लिए प्रेम क्यो जो ब्रिटिश लोगो की भाषा थी। हम यह देख कर अत्यन्त दु खी है।

हमे भारत की आत्मा को बचाने का प्रयास करते हुए कुछ निश्चित कार्यक्रम पुन निर्धारित करने चाहिए।

अपराधीकरण

राजनीति म अपराधियो का प्रवेश तथा समाज मे उनका बढता हुआ प्रभाव आज एक स्थापित तथ्य है। हम ऐसे अपराधी तत्वो की घुसपैठ को आर्यसमाज मे भी कुछ स्थानो पर महसूस कर रहे है बेशक यह हमारे आन्तरिक विवादो के कारण है। मेरे प्यारे भाइयो कृपया अपने होश सभालो मै केवल इतना ही कह सकता हू कि कृपया छोटे–छोटे विवादो और झगडो मे फसना छोड दो इससे पहले कि आर्यसमाज बचाने मे बहुत देर हो जाए।

पथनिरपेक्षता

हमे यह समझाया गया है कि हमारा देश एक पथनिरपेक्ष देश है

पथनिरपेक्षता शब्द से अभिप्राय किसी पथ या समुदाय से सम्बन्धित नही है। भारतीय सविधान की उदघोषणा मे भारत को एक प्रभुसत्ता सम्पन्न समाजवादी पथनिरपेक्ष तथा लोकतान्त्रिक गणराज्य बनाने की बात कही गई है।

उदघोषिका भारतीय सविधान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस उदघोषणा मे पथनिरपेक्ष शब्द को विशेष रूप से समझना चाहिए।

इस सन्दर्भ मे कृपया मौलिक अधिकारो के भाग–३ मे अनुच्छेद ३० का अध्ययन करे जो इस प्रकार है

समस्त अल्पसख्यको चाहे वे धर्म पर आधारित हो या भाषा पर उन्हे अपनी इच्छानुसार शिक्षण सस्थाए स्थापित करने तथा उन्हे चलाने का अधिकार है।

यह प्रावधान हमारा मानना है कि स्पष्ट रूप से पथनिरपेक्षता की भावनाओ के विरुद्ध है।

इसके अतिरिक्त वो समस्त प्रावधान तथा हमारी सरकारो के कार्य जो पथनिरपेक्षता की अवधारणा के विरुद्ध है तुरन्त रोके जाए। ऐसा करना समानता की स्थापना के लिए आवश्यक है।

गाय तथा गोवश का वध राकने मे हमारी सरकारो का सकोच अब एक असहनीय कार्य बनता जा रहा है। हम समस्त सरकारो से अनुरोध करते है कि गोवश के आथिक महत्व को महसूस करे तथा किसी भी कीमत पर इसकी रक्षा करे।

सकल्पो की सार्वजनिक घोषणा

धर्म की स्थापना एव अपने गणतन्त्र की रक्षा तथा भारत–आर्यावृत – को एकता के सूत्र मे बाधे रखने के लिए उन भावनाओ के अहसास की आवश्यकता है जिनके तहत हमारे पूर्वजो ने समय समय पर निम्न सकल्प एव प्रतिज्ञाए की थी –

हमारे अन्दर आर्यो का रक्त प्रवाहित है।

हम अपने इतिहास का पुनर्धारण करने के लिए समूचे विश्व के समक्ष मानव जाति के एक उज्ज्वल भविष्य की प्रतिज्ञा करते हैं।

हम सास्कृतिक एकता श्रेष्ठता मानवीय अधिकारो तथा शान्ति के लिए समर्पित है।

हम वास्तव मे उस धर्म मे विश्वास करते है जो अनश्वर है। धूर्तो को कमजोर करना तथा श्रेष्ठो के हाथ मजबूत करना हमारे जीवन्त सिद्धान्त है।

इसलिए हम सब मिलकर एक महान शक्ति के रूप मे उभरे हमारी यह शक्ति अजेय हो तथा हम करो या मरो की मानसिकता से धर्म के लिए देश के लिए एव उन सब मूल्यो और अस्तित्व के लिए प्रतिबद्ध हो।

इन प्रतिज्ञाओ को पूर्ण करने के लिए किसी भी बलिदान को हम बडा महान नही मानते।

क्रियान्वयन

आइए अपने बीच एक मजबूत अनुशासन की ताकत उत्पन्न करे हमारे व्यक्तिगत जीवनस्तर पर तथा इस विशाल सगठन के स्तर पर भी।

आइए तैयार रहे आर्यसमाज की शिरोमणि सस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रस्तावो और निर्देशो को स्वीकार करने के लिए जब कभी भी उनकी घोषणा की जाए।

– विमल वधावन

वेद समस्त सत्य विद्याओं का पुस्तक है

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, मुम्बई

आशातीत सफलता का मूल रहस्य

डॉ० स्वामी सत्यम अध्यक्ष अन्तर्राष्ट्रीय आय महासम्मेलन मुम्बई

विश्व क कोन काने स बधाई के पत्र आ रह ह। आय जना न मुम्बइ म सम्प न अ तर्राष्ट्रीय आय महासम्मलन की भूरि भूरि प्रशसा की हे। सम्मलन के दोरान एक के मुह स भी काई किसी प्रकार की शिकायत नही सुनी। यह सब कैसे हुआ ? क्या इस सब का श्रेय किसी एक को जाता है ? क्या किसी एक न ही यह सारा कमाल कर दिया ? क्या किसी का इसमे अपना कोई स्वाथ था ? नही सर्वथा नहीं।

अन्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन वास्तव मे एक महान यज्ञ था। वद कहता है – येन यज्ञस्तायत सप्तहोता । इस महायज्ञ मे भी सात होता थे जिन्होने तन मन धन अर्पित करके इस महान यज्ञ का इस तरह सम्पादन किया कि सारी दुनिया इसकी प्रशसा के गान गा रही है। व होता थे

श्री ओकारनाथ आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई

इन्होने व इनकी सहधर्मिणी श्रीमती शिवराजवती जी न ४ महीने दिन रात एक करके काम किया। दोना ने मिलकर लगभग १५ लाख रुपये का धन एकत्र किया। भाई जी प्रतिदिन बिना नागा सुबह ओर शाम आते रह और सभी योजनाओ को बनाने म पूरा योगदान देते रहे।

श्री मिठाईलाल सिह जी महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई

सम्मेलन समिति के विशेष अग थे। जब भी कोई विघ्न आता लोगो से मिलकर उस विघ्न को दूर कर देते। बडे–बडे लोगो से बडा अच्छा सम्पर्क है। पैसे की कमी कोई कमी नही आएगी ऐसा आश्वासन देकर उत्साह बढाते रहे।

श्री अरुण अब्रोल कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई

मौन कार्यकर्ता। आर्य महासम्मलन के स्थान स्थान पर बैनर लगाकर पूर्ण मुम्बइ म इस महासम्मलन की सूचना जन जन तक पहुचाई। साथ ही लगातार आन वाले धन क हिसाब आदि म कोई कसर नही उठा रखी।

श्री वेदव्रत जी मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली तथा श्री विमल वधावन जी

आय महासम्मलन म सार्वदेशिक सभा ने अनुकरणीय भूमिका निभाई। अन्तरग सभा के अधिवेशन सभी आर्य प्रतिनिधि सभाओ के प्रधानो और मन्त्रियो के अधिवशन सार्वदेशिक सभा के साप्ताहिक पत्र मे निरन्तर प्रचार व उदबोधन रेलवे मन्त्रालय से रियायत दिलवाना नेताओ से भेट करना घोषणा पत्र एव समस्त सम्मेलनो के प्रस्ताव तयार करना आदि सभी काम इन्होन ही तो किया।

कैप्टन देवरत्न आर्य उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा –

मुख्य सयोजक थे। सहस्त्रबाहु बन गए थे। दिनभर दफ्तर का काम करत और रात्रि को ठीक ७ ३० पर महासम्मेलन के कार्यालय मे आ जाते कार्यकर्ताओ की बैठके होती/हजारो पत्रा को पढा उनका उत्तर दिया। परिपत्र छपवाना दूरभाष द्वारा दश और विदेश के आर्य जनो से सम्पर्क बनाकर उन्हे अधिक से अधिक सख्या मे आने के लिए प्रोत्साहित करना। आकर्षक आमन्त्रण पत्र विस्तृत निमन्त्रण निर्देश समाचार पत्रो मे सूचना विज्ञापन तथा रोजाना का समाचार भिजवाना सम्मेलन स्थली मे प्रात ७ ३० बजे पहुचकर मच की तैयारी करनी ताकि यज्ञ के समाप्त होने के साथ ही मच का काम प्रारम्भ हो जाए। कार्यक्रम के अनुसार मच का सचालन वक्ताओ को समय के बारे मे पूर्ण अनुशासन मे रखना दिनभर मच पर उपस्थित रहकर अथक परिश्रम कर माइक पर घोषणाए करते रहना पुरस्कारो की व्यवस्था समय पालन को कठोरता के साथ लागू करना कितना काम था !! सब कुछ बहुत अच्छी तरह सम्हाला। साथ ही विभिन्न लोगो सस्थाओ तथा प्रतिनिधि सभाओ स निरन्तर सम्पर्क बनाए रखकर धन एकत्र किया विद्वान वक्ताओ का चुनाव किया राजनीतिक नताओ स सम्पर्क बनाए रखा। लोकप्रिय कप्टन जी सम्मलन की सफलता से सार भारत के प्रिय हा गए।

इन्ही कर्मठ व्यक्तियो के कारण महासम्मलन सफल हुआ। रात को ३ ३ बज तक काम होता था। कार्यालय के व्यवस्थापका श्री प० उमेश जी तथा श्री प्रभारजन जी पाठक ने रात्रि को ४–४ बजे तक काम किया। इन सबन आहुति दी। समय की धन की मनोरजन की स्वाथ की। तब जाकर यज्ञ सफल हुआ।

मुझे इन सब होताओ के साथ सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप मे काम करन म जीवन का आनन्द आ गया। प्रभु ने हमे पाच महीन पूण स्वस्थ रखा शक्ति दी और महर्षि दयानन्द की आत्मा ने सब क्षणो मे हमारा साथ दिया। सबसे बडी बात यह कि जैसा कि इन्होने कहा था हम आपके निर्देशन मे काम करेगे मेरी सलाहो को बिना किसी तर्क के पूरी तरह माना। मुझे पूरी स्वतन्त्रता दी। मै भी सबेरे ७ बज से रात्रि के ३ बज तक कार्यालय मे बेठता। हमारा आपस मे एक भी विवाद नही हुआ। एक वरीयता क्रम की परस्परा बना ली थी जिसको सबने सुसगठित रहकर प्रेम के साथ निभाया।

आपने एक बात पर ध्यान नही दिया। सम्मेलन के प्रमुख आयोजको ने सबको मोतियो की माला पहनाई आर सभी वक्ताओ अतिथियो और विशष अतिथियो का हृदय से स्वागत किया। इतना ही नहीं समस्त प्रमुख कार्यकर्ताओ एव समिति के सयोजको को भी अन्तिम दिन धन्यवाद कर मोतियो की माला से सम्मानित किया। **पर क्या अधिकारियो ने व मुख्य सयोजक ने एक दूसरे को माला पहनाई अथवा किसी और से अपनी प्रशसा कराई स्वागत कराया ? नहीं। स्वार्थ की प्रवृत्ति वाले १००० आदमी भी यह काम नहीं कर सकते जो नि स्वार्थ तीन आदमी मिलकर कर सकते है। महत्ता लोगो की सख्या की नहीं योग्यता श्रम व त्याग भावना की है।**

प्रथम बार आर्यसमाज के किसी उत्सव मे ऐसा हुआ। प्रमुख आयोजको ने प्रतिज्ञा की थी हम परस्पर एक दूसरे का यश नहीं गाएगे। यह था लोकैषणा त्याग का आदर्श उदाहरण जो सम्मेलन की सफलता का रहस्य है। हमने अपने आचार्य महर्षि दयानन्द की निम्नलिखित आज्ञाओ का सदा ध्यान रखा – (मुम्बई मे बनाई नियमावली से उदधृत)

१ जा प्रीति से होता है वह काम वेर से कभी नही होता। वह छोटा है मैं बडा हू, मरी बात झूठी भी हा वही सत्य हो सभा मे बात कट जाएगी तो अप्रतिष्ठा मेरी होगी अर्थात जैसे बने वैसे मेरी बात सर्वोपरि रहे सत्य हो या असत्य ऐसा झूठा हठ लेना किसी को नही चाहिए छोटा और बडा छोटे और बडे काम से ही मानना अन्यथा नही – आर्यसमाज के नियम सख्या २२ महर्षि का व्याख्यान।

२ मूल नियम १३ 'जो इन कार्यो की उन्नति और प्रचार के लिए जितना प्रयत्न करे उसका यथायोग्य सत्कार उत्साह के लिए होना चाहिए।

व्याख्यान परन्तु यह जन सत्कार की इच्छा किवा दम्भादि से कोई काम न करे किन्तु इस काम को अपना ही समझे। मनुष्यो के उपकार और ईश्वर की प्रसन्नता के लिए ही करे अन्यथा नहीं। क्योकि जैसे–जैसे विनयादि मनुष्य मे होते है वैसे–वैसे मनुष्य का सत्कार आप से आप ही होता है स्वेच्छा से नही। परन्तु आर्यसमाज का उपकार जन परमार्थ दृष्टि से ही करे और सब लोग उसकी प्रतिष्ठा करे।

(बाहर की राजनीति का कूडा करकट हम आर्यसमाज मे लाकर उसे गन्दा क्यो करे ? आज कल जेसे देश की समृद्धि के उपायो की चिन्ता छोडकर विभिन्न दलो के लोग अपने ही स्वार्थ को सिद्ध करने मे लग रहे है और देश की आर्थिक

सामाजिक, हानि की किसी को चिन्ता नही हे, ऐसा आसुरी भाव आर्यसमाज के नेताओं मे क्यो आए ? आर्यसमाज के काम को आगे बढाने और सगठन को मजबूत करने मे ही वे अगर तन मन धन लगाएगे तो जनता उनकी प्रतिष्ठा करेगी। आर्यसमाज म दलबन्दी ? क्या महर्षि के उपर्युक्त आदश के विपरीत नहीं है। समय आ गया है कि ऐसी प्रवृत्तियो को आर्य जनता निरादर की दृष्टि से देखे। – लेखक)

३ मूल नियम ६ – जो गृहस्थ गृहकार्य से अवकाश प्राप्त कर, जो जैसा गृहकार्य मे पुरुषार्थ करता है, उससे अधिक पुरुषार्थ इस समाज की उन्नति के लिए करे और विरक्त तो नित्य ही इस समाज की उन्नति ही करे अन्यथा नही।

व्याख्यान – 'जब परोपकार सर्व हित स्वहृदय की प्रीति होगी तब यह कार्य बनता है। जो इस नियम के अनुकूल आचरण करेगा उसको धन्यवाद देना चाहिए। ओर परमात्मा की तरफ स भी उसी को धन्यवाद अवश्य मिलेगा।

सम्मलन के प्रमुख आयोजको ने इन महर्षि के आदेशो का अक्षरश पालन किया इसलिए सर्वप्रथम परमपिता परमात्मा ने हमे धन्यवाद दिया ओर अब जनता धन्यवाद दे रही है।

इसलिए सर्वाधिक श्रेय उस परमपिता को है। दूसरा श्रेय निम्नलिखित बातो को हे। हमने सम्मेलन से पूर्व गह व्रत लिया था –

क हम कभी कोई काम स्वार्थ के लिए नही करेगे।

ख सम्मेलन को सफलता के शिखर पर पहुचाना ही हमारा लक्ष्य है।

ग आर्यसमाज काकडवाडी की स्थापना मे महर्षि की आत्मा ने जो आशा की उस आकाक्षा को क्रियारूप देना है।

घ त्याग सन्तोष धैर्य साहस, अचलता स्थिर बुद्धि और प्रीति से काम करेगे और क्रोध, ईर्ष्या और द्वेष अभिमान और अहकार कटु वाक्य इन सब दुर्भावनाओ को दूर रखेग ओर द्वेष भाव को अपनी सदभावना के प्रभाव स दूर करते जाएगे (योऽस्मान द्वेष्टि य वचय द्विष्मस्त वो जम्भे दध्म)

ङ हम किसी भी हालत मे अनुशासन का भग न होने देंगे।

च हम समय का कठोरता से पालन करेग।

छ किसी सस्था या व्यक्ति की सभा मच पर निन्दा या आलोचना नही होने देगे। दलबन्दी का रूप भी उभारने न देगे।

ज हम व्यक्ति की अपेक्षा समाज को और आर्य जनो के कल्याण को अधिक महत्व देगे।

झ हम ऐसा कोई काम नही करेगे जिससे यहा की समाज तथा आर्य जनो की कोई बदनामी हो अथवा महर्षि के यश एव गौरव को कलक लगे।

ञ हम तन मन धन समय, प्राण सब कुछ इस सम्मेलन को यशस्वी बनाने मे लगा देगे और कभी निराश और भयभीत नहीं होगे।

ट दूसरो के कटु वचनो को भी शान्ति और सहनशीलता की ढाल पर ले लेगे ओर चुप रहकर नम्रता से उनके हृदय का परिवर्तन करेगे।

ठ आयसमाज के सगठन को अपनी ओर से कभी टूटने नही देगे। सबको साथ म लेकर चलेगे (पक्षेभिरपि कक्षेभि सरभामहे)।

ड जा सगठन से जुडे ह एस विद्वाना का ही आमन्त्रित किया ताकि सगठन को महत्व मिले व्यक्ति का नही।

इन्ही सकल्पो से सम्मेलन यशस्वी हुआ बाधाए टल गई द्वप भावना पिघलकर प्रीति बन गई। इसम कोई सन्देह नहीं कि यदि आर्य जनो मे १०० व्यक्ति भी इन नियमो को अपने जीवन का अग बना ले तो आर्यसमाज का स्तर ऊँचा उठा कर उसे आर्य राष्ट्र बनाने मे काई कठिनाई न होगी।

भावनाए विचार और सकल्प मूल होते है। इन्हे ही सस्कार कहते है। और यह मूल जब वृक्ष बनकर सामन आता है तो जन–जन को छाया की शक्ति भी मिलती है और मधुर फल भी।

बस यही कहना है अपने भाइयो और बहनो से।

श्रेय व्यक्ति को मत दीजिए प्रभु को दीजिए महर्षि की पवित्र आत्मा को दीजिए ओर ऊपर की सदभावानाआ ओर सदगुणा का दीजिए।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, मुम्बई की सफलता पर

विभिन्न आर्य बन्धुओं की प्रतिक्रियाएं

आपने अथक परिश्रम से मुम्बई में जो अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन करवा के आर्यसमाजियों में चेतना का संचार किया है तथा सभी विद्वानों की विस्मृत हुई विचारधारा को पुन: प्रवाहित करने का भगीरथ प्रयत्न किया है। इसलिए सभी आर्य परिवार आपके आभारी हैं। हम लाखो वर्ष के पश्चात् पुनः स्वर्ग कहां, प्रकाश की ओर, धर्म संसद जैसे विषयों के प्रत्यक्ष दर्शन कर पाए वह आप ही के कारण जितनी भी स्तुति की जाए उतनी ही थोडी होगी। सभी दृष्टियों से हम उसकी सीमा नहीं आंक सकते। हम देखकर धन्य - धन्य हुए जो संकल्प किए है वह भी समयानुसार योग्य ही है। इस प्रकार के आयोजन हमें हर प्रान्त में करने होगे। यही इस सम्मेलन की उपलब्धि है।

– आर्यसमाज सभाजी नगर (औरगाबाद) महर्षि दयानन्द भवन सरस्वती कॉलनी पिन ४३१००१ (महाराष्ट्र)

कैप्टन देवरत्न जी मैं आर्य उपप्रतिनिधि सभा मेरठ की उपाध्यक्षा कैलाश सोनी आपको हार्दिक बधाई देती हूं। भगवान.करे आप लम्बी आयु पाए और इसी तरह सामाजिक काम को करते रहें।

– श्रीमती कैलाश सोनी

आपका विश्वव्यापी महासम्मेलन मुम्बई में सम्पन्न हुआ इसकी जानकारी सम्मेलन में उपस्थित हुए जो आर्य वापस उत्तर प्रदेश लौटे है उनसे हुई। सम्मेलन में जो व्यवस्था हुई और आपके संयोजन आदि के बारे में बडी सराहना हो रही है। इससे आर्य जगत् में आपका कद बढ गया है।

– स्वामी साख्यायन जी सम्पादक कर्मयोगी कानपुर

आपने सभी राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्वामी, प्रकाण्ड - विद्वानों को एकत्र किया और यहां मुम्बई में समुन्दर के किनारे अमृत ज्ञान यज्ञ, आर्य जगत् को उपलब्ध कराया, आपको अनेक धन्यवाद।

– श्री प्रशात आर्य (आर्यसमाज नादेड महाराष्ट्र)

सर्वप्रथम तो आर्य महासम्मेलन की सफलता पूर्वक समाप्ति पर मेरी ओर से हार्दिक बधाई स्वीकार करे। आपने सम्मेलन की सफलता के लिए जो दिन-रात एक किया, वह प्रशंसनीय हैं, परमेश्वर आप को आर्यसमाज की सेवा का प्रेहराव सदा किया करे।

सम्मेलन सामाजिक, संगठनात्मक, राजनैतिक तथा आर्थिक दृष्टि से सफल रहा। यदि आप इस क्रम को जारी रखते हुए रेडियो पर आर्यसमाज का प्रोग्राम कर सकें तो आर्यजनता आप को सदैव याद रखेगी।

– आर्यसमाज जवाहर नगर पलवल – १२११०२ (फरीदाबाद)

आपने जो सुन्दर कार्य किया है, वह आर्यसमाज के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा। मुम्बई जैसी महानगरी में इतनी सुन्दर व्यवस्था करके आपने मुश्किल को आसान करके दिखा दिया। यद्यपि अनुमान से अत्यधिक आर्यसज्जन महासम्मेलन में पहुंचे फिर भी आपने सभी मुश्किलो का निराकरण करते हुए आवास - निवास, खान - पान आदि की जो सुन्दर व्यवस्था की वह प्रशंसनीय है।

– श्री धर्मवीर जी (मन्त्री आर्यसमाज जामनगर) खम्भालीया नाका बाहर आर्यसमाज मार्ग जामनगर – ३६१००५ (गुजरात)

आर्यसमाज बर्रा कानपुर (उत्तर प्रदेश) आप के अथक परिश्रम से आयोजित इस भव्य एव चिरस्मरणीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन गरिमामय सफलता व आप सब के अहर्निश प्रयासों व उत्कट इच्छाओं की परमपिता परमेश्वर द्वारा निर्विघ्न सम्पन्नता के लिए हम सब बर्रा आर्यसमाज कानपुर के आर्य जन आपको हार्दिक बधाई देते हुए ईश्वर से कामना करते हैं कि आप के द्वारा घोषित आगामी कार्यक्रम पूरी तरह निर्विघ्न सफल एवं पूर्ण हो।

वैदिक अनुसन्धान केन्द की स्थापना हेतु घोषित रूप-रेखा की हम भूरि-भूरि प्रशसा करते हुए ईश्वर से आपके दीर्घायु की कामना करते हैं और साथ ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व सान्ताक्रुज आर्यसमाज व आप के सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाई प्रेषित करते हैं।

– श्री सत्येन्द्र सिह आर्य मन्त्री आर्यसमाज बर्रा कानपुर –

मुम्बई मे आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ, उसके लिए मैं आपको और आपकी टीम को बहुत-बहुत धन्यवाद प्रेषित करता हू।

शेष भाग पृष्ट ८ पर

पृष्ठ ७ का शेष भाग

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, मुम्बई की सफलता पर

विभिन्न आर्य बन्धुओं की प्रतिक्रियाएं

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के कारण सभी लोगों में उत्साह और जागृति उत्पन्न हुई है कि - आर्यसमाज में आज भी शक्ति है और सामाजिक परिवर्तन की क्षमता अभी भी कायम है। सम्मेलन मे उच्चकोटि के विद्वानों के विचार सुनकर अत्यन्त ही प्रभावित हुए है। सामाजिक उत्थान, राजनीति, धर्म, योग, शिक्षा, विज्ञान, ज्योतिष एवं वेद के सभी अंगों पर विचार सुन कर मन और आत्मा दोनों को सन्तोष हुआ।

सम्मेलन में विशाल जनसमूह एकत्रित हुआ उनके भोजन, आवास की जो व्यवस्थाएं की गई उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। हम सम्मेलन में आकर धन्य हो गए हैं। सम्मेलन में जितने लोग उपस्थित हुए उस संख्या की तुलना किसी राजनैतिक दल के सम्मेलन से करें तो भी वह उससे अधिक ही बैठेगी।

सम्मेलन से पूर्व आर्यजगत् में कुछ निराशा का वातावरण था लेकिन वर्तमान सम्मेलन ने यह सिद्ध कर दिया है कि आर्यसमाज में निराशा नहीं है, वरन् एक उत्साह जागृत हुआ है और उस उत्साह को कायम रखना आप जैसे महानुभावों का परम दायित्व बन जाता है।

आपसे अनुरोध है कि आप राष्ट्रीय स्तर पर दौरा कर एक नई शक्ति उत्पन्न करेंगे और वह क्षमता मुझे आपके अन्दर दिख रही हैं।

– श्री सुखदेव व्यास, आर्यसमाज उज्जैन, आर्यसमाज मार्ग, उज्जैन (मध्य प्रदेश)–४५६००१

मैं यह पत्र आपको 'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन'' के सफल आयोजन की बधाई देने के लिए लिख रहा हूं। वास्तव में आप धन्यवाद के पात्र है कि इतने बडे स्तर पर आपने सफल आयोजन किया। व्यक्तिगत स्तर पर वहां की व्यवस्था मैंने देखी एवं मन बडा प्रसन्न हुआ। शोभा यात्रा की भव्यता भी देखते ही बनती थी।

– श्री मृदुल आर्य (मन्त्री) आर्यसमाज, भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स, पिपलानी भोपाल– ४६२०२१

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के सफलता पूर्वक समपन्न होने पर लाख-लाख बधाईयां स्वीकार करें। आपका पुरुषार्थ अपूर्व है।

स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती दयानन्द मठ, चम्बा (हि०प्र०)

आपने अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सुनियोजित रूप से संचालित किया, साथियों का सहयोग आप को मिला, हार्दिक बधाई। मुझे सुख मिला, आभार।

– ब्रिगेडियर चितरजन सावन्त, उपवन, ६०६, सेक्टर २६, नोएडा

इतना बडा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन करके उसमें सम्मिलित होने का जो हमें सौभाग्य प्राप्त कराया, मुम्बई जैसी महानगरी में, जहां जल की तथा ठहरने की जो किल्लत रहती हैं, वहां इतना अच्छा इन्तजाम करके आप ने हम लोगों को कृत-कृत कर दिया। ईश्वर आपको तथा आपके समस्त सहयोगियो को लम्बी आयु दें ताकि इसी तरह इस विषम परिस्थिति में भी आर्यसमाज का कार्य बढता रहें।

– श्री अशर्फी प्रसाद आर्य (वैदिक भजनोपदेशक) पानीकल चौक, चन्दवारा, मुजफ्फरपुर– ८४२००१ (बिहार)

अन्तर्राष्ट्रीय आर्यमहासम्मेलन में भाग लिया हूं। आपने बहुत कष्ट उठाकर सफलतापूर्वक आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया हैं।

– आचार्य नारायण जिज्ञासु (वेद गुरुकुल) ३००० क्वार्टर्स, नागारम– ५०३००१, इन्दूरु (निजामाबाद)

आपके अत्यन्त परिश्रम से सम्मेलन सफल प्रेरणा देने वाला हुआ, यह मेरठ के भाई-बहनों से सुनकर अति प्रसन्नता हुई। मैं आपको तथा सभी भाई-बहनों को बहुत बधाई देती हूं।

– श्रीमती शकुन्तला गोयल, न० १००४, पी०एल० शर्मा रोड, मेरठ–२५०००१

आपको अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की आशातीत अप्रतर्कित समग्र - सफलता के लिए अपरिमित हार्दिक बधाई। इस सम्मेलन के अपूर्व गरिमा पूर्ण अनुमानातीत समायोजन के श्रेय में अधिक भाग आपकी वाञ्छित सामयिक सम्मोहक वक्तव्य - श्रृंखला को मिलेगा, जिसकी अविराम टिप्पणियों ने श्रोतृवृन्द में अभिरुचि और उत्साह नैरन्तर्य बनाए रखा। मन्त्र मुग्धकारी आपके मधुर वाग्विलास ने श्रोतृवृन्द व दर्शकों को बांधे रखा।

आपने इस महत्तम संयोजन की सफलता पाकर आर्य जगत् के एक प्रतिष्ठित नेतृत्व का प्रस्तावन व आदर्श रख दिया और आप निर्विवाद रूप से उस प्रतिष्ठित गौरव के लिए सुपात्र भी हैं।

– आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्र, वेदमन्दिरम, कूचा पाडा, बदायू – २४३६०१

निराश, हताश आर्य जगत को महासम्मेलन से नई दिशा, स्फूर्ति और प्रेरणा मिली। सम्मेलन का जन-जन तक सन्देश गया कि आर्य जनता में तन, मन, तथा धन की कोई कमी नहीं है। नेतृत्व, कार्यक्रम, योजना तथा दिशा बोध कराने की जरूरत हैं। आपका कार्यक्रम सफल, प्रभावी प्रेरक एवं भावना पूर्ण रहा। मैं पुनः बधाई व शुभकामनाएं देता हूं। प्रभु आपको दीर्घायु प्रदान करें। आर्य जगत् आपके प्रति आशान्वित है।

– डॉ० महेश वेदालंकार, बी० जे० २६ पूर्वी शालीमार बाग, दिल्ली

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर बम्बई आकर निकटता से प्रथम बार आपकी क्रियाशीलता, कुशल संचालन व नेतृत्व क्षमता देखने को मिली, बडी प्रसन्नता हुई। इस सम्मेलन के माध्यम से सार्वदेशिक आदि शिरोमणि सभाओं में हो रही निरन्तर रिक्तता को पूर्ण करने वाला एक व्यक्तित्व सबके समक्ष उभर कर आया है।

– डॉ० माधुरी रानी जी, सम्पादिका अवनी, 'अक्षयम्' एस० २/५०३, क १–४ सिकरौल, वाराणसी

महासम्मेलन की सफलता पर आप सभी को शुभकामना हैं। दिन-रात एक करके, आप लोगों ने सम्मेलन को सफल बनाया। सम्मेलन बहुत ही अच्छा था, धन्यवाद।

वैदिक विद्वानों के उपदेशों की ज्ञान गंगा में डूबते, वैदिक मधुर भजनों को सुनते, चार दिन कैसे व्यतीत हुए पता ही नहीं चला। सम्मेलन की मधुर स्मृति हमेशा याद रहेगी।

आप अपने पिता आर्य जगत् के तपोनिष्ठ रत्न, श्रद्ध आचार्य भद्रसेन जी के पद चिन्हों पर अग्रसर हो रहे हैं। ईश्वर आपको वैदिक प्रचार-प्रसार में हमेशा अग्रनिय बनाए।

– श्रीमती कुसुम लता जी 'बुद्धि विजय रणपाल , शान्ती बिहार, फेज – २, कवलागड देहरादून–२४२००६

१२५ वें 'आर्यसमाज स्थापना दिवस' की अभूतपूर्व सफलता और आर्य जनों के उत्साह को देखकर बडा ही हर्ष हुआ। इसके लिए आप बधाई के पात्र हैं।

– श्री छैलबिहारी लाल गोयल वेद विद्या अनुसन्धानरत, बारहद्वारी, पसरट्टा बाजार हाथरस– २०४१०१

आर्य महासम्मेलन रूपी यज्ञ की सफल पूर्णाहुति हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। निश्चित ही प्रतिकूल परिस्थितियों को दृढतापूर्वक स्वानुकूल कर विजयश्री प्राप्त कर चट्टान की तरह अडिग रहकर, डटकर, कर्मठतापूर्वक आगे बढना ही वीर सैनिक/योद्धा/आर्य का लक्ष्य/कार्य है, आप उसमें सफल रहें। वस्तुतः कई बार शब्द अभिव्यक्ति में सामर्थ्यहीन हो जाते हैं, केवल हृदय की गहराइयों से उसे अनुभव किया जा सकता हैं। कुछ पंक्तियां आपके लिए समर्पित हैं –

दिव्यात्म परिपूर्णधरा मह
आप सहश सुत पाकर
भारत मां की प्रिय विभूति
हैं रत्नयुक्त रत्नाकर
दिया आपने दान ज्ञान का

– डॉ० आशा रानी राय, प्राचार्या, कानपुर विद्या मन्दिर महिला (पी०जी०), महाविद्यालय, स्वरूप नगर, कानपुर – २०८००२

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मुम्बई में पारित प्रस्ताव

आर्य सम्मेलन

अन्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है – आर्यो के अन्तराष्ट्रीय स्तर से एक स्थान पर एकत्रित होने का महा उत्सव।

यह स्थान बेशक रिक्लेमेशन मैदान बान्द्रा मुम्बई है परन्तु वास्तव में हम सब एक दूसरे के मन तक पहुचने मे प्रयासरत हैं।

उससे भी अधिक सौभाग्यशाली हे हमारे उत्सव के उद्देश्य जिनको सामने रखकर यह बृहद आयोजन किया गया है– आर्य समाज के कार्यो का आधुनिक काल और परिस्थितियो के दृष्टिगत पुनमूल्याकन पुनर्चित्राकन पुनर्निदेशन एव पुनसकल्प किया जाना।

इस महोत्सव की तरह वास्तव में आर्यों का सम्पूण जीवन तथा आत्मा की अनन्त यात्रा भी सर्वोत्तम उद्देश्यो से अभिलक्षित होती है। हमारे जीवन और आत्मा के उद्देश्यो का निर्धारण करने मे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का विशेष एव बहुमूल्य योगदान है।

हमारे उद्देश्य किसी एक व्यक्ति या व्यक्तियो के सासारिक उत्थान को लेकर नही अपितु प्राणिमात्र की भलाई निरवर्ग और त्यागमय जीवन विश्वबन्धुता तथा आत्मा को सर्वोत्कर्ष पर पहुचाने जैसे लक्ष्यो की प्राप्ति के लिए निर्धारित किए गए है।

सर्वप्रथम हम उन समस्त इतिहास पुरुषो को स्मरण करते हुए अपनी श्रद्धा व्यक्त करना चाहते हे जिन्होने महर्षि दयानन्द जी के निर्देशानुसार सम्पूण जीवन की आहुति आयसमाज के कार्यो को दिशा एव गति देने के लिए अर्पित करने म जरा भी सकोच नहीं किया। जो इन लक्ष्यो तक पहुचने के लिए प्रत्यक कार्य के लिए सदैव तत्पर रहे ओर जिन्होने बडे से बडे बलिदान को भी बडा नही समझा।

इस महोत्सव को हम एक मील के पत्थर की तरह मना रहे है जब इन उद्देश्यो की यात्रा १२५ वर्ष पूर्ण कर रही है। इस महोत्सव पर हमने भविष्य के लिए एक बार फिर नए उत्साह और जोश के साथ अपने कायक्रमो का पुनर्मूल्याकन करते हुए व्यवस्थात्मक पुनर्निर्धारण करना हे।

जैसा कि आप जानते एव मानते है कि हमारा लक्ष्य **कृण्वन्तो विश्वमार्यम** अथात **विश्व को श्रेष्ठ बनाना** है। विश्व का सामान्य अथ बिना किसी भी भेद के धरती पर रहने वाले मानव मात्र से है। हमारे सामने सबसे बडा प्रश्न यही है कि क्या हम सब प्रकार के मानवो तक आयत्व जसे सवग्राह्य सिद्धान्त को सरलता और मधुरता से पहुचा पाए है इसके उत्तर के लिए सच्चे मन से हम सब को इश्वर की उपासना के दौरान चिन्तन मनन करना चाहिए क्योकि श्रेष्ठता के निमाण का उद्देश्य सीधा इश्वर के सृष्टि निमाण से जुडा हुआ है। जैसा कि वैदिक निर्देश है

अहम भूमिम अददाम आर्याय

यह भूमि मैने आर्य (श्रेष्ठ) पुरुषो के लिए दी है।

आर्यो का निर्माण भी इश्वर की कृपा से परन्तु मानवो के परस्पर सहयोग से ही सम्भव हे जिसे सामान्यत सत्सग या सगतिकरण कहते है।

क्या हम मानव मात्र का अपनी सगत देने म प्रयासरत हे ?

आइए ऐसे कुछ उपायो पर चिन्तन करे। इनमे से किस किस उपाय को स्थानीय परिस्थितियो तथा क्षमताओ के दृष्टिगत हम क्रियान्वित कर पाएगे। इसका विचार आप अपने आर्यजनो के साथ प्रेम पूवक मिलबैठ कर करे।

१ सगठनात्मक अनुशासन केवल दण्ड के बल पर न्ही अपितु स्वत उत्पन्न होता है जब अनुशासन लागू करने वाले का जीवन पूर्ण रूप से ईश्वराधीन रहकर व्यवस्थाओ मे सहयोग करने के लिए प्रयासरत हो। नेतृत्व को मानना चाहिए कि समस्त सभासद भाइयो की तरह और सभासदो को भी नेतृत्व में केवल कमिया निकालने का दृष्टिकोण न रखते हुए श्रद्धा पूर्वक सुझाव और विचार मन्थन की प्रक्रिया मे सहयोग देना चाहिए।

२ प्रत्येक वर्ष की गतिविधियो का मूल्याकन भी अत्यन्त प्रेम श्रद्धा और अनुशासन के सिद्धान्तो को ध्यान मे रखते हुए करना चाहिए। इस के लिए वार्षिक सम्मेलनो के अवसर पर सारगर्भित छोटी–छोटी गोष्ठिया या कायशालाए आयोजित की जानी चाहिए। नेतृत्व का सोचना चाहिए कि सभासदो की भावनाओ के अनुरूप कार्य हो रहे है या नही। हठपूर्वक किसी भी कार्य का थोपना उचित नही । इसी प्रकार सभासद सदैव रचनात्मक योगदान के लिए तत्पर रहे। नेतृत्व द्वारा सोपे गए कार्यो को इश्वरीय व्यवस्था मे राष्ट्रसेवा के कार्यो मे अपनी आहुति समझकर सम्पन्न करना ही सबसे बडा धर्म समझे। आत्मावलोकन बैठको को वार्षिक उत्सवो का स्थानापन्न समझा जाना चाहिए। इनका आयोजन बडे स्पष्ट एव आग्रह मुक्त दृष्टिकोण से किया जाना चाहिए

३ एक दूसरे का अभिवादन करते हुए आयपुत्र तथा आयदेवता श्री जी जसे विशेषणो के प्रयोग का सामान्य प्रचलन मे लाया जाए। इससे आपसी प्रेम और श्रद्धा बढाने म विशेष सहयोग प्राप्त होगा। ऐसी कामना भी अभिवादन करते समय करनी चाहिए।

४ आर्य समाजो के माध्यम से महिलाओ पढने वाले बच्चो युवाओ वृद्धा आदि की अपनी अपनी समस्याओ एव उनके समाधान के लिए अलग अलग विशषज्ञ दल बनाए जाए जो पूर्ण सहानुभूति और दाशनिक दृष्टि से विचार प्रक्रिया मे सहयोग करे।

५ आय समाज के कार्यो म **प्रचारको उपदेशको तथा पुरोहितो** का विशेष योगदान हे। इस वर्ग के आहुति देने वाले आत्माओ का भरण–पोषण समाज की नैतिक जिम्मेवारी है। दूसरी तरफ इस वर्ग को आर्यसमाज के कार्यो मे सुयोजनाबद्ध तरीके से सहयोग करने के लिए अच्छी तरह प्रशिक्षित किए जाने की प्रबल आवश्यकता है। प्रचार कार्यक्रमो के दौरान विशेष आयोजनो मे तथा अन्य औपचारिक–अनोपचारिक बैठको मे आचार व्यवहार आदि से अवगत कराना भी इसी प्रशिक्षण कार्यक्रम मे शामिल हे। प्रचार कार्यो को आर्य समाज के विस्तार के उद्देश्यो को ध्यान मे रखते हुए ही सचालित किया जाना चाहिए। इस गम्भीरता से पुरोहित आदि वर्ग को भली प्रकार अवगत कराना अत्यन्त आवश्यक है।

६ आय समाज के स्थानीय क्षेत्रो मे नागरिको का चाहे वे किसी भी पथ से सम्बन्धित हो यज्ञ के पर्यावरण सम्बन्धित वैज्ञानिक पक्ष को स्पष्ट करके समस्त लोगो को यज्ञ के लिए प्रेरित किया जाए।

इसके लिए विशेष **यज्ञ प्रशिक्षण** कायक्रम चलाए जाने चाहिए। इनमे दम्पतियो को एक दिन या आधादिन मे यज्ञ प्रक्रिया विस्तार पूर्वक समझाई जाए। प्रशिक्षण के लिए छोटे छोटे दल शामिल किए जाए जैसे २५ या ५ दम्पति। उन्हे यज्ञ के सामान की एक किट बनाकर खरीदने के लिए पेरित किया जाए।

दक्षिण अफ्रीका आय पतिनिधि सभा इस कार्यक्रम को सफलता पूर्वक विगत लगभग एक वष से चला रही है।

७ आर्यसमाज के नेतृत्व तथा स्वाध्याय प्रेमी जनता को अपने कार्यो के लेख महान आयपुरुषो पर लेख तथा सामयिक विषयो पर प्रतिक्रियाए सम्पादक के नाम पत्र मे तथा अन्य किसी भी रूप मे अधिक से अधिक देनिक समाचार पत्रो मे प्रकाशनार्थ सामग्री भेजनी चाहिए। समस्त धार्मिक उत्सवो तथा आर्यसमाज से सम्बन्धित अथवा राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय दिवसो पर भी वेदिक दृष्टिकोण जोडते हुए विशेष लेख समाचार पत्रो को भेजे जाए।

आय समाज की पृष्ठभूमि एक स्थापित राष्ट्रवादी राष्ट्रभक्त एव सुधारवादी व्यापक सगठन की हे भविष्य मे भी एसी सुन्दर छवि बनी रहे इसके लिए समय–समय पर राष्ट्रभक्त महान पुरुषो के जन्म दिवस पुण्य तिथि आदि पर विशेष कार्यक्रम गोष्ठिया आदि आयोजित किए जाने चाहिए विशिष्ट सेनिको का समय–समय पर सम्मान करना चाहिए। बच्चो और युवाओ मे राष्ट्रप्रेम की भावना भरने के लिए विशेष प्रयास करने चाहिए। समय समय पर ऐसे विचारो को भी लेखबद्ध करके दैनिक समाचार पत्रो मे भेजा जाना चाहिए।

६ राष्ट्रभक्ति का नागरिको के लिए सर्वोत्तम मार्ग है राष्ट्रवासियो की निस्वार्थ भाव से एकजुट होकर सेवा करना। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जब भी एसे राष्ट्रव्यापी सेवा सहायता कायक्रम चलाए जाए उनमे अनुशासनबद्ध होकर समस्त समाज सभाए और अन्य सस्थाए अपनी अपनी आहुति डाले जिससे सहायता कायक्रम का विशालतम रूप सामने आ सके।

१० इस महोत्सव के समस्त प्रस्तावो उदबोधनो को सुनते समय एक नोट पुस्तिका एव कलम अपने साथ रखे जिससे आर्यसमाज के विद्वान नेतृत्व एव मार्ग दर्शको के विशेष निर्देश भविष्य मे क्रियान्वयन के लिए आप को उपलब्ध हो सके।

इन्ही विचारो/प्रस्तावो के साथ आइए एक महान सकल्प को दोहराए –

आर्यसमाज हमारी माता के समान है जिससे हमारी मानसिकता का जन्म हुआ है। इस माता के सगठन की अधिकाधिक सेवा करने से कभी विमुख नही होगे उदासीन नही होगे निराश नही होगे। तन मन और धन से वचन ओर श्रेष्ठ कर्मो से इस मातृ सगठन का सुदृढ करने के लिए हर सम्भव पग उठाएगे

आर्यसमाज अमर रहे।
आर्यसमाज अमर रहे।
आर्यसमाज अमर रहे

युवा सम्मेलन

इस अ तराष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन क अन्तर्गत युवा सम्मेलन के मच स हम आज के युवा वर्ग को एक मौलिक सन्देश देना चाहते है कि – **"जीवन केवल सुकर्मो के लिए है**

अच्छे कार्यो से समाज स्वर्ग समान बनता है ओर बुरे कार्य समाज को नरक समान बना सकते है।

वैदिक दर्शन पर आधारित जीवन पद्धति का यही मूल सिद्धान्त है– **अच्छे कार्य करो अच्छे बनो** ।

जो लोग अपने अधिकारो के लिए लालायित रहते हैं बिना अपने कर्त्तव्यो का निर्वहन किए वे उस किसान के समान है जो बिना बोए फसल काटने की इच्छा रखता है।

दुभाग्य हे कि भारत का सविधान भारतीय नागरिको को अपने मौलिक कर्त्तव्यो को निभाने के लिए बाध्य करने मे असमर्थ है जबकि उनके मौलिक अधिकारो का लागू करवान क लिए उन्हे बहुत स मार्ग एव तरीके उपलब्ध कराता है। इसी का यह परिणाम है कि आज समाज मे अधिकारो की लूट मची हुई है और कर्त्तव्य इस सामाजिक तन्त्र के लिए अपरिचित से बने हुए हे।

वो हाथ सौभाग्य शाली हे जा पहले कर्त्तव्यो का पालन करते है और बाद म अधिकारो की कामना करते है।

वो समाज और राष्ट्र पूर्णत सुरक्षित होते है जिनमे ऐसे हाथ विद्यमान है।

आर्य जीवन पद्धति का प्रथम लक्षण है– **निष्काम सेवा की भावना।**

प्रकृति का कानून– **एक हाथ ले और एक हाथ दे** के सिद्धान्त पर टिका है।

हमने अपनी मातृभूमि से इस जीवन को प्राप्त किया उसी के अन्न से इसका पालन पोषण कर रहे है और उसी के वायुमण्डल मे रहकर हर प्रकार का आनन्द भोग कर रहे हैं।

हमने जो कुछ भी मातृभूमि से प्राप्त किया है उसे किसी न किसी रूप मे वापिस लौटाना ही होगा– प्रत्यक्ष या पराक्ष।

मातृभूमि के प्रति हमारे कर्त्तव्यो के दो पहलू माने जा सकते है

प्रथम – मातृभूमि के अन्य पुत्र–पुत्रियो की हर सम्भव सहायता।

दूसरा – समाज म ऐसे वातावरण का निर्माण जिससे हमारे भाईयो–बहनो को शान्तिपूर्वक जीने की व्यवस्था उपलब्ध हो सके।

हमारा इतिहास ही हमारे भविष्य का सकल्प है– इस सिद्धान्त के तहत इस सम्मेलन मे हम यह घोषणा करते है कि आर्यसमाज के विगत १२५ वर्षो म जिस प्रकार समाज मे हर प्रकार की विपत्ति के समय आर्यजनो ने देशवासियो के दुख निवारण के लिए कठोर प्रयास किए है उसी प्रकार भविष्य मे भी ऐसे कार्यो मे कभी लापरवाही आलस्य प्रमाद आदि का प्रवेश नही होने देगे।

देशवासियो की सेवा ही सच्ची राष्ट्रभक्ति है यही हमारी प्रेरणा है।

मातृभूमि के प्रति कर्त्तव्या के दूसरे पहलू के अन्तर्गत हमे स्पष्ट रूप से ऐसे कार्यो तथा सिद्धान्तो का अधिकाधिक प्रचार प्रसार एव प्रेरणा करनी चाहिए जिसस नागरिको मे परस्पर कटुता द्वेष विरोध कलह दुख आदि का निर्माण न हो।

जो कार्य हम दूसरो के प्रति कर रहे हैं यदि वही कार्य हमारे प्रति किए जाए तो हमे कैसा महसूस होगा?

इस प्रश्न का उत्तर सोच कर ही हमे अपने विचारो का क्रिया-वयन करना चाहिए।

युवा अवस्था उस खेत के समान है जिसमे जैसा बीज बोया जाए वैसा ही फल प्राप्त हो सकता है। यदि हर युवा को उक्त सिद्धान्त मातृभूमि और समाज के प्रति कर्त्तव्यो के दृष्टिगत समझा दिए जाए तो चरित्र निर्माण और अच्छे नागरिक के निर्माण का कार्य बहुत सरल हो सकता है।

इस सम्मेलन के द्वारा हम यह सकल्प पारित करत है कि भविष्य मे आर्यसमाज के कार्यक्रमो मे युवाओ का इन दो कर्त्तव्य परक सिद्धान्तो के प्रति आकर्षित करने के लिए विशेष प्रयास प्रारम्भ किए जाए यथा –

१ प्रत्येक आर्यसमाज के लिए आर्यवीर दल शाखा का प्रबन्ध करना अनिवार्य बनाया जाए।

२ युवको को उनकी शिक्षा तथा भविष्य की रूपरेखा बनाने के लिए उनकी विशेष अनुभवी व्यक्तियो के साथ गोष्ठिया कार्यशालाए आदि आयोजित की जाए तथा उन्हे अपना जीवन भ्रष्टाचार अनाचार व्याभिचार आदि से पूर्णत मुक्त रखने के लिए विशेष प्रेरणाए दी जाए।

२ बच्चो और युवको को शिक्षा एव चरित्र निर्माण के क्षेत्र मे प्रोत्साहित करने के लिए प्रश्नोत्तर प्रतियोगिताए आदि आयोजित की जाए।

४ बच्चो और युवको मे योगाभ्यास एव स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहने की प्रवृत्ति बढाने के लिए सार्वजनिक स्थलो पर योग शिक्षा शाखाए सचालित की जाए।

५ युवको को बिना दिखाव बिना दहेज आदि के विवाह के लिए प्रेरित किया जाए। यथासम्भव प्रत्येक शहर मे कम से कम एक वेवाहिक सम्बन्ध निर्धारण केन्द्र स्थापित किया जाए तथा ऐसे सब केन्द्रो का समन्वय अन्य शहरो मे स्थापित केन्द्रो से हो तथा यह समन्वय सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के सहयोग से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी स्थापित हो।

६ विवाह सस्कार के लिए अधिकाधिक आर्य उपदेशको प्रचारको और पुरोहितो के नाम का प्रचार समाज मे किया जाए तथा पुरोहितो आदि को विवाह सस्कार कराने का निर्देश/प्रशिक्षण दिया जाए कि इन सस्कारो के माध्यम से सदाचार चरित्र पारिवारिक शान्ति तथा सामाजिक कर्त्तव्यो का पालन कराने के लिए उनसे सकल्प पढवाए जाए।

७ युवको को राजनीति और राष्ट्रभक्ति क सिद्धान्त पूरक रूप मे समझाए जाए तथा इस प्रकार राजनीति मे प्रवेश की सशर्त प्रेरणा दी जाए कि किसी कीमत पर भी राष्ट्रभक्ति का त्याग नही किया जाएगा।

८ युवको को दैनिक समाचार पत्रो तथा पत्रिकाओ आदि मे अपन विचार लेख पत्र इत्यादि भेजने के तरीके तथा लाभ समझाए जाए।

इन सकल्पो को केवल मात्र पारित ही नही अपितु इनके क्रियान्वयन मे हम सब आर्यजनो को यथाशीघ्र प्रयास प्रारम्भ कर देन चाहिए। ❑

वेद सम्मेलन

आइये ! महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विशाल आह्वान का स्मरण करे – वेदो की ओर लौट चलो। केवल इसलिए नही कि विश्व के पुस्तकालय मे वेद सबसे प्राचीनतम पुस्तक है अपितु इसलिए कि यह ईश्वरीय ज्ञान बडे प्रेम और गौरवता पूर्वक चार ऋषियो को प्रदान किया गया था जो इन पुस्तको मे शामिल है।

यदि इस सृष्टि का उत्पत्तिकर्ता एक है तो उसके निर्देश और आदेश भी एक ही होने चाहिए।

यदि ईश्वर एक है तो उसका धर्म भी एक होना चाहिए।

वैदिक धर्म को हम ईश्वरीय सिद्धान्तो का एक सग्रह मानते है जिसे उस सर्वोच्च शक्ति ने सृष्टि उत्पत्ति के प्रारम्भ मे प्रदान किया था।

इसीलिए वेदो को हम सृष्टि उत्पत्ति का ब्लू प्रिन्ट (निर्माण से पूर्व तैयार किया गया योजनात्मक विवरण) मानते है। जब यह ज्ञान प्रदान किया गया तब न हिन्दू थे न मुस्लि[illegible] थे न पारसी। इसलिए वेदा का सम्बन्ध सबसे है और सबका सम्बन्ध वेद से है। मनुष्यो के समस्त पन्थ सम्प्रदाय समुदाय तथा समूह वेदज्ञान को प्राप्त करने तथा अध्ययन करने के लिए पूरी तरह से अधिकृत है।

इस प्रकार यह एक पारदर्शी स्पष्ट सिद्धान्त है कि वेद किसी एक पन्थ या देश से सम्बन्धित नहीं है। बेशक आर्यव्रत को हम वेदो की धरती मानते है क्योकि इनकी उत्पत्ति यहा के आध्यात्मिक वातावरण मे हुई है।

वेद प्राचीनतम ग्रन्थ होने के कारण आधुनिक युग मे सुविधाजनक नहीं है यह पूरी तरह से एक अनुचित विचार है। ईश्वरीय ज्ञान हर स्थान के हर मनुष्य के लिए हर समय पर सुविधाजनक है। यह सदैव ताजगी से भरा है सदैव उचित है और सदा रहने वाला है। यह ज्ञान सदेह अविश्वास और खतरो के आवरण से परे है।

समस्त विश्व को यह मालूम करा देना चाहिए कि हर दुख दर्द झगडे और क्लेश विपदा और विपत्तियो युद्ध और रक्त सहार का मूल कारण इस अद्वितीय वैदिक विरासत के प्रति अज्ञानता और उदासीनता है।

आइये ! यह सकल्प ले कि वैदिक सिद्धान्तो और आधुनिक विषयो और मुद्दो पर स्पष्टीकरणो को समूचे विश्व के समक्ष लाने के लिए हम अथक प्रयास करेगे। यह प्रयास उस रूप मे होने चाहिए जिन्हे आधुनिक युग समझ सके।

इस दिशा मे प्रथम प्रयास यह होगा कि वेद मन्त्रो का आधुनिक युग के विषयो और मुददो क अनुसार वर्गीकरण। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका महर्षि दयानन्द जी द्वारा वेद को पढने का मागदर्शक ग्रन्थ इसी उददेश्य से तैयार किया गया प्रतीत होता है।

हमारे पास वे समस्त ससाधन मानवीय तथा भौतिक उपलब्ध होने चाहिए जिनस कम्प्यूटरो पर इस वर्गीकरण योजना को क्रियान्वित करने का सुविधाजनक मार्ग बन सके। निकट भविष्य मे वेद मन्त्रो की सी० डी० तथा उन्हें इन्टरनेट पर लाने का कार्य गतिपूर्वक होना चाहिए।

इन्हीं ससाधनो के साथ विश्व के बुद्धिजीवियो के समक्ष हम इस तथ्य को प्रस्तुत एव स्पष्ट कर सकते है कि वेद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक है अर्थात गणित भौतिक रसायन जीव विज्ञान दर्शन राजनीति अर्थशास्त्र सामाजिक ज्ञान नैतिकना खगोल विद्या मनोविज्ञान तथा आध्यात्मिकता आदि।

हमे विशेष सम्मेलन गोष्ठिया तथा कार्यशालाए इत्यादि इन सब विषयो के लिए आयोजित करनी चाहिए जिसमे सम्बन्धित जनता को आमन्त्रित करके उन्हे इनका वैदिक आधार समझाया जा सके।

आर्यसमाजो मे साप्ताहिक रविवारीय सत्सगो मे होने वाले उपदेशो को भी इसी प्रकार विषयवार आयोजित किया जाना चाहिए।

वैदिक लेखको और चिन्तको से भी प्रार्थना की जानी चाहिए कि वे ऐसे विषयो और मुददो को लेकर पुस्तको का निर्माण करे। अब तक जिन लेखको ने भी ऐसे प्रयास किए है हम उनका साधुवाद करते हैं।

लोगो के मन मे सस्कृत सीखने के लिए प्रेम विकसित किया जाना भी अत्यन्त आवश्यक है। वैदिक ज्ञान को जीवित रखने के लिए सस्कृत ही एकमात्र माध्यम है। हमारे गुरुकुल और बेशक हमारे विद्यालय महाविद्यालय आदि इस दिशा मे आशा की किरण हैं। आर्यसमाज मन्दिरो को भी सस्कृत जानने वालो की सख्या बढाने के लिए विशेष कार्यक्रम प्रारम्भ करने का प्रयास करना चाहिए।

वैदिक सिद्धान्तो का जब कहीं भी किसी भाषा मे प्रस्तुतिकरण हो उनके साथ वेद का नाम तथा सन्दर्भ सख्या अवश्य दी जानी चाहिए जिससे उस विषय का सम्बन्धित व्यक्ति उसकी गहराई मे जाने की रूचि उत्पन्न कर पाए।

हमे विश्व समुदाय को सन्तोष जनक तरीके से स्पष्ट करना चाहिए कि वेद एक अद्वितीय निर्देशिका है तथा मानवता के व्यवहार की सहिता है। धरती पर किसी भी प्रकार की समस्या का समाधान वेद मे विद्यमान है।

सयुक्त राष्ट्र सघ तथा अलग अलग देशो की सर्वोच्च सस्थाओ को समय समय पर किसी समस्या का वैदिक सिद्धान्तो पर आधारित समाधान प्रस्तुत करते हुए ज्ञापन भेजे जाने चाहिए।

मानव का भ्रातृवाद तथा ईश्वर का पितृवाद – वेद के सुनहरे सिद्धान्त हैं जिन्हे समूचे विश्व की बीमारियो के इलाज के रूप मे प्रयोग किया जा सकता है।

हमे समूचे मानव जगत को सफलता पूर्वक यह समझाना चाहिए कि उनकी व्यक्तिगत पारिवारिक सामाजिक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय बुराईयो का मूल कारण है –

१ एक ईश्वर के अस्तित्व मे विश्वास न करना यह विश्वास न करना कि समूची सृष्टि ओर समस्त आत्माओ का उत्पत्तिकर्ता केवल एक ही ईश्वर है।

२ यह विश्वास करना की कोइ एक व्यक्ति ईश्वर है या ईश्वर क अवतारवाद मे विश्वास करना व्यक्ति मूर्ति पत्थर पानी या अन्य खगाल तस्वीरो को ईश्वर मानकर पूजा करना।

हमे समूचे मानव जगत को यह समझाना चाहिए कि किसी भी सिद्धान्त का अध्ययन और पालन सर्वोत्तम महत्व का है न कि कवल मात्र प्रतीकात्मक रूप मे उस सिद्धान्त को देखना।

हमे मानव जगत को यह भी समझाना होगा कि वेद जीवन यापन का एक पवित्र ढग उपलब्ध कराते है। ब्रह्मचय और योग वह मूल वैदिक निर्देश है जिनका अध्ययन और क्रियान्वयन किया जाना अत्यन्त आवश्यक है। प्रदूषण और पर्यावरण से सम्बन्धित सभी समस्याओ का निदान केवलमात्र यज्ञ है। ☐

महिला सम्मेलन

दम्पत्ति एक वैदिक शब्द है जिसका अर्थ है एक घर के दा मालिक जा परिवार मे पति और पत्नी के एक समान स्तर का समर्थन करता है।

अत सर्वप्रथम हम यह सकल्प पारित करते हैं कि हम समाज मे ऐसी मान्यताओ को स्थापित करने का प्रयास करेगे कि

१ महिला को बन्धुआ नौकर या पुरुष के पैर की जूती नही समझा जा सकता

२ महिला को वेद मन्त्रो के उच्चारण या अध्ययन अथवा सस्कार आदि कराने से रोका नही जा सकता

३ विवाह एक पवित्र तथा आध्यात्मिक बधन है जो वर और वधु के जीवन काल तक बना रहना चाहिए। इसे दोनो मे से किसी एक के वहम या अस्थिर मन के कारण तोडा नहीं जा सकता।

वैदिक धर्म मे महिला के लिए उच्चावस्था का निर्देश आर्य सभ्यता और सस्कृति का उज्ज्वल पक्ष है।

महिला को नीचा समझना पुरुष के पतन और परिणामत सम्पूर्ण समाज के पतन का कारण है।

हम पुन मनु महाराज के उस निर्देश को अपनी प्रेरणा शक्ति की तरह सकल्प रूप मे धारण करते है कि

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता

जहा महिला का सम्मान और पूजा होती है वहा ज्ञानवान एव सर्वोच्च आत्माए मगलानन्द पूर्वक निवास करती हैं।

अत हम सकल्प करते हैं कि महिला का योनाचार भददे विज्ञापनो या अन्य व्यवसायिक कार्यो के लिए प्रयोग करने का विरोध करेगे।

हम महिला जगत को आह्वान करते है कि महिला को समाज मे मात्र शक्ति के रूप मे प्राचीन सर्वोच्चता पर प्रतिष्ठित करवाने के इस पवित्र उददेश्य के लिए आर्यसमाज आन्दोलन से जुडे।

हम मातृशक्ति को उनके प्रथम अधिकार एव कर्त्तव्य का स्मरण कराना चाहते है कि अपनी सतति के चरित्र का निर्माण – गर्भावस्था से लेकर तब तक जब सन्तान पूरी तरह से समझदार न हो जाए की पूर्ण जिम्मेवारी उन पर ही है। इस सम्बन्ध मे वे मानवता की निर्माता है – शरीर और बुद्धि दोनो की।

हम विश्व के समस्त आर्यसमाजियो को यह स्मरण कराना चाहते है कि समाज की बेटियो को सही तथा सास्कृतिक शिक्षा देने के गुरुतर दायित्व मे लापरवाही न करे जिससे उपरोक्त लक्ष्यो की प्राप्ति सम्भव हो।

असहाय अबलाओ तथा विधवाओ का केवलमात्र किस्मत की दया पर नहीं छोडा जा सकता। उनकी क्षमताओ के अनुसार उनकी पुनर्वास के लिए हमे अथक प्रयास करते रहना चाहिए। ऐसी आत्माओं के आशीर्वाद समाज के लिए बहुत मूल्यवान हैं।

हम उस विचार का भी विरोध करते हैं जो विधवाओ को किसी भी अवसर के लिए श्रापित या अपशगुन मानता है।

हम महर्षि दयानन्द जी के निर्देशो को अपने सकल्प के रूप मे पारित करते हैं जिन्हे उनके अनुयायियो ने विगत १२५ वर्षों तक धारण किया है जिनके तहत अधिक से अधिक विधवाश्रम अनाथालय तथा मातृशक्ति के लिए अन्य शिक्षण आदि सस्थाओ को खोलने की व्यवस्था की जानी है। ☐

प्रकाश की तलाश में

प्रकाश एक अदृश्य शक्ति हे जो हमार अन्दर दृष्टि की सम्वदना उत्पन्न करती है जिसक द्वारा हम अपन आस पास की वस्तुए दख पाते है।

तकनीकी मायनो मे यह परिभाषा प्रकाश के सम्बन्ध म एक वैज्ञानिक सत्य मानी जा सकती हे जिसका मूल स्रोत सूर्य हे। लकिन उस वक्त क्या होता ह जब हमारी धरती सूय की तरफ दूसरा हिस्सा कर लेती हे अथात हमारे हिस्से पर रात्रि का वातावरण आ जाता है।

विज्ञान के प्रयास से हमे रात्रि मे भी प्रकाश उपलब्ध हो सका है।

परन्तु क्या यह मानवता के लिए सब कुछ है ?

नहीं मानव अब भी किसी प्रकाश की तलाश म हे। मानव अब भी यह महसूस करता हे कि भौतिकता का ज्ञान जिसक द्वारा वह अपने समस्त स्वार्थो की सिद्धि करता जा रहा है मानवता के लिए घातक ह।

आत्मा का प्रकाश अन्तत हमे मार्गदर्शन उपलब्ध कराता है।

उस प्रकाश की आवश्यकता मानव की इन्द्रिया का नही ह वास्तव म आत्मा ही स प्रकाश की वास्तविक अधिकारी है।

वेद का एक लोकप्रिय कथन हे।

तमसो मा ज्योतिर्गमय।

मुझ अन्धकार स प्रकाश की आर ल चलो।

सामान्य व्यक्ति जो अन्धकार मे जी रहे हे विवाद और अव्यवस्थाओ का निर्माण करत हे तथा एक दूसर को तुच्छ समझते हुए स्वय इस बात की भी जानकारी नहीं रखत कि उन्हे किस मार्ग का अवलम्बन करना है।

बाहरी दृष्टि तथा बाहरी प्रकाश ऐसे व्यक्तियो के बचाव के लिए सक्षम नही।

अत अपनी आन्तरिक दृष्टि का जागृत करने तथा आन्तरिक ज्ञान की प्राप्ति क लिए हमारी आत्मा का जिस प्रकाश की आवश्यकता ह वह हे स्वय का ज्ञानवान बनाना तथा आध्यात्मिक रूप म उन्नत करना।

बाहरी दृष्टि खोलकर आप इश्वर की सृष्टि को दख सकते हो।

बाहरी दृष्टि का बन्द करक आप साक्षात इश्वर की सगति का अनुभव ले सकते हो।

आन्तरिक दृष्टि ज्ञान का प्रतीक है।

कौन सा ज्ञान ?

महर्षि दयानन्द जी न घोषणा की थी कि वेद सत्यज्ञान की पुस्तक है। उन्होने वेद तथा अन्य सैकडो आष ग्रन्थो का ईश्वरीय अमृत पिया। उन्होने बाइबल ओर उसके साथ कुरान का भी अध्ययन किया तथा सत्य पर प्रकाश डालने के निर्णय पर पहुचे।

उनका अमर ग्रन्थ बडे साथक रूप म सत्यार्थ प्रकाश अर्थात सत्य का प्रकाश पुकारा गया। १८७३ से समूचे विश्व के आर्यजन इसी सर्वोच्च प्रकाशित ग्रन्थ से प्रकाश ग्रहण करते आ रहे है।

आज आर्यसमाज की स्थापना के १२५ वष पूण होने के अवसर पर समूचे विश्व क आयजन यह सकल्प करते है कि मानवता को प्रकाश की प्राप्ति का मार्गदर्शन देत हुए उन्हे प्रकाश के मूल स्रोत वेद या ऋषिकृत सत्य का प्रकाश अर्थात सत्यार्थ प्रकाश का मार्गदशन दने के लिए हर प्रकार क प्रयास करगे।

प्रकाश के विषय मे हमारा आह्वान हे

सच्चे प्रकाश की प्राप्ति के लिए वेदो की ओर लौट चलो।

वेद ही क्यो ?

इतिहासज्ञो मे इस तथ्य पर काई विवाद नही है कि वेद धरती पर प्राचीनतम ग्रन्थ है विशेष रूप से जब हिन्दू मुस्लिम पारसी या ईसाई आदि अस्तित्व म नही थे। उस समय बेशक किसी प्रकार के वैर विवाद या अव्यवस्थाए नही थी। उसका एक साधारण कारण था कि सर्वत्र वैदिक जीवन पद्धति का अनुपालन किया जाता था

मनुष्य का भ्रातृवाद और ईश्वरीय पितृवाद क सिद्धान्त को वेद ही प्रस्तुत करते है। यह सिद्धान्त वैदिक प्रकाश का मूल है जिसकी खोज मे हम सब इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन के अवसर पर मुम्बई मे एकत्रित हुए है और यह सकल्प करते है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बताए गये मार्ग पर चलकर ही सत्य प्रकाश को प्राप्त करेगे।

आयुर्वेद : अनोखा चिकित्साशास्त्र

— सजीव कुमार पाण्डेय

भारतीय सस्कृति वेदो पर आधारित है हिन्दू मतावलम्बियो के अनुसार चार वेद बताए गए है। सामवद ऋग्वेद अथर्ववेद और यजुर्वेद। जबकि आयुर्वेद का अथववेद म उपवेद की सज्ञा दी गई है जिसम कि चिकित्सा सम्बधी जानकारिया का वर्णन किया गया है। आज विश्व ऐलोपैथिक के ज्वर से पीडित है इसी का दुष्परिणाम है कि आये दिन एक नई बीमारी सुनने मे आ रही है। वैज्ञानिको की नींद हराम है कि आखिर इन स्वास्थ्य सम्बन्धी विकारो से कैसे बचा जाए। विश्व के वैज्ञानिक तथा चिकित्साशास्त्री धीरे धीरे इस निष्कर्ष पर पहुच रहे हैं कि विविध रासायनिक औषधियो के प्रयोग से मानव की स्वाभाविक रोग प्रतिरोधक क्षमता मे कमी आती जा रही है। इन एण्टीबायटिक दवाओ ने चालीस के दशक मे पेन्सलीन के रूप मे अपन पाव पसारना प्रारम्भ किया। इन औषधियो ने कई असाध्य रोगो को निष्फल करने मे अपना प्रभाव तो दिखाया लेकिन २१ वी सदी के आते आते एण्टीबायटिक दवाओ का प्रभाव कम होता जा रहा है क्योकि इन औषधियो मे कोई भी एसी औषधि नही है जिनके दुष्परिणाम सामने न आए हो। उदाहरणस्वरूप इनक सवन स रक्त चाप पाचनतन्त्र एव हृदय राग सम्बधी कइ बीमारियो ने समाज मे जन्म तो लिया है। सन १९९ म नीदरलैण्ड मे आयोजित एक गोष्ठी मे एण्टीबॉयटिक औषधियो की कार्यक्षमता की कमी तथा २१ वी शताब्दी को वैकल्पिक चिकित्सा का विचार पर विचार किया गया कि आखिर मनुष्य की राग की प्रतिरोधी क्षमता को किस तरह नियन्त्रित किया जा सकता है। इस गोष्ठी मे एक विचार जो उभर कर सामन आया वह यह था कि आयुर्वेद के द्वारा ही दुष्परिणाम रहित सफल चिकित्सा की जा सकती है। इस दिशा मे आयुर्वेद द्वारा वर्णित दिनचर्या आहारशास्त्र जडी बूटी अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

लगभग २० वर्ष पूर्व ऐलोपैथिक से ही मानव स्वास्थ्य को नियन्त्रित करने का लक्ष्य रखा गया था परन्तु २१ वीं सदी के आते आते इस गुब्बारे की हवा निकल गयी। वास्तविकता देखी जाए तो ऐलोपैथिक जो कई असाध्य रोगो को भी समाप्त करने का दावा करती है अभी तक जुकाम खासी जैसी साधारण रोगो तक का इलाज भी सफलतापूर्वक नहीं कर सकी है। हा यदि इन समस्याओ को आयुर्वेद के माध्यम से निदान किया जाए तो शायद आसानी होगी। आज जब अनक प्रकार के रासायनिक औषधियो से दुनिया के लोग परेशान होकर प्राचीन स्वास्थ्य व्यवस्था की आर देखन लगे है। आयुर्वेद क ज्ञाताओ का दायित्व इस दिशा मे और अधिक हो गया है।

आयु का विचार करते समय यह स्मरण रखना होगा कि आयुर्वेद के अनुसार शरीर इन्द्रियो मन तथा आत्मा इन चारो के समुच्चय को आयु माना गया है। इनको सही रखने पर ही शरीर भी स्वस्थ रहता हे। प्रत्येक प्राणी की आन्तरिक रोग प्रतिरोधी क्षमता ही उसे लम्बे समय तक स्वस्थ रख सकती है। भोगवादी परिणाम के स्वरूप एडस जैसा भयानक रोग विश्वव्यापी होता जा रहा है। एडस ही नहीं आज शरीर की प्रतिरोधक क्षमता समाप्त होने से कई अन्य तरीक की बीमारियो फैलती जा रही है। परन्तु ऐलौपैथिक मे प्रतिरोधक क्षमता बढाने मे कोई दवा नहीं है जबकि आयुर्वेद मे जडी बूटियो के माध्यम से रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढाया जा सकता है। इसी प्रकार भारतीय बौद्धिक सम्पदा को लूटने के लिए हल्दी नीम जैसे सर्वसुलभ तथा ज्ञात गुणो वाली वनस्पतियो पर पेटेन्टीकरण के माध्यम से अपना अधिकार जमाने के लिए विदेशी शक्तिया लगातार प्रयास कर रही हैं। इससे हम यह कह सकते हैं कि आज भारत ही नहीं बल्कि विदेशी भी आयुर्वेद चिकित्सा की शरण लेने लगे हैं। वे भी जान गय हैं कि एण्टीबायटिक दवाओ से नुकसान हो रहा है तथा वे प्रभावहीन हो रही है जबकि आयुर्वेद के माध्यम से हर तरह के रोगो से लडा जा सकता हे। ❑

स्वर्ग की तलाश में

रवग और नरक दो प्रकार की अवस्थाए है प्रथम सुख ओर आनन्द का आभास कराती है तो दूसरी दुख विपदा विपत्ति कष्ट आदि का सकेत करती है।

स्वर्ग और नरक को कल्पना कहकर छुटकारा पा लेना इतना सरल नही हे क्योकि ससार भर के प्राणियो के सुख दुख का पैमाना एक नहीं है।

वैसे वैदिक सिद्धान्त इस वक्तव्य का समर्थन करते है कि

जीव को विशुद्ध सुख का अनुभव केवल मुक्तावस्था (मोक्ष) मे होता है। उस अवस्था की सिद्धि मृत्युउपरान्त भी हो सकती है और जीवन काल मे भी।

जब हम सुख ओर दुख की अवस्थाओ पर चिन्तन करते है तो वदो की इस धरती पर उत्पन्न योगी ऋषियो महर्षियो के जीवन हमे इतना मार्ग दर्शन तो अवश्य उपलब्ध कराते है कि योग साधना से आत्मा इतना ऊचा हो सकता हे कि वह सुख दुख के अनुभव से छुटकारा पा ले।

प्रकाश की तलाश क बाद श्रृखला के दूसरे चरण मे हमने इन्सान की तलाश करने का मार्गदर्शन प्राप्त कर लिया। परन्तु स्वर्ग की प्राप्ति अब केवल सकल्प मात्र स सम्भव नही।

स्वग की खाज सतत अभ्यास से तब पूरी होगी जब हम जीवन्मुक्त की अवस्था को पा लेगे।

जीवन मुक्त होने मे आने वाली बाधाओ को अभ्यास द्वारा ही पार किया जा सकता है।

भोग वृति छोडेगे तो रोग से छुटकारा मिलेगा। परन्तु क्या केवल सकल्प (resolve) करने से ऐसा सम्भव है नही आज ही अभ्यास के प्रारम्भ करने की आवश्यकता है।

परिस्थितियो को दाष देना छोडेगे तभी हमे अपनी कमिया ढूडने का अभ्यास होगा और सुधारवाद की और हमारा अपना कदम बढेगा। दूसरो को सुधारने से पहले हमे स्वय को सुधारने का अभ्यास करना होगा।

परमात्मा की लीला कहकर हमारी अन्तरात्मा हमारी असफलता पर प्रसन्न नही होगी। हमे अपने कर्मो के दोष सुधार कर कार्यो मे से स्वार्थ के तत्व बाहर फैक कर निष्कामता का अभ्यास करना होगा। फिर असफल रहने पर भी हमारी अन्तरात्मा प्रसन्न रहेगी क्योकि उसके कर्म मे निर्लेप कर्त्तव्य पालन का भाव था।

जीवन केवल आकस्मिक घटनाओ की श्रृखला नही है हम प्रयास करे तो केवल अपने ही नही अपितु दूसरो के दुखो को भी निकासद्वार दिखा सकते है।

हमारा वर्तमान जीवन आत्मा का पूर्ण जीवन नही है फिर सुख दुख का निपटारा केवल इसी जीवन म कैसे हा सकता है यह तो एक श्रृखला है कर्मो का कछ हिस्सा इसी जन्म मे फलित होता है ता कुछ आगे आने वाले जन्मो मे। वर्तमान तो समुद्र मे एक बूद के समान हे अनन्त काल मे एक क्षण के समान है।

इन धारणाओ का अभ्यास जैसे जैसे बढता जाता है वैसे वैसे सुखवाद की कामना के उत्तावलेपन के स्थान पर धैर्य और गम्भीरता का विकास होता है। मनुष्य के सात्विक पुरुषार्थ के मार्ग पर चलते ही मोक्ष का द्वार दिखाई देने लगता है।

स्वर्ग की खोज अर्थात सुखो की प्राप्ति के लिए हमे दुखो से अछूता और अप्रभावित रहने का अभ्यास करना पडेगा। अपने दुखो को गौण और दूसरो के दुख निवारण को प्राथमिक समझ कर उनके निवारण मे प्रयासरत आत्मा ही स्वर्ग का वास्तविक अधिकारी है।

आर्यसमाज का इहिास ऐसे जन नायको स्वर्गवासियो से भरा पडा है जिन्होने मानवता धर्म और देश की खातिर बडे से बडे बलिदान को भी बडा नही समझा।

आर्य समाज के विगत १२५ वर्षो मे उत्पन्न उन स्वर्गवासियो का स्मरण करते हुए हम ईश्वर से प्रार्थना करत है कि हम जीवित रहते हुए स्वर्ग समान वातावरण म रहने के योग्य हो तथा जीवन लीला की समाप्ति पर मोक्ष द्वार मे प्रवेश के अधिकारी बने।

"इन्सान की तलाश में"

धर्म और विज्ञान का अनसुलझा प्रश्न है मैं कौन हू ? who am I ? यह यही प्रश्न महर्षि दयानन्द जी ने अपने गुरु विरजानन्द जी के समक्ष प्रस्तुत किया था।

सगठन के लिए एक समान विचारधारा वाले आत्माओ की आवयकता होती है। जिसे आप के इस सम्मेलन मे "इन्सान की तलाश मे" विषय के रूप मे प्रश्नाकित किया गया है।

दूसरे इन्सानो की तलाश से पूर्व हमे अपनी आत्मा को पहचानना होगा तभी हम अन्य सम आत्माओ को सगठन के दायरे मे भ्रातृवत स्नेह से जोड पाएगे।

इन्सान से हमारा अभिप्राय केवल मात्र शारीरिक इन्सान से नही अपितु उन पवित्र आत्माओ से है जिनके पुनीत कार्यो पर ससार टिका है।

आत्मा का मूल धर्म ज्ञान है मूल कार्य परोपकार है और मूल उपासना भी किसी व्यक्ति रूपी ईश्वर की न होकर उस निराकार ब्रह्म की है जो सृष्टि का रचयिता है।

ऐसे धर्म कर्म और उपासना वाले आत्माओ (इन्सानो) की तलाश मे है – आर्यसमाज विगत १२५ वर्षों से और भविष्य मे भी यह तलाश जारी रखने का सकल्प है। ऐसे इन्सानो से ही आर्य समाज का गौरवशाली १२५ वर्षीय इतिहास भरा पडा है।

भविष्य में भी ऐसे इन्सान आर्यसमाज से जुडें इसके लिए हमें प्रयासरत रहना है यही हमारा सकल्प है।

परन्तु जब तक प्रथम प्रश्न मैं कौन हू ? Who am I ? का उत्तर हम नहीं ढूड पाते तब तक दूसरे इन्सानो की खोज व्यर्थ है।

महर्षि दयानन्द जी ने भी पहले स्वय की खोज की थी गुरु विरजानन्द की मदद से। हमे भी स्व निरीक्षण करना है। क्या हम इन्सान हैं ? क्या हमारा मूल धर्म – ज्ञान की प्राप्ति है ? क्या हजार मूल कर्म – परोपकार है ? क्या हमारी उपासना – वैदिक सिद्धान्तो के अनुरूप है ?

समस्त स्वार्थों पद पैसा और अन्य साधनो की लालसा का जब तक पूर्ण त्याग नहीं होता तब तक हम इन्सान की श्रेणी मे स्वय को मान कर स्वय को धोखा दे रहे हैं और समाज को भी ठग रहे है तब तक हमे स्वीकार करना चाहिए कि हम लुटेरो के समान ही है। अन्यथा स्वार्थ से पूर्ण सभी तत्वो की लूट खसोट हमे तत्काल छोडनी होगी आज ही से अभी से।

क्या हम अपना स्वअर्पित धन व्यय करके आर्यसमाज के कार्य नही कर सकते ? क्या हम बिना पदो के आर्यसमाज के कार्य नही कर सकते ? ऐसे श्रेष्ठ आत्मा इन्सानो की ही हमे तलाश है जो आर्यसमाज की गाडी को निस्वार्थ भाव से आगे खींच सके।

जो इन्सान इन कसौटियो पर खरे उतरते है उनसे हम आशा करते है कि तत्काल सार्वदेशिक स्तर पर आर्यसमाज के कार्यों के लिए अपने तन मन और धन की सीमाओ को समाप्त करके प्राणी मात्र के उत्थान हेतु महान मानवतावादी कार्यों के सम्पादन मे सहयोग देने के लिए तैयार रहे।

आशा है हमारी इस तलाश मे आप मे से कुछ अवश्य ही समायोजित होने का सकल्प घोषित करेगे।

वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढना पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आंखो देखा हाल

– ब्रिगेडियर चितरजन सावन्त, *वी०एस०एम०*

यह मुम्बइ महानगर है स्थान है आर्यसमाज विश्व का सर्वप्रथम आयसमाज काकडवाडी। हवन कुण्ड के चारो आर और हॉल मे बडी सख्या मे आर्य नर–नारी एकत्र है। श्रद्धा से स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आयसमाज मे हवन हो रहा है। आयसमाज की स्थापना के सवा सौ साल पूरा होने के अवसर पर चेत्र शुक्ला प्रतिपदा सम्वत २०५८ के दिन यो कहिए सोमवार २६ मार्च २००१ को हम वही हवन कर रहे है जहा सौ आय जनो ने स्वामी दयानन्द सरस्वती क सानिघ्य मे बुधवार ७ अप्रेल १८७५ का हवन किया था। आयसमाज की विधिवत स्थापना हुई थी। अत आज ऐतिहासिक दिन है। युगादि यज्ञ मे हम आहुति डाल रहे ह। मेरे हाथ से स्रुवा एक वृद्ध सज्जन ल लत ह वह स्वय घृन आहुति चाल रहे है। कहते है कौन जाने कितन दिन जीवित रहूगा। बुरा न माना आप का हक ल लिया। स्वतन्त्रता सेनानी हू। मेरे मलिन मन म मुस्कान आ जाती हे। मन्त्रोच्चार क साथ सामग्री की आहुतिया दे कर म ओर वह एक समान हर्षित है। हम दोनो ही दयानन्द के सेनिक है।

उपस्थित आयजनो के मन मे लालसा है कि यज्ञ म हवन कुण्ड मे स्वय आहुति डाले। कम से कम सर्व पूण स्वाहा कह कर अपने हाथ से सामग्री समर्पित करे अग्नि को। वे पूर्णाहुति क लिए हवन कुण्ड के निकट आना चाहत है। कोलाहल किन्तु हल्का आचार्य वागीश स्पष्ट करते ह कि दूर कोने मे बैठ आर्य नर–नारी की उतनी ही भागीदारी है यज्ञ मे जितनी कि वेदी पर बैठे होता की। कुछ समझे और कुछ नही समझे। इस बीच एक व्यक्ति एक बडी ओर पुरातन सी कुर्सी लाया ओर मच पर रख कर बोला यह वही कुर्सी है जिस पर स्वामी दयानन्द सरस्वती आर्यसमाज स्थापना के दिन बैठे थे। भीड उधर मुड गयी। कुछ महिलाओ ने साडी क पल्लू से कुर्सी का स्पश किया ओर फिर पल्लू माथे लगाया। माइक पर आवाज आई ऐसा न कीजिए। काकडवाडी मे जड पूजा वेसे ही हे जेस काबे म कुफ्र।

दृश्य बदलता है। चार दिन पहले बान्द्रा पश्चिम का रिक्लेमेशन ग्राउण्ड। विशाल पण्डाल रग बिरगा। भव्य मच की पृष्ठभूमि मे गुरु विरजानन्द स्वामी दयानन्द सरस्वती और प० लेखराम के विशाल चित्र। मच मनमोहक है। समारोह सयोजक केप्टन देवरत्न आर्य की योजना और कार्यान्वयन पग पग पर प्रतिबिम्बित है। आर्यसमाज साताक्रूज से सचालन हो रहा है। युद्ध स्तर पर कार्य हो रहा है। हर सेना नायक और सिपाही अपना अपना काम मुस्तैदी और निष्ठा से कर रहा है। व्यवहार मे शालीनता और वाणी मे माधुर्य है। महिलाए कन्धे से कन्धा मिला कर काम कर रही है मात्र महिला सम्मेलन के लिए नही अपितु सम्पूण व्यवस्था के लिए। महाराज दशरथ क साथ केकेयी का रणभूमि मे जाना हमारी परम्परा है। आतरिक और बाह्य सौदर्य का सम्मिश्रण है। आर्य महिलाए देश–विदेश स आ रही हे मुम्बई की महिलाए स्वागत करने मे दक्ष है। श्रीमती शिवराजवती आर्या श्रीमती सुचिता आर्या अपनी नयी बहनो का मार्गदर्शन भी कर रही हे।

आज अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का प्रथम दिवस है। शुक्रवार २३ माच २००१ प्रात साढे सात बजे डॉक्टर स्वामी सत्यम के ब्रह्मत्व म आरम्भ होता हे राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ। वातावरण वेदमय है। १२५ यजमान दम्पति हैं नए धोए और स्वच्छ वस्त्रो मे प्रसन्नचित्त। उनके दोनो कन्धो पर लाल अगवस्त्रम है जिस पर स्थान–स्थान पर अकित है ओ३म। प्रशासनिक प्रबन्ध आर्यसमाज अधेरी का है। शुचिता एव स्वच्छता कण कण मे है। सामग्री समिधा घी हवन पात्र ३१ हवन कुन्डो के पास पर्याप्त मात्रा मे है। उपदेशक महाविद्यालय टकारा के विद्यार्थी आचार्य रामदेव के निर्देशन मे गृहस्थो की सहायता यज्ञ कर्म मे करने को तत्पर है। त्रुटिहीन व्यवस्था है। जनेऊ हवन पुस्तिका तौलिया जल आदि प्रत्येक होता के लिए आसन के निकट रखे है। यजमान दम्पति यज्ञ करने का अधिकार पाने के लिए प्रति दम्पति एक हजार रुपये जमा कर चुके हैं। मै यहा अकेला हूँ, पत्नी नोयडा मे है अत मेरे लिए राशि मात्र पाच सौ रुपये। वह भी मित्र चौधरी (पूर्व राजदूत) दम्पति के भतीजे ने भरी। वे और मै एक ही वेदी पर ओर स्थानीय आर्य सतीश चन्द्र गुप्त के घर मे ठहरे हैं। वैदिक युनिवर्सिटी अमेरिका के कुलपति स्वामी सत्यम सक्षिप्त परिचय के साथ विधिवत यज्ञ आरम्भ करते है। वाणी मे ओज है। गुरुकुल गौतमनगर एव गुरुकुल एटा के ब्रह्मचारी और कन्या गुरुकुल हाथरस की छात्राए वेदपाठी है। प्रभावित करते है। यज्ञ सम्पन्न होता है।

यज्ञ स्थल के माइक पर एक भिन्न स्वर है आप है कैप्टन देवरत्न आर्य। सैन्य सचालन सी कार्य कुशलता महासम्मेलन की योजना मे परिलक्षित हे। छोटी से छोटी आर बडी से बडी बात पर ध्यान दिया गया हे। आर्यसमाज के सभी धडो एव खण्डो को गुरुकुल एव डी०ए०वी० स्कन्धो को एक साथ एक मच पर ला खडा किया इस आय महासम्मेलन ने। महती उपलब्धि हे। आयप्रतिनिधि सभा मुम्बई के प्रधान महाशय ओकारनाथ आर्य मन्त्री महाशय मिठाई लाल सिह ओर सार्वदशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सयुक्त प्रयास का मीठा फल है यह। फल की मिठास और उभरती है यदि कही किसी कोने मे हल्की खवस हो। आर्य महासम्मेलन का अथक प्रचार हुआ। हवन के बाद अभी कैप्टन देवरत्न आर्य ने बताया कि दस हजार आर्य नर–नारी अतिथियो और प्रतिनिधियो के आने की आशा थी। पहले ही दिन पहुच चुके हे लगभग पन्द्रह सहस्त्र। प्रशासनिक व्यवस्था की चरमराहट यदि न सुनाई देती तो यह अस्वाभाविक होता। शौचालय की स्वच्छता पर प्रतिकूल प्रभाव पडा। सयोजक की क्षमा याचना से रोष और आक्रोश दब गया। अनेक आर्य विद्यालय आगे आये और आवासीय समस्या का समाधान मिल जुल कर किया। देश–विदेश से आये लगभग पन्द्रह से बीस सहस्त्र आर्य–समाजियो ने श्रद्धा और ध्यान से भजन प्रवचन सुना क्या इस बात का यह प्रमाण नही हे कि प्रशासनिक व्यवस्था अतिरिक्त जनसख्या का बोझ उठाने मे सफल हुई ?

उदघाटन समारोह मे श्री वेदव्रत शर्मा महामन्त्री सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा ने सगठन की शक्ति पर बल दिया और श्री विमल वधावन सम्पादक वैदिक लाईट ने घोषणा पत्र प्रस्तुत किया। आर्य श्रोता बडे ध्यान से सुन रहे थे उनके सुझाव पर गोवश सवर्द्धन भी घापणा पत्र मे सम्मिलित किया गया। श्री विलासराव देशमुख मुख्य महाराष्ट्र इस सभा के मुख्यमन्त्री अतिथि थे। उनकी प्रतीक्षा करते करते आखे पथरा गईं किन्तु वे न आए। आर्य विद्या मन्दिर के छात्रा ने अन्य आर्यों के लिए स्वागत गान गा कर सतोष किया। अधिकतर केन्द्रीय मन्त्री और महाराष्ट्र के मत्री महासम्मेलन मे सम्मिलित होने से कतराते रहे। श्रीमती जयवन्ती बन मेहता ऊर्जा राज्य मन्त्री भारत सरकार आर श्री कृपा शकर सिह गृह राज्य मन्त्री महाराष्ट्र सहर्ष आए बोले ओर अनपस्थिति–नियम के अपवाद रहे। श्री कृपा शकर सिह ओर मुम्बइ महापालिका के उप महापौर न ता बान्द्रा के आस पास आर्ष वैदिक केन्द्र के लिए भूमि उपलब्ध कराने की हामी भरी। इस आश्वासन की परख तो आने वाला समय ही करेगा। हा मुम्बइ के निकट थाणा जिल मे प्रस्तावित वैदिक विहार परियोजना का अनावरण श्री जयन्त टिपणीस आर्किटेक्ट ने किया।

आर्य महासम्मेलन मे वक्ता और श्रोता समान रूप से व्यस्त है चारो दिन आठो पहर। मुख्य पण्डाल म कुछ न कुछ होता रहता है वृद्ध–वृद्धा जब प्रवचन सुनते–सुनते थक जात है तो लेट जाते हैं फिर स्वप्नलोक मे जाते देर कहा। कभी कभी तो बहने गीत गुन–गुनाने मे आनन्द का अनुभव करती है। मुख्य मच से आधुनिकतम वाद्य यन्त्रो के साथ वैदिक भजन लोकप्रिय हो रहे है। महू के प्रकाश आर्य दिल्ली की उज्ज्वला वर्मा मॉरिशस भजन मण्डली मुम्बई की श्रीमती शिवराजवती आर्या श्रीमती अदिति सेठ ओर आर्यसमाज सान्ताक्रुज के श्री विश्वभूषण आय अपने कठ स्वर और वाद्य–वृन्द के कारण जन–जन म जम और सगठन सूक्त का गायन लोकप्रिय हुआ।

शेष भाग पृष्ठ १५

खुशियों का खजाना

– देवराज आर्य मित्र

यदि आप हमेशा खुश रहना चाहते हो ता निम्न लिखित तथ्यो पर ध्यान दीजिए और आप उचित समझते हो तो अमल करना आरम्भ कर दीजिए। आपके जीवन मे घर मे खुशिया आने लगेगी। देखते देखते महीनो वर्षो मे आप खुशहाल हो जाओगे। चारो ओर खुशी का ही वातावरण नजर आयगा और दुख मे भी सुख का ही अनुभव करोगे।

(१) यह प्रकृति का अटल नियम है यदि आप खुश रहना चाहते हो तो अन्य प्राणियो को भी खुश देखना पसन्द करो। किसी के प्रति मन मे ईर्ष्या द्वेष का भाव मत रखो। जलचर थलचर नभचर किसी भी प्राणी को मत सताओ। सबके प्रति हृदय मे प्यार रखो। यदि आप किसी दुखिया की सहायता नही कर सकते तो उसके दुख मे दुखी होकर उसका कष्ट शीघ्र दूर करने के लिए प्रभु से विनम्र प्रार्थना ही करो। कोई प्राणी आप को कष्ट दता है या नुकसान पहुचाता है तो उससे बचने के लिए रक्षा का यथा–योग्य प्रबन्ध करो।

(२) कभी झूठ मत बोलो। झूठ को त्याग कर सच बोलो। सच कहने मे बडा आनन्द है। यदि आप से कभी कोइ गलती या अपराध हो गया है वो छोटा है या बडा हे उसे स्वीकार कर लो। सच सच बताने मे अपना अपमान मत समझो। यदि आप झूठ बोल कर छुपाने की कोशिश करोगे तो एक झूठ के साथ अनेक झूठ बोलते रहेगे फिर भी सच्चाई का एक दिन पता चल ही जाता है। सच बताने मे एक बार ही कष्ट होता है उसमे शर्म भी आती हे परन्तु बार बार लज्जित नही होना पडता है। इन्सान गलती का पुतला है। अज्ञानता और अप्रसन्नता के कारण प्राय जाने अनजाने मे गलती हो ही जाती है मगर उस गलती का जो पश्चाताप करता हे और भविष्य म फिर कभी न करने की प्रतिज्ञा करता है वही वास्तव मे मनुष्य हे। सत्य का ग्रहण करने ओर असत्य को त्यागने के लिए सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

(३) कभी किसी की वस्तु को चुरान उठाने और बिना आज्ञा के छूने की चेष्टा मत करो। सारे दिन मेहनत करो। परिश्रम और पुरुषार्थ से जो प्राप्त होता है उसमे ही सन्तुष्ट होकर निर्वाह करो। पराई वस्तु को देखकर कभी लालच मत करो। यह लालच बुरी बला है। देखो थोडे लालच के पीछे व्यक्ति फस जाता है और अपनी मेहनत की कमाई भी खो देता हे। चोरी जारी आर जुआरी करन वालो क अनेक उदाहरण है जो दण्ड भुगत रहे है। विषय विस्तार के कारण यहा वर्णन नही कर रहा शिक्षा ग्रहण करने के लिए निम्न दोहे पर विचार करो।

मक्खी बैठी शहद पर पख लिए लिपटाय।
हाथ मले और सिर धुने लालच बुरी बलाय।।

नीति कहती हे पर द्रव्येषु लोष्ठवत अर्थात दूसरे की वस्तु को मिटटी के समान समझो। जब आप ऐसी भावना रखोगे तो आपकी वस्तु को भी कोई नहीं उठाएगा और उठाएगा तो सजा पाएगा।

इस ससार मे सब से पहला सुख है निरोगी काया काया कब निराग रहेगी जब शरीर मे नया खून बनता रहेगा नया खून कब बनेगा जब पाचन क्रिया (हाजमा) ठीक रहेगा। हाजमा कब ठीक रहेगा जब सख्त महनत करोगे। मेहनत करोगे तो भूख लगेगी खाया पीया शीघ्र पच जाएगा। रात को नीद भी गहरी आएगी चाहे पत्थरो पर ही सोना पडे वही नीद आ जाएगी जबकि धनवान नीद के लिए तरसते है नीद आने वाली गोलिया खाते है। आप सख्त मेहनत तब ही कर सकत हो जब शरीर मे शक्ति होगी बल होगा। शक्ति और बल प्राप्त करने के लिए ब्रह्मचर्य का पालन करना परम आवश्यक है। ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला सर्दी गर्मी भूख प्यास और बडी से बडी विपत्ति को भी सहन कर सकता है। लोग क्षणिक स्वाद के लिए सयम को खोकर मूल्यवान धातु को शरीर से निकाल कर अपने पाव पर आप कुल्हाडी मारते हे। ब्रह्मचर्य का पालन करन से वृद्ध अवस्था नही आती और आती है तो फिर भी युवा जैसा नजर आता है। जीवन मे उमग उत्साह बना रहता है ओर शरीर मे सुख का अनुभव होता।

(५) खुश रहने का अन्तिम तथ्य है अपनी इच्छाओ को कम करो ओर आवश्यकता को बढने मत दो अर्थात अपनी आय की सीमा मे रहो। आय से अधिक खर्च करने वाला ही भिखारी बन कर दुखी रहता हे सदैव कर्जदार रहता है। जीवन को शुद्ध और सरल बनाओ। जितनी आपकी इच्छाए और आवश्यकताए कम होगी उतना ही जीने का मजा आएगा। हम यात्री है जीवन एक यात्रा है। यात्रा के दौरान हमारे पास जितना सामान कम होगा उतनी ही यात्रा मे सुविधा रहेगी। अधिक सामान वाला हमेशा परेशान रहता है। अपने पास उतना ही सामान रखो जो बहुत जरूरी है उर्दू क कवि लिखता हे –

आगाह अपनी मौत से कोई बसर नहीं।
सामान सौ वर्ष का पल की खबर नहीं।।

प्रिय सज्जनो! भौतिकता की दौड मे होड करना छोड दो। यदि सग्रह करना चाहते हो तो अपने अन्दर शारीरिक और आत्मिक बल का सग्रह करो। यही सब से बडी दौलत है जिसे कोई चोर चुरा सकता नही कोई बदमाश छीन सकता नही यह वह दौलत है जो मरते दम तक तो आपके साथ रहेगी मरने के बाद भी आपकी रहेगी।

– आर्यसमाज कृष्ण नगर दिल्ली ५१

पृष्ठ १४ का शेष

आंखों देखा हाल ----------

उपदेशको और वक्ताओ के लिए विषय–चयन रोचक रहा। पहले दिन दोपहर मे उन्होने की प्रकाश की तलाश जब सूरज सर पर था। स्पष्ट है स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे आन्तरिक प्रकाश की कामना थी। मॉरीशस के डॉ० रूद्रसेन जी नीअर और अमेठी के श्री ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने अपने विचारो से उनकी सहायता की जो अधरे मे भटक रहे थे। उसी दिन शाम को सबने सबको आर्य बनाने की ठानी और गर्जना हुई कृण्वन्तो विश्वमार्यम। दयानन्द एग्लो वैदिक कॉलेज मैनेजमेन्ट कमेटी के चेयरमैन डॉ० ज्ञानप्रकाश चोपडा ने मुख्य अतिथि के रूप मे युवा वर्ग को सक्रिय करने मे डी०ए०वी० के महत्वपूर्ण योगदान की चर्चा की। उनके स्वर और शब्द आशा का सन्देश दे रहे थे। इस सत्र की सगोष्ठी मे पिता–पुत्र द्वय महाशय रामनाथ सहगल और युवा सम्पादक टकारा समाचार श्री अजय सहगल के ओजस्वी विचार सुनने को मिले। अगले दिन २४ मार्च को हवन और प्रो० उमाकान्त उपाध्याय के प्रवचन के उपरात हमारी बौद्धिक दौड आरम्भ हुई इन्सान की तलाश मे' इस वैदिक धर्म ससद मे अनेक राजनीतिज्ञो के नाम उनकी अमुपस्थिति मे केवल छपे हुए कार्यक्रम पृष्ठ तक ही सीमित रहे। धार्मिक भाई बहनो ने वहा आए अपने आर्य भाई श्री सोमपाल जी सदस्य योजना आयोग की अगवानी की और उन्हे सुना। सासद श्री रासा सिह भी आज और दोपहर बाद उन्होने शोभा यात्रा मे एक चौराहे पर खडे होकर जयघोष किया। डॉ० कमलेश कुमार शास्त्री अहमदाबाद ने भविष्य की व्यूह रचना सगठन' पर बल दिया कल शाम के सम्मेलन मे तो आज स्वमी सत्यपति सररवती ने परमात्मा का आदेश मनुर्भव दोहराया। स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती ने कहा खो गया इन्सान आज पर उसे पुन ढूढ लाने का परामर्श दिया। सायकाल के वेद सम्मेलन मे विषय गम्भीर है किन्तु चिरकाल से चली आ रही समस्या समय भाव ने विकराल रूप ले लिया। जाने माने वेद विद्वान शुष्क और नीरस जान पडे। ६ कि०मी० की शोभायात्रा की थकान श्रोताओ ने सो कर उतारी।

रविवार २५ मार्च। हवन हुआ और शुरू हुआ स्वमी सत्यपति सरस्वती का प्रवचन। एक अन्य सब मे टिप्पणी करते हुए सार्वदेशिक प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने कहा स्वामी सत्यपति मोक्ष करे। मै तो वेद प्रचार के लिए बार–बार जन्म लेता रहूगा। अस्तु। फिर तलाश शुरू हुई स्वर्ग की जहॉ डी०आई०जी० पुलिस श्री सत्यपाल सिह ने दस मिनट मे हास परिहस की फुलझडी छोड कर मन मोह लिया अपने प्रवचन मे मैने पाया की स्वर्ग और नरक इसी जीवन की जुडवा परिस्थितिया है और श्रोताओ को सदेह स्वर्गवासी बना दिया।

समापन समारोह म [illegible] महाशय शिशुपाल रामभरोस का सम्मान किया गया। बरमिघम से आए श्री कृष्ण चापडा ने यु०के० मे वैदिक विचारधारा को लोकप्रिय बनाने के अनुभव बताए। विशेष अतिथि थे श्री टी०एन० चतुवेदी सासद। स्वागताध्यक्ष डॉ० सुखदेवचद सोनी ने इस सम्मेलन के वक्ता श्रोता तालमेल की सराहनी की। सफलता का श्रेय मिला उन अनाम कार्यकर्ताओ को जो नीव का पत्थर बन कर भवन की शोभा बढाते रहे। यह आर्य महासम्मेलन अनोखा और अनुपम था ओर बना है समस्त आर्य जगत का गौरव।

– उपवन ६०६ सेक्टर २६ नोएडा २०१३०३

वेद का मानवतावाद

– डॉ० कृष्णलाल

तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान्।
अनुल्बणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।।

ऋ० १०–५३–६

हे मनुष्य ! तू अपने जीवनतन्तु का विस्तार करता हुआ लोकमात्र के प्रकाशक को प्राप्त हो। (इसके लिए) तू बुद्धि से निष्पादित, ज्योतिष्मान् मार्गो की रक्षा कर। स्तुतिशब्द करने वाले विद्वानो के उलझन रहित कर्मरूप वस्त्र को बुन। तू मनु अर्थात् मननशील मनुष्य बन अपने को देवश्रेणी का जन बना।

यह मन्त्र सूत्र रूप मे वैदिक मानवतावाद का सार है। मनुष्य का लक्ष्य देवश्रेणी मे पहुचना है। और देव क्या है ? देव वह है जो दान दे, जो अपने ज्ञान से तेजस्वी हो और दूसरों को भी तेजस्वी बनाए। देव त्यागी है, देव ऊपर उठा हुआ उदार है। ये श्रेष्ठ मानवता के गुण हैं। इसलिए देवत्व तक पहुचने से पहले मननशील मनुष्य बनने की प्रेरणा दी गई है – मनुर्भव। मानवता से युक्त मनुष्य वह है जो केवल अपने शारीरिक सुखो से ऊपर उठकर, पशुवृत्ति त्याग कर सोचता है – सबके लिए सोचता है, सबके सुख-दु ख का चिन्तन करता है और त्याग करने को तत्पर रहता है। वही धार्मिक है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय आदि धार्मिक गुण तभी आ सकते है जब त्याग–भावना हो, इन सबका मूल त्याग ही है। यह मार्ग अकर्मण्यता का मार्ग नहीं, यह कर्म का मार्ग है – ऐसा कर्म जो निष्काम हो, जिनमे अपने पराए की उलझन नहीं। ऐसा ही मार्ग तो विद्वान् सदा बताते आए हैं। वह कर्म जो सबके लिए हो, जिससे अपनी उन्नति के साथ-साथ सम्पूर्ण समाज की उन्नति हो। यह मार्ग मानवतावादी बुद्धि से बनता है और यही ज्योति का, प्रकाश का मार्ग हैं यही देवमार्ग है क्योकि देवता अथवा विद्वान् पदार्थो के केवल प्रत्यक्ष रूप को नहीं देखता, उसे तो परोक्ष प्रिय होता है – परोक्षप्रिया इव हि देवा। वह सम्पूर्ण मानवजाति को गहराई से देखता है, उसमें विद्यमान समान सूत्र को देखता है, उसके रग–रूप जाति–देश आदि के भेद तक अपने स्वार्थ को दूर–दूर तक, गहराई तक, जन–जन मे, मन–मन में। ही सर्वव्यापी भावना तो लोकमात्र की प्रकाशक है। इसी भावना में परमेश्वर के सर्वव्यापक के, सर्वप्रकाशक के दर्शन होते हैं। अपने जीवनसूत्र का विस्तार जब मनुष्य समष्टि मे करता है तभी वह अपने गन्तव्य परम लक्ष्य तक पहुच सकता है। परमेश्वर ही वह समष्टि की, मानवता की उत्कृष्ट भवना है। मननशील, कर्मयुक्त, उलझन रहित, तेजस्वी उत्कृष्ट मानवता ही देवत्व है। वही मानवता का लक्ष्य है। अपने भीतर विद्यमान उसी देवत्व को हमे उत्पन्न करना है, उसी को जगाना है। यही वेद का सन्देश है।

वेद की अधिकाश प्रार्थनाओ में प्रार्थी के लिए उत्तमपुरुष बहुवचन के प्रयोग से ही यह बात स्पष्ट है कि वेद समष्टिगत विचारधारा लेकर चलता है। यथा प्रसिद्ध गायत्री मन्त्र मे "हम सबकी बुद्धियों को प्रेरित करने" की प्रार्थना," एक अन्य मन्त्र में हम सब के लिए अन्धकार से निकल कर उत्तम सूर्य के समान ऊपर उठने की" प्रार्थना, "हे सबका नेतृत्व करने वाले परमेश्वर (अग्नि) हम सबको उत्तम धन के लिए शोभन मार्ग से ले जाओ" आदि प्रार्थनाओं मे सबके लिए सामूहिक प्रार्थना है, व्यष्टि के लिए नहीं।

वेद की उक्तियो मे सामञ्जस्य और तदनुसार सामाजिक भाव स्पष्ट झलकता है। वेद सब प्राणियों को अपनी आत्मा मे और अपनी आत्मा को सब प्राणियो में देखने की प्रेरणा देता है। यही वह स्थिति है जिसमें व्यक्ति समष्टि से एकरूप होकर घृणा से ऊचनीच की, अलगाव की भावना से मुक्त हो सकता है। सबके प्रति उसकी सहानुभूति होती है – सबके सुख–दु ख की अनुभूति उसकी अपनी अनुभूति होती है। इसीलिए वेद निर्देश देता है कि तुम समान मन वाले सखा होकर जागो।" परन्तु इस प्रकार की भावना मनुष्य सीखेगा कहां ? वास्तव मे समाज की पहली इकाई परिवार है परिवार ही आधार है।

परिवार ही वह स्थान है जहां मनुष्य बाल्यावस्था से ही विशेष सामाजिक गुणों को संजोता है। वह स्थान है जहां मनुष्य पूर्ण आयु के लिए संस्कार लेकर चलता है। इन अनेक परिवारों से ही समाज का निर्माण होता है। इसलिए अथर्ववेद के प्रसिद्ध सामनस्य सूक्त में सौमनस्य की कामना व्यक्त की गई है। जिस परिवार के सदस्यो में परस्पर ही झगडे होंगे, वे समाज मे कैसे शान्तिपूर्वक रह सकते हैं। यह तो प्राय. देखा ही जाता है कि जब मनुष्य के परिवार मे कोई संकट होता है या कोई हर्ष का अवसर होता है तो उसकी छाया उसकी कार्यक्षेत्र पर अथवा सम्बद्ध व्यक्तियो पर पडती है। पत्नी को पति के प्रति माधुर्ययुक्त शान्त सुखद वाणी बोलने का निर्देश है। इसी प्रकार भाई–बहिन आपस मे भद्र वाणी का प्रयोग करें। वेद मे ऐसे समभाव का, ऐसे परस्पर प्रेम का उपदेश है जैसा गाय का अपने नवजात बछडे के प्रति होता है। वहा पूर्ण सहानुभूति होती है, पूर्ण एकात्मता होती है। हम कल्पना कर सकते हैं कि पूर्ण समाज मे यदि वह प्रेम, यह एकात्मता हो तो समाज कितना सुखी होगा। वेद मे प्रार्थना है कि हम माधुर्ययुक्त वाणी का ही प्रयोग करे। मनुष्य का मनुष्य के प्रति बहुत व्यवहार वाणी के द्वारा होता है। वाणी आकृष्ट भी कर सकती है और वाणी विद्वेषकारिणी भी हो सकती है।

परिवार से आगे चलकर ही इस सौमनस्य भावना की परिणति पूर्ण समाज मे होती है। वेद में पूर्ण विश्व को एक समाज मानकर साथ चलने, एक साथ समान विचार करने की प्रेरणा दी गई है, जिससे कि सब साथ मिलकर सुखपूर्वक रह सके। पूर्ववर्ती देवो अर्थात् दिव्य प्राकृतिक शक्तियो अथवा विद्वानो, प्रबुद्ध व्यक्तियो ने भी इसी प्रकार समान भाव से अपना–अपना भाग प्राप्त किया है। वही उत्तम सगति का मार्ग हमें अपनाना है।

इस सगति का यह अर्थ कदापि नही कि समाज से विविधता ही समाप्त हो जाए। यह असम्भव है क्योकि मनुष्य जन्म से ही अपने कर्मों के अनुसार कुछ विशेषताए या प्रवृत्तिया लेकर आता है। यह बात सम्पूर्ण प्रकृति मे भी देखी जाती है। वेद मे स्वीकार किया गया है कि मनुष्य के दोनो हाथ देखने मे एक समान होने पर भी एक समान कार्य नहीं करते। सामान्यतया जो कार्य हम दाएं हाथ से निपुणतापूर्वक सहज ही कर लेते हैं, वह उतनी सुविधापूर्वक बाए हाथ से नहीं कर पाते। एक ही गाय की दो बछियाए जब दूध देने योग्य होती हैं तो वे भी एक सा एक जितना दूध नहीं देतीं। दोनों मे अन्तर अवश्य होता है। यहां तक कि एक ही माता–पिता के यमज पुत्रों का सामर्थ्य ठीक एक सा नहीं होता–उनमे भी अन्तर होता है। इसी प्रकार एक ही कुल के व्यक्ति अपने–अपने स्वभाव के कारण एक सा दान नही दे पाते। हम यह भी जानते है कि मात्र सृष्टि के अस्तित्व मे आने के लिए विषमता आवश्यक है। जब तक सत्त्व, रजस्, तमस् – ये तीनो गुण समावस्था में रहते हैं, तब तक सृष्टि नहीं होती। परन्तु फिर भी सर्व–कल्याण का एक उद्देश्य लेकर भी अपने–अपने स्वभाव के अनुसार मनुष्य कार्यरत रह सकता है। जिस प्रकार पृथ्वी विविधरूपो वाली होती हुई भी सब प्रकार के मनुष्यो की रक्षा करने मे उसी प्रकार तत्पर रहती है जैसे एक घर की।

वैदिक समाजवाद हृदय परिवर्तन मे विश्वास करता है। कम से कम मान्य सर्व–कल्याण–रूप एक लक्ष्य की पूर्ति मे विश्वास करता है। सामाजिक सौमनस्य के लिए आत्मसमर्पण की आवश्यकता पर बल देना ही त्याग का दूसरा नाम है। यह चिन्तनशील मनुष्य जाति में ही सम्भव है। यह आत्मसमर्पण ही समाज के अस्तित्व को बल और जीवन प्रदान करता है। यज्ञभावना, दानभावना इसका प्राण है। हमने देखा है कि सकट के समय क्रियान्वित की गई यह भावना ही लडखडाते समाज को आश्रय प्रदान करती है। राष्ट्रो मे सहायता–कोष ऐसे अवसरों के लिए ही बनाए जाते हैं।

शेष भाग पृष्ठ १८ पर

।। ओ३म् प्रब्रवाम शरद शतम् हम सौ वर्ष तक वेदवाणी द्वारा प्रभु गुण गाए।।

"विश्व के सर्वाधिक सुन्दर स्थलो मे से एक शान्त, शीतल, एकान्त अनेक फलयुक्त एव मधुर झरने के जलयुक्त सुरम्य वैदिक आश्रम'

२५

उद्गीथ साधना स्थली 'ओम्वन' हिमांचल के स्थापक

युवाहृदयसम्राट आचार्य आर्य नरेश जी, *(वैदिक प्रवक्ता)*

को सफल वेद प्रचार यात्रा की रजत जयन्ती पर

हार्दिक शुभकामनाएं

तप त्याग सयम एव कठोर परिश्रम से पोषित व्यक्तित्व के धनी श्री आचार्य आर्यनरेश जी ने गत २५ वर्षो मे वैदिक सिद्धातो के अनुसार ईश्वर के ध्यान वेद के ज्ञान यज्ञ के अनुष्ठान सस्कारी सन्तान तथा राष्ट्रहित बलिदान की भावना का जन जन मे प्रचार प्रसार करने के लिए अपने जीवन की आहुति दी है।

उद्गीथ साधना स्थली के सस्थापक आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल के भूतपूर्व वरिष्ठ प्रधान एव सार्वदेशिक आर्यवीर दल के उपप्रधान सचालक योगसाधक ओजस्वी वक्ता क्रातिकारी प्रचारक आचार्य आर्यनरेश जी ने महर्षि दयानन्द जी के प्रेरक जीवन व सत्यार्थ प्रकाश से प्रेरणा लेकर अभियन्ता (इन्जीनियर) के पद से त्याग पत्र देकर गुरुकुल कालवा मे पूज्य आचार्य श्री बलदेव जी नैष्ठिक पूज्य स्व० स्वामी ब्रह्ममुनि जी महाराज (हरिद्वार) एव योग निष्ठ सन्यासी विद्वानो के द्वारा व्याकरण निरुक्त छन्द शास्त्र दर्शन शास्त्र तथा उपनिषद आदि वैदिक ग्रन्थो का ज्ञान प्राप्त किया। ईश्वर के ध्यान एव साक्षात्कार हेतु हिमालय का भ्रमण किया व अन्त मे महर्षि दयानन्द के उपासना विषय का आश्रय लिया और आनन्द पाया। इसी आनन्द को वे वैज्ञानिक युक्ति से बाट रहे है।

आप गहन परिश्रम से वेद का स्वाध्याय कर वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार मे लगे हुए है। आपके प्रचार की सबसे बडी विशेषत यह है कि आपने अपने प्रचार के मध्य लोगो को आकर्षित करने के लिए न तो कभी अपनी तथाकथित जाति व प्रान्त का परिचय ही दिया और न ही कभी सिद्धान्त विरूद्ध पौराणिक कथाओ का सहारा ही लिया।

आपने विद्यार्थी काल मे पढ रहे श्री ब्र० ज्ञानेश्वर जी आचार्य गुजरात आदि ब्रह्मचारियो तथा आचार्य अखिलेश जी आचार्य सुभाष जी महाराष्ट्र आदि को विशेष प्रेरणा तथा सहायता दी। श्री रामफल सिह जी आर्य अग्निहोत्री सचालक आर्यवीर दल हिमाचल तथा कैप्टन प्रशान्तार्य लद्दाख आदि को विशेष प्रेरणा दी। आपने वैदिक सिद्धान्तो के अनुसार प्रचार करते हुए अनेको आर्य कार्यकर्त्ताओ को तैयार किया व अनेको आर्यसमाजो की स्थापना की।

आपने काश्मीर से कन्याकुमारी व कच्छ से कटक तक देश के लगभग १५ प्रान्तो मे भ्रमण करते हुए आठ भाषाओ मे विभिन्न पुस्तके छापी। आपने योगपथ यज्ञ विज्ञान परिचय वेद विज्ञान परिचय मेरा मन मेरा अनुशासन नारी राख या चिन्गारी जैसी करीब ५० पुस्तको का व वेदगगा जैसी कैसेटो का सम्पादन किया। आपने वैदिक सिद्धान्तो के अनुसार प्रचार करते अनेको खोजपूर्ण लेख लिखे जैसे कि भारत के सविधान पर महर्षि दयानन्द का प्रभाव आदि। आपने गत वर्षो मे विद्यार्थियो मे नैतिक शिक्षा युवाओ मे देश व धर्म की भावना माता पिता मे पचमहायज्ञ व सस्कारी सन्तान हित सस्कारो नेताओ मे नैतिकता व वृद्धो मे वानप्रस्थ द्वारा धर्म हित मे त्याग करने हेतु प्रवचन किये व शिविर लगाये। आपकी प्रेरणा से आज भारत मे अनेको परिवार दैनिक यज्ञ करते है तथा अनेको युवको को जीवन निर्माण की शिक्षा मिली है। आपके प्रमुख क्षेत्र उडीसा महाराष्ट्र हिमाचल व गुजरात के सीमावर्ती ग्राम है।

आप ईसाइयो द्वारा गोआ जेल मे कैद करने मुसलमानो द्वारा अकोला में गिरफ्तारी वारट निकालने तथा पजाब की सार्वजनिक सभा मे पौराणिको द्वारा ईट पत्थर से मारने एव विधर्मी लोगो द्वारा फैलाई गई झूठी अफवाहो से भी कभी विचलित न हुए। आपने विभिन्न प्रान्तो मे अपने प्रचार को तेज करते हुए आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से वेद एव राष्ट्र सम्बन्धित कार्यक्रम प्रस्तुत किये। आपकी प्रेरणा से अनको युवको व परिवारो ने चाय मास अण्डा शराब व झूठे व्रत आदि त्याग कर व्यायाम यज्ञ व आर्यसमाज के सिद्धान्तो को अपनाया। गृहस्थो की सभी समस्याओ के समाधान हेतु आपने गत दिनो आर्य गृहस्थ परिवार सगम की स्थापना की तथा कई स्थानो पर इसके सफल कार्यक्रमो का आयोजन भी किया।



उद्गीथ स्थली

आपने एक विद्यार्थी दिग्दर्शन अभियान प्रारम्भ किया। जिसके माध्यम से देश की भावी आशा विद्यार्थी समुदाय को देशभक्त व धार्मिक बनाने हेतु सम्पूर्ण देश के विद्यालयो महाविद्यालयो तथा अन्य शिक्षण सस्थाओ मे घूम घूम कर उन्हे जागृत किया और महर्षि दयानन्द द्वारा बतायी गयी शिक्षा की परिभाषा विद्या सभ्यता धर्मात्मता तथा जितेन्द्रियता का उपदेश किया और अनेको विद्यार्थी शिविर लगाए। जहा एक ओर देश के प्रसिद्ध साधु सन्त महात्मा व विद्वान वक्ता बडे बडे धनाढय लोगो मे बोलना ही प्रमुख समझते हैं वहा आपने राष्ट्र की नींव विद्यार्थी वर्ग व ग्रामो मे उपदेश करना गौरवमय समझा एव अनेक विद्यार्थियो को छात्रवृत्तिया दी। सुन्दर नगर (हिमाचल) मे तथा मसूरी उ०प्र० मे गाधी धाम (गुजरात) मे ईसाई पादरियो को शास्त्रार्थ की चुनौती दी पर वे भाग गए।

आपने विश्व शान्ति स्थापना व विश्व मे बढ रही साम्प्रदायिक हत्याओ को रोकने हेतु व विश्व के बुद्धिजीवियो को वेद की ओर लाने हेतु विश्व धर्म सघ की योजना दी। इसके लिए आपने "धर्म के नाम पर" जैसी अनेको हिन्दी व अग्रेजी मे पुस्तके छापीं। जिसमे प्रथम पुस्तक द होली वेदाज भारत मे हुए एशियाड खेलो मे बाटी गई।

आपके द्वारा स्थापित शिमला व सोलन के मध्य उद्गीथ आश्रम मे प्रतिवर्ष प्राय जनवरी मार्च मई जून अक्टूबर व दिसम्बर मे बच्चो युवको युवतियो व सद्गृहस्थो हेतु (प्रभु शक्ति देश भक्ति सस्कारी व्यक्ति) साधना शिविर लगाये जाते हैं। यहा ठहरने हेतु कमरो बिस्तरो तथा भोजन की उचित व्यवस्था है। आनेवालो को पहले सूचना देना जरूरी है। आश्रम मे छोटे बच्चो के लिए लघु तरणताल (मिनी स्विमिग पूल) फुटबाल कैरम बोर्ड टैबिल टैनिस व बैडमिन्टन आदि खेलो की भी व्यस्था है।

प्रचार की २५वीं वर्षगाठ के पावन अवसर पर तेजस्वी प्रतिभा के धनी जन जन के प्रेरणास्रोत वैदिक गवेषक श्री आचार्य आर्यनरेश जी को हमारी हार्दिक शुभकामनाये।

साधना शिविरो की तिथिया २१५२००१ से २८५२००१ २६५२००१ से ५६२००१ ६५२००१ से १२६२००१

सम्पर्क सूत्र – आश्रम कार्यालय

उद्गीथ साधना स्थली हिमाचल (पजीकृत धर्मार्थ न्यास) ओमवन महर्षि दयानन्द मार्ग डोहर (राजगढ) सिरगौर – १७३१०१ दूरभाष ०१७६६–२१०६१

नोट आश्रम जाने के इच्छुक शिमला मार्ग पर सोलन से बस द्वारा राजगढ या सीधे हब्बन मार्ग पर डोहर पहुचे। सोलन से आश्रम ५० किलोमीटर व राजगढ से आश्रम ६ कि०मी० है। सोलन से प्रात ६ से रात्रि ८ बजे तक राजगढ तक बसे है। सेवा निवृत्त जनो के लिए नित्य निवास की भी व्यवस्था है।

आवश्यक सूचना आचार्य आर्यनरेश जी द्वारा लिखित पुस्तके वेद विज्ञान परिचय यज्ञ विज्ञान परिचय व ईश्वर की सत्ता विज्ञान की कसौटी पर आदि आदि पढे।

(विज्ञापन)

पृष्ठ ३ का शेष भाग

सत्याग्रह अर्थात् सत्य का आग्रह

कच्चे पक्के मकान बनाए जाते है और शिक्षा का अभियान शुरू किया जाता है। पहले तो नौकरी का लालच देकर शिक्षको को ईसाई बनने के लिए बाध्य किया जाता है और फिर ईसाई बन चुके आदिवासी शिक्षको के माध्यम से ही बच्चो को अपने परिवारो सहित ईसाइयत की ओर मोडा जाता है। शिक्षा के साथ–साथ अक्सर एकाध बार का भोजन भी बच्चो को दिया जाता है। इन सब व्यवस्थाओं के तहत आदिवासी बन्धु अज्ञानता वश और मजबूरी मे ईसाइयत की ओर धकेले जा रहे हैं। धन बल के आधार पर इस षड्यन्त्र को ईसाई मिश्नरी भारतीय सविधान द्वारा प्रदत्त धर्म प्रचार की स्वतन्त्रता का अधिकार मानते है।

कोई भी सरकार इन गतिविधियो पर सख्त अकुश लगाने के लिए कुछ करेगी, ऐसी आशा करना भी व्यर्थ है।

थादला के बाद हम सबने सड़क मार्ग से जाते हुए झाबुआ, कुशल गढ़, और बासवाडा स्थित अपने आश्रमो के अतिरिक्त चल रही बालवाडियों को भी देखा। अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के तत्वावधान में आदिवासी गरीब तथा पिछडे क्षेत्रो में राष्ट्र और धर्मरक्षा का कार्य करने के लिए शिक्षा और चिकित्सा सेवाओ के माध्यम से ही कुछ विशेष कार्य सम्पन्न करने का प्रयास किया गया है।

उत्तर पूर्वी राज्यों जैसे असम, नागालैण्ड, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश के अतिरिक्त उडीसा, बिहार, उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश जैसे प्रान्तों के कुछ क्षेत्रो में इस सस्था के माध्यम से महत्वपूर्ण कार्य किए गए है। परन्तु फिर भी ऐसा लगता है कि यदि समूचा आर्यजगत धर्मान्तरण के षड्यन्त्रो के विरुद्ध इन भोले-भाले आदिवासियों, दलितों और पिछडे वर्ग के देशवासियों की रक्षा के लिए दयानन्द सेवाश्रम संघ को साधन उपलब्ध कराए तो इन कार्यों की गति भी तेज हो सकती है। जैसे ही राष्ट्रवादी सगठनो की गतिविधियाँ जहा-जहा तेज होनी प्रारम्भ होती है वहा-वहा धर्मान्तरण की गतिविधियाँ नियन्त्रण में आ जाती है।

प्रतिवर्ष इन ७–८ प्रान्तों से नए-नए युवक-युवतियों को मई माह मे दिल्ली आमन्त्रित किया जाता है जहा उन्हें १५ दिन का प्रशिक्षण देकर वैदिक धर्म, राष्ट्रभक्ति तथा अन्य सेवा कार्यों के लिए प्रवीण किया जाता है। इन्हीं शिविरार्थियों में से प्रति वर्ष कुछ नए चेहरे उभरते हैं। उन चुने हुए उत्साही महानुभावो के माध्यम से गाव-गाव में बालवाड़ियां खोलने का प्रयास किया जाता है। एक बालवाडी चलाने के लिए ५०० रुपये प्रतिमाह संचालकों को दिए जाते हैं।

क्या ५०० रु० प्रतिमाह की राशि का सहयोग सम्पन्न व्यक्तियो या हमारी आर्यसमाजों तथा अन्य सस्थाओं के लिए बहुत बडी राशि है

५०० रु० प्रतिमाह अर्थात् केवल ६००० रु० वार्षिक के अनुदान से कोई भी एक व्यक्ति या सस्था एक बालवाडी का सहयोग बनंकर इस महान कार्या को एक विशाल स्तर पर चलाने में सहयोगी कर सकते है ? परन्तु खेद है कि आर्यों के इस विशाल संगठन ने इस दिशा मे अपेक्षित ध्यान नही दिया। कुछ महानुभाव और सस्थाएं जो इस कार्य मे सहयोग दे रही हैं वे साधुवाद की पात्र हैं। परन्तु उनकी सख्या कार्य की गम्भीरता को देखते हुए पर्याप्त नहीं कहीं जा सकती। यदि आर्य जन गम्भीर रूप से इस सत्य के आग्रह को स्वीकार करें तो कोई कारण नहीं कि हर वर्ष सैंकडो गांवों को इन बालवाडियों के माध्यम से धर्म और राष्ट्र के प्रति एक गहरी मजबूती न प्रदान की जा सके। बालवाडियों का नाम 'सहयोगी व्यक्तियों या सस्थाओं के नाम पर ही रखा जाता है।

आगे भी सत्य का आग्रह जारी रहेगा कि बालवाडिया तथा अन्य गतिविधियो किन कठिनाइयों मे चलती हैं हमारे कार्यकर्ता उन सब कठिनाई को झेलने के लिए तैयार हैं बशर्ते यह निर्धारित सहयोग राशि का सहयोग अधिक से अधिक संख्या में आर्य महानुभाव देने के लिए तैयार हो।

(क्रमशः)

– विमल वधावन

पृष्ठ १६ का शेष भाग

वेद का मानवतावाद

परन्तु वेद के अनुसार उन सभी परिस्थितियों में मनुष्य को दान–त्याग पर आचरण करते ही रहना चाहिए। वेद के अनुसार बिना बांटे अकेले भोग करने वाला व्यक्ति केवल पाप का भोग करता है।

वेद कहता है कि यह सब जगत् चराचर ईश्वर के द्वारा आच्छादित है, मेरा तो कुछ है ही नहीं। ईश्वर ने सब पदार्थ बनाए ही सबके लिए हैं। यदि मैं किसी पदार्थ पर अपना एकाधिकार जमाता हूं अथवा किसी दूसरे के धन के प्रति लोभ करता हू तो ईश्वर के नियम का उल्लंघन करता हूं। हां, यदि मैं अपना भविष्य या परलोक सुधारना चाहता हूं तो मुझे दुसरों के लिए दान तथा त्याग करके ही भोग करना चाहिए अपने लिए उतना ही रखूं जितना मेरे लिए आवश्यक है। पिछले जन्म के कर्मो से जो कुछ पाया है उसे इस जन्म के नीच कर्मो से खो न दूं अपितु उसमें और परिष्कार करूं जिससे आगे मेरा जन्म सुधरा रहे। क्या चोरी–डाके से मेरा पुनर्जन्म सुधरेगा? उपर्युक्त मन्त्र सब मनुष्य के लिए सहायता की उत्सर्ग की प्रेरणा देता है। यदि मेरा कोई बन्धु (समाज का कोई व्यक्ति) भूखा है और मैं गुलछर्रे उडा रहा हू तो क्या सुन्दर समाज की कल्पना की जा सकती है। इसी त्याग के अन्तर्गत इष्ट और पूर्त आते हैं जिनके लिए अग्नि के समान तेजस्वी गृहस्थ और समाज के नेता को प्रेरणा दी गई है। यही जागृति है। सब प्रकार के यज्ञो से वायु शुद्धि द्वारा सभी छोटे–बडे प्राणियो का उपकार होता है। ये इष्ट हैं। प्याऊ खुलवाना, धर्मशाला, कुए बनवाना, अन्नदान, उद्यान आदि सुख सुविधाए प्रदान करना–से सब पूर्त हैं। यह उदार भावना उन्नत समाज का निर्माण करती है।

यज्ञ भी क्षुद्र स्वार्थ को छोडकर निःस्वार्थ भाव से व्यापक जनकल्याण के उद्देश्य से किया जाए। इससे यह पता चलता है कि केवल अग्नि मे आहुतियां अर्पित करने का नाम यज्ञ नहीं, अपितु यज्ञ एक व्यापक त्याग की भावना है। यज्ञ अध्वर अर्थात् हिंसारहित है। इसलिए यह अहिंसा और सौहार्द का प्रतीक है। देना, सहायता करना, दुःख दूर करना और मन से भी किसी का अशुभ न सोचना–यह यज्ञ है। इसी प्रकार सत्पुरूषों की सगति द्वारा सबके कल्याणार्थ सत् ज्ञान प्राप्त करना सद्व्यवहार सीखना भी यज्ञ है। उन्नत शिल्प, उद्योग, उन्नत विज्ञान में प्रवृत्त होना भी यज्ञ है यदि उसमें क्षुद्र स्वार्थ का त्याग किया जाए। इसलिए प्रार्थना है कि हमारी सरस्वती, हमारी विद्या पवित्र हो। उसकी पवित्रता यज्ञमय होने में ही है। सर्वप्रेरक परमेश्वर से सभी मनुष्यों को सर्वोत्तम कर्म की प्रेरणा देने की प्रार्थना की गई है। शतपथ ब्राह्मण में बताया गया है कि यज्ञ ही सर्वोत्तम कर्म है।

यह इतनी पवित्र भावना का नाम है कि उससे पूर्व अनुष्ठाता सत्याचरण की प्रतिज्ञा करता है – इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि – वा० स० १५ (यह मैं यज्ञ के लिए) झूठ से सत्य को प्राप्त होता हू। या प्रारम्भ करने से पूर्व इस प्रतिज्ञा द्वारा यज्ञ की केवल भौतिक ही नहीं अपितु भावनात्मक अथवा मानसिक पवित्रता का भी बोध होता है। यज्ञ केवल साधन ही नहीं परन्तु सद्गुणरूपी साध्य भी है। जब तक यज्ञ से मन की भावनाओं का उदारीकरण नहीं होता तब तक यज्ञ का वास्तविक उद्देश्य पूर्ण नहीं होता। यज्ञ सत्य है। यज्ञ सर्वकल्याणरूप है।

– विश्वनीड, ई, ६३८,
सरस्वती विहार, दिल्ली - ३४

वैदिक विद्यापीठ में प्रवेश लें

वैदिक विद्यापीठ में प्रवेश आरम्भ हो गया है जो छात्र वैदिक विद्वान बनकर देश विदेश में वैदिक धर्म प्रचार हेतु अपने जीवन को लगाना चाहते हैं उन्हें यहां रहकर वेद, उपनिषद, गीता, रामायण आदि ग्रन्थों का अध्ययन कराने की सुव्यवस्था की गई है।

छात्रो का भोजन निवास निशुल्क है।

इच्छुक छात्र अपनी योग्यता प्रमाण-पत्र की छाया प्रति के साथ प्रार्थना-पत्र शीघ्र भेजें।

- आचार्य डॉ० सत्यप्रिय शास्त्री
वेद शिरोमणि विद्यावाचस्पति
"वैदिक विद्या पीठ"
श्री साधना आश्रम
ब्रजघाट (गाजियाबाद)

ओ३म्

१४ दिवसीय योग साधना शिविर एवं वार्षिक उत्सव



स्वामी सत्यपति जी

आर्य जगत के प्रसिद्ध तपस्वी स्वामी सत्यपति जी महाराज के निर्देशन मे २८ मई से १० जून २००१ तक १४ दिवसीय योग साधना शिविर का आयोजन किया गया है।

यह शिविर मानव कल्याण केन्द्र एव द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरुकुल के परिसर मे लगने जा रहा है। इस शिविर मे क्रियात्मक योग योगासन ज्ञान कर्म उपासना की तथा दर्शन एव उपनिषेद की कक्षाए भी उपलब्ध होगी। शिविरार्थी की न्यूनतम आयु १५ वर्ष से अधिक हो और धूम्रपानादि व्यसनो से रहित हो। शिविर शुल्क ४००/– रुपये मात्र होगा।

शिविर से पूर्व हमारा वार्षिक उत्सव २५ २६ एव २७ मई २००१ को है सभी आर्यजन सादर आमन्त्रित है।

मानव कल्याण केन्द्र (वैदिक आश्रम) पजीकृत एव द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय

३५ ए, किशनपुर ग्राम, पोस्ट राजपुर, देहरादून २४८००६ (उत्तराचल)

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने के लिए सर्वदा उद्यत रहना चाहिए

पृष्ठ १ का शेष भाग

शिविरों के माध्यम से...

उन्होने बच्चो को अच्छी शिक्षा और परिवार मे सद्व्यवहार के लिए प्रेरणाए दी। उन्होने कहा कि केवल परीक्षाए पास करने से पढाई पूरी नहीं होती। पढाई तब पूरी होती है जब शिक्षाओ को अपने जीवन मे उतारे और दूसरो को भी वैसी शिक्षाए दे।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि आर्यसमाज का काम सदा परोपकार मे लगे रहने का है। पहले हम गुजरात के भूकम्प पीडितो की सहायतार्थ कार्यरत थे उसके बाद बम्बई धर्म प्रचार यात्रा के लिए हम लोग जुट गए। उन्होंने कहा कि सभा द्वारा जो भी कार्य घोषित किये जाते है उनमें आर्यसमाजो के पदाधिकारी हर प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहते है।

श्री शर्मा जी ने कहा कि शिविरो के माध्यम से शारीरिक सामाजिक और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है।

श्री जगदीश आर्य ने कहा कि देश और सस्कृति की रक्षा के लिए प्रत्येक आर्यसमाज को इस प्रकार के शिविर आयोजित करने चाहिए। उन्होने बताया कि राजौरी गार्डन में ऐसे ही एक शिविर का आयोजन किया जा रहा हैं जिसमे गरीब और पिछडे क्षेत्रों के लोगो के बच्चो के सद्व्यवहार और वैदिक धर्म की मान्यताओं के अनुरूप प्रशिक्षित किया जाता है।

अध्यक्षीय भाषण मे विमल वधावन ने कहा कि राष्ट्र भक्ति और महानता के मार्ग का अनुसरण हमारी मुख्य प्रेरणाए हैं। उन्होने प्रसिद्ध भजन मनुष्य तू बडा महान है के आधार पर बच्चो को प्रेरित किया कि सदैव अच्छे काम करके और बुराइयो से दूर रहकर ही महानता की श्रेणी मे आ सकते है। उन्होने महर्षि दयानन्द के जीवन की घटना सुनाकर बच्चो को बताया कि उन्हे समाधि की अवस्था मे देखकर विवेकानन्द के गुरु श्रीराम कृष्ण परमहस ने उन्हे बताया था कि इस महान आत्मा के मुख का तेज देखकर ऐसा महसूस होता है कि यह देश का सबसे बडा मार्ग दर्शक साबित होगा। श्री वधावन ने कहा कि आसन लगाकर एकान्त और शान्त मन से यदि आप न्यूनतम १० मिनट प्रात और १० मिनट साय बैठने का नियम बना ले तो आपके अन्दर अच्छे बुरे की पहचान करने की कुशलता उत्पन्न हो जाएगी आप बुराइयो से दूर तथा अच्छे कार्यों मे ही सलग्न रहेगे।

• उन्होने राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा देते हुए बच्चो से कहा कि राष्ट्रवासियो की सेवा ही सच्ची राष्ट्रसेवा है। उन्होने बच्चों को तनाव मुक्त रहकर खुशी–खुशी सब कार्य सम्पन्न करने की प्रेरणा दीं

आर्यसमाज मन्दिर तिलक नगर के प्रधान श्री विजय गुप्त तथा विद्यालय के प्रबन्धक श्री यशपाल कैला ने इस शिविर मे सहयोग देने वाली अध्यापिकाओ को सम्मानित किया।

पृष्ठ २ का शेष

उपनिषदों का सार है – गीता

जिन्होने दूध अर्थात उपनिषदो का सार निकाल कर अर्जुन रूपी बछडे को उपलब्ध कराया और बछडे के बहाने यह दूध जन सामान्य को भी उपलब्ध हो गया। उसी दूध का नाम है गीतामृत।

श्री जयसिगराव ने पुस्तक का लोकार्पण करते हुए कहा कि समाज मे हम जो भी कर्म करते है उसका फल समूचे समाज को मिले और उस फल पर कर्म करने वाले का एकाधिकार न हो यही कर्मफल सिद्धान्त है। उन्होने महाराष्ट्र के प्रसिद्ध सत ज्ञानेश्वर जी का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्होने एक गुरु का एक शिष्य की परम्परा तो तोडते हुए एक गुरु के हजारो शिष्य होने के सिद्धान्त को लागू करवाने की पहल की। आगे चलकर महर्षि दयानन्द जी ने भी इसी सिद्धान्त का अनुपालन करते हुए मठो और आश्रमो की स्थापना को ठुकराया और चलती फिरती समाधि अवस्था मे समाज के लोगो को वैदिक सिद्धान्तो की अनमोल विरासत खुली पुस्तक के रूप मे प्रस्तुत कर दी जो उनके आने से पूर्व सीमित थी। स्त्री और शूद्र वेद नही पढ सकते थे। गीतामृत पुस्तक की सामग्री केवल उसी मस्तिष्क मे प्रवेश कर सकती है जो अपने से अधिक समाज को महत्व देता है।

आर्य तपस्वी सुखदेव जी ने उपस्थित जनता को गीता के सिद्धान्त के अनुरूप यज्ञ करने अर्थात त्यागमय जीवन बनाने के लिए प्रेरित किया। गीता का सिद्धान्त है कि स्वार्थी विचार से केवल एक व्यक्ति या परिवार का लाभ होता है जबकि त्याग तपस्या से पूरे समाज का लाभ होता है। और ईश्वर की नजरो मे समाज के लिए अपने आपको कदम कदम पर बलिदान करने वाला व्यक्ति श्रेष्ठ होता है। मेजर (डॉ०) रविकान्त ने भी कर्मठता पूर्वक सामाजिक कर्त्तव्यो के पालन पर प्रकाश डाला।

श्री राजवीर सिह आर्य ने इन दोहो की रचना के पीछे अपनी भावनाओ को स्पष्ट करते हुए कहा कि समाज मे बहुत बडी सख्या स्वार्थी और भौतिकवादी नागरिको की होती जा रही है। इसलिए ऐसी परिस्थितियो मे चरित्र निर्माण तथा त्याग तपस्या के विचारो के प्रचार प्रसार का सकल्प मन मे उठा और ईश्वर की अपार कृपा से अल्प समय मे ही यह सकल्प क्रियान्वित होकर गीता दोहावली के रूप मे जनता की सेवा मे है।

श्री राजवीर ने गीता दोहावली के अन्तिम दोहे के आधार पर गीता ज्ञान को स्पष्ट करते हुए कहा –

मन करम और वचन से करो प्रभु का ध्यान।
सम भाव दिल मे रखो ये है गीता ज्ञान।।

उन्होने जनता को गीता अमृत ग्रहण करने की प्रेरणा निम्न शब्दो मे दी

गीता ज्ञान अमोल है करले प्राणी ध्यान।
फिर पीछे पछताएगा जब निकले तन से प्राण।।

श्री विमल वधावन एडवोकेट ने कहा कि जो धर्म प्रेमी लोग गीता दोहावली नामक ३१ पृष्ठ की इस लघु पुस्तिका को प्राप्त करना चाहे वे ३ रुपये के टिकट लगे लिफाफे पर अपना नाम पता लिखकर निम्न पते पर भेजकर मगा सकते हैं।

– सार्वदेशिक प्रकाशन १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २

पुस्तक समीक्षा

आर्यसमाज के दस नियम (संक्षिप्त व्याख्या)

पृष्ठ ८४, मूल्य १४ रुपये, लेखक प्रो० रत्नसिह जी
प्रकाशक गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८, नई सडक, नई दिल्ली

स्वामी दयानन्द के लिखित दस नियम महत्वपूर्ण हैं। इन नियमो की व्याख्या किन्हीं अन्य महानुभाव ने भी की है परन्तु प्रो० रत्नसिह जी की व्याख्या बेजोड है।

प्रथम नियम – सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जानने पर नास्तिक अलग हो जायेगे और द्वितीय नियम मे ईश्वर के निराकार और अजन्मा विशेषणो को देखकर पौराणिक अलग हो जायेगे। तीसरा नियम समाज की शोभा व विशेषता है जो ससार के किसी भी मत पन्थ मे नहीं मिलेगी।

चतुर्थ नियम से लेकर दसवे नियम तक सार्वभौम है कोई भी पन्थ नास्तिक पुराणी जैसे किरानी कुरानी मानने से इन्कार नहीं कर सकता है। इन दस नियमो मे गूढ रहस्य छिपे हैं। इन नियमो को तीन वर्गों मे विभाजित किया जा सकता है। १ स्व० के प्रति कर्त्तव्य २ अन्यो के प्रति कर्त्तव्य ३ ईश्वर के प्रति कर्त्तव्य।

सिद्धान्तत धर्म वेद है अन्य कोई मत पन्थ नहीं है। मैं तो वेद के आधीन हू। ससार का उपकार करना मुख्य उद्देश्य है। इन नियमो की भावना और सिद्धान्तो को सही सही समझ सके इस भावना से इन नियमो पर चर्चा की है। स्वाध्याय शील आर्यजन अवश्यमेव लाभान्वित होगे।

प्रकाशक लेखक की जान है वह लेखक को जीवन देता है। प्रकाशक बधाई के पात्र है।

– डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 20-5-2001 बिना टिकट भजन का लाइसेंस न० U(C) 93/2001
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2001 in NDPSo on 17-18/5/2001

५ कुण्डीय राष्ट्र कल्याण महायज्ञ व स्व० सुरेश ग्रोवर जन्मोत्सव दौड

यज्ञीय परिवार व उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के सयुक्त तत्वावधान मे **रविवार २७ मई २००१ प्रात ७ से ११ बजे तक, स्थान** आर्यसमाज मन्दिर डी० सी० एम० रेलवे कालोनी दिल्ली ६ **अध्यक्षता** महाशय राम विलास खुराना (प्रधान उत्तरी दिल्ली) **मुख्य अतिथि** चौ० चन्द्रभान (पूर्व डी० सी० पी०) श्री देवेन्द्र कुमार (समाज से०) श्री विमल वधावन एडवोकेट। **ब्रह्मा व प्रवचन** आचार्य सुभाष प्रेमपाल शास्त्री।

राष्ट्रीय, सामाजिक एव धार्मिक विचारों के लिए

सार्वदेशिक साप्ताहिक

वार्षिक सदस्यता शुल्क ५० रु०
आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रु०
नोट :- यह दरें केवल भारत में ही लागू हैं

प्रतिष्ठा मे –

शत हस्त समाहरः सहस्त्र हस्त संकिरः
सौ हाथों से कमाओ तथा हजार हाथों से दान करो

पीड़ितों की सेवा हम सब का राष्ट्रीय कर्त्तव्य है

सार्वदेशिक सभा के आह्वान् पर गुजरात में आए भीषण भूकम्प से पीड़ित मानवता की सहायतार्थ दान की अपील पर जिन दानी महानुभावों, आर्यसमाजों या संस्थाओं से दान प्राप्त हुए हैं उनकी सूची प्रकाशित की जा रही है .-

२६६	सवश्री जितन्द्र कोहली जेन • टर रोड दिल्ली	१०००/-
३००	धर्मपाल गुप्ता प्रितमपुरा दिल्ली	५००/
३०१	प्रधान आ० स० बून्दी (राज०)	२६२५/
३०२	सूरज लाल आर्य कोलकता	११००/
३०३	ईश्वर चन्द आर्य द्वारा आ० स० दीपाल हेडी सहारनपुर	४००/
३०४	विजेन्दु आर्य द्वारा आ० स० दीपाल हेडी सहारनपुर	२००/
३०५	सेवाराम आर्य द्वारा आ० स० दीपाल हेडी सहारनपुर	२००/
३०६	शिवराम सिह आर्य द्वारा आ० स० दीपाल हेडी सहारनपुर	२००/
३०७	ब्रहमा सिह द्वारा आ० स० दीपाल हेडी सहारनपुर	१५०/
३०८	ध्यान सिह द्वारा आ० स० दीपाल हेडी सहारनपुर	११०/
३०९	अजीत सिह द्वारा आ० स० दीपाल हेडी सहारनपुर	१००/-
३१०	मा० सूरजीत सिह द्वारा आ० स० दीपाल हेडी सहारनपुर	१००/-
३११	जगपाल सिह द्वारा आ० स० दीपाल हेडी सहारनपुर	५०/
३१२	पूरण सिह द्वारा आ० स० दीपाल हेडी सहारनपुर	१००/
३१३	पित्थी सिह द्वारा आ० स० दीपाल हेडी सहारनपुर	१००/
३१४	हरिसिह आर्य द्वारा आ० स० दीपाल हेडी सहारनपुर	१००/
३१५	मोरहड सिह आर्य द्वारा आ० स० दीपाल हडी सहारनपुर	१००/
३१६	रवि कुमार द्वारा आ० स० दीपाल हेडी सहारनपुर	१००/
३१७	श्याम सिह द्वारा आ० स० दीपाल हेडी सहारनपुर	१००/-
३१८	रमेश्वर सिह द्वारा आ० स० दीपाल हेडी सहारनपुर	५०/
३१९	ओम पाल सिह द्वारा आ० स० दीपाल हेडी सहारनपुर	५०/-
३२०	सेवाराम आर्य द्वारा आ० स० दीपाल हेडी सहारनपुर	१००/-
३२१	अनिल कुमार द्वारा आ० स० दीपाल हेडी सहारनपुर	५०/-
३२२	राजपाल सिह आर्य द्वारा आ० स० दीपाल हेडी सहारनपुर	१००/-
३२३	जितेन्द्र सिह आर्य द्वारा आ० स० दीपाल हेडी सहारनपुर	१००/-
३२४	चरण सिह आर्य द्वारा आ० स० दीपाल हेडी सहारनपुर	५०/-
३२५	विजेन्द्र सिह आर्य द्वारा आ० स० दीपाल हेडी सहारनपुर	१००/-
३२६	प्रधान आ०स० टाण्डा अफजल मुरादाबाद	१५०/-
३२७	धनराज आनन्द आर्य नागौर (राज०)	५००/-
३२८	उत्तम सिह हमीर पुर (हि०प्र०)	३००/-
३२९	रणजीत सिह भगत मुजफ्फरनगर	२०२/-
३३०	बच्चू गुरु जी स्वतत्रता सेनानी वैशाली बिहार	३००/-
३३१	क्वालिटी मेनुफैक्चरिंग कार्पोरेशन बगाल •	५१००/-
३३२	चन्द रतन दमानी आ०प्र०स० बगाल	१० ०००/-
३३३	दयानन्द विद्यालय हाई स्कूल बुद्दा आसनसोल	१० ०००/-
३३४	आर्य स० सरोजनी नगर नई दिल्ली	५०००/-
३३५	देशराज बुद्दीराजा नई दिल्ली	५००/-
३३६	पुरुषोत्तम लाल सरोजनी नगर नई दिल्ली	५००/-
३३७	राजेन्द्र नाथ चण्डोक सरोजनी नगर नई दिल्ली	५००/-
३३८	डॉ० आनन्द शर्मा रेलवे कालोनी चाणक्यपुरी दिल्ली	५००/-
३३९	रोशन लाल गुप्ता निर्माण विहार दिल्ली	२५०/-
३४०	सुनील महाजन सरोजनी नगर दिल्ली	२००/-
३४१	एस० सी० सूद लक्ष्मीबाई नगर दिल्ली	२००/
३४२	श्रीमती रमा देवी लक्ष्मीबाई नगर दिल्ली	५०/-
३४३	हरीश मित्र अग्रवाल लक्ष्मीबाईनगर दिल्ली	५०/
३४४	पडित रामानन्द आचार्य लक्ष्मीबाईनगर दिल्ली	५०/
३४५	मन्त्री आ० स० पूजला नयापुरा जोधपुर	५००/
३४६	डी० डी० शर्मा अमृतसर	२०००/
३४७	डॉ वी० शर्मा बोकारो स्टील सिटी बिहार	५००/
३४८	अग्निव्रत नैष्ठिक जालोर (राज०)	१५००/
३४९	भूपाल सिह आर्य	२०१/
३५०	श्रीमती तारा खुराना हरिनगर दिल्ली	५०००/
३५१	अमृतपाल शास्त्री नोएडा	१२५/
३५२	कुमारी सुकन्द नोएडा	२५१/
३५३	शान्तनु प्रथम कक्षा नोएडा	११५/
३५४	वी० एन० कठपालिया रामकृष्णपुरम दिल्ली	२००/
३५५	आर्यसमाज सेक्टर १ रामकृष्णपुरम दिल्ली	२००/
३५६	मन्त्री आ०स० बक्सर बिहार	१६०/
३५७	चन्द्र प्रकाश नन्दा हमीरपुर (हि०प्र०)	२००/
३५८	अरुण वर्मा रायसेन (म०प्र०)	१५०/
३५९	भगवान देव आर्य बुरहानपुर (म०प्र०)	१००/-
३६०	शकर लाल आर्य कोलकता	१५१/
३६१	गोपाल अग्रवाल रायगढ (म०प्र०)	२०[illegible]
३६२	ओमदत्त भारद्वाज रायगढ (म०प्र०)	५१/
३६३	गिरिधर गोपाल चड्ढक रायगढ (म०प्र०)	१००/-
३६४	चन्द्रशेखर आर्य रायगढ (म०प्र०)	५१/
३६५	हरिकृष्ण गुप्त रायगढ (म०प्र०)	५०/
३६६	गोरधन सोनी रायगढ (म०प्र०)	५०/-
३६७	टीकाराम सोनी रायगढ (म०प्र०)	२५/
३६८	ललेश कुमार द्वारा आनन्द प्रकाश बिजनौर	५१/
३६९	जय प्रकाश राजपुर द्वारा आनन्द प्रकाश बिजनौर	१००/-
३७०	लईक अहमद द्वारा आनन्द प्रकाश बिजनौर	१००/-
३७१	अहसान अहमद द्वारा आनन्द प्रकाश बिजनौर	१०/-
३७२	आर्य बन्धु द्वारा आनन्द प्रकाश बिजनौर	५१/-
३७३	सुनील कुमार द्वारा आनन्द प्रकाश बिजनौर	५१/-
३७४	सुरेशचन्द आर्य द्वारा आनन्द प्रकाश बिजनौर	१००/-
३७५	सन्तराम राजपूत द्वारा आनन्द प्रकाश बिजनौर	४५१/
३७६	दिनेश कुमार आर्यद्वारा आनन्द प्रकाश बिजनौर	१०१/
३७७	डॉ० कुलदीप कुमार मलहोत्रा जम्मू कश्मीर	१००/-
३७८	मथुरा प्रसाद आर्य जबलपुर	१०१/-
३७९	विट्ठलराव जोशी स्वतन्त्रता सेनानी लातूर	१००/-
३८०	मन्त्री आर्य समाज पीपाड शहर जोधपुर	५०००/
३८१	डॉ० सतीश लाम्बा आस्ट्रेलिया	४५००/-
३८२	बी०डी० भण्डारी नई दिल्ली	१०१/
३८३	मन्त्री आ०स० गगापुर सिटी माधोपुर राजस्थान	१७८०/-
३८४	आ०स० लल्सा पुरा वाराणसी	११००/-
३८५	मन्त्री आ० स० अमरोहा ज्योतिबा फूले नगर उ०प्र०	१०२५७/-
३८६	आ० स० सण्डीला हरदोई	१००१/
३८७	देविन्द ककड नवाशहर दोआबा पजाब	२०००/
३८८	आ० स० मन्दिर जीरा पजाब	११००
३८९	श्रीमती सचदेव द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली	५०/
३९०	पूरणलाल द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली	१००/-
३९१	सुभाष गोयल द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली	५०००/-
३९२	मैसर्स शिवम कोरूफैन प्रा० लि० द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली	५०००/
३९३	सुरेन्द्र गोयल द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली	५०००/
३९४	प्रभात ट्रेडर्स द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली	५०००/
३९५	परफैक्ट बैंक लि० राजा गार्डन द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली	११०००/-
३९६	क्लासिक कोरपर प्रा० लि० द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली	११०००/
३९७	विशाल पैकर द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली	५१००/
३९८	रवि नरुला द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली	५००१/
३९९	नार्थन इण्डिया कोरुगलेट द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली	२१०००/
४००	सुपर पैक द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली	५१००/
४०१	लोकेश सूद द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली	३०००/
४०२	मैसर्स डोलसन कन्टेनर्स प्रा० लि० द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली	२१००/-
४०३	आर० एन० पेपियर द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली	११००/
४०४	राघव ओवरसीज द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली	३१००/
४०५	विकास कैमिकल्स द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली	५००/-
४०६	ईस ३ एम इन्डस्ट्रीज द्वारा आ० स० बाली नगर दिल्ली	११००/-
४०७	नन्द लाल ढींगरा द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली	५०१/-
४०८	राजेश बक्सी द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली	२५०/-
४०९	दलीप सिह सैनी द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली	१५०/-
४१०	नरेन्द्र कुमार सब्रवाल द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली	५०/-
४११	डॉ० हरद्वारीलाल रस्तोगी द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली	५१/-
४१२	मुलख राज भाटिया द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली	१००/-
४१३	अरुण बतरा द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली	२००/-
४१४	हरबंस गुलाटी द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली	५००/-
४१५	राजकुमार द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली	२५०/-

क्रमशः

भविष्य में प्राप्त दान को भी इसी प्रकार प्रकाशित किया जाएगा। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त घोषित है। यदि आपको अपने आयकर खातों के लिए प्रमाण-पत्र की आवश्यकता हो तो सार्वदेशिक सभा के कार्यालय से मगवा लें। दान की रसीद के साथ ही यह प्रमाण-पत्र भी भिजवा दिया जाएगा।

- सभा मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रकाशन लि० द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली-२ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली-२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०६८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक



वर्ष ४० अक ७ | २७ मई से २ जून २००१ तक | दयानन्दाब्द १७८ | सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०२ | सम्वत् २०५८ | ज्येष्ठ शु० ५

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

आर्यसमाजें गो पालन के लिए यथाशक्ति सहयोग दें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत चल रही गोशाला प्रगति के पथ पर है परन्तु यदि आर्यजनो का पवित्र सहयोग गऊ माता की रक्षार्थ उपलब्ध हो तो इस गौ सम्वर्धन केन्द्र को एक भव्य रूप दिया जा सकता है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी ओमानन्द सरस्वती तथा सार्वदेशिक सभा क मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने आर्यजनो को गो रक्षा के सकल्प को कार्य रूप देने की अपील करते हुए कहा है कि महर्षि दयानन्द के अनमोल ग्रन्थ गोकरुणानिधि की भावनाओ के अनुसार गो पालन मे अधिकाधिक सहयोग दे।

सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा जी ने कहा कि इस समय महर्षि दयानन्द गो सम्वर्धन केन्द्र मे २४८ गाये हैं जिनमे से केवल ६१ गाय ही दूध देने वाली हैं इनके अतिरिक्त अन्य गो धन प्राणियो का केवल मात्र गो रक्षा की भावना से ही पालन किया जाता है।

उन्होने कहा कि आर्यबन्धुओ की प्रेरणा के लिए यहा दान देने हेतु कुछ सुझाव प्रषित किये जा रहे हैं।

जो लोग खेती के व्यवसाय से जुडे हैं वे गो पालन के लिए भूसा और चारा दान मे दे सकते हैं। इनके अतिरिक्त अन्य दानी महानुभाव अनुमानत ११ हजार रुपये मे लगभग १ ट्रक भूसा चारा दान मे दे सकते हैं। इन दिनो सभा द्वारा पर्याप्त मात्रा मे भूसा चारा गोदाम मे जमा कर लिया जाता है क्योकि वर्ष के अन्य दिनो मे भूसे की कीमते बहुत बढ जाती है।

इसी प्रकार आप १५ से २० हजार रुपये की राशि मे अच्छी नस्ल की एक गाय भी खरीद कर इस केन्द्र मे पालन हेतु भेज सकते हैं। गायो के लिए एक शेड बनाने मे भी लगभग ५ लाख रुपयो का खर्चा आता है। इस निमित्त भी आप सब का सहयोग अपेक्षित है।

श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि सभा लोगो के घरो और दुकानो के लिए गुल्लक नुमा गो ग्रास पेटिया भी बनवाने पर विचार कर रही है जिन्हे आर्यजनो को प्रदान किया जाएगा तथा प्रतिवर्ष उसमे एकत्र राशि का सग्रहण किया जाएगा।

यदि समूचा आर्यजगत और विशेष रूप से दिल्ली की आर्यजनता सकल्प करे तो गो माता के इस स्थल को एक भव्य एव रमणीक भ्रमण केन्द्र भी बनाया जा सकता है।

सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान स्व० स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के कर कमलो से गो रक्षा का यह पौधा लगाया गया था जिसकी रक्षा तथा सम्वधन हमारा प्रमुख दायित्व है।

गोपालन एव गोरक्षा के क्रियान्वयन का सर्वोत्तम दर्शनीय स्थल है यह गोसम्वर्धन केन्द्र।

इस गोशाला के निमित्त दान देकर पुण्य लाभ के भागी बने। दान राशि का चैक धनादेश अथवा ड्राफ्ट सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम पर भेजे। सभा को दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

वर्क परमिट जारी करने के वाजपेयी प्रस्ताव का कडा विरोध

असम के मुख्यमन्त्री तरुण गोगोई ने सीमापार से अवैध ढग से आए लोगो को रोजगार के लिए परमिट जारी करने के प्रधानमन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी के प्रस्ताव का विरोध किया है।

उन्होने कहा कि वह ऐसे किसी भी प्रस्ताव के खिलाफ है। उनकी सरकार अवैध प्रवेश की समस्या से निपटने के लिए जन्म एव मृत्यु रजिस्टर शुरू करने परिचय पत्र जारी करने और जमीन की खरीद पर प्रतिबन्ध का कानून बनाने के पक्ष मे है। मुख्यमन्त्री ने कहा कि सिर्फ सीमा पर बाड लगाकर इस समस्या से नही निपटा जा सकता। उन्होने कहा कि घुसपैठिए पडोसी राज्यो के जरिए असम मे प्रवेश कर सकते है। श्री वाजपेयी ने विधानसभा चुनावो के अपने प्रचार अभियान के दौरान सिल्चर मे कहा था कि असम मे आव्रजको को रोजगार के लिए परमिट जारी किए जा सकते है।

श्री वाजपेयी ने जब यह प्रस्ताव रखा था तभी देशभर मे इसका कडा विरोध हुआ था।

आर्य केन्द्रीय सभा अमृतसर द्वारा भूकम्प पीड़ितों की सहायता

अमृतसर की आर्यसमाजो का प्रतिनिधित्व करते हुए आर्य केन्द्रीय सभा अमृतसर ने गुजरात के भूकम्प पीडितो की सहायतार्थ बनने वाली योजनाओ मे ५०,०००/– रुपये की एकत्र राशि सभा की तरफ से पधारे श्री विमल वधावन एडवोकेट को प्रदान की। इसके अतिरिक्त वैदिक लाईट के महयोगी विद्वान लेखक ८६ वर्षीय श्री डी०डी० शर्मा ने भी ५०००/– रुपये की राशि प्रदान की तथा श्री ब्रह्मदेव सूद ने २०००/– रुपये की राशि दी। यह समारोह अमृतसर के प्रमुख आर्यसमाज मन्दिर शक्ति नगर मे आयोजित किया गया था। जिसमे अमृतसर की विभिन्न आर्यसमाजो के पदाधिकारियो एव सदस्यो ने भाग लिया।

श्री विमल वधावन ने अपने उद्‌बोधन मे आर्यसमाज के विशाल सगठन द्वारा देश विदेश के विभिन्न भागो मे सम्पन्न किए जा रहे गम्भीर सेवा कार्यो की चर्चा की। उन्होने बताया कि इस बार गुजरात के भूकम्प पीडित क्षेत्रो मे सार्वदेशिक सभा द्वारा कई टन हवन सामग्री भिजवाने से वहा मृत शरीरो का विधिवत सस्कार किया गया तथा स्थान स्थान पर हवन यज्ञ के कार्यक्रम जनता मे किए गए। परिणामत भूकम्प के उपरान्त महामारी नहीं फैल सकी।

उन्होने बताया कि भूकम्प पीडित क्षेत्रो मे आर्यसमाज द्वारा एक अनाथाश्रम और विधवाश्रम बनाने की योजना भी अन्तिम चरण मे है जिसके लिए सरकार ने लगभग २ एकड जमीन देने का भी आश्वासन दिया है।

आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री दर्शन कुमार तथा मन्त्री श्री राकेश मेहरा ने इस कार्यक्रम का सचालन किया तथा आगन्तुको का धन्यवाद किया।

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

सह सम्पादक
विमल वधावन एडवोकेट

आसाम के सेवा कार्यो में सात्विक सहयोग की अपील

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ नइ दिल्ली क तत्वावधान म कार्यरत दयानन्द सवाश्रम सघ (पूर्वोत्तर भारत) बोकजान कारबी आगलग (आसाम) मे एक स्वास्थ्य केन्द्र की स्थापना की गइ है। इस स्वास्थ्य केन्द्र का उददश्य उस क्षेत्र की वनवासी जनता की सवा करना है। इसके सचालन के लिए लेबोरेटरी मे काम आने वाली रक्त व अन्य परीक्षण सम्बन्धी सुविधाआ के लिये यत्र दिलशाद गाडन दिल्ली निवासी भी राजेश जी सेठ (माता श्रीमती प्रेम लता जी) ने दान स्वरूप दिया है। सवाश्रम सघ उनका आभार व्यक्त करता है और उनके स्वास्थ समृद्धि दीर्घायु की कामना करता है।

इसके सुचारू सचालन के लिये एक कमरा बनान की आवश्यकता है जिसके ऊपर लगभग ७० हजार रुपये का अनुमानित व्यय है। इस हेतु दयानन्द सेवाश्रम सघ के महामन्त्री श्री लीला जी बारान सेवाश्रम सघ की मत्री श्रीमती प्रेमलता जी क नाम एक अपील प्रेषित की है।

इस अपील के अनुसार स्वास्थ्य केन्द्र को सुचारू रूप से चलाने के लिए १२ X ३६ का एक हाल बनाया जाना है जिसका शिलान्यास तो हो चुका हे परन्तु इसके निर्माण मे लगभग १ लाख रुपया खर्च होना है और अब तक धन की व्यवस्था नही हो पाई है। यदि हाल बन जाता हे तो इसके माध्यम स स्वास्थ्य केन्द्र का कार्य बडे प्रभावशाली ढग से चल पाएगा। इस योजना मे नियमित रूप से एक डॉक्टर एक नस और एक लैबोरेटरी टैकनीशियन की नियुक्त करने का विचार है।

दयानन्द सेवाश्रम सघ के महामन्त्री श्री वेदव्रत मेहता ने कहा है कि यह कार्य ईश्वर की कृपा और पवित्र आत्माओ के सहयोग के बिना नही हो पाएगा। अत धर्म और राष्ट्र प्रेमी सज्जनो से निवेदन हे कि इस पवित्र सामाजिक काय के लिए अपनी आहुति अवश्य दे। आप की यह सहयोग राशि अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के नाम चेक या ड्राफ्ट द्वारा इसक मुख्य कार्यालय महर्षि दयानन्द भवन ३/५, रामलीला मैदान नइ दिल्ली २ के पते पर भेज सकते है। इसके लिए हम आपका अग्रिम आभार प्रकट करते है।

चतुर्वेद शतकम् पारायण यज्ञ एवं सत्सग का आयोजन

सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा दिल्ली के कार्यकारी प्रधान स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती के सान्निध्य मे किसान शिव मन्दिर किशनगढ रेनवाल जिला जयपुर राजस्थान मे ५ मई को चतुर्वेद शतकम पारायण यज्ञ एव सत्सग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मानव निर्माण समाज सुधार महिला शिक्षा एव जागृति सम्मेलन स्वाध्याय यज्ञ का वैज्ञानिक एव आध्यात्मिक स्वरूप तथा राष्ट्रप्रेम से सम्बन्धित अनेक प्रसगो को स्वामी सुमेधानन्द जी ने प्रवचनो के माध्यम से आर्यजनता को साक्षात्कार कराया।

श्री पन्नालाल पीयूष दिवंगत

आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक कविरत्न प० प्रकाशचन्द्र जी के परम शिष्य श्री प० पन्नालाल जी पीयूष स्वतत्रता सैनानी का देहावसान उनके निवास पर दिनाक ३ मई २००१ को हो गया। वे ६१ वर्ष के थे। गत ६ फरवरी २००१ से मस्तिष्क पक्षाघात से पीडित थे। स्थानीय महाराणा भूपाल चिकित्सालय मे उनका उपचार चल रहा था।

दिनाक ४ मई को प्रात १०.३० बजे पुलिस बैण्ड की मातमी धुन के साथ उनकी शव यात्रा पूर्ण राजकीय सम्मान के साथ निकली। इससे पूव राज्य सरकार व जिला प्रशासन की आर स अतिरिक्त जिला कलक्टर तथा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ने पार्थिव देह को तिरगा और पुष्प चक्र अर्पित किया। प्रदेश काग्रेस अध्यक्ष डॉ० गिरिजा व्यास ने निवास स्थान पर पहुच कर श्री पीयूष जी को श्रद्धाजली अर्पित की एव अन्तिम दर्शन किये। राजस्थान के राज्यपाल एव मुख्य मन्त्री ने भी अपने शोक सन्देश भिजवाए।

दाह सस्कार वैदिक विधि से तथा राज्य सरकार द्वारा २१ बन्दूको की सलामी आनर आफ गार्डस से सम्पन्न हुआ।

सायकाल उनके निवास पर शान्ति यज्ञ एव श्रद्धाजलि कार्यक्रम सम्पादित हुआ।

– इन्द्रदेव पीयूष
सुधाकर पीयूष (पुत्र)

आर्य समाज पश्चिम बिहार के श्री भरत सिंह वानप्रस्थी दिवंगत

श्री भरत सिह वानप्रस्थी जी का ८६ वर्ष की आयु मे १२–३–२००१ को घर पर देहावसान हो गया। आप आर्य समाज पश्चिम विहार के सस्थापको मे प्रमुख थे। आपका जन्म गुडगाव के पास सोहना के पास ७–३–१६१२ को हुआ तथा उन्होने दिल्ली मे अपना जीवन अध्यापक के रूप मे आरम्भ किया। आप अपने पीछे ३ पुत्र व ४ पुत्रियो सहित भरा पूरा परिवार छोड गये हैं आप एक कर्तव्यनिष्ठ व कर्मठ आर्य मिशनरी थे व नित्य अग्नि होत्र करते थ। १६५६ मे उन्होने आर्य समाज तीमारपुर की स्थापना मे मुख्य योगदान दिया। १६७५ के बाद पश्चिम बिहार मे आकर बसने के बाद आप आर्य समाज पश्चिम बिहार के लिए डी० डी० ए० से प्लाट लेने म जुट गये व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से आर्यसमाज को स्थापना को १६८५ मे आप वानप्रस्थी बने। आर्य समाज सरस्वती बिहार की स्थापना मे भी काफी योगदान दिया।

ससार से जाते वक्त भी विभिन्न सस्थाओ को क्या देना है व पुरोहित का क्या देना है तथा अन्त्येष्टि कैसे करनी है सब डायरी मे लिख कर गये।

प्रभु से हार्दिक प्राथना है कि उनकी आत्मा को सदगति प्रदान करे व परिवार को इस दारूण दुख को सहने की शक्ति प्रदान करे।

पगडी रस्म १६–३–२००१ को आर्य समाज पश्चिम बिहार मे हुई जिसमे विभिन्न आर्य समाजो से आये महानुभावो ने श्रद्धाजलि दी। – राजेन्द्र दुर्गा

पुस्तक समीक्षा

सत्यार्थ प्रकाश क्यो पढे ?

पृष्ठ ८८ मूल्य १४ रुपये
लेखक नीरज विद्यार्थी
प्रकाशक विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द ४४०८ नइ सडक दिल्ली ६

इस शोधपूर्ण ग्रन्थ को पढकर मूर्ख विद्वान बनते है कमजोर शक्तिशाली होते ह देशद्रोही देशभक्त बनते हैं नास्तिक आस्तिक अभिमानी स्वाभिमानी बनते हैं भोगी यागी बनते है। हिसक अहिंसक बनते हैं विधर्मी पुन धर्मी बन जाते हैं बन्जर मस्तिष्क उपजाऊ बनता है।

ऐसे दुर्लभ ग्रन्थ को बिना शका के पढे तो आज का वैचारिक प्रदूषण दूर होकर सौमनस्य पूर्ण वातावरण बनेगा। बुद्धिजीवियो इस वैचारिक क्रान्ति को पवित्रता मे बदल कर मूर्ख से विद्वान कुपात्र से सुपात्र बनेगी ही।

सभी समस्याओ का समाधान तथा भला करते हुए – प्रकाशक को शक्ति सम्पन्न करे।

प्रकाशक लेखक को जीवन देता है राम को जीवन देन वाले सन्त तुलसी दास थे तुलसी को जीवन देने वाले प्रकाशक है। अन्यथा रामायण को कौन पढता।

गोविन्दराम हासानन्द आर्यसमाज के आदि प्रकाशक है जा साहित्यकार को जिन्दा रखते है।

– डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री

स्व० श्रीमती नीमा देवी 'प्रेम' को भावभीनी श्रद्धाञ्जली

दिनाक १ मइ २००१ को प्रमकुटी कुणजोली सावली गढवाल मे प्रसिद्ध समाज सुधारक प्रख्यात देशभक्त स्वतत्रता सनानी स्व० शान्तिप्रकाश प्रेम' की धर्मपत्नी श्रीमती नीमादेवी प्रेम के निधन पर शुद्धि शान्ति यज्ञ का आयोजन सुसम्पन्न हुआ। यज्ञोपरान्त एक श्रद्धाजलि सभा का आयाजन किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री गोविन्दराम जी ने की। वक्ताओ मे सर्वश्री मनूलाल धमसिह शास्त्री सुशील कुमार निरजन हेमराज प्रियव्रत विश्वबन्धु भास्कर चन्द्रप्रकाश जयदेव आर्य गुणानन्द भारतीय बालमसिह आर्य थे। स्व० विभूति को भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्व० शान्ति प्रकाश प्रेम के साथ स्व० विभूति ने आर्यसमाज के कार्यो मे जो पूर्ण सहयोग किया उसे भुलाया नही जा सकेगा तथा उसे चिरस्थायी रखन के लिए उन्हे सदैव याद किया जाता रहगा। पचपुरी आर्यसमाज की प्रगति आज उन्ही की देन हे अत उनके सस्मरण को याद रखने के लिए सामूहिक प्रयास किए जाने चाहिए।

– धर्मसिह शास्त्री

डॉ० स्वामी सत्यम इस वर्ष के अन्त तक बंगलौर में रहेंगे

आर्यजगत के सुविख्यात सन्यासी डॉ० स्वामी सत्यम जिनके ब्रह्मत्व मे विशाल स्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन मुम्बई मे किया गया और जिन्होने लगभग ६ माह का समय व्यतीत कर अपने अथक प्रयासो स इस सम्मेलन की योजना तथा प्रत्येक कार्य को अपने निर्देशन मे करवाया वे अब इस वर्ष के अन्त तक के लिए बगलोर म निम्न पते पर रह रहे है –

डॉ० स्वामी सत्यम १२ हेमा निवास प्रथम ब्लॉक (पूर्व) जय नगर बैंगलौर – ५६००११ दूरभाष – ०८० – ६६४३४७८। Dr Swami Satyam 12, Hema Niwas 1st Block East Jai Nagar Banglore - 560011 Phone 080 6643478

जा महानुभाव स्वामी जी से कोई कार्यक्रम आदि निर्धारित करना चाहे वे उनसे उपरोक्त पते पर सम्पर्क कर सकते हैं।

आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड (२)
क्या हुआ और क्या होगा ?



१४ अप्रैल को मन्दिर ध्वस्त होने के बाद अगले दिन १५ अप्रैल को प्रात १० बजे विरोध सभा की तैयारिया थी। पजाब केसरी द्वारा प्रथम पृष्ठ पर इस समाचार को प्रकाशित करने से हजारो लोगो को इस घटना का पता लग गया और १० बजे तक वहा भीड उमड पडी। विरोध सभा लगभग सारा दिन चलती रही। दिल्ली के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री मदन लाल खुराना तथा श्री साहिब सिह वर्मा भी सभा को सम्बोधित कर चुके थे।

१५ अप्रैल को ही रात्रि मे यह विचार बना कि एक दिन का अन्तर देकर १७ अप्रैल को ससद मार्ग पर विशाल प्रदशन किया जाए तथा प्रधानमन्त्री को ज्ञापन दिया जाए। सभा प्रधान स्वामी ओमानन्द जी के इस आदेश पर सभी आर्यजन इसकी तैयारी मे जुट गए।

१६ अप्रैल का जहा हम प्रदर्शन की तयारिया करत रहे वही केन्द्र सरकार के नेताओ से भी दो तीन बार बातचीत हुई। ससद भवन मे भी यह चर्चा पहुच चुकी थी कुछ अन्य सासदो से भी चर्चा हुई सभी लोग शहरी विकास मन्त्री श्री जगमोहन की इस कार्यवाही से हैरान थे। श्री विमल वधावन एडवोकेट ने विशेष रूप से कुछ सासदो को लोकसभा मे यह मुद्दा उठाने के लिए प्रेरित किया।

१७ अप्रैल को जब प्रात ६ बजे प्रदर्शन के लिए लोग एकत्रित हो रहे थे उसी समय भाजपा की ससदीय दल की बैठक भी अलग प्रारम्भ हुई। इस बैठक मे भाजपा के तीन प्रमुख सासदो ने यह मुददा उठाया। यह सासद आर्यसमाज की मूल पृष्ठभूमि से जुडे है। सर्वश्री रामचन्द्र वीरप्पा रासासिह रावत तथा रामचन्द बैठा ने प्रमुख रूप से मन्दिर टूटने के विरुद्ध जोश से बोलना प्रारम्भ किया तो सौभाग्य से बहुत से अन्य सासदो ने भी इनका समर्थन किया और यह स्पष्ट रूप से कहा कि मन्दिर टूटने से भाजपा के प्रति बहुत बुरे सकेत जाएगे। इस बैठक मे प्रधानमन्त्री और गृहमन्त्री के साथ साथ शहरी विकास मन्त्री भी उपस्थित थे। उन्हे स्वय प्रधानमन्त्री ने भी इस मामले का सुलझान के लिए कहा। प्रधानमन्त्री ने भी माना कि मन्दिर तोडना अच्छी बात नही है।

प्रदशन मे दिल्ली और आस पास के क्षेत्रो से आर्यजन उमड रहे थे। डी०ए०वी० सस्थाओ के अधिकारी अध्यापक अध्यापिकाए और बच्चे भी बडे उत्साह से भाग लेने पहुचे हुए थे। हर व्यक्ति के चेहरे पर आक्रोश था प्रतिशोध की भावना थी। लगभग १० बजे के कुछ बाद जुलूस की शक्ल मे आर्यजन नारे लगाते हुए ससद मार्ग पर बढ रहे थे। ससद मार्ग पर पुलिस स्टेशन के सामने थोडी थोडी दूरी पर तीन अवरोधक बनाए गए थे। युवा आर्यजन सबसे पहले अवरोधक पर कूद कर चढ गये और उन्हे पार कर गए। पुलिस द्वारा उन्हे रोकने की चेष्टा निष्फल हुई कुछ आर्यजनो को गिरफ्तार करके पुलिस स्टेशन ले जाया गया। शेष आर्यजन ने दूसरे अवरोधक भी पार कर लिया और कुछ ही देर मे तीसरा अवरोधक भी टूट गया। इस बीच लगभग चार पाच सौ आर्यजन पुलिस स्टेशन मे भीतर ले जाए जा चुके थे और बाहर हजारो नर नारी अभी भी आक्रोश मे तो थे परन्तु हिंसक नहीं हुए थे अन्तत इस आक्रोश को शान्त करने के लिए पुलिस ने गैर कानूनी रूप से कई राउण्ड अश्रु गैस की गोलिया चलाई और कई बार पानी की भयकर तेज धार वाली बौछारे की जिसके परिणाम स्वरूप आर्य कवि श्री सारस्वत मोहन मनीषी के आखो पर चोट लगी और उन्हे अस्पताल ले जाना पडा।

दूसरी तरफ प्रो० शेर सिह स्वामी सुमेधानन्द चौ० लक्ष्मी चन्द श्री विमल वधावन डा० धर्मपाल स्वामी इन्द्रवेश स्वामी अग्निवेश तथा शकुन्तला आर्या और मै ज्ञापन प्रस्तुत करने के लिए श्री मदनलाल खुराना तथा साहिब सिह वर्मा के साथ ससद भवन मे श्री लाल कृष्ण आडवाणी को मिलने के लिए पहुचे। उन्हे ज्ञापन दिया गया। श्री आडवाणी ने टेलीफोन से श्री जगमोहन को बडे स्पष्ट और सख्त शब्दो मे कहा कि आपको चाहे कुछ कदम वापस भी लेने पडे आप मन्दिर की यथास्थिति बहाल करे और इसे प्रतिष्ठा का प्रश्न न बनाए।

इसके बाद यही शिष्टमण्डल दोनो पूर्व मुख्यमन्त्रियो सहित श्री जगमोहन के कार्यालय भी पहुच गया जहा पर उप राज्यपाल श्री विजय कपूर भी विराजमान थे। कुछ देर बातचीत करने के बाद श्री जगमोहन ने कहा कि हम पाच बजे फिर बैठक करेगे तो इसकी सूचना आर्यजनता को प्रदर्शन स्थल पर जा ... गई। आर्यजनता ने निर्णय लिया कि हम पाच बजे की बैठक का निर्णय सुनकर ही अपना आगे कार्यक्रम तय करेगे।

पाच बजे की बैठक से पूर्व श्री जगमोहन एव श्री विजय कपूर मन्दिर स्थल का ... भी पहले निर्धारित समय पर हम फिर श्री जगमोहन के कार्यालय मे एकत्रित हुए और शीघ्र ही श्री जगमोहन ने मान लिया कि मन्दिर का पुनर्निमाण कराने हेतु वही भूमि आपको विधिवत दे दी जाएगी। उन्होने अपनी पुस्तक कश्मीर की रायल्टी भी स्वत ही इस कार्य के लिए देने की घोषणा की। बैठक मे तो इस घोषणा के बाद श्री जगमोहन ने वाहवाही लूट ली उनके कारण श्री साहिब सिह वर्मा और मदनलाल खुराना ने भी धन सहयोग के बडे-बडे आश्वासन दिए। उप राज्यपाल श्री विजय कपूर ने भी अपनी पेशन मे से कुछ दान देने की घोषणा की।

यह समाचार देने के लिए जब हम सब लोग प्रदर्शन स्थल पर पहुच तो साय लगभग ६ बजे समूची आर्यजनता सडक पर बैठ कर ही सन्ध्या कर रही थी। यह घोषणा सुनने के बाद आर्यजनो मे एक उमग की लहर दौड गई और वहीं घोषणा की गई कि २२ तारीख को प्रात १० बजे शिलान्यास समारोह भी होगा।

इस घोषणा के बाद आर्यजनता अपने अपने घर चली गई परन्तु अगले ही दिन पुन श्री जगमोहन ने हमारे शिष्टमण्डल को बैठक के लिए अपने कार्यालय बुलाया। इसकी मुझे सूचना श्रीमती शकुन्तला आर्या ने दी और उसी समय मैने श्री लक्ष्मीचन्द श्री विमल वधावन श्री जगदीश आर्य स्वामी सुमेधानन्द आदि को वहा पहुचने के लिए कहा।

श्री जगमोहन ने फिर से वही पुरानी बाते करनी प्रारम्भ कर दी। ... इधर ले लो उधर ले लो यह दस मे भी बड़ा प्लाट है आदि। हम उनके यह व्यवहार पूर्णत अनैतिक लगा उन्होने हमे यह भी कहा कि २२ तारीख का शिलान्यास समारोह थोडा आगे टल दे क्योकि मै भाग नही ले पाऊगा परन्तु हमने इस सुझाव को नहीं माना

– वेदव्रत शर्मा

क्रमश

सत्याग्रह अर्थात सत्य का आग्रह (२)
श्री लाल बहादुर शास्त्री ने भी यही आग्रह किया था



धर्मान्तरण की आग हमारे देश मे स्वतन्त्रता के बाद ही नहीं अपितु स्वतन्त्रता से पहले भी लगी हुई थी। स्वतन्त्रता से पहले हर गैर ईसाई व्यक्ति और नेता इसका विरोध करने से चूकता नहीं था। परन्तु स्वतन्त्रता के बाद वोटो की राजनीति ने सबके मुह बन्द कर दिए। स्वतन्त्रता से पहले गान्धी और नेहरू भी धर्मान्तरण पर पूरा अकुश लगाने के पक्ष मे थे परन्तु बदकिस्मती से सविधान मे यह स्पष्ट नहीं हो पाया। हालाकि उत्तर प्रदेश के सर्वोच्च न्यायालय ने बडे खूबसूरत तरीके से स्पष्ट कर दिया और कहा कि भारतीय सविधान धर्म के प्रचार की स्वतन्त्रता तो देता है परन्तु इस प्रचार की आड मे लोभ लालच छल कपट धोखे दबाव के आधार पर धर्मान्तरण की अनुमति कदापि नही दी गई। परन्तु वोट के व्यापारियो ने सुप्रीम कोर्ट के इस निर्णय को लागू करने की पहल कभी नही की क्योकि इससे उनका ईसाई वोट नाराज होता था। परिणामत धर्मान्तरण की आग स्वतन्त्रता के बाद चली वोट व्यवस्था की आड मे बढनी शुरू हो गई। स्वतन्त्रता की खुशियो मे धर्मान्तरण का जहर घुलना शुरू हो गया। श्री जवाहरलाल नेहरू ने उन्ही राजनीतिक मजबूरियो के तहत धर्मान्तरण के विरुद्ध कोई विचार अपने मन मे नहीं पनपने दिया।

आर्यसमाज के इतिहास से सम्बन्धित एक उज्ज्वल पक्ष का रहस्योदघाटन यहा करना चाहता हू। नेहरू के बाद जब पण्डित लाल बहादुर शास्त्री ने प्रधानमन्त्री कार्यालय का दायित्व सम्भाला तो स्वाभाविक था कि प्रधानमन्त्री तक देश के हर कोने मे होने वाली हलचल का पहुचना। लाल बहादुर शास्त्री जी उत्तर पूर्वी राज्यो से प्राप्त उन खबरो को सुनकर एकदम विचलित हो उठे जिनके माध्यम से उन्होने महसूस किया कि धर्मान्तरण की आग अगर इस तरह बढती गई तो सारा देश एक बार फिर ईसाइयत की भटटी मे राख हो जाएगा।

सम्भवत यही सोचकर ही श्री लाल बहादुर शास्त्री जी ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के शिष्टमण्डल को भेट करने के लिए बुलाया। इस शिष्टमण्डल मे मुझे दो ही नाम याद है लाला रामगोपाल शालवाले (स्वामी आनन्द बोध सरस्वती) तथा श्री ओमप्रकाश त्यागी। स्वामी आनन्द बोध जी ने स्वय यह सारा घटना चक्र मुझे कई बार सुनाया शास्त्री जी ने इस आर्यसमाज के शिष्टमण्डल को बताया कि मै बेशक काशी विश्व विद्यालय का स्नातक हू लेकिन आरम्भिक रूप से मै एक निष्ठावान आर्यसमाजी हू। उन्होने कहा धर्मान्तरण की इन खबरो से मै इस नतीजे पर पहुचा हू कि इस काम को सच्ची गम्भीरता के साथ केवल आर्यसमाज ही सम्पन्न कर सकता है। धर्मान्तरण की घटनाओ को रोकना और धर्मान्तरित हुए लोगो को वापिस उनके मत मे लाना अत्यन्त आवश्यक है और यह कार्य विशाल स्तर पर होना चाहिए। इसके लिए सुझाव दिया कि न तो इसे आर्यसमाज के नाम पर किया जाए और न सार्वदेशिक सभा के नाम पर इसके लिए एक नई सभा खडी की जाए जो बेशक सार्वदेशिक सभा का एक अभिन्न अग हो। परिणामत अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ का अस्तित्व सामने आया।

शेष भाग पृष्ठ ११ पर

वाजपेयीजी का शान्ति प्रयास सर्वथा निरर्थक

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

शान्ति मात्र दो प्रकारो से मिलती है मारकर या मरकर अनेक अवसर आए स्वतन्त्र भारत मे शान्ति स्थापना के किन्तु इस देश के नेताओ ने उनका लाभ नही उठाया

पहला अवसर आया जब पाकिस्तान ने जन्म लेने के तुरन्त बाद कबीलो की आड मे कश्मीर पर आक्रमण किया था उस समय भारत के प्रधानमन्त्री थे श्री जवाहरलाल नेहरू जो विश्व मे शान्ति स्थापना का स्वप्न सजोए बैठ थे और अपने शान्ति प्रयासो के लिए बडे से बडा बलिदान देकर शान्ति अवतार बनने के लिए प्रयत्नशील थे यही कारण है कि कश्मीर के तिहाई भाग को पाकिस्तान को भेंट कर अपनी महत्वाकाक्षी वृत्ति को सन्तुष्ट करने के लिए युद्ध विराम किया था शान्ति तो हुई नही उस भूल के कारण कश्मीर का एक तिहाई भाग अभी तक पाकिस्तान के अधिकार मे है

दूसरी बार अवसर आया सन १९६५ मे श्री लालबहादुर शास्त्री के प्रधानमन्त्रित्व काल मे उन्होने जीता हुआ लाहोर स्वच्छा से ही पाकिस्तान [illegible] कश्मीर का एक तिहाई भाग पाकिस्तान से खाली कराया जा सकता था तब लाहौर वापस किया जाता इसके पश्चात ताशकन्द जाकर वे स्वयं चिरनिद्रा मे सोकर शान्त हो गए परन्तु भारत को शान्ति प्राप्त नहीं हो सकी

तीसरा अवसर आया कारगिल युद्ध के समय राजनीतिक सूझ बूझ की कमी कहे या अपनी काल्पनिक शान्ति की अभिलाषा पूर्ति के लिए कहिए श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने वह स्वर्णिम अवसर खो दिया। कारगिल के समय यदि सेनाओ को कश्मीर के पाकिस्तान अधिकृत क्षेत्र की ओर बढने के आदेश दे दिए जाते तो वह भाग तो कश्मीर मे सम्मिलित कर ही लिया जाता पाकिस्तान भी सदा के लिए भारत के साथ आ जाता

पाकिस्तान की स्थिति यह है कि उसका पश्चिमी सीमा प्रान्त तो बनता पख्तूनिस्तान पख्तून तो अवसर की खोज मे है। बिलोचिस्तान या तो पख्तूनिस्तान मे सम्मिलित होकर वहीं का एक प्रदेश बनता अथवा पृथक बिलोच राष्ट्र बन जाता और सिन्ध तो पाकिस्तान से पृथक होने के लिए छटपटा ही रहा है वह भी सिन्ध राष्ट्र बनकर खडा हो जाता परन्तु नेहरू जी से चली परम्परा को वर्तमान प्रधानमन्त्री श्री वाजपेयी भी नही तोडना चाहते भारत की सीमा पर जितनी समस्याए पाकिस्तान खडी करता है उतनी कोई अन्य देश नही [illegible] पाकिस्तान बना है भारत विरोध पर है। पाकिस्तान के नेताओ के मन और मस्तिष्क मे तो बृहद इस्लामी साम्राज्य की बात भरी हुई है वह उस निकाल नहीं पाते एतदर्थ पहले भारत को दारुलहरब (काफिरस्तान) न बने रहने देकर अब दारुल इस्लाम (मुस्लिम साम्राज्य) बनाने के कटिबद्ध हैं उनके सामने उनके रहनुमाओ की सीख है कि कत्ल करो काफिरो को जहा पाओ मारो गर्दन उनकी और काटो पोरी पोरी और उन्हे चैन से मत बैठने दो इतना सताओ कि वे तुमसे डरे डरते रहेगे तो वे स्वीकार करेगे दीन तुम्हारा नही तो उन्हे मिटा डालो।

सवाल यह है कि वे अपने रहनुमाओ से सीख माने या तुमसे मित्रता करने का कुफ्र करे हमारे देश के नेताओ और बुद्धिजीवियो और उसके उस्तादो को उनके मजहब की कोई जानकारी नहीं है।

बात तो यह है कि श्री वाजपेयी जी को शान्ति चाहिए। अभी तो वह कश्मीर मे शान्ति चाहते है इसलिए सघर्ष विराम किया हुआ है तथा धीरे धीरे किस्तो मे उसकी अवधि बढाते जाते है अच्छा हो कि वह कश्मीर मे अनिश्चित कालीन सघर्ष विराम की घोषणा कर दे इसके परिणाम स्वरूप वहा चिरस्थायी शान्ति हो जाएगी क्योकि अनिश्चित कालीन सघर्ष विराम की घोषणा सुनते ही पाकिस्तानी कश्मीर [illegible] के काफिरो को त्वरित गति से समाप्त करने की कोशिश करेगे।

परन्तु ध्यान रखे कि इससे पाकिस्तान शान्त होकर नहीं बैठेगा तब वह सम्पूर्ण भारत को इस्लामिक साम्राज्य मे सम्मिलित करने के लिए इसे दारुल इस्लाम बनाने के लिए तब तक आक्रमण करता रहेगा जब तक अपने उद्देश्य मे सफल नही हो जाता।

भारत को शान्ति तो पाकिस्तान के टूटने पर ही मिल सकती है। इसके अतिरिक्त अन्य कोई भी मार्ग नही है पाकिस्तान टूटने का अर्थ है पख्तूनिस्तान बिलोचिस्तान तथा सिन्ध देशो का उदय होना पाकिस्तान मे जो पजाब प्रदेश है तब वही लगोटी सा पाकिस्तान रह जाएगा और तब वह अपनी सहायता तथा सुरक्षा के लिए भारत की ओर निहारा करेगा अन्यथा बिलोच पख्तून और सिन्धी उसे नोच नोच कर खा जाएगे।

शान्ति शक्ति से ही प्राप्त होती है ये दोनो बहने है गिडगिडाने और मागने से शान्ति नही मिला करती यह सच्चाई ध्यान रखनी चाहिए इसी मे देश का भला है

अध्यक्ष वैदिक सस्थान
नजीबाबाद (उ०प्र०)

स्वर्ग और नर्क कहां है ?

जब कोई मर जाता है तो कहते हैं कि उसका स्वर्गवास हो गया चाहे वह सारी उम्र खोटे कर्म करते रहा हो फिर भी यह कोई नहीं कहता कि उसका नर्कवास हो गया। अब प्रश्न यह है कि स्वर्ग और नर्क कहा है?

स्वर्ग और नर्क इसी पृथ्वी पर हैं। मृत्यु हो जाने पर आत्मा कर्मों के अनुसार दूसरा जन्म [illegible] लिए किसी योनि में प्रवेश कर जाती है। सुख विशेष का नाम स्वर्ग है और दुःख विशेष (कष्ट) भोगने का नाम नर्क है। सुख दुःख कर्मों का फल है। मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है परन्तु फल प्राप्त करने में परतन्त्र है, अर्थात् ईश्वर के अधीन है। आज कोई मनुष्य यदि [illegible] करके भी सुखी है तो यह उसके पिछले कर्मो का फल है। जब इस जन्म के कर्मों का फल मिलेगा तब अन्धा, लगड़ा विकलांग [illegible] जैसे कई बच्चे जन्म से ही अगहीन होते हैं, वस्तुतः यह पिछले जन्म के कर्मों का ही फल हैं।

[illegible] यह ईश्वर का [illegible] नियम है [illegible] कि अच्छे बुरे कर्मों का फल [illegible]

[illegible]

॥ ओ३म॥

आर्य वीरागना दल दिल्ली

के तत्वावधान मे

आर्य वीरागना व्यक्तित्व विकास तथा आत्मरक्षण शिविर

दिनाक १० जून २००१ से १४ जून २००१ तक

स्थान आर्यसमाज बी ब्लाक सरस्वती विहार नई दिल्ली २४

प्रत्येक वर्ष की भाति इस वर्ष भी कन्याओ मे शारीरिक आत्मिक नैतिक बल एव वैदिक सिद्धान्तो व सस्कारो का प्रशिक्षण देकर उन्हे समाज व परिवार के निर्माण मे एक अहम भूमिका निभाने हेतु आर्य कन्या प्रशिक्षण शिविर लगाया जा रहा है।

इस शिविर मे कन्याओ के शारीरिक एव बौद्धिक विकास राष्ट्रीय चेतना अनुशासित जीवन आत्मरक्षण शस्त्र प्रशिक्षण हस्तकला प्रशिक्षण तथा आर्य सस्कृति की भावनाए जागृत करना हमारा मुख्य उद्देश्य है

उदघाटन	**१० जून २००१ रविवार साय ५ ०० बजे**
समापन	**१७ जून २००१ रविवार प्रात १० ०० बजे**

नियम

१ शिविर शुल्क १०० रुपये प्रति शिविरार्थी रहेगा। २ सभी शिविरार्थी १० जून प्रात १० ०० बजे शिविर स्थल पर पहुच जाए। ३ कापी पेन दरी चादर यज्ञ की पुस्तक टार्च लाठी मग भोजन के बर्तन साथ लाए। ४ सफेद सलवार कुर्ता तथा केसरिया चुन्नी २ जोडी सफेद पी०टी० शूज। ५ कोई कीमती वस्तु या आभूषण साथ न लाए। ६ क्राफ्ट की कक्षा हेतु छोटी कागज काटने वाली कैची फेविकोल कुछ रगीन क्रेप पेपर अवश्य लाए। ७ अपने नाम शीघ्र शिविर सचालिका या महासचिव को लिखा दे या सम्पर्क करे। ८ शिविर मे १२ वर्ष व उससे बडी आयु की कन्याए भाग ले सकती हैं।

सभी आर्य सज्जनो व दान दाताओ से निवेदन है कि इस पुनीत कार्य के लिए धन व खाद्यान्न सामग्री द्वारा हमे सहयोग प्रदान करें।

सम्पर्क उज्ज्वला वर्मा व विभा आर्या।

निवेदक

उज्ज्वला वर्मा
सचालिका आर्य वीरागना दल दिल्ली
फोन ५५२४२५४

विभा आर्या
महासचिव आर्य वीरागना दल दिल्ली
फोन ७१६१२४७

चन्द्र भान गुप्ता
प्रधान आर्यसमाज
सरस्वती बिहार दिल्ली

भजन प्रकाश आर्य
मन्त्री आर्यसमाज
सरस्वती बिहार दिल्ली

आधुनिकता और कैंसर

डॉ० बिजेन्द्र पाल सिह चौहान

आधुनिकता की चमक दमक ने मनुष्य को प्राकृतिक साधनो व प्रकृति से दूर कर दिया है। मनुष्य भोजन आवास प्राकृतिक छटा चिडिया से चहचहाते वन मे कूदते फादते पशु पक्षी सुन्दर पवित्र जल युक्त सरोवर सरिता हरे भरे जगल आसमान मे शुद्ध वायु ऊचे हरे भरे झरना युक्त पर्वतो से दूर बद एक स्थानीय शौचालय स्नानागार भोजनालय एयर कण्डीशनिग टीवी फ्रिज सौदर्य साधन ब्रुश (दन्त धावन हेतु) व क्रतिम अप्राकृतिक परिधानो जैसे भौतिक आधुनिक क्रत्रिम साधनो तक सीमित रह गया है अत्याधिक धर्नाजन की तीव्र इच्छा मै वह जगल का भ्रमण सूर्योदय नदियो का बहता जल पशु पक्षियो के कलरव जैसी सुन्दर छटा को देखने से वचित हो गया है। ड्राईग रुमो मे उसने वन पक्षी सिह आदि के चित्र लगा कर उसकी क्रत्रिम पूति कर मन का समझाना उचित समझ लिया हे। वायु जल भोजन व निर्माण आदि के क्रत्रिम साधनो म आज का मानव स्वास्थ्य के नियम प्राकृतिक आनन्द को भूलता जा रहा है और दिन पर दिन रागो से ग्रस्त होता जा रहा है। क्रत्रिम साधन कैसर के जनक बन गए है।

पर्यावरण प्रदूषण सिगरेट पान मसाला चाकलेट रगीन ठण्डे पेय चटपट भोजन व औद्योगिकीकरण तथा परमाणु युद्ध बम आदि के प्रयोगो से केसर जेसी भयानक व्याधियो ने उग्र रूप धारण कर लिया हे प्रदूषण से कैसर की वृद्धि पर अधिक प्रभाव पडा है पवतो का कटाव नदियो सरोवरो भूमि के जल का प्रदूषण कीटनाशको का अत्याधिक प्रयोग औद्योगिकीकरण मोटर वाहनो डीजल पैट्रोलियम पदार्थो का वायु मे छोडा जाना हानिकारक गैसो की वायु म उपस्थिति से वायु प्रदूषण महानगरो मे ध्वनि प्रदूषण से मनुष्य का स्वास्थ्य अत्याधिक प्रभावित हुआ है। ईश्वर की विचित्र प्राकृतिक छटा को नष्ट भ्रष्ट कर दिया गया है। मनुष्य के रहन सहन आवास भोजन की विधि कार्यकलापो मे जो परिवर्तन आया है वह प्राकृतिक नियमो से विरुद्ध है और मनुष्य के दुख का कारण बनता जा रहा है।

सयुक्त राष्ट्र सघ के पर्यावरण प्रदूषण समिति के अनुसार कैंसर रोगियो मे ६० से ८० प्रतिशत कैसर पर्यावरण प्रदूषण के कारण ही उत्पन्न होते हैं। सन १९९१ के खाडी युद्ध से पृथ्वी का वातावरण अत्यधिक प्रदूषित हुआ बम विस्फोटो तेल के कूओ से निकले धुआ आग व विषाक्त गैसा से पृथ्वी के चारो ओर रहन वाली ओजोन की पत हल्की हो गइ और जीवन को नष्ट करने वाली पराबेगनी किरण धरातल पर आनी आरम्भ हो गइ जिससे त्वचा कैसर म वृद्धि हुइ है भाजन पत का दस प्रतिशत क्षय हो चुका हे।

उद्योगो से निकलन वाली गेस भी प्रदूषण करती है। समस्त पर्यावरण प्रदूषित होता है। वायु वनस्पतिया जल सभी विषाक्त हो जात है। यही कारण है वातावरण आकाश मे पक्षियो का स्वच्छन्द रूप से विचरण पहले जैसा नही रहा अकेला अमरिका जो विश्व की आबादी का ५० प्रतिशत वायुमण्डल की कार्बन डाईआक्साइड का २२प्रतिशत भाग वातावरण मे छोडता है बडे औद्यागिक देशो म प्रदूषण की समस्या सवाधिक हे।

कृषि व भूमि बागो मे प्रयुक्त कीटनाशको का अत्याधिक प्रयाग आधुनिक रहन सहन पैट्रोल डीजल गाडियो का प्रयोग एण्टीबायोटिक्स औषधियां गर्भनिरोधक पिल्स धूम्रपान मद्यपान मादक द्रव्य हेराईन आदि के प्रयोग से कैसर की वृद्धि हुइ है। विश्व स्वास्थ्य सगठन के अनुसार प्रतिवर्ष छह लाख फेफडो के कैसर के रोगी मिलते हैं इनमे ८४ प्रतिशत धूम्रपान के कारण कैसर ग्रस्त होते हे।

अधिक आराम मे रहन आधुनिक अत्याधुनिक भौतिक साधनो का प्रयोग चटपटे तले हुए स्वाद वाले पदाथ भोज्य द्रव्य फल दुग्ध आदि को और अधिक स्वाद व रूप मे बदल कर खाने से चाकलेट कटलट आमलेट ठण्डे रगीन पेय पदार्थो सक जठराग्नि विक्रत हो कर आत्र व गुदा स्थान मे कैसर का उत्पन्न कर देती है पश्चिमी आस्ट्रेलिया के शोध कर्त्ता डा० बी०के० आर्मस्ट्राग के अनुसार मास खाने वाली महिलाओ को शाकाहारी महिलाओ की अपेक्षा अधिक कैसर होता है मास मे अनेक विजातीय तत्व एव हार्मोन होते है जो हमारे शरीर के लिए अच्छे व लाभकारी नही होते और मास मे उपस्थित रासायनिक तत्वो से कैंसर होता है।

दोष धातु मल शरीर के मूल है। इनकी साम्यावस्था से शरीर निरोगी व स्वस्थ रहता है। असम्यक आहार विहार व वातावरण पदूषण से शरीर रोगी हो जाता है। 'दोष धातु मल मूल हि शरीर'। निरोगी व स्वस्थ व्यक्ति की पहचान यह है कि उसके दोष धातु साम्य अवस्था मे रहे मल मूत्र व वेग आदि उचित अवस्था मन प्रसन्न चित्त हो वह व्यक्ति स्वस्थ होता है।

समदोष समाग्निश्च समधातु मल क्रिया। प्रसन्नात्मेन्द्रिय मन स्वस्थ इत्यमिधीयते।।

दोष धातु मल क्रिया इनकी अवस्था अथवा यू कहिए शरीर की चयापचय क्रिया (मैटाबालिक एक्टिविटीज) बिगडने पर व्यक्ति राग ग्रस्त हा जाता ह बहुत से व्यक्ति तज व अधिक गर्म चाय पीत है विश्व स्वास्थ्य सगठन के अनुसार ऐसे व्यक्तियो को अन्न नलिका का केसर विशेषज्ञो के अनुसार रूस और केश्पियन सागर के तटीय प्रदेश म रहन वाले व्यक्ति अधिक गम चाय पीते हे वहा उन लोगो मे कैसर का प्रतिशत सवाधिक होता है। इन लोगो मे अन्न नलिका का केसर होता हे विशषज्ञो क अनुसार काफी पीने वालो को मूत्राशय कैसर अधिक होता है। जर्दा सुर्ती खाने वालो को ग्रीवा तथा फेफडो श्वास नलिका के कैसर की सम्भावना रहती है तम्बाकू खाने वालो को व्रक्क मूत्राशय क कैसर की अधिक सम्भावना रहती है।

केसर रोग स ग्रस्त अग की स्थिति आकार वण प्राकृतिक स्थिति परिमाप विक्रत हो जाता है आज कामोत्तेजना यौन पिपासा की तृप्ति हेतु अनेक औषधिया निर्माताओ द्वारा तयार की जा रही हैं कामुकता के साधन श्रृगार अन्य क्रत्रिम पदार्थ बनाए व प्रयोग किए जा रह हे इन सबस कैसर हाने की अत्याधिक सम्भावना रहती है।

आज कार्यालयो गाडी वायुयान स्टेशन पर घर मे व मल शादी विवाह आदि कायक्रमो पर तथा हर स्थान पर आप देखेगे कि अधिकतर व्यक्ति स्त्री पुरुष युवा व बालक भी पढे लिखे और अनपढ भी तथा उच्च योग्यताधारी भी मुह मे ओष्ट के भीतर गुटखा पान पराग पान मसाला आदि मादक व विषाक्त अप्राकृतिक हानिकारक द्रव्य रख कर ऊट की तरह जुगाली करते मिल जाएगे जब बाते करते है तो ऊट की तरह ऊपर आकाश की ओर मुह कर मसाले की पीक को रोक कर बाते करते मिल जाएगे। अब वे जो भी बाते करते है अस्पष्ट होती है और जहा वे बैठते या खडे होते है थूक कर स्थान को गदा करने मे कोई कसर नहीं छोडते इसे वह बडा अच्छा स्टैण्डर्ड व मान मर्यादा समझते हैं वह भूलवश नहीं जानते कि बडे हॉस्पिटलो मे गुटखा आदि से होने वाले कैसर रोगियो से बैड भरे पडे है और कैसर रोगियो की निरन्तर वृद्धि हो रही है मौत के मुह मे जाकर ऐसे लोग वहा रोते हैं जब कि सब कुछ लुट चुका होता है। पान मसाला तम्बाकू सिगरेट सामाजिक बुराइ ह रागो व कसर का आमन्त्रण है। इसस सदैव दूर रहना चाहिए।

कैसर की पहचान वेदिक काल म भी थी ऋग्वद म इसका अनेक स्थानो पर वणन है अध्याय एक प्रकरण ५१ तथा ऋचाए ६ ऋग्वेद २ ११–२० तथा २ १४–४ मे इसका वर्णन अर्बुद नाम से है। अथर्ववेद के उपवेद आयुर्वेद मे इसका वर्णन हे सुश्रुत सहिता मे अबुद की चिकित्सा भी बताई है

नियात्थ वा शास्त्रमपोहन मेदोदहेत

सश्रुतचिकित्साध्याय १८ १८

मेदोऽर्बुद स्विन्नमथोऽविदार्ण विशोध्य सिव्येदगत रक्तमाशु

सश्रुत चिकित्साध्याय १८ ३१–४१

वैदिक काल मे घातक रोगो महामारी कैसर जैसे रोगो स रक्षा के समुचित उपाय थे। उस समय की व्यवस्था प्राकृतिक रूप से वेज्ञानिक द्रष्टिकोण से अत्यन्त श्रेष्ठ शुद्ध व पवित्र थी। वैदिक उपायो का आज भी अपनाए तो हमे भयानक व्याधियो व अधेरे भविष्य से मुक्ति मिल सकती है हम मिलकर कुछ उपाय करने चाहिए

वायु जल मुद्रा रसायन ध्वनि रेडियो धर्मी प्रदूषण को रोकना चाहिए वृक्षा व वना की कटाइ बन्द कर देनी चाहिए पर्वतो को तोडना बन्द कर दे नदियो मे गन्द नालो का गिरना रोके शव आदि का दाह सस्कार नदियो पर न करे ना ही उसमे अस्थि शव मल मूत्र कीचड आदि विसर्जित करे।

वृक्षारोपण की गति बढाए घर के आगन दीवारो गली मेदानो बडे मार्गो के किनारा जगल व खेतो के पास अधिक से अधिक वृक्ष लगावे बहुत से वृक्ष अधिक मात्रा म आक्सीजन छोडते व वातावरण को स्वच्छ बनाते हे इसके साथ छाया फल औषधिया प्रदान करते है इन्हे अरापित करे।

आम अमरुद अजुन एरण्ड लाल कनेर वोगेवनिवलिया अशोक जगल जलेबी सहिनन तेन्दू, गुलमोहर नीम पलास नीबू कटहल कदम्ब बवूल आवला बरगद पिलखन इमली खजूर सहिगन मन्दार पीला कनेर आदि सहस्रो प्रकार के पौधे व वनस्पतिया जिनसे हम अपने चारो ओर के पर्यावरण को सुन्दर बना सकते हैं। मनुष्य चौबीस घण्टे मे ओसतन २२००० बार श्वास लेता है और लगभग १६ किलोग्राम आक्सीजन का उपयोग करता है इतनी आक्सजीन के लिए इतने वृक्ष हमारे रहने चाहिए जो दिन मे इतनी आक्सीजन छोडते हो अर्थात परिस्थिति के सतुलन के लिए सघन छत्र का वन क्षेत्र बाकी से आधा तो हाना ही चाहिए परन्तु हमारे यहा वन केवल दसवा भाग ही रह गए है।

शेष भाग पृष्ठ ८ पर

आर्यसमाज और विश्वबन्धुत्व

— आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री (वेदप्रवक्ता)

धरती का कोइ खण्ड नदी पवत समतल आदि का सघात कहा जा सकता है। मनुष्यो की आकस्मिक रूप स एकत्रित भीड मानस समूह की सज्ञा पा सकती है परन्तु राष्ट्र की गरिमा पाने क लिए भूमिखण्ड विशष की ही नही एक सास्कृतिक दायभाग क अधिकारी और प्रबुद्ध मानव की आवश्यकता होती है जो अपने अनुराग की दीप्ति से उस भूमि के हर कण को इस प्रकार उद्भासित कर दे कि वह एक चिर नवीन सौन्दर्य मे जीवित अैर लयवान हो सके – सस्कृति के स्वर। परमात्मा हमे कठोर परीक्षण मे डालते हैं साधारण मानव की दृष्टि मे परीक्षण की यह घडी उसे विचलित कर दती है यत्रणाओ द्वारा जब दलन होता हे तब आस्थाओ का स्खलन होता है। साधारण मानव यह मान लेता है कि नियति न उस पर अकारण ही क्रोध किया है।

इस भावना से उसका मन मलिन हो जाता हे वा मानव क कल्याण की भावना का ताक मे रखकर उसके सहार पर उतारू हो जाता है य नकारात्मक विचार है जो विश्वबन्धुत्व के उज्ज्वल भाव पर एक बडा आघात हैं हमार जन ईश्वर की न्यायव्यवस्था मे पूरी आस्था रखत हुए उसस प्रार्थना करते है कि प्रथम तो हमारे मना मे द्वषभावना न हा यदि कहीं रचमात्र ऐसा हो तब हम यह प्राथना नही करते कि किसी व्यक्ति को ठिकाने लगा दे किन्तु विनम्र भाव से कहते हैं स्वामी यह आपके न्याय हस्त है।

ससार मे जितने भी मत है उनमे एकपक्षीय भावना है उनके पन्थ के प्रचार के निमित्त किसी न किसी व्यक्ति का नाम लिया जाता है जो उसका प्रवर्तक माना जाता है। सर्वविदित है कि मानव का ज्ञान स्वल्प है उसके चिन्तन की सीमा है उसे वह दृष्टि नहीं मिलती जो ईश्वर को और उसकी सृष्टि को समग्रता मे देख सके वेद का जहा तक प्रश्न है किसी व्यक्ति विशेष से वह जुडा हुआ नहीं है आस्तिक आर्यो का यह विश्वास है कि वद परमात्मा का ज्ञान है अन्य मतावलम्बियो ने पन्थाई के सूत्रधारो को आगे रखकर ऐसा लगता है कि उनके गुणा का व्यक्तिरूप मे गान किया है और यत्र तत्र उनमे मानवकल्याण का भाव दृष्टिगोचर होता है तो वह भी गौण रूप मे हैं। परन्तु वेद मे जो सन्देश है वा किसी काल और प्रदेश की इयन्ता के आधीन नही है वह सार्वभौम और सार्वकालिक है आर्यसमाज क सस्थापक महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज का प्रथम नियम बनाकर जहा तक ज्ञान के आदिस्रोत होने का प्रश्न है ईश्वर के वर्चस्व को अकाटय रूप से प्रतिष्ठित किया हे

उन्होने लिखा है (सब सत्य विद्या ओर जो पदार्थ विद्या से जाने जात हे उन सबका आदि मूल परमेश्वर है)

ये नियम इस बात का ज्वलन्त प्रमाण है कि ऋषि को गुरुडम से कितनी घृणा थी और हमारी सम्मति से ये नियम गुरुडम की नींव पर प्रबलतम आघात है।

हमारे विचार मे धर्म कोई कर्मकाण्ड नही मानव का दूसरे मानव के प्रति व्यवहार है हम सभी को मित्र की दृष्टि से देखते है और चाहते है कि हमारे मन शुभ सकल्प वाले हो सभी के कल्याण की कामना करते है किसी के प्रति मालिन्य अथवा द्वेष को कहीं पर भी प्रश्रय नहीं देते।

हमारा धर्म वो कर्म हे जो अपने का अपने मर्म को हमारी उपलब्धियो के रूप मे औरो तक पहुचाता है।

विश्वबन्धुत्व का ये आधार है कि हम एक ईश्वर की सन्तान है हम कही के रहने वाले हो अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओ को देखत हुए हम किसी भी राज्यतन्त्र का अपनाय परन्तु वद के इस सदेश का कभी न भूले कि हम प्रभु के अमृत पुत्र हैं। हमारी बालचाल की भाषा कोइ हो परन्तु सवत्र हम यह पाते है कि उल्लास हर्ष विषाद ओर विस्मय आदि अनुभूतियो की भाषा मानव कहीं भी हो वो भाषा प्रत्येक मानव समझता है।

विश्वबन्धुत्व के प्रति हम कितने प्रतिबद्ध है इसका पता तभी चल पाएगा जब हम इस भाषा क प्रति सवेदनशील होगे और अपना सौभाग्य सेवा के उस अवसर की प्राप्ति मे मानेगें जब हम विश्व के कल्याण के प्रति अपना थोडा सा योग दें।

हमारे मनीषियो ने विश्वबन्धुत्व की मूलभावना की इस रूप म बडी सुन्दर अभिव्यक्ति दी है –

नत्वहि कामये राज्य न सौख्य न पुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्ताना प्राणिनामार्तनाशनम्।।

आर्यसमाज का सन्देश है कि आज प्रत्येक व्यक्ति अपनी वृत्ति के प्रति ईमानदार रहे और अपने कार्यो से लोगो पर ऐसा प्रभाव डाले कि वह उदाहरण बन जाए।

वर्ण स यहा अभिप्राय जाति से नहीं वृत्ति से है वर्ण–अक्षर भी है जो कभी नष्ट नही होता इसी प्रकार मानव दूसरो के हृदय पर अपने कार्यो का ऐसा प्रभाव डाले कि उसे किसी स्थिति मे लज्जित नहीं होना पडे। वर्ण रग को कहते हैं ज[illegible]सी के मन पर किसी व्यक्ति की एसी छवि होगी तो कोन कह सकता है कि उसने – अपने रग की छाप नहीं छोडी वह भी ऐसी जो कभी मिट नहीं सकेगी न कभी भूल सकेगी।

आज जरूरत इस बात की है कि आर्यसमाज मात्र सस्था न रहकर एक जीवन्त आन्दालन बने जो जागरण का पुरोधा बनकर जनमानस को आन्दोलित करे जनता को इसकी प्रतीति कराई जाए कि आर्य किसी जाति का नाम नहीं है वरन आर्य सज्ञा है उस व्यक्ति की जो आस्तिक सेवावृत्ति धर्मपरायण शुभगुण युक्त हो।

विश्वबन्धुत्व की भावना का प्रचार करने के लिए यह आवश्यक है कि जातिवाद वर्गवाद और प्रदेशवाद की सकीर्णता से हम उबरे और सभी को यह स्मरण रखने की प्ररणा दे वह स्वय आर्य बने ओर अन्या को बनाए। तथा मनुर्भव जनया देव्य जनम इस वेदादेश का प्रचार–प्रसार करे।

नशा उन्मूलन अभियान और शाकाहार का प्रचार किया जाय

वैदिक साहित्य का एक व्यापक स्तर पर वितरण किया जाए जो वैदिक विचार धारा के प्रचार का विश्वस्त्र आधार बन सके।

विश्वबन्धुत्व का प्रचार प्रसार तभी सम्भव है जब हमारा गन्तव्य एक होगा मन्तव्य एक होगा वक्तव्य एक होगा कर्त्तव्य एक होगा।

वसुधैव कुटुम्बकम वसुधा ही कुटुम्ब समान है सब पर हमारा एक समान प्यार हागा

एक पिता के पुत्र है सारे एक हमारी माता

दाना पानी देने वाला एक हमारा दाता

फिर किस मूर्ख ने लडना तुम्हे सिखाया सबसे कर लो प्रेम जगत मे कोई नही पराया। जातिवाद एव सम्प्रदायवाद क दलदल से हटकर हम मानवतावाद को जीवन मे लाये।

अग्नि हमे उन्नति की राह दिखाती है विरोध के मध्य भी प्रलोभन की चमक से और आतक की निरकुशता से हम दबे नहीं वरन हमारा स्वर और भी प्रखर और मुखर हो ये हमे अग्नि से सीखना है। वह हमारी परीक्षा लेती है उसके ताप से भोजन पकाकर हम स्वय तो खा लेते हैं लेकिन वह ये भी जानना चाहती है कि वैसा ही भोजन दूसरो को प्राप्त कराने की कितनी व्यग्रता हमारे हृदय मे है ?

विश्वबन्धुत्व मानवता दूसरा नाम है दूसरो के प्रति हम कितने सवेदनशील हैं ? क्या हम वास्तव मे ऐसे मर्द हैं जो किसी का दर्द लेकर हमदर्द बन सके ?

दर्द दूसरो को बाटे शैतान वही है।
दर्द दूसरो का बाटे इसान वही है।।

हमारा अपना शरीर हम परोपकारमयी मानवता विश्वबन्धुत्व का पाठ पढाने वाला सर्वोत्तम शिक्षक है शरीर के किसी भी अग मे कोई आघात लगता है तो कष्ट का अनुभव सारा शरीर करता है ध्यान उसी की ओर रहता है। पेट मे स्वय कोई विकार न भी हो किन्तु यदि अन्य अग मे विकार हो तो वह भी अपनी सवदेनशीलता इस रूप मे व्यक्त करता है कि वह भी अपने भोजन के प्रति अनिच्छा व्यक्त करता है।

महर्षि दयानन्द महाराज मे मानव क प्रति करुणा का भाव चरमोत्कर्ष पर था सन्यासी होने पर भी उन्होने ससार के जीवो को तथाकथित वैरागियो की भाति उपेक्षित कर दया और आनन्द के अमृत से वचित नही रखा सच तो ये है कि वह विश्वबन्धुत्व एव मानवता के उद्धारको मे इस दया और आनन्द का पात्र प्राणीमात्र को बनाकर वह मूधन्य स्थान के अधिकारी बन गए हैं।

अनूपशहर मे एक दुष्ट ने उन्हे [illegible] दिया [illegible] पता लगा तो उन्होने न्योलि क्रिया द्वारा वमन कर विष निकाल दिया। वहा सेय्यद मुहम्मद तहसीलदार आपका भक्त था। उसने हत्यारे का पकडकर बन्दीग्रह मे डालने की बात कहीं। स्वामी दयानन्द जी ने देवसुलभ अप्रतिम दयालुता का परिचय देते हुए यह स्मरणीय वाक्य कहा कि मैं ससार को कैद कराने नही आया हू, अपितु कैद से छुडाने आया हू।

आयसमाज कोइ मत मजहब नही अपितु विश्वधर्म या मानव धर्म का प्रचारक सगठम है।

प्रत्येक को अपनी उन्नति से सन्तुष्ट न होना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए। कितना प्यारा चिन्तन है।

पावक की लपटो में पडकर सोना कुन्दन बन जाता है।
भाव शुद्ध हो तो छोटा सा धागा रक्षाबन्धन बन जाता है।
सघर्षो की भटटी मे तपना होती बात नहीं।
त्याग तपस्या से मानव माथे का चन्दन बन जाता है।

आइये हम सब लोग । सगच्छध्व सवदध्व स वो मनासि जानताम। इस आदेश का पालन करे ।

निर्माणो के पावन युग मे हम विश्वबन्धुत्व की भावना न भूले।

स्वार्थ साधना की आधी मे वसुधा का कल्याण न भूले।

– आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी नई दिल्ली

जन्म दिवस 25 मई पर विशेष

देश भक्ति के प्रेरणा स्त्रोत

महाराणा प्रताप

— उदयप्रताप सिह चौहान पूर्व प्रधानाचार्य

स्वतन्त्रता की प्रथम ज्योति प्रज्ज्वलित कर के भारत के गौरवशाली अतीत की रक्षा के लिए एव देश वासियो को दासता के जीवन से छुटकारा दिलाकर स्वाभिमान के लिए मर मिटने का पाठ पढाने वाला स्वतन्त्रता देवी का अनन्य भक्त महाराणाप्रताप जिसने कहा था कि **परतन्त्र बनकर महलो का निवास चादी के पात्रो मे भोजन करने से कहीं अच्छा है जगलो मे भूमि शयन और फूल फल पादपो और घास की रोटिया जिनमे स्वतन्त्रता की सुगन्ध तो विद्यमान है।**

इसी महान स्वतन्त्र दीप से प्रकाशित हुआ छत्रपति शिवाजी का अन्त करण और अपने जीवन भर मराठा राज्य के लिए लडती रही महान वीरागना झासी की रानी ने भी इसी इतिहास को पढकर जीवन के अन्तिम क्षणो तक ब्रिटिश हुकूमत स युद्ध किया और ब्रिटिश सरकार क जोर जुल्म के समक्ष आत्मसमपण नहीं किया। इसी प्ररणा से ही प्रेरित हाकर वर्तमान स्वतन्त्रता के प्रणता के रूप मे सर्वप्रथम श्री खुदीराम बोस ने देश की बलिवदी का नमन किया फिर असख्य देशभक्तो ने इस स्वतन्त्रता की वेदी पुर अपने को बलिदान करते हुए कहा कि सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल मे है देखना है जोर कितना बाजुए कातिल म है। इस पक्ति म रामप्रसाद विस्मिल चन्द्रशेखर आजाद राजगुरु सुखदेव सरदार भगतसिह सुभाषचन्द्र बास आदि खड है। हम विस्मृत नही कर सकने बहादुरशाह जफर को जिसके शब्द थे कि बागियो मे जब तलक ताकत है एक ईमान की तख्त लन्दन तक चलेगी तेग हिन्दोस्तान की।

ये सब स्वतन्त्रता प्रेमी महाराणा प्रताप की प्रेरणा से ही प्रेरित थे उक्त अमर शहीद जिनकी कुर्वानियो ने ब्रिटिश सिहासन को हिला दिया अग्रेजी हुकुमरानो के दिल दहल गये और उनको भारत स्वतन्त्र करने के लिए विवश होना पडा हम लकीर के फकीर बनकर भले ही कहते रहे कि किसी व्यक्ति विशेष की कृपा से हमे स्वतन्त्रतादेवी के दर्शन हुए है। परन्तु यह तथ्य सर्वमान्य नहीं है।

स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है इसी उक्ति के प्रेरणा स्रोत को महाराणाप्रताप। इस बात से कदापि इन्कार नहीं किया जा सकता कि स्वतन्त्रता की भावना जाग्रत करने का श्रेय राणा को ही जाता है जिन्होने विदेशी मुगलिया शासन के विरुद्ध स्वतन्त्रता का पहला बिगुल बजाया था। आज हम और देश के नेता उस महान सेनानी को स्वतन्त्रता सेनानियो की उस पक्ति मे इसलिए नही खडा करना चाहते है कि कहीं हमारा मुस्लिम वोट बैक अन्यत्र न खिसक जाये। परन्तु उन्हे यह स्मरण रखना चाहिए कि हल्दीघाटी का वह युद्ध उसी प्रकार से विदेशी शासन के विरुद्ध था जिस प्रकार भारत का स्वतन्त्रता सग्राम। हल्दी घाटी का युद्ध किसी जाति अथवा वर्ग विशेष के विरुद्ध न होकर एक विदेशी हुकूमत के विरुद्ध था और उस प्रथम स्वतन्त्रता सग्राम का नायक था प्रणवीर राणा प्रताप। उस महान स्वतन्त्रता सेनानी की सेवाओ का यदि हमने तुष्टीकरण की आग मे झोक दिया तो इनिहास हमे माफ नही करेगा। क्योकि हल्दी घाटी और यह स्वतन्त्रता सग्राम दोनो विदेशी सत्ता के विरुद्ध हुए चाहे वह मुगलिया हुकूमत हो अथवा अग्रेजी सत्ता इस प्रकार से यह निर्विवाद सत्य है कि राणा प्रताप ही इस देश के प्रथम स्वतन्त्रता के प्रेरणा श्रोत थे।

हिन्दुओ की दशा अकबर की नीति (कवित छन्द) गोर गुमान मान दे चुके थे कौडिया मे हिन्दुओ की एकता का छिन्न भिन्न तार था। किए गुलाम इस्लाम की लगाम लगा इसका अगाडी कुछ और ही विचार था। हो न सकी पूर्ण अभिलाषा परिभाषा क्योकि जीवन मे बाधक हमेशा एक खार था।

अकबर यदि बेलगाम का तुरग था तो चढने को राणा बेलगाम का सवार था।

राणा ने भारत की सोयी हुई हिन्दू जाति को उस समय जगाया था जब हम परतन्त्रता के गर्त मे गिर चुके हमारा गौरव दिशा हीन हाकर नष्ट हो रहा था।

प्रताप पराक्रम (हल्दीघाटी)

चीघते थे हाथी हय हींसते थे बारबार
बैरियो मे हल्ला सुन रल्ला मच जाता था
कट कट रूण्ड मुण्ड झुण्ड झक मारते थे
झटट पटट वीरता का झण्डा गड जाता था।
हेकडो की हेकडी दवा के दुम भागती थी
मुगलो का सारा मदमा न झड जाता था
लेकर स्वतन्त्रता की तेज तलवार जब
प्रणवीर प्रबल प्रताप अड जाता था।

उस महान स्वतन्त्रता प्रेमी ने हल्दी घाटी के युद्ध मे जो पराक्रम दिखाया वहस्मरणीय एव वन्दनीय तथा अभिनन्दनीय है।

स्वतन्त्रता सग्राम जो हल्दी घाटी के युद्ध के रूप मे लडा गया उसको केवल इस भय से हम स्वतन्त्रता सग्राम नहीं कहना चाहते हैं कि कहीं वह भी बाबरी मस्जिद न बन जाए और लोग एक बहाना लेकर राजनीति की रोटिया न सेकने लगे। परन्तु उस शासक श्रेणी के मुगलो और आज के मुसलमानो मे अन्तर का अनुभव नही करते। आज का मुसलमान और स्वतन्त्रता सग्राम का मुसलमान भारतीय और भारत का नागरिक है शासक नहीं है।

हमन तमाम जन्म दिन और जयन्तियो की घोषणा सार्वजनिक कर डाली परन्तु उस स्वतन्त्रता के प्रथम दीप की जयन्ती की घोषणा सार्वजनिक रूप मे करने मे हमे भय है करना भी चाहते है तो तुष्टिकरण हेतु हमारे ही नेता अगुस्तनुमाई के लिए तैयार है हम हिन्दू, हिन्दी हिन्दुस्तान का स्वप्न देखते है। भाषणो स जनता को मकडजाल मे फसाते है परन्तु हिन्दू, हिन्दी हिन्द की नाक बचाने वाले उस वीर को भूल बैठे हे यदि सरकार इसमे पहल नहीं करती तो देश प्रेमी जनता का इस जयन्ती को सार्वजनिक रूप मे मनाने के लिए सरकार को विवश करना चाहिए। उस विभूति ने महल अटारी राजपाट स्वर्णपात्र छोडकर सपरिवार जगलो मे रहकर घास फूस की रोटिया फल पत्र खाकर दिन बिताये थे और प्रतिज्ञा की थी कि जब तक देश को स्वतन्त्र नही कर लूगा भीला की तरह जीवन बिताऊगा उस महान देशभक्त की प्रतिज्ञा की कुछ पक्तियो पर आप दृष्टिपात कर —

प्रताप प्रतिज्ञा

जगलो मे घूमूगा पहाडो पै करूँगा वास
जीवन की घाटियो मे ऊधम मचाऊगा।
खाने को भोजन नसीब यदि होगा नहीं
पादपो के फूल पत्र बीन बीन खाऊगा।
हाथ मे रहेगा हथियार यदि न कोई तो
खाली नखो से शत्रु आसन डिगाऊगा
भूखे प्राण त्याग दूगा बस्ती छोड दूगा और
हस्ती मेट दूगा परशीश न झुकाऊगा।

****

चाहे भील वीरभारी बाकुरे लडाकू
रणक्षेत्र में दिखाए पीठ जीवन ये ख्वार हो।
इष्ट मित्र बन्धु भाई सारा परिवार चाहे
कुन्नत बजाये अल्लाह अकबर प्यार हो।
रोटी बेटी चोटी चाहे खोटी पड जाये सबकी
दिन दूना इस्लाम धर्म का प्रचार हो।
विश्व की विभूति सारी शक्तिया हो एक ओर
एक ओर चेतक और मेरी तलवार हो।

आज का नेतृत्व तो केवल कुर्सी की लडाई मे सलग्न है। इनसे देश का भला कैसे सम्भव है। आज का नेतृत्व पूजीवादी बनने मे लगा है। देश कल्याण जन सेवा तो केवल चुनाव के समय की बात रह गयी है लेकिन याद रहे उन्हे इतिहास और भावी युवक माफ नहीं करेगा जो जातिवाद और वर्गवाद से देश मे जहर घोल रहे हैं।

अन्त मे आज स्वतन्त्रता की ५२वी पुण्य जयन्ती के अवसर पर मैं उन अमर शहीदो को भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित कर रहा हू और स्वतन्त्रता के उस ज्योति पुन्ज राणा प्रताप को मेरी विशेष श्रद्धाजलि इसलिए कि उस महान सेनानी ने स्वतन्त्रता प्राप्ति का मार्गदर्शन कराया। देशभक्ति के प्रेरणास्रोत तुम्हे शत–शत नमन।

— सुखसेनपुर जनपद कन्नौज (उ० प्र०)

स्वास्थ्य चर्चा

भोजन पर भी पड़ता है मन के प्रदूषण का प्रभाव

– डॉ० दीनानाथ झा दिनकर

मन का शरीर के साथ बडा घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। प्रत्यक्ष म तो सब प्रकार क कार्य हमारी इन्द्रिया ही करती है पर वास्तव मे उनका सचालन करने वाला मन ही होता है इसलिए मानसिक विचारो का प्रभाव शरीर पर सदैव पडता रहता है।

हमारा भोजन भी इससे अछूता नहीं रहता। स्वास्थ्य ग्रन्थो मे कहा गया है कि मनुष्य जैसा भोजन करता है वैसा ही प्रभाव उसके मन पर पडता है। इसी दृष्टि से सात्विक राजसिक व तामसिक भोजन का वर्णन विस्तारपूर्वक मिलता है। इसी कारण यह उक्ति कहीं गई है कि जैसा खाये अन्न वैसा बने मन।

इस सिद्धान्त का एक दूसरा पहलू भी होता है। जिस प्रकार भोजन का प्रभाव मन पर पडता है उसी प्रकार मन के विचारो और उसकी दशा का असर भोजन पर भी पडता है। भोजन के समय जो शात और प्रसन्नचित रहने की सलाह दी जाती है उसका अर्थ यही ह कि किसी भी प्रकार की उत्तेजना आवेश क्रोध या मानसिक हलचल की अवस्था मे किया हुआ भोजन ठीक तरह से पचता नहीं है और उससे शरीर को उचित लाभ भी नहीं होता। अनेक बार तो विशेष उत्तेजनाओ की दशा मे किया हुआ भोजन शरीर को सीध हानि पहुचाता हैं।

कामुकता क भाव उदय होते ही शरीर की गर्मी बढ जाती है। श्वास गरम हो जाता है त्वचा का तापमान और खून का दौरा बढ जाता है। इसी गर्मी क दाह से कुछ धातुए पिघलने और कुछ जलन लगती हैं। ऐसे समय मे किया गया भोजन अपच करता है दूषित रक्त बनाता है और विवेकहीनता को जन्म देता है।

क्रोधित अवस्था मे किया गया भोजन । शरीर पर बहुत अधिक हानिकारक प्रभाव डालता है। न्यूयार्क मे वैज्ञानिको ने परीक्षण करने के लिए गुस्से मे भरे हुए मनुष्य के खून की कुछ बूदे लेकर पिचकारी द्वारा खरगोश के शरीर मे पहुचायी। नतीजा यह हुआ कि बाइस मिनट बाद खरगोश आदमियो को काटने लगा। एक घण्टे के बाद स्वय पाव पटक पटक कर मर गया।

क्रोध के कारण पैदा होने वाली विषैली शर्करा खून को अत्यधिक अशुद्ध कर देती है। इस अशुद्धता के कारण चेहरा लाल और सारा शरीर पीला पड जाता है। पाचन शक्ति बिगड जाती है नसे खिचती है और गर्मी का प्रकोप बढ जाता है। क्रोधित अवस्था मे किया गया भोजन शरीर के लिए नुकसानदेह ही सिद्ध होता है। इस अवस्था मे पाचक रसो के स्थान पर विषैले अम्ल उत्पन्न होने लगते है। ये अम्ल भोजन के साथ मिलकर शरीर के अवयवो मे विकृति पैदा कर देते है।

क्रोध के समय एक गिलास ठण्डा पानी पी लेना आयुर्वेदिक चिकित्सा है। इससे मस्तिष्क और शरीर की बढी हुई गर्मी शात हो जाती है। एक विद्वान के मतानुसार जिस स्थान पर क्रोध आए वहा से उठकर चले जाना या किसी और काम मे लग जाना अच्छा होता है। इससे मन की दिशा बदल जाती है तथा चित्त का झुकाव दूसरी ओर हो जाता है। कुछ समय बाद शात मन स्थिति मे भोजन करना स्वास्थ्य के लिए लाभदायी होता है।

लोभ की मनोदशा मे भोजन करने के फलस्वरूप शरीर मे जमा करने की क्रिया अधिक और त्यागने की कम होने लगती है। पेट पर इसका असर तुरन्त पडता है। दस्त साफ होने मे रूकावट पडने लगती है। पेट भरा भरा सा लगता रहता है शौच के समय आता की मासपेशिया अपने सचालक अर्थात सुस्त मन का आदेश पालन करती है।

इस अवस्था मे मास पेशिया त्याग मे बडी कजूसी करती हैं। फलस्वरूप जो मल अत्यधिक मात्रा मे होता है वही निकलता है बाकी पेट मे ज्यो का त्यो पडा रहता है और गलसड कर विषो की उत्पत्ति करता है। पेट का विष रक्त मे सम्मिलित हाकर असख्या रोगो का घर बन जाता है। हृदय की अधिक धडकन सिर का दर्द निद्रा की कमी तथा गठिया रोग अक्सर इसी प्रकार के दूषित विकार से होता है।

भय का विकार भी शरीर पर अति घातक प्रभाव डालता है। मनुष्य का शरीर सबसे अधिक बलवान और शक्तिशाली होता है। उसमे यदि भय की भावनाए प्रवेश कर जाए तो शरीर को नष्ट होने मे देर नहीं लगती। भय की अवस्था मे हमारे शरीर के अन्दर की प्रक्रियाओ मे बाधा पड जाती है। इन्द्रियो का काम रूक–सा जाता है। यह रक्त शिराओ के प्रवाह बीज कोशो के कार्य और पेट की क्रियाओ पर अपना प्रभाव डालता है। इससे हृदय की गति तीव्र हो जाती है वह जोर से धडकने लगता है रक्त दबाव बढ जाता है पाचन क्रिया रूक जाती है और यकृत के जरिए मासपेशियो से शक्कर निकलने लगती है।

भय की दशा मे किया गया भोजन शरीर तथा मन को दुबल तथा रोगो का शिकार बनाता है। आमतौर से यह देखा जाता है कि माताए बच्चो को आहार खिलाने के लिए भोजन छिपा जाने या काला भूत आने जैसे मानसिक भय दिखाती हैं। बच्चो को भोजन कराने का यह तरीका निश्चय ही बदला जाना चाहिए।

इस प्रकार की मानसिक स्थिति से अच्छे पदार्थ का भी बुरा प्रभाव पड सकता है। जो व्यक्ति हर एक पदार्थ मे बुराई देखता है उसे उसका नतीजा वैसे ही मिलता है इसलिए अपनी परिस्थिति या समयानुसार जो कुछ भी सामान्य भोजन मिल सके उसे प्रसन्नचित से और शरीर तथा मन के लिए कल्याणकारी समझकर ग्रहण करना चाहिए।

• भोजन करते समय किसी विषय पर गम्भीर रूप से विचार करने से या किसी महत्वपूर्ण समस्या पर दिमाग दौडाने से शरीर का रक्त मस्तिष्क की तरफ ज्यादा जाने लगता है और पाचक यत्रो मे उसकी कमी होने से कमजोरी आ जाती है। इससे पाचन क्रिया मे बाधा पडने लगती है तथा भोजन देर से या अधूरा पचता है। इसी कारण भोजन एकात मे तथा एकाग्रचित्त से करने का आदेश स्वास्थ्य ग्रथो मे किया गया है।

(स्वास्थ्य दर्पण से साभार)

पृष्ठ ५ का शेष भाग

आधुनिकता और कैंसर

पर्यावरण हेतु कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय क डोन हुरजान ने अम्लीय वषा व पर्यावरण की रक्षा हेतु वृक्षारोपण करना ही अनिवार्य बताया है इनमे ध्वनि वायु प्रकाश आकाश के प्रदूषण दूर होते है।

पर्यावरण के सतुलन हेतु अग्निहोत्र अत्यन्त उपयोगी कार्य है वैदिक काल से ही आर्यो ने अग्निहोत्र कार्य को प्राथमिकता दी है इससे सुगन्धित द्रव्य अपामार्ग अक चन्दन पलाश नामरमो था देवदास आम्र की समिधा तथा उपयोगी औषधीय सामग्री से वायुमण्डल पवित्र होता है आक्सीजन की मात्रा बढती तथा हानिकारक गैसो का नाश होता है अग्नि होत्र से शरीर निरोगी होता है मन को शान्ति मिलती व पर्यावरण पवित्र होता है।

योगासन करना भी शरीर को कैंसर आदि घातक व्याधियो से दूर रखने का उपाय है पदमासन शवासन पवनमुक्तासन बज्रासन शीर्षासन उत्तानपादासन ताडासन आदि करके शरीर को हम निरोगी रख सकते है।

मुख्य बात यह है कि आज के क्रत्रिम जीवन व साधनो से जहा तक हो सके दूर रहे भोजन पवित्र शुद्ध हो प्रकृति के सम्पर्क मे अधिकतर रहे तले चटपटे आधुनिक पेय मिठाई व्यजन परिधान क्रत्रिम सौन्दर्य प्रसाधनो को त्याग प्रात ब्रह्म मुहूर्त मे उठना शोचादि हेतु मैदान मे जाना पैदल घूमना औषधियो मे वनस्पतिक औषधियो का प्रयोग करे आवश्यकता पर आधुनिक चिकित्सा की सहायता भी ले सामान्यत क्रत्रिम साधनो से बचे।

दिल्ली मद्रास कोलकाता जैसे महानगरो मे मनुष्य का क्रत्रिम साधनो का उपयोग उनकी मजबूरी है। दूर दूर तक खुली हवा वहा नहीं मिलती कारखानो के मजदूर प्रदूषण मे ही जीवन काट देते है।

फिर भी कितनी भी आबादी व समस्या हो मनुष्य अग्निहोत्र तो कर ही सकता है। आज की विषम परिस्थितियो मे अग्निहोत्र अत्यन्त श्रेष्ठ व उपकारी पवित्र कार्य है। प्रत्येक घर मे अग्निहोत्र होने लगे तो भारत ही नही बल्कि विश्व की पर्यावरण प्रदूषण की समस्या हल हो सकेगी और मानव का आधिभौतिक आधिदैविक व आध्यात्मिक रूप से अवश्य ही कल्याण हो सकेगा।

शरीर का अभ्यग मालिश व्यायाम परिश्रम प्रात काल मे भ्रमण करना प्राणायाम करना गाय का दूध फल व हरी सब्जी प्रयोग करना योगाभ्यास करना दिनचर्या आदि का वैदिक आयुर्वेद मे बताई विधि क अनुसार पालन करे तो मनुष्य सौ वर्ष की आयु प्रसन्नता पूर्वक निश्चित ही पूरी करेगा।

आज कल के क्रत्रिम साधन कोल्डड्रिक काफी चाय मद्य मास मादक पदार्थ चाकलेट व अत्यन्त आरामप्रद जीवन यापन सप्त धातुओ को दूषित व विक्रत कर कैंसर आदि रोग पैदा कर रहा है। कैंसर की अभी कोई औषधि खोजी नहीं जा सकी है जहा तक हो सके प्राकृतिक साधनो का पालन करे कृत्रिम भोज्य व प्रयोग के साधनो से दूर ही रहे शरीर व मन से शुद्ध व पवित्र रहे अग्नि होत्र करे पर्यावरण को शुद्ध रखें।

– चन्द्र लोक कॉलोनी खुरजा

सवेरे उठकर क्या करें ?

– डॉ० राम प्रकाश आर्य

आज के युग मे कई काम बहुत कठिन है ओर इनमे से एक है सबेर अर्थात प्रात काल उठना। कितना ही कहत रहिए पर असर किसी पर नही लोगो की विवशता भी है जब डिनर रात्रि दस बजे हो रहा है सैकण्ड शो का प्रोग्राम है या कोई तथाकथित बहुत अच्छा सीरियल टी०वी० पर देखना है तो समय इन ही कामो ते बीत जाता है। फिर चौबीस घण्टो मे सबेरे का समय ही ऐसा है जब ठण्डी हवा चल रही होती है वातावरण शान्त होता है निन्द्रा की प्रगाढता अपनी चरमसीमा पर पहुच जाती है उस समय उठना कुछ कठिन सा होता ही है। वैसे भी लोगो का तर्क है कि जब घूमना भक्ति करना सगीत का अभ्यास आदि सभी प्रात काल भलीभाति होते है तो शय्या ने ही क्या बिगाडा है जो उसका सेवन न किया जाए।

आज म यह प्रश्न नही कर रहा कि सबेर कैसे उठे और क्यो उठे प्रश्न केवल इतना ही हे कि पूर्वजन्मो के पुण्यस्वरूप प्रात काल यदि आख खुल ही जाय तो क्या करे ? यो सबेरे उठना कुछ लोगो की मजबूरी है प्रात डयूटी पर जाना है डाक्टर ने चेतावनी दे दी है परीक्षा या इन्टरव्यू मे उपस्थित होना है ता सबेरे उठना ही पडेगा पर उठकर क्या किया जाए। क्या सबेरे सबेरे उठ कर बैड टी का सेवन किया जाए उठने के साथ ही अखवार के पन्ने चाटे जाए क्या प्रात उठते ही सिने तारिकाओ को देखा जाए क्या प्रात उठते ही हवाला या किसी अन्य काण्ड की रूपरेखा तैयार की जाए ?

मै क्या कहू प्रश्न का उत्तर वेद दे रहा है। ऋग्वेद ६/४१/१ तथा अथर्ववेद ३/१६/१ दोनो ही आदेश दे रहे है कि सबेरे उठकर अग्नि का सेवन करे। कई व्यक्ति सबेरे उठकर अग्नि का सेवन करते है सबेरे श्वेताम्बरी चुम्बन (सिगरेट पीना) बीडी पीना अथवा हुक्का गुडगुडाना उनका अग्नि सेवन है अग्नि सेवन या स्मरण का अर्थ इतना ही है कि हम ऐसी शक्ति या भगवान का स्मरण करे जो हमे अग्रे नयति जीवन मे आगे ले जाए अग्नि के समान हममे ऊर्जा उत्पन्न करे विघ्न – बाधाओ अथवा दुश्मना का दहन कर सके। आज का युग पेसे का हे चमक दमक का है तो क्यो न हम ऐश्वर्य के भण्डार के ही पास चले। इन्द्र इति परमेश्वर्ये को अपने पास बुलाए सन्न ऐश्वर्य उसी के पास है वही उसका स्वामी है क्यो न हम उसके सामने नतमस्तक हो और अपनी मुह मागी मुराद पाए। मित्र नाम के भगवान क पास चले मित्र जो हमसे स्नेह करता है ओर हम जिससे स्नेह करते है बुलाकर तो देखिए वह मित्रता अथवा दोस्ती जरूर निभाएगा। वहा धोखे की सम्भावना नही होगी। हम निमन्त्रण दे वरूण को जो लाखो करोडो ही नही असख्यो मे भी चुना जा सके तात्पर्य यह है कि जो हर दृष्टि से सर्वोत्तम हो। उस समय और भी अनेक रूपो म भगवान का स्मरण किया जा सकता हे फिलहाल प्रथम सीढी के रूप म इतना ही पर्याप्त हागा

शकालु मन कहेगा कि भगवान क इन रूपो का स्मरण करना चाहिए स्मरण कर लेगे पर चौबीस घण्टो मे कभी भी। पहली बात तो यह है कि किसी बात को टालने के लिए यह बहानेबाजी की जाती है दूसरी बात यह भी है कि यदि हमे अपना कार्य सिद्ध करवाना है। जीवन सफल बनाना है तो हमे अपनी सुविधा का नही उसकी सुविधा का ध्यान रखना होगा। नियत समय पर ही यह मिलन हो सकेगा। सम्भव है कि उसके बाद आपको अधिक सुविधा हो यह ट्रेन छूट चुकी होगी।

आप कहेगे कि सब चौपट कर दिया सवेरे सवेरे इतनी कसरत हमसे नहीं हो सकेगी। जीवन निर्वाह के लिए हमे केवल रोटी कपडा और मकान ही नही चाहिए। हम तो कामना कर रहे है आयुर्विद्या यशोबलम की आप जानना चाहेगे कि इस स्मरण से ये सिद्धिया कैसे प्राप्त होगी।

नीतिशास्त्र कहता है निशान्त च पिबेत पय आयुर्वेद का मत है कि प्रात काल उष पान करना चाहिए। सवेरे उठ कर ताजा अथवा रात्री को ताम्रपत्र मे रखा हुआ पानी पीना चाहिए। ताम्रपत्र मे पानी रखने अथवा पानी मे ताबा डालने से अनक दोष दूर हो जाते है। तुलसी के कुछ पत्ते पानी मे डालकर भी यह प्रभाव पैदा किया जा सकता है अथवा पानी मे तीन–चार बार फिटकिरी घुमा देने से ही पानी की गन्दगी नीचे बैठ जाती है इस पानी का सेवन किया जाए। यो एक गिलास पानी पर्याप्त होगा परन्तु जापानी पद्धति के अनुसार प्रात एक साथ छ गिलास तक पानी पीने का परामर्श दिया जाता हे उनके विश्वास के अनुसार इससे उदर विकृति कब्जियत ब्लड प्रेशर आदि रोग दूर हा जात है।

रात्री भोज के बाद सवेरे तक पेट मे काफी गर्मी उत्पन्न हो जाती हे इसे ठण्डे पानी से शान्त किया जा सकता है। इस दश मे सवेरे सवेरे चाय पीना बड टी लेना अनिवार्य हो रहा है। चाय की उष्णता से पेट की गर्मी बढ जाती हे परिणामत सिरदद एसीडिटी उच्च रक्तचाप आदि कई व्याधिया प्रारम्भ हो जाती है। वैसे भी कहा जाता है कि प्रात खाली पेट केवल चाय दुश्मन के बेटे को भी नहीं दी जानी चाहिए। उष पान स्वास्थ्य लाभ की सरल तथा प्रथम सीढी है और इससे आयु की वृद्धि होती है।

अनुभव करके देखिए प्रात पढा हुआ जल्दी समझ मे आता है। जल्दी याद हो जाता है ज्यादा समय तक स्थिर रहता है और बुद्धि को बढाने मे सहायक होता है। बुद्धि की त्रुटि के लिए साधना कठिन ही है। प्रात काल उठकर वही कीजिए जो मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने किया प्रात काल उठि के रघुनाथा। मातु पिता गुरु नावहिं माथा। गुरुजनो के आशीर्वाद से हम यशस्वी भी बनेगे और वर्चस्वी भी। ससार के बुहत्तम काव्य के रचयिता व्यास जी प्रात काल उठकर अपने ग्रन्थ की रचना करते थे। आइए हम भी परीक्षा करक देखे वेद के आदश को मानकर जीवन को सफल बनाए।

– ४१२ मेमारान बिहारीपुर मठिया बरेली

हाँसी की प्रसिद्ध मजार वेद मन्त्रों से गूंज उठी

आर्यवीर दल हासी के तत्वावधान मे दिनाक ३ ५–२००१ बृहस्पतिवार को पूज्य स्वामी कीर्तिदेव व स्वामी रामानन्द जी की सयुक्त अध्यक्षता मे एक विशेष यज्ञ व सत्सग का आयोजन किया गया। जिसके मुख्य अतिथि महाराजा पृथ्वीराज चोहान के वशज चौ० भीमसिह आर्य सीसर खरबला थे।

इस शुभावसर पर सर्वप्रथम आर्यसमाज खरड चुन्नी हॉसी के पुरोहित प० विजयपाल जी द्वारा वेदमन्त्रो का गुजायमान करते हुए यज्ञ सम्पन्न किया गया। यज्ञ के मुख्य यजमान महन्त योगानन्द जी थे।

इसी दौरान मुख्य वक्ता के रूप मे नगर के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य रामसुफल शास्त्री जी ने गद गद् हृदय से अपने उदबोधन मे कहा कि मानव के नाते हम सब एक ही पिता की सन्तान है। इसलिए हम सब भाई भाई है। अस्तु मिलजुल कर अधिक से अधिक परमपिता परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद का प्रचार–प्रसार करे। जिससे मानव मात्र का कल्याण सम्भव है श्रीशास्त्री जी ने कहा कि हम गर्व है कि यह वैदिक धर्म की बहुत बडी विजय है।

उल्लेखनीय है कि यह सैकडो वर्ष पुराना ऐतिहासिक किला ! जिसे मुगल साम्राज्य ने छिन्न भिन्न कर मस्जिद का रूप दिया था और मजार स्थापित की थी जो आज भी प्रत्येक बृहस्पतिवार को (पीर बाबा) की बहुत बडी भीड के रूप मे प्रमाण है। हॉसी क्षेत्र का यह प्रसिद्ध किला ! जो वर्तमान समय पर पुरातत्व विभाग के अन्तर्गत है। इसे पृथ्वीराज चौहान के नाना महाराजा अनगपाल ने बनवाया था। जहा आज भी पृथ्वीराज चौहान की सेना के घोडे बाधने की जगह घुडसार जैसी खण्डहर रूप मे विद्यमान है। खैर यह दास्तान तो बहुत लम्बी किन्तु यह कटु सत्य है कि यदि आर्यसमाज प्रयास करे तो ऐतिहासिक किले मे स्थित मजार को वेद सन्देश का माध्यम बनाया जा सकता है।

उक्त आशय की जानकारी देते हुए आर्यवीर दल के सह प्रेस सचिव अरविन्द कुमार आर्य ने बताया कि आर्यवीर दल हॉसी का किले की मजार मे यह पहला वेद प्रचार का प्रयास था जो बहुत ही सफल रहा।

आर्यसमाज मन्दिर कीर्तिनगर में उपद्रव के कारण दोषी पुलिसकर्मी स्थानान्तरित

पश्चिम 'दिल्ली' स्थित आर्यसमाज मन्दिर कीर्तिनगर मे गत २ मई की सायकालीन वला म पुलिस क अपराधिक सहयोग के कारण एक विचित्र उपद्रव वाली स्थिति उत्पन्न ह' गइ जिसके कारण आय महानुभावो मे आक्रोश उत्पन्न हुआ और परिणामत एक सप्ताह क भीतर पुलिस को प्रायश्चित करने पर मजबूर कर दिया।

२ मइ की सायकालीन वेला मे एक विवाह सस्कार का आयाजन किया गया था जिसम व' पक्ष के सभी सदस्य उपस्थित थे परन्तु वधू पक्ष की ओर से परिवार मे उसकी एकमात्र सरक्षिका उसकी ाता ने स्वीकृति तो दे दी थी परन्तु गम्भीर रोग ग्रस्त होने के कारण वे उपस्थित नहीं हो पाई। कन्या अपनी मा के साथ अपन माम' क घर रहती थी जो उससे प्राप्त होने वाली घरेलु सेवाओ के कारण विवाह म उसका सबसे बडा बाधक था। आर्यसमाज मन्दिर मे हो रहे इस विवाह सस्कार की सूचना के बाद उसका मामा अपने कुछ साथियो सहित पुलिस को भी साथ लेकर आयसमाज मन्दिर पहुच गया। मन्दिर पहुच कर पुलिस की उपस्थिति म ही पुरोहित श्री ऋषिपाल जी की पिटाई आरम्भ कर दी। पुलिस और अपराधी दोनो मिलकर जूतो सहित यज्ञ वेदी पर पहुच गए और उन अपराधियो ने राक्षसी उपद्रव प्रारम्भ कर दिया। एक तरफ रखी खाने पीने की चीजे प्लेट और ग्लास ताडने प्रारम्भ कर दिए। पुलिस इस सारे उपद्रव को मूकदर्शक बनकर तमाशा देखती रही इस बीच उन्हे रोकने का प्रयास करने पर आर्यसमाज के मन्त्री श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा तथा उपप्रधान श्री भसीन के साथ पुलिस मौजूदगी मे अपराधियो ने मारपीट की। आर्यसमाज के पूर्व प्रधान श्री जयभगवान लाहौटी ने तत्काल वहा पहुचकर गेट बन्द कर दिए और उस वक्त तक कई अन्य आर्य महानुभाव भी पहुच चुके थे। अब पुलिस ने स्थिति की गम्भीरता को समझते हुए बीच बचाव का मार्ग अपनाया और मौखिक माफी के आधार पर अपराधियो को विदा कर दिया

आक्रोश म आए आर्यबन्धुओ ने ७ मई को सायकाल आर्यसमाज मन्दिर मे एक बैठक बुलाई जिसमे पुलिस के उपायुक्त सहित कई अन्य बडे अधिकारी भी शामिल हुए प्रधान डा० दयानन्द लीखा जी की अध्यक्षता मे हुई इस बैठक मे सार्वदेशिक सभा क उपमन्त्री श्री जगदीश आय विमल वधावन दिल्ली सभा के मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य श्री मदन मोहन सलूजा श्री प्रियतमदास रसवत सहित कई अन्य नेता सम्मिलित हुए। सनातन धर्म के नेता श्री मनोहर लाल कुमार तथा स्थानीय विधायक श्री अविनाश साहनी भी उपस्थित थे।

श्री जगदीश आर्य ने कहा कि आयसमाज एक प्रमुख समाज सेवी सस्था है अत हमारे कार्यकर्ताओ के साथ ऐसा व्यवहार पुलिस को शोभा नहीं देता।

श्री विमल वधावन ने पुलिस के उच्चाधिकारियो की उपस्थिति मे कहा कि समाज क सामने कभी कभी ऐसी घिनौनी घटनाए हो जाती है जिनक कारण सर्वोच्च न्यायालय की वह टिप्पणी पूर्णत सटीक लगन लगती है कि पुलिस बल एक सगठित अपराधिक गिराह है उन्होने कहा कि अभी यह सूचना दिल्ली के विभिन्न आर्यसमाजो तक नहीं पहुची बाद मे दिल्ली के सभी आर्यसमाज और इसका विशाल सगठन सावदशिक सभा यदि अन्य कार्यवाही पर उतर आए तो यहा उपस्थित बडे बडे अधिकारियो पर भी सकट आ सकता है अत अधिकारी इस घटना की गम्भीरता को समझ ले और अपन अधिकारा स ही इस घटना मे सम्मिलित कास्टबल तथा उसक तीन साथियो को यहा से स्थानान्तरित कर दे।

श्री मनोहर लाल कुमार ने कहा कि हम आर्यसमाज की मागो से सहमत है कि पुलिस कर्मियो को स्थानान्तरित किया जाए और अपराधियो के विरुद्ध मुकदमा दर्ज किया जाए।

श्री जगदीश आर्य ने पुन पुलिस के उच्चाधिकारियो से बात की तो उन्हे बताया गया कि चारो पुलिस कर्मियो को स्थानान्तरित कर दिया गया है और मुकदमा दर्ज करने की कार्यवाही की जा रही है।

श्री जगदीश आर्य एव श्रीमती शशि प्रभा आर्या के गृहस्थाश्रम की ३६वीं वर्षगाठ

आर्यसमाज मन्दिर राजौरी गार्डन के प्रधान तथा सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री जगदीश आर्य के गृहस्थाश्रम की ३६वीं वर्षगाठ आर्यसमाज मन्दिर राजौरी गार्डन नई दिल्ली मे साप्ताहिक सत्सग के उपरान्त मनाई गई। जिसमे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा श्री विमल वधावन श्रीमती उज्ज्वला वर्मा तथा श्री रमेश वर्मा उपस्थित थे।

कै० देवरत्न आर्य ने मुम्बई आर्य महासम्मेलन मे श्री जगदीश आर्य के सहयोग का विशेष उल्लेख करते हुए कहा कि आप दोनो पति पत्नी वास्तव मे अपने महान माता पिता के नाम को रोशन कर रहे हैं। श्री जगदीश आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती शशिप्रभा आर्या ने आर्य महासम्मेलन मे महिला सम्मेलन का कुशल सयोजन किया था। कै० देवरत्न आर्य ने श्री जगदीश आर्य को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का प्रतीक स्मृति चिन्ह देकर भी सम्मानित किया।

राजनीति हो गयी है उल्टी

बिगड रही हालत भारत की कलुषित हुआ जमाना है
सर मुडन करवा कर देखा विधवा बनी शबाना है
भ्रष्ट आज नेता बन बैठे मन मलीन तन खोटा है
सब हाक रहे अपनी अपनी मुखडे की जगह मुखौटा है
वामपथियो पर हावी है वाटर की दीपा मेहता।
रावण भजता राम राम दुर्योधन पढता है गीता।

रेल डकैती बैक रौबरी मे मत्री के शेयर है
नकली हिजडे हार गए अब असली हिजडा मेयर है
जयललीता तो गयी काम से ममता दिखलाती तेवर है
बिगड रही सतान घरो मे नही बाप को केयर है
बाबू रामसिह का बेटा फैसन मे बन गया बबीता
रावण भजता राम राम दुर्योधन पढता है गीता।।

नही सघ को आशा थी कि भाजपा होगी हरजाई
हिदू हित की रक्षा की अब कौन करेगा भरपाई
अफतारी की दावत खाकर नेहरू का पीछे छोडा
अमर शहीद मुखर्जी की कुर्बानी से है मुख मोडा
बाहर से है मधुर दिखते अन्दर से बिल्कुल तीता।
रावण भजता राम राम दुर्योधन पढता है गीता।।

स्वदेशी का सारा नारा हो रहा विदेशी से मदा
स्टार कथा वाचक भक्तो पर डाल रहे अपना फदा
नग्न दिखती आज नारिया दूरदर्शन के चैनल पर
सरकार बुलाती परदेशी को राजनीति के पैनल पर
ब्रेक डान्स करने वाली भी फिल्मो मे बनती सीता
रावण भजता राम राम दुर्योधन पढता है गीता।।

अडवाणी अब रथ निकाल कर नही करेगे मनमानी
राष्ट्रवादी सारे मुददो पर अटल ने फेर दिया पानी
सौगध राम की खाता है अब मदिर नही बनाऊगा
बडी मुश्किल से मिली है सत्ता इसको नही गिराऊगा
राजीव का बोफर्स दलाली बगारू से कम बीता।
रावण भजता राम राम दुर्योधन पढता है गीता।।

सियाराम निर्भय खेताडी माहल्ला पो० आरा (भोजपुर) बिहार

पृष्ठ ३ का शेष

सत्याग्रह अर्थात सत्य का आग्रह

श्री लाल बहादुर शास्त्री ने भी यही आग्रह किया था

तब से लगातार दयानन्द सेवाश्रम सघ के माध्यम से नौ दस प्रभावित प्रान्तो मे धर्मान्तरण की रोकथाम के प्रयास चल रहे है।

यह प्रयास किस रूप मे सम्पन्न किए जाते है उसके बारे मे पूर्व अक मे भी बता चुका हू कि पहले से स्थापित आश्रमो और नई नई बालवाडिया खोलकर शिक्षा और चिकित्सा सेवा के माध्यम से भोले भाले गरीब आदिवासियो और ग्रामीणो को एक मजबूत वैदिक धर्मी बनाने का प्रयास किया जाता है। बालवाडिया चलाने वालो को केवल ५००/– प्रति माह अर्थात कुल छह हजार रुपये वार्षिक सहायता भेजी जाती है। बालवाडिया विधिवत बोर्ड आदि लगाकर घोषित की जाती है जिससे क्षेत्र मे उस कार्य को स्थायित्व और मान्यता प्राप्त हो। किसी ने पूछा की सघ के नाम पर कितनी शुद्धिया वर्ष मे करते हो तो उसका उत्तर दिया जाता है कि सघ के कार्य का यह प्रभाव है कि जहा जहा दयानन्द सेवाश्रम सघ का प्रशिक्षित एक भी व्यक्ति प्रभावशाली रूप मे उपस्थित होता है वहा धर्मान्तरण का बीज भी नही पनप सकता

समूची आर्यजनता धर्मान्तरण के घिनौने षडयन्त्र पर गम्भीर चिन्तन मनन करे तो उसको यह स्पष्ट दिखाई देने लगेगा कि किस तरह धर्मान्तरण की यह आग देश मे लगातार बढती जा रही है और हमारे प्रयास साधनो के अभाव के कारण एक दम नगण्य है। कुछ दस बीस या सौ व्यक्तियो को आत्म सन्तुष्टि तो अवश्य होगी कि हम दयानन्द सेवाश्रम सघ के माध्यम से इन महान कार्यो मे अपनी आहुति दे रहे है। कितना अच्छा हो यदि समूची आर्यजनता इन कार्यो मे सहयोग करने का मन बनाए। क्या ५०० रुपये का सहयोग प्रति माह प्रदान करना किसी व्यक्ति या सस्था के लिए कठिन का है ?

ईसाइयो के साधनो का यदि आकलन करे तो असीम साधनो धन और जनबल का नक्शा प्रस्तुत हो जाएगा। उनके इन तथाकथित सेवा कार्यो के पीछे उद्देश्यो को देखे तो जनसख्या मे ईसाइयो की जनसख्या वृद्धि का खेल भी प्रत्यक्ष नजर आने लगेगा। इस सख्या खेल के पीछे राजनीतिक नियन्त्रण के उद्देश्य भी दिखाई देने लगेगे। परन्तु हमारे भाइयो की उदासीनता और निष्क्रियता पराकाष्ठा पर है। हमारे भाई–बन्धु बालवाडियो के माध्यम से इस धर्मान्तरण विरोधी योजनाओ मे ५०० रुपये प्रतिमाह का सहयोग भी प्रर्याप्त सख्या मे उपलब्ध नही करा पा रहे।

श्री लाल बहादुर शास्त्री ने जिस सत्य का आग्रह लगभग ३०–३२ वर्ष पूर्व हमसे किया था उसी आग्रह को आज फिर कहने और सुनने की आवश्यकता है।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उन महान आत्माओ के दार्शनिक आग्रह को हम जिस दिन भी स्वीकार कर लेगे। उसी दिन भारत के राष्ट्र रक्षा यज्ञ मे हमारी एक अनमोल आहुति डाली जाएगी।

विमल वधावन एडवोकेट

(क्रमश)

स्वर्ण जयन्ती वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज कृष्णा नगर दिल्ली का स्वर्ण जयन्ती वार्षिक उत्सव ४ जून से १० जून २००१ तक बडी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इसमे रात्रि ८ से ६ बजे तक भजन श्री प्रकाश आर्य बरेली वाले तथा वेद प्रवचन ६ से १० बजे तक डॉ० शिव कुमार जी शास्त्री प्रधान केन्द्रीय आर्य सभा दिल्ली के होगे। रविवार १० जून पूर्णाहुति के अवसर पर प्रसिद्ध विद्वान डॉ० महेश विद्यालकार तथा श्रीमति राजकरणी आर्य जी का उद्‌बाधन होगा। अन्त मे ऋषिलगर होगा। सब धर्म प्रेमी सज्जन एव देवियां पधार कर धर्म लाभ उठाए।

मन्त्री आर्यसमाज कृष्णा नगर दिल्ली

वर चाहिए

१ क्षत्रिय कुलोत्पन्न सिलाई कढाई बुनाई रसोई आदि सभी गृह कार्यो मे दक्ष एम० ए० बी० एड० अर्थशास्त्र मे पी० एच० डी० के लिये जीविकोपाजन मे लगे शुद्ध शाकाहारी योग्य वर की आवश्यकता है। शिक्षा क्षेत्र मे कार्यरत युवक को वरीयता दी जाएगी। लडकी का रग गेहुओं आयु ३५ वर्ष लम्बाई सवा पाच फुट है। दहेज के इच्छुक पत्र व्यवहार न करे।

२ उपर्युक्त कन्या की छोटी बहन का रग गहरा गेहुओं आयु २६ वर्ष लम्बाई सवा पाच फुट एम० ए० बी० एड० अपनी बहन की ही भाति सभी गृहकार्यो मे दक्ष है। इसके लिए भी शुद्ध शाकाहारी योग्य जीविकोपार्जन मे लगा हुआ वर चाहिए। शिक्षा क्षेत्र मे कार्यरत युवक को वरीयता दी जायेगी। दहेज के इच्छुक पत्र व्यवहार न करे।

सम्पर्क सूत्र

व्यवस्थापक,
वैदिक सस्थान नजीबाबाद,
जनपद बिजनौर उत्तर प्रदेश।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० ...049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 27-5-2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 93/2001
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No. U (C) 93/2001 in NDPSo on 24-25/5/2001

आर्यसमाज रूद्रपुर (ऊधम सिंह नगर) का ५१वां वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज रूद्रपुर ऊधम सिह नगर का ५१वा वार्षिक महोत्सव २७ अप्रैल से ३० अप्रैल तक हर्षोल्लास के वातावरण मे मनाया गया। इस अवसर पर आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वानो नेताओ तथा भजनोपदेशको ने आर्यजनता को आर्य सिद्धान्तो से परिचित कराकर आर्यसमाज के क्रियाकलापो मे बढचढकर भाग लेने के लिए प्रेरित किया। समारोह मे विभिन्न कार्यक्रमो का आयोजन किया गया था जिससे जनता ने विशेष प्रेरणा प्राप्त की।

सम्पूर्ण, सात्विक एवं धार्मिक विचारों के लिए

सार्वदेशिक साप्ताहिक

वार्षिक सदस्यता शुल्क ५० रुपये
आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये

नोट :- यह दरें केवल भारत में ही लागू हैं

प्रतिष्ठा में –

शत हस्त समाहरः सहस्त्र हस्त संकिरः
सौ हाथों से कमाओ तथा हजार हाथों से दान करो

पीड़ितों की सेवा हम सब का राष्ट्रीय कर्त्तव्य है

सार्वदेशिक सभा के आह्वान् पर गुजरात में आए भीषण भूकम्प से पीड़ित मानवता की सहायतार्थ दान की अपील पर जिन दानी महानुभावों, आर्यसमाजों या संस्थाओं से दान प्राप्त हुए हैं उनकी सूची प्रकाशित की जा रही है :-

४१६ मोहन लाल द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली १०/-
४१७ हरि ओम वर्मा द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली १०१/-
४१८ केदार ग्रोवर द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली ५०/-
४१९ रघुनन्दन ग्रोवर द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली ५००/-
५२० नन्दलाल गुलाटी द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली १००/-
४२१ श्रीमती तारा रानी कक्कड द्वारा आ०स० बाली नगर दिल्ली १००/
४२२ मन्त्री आ० स० सौखिव कन्नौज १०००/
४२३ सन्तोष कुमार एल आई सी बलिया उ०प्र० १००/-
४२४ प्रधान/मन्त्री आ० स० हसापुरी नागपुर ११०००/-
४२५ आ०स० एव आर्यवीर दल नरकटिया गज बिहार ५१००/-
४२६ गुलशन सत्सग सभा बिन्द्रा पार्क राजौरी गार्डन दिल्ली २३६५६/
४२७ मन्त्री आ० स ग्रेटर कैलाश २ नई दिल्ली १००००
४२८ आ० स० तिलक नगर नई दिल्ली ११०००/
४२९ एशियन रबड इन्डस्ट्रीज नई दिल्ली १५६०/
४३० क्षेत्रपाल परिवार पश्चिम विहार दिल्ली १५००/
४३१ एन०एम० अरोडा राजोरी गार्डन दिल्ली १००
४३२ आ० स० सुन्दर विहार दिल्ली ३०००/
४३३ श्रीमती कमल गुलाटी दिल्ली ००/
४३५ आ० स० राणा प्रताप बाग दिल्ली ५१००/
४३६ श्रीमती प्रकाश बसल द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली १००/
४३७ गुप्तदान द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/
४३८ श्रीमती राजपाल द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ११००/
४३९ देसराज सेठी द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
४४० आर्यसमाज कृष्णा नगर दिल्ली ५०००
४४१ मनीष तथा वदना कपूर साउथ अनारकली दिल्ली ११००/
४४२ दीपक भाटिया दिल्ली ११००/
४४३ वाई० पी० धनिजा दिल्ली ११००/-
४४४ श्रीमती नारायण दास सुनेजा दिल्ली २००/-
४४५ धर्मेन्द्र सिह आर्य बिजनौर १०१/-
४४६ श्रीमती कृष्णा सेठी नई दिल्ली २५०/-
४४७ दयानन्द माडल स्कूल विवेक विहार दिल्ली ११०००/
४४८ ईश कुमार नारग दिल्ली १०००/-
४४९ कुन्दरा जी विकाश कुज दिल्ली ११००/-
४५० आर्यसमाज दयानन्द विहार दिल्ली ७५००/-
४५१ आर्यसमाज विवेक विहार एव स्त्री समाज दिल्ली ६०००/
४५२ आ० स० तिमार पुर दिल्ली ११००/-
४५३ स्त्री आर्यसमाज गाधी नगर दिल्ली ११००/-
४५४ महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली १६७८३/-
४५५ जगदीश कपूर द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली २५००/-
४५६ प्रकाश आर्य द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली २०००/-
४५७ जगदीश आर्य द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ११००/
४५८ श्रीमती विमापुरी द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली १५००/-
४५९ नगेन्द्र वर्मा द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली १२००/-
४६० श्रीमती सुनीता कक्कड द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ११००/-
४६१ श्रीमती सुषमा सेठ द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ११००/-
४६२ राम साहनी द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ११००/-
४६३ दयानन्द मदान द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ११००/-
४६४ बलदेव राज वर्मा द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ११००/-
४६५ श्रीमती कृष्णा गुगलानी द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
४६६ पवन आर्य द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
४६७ जगमोहन चोपड़ा द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
४६८ जगदीश रावत द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
४६९ कु० रितिका रावत द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
४७० प्रेम मग्गू द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
४७१ श्रीमती सरोज वर्मा द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
४७२ श्रीमती नीतू भण्डारी द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
४७३ अशोक मामिय द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
४७४ देव प्रकाश पाठक द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
४७५ श्रीमती सुमित्र सचदेवा द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
४७६ प्राणनाथ भाटिया द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
४७७ श्रीमती कृष्णा मल्होत्रा द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
४७८ श्रीमती कृष्णा खुराना द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
४७९ श्रीमती कृष्णा चौधरी द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली १०००/-
४८० ओमप्रकाश मल्लिक द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
४८१ कृष्ण लाल आय द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
४८२ श्रीमती कृष्णा अविनाशी द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
४८३ श्रीमती राज पण्डे द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
४८४ मदन लाल साहनी द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
४८५ श्रीमती रामप्यारी भाटिया द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली १०००/-
४८६ मुनिल वर्मा द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
४८७ सत्यदेव आर्य द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
४८८ नरेन्द्र बब्बर द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
४८९ सुदर्शन आहुजा द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
४९० श्रीमती कृष्णा मनोचा द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
४९१ श्रीमती सतोष चोपड़ा द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
४९२ विक्रम भाटिया द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
४९३ श्रीमती पुष्पा सोनी द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन, दिल्ली १०१/-
४९४ श्रीमती सलोचना त्रेहन द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली १५०/-
४९५ श्रीमती लीला देवी द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली १००/-
४९६ श्रीमती निर्मल मदान द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली १००/-
४९७ श्रीमती शान्ता खुराना द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली २५१/-
४९८ डॉ० अश्विनी कुमार द्वारा आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली २००/-
४९९ कुकरेजा द्वारा आ०स० मन्दिर रजौरी गार्डन दिल्ली २००/-
५०० डॉ० अनिल द्वारा आ०स० मन्दिर रजौरी गार्डन दिल्ली १००/-
५०१ डॉ० बलबीर सिह द्वारा आ०स० मन्दिर रजौरी गार्डन दिल्ली १००/-
५०२ कु० मनोज्ञिया द्वारा आ०स० मन्दिर रजौरी गार्डन दिल्ली १००/-
५०३ डॉ० वी०के० गोयल द्वारा आ०स० मन्दिर रजौरी गार्डन दिल्ली १५०/-
५०४ श्रीमती वात्सा द्वारा आ०स० मन्दिर रजौरी गार्डन दिल्ली १००/-
५०५ सन्तराम द्वारा आ०स० मन्दिर रजौरी गार्डन दिल्ली ५०/-
५०६ विश्वनाथ महेन्द्रु द्वारा आ०स० मन्दिर रजौरी गार्डन दिल्ली १००/-
५०७ श्रीमती सत्या आर्या द्वारा आ०स० मन्दिर रजौरी गार्डन दिल्ली १००/-
५०८ श्रीमती वीना आर्य द्वारा आ०स० मन्दिर रजौरी गार्डन दिल्ली १००/-
५०९ माता विश्वेश्वरा द्वारा आ०स० मन्दिर रजौरी गार्डन दिल्ली ५०/-
५१० श्रीमती मिथलेश शास्त्री द्वारा आ०स० मन्दिर रजौरी गार्डन दिल्ली २५०/-
५११ एल०आर० सलूजा एम ब्लाक राजौरी गार्डन दिल्ली ११००/-
५१२ इन्द्रपाल खन्ना आ०स० रजौरी गार्डन दिल्ली ५००/
५१३ डॉ० रमेश खण्डेलवाल डीडीए फ्लैटस राजौरी गार्डन दिल्ली १०००/-
५१४ जवाहर कपूर आर्यसमाज राजौरी गार्डन दिल्ली ५०१/-
५१५ कैलाश वर्मा आ०स० रजौरी गार्डन, दिल्ली ५००/-
५१६ श्रीमती शशि चोपड़ा राजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
५१७ श्रीमती पुष्पा चोपड़ा राजौरी गार्डन दिल्ली ३००/
५१८ श्याम सुन्दरलाल गोयल राजौरी गार्डन दिल्ली १०००/
५१९ श्रीमती कृष्णा महाजन राजौरी गार्डन दिल्ली २००/
५२० स्वर्णा भण्डारी राजौरी गार्डन दिल्ली ५००/
५२१ देसराज बजाज राजौरी गार्डन दिल्ली २००/-
५२२ ओम प्रकाश भाटिया राजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
५२३ सदानन्द मदान राजौरी गार्डन दिल्ली १०००/-
५२४ कुमारी अरुनिमा राजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
५२५ क्रपाकर लाल नागपाल राजौरी गार्डन दिल्ली ५००/-
५२६ आ० स० कैलाश ग्रेटर कैलाश-१ नई दिल्ली ११०००/-
५२७ आर्य उप प्रतिनिधि सभा गाजियाबाद उ०प्र० २८१४२/-
५२८ आर्यसमाज राजनगर गाजियाबाद ८०००/-
५२९ श्रीमती कैलाश गुप्ता राजनगर गाजियाबाद ५०००/-
५३० नित्यानन्द बसल आ०स० राजनगर गाजियाबाद २१००/-
५३१ श्रद्धानन्द शर्मा आ०स० राजनगर गाजियाबाद २१००/-
५३२ भगवान सिह नासा आ०स० राजनगर गाजियाबाद १२००/-

क्रमशः

भविष्य में प्राप्त दान को भी इसी प्रकार प्रकाशित किया जाएगा। **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त घोषित है।** यदि आपको अपने आयकर खातों के लिए प्रमाण-पत्र की आवश्यकता हो तो सार्वदेशिक सभा के कार्यालय से मगवा लें। दान की रसीद के साथ ही यह प्रमाण-पत्र भी भिजवा दिया जाएगा। – सभा मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज, नई दिल्ली-२ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली-२ से प्रकाशित (फोन. ३२७४७७१, ३२६०९८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई-मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्



सार्वदेशिक

साप्ताहिक

वेद
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४० अक ६ | १० जून से १६ जून २००१ तक | दयानन्दाब्द १७८ | सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०२ | सम्वत २०५८ | आ० कृ० ४

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

श्रावणी (वेद प्रचार सप्ताह) कैसे मनाएं

वैदिक धर्म मे स्वाध्याय को प्रत्येक वर्ण और आश्रम के लिए अनिवार्य और आवश्यक रूप से प्रधान बताया गया है। ब्रह्मचर्य आश्रम और ब्राह्मण वर्ग की कल्पना ही स्वाध्याय के साथ जुडी है अर्थात विद्यार्थियो का स्वाध्याय से विमुख रहना समाज के लिए किसी दृष्टि से भी हितकर नहीं हो सकता।

क्षत्रिय वर्ग अर्थात दश की रक्षा करने वाले पुलिस और सैन्य बल तथा शासन चलाने वाले उच्चाधिकारी लोग भी यदि स्वाध्यायशील रहे तो देश की आन्तरिक और बाहरी सुरक्षा तथा अनुशासन स्थापित करने मे अवश्य ही सहायता मिलेगी। वैश्य वर्ग यदि स्वाध्यायशील रहता हे ता देश की व्यापारिक गतिविधियो को सात्विक उन्नति प्राप्त होगी। इसी प्रकार शूद्र वर्ग भी स्वाध्याय के सहारे केवल अपना ही नही अपितु अपने आस पास के समाज को भी सदव्यवहार के द्वारा सुगन्धित कर सकता हे।

इस वर्ष रक्षाबन्धन ४ अगस्त २००१ (शनिवार) को तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी १२ अगस्त २००१ (रविवार) को है। दोनो पर्वो के बीच का सप्ताह वेद प्रचार सप्ताह के रूप मे मनाया जाता हे।

वेद प्रचार सप्ताह को केवल पारम्परिक रूप मे औपचारिकता पूर्ति हेतु मनाने से कोई विशेष लाभ नहीं होता। यदि वेद प्रचार सप्ताह को उत्साह पूर्वक अधिकाधिक लोगो को सम्मिलित करके मनाया जाए ता ज्ञान गगा घर घर मे पहुचाई जा सकती है।

महर्षि दयानन्द द्वारा निर्धारित प्रमुख लक्ष्य **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम"** अर्थात विश्व को श्रेष्ठ बनाना ही वेद प्रचार सप्ताह का भी प्रयोजन बनना चाहिए।

वेद प्रचार सप्ताह को सफल बनाने के लिए अपनी सुविधानुसार निम्न उपायो मे से अधिकाधिक उपाय किये जा सकते हैं –

१ बृहद यज्ञो का आयोजन (यदि सम्भव हो तो पार्कों अथवा अन्य सार्वजनिक स्थलों पर) जिसमें आर्य सदस्यों आदि के अतिरिक्त जन सामान्य को भी प्रेमपूर्वक आमन्त्रित किया जाये सम्भव हो तो यज्ञोपरान्त ऋषि लगर जलपान प्रसाद आदि का वितरण भी अधिक से अधिक लोगों में करें।

२ यज्ञ के दौरान तथा बाद मे आर्य उपदेशको तथा स्वाध्यायशील आर्य महानुभावों के प्रवचन अवश्य आयोजित करे जिससे जन सामान्य को वैदिक आध्यात्मिक तथा आर्य (श्रेष्ठ) विचारो से सन्मार्ग के लिए प्रेरित किया जा सके।



३ अपने क्षेत्र के अलग अलग वर्गों जैसे युवाओ महिलाओ वृद्धो बच्चो आदि के लिए अलग अलग विचार विमर्श या मार्गदर्शन कार्यक्रम गोष्ठिया या लघु सम्मेलन अथवा कार्यशाला आयोजित करें। सुखी परिवार कैसे रहें? विषय पर यदि गोष्ठिया आयोजित की जाए तो अवश्य ही एक लोकप्रिय कार्यक्रम साबित होगा।

४ वेद तथा सत्यार्थ प्रकाश की विशेष कथाओ का भी आयोजन करें जिससे इन ग्रन्थो के विचारो का लाभ लोगो के धार्मिक, सामाजिक पारिवारिक राष्ट्रीय तथा राजनीतिक उत्थान के लिए मिल सके।

५ क्षेत्रीय जनता जैसे उच्च पुलिस अधिकारी सैन्य बलो के अधिकारी विभिन्न विषयो के विशेषज्ञ जैसे डॉक्टर वकील इन्जीनियर इत्यादि तथा विशेष रूप से छात्र वर्ग को आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारो से परिचित कराने हेतु अल्पमूल्य का लघु साहित्य वितरित करे।

६ आर्यसमाज के समस्त सदस्यो की एक विशेष बैठक आयोजित करके आत्मावलोकन अवश्य करे कि क्या हमारे आर्यसमाज की गतिविधिया सन्तोषजनक है ? क्या उससे और अधिक कुछ किया जा सकता है ? यदि नहीं । तो उसके कारण और समाधानो पर चर्चा करें।

७ उपरोक्त के अतिरिक्त कोई अन्य प्रकार का आयोजन आपके मस्तिष्क मे उठे तो उसे हमें भी लिखकर भेजे। जिससे विश्व के अन्य आर्यों को भी उससे अवगत कराया जा सके।

८ आपसे अनुरोध है कि आप अपनी सुविधानुसार अभी से अपने वेद जयन्ती समारोह की तिथिया निश्चित कर ले और सगीतकारो भजनोपदेशकों तथा वैदिक साहित्य का अधिकाधिक वितरण करे।

९ आर्यसमाज के अधिकारियों से यह भी प्रार्थना की जाती है कि आगामी ४ अगस्त शनिवार अथवा ५ अगस्त रविवार को हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान विजय दिवस के रूप में धूमधाम से मनाए।

अपने आयोजनो की विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशनार्थ अवश्य भेजे।

आपकी सेवा मे –

वेदव्रत शर्मा सभामन्त्री

'आस्था' चैनल पर
प्रत्येक शनिवार सन्ध्या तथा प्रत्येक रविवार यज्ञ

विगत अक मे प्रकाशित समाचार मे पाठको को आस्था चैनल पर नियमित यज्ञ कार्यक्रम की सूचना दी गई थी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य द्वारा प्राप्त सूचना के आधार पर १७ जून से आस्था' चैनल पर प्रसारित होने वाले सन्ध्या और यज्ञ कार्यक्रम निम्न प्रकार होगे –

प्रत्येक शनिवार	**साय ५ ५० पर**	**सन्ध्या**
प्रत्येक रविवार	**प्रात ६ ४० पर**	**यज्ञ**

आस्था चैनल के प्रबन्धको ने यह कार्यक्रम आर्यसमाज सान्ताक्रुज मे फिल्माकित किए हैं जिनमे ब्रह्मा स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती जी को दिखाया गया है। इन कार्यक्रमो का उददेश्य सन्ध्या और यज्ञ की प्रक्रिया से जन सामान्य को अवगत कराना है।

कैप्टन देवरत्न आर्य ने बताया कि वैदिक विद्वान डॉ० स्वामी सत्यम स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती तथा डॉ० वागीश के वेद विषयक प्रवचनो को भी अलग से रिकार्ड किया जा रहा है। जिन्हे दस दस कडियो मे प्रसारित कराने की योजना बनाई गई है। यदि आर्य जनता तथा अन्य धर्मप्रेमी जनता ने इन कार्यक्रमो के प्रति उत्साह दिखाया तो उन्हे आगे भी जारी रखा जाएगा। ☐

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

सह सम्पादक
विमल वधावन एडवोकेट

श्री कैलाश नाथ सिंह का निर्वाचन न्यायालय द्वारा निरस्त

लखनऊ। न्यायालय उपजिला मैजिस्ट्रेट/नियत प्राधिकारी सदर लखनऊ ने अपने एक महत्वपूण फसल मे श्री केलाश नाथ सिह द्वारा २२–१–६५ को डी० ए० वी० कालेज लखनऊ मे कराये गये तथाकथित निर्वाचन को निरस्त करत हुए रजिस्ट्रार फर्म्स सासाइटीज एव चिटस उत्तर प्रदेश लखनऊ को निर्देशित किया है कि वह आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का निर्वाचन तत्काल सम्पन्न कराए।

माननीय उच्च न्यायालय इलाहाबाद लखनऊ खण्ड पीठ के न्यायाधीश श्री एस० के० वर्मा ने श्री भुवन तिवारी द्वारा योजित याचिका सख्या १६८६/एम०ए०स०/१६६५ मे दिनाक ३१ १ ६७ को निर्णय दते हुए रजिस्ट्रार सोसाइटीज द्वारा श्री केलाश नाथ सिह के निर्वाचन को दिनाक २८ ६ ६५ को दी गयी मान्यता को निरस्त कर दिया था तथा रजिस्ट्रार सोसाइटीज का निर्वाचन की वैधता/अवैधता का निर्णय करने हेतु सन्दर्भ नियत अधिकारी को भेजने का निर्देश दिया था।

उक्त सन्दर्भ पर माननीया नियत प्राधिकारी सदर लखनऊ श्रीमती कामिनी चौहान रतन आई०ए०एस० ने निणय दिया कि श्री कैलाशनाथ सिह ८–७–६ का सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा द्वारा ६ वर्ष के लिए निष्कासित किये जा चुके थे। अत वह आर्यसमाज के सदस्य न होने के कारण प्रान्तीय सभा के प्रधान पद पर चुनाव लडने की योग्यता ही नहीं रखते थे।

माननीया न्यायमूर्ति ने निणय दिया कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली से सम्बद्ध प्रान्तीय सभा है। अत आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नियम प्रभावी है।

माननीया न्यायमूर्ति ने श्री कैलाश नाथ सिह द्वारा माननीय उच्च न्यायालय इलाहाबाद लखनऊ खण्ड पीठ के न्यायमूर्ति जैदी द्वारा दिनाक २३–१२–६८ को पारित आदेश के विरूद्ध की जा रही वित्तीय अनियमितता को गम्भीरता से लेते हुए रजिस्ट्रार सासाइटीज का निदश दिया कि वह श्री कैलाश नाथ सिह द्वारा की जा रही वित्तीय अनियमितताओ के समबन्ध मे गहन परीक्षण कर पृथक से आख्या प्रस्तुत करे जिससे माननीय उच्च न्यायालय के आदेश २३–१२–६८ की अवमानना की स्थिति उत्पन्न न हो।

यह सदर्भ धारा २५ (१) सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट के अन्तर्गत सदर्भित किया गया है। मैंने पत्रावली का गहनता से अवलोकन एव परिशीलन किया। उपरोक्त के विश्लेषण के आधार पर में इस निष्कर्ष पर पहुचती हू कि सदर्भित चुनाव दिनाक २२–१–६५ सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट की धारा के आधार पर निरस्त किया जाता है। पत्रावली वाद आवश्यक कार्यवाही दाखिल दफ्तर हो। इस आदेश की एक प्रति निबन्धक फर्म्स सोसाइटीज एव चिटस उ०प्र० लखनऊ को इस निर्देश के साथ प्रेषित है कि वह नया निर्वाचन अन्तर्गत धारा २५ (२) सोसाइटी रजिस्ट्रेशन अधिनियम तत्काल कराना सुनिश्चित करे।

दिनाक मई ३१ २००१

ह० अपठनीय
कामिनी चौहान रतन
विहित प्राधिकारी/परगना मैजिस्ट्रेट
सदर लखनऊ

कातिल
परिवार का ही कोई जीवित व्यक्ति

नेपाल नरेश व उनके परिवार की नृशस हत्या का रहस्य नरेश दीपेन्द्र की मृत्यु के पश्चात और भी गहरा गया है तथा नेपाल मे राजनीतिक अस्थिरता का वातावरण पैदा हो गया हे। हत्या की जाच की माग को लेकर काठमाडू मे हुए दगो के बाद अनिश्चितकालीन कफ्यू लगा दिया गया है तथा सेना को उपद्रवियो को देखते ही गोली मारने के आदेश दे दिए गए है।

राज परिवार की नृशस हत्या से दुनिया का स्तब्ध रह जाना स्वाभाविक ही था। शुरू शुरू मे जो खबरे आई उनमे कहा गया था कि युवराज दीपेन्द्र ने ही शुक्रवार की रात्रि परम्परागत साप्ताहिक भोज के अवसर पर एकत्र राज परिवार के सदस्यो की अपने विवाह को लेकर हुई कहा सुनी के बाद हत्या कर दी तथा स्वय को गोली मारकर आत्महत्या कर ली।

नेपाल के लोगो को इस पर यकीन नहीं हुआ तथा काठमाडू और देश के अन्य भागो मे उन्होने प्रदर्शन किए यातायात अवरुद्ध किया एव माग की कि हत्यारो का पता लगाकर उन्हे फासी दी जाए। नेपालवासियो के सदेह को इसलिए भी बढावा मिला क्योकि नेपाल रडियो तथा टेलीविजन इस बारे मे खामोशी धारण किए रहे और नेपालियो को राजवश के सहार की जानकारी भारतीय मीडिया स मिली।

बाद मे खबर आइ कि युवराज दीपेन्द्र गभीर रूप से घायल होकर कोमा (मूर्च्छा) मे सनिक अस्पताल म हे। नेपाल की राज परिषद ने देश की परम्परा तथा स्वर्गीय महाराजा की इच्छानुसार दीपद्र को नया नरेश तथा उनके चाचा ज्ञानेद्र शाह को कार्यवाहक नरश घोषित कर दिया। इस बीच राज परिवार के हत्याकाड के कारणो के बारे मे कोई पुष्ट खबर नहीं आई। गभीर रूप से घायल अन्य लोगो की स्थिति भी ऐसी नहीं कि वे कोई बयान दे पाए।

३ जून को कहानी ने उस समय एक नया मोड ले लिया जब कार्यवाहक नरेश ज्ञानेद्र ने राज परिवार के सदस्यो की मृत्यु को हत्याकाड नहीं बल्कि अचानक एक स्वचालित हथियार चल जाने से हुई दुर्घटना बताया। दूसरी ओर उप प्रधानमन्त्री रामचद्र पौडल ने भी अपना वह बयान वापस ले लिया जिसमे युवराज द्वारा अपने पिता महाराजा वीरेद्र मा ऐश्वर्य लक्ष्मी तथा परिवार के अन्य लोगो की हत्या करने की बात कही गई थी।

महाराज दीपेद्र की सोमवार प्रात मृत्यु हो जाने के बाद राज परिषद ने ज्ञानेद्र को नेपाल का नया महाराजा घोषित कर दिया है। वह महाराजा तो बन गए है लेकिन राजवश मे हुई रक्तरजित त्रासदी के लिए निम्नलिखित कुछ कारणो से सदेह की सुई परिवार के किसी जीवित मैंबर की ओर ही जाती दिखाइ देने लगी हे।

नपाल मे शनिवार की साप्ताहिक छुटटी हान के कारण राज परिवार के सदस्य शुक्रवार की रात्रि मे परम्परानुसार जिस रात्रि भोज मे एकत्र होते थे उसमे १ जून की रात्रि को ज्ञानद्र शामिल नही हुए तथा उस दिन वे सपरिवार पोखरा गए हुए थे और हत्याकाड की सूचना उन्हे वहा ही दी गई।

शाही परिवार के सदस्यो का पोस्टमार्टम भी नहीं किया गया तथा शवो का सायकाल जल्दी जल्दी दाह सस्कार कर दिया गया। महाराजा महारानी व परिवार के अन्य सदस्यो की चिता को राजकुमार ज्ञानेद्र ने नहीं बल्कि परिवार के एक दूर के सबधी ने अग्नि दी। न तो किसी विदेशी राजनेता को भाग लेने के लिए आमत्रित किया गया और न ही इस अवसर पर वहा ज्ञानेद्र उपस्थित थे।

कहा जा रहा है कि राजकमार दीपेद्र की पीठ पर गोलियो के घाव थे इससे रहस्य और भी गहरा हो गया है। अगर उन्होने परिवार के लोगो की हत्या कर आत्महत्या की होती तो निशान पीठ पर नहीं बल्कि शरीर के अगले भाग मे होते।

हैरानी की बाते और भी हैं। जब भोजन के अवसर पर उनकी महारानी व महाराजा से कहा सुनी हुई और उन्हे शराब के नशे मे होने के कारण वहा से जाने को कह दिया गया था तब यह सभव था कि वे आवेश मे आकर तत्काल अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते। बयान के मुताबिक उन्होने अपनी सैनिक वर्दी पहनी फिर असाल्ट राइफल लेकर भोजनकक्ष म आए और गोलिया चलाइ।

उन्हे अपने कक्ष मे जाने वहा फौजी वर्दी पहनने मे कुछ समय तो लगा होगा। इस अवधि मे युवराज जैसे शात व सुशिक्षित व्यक्ति का गुस्सा कुछ हद तक ठडा हो जाना चाहिए था। राजकुमार दीपेद्र को मितभाषी विनम्र व सोच समझकर कदम उठाने वाला युवक माना जाता था।

इसके अतिरिक्त राजकुमार दीपेद्र द्वारा १६६८ मे पाकिस्तान की आर्डिनेस फैक्टरी मे एक ऑटोमैटिक राइफल का निरीक्षण करने का चित्र आकस्मिक रूप से मीडिया को किसने जारी किया। इस चित्र को इस समय जारी करने के पीछ क्या मकसद हो सकता था ?

इस प्रकार की खबरे भी हैं कि युवराज दीपेद्र ने पहले ही पूर्व वित्त मत्री पशुपति शमशेर बहादुर राणा की पुत्री देवयानी से गुप्त विवाह कर लिया था। ऐसी स्थिति मे वह स्वय आत्महत्या क्यो करते।

इन्हीं सब बातो के मध्य दीपेद्र को उस समय महाराजा व ज्ञानेद्र को कार्यवाहक नरेश घोषित किया गया जब वह जीवन रक्षक उपकरणो के सहारे ही जीवित थे। यह सब कार्यवाही इस तरह की गई कि ज्ञानेद्र राजकुमार दीपेद्र की मृत्यु के बाद ही राजा बने और यह सब स्वाभाविक दिखाई दे।

नेपाल की जनता द्वारा राज परिवार की हत्या मे किसी गभीर षडयत्र की आशका व्यक्त की जा रही है। माओवादियो ने भी अपने एक बयान मे महाराजा व राज परिवार की हत्या को एक गभीर राजनीतिक षडयत्र बताते हुए इसकी जाच किए जाने की माग की है। प्रधानमत्री गिरिजा प्रसाद कोइराला ने इसे एक दुखद घटना बताया है लेकिन इस हत्याकाड के कारणो के बारे मे कुछ नहीं कहा।

उपरोक्त बातो से सदेह की सूई घूमकर परिवार के किसी जीवित मैंबर तथा उनके साथ जुडी हुई किसी पार्टी की ओर ही जाती दिखाई दे रही है क्योकि हिन्दू राजवशो के इतिहास मे ऐसी कोई घटना नहीं मिलती जिसमे पुत्र ने सारे परिवार का समाप्त कर दिया हो। नवनियुक्त नरेश ज्ञानेद्र ने घोषणा की है कि सवैधानिक व परम्परागत कारणो से शुक्रवार रात्रि के घटनाक्रम के बारे मे वह पहले कुछ नहीं कह सके थे परन्तु वह अब इसकी सच्चाई के बारे मे जाच करवाकर देश की जनता को अवश्य अवगत करवाएगे।"

जो बाते सामने आ रही हैं उनमें कुछ ऐसी शकाए उभरती हुई लगती है कि हत्यारा कोई बाहर का नही बल्कि राज परिवार का ही कोई जीवित मैबर हो सकता है।

– विजय चोपड़ा
(साभार पजाब केसरी ५ जून २००१

सम्पादकीय आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड (4) क्या हुआ और क्या होगा ?



आर्यसमाज मिण्टो रोड के बारे मे अब तक दी गई जानकारी से माननीय पाठकगण एव आर्य जनता के सामने स्थिति लगभग स्पष्ट हो चुकी है कि १७ अप्रैल को हमे आश्वासन देने के बाद अगले दिन से ही श्री जगमोहन ने हम यह आभास कराना प्रारम्भ कर दिया था कि उनकी नीयत इसी स्थल के आवटन की नहीं है।

विगत सप्ताह जब पुन हम लोग प्रो० शेरसिह श्री लक्ष्मी चन्द श्री जगदीश आर्य स्वामी अग्निवेश तथा मै जब श्री जगमोहन से मिले तो उन्होने साफ इन्कार कर दिया कि मैंने कभी भी उसी भूमि के आवटन की बात नही की। वे बार बार इसी बात पर अड रहे कि आप भूमि किसी और स्थल पर ले लो। इस बात को कहते हुए श्री जगमोहन ने बार बार मेरी ओर इशारा करते हुए कहा कि य ही अडे हुए हे अन्य लोग तो मान गए थ कि भूमि कही ओर दे दी जाए

श्री जगमोहन से इस मुलाकात के बाद हमारे साथियो को यह आभास हो गया कि वास्तव मे मन्त्री महोदय इस भूमि का उसी स्थल पर आवण्टन सरलता से करने वाले नहीं। हमे इसके लिए सघर्ष करना ही होगा यह आर्यसमाज की प्रतिष्ठा का सवाल है इसमे कोई अन्धविश्वास का आभास नही होना चाहिए। भूमि और सम्पत्तियो के लिए हम लालायित नही है परन्तु जिस गैरकानूनी तरीके और धोखे से यह मन्दिर गिराया गया है पवित्र वेद और अन्य धार्मिक ग्रन्थो को जिस प्रकार अपवित्र किया गया ह और १७ अप्रल क प्रदर्शन से आर्यजनता की भावनाओ ओर शक्ति के सामने एक बार झुक कर जिस प्रकार यह सफेद झूट बोला जा रहा है कि सरकार ने उसी स्थल पर भूमि आवटन की बात को कभी स्वीकार ही नहीं किया था। इन प्रवृत्तियो ने समूची आर्य जनता को झूठ के चक्रव्यूह मे फसाकर धोखा देने का प्रयास किया है।

दिल्ली के दो पूर्व मुख्यमन्त्रियो एव सासदो की उपस्थिति ओर उनके सामने हुए इस आश्वासन को झुठलाकर श्री जगमोहन देश का क्या भला करना चाहते है यह हमारी समझ से बाहर है।

हमारी सामान्य बुद्धि से केवल एक ही निष्कर्ष निकलता है कि श्री जगमोहन ने आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड को वस्त करान का अपनी भूल अब तक नहीं मानी ओर व एक साधारण स पार्क के निमाण को लेकर अजीबोगरीब प्रवृत्ति पर उतर आए हे।

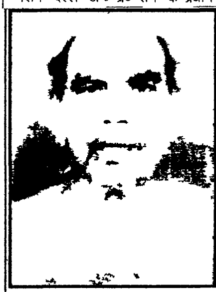
भाजपा के नतृत्व वाली केन्द्रीय सरकार के एक मन्त्री होने के नाते श्री जगमोहन अभी तक भी यह महसूस नहीं कर पाए कि उनके इस अडियल रवैये से भाजपा की छवि एक राजनीतिक दल के रूप म आयजनता की नजरो मे क्या रहेगी ?

मरे विचार म समूचे आर्यजगत को एकजुट होकर सर्वप्रथम आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड के पुनरुद्धार हेतु अपनी शक्ति लगाने के लिए तैयार रहना चाहिए।

— वेदव्रत शर्मा

श्री बटेश्वर दयाल जी का देहावसान

आर्यसमाज दीवान हाल के प्रधान श्री बटेश्वर दयाल शर्मा का निधन २ जून की प्रात बेला मे अपने चादनी चौक स्थित निवास पर हो गया। व ८३ वर्ष के थे। उनका अन्तिम सस्कार वैदिक रीति से निगम बोध घाट पर किया गया जिसमे दिल्ली आ० प्र० सभा के प्रधान



तथा सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा श्री राजसिह भल्ला श्री विमल वधावन श्री लक्ष्मी चन्द डा० रविकान्त श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री सहित कई अन्य आर्य महानुभाव एव प्रतिष्ठित सदस्य उपस्थित थे।

श्री बटेश्वर दयाल जी की स्मति मे एक श्रद्धाजलि सभा १० जून को प्रात १० बजे आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल में होगी।

पूजनीय स्व० बटेश्वर दयाल सुपुत्र स्व० श्री महादेव प्रसाद दीक्षित का जन्म दिनाक १५ अक्तूबर १९१६ को उत्तर प्रदेश के इटावा जिले के अन्तर्गत ग्राम भरईपुर के एक किसान परिवार मे हुआ। अपने बचपन ही से वे आजादी के सग्राम से बहुत प्रभावित थे। अपने गाव मे मिडिल की परीक्षा पास करने के बाद ही वे देश के स्वतत्रता सग्राम मे कूद पडे। शीघ्र ही उनका सग अनन्त देश प्रेमी व कट्टर आर्य समाजी प० रामचन्द्र देहलवी प० यश देव शर्मा व लाला रामगोपाल शालवाले से हो गया। अपने बचपन मे ही वे आर्य युवक सघ के कर्मठ व अग्रणी कार्यकर्ता रहे। सन १९३८ मे आर्य समाज के हैदराबाद सत्याग्रह मे उन्हे आर्य युवक सघ न जत्थेदार बनाकर

> **स्व० बटेश्वर दयाल जी की स्मृति में**
> **श्रद्धांजलि सभा का आयोजन**
> रविवार दिनाक १० जून २००१ **समय** प्रात १० बजे
> **स्थान** आर्यसमाज दीवान हाल चादनी चौक दिल्ली ११०००६

एक जत्थे का नेतृत्व सौंपा जिसको उन्होने बखूबी निभाया। सी० आई० डी० और हैदराबाद पुलिस से बचते हुए उन्होन निजाम के विरूद्ध आदोलन का द्रुत गति से कायम रखा ओर अन्तत २ जून १९३६ को औरगाबाद जिले म जत्थेदार के रूप मे गिरफ्तार हुए तथा उन्हे २ साल ओर ६ महीने के कठोर कारावास की सजा हुई। व अपन जीवन मे कइ बार स्वतत्रता आदोलन मे कारावास गए।

सादा जीवन उच्च विचार की सूक्ति को शब्दत अपने जीवन मे चरितार्थ कर दिखाया। समाज सेवा व सत्यता उनम कूट कूट कर भरे थे। आजादी के बाद पजाब विश्वविद्यालय लाहौर से हिन्दी के विशारद की डिग्री प्राप्त की। अपने जीवन काल मे ये पडित जी व गुरुजी के नाम से विख्यात रहे। पडित जी ने अपने जीवन काल मे अनेक समाज सेवी सस्थाओ का प्रतिनिधित्व व मार्गदर्शन किया। उन्होने जीवन पर्यन्त आर्यसमाज के नियमो का न सिर्फ सख्ती से पालन किया वरन आर्यसमाज के प्रसार प्रचार मे अहम भूमिका भी निभाई। आर्यसमाज दीवान हाल से उन्हे विशेष लगाव था और अपने अन्तिम क्षण तक वे आर्यसमाज दीवान हाल की गतिविधियो से जुडे रहे और प्रधान के रूप मे मार्गदर्शन किया। अपने प्रधानत्व के काल मे पडित जी न आनन्दबोध सरस्वती ट्रस्ट की स्थापना कर भरपूर राशि का समायोजन किया। अपना सपूर्ण जीवन पडित जी ने समाज सेवा को अर्पित किया। अपने जीवन काल मे वह अनेक समाज सेवी सस्थाओ के सचालक व सरक्षक रहे। केन्द्र

महासभा के भी पडित जी अग्रणी नेता रहे ओर अनेको समारोहो व जलसो का सफलतापूवक सचालन किया। पडित जी न भदावर प्रदेश समाज का गठन किया और जीवन पर्यन्त उसका सचालन व मार्गदर्शन किया।

प० बटेश्वरदयाल जी स्वभाव से गम्भीर उदार व विराट दानी प्रवृति के व्यक्ति थे। वे सीधे साधे व्यक्ति परोपकारमय जीवन जीने मे सदा विश्वास रखते थे। समय आने पर पडित जी ने दिल खोलकर दान दिया। न केवल वे दानी प्रवृति के थे वरन अपने सम्पर्क मे आने वाले सभी लोगो मे दान देने की प्रवृति को बढावा देने को प्रेरित करते रहे। समाज के गरीबो की उन्होने दिल खोलकर सहायता की। आर्यसमाज दीवान हाल व सार्वदेशिक सभा को भी समय समय पर उन्होने सहर्ष विभिन्न स्वरूपो मे दान दिया।

स्व० प० बटेश्वर दयाल जी ने अपने जीवन की गाढी कमाई को वैदिक धर्म प्रचाराथ प्रदान किया। दान भी कहा दिया दशे काले च पात्रे च तद्दान सात्विक विदु ।।

देश काल योग्यता को दखकर जो दान दिया जाये वही पवित्र कमाई सात्विक कही जाती है।

स्व पडित जी ने १००००० (एक लाख) रुपया आर्यसमाज दीवान हाल को स्थिर निधि के रूप मे दिया है। इस राशि का ब्याज यज्ञ तथा गरीबजनो की सेवा मे व्यय किया जाता है।

५०,००० / (पचास हजार) रुपया सार्वदेशिक सभा को देकर एक स्थिर निधि स्थापित की है।

आप सात्विक ब्राह्मण थे सादा जीवन उच्च विचार वाले व्यक्ति थे आप आर्यसमाज दीवान हाल के प्रधान पद को सुशोभित कर रहे थे। अपने प्रधानत्व मे ५१००० (इक्यावन हजार) रुपये आयसमाज दीवान हाल से अन्तर्राष्ट्रीय आय महासम्मेलन दिल्ली हेतु भी दिलवाये थे।

३१००० / (इक्तीस हजार) रुपये महर्षि दयानन्द गो सम्बर्धन केन्द्र गाजीपुर के लिए भी प्रदान किये हे।

देश काल और पात्र को देना इसलिए आवश्यक है क्योकि बन्जर (ऊसर) भूमि मे डाला गया बीज बेकार ही जाएगा। अत उपजाऊ भूमि पर पडा बीज अच्छी फसल पैदा करगा।

हम सब उनसे प्रेरणा प्राप्त करे तथा उनके गुणो को जीवन मे धारण कर समाज सेवा मे रत रहे यही उनको सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

स्व० श्री बटेश्वर दयाल जी को

शत शत नमन

> **श्री कृष्ण गोपाल दीवान आर्यसमाज दीवान हाल के प्रधान नियुक्त**
> आर्यसमाज दीवान हाल की एक अत्यावश्यक बैठक ३ जून २००१ (रविवार) को बुलाई गइ जिसमे सर्वसम्मति से श्री कृष्ण गोपाल दीवान को आर्यसमाज दीवानहाल का प्रधान नियुक्त किया गया।

परमपिता परमात्मा का आदेश – मनुर्भव

– आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री वदप्रवक्ता

अन्य देश मनुष्यों की जन्मभूमि है भारत मानवता की जन्मभूमि है। नर का तन मिलना हमारे कर्मों के फल के अनुसार इश्वरीय विधान है परन्तु विशेष विचारणीय यह है कि नर तन की सार्थकता उसकी पूर्णता तभी है जब उसमे नरमन की भी प्रतिष्ठा है।

मनुष्य मननशील है वह कर्मो को बुद्धिपूर्वक विचार कर करता है (मत्वा कर्माणिसीव्यति) यहा प्रसग वश यह भी हम उल्लेख करना चाहेगे कि हम त्याग का वैराग्य का सयम का उपदेश देने वालो के इस मत से सहमत नहीं है कि वह मन को मारे क्योकि मन है तो मनन होगा मन की उपमा हम घर के भण्डार से दे सकते है जहा हम आवश्यकता का सामान एकत्र करते है मन मे हम दूसरो से जो प्रेम सवेदना सहानुभूति और मैत्री प्राप्त करते है ये सभी सुरक्षित रहते है जिस प्रकार घर की व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने वाली एक गृहणी भण्डारगृह मे क्या हो क्या नहीं हो इसका निर्णय अपने विवेक से करती है उस प्रकार बुद्धि मन को नियन्त्रण मे रखे यह बात तो समझ मे आ सकती है जो कुछ भी मधुर प्रिय हो उपयोगी हो वह मन मे अवश्य रखा जाए। जो हमारे काम का नहीं जिसमे कटुता हो वह मन से दूर फेक दे। तन्मे मन शिवसकल्पमस्तु आदि मत्रो का सार तभी समझ सकते है जब हम अप्रिय घृणा द्वेष आदि दुगुणो को मन से निकाले और हितचिन्तन को प्रश्रय दे।

वेद ने मनुष्य की यही इति कर्त्तव्यता नहीं मानी है कि वह कवल मनुष्य का ही हितचिन्तन की परिधि मे न हमे तो समभाव ओर दयाभाव अन्य प्राणियो मे भी बाटना है यह हम देवत्व की कोटि मे लाता है। यही नही हम जितनी अवधि ससार मे व्यतीत करते है बौद्धिक मानसिक सामाजिक जो भी हमारा उपार्जन है उसका श्रेय मात्र हमारा ही नहीं है इसके लिए हम अन्यो के भी ऋणी हैं इस ऋण से उऋण होन का मार्ग यही है कि हम इस क्रम मे व्यतिक्रम न आने दे ओर इसके लिए हम ज्योतिर्मय पथो की रक्षा करने वाला जागरण प्रहरी बन सके एसी उत्तम सन्तान भी ससार को देकर जाये।

गमो की आख स आसू निकाल कर देखो।
बनेगे रग किसी पर डाल कर देखो।
तुम्हारे हृदय की चुभन कम होगी जरूर।
किसी के पैर का काटा निकाल कर देखो।

यदि अग्नि मे अग्नित्व एव वायु मे गतित्व तथा जल मे जलत्व न हो तो क्या आप उसे अग्नि जल वायु कहेगे ? उत्तर मिलेगा नही। ठीक इसी तरह मानव मे मानवता न हो तो वह मनुष्य नहीं कहलायेगा। वैदिक सस्कृति विश्ववारा सस्कृति है इसका उददेश्य है मानव का निर्माण – दिव्य उदबोधन है। परम पिता परमात्मा का आदेश है – मनुर्भव।

ओ३म तन्तु तन्वन रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मत पथो रक्ष धिया कृतान
अनुल्वठा वयत जोगुवामप मनुर्भव जनया दैव्य जनम।

ऋ० १० /५३ /६

निज कर्म को करते हुए आलोक का अनुगमन करो विज्ञानपद आलोक के शुभ मार्ग की रक्षा करो। उलझन रहित कर्त्तव्य के तुम विश्व विस्तारक बनो। मानव बनो ! मानव बनो ! तुम दिव्यजन मानव बनो।।

जहा तक इस मन्त्र की महत्ता का प्रश्न है कि यदि वेद मे कवल यही एक मन्त्र होता तो भी अन्य ग्रन्थो की तुलना मे वेद ही सर्वोपरि स्थान का अधिकारी होता।

आज विश्व मे कोई ईसाई बनाने पर शक्ति लगाता है कोइ बौद्ध बनाने मे कोई मुसलमान बनाने मे तत्पर है। वेद कहता है मनुर्भव मनुष्य बन। इसाई बनने पर व्यक्ति केवल ईसाईयो को ही ममत्व से देखेगा। मुसलमान बननें पर वह केवल मुस्लिम व्यक्ति से ही प्यार करेगा किन्तु मनुष्य बनने पर तो वह सारा ससार उसका परिवार होगा। वसुधैव कुटुम्बकम – वसुधा ही कुटुम्ब समान हे सब पर हमारा एक समान प्यार होगा।

एक बाप के बेटे है सारे एक हमारी माता
दाना पानी देने वाला एक हमारा दाता।
फिर किस मूर्ख ने लडना तुम्हे सिखाया
सबस कर लो प्रेम जगत मे कोई नही पराया।

जातिवाद या सम्प्रदायवाद के बन्धन से हटकर हम मानवतावाद के जीवन मे लाय

अग्नि हमे उन्नति की राह दिखाती है विरोध के मध्य भी प्रलोभन की चमक से और आतक की निरकुशता से हम दबे नही वरन हमारा स्वर और भी प्रखर ओर मुखर हो ये हमे अग्नि से सीखना है। यह हमारी परीक्षा लेती है उसके ताप से भोजन पकाकर हम स्वय तो खा लेते है लेकिन वह ये भी जानना चाहती है कि वैसा ही भोजन दूसरा को प्राप्त कराने की कितनी व्यग्रता हमारे हृदय मे है ?

वेदोद्धारक दयानन्द महाराज मनुष्य की परिभाषा बनाते हुए कहते है मनुष्य उसी का कहना जो मननशील हो स्वात्मवत अन्यो के सुख दुख और हानिलाभ को समझे। पापी दुष्ट अन्यायी अत्याचारी चाहे कितना ही सशक्त हो चाहे चक्रवर्ती सम्राट भी क्यो न हो उससे कभी न डरे उसका प्रतिवाद अप्रियाचरण सदा करे और धर्मात्मा चाहे निर्बल हो निधन हो उसका सत्कार प्रियाचरण सदा करे। जहा तक हो सके। अन्यायकारियो के बल की हानि और न्यायकारियो के बल की उन्नति सर्वदा करे। इस काम मे चाहे उसको कितना ही दारुण दुख प्राप्त हो चाहे प्राण भी चले जावे परन्तु इस मनुष्यपन रूप धर्म से पृथक कभी न होवे। आगे बढने से पूर्व हम पूछना चाहेगे दुनिया के लोगो से इससे पूर्णत मनुष्य की कोई परिभाषा कहीं देखी है क्या ? पर किसे चिन्ता है दयानन्द की इस परिभाषा की। मिले यह या कोई और मनुष्य की परिभाशा हमे थी और है ऐसी आशा हमे।

मानवता दूसरा नाम है दूसरो के प्रति हम कितने सवेदनशील हैं ? क्या हम वास्तव मे ऐसे मर्द है जो किसी का दर्द लेकर हमदर्द बन सके ?

दर्द दूसरो का बाटे इसान वही है
दर्द दूसरो का बाटे इसान वही है।।

हमारा अपना शरीर हमे परोपकारमयी मानवता का पाठ पढाने वाला सर्वोत्तम शिक्षक है शरीर के किसी भी अग मे कोइ आघात लगता है तो कष्ट का अनुभव सारा शरीर करता है ध्यान उसी की ओर रहता है। पेट मे स्वय कोई विकार न भी हो किन्तु यदि किसी अन्य अग मे विकार हो तो वह भी अपनी सवेदनशीलता इस रूप मे व्यक्त करता है कि वह भी अपने भोजन के प्रति अनिच्छा व्यक्त करता है यह अनुभूत बात है और शरीर के प्रत्येक अग की यह विशेषता है कि जो भी उसका ग्राह्य है वह औरो के लिए त्याज्य नहीं हे वरन पौष्टिकता के रूप मे वह सभी का भाग बन जाता है। इससे बडा समाजवाद और मानववाद का पाठ आदमी और कहा पढेगा ?

भातृप्रेम का अनुठा उदाहरण रामायण मे मिलता है। एक भाई दूसरे भाई के लिए जान देने के लिए तैयार है। गेद की तरह गद्दी को ठोकर मारने वाले भाई आज कहा हैं ?

जब मेघनाद के बाण से लक्ष्मण मूर्छित हो गए तब राम विलाप करते हुए कहते हे –

देशे देशे कलत्राणि देशे दशे च बान्धवा
त द देश न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदर

देश मे मुझ जगह जगह मित्र बन्धु बान्धव मिल सकते है परन्तु मुझ कोई ऐसी जगह दिखाई नहीं देती जहा छोटा भाई मिल जाये।

जब लक्ष्मण को होश आया तो लक्ष्मण से पूछा गया – लक्ष्मण। तुम्हे कितनी चोट लगी ? लक्ष्मण कहते है –

इषुमात्र अह वेदिम स्फूट येवेति राघवम।
वेदना राघवेन्द्रस्य केवल व्रणिनो वयम।।

लक्ष्मण ने कहा कि मै तो केवल बाण के घात को ही जानता हू, चोट तो राम के हृदय मे हुई है। मै तो कवल मूर्छित हुआ हू वेदना कितनी हुई हे यह राम से पूछो। कितना अगाध स्नेह है। मानवता भ्रातृप्रेम का ऐसा दिव्य उदाहरण और कहा मिलेगा। आर्यसमाज के दस नियम सावभोम मानवधर्म के स्वर्णिम सूत्र हैं। इन नियमो मे इश्वर अस्तित्व ईश्वर उपासना वेद निष्ठा सत्यनिष्ठा धर्माचरण विश्व का उपकार यज्ञ भावना सदव्यवहार विद्या प्रेम सर्वोदय भाव वैदिक समाजवाद व्यष्टि और समष्टि का समन्वय आदि मानव धर्म मूलाधार इन दस स्वर्णिम सूत्रो का समावेश हे। ये सभी सूत्र मानव धर्म के प्राण है। अत आर्यसमाज कोई मत मजहब नहीं अपितु विश्वधर्म या मानव धर्म का प्रचारक सगठन है।

प्रत्येक को अपनी उन्नति से सन्तुष्ट न होना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए। कितना प्यारा चिन्तन है।

पावक की लपटो मे पडकर सोना कुन्दन बन जाता है।
भाव शुद्ध हो तो छोटा सा धागा रक्षाबन्धन बन जाता है।
सघर्षो की भटटी मे तपना छोडो बात नही
त्याग तपस्या स मानव माथे का चन्दन बन जाता है।

शेष भाग पृष्ठ १० पर

वर्तमान परिवेश में एक आर्य-चिन्तन

वयस्वी-वेदना

– देव नारायण भारद्वाज

वयस्वी शब्द अब अपरिचित नहीं रहा है। साहित्य जगत मे वयस्विता आदि रूपो मे प्रयोग होता हुआ देखा जान लगा ह। अब से तीन वष पूर्व यह शब्द हमारे वयस्वी सहयाग मण्डल के सस्थापक प्रो० राजकुमार वार्ष्णय जी ने जब इसे गढा था तब यह शब्द नया लगता था वास्तव मे वयस्वी सज्ञा है – उनके लिए जो पुराने हो चुके हैं। वृद्ध वयोवृद्ध शब्दो में जीवन से चुक जाने की कसक आने लगी है। किसी भी प्रकार की श्रेष्ठता या वरिष्ठता के बिना 'वरिष्ठ-नागरिक' का सम्बोधन समान रूप स सभी आयुष्मानो के लिए व्यग्य बाध प्रदर्शित करता प्रतीत होता है। वयस्वी (वयस+वी) आयु का धनी कौन होना नहीं चाहता ? वह भल ही तेजस्वी हो वर्चस्वी हो मनस्वी हो या यशस्वी हो – या इनमे से कुछ भी नहीं – फिर भी वह वयस्वी तो हर दशा मे हो ही सकता है। जब कोई वयस्वी हो जाता है तो वह अपने छोटो की दीन हीन दशा को देखकर वेदनाओ को अनुभव करते हुए द्रवित होने लगता हैं। उसका ह्रदय नवनीत से भी अधिक कोमल हो जाता है। नवनीत उष्मा पाकर पिघलता हे किन्तु वयस्वी का ह्रदय भावातिरेक मात्र स ही पिघलकर दृगो के माग स अश्रुओ के रूप मे बहन लगता है। हमने अपने सस्थापक जी के नेत्रो का ऐसे अनेक अवसर पर नम होत देखा ह

वेदना या चेतना

एक परिवार चार भाइ सभी एक दूसर का मानसम्मान व प्यार करने वाल थे। बड भाई घर पर ही रह गये और छोटो को उन्होने इतना पढाया कि वे सभी वैज्ञानिक बनकर विदेश चले गए – कोई अमेरिका कोइ इग्लैण्ड और कोई आस्ट्रेलिया। किसी बडे पारिवारिक महोत्सव पर वे भारत आए। उनमें से एक अस्थि विशेषज्ञ दूसरा दैहिक रसायनज्ञ और तीसरा प्राण विद्या का प्राणाचाय बन चुका था। वे सभी बड भ्राता के साथ जगल म घूमने निकले। तीना छोटे भाई अपनी अपनी योग्यता पर गर्व करते हुए परस्पर विवाद मे उलझ गए और स्वय को एक दूसरे स अधिक दक्ष बताने लग। जगल मे पड अस्थि पजर को देखकर अस्थि विशेषज्ञ ने कहा देखो मैं इन अस्थियो का यथाविधि जोडकर ये जिस पशु की ह वही बनाए दता हू। बडे भाइ क मना करने पर भी वह नहीं माना और उसन पशु का ढाचा तैयार कर दिया। रसायन ने कहा कि मै रसायनो का लेप बनाकर इस पर मास चढाए देता हू। बडे भाई ने बहुत मना किया – वह नहीं माना और अस्थियो पर मास चढाकर उसने पशु का सही रूप बना दिया। छोट भाइ प्राणाचार्य बोले मैं भी आप लोगो से कम नहीं हू। मैं अभी इस पशु मे प्राण प्रतिष्ठा कर देता हू। बडे भाई ने चेतावनी दी–ऐसा मत करो। वह एक वृक्ष पर चढ गया और छोटे भाई को पशु मे प्राण डालने से मना करता रहा। पर वह भला क्यो मानने लगा। पशु मे प्राण पडे। भूखा शेर उठ कर खडा हो गया और उन तीनो छोटे भाईयो का उसने कलेवा कर डाला। बडा भाई आसू बहाता रह गया।

विज्ञान का व्यामोह

इस विज्ञान के चमत्कार पूण आविष्कार उसी भूखे शेर की भाति मानव क ऊपर से बहुत सुख सुविधाए प्रदान करते प्रतीत होते हें किन्तु मानवता का डकारते चले जा रह है। आदिकाल म जब ऋषि ने अग्नि की खोज की थी तो उससे ऊर्जा लेने के लिए न कि हाथ जलाने के लिए नि सर्ग बडा मनोरम है जब वह ज्ञान से पहल जुड जाता हे तो उसम विशेषता उत्पन्न कर दता है। ज्ञान कर्म एव समन्वय की उज्ज्वलता प्रदशित करने लगता है और जब समन्वय या सामजस्य नहीं रहता हे तो यही वि विपरीत व विद्रूपता बोधक हो जाता है तथा मनुष्य को विमोहित भ्रमित एव तिमितरग्रस्त कर देता हे। हम वयस्वी यह सब देखते हुए आसू बहाने के अतिरिक्त कुछ कर नहीं पा रहे हैं।

अमृतकुम्भ या विषकुम्भ

इस तीसरी सहस्राब्दी के आरम्भ मे प्रयाग मे महाकुम्भ लगा। प्रतिदिन पर्व पर करोडो लोगो ने तीथ स्नान किया। कुछ आधुनिक श्रवण कुमार भी अपने वयोवृद्ध माता पिता को कुम्भ स्नान के लिए लाए और उन्हे यहीं छोडकर चले गए। वे सभी वयस्वी आसू बहाते रह गए। स्वादिष्ट सुगन्धित मधुर पेय से भरे कलश को विषैला बनाने के लिए क्या हलाहल की कुछ बूदे पर्याप्त नहीं होती है ? यही हाल इस महाकुम्भ का हुआ। प्रयाग ही क्या सर्वत्र कुम्भ त्रिवणी के सगम पर ही लगता है। विज्ञान के अन्तर्निहित ज्ञान कम समन्वय यहा साकार [illegible] ज्ञान रूपी गगा [illegible] रूपी यमुना समन्वय रूपी सरस्वती (वाणी) का जहा उपदेश मिल वहीं तो त्रिवेणी है। जब समन्वय रूपी सरस्वती विलुप्त मान ली [illegible] ज्ञान व कम परस्पर स्वच्छन्द होकर भयकर उत्पाती हो जाते हैं। यह देखकर हम वयस्वी वेदना से भर जाते हैं।

लोकतन्त्र भूलोक कम्प

सम्पूर्ण भारत एव विश्व के सभी भारतीय २६ जनवरी २००१ को अपना गणतन्त्र पर्व हर्षोल्लास से मना रहे थे। इसी दिन गुजरात मे भीषण भूकम्प आया तो आता ही चला गया। लाखा लोग और अरबा की सम्पदा इससे विनष्ट हुई। पूरा भारत व विश्व सहायता के लिए उमड पडा यह तो ठीक हे पर हम वयस्ती उस दिन बहुत राय जब पता चला कि मर–अधमरे मानव शरीरो से कुछ लाग आभूषणो को उसी प्रकार से नोच रहे है जिस प्रकार गिद्ध मास को नाचते है। वद न ठीक ही कहा है स्तोता मे गोसखा स्यात (ऋग्वद) – प्रभु कहत हैं कि मेरी स्तुति करने वाला वही हो सकता हे जो पहले गो सखा बने। गो अनेक है – गाय भी ओर भूमि भी दोना बहन हैं एक बहिन का हम मारेगे तो दूसरी हमे छाडगी नहीं। विज्ञान के ज्ञान कर्म समन्वय–लोकराज मे विधायिका कार्यपालिका एव न्यायपालिका मे ढल जाते हैं। इस त्रिवेणी की नौका मे कहीं कोई छिद्र हो जाता है तो भ्रष्टाचार की बाढ सभी को ले डूबती हैं। सर्वत्र हत्या व हाहाकार छा जाता है। आधुनिक वेज्ञानिको के ही परीक्षणो से पता चलता हैं कि सगीत की स्वरलहरिया प्रकृति प्राणी सभी के लिए जीवनदायिनी होती है। इसके उलट मानव–पशु प्राणियो की हत्या के कारण उत्पन्न मौन मुखर चीखो से प्रकट पीडा जनक तरगो (इ०पी०डब्लू) से पृथ्वी काप उठती है और भूचाल आ जाता है।

स्मरण पर आक्रमण

ज्ञानमयी मेधा धर्ममयी कर्मणा परस्पर सघ समन्वय रूपी वाचना को अगीकार करने वालो मे से निकल कर कुछ लोग विधर्मी बन गये थे। उन्होन बुद्ध की दर्शनीय मूर्तियो पर चढाई कर दी। सारा ससार हतप्रभ होकर दखता रह गया ओर अफगानिस्तान मे धर्मान्धता की मदहोश आधी ने इतिहास की अमूल्य धरोहरो का टुकडे टुकडे कर दिया। हिन्दूकुश की पर्वत श्रृखला मे पिछले दो हजार वर्ष से अपलक निहार कर विश्व को शान्ति व सहिष्णुता का सदेश देने वाले भगवान बुद्ध की अति विशालकाय मूर्तियो पर राकेट लान्चर व तोप आदि अस्त्रा स आक्रमण करके धराशायी कर दिया गया। केवल इसलिए न कि वे वयस्वी थीं – परमवयस्वी थीं। तुम उनके नीचे बौने थे भुनगे थे तुम्हे किसी का वयस्वी होना सहन नहीं। वास्तव मे वे पत्थर नहीं टूटे आक्रमणकारियो ! तुम्हे पता होगा तुम्हारे इस कुकृत्य से न जाने कितने करोडो मानवो के ह्रदय टूट गये होगे। तुमने हम वयस्वी जनो के दिलो को दहला दिया पिघला दिया और आसुओ मे बहा दिया।

तहलका की प्रहलिका

तहलका की प्रहलिका थी तो वह पहेली ही किन्तु दर्पण बन गयी देश मे लम्बे समय से न्यून उच्च स्तरो पर व्याप्त भ्रष्टाचार की। 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' (यजुर्वेद) त्याग पूवक भोग की रचना का जब तक प्रचार एव परिपालन नहीं होगा तब तक इस महामारी का उपचार [illegible] जहा त्यागमय सदुपयोग के स्थान पर भोग उपभोग और सम्भोग का ही प्रचार होता हो – वहा पर कोई अनाचर व अत्याचार असम्भव नहीं। यहा तो बडे बूढो को भी काम वासना व्यूह मे इसलिए फसाया जा रहा है कि जब वे स्वय इसमे लिप्त रहेगे तो भला ओरो को टोकेगा कौन ? रोकेगा कौन ? अमेरिका म वायग्रा भारत मे इसकी अनुकृति महाताकत के विक्रय से यही सब कुछ तो किया जा रहा है। यह सभी कुछ देखकर वयस्वी वेदना स व्यथित हो उठते ह। यहा भी विज्ञान के ज्ञान कम समन्वय क असन्तुलन एव सामजस्यहीन विद्रूपता के दृश्य उपस्थित होते है। कहीं कोई बिच्छुओ की लम्बी पक्ति जा रही थी। किसी ने एक बिच्छू स पूछा तुम्हारा नेता कौन है ? बिच्छू बोला–आप किसी भी बिच्छु की दुम पर अगुली रखकर देख लो उसी का डक बता देगा कि नेता कौन ह। अथात यहा पर सभी एक से बढकर एक नेता ह। इसी प्रकार हम किसी भी दिशा – दशा या क्षेत्र मे चले जाए तो हर हलका तहलका से भरा मिलेगा। हम वयस्वी देखते हैं सोचते है और रो उठते हैं। सन्त कबीर भी हमारे साथ अपना स्वर मिला देते हैं – सुखिया सब ससार खाबे औ सोबे। दुखिया दास कबीर जागे औ रोबे।। एकहि साधे सब सधे सब साधे सब जाय के अनुसार चलो। वेद हमे ढाढस बधाते हुए कहता है तन्मे मन शिवसकल्पमस्तु (यजुर्वेद) अर्थात हर मनुष्य का मन कल्याणकारी विचारो वाला बन जाए। हमारा रुदन रूककर मुस्कान मे बदल जाएगा और ससार सत्यम शिवम सुन्दरम सा रम्य हो जाएगा क्योकि किसी – [illegible] – [illegible] तो धरती धरा। विचारो स गिरता तो मानव गिरा।

– वरेण्यम एम०आई०जी० ६५ पी अवन्तिका कालोनी (ए०डी०ए०) रामघाट रोड अलीगढ

प्राण और मन

कमलेश कुमार आर्य अग्निहोत्री

दार्शनिकों के कथनानुसार मन और प्राण सूक्ष्म शरीर के अंग होने के कारण हम जीवात्मा और स्थूल शरीर के साथ संयोग होते ही ये सक्रिय हो जाते है तथा मुक्ति पर्यन्त हमारे साथ रहते है। जन्म जन्मान्तरो के शुभाशुभ सस्कारो से युक्त इस जड मन को वेद ने बहुत शक्तिशाली बताया है। श्रीमदभगवद गीता के अनुसार जीवात्मा के लिए मन ही बन्धन और मुक्ति का कारण है। अवस्था भेद की दृष्टि से मन जागृत और स्वप्न मे तो जीवात्मा का साथ देता है किन्तु प्रगाढ निद्रा मे सर्वथा निष्क्रिय हो जाता है जबकि प्राण शरीर मे जीवात्मा का वास रहता है तब तक निरन्तर (प्रति क्षण) सक्रिय रहा करता है।

प्राण और मन को अपने अनुकूल तथा नियन्त्रित बनाये रखना हमारे लिए बहुत आवश्यक है। क्योकि अन्य योनियो मे तो जीवात्मा को प्राण और मन के महत्त्व का लेशमात्र भी ज्ञान नही रहता यह सुविधा तो केवल मानव तन मे ही प्राप्त है। अब सर्वप्रथम प्राण का हमारे तन मे क्या महत्त्व है मै यह बता रहा हू। छान्दोग्योपनिषद के ऋषि ने अलंकारिक ढग से वर्णन करते हुए तन मे प्राणो की महत्ता पर बहुत ही सुन्दर प्रकाश डाला है कि ससार के सभी प्राणियो का जीवन प्राणो पर ही स्थिर है। यद्यपि शरीर मे सभी इन्द्रियो का अपना अपना महत्त्व है परन्तु प्राणो के अभाव मे इनका कोई मूल्य नही। यदि आख नाक कान प्राणी हाथ पाव मन आदि इन्द्रिया हमारा साथ न दे तो भी हम जीवित रह सकते है किन्तु प्राणो के असहयोग से जीवित रहना असम्भव है। तभी तो मृतक के लिए कहा जाता है इसका प्राणान्त हो गया।

अब प्राणो का आधार क्या है ? यह भी सुन लीजिए इसी उपनिषद मे अन्न को प्राणो का आधार बताया गया है। अन्न से अभिप्राय है फल दूध मेवा जल शाकपात अनाज आदि समस्त सेवनीय पदार्थ। ये प्राण रक्षा के लिए आवश्यक है। जो शुद्ध और पवित्र होने चाहिए अन्यथा शारीरिक विकार उत्पन्न होने से प्राणो का सतुलन बिगड जाता है। इसके अतिरिक्त प्राणो को नियन्त्रित और अनुकूल बनाये रखने मे प्राणायाम भी बहुत सहायक है। ससार का प्रत्येक प्राणी अपने स्वाभाविक ज्ञान के अनुसार प्राणायाम करता है। हम बुद्धिमान प्राणियो को तो इस ओर विशेष ध्यान देना ही चाहिए। नियमित रूप से प्राणायाम करने वालो को कभी हृदय रोग नहीं होता।

इस सन्दर्भ मे यह भी आवश्यक है कि हम अपने स्वास्थ्य का पूर्ण ध्यान रखते हुए चिन्ता भय क्रोधादि एव अमर्यादित भोगो से बचे। अर्थात हमारा मन शिव सकल्पो वाला हो जिससे कि हम विषय विकारो की ओर प्रवृत्त न हो। दूषित मन चञ्चल और विषय वासनाओ का घर हुआ करता है। विलासी और क्रोधी व्यक्ति अपने प्राणो का व्यर्थ व्यय करके असमय मे ही काल के ग्रास बन जाते है। प्राणो की क्षति एव सुरक्षा का होना मन पर बहुत कुछ निर्भर करता है और मन की शुद्धि के लिए आहार विहार–व्यवहार की पवित्रता अति आवश्यक है। मैं आपको बता चुका हू अन्न बोला करता है आदमी नहीं। मुह नेत्र कर्ण नासिका द्वारा जो भी हम ग्रहण करते है उसी के अनुसार हमारा मानस बनता है।

मन का प्राणो के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। शरीर के पञ्चकोषो मे प्राणमय और मनोमय कोष अत्यन्त निकट है। अत प्राणायाम के द्वारा मन पर नियन्त्रण किया जा सकता है। इसके लिए धैर्य बहुत आवश्यक है क्योकि जन्म जन्मान्तरो के मन पर अंकित सस्कार शीघ्र ही नही मिटाये जा सकते। मन रूपी केसेट का अन्त मुक्ति से पूर्व नही आया करता। इस पर अंकित जिस सस्कार का जब उदय होता है तब मनुष्य की प्रवृत्ति वैसी ही हो जाती है। अत पूर्ण पुरुषार्थ द्वारा हमे पूर्व संचित सद्प्रवृत्तियो की रक्षा करने और दुष्प्रवृत्तियो के प्रभाव से बचने का यत्न अवश्य करना चाहिए।

हमे सर्वाधिक शक्तिशाली सेवक मन ही मिला है यदि यह मित्र बन जावे तो परमात्मा की अनुभूति कराने तक हमारा साथ देता है और शत्रु होने पर हमारे लिए महाविनाशकारी हो जाता है। इसी प्रकार प्राणो का महत्त्व है यदि ये हमारा साथ छोड दे तो हम निश्चय ही मृत्यु के ग्रास बन जाते है। जीवन का लक्षण प्राण ही है यही कारण है कि वेदमाता हमे मन और प्राणो के प्रति विशेष सावधान करते हुए सम्बन्धित उपयोगी पदार्थो साधनो का उपभोग मर्यादित होकर करने अर्थात विषय जन्य वासनाओ के दास न बनने का उपदेश दे रही है। ऐसा तभी सम्भव है जब मन पवित्र और नियन्त्रित हो।

सीमा तक बहने वाली नदी का जल सुखदायी माना जाता है किनारे तोड कर बाहर आया हुआ पानी तो विनाशकारी ही होता है। कहते है अग्नि–जल और मन नियन्त्रित ही हितकर हुआ करते है अनियन्त्रित होने पर ये घातक सिद्ध होते है। भोजन के अतिरिक्त हमारे देखने सुनने तथा पढने आदि का भी मन पर बहुत प्रभाव पडता है।

वर्तमान के वातावरण को देखते हुए हमे भद्र दर्शन भद्र श्रवण और उत्तम साहित्य पठन की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है अन्यथा मानवीय गुणो की रक्षा होना कठिन है।

अनुभवी विद्वानो का कहना है कि निर्दोष मन वाला व्यक्ति ही निर्भीक हुआ करता है उसे किसी का कभी कोई भय नहीं होता विद्वान यह भी कहते है कि तन की अपेक्षा मन का रोग अधिक घातक होता है। सबल मन वाला निबल तन मे भी सुखी रह सकता है किन्तु जिसका तन सबल और मन निर्बल है वह जीवन मे कभी उन्नति नही कर पाता। मन इन्द्रियो का स्वामी कहलाता है। अत दूषित मनवाला व्यक्ति अपनी इन्द्रियो पर सयम नही रख सकता यह तथ्य निर्विवाद है योगीराज भगवान श्रीकृष्ण ने अपने प्रिय सखा अर्जुन को अभ्यास और वैराग्य के द्वारा चञ्चल मन पर नियन्त्रण करने का उपदेश दिया है। वेद प्रतिपादित विचारो का प्रचार–प्रसार ऋषि शैली मे न होने के परिणामस्वरूप आज अधिकाश मनुष्यो की मानसिक अवस्था ठीक नही है इसलिए सभी विद्वानो को इस ओर ध्यान अवश्य देना चाहिए।

वर्तमान मे ईश्वर धर्म आचरण व्यवहार पूजा पाठ सम्बन्धी जो वेद विरुद्ध मान्यताए प्रचलित है उनका प्रमुख कारण मन पर अंकित सस्कार ही है। मेरा अपना चिन्तन यह है कि मन को सुसकारी बना कर अज्ञान अविद्या अन्धकार जन्य पापाचार से अर्थात हर प्रकार के दुर्व्यसनो दुरितो से परमात्मा के अमृत पुत्र मानव को मुक्त किया जा सकता है। विकृत मन प्राणरक्षा मे सहायक नही होता अत सुखमय दीर्घजीवन के लिए मन की पवित्रता का ध्यान रखना ही चाहिए। मन की अनुकूलता लोक और परलोक की सिद्धि मे आवश्यक मान कर मनीषियो ने कहा है यदि मन शुभ सकल्पो से युक्त नही है ते चाहे कोई कितना भी पूजा–पाठ भजन कीर्तन करे लाभ नही होगा। सन्त कबीरदास जी महाराज ने कहा है –

कबीर मन तो एक है चाहे जिधर लगाय।
चाहे प्रभु की भक्ति कर चाहे विषय कमाय।।

हम अपने मन की स्वच्छता और पवित्रता के प्रति सदैव सजग रहे इसे विषय विकारो के अधीन न होने दे जिससे कि जीवन के आधार प्राणो की रक्षा करते हुए दीर्घ जीवी हो सके।

मैंने आज मन और प्राणो की महत्ता पर जो संक्षिप्त जानकारी दी उसे अपने चिन्तन का विषय बनावे। मेरा विश्वास है आप इन कल्याणकारी मान्यताओं को अपना कर अवश्य ही सफल हो सकते हैं।

अन्त मे मै पुन निवेदन करता हू आप अपने मन और प्राणो का सदुपयोग ही करे। परमेश प्रभु ओ३म हमे शक्ति भक्ति प्रदान करे जिससे कि हम अपना जन्म सफल करके ही इस पवित्र मानव तन को छोडे।

वर्तमान मे ईश्वर धर्म आचरण व्यवहार पूजा पाठ सम्बन्धी जो वेद विरुद्ध मान्यताए प्रचलित है उनका प्रमुख कारण मन पर अंकित सस्कार ही है। मेरा अपना चिन्तन यह है कि मन को सुसकारी बना कर अज्ञान अविद्या अन्धकार जन्य पापाचार से अर्थात हर प्रकार के दुर्व्यसनो दुरितो से परमात्मा के अमृत पुत्र मानव को मुक्त किया जा सकता है। विकृत मन प्राणरक्षा मे सहायक नहीं होता अत सुखमय दीर्घजीवन के लिए मन की पवित्रता का ध्यान रखना ही चाहिए। मन की अनुकूलता लोक और परलोक की सिद्धि मे आवश्यक मान कर मनीषियो ने कहा है यदि मन शुभ सकल्पो से युक्त नहीं है ते चाहे कोई कितना भी पूजा पाठ भजन कीर्तन करे लाभ नहीं होगा।

कुछ सीधी-सादी बातें जो ध्यान में नहीं आती

— सिद्धराज ढडढा

कुछ ऐसी सीधी–सादी बाते है जा हम पढे लिख लोगो के अक्सर ध्यान म नही आती। ध्यान मे आन पर शायद उन बाता का भूल जाना ही हम अपने लिए ठीक मानते है क्योकि अगर हम उन बातो के फलित को ठीक से समझ ले त शायद वे हमार जीवन क शान्त प्रवाह मे खलबली पेदा कर दे।

जिन्दा रहन के लिए अपना भौतिक जीवन ठीक से चलान के लिए जिन वस्तुओ की हमे रोज जरूरत होती है वे किसी न किसी रूप मे हमे धरती से ही ओर श्रम के द्वारा प्राप्त होती है। उन वस्तुओ को पेदा करने मे अगर हम कोई योगदान नहीं करते या अपने श्रम द्वारा उत्पादित किसी दूसरी आवश्यक वस्तु का दूसरो द्वारा इसी प्रकार उत्पादित वस्तु से विनिमय करक या उनकी जीवनोपयोगी कोई सेवा करके अपनी आवश्यकता पूर्ति नहीं करते तो उस हद तक हम परोपजीवी होकर जीते हैं किसी न किसी दूसरे के श्रम का शोषण ही करते है।

धरती माता इतनी उदार है कि थोडी सी सवा के बदले वह हमे अनन्त फल देती है। गेहू का एक दाना हम बात है ता बदल म हजार ऊच सो दाने हमे मिलते है। आम की एक गुठली बोते है तो पीढियो तक हर साल वह वृक्ष हमे सैकडा फल देता रहता है। यह होते हुए भी यह कैसे आश्चर्य और विडम्बना की बात हे कि फसल पैदा करने वाले या आम आदि लगाने वाले अधिकतर किसान और उनके परिवार आज अक्सर भूखे सोत हैं ?

प्रकृति की योजना जीवन के लिए है – समाज–जीवन बिना कठिनाई के निरन्तर अक्षुण्ण चलता रह इसके लिए हे – कष्ट सहने या मृत्यु क लिए नही है। वास्तव मे ता मृत्यु प्रकृति के जीवन–चक्र का ही एक अनिवाय अग है। सहज और स्वाभाविक मृत्यु से नए जीवन का प्रारम्भ होता हे। लेकिन अभाव स किसी की मृत्यु हो यह प्रकृति क विरुद्ध है। प्रकृति क ससाधन पृथ्वी के हर प्राणी की (केवल मनुष्य की ही नही) आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए पर्याप्त हैं हालाकि व एक के भी लोभ–लालच की तृप्ति क लिए पर्याप्त नही है।

प्रकृति का एक चक्र है जिसे अगर हम समझ ले और समझकर उसके अनुसार चले तो कभी हमे अभाव या वस्तुआ की कमी न हो। उदाहरण के लिए खेत मे हल चलाकर किसान और किसान का बैल दोनो पृथ्वी की सेवा करते है। उस सेवा के फलस्वरूप जा फसल आती है उससे दोनो का जीवन चलता हे वह दोनो के लिए पर्याप्त होती है। फसल मे जो दाना होता है वह मनुष्य की भूख बुझाता है और बचा हुआ चारा या भूसा गाय–बैल की। मनुष्य और पशु इन चीजो से अपने शरीर के लिए आवश्यक और पशु इन चीजो से अपने शरीर के लिए आवश्यक पाषण लेकर शेष जो गोबर या मल मूत्र के रूप मे विसर्जन करते है वह फिर धरती का खाद्य बनता ह जो धरती की उवरा शक्ति को कायम ही नहीं रखता बल्कि उस बढाता भी है। आलस्य या ना समझी के कारण इस प्राकृतिक चक्र को जब हम तोड देते है – मल मूत्र गोबर को खाद के रूप म काम नहीं लेत नष्ट हाने दत हे तब धरती की उर्वरा शक्ति नष्ट हो जाती है और तुम ... अभाव के शिकार हात ह। फिर धरती की क्षति पूर्ति के लिए हम कृत्रिम रासायनिक खाद का उपयोग करके दोहरा नुकसान करते है – प्रकृति को और साथ ही धरती की उर्वराशक्ति को नष्ट करते है।

प्रकृति का जीवन चक्र निरन्तर और अबाध चलता रह इसके लिए यह जरूरी है कि अव्वल ता हम प्रकृति से उतना ही ले जितना आवश्यक हो अधिक नहीं। दूसरे हमारे उपभोग के कारण होने वाली प्रकृति की क्षति को हम पूरा करे। हमारी आवश्यकताआ की पूर्ति के लिए हम प्रकृति स जो लेते है उसका बदला अगर हम नहीं चुकाते अर्थात किसी न किसी रूप मे प्रकृति की उस क्षति की पूर्ति नही करते तो हम प्रकृति के चक्र को तोडते हैं प्रकृति के नियम मे बाधा पहुचाते हैं। परिणाम स्वरूप अभाव गरीबी आदि समस्याए खडी होती हैं। जो प्रकृति से लेता है लेकिन उसका बदला नहीं चुकाता उसे गीता मे चोर कहा है।

ईशावास्य उपनिषद् ने भी –

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृध कस्यस्विद् धनम

के जरिए यही कहा है – त्याग पूर्वक भोग करो किसी दूसरे क धन की यानी उसके द्वारा अपने श्रम से पैदा की हुई वस्तु की कामना (इच्छा) मत करो।

हम कोई न काइ उत्पादक शरीर श्रम नही करते या उत्पादन म सहायक होने वाली काइ सेवा नहीं करत उस हद तक हम समाज की चोरी ही करते हे विषमता गरीबी अभाव आदि समस्याए खडी करने क अपराधी होते है आज तो हम प्रकृति स या समाज से अधिक से अधिक लेने उनका अधिक से अधिक दोहन करने पर वापस श्रम या सेवा के रूप मे उन्हे कम से कम देने की वृत्ति को ही प्रगति का बडप्पन का चिन्ह मानते हैं। इतना ही नही जो किसान है जो असली उत्पादक है उसे और उसके श्रम को अकुशल कह कर उसे कम से कम पाने का हकदार मानते हैं और अपने–आपको जो उत्पादक काम नहीं करते उनको जितना अधिक से अधिक वे ऐठ सके उतने का हकदार मानते है।

श्रम और सेवा प्रकृति के नियम है – जीवन के आधार हैं निठल्लापन नही। उसी तरह परस्पर सहयोग जीवन का आधार है न कि परस्पर होड। सयम और सादगी जीवन के पोषक तत्त्व है भोगविलास नही। भोगविलास कई सामाजिक समस्याओ का जन्म दाता हे अत वह असामाजिक प्रवृत्ति है मृत्यु की ओर ले जाने वाला कदम है। सार यह है कि श्रम स्वावलम्बन सहयोग सेवा और सयम (सादगी) व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन को धारण करने वाले तत्व है निठल्लापन परावलम्बन होड शोषण तथा भोगविलास मृत्यु की ओर ले जाने वाले तत्व है तथा सामाजिक दृष्टि से अपराध है।

अगर ये सीधी–सादी बाते हमारे समझ मे आ जाती है तो क्या यह हमारा कर्त्तव्य नही हो जाता कि हम अपने जीवन मे उस दिशा मे परिवर्तन करे कदम बढाए। कल नही आज से ही उत्पादक शरीर–श्रम सेवा और सादगी को जीवन का अग बनाए।

— २६ सवादनगर नवलखा
इन्दौर ४५२००१

स्वास्थ्य चर्चा

गर्मी के मौसम में स्वास्थ्य सुरक्षा

– डॉ० सपन जैन

गर्मी के मौसम मे तेज धूप मे घूमने पर 'हीट क्रम्प्स हीट प्रोस्ट्रेशन' और लू लग जाना एक सामान्य घटना है। उन देशो म जहा गर्मी अधिक पडती है वहा तो लू लग जाना एक आम बात है। लू लगने को सन स्ट्रोक हीट स्ट्रोक इत्यादि नामो से जाना जाता है। गर्मी के मौसम म जरा सी असावधानी से मनुष्य इन घातक बीमारियो की चपेट मे आ जाता है।

हीट क्रम्प्स गर्मी के मौसम मे जल वायुमण्डल का तापमान शरीर के तापमान से अधिक हो जाता है तब शरीर बाहरी वातावरण के अनुकूल बने रहने के लिए अर्थात शरीर का तापमान न बढे इसके लिए स्वाभाविक क्रिया करता है अर्थात शरीर मे पसीना आना शुरू होता है। इस क्रिया मे त्वचा मे रक्त वाहिनिया फैल जाती है जिससे रक्त का प्रवाह अधिक होने लगता है। स्वेद ग्रथिया सक्रिय हो जाती हैं तथा शरीर से पसीना आना शुरू हो जाता है। यह पसीना बाहर आकर वायु के सम्पर्क म आने से भाप बनकर उड जाता है। इस क्रिया मे पानी [illegible] ऊष्मा का व्यय होता है। जिससे शरीर ठण्डा होता है। धूप मे अधिक देर तक रहन स अधिक पसीना आता है औ[illegible] पसीने के साथ नमक की कमी होने से मास पेशियों में अकडन होने लगती है। यह अकडन पैर की पिण्डलिया और पेट में अधिक होती है। इसे हीट क्रम्प्स कहते हैं।

हीट प्रोस्टेशन जब मास पेशिया मे अकडन दर्द एव तेज पसीना आन के साथ ही चक्कर एव कमजोरी आने लगती है चेहरा निस्तेज होने लगता है एव बेहोशी आने लगती है। नाड़ी की गति एव श्वास गति भी कम होने लगती है। परन्तु शरीर का तापमान सामान्य बना रहता हे। बाहर की गर्मी से शरीर के तापक्रम का सतुलन बनाये रखन क लिए रक्त का प्रवाह त्वचा की ओर अधिक होने लगता है। इससे हृदय को जप करने के लिए कम रक्त मिलता है इस स्थिति मे मस्तिष्क को पर्याप्त रक्त न मिलने से कमजोरी एव चक्कर आने लगता है। इसे हीट प्रोस्ट्रेशन कहते हैं।

हीट क्रम्प्स एव हीट प्रोस्ट्रेशन का उपचार

जब मास पेशियो मे अकडन एव दर्द होने लगे तो चुटकी भर नमक पानी मे घोलकर पी लेना चाहिए। इससे अकडन मे तुरन्त राहत मिलती है। यदि ऐसा नहीं किया गया तो व्यक्ति हीट प्रोस्ट्रेशन की स्थिति मे जा सकता है। जो व्यक्ति इस स्थिति मे आ गया हो उसे छाव मे लिटाकर ठण्डे पानी स भीगे [illegible] से शरीर पोछना चाहिए [illegible] शरीर पर पखे से तेज हवा करनी चाहिए। इससे हृदय की ओर रक्त प्रवाह बढता है यदि व्यक्ति होश मे आ गया हो तो उसे नमक का घोल या इलक्ट्राल का घोल पीने को दे। यदि रोगी होश मे न हो तो रोगी का नमक के घोल का ऐनीमा दे। यह दोनों स्थितिया 'लू लगने के पूर्व की है।

लू (हीट स्ट्रोक) गर्मी जब अपनी चरम सीमा पर होती है तो हवा उतनी गर्म एव शुष्क रहती है कि सुरक्षित स्थान पर रहने पर भी झुलसा देने वाली गर्मी महसूस होती है। हमारे देश मे मुख्यत उत्तर पूर्वोत्तर और मध्य भारत मे भयानक गर्मी पडती हे। मई जून से यह गर्मी अपना विकराल रूप धारण कर लेती है।

लू क्यों कैसे लगती है हमारे शरीर में बहुत ही उच्च स्तर का तापमान कट्रोल सिस्टम है। यही कारण है कि वातावरण का तापमान चाहे कैसा भी कम ज्यादा रहे मानव शरीर का तापमान लगभग एक सा बना रहता है। मानव शरीर के इस तापमान कट्राल सिस्टम मे तापमान के उतार चढाव का सहने की पर्याप्त क्षमता है परन्तु इसकी भी एक सीमा रहती [illegible] लू की गर्मी बहुत अधिक हो जाती ह इसे हमारा शरीर सह नहीं सकता तब लू लग [illegible] जब हमारा [illegible] तापमान को कट्रोल करता है जब हमारे शरीर से पसीना निकलता है पसीने के साथ लवण की कुछ मात्रा भी शरीर स निकलती है। पसीने से शरीर को ठण्डक प्राप्त होती हे। परन्तु बार बार अधिक पसीना निकलने से शरीर मे पानी एव लवण की कमी हो जाती ह जिसम शरीर मे रक्त सचार म बाधा उत्पन्न होती है और शरीर के तापक्रम मे वृद्धि हो जाती हे तत्पश्चात लू लग जाती है। साधारण रूप स लू किसी को भी अपनी चपेट मे ले सकती हे परन्तु शराबियो डायबिटीज क रोगी चम रोगी स्थूल वृद्ध दुर्बल रोगियो का लू लगन का खतरा रहता है।

लू से बचने के उपाय :

- गर्मी क दिनो मे मुहल्ल या गली मे घूमते समय नगे बदन न रहे वस्त्र पहने रहे ताकि पसीना आपके शरीर को ठण्डा किए रहे।
- गर्मियो मे नाक कान मुह गर्दन को धूप से बचाए। धूप मे चलते समय छतरी का प्रयोग करे।
- खाली पेट (भूखे प्यासे) घर से बाहर न निकले। आखो की सुरक्षा हेतु धूप का चश्मा लगाए।
- गर्मियो मे सिथेटिक कपडो का प्रयोग यथासम्भव न करे। जहा तक हो सके सूती कपडे या खादी के कपडो का प्रयोग [illegible] क्योंकि य कपडे उष्णता क अवरोधक होते है। काले या अन्य गहरे रगो के कपडे भी कम ही पहने क्योंकि गहरे रग ऊष्मा को अवशोषित करते हैं। साधारणत सफद या हल्के रग के ही कपडे पहन।
- भोजन म कच्चे प्याज का सेवन अवश्य करे क्योकि प्याज में लू से बचाव करने का चमत्कारिक गुण ह।
- गर्मियो मे दही एव छाछ का सेवन पर्याप्त मात्रा मे करे।
- गर्मियो म तरल लेकिन ठण्डे पदार्थों का सेवन अधिक करना चाहिए।
- यह सावधानिया बरतकर केवल आप 'लू से ही नहीं अपितु गर्मियो में होने वाली अन्य बीमारियो से भी बच सकते हैं।

लू लगने के लक्षण :

- लू लगने की शिकायत अचानक होती है विशेष लक्षण के रूप मे रोगी को पसीना नहीं आता या पसीना निकलना बद हो जाता हे। इसी कारण शरीर का तापमान एकाएक बहुत ज्यादा बढ जाता है यह तापमान १०५ डिग्री [illegible]इट या इससे भी अधिक हो सकता है। तेज बुखार के साथ सिर दर्द होता है।
- नाडी [illegible] गति तीव्र [illegible] जाती हैं।
- शरीर मे जलन की अनुभूति होती है परन्तु विशेष रूप से त्वचा नेत्रगोलक एव कान के भीतरी भाग मे जलन तीव्र होती है।
- चेहरे का रग लालिमा युक्त हो जाता है। नेत्र की पुतलिया फैलने लगती हैं।
- त्वचा गम एव शुष्क हो जाती हे।
- चक्कर सिरदर्द दस्त एव मितली (उल्टी) इत्यादि की शिकायत होने लगती हे।
- रोगी शरीर म खिचाव तथा हाथ पेर मे ऐठन अनुभव करन लगता है। शरीर मे पानी की कमी और अत्यधिक ताप के कारण रक्त प्रवाह धीमा पड जाता हे जिससे नसो मे खिचाव होने लगता है कभी कभी रक्त प्रवाह रुक जाता है जिससे नसे फट जाती है इस अवस्था में रोगी को बचा पाना सम्भव नहीं हो पाता।
- रोगी को बार बार रुक-रुक कर मूत्र त्याग की शिकायत होती है। पेशाब मे जलन होती है।
- लू के लक्षण दिखाई देते ही तुरन्त योग्य चिकित्सक से सलाह ले।

लू लगने का उपचार :

लू लगने पर यदि तुरन्त उपचार न किया जाए और लापरवाही की जाए [illegible] मृत्यु भी हो सकती है। इसलिए लू लगने पर चिकित्सा के उपाय तुरन्त करना चाहिए।

- यदि किसी का लू के लक्षण प्रकट हो तो तुरन्त उसे शीतल स्थान मे लिटा दे शरीर के कपडे कम कर दे माथ पर ठण्ड पानी की पटटी रखे। शरीर पर गीली चादर या टावल लपटकर पखा या कूलर चला द।
- लू लगे रोगी का ठण्ड पानी के टब मे इस तरह से लिटा दे कि उसका सिर न डूबे। सिर पर लगातार ठण्डा पानी डालते रहें। थोडे–थोडे समय पर रोगी के शरीर का तापमान लेते रहे। यदि १०० डिग्री से नीचे आ जाए तो रोगी को टब से निकाल ले। यदि पुन तापमान बढे तो फिर से ठण्डे पानी के टब मे लिटा दे। यदि आवश्यक हो तो सलाईन शुरू करवा दे। पैर व हाथ की मालिश नीचे से ऊपर की दिशा मे करे जिससे रक्त प्रवाह हृदय की ओर अधिक हो।
- ज्वर के साथ ही रोगी का ब्लड सर्कुलेशन पर भी कट्रोल रखना भी आवश्यक है इसके लिए रोगी के शरीर पर बकरी के दूध से मालिश कर क्योकि बकरी के दूध की तासीर ठण्डी होती है। हाथ–पैर क तलवो पर प्याज के रस की मालिश करे प्याज क रस मे गर्मी को नष्ट करने की चमत्कारिक गुण होता है। प्याज का रस मुख द्वारा भी सेवन करा सकते है।
- दिन मे दो तीन बार एक-एक ग्लास कच्चे आम का पना पिलाने से रोगी शीघ्र स्वास्थ्य लाभ करता है। यह लू से बचाव की अचूक एव सर्वश्रेष्ठ औषधि है।
- जौ भी 'लू के बचाव म काफी हद तक सहायक है। जौ का आटा और पिसी हुई प्याज मिलाकर शरीर पर लेप करने स शीघ्र आराम मिलता है।
- नींबू के रस मे मिश्री मिलाकर पीने स भी रोगी को लाभ मिलता है।
- पानी मे शुद्ध शहद और ग्लूकोज मिलाकर रोगी को बार बार सेवन कराये।
- लू लगने पर आहार मे हल्का भोज एव मौसमी सतरा नींबू के रस का सेवन अत्यधिक लाभप्रद है। तरबूज खरबूज आवला भी रोगी के लिए हितकर है।
- रोगी को चाय काफी जैसे उत्तेजक पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए।
- एक बार लू लगने पर रोगी को बार बार लू लगने की सम्भावना रहती है। इसलिए ऐसे व्यक्ति को धूप गर्म हवा एव गर्मी क मौसम मे कडी मेहनत से अपने आपको यथासम्भव बचाना चाहिए। ◻

चमत्कारी औषधि से गायों के प्राण बचा रहे हैं आई0 जी0 शैलजाकांत मिश्र

– *शिव कुमार गोयल*

गाजियाबाद। पशुओ के घातक रोगो की रामबाण औषधि को केन्द्र सरकार से मान्यता प्राप्त हो गइ है। मेरठ के पुलिस महानिदेशक श्री शैलजाकात मिश्र ने इस चमत्कारी ओषधि के द्वारा खुरपका मुहपका जैसी घातक बीमारियो से ग्रस्त हजारो गाय बैलो के प्राण बचाकर पूरे देश मे कौतूहल पैदा कर दिया है।

श्री शैलजाकात मिश्र। पूज्य बाबा न वृन्दावन स्थित अपनी मचान से श्री मिश्र को दर्शन देते समय इस आयुर्वेदिक औषधि की जानकारी दी थी कि बीमार गाय बैल के शरीर पर गेरु से भगवान श्रीकृष्ण का तथा अर्जुन का नाम अकित करने के बाद इस औषधि को आटे की लोई मे मिलाकर दिया जाना चाहिए। हाल ही मे मेरठ जिले मे जब यह घातक बीमारी पशुओ मे फैली तो श्री शैलजाकात मिश्र ने गाव गाव मे पहुचकर इस आषधि का प्रयोग किया। उनके इस प्रयोग से हजारो गाय बैल मृत्यु के ग्रास बनने से बच गये थे।

पशुपालन विभाग उत्तर प्रदेश के निदेशक श्री ए० के० सिह ने श्री शैलजाकात मिश्र को पत्र लिखकर इस चमत्कारी औषधि के विषय मे जानकारी प्राप्त करने का अनुरोध किया है।

श्री शैलजाकात मिश्र ने बताया कि उन्होने निदेशक का पत्र मिलने के बाद आश्वासन दिया है कि वे इस चमत्कारी ओषधि का अपने खच से उपलब्ध कराने के लिए तैयार हैं। शैलजाकात मिश्र के अनुसार औषधि की एक गाली पर मात्र बीस से पच्चीस पैसे का व्यय भार आता है। न केवल उत्तर प्रदेश के समस्त रोगी पशुओ के लिए अपितु देश की भी सपूर्ण आवश्यकतानुसार उक्त ओषधि सर्वसबन्धित को निशुल्क उपलब्ध कराना मेरे लिए अत्यन्त सतोष व गौरव का विषय होगा।

उन्होने कहा कि निवेदन यह भी है कि मूक पशुओ की बीमारी एव मृत्यु से जो अपूरणीय क्षति प्रदश एव देश को हो रही है उसे दृष्टिगत रखते हुए इस दिशा मे परम प्राथमिकता के आधार पर काय किया जाना उचित हागा। पत्र मे पुलिस महानिदेशक ने औषधि दिए जाने की विधि का भी विस्तृत ढग से उल्लेख किया है। उन्होने बताया कि उक्त औषधि को गायो के खुरपका मुहपका रोग के लिए निर्दिष्ट किया गया था किन्तु गावश के अतिरिक्त भैसा एव भैस के साथ साथ घाडे बकरियों एव यहा तक कि हाथी का भी इसी निश्चित अनुपात मे दी गइ दवा से लाभ हाने की बात प्रकाश मे आई है। अतः आवश्यकतानुसार इन पशुओ के सम्बन्ध मे भी इस ओषधि का उपयोग किया जा सकता है।

ओषधि को जिस विधि से दिया जाना चाहिए वह भी निर्धारित किया गया है। उसमे परिवर्तन किसी भी दृष्टिकोण से उचित नहीं है। पीड़ित पशुओ को केवल एक बार ही औषधि दी जानी चाहिए भले ही पशु का आकार कितना ही बडा क्यो न हो। शैलजाकात मिश्र ने बताया कि भले ही कितने ही पशु हो सबकी औषधि । उनके पास उपलब्ध हैं।

श्री शैलजाकात मिश्र ने देवरहा बाबा से गो सेवा की प्रेरणा ली थी। वे गो सेवा के कार्य मे पूरी तन्मयता से लगे रहते हैं।

विराट आर्य महासम्मेलन एव विश्व कल्याणार्थ शान्ति यज्ञ

कार्यक्रम स्थल मैरिज होम, पाई बाग स्टेशन रोड भरतपुर (राज०)

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जनपद भरतपुर एक विराट आर्य महासम्मेलन एव विश्व कल्याणार्थ शाति यज्ञ दिनाक १ जून से ५ जून २००१ शुक्रवार शनिवार रविवार सोमवार मगलवार तक आयोजित कर रहा है। इस अवसर पर भव्य एव आकर्षक शोभा यात्रा २ जून २००१ शनिवार को भरतपुर नगर के मुख्य मुख्य बाजारो से होकर निकाली जायेगी।

यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी सुमेधानन्द जी कार्यकारी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली होगे। समारोह मे डॉ० ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी गुरुकुल के ब्रह्मचारीगण डॉ० धर्मवीर आर्य अजमेर स्वामी इन्द्रवेश भरतलाल शास्त्री हासी कु० भूपेन्द सिह भजनोपदेशक राजस्थान नरदेव आर्य भजनोपदेशक भरतपुर कु० पवित्रा शर्मा हाथरस एव वेदाचार्य कु० निष्ठा विद्यालकार तथा देश के उच्च कोटि के विद्वान साधु, सन्यासी भजनोपदेशक आदि भी पधार रहे है।

– *मगलदेव आर्य,*
मन्त्री

गजल

– *राधेश्याम पाण्डेय 'दीन'*

माना कि दिल सभी के पाषाण नही होते।
पर आदमी कभी भी भगवान नही होते।

उपमा का दुरुपयोग भले स्वार्थी करे
परमार्थी कभी भी अन्जान नही होते।

सूखे हुए अधर जब दिखने लगे जलद के
तो प्यासे मेढको के गुणगान नही होते।

सीमित सहानुभूति जिनकी भाषणो तलक
उनके वसुन्धरा पर सम्मान नही होते।

अभिलेख देश भक्ति के अब भी बता रहे
प्रतिशोध समस्या के समाधान नही होते।

जिस देश की नदियो मे चले कागजी नौका
उस मुल्क के कभी भी उत्थान नही होते।

वर्षो से खा रहे हम आश्वासनो के राशन
इससे परन्तु अपने कल्याण नही होते।

कुटियो मे दीन के चिराग क्यो न जल सके
उत्तर है कुर्सियो पर इन्सान नही होते।

– ***सण्डवा चण्डिका, प्रताप गढ (उ०प्र०)***

तीस हजार शहीद सैनिकों की स्मृति में विशेष यज्ञ

तीस हजारी न्यायालय के परिसर मे १८५७ के तीस हजार सैनिको की पुण्य स्मृति मे आर्यसमाज श्रद्धापुरी की ओर से हवन यज्ञ द्वारा मौन श्रद्धाजलि भेट की गइ। आर्यसमाज के प्रधान डॉ० सुन्दरदास ने कहा कि ऋषि दयानन्द जी ने स्वतत्रता के लिए नगर नगर ग्राम ग्राम घूमकर स्वतन्त्रता की जोत जलाइ थी। इसी स्वतत्रता रूपी जोत को लेकर मगल पाण्डे ने मेरठ से अपन तीस हजार सेनिको को लेकर इसी स्थान पर १० मइ १८५७ को अग्रेजो के विरूद्ध स्वतन्त्रता के लिए लडते हुए बलिदान हुए थे। इस न्यायालय का नाम इन्ही तीस हजार सैनिको के नाम से रखा गया है।

श्री दिनेश शर्मा जी मन्त्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा दिल्ली प्रदेश ने अपने भाव प्रकट करते हुए कहा कि इस बलिदान स्थली को तीर्थ स्थली का स्थान दिया जाए। श्री हरिकृष्ण गर्ग ने कहा कि यहा पर इन तीस हजर सैनिको के नाम पटटी का बोर्ड लगाया जाय और प्रस्ताव द्वारा यह माग की गई कि यहा एक राष्ट्रीय स्मारक का निर्माण किया जाए। आर्य समाज के मत्री श्री जितेन्द्र कपूर और श्री रामलाल असडी (पूर्व पार्षद) ने भी श्रद्धाजलि भेट करते हुए इस प्रस्ताव का समर्थन करते हुए सरकार से माग की कि यह कार्य सरकार को अवश्य करना चाहिए।

– ***अमूल्य ढींगडा***
ए० २१ ओल्ड क्वाटर्स रमेश नगर
नई दिल्ली १५

प्रवेश परीक्षा

प्राचीन आर्ष गुरुकुल वैदिक परम्परा से सञ्चालित गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ मे इस वर्ष प्रवेश परीक्षा २२ जून २००१ से ३० जून २००१ तक सम्पन्न होगी। प्रवेशार्थी छात्र की योग्यता ५वीं श्रेणी उत्तीर्ण लगभग १० वर्ष का स्वस्थ मेधावी और चरित्रवान होना अनिवार्य है। प्रवेशार्थी छात्र को प्रवेश परीक्षा मे उत्तीर्ण होने के लिए ६० प्रतिशत अक प्राप्त करना अनिवार्य है। प्रवेश परीक्षा मे छात्र को बौद्धिक एव शारीरिक दोनो ही परीक्षाए होगी जिसमे लिखित एव मौखिक २ चरणो मे परीक्षा सम्पन्न होगी। प्रवेशार्थी छात्र अपने साथ लेखनी और अपने पूर्व कक्षा की पुस्तको को साथ लाये तो परीक्षा लेने मे सुविधा रहेगी। अभिभावक निम्न पते से पत्र द्वारा सम्पर्क कर सकते है –

गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी)
भोला झाल मेरठ २५०५०१
(उ० प्र०) फोन ८०६६२

पृष्ठ ४ का शेष भाग

परमपिता परमात्मा का आदेश – मनुर्भव

प्रत्येक मानव का धर्म है मानवता। मानवता के दिव्यगुणो का वर्णन इस प्रकार ह। निर्भयता अन्त करण की शुद्धि ज्ञानयोग मे स्थिति दान दम यज्ञ स्वाध्याय तप सरलता अहिसा सत्य अक्रोध त्याग शान्ति चुगली का अभाव प्राणिया पर दया कृपा निर्लोभता कोमलता लज्जा अचपलता तेज क्षमा धैर्य पवित्रता द्रोह का अभाव और अभिमानी न होना। ये सब है भारत (भारत के नागरिक भारत की सस्कृति के अनुसार) दैवी सम्पदा को प्राप्त हुए मानव के अथवा मानवता के लक्षण है।

सस्कृति के हित कट जाय वो माथ मुझको दे
गरीबो को जो उठा ले वो हाथ मुझको दे।
तडप उठे देखकर पराई पीडा को
दिल वो देव दयानन्द सा नाथ मुझको दे।।

महर्षि दयानन्द मे. मानव के प्रति करुणा का भाव चरमोत्कर्ष पर था सन्यासी होने पर भी उन्होने ससार के जीवो को तथाकथित वैरागियो की भाति उपेक्षित कर दया और आनन्द के अमृत से वचित नही रखा सच तो ये है कि वह मानवता के उद्धारको मे इस दया और आनन्द का पात्र प्राणिमात्र को बनाकर वह मूर्धन्य स्थान के अधिकारी बन गये है।

अनूपशहर मे एक दुष्ट ने उन्हे विषयुक्त पान दिया चबान स पता लगा ता उन्हान न्यौलि क्रिया द्वारा वमन कर विष निकाल दिया। वहा सैय्यद मुहम्मद तहसीलदार आपका भक्त था। उसने हत्यारे को पकडकर बन्दीगृह मे डाल दिया। कुछ समय के बाद वह स्वामी जी की सेवा मे आया तो स्वामी जी ने देवसुलभ अप्रतिम दयालुता का परिचय देते हुए यह स्मरणीय वाक्य कहा कि मै ससार को कैद कराने नही आया हू अपितु कैद से छुडाने आया हू।

ऋषिवर ने जनहित के लिए गोकरुणानिधि के रूप मे यह खजाना सौंपा जहा उन्होने आर्थिक विश्लेषण करके गाय की उपयोगिता दर्शायी वहा उन्होने गाय को मूक असहाय पशुओ का प्रतिनिधि मानकर उनकी करुण पुकार भी लोगो के सामने रखी और उनके प्रति अत्याचार न हो एसी व्यवस्था करने का सदश दिया एव सस्कार विधि के रूप म ऋषि ने मनुष्य के लिए ससार मे किस प्रकार मनुष्य नर से नरोत्तम बन उसका आचरण कैसा हो इसके लिए उपयोगी आवश्यक निर्देशिका प्रस्तुत की। उस अनुपम ग्रन्थ का नाम सस्कारविधि है जिससे मनुष्य सस्कारशील बने तथा पशुत्व पाश से मुक्त होकर और मनुष्य त्व के गुणो से युक्त होकर अन्तिम अवस्था देवत्व को प्राप्त करे।

एक बार जर्मन के पत्रकारो ने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस से साक्षात्कार मे कुछ प्रश्न पूछे थे कि यदि ससार से अमेरिका समाप्त हो जाये तो क्या हानि होगी ? नेता जी ने जवाब दिया कि यदि अमेरिका समाप्त हो जाये तो विश्व की दौलत समाप्त हो जाएगी। पत्रकारो न पूछा यदि जर्मन नष्ट हो जाये तो क्या होगा ? नेता जी कहने लगे – यदि जर्मन नष्ट हो जाये तो दुनिया से विज्ञान समाप्त हो जाएगा। फिर पूछा गया कि यदि 'इराक समाप्त हो जाए तो ? तो उत्तर मिला कि इराक समाप्त हो जाएगा तो देशभक्ति समाप्त हो जाएगी। क्योकि इराक के लोग पहले से ही 'देशभक्ति मे प्रसिद्ध हैं। फिर पत्रकारो न पूछा कि यदि यूरोप समाप्त हो जाए तो फिर क्या हागा ? सुभाषचन्द्र कहते है कि दुनिया से सुन्दरता समाप्त हो जाएगी। पत्रकारो न पूछा कि विश्व से यदि इग्लेण्ड समाप्त हो जाए तो फिर ? नेता जी कहने लगे दुनिया से मक्कारी समाप्त हो जाएगी। अन्त मे पत्रकारो ने पूछा कि यदि भारत नष्ट हो जाए तो? तब नेता सुभाषचन्द जी कहते है कि यदि भारत समाप्त हो जाए तो दुनिया से मानवता सदा के लिए नष्ट हो जाएगी। दुनिया का मानवता का पाठ पढान वाली यह वेदिक सस्कृति है।

जिसको मेहनत से बहाना पसीना आता है।
फटा आचल दु खी दुर्बल का सीना आता है।।
चाहता और के जीने मे जो अपना जीना।
सच तो यह दुनिया मे उसको ही जीना आता है।।

परन्तु आज चारो ओर अशान्तता के बादल मडरा रहे है। जिधर ही देखो उधर त्राहि त्राहि माम की आवाज से आकाश गुजायमान हो रहा है। अपने प्रसिद्ध नाटक म महाकवि जयशकर प्रसाद ने प्रश्न उठाया था कि मानव मे क्या वह तन्तु है कि वह ऐसा जन्तु बन सके जो दुर्दान्त दानव हो इसकी मै कल्पना नहीं कर सकता किन्तु जिसकी कल्पना भी उनके लिए इतनी भयावही थी। आज मानव शरीर धारी दानव से भी दुर्दान्त बनकर न केवल उन्मुक्त घूम रहे वरन जिधर देखो हर तरफ लडाई झगडा कही धर्म के नाम पर तो कही सत्ता के नाम पर।

लडाई झगडे हर मुकाम पर
यहा तक कि लडे धर्म के स्थान पर।
यही हालत रही गर तो लडेगे मुर्दे कब्रिस्तान पर।।

कारण स्पष्ट है कि मनुर्भव इस दिव्य वैदिक आदेश की न कवल उपेक्षा की है अनदेखी भी की है वरन इसके प्रति हमारी आपराधिक सर्वथा अक्षम्य अवज्ञाशीलता रही है।

दुष्परिणाम यह है कि जिन लोगो के बारे मे स्त्री पूर्णत आश्वस्त थी कि उनकी दृष्टि इतनी पवित्र है जितना अपना उसका शरीर ही नही। उनसे भी आज वह अपनी अस्मिता की रक्षा की आशा नही कर सकती।

एक समय था घोर घने जगल मे जाती हुई महिला को जानवर से डर लगता था इसान से नही। शायद जानवर मुझे खा जाएगा इसान मेरी रक्षा करेगा। परन्तु आज स्थिति यह है कि घोर घने जगल मे प्रवश करती हुई महिला को जानवर से डर नहीं अपितु इसान से डर लगता है शायद जानवर उसकी रक्षा करेगा इसान आज भक्षक बन गया है।

आइये हम सब लोग मनुर्भव जनया दैव्य जनम इस दिव्य आदेश का पालन करे इसके मर्म को समझे मानव धर्म को अपना कर्म बनाये और यह सकल्प ले कि हम मानव बनेगे ऐसे मानव जो दानव का अस्तित्व भूतल पर नही रहने देगे। यदि हमारा यह सकल्प और इसके प्रति हमारी तैय्यारी निर्विकल्प हो तभी हम अपने आपको वैदिक धर्म का जय बोलने का अधिकारी बना सकते है।

श्रेयासि बहुविहनानि श्रेष्ठ कार्य मे विघ्न तो आते है उससे घबराना नही है ईश्वर का आदेश वेदवाणी का निर्देश उसका पूर्णत प्रचार प्रसार करने मे सलग्न हो जाये।

इस जिन्दगी मे बन्द कुछ ऐसा काम कर जा।
आया है इस जहा मे कुछ पैदा नाम कर जा।
निर्माणा के पावन युग मे हम मानव निर्माण न भूले।
स्वार्थ साधना की आधी मे वसुधा का कल्याण न भूले।

– आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी
नई दिल्ली

भक्तिमय वातावरण के लिए भजन सन्ध्या

पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मडल के तत्वावधान मे आर्यसमाज कीर्ति नगर मे एक मनोहारी भजन सध्या का आयोजन किया गया जिसमे प्रमुखत श्री देवदत्त आय न अपनी भजन मण्डली के साथ मधुर भजन प्रस्तुत किए इनके अतिरिक्त दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा की मन्त्रिणी श्रीमती शशि प्रभा ग्या तथा सभा मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य ने भी एक एक भजन प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम को आर्यजनता ने मत्र मुग्ध होकर सुना। आर्यसमाजो मे भक्तिमय वातावरण पैदा करने का ये एक अच्छा उपाय थ। इस कार्यक्रम का सचालन श्री वीरपाल विद्यालकार ने किया इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वदव्रत शर्मा उपमन्त्री श्री जगदीश आय श्री विमल वधावन श्री हरीश बत्रा तथा श्री तेजपाल सिह मलिक आदि भी उपस्थित थे।

शुद्धि सस्कार

राजकोट आय समाज महर्षि दयानन्द मार्ग हाथीखाना मे ता० १६/५/२००१ की सुबह १० बजे एक खोजा धर्म की लडकी नादीया बहादुरभाई हालाणी की शुद्धि करके हिन्दु धर्म मे दीक्षित करके उसकी शादी वैदिक विधि से सम्पन्न हुई। उसका नाम अमीषा रखा गया। सस्कार के समय कन्या के पिता बहिने व परिवार के सभी सदस्य थे। आय समाज के मत्री श्री रणजीत सिह परमार ने सत्यार्थ प्रकाश भेट देते हुए शुभ कामना की। प्रमुख श्री पपट भाइ चहान ने आशीर्वाद दिया वर कन्या ने भी वेदानुसार जीवन भ पचमहा यज्ञ करने का सकल्प लिया सस्कार प० विजय जी ने सम्पन्न कराया।

मन्त्री

दिल्ली मे आर्य वीरागना शिविर

दिल्ली प्रदेश आर्य वीरागना दल के तत्वावधान मे सचालिका श्रीमती उज्ज्वला वर्मा के नेतृत्व मे एक आर्य वीरागना शिविर का आयोजन १० जून से १७ जून तक आर्यसमाज मन्दिर सरस्वती विहार बी० ब्लाक मे किया जा रहा है। दिल्ली मे यह शिविर प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है। जिसमे १२ वर्ष से अधिक आयु की बच्चियो को वैदिक सिद्धान्तो और परिवार से सम्बन्धित रीति नीति की जानकारी दी जाती है।

आय वीरागना शिविर क समापन समारोह १७ जून को प्रात १० बजे होगा जिसमे केन्द्रीय रगन राज्य मन्त्री श्री जयसिगराव गायकवाड पाटील मुख्य अतिथि होगे।

श्री बाबा मस्तनाथ सस्कृत सस्थान गुरुकुल अस्थल बोहर रोहतक १२४००१ (हरियाणा) मे प्रवेश आरम्भ

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक स मान्यता प्राप्त इस सस्थान मे निम्नलिखित कक्षाओ मे नए प्रवेश आरम्भ है

कक्षा	प्रवेश योग्यता	प्रतिशत
१ आचाय (दो वर्ष)	शास्त्री या समकक्ष	५५
२ शास्त्री (तीन वर्ष)	बारहवीं या समकक्ष	५५
३ विशारद (दो वर्ष)	दसवीं या समकक्ष	५५
४ प्राज्ञ (दो वर्ष)	आठवीं या समकक्ष	प्रथम

नोट यहा लडके लडकियो के लिए आवास भोजन तथा पुस्तके निशुल्क है। कन्याओ के लिए छात्रावास की विशेष सुविधा है। प्रवेशार्थी सम्पूर्ण विवरण तथा पते सहित उपरोक्त पते पर प्राचार्य से पत्र द्वारा तुरन्त सम्पर्क करे। स्थान सीमित।

निशुल्क ध्यानयोग - वैदिक दम्पत्ति निर्माण सस्कार प्रशिक्षण शिविर

(रविवार दिनाक २४ जून से १ जुलाई रविवार, २००१ तक)

योग साधना निर्देशक पूज्य स्वामी धममुनि जी महाराज दुग्धाहारी मुख्याधिष्ठाता आत्मशुद्धि आश्रम।

शिविराध्यक्ष श्री प० फूल सिह जी आचार्य बौद्धिकाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्यवीरदल (उ० प्रदेश)

यज्ञ ब्रह्मा श्री आचार्य भद्रसैन जी शास्त्री रोहतक

इस शुभावसर पर अनेको उच्चकोटि के वक्ताओ सन्यासी महात्माओ को आमन्त्रित किया गया है मनोहर भजनो सगीत क कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली रहेगा। महान आत्माओ यह एक स्वर्ण सन्धि जो जीवन मे नव उमग मगलमय प्रेरणा नव स्फूर्ति एवम नई दिशा की ओर अग्रसर होने का सुअवसर प्राप्त है अत माता पिताओ वृद्ध वृद्धाओ विशेष रूप से युवक युगल दम्पति अधिक से अधिक सख्या मे पधारे। जोडे मे आने मे असमर्थ है तो अकेले अवश्य आये

आवश्यक निवेदन योगदर्शन सत्यार्थ प्रकाश सस्कार विधि लेखनार्थ कापी पैन ऋतु अनुसार बिस्तर साथ लेकर आये भोजन तथा निवास का प्रबन्ध आश्रम की ओर से निशुल्क होगा इच्छुक दम्पति परिवार १५ जून तक अपना नाम प्रेषित कर देवे।

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ हरियाणा

अपील वाहन के लिए

आय समाज के प्रचार प्रसार के लिये तथा सुदूर क्षेत्रो मे सस्कार आदि कराने के लिए जाना पडता है। एक दो पहिया वाहन की अति आवश्यकता है काय क्षेत्र दिन पर दिन बढ रहा है किन्तु वाहन के अभाव मे सभी जगह सम्पर्क नही हो पाता सस्कार के कार्यो मे बाधा पहुच रही है इस दोपहिया वाहन का अनुमानित मूल्य ३०,०००/ रुपए है जो महानुभाव इस पुनीत कार्य मे सहयोग दग ईश्वर अवश्य ही उसका कई गुना प्रतिफल देगे।

नवल सिह *व्यवस्थापक* — **ब्रह्मचारिणी रश्मि आर्या**

मातृछाया साधना केन्द्र

समीप सरस्वती शिशु मन्दिर आगरा रोड हाथरस २०४१०१

पास्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 10 6 2001 बिना टिकट भजन का लाइसेंस न० U(C) 93/2001
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2001 in NDPSo on 7/8 6 - 2001

प्रतिष्ठा मे –

शत हस्त समाहरः सहस्त्र हस्त संकिरः

सौ हाथों से कमाओ तथा हजार हाथों से दान करो

पीड़ितों की सेवा हम सब का राष्ट्रीय कर्त्तव्य है

सार्वदेशिक सभा के आह्वान् पर गुजरात में आए भीषण भूकम्प से पीड़ित मानवता की सहायतार्थ दान की अपील पर जिन दानी महानुभावों, आर्यसमाजों या सस्थाओं से दान प्राप्त हुए हैं उनकी सूची प्रकाशित की जा रही है -

६३३ जयपाल हरीमत ५०/
६३४ जिला आय उप प्रतिनिधि सभा मथुरा १००००/
६३५ श्रीमती विमला मन्निक आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली १००
६३६ चेन मुनि जी आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५००
६३७ श्रीमती कम दवि एव शकुन्तला जी आ०स० बी ब्लाक जनक परी नद दिल्ली
६३८ श्रीमती निमल गुप्त आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली २००/
३९ वेदपाल निझावन आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली २००/
४० तारा चद जी आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली ७०
६४१ आर०सी० शमा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली १०
४२ सोमदत्त मित्तल आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली १००/
६४३ वेदपाल निझावन आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली ५००/
६४४ सोहनलाल ओहरी आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली १००
४५ यासीन जी आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली २००/
६४६ यमपाल आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली १००/
६४७ श्रीमती शकुन्तला देवी आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली २००/
६४८ श्रीमती राज मैहन आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नद दिल्ली
६४९ कृष्णलाल कमार आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली २००/
६५० केवल कृष्ण कपालिया आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली १००/
६५१ लक्ष्मण दास जी आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली ५०१/
६५२ दिनेश कुमार द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५०१/
६५३ विशाल दत्ता जी द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५०१/
६५४ राजेश मल्होत्रा जी द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५०१/
६५५ गिरीश कुमार द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५०१/
६५६ गुप्तदान द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५५१/
६५७ डॉ० बिन्दरा जी द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५०/
६५८ सुदेश कुमार खमेजा द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली २००/
६५९ मलहोत्रा जी द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली १०१
६६० श्रीमती सावित्री कौशल द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली ५१/
१ गुरदव सिह सैम्मी द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली १००/
६६२ उमेश सभ्रवाल द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली १०५/
६६३ कपिल द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली ११/
६४ रविन्द्र सिह द्वार आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली ५
६ ५ राजन्द्र सिह द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली ५०/
६६ हरनाम सिह द्वार आ०स बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ल ५०/
६ ७ श्रीमती मनजीत कौर द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पु नइ दिल्ली ०००/
६८ आर०सी०शमा द्वार आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५०
६९ टी० के० वशिष्ठ द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली १००/
६७० पी०डी० अदलखा द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली ५०/
६७१ केवल कृष्ण कुमार द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली ५०/
६७२ श्रीमति हरपाल कार द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५०/
६७३ छवि राम शर्मा द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली ५१
६७४ शाह जी द्वार आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली २१
६७५ सुभाष द्वार आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली २१/
६७८ सेठी साहिब द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली ५०/
६७९ अवतार सिह द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ११/
६८० रनजीत सिह द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली १०/
६८१ डा० सतीश सेतिया द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली १०१/
६८२ बाल कृष्ण द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५०/
६८३ मनोज आहुजा द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली १०१/
६८४ वीरेन्द्र कुमार द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली १०१/
६८५ अमन द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली २१/
६८६ राम कपूर द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५१/
६८७ रेवती साहिब द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली २१/
६८८ एम० के० ट्रेडर्स द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५०/
६८९ चमन लाल द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली १००/
६९० गुप्तदान द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली १००/
६९१ श्रीमति दयाल कौर द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली २१/
६९२ श्रीमती निहाली जी द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली ४०/
६९३ साघ इन्टरप्राइजेज द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ देल्ली १००/
६९४ गोपाल दान द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली १००/
६९५ कमल स्टोर द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५०/
६९६ गुप्तदान द्वार आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली २१/
९७ अनु द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली २०/
९८ रवीलोचन अरोडा द्वार आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नद दिल्ल २००/
६९९ रामचन्द्रन द्वार आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली ५०/
७०० पी० र० कृष्न द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली १००/
१ सत्य प्रकाश द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५०
७०२ कुलदीप सिह द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५०/
७०३ राकेश दुआ द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ११/
७०४ वीरेन्द्र द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली २१/
७०४ दर्शन लाल द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५००/
७०५ शोभ राज द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली १००
७०६ आर० सी० भल्ल द्वार आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली १००/
७०७ चान्द द्वार आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली ५०/
७०८ श्रीमति रूचिक द्वार आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली ३०/
७०९ गुप्तदान स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली ५०/
७१० गुप्तदान द्वार आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली २१/
७११ श्वेता द्वार ०स बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५०/
७१२ पुष्पा द्वार स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली १००/
७१३ डी० डी० नागपाल द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली १००/
७१४ यशपाल सचदेव द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली ५०/
७१५ महेन्द्र कुमार कालरा द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली ५१/-
७१६ कु० समिधा द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नइ दिल्ली १०
७१७ ओम प्रकाश मनोचा द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५१/-
७१८ रणजीत सिह द्वारा आ०स० बी ब्लाक जनक पुरी नई दिल्ली ५१/

क्रमशः

भविष्य में प्राप्त दान को भी इसी प्रकार प्रकाशित किया जाएगा। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त घोषित है। यदि आपको अपने आयकर खातों के लिए प्रमाण पत्र की आवश्यकता हो तो सार्वदेशिक सभा के कार्यालय से मगवा लें। दान की रसीद के साथ ही यह प्रमाण-पत्र भी भिजवा दिया जाएगा। सभा मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली–२ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली–२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०६८५)।
सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda vsnl.net in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod com

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र





वर्ष ४० अक १६ २६ जुलाई से ४ अगस्त २००१ तक दयानन्दाब्द १७८ सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०२ सम्वत २०५८ श्रा० शु० १०

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

आर्यसमाज मिण्टो रोड नई दिल्ली की कहानी सभा कार्यालय में प्राप्त हुए पत्रों की जबानी

देश भर से आर्यसमाज मिण्टो रोड, नई दिल्ली के सम्बन्ध में प्रधानमन्त्री, गृहमन्त्री एवं शहरी विकास मन्त्री को लिखे गए पत्रों की प्रतिलिपियां सभा कार्यालय में निरन्तर आ रही हैं। सरकार द्वारा आर्यसमाज मिण्टो रोड को ध्वस्त किए जाने के सम्बन्ध में आर्यजनता में भारी क्षोभ एवं रोष है। इस सम्बन्ध में माननीय सांसदों, विधायकों, निगम पार्षदों तथा वरिष्ठ नागरिकों ने सभा कार्यालय से व्यक्तिगत सम्पर्क किया है तथा उनके पत्र भी प्राप्त हो रहे हैं।

प्राप्त पत्रों के कुछ अंश अविकल रूप से पाठकों की सेवा में उद्धृत किए जा रहे हैं, जिससे स्पष्ट है कि यदि समय रहते भारत सरकार ने इसके पुनर्निर्माण में तुरन्त कार्यवाही नहीं की तो आर्यजनता को विवश होकर कोई ठोस कदम उठाना पड़ेगा, जिसकी सारी जिम्मेवारी भारत सरकार के शहरी विकास मन्त्रालय की होगी।

— वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री

वैदिक यति मण्डल, दयानन्द मठ, दीना नगर, पंजाब

केन्द्र सरकार ने दिल्ली मे मिण्टो राड आर्यसमाज का गिराकर जो दुस्साहसपूर्ण कार्य किया है। उसका देव दयानन्द के शिष्य कभी सहन नहीं करेगे। निजाम के साथ टक्कर लेने वाले एव निजाम को दातो चने चबाने वाले महान योद्धा लौहपुरुष फील्ड मार्शल पूज्य स्वामी स्वतत्रतानन्द जी महाराज के पदचिह्नो पर चलने वाले उनके शिष्य अभी जीवित हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आर्यसमाज एक सार्वभौम सस्था है और इसके कार्यकर्ताओ को विवश न किया जाए कि वह इसक लिए दिल्ली मे आन्दोलन प्रारम्भ करदे। इसलिए हमारी माग है कि आर्यसमाज मन्दिर का पुन उसी स्थान पर निर्माण कराया जाए तथा श्री जगमोहन को आर्यसमाज मन्दिर तोडने के लिए दण्डित किया जाए।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

माननीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी आप यह अच्छी तरह जानते हैं कि आर्यसमाजियो ने इस देश की आजादी के लिए कितना महत्वपूर्ण योगदान दिया है तथा उन्होने राष्ट्र को उन्नत बनाने का अमर सन्देश भी दिया है ऐसे लोग जहा बसते हैं जहा उनकी श्रृद्धा है वहीं उन लोगों को आहत होना पड रहा है। आपकी सरकार ने आर्यसमाज मन्दिर को ध्वम्त कर तमाम आर्यसमाजिया की भावना को ठेस पहुचाई है हम आपकी इस कृति का निषेध करते है।

श्री बृहत सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक सभा जामनगर, गुजरात

हम हजारो आर्यजन आपके ऐसे शासन का पूर्णरूपेण विरोध करते हुए निवेदन करते हैं कि आप पुन उसी स्थल पर आर्यसमाज मन्दिर के निर्माण का आदेश देकर अपनी श्रेष्ठता का परिचय दे और पुन हमारे श्रद्धा के पात्र बने।

श्री चन्द्रपाल आर्य, जामनगर

आर्यसमाज की क्रातिकारी और देशभक्ति पूर्ण छवि होने क कारण इस विषय मे भी आर्यसमाज चुप नहीं बैठेगा चाहे इसके लिए कितना भी बलिदान क्यो न देना पडे हो सकता है कि यह सघर्ष आर्यसमाज की शिथिलता को दूर करने मे सहायक हो।

आर्यसमाज प्रयाग राज, उत्तर प्रदेश

माननीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी मन्दिर विध्वस के मामले मे व्यक्तिगत रुचि रखते हुए दोषी व्यक्ति को दण्डित करें तथा ध्वस्त आर्यसमाज मन्दिर को उसी स्थान पर निर्मित कराने की कृपा करे। जहा कभी यज्ञ एव प्रवचन हुआ करते थे।

आर्यसमाज अडीग, मथुरा उत्तर प्रदेश

हमारा पूरा जिला आपके साथ है। मात्र केवल आदेश की जरूरत है आप जो भी आन्दोलन चलाएगे आर्यसमाज अडीग तन मन धन से आन्दोलन के लिए तैयार है।

आर्यसमाज चन्दौसी, उत्तर प्रदेश

मदिर विध्वस केन्द्र सरकार की धर्मनिरपेक्षता पर कालिख।

सार्वदेशिक आर्यवीर दल, उडीसा

भारतीय एकता एव अखण्डता हेतु सरकार सकारात्मक सोच बनाए। आर्यसमाज मिण्टो रोड पुन अपने पूर्व अस्तित्व मे आना चाहिए अन्यथा पूरे भारत मे सरकार के विरोध जन आन्दोलन एव सघर्ष किया जाएगा।

आर्यसमाज रिवाडी, हरियाणा

यदि आन्दोलन चला तो आपके आदेश पर बलिदान होने के लिए अनेक आर्यजन तैयार हैं आपका आशीर्वाद हमारे साथ है।

महाविद्यालय गुरुकुल मटिण्डु जिला सोनीपत, हरियाणा

आज आर्यसमाज के सामने मिण्टो रोड का आर्यसमाज एक चुनौती बनकर खडा है जिसे स्वीकार करना प्रत्येक दयानन्द के सिपाही का पुनीत कर्तव्य है। ५० आदमियो का पहला जत्था गुरुकल मटिण्डु की तरफ से जाने को तैयार है। तन मन धन से हम इस काय मे पूरा सहयोग देगे।

आर्यसमाज महाराजपुर जिला छतरपुर, मध्यप्रदेश

मन्दिर निर्माण हेतु सत्याग्रह म अपना सर्वस्व बलिदान करने के लिए हम सब तत्पर है। कृपया जब भी आवश्यकता हो सूचित करन की कृपा करे जिससे सत्याग्रहियो को इस पवित्र कार्य हेतु भेजा जा सके।

आर्यसमाज बेतिया, बिहार

सार्वदेशिक सभा द्वारा आहूत सत्याग्रह मे हजारा की सख्या मे आयजन इस जिले से जल भरने के लिए पूरी तरह से तैयार है। मात्र एक सूचना पर सत्याग्रहियो का जत्था दश के किसी भी भाग मे जाकर सत्याग्रह प्रारम्भ कर सकता है।

तोड दिया मन्दिर हमारा।
कमजोर नहीं है दिल हमारा।।

सिर हमारा नहीं झुकेगा।
ये आन्दोलन नहीं रुकेगा।।

— आर्यसमाज बचाव सघर्ष समिति
मिण्टो रोड नई दिल्ली

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

सह सम्पादक
विमल वधावन एडवोकेट

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल का निर्वाचन सम्पन्न

श्री गौरीशंकर कौशल प्रधान निर्वाचित


गौरीशकर कौशल प्रधान

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल की स्थापना १५-४-६१ को इन्दौर नगर मे हुई थी। इसके पूर्व इस क्षेत्र की समस्त आर्यसमाजे आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान और मालवा अजमेर स सम्बद्ध थी। अपने स्थापना काल से ही यह सभा शिक्षा समाजसेवा तथा पिछडे वग वनाचलो के मध्य अपने सामर्थ्य के अनुसार रचनात्मक कार्य करती रही है।

इस वर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल का निर्वाचन सन २००१-०२ तक के लिए आर्यसमाज मल्हारगज इन्दौर मे निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज अपने स्थापना काल से ही वेद प्रचार पर अत्यधिक बल देता आया है और भविष्य मे वेदो का प्रचार करता रहेगा। आर्य समाज के प्रचार के परिणाम स्वरूप ही दलितोद्धार के साथ साथ सामाजिक समरसता का प्रयास किया जाता रहा है। सामाजिक छुआ छूत ऊच नीच रग भेद दहेज आदि का विरोध आर्य समाज अपने जन्म काल से करता आया है। नारी जागरण मे आर्य समाज ने सर्वप्रथम जालधर मे कन्या महाविद्यालय प्रारम्भ किया। भय लालच प्रलोभन शिक्षा चिकित्सा सुविधा के नाम पर लाखो लोगो का धर्मान्तरण कर उनकी राष्ट्रीय निष्ठा कम कर दी गई है।

मादक द्रव्यो के प्रचार प्रसार का विरोध आर्य समाज ने सदा से किया है। वर्तमान सामाजिक अभिशाप "भ्रूण हत्या" एक भयकर चिता का विषय बन गया है। इसका सार्वजनिक रूप से घोर विरोध करना चाहिए जिससे सामाजिक सतुलन बना रहे खेद का विषय है कि आज ५३ वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी आर्य भाषा हिन्दी राजभाषा का स्थान ग्रहण नहीं कर सकी है। आज भी सूर्योदय के पूर्व लाखो गाये बूचडखाने मे नित्य काटी जा रही है।।

प्रदेश के पिछडे वर्ग वनाचल झाबुआ आदि मे लोभ लालच शिक्षा स्वास्थ्य सुविधाओ के नाम पर अनेक लोगो का धर्मान्तरण किया जा रहा है। आर्यसमाज इस कृत्य को अत्यन्त गम्भीर मानता है। विदेशी ईसाई मिशनरियो को आज भी विदेशो से अकूत धन प्राप्त हो रहा है।

उपरोक्त तथ्यो को दृष्टिगत रखते हुए यह आर्य प्रतिनिधि सभा शिक्षा छुआ छूत तथा धर्मान्तरण के सम्बन्ध मे रचनात्मक कार्य करेगी। सम्प्रति भ्रूण हत्या एक भयकर सामाजिक अभिशाप बन गया है। इसके विरुद्ध आर्यसमाज सामाजिक जागृति के माध्यम से जोरदार आन्दोजन करेगा। उल्लखनीय है कि इस भ्रूण हत्या को हत्या ही माना जाए और इसके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की जाए। भ्रूण हत्या करने वालो कराने वालो तथा प्रात्साहित करने वालो के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की जाये। इस भ्रूण हत्या का मूल कारण दहेज प्रथा है। जब तक इसका उन्मूलन नहीं होता तब तक यह पाप समाप्त नहीं हो सकता। इसी प्रकार झाबुआ आदि क्षेत्रो मे ईसाई मिशनरियो द्वारा धर्मान्तरण की रोकथाम करने दयानन्द आश्रम स्थापित करने तथा गुरुकुल स्थापित करने का रचनात्मक कार्य यह सभा करती रहेगी।

वर्तमान मे टी० वी० एव अन्य प्रचार साधनो के द्वारा राष्ट्रीय आवश्यकताओ के अनुरुप कार्य किए जाए। वर्तमान मे प्रचारित कार्यक्रमो से शालीनता का उल्लघन होता है तथा सामाजिक अपराध हत्या डकैती आदि को प्रोत्साहन मिल रहा है। परिवार नियोजन के नाम पर जो कुछ अनैतिकता का प्रचार किया जा रहा हे उस पर तुरन्त प्रतिबन्ध लगाने का यह सभा जोरदार आन्दोलन चलाएगी।

निर्वाचन दिनाक १५ ७-२००१ मे मतगणना उपरान्त प्राप्त मतो के आधार पर निम्नानुसार पदाधिकारी/सदस्यो को निर्वाचित घोषित किया गया –

प्रधान श्री गोरीशकर गोपीलाल कौशल।

उप प्रधान श्री दलवीर सिह सुदरसिह राघव (**वरिष्ठ उप प्रधान**) श्री नरेन्द्र रामनारायण आर्य श्री लक्ष्मीनारायण मागीलाल श्री जितेन्द्र सिह चन्द्रपाल सिह श्री जगदीश प्रसाद रामनिवास।

मन्त्री श्री भगवानदास मन्नालाल अग्रवाल।

उपमन्त्री श्री विद्याराम गुलाबचद वर्मा (**वरिष्ठ उपमन्त्री**) श्री दिनेश कृष्ण प्रशात त्रिवेदी श्री बालकृष्ण शकरलाल आर्य श्री रामनारायण गणेश राम आर्य श्री मनोज उमाशकर स्वर्णकार।

कोषाध्यक्ष श्री माधुरी शरण गोपीनाथ अग्रवाल।

पुस्तकाध्यक्ष श्री बाबूलाल आनन्द शकरलाल।

अधिष्ठाता भू सम्पत्ति श्री विश्वकात शुक्ल सत्यकात।

अधिष्ठाता आर्य वीर दल श्री हरिसिह देवीसिह आर्य।

सदस्य सर्वश्री सुदानलाल मोतीराम जगदीश प्रसाद वैदिक श्रीमती सीतादेवी – गोवर्धन आर्य श्री हरिनारायण पन्नालाल आर्य श्री गुलजारीलाल भोलाराम श्रीमती सुमन आर० के श्रीवास्तव अरुण कुमार अजय कुमार आर्य प्रतापसिह – शकरसिह आर्य बाबूलाल मोतीराम आर्य पुरुषोत्तम हरिनारायण गुर्जर रेवाशकर चौधरी चम्पालाल फूलसिह रामदयाल यादव सुरेन्द्र हरि शकर तिवारी राजेन्द्र बाबू गुप्ता पन्नालाल जगन्नाथ रामप्रसाद ठाकुर

– बी० डी० कुबेर
निर्वाचन अधिकारी एव सहायक पजीयक
फर्मस् एव सस्थाए, इन्दौर (म०प्र०)

आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड नई दिल्ली हेतु
आर्यजनों द्वारा सामूहिक संकल्प
५ अगस्त रविवारीय सत्संग के उपरान्त

हम आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड को केन्द्रीय सरकार के शहरी विकास मन्त्री श्री जगमोहन के आदेश पर भूमि एव विकास विभाग द्वारा बुलडोजर से ध्वस्त करने की घोर निन्दा करते हैं।

हम हैदाराबाद सत्याग्रह बलिदान विजय दिवस के पुनीत अवसर पर आज पुन आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड नई दिल्ली को ध्वस्त स्थल पर पुनर्निर्माण की प्रतिज्ञा लेते हैं।

हम पूर्ण निष्ठा के साथ सकल्प करते है कि आर्यसमाज मिण्टो रोड के पुनर्निर्माण हेतु तन मन धन से पूरा सहयोग करेगे। इसके अतिरिक्त इस निमित्त सभा द्वारा जारी किए गए किसी भी आदेश – कार सेवा सत्याग्रह जेल भरो आन्दोलन इत्यादि – का हम अक्षरश पालन करेगे।

आर्यबन्धुओं ! आईए, चिन्तन करें

— जगदीश प्रसाद वैदिक

आर्यसमाज की स्थापना को १२५ वर्ष हो चुके हैं। स्वामी दयानन्द ने उद्‌घोष किया 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम संसार को आर्य बनाओ। हम आत्म निरीक्षण करें कि हमने इस नारे को कितना सार्थक किया। हमने ससार को भारत को भारत के एक नगर को नगर के एक मोहल्ले को भी आर्य नहीं बनाया। हमने तो अपने परिवार को भी आर्य नहीं बनाया। विडम्बना तो यह है कि हम मे से अधिकाश आर्य नहीं बने। दयानन्द के शिष्य आर्य को दिन मे लालटेन लेकर ढूढना पडेगा। हम मूर्ति पूजा करते हैं। मृतक श्राद्ध करते हैं। शराब पीते हैं। मास खाते हैं। आर्य समाज मदिर मे विद्यालय स्थापित कर विद्यालय से होने वाली आय को व्यक्तिगत कमाई का साधन बना रखा है। हम वकील हैं स्वय झूठ बोलते हैं और पक्षकार व गवाह से झूठ बुलवाते हैं। हम व्यापारी हैं झूठ बोलकर व्यापार करते हैं। रिश्वत देते हैं। हम सरकारी कर्मचारी है जनता को सताते हैं और रिश्वत लेते हैं। ऐसे व्यक्ति आर्यसमाज के नेता हैं।

सज्जनो ! स्वामी दयानन्द का और आर्यसमाज का आधार सत्य ही है। मूलशकर से दयानन्द बनने का आधार भी सत्य ही है। लेकिन दयानन्द का उत्तराधिकारी आर्य समाज सत्य से हजारो किलोमीटर दूर है। हमारे पुरोहित उपदेशक और सन्यासी भी सत्य से दूर हैं। अधिकाश आर्य समाजों में भगाई हुई लडकियों के विवाह कराकर आमदनी का अनैतिक साधन बना रखा है और तो और व्यक्तिगत रूप से आदर्श विवाह मदिर के नाम से सस्था बनाकर पाप की कमाई कर रहे हैं।

हमारे साप्ताहिक सत्सगों मे २० २५ व्यक्तियों की उपस्थिति रहती है कहीं कहीं तो ३-४ व्यक्ति ही होते हैं। जबकि पौराणिक मदिरो में प्रतिदिन सैकडो हजारो की उपस्थिति रहती है। हमारे विशेष पर्वो और सम्मेलनो मे अखिल भारतीय स्तर पर एक लाख की उपस्थिति नही होती है। जबकि एक पौराणिक प्रवचनकर्ता के कार्यक्रम म नगर स्तर पर एक लाख की उपस्थिति होती है। हमारे कार्यक्रमो मे केवल आर्यसमाज से सम्बन्धित व्यक्ति ही आते है। नागरिक तो आते ही नहीं है। इस स्थिति पर हमने चितन ही नहीं किया। आम नागरिको का सम्मिलित नहीं होने का मुख्य कारण है कि स्वामी दयानन्द व आर्यसमाज को नास्तिक माना जाता है। जबकि स्वामी दयानन्द आस्तिक थे। हमने १२५ वर्ष मे जनता के समक्ष दयानन्द का आस्तिकवाद नहीं रखा। यदि आर्याभिविनय और सस्कार विधि का प्रचार करके इन दोनो ग्रथो को पढने की प्रेरणा देते तो निश्चित ही जनता हमारी ओर आती।

गभीर विचारणीय बात है कि हमारा असली सिक्का नहीं चल रहा है और सभी का नकली सिक्का चल ही नहीं रहा है खूब तेज गति से दौड रहा है।

ससार को आर्य बनाओ, उदघोष के परिपेक्ष्य मे ससार की छ अरब जनसख्या है उसमे से दयानन्दी तो एक लाख भी नहीं है।

हमको अपनी कमजोरियो पर ध्यान देना चाहिए और नकली व्यक्तियों को हमारे सगठन से पृथक करने देने से ही आर्य समाज की उन्नति होगी तथा दयानन्द का उद्‌घोष कृण्वन्तो विश्वमार्यम साकार होने का मार्ग प्रशस्त होगा।

आर्यसमाज के उपनियम क्रमाक ४ (क) मे लिखा है कि जिसका नाम किसी आर्यसमाज मे सदाचार पूर्वक दो वर्ष तक अकित रहा हो।

सज्जनो सदाचार की परिभाषा क्रमाक ४ (घ) मे लिखी है कि — सध्या आदि नित्य कर्म शुद्धवृत्ति वैदिक सस्कार पत्नीव्रत व पतिव्रत आदि सदाचार है। व्यभिचार मद्यादि मादक द्रव्यो और मासादि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन जुआ चोरी छल कपट रिश्वत आदि दुराचार हैं।

उपरोक्त इन पक्तियो पर विचार कर देखिये कि हम सदाचारी हैं ? या दुराचारी ? क्या हम आर्य समाज के सदस्य बनने योग्य है ? जब आर्यसमाज के सदस्य बनने के योग्य नहीं है तो अधिकारी कैसे बन सकते है ? हम तो अपने आपको धोखा दे रहे हैं और प्रतिदिन दयानन्द की हत्या करन का जघन्य अपराध कर रहे हैं। अपने गुरु की हत्या करने का कडा दड भोगना ही पडेगा।

दयानन्द के भौतिक शरीर की हत्या जगन्नाथ ने की थी और हम दयानन्द के सिद्धातो की हत्या कर रहे है। हम परमात्मा को सर्वव्यापक मानते हैं। हमारा परमात्मा मदिर मे बद नहीं है। हमारे कृत्यो को देख रहा है।

सज्जनो पौराणिक विद्वानो तथा विद्वान सन्यासियो को स्वामी दयानन्द के सम्बन्ध मे एक ही जानकारी है कि स्वामी दयानन्द नास्तिक थे। मै आजकल पौराणिक विद्वानो और विद्वान कर्मकाडी पडितो तथा विद्वान मठाधीश सन्यासियो शकराचार्यों से मिलकर आर्याभिविनय और सस्का विधि तथा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका भेट कर रहा हू। वे पढकर कहते हैं कि स्वामी दयानन्द तो परम आस्तिक थे, हमको ज्ञात ही नहीं है हम तो नास्तिक ही समझ रहे थे। इस प्रकार हमको आम जनता से सम्पर्क करना होगा

मैं स्वामी दयानन्द के अध्यात परक साहित्य का प्रकाशन कर रहा हू। वह भी इन पौराणिको को भेट कर रहा हू। यदि आप भी मगवाना चा तो लागत मूल्य पर उपलब्ध होगा १ महर्षि दयानन्द मूल्य पाच रुप २ स्वामी दयानन्द के अमृत वचन मूल्य ३ रुपये ३ परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना विषयक वेद म की व्याख्या — व्याख्याकार स्वा दयानन्द मूल्य पाच रुपये।

अत स्वामी दयानन्द व अध्यात्मवाद जनता के सम्मुख रखव स्वामी जी को आस्तिक सिद्ध क से ही हमारी उन्नति सभव है।

— *वैदिक सदन भवर कुआ इन्द*

साहित्य समीक्षा

दर्शन योग महाविद्यालय का अनुपम साहित्य

दर्शन योग महाविद्यालय आर्य वन रोजड सागरपुर जो गुजरात के साबर काठा जिले मे विगत कई वर्षो से चल रहा है। मेरे लिए अब यह दुर्भाग्य महसूस होने लगा है कि मै अभी तक इस पावन पवित्र आश्रम के दर्शन नही कर सका। एक सिद्ध सन्यासी स्वामी सत्यपति जी के द्वारा स्थापित यह महाविद्यालय क्या क्या कार्य कर रहा है इसकी सूचना समय समय पर आपको प्राप्त होती रहती है। स्वामी सत्यपति जी के साथ आचार्य ज्ञानेश्वर जी की विशेष आहुति इस महाविद्यालय मे लगी है जो आजकल इग्लैण्ड देश मे प्रचार यात्रा पर है।

ब्रह्मचारी विशाल ने कुछ दिन पूर्व ही इस महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित साहित्य मुझे भिजवाया है जिसे देखकर मे आश्चर्यचकित हू। मेरे मन मे अपार प्रसन्नता है कि बहुमूल्य आध्यात्मिक सामग्री को हिन्दी, गुजराती और अग्रेजी भाषा मे मुख्यत प्रकाशित किया गया है। समस्त उपलब्ध साहित्य सम्भवत कुछ सौ रुपये का ही होगा। इस साहित्य की प्रशसा मे तभी कुछ कह पाना सम्भव होगा जब एक एक का स्वाध्याय कर लूगा परन्तु सरसरी तौर पर एक दृष्टि अवलोकन से इतना अवश्य स्पष्ट होता है के जिस विशिष्ट शैली के साहित्य को सभाओ और समाजो द्वारा प्रकाशित करने की जिम्मेवारी का निर्वहन किया जाना था उसकी कमी को इस दर्शनयोग महाविद्यालय ने कई तपस्वियो के त्याग स पूरा करने का प्रयास किया है।

इस महाविद्यालय का पूरा पता सबसे उपर देने का प्रयोजन भी यही है कि पाठकगण इस सारे साहित्य का लाभ उठाने से वचित न रहे और तत्काल पत्र व्यवहार स कीमत आदि के बारे मे जानकारी प्राप्त करके इस अनुपम साहित्य के स्वामी बनने का प्रयास करे। यही मेरे स्वाध्याय प्रेम का स्वाध्याय प्रेमियो से आग्रह है।

— *विमल वधावन एडवोकेट*

सामाजिक, राजनैतिक एवं वैचारिक क्रांति के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ें।

नाम, काम और दाम

– नरेश शाडिल्य (सचालक – समग्र जीवन अभियान)

आज का मनुष्य तीन चीजो के शीभूत होकर कार्य (जीवन) कर रहा । वे है – नाम (Fame) काम (De ıre) और दाम (Money)।

इससे कोई अन्तर नहीं पड रहा है ऽ यह मनुष्य कहा कार्य कर रहा है। ाहे परिवार मे चाहे समाज मे चाहे ाजनीति मे चाहे धर्मनीति मे या अन्य ऽसी भी क्षेत्र मे। यानी आज के नुष्य के प्रत्येक कार्य के गर्भ मे ये ोन चीजें (नाम काम दाम) किसी न ऽसी रूप मे सदैव विद्यमान रहती हैं। ह अलग बात है कि चतुर मनुष्य ने न तीन चीजो को ढकने के लिए च्छे अच्छे शब्द ढूढ रखे हैं। जैसे – रिवार सेवा समाज सेवा धर्म सेवा। ानि बाहर से तो मनुष्य परिवार माज धर्म की सेवा करता दिखाई पड ा है लेकिन अन्दर से किसी न ऽसी रूप मे मेवा (नाम काम दाम) ाने की वृत्ति पाल रखी है। यानी नुष्य सेवा भी उसी क्षेत्र मे कर रहा जहा उसका मेवा सुनिश्चित हो। ह है आज के मनुष्य की मानसिकता ार उससे ऊपजी कार्य पद्धति का ाश्लेषण। अब इस मनुष्य के द्वारा हो े कार्यों का विश्लेषण करते है –

यह बात सर्वविदित है कि बीज स्वस्थ हो तो फसल भी अस्वस्थ ागी। यानी आज के मनुष्य की ानसिकता और उससे उपजी उसकी ार्य पद्धति दोनो ही अस्वस्थ हैं जिसके रेणाम स्वरूप मनुष्य की बनाई रेवार व्यवस्था समाज व्यवस्था अर्थ ावस्था राजनीति व्यवस्था राष्ट्र वस्था धर्म व्यवस्था यानी जो भी वस्था मनुष्य ने बनाई थी वह आज , तो ढह चुकी है या ढहने के कगार पहुच चुकी है। और यही नहीं स्वस्थ मनुष्य की अस्वस्थ मानसिकता चरम सीमा तो देखिये कि उसने ृति (परमात्मा) व्यवस्था को भी छिन्न न्न करने मे कोई कसर नहीं छोड ी है। यह अलग बात है कि उसका ाड भी वह भुगत रहा है। लेकिन ाड के पश्चात भी मनुष्य उद्दण्ड ही ा दिखाई दे रहा है। और कमाल तब लगता है कि जब वह यह सारा र्य सेवा के नाम पर करता है। यानी ाज के मनुष्य की अस्वस्थ मानसिकता सबसे बडा लक्षण यही है कि वह । कुछ तोड रहा है जोडने के नाम । यानी उसे यह पता ही नहीं कि जोड रहा है या तोड रहा है। और ऽ को पता भी है तो वे मौन है ाकि बोलने से उनका अपना मेवा म काम दाम) खतरे में पडता दिखाई ा है।

आज के मनुष्य की जीवन यात्रा का आरम्भ बिन्दु, यानि वेद काल को देखते है तो पता लगता है कि उस समय का मनुष्य एव उससे उपजी जीवन पद्धति मे स्वस्थता के लक्षण विद्यमान थे। क्योकि मनुष्य, प्रकृति (परमात्मा) व्यवस्था के अनुसार जीता था। जैसे जैसे मनुष्य ने अपनी व्यवस्था (भौतिक एव धार्मिक) विकसित की वैसे वैसे मनुष्य अस्वस्थ होता चला गया। और इस मनुष्य – जीवन की यात्रा चलते चलते आज यहा पहुच गई है कि आज दो व्यवस्थाये समानान्तर चल रही हैं – एक प्रकृतिजनित व्यवस्था और दूसरी मनुष्यजनित व्यवस्था। दोनो एक दूसरे के विपरीत हैं। यानी आज का मनुष्य अपनी ही प्रकृति (परमात्मा) के विरुद्ध खडा है। और आज के मनुष्य की मानसिकता का दिवालियापन तो देखिये कि उसने प्रकृति (परमात्मा) व्यवस्था के समानान्तर अपनी व्यवस्था ही नहीं प्रकृति यानी परमात्मा के समानान्तर अपना भगवान भी बनाया हुआ है। यह वैसी ही स्थिति है जैसे एक पेड अपनी जडे पृथ्वी से उखाड ले तो पेड कैसे स्वस्थ हो सकता है ? ऐसे ही आज के मनुष्य ने अपनी जडे प्रकृति से उखाड ली हैं और तीव्रता से मृत्यु की ओर गति कर रहा है। परन्तु अब यह सवाल उठता है कि यह मनुष्य स्वस्थ कैसे हो ?

पहली बात तो ध्यान योग्य यह है कि यह प्रश्न ही गलत है कि मनुष्य स्वस्थ कैसे हो ? क्योकि मनुष्य की मनुष्यता ही उसकी अस्वस्थता है। इतिहास साक्षी है कि सारे कथित भगवानो सारे सतो और सारे महापुरुषो के आजीवन अथक प्रयत्न के बावजूद यह मनुष्य पूर्ण रूपेण स्वस्थ आज तक नहीं हो पाया है। हा जब जब कोई कथित भगवान सत या महापुरुष पृथ्वी पर आया तो स्वस्थता के कुछ लक्षण अवश्य दिखाई दिये। यानी ऐसा लगता है कि इस मनुष्य के मनुष्य बने रहने मे ही अस्वस्थता का कारण छिपा है। ऐसा भी लगता है कि जब तक मनुष्य मनुष्य रहेगा तब तक मनुष्य अस्वस्थ ही रहेगा। अब यह सवाल उठता है कि मनुष्यता ही अस्वस्थता है तो फिर स्वस्थता क्या है ?

सृष्टा (परमात्मा) ने जब सृष्टि बनाई तभी से ही उसमे गति है। सारी सृष्टि में गति है केवल मनुष्य को छोडकर। मनुष्य अपनी मनुष्यता से आगे गति नहीं कर रहा है। यही है उसकी अस्वस्थता का मुख्य कारण। सृष्टि मे गति है या यो कहे कि गति मे ही सृष्टि है यानी सृष्टि की गति मे सृष्टा अन्तर्निहित है और उसी सृष्टि का एक हिस्सा यानी मनुष्य रूका हुआ है। मनुष्य अपनी मनुष्यता से आगे गति करके दिव्यता की ओर गति कर जाये तो मनुष्य की सद्गति (स्वस्थता) सुनिश्चित हो सकती है। अन्यथा दुर्गति तो निश्चित थी है और रहेगी। अब प्रश्न यह उठता है कि कैसे मनुष्य अपनी मनुष्यता से गति करे ? पृथ्वी पर दो तरह के मनुष्य रहते हैं। एक वे जिनकी दृष्टि केवल ससार की ओर है जिन्हे हम ससारी या गृहस्थी कहते हैं। दूसरे वे जिनकी दृष्टि केवल सृष्टा यानी परमात्मा की ओर है जिन्हे हम सन्यासी कहते हैं। दोनो की दुनिया अलग अलग होने पर भी दोनो मे एक बात समान है कि दोनो ठहरे हुए हैं यानी दोनो मनुष्य हैं एक ससार मे ठहरा है दूसरा परमात्मा मे अटका है। यानी दोनो गतिहीन हैं। परमात्मा वाला यानी सन्यासी परमात्मा के गुण लेकर ससार की ओर गति करे तथा ससार वाला यानी ससारी ससार से उठकर परमात्मा की ओर गति करता है तो मनुष्य मे गति आ जाएगी और वह सृष्टि की गति के साथ प्रगति कर जायेगा। यानी स्वस्थता को प्राप्त हो जायेगा। यह उपाय तो उनके लिए था जो मनुष्य अस्वस्थता को प्राप्त हो चुके हैं। फिर सवाल यह उठता है कि क्या ऐसा भी उपाय है कि नई संतति मे अस्वस्थता यानी मनुष्यता पैदा ही न हो।

बाहर से देखे तो सृष्टि के दो भाग दिखाई देते हैं (वैसे अन्दर से दोनो एक हैं) एक प्रकृति दूसरा परमात्मा। वैसे ही एक व्यक्ति मे एक शरीर दूसरा आत्मा। शरीर का पोषण प्रकृति से होता है और आत्मा का पोषण परमात्मा से होता है। बशर्ते दोनो एक साथ हो। क्योकि इतिहास मे सन्यासी ने शरीर (ससार) से अपने को काटकर केवल अपनी आत्मा को परमात्मा से पोषण दिया। और ससारी ने केवल शरीर को प्रकृति से पोषण किया। जबकि दोनो को (शरीर एव आत्मा) बराबर मिलने से ही व्यक्ति पूर्ण स्वस्थ होता है। क्योकि दोनो (शरीर एंव आत्मा) ही व्यक्ति के अग हैं एव एक दूसरे के पूरक हैं। यानी शरीर के बिना आत्मा एव आत्मा के बिना शरीर असम्भव है। इसलिए पूर्ण स्वास्थ्य के लिए दोनों को एक साथ पोषण मिलना ही चाहिए। जब शरीर को पूर्ण भोजन एव आत्मा को पूर्ण भजन एक साथ मिलने लगेगा तो व्यक्ति पूर्ण स्वास्थ्य को प्राप्त हो जायेगा।

और अन्त मे – जब व्यक्ति पूर्ण स्वास्थ्य को प्राप्त कर इस धरती पर जीवन जीयेगा तब ना तो बुद्ध को यह कहना पडेगा कि जीवन सुखी है। ना नानक को यह कहना पडेगा कि नानक दुखिया सब ससार। और ना ही धरती को कोई मृत्युलोक कह पायेगा। यानी यह धरती ही स्वर्ग बन जायेगी। असतो-मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृत गमय।

(हिन्दू सभा वार्ता १८-२४ जुलाई से साभार)

उडीसा में बाढ़ से भयंकर बिनाश

यह उडीसा प्रान्त का दुर्भाग्य है कि गत कई वर्ष से इस प्रान्त की जनता पर निरन्तर आपत्ति आ रही है। गत वर्ष पूर्वांचल मे पहले भयकर तूफान से बिनाश हुआ। उसके पीछे सारे प्रान्त मे भयकर सूखे ने फसल को नष्ट कर दिया। इस वर्ष सारे प्रान्त मे बाढ का ताडव हो रहा है। प्रान्त के अधिकतर क्षेत्र मे फसले नष्ट हो गयी हैं। लाखो लोग सडको पर आश्रय लेकर पडे हुए हैं। इस आपत्ति मे आर्यसमाज को पूर्व की तरह पीडित लोगो की सहायता करनी चाहिए परन्तु उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के पास आय का कुछ भी साधन नहीं है। अत चाहते हुए भी कुछ नहीं कर पाते। फिर भी गुरुकुल आश्रम और आर्यसमाज भुवनेश्वर ने पचास हजार रुपये लगाकर श्री स्वामी सुधानन्द जी (उपप्रधान) ने सभा की देख रेख में सहायता कार्य चालू कर दिया है। भोजन के पैकेट बनाकर बाटे जा रहे हैं तथा औषधिया दी जा रही हैं। इसके लिए गुरुकुल की एम्बुलेन्स एव ब्रह्मचारी भी लगे हुए हैं। श्रद्धालु आर्यजनों एव आर्यसमाजो से हमारा नम्र निवेदन है कि यथाशीघ्र सहयोग भेजने का कष्ट करें जिससे यह सहायता कार्य लगातार चलता रहे।

मनीआर्डर, चैक या ड्राफ्ट उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम सेन्ट्रल या स्टेट बैंक खरियार रोड का भेजें। यदि आयकर प्रमाण पत्र चाहें तो गुरुकुल आश्रम आमसेना के नाम से भेजें।

– स्वामी व्रतानन्द सरस्वती (प्रधान)
आचार्य वेदसेवक (मन्त्री)
स्वामी धर्मानन्द सरस्वती
प्रियव्रत दास (परामर्श दाता)

मृत्योर्माऽमृतं गमय

– स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

वैदिको मे यह अति प्रसिद्ध धारणा है कि मनुष्य की तीन एषणाए है –

पुत्रैषणा वित्तैषणा लोकैषणा। आयुर्वेद के आचार्य चरक ने इनसे भिन्न दो एषणाए और भी मानी हे – **जीवैषणा और परलोकैषणा।** उनका कथन है कि आयुर्वेद शास्त्र की प्रवृत्ति तभी सम्भव है कि जब व्यक्ति मे जीने की इच्छा प्रबल हो। जीने की इच्छा प्रत्येक प्राणी मे चींटी से लेकर हाथी मे पाई जाती है। यह नहीं कि आचार्य चरक का ही ऐसा मत है अपितु यजुर्वेद सहिता के चालीसवे अध्याय मे परमात्मा का मनुष्य मात्र के लिए आदेश है कि वह इस ससार मे कर्म करते हुए ही शत वर्ष तक जीने की इच्छा करे – **जिजीविषेच्छत समा ।** दैनिक सध्या मे भी सम्मिलित प्रार्थना मे कहा जाता है –

जीवेम शरद शत श्रृणुयाम शरद शत प्रब्रवाम शरद शतमदीना स्याम शरद शतम। भूयश्च शरद शतात।।

प्रसिद्ध लाकोक्ति भी हे जीवन नरो भद्रशतानि पश्यति। जीता रहकर ही मनुष्य सकडा भद्रताआ का दखता है।

उपर्युक्त आयुर्वेद शास्त्र की प्रवृत्ति व्यर्थ ही हो जायेगी यदि मनुष्य न जीने की इच्छा न हो। आयुर्वेद शब्द का अर्थ ही वह शास्त्र जो आयु का लाभ कराता है। न केवल औषध ही आयु का लाभ कराती है अपितु व्यक्ति मे जीने की इच्छा भी उसे आयु का लाभ कराती है। व्यक्ति की जिजीविषा की भावना उसमे आत्मविश्वास ओर दृढ सकल्प को जन्म देती है। एक बार को तो वह कह उठता है – **जीवास्थ जीव्यास सर्वमायुर्जीव्यासम्। अथर्व० १६ ६६ १। मैं जीऊ और सम्पूर्ण आयु जीऊ।** सर्वायु से आशय औसतन सौ वर्ष तो जीना है ही। यदि इससे भी अधिक जीया जा सके तो वह तीन सौ चार सौ वर्ष तक भी जिये। तद् यथा –

त्र्यायुष जमदग्ने कश्यपस्य त्र्यायुष। यद् देवेषु त्र्यायुष तन्नो स्तु त्र्यायुषम।।

यजु० ३६२

मन्त्र वर्णित जमदग्नि और कश्यप व्यक्ति की दाई आर बाई ओर आखो की सज्ञा है अर्थात् व्यक्ति की आखे तीन आयु पर्यन्त देखती रहे साथ ही देवो को जो तीन आयुए प्राप्त होती है वह हमको भी प्राप्त हो। व्यावहारिक जीवन मे भी जब हम एक दूसरे से मिलते हैं तो परस्पर जी लगाकर बुलाते हैं। इस जी का अभिप्राय जीव ! जीव ! जियो और जियो। मानो परस्पर एक दूसरे को मगल कामनारूप आशीर्वाद दे रहे हैं। पजाबी भाषा मे तो एक वाक्य सम्मान और आदर का सूचक है **आओ जी जी ! आया नू ! आया नू !**

सस्कारों मे जीने का आशीर्वाद

सीमन्तोन्नयन सस्कार मे पति पत्नी से कहता है – **वीरसूस्त्व भव जीवसूस्त्व भव । जीवपत्नीत्व भव।** मानो पति मगल कामनारूप आशीर्वाद दे रहा हे कि ऐ देवी ! तू वीर को जन्म देने वाली हो और जीवित पुत्र को जन्म देने वाली हो और तू स्वय जीवित रह। प्रचलित भाषा मे जच्चा और बच्चा के जीवन की आशा करता है। फिर जातकर्म सस्कार मे बालक के लिए परिजन और समाज के लोग दीर्घ आयुष्य की मानो वर्षा ही कर रहे हो जैसे ज्येष्ठ और श्रेष्ठ व्यक्ति किसी के जीवन की कामना करते हुए यह अभिव्यक्ति कर रहे हो कि मेरी भी आयु तुझे लग जाए। ठीक इसी आशय के मन्त्र पिता बालक के कान मे कहता है अग्नि आयुष्मान है उसकी आयु तुझे लगे साम आयुष्मान है उसकी आयु तुझे लगे यज्ञ का ब्रह्मा आयुष्मान है उसकी आयु तुझे लग जाए। इस प्रकार दवो ऋषियो पितरा यज्ञो की आयु यहा तक कि समुद्रो की आयु भी तुझे लग जाए और तत्पश्चात – **इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि** इत्यादि वचनो द्वारा आशीर्वाद की बौछार करते हुए कहता है कि तेरा दिन दिन सुदिन बीते दुर्दिन कभी न आए वह परमात्मा तुझे दिन के लिए समर्पित करे दिन रात्रि के लिए रात्रि दिन रात के लिए दिन रात पक्ष के लिए पक्ष अगले पक्ष के लिए इस प्रकार महीना महीनो के लिए महीने ऋतुओ के लिए और ऋतुए वर्ष के लिए और वर्ष दीर्घायु के लिए तुझे प्रदान करे। पुन बालक की ओर देखकर पिता कहता है – **अगादगात् सस्त्रवसि हृदयादधिजायसे।** तू मेरे अग अग का सार है मेरे हृदय का टुकडा है अपने प्राणो से तेरे प्राण को धारण करता हू – **प्राण ते प्राणेन स दधामि।** वेदानुकूल आयु का उपभोग कर और जीता रह – **जीव मे यावदायुषम्।** इसी आर्शीवाद की मुहारनी हम **नामकरण मे भी देखते हैं वहॉं भी कहा गया है – स त्वा अह्ने परिददातु।** अन्त मे सब लोग जाते समय बालक **को आशीर्वाद देते है – हे बालक ! त्व आयुष्मान् वर्चस्वी तेजस्वी श्रीमान् भूया ।** फिर निष्क्रमण सस्कार मे बालक को सूर्य दर्शन कराया जाता है और प्रसिद्ध मन्त्र **तच्चक्षुर्देवहित पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत** का पाठ किया जाता है। वहा भी सब लोग **त्व जीव शरद शत वर्धमान** का आशीर्वाद देते हैं। इसी प्रकार अन्नप्राशन और चूडाकर्म मे भी जहा उसके वर्च की कामना की जाती है वही उसकी जीवन शक्ति की भी कामना की जाती है।

प्राणी देह में मृत्यु का प्रवेश

हम ऊपर प्राणियो की जीवैषणा पर विचार करते हुए लिख आए हैं कि मनुष्य प्राणी को कम से कम सौ वर्ष तो जीना ही चाहिए परन्तु बिरले ही व्यक्ति है कि जिनकी उस सीमा तक पहुच हो पाती है। बहुत हुआ अस्सी पिच्चासी नब्बे को पार कर जाता है उससे पहले मृत्यु उसे दबाच लेती है। मनुष्य की सब इच्छाए एषणाए धरी की धरी रह जाती है। उसका कारण मनुष्य देह मे अमृत के साथ मृत्यु को भी प्रवेश मिल गया था। उस दिन से लेकर आज तक इस देह के अग पर मृत्यु अपना कब्जा करना चाहती है। उसका कहना कि यह मर्त्य शरीर मेरा भाजन है इन्द्रियो का अधिपति इन्द्र का कहना है कि मैं अपने मे अमृत का सचार कर मर्त्य शरीर को भी अमर बना दूगा। मानो यह इन्द्र और वृत्र का युद्ध हो। इस शरीर मे आत्मा इन्द्र है और मृत्यु वृत्र है। इन्द्र और वृत्र का युद्ध सदा से चला आया है और सदा चलता रहेगा।

ऐतरेय उपनिषद् मे एक प्रसग आता है कि जब परमात्मा ब्रह्माण्ड का निर्माण कर चुके तो उसके तीन लोको के तीस देवताओ ने चाहा कि हमको भी रहने के लिए काई घर मिल जाये। सबने ब्रह्म से प्रार्थना की कि हमे रहने के लिए घर दीजिए। उनके लिए वह गाय लाया तब देवताओ ने कहा कि हमे यह पसन्द नही है और कोई घर दिखाइये तब उनके लिए घोडे का ढाचा बना लिया कि इसमे प्रवेश करो। वे बोले कि नोऽयमलमिति। हमे पसन्द नही है हमारे लिए यह पर्याप्त नही है तब उनके लिए पुरुष का ढाचा बना लाया तब देवता बोले सुकृत बतेति। अहा क्या पुण्यमय है। देवताओ ने कहा कि आओ ! यथास्थान इसमे प्रवेश करे। तब देवताओ के अग्रणी अग्नि ने पुरुष पिण्ड मे प्रवेश किया **अग्निर्वाग्भूत्वा मुख प्राविशत्।** वायु देवता प्राण बनकर नथनो मे प्रवेश कर गया **वायु प्राणोभूत्वा नासिके प्राविशत।** और सूर्य चक्षु बनकर आखो मे प्रवेश कर गया **आदित्यश्चक्षुर्भूत्वा अक्षिणी प्राविशत।** दिशाए श्रोत्र शक्ति बनाकर कर्णों मे प्रवेश कर गई। **दिश श्रोत्र भूत्वा कर्णौ प्राविशन।** औषधि वनस्पतिया रोम बनकर त्वचा मे प्रवेश कर गई **ओषधि वनस्पतयो लोमानि भूत्वा त्वच प्राविशन।** और चाद मन बनकर हृदय मे प्रवेश कर गया **चन्द्रमा मनो भूत्वा हृदय प्राविशत।** और मृत्यु अपान बनकर नाभि मे प्रवेश कर गया **मृत्यु अपानो भूत्वा नाभिं प्राविशत।** ऐतरेय० १२४।। अथर्ववेद मे लिखा है कि इस मनुष्य देह मे सब देवता ऐसे ही आ बैठे कि जैसे गौए अपने गौष्ठ मे आ बैठती हे –

विद्वान्पुरुषमिद ब्रह्मेति मन्यते। सर्वा ह्यस्मिन्देवता गावो गोष्ठ इवासते।।

अथर्व० ११ काण्ड ८वा सूक्त।।

अथर्ववेद के मृत्यु के सूक्त मे इन देवताओ के प्रवेश का अत्यन्त मनोहारी वर्णन है। न केवल देवताओ ने ही इसमे प्रवेश किया अपितु अदेवताओ ने भी उसमे प्रवेश किया। इसी सूक्त के उन्नीसवे मन्त्र मे कहा है अस्थियो को समिधा बनाकर और रेतस वीय शक्ति को आज्य बनाकर देवताओ ने पुरुष देह मे प्रवेश किया। मन्त्र मे वर्णित है –

अस्थि कृत्वा समिध तटष्टापो असादयन्। रेत कृत्वाज्य देवा पुरुषमाविशन्।।

उस ब्रह्मा ने सर्वहुत यज्ञ का रुप धारण किया हुआ था। उस यज्ञ मे ब्रह्माण्ड की दिव्य शक्तिया अपने को हवि बनाकर आहूत कर रहीं थीं। मानो मनुष्य देह वेदी बना हुआ था। जिससे साक्षात वेद का जन्म हुआ और ये वेद एव वेदी का क्रम सतत जारी हो गया। ऐतरेय उपनिषद के उपरिलिखित प्रसग से यह स्पष्ट है कि वायु देवता ने मनुष्य देह के मुख रूप द्युलोक के नासिका द्वारा मे प्राण बनकर प्रवेश किया और मृत्यु ने मनुष्य देह के पृथिवी लोक के नाभि प्रदेश मे अपान बनकर निवास कर लिया। इसी प्रकार इस मनुष्य शरीर मे ब्रह्म प्रजापति (इन्द्र) ने प्रवेश किया। मृत्यु का यह प्रयत्न है मनुष्य शरीर पर उसका कब्जा हो जाए और इन्द्र आत्मा का यह प्रयत्न है जब तक इन्द्र स्वर्लोक का आवरण न कर ले तब तक इस पर मृत्यु का अधिकार न होने दे। स्वर्लोक का आभरण होने के पश्चात इन्द्र को इस मनुष्य देह की आवश्यकता ही न रहेगी। वह इस देह को छोडकर स्वत ही चला जाएगा।

क्रमश

आशा के शिखर से निराशा की खाई में

— वेदप्रताप वैदिक

अगर विदेश मन्त्री जसवन्त सिह की पत्रकार वार्ता को अपनी टिप्पणी का आधार बनाया जाए तो यह कहा जा सकता है कि वाजपेयी –मुशर्रफ वार्ता अगर शिखर पर नहीं पहुची तो न सही वह खर्ऽ मे भी नहीं गिरी है। उन्होने वताया कि प्रधानमन्त्री ने मुशर्रफ का निमन्त्रण स्वीकार किया है वह पाकिस्तान जा सकते है सयुक्त राष्ट्र मे बात कर सकते हैं और रियायते दे सकते हैं। आगरा की निराशा के बावजूद शान्ति का कारवा आगे बढता चला जा रहा है और किसी शुभ घडी मे वह अपने मुकाम पर पहुच ही जाएगा। उन्होने पाकिस्तानी राष्ट्रपति पर न तो स्वय कटाक्ष किया और न ही ऐसे प्रश्नो का सीधा उत्तर दिया जिससे कटुता उत्पन्न हो सकती थी। उन्होन पाकिस्तानी पत्रकारो द्वारा विदेश मन्त्रालय के प्रवक्ता के साथ की गई धक्का–मुक्की की आलोचना अवश्य की लेकिन पाकिस्तानी पक्ष के साथ अपनी बातचीत को मधुर और स्पष्ट बताया। उन्होने बार–बार यह भी कहा कि शिखर वार्ता विफल नहीं हुई है।

जसवन्त सिह से कोई पूछे कि विफलता को परिभाषा क्या है? पौने दो माह से जिस वार्ता को आपन प्रचार के शिखर पर पहुचा दिया उसके अन्त मे दानो पक्ष यह भी न्ही कह सके कि हम असहमत होने पर सहमत हैं और भविष्य मे फिर मिलेगे वह वार्ता निराशा की खाई मे नही गरी है ? शिमला समझौता या लाहौर घोषणा तो बहुत दूर की बात है हम सयुक्त वक्तव्य भी जारी नहीं कर सके। राजनयकी भाषा मे सयुक्त वक्तव्य मे कम से कम यही कहा जा सकता था कि फला–फला मुद्दो पर पाकिस्तान की राय ये है और भारत की ये राय है। दोनो की राय अलग–अलग है लेकिन इन मुद्दो पर भविष्य मे बातचीत अवश्य होगी और दोनो पक्ष दोनो मुल्को की जनता की खुशहाली चाहते है। दोनो पक्षो ने इतना शिष्टाचार भी नहीं निभाया क्या यह कम दुखद है। सन्तोष की बात है कि ख्रश्चौफ की तरह किसी पक्ष ने न तो अशोभनीय नाटक दिखाया और अब तक न कहीं कोई कटुतापूर्ण बयान दिया लेकिन डर यह है कि यह चुप्पी ये चिकनी चुपडी बाते भारतीय विदेश नीति को दोबारा भौंदूपन की राह पर चलने के लिए प्रेरित कर सकती हैं।

एक फौजी अफसर ने दिग्गज नेताओं और कूटनीतिज्ञो को कैसे बुद्धू बनाया इसकी मिसाल है मुशर्रफ की भारत यात्रा। आज तक हमारे प्रधानमन्त्री और विदेश मन्त्री यह नहीं बता सके कि आखिर उन्होने मुशर्रफ को भारत बुलाया क्यों? निमन्त्रण की यह तरग कैसे उठी और क्यो उठी? यह वह रहस्य है जिसे अगर भारत सरकार ने नहीं सुलझाया तो उसे ससद मे तो मार खानी ही पडेगी सघ परिवार के प्रहार भी सहने होगे। जिस मुशर्रफ को लोकतन्त्र का हत्यारा कारगिल युद्ध का कसाई और सीमा पर आतकवाद का प्रोत्साहक कहते –कहते हम नही थकते थे ओर जिसका हुक्का–पानी बन्द करने के लिए हमने राष्ट्रकुल और दक्षेस के दरवाजे खटखटा दिए थे वही मुशर्रफ भारत सरकार के सपनो का राजकुमार अचानक कैसे बन गया? जैसा स्वागत मुशर्रफ का हुआ वैसा तो क्लिण्टन का भी नहीं हुआ। किसी राष्ट्राध्यक्ष के आगमन पर पिछले ३०–४० साल मे इतने घण्टे–घडियाल नहीं बजाए गए जितने मुशर्रफ के लिए बजाए गए। बेचारे पत्रकार भी फिजूल मे मारे गए। उन्हे भी बुद्धू बनना पडा। पाकिस्तानी राष्ट्रपति कहा ठहरेगे क्या खाएगे क्या पिएगे क्या देखेगे क्या पहनगे आदि छिछोरेपन की बातो पर हजारो टन कागज और करोडो दर्शको के घण्टे बर्बाद हुए। दोना दशो की जनता की उम्मीद आसमान छूने लगी थी। अब उनका मुह पाताल की तरफ हे। शिखर स खाइ तक इस यात्रा के लिए आखिर कान जिम्मेदार है?

भारतीय हाने के नात जी करता है इस पाताल–पतन की सारी जिम्मेदारी मुशर्रफ के कन्धो पर डाल दे। कह दे कि वे टस से मस नहीं हुए उनका लचीलेपन का वायदा झूठा सिद्ध हुआ। उन्होने मेजबान का जरा भी लिहाज नहीं किया। उन्होने शिखर वार्ता के बहाने भारतीय मीडिया का दुरुपयोग किया। उनकी भाव–भगिमा 'बाडी लैंग्वेज कुछ ऐसी थी कि पहले दिन सभी गुमराह हो गए। इस मौके पर हम चाहे तो अपनी पीठ खुद ही ठोक सकते हैं और कह सकते हैं कि हम कितने महान हैं उदार है दरियादिल हैं कि राजा की बारात मे स्वागत मे हमने पलक–पावडे बिछा दिए रियायतो के अम्बार लगा दिए अपनी अनिच्छा के बावजूद हुर्रियत से मिलने दिया शिखर वार्ता के दौरान ही उन्हे पत्रकार सम्मेलन करने दिया और मुह की खाने के बावजूद हम कह रहे हैं कि शिखर वार्ता विफल नहीं हुई। कहीं इस छलावे का सूत्र सचालन वाशिगटन से तो नहीं हो रहा है? यात्रा के पहले उनके उत्तेजक बयानो के बावजूद हमने उन्हे यह इशारा तक नहीं किया कि उनकी यात्रा स्थागित भी हो सकती है। हमारी सरकार अन्त तक यह ही नहीं समझ पाई कि आखिर मुशर्रफ का मकसद क्या है?

मुशर्रफ ने एक पत्थर से कई शिकार किए। सबसे पहला तो यह कि वे राष्ट्रपति बन गए। जिस पद को हासिल करने के लिए अयूब खान और जिया उल हक को 'गाइडेड डेमोक्रेसी और जनमत सग्रह के लम्ब चौडे नाटक रचने पड उसे भारत ने एक झटके मे मुशर्रफ की तश्तरी मे रख दिया। खुसरवाना शान से भारत आने की गरज से जब उन्होने खुद को राष्ट्रपति बना लिया तो पाकिस्तान की जनता उनका विरोध नहीं कर सकी। यहा तक कि जमाते इस्लामी के नेता काजी हुसैन अहमद ने भी मुशर्रफ की ताजपोशी पर मुहर लगा दी। दूसरा अब भारत की यात्रा करके वह पाकिस्तान के नेशनल हीरो बन गए हैं। इस खलनायक को महानायक बनाने मे भारत का योगदान अपूर्व माना जाएगा। वे पाकिस्तान की जनता को अब बता सकेगे कि इतनी आवभगत के बावजूद टस से मस नहीं हुए। उन्होने अयूब भुट्टो जिया बेनजीर और नवाज शरीफ को भी पीछे छोड दिया। य नेता कश्मीर पर छुरी चलाते रहे जबकि उन्होन खाडा खडकाया है। भारत की सरजमीन पर ही उन्होने यह कहने का साहस किया कि कश्मीर का आन्दोलन आतकवाद नही सवातन्त्र्य सग्राम है जैसा कि बगलादेशियो का था या फिलिस्तीनियो का था। अब भारत–यात्रा से लौटने के बाद वे कश्मीर पर नई लहर उठाएगे और उस लहर पर सवार होकर पाकिस्तानी चुनाव की वैतरणी पार कर जाएगे। यानी भारत की कृपा से अब तक उन्हे जो आधी वैधता मिली है वह अगले साल पूर्ण वैधता बन जाएगी। मुशर्रफ ने अपने इस एक सूत्री कार्यक्रम के लिए भारत–यात्रा का जमकर उपयोग किया है। वरना भारतीय पत्रकारो के साथ होने वाले नाश्ते को वे पत्रकार परिषद् मे परिणत क्यो करते? उसकी टीवी रिकार्डिग क्यो करवाते और उसे बार–बार पाकिस्तान मे क्यो दिखवाते? उनका यह कहना बडा मानीखेज है। कि कश्मीर के मुद्दे को दरकिनार करना हो तो वे नहरवाली हवेली को दोबारा खरीदकर यहीं क्यो न बस जाए। यानी उन्होने कश्मीर मुद्दे को अपनी निजी आन–बान–शान का मुद्दा भी बना लिया है। उनका यह पैतरा उन्हे पाकिस्तान की जनता मे ही नहीं फौज और राजनीतिक तबको मे भी हरदिल अजीज बना देगा।

इस शिखर वार्ता से जो फायदा मुशर्रफ उठाना चाहत थे उन्होंने उठा लिया लेकिन गठबन्धन सरकार को क्या फायदा हुआ? जहा तक भारत की जनता का सवाल है उसके सामने यह स्पष्ट हो गया है कि पाकिस्तान के मामले मे यह सरकार बार–बार गच्चा खा जाती है। जैसे लाहौर यात्रा बिना तैयारी के हुई और उसका समापन कारगिल मे हुआ वैसे ही यह आगरा वार्ता भी बिना किसी तैयारी के हुई है। विदेशमन्त्री जसवन्त सिह पता नही क्यो आशावादी है? आगरा–वार्ता का समापन पतानहीं कहा होगा? अटलजी पाकिस्तान जाएगे। क्या करने जाएगे यह नहीं बताया जसवन्त सिह ने। क्या वह मुशर्रफ की चुनाव सभाओ मे भाषण देगे? अटल जी के बिना गए मुशर्रफ चुनाव जीत जाएगे इसमे अब भी सन्देह रह गया है क्या? जसवन्त सिह ने कई बार दोहराया कि वह पत्रकारो को गोपनीय बाते नही बताएगे लेकिन सबसे गोपनीय बात अनजाने मे उनके मुह से बाहर निकल आई। उन्होने खुद कहा कि शिखरवार्ता की कोई तैयारी वह नही कर सके क्योकि जब–जब उन्होने तैयारी के लिए अपने अफसरो को पाकिस्तान भेजने की कोशिश की मुशर्रफ प्रशासन ने कह दिया कि जरुरत नहीं है। एजेण्डे की भी जरूरत नहीं है पृष्ठभूमि पचा की भी जरुरत नहीं है। मसविदो की भी जरूरत नहीं है किसी समझ की भी जरूरत नहीं हे मेजबान और मेहमान की मर्यादाए तय करने की भी जरूरत नहीं है। अगर ये सब जरूरते नहीं थीं तो यात्रा की क्या जरूरत है यह हमारे प्रधानमन्त्री और विदेशमन्त्री ने पाकिस्तान सरकार से क्यो नही पूछा? जितनी लापरवाही भारत सरकार ने इस शिखर वार्ता के दौरान की है दुनिया की किसी भी सरकार ने शायद कभी नहीं की। यदि पाकिस्तानी विदेश मन्त्रालय हमारे अफसरो को यहा नहीं आने दे रहा था तो ट्रेक टू और 'ट्रेक थ्री क्या कर रहे थे ? बुद्धिजीवियो रिटायर्ड अफसरो और फौजियो की जो जमात गप्पे हाकने के लिए अकसर पाकिस्तान भेजी जाती हैं आखिर वह किस वक्त के लिए है? उसे काम में क्यो नहीं लाया गया ? प्रधानमन्त्री और विदेश मन्त्री यह नहीं कह सकते कि उन्हे तब यह बात नहीं सूझी। जो लोग जनरल परवेज मुशर्रफ और उसके परिजनो को सीधे जानते हैं उन्होने हमारे नेताओ को यथा समय आगाह कर दिया था और जो लोग पाकिस्तानी नेताओं से अपने स्तर पर बात करते हैं उन्होंने भी प्रधानमन्त्री को सचेत कर दिया था। सात हफ्तो तक कुम्भकर्ण मुद्रा मे सोते रहने का नतीजा यह नहीं होता तो क्या होता ? क्या शिखर पर बैठकर कोई सोता रह सकता है ?

शेष भाग पृष्ठ ७ पर

हृदय-रोग में घीया, तुलसी और पोदीने का रामबाण प्रयोग

– श्री के० सी० सुदर्शनजी सरसघचालक – आर०एस०एस०

हृदय राग आज तेजी से फैलता जा रहा है। खान पान की स्वच्छन्दता भौतिकवादी होड मे तरह तरह के मासाहारी एव गरिष्ठ खाद्य पदार्थों के प्रति आकर्षण शारीरिक श्रम की शून्यता मानसिक तनाव आदि हृदयरोग की वृद्धि के कारण है।

हृदय की शिराए जब अवरूद्ध हो जाती हैं तो हृदयाघात की सम्भावनाए बन जाती हैं। अधिक चिकनाईयुक्त वसायुक्त भोजन खून मे थक्के जमाता है तथा उसी का कुपरिणाम शिराए अवरूद्ध होने के रूप मे सामने आता है। आधुनिक विज्ञान ने हृदय रोग के निदान के लिए बाई पास सर्जरी पैसमेकर – जैसी अनेक अत्यन्त खर्चीली सुविधाए ईजाद की हैं किन्तु इनका उपयोग साधारण रोगी नहीं कर सकता और यह भी तथ्य सामने आये हैं कि आप्रेशन कराने वाले को जीवन भर अनेक अन्य बीमारियो का सामना भी करना पडता है।

घीया (लौकी) हृदयराग म रामवाण औषधि सिद्ध हुआ है अनक हृदयरागियों न इसका उपया किया और रोग से छटकारा पाया है। हृदयरोगियो के लिए इस अनुभूत प्रयोग की विधि इस प्रकार है –

घीया को छिलकेसहित धोकर घीयाकश मे कश ले। कशी हुई घीया को सिलबटटे पर पीस ले। ग्राइडर मे डालकर भी उसका रस निकाला जा सकता है।

घीया को पीसते समय पोदीना के ५ ६ पत्ते तथा तुलसी के ८ पत्त उसमे डाल दे। फिर पीसे हुए घीया को कपडछान करके उसका रस निकाल ले। उस रस की मात्रा १२५ १५० ग्राम होनी चाहिए। इसमे इतना ही स्वच्छ जल मिलाये। अब यह २५० से ३०० ग्राम रस हो जायेगा। इस रस मे चार काली मिर्च का चूर्ण तथा एक ग्राम सेधा नमक मिला दे। अब इस रस को भोजन करने के आधा या पौने घटे के पश्चात सुबह दोपहर एव रात्रि मे तीन बार ले। प्रारम्भ मे ३ ४ दिन तक रस की मात्रा कम भी ली जा सकती है। रस हर बार ताजा लेना चाहिये। प्रारम्भ में यदि पेट मे कुछ गडगडाहट महसूस हो तो चिन्तित न हो। घीया का यह रस पेट में पल रहे विकारो को भी दूर कर देता है। तीन बार औषधि लेने मे कठिनाई हो तो आधा आधा किलो घीया इसी प्रकार सुबह शाम लिया जा सकता है। घीया पहले पाच दिन तक लेना हागा फिर २५ दिन का अतराल देकर पाच दिन तक लगातार ले। इसे कम से कम तीन महीने तक लेना होगा। उपचार के दौरान कोई भी खटटी वस्तु न ले। न तो खटटे फल न टमाटर न नीबू। इसके साथ एक गोली एकोस्प्रिन की १५० मि० ग्रा० सुबह शाम को तथा एम्पोलिन की गोली ले।

इस प्रयोग के सम्बन्ध मे यदि किसी को विस्तार से जानकारी लेनी हो तो मुम्बई के डॉ० मनुभाई कोठारी से सम्पर्क किया जा सकता है। उनका पता है –

१४ बी० स्वामी विवेकानन्द मार्ग
मुम्बई – ४०००५४
फोन – (०२२) ६१२८१०७

हृदयरोगियो को मास मदिरा धूम्रपान आदि का पूरी तरह त्याग करना आवश्यक है। चार पाच किलोमीटर टहलना भी जरूरी है।

एक और रामबाण नुस्खा

यदि हृदय गडबड करने लग तो एक अन्य उपचार यह है –

एक चम्मच पान का रस एक चम्मच लहसुन का रस एक चम्मच अदरक का रस एक चम्मच शहद – इन चारो रसो को एक साथ मिला ले और पी जायें। इसमे पानी मिलाने की आवश्यकता नहीं है। इसे दिन मे एक बार सुबह और एक बार शाम को ले। तनाव तथा चिन्ता से मुक्त होकर इसका प्रयोग करे। हृदय मे कोई और कठिनाई हो तो जो दवा लेते रहे हैं उसे ले ले। यह नुस्खा २१ दिन का है। आगे चलकर इस दवा को यदि प्रतिदिन सबेरे एक समय लेते रहगे तो हृदयरोग कभी नहीं होगा।

एक रामबाण लेप

मै यहा हृदयरोग की एक और रामबाण औषधि बताता हू। गुजरात के प्रसिद्ध नेता श्रीचिमन भाई पटेल की पत्नी तथा पूर्व केन्द्रीय मत्री श्रीमती उर्मिला बेन एक बार हृदय रोग से ग्रस्त हो गयी। उन्हे बाईपास सर्जरी कराने का सुझाव दिया गया। उन्होने नीचे बताया गया उपाय किया तथा बाईपास सर्जरी से बच गयीं।

एक तोला काली साबूत उडद रात को गरम पानी मे भिगो दे। सबेरे पानी से उडद के दाने निकाल ले तथा उडद को छिलके समेत सिलबटटे पर पीस ले।

उडद की इस पिटठी को एक तोला शुद्ध गुग्गुल के चूर्ण मे मिला ले। इस योग को खल बटटे मे डालकर एक तोला अरडी का तेल और गोदुग्ध से बना एक तोला मक्खन डालकर उसे ढग से मिला ले। काफी देर तक इसे खलबटटे मे रगडते रहे। स्नान करने के बाद शरीर को पोछकर इस लेप को छाती से पेट के पासतक मल ले। चार घट के लिए लेट जायें। उठ बैठ भी सकते है। जब लेप सूख जाय तो स्नान कर ले। यह प्रयोग प्रतिदिन सुबह पाच दिन तक करना चाहिए। एक महीन के अतराल के बाद फिर पाच दिन तक करे। हृदयरोग से पूरी तरह मुक्ति मिल जायेगी।

पृष्ठ ६ का शेष भाग

आशा के शिखर से निराशा की खाई में

विफलता का ठीकरा मुशर्रफ के माथे पर फोडना आसान है लेकिन वार्ता को शिखर से खाई मे पहुचाने के लिए हम खुद जिम्मेदार हैं। प्रधानमन्त्री को अपने विदेश नीति तन्त्र मे आमूलचूल परिवर्तन करना होगा। यह दुर्भाग्य की बात है कि पाकिस्तान को समझने–जानने वाले लोग न तो मन्त्री मण्डल मे है और न अफसर मडल मे हैं। केवल भावना केवल तरग केवल शब्द जाल को आधार बनाकर पाकिस्तान से सम्बन्ध सुधारना आसान नहीं है।

पाकिस्तान के साथ सहज सम्बन्ध कायम करना भारतीय विदेश नीति की सबसे बडी चुनौती है। दोनो देशो की जनता तनाव और युद्ध से तग आ चुकी है। आगरा शिखर–वार्ता वह सुनहरा अवसर था जब सचमुच इतिहास नई करवट ले सकता था लेकिन करवट तो वही ले सकता है जो जाग रहा हो। पाकिस्तान से बात करते वक्त हमारे नेता खर्राटे खींचते रहते है। वही पुराना खर्राटा वे अभी भी खींचते रहे कि हम कश्मीर को कोर इश्यू (मुख्य मुद्दा) नहीं मानेगे। क्या नहीं मानेगे ? यह ठीक है कि कोर इश्यू तो गरीबी है भुखमरी है असुरक्षा है लेकिन अगर पाकिस्तान कश्मीर पर अडा हुआ है तो यही सही। आप अखाडे मे उतरे हुए हैं और धोबीपाट से डरते है। जिस दाव को सामने वाला पहलवान मान्यता दे उसी पर उसे पटखनी लगाइए। कश्मीर को कोर इश्यू बनाया जाता तो सीमा पर आतकवाद तो अपने आप उसमे समा जाता। क्या हम मध्य प्रदेश या अदमान निकोबार के सीमापार के आतकवाद की बात कर रहे हैं? यह आतकवाद कश्मीर का नही तो किस प्रान्त का है? परवेज मुशर्रफ ने जब यह कहा कि कश्मीर मे रोज लोग मर रहे हैं और आप कहते है कि दूसरे मुद्दो पर बात करे तो उन्हे यह जबाव क्यो नहीं दिया गया कि हम उस कटने–मरने को ही पहले रोकना चाहते हैं ताकि कश्मीर पर शान्ति से बात हो सके। अगर सीमा पर आतकवाद जारी रहेगा तो शान्ति से बात कैसे होगी यह सीधा सादा तर्क भी हमारे नता उस फौजी के गले नही उतार सके।

आगरा वार्ता विफल हो गइ इसका मतलब यह नही कि प्रलय हो गया। जहा तक अन्तर्राष्ट्रीय समाज का प्रश्न है भारत की इज्जत मे कुछ न कुछ इजाफा ही होगा। पाकिस्तान की बदनामी जरूर होगी कि वह आतकवाद पर अडा हुआ है। अमेरिका जैसे पश्चिमी राष्ट्र आतकवाद के सवाल पर भारत से अधिक चौकन्ने हैं। कल सम्पन्न हुई रूस– चीन शिखर वार्ता का भी सन्देश यही है कि भारत रूस और चीन मिलकर काम करे। यदि तीनो राष्ट्र और उधर अमेरिका और उसके मित्र–राष्ट्र आतकवाद का विरोध करेगे तो पाकिस्तान की क्या हालत होगी? क्या वह अलग थलग नहीं पड जाएग लेकिन दक्षिण एशिया का सबसे बडा राष्ट्र होने के नाते यह देखना भी भारत का काम है कि पाकिस्तान कहीं हताश राष्ट्र मे तब्दील न हो जाए। इसीलिए उसे दोबारा वार्ता के रास्ते पर लाया जाए लेकिन ऐसी हर कोशिश के पहले जबर्दस्त राजनयिक तैयारी की जाए।

(साभार नवभारत टाइम्स, १८–७–२००१ से

व्यक्तित्व-विकास के बिना समृद्धिशाली जीवन अधूरा

– विजय प्रकाश त्रिपाठी

मनुष्य के जीवन मे सबसे बडी उपलब्धि व्यक्तित्व का आदर्शवादी विकास होना है। धूर्तता एवं चतुरता के दायरे मे तो अनेक लोगो को परस्पर एक दूसरे से बढ–चढ कर देखा जा सकता है। अपराध करने वाले सामान्य तौर पर अन्य लोगों की अपेक्षा ज्यादा धूर्त और अधिक दुस्साहसी होते हैं। उनका मन–मस्तिष्क भी एक से बढ़कर एक प्रपच–छल रचता रहता है और उन्हे सफल बनाने के लिए ऐसे हथकण्डो का प्रयोग करता है जिनकी जानकारी प्राप्त करने वाले तो आश्चर्यचकित रह जाते हैं।

व्यावहारिक जीवन में कुशलता एव सुव्यवस्था अत्यन्त आवश्यक है। उसके धरातल पर प्रत्येक क्षण आने वाली समस्याओं का सही प्रकार से समाधान किया जा सकता है और पगति पथ पर अग्रसर होने के लिए जो प्रयास करना, समंजस्य बैठाना और सुव्यवस्था जुटाना जरुरी होता है, उसका उपाय खोज निकाला जाता है। यही व्यवस्था बुद्धि है। सभी कार्यों को सुसम्पन्न कर सकना इसी आधार पर बन पडता है। महत्वपूर्ण कार्यों की सही योजना क्रियान्वित करना और उन्हें पूरा करन का रणनीति बनाना इसी आधार पर बन पडता है। सफल समझे जाने वाले वयक्ति इसी कुशलता के आधार पर स्वल्प साधन, सीमित सहयोग और प्रतिकूल वातावरण में भी अपने लिए राह बनाते और उफनती नदी का प्रवाह चीरते हुए नाव को इस किनारे से उस किनारे तक खींच ले जाते हैं। ऐसे लोग अपने कल्पना तन्त्र को इतना परिष्कृत कर लेते हैं कि सहयोगियों का अधिकाधिक समर्थन प्राप्त करने और ईर्ष्यालु प्रतिपक्षियों को उग्र होने देने से रोक सम्भावनाओं का सही अनुमान लगा सकें अपनी सामर्थ्य का सही आकलन करते रहें और यह देखते रहें कि वर्तमान परिस्थितियों में कितना वजन उठ सकता है। व्यवहारकुशलता इसी को कहते हैं। यह बौद्धिक कुशाग्रता जिसमें जितनी अधिक विकसित होती है, वह उतना ही सही सोच पाता है, जिससे कदम सही दिशा में सही गति से उठते रहते हैं।

बिना उद्देश्य की परिकल्पनाएं करने एवं बिना आधार की उडाने उडते रहने वाले तथाकथित बहुरूपिए की भांति असफल रहते और उपहास के पात्र बनते हैं। कुशलता की उपयोगिता तभी है जब वह यर्थाथता एंव व्यवहारिकता के साथ जुड़ी हो, साथ ही उसमें दूरदर्शिता का भी समुचित समावेश हो। क्या करने पर क्या परिणाम हो सकता है, इसका अनुमान लगा सकना बुद्धि की सुक्ष्मदर्शिता है। निर्धारित योजना के मार्ग में कब, कहां, किस प्रकार की कठिनाई आ सकती है, इसका अनुमान यथार्थवादी ही लगा सकते हैं। रंगीली कल्पनाओं की उडाने भरने वालों को तो अपनी ही सूझ ठीक तथा सब कुछ सही प्रतीत होता रहता है। वे उसी के पीछे उन्मादियों की तरह पड जाते हैं। आवेश एकांगी होता है। क्रोधी और भयभीत मानसिक स्थिति के एकपक्षीय होने के कारण ऐसा कुछ कह डालते हैं तो परिणति उच्छृंखलता, उदण्डता जैसी ही बनकर रह जाती है। असफलता ऐसों के ही सिर चढती है।

उत्साह एक अच्छी बात है। साहस की जितनी प्रशंसा की जाए उतनी ही ठीक है। पुरुषार्थ की उपयोगिता से कोई क्यों इनकार करेगा? सबके समन्वय से क्रियाशीलता उत्पन्न होती है और हलचलों का सिलसिला चल पडता है, पर देखना यह भी पडता है कि तीर सही निशाना साधकर छोड़ा जा रहा है या नहीं। सक्रियता की कमीहोने पर आलस्य और प्रमाद का दोष लगता है। किन्तु उतावले उद्धत कर्मी आवश्यकता से अधिक सक्रिय होने पर भी ठोकरे खाते और हानि पर हानि उठाते रहते है इस दृष्टि से जितनी अनुपयुक्ता-निष्क्रियता है, उससे भी कई बार और अधिक वह आवेश हानि कारक सिद्ध होता है जिसके पीछे आगा–पीछा सही रूप से सोच सकने की सूझबूझ जुड नहीं पाती।

व्यक्तित्व के विकास में अपनी बुद्धि का परिपक्व होना भी अत्यन्त आवश्यक है यदि कुछ उसमें प्रबुद्धता की कमी हो तो उसकी पूर्ति हेतु सदैव विद्वानो के सम्पर्क में रहने और उनकी गतिविधियों के पीछे जुड़े रहने वाले यथार्थवादी चिन्तन को समझने का प्रयत्न करना चाहिए। ऐसे लोगों को मांनसिक बिखराव से बचाना ही श्रेयस्कर है। वे अपने लिए उचित कार्य निर्धारित करते हैं। ऐसा जिसमें नैतिकता का पुट हो, जिसे आदर्श समझा जाए, जिसे करते हुए आत्मा न धिक्कारे और समीपवर्ती लोगों को यह न कहना पडे कि लालच के वशीभूत होकर नीति नियमों का उल्लंघन किया गया। यह कुछ करने से पूर्व सोचने की बात है। इस निर्णय में कोई विकल्प सामने रहने चाहिए और उनमें से जो उपयुक्त, उचित, व्यवहारिक एवं सरल हो, उसी को अपनाने का कार्य करना चाहिए। पूर्वाग्रह को स्थान कदापि न दें। किसी की सफलता को ही अपने लिए अनुकरणीय न मान लिया जाए। प्रत्येक व्यक्ति के सामने अलग स्थिति होती है और उसे तदनुरूप संयोग बन जाने पर ही सफलता मिलती है। जरूरी नहीं कि दूसरों को जैसी परिस्थितियां मिली हैं अपने को भी उपलब्ध होती रहें। इन विभिन्नताओं में अपने लिए दिशा एवं क्रियाकलाप का चुनाव अपने आप को तथा संसाधनों को ध्यान में रखते हुए ही करना चाहिए। इस चुनाव में जो लोग सफल हो जाते हैं और फिर उसे सम्पन्न करने के लिए अपनी तत्परता को, तन्मयता को पूरी तरह नियोजित कर लेते हैं, उन्हें क्रमिक प्रगति के मार्ग पर चल पडने के द्वार खुलते रहते हैं। जिनका मन एक से दूसरे पर, दूसरे से तीसरे पर बन्दर की तरह उचकता–मचलता रहता है, उन्हें बार–बार दिशा बदलते रहना होता है। उनके सभी कार्य प्रायः आधे–अधूरे ही दिखाई देते हैं।

प्रत्येक असफलता मनुष्य का मनोबल तोड देती है, आत्मविश्वास घटाती और साहस भरे उत्साह में कमी लाती है। इसलिए यथासम्भव ऐसी रीति–नीति प्रयोग करनी चाहिए कि निरन्तर ही असफलता का मुख न देखना पडे। इसके लिए यह नीति प्रयोग करनी चाहिए कि बहुत दिनो में पूरी हो सकने वाली योजनाएं बनाने की अपेक्षा वर्तमान में सही प्रकार से बन पडने वाले कार्यो को ही प्रमुखता दी जाए। लक्ष्य बडा हो सकता है, परः उसे पूरा करने के लिए उपयुक्त विषय भारी क्रियाकलाप एक साथ ही हाथ में लिया जाए, यह आवश्यक नहीं। कक्षाएं क्रमिक रीति से उतीर्ण की जाती हैं और विद्वता के शिखर पर अनवरत श्रम करते हुए धैर्यपूर्वक बढते चलने की नीति अपनानी होती है। फसल समय पर ही तैयार होती है। वृक्ष विकसित होने में समय लेता है और अवधि पूरी कर लेने पर ही फलता–फूलता है। आवश्यक श्रम और समय के सम्बन्ध में अधीर हो जाना और सबकुछ उसी समय प्राप्त कर लेने की उतावली ग्रसित रहना ऐसा स्वभाव है जिसमे प्रयोजन सिद्ध हाने के स्थान पर सकट ही ज्यादा खडे होते हैं।

आवश्यकताओं, उत्कंठाओं, इच्छाओं का अपनी योग्यता के अनुरूप निर्धारण और प्रयासों का वस्तुस्थिति के अनुरूप संचालन ऐसी विशेषता है, जो मनुष्य को अधिक अनुभवी बनाती है, उत्साह और साहस के साथ धैर्य का सन्तुलन भी बिठाती है। ऐसे ही दृढ़निश्चयी और पुरुषार्थपरायण बड़े कार्यों को भी यथाक्रम पूरा कर लेते हैं। जबकि उतावले और अनुभवहीन अपना श्रम, समय तो गवाते ही हैं साथ साथियों की दृष्टि में भी अविश्वस्त बनते जाते हैं। अच्छा हो कि इस स्थिति से बचने के लिए आत्मसमीक्षा की पक्षपातरहित बुद्धि जगाई जाए। शरीर को स्नान कराने की तरह अपने व्यक्तित्व की कमियों को समझने और उन्हें योजनाबद्ध रूप से सुधारते रहने का प्रयत्न किया जाए। यह कभी भी कर लेना काफी नहीं। आत्मसमीक्षा और स्वभाव में शालीनता का समावेश करते रहना ऐसा नित्यकर्म है जिसे करते रहने पर व्यक्तित्व की प्रखरता निरन्तर बढती रहती है। यही है वह बहुमूल्य प्रशक्त आयुध, जिसकी सहायता से प्रत्येक जगह पर सफलता प्राप्त और विजयश्री हासिल की जाती है।

यह विचार करना उचित नहीं है कि परिस्थितियो की अनुकूलता और साधनों की विपुलता के धरातल पर ही महत्वपूर्ण सफलताएं हासिल की जा सकती है। ऐसा कदाचित ही होता है। विशेषतया तब, जब साधन-सम्पन्नों को प्रतिभावान व्यक्तित्व की भी प्राप्ति हो गई हो अन्यथा अनुभव हीन अनुपयुक्त स्वभाव वाले हाथ में आए अवसरों को भी गवाते रहते हैं कितने ही धनी और प्रतिष्ठित परिवारों के उत्तराधिकारी अपनी दुर्बुद्धि के कारण उस चलते व्यवसाय में गतिरोध उत्पन्न कर देते हैं। इसका कारण दुर्भाग्य नहीं अपितु दोष–दुर्गुणों से भरा हुआ व्यक्तित्व ही होता है। अपने नियत कार्यों की ओर से उपेक्षा बरतने वाले और उसके आवारागर्द घूमने वाले लोग प्रखर मानसिकता उपलब्ध नहीं कर पाते। कमजोर पशु पर भारी वजन नहीं लादा जा सकता। घटिया व्यक्तित्व वाले उस उत्तरदायित्व का वहन नहीं कर सकते, जो बडे कार्यों के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़े होते हैं।

सही चिन्तन, सन्तुलित उत्साह और उपयुक्त परिश्रम, अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इनका संयोग जहां होगा, वहां अग्रगमन का संयोग अनवरत रूप में सामने आता रहेगा।

चुम्बक का अपना आकर्षण, सजातियों को अपनी ओर खींच लेता है या अपने जैसी किसी समर्थता के साथ जुड़ जाता है। यह चुम्बकत्व व्यक्तित्व में सद्गुणों के आधार पर विनिर्मित और विकसित होता है, यह चुम्बकत्व व्यक्तित्व में सद्गुणों के आधार पर विनिर्मित और विकसित होता है। इसके लिए कुसंस्कारों का परिमार्जन और मानवोचित सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन के साथ-साथ दोहरे प्रयत्न अपनाने के लिए कटिबद्ध होना पड़ता है।

– ८६/ ३२३, देवनगर, कानपुर -३

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्बन्ध में कार्यकारी प्रधान श्री स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी का वक्तव्य

सेवा में –

श्री सच्चिदानन्द जी गुप्त
सम्पादक आर्य मित्र
५ मीराबाई मार्ग लखनऊ (उ०प्र०)

सादर नमस्ते।

महोदय

सार्वदेशिक सभा कार्यालय मे आज आने पर आपका ८–१५ जुलाई का आर्य मित्र पढने को मिला। आपने इस अक के प्रथम पृष्ठ पर एक समाचार प्रकाशित किया है जिसमे मेरे पत्र को अनुचित ढग से प्रकाशित कर आर्य जनता को भ्रमित किया गया है। मैने अपने पत्र मे मात्र यह लिखा था कि सार्वदेशिक सभा की ओर से उत्तराचल सभा का गठन अभी नहीं हुआ है परन्तु आर्य मित्र मे आपने मेरे पत्र का उल्लेख करते हुए लिखा है कि – आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के प्रधान श्री कैलाशनाथ सिह हैं।

इस सम्बन्ध मे मेरा स्पष्ट मत है कि सार्वदेशिक सभा ने उ०प्र० मे जिस प्रान्तीय सभा को मान्यता दे रखी है उसके प्रधान श्री जयनारायण अरूण मन्त्री श्री चन्द्रकिरण शर्मा तथा कोषाध्यक्ष श्री अरविन्द कुमार है।

आप अपने इस वक्तव्य का खण्डन छापे ताकि आर्य जनता को वास्तविक स्थिति का पता लग सके। आशा है आप सच्चाई को छापकर आर्यत्व का परिचय देगे।

– ***स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती***
कार्यकारी प्रधान सार्वदेशिक सभा

हडप्पा और मोहनजोदडो की लिपिया समझ में आईं भाषाशास्त्री मधुसूदन मिश्र का दावा

पुरातत्वविदो ने दशको पूर्व घोषणा की थी कि सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि पढना सम्भव नहीं परन्तु सस्कृत के भाषाशास्त्री मधुसूदन मिश्र ने न केवल हडप्पा और मोहनजोदडो की खुदाई से मिली लिपि पट्टिकाए पढीं प्रत्युत उस भाषा के समस्त सूत्रो को खोलकर सामने रखा दिया। सस्कृत की पाणिनी पूर्व वर्णमाला के आधार पर सिन्धु घाटी की लिपि की सगति लगाने के बाद उन्होने घोषित किया कि सस्कृत मे एकाक्षरी शब्दकोश के आधार पर वैदिक सभ्यता और सिन्धु घाटी सभ्यता के जोडने वाले तत्व हैं।

सिन्धु घाटी लिपि को सरस्वती लिपि घोषित करने वाले मधुसूदन मिश्र ने बताया कि इस लिपि मे सस्कृत की तरह ३३ व्यजन और १० स्वर हैं। लेकिन दोनों मे एक बुनियादी अन्तर है। सरस्वती लिपि दाए से बाए लिखी जाती है जबकि सस्कृत बाए से दाए। ३२ महेश्वरी सूत्र मे व्यजन पृथक नहीं था वैदिक काल मे ओ ए अक्षर लुप्त हो गए और उनकी जगह ऋ लृ आ गए। वर्णमाला मे छ ख ष और स के स्थान बदल गए। सिन्धु घाटी सभ्यता बहुजातीय बहुभाषी और बहुआयामी थी। सिन्धु घाटी की लिपियां चित्रात्मक अकात्मक और ज्योमितीय लिपि वाली थीं। पृथकपदा भाषा के कारण लिपि की जरूरत अनुभव की गई जबकि वैदिक भाषा सश्लिष्टपदा थी इसीलिए वह श्रुति बन गई। कालातर मे वैदिक भाषा ने ब्राह्मी लिपि ही अपना ली।

सिन्धु घाटी से प्राप्त चिन्हों मे स्वस्तिक का चिन्ह परिचित है। उनका कहना है कि सिन्धु घाटी की सभ्यता के अनेक प्रमाण ऋग्वेद मे उपलब्ध हैं।

सच पूछो तो इस भारत के आदि निवासी ही हम हैं

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

सच पूछो तो इस भारत के आदि निवासी ही हम हैं।।
विद्या मे बल वैभव मे नहीं किसी से भी कम है

हमको निबल विकट के हित सकट मे पडना आता है।
देश धर्म गौरव गुमान निज प्रण पर अडना आता है।।
अन्यायी शासन से सीना तान अकडना आता है।
साथ वतन के दुश्मन गद्दारो से लडना आता है।
हमी बज के तुल्य हमी मक्खन सम मधुर मुलायम है।
सच पूछो तो इस भारत के आदि निवासी ही हम हैं।।

हम अपनी धुन के पक्के है हम है मन के मरदाने।
खुशी खुशी मर मिटे धर्म पर ज्यो दीपक पर परवाने।।
हम ही देश के लिये अधिक सख्या मे गये जेलखाने।
हमने ही कुरबानी दी यह गददार हकूमत क्या जाने।।
यह स्थान नहीं छोडेगे जब तक यह दम मे दम है।
सच पूछो तो इस भारत के आदि निवासी ही हम हैं।।

हम है दिल के साफ समझते कभी किसी को गैर नहीं
[illegible] नहीं।
मिन्नत करने जाये किसी के द्वार फालतू पैर नही।
अगर तुल पडे अपनी पर तो जानो अपनी खैर नहीं।।
करो आर्यसमाज निर्माण समझलो यही बात सर्वोत्तम है।
सच पूछो तो इस भारत के आदि निवासी ही हम हैं।।

हडप जाय हलुवे सम ऐसी समझो बात नही।
आख मिलाये हम से नत्थू खैरे की औकात नहीं।
नेह निभायेगा कोई हम उससे नेह निभायेगे।
करके मेल मिलाप कहो हम मन्दिर शीघ्र बनायेगे
करो सुकर्म धर्म हेतु यह सुखद शक्ति प्रद मौसम है
सच पूछो तो इस भारत के आदि निवासी ही हम हैं।।

जेहादी आतंकवाद का खात्मा

नदी किनारे टहल रहे एक महात्मा ने जल मे डूब रहे एक बिच्छू को देखकर उसे बचाने के लिए अपनी हथेली का सहारा दिया तो बिच्छू ने डक मारा। सन्यासी ने हाथ से खिसक गये बिच्छु को पुन सहारा देना चाहा तो बिच्छू ने पूर्ववत्त प्रक्रिया दोहरायी तब एक अन्य राहगीर ने महात्मा को सचेत किया –

"दुष्ट न छोडे दुष्टता कैसे हू सुख देत।
धोये हू सौ बेर के काजर होये न सेत।।

आप मूर्खतापूर्ण परोपकार मत करे। महात्मा ने सर्वप्रथम हथेली के झटके से बिच्छू को नदी किनारे फैंका तदोपरान्त उस राहगीर को लक्ष्यकर कहा कि बिच्छू ने अपने धर्मानुसार (स्वभाव) कार्य किया है तब मैंने भी अपने स्वभावानुसार कार्य किया है। उसमें कोई परोपकार या मूर्खता नहीं की है।

हिन्दुस्तान कभी आर्यावर्त श्रेष्ठ मानवो (ऋषि मुनियो) की जन्म स्थली रहा है कालान्तर मे विदेशी आक्रमकारियो ने क्रूरतापूर्वक छल कपट से हमारा शोषण किया और धर्म परिवर्तन करके इस्लाम मे बढोतरी करत रहे। अग्रेजो के राजतक मुसलमानो की सख्या करोडो मे हो गई जो आगमन के समय मात्र कुछ सौ थी। वेद धर्म उन्नायक स्वामी दयानन्द सरस्वती एव उनके अनुयायियो ने समाज मे फैली कुरीतिये पाखडो को दूर करने के भरसक पयास किये जिससे धर्म परिवर्तन का वेग भी थमा और अनेको को शुद्धिकर पुन हिन्दू धर्म मे लाया गया। हिन्दुस्तान को आजादी का भारी मूल्य पाकिस्तान और भारत का बटवारा करके चुकाना पडा जो बाद मे बगलादेश भी बटकर पाकिस्तान से अलग हो गया। भारत मे रह रहे मुसलमानो ने कभी भी [illegible] भारत को अपना देश स्वीकार कर इसकी अखण्डता के प्रयास नहीं किये। अपितु इमाम अब्दुला बुखारी जैसी निर्लज्जता से जेहादी गतिविधियो का समर्थन भले ही न किया हो। परिणामस्वरूप काश्मीर से कन्याकुमारी तक नाना प्रकार के साम्प्रदायिक दगे आज भी जब तब होते रहते हैं। पाकिस्तान अपने नापाक इरादो से इन आतकियो की शरण स्थली बन कर रह गया है इस्लामी जेहाद को खुदा का हुकम मानकर दरिंदगी करने वाले कबीलों कौमो को पनाह देने वाले देश पाकिस्तान के जनरल मुर्शरफ से कुछ अच्छे की अपेक्षा करना ही अदूरदर्शिता है मगर हमारे आदर्शवादी महान सहनशील कवि ह्रदय का अटूट विश्वास और भाईचारे का सन्देश समवत रहीम जी के कथनुसार ईश्वर करे सत्य और स्थाई सिद्ध हो।

जो रहीम उत्तम प्रकृति का करिसकत कुसग।
चन्दन विष व्यापे नाहिं लिपटे रहत भुजग।।

पाकिस्तान के प्रधानमत्री राष्ट्रपति और जनरल मुशर्रफ कोई आदर्शवादी साहित्यक या शायर ख्याल व्यक्ति नही हैं और समय समय पर इनकी अपनी कथनी और करनी मे घोर अन्तर रहा है। गत एक पखवाडे मे इन्होने गिरगिट की तरह अनेको रग बदले हैं। इनके द्वारा नया इतिहास रचने का सकल्प कहीं ताशकद मे स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्री [illegible] इतिहास न बने हमारी ईश्वर से प्रार्थना है कि अटल जी भारत की इस अग्नि परीक्षा मे सफल हो। भारत की छवि गौरवमयी बने और भारत का कल्याण हो।

ओ३म शान्ति शान्ति शान्ति।

वीरकन्न आर्य छिन्दवाडा

आर्यसमाज, हनुमान रोड, नई दिल्ली में वेद प्रचार समारोह

श्रावणी उपाकर्म एव श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव ४ से १२ अगस्त २००१ तक आर्यसमाज मन्दिर १५ हनुमान रोड नई दिल्ली मे आयोजित किया गया है। इस अवसर पर अथर्ववेद पारायण यज्ञ सामूहिक यज्ञोपवीत सगीत एव भजन तथा प्रवचन सहित अनेको अन्य कार्यक्रम सम्पन्न होंगे। इस अवसर पर प्रो० रतन सिह अथर्ववेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा होगे।

रविवार ५ अगस्त को हैदराबाद सत्याग्रह के अमर बलिदानियो को श्रद्धाजलि अर्पित की जाएगी।

विभिन्न उच्चतम माध्यमिक विद्यालयों तथा गुरुकुलो के छात्र/छात्राओं द्वारा भाषण प्रतियोगिता आदि के कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए जाएगे।

प्रकाशन योजना के सदस्य बनकर दोहरा लाभ उठाएं

सदस्यता शुल्क १०० एक सौ रुपये, एक बार, वर्ष में दो अनमोल ग्रन्थलागत पर १० प्रतिशत छूट सहित प्राप्त करें। तीन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

१. सन्ध्या पद्धति मीमांसा - आचार्य विश्वश्रवा

२३ x ३६/१६ पृष्ठ ३५०, कपडे की जिल्द

२. जाति निर्णय – पं० शिवशंकर "काव्यतीर्थ

२३ x ३६/१६ पृष्ठ २००, कपडे की जिल्द

३. आदर्श नित्यकर्म विधि

– सम्पा० स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती

२३ x ३६/१६ पृष्ठ १७२ आवरण चार रग मे लेमीनेशन सहित

तीनों पुस्तकों का मूल्य १४५/- सदस्य बनने पर ६०/-रुपये मात्र। ३१ अगस्त तक सदस्य बनने पर यजुर्वेद भाष्य पं० हरिशरण जी सिद्धान्तालंकार प्रथम खण्ड २०x ३०/८- बडी साइज में ६०० पृष्ठों का मात्र ७०/- सत्तर रुपये में प्राप्त करें।

श्री घूडमल प्रह्लादकुमार आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट

ब्यानिया पाडा, हिण्डौन सिटी (राजस्थान) ३२२२३०

दूरभाष ०६४६६ - ३२६२४, ३४६२४

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में

स्वाध्याय प्रेमियों के लिए विशेष छूट

१५०० रुपये का वेद सेट केवल मात्र १००० रुपये में (६ जिल्द) दिया जाएगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा श्रावणी उपाकर्म के अवसर पर वेदो को घर घर पहुचाने के लिए हिन्दी वेदभाष्य (चारो वेद) पर विशेष छूट दे रही है।

इस अवसर पर जो आर्य जन अथवा आर्य संस्थाएं व आर्य शिक्षण सस्थाए इस छूट का लाभ उठाना चाहें वह दिनांक १५-८-२००१ तक स्वय कार्यालय में आकर अथवा उक्त तिथि तक चैक बैंक ड्राफ्ट व मनिआर्डर द्वारा भेजकर लाभ उठा सकते हैं।

नोट : जो व्यक्ति डाक व ट्रांसपोर्ट द्वारा वेद मंगवाना चाहें उन्हें रुपये १०००+१०० = ११०० रु०अग्रिम भेजने होंगे।

इस अवसर पर दी गई विशेष छूट पुस्तक विक्रेताओं व प्रकाशकों पर लागू नहीं होगी।

प्राप्ति स्थान :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

३/५ दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली - २,

फोन : ३२६०६८५, ३२७४७७१

– वेदव्रत शर्मा, *सभा मन्त्री*

आवश्यक सूचना ! आवश्यक सूचना !! आवश्यक सूचना !!!

समस्त संसार की आर्य समाजों एवम् आर्य सज्जनों के लिए "बिना लाभ बिना हानि" अर्थात् सेवा भावना से सर्वश्रेष्ठ हवन सामग्री, बढ़िया एवम् मजबूत लोहे के हवन कुण्ड (स्टैण्ड सहित), शहद, सर्वश्रेष्ठ गुग्गुल, शुद्ध कपूर, असली सफेद चन्दन पाऊडर व पूजा पाठ के अन्य सामान की व्यवस्था की गई है।

आर्डर के साथ आधा धन अग्रिम मनिआर्डर द्वारा भेजकर निम्नलिखित पते पर पत्र व्यवहार करें -

देवेन्द्र कुमार आर्य (प्रबन्धक)

हवन सामग्री भंडार

631/39 ओंकार नगर सी,

त्रिनगर, दिल्ली - 35

फोन : 7197580, 7196513

आर्यजनों से सविनय निवेदन
महर्षि निर्वाण स्थली के उद्धार हेतु

("आर्यों ने अभी तक इस स्थान को कोई विशेष मान नहीं दिया है, अभी तक एक बहुत मामूली, साधारण गृहस्थी के मकान जैसा यह भवन है। आर्यों के लिए बड़ी लज्जा की बात है। इस स्थान को बहुत भव्य, आदर्श और दर्शनीय बना देना चाहिए था। यदि किन्हीं अन्य मतावलंबियों के गुरु का स्थान होता तो वे सोने-चांदी से विभूषित कर देते। इस सम्बन्ध में आर्यों की लापरवाही देखकर बहुत दुःख होता है"। – *आर्यजगत् के वीतराग सन्यासी श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज।)*

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महसम्मेलन में भारत भर से महर्षि दयानन्द के भक्त सज्जनों व देवियों की आशातीत संख्या में उपस्थिति इस बात का द्योतक है कि आर्यसमाज जीवित, जागृत और चेतनामय संस्था है। पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की उपरिलिखित अपील हमारी इस चेतना को झकझोर रही है।

महर्षि ने अपना जीवन, सुख और आनन्द सभी कुछ त्याग कर मानव मात्र के उत्थान के लिए निरन्तर परिश्रम किया। पहले सही रास्ता ढूंढने में ही अनेकों कष्ट उठाने पड़े। फिर उसका मार्गदर्शक मिल जाने पर उसे हृदयगम करने के लिए अहर्निश तपस्या की। उन्हें जीवन को सार्थक करने का साधन जब मिल गया तो पूरी निष्ठा से उसे प्रशस्त करने में लग गए। अन्तिम काल में तो उनका जीवन अत्यन्त क्लिष्ट हो गया। आज वह स्थान भी जहा उनके पार्थिव शरीर का दाह – संस्कार किया गया था, वीरान पड़ा है, लगता है जैसे पूर्ण उपेक्षा की जा रही है।

हम आर्यों के लिए हमारे आचार्य ने अपना शरीर होम कर दिया और हम उनकी स्मृति में एक छोटा सा काम अभी तक नहीं कर पाए ? कैसी बिडम्बना है ? यदि कोई अपने पिता की ऐसी उपेक्षा करे तो हम उस सन्तान को क्या कहेंगे ? जो भी आर्य जन अजमेर में इस पुण्य – स्थल को देखने जाते हैं उनका सिर शर्म से झुक जाता है। महर्षि ने तो हमारे प्रति अपना कर्तव्य निभाया और हमने क्या किया ? क्या हम अशक्त हैं ? क्या हमारे पास आर्थिक साधनों की कमी है ?

आइए, सोचें और देखें की इस दयनीय दशा को कैसे समाप्त किया जाय। यह स्थान ऐसे ही असुरक्षित, उपेक्षित, जर्जर पड़ा रहा तो क्या इतिहास हमारी हसी नहीं उड़ाएगा ? महर्षि के उत्तराधिकारी के रूप मे हमारा यह निश्चित कर्तव्य बन जाता है कि इस स्थान को हम शीघ्रातिशीघ्र एक दर्शनीय, पवित्र स्थान के रूप में विकसित करें जो महर्षि की तपस्या, प्रभु-भक्ति, मानव-प्रेम तथा वैदिक धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा का प्रतीक हो और ससार उसे देखकर महर्षि की गरिमा से अभिभूत हो जाए।

हम आपसे विनम्र निवेदन करते हैं कि निर्वाण-स्थली के इस महान् कार्य मे आप हमारी अधिक से अधिक सहायता करें ताकि हम महर्षि के भक्तों के रूप मे अपना सिर ऊचा उठाकर चल सकें और विश्व में एक आदर्श स्थापित कर सकें।

– कैप्टन देवरत्न आर्य

कार्यकर्ता प्रधान – महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक ट्रस्ट, अजमेर

नोट : – चेक या ड्राफ्ट 'महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक ट्रस्ट अजमेर' के नाम से भेजे। दान आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत कर मुक्त है।

स्वर्गीय श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक का संक्षिप्त जीवन परिचय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के बुनियादी व्यक्तित्व स्व० श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक जिनकी स्मृति ही शेष है। श्री पाठक जी की सार्वदेशिक सभा के लिए सराहनीय सेवाए रही हैं। उनकी सेवाओ की स्मृति मे उनका चित्र सभा कार्यालय में लगाया गया है। उनका परिचयात्मक लेख पाठकों के लाभार्थ यहा प्रस्तुत है। *स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती*

श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक का जन्म सन १९०१ में उत्तर प्रदेश के जिला बिजनौर के अन्तर्गत महमूदपुर ग्राम मे एक विशाल ब्राह्मण परिवार मे हुआ था जिनका पुश्तैनी पेशा वैद्यक था।

इनके पिता श्री पडित लालमणि शर्मा सस्कृत के अध्यापक होकर निकटवर्ती कस्बा सिवहारा चले गये थे। उन्होने वैद्यक भी पढी थी। यहीं पर वे आर्यसमाज के सम्पर्क मे आये और आजन्म समाज की सेवा की। वह वर्षो आर्यसमाज के मन्त्री व प्रधान रहे। इन्होने स्वर्गीय महात्मा नारायण स्वामी जी के प्रशिक्षण मे कुछ समय तक आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत उपदेशक का कार्य भी किया था। यह कस्बे मे सम्मानित वैद्य थे।

कस्बा सिवहारा मे ही पाठक जी की प्रारम्भिक शिक्षा हुई। इसके पश्चात काठ (मुरादाबाद) के हाईस्कूल तथा चदौसी (मुरादाबाद) के कालेज मे शिक्षा प्राप्त की। सन १९२४ मे यू० पी० बोर्ड से हाईस्कूल परीक्षा पास की थी। इस परीक्षा मे हिन्दी मे उन्हे 'डिस्टिकशन' प्राप्त हुआ था। जो उन दिनो बहुत कम विद्यार्थियो को ही मिलता था।

पाठक जी ने सन १९२५ मे मथुरा शताब्दी मे भाग लिया। इनके बडे भ्राता स्वर्गीय पडित शकर देव जी पाठक मथुरा शताब्दी सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के बिक्री विभाग के अध्यक्ष थे रघुनाथ प्रसाद जी पाठक ने उन्हें यहा इस कार्य मे सहयोग दिया था। पडित शकरदेव जी पाठक गुरुकुल वृन्दावन (मथुरा) के छात्र थे और मृत्यु पर्यन्त गुरुकुल की सेवा मे ही निरत रहे। इन्होने कई वर्ष तक वहा सहायक मुख्याधिष्ठाता का कार्य भी किया। उन्होने महात्मा नारायण स्वामी जी की प्रेरणा पर सत्यार्थ प्रकाश का सस्कृत भाषा में अनुवाद किया और प्रकाशित कराया यह सस्कृत के धुरन्धर विद्वान थे। सन १९१६ मे उनका अन्तर्जातीय विवाह चन्दा (नासिक) निवासी श्री सेठ जगजीवन राम खेमचन्द की सुपुत्री तथा कविरत्न श्री आचार्य मेधाव्रत जी की छोटी बहिन श्रीमती जानकी देवी के साथ हुआ था। ब्राह्मण परिवार के एक युवक का वैश्य कुलोत्पन्न कन्या के साथ विवाह का उन दिनों होना एक अनहोनी घटना थी जिसके कारण उनको सारे परिवार व कुटुम्बियो एव बिरादरी द्वारा बहिष्कार की सजा भुगतनी पडी थी। पडित शकरदेव जी पाठक का जून १९४६ में देहात हो गया। उनकी मृत्यु के पश्चात श्रीमती जानकी देवी पाठक ने श्री शकरदेव जी के हजारो रुपयों के मूल्य की पुस्तको का सग्रह जिसमे सस्कृत की अनेक अलभ्य ग्रन्थ भी थे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के पुस्तकालय को दान कर दिया सन १९ [illegible] श्री [illegible] शताब्दी [illegible] नन्द सरस्वती की जन्म शताब्दी) के बाद जब पुस्तक विभाग एव कार्यालय सार्वदेशिक सभा दिल्ली लाये गये तब पाठक जी महात्मा नारायण स्वामी जी के आदेश पर सार्वदेशिक सभा की सेवा मे आये यद्यपि उन दिनो एक अच्छी सरकारी नौकरी मिल रही थी। घर एव काठ के स्कूल मे उन्हे आर्यसमाज की ओर जो आकर्षण पैदा हुआ था वह प्रभावी सिद्ध हुआ और उन्होने स्वेच्छा से सभा की सर्विस को वरीयता प्रदान की। यदि पाठक जी किसी सरकारी सर्विस मे होते तो अपने जीवन काल में वे किसी उच्च पद पर पहुच गये होते। पाठक जी सन १९२५ से लेकर जुलाई सन १९८५ तक मृत्युपर्यन्त निरन्तर सार्वदेशिक सभा की सेवा मे रहे। सभा के कार्यालय की सुव्यवस्था और विस्तार मे उनका अमूल्य योगदान रहा। जब वे सभा की सर्विस मे आये थे तब सभा का अस्तित्व नाम मात्र का था। सुव्यवस्थित कार्यालय की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

पाठक जी को सार्वदेशिक सभा से और सार्वदेशिक सभा को पाठक जी से अलग करके सोचा भी नहीं जा सकता था। दोनो एक दूसर के पर्यायवाची बन गए थे। पाठक जी को सभा की अन्तरग ने उप मन्त्री भी नियुक्त किया था। परन्तु उन्होने इस पद का अपने नाम के साथ कभी उपयोग नहीं किया। इस प्रकार उन्होने अपनी कर्तव्य परायणता तथा सभा के प्रति निष्ठा का परिचय दिया। उन्हे महात्मा नारायण स्वामी जी स्वामी ब्रह्मानन्द जी आदि उच्चतम कोटि के नेताओ के सान्निध्य एव मार्ग दर्शन का लाभ उठाने का शुभावसर भी प्राप्त रहा।

'सार्वदेशिक' पत्र के जन्म दिन (१९२७) से ही जब वह मासिक पत्र के रूप मे निकलना शुरू हुआ था पाठक जी उसके प्रबन्धक तथा प्रकाशक रहे। सन १९६५ से पत्र साप्ताहिक के रूप में निकलना हुआ था। पाठक जी मृत्यु पर्यन्त इसके सम्पादक के रूप मे कार्य करते रहे। इसके अतिरिक्त सभा से प्रकाशित होने वाले मासिक पत्र 'वैदिक लाईट' के सम्पादन मे भी पाठक जी का बहुमूल्य योगदान रहा।

पाठक जी हिन्दी और अग्रेजी के सिद्ध हस्त लेखक थे उन्होने अनेक पुस्तके तथा छोटे ट्रैक्ट लिखे जो निम्न प्रकार है

१ नैतिक जीवन २ मातृत्व की ओर ३ आर्य जीवन और गृहस्थ धर्म ४ आर्य समाज के दस नियमो की व्याख्या ५ आर्यवर्त की वाणी (टी० वास्वामी कत अंग्रेजी पुस्तिका 'द वॉयस ऑफ आर्यावत' का अनुवाद) ६ सतति निग्रह ७ स्वामी दयानन्द सरस्वती की सक्षिप्त जीवनी (हिन्दी तथा अग्रेजी) ८ स्वामी ब्रह्मानन्द जी श्री प० लेखराम जी महात्मा नारायण स्वामी जी व [illegible] जीवनी ६ आर्यसमाज और उसका सदेश १० वैदिक सस्कति (पडित गगाप्रसाद उपाध्याय कत वैदिक कल्चर का हिन्दी रूपान्तर) ११ विवाह और विवाहित जीवन १२ मासाहार घोर पाप १३ सत्यार्थ प्रकाश दर्पण आदि।

पाठक जी के लेख देश के विभिन्न पत्रादि यथा तेज हिन्दुस्तान नवभारत विशाल भारत जन सत्ता विश्वमित्र मॉडर्न-रिव्यू हिन्दुस्तान टाइम्स टाइम्स आफ इण्डिया साप्ताहिक हिन्दुस्तान ट्रिब्यून आदि मे छपे है।

पारिवारिक परिचय

पाठक जी के ३ पुत्र और ३ पुत्रिया हैं। तीनो पुत्र ग्रेजुएट हैं तथा सरकारी व गैर सरकारी अच्छे पदों पर कार्य करते रहे हैं। वे सब बाल बच्चेदार हैं। इसी प्रकार तीनो पुत्रिया भी परिवार सम्पन्न हैं। इन सबके नाम इस प्रकार हैं।

१ केशव चन्द पाठक पुत्र २ माधवचन्द पाठक पुत्र ३ विजय कुमार पाठक पुत्र। पुत्रिया शारदा वीणा मनोरमा।

२ पुत्र वधुए पुष्पलता आभारानी और पुत्री वीणा पोस्ट ग्रेजुएट है। दोनो पुत्रवधुए सरकारी स्कूलो मे अध्यापिका हैं और वीणा उत्तर प्रदेश सरकार प्रशासन की उच्च सर्विस मे हैं पुत्र विजय कुमार की शिक्षा कुछ समय पर्यन्त गुरुकुल कुरुक्षेत्र मे और पुत्री वीणा की कन्या गुरुकुल देहरादून मे हुई थी।

पाठक जी के २ बडे और २ छोटे भाई थे जिनके नाम क्रमश पडित शकर दव पाठक (सत्यार्थ प्रकाश के सस्कृत अनुवादक) पडित बूलचद शर्मा बाबूराम पाठक (उत्तर प्रदेश सरकार मे डिप्टी सेक्रेट्री के पद से रिटायर्ड) एव चन्द्रमणि पाठक शास्त्री हैं।

बाबू राम पाठक का पुत्र सुकुमार पाठक कलकत्ता में सरकारी सर्विस मे इन्जीनियर है। बाबू राम पाठक की चार पुत्रिया सुधा सविता (कनाडा) सुषमा भारती (पी०एच०डी०) हैं। चारो विवाहित हैं पुत्र सुकुमार भी।

चन्द्रमणि शास्त्री के चार पुत्र अशोक कुमार (कोटा चम्बल योजना अन्तर्गत सरकारी सर्विस) अरविन्द (बम्बई नवी से रिटायर्ड) अमिताभ (आई० पी० एस० गुजरात) अनुराग (सेना मे मेजर)। बडे भाई श्री मूलचन्द जी (नवीन [illegible]) के २ पुत्र प्रबोध चन्द्र व शरद चन्द पाठक हैं दोनो ही उच्च सरकारी सर्विस मे हैं और बाल बच्चेदार हैं। उनकी पत्नियो के नाम क्रमश सुशीला व सविता हैं ३ पुत्रिया प्रभा प्रतिभा और प्रफुल्ल हैं बडी पुत्री प्रभा अपने पुत्र के साथ आस्ट्रेलिया मे है शेष दो भारत मे हैं।

पाठक जी की एक बहिन सुखदा देवी थी। उनकी पुत्री शकुन्तला (सुप्रसिद्ध अर्थोपदेशक पडित शिवशर्मा सभल जिला मुरादाबाद की पौत्री) स्वर्गीय पडित बुद्धदेव जी विद्यालकार (सस्थापक गन्धर्व महाविद्यालय दिल्ली) के सुपुत्र तथा विनय चन्द्र जी मौदगल्य के छोटे भाइ श्री विपिन चन्द से विवाही हैं यह भी बाल बच्चेदार हैं। पुत्र शशिभूषण शर्मा सरकारी सर्विस से रिटायर्ड हैं और बाल बच्चेदार हैं

पाठक जी के दोनो छोटे भाइयो की पत्नियो के नाम क्रमश यशोदा तथा कमला हैं। बडी दो भाभियो के नाम क्रमश श्रीमती जानकी देवी पाठक तथा रामप्यारी है पाठक जी की पत्नी का नाम विद्यावती (चावली) था उनकी मृत्यु सन १९४४ मे हो गयी थी।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 29 7 2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न0 U(C) 93/2001
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2001 in NDPSo on 26/27 - 7 2001

पुस्तक समीक्षा

श्रुति विचार सप्तक – भारतीय साहित्य से जुडे हुए सात निबन्ध

सकलन कर्ता व सम्पादक डॉ० विष्णुदत्त राकेश प्रकाशक गोस्वामी श्रद्धानन्द अनुसधान केन्द्र गुरुकुल कागडी हरिद्वार

विगत वर्षो मे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय से विशष ग्रन्थो का प्रकाशन हुआ है प्रश्न है क्या लेखक बनाये जाते है कुछ लोगो का यह भ्रम है वक्ता वक्ता है पर लेखक नही। कोई लेखक है वक्ता नही। लेखक आखिर [illegible] अभिव्यक्ति है लेखक उस आमजनता के सम्मक्ष प्रस्तुत कर विषय को प्रकट कर [illegible] बनाता है। डा० राकेश ने [illegible] सी अभिव्यक्ति का प्रकट कर प्रकाशित किया है। दीक्षान्त भाषणो का सकलन एक विशेष प्रकाशन है।

आज मेरे पास श्रुति विचार सप्तक वैदिक चिन्तन के विविध रूप मे ग्रन्थ उपलबध है। विद्वान डा० राकेश जी अध्ययन अध्यापन शील व्यक्ति है परन्तु बेखरे रूपो का सकलन कर एक नया जीवन देना उनकी एक विशेषता है। लेखक तो कुछ करना चाहता है पर साध्य हतु साधन भी चाहिए।

लेखक सूझ बूझ रखता हो पर सिद्धि के साध्य मे जो तत्व चाहिये वह साधन यह मिले तो कार्य पूर्णता को प्राप्त होता है। डा० धर्मपाल कुलपति इस समर्थ व्यक्ति हैं। जिससे यह अनुपम ग्रन्थो का प्रकाशन डा० राकेश जी द्वारा सम्भव हो सका है। गुरुकुल कागडी के शताब्दी वर्षो पर यह श्रुति विचार सप्तक सकलित कर सात निबधो को प्रकाशित किया है

यह शोध परम्परा चलती रहे तो डा० धर्मपाल जी का सहयोग और लेखक डा० विष्णुदत्त राकेश का प्रबन्धो का सकलन जनता तक आता ही रहेगा।

आशा है कि सहृदय पाठक इस भारतीय चितन को मौलिक व मानवोपयोगी बना सकेगे।

डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री

प्रतिष्ठा मे

शत हस्त समाहरः सहस्त्र हस्त संकिरः
सौ हाथों से कमाओ तथा हजार हाथों से दान करो

पीड़ितों की सेवा हम सब का राष्ट्रीय कर्त्तव्य है

सार्वदेशिक सभा के आह्वान पर गुजरात में आए भीषण भूकम्प से पीड़ित मानवता की सहायतार्थ दान की अपील पर जिन दानी महानुभावो आर्यसमाजो या सस्थाओं से दान प्राप्त हुए हैं उनकी सूची प्रकाशित की जा रही है -

[illegible] रणजीत सिंह भगत मुजफ्फर नगर	५१	१११५ कोषाध्यक्ष आ० स० मवाना मेरठ	५ ०	११२६ डा हरिदेव नारायण बलिया	५०
श्रीमती लाजवन्ती त्यागी द्वारा श्री चन्द्रभान दिल्ली	५१	१११६ लक्ष्मण्दास सेठी दिल्ली	२०	११३० नयपाल सिंह रेवाडी हरियाणा)	१००
१ ३ देव दमन्त जा हाल्ण्ड (वेसफड)	१०२५/	१११७ लालकष्ण आय जमशेदपुर झारखण्ड	५१/	१ ३१ दिले रामार्थ मुजफ्फर नगर	१२६१
४ वद प्रकाश आय आ०स० औरैया	१०००	१११८ अमित कौर द्वारा श्री चन्द्रभान दिल्ली	२५/	११३२ मित्रदर्म आर्य फिरोजाबाद	००
७ ८ स बहरी रिंग रोड विकास पुरी नई दिल्ली	५ ०	१११६ श्रीमती सुनीता कुकेजा द्वारा श्री चन्द्रभान दिल्ली	३०/	११३३ अमरीस त्यागी द्वारा श्री चन्द्रभान दिल्ली	[illegible]
१०६ आ०स टनकपुर झुनझुन (राजस्थान	२००/	११२० अशोक श्रीवास्तव बलिया	५०	११३४ राधेश्याम यादव द्वारा श्री चन्द्रभान दिल्ली	५२/
१०७ श्रीमती लक्ष्मी देवी अग्रवाल चण्डीगढ	१०००/	११२१ श्रीमती नीलम श्रीवास्तव बलिया	५०	११३५ अचल सिह आय पब्लिक स्कूल साहिबाबाद गा०बाद	३१००
मिन्दलं आय शिशु नगर फेजाबाद	१००/	११२२ निशान्त श्रीवास्तव बलिया	५०/	११३६ अमरीस त्यागी द्वारा चन्द्रभान दिल्ली	५०/
१ मन्त्री आ०स महाराजगज रायबरली	३००/	११२३ शान्तनु श्रीवास्तव बलिया	५०/	११३७ श्रीमती लाजवती देवी द्वारा चन्द्रभान दिल्ली	५१/
१ १० आर्य कन्द्रीय सभा अमतसर	५००००/	११२४ डा० सुधीर श्रीवास्तव बलिया	५०	११३८ हनुमन्त राव बाबाजी लातूर	५१/
११ डीडी शर्मा अमृतसर	७०००/	११२५ डा० सरोजिनी श्रीवास्तव बलिया	५०/	११३६ आयुकलैण्ड आयसमाज न्यूजीलेण्ड	२५०००/
१११ ब्रह्मदेव सूद अमृतसर	२०००/	११२६ अजेय श्रीवास्तव बलिया	५०		
११२ जवाहर लाल वर्मा आगरा	२५१/	११२७ वहरा श्रीवास्तव बलिया	५०/		
१११४ डा० जनार्दन सोनपुर	५०/	११२८ श्रीमती विद्या श्रीवास्तव बलिया	५०/		

भविष्य में प्राप्त दान को भी इसी प्रकार प्रकाशित किया जाएगा। **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त घोषित है।** यदि आपको अपने आयकर खातों के लिए प्रमाण पत्र की आवश्यकता हो तो सार्वदेशिक सभा के कार्यालय से मगवा लें। दान की रसीद के साथ ही यह प्रमाण पत्र भी भिजवा दिया जाएगा।

सभा मन्त्री

प्रचारार्थ लघु साहित्य

१ दैनिक यज्ञ पद्धति	४ ००
२ रामचन्द्र देहलवी	१८ ००
३ प० शुक्रराज शास्त्री का बलिदान	५ ००
४ सनातन धर्म और आर्यसमाज	४ ००
५ राष्ट्रवादी दयानन्द	१२ ००
६ जीवन सग्राम	१० ००
७ मासाहार घोर पाप	८ ००
यज्ञोपवीत मीमासा	४ ००
६ सत्यार्थ प्रकाश उपदेशामृत	१२ ००
[illegible] समीक्षा	[illegible]
११ पादरी भाग गया	१२५
१२ शराबबन्दी क्यो आवश्यक है	१ ००
१३ वेदो मे नारी	३ ००
१४ पूजा किसकी	३ ००
१५ आयसमाज का सन्देश	३ ००
१६ एक ही मार्ग	३ ००
१७ स्वामी दयानन्द विचारधारा	८ ००
१८ आत्मा का स्वरूप	८ ००
१६ वेदो और आर्य शास्त्रो मे नारी	३ ००
२० दयानन्द वचनामृत	५ ००

प्राप्ति स्थान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन ३/५
रामलीला मैदान नई दिल्ली २
दूरभाष ३२७४७७१ ३२६०९८५

श्रावणी उपाकर्म एव हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान विजय दिवस

आपको जानकर हर्ष होगा कि गत वर्षो की भाति इस वर्ष भी श्रावणी उपाकर्म एव हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान दिवस बडे समारोह पूर्वक आर्यसमाज दीवान हाल मे रविवार ५ अगस्त २००१ को प्रात ८ बजे मनाया जा रहा है।

इस अवसर पर हैदराबाद सत्याग्रह के स्वतत्रता सेनानियो का सम्मान किया जायेगा। यदि आपने इस सत्याग्रह मे भाग लिया था तो आपसे प्रार्थना है कि आप अपने परिवार सहित पधार कर उत्सव की शोभा बढाये। कपया अपने आने की स्वीकति तुरन्त प्रदान कर कतार्थ कर ताकि यथोचित व्यवस्था की जा सके।

– **डॉ० (मेजर) रविकान्त**
(सेवा निवृत्त)
मन्त्री आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली

इस्लामी आतकवादियो ने किया कश्मीरी पडितो का जीना दूभर

कश्मीरी पडितो मे इस्लामी आतकवादियो का भय काफी घर कर गया है। भारत से अलग होने या पाकिस्तान के साथ मिल जाने की माग कर रहे यह आतकवादी कश्मीरी पडितो की न केवल हत्या कर रहे हैं बल्कि अपहरण और लूट की कार्रवाइयो से उनको बेहद आतकित कर रखा है। अक्टूबर १९८९ से अगस्त १९९० के बीच साढे तीन लाख कश्मीरी पडितो को घाटी से भागना पडा है। उन्होने जम्मू के शिविरो मे शरण ले रखी है। उनका कहना है कि इस्लामी आतकवादी सारे कश्मीरी पडितो को बाहर खदेड कर या उन्हे मुसलमान बना कर पूरे कश्मीर का इस्लामीकरण करना चाहते है। अब कश्मीरी पडित कश्मीर मे अपना पृथक होमलैण्ड चाहते हैं ताकि वे सुरक्षा के साथ रह सके। उधर हुर्रियत कान्फ्रेस ने कहा है कि कश्मीरी पडित घाटी मे वापस तो आ सकते हैं किन्तु वह अगर किसी होमलैड की माग करेगे तो उसे कदापि स्वीकार नहीं किया जायेगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली–२ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली–२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१ ३२६०९८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री।
ई मेल नम्बर vedicgod@nda vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र



वर्ष ४० अक १७ | ५ अगस्त से ११ अगस्त २००१ तक | दयानन्दाब्द १७८ | सृष्टि सम्वत् १६७२६४६१०२ | सम्वत २०५८ | भा० कृ० १

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

कै0 देवरत्न आर्य तथा श्री ओंकारनाथ आर्य का नई दिल्ली में भव्य अभिनन्दन

सम्मान समारोह आर्यजनता की प्रेरणा का माध्यम

नई दिल्ली २६ जुलाई। २३ से २६ मार्च २००१ को मुम्बई मे आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के सफल एव निर्विघ्न सचालन के साथ साथ उस सम्मेलन मे पारित सकल्पो को २-३ महीनो की अल्पावधि मे क्रियान्वित करने के प्रतिफल मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान कै० देवरत्न आर्य तथा मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ओकारनाथ आर्य को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मार्गदर्शन मे पश्चिमी दिल्ली की एक अग्रणी आर्यसमाज जनकपुरी सी० ब्लाक पखा रोड द्वारा एक भव्य समाराह मे सम्मानित किया गया

शेष भाग पृष्ठ २ पर



कैप्टन देवरत्न आर्य उप प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा श्री ओकारनाथ प्रधान मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा का दिल्ली मे सिक्को से तोल कर स्वागत किया गया। इस अवसर पर उपस्थित आर्य नेता श्री वेदव्रत शर्मा श्री विमल वधावन श्री रामनाथ सहगल श्री सोमदत्त महाजन श्रीमती शिवराजवती आदि।

आर्यसमाज मंदिर मिण्टो रोड के पुनर्निर्माण हेतु

आर्यजनों का सामूहिक संकल्प समारोह

आर्य समाज मदिर मिण्टो रोड के पुनर्निर्माण को लेकर चल रहे प्रयासो मे केन्द्रीय मन्त्री श्री जगमोहन पुन हर प्रकार की बाधाए और असहयोग खडा कर रहे हैं। कूटनीतिक या राजनैतिक या कहा जा सकता है कि बातचीत के मार्ग में उन्होने स्वय अपनी पार्टी के नेताओ को भी शून्य साबित कर दिया है। श्री लालकष्ण आडवाणी के स्पष्ट निर्देश के बावजूद भी श्री जगमोहन मदिर निर्माण मे कभी मुकदमे की दुहाई देते हैं तो कभी पार्क बनाने को प्राथमिकता देने की बात करते हैं।

सत्याग्रह आन्दोलन या टकराव के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं है जिससे आर्य समाज के सम्मान की रक्षा सम्भव हो और इस ध्वस्त मदिर का पुनर्निर्माण उसी स्थल पर हो सके।

धरना निरन्तर चल रहा है। उत्साही आर्यजन प्रतिदिन वहा उपस्थित होते हैं। हम लोग पूरे प्रयासों मे जुटे हैं। हमें आर्य जनता के हर सहयोग और आशीर्वाद का भरोसा है। आर्यसमाज की पवित्र विचारधारा और निस्वार्थ कर्म की शक्ति हमारी प्रेरणा है।

इन प्रेरणाओ को उजागर करने स्वय अपनी आत्माओ को ललकारने के लिए ५ अगस्त रविवार को साय ४ बजे ध्वस्त मदिर स्थल पर ही एक "सकल्प समारोह आहूत किया गया है। आपसे निवेदन है कि अधिक से अधिक सख्या मे समारोह मे उपस्थित होकर अपना सकल्प व्यक्त करे।

विगत दो सप्ताह से इसी स्थल पर यज्ञ प्रवचन आदि का पखवाडा बडे भव्य तरीके से मनाया गया जिसमे आर्यजगत के विद्वानो श्री डा० कर्णदेव शास्त्री डा० नरेन्द्र वेदालकार तथा आचार्य भद्रकाम वर्णी आदि ने वैदिक उपदेश प्रस्तुत किए। श्री स्वामी स्वरुपानन्द सरस्वती श्री गुलाब सिह राघव तथा श्री नरेश सोलकी आदि ने मधुर भजनो के द्वारा आर्य जनता को प्रेरित किया

तैयार रहो (पृष्ठ तीन पर प्रकाशित लेख) की भावनाओ को अपने दिल और दिमाग के रोम रोम मे उतारते हुए इस सकल्प समारोह मे अधिक से अधिक सख्या मे भाग ले। पाच अगस्त रविवार साय ४ बजे।

वेदव्रत शर्मा *सभा मन्त्री*

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

सह सम्पादक
विमल वधावन एडवोकेट

पृष्ठ १ का शेष

कै0 देवरत्न आर्य तथा श्री ओंकारनाथ आर्य का नई दिल्ली में भव्य अभिनन्दन

सम्मान समारोह आर्यजनता की प्रेरणा का माध्यम

दोनो आर्य नेताओ को सिक्को से सभागार मे ही तोला गया तो सारा जनसमुदाय वैदिक धर्म की जय के नारो से ग-जायमान हो उठा।

उल्लेखनीय है कि विगत अन्तर्राष्ट्रीय साथ पूर्ववत प्रचार मे जुट गई तो दूसरी तरफ मुम्बई और सार्वदेशिक के आर्यनेता इस टी०वी० चैनल योजना के क्रियान्वयन मे जुट गए। परिणामत जून के अन्तिम सप्ताह से **आस्था टेलिविजन चैनल** पर के अतिरिक्त दोनो आर्यनेताओ को **एक भव्य स्मृति चिन्ह** तथा **अभिनन्दन पत्र** भी भेट किया गया।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री **श्री वेदव्रत** शर्मा ने विगत समारोहो **को** एक और आशीर्वाद को पाकर मेरे अन्दर एक नई स्फूर्ति और उत्साह उत्पन्न हुआ है। मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हू कि मुझे इसी प्रकार आप की सहानुभूति एव उत्साह प्राप्त होता रहे और मैं अधिक



कैप्टन देवरत्न आर्य तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता आर्या एव श्री ओंकारनाथ आर्य तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शिवराजवती को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए आर्य नेता।





आर्यसमाज के मन्त्री श्री रमेश चन्द जी अन्य महानुभावों के साथ। श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती श्री स्वामी जगदीश्वरानन्द श्री स्वामी दिव्यानन्द जी अन्य आर्य सन्यासियों के साथ।

आर्य महासम्मेलन मे हर व्यक्ति के मुख पर उस सकल्प की सराहना थी जिसके तहत महर्षि दयानन्द के जीवन पर आधारित धारावाहिक **'प्रकाश'** के प्रारम्भ होने की घोषणा की गई थी और वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए **एक नया टी०वी० चैनल** प्रारम्भ कराने की माग भी शामिल थी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न होने के बाद समूची आर्य जनता तो अपने अपने क्षेत्रो मे एक नए उत्साह के प्रात काल ८ बजे से **दैनिक प्रवचन** का कार्यक्रम प्रारम्भ करवाया गया। इस सारे कार्यक्रम का मुख्य श्रेय कै० देवरत्न आर्य श्री ओकारनाथ आर्य तथा मुम्बई के अन्य आर्य नेताओ को जाता है।

दोनो आर्यनेता मुम्बई से सपरि-र पधारे थे। श्री ओकारनाथ जी की धर्मपत्नी श्रीमती शिवराजवती तथा कै० देवरत्न आर्य की धर्मपत्नी श्रीम्ती सुनीता आर्या तथा इनके सुपुत्र तथा सुपुत्री भी इस कार्यक्रम मे उपस्थित थे। सिक्को मे ता-ने ऐतिहासिक समारोह बताया। उन्होने कहा कि यह सम्मान प्रतीक रूप मे बेशक इन दो आर्य नेताओ को प्रदान किया जा रहा हे परन्तु वास्तव मे यह समूचे आर्यजगत का सम्मान है जिनके अथक प्रयास परिश्रम और कष्ट से जिनकी विशाल उपस्थिति से जिनके अनुशासन से वह विशाल कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

समारोह को सम्बोधित करते हुए कै० देवरत्न आर्य ने कहा कि इस समारोह को देखकर तथा आर्य जनता के प्यार से अधिक आर्यसमाज की सेवा कर सकू।

उन्होने सम्मेलन के आयोजन तथा आस्था चैनल के कार्यक्रम के सचालन मे समूचे आर्यजगत का धन्यवाद करते हुए कहा कि विश्व के कोन कोने से यह सन्देश प्राप्त हो रहे हैं कि आस्था चैनल के कार्यक्रम बन्द नहीं होने चाहिए। परन्तु मेरी यह स्पष्ट मान्यता है कि इनकी निरन्तरता आपके हर सम्भव सहयोग पर ही आधारित है।

शेष पृष्ठ ११ पर

तैयार रहो !

– स्वामी आनन्द भिक्षु

'आर्यसमाज निर्बल हो गया निर्जीव हो गया एकदम निर्जीव हो गया। यह चिन्ता एक दो को नही दस बीस को नही प्राय सभी विचारशील आर्य महानुभावो को केवल आर्य महानुभावो को ही नही – सभी देशभक्तो आर्यसमाज और आर्य जाति के हितचिन्तको को सता रही है बुरी तरह सता रही है। जहा जाइए जिससे बात कीजिए उसे यही चिन्ता है। हा ! क्या होगा ? कैसे करेगा ? कैसे करेगा ? आर्यसमाज देश मे एक जिन्दा जागता समाज था। उससे बडी बडी आशाए थी। बडी बडी अभिलाषाए थीं। कुछ ही दिनो मे – ऐसी शिथिलता ! ऐसी अकर्मण्यता ! ऐसी निर्बलता !! ऐसी निर्जीवता !!!

दयानन्द निस्सन्देह योगी थे तपस्वी थे देशोद्धारक थे आर्यजाति और आर्यसस्कृति के परम रक्षक थे। आह ! सच पूछिए तो न जाने वह क्या थे क्या न थे ? उन्होने जिस आदर्श का आर्य जाति के सामने रखा था जिस मार्ग पर आर्यसमाज को डाला था वह एकदम निराशा से आशा की ओर मृत्यु से अमृत की ओर अन्धकार से प्रकाश की ओर असत्य से सत्य की ओर और पराधीनता मे परम स्वाधीनता की ओर था ! परन्तु उनके अनुयायी उनके नाम और उनके काम पर मिट जाने वाले वीर सैनिक कुछ दूर बहुत थोडी दूर चलकर ठिठुक गए बहक गए पथभ्रष्ट हो गए। और ? और फिर क्या ? जो होना था वह हुआ हो के रहा ! अपमान ! निरादर ! अन्याय ! अत्याचार ! हकतलफी !! कहा कहा ? एक जगह नहीं जगह जगह!! थोडी नही बहुत बहुत !! हाय ! कुछ न पूछो ! जिनकी आखे है उन्होने देखा और देखते है। जिनके पहलू मे दिल है दिल मे महसूस करने की शक्ति है वह इस अवस्था का इस दुख को महसूस करते हैं और कर सकते हैं !! तब आलस्य शिथिलता और स्वार्थपरता मे और होना ही क्या था ? अकर्मण्यता मृत्यु है निर्जीवता है। और निर्जीव समाज का इस भूतल पर अधिकार ही क्या है ? और वह कर ही क्या सकता है ?

पर आर्यसमाज क्या सचमुच निर्जीव है निर्बल है ? वह एकदम सत्ताहीन हो गया है ? नहीं ! आर्यसमाज निर्बल नहीं है निर्जीव नहीं है। वह किसी भी जीवित समाज की भाति जीवित है सतर्क है सजग है। पर हा वह मदान्ध नहीं है उन्मत्त नही है। उसमे बबरता और बहशीपना नहीं है। वह हृदय और मस्तिष्क दोनों रखता है और दोनो को ठीक ठीक प्रयोग मे लाना जानता है। आर्यसमाज ऋषि दयानन्द की दिव्य विभूति है। जब तक आर्यसमाज मे दयानन्द के नाम का – दयानन्द के काम का आदर है जब तक आर्यसमाज मे सत्य की प्रतिष्ठा और सत्य की जिज्ञासा का चाव है और हा जब तक आर्यसमाज मे वेदो का मान और वेद रक्षा का भाव मोजूद है तब तक निस्सन्देह तब तक आर्यसमाज को निर्जीव समझना भूल है – भयकर भूल है। भूल ही नही आर्यसमाज के प्रति आर्य जाति के प्रति घोर अन्याय करना है। हम ऐसे विचारो का कभी भी – त्रिकाल मे भी स्वागत नहीं कर सकते हैं। आर्यसमाज को जब अवसर मिला और जब भी अवसर मिलेगा वह अपने जीवन का प्रमाण अपनी जिन्दगी का सबूत सदा की भाति देगा – बराबर देगा – हजारो मे देगा।

निस्सन्देह आर्यसमाज न्याय का प्रेमी और शान्ति का उपासक है। इसकी इस न्यायप्रियता और शान्ति उपासना को कोई कुछ भी समझे कुछ भी कहे सुने पर वह तो वही है जो उसे होना चाहिए। आर्यसमाज अपने अधिकार और कर्तव्य को भली भाति जानता और समझता है और समय पडने पर – आवश्यकता होने पर – वह उनकी रक्षा करता है – करेगा और प्राणपन से करेगा परन्तु मर्यादा के भीतर धर्म और न्याय की सीमा के अन्दर रहकर। आर्यसमाज मे जहा चाव है जीवन है शक्ति है तप है त्याग है बलिदान के लिए उमग है वहा उसमे धैर्य सहिष्णुता गम्भीरता विचारशीलता शान्ति और क्षमाशीलता का भी अभाव नही है। और कहा ? कब ? किस प्रकार ? क्या करना चाहिए ? यह भी वह अच्छी तरह जानता और तदनुसार व्यवहार करता है और किसी व्यर्थ जोश आवेश तथा मदान्धता मे इधर उधर नही हो जाता अन्धाधुन्द नही करता लक्ष्य भ्रष्ट नही होता।

आर्यसमाज एक धार्मिक समाज है। उसे प्रपच नहीं भाते प्रपन्चो मे पडना नहीं भाता वह खामखाह आग मे कूदना पसन्द नही करता। वह तो शान्ति से खामोशी से अपना काम – शुद्ध धर्म का काम धर्म विचार का काम – करना जानता है। परन्तु जब धर्म पर आघात होता है धर्म पर सकट पडता है तब ? तब विवश होकर लाचार होकर धर्म के नाम पर ईश्वर के नाम पर न्याय के नाम पर अपील करते हुए अपने कर्तव्यपालन पर दत्तचित्त हो जाता है !! आर्यसमाज सब कुछ बर्दाश्त कर सकता है। हिन्दू जाति सब कुछ सहन कर सकती है। परन्तु एक बात नहीं एक चीज नहीं – कभी नही कदापि भी नहीं तीन काल मे भी नही। वह बात क्या है ? वह बात है धर्म का अपमान ! धर्म का निरादर ! धर्म कार्य मे बाधा !! सरकार सुन ले ! मुसलमान सुन ले ईसाई सुन ले और भी यदि कोई विपक्षी हो तो भी सुन ले। हम अपना व्यक्तिगत अपमान सह सकते है। हम अपने सासारिक अधिकारो का मोह भी त्याग सकते है। परन्तु अपने धर्म को अपने धर्म के अपमान को कभी भी किसी भी अवस्था मे भी किसी चीज के बदले मे भी – नही भुला सकते नही छोड सकते नही छोड सकते !! वह तो प्राणो से भी प्यारी और मोक्ष से भी अधिक वाछनीय वस्तु है धर्म की रक्षा करना धर्म प्रचार मे खडी हुई विघ्न बाधाओ का मुकाबला करना उन्हे दूर हटाना आर्यसमाज का नैतिक धार्मिक तथा सामाजिक कर्तव्य है। वह उसकी अवहेलना कब तक और किस प्रकार कर सकता है ?

समाज कानून के लिए नही बल्कि कानून समाज के लिए होता है। जो कानून समाज के उचित अधिकारो का अपहरण करता है उसके सुधार के लिए कटिबद्ध होना समाज का कर्तव्य ही है। आर्यसमाज ने अब विवश होकर लाचार होकर बिल्कुल निराश होकर काफी धैर्य के बाद काफी न्याय याचना के बाद काफी प्रतीक्षा के बाद सत्याग्रह की योजना की है तो कौन इसे दोषी और उसकी इस योजना को असगत कुसमय और अदूरदर्शिता पूर्ण कह सकता है ? यह तो एकदम न्यायोचित व्यवहार है धर्मप्रणीत कर्तव्य है। और यही कारण है कि आज आर्यसमाज के साथ समूचा देश है समस्त हिन्दू जाति है और ? और प्रत्येक निष्पक्ष न्यायप्रिय तथा विचारशील पुरुष सरकार की इस नीति (?) इस हठवादिता की निन्दा करता है। अपने अधिकार की रक्षा करना अपने अधिकार रक्षा के लिए जूझ मरना प्रत्येक सभा का प्रत्येक देश और प्रत्येक जाति का प्रत्येक मनुष्य और प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है – स्वाभाविक कर्तव्य है। और उसके लाभालाभ का दायित्व उस पर है जो उसे इस कठोर और दुखपूर्ण कर्तव्यपालन के लिए आह्वान करता है निमन्त्रित करता है विवश करता है।

विधि का लिखा को मेटन हारा आय वीर को तैयार रहना चाहिए। परीक्षा का समय धर्म और देश पर निछावर हो जाने का अवसर जीवन मे बार बार नही कभी कभी आता वह भी बडे पुण्य और भाग्योदय होने पर ही आता है।

हतोवा प्राप्स्यसि स्वर्ग जित्वाबाभोक्ष्य सेमहीम

रण बाकुरे ऐसे अवसरो पर अपने कर्तव्य से नही चूकते। पर हा स्मरण रहे इस समय हमे हारजीत के विचार से नहीं कर्तव्य शुद्ध कर्तव्य के विचार से इस धर्म युद्ध के लिए तैयार रहना चाहिए। इस धर्म क्षेत्र मे पदार्पण करना चाहिए। ईश्वर हमारी सहायता करेगे और धर्म वह धर्म जिसके लिए हम अपने सकल सासारिक पदार्थों के सुख भोग का मोह त्याग कर अपने प्राणो को निछावर करने के लिए तैयार हुए है – हमारी रक्षा करेगा। धर्म की शक्ति ही सब शक्तियो से प्रबल शक्ति है। और उस शक्ति से सम्पन्न होकर ही मनुष्य मृत्यु तक पर विजय प्राप्त करता है।

धर्मपुत्र युधिष्ठिर का कहना था – मै मानता हू मेरे पास ऐसे योद्धा नही है जैसे धृतराष्ट्र के पुत्र के पास है। मै यह भी मानता हू कि द्रोणाचार्य और कृपाचार्य के सामने खडा होना सरल कार्य नही है। पर मेरा सहायक मेरा रक्षक मेरा धर्म है और वह अकेला ही शत्रुओ को पछाडने के लिए काफी है।

यह विश्वास था जिससे धर्मराज युधिष्ठिर को विजय प्राप्त हुई और यही विश्वास है जिससे इस धर्मयुद्ध मे हमारी विजय होगी।

बोलो वैदिक धर्म की जय !!

स्वाध्याय की महिमा

हमारे शास्त्रो मे स्वाध्याय की महिमा बहुत बतलाई गयी है। वेद स्मृति उपनिषद दर्शन और ब्राह्मणग्रन्थो मे स्वाध्याय के महत्व पर प्रभूत प्रकाश डाला गया है।

ये है वै के च श्रमा। इमे द्यावापृथिवीऽन्तरेण स्वाध्यायो हैव तेषा परमता काष्ठा य एव विद्वान स्वाध्यायम धीते तस्मात स्वाध्यायोऽध्येतव्य ।।

– शतपथ० का०।। अ० ५ ब्रा० ६० क० २।।

ससार मे जितने भी कार्य है स्वाध्याय उन सब मे श्रेष्ठ है कठिन कार्य है ऐसा जानकर जो स्वाध्याय करता है वह तत्त्व को जान लेता है। इसीलिए स्वाध्याय करना चाहिए।

स्वाध्याय मे एक अधिक सुख है। ज्यो ज्यो हम ज्ञान प्राप्त करते है अन्दर से एक प्रकार के विवेकयुक्त ज्ञान का प्रकाश प्राप्त करते है। गुप्त सुख का अनुभव करते है।

लोक पच्यमानश्चतुर्भिर्धर्मै ब्राह्मण भुनक्त्यर्चया च दानेन चाज्येयतया यावदयतया च।।

– *शत० ११/५/७*

स्वाध्यायशील के व्यवहार से आकृष्ट हुए लोग उसका सत्कार और दान के द्वारा तथा इसे सब प्रकार के कष्टो से बचा कर और उसके प्राणो की रक्षा करके उसका पालन करते है।

त्रयो धर्मस्कन्धा यज्ञोऽध्ययन दानमिति।।

– *छान्दोग्य २/२३/१*

मनुष्य के लिए धर्म के तीन स्कन्ध है १ यज्ञ २ स्वाध्याय और ३ दान। इनमे स्वाध्याय सर्वश्रेष्ठ है। क्योंकि इससे हम वस्तुत मनुष्य कहलाने के अधिकारी बनते है।

– आचार्य ब्र० नन्दकिशोर कृत स्वाध्याय दर्पण से

गतांक से आगे

मृत्योर्माऽमृतं गमय

यहा यह समझ लेना आवश्यक है कि स्वर्लोक से क्या अभिप्राय है। अथर्ववेद के दशम मडल के आठवे सूक्त का पहला मन्त्र इस प्रकार है–

यो भूत च भव्य च सर्व यश्चाधितिष्ठति।
स्वर्यस्य च केवल तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।।

इस मन्त्र का देवता अध्यात्म है। जिसको केवल स्व कहकर बुला सकते हैं उस ज्येष्ठ ब्रह्म को नमस्कार है। भूर्भव स्व इन तीन महाव्याहृतियो का अर्थ प्राय सत चित तो है पर आनन्द युक्त नहीं है। परमात्मा केवल स्वर्लोक आनन्दधाम कैवल्यधाम को प्राप्त कर लेना ही जीवात्मा का उद्देश्य है। मनुष्य पिण्ड के शिरोभाग को दो भागो मे बाटा गया है। आखो पर बनी भूरेखा शिरो भाग को दो लोको मे विभाजित करती है। भू रेखा से ऊपर का भाग स्वलोक कहलाता है जबकि भूरेखा के नीचे का भाग द्युलोक कहलाता है। कण्ठ कूप से लेकर नाभि तक का भाग अतरिक्ष कहलाता है। नाभि से लेकर चरण तक का भाग पृथ्वी लोक कहलाता है। आरोहण कर्त्ता वेद के शब्दो मे पुकार उठा –

पृथिव्याऽहमुदन्तरिक्षमारुहमन्तरिक्षाद्दिवमारुहम।
दिवो नाकस्य पृष्ठात स्वर्ज्योतिरगामहम।।

यजु० १७/६७

मैं पृथ्वी लोक से अन्तरिक्ष लोक अतरिक्ष लोक से द्युलोक और द्युलोक से स्वर्लोक मेंआरोहण कर उसकी आनन्द ज्योति को प्राप्त कर लू, इस स्वरारोहण मे मृत्यु बाधक बनकर खडी रहती है। क्या ही अच्छा हो कि यदि व्यक्ति मृत्यु के रास्ते मे पर्वत को खडा कर दे। वैदिक ऋचा मे कहा गया है मत्युर्दधता पर्वतेन पर्वत की रुकावट से मृत्यु को सवर्लोक तक न जाने दो। यह न समझ लेना चाहिए कि साधक भूमि पर खडे हुए पर्वत को उसके सामने खडा करेगा। मनुष्य देह मे मेरुदण्ड ही वह पर्वत है जिसे मृत्यु के सम्मुख रुकावट बनाकर खडा किया जा सकता है। इसके ३३ पर्व ही इसकी पर्वत सज्ञा को सार्थक करते हैं। योग के अष्टागो मे ध्यान का स्थान सर्वोपरि है। साधक ध्यान की स्थिति में मेरुदण्ड को सीधा करके ही बैठे तभी ध्यान की सिद्धि हो सकती है। ध्यान सिद्धि होते ही समाधि लोक आनन्दलोक को हस्तगत कर लेना सरल होता है।

मृत्यु का स्वरूप

नदी के प्रवाह की भाति जीवन भी एक प्रवाह है जिसके दो तट हैं एक तट का नाम जन्म है तो दूसरे तट का नाम मृत्यु है। जन्म के पश्चात मृत्यु, मृत्यु के पश्चात जन्म यह सिलसिला रात और दिन की उत्पत्ति प्रलय की भाति सतत प्रवाहमान है अनादि है अनन्त है। किसी को पहले या पीछे अकित नहीं किया जा सकता। दो जन्मो के मध्य मृत्यु अवश्यभावी है। नि सन्देह मृत्यु का भय प्राणिमात्र को है। विरले ही मृत्यु को प्रभु इच्छा मानते हैं। यजुर्वेद के २५वे अध्याय के १३वे मन्त्र मे अमृत और मृत्यु को उसकी छाया माना गया है। 'यस्य छायाऽमृत यस्य मृत्यु'। मृत्यु मिट्टी के एक पुतले प्राणिदेह से छुडाकर दूसरे मिट्टी के पुतले प्राणिदेह से जोडने वाली शक्ति है। इस शब्द मे पड हुआ यु धातु मिश्रण और अमिश्रण अर्थ में प्रयुक्त होता है। यू मिश्रणामिश्रणयो मृत यौति वियौति च। मृत्यु प्राणि को एक देह से तोडती है दूसरी देह से जोडती है। इसी मृत्यु के कारण वैदिक दर्शन मेंपुनर्जन्म और आवागमन का सिद्धान्त प्रतिष्ठित हुआ है। मृत्यु उस मा के तुल्य है जो अपने शिशु को आचल मे लिए हुए अपने उभय स्तनों से तोडती और जोडती रहती है। दक्षिण स्तन के दूध चुक जाने पर शिशु को छुडाकार बाए स्तन से दुग्धपान के लिए जोड देती है। यह स्वाभाविक है दाए स्तन से छुडाने पर शिशु रोता धुन्ध मचाता हाथ पैर पटकता है। मा इसकी परवाह किए बिना बाए स्तन से जोड देती है। सासारिक व्यक्तियो का भी यही हाल होता है। अन्तिम क्षणो मे जब व्यकित को यह आभास होता है कि मृत्यु मुझको इस देह से छुडा रही है तब भी वह रोता है झींकता है हाथ–पैर पटकता है तो मृत्यु रूपी मा बिना परवाह किए प्राणी को दूसरे देह से जोड देती है। वे व्यक्ति महान पुरुष हैं जो मृत्यु की घडी मे रोते नहीं हसते हैं और कहते हैं कि हे ईश्वर! तेरी इच्छा पूर्ण हो। कबीर ने कितना अच्छा कहा हे कि–

जब तुम आए जगत में जग हसा तुम रोये।
ऐसी करनी कर चलो तुम हसो जग रोये।

मृत्युञ्जय मन्त्र में वर्णित प्रार्थना

सभी जानते है कि यजुर्वेदीय मृत्युजय मन्त्र मे युवक स्नातक की और युवति स्नातिका की उभय प्रार्थना है कि मृत्योर्मुक्षीय मा अमृतात। मुझे मृत्यु बन्धन से छुडा दो लेकिन अमृत बन्धन से नहीं। युवति स्नातिका की प्रार्थना है कि 'इतो मुक्षीय मामुत' इधर से छुडा दो लेकिन उधर से नहीं। हम इस मन्त्र का जो आशय समझ पाए हैं वह उभय विध स्नातक की मृत्यु आचार्य के बन्धन छूट जाने की और उससे प्राप्त ज्ञानामृत से बधे रहने की प्रार्थना है। वेदो का अध्येता इस मन्त्र के आध्यात्मिक अर्थ मे इहलोक के बन्धन से छूट जाने की प्राथना मे विनियोग कर सकता है। युवति स्नातिका की प्रार्थना मे 'पतिवेदनम' विशेषण इस बात का सकेत है कि इत और अमुत पदद्वय का अर्थ पितृलोक और पतिलोक है उसका कथन है कि पितृ–लोकात पतिलोक गमेयम। इससे ये सकेत मिलता है कि प्राणिमात्र के लिए मृत्यु-बन्धन पितृकुल व आचार्यकुल के बन्धन के समान है। अमृत–बन्धन पतिलोक एव ब्रह्मलोक के समान है।

आचार्य की मृत्यु सज्ञा

अथर्ववेदीय ब्रह्मचर्य सूक्त मे आचार्य की पाच सज्ञाए मानी गई है।। जो क्रमश मृत्यु, वरुण सोम औषधि और पय है। आचार्य की मृत्यु सज्ञा इस बात का सकेत है कि आचार्य दो जन्मो के बीच एक कडी है। ये सर्वविदित है कि आचार्य कुमार ब्रह्मचारी को विद्यात द्विती जन्म देता है। सूत्रकार ने कहा है कि स हि विद्यात त जनयनि तदस्य श्रष्ठ जन्म। माता पितरौ तु शरीरमेव जनयत। आचार्य के पाच नामो म से पहना नाम मृत्यु है। और अन्तिम नाम पय है। मानो आचार्य मृत्यु–मातृ–स्तन्य से छुडाकर विद्या मातृ स्तन्य से जोड देता है। जिस प्रकार शिशु परिपक्व होने पर मातृ–स्तन्य से स्वत छूट जाता है वैसे ही स्नातक आचार्य के स्तन्यपान से छूट जाता है। इसी को कहा गया है– 'मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।। यहा यह ध्यान रहे कि फल परिपक्व हाने पर डाल से स्वत छूट जाता है। छूटने के लिए पकना आवश्यक है और पकने के लिए बधना आवश्यक है। इसलिए उभय–विध मृत्यु–बन्धन हितकारी है।

परिपक्वता की पहचान

स्नातक–रूप परिपक्व फल की पहचान उसका अविप्लुत–ब्रह्मचर्यपालन है। तभी वह गृहाश्रम में प्रवेश का अधिकारी बनता है। मनु के शब्दों में–

वेदानधीत्य वेदौ वा वेद वाऽपि यथाक्रमम्।
अविप्लुतब्रह्मचर्यो गृहस्थाश्रममाविशेत्।

वेद के शब्दों में अन्तेवासी ब्रह्मचर्य समुद्र को पार करके ही गृहस्थाश्रम समुद्र में प्रवेश करे। तद यथा अथर्ववेद के ब्रह्मचर्य सूक्त में कहा–

ब्रह्मचार्येति समिधा समिद्ध कार्ष्ण वसानो दीक्षितो दीर्घश्मश्रु।
स सद्य एति पूर्वस्मादुत्तर समुद्र लोकान्सगृभ्य मुहुराचरिक्रत।

अथर्व० ११/३/५/६

स्नातक का दीघश्मश्रु विशेषण उसके अविलुप्त ब्रह्मचर्य एव परिपक्वता का परिचायक है। इसका अभिप्राय यह है स्नातक रुप फल के परिपक्व होने तक ब्रह्मचारी ऐसा उपाय करे मृत्यु को निकट न आने दे इसके लिए आवश्यक है कि ब्रह्मचारी पूर्णत स्वस्थ हो अपने आप में स्थित हो उसका अपना निवास स्थान भ्रूरेखा से ऊपर स्व–लोक है। उपनिषत्कार ने कहा है कि कण्ठ में जो स्तन–सा लटका हुआ है। वह इन्द्र की योनि है। य एष स्तन इवालम्बते सेन्द्रयोनि। यहीं पर इन्द्र का निवास है। मस्तिष्क मे विद्यमान जो अगुष्ठमात्र स्थान है वहीं इन्द्र आत्मा और ब्रह्म परमात्मा का निवास स्थान है। यहीं पर इन्द्र आत्म निवास करके इन्द्रिय–भोगो को भोगता है और यहीं रहकर ब्रह्म से योग करके स्वर्ज्योति को प्राप्त करता करता है। अर्थात अपने और ब्रह्म के स्वरूप मे स्थित हो जाता है। भगवान पतजलि के शब्दो मे 'तदाद्रष्टु स्वरूपेऽवस्थानम'। योग दर्शन १/३।। द्रष्टा का अपने स्वरूप मे तथा ब्रह्म के स्व आनन्द रूप मे स्थित होना है। यह तभी सम्भव हे कि वह ब्रह्म मे ही विचरण करे। ब्रह्मचर्य सूक्त के प्रथम मन्त्र मे ही ब्रह्मचारी की परिभाषा कर दी गई है। ब्रह्मचारीश्णश्चरति। अथर्व० ११/५/१।। अर्थात ब्रह्म इष्णन चरति इति ब्रह्मचारी। ब्रह्म की इच्छा से चाहना से उसकी तलाश मे जो अहर्निश गतिशील रहता है वह ब्रह्मचारी है। यदि इन्द्र आत्मा इन्द्रियो मे रमण करेगा तो वह मृत्यु को न जीत पाएगा। इसलिए आवश्यक है कि वह ब्रह्म मे वेद अथवा ईश्वर मे विचरण करे। ब्रह्मणि चरति इति ब्रह्मचारी इस नाम को साथक करे।

ब्रह्मचारी को सावधानी बरतनी होगी कि वह इन्द्रिय अर्थों का रूप रस गध स्पर्श शब्दादि विषयो का मर्यादा मे रहकर उपयोग करे। असावधानी होते ही विषय जाल उसे बाध लेगे जोकि मृत्यु के द्वारा फैलाए गए हैं। उसे ध्यान मे रखना होगा यह जो उसे पुर मिला है उसका नाम अयोध्या है और देवो का पुर है। इन्द्रिय–गोलको मे देवताओ ने ही निवास किया था। इन्हीं देवो की सहायता से स्वर्ज्योति का आभरण सम्भव है। ब्रह्मचर्य सूक्त मे कहा भी है – ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत। इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्य स्वराभरत।। अर्थात देवो ने ब्रह्मचर्य रूप तप से मृत्यु को मार डाला ओर इन्द्र ने देवो की सहायता से स्वर्ज्योति को धारण कर लिया। यही उसका उद्देश्य था यही उसकी परिपक्वता थी। अब भला ही इस देह पर मृत्यु अधिकार कर ले। अब उसे इसकी आवश्यकता नही है।

पुराण के कथनानुसार यम की सवारी मृत्यु है जिसे महिषासुर माना गया है। उसे यह वरदान मिला है कि वर्तमान देवता मुझे न मार सकेगे तू उन पर सदैव विजयी रहेगा। तब देवो ने सोचा कि आओ हम अपना–अपना अश देकर नए देव को जन्म दे। इन्द्रिय गोलको मे विद्यमान देवो ने अपना–अपना अश दिया। उससे नई देवी का जन्म हुआ। जिसे दुर्गा कहा गया। व स्तव मे यह शक्ति ब्रह्मचर्य शक्ति है। इसीलिए कहा गया 'ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत'। ब्रह्मचर्य रूप शक्ति से देवों ने मृत्यु को मार डाला। ब्रह्मचारी ने जब वीर्य शक्ति को धारण कर लिया तब स्वत वह गृभी बन गया। तब हरेक वीर्य बिन्दु गर्भ कहलाया। हम ऊपर ऐतरेय उपनिषद् के आधार पर यह दिखा चुके हैं कि ब्रह्माण्ड की सब देव शक्तिया पुरुष पिण्ड में अवतरित हुई। उन्हीं देव शक्तियो ने अपना-अपना अश दिया। इस प्रकार ब्रह्मचारी ने त्रिलोकी की समस्त दिव्य शक्तियों को गर्भ बना लिया ब्रह्मचारी अब प्रजापति बन गया। अब गृभी बन गया।

प्रश्नोपनिषद् मे वर्णन आता है प्रजापति के दक्षिण और उत्तर दो अयन हैं। दक्षिण अयन के यात्री चन्द्र लोक को जीत लेते हैं। ये प्रजा की कामना करने वाले पितृयान के पथिक होते हैं। उत्तर अयन के पथिक तप ब्रह्मचर्य श्रद्धा और विद्या द्वारा आत्मा का अन्वेषण कर आदित्य लोक को जीत लेते हैं। वह पुन लौटकर नहीं आते। इसका विस्तृत वर्णन पाठकवृन्द प्रश्नोपनिषद में ही देखें। ब्रह्मचारी में विद्यमान वीर्यशक्ति-रूप गर्भ की दो स्थिति दो अयन हैं दक्षिण और उत्तर अयन। दक्षिण अयन के पथिक गृहस्थाश्रम मे प्रवेश करके पुत्र रूप चन्द्रलोक को जीत लते हैं। उत्तर अयन के पथिक ऊर्ध्वरेता बनकर आदित्यलोक को जीत लेते है।

दोनो ही पथ मृत्यु को जीतने के उपाय हैं। उत्तरायण के पथिक वीर्य-रूपी गर्भ को विचाराग्नि का ईंधन बनाकर समाधि द्वारा स्वज्योति को प्राप्त कर लेते हैं। दक्षिणायन के पथिक गृहस्थ मे प्रवेश कर वीर्यरूप गर्भ को पत्नी मे आधान कर देते हैं। जिससे वह पुत्र–रूप चन्द्र को प्राप्त करते हैं। तब जातकर्म मे वर्णित मन्त्र का उच्चारण करते हुए पिता कहता है–

अगादगात सम्भवसि हृदयादधि जायसे।
आत्मा वै पुत्रनामासि त्व जीव शरद शतम्।।

मानो ब्रह्माण्ड की दित्य शक्तिया पुत्र रूप मे अवतरित हो आई। मृत्यु का उन पर कब्जा न हो सका वे अमर हो गई। तभी गृहस्थ ने कहा – प्रजाभिरग्ने अमृतत्व अश्याम।

हम प्रजा के माध्यम से मृत्यु पर विजय प्राप्त कर अमृतत्व का उपभोग करे।

अभी हमने देखा अमर पथ के यात्री दो राहो के पथिक बन जाते हैं। एक उत्तरायण के और दूसरे दक्षिणायन के। उत्तरायण के पथिक आदित्य लोक को और दक्षिणायन क पथिक चन्द्रलोक को जीत लेते हैं। चन्द्रलोक का अभिप्राय वह स्थान जहा पुत्ररूप चाद के दर्शन होते रहे वह आश्रम गृहस्थाश्रम हैं। विवाह सस्कार मे पति कहता है– द्यौरह पृथिवीत्व। मैं द्युलोक हू और तू पृथिवीलोक। आओ हम मिलकर पुत्र रूप चन्द्र लोक को पैदा करे। माता–पिता की गोदी मे चाद अपनी कलाए बढा रहा होता है और धीरे–धीरे कुमार रूप गर्भ तैयार हो रहा होता है। आठ वर्ष का होते ही वह पिता का घर छोड पितामह के घर प्रवेश करता है। अब दादा के गुरुकुल रूप आगन मे पोतारूप उदित होता है। कुमार पोता है और वृद्ध पितर है और यजुर्वेद के शब्दो मे पुत्र को प्रवेश कराने आया पिता कहता है आधत्त पितरो गर्भ कुमार पुष्करस्रजम। यथेह पुरुषोऽसत। इस प्रकार पोता गर्भ हुआ और दादा गर्भी हो गया। अथर्ववेदिय ब्रह्मचर्य सूक्त के अनुसार उपनयन की कामना वाले दादा आचार्य गर्भरूप पोते अन्तेवासी को अपने उदर मे धारण कर लिया।

आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिण कृणुते गर्भमन्त।
तरात्रिस्तिस्र उदरे बिभर्ति तजात द्रष्टुमभिसयन्ति देवा।।

ब्रह्मचारी रूप गर्भ को अचार्य परिपक्व करके जन्म देता है तो उसकी सज्ञा स्नातक हो जाती है। मानो दादा को पौत्र रूप मे पुत्र मिल गया। उसने भी दीक्षात में कहा वेदोऽसि यह (मृत्यु के विजेता) दक्षिणायन के पथिक का दूसरा पडाव था। स्नातक गृहस्थ में प्रवेश होने के लिए दक्षिणायन का पथिक बन गया। और दादा आचार्य ब्रह्म के समाधि उदर मे प्रवेश कर गया। वह उन लोगो की आख का चाद बन गया। सन्यास दीक्षा के समय उसने भी जल मे स्नान कर स्वय को स्नातक घोषित कर दिया। उसके आचार्य ब्रह्म ने प्यार भरे शब्दों में आशीर्वाद देते हुए कहा– इन्द्रायेन्द्रो परिस्रव। हे जनता की आखों के चाद! तू इन्द्र की ओर बह निकल। ऋग्वेद के नवम मडल के एक सौ तेरहवें सूक्त में ग्यारह मन्त्रों की टेक यही है उनमें से एक मन्त्र जिसे ऋषि दयानन्द ने सन्यास प्रकरण मे दिया है उसे अर्थ सहित उद्धृत कर विषय को समाप्त करते हैं–

शर्यणावति सोममिन्द्र पिबतु वृत्रहा।
बलदधान आत्मनि करिष्यन् वीर्यं महदिन्द्रायेन्द्रो परिस्रव।।

हे इन्द्रो! तूने आत्मिक बल सचित किया है अत तू कोई बडा पराक्रम का काम करना चाहता है तो बस तू एक काम कर। तू अपना सोम रस वहा बहा जहा सबसे अधिक हिंसक लोग रहते हों (शर्यणावति)। वहा ससार के दुष्टों का सहर्ता इन्द्र तेरी इस करामात को देखे और कहे कि आहा! मेरा भक्त किस सुन्दरता से मेरी ओर बह रहा है। प्रशसकों के बीच भक्तिरस गाना तो सब कर सकते हैं पर तुम हिंसकों के मध्य बैठकर मस्ती के गाने गा। बस इस प्रकार इन्द्र की ओर बह निकल पडा।

एक चिन्तन २१वीं सदी में आर्यसमाज का प्रचार

– डॉ० चन्द्रशेखर लोखडे

आर्यसमाज आक्रामक प्रचार पंक्ति तैयार करें

प्र‹ र दो प्रकार का होता है (१) सुरक्षात्मक अथवा बचावात्मक और (२) आक्रामक। स्वतन्त्रता पूर्व काल मे आर्यसमाज का प्रचार आक्रामक था जिसमे शास्त्रार्थ शका समाधान खुले स्थानो पर प्रचार शुद्धि अभियान अस्पृश्यता मुहीम पिछ्डी बस्तियो मे सामूहिक यज्ञादि धार्मिक कार्यक्रम आदि बड निर्भीक ढग से आय कार्यकर्ता किया करत थे। पर स्वतन्त्रता के बाद उपरोक्त कायक्रम ठप्प पड गए हे। इसके कारणो की जड मे जाकर सोचना पडेगा।

बचावात्मक प्रचार से कोई भी सस्था आगे बढ तो सकती नहीं प्रत्युत उसका शनै शनै ह्रास अवश्य होता जाता है। युद्ध मे बचावात्मक मोर्चा शत्रु की भूमि जीतन के लिए नहीं होता बल्कि जैसे थे स्थिति के लिए होता है। इसमे पीछे हटने की सम्भावनाए अधिक रहती है। अत युद्ध स्थल पर आक्रमण ही सुरक्षा है यह घोष साथ ल कर चलना पडता है। यही रणनीति आर्यसमाज के नेता २१ वीं सदी मे अपना कर चलेगे तो आर्यसमाज के बचने की उम्मीद दिखाई दे सकती है अन्यथा यह भी अन्य छोटे--छोटे पथो की पक्ति में शामिल हो कर एक दिन नाम शेष रह जाएगा। युवको मे प्रचार के प्रति जागरूकता पैदा करना समय की माग है। युवा वग आर्यसमाज के कार्यक्रमो मे भाग नहीं लेता यह सभी अधिकारियो की शिकायत है। हमने उनकी मानसिकता तथा रुचियो की नरफ ध्यान नहीं दिया। समय सूचकता कार्य करने की क्षमत' तथा उनके लगन पर कभी गौर नहीं किया है। वही पुराने ढरे से प्रचार के तरीके अपनाए जाते है। आधुनिक तरीके से उसमे बदलाव की बात हम सोचना भी नहीं चाहते। युवकों के अनुरूप उन्हे कार्यभार जिम्मेदारी सौंपनी पडेगी तब जाकर युवको का सहयोग प्राप्त होगा।

जिस प्रकार किसी बडे समारोह को सफल बनाते समय हर व्यक्ति को उसके कार्य सौंपे जाते हैं और वह जिस प्रकार लगन से अपना कार्य पूरा करने मे जुट जाता है उसी प्रकार आर्यसमाज के प्रचार प्रसार मे हर एक को सम्मिलित कर चलना पडेगा उसका सहयोग लेना पडेगा। आर्यसमाज के शीर्षस्थ नेताओ को इस नई सदी मे कालबद्ध कार्यक्रम की घोषणा करनी चाहिए और उसमे युवको का सहभाग आवश्यक ही नहीं अनिवार्य करना चाहिए। आक्रामक प्रचार के लिए कार्यकर्ताओ की फौज तैयार करनी होगी।

प्रजननात्मक संख्या वृद्धि

किसी भी सस्था की प्रजननात्मक तरीके से वृद्धि पर अवलम्बित रहना उस सस्था की समाप्ति के लक्षण हैं। प्रजननात्मक सख्या वृद्धि के भरोसे बैठना कायरता है। आर्यसमाज गुण सापेक्ष समाज होने की वजह से जन्मगत वृद्धि का यहा प्रश्न ही पैदा नहीं होता जिसमे श्रेष्ठत्व है आर्यत्व के लक्षण हैं वही आर्यसमाजी हो सकता है यह निर्विवाद है। अन्य पथों मे गुणहीन परिवार भी उसी पथ के कहलाए जाते हैं। आर्यसमाज या वैदिक धर्म मे गुणहीन पुत्रादि तथा परिवार के लिए कोई स्थान नहीं है। जैसे वर्ण व्यवस्था जन्मगत न होकर गुण कर्म स्वभावानुगत है उसी तरह आर्यसमाज और वैदिक धर्म गुण कर्म के ही अनुसार सामाजिक व्यवस्था को स्वीकार करता है। आचारहीन न पुनन्ति वेदा आर्यत्व से विहीन व्यक्ति आर्यसमाज का अग नही हो सकता। जैसे मानवता से विहीन मानव मानव नहीं हो सकता उसी तरह से गुणहीन और आचरण शून्य व्यक्ति आर्यसमाज का सदस्य भी नही हों सकता।

यह अत्यन्त उपयुक्त भी है और आवश्यक भी है। इसमे समाज के शुद्धिकरण की प्रक्रिया सुचारु रूप से बनी रहती है। सामाजिक दोष आने की बहुत कम सम्भावनाए रहती है। जन्मगत सख्या वृद्धि व्यक्ति और समाज के लिए उतनी पोषक नही है। इसमे उस सस्था का कार्य ठप्प हो जाता है तथा कार्यकर्ता आलसी और प्रमादी हो कर निष्क्रिय हो जाते हैं और सस्था नाम शेष हो जाती है।

हम अन्तिम विजय की आस मे परिश्रम से मुह फेर बैठे है। सत्य की विजय भी तभी होती है, जब उसको बडे ठोस तरीके से लोगो के सामने पेश किया जाए। सत्य स्वत प्रकट नहीं होता उसको प्रकट किया जाता है। अन्तिम विजय सत्य की होती है, कहने वाले निष्क्रिय व्यक्ति यदि सत्य को छुपा कर किसी कोने मे रख दे किसी पर प्रकट न करें तो सत्य का मुख चमकेगा कैसे ?

आर्यसमाज के सत्य सनातन वैदिक सिद्धान्त सत्य है, पर लोगो के सामने रखने मे हम सफल नहीं हो रहे है तो उन सत्य सिद्धान्तो का फायदा क्या ? यदि स्टेशन मास्टर जानते हुए भी यह गाडी कहा जाने वाली है, यदि नहीं बताता तो उस स्टेशन मास्टर की जानकारी का क्या लाभ है ?

मैं यह बात इसलिए कह रहा हू कि भगवान भरोसे रहने से हम प्रचार मे पिछड रहे हैं हमारे परिवार आर्यसमाज से दूर होते चले जा रहे है और नये परिवार आर्यसमाज मे नही आ रहे है। नुकसान दोनो ओर से हो रहा है। मरम्मत भी नहीं है और निर्माण भी नहीं है।

आर्यसमाज आचरण के आधार पर ही 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' का जयघोष करता हैं। गुण कर्मानुसार विश्व को आर्य बनाना एक चुनौती है। आर्य के लिए पुरुषार्थ भरा कार्य है। परिश्रम और लगन से हर कार्यकर्ता अपनी'अपनी योग्यता से प्रचार प्रसार मे जुट जाय तो वेदो के सिद्धान्तों को दुनिया के कोने--कोने मे फैलाना कोई असम्भव नहीं है। आवश्यकता है कठोर परिश्रम और लगन की।

आर्यसमाज आचरण के आधार पर ही 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का जयघोष करता है। गुण कर्मानुसार विश्व को आर्य बनाना एक चुनौती है। आर्य के लिए पुरुषार्थ भरा कार्य है। परिश्रम और लगन से हर कार्यकर्ता अपनी अपनी योग्यता से प्रचार प्रसार में जुट जाय, तो वेदों के सिद्धान्तो को दुनिया के कोने कोने में फैलाना कोई असम्भव नहीं है। आवश्यकता है कठोर परिश्रम और लगन की।

प्रचारात्मक संख्या वृद्धि

अन्य सम्प्रदाय प्रारम्भ में प्रचार प्रसार के जरिए विकसित हुए तथा पश्चात उनमे प्रचार और परिश्रम के अभाव से शिथिलता आ गई जिसके कारण बाद मे वे जन्मगत सख्या के भरोसे रहकर वे नाम शेष हो गए अब सिर्फ इतिहास के पृष्ठो की शोभा मात्र बनकर रह गए हैं। ब्राह्म समाज प्रार्थना समाज दादू पथ कबीर पथ इत्यादि सैकडो पथ सम्प्रदाय इसी श्रेणी मे आते हैं।

कार्यकर्ता आर्यसमाज के प्रचार और प्रसार के प्रति अपनी अनास्था इसी तरह प्रकट करते रहेगे तो विश्व को आर्य बनाने का इच्छुक आर्यसमाज किसी एक जगह सिमट कर रह जाएगा।

इस्लाम और ईसाइयत का प्रचार प्रारम्भ स ल कर आज तक आक्रामक रहा हैं। २० साल और १४०० साल पहले जो लगन और आक्रामकता उनके प्रचार प्रसार म थी वह आज भी कायम है अपितु पहले की अपेक्षा आज अधिक है। उनका तरीका चाह अलग हो उनसे कोई सहमत हो अथवा न हो जा भी उनकी श्रद्धा हो उसे चाहे अज्ञान क कारण करते हो पर मजहब के प्रचार मे वे आक्रामक है।

इस्लाम के प्रारभिक काल मे अरब राष्ट्रो मे जब इस्लाम का प्रचार बहुतायत से हो गया तो वे आपस मे लडने लगे एक दूसरे के साथ झगडने मे अपनी शक्ति खर्च करन लग तब मुहम्मद पैगम्बर ने बडी होशियारी से अपने अनुयायी देशो को पडौसी देशो म इस्लाम क प्रचार प्रसार का आदश दिया। पूरी दुनिया मे अल्लाह का राज्य होना चाहिए और जब तक पूरी दुनिया म अल्लाह का राज्य नही हाता तब तक एक भी मुस्लिम सुख चैन से नही बैठेगा यह सोच मुस्लिम समाज के जहन मे बिठा दी गयी है। उधर क्रिश्चन ईसा का राज्य स्वर्ग से पृथ्वी तक लाना चाहते है। ये दो बडे मजहब धम प्रचार मे एक दूसरे की होड कर रहे हैं। वे आपस मे एक दूसरे को प्रतिस्पर्धी समझते हैं। हिन्दू और बौद्धो को तो वे इस बारे मे नगण्य समझते हैं। उनका मानना है कि हिन्दू शिकार है और हम शिकारी है। इन बचे हुए हिन्दुओ को कौन कितना हडप जाता है। हिन्दू अपनी सुरक्षा मे ही छटपटा रहा है। वह अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए सदियो से प्रयत्नशील है। बडे गर्व से कहा जाता है कि हिन्दुओ ने अब तक किसी देश पर आक्रमण नहीं किया और न किसी समाज के धर्म परिवर्तन की कोशिश की। अगर किसी पर आक्रमण नहीं किया और किसी का धम परिवर्तन नहीं किया यह सत्य है पर अपनी खुद की रक्षा भी तो नही कर सका। इस बात पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। आक्रामकता का अभाव ही इसका मूल कारण है।

सुरक्षा यदि साध्य है, तो आक्रामकता उसका साधन है।

सन्तुष्टो नृप नष्ट अपनी सीमाओ म सन्तुष्ट राजा कभी भी नष्ट हो सकता है उसे परिग्रही होना चाहिए। अल्पतोष उसके लिए गुण नही दाष हे।

दुनिया क दा बडे उपरोक्त मजहब इसी नीति से चल रह हे। दीपावली के शुभ पर्व पर भारत मे आ कर पोप जान पाल का भारत का ईसाइया का हिन्दुओ के धर्म परिवर्तन के प्रति आदश देना यह आक्रामकता का द्योतक नही तो क्या हे ? दुनिया क उपरोक्त दो मजहबो म अपनी आन्तरिक शत्रुता मिटाने क लिए बाह्य शत्रुओ का निमाण किया जिसस कि वे आपस मे न लडे और दुनिया मे अपन मत का फैलाव कर सके। एक झूठ यदि १० बार बोला जाए तो वह सच बन जाता ह इसका अनुभव हमे दुनिया के अनेको असत्य पर आधारित मत पथो मजहबो के प्रचार से हो रहा है। विज्ञान और तर्क की कसाटी पर यत्किचित भी खरा न उतरने वाल सम्प्रदाय प्रचार के जार पर हमस से आगे निकल चुके है।

हम है कि अन्त म सत्य की विजय होती है इस विश्वास पर निष्क्रिय हो कर बैठ गए है। पौराणिक तो दो कदम आग बढ कर किसी भगवान के अवतार के इन्तजार मे बैठे हुए आस लगाए है कि कोइ न कोई भगवान अवतार लगा और हमारे धम का उद्धार कर दगा, यह जानत हुए कि १४०० साल तक मुस्लिम आक्रमको द्वारा ग्रस्त हिन्दुस्तान ध्वस्त किए जाने के बाद भी कोइ अवतारी पुरुष इन राक्षसो का नाश करने के लिए नहीं अया तब भी २०वीं सदी मे यह अनर्गल राग अलापा जा रहा है।

आर्यसमाज अन्तिम विजय की आस मे बैठा है। दानो म अधिक फर्क नही है। एक व्यावहारिक है और एक अव्यावहारिक है। पर दोनो की साच मे आलस्य और प्रमाद की गध है। हम अन्तिम विजय की आस मे परिश्रम से मुह फेर बैठे है। सत्य की विजय भी तभी होती हे जब उसको बडे ठोस तरीके से लोगो के सामने पेश किया जाए। सत्य स्वत प्रकट नहीं होता उसको प्रकट किया जाता है। अन्तिम विजय सत्य की होती है कहने वाले निष्क्रिय व्यक्ति यदि सत्य को छुपा कर किसी कोने मे रख दे किसी पर प्रकट न करे तो सत्य का मुख चमकेगा कैसे ?

आर्यसमाज के सत्य सनातन वैदिक सिद्धान्त सत्य है पर लोगो के सामने रखने मे हम सफल नहीं हो रहे हैं तो उन सत्य सिद्धान्तो का फायदा क्या ? यदि स्टेशन मास्टर जानते हुए भी यह गाडी कहा जाने वाली है यदि नहीं बताता तो उस स्टेशन मास्टर की जानकारी का क्या लाभ है ?

हमारे पास दुनिया के अटूट सिद्धान्त हैं पर दुनिया के पास वे पहुच नहीं रहे हैं इसका दोषी कौन है ? यह एक चिता का विषय है। यह सत्य है कि अन्त मे जीत सत्य की होती है पर उस जीत के इन्तजार का दुख बडा लम्ब होता है। और उस जीत के उपभोक्ता के रूप मे हम रहे न रहे। दूसरी बात जीत का सुख क्षणिक होता है और इन्तजार रूपी दुख का समय बहुत लम्बा होता है।

– सीतारामनगर, लातूर (महाराष्ट्र)

श्रावणी उपाकर्म और रक्षा-बन्धन

– माता राज मेहता

जैसे सूर्य ओर किरणो का मेघ और वर्षा का फूल और सुगन्ध का परस्पर सम्बन्ध है ठीक उसी प्रकार का सम्बन्ध वैदिक मान्यताओ और पर्वो का है। पर्व किसी भी राष्ट्र की राष्ट्रीयता और सस्कति की पहचान है जिन पर किसी भी राष्ट्र की सास्कतिक धार्मिक भित्ति टिकी रहती है।

वेदोऽखिलो धर्म मूल (मनुस्मृति) अर्थात वेद धर्म का मूल है। सुखस्य मूल धर्म (चाण्क्य नीति) अर्थात धर्म सुख का मूल है। इस कारण ऋषि मुनि लाग सृष्टि के आरम्भ से ही वेदानुकूल आचरण करते आए हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कहा है वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है। (आर्य समाज का तीसरा नियम) कहने का तात्पर्य यह है कि वेद के स्वाध्याय का उपक्रम अर्थात प्रारम्भ दिन से विशेषत किया जाता है उसे उपाकर्म कहते हैं। यह श्रावण मास की पूर्णिमा को होता है। इसी कारण इस पर्व को श्रावणी उपाकर्म कहते है।

द्विज (ब्राह्मण) श्रावणी उपाकर्म के दिन ही पुराने यज्ञोपवीत (जनेऊ) उतारकर नए यज्ञोपवीत धारण करत हैं। आगामी श्रावणी उपाकर्म तक के लिए वेदादि सदशास्त्रो का स्वाध्याय करने के लिए सकल्प धारण करने वालो की पहचान है। वेद म यज्ञोपवीत धारण करने के लिए और यज्ञोपवीत की पवित्रता ... के लिए निम्न मन्त्र है

यज्ञोपवीत परम पवित्र प्रजापतेर्यत्सहस पुरस्तात।
आयुष्यमग्र्य प्रतिमुञ्च शुभ्र यज्ञोपवीत तलमस्तु तेज ।।

यज्ञोपवीत अधिकार का द्योतक नहीं अपितु कर्त्तव्य का बोधक हे। इसके तीन धाग तीन ऋणो अर्थात पितृ ऋण देव-ऋण क द्योतक है। ये हृदय का स्पर्श करता हुआ नीचे की ओर जाता है जो प्रेम का प्रतीक है। नीच दाहिनी ओर लगी गाठ कटिबद्धता का चिन्ह है। अभिप्राय यह हे कि हम अपन समस्त कर्त्तव्यो का पालन कटिबद्ध हाकर प्रम सहित करे।

मध्यकाल मे श्रावणी उपाकर्म के जिस दिन ब्राह्मण लोग क्षत्रियो एव अन्य वर्ण के लोगो के हाथ मे रक्षा सूत्र बाधते थे जिससे वे रक्षा सूत्र से प्रेरणा लेकर जीवन को वेदानुकूल मर्यादित बनाए। विद्या प्रचार प्रसार के लिए ब्राह्मणो और विद्वानो की रक्षा करे। यज्ञ के समय पुरोहित यज्ञमान के हाथ मे सूत्र बाधता है जिसका अभिप्राय यह है कि यजमान यज्ञ की मार्यादा का पालन करे और अपने जीवन को मर्यादित बनाए।

कालान्तर मे समाज व्यवस्था दूषित हो जाने से नारी की मयादा पर आघात होने लगे। स्वतन्त्र रूप से यज्ञो और सामाजिक कत्या म भाग लेने वाली श्रद्धा की मूर्ति शसक्त नारी परतन्त्रता की बेडियो और घरो की चारदीवारी मे असहाय ओर अबला बन कर रह गई। अब उसके पास अपनी मर्यादा की रक्षा करने का एक ही तरीका था रक्षा-सूत्र और अपनी मयादा की रक्षा का माग वह अपन भाई से ही कर सकती थी। अत ऐसे समय मे बहनो ने भाइयो के हाथ मे रक्षासूत्र बाधना आरम्भ किया। उसी दिन से श्रावणी उपाकर्म का नाम रक्षा बन्धन भी पड गया

ऐतिहासिक प्रचलित घटना के अनुसार वीर राणा के वीरगति को प्राप्त होने के पश्चात पडोसी मुस्लिम राजा की आख राणा की वीरागना पत्नी कर्मवती और उसके राज्य को हडपने पर लगी थी। कर्णवती विदुषी होने के साथ दूरदर्शिनी और कुशल राजनीतिज्ञया भी थी। अत उसने अपने राज्य एव अपनी मर्यादा की रक्षा हेतु मुगल बादशाह हुमायु को पत्र के साथ-साथ रक्षा सूत्र भेजा। हुमायु ने बहिन कर्णवती के रक्षा सूत्र मे बधकर उसके राज्य ओर मर्यादा का भार अपने ऊपर ल लिया भले ही वह कर्णवती को जीवित न पा सका। इस घटना से प्रमाणित हो जाता है कि बहन भाई का इतना पवित्र नाता है कि भाई रक्षा सूत्र म बधकर कर्त्तव्य पालन के लिए कटिबद्ध हो जाता है जैसा कहा भी गया है –

भैया कृष्ण भेजती हू मै प्यारी राखी तुमको आज।
कई बार जिसको भेजा है सजा सजाकर नूतन साथ।
बोलो सोच समझकर बोलो क्या राखी बधवाओगे?
भीर पडेगी क्या तुम रक्षा करने दौडे आओगे?

अत श्रावणी उपाकर्म रक्षा बन्धन हमे सन्देश देता है कि वेद के स्वाध्याय से विद्या की प्राप्ति धर्म का ज्ञान और सुख की साधना करना यज्ञोपवीत से सकल्प शक्ति का विकास करना कर्त्तव्य पालन के लिए कटिबद्ध होना रक्षा सूत्र से प्रेरणा लकर मर्यादा का पालन करना तथा परस्पर प्रेम मे वृद्धि करना है। यही इस पर्व को मनाने का औचित्य है।

आ०वा० आ० ज्वालापुर

पृष्ठ ६ का शेष भाग

"युद्ध से विनाश ही विनाश" योगिराज श्रीकृष्ण

उन्हे मालूम था कि दुर्योधन की मति मारी गई है और वह केवल कर्ण के आश्वासन क आधार पर ही अपनी अकड बता रहा था। उन्हे यह ज्ञात था कि कर्ण कुन्ती क कौमार्यकाल का 'कनीन पुत्र था। इस कारण वह महाराजा युधिष्ठिर आदि का सबसे बडा भाई था। कुन्ती से बिदा होकर वे कर्ण को अपने रथ मे साथ ही बैठा लाये। उन्होने कर्ण से युद्ध के सारे कुपरिणाम बताकर यह बात कही – कर्ण तुम कुन्ती पुत्र होने के कारण और पाण्डव तुम्हारे छोटे भाई हैं। यदि देखा जाय तो सबसे बडे भाई होने के कारण राज्य पर तुम्हारा अधिकार है। युधिष्ठिर तुम्हारा बहुत प्रशसक है। अत तुम मेरे साथ चलो। वहा राज्याभिषेक की पूरी तैयारी है वहा वे पाचो भाई तुम्हारा राज तिलक कर तुम्हे पृथ्वीपति बना देगे। इससे दो लाभ होगे – प्रथम तो विनाशकारी युद्ध नहीं होगा दूसरे तुम्हारा अभ्युत्थान हो जाएगा। यह सुनकर कण ने माता कुन्ती को जननी तो स्वीकार किया किन्तु नदी मे बहाने के कारण उसने अपने प्राण रक्षक अधिरथ और उसकी पत्नी राधा को अपने माता पिता कहा। इधर दुर्योधन ने उसे गरिमामय प्रतिष्ठा प्रदान कर रखी थी। इस कारण वह उनके प्रति कृतज्ञता के भाव प्रकट कर कृतघ्नता के पाप से दूर रहना चाहता था। अन्त मे कर्ण ने कहा – विदित मे हृषीकेश यतो धर्मस्ततोजय । १४३-३६। कृष्ण मैं अपने साधु भाई युधिष्ठिर के प्रति अपार श्रद्धा रखता हू। किन्तु मैं वहा नही जा सकता। यह दो टूक उत्तर सुनकर श्रीकष्ण ने अन्त मे कहा – "कर्ण। यदि बिना युद्ध के धर्मराज को अधिकार नहीं मिल सकता तो द्रोण भीष्म से कह देना कि युद्ध के लिए यह अच्छा समय है खेती कट चुकी है। आज से मार्ग शीर्ष की अमावस्या आने पर ७वे दिन रणदुम्दुभी बजाकर निपटारा करा लेना। मेरा यही अन्तिम निश्चय है।

इसके पश्चात वे प्रसन्न मुद्रा मे पाण्डवो के पास आये और युद्ध की तैयारी करने का विचार प्रकट किया। सस्कृत के कवि ने दुर्योधन की हठपूर्ण मति परख कर ही कहा था। विनाशकाले विपरीत बुद्धि। इन प्रमाणो से सिद्ध होता है कि महाराज श्रीकष्ण युद्ध के विरोधी और शाति के प्रबल समर्थक थे। वे विश्व मे युद्ध होते हुए दखना नही चाहते थे।

सुकिरण अ/१३ सुदामानगर इन्दौर (म०प्र०)

"ऋषिवर दयानन्द स्वामी ने"

– राधेश्याम आर्य, विद्यावाचस्पति

ऋषियो का यह देश हमारा पावन परम यहा की माटी।
अनुगामी होना वेदो का रही यहा की परिपाटी।।
आदिकाल मे यहा सृष्टि के दिया ईश ने अनुपम ज्ञान।
अग्नि वायु आदित्य अगिरा हुए प्रथमतम ज्योतिर्गान।।

ब्रह्मा से लेकर जैमिनि तक ऋषियो ने कर वेद प्रचार।
भू के हरे भरे उपवन मे रहे खिलाते मृदु अभिसार।।
रही व्यवस्था धर्म सुवैदिक युद्ध महाभारत से पहले।
उसके बाद धरणि के वासी वेदो का पथ छोड चले।।

विगत सदी मे एक महाऋषि पुन पधारा भारत भू पर।
अपौरुषेय वेदो के ज्योतित पथ पर स्वय अभय चल कर।।
सत्य सनातन धर्म वेद का है उसने उद्घोष किया।
परमेश्वर की वाणी शुचितम का ऋषि ने जयघोष किया।।

वेदोद्धारक वह महर्षि था ऋषिवर दयानन्द सन्यासी।
वेदो के पावन प्रचार का ही वह सदा रहा अभिलाषी।।
ईश्वरोक्त है चतुर्वेद ही स्वामी जी ने हमे बताया।
वेदो का कर भाष्य स्वभाषा भ्रान्ति अनेकानेक मिटाया।।

फैले वेदो का प्रकाश फिर एक यही थी उसकी इच्छा।
अनुगामी हो हम वेदो के यही दयानन्द ने दी शिक्षा।।
किया अहर्निश वेद ज्ञान का उसने दिव्य प्रचार निरन्तर।
लगी गूजने महिमण्डल मे, वेद ऋचाए स्वर्गिक सत्वर।।

दे करके दृष्टान्त वेद का पाखण्डो को था ललकारा।
फैली थीं जो दुष्प्रवृत्तिया उन पर कटुतम चला दुधारा।।
सायण तथा महीधर के कलुषित भाष्यों को त्याज्य कहा।
ईश्वर जीव प्रकृति सम्बन्धित सुलझ गई गुत्थिया महा।।

जाग्रत किया आर्य सुसस्कृति, कर वैदिक मत का प्रतिपादन।
स्वार्थ युयुत्सा लीन मतों का छोड दिया जन ने अनुपालन।।
वेद मार्ग ही श्रेष्ठ मार्ग है ऋषिवर ने की सिह गर्जना।
धरती के सारे पाखण्डी वेद ज्ञान पर हुए अनमना।।

हुए प्रकम्पित जगती भर के मिथ्याधारित मत मतान्तर।
वेदों का पावन प्रकाश पा हुआ प्रकाशित जन जन अन्तर।।
सत्य मार्ग के इस दर्शन ने मानवता का पाठ पढाया।
ऋषिवर दयानन्द स्वामी ने वेदाऽमृत का पान कराया।।

– मुसाफिरखाना सुलतानपुर, (उत्तर प्रदेश)

''यत्र-तत्र सर्वत्र हो महर्षि दयानन्द की जय''

– डॉ० बिजेन्द पाल सिह चौहान

आर्यसमाजो मे कृण्व तो विश्वमार्यम आर्यसमाज अमर रहे महर्षि दयानन्द की जय जो बेले सो अभय वैदिक धर्म की जय आदि का उद्घोष एक स्वर मे किया जाता है। हमे अपना उ्ग सदैव याद तो रहना ही चाहिए इसलिए प्रत्येक दिन व रविवार को और अन्य आयोजनो पर नारे लगाए जाते है। हमे इन्हे क्रियात्मक रूप भी देना चाहिए केवल जोर से उदघोष करने से कुछ न होगा यदि उदघोष करने मे ही वैदिक धर्म का प्रचार होता हो तो आज तो इलैक्ट्रनिक बहुत से ऐसे साधन है जिनसे बहरो के कान भी गुजायमान हो सकते है। महर्षि दयान्न्द ने कहा है कि जब तक वेद सूत्र का अथ सहित ज्ञान न हो उसे पढते जाना व्यर्थ है राम राम रटने से कोई लाभ नहीं जब तक हम मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के जीवन चरित्र से शिक्षा न ले व उनके आचरण गुणो पर न चले। मुह से बार बार गुड गुड कहने से मुह मीठा नही होता उसे चख कर ही स्वाद का पता चलता है अत हमे महापुरुषो के आचरण व बताए मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। महर्षि दयानन्द का नाम भी इसलिए सदैव याद किया जाता है कि उनके बताए वेदिक मत के अनुयायी बन वदिक धम का प्रचार कर पाखण्ड अन्धविश्वासो व झूठे मत मतान्तरो को दूर करे। वैदिक धर्म ही मानवता का रक्षक व पोषक हे अन्य कोई मार्ग ऐसा नहीं जो समस्त भूगोल व सृष्टि के सुख की कामना करता हो। सर्वे भवन्तु सुखिन की भावना वेद की ही है।

महर्षि दयानन्द ने वेदो का प्रकाश किया लोग वेदों को प्राय भूल चुके थे महर्षि जी ने सभी को वेद की आवश्यकता उपयोगिता व महत्व को समझाया / वह छोटे से छोटे व्यक्ति मजदूर किसान पडित पुजारी झाड फूक वाले ढोगियो तथा बडे से बडे लोगो शिक्षक वकील चिकित्सक उद्योगपतियो राजाओ महाराजाओं सभी से मिले। नगे पाव कोसो एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाकर मिले कुटी जगल मन्दिर घरो महलो जहा भी स्थान मिला वहीं ठहरे विश्राम किया विरोधो का सामना किया सत्सग किए तर्क व वार्तालाप की शास्त्रार्थो मे धूर्त पुजारी अज्ञानियो को हराया और वेद का प्रकाश फैलाते चले गए जहा जहा ऋषि के कदम पडे वहा वहा उनके अनेक सहस्रों अनुयायी हो गए और वेद प्रचार का कार्य तीव्र गति से चला।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का स्मरण इसलिए किया जाता है कि हम उनके कार्य को आगे बढाने मे प्रयत्नशील रहे सघर्ष भी करे अकेले व अनेक आर्यजन मिलकर वेद का प्रचार किया करे आज वेद प्रचार की नितान्त आवश्यकता हो गई है आज अनेक मत मतान्तरो क उप मत चल पडे है। अनेक लोग पाखण्ड का जाल फैलाने मे लगे हे मूर्ति पूजा चहु ओर चल रही है। साधुओ के वेश मे छदम चारियो ने अपने आप को भगवान के रूप मे स्थापित कराना आरम्भ कर दिया है लाखो की भीड एकत्र कर लेते है अपने नाम का जप कराते मन्त्र देन का पाखण्ड करते हैं और स्वय लाखो करोडो के धन वैभव मे सलग्न रहते है वातानुकूलित वाहनो भवनो म रहते है प्रमाद से घिरे रहत है भला साधु का अपने नाम धन वैभव प्रमाद व भाग विलास क साधन से क्या लेना दना ?

साधु महर्षि दयानन्द जैसा हो एसा पूर्ण ब्रह्मचारी स सन्यासी बना श्रेष्ठ पुरुष जो-इश्वरीय मार्ग पर चले व अन्य को चलाए ऐसा साधु ही विश्व का उपकार कर सकता है पाखण्डी प्रमादी अवसरवादी आलसी माया मोह आदि मे घिर व फसे लोग तो समाज का अज्ञान रूपी गर्त की ओर ले जा रहे है अत आज महर्षि के बताए मार्ग पर चलन व चलाने की आवश्यकता है।

महर्षि दयानन्द की भाति हमे वेद प्रचार मे प्रयत्नशील होना चाहिए स्वय को आर्य बनाए महर्षि के सिपाहियो की भाति वेद प्रचार कार्य को आगे बढाए। महर्षि के नाम स्मरण के साथ ही हमे उनके काय को सुचारू रूप प्रदान करना चाहिए कम से कम एक या दो व्यक्तियो के मन मे वेद प्रकाश की ज्योति प्रज्ज्वलित करे प्रत्येक दिन हम यह कार्य अवश्य करे। हम कृषक हैं तो खेत खलिहान घर या घेर पर या किसी भी स्थान पर दो चार ग्रामीण जहा एकत्र हो अपनी भारतीय सस्कृति सदाचार वेदमत के विषय पर वार्ता करे और अन्धविश्वास कुरीतिया तथा समाज मे फैले पाखण्ड और मूर्ति पूजा पर विशेष विचार रखे उन्हे बताए मृत्यु भोज बर्थ डे पर केक काटना आदि विवाहोत्सव पर बैण्ड बजवाना नाचना मद्यपान धूम्रपान बाल विवाह मूर्ति की पूजा नहीं करनी चाहिए अन्य तथ्य विषयो पर विवेक पूर्ण प्रकाश डाले जैसे कि दहेज प्रथा रिश्वत खारी अशिक्षा आदि महत्व पूर्ण विषय है सामाजिक प्रदूषण को समाप्त करे वेदादि को पढने प्रदान क लिए प्रयत्न करे व कराए। सत्यार्थ प्रकाश ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका को पढन को समझाय मनु स्मृति के विषयो पर प्रकाश डाल सत्यार्थ प्रकाश न इश्वर विषयक आश्रम व्यवस्था सृष्टि उत्पत्ति राजप्रजा धर्म आदि चौदह समुल्लास है इन्हे पढ कर व मनन कर हम समाज के किसी भी क्षेत्र म किसी भी विषय पर वार्तालाप कर सकते है आज क समय मे कठमुल्ला पाखण्डी पडित पुजारियो अन्धविश्वासी अनेक नत मत तर वादियो भ्रष्ट राजनीतिज्ञ को समझाने क लिए तथा कही भी शास्त्रार्थ करने के लिए सत्यार्थ प्रकाश एक शस्त्र का काय करता है। इस पुस्तक मे दिए चौदह समुल्लासो का सम्यक रूप से अध्ययन करन व अन्य शास्त्रो को पढ कर हम समाज मे उपकार का कार्य कर सकत ह।

विद्यार्थियो को अपने विद्यालय की पुस्तको के साथ समय निकाल कर महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित व मनामीत सत्यार्थ ज्ञान की पुस्तको का अध्ययन अवश्य करना चाहिए। चारो वेद व उपवेद भली प्रकार से पढे महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण भी पढे वेद मे जीवन का सम्पूर्ण ज्ञान है यही नहीं सृष्टि इश्वर सम्बन्धी पूर्ण ज्ञान है। वेद से मनुष्य का जीवन सत्य रुपेण जीने योग्य हो जाता है विद्यार्थी इसे पढ कर अपनी बुद्धि बल विकसित करे और वेद का चहु ओर प्रचार भी करे वेद ज्ञान स सदाचार चरित्र निर्माण व ईश्वर भक्ति प्राप्त होती है। विद्यार्थी वेद प्रचार मे अधिक सक्रिय रह समाज को लाभान्वित कर सकते है।

यदि श्रमिक हैं तब भी वेद प्रचार का कार्य कर सकते है गायत्री मन्त्र को अर्थ सहित जानना चाहिए ओ३म का जाप करना। अ उ व म के भाव को समझना आवश्यक है जहा कार्यरत है वहा दुर्व्यसनो के त्याग पर बल देवे क्योकि श्रमिक वर्ग मे भी अधिकाशत धूम्रपान मद्यपान अपशब्द प्रयोग अन्धविश्वास पाखण्ड आदि अधिक होती है जिनकी जीवनचर्या मे अवैदिकता होती है उन्हे बुराइयो से दूर रखने का प्रयत्न करे ईश्वर म दृढ विश्वास उन्हे कठिन से कठिन काय को सुगम बनाने मे सहायक होगा।

अधिकारी वर्ग चिकित्सक इजीनियर व राजनेतागण भी चाहे कही भी है कोइ सभा हो कार्यालय हो कोइ नियम व कानून बना रह हो सामाजिक कार्यो मे सलग्न हो सदा वैदिक नियमो व माग का पालन करे और मिलने वाला को वद के विषय म परिचचा अवश्य करे कुछ विराध भी अवश्य होगे परन्तु अपनी वाकचातुर्य वाकपटुता उचित बनाए रखे। सत्य के आग असत्य सदैव नतमस्तक हो जाता है जहा सत्यार्थ प्रकाश जैसा ज्ञान होगा आपको सर्वत्र विजय ही मिलगी ओर समाज मे अन्धविश्वासो बुराइयो का निराकरण व वेद प्रचार मे आपका मार्ग प्रशस्त भी होगा जो धनार्जन आप करत है उसका सोलहवा भाग सध्या हवन अग्निहोत्र व सत्सग कराने मे अवश्य व्यय करे और सप्ताह मे जब भी अवकाश मिले किसी न किसी क घर पर एक बार तो अग्निहोत्र अवश्य किया करे

आवश्यक नही कि बड भव्य रूप म ही कायक्रम आयोजित कर वद प्रचार कर सकत ह बड कार्यक्रमो के आयोजन क लिए अधिक समय व धन की आवश्यकता हाती है अत साप्ताहिक कार्यक्रम ही आयोजित कर ले श्रद्धालुओ की सख्या अधिक हान व उनके विचार सम्मत हा सक ता भव्य आयाजन भी कर क्योकि अधिक श्रद्धालुओ से हर सम्भव सहायता व सुगमता हो जाती है।

घर परिवारा गली मोहल्लो और गावो मे वेद की ज्योति को जलाए वेद ज्ञान का अमृत सभी को प्राप्त हो मानव व मानवता हतु जीवन का यही मुख्य कार्य है। महर्षि दयाननद सरस्वती ने अपना सम्पूर्ण जीवन सामाजिक सुधार राष्ट्र निर्माण मानव निर्माण व वेद प्रचार हेतु अर्पित कर दिया। जो लोग मानवता व सत्य के मार्ग हेतु जीवन धारण करत हैं वही महापुरुष होते है और उनका नाम विश्व मे सदा अमर रहता है महर्षि दयानन्द ऐसे महापुरुषो मे से थे उनका नाम सदा स्मरण रहेगा और उनकी जय के उदघोष की सार्थकता तभी होगी जब उनके विचारो उनके बताए मार्ग ज्ञान व वेद के प्रकाश को घर घर पहुचाएगे। वेद का प्रकाश करना महर्षि के मार्ग पर उनके कार्यो को आगे बढा कर दी ही महर्षि दयानन्द की जय का उदघोष सार्थक होगा।

घर परिवारो गली मोहल्लो और गावो मे वेद की ज्योति को जलाए वेद ज्ञान का अमृत सभी को प्राप्त हो मानव व मानवता हेतु जीवन का यही मुख्य कार्य है। महर्षि दयाननद सरस्वती ने अपना सम्पूर्ण जीवन सामाजिक सुधार राष्ट्र निर्माण मानव निर्माण व वेद प्रचार हेतु अर्पित कर दिया। जो लोग मानवता व सत्य के मार्ग हेतु जीवन धारण करते है वही महापुरुष होते है और उनका नाम विश्व मे सदा अमर रहता है महर्षि दयानन्द ऐसे महापुरुषो मे से थे उनका नाम सदा स्मरण रहेगा और उनकी जय के उद्घोष की सार्थकता तभी होगी जब उनके विचारो उनके बताए मार्ग ज्ञान व वेद के प्रकाश को घर घर पहुचाएगे।

योगिराज श्रीकृष्ण के जन्म [illegible]

"युद्ध से विनाश ही विनाश" - योगिराज श्रीकृष्ण

– मनुदेव अभय विद्यावाचस्पति

कई लोगो का अभिमत है कि श्रीकृष्ण यदि चाहते तो इस भयकर युद्ध (महाभारत) को रुकवा सकते थे। उन पर कुछ लोग यह भी दोषारोपण करते हैं कि श्रीकृष्ण ने जीवन भर लडाईया लडीं। उनके इस स्वभाव के कारण ही कौरव पाडव का यह भीषण महाभारत युद्ध हुआ। युद्ध का परिणाम सभी जानते थे किन्तु श्रीकृष्ण की ओर से जोरदार पहल नहीं हुई। उसके परिणाम से यह महान भयकर विश्व युद्ध हुआ। ऐसे दोषारोपण करने वालो के लिए हम श्रीकृष्ण का वह रुप और प्रयास प्रस्तुत कर रहे है जिसे जानकर हम यह निष्कर्ष निकालेंगे कि श्रीकृष्ण ने दूत कर्म को स्वीकार कर धृतराष्ट्र दुर्योधन भीष्म आदि कौरव दल को युद्ध न करने का प्रयास किया। उनके सत्प्रयासो का यह परिणाम था कि दुर्योधन तथा शकुनि को छोडकर शेष सभी युद्ध न कर पाण्डवो को उनके अधिकार देना चाहते थे। श्रीकृष्ण के इस महान प्रयास से सिद्ध होता है कि वे विश्व मे प्रथम श्रेणी के शाति सस्थापक थे।

द्रोपदी की करुणामय कहानी सुनकर श्रीकृष्ण का ह्रदय द्रवीभूत हो गया। उन्होने उसे धैर्य बधाते हुए कहा देवि ! आसुओ को पोछ ले। तेरे पुण्या स तर दु खो की समाप्ति हो गई है। तेरे व्र । से भी सभी शत्रु भस्म हो जायेगे। मै महाराज युद्धिष्ठिर की आज्ञा से तथा इन सभी भाईयो की सहायता से तेरे क्रोध को शात करने का प्रयास करूगा। देवी ! तुम धैर्य रखो।

प्रामाणिक तथ्यो के आधार पर श्रीकृष्ण कार्तिक शुक्ल पक्ष रेवति नक्षत्र को सूर्योदय होते ही शैव्य सुग्रीव मघपुष्प तथा बलाह नामी घोडो को अपने रथ मे जोतकर तथा ध्वजा पताका लेकर चल पडे। उनक साथ एक हजार घुडसवार एक हजार पैदल योद्धा सात्यकि तथा कृतवर्मा आदि साथ थे। ब्राह्मणो ने उनकी सफलता के लिए स्वस्ति वाचन कर अशीर्वाद दिया। अभी वे चले ही थे कि धर्मराज युद्धिष्ठिर ने उनके निकट जाकर कहा – यदि हमारी जननी जीवित हो तो उसके पुनीत चरणो मे हमारा प्रणाम कहना। हमारी माता ने श्वसुर कुल के लिए श्वसुर कुलवालो की ओर से दिए गए अनेक कष्ट सहे। उन्हे हमारा सादर प्रणाम कहना। इत्येम।

कई लोग समझते है कि श्रीकृष्ण पाडव दल के सन्देश ले जाने वाले 'दूत मात्र होगे। ऐसा नहीं किंतु वे भारत के प्रभावशाली तेजस्वी नेता थे और शाति स्थापना के लिए सात्यकि आदि यादवों की चुनी हुई मण्डली के साथ गए थे। इतिहास के विद्यार्थी जानते ही हैं कि प्रथम विश्वयुद्ध (१९१४ १८) में राष्ट्रपति विल्सन अमेरिका के राष्ट्रपति भी गये थे। श्रीकृष्ण ने हस्तिनापुर जाकर अपने पद की गौरव गरिमा के अनुरूप ही शाति स्थापित करने का पुरुषार्थ – प्रयत्न किया। किन्तु फल सदा ईश्वराधीन होता है।

श्रीकृष्ण की हस्तिनापुर की यात्रा का समाचार गुप्तचरो द्वारा धृतराष्ट्र दुर्योधन आदि को मिल गया। कौरव राजसभा द्वारा उनके स्वागत आदि का बडे भव्य रूप से प्रबन्ध किया गया। पूरे नगर का सजाया गया तथा उन्हें 'वृकस्थल' पर ठहराने का समुचित प्रबन्ध किया गया। उन्हे भेट आदि देने का सुन्दर प्रबन्ध किया गया। यहा विदुर जी ने स्पष्ट रूप से कौरव दल के प्रमुखों को समझाते हुए कहा था – श्रीकष्ण सब प्रकार से गुणी मानी तथा पूजा (सत्कार अभिनन्दन) के योग्य हैं। विशेषकर अब सारे देश के हित के लिए वे शान्ति कराने आ रहे हैं। पर स्मरण रखना है कि वह निस्वार्थी महात्मा और अत्युत्तम महापुरुष हैं। इन सारे प्रलोभनो का उन पर कुछ भी प्रभाव नही पडेगा। वह कोई भी भेट स्वीकार नहीं करेगे।

भीष्म जी ने भी विदुर से सहमति प्रकट करते हुए कहा – यह निर्विवाद सत्य हे कि वे महापुरुष हैं उन्हे सत्कार अस्त्कार मानापमान आदि उनके उददेश्य से डिगा नहीं सकता। आप अपना धर्म सम्मत कर्त्तव्य का पालन करे। हम सभी के वे आदरणीय हैं।"

श्रीकृष्ण जी सूर्यास्त समय वृकस्थल पर पहुचे। साय कालीन नित्यकर्म जैसे शौचादि से निवृत्ति स्नान सध्या यज्ञ आदि करने हेतु चले गये। वहा के नागरिको ने भी उनका बहुत सम्मान किया। उन्होने रात्रि को विश्राम किया तथा प्रात काल उठ स्नान सध्या अग्निहोत्र आदि कर व हस्तिनापुर को प्रस्थित हो गय। उनको आता देख भीष्म द्रोण कृपाचार्य आदि सभी गणमान्य उनका अभिनन्दन करने पहुच गए। उन्हे आदर के साथ महाराज धृतराष्ट्र के भवन मे स्वर्णसिहासन पर बैठाया गया। आवश्यक शिष्टाचार के पश्चात वे विदुर के भव्य भवन मे विश्राम हेतु चले गये। वहा उन्होने उनके घर पर ही षडरस स्वादिष्ट भोजन किया। उसी दिन तीसरे प्रहर श्रीकृष्ण कुन्ती भवन गये। उन्होने कुन्ती माता का दर्शन कर धर्मराज युधिष्ठिर का पाद वन्दन आदि सन्देश कहा। उन्हे देखते ही कुन्ती बिलख बिलखं कर रो पडी। उसे अपने पिछले कष्ट याद हो आये। श्रीकृष्ण ने उन्हे धैर्य बधाया। इसके बाद कुती ने धर्मराज सभी भाईयो तथा पुत्र वधु कृष्ण (द्रोपदी) का कुशल क्षेम पूछा। तब श्रीकृष्ण ने उनसे अपने आने का मुख्य प्रयोजन बताया। कुछ देर ठहर कर जब वे वहा से चलने लगे तब कुन्ती ने कहा – वृष्णिनन्दन ! यदि सधि का अवसर आ पडे तो जो हित और पथ्य हो कर लेना। किन्तु – "अविलोपेन धर्मस्य अनिकृत्या परतप" अर्थात कोई काम ऐसा न करना जिसमें धर्म का लोप होने या छल का आश्रय लिया गया हो। मैं धर्म मे प्रगाढ आस्था रखती हू।"

कुन्ती के पास से विदा होकर शौरि (कृष्ण) दुर्योधन के भवन मे गये। वहा भी उनका यथोचित सम्मान हुआ। वहीं पर शाति हेतु विचार परामर्श हुआ। चलते समय दुर्योधन ने 'घरेलू भोज' ग्रहण करने के लिए कहा। उन्होने इस निमन्त्रण को अस्वीकार करते हुए कहा – मैं दूत हू। कृतार्थ होने पर भोजन करने का मेरा अधिकार है बिना कृतकार्यता के नहीं। भोजन या तो प्रीति, से किया जाता है या आपत्ति मे। तुम्हारे मे प्रीति नहीं है और हम आपत्ति मे भी नहीं हैं। जो धर्मात्मा और अधिकार वालो का अधिकार दबाते हैं वे हमारे द्वेषी है। इसलिए मै आप किसी का अन्न न खाकर महात्मा विदुर के यहा ही भोजन किया करुगा। बस आप हठ न करे। उन्होने विदुर के यहा आकर भोजन किए। रात्रि को उनसे कहा – म कारवो क पिछले कर्मो और स्वभावो का जानता हू। यह निश्चित है कि युद्ध से नाश अवश्य होगा। इस महानाश से बचाने को महानपुण्य समझ शक्ति भर शुद्ध चित्त से मैं शाति के लिए प्रयत्न करुगा। क्योकि यह मेरा धर्म है। इससे यह और भी स्पष्ट हो जाता है कि श्रीकृष्ण विश्व शाति के घोर समर्थक थे।

दूसरे दिन राजसभा मे चलन के लिए दुर्योधन स्वय उनके पास आया। व अपने साथ विदुर को रथ मे बैठाकर राजसभा मे आये। सभापति की आज्ञा से श्रीकृष्ण जी ने प्रस्ताव रखते हुए स्पष्ट कहा –

कुरुणा पाडवाना च शम स्यादिति भारत।
अप्रणाशेन वीराणामेतया चित मा गत ।।

ऋ० (९५–३)

धृतराष्ट्र महाराज ! मै शान्ति (सन्धि) की भीख मागने आप के द्वार पर आया हू। जिस प्रकार कौरव और पाडव दोनो मे किसी का भी नाश न हा ऐसा उपाय आप कीजिए। शाति की स्थापना कोई दुष्कर कर्म नहीं यदि आप चाहे यह आपके और मेरे वश मे है। आप अपने पुत्रो को समझावे मै पाडवो को समझा दूगा। स्वत्व किसी का न मारा जाय किन्तु दोनो मे आधा आधा राज्य बाटकर सधि करा दें। इससे आपका बल इतना बढेगा कि आप (धृतराष्ट्र) सारे जगत को जीत कर शासन कर सकेगे। पिछली बातो को जानता हुआ भी धर्मात्मा युधिष्ठिर प्रजा का नाश न हो इसलिए सबको भुलाने को तैयार है। हे राजन धृतराष्ट्र ! आप भी अपने कुल पुत्र आ प्रजा के हित के लिए पुत्रो को समझाकर न्यायसगत शाति का यत्न करे। इसका यह भी तात्पर्य मत समझना कि पाडव युद्ध से डर कर मुझसे शाति का प्रस्ताव करा रहे हैं। वे तो सधि हो जाय तब आपकी सेवा करने को तैयार हैं यदि युद्ध छिड गया तब युद्ध के लिए भी तैयार ह।

प्रस्ताव सुनाने के पश्चात पूरी सभा मे सन्नाटा छा गया। कुछ देर बाद धृतराष्ट्र ने कहा – कृष्ण चाहत तो हम भी यही हैं किन्तु दुर्योधन के हठ स हम व्याकुल हो रहे है। भीष्म द्रोण कृप और गाधारी बार बार इसे समझाते हैं किन्तु यह मानता नही है। यह सुनकर श्रीकृष्ण जी ने भी दुर्योधन को बहुत समझया। श्रीकृष्ण भीष्म विदुर आदि के समझाने पर भी दुर्योधन नही माना। जब गाधारी उसे समझा रही थी तब वह राजसभा से उठकर शकुनि के पास चला गया। वहा दुर्योधन ने शकुनि से कहा – इस यादव के आने से हमारे विरुद्ध सबका क्रोध उभर रहा है। अत अच्छा हो कि इसे पकड कर कहीं बन्दी बना लिया जाय। सत्यकि को इस षडयन्त्र की भनक पड गई और उन्होने कृतवर्मा को सचेत कर दिया। यह ज्ञानकर श्रीकष्ण ने सिह के समान दहाडते हुए कहा – ये मूढ मुझे अकेला समझ आक्रमण करना चाहते है किन्तु इन्हे मालूम नहीं यहा मेरे रक्षक कौन और कैसे हैं ? समझ लो कि पाडव एव सभी यादव यहा विद्यमान हैं। यह सुनते ही चाण्डालो की घिग्घी बध गई। श्रीकृष्ण सभा से उठकर माता कुन्ती के पास चले गए। और उन्हे सब बाते बताई। वहा से चलकर वे आगे बढ लिए। यद्यपि वे इस पयास में पूर्णत सफल नहीं हुए किन्तु उन्होने मन मे एक और युक्ति सोची।

– शेष भाग ८ पर

आर्य समाज क्या चाहता है ?

आर्य समाज यही चाहता है कि –

- **मानवमात्र एक परमात्मा का उपासक हो।**
- **सभी मनुष्य उसे अपना एक मात्र पिता तथा अपने आपको उस परमपिता के पुत्र-पुत्री समझें।**
- **सब मे भाई बहनों का सा प्रेम प्यार हो।**
- **विचारों की एकता के लिए वेद का ही अनुगमन करें।**
- **राष्ट्रीय एकता के लिए महापुरुषों के पद चिन्हों पर चले।**
- **अज्ञान से ऊपर उठें, युग के बढ़ते हुए तेज कदमों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलें। कोई व्यक्ति समाज या देश धार्मिक, आर्थिक सास्कृतिक अथवा किसी भी रूप मे पीछे न रहे।**
- **सारे विश्व का धर्म एक हो। नाना मत मतान्तरो और सम्प्रदायों के जाल से मनुष्य मुक्त हो।**
- **नास्तिकता से मनुष्य की रक्षा की जाए। धर्म की किसी भी देश में उपेक्षा न हो।**
- **उन्नति और वृद्धि का सबको समान अवसर प्राप्त हो ऊच नीच, या छुआ छूत का भेद समाप्त हो सम्प्रदाय को धर्म का नाम देकर, अर्थ और सेवा का प्रलोभन देकर जबर्दस्ती दूसरों को अपने सम्प्रदाय में दीक्षित करने का काम तुरन्त बन्द हो।**
- **भौतिकवाद का स्थान आध्यात्म वाद ले तथा प्राणिमात्र पर दया का भाव रखा जाए।**

सकलन

मुकेश चन्द, सार्वदेशिक प्रेस

लोक-ायक योगिराज श्रीकृष्ण का बहुआयामि व्यक्तित्व

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

पाँच हजार वर्ष पूर्व आज की ही तरह विश्व के क्षितिज पर भाद्रपद की अधेरी रात्रि अपनी निगूढ कालिमा के साथ छाई हुई थी। तब भी भारत में जन था धन था शक्ति थी साहस था पर एक अकर्मण्यता भी थी जिससे सब-कुछ अभिभूत मोहाच्छन्न तथा तमसावृत हो रहा था। इस धरती पर महापुरुष तो अनेक हुए हैं किन्तु लोक-नीति समाज तथा अध्यात्म को समन्वय के सूत्र में गूथकर समग्र राष्ट्र में क्रान्ति का शखनाद करने वाले लोकानायक कृष्ण ही थे।

परवर्ती काल के लोगों ने चाहे कृष्ण के उदात्त चरित्र तथा बहुआयामी कृतित्व को समझने में कितनी ही भूले क्यो न की हो उनके समकालीन तथा अत्यन्त आत्मीयजनो ने उसे महाप्राण व्यक्तित्व का सही मूल्याकन किया था। उनसे आयु तथा अनुभव में बडे युधिष्ठिर उनका सम्मान करते थे तथा उनकी सलाह को सर्वाधिक महत्त्व देते थे। पितामह भीष्म आचार्य दोण कृपाचार्य तथा विदुर जैसे नीतिज्ञ प्रतिपक्ष के लोग भी उनको भरपूर आदर देते थे। महाभारत के प्रणेता कृष्ण द्वैपायन व्यास ने तो उन्हे धर्म का पर्याय बताते हुए यहा तक कह दिया था –

यतो कृष्णस्ततो धर्म यतो धर्मस्ततो जय ।

भगवद्‌गीता के वक्ता महाबुद्धिमान सजय ने तो मानो भविष्यवाणी ही कर दी थी –

यत्र योगेश्वरो कृष्ण यत्र पार्थो धनुर्धर ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।

– गीता १८।७८

आर्य जीवनचर्या का सम्पूर्ण विकास हमे कृष्ण के चरित्र मे सर्वत्र दिखाई देता है। जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जिसे उन्होने अपनी प्रतिभा तथा श्रम के द्वारा प्रभावित नहीं किया। सर्वत्र उनकी अद्‌भुत मेधा तथा सर्वग्रासिनी प्रतिभा के दर्शन होते हैं। एक ओर वे महान राजनीतिज्ञ क्रान्तिविधाता धर्म पर आधारित नवीन साम्राज्य के स्रष्टा राष्ट्रनायक के रूप मे दिखाई पडते हैं तो दूसरी ओर धर्म अध्यात्म दर्शन तथा नीति के सूक्ष्म चिन्तक विवेचक तथा प्रचारक के रूप में भी उनकी भूमिका कम महत्त्व की नहीं है। उनके समय में भारत वर्ष सुदूर उत्तर में गान्धार (आज का अफगानिस्तान) से लेकर दक्षिण की सह्याद्रि पर्वतमाला तक क्षत्रियों के छोटे–छोटे स्वतन्त्र किन्तु निरकुश राज्यों में विभक्त हो चुका था। उन्हें एक सूत्र में पिरोकर समग्र भारतखण्ड को एक सुदृढ राजीनतिक इकाई के रूप मे पिरोनवाला कोई नहीं था। एक चक्रवर्त्ती प्रजापालक सम्राट के न होने से माण्डलिक राजा नितान्त स्वेच्छाचारी प्रजापीडक तथा अन्यायी हो गए थे। मथुरा का कस मगध का जरासन्ध चेदि-देश का शिशुपाल तथा हस्तिनापुर के कौरव सभी दुष्ट विलासी दुराचारी तथा ऐश्वर्य मदिरा में प्रमत्त हो रहे थे। कृष्ण नेअपनी नीतिमत्ता कूटनीतिक चातुरी तथा सूझबूझ से इन सभी अनाचारियों का मूलोच्छेद किया तथा धर्मराज की उपाधि धारण करनेवाले अजातशत्रु युधिष्ठिर को आर्यावर्त्त के सिहासन पर प्रतिष्ठित कर इस देश में चक्रवर्ती धर्मराज्य स्थापित किया।

जिस प्रकार वे नवीन साम्राज्य निर्माता तथा स्वराज्यस्रष्टा युगपुरुष के रूप में प्रतिष्ठित हुए, उसी प्रकार अध्यात्म तथा तत्त्व चिन्तन के क्षेत्र में भी उनकी प्रवृत्तिया चरमोत्कर्ष पर पहुच चुकी थीं। सुख और दु ख को समान समझने वाले लाभ तथा हानि जय और पराजय-जैसे द्वन्द्वों को एक सा माननेवाले अनुद्विग्न वीतराग तथा जल मे रहनेवाले कमल–पत्र के समान वे सर्वथा निर्लेप तथा स्थितप्रज्ञ रहे। प्रवृत्ति और निवृत्ति श्रेय व प्रेय ज्ञान और कर्म ऐहिक और पारलौकिक – जैसी प्रत्यक्ष मे विरोधी दीखनेवाली प्रवृत्तियों मेंअपूर्व सामञ्जस्य स्थापित कर उन्हें स्वजीवन मे क्रियान्वित करना कृष्ण– जैसे महामानव के लिए ही सम्भव था। उन्होने धर्म के दोनों लक्ष्यो – अभ्युदय और नि श्रेयस को सार्थक किया अत यह निरपवाद रूप मे कहा जा सकता है कि कृष्ण का जीवन आर्य आदर्शों की चरम परिणति है।

समकालीन सामाजिक दुरवस्था विषमता तथा नष्ट हुए नैतिक मूल्यों के प्रति वे पूर्ण जागरूक थे। उन्होने पतनोन्मुख समाज को ऊपर उठाया। स्त्रियो शूद्र कहीं जानेवाली जातियों वनवासियो पीडितो तथा शोषितों के प्रति उनमें अशेष सवेदना तथा सहानुभूति थी। गन्धारी, कुन्ती द्रौपदी सुभद्रा उत्तरा आदि आर्यकुल ललनाओं को समुचित सम्मान देकर उन्होने नारीवर्ग की प्रतिष्ठा बढाई। महाभारत के युग में सामाजिक पतन के लक्षण दिखाई पडने लगे थे। गुण कर्म और स्वभाव पर आधारित वर्णव्यवस्था जन्मना जातियों के रूप में बदल चुकी थी। ब्राह्मणवर्ग अपनी स्वभावगत शुचिता लोकोपकार–भावना त्याग सहिष्णुता तथा सम्मान के प्रति तटस्थता जैसे सद्‌गुणो को भुलाकर सग्रहशील अहकारी तथा असहिष्णु बन चुके थे। आचार्य द्रोण जैसे शस्त्र तथा शास्त्र में निष्णात ब्राह्मण अपनी अस्मिता को भूलकर और अपने अपमान को सहकर भी कुरुवशी राजकुमारों को उनके महलों मे ही शिक्षा देकर उदरपूर्ति करते थे। कहा तो गुरुकुलों का वह युग जिसमें महामहिम सम्राटों के पुत्र भी शिक्षा ग्रहण के लिए राजाप्रासादों को छोडकर आचार्यकुलों में रहते थे और त्याग अनुशासन एव सयम का जीवन व्यतीत करते थे इसके विपरीत महाभारतयुग में तो कुरुवृद्ध भीष्म के आदेश से द्रोणाचार्य ने राजमहल को ही विद्यालय का रूप दे दिया। आज के विश्वविद्यालय का शायद यही पुराना रूप था जहा शिक्षक को शिष्य द्वारा प्रदत्त शुल्क लेकर उसे पढाना था। इस कुरूवशीय विश्वविद्यालय का प्रथम ग्रेजुएट तो दुर्योधन ही था जिसके अनिष्ट कार्यों ने देश के भविष्य को सुदीर्घ काल के लिए अन्धकारपूर्ण बना दिया था।

सामाजिक समता के अभाव में क्षत्रिय राजकुमारों में अपने उच्च्य कुलोत्पन्न होने का मिथ्या गर्व पनपता रहा। उधर तथाकथित हीन कुल में उत्पन्न होने का भ्रम पालने वाले कर्ण को अपने पौरुष की श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए जन्मना जाति को धिक्कारना पडा। कुरुकुल के राजकुमारों की अस्त्र सञ्चालन प्रतियोगिता मे उसे केवल इसलिए भाग नहीं लेने दिया गया था कि कुन्ती का कानीन पुत्र होने पर भी अधिरथ सूत (सारथी) ने उसका पालन किया था। तब उसने कहा –

सूतो वा सूतपुत्रो वा यो वा को वा भवाम्यहम्।
दैवायत्त कुले जन्म मदायत्त तु पौरुषम्।।

मैं सूत हू या सूतपुत्र हू या अन्य कोई किन्तु यह ध्यान रहे कि किसी कुल मे जन्म लेना दैव के अधीन है जबकि मेरा पौरुष और पराक्रम तो मेरा अपना ही है।

जिस प्रकार योगीराज श्रीकृष्ण नवीन साम्राज्य निर्माता तथा स्वराज्यस्रष्टा युगपुरुष के रूप मे प्रतिष्ठित हुए, उसी प्रकार अध्यात्म तथा तत्त्व चिन्तन के क्षेत्र मे भी उनकी प्रवृत्तिया चरमोत्कर्ष पर पहुच चुकी थीं। सुख और दु ख को समान समझने वाले, लाभ तथा हानि, जय और पराजय जैसे द्वन्द्वो को एक सा माननेवाले अनुद्विग्न, वीतराग तथा जल मे रहनेवाले कमल पत्र के समान वे सर्वथा निर्लेप तथा स्थितप्रज्ञ रहे। प्रवृत्ति और निवृत्ति, श्रेय व प्रेय, ज्ञान और कर्म, ऐहिक और पारलौकिक जैसी प्रत्यक्ष मे विरोधी दीखनेवाली प्रवृत्तियो मे अपूर्व सामञ्जस्य स्थापित कर उन्हे स्वजीवन मे क्रियान्वित करना कृष्ण जैसे महामानव के लिए ही सम्भव था। उन्होने धर्म के दोनो लक्ष्यो अभ्युदय और नि श्रेयस को सार्थक किया, अत यह निरपवाद रूप मे कहा जा सकता है कि कृष्ण का जीवन आर्य आदर्शों की चरम परिणति है।

क्षत्रिय कुलाभिमानी राजकुमारो के मिथ्या गर्व को सन्तुष्ट करने के लिए आचार्य द्रोण ने वनवासी बालक एकलव्य को अपना शिष्य बनाने से इन्कार कर दिया था। उस युग मे धर्माधर्म कर्त्तव्याकर्त्तव्य नीति–अनीति का अन्त लुप्त हो चुका था। समाज में अर्थ की प्रधानता थी और लोग पेट भरने के लिए किसी भी अनीतिपूर्ण कार्य करने में सकोच नहीं करते थे। यह जानते हुए भी कि कौरवो का पक्ष अधर्म अन्याय तथा असत्य पर आश्रित है भीष्म– जैसे प्रज्ञापुरुष को यह कहने मे सकोच नहीं हुआ था –

अर्थस्य पुरुषो दास दासस्त्वर्थो न कस्यचित्।
इति मत्वा महाराज बद्धोऽस्म्यर्थेन कौरवैः।।

हे महाराज ! पुरुष तो अर्थ का दास होता है अर्थ किसी का दास नहीं होता। यही जानकर मैं कौरवों के साथ बधा हू।

इन्हीं विषम तथा पीडाजनक परिस्थितियों को कृष्ण ने निकट से देखा था। इन दुखद स्थितियो से जनता को उबारने के लिए ही उनके सभी प्रयास थे। शोषित पीडित तथा दलितवर्ग के अभ्युत्थान के लिए उन्होंने सर्वतोमुखी प्रयास किए। ताप शाप-प्रपीडित त्रस्तजनो के प्रति उनकी सवेदना नाना रूपों मेंप्रकट हुई थी। तभी तो कौरवसभा में तिरस्कृत तथा अपमानित द्रौपदी को उन्होंने सखी बनाया तथा उसके मुक्त केशों को बाधने से पहले कौरवो के सर्वनाश की घोषणा की। उन्हे राजसी ठाठ-बाट तथा वैभव के झूठे प्रदर्शन से घृणा थी। अपनी शान्ति-यात्रा के दौरान दुर्योधन के राजकीय आतिथ्य को ठुकराकर उन्होंने महामति विदुर का सादा भोजन स्वीकार किया। उस समय लोकनीति के ज्ञाता कृष्ण ने अपने इस आचरण के औचित्य का प्रतिपादन करते हुए कहा था –

सम्प्रीतिभोज्यान्यन्नानि, आपद् भोज्यानि वा पुन ।
न त्व सम्प्रीयसे राजन् न चैवापद्‌गता वयम्।।

– उद्योगपर्व ९१।२५

हे राजन ! भोजन करने मे दो हेतु होते हैं। जिससे प्रीति हो उसके यहा भोजन करना उचित है अथवा जो विपत्तिग्रस्त होता है उसे मजबूरी मे दूसरो का दिया अन्न स्वीकार करना पडता है किन्तु यहा तो स्थिति कुछ दूसरी ही है। आपको मुझसे प्रेम का रिश्ता तो है ही नहीं और न मैं आपदा का मारा हू, जो आपका अन्न ग्रहण करू।

कृष्ण के इस उदात्त आदर्शरूप को शताब्दियो से हमने भुला दिया था। युधिष्ठिर के राजसूययज्ञ के समय उस विश्ववद्य महापुरुष ने गुरुजनो के चरण प्रक्षालन करने का विनम्र कार्य अपने जिम्मे लिया तो उस यज्ञ की प्रथमपूजा के अधिकारी भी वे ही बने। उस समय श्रीकृष्ण का अग्रपूजा का प्रस्ताव करते समय भीष्म ने उन्हे अपने युग का वेद वेदागो का उत्कृष्ट ज्ञाता अतीव बलशाली तथा मनुष्यलोक मे अतिविशिष्ट बताया था। भीष्म के शब्दो मे वे दानशीलता शिष्टता शास्त्रज्ञान वीरता कीर्तिमत्ता तथा बुद्धिशालिता मे श्रेष्ठ हैं। वे ऋत्विक आचार्य स्नातक तथा प्रिय राजा के सदृश प्रिय हैं। इन्हीं कारणों से हृषीकेश केशव हमारे सम्मान के पात्र हैं।

कृष्ण के इस निष्पाप निष्कलुष तथा आदर्श चरित्र की ओर पुन देशवासियो का ध्यान आकृष्ट करने का श्रेय महर्षि दयानन्द सरस्वती को है जो भारतीय नवजागरण के पुरोधा महापुरुष थे। उन्होने स्वरचित **'सत्यार्थप्रकाश'** के एकादशसमुल्लास मे लिखा **'देखो श्रीकृष्णजी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण कर्म-स्वाभव और चरित्र आप्तपुरुषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्णजी ने जन्म से मरणपर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा।'** स्वामी दयानन्द के समकालीन बगला मे कृष्णचरित के मार्मिक समालोचक बकिमचन्द्र चटर्जी ने १८८६ मे श्रीकृष्णचरित शीर्षक ग्रन्थ लिखकर महाभारत आधारित उनके चरित्र की समीक्षा की। कृष्णचरित के समग्र अनुशीलन तथा उनके जीवन मे घटित घटनाओ के पौर्वापर्य का समुचित अध्ययन करने के पश्चात बकिम ने लिखा –

" कृष्ण सर्वगुण सम्पन्न हैं। इनकी सब वृत्तियों का सर्वांगपूर्ण विकास हुआ है। वे सिहासनासीन होकर भी उदासीन हैं, धनुर्धारी होकर भी धर्मवेत्ता हैं, राजा होकर भी पण्डित हैं, शक्तिमान् होकर भी प्रेममय हैं।" यही वह आदर्श है जिससे युधिष्ठिर ने धर्म सीखा और स्वय अर्जुन जिसका शिष्य हुआ जिसके चरित्र के समान महामहिमा मण्डित चरित्र मनुष्यभाषा में कभी वर्णित नहीं हुआ। भावगत् विष्णु तथा ब्रह्मवैवर्तपुराणों में वर्णित कृष्ण के चरित्र की तुलना मे बकिम ने महाभारतोक्त कृष्ण के मानवीय और सहज चरित्र को ही प्रामाणिक माना। उन्होने इस बात पर खेद प्रकट किया कि मुरलीधर श्रीकृष्ण को तो हिन्दुओं ने अपना उपास्य बनाया किन्तु सुदर्शन चक्रधारी वासुदेव को उन्होंने विस्मृत कर दिया। बकिम ने इस बात पर भी आश्चर्य प्रकट किया कि कालान्तर में कल्पित राधा को तो कृष्ण के वाम भाग में आसीन किया गया किन्तु वेदमन्त्रों की साक्षी से अग्नि की परिक्रमा पूर्वक जिस विदर्भ राजकन्या रुक्मिणि को उन्होंने अपनी अर्द्धांगिनी बनाया उसके साथ प्रतिष्ठित पूजास्थलों की सख्या तो भारत में नगण्य ही है।

– ८/४२३, नन्दनवन जोधपुर

दुष्कर्मों के प्रायश्चित का पर्व है श्रावणी

– प्रो० वाचस्पति उपाध्याय

सम्प्राते श्रावणस्यान्ते पौर्णिगास्या दिनोदये। स्नान कुर्वीत मतिमान श्रुति स्मृति विधानत ।।

श्रावणी वैदिक कालीन पर्वों मे से अन्यतम है। जिसका उद्देश्य प्रमाद या अज्ञानवश किए गए दुष्कर्मो को सविधि प्रायश्चित द्वारा दूर करके भविष्य मे शुभ कर्म की प्ररणा देना है। इस अवसर पर की जाने वाली क्रियाओ के मूल मे यही पवित्र भावना है और यही ऊचा आदर्श है। इसी दिन रक्षा भी सूत्र मे बाधा जाता है जो शारीरिक व्याधियो के साथ–साथ शत्रु से भी अभय प्रदान करता है। श्रावणी शुक्ल पूर्णिमा को दो प्रमुख पर्व मनाए जाते है। श्रावणी अथवा उपाकर्म और रक्षाबन्धन। उपाकर्म शुद्ध वैदिक पर्व है। किसी नदी जलाशय या समुद्र तट पर सामूहिक रूप से विधिपूर्वक स्नान पूजन हवन करके यह पर्व सम्पन्न किया जाता था। इस दिन यज्ञोपवीत को अभिमन्त्रित किया जाता था और ऋषि पूजन आदि का विधान था।

प्राचीनकाल मे इसी दिन से वेदाध्ययन आरम्भ की तिथि नियत थी। इस समय ऋषि महर्षि आचार्य चातुमास व्रत के पालन मे अपने आश्रमो मे उपस्थित रहते थे और शातिपूर्वक अध्यापन कार्य करते थे। इस दिन से आरम्भ करके साढे पाच महीनो तक वेदाध्ययन होता था और पौष की अष्टमी के बाद शुक्ल पक्ष मे वेद व कृष्ण पक्ष मे वेदाग पढाए जाते थे। नियमित वेदाध्ययन की समाप्ति को समावर्तन कहा जाता है। श्रावण की पूर्णिमा को प्रात ही श्रुति स्मृति विधानानुसार स्नानादि कृत्य करे। यह आत्म शोधन का पुण्य पर्व है। सावधानी के साथ रहने वाल व्यक्तियो से भी प्रमादवश कुछ न कुछ भूल हो जाती है। इन दोषो को दूर करने और पाप से मुक्ति के लिए ही श्रावणी का सकल्प कर्मकाण्ड का सबसे बडा सकल्प है। उसमे ज्ञात–अज्ञात अनेक पापो का नामोल्लेख कर उनसे मुक्ति पाने की कामना की गई है।

श्रावणी पूर्णिमा पर मिटटी गोबर भस्म पचगव्य अपामार्ग कुशयुक्त जल आदि द्वारा स्नान का विधान है। इससे शारीरिक शुद्धि होती है। हवन के बाद जल के सामने खडे होकर भगवान सूर्य की स्तुति करते हुए जल से प्रार्थना की जाती है –

केवल पावनार्थाय मादशामकृतरात्मनाम।

कृत स्थितेत्वामि स्नाकि प्रसीद च पुनीहि माम।

वेदाध्ययन करने वाले-साधक ऋषि पूजन सम्पन्न करते थे। पक्ष की समाप्ति पर राजा आश्रम के अध्यक्ष की पूजा करते थे और वे आशीर्वाद के रूप मे पीले रग का सूत्र बाधते थे जिसे रक्षा सूत्र कहा जाता है।

सर्व रोगोपशमन सर्वाशुभ विनाशनम।
सकृत्कृतेनाब्दमेक येन रक्षा कृतो भवेत।।

अर्थात यह रक्षा सूत्र समस्त रोगो को दूर व समस्त विघ्नो को नष्ट करने वाला है। यह रक्षा सूत्र पूरे एक वर्ष तक सभी रोगो और व्याधियो से सुरक्षित रखता है। इस प्रकार श्रावणी उपाकर्म और रक्षा सूत्र बन्धन दोनो कार्य एक साथ सम्बद्ध हो गए।

श्रावणी को स्नान का विशेष महत्व है। स्नान सम्बन्धी विधिया बहुत वैज्ञानिक आधार पर निश्चित की गई हैं। मृत्तिका भस्म गोमय कुशा दुर्वा आदि की स्वास्थ्यप्रद और रोग कीटाणु नाशक शक्तियो को सभी मानते हैं। वर्षा ऋतु मे नाना प्रकार की औषधिया और जडी बूटिया उत्पन्न होती है। गाय आदि पशु इन्हीं औषधियो का सेवन करते हैं। इसलिए इस गोबर की विशेषता है कि यह सब प्रकार के विष और कीटाणुओ का नाशक है। दुर्गध को दूर करता है। मिटटी के तेल की गध साबुन से कठिनाई से दूर होती हैं किन्तु गोबर मलने से दूर हो जाती है। स्नान के समय विभिन्न प्रकार की औषधियो से मिश्रित जलकण मस्तिष्क को शीतलता प्रदान करते हैं। इस प्रकार श्रावणी की सारी प्रक्रिया मनुष्य की सर्वागिक शुद्धि के लिए बहुत लाभकारी है। इसी तरह पचगव्य के पदार्थों की उपयोगिता तो आयुर्वेद ने भली-भाति स्वीकृत की है। इनसे शारीरिक शुद्धि और पुष्टि दोनो होती है।

श्रावणी के अवसर पर मानसिक शुद्धि के लिए सूर्योपस्थान का अनुष्ठान अमोघ साधन है। सूर्य भगवान हमारे मन और बुद्धि के प्रेरक हैं। गायत्री मन्त्र मे बुद्धि प्रेरणा की ही प्रार्थना की गई है। सूर्योदय होते ही लोगों के मन में नया जीवन नई चेतना और नई स्फूर्ति आ जाती है। यह प्रत्यक्ष ही है। इसके अतिरिक्त ऋषि पूजन स्वाध्याय आदि का सम्बन्ध सीधे हमारी आत्मा से है। अत यह आत्मिक शुद्धि का अनुष्ठान है।

ऋषि पूजन के समय वश परम्परा का भी पाठ होता है। जिसे सुनकर ह्रदय मे अपने महान पूर्वजो के प्रति गौरव के भाव जाग्रत होते हैं। इस प्रक्रिया से हमे अपनी प्राचीन परिपाटी के पालन को प्रोत्साहन मिलता है।

श्रावण की पूर्णिमा का दूसरा महत्वपूर्ण कृत्य रक्षाबन्धन है। यह भी उतनी ही प्राचीन परम्परा है। इसका सकेत पहले किया गया है। भविष्य पुराण मे बताया गया है कि देव दानव के समय इन्द्र के हताश होने पर इन्द्र पत्नी शची ने आज के दिन वैदिक मन्त्रो से अभिषिक्त एक रक्षा सूत्र उनके हाथ मे बाधकर उन्हे अभय बना दिया था। इसी रक्षा सूत्र के बल पर इन्द्र ने अपने शत्रुओ पर विजय प्राप्त की थी। तब से यह पर्व प्रतिवर्ष मनाया जाने लगा और लोकप्रिय होता गया। लाखो वर्षो से हिन्दू जाति इस पर्व से नई स्फूर्ति, नया विश्वास और नया बल ग्रहण कर जीवन पथ पर बढती चली जा रही है। राजा बलि को भी रक्षा सूत्र बाधा गया था।

कुलपति लाल बहादुर शास्त्री सस्कृत विद्यापीठ कटवारिया सराय दिल्ली।

वेद ज्ञान घर-घर पहुंचाएं, आज यही व्रत ठाना है

— ओमप्रकाश शास्त्री

ऋषियों के वशंज सब सुन लो, माता का मान बढाना है।
वेद की वाणी घर-घर गूंजे, जो अनमोल खजाना है।।

ईश्वर का यह ज्ञान वेद है, सब के लिए बराबर है।
जिसने इसको अपनाया है, जीवन बना उजागर है।।
अज्ञान तमस को दूर भगाने हेतु प्रबल प्रभाकर है।
आज हमारा लक्ष्य यही है, वेदो का ज्ञान बढाना है।।

वेद हमारे धर्म ग्रन्थ है, वेद हमारी थाती है।
इसके सरक्षण, चिन्तन में मुनियो ने जान लुटा दी है।।
उज्ज्वल इसके श्रेष्ठ ज्ञान से, निज सस्कृति हर्षाती है।
इसकी शिक्षाओ पर चल कर, जीवन बने सुहाना है।।

वेद की वाणी कल्याणी है मगल वर्षा करती है।
दूध, पूत, धन और धान्य से, सब के घर को भरती है।।
जो भी इसकी शरण मे आए, जीवन मे रस भरती है।
वेद ज्ञान घर–घर पहुचाए, आज यही व्रत ठाना है।।

यू - १२८, शकरपुर, दिल्ली-९२

आर्यसमाज सागरपुर वेद प्रचार का भव्य आयोजन

आर्यसमाज मन्दिर सागरपुर नई दिल्ली मे दिनाक २८–७–२००१ से ४–८–२००१ तक वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रचार वाहन द्वारा नुक्कड कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। प्रतिदिन ६.३० से ७.१५ तक यज्ञ तदुपरान्त ८ बजे तक भजन तथा प्रवचन के कार्यक्रम चलते रहे। रात्रि मे ८ बजे से १० बजे तक विद्वानों के द्वारा भजन तथा प्रवचन का आर्यजनो ने लाभ उठाया।

इस अवसर अपर श्री नरेश दत्त आर्य बिजनौर श्री भीष्म कुमार श्रीमती विद्यावती आर्या तथा स्वामी यज्ञमुनि जी वानप्रस्थी ने अपने उपदेशो से आर्य जनो को लाभान्वित किया।

(पृष्ठ २ का शेष)

सम्मान समारोह आर्यजनता की प्रेरणा का माध्यम

उन्होने कहा कि इस कार्यक्रम का प्रतिदिन का खर्च १० हजार रुपये है जिसे कोई भी छोटी से छोटी आर्यसमाज वर्ष मे कम से कम एक बार सहयोग रुप मे वहन कर ही सकती है। बडी आर्यसमाजें और प्रान्तीय सभाए तीन लाख रुपये के सहयोग से एक महीने के कार्यक्रम को आयोजित कर सकती है। प्रायोजक व्यक्तियो या सस्थाओ का नाम कार्यक्रम के पश्चात टी०वी० पर ही प्रदर्शित किया जाता है।

श्री ओकारनाथ आर्य ने कहा कि जब हम कोई भी काम करते हैं तो यह नहीं सोचते कि प्रतिफल में हमें यह सम्मान मिलेगा। इस सम्मान समारोह को देखकर मन प्रसन्न तो अवश्य होता है परन्तु इसका वास्तविक लाभ तभी होता है जब आर्यजनता मे ऐसे समारोह को देखकर नई चेतना और उत्साह का सचार हो।

श्री ओकारनाथ आर्य ने आर्यसमाज से जुडे विगत पचास साठ वर्षों के अपने सस्मरण सुनाते हुए कहा कि किस प्रकार उन्होने महात्मा हसराज जी के साथ प्रेरणा प्राप्त की श्री मेहर चन्द महाजन जी के निर्देश पर टकारा ट्रस्ट का कार्यभार सम्भालना स्वीकार किया। उन्होने महात्मा गाधी और श्री लाल बहादुर शास्त्री जी के साथ हुई भेट वार्ताओ का भी उल्लेख किया।

इस समारोह की अध्यक्षता आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा और डी०ए०वी० के प्रधान पद्मश्री ज्ञान प्रकाश चोपडा ने की। अध्यक्षीय भाषण मे आर्यसमाज के सेवा और परोपकारी कार्यो का विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत करते हुए कहा कि जब कभी भी देशवासियो पर विपत्ति की घडी आती है तो आर्यसमाज अग्रणी रहकर अपने दायित्व को निभाता है। यह अपने आप मे मानव धर्म के कर्तव्यो की श्रेष्ठ अनुपालना है। उन्होने आस्था चैनल कार्यक्रम के निमित्त एक लाख रुपये का चैक भी कै० देवरत्न आर्य तथा श्री ओकारनाथ आर्य को प्रदान किया।

इस समारोह मे जनकपुरी आर्यसमाज की ओर से श्री धर्मबन्धु जी के भूकम्प पीडित क्षेत्रो मे भवन निर्माण कार्यो के लिए **एक लाख बीस हजार रुपये** का चैक श्री ओकारनाथ आर्य को प्रदान किया गया।

इस समारोह को सर्वश्री विश्वनाथ रामनाथ सहगल शिव कुमार शास्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री तेजपाल मलिक श्री अजय सहगल तथा श्रीमती शशि प्रभा आदि आर्य नेताओ ने भी सम्बोधित किया।

वैदिक लाईट के सम्पादक श्री विमल वधावन एडवोकेट ने समस्त उपस्थित जनसमुदाय तथा आर्यनेताओ का धन्यवाद करते हुए कहा कि जिन प्रतिकूल परिस्थितियो मे इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का सफल सचालन सम्भव हो पाया यह इस बात का प्रतीक है कि यदि नेतृत्व और प्रबन्धन समुचित हो तो सफलता अवश्य ही मिलती है। उन्होने कहा कि यह सम्मेलन आगामी कई वर्षो तक प्रेरणा बना रहेगा।

दिल्ली नगर निगम की स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री पृथ्वी राज साहनी ने कहा कि आर्यसमाज को मैं हमेशा समाज की सेवा मे जुटे हुए ही देखता हू। आज के युग मे जबकि माता पिता और शिक्षण सस्थाए भी चरित्र निर्माण के कार्य मे असफल हो रही है आर्यसमाज अपने इस दायित्व को भली भाति निभाता रहा है।

इस समारोह का सचालन तथा पूर्व उत्साह के साथ आर्यसमाज मन्दिर सी० ब्लाक पखा रोड जनकपुरी के प्रधान श्री सोमदत्त महाजन ने किया।

श्री महाजन ने कहा कि यह कार्यक्रम विशुद्ध रूप से आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ के सम्मान और प्रोत्साहन के लिए है उसे किसी अन्य भावना से न जोडा जाए। मैं भावनाशील समर्पित सेवाभावी कार्यकर्ता हू, मैंने उत्साह और भावुकता मे ही इस कार्यक्रम का विचार रखा और मेरी आर्यसमाज के सभी सदस्यो ने पूरे सहयोग के साथ इसका निर्वहन किया उनके सहयोग का ही यह परिणाम आपके सामने है। जो सभाए और सस्थाए अपने कार्यकर्ताओ को सम्मान और उत्साह देती है वे ही आगे बढ सकती है।

कैप्टन देवरत्न जी ने आर्य महासम्मेलन को सफल सार्थक व महत्वपूर्ण बनाने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस सम्मेलन के परिणाम स्वरूप कैप्टन देवरत्न जी केवल एक महान कार्यकर्ता के रूप मे ही नहीं बल्कि एक सस्था के रूप मे उभर कर सामने आए हैं। आर्य जनता मे महासम्मेलन से नई चेतना, उत्साह और सगठन की भावना जगी है। इसीलिए लोगो ने तन मन-धन देने मे कोई कमी नहीं छोडी है। यदि त्रुटियो को ना देखे और सोचे तो जनता ने नेतृत्व का पुकारा और ललकारा है – हमे कार्यक्रम दो ऋषि के मिशन के लिए योजना बनाओ। सगठन को मजबूत करो। तो हम सब हर तरह से आपके साथ है।

कार्यकर्ता तो भूखे प्यासे खुले आसमान के नीचे जमीन पर सोकर भी गुजारा कर सकते हैं। सच्चाई और ईमानदारी से आवाज तो दो कुछ करो तो सही।

इसी सम्मेलन मे श्री शिव भगवान लाहोटी श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा श्रीमती ऊषा अरोडा आदि को भी महासम्मेलन मे विशेष सहयोग के लिए सम्मानित किया गया।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 5-8-2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2001
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2001 in NDPSo on 2/3 -8 - 2001

हैदराबाद के आर्य शहीदों को

श्रद्धांजलि

श्रद्धाजलि अर्पण करते है हम करके उन वीरो का मान।
धार्मिक स्वतन्त्रता पाने को किया जिन्होने निज बलिदान।
परिवारो के सुख को त्यागा देश के अनेको वीरो ने।
कष्ट अनेको सहन किए पर धर्म न छोडा वीरो ने।।
ऐसे सभी धर्मवीरो के आगे शीश झुकाते है।
उनके उत्तम गुण गान को हम निज जीवन मे लाते है।।
अमर रहेगा नाम जगत मे इन वीरो का निश्चय से।
उनका स्मरण बनायेगा फिर वीर जाति को निश्चय से।
करे कृपा प्रभु आर्य जाति मे कोटि कोटि हो वीर।।
धर्म देशहित जो कि खुशी से प्राणो की आहुति दे वीर।।
जगदीश को साक्षी जानकर यही प्रतिज्ञा करते है।
इन वीरो के चरण चिन्ह पर चलने का व्रत करते हैं।
सर्वशक्ति दे बल ऐसा धीर–वीर सब आर्य बने।
पर उपकार परायण निश दिन शुभ गुणधारी आर्य बने।

धर्मवीर नामावली

श्यामलाल जी महादेव जी राम जी श्री परमानन्द।
माधवराव विष्णु भगवन्ता श्री स्वामी कल्याणानन्द।।
स्वामी सत्यानन्द महाशय मलखाना श्री वेदप्रकाश।
धर्म प्रकाश रामनाथ जी पाडुरग श्री शान्ति प्रकाश।।
पुरुषोत्तम जी ज्ञानी लक्षण राव सुनेहरा वैकटराव।
भक्त अरूणाराम जी नन्हू सिह जी गोविन्द राव।।
बदन सिह जी रतीराम जी मान्य सदाशिव ताराचन्द
श्रीयुत छोटेलाल अशर्फीलाल तथा श्री फकीर चन्द।।
राधाकृष्ण सरीखे निर्भय अमर हुए इन वीरो का।
स्मरण करे विजयोत्सव के दिन सब ही वीरो धीरो का।।

अपना समस्त कार्य हिन्दी में ही करें

10150 पुस्तकालाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
जिला हरिद्वार (उ०प्र०)

सत्यार्थ प्रकाश : प्रकाशन हेतु निःशुल्क

सत्यार्थप्रकाश द्वितीय सस्करण को छपे ११७ वर्ष हो गए हैं। सन १८८४ में इसकी दो हजार प्रतिया छपी थीं। आज द्वितीय सस्करण की प्रति का मिलना असम्भव है। लेकिन इसका प्रकाशित हुआ फोटो प्रिन्ट इस कमी को पूरा करता है।

दूसरा सस्करण ही प्रमाणिक है। अत मुद्रित सस्करण की प्रमाणिकता को अक्षुण्ण बनाए रखना चाहिए। इसलिए 'वैदिक डिजिटल वर्ल्ड सोसाईटी' ने द्वितीय सस्करण (प्रेस कापी कुल पृष्ठ सख्या ५६२) को आधार मानकर सत्यार्थ प्रकाश तैयार किया है। सत्यार्थ प्रकाश का प्रकाशन करने वाले सभी प्रकाशको/आर्य समाजो/अन्य सस्थाओ से प्रार्थना है कि सत्यार्थप्रकाश की कम्पोजिग व प्रूफ रीडिग की बाधाओ व खर्च आदि से बचने के लिए वैदिक डिजिटल वर्ल्ड सोसाईटी से विशुद्ध अन्तिम प्रूफ नि शुल्क प्राप्त करके प्रकाशित करवाए। ताकि अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का पूरे विश्व मे एक ही प्रारूप हो सके।

यह सस्करण (कुल पृष्ठ सख्या ५६२ पृष्ठ से पृष्ठ) सबसे सुन्दर अक्षरो मे छोटे बडे सभी आकारो मे व उत्तम पेज डिजायनिग की सुन्दरता लिए हुए है। सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार प्रसार करना आर्यसमाज की सच्ची सेवा है।

'वैदिक डिजिटल वर्ल्ड सोसाईटी' के द्वारा सत्यार्थप्रकाश के सौवीं सस्करण मे भी यही प्रारूप होगा। इसके अतिरिक्त इसकी विशेषताओ मे मुख्य इसका बहुभाषीय शुद्ध मन्त्रो व श्लोको का उच्चारण २००० पृष्ठो की विस्तृत व्याख्या का होना है। जो शीघ्र ही आपके हाथो मे होगा।

'सत्यार्थप्रकाश के इस बहुभाषीय सस्करण रूपी यज्ञ मे आहुती देकर एव विश्वस्तर पर जन जन तक पहुचाने मे योगदान कर पुण्य के भागी बनें। ऋषिकृत ग्रन्थ के इस सस्करण मे योगदान करना ऋषिऋण चुकाना है। आज ही सहयोग कर सत्यार्थप्रकाश (बहुभाषीय) की एक प्रति की नि शुल्क अग्रिम सदस्यता प्राप्त करे।

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करे –

वैदिक डिजिटल वर्ल्ड सोसाईटी
६६८-सी, सैक्टर.६, करनाल-१३२००१
(हरियाणा) भारत
फोन ०१८४-२८३१४८, ०१७४५-७४५६८
e-mail : vedicdigital@rediffmail.com
vedicdigital@hotmail.com

प्रचारार्थ लघु साहित्य

१ दैनिक यज्ञ पद्धति	४ ००
२ रामचन्द्र देहलवी	१८ ००
३ प० शुक्रराज शास्त्री का बलिदान	५ ००
४ सनातन धर्म और आर्यसमाज	४ ००
५ राष्ट्रवादी दयानन्द	१२ ००
६ जीवन सग्राम	१० ००
७ मासाहार घोर पाप	८ ००
८ यज्ञोपवीत मीमासा	४ ००
९ सत्यार्थ प्रकाश उपदेशामृत	१२ ००
१० मूर्ति पूजा की समीक्षा	२ ५०
११ पादरी भाग गया	१ २५
१२ शराबबन्दी क्यो आवश्यक है	१ ००
१३ वेदो मे नारी	३ ००
१४ पूजा किसकी	३ ००
१५ आर्यसमाज का सन्देश	३ ००
१६ एक ही मार्ग	३ ००
१७ स्वामी दयानन्द विचारधारा	८ ००
१८ आत्मा का स्वरूप	८ ००
१९ वेदों और आर्य शास्त्रों में नारी	३ ००
२० दयानन्द वचनामृत	५ ००

प्राप्ति स्थान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन ३/५
रामलीला मैदान, नई दिल्ली - २,
दूरभाष ३२७४७७१, ३२६०९८५

वर चाहिए

२२ वर्षीय ५ फुट ४ इच गौर वर्ण सुन्दर सुशील इगलिश ऑनर्स दिल्ली यूनिवर्सिटी कॉमर्शियल आर्ट पोलीटैक्निक लाजपत नगर दिल्ली कम्प्यूटर डिजायनर गृहकार्य मे दक्ष गोयल परिवार की कन्या हेतु आर्य विचारधारा के सुयोग्य वर की आवश्यकता है।

सम्पर्क सूत्र –
गणेश दास गोयल
२७०४ प्रेममणि निवास
गली पत्ते वाली नया बाजार
दिल्ली–६ फोन– ३६७०६८७

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली–२ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली–२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०९८५)।
सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाइट http://www.whereisgod.com

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४० अंक २० | २६ अगस्त से १ सितम्बर २००१ तक | दयानन्दाब्द १७८ | सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०२ | सम्वत् २०५८ | भा० सु० ८

एक प्रति १ रुपया (भारत में) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

सार्वदेशिक सभा का त्रैवार्षिक चुनाव अधिवेशन नवम्बर २००१ में सम्पन्न कराने के लिए

श्री रामफल बन्सल एवं श्री आर० एन० मित्तल चुनाव अधिकारी एवं प्रशासक नियुक्त

अदालत में चल रहा विवाद समाप्त

श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी के १९९४ मे देहावसान के बाद सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के १९९५ तथा १९९८ मे दो चुनाव सम्पन्न हुए। १९९५ मे श्री वन्देमातरम रामचन्द्रराव को प्रधान चुना गया। इस चुनाव को स्वामी सुमेधानन्द आदि ने अदालत मे चुनौती दे दी। इसके बाद १९९८ के चुनाव मे स्वामी ओमानन्द जी प्रधान और श्री सूर्यदेव जी मन्त्री चुने गए तो श्री सोमनाथ मरवाह के माध्यम से इस चुनाव को भी चुनौती दी गई। श्री मरवाह जी का देहावसान १५ और १६ अगस्त की मध्य रात्रि को हो गया परन्तु इससे पूर्व ६ अगस्त को **अदालत अपना फैसला दे चुकी थी।**

दिल्ली की एक दीवानी अदालत मे न्यायाधीश श्रीमती सुखविन्द्र कौर के समक्ष वादी की ओर से एक प्रार्थना पत्र दाखिल किया गया कि नवम्बर २००१ मे सार्वदेशिक सभा का चुनाव होना है अत पजाब हरियाणा उच्च न्यायालय के **सेवानिवृत्त न्यायाधीश श्री आर० एन० मित्तल** को चुनाव **अधिकारी** एव **प्रशासक** नियुक्त किया जाए। प्रतिवादियो की ओर से उत्तर मे कहा गया कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का १९९८ मे चुनाव सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री वेदप्रकाश धवन की देख रेख मे सम्पन्न हुआ था अत इस बार भी चुनाव **वर्तमान न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल** जी की अध्यक्षता मे ही होना चाहिए अकेले श्री आर० एन० मित्तल को चुनाव अधिकारी एव प्रशासक नहीं बनाया जा सकता।

अदालत मे बहस के दौरान माननीय न्यायाधीश ने इस मुद्दे को परस्पर सहमति माना कि **नवम्बर** २००१ मे चुनाव होना दोनो पक्षो को स्वीकार्य है। **वादी ने श्री आर० एन० मित्तल** को तो **प्रतिवादी ने श्री रामफल बन्सल** को **चुनाव अधिकारी** एव **प्रशासक** नियुक्त करने की माग की। इस पर दोनो पक्षो के अधिवक्ताओं मे **दोनों महानुभावों को सयुक्त रूप से चुनाव अधिकारी एव प्रशासक नियुक्त करने पर सहमति बन गई।**

परिणामत अदालत ने वादी की याचिका पर **६ अगस्त** को आदेश करते हुए **सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बन्सल** एव **श्री आर० एन० मित्तल को आगामी चुनाव नवम्बर** २००१ मे सम्पन्न कराने के लिए **चुनाव अधिकारी एव प्रशासक नियुक्त** करते हुए **निम्न मुख्य विशेषाधिकारों** से युक्त **किया है** –





श्री रामफल बन्सल | श्री आर० एन० मित्तल

१ मतदाताओं के नाम पतों सहित नई मतदाता सूचिया बनाना जो आगामी चुनाव अधिवेशन में भाग ले सकें।

२ सम्बद्ध प्रान्तीय सभाओ आदि को प्रतिनिधियो के नाम तथा पचमाश दशाश आदि भेजने के लिए निर्देश जारी करना।

३ मतदाता सूची तैयार होने के बाद एक माह का स्पष्ट नोटिस चुनाव के लिए जारी करना।

४ चुनाव अधिकारियो द्वारा इस सम्बन्ध में अन्य समुचित कार्यवाहिया करना चुनाव परिणाम को सोसाइटी रजिस्ट्रार कार्यालय मे तथा अन्य कार्यालयो मे भेजना।

५ चुनाव प्रक्रिया सम्पन्न होने तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त कार्यो का प्रबन्ध प्रशासन तथा पूर्ण नियन्त्रण। इन कार्यों के लिए किसी भी सक्षम महानुभाव की सहायता लेना।

६ पुलिस तथा अन्य विभागो से आवश्यकतानुसार समन्वय स्थापित करना जिससे चुनाव प्रक्रिया सभा के सविधान के नियम एव प्रक्रियाओ के अनुसार सम्पन्न हो सके।

७ उन समस्त अधिकारों को रखना जिससे सभा के लिए किसी भी बैक या अन्य सस्थाओ के साथ वित्त प्राप्त करने तथा व्यय करने के कार्य सम्पन्न हो सके।

८ अपने कर्त्तव्यों का पालन करने मे सार्वदेशिक सभा के प्रशासन देख रेख से सम्बन्धित उन सभी कार्यों को करना जो इसके लिए आवश्यक हो तथा इसके लिए एक या अधिक व्यक्तियो की आवश्यकता पडने पर सहायता लेना।

इन अधिकारो के अतिरिक्त इन चुनाव अधिकारियो एव प्रशासको को सभा की कार्यकारिणी एव अन्तरग सभा के सभी अधिकार प्राप्त होगे।

अदालत के आदेश मे यह भी कहा गया है कि इन चुनाव अधिकारियों के किसी अधिकार या निर्णय को कोई भी चुनौती नहीं दी जा सकेगी। कोई भी व्यक्ति इनके द्वारा निर्धारित चुनाव प्रक्रिया के विरुद्ध भी किसी प्रकार की आपत्ति नहीं कर सकेगा।

इन दोनो अधिकारियो मे से एक अधिकारी की अनुपस्थिति या अनुपलब्धता होने पर दूसरा अधिकारी कार्यो को जारी रखेगा।

इस आदेश के साथ ही वादी के कहने पर वादी की याचिका खारिज कर दी गई।

इस आदेश से आर्यजनो मे विवाद समाप्ति और निष्पक्ष चुनाव की पूर्ण सम्भावना के कारण हर्ष की लहर है।

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

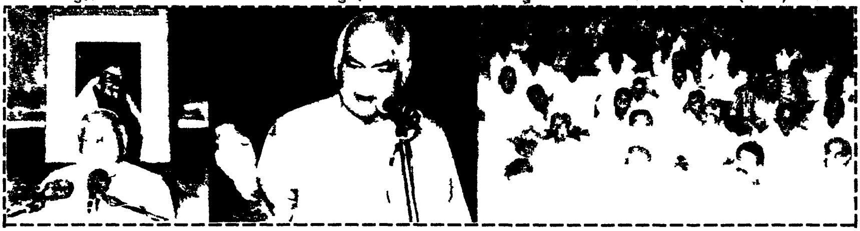
सह सम्पादक
विमल वधावन एडवोकेट

आर्यसमाज के सजग प्रहरी - स्व० श्री सोमनाथ मरवाह

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व कार्यकर्त्ता प्रधान स्व० श्री सोमनाथ मरवाहा के पार्थिव शरीर का सस्कार पूर्ण वैदिक विधि एव सामग्री के साथ दिल्ली के निगम बोध घाट पर बने विशेष सस्कार स्थल पर किया गया। सस्कार के लिए उनकी अन्तिम शव यात्रा प्रात ६ बजे उनके निवास ग्रीन पार्क से रवाना हुई। आर्यसमाज अनारकली श्री रामफल बन्सल जी ने की। दिल्ली के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना भी इस सभा में उपस्थित थे।

शोक सभा मे विभिन्न आर्य नेताओं ने श्री सोमनाथ मरवाहा को एक कर्त्तव्यनिष्ठ और ईमानदार आर्य नेता बताया। वे अर्थ शुचिता के सर्वोत्तम उदाहरण थे। उन्होंने आर्यसमाज के अन्दर से बुराईयों को हटाने मरवाहा जी का जीवन आर्य समाज और हिन्दुओं की रक्षा के लिए निस्वार्थ भाव से समर्पित था। ऐसे व्यक्तियों के जाने के बाद उनकी शोक सभा पर हर व्यक्ति उनकी स्मृतियो से प्रेरणा प्राप्त करता है। उनके परिजनो के दुख को बाट कर उसे कम करता है। जिस तरह सुख बाटने से बढता है उसके विपरीत दुख बाटने से घटता है।

इस सभा में डॉ० महेश विद्यालकार डॉ० योगेन्द्र कुमार (जम्मू) श्री चन्द्रदेव श्री ज्ञानप्रकाश चौपडा श्री बनारसी सिह श्री बनारसी सिह श्री मदन लाल खन्ना डॉ० शिव कुमार शास्त्री श्री अनिल आर्य श्री धर्मपाल श्री अश्वनी कुमार शर्मा (पजाब) श्री राजसिह भल्ला श्री कृष्ण गोपाल श्री रोशनलाल आर्य (हरियाणा) आदि ने श्री



न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल तथा दिल्ली के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना स्व० श्री सोमनाथ मरवाह को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए तथा शोक संतप्त आर्यजन

मे उनके शरीर को लगभग एक घण्टा आर्य जनता के दर्शनार्थ रखा गया जहा भारी सख्या में लोगों ने उन्हें श्रद्धाजली दी। उसके बाद शव यात्रा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा भवन के समक्ष पहुची जहा सभा के गण्यमान्य व्यक्तियो ने उन्हे श्रद्धा सुमन अर्पित किए। इनमे प्रमुख आर्य नेता थे श्री वेदव्रत शर्मा श्री ज्ञान प्रकाश चौपडा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री श्री विमल वधावन श्री जगदीश आर्य श्री लक्ष्मीचन्द श्री जयनारायण अरूण श्री चन्द्र किरण शर्मा श्री अरविन्द आदि।

निगमबोध घाट पर हजारो की सख्या मे आर्यजन उनके रिश्तेदार दिल्ली के वकील न्यायाधीश तथा अन्य सस्थाओ और राजनीतिक दलो के नेता भी उपस्थित थे।

शनिवार १८ अगस्त को परिवार की ओर से आर्यसमाज अनारकली मन्दिर मार्ग मे शाति यज्ञ एव पगडी रस्म का आयोजन किया गया।

रविवार १६ अगस्त को आर्यसमाज दीवान हाल चादनी चौक में भी एक शोक सभा का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता सार्वदेशिक न्यास सभा के अध्यक्ष का अभियान जीवन पर्यन्त चलाए रखा।

दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि श्री मरवाह जी आर्यसमाज के लिए एक सजग प्रहरी थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार तथा डी० ए० वी० में मैनेजिग कमेटी पर जब काले बादल मडरा रहे थे तो उन्होंने बडी तत्परता से इन सस्थाओ को सकट से उबारा। आर्यसमाज के पिछले पचास वर्षो मे जितने भी आन्दोलन अथवा महासम्मेलन किए गए उसमे श्री मरवाह जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

श्री विमल वधावन ने कहा कि वे लोहे की छड के समान थे। आर्यसमाज का अहित करने वालो के लिए वह रूद्र देवता का कार्य करते थे। उन्होंने अस्पताल में लेटे लेटे श्री दिल्ली के एक वकील श्री एस० एन० गुप्ता के समक्ष उस समय पूरी शारीरिक अक्षमता के बावजूद एक कागज पर कापते हुए हाथो से आर्यसमाज लिख कर अपने दर्द का परिचय दिया जब उनके शरीर को रैस्पीरेटर पर लगाया हुआ था और मुह ऑक्सीन के मास्क से बद था।

श्री मदन लाल खुराना ने कहा कि श्री अध्यक्षीय भाषण मे वरिष्ठ अधिवक्ता श्री रामफल बसल जी ने कहा कि मेरा और मरवाहा जी का साथ लगभग ५० वर्ष का था। दिल्ली मे हम दो वकील प्रसिद्ध थे – चोटी रखने वाले वकील हम दोनों की मान्यताए और सोच-विचार का तरीका एक था। सोमनाथ मरवाहा को श्रद्धाजली दी। इस सभा का सचालन श्री रविकान्त ने किया। इस श्रद्धाजली सभा में स्व० श्री सोमनाथ मरवाहा का सारा परिवार यथा – उनकी धर्मपत्नी सुपुत्र श्री अशोक मरवाहा तथा श्री अश्विनी कुमार आदि उपस्थित थे।

नीदरलैण्ड सरकार द्वारा आर्य सस्था को ऐतिहासिक सहायता

नीदरलैण्ड (हालैण्ड) सरकार की ओर से श्री देवा रसियावन को ७००० गिल्डर्स (लगभग एक लाख पचास हजार रुपये) की अनुदान राशि आर्य अनाथालय दरियागज पटौदी हाउस के लिए जारी की गई जिसे लेकर उनकी माता एव बहन दिल्ली आई और इस राशि की सहायता सामग्री अनाथालय को समर्पित की गई।

यह एक एतिहासिक दान है क्योकि विदेशो से व्यक्तिगत रूप मे तो बहुत से आर्य जन दान देने मे सदैव अग्रणी रहते हैं परन्तु यह पहला अवसर है जब विदेश की किसी सरकार ने विशेष रूप से यूरोप के देश हालैण्ड की सरकार ने यह राशि भारत की किसी आर्य सस्था के लिए जारी की हो। इस कार्य के प्रेरणा स्रोत वैदिक लाईट के सम्पादक श्री विमल वधावन एडवोकेट रहे जिनके मार्गदर्शन पर रसियावन परिवार ने यह प्रोजेक्ट हालैण्ड सरकार के समक्ष रखा और इस प्रथम प्रोजेक्ट की राशि जारी की गई। श्री विमल वधावन ने रसियावन परिवार को भविष्य मे भी ऐसी नई योजनाओ से अवगत कराया जिनसे भारत भारत के जरूरत मन्द क्षेत्रो मे सहायता पहुचाई जा सके।

आर्य अनाथालय को दी गई सहायता सामग्री मे लगभग ५०० रजिस्टर ५००० हिन्दी – अग्रेजी शब्दकोष ५०० अग्रेजी – हिन्दी शब्दकोष गुरुकुल चाय के १०० डिब्बे पायोकिल दत मजन विद्यार्थी जीवन रहस्य की १००० पुस्तके २०० सध्या यज्ञ परिचय ६०० बच्चियो के लिए विद्यालय की वर्दी जिसमे कमीज तथा स्कर्ट शामिल हैं। कपडो की खरीददारी आर्य अनाथालय के अधिकारियो द्वारा स्वय ही की गई।

यह सहायता सामग्री सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा अनाथालय के प्रेरक विद्वान श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री की उपस्थिति मे प्रबन्धक श्री एच० एस० रघुवशी को सौंपी गई।

✡✡✡

त्रिनिदाद आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्य संस्थाओं को सात्विक दान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान कै० देवरत्न आर्य की प्रेरणा पर त्रिनिदाद आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यसस्थाओ को सात्विक दान भेजा गया है जिसे मुम्बई की आर्य मैडिकल रिलीफ मिशन सस्था के माध्यम से इन आर्य सस्थाओ तक पहुचाया गया है। कै० देवरत्न आर्य इस मिशन के प्रमुख न्यासी हैं।

१ गाधीधाम आर्यसमाज को भूकम्प पीडित कार्यों के लिए १ लाख रुपये।
२ महर्षि दयानन्द स्मारक न्यास गुजरात को ५००००/ रुपये
३ श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर २५०००/ रुपये।
४ आर्यसमाज मन्दिर जामनगर के भूकम्प से क्षतिग्रस्त भवन निर्माण के लिए ११ हजार रुपये।

न्यायालय के आदेश दिनांक ६-८-२००१ की मूल प्रति

श्री रामफल बन्सल तथा श्री आर० एन० मित्तल चुनाव अधिकारी एवं प्रशासक नियुक्त

09-08-2001

Present Counsels for the parties

Arguments heard on the application u/s 151 CPC dated 1/6/2001 moved by the plaintiff During the course of arguments, Ld counsels for both the parties have agreed for holding the election of Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha, a registered body having its office at Maharishi Dayanand Bhawan, Ramlila Maidan, 3/5, Asaf Ali Road, New Delhi in November, 2001 under the supervision and control of Shri R P Bansal, Senior Advocate who is presently Chairman of the Sarvadeshik Nyaya Sabha and Mr Justice R N Mittal (Retired) Judge of the Punjab & Haryana High Court, who is an eminent Arya Samajist Both the counsels have also assured that whatever may be outcome of the election, parties shall not make any personal allegations against Mr R P Bansal and Mr R N Mittal

(2) In view of the consensus between the parties, I appoint Shri R P Bansal, the Chairman of the Sarvadeshik Nyaya Sabha and Hon'ble Mr Justice R N Mittal (Retd) Judge of the Punjab & Haryana High Court as the Election Officers-cum-Administrators who will supervise and control the election of the Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha scheduled to be held in the month of November, 2001 Both the Election Officers-cum-Administrators shall be vested with the following powers -

1. To prepare a fresh Electoral Roll/list of Voters/ Sabhasada containing the names & addresses of the delegates eligible to participate in the ensuing elections.

2. To issue directions to the concerned provincial bodies/constituents to send the names of their delegates together with Punchmansh/Dashans.

3. To circulate an agenda with one month's clear notice for election on compilation of Voters list/list of Sabhasads.

4. To take all such steps as may be considered necessary by the Election-Officer in matter of preparation of rolls, holding of elections from the beginning till the declaration of results and submission of the result in the office of the Registrar, Societies, Delhi and any other concerned office or authority.

5. To manage, administer and fully control the affairs of Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha till the completion of the election process & declaration of election results. And for the purpose necessary to seek the help of competent person/persons whenever & wherever necessary.

6.To deal with the police authorities and other concerned departments and to seek co-operation and help for conducting & concluding the election process in a free & fair manner in terms of the Constitution, rules & regulations of the Sabha.

7. To hold all such powers as may be necessary to be exercised for the purpose of receiving and desbursing finances available in the name of SAPS in any bank, institution or anywhere else.

8. To hold, control and exercise supervision over the administration of the SAPS which they may consider and to do all such acts which they may consider necessary in the discharge of their duties and to take the help of one or more persons as they may consider necessary in the discharge of their duties, as assigned.

Besides the aforesaid mentioned expressed powers they shall exercise all the powers vested in the Executive Committee and/ or Antrang Sabha of Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha

(3) It is further clarified that nobody including the parties in the suit shall be entitled to challenge the decision and or authority of the appointed persons nor anybody would be entitled to raise any objection to the mode and manner of holding elections. The fees of the Election Officers-cum-Administrators shall be fixed by themselves and will be paid out of the funds of Sabha.

(4) In the absence of non-availability of any one of the Election-Officers the other will continue to carry on the election process and acts as stated above.

(5) In view of the aforesaid observation, application u/s 151 CPC is disposed of. Ld. counsel for the plaintiff has further submitted that as the fresh election of the Sabha are scheduled to be held in November, 2001 i.e. after about a period of the three months, he intends to withdraw the present suit. Accordingly, the suit of the plaintiff is hereby dismissed as withdrawn. File be consigned to Record Room.

Announced in open Court.
on 09.08.2001,

(Sukhvinder Kaur)
CIVIL JUDGE/DELHI

गुरुकुल ततारपुर (गाजियाबाद) में शिविर सम्पन्न

गुरुकुल ततारपुर मे २ से ८ जुलाई तक आयवीर दल का शिविर लगाय गया। स्वामी सुरेन्द्रानन्द और हरिसिह व्यायाम शिक्षक ने आर्यवीरो का आसन दण्ड बैठक लाठी भाला जूडो कराटे डौरी का मल्लखम्भ सैनिक शिक्षा क प्रशिक्षण दिया। आचार्य फूलसिह जी सचालक प० उत्तर प्रदेश द्वारा सन्ध यज्ञ और बौद्धिक शिक्षण दिया गया। अन्तिम दिन प्रधान सचालक डॉ० देवव्रत आचार्य भी पधारे। गुरुकुल के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य मे ५ से ८ जुलाई तक भजनोपदेश तथा प्रवचन भी होते रहे। प्रसिद्ध भजनोपदेशक नरेश कुमार निर्मल आशाराम प० बेगराज की भजन मण्डिलयो द्वारा प्रात साय कार्यक्रम दिया गया। अन्तिम दिन नवीन ब्रह्मचारियो का वेदारम्भ सस्कार आचार्य फूलसिह जी ने कराया। आर्यवीरो को दीक्षान्त प्रतिज्ञा प्रधान सचालक द्वारा दिलाई गई। ८ आर्यवीरो ने दीक्षित आर्यवीर की प्रतिज्ञा ग्रहण की। यज्ञ के पश्चात प० उत्तर प्रदेश के अधिकारियो की बैठक यज्ञशाला मे प्रारम्भ हुई जिसमे निश्चय किया गया कि प्रत्येक जनपद मे कम से कम १० शाखाए आर्यवीर दल की होनी चाहिए और वर्ष मे एक बार बडे अधिकारी उनका निरीक्षण करे। आगामी नवम्बर मास मे दिल्ली मे सार्वदशिक सभा द्वारा जो सम्मेलन आयोजित किया गया है उसकी व्यवस्था के लिए आर्यवीरो को आदेश मिलने पर तैयार रहने को कहा गया। सायकाल आर्यवीरो द्वारा भव्य व्यायाम प्रदर्शन किया गया। डॉ० देवव्रत आचार्य आचार्य फूलसिह जी श्री स्योदन सिह आर्य और पिलखुआ इण्टरकालिज के प्रधानाचार्य ने आर्य वीरो को पुरस्कार प्रदान किए। गुरुकुल के आचार्य धर्मपाल जी ने बाहर से आए सभी उपदेशक सज्जनो का गुरुकुल मे पधारने पर हार्दिक धन्यवाद किया।

– प्रेमलता शास्त्री

धर्म नियंत्रित (मूल) राजनीति ही आदर्श राष्ट्र बना सकती है

– गोपाल दत्त पाठक

जो धर्मपरायण भारत कभी पूरे संसार तथा अपने देश की महान संस्कृति, धर्म शास्त्रो के शाश्वत सिद्धान्तो तथा यहा के दिव्य अनुभूतियों तथा महान राष्ट्र पुरुषो के समर्पणभाव की घटनाओं के कारण 'जगत गुरु' के रूप मे विख्यात था, आज वही भारत राजनीति से लेकर सामाजिक संगठनो तक मे व्याप्त भ्रष्टाचार घोर अनैतिक अराजकता, आतकवाद, अलगाववाद ऐसी स्थिति में है। ऐसे में देश के प्राचीन सस्कृति के भक्त, बुद्धि जीवियो के हृदय में पीडा का होना स्वाभाविक है। हमारे धर्मशास्त्र, वेद उपनिषद्, आदि सदा से नागरिको को उनके कर्त्तव्य नैतिकता की प्रेरणा देते रहे हैं। धर्मशास्त्र मे वर्णित 'वेद स्मृति सदाचार स्वस्य च प्रिययात्मन' एतच्चतुर्विधं प्राहु साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम ॥ मनुस्मृति २/१२ (अर्थात वेद स्मृति एव सत्पुरुषों का आचार तथा जिसके कारण आत्मा को सहज सन्तोष प्रसन्नता की अनुभूति हो) वह आत्मप्रिय परोपकार ये धर्म के लक्षण कहे जाते हैं।

धर्मशास्त्र ही मानवता, परोपकार, निष्काम सेवा राष्ट्र के प्रति समर्पण, ईमानदारी, सात्विक आदि की प्रेरणा देते हैं। हमारा अपने माता पिता भाई बहन और पडोसी के प्रति क्या कर्त्तव्य है, गरीब एव असहायों की सेवा कितनी जरूरी है। नारियों के प्रति हमें क्या भावना रखनी चाहिए, यह सब हमें धर्म शास्त्रों से ही पता चलता है। हमारे धर्म शास्त्रो ही हमें संकीर्णता से ऊपर उठकर मानवता की सेवा करने की प्रेरणा देते हैं। सभी मे समदर्शिता का भाव रखने वाले को पंडित बताते हुए धर्मशास्त्रों में कहा गया है – शुनिश्चैव श्वपाके च पडित' समदर्शिन इसी प्रकार वसुधैव कुटुम्बकम पूरे विश्व को अपना परिवार मानने की प्रेरणा धर्म ग्रन्थों से ही मिलती है।

प्रत्येक महिला में माता के दर्शन करने तथा दूसरे के धन को मिट्टी के समान मानने की प्रेरणा देने वाले प्रेरणादायक आदर्श वाक्य 'मातृत्व परदारेषु' तथा 'परद्रव्येषु लोष्ठवत' धर्म शास्त्रो मे वर्णित हैं, ये शास्त्र पग पग पर आदर्श मानव बनने की प्रेरणा देते रहे हैं। हमारे वैदिक धर्म के किसी भी धर्मशास्त्र मे यह नहीं कहा गया है कि हमारे अमुक धर्म ग्रन्थ को न मानने पर काफिर करार कर दिये जाओगे। इसीलिए वैदिक धर्म के अनुयायियों को किसी भी शासक ने कभी तलवार या धन के बल पर किसी का धर्मान्तरण नहीं करवाया। 'स्वधर्मे विधनं श्रेयं परध र्मो भयावह' अर्थात अपने धर्म में रहकर ही कल्याण सम्भव है, यही प्रेरणा पग पग पर दी गयी है। अपने धर्म का कर्त्तव्य का पालन करते हुए, राष्ट्रभक्ति को सर्वोपरि महत्व देते हुए सन्मार्ग पर चलने वाले हर मानव का कल्याण होता है यह केवल वैदिक धर्म ही कहता है।

माता पिता के प्रति हमारा क्या कर्त्तव्य है, यह हमें तुलसीकृत 'रामचरित मानस' तथा भगवान श्रीराम के आदर्श चरित्र से पता चलता है। श्रवण कुमार ने अपने माता पिता की सेवा के बल पर किस प्रकार भगवान के दर्शन प्राप्त किए, यह सर्वविदित है। हमारे देश में सवेरे उठते ही माता पिता के चरण स्पर्श कर उनका आशीर्वाद ग्रहण करने की परम्परा रही है। आज आधुनिकीकरण के इस भौतिकवादी युग में माता पिता तथा वेदों के अभिवादन की परम्परा क्षीर्णप्राय हो गयी है। विडम्बना है कि अब सयुक्त परिवार टूटने के साथ साथ वृद्ध मा बाप को कथित पढे लिखे पुत्र भार स्वरूप मानने से तनिक हिचकिचाते नहीं। माता पिता के यदि दो पुत्र हैं तो वे एक दूसरे पर माता पिता की जिम्मेदारी डालना चाहते हैं। अनेक वृद्धों को तो पश्चिमी देशों की तरह वृद्धाश्रमों की शरण लेने को बाध य होना पडता है। मां बाप का नियन्त्रण हट जाने के बाद उनकी सन्ताने निरकुश तथा स्वच्छन्द होकर पथभ्रष्ट होती चली जा रही है। उसका खान पान बिगड रहा है। परिवार में किसी अनुभवी वृद्ध का नियन्त्रण न रहने से अनेक समस्याएं खडी होने लगी हैं।

धर्मशास्त्रों में वृद्धों के प्रति सम्मान व्यक्त करने, उनसे आशीर्वाद लेने के महत्व को निम्न प्रकार व्यक्त किया गया है। नित्य प्रति शालीनता से अभिवादन तथा रोज वृद्धों की सेवा करने से आयु, विद्या, यश और बल की वृद्धि होती है। आज धर्म शास्त्रों की अवहेलना का यह दुष्परिणाम है कि भौतिकवाद की चपेट में आये हमारे परिवारों में वृद्ध माता पिता की पग पग पर अवहेलना ही नहीं होती, अपितु कुछ अत्याधुनिक कहे जाने वाले परिवारों मे तो उनका खुला अपमान तथा उत्पीडन तक होने लगा है। अनेक वृद्धों को उनकी सन्तान भोजन तक देने को भार मानने लगी है। इससे ज्यादा शर्मनाक क्या होगा।

हमारे धर्म शास्त्रों मे नारी को पुरुषो से कहीं ऊंचा स्थान दिया गया है। वैदिक धर्म में नारियों की पूजा का, उनके सम्मान का उनके प्रति कर्त्तव्य पालन का स्पष्ट निर्देश दिया गया है। यहां तक कहा गया है कि – यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता। जहां नारी का सम्मान (पूजा) होता है वहां देवता निवास करते हैं। भारतीय धर्मशास्त्र आदर्श नारियों के पतिव्रता महिलाओं के बडे बडे देवी देवताओं तक के द्वारा आदर पाने की घटनाओं से भरे पडे हैं। किन्तु जब से हमने धर्मशास्त्रों तथा धर्म के आदेशो की, प्रेरणाओं की अवहेलना की, तभी से समाज की जगह उपयोग की वस्तु बनाने में भौतिकवादी विकृतियों का अन्धानुकरण ही मुख्य कारण है। आधुनिकता तथा पश्चिमी देशों की क्लब सस्कृति के प्रभाव ने भारत की नारियो की गरिमा को खत्म कर डाला है। दूरदर्शन के भौडें कार्यक्रमों ने नारियों के प्रति हमारे दृष्टिकोण को दूषित किया है।

देश का यह दुर्भाग्य रहा है कि स्वाधीन होते ही हमारे पश्चिमी सभ्यता की चकाचौंध के शिकार नेताओ ने धर्म को रिलीजन या मजहब का पर्यायवाची मान लिया तथा देश को धर्म निरपेक्ष राज्य घोषित कर दिया। धर्म निरपेक्षता के नाम पर पाठ्य पुस्तको मे से धर्मशास्त्रों तथा इतिहास के प्रेरक अंश हटा दिए गए। कुछ दिन पूर्व देश की कुछ तथाकथित शक्तियों ने बच्चों को पढाई जाने वाली पुस्तक मे 'ग' से गणेश पर आपत्ति करते हुए कहा कि हमारे बच्चे गणेश नहीं पढ़ेंगे। धर्म निरपेक्षतावादियों ने विवेक को ताक पर रखकर वोटों के लालच में 'गणेश' शब्द हटाकर 'ग' से 'गधा' कर दिया, इसे स्वीकार कर लिया गया। इस प्रकार धर्मनिरपेक्षता की आड़ में हमारे अदूरदर्शी शासकों ने धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा से बच्चों को विमुख कर डाला।

धर्म तथा नैतिक शिक्षा के अभाव में बच्चों का संस्कार शून्य होते जाना स्वाभाविक ही है। संस्कारहीन युवा पीढी पश्चिमी देशों की विकृति की शिकार होने लगी है। 'खाओ पीओ मौज करो' उसका लक्ष्य होता गया और आज सयुक्त परिवारों का टूटना समाज में स्वच्छन्द प्रेम तथा प्रेम विवाहों का प्रचलन बढना और तनाव आदि आम बात हो जाना उसी पाश्चात्य विकृति के दुष्प्रभाव का ही कारण है। वोटों के लालच में हमारे राजनेताओं ने धर्म के प्रति लोगों के मन में घृणा की भावना पैदा कर दी। शुरू में धर्म निरपेक्षता शब्द का प्रयोग कर कहा कि शासन धर्म के क्षेत्र में किसी से भेदभाव नहीं करेगा या शासन धर्म के प्रति निरपेक्ष रहेगा। बाद में तुष्टिकरण की घातक नीति के कारण हिन्दू समाज के मान बिन्दु गौ माता की हत्या जारी रहने से भी हिन्दू समाज का व्यथित होना स्वाभाविक था। परिणामतः हिन्दू समाज अपने मान बिन्दुओं के सम्मान की रक्षा के लिए संगठित होने लगा।

इस संगठन तथा जागृति से आतंकित होकर कुछ राजनीतिक दलों ने राजनीति से धर्म को बिल्कुल अलग रखने की माग उठानी शुरू कर दी। पिछले वर्षों संसद में राजनीति से ध र्म को अलग करने का विधेयक तक लाया गया, किन्तु वह पारित नहीं हो सका।

विद्वान् कहा करते हैं कि धर्म नियन्त्रित राजनीति दुरनीति बनकर तमाम विकृतियो को जन्म देने वाली होती है। राजनीति पर धर्म का नियन्त्रण न रहा तो, वह अधर्मी एवं अवाछनीय तत्वों का अड्डा बन जायेगी।

आज विद्वानो द्वारा की गई भविष्यवाणी अक्षरश सत्य सिद्ध होकर सामने आ रही हैं। राजनीति क्षेत्रों में आगे रहने वाला अधिकांश नेतागणों का भ्रष्टाचार में डूबे रहने के मामले प्रायः समाचार पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं। अब तो संसद में खुलकर राजनीति का अपराधीकरण होने की बात स्वीकारी जा चुकी है। यह सब धर्म तथा धर्मशास्त्रों की घोर अवहेलना एवं धर्म के पालन की जगह उसके प्रति घृणा फैलाने का ही दुष्परिणाम कहा जा सकता है।

आज नारी उत्पीड़न, दहेज हत्याओं गरीब एवं पिछड़े वर्ग पर अत्याचारों एवं बात बात में नृशंस हत्याओं, अपहरणों, बच्चों तक से अमानवीय कुकर्मों जैसी घटनाएं आम बात हो गयी है। भाई भी चंद रूपयों तथा भूमि के टुकड़े मात्र के लिए भाई की हत्या करने में नही हिचकिचाता है। श्रवण कुमार के देश भारत में धन तथा सम्पत्ति के लिए अपनी मातृभूमि के साथ विश्वासघात करने वाले देश की गुप्त सूचनाएं शत्रु देशों को पहुंचाने वाले राष्ट्रद्रोहियों के पकडे जाने की घटनाएं प्रायः सामने आती रहती हैं। अत आवश्यकता इस बात की है अब राजनीति में धर्म का नियन्त्रण आवश्यक कर दिया जाना चाहिए तभी हमारा देश अपनी संस्कृति को बचाए रख सकेगा।

महाभारत कथा का एक अंश

एक संक्षिप्त विवेचन

कणिक नीति

प० मनुदेव अभय विद्यावाचस्पति

शास्त्रकारो ने ठीक ही कहा है – 'मनुष्य तू अज्ञीय मत बन। मानव जाति को सावधान करते हुए सक्षेप मे बीज रूप मे सूत्र के माध्यम से यह बडा भारी गुरु मन्त्र है। मनुष्य को सदैव यजमान (यज्ञ मान) बनने की इच्छा रखना चाहिए। यज्ञ शब्द यद्यपि स्वय मे अत्यन्त गूढ है। यज्ञ का अर्थ होता है – (१) देव पूजा (२) सगति करण (३) दान। यज्ञीय भावना के सगतिकरण का भाव यह है कि उन्नति करने के लिए सुसगतिकरण की नितान्त आवश्यकता है। कुसग से जीवन रूपी रेलगाडी पटरी से उत्तर कर कहा दुर्घटनाग्रस्त हो जावे कहा नही जा सकता। कभी–कभी तो सर्वनाश तक हो जाता है।

धृतराष्ट्र के हृदय मे अपने भाइ युधिष्ठिर तथा उनके पुत्रो की ख्याति सुनकर मन मे डाह उत्पन्न हो गया। महाभारत के अनुसार विद्या समाप्ति के १ वर्ष पश्चात सबसे ज्येष्ठ एव श्रेष्ठ गुणवान युधिष्ठिर का धृतराष्ट्र ने राज्य सिहासन पर अभिषिक्त कर दिया। उनके सिहासनारूढ होते ही थोडे दिनो के बाद धैर्य गम्भीरता सहनशीलता दयालुपन सेवको पर कृपा स्थिर मैत्री शील तथा सदाचार से पिता की कीर्ति को भुला दिया।

इस अवधि मे युधिष्ठिर ने भीम अर्जुन आदि बन्धुओ को शस्त्रादि विद्या से निष्णात कर योग्य बना दिया। इस विद्या बल से अर्जुन भीम ने सौवीर यवनाधिपति आदि अनेक विदेशी राजे महाराजो को अपने अधीर कर लिया। अन्य राजे रजवाडे जिन्हे महाराज पाण्डु ने जीत सके थे जो पश्चिम तथा दक्षिणादि देशो के थे उन्हें अपने अधीन कर लिया। देश विदेश मे सब प्रकार से कल्याण–वृद्धि होने लगी सर्वत्र सुव्यवस्था तथा शाति स्थापित हो गई। फिर क्या था पाण्डु–पुत्रो की धीरता विद्वता तथा शूरता की कथाए प्रशसाए चारो ओर होने लगी।

मनुष्य मे एक जन्मजात प्रवृत्ति होती है उसे द्वेष वृति कहते हैं । यह वृत्ति भी एक प्रकार की अग्नि होती है। कई मनुष्य अपने किसी निकट की उन्नति प्रतिष्ठा तथा प्रशसा सुनकर मन ही मन ईर्ष्या की अग्नि मे जलने लगता है तथा वह यथा सम्भव उसकी प्रशसा आदि को नष्ट करने का षडयन्त्र बनाने लगता है। यह ईर्ष्यावृत्ति के तत्व धृतराष्ट्र के हृदय मे एकाएक जागृत हो उठे। उसे पाण्डु पुत्रो की कीर्ति आदि फूटी आख भी न सुहाने लगी। वह अपने पुत्रो की यशकृत्यो की पताका फहराने की योजना बनाने लगा। पहले तो वह मन ही मन अनेक कल्प विकल्प ऊहापाह आदि म उलझा रहा किन्तु कुछ निश्चित न कर सका

उसके मन्त्रिमण्डल मे यद्यपि अनेक विद्वान एव दूरदर्शी मन्त्रिगण विद्यमान थे किन्तु उनमे कणिक नाम का मन्त्री बहुत ही वाच ल और चालाक था। उसने सेवक द्वारा 'कणिक को बुलवाया तथा अपने हृदय की बात बताई। कणिक ने अपने कुटिल स्वभाव के अनुसार धृतराष्ट्र को कुछ नीति परक बाते बताई। महाभारतकार ने 'कणिक नीति के नाम से उन सारी नीतियो का सक्षेप मे वर्णन किया ह। कणिक नीति का सार इस प्रकार है

शत्रु के छिद्र सदा ढूढते रहो अपने छिद्रो को बिल्कुल भी प्रकट न होने दो।

बैरी का नाश कभी अधूरा न करे अपितु जड मूल से उसका नाश करे अन्यथा वही शत्रु इस प्रकार दु ख देता है जैसा अधूरा निकाला हुआ देह का काटा।

यदि अन्धा या बहरा बनने से काम बनता हो तो अन्धा तथा बहरा बन जाना चाहिए।

यदि विश्वास देने से शत्रु मरे तो शिकारी की तरह विश्वास मे लाकर वध कर देना चाहिए।

अग्न्याधानेन यज्ञेन काषायेण जटा जिनै ।
लोकान विश्वासयित्वैव लतो लुम्पेद्यथा वृक ।।
६४० १६

आनाय्य फलितान शाखा पक्व पक्व प्रशातयेत।। २०
फलार्थोय समारम्भो लोके पुसा विपश्चिताम।
मित्र समारम्भो लोके पुसा विपश्चिताम। २१
तत प्रत्यागते काले भिंद्याद्घटमिवाश्मनि।।

अर्थात अग्निहोत्री यज्ञकर्त्ता भगवे वस्त्र पहन कर जटा बढा मृगछाला ओढ लोगो को विश्वास मे लाकर मौके पर बाघ की तरह झपट पडे।

फलदार वृक्ष को नमा कर पक्के पक्के फल सब उतार ले क्योकि फल के लिए ही ससार का यत्न है।

अवसर देखकर शत्रु को सिर पर उठा ले परन्तु अपना दाव देखकर ऐसा फेके जैसे पत्थर पर मिटटी का घडा।

शत्रु पर दया कभी न करनी चाहिए। शत्रु पर दया कभी न करे चाह वह दया पात्र भी हो।

भीरू को भय से शूर का हाथ जोडकर लोभी को धन देकर सम या न्यून को बल से नाश करे।

शत्रु के पथ मे खडा हुआ पुत्र हो सखा हा भाई पिता या गुरु कोइ क्यो न हो उसका शत्रु के समान ही नाश कर दना चाहिए।

चाहे शत्रु पर प्रहार करना हो या प्रहार कर चुके हो सदा मीठा बोलो।

अपने हाथ से शत्रु का सिर काटकर भी ऊपर से दया दिखानी चाहिए। शोक भी करना चाहिए तथ रोने तक लग जाना चाहिए।

वाचा भृश विनीत स्याद हृदयेन तथा सुर ।
स्मित पूर्वाभि भाषेस्यात्सृष्टो रौद्रेण कर्मणा।।

अर्थात वाणी से सदा मीठा रहे और हृदय से छरे की तरह काटने वाला।

क्षुद्र कर्म करता हुआ भी हसता सा दिखाई दे।

आप किसी पर विश्वास न लावे दूसरो को विश्वास म ले आवे।

जासूसी कार्य

शत्रु मित्र का भेद जानने के लिए अपरीक्षित पुरुष या स्त्री को जार कर्म मे लगाना चाहिए।

पाखण्डी तथा तापसो के वेष मे अथवा धर्मोपदेशक बनाकर दूसरे राज्यो मे जासूस या गुप्तचर भेजने चाहिए।

बगीचे विहार स्थलो देव मन्दिरो और जगल की छबीले मदिरापान आदि के स्थानो गलियो कूचो हर एक प्रकार के जनस्थानो समाजो और बडे चौरास्तो पर गुप्तचरो को निश्चित करे।

कूप तालाब नदी पर्वत वन उपवन तथा सर्व तीर्थों मे गुप्त दूतो को जय प्राप्ति के लिए नियत करे।

उपरोक्त नीति (कुटिल नीति) को सुनाकर 'कणिक मन्त्री ने धृतराष्ट्र से कहा महाराज । आपके भतीजे (अर्जुन भीम आदि) इस समय अपने गुणो के कारण देश–समाज मे ख्याति प्राप्त कर रहे हैं। आपके पूछने पर मैने आपको नीति के सिद्धान्त प्रकट कर दिए है। आप उपरोक्त नीतियो को कार्यरूप मे परिणित कर अपनी और अपने पक्ष की रक्षा करन का कार्य अविलम्ब प्रारम्भ कर द और अन्त मे मेरी इस बात पर भी सर्वाधिक ध्यान दे

मन्त्री पुरोहितश्चैव युवराजश्चभूपति ।
पञ्चमोव्दारपालश्च षष्टोन्तर्वेशिकस्तथा।।
कारागाराधिकारी च द्रव्य सचमकृत्तथा।
कृत्या कृत्येषु चार्थाना नवमो विनियोजक ।।
प्रदेष्टा नगराध्यक्ष कार्य निर्माण कृत्तया।
धर्माध्यक्ष सभाध्यक्षो दण्ड पालस्त्रि पञ्चम ।।
षोडसो दुर्ग पालञ्च तथा राष्ट्रान्त पालक ।
अटवी पालकान्तानि तीर्थान्यष्ठा दशैवलु।

अथात मन्त्री पुरोहित युवराज सेनापति द्वारपाल (राजा का दरबान राजा क महलो म वस्त्रादि पहनाने वाला कारागाराधिकारी (सुप्रिन्टेडेण्ट जेल) धन सचय कर्ता (कलेक्टर) कोश मन्त्री मुख्यमन्त्री नगराध्यक्ष नगर मन्त्री धर्माधिकारी सभाध्यक्ष (गवर्न फोर्ट परराष्ट्र मन्त्री मन्त्री वन विभाग इन प्रमुख स्थाना पर शुभ कृत्य जान क लिए योग्यातियाग्य दूतो को लगावे

विशेष प्रतीत होता है कि वतमा मे आजकल के राज्य भी इस कार्य क (जय पराजय मे महत्वपूर्ण कारण मान तथा इस (सी०आई०डी०) विभाग क सदा बढाते रहत है।

इधर युधिष्ठिर को युवराज घोषि कर दिया गया। इससे सर्वत्र प्रसन्नत की लहर दौड गई। सभी प्रजाज उनके सदगुणो की चर्चा स्थान स्था पर करन लगे। शनै शनै यह बा दुर्योधन तक पहुच गई और व मानसिक रूप से बैचेन हो उठा (बर यही से दुर्योधन पाण्डवो का पराभ करने तथा अपना वर्चस्व बढाने व प्रयास करने लगा) उसने अपने कुटि स्वभाव के अनुसार अपने साथिय दु शासन कर्ण और विदेशी मामा शकु से एकान्त मे चर्चा की। चर्चा का मू उद्देश्य यह था कि किसी न किस प्रकार पाण्डवो को देश से बाहर कर था। जब धृतराष्ट्र से इस विषय चर्चा की गई तब धृतराष्ट्र ने स्पष् शब्दो मे यह कह दिया कि यह का मेरे वश का नही है। क्योकि देश सभी प्रजाजन युधिष्ठिर एव उनके भाई की अति प्रशसा कर रहे है। सा वातावरण उनके ही पक्ष मे है। इत पर भी यदि मैने कुछ कर दिया आप सभी के प्राण भयकर सकट पड सकते है।

बस यही से कौरव पाण्डवो द्वन्द्व छिड जाता है और महाभारत युद्ध के पश्चात इनका दुखद अन्त जाता है।

शेष भाग पृष्ठ ८ पर

महर्षि दयानन्द का दर्शन एवं राष्ट्रीय एकता

– डॉ० किरन श्रीवास्तव

कवि और साहित्यकार युगदृष्टा होता है। भविष्य की घटनाओ व रेखाओं का वह पूर्ण संकेत करता । महर्षि दयानन्द ने भी यही किया ा। उन्होने भारतीय मनीषा को ावजीवन, स्फूर्ति और प्रेरणा प्रदान ी, तथा वेद-ज्ञान के सार्वभौम प्रसार ो सत्य को उजागर कर दिखाया, जेसे उनके पूर्व भाष्यकार नहीं कर ाके थे। महर्षि ने अपने समय से नये ाुग को जन्म दिया और युग-प्रवर्त्तक ने। वैदिक धर्म का शखनाद विश्व र्यन्त निनादित किया, उपनिषदो की देव्य वाणी मानव मात्र को सुनायी ौर वैदिक ज्ञान का गंगा-जल पिलाकर ुधीजनो की प्यास बुझायी।

आज जिस समय देश मे ोघटनकारी प्रवृत्तियो से राष्ट्रीय कता को खतरा उत्पन्न हो रहा है, स समय हम महर्षि दयानन्द के न्देश की उपयोगिता को स्वीकार र सकते हैं। देश की एकता और ाखण्डता के विषय मे उनका चिन्तन कतना सार्थक रहा है, यह उनकी चनाओ से स्पष्ट है। अत उनके ाहित्य एव रचनाओं का अध्ययन-मनन ाथा युग के सन्देश को हृदयंगम करना ार्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। महर्षि दयानन्द याग और वैराग्य के अवतार स्वरूप े। जिस परम वैराग्य से, जिस गहरी ात्परता से और जिस उच्च भाव से उन्होने अपने सम्पत्तिशाली पितृगृह का ारित्याग किया, वह उनके त्यागभाव का परिचायक, प्रमाण और उनकी विशुद्ध ाराग्य विशेषता का सूचक है।

महर्षि दयानन्द ने सम्पूर्ण मानवता के लिए पूरे विश्व मे फैली सकीर्णताओं और अन्धविश्वासो से ऊपर उठकर यापक सुधार की दिशा दी। उन्होने नपने विचार का आधार वेद को बनाया। क्योकि वेद किसी व्यक्ति की मनमानी चना नहीं सिद्ध हो सकती है और ाा ही उसकी शिक्षाओ को किसी ाल विशेष या देश विशेष से सम्बद्ध र सीमित किया जा सकता है। वे ार्वभौम और सार्वकालिक हैं। महर्षि दयानन्द ने यह अनुभव किया था कि द ही एकमात्र ऐसा बिन्दु है, जहा भी मत-मतान्तर मिल सकते हैं। ास्तव मे वेद भी ईश्वर स्वरूप ही है। क्योकि वेद ईश्वर से ही प्रकट हुए हैं। श्वर-प्राप्ति का साधन भिन्न हो सकता परन्तु सबके बीज, आधार, प्रकाशक, वामी, शासक एक ईश्वर ही है। भले ही रुचि, योग्यता और श्रद्धा विश्वास की विभिन्नता के कारण उनकी उपासना में भेद हो जाए, तत्व में कोई भेद नहीं है। क्योंकि परिणाम में सभी उपासनाए एक हो जाती है। जैसे भूख सबकी एक ही होती है और भोजन करने पर तृप्ति भी सबको एक ही होती है पर भोजन की रुचि सबकी अलग-अलग होने के कारण भोज्य पदार्थ अलग-अलग होते हैं और जैसे मनुष्यों के वेश-भूषा, रहन-सहन, भाषा आदि तो अलग-अलग होते हैं पर रोना और हसना एक ही होता है और सुख-दु ख सबको समान ही होते है, वैसे ही भगवत्प्राप्ति का सुख और अप्राप्ति का दुख सभी को एक समान ही होता है। उपासना के आरम्भ मे भाव और योग्यता की प्रधानता होती है और अन्त मे तत्त्व की प्रधानता होती है। भाव और योग्यता तो व्यक्तिगत हैं, पर तत्त्व व्यक्तिगत नहीं प्रत्युत सर्वगत है।

महर्षि दयानन्द ने वेद ज्ञान और वेद स्वाध्याय को परम-धर्म के रूप में मान्यता प्रदान किया है। उनका कहना था कि वेदो में जीवन के गहनतम अध्ययन, मनन, चिन्तन तथा व्यवहारिक ज्ञान का पूर्णरूपेण निरूपण है और वेदाध्ययन के पश्चात् ही व्यक्ति सुख शान्ति पूर्वक जीवन व्यतीत कर सकता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए महर्षि ने सन् १८७५ मे आर्यसमाज की स्थापना की।

यहा सर्वप्रथम इस पर विचार करना है कि महर्षि का दर्शन क्या है ? वास्तव मे दर्शन शब्द का अर्थ या निर्वचन इस प्रकार किया जा सकता है – दृष्टिरेव दर्शनम् (विशिष्ट) दृष्टि अर्थात् विशिष्ट मत ही दर्शन है। दूसरा निर्वचन इस प्रकार है – दृश्यते अनेन इति दर्शनम्" अर्थात् जिस साधन से परमतत्त्व को देखा जाए उसे दर्शन कहते हैं। यहां पर महर्षि दयानन्द के दर्शन को एव राष्ट्रीय एकता तथा अखण्डता में उसकी उपादेयता को साथ–साथ निरूपित किया गया है। वास्तव मे दर्शन का आधार तर्क है। अत तर्क द्वारा ही उनके सिद्धान्तो की उपयोगिता को सिद्ध करने का प्रयास किया गया है।

महर्षि दयानन्द का मत था कि राष्ट्रीय एकता को दृढ़ करने के लिए किसी एकांगी उपाय से काम लेना सार्थक नहीं हो सकता है। जब तक समाज की सर्वांगीण उन्नति नहीं होगी तब तक समाज को सुरक्षित व विकसित करना सम्भव नहीं है। क्योकिं समाज की उन्नति व विकास पर ही राष्ट्र की उन्नति व विकास निर्भर है। महर्षि दयानन्द ही ऐसे प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने धार्मिक क्षेत्र में क्रान्ति का सूत्रपात किया और उसे सफलता के शिखर पर पहुंचाया, क्योंकि धार्मिक भावना तथा सामाजिक भावना के सहचर्य से ही एकता की भावना का निर्माण हो सकता है। महर्षि ने उन्हीं दोनों भावनाओं को विकसित किया। वास्तव में जिस राष्ट्रीयता की हम रक्षा करना चाहते हैं, वह अपने साहित्य, संस्कृति एवं इतिहास की भूमिका के बिना सम्भव नहीं है।

महर्षि दयानन्द का मत था कि राष्ट्रीय एकता को दृढ करने के लिए किसी एकागी उपाय से काम लेना सार्थक नहीं हो सकता है। जब तक समाज की सर्वागीण उन्नति नहीं होगी तब तक समाज को सुरक्षित व विकसित करना सम्भव नहीं है। क्योकि समाज की उन्नति व विकास पर ही राष्ट्र की उन्नति व विकास निर्भर है। महर्षि दयानन्द ही ऐसे प्रथम व्यक्ति थे जिन्होने धार्मिक क्षेत्र मे क्रान्ति का सूत्रपात किया और उसे सफलता के शिखर पर पहुंचाया, क्योंकि धार्मिक भावना तथा सामाजिक भावना के सहचर्य से ही एकता की भावना का निर्माण हो सकता है। महर्षि ने उन्हीं दोनों भावनाओं को विकसित किया। वास्तव में जिस राष्ट्रीयता की हम रक्षा करना चाहते हैं, वह अपने साहित्य, संस्कृति एवं इतिहास की भूमिका के बिना सम्भव नहीं है।

महर्षि दयानन्द की दृष्टि दूरदर्शी है यह बात उनकी कृतियों एवं रचनाओ में स्पष्ट झलकती है। उनके धर्म मे समभाव था वे सत्य को स्वीकार करने की प्रेरणा सबको देते थे। उनका सभी प्रकार के लोगों से सम्पर्क था। इसका सबसे सटीक उदाहरण तब मिलता है जब १८७५ में उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना बम्बई में की थी, तो उसमें प्रमुख सहायक मुसलमान थे, जिन्होंने उस समय आर्यसमाज के भवन निर्माण में ५१००/– रुपये का योगदान दिया था। भले ही कोई उनका शिष्य बन जाए लेकिन उस समय उनके मत एवं धर्म से सभी सहमत थे।

राष्ट्रीय एकता एव अखंडता के लिए नि स्वार्थ भावना अति आवश्यक है। अध्ययन, तप, दान जैसी उदात्त धार्मिक प्रवृत्तियों का अनुष्ठान भी यदि स्वार्थ के लिए किया जाता है, तो वे आसुरी सम्पदा को ही उत्पन्न करती है। दैवी सम्पदा प्राप्त करने के लिए लोकमगल की कामना से सत्य का ही सहारा लेना पडता है। महर्षि ने लोकमगल के लिए ही आर्यसमाज को चलाया था जिसका उद्देश्य था समाज मे व्याप्त कुरीतियो को दूर करना और समाज को सत्य का आभास कराना। महर्षि का कहना था कि आज धर्म के नाम पर अधर्म हो रहा है, जबकि धर्म से कल्याण होना चाहिए। वास्तव मे धर्म और सत्य पर्याय है। सत्य धर्म का रूप है और धर्म सत्य का, यही वेदो का विषय भी है। उनका कहना है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं तथा उसी के द्वारा मनुष्य को सत्यासत्य का ज्ञान होता है। वे लिखते हैं –

"जो ईश्वरोक्त सत्य विद्याओं से युक्त, ऋक् संहितादि चार पुस्तक हैं, जिनसे मनुष्य को सत्यासत्य का ज्ञान होता है उसे वेद कहते हैं।"

उन्होंने वेदों की उत्पत्ति के बारे में "सत्यार्थ प्रकाश" के सप्तम् समुल्लास पृ० १४४ पर लिखा है – "प्रथम सृष्टि की आदि में परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा इन ऋषियों के आत्मा में एक-एक वेद का प्रकाश किया।"

इसके आगे वे लिखते हैं –

अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्मसनातनम्।
दुदोह यज्ञसिद्ध्यर्थमृग्यजुः सामलक्षणम्।।

"जिस परमात्मा ने आदि सृष्टि में मनुष्यों को उत्पन्न करके अग्नि आदि चारों महर्षियों द्वारा चारों वेद ब्रह्मा को प्राप्त कराए उस ब्रह्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा से ऋक्, यजुर, साम और अथर्ववेद का ग्रहण किया।"

अत ईश्वर द्वारा प्रकाशित होने के कारण वेद सत्य हैं। वेद की शिक्षा का पुन प्रचार होना अति आवश्यक है, ऐसा मानकर महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की और वेद को आधार बनाकर उसी के अनुसार जीवन यापन की शिक्षा दी।

विद्या प्राप्ति का विशेष चिह्न : यज्ञोपवीत

– दीनदयाल सुधाकर, प्रचारमन्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने निज अनुपम महाग्रन्थ संस्कारविधि में गर्भाधान से श्मशान अन्त्येष्टि तक (१६) संस्कारों को मानवमात्र के लिए अनिवार्य करने को लिखा है किन्तु जिस संस्कार की यहां पर हम चर्चा करना चाहते हैं वह दसवां उपनयन संस्कार है। जिसको बच्चे की ५ वर्ष की आयु से आठ वर्ष तक की आयु तक विद्वान् माता पिता अपने घर में ही यज्ञोपवीत (उपनयन संस्कार) कर गुरुकुल में भिजवा देना है। अब आपके पुत्र का मनुष्य से मानव और महामानव तक गरु के गर्भ में निर्माण किया जाएगा।

यज्ञोपवीत मानव मात्र को मानव से महामानव तक पहुंचाने का विशेष चिह्न है। इसलिए इसको धारण करने के दो मंत्र प्रस्तुत करते हैं।

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।

आयुष्यमग्रयं प्रति मुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।।

(पारस्कर गृ० सू० २–२–१)

अर्थ – यह यज्ञोपवीत परम पवित्र है। प्रजापति परमात्मा ने गर्भावस्था मे इसे सहज ही धारण करवाया है। यह आयु की वृद्धि करनेवाला, आयु बढानेवाला है। हे बालक तू इसे धारण कर। इससे तेरे तेज और बल की वृद्धि होगी। हे बालक ! तू विद्या यज्ञ के योग्य है। अत मैं तुझे यह यज्ञोपवीत पहनाकर ब्रह्म यज्ञ (विद्याध्ययन) के लिए बाधता हूं। अपने गुरुकुल मे प्रवेश करता हूं। इन मन्त्रों से स्पष्ट हो जाता है कि प्रजापति परमात्मा गर्भावस्था में बालक को गर्भनालरूपी यज्ञोपवीत से बाधता है इसका एक सिरा बालक की नाभि से जुडा रहता है और दूसरा माता के गर्भाशय की भित्ति से, जिससे रसादि के द्वारा बालक का पोषण होता रहता है। प्रजापति ने ऐसी सुव्यवस्था की है जिससे बाहर के वातावरण से सुरक्षित रहकर गर्भ का पूर्ण विकास हो जाने पर ही वह जन्म लेता है। परन्तु माता के भोजन व आचार विचार का प्रभाव उस पर अवश्य पड़ता है, अत आचार्य बालक को यह कह रहा है कि जैसे प्रजापित ने माता के गर्भ में भी गर्भनाल द्वारा तेरे पोषण की सुव्यवस्था की थी उसी भान्ति मैं भी उसी का प्रतीक यज्ञोपवीत तुझे पहिनाकर अपने समीप में धारण करता हू। यह यज्ञोपवीत परम पवित्र है। इसके धारण से तेरे आयु, बल और तेज में वृद्धि होगी अत. इसे प्रसन्नता से धारण कर। आज से तू इस यज्ञोपवीत के बन्धन में बध गया है। मैंने तुझे ब्रह्म यज्ञ (विद्याध्ययन) के उपयुक्त समझकर ही इस यज्ञोपवीत का उत्तरदायित्व दिया है। इस प्रकार यह स्पष्ट हुआ कि यज्ञोपवीत संस्कार मानव को पूर्ण पुरुष अथवा महामानव बनाने का एक सत्प्रयास है।

यज्ञोपवीत बनाने की जानकारी – प्रसंगानुसार इस यज्ञोपवीत (सूत्र) के बनाने के लिए कुछ जानकारी दें। यज्ञोपवीत बनाने के लिए कच्चे सूत्र के तीन बार (६६–६६–६६) चप्पे गिनकर उन्हें तिहरा बांटकर इसका एक धागा बनाया जाता है। उन तीन धागों को बांटकर फिर एक सूत्र बनाकर, ऐसे ऐसे तीन सूत्रों का एक यज्ञोपवीत तैयार होता है।

फिर तीनों सूत्रों को एक गांठ के जरिये जोड़ा जाता है। उस गांठ को ब्रह्मग्रन्थि कहते हैं। फिर इसके ऊपर तीन गांठ और लगाते हैं। जिन्हें बहुत विद्वान् तीन वेद की तीन ग्रन्थि मानते हैं। सबसे ऊपर पांचवीं गांठ को प्रणव ग्रन्थि कहते हैं। यज्ञोपवीत बाएं कन्धे से दाएं हाथ के नीचे से पहनते हैं जिससे यह हृदय के समीप से होता हुआ, नाभि प्रदेश तक तथा इससे भी आगे दायीं ओर कटि प्रदेश तक पहुचता है। यज्ञोपवीत विद्या आरम्भ करने का प्रतीक माना जाता है और प्रतीक के पीछे भावना विशेष जुडी होती है। यथा हमारे राष्ट्रध्वज मे भी तीन रग और अशोक चक्रादि विशेष अर्थों को प्रकट करते हैं जिससे समस्त राष्ट्र की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। उसी प्रकार यज्ञोपवीत का सूत्र ६६ चप्पे लेने का अर्थ है कि व्यक्ति की सामान्यत लम्बई ८४ अंगुल से १०८ अगुल तक है जिसका मध्य भाग ६६ अगुल होता है। इसलिए इसे अपने शरीर मे और निज शरीरस्थ, मन बुद्धि आत्मा का सम्पूर्ण विकास करना है। इसके किसी भाग मे कमी न रह जावे। सर्वांगीण उन्नति करने के लिए ही ६६ चप्पे सूत्र लिया जाता है। साथ में बह बटा जाने पर पूर्ण (कटि प्रदेश) तक आजाए यह भी प्रयोजन किया है।

कुछ विचारकों के अनुसार इसे बालक पाचवें वर्ष में धारण करता है। जीवन के शेष वर्ष ६६ ही अवशिष्ट रहे सो उनकी स्मृति मे इसका ग्रहण किया जाता है, अर्थात् इसके दूसरे जन्म की आयु ६६ वर्ष ही है।

तीन सूत्र = यज्ञोपवीत में तीन सूत्र होते हैं जो तीन ऋणों से उऋण होने का सकेत देते हैं। तैत्तिरीय ब्राह्मण मे लिखा है कि ब्राह्मण (वेद पढ़नेवाला ब्रह्मचारी) तीन ऋणों से ऋणी होता है। यह ऋण (१) ऋषिऋण (२) देवऋण, (३) पितृऋण है। विद्या पढने के बाद अन्य मनुष्यो को विद्या पढ़ाने से ऋषिऋण, यज्ञादि करने, करवाने से देव ऋण और माता पितादि की सेवा करने से तथा राष्ट्र के लिए सुसतान निर्माण से पितृऋण से उऋण हुआ जाता है। यह तीनों ऋण मनुष्यमात्र पर ही समझने चाहिए। जिस प्रकार यज्ञोपवीत कुमार धारण करते हैं उसी प्रकार कुमारियां भी यथासमय धारण कर सकती हैं। अत समस्त मानव जाति (स्त्री पुरुषों को) समान अधिकार है इसलिए सभी मनुष्यों को इन ऋणों से छुटकारा दिलाने को यह तीन सूत्र हैं। इन तीन सूत्रो में भी प्रत्येक सूत्र में नौ सूत्र ग्रथित हैं। इनके नौ सूत्रों में नौ देवताओ की कल्पना की गई है।

ओंकारः प्रथमे तन्तौ द्वितीयेऽग्निस्तथैव च।
तृतीये नामदैवत्यं चतुर्थे सोम देवता।।
पञ्चमे पितृदैवत्यं षष्ठे चैव प्रजापतिः।
सप्तमे मरुतश्चैवं अष्टमे सूर्य एव च।।
सर्वे देवतास्तु नवमे इत्येतास्तन्तुदेवताः।।

(साम० छा० सूत्र)

अर्थ – यज्ञोपवीत धारण करनेवाले युवकों एवं बच्चों को इन दिव्य शक्तियो के गुण अपने अन्दर धारण करने चाहिएं। यथा–१ ओकार=ब्रह्मज्ञान, २ अग्नि=तेजस्विता, उन्नति की भावना, ३ अन्नत=धैर्य, स्थिरता, ४ चन्द्रमा=सोम्यता, शीतलता, मधुरता, ५ पितृगण= सहनशीलता, संरक्षण, कुल धर्म, धारण, आशीर्वाद, दान। ६. प्रजापति=प्रजापालन, स्नेह, सौहार्द ७. वायु=गतिशीलता, पवित्रता, बलशालिता, ८ सूर्य=प्रकाश धारण, अन्धकारनाश, ९ सर्वदेवता=समस्त दिव्य गुण और सात्त्विक जीवन अथवा ब्राह्मण को यह नौ गुण धारण करने चाहिए। अर्थात् जिस भी जाति के मनुष्य में यह नौ गुण होंगे वही ब्राह्मण कहलाने का अधिकारी है। ब्राह्मण के घर मे जन्म लेने से ब्राह्मण नहीं बन सकते। श्री तुलसीदास जी ने भी लिखा है – नव गुण परम पुनीत तुम्हारे (रामायण) वे गुण नौ निम्न हैं – १ सत्य, २ अहिंसा, ३ अस्तेय (चोरी न करना), ४ इन्द्रियनिग्रह, ५ अधिक संचय का लोभ छोडना, ६ पवित्रता, ७ कष्ट सहिष्णुता, ८ विद्या, ९ ईश्वर और धर्म पर आस्था। यह योगदर्शन के यम नियम ही हैं।

वैदिक सस्कृति में यज्ञोपवीत धारण से यज्ञ करने और करवाने का अधिकार मिल जाता है और यज्ञ सर्वसुकृत्यो का मूल है, ब्राह्मण ने कहा – **यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म** (शतपथ ब्राह्मण) यज्ञ से सभी कर्म सिद्ध होते हैं। सभी संकल्प पूरे होते हैं और याजक की यज्ञ से सब आशाए पूर्ण होती हैं। यथा वेद में कहा – **आयुर्यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा** (य० २२–२३) नौ शक्तियां – १ शरीर बल, २ बुद्धि बल, ३ चातुर्य बल, ४ धन बल, ५ प्रतिष्ठा बल, ६ सगठन बल, ७. साहस बल, ८ प्रारब्ध बल, ९ आत्मबल।

यज्ञोपवीत निर्माण में पाच गांठें लगाई जाती हैं। उनमें पहली ब्रह्म गांठ है। अत इस बात का प्रतीक है कि मानव जीवन का ब्राह्मण (ईश्वर) प्राप्ति ही मुख्य उद्देश्य है। फिर उसके ऊपर तीन गांठें और हैं जो तीन वेदो की प्रतीक हैं। अथर्ववेद इन्हीं तीनों के अन्दर है। अन्तिम पांचवीं गाठ प्रणव गांठ कहलाती है।

प्रणव ईश्वर का ब्रह्म का सूक्ष्मतम और मुख्य नाम है अत. तीनों वेदों ने प्रणव को अपना, अपना निज नाम दिया है। यथा ऋग्वेद मे प्रणव है, यजु में ओ३म् है, और सामवेद में उद्गीथ नाम से पुकारा जाता है। शक्ति वही एक है। जब हम कोई निश्चय करते हैं कि भाई अमुक बात की गाठ बाधले अपने पल्ले में या यू समझो कि पाचो ज्ञान इन्द्रिया बाधकर (वश मे) रख तभी तेरे सभी व्रत पूर्ण हो सकेंगे और आचार्य के गर्भ की तीन शक्तियां निम्न हैं। १ आध्यात्मिक अज्ञान हृदय का सब नष्ट हो गया अर्थात् हृदय ज्ञान मे ज्ञान का प्रकाश ठसाठस भरा है। २ आधिदैविक–अज्ञान का प्रकाश ठसाठस भरा है। २. आधिदैविक – अज्ञान जो मस्तिष्क में अपने पराये का था वह, राग द्वेष सब नष्ट हो गया है। अब तो सब कुछ अपना ही अपना नजर आने लगा है। वसुधैव कुटुम्बकम्। ३ शक्ति आधिभौतिक अज्ञान नाभि में सब नष्ट हो गया। अब भौतिक जगत् मे जड चेतन का पूर्ण ज्ञान हो गया। अब यह चेतन को जड और जड को चेतन नही कर सकेगा।

आचार्य के गर्भ से मुक्त होना – अब ब्रह्मचारी का गुरु के गर्भ से मुक्त होकर इन तीनों अज्ञानों से छुडाकर आचार्य ब्रह्मचारी का समापवर्तन सस्कार कर उसे मुक्त कर देता है। या यू समझे कि २४ वर्ष तक आचार्य के गर्भ मे रहकर, ब्रह्मचारी वसु बनता है और उसके प्राणो का आधार नाभि केन्द्र स्वस्थ वीर्यादि धातुए पुष्ट होती हैं। ३६ वर्ष तक ब्रह्मचारी गुरु गर्भ में रहकर वह रुद्र बन जाता है। तब ग्यारह प्राण उसके वश में हो जाते हैं। मस्तिष्क उन्नत होकर प्रकृति के बहुत से रहस्यो का आवरण हटकर ज्ञान का प्रकाश हो जाता है। ४८ वर्ष तक ब्रह्मचारी रहने पर वह आदित्य बन जाता है। हृदय से अज्ञान की राशि दूर होकर आदित्य के समान सर्वत्र ज्ञान का प्रकाश होकर ईश्वर का साक्षातकार कर लेता है यही इसका समय और पूर्ण उद्देश्य है। अब गुरु से प्रार्थना करता है कि –

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमं श्रथाय।

अथा वयमादित्य व्रते तवानागसोऽदितये स्याम स्वाहा।।

अर्थ – हे वरुण ! (यम नियमो के बांधने वाले आचार्य) हमारे नाभि, मस्तिष्क और हृदय मे जो बध नियम लगाये थे उन्हें अब खोलने की कृपा करे। तब शिष्य की प्रार्थना स्वीकार होती है और तप की भट्ठी से उसे बाहर ले जाने की तैयारियां होती है। अब वह साधारण मानव न होकर स्वर्ण के समान देदीप्यमान मुखारविन्द और वज्र के समान वक्षस्थल शक्तिशाली भुजदण्ड, सूर्य के समान वर्चस्वती सर्वगुणो की खान, पूर्णपुरुष या महामानव बन गया है। इस निर्माण कार्य में जहां ब्रह्मचारी की सतत साधना रही है। वहा आचार्य का भी कम योगदान नहीं रहा है। जब आचार्य ने अपने गर्भ के अन्दर धारण किया था अर्थात् यज्ञोपवीत दिया था तब प्रतिज्ञापूर्वक यह घोषणा की थी –

मम व्रते ते हृदय दधामि मम चित्तमनु चित्तं तेऽस्तु।

मम वाचमेकमना जुषस्व बृहस्पतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्।।

अर्थ – ब्रह्मचारी आज से तेरा यह चित्त, मेरे चित्त के अनुकूल होवे। मेरे द्वारा दिए व्रतों का तुम एकाग्र होकर पालन करो, मेरी वाणी को एकाग्र होकर सुन। आज से तेरी प्रतिज्ञा के अनुकूल वृहस्पति तुझको मुझ से युक्त करे। आज उसकी यह घोषणा साकार हो गई है। आचार्य ने अपने समान ही मन, बुद्धि का विन्यास करके समाज को एव राष्ट्र को सौंप दिया है। अत हम देखते हैं कि यज्ञोपवीत सूत्र ने इस अबोध बालक को पूर्ण पुरुष तथा पुरुषार्थी, वीर, सुविद्य, बुद्धिमान् पुरुष के रूप मे परिवर्तित कर दिखाया है।

– वेदप्रचार मण्डल, जिला रेवाडी

अद्वैतवाद ने परमात्मा को पापी बना दिया है

– डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री

यजुर्वेद के ४०वे अध्याय मे परमात्मा को शुद्धम (शुद्ध पवित्र) और अपापविद्धम पापरहित बतलाया गया है। परन्तु अद्वैतवादी दशनो ने उसे पापी बना दिया है। इन अद्वैत दर्शनो मे शिवाद्वैत शैवो का अद्वैतवाद आचार्य शकराचार्य का शुद्धाद्वैत श्री बल्लभाचार्य का प्रसिद्ध है। इन दर्शनो मे चेतन सत्ता केवल एक ही है। चेतन जीवात्माओ की स्वतन्त्र सत्ता के लिए कोई स्थान नहीं है।

वही एक चेतन सत्ता स्वेच्छा से अविद्या मे पडकर जीवात्मा कहलाती है। तथा स्वय ही अपने भूले हुए स्वरूप को (सोऽह) कहकर याद करती है अथवा (अह ब्रह्मास्मि) कहकर मै वही ब्रह्म हू कहकर अपने को पुन स्मरण करती है। स्वय ही अपने को भूलती है स्वय ही अपना गुरु बनकर स्वय को याद दिलाती है और स्वय ही स्मरण करती है। मै वही ब्रह्म हू। गोरखधन्धा है आधा ब्रह्म गुरु है और आधा ब्रह्म शिष्य है। दोनो एक हैं। ब्रह्म ही ज्ञानी गुरु है और ब्रह्म ही अज्ञानी शिष्य है। स्वय ही स्वय को उपदेश दे रहा है। कैसा विचित्र कल्पित दर्शन है।

पाप और पुण्य ब्रह्म ही करता है

जड वस्तु मे न ज्ञान है न इच्छा शक्ति है और न स्वतन्त्रता है। ये तीनो शक्तिया केवल एक ब्रह्म म ही हैं। वही अपनी इच्छा से प्रत्येक कर्म करता है। चोरी हिसा व्यभिचार झूठ बोलना आदि पाप कर्म वही चेतन ब्रह्म करता है। वही गुरु बनकर उपदेश करता है। वही शिष्य बनकर उपदेश सुनता है वही दान देता है वही दान लेता है। य पुण्य के कर्म भी वही करता है। ये पाप–पुण्य के कर्म क्यो करता है? अद्वैतवादी कहते है वह लीला (खेल) अकेला करता रहता है।

इस दर्शन मे सबको पाप–पुण्य करने की पूरी छूट है। बस यह कहकर पाप–पुण्य करे कि मैं थोडा ही कर रहा हू वह ब्रह्म ही सब कुछ कर रहा है मै कर्ता–भोक्ता नहीं हू। ब्रह्म ही कर्ता है वही भोक्ता है इस चिन्तन से आप ब्रह्म ही बन जाएगे। ब्रह्म को अपना भूला हुआ स्वरूप याद आ जाएगा।

देखा कैसा विचित्र कल्पित दर्शन है। इसे समझने की आवश्यकता ही नहीं है। क्योकि समझने वाला भी वही है और समझाने वाला भी वही है।

इसी अद्वैत दर्शन को आचार्य सायण ने प्रसारित किया। इसी को रामकृष्ण परमहस ने माना। इसी अद्वैतवाद का प्रचार स्वामी विवेकानन्द ने किया। इसी अद्वैत का प्रचार डॉ० राधाकृष्णन ने किया। राधास्वामी निरकारी साईबाबा सम्प्रदाय वाले आशा बापू, मुरारीबापू, रजनीश सतपाल महाराज मध्य काल मे जितने भी सत हुए कबीरदास रविदास मलूकदास आदि सबने अद्वैतके विचार अपने प्रवचनो से लेखनी से तथा कविता से प्रकट किए है। टी०वी० चेनल पर अधिकाश प्रवचन अद्वैतसे सम्बन्धित हो रहे है। उनके प्रवचनो का सार यही है कि तुम अपने को जानो कि तुम ब्रह्म हो। शान्ति कुज वाले गायत्री के प्रचार मे यही कहते रहे कि तुम हम सब ब्रह्म हैं।

इस अद्वैत दर्शन का सहारा लेकर कोई भी गुरु सन्त चोरी हिसा व्यभिचार कर सकता है क्योकि स्त्री मे भी वही ब्रह्म है और पुरुष मे भी वही ब्रह्म है ब्रह्म ब्रह्म से मिलता है पाप कैसा? यह दर्शन कितना भ्रष्ट और अयथार्थ तथा अव्यवहारिक है। खूब धडल्ले से इसका प्रचार हो रहा है मूर्ख जनता ताली बजा–बजाकर झूमती रहती है। दीक्षा लेती रहती है जनता को इसकी असलियत का पता ही नही है। शैव वैष्णवो म आर शकर के अद्वैत मे ये लीलाए खूब खली जा रही है। इन सबके आश्रम भ्रष्टाचार के अड्डे बन गए हैं। भगवान से डरने की बात ही नही रही क्योकि वे स्वय भगवान है। मैं ऐसे अद्वैतवादियो को नास्तिक की कोटि मे रखता हू क्योकि आस्तिक वह है जो अपने से भिन्न अपना कोई इष्ट पूज्य उपास्य मानकर उसको स्मरण करता है। अद्वैतवादी जब स्वय ही ब्रह्म है तो वह पूजक भक्त उपासक कैसे बनेगा। उसका तो कोई इष्ट है ही नहीं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का दर्शन त्रैतवाद

महर्षि दयानन्द के दर्शन मे सभी समस्याओ का हल है। सभी प्रश्नो का उत्तर है। यह दर्शन व्यवहारिक तथा मानने योग्य है। इसम परमात्मा पर कोई पाप–पुण्य का दोष नहीं लगता है। त्रैतवाद मे परमात्मा जीवात्मा और प्रकृति तीनो को नित्य अनादि माना जाता है। तीनो तत्व अपने–अपने विशेष गुणो के कारण एक दूसरे से भिन्न है। परमात्मा चेतन सतच्चित आनन्द स्वरूप सृष्टि का कर्ता सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान सर्वव्यापक और जीवात्मा कर्मों का फल देने वाला शुद्ध स्वरूप पापरहित एक अजन्मा शक्ति के रूप मे विद्यमान है।

जीवात्माए अनेक हैं। परमात्मा से भिन्न स्वतन्त्र सत्ता रखती हैं। वे एक देशी अल्पज्ञ अल्प शक्तिमान स्वल्पज्ञता के कारण अविद्या मे पडकर पाप–पुण्य के कर्म करते हुए दुख सुख रूप मे भोगो को भोगती रहती हैं। किसी भी अवस्था मे परमात्मा और जीवात्मा एक नहीं होते है। भिन्नता सदा बनी रहती है। इस दर्शन मे आस्तिकता के स्पष्ट दर्शन होते है। परमात्मा उपास्य है तो जीवात्मा उपासक है इस दर्शन मे कभी जीवात्मा परमात्मा(भगवान) नहीं बन सकती और भगवान कभी जीवात्मा नहीं बन सकता।

प्रकृति (परमाणु) नित्य है जड है। भोग्य है। परतन्त्र है। परमात्मा इसका स्वामी है। यह जीवात्मा के लिए भोग्य पदार्थ है। ये तीनो सत्ताए सृष्टि मे विद्यमान है। इस दर्शन को त्रैतवाद कहते हैं।

महर्षि दयानन्द के वाद इस दर्शन की उत्सवो मे चर्चाए होती थी। त्रैतवाद पर विशेष प्रवचन हुआ करते थे। परन्तु अब –

एक आर्यसमाज मे मैने प्रश्न कर दिया कि आप यह बतलाइए कि महर्षि दयानन्द के दर्शन का क्या नाम है। मै आश्चर्य मे रह गया जब किसी ने भी इस प्रश्न का उत्तर नही दिया। आर्यसमाजा म स्वाध्याय तथा सिद्धान्त ज्ञान की कमी होती जा रही है। कोई भी सस्था अपने दर्शन पर तथा सिद्धान्तो पर खडी रह सकती है। आर्य समाजो मे विशेष रूप से त्रैतवाद पर प्रवचन होने चाहिए। उत्सवो मे अन्य सम्मेलनो के साथ त्रैतवाद सम्मेलन होना चाहिए। इस दर्शन से सम्बन्धित साहित्य जनता के हाथ मे जाना चाहिए। इसी उद्देश्य से मैने "त्रैतवाद का उदभव और विकास नाम से शोधग्रन्थ लिखा। इसी विषय पर मै कथाए भी करता हू। महर्षि का सत्य वैज्ञानिक यथार्थ और व्यवहारिक दर्शन त्रैतवाद ही है।

बम्बई मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन हुआ। मैने एक विशेष पत्र सम्मेलन के सयोजक को भेजा कि इस सम्मेलन मे देश विदेश की जनता आ रही है। अत इस सम्मेलन मे अन्य सम्मेलनो के साथ वेदान्त सम्मेलन की तरह त्रैतवाद सम्मेलन भी रखे। परन्तु मेरे सुझाव पर ध्यान नहीं दिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि इतने बडे सम्मेलन मे महर्षि के दर्शन त्रैतवाद पर एक भी प्रवचन नही हुआ। महर्षि के दर्शन को हम देश विदेश मे नही पहुचा सके। सान्ताक्रुज आर्यसमाज ने इसी विषय पर मेरे प्रवचनो का वीडियो कैसेट बनाया था यदि उसे आस्था चैनल पर दिखा सके तो श्रेयस्कर होगा। यदि इस सेवा के लिए मुझे पुन बम्बई बुलावे तो मैं निशुल्क सेवा देने के लिए तैयार हू।

अब एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन दिल्ली मे होने जा रहा हे। यदि इस सम्मेलन मे ही एक सम्मेलन महर्षि दयानन्द दर्शन सम्मेलन रख लेवे ता भी अच्छा होगा। वेद महर्षि और आर्यसमाज की मान्यताआ को जनता तक पहुचाना सम्मेलनो का उद्देश्य होना चाहिए। आर्यसमाज के प्रत्येक सभासद को महर्षि के मन्त्व्यो का तथा दर्शन का ज्ञान होना चाहिए।

इस विषय मे अद्वैत और त्रैत दर्शन का कुछ तुलनात्मक अध्ययन करने से ही अद्वैत की निसारता और त्रैतवाद की महत्ता का बोध दूसरो को भी करा सकते है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने त्रैतवाद दर्शन का वेदो से तथा दार्शनिक ग्रन्थो से उदबोधन कराके एक सही दिशा प्रदान की है आवश्यकता है उसके प्रचार की।

– म०न० १३२, पुराना हस्पताल, जम्मू १८०००१

पृष्ठ ५ का शेष भाग

कणिक नीति : एक संक्षिप्त विवेचन

यहा मन्त्री कणिक और उसकी कणिक नीति के सम्बन्ध मे सक्षिप्त पर्यालोचना करना आवश्यक प्रतीत होता है। महाभारत मे वर्णित इस कणिक नीति के प्रवर्तक मन्त्री कणिक अभारतीय तथा कहीं दूर के विदेशी विचारक प्रतीत होते हैं। भारत मे युद्धादि होते आए है। महाभारत युद्ध मे यह विशेषता थी कि दिन भर युद्ध होता था किन्तु सूर्यास्त के पश्चात सब अपने अपने शिविरो मे जाकर विश्राम करते थे। कहीं किसी ओर से छल कपट और धूर्तता का काम नहीं होता था। उच्च कोटि की नैतिक राजनैतिक आस्थाए विद्यमान थीं।

'कणिक नीति पर गहराई से विचार करने पर ज्ञात होता है कि मन्त्री कणिक विशुद्ध विदेशी (म्लेच्छ) होने के कारण क्रूर छल कपटी तथा विश्वासघाती विचारो वाला था। उसमे भारतीय आर्य पूर्वजो का शुद्ध रक्त प्रवाहित नहीं हो रहा था।

महाभारतकार के शब्दो से 'प्रतीत होता है यह कणिक किसी अनार्य अथवा म्लेचछ देश का वासी होगा क्योकि कणिक द्वारा प्रतिपादित नीति आर्यावर्त्तीय न होकर पश्चिम प्रभाव लिए हुए है।

– 'सुकिरण' अ/१३, सुदामा नगर, इन्दौर, (मध्यप्रदेश) पिन - ४५२००७

वैदिक चिन्तन

राष्ट्र की रक्षा कैसे हो ?

— स्व० पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय

सत्यं बृहद् ऋतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।

सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु।।

— अथर्ववेद काण्ड १२, सूक्त १ मन्त्र —१

व्याख्या — इस मन्त्र में पृथिवी अर्थात् देश की उन्नति के साधन बताए गए हैं। पृथिवी पर हम लोगों का जन्म होता है, इसी पर बढते हैं और इसी पर हमारी अन्त्येष्टि हो जाती है। अत इसकी उन्नति मे हमारी उन्नति और इसके ह्रास में हमारा ह्रास है। उन्नति में भौतिक, सामाजिक और धार्मिक सभी उन्नतियों का समावेश है। पृथिवी या देश के समुन्नत होने के बहुत से भौतिक साधन है। जिनको देश की सरकारें वैज्ञानिकों की सहायता द्वारा प्रयुक्त किया करती हैं। जैसे भिन्न प्रकार की भूमियों को कृषि के उपयुक्त बनाना, ऊसरों को तोड़ना, पहाड़ी जमीनों को चौरस करना, पानी की कमी को दूरस्थ नदियों से नहरें निकाल कर पानी पहुंचाना, विद्युत शक्ति को कृषकों के लिए सुलभ बनाना इत्यादि। परन्तु वेदमन्त्र में कुछ ऐसे अभौतिक तथा मानसिक गुणों का वर्णन किया गया है।, जो ऊपर दिए भौतिक साधनों से भी अधिक आवश्यक हैं, जिनके सहयोग से ही भौतिक साधन सफल हो सकते हैं और जिनके अभाव में ये भौतिक साधन सर्वथा विपरीत सिद्ध होते हैं। कृषि आदि भौतिक साधन मनुष्य के कल्याण के लिए हैं न कि मनुष्य उन साधनों के लिए। अत यदि देश में खाद्य पदार्थ बहुत हों और खाने वाले निकम्मे हो तो उन पदार्थों का उपयोग नहीं हो सकता। कल्पना कीजिए कि कोई धनाढ्य परिवार है। अच्छे मकान, खाने के लिए पुष्कल अन्न, पहनने के लिए वस्त्र, परन्तु परिवार के लोग आलसी, स्वार्थी और कलहप्रिय हैं तो घर की शान्ति तो सदा भंग होती रहेगी, और शनैः शनैः घर की समृद्धि भी चलायमान हो जाएगी। राजा दशरथ के चार लड़के थे — राम और उन्हीं के सदृश लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न — इनमें कुछ मानसिक गुण थे जिनकी सहायता से वे दशरथ के राज्य को विस्तृत और समृद्धिशाली बना सके। शाहजहां के चार पुत्र थे, दारा और उसके ही सदृश शुजा, औरगंजेब और मुराद। इनमे कुछ गुणों की कमी थी अत सुसमृद्ध मुगल राज्य शीघ्र ही छिन्न-भिन्न हो गया।

इन्हीं गुणों का वेदमन्त्र में वर्णन है। एक—एक करके देखिए। पहला है "सत्यं बृहद्" अत्यन्त सत्य प्रियता अर्थात् असत्य से घोर अप्रीति। ऋग्वेद में आया है "सत्येनोत्तभिता भूमि" (ऋ० १०/५४/१) अर्थात् सत्य भूमि को ऊपर उठाए हुए है, उसे गिरने नहीं देता।

यहा सत्य कोई लोहे का खम्भा नहीं है। न शेषनाग का फन है। न कोई एटलस जैसा कोई देव है जो भूमि को कन्धे पर उठाये रखता हो। यहा तो भूमि पर रहने वाले मनुष्यों के मानसिक गुण से अभिप्राय है। सत्यनिष्ठ लोग दरिद्र देश को भी सम्पन्न बना देते हैं और असत्यनिष्ठ लोग सम्पन्न देश की सम्पदा को भी नष्ट कर देते हैं। 'सत्य' को यह विशेषण दिया बृहत्।' यों तो सभी सत्य को अच्छा समझते हैं, परन्तु व्यवहार में सत्य को कम मान्यता दी जाती है। हर व्यापारी का विश्वास है कि सत्य से व्यापार नष्ट हो जाता है। हर वकील कहता है कि वकालत सत्यता से नहीं चल सकती। हर राजनीतिज्ञ कहता है कि राज करना है, तो सब छोड़ो। सत्य ग्रहण करना है तो लगोटी लगा कर वन को चल जाओ। राजनीति में सत्य का क्या काम ? हां, सत्य का ढिंढोरा पीटते रहो। दूसरों को उनके असत्य व्यवहार के लिए बदनाम करते रहो। भारतीय, शास्त्रों में सत्य की महिमा बुहतायत में गाई गई है। परन्तु गाजर बेचने वाले कुंजड़े से लगाकर महाधनाढ्य सेठ, साहूकारों तक सभी असत्य को समृद्धि का साधन समझते हैं। इससे भारतवर्ष की उन्नति तो नहीं होती। वेद कहता है कि पृथिवी को धारण करने वाले गुणों में से मुख्य गुण बृहद् सत्य है, नकली सत्य और असली सत्य में भेद है। क्या यह अचम्भे की बात नहीं है ? सत्य की महिमा को स्थापित करने के लिए किसी ने हरिश्चन्द्र नाटक में अनेक असत्य बातें मिला दी। क्या हरिश्चन्द्र नाटक के लिखने वाले को भी यह विश्वास था कि असत्य का मिश्रण किए बिना नाटक सफल नहीं होगा ? असत्य की विफलता का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि लाखों मनुष्य नाटक देखकर हरिश्चन्द्र की बडाई करते हैं परन्तु इन नाटकों ने संसार के असत्य व्यवहार में कमी तो नहीं की। केवल दर्शकों द्वारा धनप्राप्ति ही नाटक की सफलता नहीं है। इसी प्रकार वैज्ञानिक उद्योगों के साथ—साथ यदि सत्य का प्रचार नही होता तो देश के सम्पन्न और कल्याण-समृद्ध होने में सन्देह ही है।

दूसरा गुण है "ऋतं उग्र"। ऋत का अर्थ है सृष्टि के नियमों का सहयोग। सृष्टि किसी को अपने नियमों से असहयोग करने नहीं देती। जो ऐसा करता है उसे तुरन्त दण्ड मिलता है। आप रोटी के ग्रास को मुख के बजाय नाक से खाने लगें। तुरन्त ही दण्ड मिलेगा। सिर के बल चलना आरम्भ कीजिए दिन में सोइए, रात को जागिए। यह सब उद्दण्डता के काम हैं और उद्दण्डता के लिए दण्डित होना अवश्यम्भावी है। आजकल साइन्स का युग है। ऋतु को विस्तारपूर्वक जानने का यत्न किया जाता है। सृष्टि के नियमों की नित्यप्रति खोज हो रही है, परन्तु अपने जीवन में उसका उपयोग नहीं करते। डाक्टर होकर ऐसे आचरण या आहार—व्यवहार करते हैं, जो विज्ञान के सर्वथा विपरीत है। इससे देश और जाति को हानि होती है। कोई 'ऋत' यह आज्ञा नहीं देता कि स्त्रियां होठों को रगा करें या कमर को इस प्रकार कसा करें कि उनके पेट की नसें निर्बल हो जाए या ऊची एड़ी के जूते पहना करें। विज्ञान समुन्नत देश के आचार—व्यवहार बताते हैं कि यदि जंगली देशों ने ऋत का पालन नहीं किया तो यह उनके अज्ञान के कारण था। जब मनुष्य में ज्ञान की वृद्धि हो जाए फिर भी जानबूझ कर ऋत से असहयोग किया जाए, तो दण्डित होना ही पडेगा। तीसरा गुण है दीक्षा। यजुर्वेद में कहा है।

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।

दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यामयते।

'दीक्षा' का अर्थ ऋषि दयानन्द ने "उत्तम अधिकार" किया है। जब मनुष्य शुभ कामो के लिए व्रत धारण करता है तो उसको उस काम के करने का अधिकार प्राप्त हो जाता है। जब तक किसी देश में इस प्रचार के उच्च मनुष्य उत्पन्न नहीं होते जो निःस्वार्थभाव से देश सेवा के लिए दृढ़-संकल्प हो जाए, उस समय तक देश की उन्नति संदिग्ध रहती है। यों तो देश में करोड़ों मनुष्य रहते हैं, खाते हैं, पीते हैं और मौज उड़ाते हैं, परन्तु देश या जाति उनके आश्रय नहीं है। जैसे देश में करोड़ों पशु-पक्षी, कीट-पंतग रहते हैं, उसी प्रकार वे भी रहते हैं। 'कौऊ नृप होय हमें का हानी।' धार्मिक लोग रहें या अधार्मिक, देश रहे या नष्ट हो जाए, मेरे मकान में चिड़ियां घोसला रखती हैं, चूहे बिल बनाते हैं, मकड़ी जाला पूरती है, परन्तु उनमें से किसी को मकान की चिन्ता नहीं। घर गिर जाए तो वे गिरे हुए मकान के खण्डहर में रहेंगे या अन्यत्र भाग जाएंगे। मकान के धारण करने वाले वे पशु-पक्षी नहीं हैं। इसी प्रकार देश की रक्षा का भार भी व्रतहीन और दीक्षाहीन मनुष्यो के ऊपर नहीं है। लोग जब लोकसभाओं के सदस्य चुने जाते हैं तो उनको शपथ लेनी होती है कि हम जो कुछ करेंगे केवल देशहित की दृष्टि से करेंगे, अपने व्यक्तित्व, परिवार, दल या सम्प्रदाय की भावनाओं को बीच में न आने देंगे। यह व्रत लेना ही उनकी दीक्षा है। व्रत के पश्चात् ही वे पार्लियामेंट की सदस्यता के अधिकारी होते हैं। अब यदि उन्होंने दीक्षा भी ले ली और अधिकार भी प्राप्त हो गया, परन्तु यदि स्वार्थ या अज्ञानवश उन्होने इसको निबाहा नहीं तो देश शीघ्र ही नष्ट हो जाएगा। क्योंकि व्रत या शपथ का मुंह से लेना अथवा कागज पर हस्ताक्षर कर देना तो आसान है, परन्तु जब स्वार्थ और देशहित मे विरोध आता है तो स्थिर रहने के लिए तीन और गुणों की आवश्यकता है। तप की, ब्रह्म की और यज्ञ की। 'तप' का अर्थ है कर्त्तव्य पालन करने मे जो कठिनाइयां आएं उनको सह सकना। अपने मन के अनुकूल बात होने पर तो सभी सच बोलते हैं, परन्तु जब सच बोलने से अपने स्वार्थ में बाधा पड़ती हो उस समय सच बोलना कठिन हो जाता है। स्वार्थ होते हुए न्याय तो सभी कर करते हैं, परन्तु जो शत्रु के साथ न्याय करने में संकोच न करें वही देश का उद्धार कर सकता है। काम-क्रोध-लोभ-मोह का वशीभूत पुरुष कभी देश या जाति की रक्षा करने में समर्थ नहीं हो सकता। 'तप' वही कर सकता है जो ब्रह्म अर्थात अध्यात्म या आत्म-त्याग या आत्म-समर्पण मे विश्वास रखता हो। अध्यात्म को भूलकर जो केवल भौतिकवादी हैं वे विषयों में शीघ्र फस जाते हैं। मनुस्मृति में क्षत्रियों के लक्षण गिनाते हुए एक मुख्य लक्षण यह भी दिया है कि विषयों मे आसक्ति न हो। राजा या शासक लोग शक्ति और अधिकार पाकर लोलुप और विषयी हो जाते हैं। इसलिए वर्णाश्रमधर्म नष्ट होकर देश और जाति की अधोगति हो जाती है। देशों के इतिहासों पर सूक्ष्म दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि जब-जब बृहत्, सत्य, उग्र ऋत, दीक्षा, तप आदि गुणों का अभाव हो गया तो समुन्नत देश भी रसातल को चला गया। शासन का कोई रूप क्यों न हो, एकाधिपत्य हो, प्रजातन्त्र हो, गुणतन्त्र हो, कोई शासनपद्धति सफल नहीं हो सकती जब तक कि देश के मनुष्यों की उच्च कक्षा के लोग इन गुणो से युक्त न हों। यह ठीक है कि देश के सभी व्यक्ति गुणी नहीं हो सकते। परन्तु यदि देश में इन गुणो का सर्वथा अभाव हो जाए तो अराजकता फैल ही जाएगी। इसलिए वेदमन्त्र में उपदेश दिया है कि देश या पृथ्वी को धारण करने वाले मुख्यत ये गुण हैं इनके होते हुए अन्य ऋद्धिया और सिद्धियां तो स्वय ही आ जाती हैं। पृथ्वी रत्नगर्भा है परन्तु उन्हीं के लिए जो रत्नों के अधिकारी हैं। अफ्रीका के दक्षिणी भाग पर दृष्टि डालिए। सैकडो वर्षों से जंगली जातियां रहती थीं। नितान्त जंगली। एक दूसरे से लड़ने वाली, किसी प्रकार की उन्नति के चिन्ह न थे। जब बाहर से कुछ ज्ञान और श्रम से सम्पन्न लोग आ गए तो उस देश की वही पुरानी मिट्टी अगूर, नारगी, सेब आदि रत्न उगलने लग गई। अन्य देशों का भी यही हाल है। भौतिक सम्पत्ति की उत्पत्ति भी बिना सत्य आदि गुणों के नहीं होती। और यदि उत्पत्ति हो भी जाए तो मनुष्य का कल्याण तो हो ही नहीं सकता जब तक कि उत्पन्न वस्तु की रक्षा का उपाय न हो। खेती करना मात्र ही पर्याप्त नहीं है। उपज को चारों से बचाने का भी तो प्रश्न है। जब तक देशवासियों में यज्ञ अर्थात् आत्मसमर्पण का भाव उत्पन्न नहीं होता उस समय तक सामाजिक न्याय की स्थापना नहीं होती। सामाजिक न्याय की भावना के न होने से हिंसा, असत्य और स्तेय का आधिक्य हो जाता है। पृथ्वी को धारण करने वाली दैवी शक्तियां तो हैं ही, जैसे सूर्य की ज्योति, वर्षा, पृथ्वी की आकर्षण शक्ति इत्यादि। परन्तु जब तक इन शक्तियों के साथ मन्त्र-कथित मानव-गुणों का सहयोग न हो, निरर्थक हैं। असभ्य और असंस्कृत देशों में भूमि उतनी ही उर्वरा होती है, धातुए सोना-चादी आदि बहुत रहती हैं। सूर्य के प्रकाश की कमी नहीं, वर्षा पुष्कल मात्रा मे होती है। परन्तु मानव-गुणविहीन असभ्य देश उस समय तक उन्नति नहीं कर सकते जब तक मनुष्य समाज अपना भाग प्रदान नहीं करता। भारत भूमि में परमात्मा ने बहुत कुछ दिया है, परन्तु जब-जब इस देश के मनुष्य धर्मच्युत, असत्यप्रिय, स्वार्थी और तप-शून्य हो गए, देश परतन्त्र हो गया। भारत का क्या, समस्त देशों का यही हाल है। वेद की शिक्षा सभी के लिए है।

जब देश में ऊपर दिए गुणो का अधिक्य होता है तो पृथ्वी मनुष्य के भूत और भविष्य दोनों की 'पत्नी' अर्थात् पालिका हो जाती है। भविष्य तो भूत का अनुगामी ही होता है। जिसने बोया नहीं वह काटेगा कैसे ? जिस देश की पुरानी पीढिया गुणहीन रहेंगी उनकी नई पीढियों में गुण कहा से आएंगे ? पितृ-वर्ग ही तो सन्तान के भविष्य का उत्तरदाता होता है। वेद मन्त्र मे प्रार्थना है कि ऐसी पृथ्वी हम को 'उरु लोक' या मोक्ष की देने वाली हो। मोक्ष की वर्षा अचानक ऊपर से नहीं होती। मोक्ष परम पद है, उसके लिए भौतिक और अभौतिक दोनो साधनो की आवश्यकता है। इन साधनों के लिए बृहत् सत्य, उग्र ऋत, दीक्षा, तप, ब्रह्म और यज्ञ अनिवार्य हैं। अत प्रत्येक मनुष्य को ये गुण अपने मे धारण करने चाहिए और समाज मे उनका सचार करना चाहिए।

स्वास्थ्य चर्चा

जीवन को अर्थहीन बना देता है अवसाद

हर मानव के जीवन मे उतार चढाव आते रहते है जिनका प्रभाव मस्तिष्क पर होना लाजिमी है। हर व्यक्ति की तनाव व सघर्ष के लिए प्रतिक्रिया भिन्न भिन्न होती है कुछ व्यक्ति बडे से बडे दुखो को हसते हसते सहन कर लेते हैं जबकि कुछ अन्य थोडे से तनाव से दुखी परेशान तनावग्रस्त हो जाते हैं। अधिकाश लोगो मे दुखो का प्रभाव क्षणिक होता है और कुछ समय बाद वे दुखो को भूलकर अपने कार्यों मे सलग्न हो जाते हैं। यदि दु ख का प्रभाव लम्बे समय तक चलता रहता है और वे हादसो के बाद एक दो सप्ताह से ज्यादा समय तक उदास रहते हैं तो यह दशा अवसाद या मानसिक दबाव अथवा डिप्रेशन कही जा सकती है।

लक्षण

अवसाद डिप्रेशन ग्रसित मरीज उदास व दु खी रहते हैं। उत्साहहीन होते है निष्क्रिय रहने लगते हैं इनकी सोचने समझने निर्णय लेने की क्षमता और याददाश्त कम हो जाती है। गम्भीर रूप से बीमार मरीजो मे समय बोध समाप्त हो जाता है। मरीज बेचैन रहने लगते हैं। भूख खत्म हो जाती है कब्ज रह सकती है वे अपन को शक्तिहीन महसूस करते है जल्दी ही थक जाते है। अवसाद ग्रसित मरीजो मे विभिन्न शारीरिक बीमारियो के लक्षण बदन दर्द छाती मे दर्द इत्यादि हो सकते है। ज्यादातर अवसादग्रस्त मरीजो को गहरी नीद नहीं आती। रात मे कई बार नीद खुलती है। सुबह सोकर उठने पर वे तरोताजा महसूस नही सकते। कुछ मरीजो को ज्यादा नीद आ सकती है। इन मरीजो मे जीवन से पूर्णत निराशा की भावना पैठ जाती है। ये निराशावादी होते हैं ‹ाद मे नकारात्मक विचार होते हैं अपने जीवन को अर्थहीन समझते हैं।

अवसाद (डिप्रेशन) के लक्षण पूरे दिन एक समान नहीं होते। ज्यादातर मरीजो मे सुबह समस्या ज्यादा होती है और शाम को कम हो जाती है। इनमे एकाग्रता और याददाश्त मे कमी हो सकती है। बदन मे जगह जगह दर्द हो सकता है ये जीवन के हर पहलू परिवार कार्य समाज से निराश रहते है। निराशाजनक विचारो के कारण यौन सम्बन्धो मे भी रुचि नही रहती। नपुसकता हो सकती है। मानसिक दबाव (डिप्रेशन) विभिन्न रूपो मे हो सकता है।

इन्डोजीनियस डिप्रेशन

इसमे उदासी मरीज के मन के अन्दर होती है मरीज सोचता है कि अब जीवन बेकार है। अच्छे दिन अब कभी नहीं आएगे। बराबर नकारात्मक विचार मन मे रहते हैं। मरीज हर बात मे बुराई देखता है और इनका मन हर समय उदास रहता है। इनकी भूख कम हो जाती है वजन भी कम हो सकता है गहरी नीं नही आती। थकान आलस्य सुस्ती बराबर बनी रहती है। किसी भी कार्य मे उत्साहित महसूस नहीं करते। यह मरीज बिना किसी कारण के चिन्तित दु खी रहते हैं सोचते हैं जीवन निरर्थक हैं मन मे आत्महत्या के विचार आते है। रोग गम्भीर हो जाने पर कानो मे अपनी आवाजे सुनाई दे सकती हैं। इन्डोजीनियस डिप्रेशन अटैक मे हो सकता है मरीज कुछ दिन स्वस्थ रहता है फिर डिप्रेशन मे चला जाता है और यह चक्र चलता रहता है।

न्यूरेटिक डिप्रेशन

इस दशा मे मरीज उदास रहते हुए भी अपने आसपास हो रही घटनाओ से प्रभावित होता है। खुशी महसूस कर सकता है कार्य क्षमता कम होते हुए भी कार्यरत रहते है। इनको चिडचिडापन थकावट रहती है पर आत्महत्या के विचार कम ही आते है। न्यूरोटिक डिप्रेशन दो वर्ष से ज्यादा लगातार चलता है। गम्भीर रूप मे होने पर न्यूरोटिक और इन्डोजीनियस डिप्रेशन मे फर्क करना मुश्किल हो जाता है

डिप्रेशन से बचाव

डिप्रेशन महती समस्या है और देश मे लाखो लोग इस समस्या की चपेट मे हैं।

डिप्रेशन से बचाव के लिए अपने दु ख सुख को अपने परिवार के सदस्यो दोस्तो हितैषियो मे बाटे। उन्हे अपने मन मे न रखे। यदि अचानक कोई बुरी खबर सुनते हैं तो उसे अपने करीबी लोगों को बता कर अपने दु ख को हल्का करे। इससे राहत महससू होगी दु ख कम होगा। हल्का फुल्का महसूस करेगे मन को शाति प्राप्त होगी।

दु खी होने पर घूमने टहलने निकल जाए मन बहल जाएगा। मनोरजन के लिए जाए जीवन को नीरस न बनाए। असफलता प्राप्त होने पर दु खी निराश न हो। प्रयत्न करे सफलता अवश्य प्राप्त होगी। सतुलित भोजन पर्याप्त मात्रा मे करे। व्यायाम नियमित रूप से करे। स्वस्थ शरीर मे नकारात्मक विचार नही आते है। यदि स्वय या परिवार का कोई सदस्य बीमार है तो उपचार करवाए। जीवन मे शौक होना जरूरी है जिससे आत्मसतुष्टि प्राप्त होती है। जीवन मे नकारात्मक विचार न आने दे सकारात्मक विचार रखे ध्यान योग करे। भगवत वदना पूजा करे, ईश्वर पर विश्वास करे।

डॉ० जे० एल० अग्रवाल

चिरस्मरणीय व्यक्तित्व | कीर्तिर्यस्य स जीवति

आनन्द की मूर्ति महात्मा आनन्द स्वामी

– ओकारनाथ

आर्यसमाज के सन्यासी और विद्वान् अपने पूर्व विद्वानों और सन्यासियो को भूल कर अपने-अपने मठ और आश्रम बनाने मे लगे हुए हैं। महात्मा आनन्द स्वामी और महात्मा हसराज जी से मेरे बाल्यपन से उनके स्वर्गवास तक निकट का सम्पर्क रहा। श्री आनन्द स्वामी जी आर्यसमाज को महात्मा हसराज जी की देन थी। खुशहालचन्द जी के आठवीं श्रेणी पास करने के बाद उनके पिता गणेशदास जी ने उन्हे जुराबे बनाने की छोटी सी फैक्टरी अपने गाव मे लगावा दी थी, उसमे ३-४ लडके काम करते थे। महात्मा हसराज जी एक बार उनके गाव आए और खुशहालचन्द जी के पिता से बोले कि खुशहालचन्द मुझे द दो। इसे मैं लाहौर ले जाऊगा। पिता ने तुरन्त हा कर दी। एक मास बाद महात्मा जी ने खुशहालचन्द जी को लाहौर बुला लिया। उस समय श्री खुशहालचन्द जी गृहस्थी बन चुके थे। उनकी पत्नी मेला देवी जी थी और एक पुत्र (रणवीर) के पिता भी बन चुके थे। श्री खुशहालचन्द जी अपने परिश्रम और स्वाध्याय के कारण महात्मा हसराज जी को बहुत प्रिय थे। खुशहालचन्द जी आर्यसमाज के पत्रो मे लेखो द्वारा और विभिन्न आर्यसमाजो मे अपने व्याख्यानो द्वारा आर्य प्रादेशिक सभा पजाब और सारे भारत की आर्यसमाजो मे मशहूर हो गए थे। अपना दैनिक पत्र मिलाप आरम्भ कर दिया जो सर्वप्रिय पत्र सारे भारत मे जाने लगा। १९३९ में हैदराबाद सत्याग्रह मे। एक सयोजक तौर पर सत्याग्रहियो का एक बहुत बडा जत्था ले कर हैदराबाद पहुचे और सबको हैदराबाद की सरकार ने जेल मे डाल दिया। जब विजय प्राप्त करके हैदराबाद के सभी सत्याग्रही वापस आ गए तो आपका आर्य जगत ने स्वागत किया। देश विभाजन के बाद आप दिल्ली और जालन्धर मे आ कर मिलाप समाचार पत्र का सम्पादन करने लगे। कुछ काल के बाद आपने सन्यास आश्रम मे प्रवेश किया और 'आनन्द स्वामी' के नाम से प्रख्यात हुए। अपने तप त्याग और विद्वत्ता के कारण देश विदेश मे ख्याति प्राप्त की। एक बार आर्यसमाज सान्ताक्रुज मे एक सज्जन एक कीमती कम्बल और नकदी ले कर भेट देने को आए। स्वामी जी ने कहा कि कम्बल मेरे पास है दूसरा कम्बल रखने को मेरे पास न कोई स्थान है न घर है और ना ही मेरा कोई आश्रम। आप इस कम्बल को किसी जरूरतमन्द को देना और नकदी आप आर्यसमाज को दान दे मुझे धन की कोई जरूरत नहीं।



एक बार महात्मा आनन्द स्वामी जी नैनीताल आर्यसमाज के वार्षिक उत्सव पर आए थे। जाते समय आर्यसमाज के अधिकारियों ने जब मार्ग व्यय की बात कहीं तो कहने लगे मुझे दिल्ली से मुरादाबाद का टिकट देकर किसी सज्जन ने गाडी पर बिठा दिया। मुरादाबाद मे स्टेशन पर मुरादाबाद फ्लोर मिल के मालिक गाडी लेकर आए थे और वहा एक दिन अपने घर मे रखा और उनकी गाडी नैनीताल छोड गई। वापसी मे उनकी गाडी नैनीताल से मुरादाबाद ले जाएगी और वहा मेरी कथा है वहा वह स्वय मुझे दिल्ली भेज देगे। इसलिए मेरा कोई मार्ग व्यय नहीं हुआ (मैं वहा पर उपस्थित था)।

एक दिन आर्यसमाज नैनीताल के प्रधान श्री बाकेलाल जी कसल (अभी ६५ वर्ष के हैं) स्वामी जी से कहने लगे कि किसी रियासत के महाराजा ने मुझे कहा है कि जब महात्मा आनन्द स्वामी जी नैनीताल आएँ तो मुझे उनसे मिलवा दीजिए। महात्मा आनन्द स्वामी ने हा कर दी और महाराजा से मिलने का समय निश्चित हो गया। श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी एव बाकेलाल जी कसल मुझे भी साथ ले गए। महाराजा ने हर प्रकार के स्वागत का प्रबन्ध कर रखा था।

स्वामी जी ने महाराजा से कहा कि मैं आपके साथ अन्दर बैठ कर बातचीत करूगा और बाकी के लोग बाहर बैठकर खानपान करेगे। महाराजा के साथ महारानी और उनकी बेटी भी थी। एक घण्टे के पश्चात स्वामी जी जब बाहर आए तो महाराजा से कहा कि किसी सन्यासी को खाली हाथ नहीं भेजते – महाराजा ने महारानी से धन लाने का सकेत दिया। स्वामी जी ने कहा कि मैं जो माग रहा हू वह आपके पास है अन्दर जाने की जरूरत नहीं। महाराज ने कहा कि मैं तो जेब में कुछ नहीं रखता। स्वामी जी ने कहा कि मैं जो माग रहा हू वह आपकी जेब से नहीं माग रहा। स्वामी जी ने अपनी झोली महाराजा के सामने खोल दी और कहा कि इस झोली में अपनी सब चिन्ताए डाल दो और अब इनके बिना अपना जीवन व्यतीत करो। यह सुन कर महाराजा महारानी और उनकी पुत्री की आखो मे आसू निकल आए और सहसा तीनो ने उनके चरण छू लिए।

महात्मा आनन्द स्वामी जी की कितनी कदर थी लोगो के अन्दर कितना प्यार था – स्वामी जी ने न किसी से धन मागा था और न ही कोई ट्रस्ट बनाया था और न ही कोई आश्रम चेली चेला बनाया था। सारे देश विदेशो मे भ्रमण करके अमृत वर्षा करते और वेद का उपदेश देते।

आज के सन्यासी और विद्वत वर्ग स मेरा निवेदन है कि वे आत्म चिन्तन करे और महात्मा आनन्द स्वामी जी के जीवन से प्रेरणा लेवे और उनके द्वारा प्रतिपादित आदर्शों को अपनाए। मैंने बडे सक्षिप्त शब्दो मे लिखा है। इस पर एक पुस्तक लिखी जा सकती है।

– २७१ ओ सदन, ६३ वां रास्ता, मुम्बई-५०

सरल गीता ज्ञान की २६ हजार प्रतियों का निःशुल्क वितरण

नई दिल्ली, आर्यसमाज मन्दिर सी–ब्लाक के तत्वावधान मे प्रधान श्री सोमदत्त महाजन के अथक प्रयासो से वैदिक विद्वान डॉ० महेश वेदालकार द्वारा रचित सरल गीता ज्ञान लघु ग्रन्थ की २६ हजार प्रतियो का प्रकाशन करके निःशुल्क वितरण के लिए जारी किया गया। इस प्रयास मे आर्यसमाज के कई दानी महानुभावो और सस्थाओ के अतिरिक्त सनातन धर्म के भी बहुत से व्यक्तियो और सस्थाओ का आर्थिक सहयोग प्राप्त किया है। श्री सोमदत्त महाजन ने बताया इस कार्य पर लगभग २लाख रुपये खर्च हुए है। दिल्ली मे सर्वत्र उनके इस प्रयास की प्रशसा हो रही है। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर दिल्ली की जनता को यह भेट समर्पित की गई है। जनकपुरी के कुछ क्षेत्रो मे इस पुस्तक को घर-घर पहुचाया जा रहा है।

प्रो० मो० हनीफ शास्त्री का वेदों पर व्याख्यान

उदयपुर ५ अगस्त। आर्यसमाज हिरण मगरी के तत्वावधान में पन्ना लाल अग्निहोत्री के पौरोहित्य मे आज वृहद् वृष्टि यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें परम् पिता परमेश्वर से चराचर जगत् की सुख शान्ति हेतु समवेत प्रार्थना की गई तथा वेद मन्त्रो से विशेष आहुतिया दी गयी।

श्री अनन्त देव शर्मा एव दुर्लभ जी मकवाना इस बृहद् यज्ञ के मुख्य यजमान थे तथा समाज के उपस्थित सभी सदस्यो ने भी विशेष आहुतियो की हवि प्रदान की। इस अवसर पर विशेष सत्सग का भी आयोजन हुआ जिसमे ग्यारसी देवी आर्य एव श्रीमती तापडिया सहित महिला सदस्यो ने सुमधुर भजनो का गायन किया।

आर्यसमाज के वेद प्रचार कार्यक्रम की शृखला मे १२ अगस्त कृष्ण जन्माष्टमी को जनकपुरी नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय सस्कृत सस्थान के प्रो० मोहम्मद हनीफ शास्त्री का वेदो व उपनिषदों से सम्बन्धित व्याख्यान हुआ।

– गिरीश जोशी, सयुक्त मन्त्री

ॅ.र्न व डी०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 26-8-2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2001
०0 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2001 in NDPSo on 23/24 -8 . 2001

वैदिक संस्कृति की चुनौती का सामना महर्षि दयानन्द ने किया – शास्त्री

उदयपुर ४ अगस्त। उन्नीसवीं शताब्दी मे जब भारत वर्ष पर चतुर्दिक सास्कृतिक आक्रमण हो रहे थे और वैदिक धर्म परदेशी सत्ता से आक्रान्त था उस समय गुजराती भाषी महर्षि दयानन्द सरस्वती ऐसे महान् व्यक्ति हुए जिन्होने उस चुनौति को स्वीकार कर हिन्दी भाषा में वैदिक घोष कर इस महान सस्कृति विरासत की पुनर्स्थापना की।

खादी ग्रामोद्योग आयोग के पूर्व अध्यक्ष भानु कुमार शास्त्री ने श्रावणी उपाकर्म के पुण्य अवसर पर आर्यसमाज हिरण मगरी मे सम्बोधित करते हुए कहा कि वैदिक सस्कृत साहित्य मे ताल चाबी का उल्लेख ही नहीं है तथा तत्कालीन समाज 'कोऊ नृप होय हमे का हानि की भावना से प्रेरित धर्माश्रित व समाजाश्रित जीवन जीते थे उन्हे राज्याश्रम की चिन्ता नहीं होती थी।

उन्होने तत्कालीन शैक्षिक वातावरण का उल्लेख करते हुए बताया कि तब कृष्ण व सुदामा अर्थात राजा व रक एक ही गुरुकुल मे पढते थे जबकि आज सुदामा खैराती सरकारी स्कूल मे व कृष्ण कान्वेट पब्लिक स्कूल मे पढते है।

इस अवसर पर इन्द्रदेव पीयुष ने प्रासगिक मधुर भजनो से उत्सव को आनन्दमय बना दिया।

समाज के पौरोहित पन्ना लाल अग्निहोत्री के पौरोहित्य मे वृहद् यज्ञ व यज्ञोपवीत बदलने का सस्कार भी सम्पन्न हुआ। अतिथियो का स्वागत समाज प्रधान जितेन्द्र पाल ने किया तथा पूरे समारोह का सचालन समाज के मन्त्री डॉ० अमृत लाल तापडिया ने किया।

दौहला जि० गुडगाव में वेद प्रचार और आर्यवीर दल का शिविर सम्पन्न हुआ

गुडगाव। ग्राम दौहला मे २३ जुलाई से २ अगस्त तक प्रधान सचालक डॉ० देवव्रत आचार्य के मार्ग दर्शन में बहुउद्देशीय शिविर का आयोजन हुआ। प्रात तथा साय काल ग्राम दौहला हरचन्दपुर और लौटकी के बच्चे आसन–प्राणायाम दण्ड बैठक सर्वागसुन्दर व्यायाम नियुद्ध लाठी आदि का प्रशिक्षण लेते रहे। प्रतिदिन ७ ३० बजे प्रात काल परिवारो मे यज्ञ तथा प्रवचन होते रहे जिसमे स्त्री एव पुरुष बहुत श्रद्धा के साथ सम्मिलित होते थे। दोपहर २–३ बजे तक उपनिषदो का कथा और शका समाधान चलता रहा। अन्तिम दिनो मे आचार्य सत्यप्रिय जी तिजारा का भी सहयोग मिला। २ अगस्त को राजकीय हाई स्कूल मे ८ बजे प्रात काल विद्यालय के बच्चो एव ग्रामीण लोगो की उपस्थिति मे भव्य व्यायाम का प्रदर्शन किया गया। आचार्य सत्यप्रिय जी ने शिक्षा एव स्वास्थ्य दोनो को साथ–साथ लेकर आगे बढने की प्रेरणा दी। प्रसिद्ध समाजसेवी भगत मगतू राम जी अधिष्ठाता गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ ने आर्यवीर दल के कार्यो का उल्लेख करते हुए आचार्य देवव्रत के त्याग तप की प्रशसा की और विद्यार्थियों को बलवान् बनने तथा दुर्गुणो को त्यागने का उद्बोधन दिया। ग्राम दौहला तथा हरचन्दपुर मे आर्य वीर दल की शाखाए स्थापित की गई।

– शिवदत्त आर्य मण्डलपति, गुडगाव

प्रतिष्ठा में

वेद प्रचार सप्ताह एवं श्री

आर्यसमाज सान्ताक्रुज (प०) मुम्बई द्वारा बुधवार दिनाक १ अगस्त से रविवार दिनाक ५ अगस्त २००१ तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात ७ ३० से ६ ०० बजे तक पञ्च दिवसीय यजुर्वेदीय यज्ञ तथा भजन प्रवचन का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा एव वक्ता सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ० महावीर सिह जी आर्य (मेरठ) थे। यज्ञ मे सस्वर वेदपाठ प० नामदेव आर्य प० विनोद कुमार शास्त्री प० उमेश आचार्य प० नरेन्द्र शास्त्री तथा प० प्रभारजन पाठक ने किया। दिनाक १ से ४ अगस्त २००१ को रात्रिकालीन सत्र मे श्री मामचन्द आर्य पथिक श्री दीपचन्द आर्य जी के प्रेरणाप्रद भजनोपदेश तथा डॉ० महावीर सिह जी आर्य के आध्यात्म से सम्बन्धित वेदमन्त्रो के आधार पर ज्ञान वर्धक सारगर्भित प्रवचन हुए।

रविवार दिनाक ५ अगस्त को ७ ३० से ६ ३० तक यजुर्वेदीय यज्ञ की पूर्णाहुति हुई इसके उपरान्त १० ०० बजे से श्री कृष्ण जन्माष्टमी समारोह श्री ओकारनाथ आर्य (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई) की अध्यक्षता मे हुआ। श्रीमती शिवराजवती आर्या श्रीमती सरोजिनी गोयल के भजन हुए। श्रीकृष्ण जी के गुण गाती दुनिया नामक सुमधुर गीत गाया। तत्पश्चात प० नरेन्द्र शास्त्री जी ने धनुष बाण द्वारा अचूक निशाने बाजी का प्रदर्शन किया। अपने स्वागत भाषण मे आर्यसमाज सान्ताक्रुज के प्रधान डॉ० सोमदेव शास्त्री ने समस्त उपस्थित जनो का अभिनन्दन करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की। सुप्रद्धि भजनोपदेशक श्री मामचन्द जी आर्य पथिक ने ईश्वर की महिमा का गुणगान करते हुए मैं पहचान न पाया तुमको तथा अखिल विश्व मे व्यापक सत्ता पता दे रहा पत्ता पत्ता नामक भजनो की व्याख्या सहित गाया। इस अवसर पर आर्य समाज सान्ताक्रुज के मन्त्री श्री यशप्रिय आर्य श्री विश्व भूषण जी आर्य डॉ० सोमदेव जी शास्त्री डॉ० महावीर सिह

अनेक गणमान्य व्यक्तियो ने अपने विचार व्यक्त किए।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री मिठाईलाल सिह जी ने कहा कि श्रीकृष्ण ऐसे महापुरुष है जिन्हे वैदिक धर्म सस्कृति के रक्षार्थ सदैव स्मरण किया जाएगा। समारोह के अध्यक्ष श्री ओंकारनाथ जी आर्य (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई) ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि आर्यसमाज का भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल है। आर्य शिक्षण सस्थाए निरन्तर बढ रही है गत दिनो आर्य समाज ने भूकम्पीय क्षेत्रो मे आठ दस विद्यालय खोले। आर्यसमाज की प्रगति के लिए आप सबका सहयोग चाहिए ताकि वेद प्रचार का क्रम जारी रहे।

आमन्त्रित विद्वानो एव अतिथियों तथा सन्यासियो को फूलहार पहनाकर समाज के अधिकारियो ने सम्मान किया। श्री यशप्रिय आर्य (महामन्त्री आर्यसमाज सान्ताक्रुज) ने सभी विद्वानो सन्यासियो श्रोताओ कार्यकर्त्ताओ एव सहयोगियों को धन्यवाद ज्ञापन किया।

अन्त मे शान्ति गीत श्री विश्वभूषण जी आर्य ने गाया। शान्तिपाठ एव जयघोष हुआ। प्रीति भोज के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली–२ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली–२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०९८५)।
सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाइट http://www.whereisgod.com

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

वेदा — ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४० अक २१ | २ सितम्बर से ८ सितम्बर २००१ तक | दयानन्दाब्द १७८ | सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०२ | सम्वत २०५८ | भा० शु० १५

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर



सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष ने प्रशासक पद सम्भाला

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक चुनाव ३ तथा ४ नवम्बर २००१ को

चुनाव प्रक्रिया प्रारम्भ

प्रान्तीय सभाओ को १५ सितम्बर २००१ तक प्रतिनिधि भेजने के लिए परिपत्र जारी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का अगामी त्रैवार्षिक चुनाव अधिवेशन **३ तथा ४ नवम्बर २००१ (शनिवार रविवार)** को **आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल चान्दनी चौक दिल्ली** मे प्रात ११ बजे से होना निश्चित हुआ है। सारी चुनाव प्रक्रिया सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष **श्री रामफल बसल जी** की देखरेख और नियन्त्रण मे सम्पन्न होगी।

उल्लेखनीय है कि दिल्ली की एक दीवानी अदालत की न्यायधीश श्रीमती सुखबिन्दर कौर ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा बनाम स्वामी ओमानन्द व अन्य नामक मुकदमे मे **श्री रामफल बसल** के साथ पजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त **न्यायाधीश श्री आर०एन० मित्तल** को भी चुनाव अधिकारी एव प्रशासक नियुक्त किया था श्री आर०एन० मित्तल ने अपनी व्यस्तताओ के कारण इस दायित्व के निर्वहन करने मे अपनी असमर्थता व्यक्त कर दी। परिणामत **श्री रामफल बसल** अकेले ही इस गुरुत्तर दायित्व का निर्वहन करेगे।

विगत सप्ताह श्री रामफल बसल ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रशासक का दायित्व सम्भाल लिया है। सभा कार्यालय मे अपनी प्रथम बैठक के दौरान उन्होने स्वामी सुमेधानन्द श्री वेदव्रत शर्मा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री श्री विमल वधावन श्री लक्ष्मीचन्द तथा श्री मुकेश सैनी आदि से गहन विचार विमर्श किया है। इसके अतिरिक्त उन्होने स्वामी ओमानन्द जी प्रो० शरसिह श्री चन्द्रदेव श्री इ ५ देव जी डा० महेश विद्यालकार तथा श्री जगदीश आर्य आदि से भी विचार विमर्श किया। चुनाव प्रक्रिया को प्रारम्भ करते हुए सभी सम्बद्ध प्रान्तीय सभाओ को १५ सितम्बर २००१ स पूर्व अपने **प्रतिनिधि भेजने के लिए परिपत्र** जारी कर दिया गया है। उपरोक्त कायवाही की जानकारी समस्त अन्तरग सदस्यो को भी भेज दी गइ है। **अन्तरग** तथा **कार्यकारिणी के अधिकार** अब **चुनाव अधिकारी मे ही निहित हैं। श्री रामफल बसल** ने **श्री वेदव्रत शर्मा** को **सहायक प्रशासक** के रूप मे कार्य करने का निर्देश दिया है।

श्री रामफल बसल ने आर्यजनो से मार्मिक अपील करते हुए कहा है कि मैं सत्य और न्याय की स्थापना और आर्यसमाज की सुदृढता के लक्ष्य को सामने रखकर ही काये करूगा। उन्होने कहा है कि आज आर्यसमाज को देश और समूचे विश्व की वर्तमान परिस्थितियो के दृष्टिगत एक मजबूत और चुस्त सगठन क रूप मे खडे होने की आवश्यकता है। राष्ट्र निर्माण के कई कार्यक्रम आर्यसमाज के उचित नेतृत्व की प्रतीक्षा मे है और साथ ही आर्यसमाज को एकजुट होकर कई आन्तरिक अव्यवस्थाओ मे भी सुधार करना है

उन्होने आर्यजनो को विशेष रूप से प्रान्तीय सभाओ के प्रतिनिधियो का आह्वान किया हे कि वे पूरी श्रद्धा और आर्यसमाज के प्रति पूर्ण त्याग और समर्पण की भावनाओ से इस चुनाव प्रक्रिया मे भाग ले।

मुम्बई से कै० देवरत्न आर्य ने तथा कई अन्य प्रान्तो के आर्यनेताआ ने श्री रामफल ब र न से फोन पर सम्पर्क करके इस कार्यवाही का स्वागत किया है तथा ६र सम्भव सहयाग का आश्वासन दिया है।

गाधीधाम मे अनाथालय और विधवाश्रम का शिलान्यास शनिवार १५ सितम्बर २००१

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से गुजरात के भूकम्प पीडित अनाथ बच्चो और निराश्रित महिलाओ के लिए केन्द्र सरकार के जहाजरानी मन्त्रालय ने आर्यसमाज गाधीधाम को **२ एकड भूमि काडला पोर्ट ट्रस्ट के** तहत देना स्वीकार कर लिया है। विगत माह सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधि मण्डल के साथ **केन्द्रीय जहाजरानी मन्त्री श्री अरुण जेटली** के कार्यालय मे हुई बैठक मे यह अन्तिम निर्णय लिया गया। प्रतिनिधि मण्डल मे **श्री वेदव्रत शर्मा श्री विमल वधावन आर्यसमाज गाधीधाम के प्रधान श्री पुरुषोत्तम भाई पटेल** तथा **गुजरात सभा के मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य** शामिल थे।

श्री अरुण जेटली के आदेश के बाद समस्त कानूनी औपचारिकताए पूरी करते हुए इस भूमि का स्थानान्तरण आर्यसमाज गाधीधाम को कर दिया गया।

उल्लेखनीय है कि इस वर्ष २६ जनवरी को आए विनाशकारी भूकम्प के तुरन्त बाद सार्वदेशिक सभा की ओर से स्थानीय आर्य नेताओ को इस योजना पर कार्य करने के लिए निर्देश दिया गया था। फरवरी माह मे श्री विमल वधावन एडवोकेट ने श्री अरुण जेटली के साथ आर्यसमाज गाधीधाम के प्रतिनिधि मण्डल के साथ स्थानीय कारपोरेशन की बैठक मे इस योजना की रूपरेखा प्रस्तुत की थी।

१५ सितम्बर २००१ शनिवार को स्वय श्री अरुण जेटली गाधीधाम मे इस भूमि का शिलान्यास सम्पन्न करेगे।

आर्यसमाज गाधीधाम के मन्त्री **श्री वाचोनिधि आर्य** ने सभी आर्यजनो तथा दानी महानुभावो से इस कल्याणकारी योजना को अपने सात्विक दान से सफल बनाने की अपील की है।

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

सह सम्पादक
विमल वधावन एडवोकेट

चिरस्मरणीय व्यक्तित्व — आर्यसमाज के वीतराग, तपस्वी, धुन के धनी — कीर्तिर्यस्य स जीवति

यतिवर श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

आयसमाज के वीतराग तपस्वी धुन के धनी यतिवर श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज न केवल विद्वान थे प्रत्युत कष्ट सहिष्णु और सगठन मे कुशल भी थे। उनके प्रवचन इतनी सरल भाषा मे होते थे कि भोले भाले अनपढ लोग भी बडी आसानी से समझ लेते। नि स्पृह और वीतराग इतने कि सदा केवल एक बार भोजन करते थे सो भी दिन के १२ बजे से पूर्व यदि कालातिपात हो जाता तो फिर अगले दिन ही भोजन की बारी आती। अपने पास एक काली कामरी रखते उसी को ओढते सदा तख्त पर ही सोते कभी किसी गृहस्थी के घर के अन्दर नही सोते। १५ २० मील पैदल चल कर आर्यसमाजो मे प्रचार करना उनके जैसे बलिष्ठ और ब्रह्मचर्य से सुगठित शरीर वाले व्यक्ति के लिए बहुत ही मामूली बात थी। उनके तप त्याग समदृष्टि न्यायप्रियता और समाज सगठन के लिए अहर्निश कठिन परिश्रम के सामने बडे-बडे कटटर पौराणिक भी श्रद्धा से नत होते थे। उनके उपदेशो की सरलता और हार्दिकता भी लोगो के मन को छूती थी। वे लोगो को समाज सुधार और सगठन का महत्व समझाते। उन्हीं के उपदेशों से प्रभावित होकर प० शकर प० वासुदेव और प० जगनन्दन जैसे युवक आर्यसमाज की सेवा मे लग गए।

एक बार जब स्वामीजी मॉरीशस देश मे थे तो अचानक स्वामीजी को नेत्र रोग हो गया। उन्हे दिखना एकदम बन्द हो गया। वे चिकित्सा के लिए भारत आना चाहते थे। पर तब तक विश्व युद्ध प्रारम्भ हो चुका था इसलिए जहाज मिलना मुश्किल हो गया और यो भी उन दिनो समुद्री मार्ग खतरे से खाली नहीं रह गए थे। हवाई जहाजो का तब तक चलन नही हुआ था। पर प्रभु की भी कैसी विचित्र लीला है ! लगभग दो सप्ताह बाद बिना किसी चिकित्सा के उनकी आखो मे रोशनी आ गई उन्हे दिखना प्रारम्भ हो गया और पीडा जाती रही।

उसके बाद उन्होने अपनी आखे डॉक्टरों को दिखाई। डॉक्टरो ने प्रभु को धन्यवाद दिया कि स्वामीजी दृष्टिहीन होने से बच गए। पर उसके बाद उनकी आखो पर ऐनक सदा के लिए लग गई।

हिन्दी पाठशालाओ का प्रसार अनेक आर्यसमाजो के लिए भूमि का क्रय और आर्यसमाज के सगठन का विस्तार स्वामीजी के विशेष कार्यो मे गिने जा सकते हैं।

लौहपुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने ऋषिकृत ग्रन्थो का गहन अध्ययन रामा मण्डी (पजाब) मे रहकर किया था। श्री महाराज कई वर्ष रामा मण्डी को केन्द्र बनाकर योग साधना लोक सेवा राष्ट्र भाषा प्रचार के कार्य में लगे रहे। श्री स्वामीजी जीवन के अन्तिम दिनो में श्री ला० नारायणदत्त जी की कोठी मे ठहरे हुए थे वहीं उनकी चिकित्सा चल रही थी। शीत ऋतु आ गई। स्वामीजी के लिए रजाई दी गई। स्वामीजी ने कई वर्षों से रजाई लेनी छोड रखी थी। सम्भवत गृह त्याग के साथ ही रजाई भी छोड दी परन्तु अब रुग्ण अवस्था में उनको कह सुनकर रजाई दी गई।

'जाई लम्बाई मे छोटी थी श्री महाराज जी बहुत लम्बे थे। वहा उपस्थित श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री जी ने कहा 'स्वामीजी यह छोटी है मैं बदलवा लेता हू।

हमने शास्त्री जी से पूछा 'क्या आचार्य जी के रोकने पर दूसरी रजाई लाने का आग्रह नही किया ?' शास्त्री जी ने कहा "उन्होंने अपनी स्वाभाविक दृढता से ऐसा रोका कि मैंने लाला नारायणदत्त जी के घर किसी को बताया ही नही कि रजाई छोटी है।"

ऐसे विरक्त तपस्वी पूज्य सन्यासी का जीवन हम सदा प्रेरणा देता रहेगा।

सकलनकर्ता – विजय प्रकाश सार्वदेशिक सभा

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के जीवन की कुछ घटनाए यहा अकित की जा रही हैं इस विश्वास के साथ कि इनको पढकर हम सब तदनुरूप अपने जीवन को परिवर्तित कर सके।



स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

स्वामीजी महाराज एक ही समय भोजन करते थे। स्वामीजी दिन के बारह बजे ही भोजन करते थे। बारह बजे भोजन नही मिला तो अगले दिन बारह बजे करते थे यदि अगले दिन नहीं मिला तो उससे अगले दिन बारह बजे लेते थे। बारह बजे के पश्चात कुछ नहीं लेते थे।

श्री महेन्द्र कुमार जी ने एक घटना बताते हुए कहा कि मेरे आचार्य जी मुझे एक बार अपने साथ लायलपुर ले गये। सेठ रामनारायण वर्मा जी ने उनका आतिथ्य किया। स्वामीजी को ध्यान आया कि कहीं मेरे कारण प० महेन्द्र कुमार जी को रात्रि का भोजन न मिले। स्वामीजी ने सेठ रामनारायण जी से कहा 'मैं तो एक बार ही भोजन करुगा फिर कुछ नहीं चाहिए। इन्हे रात्रि का भोजन भी करवाना। दूध भी दोनो समय देना।

प० जी को यह सुनकर आश्चर्य भी हुआ और सकोच भी। आपने कहा 'महाराज आपने मेरे लिए ऐसा क्यो कहा ?

श्री स्वामीजी ने उत्तर दिया 'मैं सन्यासी हू। मेरे नियम और मर्यादा और हैं। तुम नवयुवक हो। तुम्हारे लिए दूध भी चाहिए भोजन आदि भी। तुम्हारे खाने पीने के दिन हैं। मैंने इसलिए उनको कहा है ताकि कहीं मेरे जैसा ही तुम्हे न समझ ले।

वह कैसे पवित्र आत्मा थे ! दूसरो का उन्हे कितना ध्यान था ! इसी कारण लोग उनके सकेत पर जान तक वारने को तैयार हो जाते थे।

आर्यसमाज लायलपुर के एक उत्सव पर भजनोपदेश के पश्चात रात्रि को स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का प्रवचन था। उसने बोलते बोलते ३५ मिनट और ले लिए। अब स्वामीजी से प्रवचन के लिए विनती की गई। आपने कहा आज का उपदेश यही है कि समय का पालन करना सीखो। निर्धारित समय मे से केवल १५ मिनट बचे हैं। वे भी मैं इनको (भजनीक महाशय को) देता हू। वे जी भरकर अपने अरमान निकाल ले।

सारी सभा ने हाथ जोड कर विनती की कि महाराज कुछ तो प्रवचन करे। स्वामीजी ने किसी की भी एक न सुनी और कहा अब तो अगले दिन ही वह कुछ कहेंगे।

यम-नियमों का इतनी कडाई से पालन करने वाले महात्मा कभी कभी ही जन्म लेते हैं। न जाने उनकी यह कितने जन्मों की साधना थी।

पूज्यपाद स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज जब उपदेशक विद्यालय लाहौर के आचार्य थे तो आप विद्यालय से भोजन तथा वस्त्र भी ग्रहण न करते थे। आप भिक्षा का भोजन करते थे। किसी भी घर के सामने जाकर भिक्षा के लिए आवाज लगा देते। एक गली मे एक घर ऐसा भी पडता था जहा से कभी भी भिक्षा मे भोजन न मिलता। उस घर की देवी स्वामीजी को जी भर कर गालिया देती। स्वामीजी उस घर पर जाकर भिक्षा अवश्य मागते। गालिया खाकर आगे चल पडते।

एक बार स्वामीजी लगातार दो दिन उसके घर के सामने गए। आवाज दी परन्तु गालिया देने वाली देवी प्रकट न हुई। स्वामी जी को चिन्ता हुई कहीं वह देवी रुग्ण तो नही हो गई। तीसरे दिन पूर्ववत वह प्रकट हुई और गालिया दीं। महाराज गालिया खाकर आगे चल पडे। अगले दिन भी उधर ही जा निकले। भिक्षा के लिए आवाज लगाई। वह देवी अपनी छत की लिपाई कर रही थी। उसका कार्य समाप्ति पर था। उसने सब बचा खुचा माल ककर गोबर व कीचड स्वामीजी पर दे मारा। साधु निहाल होकर बोले कि देवी तू धन्य है ? प्रतिदिन तू जो कुछ (गालिया) मुझे देती थी उससे मेरे पल्ले कुछ न पडता था। आज कुछ तो हाथ लगा। आशा है कि अब यहा से एक दिन भोजन भी मिलने लगेगा। इन शब्दो के साथ धन्यवाद व आशीर्वाद देकर साधु आगे चल पडे। हुआ भी ऐसा। भविष्य मे वह देवी महाराज को बडी श्रद्धा से भिक्षा देने लगी। जब न आते तो बडी दुखी होती। स्वामीजी कहीं बाहर प्रचारार्थ जाते तो उनके लौटने पर पूछा करती कि आप इतने दिन क्यों न आए। गोबर ककर व कीचड की वर्षा करके देवी ने साधु के धीरज व साधना की परीक्षा ले ली। साधु की सतत साधना से उसका हृदय परिवर्तन हो गया।

एक बार दीनानगर मे राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के लोग श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के पास आए और कहा कि अमुक दिन सघ का गुरु दक्षिणा उत्सव है आपने उसकी अध्यक्षता करनी है। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने सघ वालो की प्रार्थना एकदम अस्वीकार कर दी।

सघ के भाइयो ने जब अस्वीकृति का कारण पूछा तो पूज्य स्वामीजी ने कहा 'मैं इसमे आर्यसमाज की हानि समझता हू।

स्मरण रहे कि इस दिन सघ वाले अपने झण्डे की ऐसे ही पूजा करते है जैसे पाषाणमूर्तियो की पूजा मूर्ति पूजक करते हैं। ये लोग इस दिन झण्डे को पैसे चढाते हैं। यही इनकी गुरु दक्षिणा है।

स्वामीजी का भाव स्पष्ट था यदि वे ऐसे कार्यक्रम की अध्यक्षता करते तो फिर आर्यसमाज के सामने जड पूजा का उदाहरण प्रस्तुत करके स्वामीजी महाराज अनेक आर्यों के लिए दिशा भ्रष्ट होने का कारण बनते। आज उनकी सैद्धान्तिक दृढता का यह उदाहरण हमारे गौरवमय इतिहास की एक स्वर्णिम घटना के रूप मे अनेक आर्यों की सत्प्रेरणा का कारण बन रहा है। फूलमालाओ व चित्रों के प्रलोभन मे फसकर जो लोग गगा गए तो गगाराम यमुना गए तो यमुनादास की उक्ति के अनुसार आर्यसमाज की मान्यताओं व मर्यादाओ की अवहेलना करते हैं उनसे आर्यों को सतर्क रहना चाहिए। स्वामी दर्शनानन्द जी स्वामी आत्मानन्द जी व स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ की अडोल वेद निष्ठा वैदिक धर्मियों के लिए मर्यादा है। इस मर्यादा का पालन होना चाहिए।

अब तो आर्यसमाज के नेता कहाने वाले लोगो को समाओ के पत्रो मे अपने निजी समाचार अपनी प्रशसा अपने प्रचार व अपने चित्र छपवाने की ही लालसा रहती है। कभी प० लेखराम जी व स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी जैसे तपस्वी नेता आर्यसमाज के पास थे। प० गगा प्रसाद जी उपाध्याय ने एक बार स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के बारे मे लिखा था कि उनमे दूर तक देखने व गहरा सोचने की शक्ति थी। इसका एक उदाहरण हम देते हैं।

हरियाणा के एक आर्यवीर महाशय गुगनराम जी साधारण एक व्यक्ति थे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने इस साधारण आर्य सेवक के पुरुषार्थ से प्रेरणा पाकर पजाब की सब जेलों मे सत्यार्थ प्रकाश व ऋषि के लघु ग्रन्थ पहुचाने का अभियान चलाया। इस विषय मे एक वक्तव्य निकालकर पूज्य स्वामीजी ने सब आर्यों को प्रेरणा दी कि अपने अपने नगर के समीप के कारागार के पुस्तकालय मे आर्ष साहित्य पहुचावे। यदि नहीं पहुचा सकते तो मुझ (स्वामीजी को) पता दे। मैं व्यवस्था करूगा। क्या अब नेताओ ने कभी ऐसी बातो पर चिन्तन किया है ? प्रश्न ही नही उठता।

एक बार श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज मखदूमपुर जिला मुलतान (पाकिस्तान) में प्रचारार्थ गए। यह स्थान शारकोट व खानेवाल के मध्य में है। वहा के आर्यसमाज के मन्त्री श्री कालूराम जी कडकती धूप मे श्री स्वामीजी को गाडी पर चढाने के लिए चले। स्टेशन नगर से तीन मील की दूरी पर था। मार्ग में मन्त्री जी को एकदम यह ध्यान आया कि वह घर से चलते समय जेब मे कोई पैसे ही नहीं लाए। खेद प्रकट करते हुए स्वामीजी महाराज से कहा कि आप यहा इस पेड के नीचे रुकिए मैं घर जाकर पैसे ले आता हू।

स्वामीजी ने कहा पैसे तो मेरी जेब मे भी नहीं इसलिए आप टिकट के लिए पैसे ले आवे। कालूराम जी घर पर गए। वे उस क्षेत्र के एक बडे भू स्वामी थे। घर गए तो उनके खेतो मे कार्य करने वाले किसान वहा आए हुए थे। खेती की समस्याओ व झगडो पर कुछ बाते चल पडी। महाशय जी समस्या सुलझाने क्या बैठे स्वय ही ऐसे उलझे कि यह याद ही न रहा कि स्वामीजी का दोपहरी मे पेड के नीचे बिठाकर रात ही हो गई। महाशय जी सो गए। आधी रात को एकदम नींद खुली। ध्यान आया कि ओहो ! मैं तो स्वामीजी को वृक्ष के नीचे छोडकर आया था। अब रात्रि के समय क्या किया जावें ? स्वामीजी वहा अब तक थोडे ही बैठे होगे।

सोचा कि प्रात पता किया जावेगा। लोगो से पूछताछ की परन्तु कुछ पता न चला कि स्वामीजी किधर गए कैसे गए और कब गए ? महाशय जी को बडा पश्चाताप हुआ। कई बार मन मे सोचा कि स्वामीजी से पूछूगा कि आप तब कैसे गए थे। परन्तु जब स्वामीजी मिले तो वे पूछना ही भूल गए। आपने श्री पण्डित शान्ति प्रकाश जी को यह घटना सुनाई। प० जी ने ही हमे यह घटना सुनाई। और भी कई आर्य विद्वानो को श्री प० जी व श्री कालूराम जी ने यह घटना सुनाई। प० शान्ति प्रकाश जी इस घटना के पश्चात बीसियो बार श्री स्वामीजी से मिले। घण्टो गुरु शिष्य की चर्चा चलती थी परन्तु यह पूछना प० जी को भी ध्यान न रहा कि आप तब मखदूमपुर से कैसे आए थे ?

स्वामीजी महाराज की यह विशेषता थी कि आप अपनी प्रचार यात्रा की कठिनाइयों की चर्चा अपने लेखों में या व्याख्यानो मे कभी नहीं करते थे। आज स्वामीजी इस ससार मे नहीं हैं। अब कोई भी यह बताने वाला नहीं कि वे तब धूप मे वहा से कैसे आए थे। इससे भी बढकर तो यह बात है कि श्री स्वामीजी ने समाज को इस विषय में कोई रोष पत्र भी नहीं लिखा। इसकी कभी चर्चा ही नहीं की तो रोष पत्र क्या लिखना था। सभा सस्थाए व जातिया ऐसे तपस्वियों की साधना से ही आगे बढती है।

ऐसे महान सन्यासी का स्मरण कर आज भी हमारा सिर ऊचा होता है। ईश्वर करे कि ऐसे सच्चे साधु मानव समाज को सदा प्राप्त होते रहें।

✡✡✡

जीवनोपयोगिनी सात मर्यादाएं

– भैरवदत्त शुक्ल

वेदविषयक सामान्य रूप रेखा का परिचय प्राप्त कर लेने के अनन्तर प्रत्येक विवेकशील व्यक्ति तत्व ज्ञान की महीयसी मजु भूमिका का सहज रमणच्छु हो जाता है। इसमे सन्देह नहीं कि वेदो का एक सूक्त एक मन्त्र मन्त्र का एक पद या एक पदाश भी मानव जीवन का काया कल्प कर सकता है। चारो वेदो मे एक भी ऐसा अक्षर नहीं मिलेगा जो निराशा निरूत्साह जैसे अवनति की ओर उन्मुख करने वाले अवगुण के प्रति आकर्षण कर सकेत ही देता हो। इसलिए प्राय यह कहा जाता है कि भगवती श्रुति की सुधामयी वाग्धारा जीवन के उत्तरोत्तर ऊर्ध्व गमन सतत उत्थान उन्नयन या मानव से दिव्य बनने की प्रभावमयी प्रेरणा प्रदान करती है।

ऋग्वेद १०/५/६ और अथर्ववेद ५/१/६ मे एक मन्त्र आया है –

सप्त मर्यादा कवयस्ततक्षु
तासा मिदेकामभ्यऽहुरोगात।
आयोर्ह स्कम्भ उपमस्य नीडे
पथ विसर्गे धरूणेषु तस्थौ।।

ज्सिका आशय इतनी ही है कि ज्ञान या विद्वजनो ने सात मर्यादाए भली प्रकार से निर्धारित की है। उनमे से एक का भी उल्लघन अतिक्रमण या परित्याग करने से व्यक्ति पातकी या पापी हो जाता है। जो व्यक्ति निष्कलुष या निर्मल सुधी है वह आयु का सुदृढ नियामक या आश्रय होकर समीपस्थ स्थान या परम प्रभु के सान्निध्य मे जहा पथो मे मोडो काटो जटिलताओ या वीथियो उप पथो के बनने बिगडने की सम्भावना नही होती से अविचल स्थानो विकास कोटियो का दिव्य ऊर्ध्व चेतन स्थितियो मे स्थित रहता है।

इस मन्त्र मे प्रमुख रूप से पाच शिक्षाए प्रदान की गयी हैं –

(१) तपोपूत महर्षि विद्वजनो द्वारा विशिष्ट ज्ञान आधृत एव अनुभव सबलित सात मर्यादाए निर्धारित सुनिश्चित हैं।
(२) इन सात मर्यादाओ मे से एक का भी अतिक्रमण अथवा उल्लघन कर देने से व्यक्ति पथच्युत होकर पानी बन जाता है।
(३) निष्पाप परोपकारी सज्जन परमेश्वर परमप्रभु के सान्निध्य से ऊर्ध्व सचरण करता है।
(४) परमप्रभु के सान्निध्य समीप्य की व्यापक परिधि मे बेकार की उबाऊ हानि कारिणी जटिलताओ का सर्वथा अभाव है।
(५) उपर्युक्त ऊर्ध्व सचरण स्थायी सनातन कल्याण सापेक्ष और अविचल होता है।

हम यहा पर इन पाचो शिक्षाओ की मल सूत्रा विद्वानो द्वारा निर्धारित सात मर्यादाओ का प्रसग उठाना उचित समझते है। सबसे पहले इतना तो मालूम ही हो जाना चाहिए कि मर्यादा क्या है ? उस की व्याप्ति कहा तक है।

सीधे शब्दो मे मर्यादा वह नैतिक एव सामाजिक लक्ष्मण रेखा है जिस का उल्लघन करने से प्रक्षछन्न आतरिक आसुर भाव दश कधर द्वारा निर्मल प्रज्ञा – वैसे ही का अपहरण कर लिया जाता है और आत्मा रूपी राम अथक प्रयासो के अनन्तर ही पुन प्रज्ञा – वैसे ही उपलब्ध करने मे सफल होते है।

मर्यादा या मर्यादाओ के महत्व के अवमूल्यन के ही कारण कल का भारत (भरण पोषणकर्त्ता देश) अन्तर्राष्ट्रीय जगत के सामने आजकल सबसे बडा भीख मगा बन बैठा है। वस्तुत भारत मे है क्या नहीं ? उस के पास धन सम्पति प्राकृतिक वैभव उत्पादन साधन असीम अनत है जनशक्ति का कोई ओर छोर नही है और क्षेत्र भी कट बट दब निकल जाने के बावजूद बहुत बडा प्राकृतिक भू सम्पदा से सम्पन्न है परन्तु धन जन भूमि से सम्बद्ध जितनी भी मर्यादाए निर्धारित की गयी है उन सबका उसमे अभाव अवश्य हो गया है।

उपर्युक्त मन्त्र मे सकेतित सात मर्यादाओ मे उनका सारा विशाल परिवार सिमट आता है। इसे ठीक वैसे ही समझना चाहिए जैसे पच महाभूतो या महत्त्वो मे राशि राशि ज्ञात अज्ञात तत्त्वो का समावेश समझा या स्वीकार किया जाता है।

भगवान मनु ने लिखा है –

पान अक्षा स्त्रियश्चैव मृगया च यथा क्रमम।
एतत्कष्टतम विद्यात चतुष्क काम जे गणे।।
दण्डस्य पातन चैव वाक्या रुष्यार्थ दूषणे।
क्रोध जेऽपिगणे विद्यात कष्टमेतत त्रिक सदा।। ६।।

अर्थात काम से सम्बद्ध (१) मदय पान (२) द्यूत क्रीडा (३) व्याभिचार बलात्कार या स्त्रियो पर अत्याचार करना (४) पशुओ का शिकार चार पाप और क्रोध से सम्बद्ध (१) कठोर या आमानुषिक दण्ड (२) कठोर भाषण या अपशब्द (३) पर – दृव्य का अपहरण तीन पाप कुल मिला कर सात पाप होते है। इन सात पापो से क्रमश दूर रहना सात मर्यादाओ की कोटि मे माना जा सकता है।

आचार्य गौतम ने स्वीकार किया है –

ब्रह्म सुराप गुरुतल्पग मागृ पितृ योनि सम्बध स्तेन नास्तिक निन्दित कर्माभ्यासि अपतित त्यागिन पतित ।। ७ (१) ब्रह्म हत्या (२) मद्य पान (३) गुरु पत्नी गमन (४) मातृ–पितृ वर्ग की स्त्रियो के साथ योनि सम्बन्ध (५) चोरी (६) नास्तिकता (७) निदित कर्म बारम्बार करने की लत (८) पतित के आश्रय सरक्षण प्रदान करना और (६) शुद्ध साधु सज्जन का परित्याग – ये नौ पातक गौतम के अभिमत से सिद्ध होते है।

यदि ध्यान से देखा जाए तो उपर्युक्त नौ बात को मैं गुरु-पत्नी गमन तथा मातृ पितृ वर्ग की स्त्रियो से योनि सम्बन्ध दोनो ही पाप व्याभिचार से सम्बद्ध है और सज्जन का परित्याग नामक पाप ब्रह्म हत्या मे समाविष्ट हो जाता है। इस प्रकार यहा भी सात ही पाप बचे रहते है और हल से क्रम से बचे रहना ही सात मयादाए समझी जाती है। वर्तमान वातावरण को परिवर्तित करने के लिए हमे इन मर्यादाओं को स्वय अपनाना होगा तथा औरो को प्रेरित करना होगा।

सच्चे धर्म की सीख : आपस में स्नेह

महर्षि दयानन्द के शिष्य एव आर्यसमाज के तपोनिष्ठ महात्मा मुशीराम जी ने जिन्होने बाद मे सन्यास आश्रम मे प्रवेश कर स्वामी श्रद्धानन्द का नाम स्वीकार किया था हिमालय की उपत्यका मे गगा तट पर गुरुकुल कागडी मे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का पुनरुद्धार किया था। यहा अन्य विषयो के साथ वेद वाडमय एव दूसरे भारतीय चिन्तन दर्शन के ग्रन्थ पढाए जाते थे।

एक दिन रुडकी के एक अग्रेज पादरी ने स्वामी जी से अनुरोध किया कि **"मै धर्म प्रचार के लिए हिन्दी सीखना चाहता हू इसके लिए कुछ महीने गुरुकुल मे निवास की अनुमति चाहता हू हा मै आपको वचन देता देता हू कि गुरुकुल मे निवास के दौरान ईसाई धर्म का प्रचार बिल्कुल नही करूगा।"**

कुछ दिन बाद पादरी महोदय को स्वामी श्रद्धानन्द का उत्तर मिला – **गुरुकुल मे आपका स्वागत है आप यहा हमारे अतिथि बनकर रहेगे परन्तु साथ ही यह भी वचन दीजिए कि आप यहा रहते हुए खुली धर्म चर्चा करेगे। जिससे हमारे छात्र जान सके कि महात्मा ईसा कौन थे और ईसाई धर्म की क्या शिक्षा है? मेरा विश्वास है कि सच्चा धर्म आपस मे बैर करना नहीं प्रेम करना सिखाता है।**

पदरी महोदय के गुरुकुल आने पर स्वामी जी ने उनके निवास की पूरी व्यवस्था कर दी साथ ही उन्हे हिन्दी सीखने की पूरी सुविधा दी। गुरुकुल मे उन पर कोई प्रतिबन्ध नहीं था फलत भारतीय वैदिक धर्म के बारे मे उनकी पूर्व धारणा मिट गई और वह जीवन पर्यन्त स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल और वैदिक मन्तव्यो के हितैषी और शुभचितक बने रहे।

– नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

स्वतन्त्रता की प्राप्ति का साधन क्रन्ति थी

आर्यसमाज मोतीबाग (साउथ) नई दिल्ली मे स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की ओर से एक वाद विवाद प्रतियोगिता का आयाजन किया गया जिसका विषय था – **"स्वतन्त्रता प्राप्ति का साधन क्रान्ति थी शान्ति नहीं ।**

समारोह मे दिल्ली के विभिन्न विद्यालयो के छात्र/छात्राअ ने भाग लेकर ओजस्वी वाणी मे अपने अपने विचार प्रस्तुत किए।

श्रेष्ठ कर्मों से ही मानव-जीवन की सफलता

– डॉ० दीनानाथ आचार्य

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सभी योनियो मे मानव योनि को उत्तम कहा गया है चूकि मानव से भिन्न योनिया तो भोग योनिया ही है जबकि मानव योनि भोग–योनी के साथ कर्म योनि भी है। मानव जीवन की सार्थकता उत्तम कर्मो क करने से ही होती है। तभी तो विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ वेद से लेकर उत्तरोत्तर ग्रन्थो मे उत्तम कर्मो की चर्चा वर्णित है। मानवो के लिए वेद भगवान का आदेश है –

"कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजिविषेच्छतं समाः।

यजु० ४०/२

अर्थात मनुष्य कर्म करता हुआ सौ वर्षो तक जीने की इच्छा करे।

श्रीमद् भगवदगीता मे भगवान श्रीकृष्ण ने यह उपदेश दिया है कि – **कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफल हेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।।**

भ० गी० २/४७

यद्यपि गीता मे ज्ञान एव कर्म दोनो की विस्तृत विवेचना है तथापि कर्म पर विशेष जोर दिया गया है।

वाल्मीकि रामायण मे कहा गया है –

'कर्मसु चाऽमृतम्।' वा०रा० ५/४१/६

अर्थात कर्मो मे अमृत निवास करता है।

शास्त्र का निर्देश है कि मनुष्य अपने किए हुए कर्म चाहे वह शुभ हो या अशुभ, अवश्य ही फल भोगता है– **"अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।"**

महाभारत मे भी उपर्युक्त कथन की सम्पुष्टि हुई है – **"यथा कर्म तथा लाभ इति शस्त्रनिदर्शनम्।"**

शान्ति० १७६/२०

अपि च ...... कुरुते यादृशं कर्म तादृशं प्रतिपद्यते।" *शान्ति० २६०/१६*

वेद व्यास जी ने तो यहा तक कहा है कि **"शुभेन कर्मणा सौख्यं, दुःखं पापेन कर्मणा। कृतं फलति सर्वत्र, नाकृतं भुज्यो क्वचित्।।"**

अर्थात् शुभ (श्रेष्ठ) कर्म के द्वारा सौख्यता आती है, पाप कर्म के द्वारा दुख होता है। सुकर्म ही सब जगह फलते है, अकर्म नहीं।

सत तुलसीदास ने अपने रामचरित मानस मे तो स्पष्ट रूप से उद्घोषित किया हे कि यह ससार कर्मप्रधान है। जो जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल पाता है – **"कर्मप्रधान विश्व रचि राखा। जो जस करहिं सो तस फलु चाखा।"**

और "करै जो कर्म पाव फल सोई। निगम नीति अस कह सब कोई।" अन्य किसी कवि ने भी कहा है –

"दुख दोगे दुख मिलेगा, सुख दोगे सुख मिलेगा। मारोगे तुम किसी को तो गम पडेगा सहना।।"

भगवान मनु ने तो मानव–जीवन के लिए कर्म की प्रधानता पर जोर देते हुए कहा है –

"जन्मना जायते शूद्रः, संस्कारात् द्विजः उच्यते। वेद पाठात् भवेद्विप्रो, ब्रह्म जानाति ब्राह्मण।।" *मनुस्मृति*

अर्थात् जन्म से सभी शूद्र होते है सस्कार (ज्ञान एव सुकर्म) से द्विज कहलाते है वेद पढने से 'विप्र' और ब्रह्म (परमेश्वर) को जान लेने (साक्षात कर लेने) ब्राह्मण कहलाता है। इससे जीवन मे कर्म की सार्थकता प्रमाणित होती है। जन्मना जाति की नही।

इतिहास साक्षी है कि जितने भी महापुरुष हुए है वे जन्म से महापुरुष नही अपितु श्रेष्ठकर्मो के माध्यम से ही महापुरुष की श्रेणी मे आए है। यथा राम कृष्ण दयानन्द विवेकानन्द महात्मा बुद्ध महावीर शिवाजी, महात्मा गाधी अम्बेदकर इत्यादि।

राम के जीवन के श्रेष्ठ एव मर्यादित कर्म ही तो उन्हे मर्यादापुरुषोत्तम नीतियुक्त एव योगमय जीवन बिताने के कारण श्रीकृष्ण को योगेश्वर, ज्ञान दया परोपकार एव त्यागमय कर्मो के सुधारवादी गतिविधियो ने दयानन्द को महर्षि विवेक एव सुधार समन्वित कर्म ही विवेकानन्द को स्वामी, सत्यान्वेषी एव अहिसा के पुजारी बुद्ध, महावीर एव गाधी जी को महात्मा स्वदेशप्रेम वीरतापूर्ण कर्म शिवाजी को वीर जैसी महन उपाधियो से समलकृत किए है। इस प्रकार विश्व के वाङ्मय में ऐसे अनेक महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने श्रेष्ठकर्मों से अपने जीवन को सफल एव सार्थक बनाया है।

अब विचारणीय बिन्दु है कि श्रेष्ठकर्म का क्या अभिप्राय है ? इसका सामान्य अर्थ हम परोपकार युक्त कर्म या धर्मयुक्त कर्म कर सकते हैं। मनुष्य स्वार्थ की भावना से ऊपर उठकर जब परमार्थ का पथिक बन जाता है तो उसका जीवन सफल हो जाता है। सुभाषित सग्रह मे तो कहा गया है कि मानव का यह शरीर परमार्थ साधन हेतु है –

"परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्यः। परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकारार्थमिदं शरीरम्।।

अर्थात् परोपकार के लिए वृक्ष फलते है, परोपकार के लिए नदिया बहती है परोपकार के लिए गाये दूध देती है तथा परोपकार के लिए ही यह मानव शरीर है।

१८ पुराणो मे व्यास जी के दो ही वचन है। दूसरे का उपकार करना पुण्य के लिए और दूसरे को पीडा पहुचाना पाप के लिए होता है।

अब धर्मयुक्त कर्म को समझने के लिए धर्म का स्वरूप का स्पष्टीकरण आवश्यक है। भगवान मनु ने धर्म के सामान्य दस लक्षण निम्न बताए हे–

"धृतिक्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः। धीर्विद्या सत्यम-क्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।। *मनुस्मृति*

अर्थात् धैर्य क्षमा दम चोरी भाव का त्याग, पवित्रता इन्द्रिय–सयम बुद्धि विद्या सत्य एव अक्रोध (क्रोध न करना) ये दस धर्म के लक्षण है। और भी

"श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः। एतच्चतुर्विधं प्राहु साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।।" *मनुस्मृति*

अर्थात श्रुति (वेद) स्मृति (वेदानुकूल मनुस्मृतियादि शास्त्र), सत्पुरुषो का आचार जो सनातन अर्थात् वेद द्वारा परमेश्वर प्रतिपादित कर्म और जिसको आत्मा चाहता है या अपनी आत्मा मे प्रिय लगे, ये धर्म के साक्षात चार लक्षण कहे गए है।

उपर्युक्त लक्षणो से युक्त कर्मो से ही दूसरे की भलाई हो सकती है। धार्मिक व्यक्ति ही परोपकारी हो सकता है और उसका कर्म श्रेष्ठ होगा एव उसके जीवन मे सफलता की अपेक्षा की जा सकती है।

आगल भाषा के विद्वानो ने कर्म को तो पूजा ही स्वीकारा है – "Work is Worship."

अपने श्रेष्ठ कर्मों के द्वारा ही मानव लोकप्रिय होता है तथा उसके जीवन की सार्थकता है – "प्रिया भवन्ति लोकस्य स्वे स्वे कर्मण्यवस्थिता" मनुस्मृति

ब्राह्मण ग्रन्थ मे श्रेष्ठतम कर्म को यज्ञ कहा गया है – **"यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म।"** *गो० ब्रा०*

साथ ही स्वर्ग (सुख–विशेष) की प्राप्ति के लिए यज्ञ करने का निर्देश दिया गया है– **"स्वर्गकामो यजेत्।"**

महाभारत मे व्यास जी ने प्रशस्त (उत्तम) कर्मो के अनुष्ठान को सुखदायक कहा है।

"कर्मणान्तु प्रशस्तानामनुष्ठानं सुखावहम्।"

उद्योग ३८/२२

श्रीकृष्ण ने भी गीता मे कहा है कि अपने–अपने उत्तम कर्मो मे सलग्न रहने से मनुष्य सिद्धि को प्राप्त करते है– **"स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धि लभते नरः।"** *भ० गी० १८/४५*

जनकादि ने भी अपने जीवन मे श्रेष्ठ कर्मों के द्वारा सिद्धि की परम उपलब्धि को प्राप्त किया है–

"कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः।"

भ० गी० ३/२०

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि मनुष्य जीवन की सफलता ज्ञान एव श्रेष्ठ कर्म से ही सम्भव है। यदि मनुष्य बहुत बडा ज्ञानी हो परन्तु उसके जीवन मे श्रेष्ठ कर्म का अभाव हो आचारहीनता हो, तो उसकी सारी विद्वता अपवित्र हो जाएगी और उसको वेद भी पवित्र नही कर सकता क्योकि – **"आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः।"** *मनुस्मृति*

यही कारण हैं कि रावण बहुत बडा विद्वान था परन्तु उसकी चरित्रहीनता उसके गुणो (विद्याओ) को ढक देती है। अत जिसकी कीर्ति है वही जीवित है– **"कीर्तिर्यस्य सः जीवति।"**

इस प्रकार यह कहा जाना अतिश्योक्ति नही होगी कि बिना श्रेष्ठकर्मों के मानव –जीवन की सफलता सम्भव नही है। अत प्रत्येक मानव का कर्त्तव्य है कि वे वेदोक्त श्रेष्ठ मार्गों पर चलते हुए "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के लक्ष्य को पूरा करते हुए अपने जीवन को सफल बनाए तथा मानव–जीवन के पुरुषार्थ चतुष्टय धर्म-अर्थ-काम एव मोक्ष की सिद्धि मे सफलता प्राप्त करे।

– पुस्तकालयाध्यक्ष, श्री वैदिक पुस्तकालय, आर्यसमाज साहेब गंज, छपरा, सारण- ८४१३०१

✡✡✡

स्वतन्त्रता प्राप्ति में अगस्त-क्रान्ति की भूमिका

– आचार्य भगवानदेव वेदालकार

भारत का ऐतिहासिक गौरव

भारत का इतिहास पराजय का नही गौरवशाली सघर्ष का है यहा आक्रमणकारियो की एक के बाद एक लहर आई प्रत्येक लहर का मुकाबला किया गया। परिणामस्वरूप अधिकाश प्रतिरोध सफल रहे। किसी कवि ने ठीक ही कहा है–

सारे जहा से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा

हम बुलबुले है इसकी ये गुलसिता हमारा।।

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी

सदियो रहा है दुश्मन दौरे जहा हमारा।।

यूनान मिश्र रोमा मिट गए जहा से

कोई बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।।

इस भारत भूमि पर हमला करने के लिए यूनानी शका हूणा का ता हम पचा ही गए। बाद के आक्रमणकारी भी शताब्दियो तक हमसे मार खाते रहे। फिर भी उन्हे अपना शासन स्थापित करने के लिए सैकडा वर्षो तक सघर्ष करना पडा। विदेशी शासन स्थापित हो जाने के बाद भी क्या हमारे पूर्वज चुप होकर बैठ गए ? नही। वे सतत सघर्ष करते रहे। इस लगातार सघर्ष का ही परिणाम था कि मुगल सत्ता समाप्त हा गई और अग्रेजो को भी अपना बोरी बिस्तरा बाधकर इगलैण्ड वापस जाना पडा।

स्वतन्त्रता अनमोल है

स्मृतिकार मनु ने सुख और दुख की परिभाषा करते हुए लिखा है –

सर्व परवश दु ख सर्वमात्मवश सुखम। एतद् विद्या समासेन लक्षण सुख दु खयो ।।

अर्थात पराधीनता सब प्रकार से दुख ही दुख है स्वाधीनता सब प्रकार से सुख ही सुख है। इसलिए स्वतन्त्रता अनमोल धन है। पशु पक्षी तक इसके दीवाने है लेकिन हमारा दुर्भाग्य कि कुछ विदेशी आक्रान्ता इस भारतभूमि पर आए इस विशाल भारत को भरपूर लूटा रौदा जलाया निर्दयतापूर्वक नरसहार किया। हमारी स्वतन्त्रता को बन्धन मे डाला और हमे शताब्दियो तक पराधीनता की बेडियो मे जकडे रहे।

अग्रेजी शासकों का भारत आगमन

चार हजार मील दूर से चलकर मुट्ठीभर अग्रेज हमारी इस ऋषि मुनियो की जन्मभूमि पर आए और तीस करोड भारतीयो को अपनी चतुराई से छल छपट से गुलाम बना लिया। इस पुण्यभूमि पर १६४७ तक दासता की एक लम्बी काली छाया पडी रही इस पृष्ठभूमि मे ८ अगस्त १६४२ इ० **"भारत छोडो आन्दोलन"** का दिन स्वतन्त्रता प्राप्ति मे क्रान्ति दिवस का ऐतिहासिक दिन बन गया। इतना ही नही स्वतन्त्रता के इतिहास मे अगस्त माह **क्रान्ति** नाम से यादगार बन गया। १५ अगस्त १६४७ का दिन हर वर्ष आकर हमे याद करा जाता है कि दासता की वह काली रात हमसे बहुत भारी मूल्य लेकर गइ है। उस समय किसी ने भी आजादी की बात की तो उसका सिर धड से अलग कर दिया गया या उसे सूली पर लटका दिया गया। किसी को तोप के मुह पर बाधकर उडा दिया गया किसी को गलियो और चौराहो पर सार्वजनिक रूप से फासी दे दी गई किसी को हाथियो से कुचलवाया तो किसी को कारावास मे डाल दिया गया। बलात्कार आगजनी जैसे नृशस तरीको से आजादी के दीवाने कुचले गए।

पराधीनता के कारण

जहा एक ओर भारतीय जाति अति अहिसावाद के प्रचार प्रसार से कायर और दब्बू हो गइ थी वहीं साथ साथ स्वार्थ फूट ईर्ष्या द्वेष दश भक्ति के अभाव देशी राजाओ का चाटुकार बनन गद्दारी अज्ञान अशिक्षा अन्धविश्वास सकीर्णता समाजिक भेद भाव पक्षपात गरीबी आदि दुर्गुणो और कुरीतियो से समाज खाखला हो गया था। इन्ही कमजोरियो का लाभ उठाकर विदेशी आक्रान्ता अपनी कूटनीति ताकत और प्रलोभना से इस विशाल देश को गुलाम बनाने मे कामयाब हो गए। खेद है कि हमारी ये राष्ट्रीय विकृतिया आज भी इस देश से नष्ट नही हुई है। आज भी भ्रष्टाचार अपने शीर्ष स्थान पर फल फूल रहा है। रक्षक ही भक्षक बन गए है। जातिवाद दहेज भिक्षावृति और नशीले पदार्थो के सेवन से देश का पतन हुआ है। आज भी बडे बडे राजनेता देश का शोषण कर रहे है।

स्वतन्त्रता की लडाई मे भूमिका

इस राष्ट्र रक्षा मे सराहनीय योगदान करने वालो स्वातन्त्र्य योद्धाओ और श्रेष्ठ राष्ट्रनायको मे कुछ अग्रणी अमर स्वतन्त्र्य योद्धाओ मे अग्रणी थे – महर्षि दयानन्द सरस्वती लाला लाजपतराय बाल गगाधर तिलक महारानी लक्ष्मी बाई महात्मा गाधी प० जवाहरलाल नेहरू ब्र० रामप्रसाद बिस्मिल राजगुरु सहदेव सरदार भगतसिह चन्द्रशेखर आजाद आदि सैकडो सच्चे देशभक्त योग्यतम राष्ट्रयोद्धा एव सेनानी।

जब चारो ओर स्वतन्त्रता की रणभेरी बज रही थी स्वतन्त्रता के दीवाने खून की होली खेल रहे थे तब किसी कवि ने कितनी आशा भरी उमगो से ये पक्तिया लिखी–

शहीदो की चिताओ पर लगेगे हर वर्ष मेले।

वतन पर मरने वालो का यहीं बाकी निशा होगा।।

कितने इस जग मे धवल धाम छोड जाते है।

कितने स्वर्णादि नगद दाम छोड जाते है।

छोडने को तो यू सब छोड जी जाते है प्रकाश

वीर बलिदानी अमर नाम छोड जाते है।।

अग्रेजो से सघर्ष

जब भारत अपनी स्वतन्त्रता के लिए पूरी निष्ठा से जूझ रहा था उसी समय तीसरी शक्ति भारत मे प्रवेश कर रही थी। भारत मे व्यापारिक कम्पनी के रूप मे प्रवेश कर अग्रजो ने धीरे धीरे हिन्दू तथा मुस्लिमो राज्यो को या तो हडप लिया या उन पर सीधा नियन्त्रण कर लिया। अग्रेज बडे कूटनीतिज्ञ थे एक ओर तो वे मुसलमानो का अलगाव के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे दूसरी ओर हिन्दुओ मे विघटन के बीज बो रहे थे। तभी १६३६ मे दूसरा महायुद्ध शुरू हुआ। तब देशवासियो ने सामने एक नया खतरा पैदा हो गया पहले महायुद्ध मे भी देशवासियो पे ब्रिटिश साम्राज्य की सहायता की थी लेकिन दूसरे महायुद्ध मे महात्मा गाधी जी ने ब्रिटेन के पक्ष मे यह निर्देश जारी कर दिया कि हमे ब्रिटन के विनाश द्वारा आजादी नही चाहिए। अन्त मे गाधी जी ब्रिटन की सहायता करने के लिए तैयार हुए लेकिन इस शर्त पर कि ब्रिटेन बिना किन्हीं पूर्वाग्रहो के भारत को स्वशासन का अधिकार देगा परन्तु यह माग ठुकरा दी गई।

जापानी सेना हिन्दुस्तानी सरहद तक आ पहुची थी। कई हिदुस्तानी यह सोचकर खुश थे कि उस सेना के साथ उनके प्रिय शूरवीर नेता सुभाषचन्द्र बोस उनकी मुक्ति के लिए आ रहे है। इधर जिन्ना और मुस्लिम लीग के नेता जोर शोर से मुसलमानो के अलग राज्य की माग कर रहे थे।

भीतरी और बाहरी सकट की दोरही आपत्ति देखकर गाधीजी भी यह मानने लगे थे कि विदेशी शासक हट जाए तब ही हिन्दुस्तान इन समस्याओ का सामना कर सकता है।

स्वतन्त्रता की क्रान्ति मे ८

अगस्त १६४२ की महत्ता

अग्रेजो से शीघ्र मुक्ति पाने के लिए देश को यथाशीघ्र आजाद कराने के लिए देश मे अव्यवस्था अराजकता और हिसा न फले हिन्दुस्तानियो मे सगठन बढे और अग्रजो के भडकाने से कटुता का वातावरण न बने इस हेतु ८ अगस्त १६४२ को अखिल भारतीय काग्रेस समिति ने हिन्दुस्तान छोडो का ऐतिहासिक प्रस्ताव मजूर किया था। उस समय लोगो मे अग्रेजो के प्रति द्वेष इतना बढ गया था कि लोग जापानी शासन को स्वीकारने के लिए भी तैयार थे। महात्मा गाधी यहा तक कहते थे कि हिन्दुस्तान को ईश्वर के भरोसे ही छोड दो।

गाधी जी ने यह भी सोचा था कि कोइ उग्र कदम उठाने से पहले वह वायसराय से मिलकर अन्तिम अनुरोध करेगे लेकिन ६ अगस्त की सुबह ही गाधीजी एव अन्य कई महत्वपूर्ण नेता गिरफ्तार कर लिए गए। लोग स्तब्ध हो गए। ८ अगस्त १६४२ को काग्रेस का भारत छोडो आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। भूमिगत कार्यकर्ताओ ने आन्दोलन जारी रखा। बिहार तथा उत्तर प्रदेश मे स्थिति अधिक खराब हो गइ थी। आन्दोलन ने जन विप्लव का रूप ले लिया। युद्धो मे अग्रेज सरकार सदा कुशलता से लडती थी उसने सारे देश मे हिन्दू मुस्लिम दगा कराकर देश को आपस मे लडाया गाधी जी की प्रेरणा और मार्गदर्शन के अभाव मे लोगो ने कानून अपने हाथो मे ले लिया था जिससे सितम्बर १६४२ तक आन्दोलन की कमर टूट गई। जिससे देश भर मे निराशा व असन्तोष की खामोशी व्याप्त हो गई इसलिए इतिहास मे ८ अगस्त विशेष रूप से क्रान्ति दिवस के रूप मे प्रसिद्ध हो गया। तब अग्रेजो को भी इसी अगस्त क्रान्ति से यह अनुभव होने लगा था कि अब हमे निश्चय ही भारत छोडकर अपने देश जाना पडेगा।

तब बापू ने भी कहा था– **"मै पूर्ण राज्य से कम और किसी चीज से सन्तुष्ट न होऊगा। आप मे से जो भी इस आन्दोलन मे शामिल है वे अपने आपको स्वतन्त्र पुरुष और नारी समझे जैसे कि आप स्वाधीन हो और साम्राज्यवाद के अधीन न हो।**

६ अगस्त १६४२ को एक दुबली पतली सी लडकी अरुणा आसफ अली ने मुम्बई के गोवालिया टैक पर तिरगा झण्डा फहरा दिया था। जिससे भयभीत ब्रिटिश साम्राज्य की नीव हिल गई। महात्मा गाधी ने अग्रेजो से कहा – **"भारत छोडो।** जिससे लोगो के दिलो दिमाग पर गहरा असर पडा। एक व्यक्ति का स्वप्न समस्त भारत का स्वप्न बन गया। पूरा देश साम्राज्यवाद व उपनिवेशवाद के खिलाफ एक होकर उठ खडा हुआ। इसके साथ ही स्वतन्त्रता सघर्ष का अन्तिम चरण शुरू हुआ। अन्तत भारत की १५ अगस्त १६४७ को आजाद हो गया।

– ६४ विकास नगर फेस ३ हस्तसाल एरिया नई दिल्ली ५६

देशभक्ति और लोकतन्त्र

– बीरबल आर्य

लोकतन्त्र मे राजनताओ के क्रियाकलापो को लेकर आम जनता म असन्तोष व्याप्त है। वैचारिक मतभेद होना स्वाभाविक है परन्तु इन्हे व्यक्त करते समय जनता की प्रतिक्रिया क्या होगी इसकी चिन्ता किसी को नही रहती। मध्यप्रदेश काग्रेस के दो महामन्त्रियो श्री इन्दर प्रजापत और श्री मानक अग्रवाल ने एक दूसरे क विरुद्ध जो आरोप प्रत्यारोप लगाए है और कातिलाना हमला हुआ है उसके पीछे वाणी का दाष ज्यादा है। कबीर जी ने सत्य ही कहा हे –

ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोय।

औरन को शीतल करे आपुहि शीतल होय।।

प्रजापत जी क विरुद्ध भले ही इन्दौर मे छह छ प्रकरण चल रहे हो उसके वास्ते इनकी नृत्यागना पत्नी को नर्तकी कहने का किसी को हक नही है। तामिलनाडु मे चार बार मुख्यमन्त्री रह चुके व्यक्ति के विरुद्ध बिना आरोपा के प्रमाणीकरण क रात के अन्धरे मे सोते हुए घसीटकर कडी सुरक्षा मे जेल भेजना कहा तक उचित है जबकि आदेश देने वाली जयललिता जी स्वत न्यायालय द्वारा दोषी करार दी गई है और स्वत दोषपूण ढग से कुर्सी पर है। ऐसा प्रतीत होता है कि मिण्टो रोड आर्य समाज मन्दिर ताडने मे भी हमारे कर्णधारो ने गुरु अम्मा से मन्त्रणा की थी। तभी रात के अन्धेरे मे उसी शैली और शौर्य की एक जैसी ऐतिहासिक घटना बन गई जबकि अब्दुल्ला बुखारी की मौजूदगी तुष्टिकरण हेतु थी। फूलन देवी जो डकैत से सासद बनी और किस प्रकार दस करोड से ज्यादा की सम्पत्ति की मालिक बनी और वाणी की मिठास के कई अनुभव रेलवे के कर्मचारियो को ग्वालियर सेन्ट्रल जेल के अधिकारियो को एव सम्पर्क मे आने वालो को है। इसी वर्ग के केवटजी ने श्रीराम लक्ष्मण और सीताजी को अपनी नाव से नदी पार कराई थी। केवटजी द्वारा प्रयुक्त वाणी को रामायण पढने वाले पण्डित लोग बडे सम्मान के साथ गाकर सुनाते है। उत्तर प्रदेश की मुख्यमन्त्री रही मायावती जी और बिहार के श्री लालू जी यादव द्वारा व्यक्त वचनो का जो समाचार पत्रो मे छपते रहते है कौन देशभक्त भुला सकता है। वाणी द्वारा फैलाया गया प्रदूषण अब सभी राजनैतिक पार्टियो की कार्यशैली मे घर कर गया है। कथनी और करनी मे घोर विरोधाभास है।

जम्मू कश्मीर मे हो रहे नरसहार ओर अल्पवर्ग के हिन्दुओ सिक्खो के पलायन से सत्ता वर्ग के राजनेताओ के उदार सभ्य उन्नत और नैतिक मन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड्ता। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक जातिवाद अलगाववाद और आतकवाद का नग्न नृत्य आम बात हो गई है। मन्त्री मुख्यमन्त्री और प्रधानमन्त्री हर दुर्घटना के पश्चात कडा कदम उठाने कमर कसने और कठोर कार्यवाही करने का आश्वासन भर देते है जो अपने वातानुकूलित कार्यालय बगले मे जाकर तत्काल भूल जाते है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आजादी से बहुत पहले कहा था कि **' जो सद्‌विचार, असत्य को छोड सत्य को ग्रहण करे, अत्याचारियो को हटाए और न्यायकारियो को बढाए, अपनी आत्मा के समान सब का सुख चाहे, सो न्यायकारी है। उसी को मै श्रेष्ठ मानता हू।** तब सभी सम्प्रदायो के लोग आपसी मेलजोल और भाईचारे से स्वतन्त्रता के लिए लड रहे थे और कुरबानी दे रहे थे। आजादी के समय तक मुसलमानो की बहुसख्या अशिक्षित और जाहिल थी जो भेड बकरी के समान जिधर किसी धर्मान्ध मुल्ला या मौलवी ने हाका चल पडती थी। आज भी इस सख्या मे बढोतरी ही हुई है और यही वर्ग जेहाद के नाम पर पथभ्रष्ट हुआ है व हो रहा है। स्त्रियो को बच्चे पैदा करने वाली मशीन बनाकर रखा जाता है जो अमूनन चार से पाच बच्चे तक पैदाकर समाज और देश के वास्ते बोझ बनी हुई है। अब्दुल्ला बुखारी जैसे काजी शासन की खुल्लम खुल्ला खिल्ली उडाते है। भारत की पथभ्रष्ट यह नई पौध अपने खिचडी ज्ञान और अन्धविश्वास के कारण पाकिस्तान (पाक स्थान) के नापाक इरादो का सरे अजाम देती आई है। अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर देशद्रोह के नारे लगाए जाते है। शासन की कुम्भकरणी निद्रा भग करने हजारो अनाथ हो गए बच्चो का रुदन स्त्रियो की चीत्कार बेसहारा बेघर हो गए परिवार नाकाफी है। लोकलाज और नैतिकता का आधार आज इनके वास्ते बेमानी हो गए है और पाकिस्तानी जनरल मुशर्रफ की साफगोई कि हम काश्मीर मे जेहादी गतिविधियो को बढावा देते रहेगे को कोई महत्व क्यो नही दिया गया ? अमरनाथ तीर्थयात्रा पर गए यात्रियो मे कई लोगो ने स्पष्ट आरोप लगाया है कि काश्मीरी पुलिस और सेना मे ही विद्रोहियो ने घर कर लिया है जो तीर्थयात्रियो के छोट समूह को अलग अलग पर मारकाट करने से परहेज नही करते थे। विद्रोहियो आतकवादियो और जेहादियो को जब हमारी सेना पकडती है या जो पकड मे आ जाते है उनका निबटारा सेना को सेना के नियमो के अन्तर्गत करना चाहिए। बन्दी बनाकर अपनी मेहमाननवाजी के लिए ससार के समक्ष प्रचारित करने का साधन न बनाना चाहिए। इस से नोबल पुरस्कार की दावेदारी अवश्य पुख्ता होती है। ईश्वर हमारे इन रहनुमाओ की सुप्तप्राय आत्मा को शान्ति प्रदान करे इनका कुर्सीमोह भग हो कुम्भकरणी निद्रा को तजकर भारत को पतन के रास्ते से बचाए। लाखो उजडे परिवारो को पुन वही स्थापित किया जाए। देशद्रोह करने वालो को तत्काल मृत्युदण्ड या देश निकाला हो। विभाजन से पहले जैसा हमारे रहनुमाओ ने अनुबन्ध किया था कि जो हिन्दू सिक्ख या मुसलमान जहा आना या जाना चाहते है आए या जाए मगर जहा रहना है उसे अपना देश माने। पाकिस्तान के अन्दरूनी हालात बहुत बिगड गए है। शिया और सुन्नी मुसलमानो के आपसी झगडो मे मरने वाले मुसलमानो और उजडने वाली बस्तियो की सख्या ससार मे सर्वाधिक है। घर को आग लग गई घर के चिराग से वाली कहावत यहा चरितार्थ हो रही है। मेरे मुस्लिम भाईयो को अपने मादरेवतन (देश) मे जो मजहबी आजादी सकून काबिल है वह नापाक (पाकिस्तान) मे हरगिज हरगिज नहीं है ये बात समझना चाहिए। हमारे राजनेता सत्य को ग्रहण कर जनता की सच्ची रहनुमाई करे अन्यथा आनेवाली पीढी इन्हे कभी माफ न करेगी। मेरा देश महान बने देश का कल्याण हो। ओ३म शान्ति शान्ति शान्ति।

– छिन्दवाडा

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आजादी से बहुत पहले कहा था कि **जो सद्‌विचार असत्य को छोड सत्य को ग्रहण करे अत्याचारियो को हटाए और न्यायकारियो को बढाए अपनी आत्मा के समान सब का सुख चाहे सो न्यायकारी है। उसी को मैं श्रेष्ठ मानता हू।** तब सभी सम्प्रदायो के लोग आपसी मेलजोल और भाईचारे से स्वतन्त्रता के लिए लड रहे थे और कुरबानी दे रहे थे। आजादी के समय तक मुसलमानो की बहुसख्या अशिक्षित और जाहित थी जो भेड बकरी के समान जिधर किसी धर्मान्ध मुल्ला या मौलवी ने हाका चल पडती थी। आज भी इस सख्या मे बढोत्री ही हुई है और यही वर्ग जेहाद के नाम पर पथभ्रष्ट हुआ है व हो रहा है। स्त्रियो को बच्चे पैदा करने वाली मशीन बनाकर रखा जाता है जो अमूनन चार से पाच बच्चे तक पैदाकर समाज और देश के वास्ते बोझ बनी हुई है।

वैदिक डायरी २००२

चिरकाल की प्रतीक्षा के पश्चात तथा अनेक आर्य लोगो की प्रेरणा स प्रेरित होकर वैदिक डायरी २००२ प्रकाशित की जा रही है। इस डायरी मे ईस्वी सन की तारीख शक सम्वत विक्रमी सम्वत की तिथिया तथा दयानन्दाब्द आदि भी मुद्रित होगा।

इस वैदिक डायरी २००२ मे आर्यसमाज के जीवित सन्यासी विद्वान उपदेशक आर्य भजनोपदेशक आर्य नेता तथा पदाधिकारियो के अतिरिक्त वैदिक धर्मावलम्बी समाचार पत्र पत्रिकाओ के नाम व पता आदि प्रकाशित करने का परामर्श मिला। राजनैतिक आर्य नेताओ के नाम तथा पते भी नि शुल्क प्रकाशित किए जाएगे।

अत कृपया आप अपना केवल नाम और पता ही प्रकाशनार्थ १५ सितम्बर २००१ तक भेजिए।

– राजपाल शास्त्री २८०४ गली आर्यसमाज , बाजार सीता राम, दिल्ली ६

"सुख आ दुःख जा परन्तु कैसे"

– कुमारी ऋचा सोलकी

आज कल किसी को सुख नही चैन नहीं शान्ति नही परन्तु क्यो ? मानव की अशान्ति व्यथा व्यग्रता उलझने घबराहट दिन प्रतिदिन बढती जाती है नाना प्रकार की चिन्ताओ ने मानव को ग्रसित कर रखा है परन्तु क्यो ? मानव सुख शान्ति पाने के लिए जगलो मे पहाड पर्वता मे देश विदेशो मे मारे मारे घूम रहे है रक्त स्वेद बहा रहे हैं परन्तु मानव का हृदय फिर भी अधिक से अधिक दु खी क्षुब्ध हो रहा है। उचित अनुचित रूप से धनोपार्जन कर रहे है तथा यथेष्ठ व्यय भी कर रहे है बडी सुन्दर भव्य कोठियो मे निवास भी करते हैं – अत्यन्त महगे वस्त्र आभूषण भी धारण कर रहे हैं शरीर को नाना प्रकार के सुगन्धयुक्त वस्तुओ से सजा रहे हैं। अत्यन्त श्रेष्ठ सुस्वाद भोजन मिष्ठान्न का सेवन करते हैं समाज बडी दु ख मय स्थिति मे है। ऐसा क्यो है इस व्याकुलता व्यग्रता दु ख का क्या कारण है ?

मानव की इस स्थिति का कारण जीवन मे ध्येय का अभाव हे। लक्ष्य स्थिर नही है चित्त मे चचलता है। मानव यह नहीं सोचता न ही गम्भीरता से विचार करता है कि वह कौन है कहा से आया है क्यो आया है वह कहा विलुप्त हो जायेगा ? इन प्रश्नो के उत्तर जानने का कोई प्रयत्न नहीं करता और न ही किसी दूसरे से इन प्रश्नो का उत्तर मालूम करता है।

मानव तुच्छ सुख विशेष को ही पूर्ण सुख मानकर उसमे लीन हो जाते हैं। अल्प समय के लिए उसी मे आत्म विस्मृति कर बैठते हैं। भवन ठाटबाट के सामान आभूषण वस्त्र वाहन कार स्त्री पति बच्चो भाई बहनो मे निमग्न हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त मानव को और कुछ नहीं दीखता सूझता। इससे पतन होता है पतन ही दु ख का कारण बनता है।

मानव को यदि सुख पाना है तो उसे आत्मा तथा परमात्मा को जानना समझना परम आवश्यक है। सुख शान्ति तो वहीं मिलेगी जहा यह विराजमान है। सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा जो निराकार सर्वशक्तिमान न्यायकारी दयालु अजन्मा अनन्त निर्विकार अनादि अनुपम सर्वाधार सर्वेश्वर सर्वान्तर्यामी अजर अमर अभय नित्य पवित्र तथा सृष्टि कर्ता है ऐसे प्रभु की शरण मे जाकर सुख शान्ति निश्चित रूप से मिलेगी। वैदिक धर्म के प्रति श्रद्धा रखनी होगी। वेदानुकूल जीवन चर्या बनानी होगी। वेद विरुद्ध विचारधारा मत सम्प्रदायो को तिलान्जलि देनी होगी। परम पूज्य महर्षि दयानन्द सरस्वती के बनाए आर्यसमाज के दस नियमो को अपनाना उनका श्रद्धा पूर्वक पालन करना होगा। उनके अनुसार आचरण बनाना होगा।

मानव ने अपनी इच्छाओ आवश्यकताओ को बढा रखा है जिससे दु खो की वृद्धि हुई है। जीवन को फैशनेवुल चटकीला बनावटी और महगा बना रखा है। व्यर्थ की आवश्यकताओ की वृद्धि ऐसी ही है जैसे अपने को जन्जीरो से जकड रखना है। हाथी जैसा विशाल शक्तिशाली जीवन भी जन्जीर पड जाने से पराधीन हो जाता है। मानव ने भी अपने आत्मा को चारो और से व्यर्थ की आवश्गकताओ की दीवारो से घेर रखा है पराधीनता के कारावास मे डाल रखा है। आवश्यकताओ की दीवारो से घेर रखा है। आवश्यकताओ की वृद्धि दु खो को आमन्त्रण कर बुला लेना है। एक व्यक्ति पाच हजार रुपया मासिक पाता है तथा दूसरा तीन हजार रुपया मे काम चला लेता है। पाच हजार वाले रुपयो मे से यदि पाच सौ रुपए कम हो जाते हैं तो महीना काटना कठिन हो जाता है। दूसरे की आवश्यकताए परमित है। उसके तीन हजार मे से तीन सौ रुपये कम हो जावे तो वह आनन्द पूर्वक काम चला लेता है। अत समझ ले व्यर्थ की आवश्यकताओ को गले डालकर सुख की आशा करना व्यर्थ है मूर्खता है। जो जितनी आवश्यकताओ की वृद्धि करता है उतना ही दु खी रहता है। इनकी पूर्ति मे मानव को नाना प्रकार के कष्ट उठाने पडते है भ्रष्टाचार करना पडता है। इनकी सामिग्री जुटाने की चिन्ता सामिग्री की रक्षा की चिन्ता खो जाने पृथक हो जाने टूटने फूटने सडने बिगडने से हृदय पर बज्रघात सा होता है। अत दु ख के महासागर मे डूब जाते है।

मानव को सुख की आशा है तो उस अपनी इच्छाये आवश्यकताए परमित करनी होगी। बनावटी जीवन छोडना होगा। सादगी पूर्ण जीवन अपनाना होगा। भोजन सादा शुद्ध सात्विक करना होगा। दिखावा से बचना होगा। भ्रष्टाचारियो के द्वारा किए गए विवाह भोज आदि के आडम्बर के मोह से बचकर सादे विवाह समारोह आदि करने हागे। धनाढयो का अनुकरण कर सीमित आय वाले दु खी हो रहे है।

> **सासारिक मोह प्रलोभन सग्रह तृष्णा और विलास मानव को ससार मे फासते है। मानव अपने घर परिवार के मोह मे पडकर कुछ भी आत्मिक उन्नति नहीं कर पाते हैं। यदि वासना न हो तो अखण्ड सुख की प्राप्ति हो जाएगी।**
>
> **सुख त्याग मे है सग्रह मे नहीं है उत्तरदायित्वो और सासारिकता को कम करने मे है। त्याग मानव के उत्तरदायित्वो को कम करता है सासारिक बन्धनो से छुडाता है। त्याग सुख का साधन है। जो त्याग कर सकता है वही सुखी और शान्त रह सकता है।**

मानव को यह समझ लेना चाहिए सुख कही बाजार मे क्रय करने से नहीं मिलता है। वह किसी की खुशामद सिफारिश अथवा प्रेरणा से प्राप्त नही होता है। वह तो आत्मा का विशिष्ट गुण है। आत्मा से बाहर उसकी कहीं भी सत्ता नही है। जब मानव का अन्त करण शुद्ध सात्विक बनता है इन्द्रिया वश मे हो जाती है मन विषयो से हटकर आत्मा मे एकाग्र हो जाता है ससार के कार्यो से विरक्ति सी होने लगती है तथा समस्त क्रियाये मात्र मुमुक्षा के लिए होती हैं तब मानव को सच्चे सुख की अनुभूति होने लगती है तभी मानव अपने आत्मा मे छिपे सत्य सुख को पहचान पाते है।

सासारिक जीव आत्मा परमात्मा को भूल रहे हैं और अपने आत्मा से भिन्न किन्हीं अन्य पदार्थो मे सुख की कल्पना किए बैठे है और उन्हीं की प्राप्ति मे व्यथित क्लेशित होकर मारे मारे फिर रहे है बाह्र पदार्थो मे सुखाभास मात्र है। केवल मृगतृष्णा है।

मानव को सच्चे सुख की खोज आत्मा मे करनी चाहिए उसे यह मालूम करने का प्रयास करना चाहिए कि मानव के मानस क्षेत्र की दो मुख्य भूमिकाए हैं एक उच्च तथा दूसरी निम्न। वास्तविक सुख के लिए सदैव उच्च भूमिका मे विचरण करना चाहिए। मन की निम्न भूमिका मे कष्ट तथा नीच से नीच विचार रहते हे। नीच विचार उच्च विचारो की अपेक्षा अधिक आकर्षक होते है।

सुख तथा दु ख मानव मन की दो भिन्न भिन्न अवस्थाये है सुख दु ख की अनुभूति मन की स्थिति स्थिरता शान्ति और सन्तुष्टि पर निर्भर है। सुख वह मानसिक स्थिति ह जिसमे मन शान्त है तो स्थिर रहता है। सन्तोष का अनुभव होता है चित्त का सन्तुलन ठीक रहता है मन मे उल्लास छाया रहता है तथा मुद्रा प्रसन्न होती है।

दु ख वह मानसिक दशा है जिसमे मन अशान्त अस्थिर असन्तुष्ट रहता है। मन चचल है तो असन्तोष का वेग उठा करता है। इच्छाओ की छाया सर्वत्र छाई रहती है। जब मन अशान्त होगा तब निश्चय ही दु ख का अनुभव होगा। जितने अनुपात म मन अशान्त एव चचल हे उतने ही अशो मे मानव दु खी व क्षुब्ध रहेगा। इस प्रकार सुख दु ख ससार मे किन्ही पदार्थो मे नही होता है अपितु मन म है। अन्त करण ही सुख दु ख का निवास स्थान है।

मानव का स्वभाव कुछ ऐसा बन गया है कि वह धन तथा ससार की नाना प्रकार की वस्तुओ मे सुख व शान्ति खोजा करते है। परन्तु इन वस्तुओ मे स्थाई सुख शान्ति नही होती है। विज्ञान विलासता के साधन बढा रहा है मानव उसमे सुख की कल्पना करते है परन्तु एक के पश्चात दूसरी तीसरी आदि अनेक नई वस्तु की आवश्यकता उपस्थित हो जाती है।

सासारिक मोह प्रलोभन सग्रह तृष्णा और विलास मानव को ससार मे फासते हैं। मानव अपने घर परिवार के मोह मे पडकर कुछ भी आत्मिक उन्नति नहीं कर पाते हैं। यदि वासना न हो तो अखण्ड सुख की प्राप्ति हो जाएगी।

सुख त्याग मे है सग्रह मे नहीं है उत्तरदायित्वो और सासारिकता को कम करने मे है। त्याग मानव के उत्तरदायित्वो को कम करता है सासारिक बन्धनो से छुडाता है। त्याग सुख का साधन है। जो त्याग कर सकता है वही सुखी और शान्त रह सकता है।

– मौ० खेडा रूद्रपुर (उधमसिह नगर) उत्तराचल

स्वतन्त्रता और परतन्त्रता

– उदयवीर विराज

क्या आप जानत है सन १६४७ म मिली स्वतन्त्रता का सुख सबसे अधिक कोन भोग रहे हैं ? उन नौकरशाहो के कुलीन वशज जो अग्रेजो के शासन मे स्वाधीनता आन्दोलन का दमन करते थे। स्वाधीनता मिलन के बाद किसी नौकरशाह को पद से नही हटाया गया। जो अग्रेज या मुसलमान अफसर भारतीयो के अधीन रहकर काम नही करना चाहते थे वे इग्लड या पाकिस्तान चले गए। उनक अलावा सभी सरकारी अफसर और कर्मचारी अपन पदो पर ज्यो के त्यो बने रहे।

स्वातन्त्रय योद्धाओ की उपेक्षा

सत्ता परिवर्नन के बाद रक्तहीन क्रान्ति हो जानी चाहिए थी। सन १६३० के सत्याग्रह आन्दोलन को हुए कुल १७ वष हुए थे ओर सन १६४२ के भारत छोडो आन्दोलन को तो केवल ५ ही साल बीते थे। उन आन्दोलना मे जिन्होने घर बार छोडकर बलिदान का पथ अपनाया था उनकी आयु कुछ अधिक नही हुई थी। सन ३० मे जो ३० वष का था वह सन ४७ मे ४७ वष का होता। उनको ढूढ–ढूढ कर सरकारी पदो पर बिठाया जाना उचित था। पर नहीं बिठाया गया। क्यो?

१५ अगस्त १६४७ की अधियारी आधी रात मे प० जवाहरलाल नेहरू को महाराज्यपाल बनाने के लिए काग्रेसी कोई स्वतन्त्रता सेनानी नहीं मिला। मिला पडत माउटबेटन। यह हमारे स्वाभिमान का दिवाला था। जो आदमी १४ अगस्त की आधी रात तक ब्रिटिश सम्राट की ओर से भारत का वायसराय था वही रात के बारह बजने के बाद स्वाधीन भारत का पहला महाराज्यपाल बन गया। इससे बडा छल इतिहास मे कभी नहीं हुआ । यह नेहरू जी की और गाधी जी की सहमति से हुआ। यह कलक अमिट है।

भारतीयता से चिढ

ऐसी स्वाधीनता का परिणाम जो होना था वह हो रहा है। शेर के मारे हुए शिकार को गीदड खा रहे हैं। आज देश पर उन लोगो का शासन है जो भारत की स्वतन्त्रता को भारत की सस्कृति को भारत की भाषा को भारतीय वेषभूषाओ को भारतीय भोजन को भारतीय कलाओ को फूटी आखो देख भी नहीं सकते। हर भारतीय वस्तु से इन्हे चिढ है घृणा है द्वेष है।

सुनने मे यह बात विचित्र और असम्भव जान पडती है कि भारतीयो को भारतीयता से घृणा और द्वेष हो परन्तु इसकी सत्यता आप भारतीय प्रशासन सेवा के (आइ०ए०एस०) अफसरो के समाज मे जाकर देख सकते हैं। यह सारा वर्ग (कुछ एक अपवाद हो सकते हैं) 'इडियन है। इडियन वे लोग हैं जो भारतीय मा बाप की सन्तान हैं जो भारत का अन्न जल खा पीकर पुष्ट हुए है परन्तु जिनकी शिक्षा और सम्पत्ति ने उन्हे पश्चिमी सस्कृति और सभ्यता का दास बना दिया है। वे पश्चिम के अन्धभक्त है। गाय धोती और ईश्वर उन्हे दकियानूसी लगते है कुत्ता पतलून ओर पैसा उनकी आराधना के पात्र हैं।

कुशिक्षा ने बिगाडा

ये लोग जन्म से ऐसे नहीं थे। इन्हे शिक्षा' देकर बिगाडा गया है। इन्होने लार्ड मैकाल के द्वारा निर्धारित शिक्षा पाई है। उसके बाद सघ लोक सेवा आयोग ने यत्नपूर्वक उन लागो को चुना है जो इडियन' होने की कसौटी पर खरे उतरते है। उसके बाद मसूरी की भारतीय प्रशासनिक अकादमी मे उनकी अन्तिम साज सवार की जाती है कि उनके इडियनपने मे कोई कमी न रह जाए। इन्होने इस परम सत्य को भलीभाति हृदयगम कर लिया है कि भारत न पहले कभी कुछ था (यह निरा पाखण्डो जादू टोनो सपेरो और ठगो का देश था) न यह अब कछ है और न यह पश्चिमी देशो की अनुकम्पा और अनुकरण के बिना भविष्य मे कभी कुछ बन सकेगा। यह भयावह स्थिति है। इन काले साहबो से गोरे साहब कही अच्छे थे। उन गोरो साहबो ने न चाहने हुए न जानते हुए एक उपकार हम पर किया था। उन्होने हमे लूटा खसोटा था जिसके विरोध मे सारा देश पेशावर से डिब्रुगढ तक और कश्मीर से कन्याकुमारी तक एक हो गया था। पजाब बगाल गुजरात महाराष्ट्र असम और केरल सब मिलकर एक भारत हिन्दुस्तान हो गए थे। परन्तु इन काले साहबो ने कुल पचास बरसो मे देश को न केवल अलग अचलो मे अपितु सम्प्रदायो जातियो और भाषाओ के आधार पर खण्ड–खण्ड कर दिया है। भारतीय कोई नहीं है– बगाली है तमिल है मराठा है ब्राह्मण है दलित है जाट है यादव है।

इसमे से हर कोई स्वतन्त्रता चाहता है। कश्मीर स्वतन्त्रता चाहता है नागालैंड मिजोरम अरुणाचल पजाब सब स्वतन्त्र होना चाहते है। भारत का स्वतन्त्र होना काफी नहीं समझा जा रहा।

हर अग स्वतन्त्रता चाहता है

राज्य ही स्वतन्त्र होना नहीं चाह रहे सरकार के अग भी स्वतन्त्र होना चाह रहे हैं। ससद तो स्वतन्त्र है ही उच्चतम न्यायालय भी स्वतन्त्रता चाहता है राष्ट्रपति भी स्वतन्त्रता पाने के इच्छुक है नियन्त्रक और महालेखा परीक्षक तो स्वतन्त्र है ही। अब प्रसार भारती एक और स्वतन्त्र अग बन गया है। प्रसार भारती सरकार का मुख है। वह सरकार से स्वतन्त्र रहना चाहता है।

यह बहुत ही रोचक और हसाने वाली स्थिति है। पूरा देश भारत अग्रेजो के शोषक अपमानजनक चुगल से मुक्त हो गया (भले ही विभक्त और क्षत विक्षत हो कर ही सही) इतना काफी नहीं है अब इसका हर अग प्रत्यग पूणतया स्वतन्त्र होना चाहिए आख नाक कान मुह हाथ पाव सब स्वतन्त्र रहे कोई किसी के अधीन न हो। आख की इच्छा है कि देखे या न देखे मुह की मर्जी है कि खाए या न खाए या कितना खाए और क्या खाए हाथ की मर्जी है कि बाकी शरीर की रक्षा के लिए लडे या न लडे पाव की मर्जी है कि साप देखकर उससे दूर हटे या न हटे।

प्रसार भारती की स्वतन्त्रता का और क्या अर्थ हो सकता है? सैसर बोर्ड की स्वतन्त्रता का क्या मतलब है? ये देश के शासन के अग है। इन्हे देश के हित के विरुद्ध कार्य करने की स्वतन्त्रता कभी नहीं दी जा सकती। स्वतन्त्रता का अथ ही होता है– अपना बुरा तक करने की स्वतन्त्रता।

स्वतन्त्र प्रसार भारती विभाग देश पर जो अग्रेजी भाषा और सस्कृति थोप रहा है उसकी छूट उसे कैसे दी जा सकती है ? वह किसके आदेश से इशारे से ऐसा कर रहा है ? क्या ससद ने उसे ऐसा करने का आदेश दिया है? क्या मन्त्रिमडल ने उसे आदेश दिया है कि भारत मे जो कुछ अच्छा है उसका विनाश कर दो और जो कुछ बुरा है उसका प्रसार करो?

प्रबुद्ध भारत की सस्कृति नहीं

कहा जा सकता है कि प्रसार भारती तो भारतीय सस्कृति का जी जान से प्रचार कर रहा है। जय हनुमान ओ नम शिवाय जय जगदम्बे मीराबाई जैसे रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते है। हमारा कहना है कि यह प्रबुद्ध भारत की सस्कृति नहीं है। अधविश्वासो को बढावा देना देश को आगे ले जाने का सही उपाय नहीं है। दूरदर्शन या केबल चैनलो पर सिगरेट शराब हिसा अपराध कौशल क्रिकेट फैशन शो विश्व सुन्दरी प्रतियोगिताओ का प्रदर्शन भावी पीढी की उन्नति की सही दिशा नहीं है। युवक –युवतिया इसे देखना चाहते हैं यह उनके प्रसारण के पक्ष मे सही युक्ति नहीं है। लोग अपराध और पाप करना चाहते है उनकी रोकथाम करना शासन का कर्तव्य है। राष्ट्र की शक्ति और साधनो का दुरुपयोग लोगो की बुरी लालसाओ को तृप्त करने के लिए नहीं किया जाना चाहिए। प्रसार भारती को सरकार के कठोर नियन्त्रण से बाहर रखने का रत्ती भर भी औचित्य नहीं है।

इकाई के अग स्वतन्त्र नहीं

विचार स्वतन्त्रता और परतन्त्रता का चल रहा था। भारत देश यदि एक इकाई है तो उस इकाई की स्वतन्त्रता का कुछ अर्थ है। परन्तु एक इकाई मे दो अग स्वतन्त्र नहीं रह सकते। मुस्लिम लीगियो ने १६४७ मे कहा था हम हिन्दुओ के साथ मिलकर नहीं रह सकते। हमारा अलग पाकिस्तान बनाओ। अग्रेजो और काग्रेस ने सहमत होकर पाकिस्तान बना दिया। भारत और पाकिस्तान दो अलग इकाई बन गए।

अब स्वतन्त्रता के प्रचारक प्रसारक विदेशी महाशक्ति की शह पर कह रहे है कि कश्मीर स्वतन्त्र करो मिजोरम स्वतन्त्र करो नागालेण्ड स्वतन्त्र करो आदि। एक इकाई के अन्दर दूसरी स्वतन्त्र इकाइ नही रह सकती। वह स्वतन्त्रता नही अराजकता होगी।

अमर्यादित स्वतन्त्रता नाम की कोइ वस्तु नहीं होती। हर वस्तु परिवार म हर समाज मे या राष्ट्र मे मनुष्य शरीर की भाति सब अग स्वतन्त्रता ओर परतन्त्रता के सतुलन से बधे रहते है।।यदि मिलकर रहना है और किसी ऊचे लक्ष्य की ओर बढना है तो स्वतन्त्रता का उपभोग करत हुए कुछ न कुछ परतन्त्रता अपनानी पडेगी – इस परतन्त्रता को अनुशासन कहा जाता है। अनुशासनहीन शरीर परिवार और राष्ट्र नष्ट हो जाता है।

इतिहास से यदि कुछ सीखना हे तो नैपोलियन के फ्रास विल्हेम कैसर और हिटलर के जर्मनी जनरल तोजो के जापान से सीखा जा सकता है। यदि शक्तिशाली बनना है तो अनुशासन मे रहना होगा और व्यक्ति को अपनी स्वतन्त्रता का कुछ अश त्याग कर उतने अश मे परतन्त्रता स्वीकार करनी पडेगी। हर एक को कुछ बेचैनी भी होगी।

स्वतन्त्रता कितनी हो और परतन्त्रता कितनी इसमे ही सुशासनऔर कुशासन का अन्तर निहित है। सुशासन वह है जो राष्ट्र को शक्तिशाली बनाए रखते हुए अपने नागरिको को अधिकतम स्वतन्त्रता दे सके।

जैसा कि आज भारत में हो रहा है स्वतन्त्रता के नाम पर हत्यारो बलात्कारियो अपहरणकर्ताओ लुटेरो ठगो गबन करने वालो रिश्वतखोरो अपमिश्रण करने वालो शराब जुआ और मादक द्रव्यो का व्यापार करने वालो को छूट देना शासन नहीं कुशासन है और उसका फल राष्ट्र भुगत रहा है।

आत्महितकारी कर्मो मे लोगो को भले ही स्वतन्त्रता दी जाएं परन्तु सर्वहितकारी कार्यों मे तो उन्हे परतन्त्र ही रहना चाहिए।

नारी जागरण से ही सांस्कृतिक जागरण

– डॉ० वसुन्धरा रिहानी

वास्तव मे सौन्दर्य विचारो मे होता है भावनाओ मे होता है। दैहिक सौन्दर्य से वैचारिक एव भावनात्मक सौन्दर्य का मूल्य कहीं बढ कर है। सर्वोत्तम सौन्दर्य तो आध्यात्मिक सौन्दर्य है। भारत मे आध्यात्मिक सौन्दर्य की प्रतीक थीं सीता सावित्री गार्गी मैत्रेयी प्रभृति महिलाए। यदि देखा जाए तो यही नारी का आदर्श है यही उसका सौन्दर्य है। परन्तु प्रतिमान के बदलते ही नैतिकता का महत्त्व चरमरा कर गिर जाता है। आज सुन्दरता का अर्थ है देह को अधिक से अधिक आवरणहीन कर सकने की बेशर्म हिम्मत। इस प्रतिमान को बदले बिना न नारी जागरण सम्भव है न सास्कृतिक उत्थान।

नारी एक महान शक्ति है। माता भगिनी भार्या और पुत्री – अपने इन चारो रूपो मे वह अद्भुत कार्य सम्पादन करती है। अन्य शक्तियो के समान इस महाशक्ति मे भी ससार का कल्याण और अनिष्ट दोनो करने की क्षमता है। उदाहरणार्थ विद्युत एक महाशक्ति है। इसके सदुपयोग से ससार का भारी कल्याण होता है। परन्तु यह एक क्षण मे जीवन शून्य भी कर देती है। वज्र के गिरने से गगनचुम्बी भवन और वृक्ष एकदम धराशायी हो जाते हैं। ठीक यही बात नारी शक्ति पर चरितार्थ होती है। इस शक्ति के शुद्ध एव पवित्र दशा मे बनी रहने से समाज मे सुख शान्ति का राज्य रहता है और इसमे किसी प्रकार की अस्वाभाविकता अथवा अपवित्रता आ जाने से राष्ट्र मे विध्वस तक हो सकता है। सीता द्रौपदी हेलन क्लियोपेट्रा के वृत्तान्त हमे इस परिणाम पर पहुचाते हैं।

विकासवाद की दृष्टि से ससार मे सब से अधिक विकसित देहधारी स्त्री शरीर है। इन्द्रिया जितनी नारी शरीर मे विशेषता को प्राप्त होती हैं उतनी नर शरीर मे नहीं। जिन सप्त वर्णो से सूर्य का श्वेत प्रकाश बनता है पुरुष उनमे से केवल पाच को ही ठीक तौर पर देख पाता है। परन्तु स्त्री सातो के सातो वर्णो को पहचान सकती है। पौराणिक साहित्य मे दुर्गा जगदम्बा अम्बा अम्बालिका महामाया चण्डी भवानी परस्वती लक्ष्मी प्रभुति जितने भी नाम मिलते हैं वे नारी शक्ति के ही नाना नाम और रूप है। सम्भव है कुछ लोग उन्हे सचमुच के व्यक्ति समझते हो पर वैदिक दृष्टिकोण इसे आलकारिक वर्णन ही स्वीकार करता है।

प्राचीन आर्यो ने नारी शक्ति के महत्व को समझा था। इसीलिए हमारे महर्षियो का उपदेश है –

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।

अर्थात जहा स्त्रियो का पूजन और सत्कार होता है वही देवता निवास करते हैं। जगत् के अन्यान्य देशो मे जब नारी जाति के प्रति किसी प्रकार की निष्ठा और प्रतिष्ठा प्रदर्शित नहीं हुई थी। उस अति दूर शताब्दियो मे भी भारत की नारी ने पुरुष के समान ही सम्मान और समादर प्राप्त किया था। हमारे वेद उपनिषद् इसके साक्षी हैं। वृहद्देवता नामक ग्रन्थ मे अपाला घोषा लोपामुद्रा २७ स्त्री ऋषिकाओ के नाम आते हैं जो मन्त्रद्रष्टा थीं। याज्ञवल्क्य जैसे बहुशास्त्रज्ञ सुपण्डित ऋषियों के साथ सभा मे ब्रह्मविषय पर गार्गी मैत्रेयी आदि विदुषियो के नाम सर्वलोक प्रसिद्ध हैं। इसी भान्ति उत्तरोतर साहित्य एव समाज में जीवन के विविध क्षेत्रों में हम मदालसा लक्ष्मीबाई दुर्गावती पद्मिनी जीजाबाई पुतलीबाई कस्तूरबा चाद बीबी रजिया बेगम सरोजिनी नायडू अरुणा आसफअली इन्दिरा गाधी प्रभृति अनेकानेक वीरागनाओ के नाम स्मरण कर गर्व अनुभव करते हैं।

इस बीसवीं शताब्दी मे जिसे हम नारी पुनर्जागरण नारी मुक्ति आन्दोलन या नव निर्माण के युग से सम्बोधित कर रहे हैं पाश्चात्य सभ्यता व सस्कृति के अनुकरण का ऐसा अभियान सा चल पडा है कि भारतीय नारी वर्ग अपनी सनातन सस्कृति के प्रति उदासीन सा होने लगा है। नारी की स्वच्छन्दता तथा उच्श्रृखलता अपनी पराकाष्ठा को छूने के लिए कटिबद्ध सी हो पडी है। उसका आचार विचार खान पान रहन सहन तथा वेषभूषा पाश्चात्य सस्कृति प्रणाली के अनुरूप होता जा रहा है। जबकि भारतीय सस्कृति लज्जा तथा शील को नारी की गरिमा का आधार मानती है। यह लज्जा ही भारतीय नारी का आभूषण है तथा शील ही उसकी मर्यादा उसका अनमोल रत्न धन उसका अपना सर्वस्व है। लज्जा से वह सजती है तथा शील से वह गौरवान्वित होती है। इन दोनो का परस्पर चोली दामन का साथ है। ये दोनो एक दूसरे के पूरक है – एक के बिना दूसरा अधूरा है।

इस लज्जा का अर्थ घूघट अथवा पर्दा नहीं है और न ही इसका सम्बन्ध घर की चार दीवारी मे बन्द रहने अथवा रखने से है। यह घूघट अथवा पर्दा तो आकृति का आवरण मात्र है जिसका प्रकृति से कोई सम्बन्ध ही नहीं। नारी की लज्जा तो उसकी अपनी भावनात्मक स्वच्छता आन्तरिक पवित्रता की अवधारणा तथा समाज के प्रति अपनी शुद्ध एव सात्त्विक भावनाओ का समुचित आदर करना है। इसी भावना से नारी का नारीत्व जागृत होता है और उसके व्यक्तित्व मे निखार आता है। भारत के नव निर्माण के लिए आज राष्ट्र की ओर से भारतीय नारी को सप्रेम आमन्त्रण है जिसे स्वीकार करना प्रत्येक नारी का पुनीत कर्तव्य है। नारी की प्रगति मे ही राष्ट्र की प्रगति निहित है – उल्लास भरा विकास है – यही परम सत्य है – यही यथार्थ भी है। पर इसके लिए नारी को अपनी भारतीय सनातन सस्कृति के अनुरूप ही आचरण करना होगा। अपने प्राचीन इतिहास के पृष्ठो को पलटना होगा। अपने ही अन्तर मे झाक कर उसमे विराजित अपनी गरिमा को निहारना होगा।

भारतीय सस्कृति मे नारी देवी (दिव्य गुणो से युक्त) तथा जननी के रूप में प्रतिष्ठित हुई। नारी सृजन शक्ति का पर्याय है तभी तो उसे 'मा' की सज्ञा मिली है। इसीलिए धरती को माता कहा गया है। गगा और गाय भी इसी पावन श्रेणी मे गिनी जाती हैं। सवेदना शील और चरित्र नारी के अलकार हैं। पर दुर्भाग्य का विषय है कि पाश्चात्य सभ्यता के प्रहार ने नारी के लज्जावसन तार तार करने आरम्भ कर दिए है। उसकी सवेदनशीलता का लाभ उठा कर भारतीय सस्कृति के मर्म बिन्दुओ पर कुठाराघात किए जा रहे है।

इसी के परिणामस्वरूप आज अश्लीलता कुत्सित माडलिग एव हेय विज्ञापनो की बाढ सी आई हुई है। सर्वत्र अपसस्कृति का नग्नस्वरूप नर्तन करता दृष्टिगोचर हो रहा है। ऐसे मे सास्कृतिक जागरण तभी सम्भव है जब नारी जागरण हो। अश्लीलता नारी के स्थापित सौम्य स्वरूप के नकारात्मक पक्ष का प्रदर्शन है। यह नारी के भद्दे प्रदर्शन या उससे जुडी कुत्सित अभिव्यक्तियो तक ही सीमित नहीं अपितु यह तो हमारे चिन्तन व व्यवहार के कई स्तरो पर समाई हुई विकृति का नाम है। विकृत मानसिक कुण्ठाओ का विस्फोट बडा भयानक होता है। यह विस्फोट देश मे ८० के दशक से प्रारम्भ हुआ था जब वीडियो का आगमन व प्रचलन हुआ था। इस दौरान अश्लील फिल्मो का प्रदर्शन प्रारम्भ हुआ था। तत्पश्चात ९० के दशक मे Electronic media मे क्रान्ति की शुरुआत हुई। कई विदेशी चैनलो का आगमन हुआ। आर्थिक उदारीकरण के अन्तर्गत उन्हे भारत एक मण्डी के रूप मे नजर आया ? उन्होने देखा कि किसी भी तरह का उत्पादन प्रचार के माध्यम से बेचा जा सकता है। प्रचार का माध्यम बनाया लडकियो को। नोम चौमस्की के अनुसार 'देह सभी शास्त्रो से जीवन्त है क्योंकि यह गणितीय तथ्यो की बाड तोडकर मनोविज्ञान तक पहुच जाता है। इसलिए पूजी के बाजार मे नारी देह को भी पूजी के रूप मे ही प्रयोग किया जाने लगा है। सामाजिक दृष्टिकोण धार्मिकता सस्कृति या नीति मर्यादाओ को तोड मरोडकर पेश करने के कारण यह विष उभर कर सामने आया है। इसकी शुरुआत सिनेमा से हुई। उथली मानसिकता के लोगो ने इसे पसन्द किया और प्रसार करने मे बेशर्मी का परिचय दिया। अन्धानुकरण की परम्परा ने इसे सभ्यता और प्रतिष्ठा का मापदण्ड माना। परिणाम यह कि सारी सीमाए व मर्यादाए टूट कर बिखरने लगीं जिसका लाभ उठाया टी० वी० चैनलों विज्ञापन एजेन्सियों और पत्र पत्रिकाओ ने। आज तो अश्लीलता फैशन बन गई है। मॉडलिग व सौन्दर्य प्रतियोगिताए आदि सभ्यता की नई दौड मानी जा रही हैं। नारी को उपभोग की वस्तु बना दिया गया है। अश्लीलता अर्थोपार्जन का माध्यम बन कर व्यवसाय मे परिवर्तित हो चुकी है। अधखिली कलिया मसली जा रही है।

भारतीय सस्कृति मे धर्म ओर अर्थ के पश्चात काम का स्थान आता है। इसकी दिव्य एव स्तुत्य ढग से स्तुति की जाती है। इसकी अपनी निश्चित सीमाए व मर्यादाए है। यह प्रदर्शन की वस्तु नहीं है। दिव्यकलाओ मे इसकी गणना की जाती है न कि छिछले और उथलेपन के रूप मे। आज सौन्दर्य का मापदण्ड आचार विचार भावना नहीं बल्कि देह की कुत्सित चेष्टाए हैं। सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त आकडो से ज्ञात होता है कि भारत मे सन १९८५ से ८६ के बीच प्रतिवर्ष ३० स ५० प्रतिशत तक उपभोक्ता वस्तुओ की खपत दर बढी है। National Council of applied Economic Research के अनुसार इन वर्षो मे विज्ञापन उद्योग भी २० से ४५ प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर मे बढा है। एक अ य सर्वेक्षण के अनुसार –

देश की १० (दस) Advertisement Agencies की सकल आय (income) २६७६६ ५४ करोड रुपए थी जो कि देश के ८० प्रतिशत विज्ञापन उद्योग की आय थी। इसमे भी ४४८० करोड रुपए शुद्ध रूप से विज्ञापन माडलिग से हुई थी। यह माडलिग और कुछ नहीं बल्कि बढती अश्लीलता का प्रतिमान है। आज यह व्यापार विश्व का सबसे अधिक कमाई वाला साधन बन चुका है। आजकल एक 'माडल' या विश्वसुन्दरी इतना आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकती है कि वह नेपाल जैसे छोटे देशो की कल वार्षिक आय से भी ज्यादा ठहरेगा।

वास्तव मे सौन्दर्य विचारो मे होता है भावनाओ मे होता है। दैहिक सौन्दर्य से वैचारिक एव भावनात्मक सौन्दर्य का मूल्य कहीं बढ कर है। सर्वोत्तम सौन्दर्य तो आध्यात्मिक सौन्दर्य है। भारत मे आध्यात्मिक सौन्दर्य की प्रतीक थीं – सीता सावित्री गार्गी मैत्रेयी प्रभृति महिलाए। यदि देखा जाए तो यही नारी का आदर्श है – यही उसका सौन्दर्य है। परन्तु प्रतिमान के बदलते ही नैतिकता का महत्त्व चरमरा कर गिर जाता है। आज सुन्दरता का अर्थ है – देह को अधिक से अधिक आवरणहीन कर सकने की बेशर्म हिम्मत। इस प्रतिमान को बदले बिना न नारी जागरण सम्भव है न सास्कृतिक उत्थान।

जिस देश की नारी देश की सस्कृति की प्रतीक और पर्याय रही हो उसकी सन्तान को अपने गौरवशाली अतीत की मान मर्यादाओ का आदर करते हुए ही भविष्य मे पदार्पण करना चाहिए। आधुनिकता की ओट मे अपनी सास्कृति धरोहर और नैतिक मूल्यो का अवमूल्यन करने को धृष्टता उसे नही करनी चाहिए। यदि आज की नारी जागृत होगी तभी हमारी सस्कृति जीवित रह पाएगी अन्यथा परिणाम हम सब देख ही रहे हैं।

– प्रवक्ता दयानन्द वैदिक शोधपीठ पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ १६०००१

वेद और मानव स्वास्थ्य

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

वेदो को मनुष्य के लिए हितकारी विद्याओ तथा विज्ञानो का भण्डार कहा गया है। आचार्य मनु के अनुसार वेद पितर देव तथा मनुष्यो के मार्गदर्शन के लिए सनातन चक्षुओ के तुल्य हैं जिनके द्वारा वह अपने हित और अहित को पहचान कर कर्त्तव्याकर्त्तव्य का निर्धारण करता है। वेदो मे जहा भौतिक तथा लौकिक विषयो की विवेचना मिलती है वहा दार्शनिक तथा आध्यात्मिक प्रश्नो का समाधान भी इन्हीं ग्रन्थो मे पाया जाता है। मानव जीवन के लिए उपयोगी शरीर विज्ञान तथा स्वास्थ्य रक्षा का विशद निरूपण भी इस वाडमय मे उपलब्ध है। वेदो की दृष्टि मे शरीर न तो हेय है और न तिरस्कार के योग्य। भारत के इतिहास मे एक बार पारलौकिक चिन्तन का एक ऐसा विषय प्रवाह उपस्थित हुआ था जिसके कारण हमारे चिन्तको दार्शनिको तथा अध्यात्मविद्या विशारदो ने मनुष्य के स्थूल शरीर की सर्वथा अवहेलना और उपेक्षा ही नहीं की उस पाप का आधार स्तम्भ तथा व्याधियो का मदिर बताया। इसके विपरीत अथर्ववेद ने शरीर को अयोध्यापुरी कहा जिस पर विजय पाना शत्रुओ के लिए अशक्य है। इसी देवपुरी मे आत्मा और परमात्मा जैसी दिव्य सत्ताओ का निवास है। ऐसी स्थिति मे शरीर की उपेक्षा तथा तिरस्कार सर्वथा अनुचित है।

महाकवि कालिदास ने अपने कुमारसम्भव नामक काव्य मे शरीर को धर्म प्रमुख साधन बताया है – **शरीरमाद्य खलु धर्मसाधनम्।**

जब पार्वती ने शिव को पति रूप मे प्राप्त करने के लिए प्रबल तपस्या और शरीर को कष्ट देना आरम्भ किया तो भौतिक शरीर को सुखाना ही तपस्या नहीं है इस तथ्य को उजागर करने के लिए भगवान शकर ने उक्त वाक्य कहा। यह तो सत्य है कि पञ्चभौतिक होने के कारण शरीर अन्तत नष्ट होता है किन्तु वह ऐसी क्षुद्र तथा हेय वस्तु भी नहीं है जैसा मध्यकाल के साधु सन्तो ने उसे बताया। जीवन की नश्वरता को देखते हुए कबीर ने 'पानी केरा बुदबुदा अस मानुस की जात' आदि उक्तिया तो कहीं किन्तु इसी घट के भीतर बसे परमात्मा को पहचानने के लिए भी लोगो को प्रेरित किया।

वेदो मे मनुष्य के लिए दीर्घ आयु की कामना की गई है। आयुर्यज्ञेन कल्पताम तथा आयु प्राणप्रजा पशुम कीर्ति द्रविण ब्रह्मवर्चसम जैसे प्राप्तव्य पदार्थों मे आयु को पहला स्थान देकर वेद ने मानव शरीर के महत्त्व को स्वीकार किया है। शरीर के विभिन्न घटको मे इन्द्रिया सर्वप्रमुख है। वेदो मे ज्ञानेद्रियो और कर्मेन्द्रियो को बलिष्ठ स्वस्थ तथा यशस्वी बनाने की बात कही गई है। सध्या के अगस्पर्श तथा मार्जन मत्रो का भाव इन्द्रियो को पवित्र बलवान तथा यशस्वी बनाने का ही है। उपस्थान मत्रो मे नेत्रो द्वारा सौ वर्ष देखने सौ वर्ष तक सुनने सौ वर्ष तक बोलने स्वस्थ रहकर जीने तथा शतायु से भी अधिक काल तक स्वस्थ नीरोग एव अदीन निर्भय तथा स्वावलम्बी जीवन जीने की बात कही गई है। शरीर को सुदृढ बनाने के लिए वेद का आदेश है अश्माभवतु मे तनू है मनुष्य तेरा शरीर पत्थर के तुल्य बलशाली तथा मजबूत बने।

ऊषाकाल मे सूर्योदय से पूर्व शैय्या त्याग स्वास्थ्य के लिए अतीव उपयोगी बताया गया है। जब प्रात सध्या करते समय हम उपस्थान मत्रो का उच्चारण करते हैं तब तक पूर्व दिशा मे भगवान भास्कर उदय होते दिखाई पडते है। इस पवित्र तथा स्फूर्तिदायिनी वेला मे सध्या करने वाला उपासक आकाश मे उदय होते हुए सूर्य को देखता है तो अपने हृदयाकाश मे दिव्य प्रकाशयुक्त परमात्मा के दिव्यालोक को अनुभव कर कह उठता है –

उद्वय समसस्परि स्व पश्यन्त उत्तरम।
देव देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।।

अधकार का निवारण करने वाला यह ज्योतिपुञ्ज सूर्य जहा प्राची दिशा मे उदय हुआ है वहा देवो का देव परमात्मा रूपी सूर्य मेरे मानस क्षितिज पर उदय हुआ है और उससे निसृत ज्ञान रश्मियो की ऊष्मा को मै अन्त करण मे अनुभव कर रहा हू। वेदो के अनेक रूपो मे ऊषा की महिमा वर्णित हुई है। यो जागार तमृच कमयन्ते जैसे मत्रो मे स्पष्ट कहा गया है कि जो जागता है जल्दी उठता है ऋचाये उसकी कामना करती है। सामादि अन्य वेदो का ज्ञान भी ऊषा काल मे उठकर स्वाध्याय मे प्रवृत्त होने वाले व्यक्ति के लिए ही सुलभ है। आलसी प्रमादी दीर्घसूत्री तथा देर तक चारपाई पर मुह ढक कर सोनेवाला सुख सौभाग्य और आरोग्य से वचित रहता है। जल्दी उठकर वायुसेवनार्थ भ्रमण करना चाहिए। इस सम्बन्ध मे वेद का कहना है कि पर्वतो की उपत्यकाओ तथा नदियो के सगम स्थल पर प्राकृतिक दृश्यो की छटा अवर्णनीय होती है। यहा विचरण करने से विचारशील लोग अपनी बुद्धियो का विकास करते हैं – धिया विप्रो अजायत।

शरीर को स्वस्थ और रोगरहित रखने के लिए शुद्ध पुष्टिदायक रोगनाशक अन्न तथा स्वच्छ जल का सेवन आवश्यक है। भोजन मे गाय के दूध का प्रयोग अवश्य करना चाहिए। वेदो मे गोमहिमा के अनेक मत्र आये हैं। गाय की महत्ता का वर्णन करते हुए वेद ने उसे रुद्रसज्ञक ब्रह्मचारियो की माता वसु सज्ञको की पुत्री तथा आदित्यो की माता कहा है। यह अमृत का कुण्ड है तथा इस निष्पाप एव अदति तुल्य गो की हिंसा को महान् पाप कहा गया है। एक अन्य मत्र मे गाय को सम्बोधन कर कहा गया है कि आप कृश और दुर्बल व्यक्ति को पुष्ट तथा श्री सम्पन्न बनाती हो। यजुर्वेद के रुद्राध्यायो मे मनुष्य के भोजन के लिए उपयोगी अन्नो तथा अन्य दालो आदि खाद्य पदार्थो की लम्बी लम्बी तालिकाए प्रस्तुत की गई है।

अन्न और भोजन के बारे मे वेदो मे अनेक जरूरी निर्देश मिलते हैं। अन्नपते अन्नस्य नो धेहि इस मत्र मे अन्न प्रदाता परमात्मा से प्रार्थना की है कि आप हमे ऐसा अन्न प्रदान करे जो रोगरहित तथा बलबर्द्धक हो। यह अन्न आप हम द्विपादो तथा चतुष्पादो (मनुष्यो और चौपायो) सभी के लिए प्राप्त कराये। भोजन के बारे मे एक अन्य मत्र कहता है – 'केवलाघो भवति केवलादी अकेला खानेवाला अन्यो को भोजन से वचित रखनेवाला तो पाप का ही भक्षण करता है। वेद के इस कथन की पुष्टि गीता मे श्रीकृष्ण ने की है तथा कहा है – जो अपने लिए खाता है वह पाप का ही भक्षण करता है। वैदिक सस्कृति मे बलि वैश्वदेव तथा अतिथि यज्ञ का विधान है। श्वान कुत्ते कौवे गौ आदि प्राणियो को खिलाना अपना धर्म समझते हैं तथा आहार और अन्न की शुद्धता के अनेक निर्देश वेदोत्तर ग्रन्थो मे भी पाये जाते हैं। उपनिषदो मे आहारशुद्धौ सत्व शुद्धि सत्व शुद्धौ ध्रुवा स्मृति । आदि वाक्य आते है जिनमे सात्विक आहार से मन की शुद्धि फलत स्मृति की ध्रुवता बताई गई है। अन्न की निदा करना अनिष्टदायक कहा गया है। अन्न की तरह जल का रोगनाशक तथा कल्याणकारी रूप वेदो मे वर्णित हुआ है – 'आपो हिष्ठा मयोभुव स्तान ऊर्जेदधातन। वात आ वातु भेषज तथा मधुवाता ऋतायते आदि मत्रो मे वायु की शुद्धता तथा उसकी रोगनाशाक शक्ति की ओर सकेत किया गया है। वेद मे आया रात्रि सूक्त मनुष्य की दीर्घ निद्रा लेने तथा शान्त अवस्था मे शयन करने की सीख देता है। उपनिषद् मे जहा पचकोशो का उल्लेख हुआ है वहा सर्वप्रथम अन्नमय कोश की चर्चा आई जो मुख्यत शरीर से सम्बन्ध रखता है। स्वस्थ श्वासक्रिया की विवेचना प्राण तत्त्व विवेचन तथा प्राणायाम प्रक्रिया मे आती है। वेदो ने तो प्राण को परमात्मा का वाचक माना है – अतएव प्राण (वेदान्त सूत्र) तथा प्राणाय नमो (अथर्ववेद) आदि।

अथर्ववेद मे रोगो रोगो के कारणो उनके निवारण के उपायो रोगनाशक औषधियो नाना वनस्पतियो तथा रोग दूर करनेवाले वैद्यो (भिषक) आदि की विस्तृत चर्चा मिलती है। ये सभी प्रकरण मनुष्य के शारीरिक स्वास्थ्य से ही जुडे हैं। मनोवैज्ञानिक चिकित्सा के सकेत भी वेदो मे पाये जाते हैं। 'यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैव आदि यजुर्मन्त्र मन की शक्तियो का वर्णन करते हैं। स्पर्शपूर्वक रोग निवारण के सकेत भी अथर्ववेद के अय मे भगवान हस्त अय मे भगवत्तर आदि मे देखे जा सकते है।

– ***नन्दन वन***
जोधपुर

'सरल गीता ज्ञान' का भव्य लोकार्पण

आर्यसमाज सी ब्लाक जनकपुरी नई देल्ली ने श्रावणी उपाकर्म के उपलक्ष्य र स्वाध्याय प्रेमिओ के लिए डॉ० महेश वेद्यालकार द्वारा लिखी सरल गीता ज्ञान पुस्तक का समारोह पूर्वक विमोचन कराया। पुस्तक का विमोचन स्वामी राघवानन्द जी और स्वामी सत्यपति जी महाराज ने किया। इस पुस्तक को प्रकाशित व वितरित करने के लए आर्यसमाज सनातन धर्म मन्दिरो तथा आर्यसमाज की प्रशसा की। आर्य समाज में सनातन धर्म सुरक्षित है। महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की विचारधारा ही ससार को सुख शान्ति का मार्ग दिखा सकती है। श्रीमद्भागवद्गीता हिन्दु धर्म की धरोहर है। आज सनातन धर्म और आर्यसमाज के लोगों को मिल बैठने की जरूरत है। यह सरल गीता ज्ञान दोनो को मिलाने की कडी है। मै श्री महेश विद्यालकार को पुन बधाई व शुभकामनाए



'सरल गीता ज्ञान' का विमोचन करते हुए स्वामी सत्यपति जी।

गीता प्रेमियो ने दिल खोलकर सहयोग किया है। उसी का परिणाम है कि २५ हजार कापिया छपवाकर आर्यसमाज सी ब्लॉक जनकपुरी ने नि शुल्क बाटने का सकल्प किया है। इससे पहले भी आर्यसमाज सी ब्लॉक जनकपुरी महत्वपूर्ण छोटी छोटी पुस्तके प्रचारार्थ छपवाता और बाटता रहा है। इस शुभ कार्य के लिए मैं प्राय डॉ० महेश विद्यालकार को कष्ट देता रहा हू और उन्होने इस कार्य के लिए सहर्ष सहयोग दिया है जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। सत्साहित्य प्रचार का महत्वपूर्ण आधार होता है। सरल गीता ज्ञान मे वैदिक चिन्तन का ही प्रतिपादन किया गया है। हमे आशा और विश्वास है कि इस पुस्तक से पाठको को परमात्मा आत्मा प्रकृति जीवन मृत्यु, मन बुद्धि इन्द्रिय सुख शान्ति आदि का सच्चा बोध होगा।

इस अवसर पर सनातन धर्म सभा के प्रधान स्वामी राघवानन्द जी महाराज ने 'सरल गीता ज्ञान पुस्तक की सरल शैली विचार प्रस्तुति ज्ञान चिन्तन आदि की प्रशसा की। गीता के गूढ ज्ञान को सीधे सादे सरल शब्दों में प्रस्तुत करना इस पुस्तक की महत्वपूर्ण विशेषता है। मैंने गीता पर इससे पहले इतनी सरल कोई पुस्तक नहीं देखी है। इसमे किसी प्रकार का कोई विवाद नहीं उठाया गया है। जो जीवन और जगत के लिए महत्वपूर्ण दैनिक उपयोगी बाते हैं उन्हीं को रखा है। मैं इस पुस्तक के लेखक डॉ० महेश विद्यालकार को बधाई और शुभाशीर्वाद देता हू। ऐसे धार्मिक साहित्य की मानव समाज को बडी आवश्यकता है जो भूले भटके मानव को सन्मार्ग दिखा सके। उन्होने कहा मुझे विश्वास है इस पुस्तक से आम आदमी को जीवन दृष्टि मिलेगी। जीवन व विचारो मे परिवर्तन आयेगा। इसे पढकर मनुष्य आत्मा परमात्मा से जुडेगा। सनातन धर्म सभा के महामन्त्री और दिल्ली सरकार मे विधायक डा० रमाकान्त गोस्वामी जी ने भी पुस्तक व देता हू। उन्होने जो गीता ज्ञान का सारतत्व इस सरल पुस्तक मे सकलित कर दिया है। विद्यालकार जी के लिए मेरे मन मे प्यार और आदर है। इसी भावना के कारण सारे कार्यक्रम छोडकर आया हू। मे समझता हू जो भी इस पुस्तक को एक बार पढना आरम्भ करेगा वह निश्चय ही अन्त तक पढेगा यही इसकी सबसे बडी विशेषता है। श्री पृथ्वीराज साहनी अध्यक्ष स्थाई समिति नगर निगम कर्नल दलबीर सिह जी जोकि सभा के अध्यक्ष थे और जिन्होने इस पुस्तक के प्रसार के लिए ११०००/– रुपये दान दिया आदि ने भी अपने विचार रखे।

श्री महेश विद्यालकार ने सक्षिप्त शब्दो मे गीता ज्ञान की व्यवहारिकता उपयोगिता और सार्थकता पर विचार रखे। उन्होने सभी के प्रति कृतज्ञता आभार तथा धन्यवाद प्रकट किया। उन्होने कहा आप सभी का स्नेह अपनत्व और मान ही मेरे लिए बहुत बडा सम्मान है। मैं तो ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज का भक्त हू। इन्हीं से मुझे बल शक्ति व प्रेरणा मिलती है। जो मैं सामान्य बुद्धि सेसमझा पुन पढा और अनुभव किया वही इस पुस्तक मे लिखने का प्रयास किया है। आर्यसमाज ने विद्यालकार जी को ५१००/– (इक्यावन सौ रुपयो) से सम्मानित किया। उन्होने कृतज्ञभाव से लौटते हुए कहा – यह राशि साहित्य प्रचार मे लगाओ। मेरे पर प्रभु की बडी कृपा है। म नो स्वामी दयानन्द की कृपा से खूब मालामाल हू। आपका प्यार मेरा बहुत बडा सम्मान है।

आर्यसमाज के सभी सदस्यो अधिकारियो व अन्य सगठन के लोगो ने इस कार्यक्रम की प्रशसा की। सभी की राय थी ऐसे कार्यक्रम होते रहने चाहिए। सभा ने मिलकर प्रेम से प्रसाद ग्रहण किया। मन्त्री श्री रमेशचन्द जी एव सयोजक ब्रह्मदेव उक्खल ने अध्यक्ष मुख्य अतिथि और उपस्थित सज्जनो का धन्यवाद किया।

– सोमदत्त महाजन

ईश्वर सच्चे उपासक की सदा रक्षा करता है

आर्यसमाज इटारसी के तत्वावधान मे वैदिक सप्ताह के अन्तर्गत यज्ञ के कार्यक्रम का लोगो ने लाभ उठाया। प० शकर सिह आर्य ने उपदेश मे कहा – ईश्वर सच्चे उपासक की सदा रक्षा करता है तथा हमे ईश्वर का ध्यान करने से ६ र्म की व सस्कार की उपलब्धि प्राप्त हो सकती है। उन्होने कहा आज हमारे परिवारो मे सस्कार की जरूरत है। सस्कार हमे अच्छे विद्वानो से धार्मिक पुस्तको के अध्ययन से अच्छे पुरुषो का सग करने से प्राप्त होता है। जो इनके अनुकूल नही चलता वो अपने जीवन मे दु खो को व कष्टो को भोगता रहता है। इसलिए हमे धार्मिक विद्वानो के उपदेश धार्मिक पुस्तको का अध्ययन व परोपकार के प्रति भावना अच्छे सस्कारो के प्रति सजग रहना होगा माता पिता को अपने बच्चो मे अच्छे सस्कारो की भावना की ज्योति जलानी होगी। हमे इस खारे ससार रूपी समुद्र से जल बनकर आकाश मे पवित्र होकर पर्जन्यो का ताप धोना होगा ईश्वर जीव और प्रकति अमर है इसलिए हमे अपने जीवन मे सस्कारो का प्रकाश लाना जरूरी है। इस यज्ञ कार्यक्रम का लाभ निम्न परिवारो ने उठाया जिनमे श्रीमान नवनीत जी कोहली श्रीमान कुलभूषण जी गाधी श्रीमान नवीन श्र्मा आदि परिवारो ने यज्ञ मे आहुति डालकर ईश्वर के प्रति आस्था का परिचय दिया।

प० सुदर्शन देव आर्य
कोषाध्यक्ष प्रवक्ता आर्य समाज
इटारसी

शोक प्रस्ताव

झारखण्ड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा राची के वरिष्ठ उप प्रधान श्री रामेश्वर प्रसाद जायसवाल (हजारीबाग) का असामयिक निधन हो गया है। उनका अन्तिम सस्कार हजारीबाग मे वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ। आपकी उम्र ८५ वर्ष थी और आप हजारीबाग जिला आर्य सभा और श्री रामेश्वर आर्य विद्यालय के सस्थापक प्रधान थे। आपने अपने जीवनकाल मे निजी व्यय से हजारीबाग और उसके आस पास आर्य समाज के विशाल कार्यक्रम सम्पन्न कराये थे। झारखण्ड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा राची ने एक प्रस्ताव मे श्री जायसवाल जी के निधन को आर्य समाज के लिए गहरी क्षति बतलाया है। सभा मे दिवगत आत्मा की सदगति एव शोक सन्तप्त परिवार को दु ख मे धैर्य प्रदान करने के लिए परमात्मा से प्रार्थना की गयी।

✡✡✡

७ अक्टूबर २००१ को गोहत्या बन्द कराने हेतु राष्ट्रीय गोरक्षा महासम्मेलन

हरयाणा राज्य गोशाला सघ व वेद प्रचार मण्डल मेवात द्वारा गोहत्या बन्द करने हेतु कानूनी प्रावधान कराने के लिए पुन्हाना जिला गुडगाव मे राष्ट्रीय गोरक्षा महासम्मेलन (गोरक्षा महाकुम्भ) का आयोजन किया गया है।

भारत वर्ष के सभी सम्प्रदायो अखाडो समाजो आचार्यो पीठाधीश्वरो महन्तो शकराचार्यों को हरियाणा के मेवात क्षेत्र से गोमाता की निर्मम हत्या का कलक मिटाने के लिए हरियाणा राज्य गोशाला सघ व वेद प्रचार मण्डल मेवात द्वारा आमन्त्रित किया जाता है।

हे देश वासियो ! हम सब मिलकर ऐसा उपाय करे जिससे आर्यवर्त्त की पवित्र भूमि ऋाष मूनियो की तपस्थली हरियाणाा के मेवात क्षेत्र से गोहत्या का कलक सदा सदा के लिए मिट जाए। हमारी भावना आस्था श्रद्धा की प्रतीक गोमाता की रक्षा हेतु अपनी शक्ति सामर्थ्य अनुसार सहयोग करते हुए अधिक से अधिक सख्या मे महासम्मेलन मे पधार कर पुण्य लाभ प्राप्त करे। पधारने वाले सभी गोभक्त अपने अपने सगठन के बैनर सहित गोमाता की जय बोलते हुए ७ अक्टूबर २००१ को पुन्हाना ६ बजे प्रात काल पधारे।

निवेदक – हरियाणा राज्य गोशाला सघ व वेद प्रचार मण्डल मेवात

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 2 9 2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2001
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2001 in NDPSo on 30/31 8 2001

पुस्तक समीक्षा — सरस्वती साहित्य संस्थान द्वारा प्रकाशित

अनोखी पुस्तकें

१ प्रथम पुष्प — ऋषि का जादू

पृष्ठ २० मूल्य ३ रुपये लेखक यशपाल आर्यबन्धु

अज्ञान अविद्या पाखण्ड की वेडियो को काटा विचार से उत्पन्न कर्मो द्वारा क्रान्ति महर्षि से पूर्व तर्कहीन अवैज्ञानिक धारणाये।

जादू था कि तिलस्म तेरी जुबान मे।
कायल हुए क्या बात है तेरी जुबान मे।।

२ द्वितीय पुष्प — आर्यसमाज का आदर्श

पृष्ठ ३२ मूल्य लेखक महेश विद्यालकार

सत्य के पुजारी ऋषि दयानन्द ने असत्य से समझौता न कर मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का आदर्श व उनका सन्देश और योगीराज श्री कृष्ण चन्द्र जी का सन्देश धर्म सस्थापनार्थय जो दिया वह बाबा वाक्य प्रमाणम है इनके वास्तविक स्वरूप को जन जन तक दिया — जिसे पढना चाहिए। इससे हमारा गौरव बढेगा।

३ तृतीय पुष्प — वेद मे क्या है ?

पृष्ठ २४ मूल्य ३ रुपये लेखक वीरेन्द्र गुप्त

ऋषि से पूर्व ईश्वरीय ज्ञान को ब्रह्म पुराणादि ग्रन्थो द्वारा मानवीय खोज मानते थे और अपनी अपनी ढपली बजाकर अपने ज्ञान को सत्य सिद्ध कर रहे थे। ऋषिवर ने इस रहस्य को जानकर मानने को सही दिशा दी। वेद क्या हैं इसमे क्या है दुरित को भगाकर भद्र का आश्रय लिया परिणामत दारा मोक्षमूलर आदि ने ऋषि के वद धर्म का अनुसरण किया। वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है इसे इस पुस्तक को पढकर जाने।

४ चतुर्थ पुष्प — गुणातीत जीवात्मा और इसका बन्धयोग

पृष्ठ २४ मूल्य ४ रुपए लेखक श्री ओमप्रकाश आर्य

महर्षि कपिल ने साख्य दर्शन मे आत्मा के सम्बन्ध मे इसके स्वरूप को दर्शाया है आत्मा शुद्ध स्वरूप है विकार नहीं प्रकृति अशुद्ध परिणामिनी है। आत्मा प्रकृति से प्रभावित हाता है। जीवात्मा मे जो विशेषताए हैं वहा बुनियादी कमी भी है। यह स्वरूप से अल्पज्ञ भी है। दो मार्ग हैं प्रेय और श्रेय। इसे समझने से गुणातीत जीवात्मा और इसके बन्ध योग को जानने से पुस्तक का रहस्य जाना जा सकेगा।

५ पचम पुष्प — अथर्ववेद मे वनस्पति

पृष्ठ २६ मूल्य ३ रुपए लेखिका डॉ० वेदवती वैदिक

वेदो मे खोजने से पता चला कि इसमे आयुर्वेद विषयक ज्ञान भी है। मान्या बहन श्रीमती वेदवती जी ने स्वाध्यायपरत हो इस विषय पर गहन अध्ययन कर — मनुष्य जीवन और वनस्पति इनका उद्भव और विकास प्रमाणिक औषधिया और इनका वर्गीकरण — द्रव्य गुण विज्ञान इनके अवयव नामकरण — शक्तिया चेतना के ज्ञान से वेदो मे आयुर्वेद की खोज की है वेदवती जी ने सराहनीय कार्य कर वेदो मे खोजा है।

६ षष्ठ पुष्प भारतीय इतिहास मे मूर्तिपूजा

पृष्ठ २६ मूल्य ३ रुपए लेखक प० सूर्यवली पाण्डेय

भारतीय इतिहास मे जड पूजा का अपना ही महत्व है महर्षि दयानन्द ने मन्दिरों मे स्थापित महापुरुषो की मूर्त्तियो को भगवान मानकर उनकी पूजा का विरोध किया है। मूर्तिपूजा महात्मा बुद्ध से प्रारम्भ होती है।

लेखक ने सनातन वैदिक धर्म के प्रचार हेतु मूर्त्ति पूजा की भ्रान्ति का सफल निवारण किया है।

श्री रवीन्द्र मेहता सस्थापक सरस्वती साहित्य सस्था जागृति इन्क्लेव दिल्ली के द्वारा लघु पुस्तके देकर जन मानस मे अच्छा ज्ञान का प्रसार किया है।

मुझे पूर्ण विश्वास है लेखका के अनूठे प्रयास की पाठकगण प्रशसा करते हुए — प्रकाशक को बधाई भी देगे।

— डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री

सामाजिक एवं धार्मिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ

जुआ जिला सोनीपत मे महर्षि दयानन्द द्वार का शिलान्यास

गत दिनो आर्यसमाज मन्दिर जिला सोनीपत (हरियाणा) मे महर्षि दयानन्द द्वार का शिलान्यास प्रो० राजसिह छिकारा (अमेरिका वासी) की धर्म पत्नी श्रीमती कमला जी ने किया और इसके निर्माण हेतु ५१ हजार रुपए का दान दिया। इससे पूर्व आचार्य विश्वानन्द गुरुकुल देवडू (सोनीपत) ने अपने ब्रह्मचारियो के साथ यज्ञ करवाया। ग्राम के दोनो विद्यालयो के छात्र तथा छात्राओ ने वैदिक धर्म पालन करने के लिए आहुतिया डाली। परीक्षाओ मे उच्च स्थान प्राप्त करने वालो को वैदिक साहित्य भेट किया गया।



शिलान्यास के अवसर पर श्री वेदसिह आर्य उपप्रधान श्री केदारसिह आर्य प्रधान श्री खजानसिह आर्य मन्त्री श्रीमती सत्यवती आर्या मन्त्रिणी स्त्री आर्यसमाज श्रीमती कमलाजी श्री जितेन्द्र आर्य प्रधानाचार्य ब्र० नमन तथा धर्मपाल आर्य आदि खडे हैं।

श्री छाजू राम शर्मा जी की पुस्तक का विमोचन

१९—८ २००१ की सायकाल श्री बाल कृष्ण जी के निवास स्थान मॉडल टाउन यमुनानगर मे केन्द्रीय आर्य सभा यमुना नगर की बैठक श्री केशव दास आर्य की प्रधानता मे हुई। लगभग यमुना निगर जिला के सभी आर्यसमाजो के २०० सदस्यो स्त्री पुरुष और मक्कड जी के सम्बन्धी पडोसी आए। श्री मदन लाल वासुदेव प्रधान आर्यसमाज मॉडल टाउन यमुनागर ने श्री छाजू राम शर्मा वैद्य शास्त्री पुरोहित उपदेशक की लिखी पुस्तक आत्म चिन्तन का वैज्ञानिक आधार का विमोचन किया और कहा कि लेखनी का कार्य अवश्य होना चाहिए। श्री इन्द्रदेव जीत श्री धमेन्द्र शास्त्री और प्रकाशक मक्कड जी ने शर्मा जी के पिछले ४० वर्ष में भारत की आर्य समाजो मे बतोर पुरोहित और उपदेशक के रूप मे सराहा।

वर की आवश्यकता

एम० ए० बी० एड० पी० एच० डी० (अर्थशास्त्र) अविवाहिता युवती के लिए योग्य शुद्ध शाकाहारी निर्व्यसनी स्वस्थ जीविकोपार्जन मे समर्थ वर की आवश्यकता है। लडकी क्षत्रिय कुलोत्पन्न है। आयु ३५ वर्ष रग गेहुआ कद पाच फुट तीन इच है। गृह कार्यों मे दक्ष है। शिक्षा क्षेत्र में कार्यरत युवक को प्राथमिकता दी जाएगी। निस्सन्तान विधुर भी स्वीकार होगा। दहेज के इच्छुक पत्र व्यवहार न करें।

सम्पर्क सूत्र — व्यवस्थापक
वैदिक सस्थान नजीबाबाद
जिला बिजनौर (उ०प्र०)

धरना एवं आम सभा

दिल्ली मिण्टो रोड मे स्थित आर्य समाज मदिर को केन्द्र सरकार के शहरी विकास मत्री श्री जगमोहन जी के आदेश पर ध्वस्त कर दिया गया है। केन्द्र सरकार के इस कुकृत्य का विरोध आर्यसमाज सारे देश मे आन्दोलन के रूप मे कर रहा है। इसी क्रम मे आर्यसमाज बिलासपुर ने विभिन्न समाज सेवी सगठना के सहयोग से एक दिवसीय धरना एव प्रधान मत्री को ज्ञापन प्रेषित किया।

आन्दोलन के सयोजक श्री प्रमोद श्रीवास्तव जी ने आर्यसमाज के आन्दोलनो की जानकारी देते हुए हैदराबाद आदोलन तथा पजाब के हिन्दी आन्दोलन की याद ताजा कराई। कार्यक्रम के अत मे प्रधान मन्त्री को प्रेषित ज्ञापन को पढा गया। कार्यक्रम मे आर्यसमाज बिलासपुर के मत्री श्री सुधीर गुप्ता ने आभार प्रकट किया।

विभिन्न सामाजिक सगठन प्रमुखो ने अपने विचार प्रकट किए —

विश्व हिन्दू परिषद प्रदेश सहमत्री डॉ० द्वारिका प्रसाद अग्रवाल प्रातीय धर्माचार्य सभा के प्रमुख बजरग रजक सिन्धु सभा के प्रान्तीय सरक्षक डॉ० वे० रे० तिर्थानी बजरग दल के विभाग प्रमुख ओमप्रकाश पाण्डेय गायत्री परिवार के गौतम सिह ठाकुर श्री विजय नारायण आर्य महिला आर्य समाज की अध्यक्ष श्रीमती कुमुद वर्मा डॉ० विष्णुकान्त वर्मा तथा वरिष्ठ पत्रकार नन्द किशोर शुक्ल सहित अनेको सगठनो के प्रतिनिधियो ने केन्द्र सरकार के इस कुकृत्य की कठोर शब्दो मे निन्दा की।

— सुदर्शन जायसवाल
सहमन्त्री आर्यसमाज, बिलासपुर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली—२ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली—२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१ ३२६०६८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा सहायक प्रशासक। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र



वर्ष ४० अक २२ ६ सितम्बर से १६ सितम्बर २००१ तक दयानन्दाब्द १७८ सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०२ सम्वत २०५८ प्र० आ० का० ६
एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

आत्मा स्वरूप से देवता है

जम्मू कश्मीर के वैदिक विद्वान् डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री की प्रवचन श्रृंखला दिल्ली में सम्पन्न

जम्मू कश्मीर प्रान्त के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री ने विगत माह लगभग एक सप्ताह तक दिल्ली की आर्यजनता को आध्यात्मिक प्रवचनो से मन्त्र मुग्ध किया। उन्हे शालीमारबाग आर्यसमाज की तरफ से एक सप्ताह के लिए आमन्त्रित किया गया था।

डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री ने नैतिक चारित्रिक और आध्यात्मिक उत्थान से सम्बन्धित वैदिक विचार लोकप्रिय शैली मे प्रस्तुत करते हुए आर्य जनता को मूलत इस भावना से ओत प्रोत कर दिया कि **आत्मा स्वरूप से देवता है।**

श्री योगेन्द्र कुमार ने कहा कि आत्मा का सीधा सम्बन्ध परमात्मा से होता है और परमात्मा सृष्टि को उत्पन्न करने वाला और पालन करने वाला है। यदि मनुष्य अपनी आत्मा को पहचान ले तो उसे परमात्मा को पहचानने मे भी देर नहीं लगेगी। और जब परमात्मा से इस प्रकार से सम्बन्ध स्थापित हो जाएगा तो सारी दुनिया और सृष्टि की पहचान अच्छे-बुरे की पहचान लाभ-हानि की पहचान उत्थान-पतन की भी पहचान हो जाती है ?

आत्मा के देवता होने के सिद्धान्त को दूसरे शब्दो मे कहा जा सकता है कि आत्मा स्वरूप से राक्षस कदापि नहीं है।

ईश्वर की रचना मे दिव्यता है। ईश्वर ने जिस सृष्टि का निर्माण किया है वह भी देवता स्वरूप है। इस सृष्टि के कुछ पहलुओ का बारीकी से अध्ययन करे तो पता लगता है कि ये ईश्वर द्वारा निर्मित पदार्थ हमे सदैव कुछ न कुछ दे ही रहे हैं और प्रतिफल मे हमसे टैक्स फीस दान अनुदान आदि के नाम पर कुछ भी नही ले रहे। जो अपनी शक्ति अपने गुण और अपनी योग्यता या अपनी विशेषताओ से दूसरो को लाभ पहुचाता है और स्वय इन विशेषताओ के कारण चमकता है उसी की लोग आराधना करते है। और वही देवता कहलाता है। सूय चन्द्रमा तारे पृथ्वी वायु जल तथा अन्य बहुत से सृष्टि के पहलू हमे अपनी शक्ति और गुण देते हुए कभी थकते नही और उनके भण्डार कभी खाली नही होते। ये सब देवता है यदि मनुष्य इनसे प्रेरणा ले तो उसे अपना मूल स्वरूप स्वाभाविक रूप से समझ आ जाएगा कि वह ईश्वर की रचना है। ईश्वर की रचना सदैव दिव्य ही होती है। ईश्वर देवो का देव है। अत उसे महादेव कहा जाता है।

यदि मनुष्य देवता है तो फिर वह राक्षस क्यो बन जाता है । इस प्रश्न का उत्तर प्रस्तुत करते हुए डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री ने कहा कि एक शब्द है – सरस यदि इसके अक्षरो को उल्टा जाए तो भी सरस ही रहता है। इसके विपरीत एक शब्द है – साक्षर जिसका अर्थ होता है अक्षरो की जानकारी रखने वाला अर्थात पढा लिखा जानकार व्यक्ति। यदि इस शब्द के अक्षरो को उलटाया जाए तो बनता है राक्षस अर्थात जब पढ लिख कर वस्तुस्थिति की जानकारी के बावजूद व्यक्ति समाज विरोधी कार्य करने लगता है जिससे दूसरो को दुख और पीडा पहुचती है तो वह स्वत ही राक्षसो की श्रेणी मे आ जाता है। जिस प्रकार विचारो की उन्नति पर समाज न व्यक्ति को देवता माना उसके विपरीत विचारो के पतन से व्यक्ति को उसका समाज राक्षस मान लेता है। जिस प्रकार अच्छे व्यक्तियो के सग से दिव्य विचारो मे वृद्धि होती है इसके विपरीत बुरे सग से राक्षसी विचार बढते है।

वेद मार्ग पर चलना देवता होने की निशानी है। वेदमार्ग के विरुद्ध आचरण राक्षस होने की पहचान है। ईश्वर ने हमे वेद ज्ञान के माध्यम से बडे स्पष्ट शब्दो मे हर अवसर हर परिस्थिति आचरण और व्यवहार के लिए क्या करे क्या न करे उपदेश दिए हैं।

डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री के इन प्रवचनो की सर्वत्र सराहना हुई। प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा० महेश विद्यालकार जो आर्यसमाज शालीमार बाग की ही सदस्य हैं इन सब प्रवचनो मे उपस्थित रहे। वैदिक लाईट के सम्पादक श्री विमल वधावन एडवोकेट ने भी इन प्रवचनो से कुछ भाग का लाभ उठाया।

✡✡✡

कै० देवरत्न आर्य समर्पण शोध सस्थान के अध्यक्ष (प्रशासन) तथा स्वामी सत्यम् जी अध्यक्ष (शिक्षण) नियुक्त

समस्त आर्यजनता को सूचित किया जाता है कि १ सितम्बर २००१ से समर्पण शोध सस्थान श्री मोहनलाल जी मोहित मारीशस निवासी द्वारा स्थापित अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक अनुसधान केन्द्र करजत (महाराष्ट्र) को समर्पित करता हू। यह सस्थान इस अनुसधान केन्द्र की शाखा के रूप मे कार्य करेगा जिसके अध्यक्ष (प्रशासन) देवरत्न आर्य एव अध्यक्ष (शिक्षण) स्वामी सत्यम जी हैं। समर्पण शोध सस्थान का सम्पूर्ण स्वामित्व मै अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक अनुसधान केन्द्र को सौपता हू। – **स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती**

मॉरीशस मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन

आर्यसभा मारीशस के तत्वावधान मे २२ से २५ नवम्बर २००१ की तिथियो मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। सभा के मन्त्री श्री गगु ने सूचित किया है कि इस सम्मेलन मे मातृ शक्ति के इतिहास और भविष्य के उत्थान को दृष्टि मे रखकर वक्ताओ को आमन्त्रित किया गया है। सम्मेलन का मुख्य विषय – **नारी सृजन की आधारशिला** रखा गया है। यह सम्मेलन इन्दिरा गाधी भारतीय सस्कृति केन्द्र फैनिक्स मे आयोजित होगा। इसके अतिरिक्त आर्य परिवार सम्मेलन बेल मार्ग समुद्र तट पर आयोजित होगा।

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

सह सम्पादक
विमल वधावन एडवोकेट

चिरस्मरणीय व्यक्तित्व

कीर्तिर्यस्य स जीवति

वैदिक ज्ञान की अनूठी प्रतिभा स्वामी वेदानन्द तीर्थ

– सुखदेव व्यास

सन्यास लेने के बाद व्यक्ति का पिछला सम्पूर्ण इतिहास लुप्त हो जाता है पिछला वैभव कितना ही हो सभी को छोडना पडता है मात्र विद्या धन और अनुभव ही उसके पास रह जाता है। आर्यसमाज में अनेक ऐसे सन्त हुए है जिन्होने अपना पिछला इतिहास नहीं बताया। आज भारतीय इतिहास मे ऐसे ऐसे महापुरुष हुए हैं जिन्हे सब जानते हैं लेकिन उनके माता पिता कौन थे कोई नहीं जानता पतजनि कणाद कपिल याज्ञवल्क्य लोमस नारद शिव विष्णु आदि अनेक हस्तिया है जिनका इतिहास मे उल्लेख नहीं हो पाया है लकिन इतना तो है कि वे अपने साहित्य और दर्शन के कारण जीवित है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी अपने पिछले जीवन के बारे मे कुछ भी सकेत नहीं दिए थे लेकिन लेखराम जैसे जिज्ञासुओ ने उनके जीवन को पूरी तरह से खोज निकाला।

वैसे ही आर्यसमाज के एक सन्यासी जो वैदिक ज्ञान की अनूठी प्रतिभा है का नाम है स्वामी वेदानन्द तीर्थ। जिन्होने अपने जीवन के विषय मे कुछ नहीं बताया मात्र इतना ही उल्लेख मिला है कि स्वामी वेदानन्द जी का जन्म सन १८९२ मे उज्जैन म०प्र० मे एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवार मे हुआ था बाल्यकाल मे तीन वर्ष से नेत्र ज्योति से वचित रहना पडा परन्तु किसी ग्रामीण वैद्य की औषधि से नेत्र ज्योति पुन प्राप्त हो गयी।

वेदानन्द जी का बचपन का नाम यशवन्त था। आप कई भाषाओ और विषया के जानकार थे। उज्जैन छोडने के बाद काशी मुलतान लाहौर आदि कई स्थानो पर अध्ययन किया। गुरुकुल कागडी और ज्वालापुर मे भी रहे। महात्मा मुशीराम स्वामी श्रद्धानन्द जी के विशेष आग्रह करने पर आप राजा शिवप्रसाद सितारा–ए–हिन्द मे ब्र० यशवन्त की सेवाए लेकर अपने निजी पुस्तकालय को व्यवस्थित व उन्नत किया। आपका हस्त लेख अत्यन्त सुन्दर था। लिखने का इतना अभ्यास था कि लिखे हुए को काटना नहीं पडता था।

स्वामी वेदानन्द तीर्थ की महर्षि दयानन्द सरस्वती और वेदो पर अटूट श्रद्धा थी। उन्होने सत्यार्थ प्रकाश की टिप्पणिया लिखते समय इतनी मेहनत की कि उन्हे कई दिनो तक मटर खाकर ही काम चलाना पडा था। स्वाध्यायसन्दोह जिसमे चुने हुए वेद मन्त्रो के अर्थ और व्याख्या आज भी प्रत्येक आर्यसमाज के सत्सग के अवसर पर पढी जाती है। वे स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन म आए परिवर्तन की घटना से अत्यन्त प्रभावित हुए थे।


स्वामी वेदानन्द जी

उज्जैन के सन्यासी वेदानन्द जी का स्वाध्याय गहन व व्यापक था। वे संस्कृत हिन्दी अग्रेजी अरबी फारसी आदि के कुशल लेखक थे। आर्य समाज के उपदेशक महाविद्यालय लाहौर के मुख्याध्यापक व आचार्य रहे। वे अपने छात्रो को पुत्रवत प्यार देते थे। और उन पर सब कुछ लुटा देते थे। देश मे उनके अनेक सुयोग्य शिष्य आज भी विद्यमान है।

स्वामी जी की पुस्तक राष्ट्र रक्षा व वैदिक साधन पुस्तक की भूमिका डा० भीमराव अम्बेडकर ने लिखी थी। उसी के साथ स्वाध्याय सग्रह स्वाध्याय सन्दोह स्वाध्याय सुमन कई उत्तम ग्रन्थ लिखकर कीर्ति प्राप्त की थी।

इन दिनो उज्जैन मे सन्यासी वेदानन्द जैसे विद्वान देखने को नही मिलते है। आपके पास मे पुस्तको का एक विशाल सग्रह था जो डिगा पाश्चिमी पजाब म रह गया आज के मूल्य मे वे पुस्तके लगभग डेढ करोड रुपये की होगी।

आपने हिन्दी उर्दू मे कई छोटी छोटी पुस्तके लिखी स्वामी दर्शनानन्द कृत उपनिषद् प्रकाश का प्रामाणिक व उत्तम हिन्दी अनुवाद किया था।

स्वामी वेदानन्द जी को वेदो के सहस्त्रो सूक्तिया कठस्थ थी। धर्म चर्चा करते हुए व प्रवचन देते हुए सहज रीति से वेदो के प्रमाण दिया करते थे। स्वामी जी को अन्य मत और पथो का भी अच्छा अध्ययन और ज्ञान था।

स्वामी जी के जीवन की एक घटना है कि एक बार वे भिक्षा के लिए कहीं गए तो गृहस्थ ने स्वामी जी को डाटते हुए कहा – 'हटटे कटटे मुस्टण्डे जा कहीं काम कर लिखे न पढे भिखमगे आ जाते है।' शान्ति से सब सुनकर बोले – श्रीमान ! आप कितने पढे हैं ? वह सज्जन एम०ए० एल०एल०बी० था सम्भवत वकील था। उसने अग्रेजी मे कछ बडबडाया। स्वामी जी ने जब अग्रेजी मे कुछ कहा तो श्री महाराज के अथाह ज्ञान का कुछ अनुभव हो गया। झट श्री चारणो मे गिरकर क्षमा याचना की। स्वामी जी के लखों व पुस्तकों का पुन प्रकाशन करना अत्यन्त आवश्यक है और देश की आर्य समाजो को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

उज्जैन का यशवन्त जो उज्जैन की मिटटी मे रच बसकर बडा हुआ और भगवान कृष्ण की और कालिदास की इस मिटटी का सन्देश विश्व को देने वाला यशवन्त अपना पूर्व इतिहास अन्धकार मे डालकर स्वामी वेदानन्द तीर्थ बन गया। स्वामी वेदानन्द तीर्थ अन्धकार से प्रकाश की ओर आए थे और अपनी प्रतिभा से देश को चमत्कृत किया और आर्य जगत को ससार मे प्रतिष्ठा दिलवाई। स्वामी दयानन्द सरस्वती के सदृश्य यशवन्त उर्फ वेदानन्द सरस्वती अपने परिवार का कोई चिन्ह न छोडकर मात्र ब्राह्मण कुलो का सम्मान दे गया।

उज्जैन आर्यसमाज के पूर्व पुस्तकाध्यक्ष श्री रवि वर्मा और उनके सहयोगियो ने इस ब्राह्मण परिवार को खोज निकालने का प्रयास किया लेकिन वे असफल रहे कहते है कि वे इतना ही जान पाए कि स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती किसी धनाढय ब्राह्मण परिवार मे से थे। मात्र इससे कुछ नहीं ज्ञात हो सका। आज भी स्वामी वेदानन्द जी का सम्पन्न ब्राह्मण परिवार आज किस स्थिति मे हो उनके माता पिता कौन थे कितने भाई थे और किन परिस्थितियो मे वे काशी पढने गए थे सभी कुछ छिपा हुआ है।

उज्जैन के गुमनाम ब्राह्मण परिवार की यह विभूति स्वामी वेदानन्द तीर्थ (यशवन्त) का सन १९५६ मे देहली मे हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। आज उज्जैन के ब्राह्मण बाहुल्य क्षेत्र सिहपुरी अब्दालपुरा भागसीपुरा नईपेठ आदि मे निवास करने वाले ब्राह्मण ही बता सकते है या श्रीगोड गुजररोड सनाढय सारस्वत पुष्करणा औदिच्य महाराष्ट्रीयन ब्राह्मण चितपावन नागर आदि अनेक ब्राह्मण रहते हैं। यह किस परिवार का लाडला था जो जगत लाडला वेदानन्द तीर्थ बन गया।

उज्जैन आर्यसमाज ने पुन उस परिवार की खोज का बीडा उठाया है जिससे वह युवा यशवन्त पढने के लिए काशी गया जो लौट कर पुन उज्जैन नहीं आया कम से कम उस परिवार का सम्मान कर आभार व्यक्त किया जा सके। जो भी प्रमाण देनाचाहे आर्यसमाज उज्जैन मे उपस्थित होवे या लखक से सम्पर्क करे।

अनन्त टकणालय दालतगज
उज्जैन

आर्यसमाज बरमिघम (इग्लैण्ड) द्वारा रेडियो पर वेद प्रचार

आर्यसमाज बरमिघम की अन्तरग सभा ने निर्णय लिया कि इस वर्ष वेद प्रचार सप्ताह एक्सएल रेडियो पर वेद प्रवचनो के कार्य कम द्वारा मनाया जाए। इस निमित्त रेडियो एक्सल पर आर्यसमाज ने प्रात ६ बजे से ७ बजे तक ४ अगस्त से १२ अगस्त और विशेष रूप से श्रावणी और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन दोपहर १२ से एक बज तक का समय खरीदा गया।

इस कार्यक्रम के निमित्त भारत से ब्रिगेडियर चितरजन सावन्त जी को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया। उनके प्रवचन प्रात काल अग्रेजी और हिन्दी दोनो भाषाओ मे हुए। इस कार्यक्रम का प्रारम्भ 'वेदा का डका' आलम मे बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने से होता था। श्रोताओ को प्रश्नोत्तर का भी समय दिया जाता था।

श्रोताओ मे से एक ने प्रश्न किया कि वेदो को कैसे पढा जाए ? सावन्त जी ने उत्तर देते हुए कहा कि पहिले आप लोग सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन कीजिए – इस ग्रन्थ के अध्ययन वेदो को समझने मे बडी सहायता मिलेगी। अग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश की इतनी माग आई कि आर्यसमाज को इसकी अपेक्षा नहीं थी कई लोगो को निराश लौटना पडा। इसी प्रकार प्रति दिन सायकाल ७ ३० से ६ बजे तक वेद कथा आर्यसमाज मन्दिर मे होती थी जिस का प्रारम्भ आर्यसमाज के पुरोहित आचार्य सोने राव के मधुर भजनो से होता था। अन्त मे श्रोताओ को प्रश्नोत्तर का समय दिया जाता था।

रेडियो कार्यक्रम मे भक्ति रस के भजन स्थानीय आर्यसमाज की गतिविधिया वेद प्रवचन तथा गुरुकुल आन्दोलन डी० ए० वी० आन्दोलन नारी शिक्षा और सामाजिक क्षेत्र मे आर्यसमाज के योगदान पर प्रकाश डाला गया। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी को साय आर्यसमाज मन्दिर मे कार्यक्रम रखा गया जिसमे इतनी भारी उपस्थिति थी जिससे आर्यसमाज का विशाल हाल खचा खच भरा हुआ था। इस अवसर पर श्री सावन्त जी ने हिन्दी और अग्रेजी भाषा मे भगवान कृष्ण का सन्देश दिया।

आर्यसमाज बरमिघम रेडियो एक्सल के मैनजिग डायरैक्टर डा० अरुण बजाज के विशेष सहयोग के लिए धन्यवाद करती।

– कृष्ण चोपडा
अध्यक्ष वेद प्रचार विभाग

शिक्षक दिवस पर विशेष

आवश्यकता है शिक्षण के प्रति समर्पित शिक्षकों की ?

– प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य

शिक्षक राष्ट्र का निर्माता है। नर्सरी अथवा पहली कक्षा से लेकर वह बी०ए०/एम०ए० तक देश के लाखो करोडो विद्यार्थियो को शिक्षा देता है। स्कूलो कालेजो तथा विश्वविद्यालयो की शोभा उसी के कारण है। विज्ञान वाणिज्य कला प्रबन्धन चिकित्सा इजीनियरी आदि कोई ऐसा विषय नहीं जो वह नहीं पढाता हो ? प्रेस और कम्प्यूटर के युग मे लाखो की सख्या मे पुस्तके प्रतिवर्ष प्रकाशित होती है। किसी भी विषय पर पुस्तके बाजार मे प्राप्त की जा सकती है। यहा तक कि बडे–बडे नगरो मे फुटपाथो पर भी विज्ञान वाणिज्य आदि सम्बन्धी अच्छी–अच्छी पुस्तके मिल जाएगी किन्तु फिर भी शिक्षक का महत्त्व बना हुआ है। बिना शिक्षक के स्कूल/विद्यालय महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय सब सूने हैं अर्थविहीन हैं।

किन्तु आज शिक्षक अथवा शिक्षण के व्यवसाय के प्रति लोगो की रुचि कम होती जा रही है। पहली प्राथमिकता आईए०एस० आदि केन्द्रीय सिविल सेवाओ की होती है। दूसरी प्राथमिकता व्यवसाय–प्रबन्धन चिकित्सा विज्ञान/मेडिकल व्यवसाय को दी जाती है। एमबी०ए०/एम०सी०ए० इसी कोटि मे आते हैं। उसके बाद अगली प्राथमिकता इजीनयिरिंग तथा तकनीकी व्यवसाय को दी जाती है किन्तु शिक्षक बनना कोई पसन्द नहीं करता। इस तरह शिक्षक के व्यवसाय को आखिर मे स्थान दिया जाता है। यद्यपि पिछले दो तीन वर्षो मे स्कूलो तथा कालेजो के शिक्षको को अच्छे वेतनमान मिलने लगे हैं। कालेजो तथा विश्वविद्यालयो के शिक्षको को तो केन्द्रीय सेवाओ श्रेणी १ के बराबर वेतनमान मिलने लगे है फिर भी योग्य व्यक्ति अपने विषय के विशेषज्ञ व्यक्ति इस ओर कम आ रहे है। ऐसा क्यो हुआ ? शिक्षक के पद की गरिमा मे यह कमी क्यो आई ? इसके लिए जहा समाज शासन तथा सरकारे जिम्मेवार हैं वहा शिक्षक भी जिम्मेवार है।

एक रिपोर्ट के अनुसार आज देश मे ६.२७ लाख प्राथमिक विद्यालय हैं १६० लाख माध्यमिक विद्यालय है १ १२ लाख इन्टरमीडियेट कालेज है। फिर भी शिक्षा की स्थिति क्या है ? सरकारी सगठनो के अनुसार ६–१४ वर्ष के आयु वर्ग मे लगभग दस करोड बच्चे शिक्षा से वचित हैं क्योकि उनके पास पढने के साधन नहीं है वे अपना पेट भरने के लिए मजदूरी करते हैं। यही नही यद्यपि देश की लगभग ६५प्रतिशत आबादी के पास एक किलोमीटर के क्षेत्र मे प्राथमिक स्कूल हैं किन्तु फिर भी देश मे ३८प्रतिशत से ४० प्रतिशत लोग निरक्षर है। इसका कारण जहा एक ओर गरीबी और निर्धनता है वहा दूसरी ओर पब्लिक स्कूलो की महगी शिक्षा है। पब्लिक स्कूलो द्वारा शिक्षा का निजीकरण/व्यापारीकरण किया जा रहा है। जिनके पास पैसा है वही इन स्कूलो मे प्रवेश पा सकते हैं। फिर इन पब्लिक स्कूलो के अध्यापक दिन रात टयूश्नो मे लगे रहते है। पहली कक्षा से लेकर १२ वी कक्षा तक टयूशने चलती है। स्कूल या कक्षा में पढाने की इन्हे आवश्यकता या फुर्सत हीं नहीं ? सरकार इनका कुछ नहीं कर सकती क्योंकि ये निजी स्कूल हैं ?

सरकारी स्कूलो मे पढाई की स्थिति अच्छी नही। यदि वहा पढाई अच्छी होती तो लोग पब्लिक स्कूलो की ओर क्यो दौडते ? वहा के परीक्षा परिणाम भी कुछ अच्छे नहीं होते। फिर सरकारी स्कूलो मे अध्यापक बहुत सी जगह अनुपस्थित भी रहते है या फिर स्कूलो मे होते हुए भी पढाने मे रुचि नही लेते। प्रत्येक प्रान्त और जिले मे ऐसे अध्यापक मिल जाएगे। राजधानी दिल्ली की ही घटना है १३–८–२००१ के अखबारो मे समाचार छपा कि दिल्ली राज्य के शिक्षामन्त्री श्री नरेन्द्र नाथ ने ६–८–२००१ और १२–८–२००१ के बीच पूर्वी दिल्ली के तीन स्कूलो का दौरा किया। एक स्कूल मे तो ४४ शिक्षको मे से एक भी उपस्थित नही था यहा तक कि प्रधानाचार्य भी नहीं थे। नजफगढ मे स्कूल का समय प्रात सात बजे से १२ बजे तक का है किन्तु शिक्षक नौ बजे और प्रधानाचार्य ११ बजे आते है। यही हाल दिल्ली छावनी के स्कूल का है। कालकाजी के स्कूल का भी यही हाल है। यमुना विहार के इलाके मे भी यही स्थिति है। भलस्वा के स्कूल मे तो चपरासी द्वारा पढाई कराई जाती है। कई शिक्षक टयूशन मे व्यस्त होने के कारण कक्षाये नही लेते जबकि कुछ शिक्षक साइड बिजनेस मे जुटे रहते है। कुछ अन्य शिक्षक बडी कक्षाओ के बच्चे को छोटी कक्षाओ को पढाने की जिम्मेदारी सौंप देते हैं। यह रिपोर्ट शिक्षा और शिक्षको के मुह पर करारा तमाचा है। और वह भी राजधानी दिल्ली मे। ऐसे शिक्षको ने देश के समूचे शिक्षा व्यवसाय को एव शिक्षको को कलकित करने का काम किया है। रिपोर्ट तो यहा तक कहती है कि यह हाल केवल पूर्वी दिल्ली का नहीं अपितु पूरी दिल्ली के स्कूलो का है।

उच्च शिक्षा की ओर ध्यान दे तो कालेजो और विश्वविद्यालयो की सख्या मे निरन्तर वृद्धि हो रही है। आज विश्वविद्यालयो की सख्या २५० है कालेजो की सख्या ६५७८ है छात्रो की सख्या ५८६५४०० के आस पास है। देश मे कालेज तथा विश्वविद्यालयो के शिक्षको की सख्या ३५००००/तीन लाख पचास हजार है। इनमे ८० प्रतिशत कालेज शिक्षक है तथा २०प्रतिशत विश्वविद्यालय शिक्षक है। अब इनमे शिक्षण या पढाई को देखे तो पता चलेगा कि विश्वविद्यालयो मे तो अध्यापन का कार्य बहुत कम समय चलता है कई बार तो दिन मे एक घण्टे का भी समय नही होता क्योकि वहा शोध विस्तार आदि कार्यक्रम भी चलते रहते है। जहा तक कालेजो मे शिक्षण का सम्बन्ध है वहा वर्ष मे छ मास तो अवकाश रहता है। इसमे व्यवस्था का दोष है शिक्षको का दोष नहीं किन्तु बाकी छ महीनो मे शिक्षक कितना पढा पाते है यह देखने की बात है। यू०जी०सी० तथा राज्य सरकारो द्वारा नए वेतनमान दिए जाने पर भी केन्द्रीय सेवाओ के समकक्ष अच्छे वेतन दिए जाने पर भी कालेज शिक्षको द्वारा टयूशन जारी है। बडे-बडे कोचिग केन्द्र और एकेडिमिया उन्हीं के सहारे चलती है। विज्ञान वाणिज्य गणित कम्प्यूटर आदि विषयो मे तो टयूशनो की सारा साल भरमार रहती है। ऐसे मे कक्षाओ मे पढाने वाले शिक्षक बहुत कम रह गए है। एक उदाहरण हरियाणा का है। हरियाणा सरकार ने कालेजो मे टयूशनो पर प्रतिबन्ध लगा दिया है हरियाणा सरकार ने टयूशनो तथा कालेजो मे पढाई को लेकर एक अभियान छेड रखा है। दोषी अध्यापको के विरुद्ध शिक्षक बहुत कम रह गए है। एक उदाहरण हरियाणा का है। हरियाणा सरकार ने कालेजो मे टयूशनो पर प्रतिबन्ध लगा दिया है हरियाणा सरकार ने टयूशनो तथा कालेजो मे पढाई को लेकर एक अभियान छेड रखा है। दोषी अध्यापको के विरुद्ध सरकार सख्त कार्यवाही कर रही है। इसके लिए शिक्षक स्वय दोषी है अन्य प्रदेशो/प्रान्तो के शिक्षको का इससे सबक लेना चाहिए।

दूसरी ओर सरकार तथा सरकारो को शिक्षको की समस्याओ और कठिनाइयो को दूर करने की ओर भी ध्यान देना चाहिए। बिहार जैसे कई प्रान्तो मे तो शिक्षको को समय पर वेतन ही नहीं मिलता। फिर कई बार केन्द्र सरकार भी शिक्षको से किए गए वायदो को लागू नही करती जैसे १९९८ मे केन्द्र सरकार द्वारा की गई घोषणाओ को लागू करवाने के लिए ए०आई० फुक्टो को दिल्ली मे पिछले दिना धरना रखना पडा। उधर सरकार उच्च शिक्षा को निजी हाथो मे सोपने की तेयारी कर रही है। केन्द्र सरकार के निर्देश पर व्यापार तथा उद्योग पर गठित आर्थिक सलाहकार परिषद ने उच्च शिक्षा को निजी सैक्टर मे सौपने की सिफारिश की है। इसमे उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले प्रत्यक छात्र को स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के लिए प्रतिवर्ष एक या डेढ लाख रुपय देने होगे। चिकित्सा विज्ञान इजीनियरिंग प्रबन्धन आदि की उच्च शिक्षा का तो पहले ही निजीकरण हो चुका है। एक एक सीट के लिए कई लाख रुपये लिए जाते है जो आम आदमी की पहुच से बाहर है यदि इधर भी सामान्य उच्च शिक्षा मे यह प्रक्रिया जारी हो गइ तो गरीबो दलितो तथा समाज के पिछडे वर्ग के बच्चो का क्या होगा ? शिक्षको तथा शिक्षक सगठनो को इसका विरोध करना होगा।

अत शिक्षको को जागरूक होना होगा। उसे समाज तथा राष्ट्र की ओर ध्यान देना होगा। शिक्षक चाहे स्कूल का हो अथवा कालेज का अथवा विश्वविद्यालय का उसे अपने अध्यापन एव शिक्षण के प्रति ईमानदार होना होगा। आज देश भ्रष्टाचार की ओर उन्मुख है। राजनीति मे अपराधी लोगो का बोलबाला है। ऐसे मे शिक्षक ही देश को राह दिखा सकते हैं। आज देश को ऐसे शिक्षको की आवश्यकता है जो शिक्षा तथा शिक्षण के प्रति समर्पित हो। सरकार राज्य सरकारो तथा केन्द्र सरकार को भी शिक्षको के प्रति किए गए वायदो/अनुबन्धो/घोषणाओ आदि को पूरा करना होगा ताकि शिक्षको को अनावश्यक हडताल न करनी पडे। समाज का भी कर्त्तव्य है कि वह शिक्षक को उचित सम्मान दे।

– अध्यक्ष स्नात 'तर हिन्दी विभाग
दयाल सिह कालेज करनाल

राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि का श्राद्ध पर्व – १४ सितम्बर

– प्रो० यशपाल शास्त्री

हमार सविधान के निर्माता सचमुच ही लोकोत्तर प्रतिभा सम्पन्न थे जो कि उन्होने राष्ट्र भाषा के रूप मे हिन्दी के तथा राष्ट्र लिपि के रूप मे देवनागरी के अभिषेक दिवस को श्राद्धपक्ष मे स्थान दिया। उन्होने अपनी दिव्य दृष्टि से इस अभिषेक की सम्भावित परिणति को पहले ही देख लिया था। इसीलिए उन्होने प० बालकष्ण शर्मा नवीन तथा सेठ गोविन्द दास के माध्यम से हिन्दी के प्रबल समथक राजर्षि पुरुषोत्तम दास टडन के चरण पकड कर उनसे अग्रेजी के लिए कभी पूर्ण न होने वाली पन्द्रह वर्षो की अवधि का अभयदान माग लिया था। उनके उत्तराधिकारी इस शासन तन्त्र के सचालक अब तक जो भी होते रहे हैं उन्होने हिन्दी और देवनागरी के इस श्राद्ध की महिमा को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए हिन्दी की नामलेवा तथाकथित स्वय सेवी सस्थाओ को खुले हाथ खैरात बाटने का अपना पावन कर्त्तव्य निवाहने मे कभी कोई कोताही नहीं बरती। वे न केवल हिन्दी दिवस मनाते है अपितु 'हिन्दी सप्ताह' और 'हिन्दी पखवाडा' आदि का आयोजन बडी भव्यता से और बडी श्रद्धा भक्ति के साथ कराते हैं। दूरदर्शन पर देवनागरी को राष्ट्रीय एकता का वाहक बताया जाता है। गाधी सुभाष और तिलक को उदघृत करते हुए हिन्दी की महिमा का प्रसारण किया जाता है। यह बात दूसरी है कि जहा तक स्वय आचरण का सवाल है दिल्ली दूरदर्शन एव सरकार का आशीर्वाद प्राप्त दूरदर्शन के अन्य चैनल हिन्दी धारावाहिक प्रदर्शित किए जाने वाले एव प्रदर्शित किए जा रहे चलचित्रों गीतो गायको आदि के नाम भी देवनागरी में न देकर रोमन मे देते हैं। उन्हें भय बना रहता है कि देवनागरी मे नाम देने से कहीं देवनागरी की लोकप्रियता बढकर उसे सर्वग्राह्य न बना दे विदेशी उत्कोच के सामने उन्हे राष्ट्रीय एकता का प्रश्न नगण्य दिखाई देता है। अग्रेजो के ये मानसपुत्र हिन्दी समाचारो मे भी आधी से अधिक बाते अग्रेजी मे सुनाते हैं। क्या ही अच्छा हो यदि हिन्दी समाचारों में अग्रेजी वक्तव्यों का उल्टा हिन्दी मे सुनाया जाय और अग्रेजी समाचारो मे हिन्दी वक्तव्यों का अग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत किया जाया करे।

राष्ट्र के सम्मान सस्कृत एव सम्पदा के विस्तार मे अपने राष्ट्र की भाषा का महत्व ये राजनेता जानते न हो ऐसी बात नहीं है। इनके पसन्दीदा देश इग्लैंड के नागरिकों को, जर्मन और ग्रीक की जगह अपनी भाषा (अग्रेजी) को राष्ट्रभाषा के रूप मे प्रतिष्ठा दिलाने के लिए कितना सघर्ष करना पडा यह सब ये लोग जानते हैं। फिर भी यहा भारत में हिन्दी एव अन्य लोकभाषाओ की प्रतिष्ठा के लिए चलाये गये **अग्रेजी हटाओ आन्दोलन** को इन्होने नकारात्मक और ध्वसात्मक घोषित करके अग्रेजी के साथ जुडे निजी स्वार्थ के लिए उसे असफलता दिलाने के लिए एडी से चोटी तक का जोर लगा डाला है।

ऋग्वेद मे वाकसूक्त (वाग्देवी के सुन्दर वचन) का तीसरा मन्त्र इस प्रकार है –

अह राष्ट्री सगमनी वसूना चिकितुर्षपथमा यजियानाम।

ता मा देवा ऋदधु गुरुत्रा भूरिस्थात्रा भूर्यविशयन्तीम।।

इस मन्त्र मे वाणी के मानवीकरण द्वारा मनुष्य समाज को राष्ट्र की समृद्धि का रहस्य बताया गया है।

वाग्देवी की यह स्पष्ट घोषणा है कि "यदि मैं राष्ट्र की हू तो उस राष्ट्र मे सभी प्रकार के ऐश्वर्यों का सगम कराती हू। यज्ञीय भावना वालो मे ज्ञान की इच्छा को पहले पहल मैं ही उत्पन्न करती हू। अत ये बडो का सत्कार (देव पूजा) समानो से सहयोग (सगतिकरण) और छोटो की सहायता (दान) मे मेरे अर्थात राष्ट्रभाषा के प्रयोग को ही प्राथमिकता प्रदान करते हैं। शरीर नगर और राष्ट्र की रक्षा चाहने वाले देवगण (विद्वान लोग विद्वातो हि देवा) पढ चाहे जितनी भाषाए ले किन्तु विशेष रूप से धारण मुझे (राष्ट्रभाषा को) ही करते हैं। क्योकि मैं उस राष्ट्र के विपुल ऐश्वर्य की स्थिति विधात्री हू उसे नष्ट नहीं होने देती तथा मैं ही उस राष्ट्र को अप्राप्त ऐश्वर्य की विपुलता से प्राप्ति कराने वाली हू।

विश्व के प्राचीनतम साहित्य का यह वचन आज भी कितना सार्थक है इसका प्रमाण अपनी अपनी भाषाओ के ही माध्यम से अपूर्व समृद्धि पाने वाले राष्ट्र ब्रिटेन रूस चीन इजराइल जापान फ्रास जर्मन अरब आदि के रूप मे सबके सामने है।

भारत में भी राष्ट्रभाषा को उचित स्थान दिलाने का प्रयत्न हो रहा है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन हिन्दी साहित्य सगम हिन्दी रक्षा समिति हिन्दी प्रचारिणी सभा भारतीय हिन्दी परिषद् नागरी प्रचारिणी सभा मातृभाषा विकास परिषद् राष्ट्रभाषा सघर्ष समिति केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् हिन्दी प्रचार सभा आदि अगणित सस्थाए बडे मनोयोग से अपना काम कर रही हैं। फिर भी हिन्दी का राष्ट्रभाषा का आसन डोलता ही दीख रहा है। बात कुछ बन नहीं पा रही। यत्न करने पर भी यदि कार्य सिद्ध न होता हो तो देखना चाहिए कि कौन सा दोष रह गया है ? किन्तु इन सस्थाओं के सक्रिय सदस्य अपने प्रयत्न सम्बन्धी उस दोष को देखना ही नहीं चाहते जिनके कारण उन्हे अब तक असफलता ही मिली है। ये तो राष्ट्रभाषा के मार्ग में आने वाली रुकावटों से जूझने वालों को सरकार की दुर्नीति का विरोध करने वालों को समझाते हुए कहते है कि "विरोध की बात मत करो। रचनात्मक काम करो। विध्वस बुरी बात है। नकारात्मकता अभिशाप है। सकारात्मक मार्ग अपनाओ। पाजिटिव बनो। कभी न कभी सफलता अवश्य मिलेगी। सहज पके सो मीठा होय।" इस प्रकार के मोहक वाक्य इनके पथ के पाथेय बने हुए है।

बार बार ऐसी नपुसक शब्दावली सुनकर डॉ० राम मनोहर लोहिया ने खेदपूर्वक कहा था – "कभी कभी रचनात्मक शब्द से घृणा होने लगती है जब यह विध्वसात्मक का विकल्प बन जाता है विध्वस और रचना पूरक काम हो तो मजा आता है। एक के बिना दूसरा हर हालत मे अधूरा है। लेकिन जहा रचना के बिना विध्वस मे लाभ हानि दोनों की सम्भावनाएँ हैं वहा विध्वस के बिना रचना में तो मुझे धोखा ही धोखा दीख पडता है।"

डॉ० लोहिया के चिन्तन का समर्थन यजुर्वेद के इस मन्त्र से होता है –

अन्धन्तम प्रविशन्ति येऽसम्भुतिमुपासते
ततो भूय इव ते तमो ये सम्भूत्या रता ।।

इस मन्त्र के अनुसार लक्ष्य प्राप्ति के दो मार्ग हैं – एक तो असम्भूति और दूसरा सम्भूति। एक नकारात्मक और दूसरा सकारात्मक। एक ध्वसात्मक दूसरा सृजनात्मक। इन दोनों मार्गों मे जो व्यक्ति असम्भूति का अर्थात् ध्वस का नकारात्मक मार्ग अपनाते हैं वे घटाटोप अधेरे में प्रवेश करते हैं। जो सम्भूति का यानी सृजन का सकारात्मक या रचनात्मक मार्ग अपनाते हैं वे और भी अधिक अधेरे मे प्रवेश करते हैं। इस अधिक अधेरे को ही डॉ० लोहिया की उपर्युक्त पक्तियों का 'धोखा ही धोखा' कहा जा सकता है।

दुर्भाग्य से राष्ट्रभाषा को उचित स्थान दिलाने के लिए सघर्ष करने वाली उपर्युक्त सभी सस्थाए सृजन को ही आधार बनाये हुए हैं और शायद इसी लिए अधिक से अधिक अधेरे में भटके जा रही हैं। सफलता या उद्देश्य सिद्धि उन्हें नहीं मिल पा रही। वेद कहता है –

सम्भूति च विनाश च यस्तद्वेदोभय सह।
विनाशेन मृत्यु तीर्त्वा सम्भूत्याऽमृतमश्नुते।।

अर्थात जो व्यक्ति सृजन और विनाश इन दोनो मार्गों के महत्त्व और प्रयोग को जानता है वह विनाश यानी ध्वस के मार्ग से मृत्यु को पार करके सम्भूति के अर्थात सृजन के द्वारा अमृतत्व को प्राप्त किया करता है।

स्पष्ट है कि विनाश की अपेक्षा पहले है और सृजन की बाद मे। लुधियाना के फव्वारा चौक मे मैंने स्टेट बैंक भवन की नींव को खुदते हुए महीनो तक देखा है। यह काम बडी मेहनत का था जो लम्बे समय से चलता रहा। उसके ऊपर विशाल भवन जो बनना था। यदि नींव खोदी जाती या कम खोदी जाती तो वहा निर्मित हुई विशाल इमारत की मृत्यु को पार न कर सकती थी। पूरी बनने से पूर्व ही धराशायी हो जाती। अच्छे से अच्छा मसाला भी उसे अमरत्व न दे पाता। ऊपर डा० लोहिया ने भी रचना और ध्वस को एक दूसरे का पूरक कहा है।

अग्रेजी हटाओ आन्दोलन ध्वस का वह अपेक्षित मार्ग है जिसे अपनाए बिना उपर्युक्त सस्थाओ का कोई भी प्रयत्न सिरे नहीं चढ सकता। इसे नकारात्मक कहकर वे सकारात्मक सस्थाओ वाले तथा उनके समर्थक अपनी असफलता की खोज को भली बुरी गालियों मे व्यक्त कर सकते हैं। आखिर खुदाई करने वाले मजदूरो को भी गालिया और अपमान ही मिलता है न ? अपने ऊपर सारे शरीर का भार सभालने वाले पैर शूद्र ही कहलाते हैं न ? पर इनके बिना अपना काम चलाने का मजा लेकर देखिए तो ?

राजमिस्त्रियों को बडा वेतन चाहिए। अच्छी खातिरदारी चाहिए। उनका मुह फिर भी सीधा नहीं होता। खुदाई के मजदूरी भी सम्मान से कौन देता है ? मिलती है केवल गालिया। उन्हे काम का आदेश भी अपमान जनक शब्दो मे ही दिया जाता है। वे ध्वसात्मक मार्ग के पथिक जो ठहरे।

यदि धनकुबेरों को देखें तो वे भी सकारात्मक सस्थाओ के लिए ही अपनी थैलियो का मुह खोलते है। यदि कोई अग्रेजी हटाओ वाला अपनी थोडी सी भी माग इनके सामने प्रस्तुत करने लगे तो उनके तेवर चढ जाते हैं। उसका दिमाग खराब बताते है।

मजदूर गाली खाकर भी काम किए जाता है। पागल कहलाकर भी अग्रेजी हटाओ वाले अपने काम में जुटे हैं। यद्यपि साधनो के अभाव में उनका काम फावडे के बिना नाखूनो से मिटटी खोदने सरीखा है फिर भी हिम्मत बाधे हुए है। किन्तु इनकी हिम्मत का पुरस्कार यह कि इनका नाम सरकार की काली सूची में लिखा जाता है और जनता भी इन्हे खिजाती ही है। सब प्रकार का विष पी रहे हैं।

पर यह विष शिव को भी पीना पडा था। शिव ध्वस के देवता जो ठहरे। पर वे आशुतोष है। बडे चढावों की उन्हें भूख नही। धतूरे का फूल ही काफी है। शायद ये अग्रेजी हटाओ वाले भी उसी पथ के पार्थक है। थोडा पाकर भी प्रसन्न हो जाते है। दाता का नाम जगभर में उछालते हैं। श्रेय उसे देते हैं अपश्रेय स्वय झेलते हैं।

अपने मूल्याकन के प्रति यद्यपि इन्हें कोई रुचि नहीं पर इतिहास को कभी इनका मूल्याकन करना पडेगा अवश्य। समय साक्षी है कि सृजन के देवता ब्रह्मा को कोई नहीं पूजता। शिव सबके आराध्य है। ध्वस ही शिव है। वही महादेव है। अग्रेजी हटाओ वाले उस शकर के (या खडन प्रधान मूलशकर के) ही सैनिक है। इनका किया हुआ ध्वस ही सृजन का आधार बनेगा। 'अग्रेजी हटाओ' की नींव पर ही हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओ के विकास का महल खडा होगा।

जहा तक राष्ट्रीय लिपि का प्रश्न है हमारे सविधान में यह पद देवनागरी को प्रदान किया गया है। दुर्भाग्यवश सविधान का यह निर्देश हमारे तथाकथित राजनेताओं तथा नौकर शाहों को कभी रास नहीं आया। यह सिलसिला शुरू से चल रहा है। प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद जी बोले थे कि सभी जवानों की लिखावट नागरी होनी चाहिए और उपराष्ट्रपति राधाकृष्णन कहते थे कि सभी जवानो की एक लिखावट हो चाहे वह लिखावट जो भी हो। आज उसी तर्ज पर नौकरशाही और सरकारी तन्त्र की मिली भगत देवनागरी का उन्मूलन करने के लिए जी जान से जुटी हुई है। राष्ट्र लिपि के रूप मे अपनाए जाने की बात देवनागरी के लिए निकट भविष्य मे कभी न पूरा हो सकने वाला सपना बनकर रह गई है।

यूरोप की भाषाओ मे आपसी दूरी बहुत है किन्तु लिपि की एकता के कारण वे सभी एक सी प्रतीत होती है जबकि भारतीय भाषाए अस्सी से नब्बे प्रतिशत साम्य रखती हुई भी लिपियों की भिन्नता के कारण परस्पर आनजानी सी लगती है। वर्तमान मे दुर्नेताओ की दुरभसन्धि ने इस सम्बन्ध मे वातावरण इतना विषाक्त बना दिया है कि एक लिपि की बात करना देश को तोडने की साजिश का पर्याय बन गया है।

अत इस स्थिति मे मेरा सुझाव है कि भारतीय सविधान मे स्वीकृत सभी क्षेत्रीय भाषाओ की दो दो तथा हिन्दी की सभी भारतीय लिपियो (प्रत्येक क्षेत्र मे दो दो) घोषित की जाये यथा पजाब मे हिन्दी और पजाबी की दो दो लिपिया रहे – गुरुमुखी और देवनागरी यहा का प्रत्येक नागरिक अपनी इच्छानुसार दोनो भाषाओ के लिए किसी एक लिपि का प्रयोग कर सके। परीक्षाओं मे भी दोनो लिपिया का प्रयोग वैध हो किन्तु पाठय पुस्तके पजाबी के केवल गुरुमुखी मे तथा हिन्दी की केवल देवनागरी मे रहे जिससे दोनो लिपियो को भली भाति पढ लेने का अभ्यास बना रहे। उन्हे पढा और समझा जा सके। यही स्थिति बगाल मे रहे। वहा बगला भाषा दो लिपियो में लिखी जा सके और हिन्दी को बगला लिपि में लिखने की छूट हो। हाई स्कूल तक के अध्यापको को दोनो लिपियो मे समान रूप से लिख पाने का अभ्यास अपेक्षित किया जा सकता है। तमिल तेलुगू कन्नड मलयालम उडिया आसमी आदि सभी भाषाओ को इस नियम की परिधि में रखना चाहिए।

धूर्त राजनेताओं और स्वार्थी नौकरशाहो की मिली भगत आज भारतीय लिपियों का स्थान रोमन लिपि को दिलाने के लिए जी जान से जुटी हुई है। दूरदर्शन का सबल माध्यम उनके कब्जे में है। इसके द्वारा धारावाहिकों के नाम से लेकर 'वन्दे मातरम' तक को रोमन लिपि में इसी दुरभिसधि के अधीन दिखाया जा रहा है। इस स्थिति मे केवल देसी भाषाओं के अखबार ही सही दिशा सिखाते हुए देश को पतन के गर्त में गिरने से बचा सकते हैं। भारतीय भाषाओं की रक्षा कर सकते हैं।

भारत के स्वाधीनता सेनानियो तथा क्रान्तिकारियों ने हिन्दी और देवनागरी के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को सबल बनाने का जो सुनहरा सपना देखा था उसके सन्दर्भ मे तो अब महादेवी वर्मा की ये पक्तिया ही कही जा सकती हैं –

उस सोने के सपने को देखे कितने युग बीते।
आखो के कोष हुए हैं मोती बरसा कर रीते।।

– बी ५८ बुध बाजार
विकास नगर नई दिल्ली ५९

परमेश्वर की उपासना तथा प्रार्थना

– निहालचन्द कसल

उपासना का शाब्दिक अर्थ है – उप समीप आसना बैठना। भगवान के समीप बैठना। कैसा समीप ? जैसे एक जल बिन्दु सागर मे स्थित सागर के समीप है। उसका एक अभिन्न अश है। अपने आप को भगवान मे ही स्थित अनुभव करना। उपासना उस अवस्था का नाम है जहा ज्योति पुज प्रेम स्वरूप परमेश्वर रोम–रोम मे रम जाए मन अमृत मे भीग जाए। हृदय आनन्द से भरपूर हो जाए। यह तभी सम्भव है जब हमारा हृदय स्फुटिक शिला की भाति पवित्र हो जिसमें ज्योतियो की भी परम ज्योति भगवान का प्रतिबिम्ब स्पष्ट दिखाई दे। किसी के प्रति भी राग द्वेष अथवा घृणा न हो। सब दिखाई देने वाला ब्रह्म ही भगवान का असीम अनन्त रूप दिखाई द। देहभाव – अर्थात काम क्रोध लोभ मोह अहकार आदि पूर्ण रूप से शान्त हो जाए और हृदय परम पवित्र शन्ति प्रेम रस से परिपूर्ण हो जाए। अपनी प्रत्येक क्रिया मे भगवान की ही प्रेरणा और शक्ति का अनुभव हो। तभी परम शान्ति और शक्ति ज्योति स्वरूप शुद्ध आत्मा का अपने अन्दर ही हृदय म दर्शन होता है।

उपासना का आधार आत्म समर्पण है जब तक हम अपने आप को अपने स्वार्थ को अपने अहकार को इस ब्रह्म रूप परमेश्वर के हवाले नही करते हम उसके पास नहीं बैठ सकते।

आत्म समर्पण का भाव स्वय अपने जीवन के भार को भगवान पर डाल कर निष्क्रिय जीवन व्यतीत करना नहीं है। आत्म समर्पण से भाव है – अपने आप को भगवान की इस सुन्दर सृष्टि का एक महत्वपूर्ण अग अनुभव करते हुए स्वार्थ भाव से रहित प्रसन्नता का अनुभव करते हुए इस को सबके लिए सुन्दर सुखद तथा कल्याणकारी बनाने का दृढ सकल्प करना। इसके लिए सब से पहले परमेश्वर की प्रेरणा समझ कर हम स्वय अपना शारीरिक मानसिक तथा बौद्धिक विकास करे। स्वास्थ्य के नियमो को भली प्रकार समझ कर उनका पालन करे अपने आप को हर प्रकार से सब के लिए कल्याणकारी कार्य करने के योग्य बनाए। अपने परिवार समाज के सभी सदस्यो को हर प्रकार से योग्य और कार्य कुशल बनाए। जहा भी जिस भी सस्था में कार्य करते हैं अपने आप को उस का एक अभिन्न महत्वपूर्ण अग समझते हुए उसके विकास के लिए उस की प्रगति के लिए पूर्ण निष्ठा लगन योग्यता तथा कुशलता से कार्य करें। केवल अपना वेतन प्राप्त करने के कार्य के लिए कार्य नहीं करना। हमने कार्य करना है उस सस्था के लिए जो इस सृष्टि का अग है विकास के लिए। अपने पुरुषार्थ को प्रदीप्त करके इस सृष्टि को सब के लिए सुन्दर तथा कल्याणकारी बनाने के लिए घोर परिश्रम करना ही आत्म समर्पण है।

जैसे प्रत्येक पत्ता वृक्ष से रस ग्रहण करके फलता फूलता है अपनी सामर्थ्य के अनुसार सूर्य की रश्मियो से प्रकाश आदि लेकर वृक्ष को सुन्दरता तथा विशालता प्रदान करता है वैसे ही हम सब भी अपने आप को इस गतिशील सुन्दर ब्रह्म का एक महत्वपूर्ण अग समझते हुए इस को सुन्दर तथा समृद्ध बनाने का समर्पण भाव से प्रयास करे।

प्रार्थना एक आध्यात्मिक शक्ति है। शक्ति प्राप्त करने का बहुत ही सशक्त साधन है। शक्तिशाली बनने के लिए प्रार्थना एक व्यायाम है। महात्मा गाधी ने कहा था **प्रार्थना मेरे जीवन की रक्षक है इसके बिना मैं बहुत पहले ही पागल हो गया होता**

प्रार्थना याचना अथवा कुछ शब्दो को बार–बार दोहराना चापलूसी नही है। प्रार्थना स्वय अपनी आन्तरिक शक्तियो की अनुभूति तथा उनको व्यक्त करना है। हम यदि किसी कार्यालय मे अपनी नियुक्ति के लिए प्रार्थना पत्र मे अपनी योग्यता क आधार पर यह सिद्ध कर दे कि हमारी नियुक्ति मे आपको लाभ होगा। यदि आप मुझे दो हजार रुपया प्रति माह देगे तो मैं आप को दस हजार का लाभ पहुचा सकता हू तभी हमारा प्रार्थना पत्र स्वीकार होगा। यदि हम लिखे कि मै भूखा हू, प्यासा हू, रोगी हू दीन हीन हू, खल कामी हू, मैं कुछ भी करने के योग्य नहीं हू वह प्रार्थना पत्र नहीं याचना पत्र है।

प्रार्थना के आगे 'प्र' उपसर्ग है जो गति उत्कर्ष उत्पत्ति ख्याति तथा उचित व्यवहार के लिए प्रयोग होता है। जो चन्द्रमा की भाति निर्मल है सूर्य की भाति तेजस्वी है सागर की भाति गम्भीर है वह प्रार्थना करके तन्मयता प्राप्त करके प्रभु के दिव्य गुणो को प्राप्त कर सकता है। जो व्यक्ति अपने पुरुषार्थ को प्रदीप्त करता है प्रभु रूप होने की शक्ति को जगाता है अपना सब कुछ समर्पित करता है कुछ मागता नहीं उसी की प्रार्थना स्वीकार होती है। वही परमात्मा के दिव्य गुणो को प्राप्त कर सकता है। सर्वशक्तिमान ईश्वर सभी शक्तियो सम्पदाओ तथा प्रज्ञा का पवित्रता प्रेम शान्ति आनन्द और ज्ञान का भण्डार है स्रोत है उससे कुछ भी मागने की आवयकता नहीं है केवल अपने आप को उनके समीप उनके अन्दर अथवा उनको अपने अन्दर अनुभव करने की आवश्यकता है आपका हृदय स्वय ही प्रेम शान्ति आनन्द ज्ञान और शक्ति से भरपूर हो जाएगा।

हम भगवान क दिव्य गुणो एव नामो का स्मरण करते हैं क्या यह भगवान को प्रसन्न करने के लिए कहते हैं कदापि नही। वे तो सदैव प्रसन्न है एक रस है ज्ञान स्वरूप है उनमे अप्रसन्नता की कल्पना भी अज्ञान है। हमने भगवान के दिव्य गुणो का बार बार स्मरण करके उनका स्वय अपने अन्दर आवाहन करना है स्थापित करना है जिससे हम अपने अन्दर ही पवित्रता आनन्द शक्ति और तेज का अनुभव कर सके।

इस सारे ब्रह्माण्ड मे – ऊपर आकाश मे वायु मण्डल मे पृथ्वी पर तथा सागरो मे अनेकानेक शक्तिया तथा सम्पदाए सब के सामन समान रूप से भरी पडी है। यह कल्प वृक्ष है। इस से कुछ मागने की आवश्यकता नही है। योग्यता प्राप्त करके दृढ सकल्प से पुरुषार्थ करके लाक कल्याण के लिए कार्य करने क लिए जो भी कुछ चाहे प्राप्त कर सकत है। नदी जल की स्रोत है पीने क लिए अथवा कृषि क्षेत्र की सिचाई करने के लिए नदी से जल मागने की आवश्यकता नही है। जल का पात्र अथवा कुदाल लेकर नदी के पास जाना होगा पीने के लिए पात्र नदी मे से भरना होगा अथवा सिचाई करने के लिए नदी को कुदाल मे काट कर कृषि क्षेत्र पर ले जाना होगा। स्वामी रामतीर्थ जी ने कहा था – भगवान के पास भिखारी बनकर मत जाओ ऐसा करने पर तुम्हारी ओर ध्यान नहीं दिया जाएगा। उसके पास याचक नही दानी बनकर जाओ सेवक बन कर जाओ। आत्म समर्पण भाव से प्रसन्न मुद्रा मे पूर्ण सन्तुष्ट मुस्कुराते हुए जाओ। तुम उसकी सतान हो। कुशलता से कार्य करने के लिए उसका सहयोगी बन कर जाओ। अपना सब कुछ यहा तक कि शरीर भी समर्पित करके जाओ। आपका हार्दिक स्वागत होगा। वह आपको अपनी प्यारी गोद मे बैठाएगा।

स्थिर आसन बहुत आराम से किसी भी सुखासन मे बैठे। सारा शरीर शान्त स्थिर और ढीला। आखे कोमलता से बन्द। दोनो हाथ दोनो घुटनो पर। हथेलिया ऊपर को अगुलिया ज्ञान मुद्रा मे आपस मे मिली हुई सिर गर्दन और छाती एक रेखा मे रीढ की हडडी बिल्कुल सीधी। शरीर के किसी भाग मे कोई तनाव न हो। पूर्ण रूप से स्थिर तथा जागरूक रहे। अपनी सब इन्द्रियो पर नियन्त्रण रखे।

उपासना परमश्वर के पास अथवा अन्दर बैठना ऊपर आकाश म तेज प्रकाश और शक्ति का स्रोत सूर्य का अमृत रस से भरपूर चन्द्र तथा तारो का अपने सब ओर आगे पीछे ऊपर नीचे दाए बाए अन्दर बाहर नीले आकाश का पृथ्वी पर्वतो नदियो वृक्षो पक्षियो प्राणियो आदि का ध्यान करे। पूर्ण रूप से स्थिर तथा जागरूक रहे। अपने आप का इस असीम अनन्त सर्वाग पूर्ण ज्योति पुज सब शक्तियो तथा सम्पदाओ के स्रोत परम कल्याणकारी परमेश्वर का ब्रह्म का अथवा सारी सृष्टि का एक महत्वपूर्ण अभिन्न अश अनुभव करे। इसी के द्वारा उत्पन्न तथा पालित पाषित प्रशिक्षित इसी से ही प्राप्त शक्ति तथा साधना द्वारा इसी के लिए एक अभिनेता के रूप मे कार्य करने वाला सर्वथा निर्लेप इसी मे स्थित अपने आप का अनुभव करे। विश्व मे जो कुछ भी हो रहा है उस को स्वयमेव हो स्वाभाविक होता हुआ अनुभव करते हुए केवल दृष्टाभाव से देखे। अपने आप को तथा अन्य सभी प्राणियो को अपने स्वभाव के वश कार्य करते हुए समझे। यदि कोई अनुचित कार्य करता है उस पर क्रोध करने का अथवा उसकी चिन्ता करने का कोई लाभ नही है। मन मे सब ओर स प्रेम सुख शान्ति और आनन्द का अनुभव करे।

परमेश्वर की प्रार्थना

हे परमपिता परमेश्वर ! आप ने ही मेरे माता पिता के रूप मे मुझे जन्म दिया तथा बडे लाड प्यार से पालन पोषण किया है। आप ने ही जन्म से पहले ही मेरी माता जी की छाती मे शक्तिवर्धक दूध उत्पन्न किया। माता जी तथा पिताजी को प्रेम और स्नेह करने की प्रेरणा दी। आप ही बन्धुओ और सखाओ के रूप मे मुझे हर प्रकार से कार्यों मे सहयोग दने वाले हैं। हे प्रभो ! मैं आप की इस सुन्दर सृष्टि का अश हू, मेरे अध्यापको तथा आचार्यो के रूप मे शिक्षित करके जो कार्य आपने करवाना था मुझे उसके योग्य और कार्य कुशल बनाने वाले है। आप ही स्वय मेरी सब आवश्यकताओ को समझ कर पूरा करने वाले हैं। सब ज्ञानेन्द्रियो को समझ कर पूरा करने वाले हैं। सब ज्ञानेन्द्रियो तथा कर्मेन्द्रिया मे शरीर के सब तन्त्रो श्वास प्रश्वास रक्त सचार पाचन तत्र आदि मे आप ही शक्ति के रूप मे है। मेरी सोचने समझने की शक्ति के रूप मे आप ही हैं मैं अपने शरीर के प्रत्येक रक्त बिन्दु मे आप की ही शक्ति का अनुभव करता हू। प्रतिक्षण अपने आप को आप मे ही पूर्ण रूप से सुरक्षित समझते हुए आनन्द विभोर रहता हू।

शेष पृष्ठ ८ पर

पितृ यज्ञ तथा श्राद्ध तर्पण

– देवनारायण तिवारी

प्राचीन ऋषि महर्षियो ने गृहाश्रम मे रहने वाले गृहस्थो के लिए पच महायज्ञो का प्रावधान किया है, कि जिसको विधिपूर्वक पालन करके धर्मार्थ, काम मोक्ष की प्राप्ति कर सके।

ऋषि यज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा।
नृयज्ञं पितृयज्ञं च यथाशक्ति न हापयेत्।।

मनु० ४/२१

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञश्च तर्पणम्।
होमो देवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथि पूजनम्।।

मनु० ३/७०

स्वाध्यायेनार्चयेतर्षीन् होमैर्देवान् यथा विधि।
पितृन श्राद्धैश्च नृनन्नैर्भूतानि बलिकर्मणा।।

मनु० ३/ ८१

भावार्थ – १ ऋषियज्ञ अर्थात् ब्रह्मयज्ञ, २. देवयज्ञ, ३ भूतयज्ञ, ४ नृयज्ञ, ५ पितृयज्ञ। इनको यथाशक्ति छोडना नहीं चाहिए। इनमे अध्ययन-अध्यात्म अर्थात् वेदादि शास्त्रों का पढना पढाना तथा सन्ध्योपासना अर्थात् परमात्मा की उपासना करना। द्वितीय-देवयज्ञ, अर्थात् विद्वानो की सेवा व उनके सत्संग से पवित्रता एव दिव्य (अच्छे) गुणो को धारण करना, दातृत्व, और विद्या की उन्नति करना, ये दोनो कर्म (यज्ञ) प्रात साय करना चाहिए। तृतीय पितृयज्ञ – अर्थात देव विद्वान, ऋषि अध्यापक जो विद्या पढाने वाले हैं तथा पितर, जो माता-पिता आदि बृद्ध ज्ञानी और परमयोगियो की सेवा करनी, चतुर्थ भूतयज्ञ–अर्थात् प्राणिमात्र की सेवा जिनमे चीटी, कुत्ते, कौवे, रोगी, तिरस्कृत व्यक्ति जिन्हे समाज ने किसी अपराध से बहिष्कृत कर दिया हो, डोम चाण्डाल, यानी लघु से लघु कृमि से लेकर मनुष्य तक को अन्न-दान करना, पचम नृयज्ञ – इसी को अतिथि यज्ञ भी कहते है अर्थात् अकस्मात् आने वाले धार्मिक, विद्वान्, सत्योपदेशक, योगी सन्यासी आदि परिव्राजक गृहस्थ के यहा आवे तो उसकी अर्ध्य पाद्य भोजन दानादि से सेवा करना यह गृहस्थ का परम धर्म है।" स्वाध्याय से ऋषियों की, होम यज्ञ से देव विद्वान् आदि की, श्राद्धतर्पण से पितरो की तथा अन्नादि खाद्यो से अतिथि एव प्राणियों की अर्चना (सेवा) करनी चाहिए। (सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास)।

उपरोक्त श्लोकों में वर्णित पचंमहायज्ञो में जो तृतीय अर्थात पितृयज्ञ है, उसी पर विशेष विचार करना अपना मुख्य लक्ष्य है क्योंकि इसी कर्म को लेकर समाज में अनेक भ्रान्तियां फैली हुई हैं, जिनके कारण लोग विवश होकर भी सामाजिक रूढिवादिता के घेरे में आकर कुपात्रों के हाथों फंसकर अपना धनादि तामस दान के रूप में लोक दिखावा एव अन्धश्रद्धा के वशीभूत होकर नष्ट कर देते हैं और पितृयज्ञ या श्राद्धतर्पण का वास्तविक अर्थ न जानने के कारण आजीवन इसी अन्धीभक्ति के भवर मे डूबते रहते हैं।

पितृ यज्ञ के दो भेद हैं एक श्राद्ध और दूसरा तर्पण। श्राद्ध अर्थात् 'श्रत्' सत्य का नाम है " श्रत्सत्य दधाति यया क्रियया सा श्रद्धा, श्राद्धया यत्क्रियते तत् श्राद्धम्, जिस क्रिया से सत्य को ग्रहण किया जाए उसको श्रद्धा और जो श्रद्धा से कर्म किया जाए वह श्राद्ध है। और तर्पण, तृप्यन्ति तर्पयन्ति येन पितृन तत् तर्पणम्" अर्थात् जिस–जिस कर्म से तृप्त अर्थात् विद्यमान माता-पिता आदि पितर प्रसन्न होते हो और प्रसन्न किए जाए उसका नाम तर्पण है। परन्तु यह जीवितों के लिए है मृतको के लिए नहीं। माता-पिता, पितामह-पितामही, प्रपितामह-प्रपितामही तथा भाई भाभी पत्नी भगिनी तथा परिवार के जो अन्य पूज्य जन हैं, या अन्य कोई भी बृद्ध भद्रपुरुष हों उन सबको अत्यन्त श्रद्धा से उत्तम अन्न वस्त्र यान आदि देकर अच्छे प्रकार तृप्त करना अर्थात् जिस जिस कर्म से उनका आत्मा तृप्त और शरीर स्वस्थ रहे उस उस कर्म से उसकी सेवा करनी वह श्राद्ध और तर्पण कहाता है।

जैसा कि स्वामी दयानन्द महाराज ने लिखा है कि "विद्यमान माता पिता आदि पितर शब्द जीवितों के लिए है मृतकों के लिए नहीं। और लोग प्रायः श्राद्ध कर्म मृतको के लिए ही करते हैं अत इस शब्द पर विचार करना आवश्यक हैं मैं अपने स्वयं के अनुभव और स्वाध्याय के आधार पर भी यह कह सकता हूं कि पूर्वजों के पुण्य और आर्यसमाज की कृपा से चारो वेदो का अध्ययन करने का सुअवसर मुझे प्राप्त है और ब्रह्मपारायण यज्ञो के माध्यम से भी कम से कम पचासों बार चतुर्वेद (चारो वेदों का) पारायण यज्ञ कराने का सौभाग्य मिला है। अत मैं भी अधिकार से यह कह सकता हू कि " मृतक श्राद्ध" शब्द चारो वेदो मे नहीं है। निश्चित रूप से यह पौराणिक काल की कल्पना है। जहां तक जीवात्मा का प्रश्न है तो वह अनादि और अविनाशी है, जीव न कभी पैदा होता है न मरता है। इस विषय मे श्रीमद्भगवत गीता एव उपनिषदादि के स्पष्ट प्रमाण भी है।

न जायते म्रियते वा विपश्चित्।। *कठोपनिषद् २/१८*
न जायते म्रियते वा कदाचित्।। *गीता २/२०*

दूसरी बात यह है कि जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को उतार कर नये वस्त्र पहनते हैं, वैसे ही जीवात्मा पुराने (कर्मभोग की दृष्टि से) शरीर को छोडकर नया शरीर धारण करता है।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा
न्यान्यानि संयाति नवानि देही।। *गीता २/२२*

तीसरी बात यह है कि जीवात्मा का आना जाना अन्यों के क्रिया-कलाप या धर्म कर्म से प्रेरित नहीं है, और न ही इस यात्रा में किसी सम्बन्धी का सहयोग ही सहायक होता है, तथा इस संसार के रिश्ते भी सदा-सदा के लिए स्थायी नहीं होते हैं बल्कि यह सभी जन्म–मरण आवागमन जीवात्मा के अपने कर्मानुसार होते है।

१. धनानि भूमौ पशवश्च गोष्ठे, नारी गृहद्वारे जना श्मशाने। देहश्चितायाम् परलोक मार्गे धर्मानुगो गच्छति जीव एकः।। *(नीति वचन)*

२. यथा काष्ठं च काष्ठं च समेयातां महोदधौ। समेत्य च व्यपेयातां तद्वत् भूत समागमः।।

३. माता पितृ सहस्राणि पुत्रदार शतानि च। संसारेष्वनुभूतानि कस्य ते कस्य वा वयम्।।

४. अनित्ये प्रिय संवासे संसारे चक्रवद् गतौ। पथि संगतमेवैतद् भ्राता माता पिता सखा।।

महाभारत शान्ति पर्व अ० २८। ३६–३८–४१।

भावार्थ – (१) धनादि द्रव्य भूमि में पशुगण गोष्ठ (गोठ या सरिया) में नारी गृहद्वार तक मित्रगण श्मशान तक तथा देह चिता तक जाती है। और जीवात्मा कर्मानुसार अकेला परलोक गमन करता है।

(२) जैसे महासागर (जलधारों)मे लकडिया (सयोगवश) आपस में मिल जाती हैं, और फिर बिछुड जाती हैं वैसे ही परस्पर जीवों का समागम है।

(३) हजारो माता-पिता तथा सैकड़ों पुत्र स्त्रियों ने ससार में अनुभव किया। किसके वे तथा किसके हम। अर्थात् कोई किसी का स्थायी सम्बन्ध नहीं है।

(४) चक्र के समान गति करने वाले, वसने में प्यारे अनित्य ससार में यह भ्राता माता पिता मित्र आदि सम्बन्ध रास्ते के समागम (मिलने के) समान हैं।

एकः पालयते लोकमेकः पालयते कुलम्।
मज्जत्येको हि निरय एकः स्वर्गे महीयते।।

वाल्मीकि रामायण अयो० का० अ० १०६

भावार्थ : – अकेला (जीवात्मा) ही ससार का पालन करता है अकेला ही कुल का पालन करता है, बसाता है, अकेला ही नरक मे डूबता है अकेला ही स्वर्ग मे जाता है।

१. न कर्मणा पितुः पुत्रः पिता वा पुत्र कर्मणा। मार्गेणान्येन गच्छन्ति बद्धा सुकृत दुष्कृतैः।।

२. यत्करोति शुभं कर्म तथा कर्म सुदारुणम्।। तत्कर्तैव समश्नाति बान्धवानां किमत्र है।।

महा० शान्ति पर्व अ० १५३

३. यथा धेनु सहस्रेषु वत्सो विन्दति मातरम्। तथा पूर्व कृतं कर्म कर्तारमनु गच्छति।।

महाभारत शान्तिपर्व अ० १८१

भावार्थ – (१) पिता के कर्म से पुत्र तथा पुत्र के कर्म से पिता नहीं अपितु अपने किए पुण्य पापों से बधे हुए इस मार्ग से जाते हैं। (२) जो शुभ अथवा अशुभ कर्म करता है उनको करने वाला ही भोगता है। इसमें (उसके) सम्बन्धियों (रिश्तेदारो) का क्या है ? (३) जैसे हजारों गौवों में बछडा अपनी माता को ढूंढ लेता है, वैसा पूर्व किया हुआ कर्म कर्ता (करनेवाले जीवात्मा) को प्राप्त होता है। इस प्रकार के अनेक प्रमाण उपस्थित किए जा सकते हैं, जो इस सिद्धान्त की पुष्टि करते हैं।

आत्मान्तरगुणानामात्मान्तरेऽकारणत्वात्।।

वैशेषिक दर्शन ६। १। ५

भावार्थ – अन्य आत्मा में गुणों का अन्य आत्मा में कारण न होने से, एक आत्मा के अनुष्ठान (द्वारा) किए हुए कर्म का फल दूसरे आत्मा को नहीं मिलता। किन्तु कर्म का फल कर्ता को ही मिलता है।

सरल अर्थ – किसी आत्मा के गुण पाप–पुण्य आदि दूसरी आत्मा के लिए सुख-दुःख का कारण नहीं हो सकते।

काहू न कोउ सुख दुख कर दाता, निज कृत कर्म भोग सुन भ्राता

(रामचरित मानस, अ० काण्ड)

क्रमशः

योग के विघ्न और उनसे मुक्ति के मार्ग

– डॉ० सरोज कुमार वर्मा

योग भारतीय दर्शन की एक महत्त्वपूर्ण अवधारणा है। इसका मानव–जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध है। जीवन को सार्थक बनाने वाले जितने भी साधन हैं योग उनमें सर्वोत्तम है। मानव–जीवन के जो चार पुरुषार्थ हैं – धर्म अर्थ काम और मोक्ष – इसके प्राप्त करने के लिए चित्त का नियत्रण आवश्यक है। यह नियन्त्रण योग के द्वारा ही होता है। इस प्रकार योग चित्त को नियत्रित कर मनुष्य को सभी प्रकार के आवरणो और विक्षेपो से मुक्त कर ऐसा शुद्ध अत करण वाला बना देता है कि ईश्वर से उसका एकात्म सम्बन्ध स्वयमेव स्थापित हो जाता है।

परन्तु यह सम्बन्ध सहज स्थापित नहीं होता क्योकि अत करण की शुद्धि के लिए चित्त को नियत्रित करने के प्रयास मे कई बाधाये आती हैं जिन्हे योग का विघ्न कहा जाता है। महर्षि पतजलि ने अपने योग दर्शन मे नौ प्रकार के विघ्नो की चर्चा की है और उन्हे अन्तराय कहा है। उन्होने लिखा है –

"व्याधिस्त्यानसशयप्रमादालस्या विरति भ्रातिदर्शना सब्धभूमिकत्वानव स्थित्वानि चित्तविक्षेपास्तेऽन्तराय ।"

अर्थात व्याधि स्त्यान सशय प्रमाद आलस्य अविरति भ्रातिदर्शन असब्धभूमिकत्व और अनवस्थितत्व – ये नौ चित्त के विक्षेप हैं जो अन्तराय (विघ्न) कहलाते हैं। पतजलि ने इन विघ्नो की स्पष्ट व्याख्या करते हुए उनसे छुटकारा पाने के मार्गो का भी उल्लेख किया है।

व्याधि

इसे रोग भी कहा जाता है। यह वात पित्त और कफ की कम अधिक मात्रा भोजन से प्राप्त रस की न्यूनाधिकता तथा पाच ज्ञानेन्द्रियो+कर्मेन्द्रियो+मन–इन ग्यारहो इद्रियो के बल की न्यूनाधिकता के कारण होता है। व्याधि होने पर चित्तवृत्ति–उसे दूर करने के प्रयासों मे उलझ जाती है इसलिए वह योग मे प्रवृत्त नहीं हो पाती। इसे दूर करने के लिए पथ्य और अल्प भोजन व्यवहार मे युक्ति एव नियम का पालन तथा उत्थान के प्रयास द्वारा चित्त को जागृत करना पडता है। भगवान कृष्ण ने भी 'गीता' के छठे अध्याय मे सोलहवें एव सत्रहवे श्लोक मे कहा है –

"नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नत ।

न चातिस्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन।।

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।

युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दु खहा।।'

अर्थात् हे अर्जुन ! जो अधिक भोजन करता है जो बिल्कुल बिना खाये रहता है जो बहुत सोता है तथा जो बहुत जागता है उसके लिए योग नहीं है। बल्कि जो नियमपूर्वक भोजन करता है नियमित विहार करता है तथा कर्म करने मे भी नियमपूर्वक रहता है तथा जिसका जागना और सोना भी नियम पूर्वक होता है उसके लिए योग दु ख का नाश करने वाला होता है।

स्त्यान

योग की इच्छा होने पर स्थान और समय की प्रतिकूलता जब चित्त को योग मे प्रवृत्त नहीं होने देती तो चित्त की यह असमर्थता स्त्यान कहलाती है।

सशय

यह चित्त के द्वन्द्व की स्थिति होती है यह वस्तु ऐसी ही है या इसका स्वरूप किसी और प्रकार का है। योग होता है या नहीं। योग से मोक्ष की प्राप्ति होती है या किसी दूसरी चीज की। 'मोक्ष सत्य है या केवल कल्पना मात्र। – इस तरह के अनेको विरोधी चिन्तन करने वाले ज्ञान को सशय कहा जाता है। यह सशय भी योगी को योग मे द्वन्द्वरहित होकर प्रवृत्त नहीं होने देता। अत ये योग के प्रबल विरोधी हैं। इन्हे नष्ट करने के लिए गुरु के वचन और शास्त्र में श्रद्धारखनी चाहिए।

आलस्य

कफ आदि के कारण जब शरीर भारी हो जाता है तो तमोगुण मे वृद्धि होने लगती हैं जिसके फलस्वरूप चित्त भी भारी हो जाता है और योग करने की प्रवृत्ति नहीं रह जाती। इसे ही आलस्य कहा जाता है।

प्रमाद

योग के लिए प्रयास करना अथवा उसके प्रति उदासीनता का भाव रखना प्रमाद कहलाता है।

अविरति

इसे अवैराग्य भी कहते हैं। विषयो के करीब रहने से चित्त में उन विषयो को भोगने की जो तृष्णा होती है उसे अविरति कहा जाता है। यह विषय तृष्णा योग की प्रबल विरोधिनी है। क्योंकि यह चित्तवृत्ति को अतर्मुखी नहीं होने देती और यदि काफी प्रयास से कभी वृत्ति अतर्मुखी होती भी है तो फिर तुरन्त विषयों के स्फुरण द्वारा चित्त को चचल करके उसे वहिर्मुखी कर देती है। 'स्मृति' में भी कहा गया है –

"नि सगता मुक्तिपद यतीना सगादशेषा प्रभवन्ति दोषा ।

आरूढयोगोऽपि निपात्यतेऽध सगेन योगी किमुताल्पसिद्धि ।।"

अर्थात् 'यतियो का सगरहित रहना मुक्ति का स्थान है सग मे सारे दोष उत्पन्न होते हैं। योगारूढ भी सग से अधोगति को प्राप्त होते हैं फिर अल्पसिद्धि वाला अपक्व योगी यदि सग से अधोगति को प्राप्त हो तो इसमे आश्चर्य क्या ? यह अविरति विषय तृष्णा मे दोष देखने से दूर होता है। जिस तरह सिकी प्रिय भोज्य पदार्थ मे जहर घुला है यह जानकारी हो जाए तो भूखे रहने पर भी उसे खाने की इच्छा नही होती उसी प्रकार विषयो मे विष घुला है यह जान लेने पर उसे भोगने की इच्छा नहीं होती। यह जानकारी शास्त्रो के अध्याय और सदगुरु के उपदेश से मिलती है।

भ्रातिदर्शन

गुरु तथा शास्त्रो द्वारा दिए गए योग साधन मे असाधनत्व वृद्धि को भ्राति दर्शन कहा जाता है। यह योग के साधन के मूल स्वरूप का ज्ञान नहीं होने देता और उसकी जगह पर भ्रमात्मक स्वरूप का ज्ञान देता है। इसीलिए इसे विपर्यज्ञान भी कहा जाता है। चूकि यह विपरीत ज्ञान और प्रतिकूलता के कारण साधक को योग मे प्रवृत्त नहीं होने देता इसलिए इसे योग का विघ्न कहा जाता है।

अलब्धभूमिकत्व

योग की कई भूमिकाओ मे से किसी भी भूमिका – मधुमति आदि – का सतत अभ्यास करते रहने पर भी कि कारणवश उसकी प्राप्ति नही हाती ता इस अवस्था को अलब्धभूमिकत्व कहा जाता है। इसके कारण चित्त मे जो असतोष पैदा होता है वह भी चित्त को वहिर्मुखी बनाकर योग मे विघ्न ही पैदा करता है।

अनवस्थितत्व

योग की कई भूमिकाओ मे से किसी भूमिका की प्राप्ति होने पर भी विस्मय या कर्त्तव्य के विस्मरण के कारण जब चित्त उसमे स्थिर नही रह पाता तो उसे अनवस्थिकत्व कहा जाता है। इस विघ्न के कारण आगे की भूमिका प्राप्त नही होती तथा साधक प्राप्त भूमिकाओ से भी भ्रष्ट हो जाता है। अत प्राप्त हुई योग भूमिका मे चित्त को स्थिर करने के लिए योगी को सतत प्रयासरत रहना चाहिए।

इस प्रकार योग म प्रवृत्त होन वाल साधको के समक्ष योग के कई विघ्न उपस्थित होते हैं जिन्हे साधको को अपने प्रबल पुरुषार्थ के द्वारा धीरे धीर हटाने का प्रयत्न करना चाहिए। जब य विघ्न दूर हो जाते हैं तब चित्त नियत्रित होकर ब्रह्म म लीन हो जाता है और अद्वैत भावना रूपी निर्विकल्प समाधि को उपलब्ध होता है।

– श्रीकृष्णनगर खबडा
मुजफ्फरपुर ८४२००१ (बिहार)

योग सगोष्ठी सम्पन्न

ऋषि उद्यान अजमेर (राजस्थान) मे स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती प्रधान सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की अध्यक्षता मे दिनाक २८ २९–७–२००१ का योग सगोष्ठी का आयोजन सम्पन्न हो गया है। गोष्ठी मे आर्यसमाज के उद्भट विद्वान स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती ने अपने व्यस्त कार्यक्रमो को छोडकर गोष्ठी मे पधार कर योग मार्ग मे आयी अनेक विषमताओ का वेद एव उपनिषद तथा योग दशन के आधार पर दूर करने के लिए लोगो को प्रेरित किया। आर्य गुरुकुल आबू पर्वत के सस्थापक एव योग के प्रति श्रद्धावनत स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती ने वेद एव उपनिषदो के अकाटय प्रमाणो से योग दर्शन के विभूति पाद की प्रामाणिकता को सिद्ध किया। स्वामी दयानन्द सरस्वती के यजुर्वेद भाष्य के प्रमाण देकर पर काया शरीरावेश की विशद व्याख्या द्वारा योगदर्शनकार के कथन को पुष्ट किया। इसी प्रकार अहिंसा प्रतिष्ठाया तत्सन्निधौवैरत्याग पर योग दर्शन के व्यास भाष्य को लेकर चर्चा हुई। इस विषय पर चर्चा के समय अनेक ऐतिहासिक घटनाओ को भी उद्धृत किया गया। अध्यक्षीय प्रवचन मे स्वानुभूत एव सिद्ध योगियो के अहिंसा प्रतिष्ठा के उदधरणो को प्रस्तुत कर योग दर्शनकार के मन्तव्य की पुष्टी की गयी। इस विषय पर पर्याप्त शकाए योग जिज्ञासुओ द्वारा भी की गई थीं।

उपदेशक विद्यालय टकारा के प्राचार्य जी विद्यादेव जी ने ब्रह्मसाक्षात्कार के लक्षणों को योग दर्शन के विभूति पाद का उदधरण प्रस्तुत करते हुए स्पष्ट किया कि जो योगी इन्द्रियो का कार्य मन से लेने में सक्षम हैं वही ब्रह्म साक्षात्कार का अधिकारी हो सकता हैं। उसके लिए इन्द्रियजयी होना आवश्यक है। ऐसे इद्रियजयी के लिए कोई रूकावट बाधक नहीं बनती है। इसके साथ नौ चित्त विक्षेपो (योग मतों) को हटाना एक ब्रह्म साक्षात्कार करने वाले योगी के लिए आवश्यक बताया। यदि एक भी चित्त विक्षेप शेष है तो वह ब्रह्म साक्षात्कार मे बाधक है। इसी प्रसग में अन्त करण की पवित्रता (भाव सशुद्धि) को योग साधक के लिए नितान्त आवश्यक बताया। जन्म जन्मान्तर की वासनाओ को हटाकर अन्त करण को मूल रूप में लाकर ही योग साधक मोक्षगामी होता है। आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान एव परोपकारिणी सभा के मन्त्री डॉ० धर्मवीर जी शास्त्री ने सफल सयोजन के साथ योग जिज्ञासुओ की शकाओ का समाधान विभिन्न उदधरणो एव कथोपकथनों द्वारा किया। सेवा निवृत्त प्रिन्सिपल/श्री होशियार सिह जी ने योग सगोष्ठी के सयोजन की उदात्त जिम्मेदारी अपने मृदु एव सौम्य व्यक्तित्व से निभाई।

योग सगोष्ठी मे जो भी विचार प्रस्तुत किए गए उनको दूर से पधारे अधिसख्य श्रोताओ ने ध्यान से सुना। योग सगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे वीतराग सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी महाराज का अध्यक्षीय प्रवचन मे पस्तुत विषय पर जहा उदबोधन सुनने को मिला वहा सभी को आशीर्वाद भी मिलता रहा है। स्वामी सत्यपति जी महाराज एव श्री सोमदेव जी शास्त्री अपरिहार्य कारणों से गोष्ठी मे उपस्थित नहीं हो सके। किन्तु सगोष्टी की सफलता की शुभ कामना अवश्य प्राप्त हुई। इस प्रकार ऋषि उद्यान अजमेर में योग सगोष्ठी शान्त वातावरण मे सम्पन्न हुई।

– आचार्य विद्यादेव व्यवस्थापक

मृत्यु से अमरत्व की ओर

– हरिचन्द स्नेही

वायुरनिलमृतमथेदम भस्मान्तंशरीरम्।
ओ३म् क्रतो स्मर क्लिबेस्मर कृतं स्मर।।

यजुर्वेद अ० ४०, म० १५

प्राण वायु शरीर से निकल जाने पर जो अमर हो जाता है ऐसा यह शरीर भस्म होने योग्य है। अत हे जीव, तू ओ३म् का स्मरण कर, अपने किए हुए शुभ अशुभ कर्मो का स्मरण कर। यह यजुर्वेद के ४० वे अध्याय के १५ वे मन्त्र का सार है।

आगाह अपनी मौत से, कोई बशर नहीं।
सामान सौ, बरस का, पल की कोई खबर नहीं।।
इबरत की जा है दुनिया, इशरत का घर नहीं।
मालिक की मर्जियों की, किसी को खबर नहीं।।

इस संसार मे जिसने जन्म लिया है उसने यह नश्वर शरीर छोड कर जाना है। किसने कब जाना है, केसे जाना है, किस स्थान से जाना है। यह किसी को भी पता नही। अत हे जीव, तू मृत्यु से अमृत की ओर बढने का प्रयास करता रह। यक्ष ने युधिष्ठिर से अनेको प्रश्न किए किन्तु एक प्रश्न पर यदि ध्यान दे तो हमारा जीवन बदल सकता है। प्रश्न है – ससार की अद्भुत बात क्या है ? युधिष्ठिर ने दृढता पूर्वक उत्तर दिया, ससार की अद्भुत बात है 'मृत्यु'। हम सभी मरने वाले के शव को जलाने के लिए श्मशान भूमि मे ले कर जाते हैं किन्तु अपनी मौत को भूल जाते है।

दो बातन को भूल मत जो चाहे कल्याण।
नारायण इक मौत को, दूजे श्री भगवान।।

परमपिता परमात्मा ने हमे इस ससार मे मनुष्य जीवन प्रदान करकं प्राणी मात्र का कल्याण करने के लिए भेजा किन्तु हम ससार के मोह माया जाल मे फस गए और परमपिता परमात्मा को तथा अपने कर्त्तव्य को भूल गए। मोहग्रस्त मनुष्यो, स्वार्थियो और अज्ञानी पुरुषो के लिए मृत्यु दु खदायी है किन्तु परोपकारी, ज्ञानी, विद्वानो, सन्त महात्माओ और योगियो के लिए परम सुख देने वाली है।

किसी की चार दिन की जिन्दगी सौ काम करती है।
किसी की सौ साल की जिन्दगी बेकार जाती है।।

ऐ इन्सान हमेशा याद रख –

इन्सान का यह जिस्म क्या है जिससे शैदा है जहां।
इक मिट्टी की इमारत, एक मिट्टी का मकां।।
खून इसमें गारा है और ईंटें इसकी हड्डियां।।
चन्द स्वासों पर खड़ा है यह खाली आसमां।।
मौत की पुरजोर आंधी जब इससे टकराएगी।
देख लेना यह इमारत टूट कर गिर जाएगी।।

आओ, हम सब मिलकर अपना वर्तमान और भविष्य सुधारे। जिसने प्रभु नाम की डोर पकड ली वह भव सागर से पार उतर जाएगा वरन मृत्यु सबको दु ख देती रहेगी।

नानक दुःखिया सब संसार,
सुखी वही जेही नाम आधार।

आओ, हम सब मिलकर प्रभु का आधार लेकर जिए, उसी के होकर जिए –

तेरे फूलों से भी प्यार तेरे कांटों से भी प्यार।
मुझे रखना चाहे जैसे, वैसे रख दातार।।

हम दु ख मे हो सुख में हो, जगल मे हों मगल मे हो, कगाली मे हो, खुशहाली में हों, प्रभु नाम से बेमुख और वंचित न होवे। सदा हसते हुए गाते हुए इस सृष्टि के आनन्द का उपभोग करें। यह दुनिया साहसी व्यक्तियों की है, मातम मानने वालो की नही है –

बहुत से लोग बस अपने दुःखों के गीत गाते हैं।
होली हो या दीवाली सदा मातम मनाते हैं।।
मगर दुनियां उन्हीं की रागनी पर झूमती हरदम।
जो जलती चिता पर बैठकर वीणा बजाते हैं।।

जो समय बीत गया है उस समय को वापस नही लाया जा सकता। बीता हुआ समय मर चुका है। हमे अमरता प्राप्त करनी है। जितना जीवन शेष रह गया है उसी को सम्भाले। परमपिता परमात्मा की पवित्र गोद में बैठने के अधिकारी बनें। अपने जीवन को उज्ज्वल बनाए। किसी गीतकार ने हमें जीवन जीने की प्रेरणा दी है :–

जी बीती सो बीती लेकिन, बाकी उमर सम्भालूं मैं।।
बैठ प्रभु के चरण कमल में, गीत प्रेम के गा लूं मैं।।
जीवन अपने आप का, सफल बनाऊं मैं.....
तेरे दर को छोड कर किस दर जाऊं मैं।
सुनता मेरी कौन है, किसे सुनाऊं मैं।।

परमपिता परमात्मा के भजन और प्राणी मात्र के कल्याण से ही हमारा जीवन शुद्ध पवित्र और उज्ज्वल बन सकेगा। अपने बुरे कामों से डरो। जियो तो शुभ कर्मों के लिए और मरो तो शुभ कर्मों के लिए।

जिन्दगी ऐसी बना जिन्दा रहे दिलशाद तू।
जाए जब इस दुनियां से, दुनिया को आए याद तू।।
मिट्टी के पुतले हैं हम, मिट्टी में मिल जाएंगे।
जो कर्म योगी रहेंगे, निज कर्मो से याद आएंगे।।
मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे।
बाकी न मैं रहूं न मेरी आरजू रहे।।
जब तक कि तन में जान, रगों में लहू रहे।
तेरा ही जिक्र या तेरी ही जुस्तजू रहे।।

परमेश्वर ने हमे मनुष्य शरीर इसलिए प्रदान किया है कि हम ज्ञान प्राप्त करे। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि से अवगत हों। यदि हम इसी जन्म मे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, अविद्या, अज्ञान मे फसे रहेगे तो मृत्यु रूपी दु.ख से नहीं छूट पाएगे। परमेश्वर हमें शक्ति प्रदान करे ताकि हम असत्य से सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से अमृत की ओर बढकर अपना जीवन शुद्ध, पवित्र एवम् उज्ज्वल बना सके।

– १/४४ भगतपुरा, सोनीपत)

पृष्ठ ५ का शेष भाग

परमेश्वर की उपासना तथा प्रार्थना

हे प्रभो ! ब्रह्मा के रूप में आप ही मेरी आंखो के सामने इस सुन्दर सृष्टि की, सारे ब्रह्माण्ड की सुन्दर सर्वांग पूर्ण रचना करने वाले हैं, विष्णु के रूप मे सब प्राणि मात्र का पालन पोषण तथा सुचालन करने वाले हैं। हे प्रभो ! आप ही परम कल्याणकारी शकर के रूप में प्रतिक्षण पुराने जर जर पदार्थो, वृक्षो तथा प्राणियो को अपने आप में ही लय करके, समेट करके परम कल्याणकारी शिव के रूप मे पुन निर्माण करने वाले हैं। जिससे यह सृष्टि प्रत्येक क्षण सुन्दर नवीन रहती है। मैं आप की इस असीम सत्ता को, शक्ति को, क्रियाशीलता तथा सर्वदक्षता–कार्य कुशलता को देखकर नत मस्तक हूं, आनन्द विभोर हूं।

हे परम पिता, सर्वाधार, आराध्य देव ! मैं आप की इस परम सुन्दर सर्वांग पूर्ण परम कल्याणकारी सृष्टि का एक अभिन्न अंग हूं। आप की इस सुन्दर अद्भुत नाटकशाला में आप के आदेश के अनुसार अभिनय करने के लिए हू। मैं इस संसार में सब को प्रेम, सुख शान्ति, समर्पण, सहयोग, सद् सेवा भाव का सन्देश दे कर इस सृष्टि को सबके लिए सुव्यवस्थित, सबके लिए कल्याणकारी रखने के लिए हू।

हे परमेश्वर ! आपने मुझे सब साधनाओ का मूल यह सुन्दर सर्वांग पूर्ण मानव शरीर आत्म विश्वास, विवेक तथा बुद्धि से युक्त दिया। आप ने मेरी योग्यता तथा दृढता की परीक्षा लेने के लिए मुझे दुखो और कष्टों की भट्टी में तपाया है। मैं आप की ही दी हुई शिक्षा, वृद्धि तथा विवेक के सहारे ही सब दु खों और क्लेशों में भी मुस्कुराता रहा और आप की ही प्रेरणा से प्रसन्नता का अनुभव करता हुआ निष्ठा और लग्न से अपना अभिनय करता रहा और उस भट्टी में तपाया है। मैं आप की ही दी हुई शिक्षा, बुद्धि तथा विवेक के सहारे ही सब दु.खों और कलेशो में भी मुस्कुराता रहा और आप की ही प्रेरणा से प्रसन्नता का अनुभव करता हुआ निष्ठा और लग्न से अपना अभिनय करता रहा और उस भट्टी मे से पूर्ण रूप से कुन्दन बनकर निकला। हे भगवान ! आप ने स्वयं ही मुझे प्राणी मात्र की सेवा करने के योग्य बनाया।

प्रभो, आप ही मेरे जीवन के आधार हैं। मैं कभी भी स्वार्थ वश अपने कर्त्तव्य मार्ग से विचलित न होऊं। कभी भी एक क्षण के लिए भी आप को न भूलूं।

हम प्रभु से प्रार्थना करे – हे भगवान् ! मुझे दृढ विश्वास दीजिए। इस ब्रह्माण्ड में प्रत्येक पदार्थ तथा प्राणी आपसे ही भरपूर हैं मेरे हृदय में आप के दिव्य प्रकाश का अधिक से अधिक अनुभव प्रत्यक्ष हो। स्वयं मेरे हृदय में अपने आप को स्पष्ट करे, प्रभु प्रत्यक्ष करें। दिव्य, परम पवित्र स्नेह के सागर मेरे हृदय में अपने आप को प्रत्यक्ष करें। हे परम पिता परमेश्वर प्रत्यक्ष करें, प्रत्यक्ष करें, प्रत्यक्ष करे। ओ३म् ओ३म् ओ३म्।

एक भारतीय के सपनों का भारत

सत्यबाला देवी

वस्तुत एक भारतीय अपने स्वप्नो के भारत की अत्यन्त मधुर सुखद ज्योतिर्मय गौरवशाली और भव्य कल्पना करता है। जिसका प्राकृतिक वातावरण अत्यन्त रम्य मनोहर स्निग्ध एव छविपूर्ण होगा। जहा प्रकृति सुन्दरी सोलह श्रृगारो से अलकृत और सुसज्जित होकर अपने सम्पूर्ण वैभव सहित सुशोभित होगी। जहा शस्य श्यामला धरती अमित धन–धान्य स्वर्ण रजत ताम्र मणि–माणिक्य हीरे जवाहरात आदि उगलकर अपने वसुन्धरा नाम को सार्थक करेगी। जहा रत्नाकर भी नाना बहुमूल्य रत्न राशि प्रदान कर समस्त देश को समृद्ध और वैभवशाली बनाएगा। जहा घृत और दुग्ध की सरिताए अबाध रूप से समस्त देश मे प्रवाहित हो जन–जन को स्वस्थ और शक्तिशाली बनाने मे सहायक सिद्ध होगी।

उस स्वप्नो के भारत का समस्त वातावरण कलाकारो की कल्पना सम स्वतन्त्र एव स्वच्छन्द शिशु की मधुर मुस्कान और भोली चितवन सरिस निर्दोष और निष्पाप बाल रवि की आलोकमय स्वर्णिम रश्मि निकरसम स्फूर्तिदायक प्रेरणाप्रद एव उत्साह वर्धक कलानिधि की स्निग्ध धवल चन्द्रिका तुल्य उज्ज्वल और शीतल मन्द सुगन्ध मलय समीरसम सुखद होगा। जो प्रकृति नटी का उन्मुक्त मनोरम क्रीडा स्थल होगा।

जहा की सामाजिक धार्मिक और राजनीतिक परिस्थितिया और नियम समस्त प्रजाजन हेतु हितकारी एव कल्याण–प्रद सिद्ध होगे। जहा प्रजातन्त्र शासन प्रणाली के प्रमुख सिद्धान्तो – स्वतन्त्रता समानता और सहिष्णुता का पूर्ण सदुपयोग होगा। उस स्वप्नो के भारत मे कुटिल कूटनीति पूर्ण राजनीतिक दाव–पेच का सर्वथा अभाव होगा। जहा देश की उन्नति विकास प्रगति और समृद्धि मे बाधक राजनीतिक गुटबन्दियो का पूर्णतया बहिष्कार होगा। जहा जनता द्वारा जनता पर जनता के लिए स्वच्छ स्वस्थ प्रजातान्त्रिक शासन प्रणाली एव प्राचीन भारतीय समाजवाद के आदर्श सिद्धान्तो के समन्वय द्वारा प्रशासकीय नियमो अथवा कानूनो का निर्माण किया जाएगा। जहा प्रत्येक भारतीय को सामाजिक धार्मिक आर्थिक और राजनीतिक न्याय की समान रूप से उपलब्धि होगी। जहा के निवासी विश्व–भातृत्व विश्व शान्ति गुट निरपेक्षता जियो और जीने दो जैसे पचशील के सिद्धान्तो के पक्षपाती आत्मवत सर्व भूतेषु मानवतावाद सम आदर्श सिद्धान्तों के पोषक होगे। निरस्त्रीकरण ही जिन का नारा होगा उस स्वप्नों के भारत में महत्वाकाक्षा के स्थान पर सन्तोषवृत्ति पद लोलुपता के स्थान पर जन–सेवाभावना घातक राजनीतिक षडयन्त्रों द्वारा देश को निर्बल बनाने के स्थान पर पारस्परिक सहायता और सद्भावना विलास वासन के स्थान पर जितेन्द्रियता और सयम तथा कूटनीतिक धार्मिक आर्थिक एव सामाजिक विषमताओ और अव्यवस्था का सर्वथा अभाव होगा। जहा पचशील जैसे अमर सिद्धान्त और पच वर्षीय योजनाए देश की उन्नति प्रगति विकास और अभ्युदय की आधार स्तम्भ होंगी और उन्हें समस्त देश में क्रियान्वित और कार्यान्वित करते हुए प्रत्येक मानव को शारीरिक मानसिक बौद्धिक आर्थिक आदि सभी प्रकार की उन्नति करने के अवसर प्रदान करने जीविकोपार्जन के नाना साधन उपलब्ध कराने और व्यक्तिगत सामाजिक राजनीतिक आर्थिक आदि सभी क्षेत्रो मे उन्नति करने के अधिकार प्रदान किए जाएगे।

उस स्वप्नो के भारत की सामाजिक एव धार्मिक परिस्थितिया स्वार्थपरता शोषण उत्पीडन छुआछूत भेदभाव जातीयता अधविश्वासो अस्पृश्यता आदि के कलक से सर्वथा मुक्त होगी और इधर्मान्धता धार्मिक कट्टरता साम्प्रदायिकता जातपात आदि के विष से सर्वथा अछूती होगी। जहा की आर्थिक व्यवस्था समस्त देशवासियो को सुखी सम्पन्न समृद्ध एव सशक्त बनाने मे सहायक होगी जहा कोई व्यक्ति बेकार धनहीन दीन–हीन दु ख–दारिद्रय रोग शोक आदि से आक्रान्त और विपन्न दृष्टिगोचर नहीं होगा। जहा बालश्रम और बन्धुआ मजदूरो समक्रूर प्रथाए कानून द्वारा निषिद्ध समझी जाएगी।

उस स्वप्नो के भारत का प्रत्येक मानव पूर्ण सभ्य सुशिक्षित चरित्रवान दैवीय सदगुणो से समलकृत प्राचीन भारतीय सभ्यता–सस्कृति और आदर्शों का पक्षपोषक होगा। जहा समाज और व्यक्ति का साहित्य और समाज का घनिष्ठ एव अविच्छिन्न सम्बन्ध होगा। जहा समाज और राष्ट्र की उन्नति प्रगति विकास अभ्युदय उत्थान आन–बान तथा सम्मान की रक्षा हेतु प्रत्येक देशवासी अपने व्यक्तिगत हानि–लाभ सुख–दु ख स्वार्थों और हितो को हसते–हसते बलिदान करने हेतु सदैव तत्पर रहेगा। जहा आदर्श रामराज्य एव सर्वोदय समाज की स्थापना द्वारा सबके (मानवमात्र) उदय और कल्याण को प्रधानता दी जाएगी। जहा धनी–निर्धन ऊच–नीच छूत–अछूत स्वर्ण–अस्वर्ण स्वामी–सेवक राजा–प्रजा मिल मालिक मजदूर शिक्षित–अशिक्षित मे कोई भेदभाव नहीं होगा। जहा सबको सभी क्षेत्रो मे समानता, स्वतन्त्रता और समान अधिकारो के उचित उपभागक के साथ–साथ अपने कर्त्तव्य पालन एव उत्तरदायित्वो का भी बोध होगा। जहा के ह्रष्ट पुष्ट बलवान और शक्तिशाली नवयुवक अपनी मातृभूमि की मर्यादा सम्मान तथा गौरव की रक्षा हेतु अपना सर्वस्व ही नहीं प्रत्युत प्राणतक भी विसर्जित करने के लिए सदैव तत्पर रहेगे। जहा के नौजवान परम तेजस्वी धीर वीर गम्भीर साहसी अजेय निर्भय एव मेधावी होगे। जहा की नारिया आत्रेयी मैत्रेयी और गार्गी सम परम बुद्धिमती विदुषी ब्रह्मविद्या मे पारगत वीरागना दुर्गावती और झासी की रानी लक्ष्मीबाई के समान शत्रु से लोहा लेने वाली युद्ध में उनके छक्के छुडा देने वाली स्वाभिमानी युद्ध विद्या मे निपुण एव आत्म गौरव से विभूषित होगी। जहा की ललनाए सीता सावित्री और दमियन्ती सरिस पतिव्रता होगी और सावित्री की तरह अपने विवेकपूर्ण तर्कों द्वारा यमराज को भी हतप्रदकर पराजित करते हुए अपने जीवन सर्वस्वपतिदेव को काल के पाश से भी मुक्त कराने वाली साहसी धैर्यशालिनी और विजय गर्विता पत्निया होंगी। जिस स्वप्नो के भारत मे 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' के आदर्श सिद्धान्त का अवलम्बन कर नारी को केवल भोग की वस्तु एव दासी सम उपेक्षणीय न समझ उसे परम श्रद्धा की पात्र पूजनीय देवी और मातृत्व के गौरवपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित किया जाएगा।

उस स्वप्नो के भारत मे शोषण उत्पीडन अन्याय अत्याचार बलात्कार कुसुम कोमल सौन्दर्य प्रतिमा स्वरूप नवविवाहिता रमणियो को दहेज की बलिवेदी पर बलि चढाना और क्रूरता पाशविकता हिसक प्रवृत्तियो हत्याओ दैन्य दरिद्रता तथा अशिक्षा का बोलबाला नहीं होगा। जहा मद्यपी जुआरी वैश्यागमन तथा अन्य अनैतिक कार्यो मे सलग्न पति अपनी सती साध्वी पत्नियो के साथ निर्दयता पूर्वक मारपीट कर उनके प्रिय और जीवन के अवलम्बन स्वरूप आभूषणो को भी अपने कुकर्मो पर बलि चढाने वाले कर्मी पतियो का अभाव होगा।

उस स्वप्नो के भारत मे पूजीवाद का सर्वथा बहिष्कार कर समाज के सभी वर्गो की आधारभूत आवश्यकताओ की पूर्तिहेतु नाना लाभकारी एव उपयोगी विकास कार्यक्रम जवाहरलाल योजना तथा पचवर्षीय योजनाए लागू करते हुए सत्यार्थो मे समाजवाद की स्थापना की जाएगी। जहा धर्म और साम्प्रदायिकता की आड मे नृशस अत्याचारी क्रूरकर्मी आतकवादियो द्वारा नाना निरपराध निरीह निर्दोष व्यक्तियो देवियो और अबोध बालको को भी निर्दयता पूवक मौत के घाट नहीं उतारा जाएगा। उस स्वप्नो के भारत मे भय शोक रोग ताप दमन तथा जघन्य अपराधो का चिन्ह तक न होगा। जहा के निवासी छल कपट रहित प्रपचो–पाखण्डो अधविश्वासो एव रूढिवादिता से विमुख रहकर धर्मात्मा सत्यवादी सच्चरित्र दयालु क्षमाशील पर दु ख कातर चतुर बुद्धिमान उदार हृदय उच्चाशय परोपकारी निष्कलुष पवित्रात्मा उच्च शिक्षा प्राप्त उदारचेता और परमार्थ साधक होगे। जहा प्रत्येक व्यक्ति का गृहस्थ जीवन कलह रहित परम शान्ति प्रद सुख साधनो से परिपूरित पच महायज्ञो का नियोजक पावन और स्वर्ग सम सुन्दर होगा। जहा के पतिगण मर्यादा पुरुषोत्तम शक्तिशील और सौन्दर्य के प्रतीक भगवान राम सम एक पत्नीव्रत और योगिराज श्रीकृष्ण सम अन्याय और अत्याचार के परम विरोधी और पत्निया सती साधवी पतिप्राणा वीर प्रसूभगवती सीता समान होगी। जहा प्रत्येक दम्पति प्रतिदिन पचमहायज्ञो के अनुष्ठान एव पवित्र वेद मन्त्रो के गान द्वारा समस्त वातावरण को सुगन्धित पावन और रोगमुक्त बनाते हुए देव ऋण पितृ ऋषि तथा ऋर्षि ऋण से उऋण हो सकेगे। उस स्वप्नो के भारत मे "सब मानव हैं एक समान" के पुनीत मूलमन्त्र को अपनाते हुए समस्त विश्व के मानवमात्र के प्रति सौहार्द भातृत्व एव बन्धुत्व का नाता स्थापित करते हुए विश्व बन्धुत्व और वसुधैव कुटुम्बकम सम आदर्श सिद्धान्त का पालन किया जाएगा। जहा समस्त मानवोचित चारित्रिक सद्‌गुणो से समलकृत और अभिषिक्त मानव मानवतावाद की उच्च भावभूमि पर प्रतिष्ठित हो अपने सहवासियो और साथियो के सुख–दु ख मे सवेदना और सुहानुभूति प्रदर्शित करता हुआ अपने अधिकारो और कर्त्तव्यो का उचित उपभोग तथा उपयोग करेगा। जहा समानता सदभावना समरसता उदारता समन्तय सहानुभूति क्षमा दया सौहार्दपूर्ण पर दु ख कातरता पर कष्ट निवारण सहयोग सेवा प्रेम आदि उदात्त मानवीय सदगुणो का प्रसार और विस्तार होगा। परमार्थ साधन और निष्काम फलाशून्य कर्म ही जहा मानव जीवन का प्रमुख ध्येय होगा। जहा जाति वर्ण धर्म भाषा लिग भेद रग देश आदि के आधार पर कोई विषमता और भेदभाव नही होगा। उस स्वप्नो के भारत के सात्विक स्निग्ध उज्ज्वल मधुर सुखद शान्तिमय एव ज्योत्सनामय वातावरण मे सभी मानव एक वृहद विशाल परिवार के सदस्यो की भाति सगठित हो सामूहिक रूप स पारस्परिक साधन करते हुए निजी स्वार्थो एव हितो का त्याग ही नहीं प्रत्युत सहर्ष आत्मबल दान तक करने हेतु सदैव उद्यत रहेगे।

उस स्वप्नो के भारत मे शिक्षा का यथार्थ ध्येय केवल आजीविका प्राप्ति का साधन न होकर बालक के व्यक्तित्व का सर्वागीण विकास (शारीरिक आत्मिक और बौद्धिक) करना उसके विचारे भावा अनुभूतिये प्रवृत्तियो एव सकल्पो का समन्वय करना तथा उसकी इच्छा ज्ञान और क्रिया मे सुख साम्य स्थापित करना होगा। जहा के तपो ानी ज्ञान पुज प्रकाण्ड पाण्डित्य पूर्ण गुरुजन अपने तपोत्याग अभ्यासी ब्रह्मचर्यव्रत मे दीक्षित तेजस्वी और मेधावी शिष्य वग को सम्पूर्ण वाडम्य ओर सत्श स्त्र सम्बन्धी शिक्षा दान कर उन्ह सत्यार्थ म आध्यात्मिक जन्म प्रदान करगे उस स्वप्न के भारत मे ऐसे ही सत शिक्षा स समलक सचरित्र सत्य के अन्वेषक सुसस्कत सभ्य ईश्वर विश्वासी परम धार्मिक निष्ठावान प्राचीन भारतीय सभ्यता सस्कति अ आदर्शो के पृष्ट पोषक गुरुभक्त स्नातक जीवन सघर्ष सासारिक कायक्रमो और सुख साधनो मे रत रहते हुए भी भारतीय आध्यात्मवादी जीवन के महत उद्देश्य परलोक साधन की ओर सदैव उनमुख रहेगे।

उस स्वप्नो के भारत मे उच्च कोटि क महान रससिद्ध कवि धुरन्धर लेखक श्रेष्ठ उत्कृष्ठ नाटककार कुशल कलाकार निपुण चित्रकार सफल राजनीतिज्ञ गम्भीर दार्शनिक नीरक्षीर विवेकी विवेचक और साहित्यिक आलोचक नाना नवीन एव आश्चर्यजनक आधुनिक आविष्कारो के आविष्कारकर्ता वैज्ञानिक तथा सार्वभौम धर्म के मर्मज्ञ धर्मशास्त्री अवतरित हो देश की पूर्ण उन्नति अभ्युदय प्रगति तथा बहुमुखी विकास मे सहायक होगे। जहा साहित्य और कलाए अपने चरमोत्कर्ष को प्राप्त होंगी। जहा स्थान–स्थान पर लघु–उद्योग सस्थानों सघो शिल्पगृहो तथा घरेलू उद्योग धन्धो द्वारा भारत के समस्त निवासी कार्यरत रहते हुए समस्त साधन सम्पन्न हो सकेगे पर कोई बेकार नहीं होगा। जहा वाणिज्य उद्योग और व्यापार देश को अतुल वैभवशाली बनाएगे। जहा सरस्वती और लक्ष्मी दोनो का स्थाई आवास होगा। जहा नवीन आधुनिक वैज्ञानिक उपकरण एव आविष्कार देश के उत्थान उन्नति और विकास के आधार स्तम्भ होगे। जहा कृषि अनुसधान क्षेत्रो द्वारा आविष्कृत नवीन कृषि सम्बन्धी उपकरण और साधन भारतीय ग्रामो की चरम उन्नति और समृद्धि मे सहायक होगे।

क्रमश

संयुक्त परिवार और हमारे बड़े-बूढे

– सुशील महाजन शील'

भौतिक चकाचौध पूर्ण वातावरण के कारण ही आज जीवन मूल्यो का पतन ह रहा है। स्वार्थ और मनोमालिन्य के कारण सयुक्त परिवार प्रणाली टूट रही है।

जैसे–जैसे हम भौतिक प्रगति की सीढिया चढते गए मानवीय सम्बन्धो की जमीन हमसे छूटती गई। सम्बन्धो के बीच उपयोगितावाद एक प्रश्नचिन्ह बन कर खडा हो गया है। करीबी रिश्तो मे भी उपयोगिता की दुर्गन्ध प्रकट होने लगी है और जो भी उपयोगिता इस नई कसौटी पर खरी नहीं उतरती वह सम्बन्ध चाहे जिनके बीच भी हो सहज रूप से चलने क बजाए घिसटने लगते है।

मानव जीवन की अवस्थाओ बचपन युवावस्था और वृद्धावस्था मे दुर्भाग्यवश वृद्धावस्था को अशक्तता व असमर्थता का पर्याय माना जाता है। वस्तुत वृद्धावस्था बचपन से अधिक कोमल है नाजुक है साथ ही जीवन क अनुभवो उतार–चढाव दु खो–सुखो का अदभुत मेल है। बीते हुए जमाने की कहानी है पतझड–बसन्तो के दृश्य लिए हुए वृद्धावस्था अशक्त कैसे हो सकती है ? वह तो ज्ञान अनुभूति और अभ्यास की सम्पत्ति का भण्डार है। फिर समाज इस सम्पत्ति का सदुपयोग क्यो नहीं करता ? भारतीय सस्कृति मे तो वृद्धो को विशेष मान्यता दी जाती रही है। उनका आशीर्वाद सिर पर होना वरदहस्त माना जाता रहा है। उनके अनुभवो का अगली पीढी को लाभ उठाना चाहिए।

कौटुम्बिक जीवन की यही उपलब्धि थी कि बडे बूढे दरवाजे पर खटिया डाले नाती पोतो के साथ खेलते हुए घर परिवार की देखभाल मे यथाशक्ति हिस्सा बटाते हुए सन्तानो द्वारा सरक्षित चिन्ता मुक्त जीवन जीते थे। स्त्रिया बहुओ के आ जाने पर मानो राज्य किया करती थीं। पर शहरीकरण ने कौटुम्बिक जीवन मे विघटनवाद पैदा कर दिया है। बच्चो से वृद्धो का रिश्ता टूटता जा रहा है। बच्चो को अब दादी–नानी के किस्से कहानियो लोरियो के स्थान पर टी०वी० वीडियो तथा क्लबो मे व्यस्त रहना अधिक भाता है। एक हद तक युवाओ को वृद्ध अपने रास्ते के बाधक लगने लगते हैं।

सयुक्त परिवारो के टूटने व भौतिकवादी मनोवृत्ति के बढने के साथ परिवारो मे वृद्धो की स्थिति चिन्ताजनक हो गई। पूरब की सस्कृति मे भी परिवार और समाज मे वृद्धो को विशेष आदर मिलता रहा है। चीन की प्रचीन सस्कृति मे भी यही बात रही है। परन्तु समय के साथ साथ मान्यताओ मे परिवर्तन आया। कुछ बदलती हुई सामाजिक परिस्थितियो और कुछ पाश्चात्य सभ्यता ने अपना रग दिखाया और आदर सम्मान श्रद्धापूरित भावनाए चरमराने लगी। महिलाओ का भी नौकरी करना समय की माग बन गई। साथ ही विश्वस्त नौकरो के अभाव ने भी इस विघटन मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दिनभर काम करके लौटी थकी–मादी गृहणी घर की व्यवस्था देखे बुजुर्गों की सेवा करे या फिर बच्चो को सम्भाले ?

हा तो पश्चिम के सास्कृतिक आक्रमण के साथ हम अपने बडे–बूढो के प्रति आदर भाव खोते जा रहे हैं। प्राचीन मान्यता थी "न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा अथात वह सभा नहीं कही जाएगी जहा पर वृद्ध न हो। यह वचन हमारे ससद भवन मे भी लिखा है अनुभवो की परिपक्वता के कारण वृद्ध सही मूल्याकन कर उचित सलाह दे सकते है। पुरातन मान्यता थी कि बारात मे एक वृद्ध अवश्य जाता था ताकि आवश्यकता पडने पर समस्या का हल निकाल सके। पर आज तो वृद्धो की उपस्थिति परिवार मे समस्या बनती जा रही है। आज जीवन के मूल्य टूट रहे हैं।

बुढापा तो हर प्रकार से उत्तरदायित्वो से मुक्त होता है। किसी को बच्चो से आशा नहीं करनी चाहिए। चिडिया अपने अण्डो और बच्चो को सहेजती है और बडा होने पर जब वह उडना सीख जाते हैं तो पलट कर उन्हे देखती भी नहीं। इस लिए छोडो उन्हे परवाह मत करो। कहते हैं –"दुनिया को लात मारो दुनिया सलाम करे। हमने अपना जीवन भरपूर जीया है। अब बच्चो को भी उनका जीवन जीने दो।

जीवन के अनेक अच्छे व कटु अनुभवो को झेलने के बाद वे इतने परिपक्व हो जाते है कि यदि वृद्धावस्था मे उन्हे कष्ट भी हो तो वे उसे चुपचाप सहन कर जाते हैं।

हमारे वृद्ध अपना सारा कुछ बच्चो पर न्यौछावर कर देते हैं। यह गलत है। अपने बुढापे के लिए कुछ धनराशि अवश्य रखनी चाहिए। वृद्ध भी आधुनिक पीढी के साथ स्वय को आधुनिक बनाने का प्रयास करे। यदि दोनो पीढिया एक ही दिशा मे सोचे तो वृद्धावस्था की यह समस्या कुछ कम हो सकती है। उपेक्षित वृद्धावस्था को यदि सम्मानजनक प्रश्रय उपलब्ध हो सके तो यह समाज का एक बहुत बडा सार्थक पहलू होगा। जो आज की स्थिति मे वृद्धो की देख रेख के अभाव की पूर्ति के लिए समाज के प्रत्यक जागरुक नागरिक को आगे आना चाहिए और उनकी सेवा के लिए आश्रम केन्द्र या जो भी नाम दे उनकी व्यवस्था मे भागीदारी अवश्य करनी चाहिए।

वैदिक यति मण्डल के तत्वावधान मे

आर्यो का अन्तर्राष्ट्रीय वेदोक्त सत्य सनातन धर्ममेला

सम्माननीय भाईयो–बहिनो !

आपको जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि **वैदिक यति मण्डल** के अध्यक्ष **सत शिरोमणि स्वामी सर्वानन्द जी महाराज** दयानन्दमठ दीनानगर (पजाब) के आशीर्वाद एव प्रेरणा से दिनाक १३ अप्रैल २००१ को दीनानगर मे आयोजित यति मण्डल की बैठक ने सर्वसम्मत तय किया कि आर्यसमाज की स्थापना के **१२५** वर्ष पूरे होने के उपलक्ष मे **दिनाक २५ २६ व २७ अक्टूबर २००१** (आश्विन सुदी ९ १० व ११ विक्रमी २०५८) दिन बृहस्पतिवार शुक्रवार व शनिवार को **विजयादशमी** के शुभावसर पर आर्यो का एक विशाल मेला – **वैदिक ज्ञान गुरुकुल** दयानन्द ग्राम (नहर गगा के किनारे) जनपद मुजफ्फरनगर उ०प्र० मे बडे उत्साह पूर्वक विशाल स्तर पर मनाया जावेगा। इस विशाल मेले मे देश–विदेश के सुप्रसिद्ध साधु सन्यासी महात्मा विद्वा भजनोपदेशक एव कर्मठ आर्यजन लाखो की सख्या मे पधारेगे। इस शुभावसर पर विभिन्न सम्मेलनो के माध्यम से रचनात्मक एव ठोस कार्यक्रम तय करके भावी योजनाओ को क्रियात्मक रूप दिया जावेगा। यह कार्यक्रम **स्वामी सदानन्द जी** (दीना नगर) मन्त्री – वैदिक यति मण्डल के निर्देशन एव सानिध्य मे **स्वामी सुमेधानन्द जी** (पिपराली राजस्थान) सयुक्त मन्त्री – वैदिक यति मण्डल की अध्यक्षता मे तथा **वीरागना श्रीमती पुष्पा शास्त्री** (रेवाडी हरियाणा) के सचालन मे सम्पन्न होवेगा। आप अपने परिवार इष्टमित्रो एव सम्बन्धियो सहित सादर आमन्त्रित हैं। कृपया यथाशक्ति परोपकार पुरुषार्थ कर सहयोगी बने।

सयोजक	आयोजक	स्वागताध्यक्ष
जि० आर्य उप प्रति०	वैदिक यति मण्डल	यज्ञमुनि
सभा (मु० नगर)		(दयानन्द ग्राम)

पहुचने का मार्ग – मुजफ्फरनगर (उत्तर रेलवे) दिल्ली हरिद्वार के मध्य स्थित है। मु० नगर व बिजनौर से बस द्वारा नगला मन्दौड नहर गगा के किनारे पहुचे। आगन्तुक महानुभावो के भोजन व आवास की व्यवस्था मेले मे ही है। मेले मे धूम्रपान तम्बाकू, शराब आदि मादक द्रव्यो का प्रयोग निषेध है। वैदिक पुस्तको आदि का बाजार भी लगेगा।

गुरुकुल कांगड़ी की १४४ बीघा जमीन बिकी

आर्य जगत के माध्यम से आर्य जनता को दु खद सूचना दे रहा हू कि विश्वस्त सूत्रो से पता चला है कि पिछले दिनो गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की एकसौ चवालीस बघा जमीन सत्तर लाख रुपये मे बिक गई है जिसकी बाजार कीमत आज दस करोड है। इस बात को जिसने भी सुना वह दुखी व बेचैन हुआ है। पहले इस जमीन का सौदा पजाब सभा के महामन्त्री ने बयाना ले कर किया था। पजाब सभा पहले भी जमीने बेच चुकी है। इस सौदे का हरियाणा और दिल्ली प्रतिनिधि सभाओ ने डटकर विरोध और मुकाबला किया। उनका विरोध रग लाया। जमीन बिकने से बच गई। लोगो ने हरियाणा और दिल्ली सभा की भूरि भूरि प्रशसा की कि आपने स्वामी श्रद्धानन्द की आत्मा को बचा लिया उनकी वसीयत तथा विरासत को बिकने नहीं दिया। कई वर्ष निकल गए। पजाब के महामन्त्री जमीन की रजिस्ट्री नहीं करा सके। जमीन नहीं बिकी।

भगवान जाने क्या हुआ ? क्यो हुआ ? कैसे हुआ ? किसने किया ? जो हरियाणा और दिल्ली जमीन के पहरेदार थे जिन्होने जमीन न बिकने की वकालत और चौकीदारी की उन्हीं दोनो सभाओ ने मिल कर (दिल्ली के भी कुछ लोग) उस जमीन को बेच दिया। वर्तमान पजाब सभा के अधिकारियो ने जमीन न बिके इसके लिए दो–दो स्टे लिए हुए थे। फिर भी जमीन बिक गई ? इस काण्ड से गुरुकुल हिला है। गुरुकुल की साख व विश्वसनीयता घटी है। इससे कई प्रश्न व शकाए सामने आती है। यदि जमीन नहीं बिकती तो क्या मुसीबत आ जाती ? अचानक ऐसी क्या मजबूरी आ गई ? पिछले दिनो ही गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे चालीस लाख के कम्प्यूटर चोरी हो गए। तरह तरह की अटकले लगीं कम्प्यूटर नकली थे। कम्प्यूटरो के खाली डिब्बे आए थे। असलियत कुछ हाथ नहीं लगी। हरिद्वार के वातावरण मे यह बात आम चर्चा मे है कि गुरुकुल कागडी मे इजीनियरिंग व कम्प्यूटर के प्रवेश मे लेन देन चलता है। नियुक्तियों मे भी पैसा चल पडा है। ये सब बातें गुरुकुल जैसी सस्था के लिए कलक है। आज भी जनता मे गुरुकुल शब्द के प्रति श्रद्धा सम्मान व आदर का भाव है। लोग गुरुकुलो को आदर्श व प्रेरणा की दृष्टि से देखते हैं। गुरुकुलो को तीर्थ मानते हैं। गुरुकुल आर्यसमाज की पहिचान हैं।

वर्तमान गुरुकुल कागडी की आन्तरिक स्थिति व्यवस्था अनुशासन आदि अच्छे नहीं हैं। सही सोच विचार सस्थाहित आदि की भावना रखने वाले व्यक्तियो को वहा बर्दाश्त नहीं किया जाता है। जो वहा होना चाहिए वह नहीं हो रहा है जो नहीं होना चाहिए वह सब कुछ हो रहा है। जिन उद्देश्यो आदर्शो एव कार्यों के लिए गुरुकुल की स्थापना की गई थी वे सभी बाते वहा नजर नहीं आतीं। तेजी से गुरुकुल कालेज बन रहा है।

यह सस्था उस महापुरुष की है जिसने अपने जीवन का सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था। गुरुकुल कागडी स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन्त स्मारक है। आर्य जनता के नाम इसकी वसीयत और विरासत है। हम सबका कर्त्तव्य है इसकी रक्षा और देखभाल करना। आर्य जनता को जागरूक होकर कर्तव्यबोध की दृष्टि से स्वामी श्रद्धानन्द के ढहते हुए स्मारक को बचाने का सकल्प लेना चाहिए। गुटबाजी धडेबाजी ध्रुवीकरण समीकरण आदि की राजनीति से ऊपर उठ कर सच्चाई और ईमानदारी से सभा सगठन सस्थाओ आदि के हित के लिए सोचने की जरूरत है तभी ये बच सकेंगी। आशा है कि आर्य जनता इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेगी।

– *डॉ० महेश विद्यालकार दिल्ली*

हिसार कृषि विश्वविद्यालय में हिन्दी में काम होगा – कुलसचिव

रोहतक २५ अगस्त – चौ० चरणसिह हरयाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलसचिव महोदय ने कहा कि विश्वविद्यालय के प्रशासनिक कामकाज मे राजभाषा हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करने के हर सम्भव उपाय किए जाएगे। उन्होने यह बात कल २४ अगस्त को हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति दयानन्दमठ रोहतक के एक शिष्टमण्डल के साथ भेट के दौरान कहीं। समिति के शिष्टमण्डल ने कुलसचिव तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियो का स्पष्ट किया कि हरयाणा की राजभाषा २६ जनवरी १६६६ से हिन्दी है तथा मुख्यमन्त्री और मुख्यसचिव को भी हिन्दी मे काम करने के आदेश है। अत विश्वविद्यालय के प्रशासन मे हिन्दी मे काम न होना अवैधानिक तथा अनुचित है। समिति ने यह भी स्पष्ट किया कि कृषि विज्ञान पशुचिकत्सा विज्ञान गृह विज्ञान तथा बागवानी जैसे पाठयक्रमो की शिक्षा मे हिन्दी का विकल्प होना आवश्यक है। ऐसा न होने से हिन्दी भाषी छात्रो के साथ भेदभाव हो रहा है। इस बारे मे राष्ट्रपति के आदेश भी है तथा पाठयपुस्तके भी उपलब्ध हैं। बातचीत के अनन्तर कुलसचिव महोदय ने निम्नलिखित बिन्दुओ पर तत्काल कार्रवाई करने का आश्वासन शिष्टमण्डल को दिया –

१ विश्वविद्यालय के समस्त बोर्ड तथा अधिकारियो के नामपटट द्विभषी अर्थात हिन्दी अग्रेजी दोनो में बनवाए जाएगे। हिन्दी को ऊपर बडे अक्षरो मे लिखा जाएगा।

२ अग्रेजी के टाइपराइटर भविष्य म नहीं खरीदे जाएगे।

३ अग्रेजी के वर्तमान टाइपिस्टो तथा आशुलिपिको को हिन्दी मे काम करने का प्रशिक्षण दिया जाएगा। अग्रजी की टाइप मशीनो को हिन्दी मे बदलवाया जाएगा

४ अधिकारियो तथा कर्मचारियो का फाइलो पर हिन्दी मे टिप्पणिया तथा आदेश लिखने को प्रोत्साहित किया जाएगा।

५ छात्रो से सम्बन्ध रखने वाले सूचना पत्र प्रोस्पैक्टस आवेदन फाम अकतालिका प्रमाण पत्र परीक्ष समयसारिणी आदि हिन्दी म प्रकाशित किए जाएगे।

६ पाठयक्रमो मे हिन्दी की वैकल्पिक सुविधा के लिए एक समिति का गठन किया जाएगा। इस समिति मे हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति की तरफ से ड० ओमप्रभात अग्रवाल को सम्मिलित किया जाएगा।

कुलसचिव महोदय के साथ यह बातचीत अत्यन्त सौहार्दपूर्ण वातावरण मे हुई।

अधिकारियो ने शिष्टमण्डल का पूरा सम्मान दिया। यह समिति सभी का आभार प्रकट करती है।

शिष्टमण्डल मे समिति के उपाध्य श्री महावीर शास्त्री मीर के अतिरिक्त सयोजक श्यामलाल प्रो० ओमप्रभात अग्रवाल सहसयोजक डा० जगदवसिह विद्यालकार छात्र प्रतिनिधि श्री मनोज दूहन हिसार के प्रतिनिधि श्री शिवनाथ राय तथा श्री रघुनाथ प्रियदर्शी सम्मिलित थे।

पुस्तक समीक्षा — पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी

पृष्ठ २०२ मूल्य ५० रुपये

लेखक डॉ० राम प्रकाश प्रो० रसायन विभाग (चण्डीगढ)

प्रकाशक अनिता आर्य प्रकाशन ५००/२ हलवाई दटटा पानीपत (हरियाणा)

प० गुरुदत्त विद्यार्थी उस कली की भाति थे जो खिलने से पूर्व मुरझा गई। अमावस्या की घोर निशा मे प्रकाश पुज बनकर आए परन्तु क्षणभर मे ओझल हो गए। कब उदय हुए – कब चमके – कब छिप गए। इतना था लघु जीवन काल। महत्त्व अवधि का नही। दिव्यता का है फिर भी गुणो के भण्डार थे। लाला लाजपतराय की शब्दो मे –

हक के मतलाशी व ज्ञान के तालीवान के लिए गुरुदत्त जी की यह सादी जीवन चर्या और उसके वाक्यात मशाल मशाल के काम दे सकते हैं। मातृगण इसे रूचि के साथ पढेगे तो यह जीवन चरित्र हम भूले जनो के लिए तारीक (अन्धेरी) रात मे महताव का काम देगा।

डॉ० राम प्रकाश द्वारा लिखित जीवनी गुरुदत्त विद्यार्थी नामक पुस्तक हिन्दी व अग्रेजी मे प्रत्येक आर्य के हाथो मे होनी चाहिए। मुझे विश्वास है कि आर्यसमाज के गर्मदल के दीपक मे सदा सदा ही तेल का काम करेगी।

साहित्यिक दृष्टि से तथा वैदिक सस्कति के प्रसार की दृष्टि से यह पुस्तक उच्च कोटि की पुस्तको मे है।

मानव समाज के निर्माण के लिए आवश्यक है कि ससार मे बौद्धिक क्रान्ति पैदा की जाय। इसके लिए श्रद्धालु शिष्य ने गुरु के जीवन लक्ष्य को अपना जीवन लक्ष्य बनाकर ऐसे ससार की रचना करने की सोची जिसका चिन्तन मनन भाव एक हो – आज जरूरत है कि पडित जी के शेष कार्य जो अधूरा पडे हैं – उनके जीवन का स्वरूप हमारी आनेवाली पीढी को साहस प्रदान करेगी।

इसी आशा के साथ यह जीवन चरित पाठको की सेवा मे प्रस्तुत है।

डॉ० राम प्रकाश रसायन विज्ञान के अच्छे विशेषज्ञ है अपने विषय के प्रसारण मे वैदिक सस्कृति के प्रचार मे लगे रहते है। ऊचे वक्ता लेखक है कर्म तथा विद्वत्ता ओजस्वी व्यक्ति है।

डॉ० राम प्रकाश जी द्वारा लिखित यह जीवन मुह बोलना प्रमाण है। लेखक आर्य समाज की चौथी पीढी के गर्मदल के नेता है। उनकी खोजपूर्ण बातो ने पडित गुरुदत्त जी को हमारे सामने लाकर खडा कर दिया है।

मुझे पूर्ण विश्वास है वैदिक सस्कृति के प्रसार मे उच्चकोटि का चरित्र प्रस्तुत कर हमारा मार्ग दर्शन करेगी।

– *डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री*

आर्यसमाज किरण गार्डन का वार्षिक निर्वाचन

प्रधान – श्री जगन्नाथ प्रसाद
मन्त्री – श्री पण्डित अशोक कुमार आर्य (सम्पादक – करुणा सागर)
कोषाध्यक्ष – श्री जे०आर० महाजन

वार्षिकोत्सव एवं वेद प्रचार सम्मेलन

आर्यसमाज वेद मन्दिर चौक पटियाला मे 'चतुर्वेद शतक' के द्वारा विशेष यज्ञ 'वार्षिकोत्सव एव वेद प्रचार सम्मेलन १३–६–२००१ से १६–६–२००१ तक बडे हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस पवित्र कार्यक्रम मे विश्व प्रसिद्ध सन्यासी महात्मा और वेदो के प्रकाण्ड विद्वान पधार रहे है।

अत सभी धर्म प्रेमी भाईयो एव बहने से विनम्र प्रार्थना है कि इस शुभ अवसर पर पधार कर धर्मलाभ उठाए।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 9-9-2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2001
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2001 in NDPSo on 6/7 -9 - 2001

जेहाद और प्रलोभन का टकर

– डॉ० दिलीप अग्निहोत्री

इस्लामी कटटरपथी तलवार के बल पर और इसाई मिशनरी प्रलोभन के माध्यम से अपने धर्म का प्रचार करते रहे है। इस सत्य मे कुछ भी छिपा हुआ नहीं है दानो धर्मो के रहनुमा अपने विचारो की सार्वजनिक घाषणा करने मे भी कोई सकोच नही करते। कुछ समय पहल सर्वोच्च ईसाई धर्म गुरु पोप ने कहा था कि अब एशिया के खास देशो मे धर्म प्रचार का कार्य किया जाएगा। दुनिया मे जहाद की घोषण करते रहने का सिलसिला तो और भी विस्तृत है लेकिन गोरतलब यह है कि ये दोनो कटटरवादी एक दूसरे के देशो मे अपने धर्म का प्रचार करने से बचते रहते हैं। शायद सीधे टकराव से बचने के लिए ऐसा किया जा रहा है।

जेहाद को प्रोत्साहन देने वाले तालिबान शासन के इस देश में ही ईसाई सस्था को प्रलोभन के द्वारा अपने धर्म का प्रचार करते हुए पकडा गया। शेल्टर नाऊ इण्टरनेशनल सस्था के चौबीस कार्यकर्ताओ को पिछले दिनों काबुल के पास गिरफ्तार किया गया। इनके पास से बडी मात्रा में प्रचार सामग्री भी बरामद की गई। बताया जाता है कि यह सस्था १९८३ से ही पीडित लोगों को राहत देने के नाम पर ईसाई धर्म का प्रचार कर रही थी। इस प्रकरण ने जहा एक ओर इसाई सस्थाओ की वास्तविकता को उजागर किया है वहीं भविष्य के टकराव की ओर भी इशारा किया है। अपने विचारो को दूसरो पर थोपने का प्रयास करने वाले कट्टर इस्लामी व ईसाई गुटों को नियन्त्रित न किया गया तो विश्व के बहुत बडे हिस्से में हिंसक सघर्ष को टालना मुश्किल हो जाएगा। जेहाद की घोषणा करने वाले इस्लामी आतकवादियों के दमन हेतु विश्व समुदाय की कोई साझा रणनीति नहीं है। ईसाई धर्म का प्रचार करने वाली सस्थाओं को तो पश्चिमी देशो का पूरा समर्थन और सरक्षण रहता है। इसके लिए भारी धनराशि की भी व्यवस्था की जाती है। सेवा और राहत के नाम पर ईसाई धर्म का प्रचार किया जाता है। अब तक यह काम उन्हीं देशो में किया जाता था, जहा के लोग धार्मिक मामलों मे उदारवादी होते हैं लेकिन अब ऐसी सस्थाए तालिबान जैसे बेहद कट्टर शासन वाले अफगानिस्तान मे भी प्रचार करने का साहस दिखाने लगी हैं। इसी आधार पर अन्य देशों में इन सस्थाओं की गतिविधियों का अनुमान लगाया जा सकता है। अफगानिस्तान मे इस्लाम के अलावा किसी अन्य धर्म का प्रचार करने वाले को मृत्युदण्ड देने का प्रावधान है।

लेकिन इस टकराव को अब ज्यादा समय तक टालना मुश्किल होगा। इसकी बानगी अफगानिस्तान मे देखने को मिली है। जेहाद का प्रोत्साहन देन वाले तालिबान शासन के इस देश मे ही ईसाई सस्था को प्रलोभन के द्वारा अपने धर्म का प्रचार करते हुए पकडा गया। शेल्टर नाऊ इण्टरनेशनल सस्था के चौबीस कार्यकर्ताओ को पिछले दिनो काबुल के पास गिरफ्तार किया गया। इनके पास से बडी मात्रा मे प्रचार सामग्री भी बरामद की गइ। बताया जाता है कि यह सस्था १९८३ से ही पीडित लोगो को राहत देने के नाम पर ईसाई धर्म का प्रचार कर रही थी। इस प्रकरण ने जहा एक ओर इसाई सस्थाओ की वास्तविकता को उजागर किया है वहीं भविष्य के टकराव की ओर भी इशारा किया है। अपने विचारो को दूसरो पर थोपने का प्रयास करने वाले कटटर इस्लामी व ईसाई गुटो को नियन्त्रित न किया गया तो विश्व के बहुत बडे हिस्से मे हिसक सघर्ष को टालना मुश्किल हो जाएगा। जेहाद की घाषणा करने वाले इस्लामी आतकवादियो के दमन हेतु विश्व समुदाय की कोई साझा रणनीति नहीं है। ईसाई धर्म का प्रचार करने वाली सस्थाओ को तो पश्चिमी देशो का पूरा समर्थन और सरक्षण रहता है। इसके लिए भारी धनराशि की भी व्यवस्था की जाती है। सेवा और राहत के नाम पर इसाई धर्म का प्रचार किया जाता है। अब तक यह काम उन्हीं देशो मे किया जाता था जहा के लोग धार्मिक मामलो मे उदारवादी होते है लेकिन अब ऐसी सस्थाए तालिबान जैसे बेहद कटटर शासन वाल अफगानिस्तान मे भी प्रचार करने का साहस दिखाने लगी हैं। इसी आधार पर अन्य देशो मे इन सस्थाओ की गतिविधियो का अनुमान लगाया जा सकता है। अफगानिस्तान मे इस्लाम के अलावा किसी अन्य धर्म का प्रचार करने वाले को मृत्युदण्ड देने का प्रावधान है। तालिबान शासन मे कठोर दण्ड देना आम बात है। इसके लिए उपयुक्त न्यायिक प्रक्रिया का भी पालन नही किया जाता। इसके बावजूद शेल्टर नाऊ इण्टरनेशनल सस्था वहा प्रचार कार्य कर रही थी। बताया जाता है कि यह काम काफी पहले से किया जा रहा था। लेकिन तालिबान इसलिए निश्चित थे क्योकि उनका अनुमान था कि बेहद कठोर दण्ड व्यवस्था के कारण कोई भी विदेशी सस्था उनके यहा गैर इस्लामी प्रचार की हिम्मत नहीं कर सकती। लेकिन ऐसा हो रहा था। ईसाई सस्थाए बेहद चालाकी से छोटे बच्चो को अपनी विचारधारा से प्रभावित करने का कार्यक्रम चला रही थीं। यह सच है कि तालिबान ने अपनी कठोर और बहुत अव्यावहारिक नीतियो के कारण अपने ही नागरिको की जिदगी दुश्वार कर दी है। लेकिन राहत देने के नाम पर अपने धर्म का प्रचार करना भी बेमानी है। गिरफ्तार किए गए कर्मचारी जर्मनी के शेल्टर नाऊ इण्टरनेशनल नामक राहत सस्था के लिए काम करते थे। इनमे जर्मनी आस्ट्रेलिया और अमेरिका के नागरिक शामिल है। इन सभी देशो ने तालिबान शासन को मान्यता नही दी है इसलिए इनके बीच कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है। अपने नागरिको को छुडवाने के लिए पाकिस्तान के माध्यम से प्रयास किया जा रहा है।

कुछ भी हो इस प्रकरण ने आतकवादी सरगना ओसाम के प्रत्यावर्तन सम्बन्धी अमेरि[...] फिर पीछे छोड दिया है। इधर अमेरिका ओसामा को सौपे जाने के लिए दबाव बढा रहा था। इसके लिए कुछ समय पहले ही तालिबान शासन पर सयुक्त राष्ट्र सघ द्वारा लागू प्रतिबन्धो को भी कठोर कर दिया गया था। लेकिन तालिबान इस प्रकार के प्रयासो से ध्यान हटाने के लिए अपने अदाज मे कदम उठाता है। पहले उसने बौद्ध प्रतिमाओ का विध्वस किया और इस बार उसे ईसाई धर्म का प्रचार कर रहे लोगो ने ही मौका दिया है। तालिबान शासन का कहना है कि सभी गिरफ्तार लोगो के खिलाफ अफगानिस्तान मे ईसाइयत के प्रचार के सम्बन्ध में पुख्ता सबूत है। यद्यपि अमेरिका ने गिरफ्तार लोगो के सम्बन्ध मे अन्तर्राष्ट्रीय प्रावधानो का उल्लेख किया है लेकिन इन प्रावधानो की तालिबान कितनी परवाह करता है ? अफगानिस्तान मे ऐसे लाखो बच्चे हैं जिनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है। गृहयुद्ध मे लाखो पुरुष मारे जा चुके हैं। महिलाओ को बाहर काम करने का अधिकार नहीं है। पच्चीस लाख से ज्यादा शरणार्थी पाकिस्तान में हैं। अब पाकिस्तान ने भी शरणार्थियो के आने पर रोग लगा दिया है। इतने ही शरणार्थी ईरान मे हैं। अफगानिस्तान के शरणार्थी शिविरों मे तो जिन्दगी के लक्षण ही नदारत होते जा रहे हैं। इस स्थिति का ही ईसाई सस्थाए फायदा उठाती रही है। अफगानिस्तान मे ही इस्लामी बन्दो की जिन्दगी दुश्वार हो गई है। फिर भी दूसरे देशो मे आतकवाद को प्रोत्साहन देने मे बडी धनराशि खर्च की जा रही है। दूसरी ओर ईसाई सस्थाए प्रलोभन के द्वारा अपना कार्य कर रही है। धर्म प्रचार के इन दोनो तरीको पर विश्व मानवता के पक्षधरो को गम्भीरता से विचार करना होगा।

अपनी ही विचारधारा को सर्वश्रेष्ठ मानने की प्रवृत्ति ने ही ऐसे टकरावो को जन्म दिया है। मानव मात्र के कल्याण की भावना यहा बिल्कुल ही नहीं है। इस तथ्य पर भी विचार करना होगा कि तालिबान की कठोर नीतियो से इस्लाम को मानने वालो तथा ईसाई सस्थाओ के राहत कार्यों से पीडित लोगो को कितना लाभ हुआ ? कठोर नीतियो के कारण ही अफगानिस्तान बदहाली और विनाश के कगार पर पहुच गया हैं जेहाद के नाम पर दूसरे धर्म के लोगों की जिन्दगी से खेलने वाले तालिबान शासको का वास्तव मे अपने ही नागरिको के जीवन की कोई परवाह नहीं है। इसी प्रकार ईसाई सस्थाए यदि मानतवा के आधार पर सेवा कार्य करना चाहती है तो उन्हे समझना चाहिए कि अपने मत को थोपने का प्रयास अमानवीय है। उन्होने अफगानिस्तान मे भूख से पीडित बच्चो की तात्कालिक आवश्यकताए तो पूरी की लेकिन केवल इससे उनका भविष्य उज्ज्वल होने की कोई उम्मीद नहीं है। यह काम तो मानवतावादी दृष्टिकोण और वसुधैव कुटुम्बकम की भावना के आधार पर ही किया जा सकता है।

(वि० स० के० से साभार)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली–२ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) **फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित** सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली–२ **से प्रकाशित** (फोन ३२७४७७१, ३२६०६८५)। सम्पादक **वेदव्रत शर्मा**।
ई मेल नम्बर **vedicgod@nda.vsnl.net.in** तथा वेबसाईट **http://www.whereisgod.com**

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्



सार्वदेशिक

साप्ताहिक





सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४० अक २३ ३० सितम्बर से ६ अक्टूबर २००१ तक दयानन्दाब्द १७८ सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०२ सम्वत २०५८ प्र० आ० शु० १३

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

भूकम्प पीड़ित असहाय बालक-बालिकाओं के लिए तथा विधवा बहनों के आश्रय स्थल

'जीवन प्रभात' का गांधीधाम में शिलान्यास

कच्छ जिले मे आए विनाशक भूकम्प के कारण अनाथ हुए बालको एव विधवा बहनो को योग्य आश्रय प्राप्त हो तथा सस्कारी वातावरण प्राप्त हो सके इस आशय से आर्यसमाज गाधीधाम द्वारा सचालित असहाय बालको एव विधवाओ के आश्रय स्थल 'जीवन प्रभात' का शिलान्यास केन्द्रीय जहाजरानी मन्त्री श्री वेदप्रकाश गोयल एव केन्द्रीय कानून मन्त्री श्री अरुण जेटली के शुभ हाथो से किया गया।

समाजसेवा के कार्य मे सर्वदा अग्रसर रहने वाली गाधीधाम आर्यसमाज न कच्छ जिले मे आए भूकम्प के बाद सामाजिक सेवा के विविध कार्य किए। मृतदेहो को बाहर निकालना जीवित बचे लोगो को निकालना घायलो की सहायता करना सार्वजनिक रसोई का सचालन तम्बू, कम्बल दवाई अनाज व कपडो का वितरण करने जैसी विविध प्रवृत्तिया की। समाज सेवा का कार्य न मात्र नगर विस्तार मे अपितु गाव गाव मे जाकर भी किया गया तथा गावो मे माता–पिता से विहीन हुए बालको तथा विधवा हुई बहनो की दशा देख कर उनके लिए कुछ करने का विचार आर्यसमाज गाधीधाम ने किया। इस चिन्तन को साकार रूप देने के लिए इस भगीरथ कार्य में काण्डला पोर्ट ट्रस्ट ने दो एकड जमीन देकर अपना अमूल्य योगदान किया है।

जीवन प्रभात

[illegible]

ब्रह्मचारी आर्यनरेश जी ने प्रारम्भ वेदमन्त्रो से यज्ञ सम्पन्न कराया तथा भूमि को पवित्र किया। केन्द्रीय जहाजरानी मन्त्री श्री वेदप्रकाश गोयल व कानून मन्त्री श्री अरुण जेटली जी ने ताम्रपत्र को भूमि मे स्थापित किया।

इस अवसर पर सभा को सम्बोधित करते हुए गुजरात राज्य के शहरी विकास मन्त्री श्री पद्मानन्द कक्कड ने भूकम्प के बाद कच्छ की सेवा के लिए सर्वप्रथम आने वाले मन्त्रियो मे श्री अरुण जेटली का अभिवादन किया तथा मलबा उठाने एव नगरजनो की समस्याओ को हल करने के लिए काण्डला पोर्ट ट्रस्ट द्वारा किए गए कार्य की सराहना की। 'जीवन प्रभात मे रहने वाला हर बालक अच्छे सस्कार एव सुशिक्षा को प्राप्त कर देश का सच्चा सपूत बन ऐसी उन्होने शुभकामनाए व्यक्त की।

जी०एन०एफ०सी० के चेयरमैन श्री क०डी० जेसवानी ने आर्यसमाज गाधीधाम द्वारा की जाने वाली विविध प्रवृत्तियो की सराहना की तथा जून १९९८ मे आए तूफान के समय तथा भूकम्प की विकट परिस्थिति मे भी आर्यसमाज गाधीधाम ने किस प्रकार समाजसेवा की है उसको उन्होने खुले हृदय से सराहा। आर्यसमाज जिस प्रकार सस्कार सिचन एव सामाजिक शारीरिक एव आत्मिक विकास मे तत्पर रहत" है उसे देखते हुए निश्चित ही 'जीवन प्रभात मे बालको का तथा विधवा बहनो का सर्वागीण विकास हो सकेगा एसी उन्होने आशा व्यक्त की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप–प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य ने ससार का उपकार करने के लिए ही महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की थी। उन्होने अनाथालय विधवाश्रम स्थापित किए तथा विधवाओ के लिए पुनर्विवाह की प्रथा सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी ने ही स्थापित की। सम्पूर्ण विश्व मे आर्यसमाज की अनेको शाखाए है तथा अनाथालय विधवा आश्रम आदि कार्यरत है उसी कडी मे जीवन प्रभात आज जुड रहा है जिसका हमे गर्व है।



'जीवन प्रभात' का शिलान्यास करते समय श्री अरुण जेटली एव श्री वेदप्रकाश गोयल साथ मे श्री वाचोनिधि आर्य।
शिलान्यास समारोह पर मचस्थ श्री अरुण जेटली, श्री वेदप्रकाश गोयल, कैप्टन देवरत्न आर्य, आर्य नरेश तथा अन्य नेतागण।

केन्द्रीय कानून मन्त्री श्री अरुण जेटली ने सम्बोधित करते हुए कहा कि भूकम्प के बाद मेरा कच्छ की भूमि के साथ सम्बन्ध बढ गया है तथा आर्यसमाज जैसी समाजसेवी सस्थाओ एव काण्डला पोर्ट ट्रस्ट द्वारा ऐसे श्रेष्ठ कार्य मे दिया जाने वाला योगदान समाजोत्थान का कारण बनेगा। इसी प्रकार की प्रवृत्तियो स ही गाधीधाम विस्तार का चित्र २५ जनवरी २००१ को जैसा था उससे भी सुन्दर बन पाएगा ऐसी आशा व्यक्त की। 'जीवन प्रभात मे रहन वाले बालक–बालिकाए तथा विधवा बहने अपने आपको असहाय नहीं अपितु एक साधन सम्पन्न विशाल परिवार का सदस्य मानते हुए सुसस्कारी परिवार का अपन आपका सदस्य माने। शेष पृष्ठ ११ पर

सम्पादक

सह सम्पादक

प्रसिद्ध दानवीर स्व० लाला दीवानचन्द जी का ११८ वां जन्मोत्सव मनाया गया

नई दिल्ली २४ सितम्बर प्रसिद्ध आर्य समाजी एव दानवीर स्व० लाला दीवानचन्द जी का ११ वा जन्मोत्सव समारोह पूर्वक आर्यसमाज दीवानहाल मे मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ अधिवक्ता एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रशासक श्री रामफल बसल ने की। उन्होने कहा कि लाला दीवानचन्द जी ने करोडो रुपए कमाए और करोडो रुपए जनता की सेवा के लिए दान कर दिए। आर्यसमाज दीवानहाल उनका सही स्मृति चिन्ह है। उनकी धर्मपत्नी सतभ्रावा के नाम से करौलबाग दिल्ली मे कन्याओ का विद्यालय प्रसिद्ध है। इस प्रकार श्री बसल जी ने उनके जीवन के सम्बन्ध मे उनके व्यक्तित्व पर परिचयात्मक वृत्त प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर सतभ्रावा कन्या विद्यालय करौलबाग आयसमाज कन्या स्कूल चावडी बाजार माडर्न कैम्ब्रिज स्कूल करोल बाग की कन्याओ एवम अध्यापिकाओ ने भी भाग लिया तथा मधुर सगीत और गीत प्रस्तुत किए



आर्यसमाज दीवान हाल मे लाला दीवानचन्द के जन्मदिवस के अवसर पर उद्बोधन करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा। साथ मे खडे हैं आर्यसमाज दीवान हाल के मन्त्री मेजर डॉ० रविकान्त। इस अवसर पर श्री रामफल बसल तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मूर्ती देवी बसल के स्वागत का एक दृश्य।

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो के प्रतिनिधियो ने इसमे भाग लिया। जिनमे श्री सोमदत्त महाजन श्री अभिमन्यु चावला श्री रवीन्द्र मेहता श्री पतराम त्यागी श्री राजीव भाटिया इत्यादि प्रमुख थे। केसरिया पगडी मे आयसमाज जनकपुरी के सदस्यो की अदभुत छटा थी। यज्ञ के यजमान दिल्ली आर० एस० एस० के प्रमुख श्री सुरेश वाजपेयी थे।

इस अवसर पर श्री राजसिह भल्ला ने आर्यसमाज दीवानहाल की स्थापना तथा किस प्रकार यह जगह खरीदी गई इसका विवरण दिया। उन्होने कहा कि सौभाग्य से आज स्व० श्री सूर्यदेव जी का भी जन्मदिवस है और आर्यसमाज दीवान हाल के लिए उनकी सेवाए भी एक ऐतिहासिक यादगार बनी रहेगी।

प्रि० चन्द्रदेव जी ने लाला दीवान चन्द जी को भावभीनी श्रद्धाजली भेट करते हुए कहा कि ऐसे कर्मवीर और दानवीर विरले ही होते हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा जी ने अपने उदगार व्यक्त करते हुए कहा कि वैदिक परम्परा जन्मदिवस मनाने की है। उन्होंने आर्य समाज दीवानहाल का आभार व्यक्त किया कि यह आर्यसमाज अपने दानवीरो को तथा आर्यसमाज के शहीदो को याद करती है।

डा० सच्चिदानन्द जी ने लाला दीवान चन्द जी को एक ऐसा व्यक्ति बताया जिसने कभी भी पैसे और दान के साथ अपना नाम प्रचारित करने की परवाह नही की।

आर्य समाज जनकपुरी के श्री सोमदत्त जी महाजन ने कहा कि लाला जी का जीवन वृत्तात रोगटे खडे कर देने वाला है। आज से इतने वर्ष पूर्व निस्वार्थ भाव से इतना दान देना वास्तव मे महान है

सतभ्रावा ट्रस्ट के प्रधान श्री ओमप्रकाश आहूजा ने लाला दीवानचन्द जी को एक अदभुत प्रतिभा का धनी व्यक्ति बताया तथा उनके द्वारा स्थापित विभिन्न सस्थाओ के कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया।

समारोह का सचालन आर्यसमाज दीवान हाल क मन्त्री डा० रविकात ने किया तथा आर्यसमाज दीवानहाल की ओर से लाला दीवान चन्द जी के जीवन पर प्रकाशित पुस्तिका वितरित की।

इस अवसर पर आर्यजनो की ओर से सार्वदेशिक सभा के प्रशासक माननीय श्री रामफल बसल जी वरिष्ठ अधिवक्ता सुप्रीम कोर्ट तथा माता मूर्ती देवी का भव्य स्वागत किया गया।

चौ० लक्ष्मी चद जी ने समारोह समाप्ति पर आर्यसमाज दीवान हाल की ओर से यज्ञ शेष वितरण की व्यवस्था की।

श्री राजसिह भल्ला द्वारा धन्यवाद एव शान्ति पाठ के पश्चात सभा सम्पन्न हुई।

मेजर डॉ० रविकान्त
(सेवानिवृत्त)
मन्त्री आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली

सार्वदेशिक सभा कार्यालय २ सप्ताह बन्द रखना पडा

सार्वदशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का ३/५, दयानन्द भवन आसफ अली रोड नई दिल्ली स्थित कायालय लगभग दो सप्ताह के लिए कुछ अपरिहार्य कारण से बन्द रखना पडा। इसी कारण से सार्वदेशिक साप्ताहिक के दो अक तथा वैदिक लाईट सितम्बर २००१ माह का अक भी प्रकाशित नहीं हो पाया। आशा है पाठक तथा अन्य आर्यजन इस असुविधा को सहन करते हुए अपना सहयोग पूर्ववत जारी रखगे। इस अवधि मे आर्यजनो आर्य सस्थाओ समाजो और सभाओ की ओर से यदि कोई डाक पत्र प्रेषक के पास वापस पहुच गए हो तो उन्हे दोबारा भजने का कष्ट करे। अब सभा कार्यालय सुचारु रूप से कार्य कर रहा है। इस असुविधा के लिए खेद है।

उल्लेखनीय है कि ६ अगस्त २००१ के दिए गए दिल्ली की एक अदालत के आदेश के द्वारा सार्वदेशिक सभा के आगामी चुनाव करवाने के लिए श्री रामफल बसल एव श्री आर०एन० मित्तल को चुनाव अधिकारी तथा परिणाम घोषित होने तक प्रशासक नियुक्त किया गया था। श्री मित्तल की व्यस्तता और अनुपलब्धता के कारण उन्ही की प्रार्थना पर सार्वदेशिक न्याय सभा दे प्रधान श्री रामफल बसल जी ने अकेले ही इस जिम्मेवारी को निर्वहन करना स्वीकार किया।

चुनाव प्रक्रिया को रुकवाने के उद्देश्य से श्री मनमोहन तिवारी की ओर से एक प्रार्थना पत्र उसी अदालत मे प्रस्तुत किया गया जिस पर पाच सितम्बर को अदालत ने चुनाव अधिकारी श्री रामफल बसल को आगे कार्य करने से रोक दिया। इस बीच कुछ लोगो ने सार्वदेशिक कार्यालय पर गैरकानूनी तरीके से कब्जा करने का प्रयास किया। परिणामत श्री रामफल बसल को इस आशय की एक शिकायत स्थानीय पुलिस स्टेशन मे भी देनी पडी और न चाहते हुए भी उन्हे कार्यालय बन्द करने का कठोर निर्णय लेना पडा।

२२ सितम्बर २००१ को गहन विचार विमर्श और लम्बी सुनवाई के बाद दिल्ली की सिविल जज श्रीमती सुखविन्दर कौर ने पुन अपना निर्णय सुनाते हुए अपने पुराने आदेश दिनाक ६ अगस्त को बरकरार रखा जिसमे श्री रामफल बसल एव श्री मित्तल को चुनाव अधिकारी एव प्रशासक नियुक्त किया गया था। २२ सितम्बर के इस निर्णय की घोषणा के बाद ही कार्यालय को खोला जाना सम्भव हो सका।

सार्वदेशिक सभा का चुनाव कार्यक्रम
त्रैवार्षिक अधिवेशन ३ और ४ नवम्बर, २००१ को ही होगा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के चुनाव अधिकारी एव प्रशासक श्री रामफल बसल ने विगत माह की अव्यवस्थाओ के दृष्टिगत प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओ से प्रतिनिधि फार्म आदि सार्वदेशिक सभा मे भेजने के लिए अन्तिम तिथि २५ सितम्बर को बढाकर ३० सितम्बर कर दी है। अब सभी सम्बद्ध सभाओ को ३० सितम्बर तक प्रतिनिधि फार्म जमा करवाने होगें। फार्मों की जाच तथा आपत्तियो के निराकरण की सुनवाई १ अक्तूबर (सोमवार) को प्रात १० बजे सार्वदेशिक सभा कार्यालय मे होगी।

सार्वदेशिक सभा का त्रैवार्षिक अधिवेशन पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार **३ और ४ नवम्बर २००१ को ही प्रात ११ बजे से आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल चादनी चौक दिल्ली मे** सम्पन्न होगा। ✡✡✡

अंग्रेजी भाषा की गुलामी में कब तक जकड़े रहेंगे ?

– शिवकुमार गोयल

हमे विदेशी अग्रेजो की दासता से मुक्त हुए पूरे ५३ वर्ष बीत चुके हैं किन्तु हम अभी तक अपने को विदेशी भाषा अग्रेजी की दासता से मुक्त नहीं कर पाए है। अग्रेजी भाषा की मानसिक दासता हमे बुरी तरह से जकडे हुए है तथा हम अग्रेजी को अन्तर्राष्ट्रीय व सबसे समृद्ध भाषा होने का भ्रम पाले हुए अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा अन्य प्रान्तीय भारतीय भाषाओ की घोर उपेक्षा करने मे भी नही हिचकिचाते। १४ सितम्बर १६४८ को राष्ट्रभाषा हिन्दी को भारत के काम काज की भाषा घोषित किया गया था। हमारे स्वाधीनता सग्राम के दौरान महात्मा गाधी महामना प० मदनमोहन मालवीय लोकमान्य तिलक राजर्षि पुरुषोत्तमदास टडन प्रभृति सभी विभूतियो ने देश के स्वाधीन होते ही अग्रेजी की जगह हिन्दी को राष्ट्रभाषा का पद दिए जाने की उदघोषणा की थी। देश के स्वाधीन होने के बाद अग्रेजी भाषा की मानसिक दासता से ग्रसित प्रथम प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू ने हिन्दी को उपयुक्त स्थान दिलाए जाने म राड अटकाने शुरू कर दिए। कहा जाने लगा कि अग्रेजी के बिना भारत ज्ञान विज्ञान मे पिछड जाएगा। उधर दक्षिण भारत के कुछ निहित स्वार्थी तत्वो ने हिन्दी के विरोध मे अभियान छेड डाला। राष्ट्रभाषा हिन्दी इनकी कुचालो की शिकार होने लगी।

उर्दू व हिन्दुस्तानी भाषा की आड में

हिन्दी भाषी राज्य यदि राष्ट्रभाषा के महत्व को समझ कर अपने यहा तुरन्त हिन्दी को उपयुक्त स्थान दे देते तथा अग्रेजी के मोह व दासता से मुक्ति पा जाते तो अन्य राज्या को भी प्रेरित किया जा सकता था। किन्तु उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्र मे मजहबी उन्मादी लोगो ने उर्दू व हिन्दुस्तानी भाषा की आड मे हिन्दी के मार्ग मे रोडे बिछाने शुरू कर दिए। हिन्दी भाषा मे उर्दू व अरबी के शब्द घुसेडकर उसे विकृत किए जाने का षडयन्त्र रचा गया। हिन्दुस्तानी भाषा के नाम पर एक पुस्तक के पाठयक्रम मे बादशाह दशरथ शहजादा राम बेगम सीता मौलाना बाल्मीकि जैसे शब्दो का समावेश किया गया जिसका टण्डन जी निराला जी तथा प० श्री नारायण चतुर्वेदी और किशोरीदास वाजपेयी आदि ने प्रबल विरोध कर हिन्दी को विकृत किए जाने के षडयन्त्र को असफल किया। हिन्दी भाषी राज्यो के लोगो को लगा कि अग्रेजी भाषा इस देश से जाएगी नहीं अत उन्होने उच्च नौकरियो के लालच मे अपने बच्चो को अग्रेजी पढाने को प्राथमिकता देनी जारी रखी। अग्रेजी भाषा का दबदबा बढता गया तथा हमारी युवा पीढी राष्ट्रभाषा हिन्दी की जगह विदेशी भाषा अग्रेजी को प्रोत्साहन देने लगी और तो और विवाह मुडन सस्कार नामकरण सस्कार गृह प्रवेश जैसे सास्कृतिक व धार्मिक सस्कारो के कार्यक्रमो के निमन्त्रण पत्र भी हिन्दी की जगह अग्रेजी भाषा मे प्रकाशित कराने मे हम गौरव का अनुभव करने लगे। माता पिता तथा परिवारीजन अग्रेजी का शब्द नही पढ सकते वे भी समझने लगे कि अग्रेजी मे निमन्त्रण पत्र छपवाने मे उनके परिवार की शान बढेगी लोगो पर रौब जमेगा। हिन्दी भाषी क्षेत्रो के व्यापारी दुकानदार तक अपनी फर्मो के दुकानो के नामपटट अग्रेजी मे लिखवाने मे शान समझने लगे। फिर भला अहिन्दी भाषी राज्यो के लोगो से हम राष्ट्रभाषा हिन्दी को उचित स्थान दिये जाने की आशा कैसे कर सकते है ?

धार्मिकजन भी अग्रेजी के गुलाम

भारत धर्म प्राण देश है। हमारे धर्म सस्कृति व प्राचीन साहित्य का माध्यम सस्कृत तथा हिन्दी भाषा है। किन्तु हमारे सत महात्मा व धर्माचार्य भी अग्रेजी भाषा की मानसिक दासता के शिकार होत हुए। मै जब कुछ धर्माचार्यो को अपने नाम से पूर्व हिजहोलीनस स्वामी जी कल लिखे देखता हू तो अपना माथा पीट लेता हू। कुछ तथाकथित धर्माचार्यो व कलियुगी योगियो ने तो मानो हिन्दी सस्कृत की जगह पूरी तरह अग्रेजी भाषा अग्रेजी खान पान अग्रेजी की पाश्चात्य विकृतियो को ही अपनाने को अपने प्रभाव बढाने का साधन मान लिया है। ये कथित योगी ही योग की जगह योगा कृष्ण की जगह कृष्णा जैसी भाषायी विकृति के लिए जिम्मेदार है। १६७० मे मै दिल्ली मे हिन्दी सवाद समिति हिन्दुस्थान समाचार मे सेवारत था। रामलीला के दिन थे। दिल्ली की एक बडी रामलीला समिति के आयोजको ने हमारे कार्यालय को प्रेस सम्मेलन का अग्रेजी मे निमन्त्रण पत्र भेजा। उसे पढा तो लिखा था – काकटेल पार्टी (शराब पार्टी) मे भाग ले। मैने एक धार्मिक समारोह का निमत्रण पत्र विदेशी भाषा मे भेजे जाने तथा उसमे शराब पिलाए जाने के विरुद्ध समाचार प्रसारित कर दिया। देशभर के पत्रो मे वह प्रमुखता से छपा। बाद मे आयोजको को क्षमा मागनी पडी। मेरा कहने का आशय केवल यह है कि हमारे हिन्दी भाषी क्षेत्रो की धार्मिक व सामाजिक सस्थाए भी विदेशी भाषा व विदेशी विकृतियो की दासता से ग्रसित हो चुकी है। फिर स्वदेशी व स्वभाषा की पुनर्स्थापना की किससे आशा की जा सकती है।

शहरो के नाम बदलने की साजिश

अग्रेजी भाषा के माध्यम से हमारे सास्कृतिक व ऐतिहासिक स्वरूप को भी नष्ट किया जा रहा है। मध्यप्रदेश मे १८४७ के महान स्वाधीनता सेनानी तात्याटोपे का बहुत आदर है। वहा के कुछ राष्ट्रप्रेमियो ने वर्षो के प्रयास क बाद भोपाल व जबलपुर मे तात्याटोपे नगर की कालोनिया बसाई। अग्रेजी के मानसिक गुलामो ने तात्याटोपे नगर का नाम टीटी नगर कर डाला। आज भोपाल जाए तो स्कूटर या रिक्शावाला आपको तात्यानगर पहुचाने को तैयार नही होगा। टी टी नगर कहते ही वह समझ जाएगा कि आप कहा जाना चाहते है। दिल्ली क **रामकृष्णपुरम को आर के पुरम के** नाम से जाना जाता है। **महात्मा गाधी मार्ग** का नाम **एम जी रोड** कर दिया गया। भगवान श्री कृष्ण के उपासक मा बाप ने बेटे का नाम **कृष्ण गोपाल अग्रवाल** रखा – बेटे ने अग्रेजी के माह मे **के जी अग्रवाल** लिखना शुरू कर दिया। मा बाप की नामकरण के पीछे की भावना लुप्त हो गई।

अब तो इस अग्रेजी ने सन्तो को भी सेन्ट बना डाला है। गाजियाबाद व दिल्ली मे सेन्ट विवेकानन्द स्कूल देखे जा सकते है। भविष्य मे सेन्ट तुलसीदास व सेन्ट सूरदास भी देखने को मिल सकते है। यदि हिन्दुस्तानी भाषा के नाम पर शहजादा राम व बेगम सीता के चलन का शुरू मे विरोध न होता तो मदर पार्वती तथा मदर अनुसूया का प्रचलन अग्रेजी दा शुरू कर देते।

हिन्दी भाषी राज्यो के निवासियो को दृढ सकल्प कर लेना चाहिए कि वे अपने कार्य मे अग्रेजी का प्रयोग बिल्कुल नही करेगे। विवाह सस्कार तथा अन्य धार्मिक व सास्कृतिक कार्यक्रमो के अग्रेजी मे मिलने वाले निमन्त्रण का बहिष्कार करगे। मैने १६७० मे हिन्दी सेवी सासद श्री प्रकाशवीर शास्त्री के समक्ष सकल्प लिया था कि मै अग्रेजी मे मिलने वाले किसी भी निमन्त्रण पत्र के कार्यक्रम मे शामिल नही होऊगा – मै आज तक उसका पालन कर रहा हू। जब कोई निकट का रिश्तेदार भी अग्रेजी मे निमन्त्रण भेजता है तो उसे साफ आने से मना कर देता हू मेरठ की साहित्यिक विभूति स्व० विश्वभर सहाय प्रेमी जी के सुपुत्र श्री रत्नकुमार प्रेमी मेरठ मे प्रेमी मुद्रणालय के सचालक थे। उन्होने सकल्प लिया था कि वे अपने मुद्रणालय मे सामाजिक व धार्मिक कार्यक्रमो के अग्रेजी के निमत्रण पत्र नही छापेगे। ग्राहक अगेजी मे निमत्रण पत्र छपवाने आता वे मातृभाषा के प्रति उसका सम्मान जागृत कर उसे हिन्दी म छपवाने को तैयार करते दुराग्रह करने पर विनयपूवक कह देते – मै अग्रेजी मे नही छाप पाऊगा। आज रत्नकुमार प्रेमी जैसे हिन्दी पुरोधा की आवश्यकता हे जा अग्रेजी की मानसिक दासता का तोडकर तार तार कर राष्ट्रभाषा के प्रति र भिमान की भावना जागृत कर सके

हम अपने देशवासियो क इस भ्रम को तोडना होगा कि अग्रेजी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है तथा उसके बिना भारतीय ज्ञान विज्ञान मे अधकचर रह जाएगे। जापान ने विज्ञान मे अग्रेजी के माध्यम से नही अपनी जापानी भाषा के माध्यम स प्रगति की। चीन रूस जर्मनी म अग्रेजी कौन समझता है। इस्राइल जैसे छोटे से राष्ट्र ने अपनी मृतप्राय भाषा हिब्रू का पुनर्जीवित कर उसके भण्डार को ज्ञान विज्ञान से पूरित कर दिया। अग्रेजी हटाओ अभियान के पुरोधा डा० वेदप्रताप वैदिक का दावा है कि अग्रेजी केवल अग्रेजो या उनके कुछ गुलाम देशो की भाषा रही है, भारत अग्रेजो का गुलाम रहा इसलिए यहा के कुछ नौकरशाह अग्रेजी को पालते पोसते रहे है।

हमे हिन्दी दिवस क अवसर पर अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी क प्रति अपने दायित्व को पूर्ण करने का सकल्प लेना होगा। **(धर्म भवन पिलखुवा)**

ईसाई धार्मिकता के टेढ़े मेढ़े रास्ते

– हरिकृष्ण निगम

आज पश्चिम मे चर्च के वर्चस्व को मिल रही चुनौतिया चिन्ता का विषय बन गई है। हाल मे वेटिकन ने इस बात को स्वीकार किया है कि कुछ मिशनरी और पादरी साध्वियो को उनसे यौन सम्बन्ध बनाने के लिए मजबूर करते है। इसके अलावा उनके द्वारा किए बलात्कार क कई प्रकरण भी सामने आए है और बाद मे गर्भपात करवाने के लिए भी वे जिम्मेदार पाये गए है। राम से प्रकाशित होने वाले दैनिक पत्र ला रिपब्लिका ने हाल मे कहा है कि कई चर्चो मे साध्वियो को गर्भ निरोधक गोलिया खाने के लिए मजबूर किया जाता है।

वेटिकन ने कहा है कि यह मुद्दा एक समय विशेष भोगोलिक क्षेत्रो मे ही सीमित था पर आज सयुक्त राज्य अमेरिका के साथ ब्राजील फिलीपीन्स भारत आयरलैण्ड और इटली मे भी ऐसी घटनाए हो रही है। हाल मे हुए कैथोलिक बिशपो के एक अमेरिकी सम्मेलन के प्रवक्ता बिल रायन के अनुसार इस तरह की घटनाए काफी भयावह रूप ले रही है जिससे चर्च की छवि पर भी आच आई है। इसाई धर्मगुरुओ के यौनाचार के ऐसे प्रकरण कानसास से प्रकाशित साप्ताहिक पत्र नेशनल कैथोलिक रिपोर्टर मे इसी साल १६ मार्च २००१ को प्रकाशित हुए थे। पर इस पत्र ने मिशनरियो का पक्ष लेकर यह भी कहा कि वे दूर सुदूर क्षेत्रो मे रह कर एक कठिन जिन्दगी बिताते हुए धर्म का कार्य करते है और भौगोलिक विविधताओ को ध्यान मे रखते हुए यदि यौनाचरण की ऐसी घटनाए होती भी है तो उन्हे मीडिया को उछालने के स्थान पर अनदेखा कर देना चाहिए। वेटिकन से जारी एक वक्तव्य मे भी यही कहा गया है कि पादरियो के विकृत यौनाचारा की बातो के बारे मे उन्हे सूचना है जो कुछ विशेष देशो और क्षेत्रो तक सीमित है। यह भी कहा गया है कि वेटिकन का होली सी कार्यालय जिसका काम यूनियन ऑफ सुपीरियर जनरल के पुरुष बिशपो को देखता है और दूसरा सगठन इटरनेशनल यूनियन ऑफ सुपीरियर्स जनरल जो महिलाओ के धार्मिक आर्डर को सम्हालता है। वे दोनो ही इस पर निर्णय लेगे।

यद्यपि वेटिकन ने ऐसे देशो का नाम नही लिया है। जहा के अनेक पादरी यौनाचार मे लिप्त हैं पर एक दूसरे समाचार मे कहा गया है कि अफ्रीका मे कान्वेट मे रहने वाली ननो के साथ यौन प्रतारण सबसे अधिक है। वहा उन्हे सुरक्षित माना जाता है क्योकि सारे महाद्वीप मे एडस के रोगो से लाखो लोग पीडित है। वेटिकन से प्रकाशित ला रिपब्लिका नामक पत्र के सवाददाता मार्को पोलिटी ने कहा है कि चर्च के अधिकारियो को उन पादरियो के नाम भी मालूम है जिनके पर यौनाचरण के आरोप है पर जिने नाम गुप्त रखे हुए है। इस पर एक गुप्त रिपोर्ट भी एम० ओ० डोनाह्यू द्वारा फरवरी १९९५ मे कार्डिनल मार्टीनर सोवालो को सौपी गयी थी पर जाच को सार्वजनिक नही किया गया है क्योकि इससे कैथोलिक चर्च की छवि पर आच आती है।

यह एक विषय ऐसा है जिसके बारे मे सभी जानते है पर यदि इसकी चर्चा भी होती है तो इस सत्य को स्वीकार करने मे भी झिझकते है। बच्चो के यौन प्रतारण या अव्यस्को के साथ सेक्स सम्बन्धा के भी अनेक प्रकरण यदा कदा अखबारो मे छपते रहे है पर समाज मे उनको भी नजरन्दाज किया जाता है। मध्य प्रदेश बिहार केरल और गोवा मे भी चर्च से जुडे लोगो पर कई बार आरोप लग चुके है पर बहुधा यह उनका अन्दरूनी धार्मिक मामला मान कर इसे दबा दिया जाता है। साथ ही ऐसा शायद ही कमी हुआ हो जब हमारे देश मे इस विकृत यौनाचरण पर किसी को सजा मिली हो। ७० वर्षीय फ्रेडी पीट नाम एक व्यक्ति को शायद पहली बार गोआ मे बच्चो के साथ अनैतिक सम्बन्ध रखने के लिए कुछ वर्षो पहले सजा हुई थी।

अमेरिका की सीमा मे लगे कनाडा के ग्रामीण क्षेत्र मे एक अतिरेकी चर्च जिसका नाम चर्च आफ गॉड है ओन्टेरियो के एलमार नामक स्थान पर है। हाल मे वहा से लगभग १०० औरते और बच्चे अमेरिका की सीमा मे इसलिए भाग आये क्योकि चर्च के अधिकारी बच्चो को बेतो और छडियो से पीटकर सजा देते थे। भागे हुए समूह मे २८ स्त्रिया और ८० बच्चे है। शारीरिक दण्ड दक्षिण ओन्टेरियो मे चर्च परिसर के स्कूलो मे आम बात है। चर्च आफ गॉड के अधिकारियो के अनुसार अनुशासन के लिए शारीरिक दण्ड देना ईसाई धार्मिक ग्रन्थो के अनुसार वैध है। वैसे अमेरिका मे भी ऐसा कोई कानून नही है जिसके द्वारा बच्चो को स्कूल मे पीटना अवैध माना जाता हो। जबकि बच्चो के प्रतारण के अनेक रूपो को कानून मे प्रतिबन्धित किया गया है पर ओहायो जैसे राज्य मे बच्चे को शारीरिक सजा देने के समर्थक काफी सख्या मे है दूसरी ओर फ्लेरिडा मे यदि बच्चे के शरीर पर लाल निशान हो तो उस पर अनाचार के आरोप मे पाच साल तक की सजा दी जा सकती है। वारमौन्ट और मिशिगन मे ऐसी कई घटनाए हुई है जहा धार्मिक प्रथाओ के नाम पर स्कूली बच्चो को शारीरिक दण्ड दिए गए है। शारीरिक दण्ड कब बच्चे का प्रतारण या चाइल्ड एब्यूज का अपराध बन जाता है। इस पर कानूनी बारीकिया है। चर्च के पास इसका कोई जवाब नहीं है और अमेरिका मे अनेक चर्च इस प्रथा को जायज ठहराते है। सजा देने के लिए बच्चो को घर से जबर्दस्ती खीच कर लाकर स्कूल मे दण्ड देने के कई प्रकरण अमेरिका मीडिया मे छपे है।

आज हमारे देश मे धर्मनिरपेक्षता को वोटो की राजनीति के चश्मे से देखने वाले और बहुसख्यको के कथित बुद्धिवादियो के एक वर्ग मे आत्मप्रतारण और हीनताग्रथि इतनी प्रबल है कि वे पश्चिम के विकसित देशो का भी धार्मिक परिदृश्य कैसा है इससे सर्वथा अनभिज्ञ है। अनेक देशो मे नागरिको के आयकर से चर्च के लिए राशि एकत्र की जाती है। राष्ट्रपति बुश की नई घोषित नीतियो के तहत चर्चो के तथाकथित कल्याणकारी कामकाज के लिए सरकारी अनुदानो का प्रावधान होने के साथ साथ अमेरिकी सरकार कारपोरेट जगत से भी अपेक्षा करती है कि वे चर्च समर्थित सामाजिक कार्यक्रमो मे खुल कर राशि दे जो लाखो डालर मे होती है। यह सब तक कैथोलिक सम्प्रदाय का प्रतिगामी एजेण्डा जैसे परिवार नियोजन का विरोध आदि विश्व विदित है। दूसरे सम्प्रदायो की गलाकाट प्रतिद्वन्द्विता और अनुयाईयो की सख्या बढने के कार्यक्रम भी किसी से छिपे नहीं हैं।

आज पश्चिमी चर्च सम्प्रदायो मे जहा एक कट्टरवादी विचारो की वापसी का दौर चल रहा है दूसरी ओर व्यावसायिकता भी भरपूर है। अमेरिका मे तो चर्चो मे होड चल रही है जिससे वे अपने नए मैदानो प्रागणो अथवा परिसरो मे प्रार्थना के लिए आने वालो के बीच व्यवसाय भी कर सके। आज ऐसे कई चर्च सम्प्रदाय हैं जो चर्च के साथ रेस्तरा भी खोल रहे है। बर्गर एण्ड बेनेडिक्शन – एक प्रमुख समाचार पत्र ने इस शीर्षक से यह लिखा है कि चर्च के पोस्टर वहा आने वालो के लिए कुछ नया आकर्षण पैदा करना चाहते है। इण्डियाना के मुन्स्टर नगर मे जहा कई स्टील मिले हैं। फैमिली क्रिश्चियन नामक सम्प्रदाय ने अपने चर्च की लॉबी मे प्रसिद्ध अमेरिकी स्टारबक कॉफी का विक्रय शुरू कर दिया है। साथ ही वहा आईसक्रीम के काउन्टर भी खोले गए है। एक कॉफी बार भी चर्च के हिस्से मे है। एक पादरी मेलोदया मुन्जी का कहना है कि यह उतना महत्वपूर्ण नही है कि हम सिर्फ दो सौ कप काफी आने वालो को बेचते है पर उनकी यह भावना कि चर्च सिर्फ शुष्क ठडी और उमस भरी जगह है इस नए आकर्षण से दूर की जा सकेगी। उनके चर्च मे उस क्षेत्र के लगभग ६००० सदस्य अब यहा आकर प्रसन्न रह सकेगे और अपने मित्रो से एकसकारात्मक वातावरण मे मिलजुल भी सकते है – ऐसा चर्च का मानना है।

फैमिली क्रिश्चियन अमेरिका मे अकेला चर्च नहीं है जहा व्यावसायिक बुद्धि फल फूल रही है जिससे प्रार्थना गृहो का वर्तमान रूप बदल रहा है। मेनकेवेल्स नामक स्थान मे मसीहा क्रिश्चियन चर्च ने एक जिम और स्वास्थ्य केन्द्र भी खोला है जिसकी सदस्यता शुल्क की राशि ३०० डालर प्रति वर्ष है। हूस्टन के ब्रेन्टवुड बैपटिस्ट चर्च ने अब अपने यहा मैकडोनाल्ड की एक शाखा भी खोल दी है। इस बर्गर के बिक्री केन्द्र मे एक ड्राइव इन काउन्टर भी होगा जो चर्च और उसके सदस्य मिल कर चलाएगे पर इसका प्रबन्धन चर्च के हाथो मे होगा। उनका कहना है कि वे अपने चर्च के लोगो को आध्यात्मिक सहायता ही नही साथ मे भावनात्मक और आर्थिक सहायता भी देना चाहते है। इस आधुनिक परिदृश्य के सदर्भ मे और अनुभवो की रोशनी मे हमारे देश के कुछ विश्वदृष्टि के दावेदार बहुसख्यको की भारतीयता की अवधारणा का मध्य युगीन अन्यायपरक राजनीतिक छल से भरी और खण्डित होते हुए समाज का प्रतिबिम्ब कहते हैं कितना खोखला है यह हम समझ सकते हैं।

(७ सितम्बर, दैनिक जागरण से साभार)

गतांक से आगे

पितृ यज्ञ तथा श्राद्ध तर्पण

– देवनारायण तिवारी

जन्म मृत्युं हि यात्येको भुनक्त्येकः शुभाऽशुभम्।
नरकेषु पतत्येक एकोयाति परां गतिम।।

(चाणक्यनीति – ५/१३)

भावार्थ – मनुष्य अकेला ही जन्म और मृत्यु को प्राप्त होता है, अकेला ही शुभाशुभ पाप–पुण्य का फल भोगता है अकेला ही नाना प्रकार के नरक मे गिरता है और अकेला ही परमगति (मोक्ष) को पाता है अर्थात् जाता है।

इसी प्रकार के श्लोक गरुण पुराण मे भी कुछ पाठ भेद करके लिखे हुए हैं और श्राद्ध कर्म के निमित्त हमारे देश मे गरुण पुराण की बडी मान्यता है अत उन श्लोको को उद्धृत करना हम अनिवार्य समझते हैं।

१. **न पितुः कर्मणा पुत्रः पिता वा पुत्र कर्मणा।**
स्वयं कृतेन गच्छन्ति स्वयं बद्धाः स्वकर्मणा।।

गरुणपुराण आचार खण्ड अ० ११३

२. **भूतपूर्व कृतं कर्म कर्तामनुतिष्ठति।**
यथा धेनु सहस्रेषु वत्सो विन्दति मातरम्।।

ग० पु० आ० ख० अ० ११३

३. **क्व माता क्व पिता मूढ क्व जाया क्व सुता सुहृत।**
स्वकर्मोपार्जितं भुक्ष्व मूर्ख यातश्चिरं पथि।।

गरुड प्रेत० अ० ५

४. **आत्मनश्च शुभं कर्म कर्तव्यं पारलौकिकम्।**
विमुक्तः सर्व दु खेभ्यो येनाऽजो दुर्गतिं तरेत।।

५. **भ्रातरः कस्य के पुत्राः स्त्रियोऽपि स्वार्थ कोविदाः।।**

६. **न कार्यस्तेषु विश्रम्भः स्वकृतं भुज्यते यतः।**
गृहेष्वर्था निवर्तन्ते श्मशाने चैव बान्धवाः।

७. **शरीरं काष्ठ मादत्ते पापं पुण्यं सह व्रजेत्।**
तस्मादाशु त्वया सम्यगात्मनः श्रेय इच्छता।।

भावार्थ १ न पिता के कर्म से पुत्र न पुत्र के कर्म से पिता अपितु स्वय अपने किए हुए कर्मों से जीव स्वय बधे हुए जाते है। २ पूर्व किया हुआ कर्म ही कर्ता को प्राप्त होता है जैसे सहस्रो गौवो मे से बछडा अपनी मा के पास ही जाता है। ३ हे मूढ ! कहा माता है, कहा पिता है कहा स्त्री पुत्र और मित्र है ? परलोक मे जाते हुए तू ही अपने कर्मो का फल भोग। ४ परलोक के लिए स्वय शुभकर्म करना चाहिए जिससे जीव सर्व दुखो से मुक्त होकर दुर्गति को तर सके। ५ भाई किसके है, पुत्र कौन है, स्त्रिया भी स्वार्थ मे बधी हुई चतुर हैं। ६ उनमे विश्वास नहीं करना चाहिए क्योकि मनुष्य स्वय के ही किए हुए कर्मो को भोगता है, धन घर मे रह जाता है तथा बन्धु-बाधव लोग श्मशान तक ही रह जाते। ७ शरीर लकडियो मे (चिता मे) रह जाता है अर्थात् जल जाता है अपना ही किया हुआ पाप-पुण्य साथ जाता है। इसलिए तुझे तत्काल अपनी आत्मा के कल्याण की इच्छा से, इस अस्थित शरीर मे परलोकार्थ कर्म करने चाहिए।

इन प्रमाणो से सिद्ध है कर्मों का फल कर्ता को ही मिलता है एक दूसरे के कर्म का फल अन्यो को नहीं मिलता यही परमात्मा का नियम है। यदि अन्य के कर्मों का फल अन्यो को दे तो परमात्मा का न्याय नष्ट हो जाए। अत मृतक पितरो के बारे मे श्राद्ध पिण्डदान आदि की कल्पना मिथ्या और भ्रम है। अब पितर शब्द पर थोडा विचार करते हैं।

उदन्वती द्यौरमा पीलुमतीति मध्यमा।
तृतीया ह प्रद्यौरिति यस्यां पितर आसते।।

अथर्ववेद १८/२/४८

भावार्थ – सबसे नीचे दर्जे की पृथ्वी भोगमय (भोगलिप्त) तामस लोगो के निवास के कारण उदन्वती कही जाती है, मध्यम कोटि की भूमि कर्मफल सयुक्त, राजस पुरुषो के निवास के कारण पीलुमती कहाती है, और तृतीय सबसे उत्तम कोटि की पृथ्वी सात्विक वृत्ति प्रजापालक और पूज्य माता-पिता, गुरु साधु, महात्माओ के निवास के कारण प्रद्यौ कहलाती है।

इस उपरोक्त वेद मन्त्र मे जीवितो के लिए ही पितर शब्द आया है। मृतक या आकाश निवासी पितरो का वर्णन यहा नहीं है, अपितु पृथ्वी-निवासी पितरो का वर्णन है।

श्रीमद् भागवत् गीता मे भी पितर शब्द जीवितो के लिए ही प्रयुक्त हुआ है।

तत्रापश्यत् स्थितान् पार्थ. पितृनथ पिता महान्।
आचार्यान् मातुलान् भ्रातृन् पुत्रान् पौत्रान् सखींस्तथा।।

गीता अ० १/२६।।

भावार्थ – वहा (युद्धक्षेत्र) स्थित पार्थ ने देखा कि पिता पितामह आचार्य मातुल (मामा) भ्राता पुत्र पौत्र तथा मित्र जब सब युद्ध के लिए खडे थे।

आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहा।
मातुलाः श्वसुराः पौत्राः श्यालाः सम्बन्धिनस्तथा।।

(गीता १।३४)

एतान्न हन्तु मिच्छामिदनतोऽपि मधुसूदन।
अपि त्रैलोक्य राज्यस्य हेतो . किं नु महीयते।।

(गीता १।३५)

हे मधुसूदन ! इस युद्ध क्षेत्र मे मेरे आचार्य पिता पुत्र पितामह मामा, श्वसुर पौत्र साले तथा अन्य सम्बन्धी आकर खडे हैं। इन सबको मै नही मारना चाहता हू भले ही मुझे त्रैलोक का राज्य मिल जाए – पृथिवी के लिए कहना ही क्या है।

यदि यहा पितर शब्द से मृतको को मान लिया जाए तो सारी गीता का प्रसग ही उलटा हो जाएगा क्योकि मरे हुए को मारने का प्रश्न ही नहीं उठता और मृतक पितर प्रत्यक्ष युद्ध हेतु उपस्थित भी नही हो सकते। मृतक (जीवात्मा) शरीर विहीन होता है। इसी प्रसग मे आगे आता है कि इन सबको मारने से कुलक्षय हो जाएगी। पुन सम्पूर्ण कुटुम्ब और समाज मे अधर्म का बोलवाला हो जाएगा जिसके कारण अधर्म फैल जाएगा। हे कृष्ण ! इससे स्त्रिया भ्रष्ट हो जाती है परपुरुषो के ससर्ग से वर्णसकर सताने उत्पनन होगी। फलत वर्णसकरता से कुल नरक को प्राप्त हो जाएगा।

संकरो नरकायैव कुलघ्नां कुलस्य च।
पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदक-क्रिया।।

(गीता १।४२)

वर्ण-सकरता कुल नष्ट करने वाले और कुल को दोनो को निश्चय ही नरक मे जाती है क्योकि इन पितरो अर्थात् जीवित बडे बूढे बुजुर्गो को दाना-पानी देने वाला कोई नहीं रहता और बेचारे जीते जी ही नरक मे पड जाते हैं। यहा पिण्डोदक का अर्थ अन्न (भोजनादि) जल आदि। दूसरा पक्ष यह है कि कुलक्षय होने पर परिवार के बच्चे तथा स्त्रिया अनाथ हो जाएगे इससे पितरो के पतित होने की सम्भावाना हो जाती है, अर्थात् जो पितर (बडे-बूढे) घर बार छोडकर वानप्रस्थी या सन्यासी हो गए है उन्हे परिवार पालन के लिए वह उच्च आश्रम छोडकर पुन घर वापस आकर गृहस्थी सम्भालना पडेगा, इस प्रकार ऊचे से नीचे के आश्रम मे रहकर जीवन यापन करना पडेगा। यजुर्वेद अ० २५ मन्त्र २२ मे पितर जीवितो के लिए ही आया है। यह मन्त्र सनातनी प० स्वस्तिवाचन मे भी पढते हैं। मन्त्र निम्न है –

शतमिन्नु शरदो अन्तिदेवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।।

इस मन्त्र का देवता विद्वास और ऋषि गौतम है। माता-पिता प्रार्थना करते हैं 'हे परमेश्वर ! तब तक हम जीवित रहे तक कि हमारे पुत्र पितर न हो जाए अर्थात वे भी सतान वाले होकर उत्तम माता-पिता बनकर वृद्ध हो जाए। यदि यहा पितर मृतको को माने तो प्रार्थना बडी उल्टी हो जाएगी कि जब हमारे पुत्र मरकर पितर हो जाएं तब तक हम जीवित रहे। यह अर्थ आचार्य महीधर ने किया है। जो सनातन जगत के आचार्य और वेदभाष्य कर्ता थे। इसी प्रकार के भाव यजुर्वेद के अध्याय १९ मन्त्र ५७–५८ मे भी आते हैं। उपहूता पितर सोम्यास/ ५७/ आयन्तु न पितर सोम्यास/५८/ और भी अनेक मन्त्र उक्तवेद मे है जिनमे पितर शब्द आए हैं परन्तु प्रकरण और देवता के अनुसार उनके अर्थ भी भिन्न-भिन्न हैं।

१. **अत्र पितरो मादयध्व यथा भाग मा वृषायध्वम्।**
अमीमदन्त पितरो यथा भागमावृषा यिषत।।

२. **नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो व पितर. स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो व पितरो नमो वो गृहान्न. पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्मैतद्वः पितरो वासः।।**

३. **आधत्त पितरो गर्भं कुमारं पुष्करस्रजम्।**
यथेह पुरुषोऽसत्।

४. **ऊर्जं वहन्तीरमृत घृतं पय. कीलालं परिस्रुतम्।**
स्वधा स्थ तर्पयत में पितृ, न्।।

यजुर्वेद अध्याय २। ३१–३२–३३–३४

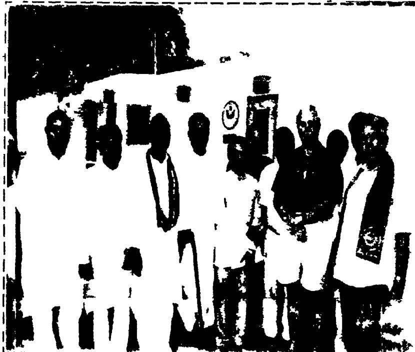
भावार्थ :– १ मनुष्य लोल माता-पिता आदि धार्मिक सज्जन विद्वानो को बुलाकर उनकी सेवा कर और कहे हे पितरो ! आप लोगो का आना हमारे उत्तम भाग्य से होता है अत आप लोग हमारी सेवा स्वीकार करो। २ इसमे नम और पितर शब्द कई बार आया है।

भावार्थ – जैसे वसन्त ग्रीष्म वर्षा शरद हेमन्त और शिशिर ये छ ऋतु रस शोष और जीव अन्न कठिनता क्रोध (मन्यु) के उत्पन्न करने वाले होते है वैसे ही पितरगण भी अनेक विद्याओ के उपदेश से मनुष्यो को निरन्तर सुख देते है इससे मनुष्यो को चाहिए कि उक्त पितरो को उत्तम-उत्तम पदार्थो से सतुष्ट करके उनसे विद्या का उपदेश निरन्तर ग्रहण करे। ३ जैसे क्रम-क्रम से गर्भ मे देह बढता है वैसे ही अध्यापक लोग अपने शिष्यो को धीरे-धीरे उत्तम शिक्षा दे और उन्हे विद्यादान देने के लिए गर्भ के समान धारण करे। ४ ईश्वर आज्ञा देता है कि हे मनुष्यो सदा अपने पितरो अर्थात माता-पिता आदि विद्या देने और पालन करने वाले पूज्यो को प्रीतिपूर्वक सेवा करो। जैसे उन्होने तुम्हारा पालन पोषण किया है वैसे ही उनका सत्कार करके कृतघ्नता आदि दोषो से बचो। इन्हीं सिद्धान्तो के अनुसार ही अमावस्य तिथि का दूसरा नाम पितर है और मघा नक्षत्र का भी दूसरा नाम पितृ है। जिसके अनुसार नामकरण सस्कार मे तिथि और तिथियो के देवता तथा नक्षत्र और नक्षत्र के देवता की आहुति पडती है यहा पितृ यज्ञ प्रकरण नहीं है और न यहा कोई तर्पण हो रहा है न मृतक श्राद्ध। यदि होता तो नामकरण सस्कार जैसे शुभ अवसर मृतक श्राद्ध का वर्णन क्यो आता। हमारा जहा तक ध्यान है कि सनातनी पद्धति मे भी बच्चे के जन्म पर श्राद्ध का विधान है। अत मानना पडेगा कि श्राद्ध शब्द मृतको के लिए नहीं अपितु प्रत्येक शुभ कार्य मे माता-पिता ज्ञानी-वृद्धादि पितरो की श्रद्धापूर्वक सेवा करनी चाहिए अन्यथा भीड भाड के ऐसे अवसरो पर व्यस्तता के कारण उनकी उपेक्षा हो जाती है या भूल से वे स्नेह से वचित रहकर भूखे ही सो जाते है।

क्रमश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि
आर्यजनों का आतंकवाद के विरोध

विगत ११ सितम्बर २००१ को अमेरिका की दो बडी बडी इमारतो विश्व व्यापार केन्द्र और पेंटागन पर आतकवादी हवाई हमलो ने विश्व के समीकरण बदल दिए है जिस आतकवाद से भारत विगत लगभग २० वर्षो से जूझ रहा है आज पहली बार अमेरिका को उसका अहसास हुआ है। इस मुद्दे पर भारत और अमेरिका अब पूरी तरह एकमत हो चुके है अब आतकवाद के





(१) आर्य शिष्ट मण्डल अमरीकी दूतावास पर अमरीकी प्रतिनिधि के साथ। (२) आतकवाद के विरुद्ध प्रदर्शन का एक दृश्य।

विरुद्ध लडाई मे भारत हर सम्भव सहयोग देन के लिए तैयार दिखाई देता है। भारतीय जनता को अपनी शान्ति प्रियता के सिद्धान्त के लिए आतकवाद को कुचलने वाले हर प्रयास को समर्थन ना चाहिए।

उक्त सिद्धान्त के तहत **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा** के तत्वावधान मे नई दिल्ली के तीनमूर्ति चौक पर सैकडो की सख्या मे आर्य नर नारी बाल वृद्ध एकत्रित हुए सार्वजनिक रूप मे आतकवाद मुक्ति यज्ञ किया गया और एक शान्ति मार्च निकाला गया। इस मार्च का नेतृत्व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने किया जिसमे सर्वश्री स्वामी गोरक्षानन्द प्रि० चन्द्रदेव सोमदत्त महाजन श्रीमती ईश्वरी देवी धवन जगदीश आर्य चौ० लक्ष्मीचन्द डा० सच्चिदानन्द शास्त्री डॉ० वेदप्रताप वैदिक महाशय रामविलास खुराना गोपाल आर्य पतराम त्यागी रवि बहल कृष्ण लाल सिक्का पुरुषोत्तम लाल गुप्त रोशन लाल गुप्त प्राणनाथ घई डा० रविकान्त अरुण वर्मा सुरेन्द्र कुमार रैली विनय आर्य हसराज चापडा सत्येन्द्र मिश्रा रामदुलारे मिश्र केवलकृष्ण कपानिया जगदीश वर्मा रमेशचन्द मदनमोहन सलूजा आदित्य कुमार ओमप्रकाश गुप्ता मुकेश सैनी राजीव भाटिया नारद पण्डित (कलकत्ता) दयानन्द मदान शिवकुमार मदान प्रियतमदास रसवत श्रीमती मनोरमा चौधरी श्रीमती कपिला श्रीमती सन्तल मेहरा तथा बलदेव राज आदि आर्य नेताओ ने भाग लिया। इस सारे कार्यक्रम का सचालन **वैदिक लाईट के सम्पादक श्री विमल वधावन एडवोकेट** ने किया।

शान्ति मार्च के बाद एक ज्ञापन पत्र अमेरिकन दूतावास के राजदूत के नाम लेकर कुछ आर्यजन दूतावास गए जहा दूतावास की सुरक्षा सेवा के प्रमुख श्री डॉन मैक कार्टली ने राजूदत की ओर से यह ज्ञापन पत्र स्वीकार किया।

इस ज्ञापन पत्र मे कहा गया है कि इस पत्र को ११ सितम्बर २००१ के दुर्भाग्यपूर्ण दिन दुनिया के सबसे क्रूरतम एव अपूर्व आतकवादी हमले मे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पीडित आत्माओ के प्रति सात्वना के रूप मे समझा जाए। यह हमला न तो प्रत्याशित था और न ही आधुनिक इतिहास मे कभी देखा गया जिसमे हजारो भोल भाले नागरिको की जान चली गई।

मानसिक रूप मे हम विश्व के उन सब लाखो करोडो व्यक्तियो के साथ सम्बद्ध है जो इस काले मगलवार को यूयार्क मे हुए आतकवादी हमलो मे शारीरिक या आध्यात्मिक रूप मे पीडित हैं।

विश्व के समस्त ८००० आर्यसमाज मन्दिरो मे १६ सितम्बर रविवार को दिवगत आत्माओ की सदगति के लिए प्रार्थना सभाए एव यज्ञ आयोजित किए गए। इन सभाओ मे परमपिता परमात्मा से उन महानुभावो के लिए भी आशीर्वाद की प्रार्थना की गई है जो आतकवाद से निपटने के लिए सकल्पशील है।

ज्ञापन पत्र मे कहा गया है कि भारत इस विपदा से काफी अरसे से निपट रहा है। हम उन अपराधी तत्वो से भी निपटने का प्रयास करते

पाकिस्तान …
दाउद अ…

११ सितम्बर २००१ को अमेरिका मे आतकवादी हमलो के २४ घण्टो के भीतर बुश प्रशासन ने ओसामा बिन लादेन के खिलाफ मुहिम तेज करते हुए अफगानिस्तान से उसे सौंपने को कहा। खुद ओसामा को पनपाने वाले पाकिस्तान ने अमेरिकी दबाव मे आकर तालिबान से मध्यस्थता की। घटना बीतने के मात्र १४ दिन के बाद अमेरिका और उसके मित्र देश ओसामा के प्रत्यर्पण से इन्कार कर रहे अफगानिस्तान पर कहर की तरह टूटने की तैयारी में हैं। पाकिस्तान अमेरिका के साथ है।

१२ मार्च १९९३ को माफिया डॉन दाउद इब्राहीम कसकर ने मुम्बई मे दस जगहो पर श्रृखलाबद्ध विस्फोट कर २५७ लोगो की जान ली और ७१३ व्यक्ति हमेशा के लिए अपाहिज हो गए। आगरा शिखर वार्ता के दौरान पाकिस्तान साफ मुकर गया कि दाउद उसकी शरण मे है। भारत के पास दाउद और उसके गिरोह के कराची मे रह रहे होने की पुख्ता जानकारियो के बावजूद आज ८ साल ६ महीने और १२ दिन बाद भी उस पर हाथ नहीं डाला जा सका है। पाकिस्तान से दाउद की भारत विरोधी गतिविधिया और अड्डे बे रोकटोक चालू हैं।

बस यही है मैनहटटन और मुम्बई का अन्तर ! अमेरिका का काम डण्डे के जोर पर होगा और भारत की फाइल सयुक्त राष्ट्र सघ के गलियारो मे चक्कर काटती रहेगी। जब अमेरिका और भारत के जख्म एक ही हैं तो इलाज मे भेद भाव क्यों ? अपुष्ट सूत्रों (और पिछले कारनामो की वजह से) ओसामा बिन लादेन और उसके साथ पूरे अफगानिस्तान पर कार्यवाही की जा सकती है तो हू-ब-हू उसी घटना के अभियुक्त पाकिस्तान मे

सभा के तत्वावधान में

में अमरीकी दूतावास पर प्रदर्शन



दाए से बाए श्री अरुण वर्मा प्रि० चन्द्रदेव तथा श्री विमल वधावन तीन मूर्ति चौक पर आर्यजनो को सम्बोधित करते हुए।



दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा के नेतृत्व मे अमरीकी दूतावास पर आतकवाद के विरुद्ध आर्यजन प्रदर्शन करते हुए।

रहे है जो श्रृखलाबद्ध बम हमलो तथा भोले भाले लोगो की हत्या के लिए जिम्मेवार है तथा जिन्हे पाकिस्तान की सैन्य और गुप्तचर सस्थाओ की सहायता मिलती है।

इस बार आपके देश को भी वैसी ही परिस्थितियो का सामना करना पड रहा है जिनके पीछे अफगानिस्तानी तालिबानो का सरक्षण है। कृपया इस हास्यास्पद स्थिति को समझने का प्रयास करे। आपके देश के प्रशासन के लिए इस अचानक हमले का दुस्साहस पूरी तरह अप्रत्याशित था।

यह उचित समय है कि सारे ससार को इकटठे बैठकर इस विकराल विपदा वाले आतकवाद का सज्ञान लेना चाहिए। जिसने विश्व के समस्त हिस्सो मे भारी सख्या मे जाने ली है। इस विपदा को उत्पन्न करने वालो को अलग थलग किया जाना अत्यन्त आवश्यक है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप मे इसके पोषक है। हालाकि इस विशाल कार्य मे कई प्रकार की समस्याए शामिल होगी परन्तु फिर भी इससे निपटने के लिए महान सकल्प और भारी उत्साह की आवश्यकता है।

हमे आतकवाद को बढावा देने वाले एव इसके पोषको और सरक्षको को किसी कीमत पर भी माफ नही करना चाहिए।

ज्ञापन पत्र मे अमेरिका को आश्वस्त किया गया है कि हम भारत सरकार से भी प्रार्थना कर रहे है कि भारत को इस सहयोग मे आने वाली हर प्रकार की असुविधा से निपटने के लिए तैयार रहना चाहिए।

आतक के खिलाफ युद्ध तब तक सफल नही हो सकता जबतक उन देशो के विरुद्ध कार्यवाही न की जाए जो आतकवादी गुटो को सहायता पहुचाते हैं।

यह एक अवसर है विश्व की उन सब ताकतो के लिए जो किसी न किसी रूप मे आतकवादी नामक अमानवीय एव अलोकतान्त्रिक शब्द से परेशान रहे है।

यह अब अमेरिका सरकार पर है कि वह समान विचारधारा एव समान उद्देश्यो वाले लोगो को आतकवाद के विरुद्ध सघर्ष मे सहयोगी समझे।

हम इस विपदा और सघर्ष के समय मे बुश प्रशासन को हर प्रकार का समर्थन एव सात्वना देना अपना परम कर्त्तव्य समझते है। ***

के दो चेहरे

ौर लादेन

शरण पा रहे दाउद इब्राहिम पर दुनिया की निगाहें क्यो नहीं टिकती। दाउद मुम्बई बम विस्फोटो मे मुम्बई स्टाक व एयर इण्डिया बिल्डिग जैसे सार्वजनिक स्थलो पर आरडीएक्स का बहुतायत से प्रयोग किया गया था। इन विध्वसक कार्यों को दाउद के गुर्गों टाइगर मेमन और छोटा शकील ने अजाम दिया था। न्यूयार्क और मुम्बई की घटनाओं में साम्यता है। अमेरिका पर हमले मे शक की सुई ओसामा पर घूम रही हैं वहीं मुम्बई बम विस्फोट मे दाउद का हाथ होना सिद्ध हो चुका है।

भारतीय खुफिया विभाग के एक आला अधिकारी के मुताबिक इस समय कराची मे आई एस आई के सरक्षण मे रह रहे दाउद ने मुम्बई बम विस्फोटो के पहले लादेन से मिलने को काबुल की दो यात्राए की थी। खुफिया सूत्रो का मानना है कि दाउद और लादेन मिलकर भारत मे अपनी खतरनाक गतिविधियो को अजाम देने की रणनीति बनाते रहे है।

गदि ओसामा को अमेरिका मे हमले के अभियुक्त के रूप मे न्यायालय के समक्ष पेश किया जाता है तो इसी तर्क के आधार पर पाकिस्तान को दाउद को मुम्बई बम काड की जाच के लिए गठित विशेष न्यायालय के समक्ष पेश करने के लिए भारतीय अधिकारियो के हवाले कर देना चाहिए। क्या दुनिया से आतकवाद के समूल नाश का सकल्प लेने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति बुश कभी पाकिस्तान से दाउद और उसके गुर्गों को भारत को सौंपने को कहेगे जो कराची मे सरकारी सुरक्षा मे आरामदायक जिन्दगी बिता रहे है। यदि ऐसा सम्भव नहीं हुआ तो पूरी दुनिया के सामने यही सकेत जाएगा कि बुश का आतकवाद के समूल नाश का सकल्प केवल ११ सितम्बर २००१ को अमेरिका पर हुए आतकी हमला मे उपजी बदले की भावना से प्रेरित था और बाकी विश्व केवल एक महाशक्ति की इच्छा के आगे अपने हितो का बलिदान कर नतमस्तक होने को मजबूर था।

साभार दैनिक जागरण

एक भारतीय के सपनों का भारत

गतांक से आगे

सत्यबाला देवी

वास्तव मे वही स्वप्नों का भारत, दिव्य, ज्योतिर्मय प्रकाश स्तम्भ के रूप मे समस्त विश्व का भी पथ प्रदर्शन करता हुआ, विश्व शान्ति, विश्व प्रेम, विश्व बन्धुत्व , **वसुधैव कुटुम्बकम,** मानवतावाद, गुट निरपेक्षता, सत्य अहिंसा, सम उच्चादर्शों का समस्त विश्व मे अमर सन्देश वहन करेगा । उस स्वप्नों के भारत के स्वर्ग तुल्य दिव्य वातावरण को कोई चोर, डाकू, विदेशी आक्रमणकारी, हत्यारा, अपहरणकर्ता, दुराचारी, मद्यपी, आतकवादी, उग्रवादी, और अलगाववादी, अपवित्र और दूषित नहीं कर सकेगा । वही परम शोभा सम्पन्न रमणीय प्राकृतिक सौन्दर्य और छवि की साकार प्रतिमा, सभ्यता संस्कृति एवं आदर्श शिक्षा का आगार राम राज्य और सर्वोदय समाज के आदर्शों का प्रतीक महान भारत बना सकूं, सच्चे भारतीय के मधुर स्वप्नों का भारत होगा। वही उसकी सौन्दर्यमयी, स्निगध ज्योतिर्मय कल्पना का साकार रूप होगा ।

पर खेद से लिखना पड रहा है कि आदर्श भारत का वह गौरवमय स्वरूप अथवा चित्र केवल स्वप्नों तक ही सीमित है। आधुनिक भारत का वास्तविक स्वरूप तो इसके सर्वथा विपरीत एवं हृदय विदारक है जिसे देखकर स्वप्नों के भारत का गौरवपूर्ण महिमा सम्पन्न रूप चित्रांकन करने वाले एक सच्चे भारतीय की आत्मा असहय आन्तरिक व्यथा से कराह उठती है। इसीलिए उस दुर्लभ भारतीय इतिहास की गौरवपूर्ण उपलब्धि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पचास वर्ष उपरान्त भी आज का भारतवासी उसका उपभोग कर हार्दिक प्रसन्नता ,उल्लास एवं आह्लाद का अनुभव नहीं कर रहा क्योंकि आज प्रकृति सुन्दरी भी हमसे रूठ गई है। स्थान-स्थान पर विनाशकारी भूकम्प व और बाढें समस्त ग्राम्य सौन्दर्य और नागरिक शोभा तथा अगनित मानव मूर्तियो और उनके सुखमय परिवारों को नष्ट भ्रष्ट कर प्रलयकालीन दृश्य उपस्थित कर रही है। आज भी अस्पृश्यता, धर्मान्धता साम्प्रदायिता, भ्रष्टाचार अन्धविश्वास से और रूढिवादिता का सर्वथा उन्मूलन नहीं हो सका। आदर्श रामराज्य और सर्वोदय समाज की स्थापना के स्थान पर आज भी चतुर्दिक अराजकता, अनुशासन हीनता, राष्ट्रीय सम्पत्ति की तोड-फोड एव विध्वंस, अलगाववादी, उग्रवादी, आतंकवादी शक्तियों द्वारा निर्बल, निर्दोष, निरीह, निरापराध असहाय व्यक्तियो की निर्मम हत्याएं, प्रदर्शनो, हड़तालों हिंसाओं, चोरियों, डकैतियों अपहरणों, अनैतिकता, स्थान-स्थान पर महिलाओं का अपमान दुराचारी व्यक्तियों द्वारा उनके अमूल्य सतीत्व धन का अपहरण, अबोध बच्चियों का अपहरण कर क्रूर कर्मी हत्यारे व्यक्तियो द्वारा बलात्कार करने के उपरान्त उनकी निर्दयता पूर्वक हत्याए, अगणित कोमलांगी सुकुमारी सुन्दरियों का दहेज प्रथा की क्रूर बलिवेदी पर बलिदान, निम्न वर्ग के प्रति अन्याय अत्याचार, हरिजनों का तिरस्कार और शोषण और अस्पृश्यता रूपी कलंक द्वारा मानवोचित अधिकारों का अपहरण बन्धुआ मजदूरो का उत्पीडन और बाल श्रमिकों के प्रति क्रूरतापूर्ण व्यवहार एव पारस्परिक ईर्ष्याद्वेष का बाजार गर्म है।

आज भी मुठ्ठीभर उग्रवादी, आतंकवादी एव पृथकतावादी तत्व अपनी धार्मिक कट्टरता, हिंसक प्रवृत्ति एवं नृशंसता का प्रदर्शन कर भारत के अभिन्न, अविभाज्य अग जम्मू और कश्मीर में अगनित निरीह, निरपराध निर्दोष व्यक्तियों, बालको और नारियो की निर्दयता पूर्वक हत्याएं कर रहे है यही नहीं पंजाब से हरे भरे प्रदेश मे भी खालिस्तान के नारे लगाते हुए अगनित हत्याएं और लूटपाट कर उस प्रदेश की समस्त शान्ति को भंग कर भारत मा के उन अविभाज्य अखण्ड राष्ट्र के क्रुरतापूर्वक टुकडे कर पुनः उसके विभाजन का स्वप्न देख रहे हैं। साम्प्रदायिकता और धमान्धता के इस विषाक्त वातावरण म प्रत्येक भारतवासी अपने को सर्वथा असुरक्षित एव आतंकित अनुभव कर रहा है। लगभग दस बारह वर्षों से ये क्रूर निर्दय कट्टरपंथी धर्मान्ध व्यक्ति अगनित सुखमय परिवारों को नष्ट भ्रष्ट कर अगणित निरपराध, निरीह मानव मूर्तियों को क्रूर काल के निर्दयी हाथों का खिलौना बना, पति, पुत्र, पितृ, विहीना अबलओं के गगन भेदीकरुण आर्तनाद से समस्त दिदिगन्त को परिकम्पित करते हुए; देश की समस्त शान्ति और निश्चिन्तता को उनकी पीडित, संतप्त करुण अश्रुधाराओं के अथाह सागर में निमग्न कर मानव की घृणित, हिंसक पाशविक और नृशंस प्रवृत्ति परिचय दे रहे हैं।

इसके अतिरिक्त आज चतुर्दिक स्वार्थ परता, पदलोलुपता, भ्रष्टाचार, कुर्सी की खींचतान, जनहित घातक भ्रष्ट दूषित राजनीतिक षडयन्त्र इस शक्तिशाली, संगठित और सुदृढ राष्ट्र को निर्बल और जर्जर, बना बाह्य आक्रमणकारियों को आंमन्त्रित कर इसे पुनः परतन्त्रता की अभेद्य श्रृंखलाओं में आबद्ध करने हेतु कृतसंकल्प है। कहना न होगा कि आज दलगत दूषित, स्वार्थ-परक राजनीति की दलदल और कुचक्रो के भंवर में ग्रस्त मानव बुरी तरह पिस रहा है। आज भी इस देश में जयचन्द जैसे देशद्रोहियों का अभाव नहीं है तो तुच्छ स्वर्ण या रजत सिक्कों के लोभ से इस परम पावन मातृभूमि के सम्मान, स्वतन्त्रता और गौरव की रक्षा हेतु अपने प्राण उत्सर्ग करने के स्थान पर तुच्छ सांसारिक सुखों की प्राप्ति हेतु विदेशी राष्ट्रो के एजेन्ट बन जननी जन्मभूमि भारत माता को निर्दयता पूर्वक विक्रय करने हेतु तुले बैठे हैं।

आज मद्यपान, दुराचार, निर्धनता, रोग-शोक, दु.ख-दारिद्र अशिक्षा, अबाध जनसख्या वृद्धि महगाई आदि ने मानव समाज के ढांचे को तहस नहस कर उसे पतन के कगार पर लाकर खडा कर दिया है। देश भले ही रसातल में चला जाए इसकी किसी को कोई चिन्ता नहीं सब अपने अपने स्वार्थ साधन और गद्दी प्राप्त करने के कुचक्रों मे लिप्त हैं। प्राचीन भारत में जहां गुरुजन अपने शिष्य वर्ग को शिक्षा दान करते थे आज वे आज वे उन्हें शिक्षा-प्रदान करने हेतु अधिकाधिक मूल्य (फीस के रूप में) चुकाने हेतु विवश करते हैं। आधुनिक शिक्षा का ध्येय भी आज मानव व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास न होकर केवल आजीविका प्राप्ति का साधन मात्र ही रह गया है। आज के अधिकाश छात्रगण और देश के भावी भाग्य निर्माता और कर्णधार भी गुरुभक्त, देशभक्त, सदाचारी, साहसी, धीर-वीर अन्याय और अत्यचार के निर्मम विरोधी न होकर अनुशासनहीन असदाचारी प्राचीन भारतीय संस्कृति-सभ्यता और आदर्शों के प्रति आस्था न रखकर पाश्चात्य वेशभूषा, भाषा, आचार व्यवहार सभ्यता आदि के पक्षपाती, दुर्बल हृदय, गुरुभक्त न होकर उनकी अवमानना और उन्हें अपमान्ति करने वाले, उद्दण्ड प्रकृति मद्यपान, धूम्रपान तथा स्मैक पान में आसक्त, दुर्व्यसनी, साहस विहीन, शक्तिहीन ब्रह्मचर्य व्रत से रहित, नाना भौतिक सुखो एव विलास-साधनों की प्राप्ति हेतु उन्मत्त एवं लालयित, शिक्षा प्रेरित में अरुचि होने से नकल करके डिग्रीया लेने के इच्छुक दृष्टिगोचर हो रहे हैं। दूसरी और आज के वेतन भोगी, शिक्षा दान में अरुचि रखने वाले गुरुजन भी अपने कर्त्तव्य से विमुख हो अपने शिष्य वर्ग को सत्यार्थों में आध्यात्मिक जन्म देने के स्थान पर उन्हे कतिपय विषयों का अधूरा ज्ञान प्रदान करने के बाद परीक्षा के पवित्र उद्देशों और नियमों का उल्लंघन करते हुए नकल करवाकर उन्हें परीक्षा मे उत्तीर्ण करवा देने में ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ बैठते हैं।

अत उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि आज के इस दूषित, आपदग्रस्त, भयप्रद एवं अपवित्र वातावरण में प्रात स्मरणीय पूज्य बापू के स्वप्नो को साकार रूप राम राज्य एव सर्वोदय समाज की स्थापना तो अब आकाश कुसुमवत ही प्रतीत हो रही है। उनका **'सब मानव है एक समान'** का पुनीत मूलमन्त्र भी मानव की स्वार्थपरता और धर्मान्धता ने सर्वथा विलुप्त ही कर दिया है। अत. अपनी पावन भारतभूमि और भारतवासियों को इस निराशाजनक दुर्दशा में ग्रस्त देख एक सच्चे भारतीय की आत्मा जो अपने स्वप्नो मे उसे एक आदर्श प्रगतिशील, विकासशील, उन्नतिशील एव महान् गौरवशाली राष्ट्र के रूप मे कल्पित कर रही थी वस्तुत अत्याधिक व्यथित, पीडित विकल एव सतप्त हो उठी है पर फिर भी वह उस स्वर्णिम भविष्य की कल्पना करती हुई अपने विकल पर आशापूर्ण नेत्रों से देख रही है कि सम्भवतः पुनः इस भारतभूमि पर कोई महाआत्मा अवतरित होकर योगिराज श्रीकृष्ण के निम्न सान्त्वना पूर्ण प्रवचनों, **''यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत, अभ्युथानम् धर्मस्य तदात्मानं सृजम्यहम्।''** अथवा **''परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।''** को सत्यार्थों में सम्भव कर उक्त भारतीय के स्वप्नों को साकार करते हुए उसकी आत्मा को सन्तुष्टि और आह्लाद से परिपूरित एवं अभिभूत कर सके।

• – रिटायर्ड प्रिंसिपल, गुरुदत्त महिला डिग्री, कालिज, धुरी (पंजाब)

प्राचीन श्रेष्ठ गौरव का निर्माण करें

– डॉ० बिजेन्द्र पाल सिह चौहान

वैदिक ज्ञान सर्वश्रेष्ठ व मानवता का मार्ग है इतना तो सभी जानते हैं कि जब तक वैदिक मत का प्रकाश रहा व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त वेद मार्ग पर ही चलते थे। सभी कार्य वेदानुसार करते थे समस्त भूमण्डल पर आर्यो का राज्य रहा। आर्यों का साम्राज्य होने के प्रत्यक्ष प्रमाण अभिलेख पत्र आदि बहुत से अभी भी सुरक्षित हैं महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश मे चीन के राजा भगदत्त (अमेरिका) पाताल लोक का बब्रुवाहन ईरान के शल्य यूरोप के विडालाक्ष आदि के नामो का वर्णन किया है। महाभारत के महाराजा युधिष्ठिर से लेकर यशपाल पर्यन्त समस्त राजाओ के नामो का उल्लेख किया है। आर्य शासको के इतिहास का लेखक जमना दास अख्तर ने विस्तृत वर्णन किया है (हिन्दुस्तान ३० नवम्बर १९९९)। जहा यरोशलम पर आज इजराइल व फलीस्तीन मे बात चीत चल रही है ईसा के जन्म से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व यूरोशलम हेबरान व पश्चिम एशिया पर आर्यो का शासन था लेखक के अनुसार रोम की पत्रिका मे यूरोप के विद्वान व लेखक वी इडुमोन ने ८१ व्यक्तियो की सूची प्रकाशित की थी। यह सभी व्यक्ति आर्य थे इनमे दशरथ खरदत्त सुबन्धु इद्रोता बीरसेन बूदस्व उदति आर्तशुमरा सनासुर आर्तमन्या अभिरथ सदर्ना आदि नाम आर्यो के है। ब्रिटेन मे लदन विश्वविद्यालय के पुस्तकालय मे एक जर्मन विद्वान की पुस्तक की कापी रखी है जो अभी तक प्रकाशित नहीं हुई जर्मन विद्वान ने ठोस प्रमाण प्रस्तुत किए हैं कि प्राचीन ईरान मे ईसा के जन्म से चार हजार वर्ष पूर्व जेगरब के पर्वतीय क्षेत्र मे आर्य थ प्राचीन इराक की भाषा मे आर्य शब्द मौजूद है। सस्कृत के अनेक शब्द उसमे हैं। हैवरान के आर्य शासक खरदत्त की यहूदियो से लडाई के समय मिश्र के आर्य शासक को पत्र लिखे थे जिनमे से चार से अधिक पत्रो की फोटो प्रतिलिपि लेखक के पास भी हैं।

इसके साथ ही गिलगित व बाल्तिस्तान मे भी गोपादास गगादास अक्षय युद्ध शासक थे। हैजा की चट्टानो पर रुद्रदास व बुद्धासिह वहा के शासको का चित्र भी अकित है। यह लेख 'हिन्दुस्तान' पत्रिका मे १७ अक्टूबर सन २००० को प्रकाशित हुआ जिसमे लेखक ने आर्य शासको का वर्णन किया है।

शीघ्र में ही हम देख रहे हैं कि भारत से बागला देश व पाकिस्तान दोनों इस्लामी देश बने और अफगानिस्तान जहा की गान्धारी थी। आर्यों का ही देश था इण्डोनेशिया जहा की शासक वर्ग मे मेधावती सुकर्णो पुत्री अभी भी है वहा के लोग आज भी मत परिवर्तन पश्चात भी पुराने आर्य सस्कृति आधारित नामकरण को अपनाते है तिब्बत मे भी आर्यो का ही राज्य था। अब स्थान स्थान पर मत परिवर्तन हो चुके है। आर्यो की सस्कृति साम्राज्य व शासन के चिन्ह आज भी उपस्थित हैं।

इतना सब वर्णन प्रस्तुत करने का मेरा अभिप्राय यही है कि आर्यों का शासन समस्त भूगोल मे था और वैदिक सस्कृति उस समय विस्तृत रूप मे थी। सस्कृत विश्व की भाषा थी भले ही स्थानीय भाषाए भिन्न भिन्न थी। आज वैदिक सस्कृति सिमट कर रह गई है। महर्षि दयानन्द ने हमे हमारा व विश्व की भलाई का मार्ग दिखा दिया है वेदो को भुला दिया गया था। अब महर्षि ने वेदो का प्रकाश विश्व भर मे कर दिया है। वेद से ही सम्पूर्ण विश्व मे शान्ति सम्भव है। वेद ज्ञान न रहने से राज्य व्यवस्था छिन्न भिन्न हुई आलस्य प्रमाद बढा अपराध बढ। व्यक्ति व शासक स्वार्थो मे घिर गए समाज मे अधविश्वास बढ गए और इन्हीं कारणो से विश्व का मानव कष्ट उठा रहा है।

वेद एक ऐसा सत्य विद्याओ का पुस्तक है जो मानवता का मार्ग बताता है सभी प्रकार के भौतिक रसायन वनस्पति चिकित्सा खगोल भूगोल अर्थशास्त्र गणित ईश्वर विषयक आध्यात्मिक ज्ञान इसमे है। इसके साथ ही प्राचीन ऋषि महर्षियो विद्वानो मनु पातञ्जलि याज्ञवल्क्य आदि ने वैदिक ज्ञान के प्रकाश का मार्ग प्रशस्त किया है महर्षि दयानन्द ने हमे अपने प्राचीन गौरव को जानने व समझने को प्रेरित किया हम उस गौरव को पुन प्राप्त करे।

गौरवशाली इतिहास व महापुरुष तो अत्यन्त महान हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम योगेश्वर श्री कृष्ण ब्रह्मचारी हनुमान भीष्म विश्वामित्र वशिष्ठ जैसे अब क्यो नही हो रहे उसका कारण है वैदिक सस्कृति का अज्ञान होना। हमे वेद मार्ग का प्रकाश जन जन मे करना चाहिए। गुरुकुलो को उच्च मान्यता दिलानी चाहिए गुरुकुल व आश्रमो वैदिक विद्यालयो के ब्रह्मचारी ही राजनीति समाज व राष्ट्र को नई दिशा दे सकते हैं वैदिक मार्ग महानताओ से भरा है। हम वैदिक सस्कारो को जाने व जन जन मे प्रकाश करे।

आर्यजनो को अपने जीवन मे दृढता लानी चाहिए। हम स्वय को पूर्ण आर्य बनाने का प्रयत्न करे। हमारे जीवन मे जो कुछ बुराइया व कुटिलताए है उन्हे दूर करने का साहस करे। नित्यप्रति दिन भर के कार्यों पर ध्यान देवे कि हमने कोई अवैदिक कार्य तो नहीं किया बुद्धि का सत्य रूप मे प्रयोग किया है। हमारा आर्यत्व केवल आर्य समाजो आश्रमो की चार दिवारी मे ही न रह जाये। अपितु हम कहीं भी हो। रेल वायुयान बस कार मे यात्रा कर रहे हो। कृषि कार्य कर रहे हो। कार्यालय मे बैठे हो व्यापार कार्य कर रहे हो। कहीं किसी कारखाने आदि मे हो राजनीति मे लोकसभा विधान सभा अथवा राज्य सभाओ मे हो हम वहा भी अपने आर्यत्व पर दृढ हो और जो भी कहे व करे वेदानुसार ही करे और आत्मबल पूर्वक बोले। हममे अपनी बात कहने का साहस होना चाहिए। जब हमारा जीवन समाज राज्य धर्म सभी कुछ वेदानुसार रहा है। श्री राम व श्रीकृष्ण युधिष्ठिर अर्जुन ब्रह्मचारी भीष्म हनुमान जैसे महात्मा हमारे पूर्वज रहे है। तो हमे अपने वैदिक पथ पर चलने मे सकोच क्यो होना चाहिए ? हमे दृढ होकर आज के अधविश्वासो पाखण्डो अराजनैतिकता भ्रष्टाचार व पाप कर्मो पापियो पर हावी हो अनैतिकता अधर्म पापाचार पर अकुश लगाना चाहिए। सभी आर्यजन एक दूसरे का सहयोग करे।

अर्जुन गर्भ से ही धनुर्धारी नहीं पैदा हुए श्री राम गर्भ से ही मर्यादा पुरुषोत्तम बन कर नहीं जन्मे कृष्ण भी गर्भ से ही योगेश्वर बन कर नही आए उनकी महानता मे माता पिता के द्वारा किए सस्कारो व गुरुकुल आश्रमो मे प्राप्त शिक्षा का पूर्ण प्रभाव था वैदिक शिक्षा ही ऐसी है कि इससे महर्षि पातञ्जलि याज्ञवल्क्य श्रीराम श्रीकृष्ण जैसे अनेको महापुरुष हुए उनके गुण कर्म स्वभाव श्रेष्ठ थे वैदिक मतानुसार वह सभी कार्य करते थे नित्य प्रति दिन भर जो भी करते थे वेद ज्ञान के अनुसार ही करते थे और वेदानुसार ही बोलते थे। वेद मे सत्य व श्रेष्ठ ज्ञान है सत्य को धारण करते थे। स्वप्न मे भी उन्हे अवैदिक व असत्य का अनुभव नही होता था सर्वदा सत्य ही बोलते सुनते व देखते थे। सत्य विचार होते थे। उनकी शिक्षा व ज्ञान का केन्द्र उनके माता पिता आचार्य वृद्धजन गुरुकुल व आश्रमो मे उच्च कोटि के विद्वान ऋषि महर्षि होते थे। उस समय वैदिक धर्म का प्रकाश सभी दिशाओ मे व भूमण्डल पर था। आज के स्त्री पुरुष भी वही हैं परन्तु वैदिक सस्कारो से रहित होने से ही उन जैसे नहीं हैं। वैदिक सस्कारो का तो विशेष महत्व है। हम इन्हे जीवन मे धारण करे और अपने जीवन को वेदानुसार करने का प्रयत्न करते रहे। सतानो मे अच्छे सस्कार डाले गुरुकुलो मे वेदाध्ययन करावे। घर परिवार को वेदमय बनावे। सगे सम्बन्धी के घर जाये तो वेद की गगा वहा बहावे उन्हे वेद का ज्ञान अवश्य कराए। वेदो से हमारा जीवन कैसे श्रेष्ठ हो सकता है। वेद की ऋचाओ का अर्थ सहित ज्ञान कराके बताए उनके जीवन मे कुछ तो वेद ज्ञान का अकुर फूटेगा ही। यदि हमे महापुरुषो के गौरव को पुन प्राप्त करना है तो वैदिक धर्म का जन जन मे प्रचार करना होगा कोई नगर कोई गाव वेद ज्ञान व प्रचार से अछूता न रह जाए। भारत वर्ष हमारा है। प्रत्येक गाव हमारा है। हम प्रत्येक जगह जाने के लिए स्वतत्र है कोई बाधा नहीं है। अग्रेजी शासन मे अनेक कठिनाइया थी फिर भी महर्षि दयानन्द ने जीवन भर साधू महात्माओ के पास जाकर मदिरो के पुजारियो सेठ व राजा महाराजाओ से जा कर मिलते थे। शास्त्रार्थ व तर्क होते थे विचारो का आदान प्रदान होता था। कष्ट सह कर भी वह अकेले ही वेदो का प्रकाश करते फिरे।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम के शब्द हमारे मस्तिष्क मे गूजते हैं तो हमे सत्यनिष्ठा व कर्मठता दृढता से वेदो का प्रचार अपनी वृद्धि से विचार कर विभिन्न श्रेष्ठ उपायो द्वार' करते रहना चाहिए। आज हम सर्व सुविधा सम्पन्न है और अच्छे प्रकार से कार्य कर व करा सकते हैं। जब वेद ज्ञान का प्रकाश हम सभी के मन मे होगा। ऋग्वेद के अतिम सूक्त 'सगच्छध्वम सवदध्वम के अनुसार हमारे वचन मन व कर्म एक से होगे मिल कर बैठ सकेगे। सगठित होगे और आर्यजन एक होगे तो कार्य क्षेत्र व चारो ओर प्रभाव भी बढेगा। राजनीति शिक्षा देश विदेश के प्रत्येक क्षेत्र मे वेद की ज्योति जलेगी और सत्य को कोई अनदेखा नहीं कर सकता वेद ज्ञान सत्य व श्रेष्ठ है। मानवता व विश्व को श्रेष्ठ केवल वेद मार्ग ही बना सकता है। जब ऐसी भावना होगी तो ओ३म का झण्डा भारत ही नही विश्व मे लहराएगा और महाराजा विक्रमादित्य वीर अर्जुन भीष्म विदुर जैसे धमर्मात्मा महात्मा विद्वान धनुर्धारी कुशल नीतिज्ञ वैदिक सस्कार व ज्ञान से शिक्षित हो उत्पन्न होगे और सर्वत्र हवन की सुगन्धि वेद की ऋचाए गूजा करेगी। न्याय व सुदृढ शासन व्यवस्था होगी पाप अनाचार न होगे। सत्य ज्ञान की सत्यता की जय होगी क्यो न हम आज से ही सभी मे वेद ज्ञान का प्रकाश करना आरम्भ कर दे।

– डी० सी० एम० रोड
खुरजा

वैदिक कालीन विभूतियां - सुकन्या : च्यवन

– मनुदेव अभय विद्यावाचस्पति

वैदिक कालीन श्रेष्ठ युग की बात है। शात सुरम्य एव घने वन मे ऋषि–मुनि तथा योगियो के आश्रम बने हुए थे। उनमे से कुछ मुनिगण गृहस्थाश्रम मे होने के कारण आश्रमो स कुछ दूर कुटिया बनाकर रहते थे। इन मुनियो मे से एक मुनि बडे तपस्वी थे। उन्हे बहुत समय पश्चात एक सुन्दर कन्या प्राप्त हुई। उस सुन्दर एव सुशील कन्या का नाम उन्होने सुकन्या रख दिया। प्राकृतिक स्वच्छन्द वातावरण तथा शुद्ध सात्विक खानपान के कारण यह कन्या दिन प्रतिदिन बडी होने लगी। बेटी को युवावस्था मे प्रवेश होते देख उसके माता–पिता चिन्तित रहने लगे।

उसी आश्रम के निकट एक और गुरुकुल था। उसमे च्यवन नामक एक मुनि–पुत्र अध्ययन हेतु आया करता था। वह गुरुकुल जाते और लौटते समय सुकन्या के माता–पिता की कुटिया के पास बने मार्ग पर चलता था। इधर सुकन्या भी कभी पेड के निकट घनी छाया मे बैठे अनाज सुधारती और कभी कभी निकट बहती नदी मे नाव चलाते हुए व्यस्त रहती। लकिन हा वह कन्या उस ब्रह्मचारी च्यवन को प्रतिदिन आते–जाते देख ही लिया करती थी। ब्रह्मचारी च्यवन भी सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला युवक था। वह भी इस कन्या की ओर कभी–कभी दृष्टिपात कर लिया करता था। एक बार युवक आग्रह पर सुकन्या ने उसे नाव की सैर भी कराई थी। इन भेटो का परिणाम यह निकला कि सुकन्या उस युवा ब्रह्मचारी की ओर आकृष्ट होने लगी और मन ही मन प्रणय (प्रेम) करने लगी। इधर युवक च्यवन भी सुकन्या के रूप और यौवन की ओर आकर्षित होने लगा। शनै शनै दोनो युवा हृदय निकट बैठकर परस्पर चर्चा आदि किया करते थे। सुकन्या ने मन ही मन च्यवन का पति रूप मे वरण कर लिया। इधर सुकन्या के माता–पिता ने भी अपनी पुत्री को च्यवन के साथ चर्चा तथा नाव–तरण आदि के समय उन्हे साथ–साथ देख लिया था। च्यवन भी बुद्धिमान और सुन्दर व्यक्तित्व वाला युवक था। कन्या के माता–पिता की दृष्टि से वह सुकन्या के योग्य लगता था।

इसी बीच एक लोमहर्षक घटना घटी। एक बार सुकन्या अकेले ही अपनी कुटिया मे स्नान हेतु पानी गरम कर रही थी। इतने मे चूल्हे का कुछ भाग एकाएक टूट जाने के कारण गर्म पानी का बर्तन उस पर गिर पडा और सुकन्या बहुत बुरे ढग से जल गई। उसके हाथ पैर तथा मुख मण्डल आदि गर्म पानी से झुलस गए। चेहरे पर अनेक फफोलो को देखकर उसके माता पिता बहुत दु खी हुए।

उनकी कुटिया के पास ही औषधि विज्ञान के महान आचार्य अश्विनी कुमार का आश्रम था। कन्या के माता–पिता ने उनसे अपनी पुत्री का उपचार करने का निवेदन किया। यह सुनते ही आयुर्वेद विशारद अश्विनी कन्या को देखने आए। उन्होने आयुर्वेदिक औषधियो द्वारा उसका उपचार किया और कुछ समय पश्चात वह स्वस्थ हो गई। एक दिन आचार्य अश्विनी उसे पुन देखने उसके घर आए। कन्या के माता–पिता ने कृतज्ञता प्रकट करते हुए उनकी सेवा करना चाही। किन्तु आचार्य ने अपनी पलके नीची करते हुए सुकन्या स पाणिग्रहण का प्रस्ताव रखा। कन्या के माता–पिता उसके पूर्व प्रणय को जानते थे उन्होने सुकन्या–च्यवन के प्रणय–गाथा की बात बता दी। यह सुनकर आचार्य अश्विनी कुछ रुष्ट होकर चले गए।

सुकन्या के स्वस्थ होने के कुछ दिनो बाद उसके माता–पिता ने उसकी सहमति से च्यवन के साथ उसका विवाह कर दिया। दोनो का दाम्पत्य–जीवन सुख से व्यतीत होने लगा। इधर कन्या क माता–पिता अपनी कुटिया छोडकर ऋषियो के आश्रमो म जाकर आध्यात्मिक चिन्तन मनन करने मे व्यस्त हो गए।

सुकन्या च्यवन के विवाह के कुछ समय बाद एक भयकर घटना घटा। च्यवन कुटिया मे झाडू आदि लगा रहे थे। प्रात काल का समय था। झोपडी के एक कोने मे एक भयकर विषैला साप बैठा था। च्यवन उसे ठीक से देख नहीं पाए और उन्होने कोने मे घुसकर झाडू से जोर जोर तथा ताकत लगाकर कोने को साफ करने लगे। बस फिर क्या था उस विषैले नाग ने च्यवन को डस लिया। विष–दन्त से घायल च्यवन चीखमार कर गिर पडा। उसकी चीख सुनकर सुकन्या दौडी हुई आई। उसके पास से वह विषधर रेगकर बाहर चला गया।

सुकन्या ने हिम्मत नहीं हारी। वह तत्काल दौडकर अश्विनी कुमार के पास गई और पति को बचाने की प्रार्थना करने लगी। उस समय अश्विनी कुमार के सम्मुख दो प्रश्न उपस्थित हो गए। प्रथम – सुकन्या द्वारा प्रणय–निवेदन को ठुकरा देने से असतोष और दूसरा था – वैद्यकीय धर्म का निर्वाहन। आत्मा की पुकार के अनुसार अश्विनी अपना वैद्यकीय धर्म पूर्ण करने सुकन्या के साथ चल दिए। उन्होने च्यवन का उपचार किया और कुछ ही घटो मे वह स्वस्थ होकर उठ बैठा। सुकन्या ने उन्हे प्रणाम कर उसका स्तवन किया। किन्तु वहा से प्रस्थित होते समय अश्विनी कुमार ने गम्भीर होकर कहा – देवी ! तुम्हारे पति औषधियो के उपचार से स्वस्थ हो गए हैं किन्तु वे तुम्हारे गृहस्थ धर्म मे तुम्हे पति–सुख (शारीरिक–सन्तुष्टि) न दे सकेगे। नागराज का विष बहुत घातक था। इनके प्राण तो बच गए किन्तु उन्हे आन्तरिक–शिथिलता आजीवन बनी रहेगी।

यह सुनकर सुकन्या निराश नहीं हुई। च्यवन स्वय बहुत विद्वान और आयुर्वेद शास्त्र विशेषकर वनस्पति शास्त्र के बडे विशेषज्ञ थे। उन्होने अपने उद्यान मे अनेक जडी–बूटिया उत्पन्न की। उन्ही जडी–बूटियो से उन्होने ऐसा अवलेह (चाष्य) बनाया कि उन्हे आन्तरिक शक्ति प्राप्त हो गई और वे अपना गृहस्थ–धर्म पति–पत्नि सयोग करने मे सक्षम हो गये। इस प्रकार सुकन्या और च्यवन का दाम्पत्य जीवन सुख से व्यतीत होने लगा। उन्होने आन्तरिक–शक्ति प्राप्त करने के लिए जो अवलेह तैयार किया था उसका नाम उनके नाम पर च्यवनप्राश आयुर्वेद मे प्रसिद्ध हो गया। व्याकरण के अनुसार च्यवन (पु०) (च्यु + णिच + ल्युट) का अर्थ जरा मृत्यु से च्युत = दूर करने वाला होता है।

– अ/१३ सुदामा नगर
इन्दौर ४५२००६

मुस्लिम महिलाएं - दर्दे दिल किसको सुनाएं

मेरे करीबी दोस्त इब्राहिम की दो पुत्रिया कॉलिज मे पढती हैं। कल अचानक मेरे पास आई और बोली अकल हमारा क्या होगा ? तालिबानो के कटटरपथी रवैये तथा इस्लामी जिहाद की आग से बचाकर हमारे पिता जी हमे यहा ले आए तथा मेरे चाचा जी हमारे पुराने रिश्तेदारो की मदद से काश्मीर मे रह रहे हैं। उन्हीं के साथ मेरी बूआ चाची और ताई रहती हैं। भारत मे आकर हमे बहुत अच्छा लगा। यहा सभी को अपने-अपने ढग से जीने की स्वतन्त्रता है। महिला हो या पुरुष खान-पान वेश-भूषा पूजा-पाठ रहन-सहन किसी मे भी कोई किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करता। कभी-कभी हम मन बना रहे थे कि उच्च शिक्षा के लिए कश्मीर जाकर श्रीनगर मे (जिसे धरती का स्वर्ग कहते हैं) रहेगे। किन्तु कल ही चाची जी का पत्र मिला है। उनका कहना है कि जिन परेशानियो और मजहब के नाम पर औरतो के साथ घुटन वाले भेदभाव पूर्ण वातावरण से बचने के लिए अफगानिस्तान से इस मुल्क मे आए और आकर कुछ राहत महसूस की थी अब तो यहा भी वही तालिबानी मजहबी फरमान और फतवे जारी होने लगे है। लगता है यहा भी न तो प्रजातन्त्र है और न ही धर्मनिर्पेक्षता। न कोई सरकार की तरफ से कोई सुरक्षा है न ही स्वतन्त्रता। कहा गया मानव अधिकार आयोग ? कहा है समानता का अधिकार ? कहा है धार्मिक सहिष्णुता ? कहा है मातृशक्ति के लिए आदर मान ? कहा गई भारतीय मान मर्यादाए ? महिला शक्तिकरण वर्ष मे महिलाओ पर होने वाले इस अत्याचार के बारे मे भारत के मुनसिफ और मौलवी क्यो नहीं कुछ बोलते ? विश्व महिला जागृति मिशन को क्या हुआ ? ऐसी घुटन तो पाकिस्तान में भी नहीं है जहा पूर्णत इस्लाम का बोलबाला है। लगता है ये सभी लोग औरतो को अपना गुलाम ही बनाए रखना चाहते हैं। जब से अपनी बूआ के चेहरे पर डाले गए तेजाब की खर सुनी है हमारा तो दिल कापने लगा है। लगता है कहीं भारत भी अफगानिस्तान तो नहीं बन जाएगा ? ऐसा न हो कि ये फरमान सारे देश की महिलाओ पर लागू कर दिए जाए ? हमारे तो आगे बढने के उच्च शिक्षा प्राप्त करके कुछ कर दिखाने के अरमान ही मिटटी मे मिलते जा रहे हैं। क्या भारतीय सरकार तथा कश्मीर की सरकार ऐसे मानवता विरोधी तत्वो का कोई इलाज नहीं कर सकती ? लगता है अब तो भारतीय सविधान भी इन आतकवादियो का गुलाम हो गया है। सारी सुरक्षा व्यवस्था लुज-पुज हो गई है। आश्चर्य तो तब होता है जब आए दिन सुरक्षा ठिकानों मे ही घुस कर सैनिको तक को गोलियो से भून दिया जाता है। काश्मीर मे हिन्दू हो या मुसलमान हर शरीफ परिवार सहमा हुआ है।

अकल आप ही बताइए अब हमारे लिए कहा ठिकाना है ? अब भारत को छोडकर भी जाए तो कहा जाए। अब तो खुदा ही रखवाला है। ये जिहादी इस प्रकार के फतवे जारी करके तथा आतक फैलाकर न केवल इस्लाम को बदनाम कर रहे है बल्कि मुस्लिम ससार की भोली भाली महिलाओ के दिलो मे नफरत की ऐसी आग सुलगा रहे हैं जो एक दिन इस्लाम को भस्म कर देगी।

अत अकल कुछ कीजिए भटके हुओ को राह दिखाइए परवर दिगार सारे मुसलमानो को नेकी के रास्ते पर लाए और रहनुमाओ को हिम्मत और कुव्वत दे ताकि सब चैन से जिदगी बसर कर सके। आमीन-आमीन-आमीन

— **डॉ० सत्यदेव**

विशेष निवेदन

मर्यादा पुरुषोत्तम राम शिवाजी तथा दयानन्द की सन्तानो ! उठो जागो और इस धर्मांधता के आतताई ताण्डव से सम्पूर्ण मानवता विशेष रूप से नारी जाति की रक्षा की जिम्मेदारी लेते हुए अभयदान देकर अपने शौर्य और आर्यत्व का परिचय दो। — **डॉ० सत्यदेव प्रधान आर्यसमाज न० ३ एन० आई० टी० फरीदाबाद**

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल का निर्वाचन सम्पन्न

सभा का विलम्बित त्रैवार्षिक साधारण अधिवेशन रविवार ६ सितम्बर २००१ को प्रान्त के विभिन्न आर्यसमाजो के १५० प्रतिनिधियो की उपस्थिति मे आर्य समाज आसनसोल के अन्तर्गत एव सार्वदेशिक सभा की साधारण सभा के लिए १५ प्रतिनिधि निर्वाचित हुए।

अधिवेशन मे समाज को सगठित करने समाजो के अदालतो मे विलम्बित झगडे समाजो पर अनावश्यक तदर्थ



चित्र मे बैठे हुए प्रधान श्री मोहनलाल अग्रवाल सभामन्त्री श्री आनन्द कुमार आर्य श्री चादरतन दम्माणी श्री सिद्धार्थ गुप्त श्री सुशील कुमार गुप्त श्री मुरलीधर श्री सजय गुप्ता प्रिंसिपल नन्दनसिह श्री विजयराज गुप्ता परिलक्षित है।

दयानन्द विद्यालय के प्रागण मे सभा के कार्यकर्ता प्रधान श्री माहनलाल अग्रवाल की अध्यक्षता मे सौहार्दपूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुआ जिसमे आगामी तीन वर्षों के लिए सर्वसम्मति से श्री मोहनलाल अग्रवाल प्रधान श्री आनन्दकुमार आर्य महामन्त्री श्री सिद्धार्थ गुप्त कोषाध्यक्ष तथा ६ पदाधिकारीगण १८ अन्तरग सदस्य समिति गठित करने जैसी प्रक्रिया को समाप्त करने के प्रस्ताव पारित किए गए।

नव निर्वाचित पदाधिकारियो ने अपना कार्यभार महर्षि दयानन्द भवन ४२ शकर घोष लेन कोलकाता ६ मे विधिवत सभाल लिया है।

— **आनन्द कुमार आर्य सभामन्त्री**

'जीवन प्रभात' का गांधीधाम में शिलान्यास

आज के समारोह के अध्यक्ष श्री वेदप्रकाश गोयल — केन्द्रीय जहाजरानी मन्त्री ने इस पुण्य कार्य के लिए भूमि प्रदान करने हेतु काण्डला पोर्ट ट्रस्ट को धन्यवाद दिया तथा लोगो को भी इस श्रेष्ठ कार्य मे सहयोग देने की अपील की। भूकम्प की परिस्थिति का धैर्यपूर्वक सामना करने के लिए गुजरात की प्रजा को उन्होने धन्यवाद दिया तथा उनके धैर्य की प्रशसा की। पाखण्ड दूर करने स्वाधीनता सग्राम के लिए लोगो को प्रेरित करने नारी शिक्षा के लिए कार्य करने तथा सस्कृत व सस्कृति का प्रसार करने के लिए उन्होने महर्षि दयानन्द सरस्वती को याद किया तथा जीवन प्रभात को महर्षि जी के ऋण चुकाने के समान बतलाया।

इस दौरान सेन्ट्रल रेलवे मजदूर सघ के महामन्त्री श्री विचारे जी ने जीवन प्रभात को रु० छ लाख का चेक सौपा जो सस्था के मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य एव प्रधान श्री पुरुषोत्तमभाई पटेलजी ने श्री जेटलीजी के हाथो से स्वीकार किया। सभा को कच्छ के सासद श्री पुष्पदान गढवी ने भी सम्बोधित किया।

कार्यक्रम के समापन मे ब्रह्मचारी श्री आर्यनरेश जी ने आशीर्वचन देते हुए कहा — परमात्मा जिस प्रकार सभी के साथ एक सा प्यार करते है उसी प्रकार हम भी सबके साथ प्यार करके सबको अपना बनाए। जितना सुन्दर कार्य आर्यसमाज कर सकती है उतना सुन्दर कार्य अन्य सस्था नहीं कर सकती। सस्था के सदस्यो एव कार्यकर्ताओ को पूर्ण सहयोग देने के लिए उन्होने सभी से अपील की।

आर्यसमाज गाधीधाम के महामन्त्री श्री वाचोनिधि ने जीवन प्रभात की जानकारी देते हुए बालको एव बालिकाओ को पूर्ण सुशिक्षित स्वस्थ तथा पुष्ट बनाने का सस्था का सकल्प व्यक्त किया। विधवा बहने अर्थोपार्जन की विधि प्रवृत्तिया तथा साधन प्राप्त कर सके ऐसी व्यवस्था की जाएगी। बालको का मानसिक व शारीरिक विकास हो सके इस आशय से खेलकूद के साधन व्यायामशाला ध्यान-योग केन्द्र पुस्तकालय आदि भी सकुल मे बसाए जाएगे। इस भगीरथ कार्य मे आर्यसमाज गाधीधाम के सदस्यो द्वारा निरन्तर प्राप्त होने वाले तन मन धन के सहयोग की भूरि भूरि प्रशसा की।

जीवन प्रभात के भवन की सरचना वडोदरा के आर्किटेक्ट श्री आनन्द वोरा एण्ड एसोसियेटस ने की है।

इस अवसर पर श्री अरुण जेटली एव श्री वेदप्रकाश गोयल को कच्छी पगडी पहना कर सम्मानित किया गया तथा उन्हे गायत्री मन्त्र का प्रतीक चिन्ह भेट किया गया। इस कार्य मे विशेष सहयोग देने वाले कैप्टन देवरत्न आर्य श्री विचारेजी श्री प्रभात गोयल श्री विनय आर्य आचार्य आर्यनरेश श्री सत्यनारायण अग्रवाल श्री नरेन्द्र सिह जाडेजा श्री ए०के० जोती श्रीविपुल मित्रा श्री शेटटी जी को शाल उढा कर सम्मानित किया गया। सभी अतिथियो ने सकुल मे बालको को हरियाली प्राप्त हो इस आशय से वृक्षारोपण भी किया।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु श्री मोहनभाई जागिड श्री गुरुदत्त शर्मा श्री भीखूभाई गोहिल श्री अशोकभाइ कक्कड श्री परितोष चौहान श्री चिराग पटल ने सहयोग प्रदान किया।

टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 30-9-2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2001
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2001 in NDPSo on 27/28 - 9 - 2001

आर्य समाज, सी ब्लॉक, सी-३ पार्क, जनक पुरी के भूतपूर्व प्रधान श्री विद्यासागर मदान दिवंगत



श्री विद्यासागर मदान

श्री मदान जी एक कर्मठ एव समर्पित कार्यकर्त्ता थे। आपका जन्म ५ मार्च सन १९३६ को पटटो की मन्त्री जिला लाहोर (पाकिस्तान) मे हुआ था। आपके पिता जी भी कर्मठ और समर्पित कार्यकर्ता थे। उन्होने ही आपको वैदिक सस्कारो से सुसस्कृत किया। प्रारम्भिक शिक्षा डी० ए० वी० हाई स्कूल दरियागज दिल्ली से और उसके पश्चात डी० ए० वी० हाई स्कूल चित्र गुप्त रोड नई दिल्ली से करवाई। आर्य कुमार सभाओ के कार्यक्रमो मे आप सक्रिय भाग लेते थे। आप मेधावी छात्र थे इसलिए दिल्ली कालिज ऑफ इन्जीनियरिंग मे दाखिला मिला। वहा से आपने प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण होकर स्नातक की उपाधि प्राप्त की। व्यवसायिक जीवन मे भी आपकी अनेक उपलब्धिया है। सनं १९६२ मे आप एम० ई० एस मे चुने गए और सन १९६१ में रक्षा मन्त्रालय के "रक्षा अनुसन्धान सस्थान" मे सर्वोच्च पद पर नियुक्त हुए। वही से आप मार्च सन १९९६ मे "रक्षा वैज्ञानिक" के पद से सेवा निवृत्त हुए।

उपरोक्त आर्य समाज मे आप भवन निर्माण एव भव्य यज्ञशाला निर्माण के सयोजक थे। आर्यसमाज की गतिविधियो मे बढ चढ कर भाग लेते थे। उनके निधन से जो क्षति हुई है वह अपूर्णीय है। भगवान उनकी आत्मा को सदगति एव शान्ति प्रदान करे।

उनकी श्रद्धाजली सभा मगलवार २ अक्टूबर साय ४ ३० से ५ ३० तक उपरोक्त आर्य समाज मे होगी।

– *सोमदत्त महाजन, मन्त्री*

जिसके हृदय मे दया है, जिसकी वाणी सत्य से सुशोभित है, जिसक परहित मे लगा है कलि भी उसका क बिगाड़ सकता है।

प्रतिष्ठा मे

1010 पुस्कालाध्यक्ष
पत्र... गुरुकुल ...
जिला हरिद्वार

मानवाधिकार विषय पर आकाशवाणी, दिल्ली से प्रसारित विचार

प्रस्तुति - पं० चिन्तामणि बाल्मीकि



चिन्तामणि बाल्मीकि

प० चिन्तामणि बाल्मीकि ने मानव की परिभाषा के आशय से कहा कि जिसमे मनन शीलता की क्षमता हो अर्थात मनुष्य उसी को कहना सार्थक है जो स्वआत्मवत अन्यो के सुख दुख हानि लाभ को अनुभव कर सके। अत मानवीय दृष्टिकोण को आत्मसात करके धारण कर सके। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओ की हर प्रकार से रक्षा उन्नति अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ महा बलवान भी हो तो उसका नाश अवनति और अप्रियाचरण सर्वथा किया करे। जहा तक हो सके वहा तक न्यायकारियो के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम मे उसे दारुण कितना भी दुख प्राप्त हो चाहे प्राण भी भले ही जावे परन्तु मनुष्य धर्म से पृथक न होवे।

सच है कि यहा धर्म व ईमान नहीं होता।
अल्लाह नहीं होता भगवान नहीं होता।
मन्दिर नहीं होता और मस्जिद नही होता
धरती के गोद मे यदि इन्सान नहीं होता।।

मानव का सबसे बडा अधिकार होना चाहिए कि वह अपने विचारो को निर्भय होकर व्यक्त कर सके। तभी वह धर्म अर्थ काम और मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर हो सकेगा।

– आकाशवाणी सेप्रसारित

"लाजपत राज ओ आर्यसमाज" ओडिआ पुस्तक का विमोचन

भुवनेश्वर। ओडिया भाषा मे लिखित "लाजपत राय ओ आर्यसमाज" पुस्तक का विमोचन उत्सव कटक म उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ है समारोह मे लाजपत राय के द्वारा सस्थापित लोक सेवक मडल (दिल्ली) के महामन्त्री श्री सत्यपाल जी डी० ए० वी० ट्रस्ट के उपाध्यक्ष श्री एन डि० ग्रोवर तथा उडीसा के प्रमुख बुद्धिजीवी उपस्थित थे।

ओडिसा के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री प्रियव्रत दास जी द्वारा लिखित इस पुस्तक मे महर्षि दयानन्द की सक्षिप्त जीवनी आर्यसमाज के क्षेत्र मे उनका प्रशसनीय कार्य उल्लेखनीय है। आत्मजीवनी मे लालाजी ने लिखा है – अगर मेरा बाल बाल भी आर्यसमाज पर निछावर हो जावे तो भी मैं उन उपकारो से उऋण नहीं हो सकता।

श्री प्रियव्रत जी का लिखित महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा श्रद्धानन्द की जीवनी ओडिया भाषी पाठक वर्ग में विशेष महत्व पा चुका है। विमोचन समारोह में आर्यसमाज लोक सेवक मडल तथा डी० ए० वी० सस्था के कार्यकर्ता उपस्थित थे।

– **ब्रजबधु पडा**
उपप्रधान, आर्यसमाज, भुवनेश्वर

अशोक विहार में विश्व शान्ति यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज अशोक विहार फेज–१ के तत्वावधान मे रविवार दिनाक १६ ९ २००१ को प्रात ७०० बजे से विश्व शान्ति वृहत यज्ञ का आयोजन प० नन्द किशोर शास्त्री जी के ब्रह्मत्व मे किया गया।

यज्ञ का उद्देश्य विश्व शान्ति तथा ११–९–२००१ को अमेरिका मे हजारो व्यक्तियो के मरने के कारण उनकी आत्माओ की शान्ति तथा परिवारजनो को ऐसी सकट की घडी मे धैर्य एव सान्त्वना देना था।

यज्ञ के उपरान्त आर्यसमाज अशोक विहार–१ के सभी अधिकारी तथा सभी उपस्थित सदस्यो की तरफ से मृतको के परिवारजनो तथा महान राष्ट्र अमेरिका के प्रति सवेदना प्रकट की गई तथा प्रस्ताव पास करके दो मिनट का मौन धारण किया गया।

अविनाश चन्द कपूर — प्रधान
शान्ति लाल आर्य — मन्त्री

मानव कल्याण केन्द्र वैदिक आश्रम, (पंजीकृत)

सूचना

निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण एवं रोग उपचार शिविर

"योग, प्राकृतिक चिकित्सा, एक्यूप्रेशर, होम्योपैथी एव चुम्बकीय पद्धति द्वारा"

मानव कल्याण हेतु समर्पित समाजसेवी सस्था मानव कल्याण केन्द्र किशनपुर देहरादून द्वारा २८ अक्टूबर से ११ नवम्बर २००१ तक केन्द्र तथा द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरुकुल के अपने ही प्रागण मे स्वास्थ्य परीक्षण एव उपचार शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

शिविर मे स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी देने तथा रोग उपचार का प्रबन्ध होगा। इसमे योग प्राकृतिक चिकित्सा चुम्बकीय एव एक्यूप्रेशर पद्यति होम्योपैथी और आयुर्वेद के योग्य आचार्यगण दमा मधुमेह (डायबिटीज) जोडो के दर्द उच्च रक्तचाप हृदय तथा गुर्दे के जटिल रोग सम्बन्धी जानकारी देगे और उपचार करेगे। यह शिविर डा० ओम प्रकाश सेठ डॉ० चमन लाल अरोडा वैद्य हसराज जी स्वामी शरणानन्द जी स्वामी प्रकाश (ब्रह्मचारी – वृन्दावन) एव श्री जगदीश आनन्द जी के निर्देशन मे सम्पन्न होगा।

स्वास्थ्य परीक्षण व उपचार के लिए सभी औषधियो निशुल्क दी जायेगी। इच्छुक व्यक्तियो को १५ दिन शिविर मे ही रहना अनिवार्य होगा। आवास भोजन दूध फल आदि के लिए मात्र ४५०/– रुपये अग्रिम देय होगे। उपरोक्त पते/फोन पर सम्पर्क कर शीघ्र अतिशीघ्र अपना स्थान पजीकृत करा ले।

नोट – योग एव ध्यान की कक्षा डॉ० अन्नपूर्णा जी के निर्देशन मे लगेगी।

निवेदक

राम कवर गुप्ता	**गुरुनारायण दुबे**	**चमनलाल रामपाल,**	**डॉ० वेद प्रकाश आर्य**
सयोजक	मन्त्री	उपाध्यक्ष	सस्थापक

सूचना – वार्षिक उत्सव २००२ की तिथि २४ २५ एव २६ मई सुनिश्चित कर दी गई है।

कार्टून चित्र हिन्दी अपनाओ देश का गौरव बढाओ



इस कार्टून चित्र में अंग्रेजी भाषा को राजनीति के सिंहासन पर बैठकर राष्ट्रभाषा हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं के रूप में दो देवियों को कुचलते हुए दिखाया गया है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली–२ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ **से मुद्रित** सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली–२ **से प्रकाशित** (फोन ३२७४७७१, ३२६०९८५)। सम्पादक **वेदव्रत शर्मा।** ई मेल नम्बर **vedicgod@nda.vsnl.net.in** तथा वेबसाईट - **http://www.whereisgod.com**

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
ओ३म्
वेद
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद
सार्वदेशिक
साप्ताहिक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र



वर्ष ४० अक २९   ७ अक्टूबर से १३ अक्टूबर, २००१ तक   दयानन्दाब्द १७८   सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०२   सम्वत २०५८   द्वि० अ० क्र०
एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डाल

गुरुकुल कांगड़ी की १५ करोड़ की जमीन मात्र ७५ लाख रुपये में बेची

कार्यालय सवाददाता।

हरिद्वार ४ सितम्बर। उत्तराचल राज्य मे पहले बडे भूमि घोटाले के रूप मे आर्यजगत की प्रख्यात शैक्षणिक सस्था गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की मूल्यवान १९८ बीघा जमीन को औने–पौने मूल्य पर बेचे जाने से स्वामी श्रद्धानन्द की तपस्थली गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय तथा सम्बन्धित सहयोगी आर्य सस्थाओ मे खलबली मच गई है। विश्वविद्यालय की १९८ बीघा भूमि जिसका सामान्य मूल्य लगभग १५ करोड रुपये बैठता है मात्र ७५ लाख रुपये मे बेच दी गई है। मूल्यवान भूमि के गुपचुप ढग से बेचे जाने तथा खरीद फरोख्त के इस प्रकरण में आर्यजगत तथा विश्वविद्यालय के वरिष्ठ पदाधिकारियो के नाम उछलने से सस्था के पदाधिकारी दो गुटो मे बट गए हैं।

विश्वविद्यालय की १९८ बीघा भूमि की बिक्री के लिए जो कुछ किया गया है उसमे मोटे लेन देन का आरोप लगाया जा रहा है। लेन देन की तपिश राजधानी देहरादून मे बैठे शीर्ष राजस्व अधिकारियो तक को अपने मे लपेटे हुए है। प्रकटत सचिव मुख्यमन्त्री एव कमिश्नर सुभाष कुमार ने स्थगनादेश देकर भूमि की अदला बदली एव स्वामित्व परिवर्तन पर रोक लगा दी है लेकिन प्रयास है कि रोक के आदेश निरस्त करवाकर दाखिल खारिज का रास्ता खोज लिया जाए।

विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार महावीर अग्रवाल ने स्पष्ट रूप से कहा कि विश्वविद्यालय स्तर पर भूमि की बिक्री नहीं की गई है। भूमि की बिक्री आर्य विद्या सभा के पारित प्रस्ताव के आधार पर की गई है लेकिन यह प्रश्न अनुत्तरित है कि विश्वविद्यालय को दान की गई भूमि किस प्रकार सहयोगी सस्था को हस्तातरित कर बेच डाली गई।

१९८ बीघा बेशकीमती भूमि को कुलपति डॉ० धर्मपाल स्वामी ओकारानन्द प्रो० शेर सिह स्वामी इन्द्रवेश श्रीमती प्रभात शोभा प्रकाशवीर शास्त्री तेजपाल मलिक रणजीत सिह आदि ने आर्य विद्या सभा के नाम से प्रस्ताव पारित कर मात्र ३५ हजार रुपये बीघा की दर पर गुरुकुल के सहायक मुख्यधिष्ठाता डॉ० दीनानाथ शर्मा की मार्फत बिकवाया जबकि शहर से सटी इस भूमि को बेचने का अधिकार आर्य विद्या सभा गुरुकुल को नहीं है। शताब्दी वर्ष प्रारम्भ होते समय कुलपति से जब भूमि विक्रय की बाबत पूछा गया था तो उन्होने साफ साफ कहा था कि गुरुकुल की एक इच जमीन भी नहीं बिकने दी जाएगी लेकिन हुआ इसका विपरीत।

गुरुकुल कागडी भूमि विक्रय पर आर्यजनों की प्रतिक्रिया पृष्ठ ११ पर देखिए

यह भूमि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब और गुरुकुल विश्वविद्यालय की है। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति हरबश लाल शर्मा ने जो कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान भी हैं भूमि विक्रय को अवैध ठहराते हुए न्यायालय मे वाद दायर कर दिया है। विहिप नेता सुर्दशन मल्होत्रा को मुखत्यारे आम घोषित कर उन्होने की गई रजिस्ट्रिया निरस्त कराने की कार्रवाई शुरू कर दी है।

कुलाधिपति के विधिक प्रतिनिधि एव विहिप के वरिष्ठ नेता सुदर्शन मल्होत्रा ने बताया कि भूमि विक्रय करने वालों ने पूरे आर्यसमाज और न्यायालय को गुमराह किया है। इस भूमि की मूल स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब आर्य विद्या पजाब और गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हैं। उल्लेखनीय है कि खसरा नम्बर ५५२ ५५३ ५५४ व ५५६ की इस भूमि को अपनी सम्पत्ति दिखाकर गुरुकुल ने १९६२ मे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग मे विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त किया था।

श्री मल्होत्रा ने बताया कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की शैक्षणिक उपसमिति आर्य विद्या सभा के समानान्तर एक अन्य आर्य विद्या सभा का गठन १९८६ म भूमि विक्रय करने वालो ने कर लिया था। इस नई आर्य विद्या सभा का रजिस्ट्रेशन मेरठ मे रजिस्ट्रार के यहा कराया गया जबकि जालधर के सीनियर जज आई०एस० वाजवा ने पजाब आर्य सभा के डॉ० के०के० पसरीचा द्वारा दायर याचिका २७४–८५ के आधार पर सभा के नए पजीकरण पर रोक लगा दी थी। न्यायाधीश ने आदेश दिए थे कि नई सभा का पजीकरण मात्र जालन्धर या दिल्ली मे ही कराया जा सकता है लेकिन मेरठ मे चुपचाप नया पजीकरण कराकर हरिद्वार एसडीएम न्यायालय से २४ नवम्बर २००० को भूमि का स्वामित्व विश्वविद्यालय के नाम करा लिया। इसके विरुद्ध पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने २३ मई २००१ को मण्डल आयुक्त सुभाष कुमार से स्टे प्राप्त कर लिया था। इसके बावजूद ४ जून २००१ को जमीन की बिक्री सहायक मुख्याधिष्ठाता डॉ० दीनानाथ शर्मा द्वारा कर दी गई। सुदर्शन मल्होत्रा ने करीब डेढ करोड रुपये की स्टाम्प चोरी का आरोप भी विक्रेताओ पर लगाया है।

भूमि विक्रेता डॉ० दीनानाथ शर्मा के अनुसार विद्या सभा का जो आदेश उन्हे दिया गया है उस पर **कुलपति डॉ० धर्मपाल व कुलाधिपति प्रो० शेर सिह प्रकाशवीर शास्त्री, तेजपाल मलिक व रणजीत सिह के** हस्ताक्षर हैं अत जमीन विक्रय मे उनका कोई दोष नहीं है।

आश्चर्यजनक है कि एक ओर विश्वविद्यालय द्वारा शहर के बीचोंबीच स्थित अपनी जमीन ३५ हजार रुपये बीघा बेची गई। दूसरी ओर बहादराबाद पास गुरुकुल इजीनियरिंग कालेज के लि ६५ बीघा जमीन को ८० हजार रुपये प्र बीघा के हिसाब से खरीद की गई।

कार्यवाहक कुलपति प्रो० वेद प्रका शास्त्री ने इस प्रकरण पर गहरा दु प्रकट किया है। विश्वविद्यालय कुलसचिव डॉ० महावीर अग्रवाल ने क कि विश्वविद्यालय ने आधिकारिक स्त पर कार्रवाई प्रारम्भ कर दी है औ तहसीलदार से दाखिल खारिज रुक दिया है। भूमि का वापस लाने के लि विश्वविद्यालय हर प्रयास करेगा।

विश्वविद्यालय सीनेट के वरिष्ठ सदस देवराज ने कहा कि सीनेट बैठक मे उ अधिकारियो को बेनकाब किया जाएग जिन्होने हुतात्मा श्रद्धानन्द के सपनो व बाजार मे बेचा है। गुरुकुल कागड विश्वविद्यालय के कुलाधिपति व आ प्रतिनिधि सभा पजाब के मुखिया प० हरब लाल शर्मा के ही भूमि विक्रय के खिला खडे हो जाने से गुरुकुल ही नहीं पजाब हरियाणा तथा दिल्ली राज्यो की आ प्रतिनिधि सभाओ और सार्वदेशिक आ प्रतिनिधि सभा मे तूफान खडा हो गय है। २० करोड की भूमि का विक्रय क खारिज कराने के लिए जहा रजिस्ट्रा स्तर पर कार्रवाई शुरू हुई है वहं कुलाधिपति के मुख्त्यारे आम सुदर्श मल्होत्रा ने मण्डलायुक्त का स्टे अप जिला अधिकारी चन्द्रशेखर भटट को सौं दिया है। श्री मल्होत्रा ने कहा कि रोटरी रगशाला सहित गुरुकुल की जो करोडे रुपये मूल्य की सम्पत्ति पूर्व मे बेची गइ है उनमे भी पजाब आर्य प्रतिनिधि सभ पार्टी बनने जा रही है। बताया जाता है कि पिछले ३० वर्षो मे गुरुकुल के नियताओ ने ही करीब ८० करोड रुपये की भूमि ठिकाने लगा दी है।

(हिन्दुस्तान देहरादून से साभार दिनाक ५ सितम्बर २००१)

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

सह सम्पादक
विमल वधावन एडवोकेट

चिरस्मरणीय व्यक्तित्व

कीर्तिर्यस्य स जीवति

'पितुष्पिता' – स्वामी श्रद्धानन्द

– श्री देवनारायण भारद्वाज

महात्मा मुन्शीराम आर्यसमाज के बडे नेता और सगठनकर्ता थे। वैदिक धर्म के निष्ठावान प्रचारक थे। ...के लिए उन्होने अपना जीवन समर्पित ...दिया था। धर्म की भिन्नता सज्जनो ... मित्रता मे बाधक नहीं बनती दोनो के ...दर साधुता होनी चाहिए। ऐड्रयूज और ...शीराम इसके ज्वलन्त उदाहरण थे। ...शीराम सन्यासी तो १२ अप्रैल १९१७ को ... परन्तु महात्मा और साधु वह सदा से ... ऐड्रयूज भी जिज्ञासु उदात्त चित्त ...र गुणग्राहक थे।

इन दोनो महापुरुषो की भेट सन ...१२ मे हुई थी। मुन्शीराम जी के गुरुकुल ...भा के प्रयोग से आकर्षित होकर ऐड्रयूज ...वरी सन १९१३ मे गुरुकुल गए थे। ...कुल को देख कर वह इतने प्रभावित ... कि मुन्शीराम जी के परम मित्र बन ...। ऐड्रयूज गाधी जी के भी निकट ...पर्क मे रहे।

अन्ध श्रद्धालु कहीं का रहता नहीं तो ...च्चा श्रद्धालु कहा से कहा पहुच सकता है ...की सीमा नहीं है। ...इस मायावी जगत ...ऐसे श्रद्धालु की परीक्षाए भी खूब होती हैं। ...मे खरा उतरता है मुन्शीराम जैसा ही। बालक मुन्शीराम बचपन से मननशील ...। पहले महात्मा मुन्शीराम फिर स्वामी ...द्धानन्द।

श्रद्धा से जलती अग्नि है,
श्रद्धा से होता हवि दान।
भौतिक धन से बडी है,
श्रद्धा से ही मिलते भगवान्।

श्रद्धा वह गुलाब का पुष्प है जिसकी ...न्ध से महकता है वायुमण्डल जबकि ...पलता है काटो भरी टहनी पर। राह पर ...ल बिखेरना तथा मार्ग से काटे चुगना। ...छ क्या' अधिकतर व्यक्ति काटे बिखेरते ... परन्तु मुन्शीराम से बने श्रद्धानन्द ने ...काटे चुगना ही अपनाया था।

स्वामी श्रद्धानन्द की दूसरी महान ...न शुद्धि आन्दोलन था। देश मे बसे ...करोडो तथाकथित अछूत व दलितो को ...मोटे मोटे प्रलोभन या भय दिखा कर ...ईसाई व मुसलमान बनाया जा रहा था। ...स्वामी श्रद्धानन्द ने तब उन बिछुडे हुओ ...को गले लगाने का महान राष्ट्रीय कार्य ...किया। शुद्ध हुए मलकानो के साथ बैठ ...र भोजन किया उन्हे यज्ञोपवीत दिए ...और राष्ट्र की मुख्य धारा से जोडा।

यह शुद्धि आन्दोलन किसी मत पथ ...अथवा सम्प्रदाय के विरोध मे नही था। ...परन्तु तत्कालीन नेताओ ने इस आन्दोलन ...को हमेशा राजनैतिक तुला पर तोला। ...कोकोनाडा काग्रेस के अध्यक्ष पद से भाषण ...देते हुए मौलाना मोहम्मद अली ने अछूतो ...को जड वस्तु के समान ईसाइयो और ...मुसलमानो मे बराबर बराबर बाट देने का ...प्रस्ताव कर डाला। यह सुनकर भी महात्मा ...गाधी ने मौन धारण किए रखा। जब ...लाखो हिन्दुओ का धर्म परिवर्तन कराया ...जा रहा था तब किसी काग्रेसी नेता को ...कोई बेचैनी न हुई। किन्तु जब वे इस ...शुद्धि आन्दोलन द्वारा अपने घर वापस ...लौटने लगे तो मानो सैकडो मुल्लाओ के ...स्वप्नो मे आग लग गई। जब गाधी जी से ...तबलीग और शुद्धि की बात कही गई तब ...गाधी जी ने मुसलमानो को कुछ न कह ...कर शुद्धि आन्दोलन की आलोचना करनी ...शुरू कर दी। गाधी के इस एकागी पक्षपात के कारण सैकडो हिन्दू काग्रेस से



निकल आए और हिन्दू महासभा तथा शुद्धि आन्दोलन से जुड गए। यह शुद्धि आन्दोलन अभी भी चल रहा है और आगे भी चलता रहेगा।

प्र तद्वोचेदमृत नु विद्वान् गन्धर्वो धाम विभृत गहा सत्।

त्रीणि पदानि निहिता गुहास्य यस्तानि वेद स पितु पिताऽसत्।।

यजु० ३२ ६

भावार्थ – हे मनुष्यो ! जो विद्वान लोग ईश्वर के मुक्ति साधक बुद्धिस्थ स्वरूप का उपदेश करे ठीक ठीक पदार्थों के और ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव को जाने वे अवस्था मे बडे पितादिको के भी रक्षा के योग्य होते है ऐसा जानो।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्वामी श्रद्धानन्द ने इस वेदमन्त्र को अपने जीवन मे किस प्रकार धारण करके ऋषित्व का वरण किया इसकी कहानी उनकी युवावस्था से प्रारम्भ होती है जब वे मुन्शीराम के नाम से जाने जाते थे। बाल्यकाल मे ही इनकी ममतामयी मा की मृत्यु हो गई थी। उच्च पुलिस अधिकारी के लाडले पुत्र मुन्शीराम रईस जादो के मित्र बनकर बुराइयो की मूर्ति बन चुके थे किन्तु बरेली मे महर्षि दयानन्द के एकपक्षीय सत्सग के रग मे उन बुराइयो के ताने बाने ढीले हो गए। पिताजी सेवानिवृत्त होकर अपने ग्राम तलवन आ गए। मुन्शीराम जालन्धर मे एक वर्ष मुख्तार रहकर वकालत की तैयारी हेतु लाहौर चले गए थे। जहा महर्षि दयानन्द के रचित सत्यार्थप्रकाश को पढकर न केवल इनके सशय शूल फूल बन गए थे प्रत्युत समस्त दुर्गुण दुर्व्यसन दूर होकर इनकी नास्तिकता की भूमि पर आस्तिकता का मधुबन लहराने लगा था और आर्यसमाज मे आने के कारण एक नया धर्म पुरुष का जीवन प्राप्त हो गया था। जब आर्यसमाज की स्थापना हुई तो मुन्शीराम को इनकी अनुपस्थिति मे ही प्रधान बनाकर लाहौर सूचना भेज दी गई थी।

होली के अवकाश मे जब ये लाहौर से जालन्धर आए तो इनके सामाजिक व्याख्यानो का अच्छा प्रभाव मित्रो पर तो पडा ही पिताजी को भी पता चल गया था कि उनका बेटा अब नास्तिक नहीं योग्य आस्तिक बन गया है। पिता जी के रुग्ण होने के समाचार से ये उनके पास पहुच कर उनकी सेवा शुश्रुषा में लग गए। पिताजी अपेक्षाकृत कुछ स्वस्थ हुए तभी निर्जला एकादशी का दिन आ गया। आज झज्झर पानी से भरकर उसके ढक्कन पर खरबूजा मिठाई दक्षिणा रखकर सारे घर को सकल्प पढना था। मुन्शीराम ने एक ओर छिपकर पुस्तक पढने की व्यस्तता के आधार पर इस पूजापाठ से बचना चाहा किन्तु बारी–बारी सब सकल्प पढ चुके थे तो अन्तत पिताजी ने इनको बुला ही लिया।

वे बोले आओ मुन्शीराम तुम कहा थे हमने तुम्हारी प्रतीक्षा करके सबसे सकल्प पढा दिया हैं लो सकल्प पढो फिर मैं भी सकल्प पढकर निवृत्त हो जाऊ। मुन्शीराम ने डरते डरते सकोचपूर्वक इस ढोग मे भाग लेने से मना कर दिया। पिताजी निराश होकर चुप रह गए। पिताजी की बात न मानने के कारण ये भी दो–तीन दिन तक उनके सामने जाने से घबडाते रहे।

सेवक से एक थाली मे मिठाई और तब की एक अठन्नी (आधा रुपया) रखवाकर मुन्शीराम के सामने करवा दिया–जाओ पुत्र ठाकुरजी को मत्था टेक कर विदा होओ। भगवान राम के पावक हनुमान तुम्हारी रक्षा करे। यह सुनकर मुन्शीराम स्तब्ध रह गए। पिताजी ने समझा मुन्शीराम अठन्नी कम समझ रहे हैं तो इसके स्थान पर पूरा एक रुपया रखवाकर फिर कहा लो पुत्र ! अब ठीक हो गया देर होती है। ठाकुरजी को मत्था टेक कर सवार हो जाओ। अपने पूज्य प्यारे पिता के आशीर्वाद लालसा की इस घडी मे असीम साहस जुटाकर मुन्शीराम को बोलना पडा पिताजी ! बात अठन्नी या रुपये की नहीं है। मै अपने सिद्धान्तो के विरुद्ध कोई काम कैसे कर सकता हू। हा सासारिक व्यवहार मे आप जो आज्ञा दे उसके पालन के लिए मैं सदैव तत्पर हू। यह सुनकर भला किस पिता को क्रोध नहीं आता। इनके पिताजी के शब्दो मे क्रोध कम निराशा अधिक टपक पडी। मुझे विश्वास नहीं कि मरने पर मुझे कोई पानी देने वाला भी रहेगा – यही भगवान तेरी इच्छा। फिर धीरे से उन्होने कहा – अच्छा अब जाओ देर होगी। मुन्शीराम अपने सर पर सकल्प विकल्प का बोझ लेकर पिताजी को प्रणाम कर यात्रा पर चल दिए।

मुन्शीराम ने सोचा कि जब मैं पिता की स्वर्ग–प्राप्ति मे सहायक नहीं और उनके धार्मिक विचारो के योग्य नहीं तो मुझे उनके धन पर भी क्या अधिकार है। पिताजी ने इनके व्यथार्थ ५० रुपये दिए थे उन्हे भी एक सम्बन्धी द्वारा वापस भेज दिया – उनके साथ एक पर्चा भी पहुचा दिया जिसमे लिखा था – जब मैं आपके मन्तव्य के विरुद्ध मत रखता हू तो मुझे कोई अधिकार नहीं कि सुपात्र पुत्रो के भाग मे से कुछ लू। जीवन रहेगा तो आपके चरणो मे अपनी भेट रक्खूगा ही। इन्होने तो सम्बन्धी से अनुरोध किया था कि वह इन रुपयो व पर्चे को इनके चले जाने के बाद दूसरे दिन पिताजी तक पहुचाए। आखिर सम्बन्धी था बन्ध कराने वाला था विग्रह कराने वाला नही उसने यह सब पिताजी तक पहुचा दिया। पिताजी ने उन्हें उल्टें पैरों घोडे पर बैठाकर मुन्शीराम का पीछा करने को कहा और वह धन राशि उन्हे वापिस करते हुए यह सन्देश भी कहलवा दिया – तुम प्रतिज्ञा करके गए हो कि मेरी सासारिक आज्ञा से मुख नहीं मोडोगे। यह रुपये उसी आज्ञा के अनुरूप दिए गए हैं। सम्बन्धी ने डेढ किलोमीटर की दौड लगाकर पिताजी का स्नेहपूर्ण आशीर्वाद पहुचाने मे मुन्शीराम की सहायता की और वे जालन्धर होते हुए फिर लाहौर पहुच गए।

इनके जाने के बाद पिताजी को मुन्शीराम की याद बैठक मे रक्खी उन पुस्तको ने दिला दी जो वे यहा छोड गए थे। एक दिन पिताजी पडित काशीराम से बोले देखो इन पुस्तको मे क्या लिखा है। पर मुझे सुनाने से पूर्व जाच लो कि कहीं ये नास्तिक व प्रभु निन्दात्मक ग्रन्थ तो नहीं है। पण्डित जी तो मुन्शीराम के शिष्य थे – उन्होने बडी चतुराई से काम किया लिया। पहले ब्रह्मयज्ञ का अर्थ सहित पाठ सुनाया तो उनकी बूढी आखो मे एक नई चमक आ गई और मन श्रद्धा से भर गया। वे विह्वल होकर बोल पडे – 'पण्डित जी हम तो अविद्या मे पडे रहे। हमारा मोक्ष कैसे होगा। हमने तो निरर्थक क्रियाए ही की हैं। अब से वैदिक सन्ध्या करेगे। और वे दृढतापूर्वक अर्थसहित मन्त्र कण्ठस्थ करने लगे। इस प्रकार पिताजी को परम पिता का प्यार मिलने लगा और पुत्र मुन्शीराम को पिताजी का दुलार मिलने लगा।

आपने देखा कि प्रस्तुत वेदमन्त्र की भावना के अनुसार एक पुत्र ने अपने पिता को परमपिता की मोदमयी गोद प्रदान कर उसकी आत्मरक्षा करके पिता के पिता बनने की बात को सिद्ध कर दिया। पिता नानकचन्द्र के घर स० १९१३ वि० मे जन्मे मुन्शीराम का पाधाजी ने राशि का नाम बृहस्पति रखा था। जो यथा नाम तथा गुण सिद्ध होकर उन्हे उसी डगर पर ले गया।

गुरुकुल खोलकर न जाने वे कितने आचार्य बृहस्पतियों के पिता बन गए और त्याग तपस्यापूर्ण वैदिक ऋषियो की उत्सर्गमयी परम्परा मे स्वय प्रकाश-पुरोधा बनकर स० १९८३ वे में भारत माता की स्वतन्त्रता तथा विश्व मानवता की राह मे बलिदान हो गए। महात्मा स्वामी और ऋषि श्रद्धानन्द को शत शत श्रद्धाजलि।

– **वरेण्यम् एम०आई०जी० (पी०)**
४५, अवन्तिका ए०डी०ए०, कालोनी,
रामघाट मार्ग, अलीगढ-२०२००१

आज का इंसान

— राम प्रकाश आर्य

आज ससार मे चारो तरफ अशाति का वातावरण बना हुआ है। इसका मुख्य कारण मनुष्य की मानसिक सोच ही है। क्या कारण है कि आज के मानव को भौतिक सुविधाए अधिकतम उपलब्ध होने के बाद भी अशाति है। इन भौतिक पदार्थो मे शाति मिल ही नहीं सकती। आज अधिकतर घरो मे कार स्कूटर फ्रिज टी० वी० वाशिग मशीन टेलीफोन जनरेटर एव अनेक और भी भौतिक सुविधाए प्राप्त है उसके बाद भी अनेक घरो मे कलह क्लेष का वातावरण बना हुआ है। इस अशाति के लिए हम स्वय ही दोषी हैं क्योकि जो पदार्थ हमारे पास नहीं है उसकी खरीदने की चाहत रहती है तथा जो उपलब्ध है उसमे हमे सतोष नहीं है और जब तक मनुष्य के अदर सतोष की वृत्ति का उदय नहीं होगा तब तक शाति किसी भी कीमत पर हमे मिल नहीं सकती क्योकि हमारे ऋषियो की वाणी है "सतोषम परम सुखम"। सतोषाद् अनुत्तम सुख लाभ (योग दर्शन)।

साथ ही यदि हम चाहते है कि हमारे घर का वातावरण स्वर्ग के समान हो तो इसके लिए प्रथम शर्त है त्याग की भावना। आज व्यक्ति के अन्दर से त्याग की भावना लगभग समाप्त सी होती जा रही है। पहले हम अपने सुख की कामना करते हैं फिर परिवार के दूसरे सदस्यो के प्रति। जबकि होना यह चाहिए कि पहले अन्य सदस्य फिर हम। अगर ऐसी भावना आ जाए तो वह व्यक्ति निश्चित ही अपने घर को स्वर्गमय बना सकता है। किन्तु आज तो मानव मरने के बाद (स्वर्गीय) आनन्द प्राप्त करना चाहता है। स्वर्ग नाम का इस सृष्टि मे कोई स्थान नहीं है ऐसा हमारे वेदो मे उल्लिखित है। मरने के बाद स्वर्ग किसने देखा है अत आवश्यकता है इसी पृथ्वी को स्वर्ग बनाने की। यह तभी हो सकता है जब हम कहे इदन्न मम यह मेरा नहीं। यह सम्पत्ति परमात्मा ने हमे कुछ समय के भोग के लिए दी है मुझसे पहले यहा थी मेरे साथ यहा है मेरे बाद भी यहीं रहेगी। अत कामना रहित होकर इन सासारिक भौतिक पदार्थों का क्रमे भोग करना चाहिए। आज वाणी के माध्यम से भी मनुष्य आग ही उगल रहा है। वाणी पर सयम न होने की वजह से ही आज कोर्ट कचहरी मे मानवो की भीड लगी है जिधर देखिए उधर ही क्रोध की अग्नि भभक रही है। मनुष्य कितने अभिमान से कहता है कि हम ही परमात्मा की सबसे श्रेष्ठ सतान है। क्या आपको ऐसा लगता है कि हम श्रेष्ठ है ? क्या आपने कभी सुना होशियार खबरदार गधा महाराज हाजिर हो कुत्ता भैया हाजिर हो इत्यादि।

आज हम गलत मार्ग पर चल रहे हैं कभी पीछे मुडकर हम नहीं देखते कि किधर जा रहे है। आज का इसान धन के पीछे पागलो की तरह दौड रहा है। हर व्यक्ति धनवान होना चाहता है वह धन चाहे किसी भी रास्ते से हमारे पास आए। पहले रात्रि मे चोर डकैत धन के लिए हमला करते थे। आज मनुष्य इतना निडर हो चुका है कि दिन दहाडे आदमियो को लूट रहा है। अब तो स्थिति इतनी बदतर हो चुकी है कि सरकारी सस्थान बैक पोस्ट आफिस एव अन्य सरकारी विभाग दिन दहाडे लूटे जा रहे है और कोई पकडा भी नही जा रहा है और पकडा जा रहा है तो जमानत पर छूट जाता है। यही कारण है कि आज के समय मे अपराध का ग्राफ बडी तेजी से बढ रहा है। इसके लिए हमारा भारत सरकार से एव यहा के न्यायाधीशो से निवेदन है कि अपनी दण्ड व्यवस्था को मजबूत करे। जब तक इन चोर बदमाशो को कडा दण्ड नही दिया जाएगा तब तक सुधार नही होगा। इस सम्बन्ध मे सत्यार्थ प्रकाश मे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लिखा है कि चोर जिस प्रकार जिस जिस अग से गलत कार्य करता है उस उस अग को सब मनुष्यो की शिक्षा के लिए राजा हरण अर्थात छेदन कर दे। जिस अपराध मे साधारण मनुष्य को एक रूपया दण्ड हो उसी अपराध मे राजा को सहस्र रुपया दण्ड होवे अर्थात साधारण मनुष्य से राजा को सैकडो गुना दण्ड होना चाहिए। क्योकि यदि प्रजा पुरुषो से राज पुरुषो को अधिक दण्ड न होवे तो राजपुरुष प्रजा प्ररुषो का नाश कर देवे जैसे सिह अधिक और बकरी थोडे दण्ड से ही वश मे आ जाती है। इसलिए राजा से लेकर छोटे से छोटे भृत्य पर्यन्त राज पुरुषो को अपराध मे प्रजा पुरुषो से अधिक दण्ड होना चाहिए।

चाहे गुरु हो चाहे पुत्रादिबालक हो चाहे पिता आदि वृद्ध चाहे ब्राह्मण और चाहे बहुत शास्त्रो का श्रोता क्यो न हो जो धर्म को छोडकर अधर्म मे वर्तमान दूसरे को बिना अपराध मारने वाले हैं उनको बिना विचारे मार डालना अर्थात मारने के पश्चात विचार करना चाहिए। दुष्ट पुरुषो के मारने मे हन्ता को पाप नही होता चाहे प्रसिद्ध मारे चाहे अप्रसिद्ध क्योकि क्रोधी को क्रोध से मारना जानो क्रोध से क्रोध की लडाई है।

हम ऐसा सुनते है कि इस तरह कडे दण्ड की व्यवस्था अरब देशो मे लागू है वहा पर गलत कार्य एव पाप कर्म कम होते है। अगर यह वास्तविकता है तो वह देश निश्चित ही उचित मार्ग पर है।

ऐसी ही व्यवस्था पूर्व मे कभी भारतवर्ष मे भी लागू थी। किन्तु इस समय लुप्त प्राय है। इस समय तो इस देश मे घोटालो का बोलवाला है। ऊपर (राजा) से लेकर नीचे (प्रजा) तक मे सब तरफ भ्रष्टाचार पापाचार दुराग्रह व्यभिचार एव अनाचार आदि भयकर रूप से नस नस मे हमारे अन्दर प्रवेश कर चुका है। अभी इनके नाम लिखना शुरू कर दू तो अनेक पन्ने भर जाएगे। अत आप स्वय समझ ले कि आज का नेता अभिनेता नौकरशाह कर्मचारी व्यापारी छात्र अध्यापक मजदूर वह चाहे स्त्री हो पुरुष हो कोई विरले ही पाप कर्म से बचा होगा। ऐसा हम दैनिक समाचार पत्रो मे पढकर देख रहे होगे। अभी जुलाई माह मे आर्यसमाज सुभाष नगर के माध्यम से एक सप्ताह तक प्रभात फेरी का आयोजन किया गया। जिसमे कारगिल मे शहीद हुए सैनिको की आत्मा की शाति के लिए यज्ञ किया गया एव वीर सैनिको के उत्साह वर्धन हेतु फैजाबाद के प्रत्येक मुहल्ले मुहल्ले व गली गली मे जाकर हमारे आर्य वीरो ने जागरण का कार्य किया। इन सातो दिनो के कार्यक्रम का विवरण समाज के महामन्त्री राज नारायण आर्य द्वारा बनाया गया और यहा के प्रत्येक अखबार ने उसको बडे ही सुन्दर ढग से छाप कर आर्य वीरो का उत्साह वर्धन किया। इस बात से मुझे थोडा सा दु ख हुआ कि समाज के महामन्त्री एव अन्य सदस्य राज (दैनिक) समाचार पत्रो के कार्यालयो मे जाकर समाचार दे आते थे। तब वह छापते थे। मेरा पत्रकार बधुओ से विनम्र निवेदन है कि क्या आपका उत्तरदायित्व नहीं बनता कि ऐसे सुन्दर सुन्दर समाचारो का सकलन आप स्वय करके अपने समाचार पत्रो मे स्थान देते। आपको इसके लिए समाचार पत्रो के मालिक धन भी देते होगे। जहा जहा अच्छे सत्सग होते है वहा वहा से अच्छी बातो का सकलन कर अपने अखबारो को अच्छा बनाए ऐसी मेरी आप से करबद्ध प्रार्थना है। क्या ये समाचार भी आपको घर बैठे मिल जाते है कि अमुक स्त्री अपने चार बच्चो के साथ प्रेमी के साथ फरार। पति ने प्रेमिका के साथ मिलकर पत्नी की हत्या कर दी। ससुराल मे बहू को गला घोट कर पति देवर सास एव ननद ने मिलकर मार डाला। एक स्त्री को खेत मे ले जाकर चार नालायको ने मुह काला किया। दिन दहाडे बीच बाजार मे हत्या कर हत्यारो ने सनसनी फैलाई हत्यारे फरार। इस तरह के कई समाचार आप स्वय वहा जाकर ले आते है वे सब आपके कार्यालय मे आकर नहीं दे जाते। इससे समाज को क्या सदेश मिलता है ? ऐसे अपराधियो की सजा चोर के हाथ काट दिए जाए हत्या करने वाले की तुरन्त हत्या कर दी जाय पत्नी को जला कर मारने वाले का एक तो पुनर्विवाह न होने दिया जाय तथा साथ ही समाज से बहिष्कृत कर दिया जाय। तभी आप इस देश मे सुधार की आशा कर सकते है अन्यथा जैसा इस समय चल रहा है आने वाला समय इससे भी बदतर होगा। ऐ मानवो ! अगर चाहते हो मानवता जीवित रहे तो अभी से सावधान हो जाओ। ऐसे अपराधियो को दण्ड देने के लिए साक्षी (गवाही) की कोई आवश्यकता नहीं है उस व्यक्ति का रिकार्ड (चाल चलन) देखकर न्यायाधीश तुरन्त निर्णय दे। इस तुरन्त न्याय व्यवस्था को चुस्त बनाए। तीन से छ माह के बीच अपराधी के कार्यों का निर्णय हो जाना चाहिए। जब तक इस देश मे कडे से कडा दण्ड देने की व्यवस्था नही लागू होगी तब तक सुधार असम्भव है।

शेष भाग पृष्ठ ११ पर

वृद्धावस्था के रोग तथा निराकरण

– श्री छाजूराम शर्मा वैद्य शास्त्री

मनुष्य को वृद्धावस्था किस आयु मे आनी चाहिए और उसको दूर हटाने के क्या उपाय हो सकते हैं ? यह एक विचारणीय प्रश्न है जिसका उत्तर प्रत्येक सुखार्थी मनुष्य जानना चाहता है।

यदि मनुष्य की सामान्य आयु सौ वर्ष की मान कर चले, तो वह जीवन मे चार दशाओ से गुजरता है। १ बाल्यावस्था, २. युवावस्था, ३. वृद्धावस्था, ४ जरावस्था। इनमे वृद्धावस्था ७५ वर्ष की आयु से १०० वर्ष तक होती है और इससे ऊपर जरावस्था आ जाती है।

प्राय समझा जाता है कि ७५ वर्ष की आयु मे अवश्य ही वृद्ध हो जाना चाहिए परन्तु, स्वास्थ्य विज्ञान के अनुसार चलने से इस समझ का खंडन हो जाता है क्योकि वृद्धावस्था का आयु से कोई अटल सम्बन्ध नहीं है। यह तो देश, काल, आहार–विहार; आचार विचार आदि पर निर्भर है। इसके अनुसार प्राचीन काल में सौ वर्ष अथवा उससे ऊपर वृद्धावस्था आती थी। मध्यकाल मे ७५ वर्ष और आजकल ५०–६० वर्ष की आयु वृद्धावस्था की मानी जाती है, सो ठीक नहीं है। यदि आयु ही वृद्धावस्था का कारण होती, तो आज हम बहुतों को ४० वर्ष में ही वृद्ध होते न देखते। दुर्बलता का नाम वृद्ध वा बुढापा है, वह किसी भी आयु में आ सकता है। शक्तिमान बने रहना युवावस्था है। प्राकृतिक जीवन जीने से यह किसी भी आयु तक बनी रह सकती है।

वृद्धावस्था में दुर्दशा

गात्रं संकुचितं गतिर्विगलिता भ्रष्टा च दन्तावलिः।
दृष्टिर्नश्यति वर्धते बधिरता वक्त्रं च लालायते।।
वाक्यं नाद्रियते च बान्धवजनो भार्या न शुश्रूषते।
हा ! कष्टं पुरुषस्य जीर्णवयसः पुत्रोऽप्यमित्रायते।।

शरीर जिसका सिकुड गया है, गाल पिचक गए हैं, चाल ढीली पड़ गयी है, दातों की पंक्तियां नष्ट हो चुकी हैं, नेत्रो की दृष्टि मन्द हो गयी है। मुख से लार टपकती है, बन्धु बान्धव आदर नहीं करते, भार्या भी सेवा नहीं करती, हा ! बडे दुःख का विषय है कि मनुष्य की वृद्धावस्था में पुत्र भी शत्रु बन जाता है। बडी दुर्दशा होती है।

युवावस्था मे जिसकी घर में बडी चाहना थी, वृद्धावस्था में उसकी घर मे कोई चाह नही, अपितु चाहते हैं कि यह शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो। अत सन्तान आदि के अधिक मोह मे न फस कर वह कार्य करना, जिससे बुढापे में सुख से रह सके। जवानी मे शरीर और इन्द्रियों की रक्षा करता हुआ सकट काल के लिए कुछ द्रव्य अवश्य बचाये रखना चाहिए, जिसके लोभ से सन्तान और पत्नी सेवा करते रहें। एक नीतिकार के विचारों पर ध्यान दे –

इह लोके हि धनिनां परोऽपि स्वजनायते।
स्वजनोऽपि दरिद्राणां सर्वदा दुर्जनायते।।

संसार मे धन वाले के लिए पराये भी अपने हो जाते हैं और धनहीन व्यक्ति के अपनी भी पराये हो जाते हैं।

अस्ति यावत्तु सधनस्तावत् सर्वैस्तु सेव्यते।
निर्धनस्त्यज्यते भार्यापुत्राद्यैः सगुणोप्यतः।।

अर्थात् जब तक पुरुष के पास धन है, तभी तक स्त्री पुत्रादि उसकी सेवा करते हैं। धन के अभाव में गुणवान होने पर भी उसकी कोई बात तक नहीं पूछता।

वृद्धावस्था क्यो आती है ?

ऋतु, देश, काल, प्रकृति के विरुद्ध अनियमित आहार विहार, पौष्टिक भोजन का अभाव, अत्यधिक आराम का जीवन, परिश्रम न करना, भोग विलास, अधिक उपवास, मानसिक चिन्ताए, क्रोध, शोक, भयग्रस्त जीवन, ब्रह्मचर्य नष्ट करना, शरीर में कोई न कोई रोग लगे रहना, विपत्तियों में फंस कर अनेक कष्ट सहना इत्यादि कारणों से शीघ्र ही बुढापा घर कर लेता है। मनुष्य की जीवनी शक्ति प्रतिदिन घटने लगती है। तब यह शारीरिक, मानसिक दोनों ही रूप से आशक्त हो जाता है। ज्ञानेन्द्रियां और कर्मेन्द्रियां निर्बल हो जाती हैं।

वृद्धावस्था के पूर्व लक्षण

स्मरण शक्ति में कमी, चलने फिरने, उठने बैठने में शकावट होना, कार्य करने में चुस्ती व उत्साह न होना, शरीर में झुर्रियां पड़ना, किसी कार्य मे मन न लगना, निश्चय किये गए विचार को बार बार बदलना, बालो का सफेद होना या गिरना, जोडो मे दर्द, वायु व कफ के विभिन्न रोग होना, बिना सामर्थ्य के इन्द्रियो की अपने भोगो मे रुचि होना इत्यादि लक्षण बुढापे के जानने चाहिए।

इससे बचने के उपाय

बुढापा अपने समय पर अवश्य आता है। लेकिन उचित उपायो से इसे २५ वर्षों तक आगे को धकेला जा सकता है। जैसे समय पर फल पकता है, वैसे ही यह शरीर भी पक जाता है। बुढापा पकी हुई आयु है। यह युवावस्था का अन्तिम समय है, जो आने के बाद फिर जाता नहीं। तभी तो कहा है कि :

जो जा कर न आये वह जवानी देखी, जो आ कर न जाये वह बुढापा देखा। जवानी में बुढापा आना जीवन में अभिशाप है। इसे ठीक से जीने के लिए निम्न उपाय करने चाहिए –

आयु की दृष्टि से सर्वप्रथम ऋतु अनुकूल उचित आहार विहार का प्रबन्ध करना चाहिए। बुढापे के उपर्युक्त कारणों से बच कर ब्रह्मचर्य का सेवन, निद्रा का उचित सेवन करना आवश्यक है।

उचित आहार क्या है ?

चोकरदार कुछ बिना छना मोटा आटा, छिलकेदार दाले, हरी सब्जियां, दूध, मक्खन, दही, घी, शहद, सूखे मेवे, देशी खांड, ऋतु के अनुसार फल, यथाशक्ति इनका सेवन वृद्धावस्था को शीघ्र आने से रोकता है। अंडे, मांस व सब प्रकार के नशो का सेवन शीघ्र बुढ़ापा लाता है। बुढापे के लक्षण देखते ही रसायन औषधों का सेवन करना जीवनी तत्वों में वृद्धि कर बुढापे को रोकता है। संयम, सदाचार, सरलता, प्रसन्नचित रहना, स्वल्पं सात्विक भोजन, क्रियाशील जीवन, प्राकृतिक नियमों का पालन निःसंदेह मनुष्य को बुढापे में सग्रह की हुई शक्ति वृद्धावस्था में काम देती है।

वृद्धावस्था में होने वाले रोग और उनकी विश्वस्त औषधियां

वृद्धावस्था में प्रायः जोडों के दर्द, मोटापा, मधुमेह, रक्तचाप, बहुमूत्र और हृदयरोग हो जाते हैं। इनका कारण गलत भोजन, परिश्रम न करना, मानसिक चिन्ताएं व शोक आदि हैं। इनमें निम्नलिखित सफल औषधियो का प्रयोग लाभदायक है।

मधुमेह : नीम निबौरी की गिरी, जामुन की गिरी, गुडमार बूटी, बेल के पत्ते, त्रिफला, गिलोय, वंशलोचन, शुद्ध शिलाजीत, चादी भस्म, मडूर भस्म, छोटी इलाचयी के बीज।

सूखी दवाओं को कूट छान कर चूर्ण बना ले। फिर उसमे भस्मे मिला दें। इसमें करेला का रस डाल कर दिन में धूप में रखे, रात को ओस मे रखे। यह एक भावना हुई। इस प्रकार करेला के रस की सात भावना देकर छाया में सुखा लें। छह माशे प्रात., छह माशे साय जल के साथ सेवन करें।

परहेज – तेल, खटाई, मीठा, आलू, चावल, आम, पकवान, लाल मिर्च, गरिष्ठ व बासी भोजन का सेवन न करें। सादा व हल्का भोजन लें। परिश्रम ब्रह्मचर्य सेवन करें। एक मास के सेवन में मधुमेह चला जाता है। रोग पुराना हो तो तीन मास अवश्य सेवन करें। इससे बहुमूत्र रोग भी ठीक होता है।

जोड़ों का दर्द – शुद्ध कुचला, सौ ग्राम, शुद्ध गूगल ५० ग्राम, मल्ल सिंदूर २० ग्राम, मीठी सुरजान ५० ग्राम लें।

पहले मल्ल सिन्दूर को खरल में पीसें। फिर उसमें कुचला और सुरजान का चूर्ण मिला दें। बाद में गूगल मिला कर एक कर लें। फिर इसमें अदरक का रस डाल कर भिगो दें। दिन को धूप में और रात को ओस में रखें। यह एक भावना हुई। ऐसी सात भावना लहसुन के रस की देकर खरल में घुटाई करें। फिर खुश्क होने पर २–२ रत्ती की गोलिया बना कर छाया मे सुखा लें।

प्रातः सायं दो दो गोलिया दूध से लें। यह दवा गृध्रसी (रींधन वायु) दर्द की अचूक दवा है। इसके अतिरिक्त गठिया, जोडों का दर्द, कमर का दर्द व सब प्रकार के वायु कफ के दर्द और पुराने जुकाम में लाभ करती हैं। साथ ही दर्द स्थान पर महानारायण तेल और विषगर्भ तेल की मालिश करके सेक दें। चावल, उडद, चने, राजमा आदि वायु कारक वस्तुए न खावें।

शेष भाग पृष्ठ १० पर

भारत को बौखलाने की जरूरत नहीं

– डॉ० वेदप्रताप वैदिक

यदि अमेरिका का निशाना सिर्फ ओसामा बिन लादेन है तो यह अच्छा ही हुआ कि अमेरिका ने अपने अफगान-अभियान मे भारत को शमिल नहीं किया। भारत ने अमेरिका के लिए जैसा उत्साह दिखाया वैसा उत्साह तो नाटो के अनेक सदस्यो ने भी नहीं दिखाया। पहले भारत के विदेश मन्त्री ने अमेरिका को सभी प्रकार की सुविधाए देने की घोषणा की और बाद मे प्रधानमन्त्री ने सारे देश का आह्वान किया कि इस आतकवाद विरोधी युद्ध मे कूदने के लिए वह तैयार हो जाए। अमेरिका को यह सब बिना मागे ही दे दिया गया। हमारे विदेश मन्त्री से बात करने मे अमेरिकी विदेश मन्त्री ने चार दिन लगा दिए और अमेरिकी राष्ट्रपति ने हमारे प्रधानमन्त्री से बात करने मे छह दिन लगा दिए। इसी से पता चलता है कि फिलहाल अमेरिका की नजर मे भारत का महत्व कितना है ? अगर अमेरिका का निशाना आतकवाद होता तो वह आगे होकर भारत से बात करता लेकिन उसका लक्ष्य तो सिर्फ ओसामा है। ओसामा को पकड़ने मे पाकिस्तान निश्चय ही मददगार हो सकता है। इसलिए अमेरिकी राष्ट्रपति और विदेश मन्त्री ने पाकिस्तानी नेताओ से बार-बार बात की।

प्रश्न यह है कि भारत ने जो किया क्या वह गलत था ? क्या भारत बुद्धू बन गया ? क्या भारत के हाथ के तोते उड गए ? क्या कोई अवसर हाथ आता–आता फिसल गया ? यह सब प्रश्न सही होते और अपना उत्तर भी स्वय ही होते बशर्ते कि अमेरिका का युद्ध आतकवाद के विरुद्ध होता। यदि अमेरिका का युद्ध आतकवाद के विरुद्ध होता तो इसमे क्या शक है कि भारत उसका स्वाभाविक नेता होता। अमेरिका ने तो अभी कुछ ही दिन दहशत के साए मे बिताए है भारत को दस साल से भी ज्यादा हो गए है अनवरत आतक का सामना करते हुए। उसकी एक महाप्रतापी प्रधानमन्त्री और एव पूर्व (एव भावी) प्रधानमन्त्री भी आतकवाद के शिकार हुए हैं। गिरे हुए ट्रेड टॉवर फिर से खडे किए जा सकते है लेकिन इदिरा गाधी और राजीव गाधी कहा से लाए जा सकते हैं ? टॉवर और पैटागन मे दिवगत लोगो के प्रति हमारी गहरी सहानुभूति है लेकिन पजाब और कश्मीर मे मरे लोगो की जिन्दगी कोई कम कीमती नहीं थी। वहा मरने वालो की अनुमानित सख्या पाच हजार है जबकि पजाब और कश्मीर मे एक लाख से अधिक लोग आतकवाद के कराल गाल मे समा चुके हैं। ११ सितम्बर २००१ यदि दुनिया याद रखेगी तो वह ११ मार्च १९९३ कैसे भूल जाएगी ? उस दिन मुम्बई मे लगभग वैसा ही कहर बरपा हुआ था जैसा कि पिछले हफ्ते न्यूयॉर्क और वाशिंगटन में हुआ है। अगर ओसामा बिन लादेन विश्व का सबसे खूखार अपराधी है तो दाऊद इब्राहीम को आप किस श्रेणी मे रखेगे। दूसरे शब्दो मे आतकवाद का जैसा भुक्तभोगी भारत है, दुनिया का कोई और देश नहीं है।

यदि अमेरिका का युद्ध आतंकवाद के विरुद्ध होता तो इसमे क्या शक है कि भारत उसका स्वाभाविक नेता होता। अमेरिका ने तो अभी कुछ ही दिन दहशत के साए में बिताए है, भारत को दस साल से भी ज्यादा हो गए है, अनवरत आतंक का सामना करते हुए। उसकी एक महाप्रतापी प्रधानमन्त्री और एवं पूर्व (एवं भावी) प्रधानमन्त्री भी आलंकवाद के शिकार हुए हैं। गिरे हुए ट्रेड टॉवर फिर से खडे किए जा सकते हैं लेकिन इंदिरा गांधी और राजीव गांधी कहां से लाए जा सकते हैं ? टॉवर और पेंटागन में दिवंगत लोगों के प्रति हमारी गहरी सहानुभूति है लेकिन पंजाब और कश्मीर में मरे लोगों की जिन्दगी कोई कम कीमती नहीं थी। वहां मरने वालों की अनुमानित संख्या पांच हजार है जबकि पंजाब और कश्मीर मे एक लाख से अधिक लोग आतंकवाद के कराल गाल में समा चुके हैं। ११ सितम्बर, २००१ यदि दुनिया याद रखेगी तो वह ११ मार्च, १९९३ कैसे भूल जाएगी ? उस दिन मुम्बई में लगभग वैसा ही कहर बरपा हुआ था, जैसा कि पिछले हफ्ते न्यूयॉर्क और वाशिंगटन में हुआ है। अगर ओसामा बिन लादेन विश्व का सबसे खूंखार अपराधी है तो दाऊद इब्राहीम को आप किस श्रेणी में रखेंगे। दूसरे शब्दो मे आतंकवाद का जैसा भुक्तभोगी भारत है, दुनिया का कोई और देश नहीं है।

इसीलिए अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज बुश ने आतकवाद के विरुद्ध जब युद्ध की विधिवत् घोषणा की तो भारत का उत्साहित होना बिल्कुल स्वाभाविक था। इसलिए प्रधानमन्त्री और विदेश मन्त्री पर यह आरोप लगाना उचित नहीं है कि वे अमेरिका के आगे पसरेगे लेकिन यह तो सत्य ही है कि हमारा विदेश मन्त्रालय यह जानने मे असमर्थ रहा कि अमेरिका की असली मशा क्या है ? जिस देश के लिए हम हथेली लगाने को बेताब है क्या उसका असली इरादा हमे पता नही होना चाहिए ? अब जबकि अमेरिका का असली इरादा जाहिर होता जा रहा है हमारे नेताओ की बौखलाहट बढती जा रही है। सरकारी प्रवक्ता के तौर पर कुछ नेता ऐसी शब्दावली का प्रयोग कर रहे है जिसका प्रयोग विशेषज्ञो और पत्रकारो के मुह से तो शोभा देता है और अपेक्षित भी है लेकिन उनके मुह से निकलने पर वे ही शब्द उल्टा अर्थ ढोते हुए दिखाई पडते है विरोधी नेता अगर सरकार की इस हेठी का लाभ उठाय तो इसमे अचरज क्या है ? लेकिन विरोधी नेता हवा मे घूसे चला रहे है। वे खरगोश के सीग मरोड रहे है। पानी बिलोकर मक्खन निकाल रहे है। वे सरकार को चेता रहे हैं कि वह भारत की जमीन का बेजा इस्तेमाल न होने दे। अमेरिकियो को कोई सैन्य–सुविधा न दी जाए। भारत से जमीन और सैन्य सुविधा माग कौन रहा है ? इस तरह की बहादुराना सलाह देने वाले नेतागण शायद भूल गए कि चन्द्रशेखर–सरकार ने ईराक पर बमबारी करने वाले अमेरिकी युद्धक–विमानो को भारतीय हवाई अडडो पर तेल भरने की सुविधा दी थी और जवाहरलाल नेहरू और लाल बहादुर शास्त्री के जमाने मे अमेरिकियो ने भारत सरकार की अनुमति से हिमालय–क्षेत्र मे ऐसे यन्त्र लगाए थे जो चीनी परमाणु गतिविधियो पर निगरानी रखते थे। यह सही है कि पाकिस्तान की तरह भारत ने कभी किसी यू–२ विमान को अपनी जमीन पर उडाने नहीं भरने दी लेकिन तब भारत गुट–निरपेक्ष राष्ट्र था और पाकिस्तान अमेरिकी गुट का विनम्र सदस्य था। अब न तो कोई गुट है और न ही कोई शीत–युद्ध। और अब रूस या चीन के विरुद्ध जासूसी का भी मौका नहीं है। इस समय तो एक ही लक्ष्य है कि विश्व से आतकवाद का उन्मूलन कैसे किया जाए। अगर इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए भारत आगे बढकर सहयोग नहीं करेगा तो कौन करेगा ? क्या भारत ने दर्जनो बार यू०एन० के झण्डे तले अपनी फौजे विदेशो में तैनात नहीं की हैं ? वैसे भी अफगानिस्तान मे भारतीय फौजें उतारने का प्रस्ताव अभी तक तो किसी के भी दिमाग मे नहीं आया है। फौजे उतारे बिना ही भारत के एक पथ से दो काज भी सिद्ध हो सकते थे। आतकवाद का सफाया और पाकिस्तान को नकेल पहनाना दोनो काम एक साथ होते। यदि अमेरिका भारत की जमीन और अन्य साधन इस्तेमाल करता तो पाकिस्तान के बाए (अफगानिस्तान) और दाए (कश्मीर) दोनो बाजू के आतकवाद का सफाया होता। इसमे बुरा क्या होता गलत क्या होता अनुचित क्या होता ? बल्कि भारत और अमेरिका के सम्बन्ध आने वाली कई पीढियो तक घनिष्टतम हो जाते। भारत कोई बहरीन या कुवैत नही है कि जहा अमेरिका जमकर बैठ जाता या पनामा या डोमिनिकन रिपब्लिक नहीं है कि उसे सदा के लिए काबू कर लेता या पाकिस्तान नही है जिसे वह अनन्तकालीन बैसाखियो पर लटका देता। भारत भारत है। कोई भी राष्ट्र उसे अपने पिटठू, पिछलग्गू या छुटभैय्या की तरह इस्तेमाल नहीं कर सकता।

यदि ओसामा के विरुद्ध भी अमरिका और भारत एक हो जाते तो मजबूर होकर पाकिस्तान को उनके साथ आना पडता। ऐसे मे रणनीति के दो चरण होते। पहले चरण मे कश्मीर की सफाई होती। अगर पहले चरण मे पाकिस्तान सच्चे मन से साथ देता तो यह असम्भव नही था कि कश्मीर की समस्या हल होती हुई दिखाई पडती। अगर नही भी होती तो कम से कम सार्थक सवाद की शुरूआत तो हो ही जाती। लेकिन अब क्या होगा ? अब अमेरिका अपनी दो आखो मे दो दृष्टिया रखेगा। एक आख से वह अफगानिस्तान देखेगा और दूसरी आख से कश्मीर। दोनो आख अलग–अलग दृश्य देखेगी और उन दृश्यो का एक दूसरे से घुलने–मिलने नही दिया जाएगा। एक आख आतकवाद को डूबता हुआ देखेगी और दूसरी उसे उभरता हुआ। याने अफगान–अभियान। कश्मीरी आतकवाद के लिए लाइसेस का काम भी कर सकता है। इस तरह अमेरिकी नेता अपने सकीर्ण राजनैतिक स्वार्थ को अपना राष्ट्रहित समझ बैठेगे और अपना सारा ध्यान ओसामा पर केंद्रित कर लेगे तो उनकी कार्रवाई आतकवाद के विष–वृक्ष को उखाडने का नहीं सीचने का काम करेगी। ऐसे म यदि भारत अभी अलग–थलग पड गया है तो यह अच्छा ही है। वह अमेरिकी तोप का भूसा क्यो बने ? यह रोल पाकिस्तान को मुबारक। इस दोमुहे रोल का असर पाकिस्तानी समाज पर क्या पडेगा और इस्लामी दुनिया मे उसकी तस्वीर कैसे तार–तार होगी यह देखने लायक दृश्य बनेगा। पाकिस्तान को यह डर भी होगा कि ओसामा–अध्याय बद होते ही कहीं उसका जलवा भी फीका नही पड जाए। अमेरिका को उसकी जनता और दुनिया इतना दबाएगी कि आखिरकार उसे आतकबाद के विरुद्ध सचमुच कमर कसनी ही पडेगी। उस स्थिति मे रास्ता पाकिस्तान होकर नहीं पाकिस्तान को रौंदते हुए आगे जाएगा। वह रास्ता भारत और सयुक्त राष्ट्र सघ होता हुआ जाएगा। भारत को अभी धैर्य खोने और बौखलाने की जरूरत नहीं है। वह तेल देखे और अभी तेल की धार देखे।

भारत की सुरक्षा

सिकुड़ती सीमाएं और बढ़ते खतरे

– प्रो० बलराज मधोक पूर्व सासद

बाहरी और आतरिक खतरो से देश की सुरक्षा किसी भी राज्य का पहला कर्त्तव्य माना जाता है। जनकल्याणकारी योजनाओ और गतिविधियो का भी अपना महत्व होता है परन्तु उन्हे सुरक्षा पर प्राथमिकता नहीं दी जाती।

खडित हिन्दूस्तान की सुरक्षा की समस्या कई कारणो से अधिक कठिन और गम्भीर हो गई है। प्रथम कारण है। देश विभाजन के फलस्वरूप पश्चिम और पूर्व की हमारी प्राकृतिक सीमा के स्थान पर कृत्रिम और कटी फटी सीमाओ का बनना इन सीमाओ के उस पार इस्लामी राज्यो पाकिस्तान ओर बगलादेश का जो मज्हबी कारणो से भारत के जन्मजात शत्रु है उदय दूसरा है भारत के अन्दर बड़ी सख्या मे ऐसे लोगो का रहना जिन्होने १९४६ के निर्णायक चुनाव मे भारत विभाजन के पक्ष मे मत देकर और विभाजन के लिए सक्रिय काम करके सिद्ध कर दिया था कि उनकी प्रथम आस्था इस्लाम और पाकिस्तान के प्रति है और खण्डित भारत उनके लिए दार उल हरब है जिसे पाकिस्तान मे मिलाना या पाकिस्तान की तरह का इस्लामी देश बनाना उनका मजहबी कर्त्तव्य है विभाजन के बाद पाकिस्तान मे लगने वाला नारा हस के लिया है पाकिस्तान लडके लेगे हिन्दुस्तान इसी बात का द्योतक था और तब से पाकिस्तान उसी के अनुसार अमल कर रहा है। खण्डित भारत की सरकारो ने अपनी गलत नीतियो मे अपनी सुरक्षित उत्तरी सीमा को भी असुरक्षित बना कर स्थिति को और भी विकट बना दिया है।

इसलिए खण्डित भारत की सुरक्षा के विषय मे तथ्यो और गत अनुभवो के आधार पर गम्भीरता से विचार करना और सुरक्षा को सुदृढ बनाने के उचित और आवश्यक पग उठाना अत्यावश्यक हो गया है।

किसी देश की सुरक्षा के निम्न चार मूल आधार माने जाते हैं –

१ सीमाओ की स्थिति सीमा के उस पार के देशो की देश के प्रति रवैया और सीमाओ के पास बसे लोगो की देश के प्रति निष्ठा और सीमा तथा समीपवर्ती क्षेत्र को अन्य भागो से जोडने की व्यवस्था।

२ जनबल देश की जनसख्या और देश के लोगो का सुरक्षा के सम्बन्धो मे जागरूकता और इसमे योगदान देने की क्षमता तथा राष्ट्रभावना।

३ देश का सेना बल जो सेना की सख्या सैनिक परम्परा प्रशिक्षण तथा जवानो और अफसरो की तथा उनके शस्त्रो की गुणवता आका जाता है।

४ सेना और आम जनता का मनोबल यदि मनोबल टूट जाए या कमजोर हो जाए तो बडी से बडी सेना और देश पिट जाते है।

जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है विभाजन के कारण भारत–पश्चिम और पूर्व की अपनी प्राकृतिक सीमाए खो चुका है श्री नेहरू द्वारा अपनाई गई गलत विदेश नीति और इसके सुरक्षा नीति के साथ तालमेल के अभाव के कारण और तिब्बत पर चीन का अधिकार हो जाने के कारण हमारी युगो से सुरक्षित उत्तरी सीमा भी असुरक्षित हो चुकी है। हमारी लम्बी समुद्री सीमा चिटगाव और कराची हमारे हाथ से निकल जाने और नेहरू सरकार द्वारा मालद्वीप पर भारत का दावा छोड देने और उसके स्वतन्त्र इस्लामी राज्य बन जाने तथा सींगापुर और अदन के अलग हो जाने के कारण पहले जैसे सुरक्षित नहीं रही है। अब इन सभी सीमाओ की अधिक चौकसी की आवश्यकता है। वैसे भी लडाकू विमान मिसाइल और अणुशक्ति के बनने से भूगोलिक सीमाओ का पहले जैसा महत्व नही रहा उनके उल्लघन के कई नये माध्यम और रास्ते खुल गए है। तो भी शत्रु सेनाए बडी सख्या मे भौगोलिक सीमाओ के रास्ते से ही देश के अन्दर घुस सकती है। पाकिस्तान बगलादेश और चीन से लगने वाली हमारी सीमाए सेना की चौकसी के बावजूद दिनोदिन अधिक असुरक्षित बनती जा रही है। इसका सबसे बडा कारण सीमावर्ती क्षेत्रो और विशेष रूप से सीमाओ के निकट मुसलमानो की बढती जनसख्या और वहा से हिन्दुओ का पलायन सीमावर्ती क्षेत्र और उनकी सैनिक छावनियो के निकट और उन तक पहुचने वाली सडको पर योजनाबद्ध ढग से दरगाहो तथा कथित मुस्लिम सतो की कब्रो और मकबरो का बनना तथा नई–नई मस्जिदो और मदरसो के निमार्ण तथा पाक और बगलादेश के एजेटो और सदिग्ध आस्था के लोगो द्वारा भारत की सैनिक गतिविधियो पर लगातार नजर और गुप्त सूचनाओ को शत्रु तक पहुचाने की व्यवस्था है। कोई भी व्यक्ति जो आखे खोलकर सीमावर्ती क्षेत्रो पर पडने वाली सडको और पुलो को देखे तो उसे इस खतरे का स्वत आभास हो जाएगा।

यह कहना की सभी मुसलमानो की देश के प्रति आस्था सदिग्ध है शायद ठीक नहीं होगा क्योकि कई ऐसे अपवाद है जिनकी अनदेखी नहीं कही जी सकती। परन्तु इन अपवादो के आधार पर कोई नीति बनाना खतरनाक सिद्ध हो सकता है। इस सम्बन्ध मे निम्न अनुभव पर सभी देशभक्तो को गम्भीरता से विचार करने की आवश्यकता है।

१९६८ मे मैं भारत सरकार की ओर से बनाई गई डिफेन्स स्टडी टीम – सुरक्षा अध्ययन दल– का उपाध्यक्ष था। हमारे अध्ययन दल जिसमे सेना के एक अवकाश प्राप्त सेनापति (जनरल) थे मे देश के अधिकाश सैनिक छावनियो का दौरा किया। इसी सिलसिले मे हमारा दल पूना स्थित दक्षिण कमान के मुख्यालय भी गया। गुजरात और राजस्थान और उनकी पाकिस्तान से लगन वाली सीमाए इन कमाण्ड के अन्तर्गत पडती है। १९६५ के युद्ध मे इस सीमा पर कई स्थानो के अनुभव कटु थे। सीमावर्ती क्षेत्र के मुसलमानों ने पाकिस्तान की प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप मे सहायता की थी। उस के परिपेक्ष मे मैंने सेनाधिकारियो की एक बैठक मे पूछा कि उनको १९६५ के युद्ध मे सीमा पर बसे मुसलमानो का क्या अनुभव है। मेरा प्रश्न सुनकर एक बडे अधिकारी ने बडे विनम्र भाव से कहा प्रोफेसर साहब यह एक राजनैतिक प्रश्न है बेहतर है कि आप इसका उत्तर हमसे ना मागे। तब मैंने कहा कि मैंने यह प्रश्न निजी रूप से नहीं सरकारी हैसियत से पूछा है इसका उत्तर मिलना चाहिए। तब उसने कहा कि यदि आप को उत्तर देना आवश्यक है तो हमारा उत्तर है 'We can trust no Muslim हम किसी मुसलमान पर विश्वास नही कर सकते। बाद मे अपनी बात को और स्पष्ट करते हुए उस अधिकारी ने कहा कि जहा कहीं सेना मे कोई मुसलमान जवान या अफसर है हमे उन पर नजर रखने के लिए विशेष प्रबन्ध करना पडता है।

हमारी इन कठिनाईयो के कारण हमारी सीमाओ की सुरक्षा का काम और अधिक कठिन हो गया है। हमारी पूर्वी सीमा और उसके निकटवर्ती क्षेत्र मे बगलादेशी घुसपैठियो की बढती सख्या ने उस सीमा की सुरक्षा की समस्या को अत्यधिक गम्भीर बना दिया है। राजनैतिक दलो और राजनेताओ को अपने वोटो की चिता अधिक है और देश की सुरक्षा की चिता कम है।

सविधान के अनुसार हमारे देश की तीनों सेनाओ का सर्वोच्च सनापति राष्ट्रपति होता है। परन्तु इस मामले मे भी हमने राष्ट्रपति को पगु बना रखा है। डॉ० सर्वपल्ली राधा कृष्णन ने १९६२ के चीन के आक्रमण के समय सेनाओ और सुरक्षा मामलो मे सक्रिय दिलचस्पी दिखाई थी। श्री नेहरु को यह बात पसद नहीं थी। परन्तु डा० राधा कृष्णन के व्यक्तित्व और कद के सामने उनकी भी कुछ चलती नहीं थी। अब स्थिति बदल गई है सेना की भरती मे भी धाधली होने लगी है और अच्छे और सुयोग्य अफसरो की सेना मे कमी महसूस होने लगी है। इस का एक कारण अवकाशप्राप्त सैनिको को समाज और सरकार द्वारा उचित सम्मान न देना भी है। इस मामले मे भारत सरकार को ब्रिटिश सरकार द्वारा स्थापित परम्परा का आदर करना चाहिए।

२००१ की जनसख्या के अनुसार भारत की जनसख्या १०० करोड से अधिक हो गई है। इसमे लगभग १५ करोड मुसलमान है। सैकुलरवाद के नाम पर चलाई जाने वाली साम्प्रदायिक और अराष्ट्रवादी नीतियो के कारण मुसलमानो मे अलगाववाद का भाव फिर जोर पकडने लगा है। उन्हे लगता है कि वे जितने साम्प्रदायवादी और अलगाववादी बनेगे उतना ही उनका तृप्तीकरण होगा और उनको विशेष अधिकार मिलेगे। फलस्वरूप देश मे मुस्लिम समस्या न केवल फिर खडी हो गई है अपितु इसने १९४७ से भी अधिक भयानक और उग्र रूप धारण कर लिया है। इसका लाभ उठाते हुए पाकिस्तानी सेना की गुप्तचर एजेन्सी आई०एस०आई० ने अपना जाल सारे देश मे विशेष रूप से जहा घनी मुस्लिम आबादी है बिछा दिया है। इसलिए अब यह स्पष्ट लगने लगा है कि पाक भारत युद्ध जिसकी सम्भावना दिनोदिन बढ रही है मे पाकिस्तान का पलडा एक दिन भी भारी होने पर देश मे उसके एजेन्ट विद्रोह का झण्डा खडा करेगे और गृह युद्ध की स्थिति पैदा करेगे। यह एक कटु वास्तविकता है परन्तु इस ओर न राष्ट्रवादी जनता और न सरकार का उचित और आवश्यक ध्यान है। इसलिए भारत का जनबल यदि इसमे राष्ट्रवाद की भावना को जगाने और सुरक्षा के सम्बन्ध मे जागरूकता पैदा करने की ओर विशेष ध्यान न दिया गया तो सुरक्षा की दृष्टि से देश के लिए वरदान की बजाए अभिशाप सिद्ध हो सकता है।

बडी से बडी सेना भी अध्यतम शस्त्रो के बिना पगु और अप्रभावी हो जाती है। अपना इतिहास इस बात का साक्षी है। १५२७ मे कनवा के निर्णायक युद्ध मे राणासागा की सेना का बाबर की विदेशी तुर्क सेना से पिटने का सबसे बडा कारण बाबर के पास तोपो का होना था। १९६२ के युद्ध मे चीन की विजय का एक बडा कारण उसकी सेनाओ के पास बेहतर शस्त्रो का होना था। जब चीनी लगातार आगे बढ रहे थे तब मैं पडित नेहरु को मिला और उनसे इनका कारण पूछा। उन्होने मुझे बताया कि चीनी सेना की बढत का एक बडा कारण उनके बेहतर हथियार है। उनके जवानो के पास स्वचालित राइफिले है जबकि हमारे सैनिको के पास पुरानी ३०३ राइफिले है। उन्होने यह भी बताया कि चीन की तोपो की मार हमारी तोपो से अधिक है।

यह समाधान का विषय है कि अब हमने अपने अणु शस्त्र बनाने शुरू कर दिए है। परन्तु अभी भी हमारे बहुत से शस्त्र तुलनात्मक दृष्टि से उत्कृष्ट नहीं है। अपनी इस कमजोरी को हमे अति शीघ्र दूर करना चाहिए।

शेष भाग पृष्ठ ८ पर

राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार में आर्यसमाज का योगदान

– पं० शिवकरण दुबे 'वेदराही'

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने १० अप्रैल, १८७५ को सर्वप्रथम बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की और वैदिक धर्म के पुनरुद्धार, समाज सुधार और राष्ट्रीय चेतना के जागरण के लिए वेद का आश्रय लिया। उन्होंने आर्यसमाज के नियम मे वेद का पढना और पढाना आर्यों का परम धर्म है, का प्रतिपादन भी किया। स्वामीजी वैदिक सस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान थे। अत प्रारम्भ में अपने विचारो को सस्कृत भाषा के माध्यम से ही प्रकट करते थे। वे गुजरात के रहने वाले थे। गृहत्याग के बाद लगभग ३५ वर्ष स्वामीजी ने ज्ञान की खोज मे इधर-उधर भ्रमण कर बिताए तथा जब वैदिक व्याकरण सूर्य स्वामी विरजानन्द सरस्वती से विदा ली, उस समय वे ४१ वर्ष के थे। उसके सात वर्ष बाद १८७२ में अपने प्रचारकार्य में वे बंग भूमि पधारे। यही उनकी मुलाकात देवेन्द्र नाथ ठाकुर और उनके अनुयायी तथा ब्रह्मसमाज के नेता केशवचन्द्र सेन से हुई। हिन्दी जगत के लिए यह प्रसंग ऐतिहासिक सिद्ध हुआ। स्वामी जी के संस्कृत भाषण सुनने के बाद केशव बाबू ने स्वामीजी को सुझाव दिया कि यदि आप अपने विचार पूरे देश में फैलाना चाहते हैं तो आप अपने विचार हिन्दी भाषा में दें। महर्षि दयानन्द ने उनके विचारों की दूरदर्शिता को समझा और धीरे-धीरे उन्होंने हिन्दी में भाषण और लेखन करना, प्रारम्भ किया। महर्षि दयानन्द हिन्दी को आर्य भाषा के नाम से अभिहित करते थे। महर्षि की दिव्य दृष्टि ने यह अनुभव किया कि यद्यपि वेद देववाणी में हैं तथापि युगों से जनता की बोल-चाल की भाषा देश की जनभाषा ही रही है। अतः महर्षि ने संस्कृत वाङ्मय में निहित ज्ञानकोश को सर्वसाधारण की भाषा में ही देने का महत्त उद्योग प्रारम्भ किया। स्वामीजी इस तथ्य से पूर्णतः अवगत थे कि भाषा ही सस्कृति की संवाहिका है तथा किसी भी देश की संस्कृति उस देश की भाषा द्वारा ही समग्रतः अभिव्यक्त होती है।

हिन्दी भाषा का विकास संस्कृत से ही हुआ है। वह वैदिक संस्कृति के समस्त विचारों को बिना अर्थ संकोच के संवहन करती है। अतः वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति के पुर्नजागरण हेतु स्वामीजी ने हिन्दी का वरण किया और सत्यार्थ प्रकाश जैसा अमर काव्य हिन्दी मे दिया। साथ ही ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, आर्याभिविनय, संस्कारविधि तथा अनेक पुस्तिकाए हिन्दी में ही लिखी। यह हिन्दी के राष्ट्र भाषा बनाने की दिशा मे युगान्तकारी घटना थी।

स्वामीजी ने राष्ट्रीय एकता के लिए जिस नवजागरण का सूत्रपात किया वह ऐक्य भाषिक, सांस्कृतिक तथा भारत की सामाजिक प्रकृति के अनुरूप था। उनका स्पष्ट अभिमत था एक धर्म, एक भाषा और लक्ष्य बनाए बिना भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति का होना दुष्कर है। सब उन्नतियो का केन्द्र स्थान ऐक्य है। जहा भाषा भाव और भावना मे एकता आ जाए, वहां सागर में नदियों की भाति सारे सुख एक-एक करके प्रवेश करने लगते हैं। हिन्दी का वरण, राष्ट्रीय सस्कृति के रक्षण, राष्ट्रीय एकता के संवर्द्धन की दिशा में मील का पत्थर सिद्ध हुआ। स्वामीजी के द्वारा स्थापित क्रान्तिकारी सस्था ने हिन्दी को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। आर्यसमाज के विद्वानो ने प्राच्य विद्या का हिन्दी भाष्य, टीका, तर्जुमा करके उन्हे जनमानस के लिए सुलभ कर दिया। इससे न केवल हिन्दी प्राचीन वैदिक ज्ञान विरासत में सवर्धन करके सस्कृति सेतु बन सकती अपितु संस्कृत ग्रन्थों मे निहित असख्य शब्दों को आत्मसात कर हिन्दी ज्ञान-विज्ञान की भाषा बन गई है। कल तक जो वेद, उपनिषद्, गीता, रामायण, दर्शन, महाभारत, सामान्य जन से दूर तथा अगम्य थे, आर्यसमाज ने उन्हे पण्डितों की पंचायत के घेरे से मुक्त कर आम जनता के लिए ग्राह्य बना दिया। इस सम्बन्ध में हिन्दी के प्रख्यात मनीषी श्री विष्णु प्रभाकर लिखते हैं हिन्दी मे वेदों की टीका एक अपूर्व देन है। वेदो को विद्वानों की मण्डली से निकालकर सर्वसाधारण की चीज बनाने का श्रेय स्वामी दयानन्द को ही है। किसी भी मत की धर्म पुस्तकें जिस भाषा मे होती है वह भाषा अत्यन्त गौरवमयी होती है। गुजराती होकर भी स्वामी दयानन्द ने यह गौरव हिन्दी को दिया। यहीं तक नहीं, उन्होंने अपने स्थापित किए हुए आर्यसमाज के लिए यह उपनियम बना दिया कि प्रत्येक आर्य तथा आर्य सभासद् को आर्यभाषा (हिन्दी) और सस्कृत जाननी चाहिए। तब हम यह कह दे कि हिन्दी का प्रचार करने वालो में स्वामी दयानन्द का स्थान पहला है तो अत्युक्ति न होगी। आर्यसमाज का उदभव भारतीय नवजागरण, राष्ट्रीय चेतना के विकास तथा समाज-सुधार की दिशा मे एक महनीय घटना थी। नवभारत के निर्माण मे आर्यसमाज का अनुपम योगदान है। इतना ही नहीं, स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज के प्रभाव से हिन्दी साहित्य मे राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ। हिन्दी पत्रकारिता की दिशा मे भी वृद्धि हुई। आर्यसमाज का पत्र सद्धर्म प्रचारक हिन्दी में निकलता था। इससे पजाब मे हिन्दी का प्रचार बढा। सन्तराम बी०ए० ने स्वयं लिखा है कि उन्हे हिन्दी सीखने की इस वयोवृद्ध क्रान्तिकारी लेखक और आर्य धर्म के प्रचारक को महात्मा गाधी पुरस्कार से भोपाल मे तथा पजाब ने राज्य के श्रेष्ठ हिन्दी विद्वान् के रूप मे उन्हे चण्डीगढ मे सम्मानित किया। उन्होने विभिन्न विषयो पर लगभग शताधिक हिन्दी पुस्तकें और लेख लिखे हैं। महान क्रान्तिकारी एव स्वतन्त्रता सग्राम में हुतात्मा शहीद गणेश शकर विद्यार्थी, **'दैनिक गणेश'**– कानपुर (१७–६–८६) मे लिखते है स्वामी दयानन्द, आर्यसमाज और गुरुकुलो ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने मे बडा काम किया। राजनैतिक, धार्मिक और सामाजिक आन्दोलनो से राष्ट्रभाषा और रष्ट्र लिपि की आवश्यकता अनुभव होने लगी।

स्वतन्त्रता के पूर्व हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि मे पंजाब का सबसे अधिक योगदान रहा है पजाब मे आर्यसमाज का प्रभाव भी बहुत था। आर्यसमाज के कारण वहा हिन्दी का जो प्रचार हुआ उसने वहा की जनता को हिन्दी लेखन की और प्रेरित किया। हिन्दी के प्रमुख कथाकार चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, सुदर्शन, यशपाल, मोहन राकेश तथा श्रीमती पणिक्कर इसी प्रदेश की देन है। हिन्दी के मूर्धन्य पत्रकार श्री बालमुकुन्द गुप्त तथा माधव प्रसाद मिश्र भी पंजाबी ही थे, क्योंकि उन दिनो हरियाणा, पंजाब प्रदेश मे ही था। महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) ने जहा अपने सद्धर्म प्रचारक नामक पत्र के माध्यम से हिन्दी का बिरवा रोपा वहीं गुरुकुल कागडी जैसी सस्था की स्थापना करके हिन्दी के प्रख्यात लेखक पत्रकार प्रदान किए। गुरुकुल कागडी मे दीक्षित तथा प्रशिक्षित प्रो० इन्द्रदेव विद्यावाचस्पति, सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, सत्यदेव विद्यालकार, धर्मदेव विद्यामार्तण्ड, जयदेव शर्मा जैसे अनेक लेखक और पत्रकार पजाबी भाषी थी। महात्मा हसराज, लाला लाजपत राय और लाला देवराज, डी०ए०वी० कालेज, नेशनल कालेज और कन्या महाविद्यालय आदि शिक्षा सस्थाओ का भी राष्ट्रीय जागरण के साथ हिन्दी के प्रचार-प्रसार मे प्रचूर योगदान रहा। इन सस्थाओ से प्रशिक्षित लोगों मे आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री, आचार्य रामदेव, डॉ० रघुवीर आदि ने अपनी सर्जना के माध्यम से हिन्दी साहित्य को गौरवान्वित किया। महात्मा आनन्द स्वामी (खुशहाल चन्द्र) ने अनेक वर्ष लाहौर और जालन्धर से हिन्दी मिलाप दैनिक का प्रकाशन किया। हिन्दी के साहित्य को विशाल सागर का स्वरूप प्रदान करने मे आर्यसमाज के अनेक विद्वानो ने सस्कृत ग्रन्थो की टीकाए, भाष्य किए। दिल्ली के प्रसिद्ध प्रकाशक श्री राजपाल सिह शास्त्री ने अनेक दुर्लभ ग्रन्थो को हिन्दी भाषा में प्रकाशित कर आर्य जगत् और जनसाधारण के लिए साहित्य तैयार किया है और कर रहे हैं। आप हिन्दी जगत् मे प्रशसनीय लेखक हैं। प्रसिद्ध रसायन शास्त्री तथ वैज्ञानिक स्वामी सत्यप्रकाश ने हिन्दी कोशों की दिशा में कार्य किया है और भौतिकी, रसायन आदि के वैज्ञानिक शब्दावली का निर्माण किया। आर्यसमाज के प्रचारार्थ कुछ पत्र-पत्रिकाए हिन्दी मे ही निकलती है जिनमे सार्वदेशिक साप्ताहिक, मधुरलोक, हिन्दी मासिक-पत्र, आर्य सेवक, वेदवाणी, दयानन्द सन्देश आदि प्रमुख है। आर्य समाज ने संस्कृत साहित्य को हिन्दी में अनुदित कर जनसामान्य के लिए सुलभ व बोधगम्य बनाया है। आज भी हिन्दी को और अधिक प्रचारित करने मे स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की सस्था कृत सकल्प है।

बरौरा से बरमिंघम

– ब्रि० चितरजन सावन्त, वी०एस०एम०

श्री राम की अयोध्या से दो घण्टे की दूरी पर है मेरा गाव बरौरा। पढे–लिखे लोग रहते हैं वहा। किन्तु सडक नहीं है। न अग्रेजो ने बनाई न उनके भारतीय उत्तराधिकारियो ने। फिर भी पहली बडी लडाई मे स्वामी दयानन्द सरस्वती का लिखा हुआ सत्यार्थ प्रकाश वाया फ्रास पहुचा बरौरा। मेरे पितामह के भाई मुशी राम लोटन सावन्त आर्य समाजी बने फ्रास–फ्लैडर्स की लडाई के मैदान मे। फिर पीढी दर पीढी वैदिक धर्म हमारी रगो मे लहू समान सचारित रहा।

बरौरा के निकट एक बुनकर–बहुल कस्बा है टाडा। महाशय मिश्री लाल उनके पूर्वज और उत्तराधिकारी वेद प्रचार के प्रति समर्पित रहे और हैं। आर्यसमाज टॉडा ने मुझे पाच दिवसीय वेद प्रचार के लिए आमन्त्रित किया तो श्रोताओ मे बडी सख्या मे मुसलमान भाई–बहिन आए। प्रधान आनन्द कुमार आर्य ने बताया कि इनकी बेटिया आर्य कन्या पाठशाला की छात्राए है। सन्ध्या–हवन उत्साह से करती है। अत टॉहा मे शाकाहार लोकप्रिय हो रहा है। उसी आर्य सम्मेलन मे मुझे मिले महाशय मिश्री लाल के कनिष्ठ पुत्र डॉक्टर नरेन्द्र कुमार आर्य। उन्होने कहा कि बरमिघम इगलैंड मे जहा वह डॉक्टर हैं वेद प्रचार अभियान को नई दिशा दी जा रही है। प्रधान आर्यसमाज वेस्ट मिडलैंडस के रूप मे उन्होने मुझे वहा आने की दावत दी। भारतीय सेना से ग्यारह वर्ष पूर्व रिटायर हो कर आर्यसमाज के मन्च से वैदिक धर्म का प्रचार करना और धार्मिक एव राष्ट्रीय विषयो पर टी०वी० डॉक्युमेन्टरी बनाना ही अब शेष जीवन का लक्ष्य है। इस प्रकार मेरी बरौरा से बरमिघम की वेद प्रचार यात्रा का बीज बोया गया। अविलम्ब अकुरित हुआ। नरेन्द्र जी ने कार्यकारिणी के समक्ष प्रस्ताव रखा कि बरमिंघम रेडियो एक्स एल पर अनुभवी कमेन्टेटर की आवाज में वेद प्रचार हो। प्रस्ताव पारित हुआ। रेडियो प्रचार रग लाया। उसकी चर्चा कुछ समय बाद।

विदेश मे वेद प्रचार की धुन मे मार्ग की बाधाए और गति अवरोधक नगण्य जान पडे। कुछ मित्रो ने कहा कि ब्रिटिश हाई कमीशन दिल्ली से वीजा लेना लोहे के चने चबाने समान है। फार्म भरने मे गलती नहीं होनी चाहिए। साक्षात्कार होगा। वीजा अधिकारी श्वेत वर्ण का है अश्वेत अधिकारियो को घास नहीं डालता। उसके प्रश्न पैने होते हैं आदि आदि। नया और पुराना पासपोर्ट दोनो ही जाचा जाता है। मेरे पत्रकार पुत्र गौरव ने नियमो का अध्ययन करके सूखी धरती को नरम किया। वीजा अधिकारी ने पूछा 'इगलैंड जाने का उद्देश्य ? । मैने कहा वेद प्रचार'। पर उसके पल्ले कुछ नहीं पडा। उसने फिर वार किया पत्नी और बच्चे आप की विदेश यात्रा के समय कहा रहेगे ? उत्तर था मेरे नोयडा निवास मे एक ही छप्पर की छाया मे। वह समझ गया कि मेरी वैवाहिक जीवन लता सूखी नहीं अभी भी सुधा है प्रेमरस है। वीजा ग्रान्टेड' उसका दो शब्द का निर्णय मेरे कानो के लिए मधुर सगीत था।

राष्ट्रीय चेतना तन–मन मे है। विचार हुआ एयर इन्डिया से लदन जाने का। किन्तु ब्रिटिश एयरवेज के एजेन्ट ने हवाई टिकट का मूल्य सबसे कम कहा। कर्म से ब्राह्मण होते हुए भी पैसे के मामले मे वणिक वृत्ति उभर आई। (यो टिकट और अन्य व्यय का भार आर्यसमाज बरमिघम वहन कर रहा था) पत्नी ने कई बार सूटकेस खोला और बन्द किया सामान रखा और निकाला। पुस्तके भारी थी। डॉक्टर नरेन्द्र का फोन आया आर्ष साहित्य साथ न लाए। आर्यसमाज वेस्ट मिडलैंडस का पुस्तकालय सर्वगुण सम्पन्न है। कम्प्यूटर भी है – दो–दो। सुधा और सूटकेस दोनो का ही भारत हल्का हुआ। गौरव के पुलिस परिचय से ब्रिटिश एयरवेज की प्रथम पक्ति मे एकल सीट पर आसीन हुआ मैं। एयर होस्टेसेज ने सुख सुविधा का पूरा ध्यान रखा। शाकाहारी भोजन की व्यवस्था भी की।

बात तो बाद की है किन्तु चर्चा अभी कर दे। शाकाहारी भोजन का सदर्भ है। तहलका – जी हा बरमिघम मे। भूतपूर्व सैन्य अधिकारी और शाकाहारी। प्रश्न पर प्रश्न पूछे जाने लगे। अनिवासी वर्ग ने सत्तर चूहे और हाजी बिल्ली वाले मुहावरे का भरपूर प्रयोग किया। मित्र बृज भूषण अग्रवाल ने कहा कि यहा मछली मासाहारी भोजन का अग नहीं है। मुझ लगा कि मुझे सीजर के साथ वे ब्रूटस बन रहे हैं। 'एट टू बूटे – लैटिन शब्द जबान पर आए और लौट गए। एक महीने बाद लौटती उडान के लिए चेकइन के समय काउन्टर पर बैठ जापानी लडकी को बताया कि मेरा शाकाहारी भोजन बिल्कुल निरामिष है – मछली अण्डा कुछ नहीं खाता मै। उसने लिखा एशियन वेजिटेरियन । विमान मे परोसे गए खाने पर आई सैण्डविच जिस पर लिखा था 'हिन्दू सैण्डविच'। हिन्दुत्व के प्रचार का जादू सर चढ कर बोल रहा था।

विमान बोइग ७४७ जम्बो मे बैठते–बैठते रात काफी हो चुकी थी। यो कहिए कि रात के बारह बजे तारीख बदल गई थी। ब्रिटिश एयरवेज ने विमान मे ही अल्पाहार' जो लगभग पूर्ण रात्रि भोज था का प्रबन्ध किया था। परोसने से पूर्व १५ मिनट का समय था। मैने मन्त्र पाठ किया। प्राणायाम करने की इच्छा हुई। प्राणायाम किया। जब आख खोल कर देखा आस–पास सहयात्री थे। उनके मन मे प्राणायाम के बारे मे जिज्ञासा थी। प्राणायाम परिचय दिया और कहा कि इगलैंड मे वे अभ्यास करे – सुजान सभी थे अत रस्सी और पत्थर पर निशान का उदाहरण दोहराना नहीं पडा। श्रद्धालु जनो से वेदमन्त्रो की चर्चा हुई। अनेक पहली बार वेदमन्त्र का पाठ अपन कानो से सुन रहे थे। बरमिघम और आस–पास रहने वालो को आर्यसमाज का पता दिया और दैनिक प्रवचन मे आमन्त्रित किया। बहुत से नहीं आए किन्तु कुछ आए भी। वेद प्रचार अभियान आरम्भ हो चुका था। क्या गोरे और क्या काले जीवन शैली सुधार कर सुखी होना कौन नहीं चाहता है।

परिचारिकाओं ने प्रकाश कम किया ताकि यात्री सो सके। थकान थी ही। प्रेशराइज्ड कैबिन मे भी बाहर से आ रही इन्जनो की आवाज ने थके तन को लोरी सुनाया। अब सपनों का ससार दूर नहीं रहा।

विमान मे बैठे बैठे ऊषा का आनन्द लिया। सूर्योदय की लालिमा आकाश मे फैल रही थी। अपने ही आप वेदमन्त्र होठो पर था ओ३म उद् वय तमसस्परि स्व पश्यन्त उत्तरम। देव देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम' पाप और अन्धकार से ऊपर उठकर प्रकाश को देखा और परम प्रकाशक ईश्वर को पा लिया । यही वेद ज्ञान है जो हमे मोक्ष मार्ग दिखाता है।

हीथरो लन्दन विमानपत्तन पर उतरकर बाहर आया। इधर–उधर देखा किन्तु कोई परिचित न मिला। मेरी धोती दूर से बता रही थी कि मैं कौन हू। थोडी देर मे आर्यसमाज वेस्ट मिडलैण्डस के पुरोहित आए। नमस्ते नमस्ते के बाद उन्होने मुझे बरमिघम की कोच मे बैठा दिया। तीन घण्टे बाद मैं बरमिघम मे था नये क्षितिज की खोज मे।

– उपवन ६०६, सेक्टर २६ नोयडा २०१३०३,

पृष्ठ ६ का शेष भाग

सिकुड़ती सीमाएं और बढ़ते खतरे

सेना की सख्या और शास्त्रो से भी अधिक महत्व सेना के मनोबल का होता है। हमारी सेना उत्तम है और हमारी सैनिक परम्परा उज्ज्वल है परन्तु भारत के शासको की हाल मे कुछ गलतियो के कारण हमारी सेना के मनोबल पर विपरीत प्रभाव पडा है। सुरक्षा सेनाओ को आतरिक सुरक्षा मे लगाना ठीक नहीं होता। यदि लगाया जाए तो उसे उचित और आवश्यक छूट और सहयोग मिलना चाहिए ताकि वे अपना काम कम समय मे सम्पन्न कर ले। कश्मीर मे हमने ऐसा नहीं किया। पीछे से हाथ बाधकर सुरक्षा सेनाओ को पाकिस्तान जेहादियो और आतकवादियो से जुझने के लिए मैदान मे झोकने और लम्बे काल तक उन्हे वहा रखने से उनके आत्मविश्वास और मनोबल को धक्का लगा है। यह एक कटु सत्य है कि हमारे जवान और अफसर कश्मीर में गत दस वर्षों मे आतकवादियो के हाथो मारे गये है उतने पाकिस्तान के साथ हुए गत तीन युद्धो मे नहीं मारे गए थे।

जेहादी पाकिस्तानियो से प्रभावी ढग से निपटने के लिए आवश्यक है कि उन लोगो से भी जिन के नगरों मोहल्लो और गावो मे उन्हे शरण मिलती है सख्ती से निपटा जाए।

शत्रु से प्रभावी ढग से निपटने के लिए यह भी आवश्यक होता है कि सेना के जवानो और अफसरो के मनो मे शत्रु को खत्म करने की प्रबल इच्छा और भावना हो। इसका सही अहसास मुझे तब हुआ जब मैं एक ससदीय कमेटी के साथ नाथुला जहा कुछ समय पहले चीनी सैनिको ने हमारे लगभग १५ सैनिको को मार डाला था और उनके शव भी उठा कर ले गए थे गया। नाथुला मे भारत और चीन अधिकृत तिब्बत की सीमा मिलती है और दोनो की सेनाओ के जवानो के ठिकाने आमने–सामने हैं।

जब नाथुला से लौटने पर हम उस क्षेत्र के कोर कमाडर परमवीर चक्र जनरल भगत से मिले तो मैंने उनसे पूछा कि क्या कारण है कि चीनियों ने हमारे इतने सैनिक मार डाले और उनके शव भी ले गए और हमारे सैनिक एक चीनी सैनिक को भी न मार सके। तब जनरल भगत ने बताया कि युद्ध मे भी किसी को मारने के लिए उसके प्रति घृणा और शत्रुता का गहरा भाव चाहिए। हमारे राजनेता हिन्दी चीनी भाई–भाई के नारे लगाए और हमारे सैनिक चीनियो पर भारी पडे यह सम्भव नहीं। यदि कल भारत के राजनेताओ ने भारत पाकिस्तान भाई भाई के नारे लगाने शुरू किए तो हमारी सेना पाकिस्तान को भी परास्त नहीं कर सकेगी।

जनरल भगत की इस अनुभवसिद्ध बात पर भारत के शासको द्वारा विशेश ध्यान देने की आवश्यकता है। पाकिस्तान भारत का शत्रु है और जब तक कायम रहेगा शत्रु रहेगा। इसका कारण इस्लाम और उस के राजनैतिक सिद्धान्त है। दुर्भाग्य से तथा कथित राष्ट्रवादी नेता भी इस्लाम के विषय मे उतने ही अनभिज्ञ है जितने गाधी और नेहरू थे। गाधी वादी और नेहरू-वादी मानसिकता भारत की सुरक्षा के लिए सबसे बडा खतरा है।

सुरक्षा के सम्बन्ध में ठीक सोच और ठीक नीति के लिए यह आवश्यक होता है कि देश की विदेश नीति और सुरक्षा नीति मे पूरा तालमेल हो। विदेशी नीति और कूटनीति को war by other means अर्थात देश की सुरक्षा को अन्य ढग से लडा जाने वाला युद्ध भी कहा जाता है। हिन्दुस्तान की सुरक्षा नीति और विदेश नीति में तालमेल का अभाव रहा है। इसी कारण युद्ध क्षेत्र में सेना द्वारा प्राप्त विजय को हम बार–बार कूटनीति की मेज पर हारते रहे है।।

सुरक्षा नीति और युद्ध नीति के विषय पर गत दो शताब्दियो मे अनुभवो के आधार पर बहुत अध्ययन और अनुसधान हुआ है और उन पर बहुत कुछ लिखा भी गया है। राष्ट्रभाषा हिन्दी मे इस विषय पर मेरे द्वारा लिखित पुस्तक भारत की सुरक्षा १६६१ मे प्रकाशित हुई थी। परन्तु यह खेद की बात है इन विषयो पर जन साधरण ही नहीं अपितु प्रबुद्ध वर्ग भी आवश्यक रूचि नहीं लेता। इन विषयो पर जो कुछ लिखा और बोला जाता है वह अधिकतर अग्रेजी में ही होता है। आवश्यक है कि हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में भी सुरक्षा और विदेश नीति पर गोष्ठिया और भाषणों का आयोजन हो ताकि लोगो को इन महत्वपूर्ण विषयो पर शिक्षित और जागृत किया जाए।

– जे ३६४, शकर मार्ग, नई दिल्ली-११००६०,

ओ३म्

वैदिक यति मण्डल

के तत्वावधान में

अन्तर्राष्ट्रीय वेदोक्त सत्य सनातन धर्म मेला

दिनांक : २५, २६ व २७ अक्तूबर, २००१

स्थान : दयानन्द ग्राम (नंगला मन्दोड़), जिला - मुजफ्फर नगर (उ० प्र०) पिनकोड - २५१३१४

सम्माननीय आर्य भाईयो एवं बहिनो !

वेदोद्धारक समग्रक्रान्ति के अग्रदूत महर्षि दयानन्द सरस्वती का स्वप्न था **सम्पूर्ण विश्व को आर्य बनाना**। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए ऋषिवर ने सत्रह बार विष के प्याले पीये तथा अपने अधूरे कार्य को आर्यों को सौंप कर निर्वाण (मोक्ष) पद को प्राप्त कर गए। अपने गुरुवर द्वारा प्रज्ज्वलित वेद ज्ञान की यज्ञाग्नि को जगाए रखने के लिए अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, धर्मवीर पंडित लेखराम, मुनिवर गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, लाला लाजपतराय, महाशय राजपाल सरीखे अनेक महापुरुषों ने अपना सर्वस्व होमकर यज्ञाग्नि को बुझने न दिया। इसके अनन्तर अनेक वेद भक्त, आर्य वीर, स्त्री पुरुषों ने इस यज्ञाग्नि को जगाये रखा है। भविष्य में भी ये ज्योति बुझने न पाये इसके लिए वर्तमान में मार्गदर्शन की आवश्यकता है। वर्तमान में अनेकानेक मत मतान्तर बढ़ते जा रहे हैं। वैदिक संस्कृति पर चहुंदिशाओं से आक्रमण हो रहे हैं। वैदिक संस्कृति के ह्रास से सम्पूर्ण मानवता को ही खतरा पैदा हो गया है। अन्धविश्वास, पाखण्ड तथा अज्ञान के गर्त से निकलने का सहारा मात्र वैदिक संस्कृति ही है। इस पावन संस्कृति को सशक्त करने की आवश्यकता है। इसके लिए त्यागी, तपस्वी, संन्यासियों, महात्माओं एवं विद्वानों के मार्ग दर्शन की महती आवश्यकता है। इसी विषय को ध्यान में रखते हुए, शहरी, प्रदूषण एवं भौतिक चकाचौंध से दूर विशुद्ध ग्रामीण आंचल में गंगनहर के किनारे शुद्ध एवं सात्विक वातावरण में आर्यो का यह धर्ममेला, महात्माओं की प्राचीन परम्परा के पोषक, तपोधन, त्यागमूर्ति श्रद्धेय पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के सान्निध्य में आयोजित किया गया है। इस समारोह का उद्घाटन पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज गुरुकुल झज्जर करेंगे। इस अवसर पर अनेक त्यागी, तपस्वी, संन्यासी, महात्मा, विद्वान्, मनीषी एवं विदुषी बहनों का आर्यों को मार्ग दर्शन मिलेगा।

आईये, इस पावन अवसर पर लाभ उठाकर अपने स्वयं के जीवन, राष्ट्रनिर्माण तथा मानवमात्र के उत्थान हेतु विचार सुनिये। इस पवित्र कार्य की सफलता के लिए तन, मन व धन से सहयोग देकर पुण्य लाभ कमाइये।

सम्मेलन (धर्म मेले) के विशेष आकर्षण

१. **गुरुकुलों की कन्याओं द्वारा वेदपाठ।**
२. **विभिन्न सम्मेलनों का आयोजन**
३. **सैकड़ों आर्य सज्जनों एवं माताओं का संन्यास एवं वानप्रस्थ में दीक्षित होना।**
४. **विशाल शोभा यात्रा : शोभा यात्रा मुजफ्फर नगर शहर से दयानन्द ग्राम तक १५ किलोमीटर (वाहनों द्वारा), आर्य सज्जनों द्वारा केसरिया पगड़ी, टोपी व माताओं द्वारा केसरिया साड़ी पहनना विशेष आकर्षण होगा।**

निवेदक

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती	**यज्ञमुनि वानप्रस्थी**	**वीरांगना बहन पुष्पा शास्त्री**	**स्वामी सदानन्द सरस्वती**
सम्मेलन अध्यक्ष	स्वागताध्यक्ष	समारोह संचालिका	स्वागत मन्त्री
फोन : ०१५७२-२६३७४	मोबाईल : ९८३७०८७६५८	फोन : ०१२७४-२५६७७	फोन : ०१८७५-४०११०

विशेष सहयोगी : जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुजफ्फर नगर एवं क्षेत्र के समस्त आर्य जन

अभाव

– श्री ओ३म्प्रकाश

अकसर देखने मे आता है कि ऐसे व्यक्ति जिन्हे जीवन की सामान्य सुविधाए भी उपलब्ध नहीं होती अभावो वचनाओ से जूझते हुए अपनी लगन परिश्रम अध्यवसाय से ससार मे अपने लिए एक स्थान बना लेते हैं जबकि वे लोग जिन्हे हर सुख सुविधा साधन उपलब्ध होते हैं जीवन मे अकसर कुछ विशेष नहीं कर पाते। वे व्यक्ति जिन्हे बना बनाया चलता हुआ घरबार व्यापार धन्धा कारोबार मिल जाता है वे अधिकाशत उसे चलाते भर रहते हैं। ज्यादा से ज्यादा उसमे थोडी बहुत बढौतरी कर लेते है किन्तु कोई विशेष उल्लेखनीय प्रगति नहीं दिखा पाते। बल्कि कई बार तो अपनी अकर्मण्यता अथवा उपक्रमहीनता के कारण चलते हुए व्यवसाय को भी हानि पहुचा बैठते है।

इस ससार मे सब को मनचाहा नहीं मिलता। ऐसे भाग्यशाली गिने चुने विरले ही होते हैं जो चादी का चम्मच मुह मे लेकर इस ससार मे आते हैं। जिन्हे बिना हाथ पैर हिलाए सब कुछ बना बनाया मिल जाता है। वरना अधिकाश को तो अपना अपना कुआ खुद ही खोदना पडता है। उन भाग्यशाली लोगो को पके पकाए पर ऐश करते देखकर कभी कभी क्षोभ भी होता है और शायद ईर्ष्या भी। मगर यह उचित नहीं है। अपनी हिम्मत हौसले और खून पसीने की मेहनत से अपने बलबूते पर कुछ कर दिखाना ही मर्दानगी है सम्मानजनक है। उसी मे आत्मसन्तोष मिलता है। उपलब्धि एव गर्व की अनुभूति होती है। एक नया उत्साह और बलवला पैदा होता है।

बनी हुई इमारत पर एक मजिल और खडी कर लेना आसान है। वैसा तो कोई भी कर सकता है। बहादुरी तो उसमे है कि नींव स्वय खोद कर एक एक ईट जोड कर छोटा मोटा ही सही ढाचा खडा किया जाए। उद्यम तो मनष्य के खून मे है। उसके स्वभाव में है। बस उसका उपयोग करने उसे काम मे लाने की जरूरत है। १९४७ मे देश विभाजन की विभीषिका झेल कर आए शरणार्थियो का उदाहरण हमारे सामने है। अपने उद्यम लगन अध्यवसाय और अनथक परिश्रम के बल पर उन लाखो लोगो ने क्या नहीं करके दिखा दिया।

अभाव को अभिशाप मानकर मन मसोस कर रह जाना उचित नहीं। अभाव तो कुछ कर दिखाने कुछ हासिल करने कुछ बन कर दिखाने की प्रेरणा देता है। जिन्हे कोई अभाव है ही नहीं वे भला कुछ नया करने की जरूरत ही क्यो महसूस करेगे। अपने देश के ही नहीं विश्व भर के महान व्यक्तियो पर एक नजर डाल कर देख लीजिए। उनमे से अधिकाश ने अभावो मे पल बढकर अभावो से जूझ कर ही अपना स्थान प्राप्त किया। पद एव प्रतिष्ठा अर्जित की। ससार मे नाम कमाया। अभावो मे जन्म लेना कोई शर्म की बात नहीं है। शर्म की बात तो है अभावो को अपनी नियति मान लेना। हाथ पर हाथ धर कर बैठ जाना। अभावो से छुटकारा पाने और जीवन मे कुछ कर दिखाने का साहस न जुटाना प्रयास न करना।

सुविधाओ और साधनो का बाहुल्य ही उमग और उत्साह को कुण्ठित कर देता है। जब आवश्यकता ही नहीं होगी तो भला आविष्कार क्योंकर होगा। सुविधाओ की कमी को कुछ कर दिखाने का अवसर माने। अपनी वचनाओ को इस परिप्रेक्ष्य मे देखना सीखे। दूसरो की समृद्धि से कुण्ठा और नैराश्य न पाले। ईर्ष्या नहीं स्पर्धा की भावना को मन मे स्थान दे। अपने जीवन पथ को सृजनात्मक दिशा दे। सदा सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाए।

– इद्राणी अपार्टमैंटस
२१६१ एफ० मदन महल
जबलपुर (म०प्र०) – ३८२००१

पृष्ठ ४ का शेष

वृद्धावस्था के रोग तथा निराकरण

अन्य शास्त्रीय औषधे – वातचिन्तामणि रस वातकुलान्तक रस समीरपन्नगरस (स्वर्णयुक्त) योगराज गूगल एकागवीर रस आदि रोगानुसार दी जा सकती है।

हृदय की धडकन (हार्ट अटैक) प्रवाल भस्म अकीक भस्म मुक्ताशुक्ति २ २ रत्ती हृदयार्णव रस १ रत्ती। यह एक खुराक है। इसे मक्खन मलाई शहद वा दूध से दिन मे दो बार दे। इससे हृदय की धडकन को बहुत लाभ होता है हार्ट अटैक का भय नही रहता। सिर मे चक्कर आना आखो के आगे अधेरा होना और मस्तिष्क की दुर्बलता दूर हो जाती है।

बहुमूत्र देशी अजवाइन नागरमोथा छह छह माशे काले तिल १ तोला (१० ग्राम) सबको बारीक कर २० ग्राम गुड मे मिला ले। प्रात साय ५ ५ ग्राम पानी से ले। बहुत लाभ होगा। शास्त्रीय औषधि – वसन्तकुसुमार रास तारकेश्वर रस बहुमूत्रान्तक रस चन्द्रप्रभावटी।

मोटापा सोठ ५० ग्राम सूखा धनिया ५ ग्राम छोटी पीपल ५० ग्राम काली मिर्च ५० ग्राम काला जीरा ५ ग्राम काला और सेधा नमक ढाई ढाई ग्राम लाल मिर्च आधा ग्राम। सबका कपडछन चूर्ण करे। दोनो समय २–२ ग्राम चूर्ण भोजन के बाद पानी से ले।

शास्त्रीय औषधे – आरोग्यवर्धिनी वटी व त्रिफला का मिश्रण नीबू का रस वा शहद डाल कर २ २ गोली प्रात साय दे चावल घी तेल केला उडद चर्बी बढाने वाले पदार्थ न खावे।

शास्त्रीय औषध मेदोहर गुगल इसमे लाभ करता है। २–३ मास तक अवश्य सेवन करे। नित्य सैर करे चिन्ता त्यागे।

उच्च रक्तचाप (हाई ब्लडप्रैशर) – सर्पगन्धा चूर्ण छोटी इलायची का चूर्ण २ २ रत्ती शुद्ध शिलाजीत २ रत्ती मिला कर प्रात साय दूध से ले। रक्तचाप वृद्धि कम होती है। अनिद्रा व उन्माद मे भी लाभदायक है। पथ्य मे हल्का सुपाच्य आहार ले। विश्राम करे। गहरी नींद ले। चिकनाई व भारी पदार्थ न ले चिन्ता शोक क्रोध अतिश्रम अति जागरण अपथ्य हैं।

– १२६ जनता डी० डी० ए० फ्लैट पावर हाउस बदरपुर नई दिल्ली ४४

गुरुकुल कांगड़ी भूमि-विक्रय पर आर्यजनों की प्रतिक्रिया

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को १९वीं० शताब्दी का महान् समाज सुधारक कहकर सम्बोधित किया जाता है। उनके अनुयायियों की परम्परा आज उनके देह त्याग के लगभग ११८ साल बाद भी एक विशाल समुद्र की तरह नजर आ रही है। समुद्र की धाराओ में शीतल जल बेशक बहुसख्यक रूप में उपस्थित होता है परन्तु इसी समुद्र मे कई जहरीले जीव-जन्तु भी अपना स्थान बनाए रखते हैं।

महर्षि के बाद २०वीं शताब्दी मे यदि सर्वोच्च अनुयायी की उपाधि देने के लिए व्यक्तित्व की तलाश की जाए तो निःसकोच, नि.सन्देह, लोह पुरुष स्वामी श्रद्धानन्द जी का नाम सामने आता है। उनके विशाल कार्यो और गुणों पर कई ग्रन्थ और छोटे-बड़े असंख्य लेख लिखे जा चुके हैं। वर्ष १६०० में गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय की स्थापना से जिस विशाल संस्था का शुभारम्भ स्वामी श्रद्धानन्द जी ने किया और जिन परिस्थितियों मे यह सब महान् कार्य सम्पन्न हुए उन सबको यहा दोहराने की आवश्यकता नहीं है परन्तु एक बात उल्लेखनीय है कि धर्म और सस्कृति से प्रेम करने वाली जनता ने धन और जमीन देते वक्त स्वामी श्रद्धानन्द जी की पवित्र भावनाओ और राष्ट्रवादी व्यक्तित्व के अतिरिक्त और किसी चीज पर ध्यान नहीं दिया होगा। किसी दानदाता ने यह स्वप्न मे भी नहीं सोचा होगा कि महर्षि दयानन्द के अनुयायियों मे से कुछ ऐसे भी निकलेंगे जो इस अमानत में ख्यानत के महान् पाप को अपने सिर का मुकुट बनाने का प्रयास करेंगे।

आर्य जनता को यह जानकर दु.ख होगा कि वही गुरुकुल कांगडी जिसका शताब्दी वर्ष आजकल चल रहा है उसकी सैंकड़ो बीघा जमीन कौडियों के भाव बेच दी गई है।

गुरुकुल कागड़ी की यह विवादास्पद भूमि लगभग १६८ बीघा है। आर्य विद्या सभा हरिद्वार की एक मिटिंग दिनांक ११ मई, २००१ में इसे बेचने का कठोर वज्रपाती निर्णय कर डाला गया। यह बैठक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी की उपस्थिति में सम्पन्न हुई, जो हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के भी प्रधान थे। इस निर्णय के पीछे प्रो० शेर सिंह और डॉ० धर्मपाल की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

इस गैरकानूनी, अनैतिक एवं दूरगामी दुष्परिणाम वाले प्रस्ताव के पारित होने के बाद २७ मई, २००१ को आर्य विद्या सभा हरिद्वार के चुनाव में स्वामी इन्द्रवेश (हरियाणा) को प्रधान तथा तेजपाल सिह मलिक (दिल्ली) को मन्त्री चुना गया। जबकि दिल्ली के शेष सदस्यों ने इस बैठक के प्रारम्भ होने के बाद वाकआऊट किया था। इस चुनाव के बाद स्वामी इन्दवेश, प्रधान आर्य विद्या सभा ने दिनांक ३१ मई २००१ के द्वारा मन्त्री, तेजपाल सिह मलिक को आदेश दिया कि आर्य विद्या सभा के खाते मे ७० लाख रुपये ड्रॉफ्ट के द्वारा जमा करके रजिस्ट्रिया करवाई जाएं। तेजपाल सिंह मलिक ने गुरुकुल कांगडी के सहायक मुख्याधिष्ठाता डॉ० दीनानाथ को प्रधान जी के आदेश का अनुपालन करने के लिए लिखित आदेश दिया तदुपरान्ता जमीनो की रजिस्ट्रिया करवाई गई।

पंजाब सभा ने इस कठोर कदम का विरोध तो किया परन्तु कोई ठोस कार्यवाही सम्भव नही हो सकी। गुरुकुल कागडी के समस्त कर्मचारी इस सारे कुकृत्य पर इन तथाकथित आर्य नेताओ के गुट का भरपूर विरोध कर रहे हैं। परन्तु ऋषि ऋण के सिद्धान्त को शून्यता की ओर धकेलते हुए गुरुकुल कागडी के कर्णधारो ने पानी में आग लगाने का प्रयास किया है।

पहले मनमोहन तिवारी को माध्यम बनाकर अदालत के आदेश को रद्द करवाने का प्रयास किया गया। अदालत ने यह प्रार्थना स्वीकार करने से इन्कार कर दिया।

दिल्ली उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री बसल ने आर्य जनता को आश्वस्त करते हुए कहा है कि चाहे मुझे कोई भी बलिदान देना पडे मैं इस जमीन को वापस दिलाने के लिए हर सम्भव प्रयास करुगा। उन्होंने यह आध्यात्मिक सकल्प व्यक्त किया है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के द्वारा प्रतिपादित त्याग और निस्वार्थ देश सेवा के सिद्धान्तो को ठेस नहीं लगने दूगा।

इस धर्मरक्षा महाभियान में उनके साथ निःस्वार्थ भाव से ही कई योग्य और अनुभवी अधिवक्ता सहयोग कर रहे हैं। जिनमें विशेष उल्लेखनीय है – वरिष्ठ अधिवक्ता श्री लालराम गुप्ता जिन्होने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती (लाला रामगोपाल शालवाले) के साथ सहयोग करते हुए कई राष्ट्रवादी कार्यो मे अत्यन्त अमूल्य योगदान दिया हरियाणा के सेवानिवृत सत्र न्यायाधीश श्री प्रहलाद राय अग्रवाल, जो आजकल दिल्ली उच्च न्यायालय मे अधिवक्ता हैं। दिल्ली के सेवानिवृत सत्र न्यायधीश श्री एस०पी० सिह चौधरी, श्री शान्ति प्रसाद पाण्डेय, श्री प्रदीप निद्रा जी ने भी अपनी अमूल्य सेवाए दी है। श्री सोमनाथ मरवाह के सुपुत्र श्री अशोक मरवाह भी अपनी हपूर्ण योग्यता के साथ अपनी सेवाए प्रदान कर रहे है।

पृष्ठ ३ शेष भाग

आज का इंसान

यहा बाहर व्यक्ति छोटा बदमाश रहता है अन्दर (जेल) क्या गया वहा से माफिया बनकर निकलता है। इसको रोकने के लिए हम सभी नागरिको का समान दायित्व है।

अवतारवाद को मानने वालो ! आपसे पूछ रहा हू आज कलयुग को प्रारम्भ हुए लगभग पाच हजार वर्ष बीत रहे हैं। एक अवतार इस कलयुग में होना है वह कब होगा क्या इससे भी बदतर समय का हमको अभी इंतजार करना होगा। आज का मानव कितना निकम्मा हो चुका है ये सब आप अपनी आंखों से देख रहे है। दूध जैसे महत्वपूर्ण चीज मे जहर मिलाया जा रहा सिथेटिक दूध (नकली दूध) बनाया जा रहा है और बाजार मे बिक रहा है। हमने तो यहा तक सुना है कि परवल, भिडी आदि हरी सब्जियों को रग कर बेजा जा रहा है। इस समय मिलावट का बाजार जोरो पर है तेल में मिलावट, हल्दी मे मिलावट, चावल मे मिलावट इत्यादि ऐसी कोई चीज मुश्किल से मिलेगी जिसमें मिलावट न हो। पैसे के लिए इन्सान कितना गिर चुका है। हे भगवान।

एक बात अक्सर हमने विद्वानो के मुख से सुनी है कि चार युग होते हैं – १ सतयुग, २ त्रेता युग, ३. द्वापर और ४. कलियुग। इस समय कलयुग चल रहा है एक अवतार होना है। मेरे हिसाब से इस समय एक अवतार से काम नहीं बनेगा कई अवतार चाहिए। जब सतयुग था तो चार अवतार हुए उस समय समय सब तरह धर्म ही धर्म था। धर्म के कोई भी विमुख नहीं था तो ऐसे मे चार अवतारो की आवश्यकता क्या थी, जब पाप था ही नहीं। दूसरा त्रेता मे तीन अवतार हुए उसमे एक चरण यानी २५ प्रतिशत अधर्म था और तीन चरण यानि ७५ प्रतिशत धर्म था तो उस समय तो एक अवतार से कार्य चल जाता तीन की आवश्यकता क्या थी। उसके बाद आया द्वापर युग उस समय आधा धर्म और आधा अधर्म उस समय दो अवतार हुए यह तो बात समझ मे आती है किन्तु आज कलयुग मे केवल एक ही अवतार लिखा है वह भी कलयुग के अत मे। हे भगवान आपसे प्रर्थना है वह समय जल्दी आये। फिर जब हमर तरफ अधर्म का बोलवाला है तो एक एक अवतार से क्या काम चल जाएगा। आप ही स्वय सोचिए। मेरा तो अपने से एव आप सभी मानवो से विनय आग्रह है कि अब आप अवतार का इतजार मत करें। वह अवतार पुरुष आप भी हो सकते है। मैं तो कहता हू आप ही है "उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्यवरान्त्रि बोधत" उठो, जागो तब तक रुको नही, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो।

हमारा लक्ष्य होना चाहिए मुक्ति की प्राप्ति यह केसे प्राप्त होगी इसके लिए हमे एक एक सीढी पर चढना होगा। वह है (धर्म) धर्मपूर्वक जीवन बिताते हुए (अर्थ) धर्मपूर्वक अर्थ अथात् धन को कमाते हुए (काम) अपनी उचित कामनाओ की पूर्ति करते हुए (मोक्ष) तक हम पहुच सकते हैं।

अन्त में अपनी लेखनी को यहीं विराम देते हुए ईश्वर से प्रार्थना करता हू कि हे भगवान हम सबको सद्बुद्धि प्रदान करे जिससे हम श्रेष्ठ रास्ते पर स्वय चलें एव दूसरो को चलने की प्रेरणा दे। मेरे इस लेख से अगर किसी के हृदय पर चोट पहुच रही हो तो हमें अज्ञानी समझकर क्षमा कर देंगे ऐसा हमें विश्वास है क्योंकि "क्षमा ही वीर का आभूषण है"।

– प्रधान, आर्य सुभाष नगर, फैजाबाद

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 7-10-2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 93/2001
R.N. No. 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No. U (C) 93/2001 in NDPSo on 4/5 -10- 2001

प्रतिष्ठा में

स्वामी ओमानन्द सरस्वती सार्वदेशिक सभा की सदस्यता से निष्कासित

स्वामी ओमानन्द जी द्वारा यह प्रचारित किया गया है कि उन्होंने अपने एक आदेश दिनाक १८-६-२००१ के द्वारा सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष पद से मुझे हटा दिया है।

सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष पद से हटाने की यह तथाकथित कार्यवाही पूर्णत गैरकानूनी, जानते हुए झूठी, अनाधिकार, मनमानी तथा असवैधानिक है क्योकि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सविधान के अन्तर्गत सार्वदेशिक न्याय सभा के नियमो के पूर्णत विरुद्ध है।

स्वामी ओमानन्द जी ने इस गैरकानूनी कार्यवाही को कई समाचार-पत्रो के माध्यम से भी प्रचारित किया है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की विगत् साधारण सभा बैठक दिनाक १८-२-२००१ मे विधिवत् रूप से सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष पद पर नियुक्त व्यक्ति को हटाने की कोई ताकत या अधिकार स्वामी ओमानन्द जी के पास नहीं है। अत उनकी उपरोक्त तथाकथित कार्यवाही जानबूझकर किया गया असवैधानिक कार्य है।

सार्वदेशिक न्याय सभा के नियम सख्या ५ (१) मे स्पष्ट रूप से सार्वदेशिक न्याय सभा के प्रधान या सदस्यों के हटाए जाने की प्रक्रिया इस प्रकार लिखी गई है –

"सार्वदेशिक न्याय सभा का प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की साधारण सभा वा नैमित्तिक साधारण सभा द्वारा कुल सदस्यों के ३/४ के बहुमत से अपने पद से हटाया जा सकेगा इससे कम सदस्यों के मत प्राप्त हों तो वह हटाया न जावेगा। सार्वदेशिक न्याय सभा का सदस्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की साधारण सभा वा नैमित्तिक साधारण सभा द्वारा उपस्थित सदस्यों के मतदान करने पर बहुमत से उस अवस्था से हटाया जा सकेगा जब कि सार्वदेशिक न्याय सभा के प्रधान ने पूर्व से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को उसके हटाए जाने की सिफारिश की हो। इस प्रकार की सिफारिश के अभाव में वह उपस्थित सदस्यों के ३/४ के बहुमत से हटाया जा सकेगा।"

दिल्ली की एक दीवानी अदालत द्वारा मुकदमा न० ४१७/६६ में दिए गए निर्णय दिनाक ६-८-२००१ के आधार पर चुनाव अधिकारी एव प्रशासक की नियुक्ति तथा उसमें अन्तरंग सभा के समस्त अधिकार निहित हो जाने से और विशेष रूप से दिनांक २४-८-२००१ को अन्तरंग सभा भग करने के पारित प्रस्ताव के बाद स्वामी ओमानन्द जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान नहीं रहे।

अन्य तथ्यों के अतिरिक्त, उपरोक्त सब तथ्यो के दृष्टिगत एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के संविधान के अनुसार यह स्पष्ट है कि स्वामी ओमानन्द जी ने इस सभा के नियमो का जानबूझकर उल्लंघन किया है। इस कार्यवाही के द्वारा विशेष रूप से न्याय सभा के नियम सख्या ५(१) तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नियम संख्या २३ (४) का घोर उल्लंघन हुआ है।

अनाधिकार एवं असंवैधानिक तरीके से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की चलती हुई चुनाव प्रक्रिया एवं अदालत के निर्णय को लागू करने में व्यवधान उत्पन्न करने के प्रयास के कारण स्वामी ओमानन्द जी ने को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सदस्यता एव सभासदी से हटाया जाने के लिए स्वय को अभिमुख किया है।

अत, न्यायालय आदेश दिनाक ६-८-२००१ के द्वारा प्रदत्त अधिकारों के तहत मैं स्वामी ओमानन्द को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एव सभासदी से निष्कासित करता हूं।

यह भी घोषित किया जाता है कि दिनांक ६-८-२००१ के बाद सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित स्वामी ओमानन्द जी की प्रत्येक तथाकथित कार्यवाही आदेश को पूरी तरह से असवैधानिक एवं शून्य माना जाए।

– ***रामफल बंसल***
चुनाव अधिकारी एवं प्रशासक

सार्वदेशिक सभा का चुनाव अधिवेशन ३, ४ नवम्बर, २००१ को

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के चुनाव अधिकारी एवं प्रशासक श्री रामफल बसल ने सभी प्रान्तों से प्राप्त प्रतिनिधियो के आधार पर **३-४ नवम्बर, २००१** को चुनाव में भाग लेने वाले प्रतिनिधियो की सूची को अन्तिम रूप दे दिया है। सब स्वीकृत प्रतिनिधियों को चुनाव में भाग लेने का पत्र (नियम विवरण) भेज दिया गया है। चुनाव अधिवेशन निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार **३, ४ नवम्बर २००१, (शनिवार, रविवार)** को **आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल, चान्दनी चौक दिल्ली-६,** मे सम्पन्न होगा। जिन प्रान्तीय सभाओ ने पचमाश राशि अभी तक जमा नहीं कराई है वे नकद या चैक/ड्रॉफ्ट आदि के माध्यम से चुनाव तिथि तक सभा में जमा करवा दे। ✡✡✡

आर्यकेन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के लिए तदर्थ समिति की घोषणा

३० सितम्बर, २००१ रविवार को आर्यसमाज पटेल नगर, नई दिल्ली-८ के सभागार मे आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य के वार्षिक निर्वाचन के समय दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं आर्यसमाज हनुमान रोड से इस सभा में प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित श्री वेदव्रत शर्मा ने संवैधानिक आपत्तियां उठाईं। जिसका श्री रामनाथ सहगल एवं श्री कीर्ति शर्मा ने अनुमोदन किया।

इन वैधानिक विसंगतियों के अतिरिक्त कुछ प्रतिनिधियों ने अशोभनीय व्यवहार भी किया। इन परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में मेरे लिए वार्षिक निर्वाचन कराना असम्भव सा हो गया। अत. मुझे बाध्य होकर आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य के वार्षिक निर्वाचन को स्थगित करने की घोषणा करनी पडी। मेरी इस घोषणा का श्री रामनाथ सहगल, श्री विश्वम्भरनाथ भाटिया, डॉ० रविकान्त, श्री लक्ष्मीचन्द चौधरी, श्रीमती कृष्णा चड्ढा एव श्री विजय भाटिया ने समर्थन किया।

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य की गत ५७ वर्षों से गरिमा बनी हुई है, उसमें किसी बात की कमी न आए अत मैं एक तदर्थ समिति बना रहा हूं। कृपया सम्बन्धित सदस्य/सदस्याओं के सहयोग से आप इस सभा के कार्य को सुचारु रूप से चलाते रहें।

मेरे अगले आदेश तक यही तदर्थ समिति आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ के सभी दायित्वों का निर्वहन करेगी।

बैंक खातों का संचालन पूर्ववत डॉ० शिवकुमार शास्त्री एवं श्री ओम्प्रकाश कपूर ही करते रहेंगे।

तदर्थ समिति

संयोजक :- डॉ० शिवकुमार शास्त्री
सदस्यगण :- १. श्री हरीश बत्रा, २. श्री वेदव्रत शर्मा, ३. श्रीमती शकुन्तला आर्या, ४. श्री वैद्य इन्द्रदेव, ५. श्री महेन्द्र प्रताप एडवोकेट, ६. श्री कीर्ति शर्मा, ७ चौधरी लक्ष्मीचन्द, ८ श्री ओमप्रकाश कपूर, ९. प्रि० ज्ञानप्रकाश चोपडा, १० श्रीमती शुकुन्तला दीक्षित, ११. श्री रामनाथ सहगल, १२. श्री जगदीश आर्य, १३. श्री धर्मपाल आर्य तथा १४. श्री पतराम त्यागी।

– ***राजसिंह भल्ला, निर्वाचन अधिकारी, आर्यकेन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१***

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-२ (फोन : ३२७०५०७, ३२७४२१६) **फैक्स : ३२७०५०७ से मुद्रित**, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन, ३/५, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२ **से प्रकाशित** (फोन : ३२७४७७१, ३२६०[illegible])
सम्पादक **वेदव्रत शर्मा।** **ई-मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट - http://www.whereisgod.com**

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक
साप्ताहिक

वेदा
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४० अक २५ | १४ अक्टूबर से २० अक्टूबर २००१ तक | दयानन्दाब्द १७८ | सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०२ | सम्वत २०५८ | द्वि० अ० क्र०

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डाल



गुरुकुल कांगड़ी की भूमि बिकने पर कड़ी प्रतिक्रियाएं

त्याग और निःस्वार्थ देश सेवा के सिद्धान्तों को ठेस नही लगने दें

गुरुकुल कागडी की स्थापना बडे पवित्र और महान उद्देश्य को लेकर की गई थी। पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे जब स्वामी श्रद्धानन्द जी ने एक गुरुकुल स्थापित करने के सकल्प को व्यक्त किया और एक प्रतिज्ञा लेकर उस सकल्प को क्रियान्वित करने निकल पडे तो लोगो के मन मे एक स्वाभाविक सा मनोवैज्ञानिक लक्ष्य बन गया था कि यह सकल्प यदि सफलता पूर्वक क्रियान्वित होता है तो अवश्य ही भारतीय सस्कृति और राष्ट्रवादी भावना भावी पीढी के कर्णधारो मे भरने के लिए एक सुगम और सुलभ मार्ग तैयार हो जाएगा। स्वामी श्रद्धानन्द जी धर्मप्रेमी जनता की इन इच्छाओ को पूरा करने मे सफल रहे। गुरुकुल कागडी की स्थापना और उसके सफल सचालन से स्वामी जी ने यह सिद्ध कर दिया कि यदि शिक्षक और आचार्य शुभ सकल्पो से विद्या प्रदान करने का दायित्व निभाये तो सस्कृति सभ्यता और राष्ट्रवाद की सुरक्षा असम्भव कार्य नहीं है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के बाद आर्यसमाज की कई महान विभूतियो ने इस गुरुकुल की पुण्य भूमि को अपने त्याग तपस्या और सर्वस्व होम के द्वारा भरपूर सीचने का प्रयास किया। इस परम्परा मे आचार्य रामदेव प० चमूपति प० बुद्धदेव विद्यालकार प० यशपाल सिद्धान्तालकार प० प्रियव्रत वेदवाचस्पति प० क्षितीश वेदालकार प० दीनानाथ सिद्धान्तालकार प० भीमसेन विद्यालकार प० इन्द्र विद्यावाचस्पति प० गुरुदत्त सिद्धान्तालकार प० सत्यकेतु जी प० सत्यदेव भारद्वाज प० सत्यकाम जी आदि तथा दूसरी तरफ आर्य नेताओ की श्रृखला को बाधते हुए महाशय कृष्ण लाला रामगोपाल शालवाले श्री चरणदास पुरी एडवोकेट राय बहादुर दीवान बद्रीदास श्री सोमनाथ मरवाह श्री वीरेन्द्र जी प० हरिप्रकाश जी श्री मनोहर विद्यालकार श्री सत्यदेव विद्यालकार श्री धर्मपाल विद्यालकार आदि ने अपने कुशल नेतृत्व द्वारा इस विशाल वटवृक्ष को एक आत्मीयता भरी बाड के रूप मे सुरक्षा प्रदान की।

परन्तु दुर्भाग्यपूर्ण कलियुग जिसने आज तक आर्यसमाज को छूने की हिम्मत नहीं जुटाई थी आज वही कलियुगी प्रवृत्तिया आर्यसमाज मे प्रवेश कर गई इतना ही नहीं यह प्रवृत्तिया अब स्वय बाड बनकर खेत को ही खाने लगी। चारे के रूप मे सर्वप्रथम इन्हे गुरुकुल कागडी की १४४ बीघा जमीन नजर आयी जिसे बेचने का कठोर और बज्रपाती निर्णय करते हुए इन्होने आर्यसमाज के प्रति विगत १२५ वर्षो से उत्पन्न मान्यताओ को हिला कर रख दिया। परन्तु आर्यसमाज के पवित्र नेताओ ने इस सकल्प के साथ अगडाई ली है कि एक एक इच जमीन को गुरुकुल की धरोहर के रूप मे ही वापिस लिया जाएगा।

वैदिक विद्वान डॉ० महेश विद्यालकार ने इस मुद्दे पर बडा कडा रूख अपनाते हुए आर्य नेताओ को प्रेरणा दी है कि इस घोर पाप को सफल न होने दिया जाए।

सार्वदेशिक सभा के डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री भी इस भूमि विक्रय पर कडा रूख अपनाने की माग कर रहे है।

पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री हरवश लाल शर्मा जी भी इस घटना से बहुत विचलित हैं। और उन्होने सभा के अधिकारियो को अतिम लक्ष्य तक इस सघर्ष को निभाने का आह्वान किया है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा है कि गुरुकुल कागडी की महान विरासत दिल्ली पजाब और हरियाणा ती
बराबर के उत्तरदायी हैं। हालाकि इ
भूमि विक्रय मे पजाब और दिल्ली
कोई विचार विमर्श तक नहीं कि
गया। यह कुछ लोगो का मनमानीपू
और गैरकानूनी निर्णय है इसे ह
किसी रूप मे भी लागू नही होने दे
और न ही इसमे लिप्त तथाकथि
आर्य नेताओ को बख्शा जाएगा।

दिल्ली उच्च न्यायालय के वरि
अधिवक्ता श्री रामफल बसल ने
इस घटना को घृणित और महाप
बताते हुए कहा है कि ऐसे कार्यो
कोई भी सभ्य समाज स्वीकार न
कर सकता। श्री रामफल बसल इ
मामले मे अपने कई साथियो से विच
विमर्श कर रहे हैं कि कानूनी प्रक्रि
का क्या रूप होना चाहिए। श्री बस
आजकल सार्वदेशिक आर्य प्रतिनि
सभा के प्रशासक भी है।

उधर गुरुकुल काग
विश्वविद्यालय मे एक सघर्ष समि
का गठन समस्त कर्मचारि
ब्रह्मचारियो तथा शिक्षको के द्वारा कि
गया है। लगातार सभाए और प्रदश
के द्वारा इस कार्य की भर्त्सना की
रही है। इस सघर्ष समिति के
सम्पर्क अधिकारी डॉ० प्रदीप जोशी
एक प्रेस विज्ञप्ति के द्वारा बताया
कि इस भूमि को बचाने के लिए स
सम्बन्धित व्यक्ति एक विशाल
आन्दोलन खडा करने के पक्ष मे

शिव सेना के एक प्रतिनिधि मण
ने भी उत्तराचल के मुख्यमन्त्री से
घटना की जाच कराने की माग की

सार्वदेशिक सभा का चुनाव अधिवेशन
३ तथा ४ नवम्बर, २००१ को

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव अधिवेशन ३ और ४ नवम्बर २००१ (शनिवार रविवार) को प्रात ११ बजे से आर्यसमाज दीवान हाल मे होगा। स्वीकृत प्रतिनिधियो को बैठक का विवरण और आमन्त्रण पत्र भिजवा दिया गया है। जिन सभाओ की पचमाश राशि अभी तक जमा नहीं हुई है वे नकद चैक या ड्राफ्ट द्वारा चुनाव तिथि तक सभा मे जमा करवा दे।

– रामफल बसल चुनाव अधिकारी एव प्रशासक

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

सह सम्पादक
विमल वधावन एडवोके

गुरुकुल कांगड़ी में एक दिन

— डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री

सदा की भांति इस बार भी मैं हरिद्वार गया और गुरुकुल कागडी के अतिथि-कक्ष मे आवास किया। व्यवस्थापको ने जलपान आदि का प्रबन्ध भी कर दिया किन्तु गुरुकुल का वातावरण देखने से कुछ अशान्त सा दिखाई दिया। पूरे दिन वेद भवन, विद्यालय भवन और कार्यालय — चारो तरफ कुछ चर्चा का विषय विचित्र-सा सुनाई दिया। उस वातावरण को सुनने के बाद विश्वास तो नहीं हो रहा था कि यह असम्भव बाते गुरुकुलीय जीवन मे सम्भव हो सकेगी।

आचार्य नरदेव शास्त्री कहा करते थे कि वेद आगे चलकर गुरुकुल की दीवारो पर रह जाएगे। मानव के मानस से उतर कर अश्रद्धा के पात्र बनेंगे। एक समय था जब गुरुकुलीय वातावरण मे आचार्यो को देखने के बाद लगता था कि यह स्वामी श्रद्धानन्द का गुरुकुल है। सस्कृतनिष्ठ सस्कृति चप्पे-चप्पे पर दिखाई देती थी।

पण्डित सत्यव्रत सिद्धान्तालकार, आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति, पं० सुखदेव वेदवाचस्पति, प० रामनाथ वेदालकार और तमाम अन्य के द्वारा वातावरण सास्कृतिक धरोहर के रूप मे दिखाई पडता था। अब गुरुकुल गुरु का कुल न होकर विषविद्यालय बन गया है, जहा विष का पान कराया जा रहा है। अब त्यागमय जीवन तपस्चर्या न होकर यहा पर भोग और विलास के साधन जुटाए जा रहे हैं।

पुरातन समय को याद कर आज के गुरुकुल मे अन्तर जमीन और आसमान का था। पुराने इतिहास के पन्ने सदाचार-युक्त न होकर चोर और उचक्को का वातावरण बन गया है।

विगत वर्षो मे हिंसा ने एक नवीन रूप लिया है और गुरुकुल में हत्याएं भी हुई। कुछ ऐसे तत्व गुरुकुल मे पहुच गए जिनका गुरुकुल और उसके नाम से दूर का भी सम्बन्ध नहीं था। गुरुकुल छावनी का रूप लेकर युद्ध भूमि बना हुआ था। अग्निवेश और इन्द्रवेश का साम्राज्य था। बाहरी तत्व गुरुकुल की सस्कृति और सभ्यता को लूटने में लगे हुए थे। उस समय पजाब, हरियाणा और दिल्ली गुरुकुल की भूमि से बाहर थे। कुछ निष्ठावान व्यक्तियो को जिनमे श्री वीरेन्द्र जी पजाब, डॉ० हरिप्रकाश और हरियाणा के नेता भी वेश सम्प्रदाय के कारनामों से चिन्तित थे। कुलभूमि में कोई पदार्पण नहीं कर सकता था।

लेकिन चारदीवारी के बाहर यह चिन्ता सबको थी कि गुरुकुलीयता की रक्षा कैसे हो ? अदालतों में मुकदमें चल रहे थे। कुछ व्यक्ति धर्मवीर सिद्धान्तालकार जैसे रुडकी जेल की हवा खा रहे थे। डॉ० हरिप्रकाश जी के वारण्ट निकले हुए थे। ऐसे वातावरण को देखकर पुराने गुरुकुल की छाया मात्र दिखाई पडती थी। लाला रामगोपाल शालवाले ने सरकार से बातचीत कर गुरुकुल पर अधिकार करने की योजना बनाई और वही पुलिस जो इन्द्रवेश और अग्निवेश की निगरानी करने के लिए रखी गई थी उसी ने कहा कि आप कल आइए और गुरुकुल पर कब्जा लीजिए।

समय बडा परिवर्तनशील है। अगले दिन गुरुकुल की भूमि मे वही पुलिस जो हमे जाने नही देती थी, हमारा सरक्षण करते हुए हमे गुरुकुल पर अधिकार दिलाया। और अराजक तत्वो का पता ही नहीं चला कि वे कहा गए। यह कथा उस बीते युग की विचारार्थ प्रस्तुत की।

परन्तु आश्चर्य है आज जब मैं गुरुकुल में पहुंचा तो चप्पे-चप्पे से पुन- लूट-खसोट और अराजकता का वातावरण दिखायी दिया। सायकाल मैं सिंह द्वार की ओर चला ही था कि मुझे ३०-४० व्यक्तियों ने घेर लिया। मैंने उनसे पूछा — "भाई क्या मामला है ?" वे बोले — आपको पता नहीं, यहा के हम उच्चाधिकारी १२ बार बने हैं और उन्होने गुरुकुल की पूर्व दिशा मे १५० बीघा से ऊपर कृषि जमीन बेच दी है। इसलिए यहा का वातावरण असन्तोषयुक्त है। हर विभाग आन्दोलन रत है। मैने पूछा — कुलपति महोदय कहा हैं ? उन्होने कहा कि वे तो अमेरिका गए हुए हैं।

उन्होंने पुन पूछा कि जिन्होने भूमि बेची, पट्टा लिखवाया और ७५ लाख रुपये लेकर विद्या सभा के नाम जमा कराया वह स्वामी ओमानन्द जी महाराज, प्रो० शेरसिह जी, स्वामी इन्द्रवेश जी, स्वामी अग्निवेश जी — ये धुरन्धर योद्धा कहा हैं ?

मैने कहा — मुझे क्यो घेर रहे हो ? अपना यह असन्तोष पजाब, दिल्ली और हरियाणा के दिग्गजो से कहो। मेरे जैसे चलते-फिरते आदमी को घेरने से क्या मिलेगा ? उन्होने कहा आप भी आर्यसमाज के उच्च पदाधिकारी हो। लम्बी कहानी को उन्होने बडे भद्दे स्वर में कहना शुरु किया। बडा ही आश्चर्य हुआ कि यह वही कुलभूमि है जिसको आर्य जनता ने अपनी पावन भावना से भूमि दान दी थी। आज वह कौडियो के दाम पर बेची जा रही है। जनता चाहती है उसका रुपया वापस करो।

भूमि खरीदने वाला कहता है कि मैंने यह जमीन करोडों रुपयो में खरीदी है। मेरा पूरा पैसा वापस दिलवा दो और जमीन ले लो।

विचार यह करना है कि ७५ लाख के अलावा वह और रुपया कहां है और किस-किस को दिया गया है ? कोई भी अधिकारी मुंह खोलकर बोलने को तैयार नहीं है। वातावरण अशान्त है।

सुना तो यह है कि जिन डॉ० धर्मपाल जी ने गुरुकुल के नव निर्माण में बडा काम किया आज वह गुरुकुल से पलायन करके दिल्ली में घर पर जा छुपे हैं। आन्दोलन उग्र रूप धारण किए हुए है। त्याग और तप नाम की चीज वहा के वातावरण से बाहर है। त्याग ने रूप बदलकर लूट-खसोट का जामा पहन लिया है। वातावरण को शान्त करने के लिए जब किसी से कोई बात की जाती है तो तब वह यही कहता है कि भले आदमियों को समझाया जा सकता है लुटेरों से क्या बात करना !

लेखक भी आख और कान बंद कर चुपचाप उन व्यक्तियों से हाथ जोडकर सिह द्वार की ओर चल पडा और मन में विचार आया, जब —

हर साख पे उल्लू बैठा है,
अन्जामें गुलिश्ता क्या होगा ?

आर्यसमाज में नये ढंग से श्राद्ध समारोह

कानपुर। पितृ का अर्थ होता है, हमारी रक्षा करने वाले। हमारी रक्षा तो जीवित माता-पिता तथा अन्य वृद्ध जन ही कर सकते हैं। परन्तु जो दिवंगत हो गए, वे भला हमारी रक्षा कैसे कर सकते हैं। अत उन्हें पितृ नहीं कहा जा सकता। श्राद्ध केवल जीवित माता-पिता या अन्य वृद्ध लोगों का ही करना चाहिए। वास्तव मे जीवित माता-पिता की सेवा करना ही सच्चा श्राद्ध है।

उपरोक्त विचार आर्य नेता, केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने आर्यसमाज मन्दिर, गोविन्द नगर के सभागार मे पितृपक्ष पर आयोजित "श्राद्ध समारोह" की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने आर्यसमाज में ऐसे वृद्ध एव वृद्धाओं को आमन्त्रित करके अन्न, वस्त्र तथा नकद राशि देकर सम्मानित किया जो अपनी सन्तानों द्वारा उपेक्षित तथा बेसहारा थे। इस प्रकार आर्य जी ने नए तथा सही तरीके से श्राद्ध मनाने की परम्परा प्रारम्भ की।

श्री आर्य ने आगे कहा कि यह कितने खेद की बात है कि एक मां अकेले चार बच्चो को परिश्रम एवं कष्ट उठाकर पाल लेती है, परन्तु चार बच्चे बडे होकर मिलकर भी अपने मां-बाप की ठीक से देखरेख नही करते। हेल्प ऐज इण्डिया, वानप्रस्थ आश्रम, वृद्ध आश्रम आदि वृद्धो की उपेक्षा की ही कहानी कह रहें हैं। जीवित अवस्था में मां-बाप को बेसहारा छोड़ देना और मरने के बाद धूमधाम से श्राद्ध करना भला कौन अच्छा कार्य कहेगा।

समारोह की अध्यक्षता प्रधान श्री देवीदास आर्य ने तथा संचालन श्री बालगोविन्द आर्य ने किया।

समारोह में प्रमुख रूप से सर्वश्री देवीदास आर्य, विनोद चन्द्र श्रीवास्तव, पंडित सत्यकेतु शास्त्री, श्रीमती दर्शना कपूर, कैलाश मोंगा आदि ने विचार व्यक्त किए।

— बाल गोविन्द आर्य

सामाजिक, वैचारिक एवं आध्यात्मिक क्रान्ति के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़े।

दो पाटों के बीच

– ब्रह्मचारी अग्निव्रत – नैष्ठिक

कुछ दिन पूर्व १२ मार्च २००१ के 'द टाइम्स ऑफ इण्डिया के अक मे श्री स्वामी अग्निवेश जी का वक्तव्य 'The Talıban Terror Indıa's Record ıs not spotless " पढने को मिला। इसी विषय पर 'राजस्थान पत्रिका' के किसी अक मे श्री स्वामी जी के विचार पढे थे इस कारण अग्रेजी भाषा मे छपे वक्तव्य का आशय सरलतया समझ गया। सोच रहा था कि इस पर कुछ लिखू। कल (१६ मई २००१) एक **आत्मीय मात्र सज्जन** के विचार सुने "मूर्तिपूजा आदि का खण्डन नही करना चाहिए। आर्यसमाज का पदाधिकारी मूर्तिपूजक नहीं होवे परन्तु परिवार वालो को स्वतत्र छोड देना चाहिए अब शास्त्रार्थ का युग नहीं है और न इसकी आवश्यकता ही है क्योकि यह हिन्दू हित के विरुद्ध है और हिन्दू हित मे ही राष्ट्र हित है। मैंने तत्काल इस पर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की परन्तु आज ब्राह्म मुहूर्त्त चल रहा था कि दो प्रकार की विचारधारा रूपी पाटो के बीच फसा आर्यत्व पिस रहा है। मैं क्या करु इस पर विचार मे डूबे चिन्तित मुझे अकस्मात उठ शब्द स्पष्ट सुनाई दिया। अप्रत्याशित रूप से इस शब्द को सुनकर मैंने चारो ओर देखा तो कोई भी दिखाई नहीं दिया। मैं बहुत देर इस पर विचार करता रहा और इसे अन्त प्रेरणा (प्रभु प्रेरणा) समझ यही विचारा कि दोनो पाटो के बीच फसे आर्यत्व को बचाने हेतु उठना होगा। यह लेख इसी प्रेरणा का परिणाम है। इस घटना को कोई काव्य कल्पना या उपन्यास कहानी की कल्पित भूमिका न समझे ऐसा निवेदन है। आज आर्यत्व को पीसने वाले दो पाट निम्नलिखित हैं –

१ आर्यत्व और हिन्दू विरोध

इस घातक विचारधारा के प्रमुख श्रीमत स्वामी अग्निवेश जी है। ससार भर मे प्रतिष्ठा की चाह ने स्वामी जी की वाणी से क्या क्या नहीं कहलवाया है ? कभी राम मन्दिर को बाबरी मस्जिद कहते हैं कभी ब्रह्मकुमारियो के पाखण्ड का यशोगान करते हैं कभी तालिबानो द्वारा बुद्ध प्रतिमा विध्वस की तुलना बाबरी ढाचे के विध्वस से करके इमाम अब्दुल्ला बुखारी जी के कन्धे से कन्धा मिलाकर खडे हो जाते हैं। जो बुद्ध प्रतिमाए इस्लाम के जन्म से भी पूर्व की हैं उनकी तुलना उस ढाचे से करना जो लाखों हिन्दुओ के खून से तथा मन्दिर तोड कर बना था मानसिक दिवालियेपन का ही सूचक है। स्वामी जी उडीसा मे पादरी स्टेंस हत्याकाड पर तो खूब आसू बहाते हैं परन्तु पूर्वाञ्चल केरल बगाल गुजरात मे ईसाइयो तथा कम्यूनिस्टों के अत्याचारो पर जीभ तक नहीं हिलाते। काश्मीर मे हजारो हिन्दुओ की नृशस हत्या लाखो का निर्वासन भारतीय ध्वज जलाना पाकिस्तानी ध्वज फहराना माताओ की लज्जा लूट भारत विरोधी नारे सेना पर आक्रमण कारगिल मे घुसपैठ भारत का विखण्डन आदि पर स्वामीजी की आखें नम नहीं होती। लोभ एव भय पर आधारित धर्मान्तरण निर्दोषो की मौत का ताण्डव भारत भर में सी० आई० ए० के नृशस कारनामे इस्लामी उग्रवाद के पाश में फसा देश और विश्व यहा तक कि इस्लामी देश भी इससे पीडित हैं यह सब स्वामी जी की चिन्ता का विषय नहीं। जो ऋषि गोहत्या के पाप को देखकर कराहता था उसी ऋषि के अनुयायी दिखलायी देने वाले आज गोहत्या के विरुद्ध व गोहत्यारो के विरुद्ध एक शब्द कहने का साहस नहीं करते क्योकि उन्हे सयुक्त राष्ट्र सघ व ससार से धर्मनिरपेक्ष होने का प्रमाण पत्र चाहिए। जिस इस्लामी जेहाद ने अब तक करोडो गैर इस्लामियो की हत्या की हो आज भी जिससे मानवता थर थर काप रही हो जिनके मजहबी ग्रन्थ मे हिसा ही धर्म हो उसे मित्र तथा जो चीटी जैसे क्षुद्र जीवो को मारने मे धर्मभीरूता रखता हो उसे शत्रु (प्रथम कोटि का) मानकर स्वामी जी इस आर्यसमाज व भारत देश को कहा ले जाना चाहते हैं ? जेहाद ने स्वामी श्रद्धानन्द जी प० लेखराम महाशय राजपाल आदि अनेको आर्य हुतात्माओ का खून पीया हो उसको परोक्ष समर्थन देना क्या घोर विश्वासघात नही है ? आर्यसमाज के इतिहास पर दृष्टि डाले तो पाएगे कि ऋषि के जीवन काल मे और उसके बाद भी लाखो हिन्दू पौराणिको ने अपनी कठी मालाए व मूर्तिया नदियो मे विसर्जित करके आर्यत्व की दीक्षा ली परन्तु सर सैयद अहमद खा फादर स्काट डॉ रहीम खा आदि ऋषि के अनेक प्रशसक भक्तो मे से कोई भी कुरान को फकने का साहस नहीं कर सका। शुद्धि आन्दोलन (जिसका आपकी दृष्टि मे तो महत्व ही सम्भवत नहीं होगा) मे भी मूलत इस्लामी शायद ही आर्य बने हो। आज भी लगभग सभी आर्य पौराणिक समाज से आए हैं। कष्ट की बात है कि वही पौराणिक आज सबसे बुरा हो गया। यह तो ठीक है कि ऋषि को विष देने मे पौराणिक आज सबसे बुरा हो गया। **यह तो ठीक है कि ऋषि को विष देने मे पौराणिक अग्रणी रहे परन्तु यह भी सत्य है कि उनके अनुयायी बनने मे भी वे ही अग्रणी रहे।** आज भी इस तथाकथित हिन्दू के बहुमत मे रहते आप जैसे धर्मनिरपेक्ष विद्वान व साम्प्रदायिक नेता धर्म निरपेक्षता का राग अलाप सकते हैं। मैं आपसे निवेदन करूगा कि यदि मूर्तिभजक इस्लाम ही वेद धर्म के अधिक निकट है तो तालिबानो मे जाकर वेद का प्रचार करके देखे तो पता चलेगा कि वे आपकी धर्मनिरपेक्षता वा वेद को कितना सम्मान देते हैं ? आज अरब देशो अफगानिस्तान व कश्मीर मे अल्पसख्यक हिन्दू कैसे जी रहा है क्या आप कभी विचार करते हैं ? वहा उन्हे धर्मनिरपेक्षता वा मानवाधिकार का सन्देश देने का साहस आप क्यो नही करते हैं ? आप सर्वधर्म सम्मेलन करते हैं तथा ऋषि के वास्तव मे आप अनुयायी हैं तो ऋषि की भाति सबके सम्मुख कहे कि **"वेद ही सत्य विद्या का पुस्तक है। कुरान बाइबिल अज्ञानियों के ग्रन्थ हैं। आओ ! सब मिलकर एक वेद को अपनायें** " तब पता चलेगा कि आप वास्तव मे विश्वमैत्री के पक्षधर हैं और यह भी पता चलेगा कि कौन मित्र व देश आपको धर्म निरपेक्षता का प्रमाण पत्र देते हैं ? स्वामी जी महाराज ! इस नादान हिन्दू को तो वैसे भी ससार मे कोई नहीं चाहता है। भारत मे भी पिट रहा है। दूसरी श्रेणी का नागरिक बन कर जी रहा है। आप ऋषि का नाम लेकर तो कम से कम इसे और पीडा न दे। यदि खण्डन ही करना है तो निष्पक्ष भाव से सबको देखे। सत्ता के लोभी राजनेताओ के पद चिन्हो पर चलकर तुष्टिकरण की नीति नहीं अपनाए तो बडी कृपा होगी।

मान्यवर ! मजदूरो निर्धनो के अधिकारो की बात आप उठाते रहते हैं और इसी के कारण आपको विश्व मे ख्याति भी मिली। आश्चर्य यह है कि आप कहीं किसी से वेद की चर्चा प्राय नहीं करते। यद्यपि श्रमिको किसानो दुखियो तथा निर्धनो को आज आर्यसमाज भूल गया है। आज आर्यसमाज मे धनी मानी और दानी ही पूजे जाते है। यहा तक कि उनका स्थान आर्य विद्वानो तथा सन्यासियो से भी ऊपर है चाहे वह दानी महानुभाव चोर तस्कर श्रमिको का शोषक चरित्रहीन कुछ भी क्यो न हो शराब मास आदि कुछ भी क्यो न बेचता हो। यज्ञशाला मे बैठकर **सर्वे भवन्तु सुखिन** का नारा मात्र लगाकर वैदिक कर्तव्य की इतिश्री मान बैठते हैं। दुखियो के प्रति हृदय मे किञ्चिन्मात्र भी दयाभाव उच्चकोटि के उपदेशक विद्वानो मे भी अपवादस्वरूप ही मिलता है। निश्चित ही ऐसे आर्यो को आपकी राजनीति के विरोध का अधिकार नहीं परन्तु यह भी सत्य है कि ऐसा करते समय आप मार्क्सवादी विचारधारा के प्रचारक ही प्रतीत होते है। सबके कर्म ही जब समान नही होते तब कैसे सभी का समान फल मिल सकता है ? हा ससार मे अन्याय एव अन्यायजनित अभाव की समस्या भी विकराल है जिससे सघर्ष के लिए आर्यसमाज को आगे आना ही चाहिए। इसके साथ यह भी सत्य है कि धनी निर्धन के बीच सघर्ष को प्रोत्सहित करने वाले तथा मजदूरो किसानो निर्धनो की राजनीति करने वाले वातानुकूलित बगलो मे रहते हुए अत्यन्त मूल्यवान मदिरा मास मेवा आदि के साथ अति विलासी जीवन जीते हैं। भारत के प्रसिद्ध कामरेड नेता ज्योति बसु जो प० बगाल के मुख्यमन्त्री रहे हैं उन्हे राज्य सरकार पैशन के अतिरिक्त वातानुकूलित बगला उनके दूरभाष विद्युत व्यय चिकित्सा हेतु विदेश जाना सुरक्षा आदि ताम झाम पर पचास लाख रुपया प्रतिवर्ष देती है। (पाथेय कण मई (प्रथम) २००१) यह है भूखे नगे निराश्रितो के साथ क्रूर उपहास। क्या स्वामी जी ! इस प्रकार के क्रूर राजनेताओ को कुछ प्रेरणा करेगे ?

मैं स्वामी जी से पूछना चाहूगा कि आपने व आपके अनुयायियो ने कितने इस्लामी व ईसाई मित्रो को आर्य बनाकर देशभक्त व वेद भक्त बना लिया है ? कितने खूखार आतकवादियो को राष्ट्रीय विचारधारा मे ला सके हैं ? शोक है कि जो देश को अपना मानते हैं गाय को माता मानते हैं वेद का नाम तो लेते हैं भारतीय ऋषि मुनियो महापुरुषो को सगर्व स्मरण करते हैं भारतभूमि के अतिरिक्त अन्य कहीं जिनकी आत्मीयता नहीं है आप हम सब जिस विचारधारा मे ही जन्मे हैं उस सबको आप प्रथम कोटि का शत्रु मान बैठे हैं तथा जो वेद व भारतभूमि को घृणा भाव से देखते हैं धर्म के नाम पर गैर इस्लामिको तथा गो आदि पशुओ की नृशस हत्या के पक्षधर हैं जिनका लम्बा रक्तरजित इतिहास है जो हमारे व आपके पूर्वजो तथा हम सबको वध योग्य काफिर कहते है हिसा ही जिनका धर्म है उनको मूर्तिभजक होने से मित्र मानना आज आर्यसमाज को कहा ले जाएगा ? कृपाकर आयसमाज को जीवित रहने दे। स्वामी जी ! यदि मूर्तिपूजक मात्र से घृणा पैदा की जाए तो महाराणा प्रताप छत्रपति शिवाजी बन्दा बैरागी वीर दुर्गादास आदि की अपेक्षा औरगजेब बाबर तैमूर गौरी आदि क्या आपकी दृष्टि मे आर्य कहलाएगे ?

हे महाराज ! हिन्दुओ को कुचल डालने के लिए तो देश मे अनक तथाकथित धर्मनिरपक्ष (अधर्मी) नेता हैं आप ता दया कर क्योकि यदि हिन्दू मर गया तो इस धर्मनिरपेक्षता का कोई आश्रय देने वाला भी नहीं मिलेगा वद और आर्यत्व की तो बात ही क्या है ? हा हिन्दूवाद के स्थान पर शुद्ध आर्यत्व की बात करे तब ता हम सब एक साथ ही है।

२ हिन्दूवाद एव आर्यसमाज

यह विचारधारा उपरिवर्णित विचरधारा मे भी अधिक व्यापक है। अधिकाश आर्यसमाजियो की दृष्टि म आर्यसमाज का उदय हिन्दू उत्थान एव राष्ट्र जागरण के लिए ही हुआ और सम्भवत इसी कारण भारत स्वतन्त्र होने के पश्चात आर्यसमाज अपना कर्त्तव्य समाप्त मा कर सो गया। निश्चित ही आर्यसमा प्रारम्भ से प्रखर राष्ट्रवादी रहा है राष्ट्रीयता व स्वराज्य का मूल मन्त्र ऋषि दयानन्द जी ने ही दिया था परन्तु हम यह भी नही भूलना चाहिए कि ऋषि सत्यासत्य की समीक्षार्थ स्वदेशी व विदेशी सभी मतो की मिथ्या मान्यताओ का खण्ड किया है। हिन्दू सम्प्रदायो का सर्वाधिव विस्तृत खण्डन किया है। जहा तक समझता हू **महर्षि जी ने सबसे अधिव शास्त्रार्थ मूर्तिपूजा पर ही किए थे।** ज लोग मूर्तिपूजा अवतारवाद आदि अन्य मान्यताओ के खण्डन मात्र स हिन्दू एकता नाश की आशका तथ राष्ट्रीय अहित व विघटन की बात कर है वे यह भूल जाते है कि जितने भ राष्ट्रवादी महापुरुष हुए एव इस सम जो अपने को राष्ट्र भक्त मानत हैं भगव दयानन्द उनसे बढकर राष्ट्रभक्त एव राष् हितैषी थे। जिसे आज हिन्दू एकता कह जाता है उसकी आवश्यकता उस परतन्त्र भारत मे आज की अपक्षा अधिक ही थी मैं हिन्दूवादियो से पूछना चाहता हू कि आपने कभी विचार किया है कि य अभागी आर्यजाति की एकता कै खण्ड खण्ड हो गयी ? कौन है जिस इस जाग्रत आर्यजाति को प्रमाद के गह गडढे मे धकेल दिया वीर शिरोमणि आर्यजाति को कायर कगाल औ चरित्रहीन बनाया और साम्प्रदाय तथ गुरुडमो मे बाट कर नष्ट भ्रष्ट बनाया है मास मन्दिरा व्याभिचार तक को धर्म व अग बनाया है पशुबलि नरबलि जै वीभत्स कुकर्मो को यज्ञ बताया है बु और महावीर जैसे पवित्र आत्माओ व वेद विरोधी बनाया इस सबका एक उत्तर होगा – **मूर्तिपूजा।**

शेष भाग पृष्ठ ७ प

इंगलैंड में एक आर्य यायावर

– ब्रिगेडियर चितरजन सावन्त, वी०एस०एम०

लंदन हीथरो विमानपत्तन से बरमिघम ले जाने वाली कोच मे अधिक यात्री न थे। अगली तीन चार कुसियो पर मै अकेला ही था। ऐसी दशा मे वाचाल भी मूक हो जाते हैं। बिना औपचारिक परिचय के कोई किसी से नही बोलता। अन्य यात्री से अखबार माग कर पढने का प्रश्न ही नहीं उठता। यदि वृद्धा कन्डक्टर अधेड ड्राइवर से मौसम की बात न करती रहती तो मैं समझता यह गूगो की बस है। बिल्ली के भाग्य से छींका टूटा। चलती बस मे मै ध्यान लगा सका। एक महिला स्वर ने ध्यान भग किया किन्तु वह मेनका न थी। वृद्धा कन्डक्टर जानना चाहती थी कि क्या मैं कॉफी या कोल्ड ड्रिक पीना चाहता हू। मूल्य पाउन्ड मे था एक ब्रिटिश पाउन्ड बराबर ६७ भारतीय रुपये। गणित मे कमजोर होने के बावजूद गुणा करने पर जो राशि आयी वह मेरे उत्तर के पीछे की प्रेरणा थी। दबी जबान से मैंने कहा – "नही धन्यवाद।" फिर बस मे ही बने स्वच्छ शौचालय मे जाकर मुह धो लिया।

लदन और बरमिघम को जोडने वाला ६ लेन का स्वच्छ व चौडा राजमार्ग कहलाता है मोटर वे। अनेक मोटर वे है जहा कारें ७० मील प्रति घटा की गति से दौडती हैं। युवा वर्ग गति सीमा का उल्लघन करके आनदित होता है। पुलिस पकड कर फाइन करती है तो क्या हुआ ? मस्त मौला की जेब मे हुआ छेद उमग की उछाल कम नही कर पाता। यात्रियो की सुविधा के लिए मोटर वे (और अन्य ए बी सी श्रेणी की सडको) पर मार्ग दर्शन के लिए बडे बडे सूचना पटल हैं। वरिष्ठ नागरिक उन्हे बिना चश्मे के पढ सकते है। उसी के आधार पर मैंने जाना कि मार्ग मे है एक नगर स्ट्रेटफोर्ड अपॉन एवन – विश्व विख्यात अग्रेज नाटककार शेक्सपियर का जन्म स्थल और क्रीडा स्थली। मन मे सोचा समय निकाल कर केसी सप्ताहान्त जाऊगा। ख्याली पुलाब पकाते पकाते झपकी आ गई। सपने मे मैंने अपना एक वेद प्रवचन दोहरा डाला। कान मे भनक पडी अतिम पडाव डिगबेथ कोच स्टेशन बरमिघम।

मुस्कान भरी भारतीय छवि नमस्ते नमस्ते फिर परिचय। महाशय गोपाल चन्द्र आर्य समाज वेस्ट मिडलैंडस के पूर्व प्रधान और वर्तमान सरक्षक। ८० वर्षीय गोपाल चन्द्र जी कर्मठ आर्य हैं। फुर्तीले । मेरा भारी सामान स्वय उठा कर अपनी कार मे रख लिया और बोले आज आप मेरे घर मे रहिए। कार चलाते चलाते महाशय जी ने बताया कि आधी शताब्दी पूर्व जब वह बरमिघम आये तो कोई मन्दिर न था और न था आर्यसमाज। न हवन कुड था न समिधा न सामग्री। फिर भी उन्होने सभी हिन्दुओं के वैदिक सस्कार कराए विशेषकर विवाह और अतिम सस्कार। "पूजा पद्धति अनेक सभी हिन्दू इस दर्शन के अतर्गत वैदिक मिशन और बाद मे गीता भवन की स्थापना हुई। बरमिघम के हिन्दू सिख एक जुट हैं। अब एशियायी मूल के नागरिक अपने पहनावे मे सडको पर निकल सकते हैं पहले का परिधान तो केवल कोट पेट टाई ही था। महाशय जी टाई स्वय लगाये हुए थे। मैं तो धोती–कुर्ता पहने था। आप पहले ब्रिगेडियर थे उन्होने पूछा। मैं इन्कार न कर सका इतने मे उनका बगलानुमा घर आ गया।

२४ घटे बाद स्नान करने मे सच्चा सुख मिला अग्रेजी साहित्य मे "बाथ" (स्नान) की जगह जगह चर्चा है। इतिहास मे **"लेडी ऑफ द बाथ", 'नाइट ऑफ द बाथ"** व स्थान बाथ की बात बताई गई है। इगलैड ठन्डा देश है नहाने की परम्परा नहीं के बराबर है। **"पब्लिक बाथ'** यानि सार्वजनिक स्नानागार होते थे जहा गरम पानी चश्मो से निकलता रहता था। क्रिसमस ईस्टर जैसे पर्व पर लोग नहाते थे बाकी दिनो तेल फुलेल से काम चलाते थे। एक भारतीय दम्पत्ति जिनके आवास मे निजी स्नानघर है ने मुझे बताया कि इगलैंड मे अग्रेजो को घर के अन्दर हमाम मे नहाना तो हम भारतीयो ने सिखाया। मैंने सोचा कि यह पी० एच० डी पाने के लिए अनुसधान का विषय बन सकता है।

आर्यसमाज वेस्ट मिडलैडस के प्रधान डॉ० नरेन्द्र कुमार आर्य अपनी नयी मर्सीडीज कार मे शाम को मुझसे मिलने चन्द्रा जी (अग्रेजी मे "चन्द्र" बन जाता है "चन्द्रा") के घर आये। तपाक से मिले। आर्यसमाज टॉडा की खूब बाते हुई। परिवार मे प्रधानो की धूम है। पिता प्रधान बडे भाई प्रधान और नरेन्द्र जी बरमिघम मे प्रधान। हास परिहास मे कितना समय बीत गया पता ही नहीं चला। स्थाानीय 'रेडियो एक्स एल' मे कल सुबह आठ बजे मुझे सक्रिय भाग लेना है और वैदिक धर्म के सिद्धान्त किस प्रकार प्रसारित किए जाए उसकी रूपरेखा आकशवाणी अनुभव आधारित हो। मुझे रात का "होम वर्क" स्कूल जाने से पहले ही मिल गया।

निर्धारित समय से पाच मिनट पहले चन्द्रा जी जिन्हे अब मैं भ्राता जी कहने लगा था ने मुझे सामान सहित रेडियो स्टेशन पहुचा दिया। वहीं से आर्य समाज भवन के अतिथि कक्ष तक मुझे एक अन्य कार्य मे जाना था। भ्राता जी के घर एक महीना रहने में प्रशासनिक कठिनाइया थी। उनकी पत्नी परलोक वासी थीं बच्चो ने बडे होकर अन्यत्र अपने अपने नीद का निर्माण कर लिया था। हा साथ ले गये सस्कार। रेडियो स्टेशन कार पार्क मे आर्य समाज के पूर्व प्रधान श्रीकृष्ण चोपडा और वर्तमान पुरोहित सोनेराब आचार्य आ चुके थे। औपचारिक अभिवादन के बाद हम तीनो प्रवेश द्वार की ओर बढे भ्राता जी हिन्दू काउसिल के काम से अन्यत्र चले गए।

रेडियो स्टेशन का प्रवेश द्वार बन्द था। न चौकीदार और न दर्बान। आश्चर्य हुआ। कृशन (पजाबी उच्चारण) चोपडा जी ने एकदीवार बटन दबाया। छिपे कैमरो से हमारी आकृतिया अन्दर टीवी पर देखी जा चुकी थी। अन्दर से स्पीकर पर आवाज आयी "परिचय ?" कृशन जी इस खेल के अनुभवी खिलाडी थे उन्होने ही उत्तर दिया। "क्लिक" की ध्वनि के साथ द्वार खुल गया। अली बाबा की तरह "सिम सिम" कहना भूल जाने से बेचारा कासिम अरब मे जान गवा बैठा था। यह इगलैड है और हम अग्रेजी भूले नहीं है।

बैठक शुरू हुई। न चाय न पानी। हमे भारत की याद आयी। हिन्दी का काम देखने काश्मीर मे ससदीय समिति आई हुई थी। फोन पर मैंने सभी को सूचना दी कि गोष्ठी होगी। चाय समोसे की बात भी बताई। कई फोन कॉल करके मैंने नौवीं कक्षा मे पढ रही बेटी ऋचा से पूछा "गोष्ठी के क्या माने ?" अपने भोलेपन से कहा "चाय और समोसे"। अब मैं इगलैंड मे हू। 'रेडियो एक्स एल' एक्सीलेट अर्थात सर्वोत्तम है। एशियी मूल के इगलैड वासियो मे लोकप्रिय है। नये नये से नये बम्बइया फिल्मी गाने और एशिया से सम्बन्धित समाचार विचार तथा वैदिक हिन्दू भजन मुस्लिम नात – कव्वाली क्रिसमस कैरोल आदि सभी कुछ यहा से प्रसारित होता है। डॉक्टर अरूण बजाज इसके स्वामी है। और डॉ० नरेन्द्र कुमार आर्य के मित्र है। इसीलिए वेद प्रचार अभियान मे नौ दिनो तक नित्य वेद मत्र और व्याख्या केवल पाच सौ पाउड मे प्रसारित करने को तैयार हो गए हैं। राशि नगण्य है। आर्य समाज वेस्ट मिडलैंडस बरमिघम अपने ३२ वर्षों के अस्तित्व में पहली बार इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर वेद प्रचार कर रहा है। प्रचारक को (यानी मुझे) भारत से आमन्त्रित किया है। आर्यों को अपेक्षा है कि रेडियों पर वेद मत्र पाठ और व्याख्या सुन कर बरमिघम वासी अधिक सख्या में आर्यसमाज भवन आयेगे और वेद मार्गी बनेंगे भविष्य मे उनका विश्वास निर्मूल नहीं था। पहले दिन की रेडियो बैठक में आशातीत सफलता मिली। वैदिक विषयों पर लघु चर्चा सुन कर रेडियो वालो ने आर्यसमाज का प्रसारण समय दस मिनट से बढा कर एक घटा कर दिया। प्रसारण मूल्य स्थिर रहा। ओम ध्वज फहर उठा।

आर्य समाज (वैदिक मिशन) वेस्ट मिडलैंडस यह नाम है उस जीवन्त सस्थान का जो मध्य इगलैड के प्रमुख नगर बरमिघम मे नीचेल्स क्षेत्र के इसे कीन स्ट्रीट पर स्थित है। प्रमुख बाजार सिटी सेन्टर की गगन चुम्बी अटटालिकाओ से आर्यसमाज तक का पैदल मार्ग आधे घटे का बस से दस मिनट और कार से पाच मिनट। मेरा पैदल प्रेम देख कर डॉक्टर नरेन्द्र के सकेत पर आर्य समाज ने "एडिडास" वाकिग शूज मुझे उपहार मे दे दिए। मूल्य न पूछिये राशि जान कर मूर्छित होने का भय है। आर्यसमाज भवन मे एक बडा हाल है ३५० श्रोताओ की कुर्सिया अग्नि शमन विभाग की सहमति से लगती हैं। २ अतिथि कक्ष एक मच एक कार्यालय बडा पुस्तकालय महिला एव पुरुष प्रसाधन कक्ष वरिष्ठ नागरिक मनोरजन कक्ष रसोई एव डाइनिग हॉल रगमच और पुरोहित आवास (अपार्टमेट टाइप) आदि हैं। फोन और कम्प्यूटर से सज्जित हैं। हा स्नान के लिए "शावर" नहीं है – न अतिथि कक्ष मे और न पुरोहित आवास मे। आर्यसमाज भवन पहले अग्रेजो का रेलवे स्टाफ क्लब था। नहाने की आवश्यकता न थी पर्फ्यूम पसीने की गध को सुगध मे बदल देता था। तो क्या मैं एक महीने नहाया नहीं ? आचार्य सोनेराब का बाल्टी लोटा किस दिन काम आता। डॉक्टर नरेन्द्र इस ओर ध्यान दे रहे हैं 'शावर लगवा कर ही चैन लेगे। प्रधान का पुत्र प्रधान है।

वेद प्रचार सप्ताह की पहली सध्या। मेरे मन मे उत्कठा है। श्रोता समूह कैसा होगा कितना बडा होगा जिज्ञासु होगे या लगडी मारने वाले होगे ? परीक्षा की घडी आ पहुची। मैं पहले ही पानी पी चुका था लघु शका से भी निवृत्त हो चुका था। आर्यसमाज भवन के सभागार मे अधिकारी और उनकी पत्नियां आ चुके थे। अन्य श्रोताओ की सख्या थी केवल आठ बाद म बढ कर दस हो गई। डॉक्टर नरेन्द्र कुमार प्रधान आर्यसमाज ने मेरा परिचय दिया और बुलाने की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। श्रोताओ की कम सख्या से निराशा की झलक कहीं दिखाई नहीं दी। आमन्त्रित किये जाने पर मैंने सामूहिक सस्वर गायत्री मत्र पाठ कराया और प्रवचन आरम्भ किया। विषय मन की शान्ति। वेदमत्र और व्याख्या से मिली मन की शान्ति।

आर्यसमाज भवन मे अतत उपस्थिति बहुत बढी कैसे ? आइये देखते हैं।

क्रमश

उपवन, ६०६, सेक्टर २६, नोएडा २०१३०३, भारत

अंग्रेजी के रहते ईमानदारी भी आना असम्भव

– स्व० डॉ० राम मनोहर लोहिया

प्रस्तुत लेख स्व० डॉ० राममनोहर लोहिया ने अपने जीवन काल मे काफी वर्षो पूर्व लिखा था। वे अत्यन्त दूरदर्शी व्यक्ति थे उस समय व्यक्त किए गए हिन्दी भाषा सम्बन्धी उनके विचार वर्तमान समय मे पूर्णत सटीक बैठ रहे है। यदि उस समय उनकी बात पर ध्यान दिया जाता तो देश मे हिन्दी भाषा की यह दुर्दशा नहीं होती जो आज हो रही है।

– सम्पादक

अंग्रेजी जबान अब हिन्दुस्तान के सार्वजनिक मामलो से खत्म हो जानी चाहिए। इसम देर करना न केवल भाषा के मसले को उलझा देना और बिगाड देना होगा बल्कि देश के दूसरे मसलो को भी बिगाड देना होगा। भाषा से देश के सभी मसलो का सम्बन्ध है। जिस जबान मे सरकार का काम चलता है इससे समाजवाद तो छोड ही दो प्रजातन्त्र भी छोडो ईमानदारी और बेईमानी का सवाल तक जुडा हुआ है। यदि सरकारी और सार्वजनिक काम ऐसी भाषा मे चलाए जाए जिसे देश के करोडो आदमी न समझ सके तो होगा केवल एक प्रकार जादू टोना। जिस किसी देश मे जादू टोना टोटका चलता है वहा क्या होता है ? जिन लोगो के बारे मे मशहूर हो जाता है कि वे जादू वगैरह से बीमारिया आदि अच्छी कर सकते है उनकी बन आती है। लाखो करोडो उनके फदे मे फसे रहते हैं। ठीक ऐसे ही जबान का मसला है। जिस जबान को करोडो लोग समझ नही पाते उनके बारे मे यही समझत है कि यह कोई गुप्त विद्या है जिसे थोडे लोग ही जान सकते हैं। ऐसी जबान मे जितना चाह झूठ बोलिए धोखा दीजिए सब चलता है क्योकि लोग समझेगे ही नही। आज शासन मे लोगो की दिलचस्पी हो तो कैसे हो ? वह कुछ जान ही नहीं पाते कि क्या लिखा है क्या हो रहा है। सब काम केवल थोडे से अग्रेजी पढे लोगो के हाथ मे है। बाकी लोगो पर इन सबका वही असर पडता है – जो जादू टोने या विद्या का।

अपने देश मे पहले से ही अमीरी गरीबी जात–पात–धर्म और पढे–वेपढे के आधार पर एक जबरदस्त खाई है। यह विदेशी भाषा उस खाई को और चौडा कर रही है। अपनी भाषाए पढे–लिखे केवल दस फीसदी लोग हो सकते हैं। पर समझ सब सकते है। लेकिन अग्रेजी तो अधिक से अधिक १०० मे से एक आदमी समझ सकता है वह भी मुश्किल से। मैंने जानबूझ कर अपनी भाषा कहा है हिन्दी नहीं कहा देश मे और भी भाषाए है केवल हिन्दी नहीं और सभी एक सी है।

बेवकूफ है वे

झगडे हिन्दुस्तान की सभी भाषाओ और अग्रेजी के बीच है हिन्दी और दूसरी भाषाओ के बीच नहीं। मेरी समझ मे वे लोग बेवकूफ हैं जो समझते हैं कि अग्रेजी रहने पर जनतन्त्र भी आ सकता है। हम तो समझते है कि अग्रेजी के होते यहा ईमानदारी आना भी असम्भव है। थोडे से लोग इस अग्रेजी के जादू द्वारा करोडो को धोखा देते रहेगे। आप कहेगे कि बेईमानी चलेगी। जब कोई किसी अफसर से मिलने जाता है तो उसका काम होना इस पर भी निर्भर करता है कि उसके कपडे कैसे है। सफेद कपडे पहनने वाले का काम वह जल्दी करता है क्योकि आम तौर पर सफेद कपडे वाला ही अग्रेजी जानने वाला भी होता है।

दलालो का राज

इसी तरह हमारे अफसर आपसी बातचीत मे भी अग्रजी का ही इस्तेमाल करत ह। दूसर उनके चारो ओर मातहत भी ऐसे ही लोग रह पाते है जो अग्रेजी जाने। हिन्दुस्तान के करोडो लोग इन अफसरो की बाते समझ ही नही पाते और उन्हे अग्रेजी जानने वाले दलालो की मदद लेनी पडती है। दूसरे के रिश्तेदारो की जो आम तौर पर ऊची जात वाले ही होते है बन आती है और कुनबापरस्ती का बाजार गर्म होता है। अपने रिश्तेदारो और सम्बन्धियो को ही वे अपने साथ नौकरी पर रखते है। इसका कारण यह है कि वे अग्रेजी अच्छी तरह जानते हैं और उनसे काम चल जाता हैं। जो अग्रेजी नहीं जानते उनका गुजारा नही हो पाता। इसी तरह अफसरो की बाते हिन्दुस्तान के करोडो लोग नहीं समझ पाते और जो दलाल वगैरह होते है उन्हे पैसा बनाने का मौका मिल जाता है। और अफसरो को अपना काम निकालने मे आसानी रहती है। कहने का मतलब यह है कि जब तक अग्रेजी की बीमारी बनी रहेगी तब तक ईमानदारी कायम हो ही नहीं सकती। एकदम नामुकिन है। मेरा यह मतलब नहीं कि अग्रेजी के खत्म होते ही ईमानदारी आ जाएगी। हा इतना मेरा विश्वास है कि अग्रेजी खत्म हो जाएगी तभी ईमानदारी कायम हो सकती है और हो भी जाएगी।

घातक उदासीनता

भाषा की वजह से सब बाते लोग समझ ही नही पाते और खुफिया तौर पर ही सब बेईमानिया चलती रहती है। खुफिया से मतलब यहा आम जनता से छिपी हुई है। इन सब कार्यवाहियो मे हिन्दुस्तान मे करीब तीस लाख अग्रेजीदा लोगो के अलावा किसी को दिलचस्पी या शिरकत नही है। ४० करोड लोग इन ३० लाख के आपसी झगडे और तनावो से अपने को दूर रखते है। और उनका केवल यही कहना रहता है कि हमे क्या कोई बने। सामान्य लोगो को न तो इतनी समझ ही है कि इस व्यापार को समझे और न दिलचस्पी ही। वही ३० लाख लोग आपस मे बटवारा कर लेते है और उन्ही के बीच सारी छीना–झपटी चलती रहती है। यह सब बाते ३० करोड तक पहुच पाने की पहली शर्त यही है कि सब काम ऐसी भाषा मे हो जिसे आम लोग समझ पाए। उस समय योग्यता का चुनाव भी केवल ३० लाख मे से नही बल्कि ४० करोड मे से होगा। योग्यता भी हिन्दी–उर्दू आदि दूसरी भाषाओ के आधार पर देखी और जाची जाएगी।

पलटन मे भी असन्तोष

इस भाषा के घपले की वजह से हमारी पलटन मे भी काफी असन्तोष है। हिन्दुस्तान मे पलटन की हालत कोई अच्छी नही चल रही है। अफसर काफी नाखुश है। देश की पलटन का असन्तुष्ट रहना कितना खतरनाक हो सकता है खास तौर पर तब जब उस असन्तोष के कारण भी सही हो। असन्तोष का एक हिस्सा तो नौकरी और तनख्वाहो की वजह से है सो उसको तो मैं छोड देता हू।

पर एक दूसरा हिस्सा सब के ध्यान देने लायक है। हमारे यहा सिविल अफसर का ओहदा पलटनी अफसर से ऊचा समझा जाता है। सिविल नौकरी का बाबू तक पलटनी बाबू से ऊचा रहता है। आप इससे इस चीज को समझ लीजिए कि जब रक्षा विभाग मे ऊचे पलटनी अफसरो की बैठक होनी है तो उसका सभापतित्व एक सिविल अफसर जो रक्षा सचिव होता है करता है। यह भी नही कि रक्षा–मन्त्री ही करे। पुराने वक्त से ही हमारे यहा यह चला आ रहा है कि पलटन के ऊचे अफसरो की अग्रेजी बहुत अच्छी होनी चाहिए। पहले ऊचे अफसर विलायत से पढकर ही आते थे तो सीख भी जाते थे पर अभी यह हाल है कि बिना अग्रेजी का बढिया ज्ञान हुए ऊची अफसरी मिलना मुश्किल है। अब भला बताइए पलटनी अफसरो की योग्यता इस बात से परखी जाएगी कि वह अग्रेजी कैसी बोलता है या इस बात से कि वह दुश्मन का मुकाबला कितनी अच्छाई से कर सकता है और लडाई की कला कैसी जानता है। पिछली लडाई का सबसे बडा जनरल एक जर्मन था और अग्रेजी का एक लफ्ज भी नही जानता था हा लडना जानता था। हिन्दुस्तान मे एक से एक वीर जातिया बसती है। वे लडाई की कला मे प्रतिभा दिखा सकती है। पर अफसरी के लिए उन्हे सीखना पडती है अग्रेजी न सीखे तो अफसर नही बन सकत केवल भाषा की वजह से ही उनकी काबिलियत का इस्तेमाल नही हो पाता। इसलिए मै कहता हू कि सार्वजनिक उपयोग से अग्रेजी हटाए बिना कोई काम नही बन सकता। अग्रेजी हट जाने पर ही ४० करोड को अपनी योग्यता दिखलाने का मोका मिलेगा।।

जापान का उदाहरण

अब सवाल उठता है कि क्या हिन्दुस्तान मे ऐसी हालत है कि बिना अग्रेजी काम चला सकते है। कुछ लोग कहते है कि कैसे करोगे ? हिन्दी मे शब्द नही है। इसके जवाब मे मै जापान का एक किस्सा बता देता हू। यह किस्सा १९४५ का है जब अमरीकी फौजो ने जापान पर कब्जा कर लिया था। उसी जमाने मे जापान से बहुत से लोग विज्ञान और दूसरी नयी चीजो की जानकारी के लिए विदेश पढने भेजे गए। जब ये लोग वापस आ गए तो इनके सामने यह सवाल उठा कि किस भाषा मे काम चलाया जाए। उन लोगो ने कहा कि हमारे पास जापानी शब्द इतने नही है कि हम जिन शब्दो को पढ कर आए है उनके बदले अपने शब्द इस्तेमाल कर सके।

– शेष भाग पृष्ठ ६ पर

पृष्ठ ५ का शेष भाग

अंग्रेजी के रहते ईमानदारी भी आना असम्भव

सरकार न उत्तर दिया कि सब काम जापानी म होगा। अगर ऐसे लफ्ज आए जिनकी जापानी न हो सके तो उन्हे वेस के वैसे ही इस्तेमाल किया जाए ओर धीरे धीरे उनके जापानी पर्याय निकालने की कोशिश की जाए। इस तरह स उन्होने किया आर आज आप देखे कि उनका काम काज कितने मजे मे चल रहा हे और अब तक कोई सवाल नहीं उठा। पर हमारे यहा मामला उलटा है। कहते है जब शब्द बन जाएगे तब देशी भाषाए शुरू करेगे। यह कितनी खतरनाक हालत है कि अपनी भाषाए प्रतिक्रियावाद की और विदेशी भाषा प्रगति की प्रतीक समझी जाती है। कइ लोग सिर्फ इसी वजह स खुलकर देशी भाषाओ की हिमायत नही कर पाते कि कही यह भी प्रगति के दुश्मन न समझ लिए जाए। इन सब बातो का फायदा उन लोगो ने उठाया जो अग्रेजी पढ लिख और देश से अपन एकाधिपत्य को उठन देना नही चाहते।

एक षडयन्त्र

देश के तीस लाख आदमी नही चाहते कि अग्रेजी खत्म हो और उनकी ताकत घटे। इसके लिए उन्होने दुनिया भर के अडगे खड किए। हिन्दुस्तान की दूसरी भाषाओ से हिन्दी की प्रतिद्वन्द्विता चलवायी। सरकार ने उनकी मदद की। हिन्दी और अग्रेजी के असली झगडे को नजरअन्दाज कराने के लिए ये झूठे झगडे दूसरी भाषाओ से चले। सरकारी नीति रही कि अग्रेजी की साम्राज्यशाही उन्हे खत्म नही करनी थी तो उन्होने किया यह कि हिन्दी को भी उसी साम्राज्यशाही का एक छोटा हिस्सा दिलाने की कोशिश की। अग्रेजी का कुछ हिस्सा हिन्दी को भी मिल जाए यही सरकारी नीति रही।

अब यह साफ बात है कि हिन्दी साम्राज्यशाही नही चल सकती। गैर हिन्दी इलाके इसको कभी स्वीकार नही करेगे। सरकार की इस साजिश ने हिन्दी का बहुत नुकसान पहुचाया। गैर हिन्दी लोगो को अपनी नौकरियो वगैरह का डर लगा। सरकारी नीति के कारण ही कइ बडे इलाको के लोग हिन्दी की कटटर मुखालफत करने लगे। आपको जानकर ताज्जुब होगा कि महात्मा गाधी के बाद मै पहला आदमी हू जो तमिलनाडु मे लगातार २५ सभाओ मे हिन्दी मे बोला। लोगो ने मुझे क्यो सुना ? तमिलनाडु मे हिन्दी का घोर विरोध है। मै जानता हू कि मुझे लोगो न इसलिए सुना कि मै हिन्दी और तमिल को बराबरी देना चाहता हू।

अग्रेजी नामपट

आज आप किसी बाजार मे निकल जाइए। दोनो तरफ सब नाम पट मिलगे अग्रेजी मे। यहा तक कि नाई की दुकान पर भी बोर्ड होगा फैसी हेयर ड्रेसर इससे फायदा क्या ? कौन समझता है ? आप सब से मेरी प्रार्थना है कि आप इस पर सोचे और दुकानदारो से कहे कि ये अग्रेजी नामपट गुलामी का नक्शा हमारे दिमाग मे ताजा रखते है।

गुलामी की निशानिया

किस–किस बात का जिक्र किया जाए। चारो तरफ गुलामी की निशानिया बाकी हैं। अग्रेजी अखबारो को ही लीजिए। ये गुलामी के सबसे बडे प्रतीक है। दुनिया के किसी भी देश मे आप दैनिक अखबार विदेशी भाषा मे नही पाएगे। हा मासिक पत्र या साप्ताहिक पत्र जो विशेष विषयो से सम्बन्ध रखते है कभी विदेशी भाषाओ मे भी निकाले जाते है। पूरे यूरोप से मैने सिवाय पेरिस और कही विदेशी भाषा का दैनिक पत्र निकलते नही देखा। पेरिस मे एक है और वह अमरीकनो ने अपने लोगो के लिए जो लाखो की तादाद मे वहा है निकाला है। हमारे यहा तो अखबार ज्यादातर अग्रेजी मे है। नतीजा यह है कि आप लोगो को यह विश्वास हो गया है कि अग्रेजी के अखबार ज्यादा अच्छे हैं। हमारे यहा अग्रेजी मे छपने वाले अखबारो की करीब आठ लाख प्रतिया निकलती है। थोडे से अखबार जो हिन्दी मे निकलते हैं उनकी दशा ही खराब है और हो भी कैसे नही आप लोग खुद भी विज्ञापन देना हो तो अग्रेजी अखबार ही पसन्द करते है। सरकार खुद अधिक विज्ञापन अग्रेजी अखबारो को ही देती है। ख्याल बन गया है कि अग्रेजी अखबार अधिक लोग पढते हैं और उनमे सूचनाए भी अधिक होती है। असल बात यह है कि यदि आप और सरकार इन्हे विज्ञापन देना बन्द कर दे तो ये अखबार दूसरे दिन बन्द हो जाए। मैं तो आप से कहना चाहता हू कि सरकार को यह नीति फौरन अपनानी चाहिए नही तो हिन्दी के अखबार उठ ही नही सकते और मुल्क के ज्यादातर आदमी दुनिया की जानकारी हासिल नही कर सकते। सरकारी विज्ञापन केवल देशी अखबारो को मिले और दूर मुद्रक भी देशी कर दिए जाए तो यह मामला अपने आप सुधर जाएगा। आप लोगो से भी मरी यही प्रार्थना है कि अग्रेजी अखबार छोडकर अपनी देशी भाषा के अखबार पढे। तभी उनकी उन्नति हो सकती है।

देशीय भाषाओं को प्रतिष्ठा मिले

हमारा कहना है कि सबसे पहले तो अग्रेजी सब जगह से आज ही समाप्त कर दी जाए। यह पहली बात है। इसके बाद हिन्दी और दूसरी भारतीय भाषाओ का प्रश्न रह जाता है। इसके लिए हमारा कहना है कि केन्द्र की भाषा हिन्दी रहे और हर सूबे मे अपनी–अपनी भाषा चले। सूबे केन्द्र को अपनी भाषा मे लिखे और केन्द्र हिन्दी मे लिखे। बी०ए० तक पढाई और छोटी अदालतो का काम क्षत्रीय भाषाओ मे चलाया जाए और एम०ए० की पढाई और हाईकोर्ट का काम हिन्दी मे हो। बी०ए० तक अपनी भाशा के साथ हिन्दी भी वैकल्पित विषय रहे।

वे बेवकूफ है जो कहते है कि अग्रेजी रहने पर जनतन्त्र भी आ सकता है। हम तो समझते है कि अग्रेजी के होते यहा ईमानदारी आना भी असम्भव है।

गलतफहमी

बहुत से लोग डरते है कि मुल्क टूट जाएगा। मेरी तो समझ मे नही आता कि मुल्क अग्रेजी से कैसे जुडा हुआ है ? इस गलतफहमी का बहुत बडा कारण यह भ्रम भी है कि अग्रेजी विश्व भाषा है। मै आप से प्रार्थना करता हू कि आप इस भ्रम को दूर कीजिए। अग्रेजी विश्व भाषा नही अग्रेजी तो क्या कोई भी भाषा विश्व भाषा नहीं है। जिस प्रकार अग्रेजी दुनिया मे फैली उसी तरह उससे पहले सस्कृत अरबी लैटिन आदि भाषाए भी फैल चुकी है। आज उनका साम्राज्य नहीं है और मैं कहता हू कि अग्रेजी का भी नही रहेगा। क्या आप समझते है कि चालीस करोड चीनी और बीस करोड रुसी कभी भी इस बात को स्वीकार करेगे कि अग्रेजी विश्वभाषा मानी जाए। सब बातो मे राष्ट्रीय आत्म सम्मान का प्रश्न आ जाता है। मै समझता हू कि यदि कभी भी कोई भाषा विश्व भाषा बन सकी तो वह किसी देश की भाषा नही होगी बल्कि सभी देशाे की भाषा का सम्मिश्रण होगी।

एक जरूरी विषय

दस साल मे भी अग्रेजी हमारे यहा से गयी नही घटी भी नही। इस तरह से घट भी नही सकती। आज स्कूलो व कालेजो मे अग्रेजी एक जरूरी विषय है और उससे राष्ट्र का महान नुकसान हो रहा है। हमारे सत्तर–अस्सी फीसदी बच्चे औसत बुद्धि के होते है और अग्रेजी भाषा का ज्ञान हासिल करने के प्रयत्न मे उनका इतना कचूमर निकल जाता है कि भूगोल इतिहास विज्ञान आदि विषय मे पर्याप्त ज्ञान प्राप्त नही कर पाते। मै हिन्दुस्तान की जनता से और खास तौर से उनसे जो इस भाषा नीति को मानते है अपील करता हू कि व सारे देश म सभाए करे और जुलूस निकाले और प्रतिज्ञा करे कि – **हम प्रतिज्ञा करते है कि अग्रेजी का सार्वजनिक इस्तेमाल हम खुद तो आज से ही बन्द करते है और सरकारी स्तर पर भी हर शान्ति पूर्ण तरीके से इसे बन्द कराएगे।** नाम पटो पर से अग्रेजी भाषा व अक्षर मिटाने के लिए सीढी रग व कूची समेत अभियान करे। स्कूल कालेजो मे माध्यम विषयक नीति पर और अग्रेजी को केवल ऐच्छिक विषय बनाने के लिए सबल आन्दोलन होना चाहिए। जहाअग्रेजी दैनिको के वर्तमान पाठक अपनी आदतो को चाहे कितनी ही कम सख्या मे क्यो न हो बदलने को तैयार हो वहा अग्रेजी दैनिको की होली जलाई जाए। अदालतो मे व फैसलो मे अग्रेजी के प्रयोग का विरोध हो और जहा जनमत तैयार किया जा सके वहा सामूहिक अडगा वाला जाए। तीन या चार महीने का नोटिस देकर अग्रेजी मे खबर भेजने वाले तार दूरमुद्रक मशीनो को तोडा जाए। ऐसी दुकानो का बहिष्कार कराए जा अपने नामपट से अग्रेजी हटाने को तैयार नही हो।

अपना समस्त कार्य हिन्दी में ही करें

पृष्ठ ३ का शेष भाग

दो पाटों के बीच

आज बहुत से आर्यसमाजी परिस्थितियो की दुहाई देकर सत्यार्थ प्रकाश मे सशोधन की माग तक कर डालते हैं। खण्डन मत करो मण्डन ही करो यह परामर्श देकर स्वय को आर्यजाति व देश का सर्वाधिक हितैषी सिद्ध करने का यत्न करते हैं। ये लोग भूल जाते है कि ऋषियो के सिद्धान्त सार्वभौमिक सार्वकालिक एव सर्वहितकारी होते हैं। बुराई सदैव बुराई है और फिर जिस मूर्तिपूजा ने अनेक बुराइयो व सकटो को जन्म दिया है वह आज अचछाई कैसे हो गयी ? यदि बुराई ही है तो आज बुराई को बुराई कहना कैसे बुरा हो गया ? आर्य भाइयो ! यदि हम अपने इतिहास पर दृष्टि डाले तो पाएगे कि जब तक आर्य लोग शास्त्रार्थरण मे जीतते थे शास्त्रार्थों की धूम मची रहती थी अनेक लोग आर्य धर्म मे दीक्षित हुआ करते थे। आर्य लोग तपस्वी त्यागी स्वाध्याय साधना सेवा परायण एव सर्वस्व होम करने को तत्पर रहते थे। आर्यो मे एकता थी सघर्षशीलता थी बडी से बडी शक्तियो को झुकाने की क्षमता थी परन्तु आज समन्वयवादी आर्यसमाज बिना पैदे के लोटे के समान निराधार एव अशक्त हो गया है। परस्पर ईर्ष्या द्वेष कलह से खण्ड खण्ड हो गया है। आज कोई भी आर्य सिद्धान्तो की धज्जिया उडाये ऋषि दयानन्द को गाली देता रहे वेद की निन्दा करे भारतीय इतिहास और सस्कृति पर व्यग करता रहे ईश्वर को विदूषक बना कर अपना उल्लू सीधा करता रह श्रीराम श्रीकृष्ण भगवान मनु जैसे महापुरुषो का अपमान करता रहे व उनके अस्तित्व को चुनौती देता रहे इस समन्वयवादी आर्यसमाजी की स्थितिप्रज्ञता? डूबी विश्राम कर रही है। अनेक उपदेशक चिकने-चुपडे प्रवचन देकर मात्र दक्षिणार्थी और पेटार्थी बनते जा रहे हैं। अनेक गुरु एव भगवान नित नए पैदा हो रहे हैं। आर्यसमाजी भी इन गुरुओ के दूरदर्शन पर प्रवचन सुनकर प्रभावित हो जाते हैं। ये गुरु एव भगवान पूर्व की अपेक्षा आज अधिक प्रवचन पटु हो रहे हैं। इधर आर्यो का स्वाध्याय समाप्त है। **पाखण्डी गुरु सत्यार्थ प्रकाश जैसे ग्रन्थ पढ पढ कर अपने ग्रन्थो की चतुराई से व्याख्या कर रहे है। उनमें सशोधन हो रहे है टीकाए बदल रही हैं इधर हम उनके ग्रन्थ पढना तो दूर अपने ग्रन्थ तक नहीं पढते हैं।** दोनो विचारो की भिन्नता को बिना गहराई से समझे सत्यार्थ प्रकाश पर टीका टिप्पणी करना समन्वयवादी व गिरगिट की भाति रग बदलने वाले आर्यो का स्वभाव बन गया है। कुछ लोगो का यह कहना कि हर व्यक्ति खण्डन करने का अधिकारी नहीं है यह तो ठीक है। सन्ध्योपासना न करने वाला फैशन परस्त विलासी असहिष्णु, निर्दयी शुष्क तार्किक सब भूतो के प्रति दयाभाव तो दूर आर्यसस्था व घरो मे अतिथियो तक को सत्कृत नहीं करने वाला परस्पर ईर्ष्या कलह विवाद करने वाला पाश्चात्य कुसभ्यता मे डूबा आदि दुर्गुणो से युक्त आर्यनामधारी को उस मूर्तिपूजक के खण्डन का अधिकार नहीं जो मूर्तिपूजक घण्टो ध्यान वा कीर्तन करता है भले ही वह अन्धश्रद्धा हो अतिथियो भूखे नगे रोगी और चीटियों कुत्तों तथा गायो को भी आत्मीयता से देखता है भारतीय परिधान पहनने मे गौरव अनुभव करता है घर व मन्दिर मे अग्निहोत्र न सही घृत का दीपक तो जलाता है ईमानदारी से व्यापार करता है। यह लिखने का तात्पर्य यह नहीं है कि आर्यसमाज समीक्षा समालोचना व खण्डन करने की योग्यता रखता ही नहीं एव शास्त्रार्थ का युग समाप्त हो गया है। हममे व उनमे जो भी बुराई है उसे दूर करना ही होगा। सैद्धातिक विसगति दूर करने हेतु शास्त्रार्थ लेखन प्रवचनो का महत्त्व सदैव रहेगा क्योकि इसके बिना सत्यासत्य का बोध न स्वय को होगा और न दूसरो को ही करा सकेगे। आचरण की विसगति दूर करने का अलग प्रयास अवश्वमेव करना होगा ताकि शास्त्रार्थ करने के अधिकारी बन सके।

हा अतना अवश्यक है कि आज काले अग्रेजो का शान है। मिथ्यावादी चोर ठगो हिसको को धर्म के नाम पर सब पाप करने की स्वतन्त्रता है परन्तु इन पापो को पाप कहने की स्वतन्त्रता नहीं है और उसी पापिनी राजनीति ने सभी मजहबियो को असहिष्णु एव धर्मान्ध बना दिया है। इस कारण शास्त्रार्थ की शैली कुछ बदलनी होगी प्रवचनो लेखो मे सत्यासत्य की समीक्षा करते समय यथासम्भव मधुरता लानी होगी। परन्तु स य और असत्य के बीच स्पष्ट सीमारेखा अवश्य खीचनी होगी अन्यथा हम भी उन्ही मतवादियो की श्रेणी मे सम्मिलित हो जाएगे जो अपने अपने मत का प्रचार करने मे लगे है। कुछ सज्जनो का मानना है कि केवल मण्डन ही करे तो श्रोता स्वय ही सबमे से सत्य बात को जानकर सत्य का ग्रहण कर ही लेगा परन्तु वे भूल जाते हैं कि प्रथम तो प्रत्येक मत का प्रचारक प्रारम्भ मे सामान्यत सत्य एव सामान्य हित की बातो का ही प्रचार करता है तथा धीरे धीरे चतुराई पूर्वक मिथ्या मान्यताओ को जनमानस मे प्रचारित करने लगता है तब तक श्रोता उसका मानस भक्त हो ही जाता है तथा मधुर मधुर विष का पान भी सहजतया करने लगता है। ऐसी परिस्थिति मे जो मतवादी अपनी मिथ्या अवधारणाओ को उसी चतुराई से प्रचारित करते हैं वे अवश्य ही जनता मे स्थान पा सकते हैं परन्तु यह कार्य दोषपूर्ण है छल है ऐसी स्थिति मे उनकी मिथ्या मान्यताओ के भावी व प्रत्यक्ष दुष्परिणाम के प्रति सचेत करने हेतु समीक्षा समालोचना वा शास्त्रार्थ आदि की अनिवार्यता होगी ही। मै समन्यवादियो एव हिन्दूवादियो से जानना चाहता हू कि आपकी विचारधारा के उदय के बाद इस । । जाति मे एकता कित बढ पायी है आज यह जाति पूर्वा जन्मजाति एव सम्प्रदायो मे बटती जा रही है। पहले छूआछूत अधिक थी परन्तु जातिवाद के नाम पर सवर्ण दलित दो ही भेद थे। सम्प्रदायो के नाम पर शैव शाक्त वैष्णव आदि कुछ एक सम्प्रदाय थे परन्तु आज छूआछूत के मिटते जाने के साथ साथ स्वेण दलित अतिदलित पिछडा अतिपिछडा आदिवासी महिला पुरुष युवा बाल धनिक निर्धन ग्रामीण नागरिक कितने ही खण्ड—खण्ड इस अभागी आर्यजाति के हो रहे हैं। छूआछूत की भावना भी पौराणिक भावना की देन है। मतो पथों की सख्या सहस्रो मे होगी। कहा एकता कर पाओगे ? जड को काटे बिना वृक्ष को नष्ट करने का दिवास्वप्न देखना बुद्धिमानी नहीं है। आज कौन वीर आर्य समन्ववादी व हिन्दूवादी है जो कर्मणा वर्ण व्यवस्था को आचरण मे लाने का साहस करता है ? कौन है जो आवश्यक होने पर भी आरक्षण रूपी लोभ मे फस जन्म जाति का प्रमाण पत्र लेने हेतु राज्य कार्यालयो मे चक्कर नहीं लगाकर यथायोग्यवाद के याय को अपनाने का साहस करता है हमने दलितोद्धार का प्रशसनीय कार्य किया है परन्तु आज कौन योग्यता के पक्ष मे (जाति व सम्प्रदाय व लिग के आधार पर धूर्तो के द्वारा प्रचलित आरक्षण रूपी भेदभाव के विरुद्ध) सघर्ष के लिए उद्यत है ? आज भी दलितोद्धार का कार्य पूर्ण नहीं हो पाया है परन्तु इस ओर तो स्वार्थी राजनेताओ का ध्यान वोट बैक बनाने की लोभ मे है भी परन्तु इस आरक्षण के कारण भावी गृहयुद्ध की स्पष्ट चेतावनी आज किसी को सुनाई नहीं दे रही। प्रतीत हो रहा है कि सारा देश साम्यवादी व अम्बेडकरवादी विचारधारा की मृगतृष्णा मे पागल हो रहा है तो कहीं गाधीवाद नेहरुवाद व हेडगोवारवाद के स्वर उठ रहे हैं। कहीं भी भगवद दयानन्द का वैदिक यथार्थवाद सुनाई व दिखाई नही द रहा है। कोई अभागा नही समझ पा रहा है कि वैदिक सत्य सर्वदा सर्वहितकारी है। मेरे भटकते हिन्दूवादिया अपन उन ग्रन्थो के दूषित पन्नो को जरा उलट कर देखो तो सही जिन्होने शूद्र व नारी को पशु से भी निकृष्ट बताकर अक्षम्य पाप किए है व इस दूषित राजनीति ने इस आर्यजाति को कभी एक न हो सकने वाले विखण्डन के कगार पर ला खडा किया है। आओ इन दोनो ही पाप प्रवृत्तियो और पापियो के मान मर्दन के लिए कटिबद्ध हो जाओ। आओ ऋषि दयानन्द प० लेखराम स्वामी दर्शनानन्द का शास्त्रार्थ युग पुन लाने का उद्योग करो। आओ ! स्वामी श्रद्धानन्द प० गुरुदत्त विद्यार्थी जैसी पीडा अपने हृदय मे उत्पन्न करो। कुछ लोगो की मान्यता है कि आर्यसमाज का जन्म ही ईसाइकरण की प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ है वे नहीं जानते कि आर्यसमाज प्रतिक्रियावादी नहीं बल्कि विशुद्ध वैदिक सत्य सनातन आदर्श का प्रस्तोता है जो सारे ससार के प्राणिमात्र को एक ईश्वर की प्रजा मानकर सबकी उन्नति चाहता है। कोई कोई आर्यसमाज को मात्र राष्ट्रभक्ति का प्रचारक मानते है वे यह भूल जाते हैं कि राष्ट्रभक्ति ही यदि परमधर्म है तो अफगानी जापानी पाकिस्तानी जर्मन सब हमसे अधिक धर्मात्मा हैं क्योकि उनमे हमारी अपेक्षा अपने देश के प्रति भक्तिभाव कही अधिक है। स्मरण रहे राष्ट्रभक्ति सब देशो के निवासियो का पृथक पृथक विषय है परन्तु धर्म सब देश सब काल मे एक सा ही माननीय है। एक बात यह भी ध्यान रखने योग्य है कि धर्म प्रवचन श्रवण वाद सवाद प्रदर्शन की ही वस्तु नही है बल्कि यह आचरण का विषय है। ससार का कोई भी व्यक्ति यदि शुद्ध सत्य आचरणवान है तो वह ही धर्मात्मा है चाहे वह बाह्य आडम्बरो से कुछ भी लगाव न रखता हो चाहे वह किसी मत सम्प्रदाय या देश का हो। सिद्धान्त बीज अवश्य है परन्तु फल आचरण ही है। यद्यपि धर्म सार्वदेशिक व शाश्वत है पुनरपि देश काल परिस्थिति मे उसका प्रचार करना भिन्न भिन्न पुरुषार्थ व शैली की अपेक्षा करता है। यथा – यदि हम वेद धर्म का प्रचार तालिबानो मे करने का प्रयास करे तो निश्चित ही सफलता सदिग्ध है जबकि वे भी प्रभु की ही सन्तान हैं जबकि भारत मे सहज है। इस बात से यह अवश्य स्पष्ट होता है कि कुछ सम्प्रदाय व देश इस कार्य के लिए अनुकूल भूमि तथा जलवायु रखते हैं और कुछ अति प्रतिकूल जबकि सर्वभूमि उस परमात्मा की ही है। यही कसौटी है जो कि हमे कौन वैदिक धर्म व आर्यसमाज के कितना निकट है और कितना दूर यह बतलाता है जिसे हमे अवश्य पहिचानना चाहिए। जो जितना जितना निकट है पहिले वह उतना उतना हमारा भाई है और उसको अपनाने के पश्चात उसकी अपेक्षा दूरी रखने वाले को भाई समझ सन्मार्ग पर लाने का उद्योग करना कोई पक्षपात नहीं बल्कि वास्तविकता है। आज वेद की दृष्टि मे मूर्तिपूजक अन्धकार मे डूबने वाला नादान भाई है तो गोहत्यारा गोली से मारन योग्य दुष्ट भाई है। दोनो प्रभु की सन्तान हाने से भाई अवश्य हैं परन्तु दोनो क अपराध का स्तर भी भिन्न है।

अन्त मे मै सभी आर्य भाइयो से निवेदन करूगा कि लेख के विस्तार की भी सीमा है। सक्षेप मे यह विचार लिखे है। आर्यसमाज के नाम पर आर्यत्व की विशुद्धता को मिटाने का अपराध हम नहीं करे। हर प्रकार के पाप का समर्थन क्षणिक एकता के लिए नहीं करे। हर सम्भव है इसके तात्कालिक लाभ प्रतीत हो। कुछ न हो तो आपको लोक प्रसिद्धि वा धर्मनिरपेक्षता वा हिन्दू गौरव जैसी उपाधिया भी मिल जाए परन्तु याद रखो इससे वैदिक धर्म मिट जाएगा ऋषियो के सिद्धान्त सदा के लिए समाप्त हो जाएगे और इस पाप का उत्तरदायी समस्त पाप ताप नाश के लिए जन्मा आर्यसमाज ही होगा। भावुकता आवेश पक्षपात मोह व लोभ से कभी सत्य का प्रकाश नही होता। और **न हि सत्यात परोधर्म** असत्य विचारो की स्थिति अग्रेजी चिकित्सा पद्धति जैसी क्षणिक सुख देने व रोगवर्धक ही होती है जबकि सत्य धर्म का प्रचार शल्यक्रिया वा प्राकृतिक आयुर्वेदिक पद्धति की भाति कष्टकारी प्रतीत होते हुए भी चिरस्थायी उन्नति व आनन्द का कारण होता है और **सत्यमेव जयते** यह भी नही भूलना चाहिए। हम सबको अपने अपने मन से देशकाल परिस्थिति क्षणिक हानि लाभ के विचार का त्याग यथोचित रूप से करके अपने अपने विचारो के प्रचार को विराम देकर जगतपिता परमात्मा के मार्ग चलने की उसी से प्राथना करनी चाहिए

श्रुतेन गमेमहि। मा श्रुतेन विराधिषि।

– प्रधान आर्यसमाज भीनमाल जनपद जालौर (राजस्थान)

(सामार परोपकारी मास जुलाई २००१ से)

विवाह में फिजूल खर्ची रोकें

– छोगमल चौधरी

इन दिनो हमारे समाज में विवाह के पावन संस्कार को जटिल, उत्साह रहित और मिथ्या प्रदर्शन का स्वरूप प्रदान कर दिया गया है। हर विवाह मे येन केन प्रकारेण, जिन्होने पैसा कमा लिया है, वह फिजूल खर्ची का रिवाज बढा देते हैं, इसका समाज के मध्यम वर्ग पर बहुत बुरा असर पडता जा रहा है। बेटी का विवाह उत्सव न रहकर मजबूरी में किया गया सर्वस्व निछावर का स्वरूप बनता जा रहा है। हमारे समाज का मूल मन्त्र तो यह रहा है कि सभी बन्धु समाज में प्रतिष्ठापन्न व सम्पन्नता युक्त बने रहे। अब इन सबको भुला दिया गया है। हर एक व्यक्ति झूठा प्रदर्शन करके अपने को अति विशिष्ट दिखाने का प्रयत्न कर रहा है। हमको यह नहीं भूलना है कि हम जो इस निरर्थक प्रदर्शन में पैसा फूंक रहे हैं इसको अन्य मध्यम वर्ग या आर्थिक रूप से कमजोर बन्धुओं की बेटियों के विवाह में सहारा देकर उनको भी चिन्तारहित बनाने मे अपना सहयोग कर सकते है। आज हम नयी–नयी समाज धातक प्रथाए बनाने मे अग्रणी होते जा रहे हैं। हम पूर्व पुण्यो से प्राप्त लक्ष्मी के वरदान रूप प्राप्त धन को बुरे कामो में लगा रहे हैं यह नहीं समझ रहे हैं कि इस प्रकार हम धन की देवी का अपमान कर रहे हैं। लक्ष्मी स्वरूप अपनी कन्याओं का आदर न करके दहेज लाने को मजबूर कर उनको यातना पहुचा रहे हैं। किसी न किसी को तो इस अनर्थकारी रिवाजों से बचाना ही होगा। मेरा विचार है कि औरों की तरफ न देखकर हम इस दहेज रूपी त्रासदी से मुक्ति दिलाने में पहल करें। नारी मात्र में जगदम्बा माता का निवास है, नारी आदि शक्ति है, हमारे शास्त्रों में अनेक उदाहरण हैं जब-जब आसुरी भावों की विश्व में प्रधानता हुई है तो आदि शक्ति ने कभी चण्डिका बनकर, काली बनकर, दुर्गा बनकर, मोहिनी रूप धारण कर असुरों का विनाश किया है। आज समाज के कर्णधार उसी आदिशक्ति स्वरूप कन्यारूपी जगदम्बा का अपमान कर रहे हैं। यह अशुभ भावना कि दहेज प्रचुर लाए तभी हम कन्या को बहू का दर्जा देगे। इस घातक विचार से समाज के लिए हम स्वयं विनाश को निमन्त्रण दे रहे हैं यह भूल रहे हैं कि इस आदिशक्ति की तो आराधना करनी चाहिए, वन्दना करनी चाहिए इसकी प्रसन्नता से ही तो हम सहज सुखी रह सकते हैं। अतः पुनरावृत्ति के दोष सहित मेरा तो बार-बार यही कहना है कि जो कन्या बहू बनकर हमारे घर में आए उसका सम्मान सही रूप से करना चाहिए दहेज में किसी प्रकार की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए।

कन्या का पिता स्वेच्छा से अपनी क्षमता अनुसार जो कुछ उपहार दे उसको तो स्वीकार कर लेना चाहिए तथा अधिक या कम का विचार न करें उसको प्रभु का प्रसाद मानकर ग्रहण करना चाहिए। एक बात मैं इन मातृशक्ति स्वरूपाओ को भी कहना चाहूगा कि सामाजिक नियमों के अनुसार गुरुजनों का सम्मान तो करना चाहिए परन्तु पैर नहीं छूने चाहिए वैसे ही थोडा सा मस्तक झुका करके नमस्कार कर लेना चाहिए। पुरुष मात्र के पैर छूना मैं तो उचित नहीं मानता हू पर कहीं कहीं पति के पैर छूने का विधान आता है तो मात्र अपने पति के ही पैर छूने चाहिए। मैं तो इसको भी जरूरी नही मानता हू। पैर छूने हो तो रिश्ते में ऊचे सासों, उम्र मे बडी ननदों या फूफिओ के पैर भले ही छू लो परन्तु पुरुष चाहे विद्वान् हो, सत हो, गुरुजन हो उनके पैर न छूकर मस्तक झुकाकर ही नमस्कार कर लेना चाहिए। इस देहज रूपी दानव का विनाश करने के लिए मातृशक्ति को ही आगे आना होगा। यह समाज के परिवार के और स्वयं के घर के लिए मगलप्रद रहेगा।

मिलनी चादी के सिक्कों की न लेकर रुपयों की लेनी चाहिए। ज्यादा पैकिग एव सजावट मे भी अधिक धन व समय का ह्रास होता है। बेटी को भी सम्मान देना चाहिए लेकिन अपने घर में सलाह बेटी से न लेकर बहू से अधिक लेनी चाहिए। बहू की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। बेटी के परिवार में माता–पिता को अपना हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। इससे बेटी सदैव अशान्त रहती है न कि सुखी।

मिलनी पहले के समय मात्र तीन हुआ करती थी। सौ दो सौ मिलनियां कई विवाहों में पुत्री के पिता से मांग कर दिलवाई जाती है। यह भी एक प्रकार की भिक्षुक वृत्ति है। किसी को उपहार देना हो तो वर का पिता अपने पास से दे दे मिलनी के गलत रिबाज को मिटाने के कुछ ठोस कदम उठाने होंगे, पहले चाहे समयानुकूल प्रथा रही हो कि कन्या का पिता बार-बार पुत्र के पिता को मिलाई दे परन्तु यह प्रथा आज के युग के लिए सही नहीं रही, आज सर्वत्र समानाधिकार के प्रयत्न हो रहे हैं। अत. कन्या के पिता को व वर के पिता को आपस में समानता का व्यवहार करना श्रेयस्कर रहेगा। पहले राजा वंशानुगत हुआ करता था, अब शासन प्रजा के द्वारा चुने हुए व्यक्ति करते हैं अतः सभी पुराने रिवाजो की अब सार्थकता नहीं रही हैं, सम्मान व सद्भाव तो पहले भी आवश्यक थे अब भी आवश्यक हैं।

अपनी शुभ कमायी को स्वय के लिए अधिक उपयोग न करके पाठशालाएं, मन्दिर, औषधालय, धर्मशालाएं, कुएं, बावडी आदि सर्वजन हितों के लिए अपनी आय का सदुपयोग करना चाहिए। अकाल के समय साथ मिलकर मनुष्यों के लिए अन्न व पशुओं के लिए चारा सुलभ करवाकर जनता के प्रिय बनना चाहिए। समाज में यश राजसत्ता द्वारा नही जनसत्ता द्वारा मिलता है। आज भी बहुत सारे धनी उद्योगपति विराजमान हैं। हम समाज से देश से गरीबी को दूर करने में सहायक हो सकते हैं इनका अनुकरण करके अन्य वैश्य समाजों के धनपति भी जनसेवा मे सहयोग कर सकते हैं, देश से गरीबी दूर कर सकते हैं। अब जो शक्ति धन व सामर्थ झूठे प्रदर्शन में व्यर्थ खर्च की जा रही है उसको जनहित में लगाया जा सकता है। एक बात और ध्यान में रखनी है कि विद्या का दुरुपयोग करने से ब्राह्मण वर्ग का सम्मान कम हो गया। शक्ति का दुरुपयोग करने मे क्षत्रिय वर्ग की अवहेलना होती चली गयी। इसी प्रकार अगर सम्पत्ति का दुरुपयोग वैश्य समाज करता रहा तो महाजन का विरद भी समाप्त हो जाएगा। अत. अब भी चेत जाने का समय है कि हम अपनी सम्पत्तियों को जनहित में लगाकर स्वत्त्व की रक्षा करें। सीधे अर्थों में जनसेवक बनकर जनसत्ता द्वारा प्राप्त यश को कायम रखे।

– ग्राम बहल हिसार

पीर की मजारों से आतंकवाद का नया खतरा

देश की राजधानी दिल्ली से लगे हरियाणा राज्य मे पाकिस्तान की खुफिया एजेन्सी आई०एस०आई० की गतिविधियों से नया खतरा उत्पन्न हो गया है। अभी तक राज्य में आतकवाद का कोई संकट नहीं था। इसका मुख्य कारण यही रहा है कि आतकवादियो ने हरियाणा को अपना निशाना ही नहीं बनाया था परन्तु अब जो कुछ सूचनाए हरियाणा की खुफिया एजेन्सी को मिलीं हैं उनसे सरकार काफी बेचैन हो उठी है और इसलिए पिछले दिनों राज्य मे रेड एलर्ट तक घोषित कर दिया गया। राज्य में आतंकवाद की यह मुसीबत बडे पैमाने पर, दनादन बनी पीर की मजारों के कारण उत्पन्न हुई है। इस राज्य के उत्तरी क्षेत्र में इनी–गिनी मजारें ही थीं वह भी जहां सूफी सन्त दफन हुए थे। लेकिन अब इन पीर की मजारों का हिसाब लगाना ही मुश्किल हो गया है। हरियाणा के अम्बाला, पानीपत, करनाल, कैथल, कुरुक्षेत्र, पंचकूला, यमुनापार आदि जिलों में पिछले एक दशक में मजारों की भरमार हो गई है। यह नवनिर्मित मजारें आई०एस०आई के एजेन्टों के लिए सम्पर्क सूत्र के रूप में इस्तेमाल हो रही हैं। कुछ क्षेत्रों से, राज्य की खुफिया एजेन्सियों को यह जानकारी मिली है कि इन मजारों पर लकीरों, चिन्हों आदि की सांकेतिक-भाषा में पाक–आतंकवादियों के लिए सन्देश अंकित किए जाते हैं। इस प्रकार यह मजारें आई०एस०आई० एजेण्टों के लिए सम्पर्क सूत्र के रूप में मददगार साबित हो रही है।

इसके अलावा उन मजारों की सफाई, सेवा आदि के लिए कोई न कोई व्यक्ति तुरन्त जुड जाता है। आई०एस०आई ने कई लोगों को गण्डा, ताबीज, दुआ-दवा की ट्रेनिंग भी दिलाई है और ऐसे प्रशिक्षित लोगों को इन मजारों पर तैनात कर दिया है। जैसे-जैसे क्षेत्रीय जनता इन स्थानों पर जुडने लगती है – वे झाड–फूंक, दुआ-ताबीज का धंधा शुरु कर देते हैं और इसी बहाने वे लोगों से सम्पर्क साधते हैं। जिन लोगों को फायदा हो जाता है उनसे यह अनुरोध किया जाता है कि वे अपने खेतों या व्यापारिक संस्थानों में पीर की मजार का निर्माण कराएं। इस तरह जी०टी० रोड के किनारे अनेक खेतों पर मजारें बन गयी है। कई मजारें तो अचानक ऐसी बन गयी हैं, जिनके बारे में यही पता नहीं चलता कि उन्हें बनवाया किसने है ? कई जगह रातों-रात मजारें बनी और सुबह लोगों ने देखा कि ईंटो पर नीला कपडा पड़ा हुआ है।

जी०टी० रोड के आसपास तथा तेल पाईप लाइनों के पास बनायी गई यह मजारें सुरक्षा के लिए खतरा मानी जा रही है। सुनसान स्थानों पर यह मजारें बनने से रात–दिन वहां कौन–कौन आता है, इसकी ओर भी किसी का ध्यान नहीं जाता। किसी को जल्दी शक भी नहीं होता और इससे आई०एस०आई० के एजेण्टों को अपनी गतिविधियां संचालित करने में बेहद सहायता मिलती है। इन सब तथ्यों के प्रकाश में आने के बाद हरियाणा सरकार चिंतित हो उठी है। साभार (विसके)

स्वास्थ्य चर्चा

प्राण दाता नींबू

– सावित्री सिघल

जीवन मे कभी कभी ऐसी घटनाए होती है जिन पर एकाएक विश्वास नहीं होता। अपने साथ घटित ऐसी ही एक सच्ची घटना प्रस्तुत कर रहीं हू। आज से लगभग ६ वर्ष पहले मे ऋषि मेले मे टकारा गई थी। वहा से लौटते समय जब बस कच्छ के समीप पहुची एक भौंरा उडता हुआ आया और मेरी बाह पर काट कर उड गया। मैंने उसी समय उस स्थान को खूब दबा दबाकर डक निकालने का प्रयास किया चाकू जो मेरे पास था रगडा दियासलाई का मसाला लगाया और किसी सहयात्री की दी हुई दवाई भी लगाई। उसमे जलन होती रही और गुलाबी से रग का पानी भी रिसता रहा। इलाज भी काफी किया पर कुछ विशेष लाभ न हुआ। आश्रम मे ही एक माता ने बताया कि उनके साथ भी ऐसी घटना घटी थी जिससे एक साल बाद आप्रेशन कराने पर पीछा छूटा। यह जानकारी होने पर मैं दिल्ली चली गई जहा आप्रेशन करके सफाई कर दी। दवाईयो से जख्म भी भर गया। एक दो महीने बीते कि फिर से पानी रिसना आरम्भ हो गया। सदेह हुआ कि कहीं अन्दर ही अन्दर नासूर तो नहीं बन गया है या कन्सर है। बेहोश करके ... आप्रेशन किया गया पहले से बडा पर निकला कुछ नहीं लेकिन फिर दो माह बाद रिसाव शुरू हो गया। बारिश के दिनो मे कुछ सूजन भी आ जाती थी और दर्द भी बढ जाता था। इसी तरह चार वर्ष बीत गए। एक दिन मैंने एक व्यक्ति को अपने साथी से कहते सुना कि यदि ततैया मधुमक्खी या बिच्छु काट ले तो उस स्थान पर नींबू रगडने से डक गल जाता है और जहर का कोई प्रभाव नहीं पडता मैंने घर पहुचते ही अपनी बाह पर नींबू रगडा थोडी देर बाद फिर लगाया तो मुझे जलन मे कमी महसूस हुई। फिर तो दिन में तीन चार बार नींबू लगाने लगी जिससे चार पाच दिन में पानी रिसना बद हो गया। दर्द और जलन भी समाप्त हो गई। इस प्रकार जो तकलीफ दो दो बार आप्रेशन कराने दवाइया खाने से ठीक नहीं हुई वह नींबू के लगाने से ठीक हो गई। नींबू के जख्म उपचारक गुण से यह मेरा प्रथम परिचय था। दूसरी घटना भी कम आश्चर्यजनक नहीं है। मेरे बेटे का कान काफी दिनो से बह रहा था कुछ ऊचा भी सुनने लगा था। दिल्ली मे कई बड़े डाक्टरों को दिखाया सफाई भी कराई टैस्ट भी हुए और महगी से महगी एन्टीबाइटिक भी खाई पर कुछ न हुआ। रोग का निदान किया गया कि कान मे इन्फेक्शन है फगस हो गई है। ठीक होना कठिन है। बेटा बड़ा परेशान था। मेरे से मिलने के लिए आश्रम मे आया। रात को अचानक ही दर्द बढ गया और पीव के साथ खून भी आने लगा उसने अपने साथ लाई हुई डालने व खाने की दवाइया इस्तेमाल की। पर खून निकलना बन्द न हुआ। बार बार रुई खून से भर जाती। अन्त मे मैंने नींबू लेकर कान के ऊपर नीचे मुह पर गर्दन मे मल दिया। डर के कारण कान के भीतर तो उसने डालने न दिया पर ऊपर बार बार मलती रही। आधे घटे के बाद खून आना कुछ कम हुआ। दर्द भी हल्का पडा और रात को २ बजे बेटे को नींद आ गई। आश्चर्य की बात है कि उस समय जो रुई लगाई थी वह सुबह बिल्कुल साफ निकली उसका रोग जो डाक्टरो के मतानुसार लाइलाज था नींबू के प्रयोग से ठीक हो गया। सुनाई भी ठीक पडने लगा। इस प्रकार कान के रोगो मे भी नींबू के प्रभावकारी होने का प्रमाण मिला।

गले के रोगो की भी यह औषधि है। गले के खराश या टान्सिल का बढना बडी आम पर कष्ट साध्य बीमारी है। टान्सिल तो आप्रेशन के बाद भी बढ जाते है। यदि नियमित रूप से कुछ दिन प्रयोग करे तो गला तो ठीक होगा ही हल्का बुखार भी छूट जाएगा।

१ आधा गिलास पानी मे दो चम्मच चीनी छोटा आधा चम्मच काला नमक और ३–४ काली मिर्च पीस कर डाले उसे ढाक कर हल्की गैस पर पकाए। जब ५–६ उबाल आ जाए तो आधा नींबू निचोड कर गैस बन्द कर दे और सुहाता पिये या पिलाए। रोग की तीव्रता मे दिन मे तीन बार दे। बाद मे ४–५ दिन तक साय प्रात दे।

२ यदि बुखार के साथ खासी भी बहुत ज्यादा है तो आधा गिलास पानी मे एक छोटा चम्मच अजवायन आवले के जितना गुड आधा नींबू बारीक काट कर डाले और धीमी गैस पर ढाक कर पकाए। जब पानी आधा रह जाये तो छानकर चुटकी भर काला नमक डालकर पिये। यह मलेरिया की अचूक दवा है।

३ हाई ब्लड प्रेशर (बी०पी०) मे एक गिलास पानी मे एक नींबू (यदि नीबू बडा हो तो आधा) २–३ बडे चम्मच बूरा चुटकी भर काला नमक पोदीना अथवा दही मे डालने वाला मसाला डालकर अच्छी तरह मिलाकर छोटी छोटी घूटो में १५ मिनट तक पिये। इसको पीने से ही बी०पी० सामान्य हो जाता है। जब भी बी०पी० बढता महसूस हो पिये। चार पाच दिन मे स्वस्थ हो जाएगे।

४ घुटनों मे लगातार दर्द रहता हो सूजन भी आ गई हो चलने फिरने मे कष्ट होता हो तो प्रात स्नान के उपरान्त आधा नींबू लेकर दोनो घुटनो पर बार बार मले रगडे। सूजन तो उतरेगी ही चलने फिरने मे परेशानी नहीं होगी थकान भी दूर होगी। शरीर के किसी भी भाग मे किसी भी अग पर यदि सूजन हो तो नींबू को छिलके सहित खूब मलें जब तक कि नींबू का छिलका भी बहुत मुलायम न हो जाये। रोग की तीव्रता मे दिन मे तीन चार बार मले।

नींबू अनेक रोगो का एक उपचार है जहा औषधि विज्ञान भी हार जाता है। वहा भी नीबू आश्चर्यजनक परिणाम देता है। आरोग्य की कुजी आपके पास है इसे जानिए मानिए और अपनाइए।

– सावित्री सिघल कुटी २०४ वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा, नई दिल्ली के तत्वावधान में अभिनन्दन समारोह

रविवार दिनाक २३ सितम्बर २००१ को आर्य समाज ग्रेटर कैलाश १ मे डा० स्वामी सत्यम जी जिनकी अध्यक्षता मे मुम्बई मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन २३ मार्च २००१ से २६ मार्च २००१ तक बडी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ उनका अभिनन्दन दक्षिण दिल्ली की सभी आर्य समाजो की ओर से किया गया। श्री सोमदत्त महाजन प्रधान आर्यसमाज सी ब्लाक जनकपुरी व उनके अन्य अधिकारियो ने भी स्वामीजी का अभिनन्दन किया। इस सम्मेलन के सयोजक श्री कै० देवरत्न जी आर्य ने भी इस अभिनन्दन समारोह मे भाग लेना था लेकिन किसी विशेष कार्यक्रम मे उन्हे मॉरिशस जाना पडा इसलिए वह इस समारोह मे भाग नहीं ले सके। इस समारोह की अध्यक्षता श्री कृष्ण लाल जी सिक्का प्रधान दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा ने की। मुख्य अतिथि पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती थे और विशिष्ट अतिथि श्रीमती शकुन्तला आर्या पूर्व महापौर दिल्ली थी। अन्य आर्य नेता श्री वेदव्रत शर्मा प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा श्री रामनाथ सहगल मन्त्री डी० ए० वी० कॉलेज कमेटी एव श्री विजय गुप्त साहित्यकार श्रीमती सरला पाल ने अपने अपने विचार रखे। श्री डा० स्वामी सत्यम जी ने आर्यसमाज के आगामी कार्यक्रम की पूरी रूपरेखा बताई और टेलिविजन मे आस्था चैनल पर मुम्बई से जो आर्य समाज का वेद प्रचार का कार्यक्रम आ रहा है उसके लिए अपील की। दक्षिण दिल्ली की सभी आर्य समाजो की ओर से उन्हे एक लाख रुपए की सहायता राशि भेट की गई। जिसका विवरण निम्नाकित है।

श्री डॉ० सत्यम जी व कैप्टन देवरत्न जी के स्मृति चिन्ह स्वामी जी को भेट किए गए। श्री पुरुषोत्तम लाल जी गुप्त वरिष्ट उप प्रधान दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा ने बताया कि आर्यसमाजो से किस प्रकार आस्था चैनल के लिए धन एकत्रित किया गया। श्री कृष्ण लाल जी सिक्का प्रधान सभा ने सबका धन्यवाद किया। आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट–१ की ओर से बडे सुन्दर लगर की व्यवस्था की गई। मच का सचालन श्री रोशन लाल गुप्त महामन्त्री सभा ने किया।

आस्था चैनल टी० वी० पर वेद प्रचार के लिए प्राप्त सहायता की सूची

१	आर्यसमाज एव स्त्री आर्यसमाज सरिता विहार नई दिल्ली	३०००० /–
२	श्री कृष्ण लाल जी सिक्का प्रधान दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा नइ दिल्ली	११००० /–
३	आर्यसमाज लाजपत नगर नई दिल्ली	१०००० /–
४	आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट–१ नई दिल्ली	१०००० /–
५	आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट–२ नई दिल्ली	१०००० /–
६	आर्य समाज अमर कालोनी नई दिल्ली	१०००० /–
७	आर्य समाज लोधी रोड (जोर बाग) नई दिल्ली	१०००० /–
८	आर्य समाज सरोजिनी नगर नई दिल्ली	५,००० /–
९	रतन चन्द आर्य पब्लिक स्कूल आर्यसमाज सरोजिनी नगर नई दिल्ली	५,००० /–
१०	आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी नई दिल्ली	५,००० /–
११	आर्यसमाज व स्त्री आर्यसमाज गोविन्दपुरी नई दिल्ली	४२०० /–
१२	डेरा आर्य समाज महरौली दिल्ली	३१०० /–
१३	आर्य पब्लिक नरसरी स्कूल कृष्ण नगर दिल्ली ५१	११००० /–
१४	आर्यसमाज डिफेन्स कोलोनी नई दिल्ली–२४	५००० /–
१५	आर्य समाज कालका जी नई दिल्ली	५००० /–

– रोशनलाल गुप्त महामन्त्री दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा नई दिल्ली

जनहित कार्यों से सगंठन शक्ति बढ़ती है

रविवार ३० सितम्बर २००१ को आर्यसमाज सी ब्लाक जनक पुरी मे मुफ्त जाच शिविर और दिल के दौरे विषय पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। रक्त चाप रक्त शुगर एव ई०सी०जी० की नि शुल्क जाच की गई और इस मे २३० नर नारियो ने लाभ उठाया।

इस कार्यक्रम का उदघाटन श्रीमान रजन ढीगरा एक प्रमुख रोटेरियन और जो इन्जीनियरिंग के व्यवसाय मे सलग्न है के कर कमलो द्वारा किया गया। श्री ढीगरा ने इस प्रयास की भूरि भूरि प्रशसा की और अपने विचार प्रगट करते हुए रोटेरी आन्दोलन का उल्लेख किया जिस का मुख्य उद्देश्य मानव मात्र की सेवा और समाज मे ऊचे मूल्यो का अनुसरण एव स्थापना करना है। श्री महाजन जी की जनकपुरी के लिए एम्बूलैस की आवश्यकता के सन्दर्भ मे श्री ढीगरा ने आश्वासन दिया कि वह इस दिशा मे रोटेरियनज की ओर से भरपूर प्रयास करेगे।

विचार गोष्ठी का सचालन डॉ कमल परवाल एम०एस० द्वारा किया गया और इस मे डॉ० अनिल लाल डॉ० शैलेन्द्र गौड एव आहार विशेषज्ञ श्रीमति रशिम आहुजा ने भाग लिया। डॉ० उपासना भगत ने विशेष योगदान दिया। गोष्ठी मे हृदय विकारो के बारे मे अनेक प्रश्न किए गए और मान्य डाक्टरो ने सब का समाधान किया। अन्तिम निष्कर्ष यह निकला कि एक नियन्त्रित दिनचर्या शारीरिक व्यायाम एव यौगिक क्रियाओ द्वारा इस जटिल समस्या से बचा जा सकता है। यहा पर यह उल्लेख करना अतिशयोक्ति नही होगी कि यह आयोजन डॉ० चन्द्र मोहन जी भगत के प्रयास से सम्भव हुआ।



(१) चिकित्सा शिविर के उद्घाटन समारोह मे कैप्टन देवरत्न का स्वागत करते हुए श्री सोमदत्त महाजन।
(२) आर्यसमाज सी ३ ब्लाक जनकपुरी मे चिकित्सा शिविर का उद्घाटन समारोह

इस अवसर पर आर्यसमाज के प्रधान श्री सोमदत्त महाजन ने अपनी समाज की गतिविधियो का उल्लेख किया उन्होने उडीसा तूफान के मध्य वहा जाकर आर्यसमाज की ओर से पीडित क्षेत्र मे सहायता प्रदान की और गुजरात के भूकम्प मे यहा से धन एकत्रित करके दो लाख रुपये की राशि प्रेषित की जिससे वहा छ मकान भी निरमित किए जा रहे हैं।

श्री महाजन जी के विशेष आमन्त्रण पर कैप्टन देवरत्न उप प्रधान सार्वदेशिक सभा मुम्बई से पधारे और उन्होने अपने उदबोधन मे आर्यसमाज के छटे नियम का उल्लेख किया कि आर्यसमाज का उद्देश्य ससार का उपकार करना है और इस प्रकार का आयोजन जन साधारण के हित के लिए एक महान कार्य है और इस शिविर मे भाग लेने वालो की सख्या देखते हुए इस की प्रशसा की।

अन्तत मुस्कान–भगत होस्पीटल डी० ब्लाक जनकपुरी और सभी डाक्टरो एव टैक्नीशियन्स का स्वागत और धन्यवाद द्वारा इस आयाजन का समापन हुआ।

इस समारोह के आयोजन मे सर्वश्री रामजीदास छोकरा ब्रह्मदत्त एव मन्त्री श्री रमेश चन्द्र का विशेष सहयाग रहा।

<u>वैदिक डायरी समीक्षा</u>

वैदिक डायरी २००२

मूल्य – ३०/– रुपये मात्र

कैलेण्डर डायरी का लक्षण समीक्षा के दायरे मे नही आता परन्तु फिर भी **मधुर प्रकाशन २८०४ आर्यसमाज मन्दिर सीताराम बाजार दिल्ली फोन ०११ ३२३८६३१** द्वारा वर्ष २००२ के लिए प्रकाशित वैदिक डायरी को देखते ही मन प्रसन्न हो उठता है। इस डायरी की विशेषताओ का उल्लेख आवश्यक है। सर्वप्रथम इसमे आर्य सन्यासियो के नाम और दूरभाष प्रकाशित किए गए है। इसके बाद आर्य नेताओ और कर्मठ कार्यकर्ताओ के नाम और दूरभाष। आर्य वैदिक विद्वानो और आर्य भजनोपदेशको के नाम और दूरभाष की अलग अलग सूची प्रकाशित की गई है। यह सूचिया सम्पूर्णता को तो प्राप्त हो ही नही सकती थी फिर भी सम्पादक श्री मधुर प्रकाश इस अद्वितीय प्रयास के लिए साधुवाद के पात्र है। उनका सकल्प है कि आने वाले वर्षो मे जैसे जैसे और नाम आदि प्राप्त होते जाएगे उन्हे भी इसमे जोडने का क्रम जारी रहेगा। आर्य पर्वो तथा सरकारी अवकाश की सूची भी प्रकाशित की गई है। इसके अतिरिक्त सार्वदेशिक सभा से सम्बद्ध सभी दश विदेश की आर्य प्रतिनिधि सभाओ के पते तथा वैदिक विचारो के प्रमुख पत्र पत्रिकाओ के नाम भी दिए गए है। अन्त मे ऋषि ऋण व्यक्त करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुयायी एव महान शिष्यो को आर्यसमाज के स्तम्भ शीर्षक के अन्तर्गत सचित्र प्रकाशित किया गया है। डायरी के एक पृष्ठ को दो दिनो मे बाटा गया है और प्रत्येक पृष्ठ के नीचे वैदिक सिद्धान्तो पर आधारित प्रेरक उक्तिया प्रकाशित की गई है। इन कारणो से इस डायरी को डायरी न समझ कर आर्यसमाज सगठन का सक्षिप्त परिचय समझना चाहिए।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि आने वाले वर्षो मे यह डायरी आर्यसमाज के विशाल स्वरूप की तरह अपना आकार एव सामग्री बृहद् रूप से आर्यसमाज तक पहुचाएगी। डायरी हार्ड बोन्ड मे आकर्षक रगीन प्रकाशन के कारण आधुनिक युग की एक उत्तम कृति लगती है।

इस प्रकाशन मे प्रत्यक्ष परोक्ष सहयोग करने वाले समस्त आत्माओ के लिए शुभकामनाए।

विमल वधावन एडवोकेट



केन्द्र सरकार मे नव नियुक्त मन्त्री श्री वेद प्रकाश गोयल का मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सपत्नीक सम्मान समारोह आयोजित किया गया। श्री गोयल की धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रकान्ता गोयल विधानपरिषद की सदस्या हैं। इस अवसर पर मुम्बई के गणमान्य व्यक्ति कैo देवरत्न आर्य श्री मिठाई लाल जी श्री सतीश चन्द्र जी तथा अन्य गोयल दम्पत्ति के साथ।

१००१ पारिवारिक यज्ञ - एक अभियान

यज्ञ हर काल मे श्रेष्ठतम कर्म है चाहे वह वैदिक काल हो या आधुनिक काल। जिस तरह वेदो का महर्षि दयान द सरस्वती ने आधुनिक काल मे पुनरुद्धार किया उसी तरह उन्होने यज्ञ के वैदिक स्वरुप को दुनिया के सामने रखा। आर्यसमाज रामनगर लातूर महाराष्ट्र ने स्वo गोविंदलालजी बाहेती की प्रथम स्मृति मे १००१ परिवारों मे यज्ञ करने का सकल्प लिया है और उसकी शुरुआत बडे ही क्रान्तिकारी ढग से प्रारम्भ हुई है। इस सकल्प को पूरा करने के लिए आर्यसमाज रामनगर लातूर की ओर से ३० पुरोहित स्वय स्फूर्ती से इस कार्य मे जुट गए हैं। हर पुरोहित को अलग अलग विभाग मे नियुक्त किया गया है। पुरोहित के साथ एक सहायक (आर्य समाज का सदस्य) होता है वह यज्ञ मे पुरोहित की सहायता करता है। जो परिवार इसके लिए तैयार होता है वहा पुरोहित और सहायक अपनी आवश्यक वस्तुओ के साथ पहुच जाते हैं। यज्ञ मे उस परिवार और आसपास के अनेक परिवार सम्मिलित होते है। यज्ञ सक्षिप्त व दैनिक यज्ञ के रूप मे किया जाता है। १० या १५ मिनिट का प्रवचन किया जाता है। जिसमे यज्ञ के शुद्ध सामाजिक और धार्मिक स्वरुप को रखा जाता है। साथ मे सस्कारो पर भी विचार रखे जाते हैं। इस यज्ञीय कर्म मे यह बात ध्यान मे रखी जाती है कि यज्ञ विधि मे कोई आडम्बर न हो। यज्ञ के यजमानो पर दक्षिणा के लिए कोई जोर नही डाला जाता। इस तरह हर पुरोहित दयानन्द के इस मिशन को पूरा करने मे लगा है। यज्ञ के इस सरल और शुद्ध स्वरुप को देखकर लोग इतने प्रेरित हो रहे है कि एक यज्ञ करने पर अन्य ४–५ परिवार यज्ञ के लिए प्रेरित हो रहे हैं। हमने इन तीन महीनो मे १००१ यज्ञो का सकल्प लिया है। जो आज के अनुभव से ऐसा लगता है कि यह उपक्रम दो ढाई महिनो मे ही पूरा हो जायेगा।

– डॉo चन्द्रशेखर लोखडे विद्याभास्कर
व्यवस्थापक यज्ञ अभियान
सीताराम नगर लातूर (महाराष्ट्र)

आर्यसमाज पश्चिम पुरी नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज पश्चिमपुरी मे सप्ताहभर से चलाए जा रहे वार्षिक वेद प्रचार उत्सव के समापन दिवस पर श्रोताओ ने वैदिक विद्वानो के उत्तम विचारो के साथ गुरुकुल बहादुरगढ से आचार्य राजजी सहित ब्रह्मचारिणियो के सुमधुर भजनो एव सस्कृत की गीतिकाओ का आनन्द लिया। उक्त कार्यक्रम बुधवार प्रात ५ बजे १६ सितम्बर २००१ प्रभातफेरी के साथ प्रारम्भ हुआ। लोगो मे असीम उत्साह था। दिनाक २० से २२ तक प्रतिदिन प्रात व साय श्रीमती सुदेश आर्य के मनोहर भजन व श्री गणेष वेदालकार के ब्रह्मत्व मे ऋग्वेद शतक यज्ञ व वेद कथा का लाभ जनता ने उठाया।

रविवार को वार्षिक वेद प्रचार उत्सव का समापन धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

प्रसाद व ऋषि लगर की व्यवस्था सर्वश्री ओमप्रकाश भाटिया उपप्रधान विश्वनाथ श्री भगवान दास गोरी व ईश्वरचन्द गुप्ता जी ने बडे सुचारु रूप से किया।

मादीपुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक भोलाराम गगवाल ने नेताओ पर कडा प्रहार करते हुए कहा कि वर्तमान चाटुकार नेताओ ने राष्ट्रहित की चिन्ता करनी छोड दी है। जबकि सन्यासी होते हुए भी भारत के स्वाधीनता सग्राम मे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वाधीन भारत का प्रथम उद्घोष करते हुए अनेक लोगो को क्राति की प्रेरणा दी। इस मौके पर विख्यात वैदिक विद्वान डाo महेश विद्यालकार ने कहा कि धर्मस्थल हमे आस्तिक बनने की प्रेरणा देते है। भारतीय चिंतन मे आर्यसमाज द्वारा प्राणीमात्र के उपकार करने की भावना को सर्वोपरि बताया गया है। इस मौके पर धर्ममुनि दुग्धारी वैदिक विद्वान गणेश विद्याशकर स्वामी शिवमुनि वेदप्रचार मडल पश्चिम दिल्ली के महामन्त्री आजाद सिह आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम के अन्त मे हमारे युवा मन्त्री श्री राजीव भटनागर द्वारा दानदाताओ व वक्ताओ के धन्यवाद व प्रधान श्री लाजपत राय आर्य द्वारा सभी अधिकारियो व अतरग सदस्यो के धन्यवाद शान्तिपाठ व ऋषि लगर के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

– राजेन्द्र दुर्गा

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज सैक्टर ६–६ए गुडगाव का प्रथम वार्षिक उत्सव दिनाक १ १० २००१ से ७ १० २००१ तक बडी धूम धाम से मनाया गया।

समारोह मे उच्च कोटि के विद्वान डाo आचार्य सत्यव्रत राजेश हरिद्वार एव अनेक स यासी महात्मा एव भजनोपदेशको ने अपने विचार व्यक्त किए।

यह उत्सव गुडगावा शहर की सभी १२ आर्यसमाजो के पूर्ण सहयोग एव सम्मलित रूप मे मनाया गया जिसमे प्रभात फेरी ३० सितम्बर रविवार प्रात ६ बजे से ७ बजे तक निकाली गई।

– अमीर चन्द श्रीधर
३२/६ रतन गार्डन
नई कालोनी मोड गुडगाव १२२००१
फोन ६३७६६०

राष्ट्रीय गौरक्षा महा सम्मेलन

जैसा की विदित है पूरे मेवात मे गौ हत्या बडे पैमाने पर हो रही है। हजारो की सख्या मे सवेरे होने से पहले गाए काट दी जाती हैं। इन सब पर पूर्ण अकुश लग सके। इस विचार को लेकर एक राष्ट्रीय गौरक्षा महासम्मेलन का आयोजन आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात एव हरियाणा राज्य गौशाला सघ के द्वारा नई अनाज मण्डी पुनहाना मे ७ अक्तूबर २००१ को किया गया। इस सम्मेलन मे धार्मिक व राजेतिक नेताओ के विचारो से जनता ने लाभ उठाया।

– आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात
फिरोजपुर झिरका (गुडगावा)

वैदिक राष्ट्र चेतना महायज्ञ

महर्षि दयानन्दार्ष गुरूकुल (ब्रह्माश्रम) वैदिक सस्कृत महाविद्यालय राजघाट (नरौरा) बुलन्दशहर २०२३६३ (उ०प्र०) आर्यावर्त्त के पावन प्रागण मे अष्टम वार्षिकोत्सव एव वैदिक राष्ट्र चेतना महायज्ञ दिनाक २९ ३० ३१ अक्टूबर को आयोजित किया जा रहा है।

इस अवसर पर गुरुकुल के ऋषि कुमारो द्वारा वेदपाठ भाषण शास्त्रार्थ धार्मिक प्रश्नोत्तरी सस्कृत सम्भाषण श्लोकोच्चारण व्यायाम–योगासन स्तूप निर्माण अग्नि के गोले से निकलना तथा अन्य शक्ति प्रदर्शन – हाथ से काच पीसना सरिया मोडना गाडी रोकना गाडी सीने से निकलवाना आदि आदि मनमोहक कार्यक्रम देखने को मिलेगे।

अत आप अपने इष्ट मित्रो सम्बन्धियो परिवारीजनो सहित अधिक से अधिक सख्या मे उपस्थित हो वैदिक राष्ट्र चेतना महायज्ञ की सफलता हेतु तन मन धन से सात्विक सहयोग प्रदान कर पुण्य के भागी बने।

कार्यक्रम – प्रात ८ बजे से ११ बजे तक यज्ञ प्रवचन मध्याह्न २ बजे से ५ बजे तक विविध सम्मेलन। रात्रि ८ बजे से ११ बजे तक भजन प्रवचन आदि के कार्यक्रम सम्पन्न होगे।

घर-घर में यज्ञ का आयोजन

आर्यसमाज की विचार धाराओ से प्रभावित नवयुवको ने उत्तर प्रदेश के एटा जिले के हिम्मतपुर काका मई गाव मे दो वर्ष पूर्व एक सस्था आर्य युवा जागृति परिषद् का गठन कर युवाओ मे बढती बुराइयो को दूर करने का वीणा उठाया है। इस के नवयुवक बीडी सिगरेट शराब गुटखा मास व जुआ द्वारा होने वाली हानियो की ओर लोगो का ध्यान आकृष्ट करते हैं तथा प्रत्येक अमावस्या व पूर्णिमा को गाव के किसी एक परिवार मे सामूहिक यज्ञ करते हैं जिससे लोगो मे आर्यसमाज के प्रति श्रद्धा पैदा हो रही है तथा नई पीढी को एक सही दिशा प्राप्त हो रही है। इस पुनीत कार्य को आगे बढाने मे श्री प्रदीप एडवोकेट श्री मनोज आर्य श्री जगवीर सिह प्रधानाचार्य श्री राम गोपाल श्री माया प्रकाश व श्री जय प्रकाश शास्त्री का भरपूर सहयोग प्राप्त हो रहा है।

– धर्मेन्द्र कुमार आर्य अजानपुर
प्रेस सचिव
आर्य युवा जाग्रति परिषद्

घर घर मे हिन्दी पहुचाओ राष्ट्रभाषा का सम्मान कराओ।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 14-10-2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 93/2001
R.N. No. 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No. U (C) 93/2001 in NDPSo on 11/12 -10- 2001

नेपाल में जहरीले, उत्तेजक तथा विद्वेषपूर्ण पोस्टरों की भरमार

'हिमालयस्तान' इस्लामी देश बनाने की साजिशों से शांतिभंग की आशंका

काठमाण्डू (विसके)। हिमालय की गोद मे बसे शातिप्रिय नेपाल को, जो शाही परिवार की सामूहिक हत्या के झटके से अभी पूरी तरह उबर भी नहीं सका है, अशाति की लपटो में झोकने की नापाक साजिशे की जा रही हैं। 'वर्ल्ड इस्लामिक स्टूडेण्ट अण्डरग्राउण्ड फ्रन्ट' नामक सगठन ने काठमाण्डू मे बडे पैमाने पर ऐसे भडकाऊ पोस्टर लगाए जिन्हें देखकर स्थानीय जनता क्रुद्ध हो उठी और इन पोस्टरों के टुकडे-टुकडे कर डाले।

इन अत्यन्त जहरीले, उत्तेजक, विद्वेषपूर्ण पोस्टरों में नेपाल के मुस्लिम बहुल जिलों को मिलाकर 'हिमालयस्तान' नाम का अलग मुस्लिम देश बनाने की धमकी दी गई है। पोस्टरों में ओसामा बिन लादेन का फोटो और वीर ओसामा बिन लादेन जिन्दाबाद, मुल्ला ओमर जिन्दाबाद, इस्लाम-एकता जिन्दाबाद' के नारे भी अकित हैं। काठमाण्डू की मुख्य सडकों पर, दीवारों पर चस्पा इन पोस्टरों से जनता में सनसनी फैल गई। इन पोस्टरों में नेपाल को हिमालयस्तान बनाने की माग के साथ-साथ मुस्लिमों का आह्वान किया गया है कि वे हिन्दुओं तथा बौद्धो पर जघन्य जुल्म ढाकर उन्हें या तो मुसलमान बनने या फिर नेपाल छोडकर भाग जाने के लिए बाध्य करे।

पोस्टरों में कहा गया है कि जैसे भारत को विभाजित कर पाकिस्तान बनाया गया था, वैसे ही नेपाल के सुन्सरी, सप्तरी, रौतहट, पर्सा, बारा आदि जिलों को मिलाकर अलग इस्लामीराज्य (हिमालयस्तान) बनाने की घोषणा की जाएगी। काफिरों को हम अपनी ताकत दिखा देंगे। तराई क्षेत्रो के अन्य धर्मावलम्बी अगर अल्लाह का आदेश मानकर इस्लाम धर्म ग्रहण नहीं करते तो उन्हें कोडा मार–मारकर, यातनाए देकर खदेड देंगे। नेपाली सेना में ५० प्रतिशत मुस्लिमों की भर्ती की जाए, नेपाल ससद में कम से कम ३० प्रतिशत प्रतिनिधत्व मुस्लिमों को दिया जाए, तराई के इस्लाम प्रभावित जिलों में उर्दू को राष्ट्रीय भाषा की मान्यता देकर इस्लामिक कानून के अनुसार वहां की शासन–व्यवस्था चलाई जाए, पेन्टागन और वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर जैसा नेपाल में भी होगा, हमारा विरोध करने वाले काफिरों को यातनाए दी जाएंगी, उनकी बीवी-बच्चों के टुकडे-टुकडे कर दिए जाएगे, इस्लामियों को बेइज्जत करने वालों के विरुद्ध हम खून की नदिया बहा देंगे। हिन्दू बहू-बेटियों की इज्जत लूटी जाएगी और काफिरों को हलाल किया जाएगा, इससे जन्नत मिलेगी।

पोस्टर में ऐसी मांगों और धमकियों की कुल सख्या १४ है। इनसे समाज मे तनाव कभी भी भडक सकता है। पोस्टर की पूरी भाषा नेपाल के साम्प्रदायिक सद्भाव को नष्ट कर दगा भडकाने वाली है। (विसके)

५८वां ध्यान योग शिविर एवं यौगिक यज्ञ

(सोमवार १५ अक्तूबर, २००१ से रविवार २१ अक्तूबर २००१ तक)

गत वर्षों की भाति इस वर्ष भी योग-धाम में श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में ध्यान योग शिविर का आयोजन पातजल योगधाम आर्यनगर, ज्वालापुर, हरिद्वार में किया जा रहा है, जिसमें आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार धारणा, ध्यान समाधि का प्रशिक्षण दिया जाएगा तथा यम, नियमादि का पालन भी कराया जाएगा। शिविरार्थी शारीरिक निर्बलता तथा मानसिक अशान्ति से छुटकारा पाने के लिए विविध यौगिक उपायो से लाभ प्राप्त करके आत्मदर्शन का मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे। शिविर में यथा समय विद्वानों के प्रवचन एव श्री स्वामी रुद्रवेश जी के भक्ति संगीत होंगे।

इस अवसर पर १७ अक्तूबर को 'व्यक्ति एवं समाज सुधार में योग का महत्व' विषय पर सगोष्ठी का आयोजन किया गया है। १८ अक्तूबर को विरक्त योगमण्डल की बैठक होगी। १६ अक्तूबर को साधक मण्डल की बैठक होगी। २० अक्तूबर को साधिका सम्मेलन एवं रात्रि ८ बजे न्यासी मण्डल की बैठक सम्पन्न होगी। अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाए।

श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव

आर्यजनो को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय, ११६ गौतमनगर, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव सोमवार २६ नवम्बर से रविवार १६ दिसम्बर २००१ तक समारोह पूर्वक आयेजित किया जा रहा है। इस अवसर पर चतुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जाएगा जिसके ब्रह्मा आर्य समाज के प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती होंगे। मेरी समस्त आर्यजनों से प्रार्थना है कि इन तिथियों को अभी से अंकित कर लेवें और उक्त वार्षिक उत्सव में अधिक से अधिक सख्या में अपने इष्ट मित्रों एवं परिवार के सदस्यों सहित पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढाए।

— आचार्य हरिदेव, श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय, गौतमनगर, नई दिल्ली

जिसके हृदय [...] है, जिसकी वाणी [...] सुशोभित है, जिसव [...] परहित में लगा [...] कलि भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता है।

प्रतिष्ठा में
10150 पुस्कालाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
जिला-हरिद्वार (उ०प्र०)

सत्संग, स्वाध्याय, सदकार्यों से ही - आत्मोन्नति

भौतिक वस्तुओं के प्रति आकर्षण व अज्ञानता के वशीभूत ही मानव भटक रहा है। सासारिक पदार्थों के प्रति आसक्ति ही जीवात्मा को जन्म मरण के बन्धन मे डालता है। ये अध्यात्मिक विचार आचार्य अखिलेश्वर जी महाराज ने उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल की गीता कथा की प्रवचन श्रृंखला समापन पर डेरावाल नगर के सत्संग समारोह में कहे।

आचार्य श्री ने आगे कहा — सांसारिक कार्यों के साथ परोपकार, सत्संग, श्रवण, योग साधना व सभी महापुरुषों के श्रेष्ठ विचारों को जीवन में अपनाकर ही मानव जीवन को सफल बनाया जा सकता है।

मण्डल के अध्यक्ष महाशय राम विलास खुराना ने "गीता प्रवचन" की साप्ताहिक श्रृंखला की सफलता के लिए क्षेत्र की संस्थाओं व सहयोगियों का आभार व्यक्त किया।

— चन्द्रमोहन आर्य, प्रचार मन्त्री

वैदिक विद्वान् आचार्य उमाकान्त उपाध्याय व आर्यश्रेष्ठ गजानन्द आर्य सम्मानित

हिण्डोन सिटी। आर्यसमाज हिण्डोन सिटी के अन्तर्गत रक्षाबन्धन से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक श्रावणी उपाकर्म के उपलक्ष्य में यजुर्वेद यज्ञ का आयोजन प० सत्यपाल पथिक के ब्रह्मत्व मे किया। यज्ञ में पुरुषो के समान महिलाओ ने भी आहुतिया दीं।

आर्यसमाज हिण्डोन जहा साहित्य प्रकाशन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहा है वहीं वैदिक विद्वानों का सम्मान भी करता है। इसके अन्तर्गत इस वर्ष सोलहवा श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य साहित्य पुरस्कार आर्यसंसार पत्रिका का ३६ वर्षों से लगातार सम्पादन कर रहे प्रतिष्ठित चिन्तक कोलकाता के आचार्य उमाकान्त उपाध्याय का उनके द्वारा लिखित "सत्यार्थ प्रकाश सन्दर्भ दर्पण" को प्रतिनिधि मानकर सम्मान किया गया। सम्मान के अन्तर्गत अभिनन्दन पत्र, शाल, स्मृति चिन्ह, हिण्डोन से प्रकाशित चालीस पुस्तकों का सेट, तेरह हजार एक रुपये की राशि भेंट की गई। नागरिकों ने फूलमालाओं से आपको लाद दिया।

इसी अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा, अजमेर के प्रधान आर्यरत्न गजानन्द आर्य कोलकाता को दूसरा रक्तसाक्षी पं० लेखराम स्मृति पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया गया। इसके अन्तर्गत अभिनन्दन पत्र, शाल, स्मृति चिन्ह, हिण्डौन से प्रकाशित चालीस पुस्तकों का सेट, दस हजार एक रुपये भेंट किए गए। आर्यपत्नी को भी पति का आत्मना सहयोग के लिए सम्मान किया गया। श्री आर्य ने सम्मान राशि परोपकारिणी सभा को भेंट कर दी और कहा — महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के माध्यम से जो विश्वकल्याणकारी आन्दोलन आरम्भ किया, मेरी कामना है यह प्रभु कृपा व आपके सहयोग और विद्वानों के आशीर्वाद से हमेशा चलता रहे।

स्थानीय कार्यकर्ता ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ का कर्मठता व जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण के लिए सम्मान किया गया। श्री ब्रह्ममुनि पिछले बारह वर्षों से मृत्यु से सघर्ष करते रहे और अब स्वास्थ्य लाभ कर पुन. कार्यक्षेत्र में आना चाहते हैं। कार्यक्रम की समाप्ति पर प्रीतिभोज का आयोजन किया गया।

— प्रभाकरदेव आर्य

आर्य समाज पिम्परी में व्याख्यान एवं ध्यान योग शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज पिम्परी द्वारा आयोजित व्याख्यान कार्यक्रम में प० धर्मवीर शास्त्री आर्य ने 'सदगुण विकृति' विषय पर अपने विचार रखे।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से आर्यसमाज पिम्परी में दिनाक १४ से २० सितम्बर २००१ तक आचार्य अमृतलाल जी शर्मा (खडवा, मध्यप्रदेश) के मार्गदर्शन में ध्यान योग शिविर सम्पन्न हुआ। आचार्य जी ने यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधी आदि अष्टांग योग की महत्वपूर्ण जानकारी शिविरार्थी को दी। पिम्परी, चिंचवड, निगडी, पुणे परिसर से आये लगभग १४० स्त्री पुरुष साधको ने प्रातः, दोपहर एवं साय तीन सत्रों में शिविर का लाभ लिया। शिविरार्थियों की मांग पर प्रतिवर्ष २ बार ऐसा शिविर आयोजित करने का संकल्प सयोजको ने व्यक्त किया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

— मुरली धर संदुरानी
मन्त्री, आर्यसमाज पिम्परी, पुणे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली–२ (फोन : ३२७०५०७, ३२७४२१६) फैक्स : ३२७०५०७ से मुद्रित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन, ३/५, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–२ से प्रकाशित (फोन : ३२७४७७१, ३२६०९८५)
सम्पादक वेदव्रत शर्मा। ई-मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट - http://www.whereisgod.com

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र



वर्ष ४० अक २६ २१ अक्टूबर से २७ अक्टूबर २००१ तक दयानन्दाब्द १७८ सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०२ सम्वत् २०५८ द्वि० अ० शु०

एक प्रति १ रुपया (भारत में) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डाल

आतंकवाद को चरम सीमा पर पहुंचाने वाले कौन हैं?

विश्व आतकवाद आज जिस चरमसीमा पर पहुचकर आधुनिक युग की भौतिकवादी महाशक्ति अमेरिका को ललकारने लगा तब विश्व मे आतकवाद के विरुद्ध चेतना लाने का प्रयास शुरु हुआ। विगत २० वर्षों में इस विषय पर भारत की अपीलो को क्यों अनदेखा किया गया ?

अमेरिका मे विश्व की सर्वाधिक भयावह आतकवादी त्रासदी ने सारे विश्व के कान खडे कर दिए है। ऐसा नहीं है कि इससे पूर्व आतकवादी घटनाए न घटती रही हों किन्तु विश्व समुदाय और विशेष रूप से महाशक्ति अमेरिका द्वारा दोहरे मापदण्ड अपनाने के कारण उनकी जानबूझकर अनदेखी की जाती रही और जब आतकवाद की अग्नि ज्वालाए अमेरिका के मर्मस्थल तक आ पहुची तब उसकी भी आखे खुली की खुली रह गयीं। अमेरिका को आतकवादी हमला इसलिए भी झेलना पडा क्योकि उसने एक दशक से भी अधिक समय से आतकवाद के खिलाफ विश्व के सबसे बडे लोकतन्त्र—भारत की अनसुनी की और आतकवाद के समर्थक पाकिस्तान को सदैव भारत के समकक्ष रखने की जानबूझ कर चेष्टा की। भारत यह सदैव कहता रहा है कि आतकवाद विश्व स्तर का रोग है जिसका निदान विश्व समुदाय मिलकर ही कर सकता है किन्तु तब उसे नहीं सुना जाता था। अब जब अपने पर आ बीती है तब अमेरिका सबका सहयोग पाने का आर्तनाद करते देखा जा सकता है। यह आश्चर्य नहीं तो क्या था कि सारे विश्व ने खूखार तालिबो द्वारा भगवान बुद्ध की विशालतम प्रतिमाओ को एक—एक कर ध्वस्त करते देखा। 'सर्वाधिक सभ्य और उन्नत कहे जाने वाले इस युग मे इतिहास और मानवता की उत्कृष्ट धरोहर प्रतिमाओ को तोड डाला गया और 'सभ्य समाज सभ्यता पूर्वक देखता रहा। आतकवाद के दृष्टिकोण से विश्व मे सर्वाधिक भयावह स्थिति कश्मीर की है।

क्या इस आतकवाद मुक्ति अभियान में पाकिस्तान का सहयोग और समर्थन उचित है ?

विश्व समुदाय पाकिस्तान जो पूरी तरह आतकवादी देश है और आणविक हथियारों से लैस है को समझने का विशेष प्रयास करे ताकि दक्षिण एशिया विश्व शाति के लिए कहीं खतरा न बन जाए। यह ठीक है कि सामरिक कारणो से अमेरिका को पाकिस्तान की सहायता लेनी पड रही है किन्तु अमेरिका यह समझने मे चूक न करे कि पाकिस्तान ही आतकवादी बनाने का कारखाना है। पिछले एक दशक मे पाकिस्तानी और अफगानी आतकवादियो ने जम्मू और कश्मीर मे अनगिनत हजार निर्दोष नागरिकों तथा सैनिको को मार डाला है। इनमे राजनीतिक दलो के नेता और कार्यकर्ता भी शामिल हैं। नेशनल कान्फ्रेस काग्रेस जनता दल भाजपा सी०पी०एम० तथा अवामी लीग ने दर्जनों सैंकडो कार्यकर्ताओ को खोया है। आतकवादियो ने ३ ५० ००० कश्मीरी पण्डितो को अपने देश मे ही शरणार्थी बनाकर बेघर कर दिया है। पिछले वर्ष जब भारत ने सद्‌भावना की इच्छा से एकपक्षीय सघर्ष विराम घोषित कर रखा था आतकियो ने ४५ सैन्य सुरक्षा केन्द्रों को अपना निशाना बनाया है।

पाकिस्तान इतनी भारी मात्रा मे आतकियो को शस्त्र आपूर्ति करता रहता है जिसकी कल्पना दु साध्य जान पडती है। पाकिस्तान यह पैसा अवैध मादक पदार्थो की बिक्री से प्राप्त करता है जो अमेरिका समेत अनेक देशो को तबाह करने मे लगा है। पिछले दस वर्षो — १६६० से २००० के मध्य भारत की सुरक्षा कमान ने कश्मीर मे आतकवादियो से २० ३६५ ए०के०४७ राइफल ८८२५ पिस्टल ६५६ भारी मशीन गन ३०८ स्नाइपर राइफल ६१५ रॉकेट लाचर १६८७ राकेट बूस्टर ७५ लाइट मशीन गन ७५७ अन्य हथियार तथा २५,००० कि०ग्रा० आर०डी० एक्स० अपने कब्जे मे लिया है। यह इतना बडा जखीरा है जो और लाखो निर्दोष जाने लेने हेतु पर्याप्त था। भारतीय सुरक्षा बलो ने पिछले एक दशक मे लगभग ६००० आतकियो को अपना निशाना बनाया है। साथ ही सुरक्षा बलों ने लगभग २४ ००० खूखार आतकियो को गिरफ्तार भी किया है। इन आतकियो मे पाकिस्तान और अफगानिस्तान के अतिरिक्त सूडान तुर्की बहरीन चेचन्या ईरान तजाकिस्तान सऊदी अरब तथा यमन और बागलादेश तक के आतकवादी शामिल हैं। इससे समझा जा सकता कि आतकवाद कैसे धीरे—धीरे अपनी ज अनेक मुल्को मे फैलाए हुए है।

आज पाकिस्तान विश्व मे आतकवा के प्रशिक्षण का एक प्रमुख केन्द्र ब हुआ है जहा स हजारो की सख्या युवक आतकवाद की ट्रेनिग ले रहे हैं पेशावर मे १६८० मे मदरसो की सख्या थी। १६६८ मे इनकी सख्या ८७ हो गयी यह कल्पना सहज ही की जा सकती कि जब १५—२० युवक आतकियों ने अप एक दुस्साहसिक कार्यवाही से अमेरिक मे हजारो बिलियन डालर की सम्प तथा हजारो निर्दोष नागरिको को ए झटके मे निगल लिया तब हजारो लाख की सख्या मे प्रशिक्षण पाने वाले तालिब विश्व की क्या दुर्गति कर सकते पाकिस्तान में ८ से १० हजार तक पजीकृ मदरसे हैं। बगैर पजीकृत मदरसे लग ४० ००० हैं। ऐसे मदरसो की सख्या भा मे भी फैल चुकी है जिनके प्रति वोट लालची सरकारे तथा राजनीतिक द जानते हुए भी बेखबर हैं। ये मदरसे स विश्व का इस्लामीकरण करना चाहते इसी को जेहाद की सज्ञा दी जाती

अमेरिकी पत्रो मे प्रकाशित खबरो मुताबिक इन मदरसो मे पाकिस्तान १७ लाख बच्चे और युवक प्रशिक्षित रहे हैं जो कश्मीर मे जेहाद के तैयार किए जा रहे हैं। इन मदरसो ६४ प्रतिशत धन आपूर्ति इस्लामिक सऊदी अरब और लीबिया से होती तथा शेष धन पाकिस्तान उपलब्ध कर है। आतकवादी गुटो मे भर्ती सीधे मद से की जाती है। मदरसो के छात्रो केवल एक शिक्षा दी जाती है कि अपने बडो की बाते सुने और माने तथा भी कोई प्रश्न न करे। मदरसो का इस सारी दुनिया को दो भागो मे बाटता एक इस्लाम को मानने वाला और दू गैर मुस्लिम समुदाय जिनमे मूर्तिपू हिन्दू ईसाई यहूदी तथा अन्य सभी जाते हैं जिन्हे काफिर कहा जाता जाहिर है कि यह केवल आतकवाद बल्कि इस्लामी आतकवाद है।

— डॉ० देवर्षि शर्मा द्वारा दै जागरण १३ अक्तूबर २००१ मे लि लेख के आधार पर।

सन् २००६ तक भारत का उदय होगा
भारत संसार का एक शक्तिशाली देश होगा

विशेषकर भारतीयो के लिए नास्ट्राडमस का भविष्य कथन उत्साहवर्धक है। इस फ्रासिसी ज्योतिषवेत्ता ने कभी भारत देश देखा नहीं था इतना ही नहीं वे एकाध बार अपवाद स्वरूप छोडकर फ्रास के बाहर नहीं गए थे। कालगणना को तुलना की दृष्टि से देखा जाए तो वे महाराणा प्रतापसिह के समकालीन थे। लेकिन स्थल काल के अत्याधिक अन्तर के उपरान्त भी इस फ्रासिसी भविष्यवेत्ता ने विश्वविजयी बलवान भारत राष्ट्र का उदय स्पष्ट रूप से देखा था। उनके कथन के अनुसार इर भारत राष्ट्र के उदय का समय समीप आ पहुचा है। वे कहते हैं भारत का पुनरुत्थान होकर वह अपने पुराने शत्रु का सम्पूर्ण विनाश कर देगा। इस भीषण काण्ड का आरम्भ जुलाई १६६६ मे होगा और सात वर्ष के घोर युद्धकाण्ड के बाद मुस्लिम पूर्णरूपेण नष्ट हो जाएगे मक्का मदीना नाम शेष हो जाएगे। सोमनाथ की घटनाओ का प्रतिशोध करोड गुना रूप से लिया जाएगा। मौहम्मद पैगम्बर की जमात सम्पूर्ण नष्ट हो जाएगी। जिन यूरोपीय देशों ने भारत को लूटा था उन पर दया नहीं दिखाई जाएगी। आल्पस पर्वत लाघकर हिन्दू सेना पैरिस पर हमला कर देगी तब राम अग्निज्वालाओ मे समाविष्ट हो जाएगा। पोप अपने—अपने स्थान से उठ जाएगे। ईसाई धर्म द्वारा जिन गलत नीतियो का प्रचार होता जा रहा है उनसे बहुसख्य योरोपीय जनता का विश्वास हटेगा। वैदिक धर्म का पुरातनकालीन वर्चस्व पुन प्रस्थापित हो जाएगा। वेद मन्त्रों से आकाश गूज उठेगा।

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

सह सम्पादक
विमल वधावन एडवोके

चिररमरणीय व्यक्तित्व

कीर्तिर्यस्य स जीवति

२६ अक्तूबर, स्वामी विरजानन्द जी दिवस पर विशेष

संस्कृत-व्याकरण के तेजस्वी सूर्य स्वामी विरजानन्द

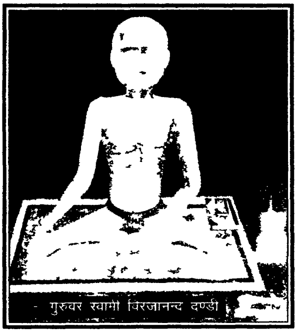
– प० मनुदेव अभय विद्यावाचस्पति

यह सर्व विदित है कि नदी मे भयकर ाढ उतर जाने के पश्चात नदी एकदम ान्त हो जाती है किन्तु अपने दोनो कगारो र न ज ने कहा–कहा का कूडा करकट ाड ज ती है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए ुख्य रूप से तीन बार प्रयास किए गए। ाथम १७५७ मे बक्सर का युद्ध द्वितीय ८५७ का महान क्रान्तिपूर्ण युद्ध तथा सन ९४७ मे अन्तत विजय श्री प्राप्त होकर ाह देश स्वतन्त्र हुआ। पूर्वोक्त शब्दावली े अनुसार सन १८५७ का महान ान्तिकारी युद्ध कतिपय ज्ञात अज्ञात ारणो से असफल हो गया। तब इसके श्चा त सम्पूण देश मे एक मुर्दानगी छा ई। परा जित जाति के लिए इससे बढकर ाज्जा पूर्ण और अन्य कोई कृत्य नहीं ोगा। इस क्रान्नि के ठीक १२ वर्ष पश्चात श के पश्चिमोत्तर प्रान्त मे भयकर दुर्भिक्ष अकाल काला बुखार) पड गया। देश के ामी भागो मे इसकी छाया पडी और सहस्रो ाोग कस्बो–ग्रामो को छोडकर शहरो की ाोर आने लगे। इन पक्तियो के लेखक के ेतामह एव पितामही इन पीडापूर्ण दुर्भिक्ष ी बाते सुनाया करते थे जिसके कारण यभीत होकर रोमाचित हो जाता था। ह दुर्भिक्ष बाढ के पश्चात किनारो का ्डा–करकट ही सिद्ध हुआ। इतिहास के ानकार जानते है कि इगलैड मे बैठी वेक्टोरिया रानी ने दुखी पीडित शोषित ारतीय जनता को शासन सुधार का एक 'हफा देकर आसू पोछने का कार्य किया कन्तु बार–बार आसू क्यों आते हैं, इसके कारणों अपना मुख मोड लिया। सात समुन्द्र पार ी महारानी विक्टोरिया द्वारा गुलामो के साथ ो व्यवहार किया गया वह माता के वात्सल्य रुणा त्याग तथा शान्ति के गुणों के बिल्कुल परीत था। विश्व मे गुलाम जातियो के साथ मा ही व्यवहार होत' है।

ऐसे भीषण समय मे स्वामी विरजानन्द ो कुटिया के सम्मुख ३४–३५ वर्षीय ष्ट–पुष्ट ६फुट २ इच लम्बा गौर वर्ण मकता हुआ ललाट धारण किए एक न्यासी उपस्थित हो गया। यहा आने के ी उक्त युवा सन्यासी मथुरा के रगेश्वर ादेव मन्दिर मे आकर कुछ समय ठहरा। म युवा सन्यासी के वेश का चित्रण करते ए प्रसिद्ध बगाली लेखक बाबू देवेन्द्र नाथ खोपाध्याय अपने ग्रन्थ मे लिखते हैं – " स सन्यासी की आयु ३४या ३५ वर्ष की गी। उसके वस्त्र गेरुए थे कण्ठ (गले) मे द्राक्ष की माला लहरा रही थी हाथ मे मात्र क बडा सा लोटा अथवा घडा था तथा थ मे कुछ पुस्तके थीं। सन्यासी की आकृति कुछ विशेषत्व है उसकी बातचीत और ाभगिमा मे कुछ असाधरणत्व का परिचय लता है। वह कुछ दिन के पश्चात दण्डी ामी विरजानन्द की पाठशाला मे आ पहुचा र उसने यथारीति प्रणिपात के पश्चात ने की इच्छा प्रकट की।"

उपनिषद् मे एक कथा आती है जिसमे द्या एक विद्वान ब्राह्मण से कहती है – म किसी अपात्र को मत देना अन्यथा ा रूप कालिमामय हो जाएगा। स्वामी रजानन्द जी अपनी पाठशाला मे प्रवेश ो समय छात्र के पात्रापात्र का भलीभाति परीक्षण करते थे। प्रविष्ठ छात्रो से वे न तो कोई शुल्क लेते थे और न समाप्ति पर कोई गुरु दक्षिणा। आजकल तो झडे को प्रमाण करवाकर दक्षिणा बटोरने मे तनिक भी लज्जा नही महसूस की जाती है। फिर उस गुरु दक्षिणा का क्या होता है वे झण्डेधारी ही जाने।

हा तो अपने नियम के अनुसार दण्डी सन्यासी ने उपस्थित सन्यासी की मेधाबुद्धि की परीक्षा करने तथा २–४ बाते करने के पश्चात अनुभव कर लिया कि यह सन्यासी विद्यार्थी पूर्ण जिज्ञासु है तथा अनन्य असाधारण मेधावी है। कुछ क्षण रुककर स्वामी विरजानन्द ने कहा – " अनार्ष ग्रन्थो की बाते एकदम भूल जाओ। यदि इन अनार्ष ग्रन्थो की शिक्षा का अशमात्र भी मन मे रहेगा तो आर्ष ग्रन्थो की शिक्षा बद्धमूल न हो सकेगी। अत मनुष्य प्रणीत पुस्तको के उपदेश को एकदम भूलजाओ और इतना ही नहीं तुम्हारे पास जो मनुष्य प्रणीत ग्रन्थ हैं उन्हे इसी यमुना मे फेक आओ।" इस आदेश को सुनकर जब दयानन्द वहा से जाने लगे तब उस उत्कृष्ट सन्यासी ने इस दयानन्द से एक और भी बडी महत्वपूर्ण बात कह डाली। "चूकि तुम सन्यासी हो इससे प्रतीत होता है कि तुम्हारे भोजन और निवास के सम्बन्ध मे कोई स्थिरता नहीं हो सकती इसलिए भोजन और आवास की व्यवस्था स्वय आपको प्राथमिक रूप से करनी होगी। यह युवा सन्यासी भी कोई कम न था वह तत्काल उन्हें आश्वासित कर वहा से चला गया। परन्तु विरजानन्द पर अपनी छाप छोड गया।



– गुरुवर स्वामी विरजानन्द दण्डी

यह निर्विवाद सत्य है कि परमात्मा नामक सत्ता पर दृढ आस्था रखने वाले सदैव आशावादी एव उच्च मनोबल के होते है। सन्यासी दयानन्द तो इसके साक्षात अवतार थे। उन दिनो मथुरा मे ज्योतिषी बाबा अथवा जोशी बाबा का धर सदाशयता और आतिथ्य के कारण बहुत प्रसिद्ध था। इस समय जोशी परिवार मे अमरलाल नामक महाशय विद्यमान थे। कहा जाता है कि उनके पूर्वज गुजरात से चलकर यहा आ गए थे। किसी ईश्वरीय प्रेरणा से ही इस युवा सन्यासी से महाशय अमरलाल का साक्षातकार हो गया। अमरलाल जी भी औदिच्य ब्राह्मण थे। कुछ सौम्य और कुछ साम्य ने परिस्थिति को अनुकूल बना दिया। ब्राह्मणवृत्ति के कारण इस सन्यासी की ओर आकृष्ट हो गए। उस सन्यासी ने अपना मथुरा आने का मन्तव्य आदिसब कुछ बता दिया। तब प० अमरलाल जी ने प्रसन्न मुद्रा में अपने ही घर पर नियमित रूप से भोजन का प्रबन्ध ा कर दिया। फिर भी समस्या आवास की शेष रह गई थी। मथुरा के विश्राम घाट के ऊपर वाले भाग मे जो लक्ष्मी नारायण मन्दिर है उसी के नीचे की मजिल की कोठरी मे इस सन्यासी के रहने की व्यवस्था हुई। देखे – विरजानन्द चरित लेखक स्व० देवेनन्द्रनाथ मुखोपाध्याय पृष्ठ १८५। इस प्रकार रोटी कपडा और मकान की व्यवस्था के बाद सन्यासी का ज्ञान यज्ञ प्रारम्भ हो गया।

कहते है गुरु विरजानन्द जी कभी–कभी पढाते समय दयानन्द दडी सन्यासी से तर्क करते हुए बहुत गहराई तक चले जाया करते थे। दण्डी दयानन्द भी समझने लगे थे कि यह गुरुजी भी असाध ारण प्रतिभा के हैं। उन्होने सर्वप्रथम इन्हे पाणिनी का पाठ पढाना प्रारम्भ किया। वे बिना टीका–भाष्यादि की सहायता से ही पढाया करते थे। कहा जाता है कि 'विरजानन्द की वागिन्द्रय से भी नाना शास्त्रो की नाना व्याख्या अविरल रूप मे निकलकर शिष्य मडली को विस्मित करती थी। दयानन्द सह सब अदभुत और अदृष्टपूर्ण व्यापार देखकर इस दृष्टि–हीन (अधे) अध्यापक को एक आलौकिक पुरुष स्वीकार करने पर बाध्य हुए और जितने विस्मयादिष्ट हुए उतने ही श्रद्धाभारावनत चित्त होकर उनसे पढने लगे।"

स्वामी विरजानन्द भाष्यों मे से महाभाष्य पाणिनीकृत अष्टाध्यायी को सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ स्वीकार करते थे। यही कारण था कि दयानन्द को पाणिनी के साथ महाभाष्य को भी पढाया जाने लगा। पढाते समय कभी गुरु–शिष्य मे वाग्युद्ध भी हो जाता था। दयानन्द की तर्कपटुता देखकर ही विरजानन्द मन ही मन अति प्रसन्न होते थे। वे कभी दयानन्द को कालजिह्व कुलक्कर कहकर पुकारते थे। स्वामी विरजानन्द के शब्दो मे – "कालजिह्व उसे कहते हैं कि जिसकी जिह्वा असत्य खडन मे काल के समान हो। कुलक्कर उसे कहते हैं जो शास्त्रार्थ के समय खूटे के समान अविचलित रहकर शत्रुपक्ष को परास्त करे।"

स्व० श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय के अनुसार – जैसे पुराकालीय समरशिक्षक या शास्त्राचार्यगण किसी सुनिपुत्र शिष्य को पाकर उसे रणभूमि मे दुर्जेय बनाने के लिए ब्रह्मास्त्र के प्रयोग तक की शिक्षा दिया करते थे इसी प्रकार उपस्थित क्षेत्र मे भी जो कुछ सिचित और सबल विरजानन्द के पास था वह उस सबकी दयानन्द को शिक्षा देने लगे।

कहा जाता है कि स्वामी विरजानन्द के सानिध्य मे दण्डी दयानन्द प्राय तीन वर्ष ही रहे। कतिपय इतिहासकार इस समय को बढाकर यह कहते हैं कि जब दयानन्द दीक्षा प्राप्त कर वहा से चले तब उनकी आयु ४१ वर्ष की थी। दीक्षा के समय दयानन्द के पास कुछ न होने के कारण वे नतमस्तक होकर गुरुजी से बोले – "मेरे पास कुछ नहीं है मैं क्या देकर गुरु–दक्षिणा का कार्य समाप्त करू।" तब विरजानन्द ने वात्सल्यपूर्ण शब्दो मे अपने शिष्य से कहा – "मैं तुमसे एक नए प्रकार की दक्षिणा चाहता हू। तुम मेरे सामने प्रतिज्ञा करो कि जब तक जीवित रहोगे तब तक भारत क्षेत्र मे आर्ष ग्रन्थों के प्रचार और वैदिक धर्म के विस्तार मे प्राण–पर्यन्त भी अर्पण कर दोगे। मैं इस प्रतिज्ञा–परिपालन को ही तुमसे दक्षिणा रूप मे ग्रहण करूगा।" इसे सुनकर शिष्य बोला "तथास्तु।" वहा से विदा होते समय विरजानन्द ने शिष्य के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया और विरजानन्द के वयोजीर्ण कधो से वैदिक ध र्म की जय पताका अपने बलिष्ठ कधो पर लेकर मथुरा से प्रस्थित हो गए।

– अ/१३, सुदामा नगर, इन्दौर मध्य प्रदेश - ४५२००६

कालजिह्व ! कुलक्कर !!

गुरु विरजानन्द उचाव

अपने शिष्य दयानन्द (सन्यासी) से उच्चकोटि की मेधा, सूक्ष्म तार्किक बुद्धि का परिचय पाकर विरजानन्द मन ही मन प्रसन्न होते थे। वे कभी कभी दयानन्द को कालजिह्व, कुलक्कर कहकर पुकारते थे। न जाने क्यों, गुरुवर्य यह शब्द उच्चारित कर मन ही मन अति प्रसन्न होते थे। प्रतीत होता है कि जब इनकी व्युत्पत्ति पूछी गई तो इन्हे 'सस्कृत शब्द' कहा गया। इनके अर्थ व्यक्त करते हुए बताया गया

कालजिह्व "उसे कहते है कि जिसकी जिह्वा असत्य खडन मे काल (मृत्यु) के समान हो।"

कुजक्कर, "उसे कहते हैं जो शास्त्रार्थ मे खूटे के समान अविचलित रहकर, दृढ रहकर शत्रुपक्ष को परास्त करे।"

स्व० देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय

अपने ही घर में अकेलेपन को ढोता बुढ़ापा

– क्रान्ति कुमार पाठक

प्रकृति का फूल समय की बेला के साथ अपने यौवन का दर्शन देता है लेकिन सध्याकाल के बाद एक तरह की मुरझाहट दिखाई देने लगती है जीवन की यही अवस्था है वृद्धावस्था। इस दौर मे अगर व्यक्ति का जीवन सम्मान सहित कट जाए तो बहुत बडी बात है। लेकिन ऐसा बहुत कम देखने मे आता है। बहुत से बुजुर्गो को बुढापे मे अकसर दर दर की ठोकरे खानी पडती है। उन्हे न तो सर छिपाने के लिए छत खाने को दो जून की रोटी और तो और तन ढकने के लिए कपडा भी मयस्सर नहीं होता। बुढापा आते ही कितना अकेला पड जाता है वह जिसकी सुनने वाला कोई नही होता। यहा तक कि जिस बेटे की खातिर वह अपना अपना सब कुछ लुटा देता है वही बेटा उन्हे सिरदर्द समझता है उनकी उपेक्षा करता है यह किसी घर गाव नगर की विशेष समस्या नहीं है। यह समस्या तो समूचे देश की है। आकडो के अनुसार भारत मे इस सदी के आखिर तक ६० वर्ष से ज्यादा उम्र के लोगो की सख्या ७ करोड ६० लाख हो गई है।

गौरतलब है कि बाल्यावस्था मे भगवान बुद्ध एक कृशकाय वृद्ध की दयनीय दशा को देखकर द्रवित हो उठे थे उनका हृदय वितृष्णा से भर गया था। इसीलिए कुछ वृद्धावस्था को जीवन का अभिशाप मानते हैं क्योकि इस अवस्था के आते आते शरीर के सारे अग शिथिल पड जाते हैं और इसान की जिन्दगी दूसरे की दया कृपा पर निर्भर रहती है परमुखोपेक्षी बने इस ससार को ऐसी दशा मे जिदा रहना एक भार लगता है और वह चाहता है उसे जितनी जल्दी हो सके जिन्दगी से छुट्टी मिल जाए।

वृद्धावस्था मे सतान की स्थिति का जायजा ल तो पता चलता है कि माता–पिता के वृद्धावस्था तक पहुचते पहुचते सतान अक्सर उनसे छुटकारा पाना चाहती है। मा बाप को एक बोझ और ऐशोआराम की जिदगी मे सबसे बडी बाधा समझते हैं। जबकि उसे कतई एहसास नहीं होता कि वह उन्हीं मा बाप की बदोलत ऐशोआराम की जिदगी गुजार रहा है जिन्होने उसके सुख की खातिर अपने सारे अरमान परवान चढा दिए। रात दिन मेहनत मशक्कत करके उसे खुशहाल देखने का सपना सजोए ही बुढापे की दहलीज पर पहुच गए। आखिर उनका उसके सिवाय और कौन है। वही तो उनके बुढापे का एकमात्र सहारा है। जब अपने ही उनकी देखभाल नहीं करेगे उनका सहारा नही बनेगे तो दूसरा उन्हे कौन और क्यो सहारा देगा? यह स्थिति आज अधिकतर नौजवानो की है। इसमे इजाफा तो उसकी शादी के बाद और हो जाता है जबकि उसके बाद तो अक्सर वह केवल पत्नी का ही होकर रह जाता है। ऐसा लगता है कि जैसे मानवता और भारतीय सस्कृति का दिन पर दिन नाश ही होता जा रहा है।

हमारी परम्परा रही है कि बुजुर्गों को उम्र के अनुसार सम्मान मिलता आया है। गावो मे तो बढती उम्र के साथ साथ सम्मान भी बढता जाता था। उनका समाज मे रुतबा था और उनकी बात मानी जाती थी। लेकिन पाश्चात्य सस्कृति के प्रभाव विखण्डित होते सयुक्त परिवार शहरीकरण इलैक्ट्रोनिक्स मीडिया और उपभोक्तावादी सस्कृति के कारण उनकी अहमीयत काफी कम हुई है।

मान्यताओ के बदलाव युवा पीढी के बढते वर्चस्व से भी उनके अस्तित्व को नकारना शुरू कर दिया है। समाज मे यह आम धारणा बनती जा रही है कि बुजुर्ग फालतू प्राणी है उनसे भी येन केन प्रकारेण काम लेने की कोशिश की जाती है। आजकल परिवारो मे देखा जाता है कि यदि बुजुर्ग परिवार का कोई काम करने मे सक्षम होता है तो उसके प्रति काम की गरज से थोडी हमदर्दी जता दी जाती है। लेकिन कहीं यह भी देखा जाता है कि उन्हे दुत्कार दिया जाता है। कुछ घरो मे तो वृद्ध अपने बच्चो द्वारा ही मार पीट का शिकार भी होते है। उनमे शारीरिक बल न होने के बावजूद बाजार से सब्जी व दूध व राशन का सामान लाने के अलावा बेटा बहू के घर होने पर बच्चो को सभालने और स्कूल से लाने की जिम्मेवारी सौपी जातीहै। उनके साथ नौकरो जैसा सलूक किया जाता है। बुजुर्गो से हर मामले पर भेदभाव बरता जाता है। उन्हे न अच्छा खानाा दिया जाता है न ही साफ सुथरे कपडे और उनके इलाज मे भी कटौती बरती जाती है। नतीजा यह होता है कि उचित देखभाल के अभाव मे वृद्धो का शारीरिक व मानसिक कष्ट बढ जाता है। वे छोटे–छोटे काम और जरुरतो के लिए दूसरो के मोहताज हो जात है। ऐसा नहीं है कि समाज मे ऐसे परिवार बिल्कुल नही है जहा वृद्धो को पूरा सम्मान मिलता ह लेकिन ऐसे परिवारो की सख्या धीरे धीरे कम होत जा रही है।

शहरो की इस नई आधुनिक शैली मे लो अपने आपको इतना व्यस्त पाते हैं कि उनके पा परिवार मे एक दूसरे से बात करने का पर्या समय नहीं रहता या वे एक दूसरे के साथ बैठ बातचीत करने की अब जरुरत ही नही समझ बूढो से बातचीत करना तो आज के युवक स की बर्बादी ही समझते है तो क्या वृद्धो की सम मे उपयोगिता नही। पूरे जीवन मे अनगिनत क उठाकर अर्जित किया गया अनुभव क्या समाज किसी काम का नही। यह सच है कि जीवन हमारी व्यस्तताए बहुत बढ गई है। लेकिन फिर जो थोडा समय हमे मिलता है उसे भी हम टी० देखकर बिताना ही अधिक पसन्द करते है?

वृद्धावस्था जीवन का आखिरी चरण है परि मे ऐसा वातावरण बनाए जिससे घर मे बुजुर्ग सम्मान मिल सके क्योकि इस स्थिति मे सभी पहुचना है इस बात का एहसास सभी नवयु को करना चाहिए। वृद्धो के पास अनुभवो सस्म स्मृतियो के विशाल भण्डार होते है। जिनसे अपनी जीवन रूपी नैया को पार लगान कामयाब हो सकते है। उनके अनुभव हमारे अमूल्य धरोहर है जिन्हे सजोकर रखना ह कर्त्तव्य है। साथ ही सरकार का भी यह कर्त्तव्य है कि वृद्धावस्था पैशन उनके पुनर्वा योजनाए आदि बनाकर उनके प्रति सम्मान प्र करे।

– युगवार्ता से र

बुढापा अतिथि

रुद्रनाथ सिह

बुढापा मित्र स्वय आया है।
ऐसे अतिथि को छाती से लगाए रहिए।
बुढापा वरदान है अभिशाप नही।
हर समय अपने को व्यस्त बनाए रहिए।।
समझ से कार्य करे अच्छा होगा।
खाने पीने मे परहेज बनाए रहिए।।
भोजन करे सात्विक लेकिन
छकने से अपने को बचाए रहिए।।
कार्य कुछ अवश्य करे लेकिन।
थकने से अपने को बचाए रहिए।।
शरीर अवश्य क्षीण होता है बुढापे मे।
पर इस आयु मे हिम्मत को बढाए रहिए।।
दीपक मे तेल चुकने वाला है लेकिन
उसको चिन्ता की हवाओ से बचाए रहिए।।
दूर का सफर चाहे तो करे लेकिन।
किसी मित्र को साथ लगाए रहिए।।
बहू बेटे प्रसन्न रहे ऐसा करे।
उनके हर कार्य मे न टाग अडाते रहिए।।
पोते पोतियो से खूब खेले लेकिन।
उनमे आसक्ति से अपने को बचाए रहिए।।
पैसा रहने पर सभी आदर करते है।
कुछ हाथ मे हो तो उसको दबाए रहिए।
अपने सयम से कुछ बचा करके
दीन दुखियो की तरफ हाथ बढाते रहिए।।
जवानी कैसी रही भूल ही जाना अच्छा।
ईश के आगे शीश अपना झुकाते रहिए।
कृपा उस ओ३म की जो पहुचे इस बुढापे तक।
ध्यान इस ईश मे अपना लगाए रहिए
सुख शान्ति यदि चाहो बन्धु।
सत्सग मे समय कुछ लगाते रहिए।।
बुढापा सुधरा तो जीवन सुधर जाए रुद्र।
ऐसे अतिथि को साथ लगाए रहिए।।

– प्रधान आर्यसमाज कप्तानगज बस्ती (उ०प्र०)

माता–पिता भगवान् की अद्भुत देन हैं

– स्व० आचार्य रामप्रसाद जी वेदालंकार

जालन्धर मे श्री भाई बैजनाथ जी गुप्त के पिता जी थे। सर्दी जब पहले पहल आई और उनको जब सर्दी अनुभव हुई तो वे प्रात आकर अपने बेटे से बोले बेटा! मुझे रात बडी सर्दी लगी क्याकि अब मौसम सर्दी का आ गया है। इस पर श्री बैजनाथ जी बोले पिता जी सर्दी लगी तो कम्बल ले लेते या फिर कहलवा देने तो हम निकाल देते। बैजनाथ जी बताते हे कि मेरी यह बात सुनकर पिताजी पजाबी मे बडे प्यार भरे शब्दो मे गाली देकर गुस्सा दिखाते हुए बोले आ चूडिया ! तू मेरी गल नू समझदा नहीं – अरे तू मेरा मतलब समझता नही जब सर्दी आई है तो मुझ अकले के लिए ही तो नहीं अन्य सब के लिए भी तो आई है अत उन्ह भी सर्दी लगी होगी। यह ले रुपये पाच हजार और कल कम्बल ले आना फिर पिंगल वाडे आदि आदि स्थानो मे जाएगे। पहले उन मे कम्बल बाटगे तब स्वय कम्बल आदि ओढना शुरू करेगे। अगले दिन बैजनाथ जी ने ऐसा ही किया।

इस पर पिता बडा प्रसन्न हुआ। सो ऐसा वह ही नहीं करता था वरन पूज्य माता जी भी अपने सभी पुत्रा से प्राय ऐसे शुभ कार्य कराती रहती थी। प्रभु की कृपा से उनके सभी पुत्र पुत्रवधुए एव पुत्रिया इस विषय मे अपने पूज्य माता पिता के वचनो पर फूल चढाते रहे। उनके बडे पुत्र श्री गुरुचरण दास ब्रह्मचारी तो ऐसे थे कि वे जो कुछ करते थे उसको गुप्त रखने मे और भी अधिक प्रसन्नता का अनुभव करते थे। अपने पूज्य माता पिता की भावनाओ का तो वे बहुत ही आदर करते थे इतना अधिक कि अन्य सब भाई बहनो को भी उनसे बडी प्रेरणा मिलती थी पुत्र का एक निर्वचन **पुनाति च त्रायते च** भी बहुत ही सुन्दर है। उसका अभिप्राय यह है कि यह अच्छा पुत्र अपने माता–पिता के हाथो से खूब शुभ कर्म कराता रहता है। वह उन को सन्ध्या स्वाध्याय सतसग सेवा दान पुण्य और परोपकार तथा विश्राम आदि प्रदान करने का पर्याप्त अवसर देता है। उसके माता पिता यदि एकान्त सेवन के लिए किसी आश्रम मे या वन मे वा किसी ज्ञानी विद्वान योगी सन्यासी तपस्वी महानुभाव के पास जाना चाहते है ता वह उन की इन भावनाओ पर फूल चढाता हुआ यथाशक्ति उनके खान–पान और रहन–सहन की व्यवस्था करके उनको साधना स्वाध्याय सतसग सेवा आदि के द्वारा अपने आप शुद्ध–पवित्र करते हुए निरन्तर जीवन आगे बढने और ऊचा उठने का पर्याप्त अवसर प्रदान करता हुआ अपने पुत्र रूप सार्थक करता है। मा–बाप भी कृतकृत्य होकर जहा इसके लिए प्रभु का हृदय से धन्यवाद करते हैं वहा उनके हृदय से ऐसे पुत्र के लिए भी सतत आशीर्वाद प्रवाहित होता रहता है।

इस प्रकार पुत्र जहा एक अच्छा पुत्र बनने के लिए अपने पूज्य माता पिता के प्रति सब कुछ करता है वहा एक नव दम्पती भी एक अच्छे माता पिता बनने के लिए एक अच्छे पुत्र की कामना से प्रभु से विदुर जी के शब्दो मे सदा यह प्रार्थना किया करते है –

मा न कुले वैरकृत्कश्चिदस्तु राजामात्यो मा परस्वापहारी।
मित्रदोही नेकृतिकोऽनृती वा पूर्वाशी वा पितृदेवातिथिभ्य ।।

विदुर–नी ४–३२।

हे प्रभो! हमारे कुल मे कोई वैरी सन्तान–पुत्र न हो। राजा वा मन्त्री आदि बनने पर वह किसी दूसरे के धन का अपहरण करने वाला न हो मित्र को वह कभी धोखा देने वाला न हो नैकृतिक – दूसरा का वह कभी तिरस्कार पाने वाला न हो किसी से वह कभी झूठ बोलने वाला न हो और पितृयज्ञ देवयज्ञ तथा अतिथियज्ञ करने से पूर्व वह कभी स्वय खाने वाला न हो।

इसके अतिरिक्त वेद मे सब तरह से घर–धन्य धान्य सुख–सुविधाओ से सम्पन्न हो जाने पर जब घर मे सन्तान नहीं होती तो घर सूना सूना सा प्रतीत होता है घर नीरस नीरस सा अनुभव होता है। अत पति पत्नी हृदय की टीस से बडी श्रद्धा और प्रेम पूर्वक प्रभु शरण मे बैठ कर प्रभु से यह प्रार्थना करते हैं – अग्ने स्यान्न सूनु – हे प्रकाशस्वरूप प्रभो ! हमारे घर मे पुत्र होवे। पुत्र भी ऐसा जो सूनु होवे। अर्थात जो जगत मे अपने उत्तम गुण कर्म स्वभावो से जहा स्वय स्थान–स्थान पर शसा प्रशसा स्नेह–सम्मान एव श्रद्धा तथा यश का भोजन बने वहा उसके कारण हम माता–पिताओ को भी स्थान–स्थान पर स्नेह सम्मान एव यश मिले। इतना ही नहीं वरन हे प्रभुवर ! वह पुत्र तो ऐसा होना चाहिए जो कि अच्छी प्रकार से श्रद्धा भक्ति से तेरी स्तुति प्रार्थना ?–उपासना भी करने वाला हो। अन्यत्र भी वेद मे ये माता–पिता प्रभु से प्रार्थना करते हैं – 'जातवेद ! यशाऽस्मासु धहि प्रजाभि । हे कण–कण और क्षण–कण मे विराजमान रहने वाले प्रभु देव। हमे प्रजा दो सन्तान दो। पर प्रजा ऐसी कि जिस के प्रकृष्ट सस्कारो के कारण उत्तम गुण कर्म स्वभावो के कारण हमे भी सर्वत्र शसा प्रससा और यश की प्राप्ति हो।

यो तो सभी माता–पिता हृदय से यह चाहते हैं कि हमारी सन्तान हमार लिए सुखप्रद हा हमार लिए शान्तिप्रद हा हमारे लिए यशाप्रद हो पर वह ऐसी होती नहीं। वो वेद मे इसका भी साधन बताया गया है वह यह कि जो माता–पिता उस जातवेदा से यह प्रार्थना करते हैं कि वह जातवेदा प्रभु उन्हे सन्तान से भी यश प्रदान करे तो उन्हे चाहिए कि व अपने घर परिवार म ऐसा वातावरण प्रस्तुत करे जिससे कि उनको उस कण–कण मे विद्यमान रहने वाले प्राणो से प्यारे ओर सब जग से न्यारे जातवेदा प्रभु से जो उत्पन्न हुए वेद है – जो उत्पन्न हुई वाणी है उसके स्वाध्याय का सौभाग्यमय अवसर प्राप्त होता रहे या किसी साधु सन्यासी विद्वान ज्ञानी तपस्वी उपदेशक द्वारा वेद वाणी के सदुपदेशो का श्रवण करने का सौभाग्य मिलता रहे। एसा होने पर इस मे कोई सन्देह नही कि उनकी सन्तान सुसन्तान बन कर उनके लिए सब प्रकार से सुखप्रद होगी शान्तिप्रद हागी। और तब वह सच्चे अर्थो मे सूनु बन कर जगत मे ऐसे उत्तम कार्य करेगी कि जिससे जहा स्थान–स्थान पर उसकी शसा–प्रशसा होगी और उसको सर्वत्र स्नेह सम्मान और यश मिलेगा वहा उस के माता–पिता की भी सर्वत्र शसा प्रशसा होगी और उन को भी उसके माध्यम से सर्वत्र स्नेह–सम्मान और यश मिलेगा। फिर वह सन्तान इतना सब कुछ होते रहने पर भी इस सब का श्रेय अपने से बडो को अर्थात अपने माता–पिता एव आचार्य आदि को देता हुए अपनी शसा–प्रशसा को उनकी ही शसा–प्रशसा कहेगा अपनी महिमा को उनकी ही महिमा दर्शायेगी। नही–नही इतना ही नही वह तो और भी आगे बढकर इस सब क्रिया कलाप का श्रेय एव अपने धर्मात्मा उत्तम माता–पिता एव आचार्य आदि के प्राप्त होने पर भी श्रेय अपने प्राणो से प्यारे प्रभु को देता हुआ उसकी भी कृतज्ञता से झूमता हुआ स्तुति प्रार्थना और उपासना करता रहेगा। ऐसे समय तब सचमुच उस माता–पिता की आत्मा तृप्त होती हुई प्रभु से अपने हृदय से की हुई निम्न प्रार्थना–स्यात्न सूनु । और जातवेदा! यशोऽस्मासु धेहि प्रजाभि । और जातवेदा! प्रजाभि अस्मासु यश धेहि कि हे सर्वव्यापक सर्वान्तर्यामी वेदोत्पदक प्रभुवर ! तू हमे यश दे। तू जहा अपने जीवनो के द्वारा हमे यश दे वहा सन्तान के माध्यम से भी हमें यश प्रदान कर। को सार्थक समझेगी और फिर वह कृतकृत्य होकर प्रभु का धन्यवाद भी करेगी।

दम्पती–पति–पत्नी जहा ऐसे उत्तम वेद के मन्त्रो से प्रभु शरण मे बैठकर यह प्रार्थना करते है वहा वे सन्तान पाकर अर्थात जननी–जनक–माता–पिता बनकर स्वय भी जी–जान से अपनी सन्तान को ऐसा बनाने का हार्दिक प्रयास करते हैं ताकि इससे जहा उस सन्तान की यशोवृद्धि हो वहा इनकी अपनी आत्मा भी फूली न समा कर हृदय से प्रभु का धन्यवाद करती रहे।

सन्तान के अभिभावक ये माता–पिता सब दृष्टि से शरीर मन बुद्धि आदि से इस सन्तान का लालन–पालन करते हे पालन–पोषण करते है इसको विद्या सुशिक्षा से समलकृत करते है इसकी नाना प्रकार की इच्छाओ–कामनाओ आकाक्षाओ को पूर्ण करते हे यहा तक कि ये अपने आपको खतरो मे डालकर भी इसको सर्वविध सुख–सुविधाओ से सम्पन्न करते हैं। ये माता–पिता अपनी सन्तान के लिए जितना कुछ करते है उसका वणन नहीं किया जा सकता। ये सन्तान के लिए सर्दी सहते हैं गर्मी सहते हैं धूप सहते है वर्षा सहते हैं आधी सहते है ओले सहते हैं भूख सहते है प्यास सहते हैं अपमान सहते हैं तिरस्कार सहते है डाट टपट सहते है स्वय फटा पुराना पहनते है पर बच्चो को ठीक ठीक नया वस्त्र पहनाते है। स्वय फटे पुराने जूते पहन लेते हैं पर बच्चो को नए पहनाते है स्वय रूखा सूखा एव बासी खा लेते है पर बच्चो को बढिया से बढिया एव ताजा खिलाने का प्रयास करते हैं स्वय छाछ पी लेते है। पर बच्चो को मक्खन और घी खिलाने का प्रयास करते हैं स्वय अप्रिय और अस्वादिष्ट खा लेते हैं पर बच्चो को प्रिय से प्रिय और स्वादिष्ट से स्वादिष्ट पदार्थ खिलाने का प्रयास करते हैं। मुझे स्मरण है कि एक बार पूज्या माता जी के सामने मिठाई आई तो उसमे से स्वय जरा सी खायी होगी कि फिर उसने वह जेब मे रख ली। मैं जब स्कूल से आया तो झट मा ने वह मिठाई मुझे दे दी। मैं जब उसको बडे प्यार से खाने लगा तो मैंने क्या देखा कि मा को बडी तृप्ति अनुभव हुई। उस समय उन्हे इतनी अधिक तृप्ति अनुभव हुई कि जितनी उन्हे स्वय खाने पर भी सम्भवत नहीं हुई होगी। देखा क्या अजीब बात है वस्तु खाऊ तो मैं पर उससे मैं तो इतना तृप्त नहीं होऊ जितनी की मेरी मा । मैंने मा से पूछा कि – 'मा जी! जब इतनी स्वादिष्ट मिठाई थी तो आपने स्वय क्यो नहीं खाई ? तो इस पर वे बोली – 'बेटा ! इसका पता तो तुझे तब ही लगेगा जब तेरी अपनी सन्ताने होगी। मा–बाप भगवान ने न जाने कितनी अद्भुत देन दी हुई है जो स्वय नानाविध कष्ट सहकर मान-अपमान सहकर भी जब अपनी सन्तान को सुख पाते हुए देखते हैं तो उससे उन्हे अत्यन्त तृप्ति होती है।

विजयदशमी पर विशेष

"शक्ति, शील और सौन्दर्य के प्रतीक

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम"

सत्यबाला देवी

परित्राणाय साधूनाम विनाशाय च दुष्कृताम के आदर्श के अनुसार भगवान राम का जन्म ही दुष्टो के विनाश साधुजनो (सज्जन व्यक्तियो) की रक्षा और पतितो के उद्धार हेतु ही हुआ और उन्होने अपने इस उच्चादर्श एव महान उद्देश्य के पालनार्थ आजन्म नाना कष्ट सहन किए। भगवान राम चन्द्र के समान कान्तिवान भुवन मोहन अनिन्द्य रूप सौन्दर्य के धनी अभिराम बल वीर्य सम्पन्न महा तेजस्वी एव स्वभाव से ही सौम्य शीलवान सुसस्कृत विनयशील और महान थे जिन्होने अपने अलौकिक गुणों की उज्ज्वल शीतल स्निग्ध यश चन्द्रिका की दिव्य छटा से समस्त विश्व को आलोकित कर दिया। वह बालपन से ही शान्त स्वभाव सरल हृदय पर दुखकातर सुकोमल प्रकृति विनम्र सहृदय उदार चेता सहनशील समदर्शी सुखदुख मे समान भाव रखने वाले एव क्षमानिधान थे। वह अनुपम दिव्य सौन्दर्यशाली शक्ति और शील के साकार रूप महानात्मा और परम आकर्षक व्यक्तित्व के धनी थे। जिन के अनिन्द्य सौन्दर्य की एक झलक पाकर भक्त जन कृतकृत्य और मुग्ध हो उठत थे। अत अपकार करने वाले के प्रति लेशमात्र दुर्भावना न रखन वाल तथा लोक कल्याण हेतु महान से महान त्याग करने वाले पुरुषोत्तम राम वस्तुत वन्दनीय है।

महर्षि वाल्मीकिकृत रामायण और परमरामभक्त गो स्वामी महाकवि तुलसीदास द्वारा रचित राम चरितमानस के चरित नायक शक्तिशील और सौन्दर्य के प्रतीक मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम का चरित्र वस्तुत अद्वितीय अलौकिक गुण सम्पन्न आदश एव अनुकरणीय है। महामुनि नारद के मतानुसार राम से अधिक नरश्रेष्ठ आदर्श चरित्र व्यक्ति ससार मे मिलना असम्भव है। वस्तुत उन का कथन पूर्णतया सत्य चरितार्थ होता है। भारतीय सस्कृति से सम्बन्धित प्राय समस्त आचार–विचार सद्गुण और विशिष्टताए रामचरित्र मे विद्यमान है। अपने उन्ही विशिष्ट दैवीय सदगुणो से समलकृत होने के फलस्वरूप ही वह मानव होकर भी देवत्व के पद पर प्रतिष्ठित हुए है। मर्यादा पुरुषोत्तम का अर्थ है – मर्यादा की रक्षा करने और पालन करने वाले पुरुषो मे सर्वश्रेष्ठ। मर्यादा पालन तो उनके जीवन का एक मात्र ध्येय था। शैशवावस्था से ही उनके उपरोक्त आदर्श की अभिव्यक्ति स्पष्टतया दृष्टिगोचर होती है। धर्म न्याय और सत्य की रक्षा और मर्यादा स्थापित करना लोक व्यवस्था की प्रतिष्ठापना करना ही उन के जीवन का चरम लक्ष्य था। उनका आविर्भाव ही भूभार उतारने हेतु एव सज्जन व्यक्तियो को सुख और सुरक्षा प्रदान हेतु हुआ था। धर्म की तथा यज्ञ की मर्यादा रक्षा हेतु वह किशोरावस्था मे ही गुरु विश्वामित्र के साथ ऋषि मुनियो द्वारा आयोजित यज्ञ निर्विघ्न पूर्ण कराने हेतु भयकर राक्षसो से निवसित बन मे चले जात हैं और ताडका सुबाहु और दुर्दान्त शक्तिशाली राक्षसा का वध कर धर्म की मयादा और व्यवस्था स्थापित करते है।

जनकपुर मे भ्रमण करते समय जव वह सीता को गौरी पूजन हेतु वाटिका म जाते देखते हैं तब सहसा सीता क अनुपम दिव्य अनिन्द्यनीय। रूप सौन्दय का दशन कर उन का सुकोमल हृदय विक्षुब्ध उद्विग्न और विचलित हा उठता हे ओर वह लक्ष्मण से कहते हे कि मेरा हृदय सीता क प्रति आकृष्ट हा रहा हे इसका अथ हे कि सीता मुझे अवश्य मिलेगी क्योकि रघुवशियो का हृदय कभी पर नारी के प्रति आकृष्ट नही हो सकता। उनक उपरोक्त कथन स स्पष्ट होता हे कि उन का मयादा पालक हृदय स्वप्न मे या अनजाने भी कभी मयादा का उल्लघन नही करता। इसीलिए एकान्त म सीता क अद्वितीय भुवन माहन रूप सौन्दर्य पर मुग्ध हाने पर भी वह मयादा का उल्लघन नही करत और दूर स ही सीता के दशन कर लौट आते है।

सीता स्वयम्बर हित आयोजित सभा मे देश विदश स आमन्त्रित महाबली तेजस्वी वीर शिरोमणि राजागण भी जब शिव धनुष तोडने मे असमथ रहते हे तब महाराज जनक अत्यधिक निराश हताश एव हतोत्साहित होकर कह उठते है **"वीर विहीन महि मै जानी"** ऐसा प्रतीत होता है कि सीता कुवारी ही रह जाएगी। तब वीर धर्म की मर्यादा पालन हेतु अतुलित शक्तिशाली श्रीराम शिव धनुष भग करने हेतु तुरन्त उद्यत हो जाते है। पर उस समय भी उनका चित्त अविचल निर्विकार और चचलता रहित था। आसक्ति रहित और विकार रहित वह निरपेक्ष भाव से केवल महाराज जनक की चिन्ता और निराशा का निराकरण करने और वीर धर्म का पालन करने हेतु ही शिव धनुष तोडने के लिए सन्नद्ध होते हैं।

शिव धनुष टूटने के उपरान्त जब परम क्रोधी कुठारधारी उद्धत स्वभाव एव प्रलयकारी परशुराम स्वयम्बर सभा मे उपस्थित होकर समस्त वातावरण को विक्षुब्ध बना देते हैं तब अपने अलौकिक देवोपरम शील स्वभाव का परिचय देते हुए श्रीराम अपने शीतल जल समान विनम्रवचनो द्वारा उनकी उग्रता और क्रोधग्नि को पूर्णतया शान्त कर देते है।

जब राजतिलक के बदले उन्हे चौदह वर्ष के लिए वनवास की सूचना मिलती है तब हर्ष विषाद रहित सुख दख म समान भाव रखन वाले परम सहिष्णु विनम्र स्वभाव भगवान राम पिता के वचन पालन की मयादा की रक्षा हेतु एक भी शब्द उच्चारित किए बिना रच मात्र भी अनिच्छा अथवा विरोध प्रकट किए बिना सिर झुका कर पिता और माता कैकेई के भी आदेशानुसार समस्त राजकीय सुख वैभव राज सिहासन को भी ठुकरा कर तपस्वी का वेश म नगे पाव बीहड भयकर वन की ओर अग्रसर हो जाते हे। यहा तक कि विमाता कैकयी क प्रति भी जिन के कारण उनहे वन वन भटकना पडा एव धूप शीत वर्षा के अतिरिक्त भयकर राक्षसो द्वारा भी अगणित असह्य कष्ट सहन करने पड उनक हृदय म रचमात्र भी कभी आक्राश क्राध ओर तिरस्कार का भाव उदय नही हाता ओर वह उन क प्रति सदैव माता के समान ही आदर और श्रद्धा क भाव प्रदिशत करत है।

यद्यपि ज्येष्ठ पुत्र हाने के नाते राज सिहासन पर उन्ही का अधिकार था पर कुल की मयादा की व्यवस्था अक्षुण्ण रखन हेतु उन्हान निर्विकार हृदय से सहर्ष चौदह वर्ष के लिए वनवास स्वीकार कर लिया। यद्यपि उन्हे अपन इस कठिन कर्तव्य पालन हेतु धूप शीतल और वषा ताप आदि क अतिरिक्त वन प्रान्तर म निवसित भयकर राक्षसो से भी जूझना पडा यही नहीं आततायी रावण द्वारा सीता हरण से पत्नी विरह की असह्य यन्त्रणा भी सहन करनी पडी पर उन के सौम्य मुख मण्डल पर कभी लेशमात्र भी मलिनता उदासीनता पश्चाताप अथवा हताशा के चिन्ह तक भी दृष्टिगोचर नहीं हुए। यहा तक कि चित्रकूट पर्वत पर माताओ गुरुजनो एव प्रजाजनो सहित भरत के आगमन पर बार बार अयोध्या लौटने के आग्रह और अनुरोध को भी उन्होने अपनी इसी मर्यादा पालक प्रवृत्ति का परिचय देते हुए अस्वीकार कर दिया। यहा तक कि स्वय पश्चाताप दुग्धा विमाता कैकेयी द्वारा भी बार–बार अयोध्या लौटने के लिए अनुरोध किए जाने पर भी धीर वीर सत्य सन्ध धर्म और मर्यादा के रक्षक दृढ प्रतिज्ञ राम अपने निश्चय पर अटल रहे और विमाता का आग्रह भी नम्रता पूर्वक अस्वीकार कर दिया क्योकि उस समय अयोध्या लौटने से पिता के वचन की मर्यादा उनकी आशा और स्वय उन की निष्ठा भग हो जाती।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम न सत्य धर्म न्याय और मर्यादा की रक्षा हेतु अपने लघु भ्राता सुग्रीव की पत्नी के प्रति कुदृष्टि डालने वाले और उसके राज्य को भी अन्याय पूर्वक हथिया लेने वाले अधर्मी दुराचारी और आततायी बालि का वध किया। इसके अतिरिक्त वनवास काल मे ऋषि मुनियो का [illegible] करने वाले उन की तपस्या एव यज्ञ आदि पवित्र कार्यो को भग करने वाल कइ बलशाली दुर्दान्त राक्षसो का वध कर धर्म ओर मर्यादा की रक्षा करत हुए वन प्रान्तर क समस्त वातावरण को शान्त निर्विघ्न सुखद पावन और भयरहित बनाने का प्रयत्न किया।

इसके अतिरिक्त एक पत्नीव्रत की मर्यादा की रक्षा करने हतु शूपनखा द्वारा दोनो भाइयो को अपने वासना पूर्ण मोह जाल मे आबद्ध करते हुए निकृष्ट प्रमाभिनय करने पर नारी धर्म की मर्यादा भग होते देख लक्ष्मण को सकेत कर उस अधर्म नारी जाति क लिए कलक स्वरूप नारी शूपनखा की नाक कान कटवा कर उसे उसकी उक्त धृष्टता और निकृष्ट भावना के प्रदर्शन का समुचित दण्ड दिया इस प्रकार जहा एक ओर उन्होने नारी धर्म की मयादा की रक्षा की वही दूसरी आर अपनी एक पत्नीव्रत की मयादा का पालन कर आदर्श चरित्र का भी परिचय दिया।

नारी धम की मयादा भग करने वाले परस्त्री के प्रति कुदृष्टि डालने वाले आततायी दुष्ट दुराचारी अधर्मी रावण द्वारा सीता हरण करने पर [illegible] पौरुष पराक्रम शूरवीरता एव धर्म निष्ठा प आस्था रखन वाले भगवान [illegible] न मुठठ भर वानर सेना की सहायता [illegible] याचारी नृशस अधर्म पर अतुलित बल शाली असख सैन्यशक्ति के अधिकारी दुष्ट रावण क कुल सहित वध कर महारानी सीता ए अन्य कई निर्दोष राजकुमारियो को उसव कारागार से मुक्त करवा कर विश्व [illegible] सत्यधर्म और न्याय की मर्यादा स्थापि की। पर अधम दुराचारी रावण पर उनक विजय दो राजाओ की पारस्पारिक शत्रुत के परिष्कार के रूप मे नही थी प्रत्यु अधम पर धर्म की पाप पर पुण्य की असत्य पर सत्य की अन्याय पर न्या की दुराचरण पर सदाचरण की कुप्रवृत्ति पर सदप्रवृत्तियो की असुर सस्कृति प देव सस्कृति की अथवा पर आर्य जा की विजय की द्योतक है जिस पर आ भी आर्य जाति गर्व और गौरव का अनु करती है। उसी पावन दिवस क सस्मर के रूप मे आज भी विजय दशमी पवित्र पर्व मनाया जाता है

श्रीराम के अलोकिक अनिद्य भु मोहन सौन्दर्य एव अनुपम छवि का दश कर समस्त चराचर विमुग्ध एव म मुग्ध हो जाते थ। उनके अतुलित ब पराक्रम वीरता और पौरुष के सम्मु अत्याचारी और अधर्मी काप उठते थ उन के आदश चरित्र की महिमा उन भक्तो को ही नही प्रत्युत समस्त मा जाति को आकर्षित कर श्रद्धा से नत देती थी। अपन दिव्य सौन्दय एव अतुलनी पराक्रम क कारण ही वह शक्ति [illegible] सौ[illegible] के तथ अपनी विनम्रता [illegible] सुशी[illegible] होने के लिए शील के प्रतीक म जाते

शेष भाग पृष्ठ ६

हरियाणा में हिन्दी की दुर्दशा के लिए सरकार दोषी

– प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य

आजादी के ५४ वर्ष बाद भी देश मे अग्रेजी का वर्चस्व जारी है। यद्यपि सविधान मे हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है किन्तु अग्रेजी को १९६५ तक सरकारी कामकाज मे जारी रखने का प्रावधान किया गया था। परन्तु आश्चर्य की बात तो यह है कि अब सरकारी कामकाज मे अग्रेजी का ही वर्चस्व है। हिन्दी भाषी प्रान्तो मे भी जिनकी सरकारी भाषा हिन्दी है – अग्रेजी का प्रयाग जारी है और १९६९ के हरियाणा राजभाषा अधिनियम की धारा ३ ४ के आधीन राज्य के सभी सरकारी विभागो प्रशासनिक कार्यो तथा जिला अदालता आदि मे समस्त कार्य हिन्दी मे किया जाना अनिवार्य है किन्तु यहा भी अग्रेजी था वर्चस्व जारी है। जिला लघु सचिवालय से लेकर राज्य सिविल सचिवालय तक अधिकाश प्रशासनिक एव सरकारी कामकाज अग्रेजी का ही होता है। सरकारी कार्यालयो मे बोर्ड हिन्दी मे लगे है किन्तु पत्राचार एव कार्यालय का समय अग्रेजी मे ही हाता है।

यद्यपि राज्य सरकार/हरियाणा सरकार के मुख्य सचिव ने राज्य के अम्बाला हिसार रोहतक गुडगाव मण्डल के सभी विभागाध्यक्षो आयुक्तो उपायुक्तो एव उपमण्डल अधिकारियो (नागरिको) को हिन्दी मे काम करने के आदेश जारी किए है। देखिए मुख्यसचिव हरियाणा पत्र क्रमाक ६२/३७/६८ जी०एस० चण्डीगढ ६/१०/६९। यह पत्र हरियाणा के सभी न्यायालयो एव जिला तथा सत्र न्यायालयो को भी भेजा गया है। इस पत्र मे कहा गया है कि सरकार इस बात को गम्भीरता से देखती है कि अभी तक भी सरकारी कार्यो मे अग्रेजी का प्रयोग किया जा रहा है। सरकार ने कहा है कि भविष्य मे सभी प्रशासनिक विभाग राष्ट्रभाषा हिन्दी मे ही सरकारी टिप्पणिया एव पत्राचार करे। सरकार के पत्र मे यह भी कहा गया है कि इन आदेशो की अवहेलना करने पर दोषी अधिकारियो एव कर्मचारियो के विरुद्ध कार्यवाही की जाएगी। इससे पहले भी हरियाणा सरकार के मुख्य सचिव ने हिन्दी मे काम करने के आदेश/निर्देश जारी किए है। देखिए पत्र क्रमाक ६२/३७/६८ जी०एस० दिनाक ३–७–१९६८ तथा पत्र क्रमाक १२/४५/६३–६ जी०एस० टी दिनाक २५–५–६३ किन्तु सरकारी आदेश फाइलो तक सीमित होकर रह गए है। अधिकारी तथा कर्मचारी इस ओर ध्यान नही देते क्योकि सरकार उनका सख्ती से पालन नही करवाती ?

हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के कामकाज मे भी अग्रेजी का प्रयोग जारी है। उधर हरियाणा सरकार ने पहली कक्षा से स्कूलो मे अग्रेजी को अनिवाय घोषित कर दिया है जबकि दसवी तथा बारहवी कक्षा तक भी छात्रो को अग्रेजी मे भारी कठिनाई आती है। हरियाणा म स्थित बहुत से पब्लिक स्कूलो मे तो दसवी तथा बारहवी कक्षाओ मे हिन्दी विषय तक लेने की अनुमति नही होती। हरियाणा क चारो विश्वविद्यालयो मे समस्त प्रशासनिक कामकाज पत्राचार आदि अग्रेजी मे होता है। कुरुक्षेत्र एव महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कालेजो मे साराकामकाज अग्रेजी मे होता है। महाविद्यालयो मे टाईम टेबल तथा सूचनापटट तक अग्रेजी मे होते है। छात्रो को समझ मे आए या न आए किन्तु सूचनाए अग्रेजी मे ही होगी। अधिकाश कालेजो मे न तो हिन्दी के टाइपराइटर हैं और न ही लिपिक है क्योकि सरकार उनके लिए स्वीकृति या अनुदान ही नहीं देती। हरियाणा के विभिन्न कालेजो मे हिन्दी प्राध्यापको के पद विज्ञापित ही नहीं होते। जो पद खाली पडे है सरकार उनको भरने की स्वीकृति नहीं देती। इससे विद्यार्थियो की भारी हानि हो रही है। हिन्दी अनिवार्य कक्षाओ मे छात्रो की भारी भीड होती है। कई जगह एक सैक्शन मे छात्रो की सख्या १००–१२५ तक हो जाती हैं ८०–६० की सख्या तो आम बात है।

हरियाणा के कालेजो मे बी०ए० कक्षाओ मे हिन्दी अनिवार्य विषय को अग्रेजी अनिवार्य के बराबर पीरियड नहीं दिए जाते। यह अन्याय हिन्दी के साथ कई वर्षो से चल रहा है। कालेजो मे हिन्दी अनिवार्य भी १०० अक की है और अग्रेजी अनिवार्य भी १०० अक की है किन्तु हिन्दी अनिवार्य को प्रति सप्ताह चार पीरियड का समय दिया जाता है जबकि अग्रेजी अनिवार्य को प्रति सप्ताह नौ से बारह पीरियड का समय दिया जाता है। करनाल पानीपत कैथल अम्बाला सढोरा पेहवा जीन्द हिसार स्थित कालेजो मे यही स्थिति है। हरियाणा के अन्य कालेजो मे भी यही व्यवस्था की हुई है। यह हिन्दी तथा हिन्दी पढने वाले छात्रो के प्रति भारी अन्याय है। इसी कारण कालेजो मे अग्रेजी के प्राध्यापको की सख्या हिन्दी के प्राध्यापको से दो गुणा होती है। जैसे करनाल स्थित राजकीय महाविद्यालय तथा दयाल सिह कालेज करनाल म अग्रेजी विभाग मे प्राध्यापको की सख्या १२–१२ है जबकि हिन्दी विभाग मे ६–६ प्राध्यापक है। जबकि दोनो ही कालेजो मे हिन्दी तथा अग्रेजी विषयो मे एम०ए० कक्षाए है। आखिर हिन्दी तथा हिन्दी प्राध्यापको के साथ यह भेदभाव क्यो ?

हरियाणा के न्यायालयो मे भी हिन्दी की घोर उपेक्षा है। यहा का सारा कामकाज अग्रेजी मे होता है। यहा की जनता को न्याय भी अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी मे नहीं मिलता। जिला न्यायालय से लेकर सत्र न्यायालय तक सारी कार्यवाही अंग्रेजी मे होती है। पजाब एव हरियाणा उच्च न्यायालय मे भी अग्रेजी का वर्चस्व है। हिन्दी मे काम करने की अनुमति नहीं ? हरियाणा का अलग से उच्च न्यायालय भी नहीं है ?

इस तरह हरियाणा मे विभिन्न प्रशासनिक शैक्षिक एव न्यायिक आदि क्षेत्रो मे अग्रेजी का गैर कानूनी वर्चस्व कायम है और इस कारण हिन्दी की भारी उपेक्षा हो रही है। इसके लिए हरियाणा सरकार सरकारी अधिकारी एव कर्मचारी दोषी है। जनता तथा प्रबुद्ध वर्ग भी इसके लिए दोषी है। इस बारे मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा (रोहतक) ने हरियाणा राष्ट्रभाषा समिति का गठन कर एक सराहनीय कदम उठाया है। इस बारे मे आर्यसमाज के अलावा अन्य स्वैच्छिक सस्थाओ सगठनो तथा शिक्षण सस्थाओ को भी सहयोग देना चाहिए। अन्य व्यक्तियो को भी इसमे सहयोग देना चाहिए ताकि हिन्दी के प्रति हो रहे अन्याय एव भेदभाव को समाप्त किया जा सके। जिला स्तर पर राष्ट्रभाषा सम्मेलन आयोजित करन की आवश्यकता है। हरियाणा के राज्यपाल एव मुख्यमन्त्री को इस बार मे ज्ञापन भेजने चाहिए कि –

१ पहली कक्षा से अग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त की जाए।
२ हरियाणा सरकार के कार्यालयो तथा कामकाज मे हिन्दी का पूर्णतया प्रयोग किया जाए।
३ हरियाणा के चारो विश्वविद्यालयो मे सारा कामकाज हिन्दी मे हो।
४ कालेजो मे हिन्दी अनिवार्य को अग्रेजी अनिवार्य के बराबर पीरियड/समय दिया जाए।
५ कालेजो मे हिन्दी के रिक्त प्राध्यापक पद भरे जाए।
६ कालेजो में हिन्दी के लिपिक रखे जाए।
७ हरियाणा के न्यायालयो म हिन्दी म काम करने की अनुमति दी जाए।

– अध्यक्ष स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, दयालसिह कालेज करनाल

हरियाणा के कालेजो मे बी०ए० कक्षाओ मे हिन्दी अनिवार्य विषय को अग्रेजी अनिवार्य के बराबर पीरियड नहीं दिए जाते। यह अन्याय हिन्दी के साथ कई वर्षो से चल रहा है। कालेजो मे हिन्दी अनिवार्य भी १०० अक की है और अग्रेजी अनिवार्य भी १०० अक की है किन्तु हिन्दी अनिवार्य को प्रति सप्ताह चार पीरियड का समय दिया जाता है जबकि अग्रेजी अनिवार्य को प्रति सप्ताह नौ से बारह पीरियड का समय दिया जाता है।

गौ सेवा से राष्ट्र की समृद्धि

– डॉ० बिजेन्द्र पाल सिह चौहान

सभी पशुओ मे गाय का स्थान अति उत्तम है गाय व्यक्ति मानव व राष्ट्र के लिए हितकारी है राष्ट्र की समृद्धि के लिए गाय की सेवा करना गौ सवर्द्धन गायो का पालना अत्यन्त हितकर है। श्रीकृष्ण ने तो गोपालन व गौ सेवा को अत्यन्त महत्व दिया था। उस समय राजा महाराजाओ के यहा सहस्रो गाये रहती थी पयाप्त मात्रा मे दूध दही होता था। प्रजा राजा सभी हृष्ट पुष्ट रहते थे प्रचुर मात्रा मे धन धान्य होता था किसी प्रकार की कोई कमी न थी प्रजा सुखी रहती थी।

आज चारो ओर व्यभिचार अनाचोार बढकर दुखो की वृद्धि हो रही है। हर किसी के चेहरे पर तनाव के लक्षण दिखाई देते है। चेहरे बुझी लालटेन की भाति दिखते है सामाजिक राजनीतिक धार्मिक व राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय समस्याए उलझती जा रही हैं। गौ पालन से अनेक समस्याओ से निपटा जा सकता है।

गाय का दूध गोवर मूत्र व गाय के मुह से निकली श्वास भी मानव क लिए कृषि व वातावरण के लिए अत्यन्त उपयोगी है गाय एक पवित्र पशु है उसे घर मे रखने से उसके पास रहने से ही अनेक रोगो से छुटकारा मिल जाता है और अनेक रोग तो पास नही आते। गाय के इतने गुण है कि यहा वर्णन नही किया जा सकता।

दुग्ध की उपयोगिता

गाय के दुग्ध मे कार्बोहाइड्रेट (शक्कर) फैट (घृत) प्रोटीन कैल्शियम तथा (आयरन (लौह) को छोड कर) सभी आवश्यक लवण होते है दूध शरीर के लिए सम्पूर्ण भोजन है गाय के दुग्ध से शरीर मे बल व ओज की वृद्धि होती है धातुए पुष्ट होती है सौन्दर्य व तेज बढता है। बुद्धि निर्मल होकर तेज होती है स्फूर्ति बनी रहती है आलस्य व उन्माद आदि नही होता रोगो से लडने की क्षमता बढती है बच्चो के लिए यह माता के दूध की भाति हितकारी व सुपाच्य है मा के दूध की अनुपस्थिति में गौ का दूध मा की भाति ही लाभकारी होता है।

गौमूत्र की उपयोगिता

आयुर्वेदिक अनेक औषधियो का निर्माण गौमूत्र से किया जाता है इसके अतिरिक्त गौमूत्र को विशेष विधि द्वारा शोधित कर काली खासी पुरानी खासी पीलिया यकृत वृद्धि उदर मे गैस बनना उदर का फूलना पाचन विकारो तथा अन्य अनेक रोगो मे लाभार्थ किया जाता है व्रक्क के रोगो मे यह उपयोगी है। अनेक बुद्धिजीवियो ने इसके मूत्र को आसवन करके कैसर रोगियो को दिया और लाभ हुआ है। गोमूत्र ऐसी असाध्य बीमारियो को भी दूर करता है जिनका आज भी इलाज नही है आज एडस जैसी भयकर व्याधिया बढ रही है भारत के महानगरो मे यह व्याधि भयकर रूप धारण करती जा रही है ऐसे रोगो मे हम रोगी की रोग प्रतिरोधक क्षमता को गौ दुग्ध व गौ मूत्र से बढा कर रोगी को व्याधि मुक्त कर सकते है यदि इस पर अन्वेषण किया जाए ता अनेक लाभकारी परिणाम आश्चर्य जनक रूप से सामने आ सकते है हमारे शास्त्रो मे व ऋषि महर्षियो द्वारा गाय की महिमा का वर्णन वेस ही नहीं किया गया है यह ऐसे समय मे उपयोगी है जहा कोई औषधि आदि साथ नही दते अत गाय की सेवा मे अनेक महत्व है आज गायो की रक्षा सवा सवर्धन हेतु आगे आना चाहिए।

गाय का गोबर

गाय का गोबर कहने को गोबर है परन्तु राष्ट्र को कुछ सीमा तक आत्मनिर्भर बना सकता है वैज्ञानिको ने गोबर से गैस बनाने की विधि तो पहले ही निकाल ली है है अब यदि गौशालाओ व गावो आदि मे जहा गाय है वहा गोबर गैस प्लाण्ट स्थापित कर चूल्हे मे जलाने वाली गैस का उत्पादन कर सकत है देश मे नगरो महानगरो मे जहरीली गैसे उगलते कारखाने लगे हुए है जिनसे वायु जल प्रदूषण बढकर मानव स्वास्थ्य व कृषि की हानि हो रही है ऐसे मे यदि गोबर गैस प्लान्ट लगा दिए जाए तो कोई क्षति नहीं अपितु गाय के गाबर से प्राकृतिक गैस बनेगी जो हानिकारक नही होती और प्लाण्ट से निकला अवशेष कृषि हेतु उपयोगी अत्युत्तम उर्वरक का कार्य करेगा इस प्रकार गैस व उर्वरक के क्षेत्र मे देश आत्मनिर्भर होगा इसके लिए गौवश की वृद्धि कर बेहतर रूप मे कार्य को बढाया जाना चाहिए। सहस्रो को रोजगार भी मिलेगा दूध व भोज्य पदार्थ आज की मुख्य आवश्यकता है अत गायो की सख्या बढेगी तो रोजगार भी मिलेगा बेरोजगारी दूर होगी।

प्रदूषण निवारण

गाय ऐसा पशु है जो लाभकारी ही लाभकारी है इससे कोई भी क्षति नही होती गाय का तो धरती पर चलना उसके पैरो के निशान भी लाभदायक है खेतो मे से गौधन जैसे बडी सख्या मे निकलता है मिटटी खुरो से उखड कर भुर भुरी होती है गोबर से खतो की उपजाऊ शक्ति बढती गौमूत्र मे यूरिया होता जो मिटटी की उपजाऊ शक्ति को बढाता है इसके साथ ही गाय की श्वास से वायु मे उपस्थित हानिकारक गेसे नष्ट होती है गाय की श्वास मे गुगुल की सुगन्ध होती हे जो वातावरण को सुगन्धित करती है तथा वायु के रोगो गठिया वात रोग श्वास कफ दर्द पुराना नजला जेसे कई रोगा से गाय के पास रहने वाले व्यक्ति को स्वस्थ्य रखती है क्षय उन्माद श्वास कफ आदि अनेक राग पास नही आत अत गाय की सवा से अत्यन्त लाभकारी परिणाम मिलत है। वातावरण व पर्यावरण को शुद्ध व पवित्र रखने के लिए गाय का पालन हितकर है।

गौ का दान

अनेक शास्त्रो मे गौ की महिमा का वर्णन है रामायण तथा अनेक स्थानो पर व प्राचीन काल मे गौदान का वर्णन है राजा महाराजा तथा साधारण प्रजा जन भी प्रत्येक अवसर पर गायो का दान किया करते थे वह गायो की वृद्धि समृद्धि व रक्षा हेतु अनेक प्रयत्न किया करते थे। गाय एक अत्यन्त महोपकारक पशु है। प्रत्येक के घर मे गाय होनी चाहिए आज भी यदि गायो की वृद्धि की जाय तो राष्ट्र की समृद्धि बढेगी अनेक क्षेत्रो मे व्यक्ति समाज व राष्ट्र का विकास व उत्थान होगा आत्मनिर्भर होगा अत गाय के विकास की ओर सभी को ध्यान देना चाहिए और सरकार को तो गाय के रक्षण सरक्षण सवर्द्धन पर विशेष ध्यान देना चाहिए जिससे राष्ट्र का विकास हो विदेशो पर निर्भर रहकर हम उनके दास तो बन सकते है। आत्मनिर्भर व कई क्षेत्रो मे स्वतन्त्र नही हो सकते यह आत्मनिर्भता व स्वतन्त्रता गाय के पालन आदि से ही हो सकेगी।

पाश्चात्यीकरण का कुप्रभाव

बडे दुख की बात है कि आज लोग पाश्चात्यीकरण के प्रवाह मे बह रहे है घरो व दरवाजो पर गाया क स्थान पर कुत्ते व कुतिया बधे दिखायी देते है और इसे पालने मे ऐसे भ्रमित जाल मे फसे लोग बडी महानता समझते है यह शौक बढता जा रहा है और हम भूल कर अपनी सस्कृति धम व कर्त्तव्यो को छाड रह तथा दुख उठा रहे है चाय न दूध का हटा दिया जहा लाग दूध पीकर हृष्ट पुष्ट रहते थे वहा चाय से अल्सर कैंसर एसिडिटी (अत्यम्लता) कोष्ठ बद्धता अपचन उदर मे वायु बनना अजीणता जस रोग बढकर मनुष्य पतले कुश रागी निर्बल व मधुमेह उच्च रक्त चाप अनिद्रा आदि रागा स ग्रासित हो रहे है उधर कुत्ते कुतिया से काइ लाभ न होकर मल मूत्र विसर्जन द्वारा गदगी फैलती है उनके बालो आदि से श्वास कास प्रतिशयाय (एलर्जी) तथा उदर विकार बढते हे।

गाय का पालना व सवा करना परम सुखकारी हितकारी लाभदायक है अत गाय पालनी चाहिए बिना दूध वाली गाय भी अनेक प्रकार से लाभदायक होती है अत प्रत्येक को गाय पालनी चाहिए और समृद्धि बढानी चाहिए गाय की सेवा सबकी व राष्ट्र की समृद्धि है।

– चन्द्रलोक कालोनी खुरजा

उपदेशक प्रशिक्षण प्राप्त करें

मारिशस के आर्य नेता श्री मोहनलाल जी मोहित के द्वारा शीघ्र उदघाटित होने वाला अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक अनुसन्धान केन्द्र कर्जत (महाराष्ट्र) की शाखा समर्पण शोध सस्थान साहिबाबाद की ओर से सस्थान मे अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय प्रारम्भ किया जा रहा है।

इसमे भारत एव विदेशो मे वैदिक धर्म के प्रचार के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रशिक्षण के लिए गुरुकुलो एवम अन्य आर्य सस्थाओ से शास्त्री और आचार्य परीक्षा उत्तीर्ण स्नातको से आवेदन पत्र भेज सकते है। इच्छुक प्रार्थी आवेदन पत्र के साथ अपने प्रमाण पत्रो की प्रतिलिपि निम्न पते पर भेजे –

समर्पण शोध सस्थान
४/४२ सेक्टर ५ राजेन्द्र नगर
साहिबाबाद गाजियाबाद (उ०प्र०)

१२०वें जन्म दिवस पर विशेष

प्रखर वैदिक क्रान्तिवीर थे वीर जयानन्द भारतीय

– धर्मसिह शास्त्री

गिरिराज हिमालय की विशाल गोद मे बसा हुआ उत्तराचल का जनपद गढवाल सदैव बडे–बडे वीर तपस्वियो को जन्म देने वाला रहा है। विकास खड बीरोखाल की पट्टी साबली निवासी श्री छविलाल जी ने आज से १२० वर्ष पूर्व दिनाक १७ अक्तूबर १८८१ को रविवार के दिन एक वीर पुत्ररत्न की प्राप्ति की जिसका नाम जेबी रखा गया। जेबी की उम्र केवल चार साल की थी कि जन्म देने वाली माता का निधन हो गया। मातृहीन इस बालक को विमाता ने लाड –प्यार से पालकर बडा किया और गढवाल के इतिहास मे क्रान्तिकारी समाज सुधारक परमदेशभक्त क्रान्तिकारी स्वतन्त्रता सेनानी भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के ज्वाजल्यमान नक्षत्र वैदिक धर्मावलम्बी ऋषि भक्त कर्मवीर जयानन्द भारतीय के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

भारतीय जी को सत्यार्थ प्रकाश पढने से चमत्कारित कर दिया। वे देवी–देवताओ के स्थान पर सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान परमात्मा की उपासना करने की प्रेरणा लेने लगे और स्वामी दयानन्द सरस्वती के उपकारो की वर्षा गढवाल म बरसाने के लिए प्रयत्न करने लगे। सन १९११ मे भारतीय जी गुरुकुल कागडी जाकर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज से मिले। उन्होने स्वामी जी से पूछा – क्या मैं आर्य समाजी बन सकता हू, क्या मैं यज्ञोपवीत पहन सकता हू? वर्ण व्यवस्था के बारे मे जैसा सत्यार्थ प्रकाश मे लिखा है उसके अनुसार उत्तम कर्म करके उच्च वर्ण प्राप्त किया जा सकता है? स्वामीजी ने इनका उत्तर देकर भारतीय जी के चारों ओर के दरवाजे खोल दिए और उन्होने धार्मिक और सामाजिक महान कार्यो के लिए आर्य समाज के मच को चुन लिया। वे सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार कार्य मे जुट गए। उन्होने भीषण प्रतिकूल परिस्थितियो व अभावो का कठिन सघर्ष करते हुए विभिन्न वर्ग वर्णों जाति सम्प्रदायो के भेदभावो से ग्रस्त जन मानस मे मानव एकता के लिए वेद की मनुर्भव की घोषणा का उद्बोध किया। समाज मे एक नई चेतना दी और एक नया जीवन मन्त्र फूका। महर्षि दयानन्द सरस्वती की आर्य पताका उत्तराचल मे पहुचाने मे भारतीय जी का सर्व प्रथम महत्वपूण योगदान रहा अन्यथा उत्तराचल मे हिन्दू समाज मे भयकर अमिट कोढ अपनी मजबूत जडे बना चुका था। हिन्दू आपस मे जाति–पाति छुआछूत घृणाद्वेष धर्म के नाम पर पाठ–पूजा के दल–दल मे फस गया था। मन्दिर विद्यालय सार्वजनिक स्थल जलाशय आदि सब बन्द थे। वेद विद्या यज्ञ हवन यज्ञोपवीत आदि गढवाल मे था ही नहीं। ऋषि पताका की जयघोष करते हुए भारतीय जी ने भूखे प्यासे असीम विघ्न बाधाओ को झेलते हुए महर्षि के मिशन को स्थानीय क्षेत्रो मे प्रबल शक्ति का सचार कर आज हमे सफलता की चोटियो तक पहुचाया है।

जब भारतीय जी को ज्ञान हुआ कि आर्यसमाज एक अमर क्रान्ति का नाम है एक ऐसी क्रान्ति जिसने अपने परिवर्तनशील प्रवाह से एक नई चेतना और नया आलोक बिखेर दिया है। यह एक ऐसी आग है जिसमे जलन और तपन नही बल्कि उत्साह वेग और विरल गतिशीलता है। आर्यसमाज साबली आदि पचपुरी गढवाल के सस्थापक गढवाल के दयानन्द कहे जाने वाले जयानन्द जन्मजात क्रान्तिकारी थे। उनकी क्रान्ति किसी भी मूल्य पर सकुचित नहीं बहुआयामो को अपने भीतर समाविष्ट किए हुए थी उनकी क्रान्ति के स्त्रोत बहुमुखी थे उनका ओज–तेज स्वय महानता का साक्षी था। आजीवन कठिन स कठिन बाधाओ और मुसीबतो स जूझकर अन्तत मृत्यु को अगूठा दिखाकर अमरत्व का आलिगन करने वाला यह महामानव अपनी मिसाल स्वय आप ही था। हाथ म गुलामी के विरुद्ध विद्रोह का प्रतीक तिरगा थामें इन्कलाब जिन्दाबाद काग्रेस जिन्दाबाद मालकम हेली गो बैक जैसे गगन भेदी नारो की गूज सुनकर प्रदेश के तत्कालीन गवर्नर सर विलियम मालकम हेली का भाषण थम गया। अचानक सबका ध्यान उस व्यक्ति की ओर गया जिसे पुलिस लाठियो से पीट रही थी। यह बहादुर आदमी और कोई नहीं बल्कि बीर जयानन्द भारतीय थे जिन्होने अपने आस्तीन मे छुपाकर रखे तिरगे झण्डे को निकालकर विलियम हेली की सभा मे खलबली मचा दी थी। यह घटना ६ सितम्बर १९३२ की है। उस समय अग्रेज समर्थक अमन सभा के लोगो ने भारत मे अग्रेजी राज्य की जडे मजबूत करने के उद्देश्य से लाट गवर्नर को पोडी बुलाया था। लॉट गवर्नर को इस सभा पर खुश करने के लिए उन्हे बताया गया था कि गढवाल मे कोई भी बागी काग्रेसी नहीं है। बाद मे लखनऊ वापस जाते समय लाट साहब ने कोटद्वार मे रेल के दरवाजे पर खडे होकर अमन सभा के नेताओ व अपने अहलकारो को सम्बोधित करते हुए कहा –" **मैं उस बहादुर आदमी जयानन्द भारतीय का बडा शुक्रगुजार हू जिसने मेरी जान बचाई अगर वह आदमी चाहता तो मुझे गोली मार सकता था।** इससे अमन सभा के नेता और उनके अनुयायी बडे शर्मिन्दा हुए।

६ सितम्बर १९५२ को समतामूलक समाज का यह प्रबल पक्षधर हमेशा के लिए हमसे विदा हो गया। भारतीय जी के जीवन –सघर्ष और साहसिक कार्यकलापो का एक प्रेरणाप्रद इतिहास है। इतिहास मे उन्हे सच्चे देशभक्त और समाज के जर्जर सामती ढाचे को एक ही झटके मे तोडने के लिए एक प्रखर क्रान्तिकारी के रूपममे हमेशा याद किया जाएगा। सामाजिक कुरीतियो धार्मिक आडम्बरो अन्धविश्वास के विषमताओ का जिस प्रकार से भारतीय जी ने सामना किया कि हमारे देश मे प्रेरणादायक ही नहीं चिरस्मरणीय है। प्यारे राष्ट्र का परतन्त्रता की कठोर बेडियो मे जकडा हुआ देखकर तो जयानन्द मानो क्रान्ति का एक दहकता अगारा बन गया और काग्रेस मे शामिल होकर राजनीति मे कूदे और अग्रेजो के सिरदर्द बन गए थे –

जजीरो से जकडे स्वदेश को राह दिखाई थी तूने
जिनको न काल भी बुझा सका वह शमा जलाई थी तूने
घनघोर तिमिर के आगन मे तू बीज ऊषा के बोता था
आवाज लगाई थी तूने जब सारा उत्तराचल सोता था।

– प्रधान आचलिक गढवाल आर्यसमाज दिल्ली डब्ल्यू० पी० ६६ए पीतमपुरा दिल्ली ८८

खून का खजाना : पालक

– प्रो० इन्द्रदेव सिह आर्य

या तो सभी हरे शाक स्वास्थ्य के लिए लाभदायक ह। जेस नोनिया (मराठी घोळ) भिडी चिकनी तुरइ (हिन्दी–गिलखिया) आदि परन्तु फिर भी हमे यह मानना ही चाहिए कि पालक भाजी वास्तव मे हमारा पालन करने वाली और उसका "पालक नाम वास्तव मे सार्थक है क्योकि पालक भाजी में विटामिन ए और सी के साथ–साथ लोहा तथा कैल्शियम प्रचुरता से पाया जाता है। इस प्रकार पालक की हरी पत्तिया अन्य सब्जियो से बढकर गुणकारी है। यदि आप कच्ची पालक की पत्तिया मुह मे चबाए तो उसका स्वाद कुछ खारा कडवा सा लगता है परन्तु वह इतना गुणकारी है कि न केवल खून बढाता है बल्कि आखो की रोशनी को बढाने के साथ त्वचा का रग भी साफ करता है।

खून की कमी को दूर करने के लिए तो पालक रामबाण औषधि है। इसमे न केवल लोहे की मात्रा पर्याप्त पाई जाती है बल्कि इसमे एक और रक्तवर्धक तत्व "फोलिक ऐसिड योगिक के रूप मे रहता है और यह सर्वथा उचित ही है कि पालक का साग सद्य प्रसूता जच्चा के लिए मुफीद माना गया है क्योकि रक्त के प्रत्येक कण मे लोहा अनिवार्य रूप से विद्यमान है उससे ही रक्त मे लालिमा आती है और रोग निरोधक क्षमता बढती है।

कुपोषण के शिकार बच्चो गर्भवती महिलाओ तथा किसी बीमारी से उठे लोगो को पालक का रस आवश्य सेवन करना चाहिए। गर्भवती महिलाओ को नियमित पालक सेवन करने से उन्हे अपच वमन वजन घटना गर्भ के बच्चे का यथोचित विकास न होना और अत मे गर्भपात होना आदि रोग नहीं होते। प्रतिदिन पालक का रस सेवन करने से समस्त रक्त विकार तथा शरीर की खुश्की दूर होती है चेहरे पर ललाई शरीर म स्फूर्ति उत्साह और शक्ति का सचार होता है जिसके फलस्वरूप चेहरे के रग मे निखार आता है।

पालक मे जो रासायनिक तत्व विद्यमान हैं उनका विवरण इस प्रकार है – १०० ग्राम पालक मे ९२ प्रतिशत जल २६ प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट २६ प्रतिशत प्रोटीन ०६ प्रतिशत वसा १७ प्रतिशत खनिज ०७ प्रतिशत रेशा रहता है जिससे शरीर को २६ कैलोरी ऊर्जा प्राप्त होती है। एनीमिया (रक्तहीनता) के रोगी को पालक का सेवन विशेष लाभदायक है क्योकि पालक रक्त की आपूर्ति में सहायक है। पालक पाचन क्रिया मे भी सहायता प्रदान करता है। कब्ज के रोगियो को पालक का रस पीने से कब्जियत दूर होती है। एक कप पालक के रस मे यदि एक कप गाजर का रस मिला लिया जाए तो रस काफी स्वादिष्ट और गुणकारी बन जाता है। पालक के पत्तों को उबालकर उसके पानी से गरारे करने से गले का दर्द और सूजन मिट जाती है। एक कप पालक के रस मे २ चम्मच मधु मिलाकर लेने से रक्त मे विशेष वृद्धि होती है। आत्र के रोगों मे पालक की सब्जी गुणकारी है। पालक क्षार शरीर की सूजन को कम करता है। चेहरे के मुहासो झाइयों कील आदि से छुटकारा पाने के लिए एक कप पालक रस और एक कप गाजर रस मिलाकर लेने से विशेष लाभ होता है। पालक के रस मे दो बूद नीबू के रस की और दो बूद ग्लिसरीन मिलाकर लगाने स त्वचा कातिवान बनती है। परन्तु स्मरण रहे कि मूत्र पथरी के रोगी को पालक हानिकारक होती है। पाचन बहुत कमजोर होने पर भी पालक का सेवन हानिकारक है।

– १८८ शिवाजी नगर, कानपुर

पृष्ठ ५ का शेष भाग

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम"

मर्यादा पुरुषोत्तम राम अत्यधिक स्वावलम्बी स्वाभिमानी धैर्यशाली दृढ निश्चयी दृढव्रती एव कर्मठ थे। वह सुख दु ख में समान भाव रखने वाले अत्यधिक निराशा जनक परिस्थितियो मे भी निराश हतोत्साहित एव किकर्त्तव्य विमूढ नहीं हुए। समर्थ सत्ताधारी और धन वैभव के अधिकारी होकर भी वह कभी प्रमादी अहकारी गर्वोन्मत्त और स्वेच्चछाचारी नहीं बने। वह अन्यतम रूप से मर्यादा के पृष्टपोषक थे। कठिन से कठिन परिस्थितियो मे भी उन्होने कभी धैर्य और साहस का त्याग नहीं किया। अत्याधिक कष्ट सहन करने और आपद ग्रस्त होने पर भी उन्होने आजीवन लोक धर्म की मर्यादा का कभी उल्लघन नहीं किया। आजन्म आपद विपदो की विशाल वाहिनी से जूझते हुए भीं सदैव सत्य न्याय और धर्म के मार्ग का अनुसरण करने वाले राम वस्तुत आदर्श मानव थे इसी लिए उनके इन्हीं सदगुणो के आधार पर उनके श्रद्धालु भक्तो ने उन्हे देवत्व के पद पर प्रतिष्ठित किया।

यही नहीं लोक व्यवस्थापक धर्म प्रतिष्ठापक प्रजावत्सल राम ने लोकरजन लोक कल्याण और मर्यादा की रक्षा हेतु अपनी पति परायणा सती साध्वी निरपराध पत्नी का भी परित्याग करने मे सकोच नहीं किया एव स्वय भी वर्षो तक प्राण प्रिय पत्नी महारानी सीता के दु सह वियोग दु ख को सहन करते रहे। क्योकि सीता के रावण के अधिकार मे रहने के प्रसग को लेकर प्रजा मे मर्यादा भग होने का भय था। यद्यपि राम निश्चित रूप से सीता की पवित्रता से अवगत थे कि सीता निरपराध है और अग्नि परीक्षा के उपरान्त सीता की पवित्रता सिद्ध भी हो चुकी थी फिर भी एक नीच धोबी द्वारा उनके प्रति निन्दनीय अपशब्द कहकर लाच्छन लगाए जाने से प्रजा मे अव्यवस्था फैलने का भय समझ सीता के प्रति के अगाध प्रेम और अटूट विश्वास होने पर भी लोक मर्यादा की रक्षा हेतु उन्होने प्राणप्रिय सीता का भी परित्याग कर दिया।

राज सूय यज्ञ के समय जब विज्ञ पण्डित वर्ग ने कहा कि अर्द्धागिनी के अभाव में यज्ञ सफल नहीं हो सकता तो उन्होने सीता की स्वर्ण प्रतिमा को ही अपने सिहासन के बाई और स्थापित किया और एक पत्नीव्रत की मर्यादा की रक्षा करते हुए पुनर्विवाह नहीं किया।

राम राज्य भी भगवान राम की इसी प्रजा वत्सलता लोक व्यवस्था और मर्यादा पालक प्रवृत्ति का प्रतीक और परिचायक है। इसी लिए पूज्य बापू आज भी भारत में राम राज्य की स्थापना का अपना सपना साकार करना चाहते थे। सहस्रो वर्षों के उपरान्त आज भी जिस राम राज्य को इतना महत्व दिया जा रहा है आखिर उसकी ऐसी क्या विशेषताए थी उनका दिग्दर्शन कराना अत्यन्त अपेक्षित है।

महाकवि बाल्मीकि के कथनानुसार राम राज्य में समस्त प्रजा जिन नियम सयम आदि धार्मिक सिद्धान्तों को अपनाते हुए अपने कर्त्तव्यो एव उत्तरदायित्वो का निष्ठापूर्वक पालन और उपभोग किया करते थे। वे 'सब मानस है एक समान मानवता के इस आदर्श सिद्धान्त का पालन करते हुए परस्पर भ्रातृवत व्यवहार करते थे। इर्ष्या द्वेष छल कपट दुर्व्यवहार और पारस्परिक कलह का तो राम राज्य मे नामो निशान तक न था। समस्त प्रजा जन स्वावलम्बी कर्मठ साहसी और परोपकारी थे। सभी मानस रोग शोक मुक्त चिन्ता रहित हृष्ट पुष्ट स्वस्थ बलवान और बल वैभव सम्पन्न थे। सभी दीर्घ जीवी थे अकाल मृत्यु का तो राम राज्य मे सर्वथा अभाव ही था। पारस्परिक कलह उपद्रव स्वेच्छाचारिता तो कहीं दृष्टिगोचर ही नहीं होती थी। भय शोक ताप दमन अन्याय शोषण उत्पीडन अस्पृश्यता तथा जघन्य अपराधो हत्याए जुआ खोरी लूट पाट इत्यादि का तो राम राज्य मे चिन्ह तक न था। राम राज्य मे समस्त प्रजाजन सरल हृदय छल प्रपचो और पाखण्डो से रहित अन्धविश्वासो और रूढिवादिता से विमुख आदर्श चारित्रिक सदगुणो से युक्त दयालु क्षमाशील उदारचेता पर दु ख कातर चतुर एव परमार्थ साधक थे। राम राज्य मे प्रत्येक व्यक्ति का गृहस्थ जीवन कलह रहित परम शान्तिप्रद स्वर्ग सम सुखद पच महायज्ञो का नियोजक कल्याणमय था। वहा के पतिगण एक पत्नीव्रत और पत्निया सती साध्वी प्रतिमप्राण एव वीर प्रसूथी। राम राज्य मे प्रत्येक दम्पति प्रतिदिन पंच महायज्ञो का अनुष्ठान एव पवित्र वेदमन्त्रो के गायन द्वारा समस्त वातावरण को पावन और सुगन्धित बनाते हुए देव–ऋण पितृ ऋण एव ऋषि ऋण से उऋण होते थे। राम राज्य मे आर्थिक व्यवस्था समस्त देश वासियो को सुखी सम्पन्न समृद्ध एव उन्नतिशील बनाती थी। वहा कोई भी व्यक्ति बेकार धनहीन दीनहीन दुःख दारिद्र से आक्रान्त और विपन्न दृष्टि गोचर नहीं होता था। राम राज्य मे समस्त मानव पूर्ण सभ्य सुशिक्षित सुसस्कृत समस्त मानवीय सद्‌गुणो से समलकृत प्राचीन भारतीय-सभ्यता सस्कृति के पृष्ट पोषक थे। राम राज्य मे धनी निर्धन ऊच–नीच छूत–अछूत सवर्ण–अवर्ण स्वामी–सेवक राजा–प्रजा शिक्षित अशिक्षित मे कोई भेदभाव न था। वहा समस्त प्रजाजनो को सभी क्षेत्रो (सामाजिक राजनीतिक आर्थिक धार्मिक) मे समानता स्वतन्त्रता एव समान अधिकारो का उपभोग करने के साथ साथ अपने कर्त्तव्य–पालन और उत्तर–दायित्वो का सत्यता और दृढता पूर्वक निर्वाह करने का पूर्णतया बोध था। राम राज्य मे नवयुवक परम तेजस्वी धीर वीर गम्भीर धैर्यवान साहसी अजेय निर्भय और परम मेघावी थी। राम राज्य मे तपोधनी ज्ञान पुञ्ज प्रकाण्ड पाण्डित्य पूर्ण गुरुजन तपोवनों के शान्त मनोरम स्निग्ध प्राकृतिक शोभा सम्पन्न वातावरण मे तपोत्याग अभ्यासी ब्रह्मचर्यव्रत मे दीक्षित तेजस्वी और मेधावी और गुरुभक्त शिष्य वर्ग को सम्पूर्ण वाडमय और वेद वेदाग सम्बन्धी शिक्षा से समलकृत सच्चरित्र सत्य के अन्वेषक सम्य सुसस्कृत ईश्वर विश्वासी परम धार्मिक निष्ठावान प्राचीन भारतीय सभ्यता आदर्शो और सस्कृति के पृष्ट पोषक गुरुभक्त स्नातक गृहस्थाश्रम मे प्रवेश कर जीवन सघर्ष मे रत एव नाना सासारिक सुख साधनो का उपभोग करते हुए भी जीवन के तृतीय प्रहर मे वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा समाप्त कर जीवन के चतुर्थ प्रहर मे सन्यासव्रत धारण कर प्राणीमात्र का कल्याण और हित साधन करते हुए भारतीय आध्यात्मवादी जीवन के महत उद्देश्य परलोक साधन की ओर उन्मुख होते थे।

राम राज्य मे समस्त देश मे घृत और दुग्ध की अवाध रूप से प्रवाहित होने वाली सरिताए जन जन को स्वस्थ शक्ति एव दीर्घ जीवी बनाने मे सहायक होती थीं। वहा की शस्य श्यामला वसुन्धरा समस्त राज्य को धन धान्य से परिपूर्ण कर अपना वसुन्धरा नाम सार्थक करती थी। रामराज्य के विस्तृत विशाल हरे भरे वन प्रान्तर देश के औद्योगिक विकास मे सहायक होते थे। ऐसा ही एक शोभा सम्पन्न रमणीय प्राकृतिक सौन्दर्यमय सस्कृति सभ्यता एव आदर्श शिक्षा पद्धति का आगर भगवान राम द्वारा शासित आदर्श राम राज्य था। भगवान राम ने राष्टीय चरित्र की मर्यादा स्थापित कर सर्वोन्ननि का द्वार उन्मुक्त और प्रशस्त कर दिया था। उक्त शक्ति सम्पन्न राष्ट्र मे सम्पदा सभ्यता एव सस्कृति अपनी चरम सीमा पर थी। यही कारण था कि पूज्य बापू ऐसे ही आदर्श राम राज्य की स्थापना के स्वप्न को साकार करने के इच्छुक थे।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने मर्यादा की रक्षा हेतु शूद्रक का भी वध किया क्योकि वर्णाश्रम धर्म के सिद्धान्त के आधार पर प्राचीन ब्रह्मवेता ऋषिगणो द्वारा ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र चार वर्गो की स्थापना कर उनके पृथक पृथक कर्त्तव्यो का निर्धारण किया गया था। ब्राह्मणो द्वारा वेदो का पठन पाठन और शिक्षा दान क्षत्रिय वर्ग द्वारा देश पर शासन करना एव शत्रुओ से देश की रखा कना वैश्यो का कर्त्तव्य व्यापार आदि द्वारा धनोर्पाजन कर देश को समृद्ध बनाना तथा शूद्रो का धर्म सेवा करना था परन्तु शूद्रक अपने सेवा धर्म का परित्याग कर ब्राह्मणत्व प्राप्त करने हेतु घोर तपस्या कर रहा था जिस अनीति के फल स्वरूप एक ब्राह्मण बालक अकाल मे ही काल–कवलित हो गया और उसके पिता के कथनानुसार राम राज्य मे अनीति हो रही है और उसी के फलस्वरूप उसे अपने पुत्र की असमय मृत्यु का सन्ताप सहन करना पड रहा है। पर वर्णाश्रम धर्म की मर्यादा की रक्षा हित रामद्वारा शूद्रक का वध किया गया।

शरणागत रक्षक और भक्त वत्सल श्री राम

जब ऋष्यमूक पर्वत पर हनुमान ने उन्हे सुग्रीव की विपत्ति से अवगत कराया और उनसे उसकी सहायता करने और शरण देने की प्रार्थना की तो उन्होने शरणागत की रक्षा करने हेतु दुराचारी कनिश्ठ भ्राता की पत्नी पर कुदृष्टि डालने वाले और अन्याय पूर्वक उसका राज्य वैभव अपहरण करने वाले बालि का वध कर सुग्रीव की सहायता की भक्त वत्सल भगवान राम का अपने भक्तो के प्रति अगाघ एव अनुपम प्रेम भी स्तुति योग्य है इसीलिए उन्होने ने श्राप ग्रस्त अहिल्या का उद्धार किया। केवट की असीम भक्ति और श्रद्धा देख उसे मनोवाच्छित फल प्रदान करते हुए भवसागर से पार कर मोक्ष प्रदान किया। जटायुनामक गिद्ध की अपारभक्ति से द्रवित हो उसे भी मोक्ष प्रदान किया। शबरी की अगाध अभूतपूर्व भक्ति देख उसके जूठे बेर तक खाने मे भी सकोच नही किया। भक्त शिरोमणि विभीषण को अपने परम मित्र के रूप मे अपूर्व और अतुलित स्नेह दान दिया। परम भक्त हनुमान तो उन्हे भरत और लक्ष्मण सम प्रिय थे और आजीवन उनके अपूर्व स्नेह और आदर के पात्र बने रहे। इस प्रकार भगवान राम ने भक्ति और प्रेम की मर्यादा की रक्षा की। समस्त वेद वेदागो के ज्ञाता आदर्श मानवोचित चारित्रिक सदगुणो से समलकृत समस्त दैवीय गुणो से विभूषित आदर्श चरित्र धीमान नरपुगव राम आदर्श पुत्र आदर्श शिष्य आदर्श मित्र आदर्श पति आदर्श भ्राता आदर्श प्रजापालक औरप्रजा वत्सल आदर्श भक्त वत्सल आदर्श शरणागत रक्षक और आदर्श शत्रु भी थे। उन्हे जिस कसौटी पर कसा जाए जिस तुला पर तोला जाए वह पूर्णतया खरे उतरते हैं।

अत उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि भगवान राम ने आजीवन आपद–विपदो की विशाल वाहिनी से जूझते हुए भी मर्यादा की रक्षा हेतु अपना सर्वस्व अपिर्त कर दिया और अपने उन्हीं उपरोक्त अनुपम दिव्य गुणो से अलकृत एव अभिषिक्त भगवान राम मानवता की उच्च भाव भूमि पर प्रतिष्ठित होकर शक्ति शील और सौन्दर्य के प्रतीक एव मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए। उनका समस्त जीवन अन्याय असत्य और अधर्म का उन्मूलन कर धर्म न्याय सत्य और मर्यादा रक्षा की प्रतिष्ठापना मे व्यतीत हुअ। आततायी दुराचारी नृशस परस्त्री पर कुदृष्टि डालने वाले दुष्ट लका नरेश को दण्डित करने हेतु उन्होने मुठठी भर वानर सेना का सगठन कर आततायी रावण की विशाल वाहिनी का विध्वस कर उसका कुल सहित विनाश किया। वनवासी राम का शक्ति शाली तेजोमय लोक मगलकारी लोक रक्षक स्वरूप वास्तव मे भारतीय समाज के लिए उत्साहप्रद एव प्रेरणा दायक है। अत विजयदशमी के इस पुण्य पावन पर्व पर मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम की वदना और उनके लोकरक्षक लोकव्यवस्थापक धर्म प्रतिष्ठायक रूप के प्रति हार्दिक श्रद्धा और सम्मान प्रदर्शित करना प्रत्येक भारतवासी का कर्त्तव्य है।

– द्वारा श्री विनय कुमार शर्मा डी ११३ शिव विहार रोहतक रोड दिल्ली ८७

क्रोध को कैसे दूर करें

– विवेक भूषण दर्शनाचार्य

क्रोध को छोडने के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाने चाहिए।

- क्रोध को दूर करने की तीव्र इच्छा होनी चाहिए कि 'मैं इस क्रोध से बहुत दु खी हो चुका हू। अब मैं इसे छोड ही देना चाहता हू।
- क्रोध को छोडने के लिए दृढ सकल्प होना चाहिए कि मैं पूरा परिश्रम करके क्रोध को छोडकर श्वास लूगा।
- जब तक क्रोध पूरी तरह छूट न जाए तब तक क्रोध को छोडने के लिए पूर्ण पुरुषार्थ करते ही रहे।
- शान्त स्वभाव के व्यक्तियो के साथ उठना बैठना आदि व्यवहार रखे क्रोधी स्वभाव वालो से दूर रहे।
- 'दूसरे लोग मेरे साथ कम से कम ऐसा – (अच्छा) व्यवहार तो अवश्य ही करे इस प्रकार की इच्छाओ को कम करते जाए।
- प्रतिदिन कुछ समय – (२–३ घण्टे) मौन रहने का अभ्यास करे।
- जब कोई क्रोध की घटना उपस्थित होने वाली हो तब अवश्य ही मौन हो जाए। इसके लिए तबतक मुह मे थोडा पानी भर कर रख सकते हैं जब तक वह क्रोध की घटना समाप्त न हो जाए। बाद मे उस पानी को फेक देवे।
- यदि क्रोध की घटना के समय मौनरहना सम्भव न हो और बोलना आवश्यक ही हो तो बोलने से पूर्व उसी समय यह दृढ सकल्प करे कि 'बिना क्रोध किए ही बातचीत करूगा।
- यदि किसी घटना मे बहुत अधिक क्रोध आने की सम्भावना हो और आप उसे नियन्त्रित करने मे अपने आप को असमर्थ अनुभव करते हो तो उस स्थान से हटकर दूर चले जावे।
- यदि कभी भूल से क्रोध कर बैठे हो तो अपनी स्थिति को ठीक करने के लिए एक गिलास ठण्डा पानी पीए।
- यदि क्रोध कर बैठे तो उसका कुछ प्रायश्चित करे अर्थात उस दिन एक घण्टा विशेष रूप से मौन रहकर ईश्वर का ध्यान प्रार्थना करे और फिर से सकल्प करे कि अब क्रोध नहीं करूगा।
- प्रतिदिन दोनो समय – (प्रात और साय) ईश्वर का ध्यान करे और ईश्वर से प्रार्थना करे कि प्रभो ! मुझसे यह क्रोध दूर कर दीजिए और मेरी बुद्धि को अच्छे मार्ग पर चलाइए।
- निम्नलिखित को प्रतिदिन कम से कम तीन बार पढे

क्रोध करने से हानिया

क्रोध करने से सिर मे दर्द होता है।

- क्रोध करने से ब्लड प्रेशर बढता है।
- क्रोध करने से एसिडिटी होती है।
- क्रोध करने से शरीर मे कम्पन रोग होता है।
- क्रोध करने से शरीर मे कमजोरी आती है।
- क्रोध करने से व्यक्ति पागल हो जाता है।
- क्रोध करने से दूसरे लोग घृणा करते हैं कोई पास बैठना नहीं चाहता।
- क्रोध करने से समाज मे प्रतिष्ठा कम हो जाती है निन्दा भी होती है।
- क्रोध करने से बुद्धि का ह्रास होता है तथा निर्णय लेने की क्षमता घटती है।
- क्रोध करने से मन वाणी और शरीर पर नियन्त्रण नहीं रहता परिणामस्वरूप व्यक्ति कुछ भी गलत बोल देता है या गलत काम कर बैठता है।
- क्रोध करने के बाद जब व्यक्ति होश मे आता है तब पश्चाताप करता है अर्थात दु खी होता है कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था।
- क्रोध करने से अगला जन्म भी अच्छा नहीं मिलता।

प्रेमपूर्वक व्यवहार से लाभ

- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से शरीर स्वस्थ रहता है।
- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से शरीर की वृद्धि होती है।
- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से मन प्रसन्न होता है।
- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से बुद्धि का विकास होता है।
- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से निर्णय लेने की क्षमता बढती है।
- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से समाज मे प्रतिष्ठा बढती है।
- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से परस्पर सबका सुख बढता है।
- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से सभी लोग उसे चाहते हैं प्रेम करते हैं और उससे सम्बन्ध रखना चाहते है।
- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से मन वाणी और शरीर पर नियन्त्रण रहता है परिणामस्वरूप व्यक्ति अच्छे काम करता है और मीठी वाणी बोलता है।
- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से अगला जन्म भी अच्छा मिलता है।

इन उपायो को लम्बे काल तक अपनाते रहने से व्यक्ति का क्रोध धीरे–धीरे कम हो जाता है और एक समय ऐसा आता है जब क्रोध पूरी तरह छूट जाता है। आशा है आप इन उपायो से लाभ उठाएगे।

– दर्शन योग महाविद्यालय आर्य वन रोजड पत्रा सागपुर जिला साबरकाठा गुजरात-३८३३०७

विभिन्न प्रतियोगिताओं में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के विद्यार्थियों का वर्चस्व

कुरुक्षेत्र (३ अक्तूबर २००१) गान्धी जयन्ती के उपलक्ष्य में पुलिस विद्या मन्दिर के प्रागण मे राज्य स्तर पर विभिन्न प्रतियोगिताओ का आयोजन किया गया जिसमे ४५ टीमो ने भाग लिया। रगोली प्रतियोगिता के कनिष्ठ वर्ग मे गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ब्रह्मचारी कुशल व नरेन्द्र आर्य ने प्रथम स्थान अर्जित किया तथा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में ब्रह्मचारी मनोज व महताव सिह आर्य ने वरिष्ठ वर्ग मे द्वितीय स्थान प्राप्त किया व चित्रकला प्रतियोगिता के कनिष्ठ वर्ग मे ब्रह्मचारी प्रदीप कुमार ने सात्वना पुरस्कार प्राप्त कर गुरुकुल कुरुक्षेत्र को ख्याति प्रदान कर गौरवान्वित किया। इसके लिए प्रसिद्ध शिक्षाविद् व गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्राचार्य श्री देवव्रत ने इन समस्त ख्याति प्राप्त प्रतिभागियो को पुरस्कार व साधुवाद देते हुए उनकी उन्नति की कामना करते हुए हार्दिक बधाई दी।

– प्राचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र

आर्यसमाज सान्ताक्रुज का ५७वां स्थापना दिवस एवं पुरस्कार समारोह सम्पन्न

रविवार दिनांक ७ अक्तूबर, २००१ को ५७ वां आर्य समाज सान्ताक्रुज का स्थापना दिवस एव पुरस्कार समारोह आर्य समाज सान्ताक्रुज के विशाल सभागृह में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर त्रिदिवसीय बृहद् यज्ञ का आयोजन सुश्री मेधा देवी प्राचार्या, पाणिनि कन्या महाविद्यालय (वाराणसी) के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। उनके साथ आयी हुई दो छात्राओं ने वेदपाठ किया। रात्रिकालीन सत्र में भजन एवं प्रवचन सुश्री मेधा देवी जी, सुश्री अन्नपूर्णा जी, सुश्री सूर्या देवी जी एवं आर्य जगत् के विद्वान डॉ० ज्वलन्त कुमार शास्त्री, (अमेठी) के सारगर्भित प्रेरणास्पद व ओजस्वी प्रवचन हुए।

रविवार दिनांक ७ अक्तूबर २००१ प्रातः यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। तत्पश्चात् प्रातः १० बजे से आर्यसमाज सान्ताक्रुज का ५७वां स्थापना दिवस एवं पुरस्कार समारोह श्री गजानन्द जी आर्य (प्रधान:श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर) की अध्यक्षता में आरम्भ हुआ। आर्यसमाज सान्ताक्रुज के प्रधान डॉ० सोमदेव शास्त्री जी ने अपने स्वागत भाषण में सबका अभिनन्दन करते हुए अपार प्रसन्नता प्रकट की। श्रीमती प्रेमलता सहगल युवा महिला पुरस्कार प्राप्तकर्त्री सुश्री अन्नपूर्णा (प्राचार्या आर्ष कन्या गुरुकुल देहरादून) को पुरस्कार स्वरूप रु० ११ हजार, स्वर्ण ट्राफी, शाल, श्रीफल एवं मोती हार सादर भेंट कर सम्मानित किया गया। तत्पश्चात् प्रथम श्रीमती कृष्णा गान्धी आर्य युवक पुरस्कार प्राप्तकर्त्ता श्री संगीत आर्य को पुरस्कार स्वरूप रु० ग्यारह हजार एवं स्वर्ण ट्राफी, शाल श्रीफल एवं मोती की माला से सम्मनित किया गया। उन्होंने प्राप्त धन राशि रुपये ग्यारह हजार तथा अपनी ओर से चौदह हजार रुपये मिलाकर कुल २५ हजार का दान आर्यसमाज वसई के भवन निर्माण निमित्त दान स्वरूप भेंट कर दिया।

सप्तम् पं० युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार प्राप्तकर्त्री सुश्री आचार्य मेधा देवी (प्राचार्या : पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी) को पुरस्कार स्वरूप ११,००१ रुपये स्वर्ण ट्राफी, शाल श्रीफल एवं मोती हार भेंट कर सम्मानित किया गया।

इसी श्रृंखला में प्रथम श्री राजकुमार कोहली वयोवृद्ध विद्वान् पुरस्कार स्वामी मुनीश्वरानन्द जी हापुड (उ०प्र०) को दिया गया। इस सन्दर्भ में ज्ञातव्य है कि स्वामी जी ९२ वर्ष की आयु होने के कारण तथा पूर्ण स्वस्थ न होने के कारण समारोह में उपस्थित नहीं हो सकें। समारोह संयोजक कैप्टन देवरत्न आर्य ने यह घोषणा की कि वयोवृद्ध विद्वान पुरस्कार स्वरूप ११,००१ रुपये ट्राफी, शाल आदि उनके पास भिजवा दिया जाएगा। इसी प्रकार श्री झाऊलाल शर्मा एव श्रीमती भागीदेवी छाबरिया गुरुकुल सहायता पुरस्कार क्रमश आर्ष कन्या गुरुकुल चोटीपुरा (उ०प्र०) एवं आर्ष गुरुकुल खरियार रोड उडीसा को सहायता निधि के रूप मे ११ हजार रुपये सम्प्रेषित किया जाएगा।

समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती रूपा शाह, समारोह अध्यक्ष श्री गजानन्द आर्य आदि ने अपने उद्‌बोधन प्रस्तुत किए।

डॉ० स्वामी सत्यम् जी, स्वामी मेधानन्द जी ने विद्वानो को वैदिक साहित्य भेंट कर आशीर्वाद दिया आमन्त्रित विशिष्ट अतिथियों एवं विद्वानो का शाल, श्रीफल भेंट कर सम्मान किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का सयोजन कैप्टन देवरत्न जी आर्य ने किया।



बाएं से श्रीमती कृष्णा गान्धी आर्य युवक पुरस्कार से सम्मानित श्री संगीत आर्य, पं० युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार से सम्मानित आचार्या मेधा देवी (पाणिनि कन्या गुरुकुल वाराणसी), विशेष अतिथि : श्रीमती सावित्री देवी वार्ष्णेय (नगर प्रमुख अलीगढ़), श्रीमती ईश्वरी देवी (पटना), मुख्य अतिथि : श्रीमती रुपा शाह (उपकुलपतिः एस०एन०डी०टी० महिला विश्वविद्यालय मुम्बई), समारोह अध्यक्ष : श्री गजानन्द आर्य (प्रधान : परोपकारिणी सभा अजमेर), डॉ० सोमदेव शास्त्री (प्रधान : आर्यसमाज सान्ताक्रुज), श्रीमती प्रेमलता सहगल युवा महिला पुरस्कार से सम्मानित आचार्या अन्नपूर्णा जी (आर्ष कन्या गुरुकुल देहरादून), समारोह संयोजक : कैप्टन देवरत्न आर्य एवम् श्री यशप्रिय आर्य (महामन्त्रीः आर्यसमाज सान्ताक्रुज)

बुरे की संगति-दुःख व पतन का कारण

दशरथ सोचते हैं वृद्ध हो गया हू, आयोध्या का राज्य राम को सौंप दूं। कैकेयी अपनी सेविका मन्थरा की बातों में बहककर महाराज दशरथ से राम के लिए १४ वर्ष का वनवास व अपने पुत्र भरत के लिए राज्य मागती है। दुष्ट मन्थरा की संगति से कैकेयी अपने पति दशरथ को खो देती है। समाज में अपयश पाती है। दुर्भावना से लाभ उठाने वाले का साथ उसकी सन्तान भरत भी नहीं देती। हे संसार के लोगों ! बुरे, नीच विचार वालों की संगति पतन व दुख का कारण बनती है। अतः महात्माओं के सत्सग में आओ ! वैदिक धर्म की शिक्षाए जानने के लिए आर्यसमाज में आओ ! ये 'आयोध्या काण्ड' के आधार पर विचार श्रद्धेय आचार्य अखिलेश्वर जी महाराज ने आर्यसमाज आदर्श नगर में 'श्रीराम कथा एवं वेद प्रवचन' के समापन समारोह में कहे।

प्रधान डॉ० जियालाल काम्बोज के अनुसार लोगों में आर्यसमाज के प्रति फैली भ्रान्तियों के निवारण के लिए वैज्ञानिक शैली से 'श्रीराम कथा' का आयोजन हुआ।

— मन्त्री प्रवीण कुमार, आर्यसमाज आदर्श नगर

ग्रामीण अंचल में आठ दिवसीय वेद-प्रचार-अभियान

ग्रामीण आर्यसमाज रुद्रपुर तहसील तिलहर शाहजहांपुर (उ०प्र०) द्वारा अपने आस-पास के ग्रामों में तिलहर तहसील आर्य सभा के सौजन्य से २६ अगस्त से २ सितम्बर २००१ तक आठ दिन तक वेद प्रचार कार्य सम्पन्न कराया गया। क्रमशः २६ अगस्त को रुद्रपुर २७ को मोहनपुर २८ को नबदिया धूसर २८ को जोगीपुर ३० एव ३१ को महमद पुर। सितम्बर को रानी रिवरिया तथा २ सितम्बर २००१ ई० को नौगाईं ग्रामों में अपराह्न में देवयज्ञ एव प्रवचन, रात्रि मे ८ बजे से ६ बजे तक भजनोपदेश एव अगले दिन प्रातः फिर देवयज्ञ एव प्रवचन कार्य सम्पन्न किया गया।

इस आयोजन में श्री क्षमानन्दार्य, श्री राममुनि आर्य, श्री रामसरन आर्य वानप्रस्थी गण एवं श्री कृपाल सिंह आर्य भजनोपदेशक तथा श्री विजयपाल सिंह आर्य भजनोपदेशक तथा प्रधान जिलार्यसभा शाहजहांपुर ने निःशुल्क भाग लेकर और पैदल घूमते हुए अनथक प्रयास करके नवजागरण की लहर पैदा की। हर ग्राम में महिला एव पुरुष श्रोताओं ने दत्तचित्त होकर अन्त तक विद्वानों को सुना। सत्यार्थ प्रकाश तथा ३ वैदिक नित्य कर्म विधिः बेची गईं। छ नवयुवको को यज्ञोपवीत धारण कराए गए। सभी ग्रामों में शीघ्र पुन वेद प्रचार आयोजित करवाने की इच्छा व्यक्त की गई।

ग्रामो मे जागृति पैदा करके ही 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। आशा है भारत की प्रत्येक तहसील एवं जिलार्य सभाए इस ओर विशेष ध्यान देकर ससार का उपकार करने में प्रवृत्त होंगी।

— जगदीश चन्द्र आर्य, मन्त्री, आर्यसमाज रुद्रपुर, तिलहर शाहजहांपुर

आर्यसमाज रानी बाग का चुनाव सम्पन्न

आर्यसमाज रानी बाग का चुनाव गत सप्ताह सम्पन्न हुआ जिसमें निम्न अधिकारी चुने गए

प्रधान – श्री चमन लाल महेन्द्रू
मन्त्री – श्री जोगिन्द्र खट्टर
कोषाध्यक्ष – श्री रामलाल आहूजा

इस आर्यसमाज की स्त्री समाज की प्रधाना श्रीमती प्रेमलता शास्त्री है यह चुनाव कार्यवाही पूर्णत शान्तिपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में हुई। विगत वर्षों के लेखे जोखे को सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 21-10-2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 93/2001
R N. No. 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No. U (C) 93/2001 in NDPSo on 18/19-10-2001

वैदिक जन सेवा समिति हांसी की गतिविधियां

वैदिक जन सेवा समिति के गठन को लगभग १ वर्ष पूरा होने जा रहा है। जब से यह समिति गठित हुई है, तब से अब तक समिति की ओर से नित्यप्रति दैनिक व रविवारीय साप्ताहिक यज्ञ होता है।

समिति का मासिक सत्सग हर महीने के अन्तिम रविवार को आर्यसमाज खरड चुगी हासी मे साय काल साढे तीन बजे से पाच बजे तक होता है। तथा घर–घर जाकर पारिवारिक सत्सग एव मन्दिर, मस्जिद व गुरुद्वारो मे भी समिति के माध्यम से वेद प्रचार किया जाता है।

जन सेवा के कार्यों मे अग्रणी समिति की ओर से अनाथ–बेसहारा व गरीब लड़कियो के विवाह मे यथा सामर्थ्य सहयोग किया जाता है। समिति ने नगर के समीप एक अनाथाश्रम खोलने व भजनोपदेशक तैयार करने का केन्द्र बनाने का निर्णय लिया है।

समिति को आर्य समाज जी०टी० रोड, आर्यसमाज खरड चुगी, आर्यवीर दल हासी तथा आर्य जगत् के कर्मठ सन्यासी स्वामी कीर्तिदेव जी एव युवा सघर्षशील वैदिक विद्वान आचार्य रामसुफल शास्त्री जी 'वैदिक प्रवक्ता' लाल सडक हासी का विशेष योगदान रहता है। अत समिति इनकी बहुत–बहुत आभारी है।

– जी०के० भूटानी, प्रबन्धक,
वैदिक जन सेवा समिति हांसी,

कश्मीर विधानसभा पर हुए हमले का तीव्र विरोध

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जनपद आगरा के खुले अधिवेशन मे निम्न प्रस्ताव पारित किया गया। १ अक्तूबर, २००१ को जम्मू कश्मीर विधान सभा पर आतकवादियों द्वारा शर्मनाक हमले के लिए सीधे–सीधे पाकिस्तान जिम्मेदार है। हमको बुलन्द आवाज मे आतकवाद के खिलाफ लडाई का ऐलान का सकल्प लेना चाहिए कि जम्मू कश्मीर मे सक्रिय आतकवादी किसी अन्य ग्रह से नहीं आ रहे हैं बल्कि पाकिस्तान से आ रहे हैं और वही आतकवादी प्रशिक्षण केन्द्र चला रहा है और वहीं से ट्रेनिंग प्राप्त आतकी आतक फैला रहे हैं। भारत की सरकार को इन आतकवादी प्रहारो को दखते हुए पाकिस्तान के खिलाफ आक्रामक रूख अपनाना चाहिए। सयम की सीमा अब समाप्त हो गयी है। भारत सरकार को अब पाक अधिकृत कश्मीर पर कब्जा कर अपने क्षेत्र पर पुन अधिकार करके सभी आतकवादी शिविरो को ध्वस्त कर देना चाहिए तभी शाति स्थापित होगी।

आर्यसमाज पिनगवां जिला गुड़गांव हरयाणा में वेद प्रचार का आयोजन

आर्यसमाज पिनगवा जिला गु० (हरयाणा) मे दिनाक १५–१०–२०० दिनाक २२–१०–२००१ तक वेद कथा आयोजन किया गया। वेद कथा के इस पावन कार्यक्रम में ब्रह्मचारी जयदेव आर्य प्रख्यात भजनोपदेशक पं० नन्दलाल निर्भय सिद्धात शास्त्री ग्राम बहिन जिला फरीदाबाद (हरयाणा) तथा प्रसिद्ध वैदिक विद्वान उपाचार्य राजेश (राजू) वैज्ञानिक के वेदोपदेश एव भजन हुए।

– रामपाल आर्य, मन्त्री
आर्यसमाज, पिनगवां, गुड़गांवा

पुण्य स्मृति के अवसर पर पारिवारिक यजुर्वेद यज्ञ

आर्यसमाज रानी बाग के युवा मन्त्री श्री जोगिन्दर खट्टर के निवास स्थान सी–८२, नीलाम्बर अपार्टमेन्ट, रानीबाग मे यजुर्वेद यज्ञ का आयोजन २८ अक्तूबर, २००१ को प्रात ५.०० बजे से दोपहर १२ ३० बजे तक किया गया है। यह आयोजन उनके स्वर्गीय पिता श्री रामचन्द्र खट्टर जी की पुण्य स्मृति मे किया जा रहा है। इस यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी जीवनानन्द जी सरस्वती होगे तथा वैदिक विद्वान डॉ० महेश विद्यालकार श्री विमल वधावन,, माता प्रेमलता शास्त्री, आदि के प्रवचन भी होगे।

प्रतिष्ठा में

आर्य कन्या गुरुकुल, शिवगंज का चतुर्थ वार्षिकोत्सव

आर्य कन्या गुरुकुल शिवगज दयानन्द बाटिका जिला सिरोही राज० २६ से २८ अक्तूबर तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस पुनीत अवसर पर आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वज्जन सन्यासीवृन्द पधारकर कार्यक्रम की गरिमा को वृद्धि प्रदान करेगे। आप सभी सज्जनवृन्द समय पर उपस्थित होकर पुनीत धर्म लाभ के भागीदार बने।

इस अवसर पर अनेकों कार्यक्रमो का आयोजन किया जा रहा है समारोह मे व्यायाम आदि के नयना किराम कार्यक्रम भी होगे।

सामाजिक एवं धार्मिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़े।

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली (रजि०) का ७६ वा वार्षिकोत्सव

सामवेद पारायण यज्ञ	सोमवार, २६ नवम्बर से रविवार, २ दिसम्बर २००१ प्रात ७.३० से ६.०० बजे तक
ब्रह्मा	स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती (योगधाम ज्वालापुर)
वेद प्रवचन	सोमवार, २६ नवम्बर से शानिवार, १ दिसम्बर, २००१
भजन	: श्री सत्यपाल पथिक (अमृतसर) साय ६.३० बजे से ७.३० बजे तक
प्रवचन	: स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती साय ७.३० बजे से ८.३० बजे तक
विशेष योग साधना शिविर	: सोमवार, २६ नवम्बर से शनिवार, १ दिसम्बर २००१, प्रात ६.३० बजे से ७.३० बजे तक
आर्य महिला सम्मेलन	मगलवार, २७ नवम्बर २००१, मध्याहन १२ से साय ४.०० बजे तक
श्री रतनलाल सहदेव स्मारक: भाषण प्रतियोगिता	शनिवार, १ दिसम्बर, २००१ प्रात १० से १ बजे तक (स्कूलों तथा गुरुकुलो के छात्र/छात्राओ द्वारा)
विषय	: 'सामाजिक कुरीति उन्मूलन में आर्यसमाज का योगदान'
पूर्णाहुति पारायण यज्ञ	रविवार, २ दिसम्बर, २००१ प्रात ८ से ६.३० बजे तक
राष्ट्र समृद्धि सम्मेलन	रविवार, २ दिसम्बर, २००१ प्रात १०.०० से १.०० बजे तक

निवेदक

राममूर्ति कैला,	अरुण प्रकाश वर्मा	प्रकाशवती शास्त्री,	पूनम मनोचा
प्रधान	मन्त्री	प्रधाना	मन्त्रिणी

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली — स्त्री आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली

फोन : 3361280, 3346602

विराट आर्यमहासम्मेलन

वैदिक यति मण्डल के तत्वावधान व जिला आर्य–उप–प्रतिनिधि सभा मुजफ्फरनगर (उ०प्र०) के सयोजकत्व में विराट आर्य महासम्मेलन दिनाक २५ अक्तूबर से २७ अक्तूबर २००१, दिन बृहस्पतिवार से रविवार तक वैदिक ज्ञान गुरुकुल दयानन्द ग्राम (नगला मदौड निकट जानसठ तहसील जनपद मुजफ्फरनगर मे आयोजित है। दिनाक २५–१०–२००१ मे मुजफ्फरनगर जनपद मुख्यालय पर ११.०० बजे से ४.०० बजे तक विशाल शोभा यात्रा का आयोजन है इस शोभा यात्रा मे आपका सम्मिलित होना विशेष रूप से प्रार्थनीय है। २५–१–२००१ को रात्रि ८.०० बजे से २७–१०–२००१ की रात्रि १०.०० बजे तक सम्मेलन उपरोक्त दयानन्द ग्राम में आयोजित है इन तीनों दिनों में सभी अतिथियों, विद्वानों, सन्यासियों की आवास व भोजन व्यवस्था स्थल पर ही है।

आर्यसमाज मन्दिर 'बी' ब्लाक सरस्वती विहार में योग ध्यान साधना शिविर

आचार्य राजू वैज्ञानिक जी के पावन सानिध्य मे योग, ध्यान, साधना शिविर २२ अक्तूबर से २८ अक्तूबर २००१, तक प्रातः ६.३० बजे से ७.३० बजे तक सम्पन्न होगा।

सभी भाई–बहिनो से प्रार्थना है कि इस कार्यक्रम मे सम्मिलित होकर आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त कर जीवन सफल बनाएं।

विशेष कृपया ढीले वस्त्र (कुर्ता–पाजामा आदि) पहन कर आए और ६.२५ तक अपना स्थान ग्रहण कर लें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली–२ (फोन : ३२७०५०७, ३२७४२१६ फैक्स : ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन, ३/५, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–२ से प्रकाशित (फोन : ३२७४७७१, ३२६०९८५) सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सभा मन्त्री। ई-मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट - http://www.whereisgod.com

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४० अक २७ | २८ अक्टूबर से ३ नवम्बर २००१ तक | दयानन्दाब्द १७८ | सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०२ | सम्वत २०५८ | का० कृ०

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डाल



गुरुकुल भूमि घोटाले के सम्बन्ध में सर्वोच्च सीनेट की बैठक

कुलपति समेत 11 पर चलेगा मुकदमा

जस्टिस जयभूषण गर्ग नए विजिटर

हरिद्वार २० अक्टूबर। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की सर्वोच्च सीनेट ने आज कुलपति समेत उन सभी ग्यारह अधिकारियो के खिलाफ एफ० आई० आर० दर्ज कराने का निर्णय लिया है जो जमीन विक्रय मे शामिल हैं।

विक्रय मे शामिल विजिटर प्रो० शेरसिह के स्थान पर पजाब-हरियाणा हाईकोर्ट के सेवानिवृत्त जस्टिस जयभूषण गर्ग को विश्वविद्यालय का नया विजिटर चुना गया है। सीनेट ने कुलपति डॉ० धर्मपाल के त्यागपत्र पर इसलिए विचार नहीं किया ताकि उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाही हो सके।

आज की महत्वपूर्ण बैठक मे यू० जी०सी० के प्रतिनिधि एम० एम० शकधर और भारत सरकार के प्रतिनिधि अशोक चतुर्वेदी ने भी भाग लिया। कुलपति की नियुक्ति करने का अधिकार चूकि विजिटर को होता है अत भूमि घोटाले मे लिप्त कुलपति डॉ० धर्मपाल के सम्बन्ध में निर्णय कुलाधिपति एव नए विजिटर जस्टिस जयभूषण गर्ग पर छोड दिया गया है।

गुरुकुल मे बीस करोड की जमीन चुपचाप बेचने पर कुलाधिपति हरबश लाल शर्मा की अध्यक्षता मे हुई बैठक में जमकर हगामा हुआ। सीनेटर देवराज राजेन्द्र नाथ पाडेय डॉ० अम्बुज शर्मा कौस्तुभ पाडेय महेश विद्यालकार रामेहर आर्य और देवेन्द्र शर्मा ने जमकर प्रहार किए। बचाव पक्ष में केवल श्रीमती प्रभात शोभा और स्वामी ओमानन्द ही नजर आए। वक्ताओ ने माग की कि कुलपति डॉ० धर्मपाल का त्यागपत्र स्वीकार करने के बजाय उन्हे बरखास्त कर दिया जाए।

बैठक मे जमीन बेचने वालों के खिलाफ मुकदमा चलाने और हर सूरत मे बेची गई जमीन वापस लेने का फैसला हुआ। कुलसचिव को निर्देशित किया गया कि वे विजिटर और एक अधिवक्ता की सलाह लेकर भूमि विक्रेताओं के खिलाफ कानूनी कार्रवाई तत्काल शुरु करे। कुलाधिपति हरबश लाल शर्मा ने कहा कि भूमि विक्रेताओ ने खरीदार से जितना कमीशन लिया है वह विश्वविद्यालय को लौटा दे। खरीदार को बाकी पैसा वे चुका देगे।

किसी भी कीमत पर भूमि वापस ली जाएगी : कुलाधिपति

श्रीमती प्रभात शोभा और स्वामी ओमानन्द ने जब पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के अश्विनी कुमार पर भी भूमि विक्रय के आरोप लगाए तो सीनेटरो ने उन्हे घेर लिया। भारी शोर शराबे के बीच विक्रय मे शामिल दोनो आर्य नेता बैठक से उठकर चले गए। महेश विद्यालकार वेदव्रत शास्त्री और देवेन्द्र शर्मा ने प्रो० शेरसिह खेमे पर अत्यन्त तल्ख टिप्पणिया की। सीनेट बैठक मे ४० मे से ३३ सदस्यो ने भाग लिया। जिसमे ३१ सदस्य एक पक्ष मे नजर आए। हरियाणा के राम मेहर ने सविधान मे सशोधन की बात कही।

बैठक के उपरान्त कुलाधिपति हरवश लाल शर्मा और अन्य सीनेटर धरनास्थल पर आए। कुलाधिपति ने घोषणा की कि उन्हे चाहे जो भी कुरबानी देनी पडे जमीन वापस ली जाएगी।

सीनेट के सदस्य एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि गुरुकुल की स्थापना का यह १००वा वर्ष चल रहा है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि इसी वर्ष मे यह शर्मनाक घटना स्वय को आर्यसमाजी नेता बताने वाले लोगो ने कर डाली। मैंने पहले ही विद्या सभा के अधिकारियो को यह कार्य न करने की चेतावनी दे दी थी। इसी कारण दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्यो को इन बैठको में शामिल न होने के लिए भी कहा गया था। परन्तु कुछ लोगो ने इस महापाप मे शामिल होकर स्वय अपना चरित्र प्रदर्शन ही किया है।

पजाब के श्री देवेन्द्र शर्मा ने कडे शब्दो मे भूमि विक्रय में लिप्त व्यक्तियो को चेतावनी देते हुए कहा कि हमने अपने रक्त को साक्षी मानकर सकल्प लिया है कि यदि हम इस भूमि विक्रय को रद्द करा पाने मे सफल हुए तभी हम अपने पूर्वजो की त्याग ओर तपस्या और उनकी विरासत का औचित्य सिद्ध कर पाएगे।

हरियाणा के श्री राम मेहर एडवोकेट ने कहा कि इस घटना ने हमारा सबका सिर नीचा कर दिया है परन्तु हम सकल्प करते है कि लेन दन की इस घटना की गहराई तक छानबीन होगी दोषियो पर कार्यवाही होगी और यह विक्रय रद्द किया जाएगा जिससे हम पुन सम्मानपूर्वक जी सके। इस पवित्र भूमि के एक टोकरे मिट्टी की कीमत कोहनूर हीरे से भी बढकर है।

श्री विमल वधावन ने कहा कि गुरुकुल कागडी का सगठन भूमि की मालकियत और कब्जा किसी व्यक्ति को नही होने देगा यह बात तो आज की सीनेट बैठक से स्पष्ट हो जाती है परन्तु ७० लाख रुपयो के अतिरिक्त जो काले धन का लेन देन हुआ है उसकी छानबीन कवल सी० बी० आई० ही कर सकती हे।

उन्होने कहा कि कुछ वरिष्ठ अधिवक्ताओ और राष्ट्रीय नेताओ के सहयोग से इस भूमि घोटाले को पूरी तरह अवश्य ही उजागर करने का हर सम्भव प्रयास किया जाना चाहिए।

उन्होने बताया कि सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष एव वरिष्ठ अधिवक्ता श्री रामफल बसल कुछ दिन बाद गुरुकुल मे पधारकर अधिकारियो से विचार विमर्श करेग। उल्लेखनीय है कि श्री बसल इस घटना को पहले ही दुर्भाग्यपूर्ण बताकर इस भूमि विक्रय को रद्द कराने का सकल्प व्यक्त कर चुके है और वे अपनी हर प्रकार की सेवाए दने को तैयार है।

कुलाधिपति की अपील पर शिक्षको एव कमचारियो ने आदालन समाप्त करने की बात स्वीकार कर ली है।

सीनेट की बैठक मे कुलाधिपति ने सात नए मनोनीत सदस्यो प्रेम प्रकाश भारद्वाज सुधीर कुमार राजेश कुमार डा० विनय कुमार मनीष सहगल अतुल मगन ओर विजय साथी का स्वागत किया। यू० जी० सी० के एम० एल० शकधर और भारत सरकार के अशोक चतुर्वेदी का भी स्वागत किया गया।

सिडीकेट के ४ शिक्षा पटल के ५, वित्त समिति के एक सदस्य को चुनने और सीनेट का कोषाध्यक्ष मनोनीत करने का अधिकार कुलाधिपति को दिया गया। नए विजिटर के नाम का प्रस्ताव प्राचार्य स्वतत्र कुमार ने रखा। अनुमोदन ओमानन्द देवेन्द्र शर्मा व देवराज द्वारा किया गया।

(अमर उजाला २१ अक्टूबर मे प्रकाशित समाचार के आधार पर)

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

सह सम्पादक
विमल वधावन एडवोकेट

आर्य मुसाफिर पं० लेखराम

— श्री हरबसलाल कपूर

आर्य जगत के पाठको के लिए पण्डित लेखराम जी का सबसे घनिष्ठ परिचय यह है कि वह एक समय आय गजट के सम्पादक रहे थे। तब सभा के इस पत्र का नाम आर्य गजट था और वह उर्दू मे छपता था। यो उनका नाम आर्यसमाज के मूर्धन्य कर्मवीरो मे और अमर हुतात्माओ मे है। उन्होने यह जानते हुए विधर्मियो का खण्डन किया कि इसके फलस्वरूप उन्हे अपने प्रण भी दने पड सकते है। परन्तु इस कारण वह कभी भी झिझके नहीं।

उनका जन्म सन १८५८ मे अविभक्त पजाब के झलम जिले के सैयदपुर गाव मे हुआ था। उनके पिता मेहता श्री तारासिह स्गमान्य स्थिति के ब्राह्मण थे।

आर्यत्व की बडी प्रगति

यह सोच कर आज आश्चर्य और आनन्द होता है कि आर्यसमाज के प्रयत्नो के फलस्वरूप भाषा के मामले मे देश कितनी लम्बी मजिल तय कर आया है। उस समय हिन्दी सस्कृत का कहीं नाम ही नहीं था। सब विद्यालयो म पढाई उर्दू और फारसी मे होती थी। लेखराम जी ने भी इन्ही मे शिक्षा पाई। वह अत्यन्त मेधावी थे परन्तु शिक्षा बहुत दूर तक चली नहीं। आर्थिक परिस्थितियो के कारण पढाई बीच मे छोड कर ही वह सत्रह वर्ष की आयु मे एक सिपाही के रूप म पुलिस म भर्ती हो गए।

पडित लेखराम जी जिस भी काम मे जुट जाते थे उसे पूरी तन्मयता से करते थे। इस कारण उनके अफसर उनस प्रसन्न थे। पदोन्नति करके उन्हे सार्जेट बना दिया गया

अध्यात्म मे रुचि

परन्तु लेखराम जी का मन आध्यात्मिक विषयो मे अधिक लगता था। वह विचारक थे। मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी के क्रान्तिकारी विचारो का भी उन पर प्रभाव पडा। सन १८८० मे वह पेशावर मे थे। वहीं उनका आर्य समाज से सम्पर्क हुआ। वह स्वामी दयानन्द जी के विचारो से इतने प्रभावित हुए कि पुलिस की नौकरी छोड कर आर्यसमाज के प्रचार को ही उन्होने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया।

अहमदिया मत का खण्डन

उन दिनो मुसलमानो का एक नया सम्प्रदाय चला था अहमदिया सम्प्रदाय। उसका मुख्य केन्द्र कादियान मे था इसलिए इन्हे कादियानी भी कहा जाता था। इनका गुरु स्वय को पैगम्बर कहता था। प० लेखराम जी ने अहमदिया सम्प्रदाय की पोल खोलते हुए तकजीब बुराहीन अहमदिया नुस्खा खब्त अहमदिया आदि कई पुस्तके लिखीं। इन पुस्तको को मुसलमानो ने भी पसन्द किया और अहमदिया लोगो का बहिष्कार कर दिया। इससे अहमदिया लोग पडित लेखराम जी के शत्रु हो गए।

कुछ समय बाद पडित जी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के पूर्णकालिक उपदेशक बन गए। उस कार्य मे पुलिस की नोकरी जितना वैभव नहीं था परन्तु मानसिक सन्तोष था कि वह धर्म का प्रचार कर रहे है।



पडित लेखराम जन्म से ही नहीं कर्म से भी ब्राह्मण थे। उनमे चिन्तन भाषण और लेखन की क्षमता थी। इतिहास ईसाइयत और इस्लाम का उन्होने गहन अध्ययन किया था और इनमे उन्हे प्रामाणिक विद्वान माना जाता था। सन १८६३ मे उनका विवाह कुमारी लक्ष्मी के साथ हुआ। उनका एक पुत्र भी हुआ पर उसकी छोटी आयु मे ही मृत्यु हो गई।

सन १८९० मे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने उन्हे ऋषि दयानन्द का विशद जीवन चरित्र लिखने का काम सौंपा। इस कार्य के सिलसिले मे जानकारी एकत्र करने के लिए उन्हे देश के विभिन्न भागो की लम्बी यात्राए करनी पडीं। इसलिए उनका उपनाम आर्य मुसाफिर पड गया।

महात्मा मुशीराम जी द्वारा सराहना

महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र की भूमिका म महात्मा मुशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) ने लिखा है कि इसमे सन्देह नहीं कि पडित लेखराम जैसा अन्वेषक स्वभाव का आर्य ही इस कार्य के लिए उपयुक्त था परन्तु मेरे विचार से यह पुस्तक पाठको के हाथ मे और शीघ्र पहुचती और घटनाओ की दृष्टि से और पूर्ण होती यदि इन घटनाओ को एकत्रित करने का कार्य किसी ऐसे अन्वेशक को दिया गया होता जिस पर उपदेश देने का दायित्व न होता। कौन नहीं जानता कि पडित लेखराम को वैदिक (आर्य) धर्म की उन्नति का विचार कभी भी एक स्थान पर बैठने नहीं देता था और यदि उन्होने कहीं सुन लिया कि अमुक स्थान पर मोहम्मदी अथवा ईसाई मतो के उपदेशक विशेष सफलता प्राप्त कर रहे हैं तो फिर बडे से बडे काम और आवश्यक कार्य को छोड कर भी उस स्थान पर पहुचना वह अपना कर्त्तव्य समझा करते थे।

बलिदान

हृष्ट पुष्ट शरीर व पुलिस की नौकरी के अभ्यास के फलस्वरूप पडित लेखराम जी को थकान और भूख प्यास का कष्ट कष्ट ही नहीं लगता था। कई वर्ष के प्रयत्न के बाद उन्होने ऋषि के जीवन चरित्र सम्बन्धी सामग्री एकत्र कर ली। वह उन्होने उर्दू मे लिखी थी। सन १८९७ मे जब वह अपने घर मे बैठे उसे पुस्तक रूप मे लिख रहे थे तभी एक काले गठीले हत्यारे ने आकर उन पर छुरे के वार करने शुरू कर दिए। छाती और पेट पर गहरे घाव हुए। अपना काम पूरा करके हत्यारा भाग निकला। उसे पहचाना नहीं जा सका और न कभी पकडा ही जा सका। उनके रक्त की बूदे महर्षि के जीवन की लिखी जा रही पाडुलिपियो पर पडी थीं इसलिए उन्हे रक्त साक्षी विरुद्ध दिया गया।

घायल पण्डित जी को तत्काल अस्पताल ले जाया गया। घाव गहरे थे। उन्हे बचाया नहीं जा सका। ६ मार्च १८९७ की रात मे उनका प्राणान्त हो गया। उस समय महात्मा मुशीराम जी उनकी मृत्यु शय्या के पास थे। उस दिन उन्हे पता नहीं था कि बीस एक बरस बाद उन्हे भी इसी प्रकार धर्म की वेदी पर अपना बलिदान देना होगा।

आर्य जनो के लिए पण्डित लेखराम का सन्देश था कि आर्यसमाज का लेखन (तहरीर) और भाषण (तकरीर) का कार्य बन्द नहीं होना चाहिए।

महात्मा हसराज जी की श्रद्धाजलि

प० लेखराम जी के विषय मे महात्मा हसराज जी ने लिखा है मैने धर्मवीर प० लेखराम जी के दर्शन उस समय किए जबकि उन्होने वैदिक धर्म के प्रचार को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया ही था। उनकी आकृति बडी सरल थी परन्तु उनके हृदय मे धर्मप्रेम की अग्नि बडी प्रचडता से प्रज्वलित थी। कोई समय नहीं जब उन्हे आर्यसमाज का ध्यान न हो। कोई भी कष्ट ऐसा नहीं था जिसे वह आर्यसमाज के लिए सहन करने को उद्यत न हों। यदि पाच सौ मील से भी तार आया है कि कोई हिन्दू अपने धर्म का त्याग करने लगा है, तो पण्डित लेखराम वहा पहुच कर कार्य करने के लिए उद्यत हैं।

न मार्ग की कठिनाई का विचार है न ही इस बात का विचार है कि जहा जाएगे वहा भोजन मिलना भी कठिन है विरोधियो की सख्या सहस्रगुणा है और सहायक सम्भवत कोई भी न हो परन्तु फिर भी धर्मवीर अपने यज्ञ पर अटल है अपने मिशन की पूर्ति के लिए उपस्थित है।

परम तपस्वी

उनका जीवन तपस्या का जीवन था। वह कष्ट सहन कर सकते थे तथा करते थे। प्रतिदिन यात्रा मे रहना कोई साधारण बात नहीं। उनको इस बात की तनिक भी चिन्ता न थी कि उन्हे धनिको जैसा भोजन प्राप्त होता है अथवा निर्धनो जैसा। जो कुछ प्राप्त हुआ उसी को खा पीकर अपितु कई बार भूखा रहकर भी वह उपदश देते थे शास्त्रार्थ करते थे। उनकी वेशभूषा भी सादा थी।

प्राणो का निर्मोही निर्भय विप्र

उनमे अदभुत निर्भीकता थी। सहस्रो विरोधियो के मध्य खडे होकर भी वे उनके मत का खण्डन करने से न डरते थे। उनको इस बात की कतई चिन्ता न थी कि मेरा जीवन सुरक्षित है अथवा नहीं। मिर्जाइयो के सामना के लिए वह प्रतिक्षण डटे रहते थे।

सर्वस्व समर्पण करने की चाह

आर्यसमाज के लिए उनमे अत्यन्त प्रेम था इस पर फिदा (समर्पित) थे। न अपने घर की कुछ चिन्ता थी तथा न मित्रो का कुछ विचार था। जब आर्यसमाज मे कलह जागी दुर्भाग्य से मैं तथा वह दो भिन्न भिन्न दिशाओ मे थे। उन्होने बहुत यत्न किया कि हमको अपनी ओर खीचे। यद्यपि वह इस उद्देश्य मे सफल न हुए परन्तु मैं इस बात की साक्षी देता हू कि उनके इन सब प्रयत्नो की नींव मे आर्यसमाज का प्रेम था। जिस प्रकार जैसूवाट मिशनरी अपने निश्चय के पक्के थे तथा अपने मिशन को सबसे बढकर समझते थे इसी प्रकार यह धर्मवीर भी आर्यसमाज तथा वैदिक धर्मप्रचार से बढ कर किसी उद्देश्य को स्वीकार नहीं करते थे। यही उनके जीवन की लगन थी। इसके लिए वह सर्वस्व न्यौछावर करने को तैयार थे।

घातक इस बात मे तो सफल हुआ कि पडित जी के जीवन को समाप्त कर दे, परन्तु उसने पडित जी के जीवन को सहस्रो गुणा अधिक उज्ज्वल तथा पवित्र बना दिया तथा आर्यसमाज की जडों को भी दृढ कर दिया क्योंकि शहीद का रक्त धर्म के भवन का सीमेंट (गारा–चूना) होता है।

राष्ट्र, राष्ट्रभाषा/राजभाषा और संस्कृति

— विश्वम्भर प्रसाद गुप्त बन्धु पूर्व आनरेरी तकनीकी सम्पादक एव हिन्दी सलाहकार

आर्य (श्रेष्ठ) भाषा हिन्दी विश्वभाषा बनने योग्य है

हिन्दी हमारी राजभाषा है। यह राष्ट्रभाषा भी है। राजभाषा से राष्ट्रभाषा का पद ऊचा होता है क्योकि राज्य की अपेक्षा राष्ट्र बहुत बडा होता है। राष्ट्र मे बहुत से राज्य होते हैं जिनकी भाषाए अलग अलग (हिन्दी से भिन्न) भी हो सकती है। राष्ट्र का क्षेत्र बहुत बडा (वेद के अनुसार) सारी पृथ्वी का है क्योकि राष्ट्रीयता मे परिवारी भावना भी निहित है जिसकी व्यापकता का आदर्श सारी पृथ्वी ही है (वसुधैव कुटुम्कम और कृण्वन्तो विश्वमर्यम (श्रेष्ठ विश्व) बनाने की ओर सयुक्त राष्ट्र सगठन अग्रसर है।

हिन्दी का उदभव ही विश्वभाषा बनने की दृष्टि से हुआ है और विद्वान लोग शताधिक वर्षो से इसे आर्य (श्रेष्ठ) भाषा कर रहे हैं। हिन्दी बोलने समझने वाले ससार मे सबसे अधिक है ही (देखिए भारत सरकार के राजभाषा विभाग की पत्रिका राजभाषा भारती अक्टूबर दिसम्बर १९७७ अक के पृ० ४० पर डॉ० जयन्ती प्रसाद नौटियाल का लेख) यह सुभाषा बल्कि विश्व की सर्वश्रेष्ठ भाषा भी है इसमे सन्देह नहीं।

२ सस्कृत से सुधरी हुई भाषा है हिन्दी

हिन्दी सभी मनीषियो द्वारा पारस्परिक व्यवहार की आपस मे मिलने जुलने की भाषा के रूप मे विकसित होकर एक महान राष्ट्रभाषा राजभाषा सम्पर्क भाषा योजक भाषा के आसन पर प्रतिष्ठापित है। यह सस्कृत से भी आवश्यकतानुसार सुधर कर पुष्ट हुई है और सभी प्रकार से 'सुभाषा कही जाने की अधिकारिणी है। सस्कृत से भी सुधरी हुई भाशा है हिन्दी जैसे सस्कृत का 'देवर शब्द जिसका अर्थ है पति का भाई (जेठा या छोटा)। महाभारत के बाद भारतीय सस्कृति मे आए परिवर्तन के फलस्वरूप नियोग के लिए केवल छोटा भाई उपयुक्त समझा जाता है जेठा वर्ज्य है (तुलना कीजिए अनुज वधु, भगिनी सुत नारी सुनु सठ कन्या सम ये चारी इन्हहि कुदृष्टि विलोकई जोई ताहि बधे कछु पाप न होई — मानस)। अतएव हिन्दी मे पति का छोटा भाई ही 'देवर' होता है बडा भाई देवर नहीं 'जेठ कहलाता है (तुलना कीजिए जेठ स्वामि सेवक लघु भ्राता)।

इसी प्रकार व्याकरण मे लिग और 'वचन के प्रकरण भी हिन्दी मे सुधरे हुए हैं। उदाहरण के लिए ते सर्वनाम पुल्लिग मे बहुवचन है किन्तु स्त्रीलिग और नपुसक लिग मे द्विवचन है और इनके विशेष्य (पूर्वपद antecedent) दूर होने पर भ्रम की स्थिति पैदा होती है। हिन्दी मे सर्वनाम लिग से अप्रभावित रहते है और क्रिया प्रभावित होकर यह भेद खोलती है। सस्कृत मे सख्यावाची शब्द एक सदा एकवचन द्वि सदा द्विवचन त्रि सदा बहुवचन ओर 'चतुर भी सदा बहुवचन होते हैं किन्तु इन सभी के तीनो लिगो मे अलग अलग रूप होते है जबकि विशति (२०) से आगे केवल एकवचन मे ही और सदा स्त्रीलिग मे ही रूप होते है। किन्तु किसी ऐसी विसगति या जटिलताओ से मुक्त होकर श्रेष्ठ विश्वभाषा बनी है।

३ भारत मे हिन्दी की स्थिति

हिन्दी का प्रयोग राष्ट्रभाषा के रूप मे देश मे सर्वत्र होता आ रहा है राजभाषा के रूप मे प्रयोग के लिए भी सरकार के पर्याप्त प्रयास आदेश अनुदेश हैं जिनके कारण कहीं भी किसी काम के लिए भी सविधान सम्मत प्रयोग मे कोई अडचन नही है। फिर भी इस आर्य (श्रेष्ठ) भाषा के प्रयोग पर भारत म ही झिझक है इसके कारणो पर प्रकाश डालते हुए भारत के गृहमन्त्री माननीय लालकृष्ण आडवाणी ने १४ सितम्बर २००० को राजधानी दिल्ली मे हिन्दी दिवस समारोह मे कहा था कि आजादी मिलते ही इजराइल की भाति हम अपनी भाषा अपना लेते तो कोई कठिनाई न होती किन्तु हमने १५ वर्ष तक अग्रेजी से चिपके रहने का निर्णय कर लिया और अब उसके शिकजे मे फस गए। यह हमारी भारी भूल थी। उन्होने बहुत ही सामयिक सलाह दी कि "हम हीन भावना त्यागकर अपनी भाषा और सस्कृति पर गर्व करे। अपनी भाषा के उत्थान के लिए सास्कृतिक चेतना पैदा करना जरूरी है। (नवभारत टाइम्स का विद्या टाइम्स परिशिष्ट दिनाक ३१ १० २००१ ई०)।

बस हमे हीन भावना त्यागकर अपना खोया हुआ स्वाभिमान जगाना है। यह हमारी शिक्षा का लक्ष्य हाना चाहिए। इसी से मानव ससाधन का अपेक्षित विकास/परिष्कार या मानव की सस्क्रिया/सस्कृति सम्भव है। हमारा भा रत (विश्वभारत) कोई हजार दो हजार साल से गुलाम चला आ रहा है। एक आक्रान्ता गया तो उसकी जगह दूसरे ने ले ली। गुलामी का सीरियल चलता रहा। बीच बीच सत्ता परिवर्तन के कई अवरोध भी हुए। अन्तत अग्रेजो की गुलामी से १९४७ मे हम आजाद हुए। अग्रेज चल गए लेकिन इसके बावजूद हमारी जीवन शैली और आचार विचार मे अग्रेजियत अभी भी समाई हुई है और हमे दिन मे अनेक बार अग्रेजियत का स्मरण कराती रहती है। हमे इससे पीछा छुडाना है। साक्षरता भी किसी विदेशी भाषा की नही श्रेष्ठ विश्वभाषा हिन्दी की चाहिए। हमारे विद्यालय फैलते जाते है उनसे निकलने वाले दिमाग सिकुडत जाते है भवन उठते जाते है आसमान मे चरित्र गिरता जाता है गढे मे। हमारी शिक्षा ऐसी सकीर्ण मानसिकता की नही उदार विश्व राष्ट्रीयता की होनी चाहिए।

४ देश के चारित्रिक पतन का कारण

चारित्रिक पतन का कारण भी यही है कि श्रेष्ठ भारतीय (पर्यावरण मैत्री वाली) सस्कृति मिटाने के लिए श्रेष्ठ भाषा हिन्दी को जड मूल से उखाडकर पर्यावरण विरोधी भाषा अग्रेजी रोपने की जीभर कोशिश हो रही है। सहसा कोई विश्वास नहीं करेगा कि कोई भाषा भी पर्यावरण को हानि पहुचा सकती है। किन्तु पर्यावरण विरोधी पश्चिमी अपसस्कृति का आक्रमण दुतरफा हुआ है। भाषा सस्कृति के प्रवाह का माध्यम होती है इसलिए एक ओर पर्यावरण मैत्री वाली भारतीय सस्कृति के प्रवाह के माध्यम सस्कृत/हिन्दी को ही मिटाने की कोशिश की गई शिक्षा मे इनको स्थान न देकर और बच्चो को बचपन से ही इनसे वचित रखकर दूसरी ओर पर्यावरण विरोधी भाषा अग्रेजी लादकर बचपन से ही पर्यावरण विरोधी मानसिकता भी पैदा की गई

हॉ अग्रेजी भाषा पर्यावरण विरोधी है। इसकी कुछ गहराई से छान बीन करने की आवश्यकता है। भारत की पहिचान इसकी चारित्रिक और सास्कृतिक श्रेष्ठता के कारण ही है। इसलिए यह राष्ट्रीय गौरव और राष्ट्रीय अस्मिता का प्रश्न है। कोई भाषा जिनके द्वारा विकसित की जाती है उनकी मानसिकता ही उसमे झलकती है और वह उसी मानसिकता का प्रसार भी करती है सीखने वाले म उसी का अध्यारोपण करती है। उदाहरण के लिए एक पन्थ दो काज या नौ नगद न तेरह उधार साधारण कामकाजी या महाजन लोगो की कहावते है जिनके लिए दो ही अग्रेजी अभिव्यक्तिया है टु किल टू बर्डस विद वन स्टोन और ए बर्ड इन हैण्ड इज वर्थ टू इन दि बुश ये अभिव्यक्तिया साफ बताती है कि ये शिकारियो बहेलियो चिडीमारो की अभिव्यक्तिया है जिनकी शिकार ओर मासाहार की मानसिकता भी इनमे साफ झलकती है ओर यही मानसिकता इन्हे सीखने वाले की बन जाएगी। परपीडन और मासाहार स्वभाव ही हो जिनका उनके द्वारा ऐसी ही भाषा की सृष्टि हो सकती है क्योकि (अमेरिका सन्त एमेट फाक्स के शब्दो मे) भोजन का हमारे जीवन मे सर्वाधिक महत्व है। यही हमारे जीवन चरित्र का निर्धारण करता है। अवधी मे तो कहावत ही है जैसा पिए पानी वैसी बने बानी जैसा खाए अन्न वैसा बने मन। अत इमरती खोया गुलाब जामुन घेवर जलेबी बरफी रसगुल्ला आदि भाति भाति की स्वादिष्ट मिठाइया सब उन्हे म स [illegible] दिखती हैं। कहा मिठाई और कहा मास ? पर हाय रे अग्रेजी ! 'स्वीट पहिले जोडकर हर मिठाई को मास (sweet meat) [illegible] दिया।

क्रमश

१४ अक्टूबर के अंक म प्रकाशित लेख से आगे

इंगलैंड में एक आर्य यायावर

— ब्रिगेडियर चितरंजन सावंत, वी.एस.एम

इगलैड की राजधानी लदन से लगभग १५० मील उत्तर पश्चिम का अचल कहलाता है, वेस्ट मिडलैड्स। 'मील' शब्द पर चौकिए नही। विकासशील भारत मे तो हम आधुनिक पैमाना "किलोमीटर" कहते है और विकसित इगलैड अभी भी 'मील' से प्रीति लगाये है। जी हा, अंग्रेज जिनके साम्राज्य मे पहले कभी सूर्यास्त होता ही नही था, अभी भी परम्परा प्रेमी है। 'मील' सभी सूचना पट्टो पर प्रमुख है। अस्तु। वेस्ट मिडलैड्स का प्रमुख नगर बरमिंघम तो कभी कभी एशिया का भूभाग प्रतीत होता है। मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरजाघर, आर्यसमाज सभी के पूजा स्थल और प्रेरणा स्रोत है यहा। अग्रेजों से दात काटी रोटी वाली दोस्ती के दिनो मे ईराक के सद्दाम हुसेन ने अपने पेट्रो डॉलर के बल पर बरमिघम के प्रमुख राजमार्ग के किनारे गगनचुम्बी विशाल मस्जिद बनवा दी थी। वह दोस्ती तो 'कुट्टी' मे बदल गई किन्तु, वह मस्जिद अभी भी "सद्दाम हुसैन मॉस्क" के नाम से जानी जाती है। जातीय दगों के इस युग मे मुस्लिम विरोधी भावना प्रबल होने पर वह अग्रेजों के आख की किरकिरी बन कर रह गई है।

'रेस रिलेशन्स' के परिपेक्ष्य मे आर्यसमाज द्वारा वेद प्रवचन को रेडियों पर प्रसारित करने के सम्बन्ध में कई सुझाव आए। एक तथाकथित शातिवादी का विचार था कि "आर्य समाज" का नाम ही न लिया जाए और वैदिक सिद्धात पर परोक्ष प्रकाश डाला जाए। डॉ० नरेन्द्र कुमार आर्य ने प्रधान आर्य समाज मिडलैड्स के रूप मे सशक्त दलील दी कि बिना राम के रामायण का मथन कैसे सम्भव होगा। कारगिल विजय की मैने चर्चा की और उसे रेडियो माध्यम पर लाने का प्रस्ताव किया तो एक अर्ध अहिंसावादी बोले कि पाकिस्तानी भडक जाए तो। भडकना या क्रोधित होना तो उनकी मानसिक निर्बलता का परिचायक होगा, मैने कहा और समय आने पर उन्हें आर्यसमाज मे एक दूरदर्शन निर्मित्त डॉक्युमेंन्ट्र 'कारगिल की गूज' दिखाई। गलतफहमी के बादल को तथ्य रूपी हवा ने बिखेर दिया, सत्य का सूर्य सभी ने देखा। कराची, पाकिस्तान की सुरैया बेगम की 'वाह-वाह मे पश्चिमी पंजाब वालो ने अपना स्वरदान नही दिया। उनमे से कुछ के सगे सम्बन्धी कारगिल मे खेत रहे थे या लापता थे। लाहौर के चौधरी मोहम्मद याकूब ने तो आर्यसमाज की चौखट चाहते हुए भी न लाघी क्योकि उनकी प्रिय सास उनके घर शो के समय ही आ धमकीं। अगली सुबह पार्क मे प्राणायाम से पूर्व उन्होने न आ पाने का अफसोस जताया। कारगिल का शो हो जाने के बाद अर्ध अहिसावादी बगले झाकने लगे, फिर भी अशक्त हाथो से ताली बजाने की चेष्टा करते रहे। आर्य समाज के उत्सव को चार चांद लग गए।

बरमिंघम के एशियायी श्रोताओ का अपना प्यारा रेडियो स्टेशन है, 'रेडियो एक्स एल'। आर्य समाज को वेद प्रचार समिति के अध्यक्ष, महाशय कृष्ण चोपडा, मै और कॉम्पियर ७४ वर्षीय सतोष पराशर स्टूडियो मे बैठे है। आर्यसमाज का 'स्पान्सर्ड प्रोग्राम' प्रसारित हो रहा है। पराशर जी पूर्व वायु सैनिक है, पौराणिक है और आर्यसमाज के रेडियो कार्यक्रम की अत्यत उत्साह से कम्पोजिग कर रहे हैं। कार्यक्रम का आरम्भ करने के लिए उन्होंने स्वय एक सी०डी० ढूढ निकाला, जो इस समय 'एयर' पर जा रहा है 'वेदों का डका आलम में, बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने।' स्टूडियो मे बैठे हम आर्यजन गदगद् हो गए।

पाराशर जी ने श्रोताओ को रेडियों पर मेरा परिचय दिया और इस बात पर बल दिया कि वेद प्रचार के लिए, आर्यसमाज वेस्ट मिडलैड्स के निमंत्रण पर बरमिघम आया हू। ऐसा वह नित्य कह रहे हैं क्योंकि श्रोताओं की संख्या बढती और बदलती रहती है। फिर, जैसा हम पूर्वाभ्यास कर चुके थे उसके अनुसार पूछा कि क्या मन की शान्ति के बारे में वेद मत्र पाठ और उसकी व्याख्या करना चाहूंगा। फिर उन्होंने एक पूरक प्रश्न पूछा (हम लोग एयर पर लाइव' जा रहे थे, कि श्रोताओ को हमारी सांस भी सुनाई दे) 'आप तो सैन्य अधिकारी रहे हैं, रणभूमि मे तो अशान्ति ही अशान्ति है, फिर मन में शान्ति कहां ? मैने कहा 'बन्धुवर, यदि मन मे शान्ति है तो रण में सैनिक सक्षम होगा, उसके शस्त्र शत्रु के लिए घातक होंगे, विजय श्री उसका वरण करेगी और शत्रु हाहाकार करेगा। राम-रावण युद्ध मे श्रीराम ध्यान केन्द्रित करके वाण चलाते थे, अशान्त रावण अट्टहास करता था। अतत चिता पर चढाया जाने वाला शव रावण का था, राम का नहीं। एक श्रोता का फोन स्टूडियो मे ही आया राम-रावण युद्ध की चर्चा जारी रखिए, मन को शान्ति भी मिल रही है। मेरा ही स्वर लगातार न प्रसारित होता रहे, अत वेदमत्र पाठ से पूर्व कॉम्पियर ने महाशय कृष्ण चोपडा से अनुरोध किया कि वेद प्रचार के कुछ पहलुओ पर प्रकाश डाले। इस बीच मैने माइक से अलग गहरी सांस कई बार ली। मन प्रफल्लित हुआ।

मन की शान्ति से सम्बन्धित वेदमत्र का सस्वर पाठ किया

इमानि यानि पञ्चेन्द्रियाणि मनः षष्ठानि मे हृदि ब्रह्मणा संशितानि। यैरेव ससृजे घोरं तैरेव शान्तिरस्तु नः।।

अथर्ववेद १६–६–५

' फिर विस्तार से व्याख्या हुई जिसका साराश यहा लिख रहा हू ये जो पाच इन्द्रिया हैं, मन जिनका छठा साथी है, जिनसे ही मेरे मन मे घोर अशान्ति उत्पन्न हुआ करती है, विवेक द्वारा परिष्कृत होने पर उनसे ही हमारे लिए शान्ति हो। मन मे चिंता हो, उद्विग्नता हो तो उपजती है अशान्ति। चिंता ही हमे असमय चिता पर ले जाती है। ईश्वर चिंतन से हम चिंता को दूर कर सकते हैं। किसी भी समस्या पर चिंता करना व्यर्थ है। हां, चिंतन करके हम समस्या का समाधान ढूंढने में सफल हो सकते हैं। फिर निश्चिंत होकर हम प्रसन्न होंगे। निश्चन्तता की स्थिति में मन मे स्वत आयेगी शान्ति।

चिंता और उद्विग्नता की उपज कहा होती है ? जब हमारी अपनी इन्द्रियां अनुशासनहीन हो जाती हैं। मन से संयम का अभाव होता है। हमारी पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं, आख कान, नाक, जिह्वा (रसना) और त्वचा। मस्तिष्क और हृदय के संयोग से बना है, मन। मन इन पांच ज्ञानेन्द्रियों और पांच कर्मेन्द्रियों – हाथ, पैर, गुदा, गुप्ताग और वाक (जिह्वा) का प्रेरक है। अनेक बार तो इन्द्रिया मन को डावाडोल कर देती हैं और अपनी अंगुलियों पर नचाती हैं। इन छ के असयम और अनुशासनहीनता से हृदय में उपजती है, अशान्ति। इन्हीं छ को हम अपने 'विवेक' (ब्राह्मण) द्वारा सगठित और अनुशासित कर सकते है। इस प्रकार परिष्कृत हो जाने पर वही छः हमें शान्ति देती हैं। अत विवेक का उपयोग शान्ति लाने के लिए आवश्यक है।

प्रवचन के अत मे श्रोताओ ने फोन पर फोन किए। शान्ति की खोज मे अनेक व्यक्तियों ने मिलने की इच्छा व्यक्त की। आर्य समाज के द्वार सभी के लिए सदैव खुले रहते हैं, यह जानकर श्रोता प्रसन्न हुए। जो अलग से बात करना चाहते थे, उन्हें भी निराश नहीं होना पडा। यह बात भी स्पष्ट कर दी गई कि आर्यसमाज गुरुडम को प्रोत्साहन नहीं देता और किसी के कान में मत्र फूक कर चमत्कार कर दिखाने को ढ़ोग और छलावा मानता है। फिर भी किसी दुखिया ने अपने दुपट्टे में मत्र लिख कर बांधने का अनुरोध किया और सौ पाउन्ड देने को तैयार हुई। उन्हें बताया गया आर्यसमाज अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करता है। उस किशोरी की समस्या थी . पति पत्नी के बीच संवादहीनता, जो प्रेम पर कुठाराघात करती है। संवाद ही जनक है प्रेम और माधुर्य का। पारिवारिक सुख के लिए आपस में बोलना बन्द न करो, अभी नहीं, कभी नहीं। आपसी बातचीत सन्देह और संशय को दूर करेगी, कटुता कम होते होते मरू में विलीन हो जाएगी और बह उठेगी प्रेम रस की धारा। अस्तु।

डॉक्टर नरेन्द्र कुमार आर्य ने स्वयं कहा कि एक शनिवार वे मुझे अपनी मर्सीडीज में भ्रमण कराने ले जाएंगे। मैंने कहा बचपन से शेक्सपियर के नाटक पढता रहा हूं, मंचन भी यदा कदा किया, क्यों न चलें उनके जन्म स्थान, स्ट्रेटफोर्ड अपोन एवन ? एक शनिवार की सुबह गंतव्य की ओर था उनकी मर्सीडीज का मुंह।

– उपवन, ६०६ सेक्टर २६,
नोएडा - २०१३०३

मृत्यु को कैसे जीतें ?

– ब्रह्म० सुभद्रा विद्यालकार

प्रश्न है मृत्यु को कैसे जीता जाए? इस ससार मे जिसने भी जन्म लिया है उसे एक दिन मृत्यु के गाल मे अवश्य जाना है चाहे कोई पशु, पक्षी हो जीव जन्तु हो भले ही यह मानव ही क्यो न हो एक एक करके मृत्यु के गाल मे जाते हैं उन सबकी मृत्यु से ज्ञात होता है एक दिन सभी को जाना है जो भी उत्पन्न हुआ है उसकी मृत्यु अवश्यमेव है। तो मृत्यु को कैसे जीतें। देखिए इस विषय मे यजुर्वेद मे क्या कहा गया है –

ओ३म् त्र्यम्बक यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात

यजु० ३/६०

(त्र्यम्बकम) अ उ म तीन अक्षरो की लोरी देने वाली (सुगन्धिम्) यशस्वी (पुष्टिवर्धनम) पुष्टि को बढाने वाले परमेश्वर की (यजामहे) हम स्तुति करे। उनकी कृपा से (उर्वारुकमिव) जैसे खरबूजा पककर (बन्धनात) लता के सम्बन्ध से छूट जाता है वैसे हम भी (मृत्यो) मृत्यु के बन्धन से (मुक्षीय) छूट जावे (अमृतात) मोक्ष से (मा) नहीं।

वेद मन्त्र मे पहला शब्द है त्र्यम्बक – यदि इसका विग्रह करे तो बनता है त्रि+अम्ब+क। त्रि का अर्थ है – तीन। अम्ब अवि धातु से बना है उसका अर्थ है – आवाज करना। यहा आवाज से अभिप्राय है – लोरी अर्थात त्रि–अ उ म इन तीनो अक्षरो स ह। इन तीन अक्षरो से जो वात्सल्य इस को प्रवाहित करने वाली लोरी होती है उसे कहते हैं – अम्ब। उसका अभिप्राय जगज्जननी (माता) परमात्मा से है जो हमारे कल्याणार्थ ओ३म की लोरी देती है।

सुगन्धिम वह सुगन्ध से युक्त है अर्थात यशस्वी है उसका यश ससार मे चारो तरफ फैला हुआ है। ससार का प्रत्येक पदार्थ उसके महान यश का गायक है। ससार की समस्त रचना उसके यश की सुगन्धि को सवत्र फैला रही है।

उसके बाद मन्त्र मे अगला वाक्य है 'पुष्टिवर्धनम – अर्थात पुष्टि को बढाने वाला। वह सर्वत्र व्यापक होकर प्रकृति के अणु–अणु को सयुक्त रखकर पुष्टि देता है इसलिए उस परमात्मा को पुष्टिवर्धनम कहा गया है।

परमात्मा के यह तीन विशेषण गिनाने के पश्चात् परमात्मा से प्रार्थना की गई है – हे परमात्मा ! खरबूजे के समान तू हमे मृत्यु से छुडा अपितु मोक्षरूपी अमृत से नहीं। इस विषय पर व्याख्या करने से पूर्व कुछ कहना चाहूगी।

कुछ विद्वानो ने ससार को द्वन्द्वात्मक कहा है। इसमे द्वन्द्व पाये जाते है। द्वन्द्व कहते हैं जोडे को अर्थात – ससार मे जैसे – सुख–दुख लाभ–हानि विजय–पराजय मान–अपमान उत्थान–पतन और विकास–ह्रास इत्यादि के जोडे पाए जाते हैं। इसी प्रकार से जीवन मे जन्म और मृत्यु का भी जोडा पाया जाता है। यह एक अनुभूत तथ्य है कि सुख बिना दुख के नहीं और दुख बिना सुख के नहीं। लाभ का सम्बन्ध हानि के साथ है और हानि का सम्बन्ध लाभ के साथ/विजय के साथ ही पराजय जुडी हुई है औरपराजय के साथ जय या विजय। मान के अमृत पान के पश्चात अपमान का विषैला घूट भी पीना पडता है और अपमान के पश्चात् सम्मान के भी दर्शन होते है।

जहा बजते हैं नक्कारे वहा मातम भी होते है

जीवन मे चढाव और उतार दोनो ही देखने को मिलते हैं। हालाकि डारविन को भले ही ससार मे केवल विकासवाद ही दिखाई देता हो लेकिन वैदिक मनीषियो को विकास के साथ ह्रास का नियम भी कार्य करता प्रतीत होता है। उत्थान के साथ पतन भी होता है और पतन के साथ उत्थान भी होता है। इसी प्रकार जन्म के साथ मृत्यु और मृत्यु के साथ जन्म का भी सम्बन्ध है। यह नियम सृष्टि मे शाश्वत है। यदि कोई व्यक्ति इस परमात्मा के अनूठे नियम को तोडना चाहे तो तोड नहीं सकता।

वस्तुत हम सबको ज्ञात है कि जीवन मे उन द्वन्द्वो के युगलो का पारस्परिक घनिष्ठ सम्बन्ध है। इस कटु सत्य का ज्ञान होते हुए भी हम जीवन मे मधुर पक्षो की तो इच्छा रखते हैं और जीवन मे कटु पक्षो की इच्छा नही रखते। सबकी यही मनोकामना रहती है मुझे सुख प्राप्त हो दुख न प्राप्त हो।

सुख भूयात दुख मा भूयात।।

व्यापारी लाभ की बात तो सुनने की इच्छा रखता है परन्तु हानि की बात सुनना नही चहाता। चुनाव मे खडा होने वाला प्रत्येक व्यक्ति विजय की शुभ सूचना तो सुनना चहाता है और पराजय का समाचार सुनने के लिए तयार नहीं होता। प्रत्येक व्यक्ति के मन मे यही इच्छा होती है कि मैं जहा भी जाऊ वहा पर मेरा सब आदर – मान – सम्मान होवे उसका कहीं भी अनादर व अपमान नहीं होवे। जीवन मे सभी उत्थान चहाते है भला पतन कौन चाहता है ? इसी प्रकार जन्म की तो सभी सुनना चाहते है मृत्यु का नाम सुनने के लिए भला कौन तैयार है ? प्रत्येक व्यक्ति को अपन अनुभव से यह ज्ञात है कि मनुष्य पर सुख और दुख दोनो ही आते हैं। जीवन मे मनुष्य युगलो को ही प्राप्त करता है। लेकिन फिर भी प्रत्येक व्यक्ति केवल सुख की इच्छा रखता है। अब जरा गहराई से आप स्वत सोचिये–विचारिये कि अगर केवल सुख ही मनुष्यो को प्राप्त हो तो दुखो की वर्षा क्या पत्थरो पर होगी।

दुख हानि पराजय अपमान शोक पतन और मृत्यु इत्यादि कृष्णपक्ष के अन्तर्गत आते हैं। इनमे सबसे अधिक भयावह वस्तु है तो वह है केवल मृत्यु। मृत्यु से सभी बचना चाहते हैं। मृत्यु के नाम से सभी चौंकते हैं। युवक तो एक ओर वृद्ध भी इसके नाम से विदकते हैं। भर्तृहरि जी ने उसका क्या सुन्दर चित्र खींचा है –

"निवृता भोगेच्छा पुरुषबहुमानो विगलित
समाना स्वर्याता सपदिसुहृदोजीवित समा।
शनैर्यष्टयोत्थान घनतिमिररुद्धे च नयने
अहो! जीर्ण कायस्तदपि मरणापाय चकित।।

जिस व्यक्ति के भोग की सब इच्छाए निवृत्त हो चुकी हैं जिसका कोई विशेष सम्मान नहीं रहा जिसके मित्रजन भी एक–एक करके चलते बने अब केवल उसके प्राण ही उसके मित्र रह गये हैं। जब वह उठता है तो लाठी का सहारा लेकर उठता है और उसकी दोनो आखो मे अन्धेरा छा जाता है। हाय! ऐसा व्यक्ति भी जब मृत्यु का नामसुनता है तो चकित हो जाता है। वह मरना नहीं चाहता। वास्तव मे सभी के मन म मृत्यु का भय समाया हुआ है हम सदा बने रहे यही सबकी कामना रहती है। महर्षि पतञ्जलि जी ने योगशास्त्र मे पाच क्लेशो का वर्णन किया है –

अविद्यास्मितारागद्वेषाभिनिवेशा पचक्लेशा।

– योग० २/३/

अविद्या अस्मिता राग द्वेष और अभिनिवेश ये पाच क्लेश कहलाते हैं। ये मनुष्यो को कष्ट देते हे इसलिए क्लेश कहे जाते है इन पाच क्लेशो मे से एक क्लेश अभिनिवेश है अभिनिवेश कहते हैं मृत्यु के भय को यही मृत्यु का भय पूर्ण ससार के सिर पर सवार रहता है। महर्षि पतञ्जलि जी ने आगे कहा –

स्वरसवाही विदुषोऽपि तथारूढोऽभिनिवेश ।। – योग० २/६

यह मृत्यु का भय पूव जन्म के अनुभव से प्राप्त होता है। सभी प्राणियो को नित्य आशा रहती है कि हम सदैव शरीर के साथ बने रह। कभी मरे नही। यह आशा पूर्वजन्म के अनुभव से होती हे। यह मृत्यु का भय बड स बडे शिक्षित व्यक्ति तथा विद्वानो क सिर पर भी सवार (हुआ) पाया जाता है। इस अवश्यम्भावी और भयप्रद मृत्यु से सारा ससार डरता है परन्तु सच्चे अर्थो मे आर्यो को मृत्यु से डरने की बात नही कहीं गयी है। भले ही ईसाई यहूदी और नास्तिक चाहे मृत्यु के भय से कितना भी घबरए अपितु सच्चे आर्यो का मृत्यु से लेशमात्र भी भय नही होना चाहिए क्योकि वेद कहता है –

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वेद मन्त्र मे त्र्यम्बकम सुगन्धिम पुष्टिवर्धनम उन तीन विशेषणो को गिनाकर परमात्मा से स्तुति की गयी है कि हे प्रभु! जैसे पका हुआ खरबूजा लता बन्धन से छूट जाता है वैसे ही हम मृत्यु बन्धन से छूट जाए परन्तु मोक्ष रूपी अमृत से न छूटे। खरबूजे की यह विशेषता है कि जब वह पक जाता है तो बेल से स्वयमेव छूट जाता है। अब प्रश्न उठता है कि

प्रश्न हम खरबूजे की भाति मृत्यु से कैसे छूटे ? मनुष्य को ऐसी स्थिति कैसे प्राप्त हो ? क्या उपाय अपनाए जाए जिनसे मनुष्य की ऐसी अवस्था हो जाए ?

उत्तर यह जीवन की चरम साधना है। यदि यह अवस्था मनुष्य को प्राप्त हो जाए तो यही मृत्यु की जीत है। यहा पर एक बात समझने की है कि मृत्यु से जीत का तात्पर्य यह नहीं है कि मनुष्य को मृत्यु प्राप्त ही न हो। अपितु मृत्यु जीत का अर्थ है कि जब मनुष्य की मृत्यु होवे तो वह घबराए नहीं उसे हसते हुए स्वीकार करे। जीवन की यह एक बहुत बडी साधना है।

प्रश्न ऐसी अवस्था प्राप्त कैसे हो ? वे कौन से उपाय हैं जिनसे मनुष्य की इतनी उच्चस्थिति हो जाती है ?

उत्तर शास्त्र ने यत्र–तत्र कुछ उपाय बताए है उन उपाय को मनुष्य यदि हृदयगम कर ले तो मृत्यु उसके लिए भयावह नहीं रहती। सर्व प्रथम मनुष्य को अपने हृदय मे बिठाना चाहिए कि आत्मा अमर है और शरीर नाशवान है

वायुरनिलममृतमथेद भस्मान्त शरीरम।

यजु० ४०/१५

शरीर मे आवागमन करने वाला आत्मा अमर है और यह शरीर नाशवान हे। इस शाश्वत तथ्य को जिसन अपने मनोमस्तिष्क मे बिठा लिया वह मृत्युञ्जय बन गया

कुरुक्षेत्र मे महाभारत के युद्ध–र म मे योगिराज श्रीकृष्ण जी इसी विषय [illegible] समझाने का प्रयास कर रहे है। जब अर्जुन पर मोह का पर्दा छा जाता है और युद्ध करने स इकार कर अपने अस्त्र–शस्त्र नीचे रख देते है उस समय योगिराज श्रीकृष्ण जी अर्जुन को जीवन और मृत्यु के रहस्य को समझाते हुए आत्मा की अमरता का उपदेश दे रहे हैं

नैन छिन्दन्ति शस्त्राणि नैन दहति पावक
न चैन क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुत।

इस आत्मा को [illegible] नहीं [illegible] आग जला [illegible] सकती [illegible] नहीं [illegible] और [illegible] आत्मतत्त्व एव ऐसा तत्त्व है जो इन भूत की शक्ति [illegible] प्रभावित नहीं हो सकता मृत्यु के प्रति शोक न रह इसलिए [illegible] जी ने आगे कहा

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुव जन्ममृतस्य च।

तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्व शोचितुमर्हसि।। *गीता*

जन्म लेन वाले की मृत्यु निश्चित है और मरे हुए की उत्पत्ति भी निश्चित है इसलिए न टलने वाले विषय मे तुझे शोक नहीं करना चाहिए। जब मृत्यु अनिवार्य और अपरिहार्य हे तो उससे डरने की क्या बात है।

इस बात को जिसने अपने हृदय मे बैठा लिया तो वह मृत्यु के बन्धन से इस प्रकार छूटता है जैसे पका हुआ खरबूजा अपनी बेल से। जिन्होने इस सिद्धान्त को समझा उनके जीवन मे खरबूजे वाली स्थिति चरितार्थ हुई है। इस स्थिति तक पहुचने का द्वितीय उपाय है –

पदार्थो का त्यागभाव से उपभोग करना

त्याग भाव से जीवन मे पदार्थों का भोगो। परमात्मा ने हमे सब पदार्थ दिए है ये सब हमारे भोगने के लिए है। यह सृष्टि और इसके सब उपकरण जीवो के उपभोग के लिए बनाए गए है।

जीवानामुपभोगार्थ हि सृष्टि ।।

यह सृष्टि जीवो के लिए ह। परन्तु हे मानव ! तू प्रत्येक पदार्थ का त्याग भाव से भोगकर।

– शेष भाग पृष्ठ ७ पर

जीवन को शान्त और आनन्दमय बनाने का एकमात्र उपाय

यज्ञ

– ओमप्रकाश आर्य

वैदिक सस्कृति मे यज्ञ का बहुत महत्त्व है। यजुर्वेद म मानवो को यज्ञ करन का सत्परामर्श है जिससे वह समस्त ऐश्वर्यो से युक्त होकर अपना जीवन शान्त और आनन्दमय बना सके। वैदिक काल म यज्ञ प्रत्येक मनुष्य के जीवन का अनिवार्य कम था। यज्ञ की महत्ता का वर्णन करते हुए वेद कहता है –

आयुर्यज्ञेन कल्पता प्राणो यज्ञेन कल्पता चक्षुर्यज्ञेन कल्पता श्रोत्र यज्ञेन कल्पता यज्ञो यज्ञेन कल्पताम। प्रजापते प्रजा अभूम स्वर्देवा अगन्मामृता अभूम।

यजु० ६–२१

अर्थात हमारी आयु जीवन यज्ञ से – श्रेष्ट कर्म से समर्थ हो। प्राण शक्ति यज्ञ से रामथ हो। चक्षु यज्ञ से समर्थ हो पृष्ठ पीठ यज्ञ से समर्थ हो। हम प्रजापति परमेश्वर की सच्ची प्रजा हो। देव बनकर सुख विशेष को प्राप्त हो और अन्त मे जन्म मरण के चक्र स छूटकर मुक्त हो।

यज्ञ शब्द की व्युत्पत्ति यज धातु [illegible] का अर्थ है देवपूजा सगतिकरण और दान। यह दो प्रकार का होता है १ नैत्यिक २ नैमित्तिक। नैत्यिक अर्थात नित्य करने योग्य यज्ञ है ब्रह्मयज्ञ देवयज्ञ पितृयज्ञ अतिथियज्ञ और बलिवेश्वदेवयज्ञ। नित्य सन्ध्योपासना करना वेदशास्त्रो का अध्ययन करना ब्रह्मयज्ञ है। अग्निहोत्र करना देवयज्ञ माता पिता की सेवा करना पितृयज्ञ विद्वान तपस्वी अतिथि का सत्कार करना अतिथ यज्ञ पके हुए भोजन मे से अग्नि मे आहुति देना एव जीव जन्तुओ की रक्षा करना और उन्हे भोजन अन्न देना बलिवेश्वदेव यज्ञ है। इन्हे पचमहायज्ञ कहा है। इन्ह हर मनुष्य करे क्योकि इससे मनुष्य का जीवन बढता है और वह परमशान्ति और आनन्द प्राप्त करता है।

नैमित्तिक यन्त पर्व आदि विशेष अवसरा पर किए जाते हैं। विज्ञान मनुष्य को सुख अवश्य दे सकता है किन्तु शाति और आनन्द नहीं। शाति और आनन्द के लिए यज्ञ की शरण मे जाना होगा।

यज्ञ क दो स्वरूप हैं – पहला आध्यात्मिक और दूसरा वैज्ञानिक।

१ आध्यात्मिक स्वरूप – 'यज्ञशक्ति' नामक पुस्तक के लेखक लिखते हैं – श्रद्धा यज्ञ का बीज है इसलिए श्रद्धा से यज्ञ करना चाहिए। श्रद्धा से किए गए यज्ञ योग की स्थिति प्राप्त होती है। योग से मनुष्य को आत्मा परमात्मा और प्रकृति का ज्ञान होता है। यज्ञ की हवि से अन्नमय कोश उसकी समिधा से प्राणमय कोश अग्नि की प्रचण्डता से मनोमय कोश अग्नि की सयोजक और विभाजक शक्ति से विज्ञानमय कोश शुद्ध होते है। आत्मा का परमात्मा के समीप पहुचकर अवर्णनीय आनन्द मिलता है। यज्ञ मे श्वेत रजित रूप उषा पैदा होती है। उसे यज्ञकर्ता मनुष्य ध्यान मे रखे। यदि उस समय सुषुम्ना नाडी चल रही होगी तो तुरन्त मस्तिष्क पर प्रभाव पडेगा। उसकी बुद्धि मे उषा के गुण प्रविष्ट होगे। उषा बुद्धि आलस्य को दूर करती है उत्साह बढाती है आध्यात्मिक कार्यो के लिए प्रकाश और पवित्रता देती है अज्ञानता व वासनाओ का नाश करती है। इसक लिए आवश्यक है यज्ञकर्ता क्रोध लोभ मोह असत्य ईर्ष्या द्वेष अहकार आदि छोड दे। पवित्र मन से किए हुए यज्ञ से व्यक्ति मे पवित्रता आती है उसके अन्दर श्रेष्ठ गुण आते है। उसे लौकिक और पारलौकिक दोनो सुख प्राप्त होत हैं।

यज्ञ करते समय जब हम श्रद्धा से वेदमन्त्रो की मधुर ध्वनि से पाठ करते हुए अग्नि देवता को द्रव्यो की आहुति देते है तो इससे अग्नि वायु जल पृथ्वी आकाश आदि भौतिक देवताओ के ऋणो से उऋण होते है। ऋषियो के दिए हुए वदमन्त्रो को बोलने से हम ऋषि ऋण से भी उऋण होते है। मुण्डकोपनिषद् मे कहा गया है कि प्रदीप्त अग्नि मे डाली गई आहुतिया सूर्य की किरणो के साथ समस्त देवो तक पहुचती हैं।

जिनके घर मे यज्ञ नहीं होता उनके सात लोक नष्ट हो जाते हैं। वे सात लोक हैं – सिर नेत्र कण्ठ हृदय नाभि पैर पुन सिर। इनकी शुद्धि ही धार्मिक कृत्यो का मुख्य उद्देश्य है। जो यज्ञ नहीं करते उनके ये सात लोक अशुद्ध होते हैं फलत सताप होते है। यज्ञ करने से याज्ञिक को सात प्रकार को एश्वर्य मिलते हैं। वे एश्वर्य हैं – आयु, प्राणशक्ति आज्ञाकारी सन्तान पशु यश लक्ष्मी धन। इन्हे पाकर मनुष्य भाग्यवान बन जाता है। यज्ञ मे परमार्थ की भावना सन्निहित रहती है जिससे यज्ञकर्ता को भौतिक दैविक और आध्यात्मिक शान्ति प्राप्त होती है।

२ वैज्ञानिक स्वरूप – यज्ञ का दूसरा स्वरूप वैज्ञानिक है। यजुर्वेद मे कहा गया है –

हविष्मतीरिमाऽआपो हविष्मॉऽआ विवासति। हविष्मान्देवोऽअध्वरो हविष्मॉऽअस्तु सूर्यः।।

अर्थात हे विद्वान लोगो ! आप वे यज्ञ करे जिससे पृथ्वी अन्तरिक्ष एव द्यूलोक जल औषधिया आदि सब प्रकार यज्ञ की हवि से युक्त होकर नाना प्रकार के सुख एव उपकार हो। यज्ञ द्वारा नाना प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं।

अग्नि मे डाला हुआ पदार्थ नष्ट नहीं होता। अग्नि का काय स्थूल पदाथ को सूक्ष्म रूप मे बदलना है। यज्ञ करते समय स्थूल घी परमणु म टूटकर वायुमण्डल मे फैल जाता है। जैसे लाल मिर्च जलने पर अत्यन्त प्रभावकारी हो जाती है। आयुर्वेद की भस्मे और होम्योपैथी की पोटेसी शक्ति भी इसी सिद्धान्त की पुष्टि करती है कि अग्नि मे डालने से पदार्थ का गुण बढ जाता है। फ्रास के विज्ञानवेत्ता अध्यापक ट्रिलवर्ट लिखते हैं कि जलती हुई शक्कर मे वायु शुद्ध करने की इतनी शक्ति है कि इससे चेचक हैजा आदि बीमारिया तुरन्त नष्ट हो जाती हैं। इसी प्रकार डॉ० एम० ट्रेस्ट ने मुनक्का व किशमिश आदि फलो को जलाकर देखा तो उनके धुए से टाइफाइड रोग के कीटाणु ३० मिनट मे नष्ट हो गए। फ्रास के डॉ० हैफिन कहते है कि घी के जलने से कई रोगो के कीटाणु मर जाते है। डॉ० सत्यप्रकाश डी०एस०सी० अग्निहोत्र पर विज्ञान की दृष्टि से हवन सामग्री का विश्लेषण करते हुए यह पाया है कि उसमे ऐसे तत्त्व है जिनसे फोरमेल्डिहाइड गैस उत्पन्न होती है यह वायुमण्डल मे फैलती है। यह एक शक्तिशाली कीटाणुनाशक तत्त्व है। फोरमेल्डिहाइड का जलवाष्प के साथ अधिक प्रभाव पडता है इसलिए यज्ञवेदी के चारो ओर जलसिचन किया जाता है और पानी का कलश रखा जाता है। यज्ञ करते समय घृत और सामग्री मे जो औषधिया डाली जाती है उनका अग्नि द्वारा सूक्ष्म तत्त्व हमारे फेफडो मे भरकर घृत तथा सामग्री की औषधियो का लाभ पहुचाता है। प० आत्माराम अमृतसरी ने अपनी पुस्तक सस्कार चद्रिका मे लिखा है कि हवन मे मिलाए गए विभिन्न सामग्रियो के जलने से उनके अणु वायु म फैलकर अनेक रोगो को दूर करते हैं और पुष्टि भी करते हैं।

यज्ञ द्वारा जलवृष्टि जलशुद्धि वायुशुद्धि होती है। **यज्ञशक्ति** नामक पुस्तक के लेखक लिखते हैं – 'यज्ञ के अन्दर घृत की प्रधान रूप से आहुति दी जाती है। इसके दो भाग हो जाते हैं। एक भाग अग्नि मे जलकर अग्नि को प्रदीप्त करता है और दूसरा भाग उसी समय जल तो नहीं पाता अपितु घृत और सामग्री की वाष्प के साथ प्राकृतिक शीतलता को प्राप्त होने के कारण शीतल होने लगती है तो उसमे जमने की क्रिया शुरू हो जाती है तथा जो घृत अग्नि मे जल जाता है उसकी गैस भी अन्तरिक्ष के जलो मे प्रवेश कर जाती है और अन्य धूम्रकण भी अन्तरिक्ष मे प्रवेश करके बादलो मे घनत्व एव हिमकणो की उत्पत्ति प्रारम्भ कर देते है तथा वर्षा होनी प्रारम्भ हो जाती है।

जब यज्ञ मे पोष्टिक सुगन्धित रोगनाशक ओषधियो के रस घृत आदि से आहुतिया दी जाएगी तब उनसे उत्पन्न वाष्प अन्तरिक्ष मे पहुचेगी जिसका सयोग वहा उपस्थित मलार्क से होगा जिससे मल के परमाणुओ का विनाश होगा और पौष्टिक सुगन्धित रोगनाशक तत्त्वो की जल मे प्रधानता होगी। **मलार्क** – पृथ्वी की गदगी जलो के माध्यम से वाष्प बनकर उड जाती है और अन्तरिक्ष मे सग्रह होती रहती है। यही मलार्क रूपी जल वर्षा द्वारा हमे प्राप्त होता है।

यज्ञ वायुशोधक भी है। वैज्ञानिको का अनुमान है कि यदि अन्तरिक्ष को शुद्ध एव निर्विष करने का उपाय न किया गया तो शीघ ही कुछ वर्षो मे ऐसी भयावह स्थिति उत्पन्न हो जाएगी कि प्राणी जीवित नहीं रह सकेगे। जिस प्रकार विष भक्षण करने वाले मनुष्य को घृत का प्रयोग कराकर निर्विष किया जाता है। उसी प्रकार अन्तरिक्ष को निर्विष करने के लिए नित्यप्रति यज्ञ का विधान है। ये आहुतिया पृथ्वी अन्तरिक्ष और आदित्यमण्डल के लिए तथा उनसे उत्पन्न होने वाले प्राण अपान व्यान आदि के लिए उनकी शुद्धि पुष्टि और समृद्धि के लिए हैं।

यज्ञ से कृषि उत्पादन मे भी वृद्धि होती है। यज्ञ से वायु एव वर्षा के जल के शोधन से कृषि को बहुत लाभ होता है। यज्ञो मे घृत सामग्री मे पडी वनस्पतियो व अन्नादि की आहुतिया दी जाती हैं तो वे सूक्ष्म एव शक्तिशाली होकर वायु मे मिलकर पृथ्वी मण्डल मे विचरण करती हैं। इस प्रकार वायु के माध्यम से कृषि को लाभ होता है और बादलो से बरसने वाले जलो मे घुलकर वह जल के साथ पृथ्वी पर तथा पृथ्वी के अन्दर खाद का काम करता है। इस प्रकार यज्ञ द्वारा खेती की उपज बढाई जा सकती है।

यज्ञ के साथ मन्त्रोच्चारण क्यो जोड दिया जाता है ? इस बात को समझने के लिए वर्तमान चिकित्सा के चिकित्सा को समझना होगा। इसमे शब्द लहरियो को केन्द्रित किया जाता है। इन शब्द लहरियो के माध्यम से पीडा वाले स्थान को ठीक किया जाता है। वेदमन्त्रा का उच्चारण भी शब्द लहरियो का काम करता है।

इस प्रकार यज्ञ मे काम आनेवाली समिधाओ घृत एव सामग्री ने अपने आपको जलाकर तमाम आत्माओ को सुख और शान्ति प्रदान की। इसीलिए शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है – 'यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म' अर्थात यज्ञ करना श्रेष्ठतम कर्म है।

अत यज्ञ एक पूर्ण विज्ञान है। इसस आध्यात्मिक एव भौतिक अनेक लाभ हैं। आवश्यकता है यज्ञ को जीवन का एव अनिवार्य कर्म बनाने की।

(यज्ञशक्ति पुस्तक से साभार)

– आर्यसमाज रावत भाटा वाया कोटा राजस्थान

आओ, मिलकर दीया जलाएं : आने वाला कल न भुलाएं

नई शताब्दी की चुनौतियां एवं शिक्षा

– अमृताकिरण निकोर

हम नई शताब्दी मे कदम रख चुके हैं नई उमगो नई अपेक्षाओ नए सपनो के साथ अटूट विश्वास अद्भुत उत्साह एव नए सकल्पो के साथ पिछली सदी की चुनौती थी **'स्वराज'** जिसे हमने **करो या मरो' 'भारत छोडो** आन्दोलन से पाया। वह क्रान्ति का समय था स्वतन्त्रता के पश्चात हमने प्रण किया एक ऐसे राष्ट्र का जो समर्थ हो सशक्त हो जो सद्भावना एव सामाजिक न्याय पर आधारित हो। हमने सकल्प लिया था शिक्षा को घर घर पहुचाने का मूल्यो से जोडने का गरीबी के उन्मूलन का टक्नौलोजी से जनता को लाभान्वित करने का नारी को विकास प्रक्रिया में भागीदारी देने का आज समय है मूल्याकन का हमने क्या खोया क्या पाया अभी क्या करना है और कैसे ताकि हम उज्ज्वल भविष्य की कल्पना कर सके।

हमने बहुत कुछ पाया है हम आजाद हैं देश की सुरक्षा को चुनौती देने वालो को हमने मुह तोड जवाब दिया है आज हम विश्व मे एक बडी शक्ति के रूप मे उभरे हैं

हास्य-रुदन में तूफानो मे
अमर असख्यक बलिदानो मे
उन्नत मस्तक, उभरा सीना
कदम मिलाकर चलना सीखा।

किन्तु हमारे समक्ष अभी भी अनेक चुनौतिया हैं जिनमे से कुछ पर विशेष बल देना जरूरी है – जैसे सामाजिक विषमताए समाज मे पनप रही हिसा विशेष रूप से नारी पर उग्रवाद की समस्या तेजी से बढती जनसख्या बालश्रम भौतिकवादी प्रवृत्तिया इत्यादि इन सभी समस्याओ का समाधान करना चाहते हुए भी हम सफल नहीं हुए हैं क्यो ? यह प्रश्न बार बार हमे परेशान करता है – इस का उत्तर हम ढूढते रहे है ढूढते रहेगे देश काल और परिस्थितियो के अनुरूप आज की परिस्थिति मे मुझे लगता है कि जब तक हम शिक्षा अभियान को क्रान्तिकारी आन्दोलन नहीं बना पाते तब तक हम अपने लक्ष्य नहीं पा सकेगे। हमे वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे रणनीति का सहारा लेना जरूरी है –

१ शिक्षा को व्यापक करना
२ तकनीकी परिकल्को से शिक्षा का सहचार्य,
३ कम्प्यूटर शिक्षा द्वारा विद्यालयो मे सूचना सग्रह,
४ सामाजिक आर्थिक एव राजनीतिक परिवर्तन के लिए प्रसार माध्यमो का प्रयोग।

आज का युग कम्प्यूटर का युग है इन्टरनेट का युग है टेली लरनिग का युग है टेली कान्फ्रेस का युग है यदि हम प्रगति करना चाहते हैं यदि हम विकास की प्रक्रिया तीव्र करना चाहते है तो हमे हर क्षेत्र में कम्प्यूटर अपनाना ही है केवल बडे बडे शहरो मे नहीं दूर दराज के क्षेत्रो मे भी बडे पैमाने पर इसका उपयोग जरूरी है। जैसे कृषि सम्बन्धी जानकारी के लिए लघु उद्योगो सम्बन्धी मार्केटिग कामर्स मैडिसन (चिकित्सा) टैकनिकल (प्रौद्योगिकी) सभी विषयो पर कोई भी व्यक्ति इन्टरनेट पर वेबसाइट पर वाछित जानकारी ले सकता है अत हमारा लक्ष्य गाव गाव मे कम्प्यूटर की शिक्षा होनी चाहिए। हम इस दिशा मे बढने का प्रयास तो कर रहे है आज राजस्थान की अशिक्षित महिलाए भी प्रशिक्षण से कम्प्यूटर पर अपनी दुग्ध सहकारिता का हिसाब किताब कर लेती हैं ऐसा एक उदाहरण है 'नयाला की महिलाओ का अमेरिका के राष्ट्रपति जब नयाला गए तो महिलाओ की दक्षता देखकर चकित हो गए – कम्प्यूटर शिक्षा जन साधारण के जीवन को नया रूप दे सकती है उन्हे नई शक्ति प्रदान कर सकती है नए विचार दे सकती है नई राह दिखा सकती है। सामजिक विषमताओ के कम कर सकती है यदि इस शिक्षा का उचित उपयोग किया जाए।

किन्तु यदि हम देश मे बढती हुई हिसा को रोकना चाहते हैं तो शिक्षा को मूल्यो के साथ जोडना जरूरी है हमारी युवा पीढी तेजी से आगे बढना चाहती है यदि अभिभावक एव शिक्षक उन्हे अच्छे सस्कार देने से हिचकिचाएगे तो उसका परिणाम दुखद होगा। व्यक्तित्व के निर्माण मे भी से भी बढकर आचार्य की भूमिका है अत उन्हे इस दिशा मे प्रभावी कदम उठाने होगे।

तीव्रता से बढ रही हमारी जनसख्या एक भयानक चुनौती है सरकार इस चुनौती से अवगत है चिन्तित भी है प्रसार मध्यम कई प्रकार के कार्यक्रमो द्वारा जनता को शिक्षित करने का भरसक प्रयास भी कर रही है इस समस्या का समाधान करने के लिए मीडिया और शिक्षाविदो को मिलकर अति प्रभावी ढग से जन साधारण को समय समय पर सन्देश देना नुक्कड सभाए आयोजित करना लोक गीतो द्वारा महिला मण्डलो मे गोष्ठियो द्वारा बातचीत द्वारा फिल्मो द्वारा जानकारी देने को प्राथमिकता देनी होगी।

महात्मा गाधी ने कहा था – **एक मानव को शिक्षा दो तो एक इकाई की शिक्षा होती है परन्तु एक महिला को शिक्षा दो तो सारा परिवार शिक्षित होता है।** नारी शिक्षा की उपेक्षा करना तो हमारी बहुत बडी भूल होगी। आज के युग देश की पचास प्रतिशत जनसख्या प्राय महिलाओ की है अत उनका शिक्षित होना अत्यावश्यक है अन्त मे मैं अटल जी की पक्तियो के साथ पुन ज्ञान का दीप जलाने की उसकी रोशनी को जन साधारण तक पहुचाने की जरूरत का आह्वान करती हू –

आओ मिलकर दीया जलाए
हम पडाव को समझे मजिल
लक्ष्य हुआ आखो से ओझल
वर्तमान के मोह जाल मे
आने वाला कल न भुलाए।

पृष्ठ ५ का शेष भाग

मृत्यु को कैसे जीतें ?

प्रश्न यह त्यागपूर्वक उपभोग क्या है ?

उत्तर जिन पदार्थो का आप उपभोग कर रहे हैं उनका उपभोग करते समय मन मे पहली भावना यह स्थिर हो कि इन पदार्थों के हम स्वामी नहीं हैं। उनका स्वामी परमात्मा है। हमे परमात्मा ने यह सभी पदार्थ केवल उपभोग के लिए प्रदान किए है। अन्ततोगत्वा हमे एक दिन इन सभी पदार्थों का त्याग करना पडेगा। इस प्रकार की भावना जब हम रखेगे तो मृत्यु के समय समस्त वस्तुओ का त्याग करते समय शोक नही होगा। किसी वस्तु को छोडते समय शोक तब होता है तब कोई भी वस्तु किसी मनुष्य से कठिनता से छीनी जाती है और व्यक्ति का छोडने का मन नहीं होता तब दुख महसूस होता है। अगर व्यक्ति किसी वस्तु को स्वेच्छा से त्यागता है तो उसे किसी प्रकार का दुख सहन नहीं करना पडता।

जीवन मे प्रत्येक कार्य करने से पहले मनुष्य को मानसिक रूप से तैयार होना पडता है। यह मानसिक तैयारी मानो प्रत्येक कार्य की भूमिका होती है। छोटे–छोटे कार्यों को करने मे भी यह नियम लागू होता है जैसे–हमे सोना है जगना है पढना है व्यापारिक कार्य करना है। इसी प्रकार मरने को भी मनुष्य को मानसिक रूप से तैयार होना चाहिए। आप कहेगे यह विचित्र बात है बात सर्वथा उचित है। जिस वस्तु को व्यक्ति सहर्ष स्वीकार करने के लिए तैयार रहता है तो जब उसको स्वीकार करने का अवसर आता है तब उसे स्वीकार करन में अपनी विमुखता प्रकट नहीं करता। किसी प्रकार का क्लेश अनुभव नहीं करता। अपितु प्रसन्नचित्त होकर उसका स्वागत करने के लिए सदैव तैयार रहता है।

त्यागपूर्वक उपभोग के नियम को यदि कोई व्यक्ति दृढता पूर्वक अपना लेता है तो वह व्यक्ति मृत्यु के बन्धन से ऐसे छूट जाता है जैसे पका हुआ खरबूजा अपनी बेल से स्वत छूट जाता है। उसे मृत्यु का किचित कोई भय नहीं रहता। यह मृत्यु के बन्धन से पृथक होने का द्वितीय उपाय है। खरबूजे की भाति मृत्यु बन्धन से छूटने का तृतीय उपाय है –

परमात्मा के स्वरूप को जानना – मनुष्य परमात्मा के सच्चे स्वरूप को जानने का प्रयत्न करे जब मनुष्य परमात्मा के सच्चे स्वरूप को समझ लेता है तब उन्हीं गुणो को अपने अन्दर धारण करने का प्रयास करता है। ईश्वर के स्वरूप को जानने से ईश्वरीय गुण साधक मे आ जाते है। इसलिए मुण्डकोपनिषद के ऋषि ने लिखा है –

स यो हि वै तत्परम ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति।।
मु० ३/२/६

अर्थात जो उस परमब्रह्म को जान लेता है वह ब्रह्म ही हो जाता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि ईश्वर के गुणो को जानने से व्यक्ति परमात्मा बन जाता है। जीवात्मा उसके स्वरूप को जानने से उसके गुणो को धारण कर लेता है। जैसे लोहे के गोले को अग्नि मे डाल दे तो वह अग्निरूप हो जाता है। अब से अगर हाथ से छूना या पकडना चाहे तो उसे हाथ से नहीं छू या पकड सकते। लेकिन वह गोला रहेगा लोहे का ही केवल उसमे अग्नि के गुण आ जाते है। ठीक यही स्थिति जीवात्मा की होती है।

मृत्यु से बचने का एक उपाय यह है कि परमात्मा के स्वरूप को ठीक–ठीक समझा जाए। परमात्मा का स्वरूप क्या है ? महर्षि दयानन्द जी ने परमात्मा के स्वरूप का वर्णन आर्यसमाज के दूसरे नियम मे इस प्रकार किया है – ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप निराकार सर्वशक्तिमान न्यायकारी दयालु अजन्मा अनन्त निर्विकार अनादि अनुपम सर्वाधार सर्वेश्वर सर्वव्यापक सर्वान्तर्यामी अजर अमर अभय नित्य पवित्र और जो सृष्टिकर्त्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है।

आत्मा अमर है शरीर नाशवान है जीवन मे पदार्थों का त्यागपूर्वक उपभोग और ईश्वर के यर्थाथ स्वरूप को समझना और धारण किया जाए। इन तीनो सूत्रों को क्रमश अभ्यास करते करते मनुष्य मृत्यु बन्धन से ऐसे छूटता है जैसे–पका हुआ खरबूजा अपनी बेल से छूट जाता है।

मन्त्र मे अगले दो शब्द आते हैं 'मा अमृतात' अर्थात अमृत से नहीं (मोक्ष से नहीं परमात्मा से प्रार्थना की गई है कि मुझे खरबूजे की भाति मृत्यु से छुडा दो परन्त मोक्ष से न छूटू। मोक्ष मे जीवात्मा परमात्म के आनन्द मे डूबा रहता है और वह ऐस आनन्द है जिसे वाणी से कहा नहीं ज सकता नाक से सूघा नहीं जा सकता उ हाथो द्वारा लिखा नहीं जा सकता और कानो से सुना नहीं जा सकता। उसी आनन्व [illegible] त्मा बिना किसी रूकावट के स्वतन्[illegible] र सर्वत्र विचरण करता रहता है।

अन्त मे यह कह जा सकता है कि जो व्यक्ति इस मन्त्र को सच्चे हृदय र अपनाए और साधनो को अपन जीवन [illegible] उतारे तो वह मृत्युञ्जय बन जाता है।

– कर्मचारी नगर इज्जत नगर बरेली

शराब का कतरा - जान को खतरा

– सुभाष चन्द गुप्त

फ्रांसिस बेकन के अनुसार सम्पूर्ण विश्व के अपराध मिलकर भी मानव जाति को उतनी हानि नही पहुचाते जितना अकेला मद्यपान।

शराब से होने वाले भयकर दुष्परिणामो की गणना एक मद्य विक्रेता ने कवि कालीदास द्वारा पूछे प्रश्न के उत्तर मे बडे सारगर्भित ढग से प्रस्तुत की। उस मद्य विक्रेता से जब प्रसिद्ध कवि कालिदास ने शराब के मटको की ओर इशारा करते हुए पूछा कि उनमे क्या है तब उसने कहा –

'मद प्रमाद कलहश्च निद्रा बुद्धिक्षयो धर्म विपर्ययश्च। सुखम कथ्या नरकस्य पथा अष्टावनर्था घटके वसन्ति।

अर्थात – इस मटके मे आठ दोष या अवगुण भरे है – **मादकता सुस्ती कलह निद्रा बुद्धि का नाश धर्म का पतन सुख का नाश तथा विपत्तियो का रास्ता।**

यह उत्तर जहा शराब न पीने वालो को सचेत कर रहा है वहा शराब के मतवालो से पूछ रहा है कि वे समाज को सर्वनाश के कगार पर पहुचाने का जघन्य अपराध करने पर क्यो तुले हुए है ?

शराब से होने वाले भावी विनाश को ध्यान मे रखते हुए ही तो सन १६३० मे महात्मा गाधी ने कहा था – **मुझे सम्पूर्ण भारत का यदि एक घटे के लिए तानाशाह नियुक्त किया जाए तो मैं बिना किसी छूट के पहला कार्य शराब की सभी दुकानो को बन्द कराने का करूगा।**

शराब से होने वाले रोग

दृष्टि दोष वाणी का लडखडाना शरीर और मन की शक्तियो मे क्षति टागे लडखडाना हृदय रोग टी०बी० पीलिया श्वास रोग लिवर की सूजन (हैपेटाइसिस) लकवा (सिरहोसिस) तिल्ली का बढना पेट मे सूजन पेट मे फोडा व जख्म हो जाने से कभी कभी खून की उल्टी होकर मौत तक सम्भव कैन्सर पागलपन विभिन्न गुप्त रोग क्रूर स्वभाव (पर्शिया के बादशाह ने शराब के नशे मे हजारो बेकसूर असहाय लोगो को मौत के घाट उतार दिया था।) आदि अनेक रोग मघपान से होते हैं।

थोडी मात्रा मे भी शराब हानिकारक

पी०जी०आई० चण्डीगढ के प्रोफेसर डा० पी०एल० वाही के कथनानुसार **"मात्रा थोडी सी भी क्यों न हो शराब पीना प्रत्येक अवस्था में हानिकारक है।** यह एक भ्राति है और सर्वथा झूठ है कि शराब का एक या दो पैग प्रतिदिन लेने से व्यक्ति स्वस्थ रहता है।"

शराब से विभिन्न देशो की दुदर्शा

अमेरिका –

* शराब के कारण ६५ प्रतिशत हत्याए एव २४ प्रतिशत आत्महत्याए
* शराब के अत्याधिक सेवन से परिवारो का विघटन
* प्रतिवर्ष साढे चार लाख लोग मद्यपान के कारण रोगी जिनमे प्रतिवर्ष ३ लाख की मृत्यु,
* ६५ प्रतिशत सडक दर्घटनाए शराब के कारण
* आयु का ह्रास – औसत आयु = ७० वर्ष जबकि शराबी की आयु ५१ वर्ष।

फ्रास –

* हिसा व दुर्घटनाओ मे ६८ मे से ६३ का कारण शराब।
* ३६ हत्याओ मे से २६ हत्या शराबखोरी से।
* २७० मौतो मे से १०८ शराब के कारण।

स्विटजरलैड –

* प्रतिवर्ष करोडो की शराब पी जाती है। एक वर्ष मे ५८ प्रतिशत चालको के लाइसेस रद्द क्योकि वे शराब के नशे मे थे।

पूर्व सोवियत सघ

* हत्याओ बलात्कारो और दुर्घटनाओ म ६० प्रतिशत के लिए शराब जिम्मेदार
* शराब के कारण २० प्रतिशत लोग दफतरो कारखानो एव अपनी डयूटी से गायब।

इटली –

* १६४१ से १६६१ के दौरान शराब की खपत दुगनी होने के कारण रोगो से पीडित होने वालो की सख्या १६४७ की अपेक्षा सन १६६६ मे तीन गुनी।

जर्मनी –

* शराब मौत का सबसे बडा कारण।

यूगोस्लाविया –

* मानसिक चिकित्सालयों मे भर्ती ५० प्रतिशत पुरुषों मे मानसिक बीमारियों का सीधा सम्बन्ध शराब से।

चिली –

* स्वास्थ्य एव मानसिक उपचार के चिकित्सा बजट का ३० प्रतिशत शराबियो के उपचार पर व्यय।

आस्ट्रेलिया –

* अधिक मात्रा मे बीयर पीने से लोगो मे कैंसर और हृदय रोग।

भारत –

* प्रतिदिन शराब की खपत ८० लाख गैलन जिस पर व्यय ८० अरब रुपये (एक रिपोर्ट १६७६)
* प्रतिवर्ष हजारो मौते – जहरीली/कच्ची शराब से तथा शराब जनित रोगो के कारण।
* पारिवारिक कलह महिलाओ का प्रताडन अपराधो मे वृद्धि दुर्घटनाए बलात्कार अन्य अपराधो मे वृद्धि का कारण शराब।

शराब का सर्वत्र निषेध

सभी धर्म ग्रन्थ शराब का विरोध करते हैं प्राय समझा जाता है कि ईसाई मत मे शराब का खण्डन नहीं करता किन्तु बाइबिल पढकर देखे तो आखे खुल जाती हैं। देखिए –

" **शराब पीने वाले को परमात्मा के राज्य मे भाग नहीं मिलेगा।"** *(न्यू टेस्टामेण्ट ६/१०)*

यह शराब साप के समान डसती है बुद्धिहीन बनाती है बकना झगडना सिखाती है।"

प्रोवर्ब्स २० २६ ३२

हमारा कर्त्तव्य

हमारा कर्तव्य है कि हम स्वय को अपने परिवार को और सम्पूर्ण समाज को शराब के अभिशाप से मुक्त कराए ताकि देश के अरबो रुपये जो शराब की नदिया बहाकर नष्ट किए जा रहे हैं उसके सदुपयोग द्वारा देश को सुदृढ समृद्ध सब प्रकार से सम्पन्न और सुखी बन जाए।

– १५६ ए०जी०सी०आर० एन्कलेव दिल्ली ६२

बोध कथा

वैदिक आर्य संस्कृति की रक्षा के लिए सर्वस्व त्याग

चैत्र सम्वत १६२४ के प्रारम्भ मे स्वामी दयानन्द महाराज हरिद्वार पधारे। भीमगोडे के ऊपर सप्तसरोवर पर एक बाढ बनवाकर उन्होने कुछ पर्णकुटिया बनवा कर **पाखण्ड खण्डिनी पताका** फहरा दी। एक निर्भय आत्मत्यागी महात्मा द्वारा सत्य के प्रसार के लिए सत्य का उदघोष किया वह दिन धर्म क इतिहास मे स्मरणीय रहेगा।

उस महामेले मे स्वामीजी ने अनेक व्याख्यान दिए। अनेक शास्त्रार्थ किए बीसियों वादियो को जीता सैकडो जिज्ञासुओ की शकाओ का समाधान किया। अन्त मे उनके निर्मल चित्त मे उदासीनता की रेखा उभरी। स्वामी दयानन्द ने अकाल पीडित प्राणियों का करुण क्रन्दन स्वय सुना था। विन्ध्याचल आदि वन्य क्षेत्रो मे कोल भील सन्थाल आदि भारतपुत्रो की अमानुष अवस्था स्वय देखी थी। उन्होने तेजहीन क्षत्रिय देख थे वैश्यो की अवस्था भी उन्होने देखी। ईसाई धर्म की बढती बाढ ग्रामीण जनता को प्रभावित कर रही थी। उन्होंने देखा कि पश्चिमी विचार प्राचीन आर्यसभ्यता को घुन के सदृश खोखला कर रहे थे।

कनखल होते हुए वह तीन दिन लण्ढोरा मे विराजे।। वह तीन दिन तक निराहार रहे। सारी शक्ति लगाने पर भी महामेले मे सत्य का सहायक साधु सन्यासी नहीं मिला। अन्त मे उन्हे अनुभूति हुई कि परोपकार के महायज्ञ मे उन्हे स्वय पूर्णाहुति मे सर्वस्व स्वाहा करना होगा। स्वामीजी ने सारे उपकरण वहीं त्याग दिए। महाभाष्य की एक पुस्तक एक स्वर्ण मुद्रा और एक रेशमी उत्तरीय गुरुदेव की सेवा मे मथुरा भिजवा दिए।

एक जिज्ञासा के उत्तर मे स्वामी जी ने कहा – **"परोपकार के महायज्ञ में सफलता के लिए उन्हें अपनी सभी आवश्यकताए त्याग करनी होंगी।"**

महर्षि का जीवन साक्षी है कि उन्होने वैदिक आर्य सस्कृति की प्रतिष्ठा के लिए अपने तन मन सर्वस्व की आहुति दे दी थी।

– नरेन्द्र

विजय दशमी का सन्देश

– प० नन्द लाल निर्भय

विजय दशमी का पर्व महान आर्यो ! सुन लो धरके ध्यान।
क्षत्रिय पर्व कहाता है मधुर सन्देश सुनाता है।।

आर्यजन इसे मनाते थे स्वर्ग धरती पर लाते थे।
विजय दशमी का है सन्देश मिटाओ जग के कष्ट-क्लेश।।

बनो सब ईश्वर भक्त महान बहादुर देशभक्त बलवान।।
बनो हनुमन्त से ब्रह्मचारी राम लक्ष्मण से बलधारी।।

वीर अगद से रण बका काल की करो न तुम शका।।
देवियो तुम भी तो जागो होड तुम फैशन की त्यागो।।

बनो तुम सावित्री सीता तुम्हे सोते युग बीता।।
बनो दुर्गा लक्ष्मी रानी किरणमयी जैसी मर्दानी।।

आज है दु खी जगत भारी गए बढ फिर अत्याचारी।।
जुल्म करते हैं नित पापी मचाई है आपा धापी।।

आर्यो ! जोश दिखाओ तुम घोर सग्राम मचाओ तुम।।
मिटा दो बेईमानो को दुराचारी शैतानो को।।

अमरपद वीरो! पाओगे वीर बाके कहलाओगे।।
मुर्शरफ की फूको लका बजादो फिर रण का डका।।
विजय तुम निश्चित पाओगे स्वर्ग में वीरो ! जाओगे।।

– ग्राम [illegible] फरीदाबाद (हरियाणा)

आतंकवाद का उन्मूलन लम्बे कठिन संघर्ष से ही

– नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

पिछले अनेक वर्षों से भारत पश्चिमोत्तर क्षेत्र से सीमा पार के आतकवाद के प्रहार को भुगतता रहा है परन्तु ११ सितम्बर को आतकी बिन लादेन के आतकवादियो द्वारा ससार के सर्वाधिक धनी साधन सम्पन्न अमेरिका के न्यूयार्क और वाशिगटन स्थित व्यापारिक और शासकीय ठिकानो पर सीधे आक्रमण से स्थिति अधिक पेचीदा हो गई है। १० अक्तूबर के दिन ओसामा बिन लादेन के सगठन अल कायदा ने धमकी दी है कि अमेरिका पर अपहृत विमानो से हमले जारी रहेगे और लडाई तब तक जारी रहेगी जबतक अमेरिका मुस्लिम जमीन से हट नहीं जाता। पिछले महीने ११ सितम्बर को न्यूयार्क और वाशिगटन पर हुए आत्मघाती विमान हमलो का उल्लेख करते हुए अल कायदा के प्रवक्ता सुलेमान बू थईत ने घोषित किया – हमारा सगठन हमलावारो के विरुद्ध आतकवाद मे विश्वास रखता है। अमेरिकियो को समझ लेना चाहिए कि अपहृत विमानो के हमले का तूफान रुकेगा नहीं। इसी सदर्भ मे १० अक्तूबर के ही दिन अफगानिस्तान के सत्तारूढ तालिबान ने घोषित किया – ओसामा बिन लादेन पर लगाए प्रतिबन्ध हटा लिए गए है। और अब वह आतकी सरगना अमेरिका के विरुद्ध जेहाद के लिए आजाद है। यह सब घटनाचक्र और वक्तव्य स्पष्ट कर रहे हैं कि आतकवाद का उन्मूलन जल्दी होता नहीं दीखता। इस आतकवाद का उन्मूलन कठिन लम्बे सघर्ष से ही होगा और यह विराट अभियान किसी एक राष्ट्र के द्वारा चाहे वह कितना ही शक्तिशाली क्यो न हो सम्भव नहीं। इसके लिए विश्व के कई महाद्वीपो के अनेक छोटे बडे राष्ट्रो को सयुक्त व्यवस्थित अभियान चलाना होगा। अमेरिका सरीखे शक्ति सम्पन्न धनी राष्ट्र को उसके सर्वाधिक व्यवस्थित नागरिक सैनिक ठिकानो को आतकवादियों ने जिस प्रकार ध्वस्त किया उससे स्पष्ट है कि आतकवाद की समस्या कितनी अधिक भयकर और जटिल है। यह ठीक है कि अब महीनेभर बाद अमेरिका अपने हवाई और स्थलीय आक्रमणो द्वारा आतकवाद के उन्मूलन के लिए सलग्न है परन्तु उसकी कार्यवाही के बावजूद आतकवादी सगठनो द्वारा नए हमलो और जेहाद के लिए जिस प्रकार आह्वन किया गया है उससे स्पष्ट है कि आतकवाद का उन्मूलन विश्वव्यापी सामूहिक प्रयत्नो से ही सम्भव हो सकेगा।

यह ठीक है कि कुछ समय पूर्व तक सीमा पार के आतकवाद का खतरा विश्व के कुछ सीमित क्षेत्रो तक मर्यादित था परन्तु आतकवादी सगठन अलकायदा ने अपहृत विमानो को जिस प्रकार नए आतकवादी हमलो की धमकी दी है और जिस प्रकार अफगानिस्तान के तालिबान शासको ने लादेन को जेहाद की जैसी छूट दी है उससे स्पष्ट है कि अब आतकवाद की समस्या किसी एक राष्ट्र और क्षेत्र तक मर्यादित नहीं रह गई है। प्रत्युत अब उसका खतरा अधिक विश्वव्यापी हो गया है। इसी के साथ यह कटु तथ्य भी भुलाया नही जा सकता कि यद्यपि इस्लामी देशो के सगठन ने अफगानिस्तान के विरुद्ध सैनय कार्यवाही का समर्थन किया है तो यह भी दु खद स्थिति है कि कछ इस्लामी देशो ने कार्यवाही का विरोध भी किया है। इसी के साथ यह भी कटु तथ्य भी भुलाया नहीं जा सकता कि इस्लामी आतकवादियो को अनेक मुस्लिम देशो से सरक्षण मिल रहा है। यह तथ्य भी स्मरण रखने योग्य है कि ऐसे कई मुस्लिम देश हैं और उनकी सख्या पर्याप्त है जहा के नागरिक इस्लाम की आड मे आतकवादी गतिविधियो मे लिप्त हैं। पिछले कुछ समय से आतवाद ने विश्व के सर्वाधिक शक्तिशाली राष्ट्र को चुनौति दी है और उस राष्ट्र ने भी अपनी स्थिति और इस आतकवाद विरोधी व्यवस्थित कार्यवाही की क्षमता को घटा कर देखना उचित नहीं है परन्तु आतकवादी सगठन जिस प्रकार के वक्तव्य दे रहे हैं और अपनी कार्यवाही कर रहे हैं उससे यह स्पष्ट है कि आतकवाद का उन्मूलन इतना सरल नहीं है। उसके लिए छोटे बडे राष्ट्रो को मिलकर सयुक्त कार्यवाही करनी होगी।

कहा जा सकता है कि जिस N[illegible]बडे राष्ट्र मे आतकवाद उभरा है उसकी जनता और शासक वर्ग को भी उसका सामना करना होगा परन्तु सितम्बर और अक्तूबर के महीनो मे आतकवाद के प्रारम्भिक आक्रमण और उसके व्यवस्थित प्रत्याक्रमण के बावजूद जिस प्रकार आतकवादी तत्व जूझ रहे है उनसे स्पष्ट है कि आतकवाद की यह विश्वव्यापी समस्या उतनी सरल और सीधी नहीं है जितनी कि ऊपर से मालूम पड रही है। कटु तथ्य यह है कि एक छोटे से देश मे आतकवादी गिरोह ने सगठित व्यवस्थित होकर विश्व के सबसे शक्तिशाली धनी राष्ट्र को अपने ही केन्द्रो मे सीधी चुनौति दी और आनन फानन मे विध्वश से भीषण क्षति कर दिखलाई। महीने भर बाद उसके व्यवस्थित प्रत्याक्रमण की दृढता और भयकरता के बावजूद वह अपना कोई लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सका है। वस्तुत आतकवाद ने विश्व के छोटे बडे राष्ट्रो और जनता के अस्तित्व को जो चुनौति दी है अच्छा हो कि उसकी भयकरता और उसके स्थाई अस्थाई प्रभावो के निराकरण के लिए छोटे बडे राग्ट्र और उनके राष्ट्रनायको को आतकवाद के उन्मूलन के लिए उपयुक्त अभियान तथा सघर्ष को अन्तिम परिणति देने के लिए व्यवस्थित योजना और कार्यक्रम निधारित करने चाहिए। आतकवाद का सकट जिस प्रकार उभरा है अच्छा हो कि उससे जूझने और उसका स्थाई समाधान करने के लिए जनता शासन और प्रत्येक छोटे बडे को न केवल चिन्तन करना होगा प्रत्युत उसके लिए सामूहिक प्रयत्न करना ही होगा।

गुरुकुल कांगडी की जमीन बेचना महापाप है

सोमदत्त महाजन

इस समय पूरा आर्यजगत गुरुकुल कागडी की जमीन बिकने से चिन्तित और दु खी है। जो भी सुनता है वह इस जमीन घोटाले की निन्दा करता है। गुरुकुल का यह दुर्भाग्य है कि करोडो की जमीन कौडियो मे गुरुकुल के रक्षको ने बेच दी। गुरुकुल जैसी सस्था की जमीन बेचना अपने मे पाप और अपराध है। उस महापुरुष स्वामी श्रद्धानन्द की सस्था की जमीन बेची गई जिसने अपना तन मन धन घर परिवार सन्तान आदि सभी कुछ गुरुकुल बनाने मे लगा दिया हो। और विचारधाराओ के लोग अपनी सस्थाओ की जमीनो को बढाते है आगे बढते हैं। हम बेच रहे है इससे बढकर हमारा और क्या पतन होगा ? क्या इसीलिए स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल बनाया था ? हमारा किसी से बैर विरोध नहीं है। जब आम भावनाशील जनता पूछती है तो हमारे पास कोई उत्तर नही होता है।

सम्पूर्ण आर्य जनता गुरुकुल कागडी की भूमि बेचने की पुरजोर निन्दा करती है यह जमीन किसी हालत मे भी खरीदने वाले के पास नही जानी चाहिए इसी मे आर्यसमाज और गुरुकुल की इज्जत है जो भी इस जमीन बेचने के काण्ड मे और रिश्वत लेने के काण्ड मे सम्मिलित है उनकी निन्दा होनी चाहिए। उन पर सब ओर से जनता का दवाब आना चाहिए। वे जमीन के सौदे को कैन्सिल कराए। जो दो नम्बर का लेन देन हुआ है उसको वापिस कराया जाए। यदि वे नहीं मानते है तो आन्दोलन सामाजिक बहिष्कार कोर्ट–कचहरी आदि का सहारा लेना चहिए। इस समय हमारा एक ही नारा और उद्देश्य है – गुरुकुल की बेची हुई जमीन वापिस हो। हर कीमत पर जमीन को वापिस कराना है।

यदि दोषी व्यक्ति किसी हालत मे जमीन की बाबत खाए हुए रुपये वापिस नही करते तो जनता उनके घरो पर धरने देने के लिए तैयार है। जनता चन्दा देकर गुरुकुल की जमीन बचाने के लिए तैयार बैठी है। जनता इस पाप और अपराध को पचा नहीं पा रही है। आर्य जनता जब जाग गई है जमीन वापिसी का आन्दोलन अब तेज होगा।

जो जमीन के घोटाले मे लिप्त हैं उन्हे दण्ड मिलना ही चाहिए। सच्चाई जनता के सामने आनी चाहिए। तभी गलत स्वार्थी व्यक्तियो पर अकुश लग सकेगा।

मेरा आर्यसमाज के उच्च अधिकारियो गुरुकुल के सीनेट सदस्यो कुलाधिपति गुरुकुल के स्नातको आर्यसदस्यो तथा सभी गुरुकुल प्रेमियो सज्जनो से नम्र निवेदन है कि गुरुकुल कागडी की जमीन को बचा लो। हमसे जो तन–मन–धन की कुर्बानी चाहिए हम करने को तैयार हैं। हम जनता से झोली फैलाकर चन्दा इकटठा कर गुरुकुल की जमीन की भरपाई करने को तैयार हैं। यह मेरे [illegible] है जनता की आवाज है।

– प्रधान आर्यसमाज पखा रोड सी ब्लाक जनकपुरी दिल्ली ११००५८

स्वास्थ्य चर्चा

नेत्रों की डाक्टरी जांच

– आचार्य हेम कुमार तिवारी

आयु के साथ रोगी की सम्पूर्ण और व्यापक स्वास्थ्य जाच जैसे पूर्व की नेत्र–जाच का विवरण उसके पारिवारिक इतिहास तथा अन्य कई बातो को ध्यान मे रखते हुए भिन्न–भिन्न प्रकार से करनी होती है। कुछ छोटे–मोटे सामान्य परीक्षण भी नेत्र–विज्ञानी के लिए उसके सहायक कर्मचारी कर देते हैं और उनकी रिपोर्ट डाक्टर को देते हैं। परीक्षण–प्रक्रिया प्राय निम्नलिखित होती है

मेडीकल इतिवृत्त कई नेत्र रोग आनुवाशिक भी होते है इसलिए नेत्र–चिकित्सक आरम्भिक जाच के दौरान रोगी का मेडीकल और पारिवारिक इतिहास जानना चाहेगा। वह रोगी से इसके सामान्य स्वास्थ्य एलर्जी (दवा यदि कोई सेवन करता हो) पूर्ववर्ती नेत्र–शल्य क्रिया या नेत्र–विकार आदि के विषय मे जानना चाहेगा। उस समय रोगी या उसके साथ आने वाला चिकित्सक से पूछ ताछ भी कर सकता है।

नेत्र दृष्टि परीक्षण दृष्टि परीक्षण रोगी की केन्द्रीय दृष्टि द्वारा बारीक या छोटी से छोटी वस्तु या आकार को देखने की क्षमता की जाच स्नेलन चार्ट पर उत्तरोत्तर छोटे अक्षरो या चिन्हो को दिखाकर की जाती है। व्यक्ति द्वारा एक विशिष्ट (६ मीटर या २० फिट) की दूरी से सबसे छोटे अक्षरो/चिन्हो वाली लाइन को सही–सही बता ेने पर केन्द्रीय–दृष्टि निश्चित की जाती है। परीक्षण का परिणाम अको द्वारा लिखा जाता है।

इसके द्वारा बताया जाता है कि ६/१६ मे पहले ६ का मतलब हैं दृष्टि परीक्षण चार्ट से ६ मीटर (२० फुट) की दूरी से किया गया। दूसरा अक अर्थात १६ इस बात का सकेत करता है कि १६ फुट की दूरी से आप अपनी सामान्य दृष्टि से इतनी छोटी पक्ति को पढ सकते हैं। दृष्टि परीक्षण चश्मे के साथ या बिना चश्म के भी किया जा सकता है।

नेत्र–दृष्टि दोनो नेत्रो मे एक जैसी नहीं हा सकती। एक आख की कमजोर दृष्टि अनजानी रह सकती है क्योकि स नी शक्तिशाली आख नेत्र–दृष्टि पर हावी हो जाती है। नेत्र–दृष्टि का विकार प्र तभी पता चलता है जब कोई व्यक्ति दृष्टि–परीक्षण के लिए नेत्र विज्ञानी के पास परीक्षण के लिए जाता है।

यदि आपको चश्मा लगा है तो उसकी भी जाच की जाएगी। आपके चश्मे का नम्बर बनाने में नेत्र–विज्ञानी ही सहायता कर सकता है। आप चश्मा कभी–कभी पहनें या न पहनें या हमेशा पहनें, उसे नेत्र–चिकित्सक को दिखाना लाभदायक रहता है।

रिफ्रेक्शन जब आखो में प्रतिबिम्ब सही–सही फोकस (सकेन्द्रित) न हो तो यह स्थिति डाक्टरी भाषा मे 'रिफ्रेक्टिव एरर' कहलाती है। इसमे निम्नलिखित नेत्र समस्याए भी शामिल है –

१ निकट दृष्टिदोष इससे दूर की वस्तुए साफ दिखाई नहीं देती।

२ दूर दृष्टिदोष इसमे निकट की वस्तुए साफ दिखाई नहीं देती।

दृष्टि वैषम्य इसमे चीजे सही रूप से दिखाई नहीं देती।

जरा दूरदृष्टि दूर की वस्तुओ से निकट की वस्तुओ पर दृष्टि स्थिर करने मे कठिनाई होती है।

और भी अनेक प्रकार की तकलीफ हैं जिनके द्वारा चश्मा या कन्टेक्ट लैंस सही और सुविधाजनक लगवाया जा सकता है। एक मशीन अथवा यन्त्र फोरोप्टर कहलाता है। जिसमे परीक्षण लैंस सही स्थिति मे रखे होते हैं उसके द्वारा भी तथा परीक्षण फ्रेम मे हाथ से अदल बदल करके विभिन्न प्रकार के लैंस लगा कर दृष्टि परीक्षण किया जा सकता हैं। दृष्टि परीक्षण के लिए फोरोप्टर का कम्प्यूटरीकृत रूप आटो रिफ्रेक्टर है।

नेत्र पेशियो व पलको का परीक्षण शरीर के अन्य अगो के मुकाबले आखो को अधिक तेजी से सार्थक रूप मे चलाया जा सकता है। नेत्रो की सचलता को देखकर उनकी अस्थिरता उनके समन्वय तथा तन्त्रिका सम्बन्धी विकारो का पता लगाया जा सकता है। आखो का सामान्य सचालन आखो की १२ बाह्य मास–पेशियो के स्वस्थ कार्यकलाप पर निर्भर है। आख की आतरिक मास–पेशिया पुतली के सचालन का नियन्त्रण करती हैं। चमकीली रोशनी के प्रति पुतली की प्रतिक्रिया को देखकर मास–पेशियो की स्थिति जानी जा सकती हैं।

इसके साथ ही नेत्र-चिकित्सक रोगी की पलको अश्रु–ग्रथियों तथा आसुओ की बहाव प्रणाली की सुचारुता भी निश्चित करता है तथा आखो के चारो और के भाग को भी ध्यान से देखता हैं। इनके ऊतको में परिवर्तन प्राय पीयूष ग्रन्था के रोगों आघात तथा मस्तिष्क एव नेत्र–कोटर के व्रण के कारण हो जाते है।

नेत्र दवाब जाच टोनोमेटरी जाच द्वारा नेत्र–दवाब का सही पता चल जाता है। यह उपकरण आख के दवाब को मापने के लिए आख की कार्निया की सतह को हल्के से स्पर्श करता हैं कार्निया अत्यन्त सवेदनशील है अत नेत्र विशेषज्ञ रोगी की आखों को सुन्न या सवेदनहीन करने के लिए उनमें विशेष नेत्र–बिन्दु डालेगा। सामान्य स्तर से उपर या नीचे वाला दवाब नेत्रो मे अनेक विकार पैदा कर सकता है। यह दवाब प्राय: ७–२२ मिलीमीटर (मर्क्यरी) होता है। ऊचा दवाब कालामोतिया का लक्षण हो सकता है जिसका समय रहते इलाज न हो तो कालामोतिया (ग्लोकोमा) दृष्टिविहीनता का कारण बन जाता है।

स्लिट लैम्प परीक्षण नेत्र विशेषज्ञ द्वारा एक विशेष माइक्रोस्कोप द्वारा आख की जाच करने के पूर्व आख मे प्रकाश की एक लम्बी पतली किरण डाली जाती है। इससे आख के कार्निया पुतली लैंस तथा विटरस आदि को विस्तार से देखा जा सकता है। स्लिट लैम्प की सहायता से दृष्टि को प्रभावित करना शुरू करने के पूर्व मोतियाबिन्द का पता चल जाता है।

नेत्रदर्शी द्वारा जाच नेत्रदर्शी एक ऐसा यन्त्र है जो आख मे एक चमकीला प्रकाश डालता है। इससे नेत्र–विशेषज्ञ पुतली के माध्यम से दृष्टि–पटल या आख के पृष्ठ भाग की जाच कर लेता है। इस परीक्षण की सुविधा के लिए आख की पुतली को फैलाने हेतु आखो मे दवा डाली जाती है। नेत्र–दृर्शी द्वारा आख की जाच तथा नेत्र–विशेषज्ञ की रिपोर्ट आख के व्यापक परीक्षण का महत्वपूर्ण अग है। इस जाच मे दृष्टिपटल च्युति कालामोतिया उच्च रक्तचाप मस्तिष्क टयूमर तथा अन्य अगों के विकारों का पता चल सकता है।

दृष्टि विस्तार क्षेत्र जाच

नेत्र–विज्ञानी कुछ रोगियों के दृष्टिविस्तार क्षेत्र की जाच करते हैं। इसे सीमान्त दृष्टि परीक्षण भी कहते हैं। इस परीक्षण का नतीजा कालामोतिया मस्तिष्क या आखो के व्रण के मूल्याकन मे उपयोगी हो सकता है। सिरदर्द का कारण जानने मे भी यह परीक्षण लाभदायक है।

नेत्रपरीक्षण के परिणाम नेत्र–परीक्षण के विभिन्न परिणामो की व्याख्या एक कुशल नेत्र–विशेषज्ञ ही कर सकता है। जब आखो की कोई आयुर्वेदिक अथवा शल्य क्रिया सम्बन्धी स्थिति का निदान हो जाता है तो नेत्र–विशेषज्ञ औषध की और परीक्षणो की लेजर शल्य–क्रिया अथवा परम्परागत शल्य–चिकित्सा की सिफारिश कर सकता है। यदि कोई रिफ्रेक्टिव एरर का पता चलता है तो नेत्र–विशेषज्ञ ही चश्मा अथवा कान्टेक्ट लैंस का नम्बर बता सकता है। नेत्रो मे कोई भी विकार या रोग हो तो शीघ्र ही उपचार के लिए तथा परामर्श के लिए अपने निकट के नेत्र–विज्ञान केन्द्र से सम्पर्क कर नेत्र चिकित्सक से उपचार करवाए।

– चीफ डॉ० राजेन्द्र प्रसाद नेत्र विज्ञान केन्द्र अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान सस्थान नई दिल्ली

नेत्रों की सुरक्षा

वेद तथा अन्य शास्त्रो के अनुसार प्रात काल और सायकाल स्पर्श मन्त्रो का जप इसलिए करते है कि हमारी सभी इन्द्रिया स्वस्थ और निरोग हो और हम यम नियमो का पालन करें यथा ओ३म वाक वाक ओ प्राण प्राण ओं चक्षुश्चक्षु ओ श्रोतम श्रोतम ओ नाभि ओ ह्रदयम् ओ कण्ठ ओं शिर ओ बाहुभ्याम यशोबलम ओ करतल कर पृष्ठे। इसमे क्रमश सभी अगो के स्वस्थ बने रहने की प्रार्थना प्रभु से की गई है। वैसे सभी अग महत्वपूर्ण हैं किन्तु नेत्रो को सर्वोपरि मानते हुए प्रभु से प्रार्थना की गई है कि हे सर्वदृष्टा भगवन आपकी कृपा से हामरी आखों की देखने की शक्ति सदैव बनी रहे। अत प्रत्येक जीवधारी के लिए आखे प्रकृति का एक अनुपम एव अमूल्य उपहार है। स्मरण रखे कि एक नेत्रविज्ञानी ही ऐसा चिकित्सक होता है जो नेत्र सम्बन्धी चिकित्सा शल्य चिकित्सा तथा आपकी दृष्टि के सम्बन्ध मे सभी प्रकार के रोग व जाच उपचार की सेवाए उपलब्ध कर सकता है। आखे आपकी हैं इनकी सर्वोत्तम देखभाल अपेक्षित है। विश्वविख्यात प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक तथा अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान सस्थान के डॉ० राजेन्द्र प्रसाद नेत्र विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष आचार्य डॉ० हेम कुमार तिवारी नेत्रो की डाक्टरी जाच के सम्बन्ध मे समझा रहे हैं कृपया इसे पढिए अनुपालन कीजिए और अपने नेत्रो की रक्षा कीजिए।

धर्मसिह शास्त्री

आर्य वीर दल हांसी द्वारा शान्ति यज्ञ सम्पन्न

हासी–अमेरिका मे आतकी हमलो मे मारे गए लोगो की आत्मिक शान्ति के लिए स्थानीय सिह सभा गुरुद्वारा मे हवन यज्ञ एव प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा प० विजयपाल आर्य (प्रभाकर) थे तथा अध्यक्षता श्री राकेश कालडा ने की।

इस मौके पर विशेष रूप से पधारे आर्य वीरदल के सक्रिय युवा आर्य नेता आचार्य रामसुफल शास्त्री वैदिक प्रवक्ता ने शान्ति यज्ञ के पश्चात मुख्य वक्ता के रूप मे अपना उदबोधन दिया। श्री शास्त्री जी ने कहा कि विश्व की सबसे बडी महाशक्ति अमेरिका के ऊपर सबसे बडा आतकी हमला विश्व रिकार्ड मे पहली बार हुआ है। ऐसी भयावह स्थिति मे विश्व भर के सभी देशो को चाहिए कि ये आतकवाद के विरुद्ध एकजुट हो जाए। हालाकि आतक की तारीफ मे कविता लिखने वाले २३५ अरब रुपये की सम्पति के स्वामी लादेन को अमेरिका ने शुरू–शुरू मे बढावा दिया था। जो कि अमेरिका की यह बहुत भारी कमी थी।

उन्होने कहा कि अमेरिका सबसे बडा शक्तिशाली देश होते हुए भी आज गर्दिश मे फस गया है तो ससार के छोटे मोटे देश सुरक्षित नहीं रह सकते। जब अमेरिका जैसी महाशक्ति के सामने आतकवाद नहीं झुक रहा तो फिर ससार के दूसरे देश आतकवाद को कैसे झुका पाएगे। अन्तत परिणाम यह होगा कि हम सबको विश्व युद्ध की आग मे धधकना पडेगा।

श्री शास्त्री जी ने प्रधानमन्त्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी के राष्ट्र के नाम दिए गए सन्देश का स्वागत करते हुए कहा कि श्री वाजपेयी ने आतकवाद के खिलाफ सैन्य कार्यवाही करने तथा सकट की घडी मे अमेरिका की मदद की बात कही हैं। यदि ऐसी ही ससार के सभी देश आतकवाद के खिलाफ करे तो विश्व मे आतकवादियो का सफाया हो सकता हैं। इस आशय की जानकारी देते हुए दल के उपमन्त्री पकज गोयल ने बताया कि आर्यवीर दल का वार्षिक उत्सव २२–२३ दिसम्बर २००१ को होगा।

उल्लेखनीय है कि युवको की आत्मरक्षा के लिए आर्यवीर दल एक कराडे प्रशिक्षण कोर्स आरम्भ करेगा जो १ नवम्बर से नियमित शाखा के रूप मे चलाया जाएगा। बैठक के दौरान दल को सक्रिय बनाने के लिए चौ० राघवेन्द्र सिह आर्य को कार्यकर्ता प्रधान नियुक्त किया गया। बैठक मे श्री सोहन लाल भयाना उप–प्रधान आर्यसमाज हासी स्वामी कीर्तिदेव जी कु० विजया जी मुख्याध्यापिका आर्य स्कूल हासी आदि व आर्य वीर दल के सभी सदस्यगण उपस्थित थे।

– पकज गोयल उपमन्त्री
आर्यवीर दल हासी

आर्यसमाज, जूनागढ के सौजन्य से गुजरात प्रांतीय आर्य वीर दल शिविर

दिनाक २६–११–२००१ से २८–११–२००१ तक जिसमें लाठी कराटे आसन खेल यज्ञ सध्या आदि सिखाए जाएगे।

भाग लेने हेतु आर्यसमाज जूनागढ का सम्पर्क करे। शिविर शुल्क १०० रुपये हैं सीमित सख्या में शिविरार्थी लिए जाएगे ताकि ३२–१०–२००१ से पहले सम्पर्क करके अपना नाम व शिविर शुल्क २००/– रुपये जमा कराके अपना स्थान निश्चित कर लें।

वेदप्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज भीमगज मण्डी कोटा ज० द्वारा दिनाक २४ सितम्बर से ३० सितम्बर तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। वेद प्रचार का कार्यक्रम क्षेत्र वार प्रतिष्ठित परिवारो मे रखा गया ठीक ७.०० बजे (सायकाल) प० रामदेव शर्मा द्वारा यज्ञ प्रारम्भ कर दिया जाता तपश्चात प० आनन्द सप्रे वेद मन्त्र की व्याख्या हृदय ग्राही ढग से करते तदुपरान्त प० दिनेश दत्त शर्मा 'बिजनौर (उ०प्र०) मनोहारी भजनोपदेश से जनसमूह को मत्र मुग्ध कर दिया करते थे पारवारिक कार्यक्रम होने से उपस्थिति बहुत अच्छी सख्या मे हो जाया करती थी। मच सचालन श्री ओ३म दत्त का सराहनीय था।

– रामदेव शर्मा मन्त्री आर्यसमाज
भीमगज मण्डी कोटा न०

नेत्र चिकित्सा शिविर का समापन

आर्यसमाज नैनीताल द्वारा आयोजित सन्त हिरदाराम निशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का समापन जिलाधिकारी श्री उत्पल कुमार सिह के कर कमलो द्वारा किया गया। इस शिविर में ५२ नेत्र रोगियो के मोतिया बिन्द के आपरेशन किए गए। जिनमें ४२ नेत्र रोगियो को लैंस प्रत्यारोपण विधि से चिकित्सा की गई जिलाधिकारी द्वारा विश्व शान्ति यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर विचार दिया कि वर्तमान मे ससार मे जो भयावह वातावरण बना है उसके लिए सभी को परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिए कि विश्व मे सद्भाव व सद विचार फैले। आध्यात्मिक चेतना जगाने मे आर्यसमाज की अहम भूमिका रही है। समाज सेवा की भावना से लगाए गए नेत्र शिविर की प्रशसा करते हुए स्वय सेवी सस्थाओं का आह्वान किया कि वे समाज सेवा के कार्यों मे आगे आए। आर्य समाज के सरक्षक बाके लाल कसल ने आर्यसमाज द्वारा लगाए गए शिविरो का ब्यौरा प्रस्तुत करते हुए सन्त हिरदाराम का आभार व्यक्त किया रोगियों की सेवा हेतु आए श्री मोती राम खिल्याणी ने कहा कि रोगियों की सेवा ही सच्ची ईश्वर सेवा है। समाज के मन्त्री माधवा नन्द मैनाली ने इस शिविर को सम्पन्न करने मे सभी लोगो का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर डॉ० डी०एन० पौडियाल केदार सिह नारायण दत्त तिवारी बाबू लाल प्रदीप साह सुबोध कसल रेखा कसल हेमा देवी आदि लोग उपस्थिति थे।

– माधवानन्द मैनाली मन्त्री

सरवाड (अजमेर) में सामवेद पारायण यज्ञ एव वैदिक सत्सग सम्पन्न

दिनाक ४ अक्तूबर से ८ अक्तूबर २००१ तक पाच दिवसीय सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन उदारमना चौधरी नारायण दास जी आर्य द्वारा आर्यसमाज मन्दिर सरवाड मे उच्चकोटि के वैदिक विद्वान आचार्य प्रवर प० भरतलाल जी शास्त्री एम०ए० हासी (हरियाणा) के ब्रह्मत्व मे किया गया।

जिसमे प्रतिदिन राम को महिला सत्सग व रात्रि को पारिवारिक सत्सग का आयोजन किया गया। कुम्भ के मेले की भाति नगर वे स्त्री–पुरुषो ने चढ–बढ कर भाग लिया।

इस अवसर पर महात्मा हरिदेव वानप्रस्थी (पाली) (राजस्थान) प० रामसुफल शास्त्री जी वैदिक प्रवक्ता हासी (हरियाणा) प० अमर सिह जी आर्य वाचस्पति भजनोपदेशक आर्यसमाज व्यावर (अजमेर) राज० तथा श्री कर्मवीर जी आर्य सचिन प्रकाशन हासी (हरियाणा) आदि विद्वान महानुभावो ने अपने–अपने विचार रखे।

पूर्णाहुति एव कार्यक्रम समापन के पश्चात ८ अक्तूबर को शाम ४ से ६ बजे तक आर्यसमाज के प्रधान श्री बद्रीलाल शारदा के ज्येष्ठ पुत्र श्री भवर गोपाल शारदा के निवास स्थान पर यज्ञ एव सत्सग का आयोजन उक्त विद्वानो द्वारा किया गया।

उल्लेखनीय है कि आर्यसमाज चापानेरी आर्यसमाज केकडी आर्यसमाज किशनगढ भीलवाडा लल्लाई अजमेर आदि से आर्यजन बडी श्रद्धा भक्ति के साथ श्रोत्ता के रूप मे पधारे। विजय नगर से माडर्न इक्को साउण्ड के मालिक श्री सत्यनारायण की माइक व्यवस्था बहुत अच्छी रही।

कार्यक्रम बहुत ही प्रभावशाली एव प्रशसनीय रहा। जिसकी नगर वासियो ने मुक्त कण्ठ से प्रशसा की।

– नारायण दास लडढार्य मन्त्री
आर्यसमाज सरवाड अजमेर राजस्थान

आर्यसमाज सुमेरपुर का रजत जयन्ती महोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज सुमेरपुर (जिला–पाली) की स्थापना को २५ वर्ष पूर्ण होने पर दिनाक २४ से ३० सितम्बर २००१ तक रजत जयन्ती महोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमे दिनाक २४ से २७ सितम्बर तक वेद प्रचार एव २८ से ३० सितम्बर रजत जयन्ती के रूप मे कार्यक्रम आयोजित किए गए। प० भरतलाल जी शास्त्री हासी के आचार्यत्व मे प्रतिदिन विशेष यज्ञ एव श्री सत्यपाल जी सरल देहरादून के सुमधुर भजन हुए। दिनाक २८ सितम्बर को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के कार्यवाहक प्रधान पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती के कर कमलो द्वारा ध्वजारोहण के साथ रजत जयनती महोत्सव का शुभारम्भ हुआ। नगर मे भव्य शोभायात्रा निकाली गई। इस अवसर पर वेद सम्मेलन युवा एव राष्ट्र रक्षा सम्मेलन वैदिक परिवार सम्मेलन नशा मुक्तिसम्मेलन के माध्यम से आमन्त्रित विद्वान ब्र० अग्निव्रत जी आचार्य विष्वड जी अजमेर राष्ट्रीय कवि सारस्वत मोहन मनीषी पुष्पा शास्त्री (हरियाणा) के सार गर्भित प्रवचनो को सुनकर श्रोता मन्त्र मुग्ध हो गए। समापन समारोह के अवसर पर आर्यसमाज के प्रधान श्री गणेशमल जी विश्वकर्मा द्वारा स्मृति चिन्ह प्रदान कर विद्वानो एव कार्यकर्त्ताओ का सम्मान किया गया। मन्त्री गुलाब सिह राजपुरोहित ने विद्वानो एव श्रोताओ का आभार प्रकट किया।

– पुरोहित आर्यसमाज

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 28-10-2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2001
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2001 in NDPSo on 25/26 -10 - 2001

पुरस्कार प्राप्त करें

सत्यार्थ प्रकाश की प्रतियोगिता मे भाग लेकर २००/– १००/– और ५०/– रुपये का प्रथम/ द्वितीय/ तृतीय इनाम लो। निम्न प्रश्नो के उत्तर पत्र मे छपने के बाद पन्द्रह दिन के अन्दर नीचे लिखे पते पर साफ साफ लिखकर भेजे। **अपना नाम, पिताजी का नाम और पूरा पता पिन कोड** सहित अवश्य लिखे।

प्र०१ तीन बार ओ३म् शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!! कहने का क्या प्रयोजन है समझाओ ?

प्र०२ किन किन प्रमाणों से सत्य असत्य की परीक्षा की जा सकती है ?

प्र०३ तीन एषणाओं का उल्लेख करते हुए सन्यासी के कोई पाच विशेष कर्त्तव्य बताओ ?

प्र०४ क्रोध से उत्पन्न होने वाले दुर्गुणों को बताकर शमन और दफन के अर्थ समझाओ ?

प्र०५ सिद्ध करो कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है ? (सक्षिप्त उत्तर)

प्र०६ स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द में कोई पाच बडे अन्तर बताओ ? (आवश्यक)

– *देवराज आर्य मित्र*
आर्यसमाज कृष्ण नगर दिल्ली ५१

भू माफियाओं द्वारा लोकतन्त्र का नाजायज लाभ

गुरुकुल कांगड़ी की 198 बीघा जमीन बेचने के विरुद्ध प्रस्ताव

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री गौरी शकर कौशल ने एक विशेष पत्र प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजेपयी गृहमन्त्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी एव मानव ससाधन मन्त्री श्री मुरली मनोहर जोशी को लिखकर गुरुकुल के भूमि विक्रय को रद्द कराने की माग की है। यह पत्र इस प्रकार है –

अमर हुतात्मा स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी पू० स्वामी श्रद्धानन्द जी की कर्मस्थली जिसका निर्माण भारत के देशभक्त जनता ने लार्ड मेकाले की राष्ट्र द्रोही शिक्षा पद्धति के मुकाबले मे भारतीय शिक्षा पद्धति हेतु अपार धन राशि देकर स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा गुरुकुल कागडी की स्थापना की उसको कुछ स्वार्थी तत्वो ने अवैध रूप से बेच दिया। जिससे भारत ही नहीं विश्व की आर्य जनता तथा हिन्दु समाज मे गहरा रोष और आक्रोश व्याप्त है।

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय जिसको शासन से लाखो रुपया अनुदान दिया जाता है जिसकी १९८ बीघा जमीन जिसका मूल्य २० करोड रुपये वर्तमान मे है वहा के कुछ प्रबधको ने ७५ लाख रुपये मे गुपचूप बेच दी।

यह उत्तराचल राज्य का पहला भूमि घोटाला है जिसमें नख से शिख तक गुरुकुल के प्रबन्ध शासन के अधिकारी और तथाकथित राजनैतिक लोग शामिल है।

वर्तमान मे कमिश्नर श्री सुभाष कुमार ने स्थगनादेश देकर दाखिला खारिज स्वामित्व परिवर्तन पर ... जिससे आर्य जनता ने राहत क... है।

पता चला है कि गुरुकुल समिति के कुछ लोगो ने गुपचुप एक आर्य विद्या सभा के नाम से मेरठ मे चुपचाप पजीयन कराकर ४ जून २००१ को बेच दी।

न तो शासन से स्वीकृति प्राप्त की जबकि शासन से अनुदान मिलता है न गुरुकुल विश्वविद्यालय और पजाब प्रतिनिधि सभा जो इस की स्वामिनी है उससे स्वीकृति ली।

पता चला है कि गत ३० वर्षो मे गुरुकुल मे घुसे भूमाफियाओ ने ८० करोड की भूमि बेच खाई।

आर्य जनता आप से अपेक्षा करती है कि आजादी के बाद बगैर शासन और आर्य प्रतिनिधि सभा तथा गुरुकुल की साधारण सभा द्वारा जो भूमि बेची गई है उसे शासन अवैध घोषित कर गुरुकुल को वापिस दिलावे बेचने वालों ओर खरीदने वालो पर अपराधिक प्रकरण चलाए जावे।

हमारी यह भी प्रार्थना है कि यदि कानून मे सशोधन करना पडे तो किया जाए कि जो सम्पत्ति जनता के धन से जन कल्याण को बनाई है उसको बगैर शासन सस्था की आम सभा तथा स्थानीय जिला पचायत की अनापत्ति के बाद ही बेची जावे जो आजादी के बाद बिके है वापिस की जावे।

10150 प्रतिष्ठा मे
पुस्तकालाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
जिला हरिद्वार (–०१०)

आर्यसमाज निर्माण विहार दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज निर्माण विहार दिल्ली–११००९२ का १८ वा वार्षिक उत्सव मगलवार २० नवम्बर २००१ से रविवार २५ नवम्बर २००१ तक उत्साह पूर्वक मनाया जाएगा। प्रात ७ ३० से ९ ०० बजे तक यज्ञ तथा रात्री ७ ४५ से ९ ३० बजे तक वेदो के प्रकाण्ड विद्वान आचार्य राजकिशोर जी कथा करेगे। तथा भजन श्री गुलाब सिह जी राघव प्रसिद्ध भजनोपदेशक द्वारा होगे। यज्ञ की पूर्णाहुति रविवार २५ नवम्बर को प्रात होगी उसके पश्चात वेदोपदेश तथा प्रवचनो का कार्यक्रम आयोजित किया गया है। सभी आर्यसमाज के भाई बहनो से अनुरोध है कि वे सम्पूर्ण कार्यक्रम मे अधिक से अधिक सख्या मे पहुच कर धर्मलाभ उठाए तथा आर्यसमाज निर्माण विहार के कार्यकर्ताओ का उत्साह बढाए।

– रवि बहल मन्त्री

गीता उपनिषदों का सार रामायण मानव जाति की आचार सहिता

मानस मन्दिर करोल बाग मे प्रवचन करते हुए महामण्डलेश्वर दयानन्द वेदपाठी जी ने कहा कि भगवद गीता समस्त उपनिषदो का सार है और रामचरित मानस मानवजाति की आचार सहिता है। इन दोनो ग्रन्थो के पाठ और मनन से मानव जीवन सस्कारित होने के साथ परमार्थी भी हो सकता है।

विश्व भारतीय वेदाश्रम ट्रस्ट के २०वे वार्षिकोत्सव पर वेदपाठी जी ने गीता और रामायण की शिक्षाओ पर गम्भीर विश्लेषण करते हुए कहा– लोग शिक्षा की उच्च व्यवस्था की प्राप्ति के लिए सात समुद्र पार जाते हैं और वहा की स्तुति के गीत गाने लगते हैं वस्तुत उन्हे रामायण और गीता मे शरण मे जाना चाहिए।

आर्यसमाज, वेद मन्दिर, दार्जिलिंग (पश्चिम बंगाल) में पुर्नमिलन कार्यक्रम सम्पन्न

वैदिक हवन से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। इसे प० गम्भीर राई– अग्निहोत्री जी के ब्रह्मत्व से सचालन किया गया।

हवन पश्चात वर्तमान प्रधान (आर्यसमाज दार्जिलिग) श्री रमाशकर प्रसाद गुप्त जी के अध्यक्षता मे सत्सग का कार्यक्रम रखा गया।

श्री विनोद शर्मा (खरसान्) जी ने मानव जीवन मे सत्सग का क्या महत्व है इस विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि – सत्सग आत्मा की खुराक के लिए आवश्यक है। जिस कागज मे हम जो चीज लपेटते है उसमे उसी चीज की दुर्गन्ध या सुगन्ध आती है। निरन्तर सत्सग मे रहने से ही आत्मिक उन्नति सम्भव है। इसके लिए हमे वेदो का अध्ययन चिन्तन करना चाहिए। वेद मे स्वत प्रमाण होने से इसे विश्वास करने की कोई आवश्यकता नहीं।

प० गम्भीर राई अग्निहात्री जी ने आर्य शब्द को किसी जाति वर्ग वर्ण तथा भौगोलिक सीमाओ स परे बताते हुए कहा कि यह मानव को सुमानव बनाने वाले गुणो का पर्याय है। सोने को आग मे तपाने से वह कुन्दन बनता है। इसी तरह आर्य भी तपे हुए सोने की तरह होना चाहिए।

महर्षि दयानन्द का मानव समाज के ऊपर बडा उपकार है। महिलाओ को शिक्षा प्रदान कराने की दिशा मे उन्होने वन्दनीय कार्य किया है।

अग्निहोत्री जी ने आगे कहा कि – वैदिक धर्म सर्वोपरी है। सभी को आखिर मे साकार से निराकार की ओर आना पडता है। अत वेद ही हमारा कल्याण कर सकता है। वेद मे बताए गए कर्म ही मानवोचित कर्म है। इसी को हमे आधार बनाना चाहिए।

कार्यक्रम सचालन वर्तमान मन्त्री ने किया। धन्यवाद का कार्यक्रम श्रीमती सुनीति छेत्री ने रखा।

– विजय शर्मा, मन्त्री,
आर्यसमाज, दार्जिलिंग

लादेन प्रेमियों से सावधान

आर्यसमाज सभाजीनगर (औरगाबाद) के मन्त्री श्री दयाराम वेसैया ने प्रधानमन्त्री एव गृहमन्त्री को एक विशेष पत्र द्वारा उनका ध्यान आतकवाद के मूल कारणो की ओर आकृष्ट करते हुए कहा है कि विश्व मे जिनके नाम पर आतकवाद चलवाया जा रहा हैं वो लादेन व उनके सहचारियो के माध्यम से धार्मिकता के आड मे 'जेहाद' के नाम पर विश्व मे तथा भारत के मुस्लीमो को बहका रहे हैं। उनके बहकावे मे शाही इमाम व कुछ मुस्लीम सगठन हिन्दूस्तान मे आतक मचवाना चाह रहे हैं। वह सब आपको विदित है।

आपने सीमी पाबन्दी लगवाई आपका हम धन्यवाद करते हैं।

पत्र मे राष्ट्रीय नेताओ से विनती की गई है कि आज देश की बिगडती हुई परिस्थिति में मन्त्रीमण्डल के सभी मन्त्रीयो से विचार विमर्श करके यह आदेश निकाले कि जो लादेन के समर्थन मे भारत के निर्देशन व जय घोष करेगा वह देशद्रोही कहलाएगा व उसका भारत से नागरितत्व समाप्त किया जाएगा। जिनको लादेन से प्रेम है वह राष्ट्र छोडकर लादेन प्रेमी राष्ट्र मे चले जाए ताकि भारत के राष्ट्रप्रेमी मुस्लमानों को परेशानी नहीं उठानी पडेगी।

लादेन का खात्मा और तालिबान का हटाना अमेरिका का लक्ष्य

वाशिगटन। अमेरिकी पत्रिका टाइम मे एक सर्वेक्षण मे अमेरिकी जनता ने घोषित किया। अमेरिका तब तक अपने को विजयी घोषित नहीं कर सकता जब तक ओसामा बिन लादेन की गिरफ्तारी या हत्या न कर दी जाए और तालिबान को सत्ता से बाहर न कर दिया जाए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली–२ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६ फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली–२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०९८५)।
सम्पादक वेदव्रत शर्मा ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाइट http://www.whereisgod.com

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४० अक २८ | ४ नवम्बर से १० नवम्बर २००१ तक | दयानन्दाब्द १७८ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ | सम्वत् २०५८ | का० कृ० १०

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

ईमानदारी कर्त्तव्य परायणता और राष्ट्रभक्ति
कलियुग से लड़ने का पवित्र माध्यम है
– रामफल बंसल

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' यह नारा मात्र नहीं अपितु महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा वैदिक धर्मियो को वेद की ओर ईशारा करते हुए वेद के एक मन्त्र मे से समाज के सचालन का वैदिक उद्देश्य निर्धारित करते हुए बडी पवित्र दृढ और मानव धर्म की सेवा भावना से प्रेरित होकर दिया गया दिव्य निर्देश था। इस निर्देश को शिरोधार्य करते हुए स्वामीजी के अनुयायियो ने वैदिक धर्म के प्रचार और जन सामान्य को आर्यत्व के लक्षणो से अभिभूषित एव सुसज्जित करने का सुगम मार्ग निर्धारित करते हुए पहले स्वय को एक श्रेष्ठ पुरुष के रूप मे अभिलक्षित किया। उनकी श्रेष्ठता उनके गुणो उनके चरित्र उनकी कर्त्तव्यनिष्ठता उनकी ईमानदारी उनकी राष्ट्रभक्ति उनके प्रेम उनकी श्रद्धा उनका ज्ञान उनका जल की तरह निश्चल और पारदर्शी जीवन एक चुम्बक की तरह समाज से जन सामान्य रूपी लोहे तक को अपने साथ आकर्षित करता चला गया। इस आकर्षण के कारण ही महर्षि दयानन्द के अनुयायियो की उस पहली पीढी के नेतृत्व ने कृण्वन्तो विश्वमार्यम् को केवल मात्र नारा ही नहीं अपितु सफलता से प्राप्त हुआ लक्ष्य बनाकर दिखा दिया। आर्यों के निर्माण की परम्परा और उनके ज्ञान की सर्वोच्चता ने जन सामान्य को अपना तन अपना मन, अपनी भावना अपनी श्रद्धा अपना धन और यहा तक की सम्पत्तिया आदि भी उन आर्य नेताओ के चरणो मे न्यौछावर करने के लिए प्रेरित किया। आज सारे विश्व मे ८००० से अधिक आर्यसमाज रूपी शाखाओ का हम दावा करते हैं यह झूठ नहीं है। बेशक इसमे कुछ बिना बिल्डिगो की भी शाखाए होगी। ऐसी शाखाओ मे एक या अधिक व्यक्ति की चलती फिरती बिल्डिगो का रूप है। इसके अतिरिक्त अन्य कई प्रकार की भव्य और मानव कल्याण मे लगी छोटी बडी योजनाए शिक्षा से लेकर अस्पताल वृद्धाश्रम महिला आश्रय केन्द्र और अनाथ बच्चो के पालन केन्द्र भी है।



श्री रामफल बसल

१२५ वर्षों की इस लम्बी यात्रा के बाद सगठन में कही कही सिद्धान्तो से हटने की हलचल कहीं चरित्र पर दोषारोपण कहीं ईमानदारी के सिद्धान्त मे खोट कहीं कर्मठता त्याग और तपस्या का अभाव और कहीं राष्ट्रभक्ति की प्रेरणाओ के प्रचार प्रसार मे लापरवाही महसूस हो रही है। परन्तु सच्चा मन सच्चा समपर्ण सच्चा त्याग और महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व के प्रति सच्ची श्रद्धा इन कमियो को किसी भी सूरत मे बर्दास्त करने को तैयार नहीं।

आर्यसमाजो सभाओ या अन्य सस्थाओ मे जिस प्रकार एक सुन्दर सभ्य और शालीन प्रजातान्त्रिक प्रणाली लागू की गई थी उसका अर्थ केवल मात्र यह नहीं होना चाहिए कि चुनाव मे अधिकार प्राप्त करके अगले चुनाव की तैयारी। चुनाव मे या नेतृत्व को सम्भालने की लालसा हर दृष्टिकोण से बुरी है। परन्तु कलियुग के इस समुद्र मे दोषी-आरोपी और कलकित इतिहास वाले लोग भी गोता खोरी करना चाहते हैं। परन्तु उन्हे रोकना हर पवित्र आत्मा का परम कर्त्तव्य है।

जब तक यह अक आर्यजनता के हाथ पहुचेगा तब तक आर्यो की सर्वोच्च सस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनावी सफर एक और मील का पत्थर तय कर चुका होगा।

इस बार चुनाव सम्पन्न कराने का गुरुत्तर दायित्व सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल जी के मजबूत और धर्मनिष्ठ कन्धो पर है।

श्री बसल जी ने इस चुनाव के माध्यम से आर्यजनो के समक्ष एक छोटा सा परन्तु विशाल और दूरगामी परिणाम वाला सकल्प व्यक्त करते हुए कहा है कि ईमानदारी कर्त्तव्यनिष्ठता और राष्ट्रभक्ति मे परिपूर्ण (शत प्रतिशत) आर्यो का दल समूचे विश्व को महर्षि दयानन्द जी के द्वारा निर्देशित उस वैदिक मार्ग पर ले जाने के लिए जुट पडे जिस मार्ग पर हर मील के पत्थर पर लिखा हो – 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम

सम्पादक

सह सम्पादक
विमल वधावन एडवोकेट

चिरस्मरणीय व्यक्तित्व

आर्यसमाज के बलिदानी

कीर्तिर्यस्य स जीवति

दानी फकीर महात्मा हंसराज

– पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपड़ा

महात्मा हसराज पिछले जन्म मे उच्च कोटि के साधक रहे होगे जो इस जन्म मे अपनी साधना पूरी करने आए थे। गीता मे कहा है कि यदि किसी योगी की साधना किसी कारण अधूरी रह जाए तो वह धीमान श्रीमान लोगो के घर जन्म लेता है जहा उसे अपनी साधना के लिए अनुकूल वातावरण मिल सके। परन्तु महात्मा हसराज जी ने ऐसे घर मे जन्म लिया जो धीमानो (साधु वृत्ति के धार्मिक लोगो) का तो था परन्तु श्रीमानो का नहीं था। बाद की घटनाओ से प्रकट हुआ कि जैसी साधना इस महापुरुष ने की उसके लिए यह घर ही उपयुक्त था।

महात्मा हसराज जी के पिता लाला चुन्नीलाल धार्मिक वृत्ति के पुरुष थे। उनके घर वजबाडा मे १६ अप्रैल १९६४ को शिशु हसराज का जन्म हुआ। माता पिता के शुभ सस्कार बालक हसराज मे भी आए। इनमे से एक था ईश्वर मे अडिग विश्वास।

जब हसराज की आयु केवल बारह वर्ष की थी तभी सन १८७६ मे पिता श्री चुन्नीलाल जी का देहान्त हो गया। हसराज जी के बडे भाई मुल्कराज भी अभी पढ ही रहे थे। कमाई करने वाला काई नहीं था। इन लोगो को बडी गरीबी मे दिन बिताने पडे।

उन दिनो बाल विवाह का चलन था। लाला चुन्नीलाल जी ने भी हसराज जी की सगाई श्री कृपाराम की सुपुत्री ठाकुरदेवी जी से तय कर दी थी। विवाह की तिथि भी तय हो गई थी। तभी सन १८७६ मे दुर्योग से लाला चुन्नीलाल और लाला कृपाराम दोनो का ही असमय मे देहान्त हो गया। लाला कृपाराम जी आग्रह कर गए थे कि विवाह की तिथि टाली न जाए। इसलिए बारह वर्ष की आयु मे ही हसराज जी का विवाह हो गया। एक ओर धनोपार्जन करने वाले पिता की मृत्यु और दूसरी ओर घर मे एक और सदस्य (पत्नी) की वृद्धि। तपस्या के लिए सारे बानक ठीक–ठीक बन गए।

बडी गरीबी मे बालक और बाद मे युवक बने हसराज ने अपनी पढाई पूरी की। बुद्धि तीव्र थी इसलिए अच्छे अक ले कर पास होता गया। अन्त मे वह दिन भी आया जब उसने बी०ए० पास किया। तब माता तथा बडे भाई ने चैन की सास ली कि अब शायद दिन फिर आएगे। बी०ए० पास व्यक्ति को उन दिनों आसानी से अच्छी नौकरी मिल जाती थी।

सन् १८८३ मे ऋषि दयानन्द का निर्वाण हो गया। उनकी स्मृति मे एक विद्यालय खोलने का निश्चय किया गया। विद्यालय खोलने के लिए चलाने के लिए धन चाहिए। लोगो ने धन दिया पर वह बहुत थोडा था – दस हजार के लगभग। इतने से स्कूल नहीं चलता।

फिर ऐसा माना जाता था कि स्कूल का प्रधानाध्यापक बनने की योग्यता केवल अग्रेजो या यूरोपियन लागो मे ही होती है। हिन्दुस्तानी स्कूल नहीं चला सकता। युवक हसराज इस स्कूल की सहायता के लिए कुछ देना चाहता था। पर देने के लिए उनके पास धन नहीं था। टटोल कर देखा पाया कि उनके पास जीवन था। जब सत युग के राजा हरिश्चन्द्र का दक्षिणा देने के लिए धन की आवश्यकता पडी तब उसन अपनी पत्नी पुत्र और स्वय के लिए अपना जीवन दान कर दिया था। युवक हसराज ने भी इस स्कूल क लिए अपना जीवन दान कर दिया कह दिया सारे जीवन बिना कोई वेतन विद्यालय की सेवा करूगा।



घर आ कर बडे भाई को बताया कि कमा कर लाने के बजाए गवा आया हू। बडे भाई ने कहा अपने घाटे मे आधे का साझीदार मुझे बना ले। मुझे ८० रुपये वेतन मिलता है। उसमे से आधा तेरे परिवार के भरण पोषण के लिए रहा। सौदा पक्का हो गया। मा मुह बाए खडी देखती रही। दरिद्रता दूर होने की उसकी आशाए चूर चूर हो गई।

डी०ए०वी० स्कूल खुला। यूरोपियन ही स्कूल चला सकते हैं इस दावे की धज्जिया उडाते हुए ठाठ से चला। विद्यार्थियो की बाढ आ गई। जानबूझ कर गरीबी को अपनाने वाला हसराज महात्मा हसराज कहलाने लगा।

कुछ समय बाद स्कूल कालेज बना। तब हसराज जी के सामने धर्मसकट आ गया। डी०ए०वी० स्कूल की स्थापना के लए प० गुरुदत्त विद्यार्थी ने भी बडा यत्न किया था। अब वह एम०ए० परीक्षा भी पास कर चुके थे। इसलिए कालेज के प्रिंसिपल बनने के पात्र थे। परन्तु कालेज की प्रबन्ध समिति ने निर्णय किया कि हसराज जी के त्याग और तपस्या को दृष्टि मे रखते हुए उन्हे ही कालेज का प्रिसिपल बनाया जाए। गुरुदत्त जी हसराज जी के घनिष्ठ मित्र थे इसलिए वह परेशान हो गए।

सस्था को चलाने मे महात्मा हसराज जी की लगन के विषय मे किसी का मत भिन्न नहीं था। मैं वेतन थोडे ही लेता हू, जो समय पर आने का बन्धन मानू ऐसी भावना उनके मन मे कभी नहीं आई। सदा समय से पहले पहुचते समय के बाद तक रहते। यह उनकी नौकरी नहीं थी उनका अपना काम था। अपने काम मे समय थोडे ही देखा जाता है। गरीबी अकिर की थी। गरीबो की तरह ही रहते थे। सादा कपडा पहनते। चालीस रुपये मासिक मे जितना विलास हो सकता था उससे अधिक उन्होने कभी किया नहीं चाहा नहीं। उन्हें यह कहने में कोई शर्म अनुभव नहीं होती थी कि हम गरीब हैं इसलिए अमीरों जितना खर्च नहीं कर सकते।

उनकी गरीबी चाहते ही दूर हो सकती थी। वेतन न लेने की प्रतिज्ञा को बिना तोडे भी उन्हे भेटे प्राप्त हो सकती थी। परन्तु जो अपरिग्रह का सुख ले लेता है वह फिर समेटा समेटी के चक्कर मे पडना नहीं चाहता। त्याग और तप से उन्हे जो यश और सन्तुष्टि मिली वह धन दौलत से प्राप्त नहीं हो सकती थी। जिनके पास उनसे सौ गुना धन था उन्हे प्राप्त नहीं हुई।

जैसे नगे पाव रहने वालो की एडिया और तलुवे कडे हो जाते हैं और उन्हे ककड पत्थरो की चुभन अनुभव नहीं होती वैसे ही गरीबी का अभ्यास मनुष्य को कष्ट सहिष्णु और धैर्यशाली बना देता है। इसीलिए म्हात्मा हसराज बडे से बडे कष्ट और बडी से बडी विपत्ति मे भी कभी विचलित नहीं हुए। ईश्वर पर से उनका विश्वास कभी डिगा नहीं।

किसी बडे पद पर पहुचना कठिन काम होता है परन्तु उस पद को छोड पाना उससे भी कहीं कठिन होता है। पच्चीस वर्ष तक प्रिसिपल पद पर काम करते करते मनुष्य की प्रतिष्ठा बढ जाती है। कालेज के सभी शिक्षक और कर्मचारी आदर सहित आज्ञापालन करते हैं। छात्र ओर उनके अभिभावक कुछ न कुछ अनुरोध ले कर आते रहते हैं। एक बडप्पन की प्रभुत्व की अनुभूति होती है। उस प्रभुत्व से व्यक्ति को बडा मोह होता है। इसे छोडने का मन नहीं होता। परन्तु महात्मा हसराज ने २५ वर्ष तक प्रभुता का उपभोग करने के बाद उसे ऐसे त्याग दिया जैसे मोर अपने पख गिरा देता है। जीवन का दान का अर्थ उन्होंने लिया कार्यशीलता के वर्षों का दान। जब कार्यशीलता घट चली तो उन्होंने अपना भार सस्था पर से हटा लिया। आगे का जीवन आर्यसमाज की सेवा के लिए अर्पित कर दिया।

कालेज के प्रिंसिपल पद से निवृत्त होकर महात्मा हसराज डी०ए०वी० प्रबन्ध समिति के प्रधान बने आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान बने। शुद्धि और प्राकृतिक आपदाओ के समय पीडितो की सेवा मे उनका समय व्यतीत हुआ। चाहे मलाबार मे मोपलाओ के हिन्दुओ पर अत्याचार हो या मेवात में मल्काने राजपूतो की शुद्धि का काम हो या अकाल बाढ या भूकम्प का कष्ट हो वह सदा सहायता भेजने को उद्यत रहते थे।

महात्मा जी दूरदर्शी शान्त मन से विचार करने वाले पुरुष थे। एकाएक दूसरे के झासे मे नही आते थे। गाधी जी ने असहयोग आन्दोलन छेडते हुए नारा लगाया कि वह सत्याग्रह द्वारा छह महीने मे भारत्त को स्वराज्य दिला देगे। लोग सरकार से असहयोग करें लगान न दें सरकारी न्यायालयो मे न जाए छात्र लाजपतराय जैसे अनुभवी नेता इस चक्कर मे आ गए। परन्तु महात्मा हसराज इस विषय मे दृढ रहे। उन्होंने कहा कि मैं मानता हू कि यह छात्रों के पढने का काल है। उन्हें पढाई छोड कर राजनीति में नहीं पडना चाहिए। इस विषय मे लाला लाजपतराय से उनका कुछ विरोध भी हो गया था।

वह मानते थे कि आर्यसमाज एक धार्मिक सस्था है और इसका राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है। पर सरकार यह नहीं मानती थी। महात्मा जी का पुत्र बलराज लाहौर षडयन्त्र मे पकडा गया था और उसे आजीवन कारावास की सजा हुई थी। यह प्रस्ताव सामने आया कि यदि बलराज क्षमा माग ले तो उसे छुटकारा मिल सकता है। इस पर महात्मा जी की राय स्पष्ट थी 'माफी मागने का प्रश्न ही नहीं है। यदि वह निर्दोष है तो उसे बिना माफी मागे छोडा जाए। यदि वह दोषी है तो सजा वह भुगत ही रहा है।

सन १९३८ की गर्मियो मे महात्मा जी हरिद्वार गए। उसी साल हरिद्वार मे कुम्भ का मेला भरा था। कारण क्या रहा पता नहीं पर वह वहा से पेट दर्द का कष्ट लेकर लौटे। बहुत चिकित्सा की गई परन्तु रोग ठीक न हुआ। १५ नवम्बर १९३८ की रात को उनकी इह लीला समाप्त हो गई। अन्तिम समय उनका परिवार पोते पोतियो नाती नातिने और महात्मा खुशहालचन्द (आनन्द स्वामी) उनके पास थे।

महात्मा जी सारे कर्त्तव्य पूर्ण कर चुके थे। कोई कामना शेष नहीं थी। प्रादेशिक सभा मे अपने उत्तराधिकारी महात्मा खुशहालचन्द जी को उन्होने अन्तिम उपदेश दिया था 'चाहे योग साधना छोडनी पडे परन्तु वेद प्रचार के काम में ढील मत होने देना।

– आर्यसमाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली ११०००१

इंग्लैण्ड में एक आर्य यायावर

गताक से आगे

– ब्रिगेडियर चितरंजन सावन्त, वी०एस०एम०

अंग्रेजी नाटक जगत के सर्वमान्य एव चिरस्थाई स्तम्भ बहुचर्चित शेक्सपियर का जन्म स्थान है एक शान्त सुन्दर नगर – स्ट्रैटफोर्ड अपॉन एवन। 'एवन' नदी के तट पर बसा है यह स्ट्रैटफोर्ड और इस नाम के अन्य स्ट्रैटफोर्ड से भिन्न है। इग्लैण्ड मे आदमियो और स्थानो के नाम सख्या मे कम हैं अत वैमित्र्य दर्शाने के लिए कोई और शब्द जोड लिया जाता है। बरमिघम से यहा आते हुए मार्ग मे कोई कठिनाई नहीं हुई। डॉक्टर नरेन्द्र कुमार आर्य प्रधान आर्यसमाज वेस्ट मिडलैंडस स्वय अपनी बडी मर्सीडीज आरामदेह गति से चला रहे थे। मुझसे वेद प्रचार की योजना के बारे मे बाते भी करते जा रहे थे। घडी पर एक आख थी समय सीमा मे सब कुछ देख कर सायकालीन सभा मे प्रवचन करने के लिए बिना विलम्ब किए वापस लौटना था। अभी खाने–पीने की चिन्ता थी नहीं। रामा जी नरेन्द्र जी की पत्नी ने पहले ही व्यवस्था कर दी थी। असैनिक होते हुए भी रामा जी नैपोलयन की इस सूक्ति से परिचित थीं 'एन आर्मी मार्चेज ऑन इटस स्टमॉक'। (सेना पेट के बल प्रमाण करती है) तन तृप्त तो मन तृप्त।

प्रयाग विश्वविद्यालय मे अग्रेजी मे एम०ए० करते समय मेरा घनिष्ट परिचय शैक्सपीयर की पुस्तको नाटक एव कविताओ से हुआ था। प्रोफेसर एस०सी० देव और प्रोफेसर पी०ई० दस्तूर शेक्सपियर के मचन में रुचि लेते थे। 'जूलियस सीजर' के मचन मे मैं एक बार ब्रूटस की भूमिका में था। अतीत की स्मृतिया आज शेक्सपियर के नगर मे सजीव हो उठी थीं। नरेन्द्र जी ने सुझाव दिया कि पहले हम दोनो सरसरी निगाह से शेक्सपियर से सम्बन्धित स्थानो को देखे ले फिर गहन अध्ययन की दृष्टि तो कुछ को चुनकर बाद मे देखे। उनके पूर्व भ्रमण अनुभव का मैंने भी लाभ उठाया। खुली छत वाली बस मे न बैठ कर पैदल ही घूमते रहे। पौंड बचाये और पैरो को व्यायाम मिला। फिर बीच बीच मे साहित्यिक चर्चा का आनन्द आया। पर्यटक बस में 'इयर–फ्रोन' द्वारा गाइड का ही स्वर सुनते रहते पैदल चलने मे अपना स्वर सुनने का आनन्द असीम था स्वान्त सुखाय।

शेक्सपियर की नगरी मे ही शेक्सपियर के अस्तित्व को मन ने एक बार फिर चुनौती दे डाली। क्या शेक्सपियर का नाम काम धाम कपोल कल्पित है ? यह विवाद नया नहीं है। बहुत पुराना है। बहुचर्चित विषयो और व्यक्तियो के बारे मे भिन्न भिन्न मत न हो तो साहित्यिक गोष्ठियो के औचित्य पर प्रश्न चिन्ह लग सकता है। कीट–क्रिटिक लिखें वो क्या ? दर्शनीय स्थलों और साहित्य प्रकाशकों की आय का स्रोत सूख जाएगा। अतत मन ने निर्णय सुना दिया। जो लोग कहते हैं कि लॉर्ड फ्रान्सिस बेकन या बेन जॉन्सन ने 'रोमियो जूलियट' 'हैमलेट' 'मैकबेथ' आदि नाटक उपनाम शेक्सपियर के आधार पर लिखे हैं वे सरासर सफेद झूठ बोलते हैं। हाड मास का शेक्सपियर नाटककार था उसका नाम है और रहेगा। अस्तु।

अब हम दूने जोश से शेक्सपियर के अपने घर पर पहुचे। प्रवेश शुल्क (जो जगह–जगह आय का साधन था) देकर अन्दर गए। परिचारिका ने सहज स्वाभाविक मुस्कान के साथ सिखाए हुए तीरके से अभिवादन किया। हमारा मन प्रसन्न हुआ। फिर आए शेक्सपियर सम्बन्धी रोचक आकडे। पिछले चार सौ वर्षों से शेक्सपियर सम्बन्धी रोचक आकडे। पिछले चार सौ वर्षों से शेक्सपियर अग्रेजी रगमच पर छाए हुए हैं क्या पूर्व और क्या पश्चिम। उनकी कुछ पक्तिया 'टु बी ऑर नॉट टु बी'

(करु या न करू) पार्टिंग इज सच स्वीट सॉरो (विरह मे कैसा टीस भरा मीठा मीठा दर्द है) अब विश्व विख्यात हैं हर अग्रेजी भाषी की जुबान पर हैं। शेक्सपियर से लिए जाने वाले कोटेसन्स के आगे तो बाइबिल भी मात खा जाती है। शेक्सपीयर का जन्म २३ अप्रैल १५६४ को और मृत्यु २३ अप्रैल १६१६ को हुई। रोचक आकडो के लिए धन्यवाद देते हुए हम आगे बढे।।

शेक्सपियर का शयन कक्ष। उनका दाम्पत्य जीवन कितना सुखमय था यह अनुसधान का लोकप्रिय विषय रहा है। पत्नी सात वर्ष बडी थी और उनके देहावसान के बाद सात वर्ष ओर जीवित रही। घर की सर्वोत्तम शय्या किसे मिलनी चाहिए विरासत मे ? निसन्देह पत्नी को। किन्तु शेक्सपियर ने सर्वोत्तम शय्या अपनी वसीयत मे अपनी पत्नी को नहीं दिया। एक पायदान नीचे वाली शय्या उन्हे दिया। शयन कक्ष मे अब और अनुसधान न करके चलिए चलते हैं रगमच पर।

ग्लोब थियेटर शेक्सपियर का समकालीन है आज भी लोकप्रिय है। इस समय मैकबेथ का मचन हो रहा है। सभी टिकट बिक चुके हैं। हाल फुल है। यदि सभी सीटे न भरी होती तो भी हम 'मैकबेथ नाटक समयाभाव के कारण नहीं देख सकते थे। बरमिघम समय से लौटना आवश्यक था क्योकि मेरे आज सायकालीन प्रवचन के पर्चे बाटे जा चुके थे। आर्यसमाज पुरोहित आचार्य सोनेराव और उनकी पत्नी आज विवाह ससकार कराने आयरलैण्ड गए हुए हैं। अत आर्यसमाज भवन भी हम दोनो को ही खोलना है। 'ग्लोब थियेटर' की लॉबी मे शेक्सपियर–सम्बन्धित अनेक उपहार वस्तुओ की खुली बिक्री हो रही है। दस–पन्द्रह पौण्ड से कम की कोई वस्तु नहीं है। मैं सामान्य विडियो कैसेटस जिनमे शेक्सपियर के नाटक रेकार्डेड हैं देख–देख कर वापव रख देता हू। मूल्य मेरी पहुच से परे है। नरेन्द्र जी स्वय खरीद कर मुझे वह चीज उपहार देने की पेशकश करते हैं। धन्यवाद देते हुए मैं अस्वीकार कर देता हू।

समय से हम बरमिंघम के आर्य समाज भवन पहुचते हैं। दो–एक परिवार जिन्होने आज प्रात रेडियो पर वेद प्रवचन सुना वह आ चुके हैं। अपनी अपनी कार में बैठे हुए हैं ठीक समय से कार से उतर कर आर्यसमाज भवन मे प्रवेश करेगे। यहा यही परिपाटी है। हॉल मे वेद प्रवचन आरम्भ होता हे। वेद मन्त्र पाठ और फिर व्याख्या। प्रश्न होता है वेद किसने लिखे ? श्रोताओ मे कुछ आर्यसमाजी हैं कुछ पौराणिक हिन्दू कुछ सिख और अन्य मतावलम्बी। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखित सत्यार्थ प्रकाश को आधार बना कर मैं उत्तर देता हू ईश्वरीय ज्ञान है वेद। वेद अपौरुषेय है। मनुष्य ने नहीं लिखा है वेद। सृष्टि के आरम्भ मे परम पिता परमात्मा ने मानव मात्र के मार्ग दर्शन के लिए ऋषियो के हृदय मे वेद ज्ञान को स्वय प्रकाशित किया। ऋषि वेद मन्त्र के दृष्टा हैं सृष्टा नहीं। सर्व साधारण की सूचना के लिए प्रारम्भिक पाठ दोहराया गया वेद चार हैं ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद। जिन चार ऋषियो पर इश्वर ने वेद प्रकाशित किया वे हैं अग्नि वायु, आदित्य ऑगीरा। नव आगन्तुको को तो प्रारम्भिक पाठ भी भाया। अधिकाश श्रोता वेद मन्त्र श्रवण करने और व्याख्या जानने के पक्ष मे थे। वेद मन्त्र को आधुनिक परिपेक्षय मे जानने–समझने और उनके मार्ग–दर्शन म दिन प्रति दिन के जीवन की समस्याओ का समाधन ढूढने की लालसा सभी के मन मे थी। इस प्रकार आर्य समाज वेस्ट मिडलैंडस अपने वेद प्रचार के लक्ष्य के ओर आगे बढ रहा है। रेडियो जैसे सशक्त माध्यम ने वेद प्रचार अभियान को गति प्रदान की। लक्ष्य समीप आने लगा।

इस बीच नये नगर 'मिल्टन कीन्स से मुझे एक रोचक निमन्त्रण मिला। वहा के ढाडा परिवार प्रमुख महाशय रघुबीर जी अपन नए बनाए गए दो महलनुमा घरो का गृह प्रवेश वैदिक पद्धति से कराना चाहते हैं। उनकी इच्छा है कि उपस्थित परिवारो के लिए मैं एक वैदिक विषय पर रोचक प्रवचन करू। उनके पुत्र मोहनीस स्वय मुझसे मिलने बरमिघम आए। ढाडा परिवार पूर्व अफ्रीका से इग्लैण्ड कुछ समय पहले आया। आर्य समाजी परिवार पूर्णतया शाकाहारी मद्य–मास धूम्रपान से अछूता। वहा ऐसा कम है। मैंने निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। बरमिघम से मिल्टन कीन्स कार से लगभग डेढ या पौने दो घण्टे का रास्ता है। लोक वाहन कोच से आधा घण्टा और जोड लीजिए असुविधा अलग। आर्य समाज वेस्ट मिडलैंड्स के पूर्व पुरोहित जो उसी समाज के प्रधान बने बाद मे और अब वेद प्रचार समिति के अध्यक्ष हैं – महाशय कृष्ण चोपडा और उनकी धर्मपत्नी लेडी डॉक्टर श्रीमती रक्षा चोपडा मेरी सहायता के लिए स्वत आगे आए। रक्षा जी अपनी नयी कार स्वय चला कर ले गई कृष्ण जी और मै तो राह की हरियाली ही निहारते रहे। यो हल्की फुल्की बातो और चुटकुलो ने माहौल मीठा रखा। न आख लगी और न सपनो का ससार बसा। बातो ही बातो मे हम मिल्टन कीन्स मे थे।

हवन का आयोजन भव्य भवन के हालनुमा कक्ष मे था। हवन सामग्री समिधा पात्र घी कपूर आदि पहले से सुव्यवस्थित थे। आचार्य सोनेराव यज्ञ के ब्रह्मा थे। लन्दन बरमिघम और अन्य आस–पास के नगरो से डेढ सौ आर्य परिवार अपनी अपनी कारो मे आए हुए थे। इगलैण्ड मे ही लघु भारत बस रहा था वेदपाठियो का। साडी सभी महिलाओ का परिधान था। पुरुष पश्चिमी रग मे जल्दी रग जाते है। कुछ बन्द गले के कोट उभर रहे थे। नई पीढी का प्रतिनिधित्व था। सोनेराव जी ने विधिवत गृह प्रवेश कराया। मिल्टन कीन्स मे पहले के पुरातन रोमन क्रीडागन के निकट वेद मन्त्रो के सामूहिक उच्चारण अत्यन्त कर्णप्रिय लगे। हवन की अग्नि ने सामग्री की सुगन्ध चहु और बिखेर दी। सौम्य शाकाहारी एव वेदव्रत परिवार प्रमुख श्री रघुवीर ढॉडा बेटा–बहू, बेटी दामाद पौ[त्र] पौत्री सभी ने यज्ञ मे आहुति डाली। मन्[त्र] उच्चारण मे कोई वयस्क पीछे न रहा वातावरण वेदमय था। हम स्वर्ग मे थे

निमन्त्रण पत्र पर छपे कार्यक्रम [के] अनुसार श्री बृज भूषण अग्रवाल मन्त्[री] आर्यसमाज और आचार्य के अनुरोध प[र] मैने अपने प्रवचन मे पारिवारिक प्रेम औ[र] सामूहिक सगठन पर बल दिया। परिवा[र] के सदस्य एक दूसरे की सुख–सुवि[धा] का ध्यान रखे केवल निज–निखार की [न] सोचे तो घर ही स्वर्ग बन जाता है। य[दि] प्रत्येक व्यक्ति अपने मुख मे आहुति डा[ले] तो यह आसुरी प्रवृत्ति है इसके विपरी[त] एक दूसरे को खिलाना दैवी प्रकृति है दूसरो को देते रहिए लेने की ओर [से] विमुख रहिए। मा–बाप भाई–बहि[न] बेटा–बेटी चाचा–भतीजा – इन सभी [के] बीच सदैव सवाद होना चाहिए सवाद–हीनता पारिवारिक परस्पर प्रे[म] को निर्मूल कर देती है। हर हालत मे ऐस[ा] न होने दीजिए। दिन आरम्भ कीजि[ए] 'नमस्ते नमस्ते' से दिन भर विचार विम[र्श] का फोन पर बात करने का आमने साम[ने] बैठ कर बात करने का और कम से क[म] एक बार साथ खाना खाने का अवस[र] हाथ से न जाने दीजिए। सामूहिक सध्[या] और हवन सगठन सूक्त के अभिनन अ[ग] है। सुख दुख मे साथ साथ रहि[ए] सम्बन्ध सबल होगा – दिन प्रतिदिन शान्ति पाठ के बाद हम सब ने सामूहि[क] प्रीति–भोज मे भाग लिया। सुखद सध्[या] सम्पन्न की और कहा – नमस्ते – नमस्ते

– उपवन, ६०६ सेक्टर २६
नोयडा २०१३०

राष्ट्र, राष्ट्रभाषा/राजभाषा और संस्कृति

— विश्वम्भर प्रसाद 'गुप्त बन्धु',

गतांक से आगे

संस्कृति के ऊपर आक्रमण

सबको जोड़ने वाली हिन्दी विश्वमैत्री, पर्यावरण-मैत्री का प्रसार करके एक श्रेष्ठ विश्व का निर्माण करने का प्रयत्न करती आ रही है। डॉ० मैग्रेसर (इग्लैण्ड) के शब्दो मे **'हिन्दी दुनिया की महान् भाषाओं में से एक है। भारत को समझने के लिए हिन्दी का ज्ञान अनिवार्य हैं, क्योंकि भारत आज शिक्षा, उद्योग, तकनीक के हिसाब से दुनिया का अग्रणी देश है।'** भारत में जब अग्रेजी शिक्षा रोपी जा रही थी, तभी ब्रिटिश सरकार के विरोधी दल के सदस्य 'हागसन' ने इसे **'संस्कृति-अपहारक'** प्रयास कहकर विरोध किया था। किन्तु चालाक 'मेकाले' ने एक कुचक्र रचा कि किसी तरह भारतीय अपना स्वत्व भूल जाएं, अपना इतिहास भूल जाए, अपनी भाषा-सस्कृति भूल जाए, और वंश-भूषा भी बदल ले। उसने बडी चतुराई से एक योजनाबद्ध शैक्षिक कुचक्र चलाया। ईसाई मिशनरियो ने हिन्दी मे इतिहास, भाषा-विज्ञान, लिपि-विज्ञान, पुरातत्व के ग्रन्थ। लोगों ने एक मुहावरा उछाला कि 'हिन्दी' शब्द विदेशी। उन्होने आर्यो को विदेशी आक्रान्ता बताकर आर्यो-अनार्यो के बीच भीषण सघर्ष की कहानी भी गढ़ी। डॉ० हार्नले और ग्रियर्सन आदि विद्वानों ने आर्यभाषाओं का वर्गीकरण करते हुए आर्यमूल तथा द्रविडमूल के भाषा-परिवारो की संकल्पना कर उत्तर-भारत और दक्षिण-भारत में भेद-भाव तथा अलगाव पैदा करने का प्रयास किया।

दुर्भाग्यवश आजादी के बाद अंग्रेजी के मानस-पुत्रों ने यह विवाद और गहराया। चोटी के कुछेक बडे-बडे राजनेता भी इस मरीचिका के जाल मे फस गए, जबकि वास्तविकता कुछ और थी। सन् १९८१ की जन-गणना के अनुसार अग्रेजी आधे प्रतिशत से भी कम भारतीयो की मातृभाषा थी। यह भारतीय भाषा भी नहीं है। फिर भी हम इसके शिकजे मे कसे हैं,। पहले यवन-आक्रान्ता आए थे और स्वभाषा भूल फारसी सीखना शुरू हुआ फिर अंग्रेज आए और अंग्रेजी थोपी गई, उन्नति का साधन बनी, देशी भाषाएं गवारपन की निशानी, vernacular, अपवित्र भाषा, गाली की भाषा हो गईं, वेदो में उपलब्ध भारतीय ज्ञान के भ्रष्ट अग्रेजी अनुवाद विश्व में प्रचारित किए गए, वही पढा-पढाकर हमारे भी दिमागों में ठूसा गया कि हम मूर्ख चरवाहों, गडरियो की सन्तान है और अग्रेजी-शासन हमें सभ्य बनाने आया है। हमे अपने साहित्य से, अपनी श्रेष्ठ संस्कृति से, अपनी उत्कृष्ट परम्पराओं से काटकर दरिद्र, दीन-हीन घोषित कर स्वाभिमान नष्ट किया गया । इस प्रकार हमारी शिक्षा पर अधिकार करके, हमारा मत-परिवर्तन करके, अग्रेजी को हमारे लिए अर्थ-काम-सिद्धि का साधन बताकर हमे दासता-पाश मे ऐसा कसा गया कि आजाद होकर भी हम उनके दास-भक्त ही बने रहे। कवि ने ठीक ही कहा है –

आक्रान्ता करता सदा, जन संस्कृति का नाश।
शिक्षा पर अधिकार कर कसे दासता-पाश।।

अंग्रेजी द्वेष बढ़ाने वाली भाषा

हिन्दी जोडने वाली भाषा है, मैत्री वाली भाषा है, इसके विपरीत, अग्रेजी भाषा के विकास मे द्वेष-भावना ही उभरकर आई। उदाहरण के लिए जवान (युवा)' के लिए शब्द है 'एडल्ट (adult) और उससे व्युत्पन्न है 'एडल्टरी (adultery)। इन्हे 'ब्रेव, ब्रेवरी' (बहादुर, बहादुरी), 'ड्रज, ड्रजरी' (चाकर, चाकरी), 'नेव, नेवरी' (धोखेबाज, धोखेबाजी), 'स्लेव, स्लेवरी' (गुलाम, गुलामी) 'राइवल, राइवलरी' (प्रतिद्वन्द्वी, प्रतिद्वन्द्विता) आदि की पंक्ति मे रखकर 'एडल्टरी' का सीधा-सच्चा अर्थ 'जवानी (यौवन)' निकालना चाहिए था, किन्तु शब्द-कोश मे इसका अर्थ है 'जार-कर्म, पर स्त्री-गमन, व्यभिचार'। ऐसा क्यों है? कारण यही है कि भारतीय सस्कृति ब्रह्मचर्य को जीवन का अनिवार्य तप मानकर वीर्य-नाश का और काम-वासना का भरसक निषेध करती है (कल्याण के देतवा, शिव 'कामारि' है)। इसलिए हठी, दुराग्रही और वेद (सत्य-ज्ञान) विरोधी मानसिकता ने आसुरी संस्कृति में इसके ठीक उलटे अर्थ में, जार-कर्म, पर-स्त्री-गमन और व्यभिचार को 'जवान' का स्वधर्म (सामान्य लक्षण) घोषित कर दिया।

देवभाषा/आर्यभाषा और उनकी ज्ञानमूलक सस्कृति के प्रति भीषण विद्वेषाग्नि में जलते हुए अज्ञान तमसान्ध ये लोग अर्थ-काम-प्रधान अपसंस्कृति से चिपके रहकर व्यभिचार-जन्य फिरग (एड्स के नए नाम से कुख्यात) रोग पालने में भी निर्लज्जता-पूर्वक गर्व ही अनुभव करते हैं, इसे 'बडे लोगों को बीमारी' कहते हैं। हजारों साल से संसार भर में फिरंग और फिरंगी शब्द यूरोपीय और यूरोप के समानार्थी कुख्यात हो चुके हैं। किं बहुना, इस भाषा के जानकर एक 'रिचर्ड लैडरर महोदय ने तो **'क्रेजी इंग्लिश' (अर्थात् पागलपन की भाषा 'अंग्रेजी') नाम का एक ग्रन्थ ही लिखा था (जिसे १९९६ में 'साइमन ऐण्ड शुस्टर', न्यूयार्क ने प्रकाशित किया था)।** फिर भी भाषा मे सुधार के नाम पर कुछ करने की बजाय, स्वभाववश अपसंस्कृति का विष ही फैलाया गया। कुछ विद्वानो ने सुधारने की कुछ कोशिश की, जैसे प्रोग्राम की वर्तनी programme (इंग्लैण्ड वाली वर्तनी) के बजाय program (अमेरिका वाली वर्तनी) सुझाई, किन्तु उनकी तूती भाषा के दुराग्रही कठमुल्लाओं के नक्कारखाने में बोलकर ठप्प हो गई।

इतिहास साक्षी है कि राज्य, भाषा, धर्म, खान-पान, रीति-रिवाज की स्थान-स्थान पर विभिन्नता होने पर भी आचार-विचार से एकात्म, अर्थात् एक सामान्य सस्कृति के उपासको का यह 'भा-रत' (भा=ज्ञान की शोध और प्राप्ति मे रत=लगा हुआ) वेद-काल से एक विशाल राष्ट्र ही था (जिसे अब 'बृहत्तर भारत' नाम दे सकते है)। इसी की प्रशसा मे विष्णु-पुराण के रचयिता ने पूरा एक अध्याय लिखा है। इसकी भौगोलिक सीमा बताते हुए (विष्णु पुराण २/३/१ मे) ऋषि कहते हैं . कि **'जो भूखण्ड समुद्र (हिन्द-महासागर) के उत्तर में और हिमाद्रि (हिमालय पर्वत-श्रेणी) के दक्षिण में है वह भारत है और उस भूमि की सन्तान भारती (भारतीय) है।'** इस सीमा-रेखण के अनुसार पश्चिम में गान्धार (वर्तमान अफगानिस्तान) और फारस या ईरान (आर्य-आर्यन-ईरान) भारतीय (आर्यो का) देश था। पूर्व मे ब्रह्म-देश (म्यांमार), दक्षिण मे श्रीलंका (सिंह-सिंहल द्वीप-श्रीलका या सीलोन) भी कभी भारत के ही भाग थे जिन्हें अंग्रेजो ने काटकर अलग किया। सुदूर पूर्व मे स्याम, जावा (यव-द्वीप), सुमात्रा, मलाया (मलय-द्वीप), बाली-द्वीप, तक भारतीय सस्कृति का प्रसार था। इसके बहुत में प्रमाण अब भी जगह-जगह मिलते हैं। यह बृहत्तर भारत 'एक विश्व श्रेष्ठ विश्व' की कल्पना साकार करने वाले 'भारत-जगत् या 'विश्वभारत' की प्रगति का मानो एक पड़ाव था। अंग्रेजों ने फूट डालकर भारत छोड़ते-छोड़ते भी विभाजन करके इसके तीन खण्ड कर दिए गए।

भारत की दुर्गति और राष्ट्रीय शोक

अमेरिका-सहित सारे पश्चिम को भरपूर विषाक्त करके भारत पर भी अंग्रेजी के विष-दन्त गडने लगे। सभी शिक्षा-शास्त्री, राष्ट्र-प्रेमी, राजनेता और न्यायालय/उच्चतम-न्यायालय तक बार-बार कह चुके हैं कि बच्चों को शिक्षा उनकी मातृभाषा मे ही दी जानी चाहिए। राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी ने तो २७ दिसम्बर, १९१७ को कोलकाता में अंग्रेजी शिक्षा आरम्भ होते ही इसे 'दुर्गति' और 'राष्ट्रीय शोक' कह दिया था, और आजादी मिलते ही इसे निकाल फेकने का आह्वान किया, किन्तु जो भयंकर भूल अग्रेजी से चिपके रहने की हो चुकी थी, उसका फल तो भुगतना ही है।

दुर्भाग्य तो यह है कि यही अग्रेजी भाषा भारत के दुधमुहें बच्चों को घुट्टी मे पिलाकर अपसस्कृति में ही उन्हें दीक्षित किया जा रहा है और अपनी भाषा से उन्हें वचित रखकर उनका स्वस्थ विकास का अधिकार मारा जा रहा है। पढाने का ढंग और पाठ्य-पुस्तको की रचना भी ऐसी हैं कि वे भाषा ज्ञान देने की अपेक्षा प्रच्छन्न मत–आरोपण अधिक सफलता-पूर्वक कर सके। एक उदाहरण है छोटे बच्चों की वर्णमाला की सचित्र पुस्तक का। अंग्रेजी वर्ण एफ मे आरम्भ होने वाले फैन, फॉक्स, फउण्टेन फ्रेम, फोर फ्लो, फुट आदि अनेक सरल शब्द हैं, जिने चित्र देकर इस वर्ण का ज्ञान दिया जा सकता है, किन्तु तीन शब्द चुने गए 'फिश, फायर और फ्राइग जिन्हें व्यक्त करता हुआ एक ही चित्र दिया गया जिसमे नीचे आग (फायर) जलती है और मछली (फिश) एक धागे से लटकी हुई भूनी (फ्राई की) जा रही है। इसे देखकर सन् १८५७ बावन इमली जिला उ०प्र० फतेहपुर, डाली से लटकते शहीदों के शवो के चित्र याद आते जिन्हें अन्य कोई व्यवस्था न होने के कारण गाव-बाहर इमली के पेड से ही लटकाकर सामूहिक फांसी दी गई थी।

अंग्रेजी पढ़ाएं पर कब, किसे ?

उपर्युक्त छान-बीन का उद्देश्य तथ्यों की जानकारी देना है विद्वानों/राष्ट्रप्रेमियों/न्यायाधीशों के मत की पुष्टि करने के लिए, ताकि न्यायालय की उपेक्षा बन्द हो। पर-दोष-दर्शन या किसी के प्रति द्वेष फैलाने का उद्देश्य नहीं है। हमें भले-बुरे किसी से घृणा नहीं, करनी चाहिए, क्योंकि 'जड़-चेतन, गुण-दोष-मय विश्व कीन्ह करतार।' अंग्रेजी भाषा के जानकार इसमें भी कोई गुण खोज सकते हैं। फिर भी हमें जब इसी दुनिया में रहना भी है तो जिन्हें अंग्रेजी जाननी जरूरी हो, वे अवश्य उसे सीखें : किन्तु **'सन्त हंस गुन गहहिं पय, परिहरि बारि बिकार'** की सलाह पर ध्यान देते हुए उसके विष–दन्त उखाड़कर ही; अथवा पहले अपनी सुभाषा का मन्त्र पढ़कर उसे भली-भांति कीलित कर दें, तब उस पर हाथ लगाएं।

– बी- १५४, लोक विहार, पीतमपुरा, दिल्ली-३४

मुम्बई यज्ञ के 'ओ३म् स्वाहा' पर लेखान्दोलन !

– सत्यानन्द वेदवागीश

अभी कुछ मास पूर्व मुम्बई मे आयोजित आर्य महासम्मेलन के अवसर पर हुए पारायणयज्ञ में श्री ब्रह्माजी के द्वारा मन्त्रान्त में स्वाहा के पहले ओ३म' स्वाहा' बोलकर आहुति दिलवाने पर पत्र–पत्रिकाओ मे उसके विरोध मे अनेक लेख लिखे गए। और एक स्वामी जी ने उन सब लेखों को पुस्तकाकार मे छपवाकर वितरित भी किया। एक प्रति मेरे पास भी आई है। मानो ब्रह्माजी ने कोई आपराधिक कृत्य कर दिया हो। उन्हे अनधिगत शास्त्र विद्वन्मन्य 'शास्त्रविरोधी अज्ञ अदयानन्दी 'मिथ्या क्रियाप्रवर्त्तक आदि विशेषणो से विभूषित किया गया।

क्या श्री ब्रह्माजी द्वारा ओ३म स्वाहा बोलकर आहुति दिलवाना इतना बुरा कर्म था ? थोडा इस पर विचार करना है।

पहली बात तो यह है कि श्री स्वामी सत्यम जी ने ही इसे इदम्प्रथमतया आरम्भ नहीं किया है। पुस्तिका मे जिन विद्वानो की सम्मति उदधृत की गई है उनमे श्री मीमासक जी श्री विश्वश्रवा जी श्री वेदश्रमीजी और श्री धर्मदेव जी वि०मा० अब नही रहे अर्थात उनके जीवन काल मे भी इस ओ३म स्वाहा का प्रयोग होता था जिसका निवारणार्थ उन्हे लिखना पडा। अभी २५ जून से १ जुलाई तक ब्यावर (राज०) आर्यसमाज मे वर्षा हेतु किए गए यज्ञ मे सकलित १०५ (१०४) मन्त्रो के पाठ हेतु एक स्थानीय महामना वृद्ध शास्त्रीजी को भी सादर आहूत किया गया। उन्होने स्वीकार किया पर उन्होने मन्त्रान्त मे रि स्थान पर प्रणवसहित स्वाहा बोलने का (=ओ३म स्वाहा) बोलने का अथवा अभ्यास बताया । तब वैसा ही किया गया। सन ५७ से ६५ तक राजस्थान के ब्यावर आदि नगरो के आर्यसमाजो मे श्री आनन्दभिक्षु जी महाराज की अध्यक्षता मे जो पारायण यज्ञ होते थे उनमे भी ओ३म स्वाहा से आहुति दी जाती थी। इन पक्तियो का लेखक दस वर्ष की आयु मे सन ४३ में श्री स्वामी व्रतानन्द जी द्वारा सस्थापित–सचालित चित्तौडगढ गुरुकुल मे प्रविष्ट हुआ। वहा प्रतिदिन साय व प्रात यज्ञ समय मे क्रमश वेद के तीस मन्त्रो से आहुति दी जाती थी जिसके एक वर्ष मे चारो वेदो का पारायण हो सके तब भी ओ३म स्वाहा' बोलकर आहुति दी जाती थी।

इस प्रकार कम से कम ५८ वर्ष से यह ओ३म् स्वाहा का प्रयोग कहीं न कहीं होता रहा। पूर्वोद्धृत ब्यावर के श्री प० वासुदेव जी शास्त्री जी के दादाश्री रामप्रतापजी ने महर्षि जी के दर्शन किए थे तब से उनके वशज परिवार निष्ठापूर्वक वैदिक धर्म कर्मानुयायी हैं और निस्पृह भाव से आर्यसमाज के प्रचार'प्रसार मे सलग्न हैं। श्री स्वामी व्रतानन्द जी महाराज श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के शिष्य थे और सन् १६१५ के लगभग वे गुरुकुल कागडी के प्रतिष्ठित स्नातक बने। इन स्वामी जी ने और श्री रामप्रताप जी के परिवार ने जो यह ओ३म स्वाहा की पद्धति अपनाई उसका मूल निश्चय ही उनसे पुराना है।

अब इस ओ३म स्वाहा पर जो मामट वक्रदृष्टि हुई है उस विषय मे थोडा विचार करे।

(१) पहला दोष यह लगाया गया है ओ३म स्वाहा बोलकर आहुति देने से होम की मूल भावना मन्त्रो से आहुति देना का लोप हो जाता हैं क्योकि ओकार मन्त्र से भिन्न हैं। यह हेत्वाभास है क्योकि विश्वानि आसुव। मन्त्र तो इतना ही ह। जब स्वाहा लगाया गया तो वह भी मनत्र से भिन्न हुआ कि नही ? यदि कह कि वह तो मन्त्र से बहिर्भूत है ता उससे पहले लगाए गए ओ३म को भी मन्त्र से बहिर्भूत मान लेने पर मन्त्र से ही आहुति क्यो नहीं मानी जाएगी ? फिर जब आप विश्वानि से पहले ओ३म लगाते है तो वह भी तो मन्त्र भाग नही है तो भी आप मन्त्र से आहुति मानते है तो अन्त मे ओ३म लगाने पर मन्त्र स आहुति क्यो नही मानी जा सकती ?

मन्त्रो से ही आहुति देने की बात पर बल दिया जा रहा है। मन्त्र किसे कहते है ? वेदवचन (=ऋचा यजु और साम) ही मन्त्र हैं महर्षि जी ने भी आहुति देने मे वेद मन्त्र को ही मन्त्र माना है। वे वसुभ्यस्त्वा (यजु० २१६) के भावार्थ मे लिखते है – अग्नौयाऽऽहुति क्रियते सा वेद मन्त्रैरेव कर्त्तव्या यतस्तस्या फलज्ञाने नित्य श्रद्धोत्पद्येत और गृह्यसूत्र वेदमन्त्रो से भिन्न अहित एव कल्पित मन्त्रो से भी भरे पडे है। स्वय महर्षि जी के सस्कारविधि मे शतश मन्त्र (?) दिए गए हैं जो वेदमन्त्र (=वेदवचन) नही हैं। 'ओम अधर्माय स्वाहा' ओ विविष्टि यै स्वाहा' ओ कषोत्काय स्वाहा। (सन्यासविधि) आदि वेदमन्त्र नही हैं। वेदो मे अधम विविष्टि कषोत्क का नामोनिशान नहीं है। ये तै०आ० के वाक्य है। जब इन्हे भी मन्त्र मानकर आहुति दी जा सकती है तो क्या ओ३म सहित स्वाहा से नहीं ? क्या ओ३म शब्द अधर्म और कषोत्क से भी बुरा हो गया जो उस पर इतना होहल्ला मचे।

विवाह सस्कार के जया होम मे 'चित चित्ति विज्ञात विज्ञाति इतने एक एक पदमात्र को मन्त्र मानकर आहुति का विधान किया गया है। सन्यास मे भू पदमात्र को मन्त्र नाम देकर पूर्णाहुति कराई गई है तब ओ३म' स्वाहा के साथ लग गया तो उससे पूर्व बोला जा रहा वेदमन्त्र क्या मन्त्र सज्ञा से हीन होकर आहुति लायक नहीं रहा ? कहा जाएगा कि 'चित' भू आदि भले ही वेद में मन्त्ररूप मे नहीं हैं किन्तु वेदमन्त्रो मे वे शब्द आए तो है। इस पर हमारा कथन है कि ओ३म्' शब्द भी तो वेदमन्त्रो मे आया है। यजु० के २१३ मन्त्र मे ओ३म प्रतिष्ठ के रूप मे और ४०१४ मन्त्र मे ओ३म क्रतोस्मर' के रूप मे फिर भू चित्त आदि की तुलना मे ओ३म के श्रेष्ठत्व को देखे। ओ३म का नाम प्रणव इसीलिए रखा गया है कि नाम के द्वारा ही प्रभु की सबसे बढिया स्तुति–गुणवर्णन किया जा सकता है। प्रकृष्टो नव–स्तव–स्तुतिर्येन स प्रणव (प्र+णू स्तुतौ+ अप भावे–प्र+नव (बहु)।

नस्यणत्वे प्रणव। ओम से उन्नीस अर्थ है। वे सब ईश्वरगुणानुवाद मे घटित होते है। समिदाधान का प्रथम अयन्त इध्म और स्विष्टकृत का यदस्यकर्मणा वाक्य का कहीं वेदमन्त्र हैं ? ये आश्वाला गृह्य के वचन हैं जलसेचन के तीन वाक्य भी वदमन्त्र नही हैं। तब फिर ओ३म पर इतना अमन्त्रत्व दाष क्यो ?

(२) दूसरा दोष आकार सहित स्वाहा बोलने के कारण ऋक्त्वनाश हो जाता है अर्थात छन्दो भग होता है । यह भी चिन्त्य है। जब रि के स्थान पर ओ३म बोला जाएगा तो छन्दोभग नही होगा। यदि च स्वतन्त्र रूप से ओ३म बोला जाए तब भी छन्दोभग दाष नही लगेगा। क्योकि जैसे मन्त्र के आरम्भ मे बोले गए ओम से छन्दोभग या ऋक्त्वनाश दाष नहीं होता वैसे स्वाहा से पहले लगाए गए ओ३म' से भी वह दोष नहीं माना जाना चाहिए। यदि आदि मे बोला गया ओम ऋचा से बहिर्भूत है तो स्वाहा के साथ ओ३म भी ऋग्बहिर्भूत है।

(३) तीसरा दोष 'यह शास्त्रविरुद्ध है'।

पहले तो यह सोचना है कि 'शास्त्र के अन्तर्गत कौन से ग्रन्थ हैं ? महर्षि के मतव्यानुसार जो वेद सहिता शास्त्र हैं। उनमे श्रौतसूत्र और गृहसूत्र एव ब्राह्मणग्रन्थ और मानुस्मृति हैं। जबकि पुस्तिका मे 'बृहत पाराशर स्मृति और लघु हारीत स्मृति (पृ० ७–८) के प्रमाण दिए हैं। ऐसा क्यो ?

विरोध भी दो प्रकार का होता है। एक तो जहा जिस बात का या कर्म का निषेध किया गया हो उसको करने का विधान या सम्पादन करना। दूसरा जिस कार्य को जैसे करने का उल्लेख हो उसको छोड देना या न करना। यथा स्वाहा बोलकर आहुति दी जाए। यह विधान है तो स्वाहा बोलकर आहुति दी जाए। यह विधान है तो स्वाह' पद बिना बोले आहुति करना यह विरोध हुआ।

किन्तु यदि यह माना जाए कि शास्त्र मे जो नहीं लिखा हो उसे मानना या करना शास्त्र विरुद्ध है चाहे वह लाभकारी क्यो न हो। तब तो अनेकत्र महर्षि ग्रन्थो मे भी शास्त्रविरोध रूपी दोष लगेगा। (अ) प्रचलित साप्ताहिक सोमवार शनिवार आदि नाम अवैदिक ही नही अभारतीय सर्वथा काल्पनिक है। किसी वेद–ब्राह्मण–कल्पसूत्र–स्मृति आदि शास्त्रो मे तो क्या रामायण–महाभारतादि मे भी इन वारो का उल्लेख नहीं है। वेद मे वार शब्द तो आया है पर सर्वत्र उसका अर्थ अन्न (ऋ १।१२८।६) वरणीय प्रदेश (ऋ १।१५।१५) वरणीय धन (ऋ० ५।१६।२) वरणीय तेज (ऋ० १०।७४।२) आवरक अन्धकार (ऋ० ६।११०।६) आदि हैं। प्रचलित सप्ताहनामो के रूप मे कहीं वार नही है। किन्तु महर्षि जी ने अपन ग्रन्थो मे इन नामो का प्रयोग किया है यथा – अम'या शनिवारेऽय ग्रन्थारम्भ कृतो मया त्रयोदश्या रवोवारे (सस्कार)। गुरोर्वारे प्रात प्रतिपद (यजु० भाष्य०) आदि। तो इस वार प्रयोग से महर्षि जी का यह कार्य क्या शास्त्र विरुद्ध हो गया ?

(ब) कल्पसूत्रो मे हविष्यान्न के रूप म व्रीहि (–चावल) और यव (जा, का विधान है किन्तु महर्षि जी ने हविरन्न म गहू का भी उल्लेख सस्कारविधि मे किया ह। ता कल्पसूत्रो मे गेहू (–गोधूम) का क्वचित भी उल्लेख न होने पर भी महर्षि जी द्वारा उसे हविरन्न कहने से शास्त्र विरोध हो गया ? विदित हो कि तै० ब्रा० (१।३।७।२) मे गोधूम का चषाल (यूपकटक) के निमाणर्थ श्रेष्ठ तो मान' है पर वहा भी हविरन्न का प्रसग नहीं है।

(स) अयत इधम मन्त्र से ५ बार घृत आहुति दी जाती है। यहा पाच सख्या की विद्वानो ने भिन्न–भिन्न व्याख्याए की है। पर किस कल्पसूत्र मे पाच बार का विधान है ? तो क्या यह शास्त्र विरोध हो गया ? फिर यह मन्त्र घृताहुति का है ही नहीं समिदाहुति का है। इध्म कहते ही इन्धन (=काष्ठ=समिधा) का है। यदि कहा जाय कि 'इध्यते प्रदीप्यतेऽग्निरनेनति इस व्युत्पत्ति से धात्वर्थ बल से घृत भी इध्म है तब तो कपूर व्यजन नलिका वायु आदि भी 'इध्म पदवाच्य होगे। फिर किसी वेद मे या वेद भाष्य मे इध्म का अथ घृत नहीं किया गया है। महर्षि जी ने जितना वेदभाष्य किया है उसमे ६ या ७ बार इध्म शब्द आया है पर कहीं भी उसका अर्थ घृत नहीं किया गया है। फिर दो मिनट पूर्व ही जिस मन्त्र को समिध की आहुति मे प्रयुक्त किया गया है।

उसे तुरन्त घृताहुति के रूप मे प्रयुक्त करना कैसे प्रशस्य है ? हा यदि वेद मे घृत पद वाले मन्त्र नहीं होते तब तो इस मन्त्र से भी काम चलाया जा सकता था। किन्तु जब वेद मे अनेक मन्त्र घृतपदबहुल है तब घृताहुत्यर्थ इध्म वाले मन्त्र का प्रयोग चिन्त्य ही है। उदा आयुष्मानग्ने हविषा वृधानो घृत प्रतीको घृतयोनिरेधि घृत पीत्वा मधु चारु गव्य पितेव पुत्रमभि रक्षतादिमान्त्स्वाहा' यजु० ३५।१७)। क्या शास्त्रानुमत न ... म किसी ने महर्षि जी के इस विधान ... शास्त्र विरुद्ध करार दिया जाए ?

शेष पृष्ठ ८ पर

प्राण में भेद

– हरिशचन्द्र वर्मा 'वैदिक'

एक प्राण वह है जिससे समस्त प्राणी जगत श्वास–प्रश्वास लेते और दूसरा प्रणव है जिसे प्राणेश्वर कहा जाता है इस प्रणव को ओम भी कहते है जिससे प्राणी श्वास–प्रश्वास लेते हैं वह एक शक्ति है। यह शक्ति सर्वत्र विद्यमान है उसी से जठराग्नि प्राणियो के शरीर के अन्दर विद्यमान रहता है और जठराग्नि से ही प्राणियो के हृदय की गति यन्त्र अविरत चलती रहती है। जीवन कायम रहता है। प्राणियों के प्राण में आत्मा है उसका अटूट सम्बन्ध रहता है आत्मा के न रहने पर प्राणियो का प्राण जो एक सूक्ष्म शक्ति है वह आत्मा के साथ चला जाता है। तात्पर्य यह कि जब आत्मा का शरीर से किसी कारणवश प्रयाण होता है तब वह अपने प्राणो को साथ लेता है और प्राणि मर जाते है। प्राण और आत्मा दोनो अमर है। आत्मा एक अत्यन्त सूक्ष्मशक्ति है। आत्मा जहा जाता है वहा उसके साथ सभी मौलिक तत्व अर्थात शरीर रचने वाली शक्तिया उसके साथ चली जाती है। जिस प्रकार रानी मधुमक्खी के साथ और मधुमक्खिया रहती है उसी प्रकार आत्मा की शक्तिया। जैसे रानी मधुमक्खी जहा अपनी नई दुनिया बनाने उठती है वही उसके साथ अन्य रानी और मधुमक्खिया उसके घर बनाने मे जुट जाती है। उसी प्रकार जब आत्मा का शरीर से सम्बन्ध होता है तब उसका जीवन कार्य प्रारम्भ होने लगता उसका प्रथम शरीर वीर्य कोश मे उत्पन्न होने लगता है। दूसरा जन्म माता गर्भाशय मे पलता है और तीसरा जन्म माता के गर्भ से इस दुनिया मे आता है। तब उसका प्राण वायुमडल से श्वास प्रश्वास लेने लगता है। अत प्राण की क्रिया प्रारम्भ हो जाती है। परन्तु इसके पहले धीरे धीरे उसकी जैसी योनि रहती वैसा ही उसके गर्भ मे ही सर्वाग बनने लगते हैं और अन्दर की शक्ति बाहर के मूलतत्व उपादनो को आकर्षित कर सूक्ष्म शरीर के द्वारा स्थूल शरीर का वह आत्मा विकास करने लगता है। अत आत्मा मूलतत्व के द्वारा ही शरीर की रचना करता है। वेद ने भी कहा है –

पचौदन पचधा (अथर्व नवम काण्ड)

पाच भूतो से खींचा हुआ (जीवात्मा) पाच प्रकार (गध रस रूप स्पर्श शब्द) तीन (शरीर इन्द्रिय और विषय) ज्योतियो (दर्शन साधनो) को पाने की इच्छा करता हुआ विक्रम (पराक्रम) करे।

अत प्राण जीवात्मा का उपकरण है प्राण का कार्य है गर्भ के लिए अण्डे को उत्पन्न करना और शरीर के अन्दरूनी क्रियाओ को सक्रिय रखना और जीवात्मा का कार्य है आयु के अनुसार प्राण से युक्त होकर कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेन्द्रिय को सक्रिय रखना जब पूर्व जन्म के अनुसार प्राण का कार्य समाप्त हो जाता है। तब उसकी क्रिया बन्द हो जाती है और तब श्वास प्रश्वास भी बन्द हो जाता है और जब आत्मा का उपकरण काम न करने के कारण वह स्वय इस स्थूल शरीर से पृथक हो जाता है। (मृत्यु का कारण दो होते है एक बीमारी और दूसरा दुर्घटना। पर अपने ऊपर दोष नहीं लेता।)

मृत शव मे न आत्मा रहता है न प्राण। किन्तु उदभिज मे प्राण रहता है इसलिए उसमे केवल कतृत्व और भोकतृत्व के गुण पाए जाते है।

दर्शन शास्त्र मे लिखा है कि – प्राण अपान पलक मीचना पलक खोलना जीवन यह सब प्राण के धर्म हैं। स्पन्दन को ही प्राण कहते है। फैलना और सिकाडना इस प्रक्रिया की सज्ञा स्पन्दन है जो वैज्ञानिक कथन के समकक्ष है। जिसे ऋषियो ने इस प्रकार की है। प्राण वै समचन प्रसारणम। (शतपथ ८/४/१०) फैलन सिकाडना कन्ट्रेक्शन एक्सपैन्शन यह सब क्रियाए शरीर के अतिरिक्त उदभिज मे भी है।

अथर्ववेद मे क्लारोफिल का वर्णन मिलता है। इसमे क्लारोफिल के लिए यति (रक्षकतत्व) शब्द आया है इसकी विशेषता बताइ गई है इसके कारण वृक्ष वनस्पतिया मे हरियाली रहती है।

अविर्वैनम देवता ऋते नारते परीकता। तस्या रुपेण इम वृक्षा हरिता हरितराज। अर्थ० १०/८/३१)

अथर्ववेद का कथन है कि वृक्षो मे प्राण है और सास लेते है। महदब्रह्मयन प्राणन्ति वीरुध। अर्थव० १/३२/१

यहा तक मैने प्राण के सम्बन्ध मे कहा कि जीवात्मा से परे वृक्ष मे भी प्राण है। दूसरा मूर्त्त और अमूर्त्त सार जड पदार्थों मे भी प्राण विद्यमान है सभी वह सक्रिय रहते है। प्राण प्रदाता। प्रणव अथात ईश्वर है वह भी प्राण स्वरूप है किन्तु इतना सूक्ष्म है कि उसे अभातिक ही कहा जा सकता है वह सवत्र व्यापक है वह इन प्राणो मे भी व्यापक है

तभी तो उनमे उस प्रेरक शक्ति का सचार होता रहता है। वहा परमेश्वर सर्वशक्तिमान है वह सारे दृश्य अदृश्य शक्तिया के प्रकाश मे विद्यमान है। प्रकाश के तरग इस भौतिक प्राण के आधार पर ही होता रहती है वह प्रणव प्राण जैसा विभिन्न प्रकार का नहीं है वह तो एक महान और अनन्त सवत्रपूर्ण है। आत्मा शक्ति का जो ज्योति दिखलाई देता है वह उसमे भी विद्यमान है जो साधक उस ज्योति मे अपने योगबल से प्रवेश करते हैं वही जानते हैं कि वह कितना आनन्द स्वरूप है। और उसका सत्य कितना महान है।

वह क्या है – वह भू प्राणस्वरूप और पृथ्वीलोक का नियन्ता है। (भुव) सर्वदु ख नाशक और अन्तरिक्ष लोक का नियन्ता है। (स्व) आनन्दस्वरूप वह स्वर्ग (मुक्ति जगत) का नियन्ता है। (मह) वह महान और और महत् लोको का नियन्ता है। (जन) वह सबका उत्पत्तिकर्ता सबका प्रेरक और पोषक है। (तप) वह तेज स्वरूप औरप्रवर्तक है। (सत्यम) वह सत्यस्वरूप और सर्वापरि है।

अत इन सप्त महाव्याहृतियो मे उसका गुण क्रिया और स्वभाव विद्यमान है। वेद का उपदेश है कि –

अप्सु ते जन्म दिवि ते सधस्थ समुद्रे अन्तर्महिमाते पृथिव्याम।

शुनो दिव्यस्म यन्म हस्तेन ते हविषा विधेम।। (अथर्व० ६/३)

पदाथ – (अप्सु) प्राणो मे (हे परमेश्वर)(ते) तेरा (जन्म) प्रादुर्भाव है (दिवि) सूर्यमडल मे (ते) तरा (सधस्थम) सहवास है (समुद्रे अन्त) अन्तरिक्ष के भीतर और (पृथिव्याम) पृथिवी मे (ते) तेरी (महिमा) महिमा है। (शुन) व्यापक (दिव्यस्य) दिव्यस्वरूप परमेश्वर का (यतमह) जा महत्व है (तेन) उसी (महत्व) से (त) तेरे लिए (हे परमेश्वर !) (हविषा भक्ति के साथ (विधम) हम सेवा करे।।३।।

परमेश्वर की रचना का ज्ञान अनन्त है उसने प्राणियो के केस अस्तित्व मे प्रकट किया उसके पहले उसे रचने की सामग्री जो उपादाने है उन्हे पहल रचा जैसा कि वद ने सक्षिप्त रूप से वर्णित किया है।

'वातो वा मनो वा गन्धर्वा सप्तविशति (यजु० नवमाध्याय)

जो एक समष्टि वायु प्राण अपान व्यान उदान समान नाग कूर्म कृकल देवदत्त और धनञ्जय (एकादश) बारहवा मन तथा इसके साथ श्रोत आदि दश इन्द्रिय और पाच सूक्षमभूत ये सब २७ पदार्थ ईश्वर ने इस जगत मे पहल रचे है

इस प्रकार प्रकृति से बने तत्वो उनसे परे जीवात्मा और उनसे परे परमश्वर है। तात्पर्य यह है कि उन्ही सबके द्वारा उस परम माता–पिता परमात्मा को हम लोग जान रह है। और उसके महिमा को देखकर हम सब उनकी प्राप्ति के लिए सन्ध्यापासना और यज्ञादि शुभ कर्म कर रह है।

विभिन्न प्रकार की शक्ति विभिन्न प्रकार की सृष्टि विभिन्न प्रकार के प्रकाश और विभिन्न प्रकार के मौलिक सात रग (बैगनी नीला आसमानी हरा पीला कमला और लाल) जिनके सयोग वियोग से अन्य रग प्रकृति मे बनते हैं और इन सबके अलावा इस शरीर के रचना करने मे जो विभिन्न प्रकार के उपादानो न कार्य कर – रस रक्त मास मेदा अस्थि मज्जा एव शुक्र। इसके अतिरिक्त स्नायु शरीर के जोड मस्तिष्क आदि को जिसने अस्तित्व मे प्रकट किया है वह कौन हो सकता है? भूत के भीतरी ढाचा को वैज्ञानिको ने कण तरग कहा है जो निरे जड पदार्थ हैं उनमे स्वय गति और परिवर्तन होने की शक्ति नहीं है तो उन्हे कौन सक्रिय किया और करता है उन सब शक्तियो को कहा से प्रेरणा मिलती है। तात्पर्य है कि इस शरीर की रचना और समुद्र के विचित्र जीव जन्तुओ को बुद्धिपूर्वक किसने कैसे इनकी साचा को बनाया। बनाने वाले का क्या प्रयोजन था और आदि मे ये कैसे बन गए? क्या इन सबका उत्तर विज्ञान दे सकता है? अभी बहुत से ब्रह्माण्ड मे अनजाने मे सृष्टियो का निर्माण हुआ अथवा हो रहा होगा उसका कर्म कार्य कारण खोजने से पता चलता है कि एक प्रभाव एक प्रेरणा एक विज्ञान से पूर्ण एक नियम है जो वह सर्वव्यापक सर्वत्र चुम्बक जैसा पूर्ण अदृश्य है जिसे आत्म विश्वासी और योगी लोग ही ध्यान द्वारा देख सकते हैं और वह तभी देखा जा सकता है जब मन को परिवर्तन से रोक दिया जाता है। क्योकि सभी भौतिक परिवर्तनशील हैं किन्तु जो अपरिवर्तनशील हैं उसकी प्राप्ति के लिए अपने मन और वृति को रोकते रहने से अभ्यास द्वारा जिस समय साधक का मन एक स्थिर हो जाता है उस समय वह उसके आनन्द स्वरूप प्रकाश को देखने लगता है। किन्तु जिस प्रकार हिलते हुए तरगजल मे अपने स्वरूप को कोई नहीं देख सकता उसी प्रकार उसे भी बाहर की भौतिक सृष्टि अथवा सासारिक माया मे फसा हुआ मन उसे नहीं देख सकता। उस अभौतिक ज्योति को देखने के लिए स्वय का अन्दर की ज्ञान दृष्टि को स्थिर करना होगा और जब ध्यानियो का ध्यान उसकी महानता के प्रेम मे मग्न हो जाता है तब उसका मन एकाग्र होने लगता है। किन्तु जब तक प्राण चलायमान रहेगा तब तक उसम व्यापक उस महान ज्योति का कोई भी ध्यानी नहीं देख सकता। जब मन और प्राण स्थिर होने लगता है तभी उस आत्मशक्ति के अन्दर जो विद्यमान है उसका दर्शन होने लगता है किन्तु किञ्चित मन मे परिवर्तन होने से वह नहीं दिखता। यह सब कार्य बहुत साधना और आहार विचार तथा मन की शुद्धि से सिद्ध होता है। गलत साधना से तर्क से ढक ढाल बजाने से अथवा तीर्थ करने से वह प्राप्त नही होता (गीता मे लिखा है)। इसके लिए किसी ज्ञानी वैदिक गुरु की आवश्यकता होती है जो ठीक ठाक साधना का नियम बताकर करा सके।

गुरु क्या है? एक दर्पण के समान है उदाहरण के लिए मुख पर लगे दाग को स्वय नही दीखता। किन्तु गुरु के सामने जाने से वह त्रुटि दाग दोष दिखलाई दने लगता है और उसे छुडाने के लिए वह आचार्य उपाय बता देते है। इस प्रकार शुद्ध हो जाने पर आचार्य की कृपा और प्रतिभा से वह स्वय को समझाने लगता है और उस शिष्य मे एक परिवर्तन हो जाता है बुद्धि विचार शुद्ध होने लगता है।

अब शरीर के चक्र के बारे मे थोडा जानकारी कर लेना ठीक है। चक्र क्या है? हारमोन्स अर्थात सूक्ष्म स्नायु और प्राणो का स्थान है। इनके जागृत हो जाने पर अज्ञानी भी ज्ञानी हो जाता है और भी अन्य सिद्धिया प्राप्त हो जाती है। वैदिक सम्पदा मे लिखा है कि – वेद ने इस शरीर मे ८ चक्रो की स्थिति बताई है। इन चक्रो का सम्बन्ध सुषुम्णा नाडी से है। सुषुम्णा का अधोमुख भाग भौतिक प्राण शक्ति के चक्रो मे क्रमश भेदन के लिए प्रवेश का द्वारा है और मस्तिष्क मे कपालो की मध्यसन्धि भाग मे सुषुम्णा का दूसरा द्वार ब्रह्मरन्ध्र मे है। ब्रह्मरध्र मे से इस दिव्य प्रकाशमय ज्ञानमय प्राण का शरीर मे प्रवेश होता है जो सविता से इस लोक पर अवतरित होता है। वहा सहस्रार चक्र है। योगी जन इसी मार्ग से ब्रह्मरध्र से प्राणो का विसर्जन करके सूर्य मण्डल को भेदकर (यह आध्यात्मिक सूर्य है जो सूर्य दिखता है वैसा ही उसका प्रतिबिम्ब के समान होतो है जो जलाने वाला नहीं होता) परमधाम का प्राप्त करते हैं। इन दोनो द्वारो के ज्ञान से ही सुषुम्णा मार्ग मे प्रवेश करने से अष्ट चक्रो का दर्शन एव ज्ञान हो पाता है। (पृष्ठ ४१)

पुन पृष्ठ ५५ पर लिखा है कि 'दीर्घ जीवन प्राणो पर ही आश्रित है। स्वास्थ सम्पादन प्राणो पर ही आश्रित है। जीवन सुख प्राणो पर ही आधारित है। प्राण ही जीवन है। प्राण और मन दोनों ही मिलकर इस काया रूपी अपूर्व नगरी को स्वर्ग एव नरक बना रहे हैं। इन्हीं से यह दह देव बन जाता है और इन्हीं से असुर और राक्षस भी बन जाता है। (वैदिक सम्पदा)

– मु०पो० मुरारई,
जिला वीरभूम (प० बंगाल)

मांसाहार मनुष्य का स्वाभाविक भोजन नहीं

– डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री

सृष्टि के आदि मे जब भी मानव पैदा हुआ होगा तब उसने सर्व प्रथम भोजन फल और पत्तियो का किया होगा क्योकि ये सीधे दातो से खाये जाते हैं। मनुष्य के दातो की बनावट मासाहारी प्राणियो से अलग है। कोई भी मनुष्य आज भी किसी प्राणी को बिल्ली शेर भेडिया आदि मासाहारी प्राणियो की तरह सीधा प्राणी को पकड के उसका कच्चा मास खाकर भोजन के बिना अर्थात अन्न दाल सब्जी दूध आदि शाकाहार के बिना जीवित नही रह सकता। सृष्टि के आदि से लेकर अब तक जो शाकाहारी प्राणी है वह शाकाहार ही कर रहा है तथा जो मासाहारी प्राणी है वह मासाहार ही कर रहा है। शेर घास नहीं खाता और घोडा मास नहीं खाता।

परन्तु मनुष्य मास भी खा रहा है और फल पत्तिया भी खा रहा है। जब कि इसका स्वाभाविक भोजन शाकाहार ही है अत मास नहीं खाना चाहिए। मनुष्य केवल मास खाकर जीवित भी नहीं रह सकता। मनुष्य को मास क्यो नहीं खाना चाहिए ? इसका पहला हेतु तो प्राकृतिक है। तदनुसार जीभ से चप चाप करके पानी पीने वाले कुत्ता बिल्ली सिह व्याघ्र आदि जीवो के लिए ही मास प्राकृतिक भक्ष्य हो सकता है। इश्वर ने उनके दात दाढ और नाखून तथा आमाशय आदि सभी अग वैसे ही बनाए है। परन्तु घूट कर पानी पीने वाले गाय भेस वानर घोडा मनुष्य आदि जीवो के लिए मास स्वाभाविक भोजन नही है। क्योकि इनके अग मासाहारियो की तरह नोचने कुचलने और चीडफाड करने योग्य नही हैं। इसी कारण मनुष्य को छोडकर अन्य काई घूटकर पानी पीने वाला जीव स्वभावत मासाहारी नहीं हैं। इसलिए मनुष्य को प्रकृति के नियमो को भग करने का अपराधी नही बनना चाहिए।

मासाहारी आध्यात्मिक उन्नति से वचित

मास तमोगुणी आहार है। तमोगुण व्यक्ति को आलसी बनाता है तथा अविद्या मे डाले रहता है। मास खाने मे हिसा होती है। योगी बनने के लिए सबसे पहली सीडी अहिसा है। अत हिसक मासाहारी व्यक्ति के शरीर के अन्त करण के परमाणु पशुतामय हो जाते हैं। उसमे सत्विक गुणो का विकास नहीं होता। सात्विक बुद्धि ही – कर्त्तव्य अकर्त्तव्य नित्य अनित्य प्रवृत्ति निवृत्ति भय अभय बन्धन तथा मोक्ष को समझती है।

गीता मे यही कहा है –

प्रवृत्ति च निवृत्ति च कार्याकार्ये भयाभये।
बन्धं मोक्ष च या वेत्ति सा बुद्धि पार्थ सात्विकी।।

तमोगुणी बुद्धि के विषय मे गीता मे कहा है – कि तमोगुणी बुद्धि हर बात को उल्टा समझती है। वह सत्य को असत्य और असत्य को सत्य मानकर काम करती है। ऐसा व्यक्ति समाधि अवस्था तक कैसे पहुचेगा। अत मास नहीं खाना चाहिए।

मास खाने से बीमारिया बढती है।

मास खाने मे भारी होता है। मनुष्य उसे खाता है पर पूरी तरह से पचा नहीं पाता है। मासाहारी का रक्त गाढा हो जाता है। रक्त की गति नार्मल नहीं रहती अत हार्ट पर उसका दवाब पडता है। मासाहारी की सास जल्दी फूलती है। मासाहारी म वे बीमारिया घर कर लेती हैं जो मास वाले मे थी मास से बौद्धिक रोग उत्पनन होते हैं। यूरोप मे गाय का मास खाने से बुद्धि के रोग उत्पन्न हुए लाखो गाए इसी कारण से मार दी गई। अब यूरोपवासी डाक्टरो की सलाह से शाकाहारी अधिक होते जा रहे हैं। भारतवासियो को पता नही अक्ल कब आएगी।

मासाहार का निषेध सभी सन्तो ने किया है।

महात्मा बुद्ध ने हिसा का विरोध किया। बधमान महावीर ने हिसा का विरोध किया। सिख सन्त गुरुओ ने मासाहार का विरोध किया। कबीर आदि सन्त गुरुओ ने मासाहार का विराध किया। सन्त कबीर जी तो यहा तक लिखते ह –

मुसलमानो को कहते है–

दिनभर रोजा रखत हैं रात हनत हैं गाय।
यह खून वह बन्दगी कैसे खुशी खुदाय।।

पशु काटने वालो के विषय मे कबीरदास कहते है –

कबिरा तेरी झोपडी गल कटियन के पास।
करनगे सो भरनगे तू क्यों भयो उदास।।

तथा –

जो बकरी पाती खात है ताकी काढी खाल।
जो नर बकरी खात है ताको कौन हवाल।।

महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट मासाहार का निषध किया हे

महर्षि दयानन्द एव मासाहार निषेध

महर्षि सत्यार्थ प्रकाश के दशम समुल्लास मे भक्ष्य और अभक्ष्य के विषय मे लिखते है –

वर्जयेत मधुमास च। मनु

अर्थात शराब और मास को छोड देवे। आगे लिखते है – मधमासाहारी म्लेच्छ कि जिनका शरीर घघ मास के परमाणुओ से पूरित है उनके हाथ का न खावे। वहीं पर आगे लिखते है – जब से विदेशी मासाहारी इस देश मे आके गो आदि पशुओ के मारने वाले मद्यपानी राज्याधिकारी हुए है तब से क्रमश आर्यों के दु ख की बढती होती जाती है।

वहीं पर स्वामी जी लिखते है – जितना हिसा और चोरी विश्वासघात छल कपट आदि से पदार्थों को प्राप्त होकर भोग करना है वह अभक्ष्य है।

सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास मे महर्षि लिखते हैं – वेद विरुद्ध महा अधर्म के काम हैं उन्हीं को श्रेष्ठ वाममार्गियो ने माना है। मद्य मास मीन मुद्रा और मैथुन।

१२ वे समुल्लास मे महर्षि लिखते हैं – जो मास खाना है यह भी उन्हीं वाममार्गी टीकाकारो की लीला है इसलिए उनको राक्षस कहना उचित है।

प्रमाण भाग

अथर्ववेद में मासाहार का निषेध देखे –

य आम मासमदन्ति पौरुषेय च ये क्रवि ।
गर्भान खादन्ति केशवास्तानितो नाशयामसि।

अथर्व ८–६–२३

अर्थात जो कच्चा या पकाकर मास खाते है जो अण्डे खाते है। चूजे खाते है उनका विनाश करे।

अथर्व वेद मे ही लिखा है कि मास खाने वाले शराब पीने वाले जूआ खेलने वाले तथा वैश्यागामी का मन मर जाता है ऐसा व्यक्ति भौतिक उन्नति तथा आध्यात्मिक उन्नति इन दोनो से हीन हो जाता है।

देखिए –

यथा मास यथा सुरा यथाक्षा परिदेवने।
यथा स्त्रिया विषण्यते मन निहन्यते।।
मास तदेव नाश्नीयात। अथर्व वेद।

मास को न खावे।

नमासमश्नीयात।

तैत्तिरीय – ११६७

मास को न खावे।

मनुस्मृति (५–५५) मे लिखा है

मास भक्षयिताऽमुत्र यस्यमासमिहाद्म्यहम।

अर्थात मास का नाम मा+स इसलिए है जैसे मै इसका इस जन्म म खा रहा हू अगले जन्म मे यह मुझ खायेगा। यह मास शब्द का अर्थ है।

मनुस्मृति मे ही लिखा हे –

वर्षे वर्षेऽश्वमेधेन यो यजेत शत समा ।
मासानि च न खादेद्यस्तयो पुण्य फल समम।। मनु० अ० ५

जो सा वर्ष तक प्रतिवर्ष अवश्वमेद्य यज्ञ करता है।

ओर जो सब प्रकार का मास नही खाता इन दोनो का पुण्य फल समान हे।

न कृत्वा प्राणिना हिसा मास उत्पद्यत क्वचित।

न च प्राणिवध स्वर्ग्यस्तमानन्मास विवजयेत।। मनु०अ० ५

यज्ञरक्ष पिशाचान्न मद्य मास सुरासवम।
तद ब्राह्मणेन नात्तव्य देवानामश्नता हवि ।।

मनु० ११९५

बिना जीव मारे मास नहीं मिल सकता और प्राणियो को मारना स्वर्णप्रद नही है अत मास का परित्याग कर देना चाहिए।

यज्ञ राक्षस और पिशाचो के भक्ष्य पदार्थ मद्य मास शराब है ये सब वस्तुए देवहव्य को खाते हुए अर्थात यज्ञ शेष को खाते हुए भक्षण करने योग्य नही हैं।

अपने अपने महापुरुष की बातो को मानो

भारतीय साहित्य मे मासहार का निषेध है। जहा जहा भारतीय साहित्य मे पशुबलि या मास खाने की बात मिलती है वह केवल मासाहारियो की शरात है उन्होने अपने स्वार्थ के लिए साहित्य मे मिलावट कर दी है। ऋषियो को भी बदनाम किया है। आज भी मासाहारी पुजारी मन्दिरो मे पशुबलि का समर्थन करते है। जैसे कलकत्ता नगरी मे काली के मन्दिर मे तथा काठमाण्डू मे शिव के मन्दिर मे आज भी पशु बलि दी जाती हैं। काश्मीर के मासाहारी ब्राह्मण आज भी शिव को मीट का शिवरात्रि पर भोग लगाते हैं। अपने स्वार्थ के लिए ऐसे ही मासाहारियो ने भारतीय साहित्य मे मिलावट कर डाली है जो मान्य नहीं है।

महात्मा बुद्ध ने मासाहार का विरोध किया परन्तु उनके अनुयायी आज मास खा रहे है।

वर्धमान महावीर ने मास का विरोध किया परन्तु आज जैनी भी मास खाते हैं।

महर्षि दयानन्द ने मासाहार का और पशुहिसा का डटकर विरोध किया परन्तु आर्यसमाज मे एक घास पार्टी और दूसरी मास पार्टी प्रसिद्ध हुई। दुर्भाग्य है आज भी मासाहारी आर्यसमाज विद्यमान है। जो मास नही खाते ऐसे सच्च आर्यसमाजी भी आज अधिकाश मे विद्यमान है। विशेषकर गुरुकुलीय शिक्षा तो मास शराब और नशे का प्रबल विरोध करती है। आर्यसमाज का सदस्य बनन के लिए यह प्रतिज्ञा करनी आवश्यक है कि मै मास शराब नशा और कदाचरण को नही अपनाऊगा/पूर्णत इन बुराइयो का न छोडने के कारण ही आर्यसमाजिया का सही आध्यात्मिक योगी ईश्वर भक्त साधक का जीवन नही बन पा रहा है। ज्ञान का प्रचार तो बहुत है परन्तु उसे व्यवहार मे नही लाया जा रहा है। यह निर्विवाद सत्य है कि जिस परिवार के बुजुर्ग सच्च अर्थो म धार्मिक और सच्चरित्रवान होंगे अपने बच्चो के लिए अपना आदर्श जीवन प्रस्तुत करेंगे तो निश्चय ही उनके बच्चे भी अनुव्रत पितु पुत्र इस वेद वाक्य के अनुसार सच्चरित्र और धार्मिक बनगे व सच्चे आर्यसमाजी भी बनेगे। मैने ऐसे अनेक परिवारो को देखा है जिनमे इस परम्परा का पालन हो रहा है। ऐसे परिवार भी देखे हे जिनके बुजुर्ग आर्यसमाज के जीवन भर प्रचारक रहे परन्तु अपना जीवन क्रियात्मक नही रहा सच्चे अर्थो म साधक नहीं बन न आर्य ही बन उनके परिवारो म विनाश का दृश्य देखने को मिला है। उनके बच्चे जब अपने पिताजी का चरित्र पतित रूप मे देखते है तो वे बच्चे मा बाप का न तो कहना मानते है और न आर्यसमाज मे आते है। जो प्रचारक स्वय नशा करेगा या व्यभिचारी होगा उसे उपदेश देने का कोई अधिकार नहीं है। आर्यसमाज केवल मूर्ति पूजा न करने वाली सस्था नहीं है इसका साधकीय जीवन से सच्चरित्रता से सत्य व्यवहार से न्यायप्रियता से गहरा सम्बन्ध है। यदि ये व्यवहारिक बाते जीवन मे नही है तो कुछ भी नहीं है।

आर्यसमाज के अधिकारी वर्ग भी सच्चरित्र दुर्गुण दुर्व्यसनो से दूर न्यायप्रिय सत्यवादी ईश्वर भक्त और साधक होने चाहिए तभी उनका प्रभाव अपने परिवारो पर तथा जनता पर पडता है ऐसे अधिकारी और प्रचारक जिस आर्यसमाज मे होगे उस आर्यसमाज का सम्पर्क आम जनता से बना रहेगा और आर्यसमाज के हाल भी साप्ताहिक सत्सगो मे भरे हुए पाए जाएगें।

परन्तु दुर्भाग्य है आर्यसमाज के कि ऐसे अधिकारी भी पैसे के बल से या हथकाण्डो से बन जाते हैं जिनका जनता मे कोई आधार नहीं होता। न उनके बच्चे ही उनकी बात मानते हैं क्योकि बच्चे अपने माता–पिता की कथनी और करनी मे अन्तर पाते है। ऐसे चरित्रहीन अधिकारियो का अपने परिवार पर ही प्रभाव समाप्त हो जाता है। आर्यसमाज के हालो मे सख्या की कमी का एक यह भी प्रबल कारण है। एक आर्य समाज मे एक व्यक्ति चालबाजियो से २० वर्ष तक प्रधान बन चुके हैं परन्तु उनके बच्चे आर्यसमाज मे नहीं आते। कितना बडा यह आर्यसमाज का दुर्भाग्य है। ऐसा क्यो?

हम सच्चे अर्थों मे आर्य बने और सच्चे अर्थों मे आध्यात्मिक जीवन बनावे। जब ऐसा हो जाएगा तब आर्यसमाजो के झगडे भी समाप्त हो जाएगा और जनता मे आर्यसमाज का विश्वास भी जागेगा। भगवान सभी को सद्बुद्धि दो।

– मकान न० १३२ पुराना हस्पताल जम्मू

पृष्ठ ५ का शेष भाग

मुम्बई यज्ञ के 'ओ३म् स्वाहा' पर लेखान्दोलन !

(द) कल्प सूत्रो (=कात्या श्रौ० २१२ ७३२१ २१४१३३१०) के अनुसार ओम प्रजापतये और ओम इन्द्राय मन्त्र आपाराहुति के और ओम अग्नये तथा ओं सोमाय मन्त्र आज्याभागाहुति के हैं किन्तु महर्षि जी की सस्कारविधि मे शास्त्र से विपरीत विधान है तो क्या इसे शास्त्र विरोध कहकर किसी ने आन्दोलन किया ?

(य) किस शास्त्र मे लिखा है कि वेद मन्त्रो के शब्दो का स्वरूप बदल दिया जाए और तदनुसार अर्थ कर दिया जाए। गृहाश्रम प्रकरण के २१ २२ २३ मन्त्रो मे अथर्ववेद के सृष्टा श्रिता आवृता प्रावृता परीवृता परिहिता पर्यूढा गुप्ता और प्रतिष्ठिता इन स्त्रीलिग प्रथमा विभक्ति के एकवचन के रूपो को पुलिग प्रथमा बहुवचन बना दिया गया और तदनुसार अथ भी कर दिया गया। अथर्व० १२५ १–३ मन्त्रो के ये शब्द वस्तुत ब्रह्मगवी के विशेषण है। और अतएव स्त्रीलिग प्रथमेकवचन के ही रूप है। शास्त्रविरुद्ध होने से या किसी ने विरोध का झण्डा खडा किया ? इत्यादि को शास्त्रानुमत न होने पर भी जब सहन किया जा रहा है तब ओ३म स्वाहा' पर असह्यता क्यो दिखाई जा रही है ? माना कि कल्पसूत्रादि मे ओ३म स्वाहा का विधान नहीं है पर स्वाहा से पूर्व ओ३म लगाने का निषेध भी तो कही नही किया गया है। जिन महानुभवो ने इसे आरम्भ किया होगा लाभ की दृष्टि से ही तो किया होगा।

(४) **चतुर्थ दोष** यह बताया गया के 'स्वाहा से पहले ओ३म लगाना वेद वेरुद्ध है क्योकि वेद मे स्वाहाकृत ¬विरदन्तु देवा कहा गया है (पृ० २५)। यहा प्रथम तो यह विचारणीय हे कि स्वाहा कृतम पद मे 'स्वाहा का शब्दरूप ने प्रयोग है अथवा अर्थरूप मे ? महर्षिजी ने यहा 'स्वाहा का शब्द रूप प्रयोग नहीं माना है। ऋग्वेद (१० ११० ११) का यह मन्त्र यजुर्वेद (२६ ३६) मे भी है। वहा महर्षि जी ने स्वाहाकृतम' का अर्थ 'सत्येन नेष्पादित कृत होम वा (=सत्यव्यवहार ने सिद्ध किए वा होम किए से बचे) अर्थ केया है। ऐसी स्थिति मे विदुषी जी का केया अर्थ चिन्त्य ही है। किच यदि मान ी लियजाए कि स्वाहाकृतम मे 'स्वाहा ाब्दरूप ही है तब भी उससे ओ३म ाथ लगाने का खण्डन नहीं होता। क्योकि ऊपरि उदधृत चतुर्थ चरण से पूर्व मन्त्र का ।र्तीय चरण है – अस्य होतु दिशि+ऋतस्य वाचि' अस्य ऋतस्य होतु दिशिवाचि' (उच्चारिताया) स्वाहा कृत वि देवा अदन्तु ऐसा अर्थ लगा। दिशिवाचि का अर्थ हुआ प्रदिष्ट=निर्दिष्ट ाणी के प्रयुक्त होने के पश्चात 'स्वाहा' कृत=स्वाहा शब्द लगाकर दी गई हवि का=हविराहुति का देव लोग उपभोग करें। यह निर्दिष्ट वाक क्या है ? वेदवाक ही तो। क्या ओ३म' शब्द वेदवाक के अन्तर्गत नहीं है ? अत 'स्वाहा कार से पूर्व ओ३म' लगा दिया तो वह वेद विरुद्ध कैसे हो गया।

(५) **पञ्चम दोष** बताया गया कि पिछले महासम्मेलनो मे कभी ओ३म स्वहा नही बोला गया अपनी व्यक्तिगत पहचान के लिए कुछ भी आदि। यह बात भी सर्वाश मे सत्य नही है। सन १९६८ मे हैदराबाद के नुमाइश मैदान मे हुए आर्यमहासम्मेलन मे आयोजित पारायणयज्ञ के ब्रह्मा श्री आचार्य कृष्ण जी (= वर्त्तमान मे स्वामी दीक्षानन्द जी) थे। तब पारायण वेद मन्त्रो के अन्त मे ओ३म स्वाहा बोलकर आहुति दी गई थी। वेदपाठियो मे श्री ज्ञानेन्द्र जी श्री सत्यप्रिय जी आदि के अतिरिक्त इन पक्तियो का लेखक भी था। उस महासम्मेलन मे सर्वश्री विश्वश्रवा जी श्री धर्मदेवजी वि०मा० श्री मीमासक जी आदि भी आए हुए थे। सम्भावना थी कि वे ओ३म स्वाहा का विरोध करेगे। पर वैसा नहीं हुआ। यदि विराध किया जाता तो समाधान कर दिया जाता।

(६) **षष्ठ दोष** यह बात कही गई कि फिर मध्य भाग मे भी ओ३म लगाइए आदि (पृ०२७)। यह कोई बात नहीं है कि स्वाहा से पहले ओ३म लगा दिया तो मन्त्र मध्य मे भी लगाया जाए। मन्त्र का अपना कथ्य है उसके मध्य मे लगाने की आवश्यकता नहीं है। और यदि सम्भव हो तो वहा लगाया ही जाता है। क्या महर्षि जी ने मन्त्रो के अन्तर्गत आए पदो के आरम्भ मे ओ३म लगाकर अनेक मन्त्र अहित नहीं किए ? देखिए यजु (३६) के मन्त्र के छ मन्त्र बनाकर उनमे छ बार ओ लगाया कि नहीं ? यजु० (यजु० २२ २०) के एक मन्त्र काय स्वाहा शिपिविष्टाय स्वाहा के १७ मन्त्र (वानप्र० सस्कार मे) बनाए कि नहीं ? यदि कहो कि नहीं बोला जाएगा तो ओकार वेदेषु और 'स्वाहात्र प्रणवादिक मन्त्र प्रयोजयेत् के विपरीत होगा। किच महर्षि जी ने तो एक मन्त्र मे ही सात बार ओ का प्रयोग किया है वह है प्राणायाम मन्त्र ओ भू ओ भुव आदि। यहा यह नहीं माना जा सकता कि इन्हे सात मन्त्र मान लेगे। महर्षि जी के शब्द हैं – 'नीचे लिखे मन्त्र का जप भी करता जाए यहा एकवचन मन्त्र' शब्द है। इस एक मन्त्र मे सात बार ओ लगाने का उत्तर ? सिवाय इसके कि ओकार प्रणव है इससे ईश–गुण–स्तवन उत्तम रीति से होता है अत सात बार भी लगा दिया गया।

(७) **सप्तम दोष** बात यह कहीं गई कि हो सके तो फिर मन्त्र बोलिए ही नहीं ओ३म ही ओ३म काहिए (पृ० २७)। इस पर निवेदन है कि ऐसा ही हो रहा है प्राय सर्वत्र हो रहा है। साय आहुतियो के दो मन्त्रो के बाद ओ३म स्वाहा' बोलकर आहुति दी जाती है। इस पर कहा जाएगा कि वहा मन्त्र है अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्नि। और इसका मन मे उच्चारण करके फिर आहुति देना है। निश्चय ही ऐसा विधान है किन्तु कौन इसका पालन करता है ?। नब्बे प्रतिशत लोग मन्त्र का मन मे उच्चारण नहीं करते। ओ३म' शब्द को अवश्य लम्बा (प्लुत सा) बोलते हैं और तुरन्त स्वाहा बोलकर आहुति देते है। प्राय सर्वत्र यह कहना पडता है कि भाई ! ओ३म स्वाहा इतना कोई मन्त्र नहीं है अग्निर्ज्यो मन्त्र को मन मे बोलो फिर स्वाहा बोला और यदि मन मे बोलने का धैर्य नहीं है तो उस मन्त्र का उच्चारण ही कर लो उसका लोप तो न करो। यही बात स्विष्टकृदाहुति के बाद की प्राजापत्याहुति के समय की हैं जब प्रतिदिन प्राय लोग ओ३म स्वाहा बोलकर आहुति देते है तब उसको दूर करने का क्या प्रयास हुआ ? इस पर कथन होगा कि ये तो लोगो की त्रुटि है। पर महर्षि जी ने तो मन्त्रान्त मे ओ स्वाहा' का प्रयोग नहीं किया। अब हम बताते हैं कि महर्षि जी ने भी प्रयोग किया है –

महर्षि जी द्वारा ओ स्वाहा' का प्रयोग

महर्षि दयानन्द जी ने मन्त्र के अन्त मे स्वाहा से पूर्व ओ का प्रयोग किया है और एक बार नहीं दो बार किया है देखिए दैनिक यज्ञ के मन्त्रो मे –

ओम आपो ज्योति रसोऽमृत ब्रह्म भूर्भुव स्वरो सवाहा

यहा स्पष्ट ही स्वाहा से पूर्व ओकार का प्रयोग हुआ है। और सभी लोग प्रात तथा साय इसे बोलते हैं तो क्या यह शास्त्रविरुद्ध प्रयोग है ? कोई चिल्लाया इस पर ? इसी प्रकार सन्यास सस्कार के होम मे भी – 'त्व तदाप आपो ज्योति रसोऽमृत ब्रह्म भूर्भुव स्वरो स्वाहा' प्रयोग है।

जब स्वय महर्षि जी ने दो स्थानो पर मन्त्रान्त मे ओ स्वाहा का प्रयोग किया है तो अन्य मन्त्रो मे कोई पारायण आदि के समय सोद्देश्य स्वाहा से पहले ओम लगाद तो अपराध कैसे हो गया ? यदि कहे कि महर्षि जी ने जिस मन्त्र मे ओ स्वाह लगाया वहा तो ठीक है अन्यत्र नहीं ? तो इस मन्त्र मे ओ स्वहा लगाने का क्या हेतु है ? यहा लगेगा तो और मन्त्रो मे क्यो नहीं लग सकता ? यदि कहे कि 'महर्षि जी ने तो तै० आरण्यक से यह मन्त्र लिया है और वहा ओ स्वाहा' का सकेत है। यदि कहे कि यह मन्त्र वेदेतर ग्रन्थ का है अत स्वाहा से पूर्व ओ लगा दिया होगा। फिर तो सस्कारविधि मे वेदेतर ग्रन्थो के शतश मन्त्र हैं वहा भी स्वाहा से पूर्व ओ लगाना चाहिए। फिर वेदेतर ग्रन्थीय मन्त्रों मे ओ स्वाहा लगे तो वेदस्थमन्त्रो मे ओ स्वाहा क्यो नही ? क्या वे अछूत हैं ?

समयाल्पता के कारण पत्र–पत्रिकाओ के सब लेखो को मैं नहीं पढ पाता पर जब मुम्बई से इन ओ३म स्वाहा से सम्बद्ध एक पुस्तिका ही मुझे प्राप्त हो गई तब मैंन अपने विचार प्रकट किए हैं।

मै यह स्पष्ट कर देना चाहता हू कि मेरा स्वामी सत्यम जी से कोई विशेष परिचय नहीं है। जीवन मे कुल ३ या ४ बार ही उनके दर्शन हुए हैं। एक सन ४४ मे जब वे सत्यशील नाग के ब्रह्मचारी थे। दो सन ७५ मे कीर्त्तिनगर आर्य समाज मे जब मेरी कथा थी। तीन अभी सन ९६ मे गुरुकुल गौतमनगर मे। तब मैंने उनसे सत्यम' ऐसा नपुसक लिग नाम न रखने का निवेदन किया था। इसके अतिरिक्त मेरा इनसे कोई व्यवहार नहीं है। अत मेरा निवेदन उनका पक्ष लेकर नहीं अपितु मेरे अपने विचारो का ही प्रकटीकरण है।

– २७२ आर्यनगर अलवर ३०१००१ (राज०)

समग्र क्रान्ति का सर्वप्रथम उद्घोष महर्षि दयानन्द ने ही किया था — कोठारी

कोटा १५ अक्तूबर । 'महाभारत काल के बाद आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती पहले महापुरुष हुए हैं जिन्होने सम्पूर्ण मानव समाज को हर दृष्टिकोण से आन्दोलित किया था अर्थात केवल वाणी से ही नहीं अपितु व्यवहारक रूप से समग्र क्रान्ति का पहला उद्घोष महर्षि दयानन्द ने ही किया था। ये वाक्य मोटर वाहन दुर्घटना दावा अधिकरण न्यायालय कोटा के न्यायाधीश श्री सज्जन सिह कोठारी ने १४ अक्तूबर को साय विज्ञान नगर मे आर्य परिवार सस्था द्वारा प्रकाशित आर्य परिवार स्मारिका का विमोचन करते हुए कहे। स्मारिका पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होने कहा कि इस स्मारिका मे हाडौती क्षेत्र के आर्यसमाजी के दिवगत ७६ आर्य कार्यकर्ताओ के जीवन परिचय और सस्मरण प्रकाशित कर उन्हे भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की गई है। आर्यसमाज के १२५ वर्ष और आर्य परिवार सस्था के १० वर्ष लेखो मे वेदप्रिय शास्त्री तथा राजेन्द्र कुमार आर्य द्वारा आर्यसमाज के गौरव पूर्ण भूतकाल वर्तमान काल मे व्याप्त जडता तथा शिथिलता और भविष्य के कार्यक्रमो का आलोचनात्मक ढग से अच्छा विश्लेषण किया गया है।

इस अवसर पर जोधपुर निवासी और दयानन्द शोध पीठ पजाब विश्व विद्यालय चण्डीगढ के भूतपूर्व अध्यक्ष और आर्य लेख परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ० भवानीलाल भारतीय ने हाडौती सहित राजस्थान के विकास मे महर्षि दयानन्द एव आर्यसमाज के योगदान की विस्तार से चर्चा की। इस व्याख्यान मे उन्होने कहा कि राजस्थान के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री श्री हीरालाल शास्त्री या जयनारायण व्यास हो हाडौती के अभिन्न हरि या प्रजा मण्डल और काग्रेस के माध्यम से स्वतन्त्रता आन्दोलन मे भाग लेने वाले सभी स्वतन्त्रता सैनानी हो सबने महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज से ही प्रेरणा प्राप्त की थी। उदयपुर जोधपुर शाहपुरा आदि के राजा महाराजाओ को भी उत्तम ढग से शासन कर प्रजा पालन करने का क्रियात्मक सन्देश उन्होने ही दिया था। आर्यसमाज अजमेर के हरविलास शारदा ने १९२६ मे बाल विवाह के विरुद्ध कानून बनवाया जो शारदा एक्ट के नाम से आज भी विख्यात है। सभा मे स्मारिका के विद्वान सम्पादक वेदप्रिय शास्त्री श्रीराम फर्टिलाइजर कोटा के कारबाइड समूह के अतिरिक्त महाप्रबन्धक जबर सिह सेवा निवृत न्यायाधीश अशोक कुमार वाजपेयी ने अपने विचार और भावनाए व्यक्त की। नगर के विख्यात आर्य विद्वान डॉ० रघुनाथ ओबेराय ने अध्यक्ष भाषण दिया। और स्मारिका के सयोजक डॉ० रामकृष्ण आर्य ने समारोह का सचालन किया।

इससे पूर्व प्रबन्धक सम्पादक राजेन्द्र कुमार आर्य सलाहकार सम्पादक मण्डल के रविन्द्र कुमार अर्जुनदेव चढडा अरविन्द कुमार पाण्डे सस्था के वरिष्ठ सदस्य शकरलाल पाल तथा श्रीमती राधादेवी आदि ने कोठारी दम्पति सहित मचस्थ सभी अतिथियो का पुष्प मालाओ से सम्मान किया। नगर के प्रतिष्ठित आर्य बन्धुओ और दिवगत आर्य कार्यकर्ताओ के पारिवारिक सदस्यो के अलावा बारा रावतभाटा आदि आर्यसमाजो के प्रधान प्रहलाद सोनी छीतरलाल धीमान देवेन्द्र कुमार और नरदेव आदि कार्यकर्ताओ ने अच्छी सख्या मे उपस्थिति होकर पाण्डाल को खचाखच भर दिया। अन्त मे रामजीलाल शर्मा के धन्यवाद और आभार ज्ञापन तथा जलपान के साथ समारोह समाप्त हुआ।

— डॉ० रामकृष्ण आर्य, सस्था मन्त्री

यज्ञ का आसन

बिछा दिया, यज्ञ का आसन
कर लिये धारण, शुभ्र वसन
अब दूर करो—
मेरा अहकार
सुनो मेरी पुकार
अब तो दो मुझे
अपना प्रकाश
करो मेरे—
यज्ञ मडल मे वास
होने दो मेरा विस्तार
मिटने दो अधकार
नहीं चाहिए—
मुझे हिरण्यमय पथ
नहीं चाहिए—
मणि मडित रथ
मुझे दे दो
मेरी प्रकाशवती चेतना
हर लो मेरी
अतस की वेदना
अज्ञान के केतु—
न निगलने पाये
ज्ञान का सूरज
जीवन बन सके—
जैसा है जलज
तुम मुझे उठाओ
अपनी वेगवान—
किरणो का रथ लाओ
मुझे उस पर बैठाओ
और ले चलो
आनद के लोक में
जहा वेगवती ज्वालाये
करती हैं भस्म, क्षुद्र तमस को
और करती परिशुद्ध, चचल मनस को।

— नरेन्द्र मोहन

वीर स्वतन्त्रता सैनानी की अन्त्येष्टि भी प्रचार स्थली बन गई

स्वामी जगतमुनि जी का स्वर्गवास १६—१०—२००१ रात को १० ३० बजे हो गया। उनकी आयु ६२ वर्ष की थी। जैसे खरबूजा पकने के पश्चात डण्ठल को स्वय छोड देता है। उसी प्रकार वेदाज्ञानुसार स्वामी जी महाराज ने बिना कष्ट के आयु पूर्ण होने पर शरीर त्याग किया।

आयु के अनुसार शारीरिक क्षीणता के कोई रोग न था। २० दिन तक केवल जल पर रहे। अन्तिम समय तक बोलकर या सकेत करके अपने पास मिलने वालो को वैदिक धर्म के प्रचार—प्रसार के लिए उपदेश करते रहे। अन्तिम श्वास छोडते ही रात को दूरभाष द्वारा आर्यो को सूचना मिलते ही वज्रपात के समान सनसनी फैल गई। उनके अदभुत वीरतापूर्वक धार्मिक कार्यो का नक्शा श्रोताओ के सम्मुख उपस्थित हो गया। ऐसे रोम—रोम वैदिक धर्म प्रचारार्थ विभूति को अपने से विदाई लेने पर तथा उनका स्थान लेने वाले वीर प्रचारक आगे न आने पर आर्य समाज शोक सागर मे डुब गया। ३ बजे सायकाल अन्त्येष्टि का निर्णय हुआ। स्वामी जी महाराज के शव को भिवानी से उनके जन्म स्थान सुरजन मैणी मे लाया गया। उनके सबसे छोटे सुपुत्र ने अन्तिम समय मे अनुकरणीय सेवा की। ३ बजे तक सूचना पाकर आर्यजन झुण्ड के झुण्ड स्वामी जी महाराज के शव के पास हजारो की सख्या मे उपस्थित हो गए। ब्र० ब्रह्मपुत्र जी आचार्य विजयपाल जी श्री जयपाल जी श्री सत्यवीर जी आचार्य बलदेव जी आदि शमशान भूमि मे वैदिक रीति के अनुसार यज्ञवेदि बनाकर समिधाओ का चयन किया। वैदिक रीति से अन्त्यष्टि करते समय गुरुकुल मटिण्डू, गुरुकुल झज्जर गुरुकुल कालवा गुरुकुल लाढौत व अनेक आर्यसमाज के पदाधिकारियो तथा आर्यजनो की उपास्थिति ने अन्त्येष्टि को भी प्रचार स्थली बना दिया।

वेद मन्त्रो द्वारा अन्तिम सस्कार होने पर स्वर्गस्थात्मा के गुणो का जन समूह मे वर्णन कर दो मिनट के लिए मौन श्रद्धाजलि दिलाई। २८ १० २००१ को शान्ति यज्ञ १० बजे सुरजन मैणी ग्राम मे ही करने की घोषणा की। तत्पश्चात घर मे यज्ञ किया गया। सभी यही कहते जा रहे थे — कीर्तियस्य स जीवति।

जो यश छोड जाता है
वह कभी मरता नहीं।

आर्यसमाज दयानन्द विहार, दिल्ली-९२ में

दिव्य सत्संग समारोह

दिनाक ७—११—२००१ से ११—११—२००१ तक

(कार्यक्रम)

भक्ति सगीत	**श्रीमती सुदेश आर्या सगीताचार्या**
	प्रतिरात्रि ८ ०० से ९ ०० बजे तक
अमृत वर्षा	**ऋषिका साध्वी आत्मदीक्षिता जी सरस्वती**
	प्रतिरात्रि ९ ०० बजे से १० ०० तक
यज्ञ एव प्रवचन	प्रात ६ ३० बजे से ७ ४५ तक
समापन समारोह	रविवार ११ नवम्बर २००१
यज्ञ व आशीर्वाद	प्रात ७ ४५ से ९ १५ बजे तक

आर्य बाल सम्मेलन, आर्य श्रेष्ठियो का सम्मान व आर्य सम्मेलन

प्रात ९ ३० बजे से दोपहर १ ३० बजे तक

अध्यक्षता	**श्री वीरेश प्रताप चौधरी** प्रधान आर्य अनाथालय
मुख्य अतिथि	**श्री वेदव्रत शर्मा,** प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
विशिष्ट अतिथि-वक्ता	**श्री धर्मपाल जी आर्य** आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
उद्बोधन	**श्रीयुत श्रीकात जी शास्त्री**
भक्ति सगीत	**सुश्री अर्चना सिह व साथी** रेडियो टी०वी० कलाकार
आशीष	**ऋषिका मा आत्मदीक्षिता जी**
सचालिका बाल सम्मेलन	मिताली वधवा

ऋषि लगर १ ३० बजे

नोट बाल सम्मेलन मे भाग लेने के लिए ७—११—२००१ तक अपने नाम कु० मनीषा २०७ (एफएफ) दयानन्द विहार दिल्ली ९२ को लिखवा दे।

मन्त्री

स्वास्थ्य चर्चा

जुकाम-जुकाम-जुकाम

– श्रीमती स्नेहलता बसल

जाडे के दिन शुरू हुए नही कि सर्दी और जुकाम की शिकायत होने लगती है। यह रोग बच्चे बूढे युवा सभी युवा वर्ग के व्यक्तियो को जकड सकता है। इस रोग के बारे मे यह धारणा है कि दो चार दिन या सप्ताहा भर के बाद स्वय ठीक हो जाता है। इसलिए नाक से बार बार छींक आने पर पानी के बहने पर घबराना नहीं चाहिए। इन साधारण लक्षणो के अलावा कुछ और भी लक्षण होते है जिससे जुकाम के रोगियो की पहचान आसानी से हो सकती है। नाक से पानी आने के अतिरिक्त नाक बद होने सिरदर्द और ज्वर प्रकोप भी जुकाम के पूर्व सकेत है।

जुकाम का प्रमुख कारण श्वसन तन्त्र के ऊपरी भाग की श्लैष्मिक ग्रन्थियो मे सूजन का होना है। ऐसा होने पर नाक की नालिका से अनावश्यक पदार्थों एव कफ आदि का सही ढग से निकास सम्भव नहीं होता। नाक से कफ का पानी धीरे धीरे बराबर ही रिसता रहता है। फलत गले मे खसखसाहट सुरसुराहट लगातार बनी रहती है। कुछ भी खाने–पीने से गले मे हल्का दर्द और रुकावट का अहसास होता है। गले से साफ आवाज नहीं निकलती है आख से पानी बहता रहता है। कुछ लोगो को शरीर मे दर्द और ऐठन की शिकायत हो सकती है। यह रोग अत्यन्त सूक्ष्म विषाणुओ के कारण होता है।

जुकाम के विषाणु शरीर मे प्रवेश करने के ४८ घण्टे बाद अपनी उपस्थिति का प्रभाव दिखाने लगते हैं। यह कहने के लिए साधारण सा रोग है किन्तु यह सक्रामक रोगो मे गिना जाता है। सक्रमित व्यक्ति के खासने और छींकने की अवस्था मे नाक के विषाणु औरो को भी प्रभावित करते हैं। चिकित्सा वैज्ञानिको के अनुसार जुकाम के विषाणुओ पर काबू पाना सरल नहीं है। क्योकि इसके फैलव मे कोई एक किस्म का विषाणु सक्रिय नहीं रहता बल्कि इस कार्य मे करीब दो सौ विषाणु सहभागी हो सकते हैं। यही कारण है कि एक दवा लेने के बाद रोग से थोडा आराम अनुभव होता है किन्तु उससे तुरन्त मुक्ति सम्भव नहीं होती कारण कि तब तक दूसरा विषाणु अपनी सक्रियता दिखाना आरम्भ कर देता है। अत चिकित्सक के परामर्श के अनुसार नियमित औषधियो का सेवन किया जाना चाहिए। किसी को जुकाम केवल सर्दी और बरसात के कारण नहीं होता। मौसम मे अचानक बदलाव आने वातावरण प्रदूषित होने भीडभाड मे सास लेने की कठिनाई होने गन्दगी के बीच रहने से भी जुकाम हो सकता है।

इस बीमारी की शुरुआत छींक आने से होती है। यह एक निश्चित लक्षण है। जब कोई रोगी छींकता है उसकी एक छींक के साथ असख्य विषाणु फैल जाते हैं और उस व्यक्ति के समीप रहनेवाले लोगो को प्रभाव में ले लेते हैं। आमतौर से यह देखा जाता है कि बच्चे को जुकाम होता है तो वह कई बार रूमाल से नाक साफ न करके हाथ से ही नाक का पानी साफ करने लगता है। इसके बाद वह जाने–अनजाने किसी अन्य व्यक्ति के साथ हाथ मिला बैठता है या भोजन करने वालो मे शामिल हो जाता है। इससे दूसरो को जुकाम होते देर नहीं लगती। इसरोग को अति साधारण मानने का परिणाम यह होता है कि किसी एक दूसरे को यह कहने नहीं सुना जाता कि उसके साथ रहने बैठने के कारण जुकाम हो गया। लोग यह मानते हैं कि चूकि मौसम ही ऐसा है किसी को जुकाम हो सकता है। वास्तव मे जुकाम से प्रभावित एव अप्रभावित दोनो को इस रोग के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए। तभी इससे सक्रमित होने से बचा जा सकता है।

जुकाम की अवस्था मे नाक बहते रहने को रिनोरिया कहा जाता है। कई बार यह दो से पाच दिनो के भीतर ठीक हो जाता है। कुछ लोगो को जुकाम और सर्दी से तुरन्त आराम मिल जाता है किन्तु खासी का शिकार हो जाते हैं। जुकाम का यह जटिल रूप कहा जा सकता है। किसी व्यक्ति को जुकाम होने या नहीं होने के पीछे उसके शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता निर्भर करती है। जिन लोगो को बार–बार जुकाम होता है उनके गले मे विषाणु स्थायी रूप से प्रभाव जमा लेते हैं। अत उन पर जुकाम केबहाने निमोनिया गठिया क्षय दमा आमवात आदि रोगो का भी हमला हो सकता है। इसलिए इस रोग के बचाव के आवश्यक उपाय किए जाने चाहिए। जुकाम एक साधारण रोग सही किन्तु समय रहते इसके प्रति सावधानी नहीं बरतने पर कई अन्य रोगो का प्रकोप हो जाता है।

स्त्रियो को जुकाम अधिक रहता है क्योकि उनको घर के सैकडो काम करने पडते हैं। अन्दर–बाहर की सफाई और चौका बर्तन के समय भी पानी के पास अधिक समय व्यतीत करना पडता है। जिन स्त्रियो को पानी से 'एलर्जी होती है वे जुकाम के प्रकोप का शीघ्र शिकार होती हैं। स्त्रियो के अलावा छोटी आयु के बच्चो को जुकाम अधिक होता है।

बचाव के उपाय – चिकित्सकों के अनुसार इस रोग के लक्षण बहुत जल्द प्रकट होने लगते हैं। इससे बचाव के लिए कुछ विशेष सावधानिया बरतनी चाहिए कारण कि केवल औषधियो के प्रयोग से जुकाम से छुटकारा सम्भव नहीं होता। दवाओं के उपयोग से जुकाम को खतरनाक रूप ग्रहण करने से अवश्य रोका जा सकता है। जुकाम होने पर ६० प्रतिशत उपचार ही दवाओं से हो सकता है जबकि कुछ उपायो को अपनाकर न केवल जुकाम को फैलने से रोका जा सकता है बल्कि दूसरो का भी बचाव किया जा सकता है।

जुकाम के रोगियो के प्रति सबसे प्रमुख सावधानी यह बरते कि रोगी के साथ उठना बैठना और साथ खान पान नहीं होना चाहिए।

प्रतिदिन एक चम्मच शहद का सेवन करना चाहिए इससे न केवल रोग मे आराम मिलता है बल्कि शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढती है।

कहीं आते जाते मे अचानक प्यास लगने पर फौरन पानी नहीं पीना चाहिए। पहले थोडी देर अवश्य सुस्ताए। जब शरीर का तापमान सामान्य होने लगे तभी पानी पीना चाहिए।

वातानुकूलित कमरे से निकलकर तत्काल धूप या बदले हुए वातावरण मे नहीं जाए इससे शरीर पर बुरा प्रभाव पडता है।

खाने–पीने में अधिक से अधिक तरल पदार्थो का सेवन करे।

जुकाम से बचने के लिए आवश्यक है कि आप खिडकियो और रोशनीयुक्त कमरो मे रहे तथा भीडभाड की जगहो से बचे।

रोगी को गले मे तकलीफ होने पर गुनगुने जल मे नमक मिलाकर गरारा करना चाहिए इससे गले की खराबी दूर होती है।

रोगी को जुकाम होने पर हाथ से बार बार नाक साफ करने की अपेक्षा रूमाल इस्तेमाल करना चाहिए। उन्हे धोते रहना चाहिए।

भोजन करने से पहले हाथ साबुन से अवश्य साफ करना चाहिए और दूसरो से दूरी बनाए रखनी चाहिए।

रोगी को आराम करने मे लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए। जुकाम होने पर धूप मे रहने से आरामदायक अनुभव होता है। ठण्डी जगहो पर जाने से पूरी तौर पर परहेज करना चाहिए।

इतनी सारी सावधानिया बरतकर आप न केलव जुकाम से अपनी रक्षा कर सकते है बल्कि दूसरो को सक्रमित होने से बचा सकते हैं। चूकि यह रोगब सक्रामक रोग माना जाता है इसलिए सावधानी बरतने मे लापरवाही नहीं करनी चाहिए। सबसे बडी बात यह है कि ज्यों ही किसी को यह अहसास होने लगे कि उसे जुकाम हुआ है उसे चिकित्सक से इलाज कराने में देर नहीं करनी चाहिए और न ही मामूली रोग समझकर नीम–हकीमो से गोलिया लेकर सेवन करनी चाहिए। इससे रोग जटिल हो सकता है और समस्या गम्भीर हो सकती है।

जिन कारणो से जुकाम होता है उन समस्त स्थितियो से हमेशा बचे। रोग के सक्रमण से बचने के लिए दवा के साथ सावधनी भी बरतनी जरूरी है। तभी चाहे कोई भी मौसम हो जुकाम से शरीर की रक्षा की जा सकती है। वैज्ञानिक ने जुकाम के विषाणुओं को पकडने की मुहिम छेड रखी है मगर अभी तक रूप बदलने मे माहिर विषाणुओ को काबू मे नहीं किया जा सका है।

विदेश समाचार

आर्यसमाज नैरोबी का वार्षिक उत्सव धूमधाम से सम्पन्न

अनेकों वर्षो बाद आर्य समाज साऊथ सी में ध्वजारोहण

आर्यसमाज नैरोबी का वार्षिक उत्सव इस बार वर्षों बाद आर्यसमाज साऊथ सी से आरम्भ हुआ। कार्यक्रम का आरम्भ ६ अक्तूबर साय काल को ध्वजारोहण से आरम्भ हुआ श्री देवराज जी मल्होत्रा ने ध्वजारोहण की विधि सम्पन्न की सभी ने मिलकर ध्वज गीत भी गया। उसके बाद पृथिवी सूक्त महायज्ञ सम्पन्न हुआ। दस हवन कुण्ड पर यजमानो से बैठकर यज्ञ किया। यज्ञ के बाद प० रामकृष्ण शर्मा जी ने आर्यसमाज साऊथ सी के इतिहास को बताया तथा बताया कि सितम्बर १९९८ से पुन इस मसाज को आरम्भ किया तथा तब से ही यह समाज कुद कुशल कार्यकत्ताओ द्वारा चलाई जा रही है। उसके बाद श्री शीलकान्त जी वेदालकार ने प० राम कृष्ण जी शर्मा की सराहना करते हुए कहा कि साऊथ सी आर्यसमाज को पुर्नगठित करने मे इनका बहुत सहयोग रहा है। इस अवसर पर आर्यसमाज नैरोबी के कार्यवाहक प्रधान श्री जोगिन्दर पाल जी गाजरी ने प० जी के कार्यो की सराहना की तथा आर्यसमाज नैरोगी की ओर से मान पत्र भेट किया तथा ग्यारह हजार की थैली भेट की। लगभग तीन सौ लोगो ने इस कार्यक्रम मे भाग लिया। इस अवसर पर प० जी ने साऊथ सी के कार्यकर्ताओ की सूची भी प्रस्तुत की। इस अवसर पर आर्यसमाज नैरोबी के वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री प्रीतम जी सैनी ने भी अपने विचार रखे विशेष रूप से उन्होने बताया कि आज से २१ वर्ष पूर्व उन्होने ही प० जी को यहा मगाया था। अत मे ऋषि लगर भी परोसा गया। तीन सौ से अधिक लोगो ने इस कार्यक्रम मे भाग लिया।

७ अक्तूबर रविवार को कार्यक्रम का आरम्भ प्रात ६ बजे आरम्भ हुआ। १२ हवन कुण्डो पर सभी यजमान विद्यमान थे। इस या मे ऋग्वेद के मन्त्रो का पाठ किया गया। उसके बाद आर्य बाल सभा का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। बाल सभा के बच्चों ने बडी ही कुशलता के साथ अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम की सयोजक श्रीमती सुबोध शर्मा थी।

इसके बाद ध्वजारोहण की विधि सम्पन्न हुई। पूर्वी अफ्रीका के वयोवृद्ध आर्य नेता श्री प्रीतम जी सैनी ने ध्वज लहराया। ध्वज लहराते ही सारा महर्षि दयानन्द भवन वैदिक घोष के नारों से गूज उठा। प० राम कृष्ण शर्मा के नेतृत्व मे आर्य स्त्री समाज की बहनो अत्यन्त ही उत्साह के साथ ध्वज का गीत गाया। उसके बाद आर्यसमाज नैरोबी के कार्यवाहक प्रधान श्री जोगिन्दर पाल जी गाजरी ने मुख्य अतिथि श्री प्रीतम जी सैनी का परिचय दिया तथा पूरे जीवन मे उनके द्वारा की गई आर्यसमाज के प्रति सेवाओ का उल्लेख किया। उसके बाद श्री सैनी ने अपना वक्तव्य देते हुए कहा कि – मैंने जो कुछ भी किया किसी पद तथा किसी अन्य पद प्रतिष्ठा के लिए नहीं किया इस अवसर पर स्वामी दिव्यानन्द जी ने ओम ध्वजा के महत्व पर प्रकाश डाला।

उसके बाद धर्म सम्मेलन का आयोजन श्री शीलकात जी वेदालकार ने किया। जिसमे विभिनन सस्थाओ के प्रतिनिधियो ने 'ईश्वर हममे क्या चाहता है इस विषय पर अपने–अपने विचार रखे। सभी श्रोताओ ने बडी उत्सुकता से सभी के विचारो को सुना।

इस कार्यक्रम के बाद पिछले सभी आर्यसमाज के प्रधानो को सम्मानित किया गया। वयोवृद्ध कार्यकर्त्ता श्री केदार नाथ जी सूद ने सभी पूर्व प्रधानों को फूलमालाए पहनाईं। उसके बाद आर्यसमाज मे कार्य करने वाले सभी सेवको को भी सम्मानित किया गया।

तथा ६ अक्तूबर सोमवार तथा मगलवार को प्रात ५.३० तथा साय भी ५.३० पर यज्ञ हुए १० अक्तूबर को चारो से वेदो के चुने हुए मन्त्रो द्वारा यज्ञ की पूर्णहुति सम्पनन हुई। १६ हवन कुण्डो पर सभी यजमान परिवार सहित विराजमान थे। नवनिर्मित भव्य यज्ञशाला श्रद्धालुओ से भरी हुई थी। प० रामकृष्ण शर्मा के पौराहित्य मे या की पूर्णहुति की विधि सम्पनन करवाई गई तथा इस अवसर पर राष्ट्र के लिए भी प्रार्थनाए की गई। गाजरी परिवार की ओर से प्रसाद सभी श्रद्धालुओ को प्रसाद किया गया।

११ अक्तूबर को २३० पर आर्य स्त्री समाज की ओर से भजन प्रतियोगिता का कार्यक्रम हुआ जिसकी मुख्य अतिथि श्रीमती राज तनेजा थी। इस प्रतियोगिगता मे विभिन्न सस्थाओ ने भाग लिया तथा प्रथम इनाम नामधारी सगत की बहनो को गया। १२ अक्तूबर को वाग्वर्धिनी सभा ने भजन सम्मेलन का कार्यक्रम आयोजित किया जिसकी मुख्य अतिथि कुमकुम भाटिया थी। १३ अक्तूअर को स्कूलो की वाद विवाद प्रतियोगिता हुई। जिसके सयोजक श्री रोशनलाल खन्ना थे। इसी दिन साथ मे ही सभी आर्य परिवार के सदस्यो का मेडिकल चैक–अप किया। इस कमेटी के सयोजक डाक्टर सुधीर विनायक थे।

१४ इक्तूबर रविवार को समापन कार्यक्रम हुआ। प० राम कृष्ण शर्मा ने यज्ञ करवाया। उसके बाद श्रद्धानन्द आर्य नर्सरी आर्य गर्ल्स सैकेण्डरी आर्य ब्वाय सैकेण्डरी तथा आर्य प्राईमरी स्कूल के बच्चो ने अपने अपने स्कूलो के रगारग कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम के सजोक प० रामकृष्ण शर्मा तथा आई०एस० सिक्वेरा थे। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नैरौबी के प्रसिद्ध स्टेट एजेन्ट श्री रवि प्रिजा थे। इस अवसर उन्होने चार फुट बाई चार फुट का एक ओम आर्यसमाज नैरोबी को भेट मे दिया तथा पूर्वी अफ्रीका के वयोवृद्ध आर्य नेता श्री प्रीतम जी सैनी ने उसका आवरण किया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डाक्टर राजेन्द्र जी सैनी ने सभी समाजो की ओर से आर्यसमाज नैरौबी को अपनी शुभ कामनाए दी। आर्यसमाज के कार्यवाहक प्रधान श्री जोगिन्दर पाल जी गाजरी ने अन्त मे धन्यवाद प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अन्त मे सभी ने धन्य है तुझको ऐ ऋषि

आर्यसमाज के वार्षिक उत्सव पर प० रामकृष्ण शर्मा ने ईस्ट १०६ रेडियो पर आर्यसमाज विषयक प्रवचन दिए तथा आय्रसमाज की मान्यताओ के विषय मे जानकारी उपलब्ध करवाई।

१५ अक्तूबर सोमवार को आर्य स्त्री समाज ने अपना ८३वा वार्षिक उत्सव मनाया। कार्यक्रम का आरम्भ हवन या से हुआ। उसके बाद आर्य स्त्री समाज की बहनो ने प० रामकृष्ण शर्मा के साथ मिलकर प्रभु भक्ति का गीत गया। उसके बाद आर्य वैदिक नर्सरी तथा प्राईमरी स्कूल के बच्चो ने सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि प्रमुख कार्यकत्री श्रीमती निर्मला हाण्डा थी। दोपहर के ऋषि लगर के बाद मन्त्रोचरण प्रतियोगिता तथा फैन्सी ड्रैस का कार्यक्रम हुआ। सभी को परितोषिक भी दिए गए। आर्य स्त्री समाज की प्रधाना श्रीमती कृष्ण जारी ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। धन्य है तुझको ऐ ऋषि के सामूहिक गान से उत्सव का अन्त हुआ।

आर्य पत्रिका का हिन्दी विभाग आर्यसमाज के प्रधान श्री जोगिन्दर पाल जी गाजरी तथा उनकी अन्तरग सभा के सभी सदस्यो को वार्षिक उत्सव की पूर्ण सफलता पर बधाई देता है।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज करौल बाग, नई दिल्ली-५

प्रधान – श्री कीर्ति शर्मा
मन्त्री – श्री तिलकराज खुल्लर
कोषाध्यक्ष– हर्षवर्धन बत्रा

आर्यसमाज डी ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली ५८

प्रधान – श्री हर्षदेव सिन्हा
मन्त्री – श्री योगी मिगलानी
कोषाध्यक्ष– श्री सुरेन्द्र नाथ धीर

आर्यसमाज कृषि मण्डी, मण्डोर रोड, जोधपुर

प्रधान – श्री राजा आर्य
मन्त्री – श्री दिनेश आर्य
कोषाध्यक्ष– श्री चन्दन आर्य

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 4-11-2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 93/2001
R.N. No. 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No. U (C) 93/2001 in NDPSo on 1/2 -11 - 2001

कर्मवीर जयानन्द भारतीय के जयन्ती समारोह पूर्वक सुसम्पन्न

आंचालिक गढवाल आर्य समाज दिल्ली के तत्वावधान में गढवाल के इतिहास में क्रान्तिकारी समाज सुधारक, परमदेशभक्त, क्रान्तिकारी स्वतन्त्रता सेनानी, भारतीय आन्दोलन के ज्वाज्ल्य नक्षत्र, तेजस्वी–निर्भीक–दृढ़ प्रतिज्ञ वैदिक धर्मावलम्बी ऋषिभक्त कर्मवीर जयानन्द भारतीय की १२० वीं जयन्ती दिनाक १७ अक्तूबर, २००१ को साय ३.३० बजे से ७.३० बजे तक श्री मोहनलाल जिज्ञासु जी के निवास स्थान बी–१/७७ यमुना विहार दिल्ली में श्री गोविन्दराम शास्त्री की अध्यक्षता में समारोहपूर्वक मनाई गई। सर्वप्रथम यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें श्री अरमक्त आर्य यझमान बने तत्पश्चात समारोह का आरम्भ हुआ जिसमें विशिष्ट आर्यनेताओं, समाज सभासदों ने भाग लिया। श्री मोहनलाल जिज्ञासु द्वारा कर्मवीर जयानन्द भारतीय की संक्षिप्त जीवनी पर तथा उनके अनेकानेक सामाजिक राजनैतिक कार्यों पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने स्व० श्री पीताम्बर सुधाशु द्वारा स्व० भारतीय पर लिखी कविताओं को भी समारोह में पढ़ा। समारोह में स्व० श्री शान्तिप्रकाश जी प्रेम को भी याद किया गया जिन्होंने कर्मवीर जयानन्द भारतीय नामक पुस्तक तथा जयानन्द गौरव गान नामक पुस्तिका प्रकाशित कर उनकी स्मृतियों को मानव समाज के इतिहास में प्रेरणास्रोत्र प्रकाशित किया। समारोह में श्री अमर दत्त जी द्वारा जयानन्द गौरव गान पढ़ी गई। श्री जिज्ञासु जी ने कहा कि 'हमें कृणवन्तो विश्वमार्यम के मार्ग पर चलना चाहिए ताकि समाज प्रगति के पथ पर चले। हमें किसी भी प्रकार आशक्त नहीं होना चाहिए क्योंकि भारतीय जी की आत्मा हमारे पास है जिनकी प्रेरणाओं से हमारी समाज तथा अनेकानेक आर्य समाजें कार्य कर रही हैं। जिस प्रकार से भारतीय जी ने सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक आडम्बरों, अन्धविश्वास के विषमताओं का सामना किया वह हमारे समाज में प्रेरणादायक ही, नहीं बल्कि चिरस्मरणीय है। समाज प्रधान श्री धर्मसिंह शास्त्री जी ने कहा कि 'उत्तरांचल के इतिहास में उन्हें सच्चे देशमक्त और समाज के जर्जर सामंती ढांच को एक ही झटके में तोड़ने के लिए तत्पर एक प्रखर क्रान्तिकारी के रूप में सदैव याद किया जायेगा। समाजमन्त्री ही हीरासिंह जी ने कहा कि हम भारतीय जी के ऋणी हैं, उऋण होने के लिए हमें गढ़वाल में वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसाद को आगे ले जाकर वहां की सामाजिक विषमताओं को दूर करना होगा।

अध्यक्षीय भाषण में श्री गोविन्दराम शास्त्री ने कहा कि उत्तराचल राज्य बनने के पश्चात उत्तरांचल विधानसभा में तथा आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तरांचल के कार्यालय मे स्व० भारतीय का चित्र लगा होना चाहिए तथा वहा के पाठ्यपुस्तकों में भारतीय जी का जीवन परिचय का पाठ होना चाहिए क्योंकि भारतीय जी ने ही सबसे पहले उत्तरांचल में वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार तथा आर्यसमाजों की स्थापना की थी और देश की आजादी के लिए ६ सितम्बर १६३२ में हाथ में तिरंगा थामें इन्कलाब जिन्दाबाद कांग्रेस जिन्दाबाद मालकम लेली गौ बैक' जैसे गगनभेदी नारों की गूंज से पौडी में आए तत्कालीन गवर्नर सर-विलियम कालकम हैली को भगा दिया था और उन्होंने अपने आस्तीन में छुपकर रखे तिरंगे झण्डे को निकालकर विलियम हैली की सभा में खलबली मचा दी थी।

— हीरासिंह समाजमन्त्री

आर्यसमाज रवीन्द्रपुरी गाजीपुर में वेद प्रचार का कार्यक्रम सम्पन्न

आर्यसमाज रवीन्द्रपुरी गाजीपुर, उ०प्र० व आर्य उप प्रतिनिधि सभा गाजीपुर (उ०प्र०) के सौजन्य से ग्राम बयेपुर (भूई धरिया बाबा का आश्रम) में दिनांक १४–१०–२००१ को वैदिक धर्म का प्रचार–प्रसार किया गया। इसमें शताधिक लोग सम्मिलित हुए। वेदों के वैज्ञानिक व व्यावहारिक ज्ञान को सुनकर लोग चकित रह गए उन्होंने अनुभव किया कि वैदिक धर्म से शून्य रहना जीवन को व्यर्थ बिताना है। उन्होंने बताया कि अब तक हम लोग वैदिक विचारधारा से अनभिज्ञ रहे। भविष्य में हम हर वर्ष इस सत्संग का आयोजन करेंगे।

यज्ञोपरान्त श्री भृगुनाथ सिंह की अध्यक्षता व श्री राजनाथ सिंह, प्रचार मन्त्री आर्य उप प्रतिनिधि सभा गाजीपुर के संयोजकत्व में सत्सग प्रारम्भ हुआ। श्री शिववचन सिंह, श्री मिठाई लाल गुप्ता, श्री सहदेव बाबू व श्री विद्यानन्द जी ने अपने मधुर भजन व उपदेश से लोगों को मार्गदर्शन दिया। श्री राजनाथ सिह ने बड़े ही प्रभावोत्पादक ढग से बताया कि राष्ट्र की वर्तमान डगमगाती स्थिति को सुधारने में वैदिक धर्म कैसे सक्षम हो सकता है। श्री सन्त प्रसाद, मन्त्री आर्य उप प्रतिनिधि सभा गाजीपुर ने 'न तस्य प्रतिमास्ति...' मन्त्र के माध्यम से ईश्वर के सही स्वरूप को प्रतिपादित किया तथा लोगों को समझाने का प्रयास किया कि ब्रह्म को साकार मानने से सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, दयालु, न्यायकारी, सर्वशक्तिमान, सबका मित्र आदि नहीं हो सकता।

पूरे आयोजन का व्यय व व्यवस्था आर्यसमाज रवीन्द्रपुरी (गाजीपुर) के मन्त्री, प्रधान व डॉ० रमेशचन्द आर्य ने किया। तदर्थ वे साधुवाद के पात्र हैं।

— सन्तप्रसाद

वेदविज्ञान दयानन्द पुरोधा — दिवस्पुत्र

दयानन्द के गम्भीरोदात्त चिन्तक ७१ वर्षीय पं० दिवस्पुत्र (पूर्वनाम पं० अभिविनय भारथी) ... अक्तूबर २००१ को अचानक निधन का उनके सुपुत्र आर्षपाणि: शर्मा से समाचार पाक स्तब्ध रह गया मैं अपने मन से कहा रहा था कि अहो ! आज दयानन्द मन्तव्यों तथा वैदिक सिद्धान्तों का अद्भुत प्रखर व्याख्याता तथा ज्ञान कोष हमसे विदा हो गया।

रंगून (बर्मा) में ब्राह्मण कुल में जन्मे पं० अभिविनय भारथी नाम से विख्यात, बाद में पश्चिमी पटेल नगर नई दिल्ली को अपनी कर्मस्थली बनाया। वर्णाश्रम की व्यवस्था का पालन करते हुए लगभग ६० वर्ष की आयु में वानप्रस्थ की विधिवत् दीक्षा लेकर पण्डित जी ' भिक्षु दिवस्पुत्र भारथी' के नाम से प्रसिद्ध हुए। भारत में आने के बाद पदवाक्य प्रमाणज्ञ पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जैसे महामनीषी विद्वानों से शास्त्रों का अध्ययन कर वेदों, ब्राह्मणग्रन्थों, उपनिषदों, श्रौत–गृह्यसूत्रों व वेदागों का परम्परागत अध्ययन करके विद्वद्वरेण्य बने।

पं० युधिष्ठिर मीमांसक, आचार्य विश्वश्रवा जैसे विद्वद्धौरेय शास्त्रार्थवेत्ताओं के साथी रहे प० भारथी अपने अनोखे व्यक्तितत्व, प्रतिमा एवं वक्तृत्वकला के धनी थे।

आर्यसमाज के क्षेत्र एवं अन्यत्र भी उन्हें प्राय बडा ही अक्खड स्वभावा वाला 'दुर्वासा' सदृश माना जाता रहा, यह केवल उन्हीं लोगों के मस्तिष्क मे छवि स्थापित थी, जो उनके सान्निध्य एव वैदिक सिद्धान्तों व आचरण से दूर रहा हो। प्रारम्भ में मेरी भी ऐसी ही धारणा थी। आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली मे जब में धर्माचार्य था, सौभाग्यवशात् ज्यों-ज्यों उनके सन्निकट आकर सान्निध्य पाया तो मेरा सारा भ्रम काफूर होता गया और पाया कि ये तो 'नारिकेल समाकारा:' हैं। वेद एवं दयानन्द सिद्धान्त विरोधियों के लिए वस्तुत' वे कडक थे, ऐसे लोगों के साथ उनका कोई तालमेल नहीं था। यदि उनसे कोई छोटी अवस्था वाला उनको अपनी प्रतिभा, आचरण, विद्यादि सद्गुणों से प्रभावित कर देता था, तो उसके सरे आम चरण स्पर्श करने में अपना सौभाग्य समझते थे।

सांवला रंग व कद के छोटे होते हुए भी सदा सफेद धोती, कुर्ता, सफेद जाकेट एवं सफेद पगडी इस एकमात्र वेशभूषा के धारण करने पण्डित जी बहुत आकर्षक तथा प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व के स्वामी थे। पण्डित जी की गुणग्राहकता एवं विद्याशयता से प्राय: लोग कम ही परिचित थे। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में देशी विदेशी भाषाओं, विद्याओं को पढने के अतिरिक्त वाद्य,संगीत, नृत्यादि विद्याओं को भी सीखने का वर्णन किया है। पण्डित जी इस कसौटी पर भी खरे उतरे, फलत: उन्हें अनेक प्रकार के वाद्य, ठुमरी,दादरा आदि ताल तथा नृत्य आदि अनेक शास्त्रीय विद्याओं में दक्षता प्राप्त थी। संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी आदि भाषाओं का पर्याप्त ज्ञान होने के अतिरिक्त उन्हें कुरान, पुराण, बाईबिल तथा गुरुग्रन्थ साहिब की बहुत अच्छी जानकारी थी। वैदिक वाङ्मय के अगाध पाण्डित्य का प्रतिमान उनके भाषणों, व्याख्यानों तथा प्रवचनों से अजस्र स्रविज होता ही था। उनके द्वारा व्यक्त अश्यानर्षत्–समाम्नाय उपदेशकालीय सदृश ज्ञान धारा से प्रसूत शोध चिन्तन व लेखों के माध्यम से उनकी त्रैमासिक 'वेदोद्धारिणी' पत्रिका उनके जीवन्त ज्ञानिक इतिवृत्त तथा प्रशस्त यशोगाथा को बताती है।

अपने जीवन को आद्यन्त संघर्षपूण जीने के आदि रहे पं० जी ने कभी भी हार नहीं मानी, लेकिन मृत्यु के दुर्दान्त शाश्वत काल से ५ अक्तूबर २००१ को हार मानते हुए हम सभी को अपनी स्मृतियां देकर हमें बिलखता छोड़ गए। वस्तुत: भिक्षु दिवस्पुत्र भारथी वैदिक सिद्धान्तों एवं महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों की वैज्ञानिक, तार्किक तथा सटीक सारगर्भित व्याख्या करने वाले, विशुद्ध तापसी ब्राह्मण एवं आर्यजगत् के तेजस्वी, उत्साही नक्षत्र थे।

भिक्षु दिवस्पुत्र का निधन

अत्यन्त दु:ख के साथ यह सूचना दी जा रही है कि भिक्षु दिवस्पुत्र भारथी (पूर्व नाम प० अभिविनय भारथी) वानप्रस्थ का गत ५ अक्तूबर, २००१ को रात्री ११.२५ बजे देहावसान हो गया। लगभग ७१ वर्ष की आयु के पश्चात् उन्होंने देह का त्याग किया।

आर्यसमाज के लिए उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। अनेक लेखों को एवं कविताओं को आर्य पत्रिकाओं में यथा समय प्रकाशित करते रहे। कुछ दिवगत आत्माओं पर प्रशस्ति पत्र संस्कृत में लिखे। श्रीभगवत् दत्त जी के साथ शतपथ ब्राह्मण पर महत्वपूर्ण कार्य किया। 'द्रव्य मीमांसा' उनकी मुख्य रचना है। वेदोद्धारिणी के जनक थे।

ऐसे अनेक कार्यों को मानवोद्धार के लिए करते हुए ही अपने प्राणत्याग दिए।

भिक्षु जी का उठाला सोमवार ८ अक्तूबर,२००१ को सांय ३ से ५ बजे तक आर्यसमाज पटेल नगर नई दिल्ली–८ में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री महेश श्री विद्यालंकार, डॉ० रूप किशोर शास्त्री, श्री रमेशचन्द्र शास्त्री, श्री माया राम शास्त्री, डॉ० रवि गुप्ता, श्री हंस राज चोपड़ा जी, श्री कर्णदेव आदि अनेक गणमान्य वक्ताओं ने उन्हें अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित की तथा उनके दिव्य व्यक्तित्व पर अपने विचार रखें।

— आर्ष पाणि शर्मा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली–२ (फोन : ३२७०५०७, ३२७४७७१) फैक्स : ३२७०५०७ से मुद्रित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन, ३/५, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–२ से प्रकाशित (फोन : ३२७४७७१, ३२६०९८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा ई-मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट - http://www.whereisgod.com

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४० अक २६ ११ नवम्बर से १७ नवम्बर २००१ तक दयानन्दाब्द १७८ सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०२ सम्वत २०५८ का० कृ० ११

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक साधारण अधिवेशन सम्पन्न

कै० देवरत्न आर्य सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित

श्री विमल वधावन वरिष्ठ उप-प्रधान, श्री वेदव्रत शर्मा मन्त्री एवं श्री जगदीश आर्य कोषाध्यक्ष

नई दिल्ली ४ नवम्बर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक अधिवेशन ३ व ४ नवम्बर २००१ को आर्यसमाज मन्दिर दीवान हॉल मे सम्पन्न हुआ जिसमे आगामी तीन वर्षों (२००१ २००४) के लिए सर्वसम्मति से मुम्बई के आर्य नेता कै० देवरत्न आर्य को प्रधान चुना गया।

यह चुनाव सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल की देखरेख एव निगरानी मे सम्पन्न हुआ। उल्लेखनीय है कि श्री रामफल बसल को दिल्ली की एक अदालत द्वारा चुनाव अधिकारी एव प्रशासक नियुक्त किया गया था।

जब प्रधान पद के लिए कै० देवरत्न आर्य का नाम प्रस्तुत हुआ तो दो तीन सदस्यो ने उडीसा के स्वामी धर्मानन्द का नाम प्रधान पद के लिए प्रस्तुत कर दिया। चुनाव अधिकारी श्री रामफल बसल द्वारा स्वामी धर्मानन्द जी को मच पर आमन्त्रित किया गया। स्वामी धर्मानन्द जी को कुछ सदस्य सहारा देकर मच पर लाए जहा उन्होने माईक पर कहा कि अस्वस्थता के कारण मैं अपना नाम वापस लेता हू और कै० देवरत्न आर्य को प्रधान बनने के लिए अपना आशीर्वाद देता हू। इस पर चुनाव अधिकारी श्री रामफल बसल ने साधारण सभा के प्रतिनिधियो से किसी अन्य महानुभाव के प्रधान पद का प्रत्याशी होने के बारे मे पूछने पर कोई अन्य नाम प्रस्तुत नही हुआ। इस प्रकार कै० देवरत्न आर्य सर्वसम्मति से प्रधान पद पर निर्वाचित घोषित हुए।

साधारण सभा ने कै० देवरत्न आर्य को सर्वसम्मति से प्रधान चुनने के साथ ही उन्हे सर्वसम्मति से ही यह अधिकार भी दिया कि वे अपनी अन्तरग सभा के अन्य अधिकारियो एव सदस्यो का चयन भी स्वय ही करे। कै० देवरत्न आर्य द्वारा ३५ महानुभावो की अन्तरग सभा के सदस्यो के नामो की घोषणा होते ही साधारण सभा ने इस पर अपनी स्वीकृति दे दी।

सार्वदेशिक सभा के नवनिर्वाचित प्रधान कै० देवरत्न द्वारा घोषित एव साधारण सभा द्वारा स्वीकृत ३५ सदस्यीय अतरग सभा के **सदस्यो एव पदाधिकारियो की सूची पृष्ठ दो पर** प्रकाशित की जा रही है।

कै० देवरत्न आर्य ने समूचे देश की आर्यजनता को यह विशाल दायित्व सौपने के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि मैं हर सम्भव प्रयास करूगा कि आपके इस विश्वास को बनाए रख सकू। कै० देवरत्न ने प्रधान चुने जाने के बाद की गई घोषणा मे सर्वप्रथम प्रतिज्ञा करते हुए कहा कि मैं कमी असत्य अन्याय और अनाचार से समझौता नहीं करूगा। एक सच्चे आर्य के रूप मे नि स्वार्थ त्याग भावना और समर्पण भाव से आर्य सगठन को उन्नत और प्रगतिशील बनाने मे अपना सर्वस्व लगा दूगा। उन्होने कहा यदि मैं इस प्रतिज्ञा के विरुद्ध चला या निष्क्रिय प्रमादी व आलसी सिद्ध हुआ तो मुझे बेशक इस पद से वचित कर दिया जाए।

कै० देवरत्न आर्य ने आर्यसमाज और वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए कुछ विशेष कार्यक्रमा और नीतिया की घोषणा भी की। उन्होने ईमानदारी और अनुशासन का भी इस घोषणा पत्र मे विशेष रूप से उल्लेख किया है।

उन्होने कहा कि तीन श अर्थात शस्त्र शास्त्र और शुद्धि के कार्य लुप्त नहीं होने चाहिए।

उनके द्वारा की गई समस्त घोषणाओ को अगले अक मे विस्तारपूर्वक प्रकाशित किया जाएगा।

४ नवम्बर २००१ को भी भोजनोपरान्त नवगठित अन्तरग सभा की बैठक भी आयोजित की गई। इसमे सभा के सुचारु सचालन तथा नियमित गतिविधियो एव कार्यों के लिए कई समितियो आदि का गठन भी किया गया जिनकी विस्तृत सूचना अगले अक मे प्रकाशित की जाएगी।



कै० देवरत्न आर्य *प्रधान*



श्री विमल वधावन *वरिष्ठ उप प्रधान*



श्री वेदव्रत शर्मा *मन्त्री*



श्री जगदीश आर्य *कोषाध्यक्ष*

दीपावली मंगलमय हो
निर्वाण दिवस प्रेरणादायक हो

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित प्रधान कै० देवरत्न आर्य एव समूची अन्तरग सभा, आर्य जनों को दीपावली के पुनीत पर्व पर हर प्रकार की सुख समृद्धि और शान्ति की कामना से परिपूर्ण बधाई देती है।

दीपावली के दिन ही महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण समस्त आर्यों के लिए ईश्वर भक्ति के मार्ग की सर्वोच्च प्रेरणा बनें ऐसी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है।

विश्व आर्य महासम्मेलन स्थगित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की चुनाव प्रक्रिया अगस्त माह मे प्रारम्भ हो जाने के कारण नवम्बर माह मे होने वाला प्रस्तावित विश्व आर्य महासम्मेलन स्थगित कर दिया गया था। सम्मेलन की नई तिथिया निकट भविष्य मे पुन निर्धारित की जाएगी। इस बीच कुछ आर्य जनो से यह सूचना प्राप्त हुई है कि इस निमित्त कुछ व्यक्तियो ने धन सग्रह प्रारम्भ कर दिया था। आर्य जनता से निवेदन है कि जिस किसी महानुभाव ने भी २३ २४ एव २५ नवम्बर २००१ के लिए प्रस्तावित विश्व आर्य महासम्मेलन के लिए दान दिया हो वे तत्काल उसकी सूचना सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली २ के कार्यालय को भेजें।

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

सह सम्पादक
विमल वधावन एडवोकेट

नव-निर्वाचित अन्तरंग सदस्यों ने यज्ञोपरान्त कार्यभार सम्भाला
दयानन्द भवन के प्रथम तल पर कार्यालय का उद्घाटन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्वाचन के उपरान्त ५ नवम्बर २००१ (सोमवार) को प्रात १० बजे आचार्य भद्रकाम वर्णी के ब्रह्मत्व मे नवनिर्वाचित पदाधिकारियो एव अन्तरग सदस्यो तथा विभिन्न प्रान्तो के प्रधान कै० देवरत्न आर्य उनकी पत्नी श्रीमती सुनीता आर्या वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन एडवोकेट श्री आनन्द कुमार राव हरिश्चन्द्र आचार्य यशपाल मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य उपमन्त्री श्री जयनारायण तथा अन्य महानुभाव उपस्थित थे। यज्ञ के उपरान्त यज्ञाग्नि को प्रथम तल पर स्थित कार्यालय में ले जाया गया जिसका विधिवत उद्घाटन स्वामी दीक्षानन्द जी के निर्देशानुसार सार्वदेशिक न्याय सभा के प्रधान श्री रामफल बसल ने किया। दिया गया। इसके अतिरिक्त फर्नीचर लकडी की दीवारे जनरेटर सेट फोटो स्टेट मशीन बिजली और टेलीफोन की अन्दरूनी व्यवस्था आदि के एवज मे पाच (५) लाख रुपये देकर यह कार्यालय विगत माह ही खाली कराया गया था।



श्रद्धेय स्वामी दीक्षानन्द जी एव स्वामी सत्यम जी से सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल आशीर्वाद लेते हुए। चित्र मे श्रीमती सुनीता आर्या एव स्वामी चेतनानन्द जी भी दिखाई दे रहे हैं।



यज्ञ अग्नि का प्रवेश प्रथम तल कार्यालय मे ले जाकर उदघाटन सम्पन्न करते हुए – बाए से श्री जगदीश आर्य कै० देवरत्न आर्य श्री वेदव्रत शर्मा श्री रामफल बसल एव श्री विमल वधावन।

प्रतिनिधियो ने कार्यालय की पहली मजिल पर यज्ञ एव शान्ति सुचारु व्यवस्था की प्रार्थनाओ सहित नए कार्यकाल का शुभारम्भ किया। यज्ञ पर चुनाव अधिकारी एव प्रशासक श्री रामफल बसल नवनिर्वाचित सभा अरुण आचार्य जगतदेव श्री भूपनारायण शास्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री सु० ब० काले श्री दयानन्द बसैये श्री चन्द्रकिरन चौ० लक्ष्मीचन्द स्वामी चेतनानन्द श्री लक्ष्मीनारायण भार्गव श्रीमती उज्ज्वना वर्मा आदि आर्य नेताओ उल्लेखनीय है कि अब आर्य प्रतिनिधि सभा का कर्यालय प्रथम तल पर आ जाएगा। पहले यह तल हिन्दुस्तान लीवर कम्पनी के पास किराए पर था। इस कम्पनी की लगभग ६ लाख रुपये धरोहर राशि थी जिसे वापस कर इसे खाली कराने मे श्री रामफल बसल कै० देवरत्न आर्य विमल वधावन तथा वेदव्रत शर्मा का विशेष सहयोग रहा। उद्घाटन के उपरान्त पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी तथा स्वामी डॉ० सत्यम ने आर्य जनों को आशीर्वाद दिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली की
कार्यकारिणी एवं अन्तरंग सदस्यों की सूची

पदाधिकारी

१	प्रधान	–कैप्टन देवरत्न आर्य (मुम्बई)
२	वरिष्ठ उप प्रधान	–श्री विमल वधावन (दिल्ली)
३	उप–प्रधान	–श्री गौरी शकर कौशल (मध्य भारत)
४		–श्री राव हरीशचन्द्र (मध्य विदर्भ)
५		–डॉ० राधाकृष्ण वर्मा (कर्नाटक)
६		–श्री सुदर्शन शर्मा (पजाब)
७		–श्री आनन्द कुमार आर्य (बगाल)
८		–श्री आचार्य यशपाल (हरियाणा)
९	मन्त्री	–श्री वेदव्रत शर्मा (दिल्ली)
१०	उप–मन्त्री	–श्री वाचोनिधि आर्य (गुजरात)
११		–श्री रोशनलाल आर्य (हरियाणा)
१२		–श्री भूपनारायण शास्त्री (बिहार)
१३		–श्री कृष्णराव (आन्ध्र प्रदेश)
१४		–श्री आचार्य जगतदेव (मध्य विदर्भ)
१५		–श्री सुग्रीव काले (महाराष्ट्र)
१६		–श्री जयनारायण अरुण (उ०प्र०)
१७	कोषाध्यक्ष	–श्री जगदीश आर्य (दिल्ली)
१८	पुस्तकाध्यक्ष	–श्री सोमदत्त महाजन (दिल्ली)

अन्तरग सभा सदस्य

१९	श्री लक्ष्मीचन्द चौधरी (उ०प्र०)
२०	डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री (उ०प्र०)
२१	श्री दयाराम बसैय्या (महाराष्ट्र)
२२	श्री टी० वी० नारायण (आन्ध्र प्रदेश)
२३	श्री भगवानदास अग्रवाल (मध्य भारत)
२४	डॉ० महेश विद्यालकार (दिल्ली)
२५	श्री प्रदीप आर्य (राजस्थान)
२६	श्री स्वामी व्रतानन्द (उडीसा)
२७	श्री आचार्य रामानन्द (हिमाचल प्रदेश)
२८	श्री पी० एन० आर्य (कर्नाटक)
२९	श्री सुबोध कुमार (तमिलनाडू)
३०	माता प्रेमलता शास्त्री (दयानन्द सेवाश्रम सघ)
३१	डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री (जम्मू कश्मीर)
३२	श्री ओकार नाथ आर्य (मुम्बई)
३३	श्री कल्याण देव (गुजरात)
३४	श्री देवेन्द्र शर्मा (पजाब)
३५	श्री मुकेश सैनी (प्रतिष्ठित)

✿✿✿

ज्योति पर्व – दीपावली

स्व० आचार्य राजेन्द्र शर्मा

सत्ता और चेतना से समन्वित जीवात्मा आनन्द की खोज मे सतत प्रयत्नरत रहता है आनन्द उसका ध्येय है आनन्द उसकी सीमा है जहा तक उसको दौडना है। जीवन यात्रा का अन्तिम सोपान आनन्द है। परन्तु मानव भटक जाता है पथ भ्रष्ट हो जाता है और उसकी अभीप्सा मात्र अभीप्सा ही रह जाती है। शाश्वत आनन्द की उपलब्धि के लिए उसका प्रयास सृष्टि के उषा काल से ही निरन्तर चल रहा है। पर्वो का समायोजन उसी आनन्द की प्राप्ति हेतु एक सशक्त प्रयास है। मानव मस्तिष्क प्रपचो और मायाजालो मे फसकर मृग मरीचिका की अतृप्त तृष्णा के चक्कर मे सदा ही व्याकुलता से छटपटाता रहता है। पर्व समय समय पर आकर उसको आनन्द से भर देते हैं हर्ष उल्लास से पूर्ण कर देते है उमग ओर उत्साह से सराबोर कर जाते है और यही पर्वो की सार्थकता है। दीपावली ऐसा ही महान पर्व है जिसको समृद्धि का पर्व कहा जाता है। आध्यात्मिक सम्पदा और भौतिक सम्पदा से हमारा अपना जीवन तथा समस्त राष्ट्रीय जीवन सम्पन्न बने तथा यह समृद्धि समस्त विश्व को अभाव मुक्त करने मे समर्थ हो जिससे प्रत्येक मानव आशा और विश्वास से भरकर खिलखिला सके यह है सार्वभौम उद्देश्य इस महान गरिमामय पर्व का जिसको ज्योति पर्व के रूप मे पुकारा जाता है।

ज्योति पर्व नामकरण ही इस महान उद्देश्य की सफलता के केन्द्र–बिन्दु को समाहित किए हुए है। इस रहस्य को हम इस तरह से समझ सकते है कि अन्धकार अविद्या समस्त क्लेशो का क्षेत्र है महर्षि पतजलि की यह घोषणा शाश्वत सत्य है इसलिए यह पर्व अन्धकार–अज्ञान के विनाश का प्रतीक है और हम सब को सकल्प लेना है कि कहीं पर भी अन्धकार नही रहने देगे। छोटे छोटे दीपको को प्रज्ज्वलित कर हम इसी भावना को अभिव्यक्त करते है और सर्वशक्तिमान परम प्रभु से सहयोग मागते है कि **तमसो मा ज्योतिर्गमय।** क्योकि हम जानते है कि अन्धकार तम अज्ञान ही वास्तव मे मृत्यु है ओर प्रकाश ज्योति ज्ञान ही अमृत है। प्रकाश प्रसन्नता और आह्लाद देता है तथा अन्धकार भय ओर शका उत्पन्न करता है।

छोटा–सा लघु मिटटी का दीप आज तिरस्कृत कर दिया गया है। विद्युतप्रकाश की चकाचौध से हम ने मिटटी के दीप नई रूई सरसो के तेल ओर उसकी शान्तिदायिनी प्रदूषण विनाशिनी दृष्टिवार्धिका शक्ति को ही **नहीं विस्तृत कर** [illegible] अपितु अपने जीवन के **लक्ष्य से ही वचित हो** गए। मिटटी का यह लघु दीप प्रतीक है [illegible] इस मिटटी के शरीर का जिसको [illegible] बना कर हमको स्वय को प्रकाशित करना है और प्रज्ज्वलित रख जीवन दीप से जन जन दीपो को प्रदीप्त करना है। स्वदीप मे न्यूनता नही आनी है ओर अन्धकारित अन्य जीवन – दीप मेरे स्वल्प प्रकाश से ही जगमगा उठते है। तब ही महाकवि की यह भावना चरितार्थ होती है कि –

जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना।
अधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।।

ज्योति पर्व दीपावली का महान सन्देश है अपने जीवन दीप के प्रकाश द्वारा समस्त मानवता को जगमगा देना और तभी अन्धकार मे पनपने वाले विषमय तत्त्व विनष्ट होगे। इसके लिए ज्ञान प्रकाश आलोक ज्योति को अपने जीवन दीप मे लाना ही होगा। अन्धकार को विनष्ट करने मे अन्यो के जीवन दीपो को प्रज्ज्वलित करने मे पथ भ्रष्टो के पथ प्रदर्शन मे तिमिराच्छिन्न हृदयो को जगमगाने मे यदि अपना दीपक बुझ भी जाए तो यहीं उसकी सार्थकता है। सूर्य के जाने के पश्चात् जैसे दीपक कह उठता है कि तुम भुवन भास्कर चले गए परन्तु **तुमसे प्रेरणा प्राप्त कर** मै तुम्हारे आगमन तक अन्धेरे से युद्ध करता रहूगा यह है पावन सकल्प जो आज जन जन को लेना है।

भुवन भास्कर महर्षि दयानन्द के कैवल्यधाम मे समाहित होने के पश्चात आर्यजनो पर यह उत्तरदायित्व आता है कि ज्ञान के मार्ग समाप्त होने पाए प्रकाश के स्तम्भ टूटने न पाए और सत्य अर्थ का प्रकाश होता रहे जिससे मानवता भटक न पाए तथा सत्य का राजमार्ग सदा प्रशस्त रहे।

परन्तु आर्यो ! सतर्क ओर सावधान रहो कि कहीं यह ज्योति पर्व अन्धकार पर्व न बन जाए। अपने आप को और अपने घर को आलोकित करने का तात्पर्य यह नही है कि अपना अन्धकार तुम पडोसी के घर मे ढकेल दो और उसके जीवन को और उसके घर को अन्धकार ग्रस्त कर दो। स्मरण रखो पडोस का अन्धकार आपके आलोक को भी तहस–नहस कर देगा ओर समस्त आर्यत्व पिशाचत्व मे परिवर्तित हो जाएगा। अन्धकार मे हम अपने आप को ही देखते है अन्य किसी की भी अनुभूति हमको नही होती है अत अन्धकार विनाश हमारा कर्त्तव्य बन जाता है वेद का उदबोधन हमे सदा स्मरण रखना है – **आर्य ज्योतिरग्रा।** ओर **उरू ज्योति चक्रथु आर्याम।**

मशाले वेद की लेकर अन्धेरा जो मिटा डाले।
उठे तो दिन निकल आये वहीं तो आर्य होता है।

– **डी ११० आर्यसमाज शकरपुर**

जगमग दीप जलाएं

राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति

आओ ! आर्य सपूतो आओ ! जगमग दीप जलाए !
गहन तिमिर मे भटक रही जगती को राह दिखाए।।

मिटटी के दीपो से निश्चय मिटता नहीं अन्धेरा
अगणित तारो के उगने से होता नहीं सवेरा

दानवता के तिमिर सैन्य ने महिमण्डल है घेरा
रहा नहीं है मानवता का सुन्दर सुखद बसेरा

बिखरा किरणे ज्ञान ज्योति की नया सवेरा लाए।
गहन तिमिर मे भटक रही जगती को राह दिखाए।।

तम के अचल मे सोता है आज यहा दिनमान
ज्ञान हमारा कहा लुप्त है विस्तृत क्यो अज्ञान ?

चलो देख लो कहा सो रहा भारत का अभिमान
सत्य शिवम सुन्दरता पूरित कहा गए प्रतिमान ?

बन करके आलोक पुज हम जाग्रत ज्योति जगाए।
गहन तिमिर मे भटक रही जगती को राह दिखाए।।

लोभ मोह मद मत्सर का है फैला पारावार
काम क्रोध बढ रहा चतुर्दिक नष्ट धर्म का सार

मानवता के तत्वो का क्यो ? होता है व्यापार
भौतिक सस्कृति नहीं कभी कर सकती है उपकार

अध्यात्म प्रदीप प्रभामय पुन प्रदीप्त कराए।
गहन तिमिर मे भटक रही जगती को राह दिखाए।।

ऐसा दीप जले जिससे न रहे तिमिर का लेश
ज्योतिर्मय हो पूर्ण धरा यह प्रगटे ज्ञान दिनेश

दम्भ द्वेष मिथ्या हिसा का बचे नही अवशेष
प्रेम दया ममता का सदा रहे उन्मेष

ख्याति-सफलता समृद्धि के सपीत मनुज सब गाए।
गहन तिमिर मे भटक रही जगती को राह दिखाए ।।

–मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ०प्र०)

सहस्राब्दि पुरुष म० स्वा० दयानन्द सरस्वती

अखिल भुवन भास्वर मणि

शिव–शकर तुम बने काल के चषक हलाहल पीकर
हो गए अमर ऋषिराज ! सुधा सुपान धरा को देकर
महाव्रती सन्यासी मुनिवर ब्रह्मचर्य व्रतधारी
नैष्ठिक निर्भय सिहपुरुष सम योद्धा परमोदारी।

कृण्वन्तो विश्व आर्य हेतु धरा पर तुम अवतरित हुए थे
[illegible] नारी विधवा दलितोद्धार हेतु जन्म [illegible]
कर्म क्षेत्र मे जब ऋषि उतरे छा रहा विधर्मी शासन
चले मनुस्मृति सविधान आर्यो का हो शासन।

कालज्यी सत्यार्थ प्रकाश रच नीर क्षीर का ज्ञान दिया
सस्कारविधि की सरचना कर सस्कारो का मान दिया
दश नियमो से निर्देशन कर धर्म कर्म का बोध दिया
शास्त्रार्थो के दिव्य अस्त्र से पथाई भ्रम दूर किया।।

सत्य–सनातन धर्म व्यवस्था जगती पर फैलाई।
ओ३म ध्वजा ने अखिल विश्व मे वैदिक क्रान्ति जगाई
अज्ञान अविद्या अन्धकार मे ज्ञान भानु बनकर तुम प्रकटे
स्वतन्त्रता घोषक स्वराज्य के मन्त्र प्रदाता तुम प्रकटे

वर्णाश्रम का बोध कराकर श्रेष्ठ सनातन पथ दर्शाया
हो आदर्श समाज राष्ट्र जन मनु का यह सिद्धान्त बताया।
घर–घर वेद ऋचाए गूजे लोकतन्त्र हो धर्म अपेक्षित।
सर्वेभवन्तु सुखिन सुलक्ष्य कर मतपथो से रहे उपेक्षित

दयानन्द विद्या भास्कर ! अतुलित यह प्रतिदान तुम्हारा।
वेद ज्ञान के ज्योतिस्तम्भ ! सुश्लोकित सुकर्म तुम्हारा
अनन्त श्री विभूषित दयानन्द ! वैदिक युग दृष्टा थे
पाखडो से पीडित जग के श्रेय मार्ग दृष्टा थे ।
वेद विद्या के महारथ सूर्य थे ज्ञान के विज्ञान के तुम ! सूर्य थे।

दीपावलि के स्नेह–दीप आत्म ज्योति से चल जला कर
वसुधरा को अभिसिचित कर वैदिक ज्ञान सुधाकर
ऋषिवर ! तुमको शत–शत प्रणाम भावो भरे हृदय से
भरत–भूमि के भव्य भाल पर भानु भास्वरित जैसे

– जन्म १८२४ महाप्रयाण १८८३

शुभ दीपावली

आर्यसमाज अनन्त प्रेम की अनन्त ज्वाला

— उमा राव

मै एक धधकती ज्वाला को देख रहा हू अनन्त प्रेम की अनन्त ज्वाला जो समस्त द्वेष दावानल को भस्मसात कर देगी। इस धधकती ज्वाला का नाम है आर्यसमाज। अमरिकन योगी एड्रो जक्सन डविड।

विगत शताब्दी म पतनोन्मुख हिन्दू समाज एव धम के उत्थान मे आर्यसमाज एक अद्वितीय आन्दोलन के रूप मे उभरा हे। यह आन्दोलन हिन्दू समाज की गली सडी मान्यताओ के विरुद्ध स्वामी दयानन्द सरस्वती के व्यक्तिगत विद्रोह स प्रारम्भ हुआ। हिन्दू जीवन पद्धति म सन्निहित कुरीतिया एव निरथक कार्यकलापो को तिरोहित करने के लिए आयसमाज एक सशक्त माध्यम बना। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेदकथित सत्य सनातन व्यवस्थाओ को तथा प्राचीन ऋषियो के शाश्वत सर्वकल्याणकारी सिद्धान्तो को आर्यसमाज का आधार बनाया। भारत क महान यागी श्री अरविन्द न स्वामी दयानन्द को भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करत हुए लिखा था **दयानन्द समस्त गिरिशिखरो के मध्य एक ऐसे सर्वोच्च शिखर हैं जो अपनी दिव्यता एव भव्यता के कारण अपने आप से ज्योतिर्मय हैं और चहू ओर प्रकाश विकीर्ण कर रहे है।** वस्तुत स्वामी दयानन्द सरस्वती के समर्थ व्यक्तित्व ने और सबल कृतित्व न आयसमाज को विधायक तथा आक्रामक स्वरूप प्रदान किया इसमे किंचित भी सदेह नहीं।

दूसरी ओर स्वामी दयानन्द सरस्वती के समक्ष विदेशी धार्मिक मतो के साथ समझौता करने का कोई प्रश्न ही नहीं था। विदेशी धार्मिक मतो से प्रताडित हिन्दू समाज को स्वामी दयानन्द सरस्वती के आक्रामक दृष्टिकोण ने बोद्धिक बल प्रदान किया और आत्मिक साहस से भर दिया।

विगत शताब्दी मे गतिशील पाश्चात्य विचारधारा ने गतिहीन तथा रुढिग्रस्त हिन्दू मानस को एक बार झकझोर कर रख दिया था और हिन्दू समाज के लिए आत्म अस्तित्व की सुरक्षा एव आत्मीयता की खोज अपरिहार्य हो गई थी। चारो ओर विजय प्रयाण करते हुए पाश्चात्य सस्कृति के मूल्यो की उपेक्षा करना हिन्दू समाज के लिए भयावह सिद्ध होता इस अनिवार्य मुठभेड मे पूण समर्पण अथवा प्रबल सघर्ष के अतिरिक्त कोई अन्य पथ लक्षित नही हा रहा था। वैसे स्वामी दयानन्द के आने से पूर्व बगाल मे ब्रह्मसमाज तथा बम्बई मे प्रार्थना समाज के रूप मे विदेशी सास्कृतिक आक्रमण का सामना करने का काम प्रारम्भ हो गया था। ब्रह्मसमाज तथा प्राथनासमाज का नेतृत्व करने वाले लाग पाश्चात्य शिक्षा दीक्षा से प्रभावित लोग थे और भारत की शाश्वत सस्कृति के मूल से उनका अधूरा परिचय था। इसके विपरीत स्वामी दयानन्द पाश्चात्य शिक्षा दीक्षा से पूर्णतया अपरिचित थे। इसके सम्बन्ध मे श्री हरविलास शारदा ने स्वामी दयानन्द के जीवन चरित्र मे लिखा है स्वामी दयानन्द को गढने मे विदेशी सस्कृति पाश्चात्य सभ्यता एव शिक्षा का किंचित भी हाथ न था। स्वामी दयानन्द सरस्वती को अग्रेजी भाषा न आती थी और वे योरीपीय सरकनि तथा विचारो स प्रभावित न थ। यही कारण था कि आर्यसमाज देशी स्वरूप न टला या। इसी कारण से आयसमाज भारतीय जनमानस क निकट आ सका और जनजीवन को प्रभावित कर सका। इसीलिए आयसमाज एक विशुद्ध भारतीय आन्दोलन की ख्याति अजित कर सका।

स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म टकारा मे १८२४ मे हुआ। बाल्यावस्था म ही शिवरात्रि की घटना ने उन्हे बौद्धिक धरातल पर जाकर एक अभिवन बाध स युक्त कर दिया। प्यारी बहन तथा सम्माननीय चाचाजी की मृत्यु ने उन्हे एक बार आत्मिक तल पर झकझोर दिया। इन घटनाओ ने उन्हे जीवन के परम सत्य की खोज पर आरूढ कर दिया और इस तरह स्वामी दयानन्द सरस्वती परम शिव और मुक्ति की खोज मे निकल पडे। यह खोज उन्हे मथुरा के दण्डी स्वामी विरजानन्द के पास ले गई। स्वामी विरजानन्द के सम्पर्क मे स्वामी दयानन्द ने नई ज्योति पाई। गुरुवर स्वामी विरजानन्द के आदेशानुसार स्वामी दयानन्द सरस्वती सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रसारार्थ और अज्ञान अन्धविश्वास को दूर करने के लिए कृतसकल्प हो भारत मे निकल पडे।

धार्मिक जगत् मे तहलका

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपनी अगाध विद्वत्ता तथा अकाटय युक्तियो से सत्य सनातन वैदिक धर्म के रूप को प्रतिपादित करना प्रारम्भ कर दिया। दार्शनिक जगत मे अद्वैत वेदान्त के विरुद्ध स्वामीजी ने वेदो के आधार पर त्रैतवाद परमात्मा प्रकृति और जीवात्मा का प्रतिपादन किया। ससार माया नहीं अपितु कर्मक्षेत्र हे जहा जीवो को अपने कर्मानुसार फल प्राप्त होते रहते है। यह जीव स्वतन्त्र सत्ता है परमात्मा का अश नहीं। यह जीव साक्षी नहीं कर्ता एव भोक्ता है। जीवात्मा के अच्छे अथवा बुरे कर्मो का भोग अनिवार्य है। भाग्यवाद का नाम लेकर कोई पुरुषार्थ के दायित्व से मुक्त नहीं हो सकता। कर्मानुसार जीवात्मा का आवागमन होता रहता है। ससार के समस्त कर्त्तव्य कर्मों को करते हुए परम मुक्ति को उपलब्ध किया जा सकता है। परमात्मा के सत्य सनातन सिद्धान्तो को मानने स पाप से सार्वजनिक कल्याण के कार्यो को करने से न्याय तथा धर्मादि के आचरण से ही मुक्ति को प्राप्त किया जा सकता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती की दृष्टि से मुक्ति भी सावधि हे क्योकि शान्त कर्मो कर अनन्त फल नही हा सकता। स्वर्ग नरक मनुष्य की अपनी ही कृति है। परमात्मा निराकार है और उसी की उपासना करनी चाहिए। परमात्मा अवतार नही लेता मूर्ति पूजन वेद विरुद्ध है– एसी सत्य बातो से स्वामी दयानन्द ने भारत के दार्शनिक धार्मिक जगत मे तहलका मचा दिया।

समाज मे नई चेतना

इसके साथ ही स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दू समाज को यह विदित कराने का निश्चय किया कि हिन्दू समाज मे प्रचलित बाल विवाह आदि गर्हित प्रथाओ तथा अन्य अनेक कुरीतियो को वेदो मे कोई मान्यता प्राप्त नहीं है। स्वामी दयानन्द सरस्वती को इस बात से अत्यन्त क्षोभ था कि ज्ञान विज्ञान और सभ्यता सस्कृति की जन्मदात्री भारतभूमि अपनी निजता तथा प्रतिभा से प्रभाहीन हो रही है। जात पात के व्यर्थ के ढकोसले ने सामाज को सज्ञाहीन बना दिया था। पण्डित पुराहितो के वेदशास्त्र सम्बन्धी अज्ञान एव विभ्रम के कारण ही ग्रह सब सम्भव हो पाया था। श्री राजगोपालाचारी के अनुसार स्वामी दयानन्द सरस्वती ने धार्मिक शास्त्रीय जगत के झाड झखाड को निर्ममता से काट कूटकर उसे जीवन जीन के योग्य बनाने का महत्त प्रयास किया। स्वामी दयानन्द ने जन्म पर आधारित वर्ण व्यवस्था को वज्य घोषित किया और स्त्री पुरुष की समानता का प्रतिपाद किया। स्त्री शिक्षा तथा प्रौढ विवाहो का समर्थन किया। विदेश यात्रा से पाप की बात को हास्यप्रद बताया। अनावयश्क कर्म काण्डो की आलोचना की। सारे समाज को झकझोरकर जगाने की स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भरपूर चेष्टा की। समस्त भारतवर्ष मे धार्मिक जगत मे नई उहा पोह करे जन्म देकर जीवनहीन समाज मे नई चेतना उत्पन्न कर दी। महाभारत के महाविनाशकारी युद्धोपरान्त वेद और वैदिक साहित्य का अध्ययन छूट जाने से पतन की परम्परा पैदा हुई और नाना मत मतान्तरो ने अज्ञान अन्धकार को चारो ओर फेला दिया। इस्लामी आक्रमणकारियो के अत्याचार और ईसाइयत क प्रलोभनकारी कार्यकलापो न हिन्दू राष्ट्र मे विभक्त राष्ट्रीयता को जन्म देकर पारस्परिक विद्वेष भावना को बढावा दिया। ऐसी अवस्था मे इस्लाम ईसाइयत तथा अपने ही देश मे प्रचलित ऊट पटाग मत मतान्तारो की साहसपूर्ण समीक्षा स्वामी दयानन्द सरस्वती क आक्रामक व्यक्तित्व तथा उनकी अटूट राष्ट्रीयता का अभिव्यक्त करती है।

धर्म को विशुद्ध स्वरूप मे प्रस्तुत करना यही स्वामी दयानन्द का उद्देश्य था। इस महत कार्य को सम्पन्न करने के लिए उन्होने नये विद्वान ब्राह्मणो की आवश्यकता पर बल दिया। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने लिखा – 'वही व्यक्ति ब्राह्मण जो विद्वान और सच्चरित्र हो। जन जन मे सर्वाधिक धर्म एव शिक्षा का प्रसार होना चाहिए। इसके लिए वेदो के पठन पाठन का अधिकार सबको प्रदान किया और वेदो की शिक्षाओ के अनुसार आचरण को सार्वजनिक कल्याण के लिए आवश्यक बताया। वेदो से ही सर्वत्र ससार मे ज्ञान का प्रकाश हुआ ऐसा स्वामी दयानन्द का दृढ अभिमत था जिससे कोई उन्हे डिगा न सकता था।

जनभाषा को अपनाया

१८६३ से १८७५ तक स्वामी दयानन्द सरस्वती प्रचार करते हुए भारत भ्रमण करते रहे।

शेष भाग पृष्ठ १० पर

युगद्रष्टा : महर्षि दयानन्द

– हरिचन्द्र स्नेही

बिस्मित हू तुझे ईश का वरदान कहू।
जो देव हो उसे कैसे मैं इन्सान कहू।।
यदि एक ही ईश्वर का विश्वासी न होता।
तो महर्षि दयानन्द तुझे भी मैं भगवान कहू।।

महाभारत काल के विनाश के पश्चात विश्व अन्धकारगर्त की ओर बढ़ता गया। चारो ओर से त्राही माम त्राही माम की ध्वनि गुजायमान हो रही थी। अन्धविश्वासो का बोलबाला था। धूर्त पाखण्डी धर्म की असत्य अविद्या अज्ञानता पाखण्ड के झण्डे चारो ओर लहरा रहे थे। सत्य का गला घोटा जा रहा था। वेदवाणी का लोप हो रहा था। जनता जनार्दन इन कठोर दुष्प्रभावो के कारण भयावह दुख सागर मे डूबती चली जा रही [illegible] मद दिख [illegible] एक प्रकाश स्तम्भ की आवश्यकता थी [illegible] मार्ग दर्शन [illegible]

[illegible] गुजरात मोरवी प्रान्त के टकारा ग्राम मे १२/०२/१८२४ (माघ शुक्ला नवमी विक्रमाब्द १८८१) श्री करसण जी तिवारी के घर मे माता श्रीमती यशोदा बाई (अमृत बेन अमूबा) की कोख से मूल नक्षत्र मे जन्म होने पर नाम मूल शकर रखा गया।

यदि सभी मत मतान्तरो के लोग विश्व की महान विभूतियो का निष्पक्ष रूप से तुलनात्मक अध्ययन करके निष्कर्ष निकाले तो प्रत्येक दृष्टि से स्वामी दयानन्द को सर्वोपरि पाएगे।

सभी महान विभूतियो मे सुपुत्र शिष्य गुरु ब्रह्मचारी योगी सन्यासी राष्ट्रवादी आर्ष शिक्षा का प्रणेता समाज सुधारक सस्कृत भाषा का उद्धारक वेदार्थ का परिष्कर्ता राष्ट्रभाषा का प्रसारक सत्य असत्य का विवेकी नारी जाति का उद्धारक विश्व कल्याण का इच्छुक पराक्रमी मर्यादा पालक अथवा अन्य किसी भी प्रकार का तुलनात्मक मूल्याकन करने लगे तो महर्षि दयानन्द इन सभी मे अग्रणी होगे। जन्म से मृत्युपर्यन्त जिनके अन्य किसी प्रकार का कोई दोष नहीं था।

गिने जाए मुमकिन है सहरा के जर्रे।
समुद्र के कतरे फलक के सितारे।।
दयानन्द स्वामी मगर तेरे एहसा।।
ना गिनती में आए कभी हमसे सारे।।

आओ हम महर्षि दयानन्द के उपकारो का थोडा सा चिन्तन करे

समाज सुधारक

महर्षि दयानन्द ने ०७–०४–१८७५ को प्रथम आर्यसमाज की स्थापना करके **एक बहुत बडा उपकार किया। उन्होने लोगो को पतित से पवित्र पापात्मा से पुण्यात्मा नास्तिक से आस्तिक बनाया। आर्यसमाज प्रेम का प्रेरक और द्वेष दम्भ का नाशक है। वैदिक धर्म दिवाकर का यह उज्ज्वल ज्ञान प्रकाशक है। महर्षि ने स्त्रियो और शूद्रो को वेद पढ़ने का** अधिकार दिलाया। नारी जाति के सम्मान अछूतोद्धार और शुद्धि आन्दोलन का सूत्रधार बनकर अपना जीवन लगा दिया। समाज मे फैली कुप्रथाओ बाल विवाह अनमेल विवाह वृद्ध विवाह सती प्रथा नारी शोषण जाति पाति के भूत आदि का निराकरण किया तथा विधवा विवाह को सामाजिक प्रतिष्ठा दिलाई। महर्षि का समाज सुधार का जादू प्रभावकारी रहा।

वेदार्थ का परिष्कर्ता

महर्षि ने लुप्त हुए वेदो को जर्मन की लाइब्रेरी से मगवाकर वेदो का पुन[illegible]र किया और कहा कि ससार की लाइब्रेरी मे वेद सबसे प्राचीनतम है। आर्यभाषा (हिन्दी) मे वेदो का भाष्य [illegible] ज्ञान का सरलतम साधन बनाया।

राजगुरु दयानन्द

सभी मतान्तरो के गणमान्य व्यक्ति यदि निष्पक्ष भाव से विचार करे तो वे इस बात पर सहमत होगे कि स्वामी दयानन्द ही ऐसे दिव्य शक्ति थे जिनको राजगुरु पद पर सुशोभित किया जा सकता है। उन्होने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास मे राजा–प्रजा धर्म की विस्तार से चर्चा की है। यदि उनके उपदेशानुसार राजा और प्रजा अपने कर्त्तव्यो का पालन करे तो सुराज्य की स्थापना की जा सकती है। राजनैतिक सुधार की ओर ऋषि दयानन्द ने कहा है कि राजा की सुनीति धर्मयुक्त हो। राजा न्याय ईमानदारी से युक्त धार्मिक विद्वान और चरित्रवान होना चाहिए। प्रजा को भी उनके कर्तव्य और अधिकारो का बोध कराया।

ईश्वर के शुद्धस्वरूप का बोध

पाखण्डी पण्डितो ने ईश्वर पूजा के नाम पर लूट खसोट करके लोगो को आतकित कर रखा था। ईंट पत्थर नदी नालो और वृक्षो की पूजा की जाती थी। ईश्वर पूजा के नाम पर नरबलि और पशुबलि का रिवाज था। ऐसे समय मे स्वामी पूर्णानन्द से सन्यास की दीक्षा लेकर दयानन्द सरस्वती ने गुरु विरजानन्द से वैदिक शिक्षा प्राप्त करके पथभ्रष्ट समाज को वेद और शास्त्रो के आधार पर ईश्वर के शुद्धस्वरूप का ज्ञान दिया तथा आस्तिकता को अपने ग्रन्थो के माध्यम से नई दिशा प्रदान की।

नारी जाति का उद्धारक

स्वामी दयानन्द से पूर्व नारी जाति उत्पीडन की शिकार थी तथा उसे पाव की जूती समझा जाता था। नारी को यह कहकर उत्पीडित किया जाता था कि –

ढोल गवार शूद्र पशु नारी।
ये सब ताडन के अधिकारी।

महर्षि दयानन्द ने मनु महाराज के शब्दो मे उपदेश दिया **यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।** महर्षि दयानन्द ने बाल विवाह सती प्रथा नारी उत्पीडन का विरोध किया तथा स्त्री शिक्षा वेश्या उद्धार विधवा विवाह का समर्थन किया। नारी को पुरुष के बराबर का अधिकार दिलाकर नारियो को आदरणीय पद प्राप्त कराए। आज विभिन्न देशो मे नारिया शासनध्यक्ष के पद को सुशोभित कर रही है।

आर्ष शिक्षा का प्रणेता

स्वार्थी लागो ने आष ग्रन्थ नष्ट कर दिए थे तथा मिथ्या ग्रन्थ बनाए [illegible] महर्षि दयानन्द विश्व के पहले व्यक्ति थे जिन्होने आर्ष शैली मे वेद का प्रचार किया था। वेद को ईश्वरीय ज्ञान बताते हुए दृढतापूर्वक कहा वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है वेद को पढना पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। **आर्ष पद्धति को अपनाकर किया विश्व मे वेद प्रचार। याद रहेगा सदा महर्षि दयानन्द का यह उपकार।।**

महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका वेद भाष्य सत्यार्थ प्रकाश सस्कारविधि आर्याभिविनय आर्योद्देश्य रत्नमाला आर्यसमाज स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश गोकरुणा निधि आदि अद्वितीय ग्रन्थो की रचना करके मानवमात्र के लिए नवजीवन का सचार किया।

राष्ट्रवादी दयानन्द

महर्षि दयानन्द के समय तक भारत परतन्त्र रहा। सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द ने स्वदेश भक्ति स्वराज्य और प्रजातन्त्र का पाठ पढाया और कहा कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि होता है। सन १६११ की जनसख्या अधिकारी श्री ब्लण्ट लिखते है दयानन्द मात्र धर्मिक सुधारक नही था वह एक महान देशभक्त था। यह कहना ठीक होगा कि उनका धार्मिक सुधार राष्ट्रीय सुधार का एक उपाय था। स्वामी दयानन्द का भारतीय जनमानस का ज्ञान अधिक गहरा सवेदनशील तथा रचनात्मक था उनमे प्रखर प्रतिभा और अन्तर्दृष्टि थी। इतिहास इस बात का साक्षी है। १८५५ ५६ ई० मे स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए स्वामी दयानन्द ने अपने गुरु स्वामी विरजानन्द से गुप्त मन्त्रणा करके कई क्रान्तिकारी नेताओ से २० २५ बार सम्पर्क किया था। अग्रेज भी इसी ब्रह्मचारी सन्यासी से खौफ खाते थे।

राष्ट्रभाषा का प्रसारक

अग्रेजो के शासनकाल मे स्वामी दयानन्द ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के सिहासन पर सुशोभित किया। स्वामी जी ने कहा था कि राष्ट्रभाषा हमे राष्ट्रीय सस्कृति से जोडती है। ऋषि दयानन्द की मातृभाषा गुजराती थी स्वय सस्कृत भाषा के प्रकाण्ड पण्डित थे किन्तु उन्होने अधिकाश ग्रन्थ हिन्दी मे ही लिखे तथा अपने व्याख्यान हिन्दी मे ही दिए। वह एक दीर्घदर्शी और अनुभवी धर्मोपदेष्टा थे। वेद और व्याकरण जैसे विषयो को सर्वप्रथम राष्ट्रभाषा स लिखने का श्रय महर्षि दयानन्द को जाता है।

सस्कृत भाषा का उद्धारक

महाभारत काल के पश्चात सस्कृत भाषा का ह्मास हुआ। देववाणी सस्कृत सस्कृत केवल कुछ ब्राह्मणा के यहा पढी और पढाई जाती थी। महर्षि दयानन्द को कुन्दन बनाने वाले ब्रह्मऋषि गुरुवर दण्डी स्वामी विरजानन्द ने आर्ष ग्रन्थो की शिक्षा समस्त भाषाओ की जननी सस्कृत मे प्रदान की। स्वामीजी ने स्वय सस्कृत भाषा मे प्रवचन देकर इसे सर्वोच्च स्थान दिलाय और विश्व को बताया कि इस भाष की शिक्षा द्वारा ही हम प्राचीनतम सभ्यता और सस्कृति भाषा का उद्धार करके इसे विश्व स्तर पर सम्मानित किया।

सत्य असत्य का विवेकी

ऋषि दयानन्द ने अपने जीवनकाल मे सदैव सत्य का पक्ष लिया। सत्यान्वेषी ने अनेक कष्ट सहन करते हुए भी सत्य के मार्ग का परित्याग नही किया सत्य के प्रचार मे अपने प्राणो की बाजी लगा दी। जब उन्हे शाहपुरा से जोधपुर जाने के लिए रोका गया त उन्होने स्पष्ट किया था चाहे मुझे तोप के मुह के आगे बाध दो चाहे लोग मेरी उगलियो की बत्तिया बनाकर जला दे तो भी कोई चिन्ता नहीं वहा जाकर अवश्य सत्य उपदेश करूगा। स्वामीजी ने स्पष्ट कहा था कि झूठ से काम सिद्धि चक्रवर्ती राज्य की उपलब्धि भी हो तो उस ग्रहण नही करना चाहिए उन्होने सन्देश दिया कि सत्य के ग्रहण करने असत्य के छोडने मे सदैव उद्य रहना चाहिए। महर्षि का अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश विश्व विश्रुत वह विलक्षण ग्रन्थ है जो सत्य पर आधारित हैं।

– शेष भाग पृष्ठ ८ प

श्रेष्ठ कर्मों से ही मानव जीवन की सफलता

– डॉ० दीनानाथ आचार्य

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सभी योनियो मे मानव योनि को उत्तम कहा गया है चूकि मानव से भिन्न योनिया तो भोग योनिया ही हैं जबकि मानव योनि भाग योनि के साथ कर्म योनि भी है। मानव जीवन की सार्थकता उत्तम कर्मो के करने से ही होती है। तभी तो विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ वेद स लेकर उत्तरोत्तर ग्रन्थो मे उत्तम कर्मों की चर्चा वर्णित है। मानवो के लिए वेद भगवान का आदेश है – कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समा – यजु० ४०/२ अर्थात मनुष्य कर्म करता हुआ सौ वर्षों तक जीने की इच्छा करे।

श्रीमदभगवदगीता मे भगवान श्री कृष्ण ने यह उपदेश दिया है कि –

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफल हेतुर्भूर्मा ते सगोऽस्त्वकर्मणि।

– भ०गी० २/४७

यद्यपि गीता मे ज्ञान एव कर्म दोनो की विस्तृत विवेचना है तथापि कर्म पर विशेष जोर दिया गया है।

बाल्मीकि रामायण मे कहा गया है –

कर्मसु चाऽमृतम

– (वा०रा० ५/४१/६)

अर्थात कर्मो मे अमृत निवास करता ।

शास्त्र का निर्देश हे कि मनुष्य अपने किए हुए कर्म चाहे वह शुभ हो या अशुभ अवश्य ही फल भोगता है –

अवश्यमेव भोक्तव्य कृत कर्म शुभाशुभम।

महाभारत मे भी उपर्युक्त कथन की सम्पुष्टि हुई है – **यथा कर्म तथा लाभ इति शास्त्रनिदर्शनम"**

– शान्ति १७६/२०

अपि च – **"कुरूते यादृश कर्म तादृश प्रतिपद्यते।** *शान्ति २९०/१६*

वेद व्यास जी ने ता यहा तक कहा कि –

त्रेन कर्मणा सौख्य दु'ख पापेन कर्मणा।
त फलति सर्वत्र नाकृत भुज्यो क्वचित।।

अर्थात शुभ (श्रेष्ठ) कर्म के द्वारा सौख्यता आती हे पाप कम क द्वारा दुख होता है। सुकर्म ही सब जगह फलते है अकर्म नही।

सत तुलसीदास न अपन रामचरित मानस मे तो स्पष्ट रूप से उदघोषित [illegible] है कि यह ससार कर्म प्रधान है। जसा कर्म करता है वैसा ही फल पाता है –

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा।
जस करहिं सो तस फलु चाखा।

और भी –

करे जो कर्म पाव फल सोई।
निगम नीति अस कह सब कोई।

अन्य किसी कवि ने भी कहा है –

दुख दोगे दुख मिलेगा सुख दोगे सुख मिलेगा।

मारोगे तुम किसी को तो गम पडेगा सहना।।

भगवान मनु ने तो मानव जीवन के लिए कर्म की प्रधानता पर जोर देते हुए कहा है –

जन्मना जायते शूद्र सस्कारात द्विज उच्यते।
वेदपाठात भवेद्विप्रे ब्रह्म जानाति ब्राह्मण।

– मनुस्मृति

अर्थात जन्म से सभी शूद्र होते है सस्कार (ज्ञान एव सुकर्म) स द्विज कहलाते हैं वेद पढने से विप्र ओर ब्रह्म (परमेश्वर) को जान लेने (साक्षात कर लेने) से ब्राह्मण कहलाता है।

इससे जीवन मे कर्म की सार्थकता प्रमाणित होती है जन्मना जाति की नही।

इतिहास साक्षी है कि जितने भी महापुरुष हुए हैं वे जन्म से महापुरुष नही अपितु श्रेष्ठ कर्मों के माध्यम से ही महापुरुष की श्रेणी म आए है। यथा राम कृष्ण दयानन्द विवेकानन्द महात्मा बुद्ध महावीर शिवाजी महात्मा गाधी अम्बेडकर इत्यादि।

राम के जीवन के श्रेष्ठ एव मर्यादित कर्म ही तो उन्हे मर्यादापुरुषोत्तम नीतियुक्त एव योगमय जीवन बिताने के कारण श्रीकृष्ण को योगेश्वर ज्ञान दया परोपकार एव त्यागमय कर्मो के सुधारवादी गतिविधिया ने दयानन्द को महर्षि विवेक एव सुधार समन्वित कर्म ही विवेकानन्द को स्वामी सत्यान्वेषी एव अहिसा के पुजारी बुद्ध महावीर एव गाधी जी को महात्मा स्वदेश प्रेम का वीरतापूर्ण कर्म शिवाजी को वीर जैसी महान उपाधियो से समलकृत किए हैं। इस प्रकार विश्व वाडमय मे ऐसे अनेक महापुरुष हुए हैं जिन्होने श्रेष्ठ कर्मो स अपने जीवन को सफल एव सार्थक बनाया है।

अब विचारणीय बिन्दु यह है कि श्रेष्ठ कर्म का क्या अभिप्राय है ? इसका सामान्य अर्थ हम परोपकार युक्त कर्म या धर्मयुक्त कर्म कर सकते हैं। मनुष्य स्वार्थ की भावना से ऊपर उठकर जब परमार्थ का पथिक बन जाता है तो उसका जीवन सफल हो जाता है।

सुभाषित सग्रह मे तो कहा गया है कि मानव का यह शरीर परमार्थ साधन हेतु है –

परोपकाराय फलन्ति वृक्षा परोपकाराय वहन्ति नद्य।
परोपकाराय दुहन्ति गाव परोपकारार्थमिद शरीरम।।

अर्थात परोपकार के लिए वृक्ष फलते है परोपकार के लिए नदिया बहती है परोपकार के लिए गाये दूध देती हैं तथा परोपकार क लिए ही यह मानव शरीर है।

अठारहा पुराण में व्यास जी के दो ही वचन है। दूसरे का उपकार करना पुण्य के लिए और दूसरे को पीडा पहुचाना पाप के लिए होता है। जैर के श्लोक से स्पष्ट है –

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्थ वचन द्वयम्।
परोपकार पुण्याय पापाय परपीडनम्।।

अब धर्मयुक्त कर्म को समझने के लिए धर्म के स्वरूप का स्पष्टीकरण आवश्यक है। भगवान मनु ने धर्म के सामान्य दस लक्षण निम्न बतलाये है –

धृतिश्क्षमा दमोऽस्तेय शौचमिन्द्रियनिग्रह ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशक धर्मलक्षणम।।

– मनुस्मृति

अथात धेर्य क्षमा [illegible] का त्याग पवित्रता इन्द्रिय सयम बुद्धि विद्या सत्य एव अक्रोध (क्रोध न करना) ये दस धर्म के लक्षण है।

और भी –

श्रुति स्मृति सदाचार स्वस्य च प्रियमात्मन।
एतच्चतुर्विध प्राहु साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।

– मनुस्मृति

अर्थात श्रुति (वेद) स्मृति (वेदानुकूल मनुस्मृत्यादि शास्त्र) सत्पुरुषो का आचार जो सनातन अर्थात वेद द्वारा परमेश्वर प्रतिपादित कर्म और जिसको आत्मा चाहता है या अपनी आत्मा मे प्रिय लगे ये धर्म के साक्षात चार लक्षण कहे गए हैं।

उपर्युक्त लक्षणो स युक्त कर्मो से ही दूसरे की भलाई हो सकती है। धार्मिक व्यक्ति ही परोपकारी हो सकता है और उसका कर्म श्रेष्ठ होगा एव उसके जीवन मे सफलता की अपेक्षा की जा सकती है।

आग्ल भाषा के विद्वानो ने कर्म को तो पूजा ही स्वीकारा है –

Work is Worship

अपने श्रेष्ठ कर्मों के द्वारा ही मानव लोकप्रिय होता है तथा उसके जीवन की सार्थकता है –

प्रिया भवन्ति लोकस्य स्वे स्वे कर्मण्यवस्थिता *– मनुस्मृति*

ब्राह्मण ग्रन्थ मे श्रेष्ठतम कर्म को यज्ञ कहा गया है –

यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म – गो० ब्रा०

साथ ही स्वर्ग (सुख विशेष) की प्राप्ति के लिए यज्ञ करने का निर्देश दिया गया है –

महाभारत मे व्यास जी ने प्रशस्त (उत्तम) कर्मो के अनुष्ठान को सुखदायक कहा है –

कर्मणान्तु प्रशस्तानामनुष्ठान सुखावहम

– उद्योग ३-/२२

श्रीकृष्ण ने भी गीता मे कहा है कि अपने अपने उत्तम कर्मों मे सलग्न रहने से मनुष्य सिद्धि को प्राप्त करते है –

स्वे स्वे कर्मण्यभिरत ससिद्धि लभते नर

– भ०गी० १८/४५

जनकादि ने भी अपने जीवन मे श्रेष्ठ कर्मो के द्वारा ही सिद्धि की परम उपलब्धि को प्राप्त किया है –

कर्मणैव हि ससिद्धिमास्थिता जनकादय

– भ०गी० ३/२०

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता हे कि मनुष्य जीवन की सफलता ज्ञान एव श्रेष्ठ कर्म से ही सभव है। यदि मनुष्य बहुत बडा ज्ञानी [illegible] परन्तु उसक जीवन मे श्रेष्ठ कर्म का अभाव हो आचारहीनता हो तो उसकी सारी विद्वता अपवित्र हो जाएगी और उसको वेद भी पवित्र नही कर सकता क्योकि –

आचारहीन न पुनन्ति वेदा

– मनुस्मृति

यही कारण है कि रावण बहुत बडा विद्वान था परन्तु उसकी चरित्रहीनता उसके गुणो (विद्याओ) को ढक देती है।

अत जिसकी कीर्ति है वही जीवित है –

कीर्तिर्यस्य स जीवति

इस प्रकार यह कहा जाना अतिशयोक्ति नही होगी बिना श्रेष्ठ कर्मों के मानव जीवन की सफलता सभव नही है। अत प्रत्येक मानव का कर्त्तव्य है कि वे वेदोक्त श्रेष्ठ मार्गों पर चलते हुए 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम के लक्ष्य को पूरा करते हुए अपने जीवन को सफल बनावें तथा मानव जीवन के पुरुषार्थ चतुष्टय धर्म अर्थ काम एव मोक्ष की सद्धि मे सफलता प्राप्त करे।

– पुस्तकालयाध्यक्ष
श्री वैदिक पुस्तकालय
आर्यसमाज, साहेबगज

अपना समस्त कार्य हिन्दी में ही करें

देवयज्ञ में दीपक क्यों ? एक समाधान

– कमलेश कुमार शास्त्री

हम जब देवयज्ञ करते करते हैं तब हवनकुण्ड मे अग्नि प्रस्थापित करने के लिए प्रथम दीपक जलाते हैं। इसका रहस्य क्या हैं ? क्या बिना दीपक सीधे हवनकुण्ड मे अग्नि की स्थापना नहीं की जा सकती ? जब हम हवन ही करने बैठे हैं और हवन के अग्नि से ही हमे काम लेना है तब हवनकुण्ड मे ही सीधा अग्नि स्थापना क्यो न कर दिया जाए ? दीपक जला कर उससे अग्नि लेकर हवनकुण्ड मे अग्नि प्रस्थापन क्यो किया जाए ?

ऐसे अनेक प्रश्न हवन करने वाली व्यक्ति के मन मे उठ सकते हैं। इनका उत्तर भी यथा तथा दिया जा सकता हे। हम यहा कुछ विचार इसी उपर्युक्त प्रश्न को लेकर करेगे।

हवन के अक्सर पर की जाने वाली प्र [illegible] कुछ [illegible] रखनी है। यह रहस्य वैज्ञानिक या भौतिक हो सकता है। इसके अतिरिक्त ईशभक्ति का प्रतीक भी हो सकता हे। यह दीप ज्वलन एक उपदेशात्मक रहस्य ले कर बैठा है। हमे व्यवहार मे पारगत बनाने का और सफल होने का तरीका सिखाता है। यह उपदेश भी हवन में दीप जलाने का दीपक रखने का रहस्य माना जा सकता हे।

देखिए हवन करने के उद्देश्य से बेठे हुए आदमी को वास्ता या प्रयोजन तो हवन के अग्नि से हवन कुण्ड से ही हाता हे। फिर भी वह सर्वप्रथम दीपक जलाता है। यह दीपक हवनकुण्ड के अग्नि का बीज है। इसी बीजात्मक अग्नि स हवनकुण्ड के उस अग्नि का जन्म होता है जिसमे हम हवन करना चाहते है।

हवनकुण्ड मे अग्नि की स्थापना करने के बाद दीपक को हम एक कोने मे ईशान कोण मे प्रस्थापित कर देते हैं। पूर्णहुति पर्यन्त यह दीपक जलता रहे ऐसी हमारी कामना होती है। इसी कारण आवश्यकता पडने पर हम उसमे घृत डालते रहते हैं। अन्य भी सावधानी रखते हैं जिसके कारण यह दीपक जलता रहता है। इस प्रकार यह बीजरूप अग्निवाला दीपक स्थिरनिधि बन जाता है। दीपक स्थिरनिधि इस कारण है क्योकि हवन के अग्नि से पूर्व वह अस्तित्व मे आया था वर्तमान था स्थिर था और पूर्णाहुति के बाद भी वह रहेगा स्थिर होगा। इसी दृष्टि से वह स्थिरनिधि है।

बीजरूप दीपक स्थिरनिधि तो है ही इसके अलावा यह आरक्षित निधि भी हो जाता है। वह इसलिए कि यदि किसी कारण से हवनकुण्ड का अग्नि बुझ जाता है शान्त हो जाता है तो उस अवस्था में यह दीपक रूप आरक्षित निधि से अग्निरूप निधि लाकर हवनकुण्ड के बुझे हुए अग्नि [illegible] प्रज्वलित [illegible] यद्यपि हम सावधानी रखते ही ह कि हवनकुण्ड का अग्नि बुझने न पाए। इसके लिए हम [illegible] घृत [illegible] प्रयोग भी करते रहते हैं। पुनरपि अग्निशमन हो जाए तब यह दीपक=आरक्षित निधि के रूप में कार्य आता है।

इस तरह यह दीपक हवनकुण्ड की अग्नि का बीज है। और यह बीज अपने में से अन्य अग्नि को जन्म देकर फिर स्थिरनिधि बन जाता है और आरक्षित निधि भी।

हवन के क्रियाकाण्ड मे किया जाने वाला यह समग्र क्रिया कलाप या विधि विधान हमे व्यवहार का मार्गदर्शन कराता है। यदि विचारेगे तो पाएगे कि हमारा दिनभर का व्यवहार दूसरी दूसरी बातो मे चलता है। फिर भी हम उसका आरम्भ ऐसे कार्यो से करते हैं जो थोडी देर के लिए थोडे से साधनो से और थोडी सी=छोटी सी प्रक्रिया से किए जाते हैं। इन बीजरूप कार्यों से ही दिनभर के कार्यो का आरम्भ होता है। एक बार ये प्रारम्भिक कार्य करके हम उन बीजभूत कार्यों को एक कोने मे सरका देते है।

उदाहरण के रूप मे एक ब्राह्मणवर्ण के आदमी को ले। वह ब्राह्मण है अत उसका कार्य पढना पढाना है। दिन भर इसी मुख्य कार्य को वह करता है। दिनभर [illegible] इस [illegible] मे वह कभी रामायण पढाता हे तो कभी उपनिषद। कभी विज्ञान तो कभी गणित। कभी व्याकरण [illegible] काव्य। इन विविध विषयो को पढाने का कार्य करने की वजह से ही यह अध्यापक के रूप मे जाना जाता है। ब्राह्मण का यह अध्यापक कार्य हवन है। जैसे हवन करने से पूर्व हमे दीपक जलाना होता है ऐसे ही इस अध्यापक को चाहिए कि वह भी दिनभर के पठन पाठन के हवन रूप कार्यो को करन से पूव एक छोटा सा दीपक जला लेव। यह दीपक उसक दैनदिन पठन पाठन के कार्य का बीज होगा यह दीपक ओर कुछ नही वदो का स्वाध्याय ही हे। दिन के आरम्भ मे ही यह अध्यापक वेद स्वाध्याय रूप दीपक को प्रथम प्रज्वलित करता है। फिर इस स्वाध्यायरूप दीपक से ज्ञानरूप अग्नि लेकर दिनभर के अपने व्यवसाय जो कि पठन पाठन का है करता है। अब यहा वेदो का स्वाध्याय बीज बनता है। यही बीज दिन भर के सामाजिक गिने जाने वाले पठन पाठन रूप हवन को जन्म देता हे। अपने व्यवसाय रूप कार्य के आरम्भ हो जाने पर हम इस स्वाध्यायरूप दीपक को एक कोने मे रख देते हैं। अब हमारा सारा व्यवहार अपने व्यवसायात्मक कार्य पठन पाठन से ही चलता है।

यद्यपि बडी सावधानी से हम अपने पठन पाठन के कार्य को करते हैं पुनरपि कभी किसी कारण से पठन-पाठन रूप यज्ञ की अग्नि मन्द पड जाती है या बुझ जाती है तो उस अवस्था में यह वेद स्वाध्यायरूप दीपक मे स्थिर और आरक्षित रूप से रखा गया ज्ञान उपयोगी बन जाता है। वह हमारे बुझ रहे पठन पाठन यज्ञ के अग्नि को पुन प्रज्वलित कर देता है। यदि यह बीजरूप दीपक स्थिर न होता [illegible] सरक्षित न होता तो [illegible] के व्यवसायात्मक पठन पाठन रूप हवन के ज्ञानरूप अग्नि का आकस्मिक रूप से शमन होने पर हम क्या करते ?

हवन से पूर्व जलाया जाने वाला दीपक ब्राह्मण वर्ण के व्यक्ति को उपदेश दे रहा है कि यद्यपि तुम पठन पाठन का व्यवहार दिन भर करते हो और उस समय अन्यान्य ग्रन्थो को उपयोग के लिए लेते हो परन्तु इन सब से पूर्व वेद स्वाध्याय रूप दीपक का प्राकटय कर उसे बीज बनाकर उसी से ज्ञानाग्नि लेकर आगे बढो। इस बीजरूप ज्ञानाग्नि का स्थिर तथा आरक्षित रखे। बस फिर भले ही दिन भर किए जाने वाले अपने व्यवसाय रूप पठन–पाठन के कार्य को करते रहो।

हवन क्षत्रिय भी करता है। वह भी हवन के पूर्व दीपक प्रज्वलित करता है। इसी दीपक से अग्नि लेकर वह हवन के अग्नि को प्रज्वलित करता है जैसा कि ब्राह्मण करता है। यह प्रक्रिया ब्राह्मण की तरह क्षत्रिय वर्ण वाले को भी उपदेश देती है।

हम जानते हैं कि क्षत्रियो का वास्ता तो यद्यपि राष्ट्र रक्षार्थ युद्ध करने का और राष्ट्र के सुचारू सचालन सेहोता है। या यो कहे कि वह दिनभर यही कार्य करता है। परन्तु इस दिनभर किए जाने वाले कार्य से पूर्व क्षत्रिय को भी एकदीपक जलाना है। [illegible] दिनभर मे किए जाने वाले अपने व्यवसायात्मक कार्य का बीज होगा।

क्षत्रिय का यह दीपक दिन के आरम्भ मे किया जाने वाला शारीरिक व्यायाम है। जिसमे आसन प्राणायाम दण्ड बैठक आदि का समावेश होता है। यद्यपि क्षत्रिय को तो तलवार भाले बन्दूक आदि के द्वारा दिनभर का व्यवसायात्मक कार्य करना है पुनरपि उसे इस दिनभर के काय से पहले इस काय के बीजरूप शारीरिक व्यायाम का करना है। मानो दिन के आरम्भ म किया जाने वाला शारीरिक व्यायाम रूप दीपक को प्रज्वलित कर उसे बीज बनाकर अब वह दिनभर के अपने क्षत्रिय कर्म का आरम्भ करता है। इस व्यवसायात्मक दैनदिन कार्य मे यद्यपि वह सावधान रहता है फिर भी कहीं किसी कारण किसी समय दैनन्दिन व्यवसाय मे मन्दता आती है तो उस मन्दता की स्थिति मे पुन स्फूर्ति का कार्य दीपक करेगा। जिसे सुरक्षित रूप से रखा गया है और वह क्षत्रिय के जीवन मे स्थिरता से जल भी रहा है। यदि कोई क्षत्रिय बिना दीप जलाए ही अपने व्यवसायात्मक क्षत्रिय कर्म मे लग जाता है तो वह उस मन्द पडे कार्य को पुन प्रदीप्त करने का कार्य कैसे करेगा ? जबकि शारीरिक व्यायामरूप दीपक को प्रज्वलित करके फिर दैनन्दिन कार्य मे लगने वाला क्षत्रिय बन्धु कभी किसी मोड पर जब अपना कार्य मन्द हुआ अनुभव करता है तब उस मन्द कार्य को पुन प्रदीप्त करने का कार्य इस बीजरूप शारीरिक व्यायाम के द्वारा कर लेता है।

इसी प्रकार हवन तो वैश्य भी करता है। वह भी हवन से पूर्व दीपक प्रज्वलित करता है। इसी दीपक से अग्नि लेकर वह अपने हवनकुण्ड मे अग्नि को प्रस्थापित [illegible] करता है जैसा कि ब्राह्मण क्षत्रिय करत हे। यह प्रक्रिया ब्राह्मण क्षत्रिय की तरह वैश्य को भी उपदेश देती है।

हम जानते है कि वैश्य का कार्य कृषि या व्यापार है। उसे दिनभर या तो कृषि कार्य करना है या व्यापार। पुनरपि वैश्य के लिए यह आवश्यक है कि वह दिनभर के कार्यो को आरम्भ करने से पूर्व एक छोटा सा दीपक भी जला लेवे। यह वैश्य का दीपक और कुछ नहीं उसके द्वारा कमाए गए धन मे से नियत राशि की जाने वाली बात ही है। यद्यपि व्यापारी की एक बडी राशि उसे व्यापार मे लगी हुई होती है। इसी से उसे अपने दैनदिन व्यापार के कार्य को करना होता है। फिर भी वैश्य को चाहिए कि वह इस दिनभर किए जाने वाले अपने व्यवसाय के कार्य को आरम्भ करने से पूर्व इस कार्य के बीज[illegible](बचत) कार्य को सम्पन्न करे। अर्थात व्यापार के कार्य करने से पूर्व बचत रूप छोटा सा दीपक जला लेवे। कमाई हुई राशि म से बचत क लिए राशि को निकालना ही हवन के आरम्भ मे वैश्य के द्वारा प्रज्वलित किया गया दीपक है। इस बचत रूप दीपक को प्रज्वलित कर उसे बीज बनाकर अब वह दिन भर के अपने व्यापार या कृषि कर्म का आरम्भ करे। वैश्य अपने इस व्यापारात्मक दैनदिन कार्य मे सभी प्रकार की सावधानी रखता हे फिर भी किसी कारण स काई बाकर दैनदिन व्यवसाय [illegible] का अग्नि मद पड जाता है या सर्वथा बुझ जाता है ता उस बुझे अग्नि को पुन प्रज्वलित करने के लिए बचतरूप दीपक उपयोगी बन जाता है। जो वैश्य इस बात रू [illegible] को जलाए बिना दैनदिन व्यवसाय [illegible] कार्य म प्रवृत्त हो जाता है वह किसी कारण से जब व्यवसाय रूप हवन का अग्नि बुझन लगे तो क्या करेगा ? बुझे हुए अग्नि को प्रदीप्त करने के लिए क्या उपाय करेगा ? यदि उसने बचत रूप दीपक जलाया हे उसे स्थिरता और सुरक्षा दी है तो वह वैश्य इस बीजरूप दीपक मे पुन अपने व्यवसाय रूप हवन को प्रज्वलित कर सकेगा।

इस प्रकार हवन के आरम्भ मे प्रज्वलित किया जाने वाला दीपक यज्ञकर्ता को सन्देश देता है कि यद्यपि तुम दिनभर अन्यान्य कार्य मे लगने वाले हो उन कार्यों से ही तुम्हारा ज्यादा वास्ता होने वाला है पुनरपि उनका प्रारम्भ करने से पूर्व तुम दैनन्दिन कार्य के बीजरूप दीपक को प्रज्वलित करना मत भूलना। यह दीपक न जलाकर भी सीधे हवनकुण्ड मे अग्नि स्थापन करके भी हवन किया जा सकता है पर इस स्थिति मे उस दिन उस क्षण हमे मुश्किल होगी जब हवनकुण्ड का अग्नि बुझ जाएगा। यदि हमने व्यवस्था नहीं की तो एक बार बुझा हवनकुण्ड का अग्नि आस पास के स्वजनो की आखो मे पानी ला देगा। पर यदि आपने ब्राह्मण के रूप मे वेदस्वाध्याय दीपक क्षत्रिय के रूप मे दिन आरम्भ मे किया जाने वाला शारीरिक व्यायाम रूप दीपक तथा वैश्य के रूप मे बचत रूप दीपक को जलाया है तो यह बीजरूप दीपक आपके व्यवसायात्मक दैनन्दिन व्यवहार की अग्नि कभी बुझने न देगा। देवयज्ञ मे हवन से पूर्व दीपक को प्रज्वलित करने का परम्परा को स्वीकार कर [illegible] रूप कार्य हमने चालू रखा है तो इससे मिलने वाला व्यावहारिक उपदेश भी स्वीकार करे और तदनुरूप कार्य भी करे।

– २४ वी वीर नगर सोसायटी
नबावाडज रोड अमदाबाद

हिन्दी के सामने मुंह बाए खड़ा संकट

– आनन्द मिश्र 'अभय'

स्वतन्त्रता के पश्चात जिस दिन हिन्दी को सविधान मे भारतीय गणतन्त्र की राजभाषा घोषित किया गया था उसी दिन उसके पैरो मे कुछ भारी भरकम पत्थर भी बाध दिए गए थे। इन पत्थरो की ओर उस समय यथोचित ध्यान न दिए जाने के कारण आज यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति हिन्दी के समक्ष सुरसा की तरह मुह फैलाकर खडी है कि उसके अस्तित्व पर ही सकट की काली घटाए चारो ओर से उमड घुमड रही हैं। इन काली घटाओ का उत्स भी सविधान मे ही है। पन्द्रह वर्ष तक अग्रेजी को सह राजभाषा बनाए रखने के प्रावधान के कारण राज काज मे व्यवहारत आज वही देश की एकछत्र स्वामिनी बनी हुई है। स्वाधीनता प्राप्त करने के नाम पर देश के विभाजन तक का स्वीकार कर लेने वाले स्वार्थ लोलुप मानसिकता ने पहले दिन से ही हिन्दी को भी खण्डित करने का विधि सम्मत उपक्रम अग्रेजी अंको को देवनागरी अको का अन्तर्राष्ट्रीय रूप कहकर देवनागरी अको का तिरस्कार एवम बहिष्कार करके किया गया। आज कोई यह पूछने वाला नहीं है कि क्या विश्व के अन्य किसी देश मे भी कहीं ऐसा है कि किसी भाषा की लिपि तो अपनी हो परन्तु अकावली पराई ? क्या लिपि मे केवल वर्णमाला ही आती है अक नहीं ? लिपि देवनागरी और अक अग्रेजी के ऐसी विसगति की ओर से आखे मींच लेने के कारण आज देश की तीन पीढियो देवनागरी अको को लगभग विस्मृत कर चुकी हैं। आगामी पीढिया तो हमारे प्राचीन ग्रन्थो तथा पुस्तको मे अकित अको को पढ ही नहीं पाएगी। इस पर विचार करने की फुरसत ही नहीं है किसी को। बहाना है सविधान की दुहाई और कम्प्यूटर। ऐसे बहानेबाज कुतर्की लोगो से कौन पूछे कि सविधान मे देवनागरी अको के प्रयोग का कोई निषेध नहीं किया गया है। फिर बाकी मामलो मे ही कौन सा सविधान का पालन हो रहा है जो अग्रेजी अको के प्रयोग के पक्ष मे ऐसा कुतर्क गढ लिया गया है ? रही बात 'कम्प्यूटर (सगणक) की तो जो सगणक किसी अपराधी का चित्र बताए गए विवरण के अनुसार बना लेता है वह देवनागरी अक कैसे नहीं बना पाएगा ? सगणक मे देवनागरी अको वाले फाण्ट भी हैं यह किसे ज्ञात नहीं है ? सगणक को देवनागरी अक बनाने से न कभी परहेज रहा है और न है। यह तो उसके प्रयोगकर्ता व्यक्ति या उसे दिए गए निर्देश पर निर्भर है कि वह अक किस लिपि मे बनाए। 'आधा तीतर आधा बटेर' की कहावत का इससे अच्छा उदाहरण शायद ही कहीं देखने को मिले।

यह तो रही लिपि को खण्डित कर डालने की बात। इससे भी बडा एक और सकट सामने आ खडा हुआ है पर उसकी ओर शायद किसी का ध्यान हो। यह सकट है बोलियों को भाषा का दर्जा दिलाने के षडयन्त्र का। भोजपुरी मैथिली बुन्देली छत्तीसगढी कुमाउनी ब्रज अवधी आदि आदि हिन्दी की बोलिया हैं। इन बोलियो को भाषा घोषित किया जाए ऐसी माग तत तत क्षेत्रो के कुछ अतिस्वार्थी तत्वो द्वारा समय समय पर उठायी जाती है। इसके पीछे छिपी राजनीति की कुत्सित मनोवृत्ति यह है कि यदि इन्हे भाषा मान लिया गया तो फिर सविधान की आठवीं अनुसूची मे इनको स्थान दिलवाना आसान होगा और जब आठवीं अनुसूची मे ये समाविष्ट हो जाएगी तो फिर इनके नाम पर पृथक राज्य (भाषावार राज्य की काग्रेसी योजना) का निर्माण कराना सम्भव हो जाएगा। इस दूषित चिन्तन का एकमात्र परिणाम यही होगा कि हिन्दी नाम की भाषा कहीं बची ही नहीं रह पाएगी। तब हिन्दी किस चिड़िया का नाम है ऐसा मुहावरा बनते फिर कितनी देर लगेगी।

सबसे अधिक दुःख तो यह है कि हिन्दी वाले ही अपनी क्षत्रीय सकीर्ण मनोवृत्ति के कारण ऐसी माग करते है। यथा एक महानुभाव हैं तो बिहार के पर उन्होने एक जेबी सस्था का पजीयन हैदराबाद मे कराया है 'वज्जिका भाषा' के नाम पर। उनकी नवीनतम खोज यह है कि हनुमान जी ने अशोक वाटिका मे बन्दिनी सीता जी से जो वार्ता की थी वह वज्जिका मे ही की थी। अब ऐसे बुद्धि के महासागर लोगो से कौन पूछे कि वज्जि सघ तो भगवान बुद्ध के समय गठित हुआ था। उसके (न्यूनतम) लगभग नौ लाख वर्ष पूर्व हुए हनुमान जी की भाषा का इलहाम आपको कहा से हो गया ? कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसे 'बुद्धिसागरो' से ही हिन्दी को आज सबसे बडा खतरा है और इस खतरे के सूत्रधार हैं मार्क्स मेकाले तथा मौलाना के मानसपुत्र जो गत पचास वर्षो से सत्ता मे समासीन और वर्चस्वी है। वे इस सनातन राष्ट्र को एक राष्ट्र मानते ही नहीं हैं। उनकी दृष्टि' मे यह अनेक राष्ट्रों का अनेक राष्ट्रीयताओ का देश है।

कहने का तात्पर्य यह कि हिन्दी को वास्तविक सकट आज न तो अग्रेजी से है और न विभाजन की जननी उर्दू से। असली खतरा तो हिन्दी को ऐसे हिन्दीवालो से ही है जो हिन्दी की बोलियो को 'भाषा' बतलाकर हिन्दी के अस्तित्व को ही जाने अनजाने मिटा डालने पर तुले हैं और उनका पृष्ठ-पोषण कर रही है साहित्य अकादमी जो बोलियो को 'भाषा' बनाने की महत्वपूर्ण किन्तु गर्हित भूमिका निभाने में लगी है। सावधान हिन्दी वालो। यह षडयन्त्र मामूली नहीं है। यदि इस जाल मे फसे तो हिन्दी के साथ-साथ आपका भी अस्तित्व शून्य होते देर न लगेगी।

अन्त मे एक बात और। अपने देश में यद्यपि स्वामियो की भरमार है परन्तु उनमें से यदि खतरा है तो केवल चार 'स्वामियों' से। शेष तो समाजहित राष्ट्रहित या व्यक्तिगत मुक्ति की साधना-उपासना मे ही लगे रहते हैं और इस प्रकार इस सनातन राष्ट्र की सनातन संस्कृति की ही सेवा करते हैं। तो बात केवल उन चार स्वामियो की है जिनमे से दो आगे से 'स्वामी' हैं तो दो पीछे से। आगे से दो स्वामी हैं स्वामी अग्निवेश और स्वामी वाहिद काजमी और पीछे से जो स्वामी है वे है सुब्रह्मण्यम स्वामी और चन्द्रास्वामी। सुब्रह्मण्यम स्वामी ने देश की राजनीति की जो गति की है वह लोकविदित है। चन्द्रास्वामी तान्त्रिक और राजनीतिक के साथ साथ अदनान खशोगी जैसे शस्त्रास्त्र तस्कर के अन्तरग मित्र हैं नरसिह राव जैसे कुटिल राजनीतिज्ञ से भी उनके घनिष्ठ सम्बन्ध जगजाहिर रहे हैं और जो आगे स्वामी तथा आर्यसमाज मे घुसपैठिए हैं उनका पूर्व इतिहास नक्सलवादी होने का रहा है।

परन्तु जो एक एकदम 'फर्जी स्वामी है और 'हिन्दी' भक्ति के पुरोधा बनने का दम्भ पाले हैं वे हैं अन्तरत से लीगी अन्तर से मार्क्सवादी और दिखने में हिन्दी स्वामी वाहिद काजमी। तो ऐसे 'फर्जी स्वामी हिन्दीभक्तों से हिन्दी के असली सेवको को सतत सावधान रहना होगा। पता नहीं 'वाहिद काजमी' का 'स्वामी' से क्या रिश्ता है ? हिन्दी की आड में हिन्दी की जडो मे 'गैमक्सीन' डालने का उनका मोटे लबादे मे ढका प्रयत्न कितना भी प्रयत्न करने पर भी छिपाए छिपता नहीं हा हिन्दी वाले ऐसे 'फर्जी स्वामी को न जाने क्यो पाले हैं पालते हैं पाल रहे हैं। समझ मे आने से परे है। हिन्दी की बोलियो को 'भाषा घोषित कराकर हिन्दी को नामशेष करने के दुष्प्रयत्न मे सलग्न ऐसे लोगो का पुरस्कार के बजाए बहिष्कार और तिरस्कार करने का समय आ गया है जो हिन्दी के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए एक अपरिहार्य शर्त है।

पृष्ठ ५ का शेष भाग

युगद्रष्टा : महर्षि दयानन्द

जगत गुरु संन्यासी

विश्व के कई महान पुरुषो ने महर्षि दयानन्द को जगत गुरु सन्यासी के रूप मे मान्यता प्रदान की है। सन्यासी वित्तैषणा लोकैषणा और पुत्रेषणा से दूर रहकर विश्व कल्याण की भावना से कार्य करता है। महर्षि ने सर्वे भवन्तु सुखिन के अनुसार ही अपने जीवन को लोकार्पण किया। वह एक आप्त पुरुष थे जो मन वचन और कर्म से एक थे।

त्याग तपस्या मूर्ति धन्य ऋषि दयानन्द महान हुए।

धर्म, धीरता, ध्रुवता की वर वेदी पर बलिदान हुए।।

उनका विमल विवेक विश्व में भव्य भाव पर भर जायेगा।

पावन पुण्य चरित्र जगत् में जीवन ज्योति जगाएगा।

अजर, अमर, जिसकी सुकीर्ति है, भला कहीं वह मरता है।

उसका तो आदर्श चरित, कल्याणत्राण नित करता है।

रोगियों का डॉक्टर महर्षि दयानन्द –

ऋषि दयानन्द जब कार्य क्षेत्र मे उतरे तो सारा समाज विभिन्न बुराइयो के रोग से ग्रस्त था। महर्षि दयानन्द ने धार्मिक सामाजिक आर्थिक राजनैतिक आध्यात्मिक शैक्षणिक दार्शनिक नैतिक व्यावहारिक आदि सभी रोगो की औषधि हम बतलाई। दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के अन्तिम चार समुल्लासों मे उनके प्रतिकूल अनेक मत मतान्तरों का ऑप्रेशन किया है और वह पूर्णरूप से सफल हुआ है।

युग पुरुष महर्षि स्वामी दयानन्द का गुणगान इन कुछ पृष्ठों में कर पाना सम्भव नहीं है। उन्होंने प्रत्येक क्षेत्र में कल्याणकारी कार्य किए हैं। विष देने वाले जगन्नाथ पर उपकार अनाज से भरे छकडे को कीचड से बाहर निकाल बैलो पर दया वेश्या को माता का दर्जा देना अपार दौलत को ठुकराना स्वावलम्बन शुद्धिकरण न्यायप्रियता निर्भयता दानवीर युग प्रवर्तक महान तर्कशास्त्री महान दार्शनिक महान वैज्ञानिक विश्व चिकित्सक महान् योद्धा महान शिक्षक महान योगी ब्रह्मवेत्ता के रूप मे अनेक उपकार करके हमारा मार्ग प्रशस्त किया।

हमने बदले मे ऋषिवर को क्या दिया ? अमृत के बदले मे विष दे डाला। फिर भी उस परोपकारी ने अपने अन्तिम समय मे वेद मन्त्रो के उच्चारण एवम् प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो कहकर ३० अक्तूबर १८८३ ई० मगलवार (विक्रमी सम्वत १९४०) के दिन इस नश्वर शरीर का परित्याग करके परमेश्वर की गोद मे आश्रय लेकर आनन्द प्राप्त किया था।

तू अजमते जहा का दमकता निशान था।
अपनो पे क्या परायों पर भी मेहरबान था।।
सच्चा था अपने कौल का अहले जबान था।
दरअसल तू सारे गुलिस्ता की जान था।
तेरी हर एक नेकी को दोहरा रहा है जहा,
तू किस कदर बुलन्द था, कितना महान था।
जरी लाखों गुहर के वो दफीने है यहा लाखो।
निकाले चीरकर सीना जमी का इन खजानों को।।
कुछ ऐसी कारनामे छोड़कर जाओ वतन पर अपनी।
कि झूमे लोग सुन-सुनकर तुम्हारी दास्तानों को।।

आओ मिलकर सकल्प करे कि परमपिता परमात्मा की अमर वाणी वेदवाणी का प्रचार-प्रसार करें तथा महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तो पर चलकर अपने जीवन को उज्ज्वल और पवित्र बनाए।

– उपमन्त्री आर्य प्रादेशिक सभा सोनीपत, हरियाणा

बढ़े - चलो !

वैदिक अमिय ऋचाएं,
ददाति नव जागृति।
'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'
ऋषि साधना पुकारती।।

धर्मज्ञ धीर पुत्र हो,
ऋषि सन्देश जान लो।
ओ३म् ध्वज कर मे ले,
बढे चलो ! बढे चलो !!

पथ तेरा वीरान हो,
चाहे प्रखर चट्टान हो।
सत्य के प्रकाश हित,
जीवन तेरा बलिदान हो।।

तुम शिष्य दयानन्द के,
दृढ संकल्प ठान लो।
ओ३म् ध्वज कर में ले,
बढे चलो ! बढे चलो !!

बाइविल हो या कुरान हो,
या पोप का पुराण हो।
जैन, बौद्ध का सन्देश,
या गुरु ग्रन्थ का बखान हो।।

वेद की कसौटी पर कस,
सत्य पर ढले चलो।
ओ३म् ध्वज कर में ले,
बढे चलो ! बढे चलो !!

जड पूजा, वहूदेववाद,

गुरूडम का बढता भूचाल।
'ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या' का,
घिरे जब भ्रमजाल।।

त्रेत को निर्विवाद मान,
प्रशस्त पंथ गढे चलो।
ओ३म् ध्वज कर में ले,
बढे चलो ! बढे चलो !!

- ब्रह्मदेव आर्य, एम० ए०
चेवारा, शेखपुरा, बिहार ८११३०४

स्वास्थ्य चर्चा

नेत्र अनमोल है उनको सुरक्षित रखें

ओ ग्राहीयाम् च रूपस्य, मुखस्य शोभा, प्रत्यक्ष बोधस्य च हेतु भूतम्।
तम सादक कर्मसु मार्गदर्शी नेत्रम्, प्रधानम् सकल इन्द्रियाणाम्।।

नेत्र आकार व रूप का ज्ञान कर सकते है और मुखाकृति का श्रृगार होत है। ज्ञान प्राप्ति का प्रत्यक्ष साधन होते है। इसलिए सभी ज्ञानेन्द्रियो मे नेत्र सर्वश्रेष्ठ एव महत्वपूर्ण है।

ओ चक्षुरक्षाया सर्वकाल मनुष्ये यत्न कर्त्तव्यो जीविते यावादिच्छा।
व्यर्थो लोको यम् तुल्यरात्रिन्दिवानम्, पुसा अन्धानाम विद्यमाने पिवित्ते।।

जीवित रहने की जब तक अभिलाषा हा तब तक मनुष्य को नेत्रो की रक्षा का प्रयत्न करते रहना चाहिए। दृष्टिविहीन व्यक्ति धनवान भी क्यो न हो तो भी उसके लिए दिन और रात्रि एक समान होते है और सारी दुनिया उसके लिए किसी काम की नही रहती।

महर्षि निर्वाण दिवस तथा दीपावली पर्व के शुभ अवसर पर विश्वविख्यात नेत्र चिकित्सक अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान सस्थान मे डॉ० राजेन्द्र प्रसाद नेत्र विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष आचार्य डॉ० हेम कुमार तिवारी जी दीपावली की शुभकामनाए देते हुए नागरिको को नेत्र सम्बन्धी दुर्घटना से बचने के लिए सावधानी बरतने की सलाह दे रहे है। *– धर्मसिंह शास्त्री*

दीपावली पर्व पर नेत्र सम्बन्धी दुर्घटना से बचने के लिए सावधानी बरतने की सलाह

सवप्रथम मै अपने देश के नागरिको का दीपावली पव की हार्दिक शुभकामनाए देता हू।

वयस्क अपनी दृष्टि खो बैठते है। नेत्र क्षति का तुरन्त समय पर उचार न होने पर दृष्टि म कमी भी हो सकती हे और दृष्टिविहीनता भी हा सकती हैं।

दृष्टि अनमोल है। दीपावली पव क शुभ अवसर पर हम अपनी नासमझी या लापरवाही स अपने जीवन मे अन्धकार न ले आए इसके लिए हमे सावधानिया बरतनी आवश्यक है।

दीपावली पर्व वास्तव मे दीपोत्सव है। एक ज्योतिपर्व है जिसे हम अपने घर आगन को स्वच्छ और प्रकाशित करके मनाए।

दीपावली के अवसर पर शोर मचाने वाले पटाखे तो बिलकुल प्रयोग न करे। हा रग बिरगे प्रकाश वाली फूलझडिया अनार आपके घर आगन का अगर आलोकित करे तो यह उत्सव कितना सुन्दर हो सकता है. जरा सोचिए।

पटाखे चलाते समय सावधानी रखे। बच्चो को बिना निरीक्षण के पटाखे न चलाने दे। रेशमी तथा प्रज्ज्वलनशील पोशाक न पहने। उचित दूरी से ही अनार हवाई आदि जलाए। इससे अपन को पडोसी तथा राह पर चलते व्यक्तियो को क्षति न पहुचे इसका विशेष ध्यान रखे।

पटाखो से हर वर्ष कई बच्चे और

इसके अतिरिक्त दीपावली क अवसर पर मेले लगते है जिसमे बच्चे तीर कमान या खिलौने की बन्दूक ले लेते हे जिसके प्रहार से नेत्र क्षतिग्रस्त होने की सम्भावना अधिक रहती है। श्री राम और श्री कृष्ण के और भी कइ आदश है जिन्हे हम बच्चो को सिखाय और बताए कि हिसात्मक खेल नेत्रो का चोट पहुचा सकते है।

किसी लापरवाही या नासमझी से अगर आख मे चोट चपेट लग ही जाती है तो शीघ्र ही अपने नजदीकी नेत्र अस्पताल मे दिखाए और नेत्र विशेषज्ञ की सलाह ले।

दीपावली के पावन पर्व पर हम प्रण करे कि हम सभी सावधानिया बरतते हुए अपनी नेत्र ज्योति की रक्षा करे। अपनी तथा अपने हितैषियो की आखो की सुरक्षा करे।

– आचार्य हेम कुमार तिवारी
प्रमुख, राजेन्द्र प्रसाद नेत्रविज्ञान केन्द्र
अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान सस्थान,
नई दिल्ली

भाषाओं के प्रति भी जिज्ञासु हैं धर्म ग्रंथों में रूचि रखने वाले : बरनाला

देहरादून प्राचीन धर्म ग्रन्थ वेद एव पुराण को पढने मे जो रूचि रखते है वे उन भाषाओ मे भी जिज्ञासा रखते है जिसमे इन धर्म ग्रन्थो की रचना की गयी है।

श्री बरनाला ने यह उद्‌गार आज राजभवन मे डॉ रूप किशोर शास्त्री द्वारा रचित तथा वैदिक क्राति परिषद् द्वारा श्रीमती सरस्वती सिह की स्मृति में प्रकाशित धर्म-दर्शन-सस्कृति पुस्तक के लोकार्पण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप मे व्यक्त किए। इस अवसर पर राज्यपाल द्वारा एक अन्य पुस्तक 'वैदिक वाग्मय निर्वचन कोष' पुस्तक का भी लोकार्पण किया गया। उन्होने कहा कि धर्म दर्शन सस्कृति पुस्तक मे ससार व देश के विभिन्न धर्मो का वर्णन है लेकिन इस पुस्तक में अपनी इस भारत भूमि पर जन्मे नवीनतम 'सिख धर्म' का उल्लेख नहीं किया गया।

उन्होने जोर देकर कहा कि इसे अगले सस्करण मे भारतीय सस्कृति के इतिहास मे अन्य धर्मों के साथ ही सिख धर्म का भी समावेश किया जाए। सिख कौम ने मानव सेवा धर्म की रक्षा और देश की आजादी के लिए बहुत त्याग और बलिदान दिया। उन्होने कहा कि गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय बहुत प्राचीन विद्यालय है। यह पुस्तक गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे पाठय पुस्तक के रूप मे शामिल की जाएगी। उन्होने कहा कि इससे छात्र छात्राओ को भारतीय सस्कृति तथा अन्य सस्कृतियो के बारे मे जानकारी मिलेगी और इनके ज्ञान प्राप्त करने के लिए उपयोग सिद्ध होगी।

इस अवसर पर गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के डॉ० कश्मीर सिह द्वारा आर्य समाज को एक नई दिशा देने मे श्रीमती सरस्वती सिह के योगदान पर प्रकाश डाला गया। डॉ० आनन्दसुमन सिह ने कहा कि डॉ० रूपकिशोर शास्त्री ने इस पुस्तक को लिखकर एक सराहनीय कार्य किया है और इनके द्वारा ५०० पुष्ठो का एक वैदिक कोष भी तैयार किया गया जो शीघ्र ही प्रकाशित होगा। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुल सचिव डॉ० महावीर ने इस अवसर पर कहा कि जो भारतीय सस्कृति जीवन दर्शन को जानना चाहते है उनकी जिज्ञासाओ की यह पुस्तक पूर्ति करेगी और छात्रो को ~ री माटी मे जोडेगी।

आचार्य वेद प्रकाश शास्त्री ने मुख्य अतिथि को धन्यवाद देते हुए कहा कि इस विश्वविद्यालय मे विज्ञान के छात्र को भी धम दर्शन सस्कृति पढना आवश्यक है।

– प्रचार विभाग
वैदिक क्रान्ति परिषद्

पृष्ठ ४ का शेष भाग

आर्यसमाज अनन्त प्रेम की अनन्त ज्वाला

कुम्भ मले के अवसर पर पाखण्ड खण्डनी पताका लगाकर और प्रसिद्ध काशी शास्त्रार्थ म स्वामीजी ने धर्म के ठकेदारो से टक्कर लेकर धार्मिक गढ को हिलाने को सफल प्रयास किया। १८७२ म स्वामीजी कलकत्ता पहुचे। वहा वे ब्रह्मसमाज के प्रसिद्ध नेताओ के सम्पर्क मे आए। ब्रह्मसमाज के प्रसिद्ध नेताओ के सम्पर्क मे आए। ब्रह्मसमाज के तत्कालीन नेता श्री कशवचन्द सेन के परामर्श पर स्वामी जी ने हिन्दी भाषा को अपने प्रचार का माध्यम बनाया। प्रारम्भ मे स्वामीजी साधारण वार्तालाप तथा भाषणो मे सस्कृत भाषा का ही प्रयोग करते थे। सस्कृत भाषा के माध्यम से स्वामीजी केवल विद्वानो तक ही पहुच सकते थे। परन्तु जनजीवन के जागरण के लिए जनता की भाषा को अपनाना अनिवार्य था। इसलिए स्वामीजी ने अधिकाधिक जनता तक पहुचने के लिए हिन्दी भाषा का अपना लिया।

१८७५ म स्वामीजी ने अपने अमर ग्रथ सत्यार्थ प्रकाश का प्रकाशित करवाया और इसी वर्ष बम्बई मे आर्य समाज की विधिवत स्थापना की। परन्तु पश्चिम भारत की बजाय विशेषत उत्तर भारत स्वामीजी के विचारो का सदेशवाहक बना। १८७७ मे स्वामी जी लाहौर पहुच। लोग उनके भाषणो की आर आकर्षित हुए। पजाब विदेशी आक्रमणो से सदैव त्रस्त रहा और अनेक सस्कृतियो का सगम स्थल बना। पढी लिखी हिन्दू जनता अपनी अस्मिता के सुरक्षार्थ इधर उधर ताक रही थी। स्वामीजी के भाषणो से उनके गिरते मनोबल को सहारा मिला और नवशिक्षित एव क्षत्रिय वर्ग को स्वामीजी के विचारो मे जनकल्याण अवरोधक तत्वो को नष्ट करने की प्रबल प्रेरणा प्राप्त हुई। इस्लाम और ईसाइयत की बुद्धिवादी समीक्षा से अपने प्राचीन धर्म मे जन जन की आस्था जागृत हो गई और अपनी ज्ञान विज्ञान की थाती को सजोकर समृद्ध करने की आकाक्षा दृढ हुई। वैदिक ऐकेश्वरवाद ने सभी देवताओ स मुक्ति का मार्ग प्रस्तुत कर दिया।

प्राचीनता और आधुनिकता

शिक्षित वर्ग तो वैसे ही अज्ञान अन्धविश्वासो को विनष्ट कर आधुनिकीकरण के लिये कृतसकल्प था। धर्म मे अन्धविश्वासो को नष्ट करने के प्रयास मे शिक्षित वर्ग धर्म के भौतिक एव सर्वजनोपयोगी तत्वो को ही भुला बैठा था और उसकी उपेक्षा कर रहा था। स्वामीजी ने समस्त आवश्यक समाज सुधार वेदो से सिद्ध कर दिए। पठित वर्ग को स्वामी जी के विचारो मे प्राचीनता और आधुनिकता का अदभुत सगम मिला। जो आधुनिकता की ओर बढते हुए भी अपनी पुरातन आस्थाए खोना नहीं चाहते थे उनके लिए आर्य समाज वरदान सिद्ध हुआ। पजाब मे आर्यसमाज क सव नप्रिय आन्दोलन बनन का यही प्रमुख कारण बना।

लाहौर मे ही स्वामीजी ने आर्यसमाज के दस नियमो की घोषणा की। स्वामीजी के मरणोपरान्त डी०ए०वी० सस्था तथा गुरुकुल कागडी की स्थापना से उत्तर भारत मे आर्यसमाज का स्वर्णकाल समुपस्थित हो गया। वैदिक मैगजीन सद्धर्म प्रचारक आदि पत्र पत्रिकाओ ने स्वामीजी के विचारो को प्रचारित करने मे भरपूर कार्य किया। उपदेशक विद्यालय भी खोले गए। शुद्धि पर जोर दिया गया। दब्बूपन की वृत्ति जाती रही। उसमे तेजस्विता आ गई। शिक्षा की समुचित व्यवस्था के कारण हिन्दू समाज प्रत्येक दिशा मे उन्नति करने लगा। एन० जी० बेरियर के अनुसार ६७ उप सर्जन जो ब्रिटिश सरकार द्वारा नियुक्त किए गए थे उनमे ५२ हिन्दू और ६ मुस्लिम थे। प्रथम श्रेणी के ४८ वकीलो मे २६ हिन्दू और ४ मुस्लिम थे। ये आकडे आर्यसमाज द्वारा प्रेरित शैक्षणिक क्रान्ति का पुष्ट प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

महात्मा हसराज जी का अनुपम त्याग तथा सेवा भावना और स्वामी श्रद्धानन्द की अपूर्व श्रद्धाभावना ने आर्यसमाज को महिमामण्डित कर दिया। इन महापुरुषों द्वारा सचालित शिक्षा सस्थाओ ने भारतीय धर्म एव सस्कृति के प्रति नवोन्मेष और गरिमा की भावना को जन जन उत्पन्न कर दिया। लाला लाजपत राय जी के अनुसार इन शिक्षण सस्थाओ ने तत्कालीन पीढी मे आत्मविश्वास को जागृत कर राष्ट्र प्रेम को प्रज्ज्वलित किया।

नव जीवन का सचार

कोई भी सुधार आन्दोलन सन्निहित स्वार्थो के लिए एक खतरा उपस्थित करता है। सभी स्वार्थ इस प्रकार क आन्दोलन का गला घोटने के लिए आगे आ जाते है। केवल सबल व्यक्तित्व ही समस्त प्रहारो को सहते हुए मार्ग को प्रशस्त कर सकता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती का ऐसा ही इस्पाती व्यक्तित्व था। रोमारोला के शब्दो मे – स्वामीजी का व्यक्तित्व सूक्ष्म विचारकर्ता एव कर्मण्यता का अदभुत समिश्रण था। वेदो की मौलिक पुनर्व्याख्या से स्वामीजी ने गडी सडी मान्यताओ और घिसी पिटी प्रथाओ से भारतीय समाज को मुक्त कर प्रगति पथ पर आरूढ कर दिया। मरणासन्न हिन्दू जाति मे नवजीवन का सचार किया। राष्ट्रीय स्वतन्त्रता एव एकता का शख फूका और सस्कृति एव धर्म के प्रति गौरव की भावना को जगाया।

आर्यसमाज केवल छुटपुट समाज सुधार करने वाली सस्था नहीं। अपितु भारतीय समाज का आमूलचूल परिवर्तन करने वाली जाज्वल्यमान ज्वाला है। आर्यसमाज है मानवता का मगल करने वाली महाज्योति। स्वामी दयानन्द की निम्न उद्घोषणा मे हम सबके लिए शाश्वत सदेश सन्निहित हे

समस्त ससार अज्ञान और अन्धविश्वास की बेडियो मे जकडा पडा है। इन बेडियों से आबद्ध लोगों को मुक्त करने के लिए मेरा आगमन हुआ है।"



जलियावाले बाग में विश्व शान्ति यज्ञ

डी० ए० वी० कालेज अमृत सर के एम एस एस विभाग की ओर से चल रहे दिनाक २४/६/२००१ से ७/१०/२००१ तक चले दस दिवसीय कैम्प के दौरान कैम्प के आठवें दिन शहीदी स्मारक जलियावाले बाग में विश्व शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया। यह आर्य समाज के इतिहास में तथा जलिया वाले बाग के इतिहास में पहली घटना है जब यहा पर इतने सुव्यवस्थित ढग से आतकवाद के विरोध मे विश्वशान्ति यज्ञ किया गया हो।

जलियावाले बाग की शोभा दिनाक ५/१०/२००१ को देखते ही बनती थी। प्रात कालीन रात्रि में चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन कालेज हाल मे किया गया तथा सायकालीन सत्र मे विश्व शान्ति यज्ञ। जलियावाले बाग को इस तरह से सजाया गया था कि ओ३म् और तिरगे झण्डे सर्वत्र दिखाई दे रहे थे साथ ही झण्डो की मदद से बडे पार्क के अन्दर यज्ञशाला भी बनाई गयी थी। चारो ओर बेनर और झण्डे ही नजर आते थे तीन बजे से साय चार बजे तक महामन्त्र गायत्री का उच्चारण एव पाठ किया गया और चार बजे से ६ ३० तक वृहद शान्ति यज्ञ हुआ। प्रि० एम० एल० ऐरी के निर्देशन एव प्रो० आर्य की देख रेख मे हुए इस यज्ञ के यज्ञमान श्री राजन गोयल सपत्नीक बने। राष्ट्रीय सेवा योजना के लगभग २०० छात्र छात्राए तथा शहर के सभी आर्य समाजों के अधिकारीगण थे। साथ ही डी०ए०वी० सस्थाओं के प्राचार्य महानुभाव इस ऐतिहासिक यज्ञ में ध्यानमग्न थे।

इस यज्ञ को देखकर अनेक विदेशी नतमस्तक होकर इसके प्रभाव से प्रभावित होकर इसमे शामिल हो रहे थे अनेक सम्प्रदायो के मानने वाले इस यज्ञ की महिमा को गा रहे थे। डी०ए०वी० कालेज मैनेजिग कमेटी के सेक्रेट्री प्रि० मोहन लाल पि० जे० काकडिया वैद्य विद्यासागर श्री दर्शनलाल आदि विशिष्ट महानुभाव इस यज्ञ मे आमन्त्रित किए गए तथा शामिल थे। यज्ञ के उपरान्त मुख्य यज्ञमान ने चारो दिशाओ मे शान्ति के दूत चार कबूतर भी छोडे।

दिनाक ३/१०/२००१ को आतकवाद के विरोध मे डी०ए०वी० कालेज से जलियावाले बाग तक एक सुव्यवस्थित एव दर्शनीय ऐतिहासिक रैली भी निकली गई जिसको प्रि० ऐरी ने हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। यह रैली भी अपने आप मे अनोखी एव आकर्षक थी।

नव रात्रों में आर्यसमाज हाँसी द्वारा वेद प्रचार

आपको जानकर हर्ष होगा कि आर्य समाज हाँसी द्वारा नवरात्रो के उपलक्ष्य मे १७ से २४ अक्टूबर तक पारिवारिक सत्सग व यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमे अनेको श्रद्धालुओ ने भाग लिया। प्रथम नवरात्र से प्रारम्भ श्री मा० नदलाल जी खेरी के घर से तथा श्री आर्य पोलियो क्लीनिक श्री रमेश खुराना श्री राम स्वरूप भाटिया श्री चौ० देवदत्त जी प्रधान श्री सतीश कुमार आर्य जी मन्त्री श्री रामसिह जी उप प्रधान श्री कृष्ण बब्बर जी तथा आर्य भवम ला० हसराज आर्य आदि यजमानो ने आर्यसमाज मे आकर २५ १० २००१ को श्रद्धा से यज्ञ पूर्णाहुति मे भाग लिया यज्ञ के ब्रह्मा प० रामकिशोर शास्त्री जी ने भजन व वेद मन्त्रो की व्याख्या हृदय ग्राही ढग से करते हुए शान्तिपाठ के साथ नवरात्रो का वेद प्रचार प्रसार सम्पन्न किया।

– सतीश कुमार आर्य, मन्त्री

चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ

वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्य नगर रोहतक मे स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य मे आश्रम ट्रस्टी श्री दीप चन्द जी एव आश्रम प्रधान श्री उदय प्रकाश जी आर्य की प्रेरणा से चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ एव ५१ लाख गायत्री जाप का कार्यक्रम आश्रम अधिष्ठाता महात्मा व्यास देव जी की अध्यक्षता में १ नवम्बर २००१ से ३० नवम्बर २००१ तक होना निश्चित हुआ है। इस अवसर पर प्रात ५ बजे से ५ ४५ बजे तक ध्यान प्राणायाम व्यायाम श्री ज्ञानमुनि जी (पूर्वनाम ज्ञान चद जी) के निर्देशन में होगा। तत्पश्चात् यज्ञ प्रात ६ बजे से ९ बजे तक वेदपाठ भजन उपदेश आदि।

सम्मिलित गायत्री जाप १० ३० से ११.३० बजे तक एव सायकाल ३ बजे से ६ बजे बजे तक यज्ञ एव वेदपाठ भजन उपदेश आदि।

नोट महात्मा प्रभुआश्रित मेला २५–११–२००१ (दिन रविवार) कुटिया गुरुकुल सुन्दरपुर।

गायत्री अखण्ड यज्ञ २६ ११-२००१ प्रात ११ बजे से साय २ बजे तक।

पूर्णाहुति ३०–११–२००१ को दोपहर लगभग १२ बजे तक होगी। इससे पूर्व आमन्त्रित विद्वानों के उपदेश भजन के साथ पूज्य महात्मा प्रभु जी महाराज के प्रति श्रद्धाजलिया भेट की जाएगी। तत्पश्चात पूर्ववत् सभी यज्ञप्रेमी याजक एव दर्शक कतारबद्ध होकर वेदमदिर से प्रसाद रूप में नारियल फल लेकर यज्ञ लगर मे भोजन ग्रहण करेगे।

निवेदक
वेद प्रकाश, मन्त्री
समस्त अधिकारी एव ट्रस्टीगण
वैदिक भक्ति साधन आश्रम रोहतक
(दूरभाष ५३२१४)

जागते रहो

"यो जागार तमृच कामयन्ते"
सामवेद २० अ० २

अर्थ – जो जागते हैं उन्हे वेद की ऋचायें चाहती हैं।

घनघोर रात्रि मे जब कभी आख खुल जाती है तब अकस्मात गश्त लगाते हुए चौकीदार की आवाज सुन पडती है जागते रहो! डरावनी रात मे पहरे वालो की पुकार सुनकर चौकने का अवसर सभी मनुष्यो के जीवन मे आया होगा पर क्या मनुष्य इस तथ्य की उपयोगिता को समझ पाए हैं। पुन पुन विचार करे कि हम सोए पडे हैं या जाग रहे हैं। शोक! आखे खोले रहने पर भी मनुष्य मूर्खता अल्पज्ञता और परतन्त्रता के अन्धकार मे सोए पडे हैं। जिस प्रकार सुप्तावस्था मे शिथिलता मन्दता आकर्मण्यता धर दबाती है उसी प्रकार हम निरन्तर आलस्य और सुस्ती का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। मूल्यवान समय अत्यन्त तीव्र गति से काल को अधिकाधिक पास ला रहा है किन्तु मनुष्यो के जीवन मे प्रवृत्तिशीलता आती ही नहीं। जिनके जीवन मे कोई उद्देश्य नहीं महत्वकाक्षा नहीं उत्साह नहीं फिर वे क्या न चीटी की चाल चले ?

कितने ही ऐसे है जो ईर्ष्या द्वेष घृणा परच्छिद्रान्वेषण काम क्रोध लोभ मोहादि मे अपनी मूल्यवान वस्तु आत्मा को भूल बैठे हैं। अमुक व्यक्ति हमारी बुराई करता है। आओ उसे नीचा दिखाए फला ऐसा है फला वैसा है वह हमे दोष लगाता है डराता है परेशान करता है। हम उसको कलकित करेगे। अधिकाश व्यक्ति बस ऐसी ऊल जलूल व्यर्थ की बातो मे महान मूल्यवान जीवन और समय को बरबाद किया करते हैं उन्हे आत्मा की तन बदन की और धर्म की सुधि ही नहीं रहती।

यजुर्वेद मे परमात्मा कहते है – "भूत्यैजागरणमभूत्यै स्वप्नम" यजु ३०/१७ (जागरणम्) जागना (भूत्यै) कल्याण के लिए है और (स्वप्नम्) सोना (अभूत्यै) नाश के लिए हैं। यह एक अटल नियम है कि जो जागता है वह पाता है जो सोता है वह गवाता है कि उक्ति भी है "जो जागत है सो पावत है जो सोवत है सौ खोवत है।"

आज प्रश्न यह है कि क्या लोग जागते हैं ? क्या ये वास्तविक जीवन से परिचित हैं ? वर्ष के आधे समय तक सोने वाले कुम्भकर्ण से इनकी स्थिति कितनी अच्छी है।

आलसी और सुप्त पडे रहकर मनुष्य कदापि अपनी उन्नति नहीं कर सकता। निर्माल्य स्थिति मे पडे रहने से मनुष्य अपनी महान शक्ति से च्युत हो जाता है। जिन मनुष्यो को अपने वास्तविक शक्ति का ज्ञान नहीं जो ससार के ताने बाने मे साक्षात परमात्म स्वरूप आत्मा को विस्मृतकर बैठे हैं वे ही सोते हैं। जिन्होने अपना भाग्य दूसरो के हाथ मे सौंप दिये हैं वे सोते हैं जो जड सुस्त निर्जीव यन्त्रवत जीवन व्यतीत करते हैं वे सोते हैं। जो व्यर्थ की आवश्यकताओ की श्रृखला मे बधे हैं उचितानुचित रूप से मान बढाई लोलुपता के शिकार हैं जो हृदय मन्दिर मे ठहरने वाले परमात्मा को भूलकर सुख की तलाश मे बाह्य पदार्थों विजातीय वस्तुओ को ढूढते फिरते हैं वे ही सोते हैं।

मनुष्यो! सावधान! जीवन को बर्बाद मत करो! आपका जीवन व्यर्थ जा रहा है –

"रात गवाई सोयकर दिवस गवायो खाय।
हीराजन्म अमोल यह कौडी बदले जाय।"

जो कुछ हुआ सो हुआ अब चेतो जागो और ओजस्वी बनने का प्रयत्न करो! उठो जागो और अतिश्रेष्ठ बनो। यही जीवन की सार्थकता है जिस जीवन मे कोई आदर्श दिव्य महान और पवित्र लक्ष्य न बनाया वह जीवन ही क्या ? नीतिकार भर्तृ जी ने कहा है कि –

आलस्य हि मनुष्याणा शरीरस्थो महान रिपु। नास्त्युद्यमसमा बन्धु कृत्वा य नावसीदति।।

नि सन्देह आलस्य से बढकर मनुष्य शरीर मे रहने वाला कोई बडा शत्रु ही नही है और प्रयत्नशील उद्यमी के सदृश अपना कोई आत्मीय बन्धु नही है।

जागते हुए मनुष्य उद्योगी बनकर लक्ष्मी (सौभाग्य को प्राप्त करता है अत कहा गया है – "उद्योगिन पुरुषसिहमुपैति लक्ष्मी। जो सोता रहता है उसका भाग्य भी सोया रहता है जो निद्रा त्यागकर उठ जाता है जो खडा हो जाता है उसका भाग्य भी खडा हो जाता है। अत आलस्य को मोह और निद्रा को अज्ञान और प्रमाद को त्यागकर अपने जीवन मे जागृति उत्पन्न करो सदा जागते रहो क्योकि जागृति मे ही कल्याण है जागने वालो को ही वेद की ऋचाए चाहती हैं।

**गफलत की नींद छोडो घण्टा जगा रहा है।
अपनी यह हरकतों से तुमको सिखा रहा है।।**

– दिव्येश्वर शास्त्री
गुरुकुल आमसेना नवापारा
उत्कलम

आर्यसमाज दार्जीलिंग का निर्वाचन

प्रधान	श्री रमाशकर प्रसाद गुप्त
मन्त्री	श्री विजय शर्मा
कोषाध्यक्ष	श्रीमती सुनीति देवी

– विजय शर्मा, मन्त्री
आर्यसमाज, दार्जीलिंग

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 11-11-2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2001
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2001 in NDPSo on 8/9-11-2001

नवदिवसीय पारिवारिक सत्सग सम्पन्न

आर्यवीर दल हासी द्वारा शारदीय नवरात्रो के उपलक्ष मे १७ से २५ अक्तूबर २००१ तक नौ दिवसीय वैदिक पारिवारिक सत्सग एव यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमे निम्नलिखित ८ परिवारो मे अलग अलग कार्यक्रम रखे गए –

१ श्री रतन सिह सानी २ मा० हर स्वरूप पूर्व सेवक आर्य समाज शहर ३ चौ० गुलाब सिह आर्य शेखपुरा ४ श्री रामस्वरूप पोपली ५ श्री सुभाष आर्य ६ श्री केसर दास मल्होत्रा ७ श्री जिले सिह हलवाई ८ श्री राम गोपाल सैनी आदि सज्जनो के यहा प्रतिदिन प्रात ६ से १० बजे तक यज्ञ तथा शाम ५ से ६ बजे तक सत्सग किया गया।

अन्तिम दिन २५ अक्तूबर २००१ को ममता पब्लिक स्कूल पुरानी सब्जी मण्डी लाल सडक हासी मे प्रात ८ से ११ बजे तक पूज्य स्वामी कीर्तिदेव जी आर्य सन्यासी आर्यसमाज जी०टी०रोड हासी की अध्यक्षता मे समापन समारोह आयोजित किया गया।

समारोह यज्ञ एव उक्त आठो परिवारो के यज्ञ के आचार्य पण्डित रामसुफल शास्त्री जी वैदिक प्रवक्ता लाल सडक हासी थे। मुख्य वक्ता के रूप मे बोलते हुए आर्यसमाज हासी शहर के वरिष्ठ उप–प्रधान श्री सोहन लाल भयाणा ने कहा कि आर्य वीरो को देश भक्तो के जीवन से प्ररणा लेनी चाहिए। जिससे दिशाहीन पथ भ्रष्ट युवको का मार्ग प्रशस्त हो सके।

उक्त आशय की जानकारी देते हुए दल के कार्यवाहक प्रधान चौ० राघवेन्द्र सिह आर्य ने बताया कि उक्त नौ दिवसीय कार्यक्रम मे आर्य जगत के उच्च कोटि के वैदिक विद्वान पण्डित भरत लाल जी शास्त्री एम०ए० वकील कालोनी हासी प० विजय पाल आर्य (प्रभाकर) पुरोहित आर्यसमाज खरड चुगी हासी पण्डित रामकिशोर आर्य (विद्या भास्कर) पुरोहित आर्य समाज शहर श्री जबर सिह व श्री वेदपाल आर्य की भजन पार्टी का भी समय–समय पर योगदान मिलता रहा। इस कार्यक्रम से नगर मे वेद प्रचार की धूम मच गई है।

जिसके हृदय मे दया है, जिसकी वाणी सत्य से सुशोभित है, जिसका शरीर परहित मे लगा हुआ है, कलि भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता है।

आर्य जगत की विभूति आचार्य राजेन्द्र शर्मा की प्रथम पुण्य तिथि सम्पन्न

शाहजहापुर। आर्य जगत के यशस्वी विद्वान तथा आर्यसमाज के लिए सर्वात्मना समर्पित स्व० आचार्य राजेन्द्र जी शर्मा की प्रथम पुण्य तिथि दिनाक २७–१०–२००१ को आर्य समाज मदिर शाहजहापुर (रजि०) मे मनाई गई। इस अवसर पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। गुरुकुल रूद्रपुर के सस्थापक आचार्य आर्येन्द्र शास्त्री वेद शिरोमणि तथा आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान श्री जयेन्द्र पाल सिह (वेद मुनि) के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुए इस शान्ति यज्ञ मे सैकडो व्यक्तियों ने अश्रुपूरित नेत्रो से आचार्य राजेन्द्र जी शर्मा को अपनी मौन श्रद्धाञ्जली अर्पित की। इस यज्ञ मे यज्ञमान के रूप मे आचार्य जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री विजय प्रकाश एव उनकी पत्नी मजू मिश्रा तथा कनिष्ठ पुत्र श्री विनय प्रकाश एव उनकी पत्नी ममता मिश्रा बैठे थे।



इस अवसर पर आचार्य राजेन्द्र जी शर्मा के सस्मरणो का बखान करते हुए श्री आर्येन्द्र जी शास्त्री ने उनके परिवार का प्रेम तथा आपसी सहयोग के साथ रहते हुए उनके पदचिन्हो पर चलने का आह्वान किया। श्री जयेन्द्र पाल सिह जी ने आचार्य राजेन्द्र शर्मा के परिवार तथा उनकी विद्वता के कई सस्मरण सुनाते हुए उपस्थित जन समूह को सिसकने पर विवश कर दिया।

उन्होने कहा आचार्य राजेन्द्र जी शर्मा आर्यसमाज शाहजहापुर मे आर्य नेता विद्वान लेखक तथा विचारक के रूप मे कर्मक्षेत्र मे अवतरित हुए थे तथा उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन वैदिक धर्म के प्रचारार्थ समर्पित कर दिया।

वेदमुनि जी ने कहा कि आचार्य जी की गणना वेद के विशिष्ट विद्वानो मे होती थी। जो दूध की भाति सदा स्नेह का ही दान करते है जो स्वार्थ का समुत्सर्जन करके कर्तव्य परायण होकर पद्दलितो को सत्पथ पर लाते हुए छलछिद्रपाखण्ड का नाश करते हुए सत्य का प्रचार करते हुए निर्बलो अनाथो की रक्षा करते हुए धर्म का सन्देश सुनाते है। विश्व मे बन्धुत्व का एकता का ज्ञान का प्रचार करते है वे ही इस भूतल मे प्रशसनीय है वन्दनीय है और आचार्य राजेन्द्र जी शर्मा ऐसे ही व्यक्ति थे।

पुण्य तिथि के अवसर पर नगर के विशिष्ट व्यक्ति आर्यसमाज के अधिकारीगण तथा अनेको सस्थाओ के प्रतिनिधिया के अतिरिक्त श्री प्रेम बिहारी गुप्त लक्ष्मी जी पत्नी श्री राजेश्वर गुप्त लक्ष्मी जी पत्नी श्री स्वय प्रकाश श्रीमती सत्यभामा श्री यशपाल सरीन सठ श्री कृष्ण श्री रविकान्त गुप्त श्री रामचन्द्र गुप्त श्रीमती सुनीता सिह पत्नी श्री कोविद सिह विधायक निगोही उपस्थित थे।

इस अवसर पर उनके पुत्रो ने आर्यसमाज मदिर शाहजहापुर (रजि०) को ५००/– रुपये गुरुकुल रूद्रपुर को २५०/– रुपये तथा रूद्रपुर गोशाला को २५०/– रुपये दान स्वरूप प्रदान किए।

यज्ञ के उपरान्त सैकडो व्यक्तियो ने ब्रह्मभोज मे भोजन ग्रहण किया।

दीवाली का नवसन्देश

– कुलानन्द भारतीय

सबके आनन्द भवन मे दीपावलि के अनुपम दीप जलें।
घर, आगन कुटिया-बगिया में, खुशियों के बासती फूल खिलें।।
दीप-दीप के अनेक दीप में, एक ही ज्योति-प्रकाश समाया हैं।
गुरु नानक के शब्दो में, प्रभु ने एक नूर से जग उपजाया हैं।।
प्रभु गगन में हैं, चमन में, गुलशन में, सबके जीवन में हैं।
उस सृष्टिकर्ता जगन्नियन्ता परमपिता को सतबार नमन हैं।
यह शुभ दीवाली भाव-भक्ति का नवसन्देश लेकर आई हैं।
हमको तुमको सबको जग में, दीवाली की बधाई है बधाई हैं।

— ३०/२१, शक्ति नगर, दिल्ली—७

प्रतिष्ठा में

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर द्वारा वेद ज्ञान से अछूते क्षेत्रों में प्रचार

नवलखा महल उदयपुर (राजस्थान) स्थित श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास द्वारा राजसमन्द जिले मे २३ सितम्बर, से २० अक्तूबर तक वेद प्रचार वाहन के माध्यम से वेद प्रचार मण्डली मे प्रचार किया। ज्ञातव्य है कि जिला राजसमन्द के अछूते क्षेत्रों मे पहली बार वेद–प्रचार का कार्य सम्पन्न हुआ। न्यास के प्रचार वाहन मे प० रघुनाथ सिह वैदिक भूषण एव प० शिवपाल आर्य ने अपने प्रवचन एव भजनो के माध्यम से भीम कूकडखेडा बरार बग्गड देवगढ दिवेर छापली कुम्भगढ बस्सी लम्बोडी केलवाडा रोछेड रेलमगरा राजसमन्द दरीबा कुरज पीपली मोसी कुवारिया लावा सरदार गढ आमेट केलवा पुनावली गूढा खमनोर व परिवार ग्रामों म वहा के २६ माध्यमिक एव उच्च माध्यमिक विद्यालयो के बालक–बालिकाओ एव ग्रामवासियो को दयानन्द का सन्देश दिया। जहा विद्यालयो मे नैतिक शिक्षा वैदिक सस्कृति एव दयानन्द का जीवन परिचय दिया। वहा अनेक गावो मे रात्रि सभाओं मे भवन एव प्रवचन के अतिरिक्त दयानन्द की जीवनी पर्दे पर स्लाइड् एव सी०डी० द्वारा प्रस्तुत की गई। कुछ स्थानो पर श्रद्धालुओं ने यज्ञ भी आयोजित करवाए।

उक्त कार्यक्रमो से लगभग १० ३१० छात्र–छात्राए एव ग्रामीण जन लाभान्वित हुए। इन्हीं कार्यक्रमो से प्रभावित होकर ६४ व्यक्तियो ने न्यास की 'वेद प्रचार मण्डल' की सदस्यता ग्रहण की वेद प्रचार वाहन से वैदिक साहित्य का भी विक्रय किया गया। लोगो मे स्वाध्याय हेतु ८४००/– रुपये का साहित्य क्रय किया। कई स्थानों पर इस प्रकार का कार्यक्रम बार–बार रखने का प्रचार मण्डली को ग्रामवासियो ने आग्रह किया।

– स्वामी तत्वबोध सरस्वती

सामाजिक, वैचारिक एवं आध्यात्मिक क्रान्ति के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागञ्ज नई दिल्ली–२ (फोन ३२७०५०७, ३२७४७७१) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली–२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०६८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सभामन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट - http://www.whereisgod.com

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

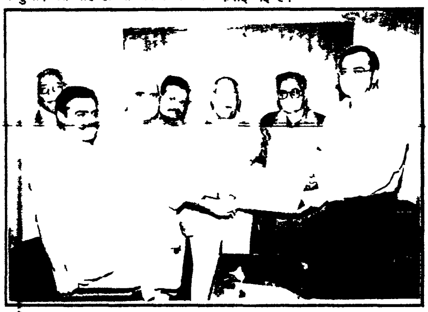
वर्ष ४० अक ३० १८ नवम्बर से २४ नवम्बर २००१ तक दयानन्दाब्द १७८ सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०२ सम्वत २०५८ का० शु० ३
एक प्रति १ रुपया (भारत में) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 'जीवन प्रभात' अनाथाश्रम एवं विधवाश्रम हेतु २० लाख रुपये प्रदान

दिल्ली ६ नवम्बर। आर्यसमाजो की सर्वोच्च सस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की देखरेख और नियन्त्रण मे गुजरात के भूकम्प पीडित परिवारो के अनाथ बच्चो और विधवाओ के लिए 'जीवन प्रभात' नाम से एक भव्य आश्रम की स्थापना गाधीधाम आर्यसमाज के तहत की गई है।

इस विशाल परियोजना के लिए २० लाख रुपये की राशि सभा की ओर से दी गई है। यह राशि केन्द्रीय कानून मन्त्री श्री अरुण जेटली के कर कमलो से 'जीवन प्रभात' के प्रबन्धको को प्रदान की गई। इस समारोह मे सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल सार्वदेशिक सभा के नव निर्वाचित प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन एडवोकेट मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा गुजरात के मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य बगाल सभा के मन्त्री श्री आनन्द कुमार आर्य बिहार सभा के प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री चौ० लक्ष्मी चन्द प्रसिद्ध उद्योगपति श्री पी०एन० आर्य श्री सोमदत्त महाजन राजेन्द्र दुर्गा उपस्थित थे।

यह समारोह सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल की अध्यक्षता मे हुआ। गत माह ही श्री अरुण जेटली एव जहाजरानी मन्त्री श्री वेदप्रकाश गोयल ने गाधीधाम म इस आश्रम का शिलान्यास किया था। जिसके लिए दो एकड भूमि केन्द्र सरकार द्वारा उपलब्ध कराई गई है।



केन्द्रीय कानून मन्त्री श्री अरुण जेटली अपने कर कमलो से २० लाख रुपए की राशि के चैक श्री वाचोनिधि आर्य को प्रदान करते हुए। साथ मे सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य न्याय सभा अध्यक्ष श्री रामफल बसल मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा वरिष्ठ उप-प्रधान श्री विमल वधावन एव चौ० लक्ष्मीचन्द।

श्री वधावन ने बताया कि इस योजना पर लगभग दो करोड रुपये व्यय होने की सम्भावना है। वर्तमान मे भूकम्प मे अनाथ हुए २१ बालक बालिकाए और १० विधवा बहने इस आश्रम मे प्रवेश प्राप्त कर चुकी हैं।

उन्होने बताया कि यह आश्रम सयुक्त परिवार के सिद्धान्त पर आधारित होगा। इसमे प्रारम्भ से लेकर विशेष शैक्षणिक योजनाओ तक का प्रबन्ध किया जाएगा। विधवा बहने इन बच्चो का पालन पोषण करेंगी उनके लिए कुटीर उद्योगों प्रशिक्षण की भी व्यवस्था होगी।

गुजरात सभा के मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य ने देश विदेश के साधन सम्पन्न महानुभावो को आह्वान किया है कि वे इस महान मानवीय कार्य मे अपनी सात्विक आय मे से अपनी क्षमतानुसार सहयोग अवश्य करे।

श्री वाचोनिधि ने कहा है कि जहा कहीं भी बेसहारा अनाथ बच्चे व विधवा बहने जनता के सम्पर्क मे आए उन्हे आश्रम सहर्ष स्वीकार करेगा।

इस से पूर्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक म इस विषय पर समस्त तथ्य प्रस्तुत किए गए तथा यह राशि आर्य समाज गाधीधाम को प्रदान करने की स्वीकृति सभा ने दी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य द्वारा जारी घोषणा-पत्र

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान निर्वाचित होने पर मैं समूचे आर्य जगत के प्रति आभार व्यक्त करता हू।

मैं प्रतिज्ञा करता हू कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान के रूप मे मैं कभी असत्य अन्याय और अनाचार से समझौता नहीं करूगा। एक सच्चे आर्य के रूप मे निःस्वार्थता त्यागभावना और समर्पण भाव से आर्य सगठन को उन्नत और प्रगतिशील बनाने में अपना सर्वस्व लगा दूगा। मैं साधारण सभा को पूर्ण अधिकार देता हू कि इस प्रतिज्ञा के विरुद्ध चलने अथवा निष्क्रिय प्रमादी व आलसी सिद्ध होने की स्थिति मे किसी भी समय वह मुझे इस पद से वचित कर सकती है।

योजना एव सकल्प पत्र

आर्यसमाज की सर्वांगीण और सार्वभौमिक उन्नति को समक्ष रखकर निम्नलिखित कार्य करने की मेरी योजना है –

सगठन :- आर्यसमाज के सगठन को सुदृढ और क्रियाशील बनाने के लिए मैं पूर्ण प्रयत्न करूगा कि –

१ सब समाजा के सत्सग व यज्ञ पद्धति मे एकरूपता हो।

२ सत्सग आकर्षक हो जिनमे उच्चवर्ग के परिवार भी सम्मिलित होने की इच्छा करे।

३ सत्सगो मे होने वाले भजन व प्रवचन उच्च स्तर के हो जिनसे सदस्य जीवनोपयोगी सन्देश प्राप्त कर सके।

४ कोई भी आर्यसमाज समाज के किसी भी नियम उपनियम का कभी भी जाने या अनजाने उल्लघन न करे। इस सम्बन्ध मे आनेवाली सभी शिकायतो पर न्याय सभा ध्यान दे तथा तुरन्त उसका उपाय करे।

५ जिन समाजो मे नियमित चुनाव नहीं होते अथवा जो कुछ ही व्यक्तियो की सम्पत्ति बन गए हैं उन्हे न्याय सभा

शेष भाग पृष्ठ १२ पर

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

सह सम्पादक
विमल वधावन एडवोकेट

स्वामी धर्मानन्द जी का व्यक्तित्व पदों से ऊपर है

सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के वि न चुनावो म सवसम्मति से कै० दवरत्न भ्रय का प्रधान चुना गया। यह चुनाव सावद्शिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल की देख रेख नियन्त्रण एव निगरानी मे हुआ। जिन्हे दिल्ली की एक अदालत द्वारा चुनाव अधिकारी एव प्रशासक नियुक्त किया गया। श्री रामफल बसल दिल्ली उच्च न्यायालय एव सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता होने के साथ साथ एक ईमानदार और राष्ट्रवादी व्यक्ति के रूप मे जाने जाते हैं। श्री बसल डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति के उप प्रधान भी है। अदालत ने श्री बसल क साथ एक अन्य अधिवक्ता तथा पजाब हरियाणा उच्च न्यायालय के सेवानिवृत न्यायाधीश श्री आर० एन० मित्तल को भी इस कार्य के लिए नियुक्त किया था। श्री मित्तल भी डी० ए० वी० प्रबन्ध समिति के उपाध्यक्ष है परन्तु श्री मित्तल ने बाद मे अपनी असमर्थता एव अनुपलब्धता व्यक्त करते हुए श्री बसल से ही इस दायित्व के निर्वहन करने की लिखित प्रार्थना की थी। निर्णय मे भी यह स्पष्ट किया गया था कि यदि एक व्यक्ति अनुपलब्ध हो तो दूसरा व्यक्ति कार्यवाही सम्पन्न करेगा।

यह निर्णय स्वामी ओमानन्द जी एव उनके सहयोगिया से परामर्श के उप त ही हुआ था। श्री मरवाह द्वारा दाखिल प्राथना पत्र के उत्तर पर श्री आर० एस० तोमर न हस्त र किए थे जो ओमानन्द जी के अनन्य भक्त हैं।

चुनाव प्रक्रिया प्रारम्भ हने स पूर्व ही गुरुकुल कागडी का भूमि घटाला आर्य जनता के समक्ष स्पष्ट हो चुका था। श्री बसल द्वारा इस आर्य समाज और सगठन विरोधी कार्य की भी घोर भर्त्सना की गई। इस काय म स्वामी ओमानन्द प्र० शरसिह इन्द्रवेश तथा इनक इर्द गिर्द रहने वाले कई व्यक्तियो का आचरण स्पष्टतया सदिग्ध प्रतीत हुआ। दैनिक समाचार पत्रो मे यह घटना लगातार प्रकाशित होती रही।

इस बीच सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की चुनाव प्रक्रिया जब प्रारम्भ हुइ तो भूमि विक्रय मे शामिल इस समूह को अपना भविष्य अन्धकारमय नजर आने लगा क्योकि आर्यजनता इस भूमि विक्रय का विरोध करने और कडे रुख से किसी प्रकार भी यह समझौता न तो करना चाहती थी और न ही किसी को ऐसा करते हुए देखना चाहती थी।

हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के आर्यजनो मे भी इस बात को लेकर काफी रोष था। इसके अतिरिक्त कई अन्य अवैधताओ और अनियमितताओ को आधार बनाकर श्री केदार सिह ने एक याचिका सार्वदेशिक न्याय सभा के समक्ष प्रस्तुत की। न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल ने हरियाणा सभा से उत्तर मागा जो सन्तोषजनक नही था। परिणामत हरियाणा सभा के लिए चुनाव अधिकारी एव प्रशासक को सर्वाधिकारी बनाया गया।

इस कानूनी वैधानिक और धाधलेबाजी को रोकने वाले दृष्टिकोण के विरोध मे स्वामी ओमानन्द जी एव इन्द्रवेश क नाम से सार्वदेशिक सभा के चुनाव को रुकवाने के लिए विभिन्न अदालतो मे लगभग दस मुकदमे किए गए। हर मुकदमे मे यह झूठ बोला जाता रहा कि चुनाव अधिकारी की नियुक्ति हमारी स्वीकति से नहीं हुई। परन्तु किसी अदालत ने इनकी दलीलो को नहीं माना। कहीं सफलता मिलती न देख अन्तत यह सारा समूह ३ नवम्बर को आर्यसमाज दीवान हाल के सामने आकर अन्तिम कदम के रूप मे चुनाव प्रक्रिया रूकवाने के लिए प्रयासरत हो गया।

इस विषय को लेकर एक अच्छी खासी पुस्तक भी लिखी जा सकती है।

३ नवम्बर २००१ का चुनाव प्रक्रिया मे जिस प्रकार चुनाव सम्पन्न हुआ वह गत अक मे सक्षिप्त रूप से प्रकाशित किया जा चुका है। कै० देवरत्न आर्य जी के नाम का जब प्रस्ताव हुआ और सारी सभा ने [illegible] अनुमोदन किया तो एक दो सदस्यो ने यह कहा कि स्वामी धर्मानन्द जी भी प्रधान पद के प्रत्याशी है। चुनाव अधिकारी श्री रामफल बसल जी के निर्देश पर स्वामी धर्मानन्द जी को मच पर आमन्त्रित किया गया। कुछ सदस्य उन्हे सहारा देकर मच पर लाए जह उन्होने माईक पर कहा कि अस्वस्थता के कारण मै अपना नाम वापस लेता हू आर कै० देवरत्न आर्य को प्रधान बनने के लिए अपना आशीवाद देता हू।

इसके अतिरिक्त अन्य कोई नाम प्रस्तुत नहीं हुआ। कै० देवरत्न आर्य सर्वसम्मति स प्रधान घोपित हुए तो उनका स्वागत के साथ साथ स्वामी धर्मानन्द जी का भी सम्मान स्वाभाविक था।

बाद मे श्री रामफल बसल ने भी स्वामी धमानन्द जी से कहा कि आपने स्वय को इन पदो से ऊपर सादित कर दिया है। मै आपके द्वारा किए जा रहे धर्मान्तरण विरोधी कार्यो से अवगत हू और मेरे मन मे अपके प्रति बहुत आदर है। इस पर स्वामी धर्मानन्द जी ने उन्हे बताया कि मैं तो बिल्कुल इस पद दायित्व के लोम मे नहीं हू परन्तु मुझ पर मेरे गुरु स्वामी ओमानन्द जी का दबाव था।

स्वामी धर्मानन्द जी ने श्री रामफल बसल को उडीसा मे आकर उनके कार्यो और प्रयासो का अवलोकन करने के लिए आमन्त्रित भी किया।

जो लोग सदस्य नहीं थे और वैधानिक रूप से चुनाव मे भाग नहीं ले सके उनकी सह पर एक छ (६) पृष्ठीय पर्चा प्रकाशित किया गया हे जिसम ओमानन्द जी की अध्यक्षता म एक असवैधानिक और गैर कानूनी सूची तैयार की गई जिसे सार्वदेशिक सभा के पदाधिकारियो के रूप मे प्रस्तुत किया जा रहा है। इसी पर्चे मे एक हस्तलिखित लेख भी छापा गया है जिसे स्वामी धर्मानन्द जी का वक्तव्य कहकर प्रचारित किया जा रहा है। स्वामी धर्मानन्द जी के नाम से यह झूठ प्रचारित किया जा रहा है कि उन्होने अपना नाम वापस नहीं लिया और कै० देवरत्न आर्य को अपना आशीर्वाद नहीं दिया।

सच और झूठ की लडाई मे आर्यसमाज की प्रगति बनाम भूमि विक्रय के इस युग मे कौन किस पक्ष का साथ देता है यह तो हर व्यक्ति की प्रवृत्ति और मनोवृत्ति पर निर्भर करता है परन्तु स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जैसे साक्षात स्वामी श्रद्धानन्द के अनुयायी के रूप मे प्रतिष्ठित महान आत्मा के नाम से झठ का पोषण करवाना उनके साथ घोर अन्याय है।

स्वामी धर्मानन्द जी ने चुनाव से कई दिन पूर्व कई आर्य महानुभावो को टेलीफोन द्वारा स्वय निवेदन किया कि इस बार चुनाव मे कै० देवरत्न आर्य का ही प्र न बनाना चाहिए। चुनाव से दो दिन पूर्व स्वा र्मानन्द जी दिल्ली पहुच चुके थे। इन दिन मे भी उन्होने बहुत से लोगो के समक्ष यही बात दोहरायी यहा तक कि उनके शिष्य स्वामी व्रतानन्द ने टेलीफोन द्वारा श्री विमल विधावन एडवोकेट को स्वामी जी का सदेश दिया कि वे कै० देवरत्न आर्य जी के साथ स्वामी जी से मिले। चुनाव अधिवेशन से एक दिन पूर्व कै० देवरत्न आर्य स्वामी धर्मानन्द जी से मिलने गुरुकुल गौतम नगर गए। वहा भी स्वामी जी ने कै० देवरत्न आर्य को अपने आशीर्वचनो से प्रधान पद का उत्तरदायित्व सम्भालने के लिए उत्साहित किया।

इतना सब कुछ होने के बावजूद उनके नाम से जो वक्तव्य कुछ स्वार्थी तत्वो ने प्रचारित किया है उसमे लेशमात्र भी सच्चाई का कोई अश नहीं है। यह पत्रक पूरी तरह से जालसाजी का एक नमूना है और झूठ से भरा हुआ है।

आर्यजनता ऐसे भ्रामक प्रचारों से सावधान रहे। ऐसे कार्य आर्य धर्म की मर्यादा और सत्य के सिद्धान्त के विपरीत है। चुनाव प्रक्रिया से सम्बन्धित कुछ और तथ्य भी भविष्य मे विस्तार पूर्वक दिए जाएगे

कैलाशनाथ, अग्निवेश और इन्द्रवेश का पुनः निष्कासन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के गत साधारण अधिवेशन दिनाक ३ ४ नवम्बर २००१ मे श्री कैलाश नाथ सिह यादव अग्निवेश और इन्द्रवेश के आर्यसमाज विरोधी कार्यों पर चर्चा के उपरान्त सर्वसम्मत प्रस्ताव क द्वारा इन तीनो व्यक्तियो को पुन सार्वदेशिक एव आर्यसमाज की पाथमिक सदस्यता से १० वर्ष के लिए निस्काषित किया गया है।

उल्लखनीय है कि इन्ही तीनो व्यक्तियो को निस्काषित करने का प्रस्ताव पहले १२ मार्च १९९५ की सार्वदेशिक सभा की एक बैठक मे भी सवसम्मति से पारित किया गया था क्योकि इन्होने सार्वदेशिक सभा के नाम पर एक बोगस समूह गठित करने का प्रयास किया था। उनकी इस गैरकानूनी एव असवैधानिक हरकत पर दिल्ली उच्च न्यायालय ने इनके विरूद्ध आदश भी दिया था।

इस बार के त्रैवार्षिक चुनाव अधिवेशन मे भी ये सदस्य नहीं थे। इसके बावजूद इन्होंने फिर से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम पर अनुशासनहीनता के प्रयास किए हैं।

आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि किसी रूप मे भी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम पर इनके प्रतिनिधित्व अथवा उपस्थिति को मान्यता न दी जाए।

श्री कैलाश नाथ सिह यादव विगत कई वर्षों से उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यो मे भी विघ्न और बाधाए पहुचाने का कार्य कर रहे हैं। उत्तर प्रदेश की कई आर्यसमाजो और शिक्षण सस्थाओ की चल अचल सम्पत्तिया खुर्द पुर्द करने के इन पर आरोप हैं।

हाल ही मे गुरुकुल कागडी की महत्वपूर्ण भूमि को कौडियो मे बेचने के कारण स्वामी ओमानन्द जी प्रो० शेरसिह तथा इन्द्रवेश आदि की भूमिका भी सदिग्ध रही है।

इस सारी अनुशासनहीनता और आर्यसमाज सगठन को अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए प्रयोग करना तथा पदलिप्सा के वशीभूत होकर अग्निवेश ने भी आर्यसमाज की छवि को काफी नुकसान पहुचाया है।

आर्य जनता इन व्यक्तियो और इनके समूह से सावधान रहे।

मानवमात्र के सर्वतोमुखी उत्थान में महर्षि दयानन्द का योगदान

– सत्या बाला

युग पुरुष युग प्रवर्त्तक युग निर्माता मानव समाज के उद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने उदार और विशाल ह्रदय को लोक कल्याण और लोक हित की पावन भावना से ओत प्रोत करते हुए समस्त मानव समाज के उत्थान हित सम्पादन एव विश्व का कल्याण करने का प्रयत्न किया। उन्होने मानव मात्र के उत्थान एव अभ्युदय हेतु आर्यसमाज के छठे नियमानुसार – ससार का उपकार करना आर्यसमाज का प्रमुख ध्येय निश्चित किया – अर्थात मानव मात्र की शारीरिक मानसिक एव सामाजिक उन्नति करना। उनके लेखो और प्रवचनो मे सर्वत्र – 'मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानी समीक्ष्यताम की भावनापरिलक्षित होती है। उन का कथन था 'ऐ ससार के मानवो! तुम एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखो कभी किसी को हानि न पहुचाओ। दूसरो के सुख दु ख को अपना सुख दु ख समझो और सबके कष्ट निवारण को अपना कर्त्तव्य समझो। सब की उन्नति मे अपनी उन्नति समझो। समस्त मानव जाति के उत्थान और उन्नति हेतु स्वामी जी ने आर्य समाज के एव नियमानुसार मानवमात्र को प्रेरित किया कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी ही उन्नति मे सन्तुष्ट न रहना चाहिए प्रत्युत सब की उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए। आर्यसमाज के सातवे नियमानुसार सब से प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए। इस प्रकार महर्षि ने मानव मात्र मे पारस्परिक सद्भाव और सद् व्यवहार की भावना को प्रोत्साहन देते हुए विश्वबन्धुत्व एव विश्व प्रेम की पुनीत भावनाओ की उदभावना की।

युग निर्माता क्रान्तिकारी मानव समाज के उद्धारक और उन्नायक महर्षि दयानन्द ने समस्त मानवमात्र के उत्थान एव अभ्युदय हेतु तत्कालीन भारतीय समाज मे प्रसारित अगणित विषमताओ पाखण्डो अन्धविश्वासों धार्मिक आडम्बरो जाति पाति सम्बन्धी अनियमिताओं आदि सामाजिक कुरीतियोपर प्रबल वैदिक धर्म के रूप मे प्रतिष्ठा की। अविद्या और अज्ञान के घोर अन्धकार को तिरोहित कर जन मानस को वेदो के सत्य ज्ञान से आलोकित किया। मूर्ति पूजा बहुदेव वाद आदि का खण्डन कर एकेश्वर वाद का महत्व प्रदर्शित किया। और प्रभु के सर्व सन्मानित ओ३म् नाम की उपासना पर बल दिया। यही नहीं मानव मात्र के उत्थान हेतु उन्होने आर्यसमाज के चतुर्थ नियमानुसार 'सत्य को ग्रहण करने एव असत्य का त्याग करने पर बल दिया। इस प्रकार उन्होने स्थान स्थान पर आर्यसमाजो की स्थापना करते हुए सर्वहितकारी एव मानव उन्नायक नियमो का प्रतिपादन किया। एकेश्वर वाद की विस्तृत व्याख्या करते हुए महर्षि ने आर्यसमाज के प्रथम नियम मे बताया 'कि सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदिमूल परमेश्वर है। परम सुधारक क्रान्ति कारी महर्षि दयानन्द ने तत्कालीन समाज में प्रसरित समस्त कुरीतियो अविद्या अज्ञान एव चारित्रिक दूषणों का परिहार कर मानव मात्र की शिक्षित सभ्य और नाना आदर्श चारित्रिक सदगुणो से समन्वित और विभूषित कर उसके उद्धार उन्नति एव प्रगति पथ को प्रशस्त किया।

यही नहीं 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' के अमर सन्देश वाहक मानव उद्धारक योगीराज महर्षि दयानन्द ने विश्व के समस्त मानव मात्र के चरित्र को आर्यत्व अर्थात समस्त मानवीय सदगुणो से अलकृत करने पर बल दिया और आर्यसमाज के चतुर्थ नियमानुसार सत्य को ग्रहण करने एव असत्य का त्याग करने का आग्रह किया मानव मात्र के उत्थान हेतु, वसुधैव–कुटुम्बकम एव आत्मवत सवभूतेषु आदि आदर्श सिद्धान्तो के पक्षपोषक महर्षि दयानन्द ने मानव उत्थान समान सदव्यवहार विश्व बन्धुत्व और विश्व प्रेम पुनीत भावनाओ को प्रधानता देते हुए सत्यार्थ प्रकाश मे लिखा है मै जैसा स्वदेश मे मानव उन्नति के विषय मे वर्तता हू वैसा ही विदेशिया के साथ भी तथा सब सज्जनो के साथ भी वर्तता हू। अत समस्त मानव जाति की उन्नति प्रगति विकास और कल्याण हेतु महर्षि द्वारा निर्धारित उपरोक्त नियमो द्वारा स्पष्टता सिद्ध हो जाता है कि मानव मात्र का उत्थान करना उनके जीवन का चरम ध्येय था।

महर्षि के जाति पाति सम्बन्धी विचार महर्षि दयानन्द जन्म के आधार पर किसी भी व्यक्ति की जाति निर्धारण करना उचित नही समझते थे। प्रत्युत जन्म पर आधारित वर्ण व्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठाते हुए उन्होंने वेद शास्त्रो द्वारा प्रतिपादित नियमो के आधार पर व्यक्ति के गुण कर्म स्वभावएव चरित्र के आधार पर उसकी जाति निर्धारित करन पर बल दिया।

अछूतोद्धार के प्रबल समर्थक महर्षि दयानन्द अस्पृश्यता के निर्मम विरोधी थे। उन्होने घोषणा की कि कोई भी व्यक्ति अस्पृश्य नही है। सब मानव हैं एक समान के आदर्श मानवतावादी अमर सिद्धान्त पर बल देते हुए स्त्री शूद्रो न धीयताम साम पाखण्ड पूर्ण सिद्धान्त का खण्डन कर उन्होने शत शत वर्षो से अभिशप्त सामाजिक अन्याय अत्याचार से पीडित और शोषित नारी और तथाकथित शूद्र को वेदपाठन का अधिकार प्रदान किया। युग–युग से प्रताडित अन्न वस्त्र एव सुविधाजनक आवास स्थानो के अभाव सम आधारभूत आवश्यकताओ से वचित सभ्यता–सस्कृति से निर्वासित अशिक्षा एव निर्बुद्धि पक मे पालित शोषित उत्पीडित नाना रोग शोक से जर्जर दैन्य अन्याय एव समाज से बहिष्कृत समस्त मानवीय अधिकारो से वचित दु खित भग्न ह्रदय मानव मूर्तियो को उन अपरिचित नरक सम सकीर्ण बिलो के समान निवास स्थानो मे कीडो के समान रेंगते हुए उन अछूत कहलाए जाने वाले मानव गण की दुर्दशा देख मानव मात्र के उद्धार के पक्ष पोषक महर्षि का कुसुम कोमल ह्रदय असह्य पीडा से व्यथित हो उठा और वह उन दीन हीन समाज और जाति से ठुकराए हुए बहिष्कृत समस्त मानव अधिकारो से वचित हीनभावना मे ग्रसित व्यक्तियो के उद्धार हेतु कटिबद्ध हो गए। हरिजनो के उद्धार हेतु उन्होने अछूतोद्धार नामक सगठन की स्थापना द्वारा उन की शिक्षा दीक्षा सुविधाजनक निवास स्थाना और खान पान के प्रबन्ध एव रोग शोक का निवारण कर उनके हतोत्साहित भग्न और निराश ह्रदयो से हीन भावना को तिरोहित कर उन्हे समाज मे मान सम्मान सुख सुविधाए सामाजिक न्याय और समाज मे समान अधिकार दिलाने का प्रयत्न किया। फ्रैन्च लेखक रोम्या रोला के मतानुसार – स्वामी दयानन्द मे कर्म योगी विचारक और नेता की उपयुक्त प्रतिभा का दुर्लभ सम्मिश्रण था। दयानन्द ने अस्पृश्यता या छूतपन अछूतपन के अन्याय को सहन नहीं और उनसे अधिक अछूतो के अपहृत अधिकारो का उत्साही विरोधी और दूसरा कोई न हुआ। सर्वपल्ली डा० राधाकृष्णन के विचारानुसार स्वामी दयानन्द एक महान सुधारक और प्रखर क्रान्तिकारी महापुरुष तो थे ही साथ ही उन के ह्रदय मे सामाजिक अन्यायो को उखाड फेकने की प्रचण्ड अग्नि भी विद्यमान थी। अत युग सस्थापक महर्षि के दयानन्द के शुभ प्रयत्नो और अभियानो के फल स्वरूप ही आज बहुसख्यक शिक्षित हरिजन स्कूलो कालिजो एव देश विदेश के विश्वविद्यालयो से [illegible] शिक्षा प्राप्त कर विभिन्न शैक्षणिक सामाजिक एव राजनीतिक क्षेत्रो मे उच्च पदो पर आसीन हैं होकर अपनी योग्यता विद्वत्ता और प्रखर बुद्धि का परिचय दे रहे है। आज बहुसख्यक हरिजन शिक्षा के क्षेत्र मे अध्यापक प्रधानाध्यापक इन्सपैक्टर डायरैक्टर आदि उच्च पदो पर लोक सभा राज्य सभा मे भी सम्माननीय मन्त्री पदो और मुख्यमन्त्री आदि उत्तरदायित्व पूर्ण पदो पर प्रतिष्ठित हो देश की जटिल राजनीतिक समस्याओ को सुलझाने एव जनहितकारी नियम प्रसारित करने मे सक्षम हैं। यही नहीं आज भारत के सर्वोच्च राष्ट्रपति को भी सर्वश्री के०आर० नारायणन सम एक हरिजन ही सुशोभित कर रहे हैं। यही नही स्वतन्त्र भारत के सविधान निर्माताश्री भीमराव अम्बेडकर की योग्यता और प्रखर बुद्धि को भला कौन देशवासी स्वीकार नहीं करता ?

आर्यसमाज के आठवे नियमानुसार अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए। निरक्षरता निवारण – आदित्य ब्रह्मचारी वेद वेदाग के प्रकाण्ड पण्डित सूर्य सम प्रचण्ड तेजस्वी महर्षि दयानन्द ने निरक्षरता का निराकरण करने हेतु वैदिक सिद्धान्तानुसार गुरुकुलीय शिक्षण पद्धति करने हेतु वैदिक सिद्धान्तानुसार गुरुकुलीय शिक्षण पद्धति पर बल दिया। जिस के अनुसार जीवन के प्रथम प्रहर से पच्चीस वर्ष की आयु तक तपोवनो के शान्त उन्मुक्त स्निग्ध पावन प्राकृतिक छटा पूर्ण वातावरण मे ब्रह्मवेत्ता तपोधनी गुरुजनो के चरणो मे अवस्थित होकर तपोत्याग मय जीवनयापन करते हुए आतपृ शीत वात

– शेष भाग पृष्ठ १० पर

महर्षि की इच्छा पूर्ण करने का व्रत लो

— आर्या मीरायति

हमारे वैदिक धर्म मे त्यौहारो का बहुत महत्व है। हम इनको पर्व भी कहते है। पर्व शब्द पृ-पूरने धातु से बना होने के कारण इसका अर्थ उल्लास पूर्वक मनाने का है। अर्थात जिस दिन कोई भी पर्व हम मनाते है उस दिन हमारे मन के भीतर अत्याधिक उल्लास होता है। पर्व मनाने से हमारी सस्कृति की रक्षा होती है। ये पर्व प्रतिवर्ष आते है और हमे नई-नई उमगे नए-नए मार्ग निर्देश करते हैं। हम इनको मनाते हुए अपने प्राचीन गौरव को अनुभव करते है और हमारे नवयुवको तथा नवयुवतियो को प्राचीन इतिहास की झलक मिलती है जिससे वे प्रेरणा प्राप्त करते है।

जिस दिन कोई भी पर्व हो हमारे सबके मन उमग से भर जाते है। सब एक दूसरे से मिलते हुए प्रसन्नता प्रगट करते है। इसी कारण दफ्तरो मे बैको मे तथा पोस्ट आफिस मे छुट्टी कर दी जाती है ताकि सब लोग अपन अपन परिवार मे अपने बाल बच्चो म बठ‌कर मिलकर आमोद-प्रमोद से प्रत्येक पर्व को मना सक। इसलिए हमार भारतवष मे क्या विदेशो मे भी जो भारतीय रहते है वह सब पर्वो को मनाते हैं।

परन्तु प्रत्यक मानवो का पर्व मनाने का ढग कुछ अलग-अलग होता है। वे पुरातन काल की कथाओ के अनुसार जो उनके पिता पितामह से चली आ रही मानते है चाहे वह प्रथा अच्छी हो या बुरी चाहे लाभप्रद हो अथवा हानिकर परन्तु उसी बेढेगी चाल से मनाते चले आ रहे है। मैने कई स्थानो पर स्वय देखा है कई लोग छोटे–छोटे त्यौहार मनाते है जैसे नाग पूजा दुर्गापूजा, होई माता का पूजन लक्ष्मी पूजन तथा करवाचौथ का व्रत इत्यादि-इत्यादि।

हमारे मुसलमान भाई ताजिए तथा ईद बकरीद मनाते है जिसमे रोते पीटते तथा बकरे काटते हैं। एक ओर तो जीवन हिसा करते है दूसरी ओर खुशिया मनाते है यह कोई पर्व नहीं त्यौहार भी नहीं है जिससे परमात्मा की बनाई हुई सृष्टि की आत्महत्या हो ऐसा जघन्य पाप और क्या होगा और फिर यह पर्व भी कैसा उसे तो कुछ और ही कहना चाहिए।

परन्तु वैदिक पर्व कितने ऊचे हैं जिनमे सबसे प्रथम यह किया जाता है जो परोपकार के लिए होता है उसमे अपना कोई भी स्वार्थ नही होता बस एक ही विचारधारा होती है वह यह कि अच्छी सुगन्धि सबको मिलनी चाहिए। फिर देखो हमारी आर्य पर्व पद्धति मे प्रत्येक पर्व पर विशेष मन्त्रो द्वारा आहुतिया दी जाती है जो उस पर्व के लिए आवश्यक होती है।

हमारे पर्व कितने अच्छे शिक्षाप्रद है जैसे मकर सक्रान्ति बसन्त पचमी, विजयदशमी कृष्णाष्टमी रामनवमी दीपावली रक्षा बन्धन, इत्यादि। हम आर्य लोग इन सब पर्वों को मनाते हुए यज्ञ करते हैं। दान देते है। चाहे आर्यसमाज मे मनाए या अपने-अपने घरो मे परन्तु ये यज्ञ दान मिष्ठान बाटना आवश्यक समझते है। प्रत्येक पर्व हमे नया-नया सदेश देता है।

आज जिस पर्व को हम मना रहे है उसके दो पहलू है। एक तो प्रत्येक स्थान पर दीपक जलाए जा रहे है दूसरे स्वामी दयानन्द जी का निर्वाण दिवस मनाया जा रहा है। आज के दिन बहुत सारे लोग लक्ष्मी पूजन करते है। ऐसे लोगो की यह विचारधारा है कि इस दिन यदि लक्ष्मी की पूजा की जाए तो घर मे बहुत धन आ जाता ह एक मनुष्य ने ऐसा किया कि रात्रि को लक्ष्मी पूजन करके घर का दरवाजा खुला रख दिया। लक्ष्मी तो न आई कोई चोर आकर चोरी करके ले गया।

हम आर्य लोग ऐसी बातो पर विश्वास नही करते हम कहते है लक्ष्मी पूजा करने से नही आती लक्ष्मी तो पुरुषार्थ करने से आती है इसलिए पुरुषार्थ करके लक्ष्मी को प्राप्त करे। दूसरे पूजा शब्द जो है वह पुज धातु से बना है जिसका अर्थ सत्कार करना लक्ष्मी का सत्कार अर्थात् पूजा करके उसका आदर करना चाहिए। जो लोग लक्ष्मी का पूजन करते हैं वही लोग रात्रि को बैठकर जुआ खेलते हैं जिससे किसी की जीत तो किसी की हार भी हो जाती है। तब जीतने वाले तो हसते है और जिनकी हार होती है वह रोते पीटते हैं। इन लोगो के समक्ष लक्ष्मी पूजा का फल आ जाता है फिर भी वह पुरानी परम्परा को नहीं छोडते।

पाठकवृन्द ऐसी लक्ष्मी पूजा से क्या लाभ है ? हम आर्य लोग असली अर्थो मे लक्ष्मी की पूजा करना जानते हैं हम लोग दीपावली मे निर्धन लोगो मे मिठाई बाटते हैं। इसी प्रकार मकर सक्रान्ति को तिल के लड्डू और कम्बल वगैरा दिए जाते हैं जिससे हमे बहुत ही प्रसन्नता होती है।

दूसरा इसके साथ आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द जी महाराज. का निर्वाण दिवस मनाते हैं इसी दिन महर्षि जी ने अपनी इहलीला पूर्ण की। उनका जीवन उस दीपक की भाति था जो अपनी बत्ती और तेल जलाकर दूसरो को प्रकाश दिया करते है। युगो की प्रतीक्षा के बाद ऐसी आत्मा का धरा पर प्रादुर्भाव हुआ करता है वे चले जाते है किन्तु बत्ती की भाति अपनी सुगन्धि लोक मे छोड जाया करते है।

स्वामीजी महाराज की सुगन्धि देश विदेश मे फैल रही है। जो जो काम उन्होने अपने जीवन मे किए उसकी प्रशसा आज विरोधी लोग भी कर रहे हैं। महर्षि जी ने जीवन मे वह कार्य किए जो कोई विरला व्यक्ति ही कर सकता है उन्होने अन्धकार मे गिरे लोगो को निकालकर वेद ज्ञान का प्रकाश दिया। उस समय लोग कहा करते थे स्त्री और शूद्र को वेद नही पढने चाहिए परन्तु दयानन्द पृथ्वी पर प्रथम महर्षि थे जिन्होने यह उद्घोष किया था कि जिस प्रकार सूर्य की धूप लेने का सबको पूर्ण अधिकार है चन्द्रमा की चादनी से सब लाभ उठा सकते है गगा की निर्मल धारा मे सब स्नान कर सकते हैं, वस्त्र धो सकते हैं अपनी प्यास जल से बुझा सकते हैं। उसी प्रकार वेद जो प्रभु की पवित्र वाणी है उसे सब पढ सकते है। महर्षि सदियो से चली आ रही पुरानी गली सडी कुरीतियो को दूर करने मे लगे रहे। अन्तत विजय श्री उनके चरण कमलो मे लोटने लगी वह प्रत्येक क्षेत्र मे सफलता प्राप्त करने के उपरान्त प्रभु द्वारा भेजी हुई मृत्यु को हस–हस कर गले लगाते हुए आज के दीपावली के दिन यह शब्द उच्चारण करने लगे। प्रभु तूने अच्छी लीला की प्रभुवर तेरी इच्छा पूर्ण हो।

अब हमारा सबका क्या कर्तव्य है? हम उस देव दयानन्द की इच्छा पूर्ण करने में लगे रहें। उन्होंने अपनी मूक भाषा में कहा था आर्यो सबके लिए दरवाजे खुले रखना और शिक्षा, शुद्धि तथा शास्त्रार्थ द्वारा मेरे बताए हुए वेद मार्ग की ओर अन्य लोगो की भी लगाने के लिए प्रयत्नशील रहना। तो आओ आर्यो ! हम सब आज दीपावली के इस शुभ अवसर पर मिलकर प्रतिज्ञा करें कि ऋषि ने तो प्रभु की इच्छा पूर्ण की थी हम उनकी इच्छा पूर्ण करें।

वेद वेदांग पुरस्कार', 'वेदोपदेशक पुरस्कार', श्रीमती लीलावती महाशय 'आर्य महिला पुरस्कार' एवम् 'श्रीमती शिवराजवती आर्या बाल पुरस्कार''

आर्यसमाज सान्ताक्रुज वर्ष – २००२ मे निम्नलिखित पुरस्कारो से आर्य विद्वानो को सम्मानित करेगा।

१ वेद-वेदांग पुरस्कार :- जिस विद्वान ने जीवनपर्यन्त वेद-वेदागो पर अनुसंधान किया हो एवम् ग्रन्थ लिखे हो उन्हे 'वेद-वेदाग पुरस्कार' से सम्मानित किया जाएगा। पुरस्कार राशि २५,००१/- रुपये दी जाएगी।

२ वेदोपदेशक पुरस्कार - वेद - वेदाग के अनुसंधान कर्ताओं के अतिरिक्त जिस विद्वान ने जीवनपर्यन्त आर्यसमाज के उपदेशक, भजनोपदेशक अथवा कार्यकर्ता के रूप में सेवा की हो उन्हें 'वेदापदेशक पुरस्कार' से सम्मानित किया जाएगा। पुरस्कार राशि १५,००१/- रुपये दी जाएगी।

३ श्रीमती लीलावती महाशय 'आर्य महिला पुरस्कार'
उपरोक्त पुरस्कार के अतिरिक्त एक महिला विदुषी/ कार्यकर्त्री को रुपये ११,००१/-, शाल एवम् रजत ट्राफी से सम्मानित किया जाएगा।

४. श्रीमती शिवराजवती आर्या 'बाल पुरस्कार'
बाल पुरस्कार की राशिः - आर्ष पाठ विधि से शिक्षा प्राप्त कर रहे भारत वर्ष में सर्वप्रथम आए छात्र-छात्राओं को रुपये, १०,०००/-, रजत ट्राफी, शाल, श्रीफल एवम् मोतियों के हार से सम्मानित किया जाएगा।

जो आर्य बन्धु किसी विद्वान के नाम उपरोक्त पुरस्कार हेतु प्रस्तावित करना चाहते हैं, वे विद्वान के जीवन परिचय, कार्य एवम् लिखे गए ग्रन्थो की सूची एवम् प्रति सहित विस्तृत पत्र दि० ३०-११-२००१ तक भेजने की कृपा करे।

जो विद्वान अपने नाम का स्वय प्रस्ताव करेगे वे अयोग्य माने जाएगे। जिन विद्वानों के नाम पूर्व मे प्रस्तावित किए गए है, उनके नामो को पुन प्रस्तावित करने की आवश्यता नहीं है।

आपके द्वारा प्रस्तावित नामों के आधार पर निर्णायक मण्डल वर्ष – २००२ के लिए वेद–वेदाग, वेदोपदेशक एवम् श्रीमती लीलावती महाशय 'आर्य महिला पुरस्कार' के लिए विद्वान का चयन करेगा। पुरस्कार ले अन्तिम निर्णय का अधिकार आर्यसमाज सान्ताक्रुज (प०) मुम्बई की अन्तरग सभा के पास सुरक्षित होगा।

—: कैप्टन देवरत्न आर्य :—
सयोजक पुरस्कार समिति एव प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

वर्तमान शिक्षा-प्रणाली क्या दे रही है ?

– डॉ० कृष्णलाल

हमे स्वतन्त्र मौलिक विचारक चाहिए हमे निर्भीक कवि और लखक चाहिए जो किसी 'वाद से बधे हुए न हो और केवल देश की महान सस्कृति के अनुरूप जनता की देशी भाषा लिखे–बोले। हमे ऐसे वैज्ञानिक चाहिए जो विज्ञान के तत्त्व सर्वसाधारण को उनकी भाषा मे समझा सके। हमे निष्पक्ष स्वतन्त्र पत्रकार चाहिए न्यायधीश अधिवक्ता (वकील) चाहिए अविष्कारक और गवेषक चाहिए। हमे केवल बाबू, अफसर प्रबन्धक नही चाहिए। हमे चाहिए वे युवक–युवतिया जो देश की मौलिक आवश्यकताओ के अनुरूप (पश्चिम की नकल किए बिना) वस्त्रो का नमूना तैयार करे जिसमे नग्नता न हो जो खाने–पीने की उत्तम वास्तव मे स्वास्थ्यवर्धक वस्तुओ के उद्योग स्थापित करे ऐसी वस्तुए जो नशे से दूर हो। हमे ऐसे युवक युवतिया चाहिए जिनका चरित्र ऊचा हो और जो अपने कार्यों तथा उन्नत चरित्र से अपने देश का नाम उज्ज्वल कर सके।

अब यह सोचना चाहिए कि क्या हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली यह सब कर रही है या करने मे समर्थ है ?

यह कहने मे सकोच नही होना चाहिए कि स्थिति निराशाजनक बनी हुइ हे। पहली बात तो यह आलोच्य है कि यहा दोहरी शिक्षा प्रणाली चल रही है। एक ओर सामान्य सरकारी विद्यालय हैं – न पीने के पानी और शौचालय की उचित व्यवस्था है न बैठने का कोई समुचित साधन है न ही सिर पर उपयुक्त छत है और न ही पढने लिखने के आवश्यक साधन है। दूसरी ओर वे तथा कथित आदर्श या पब्लिक विद्यालय हैं जहा प्रारम्भिक कक्षाओ मे (प्रथम कक्षा से पूर्व) बच्चो पर गणवेष (अनावश्यक टाई सहित) तथा बोझ बढाने वाली पुस्तको पर अन्धाधुन्ध खर्चा करवाया जाता है। अनाप शनाप शिक्षा–शुल्क और बसो का किराया इसके अतिरिक्त है।

इस प्रकार दोहरी शिक्षा प्रणाली सामाजिक चिन्तन में दरार डाल रही है। एक ओर सामान्य वर्ग के अभावग्रस्त छात्र हैं तो दूसरी ओर आभिजात्य वर्ग के सर्व सुविधासम्पन्न छात्र है जिनके वस्त्रो पर कभी कीचड का छींटा भी नहीं लग सकता।

इस दरार को बढाने मे दुर्भाग्य से राजनीतिक सरकारी जातिगत आरक्षण भी सहायाता कर रहा है और इसका वर्तमान ढाचे मे कहीं कोई अन्त दिखाई नहीं देता। योग्यता हो या न हो सरकारी विद्यालयों मे विशेष जाति के अध्यापको की नियुक्ति करके सख्या पूरी करनी आवश्यक है। यह स्थिति प्रारम्भिक कक्षाओं से लेकर उच्च कक्षाओ के विद्यालयो तक मे समान है। दूसरी ओर पब्लिक स्कूलो मे नियुक्तिया केवल योग्यता के आधार पर होती हैं। शिक्षा की गुणवत्ता के लिए सुयोग्य समर्पित अध्यापक का होना आवश्यक है

परन्तु दुर्भाग्य से दुकानदारी चलाने के लिए पब्लिक स्कूलो मे अग्रेजी और अग्रेजियत को ही आदर्श मान लिया गया है। एकदम प्रारम्भिक कक्षाओ मे दयानन्द के नाम पर चलने वाले विद्यालयो मे भी मानो हिन्दी को अप्रयोज्य मानकर केवल अग्रेजी वर्णमाला अग्रेजी गिनती अग्रेजी तुकान्त कविताए (पोयम्स) ही सिखाई जाती है। मातृभाषा हिन्दी बेचारी उपेक्षित रहती है। न हिन्दी मे गिनती न पहाडे न सामाजिक सुबोधता की दृष्टि। कही कही केवल वार्षिकोत्सवो के 'सास्कृतिक' कार्यक्रमो मे हिन्दी का प्रयोग करना पडता है। अन्यथा तो हम दयानन्द विद्यालयो मे भी 'गुडमार्निंग' साहब तैयार करने मे लगे हुए हैं।

प्राथमिक कक्षाओ मे मातृभाषा न पढाकर अग्रेजी पढाकर अथवा अग्रेजी की शिक्षा पर अधिक बल दकर हम सविधान के उस अनुच्छेद (स० ३५०–अ) की अवहेलना तो नही कर रहे जिसमे प्राथमिक कक्षाओ मे मातृभाषा के द्वारा शिक्षा देना सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया है ? यद्यपि यह निर्देश भाषायी अल्पसख्यक वर्गों के लिए उद्दिष्ट है तथापि मातृभाषा से शिक्षा के प्रसग मे आधार रूप मे यह माना ही गया है कि बहुसख्यक बच्चो की प्राथमिक शिक्षा तो उनकी मातृभाषा मे होती ही होगी। सविधान का उल्लघन करने वाले ऐसे विद्यालयो को सरकार को बन्द कर देना चाहिए और भले ही शिक्षा कर लगाकर सरकारी विद्यालयो का स्तर उठाना चाहिए। परन्तु दुर्भाग्य से सरकारी विद्यालयो मे शिक्षा के स्तर के सुधार का अर्थ अग्रेजी की पढाई ही ले लिया गया है। दिल्ली नगर निगम के विद्यालयो मे पहली कक्षा से अग्रेजी की पढाई सविधान की भावना की अवहेलना तो है ही साथ ही उस पर जनता के धन का अपव्यय निर्ममता से किया जा रहा है। हम जानते है कि 'स्कूल की बात छोडे कालेज स्तर पर भी बच्चे तीन तीन वर्ष तक अग्रेजी मे उत्तीर्ण नही होते। अग्रेजी का यह मोह राष्ट्रीय समय और धन की हानि तो हे ही राष्ट्रीय गौरव के विपरीत भी है।

अग्रेजी को और अग्रेजी मे विषयो को रटते रटते उनका खेल कूद सोना आराम सब छूट जाता है। इस सबका उनके स्वास्थ्य और सामाजिक मानसिकता पर कुप्रभाव पडता है। इनके अतिरिक्त दूरदर्शन भी उन्हे आकृष्ट करता ही है। वह भी समय मागता है। प्रकृति से भी बच्चे कट जाते है। उनके विचार कुण्ठित हो जाते है। सामान्य समाज से भी सास्कृतिक परम्पराओ से दूर होने के कारण उनके विषय मे बच्चो का चिन्तन अवरुद्ध हो जाता है। ऐसी परिस्थितियो मे हम किसी के रवीन्द्र नाथ ठाकुर अरविन्द जय शकर प्रसाद प्रेमचन्द सुमित्रानन्दन पत बनने की कल्पना भी नही कर सकते।

रोजगारोन्मुखी शिक्षा भी नैतिकता का ह्रास करने मे सहायक है। जो समय बच्चे का नैतिकता सीखने का उसका अभ्यास करने का होता है उसी समय उसके भीतर कमाने की ललक पैदा कर दी जाती है। शिक्षा के लिए शिक्षा और सच्चरित्र उन्नत सामाजिक बनाने के लिए शिक्षा का आदर्श बीच म ही छूट जाता है। हम जानते हैं कि इन आदर्शो को पनपने के लिए कम से कम सारी स्कूली शिक्षा की अवधि अपेक्षित है। इस अवधि मे उसे रोजगार की चिन्ता से मुक्त होना चाहिए। हा ग्यारहवीं कक्षा मे विषयो का चयन करते हुए इस ओर ध्यान दिया जा सकता है।

विषय को ठीक से गहराई तक समझने के लिए स्वभाषा (हिन्दी) के माध्यम की उपेक्षा किसी प्रकार नहीं की जा सकती। इसके साथ–साथ विशेष रूप से दयानन्द के नाम पर सचालित सस्थाओ मे बारहवी कक्षा तक (भले ही ऐच्छिक अतिरिक्त विषय के रूप मे) सब छात्रो के लिए सस्कृत अनिवार्य होनी चाहिए। नैतिकता और सास्कृतिक चिन्तन मनन उत्थान के लिए यह आवश्यक है। इससे छात्र को स[...] भाषाओ के मध्य एकसूत्रता की अनुभूति होगी। विद्यालयो मे भारतीय सास्कृतिक उत्सवो का आयोजन और उनमे अनुभ[...] व्यक्तियो के भाषण छात्रो का स[...] प्रकार का मार्गदर्शन करते है।

– विश्वनीड ई ६३७
सरस्वती विहार दिल्ली ११००३

आर्यसमाज के प्रेरणा स्त्रोत श्री देवीदास आर्य दिवंगत

कानपुर। महान महिला उद्धारक प्रसिद्ध समाज सेवी आर्य नेता श्री देवी दास आर्य को खोकर कानपुर मे आर्यसमाज की अपूर्णनीय हानि हुई है। २५ अक्तबूर २००१ को श्री आर्य की ह्रदय गति रुक जाने से उनके निवास पर देहान्त हो गया। पूरा कानपुर आज उनके बिना सूना लग रहा है। २८ अक्तूबर २००१ को कानपुर मे उनके शान्ति यज्ञ मे उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री राजनाथ सिह उ०प्र० के नगर विकास मन्त्री लाल जी टण्डन कई ससद सदस्यो, विधायको सहित सैकडो सामाजिक राजनैतिक एव अन्य सस्थाओ द्वारा सवेदनाए व्यक्त की गई। शान्ति यज्ञ लखनऊ विश्वविद्यालय की प्रो० डॉ० शान्तिदेव बाला ने सम्पन्न कराया।

प्रबल आत्मबल के धनी ईश्वर विश्वासी निर्भीक श्री देवीदास आर्य वैदिक धर्म के क्रियात्मक स्वरूप की साक्षात मूर्ति थे। उन्होने व्यवहारिक जीवन मे विभिन्न पहलुओ पर अपनी अमिट छाप छोडी। उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री राजनाथ सिह ने कहा कि हम सभी ने सामाजिक सेवा का जीवन्त आदर्श खो दिया है सेवा उनका जीवन धर्म था।

श्री आर्य ने अपने निजी ससाधनो से लगभग ४००० महिलाओ एवम कन्याओ को असामाजिक तत्वो तथा वेश्यालयो के चुगल से मुक्त कराया एव सभ्य समाज मे पुर्नवासित किया। ६०० से अधिक निराश्रित निर्धन एव उत्पीडित कन्याओ का विवाह निजी ससाधनो से स्वय पिता बनकर कन्यादान करके कराया। २००० से अधिक असहाय निराश्रित एव निर्धन विधवाओ वृद्धो वृद्धाओ के जीवनयापन हेतु सरकार से पेशन का प्रबन्ध कराया। चार हजार से अधिक विधर्मियो को वैदिक धर्म प्रवेश कराया जिसमे पादरी मौलवी और इमाम भी हैं।

आर्य जी आर्य कन्या इण्टर कालेज के सस्थापक प्रबन्धक अखिल भारतीय सिन्धी आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष नारी सेवा सस्थान के अध्यक्ष उ०प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व वरिष्ठ उपप्रधान उ०प्र० विद्यालय प्रबन्धक महासभा के अध्यक्ष आर्यसमाज गोविन्द नगर के सस्थापक अध्यक्ष राष्ट्रीय शिक्षण समिति के पूर्व महामन्त्री श्री मुनी हिन्दू इण्टर गोविन्द नगर के सस्थापक थे।

श्री देवीदास आर्य स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित उत्तर प्रदेश रत्न से विभूषित थे। समय–समय पर प्रदेश एव देश की विभिन्न सामाजिक साहित्यिक एव सास्कृतिक सस्थाओ ने आपके अभिनन्दन समारोह आयोजित कर कृतज्ञता ज्ञापित की। उनमे प्रमुख रूप से लायन्स क्लब रोटरी क्लब लायनेस क्लब विश्व हिन्दू परिषद [illegible] सनातन धर्म आर्यसमाज तथा विभिन्न नगर महापालिकाए है। श्री आर्य [illegible] अभिनन्दन ग्रन्थ का विमाचेन उ०प्र० विधान सभा अध्यक्ष श्री केसरी नाथ त्रिपाठी [illegible] कुछ समय पूर्व किया गया था

श्री देवीदास आर्य के दिवगत होने से उत्तर प्रदेश मे आर्यसमाज के एक युग का अन्त हो गया है। आर्यसमाज की एक अपूर्णनीय क्षति हुई है। कानपुर के सभी बाजार उनके दुखद समाचार सुनकर स्वत ही बन्द हो गए।

– बाल गोविन्द आर्य मन्[...]

युग पुरुष स्वामी दयानन्द सरस्वती

– डॉ० रवीन्द्र कुमार शास्त्री 'सोमवर्षक'

दया के सागर थे दयानन्द हमारे।
महर्षि बनकर भारत की भू पर पधारे।।
दयानन्द की विद्वता को देखकर बडे बडे विद्वानो
के माथे चकराये।
दीपावली के ही दिन स्वामी स्वर्ग सिधारे।।
अपने तपोवल से जग का सुधार किया।
अपने गुरु विरजानन्द का सपना साकार किया।
अनेक विधवाओ का उन्होने उद्धार किया।
सर्वत्र घूम घूमकर वेदो का प्रचार किया।।

भारत भूमि सृष्टि के आदिकाल से ही ऋषि मुनियो ापस्वियो वेदज्ञो साधु सन्तो वीरो वीरागनाओ विद्वानो ’व विदुषियो की वसुन्धरा रही है। भारत का प्राचीन ाम आर्यावर्त था। यहा के निवासियो को आर्य कहा ाता था। हम लोग आर्य थे और सम्प्रति भी हैं। ार्यावर्त की पुनीत श्यामा पर अनेक ऋषि मुनिगण न्म लिए। जिन्होने स्व अमृतोपदेश के द्वारा समय समय र आकर समाज के बिगडे स्वरूप मे परिवर्तन लाया। ैसे गौतमबुद्ध शकराचार्य बल्लभाचार्य भगवान महावीर ुरु नानक देव आदि उन्हीं महापुरुषो मे स्वामी दयानन्द ाद्वितीय है। जिन्होने अपने वैचारिक क्रान्तियो के द्वारा सार का कल्याण एव समाज का सुधार किया। स्वामी यानन्द के बचपन का नाम मूल शकर था। जिनको िवरात्रि के दिन शिव मूर्ति पर चढे हुए मोदको को चूहे े द्वारा खाते देखकर उससे (शिव मूर्ति) से घृणा हो ई। और उनका नकली शिव पर से विश्वास उठ गया। न्होने अपने मन मे सोचा जो अपनी रक्षा नहीकर कता है। वह दूसरो की रक्षा क्या कर सकता है? त्कालीन मूलशकर ने प्रण किया कि मै सच्चे शिव की ोज करुगा। अत मे उन्होने कर दिखाया। और दुनिया लोगो से कहा – ओ३म ही सच्चा शिव है। यही ूलशकर बाद मे स्वामी दयानन्द के नाम से प्रसिद्ध आ। स्वामी दयानन्द मथुरा मे ब्रह्मऋषि स्वामी गुरु रजानन्द से शिक्षा प्राप्त कर अपने गुरु का आदेश ाकर ईश्वर प्रदत्त ज्ञान को सारे जगत के मनुष्यो से हा – हे ससार के मनुष्यो ! वेदो की ओर लौटो। इसी तुम्हारा भला है। वेदो के विरुद्ध चलने वालो का भी भी ईश्वर कल्याण नहीं सकता है। सृष्टि के आदि ईश्वर ने चारो वेदो का ज्ञान चारो ऋषियो के न्त करण मे दिया। जिन्होने वेदो के अमृतोपदेशो के ारा समस्त ससार का कल्याण किया। बाद मे लोगो वेदो जैसे दुरुह ग्रन्थ को पढना छोड दिया। शैन–शैन द को पढने वाले कम होते गए। वेदो के रास्ते पर लोग चलना बद कर किए। कुछ लोगो की ऐसी भ्रान्त धारणा न गई कि वेदो मे मास भक्षण करने का विधान है।

स्वामी दयानन्द के जन्म से गुजरात की धरती धन्य गइ। उनका जन्म १८२४ को गुजरात के टकारा ामक ग्राम मे हुआ था। स्वामी दयानन्द ने ससार के पकार के लिए बहुत से कार्य किए जिसे भुलाया नहीं सकता है।

किसी कवि ने स्वामी दयानन्द के बारे में लिखा है –

सौ बार जन्म लेगे, सौ बार फना होगे।
एहसान दयानन्द के फिर भी न अदा होगे।
जरात की धरती से सूरज की किरण फूटी।
अज्ञान अविद्या के दानव की कमर टूटी।।
पुरनूर हुआ भारत अब अर्ज शमा होगे।
निराकार की पूजा को जीवन मे उतारा था।
पाषाण का अभिनन्दन कब उसको गवारा था।
मुह मोड लिया जिसने पत्थर के खुदा होंगे।

स्वामी दयानन्द के एहसान को भुलाया नहीं जा कता। महर्षि ने लोगो से कहा था कि यदि मेरे हाथो े सारी अगुलियो को वत्ती बनाकर जला दिया जाए व मुझे हाथी के पैर के तलवे के नीचे कुचलवा दिया ाए तो भी मैं सत्य ही कहूगा। स्वामी दयानन्द अत्यन्त र्भीक धैर्यशाली चिन्तनशील सच्चे प्रभु–भक्त सत्यवादी व गम्भीर थे। वे वेदों एव प्राचीन व्याकरण के मूर्धन्य िद्वान थें। वेदो के विरोध करने वालो को वे दो टूक वाब देते थे। महर्षि जैसा विश्व की धरती पर पहले भी न हुआ था न वर्तमान मे कोई है और न भविष्य ऐसा ऋषि होने की कोई आशा है। स्वामी दयानन्द विश्व के कल्याणार्थ एव समाज के सुधारार्थ अथक प्रयास किया कि जिससे समाज के लोग वेदानुकूल बनकर सुखमय एव आनन्दमय जीवन व्यतीत कर सके। पत्थर खाये गालिया सुनी एव जगली जानवरो का मुकाबला भी किया। अठारह बार जहर का प्याला भी पिये। धूर्त लोगो ने उन्हे अनेक यातनाए भी दीं। लेकिन दयानन्द कभी हुफ तक नहीं किए। उनका जैसा नाम था वैसा काम भी था।

स्वामी दयानन्द के बारे मे अयोध्या सिह उपाध्याय हरिऔध ने लिखा है –

वैदिकता विधि पूत वेदिका वदनीय वलि।
वेद विकच अरविंद मत्र मकरन्द मत्त अक्ति।।
आर्य भाव कमनीय रत्न के अनुपम आकर।
विविध अध विश्वास तिमिर के विदित विभाकर।।
नाना विरोध वारिद पवन कदाचार कानन दहन।।
हे निमनद तरू वृद के दयानन्द आनन्द घन।।

डॉ० रवीन्द्र कुमार शास्त्री 'सोमवर्षक लिखते है –

स्वामी दयानन्द सा न कोई था न कोई होगा।
ऋषि रचित सत्यार्थ प्रकाश सा न कोई ग्रन्थ होगा।
अटादश बार विष पीकर, कितनों का उपकार किया।
पत्थर खाकर, गाली सुनकर वेदों का प्रचार किया।।
वेदों का पण्डित ऋषियों का ऋषि, सम्पूर्ण विश्व की धरती पर
स्वामी दयानन्द सा महर्षि भारत की पुनीत पृथ्वी पर।।
न पहले था न सम्प्रति, आगे होने की आशा नहीं।
वेदों के पथपर चलते रहे, जीवन में हुआ निराश नहीं।।
वेदो की ओर लौटो स्वामी दयानन्द ने बतलाया था।
वेदों के पथपर चलने को ऋषि ने सिखलाया था।।
गुरु विरजानन्द से आदेश पाकर वेदों का प्रचार किया।
दयानन्द स्वय जहर पीकर कितनों का उपकार किया।
अपने अमृतोपदेश के द्वारा लोगों का कल्याण किया।

पत्थर खाकर जहर पीकर समाज का उत्थान किया।

स्वामी दयानन्द हिन्दी के पोषक थे

महर्षि अपना प्रवचन सस्कृत मे न देकर हिन्दी म करते थे। पहले वे सस्कृत मे स्व प्रवचन करते थे। परन्तु बाद मे हिन्दी मे अपना व्याख्यान प्रारम्भ किया। सस्कृत का प्रकाण्ड पण्डित होते हुए भी अपनी रचना हिन्दी भाषा मे ही लिखी। उन्होने भारतीयो से कहा था कि किसी भी देश का विकास अपनी भाषा स्वससकृति एव जाति पर निर्भर करता है। भारत बहुल हिन्दी भाषीय क्षेत्र है। भारत के अधिकाश राज्यो मे हिन्दी बोली जाती है। अत स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश जैसे अमूल्य ग्रन्थ को गुजराती जानते हुए भी हिन्दी भाषा मे ही लिखा। हिन्दी भाषा से ही भारत का उत्थान सम्भव है। स्वामी दयानन्द के अतिरिक्त कुछ विद्वानो ने भी हिन्दी भाषा पर बल दिया। जो इस प्रकार है –

जयप्रकाश नारायण लिखते हैं – मेरा यह सुनिश्चित मत है कि विदेशी भाषा के अनिवार्य रहते हमारे शिक्षार्थियो मे राष्ट्रीय स्वाभिमान का विकास नहीं हो सकता। स्वतन्त्र भारत मे अग्रेजी को अनिवार्य रखना राष्ट्रीय स्वाभिमान के प्रतिकूल है।

महात्मा गाधी के अनुसार – यदि मैं तानाशाह होता तो आज ही विदेशी भाषा मे शिक्षा का दिया जाना बद कर देता। सारे अध्यापकों को स्वदेशी भाषाए अपनाने को मजबूर कर देता। मैं पाठय पुस्तको के तैयार किए जाने का इन्तजार न करता।

डॉ० राममनोहर लोहिया के अनुसार – लोक सभा को लीजिए – मुझे शर्म लगती है कि हिन्दुस्तान के नुमाइन्दे वहा अपनी तकरीर अग्रेजी मे करते हैं। वह एक बिल्कुल नापाक और गदी जगह है। जहा पर अग्रेजी मे भारत के कायदे कानून बनाए जाते हैं। उसे ये लोग कहते हैं लोकशाही। जब हिन्दुस्तान काकाम लोक भाषा मे नहीं चले तो लोकशाही कैसे होगी। यह जनतन्त्र नहीं है। यह परतन्त्र है। लोकशाही के लिए तो जरूरी है कि वह लोक सभा के माध्यम से चले। मैं यह कहूगा कि अगर वहा तुम हिन्दुस्तानी में बहस नहीं कर सकते हो। तेलुगू मे भाषण दो बगाली मे दो तमिल मे दो लेकिन अग्रेजी मे मत दो।

धर्मवीर भारती के अनुसार – भारत में भारतीय भाषाओ की सार्वजनिक प्रतिष्ठा के लिए अग्रेजी हटाओ का आन्दोलन उतना ही आवश्यक और तर्क सम्मत है। जितना स्वातन्त्रय पूर्व युग मे स्वदेशी की प्रतिष्ठा के लिए विदेशी वस्त्रो की होली जलाना।

कवि हरिवश राय बच्चन ने – स्वामी दयानन्द के बारे मे लिखा हे – मैं किसी समय आर्य कुमार सभा तथा आर्यसमाज का सदस्य था। मेरे स्वतन्त्र चिन्तन पर दयानन्द का प्रभाव है। मैं ऋषि दयानन्द को एक महामानव तथा वेदो का उद्धारक मानता हू।

राष्ट्रकवि रामधारी सिह दिनकर के अनुसार – हमारा गौरव सबसे प्राचीन और सबसे महान है – यह जागृत हिन्दुत्व का महासमर नाद था। रागरुढ हिन्दुत्व के जैसे निर्भीक नेता स्वामी दयानन्द हुए वैसा और कोई भी नहीं।

प० सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला के अनुसार – उन्नीसवीं सदी का पूर्वाद्ध भारत के इतिहास का अपर स्वर्ण प्रभात है। कई पावन–चरित्र महापुरुष अलग–अलग उत्तरदायित्व लेकर इस समय इस पुण्य भूमि मे अवतीर्ण होते हैं। महर्षि दयानन्द भी उन्हीं मे एक महाप्रतिभा मण्डित महापुरुष है।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के अनुसार – मेरे हृदय मे श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती पर अगाध श्रद्धा है। वे बहुत बडे समाज सस्कर्ता वेदो के बहुत बडे ज्ञाता तथा समयानुकूल वेद भाष्य कर्त्ता और आर्य सस्कृति के बहुत बडे पुरस्कर्ता थे।

मानव जाति के उद्धार के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती ने दस नियम बनाये। उनमे पहला नियम है – सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते है। उन सबका आदि मूल परमेश्वर है। वास्तव मे वेदा क ओर लौटने से ही ससार का कल्याण सम्भव है। स्वामी दयानन्द जीवनभर वेदा का प्रचार करत रहे। उन्होने अपने जीवन म कभी घबराहट महसूस नहीं की। उन्होने छुआछूत का विरोध किया। वाल विवाह का विरोध किया। विधवा विवाह करवाया। परतन्त्र भारत मे क्राति के प्रथम उद्घोषक स्वामी दयानन्द सरस्वती ही रहे।

स्वामी दयानन्द वेदो के मार्ग पर चलते हुए सन १८८३ ई० को दीपावली के दिन शाम मे भारत का ही नहीं बल्कि समस्त ससार का जगमगाता हुआ वैदिक सूर्य सदा के लिए अस्त हा गया। मृत्यु के समय उन्होने गायत्री मन्त्र का जाप करते हुए हे ईश्वर ! तेरी इच्छा पूर्ण हो। ऐसा कहते हुए ऋषिवर दयानन्द अपने गन्तव्य स्थान पर चले गए। अर्थात सदा के लिए हम लोगो को छोडकर चले गए। सम्प्रति स्वामी दयानन्द हमारे बीच नहीं है। लेकिन कीर्ति रूपी शरीर से ऋषि आज भी हमारे मध्य विद्यमान है। जब तक सूरज चाद रहेगा। दयानन्द सूरज के भाति विश्व के आकाश मे चमकता रहेगा। किसी कवि ने लिखा है –

जब तक सूरज चाद रहेगा।
तब तक दयानन्द का नाम रहेगा।
अतएव, धन्यञ्जय प्राज्ञमूर्धन्य दयानन्द दयाघनम्।
स्वामिन तमह वन्दे वार वार च सादरम्।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने देश धर्म एव जाति की रक्षार्थ स्वय को बलिदान कर दिया। वे परोपकारी दयालु, क्षमाशील चरित्रवान व्याकरण के सूर्य आदि थे। उन्होने दुष्ट जगन्नाथ को क्षमा कर दिया। जिसने स्वामी दयानन्द सरस्वती के दूध मे काच मिलाकर पिलाया था। वास्तव मे स्वामी जी जैसा दयालु क्षमाशील महापुरुष मिलना दुर्लभ है। परतन्त्र भारत मे क्राति का विगुल बजाने वाला पहला व्यक्ति स्वामी दयानन्द ही था। स्वामी जी जो रास्ता हमे बतलाकर गए। उसे हम कभी नहीं भूल सकते हैं। युगो युगों तक स्वामी दयानन्द का नाम अमर रहेगा। अपने कीर्ति रूपी यश से आज भी अमर हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती उन्नीसवीं शताब्दी के एक अद्वितीय युग पुरुष थे।

– [illegible]

आर्यसमाज (स्वाभिमान का उदय)

– रामधारी सिंह दिनकर (राष्ट्र कवि)

सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास मे स्वामी दयानन्द ने ब्रह्मसमाज और प्रार्थनासमाज के विषय मे निम्नलिखित बाते लिखी है – जो कुछ ब्रह्मसमाज और प्रार्थना समाजियो ने ईसाई मत मे मिलने से थोडे मनुष्यो को बचाए और कुछ कुछ पाषाणदि मूर्ति पूजा को हटाया अन्य जालग्रन्थो के फन्दो से भी बचाए इत्यादि अच्छी बाते है। परन्तु इन लोगो मे स्वदेश भक्ति बहुत न्यून है। ईसाइयो के आचरण बहुत से लिए है। खान पान विवाहादि के नियम भी बदल दिए है। अपने देश की प्रशसा और पूर्वजो की बडाई करनी तो दूर रही उसके बदले पेट भर निन्दा करते हैं। व्याख्यानो मे ईसाई आदि अग्रेजो की प्रशसा भरपेट करते हैं। ब्रह्मादि महर्षियो का नाम भी नही लेते। प्रत्युत ऐसा कहते है कि बिना अग्रेजो के सृष्टि मे आज पर्यन्त कोई विद्वान नहीं हुआ। आयावर्ती लोग सदा से मूर्ख चले आए है। वेदादिको की प्रतिष्ठा तो दूर रही परन्तु वेदा से भी पृथक नही रहते ब्रह्म समाज के उद्दश्य की पुस्तक मे साधुओ की सख्या मे ईसा मूसा मुहम्मद नानक और चैतन्य लिखे हैं। किसी ऋषि महर्षि का नाम भी नही लिखा।

केशव चन्द्र और रानाडे की तुलना मे दयानन्द वैसे ही दीखते है जैसे गोखले की तुलना मे तिलक। जैसे राजनीति के क्षेत्र मे हमारी राष्ट्रीयता का सामरिक तेज पहले पहल तिलक म प्रत्यक्ष हुआ वैसे ही सस्कृति के क्षेत्र मे भारत का आत्माभिमान स्वामी दयानन्द मे निखरा ब्रह्मसमाज और प्रार्थना समाज क नेता अपने धर्म और समाज मे सुधार तो ला रहे थे किन्तु उन्हे बराबर यह खेद सता रहा था कि हम जो कुछ कर रह हे वह विदेश की नकल है। अपनी हीनता और विदेशियो को श्रेष्ठता के ज्ञान से उनकी आत्मा कही न कही दबी हुई थी। अतएव काय तो प्राय उनके भी वैसे ही रहे जेसे स्वामी दयानन्द के किन्तु आत्महीनता के भाव से अवगत रहने के कारण वे दर्प से नही बोल सके। यह दर्प स्वामी दयानन्द मे चमका। रूढियो और गतानुगतिकता मे फसकर अपना विनाश करने के कारण उन्होने भारतवासियो की कडी निन्दा की और उनसे कहा कि तुम्हारा धर्म पौराणिक सस्कारो की धूल वैदिक धर्म है जिस पर आरूढ होने से तुम फिर से विश्व विजयी हो सकते हो। किन्तु इससे भी कडी फटकार उन्होने ईसाइयो पर और मुसलमानो पर भजी जो दिन दहाडे हिन्दुत्व की निन्दा करते फिरते थे। ईसाई और मुस्लिम पुराणो मे घुसकर उन्होंने इन धर्मो मे भी वैसे ही दोष दिखला दिए जिनके कारण ईसाई और मुसलमान हिन्दुत्व की निन्दा करते थे। इससे दो बाते निकली। एक तो यह कि अपनी निन्दा सुनकर घबरायी हुई हिन्दू जनता को यह जानकर कुछ सन्तोष हुआ कि पौराणिकता के मामले मे ईसाइयत और इस्लाम भी हिन्दुत्व से अच्छे नहीं हैं। दूसरी यह कि हिन्दुओ का ध्यान अपने धर्म के मूलरूप की ओर आकृष्ट हुआ एव वे अपनी प्राचीन परम्परा के लिए गौरव का अनुभव करने लगे।

आक्रामक की ओर राममोहन और रानाडे ने हिन्दुत्व के पहले मोर्चे पर लडाई लडी थी जो रक्षा या बचाव का मोर्चा था। स्वामी दयानन्द ने आक्रामकता का थोडा बहुत श्रीगणेश कर दिया क्योंकि वास्तविक रक्षा का उपाय तो आक्रमण की ही नीति है। सत्यार्थ प्रकाश मे जहा हिन्दुत्व के वैदिक रूप का गहन आख्यान है वहा उसमे ईसाइयत और इस्लाम की आलोचना पर भी अलग अलग दो समुल्लास है। अब तक हिन्दुत्व की निन्दा करने वाले लोग निश्चिन्त थे कि हिन्दू अपना सुधार भले करता हो किन्तु बदले मे हमारी निन्दा करने का उसे साहस नहीं होगा। किन्तु इस मेधावी एव योद्धा सन्यासी ने उनकी आशा पर पानी फेर दिया। यही नही प्रत्युत जो बात राममोहन केशवचन्द्र और रानाडे के ध्यान मे भी नहीं आयी थी उस बात को लेकर स्वामी दयानन्द के शिष्य आगे बढे और उन्होने घोषणा की कि धर्मच्युत हिन्दू प्रत्येक अवस्था मे अपने धर्म मे वापस आ सकता है एव अहिन्दू भी यदि चाहे तो हिन्दू धम मे प्रवेश पा सकते हैं। ये केवल सुधार की वाणी नहीं थी जाग्रत हिन्दुत्व का समर नाद था और सत्य ही रणारूढ हिन्दुत्व के जैसे निर्भीक नेता स्वामी दयानन्द हुए वैसा और कोई नहीं हुआ।

इतिहास का क्रम ऐसा बना कि स्वामी दयानन्द की गिनती महाराणा प्रताप शिवाजी और गुरु गोविन्द की श्रेणी मे की जाने लगी। किन्तु स्वामी दयानन्द मुसलमानो के विरोधी नहीं थे। स्वामीजी का जब स्वर्गवास हुआ तब सुप्रसिद्ध मुस्लिम नेता सर सैय्यद अहमद खा ने जो सवेदना और शोक प्रकट किया उससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि मुस्लिम जनता के बीच भी स्वामीजी का यथेष्ट आदर था। स्वामी जी के बाद आर्यसमाज और मुस्लिम सम्प्रदाय के बीच का सम्बन्ध अच्छा नहीं रहा यह सत्य है किन्तु स्वामीजी के जीवन काल मे ऐसी बात नहीं थी।

सच पूछिए तो स्वामीजी केवल इस्लाम के ही आलोचक नहीं थे वे ईसाइयत और हिन्दुत्व के भी अत्यन्त कडे आलोचक हुए है। सत्यार्थ प्रकाश के त्रयोदश समुल्लास मे ईसाई मत की आलोचना है और चतुर्दश समुल्लास मे इस्लाम की। किन्तु ग्यारहवे और बारहवे समुल्लासो मे तो केवल हिन्दुत्व के ही विभिन्न अगो की बखिया उधेडी गई हैं और कबीर दादू नानक बुद्ध तथा चार्वाक एव जैनो और हिन्दुओ के अनेक पूज्य पौराणिक देवताओ मे से एक भी बेदाग नहीं छूटा है। बल्लभाचार्य और कबीर पर तो स्वामी जी इतना बरसे हैं कि उनकी आलोचना पढकर सहनशील लोगो की भी धीरता छूट जाती है। किन्तु यह सब अवश्यम्भावी था। यूरोप के बुद्धिवाद ने भारतवर्ष को इस प्रकार झकझोर डाला था कि हिन्दुत्व के बुद्धि सम्मत रूप को आगे लाए बिना कोई भी सुधारक भारतीय सस्कृति की रक्षा नहीं कर सकता था। स्वामी जी ने बुद्धिवाद की कसौटी बनाई और उसे हिन्दुत्व इस्लाम और ईसाइयत पर निश्छल भाव से लागू कर दिया। परिणाम यह हुआ कि पौराणिक हिन्दुत्व तो इस कसौटी पर खड खड हो ही गया इस्लाम और ईसाइयत की भी सैकडो कमजोरिया लोगो के सामने आ गई।

किसी का भी पक्षपात नही चूकि ईसाइयत और इस्लाम हिन्दुत्व पर आक्रमण कर रहे थे इसलिए हिन्दुत्व की ओर से बोलने वाला प्रत्येक व्यक्ति ईसाइयत या इस्लाम अथवा दोनो का द्रोही समझ लिया गया। किन्तु इस प्रसग से अलग हटने पर स्वामी दयानन्द विश्व मानवता के नेता दीखते हैं। उनका उद्देश्य सभी मनुष्यो को उस दिशा मे ले जाना था जिस वे सत्य की दिशा समझते थे। उन्होने सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका म स्वय लिखा है कि जो जो सब मतो मे सत्य बात है व सब मे अविरुद्ध होने से उनका स्वीकार करके जो जो मत मतान्तरो म मिथ्या बात है उन उन का खण्डन किया है। इसमे यह भी अभिप्राय रखा है कि जब मत मतान्तरो की गुप्त या प्रकट बुरी बातो का प्रकाश कर विद्वान अविद्वान सब साधारण मनुष्यो के सामने रखा है जिससे सबसे सब का विचार होकर परस्पर प्रेम हो कर एक सत्य मतस्थ होवे। यद्यपि मे आर्यावर्त देश मे उत्पन्न हुआ और बसता हू, तथापि जैसे इस देश के मतमतान्तरो की झूठी बातो का पक्षपात न करके यथातथ्य प्रकाश करता हू, वैसे ही दूसर दशस्थ या मतोन्नति वालो के साथ भी बर्तता हू। जैसा स्वदेश वालो के साथ भी बर्तता हू। जैसा स्वदेश वालो के साथ मनुष्योन्नति के विषय मे बर्तता हू वैसा विदेशियो के साथ भी तथा सब सज्जनो को भी बर्तना योग्य है। क्योकि मैं जो भी किसी एक का पक्षपाती होता तो जैसे आजकल के स्वमत की स्तुति मण्डन और प्रचार करते और दूसर मत की निन्दा हानि और बन्द करने मे तत्पर होते है वैसे मै भी होता परन्तु एसी बाते मनुष्यपन से बाहर हे। अन्यत्र चौदहव समुल्लास के अन्त मे भी स्वामीजी ने कहा है कि मेरा कोइ नवीन कल्पना व मत मतान्तर चलान का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं हे। किन्तु जो सत्य है उस मानना मनवाना और जो असत्य है उसे छोडना–छुडवाना मुझको अभीष्ट है। यदि मै पक्षपात करता तो आर्यावर्त के प्रचलित मतो म स किसी एक मत का आग्रही होता। किन्तु मै आर्यावर्त व अन्य देशो मे जो अधर्म युक्त चाल चलन है उनको स्वीकार नही करता और जो धर्मयुक्त बाते है उनका त्याग नहीं करता न करना चाहता हू क्योकि ऐसा करना मनुष्य धर्म के विरुद्ध है।

सुधार नही क्रान्ति उन्नीसवी सदी के हिन्दू नवोत्थान के इतिहास का पृष्ठ पृष्ठ बतलाता है कि जब यूरोप वाले भारतवर्ष मे आए तब यहा के धर्म और सस्कृति पर रूढि की पर्ते जमी हुई थी एव यूरोप के मुकाबले मे उठने के लिए यह आवश्यक हो गया था कि य पर्ते एकदम उखाड फेकी जाए और हिन्दुत्व का यह रूप प्रकट किया जाए जो निर्मल और बुद्धिगम्य हो। स्वामी जी के मत से यह हिन्दुत्व वैदिक हिन्दुत्व ही हो सकता था। किन्तु यह हिन्दुत्व पौराणिक कल्पनाओ के नीचे दबा हुआ था। उस पर अनेक स्मृतियो की धूल जम गयी थी एव वेद के बाद के सहस्रो वर्षो मे हिन्दुओ ने जो रूढिया और अन्धविश्वास अर्जित किए थे उनके नीचे यह धर्म दबा पडा था। राममोहन राय रानाडे केशवचन्द्र और तिलक से भिन्न स्वामी दयानन्द की विशेषता यह रही कि उन्होने धीरे धीरे पपडिया तोडने का काम न करके उन्हे एक ही चोट से साफ कर देने का निश्चय किया। परिवर्तन जब धीरे धीरे आता है तब सुधार कहलाता है। किन्तु वही जब तीव्र वेग से पहुच जाता है तब उसे क्रान्ति कहते हैं। दयानन्द के अन्य समकालीन सुधारक केवल सुधारक मात्र थे किन्तु दयानन्द क्रान्ति के वेग से आए और उन्होने निश्छल भाव से यह घोषणा कर दी कि हिन्दू धर्म ग्रन्थो मे केवल वेद ही मान्य है अन्य शास्त्रो और पुराणो की बाते बुद्धि की कसौटी पर कसे बिना मानी नहीं जानी चाहिए। छह शास्त्रो और अठारह पुराणो को उन्होने एक ही झटक से साफ कर दिया। वेदो मे मूर्तिपूजा अवतारवाद तीर्थो और अनेक पौराणिक अनुष्ठानो का समर्थन नहीं था अतएव स्वामीजी ने इन सारे कृत्यो और विश्वासो को गलत घोषित किया।

वेद को छोडकर कोई अन्य धर्मग्रन्थ प्रमाण नहीं है इस सत्य का प्रचार करने के लिए स्वामी जी ने सारे देश का दौरा करना आरम्भ किया और जहा जहा वे गए प्राचीन परम्परा के पण्डित और विद्वान उनसे हार मानते गए। सस्कृत भाषा का उन्हे अगाध ज्ञान था सस्कृत मे वे धाराप्रवाह रूप से बोलते थे साथ ही वे प्रचण्ड तार्किक थे। उन्होने ईसाई और मुस्लिम धर्म ग्रन्थो का भी भलीभाति मन्थन किया था। अतएव अकेले ही उन्होने तीन तीन मोर्चो पर सघर्ष आरम्भ कर दिया। दो मोर्चे तो इसाइयत और इस्लाम के थे किन्तु तीसरा मोर्चा सनातन धर्मी हिन्दुओ का था जिनसे जूझने मे स्वामी जी को अनेक अपमान कुत्सा कलक और कष्ट झेलन पडे। उनके प्रचण्ड शत्रु ईसाई मुसलमान नही सनातनी हिन्दू ही निकले और कहते हैं अन्त मे इन्ही हिन्दुओ के षडयन्त्र से उनका प्राणान्त भी हुआ। दयानन्द ने बुद्धिवाद की जो मशाल जलायी थी उसका कोई जवाब नही था।

वे जो कुछ कह रहे थे उसका उत्तर न ता मुसलमान दे सकते थे न ईसाई न पुराणो पर पलने वाले हिन्दू पण्डित और विद्वान। हिन्दू नवोत्थान अब पूरे प्रकाश मे आ गया था और अनेक समझदार लोग मन ही मन यह अनुभव करने लग थे कि सच ही पौराणिक धम मे कोई सार नहीं है।

आर्यसमाज की स्थापना

सन १८७२ ई० मे स्वामी जी कलकत्ते पधारे। वहा देवेन्द्रनाथ ठाकुर और केशवचन्द्र सेन ने उनका बडा सत्कार किया। ब्रह्मसामाजियो से उनका विचार विमर्श हुआ। किन्तु ईसाइयत से प्रभावित ब्रह्म समाजी विद्वान पुनर्जन्म और वेद की प्रामाणिकता के विषय मे स्वामी जी से एकमत नहीं हो सके। कहते हैं कलकत्ते मे ही केशवचन्द्र सेन ने स्वामी जी को यह सलाह दी कि यदि आप सस्कृत छोड हिन्दी मे बोलना आरम्भ करे तो देश का असीम उपकार हो सकता है। तभी से स्वामी जी के व्याख्यानो की भाषा हिन्दी हो गई और हिन्दी प्रान्तो मे उन्हे अगणित अनुयायी मिलने लगे। कलकत्ते से स्वामी जी बम्बई पधार और वही १० अप्रैल सन १८७५ ई० को उन्होन आर्यसमाज की स्थापना की। बम्बई मे उनके साथ प्रार्थना समाजवालो ने भी विचार विमर्श किया। किन्तु यह समाज तो ब्रह्म समाज का ही बम्बई सस्करण था। अतएव स्वामी जी से इस समाज के लोग भी एकमत नही हो सके।

बम्बई से लौटकर स्वामी जी दिल्ली आए। वहा उन्होने सत्यानुसन्धान के लिए ईसाई मुसलमान और हिन्दू पण्डितो की एक सभा बुलायी किन्तु दो दिनो के विचार विमर्श के बाद भी लोग किसी निष्कर्ष पर नहीं आ सके। दिल्ली से स्वामी जी पजाब गए। पजाब मे उनके प्रति बहुत उत्साह जाग्रत हुआ और सारे प्रान्त मे आर्यसमाज की शाखाए खुलने लगी। तभी से पजाब आर्यसमाजियो का प्रधान गढ रहा है।

इंग्लैण्ड में एक आर्य यायावर

– ब्रिगेडियर चितरजन सावन्त वी०एस०एम०

आर्यसमाज वेस्ट मिडलैण्डस बरमिघम का विशाल सभागार। चहल पहल है। भारतीय मूल के ब्रिटिश नागरिक ब्रिटिश मूल के नागरिक नर नारी बाल वृद्ध काले–गोरे अपने सर्वोत्तम परिधान म उपस्थित हैं। यहा के सभी उत्साही भरतवशी मिलकर भारतीय स्वतन्त्रता दिवस मिल कर मना रहे हैं। आर्य समाज के कई पूर्व प्रधान और वर्तमान प्रधान कदम से कदम मिला कर चल रहे है। सगच्छध्व सवदध्व स वो मनासि जानताम का अनुपम जीता जागता उदाहरण है आर्यसमाज वेस्ट मिडलैण्डस।

स्वाधीनता दिवस की वर्षगाठ के आरम्भ मे हुआ हवन। विदेशियों का मन मोह लेने वाला हवन विधिवत सम्पन्न हुआ। महिला मण्डल की भजन मण्डली ने वैदिक भजन के गुजन से विदेशियो को भी प्रभावित किया। भारतीय उच्चायोग के बरमिघम कानसुलेट के प्रतिनिधि एव स्थानीय हिन्दी – पजाबी कवि – गायक भी आए। समय आया राष्ट्रीय ध्वज के औपचारिक ध्वजारोहण का। आर्यसमाज बरमिघम के प्रधान डाक्टर नरेन्द्र कुमार आर्य ने मुझस कहा कि कारगिल विजय के उपलक्ष्य म भारतीय सशस्त्र सेनाओ का प्रतिनिधित्व करत हुए तिरगा झण्डा मै ही लहराऊ। उपस्थित जन समूह और नरेन्द्र जी की भावना का सम्मान करते हुए मैंने सैन्य–श्रद्धा स ध्वज लहरा दिया। सावधान मुद्रा मे खडे होकर सभी ने राष्ट्रीय गान गाया।

स्वाधीनता के पावन पर्व पर रगारग सास्कृतिक कार्यक्रम भारतीयो ने प्रस्तुत किया। महिलाओ मे अग्रणी थी श्रीमती शमा कुमार सुश्री विभा केल और बच्चो मे प्रिजा परिवार प्रमुख महाशय अगिरा देव के पोते व नाती। मच सचालन आर्य समाज के मन्त्री श्री बृज भूषण शरण अग्रवाल कर रहे थे प्रशासनिक सहायता मे थे युवा आर्य राजीव दत्ता और उनकी पुत्री शिक्षा। धर्माचार्य सोनेराव जी ने गीत गाया। शमा जी उन्हे कहिए कोकिल कठा का स्वर सभागार मे गूजने लगा 'ऐ मेरे वतन के लोगो जरा आख मे भर लो पानी तो श्रोताओ की अश्रुधारा बह निकली। मन द्रवित हो उठा हम सभी देश प्रेम से ओत प्रोत थे। कहते हैं जब सुश्री लता मगेशकर ने श्रोताओ के समक्ष इस गीत से शहीद सैनिक को श्रद्धाजलि दी तो प० जवाहर लाल नेहरू रो पडे थे। आज बरमिघम का दृश्य भिन्न न था। शमा जी को मिली तालियो की गूज और जन सराहना। फिर गूज उठा तबला वह भी युगलबन्दी ऐसा लगा जैसे उस्तादो के उस्ताद बजा रहे हो मच पर थे दो किशोर। वैदिक धर्म के प्रति समर्पित प्रिजा परिवार के होनहार भविष्य। उन्हे भी मिली श्रोता–सराहना। विभा केल (अग्रजी नाम उनके अग्रेज पति का है जो भारत के आर्य समाज मे आर्य बन कर कर्ण कहलाए – अब दिवगत) के गीत मे देश के लिए दर्द था एक टीस थी जिसे उमग उजागर नहीं होने दे रहा था।

कारगिल की गूज यह टी०वी० डॉक्युमेन्ट्री मैने जन आग्रह पर पुन दिखाई। कारगिल के रोमाचक रणभूमि के दृश्यो के शब्द चित्र बनाए। भरतवशियो का नाम अकुलाने लगा और भारत के लिए कुछ कर दिखाने के लिए वे बेचैन हो उठे उनके बटुए की डोरी स्वदेश के लिए खुलने लगी। डाक्टर नरेन्द्र आर्य ने सभी को धन्यबाद दिया और प्रीति भोजन ऋषि लकर के लिए आमन्त्रित किया। शान्ति पाठ के साथ स्वाधीनता सभा सम्पन्न हुई।

वेद प्रचार श्रृखला मे एक दिन का अतराल था। महाशय कृष्ण चोपडा से चर्चा हुई क्यो न बरमिघम से बाहर जाया जाए। मैने आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी देखने की इच्छा व्यक्त की। कारण क्या था ? सन १९५० से १९५५ तक मै प्रयाग विश्वविद्यालय (इलाहाबाद युनिवर्सिटी) का विधार्थी था। बी०ए० एम०ए० एल०एल०बी० की डिग्रिया वहीं से लीं। उस समय साहित्यिक गोष्ठियो के दोरान और पढे लिखे लागो के बीच अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयो के तुलनात्मक आकलन मे इलाहाबाद युनिवर्सिटी का ऑक्सफोर्ड आफ इण्डिया कहा जाता था। आपस म ही ऐसा कहकर हम लोग खुश हो लेते थे। नानी के आगे ननिहाल का बखान करने से दोनो हाथो मे लडडू आ ही जाते हैं। बरमिघम आ कर भी यदि मैं ऑक्सफोर्ड न देखता तो मन मे कसक आजीवन रहती। अत चलो दिल्ली के समकक्ष निर्णय लिया गया चलो आक्सफोर्ड। रेल गाडी का टिकट था मात्र पचास पौंड प्रति व्यक्ति। कृष्ण जी ने कहा यह तो महगा है। उन्होने अपनी कार मे मुझे ले चलने की बात कही। डॉक्टर रक्षा चोपडा उनकी पत्नी ने सचेत किया कि कार चलाते चलाते ये सपनो का ससार बसाने लगते हैं। मैंने उन्हे आश्वस्त किया कि मैं रास्ते भर इतनी रोचक बाते करूगा कि नींद नौ दो ग्यारह हो जाएगी। और फिर हम ऑक्सफोर्ड की राह पर थे। दिन भर का दाना–पानी साथ था। फिर भी ऑक्सफोर्ड की चरागाह मे भी चरने लगे। 'पीत्जा हट' मे भरपेट खाया पर्यटन मे मध्यान्तर के समय। हम दोनो ने ही शाकाहार को बढावा दिया।

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय और उस पर निर्भर नगर है सुन्दर शान्त हरा–भरा एव पर्यावरण–प्रेमी। नर–नारी स्वभाव से ही अध्ययनशील एव सौम्य हैं। फिर भी उह पु [illegible] होगी खेल मैदान और क्रीडागन जगह जगह ह। स्वस्थ तन स्वस्थ मन मस्तिष्क सम्भवत यही उनके जीवन की आधारशिला है।

अध्यात्म और विज्ञान का सामजस्य है। हाथ मे हाथ लिए या गले मे बाह डाल किशोर किशोरी दिखाई दिए किन्तु उनकी सख्या कम थी। उन दिनो अवकाश था। यो अधिकाश के हाथो मे पुस्तके थीं। ईसाइयत का प्रभाव स्पष्ट है किन्तु केवल अटालिकाओ पर। क्राइस्ट चर्च कॉलेज पुस्तकालय सभागार गिरजाघर आदि के बहुमूल्य रगीन शीशे बाइबिल की कहानिया अपनी आकृतियो मे सजोए हुए है। इतिहास मे अकित है कि ऑक्सफोर्ड जब एक छोटा गाव था तो वहा शिक्षा जो पहले केवल ईसाई धर्म के बारे मे थी का आरम्भ पादरियो बिशपो ने किया। राजा हेनरी अष्टम के सलाहकार और अभिन्न मित्र कार्डिनल (धर्मगुरु) रिशल्यु ने ऑक्सफोर्ड मे शिक्षा की नीव डाली थी। उनका विशाल तैल चित्र आज भी वहा देखा जा सकता हैं। अनेक कॉलेज खुलते गए और उनमे प्रतिस्पर्धा रहती थी कौन कितने अच्छे धर्माचार्यो को दीक्षित कर सकेगा। उस गाव के छोर पर मन्दगति से बढती टेम्स नदी जो लदन मे नदी न होकर नद है कभी इतनी उथली थी कि भार वाहक बैल (ऑक्स) उसे चलते चलते पार कर लेते थे (फोर्ड)। अत नाम पडा आक्सफोर्ड – आज तो वह विश्व–विख्यात है। यो अब विज्ञान की शिक्षा पर अधिक बल है। गिरजाघर की कुर्सिया भरती नहीं हैं ज्ञानी विज्ञानी विद्वान आज इजील की कथाओ का तक की कसौटी पर खरा नहीं पाते। धीरे धीरे धर्मशून्य हो रहा है युवा पीढी का मन। मन मे विचार आया क्या हमारा वैदिक धर्म इस मानसिक एव आध्यात्मिक रिक्तता की पूर्ति कर सकता है ?

आर्यसमाज द्वारा वैदिक धर्म प्रचार के लिए ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय परिसर एव नगर नये बीज के लिए उपजाऊ खेत समान हैं। ईसाइयत से विमुख हो रहे किशोर किशोरी आध्यात्मिक शून्य मे अधिक समय तक नहीं रह सकते। उदाहरण है धर्म विमुख सोवियत सघ। सोवियत सघ के बिखर जाने पर रूस युक्रेन जॉर्जिया आदि मे ईसाई मत पुन पनपने लगा। बरसो की भूख के बाद रुसियो को अध्यात्म के नाम पर जो भी मिला चाहे वह कितना ही छिछला और कपोल कल्पित क्यो न रहा हो उसे वे निगल गए। ईसाई बन गए। 'इसकॉन' ने कुछ लोगो को हिन्दू बनाया किन्तु चर्च द्वारा उनके मार्ग में रोडा अटकाने से उनकी प्रगति धीमी पड गई। आज हमे ऑक्सफोर्ड केम्ब्रिज एबर्डीन लदन जैसे नगरो पर जहा बुद्धिजीवियो के केन्द्र हैं ध्यान देना चाहिए। वहा की आवश्यकतानुसार अग्रेजी भाषा मे वैदिक साहित्य जो आज के अनुरूप हो नयी पीढी मे वितरित करना चाहिए। इसके लिए भूमि भवन अभी नहीं चाहिए। नुक्कड पर खडे हो कर छोटी पुस्तिकाए लागत से कम मूल्य पर दी जा सकती हैं। प्रचार माध्यम के आधुनिकीकरण को देखते हुए कुछ ऑडियो विडियो कैसेटस भी दिए जा सकते हैं। कम से कम दो चार बार हम प्रयास तो करें और उसके अनुभव के आधार पर आगे बढें। क्या इस दिशा में कोई आर्य प्रतिनिधि सभा पहल करना चाहेगी ?

इग्लैंड में वेद प्रचार अभियान में अनेक भरतवशी सक्रिय सहयोग दे रहे हैं। डॉक्टर नरेन्द्र कुमार आर्य प्रधान आर्य समाज के रूप मे नई–नई योजनाओ को कार्यान्वित करते रहते हैं। भारत से आए स यासी एव गृहस्थ प्रचारको की सुख–सुविधा का ध्यान रखने मे बरमिघम आर्यसमाज के धर्माचार्य की पत्नी श्रीमती सोनेराव आगे आगे हैं – गरम गरम शुद्ध शाकाहारी भोजन स्वय बनाती हैं और अतिथि यज्ञ मन से करती हैं। पर्यटन परम्परा मे प्रचारको को घुमाने घर बुलाने और अतिथि सत्कार करने मे आर्यसमाज के मन्त्री श्री बृज भूषण शरण अग्रवाल उनकी पत्नी मीनू, सुश्री विभा केल श्री वेद रावल माता प्रिजा एव पुत्र चन्द्रकात जिन्दल जी सपरिवार सक्रिय हैं। प्रचार मे ये सभी महाशय तन मन धन से लगे हैं। नयी दिशाए देखते हैं। नयी विधाए खोजते हैं। रेडियो पर सफल वेद प्रचार उनकी निष्ठा की कहानी मेरी जुबानी बार बार कह रहा है।

पर्यटन स्थलो मे लेक डिस्ट्रिक्ट मनमोहक है। प्रसिद्ध प्रकृति कवि [illegible] रावर्थ की कर्म भूमि यही है। बचपन से ही अग्रेजी भाषा साहित्य के विद्यार्थी वर्डसबर्थ की कविताओ का रस लेने लगते है। मैं भी उनके प्रकृति प्रेम से अछूता नहीं रहा। जब मिडलैंडस आया तो सुश्री विभा केल और श्री वेद रावल के साथ उन दोनो के सौजन्य से मैं लेक डिस्ट्रिक्ट और सबसे बडी यु०के० की झील से क्रूज का आनन्द उठा सका। ईसाई होते हुए भी वर्डसवर्थ वैदिक विचारधारा के निकट आया और चर्च ने उसकी भर्त्सना की। उनकी कविता ओड इन्टीमेशन्स ऑफ इमर्मोरटैलिटी' मे आत्मा की नित्यता आवागमन – पुनर्जन्म का सकेत है। शायद यही कारण है कि 'सुपर हिट' होने के बावजूद भी यह कविता अब पर्यटकों को नहीं सुनाई जाती। वहा रखी आगन्तुक पुस्तिका में मैंने पुनर्जन्म की अवहेलना की बात और अपने उदगार अकित कर दिए।

इग्लैंड मे अपने लगभग एक महीने के प्रवास और प्रचार के अतिम चरण मे मुझे आर्यसमाज लदन मे प्रवचन करने का सौभाग्य मिला। डॉ० एस०एस० भारद्वाज प्रधान और श्री एव श्रीमती शम्भुनाथ गुप्त से विचार विमर्श करके प्रसन्नता हुई। कर्मठ आर्य हैं। लदन मे मेरा भारी सामान स्वत स्टेशन पर उठा कर मेरे निवास तक ले जाने वाले अग्रेज श्री फ्रैंक स्माल और अलेक्स सदर्न ने न केवल वैदिक विचारों मे रुचि ली अपितु अलेक्स तो आर्यसमाज भवन में हवन देखता रहा और अहिन्दी भाषी होने पर भी मेरा प्रवचन तल्लीनता से सुनता रहा। अभी रोमन कैथलिक है भविष्य का वैदिक धर्मी हो सकता है। ऐसे अनेक अग्रेज हैं। आइए हम और आप मिलकर उन्हें अपनाए।

– 'उपवन', ६०६, सेक्टर २८, नोएडा २०१३०३।

आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी गढवाल (उत्तराचल) द्वारा

कर्मवीर जयानन्द भारतीय की १२०वीं जयन्ती के शुभावसर पर दयानन्द सेवाश्रम नौगांव

आर्यसमाज सावली आदि पंचपुरी का उद्घाटन समारोह सम्पन्न

१७ अक्तूबर पचपुरी वीरोंखाल (पौडी गढवाल)

आज महान स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी प्रसिद्ध समाज सुधारक प्रख्यात देशभक्त कर्मवीर स्व० जयानन्द भारतीय की १२०वीं जयन्ती के शुभावसर पर आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी के भवन का उद्घाटन श्री वेदव्रत मेहता महामन्त्री अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम दिल्ली के कर कमलो से सम्पन्न हुआ। समारोह बडे हर्षोल्लास के साथ मे सम्पन्न हुआ। प्रात ६ बजे जयानन्द भारतीय स्मारक भवन पचपुरी से शान्तिप्रकाश 'प्रेम प्रभाकर स्मृति भवन स्यूसी नगर तक प्रभात फेरी निकाली गई जिसमे जयानन्द भारतीय कन्या वि० तथा ज० भा० जू० भा० 'वि० पचपुरी के छात्र/छात्राओ तथा आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी गढवाल के आर्य समासदो ने भाग लिया। श्री बच्चीराम आर्य भजनोपदेशक के निर्देशन मे वैदिक गीत गाते हुए तथा जयघोष करते हुए वातावरण आर्यमय हो गया।

प्रात ६.३० बजे वैदिक ध्वजा रोहण श्रीमती प्रेमलता शास्त्री मन्त्री अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ दिल्ली के कर कमलो से सम्पन्न हुआ। अपने ओजस्वी प्रवचनो मे उन्होने ओ३म मन्त्र का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसे विशिष्ट ध्वज कहा।

ध्वजारोहण के पश्चात बृहदयज्ञ कार्यक्रम मे श्री बच्चीराम आर्य के पुरोहित्व मे यज्ञ कार्य सम्पन्न हुआ। यजमान थे श्री भगतराम आर्य ग्राम की जापरिया श्री गोपाल सिह कोहली सपत्निक श्री गोबिन्दराम जी सेरा मल्ला की धर्मपत्नी तथा सभी आर्य सभासद् आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी के युग मे सम्मिलित थे। मुख्य अतिथियो ने भी भाग लिया।

भोजनोपरान्त दिन के १ बजे दयानन्द सेवाश्रम नौगाव आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी के भवन का उद्घाटन श्री वेदव्रत मेहता महामन्त्री अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ दिल्ली के कर कमलो से सम्पन्न हुआ।

तत्पश्चात् श्री चन्द्रप्रकाश जी अध्यक्ष आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी की अध्यक्षता मे एक सभा का आयोजन किया गया जिसमे कार्यक्रम निम्नवति सम्पन्न हुआ –

मुख्य अतिथियो को समाज के मन्त्री गगाप्रसाद 'सौम्य' द्वारा बैज लगाये गए तथा प्रधान श्री चन्द्रप्रकाश जी द्वारा माल्यार्पण करके स्वागत किया गया। भूमिदान दाताओं तथा गणमान्य व्यक्तियो का भी मालाओ द्वारा स्वागत किया गया।

तत्पश्चात –

१ स्वागत भाषण श्री वासुदेव विमल पूर्व मन्त्री आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी द्वारा पढा गया।

२ श्री बच्चीराम जी आर्य भजनोपदेशक द्वारा गायत्री मन्त्र का अर्थ सहित गान।

३ श्री मोलीलाल जी कोषाध्यक्ष आर्य समाज सावली आदि पचपुरी द्वारा पाच सौ रुपये से अधिक दान देने वालो दान दाताओ के नाम का पाठन।

४ श्रीमती प्रेमलता शास्त्री मन्त्री अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ दिल्ली द्वारा श्रद्धाजलि का प्रथम पुष्प पुस्तक का विमोचन हुआ यह पुस्तक स्व० शान्तिप्रकाश 'प्रेम की जीवनी का प्रथम भाग है तथा इसके लेखक है श्री विश्वबन्धु भास्कर। वे भी पुस्तक विमोचन के समय उपस्थित थे।

५ कर्मवीर जयानन्द भारतीय के पौडी काण्ड' पर एक नाटक ज०भा०जू० भा० विद्यालय के छात्रो द्वारा।

६ श्री दयाणसिह बिष्ट प्रमुख क्षेत्र पचायत वीरोखाल – उन्होने कर्मवीर स्व० जयानन्द भारतीय को समाज सेवी करार देते हुए कहा उन्हे राष्ट्रीय स्तर तक पहुचाने का प्रयास होना चाहिए। उन्होने जयानन्द भारतीय पुस्तकालय को और विस्तृत करने का सुझाव दिया आर्यसमाज पचपुरी द्वारा दयानन्द सेवाश्रम सघ महिला सिलाई प्रशिक्षण मे १२३ महिलाओ द्वारा प्रशिक्षण लेने पर उन्होने इसे एक अच्छा प्रयास बताया।

७ श्रीमती प्रेमलता शास्त्री मन्त्री अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ दिल्ली – उन्होने सर्वप्रथम गढवाल के महापुरुष स्व० जयानन्द भारतीय स्व० शन्तिप्रकाश 'प्रेम' बुद्धि सिह आर्य तथा सभी स्वर्गीय आर्य सभासदो को श्रद्धाजलि अर्पित की। दयानन्द सेवाश्रम के भूमिदाता श्री चित्रासिह कण्डारी को भी धन्यवाद दिया। उन्होने कहा यहा दलितो पर बहुत अत्याचार हुए इसके जिसे मुझे बडा दु ख है। उन्होने कहा मैं यहा कर्मवीर स्व० जयानन्द भारतीय को श्रद्धाजलि देने आई हू। वे अमर है हमारे कार्यकर्ताओ को चाहिए कि वे सदा उनके कार्यो को आगे बढाए जिससे वे सदा अमर रहे। कुरीतियो को मिटाना है तथा धरती पर स्वर्ग लाना है। यज्ञ को उन्होंने महान कहा दयानन्द सेवाश्रम मे औषधियों के लिए उन्होने कहा अग्रेजी दवाइया भी बाटी जाए तथा किसी अवकाश प्राप्त डाक्टर से समय मागा जाए। उन्होने कहा यदि आप लोग चाहे तो आर्यवीर दल का शिविर लगवा सकते है इसके लिए उन्होने उनके साथ आए श्री हरीशसिह आर्य कार्यालय मन्त्री सार्वदेशिक आर्यवीर दल से आग्रह किया कि वे यहा समय दे।

८ श्री हरीश सिह आर्य कार्यालय मन्त्री सार्वदेशिक आर्यवीर दल उन्होने कहा महापुरुषो कार्य करके श्रद्धाजलि दी जाती है। ऋषियो ने कहा था वीरभोग्य वसुन्धरा धरती पर वीर पैदा हो प्रजा प्रजापति को मिलती है। उन्होने कहा आर्य वीर दल शरीर तथा आत्मा की उन्नति का मार्ग दिखाता है। साथ ही उन्होने २१ अक्तूबर से ३१ अक्तूबर तक हरिद्वार ज्वालापुर मे लगने वाले आर्यवीर दल शिविर की जानकारी दी।

९ श्रीमती ईश्वरी रानी मेहता उपमन्त्री अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ दिल्ली ने एक भजन प्रस्तुत किया सबके लिए खुला है मन्दिर है यह हमारा।

१० श्री वेदव्रत मेहता महामन्त्री अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ दिल्ली – उन्होने श्री दयालसिह बिष्ट प्रमुख क्षेत्र पचायत वीरोखाल के शब्दो की सराहना करते हुए कहा ऐसे जागरुक व्यक्तियो के द्वारा ही समाज का उत्थान सम्भव है। उन्होने भावी सन्तति को अनुशासित रख कर उन्हे एक आदर्श के रूप मे प्रस्तुत करते को कहा। दयानन्द सेवाश्रम सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र मे अब तक १२३ महिलाओ के प्रशिक्षित होने की तथा कुछ प्रशिक्षण ले रही महिलाओ के इस कार्य की उन्होने प्रशसा की तथा इसे एक अच्छा प्रयास बताया। साथ ही उन्होने कहा हमे यहा से महिला सिलाई प्रशिक्षण एव औषधालय की सूचनाए समय समय पर मिलती रहनी चाहिए जिससे हमे उन्हे जनता के सामने प्रस्तुत कर सके। उन्होने दयानन्द सेवाश्रम के लिए १० रुपये प्रतिमाह सदस्य बनाने को कहा तथा दयानन्द सेवाश्रम मे दानपात्र रखने को कहा। उन्होने कहा किसी अवकाश प्राप्त डाक्टर से सेवा ली जा सकती है। औषधियो के लिए उन्होने कहा यदि किसी के प्रयोग से अधिक दवाइया किसी के यहा बच जाती है तो हमे दयानन्द सेवाश्रम के लिए उन्हे प्राप्त कर लेनी चाहिए तथा सरकार से भी मागने का प्रयास हो सकता है यदि कार्य चलता रहे। उन्होंने कहा दयानन्द सेवाश्रम मे शौचालय तथा पानी की व्यवस्था होनी चाहिए।

११ कु० रीना म० सिलाई प्रशिक्षणार्थिनी – द्वारा एक भजन।

१२ श्री यशवन्त सिह कण्डारी प्रधान ग्राम सभा नौगाव – उन्होने कहा यहा पर मुख्य अतिथि के रूप मे आखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ दिल्ली से आए है उनके विचार महान हैं हमे उनके विचारो को ग्रहण करना चाहिए। दयानन्द सेवाश्रम नौगाव का शेष कार्य पूर्ण किया जाएगा।

१३ श्री हेमराज प्रियव्रत पूर्व अध्यक्ष आ० स० सा० आदि पचपुरी गढवाल उन्होने जयानन्द भारतीय को श्राद्धाजलि देते हुए उन्हे एक महान कर्मयोगी कहा।

१४ श्री चित्रासिह कण्डारी भूमिदाता दयानन्द सेवाश्रम नौगाव – उन्हाने श्री मेहता जी का धन्यवाद करते हुए कहा कि मुझे प्रसन्नता है कि इस भूमि का सदुपयोग हो गया है।

१५ श्रीमती गायत्री कण्डारी प्रधान ग्राम सभा स्यूसी – उन्होने कहा यहा पर जो लोग आए है इनके विचार महान है हमे इनके पवित्र विचारो को ग्रहण करना है।

१६ श्री विश्वबधु भारकर उपप्रधान गढवाल आर्यो प्रतिनिधि सभा – उन्होने श्रीमती प्रेमलता शास्त्री का पुस्तक विमोचन के लिए धन्यवाद किया तथा स्व० शान्तिप्रकाश प्रेम की जीवनी को शेष प्रकरणो को प्रस्तुत करने हेतु कहा।

मच सचालन करते हुए समाज के मन्त्री गगाप्रसाद 'सौम्य' ने कहा २० वर्ष पूर्व स्व० शान्तिप्रकाश 'प्रेम का यह प्रयास आज पूर्ण हुआ इसकी मुझे बडी प्रसन्नता है। मैं श्री वेदव्रत मेहता महामन्त्री श्रीमती प्रेमलता शास्त्री मन्त्री श्रीमती ईश्वरी रानी मेहता उपमन्त्री अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ दिल्ली का हार्दिक धन्यवाद करता हू। जिनके सहयोग से यह महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुआ। साथ ही मै दानीदाता महानुभावो तथा सभा पधारे लोगो का धन्यवाद करता हू।

अन्त मे अध्यक्षीय प्रवचनो मे श्री चन्द्रप्रकाश जी ने कहा मै मुख्य अतिथि सभा मे पधारे सभी लोगो को तक दानीदाता महानुभावो का धन्यवाद करता हू तथा भविष्य मे सभी लोगो से सहयोग की अपेक्षा करता हू। शान्तिपाठ के साथ ही सभा के समापन हुआ।

– गगाप्रसाद सौम्य मन्त्री
आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी
गढवाल (उत्तराचल)

स्वास्थ्य चर्चा

संधिवात से कैसे बचें ?

– इन्द्रदेव सिह आर्य

बुढापे मे साधारणत अधिकाश लोगो मे पाया जाने वाला और अतिकष्टदायक रोग शरीर की बडी सधियो का रोगाक्रान्त होना है। इसे गठिया भी कहते है क्योकि शरीर की बडी गाठो को यही रोगी बनाता है। इसे उत्पन्न करने वाले कुछ खाद्य पदार्थो से बचना आवश्यक है – जैसे बासा भोजन इमली आचार पाव रोटी ढोकले दही और उससे बनने वाले पदार्थ अधिक मात्रा मे सेवन करना वर्ज्य है क्योकि इनके बनाने मे अनेक प्रकार के हानिकारक जीवाणुओ के पैदा होने की सम्भावना रहती है। आप कह सकते हैं कि हम भी यदा कदा जलेबी खाते हैं तो क्या हमे सधिवात हो सकता है कभी कभार अचार पावरोटी भी खाते है। क्या हम जैसो को भी गठिया सता सकता है ? यह तो हम कह ही चुके है कि इन खाद्य वस्तुओ को यदाकदा और अल्पमात्रा मे सेवन करना हानिकारक नही है। अति ठण्डे पेय श्रीखण्ड अति आहार इनका प्रतिदिन अधिक मात्रा मे लेना हानिकारक है। सधिवात का आक्रमण तभी देखा जाता है जब इन पदार्थो को नियमित रूप से प्रतिदिन अधिक मात्रा मे लिया जाए।

आइए हम सधिवात के कारणो पर विचार करे। आमतौर पर सभी सधियो या जोडो मे से घर्षण को रोकने के लिए एक तैलीय पदार्थ निकलता रहता है। यदि यह क्रिया ठीक ठीक चलती रही तो आदमी को कष्ट नहीं होता। यो तो नब्बे प्रतिशत रोगियो मे सधिवात की तकलीफ घुटनो से शुरू होती है क्योकि मनुष्य की सभी प्रकार की हलचलो मे घुटनो का काम पडता है – उठने बैठने चलने दौडने सीढियो पर चढने उतरने साइकिल या मोटर चलाने मे खेलने कूदने मे नाचने मे घुटनो का उपयोग होता है।

ज्यो ज्यो उमर बढती है या मनुष्य धनसम्पत्तियुक्त होता है उसका चलना फिरना भी घटने लगता है वह कुछ आराम प्रिय बनने लगता है जिससे उसके घुटनो का उपयोग घटता जाता है और उसमे तैलीय पदार्थ का स्राव भी घटने लगता है। उसमे पूर्व मे बने इस तैलीय पदार्थ मे कोई जीवाणु पैदा होने लगते हैं जिससे घुटनो मे दर्द उत्पन्न होता है उसमे सूजन पैदा होती है। उपर्युक्त जानकारी से स्पष्ट है कि जितना घुटनो का उपयोग घटता जाता है उतनी ही तकलीफ बढती जाती है। इसलिए सामान्य रूप से यह कहा जा सकता है कि घुटनो की सक्रियता कायम रखने का सबसे प्रमुख उपाय यही है कि व्यक्ति चलता–फिरता रहे। इसके लिए प्रात साय कुछ न कुछ घूमते रहना जरूरी है। साधारणत ३५–४० मिनट का घूमना वृद्धो के लिए जरूरी है। कभी कभी डॉक्टर लोग इस तैलीय पदार्थ को पिचकारी से निकालने की राय देते हैं परन्तु यह रोग के निर्मूलन का उचित उपाय नहीं है।

सधिवात के इलाज के लिए राई के तेल या महानारायण तेल की मालिश घुटनो या दर्द वाली जगह पर करने से लाभ होता है। इसके अलावा कुछ सहते सहते गरम पानी मे तौलिए को भिगाकर उससे सेक करना भी फायदेमन्द होता है। आजकल हर घर मे बिजली के पखे चल रहे है परन्तु सधिवात के रोगी को बहुत तेजी से पखा चलाने से लाभ की बनिस्बत तकलीफ बढती देखी जाती है इसलिए बिजली के पखे को मध्यम गति से चलाना अधिक उपयुक्त होता है। यदि पखे की जरूरत बहुत न पडे तो पखे को बद रखना ही ठीक रहेगा। बहुत गरमी हो तभी पखे का उपयोग करे। बहुत तेज पखे से पसीना सूख जाता है और क्षार शरीर मे ही रह जाता है निकल नहीं पाता। तेज पखे से शरीर का क्षार न निकलने का असर मूत्रपिंड पर भी पडता है पेशाब कम होने से जलन उसमे पैदा होती है। इसलिए पर्याप्त जल खासकर गरमी के दिनो मे पीना आवश्यक है। निबू का रस पीने से भी लाभ होता है।

पृष्ठ का शेष भाग

मानव मात्र के सर्वतोमुखी उत्थान मे महर्षि दयानन्द का योगदान

और वर्षा के असह्य कष्ट सहन करते हुए मनोयोग पूर्वक वेद वेदाग तथा अन्य उपयोगी विषयो की शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक धनी निर्धन राजा रक राजकुमार नागरिक ऊच नीच सभी के लिए अनिवार्य था क्योकि उपरोक्त शिक्षा पद्धति का सर्वागीण विकास अर्थात उसका मानसिक बौद्धिक एव शारीरिक विकास सम्भव है। इसी शिक्षा प्रणाली द्वारा वैदिक काल मे प्रकाण्ड पाण्डित्य पूर्ण गुरुजन अपने शिष्यो को सत्यार्थो मे आध्यात्मिक जन्म प्रदान करने हुए उनके चरित्र मे प्रेम दया क्षमा सहानुभूति उदारता पर दु ख कातरता परमार्थ–साधन वृत्ति सेवाभाव न्याय प्रियता सत्य निष्ठा कर्त्तव्य पालन आदि सात्विक गुणो का समावेश किया करते थे। अत मानव चरित्र मे उपरोक्त उदात्त गुणो की निहिति के फलस्वरूप ही मानवता का विकास प्रसार विस्तार एव उन्नति सम्भव है। इसी शिक्षण पद्धति के फलस्वरूप मानव की इच्छा ज्ञान और किया का समन्वय होता है और शिक्षार्थी मानवता की उच्च भावभूमि पर प्रतिष्ठित होकर विश्व प्रेम विश्व बन्धुत्व और वसुधैव–कुटुम्बकम सम उच्चादर्शो का पालन करने मे समर्थ हो सकते है। अत उपरोक्त लक्ष्य सिद्धि हेतु महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज द्वारा बालको के लिए गुरुकुल और बालिकाओहित कन्या गुरुकुलो की स्थापना करवाई और स्थान स्थान पर बालक बालिकाओ हेतु, विद्यालय भी प्रारम्भ करवाए एव यथाशक्य निरक्षरता निवारण हेतु प्रयत्न किया क्योकि शिक्षित मानव ही जाति समाज और देश के उत्थान अभ्युदय उन्नति एव प्रगति मे सहायक सिद्ध हो सकते हैं

दहेज प्रथा उन्मूलन – तत्कालीन युग मे हिन्दु समाज मे नाना कुरीतियो परम्पराओ अन्ध विश्वासो रूढियो कुविचारो और दूषित प्रथाओ का प्रचलन था जिन के फल स्वरूप नारी जाति मे अशिक्षा पर्दा प्रथा सती प्रथा दहेज प्रथा कन्यावध बालविवाह वृद्ध–विवाह अनमेल विवाह वहु पत्नी प्रथा आदि दुष्प्रथाओ के फल स्वरू नारी प्रथा जैसी दूषित और क्रूरतम प्रथाओ के फलस्वरूप अगणित कुसुम कोमल सौन्दर्य की साकार प्रतिमा युवतियो को दहेज की बलि वेदी पर अर्पित कर दिया जाता था उन्हे या तो जीवित जला दिया जाता था अथवा आत्महत्या करने हेतु विवश कर दिया जाता था। प्राय धन के लोभ मे दस बारह वर्ष की अबोध निरीह बालिकाओ का विवाह किसी वृद्ध से कर दिया जाता था जिस के फलस्वरूप वृद्ध पति के अकस्मात कालकवलित हो जाने पर उस निरपराध अल्पायु बालिका को या तो दूषित सती प्रथा के प्रचलनवश पति के साथ सती होने के लिए विवश एव वाध्य किया जाता था अथवा आजीवन वैधव्य की असह्य यन्त्रणाए यातनाए अपमान पूर्ण और तिरस्कृत जीवन यापन करने हेतु विवश कर दिया जाता था क्योकि तत्कालीन युग मे विधवा–विवाह का प्रावधान तो था ही नहीं।

क्रमश

ऋषिराज दयानन्द के निर्वाणोत्सव पर प्रकाशन योजना के सदस्य बनकर

तिहरा लाभ उठाएं

सदस्यता शुल्क १००/– एक सौ रुपये केवल एकबार वर्ष मे दो बार ३०० से ६०० पृष्ठो तक का अनमोल साहित्य लागत मूल्य पर १० प्रतिशत छूट सहित प्राप्त करे। तीन पुस्तके प्रकाशित हो चुकी है –

१ सन्ध्यापद्धतिमीमासा – *आचार्य विश्वश्रवा वेदानुसन्धानकर्ता*
आकार २३x३६/१६ पृष्ठ ३५०
सम्पूण कपडे की जिल्द

२ जाति निर्णय – *प० शिवशकर शर्मा काव्यतीर्थ*
आकार २३x३६/१६ पृष्ठ ३४०
सम्पूर्ण कपडे की दोरगी जिल्द

३ आदर्श नित्यकर्म विधि – सम्पादक *स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती*
आकार २३x३६/१६ पृष्ठ १७२
आवरण चार रग मे लेमीनेशन सहित

तीनों पुस्तको का मूल्य १४५/ सदस्य बनने पर ६०/ रुपये मात्र/डाक व्यय ३२/ सुरक्षित डिब्बे के अन्तर्गत प्राप्त करे।

२३ दिसम्बर २००१ अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान पर्व तक सदस्य बनने वाले सदस्यो को यजुर्वेद भाष्य प्रथम खण्ड प० हरिशरणजी सिद्धान्तालकार का २०x३०/८ बडे साइज मे ६२० पृष्ठो का सुरक्षित व आकर्षक पैकिग मे मात्र ८०/– अस्सी रुपये में तथा आचार्य अभयदेव का वैदिक विनय २०x३०/८ साइज मे ४०० से अधिक पृष्ठो का मात्र ३०/ रुपय म यह लाभ पूव म व [illegible] सदस्य भी प्राप्त क[illegible] सकत ह डाक व्यय पृथक से।

नोट – इस योजना के पहले ५० सदस्यो को श्रीमती प्रतिमा देवी दाहोद द्वारा ८८ पृष्ठीय उपासना रहस्य उपहार स्वरूप भेट की जाएगी

विशेष दृष्टव्य –

१ इस याजना का सदस्य बनमे वालो का सदस्यता शुल्क एक सो रुपये वापिस नही होगा। सदस्य चाहे तो अपनी सदस्यता दूसरे के नाम स्थानान्तरित करवा सकते है।

२ योजना के अन्तर्गत वर्ष मे दो बार जो साहित्य प्रकाशित होगा वह सदस्यो को लेना अनिवार्य होगा। याजना के अतिरिक्त साहित्य लेना सदस्य की इच्छा पर निर्भर होगा। पुस्तके सुन्दर व लागत मूल्य पर १० प्रतिशत छूट काटकर डाक व्यय सहित प्राप्त होगी। स्तर मे हम कोई समझौता नहीं करते।

३ इस योजना के सदस्यो को द्विमासिक पत्रिका 'वैदिक-पथ ३६ पृष्ठो की जिसका वार्षिक शुल्क चालीस रुपये है मात्र बीस रुपये वार्षिक मे प्राप्त होगी।

२००२ में प्रकाशित दो पुस्तके

१ त्रिदेव-निर्णय – *प० शिवशकर शर्मा काव्यतीर्थ*
आकार २३x३६/१६ पृष्ठ १६६ पक्की जिल्द जैकेट सहित चार रग मे मूल्य ५०/– सदस्यो को २५/– मे

२ प० बुद्धदेव मीरपुरी समग्र
– आकार २३x३६/१६ पृ० ३५० सम्पूर्ण कपडे की जिल्द दो रग मे मूल्य ८०/– सदस्यो को ४०/ मे।

श्री घूडमल प्रह्लाद कुमार आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट
पानिया पाडा हिण्डौन सिटी (राज०) ३२२२३०
दूरभाष – 07469-34624, 32624

गुरुकुल कांगडी में संघर्ष, चार घायल

पथराव पन्द्रह हवाई फायर विधायक स्वामी ओमवेश के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की बेची गई करोडो रुपये मूल्य की भूमि और विश्वविद्यालय के सीनेट हाल पर चादपुर (बिजनौर) के विधायक स्वामी ओमवेश की अगुवाई मे कब्जा करने आए बाहुबली आर्य नेताओ को भूमि बचाने के लिए सघर्षरत विश्वविद्यालय कर्मचारियो ने वापस भागने के लिए मजबूर कर दिया।

इस दौरान करीब एक घण्टा तक चले सघर्ष मे विधायक ओमवेश के सुरक्षाकर्मी और साथ आए शस्त्रधारियो न जमकर फायरिग की। कर्मचारियो पर लाठी डण्डो व सरियो से हमला किया गया जिसमे चार कर्मचारी घायल हो गए। जवाब मे आदोलनरत कर्मचारियो ने हमलावरो पर पथराव किया तथा विश्वविद्यालय के सुरक्षाकर्मियो ने भी फायरिग की। गनीमत यह रही कि हवाई फायरिंग मे दोनो ही पक्षो ने एक–दूसरे को निशाना नही बनाया। घटना के सम्बन्ध मे विश्वविद्यालय के सम्पदा अधिकारी ने विधायक ओमवेश समेत नौ लोगो के खिलाफ थाना कनखल मे रिपोर्ट दर्ज कराई है।

विदित हो कि गुरुकल कागडी विश्वविद्यालय की करोडो रुपय [illegible] जमीन अवैध रूप से बेच देने क विर [illegible] म भूमि बचाओ सघर्ष समिति क तत्वावधान मे विश्वविद्यालय के शिक्षक और गैर शिक्षक कर्मचारी सघर्षरत है। समिति का नियमित धरना २१ अक्तूबर को स्थगित हो गया था लेकिन बीच बीच मे आन्दोलन के भावी स्वरूप और इस दिशा मे चल रही प्रगति की समीक्षा के [illegible] बैठके समिति द्वारा आयोजित की ज [illegible]हती हैं।

आज भी सी [illegible] हाल परिसर मे सघर्ष समिति के आह्वान पर आमसभा आहूत की गई थी जिसमे सघर्ष समिति के अध्यक्ष प्रो० भारत भ[illegible] सयाजक प्रदीप जोशी शिक्षक सघ क अध्यक्ष श्रवण कुमार कमलकान्त बुधकर डा० कश्मीर सिह राही यू०एस०बिष्ट कर्मचारी सघ के अध्यक्ष बलजीत सिह बिडला डा० ज्ञानचन्द शास्त्री कौशल कुमार राजपाल सिह मदन मोहन सिह आदि कर्मचारी आन्दोलन के भावी स्वरूप पर चर्चा कर रहे थे।

आरोप है कि तभी आर्य नेता रणजीत सिह अपनी गाडी से सीनेट हाल के बाहर उतरे और यह कहते हुए कि आर्य विद्या सभा हरिद्वार की बैठक सीनेट हाल मे बुलाई गई है हाल मे जाने लगे। उनका सघर्ष समिति के सदस्यो ने पुरजोर विरोध किया और कहा कि आर्य विद्या सभा के पदाधिकारियो द्वारा चूकि गलत ढग से विश्वविद्यालय की करोडो रुपये की भूमि बेच दी गई है और सभा को भग कर दिया गया है अत यहा बैठक नही होने दी जाएगी।

जबरन सीनेट हाल मे घुसने का रणजीत सिह का प्रयास विफल कर कर्मचारियों ने उन्हे वापस लौटने को मजबूर कर दिया लेकिन उनके जाने के बाद समिति के सदस्य सभा स्थल पर आकर बैठे ही थे कि चादपुर (बिजनौर) के विधायक स्वामी ओमवेश के नेतृत्व मे स्वामी इन्द्रवेश पूर्व कुलाधिपति प्रो० शेर सिह की पत्नी श्रीमती प्रभात शोभा तेजपाल मलिक सूबे सिह वीरेन्द्र प्रधान यतीश्वरानन्द आदि लाग गाडियो व काफिले के साथ आ धमके और अमन चौक से जबरदस्ती सीनेट हाल मे घुसने लगे।

सघर्ष समिति के सदस्यो ने उनका विरोध किया तो आरोप है कि विधायक स्वामी ओमवेश ने अपनी गाडी से सरिया उठाकर कर्मचारी नेता महावीर यादव के सिर पर दे मारा। महावीर का सिर फटते ही उत्तेजित कर्मचारियो ने पथराव शुरू कर दिया। हमलावरो की ओर से कर्मचारियो पर लगातार लाठी डण्डो से प्रहार किया जाता रहा जिससे महावीर यादव के अलावा मदन मोहन सिह जितेन्द्र कुमार और फूल सिह घायल हो गए। आरोप है कि कर्मचारियो पर हावी होने के नजरिए से स्वामी ओमवेश के सुरक्षाकर्मी तथा साथ आए बदूकधारियो ने हवाई फायरिंग भी शुरू कर दी।

– अमर उजाला ब्यूरो हरिद्वार
६ नवम्बर से साभार

कर्मठ समाजसेवी श्री मेवालाल आर्य का निधन

दिनाक २१–१०–२००१ रविवार को आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी के साप्ताहिक अधिवेशन मे आर्यसमाज लल्लापुरा के पूर्व प्रधान व कर्मठ समाजसेवी स्व० मेवालाल आर्य को भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की गयी इस शोक सभा मे उनके जीवन के अनेक किए गए कार्यो का वर्णन करते हुए आर्य जगत की अपूर्णनीय क्षति बतात हुए उनके बतलाए हुए मार्ग पर चलने का सकल्प लेते हुए उनके दिवगत आत्मा व शोक सतप्त परिवार को शाति व धैर्य प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की गयी।

श्रद्धाजलि अर्पित करने की श्रृखला मे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री अमेठी प० सच्चिदानन्द शास्त्री प्रधान श्री लक्ष्मी नारायण आर्य मन्त्री अनन्त लाल आर्य कोषाध्यक्ष श्री बुद्धदेव आर्य व पूर्व प्रधान श्री रामगोपाल [illegible] श्री जगत नारायन आर्य श्री ज्वाला प्र[illegible] आर्य व श्री रवि प्रकाश आर्य आदि समाज के सभी सदस्यो ने भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की

अन्त मे उनके पुत्र विजय कुमार आर्य ने अपने पिता के पथ पर चलते हुए आजीवन आर्यसमाज के कार्यो को आग बढाने का सकल्प किया।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 18 11 2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2001
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2001 in NDPSo on 15/16 11 2001

पृष्ठ १ का शेष भाग

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ....

की सहायता से तुरन्त ठीक किया जाए। समाजो मे जहा कहीं झगडे हैं उन्हे आर्योचित निर्णय लेकर निपटा लिया जाए।

६ सत्सगो मे उपस्थिति बढाने के लिए आर्य परिवारो को प्रोत्साहित किया जाए तथा अन्य बन्धु बाधवो को जो आर्यसमाज के सदस्य नही हैं सत्सगो मे लाने का प्रयत्न किया जाए।

७ प्रयत्न हो कि एक नगर मे जितने भी आर्यसमाज है वे एक केन्द्रीय सभा बनकर वर्ष मे कम से कम दो बार अवश्य ही सामूहिक सामाजिक उत्सव करे और उसमे नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियो को आमन्त्रित किया जाए।

८ आर्यसमाजो को राजनीतिज्ञो तथा राजनयिक सस्थाओ से पूर्णतया मुक्त रखा जाए कोई भी व्यक्ति जो किसी राजनयिक सस्था का सदस्य हो पदाधिकारी अथवा कार्यकारिणी का सदस्य न बने।

कोष और लेखा –

प्रत्येक आर्यसमाज प्रतिनिधि सभा तथा सम्बन्धित सस्थाओ का लेखा पारदर्शी हो। किसी प्रकार की धोखा धडी की गुजाइश न हो। कोषाध्यक्ष इसके लिए पूर्ण जिम्मेदार हो तथा कार्यकारिणी मे तैमास हर एक मद पर विस्तृत चर्चा हो कि अनावश्यक कार्यो पर अपव्यय न हो।

क्रय विक्रय

सार्वदेशिक सभा की स्वीकृति के बिना किसी भी आर्य सस्था के किसी भी व्यक्ति या पदाधिकारी को समाज से सम्बन्धित जमीन जायदाद आदि बेचने का अधिकार नहीं होगा।

(ऐसे सभी मामले जो पहले हो चुके हैं फिर से खोलकर उनको वापस दिलाने को पूरी कोशिश की जाए।)

भवन निर्माण

भवन निर्माण को अधिक महत्व न देकर प्रचार कार्य को मुख्यता दीजिए। किसी भी भवन निर्माण कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व सार्वदेशिक सभा से सहमति ले लीजिए तो ठीक रहेगा। किसी समाज का मूल्याकन समाज सेवा युवको की उपस्थिति सत्सग का स्तर आदि के आधार पर किया जाए न कि सम्पत्ति के आधार पर। केवल जितनी आवश्यक है उतनी ही सम्पत्ति बनाई जाए। भवन निर्माण भव्य एव प्रभावशाली होना चाहिए।

विद्वानो की गोष्ठी व सगठन

१ सभी उपदेशक प्रचारक व भजनोपदेशक सार्वदेशिक सभा की धर्मार्य सभा से सम्बद्ध हो तथा सभा उनके और उनके परिव[illegible] का यथावश[illegible]

२ सम[illegible] नगर मे रह[illegible] पुरोहित अपने परिवारो के साथ आर्यसमाज के सत्सगो मे नियमित रूप से उपस्थित हो।

३ उपदेशक आदि के प्रशिक्षण के लिए व्यवस्था की जाए।

४ समय–समय पर इन के लिए गोष्ठिया की जाए।

टी० वी० चैनल –

टी०वी० चैनल पर अथवा अन्य किसी चैनल पर कम से कम आठ घण्टे का वैदिक जीवन कार्यक्रम प्रसारित हो सके इसके लिए प्रयास हो। सभा से सम्बन्धित उपदेशको विद्वानो भजनोपदेशको सगीतकारो तथा भजन मण्डलियो की सहायता से इसका कार्यक्रम बनाया जाए। इन चैनलो पर वैदिक धर्म की व्याख्या इस रूप मे की जाए जिससे विश्व के अन्य लोग भी इसको अपनाए। कोई आलोचना निन्दा आदि न हो।

अन्य आर्य सगठन

आर्य स्त्री समाज आर्य युवा सभा आर्य कुमार सभा तथा आर्यवीर दलो का सगठन सुदृढ किया जाए। तथा युवाओ व महिलाओ को आर्यसमाज की मुख्य कार्यकारिणी मे एक अनुपात में लिया जाए।

आर्य राष्ट्र –

आर्य जगत का एक आर्य राष्ट्र के मार्ग पर बढाने के लिए आवश्यक प्रयत्न किए जाए। सभी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आर्य राष्ट्र सम्मेलन के नाम से किए जाए।

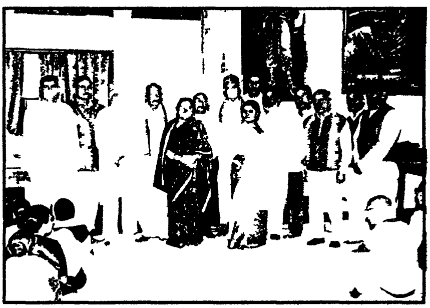
प्रतिष्ठा में

बहन उज्ज्वला की मारिशियस यात्रा

मोरिशियस मे वैदिक धर्म के प्रचार हेतु दिल्ली से श्रीमती उज्ज्वला वर्मा ने १७ नवम्बर को प्रस्थान किया। आप प्रवचनो एव भजनों के द्वारा मोरिशियस की विभिन्न आर्यसमाजो मे लगभग २० दिन प्रचार करेगी। गत वर्ष बहन उज्ज्वला वर्मा के कार्यक्रमो से प्रभावित होकर श्री मोहन लाल मोहित परिवार ने इन्हे पुन विशेष आमन्त्रण भेजा था

उडीसा के वैदिक विद्वान दम्पत्ति का दिल्ली में स्वागत

आर्यसमाज सी ब्लाक जनकपुरी द्वारा उडिया हिन्दी अग्रेजी सस्कृत एव बगला भाषा के विद्वान श्री प्रियव्रत दास एव उनकी विदुषी धर्मपत्नी श्रीमती शन्नो



श्री प्रियव्रतदास जी के अभिनन्दन समारोह पर लिया गया चित्र

दवी का स्वागत किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन श्री विनय विद्यालकार वाराणसी कन्या गुरुकुल से ब्र० नन्दिता तथा कई अन्य महानुभाव उपस्थित थे।

श्री प्रियव्रतदास ने कहा कि मै १८ वर्ष की आयु से वैदिक चिन्तन एव आर्य समाज के सिद्धान्तो पर लगभग ७०० से अधिक लेख तथा ४० से अधिक छोटे बडे ग्रन्थ लिख चुका हू। यह सभी लेख राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्रो मे प्रकाशित हुए हैं।

इसके अतिरिक्त श्री प्रियव्रत दास जी ने रेडियो एव दूरदर्शन पर भी कई कार्यक्रम प्रस्तुत किए है। आपको उडीसा के साहित्य एकाडमी पुरस्कार के अतिरिक्त कई पुरस्कार प्राप्त हो चुके है

श्री विमल वधावन ने कहा कि श्री प्रियव्रत दास जी के जीवन कार्य वैदिक प्रचारको को प्रेरणा देते है कि उन्हे अपनी लेखनी का प्रयोग अधिक से अधिक दैनिक समाचारो के लिए करना चाहिए जिनका समाज पर व्यापक प्रभाव हो।

इसी प्रकार सगठन के पदाधिकारियो को भी ऐसे कार्यक्रम बनाने चाहिए कि वैदिक विद्वानो के प्रवचन आर्य समाज मन्दिरो के अन्दर करने के साथ साथ बाहर सार्वजनिक स्थलो पर भी करने चाहिए।

श्री प्रियव्रतदास को अभिनन्दन पत्र भेट किया गया।

श्री सोमदत्त महाजन ने आर्य समाज जनकपुरी द्वारा अधिक से अधिक साहित्य प्रकाशित करके जन–सामान्य मे बाटने की योजनाओं पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का सचालन मन्त्री श्री रमेश ने किया।

हर्षोल्लास चुनौती और अपील

यह प्रसन्नता का विषय है कि दिल्ली विकास प्राधिकरण ने आर्यसमाज सैक्टर–८ रोहिणी दिल्ली–८५ के नाम से ४७३ ८५ वर्ग मीटर भूमि आवटित कर दी है। यह परमपिता परमात्मा की असीम कृपा एव सभी भाई–बहिनो के सहयोग एव आशीर्वाद से ही सम्भव हो पाया है।

चुनौती

हम सभी के कधो पर यह भार आ पडा है जिसे सभी ने मिलजुल कर पूरा करना है। २८ दिसम्बर २००१ तक दिल्ली विकास प्राधिकरण के नाम से साढे चौदह लाख रुपये का ड्राफ्ट निश्चित रूप से देना है तभी कब्जा लिया जा सकेगा। सत्य सनातन वैदिक धर्म की पताका फहराने हेतु हमे यह चुनौती स्वीकार करनी है और सगठित प्रयास करने हैं।

अपील

सभी आर्य बन्धुओ आर्य समाजो आर्य सस्थाओ धर्म की वृद्धि चाहने वाले दानी महानुभावो और समस्त जनता से अनुरोध है कि रोहिणी क्षेत्र में धार्मिक सामाजिक एव चरित्र–निर्माण की गतिविधियो को विशेष गति देने हेतु आशाओ से अधिक स्वय दान दे एव दानी महानुभावो को प्रेरित करे। विशाल लक्ष्य की ओर बढने हेतु विशाल सहयोग चाहिए, इसलिए राशि का निर्धारण स्वय कर।

सहयोगाकाक्षी – समस्त पदाधिकारी एव सदस्य आर्यसमाज सेक्टर ८ रोहिणी दिल्ली–८५
फोन–७१६२६१७ ७१६६१५१

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली–२ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली–२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१ ३२६०६८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभामन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट http //www.whereisgod.com

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक
साप्ताहिक

वेदाः ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र



वर्ष ४० अंक ३१ | २५ नवम्बर से १ दिसम्बर, २००१ तक | दयानन्दाब्द १७८ | सृष्टि सम्वत् १६७२६४६१०२ | सम्वत् २०५८ | का० शु० १०

एक प्रति १ रुपया (भारत में) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य का अजमेर में भव्य स्वागत

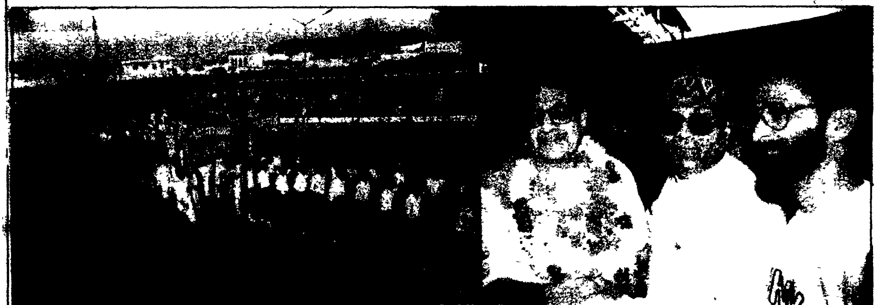
आर्यसमाज में नवीन चेतना और उत्साह की लहर

अजमेर, १७ नवम्बर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य का अजमेर आगमन पर भव्य स्वागत किया गया।

व कुरीतियो को दूर करने के कार्य करेगा। नगर परिषद की ओर से स्वागत करते हुए सभापति धर्मेन्द्र गहलोत ने कैप्टन आर्य के प्रधान निर्वाचन को अजमेर शहर के लिए गौरवपूर्ण बताया।

आर्यसमाज अजमेर सहित नगर की सभी आर्य समाजो आर्य शिक्षण संस्थाओ एव स्वय सेवी सस्थाओ द्वारा आयोजित इस स्वागत समारोह मे स्वतन्त्रता सेनानी पन्नालाल माहेश्वरी, वासुदेव भटनागर, रामभजन मिश्रा,

शेष भाग पृष्ठ २ पर



सभा प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य का अजमेर स्टेशन पर भव्य स्वागत तथा शोभा यात्रा

इस अवसर पर अजमेर रेलवे स्टेशन पर उपस्थित अजमेर शहर के गणमान्य व्यक्तियों एवं दयानन्द बाल सदन के बालकों व आर्य वीर दल के जयघोष से सम्पूर्ण वातावरण गुंजायमान हो गया।

कैप्टन आर्य के आगमन पर आर्य सांसद रासासिंह रावत ने उनका स्वागत करते हुए उनके प्रधान चुने जाने को आर्यजगत के लिए नवीन चेतना एवं उत्साह का प्रतीक बताया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि कैप्टन आर्य के नेतृत्व में आर्य समाज विश्व में पुनः नई जागृति का संचार करेगा।

इस अवसर पर पूर्व मन्त्री किशन सोनगरा ने कहा कि कैप्टन आर्य के साथ आर्यसमाज अपना क्रान्तिकारी रूप अपनाकर राष्ट्र में फैले आडम्बरों

देश भर में प्रचार कार्य का दायित्व निर्धारण

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के चुनाव अधिवेशन तथा नवगठित अन्तरंग सभा की प्रथम बैठक के उपरान्त सभा प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य द्वारा समस्त पदाधिकारियों को प्रान्तवार जिम्मेवारियां निर्धारित की हैं। आर्यसमाज के प्रचार प्रसार को गति प्रदान करने की दृष्टि से सारे देश को पांच भागों में बांट कर सभा के उपप्रधानों एवं उपमन्त्रियों को यह दायित्व सौंपा गया है कि वे इन भागों की समाओं के अधिकारियों से लेकर आर्यसमाज स्तर तक सम्पर्क स्थापित करें, जिससे समय-समय पर सार्वदेशिक सभा द्वारा घोषित नीतियों और कार्यक्रमों को शीघ्रता और सुविधापूर्वक क्रियान्वित किया जा सके।

सभा प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य, वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन तथा सभामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा इस नई दायित्व व्यवस्था का समन्वय करेंगे।

प्रत्येक भाग की व्यवस्था निम्न प्रकार निर्धारित की गई है –

पूर्व में – असम, बंगाल, बिहार, उड़ीसा के प्रभारी

श्री आनन्द कुमार आर्य — उप-प्रधान
श्री भूपनारायण शास्त्री — उप-मन्त्री

पश्चिम में – महाराष्ट्र

श्री राव हरीश चन्द्र — उप-प्रधान
श्री सुग्रीव काले — उप-मन्त्री

राजस्थान, गुजरात के प्रभारी

श्री राव हरीश चन्द्र — उप-प्रधान
श्री वाचोनिधि आर्य — उप-मन्त्री

उत्तर में – पंजाब, जम्मू-काश्मीर,

श्री सुदर्शन शर्मा — उप-प्रधान
श्री देवेन्द्र शर्मा — अन्तरग सदस्य

हरियाणा, हिमाचल के प्रभारी

आचार्य यशपाल — उप-प्रधान
श्री रोशन लाल आर्य — उप-मन्त्री

दक्षिण में – कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु के प्रभारी

डॉ० राधाकृष्ण वर्मा — उप-प्रधान
श्री कृष्ण राव — उप-मन्त्री

मध्य भारत – दिल्ली

श्री विमल वधावन — वरिष्ठ उप-प्रधान
श्री वेदव्रत शर्मा — सभा मन्त्री

उत्तर प्रदेश

श्री विमल वधावन — वरिष्ठ उप-प्रधान
श्री जयनारायण अरुण — उप-मन्त्री

मध्य प्रदेश, मध्य विदर्भ के प्रभारी

श्री गौरीशंकर कौशल — उप-प्रधान
आचार्य जगतदेव नैष्ठिक — उप-मन्त्री

सह-सम्पादक
विमल वधावन एडवोके

तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा अन्य आर्य सस्थाओ के माध्यम से लगभग विगत १५ वर्ष से बिना कहीं पदाधिकारी रहते हुए सेवा करने का मेरा सकल्प अन्तत उस समय परिवर्तित मार्ग का अनुसरण करने के लिए बाध्य हो गया जब इस सभा के वरिष्ठ उप–प्रधान के रूप मे कार्य करना स्वीकार करने के लिए मुझे आग्रहपूर्ण वातावरण मे मजबूर कर दिया गया।

इस नए दल के मुखिया हैं सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य तथा कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य और मन्त्री पूर्ववत श्री वेदव्रत शर्मा। ३५ महानुभावो का यह सगठन हर प्रकार के पवित्र सकल्पो से युक्त लग रहा है। ईश्वर से प्रार्थना है कि हमारे सबके शुभ सकल्पो के क्रियान्वयन के लिए अनुकूल परिस्थितिया साधन आदि उपलब्ध कराए।

चुनाव सगठनात्मक मार्ग पर एक मोड की तरह होते हैं। इस वर्तमान मोड पर मैं स्वय से अर्थात अपनी आत्मा से एक प्रश्न का स्पष्टीकरण चाहता हू।

हे आत्मा ! सगठन के कार्यों को करते हुए आपका मन, बुद्धि और ताकत सामाजिक और सासारिक कार्यों में लगे रहेंगे तो आप आध्यात्मिक मार्ग पर उन्नति कब और कैसे करोगे ?

वैदिक चिन्तन मे इस प्रश्न का बडा स्पष्ट उत्तर है और सामाजिक कार्यों को किस प्रकार सम्पन्न किया जाना चाहिए उसका स्पष्ट निर्देश है।

निस्पृह रूप से प्रत्येक कार्य को सम्पन्न करो अर्थात् किसी भी कार्य के साथ अपने अहम् को मत जोडो।

न्याय प्रेम श्रद्धा लगन कर्मठता और ईमानदारी जैसे सिद्धान्तो को सर्वोच्च महत्व दो।

ईश्वर के औजार के रूप मे कार्य करते हुए स्वय को ईश्वर के अतिरिक्त किसी के आधीन मत समझो।

भारत का सविधान भारत के लोगो के लिए सेक्युलर राज्य का वायदा करता है और उनसे भी आशा करता है कि सेक्युलर बनकर रहे।

सेक्युलर एक अग्रेजी शब्द है–

सेक्युलर शब्द के जब हम अधिकृत अर्थात सरकारी अनुवाद को देखते हैं तो हमे मिलता है एक उचित शब्द– **पथनिरपेक्ष**। हम इस शब्द से सतुष्ट हैं। इस शब्द मे निहित निर्देश के अनुसार भारत के नागरिकों और शासन से यह आशा की जाती है कि वह स्वय को किसी पथ अर्थात् किसी विशेष मत या सम्प्रदाय के साथ जोडकर नहीं देखेगे।

इसका अभिप्राय यह बनता है कि वे एकता की भावना से जीवनयापन करेगे। एकता की भावना की जहा समस्त नागरिको के बीच कल्पना की जाती है वहीं उस सर्वोच्च सत्ता के साथ भी एकता स्थापित रहनी चाहिए जिसके कारण इन्सानियत और नैतिकता का जन्म हुआ अर्थात ईश्वर के साथ एकता। ईश्वर द्वारा दिए गए इन मानवीय और नैतिक मूल्यो को ही धर्म कहा जाता है जिन्हे धारण करना हर इन्सान का कर्त्तव्य है।

कुछ लोग सेक्यूलर शब्द के अनुवाद के रूप में एक और शब्द प्रयोग करते हैं– धर्म निरपेक्षता जो कि पूरी तरह से गलत शब्द है।

धर्म शब्द के समानान्तर अग्रेजी भाषा मे कोई शब्द नहीं है। धर्म वास्तव मे उसी एकता का सिद्धान्त है जैसा ऊपर व्यक्त किया गया है मनुष्यो में एकता और प्रत्येक मनुष्य की ईश्वर से एकता।

धर्म जातिवाद दलगत समूहवाद तथा अन्य प्रकार के सामाजिक भेदभाव को पूरी तरह से नकारता है।

इन्हीं सिद्धान्तो के कारण हम धर्मनिरपेक्ष शब्द को गलत मानते हैं क्योकि धर्म से अलग रहकर समाज मे से सामाजिकता समाप्त हो जाती है।

उपरोक्त सिद्धान्तो को ध्यान में रखते हुए जब हम कार्य करें तो हमे खुद सुनिश्चित करना चाहिए कि पदाधिकारी के रूप मे प्रचारित छवि कहीं अहकार बन कर न तो हमारी बुद्धि में प्रवेश करे और न हमारे कार्यो मे।

अब अपने ही प्रश्न की व्याख्या सुनकर मेरा सकल्प पहले से अधिक कठोर बन जाता है और मुझे निर्देश देता है कि समाज के लिए कार्य करो समाज के नौकर बनकर कार्य करो और पद के अह के बिना कार्य करो।

परमपिता परमात्मा का सर्वोच्च प्रकाश हमे प्रकाशित करे।

परमपिता परमात्मा की सर्वोच्च ताकत हमे ताकतवर बनाए।

परमपिता परमात्मा हमारे अन्दर ऐसी योग्यता प्रदान करे कि हम अपनी आत्मा की अनन्त यात्रा पर अपने आध्यात्मिक और पवित्र सकल्पों के साथ बिना किसी विघ्न के अग्रसर होते रहे।

– विमल वधावन एडवोकेट

पृष्ठ १ का शेष भाग

आर्यसमाज में नवीन चेतना और उत्साह की लहर

आर्यसमाज अजमेर के आचार्य गोविन्द सेह डॉ० कृष्णपाल सिह चादराम आर्य आर्यसमाज नला बाजार के मन्त्री दयालदास आर्य जीव सेवा समिति के सचिव जगदीश वच्छाणी भारतीय लायन्स राजस्थान के महासचिव आनन्द शर्मा गुजराती सभा के अध्यक्ष चन्द्रकान्त पटेल नेशनल एसोसिएशन इण्डियन लायन्स के प्रधान कवल प्रकाश दयानन्द बाल सदन के आचार्य रामसिह मन्त्री वदत्त तनेजा सह प्रबन्धक राजेन्द्र आर्य पार्षद प्रकाश सोनी सूरजभान यादव दलजीत सिह रमेश सोनी मैन्द्र मीणा मूलचन्द व कैलाश च्छावा लायन्स क्लब के पूर्व प्रातपाल लायन ओ एल दवे लायन राजेन्द्र प्त आर्य शिक्षण सस्था के सचिव रेनारायण सोमानी पूर्व जिला प्रमुख खराज पहाडिया गुर्जर समाज के ला मन्त्री हरिराम गुर्जर विरजानद थमिक विद्यालय के प्राचार्य श्रद्धानन्द स्त्री डी०ए०वी० विद्यालय के प्राचार्य मेश चन्द रस्तोगी जियालाल शिक्षण स्था के रामपाल सिह दयानन्द गविद्यालय के प्राचार्य महेन्द्रपाल गी महिला आर्य समाज की श्रीमती रती देवी व शातिदेवी शास्त्री प्राइवेट न आनर्स एसोसिएशन के सम्भागीय अध्यक्ष नवीन सोगनी भारतीय काग्रेस के युवा नेता सतीश बसल सिराजुद्दीन भारतीय लायन्स यूनिक के अध्यक्ष गजेन्द्र बोहरा राजस्थान राज्य कर्मचारी सघ के प्रदेश प्रतिनिधि पातजल शर्मा महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास के स्वामी प्रेमानन्द राम पटाई सहित सी पी गुप्ता अरविन्द यादव तुलसी सोनी सूर्यप्रकाश शास्त्री प्रो० सत्यपाल पिलानिया मिलट्री स्कूल के पूर्व आचार्य एस एन उपाध्याय चिरजीलाल शर्मा आलोक मिश्रा आनन्द थदानी विमल पारलेचा विनीत जैन एव सुधीर अवस्थी विनोद काकाणी आदि अनेक गणमान्य व्यक्तियो ने माल्यार्पण कर कैप्टन आर्य का स्वागत किया।

इस भव्य स्वागत से भाव विभोर होते हुए आर्य ने अपने निर्वाचन को अपने पिता स्व० आचार्य भद्रसेन के आदर्शों व सस्कारो का सम्मान बताया एव आर्यसमाज की उन्नति के लिए स्वय के पूर्ण समर्पण की बात कहीं। आर्य के परिजन वेदरत्न आर्य वीर रत्न आर्य सोम रत्न आर्य श्रीमती उर्मिला आर्य विमलेश शर्मा धर्मेन्द्र आर्य एव नीरज आर्य ने सभी स्वागतकर्ताओ का आभार व्यक्त किया।

✡✡✡

गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में उपद्रव के बाद एफ०आई०आर० दर्ज

गुरुकुल कागडी हरिद्वार मे गत् सप्ताह हुए हमले एव उपद्रव पर प्रतिक्रिया स्वरूप स्थानीय पुलिस स्टेशन मे एफ०आई०आर० दिनाक ६–११–२००१ को ही दर्ज कर ली गई है। जिसमे ओमवेश रणजीत सिह इन्द्रवेश सूबेसिह तेजपाल मलिक यतीश्वरानन्द श्रीमती प्रभात शोभा वीरेन्द्र सिह एव अजीत के विरुद्ध १४७ १४८ ३०७ आदि धाराओ के तहत मुकदमा दर्ज किया गया है।



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान चुने जाने के बाद मुम्बई पहुचने पर कैप्टन देवरत्न आर्य का दादर स्टेशन पर स्वागत करते मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसमाजों के पदाधिकारी

राष्ट्रीय अस्मिता के उद्घोषक - दयानन्द सरस्वती

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

हमारे देश मे साधारणतया यह धारणा प्रचलित है कि ससार त्याग करने वाले सन्यासी के लिए कोई लौकिक कर्म अवशिष्ट नहीं रहता। यह पुत्रैषणा (परिवार की कामना) वित्तैषणा (धन की आसक्ति) तथा लोकैषणा (ख्याति अथवा प्रशसा की इच्छा) से ऊपर उठ कर जीवन के चरम पुरुषार्थ मोक्ष को प्राप्त करने के लिए यत्नशील रहता है। स्वामी दयानन्द ने परिजनो की ममता का त्याग तो तभी कर दिया था जब भरपूर यौवन मे स्वगृह को लात मार कर उन्होने वैराग्य का व्रत लिया। परिवार को छोडने के साथ ही उन्हे पिता की सम्पत्ति से भी छुटकारा मिल गया। आगे चल कर स्वदेशोत्थान तथा समाज सुधार के लिए उन्होने जो कुछ किया तथा कर्त्तव्य पालन के मार्ग मे आने वाली कठिनाइयो को सहन किया उससे स्पष्ट हो गया कि वे निन्दा स्तुति से ऊपर उठ चुके थे। वस्तुत दयानन्द एक ऐसे महामानव थे जिन्होने स्वधर्म स्वदेश तथा समग्र मानवता का हितचिन्तन करने मे ही अपनी जीवन यात्रा को पूरा किया।

स्वामी दयानन्द की एक बडी देन है भारत की सुप्त विलुप्त राष्ट्रीय चेतना को पुन जाग्रत करना। इसके लिए उन्होन देशवासियो से स्वधर्म स्वभाषा स्व सस्कृति तथा स्वराष्ट्र की भावना को अपनाने पर बल दिया। दयानन्द की दृष्टि मे धर्म कोई बाहरी क्रियाकाण्ड का पालन तथा व्यक्ति एव समाज के लिए बनाए गए कुछ नियमो पर चलने का नाम नहीं है। इसके विपरीत वे धर्म उसे कहते हैं जो सत्य से युक्त है न्याय से परिपूर्ण है जिसमे पक्षपात का लेशमात्र भी नहीं है तथा जो वेदाज्ञा का पालन है। जब वे वेदाज्ञा के पालन की बात करते हैं तो उसका अभिप्राय यही होता है कि सृष्टि के सर्वाधिक प्राचीन धर्मग्रन्थ वेदो मे जिन शिक्षाओ एव आदेशो का उल्लेख है वे किसी देश जाति वर्ग या समुदाय विशेष के लिए नहीं हैं। वेदो मे आचरण किए जाने योग्य जिन बातो का वर्णन है वे मनुष्य मात्र के द्वारा स्वीकार की जाने योग्य हैं। इसलिए वेद प्रतिपादित धर्म को मानव धर्म कहा जा सकता है। यों उन्हे भारत के अन्य धर्म-ग्रन्थो मे कथित धर्म की सभी परिभाषाए एव लक्षण मान्य हैं और वे उन्हें अगीकार करने पर जोर देते हैं। किन्तु इन शास्त्र कथित धर्म के लक्षणों की चर्चा करते हुए भी वे उसमे अपनी कुछ मौलिकता का समावेश अवश्य कर देते हैं। उदाहरणार्थ मनुस्मृति कथित धर्म के दस लक्षणों की मीमासा करते हुए उन्होंने अहिंसा को धर्म का प्रमुख या प्रथम लक्षण ठहराया जबकि मनु कथित लक्षणों मे इसका उल्लेख भी नहीं है।

स्वामी दयानन्द की दृष्टि मे किसी गुरु आचार्य सम्प्रदाय प्रवर्त्तक या कथित पैगम्बर द्वारा प्रवर्तित जीवन पद्धति मत पन्थ या सम्प्रदाय ही कहलाती है। उसे अखिल मानव जाति के द्वारा स्वीकार किए जाने वाले धर्म की सज्ञा नहीं दी जा सकती। पन्थ या सम्प्रदाय की शिक्षाओ तथा क्रिया पद्धतियो मे ऐसी कई बाते होती हैं जो सार्वजनिक या सर्वजन स्वीकार्य नहीं होती। बाह्याचरण स्थूल कर्म काण्ड तथा उपासना की भिन्नता ऐसे तत्व हैं जो एक सम्प्रदाय का दूसरे से अलग करते हैं। स्वामी दयानन्द की मान्यता है कि सभी मतपन्थ और सम्प्रदाय धर्म के उन मूल तत्त्वो को यथावत स्वीकार करते हैं जो नैतिकता तथा सदाचार के पालन मे सहायक होते हैं। उदाहरण के लिए सत्य अहिसा न्याय दया प्राणि मात्र के प्रति प्रेम भाव करुणा एव मैत्री आदि धर्म के वे प्राण तत्त्व हैं जिन्हे सभी मतो और सम्प्रदायो मे मान्यता मिली है। यदि स्वामी दयानन्द वैदिक धर्म से भिन्न मत पन्थो की आलोचना करते हैं तो उनकी आलोचना इनमे पाई जाने वाली उन धारणाओ और मान्यताओ को अपना लक्ष्य बनाती है जो अवैज्ञानिक है अन्धविश्वास युक्त हैं तथा सृष्टि क्रम के विरुद्ध होने के कारण अमान्य हैं। यहा यह ध्यातव्य है कि दयानन्द ने मनुष्य के विवेक को सर्वोपरि माना है। वे मानव मात्र मे एक ऐसे वैज्ञानिक सोच को जागृत करना चाहते है जो उन्हे बुद्धि द्वारा स्वीकृत बातो को मानने की प्रेरणा दे। जिसे आधुनिक चिन्तन वैज्ञानिक चिन्तन कहते हैं दयानन्द की दृष्टि मे वह सृष्टिक्रम के अनुकूल होना है। जो सिद्धान्त या मान्यता सृष्टिक्रम के अनुकूल नहीं है वह अवैज्ञानिक है अत असत्य है।

मनुष्य द्वारा बौद्धिकता को महत्त्व देने की वकालत करते हुए दयानन्द अन्य विश्वासो या धारणाओ को एक बारगी ही कहीं की टोकरी मे डालने के लिए नहीं कहते। वे मत–पन्थो के आचार्यो एव प्रचारको से अनुरोध करते हैं कि वे मिल बैठकर अपने पारस्परिक मतभेदो को कम करे तथा ऐसे रास्ते की तलाश करे जिससे मानव जाति का व्यापक कल्याण हो। उनका विश्वास था कि यदि मत मतान्तरों के आचार्यगण एक मेज के इर्द गिर्द बैठ कर अपने अन्त करण की परीक्षा करेगे तो पाएगे कि धर्म के मूल तत्वो को लेकर उनमे किसी प्रकार का विरोध नहीं है। यदि मतभेद है तो स्थूल कर्मकाण्डो पर नैतिकता की स्थूल धारणाओं पर तथा आचार विचार के ब्राह्य पक्षों पर जोर देने के कारण। उन्होंने सैमेटिक मजहबो की आलोचना की है तो उससे अधिक स्वदेश मे उत्पन्न उन मत मतान्तरो की भी की है जो भारत के प्राचीन वैदिक धर्म के ही विकृत रूप हैं। उनकी इस आलोचना मे किसी प्रकार का पक्षपात लक्षित नहीं होता। उन्हे यह भी गलतफहमी नहीं थी कि उनकी इस आलोचना या टीका को स्वीकार कर अन्य मतावलम्बी अपने पक्ष को त्याग कर तुरन्त वैदिक धर्म के अनुयायी बन जाएगे। वे इसे सम्भव भी नहीं मानते थे। उनका प्रयोजन तो इतना ही था कि विभिन्न मत–सम्प्रदायो के बीच अनुराग–विराग के जो कारण हैं उन्हे तलाशा जाए। स्वमत के प्रति आग्रह तथा अपने सम्प्रदाय मे आसक्ति यद्यपि स्वाभाविक है किन्तु ऐसा होने पर भी पर मत वालो के प्रति शत्रुता या विद्वेष न पनपे यही उन्हे इष्ट था। वे चाहते थे कि समाज मे समरसता लाने वाले तत्त्वो की तलाश की जाए तथा परस्पर विषमता एव विरोध उत्पन्न करने वाले तत्त्वो एव प्रसगो को निरुत्साहित किया जाए। इससे बढकर मत सहिष्णुता और क्या हो सकती है?

प्रचलित हिन्दू धर्म के बारे मे उनकी धारणा थी कि इसमे कुछ ऐसे विश्वासो रूढियो तथा मूढ धारणाओ का प्रवेश हो गया है जिसके कारण वह अपनी शक्ति सामर्थ्य और जीवनन्तता को खो बैठा है। अपनी इन्हीं दुर्बलताओ के कारण सबल प्रतिपक्षी उस पर प्रहार करते हैं। हिन्दू धर्म की कमजोरियो पर कटाक्ष कर सैमेटिक मतो के प्रचारक धर्मान्तरण को प्रोत्साहन देते हैं। इसे लक्ष्य मे रख कर वे चाहते थे कि एतद्देशीय धर्म (इसे ही व्यापक अर्थ मे हिन्दू धर्म कहा जाता है) का ऐसा स्वरूप पेश किया जाए उसकी ऐसी तर्कसगत व्याख्या की जाए जिससे विपक्षियो के किसी प्रकार के आक्षेप या प्रहार की गुजाइश ही न रहे। वे यह भी जानते थे कि हिन्दू धर्म मे जैसी विकृतिया या दुर्बलताए आ गई हैं उनसे वे मत पन्थ भी अछूते नहीं है जो गाहे बगाहे इस देश मे प्रचलित सनातन धर्म पर प्रहार करते हैं। उनका कहना था कि खुद काच के घर मे बैठ कर दूसरो पर पत्थर बरसाने का कोई औचित्य नहीं है। इस प्रकार उन्होने भारत मे परम्परा से प्रचलित सनातन धर्म को रूढिमुक्त बना कर अपने प्रोज्ज्वल परिशुद्ध तथा सर्वस्वीकार्य रूप मे रखने का यत्न किया। उनका कहना था कि मानवता के मूलभूत तत्त्वो को स्वय मे समाहित और समायोजित करने वाले वेदोक्त धर्म मे यदि देशवासी अपनी अविचल निष्ठा एव श्रद्धा रखेमे तो उन्हे प्रतिपक्षियो की आलोचना से खिन्न और हताश होना नहीं पडेगा। इसी स्वधर्म (व्यापक अर्थो मे मानव धर्म) के वास्तविक स्वरूप को समझकर उसका निष्ठापूर्वक पालन करने के लिए दयानन्द ने देशवासियो को प्रेरित किया।

स्वधर्म की भाति स्वभाषा को अपनाने पर उन्होने बल दिया। जातीय स्वाभिमा और राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा और वृद्धि स्वभाषा के प्रयोग पर निर्भर है। किसी अग्रेज से जब पूछा गया कि वह ब्रिटिश साम्राज्य अथवा अग्रेजी भाषा मे लिख गए शेक्सपियर के नाटको में किसे वरीयत देता है तो उसका उत्तर था – स्वभाषा प्रणीत साहित्य ही उसके मानसिक औ बौद्धिक क्षितिज को विस्तार देने वाला है वही उसके लिए श्रेयस्कर है अधिकाधिक जनता तक अपने विचार को प्रसारित करने मे लोकभाषा के महत्त्व को स्वामी दयानन्द भली भाति जान थे। उन्होने अपनी दूरदर्शिता से यह जा लिया था हिन्दी (जिसे वे आर्य भाष कहना पसन्द करते थे) ही वह सामर्थ्यवा भाषा है जा अधिकाधिक भारतवासि के भावो विचारो एव उद्वेगो का वह करन की क्षमता रखती है। स्वामी जी व मातृभाषा गुजराती थी। वे सस्कृत प्रकाण्ड विद्वान थे और इस भाषा अपने विचारो को प्रखरता से प्रस्तुत कर उनके लिए सहज था। उनके लिखे भाग खण्डन वेद विरुद्धमत खण्ड शिक्षापर्वीधान्तनिवरणा त ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका आदि ग्रन्थ सस्कृ मे ही हैं। नथापि वे अनुभव करते थे जब तक लोकभाषा या जन भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं बनाया जाए तब तक अपने विचारो को जन सामा तक पहुचाना अत्यन्त कठिन होगा। इ तथ्य को लक्ष्य मे रखकर उन्होने अप प्रमुख ग्रन्थो की रचना हिन्दी मे की। र वह समय था जब भारत मे ब्रिटिश शास का दौर दौरा था। प्रधानतया अग्रेजी राजभाषा का स्थान प्राप्त कर चुकी थ यद्यपि मुसलमानी शासन मे प्रचलि उर्दू फारसी का प्रमुत्व भी कम नही थ स्वामी जी ने अपने अनुयायियो को निर्दे दिया कि सरकार द्वारा स्थापित हण कमीशन के समक्ष वे प्रस्तुत हो तथा निवेद करे कि भारत के स्कूल कालेजो मे शि का माध्यम हिन्दी को बनाया जाए। वे के भाष्य को भी सस्कृत के साथ स हिन्दी मे प्रस्तुत करने का उन्होने स्तु प्रयास किया। यहा तक कि पटना निवासी मुन्शी मनोहरलाल को प्रेरणा दे इस्लाम के धर्म ग्रन्थ कुरान का उन्ह हिन्दी मे अनुवाद कराया।

क्रम

कर्मयोग

– बीरबल आर्य

इस भौतिक ससार में हर व्यक्ति कुछ न कुछ कर्म अवश्य करता है जो कि मनुष्य का धर्म है किन्तु जो वस्तु जिस गुण-कर्म और स्वभाव की हो उसे वैसा ही जानना और उसी के अनुरूप व्यवहार में लाना सबका कर्म (धर्म) है। निष्काम भाव से प्रभु की प्रसन्नता हेतु कर्म करने वाले विरले ही मिलते हैं। किसी भी देश के देशवासी तभी तक सुरक्षित (सुख और शांति से) रहते हैं जब तक कि उस देश के राजा (वर्तमान मे राजनेता) की कथनी और करनी मे कोई अन्तर न हो एवं राष्ट्र का हित निहित हो। साहसी, निडर और बलिदानी भाव (व्यवहार) रखने वाला शासक ही सच्चा न्यायकारी एवं धर्म-परायण होता है। जो भाषा बहुसख्यक समुदाय द्वारा बोली, पढी और समझी या व्यवहार मे लाई जावें वही उस क्षेत्र या प्रान्त की भाषा होती है। उसके विकास पर यथायोग्य व्यय करना न्यायसगत होता है। जैसे पजाब मे पजाबी, गुजरात मे गुजराती, महाराष्ट्र मे मराठी इत्यादि। जो भाषा देश के अनेक या ज्यादातर हिस्सो (लोगो) की दिनचर्या मे आवे उसे राष्ट्रभाषा मानना और उसी के विकास मे राजकोष से व्यय करना ही न्यायसगत है। भारत में हिन्दी प्राय-प्राय. सभी नगरों, महानगरों और बहुसंख्यक समुदाय द्वारा समझी, बोली और व्यवहार में लाई जाती है। यह तथ्य जानकर ही महर्षि दयानन्द सरस्वती ने साफ और स्पष्ट शब्दों मे व्यक्त किया था कि 'केवल हिन्दी ही सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र मे पिरो सकती है' जबकि वे स्वयं गुजराती भाषा-भाषी थे। मध्यप्रदेश के सर्वाधिक लोकप्रिय मुख्यमन्त्री ने मुस्लिम छात्रो के बेहतर शिक्षा के वास्ते आवासीय उत्कृष्ट शिक्षा केन्द्र शुरू करने का निर्णय लिया है जिसे एक करोड़ का अनुदान दिया जाएगा। मदरसा बोर्ड को जमीन और बीस लाख रुपये देने की भी घोषणा की है। सेवक (लेखक) को एक उर्दू स्कूल (मदरसा) में जाने का अवसर मिला जहा तालिबानों (तालिब–ईलम) की संख्या उस रोज केवल आठ थी जबकि कर्मचारियों की संख्या उनसे ज्यादा थी। मध्यप्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत से स्कूल ऐसे हैं जहां प्राथमिक पाठशाला है। उनमें पांच कक्षाओं (पहली से पाचवी) के वास्ते दो शिक्षकों की व्यवस्था हैं। अगर एक गुरुजी अनुपस्थित हो जावें तो बाकी एक को पाच कक्षाए चलाना पडती है। कहीं–कहीं पर तो एक ही भृत्य को (शिक्षको की अनुपस्थिति रहने पर) सब कार्य करना पडता है। शाला भवन भी इतने साफ-सुथरे हैं कि मदरसा (मां के आंचल की छाव) के पास जाने पर ही विदित हो जाता है कि यह जानवरों का रैनबसेरा है। इन बहुसख्यक पाठशालाओ के विकास की ओर ध्यान न देकर केवल उर्दू स्कूलों पर अनाप-शनाप व्यय करना कितना न्यायकारी है ? अपनी मातृभाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने में आपका कितना सार्थक प्रयास रहा है, यह विचारणीय बिन्दु है।

केन्द्र शासन ने सिमी पर प्रतिबन्ध लगा दिया तो कुछ राजनेताओ ने इसे समाप्त करने और सिमी के नेताओं को बिना शर्त रिहा करने का सरकार को अल्टीमेटम तक दे दिया हैं जिस इस्लामिक मूव्हमेट केकारण द्विराष्ट्रवाद का सिद्धान्त मानकर देश का बटवारा हुआ, मुस्लिमों की सख्या (जनसंख्या) के आधार पर पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान को शेष भारत की आजादी से चौबीस घण्टे पूर्व स्वतन्त्र किया गया और परिणामस्वरूप लाखों लोगों का कत्लेआम हो गया, बलात्कार हुआ और बच्चे अनाथ तथा स्त्रिया विधवा हो गईं उसी इस्लामिक मूव्हमेंट को बढावा देने तथाकथित राष्ट्रभक्तो ने सिमी की गतिविधियो को न केवल पुनःजीवति किया अपितु परवान चढ़ाने के वास्ते इसके पोषक बन गए। आखिर कुर्सीमोह भी तो कोई चीज है ? इतिहास के पन्ने पलटने पर स्पष्ट होता है कि १०१८ ईस्वी में महमूद गजनवी ने मुस्लिम, लुटेरा लाव–लश्कर मथुरा के कृष्ण (जन्मस्थान) गोपाल मन्दिर को तोड़ा था और लूटपाट की थी, उसे आमन्त्रित करने वाले यदुवंशी देशद्रोही ही थे। मन्दिर की भव्यता बाबत् लेख है कि उसके शिखर पर जलाई जाने वाली मशाल आगरा से भी दिखाई पडती है मगर मुस्लिम लुटेरों की संख्या से कई गुना अधिक यदुवंशियों की नींद हराम न हो सकी। इनके सगे–सम्बन्धियों को मार-काट, लूट-पाट एक सप्ताह तक होती रही, स्त्री-बच्चों का शील-भंग हुआ, उन्हीं के वंशज हैं कुछ मुस्लिमपरस्त आज के नेता। मोहम्मद गजनवीं के लूटपाट से देश अभी उबरा भी नहीं था कि ईस्वी ११६५ में लगभग पौने दो सौ साल पश्चात् पुनः मोहम्मद गौरी ने इतिहास को दोहरा दिया और इसके लगभग साढ़े चार सौ वर्ष पश्चात् औरगजेब ने इस विशाल और भव्य मन्दिर को तोड दिया। जो ईदगाह, कृष्ण जन्मस्थान के साथ में एक दीवार के विभाजन के साथ आज भी विद्यमान है वह उसी का अंग रही है। मुस्लिम आक्रमणकारियों को पनाह देने वाले, गुमराह करने वाले और अपने धर्म (हिन्दू धर्म) में फैली कुरीतियों को उजागर करने वाले, हमारे हिन्दू देशद्रोही भेदिए ही रहे हैं। जैसे पृथ्वीराज चौहान के शासनकाल में जयचन्द ने मोहम्मद गौरी को बार-बार आमन्त्रित किया था और देश की दुर्गति हुई थी, उसी कला का परिचय भी गाहे–बेगाहे आज के नेता करते रहे है। अगर इन तथाकथित राष्ट्रभक्तो ने मुस्लिम समुदाय के तुष्टीकरण के लिए सिमी पर से प्रतिबन्ध हटाने, जेहादी जुनूनियों की गतिविधियो पर परदा डालने और अब्दुल्ला बुखारी की तकरीरों पर मुहर लगाने का निर्णय लिया है तो इसमें आश्चर्य करने की जरूरत नहीं है? ऐसा प्रतीत होता है केन्द्र शासन ने आतकवादियो को सबक सिखाने के लिए कमर कस ली है। इन्हें अपनी मानसिकता में भी बदलाव लाना होगा अन्यथा बेमन से किया कार्य भी अधूरा रह जाता है।

द्विराष्ट्रवाद के सिद्धान्त को स्वीकार कर जनसंख्या के आधार पर देश का विभाजन एक बार हो चुका है इसे बार-बार दोहराया जाना या इस पर विचार किया जाना निरर्थक है। दृढ़ता से इसका पालन करना होगा कि जो मुस्लिम, राष्ट्रवादी बनकर भारत में नहीं रह सकते तथा जिस थाली में खाते हैं उसी में छेद करना नहीं छोड सकते, उन्हें भारत से निकाल बाहर करना होगा। इन पथभ्रष्ट मुस्लिमों को राष्ट्रवादी मुस्लिमों ने हमेशा इस्लाम का अपमान माना है क्योंकि इस्लाम इस की इजाजत नहीं देता कि बेगुनाहों का खून किया जाए अथवा इन्सानियत से हटकर कोई काम हो। ईश्वर एक हैं जो सबका मालिक है। आप खुदापरस्ती में उसकी इबादत करो या हव्य की सुगंध फैलाओ मगर उसके बन्दों पर कोई जुल्मों-सितम न ढाओ। इन गुमराह जुनूनियों के पोषकों को भी देश निकाला दे देना चाहिए क्योंकि आप जिस धर्म (मजहब) के पोषक हैं, उन्हीं के पास जाकर रहो। राष्ट्रविरोधी गतिविधियों में संलग्न राजनेताओं (भले ही वे किसी पार्टी के हो) को देशद्रोह का मुकदमा चलाकर मृत्युदण्ड देने में कोताही नहीं बरतनी चाहिए। सर्प का बच्चा कितना भी दुग्धपान क्यों न कर ले, विष ही उगलेगा, अतः उसका नाश करना ही सच्ची राष्ट्रीयता है। प्रधानमन्त्री को कुर्सी-मोह छोडकर इन देशद्रोहियों से निबटना होगा। बुराई को जड-मूल से ही काटना होगा। पत्तियों और टहनियों को काटकर किसी पेड को नहीं सुखाया जा सकता हैं। जिस कार्य का बीड़ा आपने (भले ही बहुत देर से) उठाया है, उसे अवश्य पूरा करे। भगवान आपका कल्याण करे। राष्ट्र का कल्याण हो। ओ३म् शान्ति शान्ति शान्ति ।

– छिन्दवाड़ा

गुरुकुल कांगड़ी की भूमि का विक्रय

– जयपाल विद्यालकार

गुरुकुल की भूमि के विक्रय के सम्बन्ध मे प्रकाशित पत्रो के माध्यम से जो जानकारी मिली उससे गुरुकुल के स्नातको मे बहुत क्षोभ है।

गुरुकुल कागडी के पास जो कुल सम्पत्ति है वह आरम्भिक काल मे तो दान के रूप मे प्राप्त हुई और बाद में समय–समय पर क्रय की गई। सम्पत्ति चाहे किसी प्रकार से अर्जित हुई हो उसका स्वामित्व गुरुकुल का है। विभिन्न सभाए और गुरुकुल के अधिकारी केवल उसके मैनेजर हैं मालिक नहीं। आर्य जनता ने जब भी गुरुकुल को कुछ दिया वह स्वामी श्रद्धानन्द और उनके गुरुकुल के नाम के कारण दिया। गुरुकुल के सविधान के अनुसार व्यवस्था यह है कि पजाब हरियाणा और दिल्ली की आर्य प्रतिनिधि सभाए सम्मिलित रूप से गुरुकुल की स्वामिनी सभाए हैं। परन्तु गुरुकुल की जो व्यवस्था रही उसके कारण गुरुकुल की अधिकाश सम्पत्ति का पजीकरण आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के नाम पर है। गुरुकुल की प्रबन्ध समिति शिष्टपरिषद होती है। इसमे अधिक सख्या तीनो सभाओ के प्रतिनिधियो की ही होती है। शिष्टपरिषद आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की पूर्व स्वीकृति से गुरुकुल की किसी जमीन को बेच सकती है। यदि जमीन का सम्बन्ध गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय से है तो शिक्षा मन्त्रालय या यू०जी०सी० की पूर्व स्वीकृति अपेक्षित है। परन्तु यदि बेची जाने वाली जमीन का सम्बन्ध गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय' से न होकर केवल 'गुरुकुल कागडी से है तो बीच मे आर्य विद्या सभा आ जाती है। इसके अतिरिक्त यू०पी० एज्यूकेशन एक्ट की धारा ५ के तहत गुरुकुल की किसी भी जमीन को बेचने से पहले सरकार (अब उत्तर प्रदेश की जगह उत्तराचल सरकार) की स्वीकृति भी आवश्यक है। तात्पर्य यह है कि कार्य व्यवस्था ऐसी है कि गुरुकुल की किसी भी जमीन को नियमानुसार बेच पाना सहज नहीं है। परन्तु व्यवस्था मे अस्पष्टता भी इतनी है कि किसी भी सौदे मे कानूनी अडचन उपस्थित करना सहज है। गुरुकुल कागडी की सम्पत्ति के सम्बन्ध मे इस उलझी हुई स्थिति के कारण पिछली कई दशाब्दियो से गुरुकुल की जमीने बिकती रही है और आन्तरिक कलह तथा न्यायालय मे विवाद होते रहे हैं। इस प्रकार के कलह और विवाद गुरुकुल की जमीनो को बचाने के लिए कम और हिस्सा बाट के निमित्त अधिक हुए है। इस समय गुरुकुल जहा है वहा की जमीनो का बाजार भाव तो बहुत ऊचा है। उसके लिए तो मारामारी स्वाभाविक ही है। गगा पार की पुरानी कुलभूमि पर भी इन भू–माफिया रूपी अधिकारियो की दृष्टि रही है। अब तो कन्या गुरुकुल देहरादून की जमीनो को बेचने के भी आसार नजर आने लगे हैं।

इस समय १६२ बीघा जमीन के बेचने का विवाद सामने आया है। १६६२ मे जो भूमि बेची गई थी और जिसका कब्जा दे दिया गया था वह केवल २० बीघा ही थी। इस जमीन को आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने बेचा था। तत्कालीन कुलपति श्री सुभाष विद्यालकार ने शेष जमीन पर कोर्ट से स्टे लेकर उस जमीन को हस्तातरित होने से बचाया था। कालान्तर मे जो अधिकारी बने उन्होने सम्भवत जानबूझ कर इस सम्बन्ध मे लापरवाही की। दिल्ली ओर हरियाणा की आर्य प्रतिनिधि सभाओ ने मिलकर एक आर्यविद्या सभा का गठन किया। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के सदस्यो ने इसे असवैधानिक कहकर इसका बहिष्कार किया। पहले आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब जमीनें बेचती थी तथा अन्य दो सभाए इसके विरोध मे न्यायालय मे जाकर 'गुरुकुल की जमीन को बिकने नहीं देंगे' का उद्घोष करती थीं। अब बाजी दिल्ली और हरियाणा की सभाओ के हाथ मे है। जमीन का सौदा इन सभाओ के अधिकारी करते हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब अपने अधिकार की दुहाई देती है क्योकि गुरुकुल की प्राय सभी जमीनो की रजिस्ट्री पजाब सभा के नाम पर ही है।

२७ मई २००१ को गुरुकुल कागडी के सीनेट हाल मे विद्यासभा की बैठक हुई। विषय था नये चुनाव जो मेरठ मे बनी विद्यासभा के कार्यकाल की समाप्ति पर कुछ समय से हो नही रहे थे या कराये नही जा रहे थे। पजाब के प्रतिनिधिया ने इसका बहिष्कार किया क्योकि उनकी दृष्टि मे तो मेरठ मे बनी विद्यासभा ही अवैध थी। खैर नये चुनाव हुए पदो के बटवारे को लेकर कुछ सघर्ष हुआ और दिल्ली के सदस्यो ने विरोध मे बहिर्गमन किया। नव निर्वाचित प्रधान श्री इन्द्रवेश ने घोषणा की कि आज तक जो हुआ सो हुआ भविष्य मे गुरुकुल की एक इच जमीन भी न बेची जाएगी और न किसी को बेचने दी जाएगी। नव सचिव तेजपाल मलिक राम मेहर एडवोकेट आदि न इस घोषणा का अनुमोदन किया इसे सराहा और कहा कि स्वामी जी आप कभी गुरुकुल की जमीन का सौदा होने लगे तो विक्रय पत्र पर हस्ताक्षर न करके अपने त्यागपत्र पर करना। सभी महानुभावो ने तालियो से इसका अनुमोदन किया। इस घोषणा अनुमोदन और करतल ध्वनि से सहमति प्रकट करने वालो ने जिनमे गुरुकुल के विजिटर से लेकर सहायक मुख्याधिष्ठाता तक सभी पदाधिकारी सम्मिलित है। ४ या ५ जून को अर्थात भीष्म प्रतिज्ञा के आठ–नौ दिन बाद ही विवेच्य जमीन का सोदा कर डाला। जब बाड ही खेत को खाने लगे तो खेत को भला कौन बचा सकता है ?

सुनते है गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति डा० धर्मपाल जी ने इस विवाद क कारण त्याग पत्र दे दिया है। इस एक त्यागपत्र से क्या होने वाला है ? प्रश्न यह है कि इन परिस्थितियो मे गुरुकुल की रक्षा कौन करे ? गुरुकुल आर्य जनता की थाती है। उसके सरक्षण का दायित्व भी आर्य जनता का ही है। आर्यजनो को अपनी–अपनी समाज क माध्यम से यह माग करनी चाहिए कि गुरुकुल कागडी की सम्पत्ति के सौदो की विशेष रूप से इस ताजे सौदे की एक निष्पक्ष जाच कराई जाए। आरोपियो तथा उनके सहयोगियो को इस जाच आयोग से दूर रखा जाए।

– २१० वैशाली पीतमपुरा दिल्ली ८८

ब्राह्मण के लक्षण व कर्त्तव्य

– प० नन्दलाल निर्भय

ब्राह्मण हो धर्मात्मा ईश्वर भक्त महान।
त्यागी धीर, तपस्वी वेदो के विद्वान।।

वेदो के विद्वान, सदाचारी, व्रत धारी।
करे धर्म के काम, साहसी परोपकारी।।

जग हित मे जो भेट, चढादे अपना जीवन।
पाते है सम्मान, जगत मे वही ब्राह्मण।।

परोपकारी ब्राह्मण, गौतम कपिल, कनाद।
जैमिनी, पातजलि को जग करता याद।।

जग करता है याद, धमके थे दीवाने।
शीलवन्त, गुणवान, तपस्वी ऋषि मस्ताने।।

सच्चाई के लिए, त्याग करते थे भारी।
भारद्वाज, वशिष्ठ, अगस्त्य से परोपकारी।।

सोए चादर तान कर, सुनो ! ब्राह्मण आज।
वेदो को पढते नहीं, तनिक न आती लाज।।

हो गई अक्ल खराब, खुद ने काटे बोए।
ऋषियो के सुत होय, भाग पीकर के सोए।।

आगे बढता जा रहा, यह सारा ससार।
जागो तुम भी ब्राह्मणा, हो जाओ तैयार।।

हो जाओ तैयार जगत मे धूम मचादो।
देव दयानन्द बनो, विश्व को स्वर्ग बना दो।।

पछताओगे सभी अगर अब भी ना जागे।
परसुराम भगवान बनो, बढ जाओ आगे।।

– ग्राम बहीन जनपद फरीदाबाद (हरियाणा)

व्यक्ति और समाज सुधार में योग का महत्व

— कृष्ण औतार

इ

है उ व्यक्ति समाज की एक इकाई है।
वस्तु व्यक्ति व्यक्ति के सुधार से परिवार
हो ा सुधार होता है।
अनु परिवार परिवार के सुधार से समाज
(धर्म ा सुधार होता है।
समाज समाज के सुधार से राष्ट्र का
प्रस धार होता है
ही रि राष्ट्र राष्ट्र के सुधार से विश्व समाज
तभी ा सुधार होता है।
स) कहा भी जाता है — 'हम सुधरेंगे
राजाग सुधरेगा।
और व्यक्ति अथवा मै कौन हू ? कहा से
राष्ट्राया हू ? क्यो आया हू ? और इस
निझावन के बाद कहा चला जाऊगा ?
रख ानव जीवन से सम्बन्धित इन प्रश्नो के
न्व म्बन्ध मे हजारो मानवो मे से कोई बिरला
बहुर ग्यशाली व्यक्ति ही जानने का प्रयत्न
और रता है। अधिकाश व्यक्ति तो इसी शरीर
ग्ही ो मैं समझकर इसी को सजाने सवारने
। था खाओ पियो मौज उडाओ को ही
करो ोवन का लक्ष्य मानते हैं और पुनर्जन्म मे
ो विश्वास नही करते।
े प उपर्युक्त प्रश्नो का उत्तर कठोपनिषद
ो म आचार्य यम अपने सुयोग्य शिष्य
अने चिकेता को इस प्रकार समझाते हैं —
की **ात्मान रथिन विद्धि शरीर रथमेव तु।**
मान **द्धि तु सारथी विद्धि मन प्रग्रहमेव च।।**
से **न्द्रियाणि हयानाहुर्विषयास्तेषु गोचरान्।**
भार **त्मेन्द्रिय मनोयुक्त भोक्तेत्या हुर्मनीषिण।।**
मह ३/३-४
द्वार यह शरीर एक रथ है जिसमे बैठकर
ला सका स्वामी आत्मा (मैं) इस ससार की
मह ीला देखता है विभिन्न प्रकार के कर्मो
स्था ो करके सुख दुख भोगता है नाना
के कार की खोज व रचनाए करता है।
स रथ मे पाच ज्ञानेन्द्रिया और पाच
सू र्मेन्द्रिया रूपी दस घोडे जुते हुए हैं तथा
गुण न की लगाम के सहारे बुद्धि रूपी सारथी
सब स रथ का सचालन करता है। जिसकी
मु द्धि सत्य ज्ञान सम्पन्न तथा मन सदा
वा वित्र एव वश मे रहने वाला है वही
शु व्यक्ति जीवन के लक्ष्य (धर्म-अर्थ काम-मोक्ष)
एक ो प्राप्त करता है। इसके विपरीत अज्ञानी
मट न को वश मे न रखने वाले व्यक्ति की
ला न्द्रिया उसके वश मे न रहकर ससार के
है षियो (शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध) मे
(म टकाकर उसे पथ भ्रष्ट पतित करके
ज न्म मरण के चक्र मे घुमाती रहती हैं।
स त्मा के शरीर से निकल जाने पर शव
क ो चिता पर रखकर भस्म कर देते हैं।
थी त्मा के साथ उसका सूक्ष्म शरीर शुभाशुभ
ब र्मों की गठरी साथ लेकर कर्मानुसार
किसी दूसरे परिवार मे नया जन्म नया
ारीर धारण कर लेता है।

वासासि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृहणाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि सयाति नवानी देही।। गीता २/१२

जैसे पुराने त्यागकर नर नव वस्त्र बदले सभी।

यो जीर्ण तन को त्याग नूतन देह धरता जीव भी।

वेद के अनुसार मै कौन हू ? इस ससार मे क्यो आया हू ?

वायुरनिलममृतमथेद भस्मान्तम शरीरम्।। ओं क्रतो स्मर। क्लिबे स्मर। कृत स्मर।। यजु० ४०—१५

अर्थ — आत्मा अभौतिक और अमर है और यह शरीर अन्त मे भस्म होने वाला है। हे कर्मशील मानव। ओ३म का स्मरण करता हुआ अपने सामर्थ्य को बढाता हुआ अपने लक्ष्य को प्राप्त कर।

जीवात्मा (मैं) एक निराकार अजर अमर तथा अत्यन्त सूक्ष्म शक्ति का नाम है। जो शरीर मे रहकर मन के द्वारा इन्द्रियो से कर्म कराती है। आत्मा निराकार होने से दिखाई नहीं देती तथा जिन साधनो अन्त करण चतुष्टय (मन बुद्धि चित्त अहकार) से काम लेती है वे भी दिखाई नहीं देते। आत्मा कोई भी कार्य मन के सहयोग के बिना नही कर सकता।

'यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मन शिवसकल्पमस्तु। यजु० ३४—३

मन ही व्यक्ति की उन्नति व पतन अथवा बन्धन या मोक्ष का कारण है। 'मन एव मनुष्याणा कारण बन्ध मोक्षयो।

मन साधे इन्द्रिया सधे सधे सकल व्यवहार।

मन बिगडे बिगडे सभी बिगडे इन्द्रिय व्यापार।।

अत व्यक्ति और समाज सुधार के लिए मन को शिव सकल्पी बनाना अति आवश्यक है और यह कार्य केवल योग साधना के द्वारा ही सम्भव है।

योग क्या है ? योगश्चित्तवृत्ति निरोध। योगदर्शन १-२

चित्त की वृत्तियो अथवा मन के विचारों को रोक देना योग है। योग दर्शन मे चित्त और मन एक ही वस्तु है और वह जड वस्तु है। इस चित्त मे जीवात्मा की इच्छा से विभिन्न प्रकार के चित्र सासारिक विषयो (शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध) से सम्बन्धित बनते रहते हैं इन्हीं को चित्त की वृत्तिया कहते हैं।

चित्त वृत्ति का निरोध होने पर योग साधक अपने आत्म स्वरूप का दर्शन प्राप्त करके समाधि की अवस्था मे ब्रह्म दर्शन करता है।

योग — किसी जटिल और कृत्रिम अभ्यास का नाम नहीं है। योग तो मानव जीवन की उस पद्धति का नाम है जो स्वाभाविकतया प्रत्येक व्यक्ति की होनी चाहिए। मानव जीवन की दो ही पद्धतिया है। १ योग जीवन पद्धति और २ भोग जीवन पद्धति। योग जीवन पद्धति से व्यक्ति का सर्वांगीर्ण (शारीरिक मानसिक बौद्धिक आत्मिक एव सामाजिक) विकास होकर आजीवन सुख और आनन्द के साथ सुयश को प्राप्त करता है और देहावसान पर सद्गति को प्राप्त होता है। इसके विपरीत भोग जीवन पद्धति पर चल कर व्यक्ति रोगी अस्वस्थ दीन हीन अपवित्र और अक्षम रहता हुआ आजीवन दु खी क्लेशयुक्त रहकर अपयश को प्राप्त होता है और देहावसान पर दुर्गति को प्राप्त होता है।

सम्पूर्ण सृष्टि मे मानव शरीर ही परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ रचना है और परमात्मा का आदेश है — हे मानव। तू उन्नति करने के लिए है नीचे गिरने के लिए नहीं।

'उद्यान ते पुरुष नावयानम' अथर्व० ८ १—६

मानव योनि तो है ही योग साधना के लिए।

भोग योनि तो पशु पक्षियो की है।

महर्षि पतजलि ने वेदो के आधार पर एक अनुपम खोज करके विश्व मानव समाज की उन्नति एव कल्याण के लिए अष्टाग योग पद्धति प्रस्तुति की है जिसे व्यवहार मे लाने से अविद्या आदि दोषो का नाश होकर ज्ञान का विकास होता है तथा साधक विवेक ख्याति अर्थात ईश्वर जीवन व प्रकृति का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर लेता है। योग के आठ अग इस प्रकार हैं —

यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि।

(१) यम

अहिसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह।

ये पाचो यम सार्वभौम महाव्रत हैं — सामाजिक नियम हैं। इनके पालन मे जाति देश काल और समय के अपवाद की कोई छूट नहीं है। इनका पालन करने से विश्व समाज के सम्पूर्ण क्लेशो दु खों अभावो व आपत्तियो का अन्त हो सकता है। विश्व के समस्त विद्वान वैज्ञानिक एव राष्ट्राध्यक्ष ससार से जिन भय भूख मुकदमे गरीबी भ्रष्टाचार आतकवाद अशान्ति आदि को हजारों योजनाए बनाकर भी दूर नहीं कर सके। उन सबका अन्त योग की यह प्रथम श्रेणी ही कर सकती है।

१ अहिंसा — मन, वचन और कर्म के द्वारा किसी भी प्राणी को शारीरिक व मानसिक पीड़ा या हानि न पहुचाना अपितु समस्त बैर भाव छोडकर सबसे प्रेम पूर्ण व्यवहार करना।

२ सत्य — मनसा वाचा कर्मणा अर्थात जैसा देखा सुना पढा अनुभव किया हुआ ज्ञान मन मे है वैसा ही बोलना और उसी पर आचरण करना।

३ अस्तेय — रिश्वत चोरी ठगी जबरदस्ती या अन्यायपूर्वक किसी की सम्पत्ति राज्य धन या अधिकार छीनना।

४ ब्रह्मचर्य — मन तथा इन्द्रियो पर सयम करके वीर्य की रक्षा करना। वेदादि शास्त्रो का पढना तथा ईश्वर की उपासना करना।

५ अपरिग्रह — सभी प्रकार के सासारिक भोगो का त्यागपूर्वक उपभोग करते हुए उनका सग्रह न करना दानशील होना।

(२) नियम

शौच सन्तोष तप स्वाध्याय ईश्वर प्राणिधान।

ये पाचो व्यक्तिगत नियम है इनका पालन करने से व्यक्ति दिव्यगुणी ज्ञानी एव महान बन जाएगा।

१ शौच — बाहरी व भीतरी शुद्धि बनाए रखना। शरीर वस्त्र स्थान भोजन तथा धनोपार्जन को पवित्र रखना बाहरी शुद्धि है और विद्या सत्सग सत्य भाषण व धर्माचरण से मन बुद्धि को पवित्र करना भीतरी शुद्धि है।

२ सन्तोष — अपने ज्ञान बल तथा साधनों से पूर्ण पुरुषार्थ करने के पश्चात जैसा और जितना फल प्राप्त हो उतने से ही सन्तुष्ट रहना।

३ तप — श्रेष्ठ कर्तव्य कर्मों को करते हुए भूख प्यास सर्दी गर्मी हानि लाभ मान अपमान आदि द्वन्दो को प्रसन्नतापूर्वक सहन करना।

४ स्वाध्याय — 'स्व — स्वय का अध्ययन करना अर्थात् आत्मनिरीक्षण करना तथा वेद उपनिषदादि आर्ष ग्रन्थो का पाठ करना।

५ ईश्वर प्रणिधान — शरीर बल बुद्धि विद्या, धनादि समस्त साधनो को ईश्वर प्रदत्त मानकर उनका सदुयोग ईश्वर प्राप्ति के लिए करना। सर्वव्यापक सर्वज्ञ ईश्वर मुझे देख व सुन रहा है यह भावना मन मे बनाए रखना।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वाध्याय को परम धर्म कहा है —

"वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। वेद का पढना पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" महर्षि याज्ञवल्क्य ने स्वाध्याय को परम श्रम और महर्षि मनु ने परम तप कहा है।

— बेगपुर बिजनौर २४६७२४

सार्वदेशिक सभा के कार्य संचालनार्थ गठित उप-समितियां

अन्तरग सभा द्वारा दिनाक ४ ११-२००१ मे सर्वसम्मति से सभा के कार्य सचालनार्थ निम्न उप समितियों का गठन किया गया और भविष्य मे कार्य की आवश्यकता को देखते हुए इन समितियो से सदस्यों के नाम घटाने अथवा बढाने का अधिकार सभा प्रधान एव मत्री जी को दिया गया।

धर्म प्रचार समिति

१ श्री स्वामी सत्यम् जी (अध्यक्ष)
२ श्री सोमदत्त महाजन (सयोजक)
३ श्री कृष्ण लाल सिक्का
४ डॉ० नारायण दास
५ माता प्रेमलता शास्त्री

धर्मार्य सभा समिति

१ प० विशुद्धानन्द जी शास्त्री (अध्यक्ष)
२ डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री (सयोजक)
३ डॉ० महेश विद्यालकार
४ श्री सत्यानन्द जी वेद वागीश
५ श्री नेत्रपाल शास्त्री
६ श्री उमाकान्त उपाध्याय
७ श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री
८ डॉ० भवानीलाल भारतीय
९ श्रीमती शकुन्तला दीक्षित
१० आचार्य जगत देव
११ श्री प्रेमचन्द श्रीधर
१२ आचार्य वागीश शर्मा
१३ श्री राजसिह भल्ला
१४ आचार्य भद्रकाम वर्णीय
१५ श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय
१६ ब्रिगेडियर चितरजन सावत
१७ आचार्य सुदर्शन देव
१८ श्रीमती उषा शास्त्री
१९ आर्य तपस्वी सुखदेव

आर्य महिला समिति

१ श्रीमती शकुन्तला दीक्षित (अध्यक्ष)
२ श्रीमती शशिप्रभा आर्या (सयोजिका)
३ श्रीमती शकुन्तला आर्या
४ डॉ आशारानी राय
५ डॉ० वेद कुमारी जी
६ श्रीमती विमला श्रीवास्तव
७ श्रीमती प्रेमलता शास्त्री
८ श्रीमती शशिप्रभा कुमार
९ श्रीमती कृष्णा रसवन्त
१० श्रीमती उज्ज्वला शर्मा

कानून समिति

१ श्री विमल वधावन (सयोजक)
२ श्री एस० पी० पाण्डेय
३ श्री अशोक मरवाह
४ श्री महेन्द्र प्रताप
५ श्री प्रदीप मिन्दाजोग

चिकित्सा समिति

१ डॉ० अमर जीवन (अध्यक्ष)
२ वैद्य इन्द्रदेव (सयोजक)
३ डॉ० रविकात
४ डॉ० प्रदीप सुनेजा
५ श्री धर्मसिह शास्त्री
६ डॉ० महेन्द्रपाल सिह आर्य

पत्रकार समिति

श्री पूनम सूरी (अध्यक्ष)
श्री बनारसी सिह (सयोजक)
डॉ० वेदप्रकाश वैदिक
श्री अजय भल्ला
श्री राजेन्द्र दुर्गा
श्री दिनेश शर्मा
श्री डॉ० के० सचदेवा
सम्पादक हरि भूमि (हरियाणा)

धन संग्रह समिति

श्री हरीश बत्रा
श्री महाशय धर्मपाल
श्री मुन्शीराम सेठी
श्री मित्रसेन
श्री हरिसिह सैनी
श्री ओंकारनाथ आर्य
श्री विजय सिह भाटी
श्री सत्यानन्द मुझाल
श्री पी० एन० आर्य

गौ सवर्धन समिति

१ अशोक कुमार मरवाह (अध्यक्ष)
२ श्री वेदव्रत शर्मा (सयोजक)
३ श्री विमल वधावन एडवोकेट
४ श्री महाशय धर्मपाल जी
५ श्री मुन्शीराम सेठी
६ श्री जगदीश आर्य
७ श्री शान्ति प्रकाश पाण्डेय एडवोकेट
८ डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री
९ डॉ० रविकान्त
१० श्री उमेश गुप्ता
११ श्री ईश कुमार नारग
१२ श्री हसराज चोपडा
१३ श्री महाशय श्रीचन्द
१४ चौ० लक्ष्मीचन्द
१५ श्री मनोहर लाल डाबर
१६ श्री मुकेश सैनी
१७ श्री सुरेन्द्र मिगलानी
१८ श्री रोशन लाल आर्य

जन सम्पर्क समिति

१ श्री वेदव्रत शर्मा (अध्यक्ष)
२ श्री राजेन्द्र दुर्गा (सयोजक)
३ श्री विमल कान्त शर्मा
४ श्री अजय सहगल
५ श्री बनारसी सिह जी
६ श्री सुरेश सैनी
७ श्री अजय भल्ला
८ ब्रिगेडियर चितरजन सावत
९ श्री राजीव भाटिया

विद्यार्य सभा

१ श्री राजसिह भल्ला (अध्यक्ष)
२ श्री पुरुषोत्तम लाल गुप्ता (सयोजक)
३ श्री प्रो० जगदेव जी
४ श्री ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति
५ प्रो० श्यामनन्दन शास्त्री
६ श्री सुरेन्द्र मोहन गुप्ता
७ डॉ० मुमुक्षु आर्य
८ श्री जी०पी० चोपडा
९ प्रो० वेद प्रकाश शास्त्री
१० श्री रामस्वरूप जी

सविधान सशोधन समिति

१. श्री रामफल बसल (अध्यक्ष)
२ श्री विमल वधावन एडवोकेट (सयोजक)
३ श्री वेदव्रत शर्मा

विदेश प्रचार समिति

१ कैप्टन देवरत्न आर्य (अध्यक्ष)
२ श्री विमल वधावन एडवोकेट (सयोजक)
३ श्री यशोनिधि आर्य
4. Shri S Rambharose ji, *S Africa*
5. Dr. Tilak Raj Khanna, *U S A*
6 Shri. Udaya Narayan Gangu, *Mauritius*
7 Dr Mahendra Swaroop ji, *Netherland*
8 Shri Girish Chand Khosla, *U S A*
9 Shri Harish Sachdeva, *Newzealand*
10 Shri. Krishan Chopra, *U K*
11 Shri. Amar Erry, *Canada*

प्रत्येक देश से एक या अधिक महानुभाव इस मे शामिल किए जाए।

आर्य नगर गाजियाबाद

१ श्री वेदव्रत शर्मा
२ श्री जगदीश आर्य
३ डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री
४ चौ० लक्ष्मी चन्द

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री इस समिति के पदेन अध्यक्ष होगे।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल समिति

१ श्री विमल वधावन एडवोकेट (रक्षा सचिव)
२ श्री आचार्य देवव्रत जी
३ श्री वेदव्रत शर्मा
४ ब्र० राजसिह जी
५ श्री कीर्ति शर्मा
६ श्री राजीव भाटिया
७ श्री प्रियतमदास रसवन्त
८ श्री विनय आर्य
९ श्री पतराम त्यागी
१० श्री रवि बहल
११ आचार्य जगत देव जी
१२ श्री रोशन लाल आर्य
१३ डॉ० रविकान्त
१४ श्री सोमदत्त महाजन

विशेष आमन्त्रित

१ श्री ज्ञान प्रकाश चौपडा (प्रादेशिक)
२ श्री सत्यानन्द मुजाल (प्रादेशिक)
३ श्री प्रकाश आर्य (म० भारतीय)
४ श्री सत्यवीर शास्त्री (म० विदर्भ)
५ डा० नारायण दास (असम)
६ श्री जेठमल आर्य (राजस्थान)
७ श्री स्वामी तत्वबोध जी (राजस्थान)
८ श्री राजेन्द्र दुर्गा (दिल्ली)
९ श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी (महाराष्ट्र)
१० श्री क्रान्ति कुमार कोरटकर (आन्ध्र)
११ श्री भगवान देव चैतन्य (हि० प्र०)
१२ श्री श्याम नन्दन शास्त्री (बिहार)
१३ श्री मिठाई लाल जी (मुम्बई)
१४ श्री धर्मवीर खन्ना (गुजरात)
१५ श्री अरविन्द कुमार (उ० प्र०)
१६ श्री चन्द्रकिरन शर्मा (उ० प्र०)
१७ श्री लक्ष्मीनारायण भार्गव (म० विदर्भ)
१८ डा० आशारानी राय (उ०प्र०)
१९ श्री मोहन लाल (बगाल)
२० श्री राजसिह भल्ला (दिल्ली)
२१ आचार्य नन्द किशोर (म० विदर्भ)
२२ श्री गगा प्रसाद (बिहार)
२३ श्री चादरत्न दम्माणी (बगाल)
२४ श्री देवदत्त शर्मा (अमरावती)

प्रतिष्ठित

१ डॉ० स्वामी स थम
२ स्वामी दीक्षानन्द
३ श्रीमती दमयन्ती कपूर
४ श्री हसराज चौपडा
५ श्री मुकेश सैनी

✡✡✡

।। ओ३म्।।
पावका नः सरस्वती

दूरभाष : ६५२५६६३

निमन्त्रण पत्र

श्रीमद्दयानन्द—वेदार्ष—महाविद्यालय

११६ गौतम नगर, नई दिल्ली-११००४६

६६ वाँ वार्षिक समारोह एवं २२ वाँ चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ एवं

सत्यार्थभृत् यज्ञ

२५ नवम्बर रविवार से १६ दिसम्बर, रविवार २००१ तक

विभिन्न भव्य सम्मेलनों के साथ सम्पन्न होगा।

ब्रह्मा – आर्यजगत् के प्रसिद्ध कर्मकाण्डी विद्वान् वेदवेत्ता श्रद्धेय स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती। सान्निध्य – स्वामी जीवनानन्द सरस्वती।

प्रथम दिवस – अग्न्याधान एवं पारायण यज्ञ व उपदेश–प्रातः ८.०० बजे से १०.३० बजे तक।

ध्वजारोहण – श्री चौधरी मित्रसेन जी। मुख्यअतिथि–बृजमोहन मुञ्जाल, लाला मोहनलाल चोपडा।

स्वागताध्यक्ष – विद्यामित्र ठुकराल, समय–१० ३० से ११.०० बजे तक।

दैनिक समय – प्रातः ६ बजे से १० बजे तक, सायं–३ बजे से ६ बजे तक।

विशिष्ट सहयोगी कुबेरदानी होता यजमान – श्री शशिकान्त सेठ ग्रीनपार्क, माता कान्ता सिक्का, माता विद्यावती नारंग, श्री ईश्वरचन्द्र सेठ, श्री सत्यप्रकाश खारीबावली, श्री जितेन्द्र मेहता, श्री योगेश मुञ्जाल, श्री जे०एन० जग्गी।

विशिष्ट-सम्मेलन

१. प० क्षितीश वेदालंकार स्मृति स्मारक प्रतियोगिताएं – ६, १० दिसम्बर। १०.३० से १२.३० बजे तक
२. गुरुकुल एवं संस्कृत सम्मेलन तथा प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण। १० दिसम्बर बुधवार, सायं ४०० से ६.३० बजे तक।
३. **महिला सम्मेलन** – प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान में। ११ दिसम्बर मंगलवार २ बजे से ४ बजे तक।
४ **आर्य सम्मेलन** – दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार सभा के तत्त्वावधान में। १५ दिसम्बर शनिवार सायं ४.०० से ६.३० बजे तक।

यज्ञपारायण कार्यक्रम

ऋग्वेद	–	२५ नवम्बर रविवार से ३ दिसम्बर सोमवार सायं सवन तक।
यजुर्वेद	–	४ दिसम्बर प्रातः से ५ दिसम्बर सायं सवन तक।
सामवेद	–	६ दिसम्बर प्रातः से ७ दिसम्बर प्रातः सवन तक।
अथर्ववेद	–	७ दिसम्बर साय से १३ दिसम्बर सायं सवन तक।
सत्यार्थभृत् यज्ञ	–	१४ दिसम्बर शुक्रवार प्रातः से १६ दिसम्बर रविवार तक। इसी दिन चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति भी होगी।

पूर्णाहुति एवं आर्य नेताओं द्वारा उद्बोधन

समय :– १६ दिसम्बर रविवार प्रातः ८.०० बजे से १.०० बजे तक।

आमन्त्रित विद्वान् – श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती, श्री साहिब सिंह जी वर्मा (सांसद) श्री डॉ० योगानन्द शास्त्री, (मन्त्री दिल्ली सरकार) श्री धर्मपाल जी शास्त्री (मेरठ) प्रो० राजेन्द्र जी जिज्ञासु, प्रो० धर्मवीर जी अजमेर (मन्त्री परोपकारिणी सभा)

भजनोपदेशक – श्री ओम्प्रकाश वर्मा, श्री सत्यपाल जी पथिक, श्री सत्यपाल सरल देहरादून, श्री व्रजपाल जी कर्मठ।

आवश्यक पालनीय – यजमान दम्पती के लिए धोती एवं साड़ी का पहनना आवश्यक होगा। ऋषिलंगर, वेदविद्या तथा संस्कृत-भाषा के प्रचार प्रसार के लिए दान देकर पुण्य के भागी बनें।

ऋषिलंगर – १ बजे से ३ बजे तक रविवार १६ दिसम्बर।

निवेदक

रामनाथ सहगल
वरिष्ठ प्रबन्धक

हरिदेव आचार्य
आचार्य

स्वास्थ्य चर्चा

कहीं आपको गुर्दा रोग तो नहीं ?

– डॉ० निर्भय कुमार

गुर्दे शरीर मे होने वाली उपापचयी के परिणामत पैदा हुए जहरीले पदार्थ जैसे यूरिया क्रिएटिनीन ग्वानिडिनी पदार्थ इन्डोल आदि रक्त से छानकर मूत्र द्वारा बाहर निकालते हैं। इसके अतिरिक्त शरीर मे पानी नमक और अन्य लवणो की मात्रा का नियन्त्रण करना रक्तचाप पर नियन्त्रण करना शरीर मे अम्ल और क्षार की मात्रा को उचित मात्रा मे बनाए रखना और शरीर की हडिडयो (अस्थि मज्जा या बोन मैरो) म खून बनाने की प्रक्रिया का सचालन करना होता हैं। गुर्दे हडिडयो में कैलशियम और फास्फोरस की मात्रा का भी नियन्त्रण करते हैं और साथ ही विभिन्न तरह की दवाओ का शरीर पर असर होने के बाद उनका शरीर से निकालना भी गुर्दो की जिम्मेदारी है।

गुर्दों के क्रोनिक रोग कौन हैं अधिक खतरे पर ? देखा जाए तो गुर्दों के क्रोनिक या दीर्घकालीन रोग किसी भी उम्र के बच्चो बडो और बुजुर्गों मे हो सकते हैं परन्तु कुछ विशेष स्थितियो मे इसके होने के आसार कहीं अधिक होते है। आइए देखे हम मे किसको गुर्दा रोग से ग्रसित होने की सम्भावना अधिक है।

मधुमेह के रोगी आज दुनिया भर मे मधुमेह गुर्दा रोग का प्रमुख कारण है। डायबिटीज से पीडित ४० से ४५ प्रतिशत रोगी अतत गुर्दे की क्रोनिक बीमारी (सी०आर० एफ०) से ग्रासित हो जाते हैं। यह मुधमेह रोगी है ◆वह रोगी जिनको डायबिटीज के निदान के समय या उसस पहले से ही उच्च रक्तचाप रहता हो। ◆मधुमेह का लम्बे समय तक अनियन्त्रित रहना। ◆मधुमेह के निदान के लगभग १० से १५ वर्ष बाद। इस अवधि मे न केवल मधुमेह का गुर्दो पर अपितु आख के पर्दो (रेटिना) पैर की रक्तवाहिनियो और स्नायुतत्र तथा ह्रदय पर भी असर आने का आसार सबसे अधिक होता है। ◆ मधुमेह का अपेक्षाकृत कम उम्र मे सामने आना। ◆ मधुमेह के रोगी जो धूम्रपान और शराब का व्यसन करते रहते हैं। ◆वह डायबिटीज रोगी जो अपने वजन पर नियन्त्रण नहीं रख पाते और जिनके शरीर मे वसा (कोलेस्ट्राल और ट्राइग्लिसाइड) की मात्रा अधिक रहती है। ◆वह रोगी जिनम अनियन्त्रित मधुमेह के साथ उच्च रक्तचाप भी अनियन्त्रित हो। ◆ वह मधुमेह रोगी जिनके परिवार मे मधुमेह जनित गुर्दा रोग किसी अन्य सदस्य को रह चुका हो।◆डायबिटीज के वह रोगी जिनकी मूत्र जाच मे निरन्तर एलब्यूमिन की सूक्ष्म मात्रा (माइक्रोप्रोटीनूरिया) रह रही हो। ◆उच्च शोधो से पता चला है वह मधुमेह रोगी जो प्राटीन की अधिक मात्रा का सेवन करते हैं उनमे गुर्दारोग से ग्रसित हान की सम्भावना बढ जाती है।

उच्च रक्तचाप के रोगी अनियन्त्रित रक्तचाप शरीर के सभी महत्वपूर्ण अगो जैसे ह्रदय दिमाग गुर्दे आखो इन सभी पर कुप्रभाव डालता है। निम्न परिस्थितियो मे उच्च रक्तचाप के रोगी गुर्दा रोग से ग्रसित होने की अधिक सम्भावना रखते हैं।

◆उच्च रक्तचाप निदान होने के लगभग १० वर्ष बाद। ◆विभिन्न दवाओ के प्रयोग के बावजूद रक्तचाप सिस्टोलिक १८० तथा डायस्टोलिक ११० से नीचे न हो पाना। ◆उच्च रक्तचाप के रोगी जो मोटापा शरीर मे वसा की अधिकता और खून मे यूरिक एसिड की अधिक मात्रा से भी पीडित रहते हैं। ◆वह रोगी जो दवाओ को बीच बीच मे छोड देते हो। ◆उच्च रक्तचाप से ग्रसित वह रोगी जो तम्बाकू और धूम्रपान का प्रयोग करते हो। ◆उच्च रक्तचाप पीडित वह रोगी जो प्राय दर्द नाशक दवाओ का प्रयोग करते हो।

गुर्दों मे होने वाली पथरिया प्राय रोगी गुर्दों मे होने वाली पथरियो को गम्भीरता से नहीं लेते। निम्न परिस्थितियो मे पथरिया गुर्दों की जटिल बीमारी – सी०आर०एफ० पैदा कर सकती है।

◆ यदि पथरिया दोनो गुर्दो मे लम्बे समय से हो। ◆ यदि पथरिया मूत्रवाहिनी (यूरीटर) मे अवरोध पैदा करती हो। ◆ यदि पथरियो के साथ गुर्दों मे सक्रमण भी हों। ◆ यदि पथरिया शरीर के मेटाबालिक विकार के कारण बार बार बनती हो।

इन स्थितियो मे क्या करे ? यदि आप ऊपर बतायी गयी किसी श्री श्रेणी मे आते हैं तो आप गुर्दे के क्रोनिक विकार से ग्रसित होने की सम्भावना रखते हैं। ऐसी स्थिति मे आपको शरीर मे कोई भी लक्षण न होने पर भी आपको चाहिए कि आप चिकित्सक से मिलकर आवश्यक खून और पेशाब की जाच तुरन्त करा ले। कुछ विशेष परिस्थितियो मे कुछ खास जाचे जैसे न्यूक्लीयर स्कान और गुर्दा बायोप्सी भी लाभप्रद होती है। इन जाचो मे गुर्दा रोग की तुरन्त पहचान कर रोग पर अकुश लगाया जा सकती है।

गुर्दा रोग प्रारम्भ हो जाने पर लक्षण आईए जाने कि गुर्दा रोग के प्रारम्भ हो जाने पर शरीर मे क्या लक्षण होते है। इन लक्षणो मे से एक भी यदि आपको है तो तुरन्त आवश्यक जाचे कराकर रोग की प्रगति को रोका जा सकता है।

◆ सोकर उठने के बाद चेहरे पर व आख के नीचे भारीपन और शाम तक पैरो पर सूजन। ◆ रात मे बार–बार पशाब के लिए जाना। ◆ पेशाब मे जलन दर्द या बाधा का अनुभव होना तथा पेशाब मे बहुत अधिक झाग का बनना। ◆ ३० वर्ष से कम उम्र मे ही उच्च रक्तचाप का पता लगना। ◆हाथ पैरो और कमर मे दर्द का रहना। विशेष रूप से उकडू बैठने के बाद उठने पर तकलीफ होना। ◆ थोडा सा भी श्रम करने पर सासू फूलना व अधिक थकान मालूम होना। ◆ सुबह सोकर उठने पर या दातून करने पर जी मिचलाना। ◆ भूख मे निरन्तर कमी महसूस होना तथा वजन मे गिरावट आना।

– वरिष्ठ गुर्दा रोग विशेषज्ञ रीजेन्सी अस्पताल कानपुर

'मानव मात्र के सर्वतोमुखी उत्थान में महर्षि दयानन्द का योगदान

गताक से आगे

सत्य बाला

ऐसे ही सक्रान्ति युग मे नवयुग के नियामक महान क्रान्तिकारी समाज सुधारक जन उद्धारक नारी जाति के परम हितैषी उन्नायक एव उद्धारकर्त्ता महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का अवतरण हुआ। शत शत वर्षो से उत्पीडित प्रताडित नाना सामाजिक अन्यायो अत्याचारो से जर्जर भग्न हृदय शोषित और उपेक्षित नारी की करूणाजनक और दयनीय अवस्था देख स्त्री जाति के प्रति सन्मान और श्रद्धा पूरित उदार हृदय महर्षि दयानन्द विकल एव व्यथित हो उठे और उन्होने तत्क्षण नारी जाति के उद्धार हेतु दृढ सकल्प कर लिया। दहेज प्रथा और सती प्रथा जैसी क्रूरतम और अन्याय पूर्ण प्रथाओ को जड से उखाड फेकने हेतु स्वामी जी ने डट कर विरोध किया और अभियान चलाया। दृढ व्रती स्वामी जी ने घोषणा की कि दहेज लेना और देना दोनों ही जघन्यतम अपराध हैं। दुर्दशाग्रस्त अभागी विधवाओ के लिए 'विधवा विवाह का प्रावधान किया और वैदिक विधि से उन का सुयोग्य वरो से पुनर्विवाह सस्कार कर उन्हे पुन सौभाग्यवती और सुखी बनाया।

६ नारी समानता आन्दोलन

सरदार बल्लभ भाई प्टेल के मतानुसार महर्षि दयान्न्द नारी जाति को पूज्यनीय मानते थे। उन्होने पाच हजार वर्षों के उपरान्त सबल स्वरो मे यह घोषित किया कि यत्रनार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता। अर्थात जहा नारी जाति की पूजा होती है वहा देवता निवास करते हैं। वैदिक काल मे उपरोक्त आदर्श सिद्धान्त के प्रतिपादन द्वारा नारी के प्रति घोषित किए गए सन्मानजनक और श्रद्धा समन्वित वाक्य वस्तुत उसके गौरव गरिमा और महानता के द्योतक है। इसी आदर्श सिद्धान्त के आधार पर वैदिक काल मे नारी को परम श्रद्धा और सन्मान का पात्र समझ उसे दवी गृह लक्ष्मी तथा गौरव पूर्ण महिमामय मातृत्व के पद पर प्रतिष्ठित किया गया था और उसे पुरुष के समान अधिकार भी प्राप्त थे। पर इसके ठीक विपरीत मध्यकालीन युग मे नारी की वैदिक कालीन गरिमा गौरव स्वतन्त्रता एव अधिकार पूर्णतया समाप्त कर दिए गए और उसको परतन्त्रता की श्रृखलाओ में आबद्ध करते हुए बाल्यावस्था मे पिता के युवावस्था मे पति के और वृद्धावस्था मे पुत्र के अधीन रहने का प्रावधान किया गया। **स्त्री शूद्रोनाधीयताम** जैसे पाखण्ड पूर्ण सूत्र द्वारा नारी के लिए वेदपाठन शिक्षा प्राप्ति एव उपनयन सस्कार आदि को भी धर्म विरुद्ध समझ उसे वचित कर दिया गया। महाकवि तुलसीदास प्रभृति द्वारा भी 'ढोल गवार शूद्र पशु नारी ये सब ताडन के अधिकारी समान अशिष्ट शब्दो द्वारा नारी को ताडन का अधिकारी बताया गया। और आजन्म मन वचन कर्म से पति की पूजा और सेवा करना ही उसके जीवन का एक मात्र लक्ष्य और धर्म समझा गया। यही नहीं उसे पति की भोग्या क्रीत दासी सम विलासिता का साधन माना गया। पति द्वारा नाना अत्याचार अन्याय निर्मम व्यवहार एव उत्पीडित किए जाने पर भी पति के अन्धे बहरे असमर्थ क्रोधी और गुण विहीन होने पर भी पत्नी को उसे भगवान का रूप समझ उसकी पूजा और सेवा करनी चाहिए क्योकि तन मन और अन्तरात्मा से पति की सेवा करने से ही नारी स्वर्ग प्रप्ति की अधिकारिणी बन सकती थी अन्यथा उसे नरक की असह्य यन्त्रणाए भोगनी पडेगी। इसी तथ्य के आधार पर तुलसी दास जी ने भी घोषित किया अन्ध बधिर क्रोधी अतिदीना ऐसे हु पतिकर किए अपमाना नारी पाव यमपुर दु खनाना। इस प्रकार तुलसी प्रभृति कवि जनो ने न केवल नारी की स्वतन्त्रता और अधिकारो का ही हनन किया प्रत्युत उस के लिए सर्वथा अनुपयुक्त सीमाओ ओर प्रतिवन्धो का प्रावधान कर उसे अशिक्षा परदा प्रथा द्वारा पुरुष की दासी बनाकर घर की चारदीवारी मे ही बन्दी बना असूर्य पश्या और कूपमण्डूक बना दिया गया। पर नारी जाति के प्रति सन्मान और श्रद्धापूरित हृदय वाले महर्षि दयानन्द ने नारी की उपरोक्त दुर्दशा से खिन्न और व्यथित होकर उसके उत्थान हेतु दृढ सकल्प किया। नारी जाति को अज्ञानता एव अशिक्षा के गर्त्त से निष्कासित कर उसे शिक्षित और स्वतन्त्र बनाने का भरसक प्रयत्न किया। समाज मे प्रचलित दूषित प्रथाओ और रूढियो की दासता की अभेद्य लौह श्रृखलाओ मे आबद्ध पद दलित शोषित उत्पीडित पुरुष कीक्रीत दासी एव उस की वासना पूर्ति की साधन मात्र अधिकार वचिता अपने समस्त प्राचीन गौरव गरिमा और मान सन्मान से रहित उपेक्षित नारी हेतु उन्होने उचित सन्मान अधिकारो एव समाज मे उसके प्रतिष्ठित सन्माननीय पद की घोषणा की। नारी की शिक्षा दीक्षा पूजा अर्चना पूर्ण स्वतन्त्रता और समाज मे उसे पुरुष के समान अधिकार दिलाने हेतु वह कटिबद्ध हो गए और अभियान और आन्दोलनो के सचालन द्वारा उसे समाज और पुरुष के दासत्व के बन्धनो से मुक्त कराने हेतु भरसक प्रयत्न किया। नारी को मातृत्व के प्रतिष्ठित पद पर आसीन कर उसे पुन वैदिक कालीन परम श्रद्धा और गरिमा की पात्र गृहलक्ष्मी और देवी के पद पर विभूषित किया और समस्त समाज के मानव मानस मे पुन नारी जाति के प्रति श्रद्धा और सन्मान के भाव जागृत कर उस के लुप्त गौरव को पुन प्रस्थापित किया। महर्षि दयानन्द के नारी उत्थान और उसे समानता प्रदान करने सम्बन्धी शुभ प्रयत्नो के फलस्वरूप ही आज की उच्च्य शिक्षा प्राप्त नारी प्राचीन रूढिगत परतन्त्रता के अभिशाप से मुक्त हो कर स्वतन्त्र वातावरण मे विचरण करती हुई देश के अगणित उच्च्य प्रतिष्ठा पूर्ण एव उत्तरदायित्व पूर्ण पदो पर आसीन है। विभिन्न महिला सगठनो की स्थापना और सचालन द्वारा वह अपने प्राचीन लुप्त गौरव स्वतन्त्रता एव समान मे समाज अधिकारो की प्राप्ति हेतु कृत सकल्प और प्रयत्नशील है। आज की नारी विभिन्न शैक्षाणिक सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रो मे उच्च्य पदो पर प्रतिष्ठित होकर अपनी शैक्षाणिक योग्यता तीव्र बुद्धि सूझबूझ और कार्य कुशलता का परिचय द रही है। यही नहीं वह लोक सभा और राज्य सभा सम देश की सर्वोच्च राजनीतिक सस्थाओ मे मन्त्री ... पर आसीन हो कर आधुनिक भारत की जटिल राजनीतिक समस्याओ को सुलझाने मे भी अपनी योग्यता और क्षमता का परिचय दे रही है। आज वे लोकसभा और राज्यसभा मे ३३ प्रतिशत पदो की प्राप्ति हेतु भी सघर्ष रत हैं। यही नहीं वह देश के सर्वोच्च राजनीति के प्रधान मन्त्री के पद पर भी प्रतिष्ठित होकर योग्यता पूर्वक देश की बागडोर सम्हाल ने मे सक्षम और समर्थ हुई है।

यही नहीं आधुनिक युग की शिक्षित नारी वकील न्यायाधीश राज्यपाल मुख्यमन्त्री आदि महत्वपूर्ण और उत्तरदायित्व पूर्ण पदों पर भी आसीन है।

अत उपरोक्त विवेचन से स्पष्टतया सिद्ध हो जाता है – कि नारी जाति के उत्थान समाज मे उसे मान सन्मान और समान अधिकार प्रदान कराना एव उसे वैदिक कालीन गौरव पूर्ण पद पर प्रतिष्ठित कराना महर्षि दयानन्द के जीवन का प्रमुख ध्येय था।

सक्षेप मे आज भारत के आध्यात्मिक सामाजिक धार्मिक शैक्षणिक एव राजनीतिक क्षेत्रो मे दृष्टिगोचर होने वाली महान क्रान्ति का एक मात्र श्रेय देव दयानन्द के साहसिक प्रयत्नो पर ही निर्भर है। वस्तुत वह सत्यार्थो मे नवयुग के निर्माता मा[illegible] वादी अछू[illegible] और नारी जाति क [illegible] और उद्धारकता थ।

– डी ११३ शिव विहार रोहतक रोड दिल्ली ४७

आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ का निर्वाचन

पदाधिकारी व अन्तरग सदस्य



१	प्रधान	आचार्य श्री जगद्देव नैष्ठिक
२	उपप्रधान	श्री जयनारायण आर्य
३	उपप्रधान	डॉ० मालती आर्या
४	उपप्रधान	श्री सत्यवीर शास्त्री
५	उपप्रधान	श्री शिवनाथ सिह
६	मन्त्री	श्री लक्ष्मीनारायण भार्गव
७	उपमन्त्री	श्री ललितमोहन नायक
८	उपमन्त्री	श्रीमती राजेश हाण्डा
९	उपमन्त्री	श्री प्रल्हाद प्रसाद आर्य
१०	उपमन्त्री	श्री गोविन्द तास्के
११	उपमन्त्री	डॉ० व्यकटाचार्य
१२	कोषाध्यक्ष	श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य
१३	पुस्तकाध्यक्ष	श्री सजीव कुमरा

अन्तरग सदस्य

१ श्री जयसिह गायकवाड २ श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव ३ श्री दीनदयाल आर्य ४ श्री प० देवदत्त शर्मा ५ श्री यशपाल जानवाणी ६ श्री कृष्णलाल आर्य ७ श्री देवेन्द्रदत्त शर्मा ८ श्री केशव प्रसाद पाठक ९ श्री हेमराज आर्य १० श्री श्रीपालसिह आर्य ११ श्री भुवनलाल आर्य १२ श्री सुरेन्द्रपाल आर्य १३ डॉ० दिलीप मानकर

आर्य महिला सम्मेलन एवं दान वितरण समारोह सम्पन्न

प्रथम जिला स्तरीय आर्य महिला महासम्मेलन दिनाक २६ २७ अक्तूबर २००१ को आर्यसमाज मन्दिर बीगोपुर मे बडी धूम-धाम से मनाया गया। सम्मेलन का उद्घाटन ध्वजारोहण के साथ किया गया। इस अवसर पर आर्य जगत की विदुषी बहन कलावती जी एव बहन प्राची आर्या सिरसली (उ०प्र०) ने आज के भौतिक युग मे नारी उत्पीडन कन्या भ्रूण हत्या दहेज सती प्रथा बलात्कार एव देव दासी कुप्रथाओ के बीच पिसती कराहती नारी के विभिन्न पहलुओ पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला।

सम्मेलन के मुख्य अतिथि जिला महेन्द्रगढ के उपायुक्त डॉ० आर० पी० लाग्यान ने राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरीटेबल ट्रस्ट नागपुर (उप कार्यालय बीगोपुर) द्वारा दी जाने वाली सहायता राशि को अपने कर कमलों से वितरित किया। जिसमें दयानन्द सेवाश्रम बीगोपुर २१००० रुपये कन्या गुरुकुल महाविद्यालय समीर पेठ (आन्ध्र प्रदेश) २१००० रुपये कन्या गुरुकुल महाविद्यालय जरोडा (महाराष्ट्र) २१००० रुपये कन्या गुरुकुल महाविद्यालय पचगाव भिवानी (हरियाणा) २१००० रुपये रामलीला कमेटी कोटपूतली (राजस्थान) ११००० रुपये ग्राम शिक्षा समिति बीगोपुर ५००० रुपये श्री कृष्ण छात्रावास नीम का थाना (राजस्थान) ५१,०००/- रुपये तथा अन्य गुरुकुलों के विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की।

— [illegible] आर्य, मन्त्री आर्य समाज बीगोपुर

महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज के नाम से अपरिचित क्षेत्रों में वैदिक संस्कृति का प्रचार

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर के वेद प्रचार कार्यक्रम के तहत न्यास की प्रचार मण्डली के प० रघुनाथ सिह वेदभूषण तथा प० नौबतराम वान० के मेवाड के आदिवासी ग्रामो मे प्रथम बार दयानन्द का सन्देश भजनों एव प्रवचनो के माध्यम से प्रसारित किया। दिनाक २३ अक्टूबर से ६ नवम्बर के पखवाडे में उदयपुर एव डूगरपुर जिलो के देवपुरा धावडिया पलोदडा जावरमाइन्स झाडोल केजड थाना सराडा चावण्ड बिछीवाडा डूगरपुर देवल खेरवाडा एव परसाद ग्रामो के माध्यमिक उच्च माध्यमिक विद्यालयो के अध्यापको एव छात्र छात्राओ को वैदिक संस्कृति एव दयानन्द के व्यक्तित्व एव कृतत्व की जानकारी दी। कुछ ग्रामो के सार्वजनिक स्थानों पर यज्ञ एव भजनोपदेश आयोजित हुए। लगभग ६३६० व्यक्ति प्रचार से लाभान्वित हुए।

इस प्रचार अवधि मे वेद प्रचार चल वाहन से लगभग ३७००/- रुपये का आर्ष साहित्य का विक्रय हुआ। इन ग्रामो के ४६ पुरुष महिलाओ ने वेद प्रचार मडल की सदस्यता ग्रहण कर श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास से अपना सम्बन्ध स्थापित किया।

— *स्वामी तत्वबोध सरस्वती, अध्यक्ष*

स्वाध्याय द्वारा प्रभु दर्शन

बिना प्रकाश के कोई चीज नहीं देखी जाती। परमात्मा को देखने के लिए बाहर व भीतर के दोनों प्रकाश का होना आवश्यक है। बाहर का प्रकाश — वैदिक विद्वानो योगाचार्यो एव वेदो के स्वाध्याय से प्राप्त होता है तथा भीतर का प्रकाश प्रभु की उपासना एव योग साधना द्वारा प्राप्त होगा तब शरीर मन बुद्धि एव आत्मा के आवरण दूर होकर आत्मा में ज्ञानाग्नि प्रकट होकर साधक को अपने हृदय मन्दिर मे प्रभु का साक्षात्कार करा देगी।

मनुष्य (आत्मा) परमात्मा के इतना सन्निकट है कि वह उससे कभी दूर नहीं हो सकता फिर भी वह उसे देख नहीं पाता। वेद माता कह रही है — हे मानव ! यदि तू परमात्मा को अपनी आखो से ही देखना चाहता है तो तू उसके अमर काव्य — (वेद एव ब्रह्माण्ड रचना) को देख।

वेद विश्व ज्योति भगवान के ज्ञान की किरणो रश्मियो से भगवान और इस विश्व को देखो।

अन्ति सन्त न जहाति, अन्ति सन्त न पश्यति।
देवस्य पश्य काव्य न ममार न जीर्यति।। *अथर्व० १०-८-३२*

जब प्रत्येक व्यक्ति (स्त्री एव पुरुष) योग जीवन पद्धति पर चलकर अपने जीवन का सुधार (सर्वांगीण विकास) कर लेगे तत्पश्चात् विवाहित होने पर वैदिक सस्कारो द्वारा प्रभु के इस आदेश — जनया दैवय जनम का पालन करके दिव्यगुणी सन्तति को जन्म देगे तथा माताये वेद की इस शिक्षा — स्त्री हि ब्रह्मा वभूविथ (ऋ० ८-३३-१६) को आत्मसात करके सृष्टि की ब्रह्मा बन जाएगी। तब प्रत्येक परिवार का सुधार होकर समाज एव राष्ट्र स्वय ही सुधर जाएगा तथा समस्त विश्व समाज स्वर्गधाम बन जाएगा।

योगियो और ऋषियो के हृदय से ही विश्व कल्याण विश्व सुधार की धाराये प्रवाहित होती हैं।

सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद दु खभाग्भवेत।।

अत व्यक्ति और समाज सुधार मे योग का सर्वाधिक महत्व है।

महर्षि दयानन्द ने विश्व को नई दिशा दी

आधुनिक भारत क निर्माता व महान सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने धर्म की वैज्ञानिक परिभाषा करके विश्व को नई दिशा दी। वैदिक सस्कृति से अनभिज्ञ पाश्चात्य प्रवाह मे बहते सैकडो युवको को उन्होने स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए प्रेरित किया। ये विचार पूर्व सासद श्री प्रेमसिह 'शेर' ने आर्यसमाज न्यू मोती नगर के ३६ वें वार्षिकोत्सव पर बोलते हुए कहे।

उन्होंने इस अवसर पर श्रीकृष्ण गोपाल सेठ सुरेश टण्डन, जितेन्द्र भारती प्रेम प्रकाश प्रदीप गम्भीर आदि कार्यकर्ताओं को त्रिशूल व वैदिक साहित्य देकर सम्मानित भी किया।

महर्षि दयानन्द के उपकारो को याद करते हुए वैदिक विद्वान डॉ० महेश विद्यालकार ने कहा मानवता के कल्याण व पाखण्डो को दूर करने के लिए उन्होने १६ बार विष पिया व नारी जागृति वेद प्रचार अछूतोद्धार व हिन्दी सेवा के रचनात्मक कार्य किए। डॉ० शिव कुमार शास्त्री तीर्थराम आर्य बलदेवराज आर्य जगदीश आर्य स्वामी अचलानन्द सरस्वती ने महर्षि दयानन्द के बलिदान दिवस पर अपने विचार रखे।

नवरात्र एवं विजय दशमी पर्व समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज रामकृष्णपुरम (सेक्टर-६) नई दिल्ली पिछले ४ वर्षों से प्रतिवर्ष नवरात्र एव विजय दशमी के पावन पर्व पर वेद प्रचार का कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। नवरात्रों मे प्रतिदिन सायकाल विभिन्न परिवारो मे यज्ञ प्रवचन द्वारा वैदिक धर्म एव सिद्धान्तों का प्रचार किया जाता है। इस कार्य के लिए आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वानो को आमन्त्रित करता है।

इन कार्यक्रमो के परिणाम स्वरूप आर्यसमाज रामकृष्ण पुरम (सेक्टर-६) की सदस्य सख्या इस समय लगभग ६०-७० तक पहुच गई है जबकि इस क्षेत्र मे सरकारी कर्मचारियो का वास अल्पकालीन ही होता है। इन परिस्थितियो मे किसी भी आर्यसमाज की सदस्य सख्या ६०-७० तक पहुचना एक बडी उपलब्धि ही मानी जाएगी। साप्ताहिक सत्सगो मे भी प्राय इतनी ही उपस्थिति रहती है।

नवरात्रो मे आयोजित पारिवारिक यज्ञ सत्सगो के पश्चात रविवार दिनाक २८ अक्तूबर २००१ को विजय दशमी पर्वोत्सव का सामूहिक यज्ञ द्वारा समापन हुआ जिसमे उन परिवारो को यजमान बनाया गया जिन्होने नवरात्रो मे अपने घर पर पारिवारिक यज्ञादि का आयोजन किया था।

बृहद् यज्ञ के पश्चात् डॉ० महेश विद्यालकार आ० श्याम देव शास्त्री व आ० विरेन्द्र विक्रम के सारगर्भित प्रवचन हुए। इस अवसर पर एक बाल प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमे ६ बच्चो ने भाग लिया। विषय था आर्य समाज के नियमो की व्याख्या। सभी वक्ताओ को उनके उत्साह वर्धन के लिए पुरस्कार भी दिए गए।

अन्त मे ऋषि लगर द्वारा समारोह का समापन हुआ। इन सारे कार्यक्रमो की स्थानीय लोगो ने बहुत प्रशसा की और भविष्य मे आर्य समाज की विभिन्न गतिविधियों मे सहयोग करने का आश्वासन दिया।

— *रणवीर सिह प्रधान*

शोक संवेदना

मारीशस हिन्दी लेखक सघ मे राजधानी पोर्ट लुई मे आर्य सभा के भवन मे अपने जुटाव मे अमेरिका मे हवाई जहाजों के हादसो मे घटी दुर्घटनाओ के कारण दुखी जनो और उनके परिवारों के प्रति शोक सम्वेदना प्रगट की और उन की आत्मिक शान्ति तथा विश्व कल्याण के लिए प्रार्थना की।

मान्य प्रधान डाक्टर मुनीश्वरलाल चिन्ताम प्रधान पण्डित धर्मवीर धूरा शास्त्री वाक्वा मन्त्री इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ साहित्यालकार।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 25 11-2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेन्स
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2001 in NDPSo on 22/23-11-2001

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस समारोह

ज्ञान प्राप्त करके समाज को मार्गदर्शन देना जीवन का मुख्य उ[illegible] है

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान मे रामलीला मैदान मे मनाया गया। इस समारोह मे राज्य सभा सदस्य श्री बी०पी० सिघल मुख्य अतिथि थे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन सभामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य ने मुख्य अतिथि का महर्षि दयानन्द के चित्र तथा साहित्य आदि प्रदान करके स्वागत किया।

श्री बी०पी० सिघल ने कहा कि आर्यसमाज और सनातन धर्म में मूर्ति पूजा तथा कुछ अन्य सैद्धान्तिक पक्षों के अतिरिक्त यदि इन्सानियत की दृष्टि से देखा जाए तो किसी प्रकार का भेद भाव आज कल की परिस्थितियो को देखते हुए उचित प्रतीत नहीं होता। उन्होंने कहा कि एक ही ईश्वर के हम सब उपासक हैं सारी प्रकृति मे उद्देश्यहीन तो कोई जड पदार्थ भी नहीं है। अत शरीरधारी आत्माओ के उद्देश्यहीन होने का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता। केवल जीना हमारा उद्देश्य नहीं है बल्कि बुद्धि के पूर्ण विकास और उसके अन्य मानवो के हितार्थ प्रयोग को हमे उद्देश्य समझना चाहिए। अन्य बन्धुओ के दुख बाटना और सुख देना हमारे जीवन का उद्देश्य है।

कन्द्रीय सूचना और प्रसारण मन्त्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने समारोह मे भाग लेने पर असमर्थता प्रकट कर दी थी परन्तु एक प्रेरणादायक लिखित सन्देश भेजकर उन्होने महर्षि दयानन्द की स्मृति मे अपनी श्रद्धाजलि इन शब्दो में व्यक्त की –

पुनरुत्थान युग के नेताओ मे स्वामी दयानन्द का स्थान अप्रतिम है। इन्हें विवेकानन्द लोकमान्य तिलक मदन मोहन मालवीय और महात्मा गाधी जैसे नेताओ का अग्रणी माना जा सकता है। स्वामी दयानन्द पहले ऐसे व्यक्ति थे जिन्होने भारत भारतीयो के लिए' की घोषणा की। स्वामी दयानन्द में मानव सम्वेदना की बहुत व्यापक और आन्तरिक क्षमता थी। इसलिए घर से निकलने के पश्चात उन्होने चौबीस वर्ष देश मे भ्रमण करने में बिताए और व्यक्तिगत मोक्ष के मार्ग को भूल कर समाज उद्धार में प्राण पण से लग गए। स्वामी दयानन्द का प्रादुर्भाव लोगों को रूढियों के कारागार से मुक्त कराने और जातिबन्धन तोडने के लिए हुआ था। उनका आदर्श था आर्यावर्त। उठ जाग आगे बढ। समय आ गया है नये युग मे प्रवेश कर।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस का आयोजन इस महान विभूति के लिए परम श्रद्धाजलि है। यह अहसास दिलाता है कि स्वामी दयानन्द आज भी उतने ही प्रासगिक सदैव रहे हैं। इस अवस[illegible] असीम वदन।

इस समारोह मे वैदिक विदुषी डॉ० शशिप्रभा कुमार ने नारी जाति को प्रेरित करने से सम्बन्धित प्रेरक उद्बोधन देते हुए कहा कि दीपावली पर लोग लक्ष्मी की पूजा करते है परन्तु पर्व को एक लकीर की तरह केवल पारम्परिक रूप मे मना लेना ही काफी नहीं। उन्होने आत्मा को दीपक की तरह बनाने पर बल दिया जिससे हमारी आत्मा का प्रकाश समाज के लिए मार्गदर्शक बन सके।

वैदिक विद्वान श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने दिए के कार्यों और सिद्धान्तो पर प्रवचन करते हुए कहा कि समस्त शक्तियो का स्वामी होने पर भी दिये का तब तक कोई महत्व नहीं होता जब तक वह जलना प्रारम्भ न करता है। इसी प्रकार जैसे ही दीया रूपी व्यक्तित्व त्याग और तपस्या द्वारा जलना प्रारम्भ करदे तो अन्धकार एव अज्ञानता का निराकरण प्रकाश और ज्ञान द्वारा स्वमेव हो जाता है।

जिसके हृदय मे दया है, जिसकी वाणी सत्य से सुशोभित है, जिसका शरीर परहित मे लगा हुआ है, कलि भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता है।

इस कार्यक्रम मे डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री तथा स्वामी आनन्दवेश ने भी अपने विचार प्रकट किए। सभा की अध्यक्षता वैद्य इन्द्रदेव ने की तथा सचालन डॉ० शिवकुमार शास्त्री ने किया।

पजाब केसरी के पत्रकार एव फोटोग्राफर श्री सुनील डोगरा को हवन कुण्ड तथा वैदिक साहित्य भेट किया गया जिन्होने श्री विमल वधावन एडवोकेट की प्रेरणा पर दैनिक यज्ञ का सकल्प लिया।

✡✡✡

बेचूबीर (बरही) मेले में २०वां वैदिक धर्म प्रचार समारोह

शुक्ल एकादशी केशुभ अवसर पर बेचूबीर (बरही) मेले मे कार्तिक शुक्ल नवमी दशमी एव दिनाक २४ से २६ नवम्बर २००१ को जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा मीरजापुर–सोनभद्र के तत्वावधान मे वैदिक धर्म प्रचार का कार्यक्रम सुनिश्चित किया गया है। उक्त वैदिक धर्म प्रचार समारोह मे आर्य जगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक मुर्धन्य विद्वान एव सन्यासी पधार रहे हैं।

अत सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि उक्त मेले मे इष्ट मित्रों सहित अधिक से अधिक सख्या मे पहुचकर वैदिक धर्म प्रचार स्थल पर उपस्थित रहकर विद्वानो उपदेश एव प्रवचन से लाभ उठावे तथा मानव समाज की उन्नति में सहभागी बने। इस आयोजन मे तन मन धन से सहयोग प्रदान कर कार्यक्रम को सुफल बनावें तथा यश अर्जन करें।

इस अवसर पर स्वामी रामानन्द परिव्राजक प० सत्यप्रकाश आर्य भजनोपदेशक प० रामअधार शास्त्री डॉ० अशर्फीलाल शास्त्री प० रामयश पुष्पजीवी पधार रहे हैं।

आर्यसमाज न० ३ के स्वर्ण जयन्ती अवसर पर आर्य महासम्मेलन

आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद की सभी समाजो के सहयोग से आर्यसमाज न० ३ एन० आई० टी० फरीदाबाद अपने स्वर्ण जयन्ती महोत्सव पर आयोजित होने वाले आर्य महासम्मेलम में आप सभी को हृदय से आमन्त्रित करते हुए अनुरोध करती है कि अपनी समाजो सस्थाओं तथा अपने इष्ट मित्रो सहित इसमें भाग लेकर आर्यों की एकता एव शक्ति का परिचय देने के लिए तन मन व धन से सहयोगी बनकर कृतार्थ करें।

इस अवसर पर महिला सम्मेलन युवा सम्मेलन पुस्तकालय भवन का उद्घाटन राष्ट्र रक्षा सम्मेलन सहित १०१ कुण्डीय महायज्ञ का आयोजन किया गया है। अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाए।

अंग्रेजी के प्रति मोह समाप्त हो

सार्वदेशिक साप्ताहिक ३० दिसम्बर २००१ के अक मे प्रकाशित श्री शिवकुमार गोयल का लेख अग्रेजी भाषा की गुलामी मे कब तक जकडे रहोगे पढा। कुछ इसी प्रकार की वेदना से व्यथित प्रस्ताव चम्पारण जिला आर्यसभा की बैठक मे लाया गया था। भारत से अग्रेज चले गए परन्तु अग्रेजियत नहीं गयी। हम जब किसी पदाधिकारी के पास आवेदन पत्र लिखते हैं तो श्रीमान तथा महाशय लिखते हैं परन्तु जब उसी पदाधिकारी से मिलने का अवसर आता है तो हम 'सर' कहने में सकोच नहीं करते और बडे गर्व से सर जी का स्वागत करते हैं। परिवार मे बच्चे की मा अपने दुधमुहे बच्चे को भी मम्मी पापा सिखलाने कहलवाने मे गर्व एव आनन्द महसूस करती है। अब तो हम देख रहे हैं कि अग्रेजी के पिटठू बच्चो से अपने को डैडी फिर डैड कहलवाने लगे हैं। जिस परिवार में बच्चे अपने पिता को डैडी तथा डैड कहते हैं। उस परिवार को सम्रात नहीं एडवास कहा जाता है। जबकि बच्चे ने पहले ही पिता को डेड (मृत) साबित कर दिया। आज हमारी सस्कृति कहा जा रही है। भारत के लोग क्या कारण है कि अग्रेजी के मोह में इतने लिप्त हैं। हम सिर्फ हिन्दी की दुर्दशा पर रोना रो रहे हैं फिर कब तक इस प्रकार रोते रहेगे राग अलापते रहेंगे। दिनाक १५–१६ दिसम्बर २००१ को विद्वानो की नगरी वाराणसी मे और कल भारतीय साहित्य परिषद का राष्ट्रीय अधिवेशन होने जा रहा है। अब देखना है कि हिन्दी के हितैषियों द्वारा वाराणसी में किस प्रकार का रोना रोया जाता है। हमने बहुत प्रवचन उपदेश किया। अब प्रवचन उपदेश की आवश्यकता नहीं रह गयी है। कौन उपदेश को सुनने के लिए तैयार है। अब उपदेश नहीं अमल करने की आवश्यकता है। व्यवहार में लाने की आवश्यकता है। आर्य समाजी बनना तथा आर्यसमाज आर्यसमाज मे आ जाना परस्पर दोनों भिन्न बाते हैं। आर्यसमाज सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वय गुजराती भाषा भाषी थे परन्तु उन्होंने अपनी सभी रचनाए हिन्दी में ही किया है।

अब तो अग्रेज भारत से विदा हो गए हमें अब अग्रेजी के प्रति मोह को त्यागकर हिन्दी अपनाने का सकल्प करना चाहिए।

— [illegible] कुमार गुप्त, मन्त्री
आर्यसमाज [illegible], पूर्वी चम्पारण

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १५८८, पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २ (फोन [illegible]) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड, नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन [illegible])। सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाइट - http://www.whereisgod.com

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
ओ३म्
वेद
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद
सार्वदेशिक
साप्ताहिक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र



वर्ष ४० अक ३२ २ दिसम्बर से ८ दिसम्बर २००१ तक दयानन्दाब्द १७८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ सम्वत २०५८ मा०शी०कृ० ५
एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान एवं स्वतन्त्रता संग्राम के महानायक

श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव का आकस्मिक निधन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान एव महान देशभक्त श्री वन्देमातरम रामचन्द्र राव जी का दुखद देहावसान २७ और २८ नवम्बर के बीच रात्रि में सुशुप्ता अवस्था मे ही हो गया। वे विगत ४ वर्षो से अस्वस्थ थे। उनके देहावसान की सूचना प्राप्त होते ही सार्वदेशिक सभा कार्यालय मे डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री की अध्यक्षता में एक शोक सभा आयोजित की गई। डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री तथा सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने वन्देमातरम जी के जीवन से सम्बन्धित प्रेरणादायक घटनाओ को याद करते हुए उन्हे भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की और इसके पश्चात सभा कार्यालय बन्द कर दिया गया। उनके देहावसान का समाचार सुनकर समूचा आर्यजगत शोकाकुल है। श्री वन्देमातरम जी का चिन्तन एव विचारधारा उच्च दार्शनिकता से परिपूर्ण थी।

आन्ध्र प्रदेश को निजाम के शासन एव नियन्त्रण से मुक्त कराने मे श्री वन्देमातरम जी की बडी महत्वपूर्ण एव गम्भीर भूमिका रही।

१९३८–१९३९ मे हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के दौरान अपनी युवावस्था में रामचन्द्र राव ने जेल यात्रा के द्वारा देश भक्त सम्पन्न आर्यसमाज के माध्यम से अपना योगदान दिया। जेल में अग्रेज अफसरों के आदेश पर एक नितान्त क्रूर मुजरिम के द्वारा युवक रामचन्द्र को पेड से बाधकर २३ कोडे लगाने के आदेश दिए गए। इस आदेश का क्रियान्वयन प्रारम्भ किया गया तो पहले कोडे ने ही जान निकालकर रख दी। लगभग १६ कोडे लगने के बाद युवक रामचन्द्र मूर्छित हो गया। अपनी उच्च आध्यात्मिक और आत्मिक शक्ति के बल पर मातृभूमि का दीवाना युवक हर कोडे पर पहले से ऊंची आवाज में वन्देमातरम का उच्चारण करता था।

कष्ट, त्याग, तपस्या और बलिदान का [illegible] सात्विक [illegible] है। परिणामत सारे देश मे इस घटना की कोटि कोटि प्रशसा होने लगी। प्रशसा की यह ध्वनि राष्ट्रनायक वीर सावरकर के कानो तक भी पहुची। उन्होंने युवक रामचन्द्र को मुम्बई मे एक बहुत बडी जनसभा मे आमन्त्रित किया। यह शर्मीला युवक मित्रों के आग्रह पर सभा मे तो पहुच गया परन्तु भीड का एक अग बनकर खडा हो गया। वीर सावरकर जी ने इस घटना का उल्लेख उस जनसभा मे दिए अपने उद्बोधन मे किया। उन्होने कहा कि यदि रामचन्द्र मेरे आमन्त्रण को स्वीकार करके इस जनसभा मे उपस्थित हुआ हो तो मच पर आए। इस घोषणा के बाद साथियो के आग्रह पर रामचन्द्र राव जी को मच तक ले जाया गया जहा वीर सावरकर जी ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया और कहा कि आज के बाद इस युवक के नाम के साथ 'वन्देमातरम' शब्द उपाधि की तरह प्रयोग किया जाए। वीर सावरकर जी की इस घोषणा को समूचे देश ने आदेश की तरह स्वीकार किया और तभी से रामचन्द्र राव वन्देमातरम



श्री वन्देमातरम रामचन्द्र राव

श्री वन्देमातरम जी ने १९४८–१९४९ मे हैदराबाद पुलिस एक्शन के दौरान लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल को हर प्रकार की गोपनीय सूचनाए उपलब्ध कराई और कई बार मौत के मुह मे जाकर भी मातृभूमि की रक्षार्थ कई महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न किए। सरदार पटेल के अतिरिक्त कै० एम० मुन्शी के साथ भी वन्देमातरम् जी का विशेष मेल जोल बना रहा।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद वन्देमातरम जी ने लोकतान्त्रिक व्यवस्थाओ के माध्यम से राजनीतिक भ्रष्टाचार के विरुद्ध भी कडा मोर्चा लिया।

७० के दशक मे श्री वन्देमातरम जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्कालीन प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी के विशेष प्रयास द्वारा इस सभा के साथ जुडे। कई वर्षो तक श्री वन्देमातरम जी सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान रहे। १९९४ में उन्होंने सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद को सुशोभित किया।

श्री वन्देमातरम् जी के परिवार मे उनकी धर्मपारायणा पत्नी एक विवाहित पुत्री दुर्गेश नन्दिनी तथा एक विवाहित पुत्र आदित्य प्रताप हैं। आदित्य प्रताप का विवाह स्वर्गीय श्री सूर्यदेव जी की सुपुत्री के साथ हुआ।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य ने श्री वन्देमातरम के निधन को राष्ट्र की एक अपूर्णीय क्षति बताया है

सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने श्री वन्देमातरम के परिवार को भेजे शोक सन्देश मे कहा है कि मेरे जीवन मे राष्ट्रवादी और आध्यात्मिक विचारो को प्रदान करने वाले दो ही महापुरुष थे – स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा वन्देमातरम् रामचन्द्र राव। वे स्वय को श्री वन्देमातरम जी का मानस पुत्र मानते हैं। उन्होने कहा कि श्री वन्देमातरम जी के मुख एव लेखनी से निकला एक एक शब्द आज भी जीवन्त प्रतीत होता है और भविष्य मे भी उनके विचार हमारी प्रेरणा बनते रहेगे।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा की सूचना पर आर्यसमाज हनुमान रोड ने स्वामी दिव्यानन्द एव श्री सोहनलाल पथिक जी के कार्यक्रम के पश्चात श्री वन्देमातरम् जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई।

आर्यसमाज दीवानहाल मे भी श्री वन्देमातरम् जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने के लिए एक शोक सभा का आयोजन किया गया।

श्री वन्देमातरम जी का आन्तिम संस्कार २८ नवम्बर को पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार हैदराबाद मे ही किया गया। उनकी स्मृति मे शनिवार १ दिसम्बर २००१ को मध्याह्न् ३ बजे उनके निवास स्थान पर ही शोक सभा आयोजित की गई है।

समस्त आर्य सस्थाओ सभाओ और समाजों से निवेदन है कि वे श्री वन्देमातरम् जी के प्रति श्रद्धाञ्जलि प्रस्ताव उनके सुपुत्र श्री आदित्य प्रताप को १४–३–१७८ गोशा महल कमला निलयम हैदराबाद के पते पर भेजे।

सार्वदेशिक सभा की धर्म प्रचार समिति की बैठक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गठित समितियो मे सर्वप्रथम धर्म प्रचार समिति की बैठक इस समिति के अध्यक्ष डॉ० स्वामी सत्यम् जी के निर्देश पर सयोजक श्री सोमदत्त महाजन द्वारा २ दिसम्बर २००१ रविवार को दोपहर ३ बजे आर्यसमाज मन्दिर सी० ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली–५८ मे आयोजित की गई है।

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

वैदिक धर्म का प्रचार चार दिवारी में नहीं हो सकता



स्वामी तत्वबोध सरस्वती

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान स्वामी तत्वबोध सरस्वती जी का पूर्वनाम हनुमान प्रसाद चौधरी था। आपने करोडो रूपयो की जायदाद छोडकर सन्यास ही नहीं लिया अपितु स्वय सन्यास लेने के साथ–साथ अपनी अर्जित विशाल धन सम्पदा को वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार मे लगा दिया है। नवलखा महल मे श्रीमददयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास के द्वारा स्वामीजी एक गम्भीर मिश्नरी की तरह दिन–रात प्रचार कार्य मे जुटे हुए हैं।

सत्यार्थ प्रकाश भवन मे देश–विदेश से लगभग २२५ लाख दर्शक पधार चुके है। जिनमे अधिकतर वैदिक विचारधारा से अपरिचित थे– इनमे से ५५२१३ नर–नारियो को इस पावन स्थल से प्रथम बार यहा नियुक्त विद्वानो द्वारा उन्हे देव दयानन्द के व्यक्तित्व व कृतित्व तथा विचारधारा का परिचय प्राप्त हुआ। यहा आने वाले प्राय दर्शकगणों के मन मस्तिष्क मे प्रश्न होता था कि यह भवन क्या है ? इसका क्या इतिहास तथा महत्व है ? और जब इन प्रश्नो के उत्तर मे महर्षि जी के देश व जाति के हितार्थ किए गए कार्यों से परिचित कराया जाता है तो अधिकाश की प्रतिक्रिया होती थी आर्यसमाज जैसी गौरवशाली परम्परा व महर्षि दयानन्द जैसे महापुरुष आज देश के लिए अत्यन्त आवश्यक है। इसी वैचारिक प्रेरणा के फलस्वरूप ८७२०६१/– रुपये का आर्ष साहित्य यहीं से विक्रय हुआ (जिसमे हिन्दी के ३८७५, गुजराती के ६४ मराठी के ४४ लाइट आफ ट्रूथ ४० कुल ४०५३ सत्यार्थ प्रकाश विक्रय हुए) एक ही स्थान पर ५५२१३ लोगों को वैदिक विचारधारा का परिचय व ८७२०६१/– रुपये साहित्य प्रचार पर मेरी नजर मे सन्तोष किया जा सकता है पर इतने पर ही बस नहीं करना है।

स्वामी जी ने उदयपुर शहर तथा आसपास के क्षेत्रों में वेद प्रचार मण्डल के द्वारा भी एक विशाल कार्य सम्पन्न करके दिखाया है। उनके कार्यों की रेखा इतनी लम्बी हो चुकी है कि शायद ही कोई अन्य व्यक्ति इससे बडी रेखा खींच पाएगा।

स्वामीजी का मानना है कि ससार मे वैदिक धर्म का प्रचार करना आर्यसमाज का असली काम है और महर्षि देव दयानन्द का यही सन्देश है कि जिस कदर यह काम अपने में महान है उतना ही प्रयत्न साध्य है। हमने महर्षि की प्रचार शैली को त्याग दिया तथा अपने आपको आर्यसमाज की चार दिवारी मे कैद करा लिया। अकेले महर्षि जी ने बहुत कम समय मे स्वय पैदल घूम–घूमकर अनेको तकलीफो/अपमानो को सहनकर वैदिक सस्कृति का प्रचार–प्रसार किया। आज आने–जाने के साधन उपलब्ध हैं– प्रचार के उत्कृष्ट साधन उपलब्ध होते हुए भी आर्यों द्वारा प्रयत्न मे कमी आने से वेद प्रचार के पवित्र कार्य मे शिथिलता आ गई। इस कमी को दूर करने के लिए हमने नारे दिए –

वेद प्रचार के लिए समाजो से बाहर निकलो।

लोग हमारे पास न आएगे, हमे उनके पास जाना होगा।

महर्षि दयानन्द की वेद प्रचार शैली अपनाओ।

इन अनुकरणीय क्रियात्मक प्रयासो से वेद प्रचार के कार्य मे उल्लेखनीय प्रगति आई।

(क) मई १९९८ मे सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अन्तर्गत वद प्रचार मण्डल इकाई का गठन कर इसके तहत करीब दस लाख की लागत से एक प्रचार वाहन तैयार किया गया और इसे प्रचार के सभी आधुनिक साधनो से सुसज्जित कर तथा इसमे हर तरह के आर्ष साहित्य उपलब्ध करा कर प्रचार कार्य शुरू कराया। करीब २००००/– रुपये मासिक खर्च (एक उपदेशक एक भजनोपदेशकमय ढोलवादक साहित्य विक्रयकर्ता वाहन चालक मय हैल्पर) से प्रचार कार्य शुरु किया।

इस भजन मडली को ग्राम–ग्राम भेजते हैं और यज्ञ से कार्यक्रम शुरू कराकर भजन प्रवचन कराते हैं। दूसरे ग्राम मे जाने से पूर्व उस वक्त तक प्रचार कराते रहते हैं जब तक कमसे कम एक व्यक्ति वेद प्रचार मडल का सदस्य न बन जाता है।

इस प्रचार शैली का ही परिणाम है जिन स्थानो पर देव दयानन्द/वेद/आर्यसमाज का नाम भी लोग नहीं जानते वहा जागृति आई जैसा वहा बने वेदप्रचार मडल के सदस्यो से स्पष्ट है।

दिनाक १४–१–१९९८ से ३१–८–२००१ तक २५७३० किलोमीटर की यात्राकर ३१५ ग्रामों व नगरो मे हजारों नर–नारियों को वैदिक विचारधारानुकूल प्रवचन/उद्बोधन प्रदान किए। यज्ञ वैदिक सत्सग व सस्कार सम्पन्न कराए। लगभग ५२६७२/–रुपये का साहित्य वाहन के माध्यम से विक्रय किया गया। इसके अतिरिक्त लगभग ३२०००/–रुपये का प्रचार साहित्य वैदिक धर्म का परिचय यज्ञ दर्शन (ट्रैक्ट) व सत्यार्थ प्रकाश निशुल्क वितरित किया गया।

(ख) अब तक वेद प्रचार मडल के निम्न सदस्य बने हैं –

वार्षिक सदस्य

सरक्षक सदस्य २२
प्रत्येक ५०००/– योगदान
प्रतिष्ठित सदस्य ६२
प्रत्येक १०००/– योगदान
सहयोगी सदस्य ८४७
प्रत्येक १००/– योगदान
समय दानी २५ कुल सदस्य ६६१

आजीवन सदस्य

सरक्षक सदस्य १
प्रत्येक ५१०००/–योगदान
प्रतिष्ठित सदस्य ७
प्रत्येक ११०००/– योगदान
सहयोगी सदस्य १११
प्रत्येक ११००/– योगदान

कुल सदस्य ११६

स्वामी तत्वबोध सरस्वती जी के द्वारा राजस्थान में किए जा रहे ये कार्य मेरी दृष्टि मे सारे विश्व में एक असमानान्तर प्रयास के रूप मे स्वीकार करने योग्य हैं।

समूचे विश्व के आर्यजनो को इस विवरण से पवित्र प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए और सकल्प लेना चाहिए कि वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार मे अब और अधिक लापरवाही ठीक नहीं।

आप जितने भी प्रयास करते हैं उनसे अन्य लोगों को भी प्रेरणा मिलती है। अत आइए आज ही सकल्प करे कि हम किस माध्यम से किस रूप मे और कितना सहयोग प्रचार कार्यों में आहूत कर सकते हैं।

– विमल वधावन *वरिष्ठ उप प्रधान*

गुरुकुल आमसेना उडीसा के स्वर्णपदक विजेता

नवापारा जिला अन्तर्गत गुरुकुल आमसेना उडीसा महर्षि दयानद विश्वविद्यालय रोहतक हरियाणा द्वारा मान्यता प्राप्त गुरुकुल स्कीम मे ब्रह्मचारी दिलेश्वर आर्य (दिव्येश्वर) ने व्याकरणाचार्य की परीक्षा देकर आचार्य वर्ग मे सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया इन्होने म०द०वि० विद्यालय द्वारा आयोजित दशवे दीक्षान्त समारोह मे हरियाणा के राज्यपाल श्री बाबू परमानन्द जी के कर कमलो से गोल्ड मेडल (स्वर्णपदक) एव आचार्य की उपाधि और प्रमाण पत्र प्राप्त किया।

दिलेश्वर आर्य ने आचार्य श्री धर्मानन्द जी सरस्वती आचार्य धनञ्ज्य जी शास्त्री के चरणो मे रहकर एव अध्ययन कर अथक परिश्रम से व्याकरणाचार्य की परीक्षा देकर ८०० टोटल अक मे से ६०३ नम्बर ७५ प्रतिशत लाकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। अत सभी गुरुजनों एव विद्वानो को आभार जताया।

आर्यसमाज, श्रीनिवास पुरी, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आपकी अपनी आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव दिनाक ३–१२–२००१ सोमवार से ९–१२–२००१ रविवार तक बडी धूम धाम के साथ आर्य समाज मन्दिर के विशाल प्रागण मे मनाया जा रहा है। जिसमे उच्च कोटि के विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

आपसे प्रार्थना है कि आप अपने इष्ट मित्रो एव परिवार सहित पधार कर धर्मलाभ उठावे तथा उत्सव की शोभा बढावे।

आर्यसमाज कायमगज का वार्षिक महोत्सव

आर्यसमाज कायमगज का वार्षिक उत्सव बडे हर्षोल्लास के साथ दिनाक ६ ७ ८ एव ९ दिसम्बर २००१ गुरुवार शुक्रवार शनिवार एव रविवार तक आर्यसमाज मन्दिर बजरिया राधाकिशन कायमगज जनपद फर्रुखाबाद मे मनाया जायेगा।

इस अवसर पर ७.३० बजे से १०.३० तक यज्ञ भजन एव प्रवचन मध्यान्ह १ बजे से ५ बजे तक विविध सम्मेलन रात्रि ७ बजे से १० बजे तक भजन एव प्रवचन होंगे।

आप सभी धर्म प्रेमी बन्धुओं माता बहिनो से प्रार्थना है कि उपर्युक्त कार्यक्रमानुसार परिवार एव इष्ट मित्रों सहित पधार कर आत्मोन्नति के अनुपम अवसर से लाभान्वित होकर उत्सव की शोभा बढ़ाए।

आर्यसमाज के अधिकारियो से निवेदन

व्यक्तिगत व समानान्तर सस्थाओ से सावधान रहे

निवेदन है कि दिल्ली में कुछ व्यक्ति आर्यसमाज के नाम पर व्यक्तिगत या सामूहिक सस्थाए चला रहे हैं जिनका सम्बन्ध न तो दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा या प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से है और न ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ है। इसी असवैधानिक तर्ज पर अब कुछ समानान्तर सार्वदेशिक/प्रातीय प्रतिनिधि सभाए भी बन रही है। हमारी आप से विनम्र प्रार्थना है कि आप इस तरह की सस्थाओं को किसी प्रकार का कोई सहयोग न दे क्योंकि ये सभी सस्थाए आर्य समाज के ससाधनों का व्यक्तिगत लाभ के लिए दुरुपयोग कर रही है जो आर्यसमाज के सगठन के लिए बडी घातक है।

इस सम्बन्ध में यदि आप को कोई सशय हो तो हम से तुरत सम्पर्क करें।

– प्रकाश त्यागी (मन्त्री), सुरेन्द्र रैली (प्रधान)
केन्द्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्यसमाज सी ब्लॉक प्रीत विहार, दिल्ली

चिरस्मरणीय व्यक्तित्व • आर्यसमाज के बलिदानी • कीर्तिर्यस्य स जीवति

स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती

पूर्व–जन्म के प्रबल सस्कारो से २३ वर्ष तक पशु चराने वाला व्यक्ति भी आगे चलकर सस्कृत का प्रौढ विद्वान् वक्ता तथा तेजस्वी नेता बन सकता है इसका उदाहरण यदि हम देखना चाहे तो हमे राजगुरू धुरेन्द्र शास्त्री (स्वामी ध्रुवानन्द) के जीवन पर दृष्टि डालनी होगी। धुरेन्द्र जी का जन्म मथुरा जिले के पानी गाव मे एक कुलीन ब्राह्मण–कुल मे हुआ। उनके माता–पिता ग्रामीण जीवन जीने के अभ्यस्त थे। परिस्थितिया कुछ ऐसी थी कि उन्होने इस बालक को पढाने की कोई आवश्यकता ही नहीं समझी। युवावस्था–पर्यन्त वह ग्राम के पशुओ को चराने मे ही लगा रहा।

इसी युवक को वीतराग स्वामी सर्वदानन्द जी ने अपनी सस्कृत पाठशाला के अन्तेवासी छात्रो के लिए भोजन बनाने हेतु रख लिया। अब यह धूरिया नामक दरिद्र ब्राह्मण छात्रो का भोजन बनाने लगा। पनी आयु के छात्रो को सस्कृत पढते दखकर धूरिया के मन मे भी पढ़न की इच्छा जागृत हुई। उसने अत्यन्त सकोच के साथ जब अपने मन की इस इच्छा को स्वामी जी के समक्ष प्रकट किया तब दयालु आचार्य ने धूरिया को भी अन्य छात्रो के साथ बैठकर पढने की आज्ञा दे दी। इस प्रकार इस बालक का विद्यारम्भ हुआ।

धूरिया मे प्रतिभा तो थी ही। अब जो उसे शिक्षा ग्रहण करने का अवसर मिला तौ परिश्रम और प्रतिभा का मणि–काञ्चन–सयोग हो गया। स्वामी सर्वदानन्द जी ने धूरिया का नाम बदलकर धुरेन्द्र नाम दे दिया। १६१६ मे धुरेन्द्र ने पजाब विश्वविद्यालय की शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। 'महाराजा सस्कृत कॉलेज जयपुर' मे नव्य–न्याय का अध्ययन भी किया। तदनन्तर वे काशी गए और वहा दर्शनो का विस्तृत अध्ययन किया। स्वामी सर्वदानन्द जी का ससर्ग पाकर धुरेन्द्र जी में आर्यसमाज की सेवा का भाव जागृत हो चुका था।

१६२३ मे वे शुद्धि–सभा आगरा मे सम्मिलित हुए। अगले वर्ष इस सभा के मन्त्री चुन लिए गए। १६२६ में 'शुद्धि सभा का कार्यालय लखनऊ आ गया तब धुरेन्द्र जी भी लखनऊ चले आए। १६२६ से १६२८ तक धुरेन्द्र जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल व बिहार द्वारा सचालित गुरुकुल वैद्यनाथ धाम मे आचार्य–पद पर कार्य किया।

इन्ही दिनो शाहपुरा (राजस्थान) के नरेश ने आचार्य जी को अपनी राजधानी मे बुलाया। उन्हे युवराज सुदर्शनदेव जी को शिक्षित करने का भार सौपा गया। राजाधिराज उम्मेदसिह ने शास्त्री जी की योग्यता तथा विद्वत्ता से प्रभावित होकर उन्हे 'राजगुरु की उपाधि प्रदान की। कालाकाकर देवास तथा झालावाड आदि अनेक राज्यो के नरेशो ने भी शास्त्री जी को सम्मानित किया ओर उनके श्रद्धालु भक्त बने। देशी नरेशो के व सदा श्रद्धाभाजन रहे।



स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती

राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री ने हैदराबाद आय स याग्रह क चतुथ सर्वाधिकारी के रूप मे भाग लिया। १५०० सत्याग्रहियों के साथ धार्मिक अधिकारो की रक्षा के लिए कारावास की कठोर यातनाए सहीं। इस सत्याग्रह मे आर्यसमाज की विजय हुई। शास्त्री जी कारागार से मुक्त होकर जब उत्तरप्रदेश पहुचे तो स्थान–स्थान पर इस विजयी सेनापति का भव्य स्वागत हुआ। वे सयुक्त प्रान्त की आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान–पद पर निर्वाचित हुए। इस पद पर रहकर आप ने आर्य सगठन को दृढ किया।

१६४६ मे जब सिन्ध की मुस्लिम लीग सरकार ने सत्यार्थप्रकाश के १४वे समुल्लास पर प्रतिबन्ध लगाया तब महात्मा नारायण स्वामी खुशहालचन्द खुर्सन्द चादकरण शारदा तथा महाशय कृष्ण आदि आर्य नेताओ के साथ आप ने कराची मे सत्याग्रह किया।

धुरेन्द्र जी की देश के स्वाधीनता सग्राम मे की गई सेवा भी उल्लेखनीय है। वे महात्मा गाधी के अनुयायी के रूप मे विभिन्न सत्याग्रहो मे सम्मिलित हुए और कारागार की यातनाए सहन की। उत्तर प्रदेश तथा बिहार के राजनैतिक नेताओ से आपका घनिष्ठ परिचय था और वे उन्हे अत्यन्त सम्मान की दृष्टि से देखते थे।

७ जुलाई १६५४ को सर्वदानन्द साधु आश्रम (जिला अलीगढ) मे धुरेन्द्र शास्त्री ने सीधे ब्रह्मचर्य आश्रम से सन्यासाश्रम मे प्रवेश किया। उनके दीक्षा–गुरु स्वामी आत्मानन्द सरस्वती थे। सन्यासी बनकर वे धर्म–प्रचार के लिए निकल पड। तमिलनाडु, कर्नाटक आन्ध्रप्रदेश तथा केरल के सुदूरवर्ती प्रान्तो मे आपने व्यापक भ्रमण किया। सर्वत्र वैदिक धर्म की दुन्दुभि बजाई।

१६५६ मे स्वामी ध्रुवानन्द पूर्वी अफ्रीका की प्रचार–यात्रा पर निकले। उगाण्डा जजीबार आदि देशो का व्यापक भ्रमण किया। वहा से वे बर्मा तथा मॉरिशस गए आर जमकर आर्य विचारधारा का प्रचार करत । इस प्रकार लगभग चार वर्षो तक भारत से बाहर रहकर आपने धर्म–प्रचार किया।

स्वामी जी मे सगठन–कौशल सभा–सस्थाओ के सचालन की क्षमता तथा नेतृत्व के सभी गुण थे। 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आपको अपना प्रधान चुना। इस प्रकार भूमण्डल के समस्त आर्यो के नेतृत्व करने का आपको अवसर मिल गया। जहा–जहा आर्यो मे अथवा उनकी सस्थाओ मे विवाद का कोई स्वर उभरता स्वामीजी उन–उन स्थानो पर जाकर इनका समाधान करते। आर्यो मे उनके प्रति प्रगाढ विश्वास था। वे स्वय भी अनुशासनप्रिय थे और आर्यजनो से भी अपेक्षा रखते थे कि वे भी अनुशासन का कडाई से पालन करे। किसी सभा या सगठन के लिए उसके सदस्यो की सिद्धान्तप्रियता तथा अनुशासन–प्रियता को वे आवश्यक समझते थे।

जब आर्यसमाज ने गोहत्या विरोध मे प्रचण्ड आन्दोलन चलाया तब उसका नेतृत्व भी स्वामी ध्रुवानन्द के कन्धो पर ही आया। स्वामीजी ने भारत मे होने वाले गोवध की क्रूर एव त्रासदायक समस्या को गहराई से समझा। देश मे सर्वत्र घूमकर गोहत्या के विरोध में प्रबल जनमत जागृत किया। १६६४ मे आपने सिगापुर तथा थाईलैण्ड आदि दक्षिण–पूर्वी देशो का भ्रमण किया। वहा के प्रवासी भारतीयो को वैदिक धर्म का सन्देश दिया।

शास्त्रीजी का शास्त्रीय ज्ञान अत्यन्त विशद तथा प्रामाणिक था। वे आर्यों मे प्रचलित कर्मकाण्ड को उसके वास्तविक रूप मे अनुष्ठित करने के पक्ष मे थे। सन्ध्या एव यज्ञ आदि के विधि–विधान का ऋषि दयानन्द–निर्दिष्ट पद्धति के अनुसार ही पालन करने–कराने के प्रबल आग्रही थे। यदि वे इस कर्मकाण्ड के आचरण मे किञ्चित भी त्रुटि देखते या कहीं उनहे स्वतन्त्रता और मनमानी बात दिखाई पडती तो एक सच्चे उपदेशक के रूप मे वे उस त्रुटि की ओर सकेत करते तथा आर्यो से उसे सुधरवा लेते।

१६६५ के जून मास मे आप बम्बई पहुचे। आर्यश्रेष्ठि श्री प्रतापसिह शूर जी वल्लभदास के कच्छ कैसल मे आपका निवास था। उन्हे २६ जून को प्रात ही दिल्ली क लिए वायुयान लना था। हवाई पतन जाने के लिए आप कार मे सवार हो रहे थ कि आपको थोडी घबराहट के साथ एक वमन हुआ। इससे पहले कि आपको चिकित्सा उपलबध कराई जाती प्रबल हृदयघात से स्वामी ध्रुवानन्द का निधन हो गया उनकी अन्त्येष्टि दिल्ली मे हुई।

✡✡✡

अब तो कुछ करना ही पड़ेगा !!

– ज्ञानचन्द

कुछ वर्ष पूर्व भारतीय मूल के ब्रिटिश लेखक सलमान रश्दी ने अपनी सैटनिथ वर्सेज पुस्तक मे पराक्ष रूप से कुरान की कुछ मजाक उडा दी थी तथा हजरत मुहम्मद और उनके इलहाम पर छद्म टिप्पणिया कर दी थी तो पूरे विश्व मे प्रलय मच गई थी। भारत समेत सारे ससार मे आतक व्याप्त हो गया था। सलमान रश्दी को मार डालने के लिए फतवा जारी कर दिया गया था। मुसलमान लोग अपने धर्म और अपने धर्मगुरु तथा अपनी धर्म पुस्तको पर किसी अविश्वासी एव आलोचक की टिप्पणी की इजाजत नहीं देते। वे किसी लेखक के आलोचना के अधिकार को इस सीमा तक स्वीकार ही नही करते कि hह उनके निजी विश्वास और आस्था क आधार पर आक्षेप करे। उनका मानना है कि आप उनके गुरु उनकी आकाशो द्भव कुरआन पर विश्वास नही कर सकते तो आपको उस पर कीचड उछालने का अधिकार नही हे और आलाचना से आप दूर ही रहे। आपको हमारी पुस्तक छूने की भी जरूरत नही है।

मुस्लिमो के तक की गहराइ म यह भावना और यह आस्था रहती है कि धर्म गुरु ओर धम ग्रन्थ तर्क की सीमा मे आते ही नहीं। इल्हाम और अन्त प्रेरणा किसी अन्य ही स्तर की चीजे है। वैज्ञानिक की लेबोरेटोरी मे परीक्षण पटल उन्हे लाने का अधिकार किसी को भी नही है। पिता माता का सम्मान भाई बहन का शुद्ध प्रेम मित्र मित्र के अन्तरग सम्बन्ध देश व जाति के प्रति बलिदान की भावना इन सबका तर्क युक्ति और परीक्षणो से कोई वास्ता नहीं है। इन्हे यदि समझना हो तो आस्थापूर्ण हृदय विश्वासपूर्ण मस्तिष्क और श्रद्धाकवलित प्राण लेकर ही इस ओर आए अन्यथा दूर ही रहे।

किसी सुदूर काल मे यही बात भारतीय प्रायद्वीप के आर्यो मे भी थी। वेद निन्दक को वे नास्तिक व समाजशत्रु मानते थे। वेद–विधि को न अपनाने वाला अविधि ग्रस्त व्यक्ति समाज के लिए बाधा जाना जाता था। इन वेद विरोधियो को वे द्विस वृत्र स्तेन आदि नामो से पुकारते थे। इस प्रकार की मनोवृति वालो को वे दूर कर देना उचित मानते थे। उन्हे मार देना वे दुष्कर्म नहीं अपितु समाज के लिए लाभक सत्कृत मानते थे। इस मान्यता के भी अपने सुदृढ सुपुष्ट तर्क और आधार हैं। आर्यो की ऐसी मान्यता किसी अहवादी कारण या स्वय को श्रेष्ठ कहलाने की प्रवृत्ति के कारण नहीं थी। आग्रह घृणा और वैर भाव की वृत्ति इसके पीछे नहीं थी। बल्कि समाज की भलाई समाज के विकास व्यक्ति के विकास समाज व व्यक्ति के समन्वित विकास के प्रति अवरुद्ध और स्वार्थी वृत्ति को वे हेय त्याज्य अत विनाश्य मानते थे। विश्व के सरक्षित विकास मे प्रेरणा प्रचोदयन एव स्वस्ति का पथ व आधार प्रस्तुत करने वाले ज्ञान सूक्ति समुच्चय वेद को ही आप अस्वीकार करेगे तो आप विधिहीन स्वेराचारी स्वच्छन्दवृत्ति के आवारा और समाज विरोधी स्वार्थी व्यक्ति बन जाएगे। स्वैराचारी विधि से निबर्न्ध नियमो को न मानने वाले समाज की व्यवस्था पृथ्वी के विकास और सृष्टि के आधारभूत मन्तव्य को न मानने वाल लोग जगत के क्षय के ही साधन बनेगे उसकी जय ओर उसके प्रश्रय के साधन न बनेगे। यह वृत्ति प्रगति व विकास को अवरुद्ध ही करेगी। ऐसे लाग या तो स्वय या समधान न बदल जाए अन्यथा बहु सख्यक स ा न क हित उसके विकास की अनवरुद्ध प्रगति के हित मे नष्ट कर देना वेदिक काल म सहर्ष सानुमोदित कृत्य था। वैदिक काल मे ऋशिगण आच्छादित राजतत्र था अथवा श्रेष्ठी सामाजिक प्रतिष्ठितो का गणतन्त्र था। आज का मूढ प्रजातन्त्र जनतन्त्र नामक मूढ तत्र या भीड तन्त्र नहीं था। यह मूर्ख मान्यता है कि गवार भ्रात उद्विग्न कपटी छली समाज विरोधी – सब प्रकार मे जन बराबर के अधिकारी हो शासक को चुनने के लिए तथा नियम बनाने के लिए। यह देश धरती समाज और मानवता के साथ बलात्कार है और इस बलात्कार के दूषित परिणाम स्पष्ट देखे जा रहे हैं।

आज के विविध–सास्कृतिक युग मे बहुपक्षीय सभ्यताओ से युक्त एव वैज्ञानिक प्रगति के प्रभाव से उत्पन्न हुई अत्यधिक स्वैच्छाचारी स्वतन्त्रता के काल मे ऊपर वर्णित वैदिक वृत्ति घृणित व जनविरोधी मानी जाएगी। इस प्रकार की वृत्ति को आज हम बर्बर अप्रजातान्त्रिक घृणित व जनविरोधी मानेगे। मुसलमानो की जबरन धर्म परिवर्तन की वृत्ति को निश्चय ही घृणास्पद कहा जा सकता है क्योकि वेद शास्त्रार्थ मे विश्वास करते हैं शस्त्रार्थ तो एक मजबूरी है वेद के लिए।

दृष्टि भेद व युक्ति भेद से आप अनास्थावादी आलोचक को स्वतन्त्रता देना गलत भी कह सकते है सही भी। परन्तु भारतीय मनस्विता सामुदायिक हित के आगे व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की सीमा रखता है। इसे इस प्रकार जाचना होगा।

किसी अल्पसख्यक या बहुसख्यक समाज की आस्था के केन्द्र बिन्दु ग्रथ या ग्रन्थकार पर आपको आक्षेप लगाने उसे विकृत करने हास्यापद बताने या उस पर विपरीत टिप्पणी करने का हक होना ही क्यो चाहिए। वेदास्थावादी लोग किसी को बलपूर्वक आर्य बनाना नही चाहते परन्तु वेदवादियो के वेदानुमोदित पथ मान्यता पर आपको धृष्ट मन्तव्य प्रस्तुत करने की छूट भी वे कैसे दे। आज के काल मे वेद म आस्था न रखने वाले को आप मार तो नही सकते पर दुराग्रही विधान कानून का विरोधी व अत्याधिक मनमौजी व्यक्ति मार देन या कारागार म डालन योग्य हे – इससे आप अन्तमन म ।र५ ृति नही महसूस करग। बिना किसी विधिबन्धन और नियमग्रन्थन के अमेरिकी डिजाइन की पूर्ण स्वतन्त्रता विनाश घृणित विनाश की ओर ही ले जाती है। भारत के प्राचीन काल मे भी ऐसे समय आते रहे है और ऋषिगणो ने उसमे भरपूर भाग लेकर घृष्ट शासनो को बदला भी है। सुप्रसिद्ध भक्त ध्रुव की सातवीं पीढी मे उत्पन्न राजा वेन के विधि विधान रहित व्यक्तिवादी निरकुश शासन का महर्षि गणो ने वेन की हत्या करके इतिश्री कर दी थी और मानवता वादी पृथु को नरेश बनाया था जिसके कारण पृथ्वी पृथ्वी नाम की पात्रा बनी। राजा नहुत को सप्त ऋषियो ने सिहासनच्युत कर पृथ्वी पर फेक दिया था।

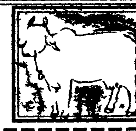
प्रश्न यह है कि आप व्यक्ति को विधान से ऊपर कैसे मान सकते हैं। वेद सहिता के रूप मे प्रस्तुत सामाजिक विधि व्यवस्था राजनीतिक आर्थिक नियमावली धार्मिक आध्यात्मिक जीवन शैली सग्रह को आप निजी रूप मे न माने परन्तु आपको उसकी निन्दा व मजाक का भी अधिकार क्यो और कैसे दिया जा सकता है। वह भी तब जबकि आपने विद्वान वेदविज्ञ ब्राह्मण ब्रह्मवेत्ता के चरणो मे बैठ कर वेद के भौतिक दैविक और आत्मिक तीनो अर्थों को तर्क व्याकरण न्याय दे योग के सुपुष्ट आधार पर न समझ लिया हो हृदयगम न कर लिया हो। वेद गुलशन नन्दा के उपन्यास नहीं है जो पढा और बात गले उतर गई। वेद न्यूटन आइस्टीन और डार्बिन या मार्क्स सरीखे लोगो से अधिक उन्नत समर्थ और गहन दृष्टि सम्पन्न ऋषियो द्वारा गृहीत परमव्योम से उतरी ईश्वर की वाणी है। इससे मजाक या इसकी निन्दा सहन की जाय तो आखिर क्यो आखिर किस लिए। कानूनो का विधान ग्रन्थो का असम्मान तो कोई भी देश या सरकार स्वीकार नहीं करती। वेद भी एक ऐसा विधान–सग्रह है जो एक बहुसख्यक जाति और सस्कृति के द्वारा स्वीकृत व यथासम्भव आचरित कानून–ग्रन्थ है। आप उनके विषय मे कैसा भी कुछ भी बोलने लिखने को स्वतन्त्र कैसे हैं। अच्छा या सटीक अध्ययन युक्त नही लिख सकते तो मुख बन्द रखिए।

बौद्ध व जैन धर्मो ने वेद के विषय मे इतना घृणित जघन्य और टोषोत्पात्क इतना कुछ लिखा है कि यदि वेदिक आर्य जन उसे पढे तो उ।। रक्त खौलने लगेगा। हिन्दु सनातनी या आय ग्रन्थो मे जैन बौद्धो के विषय मे तार्किक टिप्पणी दर्शन की युक्ति की दृष्टि से जरूर दी गई है परन्तु उनके नहापुरुषो का चरित्र हनन उनमे नहीं मिलेगा। पर जैन–बौद्ध ग्रन्थो मे अकारण व अतार्किक द्वेषपूर्ण कथनो प्रसगो की भरभार है। श्रीकृष्ण नर्क मे सड रहे अपने पापो का प्रायश्चित्त कर रहे है श्रीरामचन्द्र की सीता सहित सैकडो सुन्दर रानिया थीं हनुमान मारुतिनन्दन की ७०–७५ पत्नियां थीं। यह सब लेखन इन श्रमण मे अत्यन्त वेश्रमण ढग से दिया गया है। इस सब दूषित सामग्री पर हम कोई प्रतिक्रिया करे या नहीं यह एक बहस और वार्तालाप का विषय है। परन्तु आर्यत्व हिन्दुत्व के मौलिक आधारभूत पावन व परमपूज्य ग्रन्थ वेद के साथ धृष्टता को सहन करने की अब एक सीमा हो ही जानी चाहिए। महीधर नामक वाममार्गी पूर्वाग्रही कामलोलुप सस्कृत के आधुनिक शिष्यो और पूर्वकल्पी मानवद्वेषी अन्य धर्मी साम्प्रदायिको के अत्यन्त श्लीलतारहित प्रतिवाद व प्रवाद पूर्ण लेखनों से हमे अपने पूर्वजो की परमप्रिय थाती वेदो की रक्षा करनी ही पडेगी। भारत स्वतन्त्र है आर्य स्वतन्त्र है हिन्दु स्वतन्त्र है तो अब वेदों के सम्मान की रक्षा हित मानसिक परतन्त्रता में निबद्ध पडे रहने का क्या अर्थ !

- क्रमश



गौ-रक्षा कार्यक्रम में आप भी आहुति दे सकते हैं



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के विगत साधारण अधिवेशन दिनाक ३ एव ४ नवम्बर २००१ मे बगाल आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्य श्री चान्द रतन दम्माणी द्वारा गायमाता के विषय पर गहन अनुसधान के आधार पर कुछ प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए थे जिन्हे अधिवेशन मे सर्वसम्मति से पारित किया गया था। सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने समस्त प्रान्तीय सभाओ को एक पत्र द्वारा यह प्रार्थना की है कि इन प्रस्तावो का आर्य पत्र पत्रिकाओं के अतिरिक्त अन्य दैनिक समाचार पत्रों मे भी अधिकाधिक प्रचार प्रसार होना चाहिए। सभी सभाए आर्यसमाज तथा अन्य सस्थाए अपने पदाधिकारियो से विचार विमर्श के उपरान्त यह निश्चित करे कि वे गो रक्षा कार्यक्रम मे क्या सहयोग दे सकती है। सभी सस्थाओ के अधिकारी तथा विद्वान पाठकवृन्द अपने वक्तव्यो के साथ साथ इन प्रस्तावो मे व्यक्त सिद्धान्तो भावनाओ और सकल्पो का अधिक से अधिक प्रचार करने मे किसी प्रकार का कोई आलस्य न करे। ***सम्पादक***

प्रस्ताव १

(क) प्राणितत्वविदों (Ancient Indian Metaphisicians) ने 'गाय' का लक्षण करते हुए बताया – 'ककुदयुत – गलकम्बलवान गो । अर्थात थूह (कूहान ठाठी) तथा गले मे झालर पीठ समतल पीछे का भाग कुछ उन्नत व सामान्य ऊघ वाली (ZEBU) 'गाय' है। इसके अनुसार हमारी देशी नस्ले अथवा प्रजातिया यथा – थापरापकर हरियाणी गीर साहीवाल राठी मेवाती गगातीरी देवनी कागायम काफ्रेज ही गाय हैं आष्ट्रियन जर्सी फ्रिजियन आदि विदेशी प्रजातिया गाय नहीं कही जा सकती। हमे यह भी भली प्रकार समझ लेना होगा कि उक्त विदेशी प्रजातिया गोत्व (गौपन) हीन हैं तथा इनके साथ सकरीकरण हुई भारतीय नसल की गायो से उत्पन्न गोवश मे भी गोत्व (गौपन) जाता रहता है। यही नहीं इनसे प्राप्त दूध एक ओर सेवन मे अरूचिकर होता है वहीं दूसरी ओर इनके दग्धादि सेवन से मानव देह मे रोग सक्रमण की भावना बहुत बढ जाती है।

(ख) जहा देशी भारतीय नसले गात्वयुक्त अर्थात गाय हैं जो भारत अफगानिस्तान पारस्य तथा अफ्रीका के कुछ भागो मे जो आर्यावर्त अर्थात विशाल प्राचीन भारत के अग रहे है मे प्राप्य हैं। अन्यत्र सर्वत्र गौ की शकल का जन्तु गव्य (गोमृग) मिलता है जिसे पालतु बनाकर दुधारु तो बना दिया है परन्तू वह गोत्व (गौपन) हीन है। आयुर्वेदोक्त गव्य दूध दही घी गोबर गोमूत्र गाय में हैं। गवव्य में रचमात्र भी नहीं। पच गव्यो से जहा सामान्य रोगोपचार होता है वहीं उनसे असाध्य रोगों का निदान पाना भी सम्भव है। इस दिशा में अब तक हुए प्रयासों से उत्साहजनक परिणाम सामने आए हैं आ रहे हैं फिर भी गहन शोध ो की आवश्यकता है जो निजी सस्थानों के साथ ही विशद् राजकीय सहयोग की अपेक्षा रखते हैं।

(ग) काफ्रेज गीर थारपारकर हरियाणा मेवाती राठी गगातीरी साहीवाल देवती कागायम – ये भारतीय नसले ही गाय हैं। जर्सी होल्स्टेन फ्रिजियन आदि नहीं। गौ सवर्द्धन उपर्युक्त देशी नस्लोमे आपसी सकरीकरण से सम्भव है इसी से नस्ल सुधार एव दूध की वृद्धि भी होगी। इसके विपरीत धवलक्रान्ति के नाम पर विदेशी साड के रक्षित शुक्र से गाय को गर्भित कराना नस्ल सुधार नहीं वस्तुत यह गौ-नस्ल सहार ही है। परिणाम सामने है देशी नस्ल की गायों की नस्ल कमजोर होती जा रही है और उनकी सख्या भी तीव्र वेग से घटती जा रही है। कसाई खानो मे तथा अन्य प्रकार की देशी नस्ल के गाय बैल आदि का अधिक सख्या मे दुर्भाग्यपूर्ण ढग से काट किया जाना भी गोवश नाश का एक बडा कारण रहा है। परन्तु अब सम्भवत हम ऐसी स्थिति में पहुचे जा रहे हैं जहा से पुन सम्भलने में काफी कठिनाइया आएगी फिर भी आज जो परिस्थिति है उसे सम्भाल लिया जाए तो अच्छा है।

सार्वदेशिक सभा का यह अधिवेशन उपर्युक्त परिपेक्ष्य मे समस्त बुद्धिजीवियो विज्ञानविदो राजनीतिज्ञो शासनाधिकारियो का ध्यान परिस्थिति की गहराई की ओर आकर्षित करते हुए उनसे पुरजोर अपील करता है कि भारतीय नस्ल की ऊपरवर्णित कि~म के गौवश यथा काफ्रेज गीर थारपारकर हरियाना मेवाती राठ गगातीरी देवती साहीवाल कागायम के क आरेतत्वनाश की स्थिति को समझते हुए अविलम्ब उक्त नस्लो के किसी भी उम्र के पशु के वधपर अविलम्ब रोक लगा दिए जाने की बात को समझकर सभी आवश्यक कदम उठाए जाए तथा उनके सवर्द्धनार्थ कारगर उपाय किए जाए एव उक्त नस्लो के गोमूत्र एव गोबर के शोध कार्यो मे लगे सस्थानों, गोशालाओं को व्यापक राजकीय सहयोग प्रदान कर उनके मानवहितार्थ औषधि निर्माण कार्य को प्रोत्साहित किया जाए।

प्रस्ताव २

गाय भारतीय आत्मा का मानबिन्दु है। यह हमारी महान सभ्यता और सस्कति का प्रतीक है। भारतवर्ष का सम्पूर्ण सामाजिक आर्थिक नैतिक और आध्यात्मिक जीवन सदा से गोवश पर आश्रित रहा है। कषि ग्रामीण उद्योग धन्धे वाणिज्य और परिवहन सहित समस्त भारतीय अर्थतन्त्र गौ पर केन्द्रित है। देश की सम्पूर्ण आय का बहुत बडा अश हमे गोवश से मिलता है। आज भी भारत मे खेती का ८० प्रतिशत एव बोझा ढोने का ५० प्रतिशत काम बैलो से ही होता है। देश की ऊर्जा का सबसे बडा स्रोत गोवश है। भारत मे वैदिक काल से गोरक्षा एव गो सेवा की अविच्छिन्न परम्परा रही है। दुर्भाग्य से कालान्तर मे गोहत्या की घृणित प्रथा शुरू हुई जो अब तक जारी है। यद्यपि स्वराज्य के पश्चात हमारे सविधान निर्माताओ ने व्यापक जन आकाक्षा को ध्यान मे रखकर निर्देशक सिद्धान्त बनाया है तथापि सरकारी शक्तियो के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभावो के परिणामस्वरूप इस धारा की दी गई व्याख्या के कारण विभिन्न राज्यो मे गोवश रक्षा निष्प्रभावी हो गई है। अनुभवो ने सिद्ध कर दिया है कि गोवश की रक्षा कानून जो प्रदेशो मे बनाए गए वे त्रुटिपूर्ण हैं। बूढे और अनुपयोगी बैलो के नाम पर उपयोगी अनुपयोगी सारे गाय बैल काट दिए जाते हैं। विदेशी मुद्रा अर्जन के लालच से इस देश से गोमास तक का निर्यात हो इससे बडा अपमान हमारा और भारतीय सस्कृति का क्या होगा? अत सम्पूर्ण रक्षा हेतु अविलम्ब केन्दीय कानून बनाने की प्रक्रिया शुरू होनी चाहिए अथवा भारतीय दण्ड सहिता मे तदर्थ सशोधन होना चाहिए या फिर गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित कर सम्पूर्ण गोवश की पूर्ण परिपालना एव रक्षा का दायित्व शासन को स्वय ग्रहण कर लेना चाहिए। (नोट– राष्ट्रीय पशु घोषित कराना गोवश रक्षा एव देशोन्नति का सरलतम उपाय हो सकता है।)

यह अधिवेशन भारत सरकार से पुरजोर माग करता है कि इस दिशा मे समुचित विचार करके भारतीय सस्कति सविधान एव देश की बहुसख्यक जनता की मनोभावना का आदर करने का समुचित उपाय कर।

प्रस्ताव ३

(क) प्रत्येक गाव एव अनेक शहरा मे परम्परा से पहले एक साझी गोचर भूमि रहती थी जहा गाय बैल बछडे प्रतिदिन चरने जाते थे इससे उनके पालको का कोई अतिरिक्त वित्तीय भार नही पडता था। १९५५ के भूमि सुधार कानूनो द्वारा सम्पूर्ण गोचर भूमि भी छीन ली गई। फलत अब अनुत्पादक गाये चरने के लिए गाचर भूमि न होने से लोग गो~श को कसाइयो के हाथ बेचने को बाध्य होने लग। शनै शनै गोरक्षा की भावना भी लुप्त होती गई।

(ख) दश मे लगभग ५ गोशालाओ मे से अधिकाश की स्थिति आर्थिक दृष्टि से दयनीय हो गइ ह मान म सरकार इस ओर सगज हुइ हे फिर भी गौ के महत्व के बारे मे व्याप्त गहन अज्ञान को दूर करने का कोई प्रयास नहीं हो पाया है जिस पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है। गहन अज्ञान के कारण सामाजिक मनोवृत्ति आज गो सेवा से विमुख होती जा रही है जिसे गो सेवोन्मुख करना जरूरी हो गया है।

(ग) गोशालाओ की भूमि एव मकानो पर बहुत सारे स्थानो पर दबग लोगो ने अवैध कब्जे कर रखे हैं या करने की साजिश कर रहे हैं।

यह अधिवेशन सरकार से माग करता है कि उपर्युक्त परिस्थितियो का विवेचन करते हुए एक समिति का गठन करे जो सही आकलन करते हुए निम्न उपाय करने हेतु सरकार को अपने सुझाव प्रस्तुत करे

(१) गोवश के चरने हेतु गोचर भूमि को पुन उपलब्ध कराया जाए। (२) गोशालाओ को हदबन्दी कानून से मुक्त रखा जाए। (३) राज्य सरकारो को केन्द्रीय निर्देश जारी किए जाए कि वे गोशालाओ या गाय से सबन्धित सम्पत्तियो करे अनधिकत व्यक्तियो के चुगल से मुक्त कराने सम्बन्धित शिकायतो को प्राथमिकता देकर निपटाए। (४) गोशालाओ को आयकर से मुक्त रखा जाए।

प्रस्ताव ४

केन्द्रीय सरकार विभिन्न प्रकार के खाने योग्य तिलहन की खल्लिया तथा अन्य तरह के गोचारे का निर्यात बन्द कर दे। अपने देश मे भी इन खल्लियो तथा अन्यान्य चारों का उपयोग अन्य कामो मे होन पर रोक लगाए तथा इन वस्तुओं को खरीद बिक्री करो (Texes) से मुक्त रखा जाए।

प्रस्ताव ५

भारत का पशुधन भारतीय सीमा से सटे पाकिस्तान एव बगलादेश मे चोरी छिपे ले जाए जाने की सूचनाए अक्सर प्राप्त होती रहती हैं परिस्थिति पर नजर रखक इसे रोकने के कारगर उपाय किए जाए

प्रस्ताव सख्या ६

दश मे तथा विदशो मे समय सम पर आयोजित होने वाले शासकीय भोज मे भारत सरकार के प्रतिष्ठानो मे होटल मे जलपान गृहो मे गामास के प्रयोग प पूर्ण प्रतिबन्ध होना चाहिए। गावश के मास गोचर्म क निर्यात तथा गोमासयुक्त वस्तुअ के आयात पर प्रतिबन्ध हाना चाहिए।

प्रस्ताव ७

यह अधिवशन मठ मन्दिरो गुरुकुल एव आश्रमो स अनुराध करता है कि अपन अपन सस्थानो मे गोपालन क व्यावहारिक रूप म अधिकाधिक अपना का प्रयास करे तथा अपने नि~य नैमित्ति अनुष्ठानो मे यदि उपलब्ध हा सक गोदुग्ध आधारित व्यजना का प्रयाग करे जन साधारण का भी यह सकल्प ग्रह कर उसका पालन करना चाहिए कि ी न काइ क सामान न खरीद काम म लाए।

प्रस्ताव ८

(क) हममे गोवश पालन की भाव पुन जागनी चाहिए एव तदर्थ यह आवश्य है कि हम अपनी रोटी मे से एक अश ग के लिए जो निकाला करते थे किन्तु अ अपने मुहल्लो मे दूर दूर तक भी ग अनुपलब्ध हो गई है तो ऐसी स्थिति हमारे परिवार का गाय के लिए एक र निर्धारित कर उसे किसी ऐसी गौशाला गौसस्थान को जहा गाय यानि विशुद्ध दे नसल वाली गाय ही पाली जाती हो मारि या त्रैमासिक धनराशि (राशि कम भधिक कुछ भी हो सकती है) स्वेच्छा पू भेजना आरम्भ कर दे ताकि दैनन्दि गोसेवा की भावना हमारे परिवारो मे जग सके।

(ख) हमारे प्रत्येक परिवारो के एव विषाद (खुशी एव गमी) के अवसरो जहा विविध प्रकार से धन व्यय किया ज है वही उस उपलक्ष्य मे देश की गोशालाओ या गौसस्थानो को अपनी सह राशि (जो कम या अधिक कुछ भी सकती है) अवश्य भेजनी चाहिए गौशालाए या सस्थान शोध कार्य व एव विविध चिकित्सकीय औषधियो निर्माण कार्य मे लगे हो।

यह अधिवेशन विचार व्यक्त क है कि गौ रक्षा की भावना से जुडे सभ सेवक चाहे वे किसी भी सस्था से जु सर्वसाधारण को इस दिशा मे प्रेरित रहने का बीडा उठावे। गो सेवको के कार्य से एक ओर जहा आम लोगो के प्रति कर्त्तव्य भावना का उदय होग उन गोशालाओ एव गौ सस्थानो आवश्यक शोध कार्य मे प्रगति भी हो स

ऋषिराज दयानन्द के निर्वाणोत्सव पर प्रकाशन योजना के सदस्य बनकर

तिहरा लाभ उठाएं

सदस्यता शुल्क १००/– एक सौ रुपये केवल एकबार वर्ष मे दो बार ०० से ६०० पृष्ठो तक का अनमोल साहित्य लागत मूल्य पर १० प्रतिशत छूट सहित प्राप्त करे। तीन पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं –

१ सन्ध्यापद्धतिमीमासा – *आचार्य विश्वश्रवा वेदानुसन्धानकर्ता*
आकार २३x३६/१६ पृष्ठ ३५० सम्पूर्ण कपडे की जिल्द

२ जाति निर्णय – *प० शिवशकर शर्मा काव्यतीर्थ*
आकार २३x३६/१६ पृष्ठ ३४० सम्पूर्ण कपडे की दोरगी जिल्द

३ आदर्श नित्यकर्म विधि – सम्पादन – *स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती*
आकार २३x३६/१६ पृष्ठ १७२ आवरण चार रग मे लेमीनेशन सहित

तीनों पुस्तको का मूल्य १४५/ सदस्य बनने पर ६०/ रुपये मात्र/डॉक व्यय २/ सुरक्षित डिब्बे के अन्तर्गत प्राप्त करे।

२३ दिसम्बर २००१ अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान पर्व तक सदस्य बनाने वाले सदस्यो को यजुर्वेद भाष्य प्रथम खण्ड प० हरिशरणजी सिद्धान्तालकार का २०x३०/८ बडा साइज मे ६२० पृष्ठो वा सुरक्षित आकर्षक पैकिग मे मात्र ८०/– अस्सी रुपये मे तथा आचार्य प्रभादेव का वैदिक विनय २०x३० साइज मे ४०० से अधिक पृष्ठो का मात्र ३०/– रुपये मे/यह लाभ पूव म बन चुक सदस्य भी प्राप्त कर सकते हैं। डॉक व्यय पृथक से।

नोट इस योजना के पहले ५० सदस्यो को श्रीमती प्रतिभादेवी दाहोद द्वारा ८८ पृष्ठीय उपासना रहस्य उपहारस्वरूप भेट की जाएगी।

विशेष दृष्टव्य – इस योजना का सदस्य बनने वालो का सदस्यता शुल्क एक सौ रुपये वापिस नहीं होगा। सदस्य चाहे तो अपनी सदस्यता दूसरे के नाम स्थानान्तरित करवा सकते है।

योजना के अन्तर्गत वर्ष म दा बार जो साहित्य प्रकाशित होगा वह सदस्यो को लेना अनिवार्य होगा। योजना के अतिरिक्त साहित्य लेना सदस्य की इच्छा पर निर्भर होगा। पुस्तके सुन्दर व लागत मूल्य पर १० प्रतिशत छूट काटकर डाक व्यय सहित प्राप्त होगी। स्तर मे हम कोई समझौता नहीं करते।

इस योजना के सदस्यो को द्विमासिक पत्रिका 'वैदिक पथ ३६ पृष्ठो की जिसका वार्षिक शुल्क चालीस रुपये है मात्र बीस रुपये वार्षिक मे प्राप्त होगी।

२००२ मे प्रकाशित दो पुस्तके

त्रिदेव निर्णय – *प० शिवशकर शर्मा काव्यतीर्थ,*
आकार २३x३६/१६ पृष्ठ १८६ पक्की जिल्द जैकेट सहित चार रग मे मूल्य ५०/– सदस्यो को २५/– मे

प० बुद्धदेव मीरपुरी समग्र
– आकार २३x३६/१६ पृ० ३५० सम्पूर्ण कपडे की जिल्द दो रग मे मूल्य ८०/– सदस्यो को ४०/– मे

श्री घूडमल प्रह्लाद कुमार आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट
ब्यानिया पाडा हिण्डौन सिटी (राज०) ३२२२३०
दूरभाष - 07469-34624, 32624

सफल ध्यान के चार सोपान

– डॉ० नारायण दास

पूर्णत सुखी जीवन यापन करने के लिए आवश्यक है कि मनुष्य ध्यान को अपने जीवन का आवश्यक अग बना ले। कुछ प्रयोगो द्वारा इस तथ्य का प्रतिपादन हो चुका है कि मानव के मानसिक स्वास्थ्य के लिए ध्यान एक शक्तिशाली क्रिया है। ध्यान अशात मन को शान्ति प्रदान करता है। ध्यान की प्रक्रिया के पूव कुछ शर्तों की पूर्ति आवश्यक है। ये शर्ते योग के आवश्यक अग हैं।

भोजन के पूर्व भूख का अनुभव करते हैं। अत भोजन के लिए भूख आवश्यक है इस प्रकार निद्रा के पूर्व थकान आवश्यक है ठीक इसी प्रकार ध्यान के लिए भी ध्यान से पूर्व कुछ बाते आवश्यक हैं।

ध्यान की सम्पूर्ण क्रिया एक कला है ध्यान एक विज्ञान है ध्यान के पूर्व कुछ क्रियाए आवश्यक हैं – जैसे आसन तथा प्राणायाम। मुद्रा बध आदि क्रिया सहित किए गए आसन प्राणायामो से ग्रन्थियो की गुप्त क्रियाए व्यवस्थित एव सुचारू होती है तथा आध्यात्मिक चेतना का विकास होता है।

अब मैं कुछ ऐसे अभ्यासो का वर्णन करूगा जो ध्यान के लिए आवश्यक हैं।

सफल ध्यान के लिए चार बाते –

१ अध्यात्मिक श्वसन २ अध्यात्मिक स्थान ३ अध्यात्मिक ध्वनि ४ अध्यात्मिक स्वरूप

१ अध्यात्मिक श्वसन इसकी क्रिया इसी स्वाभाविक श्वसन क्रिया स प्रारम्भ होती है जिस विधि के द्वारा आप अभी श्वास ले रहे हैं। आगे स्थिति मे श्वास अपेक्षाकृत अभी गहरी एव लम्बी होती जाती है – श्वसन की इस क्रिया से चौबीस घटो मे २१६०० श्वसन प्रश्वसन प्रक्रिया होती है चाहे आप इस ओर सचेत रहे या न रहे।

आपको केवल श्वसन के प्रति सचेत रहना है कि आप श्वसन क्रिया कर रहे हैं। चेतना का अभ्यास स्वाभाविक श्वसन पर किया जावे इसके पश्चात उज्जायी प्राणायाम नामक श्वसन विधि का प्रयोग किया जाए।

उज्जायी प्राणायाम का अभ्यास हल्के खर्राटे लेने की आवाज के साथ किया जाता है। पच्चीस तीस बार श्वसन के बाद ध्यान करने की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। उज्जायी प्राणायाम कुछ समय तक प्रारम्भ रहती है पश्चात उसमे विराम आ जाता है। प्राणायाम मे रुकावट न आने दीजिए – अपना नियन्त्रण रखिए। इस बिन्दु पर सचेतनता आवश्यक है।

पश्चात् यही क्रिया आप "मेरुदण्ड" (आध्यात्मिक स्थान) मे करेंगे। जो हमे द्वितीय सोपान पर पहुचा देता है।

२ अध्यात्मिक स्थान – योग में मेरुदण्ड को ऊची चेतना का वाहक माना जाता है जिससे हम अपनी चेतना को ऊपर नीचे लाते और ले जाते हुए स्तरते हैं। इस उतार चढाव से श्वसन ध्वनि उत्पन्न होती है।

मूलाधार चक्र से लेकर आज्ञाचक्र तक मेरुदण्ड से सुषुम्ना मार्ग प्रश्वसन-उच्छवसन क्रिया के लिए "अध्यात्मिक स्थान" है।

३ अध्यात्मिक ध्वनि – अध्यात्मिक ध्वनि को मन्त्र कहते हैं। अब आप श्वास के साथ ओ३म का मन्त्र जोड सकते हैं। आरम्भ में प्रयास द्वारा हम चेतनापूर्वक मन्त्र का मानसिक उच्चारण करते हैं। इस लगातार प्रयास के बाद मन्त्र उच्चारण स्वत हो जाता है। यह अध्यात्मिक ध्वनि है।

यह आपके इतने अनुकूल है कि अनजाने ही आप मन्त्र की पुनरावृत्ति करते हैं। यह आप से कभी अलग नहीं होता। इसे अजपा जाप भी कहते हैं।

श्वास लेने के साथ साथ मन्त्र पर जागरुकता रखिए। इस प्रकार तीस चालीस बार श्वसन क्रिया करें।

आप अनुभव करेगे कि श्वसन में एक विशेष ध्वनि पैदा होती है इसे सावधानीपूर्वक सुनिए। इसकी तरगो से ध्वनि पैदा होती है। यह ध्वनि चेतना से स्वत उत्पन्न होती है।

श्वास छोडते समय भी ध्वनि पर एकाग्रता करे। प्रश्वास तथा श्वास के साथ दो भिन्न ध्वनियो का अनुभव होता है।

यह दो ध्वनिया "सोह" हैं। श्वास लेते समय "सो एव छोडते समय "ह" की ध्वनि होती है।

"सोह" आप की श्वसन चेतना की विचार जागरुकता है। यह द्वितीय मन्त्र है।

४ अध्यात्मिक स्वरूप – सस्कृत मे अध्यात्मिक स्वरूप को "इष्टदेव" कहते हैं। "इष्ट अर्थात इच्छित देव का अर्थ– दिव्य चेतना"।

चेतना की पकड के लिए किसी प्रतीक पर एकाग्रता अनिवार्य है। यह मानसिक अध्यात्मिक वा सूक्ष्म हो सकती है। जब आप ध्यान का तीसरा सोपान भली भाति पूर्ण कर लेते हैं तब आपका मन बिल्कुल शान्त तथा सकल्प रहित हो जाता है। अब आखे बन्द करके अपने ललाट पर चिदाकाश की धारणा कीजिए। अर्थात् अपने ललाट पर "ओ३म ख ब्रह्म" परमात्मा आकाश के समान है ललाट पर उस आकाश को देखते जाए। जैसा भी आख बन्द करने पर दीखता है उसको जागरुकता पूर्वक देखते रहे तथा अपने श्वसन पर भी नियन्त्रण रखें।

एक ऐसा समय आएगा कि आप के सामने ललाट वाला आकाश प्रकाश से भर जाएगा। यह सौम्य प्रकाश होगा जो कि आनन्द देने वाला होगा। इस स्थिति मे जितनी देर आप बैठना चाह बैठे रहे। यदि आप ने अपना कोई गुरु मान रखा है और उस पर पूर्ण श्रद्धा है तो चौथे चरण में गुरु के स्वरूप पर भी ध्यान किया जा सकता है– जो कि बहुत लाभदायी सिद्ध होता है। ध्यान की पूर्णता लुप्त हो जाता है और आप को अपने "आत्म स्वरूप की स्थिति" मे अनुभव करते हैं।

मेरे अनुभव मे सफल ध्यान के लिए उपर्युक्त चार सोपानो के अनुसार अभ्यास करने से अवश्य ही सफलता मिलती है।

ओ३म आनन्द ! ओ३म् आनन्द !! ओ३म आनन्द !!!

– प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा असम

वयम् जयेम् त्वया युजा

सार्वदेशिक सभा के नवनिर्वाचित प्रधान

सम्माननीय श्री कैप्टन देवरत्न आर्य की सेवा में प्रस्तुत हृदयोद्गार

आर्यों ने आपको प्रधान का पद दे दिया,
सार्वदेशिक सभा का पूरा नियन्त्रण है दिया।
आपने स्वीकार कर सम्मान बहुमत का किया,
हे वरेण्य प्राज्ञ ! झझटो को आपने है वर लिया।

कृत्सकल्प होकर सवारे पूर्वजो का यह चमन।
बधाई और निज प्यार देकर आज हम करते नमन।।
अभिनन्दनम ! अभिनन्दनम् !!

आशा भरी नजरो से जग का कोना–कोना हैं निहारे,
सो रहा है सूर्य क्यो कर ? टिमटिमाते हैं सितारे।
छद्म और पाखण्ड गुरुडम हर तरफ आचल पसारे,
फस रहे पीडा मे जन–जन सोचते किसको पुकारे।
दया और आनन्द का होता नहीं क्यो ? आगमन।।

कृत्सकल्प होकर सवारे पूर्वजो का यह चमन।
बधाई और निज प्यार देकर आज हम करते नमन।।
अभिनन्दनम् ! अभिनन्दनम् !!

जगमग दीपो की दिवाली आज फिर आई दुबारा,
१८८३ मे ऋषि ने पूछकर जब प्राण वारा।
एक दीपक अनगिनत दीपो को देकर ज्योति सारा
हस रहा था – देखकर छिपते अमावस का किनारा।
कोना–कोना हर्षमय उल्लास का वातावरण।।

कृत्सकल्प होकर सवारे पूर्वजो का यह चमन।
हृदय से सत्कार कर आज हम करते नमन।।
अभिनन्दनम् ! अभिनन्दनम् !!

हो रही थी ध्वस्त माना १२६ मंजिल इमारत,
छुप रहा पर सच यही है विश्व मे तालिबान आहत।
हर नए उत्साह से निर्माण हो संकल्प–राहत,
देखकर विस्मित झुके फिर विश्व का सिर दर्प उन्नत।
सस्कारित पुण्य पथ पर बढ चला आवागमन।।

कृत्सकल्प होकर सवारे पूर्वजो का यह चमन।
विवेक और सौहार्द्र लेकर आपका करते नमन।।
अभिनन्दनम् ! अभिनन्दनम् !!

देश और प्रदेश के हर शाख मे विघटन का कारण,
सोचने और खोजने का कुन्द सा होता निवारण।
धर्म की व्याख्या सरलतम मच से करते उच्चारण,
हाय ! हम खुद कर नहीं पाते उसे सार्थक व धारण।
धींगामुश्ती और कुण्ठा व्याप्त है चहुदिशि क्षरण।।

कृत्सकल्प होकर सवारें पूर्वजो का यह चमन।
हृदय के उद्गार लेकर आज हम करते नमन।।
अभिनन्दनम् ! अभिनन्दनम् !!

मनमानी हर ग्रन्थ मे, विधि में, विनियोग में पाते विविधता,
मुण्डे–मुण्डे मतिर्भिन्ना ? कैसे हो स्वस्थ सी एकरूपता।
उपदेशकों सन्यस्त जन में ललक लुप्त अर्जन की क्षमता
मचासीन वक्ता उद्घोषक भी दिखाते हैं विषमता।
आमन्त्रण भी बाटकर करना पडे पुरोगम स्थगन।

कृत्सकल्प होकर सुधारे अघतन का यह चलन।
टूटे हृदय के तार लेकर कर सके तब अनुगमन।।
अभिनन्दनम् ! अभिनन्दनम् !!

लट्ठम् लट्ठा बिन निर्वाचन वर्चस्व हित हो टन्टा–पट्टा,
बूढे अन्यमनस्क जन कहते यही कहानी खट्टा–मीट्ठा।
स्रोत धन आगम–खर्च के खोलते कहीं कच्चा चिट्ठा,
तलपट हर हालत मे मिलता शेष मे बचे केवल मट्ठा।
आख मूद अधिकारी भी करते स्वयम् आत्मा का हनन।।

कृत्सकल्प होकर उबारे उनके हृदय का आवरण।
स्वार्थ से विलगाव कलुष को छोड होवे शान्त मन।।
अभिनन्दनम ! अभिनन्दनम् !!

आर्य है। आर्यत्व का अस्तित्व सजोना सब चाहे,
ऋषि के सबल उपदेश और आदेश पर सबकी निगाहे।
दूढते विश्वास से सत्यार्थ मे सुख शान्ति राहे,
फैलता जाता है गुरुडम तिकडमो मे रख अफवाहे।
है कहीं ना विरोध का स्वर मानिए यह सच श्रीमन्।।

कृत्सकल्प होकर जगाये आत्म सम्मान कर सगठन।
युग युगो तक हो समादृत आपका सारा यत्न।।
अभिनन्दनम् ! अभिनन्दनम् !!

वसुन्धरा मे राष्ट्र भारत का हृदय स्पन्दित बिहार,
कार्य मे, उपचार मे जी जान से रहता तैयार।
नेतृत्व बिन जो निर्बल–दुर्बल और अकिचन है बेकार,
फिर भी मन के भाव लेकर भेजते बेढब उपहार।
क्षुद्र बुद्धि दीन की सौगात मे स्यात् तिक्त पन।।

गरल को देखे विचारे हो सफल जिससे निराकरण।
आपके नेतृत्व मे झड जाए सब उत्पन्न कु–कारण।।
अभिनन्दनम् ! अभिनन्दनम् !!

शास्त्र और शुद्धि की अब तक प्रेरणा मिलती रही है,
शस्त्र भी हमे चाहिए क्यो कर किसी ने ना कही है।
दे रहे है प्रेरणा अद्भुत अनोखापन यही है,
आतक के साए मे जरूरत जिसकी अपने आप ही है।
लात के भूतो का बातो से कभी न हो सकता दमन।।

यथायोग्य व्यवहार के नि :म का सच हो अब कार्यान्वयन।
सोई जाति ले अगडाई 'मरुत' समर्थ सब विधि तत्क्षण।।
अभिनन्दनम् ! अभिनन्दनम !!

[illegible] प्रसाद आर्य 'मरुत' आर्यसमाज नेमदार गंज (नवादा — बिहार)

गायत्री महामन्त्र का वैज्ञानिक प्रयोग

चिकित्सा शास्त्र की अनेक पहेलियो को पूरी तरह सुलझाने मे सक्षम गायत्री महामन्त्र का वैज्ञानिक प्रयोग देश की सीमा के अन्दर और बाहर किया जा रहा है। विभिन्न शोधो के माध्यम से प्राप्त परिणामो को व्यावहारिक रूप देने का प्रयास जोरो पर हे। जिन शारीरिक व्याधियो को दूर करने मे आधुनिक चिकित्सा पद्धति विवश हो जाती है। उसे आध्यात्मिक शक्ति के माध्यम से आदिकालीन पद्धति दूर कर देती हे।

प्राचीन काल से भारतवर्ष मे मन्त्रो द्वारा अनेक व्याधियो का उपचार किया जा रहा है। अनेक सत मुनि तथा तपस्वी उन मन्त्रो के बल पर अपनी हृदय गति व शरीर की अन्य क्रियाओ को नियन्त्रण मे रख पाते थे तथा सम्पूर्ण जीवन का लाभ ले पाते थे। धीरे–धीरे उन मन्त्रो के ज्ञान का हास हाता गया तथा उनका उपभोग भी उचित जानकारी के अभाव मे लुप्त होता गया। अभी भी अनेक सिद्ध पुरुष व महिलाए इन मन्त्रो के सफल उपयोग के कारण लाभान्वित हो रहे हैं। पर सुदृढ विधि के अभाव मे सामान्य जन इन मन्त्रो का प्रभावी उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। आदि महामन्त्र के शरीर पर पडने वाले प्रभावो को जाचा परखा गया उसके अतिरिक्त उच्च रक्तचाप हृदयगति की अनियमितताओ जीवन की लम्बाई पर इस मन्त्र के नियमित जाप करने के प्रभावो की समीक्षा की गई। प्रारम्भिक तौर पर १६ से ७० वर्ष आयु के समूह के २७७ लोगो का अपने अध्ययन का विषय बनाया। उन पर १७ दिन से लेकर १ वष तक गायत्री मन्त्र के जाप से पडने वाले प्रभाव का परीक्षण किया। इस मन्त्र के नियमित तथा उचित उच्चारण से रक्तचाप के ६० प्रतिशत से ज्यादा मरीजा मे हृदय गति भी कम हो गई। इसी तरह हृदय गति की अनियमितता के विभिन्न कारणो मे भी इस विधि से प्राप्त परिणाम अत्यन्त आशाजनक रहे है। इस विधि मे ओ३म शब्द को जितना लम्बा खीचा जा सके उतना खीचा जाना चाहिए। ओ तथा म दोनो शब्दो को एक सास मे लम्बा खीचने मे हृदय गति रक्तचाप पर तुरन्त प्रभाव पडता है। ओ म म तत्पश्चात मन्त्र को तेज गति से पढे या बोले। यदि इस मन्त्र को लगातार पाच मिनट तक हर दो घण्टे मे बोला जावे तो अत्यन्त अनुकूल प्रभाव मिलते है। परीक्षणो से यह तथ्य प्रकट हुआ है कि गायत्री मन्त्र जाप मनुष्य की जीवनी शक्ति को असाधारण रूप से बढाता है चिकित्सा विज्ञान जिसे इक्युनिटी या रोग प्रतिरोधी क्षमता कहता है वस्तुत वह प्राणशक्ति की प्रचुरता है।

प्राणशक्ति का क्षरण ही मनुष्य को रोगी बनाता है। गायत्री मन्त्र जाप प्राणशक्ति को प्रखर करता है। गायत्री जाप श्वसन क्रिया को प्रभावित करता है। श्वास को बचा कर प्राण को प्रखर बनाया जा सकता है। एक स्वस्थ व्यक्ति द्वारा (२४ घण्टे मे) २१६०० श्वास ली जाती है अर्थात प्रति मिनट मे १५ श्वास ली जाने वाली गायत्री जाप से घटकर प्रतिमिनट ७ रह जाती है। इसका सीधा अर्थ यह हुआ कि प्रतिदिन एक घण्टे जप कर व्यक्ति ५०० श्वास बढा सकता है। और निरन्तर चलने वाली यह क्रिया उसके आयुष्य मे चमत्कारिक वृद्धि कर सकती हे। मन्त्र नियमित जप करने वालो मे दीर्घायु होने तथा उच्च रक्त चाप व हृदय रोग के दौरे की कम सम्भावना होने का पता चलता है। एक ही परिवार के दो व्यक्ति इस अध्ययन मे लिए गए। उनमे से एक व्यक्ति नियमित पाठ करता है।

इस तरह के २० परिवार इस अध्ययन मे लिए गए ५ वर्षो से अधिक समय तक नियमित पाठ करने वालो मे न केवल उच्च रक्तचाप व हृदय रोग के दौरे कम थे वरन अगले तीन वर्ष भी उन रागो के होने की सम्भावना बहुत कम थी। परिणामो से अत्यन्त दूरगामी लाभ मिलन की पूर्ण सम्भावना है।

(– दैनिक जागरण से साभार)

दयानन्द सार

जिस क्षण देह मे दुर्बलता प्रतीत हो उसी क्षण
एक महान् विशालकाय व्यक्तित्व को याद करो।
जब तुम्हारे मन मे शिथिलता या कायरता का प्रवेश हो,
उसी क्षण जीवन और उत्साह से ओत-प्रोत उस तेजस्वी देश-भक्त का स्मरण करो।
जिस क्षण तुम्हारे हृदय मे मोह और विलास का साम्राज्य प्रवेश हो,
उसी क्षण धन को ठोकर मारने वाले उस नैष्ठिक ब्रह्मचारी को याद करो।
अपमान से आहत होकर जिस क्षण तुम अपनी नजर ऊँची न उठा सको,
उसी क्षण हिमालय के समान अडिग और उन्नत व्यक्ति के मुख को अपनी कल्पना मे उपस्थित करो।
मृत्यु वरण करते हुए डर लगे तो
उस निर्भयता की मूर्ति का ध्यान करो।
द्वेष भाव से उत्तप्त होकर जब तुम अपने विरोधी को क्षमा करने में हिचकिचाहट का अनुभव करो तो
उसी क्षण विष पिलाने वाले को आशीर्वाद देते हुए एक राग द्वेष से विमुक्त सन्यासी को याद करो।
वह महान व्यक्ति "महर्षि दयानन्द सरस्वती" है और यह गौरवशाली पुरुष भारतीय महापुरुषो मे अग्रणी स्थान पर विराजमान है।

– श्री रमण लाल देसाई (गुजराती उपन्यासकार)

।। ओ३म्।।
पावका न सरस्वती

दूरभाष : ६५२५६६३

निमन्त्रण पत्र

श्रीमद्दयानन्द—वेदार्ष—महाविद्यालय

११६ गौतम नगर, नई दिल्ली-११००४६

६६ वाँ वार्षिक समारोह एवं २२ वाँ चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ एवं

सत्यार्थभृत् यज्ञ

२५ नवम्बर रविवार से १६ दिसम्बर, रविवार २००१ तक

विभिन्न भव्य सम्मेलनों के साथ सम्पन्न होगा।

ब्रह्मा — आर्यजगत के प्रसिद्ध कर्मकाण्डी विद्वान वेदवेत्ता श्रद्धेय स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती। सान्निध्य — स्वामी जीवनानन्द सरस्वती।

प्रथम दिवस — अग्न्याधान एव पारायण यज्ञ व उपदेश—प्रात ८०० बजे से १० ३० बजे तक।

ध्वजारोहण — श्री चौधरी मित्रसेन जी। मुख्यअतिथि—बृजमोहन मुञ्जाल लाला मोहनलाल चोपडा।

स्वागताध्यक्ष — विद्यामित्र ठुकराल समय—१० ३० से ११०० बजे तक।

दैनिक समय — प्रात ६ बजे से १० बजे तक साय—३ बजे से ६ बजे तक।

विशिष्ट सहयोगी कुबेरदानी होता यजमान — श्री शशिकान्त सेठ ग्रीनपार्क माता कान्ता सिक्का माता विद्यावती नारग श्री ईश्वरचन्द्र सठ श्री सत्यप्रकाश खारीबावली श्री जितेन्द्र मेहता श्री योगेश मुञ्जाल श्री जे०एन० जग्गी।

विशिष्ट-सम्मेलन

१ प० क्षितीश वेदालकार स्मृति स्मारक प्रतियोगिताए — ६ १० दिसम्बर। १० ३० से १२ ३० बजे तक
२ गुरुकुल एव सस्कृत सम्मेलन तथा प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण। १० दिसम्बर बुधवार साय ४०० से ६ ३० बजे तक।
३ **महिला सम्मेलन** — प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान मे। ११ दिसम्बर मगलवार २ बजे से ४ बजे तक।
४ **आर्य सम्मेलन** — दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार सभा के तत्त्वावधान मे। १५ दिसम्बर शनिवार साय ४०० से ६ ३० बजे तक।

यज्ञपारायण कार्यक्रम

ऋग्वेद	—	२५ नवम्बर रविवार से ३ दिसम्बर सोमवार साय सवन तक।
यजुर्वेद	—	४ दिसम्बर प्रात से ५ दिसम्बर साय सवन तक।
सामवेद	—	६ दिसम्बर प्रात से ७ दिसम्बर प्रात सवन तक।
अथर्ववेद	—	७ दिसम्बर साय से १३ दिसम्बर साय सवन तक।
सत्यार्थभृत् यज्ञ	—	१४ दिसम्बर शुक्रवार प्रात से १६ दिसम्बर रविवार तक। इसी दिन चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति भी होगी।

पूर्णाहुति एवं आर्य नेताओं द्वारा उद्बोधन

समय — १६ दिसम्बर रविवार प्रात ८०० बजे से १०० बजे तक।

आमन्त्रित विद्वान्	—	श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती श्री साहिब सिह जी वर्मा (सासद) श्री डॉ० योगानन्द शास्त्री (मन्त्री दिल्ली सरकार) श्री धर्मपाल जी शास्त्री (मेरठ) प्रो० राजेन्द्र जी जिज्ञासु प्रो० धर्मवीर जी अजमेर (मन्त्री परोपकारिणी सभा)
भजनोपदेशक	—	श्री ओम्प्रकाश वर्मा श्री सत्यपाल जी पथिक श्री सत्यपाल सरल देहरादून श्री व्रजपाल जी कर्मठ।
आवश्यक पालनीय	—	यजमान दम्पती के लिए धोती एव साडी का पहनना आवश्यक होगा। ऋषिलगर वेदविद्या तथा सस्कृत-भाषा के प्रचार प्रसार के लिए दान देकर पुण्य के भागी बने।
ऋषिलंगर	—	१ बजे से ३ बजे तक रविवार १६ दिसम्बर।

निवेदक

रामनाथ सहगल
वरिष्ठ प्रबन्धक

हरिदेव आचार्य
आचार्य

राष्ट्रीय अस्मिता के उद्घोषक - दयानन्द सरस्वती

गातक से आगे

कालान्तर म स्वामी दयानन्द के स्वभाषा प्रेम के उदाहरण को सामने रख कर उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने हिन्दी के प्रचार–प्रसार यहा तक कि स्वतन्त्र भारत के सविधान मे उसे राजभाषा का स्थान दिलवाने के जो प्रयास किए उन सबका विवरण देना भी कठिन है। प्राय देखा गया है कि राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने की आवाज उठाने वाले देशभक्तो में उन लोगो की ही अधिकता रही जो स्वय हिन्दी भाषी नहीं थे। उदाहरणार्थ ब्रह्मसमाज के सस्थापक राजा राममोहन राय ने अपने पत्र बग दूत मे हिन्दी को स्थान दिया तो इसी सस्था के नेता केशवचन्द्र सेन ने ही स्वामी दयानन्द को अपने प्रवचन एव व्याख्यान हिन्दी मे देने का परामर्श दिया। गुजरात मे उत्पन्न दयानन्द और गाधी ने हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया।

स्वसस्कृति को अपनाना दयानन्द की दृष्टि मे राष्ट्रीयता तथा स्वदेश गौरव की स्थापना का अनिवार्य तत्त्व था। प्राय सभ्यता ओर सस्कृति का युगपत प्रयोग किया जाता है। सभ्यता के अन्तर्गत किसी देश या वर्ग के लोगो की बाह्य वेश भूषा खान पान रहन सहन मनोरजन के साधन आदि का समावेश होता है जब कि सस्कृति के भीतर हम उन तत्त्वो का समावेश करत हैं जो किसी देश या समान को उसकी विशिष्ट पहचान देते है। शताब्दियो पूर्व जब स्मृतिकार मनु ने कहा था कि इसी आर्यावर्त देश के निवासी अग्रजन्मा ब्राह्मणो के सान्निध्य मे बैठकर उच्चाचण तथा चरित्र की शिक्षा ग्रहण करने के लिए ससार भर का शिष्य समुदाय चला आता था तो अपने भारत की आर्य सस्कृति की ही बात की थी। इस वैदिक या आर्यसस्कृति को यजुर्वेद मे विश्व वारा प्रथमा सस्कृति कहा है क्योकि मानवीय सभ्यता सदाचार तथा सत्कर्मों की प्रेरणा ससार के लोगो को भारत से ही मिली भी। अग्रेजो ने भारत मे आकर एक मिथ प्रचारित किया जिसका अभिप्राय यह था कि यदि ब्रिटिश जाति यहा बहुत पहले आ गई होती तो भारत को सभ्य और सुसस्कृत बनने मे इतना विलम्ब नहीं होता। इसी जातीय अहकार को प्रकट करते हुए आगरा कालेज के एक गोरे प्रोफेसर ने हिन्दुस्तानी छात्रो के सामने कहा – अगर अग्रेज लोग भारत मे दो हजार साल पहले आते तो हिन्दुस्तानियो की सभ्यता और नैतिकता का स्तर बहुत पहले ऊचा हो गया होता। अग्रेज को इस मिथ्या गर्वोक्ति का उत्तर क्लास के एक आर्यसमाजी छात्र ने यह कहा कर दिया – सर यदि आप दो हजार साल पहले हमारे चरित्र के स्तर को ऊचा करने के लिए यहा आते तो बन्दरो और लगूरो की तरह उस समय यूरोप के पेडो पर कौन लटकता ? (भारत भक्त एण्डूज – ले० बनारसीदास चतुर्वेदी) बात तीखी होने पर भी सच है। दो हजार वर्ष पहले यूरोप के लोग अफ्रीका के अदिवासियो का सा जीवन जी रहे थे।

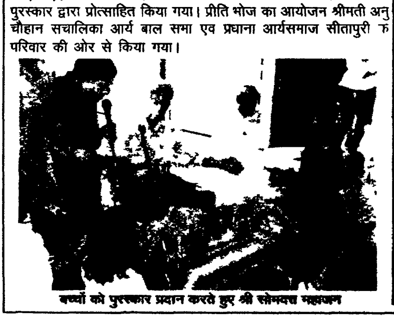
दयानन्द जिस सस्कृति के प्रचारक थे उसमे सच्चरित्रता त्याग बलिदान विश्वमैत्री देशप्रेम जैसे तत्वो का समावेश हुआ है। वे सस्कृति के आधार पर खेमाबदी के खिलाफ रहे। दयानन्द जैसा सुसस्कृत व्यक्तित्व का धनी महापुरुष ही बरेली के लाट पादरी डॉ० स्काट थियोसोफिकल सोसायटी के सस्थापको तथा मुस्लिम जागरण के अग्रदूत सैयद अहमद खा का सम्मान और प्रेम प्राप्त कर सका था।

भारतवासियो मे स्वदेश प्रेम तथा स्वदेशी की भावना जगाना स्वामी दयानन्द का सर्वोपरि लक्ष्य था। सर्वसग परित्यागी परिव्राजक होने पर भी देश की पराधीनता उन्हे कचोटती थी। वे अपने आराध्य देव से स्वदेश के सकट काटने तथा उसे पराधीनता के पाश से मुक्त करने की प्रार्थना करते थे। आर्याभिविनय जैसे उपासना के ग्रन्थ मे उन्होने वेद मन्त्रो पर आधारित जो प्रार्थनाए लिखी हैं उनमें उन्होने परमात्मा को राजधिराज जैसे सम्वोधन से सम्बोधित किया है और उस राजाओ के अधिराज परमात्मा देव से प्रार्थना की है कि आर्यों का अखण्ड चक्रवर्ती निर्द्वन्द्व शासन सर्वत्र हो और हमारे देशवासी कभी पराधीन न हो। स्वराज की कामना दयानन्द मे प्रबल रूप मे उपस्थित थीं। वे सुराज्य की तुलना मे स्वराज्य को वरीय तथा श्रेयस्कर समझते थे। उनके इस वाक्य को भुलाना कठिन है जिसमें उन्होने कहा था – चाहे कोई कितना ही करे किन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है किन्तु मत मतान्तर के आग्रह से शून्य माता पिता के समान कृपा और दया युक्त अपने और पराये के पक्षपात से रहित विदेशियो का राज्य सुखकर नहीं होता। कहना नहीं होगा कि दयानन्द के उस स्वराज्य चिन्तन से प्रेरणा लेकर भारतवासियो ने अपनी आजादी की लडाई लडी और उसमें सफलता प्राप्त की। इसी तथ्य को ध्यान मे रखकर श्रीमती ऐनी बेसेट ने कहा था – भारत भारतीयों के लिए का नारा लगाने वाला दयानन्द ही पहला व्यक्ति था।

८/४२३ नन्दवन जोधपुर

आर्य बाल सभा 'डी' ब्लाक सीतापुरी, नई दिल्ली-४५ का नवरात्रीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

आर्य बाल सभा द्वारा आयोजित नवरात्रीय गायत्री महायज्ञ का समापन समारोह नवमी २५–१०–२००१ को प० प्रणव देव जी शास्त्री द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सोमदत्त जी महाजन प्रधान आर्य समाज सी ब्लाक जनकपुरी द्वारा की गई मुख्य अतिथि श्री हरस्वरूप जी सिघल ने अपने भाव प्रकट किए। श्रीमती विमला भाटिया के उत्साही भाषण एव श्रीमती शकुन्तला गुलाटी के मधुर भजनो ने बच्चो एव उपस्थित लोगो को भाव विभोर किया। बच्चो का कार्यक्रम जिसमे मुख्यत प्रात कालीन मन्त्र ईश्वर स्तुति प्रार्थनाउपासना मन्त्र ईशवन्दना सगठन सूक्त भजन कविताए एव आर्यसमाज के नियम आदि के द्वारा उत्साहित रूप से प्रस्तुत किए गए। जिसकी सराहना सभा मे उपस्थित सभी ने की। बच्चो को पुरस्कार द्वारा प्रोत्साहित किया गया। प्रीति भोज का आयोजन श्रीमती अनु चौहान सचालिका आर्य बाल सभा एव प्रधाना आर्यसमाज सीतापुरी के परिवार की ओर से किया गया।



बच्चों को पुरस्कार प्रदान करते हुए श्री सोमदत्त महाजन

विदेशों में आर्यसमाज के बढ़ते कदम

मारिशस का एक आर्यसमाज

– अश्वन्ती जुटाना

संसार के हिन्द महासागर मे एक छोटा सा द्वीप है जिसको धरती का स्वर्ग कहा जाता है, वह है मारिशस। इसके उत्तर प्रान्त में एक छोटा सा गाव है जो समुद्र के किनारे बसा हुआ है इसकी सुन्दरता के कारण यहा पर लाखों पर्यटक दिन–रात चलते–फिरते नजर आते हैं। एक अनोखा बहुजातिय गाव है जहा पर हजारों बडे होटल, डिस्को टेक बार, कासिनो, रेस्टोरेंट आदि हैं। इन सब के बावजूद गाव के प्रवेश द्वार पर एक शिव मन्दिर और अन्त में एक राम मन्दिर है। रास्ते के इस पार मस्जिद है उस पार गिरजाघर है कुछ ही दूरी पर एक विशाल कोविल है और महर्षि दयानन्द गली मे एक विशाल आर्यसमाज मन्दिर है।

१९०१ मे जब महात्मा गाधी मारिशस आते हैं कुछ ही साल मुनिलाल डॉ० को भेजते हैं और सिर्फ चार साल बाद १९१० मे आर्य समाज की स्थापना मारिशस मे हो जाती है। भारत से अनेक विद्वान स्वामी इस धरती पर अपने कदम रखते हैं आर्यसमाज के कार्य चलते रहते है। लगभग १९५३ मे स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज यहा आकर गाव–गाव मे प्रचार प्रसार करने लग जाते हैं एक पौराणिक सभा मे उनका प्रवचन चलता है। उसी समय समाज के सभी पढे लिखे लोग निकल कर आर्यसमाज की स्थापना कर देते हैं जिसमें प० मितारू प० पचन देवनारायण विसेशर जगदेव साअम्बर जैसे महान लोग थे। किसी ने अपनी जमीन दान दे दी किसी ने पैसे किसी ने मेहनत और वह मन्दिर खडा हो गया जहा पर यज्ञ सत्सग–प्रवचन आदि होने लगा। जिसका उद्घाटन देश के पूर्व प्रधानमन्त्री डॉ० सर शिवसागर रामगुलाम के कर–कमलो द्वारा किया गया था।

१९६० मे एक भयानक तूफान आता है यह सब कुछ तोडफोड कर बरबाद करके चला जाता है सब लोग हताश हो जाते हैं मन्दिर को इस बार पक्का बनाने का सोचा गया ककरीट का। यह सुनकर मन्दिर मे सिर्फ ७ सदस्य रह गए। उसी समय नवनियुक्त विष्णुदेव विसेसर का इस समाज मे प्रवेश होता है। कुछ ही समय मे उनको प्रधान पद दिया जाता है जिसे आज तक वे सम्भाल रहे है। इनके आने के बाद समाज मे चार चाद लग गए समाज मे धडाधड नौजवान लाग प्रवेश होने लगे। महिला समाज और युवक सघ की स्थापना की गई। इस प्रगति की बदौलत आर्य सभा मारिशस के महान प० रामरूप रामलगन द्वारा बिसेसर जी को बिना चुनाव के परिषद् का प्रधान नियुक्त कर दिया जिसमे लगभग ४२ आर्यसमाज हैं। परिषद् मे भी तीन ऐसे नियम लाए जो आज यह ससार अपना रहे हैं। वह है श्रावणी यज्ञ एक मास तक घर–घर मे हर मन्दिर मे यज्ञ होते हैं। एक मास व्रत रखे कि हम अपने परिवार के साथ रोज सुबह–शाम सध्या करेगे। और हरेक आर्यसमाज मे घर पर दुकानपर दफ्तर पर ओ३म का झण्डा फहराएगे। यह सिलसिला इस देश के हर ४५० शाखा समाजो मे लगभग १० वर्ष चालू है।

आज इस गाव के आर्यसमाज के बल पर तथा आर्यसमाज जिला परिषद् के एक अन्तरग सदस्य हैं एव आर्यसभा के सगीत समिति के प्रधान हैं जो देश के उन महान कलाकारो के सहयोग से पूरे देश मे सगीत के कार्य का प्रचार प्रसार करवा रहे है। आज इसी गाव के आर्यसमाज मे जिला परिषद् के प्रधान देश के महान सगीतकार श्री रविन्द्रजी आदि लगभग ८० सदस्य हैं। जहा पर साप्ताहिक सत्सग यज्ञ सगीत भ[illegible] की कक्षाए चलती है। जहा क[illegible] ईसाइया के बच्चे बैठने को हमेशा तैयार रहते हैं। और मन्त्र पाठ भी करते है।

एक मजे की बात सुनाऊ जब मेरे बच्चे सध्या करने बैठते थे। एक ईसाई की लडकी लगभग ४–५ साल की भी बैठ जाती थी एक बार अपने नानी के यहा गई। नानी कहती है खाना खा लिया सोने से पहले प्रेयर कर लो। लडकी कहती है मैं जानती हू, शुरू कर दी– ओ३म शन्नो देवी वैदिक सन्ध्या। सब लोग आश्चर्य मे पड गए।

कईबार बिसेसर जी यूरोपीयनो के घर पर यज्ञ करने गए हैं। यह आर्यसमाज का एक ताज है। इस गाव मे उनका बेटा प्रमोद वर्मा ने एक हालैण्ड निवासी श्रीमती यशोदरा रघुवर सिह से बातचीत करने के दौरान बताया कि पिताजी आर्यसमाजी हैं और यज्ञ आदि करते हैं। यशोदरा इससे प्रभावित होकर आर्यसमाज मन्दिर मे लगभग ५० सुन्दर कुर्सिया फर्श पर मार्बल टाइल्स मन्दिर को रगवाया अनेक कार्य लगभग १०० हजार रुपये खर्च कर के चली गई।

आज गाव गाव के आर्य समाज इस देश मे चमकते है लाखो लोग इसकी तस्वीर खींच कर ले जाते है। यज्ञ मे कई देश क यूरोपियन हिन्दु लोग आर्यसमाज म आत रहते हैं दान देते रहते है। परमात्मा कर यह उन्नति के शिखर पर चढता रहे। इसक सभी सदस्य लोग दीर्घायु होवे और ससार के अच्छे आर्य समाजो मन्दिर म इनका नाम होवे।

– महर्षि दयानन्द गली
मॉरिशस

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया के ४०वें वार्षिकोत्सव पर ब्रह्मचारिणी सूर्या द्वारा सामवेद की प्रस्तुति

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया का ४०वा महोत्सव रविवार दिनाक २८–१०–२००१ को दिल्ली के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री मुशीराम सेठी मैनेजिग डायरेक्टर फ्रन्टियर बिस्कुट फैक्ट्री की अध्यक्षता मे हुआ। उसी दिन चतुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति प्रात १० बजे हुई जिसके ब्रह्मा डॉ० विश्वपाल वेदालकार थे। यज्ञोपरान्त दिल्ली एव दिल्ली के आस–पास से पधारे हुए लगभग १००० व्यक्तियो के जनसमूह के समक्ष गुरुकुल की प्राचार्या श्रीमती सुशीला ने गुरुकुल की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमे गुरुकुल की कन्याओ ने राजस्थान स्तर पर और राष्ट्रीय स्तर पर जो कीर्तिमान स्थापित किए हैं, की सूचना दी और उन कन्याओं को समारोह के अध्यक्ष द्वारा शाल एव स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस समारोह में दिल्ली से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री जयदीश आर्य, श्री प्राणनाथ धई, श्री सोमदत्त महाजन, श्री एस० के० दुआ, श्री शिवदयाल आर्य, श्रीमती ओमवती, श्री विजय सचदेवा, श्रीमती विद्यावती ठुकराल, श्रीमती कौशल्या, श्रीमती मजू कशी आदि विशेष बसो या अपने वाहनो से समारोह में आए।

कार्यक्रम का आकर्षण था ब्रह्मचारिणी सूर्या द्वारा सामवेद की प्रस्तुति समारोह मे पधारे हुए एक सन्यासी ने सामवेद हाथ में लेकर बीच–बीच मे से सामवेद मन्त्रों का उच्चारण करवाया जिसे ब्र० सूर्या धाराप्रवाह बोलती गई।

इस अवसर पर श्री सोमदत्त महाजन ने पूरे वर्ष गुरुकुल को सहयोग करने वाले दान–दाताओं को विशेष रूप से सम्मानित किया। इस अवसर पर श्री रामनाथ सहगल भी उपस्थित थे।

शोक समाचार

दिल्ली के कालका जी क्षेत्र के प्रसिद्ध आर्य नेता गगाशरण जी के सुपुत्र श्री सतीश कुमार का निधन १४ नवम्बर २००१ को प्रात ७ बजे ह्रदय गति रूक जाने से हो गया। वे लगभग ४० वर्ष के थे। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें तथा परिवार के सदस्यो को इस महान दुख को सहन करने का सामर्थ्य प्रदान करें।

दहेज रहित सामूहिक विवाह

गिल्ड ऑफ सर्विस नामक सस्था ने गत दिनो नौ जोडो की शादी सस्था प्रागण के सामूहिक विवाह मण्डप मे धूमधाम एव बडे ही उल्लासपूर्ण माहौल मे कराई। सस्था के पदाधिकारियो ने मा–बाप की भूमिका निभाते हुए पूर्ण दायित्व के साथ नव दम्पतियो को आशीर्वाद व उपहार प्रदान किए और यहा तक कि दूल्हा–दुल्हनो को वैवाहिक जीवन से सम्बन्धित भावी जीवन की सफलताओ के लिए सन्देश भी जारी किए गए। सामूहिक विवाह हालाकि दहेज रहित कराए गए मगर सस्था ने नवदम्पतियो को वैवाहिक जीवन शुरू करने के लिए रसोई गैस से लेकर कम्बल मशीन व अन्य आवश्यक उपहार दिए। यह सामूहिक विवाह महासचिव डायना खम्बाटा मीरा खन्ना आदि की देखरेख में कराया गया। कन्यादान प्रसिद्ध समाज सेविका गाजियाबाद की श्रीमती शान्ती चौहान ने किया। इस मौके पर दिल्ली महिला आयोग की सदस्य रिनी जैकब आर्य कन्या सदन के अधिष्ठाता एच०एस० रघुवशी सहित अन्य अनेको सामाजिक सस्थाओ के प्रतिनिधि तथा शहर के गणमान्य कार्यकर्ता मौजूद थे।

समाज सेवा एव मानव कल्याण के अग्रणी श्रीमती मोहिनी गिरि की अध्यक्षता मे गिल्ड ऑफ सर्विस नामक यह सस्था प्रतिवर्ष अनेको सामूहिक विवाह कराती आ रही है जिनमे कि भारत की प्रथम महिला श्री ऊषा नारायणन सहित अन्य अनेक गणमान्य व्यक्ति सस्था प्रागण मे उपस्थित होकर नव दम्पतियो को आशीर्वाद देते आ रहे है।

✡✡✡

जिसके ह्रदय में दया है, जिसकी वाणी सत्य से सुशोभित है, जिसका शरीर परहित मे लगा हुआ है, कलि भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता है।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 2-12-2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2001
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2001 in NDPSO on 29/30-11-2001

नि शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का शुभारम्भ

समाज सेवा समिति गुरुकुल आश्रम पूठ द्वारा वेणु नेत्र चिकित्सालय के सौजन्य से नि शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का शुभारम्भ क्षेत्र विधायक माननीय रामनरेश जी रावत व एस० डी० एम० महोदय की अध्यक्षता तथा विधायक श्री के कर कमलो द्वारा सम्पन्न हुआ। माननीय विधायक जी ने कहा कि आख हमारे लिए अनमोल हैं जिससे हम भगवान की अदभुत लीला को देख सकते हैं तथा उसका आनन्द उठा सकते हैं। उन्होने कहा कि हमारे क्षेत्र वासियो को इसका पूर्ण लाभ उठाना चाहिए तथा सहयोग भी करना चाहिए। एस० डी० एम० जी ने कहा कि इस प्रकार से हमारे क्षेत्र के सभी रोगियो को खूब लाभ मिलेगा जो पैसे के अभाव मे अपना उपचार नहीं करा सकते आज उनके लिए स्वर्णिम अवसर समाज सेवा समिति गुरुकुल आश्रम पूठ ने प्रदान कर दिये हैं। हमे पूर्ण इसका लाभ लेना चाहिए। इस शिविर मे सुबह से ही क्षेत्रवासियो (रोगियो) की भीड लगी रही। लगभग २६५ मरीजो ने अपनी आख दिखाई तथा सभी का उपचार मुफ्त किया गया। डॉक्टर अपने साथ ५७ रोगियो को साथ ले गए जिन्हे आपरेशन के बाद वापस भेज दिया जाएगा। गुरुकुल आश्रम पूठ व समाज सेवा समिति के सचालक व सस्थापक डॉ० धर्मपाल आचार्य ने सभी को इस योजना से पूर्ण लाभ उठाने का आह्वान किया तथा कहा कि यह शिविर प्रत्येक माह की २१ तारीख को आयोजित किया जाया करेगा। — *सोमेन्द्र शास्त्री*

गुरुकुल पूठ — समाज सेवा समिति

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस समारोह

महर्षि दयानन्द मानवता के सच्चे पुजारी थे

कानपुर १३ नवम्बर। आर्य कन्या इण्टर कालेज गोविन्द नगर के तत्वावधान मे दयानन्द निर्वाण दिवस समारोह कालेज की प्रबध समिति के अध्यक्ष श्री त्रिलोक नाथ सूरी की अध्यक्षता मे मनाया गया।

समारोह के प्रारम्भ मे चार हजार से अधिक छात्राओ ने वेद मत्रो का उच्चारण कर तथा विभिन्न गीत सगीत और भाषणो से महर्षि को श्रद्धाजलि भेट की।

कालेज के नवनिर्वाचित प्रबधक श्री शिव कुमार आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द मानवता के सच्चे पुजारी थे। महर्षि के ह्रदय मे उस व्यक्ति के प्रति भी दया की भावना थी जिसने उनको जहर दिया था। महर्षि द्वारा उसे ५००/— रु० देकर नेपाल भाग जाने की सलाह देना वास्तव मे दया की भावना की पराकाष्ठा है।

बिहार से पधारी सुश्री ऋचा ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने नारियो के गौरव को बढाने का जो महान कार्य किया है उसके लिए नारिया सदैव उनकी ऋणी रहेगी। महर्षि ने कहा कि जहा नारियो की पूजा होती है वहा देवता निवास करते हैं। कुमारी ऋचा ने आर्य कन्या इण्टर कालेज के सस्थापक पूर्व प्रबन्धक श्री देवी दास आर्य का स्मरण करते हुए कहा कि वे महान महिला उद्धारक थे उन्होने आर्य कन्या इण्टर कालेज की स्थापना करके नारियो की बडी सेवा की है।

समारोह मे प्रमुख रूप से सर्व श्री शुभ कुमार बोहरा (प्रधान आर्य समाज) बाल गोविन्द आर्य वीरेन्द्र मल्होत्रा जाति भूषण श्रीमती दर्शना कपूर कैलाश मोगा सरोज अवस्थी सतोष अरोडा चद्रकान्ता गेरा राज सूरी आ[illegible] समारोह का[illegible] राजजीत पाल ने [illegible] श्रीमती वीनस शर्मा न[illegible]

— *कार्यालय प्रमु[illegible]*

प्रतिष्ठा में
10150 पुस्तकालाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय
जिला हरिद्वार (उ०प्र०)

हर्षोल्लास, चुनौती और अपील

यह प्रसन्नता का विषय है कि दिल्ली विकास प्राधिकरण ने आर्यसमाज सैक्टर—८ रोहिणी दिल्ली—८५ के नाम से ४७३ ८५ वर्ग मीटर भूमि आवटित कर दी है। यह परमपिता परमात्मा की असीम कृपा एव सभी भाई—बहिनो के सहयोग एव आशीर्वाद से ही सम्भव हो पाया है।

चुनौती

हम सभी के कधों पर यह भार आ पडा है जिसे सभी ने मिलजुल कर पूरा करना है। २८ दिसम्बर २००१ तक दिल्ली विकास प्राधिकरण के नाम से साढे चौदह लाख रुपये का ड्राफ्ट निश्चित रूप से देना है तभी कब्जा लिया जा सकेगा। सत्य सनातन वैदिक धर्म की पताका फहराने हेतु हमें यह चुनौती स्वीकार करनी है और सगठित प्रयास करने हैं।

अपील

सभी आर्य बन्धुओं आर्य समाजो आर्य सस्थाओ धर्म की वृद्धि चाहने वाले दानी महानुभावो और समस्त जनता से अनुरोध है कि रोहिणी क्षेत्र मे धार्मिक सामाजिक एव चरित्र—निर्माण की गतिविधियो को विशेष गति देने हेतु आशाओं से अधिक स्वय दान दे एव दानी महानुभावों को प्रेरित करे। विशाल लक्ष्य की ओर बढने हेतु विशाल सहयोग चाहिए इसलिए राशि का निर्धारण स्वय करें।

सहयोगाकाक्षी — समस्त पदाधिकारी एव सदस्य
आर्यसमाज सेक्टर—८, रोहिणी, दिल्ली—८५
फोन—७१८२६१७, ७१८६१५१

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

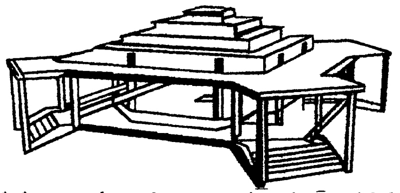
जिला राजकोट—३६३६५० (गुजरात) दूरभाष (०२८२२) ८७७५६

विश्व दर्शनीय यज्ञशाला के निर्माण हेतु

आर्थिक सहायता की अपील

ऋषि जन्मभूमि टंकारा में निर्माणाधीन यज्ञशाला में अपना योगदान देकर पुण्य के भागी बने

ऋषि जन्मभूमि पर निर्माण की जाने वाली इस यज्ञशाला का एक विशेष महत्व है। पूरे विश्व के ऋषि भक्तो के लिए टकारा गुरुधाम का स्थान रखता है और समस्त आर्य जगत की भावुक भावनाए इस स्थान से जुडी हुई हैं इसलिए आपके द्वारा दिया गया योगदान किस महत्व का होगा इसे आप अवश्य समझे।



२४ स्तम्भो से बनी यह यज्ञशाला पूर्णरूप से कक्रीट की बनी हुई होगी। इसमे ईट-अथवा प्लास्टर नाममात्र के लिए ही होगा। भूमितल से ६ फीट ऊची इस यज्ञशाला का रेखाचित्र एव काल्पनिक चित्र कम्प्यूटर द्वारा तैयार किया गया है और कम्प्यूटर इजीनियर का ऐसा मानना है कि इस आकार की यज्ञशाला पूरे विश्व मे इससे पूर्व नहीं निर्मित हुई होगी। इसे विश्वदर्शनीय बनाने हेतु और सुन्दर रूप बनाये रखने के लिए ऐसी सम्भावना है कि इसे ग्रेनाइट पत्थर से सुसज्जित किया जाएगा और स्तम्भो को खुर्जा टाइल्स से डिज़ाइनदार बनाया जाएगा।

आर्य जनता से अनुरोध है कि टकारा मे चल रहे यज्ञशाला के निर्माण कार्य मे मुक्तहस्त से अधिकाधिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। यह दान नकद/ड्राफ्ट/क्रास चैक तथा मनीआर्डर द्वारा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टकारा के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज 'अनारकली' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के पते पर अथवा टकारा, जिला राजकोट—३६३६५० (गुजरात) को भिजवाने की कृपा करें। आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि अपने आर्यसमाज, अपनी शिक्षण सस्था तथा सम्बन्धित सस्थाओं की ओर से अधिकाधिक राशि भेज कर पुण्य के भागी बनें।

टकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

ओकारनाथ	विद्यादेव	रामनाथ सहगल
मैनेजिंग ट्रस्टी	आचार्य	ट्रस्ट मत्री

उप-कार्यालय आर्यसमाज 'अनारकली' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली—११०००१
दूरभाष ३३६३७१८, ३३६२११०, ४६६३६०७ टेलीफैक्स ४६१५१६१

सामाजिक, वैचारिक एवं आध्यात्मिक क्रान्ति के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़े।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८, पटौदी हाउस दरियागज, नई दिल्ली—२ (फोन ३२७०५०७, ३२७४७७१) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली—२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०९८५)।
सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई—मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाइट — http://www.whereisgod.com

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४० अक ३३ ६ दिसम्बर से १५ दिसम्बर २००१ तक दयानन्दाब्द १७८ सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०२ सम्वत २०५८ मा०शी०कृ० ६

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

इतिहास की पुस्तको से झूठी, मनगढन्त निराधार और दुर्भावना पूर्ण बातो को हटाया जाए

आर्य विदेशी और आक्रमणकारी नहीं थे

आर्य सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यता है जिसका उद्‌गम वेदो की धरती आर्यावर्त है

केन्द्रीय सरकार के राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान और प्रशिक्षण परिषद (N C E R T) द्वारा जारी एक आदेश के तहत छठी से बारहवीं कक्षा मे पढाई जा रही इतिहास की पुस्तको से हिन्दुओ जैनियो सिक्खो और जा[illegible] के प्रति दुर्भावना पूर्ण लिखे गए अश [illegible]

निर्देश जारी किया गय[illegible]

[illegible] विरुद्ध साम्यवादी तथा [illegible] सासदों ने ससद मे आवाज उठाई। यह आवाज किस समुदाय को प्रसन्न करने के लिए उठाई गई है यह तो स्पष्ट नहीं परन्तु इतना अवश्य है कि साम्यवादी इतिहासकारो की दुर्भावना पूर्ण लेखनी की पोल खुलना इन्हे रास नहीं आया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के एक शिष्टमण्डल ने भाजपा के प्रवक्ता एव आर्य विचारो से ओत–प्रोत ससद सदस्य प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा से भेंट की। इस शिष्टमण्डल मे सभा के वरिष्ठ उप–प्रधान श्री विमल वधावन मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य पुस्तकाध्यक्ष श्री सोमदत्त महाजन श्री रामनाथ सहगल श्री सदानन्द मदान श्री दयानन्द मदान एव श्री विनय आर्य शामिल थे।

श्री विमल वधावन ने प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा से कहा कि केन्द्र सरकार की इस इतिहास सशोधन कार्यवाही का हम समर्थन करते है परन्तु यह कार्यवाही समुचित नहीं है। उन्होने स्पष्ट रूप से कहा कि आर्यों को आक्रमणकारी और विदेशी कहने वाली बातो को भी इतिहास की पुस्तको से हटाया जाना आवश्यक है। अत आर्यसमाज केन्द्र सरकार के समक्ष यह माग रखता है कि इतिहास की पुस्तको मे राष्ट्रवादी हिन्दू जाति को विदेशी कहने वाली बातो को भी हटाया जाना चाहिए।

आर्य न तो आक्रमणकारी थे और न ही कहीं विदेश से आए थे वे भारत के मूल निवासी थे। भारत का प्राचीन नाम आर्यावर्त था जब ईसाइयत और इस्लाम का जन्म भी नहीं हुआ था। उस समय सारा ससार आर्यो के आधीन ही था। आर्य सभ्यता विश्व की सबसे पहली सभ्यता है। सृष्टि तथा मानव की उत्पत्ति का स्थान भी आर्यावर्त ही था।

केन्द्र सरकार की इस शैक्षिक परिषद ने केवल कुछ ही बातो को हटाने के लिए आदेश जारी किया है। जिनमे मुख्य निम्न प्रकार है –

१ गौ मास का परोसा जाना भारतीय सभ्यता का अग था।

२ दिल्ली आगरा और मथुरा के आस पास के क्षेत्रो मे जाटो की शक्ति का उदय हुआ था और इन्होने खूब लूट–पाट मचाई।

३ राम और कृष्ण के अस्तित्व की कही पुष्टि नहीं होती।

४ वैदिक कर्मकाण्डो के अनुसार यज्ञो मे पशुबलि होती थी।

५ जैनियो का इतिहास सदिग्ध है।

६ गुरुतेग बहादुर ने पूरे पजाब क्षेत्र मे लूट–मार मचा रखी थी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने सरकार द्वारा इन दुभावना पूर्ण अशो को हटाने के इस प्रयास का जहा समर्थन किया है वहीं आर्यो को आक्रमणकारी और विदेशी कहे जाने वाले तथाकथित इतिहासकारो को खुली चुनौती दी है और केन्द्र सरकार से माग की है कि आर्यो की सभ्यता से सम्बन्धित झूठी मनघढत निराधार और दुर्भावना पूर्ण बातो को भी इतिहास की पुस्तको से हटाया जाना चाहिए।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

इतिहास सशोधन का समर्थन और

आर्यों से सम्बन्धित निराधार बाते हटाने की माग

आर्य विदेशी या आक्रमणकारी नहीं थे। इतिहास की पुस्तको से मनगढन्त निराधार और दुर्भावना पूर्ण बाते हटाई जाए।

समस्त आर्यजनो से निवेदन है कि उपरोक्त विचारो को टेलीग्राम द्वारा अथवा अपने विस्तृत विचारो को पत्र द्वारा निम्न पतो पर भेजे

श्री अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमन्त्री ७ रेसक्रास मार्ग नई दिल्ली तथा

डॉ० मुरली मनोहर जोशी मानव ससाधन मन्त्री

६ रायसीना रोड नई दिल्ली

संकल्प यज्ञ सद्‌भावना पूर्ण वातावरण बनाते हैं

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप–प्रधान श्री विमल वधावन की देखरेख मे आर्यसमाज रानी बाग के नव निर्वाचित पदाधिकारियो सभासदों एव सदस्यों ने यज्ञ के उपरान्त आर्यसमाज के सगठनात्मक एव सैद्धान्तिक विचारो से युक्त सकल्प समारोह का आयोजन किया। पदाधिकारियो एव सदस्यों को श्री विमल वधावन ने निम्न सकल्प पढवाया

हम सब आर्यसमाज रानीबाग के पदाधिकारी सभासद एव सदस्य परम पिता परमात्मा को सर्वविघयमान मान कर यह सकल्प व्यक्त करते है कि

आर्यसमाज की उन्नति व इस महान सगठन के सामूहिक कार्यों मे तन मन धन से सदा सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। इस मे कभी किसी प्रकार अहभाव निष्क्रियता, प्रमाद या आलसीपन को बाधक नहीं बनने देंगें।

आर्यसमाज की सदस्यता मेरी व्यक्तिगत न हो कर पूरे परिवार को एक यूनिट मानते हुए निभाई जाएगी।

आर्यसमाज मे मन्तव्यो और वैदिक सिद्धान्तों मे पूर्ण आस्था और सम्वद्धता बनाए रखूगा। सत्व रज और तप के सिद्धान्त को समझते हुए अपने जीवन मे अधिकाधिक सात्विकता बनाने का प्रयास करूगा।

मैं अपने जीवन से असत्य वादन अन्याय अनाचार वैर–द्वेष आदि को पूर्ण रूप से लुप्त करने का हर सम्भव प्रयास करूगा जिससे मेरे जीवन को देख कर लोग आर्यसमाज की छवि की कल्पना किया करे।

आर्यसमाज के कार्यों का सम्पादन करते हुए तथा अन्यथा अपनी जीवन चर्या मे भी – बडो के प्रति पूर्ण श्रद्धा समर्पण भाव तथा छोटो के प्रति स्नेह और मार्गदर्शक की भावना से मैं सदा युक्त रहूगा।

शेष भाग पृ० २

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

पृ० १ का शेष भाग

संकल्प यज्ञ सद्भावना पूर्ण वातावरण बनाते है

आर्यसमाज के कार्यों और देशवासियों की सेवा को ही देश प्रेम और राष्ट्र सेवा समझते हुए मैं निस्वार्थ त्याग और समर्पण भाव से सदैव तत्पर रहूगा।

आर्यसमाज की चल–अचल सम्पत्तियो को ईश्वरीय कार्यों के लिए ईश्वर की कृपा से दान–अनुदान मे प्राप्त एक धरोहर के रूप मे तथा स्वय को उनका सरक्षक समझ कर कार्य करूगा।

दैनिक यज्ञ की परम्परा को अपनी दैनिकचर्या का सर्वप्रथम कार्य मन वचन और कर्म से सिद्ध करूगा।

छोटे–मोटे मत भेदो को मन भेद नही बनने दूगा उन्हे जीवन की छोटी सी घटना समझ कर टालने का प्रयास करूगा।

उपस्थित सदस्य इन सकल्पो का उच्चारण करने के बाद आर्यसमाज के प्रति पूर्ण समर्पण भाव श्रद्धा और अनुशासन की विचारधारा मे प्रसन्नता अनुभव करने लगे।

श्री विमल वधावन ने नए पदाधिकारियो का सम्बोधित करते हुए कहा नई कार्यकारिणी का गठन केवल मात्र लोकतान्त्रिक परम्पराओ को जीवन्त बनाए रखने के उद्देश्य से ही किया जाता है नई कार्यकारिणी को आयसमाज के सिद्धान्तो मान्यताओ मे परिवतन का कोई अधिकार नहीं होता। इससे सिद्ध होता है कि आर्यसमाज एक सैद्धान्तिक सगठन है। नए और पुराने पदाधिकारिया को प्रशिक्षण के सिद्धान्त पर आधारित सहयोग भावना रखनी चाहिए। पुराने अधिकारी अपनी देख–रेख म नए अधिकारियो को प्रशिक्षित करे।

उन्होने कहा कि भारत वर्ष जो पहले आर्यावृत्त के नाम से प्रसिद्ध था मूलत ऋषियो मुनियो की परम्परा वाला देश है त्याग बलिदान परोपकार और निस्वार्थ भावनाए हमारे लक्षण है। इन लक्षणो को बनाए रखने से हमे हर प्रकार की सुख समृद्धि के साथ–साथ मानसिक शान्ति और आध्यात्मिक उत्थान भी प्राप्त होता है।

जब हम परा[illegible] मे अपना धन शक्ति आदि [illegible]ते है तो वापिसी मे हमे कई गुणा करके यह सम्पदाए प्राप्त होती है जिस प्रकार सूर्य देवता नदी और समुद्र का जल वाष्पीकरण द्वारा ले जाकर उसे कई गुणा करके बरसात के रूप मे लौटाते है

उन्होने कहा कि सकल्प यज्ञो स आर्य जनो मे आपसी प्रेम और अनुशासन की भावनाए बलवती होगी। उन्होने आशा व्यक्त की कि समूचे आर्य जगत मे इस प्रकार सकल्प यज्ञो की परम्परा चलनी चाहिए। इसे शपथ ग्रहण समारोह की तरह आयोजित किया जाना चाहिए।

माता प्रेमलता शास्त्री ने अपने सम्बोधन मे कहा कि हमे हर कार्य को करने से पूर्व तथा प्रत्येक प्रार्थना के समय केवल उस परम पिता परमात्मा और उसकी निस्वार्थ भाव से प्रदत रचनाओ की और देख कर शुभ प्रेरणाए ग्रहण करनी चाहिए।

माता जी ने आर्यसमाज रानीबाग के सभी सदस्यो को शुभाशीर्वाद एव मार्गदर्शन देने के साथ–साथ उनका धन्यवाद भी किया कि वे सब समर्पण भाव के साथ वैदिक धर्म प्रचार के कार्यों को सम्पन्न करते है।

वैदिक विद्वान डॉ० कृष्ण लाल जी ने हिन्दी ओर सस्कृत के प्रति भी निष्ठा बनाए रखने पर बल दिया। ✡

वैदिक संस्कृति यज्ञ प्रधान क्यों है?

मानव जीवन की सम्मुन्नति के लिए वैदिक सस्कृति मे ऋषि–महर्षिया न षाडश सस्कारो की परम्परा का शुभारम्भ किया। मानव के जन्म के प्रारम्भ से लेकर अथात उसके गर्भाधान से लेकर मानव–जीवन के अन्तिम क्षणो मृत्यु तक अन्त्येष्टि–सस्कार का प्रावधान किया गया सस्कार का शाब्दिक अर्थ है – सवारना शुद्ध करना दोषापनयन करना अथवा गुणो का आधान करना।

सस्कार मानव–जीवन के साथ आग्नेय शिक्षा का सामजस्य करते हैं जीवन को समुन्नत करने के लिए उनमे प्रयुक्त होने वाले घृत समिधा आदि तत्त्वो के यज्ञो मे प्रयोग के प्रसग प्रस्तुत हैं।

विधि–विधानो मीमासा शतपथब्राह्मण आदि ग्रन्थो मे पृथक–पृथक यज्ञो की अलग–अलग परिमाप वाली वेदियो तथा सामग्रियो का पृथक–पृथक चयन निर्दिष्ट है। वेदो के सभी प्राचीन–अर्वाचीन विद्वानो ने यज्ञो के विविध–लाभ प्रदर्शित किए है। फ्रास के एक वैज्ञानिक ने १६१६ ई० मे (यज्ञीय) धूम्र का लाभ दिखलाते हुए लिखा था – 'जलती हुई अग्नि मे शक्कर डालने से उत्पन्न धूम्र मे वायु को अत्यधिक शुद्ध करने की बहुत बडी शक्ति होती है। इससे क्षयरोग चेचक और हैजा आदि बीमारिया तुरन्त नष्ट हो जाती हैं।

जर्मनी के प्रसिद्ध दार्शनिक एव वेदो के प्रसिद्ध विद्वान मैक्समूलर ने 'फिजिकल रिलीजन मे यह स्वीकार किया है कि ससार के प्राय सभी सम्प्रदायो ने किसी न किसी रूप मे यज्ञ को स्वीकार किया है आर्यों के छोटे–बडे परिवारो ग्रामो एव नगरो मे यज्ञ का अत्यधिक प्रचलन था।

इस परम्परा से प्रभावित होकर ग्रीक एव रोम के निवासियो के यहा भी यज्ञ का दूसरे रूप मे प्रचलन हुआ। पारसियो म आर्यो की ही भाति आज भी और यहूदियो के उपलब्ध धर्मशास्त्रा मे यज्ञ करने का वर्णन प्राप्त है। वे हवन–कुण्ड को 'केर' शब्द से सम्बोधित करते हैं।

जैनियो मे अगर एव धूप से पूजन किया जाना यज्ञ का सूक्ष्म तथा अवशेष मात्र है। ईसाई और मुसलमान सम्प्रदायो मे भी उदबत्ती और लोबान आदि वायु–शोधक पदार्थ जलाए जाते हैं। इस प्रकार यद्यपि यज्ञो के स्वरूप मे भारी परिवर्तन हुआ है तथापि किसी न किसी रूप मे इसे स्वीकारा अवश्य गया है।

कुछ विद्वानो का चिन्तन है कि आदि सृष्टि मे अग्नि को उत्पन्न करना मनुष्य का सबसे पहला वैज्ञानिक आविष्कार रहा होगा। यहीं से उसकी बुद्धि का विकास हुआ होगा।

ऋग्वेद ससार का प्राचीनतम ग्रन्थ है और अनेक विद्वानो की मान्यता है कि वेद सृष्टि के आदि मे ईश्वर द्वारा ऋषियो के हृदय मे प्रकट हुए। यही कारण है कि वेदो को ईश्वर–प्रणीत अथवा अपौरुषेय माना गया। सृष्टि के प्रारम्भ मे चार ऋषियो के पवित्र हृदयो मे यह ज्ञान पैदा हुआ। श्रुति–परम्परा से इस ज्ञान को नियमित रूप से आगे बढाया जा रहा है। इसी कारण इन्हे श्रुति शब्द से पुकारा गया।

ऋग्वेद के मन्त्रो से स्पष्ट है कि वेदो की उत्पत्ति हुई और इसके लिए अग्नि का आविष्कार प्रथम महान आविष्कार रहा होगा। यही कारण है कि ऋग्वेद के प्रामि मन्त्र में – **ओउम अग्निमीळे पुरोहित यज्ञस्य देवमृत्विजम। होतार रत्नधातमम'** – जैसी पवित्र विद्या का जन्म हुआ।

अर्वाचीन वेदाविद् स्वामी दयानन्द सरस्वती ने यज्ञो के सन्दर्भ मे हवन–कुण्ड के परिमाण धातुओ का वर्णन करते हुए लिखा है – 'यज्ञ–कुण्ड मिटटी लोहा ताबा व पीतल के होने चाहिए। अक्षर–विज्ञान के सम्पादक पण्डित रघुनन्दन शर्मा लिखते है कि 'जिस तरह अन्न औषधि–वनस्पतियो को उत्पन्न करने के लिए हल फाल आदि जोतने के चक्र पानी निकालने के और जमीन खोदने काटने पीसने कूटने आदि के लिए सब यन्त्र बनाए जाते थे। इसी तरह यज्ञ–रक्षा के लिए बाणो से लदी गाडियो और रथ आदि एव उनके बनाने के सभी साधन उपलब्ध थे।

पच महायज्ञो के स्त्रुवा से उपकरणो तक सभी कारीगरी के सारे पदार्थ बनाए जाते थे। कुण्ड गोल त्रिकोण–चतुष्कोण षटकोण एव श्येन पक्षी आदि के आकार वाले बनाने का विधान है। इसके अतिरिक्त परिस्थितियो के अनुसार उन्हे जगलो अथवा नदी–नालों के तट पर बनाए जाने का निर्देश उपलबध होता है।

यद्यपि वर्तमान समय मे यज्ञो का प्रचलन कम हो गया है तथापि इसे पूर्णत समाप्त नही समझा जा सकता। वर्तमानकाल के पर्यावरण–प्रदूषण की समस्या की स्थिति को ध्यान मे रखते हुए विदेशो मे अग्निहोत्र–विश्वविद्यालय जैसी महान सस्थाए अग्निहोत्र के सन्दर्भ मे नित नई जानकारिया प्रदान करने के निमित्त निरन्तर प्रयासरत हैं। यज्ञ मे प्रयुक्त घी की एक–एक बूद से पर्यावरण को कितना लाभ पहुच सकता हैं यह सब आज हमारे समक्ष हैं। कुछ वर्ष पूर्व जबकि अभी भी भौतिक विज्ञान विकसित नहीं हुआ था लोगो मे यह धारणा बन गई थी कि घी जैसे अमूल्य पदार्थ का अग्नि मे जलाकर नष्ट कर देने से क्या लाभ ? किन्तु आज के भौतिक विज्ञान से यह बात स्पष्ट हो गई है कि अग्नि मे घी डालने से घी जलकर हमारे वायुमण्डल म सहस्त्रो गुणा होकर पर्यावरण को शुद्ध एव परिष्कृत करता है। यज्ञ में प्रयोग की जानेवाली औषधियो एव नस्पतियो से युक्त सामग्री भी इसी प्रकार वायु मे फैली कार्बनडाई ऑक्साइड को दूर कर मानव–जीवन के हितार्थ ऑक्सीजन को उत्पन्न करती रहती है।

— श्रीमती गरिमा देवी

पृष्ठ १ का शेष भाग

सार्वदेशिक सभा ने साम्यवादी और पाश्चात्य तथाकथित इतिहासकारो को खुली चुनौती देते हुए शास्त्रार्थ के लिए ललकारा है।

इस विषय पर १८ दिसम्बर २००१ (मगलवार) को दोपहर बाद तीन बजे रफी मार्ग स्थित कान्स्टीटयूशन क्लब मे एक विशेष परिचर्चा भी आयोजित की गई है जिसकी अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य करेंगे। इस परिचर्चा मे वैदिक इतिहासकार राष्ट्रवादी नेता कानूनविद ससद सदस्य तथा वरिष्ठ पत्रकार भाग लेगे।

सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने समस्त प्रान्तीय सभाओं आर्य समाजो आर्य सस्थाओ तथा आर्यजनो को आह्वान किया है कि इस विषय पर प्रधानमन्त्री तथा मानव ससाधन मन्त्री (श्री मुरली मनोहर जोशी) तथा अपने स्थानीय सासदो को टेलीग्राम भेजकर अपनी माग से अवगत कराए।

लेखराम के काम : पावन प्रखर ललाम

– देवनारायण भारद्वाज



प० लेखराम जी

वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्यसमाज के प्रारम्भिक आधार स्तम्भो मे पडित लेखराम का नाम अग्रणी है जिन्होने ऋषि परम्परा मे अपने बलिदान से आर्य धर्म को जीवन प्रदान किया। उनका जन्म ग्राम सैदपुर जिला झेहलम मे चैत्र स० १६१५ वि० (१८५८ ई०) मे पिता प० तारासिह के यहा हुआ था। उनका बलिदान भी लाहौर नगर मे स० १६५४ वि० या ६ मार्च १८६७ ई० को वेदधर्म की वेदी और ऋषि कर्म की गोदी मे हो गया था। पडितजी के जन्म मृत्यु का समय तो हमसे दशाब्दियो दूर खिसक ही गया है वह पवित्र भूमि भी भारत के हाथ से दूर पाकिस्तान मे बदल गई है जहा यह सूर्य उदय और अस्त हुआ। आज वह भूमि भारत के मानचित्र मे भले न हो किन्तु पडित लेखराम के चित्र एव चरित्र का प्रकाश जागरूक आर्यसमाज के रूप मे अखिल विश्व मे छाया हुआ है और छाया रहेगा।

पडित लेखराम के जीवन कार्यो का अवलोकन किया जाए तो प्रारम्भिक स्तर पर उनमे पावन प्रवाह मध्य मे प्रखर उत्साह एव अन्त मे लालित्यपूर्ण आकर्षण दिखाई देता है। जन्मजात सस्कारो ने उन्हे बाल्यकाल से ही मेधावी बना दिया था। ग्राम की पाठशाला मे ६ वर्ष के बालक लेखराम को शिक्षा विभाग का निरीक्षक उनकी कुशाग्र बुद्धिमत्ता से प्रभावित होकर पुरस्कृत करता है। पुलिस विभाग मे कार्यरत अपने चाचा गण्डाराम के साथ पेशावर मे रहने पर एक मौलवी उन्हे अरबी–फारसी पढाने आते है। वे योग्य बालक को इस्लाम की ओर खींचने लगते हैं किन्तु ११ वर्ष के इस बालक द्वारा इस्लाम पर प्रकट की गई शकाओ का समाधान न कर सकने पर इनको आगे पढाने का साहस ही नहीं जुटा पाते हैं। लेखराम मिडिल की परीक्षा मे बैठते हैं। अनेक विषयो मे उत्तम अक प्राप्त करते हैं किन्तु इतिहास के प्रश्न पत्र की उत्तर पुस्तिका मे प्रचलित इतिहास पुस्तकों की विसगतिया लिखकर उठ आते हैं। भले ही वे मिडिल उत्तीर्ण होने से रह गए किन्तु अपने तेजोमय कार्य कलापो से वे स्वय इतिहास के माडल – आदर्श बन गए।

चाचा गण्डाराम अपने भतीजे लेखराम को पेशावर मे पुलिस की सेवा मे नियुक्त करा देते हैं। पावन प्रेरणा का प्रवाह यहा भी पवन की भाति बहता रहता है। एक सिख सिपाही को नियमित पूजा पाठ करते देख इनके मन मे छिपा प्रभुभक्ति का अकुर फुट पडता है। इनमे कृष्णभक्ति का रग चढ जाता है। यह भक्ति भागवत से मुडकर गीता की ओर दौड पडती है। वृन्दावन जाने का विचार छोडकर काशी से गीता का एक नूतन भाष्य मगाते हैं। इसे पढते पढते कन्हैयालाल अलखधारी के पाखण्ड निवारक साहित्य का इन्हे सकेत मिलता है। यही सकेत उन्हे ऋषि दयानन्द के साहित्य सन्देश से मिलन करा देता है। एक माह का अवकाश लेकर मई १८८१ ई० मे अजमेर पहुचकर ऋषिराज से भेट करते हैं। मार्ग मध्य जयपुर मे किसी बगाली सज्जन ने लेखराम से प्रश्न किया था कि आकाश भी व्यापक है ब्रह्म भी दो व्यापक एक साथ कैसे एकत्र रह सकते हैं। ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या का भ्रम तो ऋषि साहित्य ने पहले ही निवारण कर दिया था। ऋषि के साक्षात्कार ने त्रैतवाद के सिद्धान्त को इनके मन मे दृढ कर दिया था। बगाली सज्जन का वही प्रश्न सबसे पहले ऋषि के सम्मुख रक्खा। उन्होने एक पत्थर उठाया और बारी बारी से पूछा – इसमे अग्नि मिटटी जल आकाश वायु एव ईश्वर व्यापक है या नहीं ? लेखराम के हर बार हा कहने पर ऋषि ने बताया जो पदार्थ जिससे सूक्ष्म होता है वह अपने स्थूल मे व्यापक होता है। ब्रह्म सभी पदार्थों से अति सूक्ष्म है इसलिए वह सर्व व्यापक है। इसी भेट मे बिछुडे भाइयो को वैदिक धर्म मे पुन लाने की सहमति भी उन्होने ऋषिराज से प्राप्त कर ली थी।

लेखराम ने अपनी सन्तुष्टि के लिए पूछा कि जीव एव ब्रह्म की भिन्नता का कोई स्पष्ट वैदिक प्रमाण बताए। ऋषि ने बता दिया कि यजुर्वेद का ४०वा अध्याय यही उद्घोष करता है। लेखराम ने ऋषि के दर्शन सेसुख और प्रवचन से शान्ति प्राप्त की। साथ ही स्मृति स्वरूप ऋषि के हाथ से एक अष्टाध्यायी की पुस्तक लेकर वे घर के लिए विदा हो लिए। आर्य सिद्धान्त पर दृढता इतनी बढ गई थी कि वे अपने एक पुलिस निरीक्षक से विवाद कर बैठे भले ही इसके लिए उन्होने कुछ पदावनति का जोखिम उठाया। राजकीय कार्य से दौरे पर तागे पर बैठ कर गए। मार्ग मे अग्रेज अधिकारी ने टोक दिया कि आपको नियमानुसार तागे पर यात्रा नही करनी चाहिए। इन्होने भी उसे दो टूक उत्तर दे दिया कि पैसा मैने अपनी जेब से व्यय किया है और तागे पर यात्रा करके विभाग की प्रतिष्ठा ही बढाई है। अग्रेज अधिकारी इनके उत्तर से तो निरुत्तर हो गया किन्तु बाद मे तागे पर न जाने का निर्देश भी उसने दे दिया। राजसेवा काल मे ही उन्होने पेशावर व अन्यत्र कई आर्यसमाज स्थापित कर दिए थे या स्थापना मे सक्रिय भूमिका निभाई थी। उन्होने धर्मोपदेशक नामक पत्र भी प्रकाशित किया था। पुलिस विभाग की दासता को अपने धर्मोद्धार अभियान मे बाधक समझकर सन १८८४ ई० मे उन्होने इससे त्यागपत्र दे दिया और दूने उत्साह से प्रचार का कार्य करने लगे।

कादिया के मिर्जा गुलाम अहमद के द्वारा एक हिन्दू विष्णुदास को एक वर्ष मे मुसलमान न बन जाने पर मारे जाने का भय दिखाये जाने पर पडित लेखराम वहा पहुचे और उसे सहारा दिया तथा आर्यसमाज का सभासद बना दिया। मिर्जा जी के समस्त षडयन्त्रो का भेदन करके हिन्दुओ की रक्षा की। पादरी खडकसिह के ईसाई समर्थक व्याख्यानो के खण्डन हेतु लेख लिखकर वितरित किए। अजमेर के अब्दुल रहमान को वैदिक धर्म मे लाकर सोमदत्त बनाया और इनसे शास्त्रार्थो मे भरपूर सहायता ली। चरैवेति–चरैवेति की भावना के अनुसार रात्रि दिवस निरन्तर आर्य प्रचार मे लगकर विपक्षियो को परास्त किया। फिरोजपुर से आर्य गजट पत्र के सम्पादन से आर्य प्रचार को प्रखर बनाया। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के स्थायी महोपदेशक एव प्रचारक बनकर उसके प्रधान बाबू मुशीराम जिज्ञासु (स्वा० श्रद्धानन्द) के साथ बढ चढकर काय किया।

पहले कृष्णभक्ति के रग मे विवाह करने से मना कर दिया था फिर ऋषि की उमग मे २५ वर्ष तक विवाह न करने की बात मन मे घर कर गई थी। सम्बन्धियो के आग्रह पर ३५ वर्ष की आयु मे २६ वर्षीय युवती लक्ष्मीजी से विवाह किया तो आर्य कीर्तिमान स्थापित कर दिया। जन्मजात जाति पाति से और पोगापथी पौराणिक परम्पराओ को तोड दिया। विवाह के आकर्षण एव सन्तान के सुखदर्शन भी लेखराम को धर्मपथ की दौड से रोक नही सके। लेखराम किसी प्रचार यात्रा से लौटकर सभा कार्यालय मे आकर प्रधान मुशीराम जी एव मेहता जैमिनी से मिलते है। प्रधानजी उन्हे दो सन्देश सुना देते हैं। पहला मुस्तफाबाद मे पाच हिन्दू मुसलमान बनने वाले हैं दूसरा आपका पुत्र बीमार है। सन्देश के साथ साथ अपना निर्देश भी प्रधानजी ने सुना दिया। आप पुत्र की देखभाल घर जाकर करे मै मुस्तफाबाद की व्यवस्था देख लूगा। पडितजी ने कहा नही वहा तो मेरा ही जाना ठीक रहेगा। मुझे अपने एक पुत्र से जाति के पाच पुत्र अधिक प्यारे है। वे घर गए वहा बस दो घण्टे रहकर मा और पत्नी को धैर्य बधाया और चल पडे धर्मोद्धार यात्रा पर। पीछे सवा वर्ष का पुत्र सुखदेव भी इस ससार से चल बसा।

घासीपुर जिला मुजफ्फरनगर के कई बडे बडे चौधरियो के मुसलमान होने की बात सुनकर वहा पहुचकर मौलवियो के बीच बैठ जाते है। यात्रा की व्यस्तता मे बढी दाढी को देखकर मौलवी इन्हे अपना साथी समझकर इनसे पूछ बैठे – दाढी तो हुई ये मूछे कैसे ? पडित लेखराम को अच्छा अवसर विवाद हेतु मिल गया। उन्होने हसते हुए उत्तर दिया – दाढी तो बकरो के भी होती है मूछे सिह के होती है। फिर क्या था – पडितजी ने मौलवियो को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। इनके भाषण को सुनकर सभी चौधरी मत परिवर्तन से बचकर दृढ वैदिक धर्मी बन गए। लेखराम धर्म मे आडम्बर को नही आचरण को प्राथमिकता देते थे। सभा प्रधान म० मुशीराम अपनी बैठक के बाहर धोती कुर्ता पहिनकर टहल रहे थे – तभी पाजामा प्रिय पडितजी वहा उनसे मिलने पहुच गए। *शेष भाग पृष्ठ ११ पर*

६ दिसम्बर पुण्य तिथि पर विशेष

आर्ष प्रज्ञा की ज्वलन्त प्रतिभा स्व० डॉ० प्रज्ञा देवी

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

वेद मन्त्रो की द्रष्ट्री ऋषिकाओ की चर्चा हमने सुनी है। घोषा, अपाला, लोपामुद्रा, शची, इन्द्राणी आदि के नामों का परिचय मिला, किन्तु हमने इन मन्त्रद्रष्टी ऋषिकाओं को अपने चर्म चक्षुओ से कभी नहीं देखा। उपनिषद् काल की ब्रह्मवादिनी नारियों का वृत्तान्त हमने पढा। गार्गी और मैत्रेयी जैसे विदुषियो के शास्त्रज्ञान तथा ब्रह्मज्ञान का परिचय भी प्राप्त हुआ परन्तु ये तो सहस्राब्दियों पुरानी कथाये हैं। सुलभा जैसी नैष्ठिक ब्रह्मचर्यव्रत धारिणी की कथा महाभारत में आई है, किन्तु यह घटना भी पाच हजार वर्ष पुरानी हो गई। मण्डन मिश्र की पत्नी सरस्वती (भारती) ने शकराचार्य से शास्त्रार्थ किया, यह व्रतान्त भी शकर दिग्विजय मे पढा था। उपर्युक्त पण्डिता नारियो को चाहे हमने प्रत्यक्ष नहीं देखा किन्तु साम्प्रतिक काल मे डॉ० प्रज्ञा जी जैसी विदुषी वैदिक तथा आर्ष प्रज्ञा की प्रतिमा को साक्षात देखकर हमे विश्वास हो गया कि निश्चय ही हमारे देश की नारियो ने धर्म, दर्शन, शास्त्राध्ययन तथा पठन पाठन के क्षेत्रो मे सर्वोच्च उपलब्धियां प्राप्त की है।

काशी तो सदा से विद्या की नगरी रही है। किन्तु यहां शायद ही किसी नारी को वेदादि शास्त्रों के अध्ययन का अधिकार पौराणिक पण्डितों ने दिया हो। नारियो की बात छोडिये। काशी में तो आर्यसमाज के पण्डितो को भी शास्त्राध्ययन में जैसी कठिनाइयां उठानी पडी हैं उसका इतिहास प० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, पं० युधिष्ठिर मीमासक, स्वामी वेदानन्द तीर्थ तथा स्वामी परिव्राजक सदृश आर्य विद्वानों के संस्मरणों से जाना जाता है। ऐसी स्थिति मे यह तो कल्पना करना भी कठिन है कि किसी आर्य नारी को काशी मे शास्त्र पढने की सुविधा मिल सकती है। प्रो० महेश प्रसाद की सुपुत्री कल्याणी देवी का प्रसंग तो पचास वर्ष पुराना हो गया जब हिन्दू विश्वविद्यालय के पण्डितो ने एक अब्राह्मण नारी को वेद तथा वैदिक कर्मकाण्ड का प्रशिक्षण देने से इन्कार कर दिया था।

काशी में वेदाध्ययन की परम्परा तो शताब्दियो पूर्व ही लुप्त हो गई थी। ऋषि दयानन्द ने जब १८६६ में इस नगरी मे जाकर वहा के पण्डित समुदाय को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा तो उन्हें यह जानकर बडी हैरानी हुई थी कि इतनी बडी काशी पुरी में प० बालशास्त्री तथा प० गणेश श्रोत्रिय के अतिरिक्त वेद का जानने वाला कोई पण्डित नहीं है। यह महर्षि दयानन्द का ही पुण्य प्रताप था कि न केवल काशी, अपितु समस्त भारत में वेद की चर्चा पुन प्रवर्तित हुई, अन्यथा काशी में तो नव्य व्याकरण, नव्य न्याय, नवीन वेदान्त तथा नय मीमांसा के अतिरिक्त आर्ष शास्त्रों के अध्ययन अध्यापन का सर्वथा लोप ही हो गया था।

आर्ष शास्त्रों के पठन पाठन का पुनरूद्धार मथुरा में निवास करने वाले एक प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द ने किया। नेत्रहीन होने पर भी स्वोपार्जित विद्या तथा निसर्ग प्राप्त विवेक बुद्धि से उन्होंने सस्कृत व्याकरण में अपूर्व व्युत्पन्नता प्राप्त की। अन्तत वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि सस्कृत व्याकरण का अशेष वैभव महर्षि पाणिनि की अष्टाध्यायी तथा उस पर लिखे गए महर्षि पतञ्जलि के महाभाष्य में ही प्रकट हुआ है। इन आर्ष ग्रन्थो से भिन्न कोमुदी, सारस्वत, शेखर आदि ग्रन्थो को उन्होने अनार्ष घोषित किया था। स्वामी विरजानन्द के ये क्रान्तिकारी विचार १८६०–६२ की अवधि में उनके प्रज्ञाशील शिष्य दयानन्द सरस्वती में सक्रमित हुए और उन्होने आर्ष ग्रन्थ प्रामाण्यवाद के इस सिद्धान्त को केवल व्याकरण तक ही सीमित न रख कर शास्त्रो की सभी शाखाओ में लागू किया। फलत उन्होंने यह स्पष्ट कहा कि विमल प्रज्ञा के धनी ऋषियों के ग्रन्थों के अध्ययन से वैसा ही लाभ प्राप्त होता है जैसे समुद्र मे एक बार गोता लगाना और अनेक मूल्यवान् रत्नों को पा लेना। जब कि अनार्ष ग्रन्थों में श्रम समय और शक्ति का वैसा ही व्यय होता है जैसा हम वर्षो तक पहाड खोदते रहें और हमे कुछ भी सार्थक वस्तु न मिले।

ऋषि दयानन्द ने अपनी प्रस्थानत्रयी (सत्यार्थ प्रकाश, सस्कारविधि तथा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका) में आर्ष पाठविधि की व्यवस्था की थी, किन्तु आर्यसमाज के अधिकाश गुरुकुलों में उसे क्रियान्वित नहीं किया जा सका। इसके कारण कुछ भी क्यों न रहे हो, मोटे तौर पर यह मान लिया गया कि आर्यसमाज में ऐसे पण्डितों का अभाव ही है जो पाणिनीय शब्दशास्त्र का सहारा लेकर व्याकरण पढा सकें। तथापि कुछ पण्डित अवश्य थे जो आर्ष व्याकरण में प्रकर्षता प्राप्त करने के अनन्तर पाणिनीय क्रम से ही व्याकरण पढाना श्रेयस्कर समझतें थे। इनमे अन्यतम थे 'पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु' जिन्होंने सर्वदानन्द साधु 'आश्रम' (हरदुआगंज–अलीगढ) में स्वामी पूर्णानन्द नामक एक विद्वान् से पाणिनीय शास्त्र का अध्ययन किया था। कालान्तर में जिज्ञासु जी अमृतसर तथा लाहौर में रहकर आर्ष व्याकरण का अध्यापन कराते रहे। देश विभाजन के पश्चात् उन्होंने काशी को अपना कार्यक्षेत्र बनाया और व्याकरणादि शास्त्रों के अध्ययन अध्यापन में प्रवृत्त हुए। जिज्ञासु जी की सुविस्तृत शिष्य परम्परा रही है जिसमें प० युधिष्ठिर मीमांसक, आचार्य भद्रसेन, पं० याज्ञवल्क्य, प० धर्मदेव निरुक्ताचार्य, डॉ० विजयपाल, डॉ० वीरेन्द, डॉ० मुनीश्वरदेव, डॉ० सुद्युम्न, डॉ० प्रशस्यमित्र शास्त्री जैसे सुधी विद्वानो के अतिरिक्त डॉ० प्रज्ञा तथा सुश्री मेघा जैसी विदुषियो की गणना होती है।

डॉ० प्रज्ञा जी का जन्म ५ मार्च १६३७ को मध्यप्रदेश के सतना जिले के कोलगवा नामक ग्राम के एक सद्गृहस्थ श्री कमलाप्रसाद आर्य के यहा हुआ था। १६५४ मे श्री आर्य का स्वर्गवास हो गया तो उनकी पत्नी श्रीमती हरदेवी ने अपनी दो पुत्रियो प्रज्ञा तथा मेधा एव पुत्र सुद्युम्न को वाराणसी लाकर पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के सुपुर्द कर दिया। तब कौन जानता था कि ये बहने काशी में रहकर न केवल उच्च कोटि का ज्ञानार्जन करेंगी अपितु इसी पौराणिक नगरी में 'पाणिनि कन्या महाविद्यालय' की स्थापना कर भारत के नारी समाज को समुन्नत करने में अपना सर्वस्व समर्पित कर देंगी। प्रज्ञा जी ने जिज्ञासु जी के सान्निध्य में वेद वेदांग, दर्शन आदि का तलस्पर्शी अध्ययन किया तथा १६७० में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से विद्यावारिधि की शोध उपाधि प्राप्त की। ८ जुलाई १६७१ को उन्होने काशी में जिज्ञासु स्मारक पाणिनि कन्या महाविद्यालय की स्थापना की। आज इस महाविद्यालय को स्थापित हुए इक्तीस वर्ष पूरे हो रहे हैं। इस महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर सैकडों कन्याओं ने भारतीय धर्म, सभ्यता, संस्कृति, कला तथा दर्शन का जो पाठ पढ़ा है वही इस शिक्षण संस्था के गौरव का आख्यान करने के लिए पर्याप्त है। यह सब डॉ० प्रज्ञा जी के परिश्रम लगन अध्यवसाय त्याग तथा तप का फल है।

आश्चर्य होता है कि संस्था संचालन के गुरुतर भार को वहन करती हुई डॉ० प्रज्ञा किस प्रकार सामाजिक शैक्षिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों में स्वयं को निरन्तर सम्पृक्त रखती थीं। समस्त भारत के आर्यसमाजों मे वे प्रचारार्थ जाती थी। व्याख्यान प्रवचन तथा कथाओं का निरन्तर क्रम जारी रहता। साथ ही वेद पारायण यज्ञों में ब्रह्मा के पद पर आसीन होकर बृहद् यज्ञ यागो का सम्पादन करना उनकी परिश्रमशीलता का प्रमाण प्रस्तुत करता है। महाविद्यालय में शैक्षिक और सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का जैसा विस्तार उन्होने किया था, इसका पूर्ण परिचय तो मुझे १६६४ में तभी मिला जब मैं स्वयं उक्त संस्था के वार्षिकोत्सव में गया और यह सब अपने चर्मचक्षुओं से देख सका।

डॉ० प्रज्ञा जी की ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज के प्रति असीम श्रद्धा थी। इसका एक ज्वलन्त प्रमाण मुझे जब मिला जब कई वर्ष पूर्व मैंने उन्हें दयानन्द शोधपीठ पञ्जाब विश्वविद्यालय के अध्यक्ष पद पर रहते समय ऋषि दयानन्द की वेद व्याख्या पद्धति पर आयोजित एक अखिल भारतीय सगोष्ठी में आमन्त्रित किया। एक विद्वान् जो जन्म से आर्यसमाजी तो थे ही वेद विद्या में स्वय को पारंगत भी समझते थे, अकारण ही सायण की प्रशसा करते करते ऋषि दयानन्द के प्रति कुछ आलोचनात्मक कटुक्ति कह गए। गोष्ठी मे आमन्त्रित अन्य विद्वानों ने इसे अनुचित माना। हमने डॉ० प्रज्ञा जी से निवेदन किया कि वे अपने व्याख्यान में आक्षेपकर्ता की बयानियों का करारा उत्तर दे। उस सभा में उपस्थित सभी लोगों को डॉ० प्रज्ञा जी का वह तेजस्वी उत्तर स्मरण होगा जो उन्होंने ऋषि दयानन्द के वेद व्याख्या प्रणाली के समर्थन में दिया था तथा सायणाचार्य की प्रशसा करने वाले वे कथित विद्वान् अपना सा मुंह लेकर रह गए थे।

मन्त्रमालिका, देवसभा, उरुधारा नारी, स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश व्याख्यान माला, नवग्रहों का शुभागमन आदि अनेक ग्रन्थों के लेखन व सम्पादन से डॉ० प्रज्ञा जी की असाधारण विद्वता का परिचय तो मिलता ही है अष्टाध्यायी भाष्य लेखन तथा प० क्षेमकरणदास त्रिवेदी कृत अथर्ववेद भाष्य एवं गोपथ ब्राह्मण भाष्य के सम्पादन से उनका गहन पाण्डित्य भी पदे पदे प्रमाणित होता है। प्रज्ञावान् पुरुष दीर्घायु नहीं होते। विगत ६ दिसम्बर १६६५ को ऐसी वेद विदुषी का भी देहावसान हो गया। इस दैवी विधान के समक्ष नतमस्तक होना ही पड़ता है।

– नन्दन वन,
जोधपुर

✿✿✿

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की अस्मिता पर भूखे भेड़ियों का हमला !
१९८ बीघा जमीन बेचकर मालामाल हुए

समूचे राष्ट्र की आखो मे पीडा का झझावात उमड पडा जिस दिन समाचार पत्रो के मुख पृष्ठ पर स्याह रेखाओ मे यह तथ्य उभर कर आया कि विश्वविद्यालय की बहुमूल्य लगभग ३२ करोड की धरती आर्यसमाज के पुरोधा माने जाने वाले सन्यासियो स्वामी ओमानन्द स्वामी इन्द्रवेश स्वनाम धन्य कुलपति डॉ० धर्मपाल तथा वैदिक ऋचाओ से अभिमन्त्रित ऋत्विजो छद्म के कालुष्य से भरे भूमाफिया लोगों ने बेशर्मी के साथ बेचकर अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के सीने पर खजर चलाकर कदाचार का काला इतिहास लिख दिया।

सभवत सामान्य जनो के मानस मे इस समाचार से भले ही अहसास न हुआ हो क्योकि भारत की आम जनता ऐसे समाचारो से अब उद्वेलित नहीं होती किन्तु सम्बद्ध लोगों मे निश्चय ही उद्वेग उमडा होगा कि भरी दुपहरी मे यह जघन्य काण्ड क्यो और कैसे हो गया ? पालकी उठाने वाले कहारो ने ही सद्य परिणीता वधू की अस्मत सरे आम लूट ली। इस कुकृत्य ने नाना प्रकार के सशय उत्पन्न किए हैं। शायद अनेक वर्षों से इस बहुमूल्य भूखण्ड को बेचने की साजिशो का तानाबाना जिन लोगो ने तैयार किया था उन्हीं ने पजाब प्रतिनिधि सभा के समानान्तर एक नकली विद्या सभा की स्थापना कर मेरठ से चुपचाप १९६८ मे रजिस्ट्रेशन कराकर अपनी कल्पनाओ को अजाम दिया है।

यह तथ्य और भी विदीर्ण करने वाला है कि वैदिक सस्कृति के जिन ध्वज वाहकों ने इस विद्यापीठ के सरक्षक बनकर प्राण प्रतिष्ठा की उन्होने ही इसकी अस्मिता लूटी है। यह जीवन्त सस्थान जो आज विश्वविद्यालय के कलेवर मे खडा हुआ है स्वामी श्रद्धानन्द के चीवर वस्त्र तथा हाथ के कमण्डलु जिसके बनाने मे नीलाम हो गए। गाधी जी को 'महात्मा का ऐतिहासिक अवदान जिसकी शीतल छाया में मिला उसी को लूट कर धन की हवस पूरी करने वाले इसके पुराने पहरुए ही हैं उन्हीं के हाथो से यह मुस्कराता फूल मसला जा रहा है।

स्वामी श्रद्धानन्द ने मार्च १९०२ मे कागडी की पावन धरती पर भगीरथी के किनारे गुरुकुल की स्थापना की थी। अमर हुतात्मा के मानस में महर्षि दयानन्द के दिव्य सदेश को समग्र विश्व मे जीवन्त देखने की ललक तथा सस्था से उत्पन्न तरुण स्नातकों को देश की स्वाधीनता के यज्ञ में समिधा बनाने का सकल्प था। इसी पृष्ठ भूमि में स्वामी जी ने अपने दोनों पुत्रों को जलती यज्ञ की ज्वाला में झोक दिया था। 'वीर अर्जुन' के सस्थापक प० इन्द्र विद्यावाचस्पति ने आजीवन प्रखर लेखनी से राष्ट्र की क्रान्ति मे अमित योगदान दिया था। दूसरे पुत्र हरिश्चन्द्र विद्यालकार जो महान क्रान्तदर्शी राजा महेन्द्र प्रताप के साथ देश की मिटटी का तिलक माथे पर लगाकर विश्व मे क्रान्ति की अलख जगाते रहे। हरिश्चन्द्र कभी नहीं लौटे पता नहीं कहा अन्तर्ध्यान हुए। स्वामी श्रद्धानन्द के द्वारा लगाया गया वही अकुर अब एक वट वृक्ष के रूप मे लहलहाने लगा है।

राष्ट्र की अकूत सपदा तथा जनता की पसीने की कमाई अनेक वर्षों से इसकी चार दीवारी मे सिमटने लगी है। शायद यही कारण है कि भेडियो ने धन की बोटी चबाने के लिए इसी परिवेश मे मादे बना ली है। गुरुकुल के जिस प्रागण मे वेदमन्त्रों की वैखरी की ध्वनि उठनी चाहिए थी वहा कदाचार की टेकरियो के सिलसिले नजर आने लगे हैं। सरकारी अमला भी यहा आकर सुस्वादु भोजन कर भागीरथी के शीतल जल से स्नान कर मुक्ति के सोपानो पर खडा हो जाता है। धन का लेखा जोखा कौन रखता है। कागजी महल खडे करना और काली कमाई से आने वाली पीढी के लिए ऐशोआराम के सामान जुटाना हमारी फितरत मे समा गया है।

लाश के चारों और खडे गिद्धो की तरह यहा की सीनेट और प्रशासनिक अधिकारियो के काफिले इस सस्था की बोटिया किस तरह नोच रहे हैं यह शब्दो की अभिव्यक्ति मे लाना भी कठिन प्रतीत होता है।

सस्थान को विश्वविद्यालय का रूप देने हेतु जिस बहुमूल्य धरती को सहर्ष भेट किया गया वही १९८ बीघा भूखण्ड वर्तमान कुलपति डॉ० धर्मपाल की रहनुमाई मे मात्र रू० ३५०००/– प्रति बीघा की दर पर ७० लाख रुपये मे भूमाफियाओ को दे दी गई है। जो नगर के मध्य मे तथा जिसका मूल्य ३२ करोड आका जा रहा है जबकि शहर से लगभग आठ किमी० दूर सडक से आधा किमी० परे खेती की जमीन ६० हजार रुपये प्रति बीघा की दर से इजीनियरिंग कालेज बनाने के लिए खरीदी गयी।

अखबारो के पन्नो मे काली कहानी प्रकाश मे आई है वह नि सन्देह चौकाने वाली तथा अतीत के भ्रष्टाचारो को पीछे छोड देने वाली भी है। अब तो भूमाफिया क्रेताओं और राजहसों की मानिन्द श्वेत वस्त्र धारी वैदिक वक्ताओ डॉ० धर्मपाल प्रभात शोभा प्रो० शेर सिह तेजपाल मलिक आदि तथा काषाय वस्त्रो से सुसज्जित स्वामी ओमानन्द स्वामी इन्द्रवेश आदि जीवन के उपसहार मे श्वास लेने वाले निष्काम कर्मयोगियो ने मिलकर क्रय विक्रय को वैधानिक रूप देना प्रारम्भ कर दिया है। केन्द्रीय सरकार को चुनौती भरे इस दुष्कृत्य को पूरी शक्ति से कुठित करना होगा।

इस सदेह को और भी अधिक बल मिलने लगा है कि एक दशक पूर्व सीनेट तथा अन्य माध्यमो से जुडे साधु सन्तो को उस व्यक्ति की तलाश थी जो काल्पनिक कथानक को साकार रूप दे सके। निश्चय ही उस दिन इस अपेक्षा पर भी पटाक्षेप हो गया जिस दिन डॉ० धर्मपाल को कुलपति के रूप मे इस सस्थान मे नियुक्त कर दिया गया और षडयन्त्र की प्रस्तावना को अमली जामा पहिनाने का उपक्रम प्रो० शेर सिह प्रभात शोभा डॉ० धर्मपाल आदि ने प्रारम्भ कर दिया। वर्तमान कुलपति को ६ वर्ष होने वाले हैं। इसी बीच कुलपति ने अघमषण मत्र की नई प्रस्तावना लिखकर अनेको फकीरो को मालामाल भी बना दिया है। इस चुनौती भरे तथा कुहासे मे दबे कथानक के आवरण को उठाने मे समय तो लग सकता है लेकिन सस्था के अन्तर्देश मे जिन विकारो ने घर बना लिया है उनसे परित्राण भी अनिवार्य है। कहीं ऐसा न हो कि स्वामी श्रद्धानन्द का यह बोधिवृक्ष समय से पूर्व भू–लुठित हो जाये। अब काले कारनामे को स्पष्ट करने वाले निम्नाकित बिन्दुओ पर ध्यान अपेक्षित है।

१ गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की स्थापना ४ मार्च १९०२ स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा की गयी।

२ १९२४ मे बाढ के कारण गुरुकुल को मायापुर मे स्थापित किया गया।

३ जगजीतपुर जमालपुर ज्वालापुर आदि के निवासी द्वारा कुछ भूमि दान मे तथा कुछ भूमि चन्दे से प्राप्त धन से आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने खरीदी।

४ १९५० मे डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जी महामहिम राष्ट्रपति जी भारत ने एक लाख रुपये विश्वविद्यालय को तथा एक लाख रूपये राजेन्द्र छात्रावास के निर्माण के लिए ३३ वर्षों मे बिना ब्याज के वापस देने हेतु दिया।

५ वर्तमान कुलपति डॉ० धर्मपाल ने उक्त छात्रावास को गुरुकुल विद्यालय की सम्पत्ति बताकर समिति के विरोध होने पर भी ५००० रुपये मासिक किराये पर दे दिया।

६ १९६१ मे मई मे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा इस विश्वविद्यालय को विधिवत् डीम्ड टू बी युनिवर्सिटी का दर्जा देने का प्रस्ताव पारित हुआ जिस हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने खसरा न० ५५२ ५३ ५४ ५५, ५६ की भूमि को विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार के नाम हस्तान्तरित कर दिया।

७ आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की एक शैक्षणिक उपसमिति आर्य विद्या सभा है। आज के जमीन विक्रेताओ ने १९८६ मे इसी के समानान्तर एक नकली विद्या सभा का गठन किया था।

८ जबकि पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के डॉ० के० के० पसरीचा जी के द्वारा दायर याचिका २७४–८५ के आधार पर जालन्धर के सीनियर जज आई० एस० बाजवा ने अन्य आर्य विद्या सभा के पजीकरण पर रोक लगा दी थी तथा आदेश दिए कि नई विद्या आर्य सभा बनाने हेतु मात्र जालन्धर या दिल्ली मे रजिस्ट्रेशन कराया जा सकता है।

९ परन्तु नकली विद्यार्य सभा का पजीकरण कराने हेतु मेरठ मे १९८६ मे डॉ० हरि प्रकाश शेर सिह अश्वनी कुमार डॉ० धर्मपाल आदि शामिल थे।

१० इन्हीं लोगो ने २४ नवम्बर २००० को विश्वविद्यालय की भूमि को एस० डी० एम० की कोर्ट से नकली विद्या सभा के नाम कर लिया।

११ इसके विरोध मे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब २३ मई २००१ को मण्डलायुक्त सुभाष कुमार से स्थगनादेश प्राप्त कर लिया। इसके बावजूद ४ जून २००१ को सहायक मुख्य अधिष्ठाता डॉ० दीनानाथ ने जमीन बेच दिया।

१२ डॉ० दीनानाथ ने तथाकथित आर्य विद्या सभा के पूर्व प्रधान डॉ० रणजीत सिह पूर्व मत्री प्रकाशवीर विद्यालकार वर्तमान प्रधान स्वामी इन्द्रवेश व वर्तमान मत्री तेजपाल सिह मलिक के लिखित आदेश पत्र के माध्यम से जमीन का विक्रय किया जाना स्वीकार किया है।

१३ भूमि विक्रय सम्बन्धित निर्णय लेने के लिए दिनाक ११ मई २००१ क आर्य समाज मन्दिर १५ हनुमान रोड न दिल्ली पर कुलद्रोही तथाकथित आर्यसभ गुरुकुल कागडी हरिद्वार की विस्तरि उच्च स्तरीय समिति नामक सभा व कार्यवाही मे इन कुलद्रोहियो ने जमी बेचने का निर्णय लिया।

इन कुलद्रोहियो को कठोर दण्ड दे हुए गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय व भूमि वापस दिलाने का कष्ट करे जिस स्वामी दयानन्द के अमर सेनानी स्वा श्रद्धानन्द के कृण्वन्तो विश्वमार्य के सप को साकार किया जा सके।

– दयाशकर विद्यालक
सघर्ष समिति सदर
गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्व

अब तो कुछ करना ही पड़ेगा !!

– ज्ञान चन्द्र

गताक से आगे

एक अल्प प्रमाण के तौर पर अभी कुछ ही वर्ष पूर्व निर्वाण प्राप्त बौद्ध विद्वान भदन्त आनन्द कोसल्यायन के ग्रन्थ वेद से मार्क्स तक को सदर्भित करना चाहेगे।

बुद्ध भूमि प्रकाशन नागपुर से इस पुस्तिका का तृतीय सस्करण १६६७ मे छपा है। इसने प्रारम्भिक २३ पृष्ठो पर वेदो की जो बखिया उधेडी गई है उसे पढकर एक सामान्य और साधारण वेदाध्येता का रक्त भी वाष्प बनने लगेगा। न सिर न पैर जबरदस्ती वेदो के घृणित और निम्न कोटि के अर्थो को प्रस्तुत किया गया है। बिना वेदो का साधारण मौलिक अध्ययन किए हुए मात्र पूर्वाग्रह ग्रसित सदर्भ ग्रन्थो के आधार पर अल्पज पाश्चात्यो की मुख जूठन उठा कर जो छीछालेदर तथाकथित बौद्ध विद्वान ने की है उससे स्वय भगवान बुद्ध तक लज्जित महसूस करेगे। इस बौद्ध विद्वान के कथन न तर्क युक्त है न शब्दार्थ ही सत्य और व्याकरण के अनुरूप है और न वैदिक परिवेश और मान्यताओ से उसका कुछ लेना दना है। इन २३ पृष्ठो मे से ६ १० ११ पृष्ठो पर तो मूढता और धृष्टता की सारी सीमाए पार कर दी गई है। अत्यन्त घृणोत्पादक विकृत कामुकता युक्त तथा अश्लीलतापूर्ण वेदार्थों मे जिस प्रकार प्रस्तुत किया गया है वह अत्यन्त ही द्वेषपूर्ण एव कुटिलवृत्ति का परिचायक है। क्या करुणामूर्ति भगवान बुद्ध को उन जैसी महान आत्मा मौलिक चिन्तक व अप्रतिम तपस्वी को ऐसे मूढ और वेदद्वेषी लेखक की ही अपने सद्धर्म प्रचार के लिए जरूरत थी। क्या घृणापूर्ण वेद निन्दा के बिना बुद्ध का धर्म शून्य और आधार रहित हो जाता है। क्या बुद्ध धर्म मे स्वकीय तत्त्व कुछ है ही नहीं। निश्चित रूप से बुद्ध की मौलिकता और महानता वेद विरोध पर आधृत नहीं थी यह एक ऐतिहासिक तथ्य है। सत्य तो यह है कि वेदो की वानिक स्पष्टता भाषा की अतीव शुद्ध रहस्यपूर्णता बह्वर्थी प्रकृति कूट शैली आलकारिक वर्णन अतीव गहन यौगिक स्तुतिकरण से सामान्य जन को बचाने मुक्ति दिलाने के हित तथा उस काल के धूर्त स्वार्थी लोलुप व बहुधा अज्ञानी पुरोहित समुदाय से अल्पज्ञ जन साधारण को सुरक्षित रखने के रहना उचित समझा। उन्होने ईश्वर व पुनर्जन्म पर विशेष टिप्पणी न करके आचार नैतिकता सत्कर्म और सदाचार जैसी प्रत्यक्ष बातो पर ही आग्रह रखा। बुद्ध द्वारा उपदिष्ट धम्मपद ग्रन्थ के वाक्य व विचार वेद और उपनिषद के प्राय अनुवाद ही लगते है। एक भी बुद्ध वचन इतना नूतन और मौलिक नही है जिसके आधार रूप समानार्थी वचन वेद या फिर उपनिषदो मे न मिलता हो। वेद विरोधी होने का तो प्रश्न ही नही है। धम्मपद की प्रत्येक पालि बुद्धगाथा से मिलता जुलता मन्तव्य आपको सरलता से वेदो उपनिषदो मे प्राप्त हो जाएगा। स्वय शाक्यमुनि गौतम बुद्ध अपने आचरणो और आस्था से कहीं भी वेद विरोधी सिद्ध नही होते। वेद का सत्याचरण कर्मठता नैतिकता सामाजिकता समृद्धि और स्वास्थ्य की बाते बुद्ध वचनो मे अपनी निजी मौलिकता मे पूरा प्राप्त होता है। दो विषयो मे बुद्ध अपनी भिन्न भावधारा लेकर जरूर चलते हैं। एक तो कर्मकाण्ड जप मन्त्रोच्चार व यज्ञादि पर उनका बिल्कुल जोर नही है। दूसरे साधना व योगानुभूतियो की शब्दातीत व वर्णनातीत वैदिक बातो पर उनका सम्पूर्ण मौन।

पर बुद्ध की इस बात को समझने मे भी कोई जटिलता आडे नहीं आती। बुद्ध सकारण ही बाह्य यज्ञ कर्मकाण्डो के समक्ष आन्तरिक कर्मकाण्ड और आन्तरिक यज्ञ पर जोर देते थे तथा भौतिक सुख समृद्धि के लिए भी कर्मठता उद्यम प्रत्युत्पन्न मतित्व पर आग्रह रखते थे न कि आकाशीय देवताओ की कृपा पर भरोसा करते थे। परन्तु भौतिक कामनाओ पर जोर देना बुद्ध अतार्किक समझते थे। यह भी औपनिषदिक ऋषियो की सी ही वृत्ति है। इसमे कोई विपरीत बात भी नहीं है।

परन्तु रहस्यवाद, गूढ तात्विक्ता गुह्य अनुभूतियो और अति गहन प्रतीकवाद से भरे वेद के आध्यात्मिक विषय स्थलो पर बुद्ध का मौन एक पुष्ट प्रमाण है इस बात का कि ये विषय शब्दातीत हैं और शब्द मे बाधते ही वे अपना मूल्य व प्रभाव त्याग देते हैं। सत्य को शब्द मे बाधते ही वह विचार या मत बनकर रह जाता है और अपनी मौलिक सूक्ष्मता को छोड देता है।

अकारण वेद निन्दा वेदोपहास वेद विकृति के प्रति कुछ करने का समय आ चुका है। अब तो कुछ कहना ही पडेगा। विदेशी विद्वानो के अज्ञान असामर्थ्य के साथ साथ बहुत से पाश्चात्यो की भारत विरोधी वृत्ति के कारण प्रस्तुत किए गए वेदार्थों के विरोध मे अब कुछ कहना ही पडेगा। एक तो वेदो के सत्यार्थों को सामने लाने का अनथक अविरल सकल्पपूर्ण प्रयास करना ही पडेगा और वह भी मात्र अपनी वेद आस्था की रक्षा व और आर्य जाति के गौरव श्रेष्ठत्व के रक्षणार्थ मात्र नही – यह तो एक तुच्छ सा अहवादी प्रयास होगा। बल्कि यह तो इसलिए कि आज के अनेकचित्त विभ्रान्त मानव जाति के अस्तित्व की रक्षार्थ वेदानुशील को बढावा देने के लिए। इसी वेदाश्रय से मानवता बच सकेगी। यह विश्वास मात्र नहीं है। इसके पीछे सदियो का अनुभव है।

बहुत वर्ष पहले पाण्डिचेरी के योगिराज श्री अरविंद ने दीघकालीन वेदानुमथन के बाद यह कहा था कि **मानवता का भविष्य भरत और विश्व का भविष्य वेद के अन्वेषण और अनुसधान पर व प्रयोग पर अवलम्बित है। अत वेदो का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाना चाहिए।**

ग्रीक लैटिन फ्रैंच जर्मन अग्रेजी एव सस्कृत के अपने गहन ज्ञान के आधार पर तथा अपनी यौगिक अर्हता के द्वारा श्री अरविन्द ने वेदो के इतने नूतन उपयुक्त और सटीक अर्थ प्रस्तुत किए कि उसके सामने सायण आदि तो फीके पड ही जाते हैं यहा तक कि निरुक्त जैसे महान ग्रन्थ के रचयिता महर्षि यास्क भी हलके पड जाते हैं। यास्क का काल वेदो के बहुत बाद का है। अत निरुक्त मे वैदिक देववाणी की सम्पूर्णता व रहस्यात्मकता प्राप्त नहीं होती। देवगिरा छान्दस के शब्दार्थों की अशेष व परिपूर्ण अभिव्यजना वहा प्राप्त नहीं होती। परन्तु बुद्धि के पार परमे व्योमन तक पहुचते हुए ऋषि श्रेष्ठ अरविन्द ने अपने योगबल एव ग्रीक लैटिन जर्मन फ्रैंच भाषाओ की शब्द रचना ज्ञान के आधार पर इन भाषाओ के शब्दो मे पुरानी वैदिक शब्दाभिव्यक्ति की परछाईं और भावना को पहचानकर वेद मन्त्रों के अत्यन्त करने मे निर्विवाद सफलता पाई। श्री अरविन्द के वेद रहस्योद्घाटक लेख इस बात का स्पष्ट व पुष्ट प्रमाण हैं। और सर्वप्रथम तो अनन्त वन्दनाए हैं महर्षि दयानन्द के पुनीत चरण कमलों की जिन्होने भ्रातियो विकृतियो के दुष्ट सलिल से भरे अधतमत पूर्ण विस्मृति के गर्भ से वेदो को उद्धृत करके मानवता के सामने पुन उन्हे उनकी स्वर्णिम आभा व ईश्वरीय गरिमा के साथ प्रस्तुत किया। विश्ववद्य देव नमस्कृत समस्त मानवमात्र के लिए पूजनीय महर्षि दयानन्द ने कितने कठिन दुराग्रही निम्नवृत्तिपोषक व कठिन-क्रूर काल मे वेदो को अत्यन्त आस्था और दृढता के साथ सामने रखा। विदेशी दासता एव आर्यजनीय मूढता के भयानक जटिल और गर्हित अवरोधो के बावजूद वेद और एकमात्र वेद का उद्घोष करने का अतिमानुषिक साहस किया। महर्षि दयानन्द का वेदोद्धार उपक्रम इतना मौलिक व इतना दृढ है कि वेद एव दयानन्द आज पर्यायवाची से हो गए हैं और इतने घुल मिल गए हैं कि एक का ध्यान या प्रसग आते ही दूसरे का ध्यान स्वत हो आता है।

वेद अपरिहार्य है। वेद अनुपेक्षणीय हैं। यदि हमे उत्तम स्वास्थ्य समृद्धि प्रज्ञा सतत विकास और सर्व सुख सम्पन्नता से युक्त मानव जीवन एव सहयोगी तथा सदा अनुकूल प्रकृति युक्त वातावरण की अभीप्सा है तो वेद पूरी तरह स्वीकार्य बल्कि अपरिहार्य ही हैं। धर्म अर्थात दैवी सम्पदा एव नैसर्गिक निर्ममत्ता की जय हमे अभीष्ट है तो वेद अपरिहार्य हैं। अधर्म अर्थात् मानवता विरोध वृत्तियो की पराजय चाहिए तो वेद चाहिए। विश्व का कल्याण और विश्वजीवन की सार्थकता हमारा लक्ष्य है तो वेदों की शरण मे आना ही होगा। वैज्ञानिक वृत्ति एव पद्धति साथ ही सद्भाव पूर्ण तार्किक दृष्टि से वेदो का अध्ययन विश्लेषण प्रारम्भ किया जाना चाहिए। यह सर्व सम्पन्नता का भी सर्वसुख के निमित्त होना ही हैं।

वेदानुसधान व वेदानुशील के साथ ही साथ हमे मूढों प्रलापियों धूर्तो व कपटी जनों से अपनी प्रतिरक्षा करनी होगी। स्वमत आग्रही अज्ञानपूर्ण एव दुष्ट ज्ञानपूर्ण लोगो के लिखे दोष दर्शक लोगों के ग्रन्थों का पराभव व विनाश भी उसी दिशा में आगे बढाने वाला कार्य होगा। मानवता की रक्षार्थ अब तो कुछ करना ही पडेगा।

– श्री अरविन्द चेतना समाज

अपसंस्कृति और उसकी विकृतियों से बचिए

– अशोक कौशिक

समकालीन भारतीय समाज तीव्र सक्रमण के दौर से गुजर रहा है। परिवर्तन की आधिया कई दिशाओ से आ रही हैं – एक ओर आधुनिकीकरण की अनिवार्यता है दूसरी ओर परपरा के आग्रह हैं। पश्चिम की आर्थिक तकनीकी सहायता अपने साथ वहा की जीवन शैली और नए मूल्य जुटा रही है जिन्हे अपनी जड से कटे भारतीय आधुनिकता समझ कर बिना तर्क के अपना रहे हैं। इस अधानुकरण ने एक नई चिता को जन्म दिया है – अपनी अस्मिता और पहचान खो जाने की। प्रगति और परम्परा के समन्वय के जो प्रयत्न हुए हैं उनके अधिकाश परिणाम हास्यास्पद रहे हैं न हम भारतीय रह गए हैं न हम सच्चे अर्थों मे आधुनिक हुए हैं। छद्‌म भारतीयता पर हमने छद्‌म आधुनिकता का लबादा ओढ़ लिया है और अनेक भ्रमो को पालते हुए एक गन्तव्यहीन यात्रा पर निकल पडे हैं। स्थिति और भी उलझन भरी उस समय होती है जब हमे यह अनुभव होता है कि परम्परा के पास आज के समाज की सभी समस्याओ के हल नहीं हैं और न आधुनिकता के कार्यक्रम मे ऐसी शक्ति है कि वह परम्परा की अवहेलना कर समाज को आगे बढा सके। हम अनिर्णय के दलदल मे फस गए हैं और सार्थक विकल्पो की खोज के मार्ग को अवरोधित पाते हैं। हमारे सास्कृतिक लक्ष्य और साधन दोनों एक के बाद दूसरे चक्रवात मे फसकर झटके खा रहे हैं। यही है आज के सक्रमण की पीडा।

सक्रमण तो ऐतिहासिक प्रक्रिया है। उसका हमेशा दुखदायी होना आवश्यक नहीं है। पारिस्थितिक परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन की अनिवार्यता बन जाते हैं। मद गति से होने वाला अनुकूल समाज की निरतरता को प्रभावित नहीं करता। सच तो यह है कि उसके बिना सामाजिक सरचना और सास्कृतिक मूल्य दोनो के विघटित होने का खतरा होता है। परिवर्तन को प्रेरित करने वाले अनेक कारक हो सकते हैं नई आवश्यकताए सुरक्षा की पर्याप्त और विश्वसनीय व्यवस्था अत्यधिक श्रम और एकरसता कम करने वाली सुविधाए, नए प्रतिष्ठादायक उत्पादन आदि। ऐसे परिवर्तन सस्कृति के नम्य पक्षों मे अपेक्षाकृत सरल होते हैं। आधार विश्वास व मान्यताए तुलनात्मक रूप से अनम्य होती हैं। उनमें परिवर्तन होता तो है पर वह समय लेता है। इन पक्षो से अनावश्यक छेडछाड तीव्र प्रतिक्रिया को जन्म दे सकती है और उसके परिणामो का पूर्वानुमान कठिन होता है। अन्य सस्कृतियों के तत्व और नवाचार उनकी गुणवत्ता के आधार पर अपनाए जाते हैं कभी कभी उनके नए-पन और प्रतिष्ठा के लिए भी। यहा यह भी आवश्यक है कि परिवर्तन किसी समाज पर थोपा न जाए वह उसके केन्द्रीय मूल्यों से टक्कर न ले और समाज को अपनी गति से अन्य सास्कृतिक तत्वों को आत्मसात् करने का अवसर हो। भारत ने शेष विश्व को क्या दिया? [illegible] के [illegible] अल समादी के अनुसार तीन चीजें – अक और गणना पद्धति (दशमलव बिंदु के साथ) शतरज का खेल और कथाए। कोल्लेयर की सूची मे इनके अतिरिक्त दो तत्व और हैं – चौसर (और पासे) का खेल और रेखागणित के आरम्भिक सूत्र। बात यह नहीं है कि भारत ने और भी कुछ दिया या नहीं। अन्य सूचियो मे योग खगोल शास्त्र उदात्त दार्शनिक चिंतन चरक और सुश्रुत का आयुर्विज्ञान आदि शामिल हैं।

तीन या पाच की सक्षिप्त सूची का महत्व यह है कि उसके तत्वो का जन्म तो भारत मे हुआ पर उनका प्रसार विश्व भर मे हुआ और वह भी इस तरह कि वे अपनाने वाली संस्कृति के रग मे रग गए उसके अनुरूप ढल गए। भारतीय अको को तो अरबी अक ही मान लिया गया था। शतरज का स्रोत एक है पर उसके रूप और नियम अनेक हैं। जिन देशो ने उसे अपनाया उन्होंने खेल को नए मोड दिए और इस तरह उसके स्वरूप को अनेक रूप दिए। भारतीय मूल की कथाओ का आश्चर्यजनक विस्तार हुआ और कहीं चीनीकरण। रेखागणित का प्रयोग भी भिन्न प्रयोजनो से हुआ उसके माध्यम से वास्तुविद्या के अनेकरूप और उसकी शैलिया विकसित की गईं। चौसर का खेल अब अभिजात्य का चिन्ह भले ही न हो पर सैकडो लोक सास्कृतिक रूपो मे वह अभी भी जीवित है। ससार की हर सस्कृति ने बाह्य तत्व ग्रहण किए हैं भारत ने भी। मुख्य प्रश्न इन तत्वो के उदगम का नहीं है प्रश्न है उनके समवाय का जिससे सस्कृति को उसकी विशिष्टता मिलती है।

सस्कृति और परस्परा दोनो मानसिक सकल्पनाए हैं। इनका प्रतिरूप या तो समाज उसके इतिहासकार साहित्यकार दार्शनिक और सास्कृतिक व्याख्याकार स्वय गढते हैं या दूसरो के गढे प्रतिरूप को ग्रहण कर लेते हैं या उसमे से अधिक प्रतिस्पर्धी प्रतिरूप एक साथ अस्तित्व मे रहते हैं। इस तरह के किसी प्रतिरूप मे सस्कृति के सभी तत्वो का समावेश सभव नहीं होता उन्हे एक निश्चित योजना के अनुसार सजोया जाता है। कौन से तत्व चुने जाते हैं और कौन से छोडे जाते हैं। वह इस पर निर्भर होता है कि हम बाहरी दुनिया को अपना कैसा चेहरा दिखाना चाहते हैं। युद्ध और शाति दोनो हमारी परम्परा के अग हैं। अपने आपको शाति के अग्रदूत के रूप मे प्रक्षेपित करते समय हम साहित्य के वीरगाथा काल का स्मरण नहीं करते हालाकि हमें अपने प्राचीन विनाशकारी शस्त्रों की क्षमता पर गर्व है और विजय की स्मृतिया हमे गदगद कर देती हैं।

विदेशियो ने हमारी सस्कृति को आध्यात्मिक कहा और अपने कृतज्ञ भाव से इस निरूपण को स्वीकार कर लिया। सत्य यह है कि हमारे पौराणिक आख्यान प्रणय प्रसगो से भरे हैं। अर्थशास्त्र और कामशास्त्र के क्षेत्रो मे हमारी उपलब्धिया चमत्कृत कर देने वाली हैं और सस्कृत (और उससे सबद्ध भाषाओ जैसे पालि प्राकृत और अपभ्रश) मे अध्यात्म निरपेक्ष विषयो की अमूल्य निधि है सभवत ससार की अन्य क्लासिकी भाषाओ से अधिक। विशेषता यह है कि हमने इन तत्वो का एक नैतिक आधार देने का यत्न किया था जिसका अब अवमूल्यन हो रहा है। आज जो स्थिति उभर रही है उसमे सूक्ष्म लघु और क्षेत्रीय अस्मिताए स्वायत्तता की घोषणा कर रही हैं और अपने आपको देश की विराट परपराओ से धीरे धीरे असपृक्त कर रही हैं। इस प्रवृत्ति के कतिपय परिणाम विघटनकारी हैं पर वह अकारण नहीं है उनके अपने तर्क है। अपने सास्कृतिक यथार्थ की समझ जरूरी है लेकिन इस क्षेत्र मे दुराग्रह सास्कृतिक अराजकता को जन्म दे रहे हैं।

सस्कृति को देखने समझने के मुख्यत दो दृष्टिकोण अपनाए गए हैं – वृक्ष प्रतिरूप और नदी प्रतिरूप। पहला दृष्टिकोण सस्कृति को वृक्ष के रूप मे देखता है समान जडे एक तना और अनेक शाखाए। भारतीय मूल के मतो और उनसे जुडी सस्कृतिया बौद्ध जैन सिख मे यह उपमा अशत सही हैं। पर प्रश्न यह है क्या हम चार्वाक लोकायत बौद्ध जैन और सिख आदि मतो को केवल शाखाए मान सकते हैं? ये शक्तिशाली प्रति सस्कृतिया थी जिन्होने वैदिक धम की धारा को एक नया मोड देने का प्रयत्न किया उसके लक्ष्यो और साधनो की नई व्याख्या की। भारतीय चिंतन धारा मे उसके तत्व घुलमिल गए और उसमें से कुछ आज के सास्कृतिक प्रतिमानो मे शीर्ष स्थानो पर है। सत कवियो और सुधारको ने भी नए पथ बनाए जो मूलत ऐसी प्रति सस्कृति के रूप मे उभरे जिसने हिन्दू समाज के अमानवीय पक्षो का विरोध किया और सामाजिक न्याय का नारा बुलद किया। वे पूरी तरह सफल भले ही न हुए हो पर उनसे उपजी सामाजिक क्राति की चिगारिया निश्चित रूप से प्रभावशाली थीं। स्वामी दयानन्द इसके अनन्य उदाहरण थे। कबीर बसवा ज्योतिबा फुले और नारायण गुरु की श्रृखला भी भुलाई नहीं जा सकती।

दूसरा प्रतिरूप सस्कृति को एक बडी नदी के रूप मे देखता है जिसमे अनेक पृथक उद्‌गमो से आई धाराए मिलकर अतत एक विशाल धारा नदी का रूप ले लेती हैं। यह ठीक है कि पृथक स्रोतो की धाराए मिलती हैं पर वे अपनी प्रकृति गुण और धर्म पूरी तरह नहीं त्यागतीं। विशेष स्थितियो मे धाराए मिलने के बाद अलग भी हो सकती हैं। वैदिक सस्कृति मे अनेक स्थानिक और क्षेत्रीय रग व वैशिष्ट्य है। यह क्यो हुआ? सिखो मे अलगाववाद क्यो आया? भारत मे जाति युद्ध का आरम्भ क्यो हो रहा है?

तीसरा प्रतिरूप 'कथा' का हो सकता है जिसका निर्माण अलग-अलग रगो आकारो और बुनावटो के कपडों को जोड कर किया हो। यह शायद आज के सास्कृतिक यथार्थ का अधिक विश्वसनीय प्रतिबिब हो – स्थानीय और क्षेत्रीय सस्कृतियो का सभ्यता सूत्रो से मिलाया गया रूप जिसमे विविधता भी है एकता भी। इस प्रतिरूप को स्वीकृति नहीं मिल रही है। कारण है कई समूहो का सास्कृतिक उच्च भाव और कटटरवादिता। धर्म और परम्परा का राजनीतिकरण आग मे घी का काम कर रहा है।

आज देश मे अनेक विघटनकारी शक्तिया हमारी सास्कृतिक नींव पर हमला कर रही हैं पर स्थिति अभी भी नियत्रण के बाहर नहीं है। देश की जनपदीय सस्कृतियो मे अभी भी ऊर्जा और अदम्य जीवन आकाक्षा शेष है। अपसस्कृति और उसकी विकृतिया अधिकाशत समृद्ध वर्ग तक सीमित हैं पर उनका विष धीरे धीरे लोक सस्कृतियो की ओर भी फैल रहा है। आज नहीं तो कल स्थिति गभीर हो सकती है। हमारे सामने परिवर्तन की कौन सी चुनौतिया हैं?

छद्‌म आधुनिकरण पहली चुनौती है। हमने आधुनिकता के आधार मूल्य तार्किक विवेक परानुभूति सामाजिक गतिशीलता और सक्रिय सहभागिता नहीं अपनाए हम उसके बाह्य उपभोगवादी लक्षणो मे ही उलझ कर रह गए हैं। इससे व्यक्ति केद्रिकता बढी है सामाजिक सरोकार का हास हुआ है। व्यक्तिगत धरातल पर लोकतत्रीकरण की प्रक्रिया ने सामाजिक परिस्थिति और भूमिकाओ को डगमगा दिया है। धर्म निरपेक्षता आज के सदर्भ मे धर्म विमुखता बन गई है। धर्म के आधार पर सिद्धात विस्मृत होते जा रहे हैं तात्रिक और चमत्कारी बाबा फल फूल रहे हैं क्योकि वे अच्छे दामो पर स्वार्थो की सेवा मे रत हैं। हमारी सस्कृति अनुकरण की भोगवादी और लिप्सावादी सस्कृति बन गई है। आर्थिक उदारता खुलापन और वैश्वीकरण ससार भर मे एक अपसस्कृति फैला रहे हैं। हम इस प्रवृत्ति के असहाय दर्शक मात्र बन गए हैं।

दूसरी चुनौती है धर्म के दुरुपयोग की। जहा एकसत्त नवजागरण का प्रतिबद्ध प्रयत्न होना चाहिए था वहा धर्म को अल्पकालिक राजनैतिक लाभ का साधन बना रहे हैं। धर्म की उदात्त भावनाए और मगलकारी सिद्धात भुला दिए गए हैं। प्रश्रय दिया जा रहा है विवेकहीन धर्मांधता को। और तीसरी चुनौती है अविवेकी और निकट दृष्टि की राजनीति की। जहा विश्व के सामने युद्ध पर्यावरण ऊर्जा भूख निवासहीनता और सार्वजनिक स्वास्थ्य के विराट प्रश्न उत्तरो की खोज कर रहे हैं – हम कुर्सी और सत्ता के खेल मे लग हैं। है किसी को भविष्य की चिन्ता? समय रहते हमे स्थिति की भयकरता का जायजा लेना है और अपना भविष्य स्वय अपने हाथो मे लेना है।

– ३८५, साईट १ विकासपुरी, नई दिल्ली १८

मितव्ययता अनेकों दुर्गुणों से बचाती है

– खुशहाल चन्द्र आर्य

मितव्ययता से मेरा अभिप्राय ऐसे खर्चों से है जो सोच समझकर उचित जगह पर किए जाए और अनुचित जगह पर नहीं किए जाए। इसी को मितव्ययता कहते हैं। आज कल मितव्ययी को कुछ लोग कजूस कण्टक व अति लोभी की सज्ञा दे देते हैं और उसको घृणा की दृष्टि से देखने लगते हैं। यह सिर्फ अनुचित ही नहीं बल्कि अव्यवहारिक भी है। वास्तविकता यह है कि मितव्ययता एक बडा भारी गुण तो है ही साथ ही हमारा एक सच्चा मित्र भी है जो हमको अनेको बुराइयो से बचा लेता है। या यह कहिए कि मितव्ययता एक ऐसा गुण है जिसके होने पर अनेको गुण आने लगते हैं और दुर्गुण दूर भागने लगते हैं इसलिए हम यह भी कह सकते हैं कि मितव्ययता गुणो की जननी है और अवगुणो का विनाश करती है। मितव्ययी व्यक्ति जूआ सुल्फा गाजा भाग शराब आदि बुराइयो से हमेशा ही दूर रहेगा और वैश्यागमन जैसी भयकर व घातक बुराई को तो कभी स्वप्न मे भी नहीं सोचेगा। वह ताश चौपड खेलना सिनेमा देखना व गन्दे उपन्यास पढने को भी समय की बर्बादी समझकर इनसे भी दूर रहने की चेष्टा रखेगा कारण मितव्ययी पैसो को खर्च करने पर तो विशेष ध्यान रखता ही है साथ ही वह समय स्वास्थ्य इज्जत व सम्मान आदि का भी पूरा ध्यान रखता है। जिस काम मे पैसो के साथ साथ समय व शरीर की हानि भी होती हो वह काम मितव्ययी कभी नहीं करना चाहेगा। आप जानते ही हैं कि सभी दुर्गुणो मे पैसों के साथ साथ समय व शरीर की बर्बादी तो होती ही है साथ ही इज्जत व सम्मान पर भी आघात पहुचता है इसलिए पाठकवृन्द स्वय ही विचारे कि मितव्ययी इन दुर्गुणो की तरफ भी आख उठाकर देखेगा भी क्या ?

मितव्ययी की बुद्धि बडी तर्कपूर्ण होती है। वह न्यायोचित बात को तुरन्त समझ लेता है और उसका जिस काम के करने से क्या हानि और क्या लाभ है यह समझने मे उसे देर नहीं लगती। इसलिए वह हानि वाले काम को छोडकर लाभ वाला काम ही करेगा तब उसका दुर्गुणो से बच जाना और सद्गुणो मे प्रवृत्त हो जाना स्वभाविक है। अधिकतर देखने मे आता है कि मितव्ययी अपने घर का बनाया भोजन ही करके खुश रहता है। बाजार के दही बडे कचौडी पुचके चाट तथा वैजीटेबल घी से बनी मिठाईया जिन पर मक्खिया भिनभिनाती रहती हैं पैसे के लालच में मन होते हुए भी नहीं खाएगा इससे उसके स्वास्थ्य की रक्षा जबरन ही हो जाती है।

आपने यह भी देखा होगा कि मितव्ययी कभी भी आलसी व प्रमादी नहीं होता। वह हमेशा क्रियाशील बना रहना चाहता है और अपना काम अपने ही हाथो से करके प्रसन्न रहता है। वह थोडी दूर के चलने मे थोडा बोझा व भार उठाने मे और अपने घरेलू काम काज करने में न तो वह अपनी तौहीन (बेईज्जती) समझता है और न ही कुली रिक्सा या टैक्सी की बाट देखता है और उस काम को वह स्वय ही कर लेता है इससे पैसो की बचत तो होती ही है साथ ही समय भी बचता है और स्वास्थ्य मे भी लाभ होता है। सबसे बडी बात तो यह है कि उसका काम करने का अभ्यास बना रहता है जो जीवन मे उसे हमेशा उन्नति के पथ पर अग्रसर करने में सहयोगी बना रहता है।

मितव्ययी जहा पैसे कम खर्च करने का ध्यान रखता है वहीं पैसे ज्यादा कमाने का ध्यान भी रखता है। इसलिए वह ज्यादा मेहनत व परिश्रम करके औरो से ज्यादा धन कमाना चाहेगा और वह अपने स्वभाव के अनुसार उस धन को अपने शरीर पर उचित खर्च करेगा अपने परिवार समाज व राष्ट्र के लिए ज्यादा खर्च करना चाहेगा। इसी को ही सच्चा वैदिक समाजवाद कहते हैं। जो व्यक्ति अपनी बुद्धि व बल से ज्यादा से ज्यादा कमाता है और अपने सुख साधनो पर कम से कम खर्च करता है वही वैदिक समाजवाद का सच्चा अनुयायी या कार्यकर्त्ता होता है। ऐसा मितव्ययी अपने धन को राष्ट्र का धन समझता है और उसका उपभोग भी उचित मात्रा मे यानी त्याग भाव से करता है उसमे लिप्त नहीं होता जो वेद के मन्त्र **तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा** (त्याग भाव से भोग करो) का आदेश है उसका सही पालन करता है। ज्यादा खर्चीला व्यक्ति तो त्याग के महत्त्व को समझता ही नहीं। वह तो खाओ पीओ और मौज करो वाममार्गी वालो के सिद्धान्त को ही ज्यादा प्रश्रेय देता है। जो राष्ट्र की उन्नति मे बाधक सिद्ध होता है। कम खर्च करने वाला व्यक्ति ही गरीब अनाथ असहाय व कमजोर व्यक्ति की मदद कर सकता है। जो व्यक्ति जितना कमाएगा उतना ही खर्च कर देगा उससे जनहित परोपकार तथा शुभ कार्यों मे खर्च करने की उम्मीद ही क्या की जा सकती है ? जिसके पास धन होगा वही तो जरूरत पडने पर धन दे सकता है। नहीं होने वाला कहा से देगा।

देखने में आया है कि मितव्ययी अधिकतर अहिसक मृदुभाषी विनम्र शान्तिप्रिय त्यागी परिश्रमी सयमी व कुशाग्र बुद्धि वाला होता है। यह गुण मनुष्य को उन्नति व समृद्धि की ओर अग्रसर करने के साथ साथ एक सच्चा मानव (नागरिक) भी बनाते हैं जिनके सहयोग मे राष्ट्र उन्नति करता है विश्व मे सुख व शान्ति रहती है और वेद का ओदश 'मनुर्भव' (हे जीव ! तू मानव बन) का पालन भी एक मितव्ययी ही कुछ अशों मे कर पाता है।

कजूस और मितव्ययी मे बडा अन्तर होता है। कजूस होना मनुष्य का दोष है जो उसको सब जनहित कार्यों को करने से दूर रखता है और उसको स्वय की लाभ हानि की उलझन मे लिप्त रखता है। परन्तु मितव्ययी होना एक गुण है जो बुद्धि पूर्वक हितकारी कार्यों में मनुष्य को प्रवृत्त करता है। वह अपने शरीर व व्यक्तिगत कार्यों पर तो कम खर्च करता है लेकिन अच्छे कार्यों में कभी पीछे नहीं रहता। महाभारत का यह श्लोक –

द्वौ सागरे निवेष्टव्यौ गले बद्ध्वा दृढां शिलाम्।
धनवन्तं अदातारं, दरिद्रं चातपस्विनम्।।

(जो व्यक्ति धनी है पर दान नहीं देता और जो व्यक्ति दरिद्र है पर वह परिश्रम नहीं करता। ऐसे दोनो व्यक्तियो के गले मे भारी पत्थर बाध कर समुद्र मे डुबो देना चाहिए।) कजूस व्यक्ति पर लागू होता है मितव्ययी पर नहीं। कजूस व्यक्ति से कभी भी किसी को लाभ नहीं हो सकता। उस व्यक्ति का होना या न होना समान है। वह पृथ्वी पर भार स्वरूप है। इसलिए महाभारत के रचियता व्यास ऋषि ने कजूस के लिए इतना कठोर दण्ड देने का विधान किया है। यह उचित भी है। जैसे बन्द पानी पडा पडा दूषित हो जाता है उसमे कीडे पड जाते हैं और वह पानी किसी के भी काम नहीं आता और एक दिन सूख कर समाप्त हो जाता है इसी प्रकार बन्द पानी की तरह कजूस का धन भी किसी के काम नहीं आता। वह न तो स्वय पर खर्च करता है न परिवार समाज व राष्ट्र की उन्नति मे खर्च करता है न परोपकार मे लगाता है न किसी को दान देता है। उसका धन चोरो डकैतो लूटेरो व ठगो के हाथ ही पड कर नष्ट हो जाता है। यदि ऐसे नष्ट नहीं होता तो उसके मरने के बाद उसके लडके बहता हुआ पानी निर्मल व स्वच्छद रहता है। वह पानी नहाने धाने पीने बिजली पैदा करने तथा सिचाई करने के काम आता है। जिससे मनुष्य ही नहीं प्राणी मात्र का भला व कल्याण हाता है। इसी प्रकार मितव्ययी का धन परोपकार व जनहित के कार्यो मे लगता है। उसके धन से परिवार समाज व राष्ट्र उन्नत एव समृद्धिशाली बनता है इसलिए लोग उसका यशोगान व सम्मान भी करते हैं। हमारे ऋषि मुनियों ने धन की तीन गतिया बताई है। दान भोग और सर्वनाश। कजूस का धन तीसरी गति को मितव्ययी का धन प्रथम गति को और फिजूल खर्च करने वाले का धन द्वितीय गति को प्राप्त होता है।

मितव्ययी मे जो सब से बडा गुण होता है वह है उसका लेन देन मे स्वच्छ व ईमानदार रहना। मितव्ययी अपनी इज्जत को धन से ज्यादा महत्व देता है इसलिए वह लेन देन व व्यवहार मे सही रहना चाहता है। लेन देन मे सही व्यक्ति को ही ईमानदार कहा जाता है जो सब गुणो में सर्वोत्तम है। इसलिए मनु महाराज ने भी इस श्लोक के द्वारा अर्थ की शुद्धि को ही सर्वोपरि माना है।

सर्वेषामेव शौचानामर्थ शौच परं स्मृतम्।
योऽर्थे शुचिर्हि स शुचिर्न मृद्वारि शुचिः शुचिः।।

सभी प्रकार की शुद्धियों मे धन सम्बन्धित शुद्धि सब से उत्तम है। जो मनुष्य धन के विषय में शुद्ध है वही शुद्ध है। मैंने कई वैदिक विद्वानों को देखा है जो वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् होते हुए भी पैसों के मामले में कमजोर होते हैं। झूठ बोलकर दक्षिणा ज्यादा लेने की कोशिश करते हैं। रेल भाडा व अन्य खर्चे ज्यादा लेने के लिए बढाकर बता देते हैं आदि-आदि। इसलिए कहा गया है **'आचार हीन न पुनन्ति वेदा'** आचार हीन व्यक्ति को वेद भी पवित्र नहीं कर सकते।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि कजूसी और फिजूलखर्ची के बीच की श्रेणी का नाम मितव्ययता है यानी इन दोनो के गुण मितव्ययी में होते हैं और इनके अवगुण नहीं होते या यह कहिए कि मितव्ययता दोनो का परिष्कृत (सशोधित) रूप है। मितव्ययी अपनी सुबुद्धि से फिजूल खर्चीले व्यक्ति के अवगुण जैसे शराब पीना जूआ खेलना धूम्रपान करना आदि को ग्रहण नहीं करता और उसके गुण जैसे उदारता सहृदयता दया करुणा व परोपकारिता आदि को ग्रहण कर लेता है। इसी प्रकार कजूस व्यक्ति के अवगुण अति स्वार्थ अन्याय छल कपट व बेईमानी आदि को नहीं अपनाता और उसके गुण कम खर्च करना ज्यादा परिश्रम करना पैसो का हिसाब पूरा रखना तथा सयमी होना आदि को अपना लेता है जिससे वह अपना जीवन उत्तम बनाकर परिवार समाज व राष्ट्र की सेवा कर पाता है और अपना जीवन भी सुखी बना पाता है।

कुछ अपवादो को छोडकर जितने भी महापुरुष हुए हैं सभी मितव्ययी ही हुए हैं। जैसे महात्मा चाणक्य महर्षि दयानन्द महात्मा हसराज लाल बहादुर शास्त्री व महात्मा गान्धी आदि। जिसने महात्मा चाणक्य का जीवन वृत पढा होगा वे जानते हैं कि चाणक्य एक सम्राज्य का महामन्त्री होते हुए भी जगल मे एक कुटिया बनाकर कम से कम खर्च करके त्यागपूर्ण जीवन व्यतीत करता था। हाथ से लकडी काटकर नित्य यज्ञ करता था गऊ के गोबर के उपलों से आग जलाकर स्वय भोजन बनाता था और एकान्त जीवन व्यतीत करते हुए बडी कुशलतापूर्वक राज का कार्य भी सम्भालता था जिसके कारण वह महान पुरुष कहलाया। महर्षि दयानन्द के पत्राचारो को पढने से ज्ञात होता है कि वे एक पैसे का भी कितना ज्यादा महत्व समझते थे। वे एक एक पैसे का हिसाब स्वय देते थे और दूसरों से लेते थे। मितव्ययता का गुण उनमे अत्याधिक था जो उनकी महानता को प्रकट करता है। महात्मा हसराज का जीवन तो पूर्ण त्यागमय था। वे त्याग की प्रतिमूर्ति थे। वे डी०ए०वी० कॉलेज लाहौर के प्रधानाचार्य होते हुए भी सस्था से एक पैसा भी वेतन नहीं लेते थे और निःस्वार्थ भाव से कर्त्तव्य पारायणता के साथ अनवरत सेवा करते थे। उनका जीवन अति सरल व सादा था जिसने उनको महानता की उच्च कोटि तक पहुचाया। यह तो सर्वविदित है कि कि लाल बहादुर शास्त्री मन्त्री बनने के बाद भी एक पुराना कोट को छोडकर दूसरा कोट नहीं रखते थे। जब उनको विदेश यात्रा पर जाना पडा तो उनको नेहरू जी का कोट ले जाना पडा था। इस गुण ने उनको प्रधानमन्त्री पद तक पहुचा दिया। महात्मा गान्धी के बारे मे तो सभी जानते हैं कि वे पैसे की शुद्धता और खर्चे पर कितना ज्यादा ध्यान रखते थे। प्रयोग किए हुए लिफाफे के कागज को वे रद्दी की टोकरी में न फेक कर लिखने के काम लेते थे। मितव्ययता के उनके जीवन में अनेकों उदाहरण मिलते हैं लेकिन लेख की विस्तारता का ध्यान रखते हुए उनको यहा लिखना उचित नहीं समझता। इतना ही काफी समझकर मैं अपने इस उपयोगी हितकारी शिक्षाप्रद व प्रेरणादायक लेख को यहीं विराम देता हू।

– १८० महात्मा गान्धी रोड
(दो तल्ला), कोलकाता - ७०००० [illegible]

सभी धर्मों तथा संस्कृतियों का आदि स्त्रोत : वेद

– प्रतापसिह शास्त्री

आज ससार मे यहूदी मुसलमान ईसाई पारसी यूनानी भारतीय पौराणिक बौद्ध जैन वैदिक आदि जो प्रचलित धर्म हैं तथा इन सभी के जो धर्मग्रन्थ हैं इन सभी के सत्य अश का मूल स्रोत वेद ही है। लेकिन इनके अनुयायियो को तथा इनके धर्माचार्यों को यह तथ्य समझाना आज ऐसा हो गया है जैसे रेलगाडी मे ऊट को चढ़ाना। यदि यह सत्य समझ मे आ जाए तो विश्व भर मे एक धर्म होगा एक समाज होगा एक सस्कृति होगी और वह धर्म और समाज दूसरा कोई न होकर वैदिक धर्म होगा और वैदिक सस्कृति होगी क्योकि इन सबका आदि स्रोत वेद है।

आइए देखे वेद रूपी गगोत्री से उपजने वाली ज्ञान गगा की धारा किन किन क्षेत्रो मे पहुच कर क्या क्या रूप धारण करती है। अथर्ववेद का एक मन्त्र है – **यस्मिन् वेदा निहिता विश्वरूपा तेनौदनेन अतितराणि मृत्युम।** (अथर्व० ४ ३५ ६) अर्थात यहा ब्रह्म को एक पौधा कहा गया है। ब्रह्म रूपी जो धान का चावल का पौधा है जिस पौधे के चावल का भात बनता है उस परमात्मा रूपी पौधे मे वेद निहित हैं। इसी वेद ज्ञान से मनुष्य मृत्यु को तर जाता है अमरत्व (मोक्ष) को प्राप्त कर लेता है।

महाभारत काल के बाद

किन्तु महाभारत काल के बाद ऐसा समय आया कि वेद रूपी गगोत्री से निकली ज्ञान गगा की धारा ज्यो ज्यो आगे बढती गई त्यों त्यो मार्ग मे मिल गए कूडे कर्कट के कारण उसके शुद्ध रूप को पहचानना ही कठिन हो गया। महर्षि दयानन्द से पहले पौराणिक या पाश्चात्य वेद से अनभिज्ञ भाष्यकारो ने वेद मन्त्रो के यौगिक अर्थ न करके रूढ अर्थ किए। उन अर्थों को पढ कर लोगों की वेदो मे आस्था ही नहीं रही बल्कि वेद ज्ञान लुप्त प्राय हो गया। दसियो शताब्दियो तक पुस्तक के रूप मे वेदो के दर्शनमात्र से ही लोग वचित हो गए। वैदिक सस्कृति के रक्षक वेद एव ब्राह्मणो के प्रतिपालक आर्य जाति के जीवनदाता क्षत्रिय वीर श्री शिवाजी यज्ञोपवीत धारणार्थ १३ करोड ८७ लाख ७६ हजार रुपया खर्च करने पर तथा प्रायश्चित्त करने पर भी धर्माचार्य श्री गागा भट्ट और लेवता ब्राह्मणो की व्यवस्था से अपने आपको गायत्री मन्त्र से पवित्र न कर सके। केवल अपनी मनमानी से इन नाममात्र के ब्राह्मणों द्वारा उन्हें यज्ञोपवीत का अनधिकारी घोषित कर दिया गया।

जावा के मुसलमान रामायण पढते हैं

हमने ऊपर जो अथर्ववेद का मन्त्र दिया है उसी मन्त्र के आधार पर जावा देश की मुस्लिम जनता में एक कथानक (किंविदती) प्रसिद्ध है जो वेद के आध्यात्मिक भाव को प्रकट कर रहा है। जावा की जनता मुसलमान है। ये मुसलमान रामायण तथा महाभारत पढ़ते हैं और साथ ही कुरान को अपनी धर्म पुस्तक समझते हैं। इन्हीं मुसलमानों में यह कथानक प्रचलित है कि महाभारत के युद्ध के बाद युधिष्ठिर जावा में एक पहाड के ऊपर चढकर बैठ गया। उसके पास जीवन के वृक्ष की जड थी। पहाड पर चढ चुकने के बाद यह एक पुस्तक बन गई और युधिष्ठिर इस पुस्तक को अपने सामने खोलकर सैंकड़ों साल तक बैठा रहा। इस पुस्तक के कारण वह अमर हो गया। सदियो बाद एक मुसलमान जिसका नाम शेख सीती जेनार था उसी पहाडी पर चढा जहा उसने युधिष्ठिर को बैठे देखा। दोनो आपस मे बडे प्रेम से मिले। शेख ने युधिष्ठिर ने कहा मेरे पास जीवन की पुस्तक है। इसके प्रभाव से अब तक जीवित हू, मरा नहीं। शेख ने युधिष्ठिर से पुस्तक मागी और देखकर चिल्ला पडा अरे यह तो कुरान है। लाओ ! यह पुस्तक मुझे दे दो। युधिष्ठिर ने वह पुस्तक शेख को दे दी और मर गया। इसी शेख ने जावा मे कुरान का प्रचार किया।

जावा के इस कथानक मे वृक्ष की जड के पुस्तक बन जाने उससे युधिष्ठिर के अमर हो जाने और जड से बनी उसी पुस्तक के कुरान होने का किस्सा सिर्फ अलिफलैला का किस्सा नहीं है वस्तुत इसमे भी आध्यात्मिक उन्नति के लिए प्रेरणा दी गई है जो उक्त वेद मन्त्र को ही अपना स्रोत प्रमाणित करता है। शारीरिक उन्नति के लिए वनस्पति अन्न फल आदि और आध्यात्मिक उन्नति के लिए वेद ज्ञान चाहिए यही भाव जाव मे एक कथानक बन गया जिसका आदि स्रोत वेद है।

बकर ईद का सही अर्थ

इस्लाम से थोडा सा भी परिचय रखने वाले जानते हैं कि बकरीद के नाम पर गौ की कुर्बानी दी जाती है। वहा गाय का मारा जाना एक उत्सव का रूप धारणकर गया है। मुसलमानो ने गाय का इस प्रकार मारना यहूदियो से लिया है। यहूदियो की धर्म पुस्तक 'डिट्रोनिमी' मे लिखा है कि यदि कोई कत्ल हो जाए और उसका कातिल न मिले तो एक नया ताजा बछडा लेकर मारा जाए और उसके खून से कत्ल हुए व्यक्ति के रिश्तेदार हाथ धो कर कहे कि हमने उस व्यक्ति को नहीं मारा तो वे पाप के भागी नहीं होगे। यहूदियो मे पाप से बचने के लिए गाय का मारा जाना पाया जाता है और मुसलमानो मे भी यही बात है। ऐसी दूषित बात जो इनके धर्म ग्रन्थो मे आ गई उसका कारण साहित्य मे आए शब्द 'गोमेध' का गलत अभिप्राय लेना ही है।

गोमेध कृषि कर्म

बौद्ध काल मे ही महात्मा बुद्ध जैसा सन्यासी वेदज्ञान से अनभिज्ञ था अन्यथा वह वेद के नाम से यज्ञों मे प्रचलित पशुबलि को हिंसा को अवश्य रोकता। उसने अहिंसा धर्म का तो प्रचार किया किन्तु वैदिक कर्मकाण्ड से वह बिल्कुल अनभिज्ञ रहा। भारत मे लम्बे समय तक गोमेध यज्ञ होता रहा और इसके नाम पर यज्ञो मे 'गोवध' होता रहा। जबकि गो शब्द के अर्थ हैं धरती अर्थात 'गोमेध' से अभिप्राय कृषि करना खेती करना ही होता है।

वैदिक सस्कृत में 'गो' शब्द के दो (अनेक ज०आ०) अर्थ हैं – गाय तथा पृथ्वी। जहा यज्ञ शब्द जुड गया वहा खेती करना – यह यौगिक अर्थ हो गया। वेदों मे अनेक स्थल हैं जहा 'गो' शब्द का अर्थ=पृथ्वी है यथा देखिए – ऋग्वेद मन्त्र १० ६५ ६ **'या गौर्वर्तनिं पर्येति निष्कृत पयो दुहाना व्रतनीरवारत'** अर्थात् जो पृथ्वी अपने नियम का पालन करती हुई दानी और श्रेष्ठजनो के लिए चहु ओर धाराप्रवाह निरन्तर अन्न रस फलादि भोग्य पदार्थो को उत्पन्न करती हुई अनेक प्रकार की सुख सामग्रियो को पैदा करती है वह गौ परमात्मा की महिमा का उपदेश करती हुई अपनी कक्षा मे सूर्य के चारो तरफ घूमती है। एक अन्य मन्त्र देखिए – **आय गौ पृश्निरक्रमीदसदन्मातर पुर पितर च प्रयन्त्स्व।** अर्थात यह पृथ्वी जननी–स्वरूप जल को प्राप्त होती हुई उसे अपने साथ लेती हुई तथा नि शेष प्राणियो को पितृवत् उत्पन्न तथा पालन करने वाले सूर्यलोक के चारो तरफ चलती हुई अन्तरिक्ष मे भ्रमण करती है। इन मन्त्रो मे गौ शब्द के अर्थ जहा धरती हैं वहा विज्ञान का सिद्धान्त भी अनादि काल से मन्त्र मे विद्यमान है कि पृथ्वी सूर्य के चारो ओर घूमती है।

पारसियो मे 'गो मेध' के लिए गोमेज शब्द पाया जाता है परन्तु उनके धर्म मे गोमेज का अर्थ गोकुशी न करके खेती करना लिया गया है। पारसी धर्म के विद्वान डा० हाग व भारतीय काग्रेस के प्रारम्भिक नेता पारसी दादा भाई नौरोजी भी यह स्वीकार करते है कि 'गोमेध' शब्द का अपभ्रश शब्द ही गोमेज है जिसका अर्थ खेती करना है गाय को मारना नहीं और पारसी धर्म के इस गोमेज शब्द का आदि स्रोत वेद ही है।

मिथ्र देवता

अब देखते है इस विषय मे ईसाई क्या कहते हैं। रोमन साम्राज्य के अध पतन से ३०० वर्ष पहले वहा एक धर्म फैला हुआ था जिसका 'मिथ्र धर्म' था। इस धर्म का विस्तार इतना अधिक था जितना पीछे ईसाइयत का हो गया। ब्रिटिश म्यूजियम मे इस धर्म का एक सगमरमर का बुत रखा हुआ है जिसमे मिथ्र देवता बर्छी लेकर गाय पर आक्रमण करता है परन्तु बर्छी लगने से खून की धार बहने के स्थान पर गेहू जौ चना चावल (धान) गन्ना ईंख आदि अनाज उपजते दिखाए गए है। डा० हॉग लिखते हैं कि गोमेज शब्द भी उसी समय का है जब 'गोमेज या गोमेध' का अर्थ केवल मात्र कृषि करना समझा जाता है जब लोग गोमेध से मतलब गाय को मारना लेने लगे थे और साथ ही गोमेध का अर्थ खेती करना भी समझते थे। बुत बनाने वाले ने यह बुत खेती की प्रेरणा हेतु बनाया था गाय वध के लिए नहीं। यदि आज भी मुसलमान और ईसाई यहूदी या अन्य लोग महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित **'गोकरुणानिधि'** पुस्तक पढ ले तो वे कदापि गो वध न करे।

महारानी विक्टोरिया को चेतावनी

राजस्थान के पोलिटिकल एजेट कर्नल ब्रुक्स जब अपना सेवाकाल समाप्त कर इग्लैण्ड जाने लगे तो अजमेर मे उनका विदाई समारोह रखा गया। मौके की बात कि स्वामी दयानन्द जी भी उस दिन अजमेर मे ही थे। स्वामीजी की भक्त मण्डली आग्रह करके उन्हे भी समारोह मे ले गई। जब स्वामीजी से कुछ कहने का अनुरोध किया गया तो दो बाते ही केवल उन्होने कर्नल ब्रुक्स को कहीं। आप लदन पहुच कर महारानी विक्टोरिया को कह दे **यदि भारतीयों के धार्मिक जीवन मे शासन इसी तरह हाथ डालता रहा और गाय जो भारत की अर्थ व्यवस्था की रीढ एव सास्कृतिक जीवन का प्रतीक है का वध जारी रहा तो १८५७ की क्राति फिर भी दोहराई जा सकती हैं।** स्वामीजी के इस गम्भीर गर्जन को सुन कर सब अवाक रह गए। पर इतनी स्पष्ट बात साधु ही उनसे कह भी सकता था। कर्नल ब्रुक्स समझ गए कि वह सन्यासी देश की नब्ज पर हाथ रख कर बोल रहा है।

गो गाय भी पृथ्वी भी

वस्तुत गो का अथ पृथ्वी न करके गाय कर लिया गया और इससे यहूदी और मुहम्मदी मतो मे एक भारी गलती पैदा हो गई। कुरान मे भी ऐसे सकेत हैं कि गौ को मारने का विचार किसी न किसी गलतफहमी से पैदा हुआ है। इनके धर्मग्रन्थ मे लिखा है **और मूसा ने जब अपने लोगों को कहा कि खुदा ने गाय की कुर्बानी को कहा है तो वे लोग कहने लगे क्या हमसे मजाक करते हो ?** इसके बाद उन लोगो ने तीन बार मूसा पर विश्वास नहीं किया और उसे बार बार खुदा के पास भेजा और पुछवाया कि गाय की कुर्बानी से तुम्हारा क्या मतलब है ? जब हर बार मूसा ने गाय की कुर्बानी का ही जिक्र किया तब जाकर उन लोगो ने माना। इससे भी ध्वनित होता है कि हजरत मुहम्मद के दिल मे यह भाव था कि गाय को मारने के ख्याल मे कहीं न कही गलती है लेकिन क्योकि यहूदियो मे गोकुशी चल पडी थी इसलिए हजरत मुहम्मद ने इसे ले लिया।

असल मे प्राचीन धर्मो का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि बकरीद गोमेध ही था और गोमेध का अर्थ कृषि था। गौ शब्द मे गलती खाकर वैदिक धर्म का कृषि का ऊचा विचार अन्य धर्मों मे पहुचते पहुचते कुछ का कुछ बन गया। अर्थ का अनर्थ हो गया।

यम और नियम

योग दर्शन मे ५ यमो तथा ५ नियमो का वर्णन है। पाच यम-अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह। पाच नियम –शौच सतोष तप स्वाध्याय तथा ईश्वर प्रणिधान। इस प्रकार योग का अभ्यास करने के लिए तथा वैदिक जीवन पद्धति के लिए ये आवश्यक हैं। बौद्ध धर्म मे जब किसी को दीक्षा दी जाती थी उस दीक्षा को उप सम्पदा कहते थे और उस समय बुद्धम शरणम गच्छामि धर्म शरण गच्छामि सघम शरण गच्छामि इन शब्दो का तीन बार पाठ होता था। उसके बाद १० आदेश दिए जाते थे जो प्राय वही थे जो योगदर्शन के यम नियम है। ईसा मसीह ने 'सर्मन आन दी माऊट' मे वैदिक पाच यमो की ही व्याख्या की है। ईसा मसीह की यमो की व्याख्या योग दर्शन की व्याख्या के इतनी निकट है कि ऐसा प्रतीत होता है कि वह किसी भारतीय सन्त के सम्पर्क मे आया होगा या भारत मे आकर उसने इन सिद्धान्तो को यहा के बौद्धो से सीखा होगा क्योकि ईसाइयत बौद्ध मत से निकली है ऐसा बहुत से विद्वानो का विचार है।

– २५ गोल्डनविहार हिसार

स्वास्थ्य समाचार

मूली में समाए हैं अनगिनत गुण

मूली मे विटामिन ए बी और सी पाया जाता है। यह रूचिकारक व क्षारयुक्त होती है। छोटी मूली तिक्त रूचिकारक पाचक होती है तथा ज्वर श्वास नाक कठ नेत्र आदि के रोगो को ठीक करती है जबकि बडी मूली रूक्ष उष्ण गरिष्ठ और वात पित्त एव कफ का दोष बढाने वाली होती है। कोमल मूली दोषहर होती है। सूखी मूली लघु, कफ पात्तजित और विषहर होती है। कोमल मूली दोषहर होती है। सूखी मूली लघु, कफ पात्तजित और विषहर होती है।

- मूली के सेवन से रक्त की शुद्धि होती है।
- यह कृमि नाशक और शूलनाशक होती है।
- मूली नेत्रज्योति के लिए अत्यत लाभदायक औषधि है। इसके नियमित सेवन करते रहने से नेत्रज्योति बढकर आखो पर लगा चश्मा भी हट सकता है।
- मूली के सेवन से थकान दूर होती है और गहरी नींद आती है।
- उच्च रक्तचाप के रोगियो के लिए मूली बहुत गुणकारी होती है।
- मूली के नियमित सेवन से होठ व नाखूनो की गुलाबी आभा बढती है।
- मूली के रस को पानी में मिलाकर सिर धोने से जुए मर जाते हैं।
- मूली का सूप हिचकी और श्वास रोगो मे बहुत लाभकारी रहता है।
- मूली के सेवन से श्रवणशक्ति बढती है।
- घुटने कधे व अन्य जोडो के दर्द अथवा अकडन को दूर करने मे मूली के ताजे रस का सेवन बहुत फायदेमद रहता है।
- यदि मूली की राख मे सरसो का तेल मिलाकर उससे मालिश की जाए तो बाय का दर्द दूर हो जाता है।
- कोमल मूली को काटकर चीनी मिलाकर खाने से अथवा इसके पत्तो के रस मे चीनी मिलाकर पीने से अम्लपित्त मिट जाता है।
- सूखी मूली का जूस पीने से अर्श मस्से मे काफी लाभ होता है।
- यदि मासिक धर्म नियमित न आता हो तो मूली का तीन माशा चूर्ण लेने से यह समस्या दूर हो जाती है।
- नियमित मूली के सेवन से पेट के कीडे मर जाते है।
- मूली को भोजन के साथ अथवा बाद मे खाना चाहिए लेकिन रात मे इसका सेवन करना उचित नहीं होता।
- खाली पेट मूली खाने से छाती मे दाह होता है और ऐसी स्थिति मे यह पित्त को बढाता है।
- मूली के २५ ग्राम रस मे आधा ग्राम जवाखार मिलाकर प्रतिदिन सुबह शाम सेवन करने से गुर्दे और मूत्राशय की पथरी टूटकर बाहर निकल जाती है।
- मूली के पत्तो को तेल मे उबाल कर तेल कान मे डालने से कान का दर्द दूर होता है।
- गुर्दे मे दर्द रहता हो तो १०० ग्राम मूली के रस मे १२ ग्राम कलमी शोरा मिलाकर खूब अच्छी तरह से खरल करके छोटे छोटे बेर के आकार की गोलिया बना ले। इन्हे किसी साफ चौडे मुह वाली शीशी मे रख ले। प्रतिदिन सुबह शाम ताजे पानी के साथ एक एक गोली खाने से गुर्दे का दर्द ठीक हो जाता है।
- गले मे सूजन आ जाए तो २५० ग्राम मूली के रस में १२ ग्राम लाहौरी नमक डालकर गर्म करके गरारा करने से गले की सूजन दूर होती है।
- खूनी बवासीर हो तो एक मूली को बीचोबीच से खोखला करके उसमें २४ ग्राम रसौत भरकर इसका मुह बन्द करके उपलों की गर्म राख में भस्म कर लें। दूसरे दिन इसमें से रसौत को निकालकर मूली के ताजे रस में बेर के आकार की गोलिया बना लें। प्रतिदिन सुबह शाम एक एक गोली का ताजे पानी से सेवन करने से खूनी बवासीर का रोग कुछ ही दिनो में ठीक हो जाता है। इस दवा के इस्तेमाल के दिनों में गर्म वस्तुओ का सेवन करे।
- गठिया के रोगियो को तथा जिनको तिल्ली बढी हुई हो उन्हें मूली का सेवन नहीं करना चाहिए।
- भोजन करने के कुछ देर पश्चात अगर पेट में गैस [illegible] हुई महसूस होता हो तो मूली के रस में नींबू का रस मिलाकर पीने से तुरन्त आराम मिलता है।
- मूली का अचार जिसमें नमक व काली मिर्च डाली हुई हो का नियमित सेवन करने से तिल्ली और पेशाब के रोगों में लाभ मिलता है। इसमें पेशाब खुलकर आता है।
- यदि दाद हो तो २० ग्राम मूली के बीजों का इतनी ही मात्रा मे गधक अमलसार और गुग्गुल तथा एक ग्राम तूतिया के साथ १२५ ग्राम पानी में पीसकर साफ शीशी में रख लें और इसे नियमित दाद पर लगाए। कुछ ही दिनो के बाद दाद ठीक हो जाएगा।
- मूली के पत्तों और मूली के १२५ ग्राम रस में २४ ग्राम शक्कर मिलाकर नियमित रूप से पीने से पीलिया का रोग दूर होता है। लेकिन इस दौरान खटाई का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

(विसके से सामार)

महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्म-स्थली एवं निर्वाण-स्थली का संरक्षण हो - प्रो० रासासिंह रावत

स्वराज्य के प्रथम मन्त्रद्रष्टा सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत भारतीय पुनर्जागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म गुजरात राज्य के काठियाबाड मे टकारा नामक ग्राम मे १८२४ ई० मे हुआ था। उनका सम्पूर्ण जीवन देश समाज और मानवता के उपकार में व्यतीत हुआ। राष्ट्रीय चेतना एव सामाजिक जागृति पैदा करने और भारतीय अस्मिता को पुनर्जीवित करने मे उनका बहुमूल्य योगदान था जिसे देश के सभी महापुरुषो ने मुक्त कठ से स्वीकार किया है। आज देश के करोडो लोग उनके प्रति अगाध श्रद्धा और सम्मान रखते हैं तथा उनके मन्तव्यो और सिद्धान्तो के अनुसार आचरण करते हैं। उनके नाम पर हजारो शिक्षण सस्थाए गुरुकुल पाठशालाए देश मे सचालित हैं। ऐसे महापुरुष का निधन ३० अक्तूबर १८८३ को भिणाय कोठी अजमेर (राजस्थान) मे हुआ।

ऐसे महापुरुष की जन्म स्थली और निर्वाण स्थली का सरक्षण नहीं हो पाया और आज भी जन्म स्थली तथा निर्वाण स्थल के बहुत बडे भाग का स्वामित्व निजी व्यक्तियो के हाथो मे है अथवा व्यावसायिक उपयोग कर मूल स्थान की ऐतिहासिकता का नष्ट कर रहे हैं।

भारत सरकार के सस्कृति मत्रालय से मेरा अनुरोध है कि महर्षि दयानन्द की ज मस्थली तथा निर्वाण स्थली सम्बन्धित स्थलो का अविलम्ब अधिग्रहण करने की कार्यवाही करावे ताकि इन पवित्र स्थानो की ऐतिहासिकता स्वभाविकता तथा पुरातत्विक एव सारकतिक महत्व अक्षुण्ण रह सके तथा वहा उनके गौरव के अनुरूप भव्य स्मारक विकसित किया जा सके

इस पत्र में प्रकाशित लेखों और विज्ञापनों के सम्बन्ध में

सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखो तथा विचारो से सम्पादक मण्डल या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है। यह साप्ताहिक पूर्णत सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नीतिगत एव सैद्धान्तिक पक्ष को ही उजागर करता है। परन्तु कुछ विशेष परिस्थितियो मे वैदिक विद्वानो के विचारार्थ प्रस्तुत करने के लिए अन्य सामग्री भी प्रकाशित की जा सकती है। सार्वदेशिक साप्ताहिक मे प्रकाशित दान आदि की अपीलो को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का निवेदन या निर्देश न समझा जाए।

— सम्पादक

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली का ७६वा वार्षिकोत्सव समारोहपूर्वक सम्पन्न

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली का ७६वा वार्षिकोत्सव २६ नवम्बर से २ दिसम्बर २००१ तक समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर पूज्य स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती (योगधाम ज्वालापुर हरिद्वार) के ब्रह्मत्व मे सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमें सहयोगी डा० कर्णदेव शास्त्री थे। वेदपाठ गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियो ने किया। प्रात ईश्वर भक्ति के भजनो का रसास्वादन श्री सत्यपाल पथिक जी (अमृतसर) द्वारा कराया गया।

पूज्य स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी द्वारा प्रतिदिन प्रात ६ ३० से ७ ३० बजे तक योग साधना शिविर लगवाया जिससे अनेक लोगो ने लाभ उठाया। सायकालीन सत्सग मे प्रतिसाय आदरणीय श्री सत्यपाल पथिक जी के मनोहारी भजन सारगर्भित मनोपदेश । पूज्य स्वामी दिव्यानन्द जी के वेद एव योग पर प्रवचन होते रहे।

२७ नवम्बर २००१ को मध्याह्न मे आर्य महिला सम्मेलन सम्पन्न हुआ। शनिवार १ दिसम्बर २००१ को पूज्य स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता मे श्री रतन लाल सहदेव स्मारक भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न हुई जिसका विषय था "सामाजिक कुरीति उन्मूलन मे आर्यसमाज का योगदान"। जिसमे विभिन्न स्कूलों एव गुरुकुलो के छात्र/छात्राओ ने भाग लिया। प्रथम पुरस्कार कन्या गुरुकुल नरेला की छात्रा कु० ममता द्वितीय पुरस्कार डी०ए०वी० स्कूल दयानन्द विहार के छात्र श्री गौरव अग्रोल तृतीय पुरस्कार रघुमल आर्य कन्या सी० से० स्कूल राजाबाजार की छात्रा कु० गीतिका एव चतुर्थ विशेष पुरस्कार श्री आजाद आलम हरकोर्ट बटलर सी० से० स्कूल मन्दिर मार्ग ने प्राप्त किया।

रविवार २ दिसम्बर २००१ को सामवेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न हुई। तत्पश्चात् "राष्ट्र समृद्धि सम्मेलन" सम्पन्न हुआ जिसकी अध्यक्षता पद्मश्री डा० श्याम सिह शशि ने की। जिसमे मुख्य वक्ता पूज्य स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती श्री सोमपाल जी (पूर्व केन्द्रीय मन्त्री) श्री रासा सिह रावत (सासद) ब्रिगेडियर चितरजन सावत डॉ० वीरपाल विद्यालकार ६४ डा० महेश विद्यालकार ने राष्ट्र की समृद्धि के सम्बन्ध मे ओजस्वी भाषण दिए। इस अवसर पर शुद्धि सभा के प्रधान श्री हरवश लाल कोहली ने तालिबान व उग्रवाद की भर्त्सना मे एक उत्तेजना पूर्ण स्वरचित कविता प्रस्तुत की। सम्मेलन का कुशल सयोजन श्री बनारसी सिह पत्रकार ने किया। इस सम्मेलन मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा एव श्री सुभाष विद्यालकार पूर्व कुलपति (गु०का०वि०) भी उपस्थित थे। अन्त मे आर्य समाज के मन्त्री श्री अरुण प्रकाश वर्मा ने सभी आमन्त्रित विद्वान वक्ताओ आर्यसमाज एव स्कूल के अधिकारियो सदस्यो अध्यापिकाओ छात्राओ एव अन्य समाजो से पधारे हुए अतिथियो का हार्दिक धन्यवाद किया। शान्ति पाठ एव ऋषि लगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

— अरुण प्रकाश

नेत्र चिकित्सा शिविर का शुभारम्भ

समाज सेवा समिति गुरुकुल आश्रम पूठ द्वारा क्षेत्रवासियो की सेवार्थ प्रत्येक माह की २१ तारीख को निशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का शुभारम्भ किया गया है। जिससे सभी को लाभ मिल सके। कैम्प स्थल से रोगियों को अस्पताल लाने ले जाने रहने की जगह दवाइया तथा खाने का निशुल्क प्रबन्ध है।

पृष्ठ ३ का शेष भाग

लेखराम के काम पावन प्रखर ललाम

उन्होने कहा – लाला मुशीराम जी! इस धोती ने ही हमारे देश का नाश किया है। उनका आशय उन धोती धारी पोप पाखण्डियो से था जो ऊपर से कुछ और भीतर से कुछ और होते हैं। पडित लेखराम का ईश्वर के प्रति समर्पणभाव स्पष्ट करना अप्रासगिक न होगा। प्रचार यात्रा मे महात्मा मुशीराम एव पडित लेखराम शिकरन पर बैठकर साथ-साथ जा रहे थे। सन्ध्या समय मार्ग मे पडितजी शौचादि से निवृत्त होकर आए। जल पर्याप्त न होने के कारण खुलकर हाथ मुह नहीं धो पाए। शिकरन के ऊपरी भाग मे जाकर मौन हो गए। नीचे बैठे महात्मा जी ने पडितजी को सम्बोधित अपनी पुकार का जब कोई उत्तर नहीं पाया तो ऊपर झाककर देखा। पडित जी आख बन्द कर सन्ध्या मे मग्न थे। उनका तर्क था कि स्नानादि शारीरिक कर्म है इन्हे करना चाहिए। पर इनके न हो सकने पर सन्ध्या नहीं छोड देना चाहिए क्योकि वह आत्मिक धर्म है। आध्यात्मिक शुद्धि का यह अर्थ नहीं कि भौतिक शुद्धि की उपेक्षा कर दी जाए। इसका एक उदाहरण देना अनुचित न होगा। जालन्धर मे लाला देवराज के निवास पर पडितजी ठहरे थे। वहा एक गमले पर ओ३म लिखा था किन्तु गमला अवमानना की दशा मे रखा हुआ था। इस स्थित को देखकर पडितजी ज्वराक्रान्त दशा मे भी उस निवास को छोडने के लिए उद्यत हो गए। उनका कहना था कि यदि गमले पर ओ३म लिखा है तो उसे रखना भी उचित प्रकार से चाहिए। प्रभु के नाम का उचित सम्मान होना चाहिए।

पडित लेखराम के पावन प्रखर समस्त कार्यो का निदर्शन निष्कर्षण उनके द्वारा सम्पन्न अन्तिम एक महान कार्य मे सिमट कर उन्हे मनमोहक ललाम स्तर प्रदान कर देता है। वह महनीय कार्य है महर्षि दयानन्द के जीवन चरित का लेखन। इसके लिए उन्होने भारत के अधिकाश उन प्रमुख स्थानो का भ्रमण किया था जहा ऋषि ने कभी भ्रमण किया था। ऋषि जीवन घटनाओ की छानबीन तथा सकलन करके आर्यसमाज के इतिहास का आधार निर्मित्त कर दिया था। उनका यह एक कार्य वैदिक धर्म की त्रिवेणी के सगम स्वरूप था। जिसकी एक गग धारा ऋषि जीवन घट थी दूसरी यमुनधारा आर्यसमाज प्रचार तट थी और तीसरी सारस्वत धारा ऋषिपथ पर बलिदान हठ थी। आर्यसमाज के बढते प्रभाव एव मत परिवर्तन मे सुदृढ टकराव को देखकर विरोधी मतान्ध लोग पडितजी के जीवन को मिटाने की योजना बनाने लगे। इन्हीं तत्वो ने एक क्रूर भयानक नर पिशाच आततायी मुस्लिम युवक को हिन्दू बनने के बहाने पडितजी के पीछे लगा दिया। सप्ताह दो सप्ताह उसने उनके घर भोजन किया। ६ मार्च १८९७ ई० को पडिज जी दोपहर २ बजे मुल्तान से लाहौर लौटे। वह युवक उनके साथ हो लिया और घर बैठा रहा। पडितजी ऋषि जीवन चरित्र लिखने मे व्यस्त हो गए। थककर सन्ध्याकाल को उठे और अगडाई ली। अभी जीवनचरित मे ऋषि का अन्तिम वाक्य ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो तूने अच्छी लीला की लिखकर उठने वाले लेखराम ने अपना अन्तिम वाक्य आर्यसमाज से लेख का काम बन्द न हो कहते हुए रात्रि मे अपनी जीवनलीला पूर्ण कर दी। प्यारे अमर हुतात्मा पडित लेखराम के नाम – मेरे पावन पुण्य प्रणाम।

– वरेण्यम एम आई जी भूखण्ड ४५ अवन्तिका कालोनी (ए०डी०ए०) रामघाट मार्ग अलीगढ (उ०प्र०)

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डीएल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 9 12 2001 बिना टिकट भेजने की लाइसेंस न० U(C) 93/2001
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2001 in NDPSo on 6/7-12-2001

पूर्वी दिल्ली के शकरपुर क्षेत्र में आर्यसमाज मार्ग का नामकरण

दिल्ली नगर निगम द्वारा शकरपुर क्षेत्र मे १ दयानन्द ब्लाक नजदीक हैल्थ होम स लेकर पुराने पोस्ट आफिस वाले मार्ग तक जाने वाली सडक का नाम आर्यसमाज मार्ग रखे जाने का कार्यक्रम १४ दिसम्बर २००१ (शुक्रवार) को समारोहपूर्वक सम्पन्न होगा।

दयानन्द ब्लाक नजदीक हैल्थ होम अग्रसेन मार्ग शकरपुर मे प्रात ६ बजे विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया है। प्रात ६–३० बजे आर्यसमाज मार्ग का उद्घाटन दिल्ली के महापौर श्री शान्ति देसाई जी करेंगे। समारोह की अध्यक्षता श्री बी०डी० पाण्डेय निगम पार्षद करेगे।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन महामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा श्री लाल बिहारी तिवारी सासद पूर्वी दिल्ली स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती सहित आर्यसमाज के वरिष्ठ अधिकारी तथा कार्यकर्ता उपस्थित रहेगे। अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाए।

इस मार्ग के नामकरण के लिए क्षेत्रीय आर्य उप प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री पतराम त्यागी आर्यसमाज शकरपुर के प्रधान श्री मिश्री लाल गुप्ता तथा उप प्रधान श्री ओमप्रकाश रूहिल ने अथक प्रयास किया जिसके फलस्वरूप यह कार्य सम्पन्न हो सका।

'ओ३म' ईश्वर का मुख्य नाम

श्रीमद दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर के तत्वावधान मे सचालित वेद प्रचार मण्डल द्वारा प्रत्येक माह के प्रथम रविवार को आयोजित होने वाले पारिवारिक सत्सगों की श्रृखला में दिनाक ४–११–२००१ को साय ५ बजे न्यास की यज्ञशाला मे वैदिक यज्ञ सम्पन्न होने के उपरान्त न्यास क सभागार म पारिवारिक सत्सग प्रारम्भ हुआ जिसकी अध्यक्षता न्यास के कोषाध्यक्ष श्री लालचन्द जी मित्तल ने की। सत्सग के सयोजक श्री अशोक आर्य ने कहा कि यह हमारा परम सौभाग्य है कि जिस पवित्र स्थल पर आर्यसमाज के सस्थापक व युगपुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना की थी वहीं इस सत्सग के माध्यम से स्वय को अनुप्राणित करने हेतु उपस्थित है। इस अवसर पर सर्व प्रथम श्रीमती शारदा गुप्ता ने त्याग भाव पर आधारित भजन "मैं नहीं मेरा नहीं यह तन किसी का है दिया" प्रस्तुत किया। श्री पूर्णचन्द ने मनुष्य जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति के साधन अष्टाग योग पर प्रकाश डालते हुए प्रभु स्मरण मे बाधक मन की चचलता पर नियन्त्रण पर आवश्यकता से सम्बन्धित भजन चचल मन नित ओ३म जपा कर ओम' प्रस्तुत किया। श्री इन्द्र देव पीयूष ने ईश्वर की महत्ता को बताते हुए अक्षर ओम अनादि अपार तथा न्यास के प्रचारक श्री कृष्ण कुमार शास्त्री ने ईश्वर के मुख्य नाम ओम का स्मरण हेतु प्रेरक भजन ओम अनेक बार बोल प्रेम के प्रयोगी प्रस्तुत किया। अन्त मे सत्सग के सयोजक श्री अशोक आर्य द्वारा आवश्यक सूचनाए दिए जाने के उपरान्त शान्ति पाठ व प्रसाद वितरण सहित कार्यक्रम को विराम दिया गया।

– मुनीन्द्र सिह भाटी
न्यास प्रवक्ता

४ दिवसीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

आयसमाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना मे ४ दिवसीय गायत्री यज्ञ एव वेद प्रचार कार्यक्रम समापन समारोह श्रद्धापूर्वक सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता आर्य समाज के प्रधान श्री रोशन लाल आर्य ने की। आर्य समाज के पुरोहित प० सुरेन्द्र कुमार शास्त्री ने यज्ञ सम्पन्न कराया।

श्री रोशन लाल आर्य ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेद प्रतिपादित शाश्वत सत्य सनातन धर्म की रक्षा के लिए आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज मजहब अथवा सम्प्रदाय न होकर सामाजिक बुराइयों धार्मिक अन्धविश्वास पाखण्ड को समाप्त करने के लिए आन्दोलन है।

समारोह को सम्बोधित करते हुए मुख्य वक्ता ब्रह्मचारी राम प्रकाश स्वामी सुमनायति जी महाराज स्वामी शोमानन्द जी ने ऋषि गाथा गाकर महर्षि दयानन्द के जीवन पर चर्चा की।

प्रसिद्ध कवि एव भजनोदेशक श्री सत्यपाल प्रथक ने 'तुमने किसी पहाड को पिघलते हुए देखा है – ऋषिवर दयानन्द वो पहाड सचमुच पिघल गया एव गायत्री गीत द्वारा वेद के सन्देश देते हुए उपस्थित जन समूह को मन्त्र मुग्ध कर दिया।

गुरुकुल मझावली का वार्षिकोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया

फरीदाबाद ११ नवम्बर। गुरुकुल मझावली जिला फरीदाबाद का वार्षिक महोत्सव ३–४ नवम्बर को धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर सर्वश्री स्वामी दीक्षानन्द जी स्वामी धर्मानन्द जी स्वामी धर्ममुनि डॉ० देवव्रत आचार्य ब्र० ओ३म प्रकाश योगाचार्य आचार्य हरिदेव प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु, स्वामी सम्पूर्णानन्द आदि पधारे। प्रज्ञाचक्षु शास्त्रीय सगीत व गायक सुचित नारग एव तबला वादक श्री आनन्द का शास्त्रीय सगीत सुनकर उपस्थित जनता आह्लादित हो उठी।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ एव योग शिविर सम्पन्न

दिनाक २६ अक्टूबर से गायत्री यज्ञ और ४–११ नवम्बर तक डॉ० देवव्रत आचार्य के ब्रह्मत्व मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ किया गया। ब्र० ओ३म प्रकाश योगाचार्य के गीत प्रतिदिन होते रहे। २६ अक्टूबर से प्रात योग शिविर एव छान्दोग्य उपनिषद् की कथा चलती रही। योग प्रशिक्षण श्री चैतन्यमुनि वानप्रस्थ एव डॉ० देवव्रत आचार्य ने दिया और आसन प्राणायाम क्रिया का प्रशिक्षण ब्र० ओ३म प्रकाश योगाचार्य द्वारा किया गया। इस शिविर मे ५० साधको ने १५ दिन तक योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण प्राप्त किया।

– ब्रह्मप्रकाश आचार्य
गुरुकुल मझावली

वैदिक ज्ञान मेला का भव्य आयोजन

आज समस्त विश्व आतकवाद एव पर्यावरण प्रदूषण के साथ साथ अज्ञान अन्याय अभाव तथा अराष्ट्रीयता से नितान्त जर्जरित होता चला जा रहा है। भौतिक विज्ञान ने धन सचय और विलासिता को ही उपास्य बना लिया है। इन सबसे मुक्ति का मार्ग है 'वेदो की ओर लौटो'।

अपने जीवन के १२६ वर्षों मे आर्यसमाज ने सभी क्षेत्रो मे नई चेतना का सचार किया है। आज भी उसे इन गुरुत्तर उत्तरदायित्वो को निभाना है इन्हीं उत्तरदायित्वो की श्रृखला मे प्रत्येक वर्ष की भाति इस वर्ष भी कार्तिक पूर्णिमा के पावन पर्व पर 'वैदिक ज्ञान मेला' का भव्य आयोजन आर्यसमाज मन्दिर के सभागार में दिनाक ३० नवम्बर से ३ दिसम्बर तक किया गया। जिसमें देश के उच्च कोटि के विद्वान महात्मा एव भजनोपदेशो ने पधारकर लोगों को लाभान्वित किया।

इस अवसर पर अनेको सम्मेलनों का आयोजन किया गया।

प्रतिष्ठा मे

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज व्यापुर (पटना) का ६४वा (चौरानवे वा) वार्षिक महोत्सव ३ ४ ५ ६ नवम्बर २००१ को सम्पन्न हुआ। जिसमे श्री स्वामी प्रशान्तानन्द जी सरस्वती (गुजरात) श्री प० नवल किशोर शास्त्री (समस्तीपुर) श्रीमती राजबाला देवी आय भजनोपदेशिका (हरियाणा) श्री प० अरविन्द शास्त्री डी० ए० वी० आर्य समाज वेलीरोड दानापुर (पटना) श्री शिवमुनि वानप्रस्थी (शिवहर आर्य भजनोपदेशक) ब्यापुर (पटना) श्री सत्य प्रकाश आय भजनोपदेशक ब्यापुर (पटना) श्री सुमन आर्या (रोसडा) श्री यतीन्द्र नाथ शास्त्री (चम्पारण) तथा श्री देवदत्त आर्य वैद्य (पटना) आदि विद्वानो के उपदेश एव भजन हुए।

– रामसिंह मत्री आर्यसमाज ब्यापुर (पटना)

महर्षि दयानन्द सरस्वती का ११८वा बलिदान दिवस मनाया

आर्यसमाज मरोठ द्वारा मधुर भ... उदघोष के साथ खुशहाल चन्द आर्य व मागीलाल पत्तरावाला के नेतृत्व में प्रभावी प्रभा... फेरी निकाली गई एव आर्य समाज मदिर पर ६ बजे विश्व शाति यज्ञ किया गया।

चेतनसिह सगवालिया शाखा नायक व विजयकुमार मालवीय के निर्देशन मे आर्यवीर दल की रैली आर्यसमाज से १० बजे आरम्भ होकर शहर के प्रमुख मार्गों से निकाली गई। रैली मे आर्य वीर जोश के साथ नारे लगा रहे थे। कश्मीर तुम्हे हम क्या देगे लाहोर कराची ले लेगे। तुम दूध मागो खीर देगे। कश्मीर मागा तो हम चीर देगे। यह रैली पुराना बस स्टेण्ड पर समाप्त हुई। तदुपरान्त नारायणसिह सगवालिया मत्री ओमप्रकाश आर्य प्रधान आर्यसमाज के मार्ग दर्शन मे आर्यवीरो ने भव्य व्यायाम प्रदर्शन किया। जिसमें आर्य वीरों ने पी०टी० लेझियम, लाठी छुरी-तलवार रस्सी-लकडी जबडे के आर पार सुई निकालना हाथ पर नारियल फोडना आग पर चलना आग की गोलिया खाना ट्यूब लाईट फोडना व जिमनास्टिक के करतब दिखाए गए। दीपक कुमार पटेल बालाराम आर्य राहुल मालवीय ओमप्रकाश रावत द्वारा सराहनीय प्रदर्शन किया गया। जनता आर्यवीरों की भूरी-भूरी प्रशसा करते देखी गई। श्री रमेश सेनपुरिया ने आभार प्रकट किया।

– मन्त्री, आर्य समाज मरोठ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज, नई दिल्ली–२ (फोन ३२७०५०७, ३२७४७७१) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ३/५ महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०९८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई–मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट – http://www.whereisgod.com

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्



सार्वदेशिक
साप्ताहिक



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४० अक ३४ १६ दिसम्बर से २२ दिसम्बर २००१ तक दयानन्दाब्द १७८ सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०२ सम्वत २०५८ मा०शी०शु० २

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की धर्म प्रचार समिति की प्रथम बैठक सम्पन्न

देश–देशान्तर में धर्म प्रचार हेतु नए आयाम

सार्वदेशिक सभा द्वारा नियुक्त धर्म प्रचार समिति की प्रथम बैठक आर्यसमाज मन्दिर सी० ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली मे सम्पन्न हुई। जिसकी अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष डॉ० स्वामी सत्यम जी ने की तथा सचालन समिति के सयोजक श्री सोमदत्त महाजन ने किया। इस बैठक मे सार्वदेशिक सभा क वरिष्ठ उप–प्रधान श्री विमल वधावन विशेष रूप से उपस्थित थे। इनके अतिरिक्त बैठक मे माता प्रेमलता शास्त्री अजय सहगल विनय आर्य सुन्दर लाल कथुरिया कमल बजाज उदयर भान बजाज आदि महानुभाव उपस्थित थे। इस बैठक मे यह प्रस्ताव पारित किया गया है कि वैदिक विषय पर पुस्तक प्रकाशित करने वाले समस्त प्रकाशको का पजीकरण सभा से हो और उन्हे आर्यसमाज का प्रामाणिक प्रकाशक माना जाए।

यज्ञ पद्धति भी केवल उसी रूप पुस्तिका प्रकाशित की जाए जो धर्मा सभा द्वारा निर्धारित हो।

– शेष भाग पृष्ठ २ प

आर्यजनता से भी सुझाव आमन्त्रित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप–प्रधान श्री विमल वधावन ने समूची आर्य जनता को धर्म प्रचार कार्यों मे तेजी लाने के लिए अपने व्यावहारिक सुझाव भेजने के लिए आमन्त्रित किया है। परन्तु सुझाव भेजने से पूर्व यह अवश्य सुनिश्चित करे कि आपने स्वय इन सूझावो पर कार्य करने का प्रयास किया है और यह भी स्पष्ट उल्लेख करे कि आपके यह उपाय सफल रहे या नहीं।

सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव का राजकीय सम्मान के साथ अन्तिम सस्कार

हैदराबाद २८ नवम्बर २००१। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान एव महान देशभक्त श्री वन्देमातरम रामचन्द्र राव के पार्थिव शरीर का अन्तिम सस्कार पूर्ण राजकीय सम्मान के साथ हैदराबाद के शवदाह गृह मे वैदिक रीति से सम्पन्न कर दिया गया।

श्री वन्देमातरम रामचन्द्र राव को श्रद्धाजलि देने के लिए आर्यसमाज तथा अन्य सस्थाओ के पदाधिकारियो और सामाजिक नेताअ के अतिरिक्त राजनेता भी भारी सख्या म उपस्थित थे।

आन्ध्र प्रदेश के मुख्य मन्त्री श्री चन्द्रबाबू नायडू ने उन्हें महान समाज सुधारक स्वतन्त्रता सेनानी तथा जनप्रिय व्यक्ति कहकर सम्बोधित किया।

श्री वन्देमातरम रामचन्द्रराव आन्ध्र प्रदेश विधान सभा के लिए दो बार चुने गए। इसके अतिरिक्त वे भाषा आयोग व चेयरमैन भी रहे। उन्होंने चुनाव याचिकाओ को साधन सम्पन्न बनाते हुए अदालतो के माध्यम से राजनीतिक भ्रष्टाचार को सफल चुनौतिया दीं।

श्री वन्देमातरम् जी की स्मृति में श्रद्धाजलि सभा का आयोजन आर्यसमाज मन्दिर सिकन्दराबाद मे ६ दिसम्बर को किया गया। जिसमे सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप–प्रधान श्री विमल वधावन विशेष रूप से उपस्थित थे। अगले दिन १० दिसम्बर को भी आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्रद्धाजलि सभा आयोजित की गई जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य मुम्बई से विशेष रूप से पहुचे।

कैप्टन देवरत्न आर्य ने कहा कि श्री वन्देमातरम जी एक महान राष्ट्रवादी और ईमानदार आर्यनेता होने के साथ–साथ एक विश्व विख्यात वैदिक विद्वान भी थे। उन्होने सत्यार्थ प्रकाश जैसे अमर ग्रन्थ पर अग्रेजी मे व्याख्याए प्रस्तुत करते हुए एक उत्तम कोटि का ग्रन्थ की भी रचना की। जिससे उनका नाम आने वाले भविष्य मे अमर रहेगा।

कै० देवरत्न आर्य ने श्री वन्देमातरम रामचन्द्र जी के स्वतन्त्रता आन्दोलन मे गम्भीर योगदान की चर्चा करते हुए कहा कि उनके सहयोग के बिना भारत के गृहमन्त्री सरदार पटेल द्वारा किया गया पुलिस एक्शन एक दुष्कर कार्य था। श्री देवरत्न आर्य उनके त्याग–तपस्या और बलिदान की घटनाओ को स्मरण करते हुए भावविह्वल हो उठे।



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द राव का पार्थिव शरीर तथा शोकमग्न पुत्री धर्मपत्नी तथा पुत्रवधु के साथ अन्य परिजन।

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप–प्रधान श्री विमल वधावन एडवोकेट ने आर्यसमाज मन्दिर सिकन्दराबाद मे आयोजित श्रद्धाजलि सभा मे कहा कि श्री वन्देमातरम जी का व्यक्तित्व आने वाली पीढ़ी के लिए आप मे राष्ट्रभक्ति की एक गम्भीर विचारधारा के रूप मे स्मरण रहेगा। श्री वन्देमातरम जी सविधान के भी गहन विद्वान थे। उन्होने सदैव समान नागरिक सहिता गौरक्षा शराब बन्दी तथा अल्पसख्यक तुष्टिकरण विषय पर सदैव आग्नेय क्रान्तिकारी विचार व्यक्त किए। भारतीय सविधान को बिना दातो का शेर मानते थे।

उन्होने श्री वन्देमातरम जी के राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय प्रयासो का उल्लेख करते हुए कहा कि १९६० मे जब नेपाल मे लोकतान्त्रिक विचारधारा ने जोर पकड़ा तो महाराजा के सामने नेपाल को हिन्दू राष्ट्र बनाए रखने के औचित्य पर प्रश्न चिन्ह लग गया क्योकि हिन्दू शब्द की उत्पत्ति के बारे मे किसी प्रकार का निश्चित उल्लेख किसी शास्त्र आदि मे नहीं है

शेष भाग पृष्ठ २

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

पृष्ठ १ का शेष भाग

सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव का राजकीय सम्मान के साथ अन्तिम सस्कार

महाराजा ने देश देशान्तर से हिन्दू विचारधारा के विद्वानो से इस समस्या पर विचार–विमर्श किया परन्तु समाधान प्राप्त नहीं हुआ। सार्वदेशिक सभा के तत्कालीन प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और वरिष्ठ उप–प्रधान श्री वन्देमातरम रामचन्द्रराव महाराजा के निमन्त्रण पर नेपाल पहुचे और इन आर्य विद्वानो ने हिन्दू और आर्य शब्द का स्पष्टीकरण करते हुए महाराजा को इस बात के लिए सन्तुष्ट किया कि नेपाल को आर्य राष्ट्र के रूप मे प्रस्तुत करे। नेपाल के नए लिखे जा रहे सविधान मे इन आर्यनेताओ के सुझाव यह लिखकर मान लेए कि – नेपाल की आर्य सस्कति का रक्षक नेपाल का राजा होगा।

श्री विमल वधावन ने श्री वन्देमातरम जी द्वारा मल्लिकापुर मे ३००० एकड भूमि को गरीब और भूमिहर लोगो के लिए एक को–ओपरेटिव के रूप मे स्थापना करने को आचार्य विनबा भावे के भूदान आन्दोलन के समान बताया।

उन्होने कहा कि श्री वन्देमातरम जी अग्रेजी मे सत्यार्थ प्रकाश की व्याख्या काफी हद तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के उद्देश्यो और भावो का स्पष्टीकरण करते हैं कि वे सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओ द्वारा क्या सन्देश देना चाहते थे।

इस बैठक मे श्री रामचन्द्रराव के हैदराबाद निवास के के मार्ग का नाम वन्देमातरम रामचन्द्र राव मार्ग रखने इसी मार्ग पर उनकी प्रतिमा स्थापित करने तथा पाठय पुस्तको मे उनका सक्षिप्त परिचय पढाए जाने की माग के प्रस्ताव पारित किए। इस बैठक की अध्यक्षता आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री टी०वी० नारायण ने की तथा आर्यसमाज सिकन्दराबाद के मन्त्री श्री आर० रामचन्द्र ने सचालन किया।

इस बैठक मे सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री जी० कृष्णराव वैदिक विद्वान सौमैय्या सर्वश्री ओमप्रकाश क्रान्ति कुमार कोरटकर लिगम आर्य वेकटेश दशरथ पवन मालवे डॉ० नन्दन सत्यम आर्यभूषण वानप्रस्थ श्रीनिवास ने भी अपन विचार व्यक्त किए। सभी वक्ताओं ने इस बात पर बल दिया कि श्री वन्देमातरम जी की विचारधारा को जीवित रखकर ही सच्ची देशभक्ति का पालन किया जा सकता है और यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के पूर्व उप–प्रधान माननीय श्री छोटू सिह जी ने श्री श्रीवन्देमातरम जी के निधन को राष्ट्रीय क्षति बताते हुए कहा है कि उनके साथ मिलकर कार्य करने की स्मृतिया आज भी मेरे मस्तिष्क मे जीवित है। वे एक महान राष्ट्र भक्त थे।



पुत्र आदित्य प्रताप के साथ आन्ध्र प्रदश के मुख्यमन्त्री श्री चन्द्रबाबू नायडू श्री वन्दमातरम का श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए पूर्व केन्द्रीय मन्त्री श्री पी शिवशकर आदित्य प्रताप को सात्वना देते हुए तथा राईफलो की सलामी देते हुए आन्ध्र प्रदेश सरकार का पुलिस बल।



राजकीय सम्मान के साथ श्री वन्देमातरम रामचन्द्र राव के पार्थिव शरीर को अतिम सस्कार के लिए ले जाते हुए अन्तिम यात्रा भौतिक देह को भस्मात करने से पूर्व श्री वन्देमातरम जी का पार्थिव शरीर यज्ञ सामग्री सहित अन्तिम सस्कार मे समिधा अर्पित करते हुए सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री जी०कृष्ण राव तथा अन्य आर्यजन।

पृष्ठ १ का शेष भाग

देश–देशान्तर मे धर्म प्रचार हेतु नए आयाम

सभी उपदेशको का भी सावदशिक सभा मे पजीकरण आवश्यक हो तथा इस प्रकार पजीकृत उपदेशक की मान्यता ही माना जाए। सार्वदेशिक सभा टी०वी० चैनलो के माध्यम से इन्हीं उपदेशको मे से विद्वानो को प्रयोजित किया करेगी।

आर्यसमाजों की सदस्यता व्यक्तिगत न होकर पूरे परिवार की मानी जाए तथा साप्ताहिक सत्सगो के बाद पारिवारिक मेल–जोल बढाने के विशेष सत्र आयोजित किए जाए।

रविवारीय सत्सगो मे ऋषि लगर के आयोजन भी होन चाहिए। क्योकि परिवार आयसमाज के साथ जुडता है तो अन्य वारो पर भी इस का प्रभाव पडता है।

वर्तमान युग की आवश्यकताओ को देखते समस्त आधुनिक तरीको से प्रचार–प्रसार कार्यक्रम बनाए जाने चाहिए।

प्रचार–प्रसार को बढाने के लिए विशेष प्रशिक्षण कि जाने चाहिए।

भारतीय प्रान्तो तथा विदेशो मे हर स्थान के मूल निवासियो को अधिकाधिक जोडने के लिए मूल भाषा मे भी वैदिक धर्म की छोटी–बडी पुस्तको और ग्रन्थो का प्रसार किया जाना चाहिए।

विदेशो मे प्रचार–प्रसार के लिए अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठिया आयोजित की जानी चाहिए।

आर्यसमाज के सदस्यो का व्यक्तिगत व्यवहार उत्तम दर्जे का होना चाहिए क्योकि उनके व्यवहार को ही लोग आर्यसमाज का चरित्र मानते है।

विशेष बुद्धिजीवी वर्ग को भी आर्यसमाज की विचारधारा से जुडना चाहिए।

स्थानीय स्तर से लेकर सार्वदेशिक स्तर तक कार्यकर्ताओ और पदाधिकारियो की विशेष कार्यशालाए आयोजित की जानी चाहिए जो आत्ममथन का कार्य करे और अपनी कमजोरियो को सदैव दूर करने के लिए मिलजुल कर प्रयास करे।



आर्यसमाज सिकन्दराबाद म श्रद्धांजलि मे उपस्थित बाए से श्री ओमप्रकाश श्री पवन नालवे श्री आर०रामचन्द्र आर्य जी० कृष्ण राव श्री विमल वधावन श्री आदित्य प्रताप डॉ० नन्दन समय और श्री सौम्यैया।

प्रत्येक आर्यसमाज मे सुन्दर विक्रय केन्द्र स्थापित होने चाहिए जो वैदिक विषयो की पुस्तको के अतिरिक्त यज्ञ के लिए आवश्यक समान तथा भजनो के कैसेट आदि भी उपलब्ध कराए।

इस समिति के अध्यक्ष डॉ० स्वामी सत्यम जी ने कहा कि हम सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समक्ष विचार रखेगे कि यह धर्म प्रचार केवल सुझाव देने वाली समिति ही बनकर न रह जाए अपितु सभी प्रस्तावों के कार्यान्वियन की जिम्मेदारी भी इस समिति को ही सौपी दी जाए।

चिरस्मरणीय व्यक्तित्व

आर्यसमाज के बलिदानी

कीर्तिर्यस्य स जीवति

पं० क्षेमकरणदास त्रिवेदी – (अथर्ववेद-भाष्यकार)

अब्राह्मण घर मे जन्म लेकर तथा उर्दू फारसी के माध्यम से प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण करके और राजकीय सेवा से मुक्त होने के पश्चात भी कोई व्यक्ति वेद का प्रकाण्ड विद्वान बन सकता है तथा प्रौढ वय मे सस्कृत का अध्ययन कर उस अथर्ववेद सहिता पर जिस पर सायण का भी पूरा भाष्य नहीं मिलता भाष्य रचना भी कर सकता है इस तथ्य को आर्यसमाज की पुरानी पीढी के विद्वान प० क्षेमकरणदास त्रिवेदी ने अपने कृतित्व के द्वारा चरितार्थ किया।

त्रिवेदी जी का जन्म ३ नवम्बर १८४८ ई० को अलीगढ जिले के शाहपुर ग्राम मे हुआ था। उनके पिता का नाम लाला कुन्दनलाल सक्सेना था। पाच वर्ष की आयु मे ही उन्होने करीमा खालिकबारी आदि फारसी की प्रारम्भिक पुस्तके पढ ली थीं। सन १८५७ मे जब सैनिक विद्रोह ने पश्चिमोत्तर प्रदेश (वर्तमान उत्तर प्रदेश) के नागरिक जीवन को अशान्त बना दिया क्षेमकरणदास जी के अध्ययन क्रम मे किञ्चित व्याघात उत्पन्न हो गया परन्तु प्रान्त मे शान्ति स्थापित होने के पश्चात वे पुन फारसी पढते रहे तथा अलीगढ के अग्रेजी स्कूल मे प्रविष्ट होकर उन्होने फारसी के साथ अग्रेजी तथा सस्कृत का भी अभ्यास किया।

१८७१ ई० मे उन्होने कलकत्ता विश्वविद्यालय की प्रवेशिका एण्ट्रेन्स परीक्षा उत्तीर्ण की। पुन आगरा कालेज आगरा मे एफ०ए० की कक्षा मे प्रविष्ट हो हुये परन्तु ६ मास के पश्चात ही घर की आर्थिक विवशताओ के कारण १८७२ ई० मे अध्यापक बन गए। १८७३ ई० में वे मुरादाबाद आ गए।

स्वामी दयानन्द से साक्षात्कार

१८७७ ई० मे उन्हे स्वामी दयानन्द सरस्वती के दर्शन करने तथा व्याख्यान सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। क्षेमकरणदास जी का यज्ञोपवीत स्वामी जी के करकमलो द्वारा ही हुआ तथा उन्हे कुछ दिनो तक सस्कृत भी स्वामी जी ने पढाई। स्वामी जी ने क्षेमकरण जी से यह आश्वासन लिया कि वे निकट भविष्य में सस्कृत का सर्वाङीण अध्ययन करेंगे तथा वेद पर भाष्य भी लिखेगे। त्रिवेदी जी ने अपने गुरु को दिए हुए वचन को पूरा किया। वे न केवल सस्कृत के व्युत्पन्न पण्डित ही बने अपितु उन्होने अथर्व सहिता तथा उसके गोपथ ब्राह्मण पर विस्तृत भाष्य भी लिखा। त्रिवेदी जी आर्यसमाज मुरादाबाद के मन्त्री पद पर भी रहे।

सस्कृत अध्ययन और वेद-परीक्षा

१८८६ ई० मे क्षेमकरणदास जी ने पजाब विश्वविद्यालय का प्राज्ञ परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात प० ठाकुरप्रसाद व्याकरणाचार्य से उन्होने योगदर्शन पढा तथा प० भवानीदत्त शास्त्री से पजाब विश्वविद्यालय की शास्त्री परीक्षा के ग्रन्थ पढे। ऋग्वेद का उन्होने विशेष रूप से अध्ययन किया। राज्य सेवा के प्रसग मे जब वे जोधपुर आए तो उन्होने स्वामी गिरानन्द स्वामी प्रकाशनन्द स्वामी अच्युतानन्द तथा प० लालचन्द्र शर्मा विद्याभास्कर से व्याकरण निरुक्त तथा वेद का अध्ययन किया। प्रयाग मे प० रामजीलाल शर्मा से सामवेद पढकर सन १९०८ मे महाराजा बडौदा द्वारा सस्थापित वेद विद्यालय से सामवेद की परीक्षा मे सफलता प्राप्त की। १९११ ई० मे त्रिवेदी जी गुरुकुल कागडी गए और सर्वशास्त्रनिष्णात गुरुवर काशीनाथ से ऋग्वेद तथा अथर्ववेद का विशेष अध्ययन करते रहे। उस समय गुरुकुल मे वेदो के एक अन्य विद्वान प० शिवशकर शर्मा काव्यतीर्थ भी वेदाध्यापक पद पर कार्य करते थे। त्रिवेदी जी ने उनसे भी अध्ययन मे सहायता ली थी। १९११ मे उन्होने बडौदा से ही ऋग्वेद तथा अथर्ववेद की विशिष्ट परीक्षाए उत्तीर्ण की। यजुर्वेद की परीक्षा किन्हीं कारणो से वे न दे सके। तीन वेदो मे निष्णात होने से त्रिवेदी कहलाए। उनका निधन १३ फरवरी १९३६ ई० मे हुआ।

अथर्ववेद-भाष्य

प० क्षेमकरणदास त्रिवेदी की वैदिक साधना का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य था। अथर्ववेद पर सायणभाष्य भी पूर्ण उपलब्ध नही था। इस काय को सम्पन्न करने हेतु उन्होने अनेक पण्डितो की सेवाए भी ली। अथर्ववेद प्रारम्भ मे मासिक पत्र के रूप मे छपता था। पजाब युक्तप्रान्त की सरकारो तथा उत्तर प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा उन्हे इस कार्य के लिए मासिक अनुदान भी मिलता था परन्तु सब मिलाकर यह आर्थिक सहायता १०० के लगभग हाती थी। अथववेद भाष्य का प्रथम खण्ड १९६९ वि० (१९१२ ई०) मे प्रकाशित हुआ। इसका समाप्तिकाल १९२१ ई० है। अनेक विदेशी विद्वान भी अथर्ववेद भाष्य के ग्राहक बने थे। अथर्ववेद के कतिपय मन्त्रो का परिशिष्टार्थ स्वामी सत्यप्रकाश वेदिक यति न भी किया था। इसे त्रिवेदी जी ने ही अथर्ववेद भाष्य-परिशिष्टम शीर्षक से ओकार प्रेस प्रयाग मे मुद्रित करवाकर १९६८ वि० मे प्रकाशित किया। त्रिवेदी जी रचित इस अथर्ववेद भाष्य को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने प्रकाशित किया है।

गोपथ ब्राह्मण भाष्य

अथर्ववेद के गोपथ ब्राह्मण पर सस्कृत भाषा मे भी कोई व्याख्या उपलब्ध नही होती। इस पर त्रिवेदी जी ने जो भाष्य लिखा है वह वैदिक वाडमय मे प्रथम भाष्य हैं यह १९८१ वि० मे प्रकाशित हुआ।

अथर्ववेदभाष्यसहिताया पदाना वर्णानुक्रमसूचीपत्रम शीर्षक से उन्होने अथर्ववेद के पदो की सूची भी छपवाई थी जा १९७८ वि० मे नारायण यन्त्रालय प्रयाग से छपी।

अन्य ग्रन्थ

त्रिवेदी जी न यजुर्वेदान्तर्गत रुद्राध्याय का सस्कृत हिन्दी तथा अग्रेजी मे अनुवाद किया (प्रकाशन – १९६३ वि०) तथा हवन-मन्त्रो पर भी सस्कृत मे भाष्य लिखा (प्रकाशन – १९२८ वि०)। वेद विद्याए शीर्षक उनका एक अन्य ग्रन्थ भी प्रकाशित हुआ जो अपने मुल रूप मे गुरुकुल विश्वविद्यालय कागडी मे व्याख्यानरूप मे पढा गया था। इसमे वेदो मे विमान नौका अस्त्रशस्त्र व्यापार गृहस्थ अतिथि सभा ब्रह्मचर्यादि विषया व सूक्तो का मार्मिक विवेचन किय गया है।

आनन्द का स्त्रोत

एक नगर था। उसमे हर घर मे दुख था। किसी के बच्चे न होने से हैरानी थी किसी के अधिक बच्चे होने से कोई काम के मारे हैरान था किसी के पास काम ही नहीं था किसी के पास धन का बाहुल्य था किसी के पास अभाव ही अभाव था। कहने का मतलब यह कि हर घर मे परेशानी थी।

एक दिन अचानक आकाशवाणी हुई कि नगर के निकट अमुक स्थान पर सुख का ढेर लगा है। लोग अपने दुख की गठरी ले जाए उसे पटक आवे और सुख की बाध लावे। लोगो को बडी खुशी हुई। उन्होने अपने दुख को गठरी मे बाधा और चल दिए।

अकस्मात वे देखते क्या है कि नगर के छोर पर बैठा एक साधु आनन्द-विभोर हो खिलखिलाकर हस रहा है। उन्होने कहा – महाराज बडा अच्छा अवसर है। कोई दुख हो तो दूर कर लीजिए।

साधु ने कोई उत्तर नहीं दिया पहले की भाति हसता रहा। लोग अपना-अपना दुख पटक आए। सा नगर मे सुख ही सुख हो गया।

कुछ दिन बीतते-बीतत एव व्यक्ति ने देखा कि उसकी जेब खाली है जबकि पडोसी की तिजोरी भरी है। इस विचार के उदय होते ही दुर फिर लौट आया।

लेकिन लोगो ने देखा कि नग के छोर पर बैठा साधु यथापू आनन्दित था। उन्होने कहा महारा यह क्या बात है कि जब दुख था त आप हस रहे थे जब सुख आ ग तब आप हसते रहे और अब ज दुख फिर आ गया है तब भी अ हस रहे हैं।

साधु ने कहा बात यह है ि तुम लोग मूर्ख हो जो सुख को बा खोजते हो। सुख बाहर नही अन्द है।

अब लोगो न समझा कि आन का स्रोत कहा है।

जिसके हृदय मे दया है, जिसकी वाणी सत्य से सुशोभित है, जिसका शरीर परहित मे लगा हुआ है कलि भी उसक कुछ नही बिगाड़ सकता है।

नेपाल में माओवादी ताण्डव

– नन्दकिशोर श्रीवास्तव

हिमालय की गोद मे बसा नेपाल इस समय माओ–वादी आतक से ...र्रा रहा है। माओवादियो से निपटने के ...लेए नपाल नरश महाराज ज्ञानेन्द्र ने ...पाल मे आपातकाल की घोषणा कर दी ... और नेपाल सेना ने पहली बार ...ातकवाद के विरुद्ध मोर्चा खोल दिया ...। वैसे तो नेपाल मे कम्युनिस्ट शासन ...थापित करने के उद्देश्य से १९८६ मे ...ाओवादी सक्रिय हो गए थे। अब तक ...न्होने नेपाल मे २ हजार नेपालियो को ...ौत के घाट उतार दिया है। माओवादी ...ातकियो ने नेपाल के अनेक स्थलो पर ...समानान्तर सरकार' बनाने के साथ नेपाली ...ुलिस को अपने हमलो का निशाना बना ...लेया है। ४ महीनो क सघर्ष विराम को ...माप्त कर अब माओवादियो ने गत २३ ...वम्बर को नेपाल के कोई दो दर्जन ...जलो के अनेक स्थानो पर एक साथ ...ईसक वारदाते की और सेना तथा पुलिस ...ौकिया पर हमला कर ४१ जवानो की ...त्या कर दी। इसके बाद उनके हमले ...गातार जारी देखकर नेपाल मन्त्रिमण्डल ... देश मे आपातकाल लगाने का निर्णय ...किया। सरकार के इस निर्णय को स्वीकार ...र नेपाल नरेश महाराज ज्ञानेन्द्र ने २६ ...वम्बर की रात देश के सभी ७५ जिलो ... आपातकाल लगाने की घोषणा कर दी ...ौर माओवादियों को आतकवादी घोषित ...र दिया। अब आतकवादी मामले मे शामिल ...ोगो को आजीवन कैद की सजा दी जा ...कती है। सदिग्ध लोगो को बिना वारट ६० ...देनो तक कैद किया जा सकता है।

नेपाल की पुलिस और सेना ने इन ...ातकवादियो के खिलाफ कार्रवाई शुरू ...र दी और पहले ही दिन २०० आतकियो ...ो मौत के घाट उतार दिया है। सेना की ...ार्रवाई शुरू होने पर माओवादी अब ...ागने तथा छिपने लगे हैं। उनकी भारतीय ...ीमा मे घुसपैठ की आशका को देखते ...ए पश्चिम बगाल ने नेपाल सीमा से ...गने वाली सीमा पर रेड एलर्ट घोषित ...र चौकसी बढा दी है। पश्चिम बगाल ... दार्जिलिग जिले मे इन आतकवादियो ... घुस आने की आशकाए काफी बढ गई ...। अन्य सीमाओ पर भी कडी नजर ...ी जा रही है।

वास्तव मे नेपाल मे माओवादी आतकी ...क दशक से अधिक समय के सक्रिय ...। नेपाल के पूर्व नरेश महाराज वीरेन्द्र ... माओवादियो की हरकतो को नियन्त्रित ...रने का प्रयास भी किया था। इसके ...ए उन्होने कमेटी बनायी थी पर वे ...ाई निर्णायक कार्रवाई करते कि उनकी ...ा उनके परिवार की दर्दनाक हत्या हो ...ी। उनकी हत्या के बाद जब से ज्ञानेन्द्र ...ाल नरेश बने हैं तब से माओवादी कुछ ... ऊपर से शात रहे ४ माह के लिए ...र्ष विराम भी कर दिया परन्तु अब ...की गतिविधिया अचानक बहुत बढ ...ी हैं। वर्तमान प्रधानमन्त्री शेर बहादुर ...उबा ने जुलाई मे जब पद ग्रहण किया ... तो माओवादी उग्रवादियो ने उनसे ...ाति–वार्ता भी शुरू की। माओवादियो ... माग है कि नेपाल मे नया सविधान ...ाने के लिए सविधान सभा बनाई जाए। ... देउवा ने जब यह माग अस्वीकार कर ... तो माओवादी भडक उठे और उन्होने ...पक कार्रवाइया शुरू कर दीं। नेपाल ...कार अभी तक नेपाली पुलिस का ही ...ाग इन आतकवादियों के खिलाफ करती रही है परन्तु अनेक क्षेत्रो मे इन आतकवादियो ने पुलिस चौकियों पर हमला कर न केवल सिपाहियो की हत्या की बल्कि बडी मात्रा मे चौकियो व थानो से हथियार भी लूट लिए। नेपाल के कई जिलो म उनका वर्चस्व कायम है। चीन व चीन समर्थित तत्वो से उन्हे काफी सहायता मिलती रही है। इन आतकवादियो के नेता ४७ वर्षीय कामरेड प्रचण्ड है। कृषि मे स्नातक की उपाधि लेने वाले प्रचण्ड कुछ दिनो तक अध्यापक के रूप म भी कार्य करते रहे। उन्होने १९६० के दशक के लगभग मध्य मे आतकवाद का रास्ता अपना लिया। उन्होने नेपाल मे ५ हजार माओवादी गुरिल्लो की 'पीपुल्स लिवरेशन आर्मी तैयार कर ली और उसके बल पर अपने मसूबो को अजाम देने लग हैं। यह आर्मी रात के अधेरे मे हमले करने तथा अपना उद्देश्य पूरा कर भाग निकलने मे काफी निपुण है। इस छापामार सेना ने दूरदराज के इलाको को अपना निशाना बनाया और पुलिस थानो व चौकियो पर हमले कर वहा से बडी मात्रा मे शस्त्रास्त्र भी लूट लिए। नेपाल के ७५ मे से लगभग ३० जिलो मे उनका आतक तथा पीपुल्स गवर्नमेन्ट तक कायम हो गयीं। इन स्थानो से इन माओवादी आतकियो ने असैनिक अधिकारियो को भी खदेड दिया। अपने नियन्त्रण वाल क्षेत्रो से माओवादी आतकी टैक्स वसूल रहे हैं तथा 'कगारू न्यायालय' लगाकर 'फौरी निर्णय करन लग। इन हरकतो के कारण भी नेपाल सरकार के सामने इनसे निपटने की गम्भीर समस्या उत्पन्न हो गई थी परन्तु चार महीने के युद्धविराम जो गत शुक्रवार २३ नवम्बर को खत्म हुआ के तुरन्त बाद आतकवादी घटनाओ की भरमार हो गयी। नेपाल के दो दर्जन जिलो के सैकडो स्थानो पर एक साथ कार्रवाइया हुई। सेना पुलिस के जवान मारे गए नेपालगज के पूर्व मे स्थित सुर्खेत विमानतल पर खडे एशियन एयरलाइन्स के हेलीकॉप्टर को बम से उडा दिया गया बैंको व वित्तीय सस्थानों पर हमले कर २० करोड से भी अधिक रुपये लूटे गए। दाग छावनी व पुलिस केन्द्र हमलो के शिकार हुए। आतकवादी बडी मात्रा मे हथियार लूटने मे भी सफल रहे।

तिब्बत को हडपने के बाद से ही चीन की गिद्ध दृष्टि नेपाल पर लगी रही है लेकिन हिन्दुत्व के कारण भारत–नेपाल का अटूट बन्धन उसके मार्ग की सबसे बडी बाधा रहा। इसीलिए नेपाल मे चीन हित पोषित करने वाले माओवादी समय–समय पर भारत विरोधी भावनाए भडकाते रहे। माओवादियों की ४१ सूत्री माग मे पहली माग ही यह है कि भारत–नेपाल शान्ति एव मैत्री सन्धि १९५० को समाप्त किया जाए। नेपाल मे भारत विरोध ही देशभक्ति का आधार माना जाने लगा है। यदि यही रवैया बना रहा तो नेपाल का हश्र भी तिब्बत जैसा हो सकता है। उसके बाद चीनी ड्रेगन के एजेण्डे मे भूटान अरुणाचल सिक्किम तथा अन्य उत्तर भारतीय क्षेत्र हडपना हा सकता है। इसलिए नेपाल में इस समय जो कुछ चल रहा है उसे गभीरता से लेना चाहिए।

माओवादी आतकवादियो की इन ताजा हरकतो पर नेपाल के प्रधानमन्त्री श्री देउवा ने गहरी चिता व्यक्त करते हुए आशका व्यक्त की है कि इसके पीछे नेपाल को गृहयुद्ध की आग मे झोकने की साजिश चली आ रही हैं। माओवादियो ने जिस तरह से सेना पुलिस हवाई अड्डों सरकारी आधिकारियो को अपने हमलो का निशाना बनाया है वह साबित करता है कि माओवादी बहुत सोची–समझी रणनीति के आधार पर कार्य कर रहे हैं। अब तो उनके सम्बन्ध पाक खुफिया एजेन्सी आई०एस०आई० से भी हो गए हैं। नेपाल के हालात देखकर सत्तारूढ दल नेपाली काग्रेस ने भी अपनी पार्टी के प्रधानमन्त्री शेर बहादुर देउवा को सख्त कदम उठाने का निर्देश दिया है।

नेपाल मे दिसम्बर १९६० मे भी तत्कालीन नरेश महेन्द्र ने आपातकाल लागू किया था। उस समय वी०पी० कोईराला की निर्वाचित सरकार को हटाया गया था। कोईराला की सरकार को हटाने के बाद नेपाल नरेश ने एकदलीय पचायत प्रणाली लागू कर दी थी जो ३० वर्षों तक नेपाल मे कायम रही। लोगो को आशका है कि कहीं इस समय भी पुन यही ऊहापाहो के बीच नेपाली जनता काफी चिंतित है।नेपाल की घटनाओ का असर भारत पर कितना पडता है यह आगे आने वाला समय ही बताएगा। फिलहाल यह आशका तो उत्पन्न हो ही गयी है कि माओवादी आतकवादी नेपाल से भागकर उ०प्र० के तराई वाले क्षेत्रो मे घुसपैठ करने और भारत के चीन समर्थको का सहयोग जुटाने का प्रयास करेगे। इस सम्बन्ध मे पूरी चौकसी रखना जरूरी है। उ०प्र० सरकार ने सीमा पर कडी निगरानी शुरू भी कर दी है। (विसके)

अंग्रेजी की गुलामी में गर्व कैसा

– इन्द्र किशोर मिश्र

अभी हाल ही मे दिल्ली मे अन्तर्राज्जीय परिषद की बैठक मे देश भर के मुख्यमन्त्रियो ने शिरकत की और जाहिर है वहा सभी मुख्यमन्त्री हिन्दी मे नहीं बोले। खास तौर पर जिन राज्यो की राज्य भाषा हिन्दी न हो उन्हे हिन्दी के बजाय अपनी राज्य की भाषा में बोलना था सो अपनी–अपनी भाषा मे सभी ने अपना पक्ष रखा कईयो ने अग्रेज मे भी कहा। सयोग से पश्चिम बगाल के मुख्यमन्त्री बुद्धदेव भटटाचार्य ने अग्रेजी मे अपना भाषण दिया। यह एक सामान्य प्रकरण था। दिल्ली में हर दिन कोई न कोई बैठक केन्द्र राज्यों के बीच विभिन्न स्तरो पर होती ही रहती है और राज्य के नुमाइन्दे अपनी सुविधा के अनुकूल भाषा मे बोलते हैं।

पर इधर कलकत्ते के एक बडे बगला भाषा दैनिक अखबार ने इस पर गत १९–११–२००१ के सस्करण मे तीक्ष्ण प्रतिक्रियात्मक विश्लेषण अपने सम्पादकीय मे किया है। जिसका शीर्षक है जैातीय भाषा अग्रेजी (यानि राष्ट्र भाषा अग्रेजी) अग्रलेख मे उस अखबार ने राज्य के मुख्यमन्त्री बुद्धदेव भटटाचार्य की उस बैठक मे अग्रेजी मे भाषण देने की भूरि भूरि प्रशसा कर यह साबित करने की कोशिश की है कि हिन्दी हालाकि देश में सर्वाधिक लोगो द्वारा बोली जाने वाली भाषा होते हुए भी वह राष्ट्र भाष नहीं है। राष्ट्र भाषा अग्रेजी ही हो सकती है। सम्पादकीय मे आगे यह भी लिखा गया है कि हिन्दी उत्तर भारत मे बोली जाने वाली भाषा है और उसके साम्राज्य को सारे देश मे लादने के लिए ही उसे राष्ट्र भाषा और सम्पर्क भाषा के रूप मे केन्द्र सरकार ने बना रखा है।

बगला भाषा का सर्वाधिक बडा अखबार होने का गर्व है उस दैनिक को और उसके सम्पादकीय स्तम्भ के ऊपर एक सब टाइटिल जो उस अखबार के जन्म लग्न से छपता आया है वह है 'वन्देमातरम यानि बकिमचन्द्र की वाणी को एक ओर शिरोधार्य किया जा रहा है तो दूसरी ओर बकिम की भावनाओ के खिलाफ विषोदगार भी। क्योकि बकिम चन्द्र चटटोपाध्याय राष्ट्र भाषा और सम्पर्क भाषा हिन्दी के लिए सदाब्रती रहे। बकिम का राष्ट्र गीत सारे हिन्दुस्तान मे गाकर लोग राष्ट्र भक्ति की शपथ लेते हैं बुद्धबाबू के अग्रेजी भाषण पर बगाल को इतराने की नहीं शर्माने की जरूरत है क्योकि वामफ्रन्ट सरकार ने ही सत्ता मे आते ही प्राथमिक कक्षाओ से अग्रेजी को हटाया ताकि बच्चे मातृभाषा मे शिक्षा ग्रहण कर सकें। ऐसे राज्य के मुख्यमन्त्री को अगर हिन्दी नहीं आती है तो उसे गर्व के साथ दिल्ली में आयोजित बैठक मे बागला भाषा ने अपना पक्ष प्रस्तुत करना था तो समस्त बगाल की जनता के लिए भी गौरव की बात होती। जहा बगला को स्थापित करने की जरूरत है वहा अग्रेजों की दासता स्वीकारना गर्व की बात कैसे हो सकती हैं? अगर गर्व करना है तो भारत की समस्त आचलिक भाषाओ पर किया जाना चाहिए।

खेद का विषय है कि तुच्छ राजनीति करने की प्रवणता के चलते ही हिन्दी की जगह अग्रेजी की वकालत करने का ढोग कुछ लोगो द्वारा किया जाता है और जब व्यवहारिक जीवन मे बात आती है तो जन-जन मे बोली और समझी जाने वाली सम्पर्क भाषा हिन्दी का ही दामन थामा जाता है। जो राजनेता दिल्ली की बैठक मे अग्रेजी में बोलना गर्व महसूस करते हैं वही नेता निर्वाचन के दिनों में जनसभाओ मे क्यो नहीं अग्रेजी मे भाषण देते ? कितने लोग अग्रेजी मे दिए भाषण को समझेगे ? अग्रेजी को राष्ट्र की भाषा मनवाने वाले अग्रेजियत के गुलाम मानसिकता के लोगो को कश्मीर से कन्याकुमारी और गुजरात से असम तक चलने वाली ट्रेनो के जनरल डिब्बो मे यात्रा करते समय अगर किसी एक भाषा को अपना माध्यम बनाना पडता है तो वह एक मात्र हिन्दी ही है। हिन्दी जन जन की भाषा है और यही कारण है कि सुदूर दक्षिण और मेघालय असम उडीसा गुजरात, महाराष्ट्र मे भी निर्वाचनो के दिनो में केन्द्रीय नेताओं को या तो आचलिक भाषा में भाषण देना पडता है या फिर हिन्दी में। खेद का विषय है कि आज कुछ लोग हिन्दी का राजनैतिक विरोध करने के लिए अपनी आचलिक भाषा के गौरव और मातृ भाषा का भी हनन करने को तत्पर बन बैठे हैं।

६८, नया बाजार, खड़गपुर - ७२१३०१

अपनी राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा के लिए हमें भारतीय मेधा को पाश्चात्य चकाचौंध के राहु से बचाना होगा

– प० श्रीदत्त आर्य

आज हमारा अधिकाश भारतीय युवा वर्ग पाश्चात्य शिक्षा-पद्धति की चकाचौंध से इतना अधिक सम्मोहित हो गया है कि उसे भारतीय बौद्धिकता की स्वतन्त्रता सास्कृतिक वर्चस्व एव राष्ट्रवाद तथा स्वदेशी माटी से जुडा हुआ भारतीय कतई अच्छा नहीं लगता अपितु इसे बडे गर्व से 'स्टुपिड जॉब' कहकर मुह मोड लेता है। इससे स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है कि नव पूजीवाद की कारा में हमारी बौद्धिक प्रतिमाए महगे शिक्षा-सस्थानों में केवल पब्लिक स्कूली कल्चर मे दीक्षित होकर 'प्रेस्टिजियस सब्जेक्ट' को अपना कैरियर मानकर एम०बी०ए० एम०बी०ई० एस०एफ० सी०आई० के पाठ्यक्रमो पर अपने को बलिदान कर व्यावसायिक पाठ्यक्रमो के माध्यम से भारत को 'विदेशी नर्सरी' बना रहे हैं, जहा बहुराष्ट्रीय कम्पनियो के 'वर्कर' तैयार होकर भारत से मौका मिलते ही बाहर उड जाने की लालसा पाले हुए रहते हैं।

उच्च शिक्षा के नाम पर प्रगति व विकास की रफ्तार में जिस विश्व बाजारवादी लक्ष्य को सामने रखकर हम आगे बढ रहे हैं क्या अपनी माटी से कटकर हमे अन्दर ही अन्दर ऐसा महसूस नहीं हो रहा कि हम निश्चय ही कहीं भटके जा रहे हैं और यह भटकाव हमारे मानसिक सतुलन को कहीं इतना न बिगाड दे इतना अधिक झटका न दे दे कि हम शर्म महसूस करने लायक ही न रह जाए क्योकि जिनकी सभ्यता और पूजीवादी विचारधारा मे हम अपनी आर्थिक नैय्या को पतवारों से आगे बढाने की कोशिश कर रहे हैं वहा कुछ आगे जाकर कहीं भयानक गर्त और घातक प्रपात तो नहीं हैं जहा जाकर नीचे गिरते हुए हम अपना अस्तित्व ही खो बैठेंगे और नष्ट हो जाएगे? तब पाश्चात्य बाजारवाद हमारे इस बौद्धिक सर्वनाश का एक अनोखा जश्न मनाएगा कि 'मैंने यहा कुछ ऐसा किया कि इस देश को मारकर मेरा बाजार तो स्थिर हो गया।

लॉर्ड मैकाले ने ब्रिटेन के हाउस ऑफ कॉमन्स में भारत मे अग्रेजी शिक्षा का सर्वमान करते हुए कहा था – 'यूरोपीय भाषा मे शिक्षा पाकर हो सकता है कि ये (भारतीय) आगे चलकर किसी युग में यूरोपीय सस्थाओं की माग करे। वह दिन जब भी आएगा वह अग्रेजों के इतिहास का सबसे गौरवमय दिन होगा। मैकाले का वह सपना वास्तव में अब सच हो रहा है। कभी जो उसने सोचा था – हमें ऐसा वर्ग बनाना है जो हमारे उन करोडो लोगों के बीच जिन पर हम शासन कर रहे हैं दुभाषिए का काम बखूबी निभा सकें। आज भारत स्वाधीन हो गया है जिसके बौद्धिक विचरण मे केवल मैकाले की सही सोच का सपना हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं – अनुभव कर रहे हैं।

हमारी सरकार वास्तव में अनुगूज के स्वरों में अपनी ऐतिहासिक एव बौद्धिक अस्मिता को पाश्चात्य भौतिकवादी चिन्तकों एव बाहरी चकाचौंध के मोह की बीन पर मत्र मुग्ध सर्पिणी के समान नर्तन करती हुई पूर्णत उनके वश मे हुई जा रही है। इसके फलस्वरूप विदेशी भाषा के मोह बन्धन के वर्चस्व से बाहर आने की उसकी कोई सदिच्छा-शक्ति ही नहीं दिखाई दे रही है।

जब हमारी सविधान सभा बनी तो उस समय देश मे शिक्षा के माध्यम पर गम्भीरता से विचार ही नहीं किया गया। सविधान मे मात्र अनुच्छेद ३४० 'क' के तहत प्राथमिक शिक्षा मे मातृभाषा का व्यवहार स्थापित करा दिया गया जिसके आगे उसने मैकाले की शिक्षा पद्धति को भी आघात नहीं पहुचाया। फिर १९५६ ई० में 'राजभाषा-आयोग' आया तो इसकी कार्यसूची मे शिक्षा के माध्यम-परिवर्तन की कोई चर्चा ही नहीं रही। इसके बाद मे 'राजभाषा अधिनियम' की कार्यसूची में राजकीय कार्यो में कुकुरमुत्ते की तरह मैकाले के मानसपुत्रों की वाछित भीड को मातृभाषा से पृथक कर सरकार के मुकाबले समानान्तर कान्वेन्ट स्कूलो की श्रृखला की कडिया कायम की गई और प्रतिदिन अपने साथ और कडिया जोडने मे यह कतई निरुत्साहित नहीं है। कारण हमारे देश में दासत्व को वह भाषा जो रोजी रोटी से जुड गई हो अपना विस्तार तो करेगी ही और सुकल्पित अबाध गति से उसका मोह हम भारतीयों में बढ रहा है और फिर उदारवादी बाजार व्यवस्था मे आने-वाली बहुराष्ट्रीय कम्पनियो के द्वारा सुख सुविधाओं के प्रलोभनो के साथ आज उन भारतीयो के लिए महान आकर्षण का केन्द्र बिन्दु होकर रह गए हैं।

यही कारण है कि आज प्राईवेट मैनेजमेंट की सस्थाओं मे केवल अर्थ के व्यापार मे सलग्न अध्यापक–वर्ग दिन भर पैसा कमाने की धुन मे अध्यापक' के 'चरित्र' की ही हत्या कर रहा है। इससे भारतीय शिक्षा–व्यवस्था (मैकालीय प्रणाली की) और बाजारवाद की खुली व्यवस्था मे विदेशी कम्पनियो की रुचि में दिन–दिन इजाफा हो रहा है जिससे उच्च शिक्षा के उत्पादन तत्र को वे अपने कब्जे में कर लेना चाह रही है और इनका परिणाम भयानक दृश्यों का सकेत कर रहा है कि उच्च व्यवसायी–वर्ग उच्च शिक्षा की समस्त प्रणाली को अपने काबू मे रखना चाहता है इससे इस समाज में इस नए शिक्षा–तत्र के व्यवसाय के लिए नवीन जमींदारी–व्यवस्था भी प्रचलित हो गई है और हमारी सरकार भी इसी बाजारवाद के आधुनिक शिक्षा तत्र को विकसित होते देखने में दिनोंदिन शिक्षा–व्यय के बजट मे कटौती कर शिक्षा को पूर्ण रूप से विदेशी वर्चस्व के अधीन बना देने में कोई बुराई नहीं देख रही है। अभी पिछले दिनो छपी खबरों में साफ लिखा था कि भारत की आधुनिक शोध–सस्थाओ के आधे से ज्यादा शोध विद्यार्थी विदेशो के लिए आहरण कर लिए गए हैं। विदेशों को पनपाने के लिए ही भारत ने आई०आई०टी० नामक इजीनियरिंग कालेज को खोल रखा है जिससे अमेरिका भारतीय मेधा को और उसके वैज्ञानिक श्रम को अपने स्वार्थ के लिए आयात कर सके।

अभी तक एक सोची समझी साजिश के तहत भारतीय मेधा को हीन भावना के इस सीमा बिन्दु तक पहुचाने मे जो श्रम और प्रचार पाश्चात्य मीडिय' और शासको ने किया है उससे आज वास्तव मे हम अपनी उदात्तचिन्तन की प्रक्रिया से दूर होकर बहुत हील हो गए हैं जिससे हमारी स्पर्धा भावना ही कुन्द होकर रह गई है। इसने भारतीय विकासवाद एव वैदिक भावना के रचनात्मक सातत्य को बहुत ही गहरी क्षति पहुचाई है।

भारतीय मेधा के उत्कर्ष एव उसकी सहिष्णुता तथा सतत आध्यात्मिक चिन्तन से उद्भूत प्रखर मेधा–शक्ति से वेदो और सस्कृत के माध्यम से विदेश अब अच्छी तरह परिचित हो रहा है और यही कारण है उस उदात्त मानवीय चिन्तन के प्रणेता – 'वसुधैव कुटुम्बकम' से विश्व मानवता के निर्माता भारत मे इस अवधारणा से विश्वव्यापारियो को न्यौता मिला है। इससे विदेशी विश्वविद्यालयो की होड पर अकुश लगेगा। इस कम्प्यूटर युग मे वे यहा आने वाले विद्यालय हमारा बौद्धिक आर्थिक और सास्कृतिक विकास करने आ रहे हैं या भारतीय मेधा को ग्रसने आ रहे है ? इस साजिश को भापकर ही सुभाष बाबू ने इगलैण्ड मे पत्र लिखा था – 'भारतीय मेधा को पश्चिम की नकल न बनाओ। स्वतन्त्र चिन्तन की जो हमारी परम्परा है उसका ध्वज हम सम्भालते रहे। अपनी राष्ट्रीय अस्मिता' की रक्षा के लिए हमे भा० मेधा को बचाना होगा। श्री प० श्रीदत्त आर्य महात्मा गाधी ने स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात 'इन्टरव्यू' मे स्पष्ट शब्दो मे कहा था – 'दुनिया से यह कह दो – गाधी इग्लिश भूल गया है। उनका स्वदेशीवाद और नेताजी का भारतीय मेधा को विकृत न करने का आह्वान इन दोनों का तात्पर्य क्या एक ही नहीं है। इसी प्रकार रमेशचन्द्र दत्त ने भी अग्रेजी के विरुद्ध (जो १८३५ ई० में सेवानिवृत्त होकर इग्लैंड में बस गए थे) कहा था – 'भारतीय उद्योगों के विरुद्ध रक्षात्मक उपाय अपनाकर भारतीयों के विनिर्माण क्षमता नष्ट कर दी गई और उसके बाद उन्मुक्त व्यापार उन पर थोप दिया गया कि वे फिर से जीवित न हो सकें।

नव साम्राज्यवाद एक सोची–समझी साजिश के द्वारा जिस प्रकार अपना वर्चस्व विस्तार लेता है आज हम भारतीय केवल उसके उसी वैभव–पक्ष पर फिदा हो उसे ही नमन करना अपना परम कर्त्तव्य समझ बैठे हैं। आज विज्ञान पूजी और तकनीक ने मिलकर अर्थशास्त्र राजनीतिशास्त्र एव समाजशास्त्र के सभी प्राचीन सिद्धान्त बदल दिए हैं। यही कारण है कि कैम्ब्रिज मे भारतीय मेधा के पुरोधा आचार्य जगदीशचन्द्र बसु के रेडियो के बारे मे भाषण से चौकन्ने अग्रेजो ने भारतीय मेधा को हीनतर साबित करने के लिए जालसाजी मे उनकी मूल डायरी ही चोरी करवा दी थी। जब अग्रेजो को अपनो मे समझदारी से उपयोग करने वाला उसका कोई न मिला तो उन्होने वह डायरी मारकोनी के हवाले कर दी। इसीलिए आज रेडियो के आविष्कारक भारतीय नहीं इटली वाले माने जाते हैं परन्तु इस चोरी और धोखाधडी का हाल ही में रहस्योदघाटन होने पर आई०ई०ई० सस्थान ने आचार्य बसु को रेडियो का आविष्कारक होना स्वीकार कर भारतीय मेधा की महत्ता को स्वीकारा है।

अभी हाल मे हल्दी को पेटेन्ट कराने के प्रसग में डा० मिशलकर की विजय भी भारतीय मेधा की प्रतिष्ठा की स्वीकारोक्ति विश्व के समक्ष स्पष्ट है। पेरु की गुफाओ (दक्षिण अमेरिका) मे पाई गई भाषा को एक अमेरिकन ने शोधकर उसे 'सस्कृत भाषा' बताया है जिससे कोलम्बस का अमेरिका का अनुसधान कर्त्ता का दर्जा शायद अब न रहे। अत अब भी यदि कोई भारतीय मेधा को घटिया मानता है तो अग्रेज विश्वव्यापी है' के नाम पर हम गिला न कर उन्हें उनके झूठे दम्भ के लिए माफ करते हैं।

वे अब टूट रहे हैं। श्री गुन्नर मिर्डल ने अपनी पुस्तक 'चैलेज ऑफ वर्ल्ड पावर्टी' मे उसी सजिश को बडे स्पष्ट रूप से दर्शाया है कि 'विकसित देश अविकसित देशो के भावी नक्शा बनाएगे और यह नक्शा धन से तय किया जाएगा। यही कारण है हमारे जैसे गरीब देश मे विदेशी पूजी को आकर्षित करने के लिए भारतीय पूजीवाद और सरकारी तन्त्र आचल फैलाए बैठे उनकी सशर्त साजिशों के आगे घुटने टेककर अगवानी मे झुके दिख रहे हैं। इनपर बाहरी थोपा जाएगा इसी के सहारे हमारी प्रतिमा को धन की चकाचौंध से जकडकर हमारी मेधा को अपने हित साधने के लिए काम मे लाया जाएगा। इस बाजारवाद और अन्तर्राष्ट्रीय दस्युवृत्ति के बारे मे हमारे प्रिय बापू की यह उक्ति हमारे देश के विदेशी नजरियावाले को कितना झकझोड सकेगी पता नहीं पर इसकी सत्यता को इससे मुह मोड लें पर भी स्वीकार करना ही होगा – अगर मेरे हाथ मे तानाशाही सत्ता होती तो मैं आज ही इस विदेशी माध्यम मे दी जानेवाली शिक्षा को बन्द कर देता। 'बापू ने ऐसे सतर्क भाव से कहा था। अभी हाल फिलहाल चीन ने हागकाग का शासन-सूत्र अपने हाथ मे आते ही फरमान जारी कर दिया है कि सारी पढाई चीनी भाषा मे ही होगी। हमें भी इससे सबक लेना चाहिए।

> **उच्च शिक्षा के नाम पर प्रगति व विकास की रफ्तार मे जिस विश्व बाजारवादी लक्ष्य को सामने रखकर हम आगे बढ रहे है क्या अपनी माटी से कटकर हमे अन्दर ही अन्दर ऐसा महसूस नहीं हो रहा कि हम निश्चय ही कहीं भटके जा रहे है और यह भटकाव हमारे मानसिक सतुलन को कहीं इतना न बिगाड दे इतना अधिक झटका न दे दे कि हम शर्म महसूस करने लायक ही न रह जाए क्योकि जिनकी सभ्यता और पूजीवादी विचारधारा मे हम अपनी आर्थिक नैय्या को पतवारो से आगे बढाने की कोशिश कर रहे है वहा कुछ आगे जाकर कहीं भयानक गर्त और घातक प्रपात तो नहीं है जहा जाकर नीचे गिरते हुए हम अपना अस्तित्व ही खो बैठेगे और नष्ट हो जाएगे ?**

वैदिक ज्ञान ही समाज में स्वत्व स्थापित कर सकता है

– आचार्य रामनाथ सुमन

आज व्यक्ति से लेकर विश्व की विराट ईकाई तक अनाचार, उच्छृंखलता, स्वार्थपरता एवं अराजकता का दृश्य दिखाई दे रहा है। व्यक्ति अपने परिवार से सामंजस्य नहीं बना पा रहा है, परिवार अपने ग्राम के अन्य परिवारों से मिलकर नहीं चल रहा है, ग्रामों की ईकाई अपने ही समाज बंधुओं वाले अन्य ग्रामों से बेमेल व्यवहार में लगी हैं। समाज का एक वर्ग अन्य वर्गों से ईर्ष्या द्वेष की अग्नि में झुलसकर वर्गवाद का ग्रास बनकर कलह में आसक्त हैं। एक समाज का रूप देखना मानों आकाश कुसुम देखने जैसा हो रहा है। लोकतांत्रिक दूषित शासन प्रणाली ने सामाजिक समरसता के सिंधु में ऐसा हलाहल विष घोला है कि वहां सोहार्द की सुधा प्राप्त ही नहीं हो पा रही है। राष्ट्रमंगल की भावना ऐतिहासिक विषय बनकर वर्तमान का स्पर्श नहीं कर रही है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र का पड़ौसी होकर भी अशान्ति, आतंक, घुसपैठ तथा अव्यवस्था फैलाने में ही अपना कृतकार्य मान बैठा है। राष्ट्र के कल्याण के लिए निर्मित तथा राष्ट्र सुरक्षा के लिए गठित संयुक्त राष्ट्र संघ तथा सुरक्षा परिषद जैसे संगठनों पर भी दो चार राष्ट्राध्यक्षों का एकाधिपत्य विश्व भर में अशान्ति का कारण बना हुआ है। यह है आज के व्यक्ति से लेकर विशाल विश्व तक की सामाजिक दुरवस्था। इस दुरवस्था का शमन तथा समाधान है संस्कृति के एक मात्र अधिष्ठान वाङ्मय के प्राणभूत वैदिक साहित्य का स्वाध्याय एवं उक्त स्वाध्याय मनन चिंतन के उपरान्त प्राप्त रत्नभूत सुभाषित सूक्तियों का जन जन में, घर घर में, ग्राम ग्राम में, नगर नगर में, सभी राष्ट्रों में तथा तदनुरूप अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रमों का प्रचार प्रसार एवं क्रियान्वयन।

यह प्रश्न प्राय आज के तथाकथित बुद्धिजीवियो द्वारा उठाया जाता है कि वैज्ञानिक प्रगति के वर्तमान युग मे सस्कृत मे लिखे गए वैदिक साहित्य की क्या प्रासगिकता है ? उसकी क्या उपयोगिता है ? क्या आवश्यकता है ? ऐसा प्रश्न उपस्थित करने वाले लोगों को शायद समाज के स्वरूप का ज्ञान ही नहीं है और न ही वर्तमान समाज की मर्मान्तक पीडा की किचित मात्र भी अनुभूति है। विज्ञान के जीवनोपयोगी वरदान के साथ समाज को विच्छिन्न करने वाला अभिशाप भी समाज को कितना झेलना पड रहा है और अन्तत इस अभिशाप से मुक्ति किस साधन या साहित्य से मिल सकती है, इसकी चिता इन्होने कभी की भी नहीं है। अन्यथा कल्याणकारी सस्कृत वाणी के विराट विशाल दिव्य मदिर में विराजित वेद भगवान के दर्शनों से इन्हें वचित न होना पडता और पदे पदे वैदिक वाडमय से प्राप्त अमृतमयी प्रेरणा की समसामयिक उपयोगी प्रासंगिकता के विषय मे इन्हें कुतर्क उठाने का दुर्भाग्य भरा अवसर न आता।

आज व्यक्ति से लेकर विश्व की विराट ईकाई तक अनाचार, उच्छृखलता, स्वार्थपरता एव अराजकता का दृश्य दिखाई दे रहा है। व्यक्ति अपने परिवार से सामजस्य नहीं बना पा रहा है, परिवार अपन ग्राम के अन्य परिवारों से मिलकर नहीं चल रहा है, ग्रामों की ईकाई अपने ही समाज बधुओं वाले अन्य ग्रामों से बेमेल व्यवहार में लगी हैं। समाज का एक वर्ग अन्य वर्गों से ईर्ष्या द्वेष की अग्नि में झुलसकर वर्गवाद का ग्रास बनकर कलह में आसक्त हैं। एक समाज का रूप देखना मानों आकाश कुसुम देखने जैसा हो रहा है। लोकतात्रिक दूषित शासन प्रणाली ने सामाजिक समरसता के सिधु में ऐसा हलाहल विष घोला है कि वहा सोहार्द की सुधा प्राप्त ही नहीं हो पा रही है। राष्ट्रमंगल की भावना ऐतिहासिक विषय बनकर वर्तमान का स्पर्श नहीं कर रही है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र का पडौसी होकर भी अशान्ति, आतंक, घुसपैठ तथा अव्यवस्था फैलाने में ही अपना कृतकार्य मान बैठा है। राष्ट्र के कल्याण के लिए निर्मित तथा राष्ट्र सुरक्षा के लिए गठित संयुक्त राष्ट्र सघ तथा सुरक्षा परिषद जैसे सगठनों पर भी दो चार राष्ट्राध्यक्षों का एकाधिपत्य विश्व भर में अशान्ति का कारण बना हुआ है। यह है आज के व्यक्ति से लेकर विशाल विश्व तक की सामाजिक दुरवस्था। इस दुरवस्था का शमन तथा समाधान है संस्कृति के एक मात्र अधिष्ठान वाङ्मय के प्राणभूत वैदिक साहित्य का स्वाध्याय एव उक्त स्वाध्याय मनन चिंतन के उपरान्त प्राप्त रत्नभूत सुभाषित सूक्तियों का जन जन में, घर घर में, ग्राम ग्राम में, नगर नगर में, सभी राष्ट्रों मे तथा तदनुरूप अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रमो का प्रचार प्रसार एव क्रियान्वयन।

भारत में अब तक प्रचलित रही सामाजिक व्यवस्था मे चारो वर्ण, आश्रमो का सही मार्गदर्शन तो वेदज्ञान पर अवलंबित है ही, वर्तमान मानव समाज मात्र के विद्रूप रूप का निराकरण तथा उज्ज्वल भविष्य की रचना भी वैदिक साहित्य के स्वाध्याय से सहज सुलभ है।

चातुर्वर्ण्य त्रयोलोकाश्चत्वाराश्रमाः पृथक।
भूतं भव्य भविष्यंच सर्वं वेदात प्रसिध्यिति।।

मनुस्मृति १२–९७

इतना ही नहीं

पितृदेव मनुष्याणां वेदश्चक्षुः सनातनम्।
अशक्यं चा प्रमेयं च वेदशास्त्रमिति स्थितिः।। *मनु० १२–११३*

अर्थात् पितरों, देवताओं तथा मनुष्यों के लिए वेद सनातन चक्षु हैं। जो विषय जानने में अथवा जो वस्तु देखने में नहीं आती है उसे भी वेदों द्वारा जाना तथा देखा जा सकता है। यहां मनुष्य मात्र के लिए वेद वेदों को चर्मचक्षुओं से पृथक सनातन चक्षु बताकर देश, काल की सीमा को लाघकर नित्यशाश्वत रूप में ज्ञान तथा दृष्टि का साधन बताया गया है। व्यक्ति में तेजस्विता तथा वर्चस्विता का आज अभाव दिखाई दे रहा है। वेद कहता है कि **'वर्चोदा अग्नेसि वर्चो मेंदेहि, तेजोसि तेजोमयि धेहि।'** आज भाई का भाई शत्रु बनकर उसके प्राण लेने को उतावला है। पुत्र पिता के अनुरूप आचरण से कतरा रहा है। विवाह होते ही बेटा मां के मन को कष्ट देने में नहीं संकुचा रहा है। प्रेम विवाह के पाश में आबद्ध पति पत्नी के रूप में स्त्री पुरुष सीधे द्वितीय आश्रम में प्रवेश कर जाते हैं। किन्तु परस्पर का स्नेह सौहार्द, मधुर व्यवहार अधिक दिनों तक नहीं चल पाता है। नित्य चिरतन तथा शाश्वत दृष्टि रखने वाला वेद कहता है –

'जायापत्ये मधुमतीं वाचं वदत मद्रया' तथा गृन्गामी ते सौभागत्वाय हस्तं मया पत्याजरदष्टि यर्थास्याः।

आज माता पिता ही नहीं शिक्षक आचार्यों के प्रति भी घर के सुखमय वायुमण्डल में रहने वाले बालक श्रद्धा के स्थान पर अपमान, अवहेलना तथा उपेक्षा दिखाने में नहीं संकुचाते। आज की यह समस्या कल के समाज का कैसा स्वरूप निर्माण करेगी, सहज ही समझा जा सकता है। आचार्य देवो भव की शिष्य को शिक्षा देने वाला वेद आचार्य भी पथ प्रदर्शक बनकर शिक्षा देता है कि आचार्य उपनयन संस्कार के माध्यम से शिष्य को अपने अन्तःकरण का अंग बनाकर उसे आत्मसात् करता हुआ उसके सम्पूर्ण कुसंस्कारों को, समस्त मल विक्षेपों को दूर करके उसे विधावदात बनाने का दायित्व वहन करता है।

आज व्यक्ति, परिवार समाज की स्वार्थ परक वृत्ति ने सामाजिक विराट रूप की भावना को ओझल कर दिया है। ब्राह्मण समाज, क्षत्रिय समाज, यादव समाज, गूजर समाज, वैश्य समाज तथा अनुसूचित व दलित समाज जैसे वर्ग मूलक संगठन तो देखने को सर्वत्र मिल जाएंगे, राजनीतिक दृष्टि वाले विभिन्न दलों की दल दल से निकलना ही किसी भी राष्ट्रीय व्यक्ति को कठिन हो रहा है किन्तु राष्ट्र की बात कहने वाले बुद्धिजीवी भी कम दिखाई पड़ते हैं। नदियों के जल पर दो प्रांतों में विवाद यत्र तत्र देखने को मिल जाएगा। प्रांत की बात तो दूर रही पुलिस थानों की सीमा को लेकर भी मृत व्यक्ति का शव आज हर जिले में असहाय अवस्था में देखने सुनने में आ जाता है। फिर भी राष्ट्र दृष्टि की कल्पना कैसे की जा सकती है ? ऐसी भयावह संकट की स्थिति में वेदभगवान की राष्ट्र दृष्टि को ही नमन करना पडेगा।

विश्व का कल्याण चाहने वाले ऋषियों ने पूर्वकाल में तप करके यह योग्यता अर्जित की थी कि वे किसी भूभाग को सांस्कृतिक एकता के सूत्र में आबद्ध करके उसे राष्ट्र की संज्ञा दे सकें। उन्होंने तप और दीक्षा के बल पर राष्ट्र का निर्माण किया और इसमें बल तथा ओज भर दिया। समाज की ओर से प्रार्थना है कि देवशक्तियों ! इस राष्ट्र को ऋषियों की धरोहर के रूप में सौंप दो। मैं आप सब पाठकों से अनुरोध करता हूं कि आज के इस वैज्ञानिक प्रगति वाले युग में क्या ये राष्ट्रीय विचार अप्रासंगिक हो गए हैं ? क्या आज किसी देश प्रेमी को इन श्रेष्ठ विचारों की आवश्यकता नहीं ? क्या ये विचार किसी एक देश की सीमा में बधकर ही रह जाने वाले हैं ? क्या विश्व के किसी भी राष्ट्रभक्त के लिए इन विचारो में पुरानापन, हिन्दूपन या साम्प्रदायिक दुर्भाव झलक रहा है ?

गदि नहीं तो क्यो महिमामय वैदिक साहित्य के सुधामय सुभाषितों का सम्मान नहीं होना चाहिए ? क्यों इनकी उपयोगिता नहीं रही ? क्यों इनकी आवश्यकता तत्काल क्षीण हो गई ?

आज के वैज्ञानिक मस्तिष्क को वंदनीय वैदिक वाङ्मय की सार्वदेशिक तथा सार्वकालिक उदार भावनाओं का परिचय कराकर यह बताना होगा कि वेदवाणी देशकाल, परिस्थितियों में बंधे सीमित ज्ञान वाले मानव की वाणी में नहीं है। यह तप पूत मनीषी ऋषियों के पवित्र अन्तःकरण में स्वतः स्फूर्त प्रकट हुई अनादि निधनां नित्यशाश्वत दिव्यवाणी है, जिसके वचन सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर सृष्टि के अतिम क्षण तक भी उपयोगी रहेंगे।

आज के वैज्ञानिक युग में पृथ्वी का शोषण नहीं दोहन ही हमें करना है, यदि इसके सुपुत्र के नाते हमें जीवन जीना है तो वैदिक निवेदन के रूप में हमें कहना पड़ेगा कि –

पृथिवि मातमामा हिंसीर्मोअहत्वाम्।।

यजुर्वेद

यदि सम्पूर्ण भेद भावों को त्यागकर एकात्मता का अमृतसूत्र हमें सारे संसार को देना है तो वेद के शब्दों में –

यस्मिन सर्वाणि भूतान्या त्मैवाभूद विजानतः, तत्रको मोहःकः शोक एकत्व मनुपश्यता (यजुर्वेद) कहना ही पडेगा।

आज वैदिक ज्ञान से विलग होने के कारण ही समाज में रजत्व का दुष्प्रभाव बढा है। वैदिक ज्ञान के प्रचार प्रसार से ही समाज में स्वत्व स्थापित हो सकता है, इसके अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं है।

शिक्षा, परीक्षा और दीक्षा का महत्व

— वासुदेव शास्त्री

शिक्षा उसे कहते है जिससे मानव कुछ सीख कर वैयक्तिक पारिवारिक सामाजिक राष्ट्रीय तथा विश्व राष्ट्रीय प्रगति कर इस ससार को स्वर्णिम रूप प्रदान कर सके। वैदिक शिक्षा का प्रारम्भ गर्भाधान सस्कार से होता है। वीर अभिमन्यु ने माता के पेट मे पडे रहकर अर्जुन से सुनकर चक्रव्यूह में घुसने का तरीका सीखा था। अष्टावक्र ऋषि ने गर्भावस्था मे वेदान्त की शिक्षा ग्रहण की थी। माता मदालसा की आठो सन्ताने गर्भावस्था मे ही माता से शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरञ्जनोऽसि ससारमाया परिवर्जितोऽसि इस लोरी को सुन सुनकर ब्रह्मर्षि बनी थीं।

शिक्षा का दूसरा अध्याय तब शुरू होता है जब नवजात शिशु को घृत और मधु मिलाकर सोने की शलाका से उसकी जिह्वा पर ओ३म् लिखने का विधान किया जाता है। स्वर्ण शलाका से जिह्वा पर ओ३म् लिखना बालक को अध्यात्मक जगत मे प्रवेश कराना होता है। साथ ही कान मे वेदोऽसि शब्द सुनाना भी बालक को सब सत्य विद्याओ की पुस्तक वेद के प्रति श्रद्धावान बनाना तथा तुम्हारा गुप्त नाम वेद है — तुम जानो एव मानों के द्वारा बालक का एक सुसस्कारित नागरिक बनाने का अमिट पदक्षेप है।

यज्ञोपवीत सस्कार के द्वारा बालक को शिक्षा दी जाती है कि हे बालक तुम ऋषिऋण देवऋण तथा मातृपितृऋण के ऋणी हो। वेदादि ग्रन्थ का पाठ तथा तदनुसार आचरण के द्वारा ऋषिऋण से अग्निहोत्र अतिथियज्ञ बलिवैश्यदेव यज्ञ आदि द्वारा देवऋण से एव जीवित माता पिता और पितरो की सेवा सत्कार करके पितृऋण से उऋण होने के लिए प्रयत्नशील रहना।

वेदोद्धारक स्वामी दयानन्द के अनुसार शिक्षा की परिभाषा मे विद्या अर्थात् ज्ञान की प्राप्ति और उसके आधार पर मानवीय गुणों जैसे सभ्यता धर्म शिष्टाचार सयम का होना आवश्यक है। डॉ० राधा कृष्णनन के अनुसार भारत सहित सारे ससार के कष्टो का कारण यह है कि शिक्षा का सम्बन्ध नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यो की प्राप्ति से न रहकर केवल मस्तिष्क के विकास से रह गया। जिस शिक्षा मे ह्रदय और आत्मा की अवहेलना हो उसे पूर्ण नहीं माना जा सकता। श्री अरविन्द जी की मान्यता है कि ज्ञान भक्ति और निष्काम कर्म आर्य शिक्षा के मूल तत्व हैं। हमारा उद्देश्य होना चाहिए ऐसी शिक्षा देना जिससे भावी सतान ज्ञानी सत्यनिष्ठ और विनीत हो चाहे धर्म की किसी रूप में स्पष्ट शिक्षा दी जावे या नहीं पर ईश्वर के लिए मानवता के लिए देश के लिए दूसरो के लिए और इन सबमे अपने आपको जीवित रखने के लिए धर्म इस सार को प्रत्येक विद्यालय का आदर्श बनाया जाना आवश्यक है। केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त कमीशन के अध्यक्ष डॉक्टर दौलतसिह कोठारी के मत मे विद्यालय पाठयक्रम का एक गम्भीर दोष है — 'सामाजिक नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यो की शिक्षा का अभाव।

भारत के सबसे पहले शिक्षा मन्त्री मौलाना अब्दुल कलाम आजाद ने स्कूल कालेजो के पाठयक्रम के इस दोष को दूर करने के लिए धार्मिक शिक्षको की अनिर्वायता पर बल देते हुए देश के राज्यो के सभी शिक्षा मन्त्रियो तथा विश्वविद्यालयो के कुलपतियो को अपने—अपने अधीनस्थ शिक्षण—सस्थाओ मे धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था करने का आदेश दिया था। शिक्षा मन्त्रालय के सचिव प्रो० हुमायु कबीर के हस्ताक्षरो से जो परिपत्र सबको भेजा गया था उसमे शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर पाठ्यक्रम मे धार्मिक एव नैतिक शिक्षा का प्रावधान करने और उसके द्वारा विद्यार्थी के चारित्रिक एव सास्कृतिक विकास पर बल दिया गया है और उसके लिए अध्यापको का स्वय धार्मिक होना आवश्यक ठहराया गया है। वस्तुत शिक्षा का उद्देश्य ज्ञानवृद्धि के साथ साथ छात्रो मे मानवीय व व्यवहारिक गुणो का विकास करना है। यदि विद्यार्थी मे विनम्रता कर्मठता सत्यनिष्ठा सेवावृत्ति निरभिमानता देशभक्ति आदि गुण नहीं है तो उसे वास्तविक अर्थों मे विद्वान वा शिक्षित होना नहीं माना जा सकता। शिक्षित मनुष्य केवल अपने लिए नहीं जीता अपितु समाज के लिए जीता है। वह अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहकर सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझता है।

वेदारम्भ सस्कार मे स्वामी दयानन्द जी ने सार रूप मे इन्हीं गुणो का निर्देश किया है। इन गुणो के अभाव मे विद्या फलीभूत होगी वा नहीं यह प्रश्न उपस्थित कर उसके उत्तर मे उन्होने कहा है — कभी नहीं क्योंकि विद्या का यही फल है कि मनुष्य को धार्मिक होना अवश्यमभावी है। जिसने विद्या के प्रकाश से अच्छा जानकार न किया और बुरा जानकर न छोडा तो क्या वह चोर के समान नहीं है ? क्योकि जैसे चोर चोरी को बुरा जानता हुआ चोरी करता और साहुकारी (वाणिज्य) को अच्छी जानकर भी नही करता वैसे ही जो पढके अधर्म को नहीं छोडता और धर्म को नहीं करता उसकी विद्या का फल कैसे होगा ?

ऋषिवर दयानन्द जी ने वैदिक शिक्षा मे शिक्षित करने कराने की चाबिया हमे प्रदान की हैं वह कालातीत सार्वकालिक एव सार्वभौमिक है वैदिक शिक्षा का मूल है — यानि अनवद्यानि निर्माणि तानि सेवितव्यानि नो इतराणि। यानि अस्माक सुचरितानि तान त्वयोपास्यानि नो इतराणि — हे बालक! जो परहित अन्याय और अधर्माचरण हो उसको मत मानना।

शिक्षा के उपरान्त परीक्षा की घडी आती है। परीक्षा का अर्थ होता है चारो ओर से देखना। विद्यार्थी का चहुमुखी विकास हुआ या नहीं यह देखना परीक्षा का काम है। वैदिक दृष्टिकोण से परीक्षा पाच प्रकार से होती है —

१ जो ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव और वेदो से अनुकूल हो वह सत्य और उससे विरुद्ध असत्य।

२ जो सृष्टिक्रम के अनुकूल है वह सत्य और जो सृष्टि क्रम के विरुद्ध है वह असत्य।

३ आप्त अर्थात जो धार्मिक विद्वान सत्यवादी निष्कपटियों का सग उपदेश के अनुकूल हो वह ग्राह्य जो विरुद्ध वह सब असत्य।

४ अपनी आत्मा के अनुकूल अर्थात जैसा अपने को सुख प्रिय और दुख अप्रिय है वैसा ही सर्वत्र समझ लेना चाहिए कि मै भी किसी को दुख वा सुख दूगा तो वह भी अप्रसन्न और प्रसन्न होगा।

५ प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द ऐतिह्य अर्थापत्ति सम्भव और अभाव इन आठो प्रमाणो से परीक्षा अर्थात सत्यासत्य का निर्णय होता है।

परन्तु विद्यार्थियो की परीक्षा का स्वरूप कुछ और ही होता है। जिस प्रकार से आरूणी नामक शिष्य स गुर ने अपनी जमीन पर पानी की धारा रोकने के लिए भेजा था और गुरुभक्ति की परीक्षा ली थी जिस समय गुरु द्रोण ने तीरन्दाजी के समय अर्जु स प्रश्न पूछ कर एकाग्रता की परीक्षा ली थी जिस प्रकार प्रज्ञाचक्षु विरजानन्द ने वज्रशरीर दयानन्द को पाव पर इकटठा किया हुआ कूडा लगन पर प्रहार के द्वारा गुरुभक्ति एव धैर्य की परीक्षा ली थी ठीक उसी प्रकार की परीक्षाओ के द्वारा योग्य—अयोग्य विवेचित किया जा सकता है।

अन्तिम अध्याय दीक्षा का है दीक्षा का अथ है — दीयते परम ज्ञान क्षीयते पाप कर्माणि — अर्थात श्रेष्ठतम ज्ञान प्रदान कर सब प्रकार के पापो से मुक्त कराकर समाज एव राष्ट्र के कर्म क्षेत्र मे प्रवेश कराना। प्राचीन काल मे गुरुकुल से अपना अध्ययन समाप्त करके घर लौटने वाले स्नातको के लिए दीक्षान्त समारोह का अनुष्ठान हुआ करता था। वैदिक दीक्षा का स्वरूप उपदेश के रूप मे होता था — जो इस प्रकार है — 'सत्य का आचरण कर धर्म का आचरण कर। स्वाध्याय मे प्रमाद मत कर। आचार्य को जो धन प्रिय है वह ला उसे देना आचार्य की जो शिष्यो की प्रजा है उसका सिलसिला मत तोड देना। सत्य और धर्म पर दृढ रहना। आध्यात्मिक और आधिभौतिक दोनो का ध्यान रखना। स्वाध्याय और उससे प्राप्त ज्ञान मे बडे देवो तथा आयु मे बडे पितरो की बात को सुनने मे प्रमाद न करना। माता—पिता आचार्य तथा अतिथि को देवता के समान मानना। हमारे जो प्रशसनीय कार्य है उन्ही का अनुसरण करना अन्यो का नही। हमारे जो शुभ आचरण है उन्हीं का अनुकरण करना अन्यो का नहीं। हमसे भी जो श्रेष्ठ विद्वान है उनका सग [illegible] दान श्रद्धा से देना श्रद्धा न हो [illegible] देना शरम से देना डर से देना। यदि धर्मो—धर्म के सम्बन्ध मे कभी सशय हो जाए तो जो धर्म कार्य मे स्वत प्रवृत्त हो और सन्तुलित मस्तिष्क से विचार करने मे समर्थ हो जैसा वे कहे वैसा करना। यही आदेश है यही उपदेश है यही वेद और उपनिषद का सार है यही हमारा अनुशासन है ऐसा ही आचरण करना।

इन वैदिक आदर्शों से दीक्षा लेकर हम इस धरा—धाम को सुखमय शान्तिमय और आनन्दमय बनाए।

शिक्षा का उद्देश्य ज्ञानवृद्धि के साथ साथ छात्रों में मानवीय व व्यवहारिक गुणों का विकास करना है। यदि विद्यार्थी में विनम्रता, कर्मठता, सत्यनिष्ठा, [illegible] आदि गुण नहीं है तो उसे वास्तविक [illegible] शिक्षित मनुष्य केवल [illegible] जीता है। वह अपनी ही [illegible] समझता है।

ओम शम
आर्यसमाज धूरी पजाब।

सार्वभौम चित्त का धर्म : योग

–स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

मानव जीवन के सर्वागीण विकास के लिए योग विद्या सहयोगी हे। 'ह विद्या सवतन्त्र स्वतन्त्र वेदविहित है। यह किसी मत सम्प्रदाय की देन नहीं है न इसे किसी मत सम्प्रदाय के अनुसार विभक्त किया जा सकता है। यह शिक्षा प्रत्येक मत सम्प्रदाय के लिए उपयोगी अपरिहार्य ह। इससे सभी अपनी सब प्रकार की उन्नति करने मे सफल होते हैं।

मानव जीवन के लिए आवश्यक शारीरिक मानसिक बौद्धिक तथा आत्मिक विकास मे एक यही विद्या सफलता दिलाती ह। महर्षि पतजलि के अनुसार याश्चित्तवृत्ति निराध अर्थात चित्त की वृत्तियो का निरोध करना योग है। इस सूत्र के आधार पर महर्षि व्यास कहते हैं कि योग सार्वभौम चित्तस्य धर्म अथात याग सम्पूर्णता से चित्त का धर्म है। अन्य सभी अग सहायक हैं।

महत्व

योग की शिक्षा सर्वकालो मे रही है। इसका महत्व किसी एक काल के लिए नहीं रहा वरन सदैव इसकी उपयोगिता रही है। वास्तव मे योग एक मानसशास्त्र ह जिसमे मन को सयत करना और पाशाविक वृत्तियो से हटाना सिखाया जाता है। जीवन की सफलता किसी भी ...त्र की हो वह सयत मन पर ही निर्भर करती है। मन सयम का अभिप्राय है कि किसी एक समय मे किसी एक वस्तु पर चित्त का एकाग्र होना। दीर्घकाल तक ...भ्यास करने स मन का ऐसा स्वभाव बन जाता है किसी विषय को सोचते या ...सी काम को करते हुए मन उस पर ...काग्र रहे ऐसा अभ्यास करना। आरम्भ ...न तो कठिन होता है पर जब अभ्यास करते करते वैसा स्वभाव बन जाता है तब उससे बहुत लाभ होता है और सुख अनुभव ...ता है।

...पयुक्त एव सुसगत रीति से सोच ...ा अच्छे ढग से कोई काम न कर ... ...विचार और काम मे मन की ... ...ि से ही होता है।

...द्यार्थी यदि अध्ययन के समय स्थिर ...न स नही सुनता या पढता तो विद्या ...ा ...अती। मजदूर स्थिर मन के बिना ...षि कारखाना या कोई शारीरिक कार्य भी नहीं कर पाता। जो विद्यार्थी अनुत्तीर्ण होते हे। इसका एकमात्र कारण मन का स्थिर न रहना ही है। कोई भी सासारिक कार्य मन की एकाग्रता के बिना विधिवत पूरा नही होता। मन की एक विशेष शक्ति ...ा ही महर्षि पतजलि ने अनेको सिद्धियो ...वर्णन किया है। इससे स्पष्ट होता है याग कोई धर्म सम्प्रदाय या धर्मविषयक ...न नहीं है प्रत्युत यह ससार के सभी धर्मो ओर तत्व ज्ञानो मे सहायक है। जो भी योग का प्रयोग करता है उसे सुख शाति और आनन्द मिलता है।

सासारिक एव पारमार्थिक लाभ

योग का नियमित श्रद्धापूर्वक अभ्यास करने से मानसिक बल बढता है। जिससे ...ा कार्य करने का निश्चय करता है वह सरलता से पूरा होता हे। अपनी योग्यता ...क्ति के अनुसार कार्य–अकार्य का निश्चय उचित ही करता है।

सासारिक मोह ममता कम होती है। भोगो स परागमुख होकर परोपकार करने का मन बनता है।

योग की शिक्षा से ईश्वर के सर्वशक्तिमान दयालु निर्विकार सर्वान्तयामी आदि गुणो को धारण करके साधक के अन्दर अलौकिक शक्तियो का आधान सम्भव होता है।

यम–नियमो के पालन से अनेक बुराईयो से बचता है। ऐसे साधक का जीवन समाज के लिए हितकारी सिद्ध होता है।

पारस्परिक द्वेष भावना की कमी हो जाती है दया प्रेम सद्भाव विष्वबन्धुत्व के भाव पैदा होते है। वह सभी के सुख–दुखो को अपने सुख–दुखो के समान मानने लगता है। शारीरिक या वाचिक हिसा के भाव समाप्त हो जाते हैं।

योग की शिक्षा से व्यक्ति मे छल कपट झूठ का व्यवहार नहीं रहता।

चोरी करना धोखा देना काम से बचना अपने कर्त्तव्य का पालन न करना ये सभी दुष्प्रवृत्तिया शान्त होती देखी जाती है।

वह सयम का पालन प्रारम्भ करता है व्यभिचार बलात्कार की घटना उससे नहीं हो सकती। दूसरी मा–बहन को सम्मान की दृष्टि से देखता है।

याग के प्रयोग से नशीली वस्तुआ का व्यवहार त्याग देता है। अण्डे मास का प्रयोग उसे नहीं भाता। वह सात्विक भोजन अन्न फल दूध खाकर योगचर्या को नियमित वनाए रखना चाहता है। उसे जीवन जीने की इच्छा होती है। उसका जीवन भार रूप नहीं बनता।

अधिक सग्रह मे विश्वास न करके आवश्यकताओ की पूर्ति मे ही सतुष्टि रखता है।

समान लाभकारी

किसी भी मत पथ सम्प्रदाय या दल का प्रचारक या भक्त हो योग सभी के लिए समान लाभकारी है।

सासारिक क्षेत्र मे कृषक व्यापारी अध्यापक उपदेशक कर्मचारी इजीनियर मशीनमैन या कार्यालय कर्मचारी शासन प्रशसक नैता या अभिनेता सैनिक या सेनापति मन्त्री या प्रधानमन्त्री राष्ट्रपति सभी का योग का प्रयोग अपने–अपने क्षेत्र मे कार्य करने के लिए शारीरिक मानसिक बौद्धिक तथा आत्मिक शक्ति प्रदान करता है।

शारीरिक लाभ

आध्यात्मिक लाभ धारणा ध्यान समाधि के अभ्यास से होता है और आसन प्राणायाम के द्वारा शारीरिक रोगो की निवृत्ति होती है। स्वस्थ शरीर मे ही स्वस्थ मन रहता है। अत मन भी प्रसन्न चित्त रहकर कार्यक्षमता मे वृद्धि होती है। आयु की वृद्धि होती है। रोगो के न रहने से औषधियो में व्यर्थ नष्ट होन वाला धन बचता है। उसी धन का असहायों की सहायता मे, राष्ट्रीय योजनाओं मे या आपत्तिकाल में दान में प्रयोग कर सकता है।

योग शिक्षा सभी के लिए आवश्यक हो

योग की शिक्षा सन्यासी त्यागी महात्माओ के लिए ही उपयोगी या आवश्यक नहीं वरन ससार के प्रत्येक नर नारी बालक वृद्ध रोगी स्वस्थ सभी के लिए प्रकार भेद से आवश्यक तथा उपयोगी है। प्राय यह समझा जाता है कि योग सासारिक स्त्री पुरुषो के लिए नहीं है। यह तो केवल योगियो की विद्या है।

योगी शब्द का यदि उदारता से व्यापक रूप से अर्थ किए जाए तो जो कोई ससार मे सदाचारपूर्वक सुख से अपना उन्नत जीवन व्यतीत करना चाहता है तो वह योगी है। इस प्रकार योग सभी के लिए आवश्यक है।

योग तथा भोग का भेद

इस समय ससार में मनुष्य मनोबल का पतन करके बुरे से बुरा कार्य करते हुए सकोच अनुभव नहीं करता। जबकि कर्त्तव्याक्रर्त्तव्य का विचार किए बिना जो कर्म किए जाते हैं उनका परिणाम दुखदायी होने पर मनुष्य पश्चात्ताप करता है। इससे अच्छा है कि वह कर्म करने से पहले उसके फल को विचारें हानि–लाभ यश अपयश को सोचे पुन कार्य का सम्पादन करे तो उसे कभी पश्चाताप नहीं करना पडे। इसकी समझ योग शिक्षा के व्यवहारिक रूप के बिना नहीं आ सकती। विचार करे कि योग और भोग में पहले बहुत अन्तर हो जाता है। अत इन्द्रियो का नियन्त्रित प्रयोग ही योग है। अनियन्त्रित प्रयोग ही भोग है।

वैज्ञानिक आधार

विज्ञान सदाचार का विरोधी नहीं है। विज्ञान से सिद्ध है कि जो सदाचारी शान्त स्वस्थ प्रसन्नचित्त तथा निश्चिन्त उदार परोपकारी पुरुषार्थी पराक्रमी, सेवाभावी पितृभक्त गुरुभुक्त तथा राष्ट्रभक्त होते हैं वे सुखी दीर्घजीवी और सर्वहितकारी होते हैं ये सभी गुण योगशिक्षा से ही सम्भव है।

– अध्यक्ष, पातञ्जलयोगधाम,
ज्वालापुर, हरिद्वार

वेद मार्ग पर चलना होगा

– रुद्रनाथ सिह

मत पथो का गान नहीं अब गान सत्य का गाना होगा।
बातो से केवल काम चले ना घर घर अलख जगाना होगा।
आस पास मे गाव गाव मे शहर शहर मे गली गली में।
सत्य धर्म की खातिर हमको स्वय समर्पित करना होगा।।

हर नागरिक बने दयानन्द और योगी अरविन्द बन जाए।
बालक बन जाये सावरकर से लाजपत श्रद्धानन्द कहलाए।
लेखराम बन बढे चलो झुठलाने वालो को सबक सिखाओ।
नयी क्रान्ति के आवाहन कर, जग में वेद ध्वजा फहराओ।।

आर्य बन्धुओ को हाथों में, वेद शास्त्र ले चलना होगा।
सत्य सनातन धर्म का झडा, ओ३म् साथ मे रखना होगा।
आस पास मे गाव गाव मे शहर शहर में गली गली में।
सत्य धर्म के खातिर हमको, स्वय समर्पित करना होगा।

गोरक्षा की कोरी बाते, करना अब से बन्द करो।
एक गाय घर में रखने का अविलम्ब सकल्प करो।।
बातों का अब समय नहीं है, कुछ कर दिखलाना होगा।
गोपाल कृष्ण बन जाने का, यह अच्छा अवसर होगा।

घर घर में धारा बहे दूध की, बच्चा बच्चा हनुमान बने।
आ जाए भइया राम भरत, सत्य न्याय राज बने।।
आस-पास मे गाव-गाव मे शहर शहर में गली गली में।
सत्य धर्म के खातिर हमको, स्वय समर्पित करना होगा।।

दलितोंद्धारक गाधी दयानन्द, फिर आये देरी ठीक न हों।
निचलों के घर राम विराजें, शबरी उन्हें पुकार रही।।
गले लगालो इन बिछुडों को राम राज्य फिर आ जाए।
फिर देखोगे कैसे हमको, कोई अपनी आख दिखाए।।

देश द्रोहियो को भी, हमको, अच्छा सबका सिखाना है।
गोविन्द, बन्दा बैरागी बन, हमे सगठित होना है।।
आस पास में गाव गाव में शहर शहर में गली गली में।
सत्य धर्म के खातिर हमको, स्वय समर्पित करना होगा।।

आओ आओ वीर सपूतों, सूर्य चन्द्र की राह गहो तुम।
कितनी बाधाए आए अपने पथ पर डटे रहो तुम।
यदि चट्टाने पडे राह मे, उन्हे हटाना ही होगा।
जीवन अर्पित करना सीखो, वरण सफलता का होगा।।

ऋषि दयानन्द सरस्वती ने, हमको जो मार्ग दिखाया है।
बोलो मेरे आर्य बन्धुओं, क्या वह तुम्हें न भाया है।।
आस पास मे गाव-गाव में शहर शहर में गली गली में।
सत्य धर्म के खातिर हमको, स्वय समर्पित करना होगा।।
वेद मार्ग पर चलना होगा।।

– प्रधान, आर्यसमाज कप्तानगज बस्ती, (उ०प्र०)

आर्यसमाज के बढ़ते कदम

आर्यसमाज टाण्डा का अनुकरणीय वेद प्रचार कार्य

आर्यसमाज टाण्डा अपनी उपलब्धियो के आधार पर अनोखा और अनुपम है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के जन्म स्थान अयोध्या से लगभग २ घण्टे का मार्ग तय करके जब मै वहा पहुचा तो मिश्रीलाल आर्यकन्या इण्टर कालेज के प्रागण से वेद मन्त्रो की ध्वनि स्पष्ट सुनाई दी। आर्यसमाज टाण्डा अपना ११० वा वार्षिक उत्सव धूमधाम से मना रहा था। ओ३म ध्वज स्थान–स्थान पर हवा मे फहरा रहे थे और यज्ञ शाला से आ रही सुगन्धित वायु जगह–जगह आने–जाने वाले को बता रही थी कि वृहत यज्ञ हो रहा है। आर्यसमाज के वार्षिक उत्सव मे मिश्रीलाल आर्य कन्या इन्टर कालेज टाण्डा विशेष योगदान दे रहा था। क्या प्रधानाचार्य और क्या अध्यापिकाए एव विद्यार्थी सभी स्वेच्छा से कार्यक्रम को सफल बनाने मे एक दूसरे का हाथ बटा रहे थे। आर्यसमाज टाण्डा के प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य जो अभी ४ नवम्बर २००१ को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान चुने गए है स्वय सभी बातो का निर्देशन इतनी सरलता और सहजता से कर रहे थे कि माहौल मे तनाव का नाम न था।

टाण्डा एक छोटा सा कस्बा है जिसमे अधिकतर मुस्लिम बुनकर रहते है। उनमे से अधिकाश की बेटिया और बहने मिश्रीलाल आर्य कन्या इन्टर कालेज की छात्राए है। विद्यालय और छात्रावास मे नियमित रूप से सभी छात्राए वेद मन्त्र का पाठ करती है और नित्य हवन करती है। वैदिक विचारधारा से प्रभावित विभिन्न धर्मो की अध्यापिकाए और छात्राए विद्यालय मे केवल शाकाहारी भोजन एव अल्पाहार करती हैं। सम्भवत इसका एक कारण यह भी है कि वे अपने घरो से विद्यालय के लिए जब आती है तो घर से शाकाहारी भोजन लाती है और गृहणिया दुबारा किसी और तरह का भोजन बनाने मे रुचि नहीं लेती है। शाकाहार अभियान की उपलब्धि की निकटवर्ती नगरो मे चर्चा हैं

आर्यसमाज टाण्डा का ११० वा वार्षिक उत्सव एक नया सन्देश लेकर आया। वेद प्रचार गाव–गव और घर–घर मे करने का बीडा प्रधान और कार्यकर्ताओ ने एक साथ उठाया। प्रधान जी के निमन्त्रण पर टाण्डा पहुचने वाले विद्वानो में थे श्री जयनारायण अरुण प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, प० नेत्रपाल शास्त्री, आचार्य नन्द [illegible] शास्त्री, डॉ० ज्वलन्त कुमार शास्त्री [illegible] आशारानी आर्य डॉ० वीरेन्द्र परिव्राजक कुवर महिपाल सिह सुश्री योगमयी ऋचा श्री सत्य प्रकाश आर्य डॉ० विधान चन्द्र आर्य। इतने विद्वानों की उपस्थिति का लाभ उठाते हुए श्री आनन्द कुमार आर्य ने वेद प्रचार की धीमी गति पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया। अपने प्रचार जीवन मे मैने यह पहली बार देखा कि छोटे–छोटे गाव और कस्बो के अनेक अवैतनिक आए प्रचारक एकत्र हुए और उन्होने विचार मन्थन मे सक्रिय भाग लिया। श्री आनन्द कुमार आर्य ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य के एक अन्य उद्‌बोधन की चर्चा करते हुए कहा अब समय आ गया है कि हम आपसी मतभेदो और विचारो को भुलाकर अपने असली कार्य अर्थात वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार मे तन–मन–धन से लग जाए। जो लोग आर्यसमाज की सम्पत्ति का निजी उपयोग कर रहे है उनका बहिष्कार किया जाए और उनकी उपेक्षा की जाए। प्रचार सामग्री अधिक मात्रा मे घर–घर पहुचाई जाए। ग्रामीण आर्य प्रचारको ने आश्वासन दिया कि वे दुगुने जोश से वेद प्रचार मे सक्रिय हो जाएगे और निष्क्रियता पास नही आने देगे। श्री जयनारायण अरुण ने आश्वासन दिया कि वे जगह–जगह जाकर धरतीपुत्रो से सम्पर्क करेगे। आनन्द जी ने कहा कि हमे समय–समय पर अपनी उपलब्धियो और न्यूनताओ की समीक्षा करते रहना है।

वार्षिक उत्सव मे वेद सम्मेलन महिला सम्मेलन आर्य युवा सम्मेलन गौ रक्षा सम्मेलन और राष्ट्र रक्षा सम्मेलन विभिन्न दिनो पर आयोजित किए गए। वक्ताओ और श्रोताओ मे ताल–मेल था। यह भी अनुभव किया गया कि हमे प्रचार साधनो मे आधुनिककरण लाने की आवश्यकता है। आज के युग मे रेडियो और टी०वी० का जितना ही उपयोग वैदिक धर्म के प्रचार के लिए किया जाए उतना ही अधिक अच्छा होगा। यदि सामान्य जन अपनी दिनचर्या से समय निकालकर गोष्ठी और उत्सव मे नही आते है तो क्यो न हम इलेक्ट्रानिक माध्यमो द्वारा उनके घर की चारदीवारी के भीतर पहुच कर प्रचार करे। उसके लिए प्रतिनिधि सभाओ को अपने–अपने स्तर पर भी धन सग्रह और विचार–विमर्श करने की आवश्यकता है।

इसमे कोई सन्देह नहीं कि वैदिक विचारधारा का प्रचार–प्रसार भवन निर्माण की अपेक्षा अधिक आवश्यक है। फिर भी हमे ऐसे केन्द्र स्थापित करने है जहा से वेद प्रचार को दिशा दी जा सके। उत्तर प्रदेश के पूर्वी अचल मे आर्यसमाज टाण्डा ऐसा ही एक महत्वपूर्ण और सक्रिय केन्द्र है। ये बात भी जानी मानी है कि शिक्षण सस्थाओ द्वारा नयी पीढी के मन मस्तिष्क को प्रभावित करने मे सरलता होती है इसी को ध्यान मे रखकर आर्यसमाज के आरम्भिक वर्षो मे स्कूल और गुरुकुल खोले गए थे। ये भी सत्य है कि स्कूल और स्कूलो की सम्पत्ति को अनाधिकार रूप से हथियाने के झगडे भी शुरू हुए जिससे प्रचार कार्य की शक्ति क्षीण हुई। यह अपने आप मे सुखद आश्चर्य है कि मिश्री लाल आर्य कन्या इन्टर कालेज टाण्डा और डी०ए०वी० एकेडमी टाण्डा मे ऐसा कोई विवाद नहीं है। यही नही सम्भवत उत्तर प्रदेश के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो मे मिश्रीलाल आर्य कन्या इन्टर कालेज टाण्डा एक मात्र ऐसा सस्थान है जहा प्रबन्धक प्रधानाचार्या अध्यापिकाए अभिभावक गण और विद्यार्थियो मे से किसी ने भी किसी पर भी कोई मुकदमा कोर्ट कचेहरी मे नही दायर किया और न पहले से चल रहा है। यहा के आर्य तो न्यायालय जाने वाले मार्ग से अपरिचित है।

आर्य कन्या कालेज मे विस्तार शैक्षिक और प्रशासनिक दृष्टि से वर्ष प्रतिवर्ष हो रहा है। आर्यसमाज के १००वे वार्षिक उत्सव पर भी आर्य कन्या कालेज के आधुनिक अतिथि कक्ष का उद्‌घाटन किया गया। यज्ञ करके आलोक जो पुस्तकालय कार्यशाला और प्रधानाचार्या का निवास रहेगा। उसकी आधारशिला श्रीमती गुणवती ग्रोवर पूर्व प्रधानाचार्या ने रखी। आशा है कि सुश्री वीना वर्मा वर्तमान प्रधानाचार्या शीघ्र ही अपने नए निवास मे रहेगी।

वेद प्रचार मे आधुनिकीकरण के मार्ग पर चलते हुए ११० वे वार्षिक उत्सव के अवसर पर 'महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती और आर्यसमाज नामक विडियो तथा दूरदर्शन दिल्ली द्वारा निर्मित 'गुरुकुल कागडी हरिद्वार पर वृत्त चित्र दिखाए गए। गुरुकुल के शताब्दी वर्ष के अवसर पर उसकी उपलब्धियो के बारे मे जानकर इस ग्रामीण आचल के नर नारी प्रभावित हुए।

आर्यसमाज टाण्डा के ११०वे वार्षिक उत्सव के अवसर पर श्री आनन्द कुमार आर्य उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का अभिनन्दन किया गया। सचालन महाशय दीनानाथ आर्य और मन्त्री विज्ञमित्र ने किया। टाण्डा वासी गदगद है कि उन्ही का एक धरती पुत्र अब अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वैदिक धर्म प्रचार के क्षेत्र मे विशेष रूप से सक्रिय हो रहे है। इस अवसर पर विभिन्न श्रेणी के नगर वासियो एव सामान्य नर नारियो ने पुष्प माला पहनाकर और आनन्द जी की विशेषताए जनसाधारण को बताकर उनका अभिनन्दन बडे स्नेह से किया।

आनन्द जी ने पुन सकल्प लिया कि अपने दिवगत पिता महाशय मिश्री लाल आर्य को दिए गए वचन के अनुरूप अपने जीवन को वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार मे वैसे ही समर्पित कर देगे जैसे उनके पिता ने किया था। विशाल जन समूह ने करतल ध्वनि करके श्री आनन्द कुमार आर्य के सकल्प का समर्थन किया।

आर्यसमाज टाण्डा ने वेद प्रचार कार्य मे एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

– बिग्रेडियर चितरजन सावन्त,
'उपवन' ६०६, सेक्टर २६, नोएडा

स्वास्थ्य चर्चा स्वास्थ्य चर्चा स्वास्थ्य चर्चा

बहुउपयोगी है चुकंदर

– डॉ० नागेन्द्र कुमार नीरज

इसका वानस्पतिक नाम बीटा बुलगारीस है चुकदर की दो प्रमुख किस्मे है। प्रथम सब्जी वाला चुकदर तथा दूसरा शर्करा वाला चुकदर। शर्करा चुकदर से सिर्फ शर्करा ही बनाया जाता है। सब्जी नही बनती है। चुकदर के मूल कद कई प्रकार के होते हैं। ये लाल पीले सफेद गोल व लम्बे होते है। बाजार मे प्राय लाल चुकदर मिलता है। सामान्य आकार के गोल लाल चुकदर सब्जी की दृष्टि से श्रेष्ठ होते हैं। कद मूल सब्जियो मे चुकदर एक उत्तम टानिक आहार है। इसमे प्रचुर मात्रा मे श्रेष्ठ किस्म की शर्करा ६३६ प्रतिशत होती है।

इसके शर्करा का मुख्य भाग सुक्रोज होता है परन्तु डक्स्ट्रोज तथा फल शर्करा भी इसमे पाए जाते है। ये शर्करा मे शीघ्र अवचूषित होकर शक्ति ऊर्जा एव उष्मा प्रदान करते है तथा स्वास्थ्य को बनाए रखते हैं। इसका पचाग अर्थात सभी भाग सब्जी के रूप मे प्रयुक्त होते हैं। यह क्षारीय तत्वो विशेषकर केल्शियम तथा लोहा का उत्तम स्रोत है। चुकदर को आग मे भूनकर उबालकर व वाष्प द्वारा बनाया जाता है। यह प्रबल रोचक तथा मूत्रल है। चुकदर का रसखनिज तथा विटामिन की दृष्टि से अति उपयोगी होता है। यह पोषण ऊर्जा रोग निवारण तथा स्वास्थ्य सरक्षण की दृष्टि से श्रेष्ठ पेय है। चुकदर को उबालने से पानी लाल हो जाता है। पानी का लाल होना यह सूचित करता है इसमे घुलनशील विटामिन रजक द्रव्य आदि घुला है। प्रयोग द्वारा देखा गया है कि इस लाल पानी मे विटामिन ए पाच प्रतिशत विटामिन सी दस प्रतिशत विटामिन बी (विशेषकर रिबोफ्लोबिन) पद्रह प्रतिशत घुला हुआ है।

उबालते समय बर्तन का ढक्कन नही होने से इन विटामिनो के नष्ट होने का डर बढ जाता है। पैंतीस प्रतिशत तक विटामिन सी तथा नायासिन नष्ट हो जाते है। चुकदर का अवशोषण आतो द्वारा होता है जिससे मल लाल हो जाता है किन्तु किसी किसी को चुकदर अलर्जिक प्रतिक्रिया करता है। फलत उसका लाल रग रक्त मे प्रवेश करके पेशाब का रग चमकीला लाल बना देता है। विदेशो मे चुकदर को बनाते समय इसे अच्छी तरह पद्रह मिनट तक ढक कर उबालते है। फिर इसमे नीबू का रस मिलाकर बडे स्वाद के साथ खाते है। चुकदर गुर्दे तथा पित्ताशय की अच्छी तरह सफाई करता है। इसमे पोटेशियम सोडियम कैल्शियम मेग्नीशियम तथा लोहा प्रचुर मात्रा मे होता है। इसका रस तीव्र रक्तशोधक है। यह लाल रक्त कणो के निर्माण मे भाग लेता है।

पथरी वाले लोग इसके पत्ते का शाक नही खाए। चुकदर मे विशेष तत्व विटिन होता है। चुकदर का ताजा रस दिन मे ३–३ घटे के अतराल पर एक एक गिलास पीने से पेशाब की जलन लिग के अदर की जलन यूरिन इन्फैक्शन पथरी खून की कमी कम तथा अनियमित माहवारी पित्त वमन हैजा अतिसार हीन रोग प्रतिरोधक क्षमता नाखून का भददापन मानसिक व स्नायुविक दौर्बल्य मधुमेह आमाशयिक व्रण हाइपो ग्लूसेमिया व हाइपर ग्लूसोमिय यकृत प्रदाह यक्ष्मा आर्द्र एव शुष्क बेरी बेरी हृदय रोग यकृत एव गुर्दे सम्बन्धी रोग मासपेशीय व कमजोरी तथा उच्च रक्तचाप ठीक होते हैं।

लाल चुकदर गर्भाशय सम्बन्धी रोग मे तथा सफेद चुकदर यकत दोष मे लाभदायक होता है। चुकदर के मूल यकृत ... मे लाभदायक हाता है। चुकदर को मूल कद तथा पत्तियो की ...नी रस सूप तथा सलाद के रूप मे खाया जाता है। चुकदर के रस को नाक मे डालने से सिर दर्द ठीक होता है।

कद को उबालकर तथा कच्चा काटकर सलाद बनाया जाता है। इसका मनलुभावन रग भोजन को स्वादिष्ट एव रगीला बना देता है। इसके पत्तो का रस तथा सब्जी रक्तहीनता दृष्टिमदता कोष्ठबद्धता रिकेटस तथा आस्टियो मलेसिया तथा स्नायुविक कमजोरी को दूर करता है।

(एक्युप्रेशर पद्धति)

गरदन, कमर का दर्द और थकावट

– डॉ० एस० सी० चोपडा एम० डी० (अल्ट मेडि०)

एक्युप्रेशर द्वारा गरदन कमर के दर्द तथा थकावट का घर बैठे अत्यन्त सहज ढग से इलाज सभव है। आजकल की भाग दौड की दिनचर्या मे ये बीमारिया आम हैं पर सही समय पर इलाज न हो तो भयकर रूप धारण कर लेती हैं। पढिए इस लेख मे इन बीमारियो के कारण तथा एक्युप्रेशर विधि से उनका निवारण –

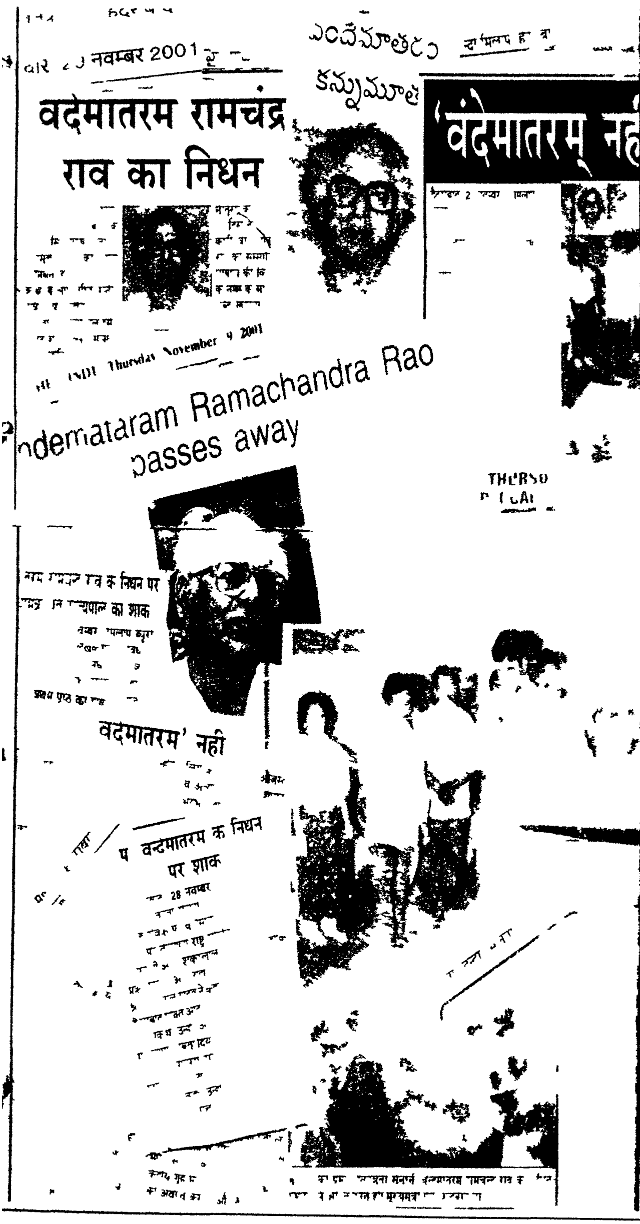
हमारी इच्छाए हमारी जीवन शक्ति को दिशा निर्देश देती हैं। यही इच्छाए इस शक्ति को समय समय पर कम करती रहती हैं। एक समय ऐसा भी आ जाता है जब यह शक्ति पूर्णतया समाप्त होने को होती है उस समय सबसे पहले लक्षण थकावट आम कमजोरी किसी काम मे मन न लगना पीला चेहरा उदासी हलका डिप्रेशन इत्यादि हमे महसूस हाता है। यह स्थिति आने से पहले ही थकावट का उपचार किया जाए इससे अपनी जीवन शक्ति रक्त एव मन के सतुलन को बनाए रखने मे सहायता मिलती है। एक्युप्रेशर पद्धति के द्वारा इन स्थितियो पर विजय पायी जा सकती है।

गर्दन एव कमर का दर्द

रीढ की हडडी हमारे शरीर का मुख्य आधार है। वह शरीर को लचक प्रदान करती है। गरदन कधे एव हिप्स के जोड लिगामैंटस ओर टेनडनस द्वारा एक दूसरे से जुडे होते हैं। गलत तरीके से बैठना गरदन का मरोडना अधिक समय तक झुक कर पढना तथा काम करना मासपेशियो मे ऐठन मुडते घूमते नीचे या ऊपर देखते समय तथा चोट लग जाने से पूरी रीढ की हडडी प्रभावित होती है। गरदन से लेकर नीचे कमर तक यह बहुत सख्त महसूस होती है। गरदन के पास या पीठ के ऊपरी भाग मे दर्द होने से दोनो भुजाओ में भी दर्द हो जाता है क्योकि पीठ का ऊपरी भाग तथा भुजाओ की मासपेशिया परस्पर सम्बन्धित होती हैं। जब गरदन के ७ वट्रीब्रा प्रभावित हो अर्थात गर्दन के इस भाग मे दर्द से उसे सरवाइकल स्पोडीलाइसिस कहते हैं। अगर लम्बर के ५ वट्रीब्रा (जो पूरे शरीर को समाले हुए हैं) प्रभावित होते हैं तो इसे कमर दर्द या बैकएस कहते हैं। पूरी रीढ की हड्डी में स्पाइनल कार्ड सुरक्षित रहती है वह भी प्रभावित हो जाती है और जो हिस्सा नर्व को दबाता है उस अग मे दर्द महसूस होता है। अगर लम्बर के नीचे का हिस्सा दबता है तो पूरे पाव मे इसका प्रभाव होता है। तब इतना दर्द होता है कि चलना फिरना मुश्किल हो जाता है। हडिडया तथा मासपेशिया इस दर्द को सहन नहीं कर सकतीं। पाव मे पाव की अगुलियो मे तलवो मे सुन्नपन महसूस होने लगता है। एक्युप्रेशर पद्धति द्वारा इन रोगो का सफल इलाज (जो मुख्यत रीढ की हडडी से सम्बन्धित है)। इसे प्रतिदिन सुबह एव शाम को करने से लाभ मिलता है और कुछ ही समय मे दर्द दूर हो जाता है।

– २४ एस० एफ० एस० शक्ति अपार्टमेट
अशोक विहार –३ दिल्ली–५२

स्वतन्त्रता सेनानी श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव को राष्ट्रीय दैनिक समाचार-पत्रों द्वारा अन्तिम विदाई


नवम्बर 2001

वदेमातरम रामचंद्र राव का निधन

'वंदेमातरम् नही

Thursday November 9 2001

ndemataram Ramachandra Rao passes away

वदेमातरम' नही

वन्देमातरम क निधन पर शाक

28 नवम्बर

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर विशेष विज्ञापन प्रकाशित करने की मांग

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप-प्रधान श्री विमल वधावन एडवोकेट ने एक पत्र द्वारा दिल्ली की मुख्यमन्त्री श्रीमती शीला दीक्षित का ध्यान ३० नवम्बर २००१ के दैनिक समाचार पत्रो मे छपे उस विज्ञापन की ओर दिलाया है जिसमे महान सन्त श्री गुरुनानक देव जी के जन्म दिवस पर दिल्ली सरकार एव अल्पसख्यक आयोग के नाम पर प्रकाशित किया गया है। महापुरुषो के जन्म दिवसो अथवा पुण्य तिथियो पर उनकी स्मृति मे सरकार द्वारा विशेष प्रेरणात्मक विज्ञापन प्रकाशित किए जाने का उन्होने स्वागत करते हुए मुख्यमन्त्री से निवेदन किया है कि इसी प्रकार का विज्ञापन स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी की पुण्यतिथि (बलिदान दिवस) पर २५ दिसम्बर २००१ को प्रकाशित कराने का निर्देश जारी करके दिल्ली सरकार के साम्प्रदायिक सौहार्द से परिपूर्ण दृष्टिकोण का परिचय दे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का नाम साम्प्रदायिक सौहार्द का पर्यायवाची माना जाता है। वर्ष १९१९ मे स्वामी श्रद्धानन्द पहले ऐसे गैर मुस्लिम सत थे जिन्हे दिल्ली की जामा मस्जिद मे उद्बोधन के लिए आमन्त्रित किया गया था। उस अवसर पर उन्होने निम्न वेद मत्र के द्वारा अपना उद्बोधन प्रारम्भ करते हुए सम्प्रदायिक एकता की पुरजोर वकालत की थी।

त्व हि न पिता वसो त्व माता शतक्रतो बभूविथ। अधा ते सुम्नमीमहे।। (ऋग्वेद ८/९८/११)

हे परमेश्वर! आप ही हम सबके पालक तथा विविध प्रज्ञा एव कर्मविशिष्ट प्रभो आप ही हमारे निर्माणकर्ता हैं। इसी कारण हम सब आपसे ही सुख की कामना करते हैं।

पत्र मे कहा गया है कि दिल्ली सरकार द्वारा २५ दिसम्बर २००१ को इन विचारो से सुसज्जित विज्ञापन भारतीय सविधान मे व्यक्त मूल कर्त्तव्यो का भारत के नागरिको को अवश्य स्मरण करायेगा। जिनमे कहा गया है –

भारत के सभी लोगो मे समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करें जो धर्म भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो।

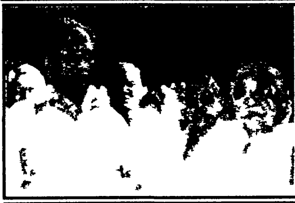
(भारतीय सविधान का अनुच्छेद ५१क(ड))

उन्होने मुख्यमन्त्री से आशा व्यक्त की वे आर्यसमाज की इन भावनाओ का सम्मान करते हुए राष्ट्रीय हित मे २५ दिसम्बर २००१ (...) को दिल्ली सरकार की ओर से एक विज्ञापन सभी दैनिक समाचार पत्रो मे देकर अपने सवैधानिक कर्त्तव्य का पालन अवश्य करेगी।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 16 12 2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2001
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2001 in NDPSo on 13/14 12 2001



सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप–प्रधान श्री विमल वधावन एव माता प्रेमलता शास्त्री के साथ आर्यसमाज मन्दिर रानी बाग के नव निर्वाचित पदाधिकारियों द्वारा सकल्प दिवस के आयोजन पर यज्ञ के उपरान्त लिया गया चित्र।



दयानन्द सेवाश्रम नौ गाव आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी के भवन का उद्‌घाटन करने आए अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के महामन्त्री श्री वेदव्रत मेहता श्रीमती ईश्वर रानी मेहता माता प्रेमलता शास्त्री का स्वागत करते आर्यजन।

श्री सत्यानन्द मुजाल जी की सुपुत्री का देहावसान

आर्यजनों को यह सूचित करते हुए अत्यन्त दुख हो रहा है कि आर्यसमाज के प्रसिद्ध समाजसेवी एव उद्योगपति श्री मुजाल एल २४ माडल टाउन की सुपुत्री श्रीमती सुषमा चोपडा धर्म जितेन्द्र चोपडा का रविवार ४–११–२००१ को लम्बी बीमारी के स्वर्गवास हो गया। उनकी आयु केव वर्ष थी और कुछ समय से उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा था। उनकी अन्त्येष्टि उसी दिन वैदिक रीति से लुधियाना मे की गई और रविवार दिनाक ११–११–२००१ को साय ३ बजे से ५ बजे तक आर्य सीनियर सैकेडरी स्कूल के प्रागण मे अन्तिम शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमे आर्यसमाज आर्यसमाज से सम्बन्धित सस्थाओ जैसे गुरुकुल डी० ए० वी० विद्यालय तथा अन्य समाजसेवी सस्थाओं के हजारो व्यक्तियों ने भाग ले कर श्रीमती सुषमा चोपडा के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित की। इसके साथ ही विभिन्न सस्थाओं से प्राप्त शोक सदेश पढकर सुनाए गए।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने समस्त आर्यजगत तथा सार्वदेशिक परिवार की तरफ से सम्वेदना प्रकट करते हुए परम पिता परमात्मा से प्रार्थना की है कि दिवगत आत्मा को शान्ति एव सदगति प्राप्त हो और मुजाल परिवार एव चोपडा परिवार को यह अपार दुख सहन करने की शक्ति प्राप्त हो।

प्रतिष्ठा मे

श्री ईश कुमार नारग को मातृ शोक

आर्यसमाज दयानन्द विहार दिल्ली के मन्त्री श्री ईश कुमार नारग की माताश्री श्रीमती विशन देवी का आकस्मिक निधन १४ नवम्बर को साय ५–४५ पर हो गया। वे ७८ वर्ष की थी। श्रीमती नारग वैदिक विचारो से ओत–प्रोत थी तथा समाज सेवा के कार्यो मे प्रसन्नतापूर्वक भाग लेती थीं। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड कर गई है। उनके पुत्र श्री ईश कुमार नारग वैदिक सिद्धान्तो मे पूर्ण श्रद्धा रखत हैं तथा आर्यसमाज दयानन्द विहार के युवा उत्साही मन्त्री हैं। श्रीमती नारग की तीन विवाहित पुत्रिया श्रीमती जयदेवी छाबडा श्रीमती सन्तोष चावला तथा श्रीमती आदर्श राजपाल हैं।

श्रीमती नारग का अन्तिम सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। इस अवसर पर स शिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्र ल्ली सभा के मन्त्री श्री पतराम त्यागी तथा अन्तरग सदस्य श्री रवि बहल पडपड क्षेत्रीय सभा के प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार रैली आदि सहित आर्यसमाजो के अधिकारी तथा कार्यकर्ता उपस्थित थे। श्रद्धाजलि सभा मे ब्र० राजसिह श्री ब्रह्मदेव श्री वेदव्रत शर्मा श्री विनय आर्य पूर्वी दिल्ली के अनेको आर्यसमाजो अनेको व्यक्तियो ने उन्हे भावमीनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

।। ओ३म।।

आर्य पर्वों की सूची

सन्‌ २००२ ई० तदनुसार विक्रमी सम्वत्‌ २०५८–५९

क्र०स०	पर्व नाम	चन्द्र तिथि	सम्वत	अग्रेजी तिथि	दिवस
१	लोहडी	पौष बदी ३०	२०५८	१३–१–२००२	रविवार
२	मकर सक्रान्ति	पौष सुदी १	२०५८	१४–१–२००२	सोमवार
३	बसन्त पचमी	माघ सुदी ५	२०५८	१७–२–२००२	रविवार
४	सीताष्टमी	फाल्गुन बदी ८	२०५८	०६–३–२००२	बुधवार
५	ऋषि पर्व – महर्षि दयानन्द जन्म दिवस	फाल्गुन बदी १०	२०५८	०८–३–२००२	शुक्रवार
६	ऋषि पर्व – शिवरात्रि (महर्षि दयानन्द बोध दिवस)	फाल्गुन बदी १४	२०५८	१२–३–२००२	मगलवार
७	लेखराम तृतीया	फाल्गुन बदी ३	२०५८	१७–३–२००२	रविवार
८	नवसस्येष्टि (होली)	फाल्गुन सुदी १५	२०५८	२८–३–२००२	गुरुवार
६	आर्यसमाज स्थापना दिवस/ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा/नव–सम्वतसर/ उगाडी/गुडी पडवा/चेटि चाद	चैत्र सुदी १	२०५६	१३–४–२००२	शनिवार
१०	वैशाखी	चैत्र सुदी १	२०५६	१३–४–२००२	शनिवार
११	रामनवमी	चैत्र सुदी ६	२०५६	२१–४–२००२	रविवार
१२	हरि तृतीया	श्रावण सुदी ३	२०५६	११–८–२००२	रविवार
१३	वेद प्रचार समारोह – श्रावणी उपाकर्म (रक्षा बन्धन)	श्रावण सुदी १५	२०५६	२२–८–२००२	गुरुवार
१४	वेद प्रचार समारोह – श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	भाद्रपद बदी ८	२०५६	३१–८–२००२	शनिवार
१५	विजयदशमी	आश्विन सुदी १०	२०५६	१५–१०–२००२	मगलवार
१६	गुरुवर स्वामी विरजानन्द दण्डी जन्म दिवस	आश्विन सुदी १२	२०५६	१७–१०–२००२	गुरुवार
१७	महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस (दीपावली)	कार्तिक बदी ३०	२०५६	०४–११–२००२	सोमवार
१८	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष बदी ४	२०५६	२३–१२–२००२	सोमवार

विशेष टिप्पणी
१ आर्यसमाजे इन पर्वो को उत्साहपूर्वक मनाए।
२ देशी तिथियो मे घट–बढ होने से तिथि मे परिवर्तन हो सकता है।

वेदव्रत शर्मा
मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२, दूरभाष ३२७४७७१, ३२६०९८५

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली–२ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ३/५ महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली–२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१ ३२६०९८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई–मेल नम्बर vedicgod@nda vsnl net.in तथा वेबसाईट – http //www.whereisgod.com

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक
साप्ताहिक

वेदा
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४० अक ३५ २३ दिसम्बर से २९ दिसम्बर २००१ तक दयानन्दाब्द १७८ सृष्टि सम्वत १९७२९४९१ २ सम्वत २०५८ मा०शी०शु० ८

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे विशेष सगोष्ठी

मनगढन्त, झूठी और निराधार बातों को इतिहास से हटाया जाए

आर्यो को विदेशी और आक्रमणकारी कहने वाली बातों का बुद्धिजीवियों द्वारा कडा खंडन

विशेष प्रस्ताव पारित करके सरकार को भेजा गया

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे इतिहास की सरकारी पुस्तको मे प्रकाशित कुछ मनगढन्त झूठी बे–बुनियाद और षडयन्त्रकारी बातो की ओर केन्द्र सरकार का ध्यान आकृष्ट करने के लिए एक विशेष सगोष्ठी का आयोजन कास्टीटयुशन क्लब मे किया गया।

सगोष्ठी क ग था "आर्य विदेशी



आर्य भारत के मूल नागरिक थे विदेशी और आक्रान्ता नही – इस विषय पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित सगोष्ठी मे मचस्थ विद्वतजन प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा मच सचालन करते हुए वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन एडवोकेट पुरातत्वविद श्री बी०बी० लाल राष्ट्रवादी चिन्तक प्रो० बलराज मधोक वैदिक विद्वान डॉ० महेश विद्यालकार न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य।

या आक्रमणकारी नहीं थे तथा वेदो मे गो मास नहीं"।

इस सगोष्ठी मे केन्द्र सरकार द्वारा इतिहास की पुस्तको से जैनधर्म सिख धर्म जाटो तथा वेदो मे गोमास जैसी निराधार बातो को हटाने का समर्थन किया गया परन्तु साथ ही सरकार को एक प्रस्ताव के द्वारा यह भी कहा गया कि आर्यो को आक्रमणकारी और विदेशी कहने वाली बातों को भी हटाया जाए।

इस सगोष्ठी मे वैदिक विद्वान डॉ० महेश विद्यालकार पुरातत्ववेत्ता श्री बी०बी० लाल राजनीतिक विचारक प्रो० बलराज मधोक वरिष्ठ अधिवक्ता श्री रामफल बसल आदि ने विचार व्यक्त किए।

सगोष्ठी की अध्यक्षता सभा प्रधान श्री कैप्टन देवरत्न आर्य ने की। सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसे सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया। सगोष्ठी का सचालन सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने किया।

प्रो० बलराज मधोक ने कहा कि सर्वप्रथम हम किसी तथ्य को समझते हैं तथ्यो को जानने के बाद उनका मूल्याकन किया जाता है और उस मूल्याकन के बाद नीति निर्धारित की जाती है तथा उस नीति के आधार पर इतिहास लिखा जाता है। यह सारी प्रक्रिया सत्य पर आधारित होनी चाहिए परन्तु ब्रिटिश सरकार ने गलत और मनगढन्त तथ्यो की कल्पना की। गणित म न उनका मूल्याकन भी गलत । इस दश क प्रति शोषण की नीति उनके प्रारम्भिक काल से ही नज़र आ रही थी और इन सारी बातो को देखकर यह स्पष्ट है कि उनके द्वारा लिखा गया इतिहास किसी दृष्टिकोण से भी सच्चा नहीं हो सकता।

आर्यों का आदि देश भारत ही है जिसका प्राचीनतम नाम आर्यवर्त था। इससे पहले उसका कोई नाम नहीं था। सृष्टि उत्पत्ति के बाद इस देश का यही प्रथम नाम था और मूलरूप से मनुष्य की उत्पत्ति इसी धरती पर हुई थी। उन्ही का नाम आर्य था। इन बातो को साबित करने के लिए हमारे धर्म और साहित्य ग्रन्थो मे पर्याप्त ज्ञान का भण्डार भरा पडा है।

श्री बलराज मधोक ने कहा कि सर विलयम जोन्स नामक एक व्यक्ति ने १७७१ मे इस मनगढन्त अवधारणा को प्रस्तुत किया। उसका यह विचार अग्रेजो की नीति के अनुरूप था और उन्होने इसे प्रचारित कर दिया। जबकि कई अग्रेज विद्वान यह भी स्वीकार करते है कि सस्कृत पाश्चात्य भाषाओ की भी जननी है। परन्तु इतिहास को तोड–मरोडकर उन्होने इस देश की मूल सस्कृति और प्राचीन इतिहास को कलकित करने का प्रयास किया।

श्री मधोक न कहा कि सरदार पटेल के स्थान पर जवाहरलाल का प्रधानमन्त्री बनाने की वकालत करने वाले गाधी जी स जब इसका कारण पूछा गया तो उन्होने कहा कि हमारे बीच मे नेहरू ही एकमात्र इग्लिश मैन ह जिसको इग्लिश लोग पसन्द करते है। उन्होने बत या कि इन बातो के आधार पर ही एक अग्रेज लेखक ने नहरू के ब र म लिखा था कि वह अग्रेजो का अन्तिम व सराय हे और कहा था कि भारत का जितना अनिष्ट अग्रेज सैकडो सालो मे नही कर पाए वह नेहरू की अग्रेज नीति ने लगभग १७ वर्षो मे ही कर दिखाया।

श्री मधोक ने कहा कि उत्तर प्रदेश के प्रथम मुख्यमन्त्री डा० सम्पूर्णानन्द ने भी गहरे तथ्यो के आधार पर एक पुस्तक लिखी थी – **"आर्यों का आदि देश"**।

उन्होने कहा कि सारी दुनिया जानती है कि इस धरती पर मुगल विदेशी थे उन्होने आक्रमण किए अग्रेज विदेशी थे उन्होने भारत का भरपूर शोषण किया। ये दोनो विदेशी नस्ले भारतीयो पर भरपूर अत्याचार करती रहीं तो इन परिस्थितियो मे अकबर को महान बताने वाले किस दृष्टि से इतिहास की रचना करते हैं यह पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है।

श्री मधोक ने कम्युनिजम म्य । पर प्रहार करते हुए कहा कि जो पचहत्तर दुनिया के सबसे बडे देश की सत्ता मिलने क बावजूद भी लगभग ७० वर्ष मे समाप्त हो गई। वह विचारधारा करोडो-अरबो वष पुरानी सस्कृति क इतिहास पर भ प्रहार का दुस्साहस कर सकती है ये भारतीय नेताओ की कमजोर मन स्थिति का परिचायक है।

पुरातत्व विशेषज्ञ डा० बी०बी० लाल ने बताया कि इतिहास कवल वक्तव्य पर नहीं अपितु साक्ष्य पर आधारित होता ह आर आर्यो के इस देश के मूल निवासी होने मे सच्चा और आक्रमणकारी या विदशी होने के झू को मै प्रमाणो के आधार पर साबित क सकता हू। उन्होने बताया कि खुदाई व दौरान मिले अवशेषो के आधार पर यह साबि किया जा सकता है। उसकी तस्वीरे स्लाइड पर दिखाई जा सकती है।

प्रो० लाल ने कहा कि पाश्चात्य विद्वा भी इस बात को मानते हैं कि सस्कृत ग्रीव और लैटिन भाषाओ मे सामजस्य है। इसव आधार पर वे कल्पना करते हैं कि इन तीन का उदगम कही न कही अवश्य होगा औ उस उदगम स्थान क लोगो को इण्डो यूरोपीयन कहकर सम्बाधित करते हे व लोग कहा रहते थे इसका उन्हे कोई ज्ञा नही। परन्तु हम स्पष्टतया यह साबित क सकते है कि वे लोग भारत मे रहते थे औ इन सब भाषाओ की जननी सस्कत हे

पुरातत्वविद श्री लाल ने आगे कहा वि इस देश के साहित्य को खराब करने म सबसे बडा प्रहार मैक्समूलर ने किया।

शेष पृष्ठ १२ प

सम्पादक

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् (ऋग्वेद ९.६३.५)
विश्व को आर्य बनाओ

आर्य भारत के मूल नागरिक हैं

आर्य का अथ श्रेष्ठ है। ऋग्वेद विश्व म सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ क रूप मे मान्य है। यह ज्ञान समाधिस्थ ऋषिया का सृष्टि उत्पत्ति क प्रारम्भ म परमपिता परमात्मा द्वारा दिया गया था। यह ज्ञान उन ऋषियो को इसी धरती पर प्राप्त हुआ जिसका वतमान नाम इण्डिया आर प्राचीनतम नाम आर्यवर्त बाद म भारत तथा हिन्दुस्तान पडा। दूसर शब्दो म ऋग्वद की उत्पत्ति इस भारत भूमि पर होना और समूचे विश्व को आर्य बनाने के लिए प्ररित करने का निर्देश यह साबित करते है कि मनुष्य की उत्पत्ति सर्वप्रथम इसी धरती पर हुई थी जिसे वेद की धरती कहा जाता है और वह आर्य नाम से इस देश का मूल निवासी था।

कई पश्चात्य विद्वानो ने भारत के इस विचित्र ज्ञान के सच्चे और सर्वमान्य स्वरूप को सामने लाने मे विशेष कार्य किया परन्तु कुछ अन्य व्यक्तियो ने अज्ञानता या षडयन्त्र के तहत इस श्रेष्ठ धरती के प्राचीन इतिहास को मनगढन्त निराधार र षडयन्त्रकारी तरीका स प्रस्तुत किये

इस ... का अस्वीकार नही किया जा सकता कि वेदो की इस धरती पर वेचित्र प्रकार के इतिहास रचे गए और यह धरती हजारो साल विदेशियो के आक्रमण का शिकार होती रही।

वह आक्रमणकारी कौन थे ?

यह धरती इस्लाम के जन्म की प्रत्यक्षदर्शी हे जो अल्लाह के निर्देश पर चलने वाली एक सामाज्यवादी कटटर विचारधारा है।

इसके बाद पश्चिमी आक्रमण और शोषण का युग आता है। श्वेत नस्ल का बोझ इस धरती ने सहन किया। श्वेत नस्ल एक मायने मे भिन्न थी। नए आक्रमण इस्लामिक हमलो से भिन्न थे। श्वेत नस्ल ने सर्वप्रथम भारत क व्यापार को काबू किया बाद मे राजनीतिक व्यवस्था को और फिर अपने पूरे जोर के साथ यहा की शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित करने का प्रयास किया जिसके पीछे एक स्थायी उद्देश्य और विचारधारा थी।

परिणाम आज हमारे सामने है। हम हर बात और घटना को कई शताब्दियो से पाश्चात्य विचारधारा द्वारा तैयार किए गए शीशे से ही देखते रहे हैं।

एक सार्वजनिक माग थी – 'ब्रिटिश भारत छोडो ।

ब्रिटिश लोगो ने इसका जवाब एक नीति से दिया। यह प्रतिक्रिया मे व्यक्त किया गया एक विचार था – षडयन्त्रपूर्ण परन्तु सुनियोजित। कि आर्य खानाबदोश गडरियो के जाति समूह थे उन्होने भारत पर आक्रमण किया वे मध्य एशिया से आये थे और यहा के मूल निवासियो को उन्होने उखाड फेका। अत जवाब में कहा गया कि जो पहले आय थ वही पहले भारत छोडे। आर्यो को आक्रमणकारी कहने वाली बातो के पीछे यही मुख्य उददेश्य था।

इसी नीति के तहत इन्होने पवित्र वद ज्ञान को मात्र गडरियो के गीत कहन का दुस्साहस भी कर दिखाया।

हिन्दुओ और मुस्लिमो मे भेदभाव पैदा करने के बाद इन्होने हिन्दुओ मे भी उत्तरी ओर दक्षिणी भारतीयो के नाम पर भेदभाव का प्रयास किया। यह भ्रान्ति फैलाई गई कि दक्षिण भारतीय और उत्तर–पूर्वी भारतीय आर्यो के आक्रमण के शिकार थे। इस नीति से ब्रिटिश राज्य को ईसाई धर्मान्तरण की योजना को भी कार्यरूप देने मे सुविधा नजर आई। इसका परिणाम भी हमारे सामने है – दक्षिण मे केरल तथा तमिलनाडू और उत्तर–पूर्व मे नागालैण्ड मिजोरम और मेघालय आदि राज्य आज धर्मान्तरण की गतिविधियो स त्रस्त ह। यह विष दश के अन्य भागो म भी फैल रहा है।

इन मिश्नरी ओर साम्राज्यवादी हमलो के बाद मार्क्सवाद का वैचारिक हमला भी इस धरती ने देखा। मार्क्स न भी ब्रिटिश कदमो का ही सहारा लिया। मार्क्स का कहना है –

भारतीय समाज का कोई इतिहास नहीं है कोई इतिहास जानकारी मे नही है जिस हम इतिहास कहते है वह केवल हमलावरा का ही इतिहास है"।

उनका यह विश्वास उनके भारतीय अनुयायियो का भी विश्वास बन गया।

हम राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान ओर प्रशिक्षण परिषद (एन०सी०ई०आर०टी०) द्वारा छटी कक्षा मे पढाई जा रही रोमीला थापर द्वारा लिखित प्राचीन इतिहास की पुस्तक के अध्याय तीन का सन्दर्भ देते है –

(क) ऐसा स्पष्ट प्रतीत होता है कि इस लेखिका ने इतिहास के मूल सिद्धान्तो को तिलाजलि दे दी है कि इतिहास पर पुख्ता प्रमाण आर निश्चितता की मोहर अवश्य होनी चाहिए। उसके अपने शब्दो मे – हम नहीं जानते कि वे लोग कहा से आए। शायद वे उत्तर पूर्वी ईरान से या *केस्पियन सागर के समीप के क्षेत्र से या* मध्य एशिया से आए। (पृष्ठ ३५ प्रथम कॉलम लाईन १२–१५)

(ख) उनकी प्रजाति के बारे मे हम कुछ नहीं जानते। हम यह भी नही कह सकते कि पश्चिमोत्तर भारत मे पहले से आबाद लोगो की प्रजाति से वे भिन्न थे या नही। पहले सोचा गया था कि आर्यभाषी लोगो ने बडी तादाद मे आकर देश पर हमला किया परन्तु यह सिद्ध करने के लिए बहुत कम सबूत हैं। (पृष्ठ ३५ प्रथम कॉलम लाईन २० से द्वितीय कॉलम लाईन ६ तक)

(ग) भारतीय इतिहास के इस काल को वैदिक युग कहते है क्योकि इस युग के इतिहास की रचना वैदिक साहित्य के स्रोता के आधार पर की जाती है। परन्तु पिछले ४० वर्षो मे वैदिक युग के इतिहास के लिए पुरातत्व–विज्ञान के भी सबूत मिले हैं। (पृष्ठ ३५ द्वितीय कॉलम लाईन १२–१७)

जहा तक वैदिक साहित्य के स्रोत अर्थात पवित्र वेदो का प्रश्न है रोमिला थापर या अन्य इतिहासज्ञ इतने सक्षम नहीं हो सकते कि प्राचीन ऋषियो महर्षियो और सन्तो की भावनाओ विचारो और उद्देश्यो को समझ सके। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदो को उचित व सही सन्दर्भ मे समझने का आह्वान किया था। यहा तक कि उन्होने कुछ सस्कृतज्ञो द्वारा वेद के गलत भाष्यो का भी खण्डन किया।

जहा तक पुरातत्व विज्ञान के सबूतो का सम्बन्ध है लेखिका न कवल कुछ खास प्रकार के बर्तनो के पाए जाने के आधार पर आर्यो को आक्रमणकारी कहा है जो आक्रमण कभी हुआ ही नही।

(घ) एक अन्य स्थान पर वह स्पष्ट स्वीकार करती है कि हडप्पा सस्कृति के लोगो के बारे मे अधिकतर जानकारी हमे उनके निवासस्थलो की खुदाइ करने से मिली है परन्तु आर्यो के बार म बात ऐसी नहीं है। (पृष्ठ ३६ द्वितीय कॉलम लाईन १०–१३)

यह प्रथम दृष्टया स्पष्ट है कि आर्यो को आक्रमणकारी कहने वाली बाते निराधार अविश्वसनीय मनगढन्त झूठी तथा षडयन्त्रकारी है जिनका उददेश्य केवलमात्र इस धरती के गौरवशाली इतिहास की निन्दा करना था।

हम कडे शब्दो मे इस प्रकार की बातो को उन पुस्तको मे शामिल रखन या भारतीय छात्रो को पढाए जाने की निन्दा करते हैं।

आर्य शब्द का अर्थ है श्रष्ठ आदरणीय तथा उत्तम। यह कोई जातिवाचक शब्द नहीं है। द्रविड शब्द *का भी अर्थ है ज्ञान का भण्डार।* अत आर्य और द्रविड के नाम पर भद भाव पैदा करने का प्रयास ब्रिटिश नागरिको का एक असफल प्रयास था।

तक्षशिला की स्थापना मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के भाई भरत क पुत्र तक्ष ने की थी।

रामायण और महाभारत कपल किस्स कहानिया नहीं हैं अपितु वे स्थापित इतिहास है। आज तक कोई भी इनके सही होने को चुनोती नहीं दे पाया जिनके राजाओ के इतिहास भगवदपुराण तथा युधिष्ठिर से यशपाल तक का इतिहास सत्यार्थ प्रकाश मे वर्णित है।

आर्यो को आक्रमणकारी कहने वाली बातो को वेदमन्त्रो की मनगढन्त और अज्ञानता पूर्ण व्याख्या के आधार पर प्रचारित किया जाता है। इस सम्बन्ध मे महर्षि दयानन्द सरस्वती के भाष्य और लेखो आदि को ही प्रमाण मानना चाहिए। उनकी व्याख्याए सत्य की खोज के मार्ग पर चलते हुए योगी आचरण का फल है। उन्होने वेदो का गहन स्वाध्याय किया उन्होन लगभग पूर्ण भारतीय साहित्य का अवलोकन किया। काफी हद तक उन्हाने इस्लाम और ईसाईयत की विचारधारा को भी समझने के बाद अपने विचार व्यक्त किए।

श्री अरविन्द भी महर्षि दयानन्द के उन शब्दो का समर्थन करते हें कि आय लोग ... मूल निवासी थे जिस ... इण्डिया कहा जाता ह।

यह हास्य स्पद है कि स्वतन्त्रता ... ५४ वर्ष बाद भी हमारी सरकारे इतिहास मे शामिल इन मनगढन्त बातो को हटा नहीं पाई।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद (एन०सी०ई०आर०टी०) के वतमान निर्देशक श्री जे०एस० राजपूत का हम धन्यवाद करते है कि उन्होने सिख धर्म जैन धर्म जाटो और पवित्र वेदो से सम्बन्धित कुछ आपत्तिजनक बातो को हटाने का आदेश दिया। हम केन्द्र सरकार के मानव ससाधन मन्त्री डॉ० मुरली मनोहर जोशी का भी साधुवाद करते हैं कि उन्हाने इस कार्यवाही को उत्साहवर्धक सरक्षण दिया। परन्तु यह सब बहुत कम है।

हम इस प्रस्ताव के द्वारा केन्द्र सरकार को प्रतिवदन करते है कि इतिहास की पुस्तका मे से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप मे आर्यो को आक्रमणकारी कहने वाली निराधार बातो को पूरी तरह से हटाया जाए। जो हिन्दू (आर्य) जनता के लिए अपमानजनक है।

हम भारत के समस्त राजनीतिक दलो को भी स्पष्ट कहना चाहते हैं कि अब बहुत हो चुका। देश की राष्ट्रवादी हिन्दू (आर्य) जनता जो लोकतान्त्रिक व्यवस्था मे आज भी एक बहुत बडा मत रखती है इन सब बातो को आग बढाए जाना बदाश्त नही करेगी जिनके द्वारा उनक मूल अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लगता है। यह हास्यास्पद और शर्मनाक है।

'वैदिक शिक्षा प्रणाली से विश्व को श्रेष्ठ बनाएं'

भारत के विद्यालय एवं शिक्षक सोचें......

अमेरिका ने महर्षि दयानन्द को माना

आज स लगभग एक सो बीस वष पूर्व सुराज्य व स्वराज्य के प्रथम उदघोषक महर्षि दयानन्द स्वलिखित अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे बच्चो के पठन–पाठन के विषय म उपदेश करते हैं कि लडके तथा लडकियो की पाठशाला एक दूसरे से दो कोस (३ कि०मी०) दूर हो। दानो की पढाई अलग–अलग स्थान पर हो। जिससे कि वे विद्यार्थी काल म परस्पर विषय (सैक्स) कथा तथा स्पर्श आदि आठ प्रकार के मैथुनो से बच सके। जिससे उनको उत्तम विद्या स्वभाव शील तथा स्वास्थ्य की प्राप्ति होकर शरीर एव भात्मा बलयुक्त हो सके ओर वे सब प्रकार के दुखो से बचकर नित्य आनन्द को बढा सके। यह नियम समाज के प्रत्येक दरिद्र अथवा धनाढय के लिए अनिवाय होना चाहिए।

यह प्रसन्नता का विषय हे कि इसी [illegible]त का ध्यान मे रखते हुए अमेरिका के [illegible]द्धिजीवियो न विद्यार्थियो क चरित्र एव [illegible] को सुधारन हेतु लडके तथा [illegible] अलग–अलग [illegible]क्षाए [illegible] [illegible] जस व Sm [illegible] [illegible] क नाम दते है। गत स्टार–ट्रिब्यून क सम्पादक न इस पर [illegible] लेख भी लिखा है। जो कि अमरिका का प्रमुख पत्र है। लडके व लडकियो की पृथक कक्षाओ का यह कार्य 'ए०ए०यू०डब्ल्यू' अर्थात अमेरिका ऐसोसिएशन ऑफ यूनिवर्सिटी वूमन के सर्वेक्षण के पश्चात ही सम्पादित हो रहा है।

राष्ट्र का प्रत्येक बुद्धिजीवी व्यक्ति यह जानता है कि देश की सर्वाधिक मूल्यवान वस्तु सोना–चादी हीरे–मोती या गगन चुम्बी भवन अथवा विशालकाय कल–कारखाने नहीं अपितु वहा के शिक्षित सभ्य स्वस्थ व चरित्रवान विद्यार्थी ही हैं। जो कि कल के भावी नागरिक ही नहीं अपितु राष्ट्र की भावी नींव भी हैं। जिनके अयोग्य होने पर कितना भी धनाढय व विशाल राष्ट्र हो धराशायी हो जाता है।

विश्व मे सर्वाधिक सम्पन्न व उन्नत समझे जाने वाले देश अमेरिका की सबसे बडी समस्या वहा के उद्दण्ड विद्यार्थी ही हैं। जिनके कारण वहा के बुद्धिजीवी राष्ट्रभक्त अत्यन्त चिन्तित है वहा चरित्र का पतन इस हद तक हो चुका है कि हाईस्कूल पास करने से पूर्व ही अनेक लडकिया गर्भ धारण कर लेती हैं और अनेको विद्यार्थी भयकर रोगो के शिकार हो जाते हैं। अत सेन्ट पॉल हाई स्कूलो में अब अधिकारी लोग स्कूल पढने वाले बच्चो को अनचाही सन्तानो से बचाने के लिए गर्भ निरोध के सब साधन देने के लिए बाध्य हो गए हैं। विशेष जानकारी के लिए 'स्टार ट्रिब्यून' मे छपे स्टाफ राईटर Lourdes Mehrano Leslieका लेख पढे। St Paul Schools Confront Birth Control

वैदिक महर्षि दयानन्द एक महान दूरद्रष्टा थे। उन्होने जो कुछ भी कहा है वह अत्यन्त विचार करने के बाद सम्पूर्ण ससार क हित के लिए ही कहा है। यदि हम थोडा ध्यान दकर विचारेग तो हम पता चलेगा कि सहशिक्षा निम्नलिखित अनेको दोषो से युक्त एक विकृत व्यवस्था है जिसे आज A A U W" अर्थात अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ यूनिवर्सिटी वूमन भी स्वीकारने लगी है।

(१) हमार विचार मे सह शिक्षा विद्यार्थियो मे अधिक [illegible] नहीं करती अपितु लडकिया क प्राय जन्म से ही सकोची व शर्मालु व्यवहार होन से वे पाठ के पढते समय (लडको से सकोच के कारण) न आने पर भी प्रश्न नही पूछतीं और यही स्थिति लडको की भी होती है कि कहीं पूछने मे गलती होने पर लडकियो मे कही हसी का विषय न बनना पडे।

(२) पढाई व पाठ की तैयारी मे अधिक रुचि व ध्यान की अपेक्षा एक दूसरे से अधिक सुन्दर स्मार्ट सम्पन्न व आकर्षक दिखने हेतु जेवरो जूतो कपडो घडियो व गाडियो के प्रति अधिक ध्यान देने से समय व धन की सीमा रहित बर्बादी व बुद्धि पर वृथा भार तथा मानसिक चिन्ता। पढाई की अपेक्षा शीघ्र व अधिक से अधिक फ्रैण्डस बनाने की प्रतिस्पर्धा होना।

(३) लडके लडकियो मे परस्पर मित्र बनाने की होड के कारण स्वय को श्रेष्ठ तथा दूसरे युगल को निम्न व नीचा दिखाने हेतु लडके लडकियो मे मन मुटाव झगडे व हत्या तक की नौबत का आना।

(४) कक्षा में पाठ के चलते भी उधर ध्यान न होकर परस्पर की कामुक बातो अश्लील हरकतों इशारो प्रेम पत्रों व आकर्षक वस्तुओ के आदान प्रदान मे ध्यान का होना।

(५) इतना ही नहीं अपितु पाठ से पूर्व व पश्चात भी कक्षा में अधिकतर इन्हीं बातो की चर्चा चलना और यहा तक कि घर आने पर भी लम्बे–लम्बे फोन पिकनिक व होटल आदि का कार्यक्रम बनाना।

(६) लडके–लडकियो मे की गई मित्रता को किसी भी कारण से टूटने पर मानसिक स्थिति के बिगडने से पढने मे बिलकुल मन न लगना।

(७) ऐसी मानसिक अशान्ति के कारण स्वास्थ्य का बिगडना और आत्महत्या तक कर लेना।

(८) पढते समय लडके–लडकिया की घनिष्ठ मित्रता के कारण परस्पर अलग न होने की इच्छा से एक दूसरे के कारण विशेष उन्नति हेतु दूर न जा कर अपने भविष्य को बर्बाद कर देना।

(९) अधिक लगाव (अटेचमैण्ट) के कारण छोटी–छोटी बातो पर रूठ जाना स्कूल मे न आना तथा कक्षा छोड देना जिससे स्वास्थ्य धन व विद्या की हानि होना।

(१०) एक ही कक्षा म पढ रहे लडके या लडकिया सह [illegible] विरोध करने पर कहने के लिए ता यही कहते है कि हम गन्दे विचार नहीं रखते पर शायद ही उन्हे किसी ने आपस म बात करते समय भाई–बहिन का शब्द उच्चारण करते हुए सुना हो। अत सच्चाई यह है कि वे आपस मे एक दूसरे को भाई बहिन प्राय नहीं समझते और आग चलकर उनके सम्बन्ध कामुक या सैक्स रूप मे बदल जाते है।

(११) सह–शिक्षा के फैशनेबल रोग के कारण विद्यार्थी काल मे रोगो झगडो अनचाही सन्तानो या गर्भपातो व एडस इत्यादि बिमारियो से निरन्तर राष्ट्र का पतन हो रहा है।

(१२) लडके–लडकियो के मध्य विद्यार्थी काल मे बने भावुक सम्बन्धो के कारण विद्यालय की पढाई ही चौपट नहीं होती अपितु भविष्य मे भी इच्छा विरुद्ध विवाह होने पर गृहस्थ मे अशान्ति झगडे हत्या आत्महत्या व तलाको की वृद्धि होती है।

अत इन खोजपूर्ण तथ्यो से यह सिद्ध होता है कि सह–शिक्षा ने शिक्षा को उन्नत नही किया अपितु शिक्षा तथा जीवन का पतन ही किया है। और जिस हीनभावना को सह–शिक्षा के द्वारा दूर करने की लोग चर्चा करते हैं वह या तो शिक्षा के पूर्ण होने के साथ–साथ दूर हो जाती है अथवा विद्या के पश्चात आयु के विकास के साथ–साथ परिवार के सदस्यो मे रहते हुए दूर हो जाती है।

इतने पर भी यदि किसी पाश्चात्य कुकृति (असस्कृति) प्रेमी को सन्तोष नहीं मिला हो तो वह ए०ए०यू० डब्ल्य० अर्थात अमेरिका एसोसियेशन ऑफ ५ [illegible]टी वूमेन की रिपोट पर विश्वास करे। जा कि अमेरिका क प्रसिद्ध समाचार पत्र स्टार ट्रिब्यून क पृष्ठ सख्या ए–१० पर है। रासवैल्ड मिडल स्कूल बाल्टीमोर कैलीफोर्निया आदि मे किए गए लडको स लडकिया अलग करन पर विद्यार्थियो का बौद्धिक व मानसिक विकास सहशिक्षा की अपक्षा कहीं अच्छा हुआ। कक्षाए भी अधिक शान्तिपूर्ण रही और पढाने वालो को भी अधिक अच्छा लगा। अत इन सब बातो को ध्यान मे रखते हुए **आज के अमेरिका के बुद्धिजीवियो ने महर्षि दयानन्द द्वारा आज से लगभग एक सौ बीस वर्ष पूर्व दिए गए सुझावों को स्वीकार करते हुए सहशिक्षा के स्थान पर लडके लडकियो को अलग अलग पढाने का निर्णय किया है। महर्षि दयानन्द तो सत्यार्थ प्रकाश के पठन पाठन तृतीय सम्मुलास मे यह भी लिखते है कि लडकियो को महिलाए ही पढाए और लडको को पुरुष ही।** एसा करने स ही अनेक [illegible] [illegible] द्वारा किया जा रहा शार[illegible] व मानसिक शोषण रुक सकेगा तथा अनेक छात्राए अपमानित हान क पश्चात आत्महत्या के पाप स बच सकेगी।

इस के साथ साथ हम आर्यावर्त (भारत) की अन्य सनातन वैदिक धर्म आदि से जुडी सस्थाओ से भी अनुरोध करते हे कि वे भी अपने यहा सहशिक्षा प[illegible] प्रतिबन्ध लगाए।

क्योकि आज के ये नन्हे मुन्ने विद्यार्थ[illegible] ही कल के कार्यकर्त्ता अध्यापक इन्जीनियर डाक्टर अथवा नेता है।

यदि विद्यार्थी काल मे इन्हे उपरोक[illegible] गुणो से युक्त सस्कारी बना लिया गर[illegible] तो समझो सब कुछ बन गया यदि न[illegible] ता पुन समझे कि सब कुछ बिगड गया परिवारो सामाजिक सस्थाओ अथ[illegible] राष्ट्रीय सस्थाओ का निकृष्ट अथवा श्रे[illegible] होना इन्हीं पर निर्भर करता है। चरित्रही[illegible] कर्तव्यहीन अथवा शक्तिहीन हाथो मे रा[illegible] आज भी गिरा और कल भी। देश आ[illegible] भी गुलाम हुआ और जानो कल भ[illegible] क्योकि अच्छे से अच्छे वैज्ञानिक साध[illegible] व राज्य की सुरक्षा के अतिविशि[illegible] उपकरणो अथवा अस्त्र या शस्त्रो चलाना तो किसी व्यक्ति ने ही है अ[illegible] उनका सच्चा निर्माण होना है यो[illegible] माता पिता की सहायता से किसी विद्या[illegible] मे। अत यदि हमे राष्ट्र की सभी समस्या को मूल से समाप्त करना है तो उसका [illegible] ही मुख्य उपाय है कि हम योग्य चरित्रव[illegible] देशभक्त व सुपठित शिक्षको की सहायता श्रेष्ठ 'शिष्यो' अर्थात विद्यार्थियो का नि[illegible] करना अपना परम धर्म समझे।

– शेष भाग पृष्ठ १० पर

शिक्षा

शिक्षा उसे कहते है – जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता एव जितेन्द्रियता आदि आदि गुणो का विकास होकर सब प्रकार के दुर्गुणो का विनाश हो।

– महर्षि दयानन्द

चिरस्मरणीय व्यक्तित्व

कीर्तिर्यस्य स जीवति

स्वामी श्रद्धानन्द का सर्वमेध यज्ञ

– प्राचार्य इन्द्र विद्यावाचस्पति

अभी हम दोनो भाई श्री हरिचन्द्र और श्री इन्द्र स्नातक नही बन थे अगले वर्ष बनने वाले थे। एक दिन प्रात काल लगभग ४ बजे हम दोनो को सोते से जगाकर कहा गया कि प्रधान जी ने आप को बुलाया है बगले पर चलिए। ऐसे असाधारण समय मे बुलाए जाने का कारण हमारी समझ मे नही आया। पूछने पर सेवक ने उत्तर दिया – मुझे कुछ मालूम नही हा इतनी बात अवश्य है कि आज रात भर वह सोए नहीं। पहले टहलते रहे फिर कुछ लिखते रहे।

जब हम दोनो बगले पर पहुचे पिता जी को बडे कमरे मे टहलते पाया। यह उन की विचार की मुद्रा थी गम्भीर विचार के समय वह पीछे की ओर दोनो हाथ मिलाकर टहला करते थे। हमारे पहुचने पर वे कुर्सी पर बैठ गए और अत्यन्त गम्भीरता से दराज मे से फुलस्केप के आकार का एक लिखा हुआ कागज निकालकर हमारे सामने रखते हुए कहा इसे पढ लो और यदि तुम सहमत हो तो इस पर हस्ताक्षर कर दो। उस कागज मे जो कुछ लिखा था उसका अभिप्राय यह था –

मैने अपनी शक्ति के अनुसार अपने जीवन मे वैदिक धर्म की सेवा की है। ऋषि दयानन्द की आज्ञा को शिरोधार्य करके वैदिक धर्म के पुनरुद्धार और आर्य जाति के उत्थान के लिए गुरुकुल का सचालन करता रहा हू। मैंने गुरुकुल के लिए अपनी सब शक्ति लगा दी है परन्तु अब मुझे अनुभव हो रहा है कि मेरा अब तक का प्रयत्न अधूरा था मैंने अभी गुरुकुल के लिए सब कुछ नहीं दिया। जालन्धर मे मेरा जो मकान है वह पुश्तैनी नहीं है मैंने अपनी कमाई से बनाया है उसमे अभी तक मेरी ममता विद्यमान है। मैं उसे भी दान देना चाहता हू, इस कारण मैं इस दानपत्र द्वारा वह मकान गुरुकुल कागडी के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को अर्पित करता हू।

जब हम उस दानपत्र को पढ चुके पिताजी ने कहा यदि तुम्हे इस मे कोई आपत्ति न हो तो वैसा लिख कर दोनो नीचे अपने हस्ताक्षर कर दो ताकि पीछे वाले कोई झगडा न मचाए।

उस दानपत्र पर हम दोनों के हस्ताक्षरो का महत्व यह था कि इससे कुछ मासपूर्व पिताजी एक वसीयतनामा लिख चुके थे जिसमे उन्होने यह लिखा था कि कोठी बेच कर जो दाम उठें वह दोनो भाईयो को आधे–आधे बाट दिए जाए। अनुमान था कि कोठी बीस हजार मे बिकेगी। वसीयतनाम मे हरिश्चन्द्र जी को १०००० से प्रेस और पत्र चलाने का आदेश तथा मुझे विलायत जाकर बैरिस्टरी पास करने का आदेश दिया गया। इस नए दानपत्र से वह वसीयतनामा रदद होता था।



हम दोनो ने उस अर्पणनामे को पढ लिया और चुप चाप उस के नीचे स्वीकृति सूचक हस्ताक्षर कर दिए। तब पिताजी ने हमसे कहा कि यह तो तुम्हे मालूम ही होगा कि यह कोठी मेरी अन्तिम भौतिक सम्पत्ति थी। शेष प्रेस आदि सब वस्तुए मै पहले ही दे चुका हू। इस कोठी के देने के पश्चात तुम्हारे लिए कोई वस्तु नही बचेगी इस पर तुम आपत्ति करना चाहो तो कर सकते हो। जहा तक मुझे याद है शब्दो द्वारा हम दोनो भाई पिता जी के कथन का कुछ भी उत्तर नहीं दे सके। केवल इतना ही सूचित किया कि हमे सब मालूम है हमें कोई आपत्ति नहीं और यह सूचना भी हमने शब्दो से नहीं सिर के इशारे से ही दी थी। इसके पश्चात हम दोनो आश्रम की ओर चले गए और पिता जी फिर बगले मे टहलने लगे।

हम दोनो यह समझ गए थे कि जब तक स्वय पिताजी दान की घोषणा न करें तब तक दान का सकल्प गोपनीय है। उन दिनो गुरुकुल का उत्सव हो रहा था। उत्सव के निमित्त से हमारे बहुत से सम्बन्धी आए हुए थे। बडी बहिन वहीं थी और सम्भवत ताई जी भी थीं। हमने दिन भर उनसे भी दानपत्र की कोई बात न की। दोपहर बाद गुरुकुल के लिए अपील के सम्बन्ध मे पिता जी का भाषण था। इन दिनो अपील का समय उत्सव मे सबसे अधिक महत्व रखता था। भीड और उत्साह की दृष्टि से वह अवसर अपूर्व समझा जाता था। उस वर्ष अपील से पूर्व शायद आगरे के ठाकुर नत्थासिह ने मथुरा मे एक बत्ती धीमी सी जल रही थी वाला भजन ऐसी सुन्दरता से गाया था कि उस के प्रत्येक पद पर करतल ध्वनि सुनाई दी थी। भजन के पूर्ण सन्नाटे म अपील के लिए खडे हो कर पिता जी ने निम्नलिखित आशय का भाषण आरम्भ किया – (व्याख्यान का यह आशय मे स्मृति के भरोसे पर और भी बहुत सक्षेप मे लिख रहा हू)

कुछ समय हुआ गुरुकुल के लिए धन सग्रह करने के निमित्त मे दिल्ली गया। वहा एक मण्डली को साथ लेकर मे शहर के सबसे बडे रईस के घर चन्दा मागने पहुचा। उस रईस को जब गुरुकुल की शिक्षा मण्डली के आने का समाचार मिला तो वह घर के अन्दर चला गया और कहला भेजा कि रायसाहब टटटी गए हैं। हम बहुत देर तक वहा बैठे रहे पर रायसाहब घर से बाहर न आए। यह बात मुझे बहुत बुरी मालूम हुई और मैं असन्तुष्ट होकर मण्डली को लेकर वहा से चला आया। डेरे पर आकर मैंने अपनी अन्तरात्मा से पूछा कि ऐसा क्यो हुआ ? मेरे अन्दर क्या कमी है जिसके कारण वह धनी आदमी मुझसे बचने की चेष्टा कर रहा था ? और इसका भी क्या कारण है कि उसके बाहर न आने को मैंने बुरा माना ? मेरी आत्मा ने उत्तर दिया कि इसका कारण यह है कि तूने अभी अपने आप को सर्वतोभाव से धर्म की सेवा मे अर्पण नहीं किया और तेरे मन मे बची हुई सम्पत्ति के कारण अहकार है। उसी समय मैंने निश्चय किया कि मैं अहकार की जड इस थोडी सी सम्पत्ति को भी गुरुकुल को अर्पण कर दूगा और तब वस्तुत धर्म की सेवा के योग्य हो सकूगा। इसके पश्चात पिताजी ने अर्पणनामा पढ कर सुना दिया।

जो बात मैंने इन थोडी सी पक्तियो म लिखी है वह वस्तुत लगभग डेढ घण्टे के व्याख्यान मे कही गई थी। जो नर नारी उस दिन की अपील मे उपस्थित थे उन्हे उस समय का दृश्य कभी नही भूल सकता। प्रारम्भ से ही श्रोता समझ गए थे कि आज की अपील मे कोई असाधारण बात है। पिताजी म भावुकता का अश बहुत अधिक था। उनके भाव चेहरे के चित्रपट पर तत्काल प्रतिबिम्बित हो जाते थे। हृदय की प्रत्येक भावना आख नाक और होठो पर स्पष्टता से झलकने लगती थी और स्वर भी तदनुसार ही प्रभावित हो जाता था। जिस समय बादल के समान गर्जते हुए स्वर से उन्होने कहा कि मेरी अन्तरात्मा ने उत्तर दिया कि इसका कारण वह अहकार है जो थोडी सी बनी हुई सम्पत्ति के कारण उत्पन्न होता है तो प्राय सब श्रोता समझ गए कि इसके आगे कोई सनसनीपूर्ण घोषणा होने वाली है यज्ञ कुण्ड मे कोई बडी आहुति पडने वाली है। वक्ता के उस अवसर और सम्भावित घोषणा का श्रोताओ पर कुछ ऐसा असर पडा कि उनकी आखो मे आसू आ गए जो वक्ता के प्रत्येक वाक्य के साथ बढते गए और आखो से बहने लगे। मच पर अजीब दृश्य हो रहा था। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान लाला रामकृष्ण जी जो शायद ससार के कुछ एक चुने हुए उन व्यक्तियो मे से होगे जिनके बारे मे भावुक होने का सन्देह भी नहीं किया जा सकता था वे रो रहे थे। प्रकाश के सम्पादक महाशय कृष्ण जी रुमाल से आखे पोछ रहे थे। भक्तराज लाला लब्भूराम नैयर आवाज से रो रहे थे। ये तीन नाम मैंने नमूने के तौर पर पेश किए हैं। अपनी अपनी प्रकृति के अनुसार प्राय सभी श्रोता द्रवित हो गए थे। जनता का यह हाल था कि उसे ताली बजाने या भाव व्यक्त करने तक का अवसर नही मिला जब तक पिताजी दानपत्र पढकर बैठ नहीं गए। व्याख्यान समाप्त होने पर जनता ने दिल खोलकर तालियो और जयकारो के साथ अपना हार्दिक भाव प्रकट किया।

इस प्रसग मे पिताजी की वक्तृत्व शैली के सम्बन्ध मे कुछ शब्द कह दना अप्रासगिक न होगा। वे भारतवर्ष मे अपने समय के कुछ एक ऐसे वक्ताओं में से थ जिन्हे जनता पर प्रभाव उत्पन्न करने वाला सर्वमान्य वक्ता कहा जा सकता है।

क्रमश

राष्ट्रीयता का पुरोधा

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

– आचार्य धर्मवीर विद्यालकार

किसी एक सीमित भूखण्ड का तब देश कहते हैं जब उसक निवासियो की भाषा साहित्य रहन सहन सस्कृति धर्म व्यवहार आदि अपने ढग से विकसित होता है। प्रत्यक देश अथवा राष्ट्र दूसरे राष्ट्र स इन्हीं तथ्यो क आधार पर भिन्न भिन्न होता है। प्रत्येक राष्ट्र की राष्ट्रीयता इसी कारण भिन्न भिन्न होती है। शासक देश शासित देश की इन्हीं विशेषताओ को निन्दनीय आर त्याज्य ठहरा कर और अपनी विशेषताओ को ग्राह्य बनाकर प्रसारित करता है ताकि दीर्घ काल तक शासन कर सके।

आक्रान्ता मुसलमान शासक नहीं लुटेरे रहे जबकि कूटनीतिज्ञ अग्रेज शासक बने। अग्रेजो ने भारत की भाषा वेशभूषा साहित्य जीवन पद्धति सस्कृति धर्म एव धार्मिक पुस्तक (वेदो) को हीन निकृष्ट त्याज्य प्रचारित कर अपनी भाषा जीवन शैली का साहित्य एव धम को श्रेष्ठ बताया। अर्थात भारत की राष्ट्रीयता का भारतीयो से छुडवा कर अपनी राष्ट्रीयता ग्रहण करा दी। मुशीराम (बाद मे स्वामी श्रद्धानन्द) ने इसे अनुभव किया और गुरुकुल की स्थापना की।

उनके जीवन की सर्वोत्कृष्ट कृति है गुरुकुल पद्धति की स्थापना यह काम भी ... धार्मिक–भावना (महर्षि दयानन्द) के विचारो के अनुरूप मानव निमार्ण की ... सप्र ... धार्मिक युवको का निमाण था। यह आर्थिक काय शुद्ध धार्मिक उद्देश्य से किया गया। पूरे राष्ट्रीय स्वरूप में स्वत परिवर्तित हो गया। ऐसे युवको ने जब राष्ट्रीय वातावरण को प्रभावित किया तो शासक एव प्रजा जागी। मानो गाढ निद्रा मे साने वालो को ढोल पीट पीटकर जगाया हो।

'स्वामी दयानन्द सरस्वती' वेदानुकूल निराकार ईश्वर के प्रचार–प्रसार मे व्यस्त थ। बाधाए आई सामाजिक अन्धविश्वास और कुरीतिया समाज सुधार भी साथ–साथ पारतन्त्रय। इस प्रकार धार्मिक सुधार के साथ सामाजिक सुधार ओर साथ ही राष्ट्रीय जागरण प्रारम्भ हुआ।

यही स्थिति मुशीराम की हुई। सत्यधर्म की स्थापना हेतु समाज सुधार आवश्यक हुआ। ये समाज सुधार ही आगे बन गया राष्ट्रीय जागरण।

गुरुकुल में आचार्य एव अन्तेवासी के सतत सान्निध्य ने आचार्य को मातृत्व एव पितृ–कर्त्तव्य के प्रति जागरुक किया वहीं शिष्य पुत्र–तुल्य हो गया। बालक द्वारा निश्चित मात्रा प्रात राश अथवा भोजन न ग्रहण करने पर उसे डाक्टर के पास भेजा जाता ताकि उसकी जठराग्नि उद्दीप्त हो मन्द न हो। अर्धरात्रि में सोते हुए बालकों का निरीक्षण होता था। एक बार एक रुग्ण बालक ने रात्रि मे वमन किया उस मुशीराम जिज्ञासू ने स्वय साफ किया। बालको के आच्छादन वस्त्रादि की शिक्षा की चिन्ता आचार्य मुशीराम ही करते। एक मध्य रात्रि कुछ आहट सुनकर मुशीराम अपनी झोपडी के बाहर आए। देखा कि चार छात्र भागे जा रहे हैं। लालटेन लेकर पीछे चल पडे। गगा के किनारे पहुचकर छात्र रुक गए। आचार्य को बताया कि चीता आया है और गगा मे चला गया है। धीर गम्भीर आचार्य ने पूछा – कि अब क्या इरादा है। आचार्य की नाराजगी देखकर बच्चे चुपचाप वहा से चले गए।

गुरुकुल में देशी वस्तुओ का खद्दर के वस्त्रो का शुद्ध अन्न दूध घी का प्रयोग होता था। इसके साथ ही धर्म क साथ राष्ट्रधम भी सिखाया जाता था। छात्रो मे किसी प्रकार का भद भाव नहीं था। ब्रह्मचारी कर्मचारी अध्यापक उपाध्याय सब छोटे बडा मे स्नेह ओर आदर भाव था किसी को किसी दूसर की तथाकथित जन्म जाति का पता नहीं था। स्नातक बनन क कइ वर्ष बाद एक दूसरे की जन्मगत जाति मालूम होती थी। तब भी व्यवहार मे कोई अन्तर नहीं आता था वही अटूट भ्रातृभाव राष्ट्रीयता स्वाभाविकता बनी रहती थी।

उत्कृष्ट आचरण की शिक्षा का अभ्यास बालका को प्रतिदिन कराया जाता ... उनका मन शुद्ध निर्मल एव पवित्र ... रहता था। पाठयक्रम मे वेद सस्कृत व्याकरण दे दर्शन आदि ऋषि प्रणीत ग्रन्थ ही थे। पाणिनी मुनी की अष्टाध्यायी ने सिद्धान्त कोमुदी का अपदस्थ कर दिया। कालीदास ने रघुवश भवभूति का उत्तर रामचरित भारवि का किरातार्जुनीयम के चुने हुए अश वेणीसहार मुद्राराक्षस हर्षचरित कादम्बरी शिवराज विजय आदि ग्रन्थो से अपने राष्ट्र के प्रति श्रद्धा और साहित्य की श्रेष्ठता का परि... हो रहा ह। इसक साथ ही आधुनिक हिन्दी (आयभाषा) अग्रजे साहित्य का अनुशीलन छात्रो के विचार ... बना रहा था।

श्री गोबर्धन जी ने विज्ञान (भातिकी ओर रसायन) की पुस्तको का हिन्दी मे लेखन और अध्यापन गुरुकुल मे किया। आचार्य रामदेव ने इतिहास का लेखन उपलब्ध प्रयोगो के आधार पर नवीन प्रयास किया। सगीत की शास्त्रीय एव सुगम शिक्षा की व्यवस्था कबड्डी आदि खेलो के साथ हाकी फुटबाल बालीबाल आदि विदेशी खेलो में भी छात्र रुचि लेते थे।

सरस्वती यात्राओ मे कलकत्ता बम्बई मद्रास पाण्डीचेरी मदुरई कन्याकुमारी के साथ–साथ बद्रीनाथ केदारनाथ गगोत्री यमनोत्री एव कैलाश तक सम्मिलित थे जो बालको की राष्ट्रीय दृष्टि का उदारता वास्तविकता द्वारा विस्तार प्रदान करती थी।

भारत राष्ट्र के जीवन म (शरीर मन बुद्धि सस्कार भारतीय भाषा सस्कृति सभ्यता की श्रेष्ठता कूट–कूट कर भरी जा रही थी। शिक्षा का माध्यम हिन्दी (आर्यभाषा) व्यवहार का माध्यम हिन्दी (पजाबी राजस्थानी गुजराती ब्रजभाषा अवधि बगाली तमिल तेलगू, कन्नड नहीं) जबकि इन सभी प्रान्तो के बालक प्रविष्ट थे। कायालय सगोष्ठी सम्मेलन नामपटट सौर कलेण्डर सभी में आर्यभाषा का प्रयोग था। एस वातावरण मे तैयार नवयुवक जो विद्या सुशिक्षा और धर्म का मूर्त स्वरूप थे राष्ट्र पर प्राण न्याछावर करने वाले सिद्ध हुए। विद्या सुशिक्षा धर्माचरण भारतीय राष्ट्रीयता के दृढ मूल हैं। इस प्रकार यह धार्मिक शिक्षण संस्था स्वत ही राष्ट्रीय सस्थाओ में अग्रणी थी। ब्रिटिश सरकार की वक्र दृष्टि इसका कुछ न बिगाड सकी। लार्ड रेमजे मेकडान्लड ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री ने टिप्पणी की थी – 'कि अगर कोई चित्रकार ईसा की मूर्ति बनाना चाहता है तो वह भारत में हरिद्वार की गगा के पार गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के सस्थापक महात्म मुशीराम जी का दर्शन कर।

अनेक नवयुवको ने गुरुकुल म रहकर योगाभ्यास ... किया आर शरीर की नश्वरता ... आत्मा की अनश्वरता और परमात्मा को कमफल क न्यायपूवक फल प्रदान ... का सक्षात्कार किया। इन विचारो आर अभ्यासो क फलस्वरूप अनक युवक राष्ट्र के लिए हसत हसत बलिदान हुए

धार्मिक व्यक्ति ही निर्भय हा सकता है। 'द्वितीय याद मय भवति इस उपनिषदीय वाक्य मे तथा तत्र को मोह क शोक एकत्व मनुपश्यत एव शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा वद वाक्य' स मनुष्य मात्र के प्रति एकता की सक्षात अनुभूति राष्ट मे एकता की स्थापना का दृढ आधार बनी मनुष्य मात्र म जाति रग लिग ... समाप्त करन मे प्रबल सहायक बनी भ्रातृत्व स्थापित हुआ क्योकि हम सभी उस अविनाशी परमात्मा जिसे शिव विष्णु खुदा या God कहा जाता है के पुत्र है।

इस एकता की राष्ट्रीयता की शिक्षा को आत्मसात करने वाला मूर्तस्वरूप मुशीराम जिज्ञासु जब श्रद्धानन्द सरस्वती बन और गुरुकुल कागडी क सीमित क्षेत्र स बाहर विस्तृत राष्ट्रीय क्षेत्र म ... स्थान अनायास ही मिल गया।

३० मार्च १९१९ के दिन 'रौलेट एक्ट' क विरोध म दिल्ली मे निकाले गए जुलूस मे सभी धर्मो के अनुयायियो के सर्वमान्य नेता बने। घण्टाघर के चौराहे पर जुलूस को रोकने के लिए तैनात फौजियो की सगीनो के सामने कुर्ते के बटन खोल कर बोले 'पहले इस सन्यासी के सीने को छलनी करो फिर जनता को भूनना उस चमत्कारी दृश्य से शासक अग्रेज अफसर ही नहीं सभी फौजी और सामान्य जनता भी चमत्कृत हुई।

जुलूस पीपल पार्क मे सभा में परिवर्तित हुआ तब अग्रेज फौजी अफसरो के आदेश से सैनिको ने सभा स्थल को घेर लिया। स्वामी जी आगे आए आफीसर से कहा कि यह सभा शान्त एव अहिंसक है इसे पूर्ण होने दे अगर आपने गोलिया चलाई तो परिणाम का दायित्व आप पर होगा। आफीसर व सैनिक चले गए। सभा निर्विघ्न सम्पन्न हुई।

इससे भी अधिक आश्चर्यजनक घटना ४ अप्रैल सन १९१९ को हुई। ऐसी घटना न भूलकाल मे हुई न भविष्य मे। इसे अग्रेज शासको ने बढने नहीं दिया। यह थी हिन्दु मुस्लिमों की एकता की प्रतीक। मुस्लिम नेताओ के आदेश से दो प्रतिनिधि स्वामी श्रद्धानन्द के निवास पर पहुचे। उन्हे सविनय निवेदन के बाद ससम्मान गाडी पर बैठाकर जामा मस्जिद लाए। प्रधान मौलवी सहित सभी मुसलमानो ने जय घोष के साथ स्वागत किया और नम्र निवेदन किया कि वर्तमान विकट समय मे मुसलमानों को कर्तव्य का उपदेश करें।

वेदी पर विराजमान स्वामी श्रद्धानन्द ने निम्न समयोपयोगी महत्वपूर्ण एव छोटे से वेद मन्त्र का पाठ किया –

'त्व हि न पिता वसो त्व माता शतक्रतो बभूविथ अथाते सुम्नमीमहे। जिसका अर्थ है – हे सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक कृपालो परमात्मन आप हमारे पिता के ... पालक हो ममतामयी माता के समान अनक प्रकार से हमे सुख प्रदान करत हो ... आपकी छत्र छाया म हमे ... है।

यह राष्ट्रीय एकता अग्रेज ... तिलभर न सुहाई। उन्होने ऐसी फूट डाली ... आज स्वतन्त्र हान पर भी भारत ... शान्त नहीं रहन दे रहा हे। राष्ट्रीयता ... निर्भीकता के कारण ही पजाब क अमृतर नगर मे उस स्थिति मे जबकि ... जलियावाला काण्ड से अत्यन्त त्रस्त थी स्वामी श्रद्धानन्द न राष्ट्रीय कागस का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न करान का अदभुत साहसिक कर्त्तव्य सफलता पूवक निभाया था। उसकी विशेषताए थी

१ अधिवेशन से एक दिन पूव घनघोर वर्षा हुई शामियाने गिर गए सभास्थल पर पानी भर गया। स्वामी श्रद्धानन्द जी के निवेदन पर नगरवासिया ने समस्त प्रतिनिधिया का ससम्मान अपने घर ठहराया तथा उनक आतिथ्य मे कोई कसर नहीं छोडी।

२ स्वामी श्रद्धानन्द जी का स्वागत भाषण हिन्दी मे था जबकि आज तक अग्रेजी मे हाता था। सबका हिन्दी अपनान का परामर्श दिया।

३ स्वामी जी ... प्रतिनिधि ... का ... ... सुविधा ... के साथ ... स्वार्थ सेवा करने ... कराया

४ प्रत्येक समर्थ प्रतिनिधि अपन घरेलू कार्यो के लिए अछूतो मे से नियुक्त करे।

५ हिन्दुओ मुसलमानो और ईसाइयो मे भ्रातृत्व जागे और सगठित हो।

अखिल भारतीय काग्रेस जिसके अग्रणी नेता स्वातन्त्र्य आन्दोलन के सूत्रधार के रूप मे सक्रिय थे। स्वामी जी एव समस्त गुरुकुल वासी उनक साथ सक्रिय थे। स्वामी जी उनके साथ अपना सम्बन्ध विच्छेद करने देने मे विवश हुए। जब गाधी जी स्वामी श्रद्धानन्द को अपना बडा भाई समझते थे परन्तु धर्म परिवर्तन के विषय मे स्वामी जी से सहमत न हुए। स्वामी जी ने शुद्धि आन्दोलन (अथात मुसलमानो को हिन्दु धर्म मे वापिस लाना) आरम्भ कर दिया था। मुसलमानो ने महात्माजी से स्वामी श्रद्धानन्द के इस कार्य का विरोध किया स्वामी जी का मनत्व था कि मुसलमान हिन्दु का धर्म परिवर्तन नहीं करेंगे। महात्मा गाधी स्वामी जी के मनत्व से सहमत नहीं हुए और उन्हे शुद्धि आन्दोलन बन्द करने की सलाह दी। स्वामीजी ने गाधी जी की सलाह न मानी यह मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति भारत विभाजन और गाधी जी की मृत्यु का कारण बनी।

स्वामी जी का दूरदर्शिता पूर्वक आरम्भ किया गया शुद्धि आन्दोलन भारत राष्ट्र कल्याण मे सहायक सिद्ध हुआ। इसी परिणाम स्वरूप हिन्दुत्व का अस्तित्व आज सीना ताने खडा है। हिन्दुत्व रक्षक के रूप महर्षि दयानन्द के विरोधी हिन्दुओ ने महर्षि परम शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द के उत्तराधिकारी गुरुकुल कागडी को गुरुकुल के अधिकारि द्वारा स्वीकार न करने पर स्वामी जी की पौत्री श्रीमती पुष्पशोभा को सन १९८७ में स्मृति चिह्न शाल व श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया

पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव - एक संस्मरण

– आनन्द कुमार आर्य

सार्वदेशिक साप्ताहिक दि० ... सितम्बर २००१ के अंक से ... मातरम जी के आकस्मिक ... दुखद समाचार पाते ही मन ... हो गया। उस महाभाग्य के ... दक्षिण भारत में आर्य समाज के एक निर्भीक एक विचारक एक आर्य नेता का स्थान रिक्त हो गया उनका निधन निश्चय ही आर्य जगत की महती क्षति है।

स्वतन्त्रता संग्राम के हैदराबाद सत्याग्रह में श्री रामचन्द्रराव नामक एक आर्य युवक का साहसी सक्रिय योगदान जिसमे आन्ध्रप्रदेश को निजाम के शासन से मुक्त कराने मे कोडो के क्रूर प्रहारों की यातनाए सहते हुए ऊँची आवाज में वन्देमातरम ! वन्देमातरम ! उच्चारित करते रहना आर्यसमाज के गौरवमयी इतिहास की अविस्मरणीय कृति है। उनके इस निर्भीक कृतित्व से अविभूत होकर वीर सावरकर जी ने रामचन्द्रराव के आगे वन्देमातरम जोडकर उनका नाम वन्देमातरम रामचन्द्रराव कर दिया ओर तब से वह इस नाम से जाने जाते थे और कालान्तर मे अपनी योग्यता ... से वह युवक आर्य समाज का ... बना। महर्षि दयानन्द सरस्वती के सत्यार्थप्रकाश ... अमिट छाप पडी और वह आर्य समाज का दीवाना हो गया सरकारी चकाचौध सुख सुविधा ऐश्वर्य की परवाह किए बिना दक्षिण भारत मे आर्यसमाज के प्रचार प्रसार का जीवनादर्श निश्चित करके उन्होने अपना सम्पूर्ण जीवन आर्यसमाज की सेवा मे न्योछावर कर दिया।

दो दशको से अधिक समय तक आर्य जगत का पथ प्रदर्शन करने वाले सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती दक्षिण के इस कर्मवीर से बहुत प्रभावित थे और अन्ततोगत्वा वन्देमातरम जी को सभा से जोडने मे उन्हे सफलता मिली। स्वामी जी उन्हे सदैव पडित जी के नाम से ही पुकारते थे। वन्देमातरम जी ने स्वामी जी के साथ कधा से कधा मिलाकर काम किया और उनकी अन्तरग सभा मे उनके साथ वरिष्ठ उप प्रधान पद को सुशोभित किया। पडित जी ने राष्ट्रभाषा को उसका अधिकार प्राप्त कराने हेतु सम्पूर्ण भारत में हिन्दी भाषा सम्मेलन आयोजित करने का आह्वान किया और विशेषकर अहिन्दी भाषा प्रान्तो मे वह सम्मेलन बहुत सफल रहा। पश्चिम बगाल मे चतुर्थ हिन्दी भाषा सम्मेलन सन १९६३ हुआ था।

मै प० वन्देमातरम जी के सानिध्य मे १९६० मे आया और जितनी बार उनसे मिला कुछ सीखा प्ररणाए प्राप्त की और उन्हे अपने जीवन मे आत्मसात करने का प्रयास किया। मै उनसे बहुत प्रभावित था सन १९६३ मे आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल के नवनिर्मित महर्षि दयानन्द भवन के उदघाटन के अवसर पर स्वामी जी के साथ पडित वन्देमातरम जी तथा श्री सूर्यदेव जी का विशेष आग्रह से बुलाया था। तीनो आर्य नेता कलकत्ता पधारे थे। सभा भवन मे यज्ञोपरान्त ओ३म पताका प० जी ने फहराया था ओर उस अवसर पर चतुर्थ हिन्दी भाषा सम्मेलन एव वेदसम्मेलन की अध्यक्षता प० वन्देमातरम जी ने की थी। आज वह दृश्य मेरी आखो के सामने परिलक्षित है और मेरे समेत पश्चिम बगाल का आर्य जन गोरवान्वित अनुभव कर रहा है कि उनका पदार्पण सभा मे हुआ था और उनका मार्गदर्शन प्राप्त हुआ था। इस प्रकार मे श्रद्धेय प० जी के अधिक सानिध्य मे आता गया।

पूज्यपाद स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के देहावसान के उपरान्त सन १९९४ मे प० वन्देमातरम रामचन्द्रराव सार्वदेशिक सभा के सम्माननीय प्रधान निवाचित हुए। सभा की गतिविधियो काग प्रणाली पत्रकारिता मे आमूल चूल परिवर्तन करके आर्य समाज के उच्चादर्शो को जनमानस तक पहुचाने का उनका उद्देश्य था और उन्होन कार्य प्रारम्भ ही किया था कि उनके वरिष्ठ सहयोगियो ने ईर्ष्या वश इस दक्षिण भारत के सपूत को सहयोग देना दूर रहा उन्हे कार्य करने ही नही दिया। उनका सरल स्वभाव स्वच्छ हृदय इस मानसिक यातना का सहन नही कर सका ओर परिणाम हुआ कि वे हृदय रोग के शिकार हो गए। प्रान्तीय सभाओ मे वेबुनियाद विवाद खडे किए गए जिसमे उन्ही महाशयो ने घृत की आहूति देकर उसे प्रज्वलित करने मे कोई कोर कसर उठा नही रखी। एक सादा जीवन उच्चविचार का दार्शनिक विचारक अपने ज्ञान अर्जित जीवन की उपलब्धियो को आर्य जगत मे नहीं पहुचा सका और आर्य जन उससे वचित रह गया। विपरीत प्रतिकूल स्वास्थ्य मे भी पडित जी सघर्षो से घबडाए नहीं और अपने दायित्व के प्रति सजग रहे सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद की गरिमा को अक्षुण्य रखकर सही निर्णय लेते रहे और इस तरह से आर्यसमाज की शिरोमणि सस्था सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अस्मिता को सुरक्षित रखने मे सफल रहे। उनके व्यक्तिगत जीवन का आदर्श ही था कि उनके पुत्र का शुभविवाह पुण्यात्मा श्री सूयदेव जी की सुपुत्री से सम्पन्न हुआ था मुझे उक्त विवाह मे सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। वह विवाह स्वय मे आदर्श विवाह था और आर्य जगत के लिए प्रेरणा स्वरूप था कि आर्यो की कथनी करनी मे अन्तर नही होना चाहिए महर्षि के उपदशो का अक्षरश पालन था कि सम्पूर्ण मानव कर्मानुसार ब्राह्मण क्षत्रिय वेश्य और शूद्र होता है अत जन्म जाति पाति प्रान्त भाषा की सकुचित भावनाओ से उठकर यह विवाह हुआ था। दोनो परिवार शिक्षा योग्यता आर्यत्व के प्रतीक है।

आर्यसमाज के प्रचार प्रसार को गति प्रदान करने के लिए प० वन्देमातरम जी की योजना आर्य जगत को पाच भागो मे विभक्त करने की थी और उसको क्रियान्वित करने के लिए प्रान्तीय सभाओ से सम्मति प्राप्त करके उसका गठन करना चाहते थे। सबसे प्रथम आयोजन पूर्वांचल मे करने का आदेश मुझे हुआ जिसे मेन १९९५ मे आर्यसमाज टाण्डा उत्तर प्रदेश के १०५वे वार्षिकोत्सव पर आयोजित किया जिसमे उत्तरप्रदेश के साथ बगाल बिहार तथा उडीसा के आर्य नेता विद्वान और सक्रिय कार्यकत्ता अच्छी सख्या मे पधारे सभी से पूज्य प० जी का प्रथम साक्षात्कार था अनेक दृष्टियो से पूर्वांचल की वह गोष्ठी बहुत सफल थी पूरी कार्यवाही मेरे पास सुरक्षित हे।

पूर्वी भारत मे आर्यसमाज टाण्डा एक सशक्त आर्यसमाज है। कई शिक्षण सस्थाओ अनेको आर्यसमाजो का मार्गदर्शन उसके द्वारा होता हे। स्व मिश्रीलाल आर्य (मेरे पिता श्री) स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी एव खददरधारी जन्म से आर्यसमाजी आर्य सिद्धान्तो के पोषक कर्मठ आर्य नेता थे। सन १८७५ मे आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोह के अवसर पर आर्यसमाज के १०१ नक्षत्र की सूची मे पूज्य पिता श्री का नाम प्रकाशित हुआ था यह मेरे लिए गोरव की बात है। महर्षि ने अपने अमरग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' मे कितना सत्य कहा है कि 'वह कुल धन्य वह सन्तान बडी भाग्यवान है जिसके माता पिता धार्मिक व विद्वान हो।' श्री मिश्रीलाल आर्य आर्यसमाज टाण्डा के ५ दशक से अधिक प्रधान व मन्त्री रहे। सन १९४४ मे उनके द्वारा स्थापित आर्य कन्या पाठशाला ही इन्टरमीडिएट तक पहुच गया था जिसमे ३००० तीन हजार छात्राए हैं लगभग एक हजार १००० छात्राए मुस्लिम हे क्षात्रावास भी है विशेषता है सरकारी सहायता प्राप्त होते हुए भी सभी छात्राए सामूहिक रूप से सध्या हवन प्रार्थना करती हैं। आज के वर्तमान परिप्रेक्ष में साम्प्रदायिक एकता का प्रतीक है वह विद्यालय।

सन १९८० ई० में उनके देहावसान के पश्चात विद्यालय के नाम में उनका नाम जोड दिया गया और वर्तमान मे वह विद्यालय मिश्रीलाल आर्य कन्या इन्टर कालेज टाण्डा के नाम से जाना जाता है। १९९५ ई० मे उक्त विद्यालय की स्वर्ण जयन्ती थी जिसे भव्य रूप से मनाने का निश्चय किया गया था। सौभाग्य से तत्कालीन सार्वदेशिक सभा प्रधान स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी प० वन्देमातरम जी ने समारोह उदघाटन करने की स्वीकृति प्रदान की और टाण्डा पधारे। स्वर्ण जयन्ती समारोह उदघाटन के साथ विद्यालय मे नवनिर्मित मुख्यद्वार पर झण्डारोहण करके ओर विज्ञान कक्ष का उदघाटन भी प० जी के करकमलो से सम्पन्न हुआ था। स्वर्ण जयन्ती के साथ ही आर्यसमाज का उत्सव भी चल रहा था उसमे पूज्य प० जी के सार्वजनिक अभिनन्दन का भी सौभाग्य टाण्डा के आर्यो को प्राप्त हुआ था। इस प्रकार टाण्डा आर्यसमाज व विद्यालय धन्य हे जिसे पण्डित जी का आशीर्वाद उनके द्वारा उदघाटिक स्मृति चिन्ह सदैव स्मरण कराता रहेगा।

मेरे आर्यसमाज के जीवन मे तीन विभूतियो ने मुझे प्रेरित किया और जिनका आशीर्वाद मुझे प्राप्त रहा ओर यह सयोग ही है कि उन तीनो मे कितनी साम्यता थी। तीनो ही स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी थे और उन्होने अपने कृत्यो से आर्य जगत मे एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया था। मैने उन पुण्यात्माओ के जीवन से जो प्ररणाए ली उनमे सर्वप्रथम मेरे पूज्य पिता श्री मिश्रीलाल जी आर्य है जिनसे कर्त्तव्यपारायणता सत्यपथ पर अडिग रहने विपत्तियो मे धैर्य व साहस रखने की क्षमता। द्वितीय – स्वामी आनन्द बोध सरस्वती से एक सेवक से लेकर उच्चपदाधिकारी होने तक गर्व को समीप नही आने देने का ज्ञान निर्भीकता कर्मठता। तृतीय– प० वन्देमातरम जी से त्याग तपस्या तथा बलिदान करना सीखा। यह सभी आज मेरे जीवन का सम्बल है। इस प्रकार से मैने अपने जीवन मे उपर्युक्त उच्चादर्शों को आत्मसात करने का प्रयास किया है। उनके ये सारे गुण मुझमे आ सकेंगे ऐसा तो मै नहीं कह सकता किन्तु मै उस मार्ग पर चलते रहने का प्रयास करुगा। उनके वे सारे गुण मेरे पास धरोहर ... मे विद्यमान रहेंगे जिनसे प्रेरणा प्राप्त ... अपने कर्तव्य पालन का निश्चय रहूगा।

ऐसे पूज्यवर प० वन्देमातरम रामचन्द्रराव के श्री चरणो मे ... नमन!

– उप प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ७७/१ ए पार्क स्ट्रीट कोलकाता ७०००१६

मिलाप के साथ बीती याद ताजा की थीं रामचन्द्रराव ने

हैदराबाद २८ नवम्बर (मिलाप) सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी वन्देमातरम रामचन्द्र राव ने पिछले दिनो हिन्दी मिलाप' को दिए साक्षात्कार म स्वतन्त्रता सग्राम के दौरान अपने जीवन की यादगार व महत्वपूर्ण घटनाओ की जानकारी दी उन्होने स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद देश मे हुए परिवर्तनो पर भी खुल कर अपने विचार व्यक्त किए। सम्भवत श्री रामचन्द्र राव द्वारा अपने जीवनकाल क दारान किसी समाचार-पत्र क सवाददाता को दिए गए साक्षात्कारो मे यह अन्तिम है। आज हम यहा इसी साक्षात्कार क मुख्य अश प्रकाशित कर रहे है –

आर्यसमाज से आप कब और कैसे जुडे ?

महान आर्य समाजियो – पडित रामचन्द्र देहलवी और पडित देवेद्रनाथ शास्त्री के ओजस्वी भाषणो से प्रभावित होकर मै और मेरे बडे भाई साहब आयसमाज से जुड गए।

स्वतन्त्रता सग्राम मे भाग लेने की प्रेरणा आपको कहा से मिली ?

प्ररणा मुझे विरासत म मिली। तत्कालीन परिस्थितियो ने भी मुझे अपने हर काय देश की स्वतन्त्रता लिए करन का प्ररित किया।

इस सग्राम के दौरान हैदराबाद रियासत की सामाजिक व राजनीतिक परिस्थिति कैसी थी ?

परिस्थितिया काफी भयानक थीं। निजाम सरकार द्वारा हिन्दुओ पर जुल्म ढाया जा रहा था हिन्दुओ को जबरन इस्लाम धर्म स्वीकारने के लिए मजबूर किया जा रहा था। जो हिन्दू इस्लाम धर्म स्वीकार करने से इन्कार कर देता था उस पर नाना प्रकार से अत्याचार किए जाते थे। हिन्दुओं का खुलेआम कत्ल हो रहा था। बलात्कार की घटनाए भी बढ रही थीं। हिन्दुओ के लिए तो बिना किसी सरक्षण के घूमना भी कठिन हो गया था। निजाम का उद्देश्य हैदराबाद रियासत को एक स्वतन्त्र राज्य क रूप मे स्थापित करना था। वह यह भी चाहता था कि उसके राज्य में केवल इस्लाम धर्म के अनुयायी ही रहे।

आपको पहली बार जेल कब और क्यों भेजा गया ?

निजाम सरकार के कुशासन व जुल्म के विरोध मे गौलीगुडा क राम मन्दिर क निकट एक जनसभा आयोजित की गयी थी। मैंने इस जनसभा म भाषण दिया। जैसे ही मैं अपना भाषण समाप्त कर मन्दिर की सीढियो से नीचे उतर रहा था पुलिस ने मुझे गिरफ्तार कर लिया। यह घटना २४ अक्तूबर ... की है। मुझे सरकार क खिलाफ गद्दारी ... और भडकीले भाषण देन क आरोप न गिरफ्तार किया गया।

हमने सुना है जेल में आपको नाना प्रकार की यातनाए दी गयीं। जेल जीवन के आपके अनुभव के बारे मे हमे कुछ बताइए।

मुझे चचलगुडा जेल के बुर्जगज मे रखा गया। बुर्जगज जेल की सबसे खराब जगह थी। यहीं पर थोडी-सी जगह मे मुझे सारे नित्य कर्म करने पडते थे। जब मैं जेल के बाहर था तभी निजाम सरकार ने मुझे मार डालने के कई प्रयास किए थे। चूकि मै अब जेल मे था सरकार के लिए मुझे खत्म करना आसान हो गया। एक दिन शाम को जब सारे कैदी भोजन कर चुके थे तब मुझे जेल के एक बडे-से खुले हिस्से मे बुलाया गया। यहा एक ट्राई पड रखा हुआ था। मेरे सारे कपडे उतार कर मुझे ट्राई पैड पर खडा किया गया। ... मेरे हाथ-पाव व ... स कर बाध दी गयी। ऐसा करने के बाद दा... नामक एक पहलवान को बुलाया गया। यह पहलवान गुण्डागर्दी का काम करता था और इसन कई कत्ल किए थे। मुझ यह पहलवान उस दिन नशे म चूर दिखाई दिया। इसने मर नग शरीर पर बेत के हर वार के बाद चोट खाए हुए भाग मे बत को रगडत हुए खीचा। मुझे २४ बेते लगायी गयी थी।

इसके बाद क्या हुआ ?

शायद डाक्टर ने मुझ पर २४ से अधिक बेत लगाने स मना कर दिया था। इसी कारण २४ वार करने के बाद मुझ ट्राई पैड से उतार दिया गया। मार क कारण शरीर पर चोटो के कइ निशान पड गए थे। जल के कुछ कर्मचारियो की मदद से मेरी दवा दारू शुरू हुइ। लगभग १० दिन मुझ पर बेत से वार किए गए थे उनका मुझ पर आज भी असर पडता है। उठने बैठने मे अभी भी दिक्कत आती हे। जेल मे ही मेरे साथ तीन अन्य साथियो को भी अलग अलग जगहो पर अलग अलग दिन बत लगाई गइ थीं। बाद मे पता चला कि इनमे से एक ने दो चार बेत खाने के बाद क्षमा याचना कर ली परन्तु रामलाल ने ऐसा नहीं किया। उसने बत की २७ मार को सहा और जब उसे ट्राई पैड से उतारा गया तब उसने दड बैठक लगायीं थीं।

वन्देमातरम आन्दोलन से आप कैसे जुडे ?



उन दिनो वन्देमातरम का नारा हर स्वतन्त्रता सेनानी की जुबान पर था। विदेशी शासको को देश की भूमि से बाहर भगाने के लिए क्रान्तिकारी सेनानियो ने वन्देमातरम आन्दोलन शुरू किया था। हैदराबाद रियासत मे भी यह आन्दोलन जोर पकडने लगा था। इस आन्दोलन को कुचलने के लिए निजाम ने वन्देमातरम के गायन पर प्रतिबध लगा दिया था। यह प्रतिबध उस समय लगा जब मै ... क्रान्तिकारी सेनानियो से प्रेरणा लेकर इस प्रतिबन्ध का उल्लघन किया आर वन्दमातरम आन्दोलन से जुडा।

स्वतन्त्रता सग्राम के दौरान किस घटना को आप अपने जीवन की मुख्य घटना मानते है और क्यो ?

गोलीगुडा क राम मन्दिर क निकट मैने जो जनसभा सम्बोधित की थी उसे मै सबस महत्वपूर्ण घटना मानता हू। इस जनसभा मे लाग भारी सख्या मे उपस्थित थे और मुझ विश्वास था कि यदि मै अपने भाषण से इन्हे प्रभावित करू तो स्वतन्त्रता सग्राम मे भाग लेने वालो की सख्या मे भारी इजाफा होगा और यह सग्राम इतना तीव्र होगा कि वह सफल होकर ही रूकेगा।

हमने सुना है कि मुक्ति आन्दोलन के दौरान आपने स्वतन्त्रता सेनानियो मुख्य रूप से आर्यसमाज के लिए गुप्तचर के रूप मे कार्य किया और निजाम की देश विरोधी व हिन्दू विरोधी साजिशो को नाकाम करने मे काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। एक गुप्तचर के रूप मे अपने कार्यो के बारे मे हमे कुछ बताइए।

निजाम हैदराबाद रियासत का एक स्वतन्त्र इस्लामी राज्य बनाने के प्रयास म लगा हुआ था। इस प्रयास का सफल बनाने मे वह अग्रेजो की मदद ल रहा था। निजाम सरकार की कुटिल चालो का पता लगाने के लिए मुझ गुप्तचर क रूप मे काम करना पडा था। उन दिनो मै वेष बदल कर निजाम सरकार के प्रमुख कार्यालयो पुलिस व सैन्य ठिकानो पर जाकर इन चालो का पता लगाता था और स्वतन्त्रता सेनानियो का सतर्क कर देता था। मैने किसी तरह निजाम के तोपखाने व गोलकोण्डा किला जहा निजाम की खुफिया सना थी वहा जाने मे भी सफलता प्राप्त की थी। मैंने निजाम को हथियार पहुचाने वाले वाहनो ... की जानकारी भी सरकार का दी। निजाम सरकार की साजिशो का पता लगाने म कुछ देश प्रेमियो ने मेरी मदद की। एक गुप्तचर के रूप मे मेरी अभिनय कला न मेरा बहुत साथ दिया। निजाम सरकार के प्रमुख ठिकानो पर मुझ ऐसा नाटक करना पडता था कि मै निजाम का वफादार हू। पुलिस एक्शन की भनक पडते ही निजाम ने कुछ प्रमुख स्थानो पर तोप तेनात की थीं ओर कुछ स्थानो पर बारूदी सुरग बिछायी थी। किसी तरह मुझे इसकी जानकारी मिल गयी और मैंन इसस भारत सरकार के प्रतिनिधि मुशीजी को अवगत करा दिया। उन्होंने भारतीय सेना को इन सबकी जानकारी दे दी जिसका लाभ उठा कर सेना ने सतर्कता बरती।

स्वतन्त्रता सग्राम के दौरान स्वतन्त्र भारत के सम्बन्ध मे आपने क्या सपने देखे थे ? क्या वे स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद साकार हो पाए ?

मैंने सपना देखा था कि स्वतन्त्र भारत म जनता अपनी सरकार खुद चुनेगी। सभी के साथ न्याय होगा परन्तु एसा नहीं हुआ।

इसके क्या कारण रहे ?

दश मे शुरू स जो निर्वाचन प्रक्रिया रही उसमे हमेशा पेस का बोलबाला रहा है। धनवान व्यक्तियो न अपन पैसे के बल से सत्ता सम्भाली और अपने निजी स्वार्थो की पूर्ति क लिए उसका दुरुपयाग किया इसक चलते जनता के साथ अन्याय हाता आ रहा है।

वर्तमान समय में आप किस समस्या को देश की सबसे बडी समस्या मानते है ?

भ्रष्टाचार ही दश की सबस बडी समस्या है। इसी के कारण देश म आज आशा के अनुरूप प्रगति नही हो रही है

देश मे सकारात्मक परिवर्तन व वाछित प्रगति के लिए आप क्या सुझाव देगे ?

यही कहूगा कि राष्ट्रीयता की भावना को हर नागरिक मे जागृत करना होगा।

एक स्वतन्त्रता सेनानी के नाते आप देश के नागरिको को क्या सन्देश देना चाहेगे ?

हर एक नागरिक को चाहिए कि वह आत्मनिभर बनने का प्रयास करन के साथ साथ देश के हितो की रक्षा के लिए भी काम करे। देश के विकास म अपनी भूमिका निभाए और मातृभूमि की हर सम्भव सवा करे।

विदेश समाचार

मोरिशिस आर्य महिला मण्डल के तत्वावधान में आयोजित

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन

मोरिशस म अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन म दिनाक २२ नवम्बर से २५ नवम्बर तक बहुत ही धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। दिनाक २२ को अर्यसभा पाट लुइस क विशाल सत्सग भवन मे वृहद यज्ञ व सास्कृतिक कार्यक्रमो के साथ सम्मेलन का उदघाटन प्रारम्भ हुआ। मारिशस आय महिला मण्डल की प्रधाना श्रीमती धनवन्ती रामचरण व देहली से आई आचार्या उज्ज्वला वर्मा के ध्वजारोहण के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम यज्ञ हुआ फिर प्रधान धनवन्ती रामचरण व प्रधान डॉ० रुद्रसेन नीऊर द्वारा स्वागत भाषण व सन्देश पढा गया। आर्यसभा के वयोवृद्ध सेनानी श्री मोहनलाल जी मोहित को अभिनन्दन पत्र द्वारा सम्मानित किया गया। आचार्या उज्ज्वला वर्मा द्वारा भजन व प्रवचन तथा दक्षिण अफ्रीका से आए श्री डा० शिशुपाल राममरोस द्वारा सन्देश दिया गया। इस अवसर पर भारतीय उच्चायुक्त महामहिम डॉ० अतुल खरे तथा माननीय डॉ० नवीनचन्द्र रामगुलाम भी उपस्थित थे। २३ तारीख का प्रात ना बज इन्दिरा गाधी कल्चर सेन्टर ऑफ इण्डिया मे सम्मेलन का उदघाटन हुआ जिसमे प्रधानमन्त्री की पत्नी श्रीमती सरोजिनी जगन्नाथ ने दीप प्रज्ज्वलित किया आचाय' उज्ज्वला वर्मा ने उदघाटन भाषण दिया। १५ मि। क जोरदार भाषण मे नारी की गरव गरिमा की याद दिलाते हुए इतिहास क पन्नो से लेकर आज की वतमान स्थिति पर प्रकाश डालत हुए तथा महर्षि दयानन्द ने जो नारी को गरिमा प्रदान करी उसे याद करते हुए बहुत ही ओजस्वी वाणी मे अपन वक्तव्य को प्रस्तुत किया। पूरा सभागार कई बार



मोरिशस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन का एक दृश्य। चित्र में दक्षिण अफ्रीका से आई सदस्या आर्य महिला मोरिशस की प्रधान श्रीमती रामचरण आचार्या उज्ज्वला वर्मा श्रीमती नवीन चन्द रामगुलाम तथा सस्कृत के एक विद्वान।

तालिया से गूजता रहा। तत्पश्चात सभी विशिष्ट अतिथियो ने अपने भाषण दिए। दिन के दूसरे सत्र मे कई महिलाओ ने नई सहस्त्राब्दि मे नारी की भूमिका पर अपने अपने विचार रखे। तीसरे सत्र मे फिर यहा की आर्य विदुषियों ने 'वेदों में नारी का स्थान' इस विषय पर विचार व्यक्त किए।

२४ तारीख को प्रात नौ बजे से प्रथम सत्र प्रारम्भ हुआ – आचार्या उज्ज्वला वर्मा की अध्यक्षता मे विषय था राष्ट्र और समाज निर्माण मे नारी की भूमिका ११ बजे से द्वितीय सत्र प्रारम्भ हुआ – डा० उषा शास्त्री की अध्यक्षता मे विषय था नारी के उत्थान मे आर्यसमाज का योगदान।

२ बजे तृतीय सत्र मे विशिष्ट अतिथियो का आगमन हुआ जिसमे प्रमुख भारतीय उच्चायुक्त डॉ० अतुल खरे उप–प्रधान मन्त्री श्री पोल रेमो वे राजे आर्य सभा के प्रधान श्री नियूर जी मन्त्री डा० उदय नारायण गगू, आदि उपस्थित थे। २५ तारीख का बेलमार समुद्र तट पर प्रात ६ बजे १२५ कुण्डीया वृहद यज्ञ का आयोजन किया गया दूर दूर तक मन्त्रोच्चारण की ध्वनि गूज रही थी। पूरा वातावरण यज्ञमय हा रहा था। इस अवसर पर आचाया उज्ज्वला वर्मा ने नारी जाति को सम्बोधित करता जागृत करता बहुत ही ओजस्वी गीत व भाषण प्रस्तुत किया साथ ही डॉ० उषा शास्त्री ने भी भजन प्रस्तुत किया। इस अवसर कला एव सस्कृति मन्त्री माननीय मोती रामदास परिवहन व जहाजरानी मन्त्री माननीय अनिल कुमार बेचू, व्यापार एव सहकारी मन्त्री माननीय प्रेमदत्त कुन्जू, आवास एव भूमि मन्त्री माननीय मुखेश्वर चुनी द्वारा अपने सन्देश प्रस्तुत किए गए। देहली से आए हुए योगाचार्य श्री खुशबख्त राय जा पिछले चार महीने से वहा विभिन्न आर्य समाजो मे योग की कक्षाए चला रहे थे उन विद्यार्थियो द्वारा बहुत ही सुन्दर योग का प्रदर्शन हुआ।

अन्त मे धन्यवाद व शाति पाठ के साथ सम्मेलन का समापन हुआ।

– मन्त्री डॉ० उदय नारायण गगू

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व को

पूर्वी अफ्रीका से हार्दिक बधाई

प० राम कृष्ण शर्मा वेद प्रवक्ता आर्यसमाज नैरोबी



३ व ४ नवम्बर को आर्यसमाज दीवान हाल मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ। जिसमे आगामी तीन वर्षो के लिए (२००१–२००४) अधिकारी वग का चयन किया गया। इस बार सावदेशिक सभा का प्रधान बनने का सौभाग्य कैप्टन देवरत्न जी को प्राप्त हुआ वरिष्ठ उप–प्रधान श्री विमल वधावन को बनाया गया। मन्त्री श्री वेदव्रत जी बने तथा कोषाध्यक्ष श्री जगदीश जी आर्य बने। सार्वदेशिक सभा का कार्य क्षेत्र केवल भारत ही नही अपितु विदेशो मे कार्य कर रही आर्य समाज भी हैं। अभी तक का अनुभव यही बताता है कि सार्वदशिक सभा केवल भारत मे ही सीमित होकर रह गई है। कभी कभार कोई समाचार मिल जाता ह कि सार्वदेशिक सभा भी है।

वर्तमान नेतृत्व के सामने काफी चुनौतिया है। प्रथम तो यह कि ऋषि दयानन्द द्वारा स्थापित सिद्धान्तो की रक्षा करना तथा उनका प्रचार और प्रसार करना। वर्तमान समय मे अनेको पथ व सम्प्रदाय अस्तित्व में आ गए हैं जो जनता को मार्ग से गुमराह कर रहे हैं।

कैप्टन देवरत्न जी को सर्वप्रथम सभा के सगठन को दृढ करना होगा तथा इसके प्रचार विभाग को भी मजबूत करना होगा। वैदिक साहित्य को अधिक से अधिक अग्रेजी भाषा मे प्रकाशित करना होगा जिससे कि विदेशो मे भी आर्यसमाज की छवि को चमकाया जा सके। समय–समय पर विदेशो मे योग्य साधुओ और सन्यासियो को भी भेजना होगा। **विदेशों मे कार्य कर रहे विद्वानो से भी सम्पर्क रखना होगा तथा उनकी सेवाओं को भी लेना होगा। विदेश मे रहने वाले विद्वानों और प्रचारकों को सभा की गतिविधियों से परिचित करवाना होगा।**

इसके साथ ही वर्तमान युग जिसको आजकल डॉट काम कहते है उसका पूरा लाभ उठाते हुए जन-जन तक आर्यसमाज के सिद्धान्तों तक पहुचाना होगा।

मुझे पूरा विश्वास है कि कैप्टन देवरत्न जी प्रत्येक व्यक्ति की आकाक्षाओ के अनुरूप खरे उतरेगे। व्यक्तिगत रूप से भी मेरा इनके प्रति सदैव आदर भाव रहा है और मैंने एक बार अपनी मुम्बई यात्रा के दौरान कहा भी था कि आप जैसे कर्मठ व्यक्ति ही सार्वदेशिक सभा का प्रधान बनने योग्य है।

मैं आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉक्टर राजेन्द्र जी सैनी तथा आर्यसमाज नैरोबी के प्रधान श्री कुलभूषण जी विद्यार्थी की ओर से तथा अपनी और स सावदशिक सभा के नव–निर्वाचित अधिकारियो का बधाई दता हू तथा अपन पूण सहयाग दने के सकल्प का दुहराता हू।

स्वामी श्रद्धानन्द का समर्पण

– आचार्य अजय आर्य, विश्व शाति अभियान प्रवक्ता ब्रह्मानन्दाश्रम (बणी) पुण्डरी

सिद्धान्तो के प्रति समर्पण और मानवीय सेवा की स्वरूपगत परिभाषा के जिज्ञासुओं के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी की जीवनगाथा अवश्य पठनीय है। सच तो यह है स्वामी जी का जीवन त्याग श्रद्धा समर्पण और सेवा जैसे दैवीय गुणो का जीवत स्वरूप है। उन्होने सिद्धान्तो पर न केवल प्रवचन किये, अपितु उन्हे पूर्णत आत्मसात् भी किया। यद्यपि स्वामी दयानन्द सरस्वती के सम्पर्क मे आने ओर आर्यसमाज की सदस्यता के पश्चात ही उन्होने स्वय को समाज वेद और मानवता की सेवा के लिए अर्पित कर दिया किंतु सन्यासाश्रम मे प्रवेश के पश्चात तो वे जीये ही प्राणी मात्र की सेवा के लिए। १२ अप्रैल १९१७ मुशीराम सन्यास ग्रहण कर रहे थे। उन्होंने सन्यासदीक्षा लेते हुए किसी सन्यासी को अपना गुरु नही बनाया। 'की कायापलट करने वाले गुरु तो महर्षि दयानन्द ही थे। वे स्वय भी अपने सम्पूर्ण जीवन को श्रद्धा की दिव्य भावना से उत्प्रेरित मानते थे। उन्होने सन्यास ग्रहण करते हुए अपने सम्बोधन मे कहा था –

श्रद्धा से प्रेरित होकर ही आज तक के इस जीवन को मैंने पूरा किया है। श्रद्धा मेरे जीवन की आराध्यादेवी है, अब भी श्रद्धाभाव से प्रेरित होकर ही मै सन्यास आश्रम मे प्रवेश कर रहा हू। इसलिए इस यज्ञकुण्ड की अग्नि को साक्षी रखकर मै अपना नाम श्रद्धानन्द रखता हू, जिससे मैं अगला सब जीवन भी श्रद्धामय बनाने मे सफल हो सकू।

स्वामी श्रद्धानन्द एक महान शिक्षाशास्त्री थे। गुरुकुल कागडी की स्थापना विश्व इतिहास की महानतम घटना के रूप मे उल्लेखनीय है। उन्होने आचार्य के रूप मे गुरुकुल का सफल सञ्चालन किया। सौ वर्ष पूर्व उन्होंने गुरुकुल की स्थापना के लिए ३० सहस्र रुपये एकत्र करने की प्रतिज्ञा की और कहा कि जब तक यह कार्य पूरा नहीं हो जाता मैं अपने घर में पाव नहीं रखूगा। उन्होने निजी पुस्तकालय और दूसरी सभी सम्पत्ति गुरुकुल को दान कर दी। १९१२ में जालन्धर स्थित अपनी विशाल कोठी को दान कर देना चाहा, किन्तु वे इससे पूर्व अपने पुत्रो की स्वीकृति ले लेना चाहते थे। इन्द्र जी ने अपने लिखित सस्मरणो मे लिखा है कि वे उस दिन को नहीं भूल सकते जब उन्हे और उनके भाई हरिश्चन्द्र को आचार्य जी के कक्ष मे बुलाया गया। पिता ने उन्हे कहा कि अब उनके पास यदि कोई अचल सम्पत्ति अवशिष्ट रही है तो वह जालन्धर उनकी भव्य कोठी है। यही वे अपने पुत्रो के लिए बचा सके हैं। उनकी इच्छा तो इस कोठी को भी गुरुकुल को दान करने की है। किन्तु जब तक वे इसके लिए अपने दोनो पुत्रो की स्वीकृति नहीं ले लेते तब तक उस भवन को दान करना उन्हे ठीक नही लगता। आचार्य जी के इस कथन को सुनकर इन्द्र और हरिश्चन्द्र थोडी देर के लिए भावविभोर होकर खडे रहे। तत्पश्चात उन्होने उस दान पत्र पर अपने हस्ताक्षर कर दिये और इस प्रकार महात्मा मुशीराम ने गुरुकुल के लिए अपना सर्वस्व देकर सर्वमेध यज्ञ म अपनी अन्तिम आहूति डाल दी।

धन्य हो – समर्पण त्याग और श्रद्धा की वह विलक्षण प्रतिमूर्ति। त्याग समर्पण और साहस की ऐसी दूसरी मिसाल विश्व इतिहास के पन्नो मे दुर्लभ है। अपना पुत्र धन वैभव सुख सब कुछ उन्होने मानवता को अर्पित कर दिया था। श्रीमती सरोजिनी नायडू का यह कथन अक्षरश सत्य है कि – **"वे अपने जीवन की शहादत की अन्तिम घडियो तक साहस और कर्मयोग की अनुपम मूर्ति रहे।"**

२३ दिसम्बर १९२६ को अब्दुल रशीद नामक मताध मुसलमान ने स्वामी जी की हत्या कर दी। उनका जीवन युग युगो तक हमे प्रेरणा देता रहेगा।

सम्पर्क सूत्र – **आर्यसमाज, सफदरजग एन्क्लेव, बी२ नई दिल्ली ११००२९**

सन्त श्रद्धानन्द आया था

– स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

दयानन्द के प्रवचन सुन जीवन ने पलटा खाया था।
छोड दिए दुर्व्यसन सभी और सत्य मार्ग अपनाया था।।
दलितो का उद्धार किया और शुद्धि चक्र चलाया था।
छुआ-छूत जाति पाति का नामो-निशा मिटाया था।।
वेद ईश्वरी ज्ञान सभी को आकर के दरशाया था।
नंगी सगीनो के आगे सीना खोल दिखाया था।।
निडर शेर सम खडे रहे वह तनक नहीं घबराया था।
दयानन्द का सच्चा शिष्य सन्त श्रद्धानन्द आया था।

आर्य नेता स्वामी श्रद्धानन्द स्वामी

– प० नन्दलाल निर्भय

स्वामी श्रद्धानन्द जी, नेता थे गुणवान।
गाता है सारा जगत्, उनके यश के गान।।
उनके यश के गान, रहे हैं गा नर नारी।
ईश्वर भक्त महान्, तपस्वी थे बलधारी।।
जगत् गुरु, ऋषि दयानन्द के शिष्य थे नामी।
दुनिया मे हो गए अमर श्रद्धानन्द स्वामी।।
भारत में था उस समय, अंग्रेजो का राज।
करते थे गोरे जुल्म, था यह दुखी समाज।।
सारा देव समाज, बहुत ही था आतकित।
अबला, दीन, अनाथ पापियों से थे पीडित।
विद्यार्थियों ने किया देश को बिलकुल गारत।
सभी तरह था दुखी, हमारा प्यारा भारत।।
देखा भारत वर्ष का, जब बेढगा हाल।
स्वामी श्रद्धानन्द को, भारी हुआ मलाल।।
भारी हुआ मलाल, बढे बलशाली भागे।
सुन उनकी हुकार, भारती योद्धा जागे।।
अंग्रेजो ने पाप किए, है उनका लेखा।
स्वामी जी पर ढग, देश का गया न देखा।।
खोला गुरुकुल कागडी, किया निराला काम।
स्वामी श्रद्धानन्द ने, किया जगत् मे नाम।।
किया जगत् में नाम, वीर बलवान बनाए।
स्वामी जी का काम देख, गोरे घबराए।।
वीर पुरुष ने मारा ऐसा अद्भुत गोला।
अंग्रेजो के विरुद्ध मोर्चा निर्भय खोला।।
ऐसा नेता विश्व मे, नहीं दीखता आज।
पाखडी नेता बने रही न शर्म लिहाज।।
रही न शर्म लिहाज आर्यो कदम बढाओ।
अपनाओ वैदिक धर्म, विश्व को आर्य बनाओ।
करो वेद प्रचार, नहीं है सब कुछ पैसा।
गुण गाए ससार, काम कर जाओ ऐसा।।
पछताओगे आर्यो, अगर न दोगे ध्यान।
माने जाओगे नहीं समझदार इन्सान।।
समझदार इन्सान, वही जन कहलाते है।
जो परहित के काम जगत में कर जाते है।।
बोओगे जो बीज उसी का फल पाओगे।
भले करोगे काम, भले माने जाओगे।।

– ग्राम पोस्ट बहीन जनपद, फरीदाबाद, हरियाणा

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर विचार करें :-

१ क्या मुस्लिम भाई शराब पीकर मस्जिद मे जा सकता है ? नहीं
२ क्या सिक्ख भाई शराब पीकर गुरुद्वारे मे जा सकता है ? नहीं
३ क्या जैन भाई शराब पीकर जैन मन्दिर मे जा सकता है ? नहीं

तो फिर

१ क्यो हिन्दू भाई शराब पीकर देवी जागरण करते/कराते हैं ?
२ क्यो हिन्दू भाई शराब पीकर अखण्ड रामायण का पाठ करते/कराते हैं ?
३ क्यो हिन्दू भाई शराब पीकर रामलीला मे महापुरुषो का अभिनय करते है ?
४ क्यो हिन्दू भाई शराब पीकर मन्दिरो मे जाते हैं ?

क्या हमारे धर्म ग्रन्थो मे इसकी आज्ञा है ?
क्या ऐसे कृत्यो मे दान देकर उन्हे प्रोत्साहित करना उचित है ?

नहीं

तो फिर हिन्दू समाज इन दूषित प्रवृत्तियो का विरोध क्यो नहीं करता और उन्हे छोड क्यों नहीं देता ?

जरा विचारिए

– ओम प्रकाश भोला, इन्दिरा नगर धामपुर

आचार्य चैतन्य जी को बनारसी दास वर्मा साहित्य सम्मान से सम्मानित किया जाएगा

आर्यजगत के प्रतिष्ठित नेता एव सुप्रसिद्ध वैदिक प्रवक्ता और वरिष्ठ साहित्यकार आचार्य भगवान देव चैतन्य जी को उनकी साहित्यिक सेवाओ के लिए सस्कार भारती अनुष्ठान समिति द्वारा श्री बनारसी दास वर्मा साहित्य सम्मान २००१ के लिए चुना गया है। उन्हे यह सम्मान २७ जनवरी २००२ को हापुड (उत्तर प्रदेश) मे एक विशेष समारोह मे प्रदान किया जाएगा।

– *जीतेन्द्र मल्होत्रा, मन्त्री* *[illegible] कलाकेन्द्र, सुन्दरनगर (हि०प्र०)*

जिसके हृदय मे दया है जिसकी वाणी सत्य से सुशोभित है जिसका शरीर परहित मे लगा हुआ है कलि भी उसका कुछ नही बिगाड सकता।

पृष्ठ ३ का शेष भाग

भारत के विद्यालय एवं शिक्षक सोचें......

जैसे किसी विशाल भवन फैक्ट्री या विशिष्ट मशीनरी की नींव (Foundation) ही उसके प्राण हे। जैसे किसी विशालकाय वृक्ष के जीवन का आधार उसकी जडे हैं। ठीक इसी तरह के हमारे विद्यार्थी है। क्योकि विद्यार्थी रूपी नींव अथवा जड के सुदृढ होने से ही इस के ऊपर बना राष्ट्र का ढाचा सुरक्षित एव सु–उपयोगी हो सकता है। अत महर्षि दयानन्द सरस्वती जो कि विश्व के शिक्षा शास्त्री थे उन्होने राष्ट्र के समक्ष शिक्षा की एक ऐसी परिभाषा दी कि यदि हम उसके अनुसार चलते तो हमारे राष्ट्र की कुछ और ही स्थिति व शोभा होती। अत्यन्त दुख का विषय है कि मुझे अपने गत पच्चीस वर्षो के वेद प्रचार काल मे भारत के अनेक विद्यालयो महाविद्यालयो अथवा बी०एड० एव एम०एड० के विद्यार्थियो मे बोलने का अवसर मिला। पर पूछने पर एक भी ऐसा विद्यालय या उसका विद्यार्थी नही मिला जिसने शिक्षा की पूर्ण परिभाषा बताई हो। अत जब शिक्षको को शिष्यो का या विद्यालय के चलाने वाले प्रबन्धको अथवा शिक्षा विभाग के प्रबन्धको एव मन्त्रियो को परिभाषा ही नहीं आती तो कैसे योग्य विद्यार्थी बन सकते हैं अथवा बनाए जा सकते हैं। यही कारण है कि गत स्वतन्त्र गणतन्त्र के पचपन वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी हमारे राष्ट्र के व्यक्ति तो उन्नत नहीं हुए पर उसकी जड वस्तुए अवश्य उन्नत हुइ है।

वह सच्ची पूर्ण परिभाषा जो विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करके उसे एक योग्य नागरिक बनाती है वह इस प्रकार से है 'जिससे विद्या सभ्यता धर्मात्मता एव जितेन्द्रियता आदि आदि गुणो का विकास होकर सब प्रकार के दुर्गुणो का विनाश हो उसे ही शिक्षा कहते हैं।

'विद्या' का अर्थ मात्र गणित विज्ञान व भूगोल आदि से ही नहीं अपितु पाखण्ड जडपूजा कबरपूजा भाग्यवाद तथाकथित राशिफल भूत–प्रेत झूठे उपवास मुहूर्त निर्णय हस्तरेखा मगल शनि का भारी होना अण्डा मास आदि अनिष्ट भोजन शराब तम्बाकू आदि के नशे व पान-मसाले गुटका एव एल०एस०डी० व कोकीन आदि शरीर को विनष्ट कर देने वाली वस्तुओं की भी जानकारी हो कर उस से बचना है।

सभ्यता का अर्थ है देशभक्ति पूर्ण विनम्रता तथा सेवा का जीवन तथा भारतीय सस्कृति व प्राचीन वैदिक सस्कृति व सस्कृत तथा हिन्दी से प्यार सादा पहनावा व नमस्ते के आचरण सहित राष्ट्रभाषा हिन्दी बोलने व माता–पिता चाचा व चाची कहने मे गर्व। अपनी सस्कृति व सभ्यता हेतु बलिदान होने वाले महर्षि दयानन्द श्याम जी कृष्ण वर्मा लाला लाजपतराय सुभाष चन्द्र बोस रानी झासी वीर सावरकर भगतसिह रामप्रसाद बिस्मिल व लालबहादुर शास्त्री आदि के प्रति सत्कार की भावना व उनके जीवन तथा देश की मिटटी से प्यार। अपने घरो व विद्यालयो मे उनके चित्रो की स्थापना।

धर्मात्मता का अर्थ है मुर्दे देवी–देवताओ और तथाकथित भगवानों व पाखण्डी महाराजों के स्थान पर ससार के निर्माता पालनकर्ता व कर्मफल प्रदाता एव सृष्टि के आदि मे मानवधर्म 'वेदज्ञान' दाता एक चेतन सर्वव्यापक, निराकार, सर्वज्ञ जन्म व मृत्यु से रहित महाशक्ति रूप 'ओंकार' प्रभु से प्यार। प्रात व साय उसका ध्यान प्रार्थना व ज्ञान रखते हुए झूठ व चोरी आदि सब पापों को छोडने का सकल्प। सबको भगवान का समझकर ऊच–नीच के बिना अपनी आत्मा के तुल्य अच्छा व्यवहार। प्रतिदिन उसके द्वारा प्राप्त सुखकारी शरीर व अन्य प्राकृतिक पदार्थों के बदले धन्यवाद एव एकाग्रचित्त होकर अपने आत्मा में आनन्द की अनुभूति प्राप्त करना। जिसकी सिद्धि हेतु उस प्रभु की वेदवाणी को प्रतिदिन पढना तथा यज्ञ के द्वारा मन को शान्त कर सफलता प्राप्त करना।

जितेन्द्रियता का अभिप्राय है अपनी अनावश्यक इच्छाओ अर्थात खाने–पीने पहनने–ओढने तथा देखने–सुनने की चटोरी व आभूषण आदि चमकीली वस्तुओ का गुलाम न बनना। अतिनिद्रा आलस गप–शप व अधिक भ्रमण का त्याग करके अवश्य छह घण्टे निंद्रा लेना प्रात सूर्योदय से पूर्व उठना नित्य अध्यापकों व माता–पिता को प्रणाम करना। नित्य इन्द्रियो को वश में रखने व ब्रह्मचर्य की रक्षा हेतु व्यायाम भ्रमण योगासन तथा प्राणायाम करना। अश्लील चलचित्र (सिनेमा) दूरदर्शन क्लब शो अश्लील पुस्तको व नग्न चित्रों को न देखना। प्रत्येक छात्र व छात्रा को भाई बहिन समझना।

अपने विद्यार्थी जीवन का मुख्य उद्देश्य ब्रह्मचर्य अर्थात शरीर की धातुरक्षा से उन्नति बुद्धि की विज्ञान से उन्नति व मन की अच्छे सात्विक पुरुषो के सत्सग से उन्नति करना। जो कि अपनी पूजा व मन्त्र न देकर प्राचीन वेद व वैदिक ऋषियो का ही मार्ग बताते हो। कम बोलना पर अधिक विचारना। शरीर को शृगार के स्थान पर विद्या व गुणों से चमकाना तथा बुद्धि को पुष्ट शान्त व स्वस्थ रखने वाले दूध घी फल दाले व कम नमक मिर्च वाले शाकाहारी व कम गर्म भोजन को निश्चित समय पर करना ब्रह्मचर्य (रज–वीर्य) को नष्ट करने वाली कैम्पा कोला आदि चाय काफी अण्डा मछली लाल मिर्च न खाना तथा देर से न सो कर दस बजे के पास सोना।

यदि सभ्य धार्मिक माता–पिता की सहायता व देशभक्त सयमी सुशिक्षको एव लोभरहित सच्चे राष्ट्रप्रेमी प्रबन्धको के द्वारा उपरोक्त प्रका की आवासी शिक्षा देश के भावी नौनिहालो को मिलने लगे तो भारत शीघ्र ही शारीरिक आत्मिक व सामाजिक दृष्टि से सर्वांगीण विकास करके पुन विश्वगुरु व सोने की चिडिया बन जाए।

आओ हम सभी ऐसा सकल्प करें कि शिक्षा को केवल पेट भरने या पैसा कमाने का साधन न बनाए देश के उत्थान व जीवन के निर्माण का साधन बनाएगे। सद्गुणों को जीवन मे धारण करके स्वय को महान बनाकर राष्ट्र को महान बनाएगें। जिससे कि पुन विश्व का प्रत्येक व्यक्ति हाथ मे ओ३म की पताका लेकर कृण्वन्तो विश्वम आर्यम का वैदिक नाद गुजाते हुए यह कह उठेगा –

जो बोले सो अभय
भारत माता की जय

पुस्तक समीक्षा

इतिहास ग्रन्थ समीक्षा

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ के द्वारा उसके अन्तर्गत सभी आर्यसमाजो और सस्थाओ का इतिहास एक बडे ग्रन्थ (११x६ इच) के रूप मे लगभग ६०० पृष्ठो पर प्रकाशित किया गया है। इस ग्रन्थ मे इस प्रान्तीय सभा से सम्बद्ध सभी आर्यसमाजो और विभिन्न सस्थाओ के परिचय के अतिरिक्त आर्यसमाज की निष्ठावान् और लग्नशील विभूतियो के चित्र और परिचय भी प्रकाशित किए गए हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा इस प्रान्तीय सभा के जिन क्षेत्रो मे प्रवास हुआ और जिन महानुभावो से पत्र–व्यवहार हुआ उनका सकलन महर्षि दयानन्द की स्मृति को जीवन्त करने का एक विशेष प्रयास है।

इस प्रान्तीय सभा को स्थापित हुए एक शताब्दी हो चुकी है। पहले इस सभा का नाम आर्य प्रतिनिधि सभा नरसिहपुर था। जिसे बाद मे आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ नागपुर के रूप मे पजीकत कराया गया।

१८६६ से लेकर अब तक के प्रधान और मन्त्रियो की सूची भी इस ग्रन्थ मे प्रकाशित है। सम्भवत श्री घनश्याम सिह गुप्त इस सभा के सबसे लम्बे समय (२३ वर्ष) तक प्रधान रहे। श्री घनश्याम सिह गुप्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भी प्रधान रहे हैं। इस प्रकार और भी कई विभूतियो से साक्षात्कार इस ग्रन्थ के द्वारा सम्भव है। प्रान्तीय सभाओ में महिलाओं का नेतृत्व बहुत कम देखने मे आता है परन्तु इस सभा मे श्रीमती कोशल्या देवी जी ७ वर्ष तक प्रधान पद पर रहीं। उनके साथ श्री रमेश चन्द्र श्रीवास्तव मन्त्री थे। जो बाद मे प्रधान भी बने।

सभा के बहुत से वर्तमान और पूर्वाधिकारियो का परिचय सचित्र इस ग्रन्थ मे प्रकाशित है। विगत सौ वर्षों में सभा की गतिविधियो का अच्छा विवरण प्रस्तुत किया गया है।

एक विशेष तथ्य जो आज तक मेरे मस्तिष्क मे भी नहीं आ पाया वह यह है कि धर्मान्तरण की गतिविधियो पर रिपोर्ट देने के लिए उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री नियोगी के नाम से जो नियोगी आयोग नियुक्त हुआ था उस मे इस प्रान्तीय सभा तथा सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री घनश्यामसिह गुप्त को भी सदस्य मनोनीत किया गया था।

आर्य प्रतिनिधि सभा के एक प्रकार का सदर्भ ग्रन्थ के रूप मे इस विशाल ग्रन्थ को देखा जा सकता है। जिला स्तर तक की हर प्रकार की विस्तृत जानकारी प्रकाशित करने के पीछे एक लगनशील और उत्साही मण्डल का एहसास होता है जिसके मुखिया सम्पादक श्री जयसिह गायकवाड तथा उनकी सहायता करने के लिए श्री गणेशप्रसाद शाह तथा श्री आदित्य मुनि वानप्रस्थी हैं।

यदि समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाए अपने अपने जीवन काल की गतिविधियों को इस प्रकार ग्रन्थ के रूप में प्रस्तुत कर सके तो समूचे विश्व के आर्यसमाज का ताजा इतिहास स्वत ही प्रस्तुत हो जाएगा।

इस ग्रन्थ की कीमत १२५/ (एक सौ पच्चीस रुपये) रखी गई है तथा इसे आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ के कार्यालय दयानन्द भवन मगलवारी बाजार सदर नागपुर महाराष्ट्र से प्राप्त किया जा सकता है।

समीक्षक
विमल वधावन एडवोकेट
वरिष्ठ उप प्रधान

भारतीय मदरसे भी आतंकी बनाने की फैक्टरियां

— योगेश मिश्र

भारतीय मदरसो को आतकवादी पैदा करने की फैक्टरिया कहने का और तथ्यो के आधार पर साबित करने का अपार साहस व्यक्त किया है दैनिक जागरण के विद्वान पत्रकार माई योगेश मिश्र ने। योगेश जी से ही पता चला कि इस लेख के कारण उन्हे कुछ मुसलमान सगठनो से धमकिया भी मिल रही हैं। वैदिक धर्म के प्रथम सिद्धान्त आत्मा को अजर और अमर मानने वाले इस निर्भीक पत्रकार मे किसी प्रकार का भय उत्पन्न नही हुआ। विद्वान पत्रकार ने इस लेख मे उत्तर प्रदेश बिहार राजस्थान गुजरात आदि क्षेत्रो मे चल रही इस्लामिक गतिविधियो का तथ्यात्मक ब्योरा प्रस्तुत किया है जिसे एक राष्ट्रवादी रिकार्ड मानकर हम यहा प्रकाशित कर रहे है और इन राष्ट्रवादी विचारो के लिए लेखक का साधुवाद करते हैं — विमल वधावन वरिष्ठ उप–प्रधान।

आतकवाद की शिक्षा केवल पाकिस्तान के मदरसो मे ही नहीं भारत के तमाम मदरसो मे भी दी जा रही है। खासतौर पर उत्तर प्रदेश ओर बिहार मे नेपाल की सीमा से सटे इन इलाको मे पिछले तीन साल के दौरान मदरसो की जो बाढ आई है उससे इस धारणा की और पुष्टि होती है। खुफिया' सूत्रो के मुताबिक अगर नेपाल के सीमावर्ती क्षेत्र मे मदरसो और उनमे दी जा रही कट्टरपथ की तालीम पर अकुश नही लगा तो आतकवादियो की नई फोज को भारत मे ही पैदा होने से नहीं राका जा सकता।

हालात यह हो गए हैं कि बिहार के किशनगज मे बाग्लादेश व पाकिस्तान से आए घुसपैठिया ने वहा के जनसाख्यकीय अनुपात (डेमोग्राफी) को बदल कर रख दिया है। अब वहा बहुसख्यक बन गया अल्पसख्यक समुदाय "मिनी पाकिस्तान" की माग भी उठाने लगा हे। बीते तीन साल मे यहा कव न किशनगज मे ७२ नए म"रर' खुल गए "

उत्तर प्रदेश आर [illegible] र व सीमाइ इलाको मे तकरीबन चार सौ मदरसे काम कर रहे है। खुफिया एजेसियो द्वारा की गई तहकीकात से यह खुलासा भी हुआ है इन इलाको की कई मसजिदे भी जेहादी कामकाज के लिए इस्तेमाल की जा रही हैं। इस धुर इसलामिक आदोलन की अगुवाई तबालिक जमात तथा अहले हदीस के माध्यम से की जा रही है। इन समठनो को तमाम अरब एजेसियो से वित्तीय मदद प्राप्त होती है। पाकिस्तान इसमे मददगार है। इसके लिए वह पीर पगारो जैसे बरेलवी धडो का इस्तेमाल करता है। अकेले उत्तर प्रदेश मे ८०० किमी के क्षेत्र मे इस तरह की गतिविधिया जारी है। पीलीभीत से महाराजगज तक के कई जिले स्थित हैं। खुफिया रिपोर्ट के मुताबिक अकेले सिद्धार्थनगर मे ५१ मदरसे हैं। जबकि महाराजगज मे ५२ मदरसे। इनमे १४ नए मदरसे व मसजिदें १९९७ के बाद निजी जमीन पर बनाए गए है। १९९३ से पहले इन मदरसो मे आम तौर पर धार्मिक शिक्षा दी जाती थी। लेकिन इसके बाद यहा उग्रवादी विचारधारा का पोषण हाने लगा। यही वह दौर था जब आई एस आई ने इन मदरसो पर अपना प्रभुत्व बढाना शुरु किया। खुफिया रिपोट के मुताबिक मुसलिम विचारक व शिक्षक अ–रोक–टोक इन मदरसो का दौरा करते रहते हैं। जिनमे मौलाना अब्दुल रऊफ रहमानी का नाम प्रमुख है। वह नेपाल का रहने वाला हे और मरकजी जमाएत अहले हदीस का अमीर है। यह राबित–अल–आलम–अल–इसलामी का सदस्य भी है। इस कट्टर इसलामी सगठन का मुख्यालय मक्का मे है। भारत नेपाल सीमा के पास बन रह मदरसो का सचालन अहले हदीस और मौलवी रहमानी द्वारा किया जाता है।

इसी तरह नेपाल के कृष्णानगर मे रहने वाला मोलाना अब्दुल मदनी अहले हदीस का नायब अमीर हे। यह मदरसा 'खेजत–उल–कुब्रा को चलाता है। बताया जाता है कि इसका सम्बन्ध आईएसआई व दाउद इब्राहिम से है। उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थनगर जिले मे बैरहवा मे एक मदरसा तालिमात ए–दीन के नाम से चल रहा है। इस मदरसे के मौलवी मोहम्मद अली को उस समय दिल्ली से गिरफ्तार किया गया था जब वह पाकिस्तान जा रहा था। उसने आईएसआई के साथ अपने सबधो को कुबूल किया था।

हाल के दिनो मे एक पाकिस्तानी नागरिक अब्दुल मजीद जो पेशे से इजीनियर है को महाराजगज जिले के बभनी खुद मे इकरा जूनियर हाइस्कूल [illegible] निमाण की निगरानी करने के लिए भार [illegible] आ [illegible] जाते देखा जाता हे। सिद्धार्थनगर जिले क ही मदरसा जमायत–उल–इसलामिया के बारे मे कहा जाता है कि इसे जेद्दा स्थित इसलामिक डवलपमेट बैंक से आर्थिक मदद मिलती है। इसके सदस्य दिल्ली मुम्बई तथा लखनऊ का अक्सर दौरा करते रहते हैं। महाराजगज के एक अ य मदरसे अल–सफा–अल–इस्लोआमिया के मौलवी अब्दुल वाहिद मदनी के बारे मे माना जाता है कि उसे सऊदी दूतावास से तनख्वाह मिलती है। बिहार की लगभग ६६० किमी की सीमा नेपाल से सटी हुई है। इस क्षेत्र मे ज्यादातर मुसलिम बहुल इलाके हैं। इसलिए आईएसआई को यह जगह अपने लिए एकदम मुफीद नजर आती है। अब तक इन इलाको मे ६७१ मदरसो व मसजिदो का निर्माण किया जा चुका है। इनमें ज्यादातर मदरसो को खाडी देशों व पाकिस्तान से आर्थिक मदद मिलती है। सबसे खतरनाक इलाका किशनगज का है। बाग्लादेश से सटी दस किमी की सीमा मे भी आईएसआई की गतिविधिया काफी तेज है क्योंकि इन इलाकों मे तकरीबन एक लाख बाग्लादेशी घुसपैठिए नाजायज रूप से रह रहे हैं। यहा ६५ लाख मुसलमान हैं। जो कुल आबादी का ६६ फीसदी हैं। पूर्वी चम्पारण मे ५५ लाख से ज्यादा मुसलमान हैं। इन दोनो इलाको मे आईएसआई पूरी तरह सक्रिय हैं।

पिछले तीन साल से आतकवाद की तालीम दे रहे मदरसो की बाढ कवल उत्तर प्रदेश और बिहार मे ही नहीं आई है। इन मदरसो की सख्या राजस्थान व गुजरात के सीमावर्ती इलाको मे भी तेजी से बढी है। इन इलाको मे तकरीबन ८३६ मदरसे चल रहे हैं। इनमे अधिकतर ऐसे हैं जहा आतकियो की बुनियादी खेप तैयार करने का काम हो रहा है। यही नहीं इन मदरसो मे न केवल बच्चो को 'जेहाद की तालीम दी जा रही है बल्कि ये मदरसे पाकिस्तानी जेहादियो के लिए पनाहगाह बने हुए हैं।

राजस्थान व गुजरात के पास पाक सीमा से जुडे क्षेत्रो के मुसलिम युवको पर इनकी नजर है। मदरसो मे इन बच्चो को बचपन से ही कट्टर इसलामिक विचारधारा की खुराक पिला दी जाती है। इसके लिए बाकायदा पाकिस्तान व अरब देशो के कट्टर विचारधारा वाले शिक्षको को लगाया जाता हे।

खुफिया एजेसियो [illegible] प्रदेश और बिहार क अलाव गुजरात व राजस्थान सीमा से दस किलामीटर के भीतर स्थित मदरसो की गतिविधियो का भी खुलासा किया है। खुफिया एजेसियो की इस रिपोर्ट के मुताबिक राजस्थान मे श्रीगगानगर बीकानेर जैसलमेर तथा बाडमेर मे भी आईएसआई सक्रिय है। राजस्थान का १०३ किलोमीटर का इलाका पाकिस्तान सीमा से लगा हुआ है। इसमे से केवल ६०४ किलोमीटर क्षेत्र मे ही बाड लगाई गई है। बाकी इलाका घुसपैठियो के लिए सुरक्षित बना हुआ है। जैसलमेर मे अल्पसख्यक समुदाय के ८३ हजार लोग रह रहे है जबकि अकेले बाडमेर मे एक लाख ६४ हजार अल्पसख्यक है। यहा १५० मसजिदे व ७१ मदरसे हैं परन्तु जैसलमेर मे २८ मसजिदे व ४१ मदरसे हैं। इन मदरसो मे बरेलवी व देवबदी दोनो ही विचारधारा के मोलवी इसलामिक शिक्षा प्रदान करते है। सरकार की जाच मे पता चला है कि ज्यादातर मदरसो की स्थापना बिना किसी पजीकरण के हुई है। इन मदरसो मे अधिकाशत उत्तर प्रदेश महाराष्ट्र व गुजरात के मौलवी पढा रहे हैं।

धर्मस्थल कानून तथा राजस्थान धार्मिक अधिनियम के तहत राजस्थान मे किसी भी धार्मिक निर्माण के लिए जिलाधिकारी से अनुमति लेनी पडती है। मगर इन मदरसो व मसजिदो के बारे मे पाया गया है कि ज्यादातर मामलो मे यह अनुमति नहीं ली गई। और तो और जैसलमेर मे सात ऐसे मदरसे व मसजिदे है जिनका निर्माण सरकारी जमीन पर किया गया हे। उनके खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। नए निर्माण पर रोक लगा दी गई है। गुजरात महाराष्ट्र बिहार तथा पश्चिम बगाल क तबालिक जमात के कार्यकर्ता इन मदरसा का दौरा करते रहते है। स्थानीय अल्पसख्यक नेता इन मदरसो के निर्माण के लिए चदा इकटठा करते हैं। बाडमेर के नगरदा का रहने वाला लतीफ खान पिछले दिनो फड एकत्र करने पाकिस्तान गया था।

खुफिया सूत्रो से पता चला है कि बाडमेर के गगरिया तथा सुजान का निवान स्थित दो मदरसे और बीकानेर के नूरिया रिजविया मदरसा खाजूवाला मे कटटर इसलामिक विचारधारा की शिक्षा दी जाती हे। आतकी गतिविधियो के चलते जैसलमेर के जिलाधिकारी को साम गाव मगरे की बस्ती तथा टोडा स्थित तीन मसजिदो को गिराने क आदेश देने पडे थ। खुफिया सू [illegible] ने यह तथ्य भी जुटाया है कि तस्करो स भी इन मदरसो को पैसा मिलता है। बाडमेर से सटे जालौर जिले मे सचोर मदरसे को अरब देशो से पैसा प्राप्त होता है। सचोर मे पीरो की जल दरगाह मे पाकिस्तानी पीर इजाज हुसैन ने तीन बार दौरा किया है। इसके लिए उसने फर्जी पासपोर्ट का इस्तेमाल किया था। उसने इन मदरसो को सरकारी आदेशो की परवाह न करने के निर्देश दिए थे।

गुजरात के कच्छ व बनासकाठा जिलों के मदरसो मे भी आतकी शिक्षा दी जाती है। इन मदरसो मे पाकिस्तान के धार्मिक सस्थान पीर पगारो के निर्देशो का पालन किया जाता है। गुजरात के कच्छ जिले की ३३० किलोमीटर की सीमा पाकिस्तान से लगी हुई है। इसके अलावा १०४ किलोमीटर का समुद्री इलाका भी पाक से सटा हुआ है। इस जिले मे ४६० मसजिदे और २०३ मदरसे हैं। इनमे दस हजार से ज्यादा छात्र इसलाम की तालीम पाते हैं। ज्यादातर को खाडी देशो से वित्तीय मदद प्राप्त होती है। इन मदरसो की गतिविधियो पर अकुश लगाने के लिए खुफिया एजेसियो ने सरकार से इन्हे मिलने वाली विदेशी मदद पर रोक लगाने को कहा है। इसके अलावा विदेशी मुद्रा की आवाजाही पर निगरानी रखने का काम शुरू करने के साथ साथ राज्य [illegible] खुफिया एजेसियो को मजबूत किए जाने की भी जरूरत बताई हे। ग्राम रक्षा समितियो के गठन और सीमावर्ती गावो के निवासियो को पहचानपत्र देने पर भी विचार किए जाने की बात की गई है। सीमावर्ती क्षेत्र के १० किलोमीटर दायरे मे इन लाइन परमिट लागू करने पर भी विचार किया जाना चाहिए। ✿

पोस्ट। रजिस्ट्रेशन न डी०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 23-12-2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/20
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2001 in NDPSo on 20/21-12-20

पृष्ठ १ का शेष भाग

मनगढन्त, झूठी और निराधार बातों को इतिहास .....

वैदिक विद्वान डा० महेश विद्यालकार ने कहा कि वेद का निर्देश "तिस्रो देवी मयो भुव" के सिद्धान्त पर देश की सम्मान योग्य तीन देविया – सस्कृति मातृभूमि औा मातृभाषा की रक्षा हमारा परम कर्त्तव्य है। जबकि अग्रेजो ने इन्ही तीनो को नष्ट करने का पूरा प्रयास किया। हर क्षेत्र मे मिलावट और गलत व्याख्याए करके उन्होने अपनी राजनीतिक नीतियो को लागू करने का प्रयास किया। शिक्षा मे मिलावट वेद की व्याख्या मे मिलावट और यहा तक की मनुस्मृति मे भी मिलावट की गई या करवाई गई।

सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष एव वरिष्ठ अधिवक्ता श्री रामफल बसल ने कहा कि जब से धरती बनी है और जब से मनुष्यो की उत्पत्ति हुई तब से ही उसका नाम आर्य हे और इस भूमि का नाम आर्यवर्त है। चाहे हम हिन्दू कह या आर्य हम सब मूलत वैदिक धर्मी हे और वैदिक धर्म ही सबसे प्राचीन है।

श्री बसल ने कहा कि कभी कभी प्रशासनिक कार्यों को करते हुए कुछ लोग सिद्धान्त से समझौता कर लेते हैं परन्तु सभ्य वैदिक धर्मी और राष्ट्रवादी ऐसा कभी नही कर सकता।

उन्होने बताया कि सोमनाथ मन्दिर के उद्धार के बाद जब उसके उदघाटन के लिए सरदार पटेल ने प्रथम राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद से निवेदन किया तो यही कहा था कि राष्ट्रपति पद का गौरव या वैदिक धर्म की स्थापना और विदेशी आक्रान्ताओ के चिन्ह की समाप्ति मे से आप क्या चुनेग तो इस बात पर बाबू राजेन्द्र प्रसाद ने उदघाटन को स्वीकार किया।

उन्होन कहा कि पहले शोर मचाया जाता था कि इस्लाम को खतरा है जबकि आज वास्तविकता यह है कि इस्लाम खुद एक खतरा बन चुका है केवल भारत के लिए ही नही अपितु सारे विश्व के लिए।

उन्होने अविभाजित पजाब के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री जी०डी० खोसला की एक पुस्तक से कुछ विशिष्ट अश पढकर सुनाए जो मुस्लिम लीग ने मुसलमानो के लिए गुप्त निर्देश जारी किए थे। ये निर्देश निम्न प्रकार थे –

Printed and cyclostyled copies of the following circular were secretly distributed among the Muslims of India

(1) All Muslims of India should die for Pakistan

(2) With Pakistan established whole of India should be conquered

(3) All people of India should be converted to Islam

(4) All Muslim kingdoms should join hands with the Anglo-American exploitation of the whole world

(5) One Muslim should get the right of five Hindus, i e, each Muslim is equal to five Hindus

(6) Until Pakistan and Indian Empire is established, the following steps should be taken

(a) All factories and shops owned by Hindus should be burnt, destroyed looted and loot should be given to League Office

(b) All Muslim Leaguers should carry weapons in defiance of order

(c) All nationalist Muslims if they do not join League must be killed by secret Gestapo

(d) Hindus should be murdered gradually and their population should be reduced

(e) All temples should be destroyed

(f) Muslims League spies in every village and district of India

(g) Congress Leaders should be murdered, one in one month by secret method

(h) Congress upper offices should be destroyed by secret Muslim Gestapo, single person doing the job

(i) Karachi, Bombay, Calcutta, Madras, Goa, Vizagapatam should be paralysed by December 1946 by Muslim League volunteers

(j) Muslim should never be allowed to work under Hindus in Army, Navy Government services or private firms

(k) Muslim should sabotage whole of India and Congress Government for the final invasion of India by Muslims

(l) Financial resources are given by Muslim League Invasion of India by Nizam communist few Europeans, Khoja by Bhopal few Anglo Indians, few Parsis, few Christians, Punjab Sind and Bengal will be places of manufacture of all arms, weapons for Muslim Leaguers invasion and establishing of Muslim Empire of India

(m) all arms, weapons should be distributed to Bombay, Calcutta, Delhi, Madras, Bangalore, Lahore, Karachi, branches of Muslim League

(n) All sections of Muslim League should carry minimum equipment of weapons, at least pocket knife at all times to destory Hindus and drive all Hindus out of India.

(o) All transport should be used for battle against Hindus

(p) Hindu women and girls should be raped, kidnapped and converted into Muslims from October 18 1946

(q) Hindu culture should be destroyed

(r) All Leaguers should try to be cruel at all times of Hindus and boycott them socially, economically and in many other ways

(s) No Muslim should buy from Hindu dealers All Hindu produced films should be boycotted All Muslim Leaguers should obey these instructions and bring into action by September 15, 1946

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने इस सगोष्ठी के लिए विशेष रूप से तैयार प्रस्ताव का मूल पाठ प्रस्तुत किया जिसे सभा मे उपस्थित सभी सदस्यो ने सर्वसम्मति से स्वीकार किया।

सगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य ने अपनी मिलिटरी सेना के कई सस्मरण सुनाते हुए कहा कि मुसलमान पाकिस्तान मे बैठकर तो भारत का खुला विरोध करते ही है भारत का विरोध उन्होने अपनी सस्कृति बना लिया है। परन्तु भारत मे बैठकर भी ये लोग पाकिस्तान के ही समर्थन की बात सोचते हैं।

इसी मानसिकता के तहत भारत के रॉकेट का नाम जब आर्यभट्ट प्रस्तावित हुआ तो इन लोगो ने इस शब्द का भी विरोध किया।

उन्होने कहा कि हमने कभी किसी पर आक्रमण नहीं किया बल्कि जितने भी आक्रमण हुए वे अन्यों द्वारा हम पर किए गए।

सृष्टि के प्रारम्भ मे एक प्रेरणास्वरूप नाम वेद द्वारा मनुष्य को दिया गया – आर्य। आर्य शब्द का अर्थ था श्रेष्ठ जो किसी प्रकार से भी असभ्य या कष्टपूर्ण व्यवहार करता था उसे अनार्य कहा जाता था। यही शब्द बिगडकर अनाडी के रूप मे भी प्रचलित हुआ।

के० वरत्न ने कहा कि आर्यो को आक्रमणकारी और विदेशी कहने वाले लोग आज तक यह नही बता पाए कि यदि हम यहा के मूल निवासी नही थे तो साक्ष्य के आधार पर बताया जाए कि हम कहा के थे ? कोई कहता है मध्य ईरान से आए कोई कहता है जर्मन से आए और कोई रशिया से बताता है। यह सब झूठ बाते हैं। यदि हमारी आर्य सस्कृति और वैदिक धर्म नही था तो तथाकथित इतिहासविद आज तक यह क्यो नहीं बता पाए कि हमारी सस्कृति ओर धर्म कौन सा था और आर्य सस्कृति वैदिक धर्म को मानने वाले कौन थे? इन कपोल कल्पनाओ को इतिहास नहीं कहा जा सकता।

सगोष्ठी अध्यक्ष के नाते सार्वदेशिक सभा प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य ने आर्यो को आह्वान किया कि इस विषय पर अधिक जन जागृति अभियान चलाकर पत्रो के माध्यम से देश के राजनीति को आगाह किया जाए कि इस प्रकार दूषित नीतिया अब बर्दास्त नहीं की जाए।

सगोष्ठी का सचालन करते हुए विमल वधावन एडवोकेट ने कहा कि प्रधान जी क इस निर्देश के अनुसार शीघ्र आर्यसमाज हनुमान रोड दिल्ली में पुरातत्व श्री बी०बी लाल द्वारा स्लाईड के माध्यम पुरातत्व से सम्बन्धित साक्ष्य प्रस्तुत करने लिए एक विशेष व्याख्यान का आयोजन हो। उन्होने दिल्ली की विभिन्न आर्यसमाजो आए आर्यनेताओ को सम्बोधित करते कहा कि वे राष्ट्ररक्षा सम्मेलनो मे भी इस प्रकार के विषय को उजागर करे और विषयो के विशेषज्ञो को आमन्त्रित करे।

इस सगोष्ठी मे सार्वदेशिक सभा कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य पुस्तकाध्यक्ष सोमदत्त महाजन उपमन्त्री श्री रोशनलाल आर्य चौ० लक्ष्मी चन्द श्री सुरेन्द्र मो गुप्ता श्री अरुण वर्मा तथा कई अन्य आ महानुभाव भी उपस्थित थे।

प्रतिष्ठा मे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली–२ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६ फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ३/५ महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली–२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०६८५)
सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई–मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट – http://www.whereisgod.con